শ্রীমন্তগবদসীতা।

'মূল, অব্য়, মূলের অমুবাদ, শাক্করভাষ্য, আনন্দগিরিটীকা এবং ভাষ্যামুবাদ-সবেতা।

মহান্ত্ৰপোধ্যায় শ্ৰীযুক্ত প্ৰম্থনাথ তৰ্কভূষ্

সম্পাদিতা।

(इडीय मः क्रवन)

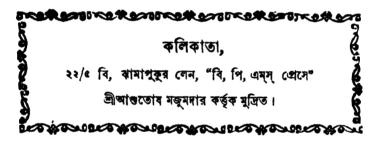
সংশোধিত ৬ পরিমার্কিত।

외작[비주---

श्रीकीटवामहक्त प्रकृपमात्र,

২১।১ বামাপুকুব লেন, কলিকান্তা।

১৩৩১ দলি ৷



শ্রীমন্তগবদগীত।-শ্লোকানামকারাাদ-বণক্রম:।

| 🗨 অধ্যায়:, শোক:, | | | व्यशामः, स्मावः | | |
|-----------------------------------|-------|------------|---------------------------------|-----|-----|
| অকীত্তিঞ্চাপি ভূতানি | þ | 98 | जना निमशा खमन खरीर्य। म् | >> | 79 |
| অকরং ব্রহ্ম প্রমন্ | ъ | 9 | অনাশ্ৰিত: কৰ্মফলম্ | • | ` > |
| অক্ষবাণামকারোহন্দ্রি | > | ೨೨ | অনিষ্টমিষ্টং মিশ্রঞ | 75 | >5 |
| অগ্নির্জ্যোতিরহঃ শুক্ল; | ۲ | ₹8 | অমুদ্বেগকরং বাক্যম্ | >9 | >6 |
| অচ্ছেছোহয়নদাহোহয়ন্ | ર | ₹8 | व्ययुवद्यः कवः हिश्नाम् | 72 | ર¢ |
| অক্টোৎপি সন্নব্যয়াত্মা | 8 | • | অনেকচিত্তবিভ্রান্তা: | >0 | >> |
| অক্তশ্চাশ্রদ্ধানশ্চ | 8 | 8• | অনেকবন্ত্রনরনম্ | >> | >• |
| অঁত্ৰ শুবা মহেঘাসাঃ | > | 8 | অনেকবাহ্দরবক্ত্রনেত্রম্ | >> | 36 |
| অথ কেন প্রযুক্তাহয়ম্ | ૭ | ৩৬ | অন্তকালে চ মামেব | ۲ | ¢ |
| অণ চিত্ত সমাধাতুম্ | >> | ત્ર | অন্তবন্তুফলং তেবাম্ | ٩. | २७ |
| অপ চেং ভ্যিমং ধন্ম্যম্ | ર | २७ | অন্তবন্ত ইমে দেহা: | ्र | 72 |
| অথ চৈনং নিত্যজাতম্ | > | २७ | অন্নান্তবস্থি ভূতানি | • | >8 |
| অথবা যোগিনামেব | ৬ | 88 | অভ্যেচ বহব: শুরা: | > | > |
| অথবা বহুট্টৈতেন | >• | 8 २ | অন্তে ত্বেবসঙ্গানন্তঃ | >0 | ₹¢ |
| অণ ব্যবস্থিতান্ দৃষ্টা | > | २० | অপরং ভূবতো জন্ম | 8 | 8 |
| অগৈতদপ্যদক্তো০দি | >> | >> | অপবে নিয়তাহারাঃ | 8, | 9. |
| অদৃষ্টপূর্বাং সবিতোহণ্মি | >> | 84 | অপরেয়মিত স্বক্তাম্ | . 9 | ¢ |
| অদেশকালে বদানম্ | >9 | >> | অপগ্যাপ্তং তদসাকন্ | > | >• |
| অদ্ভো প্ৰভূতানাম্ | >5 | 20 | অপাধন জ্বতি প্রাণম্ | 8 | २२ |
| অধন্ম ১ ধন্মমিতি যা | 24 | ૭ર | অপি চেৎ স্বহরাচারো | ત્ર | 9. |
| অধন্মাভিভবাৎ কৃষ্ণ | > | 8• | অপিচেদসি পাপেভ্যঃ | 8 | ৩৬ |
| মধ্য-চাদ্ধং প্রস্ত ান্তস্য | > @ | 2 | অপি ত্রৈলোক্যরাজ্যস্ত | > | 96 |
| অধিভূত্ব করো ভাবঃ | ٦ | ъ | অপ্রকাশোহ প্রবৃত্তিশ্চ | 28 | 20 |
| অধিষক্তঃ কপং কোহত্ত | ٦ | ર | অফলাকাজ্ঞিভির্যঞো | 2,9 | २५ |
| অধিষ্ঠানং তথা কৰ্ম্ভা ' | 72 | 28 | অভয়ং সন্ত্ৰসংশুদ্ধিঃ | ১৬ | > |
| অধ্যায়জ্ঞান-নিত্যত্বমূ | 20 | >> | অভিসন্ধায় ভূ ফলপ্ | 29 | >5 |
| অধ্যেষ্যতে চ য ইমম্ | 72 | 90 | অভ্যা;সবোগধুক্তেন | * 6 | ۲ |
| অনস্তবিজয়ং রাজা | > | >0 | অভ্যাদেহপ্যসমর্থোহসি | 35 | >• |
| অনম্ভণান্তি নাগানাম্ | . > 0 | २न्न | অমানিত্মদন্তি শৃম্ | 20 | 1 |
| অন্তচেতা: সত্তৃম্ | ь | >8 | অমী চ ডাং ধৃতরাট্রক পুক্রাঃ | | 26 |
| অন্তাশিস্তরতো মাম্ | 8 | २२ | অমী হি খাং স্থরসভ্যাঃ | *> | २५ |
| অনপেক: ওচিদ ক: | >२ | >9 | ু অষতিঃ শ্রদ্ধরোপেতো | ₩. | 9 |
| অনাদিড়ায়িগু পৃত্যুৎ | 30 | 92 | অন্নেষ্ চ সর্বের্ | > | >> |

গীতা

| | ব্য:, | CHT: | • | 4 ; | (취: |
|----------------------------|------------------|------|---------------------------------------|------------|------------|
| .অযুক্ত: প্ৰাকৃত: স্তৰ: ' | 76 | 24 | আঢ্যোহভিজনবানস্থি | > હ | >6 |
| অবজানাতি মাং সূঢ়াঃ | ٦ | >> | আত্মসন্তাবিতা: স্তর্না: | 20 | >1 |
| व्यवाह्यवामार्यं बहुन् | > | ৩৬ | আত্মোপম্যেন সর্বত | 4 | ૭ ૨ |
| অবিনাশি তু তদ্বিদ্ধি | 2 | 39 | আদিত্যানামহং বিষ্ণু: | >• | ٤5 |
| অবিভক্তঞ্চ ভূতেবু | 20 | >6 | আপুৰ্য্যমাণমচল প্ৰতিষ্ঠম্ | > | 90 |
| অব্যক্তাদীনি ভূতানি | 2 | २৮ | আত্রনভূবনালোকা: | ь | 7.9 |
| অব্যক্তাদ্ব্যক্তর: সর্বা: | ъ | 76 | আয়ুধানামহং বক্তমু | >• | २৮ |
| অব্যক্তোহকর ইত্যুক্তঃ | ۳. | २५ | আযু:সন্ধবলারোগ্যম্ | >9 | ь |
| অব্যক্তোহৰুমচিন্ত্যোহৰুম্ | > | ₹. | আকককোশু নেরোগম্ | હ | 9 |
| অব্যক্তং ব্যক্তিমাপরং | 9 | ₹8 | আরুতং জ্ঞানমেতেন | • | લ્ |
| অশান্তবিহিতং বোরং | >9 | ¢ | আশাপাশশতৈৰ্বদাঃ | 29 | ે ર |
| অ শোচ্যানয়শোচন্ত্ | > | >> | আশ্চর্য্যবং পশ্রতি | | |
| অপ্রদ্ধানা: পুরুষা: | ۵ | 9 | ক শ্চিদেনম্ | ર | २२ |
| অপ্ৰদায়া হতং দত্তং | 29 | २৮ | আহ্বীং যোনিমাপরা: | >> | २० |
| অৰখঃ সৰ্ববৃক্ষাণাং | >• | २७ | আহারওপি সর্কৃত | >4 | 9 • |
| অসক্তব্দিঃ সর্বত | 74 | 82 | আহস্তাম্যয়: সর্কে | >• | ১৩ |
| অস্ক্রিরনভিষ্ক: | 30 | \$ | ই | | |
| ব্দসভ্যমপ্রতিষ্টং তে | 20 | ٦ | ইচ্ছাদ্বেষসমূখেন | 9 | २१ |
| অসে মরা হতঃ শক্রঃ | 35 | >8 | ইচ্ছা দ্বেষঃ স্থাং তঃখন্ | 20 | ৬ |
| অসংবভান্মনা যোগো | ৬ | ৩৬ | ইতি কেতং তপা জানগ্ | 20 | 74 |
| অসংশয়ং মহাবাহো | , ^৬ . | 90 | ইতি গুঞ্তমং শাল্প | >€ | ₹• |
| অন্মাকং ডু বিশিষ্টা যে | ٤, | 9 | ইতি তে জানমাখ্যাত্য্ | 74 | ৬৩ |
| অহস্কারং বলং দর্পং কামং | | | ইত্যৰ্জ্বনং বাস্থদেবঃ | >> | • 3 |
| ্কোধঞ্চ সংশ্ৰিতাঃ | >6 | 74 | ইত্যহং বাস্থদেবস্থ | 72 | 98 |
| ष्णरुकोत्तर वनः पर्शर कामः | | | ইদম্ভ তে গুঞ্তমম্ | ۵ | > |
| ক্রোধং পরিগ্রহম্ | 74 | ૯૭ | र्शनस्य नाष्ठभकात्र | 74 | ৬৭ |
| ष्यहर जस्जूत्रहर गुकाः | 7 | >0 | ইদমক্ত ময়া লক্ষ্ | 20 | 20 |
| ৰহমাত্মা গুড়াকৈশ | >• | ₹• | ইদং জানমুপাশ্রিত্য | >8 | • |
| অহং বৈশানরো ভূড়া | 24 | >8 | ইদং শরীরং কৌন্তের | 20 | > |
| অহং সর্বান্ত প্রভবো | 306 | ٦ | ই जित्र एक जित्र का र्थ | 9 | 98 |
| चहर हि नर्यरकामार | \$ | ₹8 | ইন্দ্রিগাণাং হি চরভাম্ | 2 | 69 |
| অহিংসা সভ্যমক্রোধ: | 10 | ર | ইন্দ্রিয়াণি পরাণ্যাহঃ | • | 82 |
| অহিংসা স্বতা ভূটিঃ | >. | ¢ | ইন্সিগাণি মনো বৃদ্ধিঃ . | • | 8 • |
| অহো ৰত মহৎ পাপম্ | > | 88 | ইজিয়ার্থের্ বৈরাগ্যম্ | 50 | ь |
| • | | | ইমং বিবস্বতে বোগস্ | 8 | . |
| আখ্যাহি মে কো ভবান্ | >> | 9> | रेडीन् राजागन् हि (वा स्वाः | • | 4 |
| | | | | | |

| - শ্রীমন্তগ | বদগা ও | 1 -CA 1: | কানামকারাদি-বর্ণক্রমঃ। | | 1/0 |
|---|---------------|-----------------|-----------------------------------|----------|-----------------|
| | অঃ, (| লাঃ, | 1 | অঃ, | CHI:, |
| ইহৈকত্বং জগৎ কুৎসম্ | 22 | 9 | এবং প্রবর্ত্তিতং চক্রং | ف | 35 |
| ইহৈব তৈজিতঃ সর্গঃ | • | >> | এবং বছবিধা যজা | 8. | ०७३ |
| 5 | | | এবং বুদ্ধে: পরং বুদ্ধা | 9 | 89 |
| ঈশর: সর্বভূতানাং | 74 | ७५ | এবং সতত্তযুক্তা যে | ۶٤ | > |
| अ ५ ३३ - १११ ट्रूजिस ५ | | | এষা তেহভিহিতা সাংখ্যে | ₹. | 60 |
| | >• | ২৭ | এষা ব্ৰাহ্মী স্থিতিঃ পাৰ্থ | ર | 92 |
| উচ্চৈ:শ্রবসম্বানম্ উৎক্রামস্তং স্থিতং বাপি | ٥. | >0 | \8 | | |
| ७९का न७ ९ १२७९ साम উ ऌमः পूक्रवद्यभ्रः | 26 | 39 | ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম | ъ | 55 |
| উৎসরকুলধর্মাণাম্ | ,, | 89 | ওঁতৎসদিতি নির্দেশো | 59 | २७ |
| ७२गमपूर्णा मानान् छेरमीरमयुत्रिरम लाकाः | • | ₹8 | • | • 1 | (, |
| উদারা: সর্ব এবৈতে | 9 | 34 | • | | |
| उनात्राः गर्भ यद्यः उनात्रीनबद्यात्रीनः | 28 | २७ | কচ্চিদেতচ্ছ ভং পাৰ্থ | ۹۲ . | 42 |
| উদ্ধেদায়নাখান্ | 9 | Č | কচ্চিল্লোভয়বিভ্ৰষ্টঃ | • | 96 |
| উপদ্ৰহাত্মস্তা চ | 30 | २२ | কট্ব মূলবণাত্যুক | 79 | ه ٠ |
| | • | `` | কর্থং ন জ্ঞেয়মন্মাভিঃ | > | 9 5 |
| . উ | | | कथः जीन्नमरुः मःरंथा | ર | 8 |
| উদ্ধং গচ্ছস্তি সম্বস্থাঃ | 36 | 74 | কথং বিস্থামহং যোগিন্ | >• | 39 |
| উৰ্দ্মূলমধঃশাখম | > ¢ | > | কৰ্মজং বৃদ্ধিযুক্তা হি | \$ | 6 > |
| · **I | | | কর্মণঃ স্কৃতস্থাতঃ | >8 | એ ક |
| ঋষিভিব্ভধা গীত্ৰ | 50 | 8 | কৰ্ম্মণৈৰ হি সংসিদ্ধিম্ | 9 | ₹• |
| ` | | | কৰ্মণো খুপি বোদ্ধবাদ্ | 8 | >9 |
| ٩ | | | ক ৰ্ম্যাকৰ্ম যঃ পঞ্চেং | 8 | 74 |
| এতচ্ছুত্বা বচনং কেশবস্থ | >> | 90 | কর্মণ্যেবাধিকারন্তে | ₹ | 89 |
| এতদ্যোনীনি ভূতানি | 9 | ৬ | কৰ্ম এক্ষোদ্ভবং বিদ্ধি | • | `>« |
| এতক্মে সংশয়ং ক্লক | ৬ | ৩৯ | কর্ম্মেক্সিয়াণি সংযম্য | 9 | ৬ |
| এতান্তপি তু কর্মাণি | 76 | , 9 | কর্ণরন্তঃ শরীরন্থং | >9 | ৬ |
| এতাং দৃষ্টিমবস্তুভ্য | ১৬ | ৯ | ' কবিং পুরা ণমম্শা সিতারমূ | , b | ۶ |
| এতাং বিভূতিং বোগঞ্চ | >• | 9 | কশ্বাচ্চ তে ন নমেরন্ | >> | ৩৭ |
| এতৈৰিস্ক: কৌন্তের | >> | २२ | কাজ্জন্তঃ কৰ্ম্মণাং সিদ্ধিম্ | , 8 | ٠ > ২ |
| এবমুক্তো দ্বীকেশো | > | ₹8 | কাস এষ ক্রোধ এষঃ | ં | .09 |
| এবস্ঞা ততো রাজন্ | >> | 8 | কামকোধবিযুক্তানাম্ | ¢ | ২৬ |
| অবস্কাৰ্জ্ন: সংখ্যে | , , | 89 | কামমাশ্রিত্য হপুরুষ্ | 74 | .)• |
| এবস্কু হ্বীকেশম্ | 5 | \$ | কা্মাত্মানঃ স্বর্গপরীঃ | , २ | 80 |
| এব मে उँ न् यथाथ प्रम् | >> | 9 | কামৈন্তি তৈ হ তজানাঃ | 9 | . 15 . |
| স্থাবং জাদা কৃতং কর্ম | 8 | ٠ ٥٤ | | 36 | ₹ |
| এবং প্রশারাপ্রাপ্তম্ | 8 | 2 | কায়েন মনসা বুদ্বা | C | >> |

| • | | | | GET 0 / | ratto |
|----------------------------|------|--------------|------------------------------------|----------|------------|
| | - | at:, | | જાઃ, (| |
| কাৰ্পণ্যদোৰোপ্ৰতস্বভাব: | ર | . n ¦ | জ্বামরণমোকার | 9 | २२ |
| কার্য্যকারণকর্ত্ত্বে | | `٤٠ | জাতদ্য হি ধ্রুবো মৃত্যুঃ | ર | ২৭ |
| কাৰ্য্যমিত্যেব নং কৰ্ম | 74 | ۾ , | জিতাম্বনঃ প্রশাস্ত্রস্য | 9 | 9 |
| কালোহক্সি লোকক্ষয়ত্বৎ | >> | ૭૨ | জ্ঞানযজ্ঞেন চাপ্যন্তে | ۵ | >€ |
| কাশ্রন্ড পরমেখাসঃ | > | 39 | জানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা | ৬ | ъ |
| কিং কর্ম কিমকর্মেতি | 8 | 20 | জ্ঞানং কশ্ম চ কৰ্ত্তা চ | 22 | >> |
| কিং তদ্বন্ধ কিমধ্যামুম্ | ъ | > | জ্ঞানং জ্ঞেয়ং পরিজ্ঞাতা | 72 | 74 |
| কিং নো রাজ্যেন গোবিন্দ | > | ৩২ | জ্ঞানং তে২হং সবিজ্ঞানম্ | 9 | ર |
| কিং পুন ত্রান্দণাঃ পুণ্যাঃ | ۶ | ೨೨ | জ্ঞানেন তু তদজ্ঞানম্ | œ | 72 |
| কিরীটিনং গদিনং চক্রহস্তম্ | >> | 89 | জ্বেয়ং যৎ তৎ প্রবক্ষ্যানি | 20 | ۶२ |
| কিরীটিনং গদিনং চক্রিণঞ্চ | >> | 29 | জেয়ঃ স নিত্যসন্মাসী | Œ | 9 |
| কুতত্বা কশ্মলমিদম্ | 2 | 2 | का। त्रमी ८५९ कन्यगर छ | 9 | > |
| কুলকয়ে প্রণশ্রন্তি | > | ೧೦ | জ্যোতিষামপি তজ্যোতি ঃ ` | 20 | >9 |
| ক্ষিগোরক্যবাণিজ্যম্ | 74 | 88 | | | |
| কৈলিকৈ জীন্ গুণানেতান্ | :8 | ٤٥ | ত | | |
| ক্রোধাদ্ ভবতি সক্ষোহঃ | ર | ৬৩ | ত ইমেহবস্থিতা যুদ্ধে | > | ৩৩ |
| ক্লেণোহধিকতরত্তেষাম্ | >5 | ¢ | তচ্চ স্মৃত্য স্মৃত্য | - ५८ | 97 |
| ক্লৈব্যং মান্ম গমঃ পার্থ | ર | 9 | ত তঃ পদং তৎ পরিমার্গিতব্যস | (> @ | 8 |
| কিপ্ৰং ভবতি ধন্মায়া | 8 | ৩১ | ততঃ শঙ্খাশ্চ ভেৰ্য্যশ্চ | > | ১৩ |
| কেত্রকেত্রজ্যোরেবস্ | 20 | ৩৪ | ততঃ খেতৈৰ্হয়ৈৰ্যুক্তে | > | \$8 |
| ক্ষেত্ৰজ্ঞাণি মান বিদ্ধি | 20 | . 2 | ততঃ স বিশ্বয়াবিষ্টো | >> | \$8 |
| গ | • | , | তৎ কেতং যচ্চ যাদৃক্চ | 20 | 9 |
| - | | | তত্ববিত্তু মহাবাহো | 9 | २৮ |
| গতসঙ্গত মুক্তভ | 8 | २७ | ,তত্ৰ তং বুদ্ধিসংযোগং | હ | 89 |
| গতিভ্ৰা প্ৰভঃ সাকী | ۶ | 24 | তত্ৰ সন্থ [্] নিৰ্মালড়াৎ | >8 | ৬ |
| গামাবিখ চ ভূতানি | . >« | 20 | , তত্ৰাপখ্ৰং স্থিতান্ পাৰ্থঃ | > | રહ |
| গুণানেতানতীত্য ত্রীন্ | >8 | २० | তিকৈকত্বং জগৎ ক্রৎক্রং | >> | 20 |
| গুরুনহর্বা হি॰মহাস্থভাবান্ | ર | ¢ | তবৈকাগ্ৰং মনঃ ক্বৰা | ৬ | > २ |
| Б. | | | তত্ত্বৈং স্তি কর্তারম্ | 76 | 7.9 |
| ठक्ष्म हिप्मनः कृषः | ৬ | 9 8 | তদিত্যনভিসন্ধায় | >9 | २৫ |
| চতুৰিধা ভজন্তে মাং | 9 | ৾১৬ | তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন | 8 | . 98 |
| চাতুৰাণ্যং ময়া স্থাইং | 8 | 20 | ज न्द्रक्षत्रखन्धेत्रानः , | ¢ | > 9 |
| চিন্তামপরিয়েরাঞ | 20 | >> | তপশ্বিভ্যোহধিকো যোগী | 6 | 89 |
| চেতসা সর্বাকশ্বাণি | 74 | 49 | তপাম্যহমহং বৰ্ষং | ۵ | >> |
| · • • | | | তমন্বজ্ঞানজং বিদ্ধি | >8 | د . |
| क्ष्म क्ष्म ह स्म निवाम् | 8 | ৯ | তমুবাচ স্বীকেশ: | ٤. | >• |
| | • | • | - Vita dilas ia . | • | - |

| | অ:, | লো,] | | ৰঃ, ে | #it:, |
|--|-------------|------------|-----------------------------------|----------|------------|
| ত্তমেব শবণং গচ্ছ | 74 | ७२ | দংষ্ট্রাকরালানি চ তে | >>. | 56 |
| জন্মাঞ্চান্ধ প্রমাণ্ তে | >> | ₹8 | দাতব্যমিতি যদানম্ | >9 | २ • |
| তন্মাৎ প্রণম্য প্রণিধার | >> | 88 | দিবি স্থ্য-সহস্রস্থ | >> | >< |
| ত্ত্মাং হমিজিয়াণ্যাদে | 9 | 82 | দিব্যমাল্যাম্বরধরম্ | >> | >> |
| ত্ত্মাত্ত্মতিষ্ঠ যশো লভস্ব | >> | ೨೨ | হঃখমিত্যেব যৎ কৰ্ম | 74 | b |
| তন্ত্ৰাৎ সৰ্কোষু কালেষু | ь | 9, | ছঃ খেমহ দ্বিগ্ৰমন ঃ | ર | Ø. |
| তন্মাদসক্তঃ সতত্তম্ | 9 | 66 | দূরেণ হাবরং কর্ম | 2 | 88 |
| ত শাদজানসভূত ম্ | 8 | 8२ | দৃহাতু পাওবানীকম্ | > | 2 |
| जन्नारनवः विनिदेवनम् | ર | २৫ | দৃট্টেদং মান্ত্ৰং রূপম্ | >> | ¢ > |
| তন্মাদোমিত্যুদাকত্য | 76 | ₹8 , | দৃষ্টেমান্ স্বজনান্ কৃষ্ণ | > | २৮ |
| ত্সাদ্যস্মহাবাহে৷ | ২ | ৬৮ | দেব-বিজ-গুরু-প্রাক্ত- | 59 | >8 |
| ত্ত সংজ্নধন্ হৰ্ম্ | > | >> | দেবান্ ভাবয়তানেন | ৩ | >> |
| ত তথা কপ্রাবিষ্টম্ | > | > | দেহিনোহস্মিন্ যথা দেহে | ২ | 20 |
| तिश्वाक्तःथमःरयोगम् | 9 | २७ | দেহী নিত্যমবধ্যোহয়ম্ | ર | 9. |
| তানহং দ্বিষ্তঃ কুরান্ | ১৬ | 75 | দৈবমেবাপরে যজ্ঞম্ | 8 | ₹ 8 |
| তান স্মীক্য স কৌস্তেয়ঃ | > | २१ | रित्वी मन्भन् विद्यांकांव | 20 | æ |
| তানি সর্বাণি সংব্যা | > | برد | रिनवी दश्या खनमग्री | 9 | >8 |
| जूनानिकाञ्जिजियों नी | ۶٤ | , دد | দোবৈরৈতেঃ কুলন্নানাম্ 🕟 | > | 88 |
| তেজঃ ক্ষমা ধৃতিঃ শৌচম্ | 28 | ৩ | ভাবাপৃথিব্যোরিদমন্তব ম্ | >> | २० |
| তে ত', ভূক্তা স্বৰ্গলোকম্ | ۶ | २ऽ | দাত ভুলয়তামশ্মি | >• | ৩৬ |
| তেষামহ সমুদ্ধৰ্তা | ,,> | 9 | দ্ৰব্যশঙ্কান্তপো যজা: | 8 | 2 b |
| তেবামেবা ত্ত্বস্পা ৰ্থম্ | ٥ د | >> | ক্রপদো ক্রোপদেয়ান্চ | > | 74 |
| তেবা জ্ঞানী নিতাসকঃ | 9 | >9 | দ্রেণিঞ্ভীমঞ্জয়দ্রঞ | >> | ૭૬ |
| তে ষাং সত্তযুক্তানাম্ | > 0 | >• | দাবিমৌ পুক্ষো লোকে | >0 | > 9 |
| ত্যকা কৰ্মফলাসঙ্গম্ | 8 | ٠, | হৌ ভূতসর্গে লাকে ইস্মিন্ | 29 | 5 |
| ত্যান্ধ্য দোষবদিত্যেকে | 76 | 9 | ध | ٠ | |
| ত্রিভি গুণ্মধৈর্ভাবেঃ 🍐 🦥 | 9 | 20 | ধর্মপেত্রে কুরুকেত্রে | > | > |
| ত্রিবিধ ্নরক ন্তেদম্ | >9 | ₹ 5 | ধ্মেনাবিয়তে বঙ্কিঃ | 9 | 9 |
| ত্ৰিবিধা ভবতি শ্ৰদ্ধা | >9 | ર | ধ্মো রাত্রিস্তথা কৃষ্ণঃ | Ь | २৫ |
| देव छगाविषया दवनाः | 2 | 8¢ | ধৃত্যা যদ্মা ধারমতে | 76 | ၁၁ |
| ত্ৰৈবিদ্যা মাং সোমপাঃ | ۵ | २० | ধৃষ্টকৈতৃশ্চেকিতানঃ | > | ¢ |
| क्रमन्त्रः अत्रभः दिनियाम् | >> | 74 | ধ্যানেনাত্মনি পশ্চপ্তি | · 20 | ₹8 |
| वभाषित्वतः श्रुक्तवः श्रुवानः | >> | 196 | , ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ | ₹. | 45 |
| æ ₹ | | | । न कर्ज्यः न कर्मानि | €. | >8 |
| দৰ্ভো দমৰ্ভামন্দি | >• | 97 | ় ন কর্মণামনারম্ভাৎ | ৩ | 8 |
| ष रहा पर्लाड्डियानं•6 | >> | 8 | ় ন চ ঃতশানামু খেযু | 74 | ধ্ব |

| ure. | | | | | |
|---------------------------|-----------|---------------|----------------------------|-------------|-------------|
| | সঃ, | CMI | | V: , | Mi., |
| ৰ চ মংস্থানি ভূতানি | त | æ | নিয়তং কুক কর্ম দ্বম্ | 9 | b |
| ন চ মাং তানি কর্মাণি | ત | > | নিয়তং অঙ্গরহিতম্ | 74 | २७ |
| ন চ শক্লোম্যবস্থাতুম্ | > | 90 | নিরাশীর্যতচিতা ছা | 8 | 52 |
| ন চ শ্রেষােহ্মপশ্রামি | > | ંગ્ર | নিৰ্মানমোহা জিভসঙ্গ- | >0 | Œ |
| ন চৈতদ্বিদ্ধঃ কতরয়ো | > | • | নিশ্বরং শৃণু মে তত্ত্ | 74 | 8 |
| ন জারতে শ্রিয়তে বা | ર | > 0 | নেহাভিক্রমনাশোহস্তি | 2 | 8 • |
| ন তদস্তি পৃথিব্যাং বা | 36 | 80 | , নৈতে স্তী পাৰ্গ জানন্ | ъ | 5 9 |
| ন তদ্ভাসয়তে হর্যো | 5¢ | 4 | নৈনং ছিক্স্তি শশ্বাণি | Ą | 5.0 |
| ন ভূ মাং শক্যদে জন্তুম্ | >> | ь | নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি | , C | ٠ ٢ |
| নদেবাহং জাতু নাসম্ | 2 | 52 | নৈব ভক্ত ক্লভেনার্থো | 9 | 36 |
| ন ছেষ্ট্যকুশলং কৰ্ম | 74 | >• | প | | |
| ন প্রদায়ৎ প্রিয়ং প্রাপা | ¢ | ٠, | · | | |
| ন বৃদ্ধিভেদং জনরেৎ | C, | ৩৬ | পঞ্চৈতানি মহাবাহো | 76 | 70 |
| নজস্পং দীপ্তমনেকুবর্ণম্ | >> | ₹8 | পত্ৰং পুশ্পং ফলং তোৰুম্ | <u>৯</u> | , 5.A |
| নম: প্রস্তাদণ পৃষ্ঠতন্তে | >> | 8 • | পরস্তমাৎ তু ভাবোৎস্তো | ь | ₹• |
| ন মাং কৰ্মাণি গিম্পস্তি | 8 | >8 | পরং ত্রন্ধ পরং ধাম | >• | >5 |
| ন মাং হয়জিনো মূঢ়াঃ | ,9 | >¢ | পরং ভূষঃ প্রবক্ষ্যামি | 28 | , |
| ন মে পার্থান্তি কর্ত্তবাং | 9 | \$ \$ | পরিতাণায় সাধ্নাম্ | 8 | b |
| ন মে ৰিছ: হ্রেরগণাঃ | > 0 | > | - প্ৰনঃ প্ৰতামশ্বি | >• | 37 |
| ন রূপমতেহ ত্মোপ- | > % (| ૭ | প্র মে পার্থ রূপাণি | >> | • |
| न (वम यक्काथ) ब्रुटेनः | 220, | 86 | প্রাদিত্যান্ বস্থন্ রুদান্ | >> | 9 |
| ন্টো মোহ: স্বতিল কা | 24 | 90 | পশামি দেবাং স্তব দেব- | >> | >0 |
| ন হি কশ্চিৎ কণমপি | 9 | æ | পঞ্জৈতাং পা ভূপুত্রাণাম্ | , | 9 |
| ন হি জানেন সদৃশম্ | 8 | ৩৮ | পাঞ্চজন্তং হৃষীকেশো | > | 26 |
| ন হি দেহভূতা শক্যম্ | 74 | >> | পাপমেবাল্রমেদশ্বান্ | > | ৩৬ |
| ন হি প্রপঞ্জানি মমাপহভাৎ | 2 | ь | পার্থ নৈবেহ নামূত্র | | 8• |
| নাত্যশ্ৰত্ত যোগো২ন্তি | 4 | >0 | পিতাসি লেকিস্ত চরাচারস্থ | 22 | 80 |
| নাদত্তে কুঞ্চিৎ পাপশ্ | æ | 26 | পিতাহমস্ত জগতো | 8 | >9 |
| নান্তোহন্তি মম দিব্যানাম্ | 206 | 8 • | भूर्गा तसः भृषिवाक | 1 | 8 |
| নাম্বং ওণেড্যঃ কর্তারম্ | 28 | 79 | পুৰুষঃ প্ৰকৃতিছো হি | 20 | \$ 5 |
| নারং লোকোহস্তায্জ্ঞ | 8 | ৩২ | পুরুষ: সঃ পর: পার্ধ | b | २२ |
| নাসতো বি৮তে ভাবো | 2 | >9 | পুরোধসাঞ্চ মুখ্যৎ মাম্ | . > = | . |
| নাস্তি বৃদ্ধিরযুক্ত | ર | 44 | পূৰ্কাভ্যাদেন তেনৈব | . ' '9 , | |
| নাহং একাশ: সর্বত | 9 | \$ 6 ′ | | 24 | (5) |
| নাহং বেদৈ ন' তপদা | 22 | 69 | | >8 | \$ \$ |
| নিরতশ্র জু সন্ন্যাসঃ | 75. | 9 | প্রকৃতিং পুরুষক্ষৈব | 20 | 29 |
| | | | | | |

| | - | | 1 | | |
|------------------------------------|-------------|---------------|-------------------------------|---------------|------------|
| | | C對 :, | | W (\$, | Calls, |
| প্রকৃতিং স্থামবস্তুভ্য | 2 | b | • | | |
| প্রকৃতে গুণসংমৃঢ়া: | ૭ | १२ | ভক্ত্যা ঘনস্তন্ত্যা শব্দঃ | >> | 48. |
| প্রকৃতে: ক্রিম্নশানি | 9 | 99 | ভক্ত্যা মামভি দান্দতি | 74 | tt |
| প্ৰকৃত্যৈৰ চ কৰ্মাণি | 20 | २२ | ভয়াদ্রণাহপরতম্ | ર | 90 |
| अब शें विषा को मान् | 2 | e e | ভবান্ ভীমণ্ড কর্ণন্ড | > | |
| প্রযন্ত্রাদ্ যতমানস্ত | Ġ | 8¢ | ভবাপ্যয়ে হি ভূতানাম্ | >> | ં ર |
| প্রয়াণকালে মনসাচলেন | 7 | >• | ভীন্মদ্রোণপ্রমুখত: | > | २¢ |
| वानपन् विक्षन् गृहन् | Œ | ۶ | ভূতগ্রামঃ স এবার্ম্ | ь | 79 |
| প্রবৃত্তিঞ্চ নির্ত্তিঞ্চ জনা ন | | | ভূমিরাপোহনলো বায়ু: | 9 | 8 |
| বিছরাম্বরাঃ | 20 | 9* | ভূয় এব মহাবাহো | ٥. | > |
| প্রবৃত্তিঞ্চ নিবৃত্তিঞ্চ কার্য্যাক | বেঁ্য | | ভোকারং বজ্ঞতপদাম্ | ¢ | दह |
| ভরাভরে | 76 | •• | ভোগৈখগ্য প্ৰস্কানাম্ | 2 | 88 |
| প্রশান্তমনসং ছেনম্ | • | २१ | Ą | | |
| অশাস্তাত্মা বিগতভী: | 9 | >8 | . • | | |
| প্ৰসাদে সৰ্বছ:খানাম্ | ર | ৬৫ | মজিতঃ সর্বহর্গাণি | 76 | 44 |
| প্ৰহ্লাদ-চামি দৈত্যানাম্ | > 0 | 9. | মজিতা মদ্গতপ্রাণাঃ | >• | 6 |
| প্ৰাপ্য পুণ্যক্বতাং লোকান্ | હ | 82 | মৎ কর্ম্ম ক্রন্মৎপরমো | \$2 | æ |
| 4 | | | মত্তঃ পরতরং নাস্তং | 9 | 9 |
| | _ | | মদক্রহার পর্মম্ | . >> | \$ |
| বলং বলবভামশ্মি | 9 | 22 | মন: প্রসাদ: প্রেম্যক্ষ্ | 29 | 20 |
| বহিরস্তশ্চ ভূতানাম্ | 20 | >6 | মহ্যাপাং সহবেষু | 9 | 9 |
| वहनाः अग्रनामस्ड | 9 | >> | মন্মনা ভব মদ্ভক্তঃ | a | 98 |
| াহ্নি সে ব্যতীতানি | 8 | c ! | মন্মনা ভব মদ্ভক্ত: | 22 | _ |
| ব্রুরাছাত্মনতত | 9 | 9 | মন্যদে যদি তচ্ছক্যৰ্ | >> | 8 |
| বাহুম্পর্শেষসক্রাত্মা | Œ | २১ | मम (वानि म र्न्विक | >8 | • |
| ৰীজং মাং সৰ্কভূতানাম্ | 9 | > | মনৈবাংশো জীবলোকে | >6. | 9 |
| ৰুদ্দিগুক্তো অহাতীহ | 2 | 60 | মরা ততমিদং স্ক্র | 2 | 8 |
| বৃদ্ধিজ্ঞ নিমসংমোহ: | >• | 8 | নদ্বাধ্যকেণ প্রকৃতিঃ | 9 | >• |
| বুদ্ধের্ভেদং ধ্বতেকৈব | 78 | २ ञ् ' | ময়া প্রসঙ্গেন তবার্ক্নেদম্ ' | 22 | 89 |
| ব্ৰুৱা বিভৰ্মা যুক্তঃ | 3 P. | @\$ I | মরি চানস্থাগেন | .50 | >• |
| বুহংসাম তথা সালাম্ | >• | ∞€ | ময়ি সর্বাণি কর্মাণি | ,,• | ٥. |
| বৃদ্ধণো হি প্রতিষ্ঠাহম্ | 78 | 29 | ম্বাবেশ্চ মনো যে মাস্ | 58 | ર |
| বন্ধগাধার কর্মাণি | • | >• | ম্যাস্ক্রমনাঃ পার্থ | ٩. | ٥. |
| ব্ৰম্ভূতঃ প্ৰসন্নাত্মা | 74 | 28 | মধ্যেব মন আধংক | >5 | b ' |
| বন্ধাৰ্পণং বন্ধ হবি: | 8 | २8 | महर्वमः मश्र भूटर्स | 5. | • |
| রান্দণক্ষত্তিরবিশাং | 22 | 82 ; | महर्वीगाः कृष्णवस्म् | >• | ₹. |

গীতা।

| | 'ষঃ, (| 湖 :, | | অ:, | CHI, |
|--------------------------------|-----------|-------------|----------------------------------|----------------|-----------|
| মহাত্মানস্ত মাং পার্থ | 8 | ১৩ | যত্র যোগেশবঃ ক্লকঃ | طد | 11 |
| মৃহ্াভূতাক্তহকা রো | ১৩ | ¢ | যত্রোপরমতে চিত্তম্ | ė | २० |
| মাঞ্চ যোহব্যভিচারেণ | >8 | २७ | যৎ সাংখ্যৈঃ প্রাণ্যতে স্থানম | • | 4 |
| মাতুলা; খঙরাঃ পৌতাঃ | > | 9 8 | যথাকাশস্থিতো বিত্যম্ | ۵ | \$ |
| মাতে ব্যণামাচ বিমৃত- | >> | ۶۶ | यथा मीरा निवाक्यः . | 4 | >> |
| মাত্রাম্পর্শাস্ত কৌন্তেয় | > | >8 | यथा नमीनाः वहत्वारुष्ट्रवंशाः | >> | ₹ |
| মানাপমানরোম্ভল্য: | 23 | २৫ | ্যণী প্রকাশয়ত্যেক: | >9 | ၁၁ |
| নাম্পেত্য পুনৰ্জন্ম - | ۲ | > ¢ | यशा अनीश्वर जनम् | >> | 25 |
| মাং হি পার্থ ব্যপাঞ্জিত্য | ۵ | ৩২ | যণা সর্বাগতং সৌক্ষ্যাৎ | 20 | વર |
| মুক্তসঙ্গে হিনহংবাদী | 74 | 26 | •যথৈধাংসি সমিদ্ধোহয়িঃ | 8 | ୬୩ |
| মৃতৃগ্রাহেণা মনো যৎ | 29 | 22 | यमक्रवर (वनविरम) वनश्चि | ъ | >> |
| মৃত্যুঃ সর্বহর-চাহম্ | ٥ د | 98 | খদতো চাত্ৰুবন্ধে চ | 35 | େ |
| মোঘাশা মোঘকর্মাণো | 8 | ۶१ | যদহন্ধারমান্ত্রিত্য | > b: | 63 |
| ম | | | যদা তে মোহকলিলম্ | ર | ez |
| ক ইদং প্রমং গুহুম্ | 24 | 46 | যদাদিত্যগত ্ তে ল: | >@ | >5 |
| ষ এনং বেত্তি হস্তারম্ | \$ | 79 | যদা ভূতপৃথগ্ভাবম্ | >0 | 0, |
| ৰ এবং বেত্তি পুৰুষম্ | 50 | ২৩ | यना यना हि धर्माञ्च . | , .8 | 9 |
| ষচাপি দৰ্কভূতানাম্ | > • | ೦ನಿ | যদা বিনিয়তং চিত্তং | • | 76 |
| ৰচ্চাবহাসাৰ্থমসংকৃত: | >> | 83 | যদা সত্ত্বে প্রবুদ্ধে ভূ | >8 | 28 |
| ধন্ধন্তে সান্থিকা দেবান্ | ٠ >٩ | 8 | যদা স্হরতে চায়ম্ | .\$ | Ch |
| ৰজ্ঞদানতপঃ কৰ্ম | >V | ¢ | যদাহি নেক্সিয়ার্থেযু | • | 18 |
| যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সন্তঃ | ૭ | ०८ | যদি শামপ্রতীকার ম্ | > | 84 |
| যজার্থাৎ কর্দ্মণো২ন্সত্র | ৩ | ۶ | যদি হুংং ন বর্তেরম্ | 9 | २७ |
| ষজ্ঞে তপসি দানে চ | 59 | २१ | ষদৃচ্ছয়া চোপপন্নশ্ | ર | प्रश |
| বজ্জাভা ন পুনৰ্ণোহ্ম্ | 8 | ৩ঃ | যদৃচ্ছালাভসম্ভষ্ট: | 8 | 44 |
| যততো হুপি ক্লোম্বের | ર | 90 | ষদ্যদাচরতি শ্রেষ্ঠঃ | • | 25 |
| বতস্তো যোগিনকৈন্তম্ | >€ | >> | যদ্যদ্বিভৃতিমং সন্তম্ | >• | 8) |
| যতঃ থা বুত্তি ভূ তানাম্ | 74 | 89 | ষদ্যপ্যেতে ন পশুস্তি | > | 49 |
| যতে জিয়ননো বৃদ্ধিঃ | ¢ | २৮ | য ন্না ভূ ধৰ্মকামাৰ্থান্ | 74 | -08 |
| ষতো যতো নি শ্চর তি | • | २७ | यया धर्मामधर्माशः | 74 | ده. |
| ৰৎ কল্পোষি যদখাসি | \$ | २१ | ষয়া স্বপ্নং ভয়ং শোকষ্ | 74 | 90 |
| बखनधा विविभव | 74 | ৩৭ | বন্ধান্মরভিরেব স্থাৎ | 9 | >9 |
| यएक कारमभ्यूना कर्या | 72 | >8 | ষশ্বিজিয়াণি মনসা | • | • |
| ধৎত্ ক্লংমবদেকস্মিন্ | 74 | २२ | বশ্বাৎ করমতীভোহহ্ম্ | >4 | 74 |
| ৰংডু প্ৰভ্যুপকারার্থম্ | >1 | \$ 3 | • | .,75 | 94 |
| ৰত কালে খনাবৃতিম্ | . · Þ | २७ | ষশ্য নাহংক্তো ছাব: ে | >> | 32 |

| | জ:, | শো:, | | ত্বঃ, গৈ | at:, |
|--|-----|------------|------------------------------------|----------------|---------------|
| যক্ত সর্বের সমারম্ভাঃ | 8 | 29 | বোগী যুঞ্জীত সততং | . .,, | ۰, |
| ষং ষং বাপি শ্বরন্ ভাৰম্ | 6 | ৬ | যোৎশুমানানবেক্ষেহ্হং | ំង | ২৩ |
| যং লক্ষা চাপরং লাভম্ | • | २२ | ' যোন শ্ব্যাতি ন দ্বেষ্টি | > १ | 29 |
| যং সন্ন্যাসমিতি প্রাহঃ | હ | ર | যে।২ম্ব:মুখোহন্তরারাম: | ₹8 | |
| ষং হি ন ব্যথরস্ভোতে | ર | 26 | ' যো সামজমনাদিঞ্চ | > 0 | ৩ |
| বঃ শান্তবিধিমুৎস্ক্র | ১৬ | २७ | যো মামেবমসমূঢ়ো | >4 | 35 |
| যঃ সর্বানভিম্বেং | ર | ¢ 9 | যো মাং পশ্যতি সর্ব্বত্র | 6 | 9 0 |
| যাত্যামং গতর্সম্ | >9 | >• | ৰো যো বাং যাং তহুং ভক্তঃ | 9, | २১ |
| য়া নিশা সর্বভূতানাম্ | ર | ৬৯ | যোহয়ং যোগন্তয়া প্রোক্তঃ | છ | ಉ |
| যান্তি দেবত্রতা দেবান্ | ۵ | > € | র | | |
| যামিমাং পুশিতাং বাচম্ | ર | 8२ | রজসি প্রলয় ং গ ধা | \$8. | 3.¢ |
| যাবৎ সংজায়তে কিঞ্চিৎ | 20 | २७ | র জ ন্তম শ্চাভিভূ য় | >8 | ۶۰ |
| যাবদেতালিরী ক্ষে য়হহ ন্ | ٠, | २२ | রজো রাগাত্মক বিদ্ধি | >8 | 9 |
| যাবানৰ্থ উদপানে | ર | 85 | ্রদোহমপ্স্কৌস্তেয় | 9 | ь |
| যু ক্তঃ কৰ্ম্ম ফ লং ত্যক্ত ্বা | ¢ | ১২ | রাগদেষবিযুক্তৈন্ত • | ર | ∌ 8 |
| য্কাহারবিহারভা | ৬ | >9 | রাগী কর্মফলপ্রেপ্স্: | 72 | २ 9 |
| যুঞ্জন্তবং সদাত্মানং বোগা | | | রাজন্ সংস্বৃত্য সংস্বৃত্য | 72 | 95 |
| নিয়ভ্যানস: | ৬ | >6 | রাজবিষ্ঠা রাজ গুহুম্ | ٠ ৯ | 2 |
| যুঞ্জন্নেবং সদাত্মান্ যোগী | | | ক্রাণাং শঙ্করশ্চাব্দি | ٥ د | २७ |
| বিগত-কল্ময়ঃ | ৬ | २৮ | ক্ষুদিত্যা বসবো বে চ 🦠 | >> | > > |
| ষ্ধানুষ্ণান্চ বিক্রান্তঃ | > | ৬ | ্রপ্থ মহতে বছবজ্ব নেতাম্ | >% - | २७ |
| যে চৈব সান্ত্ৰিকা ভাবাঃ | 9 | >5 | ं ं ल : | | |
| যে তু ধৰ্মামৃতমিদং 📑 | ۶٤ | २० | লভম্ভে ব্ৰহ্মনিৰ্ব্বাণম্ | ć | 20 |
| ৰে তু সৰ্বাণি কৰ্মাণি | ۶٤ | ৬ | লেলিহুদে গ্রসমান: | 357 | _ |
| বে বৰুরমনির্দেশুম্ | ३२ | , 9 | লোকেংশ্মিন্ ছিবিধা নিষ্ঠা- | ÷ و | 9 |
| বে বেতদভাহরন্ত: | 9 | ७२ | লোভঃ প্রবৃত্তিরারন্তঃ | 78. | 5 2 |
| ষ ংগন্তদে বতাভক্তা: | ۶ | २७ | ব | | h |
| যে মে মতমিদং নিত্যম্ | • | ৩১ | ৰক্তমুমন্ত্ৰশেষেণ • | 2 m | ۶ę |
| যে যথা মাং প্রপন্তত্তে | 8 | >> | বক্ত্রাণি তে স্বরমাণাঃ | 3 2 · | ₹ 9 |
| ৰে শান্ত্ৰবিধিমুৎস্ক্য | >1 | > | বায়্র্যমোহগিব রুণঃ | >> | 60 - |
| বেষাং দস্ত গতং পাপং | 9 | २৮ | वामाध्मि जौर्गानि यथा | ર | ?? |
| যে হি সংম্পৰ্শজা ভোগা: | ¢ | २ २ | বিভাবিনয়সম্পন্তে | * | 74 |
| -বোগবুকো বিশুদ্ধাত্মা | ¢ | 9 | বিধিহীনম স্ ষ্টান্নম্ | >9 | 20 |
| ্রোগসংস্তত্তকর্দ্বাণ ম্ | 8 | 82 | , विविक्तरावी नच्यांनी | 2A. | ∢ ₹ |
| যোগন্ধঃ কুক কর্মাণি | ર | 86 | বিষয়া বিনিবর্ত্তন্তে | ર | 45 |
| যোগিনামুণি সর্কোষার্ | • | 89 | विश्वदब्रिक्टिवनश्रद्यां गाप | · 46 , | 40 |
| | | | | | |

| | ত্যঃ, ে | #i, | • | ত্যঃ, (| .# 1:, |
|-------------------------------|------------|------------|--------------------------------|------------|---------------|
| বিজ্ঞব্যেণাম্বানো যোগস্ | >• | 76 | স ঘোষো ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাম্ | > | 6 ¢ |
| বিহায় কামানু যঃ স্কান্ | ₹ | 95 | সঙ্করো নরকারের | > | 85 |
| বীতরাগভরকো্ধাঃ | 8 | ٥٠ | সন্ধরপ্রভবান্ কামান্ | Ŀ | ₹8 |
| বৃষ্ণীণাং বাস্থদেবাহন্মি | > • | 9 | সততং কীৰ্ত্তয়স্তো মাম্ | ጽ | >8 |
| বেদানাং সামবেদোহশ্মি | >• | २२ | স তরা শ্রহ্মা যুক্তঃ | 9 | २२ |
| বেদাবিনাশিনং নিজ্ঞস্ | 2 | २५ | সংকারমানপূজার্থম্ | >9 | 22 |
| বেদাহং সমতীতানি | 9 | ২৬ | সৰং রজন্তম্ ইতি | >8 | |
| त्वरमत् यरकात् जभः सः देवव | ٦ | २४ | সরং স্থাপে সঞ্জয়তি | >8 | نو |
| বেপথুশ্চ শরীরে মে | 2 | २৯ | স্বাৎ সংস্থায়তে জ্ঞানম্ | >8 | >9 |
| ব্যবসায়াগ্মিকা বৃদ্ধিঃ | ર | 85 | সন্থামুরপা সর্ববশু | >9 | 9 |
| ব্যামিশ্রেণৈব বাক্যেন | 9 | ર ; | সদৃশং চেষ্টতে স্বস্তাঃ | 9 | ೨೨ |
| ৰ্যাসপ্ৰদাদাৎ শ্ৰুত্বান্ | 76 | 96 | সন্তাবে সাধুভাবে চ | >9 | २७ |
| × | | 1 | সম্ভষ্ট: সততং যোগী | >5 | >8 |
| শক্রোতীহৈব যঃ সোদূম্ | ¢ | २७ | সন্ন্যাগন্ত মহাবাহো | ¢ | હ |
| শলৈঃ শলৈকপ্রমেই 🗎 | ৬ | ₹@ | সন্ত্যাসভা মহাবাহো | 72 | > |
| শ্যোদসন্তপঃশৌচম্ | 74 | 8२ | সন্ন্যাসঃ কর্ম্মণাং কৃষ্ণ | ¢ | > |
| শরীরবাঙ্মনোভির্যৎ | ٦۴ | 26 | সন্ন্যাসঃ কর্মযোগশ্চ | ¢ | ₹ |
| শরীরং যদবাগোতি | > @ | ٦ | সমহ:থমুথ: স্বতঃ | >8 | ₹8 |
| ভঙ্গৰক গতী হেছে | ъ | २७ | সমং কাগ়শিরোগ্রীবম্ | • | 20 |
| শুচৌ দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য | ୬ ୍ | >> | সমং পশুন্হি সৰ্বত | 20 | २৮ |
| ভভা ভভফলৈরেবম্ | ઢ | २৮ | সমং সর্কের্ভূতের্ | >2 | २१ |
| শৌৰ্য্যৎ তেকো শ্বতিদৰ্শকান্ | 745 | 89 | সমঃ শত্রে চ মিত্রে চ | >5 | 74 |
| শ্ৰদ্ধা পৰ্য়া ভগ্তন্ | >9 | >9 | সমোহহং স্কভূতের্ | ત્ર | ৾ঽঌ |
| শ্রদাবাননস্যুশ্চ | 746 | 95 | সর্গাণামাদির স্ত* চ | >• | ৩২ |
| শ্ৰমাৰীলভতে জানৰ্ | 8 | ೨৯ | ু-স্ক্কিশ্বাণি যনসা | ¢ | 20 |
| শতিরিপ্রতিপন্না ভে | ₹ | ৫৩ | স্ক্ৰিশ্বাণ্যপি সদা | 74 | 60 |
| শ্ৰেষাদ্ জব্যৰগান্ যক্ষাৎ | 8 | ৩৩ | সৰ্বাপ্তহতমং ভূয়: | 72 | ₽8 |
| শ্রেয়ান্ স্বধর্মো বিপ্রণঃ | 9 | ા | সর্বতঃ পাণিপাদং তৎ | 20 | 20 |
| अत्रान् वशर्या विश्वनः | 74 | 89 | সর্ববারাণি সংযম্য | ٦ | >5 |
| শ্ৰেয়ে হি জানমভ্যাসাৎ | >5 | ۶٤ | সৰ্বদ্বারেষ্-দেখেহ স্থিন্ | >8 | >> |
| শ্রোতাদীনীব্রিয়াণ্যন্তে | 8 | २७ | সর্বধর্মান্ পরিত্যক্ষ্য | 22 | <i>9.9</i> |
| শ্রোত্তং চকু: স্পর্ণনঞ্চ | >6 | 6 | স্কভ্তহ্মান্তান্ম্ | 4 | 44 |
| · 7 | | | সর্বভৃতস্থিতং যো মাম্ | • | 92 |
| স এবাদং মরা তে২ছ | 8 | ٠, | সর্কভূতানি কৌন্তের | 8 | . ,9 |
| সক্তা: কর্মণ্যবিদ্বাপ্ | 9 | २€ | সর্বভূতেরু যেনৈক্স্ | 3 P | २० |
| সংৰতি মন্বা প্ৰসভৰ্ম্ | >> | 82 | সর্বনেতদৃতং মঞ্জে | >• | >8 |

| | অ:, | C#1: | | ₩:, | Cat:, |
|-----------------------------|-----|------------|-----------------------------|-----|--------------|
| সর্কযোনিষু কৌন্তেয় | >8 | 8 | स्थर जिमानीर जिविधम् | 76 | |
| नर्मछ চাহং इपि निविद्धी | >¢ | >¢ | স্থ্ৰপ্ৰিদং ক্ৰপম্ | >> | 45 |
| সকাণী জিন্নকৰ্মণ | 8 | २१ | স্ক্ৰিতাৰ্যুদাসীন- | • | , p . |
| সর্কেন্দ্রিয়গুণাভাসম্ | 20 | >8 | সেনরোক্তরোমধ্যে | > | ۲۶ |
| সর্বেহপ্যেতে যজ্ঞবিদঃ | 8 | 9. | স্থানে স্বৰীকেশ তব | >> | . 🖦 |
| সহলং কর্ম কৌন্তের | 74 | 84 | হিতপ্ৰজন্ম কা ভাষা | ₹. | €8 |
| সূহয়জা: প্ৰজা: সৃষ্ট্ৰা | • | >• | স্পূৰ্ণান্ কুছা বহিবাহ্যান্ | æ | ₹.9 |
| সহ স্ গৃপ্যান্তম্ | ь | >9 | স্বধর্মপি চাবেক্ষ্য | ર | 9) |
| সংনিরম্যে ক্রিয়গ্রামম্ | ১২ | 8 | স্বভাবজেন কৌন্তেয় | 24 | 9. |
| নাধিভূতাধিদৈবং মাম্ | 9 | 9. | স্বয়নেবাত্মনাত্মানম্ | >• | >¢ |
| नारशारगारमी भूगग्वानाः | Œ | 8 | ষে ষে কর্মণ্যভিরত: | 74 | 84 |
| সিদ্ধিং প্রাপ্তো যথা ব্রহ্ম | 74 | ¢• | ē | | |
| স্থহ:থে সমে কৃত্বা | 2 | ()'y | হতো বা প্রাপ্যাসি স্বর্গং | ર | >> |
| স্থুখনাত্যস্তিকং যত্তৎ | ৬ | ₹ 5 | হস্ত তে কথয়িক্যামি | >• | >> |

ভাষ্যাম্ভৰ্গত-শ্ৰুতি-শ্বতি-বাক্যানাং বৰ্ণাকুক্ৰম-দুচী।

অথ ভশ্ৰ ভন্নং ভবভি (ভৈ উ. २।१) 20 অথ গোহন্তাং দেবতামুপাত্তে অন্তোহ্যাবস্তোহ্হমন্ত্ৰি, ইতি न म (वन यशा পশুরেবং স দেবানাম (বু-উ. ৩৪।১০) 8 >2 অনাস্থবিচ্ছোচামি (ছা-উ, গা)। এইঙ্গাং) ১৮ 90 অন্ধো মণিমবিন্দৎ (তৈ-আ, 2122) 20 >8 অগ্রত ধর্মাদক্ততাধর্মাৎ... मर्क्त (वर्षा वर भन्नामनसि, नर्सानि ह यन তপাংসি বদক্তি। যদিচ্চক্তা ব্রহ্মচর্য্যং চরস্তি তত্তে পদং সংগ্রহেণ ব্রবীয়োমিছোতৎ (কাঠ-উ.

অন্তদেব তদ্বিদিতাদথো অবি-দিতাদধি (কে-উ, ১৷৩) অপ্তোহসাবস্তোহহমন্দ্রি ইতি ন স বেদ যথা পশুরেবং দেবানাম (বু-উ, ৩।৪।১•) অপাণিপাদো কবনো গ্রহীতা পশুত্যচন্দুঃ স শূণোত্যকর্ণঃ (বেড, উ, ৩:১৯) ১৩ অপ্রাণো হ্রনা: ভ্রো হক্রাৎ পর্তঃ পর: (মা-উ ২।১।২) অয়ম্মিট্র বানরো বোহয়মন্ত:-পুরুষে যেনেদমন্নং পচ্যতে (वृ-छ, १।२।) "> অবিস্থায়ামস্তরে বর্ত্তমানাঃ (का-छे, शक्) ४० অধ্যক্ষমপর্নম (কা-উ, ৩)১৫): ১৮ - ৫০

| | | makus | | | -util a |
|---|------|------------|--|-----|-------------------|
| | 9 | , त्याः | | | , chi: |
| শ্বাদো নহি সঞ্জতে (রু-উ, | | | এতদ্ বৈ তদকরং গার্গি ভ্রান্ধ | 41 | |
| (।कार्य) | Ø | ¢ | षाजिनमञ्जि (तृ-ष्ठे, दाष्टाष्ट) | 4 | ' >> |
| অস্থ্ৰমন্ (বৃ-উ, গে৮৮) | ٦ | >> | এতমেৰ প্ৰবাজিনো লোক- | | |
| | >0 | >5 | মিচ্ছস্তো ত্রাহ্মণাঃ প্রত্রন্ধন্তি | | |
| बिंहण्ड कृक्शमहत्रक्र्नक (ब म ९ | | | কিং প্রজয়া কবিয়ামো | | |
| (cidic | 71 | 65 | বেষাৎ দোহরমান্সারং | | |
| শরপৃষ্ (কা-উ, ১)১৫) | >> | (• | গোৰঃ (বৃ-উ, ৬।৪।২২) | ર | >> . |
| আত্তঃ প্ৰাণ আত্মত আশা | | | এতত্ত বা অক্রন্ত প্রণাসনে | | |
| আয়তঃ প্রব আগ্রত | | | গার্গি (বু-উ, এ৮।৯) | ٦ | ৩ |
| আৰাশ আত্মতন্তেই আত্মত | | | ওমিভ্যেকাক্ষনং ব্রহ্ম (ভগবদ্ | | |
| আপ আয়ত আবিভাব- | | | গীতা ৮।১৩ } | ۴ | • |
| ভিরোভাবাবাম্বতো২রম্ | | | কথমসতঃ সজ্জান্বেত (ছান্দো, | | |
| (ছা-উ, १।२७।১) | 50 | ٠٥. | (داداھ | ૭ | > |
| ্দান্থা বৈ পুত্রনামাসি (তৈ- | le . | - | , | 8 | 24 |
| २।३३) | | હ 9 | কো অদ্ধা বেদ ক ইহ প্ৰবোচৎ | | |
| আন্মেত্যেবোপাসীত (রু-উ | | • • | কুত আঞ্চাতা কুত ইয়ং | | |
| (\$1816) | - | 8 | বিস্থষ্টি: (তৈ-ব্রা,২৮৮৯) | 2 | 20 |
| আইয়বেদং স্বস্ (রু উ,১।৪।৬) | | >0 | ক্ষীরন্তে চান্ত কন্মাণি (মৃগু-উ, | | |
| आटब्राटनार नसम् (इ ७,०।०।० | | , • | शशक) | > ૭ | २७ |
| १।२८।२.) | - | | তত্ৰ কো মোহ: ক: শ্লোক | | • |
| 114414.) | | . J. | একদমন্থপশুডঃ (ঈশ উ. ৭) | >6 | 90 |
| আদিত্যবর্ণম্ (ষেত-উ, ৩৮) | | ¢. | তমেতং বেদায়বচনেন ব্রাহ্মণা | | |
| • | | | বিবিদিষন্তি যজেদ (বু-উ | | |
| ইনীকাতৃশ্বৎ স্ক্রাণি কর্মাণ | | | હાકારર) | • | 8 |
| वाम्बरक (श-छ, ४।२॥०) | 30 | ২৩ | ডমেব বিদিয়াতি মৃত্যুমেতি | | |
| ইং চেদবেশীদশ সভামত্তি ন | | | নাম্বঃ পছা বিশ্বতেহরনার | | |
| চেদিইাবেদীমূরতী বিনটিঃ | | | Comment of the contract of the | 7 | 69 |
| (· · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 20 | ર | , তমেবং বিধানমৃত ইহ ওবঙি। | | |
| উদ্বিশ্লোহবাকৃশাথ এবোহৰথ | • | | নাশ্তঃ পথা বিশ্বতেহ্য়নায় | | |
| স্মাতনঃ (কঠ-উ, ৩)২।১) | 36 | • | (নৃসি∖হ পূ-উ, ৬) | >0 | ર |
| একমেবাৰিজীয়ন্ (ছা-উ,ভাং। |) > | > | তন্মান্ত্যাসমেষাং তপ্ৰসামতি- | | |
| क्रका (मतः नर्सकृष्डम् गृहः | | | রিক্তমাহঃ (মহা না-উ,২৪।১) | 9 | > |
| সৰ্বব্যাপী সৰ্বভূতান্তরাত্মা। | | 1 | | 5 | ee |
| কৰ্ম্যাক: সর্বভূতাধিবাস: | | | তক্ত ভাবদেৰ চিন্নস্ (ছা-উ, | - | |
| সান্দী চেন্তা কেবলো নিন্ত- | | | 4) (\$18 ¢ le | ð. | २७ |
| 442 ((4/2-18 ² , 4/2) | 4 | ٠ ١٠ | • | 8 | ৩৭ |

षः. क्षाः. তম্ম ভাসা সর্বাহিদং বিভাতি (খেত-উ. ১৮১৪) ত্যক ধর্মমধর্মঞ্চ উল্লে সত্যা-ৰুতে ত্যন্ত। উভে মত্যা-(তৈ-উ. ৪।৭৮) নুতে তাকা বেন তাৰ্দ্বনি कर काल ।। मध्मविद्यव निः मात्र पट्टा मात्रण-দৃক্ষা। প্রস্তুত্তাদ-বাহাঃ পরং বৈরাগ্যমাঞ্জিভাঃ ॥ (ইভি বৃহস্পৃতি:) আ, ৩)২২) দ্ৰমেতে বিপরীতে বিষচী প্রেবণারা অবিন্তা যা বিশ্ৰেডি Б লোকৈবণাৰান্ড জাতা (ক-উ, ২া৪) দ্ব্যা হ বৈ প্রাক্তাপত্যা দ্বেবা-শ্চাম্বরাশ্চ (বু-উ.৩।৩।১) প্রাগদারপরিগ্রহাথ धावजीर पृथिवी धावजीव প্রাক্ত পর্বতা: (ছা-উ,৭।৬।১) ধ্যায়তীৰ লেলায়তীৰ (বু-উ. সাধনং প্রতং বিত্তং હાગા૧) মান্তবং 75 न कर्माण न श्रेष्ठ्या धरनन সাধনং বিস্থাঞ্চ জ্ঞানেনৈকে অমৃত্রমান্তঃ (তৈ-উ. ৪।১২) D न পৃথিব্যা। नाउँ त्रिक्त न ৷ বহুধাবস্থিতঃ স এব ভগুবান मिवाबिएक डवाः (दे**ड-**म्. সর্বতোমুধ: ভ্ৰম্ফ চৰ্ব্যাদেব (1219) ন সংদূপে ভিষ্ঠতি রূপমস্থ ন চকুষা পঞ্জতি কন্দ্রেনম (ৰেড-উ. ৪২০ } নাবিয়তো হুন্চরিতাৎ (কঠ-উ. ভারণ: (ছা-উ, ৩)১৪।২) ৬৬ নিষৰং নিজিন্তং শাস্তম্ (খেত-জিভতে ব্দরগ্রহি: (মুঞ্জু,

ন্তাস ইতি ত্রন্ধা ত্রন্ধা হি পদ্ম চাস এবাডাৱেচৰৎ (মহানা-উ. 2212) পাভিতাং মির্বিছ (বৃ-উ,৫।৫।১) ২ পাদোহন্ত বিশ্বা ভূতানি (তৈ विटेखवगा**त्रा**क नाथानाथ ভিক্ষাচর্যাৎ চরস্তি (বু-উ. ele>) 0 চ তত্ৰ মাহাবং বিভঃ কৰ্ম্ম পিত্লোকপ্রান্তি-विखः (पवरणाकश्राश्रिमाधनः সোহকামরত (র উ.৩৪/১৭) ২ বিশ্বৰপঃ প্রভ্রমেৎ (জাবা-উ. ৪) ৩ ব্ৰহ্ম বেদ ব্ৰহ্মৈৰ ভৰতি (মুঞ্জ-উ ७८ (दाइाए ₹ बदेश्वरवष् गर्कम् (वृ-ष्ठे,८।८।১) >७

ì

| ত্ম:, স্লো:, | জ:, শ্লো |
|---|--|
| भर्मरेनवाञ्चल्डेवाम् (वृ-ष्टे, ' | দিদ্বাস্বাকোৎ গ্রৈন্তি |
| د۶ ۶ (هراهاه | मः क्रुप्तः (तृ-डे, ebb) २ ८० |
| মারাং তু প্রকৃতিং বিভাস্থা- | বিজ্ঞানমানন্দং ব্ৰহ্ম (বৃ-উ,৫।৯ |
| विनर जू भरहचत्रम् (स्थ ७-७, | २৮) 8 २ ¢ |
| 8(0.6) 25 | বিদিদ্বাবৃ্থায়াথ ভিক্ষাচর্য্যং |
| ee ec | চরস্তি (বৃ-উ, ৫৫।১) ১৮ 🐮 |
| यरका देव विकृ: (देख-मः, | বিদ্বান্ন বিভেতি কুতশ্চন (তৈ- |
|) (81PIC | উ, २।८) ७० २ |
| اه بو | শ্রের শ্চ প্রে রশ্চ (ক-উ, ২।২) ১৩ |
| য়জো ৰাচো নিবৰ্ত্তন্তে (তৈ-উ, | স ইদং সর্কাং ভবতি (বু-উ, |
| ۶۲ ۵۲ (۱۹۱۶ | ৩ ৪) ১৩ |
| यः नाकानभरत्राकान् उत्त व | সভ্যং জ্ঞানমনন্তং ব্ৰহ্ম (তৈ-উ |
| बाजा नर्वाखनः (तृ-छ, ८।८।১) २ ३৮ | \$15) 8 24 |
| अभि भेकात्मा (१००) गावार) | স দাধার পৃথিবীম্ (তৈ-সং, |
| ষণাক্তার বিভিতারাধরেরা: | 81214) >6 20 |
| সংব্যেরমেনং সর্বং তদ্ভি- | স যথাকামো ভবতি তং |
| न्रामिक श्रिक्ष खेबाः | ক্রন্তবতি (বু-উ _, ৬।৪।৫) 💆 ^৪ |
| नाधू क्र्वंखि वछन् द्वन यर | >9 |
| न (वल (इ. डे., ८।)।८) ८ ,७० | স যোহ বৈ তদ্ভগবন্ মন্থ- |
| यहां हर्न्यवर (त्वज्ञ-जे, धार •) ' ५७ ' २ | শ্বেষু প্রারণান্তমোকার- |
| वना मर्क्स धामूहारख (का-छ, | মভিধ্যারীত কতমং বাব স |
| (9) 25 25 | তেন নোকং জয়তীতি। |
| ষ্ঠু হ বা আত্মসন্মিতমূলং | তক্ষৈ সহোবাচ। এতদ্ |
| जनवृत्ति जन्न हिनक्षि यम् ज्रान | ৈ স্ত্যকামপ্রং চাপ্রং |
| जिन्ना क्रम हर कर्नीसार्थकः | চ बन्न यरनाकातःयः |
| হিনক্তি, তদ্বং কনীয়েহিরং ন তদৰতি (শতপথে) ৬ ১৬ | পুনরেতং ত্রিমাত্তেণোমি- |
| ম্ <mark>যুদ্দিলোঁকে</mark> ইন্তি °বা ন | ভ্যনেনৈবাক্ষরেণ পরং |
| (विक (देंछ-मर, भागा) १७ १३२ | পুৰুষমভিধ্যারীত সমামভি- |
| বেল ভৌক্তা পৃথিবী চ দূঢ়া | ক্ষীয়তে ব্ৰহ্মণোক্ষ্ (প্ৰশ্ন- |
| (रेड-मर, ८।२।४) २९ २७ | . हे, बाजाराह) ४ , ३३ |
| ৰেন স্থাওপতি তেৰসেদঃ | সর্বাৎ তদভিসমেতি যৎ কিঞ্চিৎ |
| (((((((((((((((((((| প্ৰজা: সাধু কুৰ্বন্তি যন্তদ্ |
| वी क्कोशकः भन्नत्य व्यागन् | বেদ ষৎ স বেদ (ছা-উ, |
| ((बन्दा,शामा) । ३ ३० | 81) S , 8.9 |
| ता वा अञ्चलकार गोर्गीवि- | বরংক্যোতিঃ (বৃ-উ,-৬৩০১) ১৮ ৫০ |

उँ ७९मए-जन्मार्ग नमः।

সর্ব্বজ্ঞ-ভগবত্-পরমর্ধি-শ্রীবেদব্যাস-প্রণীত-মহাভারতান্তর্গতা

শ্ৰীসদ্ভগৰদগীত। ।

শাহর-ভাষ্যোপক্রমণিকা।

ওঁ নারায়ণঃ পরোহব্যক্তাদগুমব্যক্তসম্ভবম্। অগুস্থাস্তস্থিমে লোকাঃ সপ্তদ্বীপা চ মেদিনী॥

আনন্দগিরিকুতটীকা।

দৃষ্টিং মন্ত্রি বিশিষ্টার্থাং রুপাপীব্যবর্ষিণীম্।
হেরম্ব দেহি প্রত্যহক্ষেত্র্যহনিবারিণীম্ ॥>
বদ্বক্তুপক্ষেক্ত-সংপ্রস্তাং, নিষ্ঠামৃতাং * বিশ্ব-বিভাগ নিষ্ঠম্।
সাধ্যেতরাভ্যাং পরিনিষ্টিতান্তং তং বাস্ক্রদেবং সভতং নভোহ্বি ॥২
প্রত্যঞ্জমচ্যতং নদ্যা শুরুনপি গরীয়দঃ।

ক্রিরতে শিখাশিকারে গীতাভাষাবিবেচনম্ ॥৩

কর্মনিষ্ঠাঞাননিষ্ঠেত্যুপায়োপেরভূতং নিষ্ঠাব্দমধিকত্য প্রবৃত্তং শীডাশালং ব্যাচিথ্যাস্থ র্জগবান্ ভাল্পকারো বিল্লোপগ্লবোপশননাদি-প্রয়োজন-প্রানিদ্ধে প্রানাশিক-ব্যবহার-প্রমাণকমিষ্টদেবতা-তত্তামুমুরণং মকলাচরণং লম্পাব্দরন্ আনম্পর্শে ইতিহালপুরাণয়োর্জ্যাচিথ্যাসিত-শীতাশালে এক্যাক্যভামভিপ্রেড্য পৌরাণিক-প্লোকমেকমেব অন্তর্গামিবিষরমুদাহরতি "নারায়ণ" ইতি টি

ভাষামুবাদ।

ভগবৎ ভরামুম্মরণরূপ মঙ্গলাচরণ।

নারায়ণ, অব্যক্ত (অর্থাৎ মূল প্রকৃতি) হইতে •পর। জন্জ ইউতে অতি (অর্থাৎ ব্রহ্মাত) সমূৎপর। এই সমস্ত লোক এবং সম্বীশা মেদিনী ব্রহ্মাত মধ্যে বিশ্বমান রহিয়াতে।

^{*} निर्शाविष = शिकांब्र छत्र ।

শ্রীমদভগবদগাতা

সানন্দগিরিকত-টীকা। "আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নরস্থনব:। ষয়নং * তত্ত তাঃ পূর্বং তেন নারায়ণঃ স্থৃত: ॥"

ইতি স্থৃতিসিদ্ধঃ স্থুলদুৰ্বাং নারারণশন্দার্থঃ। স্ক্রদর্শিনঃ পুনরাচক্ষতে---নরশব্দেন চরাচরাম্মক শরীরজাতমূচ্যতে। তত্ত্ব নিত্যসন্নিহিতাঃ চিদাভাসা ন্ধীবা নারা ইতি নিক্ষচ্যকে। তেবাম অরমম্ আশ্রামে নিরামকোইত্র্যামী নারারণ ইতি। ব্যধিকতা অন্তর্গানিবান্ধণং শ্রীনারায়ণাপাং নন্তামায়ং চ অধীয়তে। তদনেন শান্ত্রপ্রতিপাত্ম বিশিষ্ট্য তত্ত্বমাদিষ্ট্য ভবতি। নমু পরক্ত আত্মনো মান্ত্রা-সৰ্দ্ধাদ্ অন্তৰ্গামিবং শাল্পপ্ৰতিপাশ্বহং চ বক্তব্যম্, অন্তণা কৃটস্থাসন্থাবিষয়াবিতীয়ন্ত ভদবোগাৎ, তথা চ ভদ্ধতাসিদ্ধৌ কণং বথোক্তা পরদেবতা শান্তাদাবসুমর্য্যতে। **৬६৯ হি তরভাল্ন**রণম্ অভীষ্টকলবদ্ অভীষ্টং তত্তাহ-পরোহ্ব্যক্তাদিতি। . অব্যক্তম্ অব্যাক্বতং মায়া ইত্যথান্তরং'তথাৎ'পরো ব্যতিরিক্তঃ তেনাসংস্পৃষ্টেহায়ং পর:, "অক্ষরাৎ পরত: পর:" ইতি শ্রুতে: গৃহীত:। তত্ততো মায়াসহদ্ধাভাবেহপি । করনরা ডদীয়দপতিমপীকৃত্য অন্তর্য্যামিস্বাদিকমুরেরম্। যন্মাদীখেরত ব্যতিরেকা বিবক্ষিত্তপ্রিন্ অব্যক্তে যাজিসিজেহপি কার্য্যলিষ্কম্ অমুমানমুপ্রভাতি অপ্ত-মিতি ৷ অপঞ্চীকৃত-পঞ্চনহাভূতায়কং হৈরণ্যগর্ভং ঞ তর্ম "অগুন্" ইত্যভি-লপাড়ে। তদব্যক্তাৎ পূর্ব্বোক্তাহংপদ্ধতে। প্রসিদ্ধা হি শ্রুতিস্বতিবাদেরু হিরণ্য-গর্ভন্ত মূলকারণাছৎপতিঃ। তথা চ কার্যালকাদব্যক্তাদভিব্যক্তিরিত্যর্থঃ। হিরণাগর্ভে শ্রুতিসমধিগতে পি কার্যালিককম্ অনুমানমন্তীতি মধানো বিরাতু ৎপত্তিরূপদর্শরতি—অগুস্যোতি। উক্তদ্যাওম্ভ হিরণ্যগর্ব্বাভিধানীয়ম্ভ সম্ভরিনে ভূরাদরো লোকা বিরাড়ায়কা বর্ত্তরে ।° কার্য্যং হি কারণস্যান্ত-র্জন্তি ; তেন হিরণ্যগর্জান্তভূতি। ভূরাদয়ো লোকা ঞ বিরাড়ায়ান:, তেন স্ষ্টা ইতি ভরিকানিরণাগর্ভসিনিরিভার্থ:। লোকানেব পঞ্চীরুভপঞ্মহাভূতান্মক-বিরাড়াত্মত্বেন রুৎেপাদয়তি-স্পুদ্ধীপেতি। "সা পৃথিব্যভবং" ইতি শ্রুতৌ বিরাজো জন্ম সমীর্তিতম্, ইত্যঙ্গীকারাণ্ অশেবদীপোপেতা পৃথিবীত্যনেন সর্ম-লোকাম্বকো বিরাড়েবোচ্যতে। "চ"-শব্দেন বিরাজো হি হিরণাগর্ভে পূর্বো-**ভাষান্তৰ**ৰ্ভবিং ভতঃ সম্ভবোহমুক্ষতে। প্রমায়া হি <mark>সাকানবারা ক</mark>গ-महम्बन्दर्शांच कांचरमान कड्डांदा कथरेखकत्रन-महिलानकांचना स्य महित्रि

ক্ষম উত্ত তাঃ — তা বৰস্তান্দ্ৰম্। † মানাসহকাতাবেহণি — মানাবকোতা

¹ देशकामक्र = श्विमागर्कम।

[!] जुत्रानरत्रारमाक। = त्याका ।

শান্বরভাষ্যোপক্রমণিকা।

স ভগবান্ স্টেব্ৰু দং জগৎ তম্ম চ স্থিতিং চিকী ধু ম রীচ্যাদীন্

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

তিষ্ঠতীত্যর্থ:। অত্র-চ নারায়ণশব্দেন অভিধেয়মুক্তন্। নরা এব নারা জীবাঃ
"বং"-পদবাচ্যাং, তেবাম্ অয়নম্ অধিষ্ঠানং "তং"-পদবাচ্যং পরং এক্ষা। তথাচ
করিতন্ত অধিষ্ঠানাতিরিক্ত-শ্বরূপাভাবাদ্বাচ্যন্ত করিত্ত্বেংপি লক্ষ্যন্ত এক্ষমাত্রদাদ্
ব্রহ্মাইয়ক্যং বিষয়েহিত্র স্বচ্চতে। তেন অর্থাদ্বিষয়-বিষয়িভাবঃ সম্বক্ষাংশি
ধ্বনিতঃ। 'পরোহব্যক্তাদ্' ইত্যনেন নায়াসংস্পর্শাভাবোক্ত্যা সর্বানর্থমিব্রুটা
পরমানন্দাবির্ভাবলক্ষণো মোক্ষো বিবক্ষিতঃ। তেন চ তৎকামন্ত অধিকারো
ভোতিতঃ। পরিশিষ্টেন + তু † বস্তুনো বাস্তবমিদ্বিতীয়ন্ধমাবেদিতম্। তেন
চ বস্তুদারা পরমবিষয়ত্বং তক্স্ক্রাননিষ্ঠায়াত্ত্পায়ভূত-কর্ম্মনিষ্ঠায়াশ্ব অবাস্তর্ম-বিয়য়্বিমিত্যর্থাদ্ উক্তমিত্যবধ্যেম।

নমু নৈব সাধ্যসাধনভ্তং নিষ্ঠান্বরম্ মত্র ভগবতা প্রতিপান্ধতে, ভ্নিপ্রাধিতেন বৃদ্ধণা অভ্যধিতস্ত ভগবতো ভূমিভারাপহারার্থং বস্থদেবেন দেবক্যানাবির্ভূস্ত তাদর্গ্যেন মধ্যমং পৃথাস্থতং প্রথিতমহিনানং প্রেরম্বিত্থ ধর্মরাঃ ইঠ মনুসমানহাদ্ মতো নাস্য শাস্ত্রস্য নিষ্ঠান্বরং পরাপর-বিষর-ভাবমন্থভবিত্মলমিতি । তত্র, ভগবতো ধর্মসংস্থাপন-স্বাভাব্য-প্রোবাদ্ ধর্মব্রস্থাধনার্থমেব প্রান্ধভাবাত্মপ্রাদ্ ভূভারপরিহারস্য চ মার্থিকত্বাদ্ অর্জুনং নিমিন্তীক্বত্য অধিকারিণং অবর্জ্বনারা
ক্র জাননিষ্ঠারাম্ অবভাররিত্বং গীতাশাস্ত্রস্য প্রণীতহ্বাদ্ উচিত্রস্য নিষ্ঠাব্রবিষর্থমিতি পরিহরতি — স্প্রতাবান্ ইত্যাদিনা ধর্মব্রমর্জ্কুনায়োপ্র-
দিদেশ ইত্যন্তেন ভারেণ। তত্র নেদং গীতাশাস্ত্রং ব্যাধ্যাতৃম্বিতন্য
মাধ্যপ্রতিত্বানির্কারণাং, তথাবিধশাস্বান্তরবদ্ ইত্যাশন্য মন্ত্রসাচরব্বস্থ উদ্দিশ্যং
দর্শরন্ আদৌ শাস্ত্রপ্রবেত্ই আপ্রতনির্কারণার্থং সর্বজ্ঞাদি-প্রতিজ্ঞাপূর্বকং
সর্বলগজ্জনিরিত্রমাহ— স্প্রতানিতি। প্রক্রতো নারারণাথ্যে দেবঃ স্বর্জ্জ্বনির্ভিত্তমাহ
স্বিলগজ্জনিরিত্রমাহ— স্প্রতানিতি। প্রক্রতো নারারণাথ্যে দেবঃ স্বর্জ্জ্বনির্ভিত্তমাহ
স্বিলগজ্জনিরিত্রমাহ
স্বিলগজ্জনিরিত্রমাহ
স্বিলগ্রন্থ বিদ্বানিতি। প্রক্রতো নারারণাথ্যে দেবঃ স্বর্জ্জ্বনির্কারণাথ্য দেবঃ স্বর্জ্জ্বনির্কারণাত্য দেবঃ স্বর্জ্জ্বনির্বিত্রমাহ
স্বিলগজ্জনিরিত্রমাহ
স্বিলগ্রন্থ বিদ্বানিতি।

ধক্ষ ই অগতের স্থিতিহেতু, ভুগবান্ তাহার প্রবর্তক।

সেই ভগবান্ এই জগৎ স্ষ্তিপূর্বক ইহার শ্বিভিসাধনে ক্ষিণাবী হইয়া, প্রথমে মরীচি প্রাজ্ঞতি প্রজাপতিগণকে স্ষ্তি করিয়া, ভাঁহাদিগকে বেদোক্ত প্রবৃদ্ধিলক্ষণ ধর্ম পরিপ্রাহ করাইয়াছিলেন। * পরিশিষ্ট্রেন শ্বণবের। । † ভ্—ভ্লকেন। । ই ধর্মপ্রবর্তনধারা দর্মপ্রবর্তনধার।

শাহর-ভাষ্যোপক্রনণিকা।

আগ্রে স্কী প্রজাপতীন্ প্রবৃত্তিলক্ষণং ধর্মং গ্রাহয়ামাস বেদোক্তম্। ততোহত্যাংশ্চ সনক-সনন্দনাদীসুৎপাত্য নিবৃত্তি-ধর্মাং জ্ঞানবৈরাগ্য-লক্ষণং গ্রাহয়ামাস। দ্বিবিধা হি বেদোক্তো ধর্মাঃ, প্রবৃত্তিলক্ষণো নিবৃত্তিলক্ষণশ্চ।

আনন্দগিরিকুতটীকা।

সংক্ষারঃ সমস্তমণি প্রপঞ্চম্ৎপান্ত ব্যবস্থিতঃ। ন চ তস্য জনাপ্তম্ম, ঈশরামুগৃহীতানামাপ্তম্বাসিদ্ধ্যা, তস্য পরমাপ্তম্বিদ্ধেরিত্যর্থঃ। নমু ভগবতা স্থইমণি
চাত্র্বাগাদিবিশিষ্টং হিরণ্যগর্ভাদিলকণং জগদ্ ন ব্যবস্থিতিমান্থাতৃং শক্ততে
ব্যবস্থাপকাভাবাৎ, ন চ পরস্যৈবেশ্বরস্য ব্যবস্থাপকত্বং বৈবম্যাদি-প্রসঙ্গাৎ, তত্রাহ—
তত্ম চেতি। ক্রইস্য জগতো মর্য্যাদা-বিরহিত্তত্বে শক্তিতে তদীরাং ব্যবস্থাং
কর্ত্বামিজন্ ব্যবস্থাপকমালোচ্য কত্রস্যাপি কত্রত্বেন প্রসিদ্ধং ধর্মং তথাবিধমধিগম্য
ক্ষরানিত্যর্থঃ। ক্রস্য ধর্মস্য সাধ্যস্থভাবতরা সাধ্যিতারমন্তরেণ অসন্তবাৎ
তব্যের ক অনন্ত্রাভ্রানভ্যপগর্মাৎ † প্রাণিপ্রভেদানাম্ অধর্মপ্রায়াণাং তদবোগাৎ
ক্রতদীরা ক্ষরিত্যাশব্যাহ—মরীচ্যাদীনিতি। তেবাং ভগবতা ক্ষরানাং
ক্রেলাক্ষ্টি † হেতুনাং বাগদানাদি-প্রবৃত্তিসাধ্যং ধর্মমন্থ্রাত্মধিকতানাং স্বকীরত্বেন
তত্বপাদামম্প্রমৃত্তিরিত্যা
ক্রিনিত্রপ্রা
ক্রেলাক্ষিতি।
ক্রিনিত্রপ্রি

নহ নৈতাৰতা কগদশেষমপি ব্যবস্থাপরিতৃৎ শক্যতে, প্রবৃত্তিমার্গস্য পূর্বোক্তবর্জ করিত্বহুপি নির্ভিমার্গস্য তেন ব্যবস্থাপনাযোগ্যখাৎ তরাহ—তত্যোহক্ষাংশ্রেক্তি। নির্ভির্মপস্য ধর্মস্য শম-দমান্তান্মনো গমকমাহ—ক্তানেতি।
বিবেহুবৈশ্বাস্যাতিশয়ে শমান্ততিশয়ো গম্যতে,ততো বিবেহুদি তস্য গমকমিত্যর্থঃ।

বৰ্ষবিধিও তাহার আদি-অসুঠাভূগণ।

প্রস্তার (ডিনি) সনক, সনন্দন প্রভৃতি অপর সকলকে উৎপাদন করিয়া, জ্ঞান-বৈরাগ্য-লক্ষণ নির্ভি ধর্ম পরিগ্রহ করাইয়াছিলেন; বেছেছু বেদোক্ত ধর্ম, প্রবৃত্তি-লক্ষণ ও নির্ভি-লক্ষণ ভেদে দিবিধ।

[🛊] তক্তিব = ভণস্টানাবৈব। 👚 অনভ্যুপগদাৎ = জভ্যুপগদাৎ । 📫 এজাহাট = এজাহাট

শান্তর ভাষ্যোপক্রমণিকা।

জগতঃ * স্থিতিকারণং প্রাণিনাং সাক্ষাদভ্যুদয়-নিঃপ্রোয়স-হৈছু র্যঃ স ধর্মো ব্রাহ্মণাতৈর্ব্বর্ণিভিরাশ্রমিভিশ্চ শ্রেয়ো-হর্ষিভিরস্তীয়মানঃ। দীর্ঘেণ কালেন অনুষ্ঠাতৃণাং কামোদ্ভবাদ্

আনন্দগিরিকুতটীকা।

ধর্ম্মে বছবিদাং † বিবাদ-দর্শনাজ্জগত: স্থেয়ে কারণীভূতধর্মাস্তরমপি ঞ শ্রপ্তব্য-মন্তি ইত্যাশক্যাহ—দ্বিবিধাে হীতি। অতিপ্রদলাপ্রদক্ষব্যার্ত্তরে প্রকৃতং ধর্মং লক্ষ্যতি-প্রাণিনামিতি। প্রবৃত্তিলক্ষণো ধর্মোহভ্যুদয়ার্থিনাং সাক্ষাদভ্যু-দরহেত:. নিঃশ্রেরসার্থিনাং প্রম্পর্য়া নিঃশ্রেরসহেতঃ, নিব্তিলক্ষণস্ত ধর্মঃ সাক্ষাদেব নিঃশ্রেয়সহেতুরিতি বিভাগঃ। জ্ঞানস্যৈব নিঃশ্রেয়সহেতুত্বেহপি শমাদীনাং জ্ঞানদারা মোক্ষহেতুত্বম্, জ্ঞানাতিরিক্তব্যবধানাভাবাচ্চ সাক্ষাদি-यरश्चरः वैत्या नकारज जर्हि वर्गिषमाञ्चभिषदश्यरभका मर्देर्सत्तव পুরুষার্থাথিভিদু বিপি ধন্মে যথাযোগ্যমন্থর্টেরৌ—ইত্যন্ত্র্টাতুনিরমাসিদ্ধিরিত্যাশস্ক্য অর্থিত্বাবিশেষেংপি, শ্রুতিস্বৃতিপর্য্যালোচনরা অন্তু-আং—ব্রাহ্মণালৈরিতি। ষ্ঠানাৎ নিয়মসিদ্ধিরিতার্থ:। নিতানৈমিত্তিকেরু বাবজ্জীবমন্নষ্ঠানং কাম্যেরু করণাংশে রাগাধীনা প্রবৃত্তিরিতিকর্ত্তব্যতাংশে বৈধীতি বিভাগেহপি কলাচিদেবাছগ্রান-মিভি বিভাগমভিপ্রেত্য আহ—দীর্হেণেতি । ^{*} অথ যথোক্তধর্মবশাদেব জগতো বিবক্ষিতস্থিতিসিদ্ধে র্ভগবতো নারায়ণস্য আদিকর্ত্তরনেকানর্থকলুষিতশরীরপরি-গ্রহাসম্ভবাৎ অম্প্রদ্যৈর ক্স্যাচিদনাপ্রদ্য বৈষম্যানৈর্গ্যবতো নিগ্রহপরিগ্রহন্বারেণ গীতাশাস্ত্রপ্রবনমিতি কুতোহস্য মাপ্তপ্রণীতত্বং তত্তাহ—অনুষ্ঠাতৃণামিতি 1. ব্দধবা বধোক্তশকারাং দীর্ঘেণেত্যারভ্যোত্তরম্। মহতা কালেন ক্বতত্ত্বেত্ত্যিরে দাপরাবদানে गारकानाः कामत्काशामिशृर्ककार व्यवित्वकार वेशंभावाक्ष्मार ধর্মের কল অভাদর ও নিংশ্রেরস।

জগতের স্থিতিকরণ, প্রাণিগণের সাঁকাৎ অভ্যুদয় ও নিঃশ্রেয়স-তেতু যে ধর্মা, সেই.ধর্ম জোয়োভিলাষী বর্ণাশ্রমসেবী আক্ষণাদির ছারা অক্ষ্মিত ইইয়া, আসিতেছিল। দীর্ঘকাল পরে অনুষ্ঠাতৃগণের জনমে কামনার উত্তব হওয়ায় বিবেক ও বিজ্ঞানের হানিকর অধ্যের

^{* &}quot;**ব্যাতঃ"** = "তবৈকো জগতঃ" "তবৈৰ জগতঃ"।

[†] বছবিদাং = বছবিধানাম্। 🗼 কারণীভূতগদ্ধান্তরমপিক-কারণীভবদ্ধদান্তরমূপি।

শান্ধর-ভাষ্যোপক্রমণিকা।

হীয়মান-বিবেক-বিজ্ঞানহেতুকেন অধর্মেণাভিভূয়মানে ধর্মে, প্রবর্দ্ধমানে চাহধর্মে, জগতঃ স্থিতিং পরিপিপালয়িবুঃ দ আদি-কর্ত্তা নারায়ণাখ্যো বিষ্ণুর্ভোমস্থ ব্রহ্মণো ব্রাহ্মণত্বস্থ রক্ষণার্থং দেবক্যাং বস্থদেবাদংশেন কিল * দম্বভূব; ব্রাহ্মণত্বস্থ হি রক্ষ-ণেনণ রক্ষিতঃ স্থাদ্বৈদিকে। ধর্মাঃ, তদধীনত্বাল্পমভেদানাম্।

আনন্দগিরিকৃত-টীক। ।

ধর্মাভিভবাং অধর্মাভির্দ্ধেশ্চ জগতো মর্য্যাদাভেদে তদীরাং মর্য্যাদাম্ আত্মনির্মিতাং পালরিত্মিচ্ছন্ প্রকৃতো ভগবান্ এভদর্থেন চাতৃর্ব্বর্গাদিসংরক্ষণার্থং লালায়রং মারা-শক্তিপ্রকৃৎ ফেছাবিগ্রহং জগ্রাহেত্যর্থং। ভৌমস্য ব্রহ্মণো গুপ্ত্যৈ বস্থদেবাদজীজনৎ ইতি স্বভিম্পুস্তত্যু পদন্বর্যন্ত্র ব্যাচপ্তে ভৌমস্থেতি। অংশেনেতি। কেছানির্মিতেন মারামরেনা বর্মণেগইত্যর্থং। কিলেত্যপ্রির্ম্পে পোরাণিকী প্রসিদ্ধিরনুম্বতে, নহি ভগবতো ব্যতিরিক্তস্যেদং জন্মতি যুজ্যতে, বহুবিধাগমবিরোধাদিতি ভাবং। নমু বৈদিক্ধর্ম-সংরক্ষণার্থং ভগবতো জন্ম 'বদা মদা হি ধর্মস্য' ইত্যাদিদর্শনাৎ, কিমিদং বাদ্ধান্য রক্ষণার্থমিতি তত্তাহ—ব্রাহ্মণত্বস্য হীতি। তথাপি বর্ণাশ্রমভেদ-বাহ্মপনং বিনা কণং বণোজধর্মক্ষণমিত্যাশন্ধ্য আহ—তদ্বীন্তাদিতি।

কুঞাৰতার, ধলা ও ব্রান্ধণের সম্বন্ধ।

দারা ধর্ম অভিভূত হইরা পড়ে; স্তরাং অধর্ম প্রবল হইলে, জগতের দ্বিতি পরিপালন করিতে অভিলাষী হইয়া, সেই আদিকর্তা নারায়ণরূপী বিষ্ণু, আক্ষাণ ও আক্ষাণতের রক্ষাকরিবার জন্ত বস্থদেবের উরসে দেবঁকীর গর্ভে অংশরূপে আবিভূতি হয়েন। যে হেতু আক্ষাণ্ডের রক্ষা হইলে, বৈদিক ধর্ম রক্ষিত হয়; কারণ বর্ণাশ্রাদ-ভেদ তাহারই অধীন।

ভাবপর্য অনাদিকাল-প্রচলিত নৌকিক বাবস্থার অধিরোধে ঐতিক ও পার্ব্রিক অধ্-সম্প্রলাজার্থ বাগহোম প্রস্তৃতি কর্মাই প্রবৃত্তিলক্ষণ ধর্ম। আর ইহাতে বিগতস্থ হইরা লক্ষা, মৃত্যু, জরা, ব্যাধি ও শোক প্রভৃতির একমাত্র নিদান যে অক্সান, তাহাল উচ্ছেদ সাধ্য দ্বারা নির্বাশপদ পাই র লক্ষ্য, সংসার্থিরাটা পর্মহংসগণ, শম, দম ও ভিত্তিকা প্রভৃতি যে সকল ধর্মের অন্তর্ভান করিয়া থাকেন, তাহাই নির্ভিলক্ষণ ধর্ম। প্রবৃত্তিলক্ষণের কণ প্রধ্যে মুখ পরে নির্বাণ, এবং নির্ভিলক্ষণের ফল কেবলই নির্ভিণ।

^{*} किल = कुक: किला वकरनन = त्रैकरन : ‡ स्त्रारनन = त्ररनन :

শাঙ্করভায়োগক্রমণিকা।

স চ ভগবান্ জ্ঞানৈশ্বর্যাশক্তিবলবীর্য্যতেজোভিঃ সদা সম্পদ্দ স্ত্রিগুণাত্মিকাং বৈষ্ণবীং স্থাং মায়াং মূলপ্রকৃতিং * বশীকৃত্য

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

বান্ধণং হি পুরোধার ক্রতাদিপ্রতিষ্ঠাৎ প্রতিগন্ধতে যাজনাধ্যাপনরোত্তর্মন্ত্রা তন্দারা চ বর্ণাশ্রমভেদব্যবস্থাপনাং,অতো ত্রান্ধণ্যে রক্ষিতে সর্ব্বমণি স্করক্ষিতং ভবতীত্যর্থ:। নত এবনপি ভগবতো নারারণক্ত শরীরাদিমত্বে সতি অম্বদাদিভিরবিশেষাদ অনীখ-রত্বপ্রসক্তিরিত্যাশস্ক্য জ্ঞানাদিকতং বিশেষমাহ— স চেতি। জ্ঞানং জ্ঞপ্তিরর্থপরি-চ্ছিতি:। এখর্যামীখরত্বং স্বাতন্ত্রাং, শক্তিন্তদর্থনির্বর্তনসামর্থ্যং, বলং সহায়সম্পতিঃ বার্যাং পরাক্রমবন্তং, তেজন্ত প্রাগশভামপ্রধৃদ্যত্বম্ এতে চ বড়্প্রণা: সর্কবিষয়া: সর্বাদা ভগবতি বর্ত্তরে। তথা চ তত্ত শরীরাদিমত্তেহপি নাম্মাদিসামামিতার্থঃ। অলৈবমণি কথমীখনত অনাদিনিধনত নিতাওমবৃদ্ধমুক্তবভাবত বভাববিপরীতং জন্মাদি স্ভবতি,নহি ভূতানামীশিতা স্বতম্বশ্চাত্মনোহনর্থংঞ স্বরমেব সম্পাদরিভুসহ'তি ন চাস্ত দেহাদিগ্ৰহে কিমপি ফলমুপলভাতে তত্ত্ৰাহ-ত্ৰিগুণাজ্মিকামিতি। দিশ-किञ्चरमश्मिणञ्देवक्रभामिकार्थभिमः वित्यस्यम्। जङ्घा वााशकदः बङ्कः देवस्रवीमि-ত্যক্তম্। ঈশ্বরপারবশ্যং তদ্যা দর্শরতি স্থামিতি,। তদ্যাশ্চ প্রতিভাদমাত্রশরীরক্ষেব ন তু বস্তুত্বমিত্যাহ-মায়ামিতি। তদ্যা নানাবিশ্বকার্য্যাকারেণ পরিণামিত্বং স্করতি মূলপ্রকৃতিমিতি। ঈশর্য্য প্রকৃত্যধীনম্বং বারম্বতি—বশীকুত্যেতি। নিভাস্বং কার্য্যাকারবিরহিতত্বং, গুরুত্বমকারণত্বং, বুরুত্বমজড়ত্বং, মুক্তত্বম অবিদ্যাকারকারণার-তন্ত্রারাহিত্যম্। ন চ নিত্যখাদর: সংগাঁরাবস্থারাম্ অসজো নোকাবস্থারাং ভবস্তীতি

আর সেই ভগবান, সদা জ্ঞান-ঐশর্য্য-শক্তি-বল-বীর্য ও ভেজ্ঞান সম্পন্ন বলিয়া ত্রিগুণাজ্মিকা, বৈষ্ণবী, সীয় মান্না মূলপ্রকৃতিকে বশীকৃত করিয়া, জ্ঞা অব্যয় ভূতসমূহের ঈশর,নিভ্যশুদ্ধ বৃদ্ধ মূক্তশ্বভাব হইলেও নিজ মানার হানা দেহবানের স্থায় যেন জন্মগ্রহণ করিয়া, গ্লোক-নিবহের প্রতি জনুপ্রহ করিছেছেন বলিয়া লক্ষিত হন।

ভগবানের **লক্ষণ ও** তাঁহার অবভার-রহস্ত।

मृत्यकृष्टिः – थकृष्टिः । † जान्तरः – जान्तराह । ‡ न्हान्यरमाहर्षः + नान्यरमाहर्षः ।

শান্বভাব্যোপক্রমণিকা।

অজোহব্যয়ো ভূতানামীশ্বরো নিত্যশুদ্ধবৃদ্ধমুক্তস্বভাবোহিপি সন্ স্বমায়য়া দেহবানিব জাত ইব চ লোকামুগ্রহং কুর্বন্দিব লক্ষ্যতে, স্বপ্রয়োজনাভাবেহিপি ভূতামুজিল্লক্ষয়া বৈদিকং হি ধর্মবন্ধ-মর্জ্জ্বনায় শোকমোহ-মহোদধৌ নিমগ্রায় উপদিদেশ, গুণাধিকৈ-হি গৃহীতোহসুষ্ঠীয়মানশ্চ ধর্মঃ প্রচয়ং গমিম্বতীতি। তং

আনন্দগিরিকুত-টীক।।

যুক্তমিত্যাহ-স্বভাবইতি। দেহগ্রহে প্রাধান্তং মারারা দর্শরিতৃং পুনঃ স্বমাররেত্যুক্তম্। "স বা অরং পুরুবো জারমানঃ শরীরমভিসম্পাল্তমান" ইতিশ্রুতিমাশ্রিত্যাহদেহবানিতি। ইবকারাভ্যাং দেহাদেরবস্তব্দেন করিত্বং ল্যোত্যতে। ধর্মবরোপদেশবারা প্রাণিবর্গন্যাভ্যুদরনিংশ্রেয়স-তৎপরদ্বাপাদনং* ল্যোকার্থ্যহঃ। যঞ্চপি কৃটস্বঃ
স্বত্রো নিত্যমাদিলক্ষণশ্রমীশরঃ স্বতো দৃশ্রতে তথাপি বথোক্তমারাশক্র্যা
দেহাদি গৃহীয়া প্রাণিনামম্গ্রহমাদধানো ন স্বভাববিপর্যায়ং প্রয়াতীত্যর্থঃ। † নম্
প্রেরাজনমমুদ্রিশু ন মন্দোহপি প্রবর্ত্তত ইতি ভারাদীশর্ম্য আপ্রকামতন্ত্রা ক্রতক্রত্যম্য প্ররোজনাভাবাদম্ব্রাহ্যাণাঞ্চাবৈত্রাদ ব্যতিরিক্রানামসন্ত্রার ধর্মবর্মপদেষ্ঠুমুচিতমিতি তত্রাহ স্প্রান্ত্রোক্রনেতি। করিতভেদভাঞ্জি ভ্তান্ত্রপাদান্ত্র ভদত্বগ্রহেছ্ব্যা হৈত্যবন্দনাদিবিলক্ষণং ধর্মবর্মর্জ্বনং নিমিন্তীক্বত্য আপ্রকামোহপি ভগবান্ত্রপদিষ্টবানিত্যর্থঃ। অর্জ্বন্ন্যোপদেশাপেক্ষান্ত্রীতি দর্শরিত্বং বিশিন্ত্রি পোক্তিত

কুক্ষাবভারের উদ্দেশ্ত ; গীতা ও ব্যাসের সম্বন্ধ।

[বস্তুতঃ] তাঁহার নিজের প্রয়োজন না থাকিলেও জীবগণের উপর অনুগ্রহ করিবার ইচ্ছাবশতঃ [তিনি] শোকমোহরূপ মহোদ্ধিতে নিমা, অর্জ্নকে বৈদিক ধর্মদ্বয়ের উপদেশ প্রদান করিয়া ছিলেন; যেহেতু গুণশালী ব্যক্তিবৃদ্ধ-কর্তৃক গৃহীত ও অনুষ্ঠিত ধর্মই লোকমধ্যে প্রচার লাভ করিয়া থাকে। এই ধর্ম, ভগবান্ কর্তৃক যে-ভাবে উপদিষ্ট হইয়াছে, সর্ব্বজ্ঞ জগবান্ বেদব্যার সেই ভাবে গীভানাকক গ্রন্থে সাতশত শ্লোক্ষারা নিবন্ধ করিয়া গিয়াছেন।

^{*} তৎপরত্বাপাদন: = সপ্রবণত্বাপাদন: <u>|</u>

[†] প্রয়াতীভার্থঃ - পর্যোতীভার্থঃ।

শাহরভায়োপক্রমণিকা।

ধর্মাং ভগৰতা যথোপদিউং বেদব্যাসঃ সর্ববেজ্ঞা ভগৰান্ গীড়াথৈঃ ' সপ্তভিঃ শ্লোকশতৈরূপনিববদ্ধ।

তদিদং গীতাশাস্ত্রং সমস্ত-বেদার্থ-সার-সংগ্রহভূতং **চুর্ব্বিজ্ঞে**- রার্থম্। তদর্থাবিক্ষরণার অনেকৈ-ব্বিস্থত-পদ-পদার্থ-বাক্যার্থ-

আনন্দগিরিক্ত-টীকা।

নমু ভৃতামুগ্রহে কর্ত্তব্য কিমিত্যর্জ্ক্নার ধর্মদরং ভগবডোপদিশ্যতে ভ্রাহ—
শুণাধিকৈরিতি। প্রচরং গমিশ্রতীতি মন্ধা ধর্মদর্মজ্ক্নার উপদিদেশিতি
সদক্ষ:। অধ শুগতোপদিপ্রধর্মবদ্ অরমপি ভগবছপদিপ্রো ধর্ম্মো ন প্রামাণিকোপাদেরভার্পগজেদ, ইত্যাশহ্য বেদোক্তবাং নাস্ত তর্ল্যহম, ইত্যুত্তরমভিপ্রেত্য
নিপ্তপিরগৃহীভ্রাচ্চ মৈবমিত্যাহ—তং ধর্ম্মামিতি। অধর্মে ধর্মবৃদ্ধিবেদিব্যাসভ লাজা, ইত্যাশহ্যাহ—স্বর্ব তর ইতি। "ক্লক্টেপারনং বিদ্ধি ব্যাসং নারারণং প্রভূষ্" ইতিস্বত্যে। † সজ্জনোপকারকভগবদবতার্যাচ্চ ব্যাসভ নার্যধান বৃদ্ধিরভ্যাহ—ভগবানিতি।

গীতাশাব্রত অনাপ্তপ্রণীত্তমণাক্বত্য ব্যাধ্যেরতমূপণাদিতমূপসংহরতি—ত্তিদ্দিতি। পৌকবেরত বচসো মৃলপ্রমাণাভাবেন অপ্রামাণ্যমিতি মন্ধা বিশিনাই—সমস্তেতি। শাব্রাক্রেরব তদর্পপ্রতিপত্তিগভবে কিমিতি ব্যাধ্যানম্ ইত্যাশব্যাহ—তুর্বিব ক্রেয়ার্থমিতি।

"পদচ্ছেদঃ পদার্থোক্তিবিক্সহো বাক্যবোজনা। আক্ষেপক্ত ‡ সমাধানং ব্যাধ্যানং পঞ্চলক্ষণমূ § ॥"

ইত্যাদিক্রমেণাত শাল্পত পূর্কাচার্য্যৈর্ক্যাখ্যাত্থাৎ কিমর্থমিদমারভ্যতে, গত্যর্থবাৎ, তত্তাহ—তদুর্থেতি। গীতাশাল্পর্যত ** প্রকটিকরণার্থ্য পদবিভাগাল্পদর্থোতিঃ। সমাস্থারা বাক্যার্থনির্দেশন্তত্তাপেন্দিতো ভারত আকেপসমাধানলক্ষণো ইতিকারে-দর্শিতঃ, ভথাপি ভথাবিধনেব শাল্পং শালপরিচরশ্রৈঃ সমুক্ররাসমুক্ররবাধিভি ়া

পীতা-পরিচয় ও আচার্ব্যের ভাষ্যক্ষনার হৈছে।

একস্ত এই গীতাশাল্প সমস্ত বেদার্থের সার-সংগ্রহ-শক্ষণ, ও ছব্বিজ্যে সূর্থ-বিশিষ্ট। ইহার অর্থ আবিফার করিবার কর অবেকে ইহার পুদ, পদার্থ, বাক্যার্থ এবং 'ভার' বিবৃত করিবাও লোকে সে

क्ष्मका = ब्राविका । † म्यादा = व्यक्ता । † व्यक्तिक = व्यक्तिका । ई नक्ष्यका मृद्धका । क्ष्मका । क्ष

শাহরভাষ্যোগক্রমণিকা।

স্থান্নমপি অত্যম্ভবিক্লদ্ধানেকার্থছেন লোকিকৈগৃ হ্যমাণমূপলভ্য অহং বিবেকতোহর্থনির্দ্ধারণার্থং সংক্ষেপতো বিবরণং করিষ্যামি।

তস্তাস্থ গীতাশাস্ত্রস্থ সংক্ষেপতঃ প্রয়োজনং পরং নিঃশ্রে-যুসং সহেতুকস্ত সংসারস্থ অত্যস্তোপরমলক্ষণম্। তচ্চ সর্বে-

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

বিক্লন্ধবিদন অনেকার্থবেন চ গৃহীতমালক্য তদ্ব্দিমমুরোদ্ মিদমারদ্ধব্যমিত্যর্থঃ।
বেবাং প্রাচীনে ব্যাধ্যানে বৃদ্ধিরপ্রবিষ্টা তেবাং সংপ্রতিতন এত দ্বিদ্ধানী
প্রবেক্যতীতি কুতো নিরমঃ? তত্তাহ বিবেক্ত ইতি। পূর্ববিদ্ধান্যনি তত্তমর্থনির্দ্ধান্তবিধি ভারঃ • সংকীর্ববিদ্ভাতীতি † ন তত্ত্র কেবাঞ্চিমনীয়া সম্নির্বিত্ত,
প্রকৃতে তু অসৃং প্রকীর্ণতরা তত্তংপদার্থনির্ণরোপনোগী ফ্রায়ো বিত্রিরতে। তেনাত্ত মক্ষমধ্যমরোরপি বৃদ্ধিরবতরতীত্যর্থঃ। কিঞ্চ অনপেক্ষিতাধিকগ্রন্থসভাবাৎ ন প্রাচীনে ব্যাধ্যানে প্রোত্গাং প্রবৃত্তিঃ, অত্র তু অপেক্ষিতারগ্রন্থে বিববণে প্রায়শঃ
মর্কেবাং প্রবৃত্তিঃ ভাদিতি মন্ধা আহ— সংক্ষেপ্ত ইতি।

নম্ অনাপ্তপৌতদাভাবেৎপি নেদং শাস্ত্রং ব্যাথ্যেরং, বিবরাজমুবক্ষভান-ভিহিতদেন শাস্ত্রদাভাবাদ, ইত্যাশহ্য সর্বব্যাপারাণাং প্ররোজনার্থতাদাদৌ প্রয়োজনমাহ—তন্ত্রেতি। প্রদাধিতপ্রামাণ্যক্ত ব্যাথ্যেরদেন মনসি সমিহিতক্ত গীতাশাস্ত্রক্ত সংক্ষেপতঃ ‡ সংগ্রহঃ সম্পিভিত্তমেকবাক্যত্বং, তেনেদং পরমং ফলং বরিন্দিতং প্রেরোনিঃশ্রেরসং কৈবল্যম্ অবাস্তরফলম্ব তত্র তত্রাবাস্তরবাক্য-ভেদেন মনোনিগ্রহাদি বিবক্ষাতে। নিঃশ্রেরসঞ্চ বিবিধং—নিরতিশয়স্থাবির্ভাবো নিঃশেশনংশান্থিভিত্তিক; তত্ত্রাজমুদাহরতি—প্রমিতি। বিতীয়ং দর্শর্তি—স্তেতু

সক্ষ অর্থ মত্যক্ত বিরুদ্ধ ভাবে ও অনেক প্রকারে গ্রহণ করিয়া থাকে দেখিয়া, আমি বিবেকতঃ ইহার অর্থ নির্দ্ধারণ করিবার জন্ম হুক্তেপ্রে ইহার বিবরণ করিতেছি।

্বেই এই গীতাশাল্তের সংক্ষেপতঃ প্রয়োজন—সহেতুক সংসারের অ্ত্যস্তু-নিবৃত্তিগক্ষণ পরম-নিঃশ্রেয়স্; তাহাও সর্বাকশ্রসংস্থাস-

^{*} বিশ্ব রিণার্থো-ভার: — নিদ্ধ রিণার্থোপভাস: । া সংক্ষেপতং — সংক্ষেপঃ ।,

[†] ভাতীতি = ভৰতীতি।

শাররভাব্যোপক্রমণিকা।

কন্ম সন্ত্যাসপূবর্ব কাদ্ আত্মজ্ঞাননিষ্ঠারূপাদ্ ধর্মান্তবতি। তথে- নমেব গীতার্থধর্মম্ উদ্দিশ্য ভগবতা এবোক্তম্—

"দ হি ধর্মঃ স্থপর্যাপ্তো ব্রহ্মণঃ পদবেদনে" ইত্যমুগীতাস্থ।

তবৈব চোক্তং "নৈব ধর্ম্মী ন চাধর্ম্মী ন চৈব হি শুভাশুভী।

আনন্দগিরিকুত-টীকা।

কস্মেতি। সংসারোপরমন্ত আত্যন্তিকদ্বং প্রতিযোগিনঃ সংসারত পুনক্ষৎপদ্ত্য-यোগ্যখং, তচ্চ স্বাপমূর্চ্ছাদিব্যবচ্ছেদার্থং বিশেষণং, তদেব সাধরিতৃং সহেতৃ-কন্মেত্যুক্তম্। উক্তং ফলং সম্চিতাদ্ একাকিনো বা কৰ্মণঃ ভাদ্ ইতি তক্তৈব শাস্ত্ৰ-প্রতিপান্থতা ইত্যাশক্ষ্য অভিধেয়নভিধিৎসমানঃ সমাধত্তে—তচ্চেতি । আত্মক্ষান-নিষ্ঠাশেষত্বেন কর্ম্মনিষ্ঠা অত্যোচ্যতে। প্রাধান্তেন তু আত্মজাননিষ্ঠৈবাত্ত প্রতিপায়ত ইতার্থ:। নমু শেবিণী নিষ্ঠা কুতো ন ভবতি ? সন্ত্যাসাৎ কর্মনিষ্ঠারা: শেষদ্বাৎ তত্রাহ—সুব্রেত । সন্ন্যাসন্থারেণ অসক্তদম্ভিতশ্রবণাদে: শেষিণী নিষ্ঠা সিধ্যতি. শেষত্বঞ্চ কর্ম্মণন্তত্ত্ব পরম্পরায়ত্তমিতার্থ:। নমু "মুজ্ঞদানতপ্যকর্ম ন ত্যাজ্ঞাং কাৰ্য্যমেব তদ্"ইতি বাক্যশেবাদ্ অসমুচ্চিত্ৰমাত্মজানমত্ৰ ন প্ৰতিপান্ধতে, নৈত্যাহ —তথেতি। সর্ককর্মসন্ন্যাসপূর্ককমাত্মজাননিষ্ঠারূপং ধর্মং,নিঃশ্রেরসপ্রয়োজনং প্রাপ্তক্তৎ পরামূশতি—ইমুমেবেতি। বক্তভেদীদভিপ্রারভেদাশবাং বারুরভি— ভগবতৈবেতি। "উক্তম্" অমুগীতামু ইতি সম্বর্ষ:। ব্রহ্মণঃ পদং পুর্ব্বোক্তং নিংশ্রেরসং তক্ত বেদনং লাভত্তত্ত বিশিষ্টো † জ্ঞাননিষ্ঠান্ধণো ধর্মঃ সমর্থো ভবতীতার্থ:। रজ্ঞদানাদিবাকাঞ্চ তু তদ্ব্যাখ্যানাবসরে তাৎপর্য্য বক্ষাতে। কর্মত্যাগস্ত ভগবতোহভিপ্রেতদে • বাক্যান্তরনমুগীতাগতনেবোদাহরভি— তত্রৈবেতি। ধর্মাধর্মাপুর্বাসংগগিতে হেত্মাহ—ন চৈবেতি। ! किस्राह्म-সম্বদাভাবাৎ তরির্ব্দ ত্যা পূর্ব।ভ্যান্ অসম্বদ্ধে প্রাপ্তমর্থনাহ—যঃ স্থানিভি।

পূর্বক আত্মজ্ঞান-নিষ্ঠারূপ ধর্ম হইতে হয়'। স্বার ইহাকেই গীর্ভার্ধ-ধর্মরূপে লক্ষ্য করিয়া "অসুগীভাতে" ভগবান্ই ৰলিয়াছেন ;—

"যেহেছু সেই ধর্ম একাপদ জানিবার পক্ষে শ্রপর্যদণ্ড" সেই স্থলেই আবার বলিয়াছেন ;— "কি ধর্মাচারী কি অধন্ম দেবী অধবা শুভাশুভ-কামী (কেইই ঐ

^{* ···} र किश अक्रमें शि उदेव · · । + विनिद्ध = दिनिंडे - । ! व रेडरवि = व र्टि ।

শাৰরভাব্যোপক্রমণিকা।

যঃ স্থাদেকাসনে লীনস্ত্ ফীং কিঞ্চিচন্তর্যন্ ॥"
"জ্ঞানং সন্ন্যাসলক্ষণম্" ইতি চ।
ইহাপি চান্তে উক্তমর্জ্ক্নায়—
"সব্ব ধর্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ্ঞ" ইতি।
অভ্যুদয়ার্থোহপি যঃ প্রবৃত্তিলক্ষণো ধর্ম্মো বর্ণাশ্রমাংশেচাদ্দিশ্য বিহিতঃ, স দেবাদিস্থানপ্রাপ্তিহেতুরপি সন্

আনন্দগিরিকত-টাকা।

বাগাদিবাছকরণব্যাপারবিরহিতত্বং তৃকীমিত্চাতে। কিঞ্চিদ্চিন্তর্মন্ ইত্যস্তঃকরণব্যাপারাভাবেহিভিপ্রেতঃ। বিবিধকরণ-ব্যাপারবিরহিতঃ * সন্ প্রাপ্তকোরোহিকারী কেবলমেক মির্রবিতীয়ে ব্রহ্মণ্যাসনমবস্থানং তত্ত্ব লীনন্ত মিরেব
সনাপ্রিভাগী তাঁৎ তত্ত অসম্প্রজ্ঞাতসমাধিনিঠিত সর্ব্বকর্মত্যাগহেতৃকং জ্ঞানং মৃত্তিহেতৃর্ভবতীতার্মঃ। ন কেবলমন্থগীতাম্বেব বংগাক্তং জ্ঞানমূক্তং, কিন্তু-প্রক্লতেহিগি
শালে সমাপ্রবৃদ্ধরে দর্শিতমিত্যাহ—ইহাপীতি। নহত্ত নিবৃত্তিলক্ষণধর্মাত্মকং
সমন্ত্রাসমাত্মজাসমেব ন প্রতিপাদ্যতে "কুরু কর্মের তন্মাত্মমৃ" ইত্যাদৌ প্রবৃত্তিলক্ষণগর্মাত্মকং
সমন্ত্রাসমাত্মজাসমেব ন প্রতিপাদ্যতে "কুরু কর্মের তন্মাত্মমৃ" ইত্যাদৌ প্রবৃত্তিলক্ষণগর্মাত্মগ্রহাসমাত্মজাসমেব ন প্রতিপাদ্যতে "কুরু কর্মের তন্মাত্মমৃ" ইত্যাদৌ প্রবৃত্তিলক্ষণার্থা গর্মাত্মগ্রহামিতিশান্তর্গ্রহত্বন অহত্র বিহিত্ত্যাপি
তত্ত্ব ন মৃক্তং নোক্ষ্যাধনত্মধিকারে বিধানং দেবাদিস্থানপ্রাপ্রিপ্রের্জ্য ব্রহ্মন্তর্গ্রহত্ব ব্রহ্মনিত্যাই ত্রের্জ্যাই ত্রের্জ্য ব্রহ্মনিত্রির্জ্বাই ব্রহ্মনিত্যাই—স্বৃদ্ধাণিতি। ফলাভিসন্ধিরার ক্রন্তঃ বৃদ্ধিভিন্তির্ভাগি ত্রের্জ্যাই ব্রহ্মিত্যাই—স্বৃদ্ধাণিতি। ফলাভিসন্ধিরার ক্রন্তঃ বৃদ্ধভিন্তির্ভাগি ত্রের্জ্বাই ত্রের্সের্জ্যার ব্রহ্মিত্যাই—স্বৃদ্ধিনিতি। ফলাভিসন্ধিরার ক্রন্তঃ বৃদ্ধি

थावृष्टिनक्ष्म ७ निवृष्टिनक्ष्म = श्रामंत्र क्या ।

ব্ৰহ্মপদ পায় না, কিন্তু) বে, কিছু চিন্তা না করিয়া একাসনে তৃষ্টীভাৰ ভাৰনখন করিয়া লীন হয় (সেই ঐ ব্হহ্মপদ পাইয়া থাকে)"

এম: "বাহার লক্ষণ রন্ন্যাস ভাহাই সেই জ্ঞান" ইভ্যাদি। স্থার এই প্রস্থেত শেষভাগে অর্জ্জনকে বলিয়াছেন; যথা,—

"সমূদর ধন্ম পরিভ্যাগ করিয়া আমারই শরণাগত হও।" ইভ্যাদি। অভ্যুদরের নিমিন্ত যে প্রের্ম্ভিলক্ষণ ধন্ম বর্ণাশ্রমীদিগকে। উন্দেশ করিয়া বিহিত হইয়াছে, ভাষাও দেবাদিগণের স্থান প্রাশ্তির

^{&#}x27; + वित्रविकाः = त्रिकाः = वित्रवी ।

শাহ্বভাহ্যোপক্রমণিকা।

ঈশ্বরার্পণবৃদ্ধ্যা # অনুষ্ঠীয়মানঃ সত্তশুদ্ধয়ে ভবতি ফলাভিসন্ধি-বর্জিভাঃ। শুদ্ধসত্ত্বস্থ চ জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতাপ্রাপ্তিদারেণ জ্ঞানোৎপত্তিহেতুত্বেন চ নিঃপ্রেয়সহেতুত্বমপি প্রতিপদ্মতে। তথা চেমমেবার্থমভিসন্ধায় শ বক্ষ্যতি—

"ব্ৰহ্মণ্যাধায় কৰ্মাণি·····" "যোগিনঃ কৰ্ম কুৰ্বস্থি, সঙ্গং ত্যক্তবৃত্মশুক্তময়ে।" ইতি। (গীতা ৫ অঃ, ১০।১১ শ্লোক।)

ইমং দ্বিপ্রকারং ধন্মং নিঃশ্রেয়সপ্রয়োজনং পরমার্থতত্ত্বং চ বাহ্নদেবাখ্যং পরব্রহ্মাহভিধেয়ভূতং বিশেষতোহভিব্যঞ্জয়দ্ বিশিষ্ট-

আনন্দগিরিকত-টীকা।

ইতি শেবং। প্রবৃত্তিসকণধর্দ্দস্যোক্তরীত্যা চিত্তগুদ্ধিকৈতৃত্বেশ্ব মোক্ষরেতৃদ্ধন
কুতো মোক্ষাধিকারে নির্দেশঃ ভাদিত্যাশব্দাহ—শুদ্ধেতি। প্রতিশব্ধতে
প্রাপ্তকা ধর্ম ইতি শেবং। বছক্তং ফলাভিসন্ধিবর্জ্জিতমীশ্বার্পণবৃদ্ধায়ন্তিতং কর্ম
বৃদ্ধিকরে ভবতীতি তত্র বাক্যশেবমম্বক্লরতি— তথাচেতি। শাল্পভ প্রবেজনং সসাধনমূক্তমন্ত বিষয়ং দর্শরতি—ইম্মিতি। দর্শিতেন ফলেন শাল্পভ নিষ্ঠান্বর্দ্ধারা সাধ্যসাধনভাবং সম্বন্ধে বিবরেণ বিষরবিদ্ধিদিতি বিবক্ষিণাহ— বিশেষত ইতি। এবমম্বন্ধত্ররবিশিষ্টং শাল্পং ব্যাগ্যানাহসিত্যা-

হেতু হইলেও ফলাভিসদ্ধান-বর্জনপূর্বক ও ঈশরাপর্ণবৃদ্ধি-সহকারে
অমৃষ্টিভ হইলে, চিন্তশুদ্ধির হেতু হয়, এবং শুদ্ধ চিন্ত ব্যক্তিকে জ্ঞাননিষ্ঠার বোগ্যভা প্রদান করিয়া (ভাহার) জ্ঞানোৎপশ্তিরও হেতু
হয়—সেইজন্ম উক্ত প্রবৃদ্ধিলক্ষণ ধর্মের নিঃজ্যেস-হেতুদ্ধ প্রমাণিভ
হয়। এই অর্থ লক্ষ্য করিয়াই ভগবান্ (পরে) বলিবেন,—
"বন্দে কর্মকল অর্পণ করিয়া, বভচিত্ত ও জিভেক্সিয়—বোগিগণ,
স্থাসন্তি ভাগ করিয়া আত্মগুদ্ধির জন্ম কর্ম করেন।" ইতি।

নিংভারস প্রয়োজনাত্মক এই গুই প্রকার ধর্ম এবং স্কিন্ধের্ড্ড পরমার্থন্ত বাস্থদেবাধ্য পরব্জাকে বিশেষভাবে অভিব্যুক্ত সুরিহতহে বলিরা এই গীভাশান্তের প্রয়োজন, অভিবেয় এবং সম্পন্ধ,

वेर्यमर्गन्···= क्षेत्रार्थ्···। † ७वा···वकाछ चृष्ठवाठ वकाृ्ष्ठि ।

শঙ্করভাষ্যোপক্রমণিকা।

প্রব্যোজন-সম্বন্ধাভিধেয়বদ্গীতাশাস্ত্রম্। যতস্তদর্থবিজ্ঞানেন সমস্ত পুরুষার্থসিদ্ধিরিতি, অতস্তদ্বিবরণে যত্নঃ ক্রিয়তে ময়া। অত্র চ "প্রতরাষ্ট্র উবাচ ধন্ম ক্ষেত্রে" ইত্যাদিনা। প

পদংহরতি —বিশিষ্টেতি। দিদ্ধে ব্যাখ্যানযোগ্যত্বে ব্যাথ্যরত্বে ফলিতমাহ—
যত ইতি। এবং গীতশান্ধ্রত সাধ্যসাধনভূতনিষ্ঠাদ্ধবিষয়ত্ত পরাপরাভিধেরপ্রয়োদ্ধনবতো ব্যাথ্যরুবং প্রতিপান্ধ ব্যাথ্যাতৃকানঃ শান্ধং তদেকদেশত প্রথমাধ্যারস্য দিতীরাধ্যারৈকদেশদহিতত তাৎপর্য্যমাহ—অত্র চেতি। গীতশান্ধে
প্রথমাধ্যারে প্রথমশ্লোকে কথাসম্বন্ধ প্রদর্শনপরে স্থিতে সভীতি যাবং।

অক্ত শাল্কের প্রয়োজন, বিষয় ও সম্বন্ধ হইতে সম্পূর্ণরূপে পৃথক্, ইহা সিদ্ধ হইতেছে। যেহেতু ইহার অর্থ বিশেষরূপে জানিলে, সমস্ত পুরুষার্থ সিদ্ধ হয়—সেই জন্মই ইহার বিবরণে আমি যত্ন করিতেছি। এক্ষণে "ধৃতরাই উবাচ— ধন্ম ক্ষেত্রে" ইত্যাদি বাক্যদারা বক্ষ্যমাণ প্রকারে গ্রন্থায়ন্ত করা হইতেছে।

উপক্রমণিকা-ভাষ্যের তাৎপর্য্য।

আবৈতবাদ নামে প্রসিদ্ধ হন্ধহ দার্শনিক সিদ্ধান্তটি বুঝাইবার জন্ম আচার্য্য শব্দর প্রস্থানত্তমের ভাষ্য রচনা করিয়াছেন। এই প্রস্থানত্তম অর্থাৎ উপনিষদ, শারীরকস্ত্র এবং গীতাই একণে মূল বেদান্ত শান্ত্র বলিয়া প্রথিত। বেদান্তস্ত্র বা শারীরকস্ত্র এবং দশথানি উপনিষদের উপর আচার্য্য শব্দরের ধে ভাষ্য আছে, তাহা অতীব বিস্তৃত এবং বহুতর শান্ত্রান্তরের সহিত সবদ্ধ বলিয়া, অল্পদিনে এবং অল্ল পরিশ্রমে উহার দ্বারা অবৈতবাদের রহন্ত অবগত হওয়া এক প্রকার অসম্ভব; কিন্তু গীতাভাষ্য তত বিস্তৃত নহে, এবং অন্তান্ত ভাষ্যের স্থায় ইহাছে পূর্ব্রমীমাংসা, এবং বৌদ্ধ-দর্শন প্রভৃতি শান্ত্রান্তরের অবতারণা বিশেষভাবে না থাকায়, তত ছর্ব্বিজ্ঞেয়ও নছে। এই কারণে অবৈত-তত্ত্বান্তসন্ধায়ী ব্যক্তিগণের পক্ষে, গীতাভাব্যের অম্পূর্ণীলন জনায়াসে এবং অন্ত সমন্ত্রের মধ্যে বিশেষ ফলপ্রদ হইয়া থাকে;

^{*} বতক্তদর্ব বিজ্ঞানেন = বতক্তদর্থে বিজ্ঞাতে। † অত্ত্র-- = দিনা = অত্রচ।

भाक्षत्र जारगां भक्तमनिका - जार भर्या ।

এই গীতাভাষ্যের পরবর্ত্তী অধ্যায়সমূহে ভাষ্যকার আচার্ব্য শহর যে কর্মটি গুরুতর প্রয়োজনীয় বিষয়ের অবতারণা করিয়াছেন, তাহা অতি সংক্ষিপ্ত-ভাবে এই উপক্রমণিকা-ভাষ্যে স্থন্দররূপে স্টিত হইরাছে। স্থতরাং গীতাভাষ্যের প্রকৃত তাৎপর্য্য হৃদরঙ্গম করিতে হইলে, এই উপক্রমণিকা-ভাষ্যের তাৎপর্য্যার্থবিষয়ে একটু বিশনভাবে আলোচনা করা আবশ্যক। সংক্ষেপতঃ এই উপক্রমণিকাভাষ্যে আচার্য্য শঙ্কর চারিটি অভি হরবগাহ বিষয় স্থত্তরূপে অব হারণা করিয়াছেন, ষণা, ১ম—ঈপ্রত্তর, ২র—অবতার-রহস্ত, ৩য়—ক্ষানকর্ম্ম-সমুচ্চর-বাদ, এবং ৪র্থ—নির্মাণ্ডর। পরবর্ত্তী ভাষ্যগ্রন্থে এই চারিটি বিষয়েরই বিস্তৃতবিবরণ হারা আচার্য্য শঙ্কর প্রতিপাদন করিয়াছেন যে, সমগ্র গীতাশাস্ত্রেরও এই চারিটি বিষয়ই মৃথ্য প্রতিপান্ত। এই চারিটি বিষয়-সম্বন্ধে অস্কুক্রমণিকা ভাষ্যে আচার্য্য শঙ্কর যাহা বলিয়াছেন, এই স্থানে যণাক্রমে সংক্ষেপে তাহারই আলোচনা করা হইতেছে।

১ম। ঈশ্বরতত্ব। অফুক্রমণিকাভাব্যের প্রথমেই ভাষ্যকার শক্বরাচার্য্য দ্বীরতত্ত্ব কি, তাহা বুঝাইবার জন্ত একটি পৌরাণিক শ্লোক উদ্ধৃত করিদ্বাছেন। এ লোকটির অমুবাদ এই বে—"নারায়ণ অব্যক্ত (অর্থাৎ মৃদ প্রকৃতি) হইতে পর। অব্যক্ত হইতে অও (অর্থাৎ ব্রহ্মাও) সমুৎপর। এই সমস্ত लाक जनः मधनीभा रमिनी, बन्ना अपरा विश्वमान"। जह स्मारकत्र मरधा নারায়ণ এই শল্টির অর্থ-টাকাকার আনন্দগিরি এই ভাবে করিয়াছেন যথা—'নরশব্দেন চরাচরাত্মকং শ্রীরঙ্গাতমুচ্যতে। ত**ত্র নিভাসন্নিহিভাঃ** চিলাভাসা জীবা নারা ইতি নিরুচ্যস্তে তেষাম্ অয়নম্ আশ্রয়ো নিরামকো-২ন্তর্গ্যামী নারায়ণ ইতি।" ইহার অর্থ এই যে, স্থাবর ও জর্ম এই দিবিধ শরীরসমৃহই নর শব্দের অর্থ। সেই দিবিধ শরীরসমূহে নিভাসল্লিছিত বে সকল চিদাভাস অর্থাৎ জীবসমূহ, তাহারাই নার এই শ্লের **দা**রা অভি-हिंछ हरेंग्रा थात्क; त्मरे बीवमगुरहत विनि अन्नन अर्थाद आधान-निन्नामक ও অন্তর্যামী, তিনিই নারায়ণ। ইহা দারা—বুঝা গেল বে, স্থথ-চুঞ্খ-ভোজা ৰলিরা প্রসিদ্ধ অনস্ত জীব সমষ্টির যিনি আশ্রয়, অর্থাৎ যিনি জীবসমূহের আত্মরূপে অবস্থিত হইয়া, তাহাদিগকে তাহাদের সদসৎ কর্ম্মের ফলভোগ করাইতেছেন, যাঁহার স্বাভেই এই জীবনিবহ সন্তাবান, অর্থাৎ প্রতিবিশ্বভূত চিদাভাস

শাহরভায়োপক্রমণিকা-তাৎপর্য।

সমূহের পক্ষে বিনি বিষয়ানীর আশ্রয়, তিনিই নারারণ। পুথক পুথক ভাবে প্রতীত জীবসমন্তির বিনি একমাত্র অধিষ্ঠান, তাঁহার সহিত এই ভোগ্য জগতের गरिक कि मश्क, कारारे वृक्षारेवात बना वना स्टेरकट्ट व किनि "शाता-হ্ব্যক্তাং" অর্থাৎ তিনি অব্যক্ত মূল প্রকৃতি, অর্থাৎ বন্ধ ভাবে অবস্থিত কারণরণ জড় শক্তি হইতেও প্রভার অর্থাৎ তাহার অধিষ্ঠান। সেই অব্যক্ত কাহাকে বলে ? তাহার পরিচর দিতেছেন বে, "অওমব্যক্তাসম্ভবস্" অও সেই चवारकत कार्या जबर रमटे चरछत मस्या मकन लाक जबर मधनीना सिनी প্রথিষ্ট রহিরাছে। ফলে কি দাঁড়াইল? স্থল ও স্ক্রভাবে প্রবিতক্ত এই ক্ষিতি জন তেজঃ পবন ও আকাশরপ অসীম জনম্ভ প্রেপঞ্চরপ বড়প্টি-মর্থাৎ ভোগ্য-বগৎ এবং ইহার ভোকুরূপে প্রবিভক্ত **অনভ** অপরিনিত কোটি কোটি চিদাভাসরপ জীবসমষ্টি,-এই দ্বিধ বন্ধর অর্থাৎ বাবভীর ভোগ্য ও ভোক্তৃবন্তর বিনি অধিঠান, বাহার সভার ইহারা नकरनरे मसायुक्त, रमरे मराजत मश—मराजात माजा, मर्साचा मिक्रमानमरे পরমেশ্বর। বিনি কোন দেগবিশেব বা কোন কালবিশেব বারা পরিচ্ছির নহেন, অৰ্থচ সকল বস্তুরই যিনি আত্মা, যাঁহা হইতে পৃথক্ ভাবে কোন বস্তুই থাকিতে পারেনা; স্থতরাং বিনি অণু হইতেও অণুতর, অথচ মহৎ हरेए**ड महस्त्वत्र, त्रहे नर्स्**थमारन्त्र अक्माख श्रह्मत्र नर्साचाहे नात्रात्रन्। ভিনিই সকলের আত্মা; স্থতরাং তিনিই প্রমেশ্বর। নিগ্রহান্তগ্রহসমর্থ সম্রাটের ন্যার কোন নির্দিষ্ট দেশে পৃথক্ ভাবে বিছমান থাকিরা, নিজ্ঞাক্তি দারা क्षेत्रत अहे जीवनमंद्रित नित्रमन कतिएछएएन, अहे व्यकात निकास महेच्छनानीत অনুযোগিত নছে। ঈশার কোন জীব হইতেই পৃথক নছেন, প্রত্যেক জীবের क्रबद्ध जार्च कर्ति नर्समा विश्वमान शांकिया, जीवकालहे छिनि वहे छाना सन्तरहरू ভোকা। ব্যষ্টিভাবে তিনি আপনাকে পৃথক্ পুণক্ জীবরূপে প্রকৃতিত ক্রিলেও ममहिछार्य वाखिवक छिनि धक ७ देशायत नित्रखा ; छांशात्रहे नखात्र जीवनिवह मुझीबान, जीत्वत्र कानक्रण शृवक् मछा नाहै। खाहात्र शत्र मेचद्वत्र धहे छात्रक आवात कीरवत अकारनत উপत निर्वत करत। बीव, मेचत-कृशांत अकानवृक्त हरेल, आत्र मेचरतत्र महिल लाहात वह ममहिराहिकान शास्त्र मा क्रम स क्रम অনিউরি দেশকাগাদি-পরিচ্ছেদ-পরিশৃত সভামাতে পর্যাবসর হয়। এই এজ বা আত্মতত্ত্ব এবন এক অপূর্বভাব স্থাছে, বাহাতে তিনি একাধারে একই কালে

শাঙ্করভাব্যোপক্রমণিকার তাৎপর্য্য।

জীব ও ঈশ্বরভাবে বিরাজিত হন। জীবরূপে তিনি অজ্ঞানোপহিত ও ব্যষ্টিভাবাপর, এবং ঈশ্বরূপে তিনি অচিস্তামারাশক্তি দ্বারা অধিষ্ঠিত ও সমষ্টিভাবাপর হইরা সর্বশক্তিমান্ হন, এইমাত্র বিশেষ। জীব মুক্ত হইলে জীবেশ্বর ভাব থাকে না, এবং জীব, বতক্ষণ বদ্ধ থাকে, ততক্ষণ তাহার ঈশ্বরাস্থ্রাহ লাভ ভির কোন গত্যস্তরও থাকে না। এই ঈশ্বরভাব জীবের অজ্ঞানের উপর নির্ভর করিলেও ঈশ্বর, সর্বজীবের ও জগতের আত্মস্বরূপে আশ্রর, সকলের বিধাতা ও নিরস্তা, কারনিক বস্তু নহে। এই প্রকার সিদ্ধান্তই ঈশ্বর সম্বন্ধে অহৈতবাদীর সিদ্ধান্ত। ইহাই সংক্ষেপে স্ট্রনা করিবার জন্ম আচার্য্য শঙ্কর উপক্রমণিকাভান্তের পূর্ব্বে পৃথক্ সঙ্গলাচরণ না করিয়া ঈশ্বরতত্ব-প্রতিপাদক একটি পৌরাণিক শ্লোক উদ্ভুত করিয়া, ফলতঃ ঈশ্বর-শ্বরণরূপ মঙ্গলাচরণই করিয়াছেন। গীতার প্রবর্ত্তী অধ্যায় সমূহেও এই ভাবেই ঈশ্বরত্ব প্রপঞ্চিত হইরাছে।

২য়। অবতারতক্ক। অবতার-তত্ত্বের অবতারণা-প্রসঙ্গে এই উপক্রমণিকাভাগ্যে আঁচার্য্য বলিয়াছেন—"সচ ভগবান্ জানেখর্যাশক্তিবলবীর্য্যতেকোভিঃ
সদা সম্পন্নপ্রিগুণাত্মিকাং বৈষ্ণবীং স্বাং মায়াং মৃল্প্রকৃতিং বশীক্ত্য অকোহব্যয়ো
ভূতানামীখনো নিত্য-শুদ্ধ-বৃদ্ধ-মৃক্ত-স্বভাবোহপি সন্ মায়য়া দেহবান্ইব জাতইব
চ লোকান্বগ্রহং কুর্ময়িব লক্ষ্যতে"।

এই ভাষ্যের অমুবাদ যথাস্থানে প্রদন্ত হইন্ধাছে। এথানে তাহার পুনক্লবেশ
নিপ্রব্রোজন। এক্ষণে ইহার দ্বারা অবতারসম্বন্ধে আচার্য্য শহরের কি
অভিপ্রায়, তাহা এই ভাষ্যের সাহাষ্যে ব্রিবার চেষ্টা করা যাইতেছে—ভাষ্যকার
বলিতেছেন, সেই ভগবান্ যদিও নিভ্যুক্তমুক্তমুক্তমভাব—অর্থাৎ তিনি নিভ্যুক্তমুক্তমভাব — অর্থাৎ তিনি নিভ্যুক্তমুক্তমভাব বলিয়া—কোনপ্রকার অনিভ্যুক্তমুক্তমভাব কদাপি সুভ্বুপর নহে।
তিনি ক্তমুক্তাব বলিয়া, তিনি কোনপ্রকার কারণের দ্বারা নিয়্ত্রিভ নহেন; তিনি
ব্রম্বভাব বলিয়া, তিনি সর্কাণ জ্ঞানসভাব; জড়ক্তপতা ভাঁহাতে কখনও আনিতে
পারে না; তিনি মুক্ত স্বভাব, তিনি অজ্ঞান কাম ও কর্মের পরতম্ব কোন সমরেই
হইতে পারেন না।

এখন-ইহাই বুলি হইল প্রমেখরের স্বভাব, তবে তিনি এই সংসারে সম্ব্যাদি
মুর্বিপরিপ্রহ করিয়া অবতীর্ণ হইবেন, ইহা কিরপে সম্ভবপর হয় ?—ইহার উত্তর
দিতে কাইরা আচার্য্য শহর বলিতেছেন—"তিনি মারাপ্রভাবে বেন দেহবাৰ হন,
বেন তিনি ক্লমগ্রহণ করেন, বেন তিনি লোকনিবহের প্রতি সক্রগ্রহ করিতেছেন,

শাহরভাষ্যোপক্রমণিকার তাৎপর্যা।

এইরূপে লোকে তাঁছাকে বুনিয়া থাকে"—মাবার একটু পূর্বেই আচার্য্য বিলয়াছেন—বন্ধদেব হইতে দেবকীতে তিনি অংশৃতঃ আবির্ভূত হইয়াছিলেন। কেন মাবিত্ত হইয়াছিলেন?—তাহার উত্তর স্বরূপে তিনি আবার বিলয়ছেন—
"ভৌমদ্য ব্রহ্মণো ব্রাহ্মণস্বস্য রক্ষণার্থং"—ভৌমব্রহ্ম অর্থাৎ ব্রাহ্মণকে রক্ষা করিবার ক্রপ্রাহ্মন (ভৌমদ্য ব্রহ্মণ করিবার কি প্রয়োজন?—ইহার উত্তর ভাষ্যকার এইরূপ দিয়াছেন যে "ব্রাহ্মণস্বস্য রক্ষণেন রক্ষিতঃ স্যাদ্বৈদিকো ধর্মঃ, তদধীনভাদ্বির্বাহ্মনতেদানাম্"—মর্থাৎ ব্রাহ্মণতের রক্ষা দ্বারা বৈদিকধর্ম রক্ষিত হইয়া থাকে; ব্রেহেতুক বর্ণাশ্রমবিভাগ বৈদিকধর্মের উপর নির্ভ্র করিতেছে। এই কারণে বৈদিকধর্ম সর্বাথা রক্ষিত হওয়া আবশ্রক।

এখন এই অবতার-রহস্য ব্যাখ্যা করিতে যাইয়া, আচার্য্য শহর যে কয়টি কথা এন্থলে বলিলেন, সংক্ষেপতঃ তাহার তাৎপর্য্য এই দাঁড়াইতেছে যে, বর্ণাশ্রম ধর্মের রকা করিতে হইলে, ব্রাহ্মণত্বের রকা আবশুক —এই ব্রাহ্মণ্ডকে রকা করিবার অন্ত তণবান্ মন্থ্যমূর্ত্তিতে দেবকীর উদরে বস্থদেব হইতে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন; কিন্তু, তাঁহার এই জন্মপরিগ্রহ অন্তান্ত জীবের জন্মপরিগ্রহের ন্তায় ব্যবহারিক নহে, ইহা মান্নিক অর্থাৎ তিনি বাস্তবিক জন্মগ্রহণ করেন নাই; কিন্তু তদীয়মায়াপ্রভাবে লাকে বিবেচনা করিয়াছিল, যেন বাস্তবিকই তিনি জিবারাছেন। আর তিনি বাস্তবিক না জন্মিলেও লোকের মনে করার উপরই তাঁহার জন্ম নির্ভর করে। কারণ তিনি সভাসতা জন্মিলেও যদি লোকে তাহা না **বুঝিতে পারে, তাহা হইলে, তাঁ**হার সে জন্মগ্রহণই রুণা। যাহা আমার জ্ঞানের বিষয় হয়, তাহাই আমি "আছে" কি "নাই" বলিতে পারি: নচেং সে সম্বন্ধে আশাদের কোন কথা বলিবারই অধিকার নাই। সভার্গতাই যদি ভগবান্ তাঁহার অচিন্তাশক্তির সাহায্যে কোন ব্যক্তিবিশেষের উপর তাঁহার অবতরণজ্ঞান উৎপাদন করেন, এবং তাহা হইনেই ধর্ণন তাঁহার উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে, তথন তাঁহার ৰাম্ভবিক জন্ম স্বীকারের আবশুকতা কি ? ঈশবের অবতার গ্রহণ, তাঁহার শক্তিরই (थेना मांब ; आत मक्तित (थेना विविद्यार देशांदक मान्निक वााशांत वृता देत । আচার্য্য শ্রন্তর উপক্রমণিকাভাব্যে সংক্ষেপতঃ ইহাই বলিয়াছেন। একণে দেখিতে হইবে, ইহার আরও কিছু তাৎপর্য্য আর্ছে কি না ?—

ইহার অপর তাৎপর্য্য এই বে,পরনেখর স্পষ্টির পূর্কাবস্থার "আমি এই জীবরূপে সংমারী হইরা অধ্যতঃশ ভোগ করিব" এইপ্রকার বে সংকল করিয়া প্রাকেন, সেই

শান্ধরভায়োপক্রমণিকার তাৎপর্য্য।

সংকল্পের পরিণতিই জীবস্টি। তাঁহার এই জীবভাবে বিষয় ভোগ করিবার সংকল্প যতদিন কার্য্য করিবে, ততদিন মধ্যে মধ্যে এই জীবস্টিকে রক্ষা করিবার জন্ম অবতার হওয়াও একান্ত স্থাবশুক।

কেন তাহা বলি—জীবস্ষ্টকে রকা করিতে হইলে, জীবের ভোগাস্টির আবশুক্তা আছে; ইহা কেইবা না স্বীকার করিবে? কিন্তু ভোগ্যস্টির মূল উপাদানে বে প্রকৃতি বা অব্যক্ত, তাহা ত্রিগুণাত্মক। বতকাল স্টে পাকে, ততকাল বিষমভাবে পরিণতিই এই অব্যক্তের স্বভাব। এইস্বভাব অমুদারে আমাদের মন: রাগদ্বের ও মোহ প্রভৃতি রাজ্বস ও তামসভাবের ·দ্বারা প্রতিক্ষণ আক্রান্ত হয়: কিন্তু তথাপি মধ্যে মধ্যে **সাত্তিক**রন্তির বিকাশও হঁইয়া থাকে ; আরু সান্ত্রিকরতির বিকাশ অপেক্ষা রাজ্ঞ্য ও তামসর্ত্তি'র विकाश अधिक পরিমাণে হইয়া পাকে—ইহা স্বাভাবিক—ইহাও আমাদের প্রতাক্ষদির। মনুযাস্টের উৎকর্ষ রক্ষা করিতে হইলে, অর্থাৎ পশুস্টি হইতে মমুন্তুস্ষ্টিকে যথার্থ পৃথক্ভাবে রক্ষা করিতে হইলে, মুস্থাগণের মধ্যে সাত্ত্বিক বৃত্তির বাহাতে প্রাচুর্যা, হয়, তাহাবও একান্ত সাব**শুক। 'সান্ত্বিকৃত্তি'র** প্রাচুর্যাই মহুযাসমাজে প্রকৃত ব্রাহ্মণত। আদর্শস্বরূপ বর্ণাশ্রম-ধর্মই মহুযাজাতির পূর্ণ উৎকর্ষ। সেই উৎকর্ষ, ত্রাহ্মণত্বের অর্থাৎ মহুয়জাতির মধ্যে সান্ধিক বৃত্তির প্রাচুর্য্যের উপরই নির্ভর করিয়া পাকে। এই ব্রাহ্মণুম্ব যথনই হ্রাস প্রাপ্ত হর, তথনই বর্ণাশ্রমধর্মত মলিন হইয়া পড়ে। বর্ণাশ্রম ধর্ম মলিন হওয়াও বা, আর মমুখ্যগণের মধ্যে পণ্ডভাব-রুদ্ধি হওয়াও তা। "আমি মুমুখ্যভাবে ভোগ করিব," স্টির পূর্বে পরমেশরের এই বে সুংকল, তাহা যতকণ কার্য্য করিবে, ততকণ **শন্দ্যাশনাজের উৎকর্বরক্ষার জন্ম ব্রাহ্মণ্য ধর্মের রক্ষা একান্ত আবশ্রক ; কিঙ্ক** ত্রিগুণাত্মিকা প্রকৃতির নিয়ত পরিবর্ত্তনশীল স্বভাববশতঃ রাজস ও'তামস র**ভিগুলি** উদিত হইনা, এই ব্রাহ্মণ্যকে বিপর্যান্ত করিবার চেষ্টা অবিরতই করিতেছে। ুৰ্থন এইভাবে রাজদ ও তামদ বৃত্তিগুলি অত্যন্ত প্রবল ইইয়া একেবারে ব্রাহ্মণ্য ধর্মের বিলোপ করিতে উন্নত হয়, তখনই দেখিতে পাওয়া যায়, একজন মহাপুরুষ উপান্ন रुरेशा वत्नत बाता, উপদেশের बाता ও मृष्टीरस्त बाता मश्याम्यात्वत माना तमरे প্রবলভাবে অভিব্যক্ত রাজ্য ও তামস বৃত্তিগুলিকে প্রশমিত করিয়া, সাধিক ইতির প্রাচ্ব্য বিধান করিয়া চলিয়া যা'ন। বে মহাপুরুষ এইপ্রকার কার্ব্য कतिता छिनता बा'न, छाशतक अनेच वा मश्चा तुना यात्र ना ; कातन, डांशत्छ त्व

শাক্ষরভাষ্যোপক্রমণিকার তাৎপর্য্য।

সকল শক্তির প্রকাশ পায়, সেই সকল শক্তি অন্ত কোন মহয়ে দেখিতে পাওয়া यात्र ना। **তাঁহাতে** যে প্রকার জ্ঞানের বিকাশ দেখা যায়, সেই প্রকার সর্ববস্তু-বিষয়ক নির্মান জ্ঞান অন্ত কোন মহুয়ো সম্ভবপর নহে । আরও আশ্চর্য্যের বিষয় এই বে. মহুষ্য মাত্রেরই সাধারণ ধর্ম্ম যে স্বার্থপরতা এবং অহং-ম্যাভিমান, সেই মহাপুরুষে সেই স্বার্থপরতা বা অহং-ম্যাভিনানের লেশনাত্রও দেখিতে পাওয়া ষায় না। এজন্ত তাঁহাকে জীব বা মুম্য বলা চলে না। অসহ গ্রীম হইলে, ভৌতিক রাজ্যে যেমন বর্ষা হওয়া স্বাভাবিক, রাত্রির পর যেমন দিন হওয়া স্বাভাবিক, দেই প্রকার আধ্যাত্মিকরাজ্যে রাজ্ম ও তাম্স বুত্তির অতিশয় আধিক্য হইলে, সাত্তিক প্রবৃত্তির পুন:স্থাপন দারা বর্ণাশ্রমধর্মের রক্ষার জন্ম সর্বাশ্তিময় প্রমেশবের মায়িক বিগ্রহধারণপূর্ব্বক অবতার হওয়াও বিশ্বস্টির একটি অথগুনীয় নিয়ম। বে সকল উপায় দারা শম. দম. তপঃ, অহিংসা, ভূতদরা, উৎসাহ, ধৈষ্য প্রভৃতি সাব্দেক গুণসমষ্টির জগতে প্রতিষ্ঠা হইয়া থাকে; সেই মকল উপায়ই এই অবতারের দর্মদা বশীভূত হইয়া থাকে। ইহাই বুঝাইবার জস্ত আচার্য্য শবর বলিগাছেন "বৈকাবীং স্বাং মারাং মূলপ্রকৃতিং বশীকৃত্য" "মূলপ্রকৃতি রূপ স্বীষ্ণ বৈষ্ঠ্বী মান্নাকে বশীকৃত করিয়া" তিনি অবতীর্ণ হইয়া থাকেন; কারণ বিষ্ণুর শক্তি সঞ্চারণ-প্রধানা। এই কথাই মূলেও উক্ত হইয়াছে। যথা—"যদা যদা হি ধর্মক মানির্ভবতি ভারত। অভ্যুখান্মধর্মক তদাআনং স্কাস্যহ্ম্^ত॥ "ব্ধনই ধর্ম্মের মানি ও অধর্মের বৃদ্ধি হইবে, তথনই আমি অবতীর্ণ হইয়া থাকি।"

জ্ঞান কর্ম্মের অনমূচ্য় ও মোক স্বরূপ বিষয়ে আচার্য্য শহর পরবর্ত্তী ভাষ্যে আতি বিস্তৃত ভাবে আলোচনা করিয়াছেন, এই জন্ম ঐ ছুইটি বিষয়ের এথানে পৃথক আলোচনা করা হইল না।

প্রথমোহধ্যায়ঃ।

-ধৃতরাষ্ট্র উবাচ।

ধর্মক্ষেত্রে কুরুকেত্রে সমবেত। যুযুৎসবঃ। মামকাঃ পাগুবাশৈচব কিমকুর্বত সঞ্জয়॥ ১

সঞ্জয় উবাচ।

দৃষ্ট্ব। তু পাগুবানীকং বৃঢ়ং প্রর্যোধনস্তদা। আচার্য্যমুপসঙ্গম্য রাজা বচনমত্রবীৎ॥ ২

- ১। অবয়:। ধৃতরাষ্ট্র উবাচ—(হে) সঞ্জয়! য়য়ৢ৻সবঃ (বোদয়ৄয়িচছবঃ সন্তঃ)
 ধর্মক্ষেত্রে কুরুকেত্রে সনবেতাঃ (মিলিতাঃ) মামকাঃ (মংপ্রাঃ) পাগুবাঃ চ এব
 কিম্ অরুর্বত ? (কুর্বন্তি আ १)॥ >
- ১। ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন—হে সঞ্জর, যুদ্ধ করিবার অভিলাবে ধর্মক্ষেত্র কুরুক্ষেত্রে মিলিত হইয়া আমার পুত্রগণ ও পাড়তনরগণ কি করিল?॥ ১
- ২। অষয়:। পাগুবানীকং (পাগুবদৈয়ং) বাুঢ়ং (ব্যুহরচনয়া অধিষ্ঠিতং) দৃষ্ট্র। (অবলোক্য) রাজা হুর্যোধন: তদা আচার্য্যন্ (বেলাণ্ম্) উপদক্ষ্য (বিনম্নেল উপস্থত্য) বচনম্ (ইদং বাক্যম্) অপ্রবীৎ (অকণয়ৎ)॥ ২
- ২। সঞ্জর বলিলেন—পাণ্ডবনৈক্তকে ব্যুহাকারে সজ্জিত দেখিয়া সেই সময় রাজা হুর্য্যোধন আচার্য্য জোণের নিকটে গমন করিয়া বলিতে লাগিলেন॥ ২

আনন্দগিরিকুত-টীকা।

- ১। তবৈষা অক্ষরষোজনা—গৃতরাষ্ট্রো হি প্রজাচকুর্বাহ্নচকুরভাবাদ রাহ্মর্থং প্রত্যক্ষিত্মনীশ: সন্ অভ্যাসবর্তিনং সঞ্জয়মাত্মনো, হিতোপদেন্তারং পৃচ্ছতি— ধর্মাক্ষেত্র ইতি। ধর্মান্ত তবু ক্লেন্ড কেত্রম্ অভিবৃদ্ধিকারণং যহচ্যতে কু ক্লেক্ষেত্র-ইতি। তত্র সমবেতাঃ সঙ্গতাঃ যুত্ৎসবো বোদ্ধ্ কামান্তে চ কেচিন্মদীয়াঃ হুর্গ্যোধনপ্রভ্তয়ঃ পুাগুবাশ্চাপরে যুধিষ্ঠিরাদয়ন্তে চ সর্কে যুক্ত্রে সঙ্গতাঃ ভূতা কিম্
 অকুর্কত (ক্রতবন্তঃ)॥ ১
- र। কিনুস্থদীরং প্রবলং বলং প্রতিলভ্য ধীরপুরুবৈভীমাদিভিরধিষ্ঠিতং পরেষাং ভয়মাবিরভূৎ, বদ্বা পক্ষরহিংসানিমিত্তাধর্মভ্যুমাসীদ বেন এতে বুদ্ধার্পরমে-

পশ্যৈতাং পাণ্ডুপুত্রাণামাচার্য্য মহতীং চমুস্। বৃঢ়াং ক্রপদপুত্রেণ তব শিয়েণ ধীমতা॥ ৩

- ৩। হে স্বাচার্য্য, স্বাপনার শিয়—ক্রপদন্পতির পুত্র ধীমান্ গুট্চ্যুয়ের দারা বিরচিত ছুর্ভেম্ব ব্যুহরচনায় সজ্জিত, পাঙুপুত্রগণের এই বিশাল দৈঞ স্বৰোকন ক্রন॥৩

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

রয়িতি, এবং পৃত্তপরবশশু * পৃত্তসেহাভিনিবিষ্টশু গৃতরাষ্ট্রশু প্রশ্নে সঞ্জয়শু প্রতিব্যান দৃদ্যে ত্যাদি। পাগুবানাং ভয়প্রসঙ্গো নাস্তি ইত্যেতং "তু" শন্দেন খোত্যতে। প্রভ্যুত হুর্যোধনস্থৈব রাজ্ঞো ভয়ং প্রভ্তং প্রাহর্জভ্ব। পাগুবানাং পাগুস্তানাং য়্ধিট্রনাদীনাম্ অনীকং সৈশুং ধৃইছ্যুমাদিভিরতিষ্ঠইর্ত্হাধিটিতং দৃষ্ট্রা প্রত্যক্ষণ প্রতীত্য অন্তর্ভদরো হুর্যোধনো রাজা তদা তন্তাং সংগ্রামোদ্যোগাবস্থামাম্ আচার্য্যং দ্রোণনামানম্ আয়নঃ শিকিতারং রক্ষিতারঞ্চ লাখন্ উপসংগম্য তদীয়৲ সমিপং বিনয়েন প্রাপ্য ভারোদ্বিগ্রহ্বদয়ত্বেহপি তেজস্বিদ্যাদেব বচনমর্থ-সহিতং বাক্যমুক্তবানিত্যর্থ:। ২

০। তদেব বচনমুদাহরতি—প্রেণ্যুতি। এতামম্মদভ্যাসে মহাপুরুষানপি ভ্বৎপ্রমুধানপরিগণয় ভরলেশশৃন্তাম্ অবস্থিতাং চম্মিমাং সেনাং পাঙুপ্তৈর্গ্ বিপ্তিরাদিভিরানীতাং মহতীম্ অনেকাক্ষোহিণীসহিতাম্ অক্ষোভ্যাং পণ্য ইতি আচার্য্যং
ছর্ব্যোধনো নির্ছক্তে। নিরোগদারা চ তমিন্ পরেবাম্ অবক্সাং বিক্সাপরন্ ক্রোধাতিরেকন্ উৎপাদরিত্ম্ উৎসহতে। পরকীরসেনায়া বৈশিষ্ট্যাভিধানদারা পরপক্ষেহপি
ক্ষণীরমেব বলমিতি ক্তরন্ আচার্য্য তরিরসনং ক্ষরমিতি মন্তানঃ সন্ আহ—
ব্যুঢ়ামিতি। রাজ্যে ক্ষপদন্ত প্রস্তব চ শিক্ষো ধৃষ্টগুল্মা লোকে খ্যাতিম্পগতঃ
ক্ষরক্ষ শক্তান্তবিদ্যাসম্পরে। মহামহিমা তেন ব্যুহমাপাত্ত অধিষ্ঠিতানিমাং চমুং
ক্ষিত্তিন প্রতিগন্ধনে কিমিতি বা মৃত্যুদীতার্থঃ॥ ৩

 [&]quot;প্রপরবশস্ত প্রক্ষেহাভিনিবিইস্ত" ইত্যর—"প্রপরবশস্তাভিনিবিইস্ত" ইতি বা পাঠ:।

অত্র শূরা মহেধাসা ভীমার্জ্বনসমা যুধি।

যুযুধানো বিরাটশ্চ ক্রপদশ্চ মহারথঃ ॥ ৪

ধৃষ্টকেতুশ্চেকিতানঃ কাশিরাজশ্চ বীর্য্যবান্।
পুরুজিং কুন্ডিভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নরপুঙ্গবঃ ॥ ৫

যুধামন্যুশ্চ বিক্রান্ত উত্তমোজাশ্চ বীর্য্যবান্।

সৌভদ্রে। দ্রোপদেয়াশ্চ সর্ব্রেব মহারথাঃ ॥ ৬

৪—৬। অবর:। অত্র (পাগুবদেনারাং) শ্রা: মহেশাসা: (মহাধমু:শালিন:) যুধি (যুদ্ধে) ভীমার্জ্নসমা: (বর্ত্তন্ত ইতি শেষ:)। [কে তে
ইত্যাহ] মহারথ: যুর্ধান: বিরাট: চ ক্রপদ: চ। [তথা] বীর্য্যান্ খৃষ্টকেতৃ:
চেকিতান: কাশিরাজশ্চ। নরপুলব: পুরুজিং কুন্তিভোজ: শৈব্য: চ। বিক্রান্ত:
যুধামন্ত্য:, বীর্য্যান্ উত্তনোজা:, সৌভদ্র: (স্বভ্রাপুত্ত: অভিমন্ত্রা:) দৌপদেয়া:
চ (দ্রৌপদীপুত্রা:) সর্বত্ব মহারথা: ॥ ৪—৬

৪—৬। এই পাণ্ডব-দেনার মধ্যে, বীরগণ মহাধ্যুদ্ধারী ও বৃদ্ধে ভীম ও অর্জ্জুনের সদৃশ; [তন্মধ্যে] যুব্ধান, বিরাট ও জ্ঞপদ মহারথ এবং বীর্য্যবান্ ধৃষ্টকেত্,
ঢেকিতান ও কাশিরাজ; নরশ্রেষ্ঠ পুরুজিং, কুছিভোজ ও শৈব্য; বিক্রমশালী
ব্ধামন্য; বীর্য্যবান্ উত্তরোজাঃ; স্থভ্ডাতনর অভিমন্ত্য এবং জৌপদীর প্রগণ—
সকলেই মহারণ্॥ ৪—৬

আনন্দগিরিকৃতটীকা।

৪—৬। অন্তেহণি প্রতিপক্ষে পরীক্রমভাজো বহবঃ সন্তি ইত;ছপেক্ষণীয়বং পরপক্ষপ্ত বিবক্ষরাহ—আন্ত্রেতি। অতাং হি প্রতিপক্ষভূতারাং দ্বেনারাং শ্রীঃ বর্ম অভীরবঃ শন্ত্রান্তকুশলাঃ ভীমার্জুনাভ্যাং সর্বসম্প্রতিপক্ষভূতারাং দ্বেনারাং শ্রীঃ ব্রুম অভীরবঃ শন্ত্রান্তকুশলাঃ ভীমার্জুনাভ্যাং সর্বসম্প্রতিপরবীর্ব্যাভ্যাং ভূল্যা যুক্ষভূমাবৃপলভাত্তে। তেরাং যুক্ষপোণ্ডীরং বিশদীকর্ত্বং বিশিন্তি—মহেলাসা ইতি ইবঃ অততে অন্মিরিতি ব্যুৎপত্যা ধয়তত্ত্তাতে। তচ্চ মহদভৈরপ্রযুগ্ধ তদ্বেবাং তে রাজানত্তথা বিবক্যাত্তে। তানেব পরসেনামধ্যমধ্যাসীনান্ পরপক্ষাবহুর্গানগোরাজা বিজ্ঞাপরতি—যুমুধান ইত্যাদিনা সোজালে। ক্রেপিদেরাক্ষেত্তাত্তন । * তেরাং সর্বেবামপি মহাবলপরাক্রমভাক্ষাদ্ অন্তপেক্ষ্যন্থং প্রবিবক্ষতি স্ব্বি-এব্রিত। ৪—৬

कारखनै।—्टिन्।- छारखन। किक वृहेरकजूतिक लाहेन्। एक्शं--।

অস্মাকস্ক বিশিষ্টা যে তান্নিবোধ দিজোভন।
নায়কা মম সৈতাস্ত সংজ্ঞাৰ্থং তান্ ব্ৰবীমি তে॥ ৭
ভবান্ ভীশ্বন্দ কৰ্ণন্দ কৃপন্দ সমিতিঞ্জয়ঃ।
অশ্বথামা বিকৰ্ণন্দ সৌমদ্ভিস্তথৈৰ চঞ্চ ॥ ৮

৮। অধ্যা। [কেতে ইত্যাহ] ভবান, ভীয়া (পিতামহা), চ কর্ণা, চ ক্রপা, চ সমিতিঞ্জা, অখপামা, বিকর্ণা (মদ্বাতা), চ সৌমদ্ভিঃ (সোমদ্ভক্ত পুত্রো ভূরিশ্রবাঃ) তথৈব চ (সর্বাত্রব এতে মহারখাঃ)।

৮। [বণা,—] আপনি, পিতামহ ভীন্ন, কর্ণ, সমিতিঞ্জর, রূপ, অর্থখামা, বিকর্ণ ও সোমদত্ততনর (ভূরিশ্রবাঃ)।

৭। সৰয়:। হে বিজ্ঞান্তম! সন্মাকং তুবে বিশিষ্টা: (প্রধানা:) নন সৈন্তক্ত নায়কা: [সন্তি] সংজ্ঞার্থং (বিশেষপরিচয়ার্থং) তান্তে (তুভ্যং তব সনীপে বা) ববীনি (কথরানি) তান্নিবোধ (অবধারয়)।

৭। আমানের মধ্যে প্রধান যে সকল আমার সেনানায়ক আছেন, বিশেষ-ভাবে পরিচয়ের জন্ত তাঁহাদের নামও ভবৎসমীপে নিবেদন করিতেছি। হে দিজোত্তম, আপনি অবধারণ করুন;—

[ু]স্থানন্দগিরিকৃতটীকা।

৭। যথেবং পরকীয়ং বলমতিপ্রভূতং প্রতীত্য অতিভীতবদ্ অভিদধাসি হতত্ব সন্ধিরেব পরৈরিয়তাম্, অলং বিগ্রহাগ্রহেণ—ইত্যাচার্য্যাভিপ্রায়মাশস্ক্য ব্রবীতি— অস্মাক্রমিতি। তু শন্দোহনস্তর্গংপরমপি স্বকীয়ং ভরং তিরোদধানো গৃহতামান্মনো ভোতরতি। যে থলু অস্মৎপক্ষে ব্যবস্থিতাঃ সর্বেভ্যঃ সমুংকর্ষজ্বঃ তান্ মর্মোচ্যমানান্ নিবোধ নিশ্চয়েন মদ্বচনাদ্ অবধারয়েত্যর্থঃ। যম্ভূপি স্বমেব ত্রেহর্ণিকেরু ত্রৈবিভার্দ্ধেরু প্রধানস্বাৎ প্রতিপত্ত্বং প্রভবিস, তথাপি মদীয়নৈত্যত্ত যে মুখ্যান্তান্ অহং তে তুভ্যং সংজ্ঞার্থম্ অসংখ্যেরু তেরু মধ্যে কতিচিয়ামভির্গৃহীশ্বা পরিশিষ্টান্থপলক্ষিভূৎ বিজ্ঞাপনং করোমি, ন তু এজ্ঞাতং একিঞ্ছিৎতব জ্ঞাপরামীতি মন্থাই—স্বিজ্ঞান্ত্রমতি।

৮। তানেব স্বদেনানিবিষ্ঠান্ প্রদ্বধোরেরান্ আশ্বীরভয়পরিহারার্থং পরি-গণ্যতি—ভবানিত্যাদিনা॥

^{*} खरेशव ह = कांग्रेसचः।

অত্যে চ বহবঃ শূরা মদর্ষে ত্যক্তজীবিতা: ।
নানাশন্ত্রপ্রহরণাঃ দব্বে যুদ্ধবিশারদাঃ ॥ ৯
অপর্য্যাপ্তং তদস্মাকং বলং ভীম্মাভিরক্ষিতম্ ।
পর্য্যাপ্তস্থিদমেতেষাং বলং ভীমাভিরক্ষিতম্ ॥ ১০

- ৯। অবয়। অঞ্চে চ বহব: শ্রা: মদর্থে ত্যক্তনীবিতা: (নীবিতমণি ত্যক্তমুম্মতা:) সর্কে নানাশস্ত্রপ্রহরণা: (বহুবিধশস্ত্রশালিন:) বুদ্ধবিশারদা: ॥ ৯
- > । অবয় । ভীন্নাভিরক্ষিতম্ (ভীন্নাধিষ্ঠিতম্) অস্থাকং (কৌরবাণাং) তৎ (প্রসিদ্ধং) বলম্ (সৈম্ম) অপ্র্যাপ্তম্ (অপ্রিমিতম্)। এতেবাং (পাগুবানাং) ভীমাভিরক্ষিতম্ (ভীমাধিষ্ঠিতম্) ইদং বলং (সৈম্ভং) প্র্যাপ্তং (প্রিমিতম্) ॥> •
- ৯। আরও অনেক বীর আমার জন্ম প্রাণ পর্যন্তও পরিত্যাগে ক্বতসংকর; তাঁহারা সকলে বহুবিধ অব্রশন্তে সজ্জিত এবং যুদ্ধবিশারদ ॥১
- ১•। ভীম-পরিরক্ষিত আমাদের সেই সেনা অপরিমিত এবং পাণ্ডবগণের ভীমসেন-রক্ষিত এই সেনা পরিমিত ॥১•

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

- ন। জোণাদিপরিগণনশু পরিশিষ্টপরিসংখ্যার্থবং ব্যাবর্জয়তি—অন্যে চেতি সর্কেংপি ভবস্কমারভ্য মদীরপৃতনারাং প্রবিষ্ঠা: বঙ্গীবিতাদপি মহুং স্পৃহরক্তি ইত্যাহ
 —মদর্থ ইতি। যত্ত, তেবাং শূর্বমূক্তং তদিদানীং বিশদয়তি—নানেতি।
 নানাবিধানি অনেকপ্রকারাণি শঙ্গাণি আয়্ধানি প্রহরণানি প্রহরণসাধনানি
 বেষাং তে তথা। বছবিধায়্ধসম্পত্তাবপি তৎপ্ররোগে নৈপুণ্যাভাবে তবৈফল্যমিতি
 চেয়েতাাহ স্বর্ব ইতি।
- ১০। রাঞ্চা প্নরপি বকীয়ভয়াভাবে
 ক্ষেত্তরমাচার্যাং প্রাথ্যাবেদরীভি
 অপর্যাপ্তিমিভি। অসাকং থলু ইদম্ একাদশনংখ্যকাকৌহিনী-পরিগণিত্ব
 অপরিমিভং বলং ভীয়েণ চ প্রথিতমহামহিয়া স্কর্দ্ধনা সর্বাজে রক্ষিতং পর্ব্যাপ্তং
 পরেষাং পরিভবে সমর্থ্যা, এতেষাং প্রক্তদয়ং সপ্তসংখ্যকাকৌহিনী-পরিমিভং বলং
 ভীমেন চপলবৃদ্ধিনা কুশলভা-বিকলেন পরিপালিভম্ অপর্যাপ্তম্ অস্থান্ অভিতবিতুম্ অসমর্থীমিভার্থঃ। অপবা তদিদমস্বাকং বলং ভীয়াধিভিত্তক্ অপর্যাপ্তর্ম অপরিক্ষিত্র অর্থ্যান, অক্ষোভ্যম্; এতেষাং তু পাগুরানাং বলং ভীয়েন অভিয়কিতং

[🕆] ব্ৰীয়ভয়ভাবে = ব্ৰীয়ভাবে।

আয়নের চ সবের্ব বঁথাভাগমবন্ধিতাঃ।
ভীন্মমেবাভিরক্ষস্ত ভবস্তঃ সবর্ব এব হি॥ ১১
তক্ষ সঞ্জনয়ন্ হর্ষং কুরুরজঃ পিতামহঃ।
সিংহনাদং বিনজোচৈচঃ শব্ধং দধ্যো প্রতাপবান্॥১২

- ১১। অবর। সর্বের্ অরনের্ (নিরতদেশেয়) বথাভাগম্ অবস্থিতাঃ সর্বের্
 এব ভবস্তঃ ভীন্নমেব অভিরক্ষত্ত (সর্বাভঃ রক্ষত্ত) ॥১১
- ১২। অবস্থা তন্ত (ছর্ব্যোধনন্ত) হর্বং (প্রীতিং) সঞ্জনস্থ (সম্মৃত্ উৎ-পাদস্থা) প্রতাপবান্ কুক্র্জঃ প্রতামহঃ (ভীন্মঃ) উচ্চৈঃ সিংহনাদং বিনম্ভ (সিংহনাদসদৃশং নাদং ক্ষা) শৃশ্যং দংখা (মুখ্যাক্ষতেন আপুরস্থাসাস) ॥১২
- ১>। সকল পথেই নিজ নিজ বিভাগান্থনারে থাকিয়া, আপনারা সকলেই ভীন্ধকে (সর্বতোভাবে) রক্ষা করিতে থাকুন ॥১১
- ১২। তাঁহার (ছর্ব্যোধনের) হর্ব উৎপাদন করিবার জন্ত [এই সময়] প্রতাপশালী কুরুকুলপ্রেষ্ঠ পিতামহ (ভীয়া) উচ্চ সিংহনাদ সহকারে শত্মধনি করিলেন ॥১২

্ আনন্দগিরিকুড-টীকা।

পর্যাথং পরিমিতং, সোচুং শক্যমিতার্থঃ; অথবা তৎ পাণ্ডবানাং বলমপর্যাপ্তং নালম্ অস্থাকম্ অস্থভাং ভীমাভিরক্ষিতং ভীমোহভিরক্ষিতঃ অসৈ পরবলনি-বৃত্তার্থমিতি তদেব তথোচ্যতে, ইদং পুনরস্থদীয়ং বলমেতেবাং পাণ্ডবানাং পর্যাপ্তং পরিভবে সমর্থং ভীমাভিরক্ষিতং ভীমো তুর্বলহাদয়ো যম্মাদ্ অসম পরবলনিবৃত্তার্থ-মভিরক্ষিতঃ ভক্মাদস্থাকং ন কিঞ্চিদ্যি ভয়কারণমন্তীত্যর্থঃ ॥১•

- ১১। সকীরবলন্থ ভীয়াধিষ্ঠিতছেন ব্লিষ্ঠমুক্তা ভীয়শেষজেন তদম্প্রপদং দ্রোণাদীনাং প্রার্থরতে—অয়ুনেম্বিতি। কর্তব্যবিশেষজ্যোতী "চ"শব্য:। সমর-সমারভ-সময়ে ধোধানাং বথাপ্রধানং বৃদ্ধভূমো পূর্বাপরাদি দিগ্বিভাগেন অবস্থিতিস্থানানি নিয়ম্যন্তে, তানি অত্র অয়নানি উচ্যন্তে। সেনাপতিশ্চ সর্বসৈম্পমধিষ্ঠায়
 মধ্যে তিষ্ঠতি; তেরু সর্বের্ প্রক্ প্রং প্রবিভাগম্ অপ্রত্যাধ্যায় ভবান্ অক্ষথামা
 কর্ণশেচভ্যেবমাদরো ভবস্তঃ সর্বে অবস্থিতাঃ সন্তো ভীয়মের সেনাপতিং সর্বজ্যে
 সক্ষর । তেরু বি রক্ষণে সর্বমন্দীয়ং বলং রক্ষিতং স্থাৎ, পরবলনির্ত্তপ্রেন তত্ত
 ক্ষমাভী রক্ষিত্যাদিত্যর্থঃ ॥১১
- ও । ত্রেষ্মাচার্য্য প্রতি সংবাদং কুর্বতং তরাবিষ্ঠ রাজানং দৃষ্ট্য তর্দ ভ্যাসবর্তী প্রিতামহঃ তদ্ব্দান্তরোগ্রথম্ ইখং ক্রতবানিত্যাহ—ত্রেজ্ঞতি । রাজ্ঞা

ততঃ শখাশ্চ ভের্যান্দ পণবান্ক-গোষ্ধাঃ।
সহসৈবাভ্যহম্মস্ত স শব্দস্তমুলোহভবৎ ॥১৩
ততঃ খেতৈর্হ রৈয়ু ক্তে মহতি স্থান্দনে স্থিতো।
মাধবঃ পাণ্ডবশ্চৈব দিব্যো শক্ষো প্রদগ্মতুঃ ॥১৪

১৩। অবর। ততঃ (ভীমুক্ত শব্ধধ্বনেরনস্তরং) শব্ধাঃ চ ভের্য্যঃ চ পণবানক গোমুধাঃ (বাছবিশেষাঃ) সংসা অভ্যহন্তত্ত (শব্দবস্তঃ সম্পাদিতাঃ) স শব্দঃ (বাছধ্বনিঃ) ভুমুশঃ (ভরকরঃ) অভবং (আসীৎ) ॥১৩

১৪। অবর। ততঃ (তুমুলশকানন্তরং) থেতৈঃ (ওটন্রঃ) হরৈঃ (অথৈঃ)
বুক্তে মহতি (বিশালে) শুন্দনে (রথে) স্থিতে মাধবঃ (বাস্থ্যদেবঃ) পাগুবন্দ
"(অর্জুনন্দ) দিব্যৌ শক্ষো প্রদায়তুঃ (মুধ্মাক্লতেন পরিপুরয়ামাসতুঃ) ॥১৪

১০। ভীয়ের শঝধানির পরেই সহসা কৌরবসেনার মধ্যে শঝ, ভেরী, পণব, আনক ও গোমুথ ুপ্রভৃতি (নানাপ্রকার রণবান্তসমূহ) বাজিরা উঠিল। সেই সকল (মিলিত বান্ত-নিবহের) ধানি (শক্রপক্ষে) অতি ভয়দায়কু হইরাছিল॥১৩

১৪। তাহার পর শুল্রবর্ণ ঘোটক-চতুইর-সমন্বিত বিশাল রথে স্বস্থিত মাধব (ভগবানু) ও পাণ্ডব (অর্জুন) দিব্য শুঝ্ধবনি করিলেন॥ ১৪

আদন্দগিরিকুত-টীকা

হুর্ব্যোধনত হর্ষং বৃদ্ধিগতমুল্লাসবিশেষং পরপরিভবদ্বারা অকীরবিজয়দারকং সম্যগ্-উৎপাদরন্ ভরং তদীরম্ অপনিনীয়্ উচৈচঃ সিংহলাদং ক্রদা শব্দমাপুরিভবান্। কিমিতি হুর্ব্যোধনত হর্ষমুৎপাদয়িত্বং পিতামহোষততে, কুরব্বদ্ধাৎ তত্ত কুরুরাজদাৎ পিতামহয়াচ অভ হুর্ব্যোধনভয়াপনয়নাগ্লা " প্রার্ত্তিরুচিতা। তহুপজীবিতয়া তদ্-বশ্যাচ ভক্ত চ সিংহনাদে শব্দদে চ পরেবাং হুদয়ব্যথা সম্ভাব্তে দ্রাদেব অরিনিবহং প্রতি ভর্মজননদক্ষণপ্রতাপ্যাদিত্যর্পঃ ॥১২

১০। রাজাভিপ্রারং প্রতীত্য ভীষ্মপ্রবৃত্তানন্তরং তৎপকৈতৈতেঃ রাজভিঃ শথাদয়ো বাছবিশেষা ঝটিভি শন্ধবন্তঃ সংপাদিতাঃ। স চ শথাদিপ্রযুক্তশন্তঃ তুমুলো বহুলং ভরং পরেষাং পরিভোত্যর আসীদিতাহ—তত ইতি ॥ ১৩

১৪। এবং ছর্ব্যোধনপক্ষে প্রাপ্তমালক্ষ্য পরিসরবর্ত্তিনে। কেশবার্জ্জনে। বৈতৈহরে: অতিবলপরাক্রমৈর্ন্তে মহুত্যপ্রধৃষ্যে রূপে ব্যবস্থিতে অপ্রাক্তনে শন্মে। প্রিতবন্ধাবিত্যাহ—ততঃ শেতহি হৈরিতি॥ ১৪

^{*} वर्णनत्रहार्था-वर्णनत्रार्था ।

পাঞ্চলতং হ্বীকেশো দেবদক্তং ধনঞ্জয়ঃ।
পৌজুং দধ্যো মহাশহ্যং ভীমকর্মা রকোদরঃ ॥১৫
অনস্তবিজয়ং রাজা কৃত্তীপুত্রো যুধির্চিরঃ।
নকৃলঃ সহদেবশ্চ হ্রঘোষমণিপুষ্পকো ॥১৬
কাশ্যশ্চ পরমেষাসঃ শিখণ্ডী চ মহারথঃ।
য়ুক্তরুদ্রো বিরাটশ্চ সাত্যকিশ্চাপরাজিতঃ ॥১৭
ফ্রপ্রদো দ্রোপদেয়াশ্চ স্বর্ব শঃ পৃথিবীপতে।
সৌভদ্রশ্চ মহাবাহুঃ শহ্মান্ দধ্যুঃ পৃথক্ পৃথক্॥১৮

১৫-১৬। অবর। হ্রবীকেশ: পাঞ্চল্ডং, ধনঞ্জর: দেবদত্তং, ভীমকর্মা বুকোদর: মহাশব্দ পৌশুং, কুস্তীপুত্রো রাজা যুধিন্তির: অনন্তবিজয়ং, [তথা] নকুল: সহদেবশ্চ (বথাক্রমং), স্থাবোৰ-মণিপুপকৌ দল্মৌ ॥১৫-১৬

১৭-১৮। অবর। পৃথিবীপতে! (ধৃতরাষ্ট্র!) প্রমেষাস: (মহাশ্রাসন:) কাঞ্চা, মহারথ: শিপত্তী, ধৃষ্টহ্যয়:, বিরাটঃ, অপরাজিতঃ সাত্যকিন্চ, ক্রপদঃ, স্থৌপদেরান্চ, (ক্রৌপদীপুত্রান্চ) [তথা] মহাবাহঃ সৌভড়ন্চ (অভিমন্ত্যঃ) সর্ক্ষশঃ (এতে সর্ক্ষে) পৃথক্ পৃথক্ শৃথান্ দগ্মঃ ॥১৭-১৮

১৫-: ৬। স্বীকেশ 'পাঞ্চলত্ত' শঝ, ধনঞ্জর 'দেবদত্ত' শঝ, ভীমকর্দ্মা বৃক্ষোদর 'পোঞ্জু' মহাশঝ, কুন্তীপুত্র রাজা যুধিছির 'অনস্তবিজয়' শঝ, নকুল ও স্হদেব যথাক্রমে 'সুবোব' ও 'মণিপুতাক' শঝ বাজাইলেন ॥১৫-১৬

১৭-১৮। হে পৃথিবীপতে ! [সেই সময়] মহাশরাসনধারী কাশু, মহারথ শিখঙী, গুঠছার, বিরাট, অপরাজিত সাত্যকি, জ্ঞাপ ও ক্রৌপদীপুত্রগণ,—ইহারা সকলে [নিজ নিজ] শশু পৃথক্ পৃথক্ বাজাইরাছিলেন ॥১৭-১৮

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

১৫। তরোঃ শঝরোর্দিব্যম্বনেব আবেদরতি— পাঞ্চক্তস্থামিতি। কেন্দ্রার্জ্নরোর্দ্ধাভিষ্ধাং দৃষ্ট্। সংজ্ঞঃ সারভেন সর্যর-রসিকো ভীমসেনোহশি ব্যাভিষ্পোহভূদিত্যাহ—পৌগু মিতি॥ ১৫

১৬। 'এতেবাষ্ ঈদৃশীং প্রবৃত্তিং প্রতীত্য পরিপালনাবকাশমাসাম্ব রাজে বৃধিষ্ঠিরভাগি প্রবৃত্তিং দর্শরতি—অনস্তেতি। জ্যারসাং ল্রাভ্গাম্, অন্সরশমাব-শুক্ষিতি মন্বা তরোর্ববীরসোপ্রারেগি প্রবৃত্তিমাহ—নকুল ইতি ॥১৬

म (घारंघा शार्खब्राङ्कोगाः क्षमद्रानि ब्रमात्रब्र । নভশ্চ পৃথিবীঞৈব ভুষুলো ব্যন্মনাদয়ন্॥ ১৯ অথ ব্যবন্থিতান্ দৃষ্ট্ব। **ধার্ত্তরাষ্ট্রা**ন্ কপিথবজঃ। প্রবৃত্তে শস্ত্রসম্পাতে ধুকুরুত্তম্য পাণ্ডবঃ ॥ ২০

১৯। অবর। নভক পৃথিবীঞ্জব ব্যহনাদর্ন্ (প্রতিধ্বনিভিঃ পুরন্ন্) সঃ তুমুল: (মহান্) বোষ: (শব্দঃ) ধার্তরাষ্ট্রাণাৎ (ছর্ব্যোধনাদীনাং) হুদয়ানি (মনাংসি) ব্যদারয়ৎ (বিদারিতবানিব) ॥১৯

২০—২১। অবন্ধ। (হে মহীপতে!) অথ (অনন্তরং) শল্পসম্পাতে (শরাদিবর্বণোভোগে) প্রবৃত্তে (অভিমুখে সতি) কপিধাজঃ পাওবঃ (অর্জুনঃ)

১৯। আকাশ ও পৃথিবীকে প্রতিধ্বনি দারা পরিপুরিত করিরা উত্থিত সেই মহাশব্দ ধৃতরাষ্ট্রস্থতগণের জদরকে বিদীর্ণ**প্রার করিরাছিল** 🏗 ১৯ 🕈

২০—২১। হে মহীপতে অনস্তম্ন শত্রপাতের প্রারম্ভ সময়ে ধৃতরাষ্ট্রপক্ষীয় সৈন্তগণকে (সাহসভরে) অবিচলিত ভাবে অবস্থিত নিরীক্ষণপূর্বক অর্জুন স্বীয়

আনন্দপিরিক্বত-টীকা।

১৭ — ১৮। অভেবাদপি **তৎপক্ষীরাণাং বাুুুঞানৈক**সত্যং বি**ঞ্চাপরন্ ধুতরা**ইভ হরাশাং সঞ্জরো ব্যুদশুতি - কাশ্যুদেচত্যাদিনা। পরমেশাসাদিবিশেষণচভুইরং প্রত্যেকং সম্বধ্যতে॥ ১৭—১৮

তৈত্তৈঃ রাজভিঃ শঝানাপুরয়ত্তিঃ আপাদিতো মহান্ ঘোষঃ ভুমুলো ২তিভৈরবো নভশ্যন্তরীক্ষং পৃথিবীঞ্চ ভূবনং লোকত্ররং সর্ব্বমেব বিশেষেণামুক্রমেণ नामवन् नामयुक्तर कूर्वन् धार्कताङ्घोणार क्रद्याधनामीनार कमवानि अञ्चःकत्रशान ব্যদাররদ্ বিদারিতবান্। যুজ্যতে হি তৎপ্রেরিতশব্দবোৰশ্রবণাৎ তৈলোক্যাক্রোশে তম্পশ্ণ,তাং তেষাং হৃদরের দোধ্রমানত্বং তদাই—স স্বোষ ইতি॥১১

२०। क्रिंगंधनानीनाः शार्खताङ्कानारमयः छन्नश्रीश्रः श्रामर्गं भार्थानीनाः भारतः বানাং ছুবৈপরীত্যমিদানীমূদাহরতি—অধ্যেত্যাদিনা। তীতিপ্রত্যুপস্থিতৈরনস্করং প্ৰায়নে প্ৰাপ্তে২পি বৈপ্ৰীত্যাদ্ *ব্যৰন্থিতান্ †অপ্ৰচলিতানেৰ প্ৰান্ প্ৰত্যক্ষেণা-প্ৰজ্য হত্যতং বানরবরং ধ্বজ্লকণ্ডেন আলায় অবস্থিতো হর্জুনো ভর্গবন্তমাহ

[🖚] বৈশরীজ্ঞান—ধ্যামুৎপাল্য।

[†] ব্যবস্থিতান্—লথ ব্যবস্থিতান্।

হ্বীকেশং তদা বাক্যমিদমাহ মহীপতে।

অৰ্জুন উবাচ।

সেনয়োক্সভয়োম ধ্যে রথং স্থাপয় মে২চ্যুত॥ ২১
যাবদেতান্ নিরীক্ষেহহং যোজু কামানবস্থিতান্।
কৈম যা সহ যোজব্যমন্মিন্ রণসমুভামে॥ ২২

ব্যবস্থিতান্ (সাহসেন অপ্রচলিতান্) ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ (কুরুসৈনিকান্) দৃষ্ট্রা (বিলোক্য) ধহু: উক্তম্য (উত্থাপ্য) হ্ববীকেশন্ ইদং (বক্ষ্যমাণপ্রকারং) বাক্যম্ উবাচ। [হে] আচ্যুত ! মে রধং উভরো: সেনরোমধ্যে স্থাপর (সরিবেশর) ॥২০—২১

২২। অবয়। এতান্ (পুরতঃস্থিতান্) অবস্থিতান্ (অচঞ্চান্) বোদ্কামান্ (সুদ্দিছতঃ) যাবং (সাকল্যেন) অহং নিরীকে, (বিলোকয়ামি) অমিন্রপ্রস্থ্যমে (সমরা্রভে) ময়া কৈঃ সহ বোদ্ধব্যম্ (স্কং কর্ত্বব্যম্) ॥২২

শরাসন উত্থাপিত করিয়া ফ্রীকেশকে এই প্রকার বাক্য বলিলেন। আর্জুন কহিলেন, হে অচ্যুত, এই উভর সেনার মধ্যে আমার রথ স্থাপন করুন ॥২০-২১

২২। বতক্ষণ আমি, এই সকল সমুখস্থিত যুদ্ধকারিগণকে এবং [ইহাদের মধ্যে] কাহাদের সহিত আমার্কে যুদ্ধ করিতে হইবে দেখিব ॥২২

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

ইতি সধনঃ। কিম্ আহেত্যপেকারাম্ ইদং বক্ষ্যমাণং হেত্মদ্বচনমিত্যাহ—বাক্য-মিদমিতি। কন্তাম্ অবস্থারাম্ ইদম্ উক্তবানিতি তত্তাহ—প্রবৃত্ত ইতি। শক্ষাণান্ ইর্প্রানপ্রভৃতীনাং সম্পাতঃ সমুদারস্তমিন্ প্রবৃত্তে প্ররোগাভিমুখে সভীতি বাবং। কিং ক্রমা ভগবস্তং প্রভৃত্তিবানিতি তদাহ—ধ্যুরিতি। মহীপতিশব্দেন রাজা প্রজাচক্ষ্য সঞ্জনে সংবোধ্যতে ॥২•

২১। তদেব গাঞীবধননো বাক্যমন্থকামতি—সেনুয়োরিতি। উভরোরণি সেনরোঃ সরিহিতরোমধ্যে মদীরং রথং স্থাপর ইত্যর্জুনেন সারথ্যে সর্বেশরো নির্জাতে, কিং হি ভক্তানামশক্যং বদ্ভগবানপি তরিরোগম্ রুম্নতিন্তি। বৃক্তং হি ভগবতো ভক্তপারবশ্বম্ । অচ্যুতেতি সম্বোধনতরা ভগবতঃ স্বরূপং ন ক্লাচিদ্শি অচ্যুতিং প্রাপ্নোত্মত্যুতে ৪২১

२२। मत्या त्रथः शांभात्रज्ञाकः, जात्र त्रथशांभांशानः निकात्रत्रि ।

যোৎস্তমানানবেক্ষেহহং য্ এতেহত্ত সমাগতাঃ। ধার্ত্তরাষ্ট্রস্ত জুর্ববূজের্তুজে প্রিয়চিকীর্ববঃ॥ ২৩

🕟 সঞ্জয় উবাচ।

এবমুক্তো হুষীকেশো গুড়াকেশেন ভারত। সেনয়োরুভয়োর্মধ্যে স্থাপয়িত্বা রুখোত্তমম্॥ ২৪

২০। অবর। অত্তর্ কুরুকেত্ত্রে) হর্প্কে: (সন্দর্কে:) থার্ডরাষ্ট্রস্ত (হুর্ব্যো-ধনক্ত) যুদ্ধে (রণে) প্রিরচিকীর্ধব: (হিতং বিধাতৃমিচ্ছব:) দে এতে (রাজান:) সমাগতা: [তান্] যোৎস্তমানান্ (যদ্ধার্থমভ্যুম্বতান্) অহম্ অবেকে (পশ্রামি) ॥২০

২৪-২৫। অবয়। সঞ্জয় উবাচ,—[হে] ভারত। গুড়াকেশেন (জিতনিদ্রেশ অর্জুনেন) এবম্ (উক্তপ্রকারম্) উক্তঃ স্ববীকেশঃ উভরোঃ সেনরোঃ মধ্যে।

২০। যতক্ষণ আমি রণে ছর্জ্ দ্ধি ছর্য্যোধনের হিতাকাজনী এই সকল সমাগত যোদ্গণকে দেখি [ততক্ষণ] উভর সেনার মধ্যে আমার রথ (স্থাপন করুন) ॥২৩

২৪-২৫। সঞ্জয় বলিলেন,—"হে ভরতকুলোম্ভব [ধৃতরাষ্ট্র!], জিতনিজ [অর্জুন] এই প্রকার বলিলে, উভয় সেনার মধ্যস্থলে, ভীমন্ত্রোণপ্রমুথ মহীপাল-

আনন্দগিরিক্ত-টীকা।

এতান্ প্রতিপকে। প্রতিষ্ঠিতান্ ভীমনোণাদীন্ স্বস্থাতিঃ সার্ধং বের্টিরুমপেকাবতো যাবদারা নিরীকিতৃমহং ক্ষম: স্থাং, তাৰতি প্রদেশে রথস্ত স্থাপনং কর্ম্পরমিত্যর্থ:। কিঞ্চ প্রাঃত্তে বৃদ্ধপ্রারম্ভে বহবোঁ রাজানঃ অমুখ্যাং * বৃদ্ধৃনাবৃপ্রভাতে
তেবাং মধ্যে কৈঃ সহ ময়া বাৈদ্ধব্যং, ন হি কচিদপি মম গতিপ্রতিহতিরস্তি ইত্যাহ
—কৈর্মায়েতি।

২৩। প্রতিষোগিনামভাবে কথং তব যুকৌৎক্ষক্যং † ফলবঁদ্ ভবেদিতি ভূজাই
— যোৎস্থামানানিতি। যে কেচিদেতে রাজানো নানাদেশেভাঃ অন্ত কৃককেন্ত্রে
সমবেতাস্তানহং বোংস্থানান্ পরিগৃহীতপ্রহরণোগারান্ অভিতরাং সংগ্রামসমুহক্ষ্
কান্ উপলতে তেন প্রতিষোগিনাং বাহল্যমিত্যর্থঃ। তেবাম্ অলাভিঃ সহ পূর্ববৈব্যাভাবে কথং প্রতিষোগিবং প্রকল্পাতে তত্তাহ— ধার্ত্তরাষ্ট্রস্থৈতি। শৃতরাষ্ট্রপুরস্ত হর্ষ্যোধনত ত্র্ব্ধুদ্ধঃ স্বরক্ষণোগারম্ অ্পতিপ্রদানত স্কার সংরক্তং

चर्यास् = म्यास् ।

⁺ ब्राक्षेरक्कान्-ब्राक्षेत्र्यान् ह

ভীন্মদ্রোণপ্রমুখতঃ সর্বেষাক মহীক্ষিতাম্।
উবাচ পার্থ পশ্যৈতান্ সমবেতান্ কুরুনিতি ॥ ২৫
তত্তাহপশ্যৎ স্থিতান্ পার্থঃ পিত্নথ ণিতামহান্।
আচার্য্যান্ মাতুলান্ ভাত্ন পুত্রান্ পৌত্তান্ সধীংস্তথা।
শশুরান্ স্কুদ্দৈচৰ সেনয়োকভয়োরপি ॥ ২৬

ভীয়দ্রোণপ্রমূথতঃ সর্কেষাং চ মহীকিতাং (ভূপালানামগ্রতঃ) , রণোরমং ভাপরিদা "হে পার্থ ! এতান্ সমবেতান্ কুরুন্ পশু" ইতি উবাচ ॥২৪-২৫

২৬। অবয়। পার্থ: তক্ত উভরো: সেনরো: অপি স্থিতান্ পিতৃন্ (পিতৃক্রান্) অথ পিতামহান্ আচার্যান্ মাতৃলান্ আতৃন্ প্রান পৌতান্ তথা স্থীন্ খণ্ডবান্ স্কুল:- চৈৰ অপশুৎ (আলোক্যৎ) ॥২৬

গণের সমুধে জ্বীকেশ, সেই উত্তম রথথানি স্থাপন করিয়া অর্জুনকে কহিলেন— "হে পার্থ, যুদ্ধার্থে সম্মিলিভ কুক্সগকে বিলোকন কর" ॥২৪-২৫

২৬। [অনস্তর] অর্জুন সেই উভয় সেনার মধ্যে দেখিলেন বে, তাঁহার পিতৃহুব্য ব্যক্তিগণ, পিতামহ, আচার্য্য, সাড়ল, ভাষা, প্র, পৌর, সথা, খণ্ডর ও ক্রন্ত্রণাণ অবস্থিতি করিতেছেন ॥২৬

আনন্দগিরিকুত-টাকা।

কুর্নতো যুদ্ধে যুদ্ধভূনৌ স্থিতি প্রিরং কর্তুমিচ্ছবো রাজান: সমার্গতা: দৃশুজে, তেন ভেষামৌপাধিকম্ অসং প্রতিযোগিত্বমূপপল্লনিত্যর্থ: ॥২৩

২৪-২ং । এবম্ অর্জুনেন প্রেরিতো ভগবান্ অহিংসারপং ধর্মাশ্রিত্য প্রারশোর্দ্ধ তং নিবর্ত্তরিশ্বতীতি ধতরাইত মনীবাং গুল্বরিষঃ *সঞ্জরো রাজানং প্রত্যক্তন বান্ ইত্যাহ—সঞ্জয় ইতি। ভগবতোহণি ভ্ভারাপহারার্থং প্রবৃত্তত অর্জুনাভি-প্রারশ্বিকি আজিসমূহত্য আজিপ্রারাহ্বন্দ্রাভানমাদর্শরতি—এব্যিতি। ভীন্নদ্রোণাদীনাম্ অন্তেবাঞ্চ রাজামন্তিকে রথং স্থাপরিদ্ধা ভগবান্ কিং রভবানিতি ভদাহ—উবাচেতি। এতানভ্যাসে । বর্ত্তমান্ত্রন্ ক্রন্ ক্রবংশপ্রস্তান্ ভবতিঃ সার্ধং ব্রার্থং সংগভান্ পশ্র। দৃষ্ট্রা, চ বৈঃ সহ অর বৃর্ৎসা ভব উপবর্ত্তে তৈঃ সাক্ষং বৃত্তা নো ধল্ এজেবাং শল্পালিশিবতাং মহীকিতান্ উপেকোপপছতে, সারধ্যে ভূ ন সনঃ ধেরনীরসিত্যর্থঃ ৪২৪-২৫

২৬ ৷ এবং স্থিতে মহান্ অধন্দো হিংলা ইতি বিপরীতবৃদ্ধা-বৃদ্ধাৎ উপরিক্ষালা

प्रप्रविद्यः - प्रतिकृमः।

তান্ সমীক্ষ্য স কোন্তেয়ঃ সর্বান্ বন্ধূনবন্ধিতান্। কুপয়া পরয়াবিষ্টো বিষীদন্ধিদমত্রবীৎ ॥ ২৭

অৰ্জুন উবাচ।

দৃষ্টে মং স্বজনং কৃষ্ণ যুষ্ৎস্থং সমুপস্থিতম্।* দীদন্তি মম গাত্রাণি মুখঞ্চ পরিশুয়তি॥ ২৮

২৭। অষয়। স কৌস্তেয়ঃ অবস্থিতান্ তান্ সর্কান্ বন্ধূন্ সমীক্ষ্য (অ:লোচ্য) পরয়া ক্রপয়া আবিষ্ঠঃ বিষীদন্ (উপতাপং কুর্বন্) ইদম্ অব্রবীৎ (উবাচ) ॥২৭

২৮। অবর। [হে] কৃষ্ণ! যুর্ৎস্থং (বোদ্বাসচ্ছং) সমুপস্থিতম্ ইমং স্বজনং দৃষ্ট্যামম গাত্রাণি সীদন্তি (অবস্কানি ভবস্তি) মুধং চ পরিভ্যাতি ॥২৮

২৭। তখন সেই কৌন্তেয়, (যুদ্ধার্থ) অবস্থিত সেই বন্ধুগুণকে দেখিয়া অত্যন্ত করুণাবিষ্ঠ ও বিষয় হইয়া ইহা বলিতে লাগিলেন ॥২৭

২৮। অৰ্জুন কহিলেন। 'হে কৃষ্ণ ! যুদ্ধাৰ্থ উপস্থিত এই সকল আত্মীয়গণকে দেখিয়া আমার অঙ্গ অবদন্ন হইতেছে এবং মুখ শুক্ষ হইতেছে ॥২৮

আনন্দগিরিকৃত-টীকা !°

পার্থস্য সংপ্রবৃত্তা ইতি কথরতি—অত্তেত্যাদিনা। সপ্তম্যা ভগবদভাত্মজানে সমর-সমারভার সংপ্রবৃত্তে সতি ইত্যেতত্চ্যতে। সেনয়োকভয়োরপি স্থিতান্ পার্থোহপশ্রৎ ইতি সম্বন্ধঃ। ''অথ''-শব্দঃ ''তথা''-শব্দপর্যারঃ। যাওরাঃ ভার্য্যাণাৎ জনরিতারঃ। স্থত্নো মিত্রাণি—ক্রতবর্ম্ম-প্রভৃতরঃ॥ ২৬

২৭। সেনাৰ্য়ে ব্যবস্থিতান্ যথোক্তান্ পিতৃপিতামহাদীন্ আলোচ্য † প্ৰমক্বপাপরবশঃ সন্ অৰ্জ্নো ভগবন্তম্ উক্তবান্ ইত্যাহ—তান্ ইতি। বিষীদন্ যথোকানাং পিত্রাদীনাং হিংদাসংরম্ভনিবন্ধনং বিষাদম্ ট্রপতাপং কুর্মন্ ইত্যর্থঃ॥ ২৭

২৮। তদেব ''ইদং''-শন্ধবাচ্যং বচনমুদাহরতি — দৃষ্টে তি। আত্মীয়ং বন্ধবর্গং বুদ্দেছরা যুক্তুমৌ উপস্থিতমুপলভ্য শোকপ্রবৃত্তিং দর্শরতি— সীদন্তীতি। দেবাংশস্ত অর্জুনস্ত অনাত্মবিদঃ অপরদেহেরু আত্মাত্মীয়াভিনানবতঃ তৎপ্রিরস্ত যুদ্ধা-রুদ্ধে তন্মৃত্যুপ্রসঙ্গ-দর্শনশোকো + মহানাসীদিত্যর্থঃ ॥২৮

বেপথুশ্চ শরীরে মে রোমহর্ষশ্চ জায়তে।
গাণ্ডীবং অংসতে হস্তাৎ ত্বক্ চৈব পরিদহৃতে॥২৯
ন চ শক্ষোম্যবন্থাতুং অমতীব চ মে মনঃ।
নিমিক্তানি চ পশ্যামি বিপরীতানি কেশব॥ ৩০
ন চ শ্রেয়ো মু পশ্যামি* হত্বা স্বজনমাহবে।
ন কাজ্কে বিজয়ং কৃষ্ণ ন চ রাজ্যং স্থখানি চ॥ ৩১

- ২৯। অধর। মে (মম) শরীরে বেপথু: (কম্পা:) চ রোমহর্ব: চ (রোমাঞ্চ:) জান্ধতে, হস্তাৎ গান্তীবং প্রংসতে (ঝলতি), ত্বক্ চ এব পরিদহতে ॥২৯
- ৩ । অবস্থা হে কেশব ! [অইং] অবস্থাতৃং ন শকোমি, মে মনঃ ভ্রমতি ইব, বিপরীতানি নিমিত্তানি (লক্ষণানি) চ.পশ্রামি ॥৩ •
- ৩১। অবঁষ। মুআহবে (যুদ্ধে) স্বজনং হয়া শ্রেষঃ ন পশ্রামি। হে রুকা! বিজয়ংন কাজেক (ন প্রাথ্যে),ন চ রাজ্যং,ন চ স্থানি [কাজেক]॥৩১
- ২>। আমার শরীরে কম্প ও রোমাঞ্চ হইতেছে, হস্ত হইতে গাণ্ডীব খলিত হইয়া পড়িতেছে এবং গাত্তের ত্বক্ যেন দগ্ধ হইয়া ঘাইতেছে ॥২>
- ৩০। হে কেশব! আমি অবস্থান করিতে পারিতেছি না, আমার মন ধেন বিমুর্ণিত হইতেছে, আমি [যেন] বিপরীত লক্ষণ সকল দেখিতেছি ॥৩০
- ৩১। যুদ্ধে স্বজনগণকে বিনাশ করিয়া আমি কোন মঙ্গলই দেখিতেছি না। হে কৃষ্ণ ! [স্বামি] বিজয় চাহি না, রাজ্য কিংবা সুথ কিছুই চাহি না ॥৩১

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

- ২৯। আক্ষের্ ব্যথা মুখে পরিশোষশ্চ † ইত্যু ভরং শোক্লিক্সুক্তং; সংপ্রতি বেপথুপ্রভৃতীনি ভাতিলিক্সানি উপস্তম্ভতি—ব্রেপথুক্তেচ্তি। রোমহর্ষো রোমাং গাত্তের প্লকিত্ত্বম্॥২৯ •
- ৩০। কিঞ্চ অধৈর্য্যাপি সংবৃত্তমিত্যাহ—ন চেতি। মোহোহপি মহান্ ভবতী ত্যাহ্— ভ্রমতীবেতি। বিপরীতনিমিত্তপ্রতীতেরপি মোহো ভবতীত্যাহ— নিমিত্তানীতি। তানি বিপরীতানি নিমিত্তানি বাদনেত্রক্ষরণাদীনি ॥৩০
 - ু৩১। যুদ্ধে অজনহিংসয়া 🗯 ফলাম্পলস্তাদপি তত্মাৎ উপরিরংসা আয়ুত

^{*} জেরো সু পঞ্চামি = শ্রেরোহমুপ্ডামি ইতিবাপটিঃ।

† স্বন্ধনিয়া = স্কন্হিংসারাঃ।

⁺ পরিশোবক = শোবক:।

কিং নো রাজ্যেন গোবিন্দ কিং ভোগৈজ্জীবিতেন বা ॥৩২ যেষামর্থে কাজ্জ্মিতং নো রাজ্যং ভোগাঃ স্থখানি চ। ত ইমেহবৃদ্বিতা যুদ্ধে প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা ধনানি চ॥ ৩৩ আচার্য্যাঃ পিতরঃ পুত্রাস্তথৈব চ পিতামহাঃ। মাতৃলাঃ শৃশুরাঃ পৌত্রাঃ শ্যালাঃ সম্বন্ধিনস্তথা॥ ৩৪ এতান্ ন হস্তমিচ্ছামি দ্মতোহপি মধুসূদন। অপি ত্রৈলোক্যরাজ্যস্ত হেতোঃ কিং মু মহীকৃতে॥ ৩৫

৩২-৩৪। অষয়। হে গোবিন্দ! নঃ (অস্মাকং) রাজ্যেন কিং, ভোগৈঃ জীবিতেন বা কিং [প্রয়োজনম্], যেষাং অর্থে নঃ (অস্মাকং) রাজ্যং কাজ্জিতং ভোগাঃ [কাজ্জিতাঃ] ধনানি চ [কাজ্জিতানি]তে ইনে আচার্য্যাঃ পিতরঃ প্রাঃ তথা এব চ পিতামহাঃ মাতুলাঃ খণ্ডরাঃ পৌত্রাঃ খ্যালাঃ তথা সমন্ধিনঃ বুদ্ধে প্রান্ধনানি চ ত্যক্ষা (ভ্যক্তুদ্) অবস্থিতাঃ ॥ ৩২-৩৪

৩৫। অধর। হে মধুসদন! মতোহপি [অইম্] এতান্ হন্তং ন ইচ্ছামি। বৈলোক্যরাজ্যন্ত হেতো: অপি [এতান্ হন্তং ন ইচ্ছামি], ছ (ভো:) মহীকৃতে (পৃথিবীমাব্যন্ত হেতো:) কিং [হিনা ? অপি তু নৈব ইত্যৰ্থ:] ॥৩৫

৩২-৩৪। হে গোবিনা ! আমাদের রাজ্যে কি প্রয়োজন ? ভোগে বা জীবনেই বা কি হইবে ? যাহাদের জন্ম আমাদের রাজ্য-ভোগ ও ধনের আকাজ্ঞা, সেই আচার্য্য, পিতৃতুল্য ব্যক্তি, পুত্র, পিতামহ, মাতৃল, খণ্ডর, পৌত্র, শুলক এবং সম্বন্ধিগণ [এই রণক্ষেত্রে] ধন ও প্রাণ, পরিত্যাগ করিতে উপস্থিত ॥ ৩২-৩৪

৩ঃ। হে মধুসুদন । ইহারা আমাদিগকে মারিয়া ফেলিলেও আমি ইহাদিগুকে

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

ইত্যাহ—ন চেতি। প্রাপ্তানাং যুযুৎস্থনাং হিংয়ন্না বিজ্ঞাে রাজ্যং স্থানি চ শন্তং শক্যানি ইতি কুতাে যুদ্ধাৎ উপরতিরিত্যাশঙ্কাহ—ন কাজ্জ ইতি ॥৩১

৩২-৩৪। কিমিতি রাজ্যাদিকং সর্বাকাঙ্কিতথাৎ ন কাঙ্ক্যতে, তেন হি
প্রভারাদীনাং স্বাস্থ্যসাধাতৃং শক্যমিত্যাশ্ব্যাহ—কিমিতি। রাজ্যাদীনামাকৈশে
ছেতৃমাহ—হৈষামিতি তানেব বিশিনষ্টি—আচার্য্যা ইতি। স্থালা ভার্য্যাণাং
প্রাতরো ইইহ্যয় প্রভৃতয়ঃ ॥৩২-৩৪

৩৫। বংগ্রহণি বরাজ্যপরিণছিয় আততারিয় ক্লপাব্দ্যা বধর্মাদ বুদাং.

নিহত্য ধার্ত্রাষ্ট্রান্ নঃ কা প্রীতিঃ স্থাজনার্দ্ন । পাপমেবাপ্রয়েদস্মান্ হবৈতানাততায়িনঃ ॥৩৬

মারিতে ইচ্ছা করি না। ত্রৈলোক্যরাজ্যের নিমিত্তও [আমি ইহাদিগকে মারিতে চাহি না], কেবল পৃথিবীর [রাজ্য লাভের] জন্ত আর কথা কি ॥০৫

৩৮। অষয়। [হৈ] জনার্দন ! ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ নিহত্য (ধৃতরাষ্ট্রপুত্রান্ বিনাষ্ট) নঃ (অস্নাকং) কা প্রীতিঃ স্থাং ? (ন স্থান্ ইত্যর্থঃ)। এতান্ আততায়িনঃ হত্বা অস্নান্ পাপম্ এব আশ্রেষে (সমাশ্রেষে) ॥৩৬

৩৯। হে জনার্দ্দন । ধৃতরাষ্ট্র-পূত্রগণকে বিনাশ করিয়া আমাদের কি স্থপ ছইবে ? [অধিকন্তু] এই সকল (আচার্য্য দ্রোণ প্রভৃতি) আততাম্মিগণকে বিনাশ করিলে আমরা নিশ্চরই পাপভাগী হইব॥ ৩৬

আনন্দগিপ্পিকত-টীকা।

পূর্ব্বোক্তমোহাদিবশাৎ প্রচ্যুতিং প্রদর্শরতি—এতানি। "জিঘাংসম্ভং জিঘাংসীরাং" ইতি স্থারাং এতেষাং হিংসা ন দোষার ইত্যাশঙ্ক্যাহ—স্মতোহপীতি। পৃথিবীপ্রাপ্ত্যর্থং হি হননমেতেষামিষ্যতে ন চ তংপ্রাপ্তিঃ সমীহতেতি কৈমুতিকস্থারেন * দর্শরতি—অপীতি ৮ ন হি মহদপি তৈলোক্যলক্ষণং রাজ্যং লকুং
স্থাজনহিংসারে মনো মদারং স্পৃহরতি পৃথিবীপ্রাপ্ত্যর্থং পুনর্বজ্বধং ন শ্রদ্ধামীতি †
কিং বক্তব্যমিত্যর্থঃ ॥৩৫

৩৬। ছর্ব্যোধনাদীনাং শক্রণাং নিগ্রহে প্রীতিপ্রাপ্তিসম্ভবাদ যুদ্ধং কর্ত্ত্র্যমিত্যাশক্ষাহ—নিহত্যেতি। যদি পুনঃ অমী হর্ব্যোধনাদয়ো ন নিগ্ছেরন্ ভবস্তঃ তর্হি
তৈর্নিগৃহীতা ছঃথিতাঃ স্থারিত্যাশক্ষ্যাহ— পাপামেবৈতি। যদি ইনে ছর্ব্যোধনাদয়ো নির্দোর্যানেবামান্ অকম্মাদ্ বৃদ্ধভূমৌ হয়্যঃ, তদা এতান্ "অগ্নিদো গরদ''শেচত্যাদিলক্ষণোপেতান্ আততাগ্রিনো নির্দোষক্রনিহংসাপ্রযুক্তং পাপঃ পূর্ব্বের
পাপিনঃ সমাশ্রমেদিত্যথঃ। অথবা যক্সপেতে ভবস্তি আততাগ্রিনন্ত্রণাপি এতান্
ক্রতিশোচান্ ছর্ব্যোধনানীন্ হিংগাল্বা হিংগাক্তরং পাপেম্ অম্মানেবাশ্রমেৎ, অতো
নাম্মাভিরেতে হস্তব্যা ইত্যর্থঃ। অথবা গুরুত্রাত্মস্কর্প্রভূতীন্ এতানু হলা বয়ম্
আততাগ্রিনঃ স্থান, ততশৈচতান্ হলা তৎক্বতং পাপেম্ আততাগ্রিনোহস্মানেব
সর্মাশ্রমেদিতি বুদ্বাছপর্মণম্ অমাকং শ্রেমস্কর্মিত্যর্থঃ॥ ৩৬

কৈমৃতিকন্তারেন — কৈমৃত্যক্তারেন। † অন্ধ্রামীতি — অন্ধ্যামিতি।

তস্মান্নার্হা বয়ং হস্তং ধার্ত্তরাষ্ট্রান্ সবান্ধবান্ । । । । স্বজনং হি কথং হত্বা স্থাখিনং স্থাম মাধব ॥ ৩৭ যতাপ্যেতে ন পশ্যন্তি লোভোপহতচেতসঃ । কুলক্ষয়কৃতং দোষং মিত্রদ্রোহে চ পাতকম্ ॥ ৩৮ কথং ন জ্রেয়মস্মাভিঃ পাপাদস্মান্নিবর্ত্তিতুম্ । কুলক্ষয়কৃতং দোষং প্রপশ্যন্তি র্জনার্দ্দন ॥ ৩৯

- ৩৭। অধ্য়। তত্মাৎ ব্য়ং স্বাহ্মবান্ধার্ত্রাষ্ট্রান্হন্তং ন অর্থাঃ (যোগ্যাঃ), গে সাধ্ব! হি (যতঃ) অঞ্জনং হলা কথং অধিনঃ ভাষ॥ ৩৭
- ৩৮। অথয়। যন্ত্রপি এতে (ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ) লোভোপহতচেতসঃ (লোভান্তি-ভূতবুদ্ধয়ঃ) কুলক্ষয়কুতং দোষং মিত্রন্দোহে পাতকং চ ন পশুস্তি॥ ৩৮
- ০৯। অবস্ব। হে জনার্দন! কুলকয়কুতং নোবং প্রপশ্বাদ্তি: অস্মাতিঃ অস্মাৎ পাপাৎ নিবর্ত্তিত্ব কথং ন জ্ঞেয়ম্ ? ॥ ৩>
- ৩৭। সেইজন্ম স্বান্ধব হুর্য্যোধন-প্রভৃতিকে বিনাপকরা আমাদের উচিত নহে; হে মাব। যেতেতু স্কলবিনাশ করিয়া আমরা কি প্রকারে স্থবী হইব ?॥ ৩৭
- ৩৮। যদিও এই সকল ধৃতরাষ্ট্রপুত্র লোভবশত্য নষ্টবুদ্ধি হইয়া কুলক্ষনিবন্ধন-দোষ ও মিত্রহিংসাজনিত পাতক বুদ্ধিতে সমর্থ হইতেছে না—॥ ৩৮
- ৩৯। [তথাপি] হে জনার্দন! কুলক্ষ্মজনিতদোষ আমরা বিশেষরূপে দোধতে পাইয়াও আমাদের এই পাপ হইতে নিযুক্ত হইবার জ্ঞান কেন হইবে না? ।। ৩৯

আনন্দগিরিকুত-টাকা।

- ৩ । কলাভাবাদনর্থসম্ভবাচ্চ পরহিংসা ন কর্ত্তব্যা ইত্যুপসংহর্তি তক্সাদিতি । কিঞ্চ রাজ্যস্থমুদ্দিশ্য যুদ্ধমুপক্রম্যতে ন চ স্বজনপরিক্ষয়ে স্থমুপপছতে
 তেন ন কর্ত্তবাং যুদ্ধমিত্যাহ—স্বজ্ঞনং হীতি ॥ ৩ গ
- ০৮। কথা তর্হি পরেষাং কুলক্ষরে স্বজনহিংসায়াঞ্চ প্রাকৃতিত্তরাহ—য়ন্তাপীতি। লোভোগহতবৃদ্ধিত্বাৎ ভেষাং কুলক্ষ্মাদিপ্রযুক্তদোষপ্রতীত্যভাবাং প্রবৃত্তিনিম্রম্ভঃ সম্ভবতীত্যপ্র:।। ০৮.
- ৩>। পরেষামিবাম্মাকমপি প্রবৃত্তিবিশ্রম্ভ: সম্ভবেদিতি চেয়েত্যাহ—কথ্মিতি । কুলক্ষের মিত্রপ্রোহে চ দোবং প্রপশ্যম্ভিরম্মাভিত্তদোষণাক্ষিতং পাগং কণং ন

শ্বাক্ষান্ – খবাক্ষবান্ ইতি বা পাঠঃ।

কুলক্ষয়ে প্রণশুস্তি কুলধর্মাঃ সনাতনাঃ।
ধর্ম্মে নফে কুলং কুৎস্নমধর্মোহভিভবত্যুত॥ ৪০
অধর্মাভিভবাৎ কৃষ্ণ প্রত্নয়স্তি কুলন্তিয়া।
স্ত্রীয়ু দুফাস্থ বাষ্ণেয় জায়তে বর্ণসঙ্করঃ॥ ৪১

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

জ্ঞাতব্যং, তদজ্ঞানে তৎপরিংারাসম্ভবাৎ, অতোহস্মাৎ পাপান্নির্ত্ত্যর্থং তজ্জান-মপেক্ষিতমিতি পাপপরিহারার্থিনামস্মাকং ন যুক্তা যুদ্ধে প্রাকৃতিরিত্যর্থ: ॥ ৩১

- ৪০। কোহসৌ কুলকরে দোষো যদ্দর্শনাদ্ যুদ্মাকং যুদ্ধাৎ উপরতিরপেক্যাতে তথাই—কুলেতি। কুলস্ত হি করে কুলসম্বন্ধিনশ্চিরস্তনা ধর্মাঃ তন্তদমিহোত্রাদিক্রিরাসাধ্যা নাশমুপযাস্তি কর্তুরভাবাদিত্যর্থঃ। ধর্ম্মনাশেহপি কিং স্থাদিতি
 চেৎ তত্রাহ—ধন্ম ইতি। কুলপ্রযুক্তে ধর্মে কুলনাশাদেব নষ্টে কুলকরকরস্ত কুলং পরিশিষ্টমখিলমপি তদীরোহধর্ম্মোহভিভবতি অধর্মজুরিষ্ঠং ওম্ম কুলং ভবতীত্যর্থঃ ৪০
- 8>। কুলক্ষরকতে হবশিষ্টকুলন্ত অধর্মপ্রবণত্বে কো দোবঃ ভাদিতি তত্ত্তাই—
 অধ্নেম তি। পাপপ্রচুরে কুলে প্রস্থতানাং স্ত্রীণাং প্রত্তুত্বে কিং ছয়তি
 তত্ত্বাই—স্ক্রীয়িতি॥'৪>

৪০। অবয় । কুলকয়ে [সতি] সনাতনাঃ (চিরন্তনাঃ) কুলধয়াঃ প্রণশ্যন্তি,
 উত ধয়ে নষ্টে [সতি] অধয়ঃ রুৎয়ং (সমগ্রং) কুলম্ অভিভবতি ॥ ৪০

^{8&}gt;। অবস্ব। হে ক্ষা । অধর্মাভিতবাৎ কুলস্ত্রিয়া প্রহায়স্তি (ব্যভিচারাদি-দোবযুকাঃ ভবস্তি), হে বার্ফেস্ম ! (বৃষ্ণিকুশোন্তব !) স্ত্রীয়ু হুষ্টাস্ক [সতীরু] বর্ণসঙ্করঃ জারতে ॥ ৪১

৪০। কুলের ক্ষয় হইলে সনাতন কুলধর্মসমূহ বিনষ্ট হয় এবং কুলধর্ম নয়
 হইলে অধর্ম, সমগ্র কুলকেই অভিভূত করিয়া ফেলে॥ ৪০

৪১। হে ক্ষা । কুল অধ্ধে অভিভূত হইলে কুলরমণীগণ ব্যভিচারাদি দোষে । বিশ্ব হয়। হে বাফের । কুলস্ত্রী সকল [ব্যভিচারাদি দোবে] ছষ্টা হইলে বর্ধ-সন্ধর উৎপন্ন হয়॥ ৪১

সঙ্করো নরকায়ৈব কুলম্বানাং কুলম্ব চ।
পতন্তি পিতরোচ্মোং লুগুপিট্ণুাদকক্রিয়াঃ॥ ৪২
দোষৈরেতঃ কুলম্বানাং বর্ণসঙ্করকারকৈঃ।
উৎসাভান্তে জাতিধর্মাঃ কুলধর্মাশ্চ শাশ্বতাঃ। ৪৩

- ৪২। অবয় । সকর: কুলমানাং কুলগু চ নরকায় এব [ভবতি], হি (বসাং) এবাং পিতর: লুগুপিডোদককিয়া: (লুগুা: পিণ্ডগু উদকস্ত চ ক্রিয়া বেবাং তেত্বা) পতত্তি॥ ৪২
- ৪০। অন্বয়। এতৈঃ বর্ণসন্ধরকারকৈঃ দোবৈঃ কুলগ্নাং শাশ্বতাঃ (সনাতনাঃ) জাতিধর্মাঃ (জাতিপ্রযুক্তাঃ ধর্মাঃ) কুলধর্মান্চ (কুলপ্রযুক্তাঃ ধর্মান্চ) উৎসাম্বস্তে (বিনাশিতা ভবস্তি) ॥ ১৩
- ৪২। [বর্ণ]-সঙ্কর

 ক্রারণ, ইহাদের পিতৃগণ প্রাদ্ধতর্পণে বঞ্চিত হইয়া অধােগতি লাভ করিতে

 থাকেন ॥ ৪২
- ৪০। এই সকল বর্ণসন্ধরকারক-দোবের উদরে কুলক্ষরকারিগণের [নিজ্ঞানিজ] শাখত জাতিধর্ম ও কুলধর্মসমূহ † বিনাশিত হইরা-পাকে॥ ৪৩

আৰন্দগি বিকৃত-টীকা।

- ৪২। বর্ণসন্ধরশু দোষপর্য্যবসায়িতামাদর্শয়তি—সৃষ্কর ইতি। কুলক্ষয়ক্রাণাং দোষাস্তরং সমূচিনোতি—পৃতস্তীতি। কুলক্ষয়কতাং পিতরো নিরম্নগামিনো-ভবস্তীত্যত্ত হেতুমাহ—লুপ্থেতি। পুতাদীনাং কর্ত্বণম্ অভাবাৎ দুখা পিওস্থো-দক্ষ চ ক্রিয়া ধেষাং তে তথা, তত্শ্চ প্রেতস্বপরাবৃত্তিকারণাভাবাৎ নরকপতনমেব আবশ্যকম্ আপতেদিত্যর্থ: ॥ ৪২
- ৪৩। কুলক্ষরভাষ্ এতৈরুদান্ধতৈর্দোবৈ: বর্ণসঙ্করতেত্ভিভাতিপ্রযুক্তা বংশ-প্রযুক্তাশ্চ ধর্মাঃ সর্ব্বেঃ সমুৎসাম্বস্তে তেন কুলক্ষরকারণাদ্ যুদ্ধাৎ উপরতিরেব শ্রেষসীত্যাছ্—দোঠিবরিতি।। ৪৩

^{*} আঙ্গান, ক্ষত্রির, বৈশুও শুদ্র, এই চারি বর্ণের অনুলোম অথবা প্রতিলোমজাত সন্তানগণ বর্ণসঙ্কর।

[†] বংশবিশেষের চির্পাচলিত আচার।

উৎসরকুলধর্মাণাং মনুষ্যাণাং জনার্দন।
নরকে নিয়তং বাসো ভবতীত্যসুশুশ্রুম ॥ ৪৪
আহো বত মহৎ পাপং কর্ত্তুং ব্যবসিতা বয়ম্।
যদ্রাজ্যস্থলোভেন হস্তুং স্বজনমুগ্রতাঃ ॥ ৪৫
যদি মামপ্রতীকারমশস্ত্রং শস্ত্রপাণয়ঃ।
ধার্ত্ররাফ্রী রণে হন্যুস্তম্মে ক্ষেমতরং ভবেৎ॥ ৪৬

- 88। অবর। হে জনার্দন! উৎসন্নকুলধর্মাণাং (উৎসন্নাঃ কুলধর্মাঃ বেষাম্ ইতি, তেষাম্) মহয়াণাং নিয়তং (নিশ্চিতং) নরকে বাসঃ (স্থিতিঃ) ভবতি ইতি [বরম্] অনুঞ্জাম (শতবন্তঃ)॥ ৪৪
- ৪৫। অথর। আহো বত! বয়ং মহৎ পাপং কর্ছ্ৎ ব্যবসিতাঃ (ক্বতনিশ্চরাঃ) বং (বন্ধাৎ) রাজ্যস্থলোভেন [বয়ং] স্বন্ধনং হস্কুম্ উন্মতাঃ ॥ ১৫
- ৪৬। অবর। বদি শত্রপাণরঃ ধার্তরাষ্ট্রাঃ মান্ অশস্ত্রম্ অপ্রতীকারং রণে হয়ঃ, তং নে ক্ষেমতরং ভবেং ॥ ৪৬
- 88। হে জনার্দন । যে সকল মানবের কুলধর্ম বিনপ্ত হয়, তাহাদের নিশ্চরই নরকে বাস ঘটিয়া পাকে, ইহা স্থাসরা [শাস্তে] শ্রবণ করিয়াছি॥ ৪৪
- ৪৫। হার ! আমরা মহৎ পাপ করিতে প্রবৃত্ত হইরাছি ; যেহেভু রাজ্যস্থাের লোভে আমরা স্বজন-বিনাশ করিতে উন্মত হইরাছি ॥ ৪৫
- ় ৪৬। শস্ত্রপাণি ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রগণ, যদি প্রতীকার-পরায়ুখ ও অশস্ত্র আমাকে রণে বিনাশ করে, আমাদের পক্ষে তাহাই বিশেষ মঙ্গলকর হইবে॥ ৪৬

আনন্দগিরিকৃত-টীকা।

- ৪৪ । কিঞ্চ জাতিধর্শের্ কুশধর্শের্ চ উৎসন্নের্ তত্তভর্শার্শিতানাং মন্থয়াণান্
 আনধিকতানাং নরকপতনঝোবাথে অনর্থকরমিদমেব হেরমিত্যাহ—উৎসদ্রেতি।
 বথোকানাং মন্থ্যাণাং নরকপাতশু আবশ্যকত্তে প্রমাণমাহ—ইত্যুকুশুশ্রুমেতি॥ ৪৪
- । রাজ্যপ্রাপ্তিপ্রযুক্তরণোপভোগণুক্তরা স্বজনহিংসারাং প্রবৃত্তিরস্থাকং শুক-দোষবিভাগবিজ্ঞানবভান্+অভিকটেভি পরিভ্রন্থরঃ সরাহ—অহে। বভেতি ॥৪৫
 - ৪৬। যভেবং মুদ্ধে বিমূপঃ † সন্ পরপরিভবপ্রতীকাররহিতো বর্তেখান্তহি

[#] विकानविज्ञान विकान**ण**िनाम्।

⁺ ब्राक विश्वः - ब्रेकविश्वः।

সঞ্জয় উবাচ।

এবমুক্ত্বার্চ্ছনঃ সংখ্যে রথোপস্থ উপাবিশৎ। বিস্তজ্য সশরং চাপং শোকসংবিগ্নমানসঃ॥ ৪৭

তি শ্রীমহাভারতে শতসাহস্র্যাৎ সংহিতায়াৎ বৈদ্যাসিক্যাৎ ভীদ্মপর্বাণি শ্রীমদ্ভ ভগবলগীতাস্পনিবৎক্ষ ব্রহ্মবিভারাৎ বোগশান্তে শ্রীক্ষমার্ক্নসংবাদে অর্জুন-বিবাদবোগো নাম প্রথমোহধ্যারঃ ॥

- ৪৭। অবর । সঞ্জয়: উবাচ। সংখ্যে (বুদ্ধে) শোকসংবিশ্বমানসঃ রথোপস্থঃ অর্জুন: এবম্ উক্তা সশরং চাপং বিস্তঞ্জ উপাবিশৎ ॥ ৪৭
- ৪৭। সঞ্জর বলিলেন—যুদ্ধক্ষেত্রে শোকব্যাকুলহাদর রথোপরিস্থিত **অর্জু**ন এই প্রকার বলিয়া ধয়ঃ ও শর পরিত্যাগপূর্বক উপবেশন করিলেন॥ ৪৭

্তি লক্ষণ্ণোকাত্মক শ্রীমহাভারতাথ্য ব্যাসক্কত-সংহিতার ভীম্নপর্বে শ্রীমন্তগবদ্-গীতানামক উপনিষদে ব্রহ্মবিছা-রূপ বোগশান্ত্রে প্রথম অধ্যারে অর্চ্চনের বিযাদবোগ সমাপ্ত।

আনন্দগিরিকুত-টীকা।

াৎ শত্রপরিগ্রহরহিতং শত্রুং শত্রপাণরো ধার্ত্তরাষ্ট্রা নিগৃহীর্রি<mark>ত্যাশভ্যাহ—</mark> াদীতি। প্রাণ্রাণাদপি প্রকৃষ্টো ধর্মঃ প্রাণভৃতামহিংসেতি ভাবঃ॥ ৪৩

৪৭। বথোক্তম্ অর্জ্বত বৃত্তান্তং সঞ্চরো-ধৃতরাট্রং রাজানং প্রতি প্রবেদিতবান্
্রমেব প্রবেদনপ্রকারং দর্শরতি—এব্মিতি। প্রদর্শিতেন প্রকারেণ ভগবন্তং প্রতি
বৈজ্ঞাপনং কথা শোকমোহাভ্যাং পরিভূতমানসঃ সন্ অর্জ্জ্বঃ সংখ্যে বৃদ্ধমধ্যে শরেণ
হিতং গাণ্ডীবং ত্যক্তা ন বোৎভেছেইনিতি ক্রবন্ মধ্যের্থত সন্ন্যাসমেব প্রের্থর বা উপবিষ্টবানিত্যর্থঃ ॥ ৪৭

ইতি শ্রীমংপরমহংস-পরিব্রাঞ্চকাচার্য্য-শ্রীমজুদ্ধানক্ষ-পৃত্ত্যপাদশিব্যানক্ষ্মান-গিরি-বিরচিতে, শ্রীমদ্ভগবদগীতা-শাহরভাব্যব্যাধ্যানে প্রথমেহধ্যার: ॥

षिতীয়োহধ্যায়ঃ।

সঞ্জ উবাচ।

তং তথা কপয়াবিষ্টমশ্রুপূর্ণাকুলেক্ষণম্। বিষীদস্তমিদং বাক্যমুবাচ মধুসূদনঃ॥ ১

- ১। অধর। সঞ্জরঃ উবাচ। মধুস্দনঃ তথা কুপরা (করুণরা) আবিষ্টিষ্ (অধিষ্ঠিতম্) অশ্রুপ্থাকুলেকণং বিবীদস্তং (শোচস্তং) তম্ (অর্জুনং প্রতি) ইদং (বক্যমাণং) ৰাক্যম্ উবাচ॥ ১
- ১ ! সঞ্জ কহিলেন—সেইরূপ ক্লপাবিট অঞ্পূর্ণাকুলনেত্র এবং বিষয় অর্জুনকে [লক্ষ্য করিয়া] মধুস্পন এই বাক্য বলিতে লাগিলেন ॥১

আখিনদ্গিরি—অহিংসা পরমো ধর্ম্মো ভিকাশনঞ্চ ইত্যেবংলকণরা বৃদ্যা বৃদ্ধের বিস্থাসর্জ্বনত প্রথা পর্বাণাং রাজ্যৈখাই মুখ্য অপ্রচলিতম্ অবধার্য্য অস্থ্যনার গুড্তনার প্রথান অধ্যান অধ্যান অধ্যান অধ্যান অধ্যান অধ্যান অধ্যান সঞ্জার ইতি। পরমেখরেণ আর্যামাণোহিপি ক্রত্যাক্ত্যে সহসা ন অর্জ্ক্য শোকত দুঢ়তরমোহহেত্ত্বাং, তথাপি তং ভগবান নোপেক্ষিত্রবানিত্যাহ—তং তথেতি। তং প্রকৃতং পার্থং, তথা অজ্ঞন-মরণ প্রস্ক-নর্শনেন, *কপরা করণরা আবিষ্টম্ † অধিষ্টিতম্ অপ্রভিঃ পূর্ণে সমাকৃলে চ ক্রমণে বহুত তম্ব অপ্রতায়েতরলাক্ষং, বিবীদস্তং শোচন্তম্ ইদং বক্ষামাণং বাক্যং সোপপত্তিকং বচনং মধুনামানমন্তরং স্থানতবানিতি, ф মধুস্দনো ভগবান্ উক্তবান্ ন তু বধোক্তমর্জ্ন-মুণেক্ষিত্রানিত্যর্থঃ। ১

কৃতত্ত্বা কশ্মলমিদং বিষমে সমূপস্থিতম্। অনাধ্যজুইটমস্বর্গ্যমকীর্ত্তিকরমর্জ্জুন॥ ২

২। অবর। ঐতগবান্ উবাচ। হে অর্জুন! বিবনে (অস্মিন্ সভরস্থানে) কুডঃ (কসাৎ) অনার্যাজুইন্ (সন্বিগহিত্তম্) অকীর্তিকরম্ অম্বর্গ্যমূৎ(পরলোকাহিত-করম্) ইনং কশ্মলং (মলিনং) ডা (ডাং) সমুপদ্বিত্ম (প্রাপ্তম্) ॥ ২

^{*} पर्नत्वन कृषदा - पर्नवद्रशता ।

⁺ विशिष्ठम् - विशिष्ठम् ।

^{‡ &}quot;হাৰিতবান্ ভগবান্ ইতি" ইতি বা পাঠ:। °

২। **ঐভিগ্**বান্ কহিলেন—হে অর্জুন। এই ভরাবহ রণক্ষেত্রমধ্যে কোথা হইতে অনার্যাননসেবিত পরলোকে অহিতকর ও ইহলোকে অকীর্ট্রিকর এই সমর-পরাক্ত্ব-রূপ মনিনতা তোমার উপস্থিত হইন ?॥ ২

আনন্দ্রিনিকিং তদ্বাক্যমিত্যপেক্ষায়ামাহ— ঐভিগ্রানিতি। কুতঃ হেতোঃ দা দাং সর্বক্ষিত্রিপ্রথবরং, কন্মলং মলিনং শিষ্টগর্হিতং যুদ্ধাং পরামুখদ্বং, বিবমে সভরহানে, সমুপন্থিতং প্রাপ্তম্, অনার্য্যৈঃ শাস্ত্রার্থমবিত্তিঃ ভূইং সেবিতম্, অবর্গ্যং বর্গানহং প্রত্যবারকারণম্, ইং চ অকীর্ত্তিকরম্ অবশন্ধরম্ * অর্জুননায়া প্রখ্যাতন্ত তব নৈতং যুক্তমিত্যর্থঃ॥ ২

> ক্লৈব্যং ণ মা স্ম গমঃ পার্থ ! নৈতৎ ত্বযুগপগন্ততে। ক্লুন্দে হৃদয়দৌর্বল্যং ত্যক্ত্বোতির্চ পরস্তপ॥ ৩

- ৩। অবর। বে পার্থ ! ক্লৈব্যং (অবৈর্যাং) মান্দ্র গমঃ, এতং (ক্লৈব্যং) দ্বরি ন উপপদ্মতে (ন যুদ্ধং ভবতি), হে পরস্তপ (শত্রুতাপন) ক্লুব্রং (নীচজনোচিতং) দ্বুদরদৌর্ম্বল্যং ত্যক্তা (বিহার) উত্তিষ্ঠ (রণার উপক্রমং কুরু)॥ ৩
- ৩। হে পার্থ! অধীর হইও না, ইহা তোমার পক্ষে উপযুক্ত নহে, হে পরস্তপ! নীচলনোচিত হাদরদৌর্জন্য পরিত্যাগ করিয়া যুদ্ধ করিবার জ্ঞ উপক্রম কর॥ ৩

আনন্দ্রিনি প্নরণি ভগবান্ অর্জুনং প্রত্যাহ—ক্রৈব্যমিতি। ক্রৈব্যং ক্লীবভাবমধৈর্যং, মান্দ্রগমো মা গাঃ, হে পার্থ পূথাতনর! ন হি দ্বরি মহেধরেণাপি ক্লভাহবে প্রখ্যাতিপৌক্ষবে মহামহিমনি এতদ্ উপপস্থতে। ক্রুং ক্রুদ্রকারণং, হুদরদৌর্কান্যং মনসো হুর্কান্দমধৈর্যং তাক্ষা, উত্তিষ্ঠ যুদ্ধায়োপক্রমং কুক্ল, হে পরস্তুপ পরং শক্রং তাপরতীতি তথা সংঘাধ্যতে ॥ ৩

व्यक्त डेवाह।

কথং ভীষ্মমহং সংখ্যে দ্রোণঞ্চ মধুসূদন। ইযুভিঃ প্রতিযোৎস্থামি পূজাহাবরিসূদন॥ ৪

 ८ अव्या । अर्जुनः उर्वाठ । ८ मध्यमम । ८ अतियन । अरः नः १४।
 (क्ष) केथर (किन अकारतन) हेव्जिः (वारेनः) भ्वारशे (भ्राची) छोत्रर ज्ञानक अजिरवारकामि ॥ ८

भवन्यत्य — अवन्यत् ।

[†] মা ফ্লেব্যং গতহ কোন্তের ইতি বা পাঠ:।

৪। অর্জুন বলিলেন—হে মৃধুস্দন । হে অরিস্দন । আমি রণমধ্যে কিরুপে
পুলনীর ভীল্প ও জোণের সহিত শরসমূহের হারা বৃদ্ধ করিব ? ॥ ৪

আনন্দ্গিরি—এবং ভগবতা প্রতিবোধ্যমানোহপি শোকাভিভূতচেত্বান্
অপ্রতিব্ধ্যমানঃ সন্ অর্জনঃ স্বাভিপ্রারমেব প্রকৃতং ভগবত্তং প্রত্যুক্তবান্—কথমিত্যাদিনা। ভীন্নং পিতামহং, দ্রোপঞ্চাচার্য্যং, সন্ম্যে রণে, হে মধুস্দন, ইবৃভিঃ
নারকৈন্তৌ কথং প্রতিবোৎস্তানি প্রতিবোৎস্তে, তৌ হি পূজাহৌ কুসুমাদিভিরর্জনবোগ্যৌ, * হে অরিস্দন, সর্কানেব অরীন্ অবত্বেন স্থদিতবানিতি ভগবান্ এবং
সংবাধ্যতে ॥ ৪

গুরুনহত্বা হি মহামুভাবান্ শ্রেয়ো ভোক্ত্যুং ভৈক্ষ্যমপীহ লোকে। হত্বাহর্থ কামাংস্ত গুরুনিহৈব ভুঞ্জীয় ভোগান্ রুধিরপ্রদিশ্ধান্॥ ৫

ে। অবর। হি (বসাৎ) মহামুভাবান্ গুরুন্ (ভীন্নদ্রোণাদীন্) অহতা ইহ লোকে ভৈক্যন্ (ভিকাশনন্) অপি ভোজুং শ্রেরঃ (প্রশস্তরং), তু (কিছ) গুরুন্ হতা (বিনাশ্র) ইহ এব ক্ষিরপ্রদিক্ষান্ (ক্ষির্লিপ্তান্) অর্থকামান্ ভোগান্ ভূজীর (অনীরান্)॥ ধ

বেহেতু [এই সকল] মহাত্মভাব গুরুজনকে বিনাশ না করিরা এই জগতে
ভিকার ভোজন করাও প্রেরন্থর। কিন্ত, [হার!] গুরুজনকে বিনাশ করিরা
[আমি] এইধানেই রুধিরলিপ্ত অর্থকামাত্মক ভোগ্য ভোগ করিব।।

আননদণিরি—রাজাং ধর্ম্যেইপি বৃদ্ধে শুর্কাদিবধে বৃত্তিমাত্রফলমং গৃহীয়া পাণমারোপ্য. ক্রতে—গুরুনিতি। শুরুন্ ভীয়ন্ত্রোণাদীন্ আত্রাদীংশ্চাল প্রাথান্ আহিংসিছা মহাম্ভাবান্ মহামাহাত্মান্ শ্রুভাগ্যরনসম্পর্কান্ শ্রের: প্রশৃষ্ঠতরং বৃত্তং ভোজ মু অভ্যবহর্ত্বং ভৈক্যাং ভিক্যাণাং সমূহং ভিক্ষাশনং নৃপাদীনাং নিবিদ্ধাশি ইহলোকে ব্যবহারভূমৌ ন হি শুর্কাদিহিংসরা রাজ্যভোগোহপেক্যতে। বিশ্ব হুয়া শুর্কাদীন্ অর্থকামানের ভূঞ্জীয় ন মোক্ষমন্ত্রেরম্ ইহুর্ব ভোগো ন স্বর্গে। শুরুকামানের বিশিন্তি—ভোগানিতি। ভূজান্ত ইতি ভোগার্য ভান্ ক্রমির-

 ^{• ••}বোগোঁ, হে···=··বোগোঁ, বত্ৰ বাচাপি বোৎস্তানীতি বক্ত মূ অনুচন্তিং তত্ত্ব কথা
 বালেবোৎস্য ইতি ভাবা, হে···।

প্রদিশ্বান্ কোহিতনিপ্রান্ ইবাত্যস্তগর্হিতান্ অতো ভোগান্ প্রক্রমান্ত্রিক্তাক্র ভিকাশনমেব যুক্তমিত্যর্থ: ॥ ৫

ন চৈতদ্বিদ্যঃ কতরফো গরীয়ো

যদ্বা জয়েম যদি বা নো জয়েয়ুঃ। যানেব হয় ন জিজীবিধাম-

স্তেহবস্থিতাঃ প্রমুখে ধার্ত্তরাষ্ট্রাঃ ॥৬ [°]

আয়য়য়। বদ্বা (यদি বা) [বরং] জরেম, যদি বা নঃ (আয়ান্) জরেয়ঃ (ধার্জরাষ্ট্রা ইতি শেষঃ) [এতরোঃ পক্ষরোম ধ্যৈ] নঃ (আয়াকং) কতরৎ গরীয়ঃ (খেরয়রং) এতৎ ন বিদ্মঃ (জানীমঃ)। বান্ এব হলা [বরং] ন জিলীবিধাসঃ (ন জীবিতুমিচ্ছামঃ) তে ধার্ত্ররাষ্ট্রাঃ প্রমূথে (সল্পুথে) [যুদ্ধার] অবস্থিতাঃ ॥৬

৬। আমরা বিপ্লর লাভ করিব, কিংবা আমাদিগকে [ধৃতরাষ্ট্রপ্ত্রগণ] পরাজিত করিবে, এই উভর পক্ষের মধ্যে কোন্ পক্ষ শ্রেয়ঃ, তাহা বুরিতে পারি-তেছি না। বাহাদিগকে বিনাশ করিয়া আমরা জীবিত থাকিতে ইচ্ছা করি না, এ বে সেই ধৃতরাষ্ট্রপ্ত্রগণ (আমার) সম্মুখে অবস্থিত ।

আননদি গিরি — ক্রিয়াণাং স্বধর্মগান্ যুদ্ধমেব শ্রেম্বরমিত্যাশক্যাহ— ন চৈতদিতি। এতদপি ন জানীমো তৈক্যযুদ্ধরোঃ ক্তরং নোহস্মাকং গরীয়ঃ শ্রেষ্ঠং, কিং তৈক্যং হিংসাশ্রেষাং, উত যুদ্ধং স্বর্জিফাদিতি। সন্দির্মা চ জয়ছিতিঃ। কিং সাম্যমেব উভয়েয়াং বন্বা বয়ং জয়েম অতিশয়েমহি বদি বা নোহস্মান্ ধার্জয়াষ্ট্রা ছর্মোধনাদয়েরা জয়েয়য়ঃ। জাতোহপি জয়ো ন ফলবান্, বতো যান্ বদ্ধ্ হথা ন জিজীবিবামো জীবিতুং নেচ্ছামঃ, তে. এব অবস্থিতাঃ প্রস্থে সংস্থে ধার্জয়াষ্ট্রা য়তরাষ্ট্রজাপত্যানি, তত্মাতিক্রসাৎ যুদ্ধশু শ্রেষ্ঠ কেং ন সিদ্ধমিত্যর্থঃ ॥৬

কার্পণ্যদোষোপহতশ্বভাব

পূচ্ছামি ত্বাং # ধন্ম সংমৃতচেতাঃ। যচ্ছে য়ঃ স্থামিশ্চিতং জহি তন্মে

শিষ্যন্তেইহং শাধি মাং ছাঃ প্রপন্নম্॥ 4

 । অনুষ্
া কার্পণ্যদোবেশিহতসভাবঃ (দৈন্তদোবকল্বিতধীঃভিঃ) ধর্ম क সংস্কৃতেতাঃ (ধর্মে সংস্কৃৎ তেতো বস্ত সঃ) [অহং] দাং পৃচ্ছানি—মে

^{* 415-411.}

বিদ্যালিত শেরঃ ভাং [তং] জহি (কথর), অহং তে (তব) শিষ্যঃ প্রণক্ষং (একারাপ্রিতং) মাং শাধি (উপদিশ) ॥°

च। স্বার্থান্ধতা প্রযুক্ত দৈল্পদোবে আমার চিত্ত মলিন হইরাছে, আমার চিত্তে ধর্মান্ধর্মের বিবেক প্রকাশ পাইতেছে না, আমি তোমার নিকট জিজ্ঞাসা করিতেছি

—আমার পক্ষে বাহা নিশ্চিত প্রেরম্বর, তাহা বল, আমি তোমার শিশ্ব [হইলাম];
শরণাগত আমাকে [সং] উপদেশ প্রদান কর ॥

প্রশাসত আমাকে [সং] উপদেশ প্রদান কর ॥

প্রশাসত আমাকে [সং] উপদেশ প্রদান কর ॥

প্রশাসত আমাকে [সং] উপদেশ প্রদান কর ॥

প্রশাসত আমাকে ভ্রামান্ধর ভ্রামান্ধর দিল্ল প্রশাসত আমাকে ভ্রামান্ধর দিল্ল প্রশাসত আমাক বিভাগ কর দিল্ল প্রশাসত আমাক বিভাগ কর দিল্ল প্রশাসত প্রশাসত আমাক বিভাগ কর দিল্ল প্রশাসত আমাক বিভাগ কর দিল্ল প্রশাসত বিভাগ কর দিল্ল প্রশাসত বিভাগ কর দিল্ল কর দ

আনন্দ্রি — সমধিগত সংসারদোর জাত ত অভিতরাং নির্বিপ্পত মুমুকোরপন্তরত আব্যোপদেশসংগ্রহণে অধিকারং স্চরতি — কাপিলাত । যোহরাং স্বরান্ধিপ সক্ষতি ন ক্ষমতে সংক্রপণঃ তদ্বিধন্তাদ্ অধিলোহনাত্মবিদ্ অপ্রাপ্তরমন্ত্রমার্থতরা ক্রপণো ভবতি, "বো বা এতদক্ষরং গার্গ্যবিদিদ্বা অত্মারোকাৎ প্রৈতি সক্ষপণঃ" ইতি প্রস্তেঃ; তক্ত ভাবঃ কার্পণ্যং দৈলং তেন দোবেণ উপহতো দ্বিতঃ অভাবশ্চিত্তমন্তেতি বিগ্রহঃ। সোহহং পৃদ্ধামি অমুমুঞ্জে, যা যাং ধর্ম্মগংস্ট্টেতা ধর্ম্মোধাররতীতি পরং ব্রন্ধ তরিন্দ্ সংস্ট্রম্ অনুমুঞ্জে, যা যাং ধর্ম্মগংস্ট্টেতা ধর্মোধাররতীতি পরং ব্রন্ধ তরিন্দ্ সংস্ট্রম্ ক্রান্তিক্রম্ অনাপেক্ষিকং শ্রেরঃ তাৎ ন রোগনিবৃত্তিবদ্ অনৈকান্তিক্র্ম্ অনাত্যন্তিকং স্বর্গবদ্ আপেক্ষিকং বা তরিঃশ্রেরসংশ্বে মহুং "প্রবৃত্তি নাপুজারাশিল্যার" ইতি নিবেধাৎ ন প্রবৃত্তমানিতি মা মংস্থা যতঃ শিব্যন্তেহ্বং ভবানি। শাধ্যমুশাধি মাং নিংশ্রেরসং স্থামহং প্রপ্রোহিষি॥ ৭

নহি প্রপশ্যামি মমাহপত্মতাদ্ যচ্ছোকমুচেছাবণমিন্দ্রিয়াণাম্। অবাপ্য ভূমাবসপত্মমৃদ্ধং

রাজ্যং স্থরাণামপি চাধিপত্যম ॥ ৮

- ৮। অনুয়। ভূমো অসপত্বম্ (নিহ্নটকম্) ধহং রাজ্যং অবাপ্য ক্ররাণাং চ
 [বা] আধিপত্যম্ (অবাপ্য) বং মম ইন্দ্রিয়াণাম্ উচ্ছোষণং (প্রভণনম্) শোকম্
 অপমুস্তাৎ (অপসারয়েৎ) তং ন প্রপশ্রামি ॥৮
- ৮। বুদ্ধে আত্মীরগণের প্রাণসংহার করিয়া এই পৃথিবীতে শহেহীন সমৃদ্ধিবুক্ত রাজ্য লাভ করিলে, অথবা দেবগণের উপরেও আধিপতা লাভ করিলে, বাহা
 আমার এই ইলিয়তাপকর শোক অপহরণ করিতে পারিবে, এমন কোন উপার
 আমি দেখিতে পাইভেছি না ॥৮

আনন্দ্গিরি—কুতো নিংশ্রেরদমেব ইচ্ছিসি তরাক—ন হীতি। বসার প্রশাসামি। কিং ন প্রশাসী মম অপস্থাদ্ অপনরেদ্ বচ্ছোকমুচ্ছোবণং প্রতপনম্ ইন্দ্রিরাণাং তর পঞ্চামি। নম্ন শক্রন্ নিহত্য রাজ্যে প্রাপ্তে শোকনির্ভিত্তে ভবিষ্যতি,নেত্যাহ—অবাপ্ত্যেতি। অবিশ্বমানঃ সপন্ধঃ শক্রবন্ত তদ্ " মুক্তং রাজ্যং রাজ্ঞঃ কর্ম প্রশারক্ষণপ্রশাসনাদি তদিদমতাং ভূমৌ অবাপ্যাদি শোকাপনর-কারণং ন পশ্যামীত্যর্থঃ। তর্হি দেবেক্রত্বাদিপ্রাপ্তেটি + শোকাপনরত্তে ভবিষ্যতি, নেত্যাহ—স্থিরাণামপীতি। তেবামাধিপত্যম্ অধিপতিত্বস্থাম্যমিক্রতং ব্রহ্মহং বা তদবাপ্যাপি মম শোকো নাপগছেদিত্যর্থঃ॥ ৮

সঞ্জ উবাচ ।

এবমুক্ত্ব। হ্নবীকেশং গুড়াকেশঃ পরস্তপঃ

ন যোৎস্থ ইতি গোবিন্দমুক্ত্বা ভূফীং বন্ধূব

হ ॥ ৯
তমুবাচ হাষীকেশঃ প্রহসন্মিব ভারত।

সেনয়োক্রভয়োর্ম ধ্যে বিধীদন্তমিদং বচঃ ॥ ১০

৯-১০। অবর। সঞ্জয় উবাচ। পরস্তপ: গুড়াকেশ: (অর্জ্ন:) হ্বরীকেশং গোবিন্দম্ এবম্ উক্রা অহং ন ধোৎত্তে ইতি উক্রা তৃকীং (মৌনী) বভূব। হৈ ভরত! (ভরতকুলোত্তব গ্রুরাষ্ট্র!) উভয়ো: সেনয়োমধ্যা প্রহসন্নিব (উপহাসং কুর্কন্নিব) হ্বরীকেশ: বিবীদস্তং তম্ (অর্জ্নম্) ইদং বচ: উবাচ॥ ৯—১০

৯—১০। সঞ্জয় কহিলেন—এই কথা বলিয়া পরস্তপ অর্জ্ব, "আমি বৃদ্ধ করিব না" এই কথা হ্যবীকেশ গোবিন্দকে বলিয়া মৌনাবলম্বন করিলেন। হে ভারত! [তৎকালে] উভয় সেনার মধ্যে মেন [উপহাসচ্ছলে] হাত করিয়া, হ্যবীকেশ বিষয় ভাঁহাকে (অর্জ্কুনকে) এই কথাগুলি বলিতে আরম্ভ করিলেন॥ ৯—১০

আনন্দ্রিনি এবমর্জুনেন স্বাভিপ্রায়ৎ ভগবন্তং প্রতি প্রকাশিতং সঞ্জরের রাজানম্ আবেদিতবানিত্যাই—সঞ্জয় ইতি ৷ এবং প্রাপ্তক্রকারেণ ভগবন্তং প্রত্যুক্ত্য পরস্তুপোহর্জুনো ন বোৎত্তে ন সংপ্রহরিব্যে স্বভাব্যাইশোকপ্রস্কাদিতি গোবিন্দম্ক্র্য তৃষ্টীসক্রবন্ বভূব হ কিলেত্যর্থঃ ॥১

আনন্দ্রিরি—তমর্জ্নং সেনরোর্কাহিন্তোক্বরোর্বধ্যে বিবীদর্থ বিবাদং কুর্বস্তমতিক্রংথিতং শোকমোহাত্যাম্ অভিতৃতং স্বধর্মাৎ প্রচ্যুত্তপ্রারং প্রতীদ্রা

^{*} जर्युक्र = जकृत्र।

⁺ वारखो – वाखा ।

[‡] পরস্তপেতি বা পাঠঃ।

অংশবিদ উপহাসং কুর্মবিদ তদাধাসার্থং হে ভারত ভরতাবর ইভ্যেকং সংবোধ্য ভগবানিদং প্রশ্নোত্তরং নিঃশ্রেরসাধিগমসাধনং বচনম্চিবানিড্যাহ-- তমুবাচেতি। ভদেব বচনম্ উদাহরতি—শ্রীভগবানিতি॥ ১০

প্রীভগবামুবাচ।

ভাষ্যম্। (তত্রাদাববতর্ণিকা)! "দৃষ্টাতু পাণ্ডবানীকন্" ইত্যান্নভ্য "ন বোৎস্টেভি গোবিন্দমূলা তৃষ্টাং বভ্ব হ" ইত্যেভদন্ত: প্রাণিনাং শোক্ষোহাদিন্দং সংসারহঃথবাজভূতদোবোদ্ভবকারণহেতৃপ্রদর্শনার্থদ্বন ব্যাখ্যেরা গ্রহঃ, তথাহি কর্জুনেন রাজ্যভরুপ্রমিত্রস্কহংবজনসম্বন্ধিবাদ্ধবের্ 'অহমেবাং মমৈতে' ইত্যেবং লান্তিপ্রতান্ধনিত্তকেহবিচ্ছেদাদিনিমিত্তৌ আত্মনঃ শোক্ষোহাে প্রদর্শিতে), "কথং ভীন্মহং সংখ্যে" ইত্যাদিনা। শোক্ষোহাভ্যাং ক্রভিভূতবিবেকবিজ্ঞানঃ সক্তর্পর ক্ষাত্রধর্মে বৃদ্ধে প্রবৃত্তাহিপি ভন্মান্য্রাহ্ণপররাম, পরধর্মক ভিক্ষাবনাদিকং কর্তুঃ প্রবর্তে চ। তথা চ সর্বপ্রাণিনাং শোক্ষাহাদিদােবাবিইচেত্রসাং ক্ষভাবত্রবে ক্ষর্মপরিত্যাগঃ প্রতিষিদ্ধবেবা চ ভাং। ক্ষর্মে প্রক্রানামপি ভেষাং বাত্মমনঃক্যাদীনাং প্রবৃত্তিঃ ক্লাভিসন্ধিপ্র্বিকৈব সাহক্ষারা চ ভবতি। তত্রবং সভি ধর্ম্মাধর্ম্মাদিনাং ইন্থানিইজন্মস্থত্ঃখাদিপ্রাপ্তিলক্ষণঃ সংসারোহত্বপরতাে ভবতীত্যতঃ সংসারবীজভূতৌ শোক্ষাহাের, তরােন্চ সর্বন্দ্মান্যস্প্রকাৎ আত্মজানাং নাভতো নির্ভিরিতি তত্বপদিদিক্য সর্বলােকাফ্রার্থিক্ অর্জুনং নিমিত্রীক্বতাহ ভগবান্ বাস্থদেবঃ অশোচ্যানিত্যাদি।

তত্ত্ব কেচিদাহঃ, সর্বকর্মগংক্তাগপূর্বকাৎ আত্মজাননিষ্ঠামাত্রাদেব কেবলাৎ কৈবলাং ন প্রাণ্যত এব, কিং তর্হি ? অগ্নিহোত্রাদিশ্রোতসার্তকর্মসহিতাৎ জানাৎ কৈবল্যপ্রাপ্তিরিতি সর্বাহ্ম গীতাল্প নিশ্চিতোহর্থ ইতি । জ্ঞাপকঞাছক্রিল্লার্থত্ত—"অথ চেন্দমিং ধর্ম্মং সংগ্রামং ন করিয়াসি", "কর্মণ্যেবাধিকারত্তে",
"ক্রুল্ল কর্মেব তত্মান্ত্রম্" ইত্যাদি । হিংসাদিযুক্তমাৎ বৈদিকং কর্ম অধর্মারেতি
ইর্মপ্যাশকা ন কার্য্যা । কথম্ ? ক্লাত্রং কর্ম্ম যুদ্ধলক্ষণং গুল্পত্রাদিহিংসালক্ষণমত্যক্তক্রকরমণি অধর্মইতি ক্লমা নাধর্মান্ত, তদকরণে চ "ভতঃ অধর্মে
ক্রিক্স :হিন্মা, গাপমবাক্ষ্যসিত ইতি ক্রবতা বাবজ্জীবাদিশ্রতিচোদিতানাং
ক্রম্মণাং প্রাদিহিংসালক্ষণানাঞ্চ কর্মণাং প্রাণেব নাধর্মমিতি স্থানিশ্রিভমুক্তম্ব ভবতীতি ।

তদসং, ভানকশনিষ্ঠয়োর্কিভূাগবচনাৎ বৃদ্ধিবয়াশ্রয়রোং "অশোচ্যান্" ইত্যাদিনা গ্রাহেন ভগবতা যাবৎ "ব্যধ্মসপিচাবেক্স" ইত্যেভদবেন গ্রহেন

ষ্ৎপর মার্থাত্মনিরূপণং কৃতং, তৎ সাংখ্যং, তদ্বিষয়া বুদ্ধিরাত্মনো জন্মাদিষ্ড -বিক্রিয়াভাবাৎ অকর্তাম্মেতি প্রকরণার্থনিরূপণাৎ যা জায়তে, সা সাম্বাবৃদ্ধিং, সা বেৰাং জ্ঞানিনাৰুচিতা ভবতি, তে সাংখ্যাঃ। এতজাবুদ্ধের্জন্মনঃ প্রাক্ সাত্মনো-দেহাদিব্যতিরিক্ত কর্তৃৰভোক্তৃত্বান্তপেকো ধর্মাধর্মবিবেকপূর্বকো মোক্ষসাধনা-कृष्ठीननिक्रभगनकरमा योगः, छन्विया वृक्षिर्यागवृक्षिः, ना ययाः कर्मिनामृहिछा ভবতি, তে যোগিন: ় তথা চ ভগবতা বিভক্তে বে বুদ্ধী নির্দিষ্টে "এবা তেছভি-হিতা সাংখ্যে বৃদ্ধির্যোগে ত্বিমাং শৃণু" ইতি। তয়োশ্চ সাংখ্যবৃদ্ধ্যাশ্রমাং আবান-যোগেন নিষ্ঠাং সাংখ্যানাং বিভক্তাং বক্ষাতি "পুরা বেদাম্মনা মরা প্রোক্তা" ইতি তণাচ বোগবুদ্ধাশ্রমাং কর্মযোগেন নিষ্ঠাং বিভক্তাঞ্চ বক্ষ্যতি "কর্মযোগেন বোগিনাম" ইত্যেবং সংখ্যবৃদ্ধিং বোগবৃদ্ধিঞ্চ আশ্রিতা দে নিষ্ঠে বিভক্তে ভগবতৈ-বোল্ডে জ্ঞানকর্মণোঃ কর্ত্তবাক্ত হৈক্তানেক্তব্দ্যাশ্রয়য়োঃ একপুরুষাশ্রম্থা-সম্ভবং পশ্ৰতা। বথৈতদ্বিভাগবচনং, তথৈব দর্শিতং শাতপথীয়ে ব্রাহ্মণে,— "এতমেব প্রবাজিনো লোকমিচ্চন্তো বান্ধণাঃ প্রব্রুত্তি" ইতি মুর্ব্বকর্মসন্মাসং বিধার, তচ্ছেবেণ "কিং প্রজয় করিব্যানো বেবাং নোহয়নাত্মাহয়ং লোক" ইতি। তত্ত্বৈর চ. প্রাঞ্গারপরিগ্রহাৎ পুরুষশ্চাত্মা প্রাক্ততো ধর্ম্মঞ্চিজ্ঞাণে তেরকালং লোক-जन्मायनः शृद्धाः, विश्वकातक विजः मासूनाः रेनवकः , তত मासूनाः विजः कर्यात्रभः পিতৃলোকপ্রাপ্তিদাধনং, বিভাঞ্চ, দৈবং বিত্তঃ দেবলোকপ্রাপ্তিদাধনং, "সোহ-কাময়ত" ইতি অবিম্যাকামবত এব সর্বাণি কর্মাণি শ্রোতাদীনি দর্শি-তানি, "তেভ্যো বাখার প্রজ্ঞি" ইতি বাখানমাত্মাননের লোকমিছতো হকামন্ত বিহিতম্। তদেতদ্বিভাগৰচনম্ অনুপ্পন্নং ভাৎ, যদি শ্রোতকর্মজানয়োঃ সমৃচ্চরোহভিপ্রেতঃ স্যান্তগবতঃ।

ন চ অর্জ্বেশ্ত প্রশ্ন উপপরে। ভবতি 'জ্যায়দী চেং কর্মণত্তে' ইত্যাদিঃ।
একপ্রবাহঠের ছাদভবং বুদ্ধিকর্মণাে: ভগবতা পূর্ব্ধমন্ত্রুং কথমর্জুনােহশ্রুতং
বৃদ্ধেশ্চ কর্মণাে জ্যায়লং ভগবতি অধ্যারােপয়েং, মৃধৈব ''জ্যায়দা চেং কর্মণত্তে
মতা বৃদ্ধিঃ' ইতি। কিঞ্চ ষদি বৃদ্ধিকর্মণাে: দর্বের্ষাং দম্চের উক্তঃ স্থাৎ
অর্জ্ব্রাণাপি দ উক্ত এবেতি। ''মচ্ছের এতয়ােরেকং তলাে ক্রহি স্থানিশ্রিত্র্য'
ইতি কথম্ভারারুপদেশে দতি অক্তর্রবিষয়এব প্রশ্নঃ স্থাং। ন হি পির্প্রশন্নার্থিনাে বৈজ্ঞেন মধুরং শীতলঞ্চ ভাক্তরামিত্যুপদিষ্টে, তয়ােরক্সতরং পিত্তপ্রশানকারণং ক্রহীতি প্রশ্নঃ সম্ভবতি। অথার্জ্ব্নস্থ ভগবত্কবচনার্থবিবেকাান্বধারণনিমিত্তঃ প্রশ্নঃ করােত, তথাপি ভগবতাঃ প্রশাল্রপং প্রতিবচনং দেরং

"মন্ত্রা বৃদ্ধিকর্মণোঃ সমুক্তর উক্তঃ, কিমর্থমিখং দং ত্রান্তোহনি" ইতি। ব তু পূনঃ প্রতিবচনমন্ত্রপং, পৃষ্টাদস্তদেব। "দে নিষ্ঠে মন্ত্রা প্রোক্তে" ইতি বকুং যুক্তম্। নাপি খার্তেনৈব কর্মণা বুদ্ধেঃ সমুক্তরেইভিপ্রেতে বিভাগ-বচনাদি সর্বমুপপরম্। কিঞ্চ ক্রির্জ যুদ্ধং কার্ত্তং কর্ম স্বধ্মইতি জানকঃ "তৎ কিং কর্মণি ঘোরে মাং নিরোজরসি" ইত্যুপাল্ডোইর্পপন্তঃ। ভন্মাৎ গীতাশাস্ত্রে ঈবনাত্রেণাপি প্রোতেন স্বার্ত্তন বা কর্মণা আত্মজানক সমুক্তরো ব কেনচিদ্র্শির্তুং শক্যঃ।

ষত্ত অজ্ঞানাৎ রাগাদিদোষতো বা কর্ম্মণি প্রগৃতত যজেন দানেন ভণসা वा विश्वष्ठमञ्ज खानम् १ भन्न भन्न भन्न भन्न । विश्वष्ठ विश्वप्रमु । विश्वप्रमु । विश्वप्रमु । চেভি, ভন্ত কর্মণি কর্মপ্রোজনে চ নিবৃত্তে২পি লোকসংগ্রহার্মং বন্ধপূর্মণ ষণাপ্রবৃত্তিশ্রখৈব কর্মণি প্রবৃত্তত যৎ প্রবৃত্তিরূপং দুখ্রতে ন তৎ কর্ম, বেন বুদ্ধে: সমুচ্চয়: তাৎ, যণা ভগবতো বাস্থদেবত কাত্ৰকৰ্ম চেষ্টিভং ন জানেন সমুচ্চীরতে পুরুষার্থসিদ্ধরে, তদ্বৎ তৎফলাভিসদ্ধাহমালাবক্ত তুলাম্বাৎ বিছমঃ। তব্বিলাহং করোমীতি মন্ততে, ন চ তৎফলমভিসন্ধতে। যথা চ বর্গাদি-কামার্থিনোহরিহোত্রাদিকর্মধকণধর্মামুঠানার আহিতাগ্নে: কাম্যএবাগিহোত্রাদৌ প্রবৃত্তত্ত সামিক্ততে বিনষ্টেংপি কামে তদেব অগ্নিহোত্রাভ্তম্বভিষ্ঠতোহপি ন ডং কাম্যমগ্নিহোত্র।দি ভবতি। তথা চ দর্শর্যি ভগবান্—"কুর্বরূপি ন কর্ন্নেতি ন লিপ্যতে" ইভি। অত্র যক্ত "পূর্বৈর: পূর্ববিরং কৃতম্" "কর্মণৈব হি সংনিছি-. মান্থিতা জনকাদর:" ইতি তৎ তু প্রবিভজ্য বিজেরম্। তৎক্পম্? বদি ভাবং পূর্ব্বে জনকাদয়ঃ ভত্ববিদোপি প্রবৃত্তকর্মাণঃ স্থান্তে লোকসংগ্রহার্থং ''গুণা গুণের বর্তন্ত' ইতি জানেনৈব সংসিদ্ধিমান্থিতা:। কর্মসন্ন্যাদে প্রাপ্তে হপি কর্মণা সহৈব সংসিদ্ধিমান্থিতা ন কর্মপদ্মাসং ক্রতবন্তঃ ইত্যেবাহর্মঃ। অর্থ ন তে তত্ত্ববিদ ঈশরসমর্গিতেন কর্মণা সাধনভূতেন সংশিদ্ধিং সম্ভাজিৎ জ্ঞানোৎপত্তিলকণাং বা সংসিদ্ধিমান্থিতা অনকাদর ইতি ব্যাধ্যেরৰ্। এক মেবার্থং বক্ষাতি ভগবান্ সম্বন্ধরে কর্ম কুর্মস্তীতি, "অবর্মণা তমভ্যক্তা সিন্ধিং বিন্দতি মানবঃ" ইত্যুত্য দিদ্বিপ্রাপ্তত চ প্রজ্ঞাননিষ্ঠাৎ বক্ষ্যতি "দিদ্বিং প্রাণ্ডো বথা ব্রন্ন'' ইত্যাদিনা, তন্মাদ্যীতাম কেবলাদের ভব্জাদান্মোক-প্রান্তিঃ, ন কর্মসম্চিতাদিতি নিশ্চিতোহর্গঃ, ২ণা চায়মর্ক্তবা প্রকর্মশা বিভজ্য তত্র ভত্র দর্শবিষ্যামঃ।

আনন্দগিরিক্তটীকা'। অতীত্তদন্তত ইখনন্দরোধনর্থ বিবনিদ্যা তবি-

রেব বাক্যবিক্তাগ্মবগমরতি—দৃষ্ট্র†ত্বিতি। "ধর্মক্লেকে কুরুক্লেকে ইত্যাদিরাভ লোকভাবদেশং বাক্যাং শান্তত কথাসমন্ধপরম্বেন পর্য্যবসানাৎ, দৃষ্ট্েত্যারভা বাবং "जूकोः वसूव इ" देखि खावटेक्रकः वाकाम्, देख खात्रखा "देनः वहः" देखाखनत्खा এছো ভণত্যপক্ষ বাৰ্যমিতি বিভাগ:। নহু আন্তলোকত যুক্তমেকবাৰ্যকং প্রক্বতশাস্ত্রক্ত সহাভারতেহবতারাবম্বোভিডমাৎ অন্তিমস্তাপি সম্ভবচ্যেকবাকামম অর্কুনাখাসার্থতয়া প্রবৃত্তছাৎ তন্মধ্যমন্ত তু কথ্যেকবাক্যছম্ ইত্যাখন্ত অধৈক-ত্বাদিজ্যাহ —প্রাণিনামিতি। শোকো মানসন্তাপো মোহো বিবেকাভাব: षानिमक्षिकार्वास्त्रत्वनार्थः, मेवदः मश्मात्रच द्वःशाचातारीकपूरण मायस्य উত্তবে কারণমহকারো মমকারত্তদ্ধেতৃরবিল্পা চ তৎপ্রদর্শনার্থছেনেতি বোজনা। সংগৃহীতমর্থং বিরুণোতি—তথাছীতি। রাজ্যং রাজ্ঞ: কর্ম পরিপালনাদি পুজার্হা-শুরবো ভীমদ্রোণাদয়: পূজা: সমম্পাদিতা: সৌভদ্রাদর: সমম্ভরমস্তরেণ কেই-গোচরা শুরুপুত্র প্রভৃতরো মিত্রশব্দেনোচ্যন্তে উপকারনিরপেক্ষতরা স্বয়মুপকারিলো হৃদরামুরাগভাক্তো ভগবং প্রমুধা: সুহৃদ: বন্ধনা জ্ঞাতরো হুর্যোধনাদর: সম্বন্ধিন: খণ্ডরখাল প্রভৃতরো দ্রুপদধুইছামাদরঃ পরম্পররা পিতৃপিতামহাদি ষহুরাগভাজো রাজানো বান্ধবাঃ তেবু বণোক্তং প্রত্যবং নিমিন্তীক্টত্য যঃ মেহো যশ্চ তৈঃ সহ বিচ্ছেদো যক্ত এতেবামুপদাতে পাতকং যা চ লোকগঠা দৰ্কং তরিমিত্তং বরোরা-ম্বনঃ শোকমোহয়োত্তাবেতৌ সংসারবীকভূতৌ কথমিত্যাদিনা দর্শিতাবিত্যর্থ:। কথং পুনরনয়োঃ সংসারবাজয়োরর্জ্নে সম্ভাবনা উপপদ্ধতে ন হি প্রথিতমহামহিল্লো বিবেকবিজ্ঞানবভঃ বধর্দো প্রবৃত্তভা তভা শেকুমোহাবনর্থহেত্ সম্ভাবিতাবিত্যাশঙ্কা বিবেক্তিরস্কারেণ তংলার্কিহিতাকরণপ্রতিষিদ্ধাচরণকারণভাৎ অনর্থাধারকল্নোরন্তি ভশ্বিন্ সম্ভাবনেত্যাহ—শোকমোহাভ্যামিতি। ভিক্ষা জীবনং প্রাণধারণম্ আদিশক্ষাথ অশেষকর্মসন্নাদনকণং পারিত্রাজ্যমাত্মাভিধ্যানমিত্যাদি গৃহুতে। কিঞ वर्ष्युत्न मृथमात्नी (नाक्तमाद्दी मश्त्राववीकः लाक्तमाद्द्याः व्यामानिर्मिकेलाकः মোহবদিভ্যুপ্লর্জা শোক্ষমোহো প্রভ্যেকং পক্ষীকৃত্য অনুমাতব্যমিত্যাহ—তথা भाकस्माशानीज्यानिमस्यन मिथ्याजिमानस्यश्रशं मुख्या वाया हिन्द्र विकास क्षेत्र क्ष করণদাভভাবার শোকাদেঃ সংসারবীব্দতেতি দৃষ্টাস্তস্ত সাধ্যবিকলতেভি চেৎ ण्डार-श्वर्य हेि । काबानीनामिणानिभन्नानवभिक्षेति हेिस्यानि आनी-র্বত্তে। ফ্লাভিসদ্ধিত্তবিব্যেহভিলাবঃ কর্তৃবভোকৃষাভিমানোহহরারঃ। প্রাপ্তক অকাৰেণ বাগাদিব্যাপারে সভি কিং সিধ্যতি ততাহ—তত্ত্তেতি। তত-

কর্মার্য্রানেন প্র্যোগচরাদিষ্টং দেবাদিজন্ম, ত হঃ স্থাপ্রাপ্তিঃ অভ্তকর্মার্য্রানেন অধর্মোপচরাদিষ্টং তির্যাগাদিজন্ম, ততো হঃধপ্রাপ্তিঃ ব্যানিশ্রকর্মার্য্রানাহভাভ্যাং ধর্মাধর্মাভ্যাং মহুগাজন্ম, ততঃ স্থাজঃধে ভবতঃ; এবমাত্মকঃ সংসারঃ সন্ততোবর্ত্তত ইতি । অর্জুনস্থ অন্তেরাঞ্চ শোকনোহরোঃ সংসারবীজন্মপুপাদিতমুপ্নংহরতি—ইত্যুত ইতি । তদেবং প্রথমাধ্যারক্ত বিতীরাধ্যাবৈকদেশসহিত্ততুলাত্মাজানোঞ্ম নিবর্ত্তনীয়-শোকমোহাখ্য-সংসারবীজ-প্রদর্শনপরত্তং দর্শরিত্বা বক্ষ্যানাগসক্ত্রত সহজ্যারনিবর্ত্তকসম্যক্ত্রানোপদেশে তৎপর্যাং দর্শরতি—ত্রোলেচ্চি । তদবংপাক্তং জ্ঞানমুপদিদিক্ত্রং উপদেই মিছন ভগবানাহেতি সম্বন্ধঃ। সর্বলোকার্য্রহার্থং যথোক্তং জ্ঞানমুপদিদিক্ত্রতাত্মবৃক্তমর্জুনং প্রত্যেব উপদেশাদিত্যাশঙ্কাহ—অর্জ্জুনমিতি। নহি তত্তামবন্থারামর্জ্নন্ত ভগবতা যথোক্তং জ্ঞানমুপদেই নিষ্ঠং কিন্তু স্বধর্মান্ত্রানাদ্বৃদ্ধিভদ্যুত্তরকালমিত্যভিত্তেরেত্যো-ক্ষ্ম্—নিমিত্তীকৃত্ত্যতি।

সর্ককর্মসন্ন্যাসপর্ককাদাত্মজ্ঞানাদেব কেবলাং কৈবল্য প্রাপ্তিরিভি গীতাশান্তার্থ: স্বাভিপ্রেতো ব্যাখ্যাতঃ সংপ্রতি বৃত্তিক্বতামভিপ্রেতং নিরসিতুমমুবদভি— তত্ত্ৰেতি। নিৰ্দ্ধারিত: শাস্ত্রার্থ: সতিসপ্তম্যা পরামৃখ্যতে। তেষামৃক্তিমেব বির্ণনাদৌ সৈদ্ধান্তিকমভাপগমং প্রত্যাদিশতি—সর্ব্বকর্ম্মেতি। বৈদিকেন কর্মণা সমুচ্চমং ব্যুদসিতুং মাত্রপদং স্নার্ত্তেন কঁশ্মণা সমুচ্চয়ং নিরসিতুমবধারণম্। অভ্যাসসম্বন্ধং ধুনীতে—কেবলাদিতি। নৈবেত্যেবকারঃ মম্বধ্যতে। কেন তর্হি প্রকারেণ জানং কৈবন্য প্রাপ্তিকারণমিত্যাশঙ্ক্যাহ —কিং, তহীতি। কিং তত্ত প্রাপকমিত্যা-শহ্য ইদমেৰ শান্ত্ৰমিত্যাহ—ইতি সৰ্ববাস্থিতি। যথা প্ৰযালামুযালাছ্যপক্ষতমেৰ দর্শপূর্ণনাসাদি স্বর্গনাধনং তথা শ্রৌতসার্তকর্ম্মোপক্কত্মেব ব্রদ্মজ্ঞানং কৈবল্যং সাধয়তি। বিমতং সেতিকর্ত্তব্যতাকমেৰ স্বফলসাধকং করণমাদর্শপূর্ণমাসাদিবৎ তদেব জ্ঞানকর্মসমূদ্ধ্যপরং শাস্ত্রমিতার্থঃ, ইতিপদমাছরিত্যনেন পূর্বেণ সম্বাতে। পৌর্ব্বাপর্য্যালোচনায়াং শাস্ত্রস্থার সমুচ্চরপরত্বং ন নির্দ্ধারিতমিত্যাশস্থ্যাহ—ভত্তাপ্র-কঞ্জেতি। ন কেবলং জ্ঞানং মুক্তিহেত্রপি তু সমুচ্চিতমিত্যস্তার্থস্ত সংধ্যান-क्होरन भाभशाशियहनमानशानकशः निकः भमक्षिकार्थः। नाज्य नमूह्दसभतरः नित्रवं रवाकामि প্রমাণমিত্যাহ কর্মাণে ব্রেড। তত্ত্বৈব বাক্যান্তরমূলাহরতি কুকুকুর্ন্মতি। নমু "ন হিংস্তাৎ সর্বাভ্তানি" ই গাদিনা প্রতিবিদ্ধবেন हिर्शामतनवर्षहेकूषावशमां उद्याल ३१ दिनिकः कर्म अधर्माति । नाम्कीकुर শ্ব্যতে তথা চ হত সাপেক্যজানেন সমুচ্চরো ন সিধাহীতি সাংখ্যবতমাশ্ব্য

পরিহরতি হিংসাদীতি। আদিশনাছচ্ছিটভক্ষণং গৃহতে। রথোভশকা ম
কর্ত্তব্যে হারাকাজ্জাপূর্দকং হেতুমাহ কথিমিত্যাদিনা। স্বশন্দেন করিরোবিবক্ষাতে যুদ্ধাকরণে করিরভ প্রত্যবারশ্রবণাৎ তন্ত তং প্রতি নিত্যমেন অবশ্যকর্ত্তব্যস্থং-প্রতীতেগুর্কাদিহিংসাযুক্তমতিকুরমপি কর্ম নাধর্মারেতি হেম্বস্তরমাহ —
তদকরণে চেতি। আচার্য্যাদি-হিংসাযুক্তমতিকুরমপি যুদ্ধং নাধর্মারেতি ক্রতা
ভগবতা শ্রোভানাং হিংসাদি-যুক্তানামপি কর্মণাং দ্রতো নাধর্মমতি ক্রত্তা
ভগবতা গ্রোভানাং হিংসাদি-যুক্তানামপি কর্মণাং দ্রতো নাধর্মমতি ক্রত্তা
বিষয়ম্বাং কুঙো বৈদিককর্মান্ত্র্চানাত্বপপ্রিরিত্যর্থঃ, জ্ঞানকর্মণমুচ্চরাৎ কৈবল্যদিদ্ধিরিত্যপুসংহর্ত্নিতিশকঃ।

যন্তাবদ্রশ্বজ্ঞানং সেতিকর্দ্তন্যতাকং স্বফলসাধকং করণতাদিতি অনুমানং তৎ দূবয়তি —তদসদিতি। ন হি শুক্তিকাদিজ্ঞানমজ্ঞাননিবৃত্তে স্বফলে সহকারি **কিঞ্চিদপেক্ষ**তে তথা চ ব্যভিচারাদসাধকং করণত্বমিত্যর্থ:। যৎ তু গীতাশাঙ্কে সমুচ্চয়ত্তৈব প্রতিপাপ্ততেতি প্রতিজ্ঞাতং তদপি বিভাগবচনবিক্ষমিত্যাহ— জ্ঞানেতি। সাংখ্যবুদ্ধির্ঘোগবুদ্ধিশেচতি বুদ্ধিষয়ম্। তত্র সাংখ্যবুদ্ধ্যাশ্রমাং জ্ঞান-নিষ্ঠাং ব্যাখ্যাতৃং সাংখ্যশব্দার্থমাহ—অশোচ্যানিত্যাদিনা ইভি। জ্পোচ্যা-নিত্যাদিনা স্বধর্ম্মপি চাবেক্ষ্যেত্যেতদস্তং বাক্যং **শাবস্তবিদ্যাতি** গ্রন্থেন ষৎ পরমার্থভূতমাত্মতত্ত্বং ভগবতা নির্মীপিতং ডৎ ব্যাণ্যায়তে প্রকাশ্ততে সা বৈদিকী সম্যগ্রুদ্ধিঃ সংখ্যা তয়া প্রকাশ্তরেন সম্বৃদ্ধি প্রকৃতৎ তবং সাংখ্যমিত্যর্থ:। সাংখ্যশব্দার্থমূকা তৎপ্রকাশিকাং বৃদ্ধিং ভদ্-বতশ্চ সাংখ্যান্ ব্যাকরোতি—তদ্বিষ্য়েতি। তণ্বিষয়া বৃদ্ধিঃ সাংখ্যে বৃদ্ধিরিতি সম্বন্ধঃ। ভামেব প্রকটয়তি—আ্বানু ইতি। "ন জায়তে মিয়তে বাং" ইভ্যাদি-প্রকরণার্থনিরপণছারেণ আত্মনঃ ষড়্ভাববিক্রিয়াসম্ভবাৎ কুটছোৎসারিতি যা বৃদ্ধি কংপদ্মতে সা সাংখ্যবৃদ্ধি: তৎপরা: সন্ন্যাসিন: সাংখ্যাইত্যৰ্থঃ। বোগব্জাপ্রবাং কর্মনিষ্ঠাং ব্যাখ্যাতুকামো বোগশন্বার্থনাহ—এতস্তাইতি। যথোক্তবৃদ্ধ্যুৎপত্তৌ বিরোধাদেবাহগানাযোগাৎ তভাতান্নবর্তকদাৎ তহংপত্তেরা ঝনশ্চ দেহাদিব্যতিরিজিফাছ্যপেক্ষরা ধর্মাধর্মং নিষ্কৃষ্য তেনেশ্বরারাধন-রূপেণ কর্মণা পুরুষো মোক্ষায় যুজ্যতে যোগ্যঃ সম্পছতে তেন মোক শিদ্ধরে পরম্পররা সাধনীভূতপ্রাপ্তক্তধর্মামুষ্ঠানাত্মকো যোগ ইত্যর্থঃ। অথ যোগ-বুৰিং বিভক্তৃন্ ৰোগিনো বিভক্তে—তদ্বিষ্যুতি। উত্তে বুৰি**ংরে ভগবজোহ-**ভিমতিং দর্শরতি—তথা চেতি। সাংখ্যবুদ্যাশ্রর জাননিঠেত্যেতদপি ভগবজো-

२ जिमाजिमाणार-जाराहरू । कानरमय द्यारा कानरवागरकने हि क्याना বুজাতে তাদাস্থামাপখতে তেন সন্ন্যাসিনাং নিষ্ঠা নিশ্চয়েন স্থিতিস্তাৎপর্ব্যেণ পরি-সমাপ্তিতাং কর্মনিষ্ঠাতো ব্যতিরিক্তাং নিষ্ঠরোর্মধ্যে নিষ্কব্য ভগবান বক্ষাতীতি যোজনা। "লোকেহস্মিন ছিবিধা নিষ্ঠা পুরা প্রোক্তা ময়ানম, জ্ঞানযোগেন সাংখ্যা-নান্" ইন্ড্যেন্তৰ্বাক্যমূকাৰ্থবিষয়নৰ্থতোত্মবৰতি—পুরেতি। বোগব্দ্যাশ্রয়া কর্ম-নিষ্ঠেভ্যজাপি ভগবদমুমতিমাদর্শয়তি—তথা চেতি। কর্মেব থোগঃ কর্মবোগ-ক্তেন হি বুদ্ধিওদ্বিদারা মোক্ষহেতুজ্ঞানার পুমান যুজ্যতে তেন নিষ্ঠাং ক্রিণাং স্কাননিষ্ঠাতো বিলক্ষণাং কর্মবোগেনেত্যাদিনা বক্ষাতি ভগবানিতি বোজনা। নিষ্ঠাছরং বুদ্ধিছরাশ্রমং ভগবতা বিভজ্যোক্তমুপসংহরতি—এবমিতি। কয়া প্র-রহুণণন্ত্যা ভগবতা নিষ্ঠানমং বিভল্যোক্তমিত্যাশক্যাহ জ্ঞানকর্মণোরিতি। কর্মান্ত কর্মান্তব্যুদ্ধান্তব্যুদ্ধ আনং পুনরকর্ত্তিকত্তব্যান্তব্যু ভত্তব্যস্থিৎ বিক্রমাধনসাধ্যমারেকাবস্থতৈর প্রথত সভবত্যতো যুক্তনের তরোর্কিভাগবছন-মিতার্থঃ। ভর্গবছক্তবিভাগবচনক্ত মূলত্বেন শ্রুতিমূলাহরতি—যথেতি। তত্ত্ব কান-নিষ্ঠাবিবরং বাক্যং পঠতি —এতমেবেতি। প্রক্লতমান্মানং নিত্যবিজ্ঞাপ্তিরভাবং রেদিভূমিছত্তঃ ত্রিবিধেহপি কর্ম্মকলে বৈতৃক্যভাজঃ সর্বাণি কর্মাণি পরিত্যজ্য .कामनिष्ठाः ज्वरहोिज शक्षम-नकात्र-खोकाद्मभ मन्नामविधिश विविक्षण जरेक्चव विरक्षः শেবেণাহর্থবাদেন কিং প্রজন্মেত্যাদিনা মোকফলং জ্ঞানমুক্তমিত্যর্থঃ। নকু কলা-ভাবাৎ প্রজাক্ষেপো নোপপন্ততে পুত্রেণৈতল্লোকক্ষয়ত বাক্যান্তর্গিদ্ধত্বাং ইত্যাশস্থ্য বিস্তবাং প্রজাসাধ্যমপুর্যলোকস্তাত্মব্যজিরেকেণাভাবাৎ আত্মনত আন্দেশোবৃত্তিমানিতি বিবক্ষিত্বাহ—যেষামিতি। ইতিজ্ঞানং দর্শিতমিতি শেবঃ। স্থান্তির ব্রাক্সণে কর্মনিষ্ঠাবাক্যং দর্শন্তি তিত্রেবেতি। প্রাক্তত্বমতত্বদর্শিষেনা-🗪 সচ ব্ৰহ্মচারী সন শুরুসমীপে বথাবিধি বেনমধীত্যার্থজ্ঞানার্থং ধর্মজিজ্ঞাসাং ক্রছা ভয়ত্তরকালং লোকত্তরপ্রাপ্তিসাধনং পুত্রাদিত্তরং "দোকামরত জারা মেস্তা"দিত্যা-**নিনা কামিভবানি**তি শ্রুভমিত্যর্থ:। বিস্তং বিভন্ধতে—দ্বিপ্রকারমিতি। তদেব । ব্রাকারত্বৈরূপ্যমাহ—মানুষ্যুমিতি। মানুষ্যং বিত্তং ব্যাচষ্টে—কর্ণ্মরূপমিতি। জ্ঞ ফলপৰ্য্যবদায়িত্বমাহ—পিতৃলোকেতি ['] দৈবং বিস্তং বিভন্তত—বিদ্যা-্ষ্ণতি। তত্তাংপি ফলনিষ্ঠথমাহ—দেবেতি। কৰ্মনিষ্ঠাৰিবরত্বেনাদাভভশতে-তাংশর্বামাহ— অবিত্যেতি। অজ্ঞত কামনাবিশিষ্টতৈত কর্মাণি "সোকামরতে জ্যা-निमा नर्निछानी छार्थः । काननिक्वाविषद्रएकन नर्निछन्यएकत्रि छार्थिः-ভেডাইতি। কর্মন্থ বিমন্তবৈধ সন্ত্যাসপূর্বিকা আনৰিটাপ্রাপ্তমাত্যা

দর্শিতেতার্য:। অবস্থাতেদেন জ্ঞানকর্মণোর্ভিয়াধিকার্যক্ত প্রভাষাৎ তর্মুদের ভগবতো বিভাগবচনেন শাস্ত্রক্ত সমূচ্যপরতং প্রতিজ্ঞাতমপ্রাধিতমিতি সাধিতং, কিঞ্চ সমূচ্যরো জ্ঞানত প্রোতেন স্মার্ভেন হা কর্মণা বিবক্ষাতে, ইদি প্রথমং তন্ত্রাহ—তদেতদিতি।

সমূচন্দেহ জিপ্রতে প্রশাহপপত্তিং দোবাস্তরমাহ—নচেতি। তামেবাহপপত্তিং প্রকটরতি – একপুরুষ্টেত । যদি সমুচ্চরঃ শাস্তার্থোভগবতা বিবক্ষিতত্তদা জার্ম-কর্মণোরেকেন প্রধেণাক্ষ্ঠেরত্বযেব তেনোক্তমর্জ্জ্নেন চ ঐতং তৎ কৃথং তদসম্ভবমমুক্তমশ্রতঞ্চ মিথ্যৈব শ্রোতা ভগবভ্যারোপয়ের চ তদারোপাদৃত্তে কিমিতি মাং কর্মণ্যেবাতিক্রে যুদ্ধলক্ষণে নিরোজনদি ইতি প্রশ্লোহবকরাজে, তথা চ প্রশ্নালোচনয়া প্রষ্টুপ্রতিবক্ষ্মো: শাত্রার্থতয়া সমুচ্চয়োছভিপ্রেতো ন ভবতীতি প্রতি গাতীত্যর্থঃ। কিঞ্চ সমুচ্চরপক্ষে কর্মাপেকরা বুরের্জারন্ধং ভগবতা পূর্মমমুক্তম্ মর্জুনেনচ অঞ্তৎ কথমসৌ তামিন্ আরোপরিতৃমইতি তত্ত অন্ত-বাদবচনং শ্রোভুরম্বচিতমিত্যাহ—বুদ্ধেশ্চেতি। ইতশ্চ সমূচ্যঃ শাল্তার্থো ন সম্ভবতি অন্তথা পঞ্চ মাদৌ অৰ্জ্জুনন্ত প্ৰশ্নামূপপত্তেরিত্যাহ—ক্বিঞ্চেতি। নত্ত্ব সর্বান্ প্রত্যক্তোহপি সমুচ্চয়েন অর্জুনং প্রত্যুক্তোদাবিতি তদীয়প্রশ্লোপপত্তিরিত্যাশ্ভ্যাছ —যদীতি। এতয়োঃ কর্মতত্ত্যাগরোরিতি যাবং। নমু কর্মাপেকরা কর্মত্যাগ-পূর্মকন্ত জ্ঞানত প্রাধাতাৎ তত্ত শ্রেম্বাৎ তদ্বিষম্প্রশ্লোপপত্তিরিতি চেম্বেড্যাহ— নহীতি। তথৈব সমূচ্চয়ে পুরুষার্থনাধনে ভগবতা দর্শিতে সতি অ**ভতরপোচরো** ন প্রশ্নো ভবতীতি শেষ:। সমুচ্চয়ে ভগবতা উক্তেহপি **তদজানাৎ অর্জ্বত** প্রশ্লোপপন্তিরিতি শক্যতে—অ্থেতি। অজ্ঞাননিমিতং প্রশ্নমনীকুড্যাপি প্রত্যাচষ্টে—তথাপীতি। ভগবতো বাব্যভাবেন পূর্বাপরাহ্মদ্ধানসম্ভবাৎ ইত্যর্থ:। প্রস্লান্থরূপত্বমেব • প্রতি বচনস্ত প্রকটরতি—মৃয়েক্তি। ব্যাবর্জ্তামংশ**রা** দর্শয়তি—নত্বিতি। প্রতিবচনশু প্রশ্নানমূরপদ্বনে । শিষ্টমুডি—পুঠীদিভি। শ্রোতেন কর্মণা সমুক্তরো জানভেতি পক্ষং প্রতিক্ষিপ্য **পক্ষার্ত্তর**ে প্রতি-কিপতি—নাপীতি। ঞাতিশ্বতো!জনিকর্মণোর্বিভাগবচনমাদিশনগৃহীতং বুদ্ধে-र्जात्रचः नक्षमार्गा अत्मा छर्गनः अिविनमः नर्सिमनः स्मीरज्यनः चार्छ **বিভীরণকাগন্ত**বে নাপি কর্মগ্রা বৃদ্ধে: সমুচ্চয়ে বিরুদ্ধ ভাদিতার্থ:। হেত্তরমাহ—কিঞ্চেত। সমুচ্চরপকে প্রাপ্তপ্রিকনরোরসম্ভবাৎ গীতাশারং . তৎপরমিত্যুপসংহর্তি ——তুস্মাদিতি। বিভগ্তপাশ্বকান্য वक्नितिरक्षी न प्रव्यातिप्रार्थकम् ज्ञानिवृधिकनवाजनजानिज्यकानेवर

অথবা বন্ধঃ সহায়ানগেকেণ জ্ঞানেন নিবর্ত্তাতে অজ্ঞানাত্মকত্বাৎ রক্ষ্পাদিবৎ ইতি ভাবঃ।

नसू "कूर्याप्विवारस्थानस्य किलीर्व त्वीकमः श्री हिल वक्तामांगचार कथर গীতাশান্ত্রে সমূচন্ত্রো নাস্তি তত্তাহ—যস্তাত্ত্বিতি। চোদনাস্ত্রামূসারেণ বিধিতোহমু-ঠেয়ত কর্মণো ধর্মস্বাদব্যাপারমাত্রত তথাস্বাভাবাৎ তত্ত্বিদশ্চ বর্ণাশ্রমাভিমান-শুক্ত মধিকার প্রতিপত্তাভাবাৎ বাগাদিপ্রবৃত্তীনাম্ অবিভালেশতো-ভারমানানাং কর্মাভাগদাৎ "কুর্যাদ বিদান" ইত্যাদি বাক্যং ন সমুচ্চয়প্রাপক্মিভিভাব: ৰাশন্ধ-চাৰ্থে ছিতীয়ন্ত্ৰ বিবিদিষা বাক্যন্তসাধনান্তসংগ্ৰহাৰ্থ:। সাংসারিকং 🖏 নং ব্যাবর্ত্তরতি—পরমার্থেতি। তদেবাভিনয়তি—একমিতি। রপগ্রহণমাভাগত্ব প্রদর্শনার্থং কর্ম্মাভাগসমুক্তরন্ত যাদুচ্ছিকত্বাৎ ন মোক্ষ্ ফলরতীতি শেষ:। কিঞ্চ জ্ঞানিনো বাগাদিপ্রবৃত্তি ন জ্ঞানেন তৎফলেন সৃষ্ঠীয়তে ফলাভিসন্ধিবিকলপ্রবৃত্তিছাৎ অহন্ধারবিধুরপ্রবৃত্তিছাৎ বা ভগবৎপ্রবৃত্তি-বদিত্যাহ—যথেতি। হেভূৰমন্ত অসিদ্ধিমাশকা পরিহরতি—তত্ত্রবিদিতি। কুটম্বং ব্রদৈবাহমিতি মধানো বিধান প্রবৃতিং তৎফলং বা নৈব স্বগতত্বেন পশ্রতি क्रभामियः मुश्रम्बे धर्माबारगानाः किञ्च कार्याकात्रगमः चाजरबरेनव ध्ववृद्धानि প্রভিপম্বতে ততত্ত্ববিদো ব্যাখ্যানভিক্ষাটনাদৌ অহকারত তথ্যাদিফলাভি-সংক্রণ্ড আভাগদ্বাং ন মসিদ্ধং হেতুহয়মিত্যর্থঃ। নমু জ্ঞানোদম্বাৎ প্রাগবস্থায়ামিব উত্তরকানেহপি প্রতিনিয়তপ্রবুত্যাদিদর্শনাৎ ন তবদর্শিনিষ্ঠপ্রবৃত্যাদেরাভাসদমিতি ভত্তাহ—য়পাচেতি। স্বর্গাদিরেব কান্যমানস্বাৎ কামস্তদর্থিনঃ স্বর্গাদিকামশু অগ্নি-হোত্রাদেঃ অপেক্ষিতস্বর্গাদিসাধনশু অমুষ্ঠানার্থময়িমাধার ব্যবস্থিতশু ত্রিরেব কাম্যে কর্মণি প্রবৃত্তত্ত মর্মকৃতে কেনাপি হেতুনা কামে বিনষ্টে তদেবায়িছোত্রাদি নির্ব্বর্ত্তা ন তৎ কাম্যং ভবতি নিত্যকাম্যবিভাগত স্বাভাবিক্যাভাবাৎ কামোপবদ্ধামূপবদ্ধকৃতত্বাৎ ভথা বিহুবোহপি বিশ্ব্যধিকারাভাবাৎ বাগাদিপ্রবৃত্তীনাং কর্মাভাসতা ইত্যর্থ: বিৰৎপ্রবৃত্তীনাং কর্মাভাসছমিত্যত্র ভগ্রদম্বমতিমুপ্রস্ততি— তথাচেতি। নমু বিষদ্ব্যাপারেহপি কর্মশব্দপ্রোগদর্শনাৎ তদ্ব্যাপারভ কর্মাভাসভাস্থপতেঃ সমুচ্চয়সিদ্ধিরিতি তত্তাহ—অত্রে যচেতি। জ্ঞানকর্মণোঃ সমুক্তিভ্যৈব সংসিদ্ধিহেতুত্বে প্রতিপন্নে কুতো বিভক্তার্থজ্ঞানমিতি পৃচ্ছতি— ত্তৎকথমিতি। তত্ৰ কিং জনকাদয়োহপি তত্ববিদঃ প্ৰবৃত্তকৰ্মাণঃ স্থাঃ আহোবিৎ অভৰ্বিদ ইভি বিকল্প প্ৰথমং প্ৰত্যাহ—যদীতি। তৰ্বিৰে কথং প্ৰবৃত্তকৰ্মানং কর্মণামকিঞ্চিৎকরমাৎ ইত্যাশস্যাহ—তে লোকেতি। তেষাম্ উক্তপ্রব্যেকনার্থ-

মণি ন প্রবৃত্তির্কা সর্বতাণি উদাদীনতাৎ ইত্যাশব্যাহ—গুণাইতি। ইক্রিয়াণাৎ বিৰয়েৰু প্ৰবৃত্তিৰারা ভববিদাং প্রাকৃতকর্মত্বেহপি জ্ঞানেনৈৰ ভেষাং মুক্তিরিত্যাহ— জ্ঞানেনেতি। উক্তমেবার্থং সংক্ষিণ্য দর্শরভি—ক্ষেত্র তি। কর্মণেজ্যানৌ ভক্ত বাক্যাৰ্থং ৰাধিতাহুবৃত্ত্যাভাদো গৃহতে। বিতীয়মহবদতি—অপেতি। কণমতি—ঈশ্বরৈতি। বিভল্প বিজেয়ছং বাক্যার্থন্তোক্তমুপসংহরতি—ইতি কৰ্মণাং চিত্তভূদ্ধিৰায়া জ্ঞানহেতুদ্ধিত্যুক্তেহৰ্থে বাক্যশেৰং ব্যাখ্যেরমিতি। প্রমাণর জি—এত্তমেবেতি। বোগিনঃ কর্ম্ম কুর্মস্তীত্যাদি বাক্যমর্থতোহমুবদজ্তি— স্ত্ত্ত্তি। স্বৰুৰ্মণা ইত্যাদৌ সাক্ষাদেব মোক্ত হতুৰং কৰ্মণাং বক্ষ্যতীত্যাশস্থাই— স্বক্স ণৈতি | স্বৰ্ণানুষ্ঠানাৎ ঈশ্বরপ্রসাদ্ধারা জ্ঞাননিষ্ঠাবোগ্যতা শভ্যতে; ততো জ্ঞাননিষ্টশা মুক্তিতেন ন সাক্ষাৎ কৰ্মণাং মুক্তিহেতৃতা ইত্যগ্ৰে ক্ষুড়ীভবিষ্য-তীত্যর্থঃ। তত্ত্বজ্ঞানোত্তরকালং কর্ম্মাসম্ভবে ফলিতমুপসংহরতি—তম্মাদিতি । নয় ব্যুপি গীতাশাস্ত্রং তত্ত্বানপ্রধানমেকং বাক্যং, তথাপি তন্মধ্যে আর্মাণং কর্ত্ম-তদন্তমনীকর্তব্যং প্রকরণপ্রাধান্তাদিতি সম্চেরদিজিন্তত্তাহ—য্থাটেতি। শব্দেনাত্মজ্ঞানমেব কেবলং কৈবল্যহেতুরিতি গৃহুতে।

বৃত্তিক্বভাসভিপ্রারং প্রত্যাখ্যার স্বাভিপ্রেতঃ শাঁরার্থঃ সমর্থিতঃ; স্প্রতি
অশোচ্যানিত্যস্বাৎ প্রাক্তনগ্রহসন্দর্ভন্ত প্রাপ্তকং তাৎপর্য্যার্থমন্ত অশোচ্যানিত্যাবেঃ
"স্বধর্মপি চাবেক্য"ইত্যেতদন্তন্ত সমুদায়ন্ত তাৎপর্য্যমাহ—তত্ত্রৈতি। অব হি
শারে ত্রীণি কাণ্ডানি অন্তাদশসংখ্যাকানামখ্যায়ানাং বট্কবিত্যমুপাদার বৈবিধ্যাৎ,
তত্র পূর্ববিট্কাল্পকং পূর্বকাণ্ডং জন্সদার্থং বিষয়ীকরোভি, মধ্যমবট্করূপং মধ্যমকাণ্ডং তৎপদার্থং গোচররতি, অন্তিমষট্কলক্ষণমন্তিমং কাণ্ডং পদার্থরোইরক্যং
বাক্যার্থমধিকরোভি, তল্প্রান্যাধনানি, তত্র তত্ত্ব প্রস্বাহ্ণপত্তত্তে তল্প্রান্ত
তদ্ধীনত্বাৎ, তল্প্রান্মেব কেবলং কৈবল্যাধনমিতি চ সর্বত্র বিগীতম্; এবং
পূর্ব্বোক্তরীত্যা গীতাশাল্রার্থে পরিনিন্দিতে সতীতি যাবৎ, ধর্ম্মে সংমৃচ্ছ কর্ত্তব্যাক্তব্যবিবেকবিকলং চেতোষস্ত তন্ত্র মিণ্যাজ্ঞানবতোহ্হছার-মমকারবতঃ
লোকাধ্যমাগরে ত্রকত্তরে প্রবিশ্র ক্লিখতো ব্রন্ধাইল্যক্রলক্ষণবাক্যার্থজ্ঞানমাল্পজানং
তদ্ভিরেকেণোদ্ধরণাসিকে: তম্ভিভক্রমভিন্নিশ্বং শোকাৎ উন্ধর্মিক্তন্ ভগবান্
ব্রেণাক্তলান্রর্থং তম্ অব্বন্মব্রেরন্ প্রার্থপরিশোধনে প্রবর্ত্তরন্ আদৌ
দ্বন্দার্থং বেশ্বরিভূম্ "অশোচ্যান্" ইত্যাদিবাক্যমাহেন্তিবোজনা ॥ ১০

क्ष्यात । "मृद्दे। जू भाखवानी कम्" हेणामि झाक इहेरण "न वाश्य हेकि भाविनमम्का जूकीर वज्य इ" এই झाक भर्यास अर्, आगिशरणत स्माक (मनसाम)

মোহ (অবিবেক) প্রভৃতি বে [ছঃখনর] সংসারের বীজভূত দোর, তাহারই উদ্ভবের প্রতি কারণ [অবিষ্ঠার] প্রদর্শনার্থ [নিবদ্ধ হইয়াছে,] এই প্রকার ব্যাখ্যা করিতে ইইবে। আমি যুদ্ধে কি প্রকারে ভীম ও দ্রোণকে বধ করিব— এই প্রকার বাক্য দারা, অর্জুন, শোক ও মোহ প্রকাশ করিয়াছেন। ভারু, পুত্র, মিত্র, ক্ষরৎ, ক্ষলন, সম্বন্ধী, ও বান্ধবগণের প্রতি "আমি ইহাদের," ও ইহারা আমার" এই প্রকার ভ্রান্তিবৃদ্ধিজনিত মেই ও ইহাদের সহিত বিচ্ছেদাদি সম্ভাবনাই শোক ও মোহের কারণ। শোক ও মোহাদির উদরে বিবেক-বিজ্ঞান অভিতৃত হইয়াছিল, এই জন্তই অৰ্জুন স্বেচ্ছাক্ৰমে যুদ্ধরপ ক্তিয়ধৰ্মে প্রবৃষ্ট হইরাও, তাহা হুইতে নিরুত হুইতে উন্নত হুইরাছিলেন এবং পরধর্ম ভিকার্ভি পর্যান্ত প্রহণ করিতে প্রবৃত্ত হইরাছিলেন। এই প্রকার স্বভাবত: শোক ও. মোহে আবিষ্টভ্ৰদয় প্ৰাণিমাত্ৰেরই স্বধর্ম-পরিত্যাগ এবং প্রতিষিদ্ধ সেবা হইয়া থাকে। বাহাদের হৃদয় শোক ও মোহাদির আবেশে কলুবিত, তাহারা অধর্মে ় প্রবৃত্ত হইলেওঁ, তাহাদের ধর্মপ্রবৃত্তি ফলাভিসদ্ধানপূর্বকও সাহস্কার হইরা থাকে। এই প্রকার ফলাভিসন্ধান ও অহঙারপূর্বক প্রবৃত্তির বশে ধর্ম ও অধর্ম বৃদ্ধি পার, ধর্মের ফল ইষ্ট ও অধর্মের ফল অনিষ্টরূপ কারণ হইতে সুখ ও ছঃখের সম্প্রাপ্তি ্বর। এই প্রকার স্থপ ও হঃপ প্রাপ্তিকেই 'সংসার' করে। এই প্রকারে স্থপ-হঃখনম সংসার নির্বত হয় না ৷ এই কারণেই শোক ও মোহ সংসারের নিমিত সংসারনিষিত্ত শোক ও মোহের নিবৃত্তি অন্ত কোন উপারের দারা হইতে পারে ্না। এই কারণে সর্ব্ধ লোকের অমুগ্রহার্থ সেই আত্মতত্বজ্ঞানের উপদেশ করি-ৰার স্পতিলাবে ভগবান্ বাহ্মদেব অর্জ্নকে উপলক্যমাত্র করিয়া "অশোচ্যান্" ইত্যাদি স্নোক বলিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। কেণল জ্ঞানই মোক্ষের কারণ

এই প্রকার সিদ্ধান্তপ্রসঙ্গে কেহ কেহ বলিয়া থাকেন ভানকর্মসমূচ্চরবাদ। ব্যু, সর্ক্তর্মসংভাসপূর্কক কেবল আত্মজ্ঞাননিষ্ঠাতেই

বে কৈবল্য লাভ হয়, তাহা নহে। কি উপারে তবে কৈবল্য লাভ হয় ? শ্রোভ ও মার্ত্ত কর্মায়ন্তানের সহিত আত্মজান, কৈবল্যলাভের কারণ; ইহাই সকল গীতা শার্মের নির্ণীত অর্থ। জ্ঞান ও কর্ম মিলিত হইয়া মোকলাভের কারণ হয়, এই সিদ্ধান্তভিকে প্রমাণ করিবার জন্ত তাহারা এই সকল গীতার বচন উদ্ধৃত করিয়া খাকেন বে "মথ চেন্থনিমং ধর্ম্ম সংগ্রামং ন করিব্যসি" (ভূমি মলি এই মর্মাহেতু সংগ্রাম না কর), "কর্মণ্যবাধিকারত্তে" (তোমার কর্মেই অধিকাল্প), "কুক কৰ্মেব জন্মান্ত্ৰং" (এই কারণে তুমি কর্ম্মেরই জন্মন্তান কর) ইত্যানি।
ক্রিথমান হইলেও
পাপজনক নহে।
ক্রিথমান কারণ হয়, এই প্রকার আশস্কা করা উচিত
নহে কেন ? [তাহা বলি] যুদ্ধরণ ক্রিরথর্ম, গুরু

প্রাণির হিংসাস্থরণ অত্যন্ত জুর কর্ম হইলেও, বে কারণে ইহা ক্ষত্রিক্সাতির স্বধর্ম, এই কারণই ইহা অধর্মের হেরু নহে। এই মৃদ্ধরূপ বিহিতকর্মের অকরণে "ততঃ স্বধর্মং কীর্ত্তিক্ষ হিলা পাগমবাস্প্যাসি" (তাহা হইলে নিজ্বধর্ম ও কীর্ত্তি পরিত্যাগ করিয়া পাপভাগী হইবে) এই প্রকার বলিয়া (ভগবান্) প্রথমেই যে যাবজ্জীব-বিহিত পঞ্জান্তত্তির হিংসারূপ বৈদিক যাগ প্রভৃতির অধর্মারূপতা নাই, তাহা স্থনিক্ষিত্ররূপে বলিয়া দিয়াছেন। জ্ঞান ও কর্মের সমৃদ্ধর্মাদিগণের যে মত প্রদর্শিত হইল, তাহা ঠিক নহে। [সাংখ্যবৃদ্ধি ও যোগবৃদ্ধি এই] দ্বিবিধ বৃদ্ধিকে অবলম্বন করিয়া [যথাক্রমে] জ্ঞাননিষ্ঠা ও কর্মনিষ্ঠার বিভাগীবচন বিশ্বমান

জ্ঞান ও কর্ম উত্তরে মিলিত হইর। মোকের কারণ হইতে পারে না। সাংখ্যবৃদ্ধি কাহাকে কহে। আছে বৰিয়া, সমুচ্চরবাদ গীতাশাস্ত্রের প্রতিপান্ত নহে। "অংশাচ্যান্" ইত্যাদি শ্লোক হইতে "স্বধর্মপি চাবেক্ষ্য" এই শ্লোক পর্যস্ত গ্রন্থের হারা ভগবান যে পরমার্থ আত্মতত্বের নিরূপণ করিয়াছেন, তাহাই সাংখ্যশব্দের হারা অভি-

হিত। জন্মপ্রভৃতি ছর প্রকার বিকার আয়ার হইতে পারে না; এই কারণ আয়া অকর্ত্তা, এইরপ প্রকরণের অর্থ নিরূপিত হইলে সাংখ্যবিবরে বৃদ্ধি উৎপন্ন হর, তাহারই নাম 'সাংখ্যবৃদ্ধি'। বে সকল জ্ঞানিগণের এই প্রকার সাংখ্যবৃদ্ধি অভ্যন্ত হইরাছে, তাহারা 'সাংখ্য'শ্বের হারা অভিহিত হন। এই প্রকার সাংখ্যবৃদ্ধির উদন্ন হইবার পূর্বে আয়া

যোগবৃদ্ধি কাহাকে বলে ? শরীরাদি হইতে ভিন্ন হইলেও, কর্তা ও স্থ-ছঃথভোক্তা এই প্রকার নিশ্চর থাকাপ্রযুক্ত ধর্ম ও অধর্মের বিবেকপূর্কক, মোক্ষণাভের পর-

শরার কারণ কর্মান্থর্চানের স্বরণনির্দারণকে 'ব্যোগ' কহা যার ; এই যোগবিষরে বৈ বৃদ্ধি, তাহাই 'বোগবৃদ্ধি'। বে সকল কর্মান্থ্রারিগগের এই যোগবৃদ্ধি অভ্যস্ত হইরাছে, তাহারাই 'যোগী'। [বে একার বৃদ্ধি-মুন্মের বিজ্ঞাগ প্রদর্শিত ইইল, তাহাই ভগবানের অভিমত; কারণ] আছু ভগবান্ ঐ বিবিধ বুদ্ধির বিভাগ করিয়া নির্দেশ করিয়াছেন বে "এষা

সাংখাবৃদ্ধি ও বোপবৃদ্ধি এক-কালে এক পুরুবের হওয়া অসম্ভব । তেহভিহিতা সাংখ্যে বৃদ্ধির্যোগে দ্বিমাং শৃণ্
(এই তোমার নিকট সাংখ্য-বিষয়ে বৃদ্ধি অভিহিত হইল; একণে তৃমি বোগ-বিষয়ে বৃদ্ধি

শ্রবণ কর) সেই দ্বিবিধ বুদ্ধির মধ্যে সাংখ্য-ৰুত্নিকে আশ্রর করিরা, পূর্বোক্ত সাংখ্যজ্ঞানিগণের বিভক্তরূপে, জ্ঞান-বোগের ছারাই নিষ্ঠা হইয়া থাকে; ইহা "পুরা বেদান্থনা মরা প্রোক্তা" এই স্কল বাক্যের দারা ভগবান্ প্রতিপাদন করিবেন। এই প্রকার ষোগবুদ্ধির অবলম্বনে, বিভক্তরণে কর্মবোগের মারাই নিঠালাভ হর, ইহা "কর্মবোঁগেন যোগিনাম্" এই বাক্যের ধারা প্রতিপাদন করিবেন। আত্মার কর্ত্ত ও অনেকত্বজ্ঞান থাকিলে লোকে কর্ম্ম করিতে প্রবৃত্ত হয় এবং আত্মার অকর্ত্ব ও একরজানই প্রকৃত জ্ঞাননিষ্ঠার কারণ; এই কারণে এক शूक्र विकारन कर्वनिष्ठी ও छाननिष्ठीत अधिकाती हरेरत, रेहा मस्ट नरह : ইহাই পর্য্যবেক্ষণ করিয়া ভগবান্ সাংখ্য ও যোগবৃদ্ধি অবলম্বন করিরা, িবণাক্রমে । বিভাগপুর্বক জাননিষ্ঠা ও কর্মনিষ্ঠার উপদেশ প্রদান করিরাছেন। গীতাশাল্রে বেমন এই জ্ঞান ও কর্ম্মের বিভাগ উক্ত হইগাছে, শতপথবাদ্ধণেও সেই প্রকার জ্ঞান ও কর্ম্মের 'বিভাগ প্রদর্শিত হইয়াছে; [শতপথ ব্রাহ্মণে উক্ত আছে বে] "এতমেব প্রবাজিনো লোকমিছজো বান্ধণা: প্রক্তি।" এই নিত্য বিজ্ঞানময় আত্মস্বরূপ লাভ করিতে অভিলাবী হইরা লৌকিক ও অলৌকিক ভোগে বিভূক্তিত ত্রাহ্মণগণ [সর্ববর্ণ্মসন্ত্রাসপূর্বক] প্রভ্রা অবলহন করিয়া থাকেন [এই 'বাক্যের দ্বারা সর্ককর্ম-সংস্থাদের কিংান ক্রিয়া], "কিংপ্রজয়া ক্রিব্যাম: বেবাং নোহয়মাত্মারং লোকঃ" [আমন্ত্রা সন্ততির ছারা কি করিব? আমাদের আত্মাই একমাত্র লক্ষ্যা লোক] এই শেব বাক্যের ছারা বিষয়বিরক্ত ও আত্মরূপলোককামী সন্ন্যাসি-গ্রের পকে [সর্ককর্মসন্ত্রাসরূপ জাননিষ্ঠার অনুকৃল] ব্যুখান (প্রব্রুা) বিহিত হইরাছে। সেই শতপথ ব্রাহ্মণেই দর্শিত আছে বে, গুরুগুহে বে্দাধ্যমন পূর্বার্ড ধর্মবিচার শেষ করিয়া বিবাহ করিবার পূর্বে ত্রৈবণিকগণের বিবর-ভোগবাসনার আয়ুত আত্মাকে প্রাকৃত করা বার ; সেই প্রাকৃত আত্মা দেবলাক মহব্যালাক ও পিতৃলোক প্রাণ্ডির সাধনরণে ম'মুব, ও দৈববিত লাভ_্ক্ষিতে ্ষ্টিক্তত হর, এবং পদ্ধী প্রভৃতির কামনা করিয়া থাকে। এ ছিবিশ বিজের সধ্যে

বিহিত কর্ম সকলকেই "মাহ্ব বিত্ত" কহা বার; উহা পিতৃ:লাকপ্রাপ্তির সাধন। কর্মের অন্তক্ল দ্রব্য দেবতাপ্রভৃতির বর্ণার্থস্থাপের বে বিজ্ঞান, তাহাই "দৈব বিত্ত" দৈববিত্তের ফল দেবলোকপ্রাপ্তি। এই প্রকার বাক্যসকলের ঘারা অবিত্তা ও কামবৃক্ত প্রাক্তত আত্মাই বে প্রৌত কর্মের অধিকারী, তাহাই ম্পান্তর্মণে প্রদর্শিত হইরাছে। শতপথ ব্রাহ্মণে যে প্রকার আননির্চা ও কর্মানির্চার বিভাগবচন পরিদর্শিত হইল, তাহা প্রক্ষতপ্রস্তাবে অন্থপর হইত, বদি প্রতিবিহিত কর্মা ও আত্মতব্যজানের সমৃত্রের (যুগপদক্ষ্তান) ভগবানের অভিমত্ত হইত (জ্ঞান ও কর্মের সমৃত্রের বদি ভগবানের অভিপ্রেত হইত), তাহা হইলে,

জ্ঞান ও কর্ম্বের সমুচ্চর ় পক্ষে অর্জ্জনের প্রশ্ন অনুস্পার। "কর্ম হাতে জ্ঞানই যদি শ্রেষ্ঠ,ইহাই তোমার অভিমত" ইত্যাদি অর্জুনের প্রশ্নও উপপত্তিযুক্ত হইতে পারে না; কারণ [জ্ঞানকর্ম্মের সমুক্তরবাদে] জ্ঞান ও কর্ম্ম এককালে এক পুরুবের দারা অন্তর্গ্নিত হইতে পারে না,

ইহা ভগবান কথনই বলিতে পারেন না; স্থতরাং ভগবান যাহী বলেন নাই, অগচ অর্জ্জুন যাহা ওনেন নাই, সেই জ্ঞান ও কর্ম্মের এক পুরুবের ছারা এক কানে অষ্টান অসম্ভব ও কর্ম হইতে জ্ঞানের শ্রেষ্ঠম বুণা ভগবানের উপর আরোপ করিয়া অর্জুনের এই প্রকার প্রশ্ন কি প্রকারে উপপন্ন হইছে পারে ? क्कानकर्षनमूळ्य वारत जात अकृषि रताय [अहे रव ने, यति नकरनत शत्कहे कान ও কর্মের সমুচ্চর উক্ত হইত, তাহা হইলে অর্জুনের পক্ষেও ভাহা হইত। [ইহা দ্বির, এ প্রকার হইলে] "জ্ঞান ও কর্মের মধ্যে বাহা শ্রের: নিশ্চর করিয়া তাহা একটি আমাকে বলুন" অর্জুনের এ প্রকার একতর বিষয়ে প্রশ্ন 年 প্রকারে সঙ্গত হইবে ? মিষ্ট ও শীতদ বস্তু ভোজন করা উচিত, এই প্রকার देवच डेनएमम कतिरन, 'मधूत ७ भीजरनत मृत्या वांश निखनारमत डेन्युंद्र, ভাহার একটি আমারে বল" পিত্তরোগ-প্রশমনার্থীর এই প্রকার প্রশ্ন হইতে পারে না। ভগবৎক্ষিত বাক্যের অর্থের বিবেক অবধারণ করিতে অসমর্থ हअत्राख्डे [अर्ब्युतनत के श्रेकांत्र] श्रेष्ठ इहेन्नाहिन, हेरा यनि कन्नना कर्ना यात्र, ভাছা হইলেও অর্জুনের প্রশ্নের অনুরূপ উত্তরই ভগবানের দেওয়া উচিত। "আমি পুরের তুই প্রকার নিষ্ঠা বলিয়াছি" এই প্রকার প্রান্তর অনমূর্ণ অন্ত প্রকার প্রাক্তর দেওয়া [কোন প্রকারেই] পদত হয় নাই। কেবল শার্ডকর্ম্বের সঞ্জিত আত্মজানের সমূচের অভিপ্রেত হইলে [প্রাপ্তক নির্চাহরের] বিভাগবোধক বাক্যাদির সঙ্গতি হইতে পারে না। মৃতিশাত্রবিহিত কর্মের

সহিত জানের সমুদ্ধর অসীকারপক্ষে আর একটি বোব [এই বে,] ক্ষত্রিরপুণের যুদ্ধনণ ধর্ম বৃতিশাল্ল-বিহিত; স্নতরাং ইহা অধর্ম; ইহা জানিয়াও কর্জুনেক 'তবে আমাকে [এই] খোর কর্মে কেন নিযুক্ত করিভেছ' এই প্রকার ভিরন্ধার সর্বাঞ্চলারে, অনুপণর হইরা উঠে। এই কারণে এই গীতাশান্তে। বর্মাত্তও প্রৌত বা স্মার্স্ত কর্ম্মের সহিত আত্মতব্জ্ঞানের সমূচ্চর প্রতিণাদিত हरेबाएह, हेरा त्कहरे तम्यारेटि भारतन ना। अञ्चान वा बागानितमयक्र কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হইয়া বজ, দান কিংবা তপভার প্রভাবে চিত্তের বিত্তি হওরাতে যাহার "এই সকলই এক ব্রহ্ম-ব্রহ্ম পরিশানবর্জিত ও জকর্ত্তা" এই প্রকার পরমার্থবিষয়জ্ঞান উৎপন্ন হর, তাহার [সাসজি-भूर्तक] कंग्रं किश्ता कर्त्यात्र প্রাঞ्चन निवृष्ट स्ट्रेलिश वृष्ट्रभूर्तिक প্রথমে বেমন কম্মে প্রবৃত্তি হইরাছিল, সেই প্রকারই লোকসংগ্রহের জন্ত [তথনও কর্মে প্রবৃত্তি থাকা প্রযুক্ত] সেই কর্মে প্রবৃত্ত ব্যক্তির যে প্রবৃত্তিরূপ কর্ম পরিদৃষ্ট হয় [প্রাক্ত পক্ষে] তাহা [প্রাবৃত্তি-লক্ষণ] কর্ম হইতে পারে না, যাহা দেখিরা [ভোমরা বলিবে বে জানী পুরুষের] কর্মের সহিত জ্ঞানের সমুচ্চর হইতে পারে ৷ ভগবান বাহুদেবের ক্তিয়জনোচিত যুদ্ধাদিব্যাপার প্রকৃত-পকে অভিমান-সহকারে কৃত হয় নাই; এইজয় উহা প্রবৃত্তিলকণ কর্ম না হওয়াতে, তাঁহার জ্ঞানের সহিত কর্ম্মের সমুচ্চর হয় না; সেই প্রকার আত্ম-তৰ্জ ব্যক্তিরও কর্মফলে অভিদন্ধি ও অহতার না থাকায়, ভগবানের ভার জানের সহিত তাঁহাদের কর্মেরও সমুচ্চর হইতে পারে না, [অভিমান সহিত বিহিত কর্মের সহিতই জ্ঞানের সমুচ্চর হওয়া সম্ভবপর নহে, ইহাই জ্ঞানকর্ম-भम्छ्यतीम नित्राकतानत जारभर्य। त्यान वर्शामिकामार्थी, वर्शामिकामताधन অগ্নিহোতাদি কর্ম নির্বাহের জন্ত অগ্নি হাণন করিয়া, কান্য অগ্নিহোতাদি আরম্ভ করিবার পর ঐ কর্মের অর্দ্ধেক অর্চ্চানকালে কাম বিনষ্ট হইলেও, थै राक्ति यनि अ नवन कृत्यंत शृक्तिय अधूनीन करत, जारा रहेरनड थे ব্যক্তির পকে এ কর্ম কান্য কর্ম হয় না [কারণ সে নমর তাহার কামনা थार्क ना]। खारनाम्य रहेरन कुछ कर्ष रेव अकुछ शक्क वक्कररू कर्म-चक्र रह मा, छारा छशवान् "क्र्सहिन न करवारि न विभारक वह नक्त বাক্যের ঘারা দেখাইবেন। "পূর্ব্ব পূর্বতির প্রাচীনগণ কর্ম্বের অনুষ্ঠান করিরাছেন" "জনক প্রভৃতি মহাঝারা কর্মের কারাই সম্ক্রিঞ্চার দিছি লাভ করিয়াছেন" ইত্যাদি বাঁক্য ভিলান ও কর্মের সমুক্তর অলীকাল না

कतिरा] कि अर्कात मन्न इं इहेर्द । [अहे अकात अस्त्र अहे डेसन হইতেছে যে] যদি অনক প্রভৃতি পূর্ববর্তী মহাস্থারা প্রমার্থতক্ত হইরাপ্ত ্শ্ৰোত ও সার্ভ] কর্মে প্রবৃত হইরা থাকেন, তাহা হইলে [ইহাই বিশিতে হইবে বে] তাঁহারা "গুণা গুণেরু বর্ততে" এই লোকে প্রদর্শিত জ্ঞানাবলম্বনে -লোকসংগ্রহের নিমিত্ত [কর্মমার্গে অবস্থিতি করিয়াই] সম্যক্প্রকার সিদ্ধি লাভ করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন, (অর্থাৎ জ্ঞানের উদরে তাঁহাদের কর্ম্মের আস্ক্তি পরিষ্ঠত হইলেও, তাঁহারা [লোকসংগ্রাহের অন্ত] কর্মের সৃষ্ঠিতই সিদ্ধিলাভ করিয়াছিলেন, কর্ম্ম পরিত্যাগ করেন নাই। ইহাই ঐ সকল বাক্যের তাৎপর্য্য)। বদি, জনকাদির পরমাত্মসাক্ষাৎকার উৎপন্ন হর নাই [ইহা বিবেচনা করা বার], [তাহা হইলো] তাঁহারা সাধনভূত ঈশরসমর্পিত কর্ম্মের দ্বারা চিত্তভূদিস্বরূপ সংসিদ্ধি কিংবা তত্ত্তানোৎপত্তিরূপ সংসিদ্ধি প্রাপ্ত হইরাছিলেন, এই প্রকার ব্যাখ্যা করিতে হইবে। "সম্বশুদ্ধির নিমিত্ত কর্ম করিয়া পাকেন" এই প্রকার বাক্যের দারা ভগবান এই বিষয়টিই বলি-বেন। "নিজ্কর্শ্বের অমুষ্ঠান দারা সেই (পরমেশ্বরের) অর্চ্চনা করিয়া মানবগণ সিদ্ধি লাভ করিয়া থাকে" এই প্রকার বাক্য বলিয়া সিদ্ধি-(চিত্র-ভিদ্ধি) প্রাপ্ত ব্যক্তির পকে "সিদ্ধি প্রাপ্ত হইরা যে প্রকারে ব্রহ্ম [সাকাৎ কার] লাভ করে" ইত্যাদি বাক্যের **খারা জ্ঞাননিষ্ঠার উপদেশ করিবেন্**। এই কারণে গীতাশালে, কেবল তর্জ্ঞান হইতেই মোক্ষপ্রাপ্তি হয়, কর্ম্মের সহিত সমুক্তিত তবজ্ঞান মোকের কারণ নহে, ইহাই নিশ্চিত অর্থ [তাহা প্রতিপন্ন হইতেছে]। এই প্রকার তাৎপর্য্যার্থ বাহাতে বিশদীকৃত হয়, তাহা প্রকরণাত্মারে বিভাগ করিয়া, সেই সেই স্থানে প্রদর্শন করিব। এই প্রকার স্বভাবের বশে .কর্ত্তব্যপালনবিষরে সংমৃচ্চিত্ত ও মহান্ শোকসাগ্রে নিমগ্ন অর্চ্ছনের আয়জ্ঞান ব্যতিরিক্ত অন্ত কোন উপার বারা উদ্ধার দেখিতে না পাইয়া, ভগবান বাস্থদেব দেই শোকসাগর হইতে অর্জ্বনের উদ্ধার করিতে অভিলাষী হইয়া, আয়ৢঞানের জ্ঞা, অবভারণার্থ বলিলেন বে, অশোচ্যান্ ইত্যাদি।

আশোচ্যানশ্বশোচস্ত্ৰং প্ৰজ্ঞাবাদাংশ্চ ,ভাষসে।
গতাসূনগতাসূংশ্চ নামুশোচস্তি পণ্ডিতাঃ॥ >>
আশ্বয় ।—বন্ মশোচ্যান্ (শোচিত্ৰমহণিক্) অবশোচ্য (অহুশোচিতবানসি)

আজ্ঞানাদাংশ্চ ভাবদে (বৃদ্ধিনতাং বচনানি কথবসি); পশ্ভিতাঃ গভাস্ন্ (গভ-আনান্) অগভাস্ন্ (জীবভঃ) চ ন অন্নোচন্তি॥ ১১

অমুবাদ ।—(হে অর্জুন!) তুমি অমুশোচনার অবোগা তীম, জোণ প্রাকৃতির জন্ত শোক প্রকাশ করিতেছ, অথচ পণ্ডিতগণের ভার বাক্যও বলিতেছ়া [এ লগতে] পণ্ডিতগণ গতপ্রাণ কিংবা জীবিত ব্যক্তিগণের জন্ত শোক করেন না॥১১

ভাষ্য ।—তত্ত্রবং ধর্মসংস্চৃতেত্রে মিণ্যাঞ্জানবতো মহতি শোকসাগরে নিমগ্রত অর্জ্বত্ত অর্জাত্মজানাং উদ্ধরণমপঞ্চন্ ভগবান্ বাহ্মদেবঃ ততঃ রুপরা অর্জ্বনমুদ্দিশাররিব্ঃ আত্মজানার অবতারররাহ। অশোচ্যা নিত্যাদি। ন শোচ্যাঃ অশোচ্যাঃ ভীল্মজোণাদরঃ সদ্বৃত্তহাৎ পরমার্থরণেণ চ নিত্যহাৎ, তান্ অশোচ্যান্ অবশোচঃ অন্থাদিনা ইতি, বং প্রঞাবতাং বৃদ্ধিনতাং বাদাংশ্চ বচনানি চ ভাবসে, তর্দেতং মৌত্যং পাণ্ডিত্যবিক্কম্ আত্মনি দর্শরি উন্মন্ত ইবেত্যতি-প্রারঃ। বন্ধাৎ গভাহন্ গতপ্রাণান্ মূতান্ অগভাহন্ অগভপ্রাণান্ জীবতশ্চ ন অন্থশোচন্তি পণ্ডিতাঃ আত্মজাঃ, পণ্ডা আত্মবিষরা বৃদ্ধির্ববাং তে হি পণ্ডিতাঃ শিণিভিত্যং নির্কিন্ত ইতি ক্রতঃ। পরমার্থতন্ত নিত্যান্ অশোচ্যান্ অন্থশোচনি অতো মৃশ্চাহ্যীত্যভিপ্রারঃ॥ ১৯

আনন্দগিরিটীকা।—ষত্ত অজ্ঞানং তত্ত ত্রমো বত্ত ভ্রমন্তত্ত পদার্থপরিশোধনপূর্বকং দ্যাক্ জ্ঞানং বাক্যাহ্নদতীতি জ্ঞানাধিকারিণমভিপ্রেত্যাহ—অশোচ্যানিত্যাদীতি। বং তু কৈশ্চিং "আত্মা বা অরে দ্রন্থতাঃ" ইত্যাত্মাত্ম-মাথাত্ম্য-দর্শনবিধিবাক্যার্থমনেন শ্লোকেন ব্যাচন্তে স্বরং হরিরিত্যক্তং তদযুক্তং ক্রতিবোগ্যক্রেত্বার্থমনবেতপ্রেরঃসাধনতারাঃ পরাভিমতনিরোগত্ত বা বিধার্থত্ত অত্র অপ্রতীরমানত্ত কর্নাহেত্বতাবাং, ন চ দর্শনে প্রক্রতন্ত্রবহিতে বিধেরবাগানিবিলক্ষণে
বিধিক্ষপপত্ততে ক্রত্যান্তর্ভ্রতভাহার্থবাং তব্যো ন বিধিমধিকরোজীত্যভিপ্রেত্য
ব্যাচন্তে—ন শোচ্যা ইতি। কথং তেবামশোচ্যদ্মত্যক্তে ভীন্নাদিশলবাচ্যানাং শোচ্যত্বং তৎপদলক্ষ্যাণাং বেতি বিকর্যাত্যং দ্ব্যতি—সন্ধৃ ক্রত্তাদিতি।
বে ভীন্নাদিশলৈকচ্যন্তে তে প্রতিক্রত্যানীরিভাবিগীতাচারবলাং ন শোচ্যতামানুবীরিরিত্যর্থ:। বিতীরং প্রত্যাহ—পরমার্থেতি। জ্বলেচনপ্রকারমভিনরন্
আলোচ্যের্ শোচার্ক্যা ভ্রান্তোহনীত্যাহ—তানিতি। জ্বশোচনপ্রকারমভিনরন্
আলোচ্যের্ শোচার্ক্যা ভ্রান্তোহনীত্যাই—তানিতি। জ্বশোচনপ্রকারমভিনরন্
আলিবের প্রক্টমতি—তে ব্রিয়ন্তাইতি। প্রভাব্যাদিপ্রবৃক্তৎ দ্ব্যাদিশলেন

গৃহতে, ইত্যক্লশাচিতবানদীতি সম্বন্ধঃ । বিক্ষার্থাভিধান্নিষেনাশি ভ্রান্তমঞ্জ্নশু সাধরতি—ত্বং প্রজ্ঞাবতামিতি । "উৎসন্ধ্রপধর্মাণাশ্" ইত্যাদীনি বচনানি । কিমেতাবতা ফলিতমিতি তদাহ—তদেতদিতি । তন্মোত্যমশোচ্যের, শোচ্য-দৃষ্টিস্থমেতৎ পাণ্ডিত্যং বৃদ্ধিমতাং বচনভাষিত্বমিতি বাবং । অর্জ্জ্নশু পূর্ব্বোজ্জনাস্থিতাক্ষে নিমিত্তমাত্মাজানমিত্যাহ—যুদ্মাদিতি । নম্ব ক্ষমুদ্ধভাক্ষমের পাণ্ডিত্যং ন তু আত্মজ্জবং হেবভাবাদিত্যাশক্ষাহ—তে হীতি । পাণ্ডিত্যং পণ্ডিতভাবন্ আত্মজ্জানং নির্বিপ্ত নিশ্চরেন লক্ষ্ম বাল্যেন তিঠাদেদিতি বৃহদারণ্যক্ষতমুক্তার্থামূলাহরতি—পাণ্ডিভ্যমিতি । যথেকিং পাণ্ডিভ্যরাহিত্যং কথং নমাগতমিত্যাশক্ষ্য কার্য্যদর্শনাদিত্যাহ—পরমার্থতিস্থিতি । যথাদিত্যজ্জাণেক্ষিত্য দর্শন্নতি—অত্ইতি ॥ ১১

অনুবাদ। শোকের অবিষয়কে অশোচ্য [কহে] সংখ্যাব ও পরমার্থ-রূপে নিত্যতাপ্রযুক্ত ভীন্ন দ্রোণ প্রভৃতি অশোচ্য, সেই অশোচ্য (ভীন্ন দ্রোণ প্রভৃতিকে) উদ্দেশ করিয়া তুমি অনুশোচনা করিয়াছ [বে] গতাহারা মরিয়া ষাইবে, তাহাদের বিরহে রাজ্যস্থাদি লইয়া আমি কি করিব !" তুমি "প্রজ্ঞাবান্" বুদিমান্দিগের "বাদ" বচনসকলও বলিতেছ, এই 'প্রকার [পরক্ষার] বিক্ত্ব নিজের পাণ্ডিত্য ও মৃঢ্তা প্রকাশ করিতেছ। [তুমি] উন্মণ্ডের ভান্ম, [এককালে নানা বিক্তব কথা বলিতেছ] ইহাই ভাৎপর্য্য। বে হেতু 'গতাহ্ম' শতপ্রাণ (অর্থাৎ মৃত), "অর্গতাস্ম" অগতপ্রাণ (অর্থাৎ জ্বাবিত) ব্যক্তিগণকে উদ্দেশ করিয়া "পণ্ডিত্ত" আত্মজ্ঞগণ অনুশোচনা করেন না। আত্মবিষ্কিশী বৃদ্ধিকে পণ্ডা কহা যার, পণ্ডা যাহাদের আছে, তাঁহারা পণ্ডিত। "পাণ্ডিত্য (আত্মজ্ঞান) লাভ করিয়া।" ইত্যাদি অর্থে প্রযুক্ত শ্রুতি দ্বারা বুঝা যার বে, পণ্ডা শব্দের অর্থ আত্মজ্ঞান। পরমার্থতঃ নিত্য, অত্রব অশোচ্য ভীন্ধ দ্রোণ প্রভৃতিকে উদ্দেশ করিয়া অনুশোচনা করিতেছ, এই কারণে তুমি মৃচ্ হইয়াছ, ইহাই [স্লোকের] তাৎপর্য্য॥ ১১

ন স্বোহং জাতু নাসং ন স্বং নেমে জনাধিপাঃ। ন চৈব ন ভবিশ্বামঃ সূর্ব্বে বয়মতঃপরমু॥ ১২

অন্বয় ।——ন তেব জাতু (কলাচিৎ) অহং নাসং ("নাভূবম্) [কিন্তু আস-মেবেত্যর্থঃ] ন তং ন ইমে জনাধিপাঃ (রাঞানঃ) অতঃপরং সর্কে বয়ম্ন চৈব ভবিশ্বাম এব ইত্যর্থঃ)॥ ১২

অকুবাদ ৷ — আনার, ভোমার ও এই সকল নরপতিগণের কোন দিন অভাব হয় নাই, এই বর্ত্তমান দেহনাশের পরও আমাদের সকলের বিনাশ इहेरव ना॥ १२

ভাষ্য ৷কুতন্তে অশোচ্যাঃ ? যতো নিত্যাঃ ; কথং ? ন তু এব জাতু कर्माहिमश्र नामः किन्न जामरायत । जाजीराज्य तमरशास्त्र विनातमम् पर्वापित् বিশ্বদিব নিত্যমেবাহমাসম্ ইত্যভিপ্রায়:। তথা ন বং নাসী: কিন্তু আসীরেব। তথা নেমে জনাধিপা: নাসন কিন্তু আসলেব। তথা ন চৈব ন ভবিদ্যান: কিন্তু ভবিষ্যান এব দর্বেবরুম অতঃ অসাৎ দেহবিনাশাৎ পরম উত্তরকালেছপি ত্রিছপি কালের নিত্যা আত্মস্বরূপেণেত্যর্থঃ, দেহভেদাভিপ্রায়েণ 🕶 বছবচনং— নাৰভেদাভিপ্ৰায়েণ॥ ১২

আনন্দগিরিটীকা।—নিত্যবদশোচাৰে কারণমিতি স্থচিতং বিবেচন্নিতৃং প্ররপুর্নকং প্রতিজ্ঞানীতে —কুতইত্যাদিনা। নিত্যথমসিদ্ধং প্রমাণাভাবাদিতি চোদয়তি—কথমিতি। আয়া ন স্বায়তে প্রাগভাবশৃন্তবাৎ নরবিষাণবদিতি প্রিহরতি—ন ত্বেবেতি। কিঞ্চ আত্মা নিত্যাভাবতে সতি অক্সাতত্বাদ্ব্যতি-त्वःक चठेविण्डाङ्गानाञ्चवम्थर—न कित्वि । यड् केन्छिर चाच्चमाणाच्यार বিজ্ঞাসিতং ভাৰামণ্নিশতি নবিত্যাদিনা শ্লোকচতুষ্টয়েন ইত্যাদিষ্টং তদসদ ৰিশেষবচনে হেম্বভাৰাৎ সৰ্কত্তিৰ আত্মৰাথাত্ম্য-প্ৰতিপাদনাবিশেষাৎ ইত্যাশয়েন পদচ্ছেদঃ পদার্থোক্তির্বিগ্রহো বাক্যযোজনা ইতি ত্রিতয়মপি ব্যাখ্যানাঙ্গং প্রতি-পাদয়তি—ন্ত্বিত্যাদিনা। নম আত্মনোদেহোংপত্তিবিনাশয়ো: উৎপত্তিবিনাশ-প্রসিকে: উক্তমমুমানদ্রং প্রসিদ্ধিবিক্তমত্রা কালাত্যয়াপদিষ্ট্র ইইমিতি নেত্যাহ— চরাচরব্যপাশ্রয়স্ত স্থাদিতি স্থায়েন আঞ্চনো জন্মবিনাশ-.অতীতেম্বিতি। প্র সঙ্গে ঔপাধিকজন্মবিনাশাবিবয়ত্বাৎ নিরুপাধিকশু তক্ত জন্মাদিরাহিত্যমিতি ভাব:। যম্মপি তবেশ্বরক্ষ জন্মরাহিত্যং তথাপি কথং মমেত্যাশস্থাহ—তথেতি। তগাপি ভীমানীনাং কথং জন্মাভাবঃ তত্তাহ তথা—্রমইতি। দ্বিতীয়ম্মুন্নং প্রপঞ্যন উত্তরার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—তথেত্যাদিনা। মন্থ দেহোৎপত্তিবিনাশয়ো-রাম্ম'না জন্মনাশাভাবেহপি মহাসর্গমহাপ্রশন্ধরোঃ ত্রাগ্নিবিক্ট্নিঙ্গদৃষ্টান্তশ্রুতা ৰ ন্মনিনাপৌ এইবৌ ইত্যাশস্থ্য নামাশ্রতেরিতি স্থায়েন পরিধরতি—ত্রিম্বপীতি। যাবদ্বিকারম্ভ বিভাগো লোকবদিতি ভাষেন ভিন্নখাদ্ বিকারিসমান্ত্রনামমুমীয়তে ্তিরবঞ্ধ বহুবচনপ্ররোগপ্রনিত্যিশক্ষ্যাহ — দেহেতি॥ ১২

^{· 🔺 :} দেহভেৰাসুমুক্ত !--ইভি বা পীঠঃ।

অনুস্নাদ।—কি কারণে দেই ভীম জোণ প্রভৃতি অশোচ্য ? বেছেডু তাঁহারা নিত্য, কেন [তাঁহারা নিত্য] ? কোন সময়েই আমি ছিলাম না, তাহা নহে, কিন্তু [পূর্ব্বে] [সর্ব্বদাই] আমি বিশ্বমান ছিলাম। বেরূপ ঘট ভাঙ্গিয়া গেলেও ঘটন্থিত আকাশ বিশ্বমান থাকে, তন্ত্রপ। পূর্ব্ববর্তী

আন্না কি কারণে অংশাচ্য ? দেহের উৎপত্তি ও বিনাশ হইলেও ঐ সকল কালে আমি বিভয়ান ছিলাম [ইহা হির]। সেই প্রকার ভূমিও না ছিলে, তাহা নহে, কিন্ধু বিভয়ান ছিলে।

সেই প্রকার এই সকল অ্বনাধিপগণও পূর্বে বিশ্বনান ছিলেন না, তাহা নহে; কিন্তু পূর্বে বিশ্বনানই ছিলেন। সেইপ্রকার এই নেহ বিনাশের পরেও আমরা সকলে অসং হইরা বাইব (মরিয়া বাইব) তাহাও নহে; কিন্তু আমরা সকলেই বিশ্বনান থাকিব। ভূত, বর্ত্তনান ও ভবিশ্বং এই তিনকালেই আত্মহরূপে আমরা সকলেই অবিনাশী, ইহাই [এই ক্লোকের] অর্থ; [এই ক্লোকে অনামিপ প্রভৃতি পদের পর যে] বছবচন, [তাহা] দেহের নানাত্ব অস্কীকার করিয়াই [প্রযুক্ত হইরাছে], আত্মার নানাত্ব অভিপ্রায়ে নহে)॥ ১২

দেহিনোহস্মিন্ যথা দেহে কোমারং যৌবনং জরা। তথা দেহান্তরপ্রাপ্তির্ধীরস্তত্ত ন মুহ্ছতি॥ ১৩

্ অনুষ্য়। যথা অস্মিন্ দেহে দেহিনঃ কৌমারং যৌবনং জরা, তথা দেহান্তর প্রাপ্তিঃ, তত্র ধীরো ন মুহতি॥ ১৩

অকুবাদ। দেহাভিনানী জীবের এই দেহে বে প্রকার কৌমার বৌবন ও জরারেপ অবহান্তর প্রাণ্ডি হর, [অথচ দেহী নষ্ট হয় না], সেইরূপ এই দেহ বিনাশের পর দেহান্তরপ্রাণ্ডি হয়, অথচ দেহীর বিনাশ হয় না, স্কুতরাং কৌমার প্রভৃতি অবস্থা-পরিকর্তনের স্থায় দেহের পবিবর্তনে [আমি মরিলাম ভাবিয়া] ধীর ব্যক্তি মোহবশবর্তী হয়েন না॥ ১৩

ভাষ্য ৷ তত্ত্ব কথমিব নিত্য আত্মেতি দৃষ্টাস্তমাহ—দেহিন ইভি দেহোহ-ভাজীতি দেহী, তক্ত দেহিনো দেহবতঃ আত্মনঃ অত্মিন্ বর্ত্তমানে দেহে বথা যেন প্রকারেণ কোমারং কুমারভাবো বাল্যাবস্থা, যৌবনং যুনোভাবো মধ্যমা-বস্থা, জরা বরোহানিজীণবিস্থা ইংভ্যতাঃ তিল্রোহবর্ত্তী অভ্যেন্সবিলক্ষণাঃ; তালাং প্রথমাক্সানানে ন নাশো বিতীয়াবস্থোপজননে নোপজননমাত্মনঃ, কিং তর্থি দ অবিক্রিন্ত্রের বিতীয়ত্তীয়াবস্থাপ্রাপ্তিঃ আত্মনাদৃষ্ঠা যথা তদ্বদেব দেহাদক্ষো- দেহান্তরং তক্ত প্রাপ্তিদে হান্তর প্রাপ্তি: অবিক্রিমটেতবাত্মন ইত্যর্থঃ, ধীরো ধীমান্ ভট্রেবং সতি ন মুহুতি ন মোহমাপ্ছতে ॥ ১৩

আনন্দগিরিটীকা। নমু পূর্বং দেহং বিহার অপূর্বং দেহমুপাদার অন্ত বিক্রিয়াবন্ধেন উৎপত্তিবিনাশবন্ধবিক্রম: সমুস্তবেদিতি শক্তে—তৃত্ত্তি। অশোচ্যন্ত প্রক্রিয়াখার নিত্যন্ধে হেতৃক্তে সতীতি বাবং। অবস্থাভেদে সত্যপি বস্ত্রতাবিক্রিয়াভাবাং আত্মনা নিত্যসমুপপরম্ ইত্যুত্তরপ্লোকেন দৃষ্টাস্তাবিষ্টিভান প্রতিপাদরতীত্যাহ — দৃষ্টাস্তিমিতি। ন কেবলমাগমাদেব আত্মনা নিত্যন্ধং, কিন্তু অবস্থাস্তরকজনাস্তরে পূর্বসংস্কারামুর্ত্তেশ্চেত্যাহ—দেহিন ইতি। দেহকন্ধং তিমিরংং মমাভিমানভাক্তং, তাসামিতি নির্দ্ধারণে ৬টা, আত্মনঃ শ্রুতিপ্রতিভিনিত্যক্ত্রানং, ধীমানিত্যক্র ধীর্ম্বিক্সাতে, এবং সতীতি ভন্ততো বিক্রিয়াভাবান্ধিত্যুত্ব সমধিগতে সতীত্যর্থঃ। ১৩

অনুবাদ । আত্মা কি প্রকারে নিত্য । দেহিন ইত্যাদি শ্লোকের দারা এই বিষয়ে দৃষ্টাস্ত প্রদর্শন করিতেছেন। দেহ যাহার আছে, সে দেহী (দেহাতিমানী জীব), সেই দেহীর অর্থাৎ দেহবিশিষ্ট আত্মার 'এই' বর্ত্তমান দেহের যথা (যে প্রকারে) "কৌনার" কুমারভাব অর্থাৎ বাল্যাবস্থা "যৌবন" বুবার ভাব অর্থাৎ মধ্যমাবস্থা "জরা" বয়সের হানি অর্থাৎ জীর্ণাবস্থা এ

ে দেহাস্তর হইলেও কিরুপে তিন প্রকার পরম্পের বিলক্ষণ অবস্থা হয়], সেই তারা বিনষ্ট হয় না।

(দেহীর] নাশ হয় না, দ্বিতীয় অবস্থার উৎপত্তি

হইলে [দেহীর] উৎপত্তি হয় না, কি তবে ? বিকার রহিত আত্মারই বেমন দিতীয় ও তৃতীয় অবস্থার প্রাপ্তি দেখা যার, সেই প্রকার এই দেহ হইতে অন্ত দেহ "দেহান্তর", তাহার প্রাপ্তি "দেহান্তরপ্রাপ্তি" অবিক্রির আত্মারই হইয়া থাকে। ইহাই [রোকের] অর্থ। "ধীর" ধীমান্ এই প্রকার স্বভাবে মোহ প্রাপ্ত হয় না॥ ১৩

> মাত্রাম্পর্শাস্ত কোন্তেয় শীতোঞ্চপ্রথগ্নঃখদাঃ। আগমাপাশ্বিনোহনিত্যাস্তাং স্তিতিক্ষপ্র ভারত॥ ১৪

অন্ধর। [হে] কৌজের! মাত্রাপার্শাঃ (বিবরেজিরসংযোগাঃ)
শীতোক অধ্হঃখদাঃ; [তে চ] আগমাপ।রিনঃ (উৎপত্তিবিনাশশালিনঃ) অনিত্যাশ্চ [অতএব] তান্ তিতিকর (সহর) ॥ ১৪ আকুবাদ। হে কুজীনন্দন! ইন্দ্রিরের সহিত শবাদি বিষয়ের সম্বন্ধ শীভোক্তর্থত্থপ্রাদ; তাহারা উৎপত্তিবিনাশশালী ও অনিত্য; এই কারণে তুমি ঐ সকলকে সহাকর॥ ১৪

ভাষ্য। বছপি আন্মবিনাশনিমিণ্ডো নোহে! ন সন্তবতি, নিত্য আত্মেতি বিজ্ঞানতত্ত্বপাপি শীতে:ক্ষমুখহ:ধপ্রাপ্তিনিমিন্তো নোহো লোকিকো দৃশ্যতে স্থ-বিরোগনিমিত্তা নোহো হঃধসংবোগাদিনিমিত্তশ্চ শোক ইত্যেত্দর্জ্বত্ত বছল-মাশর্যাই মাত্রাম্পর্শা ইতি। মাত্রা আভিন্মীরত্তে শব্দাদর ইতি শোকাশীনীক্রিয়াণি, মাত্রাপাং স্পর্শাঃ শব্দাদিভিঃ সংবোগান্তে শীতোক্ষমুখহ:খদাঃ শীতমুক্তং স্থাং হংথক প্রয়ন্তত্ত্তীতি। অথবা স্পৃশ্যত্তে ইতি স্পর্শা বিষয়াঃ শব্দাদরঃ মাত্রাশ্চ স্পর্শিক শীতোক্ষমুখহ:খদাঃ শীতং কদাচিৎ স্থাং কদাচিদ্ঃধক্ষ তথোক্ষমপ্যনিরত্বরূপং স্থাহ:থে পুনর্নিয়ত্ত্রূপে যতোন ব্যভিচরতঃ অভন্তাভ্যাৎ পৃথক্ শীতোক্ষরোগ্রহণং, বন্ধাং তে মাত্রাম্পর্শাদরঃ আগমাপারিনঃ আগমাপার-শীলাঃ তন্ধাৎ অনিত্যা উৎপত্তিবিদ্যুক্রপত্বাং, অভন্তান্ শীতোক্ষাদীন্ তিতিক্ষম্ব প্রস্থ তেরু হর্ষবিষাদং মাকাবীরিত্যর্থঃ॥ ১৪

আনন্দ্রিটিক। আন্ধন: শ্রুত্যাদিপ্রমিতে নিত্যতে তহৎপত্তিবিনাশ-প্রযুক্তশোকমোহাভাবেহপি প্রকারাস্তবেণ শোকমোহে ভাতাম্ ইত্যাশকাম্ অনুজো-ত্তরত্বেন লোকমবতারম্বতি—যদিত্যাদিনা। শীতোঞ্চয়োন্তাভ্যাৎ স্থবঃধয়োশ্চ প্রাপ্তিং নিমিত্তীক্বত্য যো মোহাদিদূ খ্যতে তন্তাবম্বব্যতিরেকাভ্যাং দৃখ্যমানস্বমাশ্রিভ্য লৌকিকবিশেষণমশোচ্যানিত্যত্র যো বিভাধিকারী স্বচিতন্তক্ত তিতিকু: সমাহিতো ভূবেতিশ্রুতঃ তিতিকুবং বিশেষণমিহোপদিশ্রতে। ব্যাথ্যেরং পদমুপাদার করণ-বুৎপত্ত্যা তভেক্তিরবিষয়ধং দুদ্যতি—মাত্রাইত্যাদিনা। ব্রীসমাসং দুর্দ্ ভাববাংপত্ত্যা স্পর্শব্যাথমাহ — মাত্রাণামিতি। তেবামর্থক্রিরামাদর্শরতি — তে শীতেতি ৷ সম্প্রতি শক্ষরস্ত শক্ষাবৃৎেপত্ত্যা কর্ম্মাদিবিষরপরত্বমুপেত্য সমাসাহুরৎ দর্শন্ব বিষয়াগাং কার্য্যৎ কথমতি—অথবৈতি । নমু শীতোঞ্চপ্রয়ন্তে: স্থক্:খ-সিদ্ধত্বাৎ কিমিতি শীতোঞ্চরোঃ স্থগন্ধান্তাৎ পৃথক্গ্রহণমিতি তত্রাহ—শীত্রমিতি বিষয়েভ্যস্ত পৃথক্কথনং তদস্তভূ তয়োরেব তয়ো: স্থপহংথহেছো: আঞ্চক্র্য-প্রতিক্ল্যয়ে: উপলক্ষণার্থম্ অধ্যায়ং হি শীতমুক্ং বাহক্ল্যং প্রাতিক্ল্যং বা সম্পান্ত বাজাবিবরাঃ সুথাদি জনমন্তি। নমু বিবয়েজিয়সংযোগত আত্মনি শদা শৃষাত্তংপ্রযুক্তশীভাদেরপি তথাদাৎ তলিমুত্তৌ হর্হবিযাদৌ তশিলা-পলৌ ইন্ড্যাশহ্য উত্তরার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—যুদ্মাদিন্ত্যাদিনা। অত্র চ কৌবেষ ভারতেতি সম্বোধনাত্যাম্ উভয়কুনগুদ্ধতৈব বিভাধিকারিম্বনিতি এতদেব ভোত্যতে ॥ ১৪

অনুবাদ ৷—আত্মা নিত্য এই প্রকার বিশেষ জ্ঞানবান লোকের ম্ছাপ আত্মবিনাশ নিমিত্ত মোহ হওয়া অসম্ভব, তথাপি শীত, উষ্ণ, ত্ৰথ ও হুঃখ প্ৰাপ্তি-নিবন্ধন লৌকিক মোহ এবং অবের বিয়োগ ও হঃথের সংযোগ-নিমিত শোক হইতে দেখা বার, (আত্মার নিত্যত্ব জ্ঞান হইলেও এপ্রকার শোক ও নোহ নিবুত্ত হইতে পারে না) অর্জুনের এপ্রকার [প্রশ্ন] আশকা করিয়া ভগবান বলিতে-ছেন, মাত্রাম্পর্না ইত্যাদি। শব্দ প্রভৃতি বিষয় যাহা দারা জ্ঞানগোচর হয়, দেই শ্রবণ প্রভৃতি ইক্রিরসমূহ [কে] মাত্রা [কহা যায়]। মাত্রার স্পর্শ [অর্থাৎ] **भक्षा**नि विषय्त्रत महिल मश्याम [-(कहे] माजाम्मर्ग [वरन], माजाम्मर्ग हे भील. উক্ত, স্থপ্ত প্রংখ প্রদান করে। স্থাবা বাহার। স্পর্শের (অর্থাৎ জ্ঞানের) গোচর হয়, সেই সকল শবাদি বিষয় [-কে] স্পর্ণ [বলে] মাত্রা এবং স্পর্ণ (এই উভয়কে) মাত্রাম্পর্ল [কহা যায়]; সেই মাত্রা ও ম্পর্ল, শীতোঞ্চন্থগুঃপঞ্জন হয়; শীত কোন সময়ে স্থাছেতু হয়, কোন সময়ে ছঃখের ছেতু হয়, এইরূপ উষ্ণও কোন সমর অথকর ও কোন সমর হংখকর হর [এই কারণে এই হই বস্তর অথ ও হংখ-ন্ধপতা অনিয়ত], কিন্তু সুধ ও হু:থ নিয়তরূপ, সুথের সুথরূপতা ও হু:থের ছঃধরূপতা কথনও ব্যভিচরিত নহে। এই কারণ স্থুপ হইতে [অনিয়তরূপ] भीज ও উकारक পুণগ ভাবে গ্রহণ করা হইয়াছে। বেহেতু এই মাত্রাম্পর্শাদি আগমাপারী [অর্থাং আগম (উংপত্তি) ও অপার (বিনাশ)-শীল] সেই কারণ অনিত্য; অভএব সেই শীভোকাদি সহু কর, সেই শীভোক্ষ স্থগছাথ লাভ इट्टेंग इर्व ७ विवास कविल मा॥ ১৪

্ যং হি ন ব্যথয়স্ত্যেতে পুরুষং পুরুষর্যভ।
সমত্রঃখন্তখং ধীরং সোহমৃতত্বায় কল্পতে॥ ১৫

জানুয়। হে পুরুষণ্ড। (পুরুষশ্রেষ্ঠ) এতে শীতোফাদরঃ) বং সমছঃখ-স্থাং ধীরং ন ব্যাণরস্তি, সঃ অমৃতত্বায় করতে (সমর্থো ভবতি)॥ ১৫

অনুবাদ। হে প্রুষশ্রেষ্ঠ ! যে সমত্ঃধর্মথ (মুধ ও তঃথে হর্ষ ও বিষাদ-হীন) ধীরপুরুষকে এই সকল শীতোঞাদি ব্যথিত করিতে পারে না, সেই মোক্ষ-লাভে সমর্থ হুইরা থাকে ॥ ১৫

ভাষ্য। भौराजकामीन् महण्डः किः जामि जि मृत्- यः ही जि। यः हि शुक्रवः

ামে তৃঃধক্ষথে যক্ত তৎ সমতঃথক্ষধং ক্ষথতঃথপ্রাপ্তে হর্ষবিষাদর্গতিৎ ধীরং ধীমন্তং ব্যাগরন্তি ন চালয়ন্তি নিত্যাত্মদর্শনাৎ এতে যগোক্তাঃ শীরতাকাদরঃ, স নিত্যা-নত্যবরূপদর্শননিষ্ঠঃ ঘন্দস্থিকঃ অমৃত্তার অমৃত্তাবার মোক্ষায় ক্ষতে সমূর্থো ব্বতি॥ ১৫

আনন্দ গিরিটীকা। অধিকারিবিশেনণং ভিতিক্ষণ নোপযুক্তং কেবলন্ত
গ্রন্থাহেতুঘাদিতি শক্ষতে—শীতেতি। বিবেকবৈরাগ্যাদিসহিতং ভল্লোক্ষহেতুজানধারা তদর্থমিতি পরিহরতি—শূণিতি। তিতিক্ষমাণক্ত বিবক্ষিতং
গাভমুপগন্তরতি—যুং হাতি। হর্ষবিষাদরহিত্যিত্যত্ত শমাদিসাধনসম্পদ্ধমৃচ্যতে
—ধীমন্তমিতি। নিত্যানিত্যবিবেকভাগিদ্বমেত্টেভেরং বৈরাগ্যাদেকপলক্ষণম্। নিত্যান্মদর্শনং অমর্থজ্ঞানং সাধনচতুইরবস্তমধিকারিশমন্ত দংপদার্থজ্ঞানবত্তকত মোক্ষোণ্রিকবাক্যার্থ জ্ঞানবোগ্যভামাহ—স নিত্যেতি। ১৫

অনুবাদ। বাহার স্থপ ও ছংখ সমান (অর্থাৎ স্থপ বা ছংখ প্রান্থিতে বাহার হর্ষ ও বিবাদ হয় না), সেই পুরুষই সমছংখস্থপ। নিভ্য আজার জান হওয়াতে বে সমছংখস্থপ "ধীর" ধীমান্ পুরুষকে এই সকল শীতোঞাদি পরিচালিত করিতে পারে না, সেই নিভ্যাত্মদর্শননিষ্ঠ পুরুষ 'অমৃতভ্য' অমৃতভাব, (অর্থাৎ মোক্ষ) লাভ করিতে সমর্থ হয়॥১৫

নাসতো বিহাতে ভাবো নাভাবো বিহাতে সতঃ। উভয়োরপি দৃষ্টোহস্তস্ত্বনয়োস্তত্ত্বদর্শিভিঃ ॥ ১৬

আম্বা। অসতঃ (মিণ্যাভ্তত শীতোকাদেঃ) ভাবঃ (সতা) ন স্থিতে (নান্তি); সতঃ (সত্যত্ত আত্মনঃ) অভাবঃ ন বিভাতে (নান্তি)। তহদশিভিঃ (প্রমার্থ জৈঃ) উভয়োরপি অনয়োঃ (সদস্তোঃ) অস্তঃ (নির্ণয়ঃ) দৃষ্টঃ (উপ্লব্ধঃ)॥ ১৬

অনুবাদ। অগতের (অজ্ঞানকরিত শীতোকাদির) সন্তা নাই, পরমার্থ সদ্বস্থরও বিনাশ নাই; তত্ত্ত পণ্ডিতগণ সৎ ও অসতের এই প্রকারই স্বরূপ নির্ণির করিরাছেন॥ ১৬

ভাষ্য। ইতণ শোকমোহে অক্করা শীতোকাদিসহনং যুক্তং, ব্রাৎ ইত্যাহ—নাদত ইতি। নাদতোহবিশ্বমানসভ শীতেকোদেঃ সকারণত ন বিভাতে নান্তি ভাবো ভবনমন্তিক্ষ্। ন হি শীতোকাদি সকারণং প্রমাণৈনিক্ষণ্য-মাণ্ড বন্ত দত্তবি। বিকারো হি সঃ বিকারণ্ড ব্যক্তিচরতি, কথা প্টাদিসংখানং हक्ता निक्रणमांगः मृत्राजिद्यः कण चर्नगर्द्यः चन्न, जना नर्द्या विकातः कावन-বাভিরেকেণ অনুপ্লকে: অসং। জন্ম প্রধ্বংসাভ্যাং প্রাযূর্দ্ধ অনুপ্লকে: কার্যান্ত घठारमम् नानिकात्रन्छ ७९कात्रन्छ ठ ७९कात्रन्य छित्रत्कन असूननस्कत्रमञ्जू। তদসত্ত্বে চ সর্বাভাব প্রসঙ্গ ইতি চেং ? সর্বত্ত বুদ্ধিদরোপণজ্ঞে সদ্বুদ্ধিরসদ্-বুদ্ধিবিতি ষণ্বিষয়া বৃদ্ধি ন'ব্যভিচরতি তৎ সং। ষণ্বিষয়া ব্যভিচরতি তদসং ইতি সদস্বিভাগে বুদ্ধিতন্ত্ৰ স্থিতে সৰ্বাত্ৰ বে বুদ্ধী সবৈৰ্বস্পলভ্যেতে সমানাধি-क्तरन। न नीरनारभनवर मन् चछः मन् भछः मन् इखीछि। धवर मर्सक তরোবুন্দ্যো বঁটাদিবুদ্ধিক্যভিচরতি। তথা চ দর্শিতম্। ন তু সদ্বৃদ্ধি: তত্মাৎ चछो निवृक्षिविवरवाश्यन् वा जिहाबार न जू मन्तृकिविवरवाश्वाज्ञार। चरहे বিনষ্টে ঘটবুকো ব্যভিচরস্তা। সদ্বুদ্ধিরপি ব্যভিচরতীতি চেৎ ন পটাদাবশি সদ্বুজ্জিদর্শনাৎ বিশেষণবিষ্টায়ৰ সা সদ্বুজ্জ্জ্জান্তী ন বিনশ্রতি অধ मन्द्रित्र चटेर्कित्रि चटेरास्टरत मुखरू इंडिट्टर। न भटेरानायमर्गनार। সদ্বৃদ্ধিরপি, নতে খটে ন দৃশুত ইতি চেৎ ন বিশেব্যাভাবাৎ সদ্বৃদ্ধিঃ वित्नवनिवन्ना मठी वित्नवााভाবে वित्नवनां प्रभारती किश्विवन्ना छाए। न छ श्नः नन्द्रिक्तियत्राভावाः এकाधिकत्रवस्य घोनिवित्यद्याভावन युक्तम् हेिछ ८६६ न निषम्भूषक्षिति मत्रीकाषावज्ञकताज्ञात्वर्शि नामानाधिकत्रगुष्पन्ति । তমাদেহাদেদ্বিক্ত চ স্কারণক্ত অস্তো ন বিশ্বতে ভাব ইতি। তথা স্তশ্চ আত্মনঃ অভাবোহবিগ্রমানতা ন বিগ্নতে সর্ব্বোব্যভিচারাৎ ইত্যবোচাম:। এবসাত্মনাত্মনোঃ সদসতোরভয়োরপি দৃষ্ঠ উপলব্বোহস্তো নির্ণয়ঃ সৎ সদেব অসং অদদেবেতি তু অনরোর্যথো ক্ররোস্তব্দর্শিভি:। তদিতি সর্বনাম সর্বঞ্চ ব্রহ্ম তক্ত নাম তদিতি ভদ্ধাবস্তব্ধ এক্ষণো বাথায়্যং ভৎ দ্ৰষ্ঠ্যু শীলং বেবাং তে তব্দৰ্শিনস্তৈঃ তৰদৰ্শিভিং। খনপি তৰ্দশিনাং দৃষ্টিমাশ্ৰিত্য শোকং মোহঞ্চ হিন্তা শীতোঞা-'দীনি নিয়তানিয়তরপাণি ঘলানি বিকারোহয়মসল্লেব মরীচিএলবং মিথ্যাবভাসতে ইতি মনদি নিশ্চিত্য তিতিক্ষয়েত্যভিপ্রার:]'১৩

আনন্দগিরিটীকা। অধিকারিবিশেষণে তিতিক্ষ হৈছস্তরপরত্বেন উত্তরলোক্ষবতাররতি—ইত্নেচ্ডি। ইতঃশ্লার্থমের ক্ষুট্রতি—যুদ্মাদিতি। বতঃ শীতাদেঃ ক্লোদিহেতোরনান্ধনো নাস্তি বস্তুত্বং বস্তুনন্ধনো নির্মিকারত্বেন একরপরন্, অতোমুম্কোর্মিশেষণং িতিক্ষ্বং যুক্তমিত্যাহ—্রেড্যাদিনা। কার্যস্তান্ত্বেনি কারণক্ত সন্থেন অত্যন্তাসমিদিরিভ্যাশস্য বিশিন্তি—স্কারণ্স্যুতি। নাস্তইত্যুপাদায় পুনন্করোহ্বশ্যব্যার্থন্।

অনতঃ শৃক্তভাত্তিদক্ষসকাত।বাৎ অপ্রসক্তপ্রতিবেধপ্রসক্তিরিত্যাশহ্যাহ—নহীতি। বিমতমতাত্মিকমপ্রামাণিকছাৎ রক্ষ্মর্পবৎ, ন হি ধর্মিগ্রাছকভ প্রত্যক্ষাদেভত্মানে मकः आमागाः कहारा विषयु हर्निक्रभकाः चराशिनिर्साहाः दिख्यिकार्थः। क्शर भूनत्रशाकामितियश्च भौरजाका भिरेषज्ञ धर्मिक्रशरका अनिकीष्ठाचर जलार---বিকারোহীতি। ততশ্চ বিমতং মিথ্যা আগমাপারিত্বাৎ সম্প্রতিপল্লবদিতি ফলিতমাহ—বিকারুশ্চেতি। বাচারভণশ্রুতে: দৈতমিণ্যাদে অমুগ্রাহক্ত দর্শরিতৃং চকার:। কিঞ্চ কার্য্যং কারণান্তিরমভিরৎ বেতি বিকর্যান্তং দূবর্যতি-নিরপ্যমাণমন্তর্কহিন্চেতি শেষঃ বিমৃতং কারণাৎ ন ভন্ধতো ভিন্ততে কাৰ্য্যখাৰ ঘটবদিতাৰ্থ:। ইতোহপি কাৰণাভেদেন নান্তি কাৰ্য্যম মাদাবস্তেচ বল্লান্তি বর্ত্তমানেহপি তৎ তপেতি স্থানাদিত্যাহ—জন্মতি। যদি কার্যাৎ কারণাদভিরৎ তদা তক্ত ভেদেনাসত্তে পূর্বসাদবিশেবঃ তাদান্মোন অবস্থানত্ত ন যুক্তং তত্তাপি কারণব্যতিরেকেণাভাবাং। কার্য্য-কারণবিভাগবিধুরে বন্ধনি কার্য্যকারণপরম্পরায়া বিভ্রমন্বাৎ ইত্যুক্তিপ্রোত্যাহ মুদাদীতি। কার্যাকারণবিভাগবিহীনং বল্পেব না্স্টীভি মধানশ্চোলরভি---তদসত্ত্ব ইতি ৷ মহবুৰব্যাহৰবুদ্দিষম্পৰ্শনাদমুৰ্ত্তে চ ব্যাহভানাৎ করিভ-দাদক্ষিতং সর্বভেদক্ষনাধিষ্ঠানমকার্য্যকারণং বস্তু সিধ্যতীতি পরিহরতি— ন সর্ববেত্রিত। সম্প্রতি সতো বস্তুত্বে প্রমাণমন্থসানমূপক্তভি-- যদ-বিষয়েতি। বদ্ব্যারভেষদ্রভং তৎ তমর্থং সৎ ধণা সর্পধারাদিবদুগতে। রজ্জাদেরিদমংশঃ, বিমতং সত্যমব্যভিচারিদাৎ সংপ্রতিপন্নবদিতার্থঃ। ব্যাবৃত্ত কলিততে এপ্রমাণনাহ—যদ্বিষয়েত্যাদিনা। বদ্ব্যাহতং তল্মিণ্যা বধা দর্শ-ধারাদি, বিমতং মিণ্যা ব্যক্তিচারিদাৎ সংপ্রতিপল্লবদিতার্থঃ ইতাকুমানবরমভুক্তা সতোহকরিত্তম্ অসতক করিতত্বং হিতমিতিশেবঃ। নমু নেদমমুমানহরমুণপছতে সমন্তহৈতবৈত্তপ্যবাদিলো বিভাগাভাবাদম্মানাদিব্যবহারাম্পপত্তেত্তভাই—স্দৃ-স্দিতি | উক্তে বিভাগে বুদ্ধিৰগাধীনে স্থিতে সত্মস্থমানাদিব্যবহারো নির্মাহতি প্রাতিভাসিকবিভাগেন বিরোগাৎ পরমার্থস্তৈব তদ্ধেতৃত্বে কেবলব্যতিরেকা-ভাবাদিতার্থ:। कुछ: সদস্দ্বিভাগত বৃদ্ধির্মাধীনকং বৃদ্ধিবিভাগতাশি ভবাভাবাৎ ভত্তাহ—সূৰ্বাত্তেতি। ব্যবহারভূমিঃ সপ্তম্যর্থঃ। বুদ্ধিবিভাগভাপি করিততৈব বোধ্যবিভাগপ্রভিভানহেভূতেভিভাবঃ। বুদ্দিদরময়ক্ষধ্য সদসদ্বিভাগে সভঃ সামাজরণতরা বিশেষাকাজ্ঞারাং সামাজবিশেবে বে বন্ধনী বন্ধভূতে স্যাতামিডি त्तर ज्वार-मुमानाधिकत्रण हेकि। शनत्त्राः गामानाविकत्रणाः व्यक्तांक-

পচর্ব্যতে, সেংয়মিতি সামানাধিকরণাবদ্বটঃ—স্ন ইত্যাদি সামানাধিকরণামেক-वबनिर्देश बखटलटम चछेभछेदबाबिव जनदर्याशामिकार्थः। नौनम्श्भनमिकिवर धर्म-ধর্ম্মিবিষয়তয়া সামানাধিকরণাত স্থবচন্ধার বলৈকাবিষয়ন্তমিতি চেরেতাাহ—ন নীলেতি। ন হি সামান্তবিশেষরোর্ভেদেহভেদে চ ভদ্তাবো ভেদাভেদৌ চ বিক্লমৌ परा बाजियारका: मामानाधिकतपार नीतारभगत्तातिय न त्रीपर किन्न वार्यक्र-মন্ত্রতে করিতমিত্যেকনিষ্ঠমিতার্থঃ। সামান্তবিশেষরোক্তক্তারং গুণুগুণালে অতিদিশত্যেবমিতি। তুল্যৌ হি তত্তাপি বিকল্পদোৰৌ ইতি ভাবঃ। সামানাধি-कत्रगाञ्चभभक्ता व वचनी मामाञ्चवित्मको हेलि भक्तर श्रकिकभा वित्मको अव বন্ধনীতিপক্ষং প্রতিক্ষিপতি—তুয়োরিতি। বুর্দ্ধিব্যভিচারাদ্বোধ্যব্যভিচারেছি কথং ব্যাহন্তানাং বিশেষাণামবস্তব্দিত্যাশঙ্ক্যাহ—তথাচেতি। বিকারো হি স ইত্যাদাবিভিশেবঃ। ন চৈকং বস্তু সামান্তবিশেষাত্মকমেকক্স হৈরপ্যবিরোধা-দিতাভিপ্রেতা সামান্তমেকমেব বন্ধতদ্বুদ্ধেরব্যভিচারাং, বোধস্তাপি সতম্বধাদাদি-ভাাহ—নত্মিতি। ব্যভিচরতীতি পূর্বেণ সম্বন্ধঃ বিশেষাণাং ব্যভিচারিছে সভশ্চাব্যভিচারিত্বে ফলিভমুপদংহরতি—তুম্মাদিতি। অসম্বং কল্লিভম্ব। তচ্চলার্থমের ক্ষোরয়তি—ব্যক্তিচারাদিতি। সদ্বৃদ্ধিবিষয়ভ সতোহকল্লিতদ্বে তচ্চকোপান্তমেব হৈতুমাহ—অব্যভিচারাদিতি। সদ্বৃদ্ধিব্যভিচারধারা বোধ্য-শুপি ব্যভিচারাৎ তদব্যভিচারিদ্বহেতোরসিদ্ধিরিতি শহতে।—ঘটে বিনষ্ট সদ্বুদ্ধেবটমাত্রবৃদ্ধিবদ্ঘটবিষয়ভাভাবাৎ ন ঘটনাশে ব্যক্তিচায়োছত্তি हेि পরিহরতি – ন পটাদাবিতি। সণ্বুদ্ধেরঘটবিষরতে নিরালম্বভাষোগাৎ বক্তব্যমিত্যাশঙ্কাহ—বিশেষণেতি। সতোহকরিত্বহেতোর-ব্যভিচারিষস্তানিদ্ধমূদ্ তা বিশেষাণাৎ করিতম্বহেতো ব্যভিচারিমসাসিদ্ধিং सकरछ-- मामिकि । यथा मन्युक्तिक्टो नर्रहे भोगालो मुहेकार व्यवासिकानि অব্যভিচারঃ সভোদর্শিতন্তথা ঘটবুদ্ধিরণি ঘটে নষ্টে ঘটান্তরে দুটেতাব্যভিচারাৎ ঘটে ব্যভিচারাসির্দ্ধে বিশেষাস্তরেদ্রপি ক্রিভন্বহেতোঃ ব্যভিচারো ন সিধ্যতীত্যর্থঃ। चृत्र्क्षिणेखतः मृष्टेत्वि भर्गमायमृष्टेत्वन वाखिनात्रार भर्गमिवित्मत्वविभ वाखि-চারিছসিমিরিক্যুত্তরমাহ—ন পটাদাবিতি। বিশেষাণামেবং ব্যক্তিচারিছে সভো-ৃষ্পি ভত্নপত্তেরব্যভিচারিত্তত্ত্সিজিতাদবস্থামিতি শঙ্কতে—সন্বৃদ্ধিরিতি। ঘটাদিনাশদেশে তত্ত্পরক্তাকারেণ সম্বাভামেহণি নাসম্বং ঘটাভভাবাধিছানভরা ভানাদিত্যাহ—ন বিশেষ্টেত। যথা দৰ্জগতা জাতিন্নিত্যত্ত খণ্ডমুঞাদিব্যক্ত্য-ভবিদেশে গোৰং ব্যক্ষকাভাবাৎ ন ব্যক্ততে ন গোৰাভাবাৎ তথাসৰমপি ঘটানি- নাশে ব্যঞ্জাবাথ ন ভাতি ন বন্ধপাভাবাদিত্যুক্তনেব প্রপঞ্চনতি—সদি-जामिन। नथिजितानिकविरमधगषवाजिनात्रशी वक्रभावाजिनाकाकः मणः चरत्राः मरकारत्त्व विरागवर्गविरागयुषमर्गना चर्रमरकात्रिश সভাত্বমিভিভাব:। वित्नवनित्नवाद्य चरत्राः मद्दश्रीवार चलितिकश्चिष्ठचात्र्यानः मामानाधिकत्रणः ৰীবাধিভমিভি চোদন্বভি-একেডি। অম্ভবসমুস্ত্য বাধিভবিবন্ধবন্ধভাত-মানত নিরভতি—নেত্যাদিনা। ঘটাদে: সতি করিতছামুমানত দোক-রাহিত্যে ফণিতমুণসংহরতি—তত্মাদিতি। প্রথমপাদব্যাখ্যানপরিসমাধাবিতি-নমু নেদং ব্যাখ্যানং ভাষ্যকারাভিত্রেতং সর্ববৈত্তপৃক্তমবিবক্ষারাং भाज्जज्जावावित्राधार दक्नाणि शूनकृ सिंगत्यम त्रमनीविकत्यारत्थाकिज्ञत्मजिलिज চেৎ মৈবং কিমিদং হৈতপ্রপঞ্চত শৃত্তবং কিং ভূচ্ছবং কিং সন্বিলক্ষণৰ: নাছো-**২নভাগগনাৎ বিভীয়ানভাগগমে তু তবৈ**ব শান্তবিরোধে ভাষ্যবিরোধ**ক সর্বাং** হি শাস্ত্রং তম্ভাব্যং চ হৈতক্ত সভ্যত্বানধিকরণত্বসাধনেনাহৈতসভ্যত্বে পর্যাবসিত-মিতি ত্রৈবিভার্কৈন্তত্ত তত্ত্ব প্রতিষ্ঠাপিতং তথা চ প্রক্রেপাশক্য সম্প্রদারপরি-চরাভাবাদিতি দ্রষ্টবাম্। অনামুজাতত করিতত্বেনাবস্তব্পতিপাদনপরতরা প্রথমপাদং ব্যাখ্যার দিতীরপাদমাত্মনঃ সর্ককর্মনাধিষ্ঠানস্তাকরিতত্ত্বেন বস্তম্ব প্রসাধনপরতরা ব্যাকরোতি—তত্থেতি। নবান্ধন: সদান্ধনো বিশেষেষু বিনা-শিবু তহুপরক্তত বিনাশ: ভাদিত্যাশহ্য বিশিষ্টনাশেুহপি স্বরূপানাশ<mark>ভোক্তভাল</mark>ৈব-মিত্যাহ—সুর্বাত্তেতি। নমু কদাচিদসদেব পুন: সন্থমাপমতে প্রাগসভো ঘটত জন্মনা স্বাভ্যুপগমাৎ সচ্চ ক্লাচিনস্বং প্ৰতিপ্ছতে স্থিতিকালে সডো ঘটক্ত পুনন'শেনাসৰাঙ্গীকারাদেবং সদসভোরব্যবস্থিতভাবিশেবাছভৱোরণি হেরত্বমুপাদেরতং বা তুল্যং স্থাদিতি তত্তাহ—এবমিতি। তুশকো দৃষ্টশকেন বৰ্ণামানো দৃষ্টিমৰ্ণারম্বতি নহি প্রাগসতো ঘটন্ত স্ব্মসতে ছিতে স**ৰ্প্রাণ্ডি**-বিরোধাদসন্ধনিবৃত্তিক সন্ধপ্রাপ্ত্যা চেৎ প্রাপ্তমিতরেতরাশ্রমন্দর্যরেশের সন্ধা-পৰিমুমৰ্নিবৃত্তান্সৰ্মনবকাশি ভবেৎ এতেন সতোহস্বাপত্তিরপি প্রতিনীভেডি ভাবঃ। ৰুখং তহি সভোহসৱমসতন্চ সৰুং প্ৰতিভাতি ইত্যাশস্ক্য তৰ্মৰ্শনা-ভাবাদিত্যাহ—ত্ত্ত্ত্ত্ত্তি। তক্ত ভাবতত্ত্বং ন চ তচ্চকেন পরামর্শবোগ্যং কিঞ্চিদন্তি। প্রকৃতং প্রতিনির্তমিত্যাশন্ত্য ব্যাচষ্টে—তদিত্যাদিনা। নম্ব নদনতোরম্বণাম্বং কেচিৎ প্রতিপদ্ধন্তে কেচিত্ত্ব তর্মোরুক্তনির্ণরমহন্তত্য তথাম্ব-নেবাভিগছৰি তত্ৰ কেবাং মতমেৰিতব্যমিতি তত্ৰাহ—ত্বমপীতি ॥ ১৬

অমুবাদ ৷ এই কারণেও পোক ও মোহ না করিরা শীতোঞারির

महन कड़ा डिविड, त्राह्यू देशहे वनिष्ठाहन। [नामछ हेखानि झाटकड़ অর্থ এই বে] 'অসং' অর্থাৎ (নিজরণে) কারণের সহিত অবিভ্যমান, শীভো-কাদির "ভাব" ভবন (অর্থাৎ অন্তিম্ব) নাই, সকারণ শীতোকাদিবিষর, প্রমাণের ছারা নিরূপিত হইলে [কথনই] সং বন্ধ হইভে পারে না। সেই ষট প্রস্থৃতি [যে কারণে] বিকার [এইজয়ই] অসং। ধাহা কার তাহা ব্যভিচারী হয়। যে প্রকার ঘটাদি অবয়বিদ্রব্য চকু দারা [ভাল করিয়া] দেখিলে মৃত্তিকা ব্যতিরেকে আর কিছুই নাই বলিয়া বুঝিতে পারা বার, সেই প্রকার সকল কার্য্যই কারণ ব্যভিরেকে উপলব্ধ হর না বলিরা নিজরূপে অসং [ইহা সিদ্ধ হর]; উৎপত্তি ও বিনাশের পূর্ব্বে ও পরে কার্ব্যের [নিজরূপে অবিশ্বমানতা প্রযুক্ত] অমুপলন্ধি থাকে [এই জন্মও কার্য্যকে অসৎ বলা বার]। বটাদির স্থায় মৃত্তিকা প্রভৃতিও নিজ কারণ ব্যতিরেকে অমুপ্রক হর, এই বস্তু মৃত্তিকা প্রভৃতিও অসং। এই প্রকারে সকল কারণের অসম্ব হইলে সকলেরই অভাব সিদ্ধ হয় (অর্থাৎ শুক্তবাদ আসিরা পড়ে) এই প্রকার শহা করা যাইতে পারে না; কারণ সকল প্রকার ব্যবহারকালেই সদ্বৃদ্ধি ও अनम्त्कि এই ছই প্রকার বৃদ্ধি উপদন্ধ হইরা থাকে। বে বস্তু বিবরে জ্ঞান কখনও ব্যক্তিচার (অভ্যথাভাব) প্রাপ্ত হর না, তাহাকেই সং কহে। বে বন্ধ বিষয়ে জ্ঞান ব্যভিচার (অন্তথা পরিবর্ত্তন) লাভ করে। তাহাকে ষ্পাৰ কহা যায়। এই প্ৰকার অনুভবসিদ্ধ সদসদ্বিভাগ বিশ্বমান আছে বিশিরাই সর্ব্বে সকল ব্যক্তিই একটি বস্তুকে অবলয়ন করিয়া এই ছিবিধ বুদ্ধির অস্কুতব করিয়া থাকে।

(মন্তব্য)—ঘটণট প্রভৃতি কার্য্যবিবরে বে জ্ঞান উৎপর হয়, তাহাতে, ঘটণট প্রভৃতি বন্ধর সহিত, তাহাদের উপাদান কারণ মৃত্তিকা প্র প্রভৃতিরঞ্জ প্রকাশ হয়, ইহা সর্কায়ভবসিদ্ধ চক্ষর নারা ঘটজ্ঞানসমরে যদি কেছ আমাদিগকে জিজ্ঞাসা করে বে, ঐ বাহা দেখিতেছ, তাহা মৃত্তিকা হইতে পৃথক্ বন্ধ কিনা ? আমরা সকলেই এরূপ প্ররের উত্তর দিয়া থাকি বে, মৃত্তিকা হইতে পৃথক্ ঘট দেখিতে পাই না; কিন্তু মৃন্মর ঘট দেখিতে পাই , আবার সেই ঘটটি নই হইকে, মৃত্তিকা যথন চুর্ণভাব প্রাপ্ত হয়, তথন আমরা দেখিতে গাই, ঘট নাই বটে, কিন্তু বে মৃত্তিকা দেখিরা আমরা ঘটব্যবহার করিতেছিলাম, সেই মৃত্তিকা বিশ্বমান রহিরাছে। এক্ষণে দেখিতে হইবে, ঘট বন্ধটির কি প্রকার সন্তা ? ইহা সকলেই বীকার করিলাছ । এক্ষণে দেখিতে হইবে, ঘট বন্ধটির কি প্রকার সন্তা ? ইহা সকলেই বীকার করিরা থাকেন, এ ক্লগতে আমরা বাহা কিছু দেখিতে পাই, ভাহা

কোন বস্তু হইতে ভিন্ন এবং কোন বস্তু হইতে অভিন্ন; যেমন বট, পট হইতে ভিন্ন এবং নিজ স্বরূপ হইতে অভিন্ন; ঐ বস্তু যাহা হইতে ভিন্ন, কৰ্মণ তাহা হইতে অভিন্ন হইতে পারে না; এবং বাহা হইতে অভিন্ন, কথনও তাহা হইতে ভিন্ন হইতে পারে না। একণে দেখিতে হইবে, ঘট ও মৃতিকার कि প্রকার সম্বন্ধ। বধন দেখিতে পাই--বট রহিয়াছে, তধন আমরা মৃদ্বট এই প্রকার ব্যবহার করি; আবার যখন ঘট নষ্ট হয়, তথন সেই মৃত্তিকাতেই ইহা पर नार वह शकात वावशत कति। विक्रा पर पर मिलन हरेट जिन्न वा মভিন্ন কিছুই স্থির করা যাইতেছে না; যে বস্তু কোন এক বস্তুর অভিন্ন নতে, অথচ ভিন্ন নহে, এমন বস্তুর প্রকৃত স্বরূপ কি, তাহা কেমন করিয়া বলা বাইতে পারে? এই প্রকার যুক্তিবলে জগতের যাবৎ বিকারই নিজ কারণ হইতে ভিন্ন বা অভিন্নরূপে স্থির হইতেছে না, অথচ বেখানেই বিকারবৃদ্ধি, সেই খানেই সেই বিকারের কারণ অমুগত রহিয়াছে, ইহা স্পষ্ঠ বুঝিতে পারা বাইতেছে। মৃত্তিকা কণন ঘটবৃদ্ধির বিষয় হইতেছে, কখন পিও-বৃদ্ধির বিষয় হইতেছে, শাবার কথনও চূর্ণ-বৃদ্ধির বিষয় হইতেছে, অথচ সকল বৃদ্ধিতেই মৃত্তিকার প্রকাশ হইডেছে, ইহা স্থির; এইরূপ স্থলে দকল বিকারের উৎপত্তি, নাশ ও স্থিতিকালে একভাবে সর্বাদা অহুগত থাকা প্রযুক্ত, ঘটাদি অনির্বাচনীয় বিকারের একমাত্র উপাদান মৃত্তিকাদি, সেই সেই বিকারাপেকা সং হইরা উঠিতেছে; এই প্রকার म्मामि विकारत्रत्र अनिर्वाहनीय्राध्ययुक व्यवः वे मक्न अनिर्वाहनीय कार्यात्र সহিত, সর্বাত্ত সং এই বৃদ্ধির বিষয় যে বস্তু, তাহার সর্বাণা বিল্লমানতা প্রযুক্ত শকল কাৰ্য্যের একমাত্র কারণক্রপে বে সদ্বস্ত সর্বত্ত উপলব্ধ হয়, ভাহাই নিভা। জগতে যত ব্যবহার আছে, সকল ব্যবহারে সদ্বস্তুর প্রকাশ সর্বদা হইরা शांत्क, हेश नकनत्करे श्रीकात कतित्व हरेता। श्रामता वथन त्य श्रकात शांतरात्र क्तियां शांकि, नकन वावहारतहें ने भार्यंत्र खान जामारमत जर्श हहेवा थारक ; विमन "मन् चि:" अर्थार चि जाहि, "आमीर चि:" अर्थार चि-मखा हिंग এवर "ঘটো ভবিয়াভি" অর্থাৎ ঘটের সন্তা হইবে। এই প্রকার বত ব**ন্তই আ**মরা জানি, সকল বন্ধতেই সভের ক্ষম আরোপ না করিয়া, কিছুই বুঝিতে পারি না। এরপ ছলে ইহাই বলিতে হয় বে, আমাদের জ্ঞানে সং ও অসং ছই বস্তুই विषय श्रेरङ्ग्ह अर्थाए नर्सज এकक्षण, अविनानी, अनामि अक्षां मनस्वरूष আপ্রয় করিয়া বট, পট, মঠ, মহব্য, পণ্ড, ক্ষিভি, তেজ, বায়ু, আকাশ প্রভৃতি नकन व्यभिक्तिमीत्र व्यन् रहमभूट्द क्त्रमायत्र ध्रांशकत मरश्र शक्ति। श्रीव

নং ও অসতের শ্বরণ অবগত হইতে অসমর্থ হইরা প্রান্তিময় করনাশালৈ আবদ্ধ হইরা পড়িরাছে। ইহার পর্বর্তী ভাষ্যে এই সং ও অসতের বিবেক-বিষয়ে বিশদভাবে উপদেশ আছে। যথাস্থানে ভাষা বিশদভাবে বুঝান যাইবে।

व्यक्तवीम । नीन छे९भन वहे अकात वृक्षित्छ स्यमन नीन ७० ७ পদ্ম এই হুইটি বন্ধ পরম্পর ব্যভিচারী হইরাও একত্র প্রকাশ প্রাপ্ত হয় (অর্থাৎ নীৰ গুণের অভাব হইলে পল্লের অভাব হয় না; কারণ গুত্রপল্লে নীৰ গুণ नारे, अथि शर्मवृक्ति दश ; এই श्रीकात्र शर्मवृक्ति ना इटेल नीनवृक्ति दश ना, ভাহা নহে; কারণ নীল ঘট এই প্রকার বুদ্ধিতে নীল বিষয় হইয়াছে; কিন্ত शक्त विवद रह नारे; धरे कात्रत्म नीन खन ७ शक्त भव्रत्मव वाणिहाती स्टेरन७, নীল উৎপল এই প্রকার সমানাধিকরণ গৌণবৃদ্ধি উৎপন্ন হয়), সেই প্রকার "সন্ ঘটঃ" "সন্ পটঃ" ইত্যাদি ছলে যে সমানাধিকরণ বৃদ্ধি হয়, তাহার বিষয় বন্ধবর পরম্পর ব্যভিচারী নহে। এই প্রকার সকল ব্যবহার ছলেই [नमन दृषि रहेना थात्क]। किंद धरे मन्दृषि ७ व्यमन्दृषित मरधा ঘটাদিরূপ যে অসদ্বুদ্ধি বিষয়, তাহাই ব্যভিচরিত হয় (অর্থাৎ সদ্বুদ্ধি य প্रकात गर्क बात्रशास अप्रशंख, चीनि वृक्षि त्र श्रकात गर्क बात्रशास অমুগত হয় না) যে প্রকারে ঘটাদি বুদ্ধি ব্যক্তিচরিত হয়, তাহা দর্শিত হইরাছে। কিন্তু সদ্বৃদ্ধি ব্যভিচরিত নহে। স্থতরাং ব্যভিচার থাকার বটাদি বুদ্ধির বিষয় যে সকল বস্তু তাহাদিগকে অসৎ বলা বার, এবং ব্যক্তিচার না থাকার সদ্বৃদ্ধির যাহা বিষয়, তাহা অসং নছে। यদি বল, ঘট বিনষ্ট হইলে ঘটবুদ্ধিও ব্যভিচরিত হয়, সেই সঙ্গে "ঘট: সন্" এই ৰুদ্ধিয়ও নাশ হওয়ার সদ্বৃদ্ধিও নাশ প্রাপ্ত হর, ইহাও বলা বার না; কারণ [ঘট ব্যবহার নষ্ট হইলেও] পটাদি ব্যবহারে সদ্বুদ্ধির প্রকাশ रुहें ब्रा बादन। मन्त्कित विवत्र विषय। (व्यर्थाए मछारे मन्त्कित विवत्र) পটাদিতে সদ্বুদ্ধির সম্ভাবের স্থার, একটি ঘট বিনষ্ট হইলেও অপর ঘটে ঘটবুদ্ধি বিশ্বমান থাকে [স্থতরাং ব্যতিচার না থাকার ঘটকেও সং বলা বাইতে পারে] এই প্রকার শবা হইতে পারে না; কারণ সৃদ্বৃদ্ধির স্থার ष्ठेनुकि श्रोनि बावशत्रकारन शतिमृष्ठे स्म ना।

ষ্ট বিনষ্ট হইলে সদ্বৃদ্ধিও দৃষ্ঠ হয় না [প্রতরাৎ সদ্বৃদ্ধির বিষয়ও প্রমাৎ] এই প্রকার শবা হইতে পারে না; কারণ ঘটাদিরণ বিশেষ্য না থাকার সদ্বৃদ্ধি হর না, সদ্বৃদ্ধির বিষর বিশেষণ—বিশেষ্য না থাকিলে বিশেষণ-বিষরিণী সদ্বৃদ্ধি কোন্ বিষয়কে অবসরন করিরা উৎপন্ন হইবে? সদ্বৃদ্ধির বিষয় না থাকার সদ্বৃদ্ধি হইল না, ইহা হইতে পারে না। ঘটাদি বিশেষ্য অসৎ হইলে, সদ্বন্ধর সহিত একজানে অভিনন্ধণে প্রতিভাসমান হইরা থাকে, ইহা কি প্রকারে সঙ্গত হইতে পারে, এই প্রকার শল্পা করা বাইতে পারে না; কারণ মক্র-মরীচিকাতে জলের ভাদান্ম্য না থাকিলে, মিথ্যাভূত জলের সহিত সত্য মরীচিকার অভিনরণে এক-জ্ঞানে প্রকাশ হইরা থাকে, এই প্রকার দেখিতে পাওরা বার। স্থতরাং অসৎ দেহাদি ও বন্দ স্থতঃখাদি ও ইহাদের কারণ অজ্ঞানের, বাত্তবিক সন্তা বিভ্যমান নাই।

সেই প্রকার সৎ আত্মার অভাব অর্থাৎ অবিশ্বমানতা নাই [কারণ]

আন্ধা ভিন্ন সকল বস্তাই সক্ষ-সরীচিকার স্থান অসং—এই প্রকান স্থিন করিনা স্থপ ছংখাদি সক্ষ করিতে হর। আত্মা সর্ব্ব নির্মিতরপে বিশ্বমান আছে, ইহাই
বলিরাছি। এই প্রকার সং আত্মা এবং অসং
অনাত্মা এই উভরের "অস্ত" নির্ণর "দৃষ্ট" উপলব্ধ
হইরাছে "সং সংই অসং অসংই" যথোক্তরপ সং
ও অসতের এই প্রকার নির্ণর তত্ত্বাশিকা প্রাপ্ত

হইরাছেন। তৎ এই শক্টি সর্বনাম (তৎ এই শক্ষের ছারা সক্স বছকেই বুঝান বার) বন্ধ সকল বন্ধর ব্রন্ধা (এই কারণে) তৎ এই শক্ষ্টি ব্রক্ষের নাম; তাহার (ব্রক্ষের) ধর্ম এই অর্থে তন্ধ, এই শক্ষ্টি প্রবৃক্ষ হর; [মুতরাং] তন্ধ এই শক্ষের অর্থ ব্রক্ষের বাধান্ম (প্রক্রুত স্বর্মপ); সেই ব্রক্ষের প্রকৃত স্বর্মপ দর্শনই বাহাদের স্বভাব, তাঁহারাই তন্ধর্শী; তন্ধদর্শি, এই শক্ষের তৃতীয়ার বহুবচনে, তন্দর্শিভি: এই পদ্টি সাধিত হর। [হে অর্ক্র্ন] তৃমিও তন্ধর্শিগণের দৃষ্টি অবলম্বন করিয়া শোক ও মোহ পরিহার পূর্বেক, [প্রাপ্তক্ষ প্রকারে] নিয়ত ও অনিয়জরূপ নন্দনিচয়কে "এই সকল বিকার অসৎ মরুমরীচিকার ভার মিধ্যা প্রতিভাসমান হয়," এইপ্রকার হলরে নিশ্চর করিয়া সহাঁকর, ইহাই অভিপ্রায় ৪১৬

অবিনাশি তু তদ্বিদ্ধি যেন সর্ববিদং ততম্। বিনাশমব্যয়স্থাস্থ ন কশ্চিৎ কর্ত্ত্ব্যর্হতি॥ ১৭

चाबुश । दान रेमर अर्थर जल्द (वार्थिर), छर छू [धव] प्रदि

নাশি (নিত্যং) বিদ্ধি (জানীহি) কশ্চিং অন্ত অব্যয়ন্ত বিনাশং কর্ম্ব ন অহঁতি ॥ ১৭

আনুবাদ। এই সকল বস্ত বাহার অন্তর্নিবিষ্ট, তাহাকেই অবিনাশী বলিয়া জানিবে; সেই সর্বব্যাপক অব্যয়ের বিনাশ করিতে কেহই সমর্থ নহে॥ ১৭

ভাষ্য। কিং পুনন্তং বং সদেব সর্বাদান্তীতি উচ্যতে অবিনাশীতি।
আবিনাশি ন বিনষ্ট্ং শীলমন্তেতি তু শক্ষোহসতো বিশেষণার্থঃ। তদ্ বিদ্ধি
বিদানীহি। কিমৃ ? বেন সর্বাদিদং জগৎ ততং ব্যাপ্তং সদাধ্যেন ব্রহ্মণা
সাকাশমাকাশেনের ঘটাদয়ঃ। বিনাশমদর্শনমভাবমব্যর্ক্ত। ন ব্যেতি উপচয়াপ্রচয়ৌ ন যাতীত্যব্যরং তস্যাব্যর্স্য নৈতং সদাধ্যং ব্রহ্ম ক্ষেন রূপেণ ব্যেতি
ন ব্যক্তিরন্তি নিরব্যবন্ধাৎ দেহাদিবং নাপ্যান্থীরেন আত্মীয়াভাবাং বথা
ক্ষেক্তো ধনহাল্তা ব্যেতি নম্বেবং ব্রহ্ম ব্যেতি অভোহব্যর্স্যাস্য ব্রহ্মণো
বিনাশং ন কশ্তিং কর্ত্ত্র্মহ্তি ন কশ্তিদান্মানং বিনাশয়িত্বং শক্ষোতীশ্বরোহপি
আত্মা হি ব্রদ্ধ স্থাত্মনি চ ক্রিয়াবিরোধাং ৬১ গ

আনন্দ্রিটীক। নমু সদিতি সামাস্ত্রং বা প্রথমে তস্য विश्वकार्यक्रा अनुवानभावां मार्थिवित्र विनामः मार्थि न हाचा-দরোবিশেষাক্তদাপি সন্তীতি বীচ্যম্ আত্মতিরিক্তানাং বিশেষাণাং কার্যান্তীনী-কারাৎ প্রলয়াবস্থায়াম অনবস্থানাদাত্মনন্ত সামালাত্মনো ধর্মিতাৎ উক্তলোৱা-দ্বিতীরে তু শ্বরূপন্য ব্যাবৃত্ততে করিতথাৎ বিনাশিসমন্তবৃত্তত্বেন তত্ত্বৈব সামান্ততরা প্রাপ্তকদোবামুশক্তিরিতি মহানশ্চোদরতি—কিং পুনরিতি। সামান্তবিশেষভাবশূল্যমণত্তৈকরসং সদেবেত্যাদিশ্রতিপ্রমিতং সর্কবিজিনারহিতং বঞ্জ প্রকৃতং সদ্বিবন্ধিতমিত্যুত্তরমাহ—উচ্যুতইতি | আত্মনঃ সদাত্মনো বিনাশ-রাহিত্যবিজ্ঞানে সর্বজ্ঞগদ্ব্যাপকত্বং হেতুমাহ—্যেনেতি। আত্মনো বিনাশা-ভাবে যক্তিমাহ—বিনাশমিতি। আত্মনোবিনাশমিচ্ছতা স্বতো বা পরতো বা নাশন্তক্ষেব্যতে নাম্ভ ইত্যাহ—অবিনাশীতি। দেহাদিবৈত্যসগুচ্যতে ভতঃ সজোবিশেষাং বতো নাশরাহিত্যম্। তদ্য ভোতকো নিপাভ ইত্যাহ—ভুশক্দ-ইতি। আকাজাপুর্বকং বিশেষ্যং দর্শরতি—কিমিত্যাদিনা। • বিমত্মবি-नानि गांशकपानाकानवर न हि अभिकासतानाहत्रवर किस् अभिक्रमनीकि ভাবঃ। ন বিতীরইত্যাই—বিনাশমিতি। ন খবস্য বিনাশং কর্ড্য কন্দি-দর্ষভীতি সমনঃ। বিনাশস্য সাবশেষখনিরবশেষখভ্যাং বৈরভেনাঞ্জিতা

ব্যাকরোতি—অদর্শনমিতি। ন কশ্চিদস্যাভাবং কর্তুং শরোতীত্যত্র হেতুমাহ—
অব্যয়স্তেতি। বন্ধ হি স্বরূপেণ ব্যেতি স্বসম্বনিনা বেতি বিকর্মান্তং দ্বারতি—
নৈতদিতি। ন হি নির্বয়বস্থ স্বাবয়্রবাপচয়রূপব্যয়ঃ: সম্ভবতীত্যত্র বৈধর্ম্যয়
দৃষ্টাস্তমাহ—দেহাদিবদিতি। দিতীংং নিরস্থতি—নাপীতি। তদেব ব্যতিরেকদৃষ্টাস্তেন স্পাইরতি—যথেতি। দিবিধেহপি ব্যংগাধারে ফলিতমাহ—অভইতি
কিঞ্চ বন্ধ পরতোন নশ্রত্যাত্মতাদ্বটবদিত্যাহ—ন ক্ষিচ্দিতি। আত্মস্বাহ্বেরারিদিন্ধ্রুরতি—আ্লা হীতি। তাদাত্মশ্রতিরত্র হীতিহেতু: ক্রিয়তে।
অস্ত্র তর্হি স্বয়্রের বন্ধ স্বাত্মনো নাশকমৃদ্বন্ধনাদিদর্শনায়েত্যাহ—
স্বাত্মনীতি॥ ১৭ ॥

অনুবাদ। কি সেই বস্তু, যাহা দংশ্বরূপে দুর্বত্ত বিছমান আছে? [এই প্রকার প্রায়ের উত্তর] বলা বাইতেছে—অবিনাশীত্যাদি। যে বস্থ বিনাশশীল নহে, তাহাই অবিনাশী; মূলে "তু" শব্দের উপাদান অসৎ হইতে সতের বৈলক্ষণ্য করাইবার জন্ত। তাহাকেই (অবিনাশী^{*}) জানিবে; কি সে বস্তু? যাহা দারা এই সকল জগৎ তত (ব্যাপ্ত) আছে; আকাশের অন্তরে বেমন ঘটাদি বস্তু প্রবিষ্ঠ আছে, সেই প্রকার আকাশের সহিত এই বিশ্ব সদাপ্য ত্রন্মের অন্তঃপ্রবিষ্ট আছে। বিনাশ (অর্থাৎ অদর্শন)-অভাব) যাহার ব্যয় নাই তাহাই অব্যয় (অর্থাৎ যাহার হ্রাস বা বৃদ্ধি হয় না তাহাই অব্যব); দেহাদির স্থায় অব্যব না থাকা প্রযুক্ত, সং এই শব্দের প্রতিপান্ত ব্রহ্ম নিজরূপে কবনই অন্তণাভাব প্রাপ্ত হয় না; আত্মীয় বছুর বিনাশাদিনিবন্ধন ত্রন্ধার অপচয় হইবার সম্ভাবনা নাই; আত্মীয়ধনাদির হানিতে যেমন দেবদত্তের হানি হয়, গেই প্রকার আত্মীয় না থাকা প্রযুক্ত ব্রক্ষের হানি হইতে পারে না; এই কারণে অব্যয় এই ব্রক্ষের কেহই বিনাশ করিতে সমর্থ হর না। ত্রহ্ম যে কারণে সকলেরই আত্মা, এই 🕸 कान वाकि ज्ञेषत इहेरल इहात विनाम कतिएक मक्कम हत्र ना ; काक्रम নিব্দের আত্মাতে স্বক্র্ক হনন ক্রিয়ার সম্ভাবনা নাই ॥১१

্ব্যন্তবন্ত ইমে দেহা নিত্যস্থোক্তাঃ শরীরিণঃ। অনাশিনোহপ্রমেয়স্ত তন্মাদ্যুধ্যস্ব ভারত ॥ ১৮

অব্যা। নিতাস্য জনাশিনঃ অপ্রনেয়স্য শরীরিণঃ ইনে দেহাঃ **অভ্যক্ত** উক্তাঃ ; হে ভারত তত্মাৎ যুধ্যস্থ ॥ ১৮ অমুবাদ ৷ হে ভারত, অবিনাশী অপ্রমেয় ও নিডা শরীয়ীর এই সকল দেহই বিনাশশীলরণে উক্ত হইরাছে ; [যে কারণে আস্থার বিনাশ হয় না] এই অন্ত তুমি যুক্ষ ক্র ॥১৮

ভাষা। কিং পুনতং অসং ফাব্মসতাং ব্যভিচরতি ইতি উচ্যতে অন্তবন্ত ইতি। অন্তবন্তঃ অন্তো বিনাশো বিশ্বতে বেবাং তে অন্তবন্তঃ বৰা মগতকিকাদৌ সদ ব্রিরহুবুরা প্রশাণনিরপণাত্তে বিচ্ছিততে স তস্যা অন্তঃ; তথা ইমে দেহাঃ শ্বপ্নমানাদেহাদিবচ্চ অন্তবন্তো নিত্যস্য শরীরিণঃ শরীর-বতোহনাশিনো হপ্রমের্গস্য স্পান্মনোহস্তবস্ত ইত্যুক্তা বিবেকিভিরিত্যর্থ:। নিত্যক্ত অনাশিন ইতি চ ন পুনক্ষকং নিত্যপঞ্চ দ্বিবিধন্বাৎ লোকে ৰণা দেহো ভশীকৃতো ২দৰ্শনং গড়োনষ্ট উচ্যতে ৰিশ্বমানোছপি যথা অশ্বৰণাপরিণতো ব্যাখ্যাদিযুক্তো জাতো নষ্ট উচ্যতে। জন্তানাশিনো নিত্যন্তেতি হিবিধেনাপি নাশেনাসহয়ে। হতেতার্থ:। অন্তথা পুলিব্যাদিবদ্পি নিতাবং ভাদাস্থন: তন্মাভূদিতি নিত্যস্তানাশিন ইত্যাহ। অপ্রমেয়ন্ত ন প্রমেয়ন্ত প্রত্যকাদিপ্রমাণে: অপরিচ্ছেন্ত ইতার্থ:। আগ্রেন আআ পরিচ্ছিছতে প্রতাকাদিনা চ পূর্বন্। নাত্মনঃ স্বতঃসিদ্ধ-ছাर। সিঙ্কে স্থান্থনি প্রমাতরি প্রমিৎসোঃ প্রমাণাবেষণা ভবতি নহি পূর্ব্ধমিখম্ আহমিতি আত্মানং অপ্রমায় পশ্চাৎ প্রমেরপরিচেদার প্রবর্ততে। ন ছাত্মা নাম কন্তচিদপ্রসিজে। ভবতি। শাহ্রং তু অন্ত্যং প্রমাণমতজ্জাধ্যারোপণমাত্র-নিবর্ত্তকত্বেন প্রমাণ্ডমাত্মনি প্রতিপদ্ধতে ন বজাতার্থজ্ঞাপকত্বেন; তথা চ শ্রুতিঃ "ৰংসাকাদ ব্যাকাৎ ব্ৰহ্ম য অ:জা স্কান্তর:" ইতি ৷ বন্ধাদেবং নিত্যোহ-বিক্রিস্টাক্স তথাদ্য্ধ্যক বুদাছপরনং মাকাবীরিতার্থ:। ন হল বুদ্ধকর্তবাতা বিধীয়তে। বুদ্ধে প্রবৃত্ত এব ছসে শোকমোহপ্রতিবদ্ধস্থকীমান্তে তক্ত কর্তব্য-প্রতিবদ্ধাপনয়নমাত্রং ভগবতা ক্রিয়তে তন্মাৎ "যুধ্যম" ইত্যন্থবাদমাত্রং, ন विषि: ॥ ३৮

আনন্দণিরিটীকা। সদসভোরনন্তরপ্রকৃতরোঃ স্বরূপাব্যতিচারিনেন পর-মার্থতরা সরিধারিতমিদানীমসরিদিধাররিবরা পৃচ্ছতি—কিং পুনরিতি। অসদেবেতি নির্দারিতমাৎ প্রশ্নত নিরব্দাশ্বমাশ্বর শৃত্তং ব্যাবর্ত্ত্য বিবক্ষিত-মসরিধাররিত্বং তত্ত সাবকাশ্বমাহ—হাত্ স্বাত্ত্যেতি। দেহাদেরনাম্বর্বক্ত প্রকৃতাস্ক্র্কিবিবরতেত্যাহ—উচ্যতইতি। তেবাং স্বাত্ত্যেৎ ব্যুদ্ততি—নিত্ত্য শ্যেতি। আকাশাদিব্যাবৃত্ত্যর্থং বিশিন্তি—শরীরিণইতি। পরিণাদ- নিভাৰং ব্যৰ্জিনতি—অনাশিনইতি | তত্ত প্ৰভাকাছবিবর্থমাং—অপ্ৰ মেয়ন্ত্রেতি ৷ দেহাদেরবছযাদাম্মনৈকরপদান্ত্রে খবর্পে প্রবৃত্তভাপি তব্ न हिश्तामित्मावत्रखावत्नजाह—जन्मामिजि । नम्र महामियु मम्बूरबन्नस्वरखन्जान বিচ্ছেদাভাবাৎ কথমন্তবন্ধ ভেবামিয়তে তত্ত্বাহ—যুখেতি। তথেমে দেহাঃ मन्बिकारकार्शि धामानरका निक्रभगात्रामयमारन विस्कृतामस्वरसा क्वडीकि (नवः। (पर्वामिना क कांशिक्कारमञ्ज्यक् मचांजिभन्नवमध्यांक् भकामिकांक-স্বাপ্লেতি। শরীরাদেরত্তবহেংপি প্রবাহরপেণাম্মনতংগদরকানতত্বনাশভাহি-নিত্যস্ত্রেতি ৷ প্রবাহত প্রবাহিব্যতিরেকেণানিরপণার তদাত্মনা দেহাছভাবে সংস্কৃষিদ্ধিরিত্যভিসন্ধার্যেক:-বিবেকিভিরিতি। পদবরতেকার্থক্সাশক্য নিরভাজ—নিত্যক্তেত্যাদিনা। নিভাষত বৈবিধ্যদিদ্যর্থং নাশবৈবিধ্যং প্রতি জাতং প্রকটরতি—ষ্বথেত্যাদিনা। নাশক নিরবশেষত্বেন সবিশেষত্বেন চ সিন্ধে বৈবিধ্যে ফলিতমাহ—তত্ত্তেতি। বিশেষণাভ্যাৎ কৃটছনিভাগমাগ্ননো বিবক্ষিত্রমিতার্থঃ। অন্ততর্বিশেবণমাত্রোপাদানে পরিণামিনিভাত্তমান্ত্রন:-শ্বেতেত্যনিষ্টাপত্তিমাশক্যাহ—অন্যথেতি। উপনিষদ্ববিশেষণাশ্রিত্যাপ্রমেরম্ব-মাকিণতি—নিষ্বৃতি। ইতশ্চাম্বনো নাপ্রমেম্বমত্যাহ—প্রত্যক্ষাদিনেতি। তেন চাগনপ্রবন্তাপেকরা পূর্বাবস্থারামাথৈব পরিচ্ছিত্তত তরিরেবাজ্ঞানম্বসম্ভ বাদজ্ঞাতজ্ঞাপকং প্রমাণমিতি চ প্রমাণলক্ষণাদিত্যর্থ:। এতদপ্রমেরমিত্যাদি-শ্রতিমন্থ্রতা পরিহরতি—নেত্যাদিনা। কণং মানমনপেক্যাত্মন: সি**ছছমি** ত্যাশক্ষোক্তং বিবৃংগাতি—সিদ্ধেহীতি। প্রমিৎসাং প্রমেরমিতি শেবঃ। তদেব ব্যতিরেকম্থেন বিশদয়ভি—ন হাতি। আত্মন: দর্কলোকপ্রদিদ্বাচ তশ্বির প্রমাণমন্বেষণীয়মিত্যাহ—ন হাাভ্যেতি। প্রত্যক্ষাদেরলাম্ববিষয়ধাৎ তর চাজ্ঞাতজ্ঞাততামা ব্যবহারসম্ভবাৎ তৎপ্রামাণ্যস্ত চ ব্যবহারিকদাদ বিশিষ্টে তৎ; প্রবৃত্তাবলি কেবলে ডদপ্রবৃত্তে বদ্যুপি নাত্মনি তৎ প্রামাণ্যাৎ তথালি তদ্ধিতপ্রত্যা শাব্রহ্ম তত্র প্রবৃত্তিরবশুম্ভাবিনীত্যাশস্ক্যাহ—শাস্ত্রন্থিতি ৷ শাব্রেণ প্রত্যগ্-ভূতে ব্ৰহ্মণি প্ৰতিপাদিতে প্ৰমাত্ৰাদিবিভাগত ব্যাবৃত্তমাহাক্তমতাস্বত্তমলৈকৈৰেঃ-উয়া নিদে যিছাজাগমশু • প্রামাণ্টমিত্যর্থঃ। তথাপি কথমশু প্রত্যগান্ধনি প্রামাণ্যং অন্ত স্বতঃ সিদ্ধত্বেনাবিবরত্বাদক্তাতজ্ঞাপনাযোগাদিত্যাশহ্য স্বতো-ভাসমানোহণি প্রতীচৌ মন্তুরোহাং কর্ত্তাহমিত্যাদিনা মন্তুযুত্তকর্তৃতাদীনাম-ভদ্মাণাম্ অধ্যারোপণেনাত্মনি প্রতীয়মানত্তাৎ তন্মাত্রনিবর্ত্তকত্বেনাত্মনো বিষয়ত্বম শনাপাল্ডেব শান্ত্ৰং প্ৰামাণ্যং প্ৰতিপম্ভতে সিদ্ধন্ত নিষ্ঠ্ৰক্ষাদিতি সানাদি গাং—

অতদ্ধর্মেতি। ঘটাদাবিব স্থুরণাতিশর্জনকত্বেন কিমিত্যাত্মনি শান্তপ্রামাণ্যং নেষ্টমিত্যাশ্বর জড়থাঞ্ড্যাত্যাং বিশেবাদিতি মন্বাহ—ন্তিতি। বন্ধাত্মনের মানাপেক্ষামন্তরেণ যতঃ স্থুরণে প্রমাণমাহ—তথা চেতি। সাক্ষাদত্তাপেক্ষামন্তরেণাপরাক্ষাৎ অপরোক্ষ্মরণাত্মকং যদব্রজ্ম ন চ তত্তাত্মনোহর্থান্তরত্বং সর্বাভ্যন্তরত্বেন সর্ববিস্তান্তর্থান্তর ত্যাত্মানাং ব্যাচক্ষ্যেতি যোজনা। অপ্রমেয়ত্বেনাবিনাশিত্বং প্রতিপাত্ম ফলিতং নিগমরতি—হাম্মাদিতি। স্বাহ্মনির্ভিহেত্ননিবেধে তাৎপর্যাৎ দর্শরতি—হাদ্ধাদিতি। আত্মনো নিত্যত্বাদিস্বরূপমূপণাত্ম বৃদ্ধকর্ত্ববিধানাৎ জ্ঞানকর্ম্মস্করেরাহত্ত ভাতীত্যাশঙ্ক্যাহ—ন হীতি। হ্ধ্যাক্তি বচনাৎ তৎপ্রবর্তকত্ববিধিরন্তীত্যাশঙ্ক্যাহ—হাদ্ধাহিতি। কথং তর্হি, কথং ভীন্মমহমিত্যাক্ষ্রক্রনত্ম হ্লোপরমপরং বচনমিতি তত্ত্রাহ—শোক্তে। যদি স্বতো হৃদ্ধে প্রবৃত্তিঃ তর্হি ভগবদ্বচনত্ত কা গতিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—ত্ত্ত্তি। ভগবদ্বচনত্ত প্রতিবন্ধনিবর্ত্তকত্বে সত্যর্জ্বনপ্রত্তঃ স্বাভাবিকত্বে ফলিতমাহ—ত্ত্যাদিতি। ১৮

অনুবাদ। কি এমন অসৎ বন্ধ, বাহার নিজসতা অন্তণাভাব প্রাপ্ত হয় ? ইহার উত্তরে বলা যাইতেছে বে, অস্তবস্ত ইত্যাদি।—অন্তশক্ষের অর্থ বিনাশ, ভাহা বাহাদের আছে, তাহারাই অন্তবানু; বেমন মূগভৃঞ্চিকার জলে অনুগত সদবৃদ্ধি, প্রমাণের দ্বারা বস্তুনিরূপণের পর আর থাকে না আর ঐ জলকে সং বলিয়া বোধ হর না] এই সদবৃদ্ধির বিচ্ছেনই তাহার অন্ত. সেইপ্রকার এইসকল দেহও স্বপ্নসিদ্ধ বা ঐক্রজালিক দেহাদির ফ্রায় অন্তবান্। নিত্য শরীরী (অর্থাৎ শরীরাভিমানী) অবিনাশী ও অপ্রমেয় আত্মার এই দেহ সকলও অন্তবান ইহা বিবেকিগণ কহিয়া থাকেন। নিত্য ও অবিনাশী এই একার বলাতে যে পুনক্ষজি হইয়াছে, তাহা নহে ; [কারণ] লোকে নিত্যন্তও দিবিধ। বেমন দেহ ভত্মীভূত হইরা অদর্শন প্রাপ্ত হইলে নষ্ট হইল, এই প্রকার ৰলা যায় এবং বস্তু বিশ্বমান আছে, অথচ ব্যাধি প্রভৃতির দ্বারা অবস্থান্তর প্রাপ্ত হইয়াছে, এরপস্থলে এ বস্তু নষ্ট হইয়াছে, এই প্রকার বলা যার। অনাশী ও নিত্য এই ছইটি শব্দ দারা আত্মার [পূর্ব্বকথিত] দ্বিবিধ নাশের সহিত অসবদ্ধ,—ইহাই প্রতিপাদিত হইতেছে। কেবল নিত্য এই নাত্র বলিলৈ পুণিব্যাদির স্থায় [পরিণামী] নিতাত্বও আত্মায় প্রদক্ত হইতে পারে, তাং व्याच्यात्य दक्षां डेहिड नरह ; वहे कांतरा निष्ठा ও व्यविनानी वहे इहाँहे नक প্রয়ক হইয়াছে। অপ্রনেয়, (অর্থাৎ আত্মা কোন প্রত্যকাদি প্রনাণের পরিজেন্ত নতেঁ। শাস্ত্রের দারা আন্থা পরিচ্ছেন্ত এবং শাস্ত্রজ্ঞান হইবার পূর্বেও শাস্ত্রের দারা আন্থা প্রত্যক্ষাদি প্রমাণের দারাও পরিচ্ছেন্ত হইতে পারে,—এই প্রকার শকা করা উচিত নহে। কারণ আন্থা (জ্ঞান) স্বতঃসিদ্ধ (স্বরংপ্রকাশ)। প্রমাতার স্বরূপ আন্ধার জ্ঞান থাকিলেই প্রমাক্তানেচ্চু ব্যক্তির প্রমাকরণের অবেষণা হইরা থাকে। "আমি এইরূপ" এই প্রকারে আন্মন্তান পূর্বের না থাকিলে, কেংই প্রমাণদারা বন্ধস্বরূপ নির্ণর করিতে প্রবৃদ্ধ হর না। আন্থা কোন ব্যক্তিরই [নিজের নিকটে কোন অবস্থাতেই] অজ্ঞাত হইতে পারে না। আন্থাবিষরে চরম প্রমাণ শাস্ত্র, ও আন্থাতে আরোপিত

শার আত্মতত্ত্বের জ্ঞাপক নহে, কেবল আত্মার উপর আরো-পিত মিথ্যা ধর্ম্মের নিবেধক। অন্ত ধর্মের নিবর্ত্তকরপে আত্মবিষয়ে প্রমাণত প্রাপ্ত হয়। [আত্মা সর্বাদা স্বরংপ্রকাশ এই জন্ত] অঞ্চাত অর্থের জ্ঞাপকত্বরূপ প্রামাণ্য [আত্মবিষয়ে] শাস্ত্রের অঙ্গীকার করা যার না! এই কথাই শ্রুতি বলিরা

দিতেছেন যে, যে বন্ধ অপর বিজ্ঞানের সাহায্য ব্যতিরেকে স্বরং প্রকাশ পার এবং যে বন্ধ সকলের অন্তরে বিরাজনান, তাহাই ব্রন্ধ। যে কারণ আত্মা এই প্রকার নিত্য ও নির্কিকার, এই জন্ম তুমি যুদ্ধ কর (অর্থাৎ যুদ্ধ হইতে নির্ব্ত হইও না)। এই বাক্যে যুদ্ধ কর্ত্তব্য বলিয়া বিহিত হইতেছে না। [কারণ] অর্জ্জুন যুদ্ধে প্রবৃত্তই ছিলেন [মন্ধ্য কেবল] শোকমোহাদিলার। প্রতিবদ্ধ হইয়া নির্ব্যাপার হইয়াছিলেন। ভগবান্ অর্জ্জুনের কর্ত্তব্যপালনবিষরে প্রতিবদ্ধকমাত্রের অপনয়ন করিতেছেন, এইজন্ম "বৃদ্ধ কর" এইরূপ বিধান করা হইতেছে না; কিন্তু পূর্বসিদ্ধ অর্থের অনুবাদমাত্র করা যাইতেছে ॥১৮

য এনং বেত্তি হস্তারং যশৈচনং মন্যতে হতম্। উভৌ তৌ ন বিজানীতো নায়ং হস্তি ন হন্যতে ॥১৯

অনুয়। ব: এনং (আত্মানং) হস্তারং (গ্ননক্রিয়াকর্জ্ভ্ডং) বেস্তি (মন্তাতে) য'ল্চ এনং (আত্মানং) হতং (হননক্রিয়াকর্মভূতং) মন্তাতে, তৌ উভৌ [এব] অয়ং (এবায়া) দ হস্তি ন [বা] হন্তাতে ইতি ন বিজানীতঃ॥ ১৯

অনুবাদ। যে ব্যক্তি এই আত্মাকে হস্তা বলিয়া জানে অথবা দ্বে ব্যক্তি ইহাকে হত বলিয়া জানে, তাহারা উভরেই [বাস্তব পক্ষে] জানে না; অর্থাৎ জাত্মা হস্তাও নহে, হতও হইতে পারে না, ইহা বুঝিতে পারে না॥ ১৯

- ভাষ্য লোকমোহাদিসংগারকারণনিত্বতার্থ: গীতাশাস্ত্রং ন প্রবর্ত্তকম্

ইজ্যেতৎ পার্যন্ধ দাকীভূতে ৰচারানিনার তগৰান্ বর্ষ মন্ত্রে যুঁদ্ধৈ তীল্পাদরের মন্ত্রা হলতে অহমেব তেবাং হল্তা ইজ্যেবা বৃদ্ধির্ক্রিব তে, কথন্ ? ব এনমিতি। ব এনং প্রকৃতং দেহিনং বেতি বিজ্ঞানাতি হলাবং হননক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তারুং, বকৈন্দ্রেরা মন্ত্রত হতন্, দেহহননে হতোহহমিতি হননক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তারুং তাবুংতী ন বিজ্ঞানীতঃ ন জ্ঞাতবত্তী অবিবেকেন আত্মানমহংপ্রত্যারবিষয়ং হস্তাহং হতোহ্মিতি দেহহননেন আত্মানং বৌ বিজ্ঞানীতঃ তাবাত্মস্বর্গানভিজ্ঞাবিত্যর্থঃ। বলাবারমাত্মা হত্তি ন হ হল্পতে ন চ কর্ম তবত্তি ইত্যর্থঃ অবিক্রিয়তাং ॥ ১৯

আনন্দ্রিরিটাকা। অবিনাশি তু তদ্বিদ্ধীত্যতা পূর্বার্দ্ধেন তৎপদার্থসমর্থনস্ভরার্দ্ধেন নিরীশ্বরবাদন্ত পরিপামবাদন্ত বা নিরাক্রগমাত্মনি জন্মদিপ্রতিজ্ঞানন্ত উপচারিকরপ্রদর্শনার্থমন্তবন্ধ ইত্যাদিবচনমিতি কেচিৎ, অন্ধ নামারমপি পর্বাঃ, পূর্বেক্তির গী গাশাত্রার্থলোৎপ্রেক্ষামাত্রমূলবং নিরাকর্ত্ত্ব্ মন্তব্বং
ভগবানানীতবানিতি রোক্ত্ররতা সম্পতিং দর্শরতি—শোক্ষােহাদিতি।
তত্র প্রথমমন্ত্রতা সম্পতিমাহ—হাজিতি। প্রতাক্ষাজ্ঞানপ্রস্থতবে নাভাগবাৎ তৎকৃতা
বৃদ্ধি নি প্রের্থিত — ক্রথমিতি। প্রতাক্ষাজ্ঞানপ্রস্থতবে নাভাগবাৎ তৎকৃতা
বৃদ্ধি নি প্রের্থিত — ক্রথমিতি। হস্তারং হত্কগান্ধানং মন্ত্রমানন্ত কর্মমন্ত্রনিত্তা।
মর্পাদিক্ষান্ত্রমান্ত হস্তাহ্মিতি। হস্তারং হত্কগান্ধানং মন্ত্রমানত্র কর্মমন্ত্রনিত ।
স্ক্রির্থিত বিলয়েক্ত্রমিতি। হস্তার্থিকানমন্ত্রানমিত্যক্র হেতুমাহ — হাস্মাদিতি। আত্মনো হননং প্রতি কর্ত্রকর্মন্বরোরভাবে হেতুং দর্শর্বিত—অবিক্রিয়ুক্ত্রমিতি॥ ১৯

অনুবাদ। সংসারকারণ শোক ও মোহাদির নি:তির জন্তই গীতাশান্ত্র
[আরক হইরাছে], গীতাশান্ত প্রবর্ত্তক নহে। এই অর্থর প্রমাণস্বরূপ মন্ত্রন্ত্র
ভগবান্ উদান্ত্রত করিতেছেল। [হে অর্জুন] তুমি অভিমান করিতেছ বে,
ভীন্ন প্রভৃতিকে আমি মারিব, আমি ইহাদের হস্তা এই প্রকার তোমান্ত্র মিথ্যা
বৃদ্ধি কেন ? [ভাহাই বলা বাইতেছে]—ব এনমিতি। বে ব্যক্তি "এই" প্রকৃত্ত দেহাকে "হন্তা" হননক্রিয়ার কর্ত্তা [এইরূপ] বোধ করিরা থাকে, [সেইরূপ]
আন্ত এক্তন বে আত্মাকে হনন ক্রিয়ার কর্ম্ম [এইরূপ] বোধ করে, ভাহারা।
উভরেই বিশেষ জ্ঞানবান্ নহে; [বৃদ্ধিতবের সহিত্ত] অবিবেক থাকার বাহারা
ভিইবে প্রকার জ্ঞানের আমি বিষর আত্মাকে, আমি হন্তা, হত হইলাম ও ক্রেণ্ডে হননক্রিয়ার কর্ম্মত থাকিলেও [অবিবেক্বশতঃ ভাহা আত্মাতে আন্তর্মণ করিরা] আসি হত হইতেছি এই প্রকার বৈধি করে, তাহারা বিজ্ঞানবান্ নছে (অর্থাৎ তাহারা আত্মার স্বরূপবিষয়ে অনভিজ্ঞ)। আত্মা হতা নহে (অর্থাৎ হননক্রিয়ার কর্ত্তা নহে)। আত্মা হত হর না (অর্থাৎ হননক্রিয়ার কর্ত্তা করেও হর না), ইহার কারণ আত্মা [বাত্তব পক্ষে] অবিক্রির ॥ ১৯

ন জায়তে ত্রিয়তে বা কদাচি
স্নায়ং ভূষা ভবিতা বা ন ভূয়ঃ।

অজো নিত্যঃ শাখতোহয়ং পুরাণো

ন হততে হস্তমানে শরীরে॥ ২০

আমুয়। আরং (আরা) কদাচিৎ ন আরতে ন বা মিরতে [বসাৎ] [আরং] ভূরা (ভবনক্রিয়ামমূরুর পশ্চাৎ) অভবিতা ভূর: (প্নরতাবং গ্রা) [ইতি] ন। আর: নিত্য: শাখত: প্রাণশ্চ [আয়া] শরীরে হয়সানে ন হয়তে ॥ ২০

আনুবাদ। এই আত্মা কোন সময়েই ক্ষাঞ্চণ করে না এবং কখনও মৃত হর না; [কারণ দেহাদির স্থার] এই আত্মা একবার ক্ষালাভ করিয়া পুনর্কার বিনাশ প্রাপ্ত হর না; জ্মাহীন বিনাশরহিত অবিক্রিয় ও নিভ্য সিদ্ধ আত্মা, শরীর বিনষ্ট হইলেও বিনাশিত হর না॥ ২০°

ভাষ্য।—কথমবিক্রিরঃ আন্মেতি বিভীরোময়ঃ ন জারতে নোৎপদ্ধতে লনিক্রণা তু বন্ধবিক্রিরা নাম্বনো বিশ্বত ইত্যর্থঃ। তথা ন ব্রিরতে বা তব্র বাশক্ষণার্থে ন ব্রিরতে চেতাপ্ত্যা বিনাশক্ষণা বিক্রিয়া প্রতিবিধ্যতে, কণাচিক্রনঃ পর্কবিক্রিয়াপ্রতিবেধেঃ সংবধ্যতে। ন ক্লাচিক্রারতে ন কণাচিক্রিরত ইত্যেবম্। যামাদরমান্তা ভূষা তবনক্রিয়াময়্পুর পশ্চাদভবিতা অভাবং গঞ্জা ন ভ্রঃ পুনত্তমার ব্রিরতে। বো হি ভূষা ন ভবিতা স ব্রিরতে ইত্যুচ্যতে লোকে। বাশক্ষার শক্ষাত অরমান্ত্রা অভ্যুত্ত বোকে। বাশক্ষার শক্ষাত অরমান্ত্রা অভ্যুত্ত বৈবিনাম্যা অতো ন লারতে। যা ফুড্যা ভিবিতা স লারত ইত্যুচ্যতে নৈবমান্ত্রা ব্যুত্ত ন লারতে। যামাদেবং তল্পাদক্রো বলার ব্রিরতে তল্পারিত্যক। ব্যুত্তাবিনামান্ত্রিরারালাং প্রতিবেধে সর্কা বিক্রিয়াঃ প্রতিবিদ্যা তবন্তি তথাপি নধ্যভাবিনীনাং বিক্রিয়াণাং তদর্বৈঃ ব্যুক্তবেধা বথা ভালিত্যাহ শাব্ত ইত্যুক্তবানামাণ্ডি বৌবনাদিসমন্ত্রবিক্রিয়াণাং প্রতিবেধা বথা ভালিত্যাহ শাব্ত ইত্যুদ্ধনান্ত্রা শাব্ত ইত্যুদ্ধনান্ত্রা

স্বরূপেণ নিরবয়বয়াৎ নিশুণিষাচ্চ নাপি শুণক্ষয়োণাপকয়ঃ। অপক্ষয়বিপরীতাপি রিজিকলা বিক্রিয়া প্রতিষিধাতে প্রাণ ইতি। খো হ্বয়বাগমেনাপচীয়তে স বর্জতেহভিনব ইতি চোচাতে। অয়ং ছাল্মা নিরবয়বয়াৎ প্রাণি নব এবেজি প্রাণো ন বর্জত ইতার্থঃ, তথা ন হস্ততে ন বিপরিণমাতে, হস্তমানে বিপরিণমান্তি। ন বর্জত ইতার্থঃ, তথা ন হস্ততে ন বিপরিণমাতে, হস্তমানে বিপরিণমান্তি। শরীরে। হস্তিয়ত্র বিপরিণামার্থো জ্বইবাঃ প্রক্রজতায়ৈ। ন বিপরিণমাত ইতার্থঃ। অমিন্মক্রে বড়ভাববিকারালোকিক-বস্তবিক্রিয়া আত্মনি প্রতিষিধান্তে। সর্ববিক্রয়ারহিত আত্মা ইতি বাক্যার্থঃ। হস্মাদেবং তমাছতে তৌ নে বিজানীত ইতি পূর্বেণ মন্ত্রণাশু সম্বন্ধঃ॥ ২০

আনন্দগিরিটীকা। তদেব সাধয়িতুং ন জারতে ভ্রিয়তে বা বিপশ্চিদি-জাদি-মন্ত্রান্তরমবতারমতি—কথমিতি। দর্কবিক্রিয়ারাহিত্যপ্রদর্শনেন বিশাদরন মন্ত্রমেব পঠতি—ন জায়তে ইতি। জন্মমরণবিক্রিমাঘয়প্রতিষেধং সাধরতি—নায়্মিতি। অৱমাত্মা ভূতা ন ভবিতা ন ভূতা ভূরো ভবিতেতি যোজনা। ন কেবলং বিক্রিগাছয়মেবাত্ত নিবিধ্যতে, কিন্তু সর্বমেব বিক্রিয়া-লাতমিত্যাহ—অজইতি। বাচ্যমর্থমুকা বিবন্ধিতমর্থমাহ—জনিলক্ষণেতি। বিকলার্থবং ব্যাবর্ত্তরতি—বৈতি। নিশালমর্থৎ নির্দিশতি—নেত্যাদিনা। সংশ্বমেবাভিনয়তি—ন কদাচিদিতি। অস্ত্যবিক্রিয়াভাবে হেতুদ্বেন নাম্ন-মিত্যাদি ব্যাচাষ্ট—যুদ্মাদিতি। উক্তমেব ব্যনজি—হোহীতি। আত্মনি ডু ভ্ৰা পুনরভবনাভাবালান্তি মৃত্যুরিতার্থ:। আত্মনো করাভাবেহপি হেতুরিহৈব বিৰক্ষিত ইত্যাহ—বাশব্দাদিতি। অভূষেতি ছেদঃ দেহবদিতি ব্যতিরেকো-দাহরণম। উক্তমেবার্থং সাধরতি—যোহীতি। জন্মাভাবে তৎপূর্ব্বিকান্তিত্ববিক্রিয়াপি নাম্বনোহন্তীত্যাহ—যাস্মাদিতি। প্রাণবিরোগাদাম্বনো মৃতেরভাবে সাবশেষনাশা ভাবৰন্ধিরবশেষনাশাভাবোহপি সিধাতীত্যাহ—যন্মাদিতি। নমু জন্মনাশরো-निरंबर्ध जन्दर्भजानार विकिन्नान्त्रतानामि निरंबर्धमिएक्टनिरंबर्धार्थः न शुक्क ষজিতব্যমিতি তত্তাহ—যদ্যপ্নীতি। স্বশবৈদম ধ্যবভিবিক্রিয়ানিবেশবাচকৈরিতি यावर। व्यार्थितकरित नित्यत्व नित्यत्व निष्ठा निष्ठा नात्वा नित्यत्वा न श्रवार्थ-वानिङ्गांनङ्गार- अनुक्लान। शिक्षि। निङ्गांत्यन भाष्ठभक्ष शोनक्ष्य পরিহরন ব্যাকরোভি—শাখুতইত্যাদিনা। অপকরো হি পরপেণ ব ভাব্ধণাপচয়তো বেভি বিকল্প ক্ষমণ দ্বয়তি—নেত্যাদিনা। প্রাণপদ-ভাগতার্থবং কথয়তি—অপক্ষয়েতি। তদেব কুটয়তি—যো হীতি। ন মিয়তে বেতানেন চতুর্থপাদর্ভ পৌনকক্তামাশক্য ব্যাষ্ট্রে—তথেত্যাদিনা।

নমু হিংসার্থো হস্তিঃ শ্রারতে, তংকথং বিপরিণামো নিষিধ্যতে ? তত্ত্বাহ—হস্তিরিতি। হিংসার্থত্বসম্ভব্ব কিমিত্যর্থান্তরং হস্তেরিষ্যতে তত্ত্বাহ—অপুনরুক্তর তারাইতি। হিংসার্থত্বে মৃতিনিবেধেন পৌনরুক্তরণ, তর্ন্ধিবেধার্থ্বং বিপরিণামার্থ্বমেষ্টব্যমিত্যর্থঃ। পূর্ব্বাবস্থাত্যাগেন অবস্থান্তরাপতির্বিপরিণামঃ, তদর্থ-শেচদত্ত্ব হস্তিরিষ্যতে তদানিম্পার্মর্থমাহ—নেতি। ন জারতে ইত্যাদিমরার্থ-মুপসংহরতি—অন্মির্মিতি। বর্নাং বিকারাণামান্থনি প্রতিবেধে ফ্রিনিমার্হ —স্ব্রেতি। আন্মনঃ সর্ব্বিক্রিয়ারাহিত্যেহপি কিমারাত্মিত্যাশন্ত্যাহ —যুদ্মাদিতি। ২০

অনুবাদ। আত্মা কেন অবিক্রিয়? [ইহা বুঝাইবার বাষ্ট্র । মন্ত্র অবতারিত হইতেছে। [আয়া] জন্মলাত করে না (অর্থাৎ উৎপন্ন हत्र ना. **উ**ৎপত্তিরূপ বস্তবিকার আত্মার নাই, ইহাই অর্থ)। [আআ] মৃত্যুলাভও করে না, 'বা' শক্ষ সমুক্তয়রূপ অর্থে ব্যবস্থৃত হইয়াছে, আবা মরে না। এই বাক্যের দারা বিনাশরূপ শেষবিকার প্রতিষিদ্ধ হইতেছে। क्माहि९ এই भक्षि मक्न विकारतत निरवर्धत मरक्न मयस इटेरज्रह, (व्यर्था९ আত্মা কোনকালেই জন্মগ্রংণ করে না, কোন কালেও মরে না ইভাাদি প্রকারে অর্থ করিতে হইবে); বেহেতু আত্মা উৎপত্তিরূপ ক্রিয়ার অভ্রন্তব করিয়া পরে পুনর্কার অভাব পাইবে না (অর্থাৎ বিনষ্ট হইবে না); এই कातरा व्याचा मतिरव ना ; रय এकवात জन्मधंश कतिया शूनस्तित जनर्भन প্রাপ্ত হর, লোকে সেই 'মৃত' হইয়াছে—এই প্রকার ব্যবহার হর। 'বা' শব্দ ও 'ন' শব্দ থাকা প্রযুক্ত [এই প্রকারও অবয় হইবে ৰে] এই জাদ্মা चारा ना थाकिया भरत रमशमित छात्र रव कातरा भूनर्यात **উৎभन्न रम ना**, এই কারণে আত্মার জন্ম হয় না; যাহা অগ্রে থাকে না, পরে হর, তাহাই লোকে 'জন্মবান্' বলিয়া ব্যবহাত হয়। আত্মা বেহেতু এ প্রকার নহে, এই কারণে আত্মার জন্ম হয় না। যে কারণে আত্মা এই প্রকার, এই কারণে আত্মাকে "অজ" বলা যায়, যেহেতু আত্মার বিনাশ নাই, এইজভ আত্মাকে "নিত্য" বলা বার। বন্তপি আদি ও অনস্ত বিকারের (অর্থাৎ ব্লয় ও মৃত্যু এই ছইটির) এ প্রতিবেধ হইলে সর্বপ্রকার বিকার প্রতিবিদ্ধ হইর। থাকে, ज्यांनि मधाजारी विकात नकलात निक निक नास्त्र वाता निर्देश कतिश প্রতিবেধ করা উচিত, এই কারণ মূল শ্লোকে অফুক্ত হইলেও বৌবনাদি সকল প্রকার বিকারের প্রতিষেধ যাহাতে হয়, তাহীই [ভগবান্] বলিজেছেন, শীৰত' ইত্যাদি শব্দের ঘারা। 'শাৰত' এই শব্দের ঘারা 'অপক্ষরন্ধণ' বিকার আঁডিবিছ ইইতেছে, যে সর্বাদা বিশ্বমান থাকে, তাহাকেই "শাৰত' করে। আঁছা নিরবন্ধন, এই কারণে স্বর্ধণতঃ অপক্ষর প্রাপ্ত হয় না। আত্মা নিস্তর্ধা, এই কারণে স্বর্ধণতঃ অপক্ষর প্রাপ্ত হয় না। আত্মা নিস্তর্ধা, এই কারণে স্বর্ধানর অপক্ষর হয় না। 'পুরাণ' এই শব্দের ঘারা অপক্ষরের বিপরীত বৃদ্ধিরপ ক্রিয়ার ও প্রতিবেধ হইতেছে! অবর্ধরের আধিক্যে যাহা উপচয় লাভ করে, তাহাই বৃদ্ধি পায় ও অভিনব বালিয়া কথিত হয়; কিন্তু এই আত্মা পুর্কাকালেও নব, এই কারণ পুরাণ (অর্থাৎ আত্মা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয় না)। শরীর বিপরিণাম প্রাপ্ত হইলেও আত্মা হত হয় না (অর্থাৎ বিপরিণাম প্রাপ্ত হয় না) এই স্থানে বে হন্ খাত্ম প্রবৃক্ত হইরাছে, পুনকক্তির' পরিহারার্থ তাহার অর্থ বিপরিণাম প্রাপ্ত হয় না)। এই মত্রে ছয় প্রকার ভাবক্রিয়া (অর্থাৎ, লৌকিক ভাব বল্পর বিকার আত্মাতে প্রতিষিদ্ধ হইয়াছে। আত্মা সর্বপ্রকারবিকারবর্জ্জিত ইহাই বাক্যার্থ)। বেহেত্ আত্মা এই প্রকার, এই জন্মই তাহারা উভয়ে জানে না এই প্রকারে পূর্বামন্ত্রের সহিত এই মত্রের অরয় [করিতে হইবে]॥ ২০

বেদাবিনাশিনং নিত্যং য এনমজমব্যয়ম্। কথং স পুরুষঃ পার্থ কং ঘাতয়তি হন্তি কম্॥২১

আনুষ্ম। হে পার্থ! যা এনং (আত্মানং) অলং অব্যয়ং নিত্যং অবিনাশিনং বেক্তি, সাং পুরুষা কথা কং বাতয়তি কং [বা] হস্তি॥ ২১

আমুবাদ। হে পার্থ! বে পুরুষ এই আত্মাকে অজ, অব্যর, নিজ্য ও আবিদাশী বলিরা জানিয়াছে, সে কাহাকে বিনাশ করাইতে পারে? কাহাকেই বা বিনাশ করিতে পারে॥ ২১

ভাষ্য। ব এনং বেদ্রি হস্তারমিত্যনেন মন্ত্রেণ হননক্রিরারাঃ কর্তা কর্ম্ম চ ন ভবতীতি প্রতিজ্ঞার ন জারত ইত্যনেন অবিক্রিয়ত্বে হেত্যুক্তা প্রতিজ্ঞান ভার্যবুদ্দার্থার করি কর্মান ভার্যবুদ্দার করি তার্যবিকারর হিতং নিত্যং বিপরিণামর হিতং বো বেদেতি সম্বন্ধঃ । এনং পূর্বেণ মন্ত্রেণ উক্তলক্ষণমক্তং জন্মরহিত্য অব্যর্ম অপক্ষরহিত্য কথাং কেন প্রকারেণ স বিশ্বান্ প্রকারহিত্য হত্তি হননক্রিরাং করোতি। কথাং বা শতর্ভি হত্তারং প্রয়োজরতি। ন ক্রিঞ্চৎ কঞ্চিৎ হত্তি ন কর্মান্ত ক্রিয়াই প্রয়োজরতি। ন ক্রিঞ্চৎ ক্রিছৎ হত্তি ন কর্মান্ত ক্রিয়াই প্রয়োজরতি।

ড়াভয়ত্র আকেণ এবার্থ: প্রশ্নার্থাসম্ভবাৎ হেত্র্গত অবিক্রিয়ত্বত চ তুলাতান্-বিছবঃ দর্মকর্মপ্রতিবেধ এব প্রকরণার্থোহভিপ্রেতো ভগবতঃ। হল্লেছালেগ উদাহরণার্থবেন বিছবঃ কিঞ্চিৎ কর্মাসম্ভবে হেতুবিশেষং পঞ্চন্ কর্মাপ্যাক্ষিপতি छগবান कथर म शूक्य देखि। नमृक्टरमय आधारनाश्विकिमधर मर्बाक्यामध्य-কারণবিশেষঃ সত্যমুক্তো ন তু সকারণবিশেষঃ অক্তথাদ্বিছ্বোহবিক্রিয়খাদান্ত্রন ইন্ডি। নৰবিক্ৰিয়ং স্থাণুং বিদিতবতঃ কৰ্ম ন সম্ভবতীতি চেৎ ন বিছয় আন্ধ-দ্বাৎ ন দৈহাদিসংঘাতত বিষ্তা। অতঃ পারিশেব্যাদসংহত আত্মা বিশ্বান-বিক্রিয় ইতি ভক্ত বিহুষ: কর্মাসম্ভবাদাকেপো যুক্ত: কথং স পুরুষ ইভি। যণা বৃদ্ধাভাহতত শলাভর্থত অবিক্রির এব সন্ বৃদ্ধিবৃত্যবির্বেক্বিজ্ঞানেন অবিভয়া উপলব্ধা আত্মা করাতে এবমেবাত্মানাত্মবিবেকজানেন বৃদ্ধিবৃত্ত্যা বিভয়া অসত্যরূপরৈব পরমার্থতোহবিক্রিয় এবাছা বিদ্বাহুচ্যতে। বি**হুবঃ কর্দ্রাসম্ভ**ৰ-বচনাৎ বানি কর্মাণি শাস্ত্রেণ বিধীয়স্তে তান্তবিছবোণিহিতানীতি ভগবতো নিশ্চরোহবগনাতে। নমু বিভাগ্যবিহুষএব রিধীয়তে বিদিতবি**ভভ পিষ্টপেৰণ**-বদ্বিভাবিধানানর্থক্যাৎ। তত্তাবিহুষঃ কর্মাণি বিধীয়ন্তে ন বিহুষ ইতি বিশেষো নোপপছতে ইতি চের, অনুষ্ঠের্স্য ভাবাভাববিশেবোপপত্তে:। অশ্বিহোক্রাদি-विश्वर्थकारनाखत्रकानम् अभिरहाजानिकस्थारनकनाश्वरनाश्रन्थत्रक्ष्यम् अन्तर्रक्षः কর্ত্তাহং মম কর্ত্তব্যমিত্যেবংপ্রকার-বিজ্ঞানবতোহবিহুবো বথাহহুঠেয়ং ভর্তি ন তু তথা ন জায়তইত্যাত্মাত্মস্বরপবিধ্যর্থজ্ঞানোত্তরকালভাবি কিঞ্চিল্মটেরং ভবতি। কিন্তু নাহং কৰ্ত্তা ন ভোক্তা ইত্যাম্মাইম্মকত্বাকৰ্ত্তবাদিবিবয়**ন্ধানাদস্তৎ** নোংশম্বত ইত্যেষ বিশেষ উপপদ্ধতে ৷ য: পুন: কর্ত্তাহমিতি বেক্ত্যা**দ্মানং** তদ্য নমেদং কর্ত্তব্যমিতি অবশ্রস্তাবিনী বৃদ্ধি: দ্যাৎ; তদপেকরা সোহধিক্রিরত ইভি তং প্ৰতি কৰ্মাণি সম্ভবন্তি। স চাবিখান্ 'উভৌ তৌ ন বিশানীডঃ' ইভি বচনাং। বিশেষিত্স্য চ বিভূষঃ কর্মাকেপবচনাৎ কথং স পুরুষ ইতি। ভন্মান্ বিশেষিভস্য অবিক্রিয়াত্মদর্শিনো বিহুষো মুমুক্ষোশ্চু সর্বকর্মসংস্থাসএবাধিকারঃ। অভএব ভগবালারারণঃ সাংখ্যান বিহুবোহবিহুষশ্চ কর্মিণঃ প্রবিভজ্য বে নির্চে গ্রাহরতি—"জ্ঞানবোগেন "সাংখ্যানাং কর্মবোগেন বোগিনাম্" ইতি। তথা চ প্ৰায়াহ ভগৰান ব্যাস:—'দ্বাবিমাবণ পছানো' ইত্যাদি।

তথা চ ক্রিয়াপথলৈচব পুরস্তাৎ পশ্চাৎ সংস্থাসন্দেতি। এতমেব বিভাগং পুনঃ পুনর্দশিরিয়তি ভগবার্। অতস্থবিৎ 'অহংকারবিম্চারা কর্জাহমিতি মন্ততেঁ, ত্থবিভ্ 'নাইং করোনীতি'। তথাচ 'সর্ককর্মাণি মুনীনা সংস্থাতে' ইভ্যুানি।

ভত্ত কেচিৎ পণ্ডিত মন্তা বদন্তি জনাদিবড় ভাববিক্রিয়ারহিতঃ অবিক্রিয়ঃ
অবর্তা একোহহমান্তেতি ন কস্যচিৎ জ্ঞানমূৎপন্ততে বন্ধিন্ সতি সর্বাকর্মণয়াস
উপদিশুতে তর, ন জারত ইত্যাদিশারোপদেশানর্থক্য প্রসঙ্গাৎ। বথা চ শারোপদেশসামর্থ্যাৎ ধর্মাধর্মান্তিত্ববিজ্ঞানং কর্তুশ্চ দেহান্তরসম্বন্ধিজ্ঞানঞ্চ উৎপন্ততে,
তথা চ শারাৎ তল্যৈব আত্মনোহবিক্রিয়ত্বাকর্ত্তবৈক্যাদিবিজ্ঞানং কর্মানোপপন্ততে
ইতি প্রষ্টব্যান্তে। করণাগোচরত্বাদিতি চের মনদৈবান্ত্রন্তইব্যমিতি শ্রুতেঃ।
শারাচার্য্যোপদেশ-জনিতশমদমাদিসংস্কৃত্ৎ মন আত্মদর্শনে করণম্। তথা চ
তদ্বিগমারান্থমানে জাগমে চ সতি জ্ঞানং নোৎপন্ততে ইতি সাহসমাত্রমেতং।
জ্ঞানঞ্চোৎপঞ্চমানং তদ্বিপরীতমজ্ঞানম্ অবশ্রুৎ বাধত ইত্যভূগপগস্তব্যম্।
তচ্চাজ্ঞানং দর্শিতং হস্তাহং হতোহস্মীত্যুতে তৌ ন বিজ্ঞানীত ইতি জ্ঞা
চান্ধনো হননক্রিয়াঃ কর্তুহং কর্ম্মন্থ হেতুকর্ত্ত্বক্ অ্ঞানক্তং দর্শিতম্।

তচ্চ সর্বক্রিয়াস্থাপি সমানং কর্তৃথাদেরবিভাক্কতথম্ অবিক্রির্থাদাথানঃ।
বিক্রিয়াবান্ হি কর্ত্তা আত্মনঃ কর্মভ্তমভং প্রয়োজয়তি কুর্বিতি। তদেতদবিশেষেণ বিছ্বঃ সর্বক্রিয়াস্থ কর্তৃথং হেতৃকর্তৃথঞ্চ প্রতিষেধতি ভগবান্ বিছ্বঃ
কর্মাধিকারাভাবপ্রদর্শনার্থং 'বেদাবিনাশিনং' 'কথং স পুরুষ' ইত্যাদিনা। ক
প্নর্বিত্বোহধিকার ইত্যেতত্ত্বং পূর্বমেব 'জ্ঞানযোগেন সাংখ্যানা' মিতি। তথা
চ সর্বকর্মসংভাসং বক্যতি 'সর্বকর্মাণি মনসা' ইত্যাদিনা।

নমু মনসেতি বচনার বাচিকানাং কারিকানাঞ্চ সন্ন্যাসইতি চেৎ ন সর্ব্বকর্মাণীতি বিশেষিত্যাং। মানদানামের সর্ব্বকর্মণামিতি চেন্ন মনোব্যাপারপূর্বক্যান্বাক্ষারব্যাপারাণাং মনোব্যাপারাভাবে কর্মান্মপথতে:। শাল্তীরাণাং
বাকারকর্মণাং কারণানি মানদানি মনোব্যাপারাণি বর্জনিয়া অস্তানি সর্ব্বকর্মাণি মনসা সন্ন্যস্তান্তইতি চেন্ন, 'নৈব কুর্বনিকাররন্' ইতি বিশেষণাং। সর্ব্বকর্মসংস্তাসোহরং ভগবতোক্তো মরিষ্যতো ন জীবত ইতি চেন্ন, 'নবদ্বারে পুরে
দেহী আতে' ইতি বিশেষণায়পপতে:।

ন হি সর্বকর্ণসংস্থাসেন মৃতস্থ তদ্দেহে আসনং সম্ভবতি অকুর্বজোহকারয়ভল্চ দেছে সংস্থান্ততি সমধ্যা ন দেহে আন্ত ইতি চের্ম, সর্ব্ব্যাত্মনোহবিক্রিয়ন্তাবধারণাং। আসনক্রিয়ায়াল্টাধিকরণাপেক্ষত্মাৎ তদনপেক্ষত্মান্ত সংস্থাসস্থ। সংপূর্বের স্তাসলব্দেহত্র ত্যাগার্থো ন নিক্ষেপার্থঃ। তন্মাদ্যীতালাক্ত্রে আত্মনানবতঃ
সংস্থাস এবাধিকারো ন কর্মণীতি তত্র তত্ত্রোপরিষ্টাদাত্মজ্ঞানপ্রকরণে দর্শনিস্থানঃ ॥ ২৯

ুজানন্দগিরিটীকা।—পূর্বলোকার্থ জৈবোত্তর্ত্তাপি প্রতিভানাৎ পৌন-ক্সক্রামাশক্য বৃত্তামুবাদপূর্বকমুত্তরশ্লোকমবতারম্বতি—যুঞ্জমিতা দিনা। কর্তৃমা-ছভিমানবিরোধাদুদৈতকুটস্থাত্মনিশ্চরদামর্থ্যাৎ প্রাপ্তং বিহুষঃ সংস্থাসম্। বিছা পরিপাকার্থমভামুজানাতি—বেদেতি। পদহরত পূর্ব্বমেব পৌনক্ষক্তামাহ —অবিনাশিন্মিত্যাদিনা। প্রশ্নেংপি সম্ভবতি কিমিতি নঞ্লেখেন ব্যাখ্যারতে তত্ত্বাহ—উভয়ত্ত্রেতি। উত্তরত্ত প্রতিবচনাদর্শনারাত্ত প্রশ্নঃ সম্ভব-তীতার্থঃ। বিবন্ধিতং প্রকরণার্থং নিগময়তি—হেতুর্থস্থেতি। অবিক্রিয়ন্থ **८१वर्थ छन्छ विष्यः मर्सकर्यानित्याय ममानवानिछि बावर। यनि विष्टबः मर्सकर्यः** নিষেধাছভিমতন্তর্হি কিমিতি হস্তার্থএবাক্ষিপ্যতে তত্ত্বাহ—হস্তেরিতি। উক্তৎ হেভুমাক্ষেপ্তৃং পৃচ্ছতি—বিচুষ্ইতি। অভিপ্রায়মপ্রভিপ্রমানো হেভুবিশেষং পূর্বোক্তং স্মারয়তি — নম্বিতি। উক্তমঙ্গীক্বত্যাক্ষিপতি—সত্যমিতি। বিহুবো বিজ্ঞানাত্মনো ব্ৰহ্মণশ্চ বেছ্মন্ত বিৰুদ্ধধৰ্মত্বেন দহনতুহিনবস্কিন্নভাদ্বিছ্মঃ কর্মত্যাগেন অসৌ কারণবিশেষঃ স্থাদিত্যাহ—অন্যত্মাদিতি। দিভিচ্ছেদ:। তথাপি কৃটস্থমবিক্রিয়ং ব্রহ্ম প্রতিপাল্পমানশু কুতো বিক্রিয়া সম্ভবেৎ, ত্রহ্মপ্রতিপত্তিবিরোধাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—নন্মিতি["]। ''অয়মাত্মা ত্র**হ্ম'' ইত্যাদি**-শ্রুতা। সমাধত্তে—ন বিজুষ্ইতি। কিঞ্চ বিছকাবিশিষ্ট্রন্ত বা কেবল**ন্ত বা, নাজো**-বিশিষ্ট্রভাবিদ্বভারাং বিশেষণভাপি তৎপ্রসঙ্গার চ বিশেষণীভূতসংঘাতভ অচেতনম্বাদ্বিশ্বতা যুক্তেত্যাহ—ন দেহাদীতি। বিতীয়ে তু জীবব্রশ্ববিভাগা-দিন্ধিরিত্যাহ—অতইতি। কিঞ্চ প্রামাণিকবিরুদ্ধধর্মবন্ধ্বভাদিদ্ধাৎ প্রাতি-ভাষিকস্ত চ বিশ্বপ্রতিবিশ্বয়োরনৈকান্ত্যান্তেদামুমানাযোগাৎ শীবভ্রশ্বণোরভেদ-শিদ্ধিরিত্যভিপ্রেত্য ফলিডমাহ—ইতি ত্রস্তেতি। নর্ববিক্রিরত ব্রশ্বীরূপ্ডরা দর্শকর্মাসম্ভবে। বিহুয়ো বিহুতাপি কথং সম্ভবতি ন হি ব্রহ্মণোহবিক্রিয়ন্ত বিষ্ণালক্ষণা বিক্রিয়া ভবিতুমইতি তত্তাহ—যুথেতি। অদুষ্টেক্সিয়াদিসহক্ষতমন্তঃ-করণং প্রদীপপ্রভাবৎ বিষয়পর্য্যন্তং পরিণতং বৃদ্ধিবৃত্তিরুচ্যতে। তত্ত্ব প্রতিবিশ্বিতং চৈতস্তম্ অভিব্যঞ্কবুদ্ধিগুত্যবিবেকাদ্বিষয়জ্ঞানমিতি ব্যবহ্রিয়তে। তেনাত্মোপ-তচ্চীবিদ্যাপ্রযুক্তমিণ্যাসম্বন্ধনিবন্ধনম্। তথৈবাধ্যাদিকসম্বন্ধেন ব্ৰহ্মাজৈক্যাভিব্যঞ্জকবাক্যোখবুদ্ধিবৃত্তিদারা বিদানাম্বা ব্যপদিখতে, ন চ মিথ্যা-সম্বন্ধেন পারমার্থিকাবিক্রিয়ত্ববিহতিরস্তীত্যর্থঃ। অহং ব্রেক্ষেতি বুদ্ধিরুক্তের্শ্বোক্ষা-বস্থামানপি ভারাদাত্মনঃ সবিশেবত্বমাশক্য তন্তা যাবছপাধি সন্থমেবেত্যাহ— অসত্যেতি। নম কুটম্বভান্মনো মিধ্যাবিভাবীদ্বেংশি তভ কর্মাধিকারনিবুটো

কণ্ঠ কৰ্মাণ বিধীয়ক্তে ন হি নির্ধিকারাণাং তেষাং বিধিরিত্যাশক্সাহ— বিজুষইতি।

কর্মাণ্যবিছবো বিহিতানীতি বিশেষমান্দিপতি—নম্মিতি। কর্মবিধানমবিছবো বিছ্বশ্চ বিদ্যাবিধানমিতি বিভাগে কা হানিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—বিদিতেতি। বিশ্বারা বিদিতত্বং गদ্ধত্বম। কর্মবিধিরবিহুবো বিহুবো বিশ্বাবিধিরিতি বিভাগা-সম্ভবে ফলিতমাহ—ত্ত্তেতি। ধর্মজ্ঞানানস্তরমহুঠে। ভাবাদ্ব ক্ষজ্ঞানোত্তরকালঞ্চ ভদভাবাং ব্ৰদ্ধজানহীনভৈব কৰ্মবিধিরিভি সমাধতে—নাকুন্তেয়ন্তেতি। বিশেষোপপস্তিমেব প্রপঞ্চরতি—অগ্নিহোত্রাদীতি। নমু দেহাদিব্যতিরিক্তাস্থ-ক্সানং বিনা পারলোকিকের কর্মস্থ প্রবুত্তেরমুগণতেন্তথাবিধজ্ঞানবতা কর্মাযুঠেরমিতি চেৎ তত্রাহ—কর্ত্ত্রাহমিতি। আত্মনি কর্ত্তা ভোক্তেত্যেবংবিজ্ঞানবত্ত্বেপি ব্রদ্মজ্ঞান-বিহীনদ্বেনাবিছ্বোহ্স্টেরং কর্ম্বেভার্থঃ। দেহাদিব্যভিরিক্তাত্মজ্ঞানবদ্বক্ষজানমণি ক্ষানত্বাবিশেষাৎ কর্মপ্রবৃত্তাবৃপকরিষ্যতীত্যাশক্যাহ — নত্ত্বিতি। ধিছাদবিক্রিরাছজ্ঞানভেতি শেষ:। নমু ব্রহ্মাছেকছ্ঞানাচ্নত্তরকাণমপি কর্তাহ-মিজ্যাদি-জ্ঞানোৎপত্তৌ কর্মবিধি: সাবকাশ: ভাদিতি নেজ্যাহ-নাহমিতি। কারণাভাবাদিতি শেবঃ। কর্ত্তাদিজ্ঞানমন্তদিত্যক্তম্। অমুষ্ঠানানমুষ্ঠানয়োক্তক-বিশেষাদবিহুবোহমুষ্ঠানং বিহুবো নেভ্যুপসংহরতি—ইত্ত্যেই তি ৷ নশ্বাদ্মবিদো ন চেদহুঠেমং কিঞ্চিত্ত কথং তৰ্হি বিখান যজেতেত্যাদিশাস্ত্রাৎ তং প্রতি কর্মাণি বিধীয়ন্তে তত্ত্রাহ—যঃ পুনরিতি। আত্মনি কর্তৃত্বাদিজ্ঞানাপেক্ষয়া কর্ম্মনধিক্বতত্ব-জ্ঞানে তথাবিধং পুরুষং প্রতি কর্মাণি বিধীয়ত্তে। সচ প্রাচীনবচনাদবিদানে-বেভি নিশ্চীয়তে। ন ধর্কর্ড্যাদিজ্ঞানবভন্তদ্বিপরীভকর্ড্যাদিজ্ঞানহারা কর্মস্থ প্রবৃত্তিরিত্যর্থঃ। কর্মাসম্ভবে ব্রহ্মবিদো হেম্বস্তরমাহ—বিশেষিত্যস্থেতি। दिकादिनां निमित्राक्तिका किता । यद्या विकादा नार्षि कर्म, उथापि विविक्ति । স্তাদিত্যাশক্ষ্যাহ—তত্মাদিতি। বিশ্বরা বিরুদ্ধতাদিব্যমাণমোকপ্রতিপক্ষদাচ্চ কর্মণামিতার্থ:। যম্মি মুমুকোরাশ্রমকর্মাণ্যপেকিতানি তথাপি বিস্তাতং-ফলাভ্যামবিক্ষান্তেব তামভ্যপগতাম্মঞ্জণা বিবিদিষা সংস্থাসবিধিবিরোধাদিজাভি-প্রেজ্যেক্তেহর্থে ভগবতোহমুমতিমাহ—অতএবেতি। বিহুরো বিবিদিরোক্ত সং-স্থাসেথধিকারোথবিহবন্ত কর্মণীতি বিভাগভেট্ডাদিত্যর্থঃ। অধিকারিভেদেন নিষ্ঠাৰম্ব ভগৰতা বেদব্যাসেনাপি দৰ্শিতমিত্যাহ—তথাচেতি । অধ্যয়নবিধিনা সাধ্যাৰপাঠে ত্ৰৈবৰ্ণিকস্থ প্ৰবৃত্ত্যনম্ভবং তত্ত্ব ক্ৰিৰামাৰ্গো জ্ঞানমাৰ্গক্ষেতি ছৌ মাৰ্গাৰধি-কারিভেদেনাবেদিতাবিতার্থ:। আদিশকাদ্ বন্ধ বেদাঃ প্রতিষ্ঠিতাইত্যাদি গৃহতে। উক্তরোর্মার্গরোজন্যতাং পরিহর্ত্মুদাহরণান্তরমাহ—তথেতি। বৃত্তি । বৃত্তি ভিছারা কর্মতংকলরোর্কৈরাগ্যোদরাং পূর্কং কর্মার্গা বিহিছো বিরক্ত পূনঃ সন্ধাদ-পূর্ককো জ্ঞানমার্গো দর্শিতঃ স চেতরমাদিতিশরশালীতি প্রতমিত্যর্থঃ। উক্তে বিভাগে পূনরপি বাক্যশেবামুক্ল্যমাদর্শরতি—এতমেবেতি। অহতারবিমূচা-ছেত্যু ব্যাখ্যানং—অতত্ত্ববিদিতি। তত্ববিত্তি লোকমবতার্গ্য তাৎপর্যার্থং সংগ্রাতি—নাহমিতি। পূর্কেণ ক্রিয়াপদেনেতিশন্ধঃ সংবধ্যতে। বিরক্তন্থিরতা বাক্যান্তরং পঠতি—তথাচেতি। আদিশন্তকৈব প্লোকত শেষ-সংগ্রহার্থঃ।

অবিক্রিয়াত্মজানাৎ কর্ম্মগংস্তাদে দর্শিতে মীমাংসক্ষতমুখাপরতি-তত্ত্তেতি। আত্মনো জ্ঞানক্রিয়াশক্র্যাধারত্বেন অবিক্রিয়ত্বাভাবাৎ অবিক্রিয়াখ-জ্ঞানং সংস্থাসকারণীভূতং ন সম্ভবতীত্যর্থ:। বথোক্তজ্ঞানাভাবো বিষয়াভাবাদ্বা মানাভাবাদবেতি বিকল্প আছাং দুষম্বতি—নেত্যাদিনা। ক্রিয়াত্মাভাবো 'ন জায়তে ত্রিয়তে বা' ইত্যাদিশান্তভ আপ্রবাক্যতরা প্রমাণ-স্তাম্ভরেণ কারণমানর্থক্যায়োগাদিতার্থ:। বিতীয়ুং প্রত্যাহ—যথাচেতি। পারলৌকিককর্মবিধিদামর্থ্যদিদ্ধ বিজ্ঞানমুদাহরতি—কর্ত্ত্র ক্ষেত্ত । কর্ম-কাণ্ডাদজ্ঞাতে ধর্ম্মাদৌ বিজ্ঞানোৎপত্তিবৎ জ্ঞানকাণ্ডাদজ্ঞাতে ব্রহ্মাত্মনি বিজ্ঞা-নোৎপত্তিরবিকদ্ধা প্রমাণ্ডাবিশেবাদিত্যর্থ:। জ্ঞান্ত মন:সংযোগকভাত্বাদাত্মন্ড শ্রুত্যা মনোগোচরত্বনিরাসালাক্ষজানে সাধনমন্তীতি **শহ**তে—করুণেতি। শ্রুতিমাশ্রিত্য পরিহরতি—ন মুনুসেতি। তত্ত্বমক্তাদিবাক্যোথমনোরুল্যৈব শান্তাচার্য্যোপনেশমফুক্তা জন্তব্যং তত্তমিতি শ্রন্থতে স্বন্ধপেণ স্থাকাশমণি বন্ধাত্মবন্ধ বাক্যোখবুদ্ধিবৃত্ত্যভিব্যক্তং স্বিক্লক্ত্যবহারাল্যনং ভবতীতি মনো-গোচরছোপচারাদসিদ্ধং, করীণাগোচরছমিত্যর্থঃ। কথং ভর্হি ব্রদ্ধাত্মনো মনো-বিষয়খনিবেধঞ্জিরিত্যাশঙ্কা অসংস্কৃতমনোবৃত্ত্যবিষয়খনিষয়া সেতি মন্বানঃ সত্যপি শ্রুতাদৌ ভদমুগ্রাহকাভাবাৎ নাশাক্ষ-সন্নাহ—শান্ত্রেকি। বিক্রিরাত্মকজ্ঞানম্ উৎপত্ত মর্হ তীত্যাশঙ্ক্যাহ—ত্তথেতি ৷ তত্ত অবিক্রিরত আত্ম-নোহবিগত্যর্থং বিমতো বিকারো নাজ্বধর্মো বিকারভাৎ উভয়াভিমতবিকার-বদিতামমানে পূর্ব্বোক্তঞ্জভিশ্বতিরূপাগমে চ সত্যেব ভশ্বিরোৎপদ্যতে জ্ঞানমিতি বচঃ সাহসমাত্রং, সভ্যের মানে মেরং ন ভাতীতিবদিত্যর্থ:। মুমু যথোক্তং জানমুংপরম্পি হানারোপাদানার বা ন ভবতীতি কুতোহত ফলবন্ধ ভতাহ— জ্ঞানক্ষেতি। অবশ্যমিতি। প্রকাশপ্রবৃত্তেত্তমোনিবৃত্তিব্যক্তিরেকেশাহন্

পত্তিবং আত্মাঞ্চাননিবৃত্তিমন্তরেণ আত্মঞ্চানোৎপত্তেরস্পগত্তেরিত্যর্থঃ। নব-জ্ঞানস্ত জ্ঞানপ্রাগ্ ভাবদাং তরিবৃত্তিরেব জ্ঞানং ন তু তরিবর্ত্তকমিতি তত্তাহ— তচ্চেতি। কথং পুনর্ভগবতাপি জ্ঞানাভাবাতিরিক্তমজ্ঞানং দর্শিতমিত্যা-শন্ধ্যাহ—অত্র চেতি। বিমতং জ্ঞানাভাবো ন ভবত্যুপাদানদ্বাং মৃদাদিব-দিতি ভাবঃ।

নমু হননক্রিয়ায়া ন হিংশ্রাদিতি নিবিদ্ধতাং তৎকর্ত্বাদেরজ্ঞানক্তত্বেহপি বিহিতক্রিয়াকর্ত্বাদেন তথাছমিতি নেত্যাহ—তচ্চেতি। ন তাবদাত্মনি কর্ত্বাদি নিত্যমমুক্তিপ্রসঙ্গাল চানিত্যমপি নিরুপাদানং ভাবকার্য্যস্তোপাদান-নিয়মায় চানাত্মা তর্পাদানমাত্মনি তৎপ্রতিভানায় চাহৈত্মব তর্পাদানং কৃটয়য় তন্তাবিত্যাং বিনা তদ্যোগাদিত্যাহ—অবিক্রিয়্যালিতি। কর্ত্বাভাবেহপি কারমিতৃত্বং লাদিত্যাশক্যাহ—বিক্রিয়াবানিতি। আত্মনি কর্ত্বাদিপ্রতিভান-জ্ঞানাত্মনির্কাচ্যমজ্ঞানমুপাদানং তরিবৃত্তিশ্চ তত্মজ্ঞানাদিত্যক্রম্, ইদানীং কর্ত্বার্মিয়্ত্বংয়ারবিত্যাক্রতত্ম ভগবতোহমুমতিং দর্শয়তি—তদেতদিতি। বিহ্নমে বৃদি কর্মাধিকারাভাবো ভগবতোহভিমতঃ তর্হি কৃত্র তন্ত্ম জীবতোহধিকারঃ জ্ঞাদিতি পৃচ্ছতি—ক্ পুনরিতি। জ্ঞাননিষ্ঠায়ামত্যক্তং আরম্বতি—উক্তে

বক্ষ্যমাণে বাক্যে সর্ব্বর্গ্রাসো ন প্রতিভাতি মানসানামেব কর্ম্মণং বিশেষণবশাং ত্যাগাবগমাদিতি শব্ধতে—নন্মিতি। বিশেষণাস্তরমাশ্রিত্য দ্বরতি —ন সর্বেতি। মনসেতি বিশেষণামানসেবের কর্মস্থ সর্ব্বশ্বং সংকৃচিতঃ ভাদিতি শব্ধতে—মানসানামিতি। সর্বাদ্যনা মনোব্যাপারত্যাগে ব্যাপারাস্তর্নাগামস্থপত্তেঃ সর্ব্বকর্মসংস্থাসঃ সিধ্যতীতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। মানসেবাদি কর্ম্মসংস্থাসে সব্বোচার বাগাদিব্যাপারাম্থপতিরিতি শব্ধতে—শাস্ত্রীয়া-ণামিতি। অন্যানীতি। অশান্তীরবাক্কার্মকর্মকারণান্থশান্ত্রীরাণি মানসানি তানি চ সর্বাণি কর্ম্মণিত্যর্থং। বাক্যশেষদান্য দুবরতি—ন নৈবেতি। ন হি বিবেকব্দ্যা সর্বাণি কর্মাণি অশান্ত্রীরাণি সংক্তন্ত তিষ্ঠতীতি যুক্তং নৈব কুর্ম্মিত্যাদিবিশেষণক্ত বিবেকবৃদ্ধেশ্চ সর্ব্বত্যাগহেতোদ্ধন্যভাগিত্যর্থঃ। ভগবদ-ভিনত্বর্ব্বর্ক্সকর্ম্বন্মানত অবস্থাবিশেষে সব্বোচং দর্শরন্মাশব্ধতে—মারিয়্তুক্তি। সংক্রাম্যান্ত্রীবদবস্থারামেবাত্র বিবক্ষিত ইত্যত্র লিকং দর্শরন্ম্বন্তরমাহ—ন নবেতি। অন্থপত্তিমেব স্ফোরম্বৃত্ত্বিত বিবেকবশাদশেষাণ্যপি কর্মণি দেহে বংগাক্ষে

निकिना अकूर्वज्ञकातप्रश्य विद्यानविष्ठित्छ। उथां एत्र कर्माणि म्श्राकाकूर्य-তোহকারয়তক স্থ্যাসনমিতি সম্বন্ধতবাৎ বিশেষণক্ত সতি দেহে কর্মত্যাগ-বিষয়ভাবাজীবতঃ দর্মকর্মত্যাগো নাস্তীত্যর্থঃ। অথবা কুর্মড-ইত্যাদি পূর্ম-ত্রৈব সম্বন্ধনীয়ং, শিকাসিদিচোগ্যন্ত দেহে সংগ্রন্তেত্যারভ্যোদ্ধেয়ন্। আত্মনঃ সর্ব্বতাবিক্রিয়ন্থনির্দারণান্দেহসম্মনস্তরেণ কর্ভূত্ব কার্মিভূত্বাপ্রাপ্তের প্রাপ্ত প্রতিবেধ-প্রসঙ্গরিহারার্থম্ অত্মহক্ত এব সম্বন্ধঃ সাধীয়ানিতি সমাধত্তে—ন সর্বব্রেতি। ঞ্জিবু স্বৃতিবু চেত্যর্থ: । কিঞ্চ সম্বন্ধস্থাকাজ্ঞাসন্নিধিযোগ্যতাধীনত্বাৎ আকাজ্ঞা-বশাদশ্বদভিমতসম্বন্ধসিমিরিত্যাহ—আসনেতি। ভবদিষ্টম্ভ সম্বন্ধো ন সিধ্য-ত্যাকাজ্ঞাভাবাদিত্যাহ—তদনপেক্ষত্বাচ্চেতি। সংস্থাসশব্দ নিক্ষেপার্থবাৎ ভক্ত চাধিকরণসাপেক্ষত্বাৎ অম্মদিষ্টসম্বন্ধসিদ্ধিরিত্যা**শঙ্ক্যাহ—সংপূর্ব্বস্থিতি।** पश्चर्याभगर्गरेववर्यामिकार्थः। मनमा वित्वकविष्वातन गर्सानि कर्यानि भन्नि-ত্যাব্যান্তে দেহে বিধানিত্যভৈব সম্বন্ধত সাধুখং মধোপসংহরতি—তত্মাদিতি। সর্বব্যাপারোপরমাত্মনঃ সর্বকর্মসংস্থাসস্ত অবিক্রিয়াত্মজ্ঞানাবিরোধিত্বাৎ প্ররোজ-কঞ্জানবতো বৈধে সংস্থাদেহধিকারঃ সম্যগ্ঞানবতন্ত্বৈধে স্বাভাবিকে ফলাম্ব-নীতি বিভাগমভ্যুপেত্যোক্তেহর্থে বাক্যুশেষামুগুণ্যং দর্শরতি—ইতি তত্ত্র তত্ত্তেতি ॥ ২১

অনুবাদ। "বেদ" গানে "অবিনাশী" বিনাশরণ চরমভাববিকার-রহিত। "নিত্য" বিপরিণামরহিত, [এতাদুশ আত্মাকে] যে জানে [এই প্রকার অবয়] "এই" পূর্বমন্ত্রের দারা যাহার লক্ষণ উক্ত হইরাছে "জজ" জমরহিত "অব্যয়" অপক্ষয়রহিত—সেই বিদ্যান পূরুষ, কোনরূপে অধিকৃত [হইয়া] হনন ক্রিয়া করিবে, কি প্রকারেই বা হননকর্তাকে [হনন করিবার জন্তু] প্রেরণা করিবে ? [সেই বিদ্যান্] কোন প্রকারে কাহাকে বিনাশ করে না, কোন প্রকারে কাহাকেও হনন করিবার জন্তু প্রেরণাও করে না। উভর স্থলেই আক্ষেপই অর্থ, প্রশ্নরূপ অর্থের সন্তাবনা নাই। আক্ষেপের কারণ উভরস্থলেই ভূল্য [সকল প্রকার কর্ম্বের নিষেধ অভিপ্রেত হইলেও] কেবল হননক্রিয়া মাত্রেরই প্রেতিষেধ উদাহরণার্থই [প্রযুক্ত হইরাছে]। এক্ষণে জ্বজ্ঞানা হইতেছে বে, পণ্ডিতের কর্ম্মাত্রেই কর্ভ্যু থাকিতে পারে না—এই প্রকার সিদ্ধান্তকে স্থানন করিবার জন্তু কোন্ হেভূবিশেষ অবলোকন করিয়া ভগবান্ "কথং সং" ইত্যাদি শ্লোকের দারা কর্মের আক্ষেপ করিতেছেন ? সকল প্রকার

বিধান পুরুবের কর্মাসভবে বিশেব হৈছু প্রদর্শিত হইতেছে।

কর্ম প্রতিবেধের প্রতি বিশেষ কারণ আত্মার অবিক্রিয়ত, ইহা পূর্বেই উক্ত হইরাছে, [এই প্রকার উত্তর হইতে পারে না কারণ] ইহা উক্ত হইরাছে, তাহা সত্য বটে; কিছ উश कात्रनित्मय रहेएछ शास्त्र ना ; त्यरह्कु चरि-ক্রিন্ন আত্মা এবং বিদান্ এক নহে, [এই হুই বন্ধ

পরস্পর বিভিন্ন]; একটা শুক বৃক্ষ ক্রিয়ারহিত ইহা বে জানিয়াছে, ভাহার ক্রিরা সম্ভবপর নহে; এইরূপ কথন কথনই হইতে পারে না; এই প্রকার আশহা করা বাইতে পারে না; কারণ বিধান ও আত্মা একই বস্ত; দেহাদি সমষ্টির বিছন্তা হইতে পারে না; এই কারণে দেহাদিসমষ্টি হইতে পুণক্রপে দ্বিভ অসংহত আত্মাই অবিক্রিয় ও বিধান; এই হেতু বিধানের কর্ম সম্ভব নছে: স্থতরাং "কথং স পুরুবঃ" ইত্যাদি বাক্যের দারা তাহার কর্মাকেপ উচিডই হইরাছে। আত্মা শ্বরং অবিক্রির হইরাও বেসন [অনাদি] অঞ্জানের वर्ष, अवर विषद्राकारत পत्रिपंड बुद्धितृखित व्यवित्वक-निवस्तन, व्सामिकत्रर्णत ছারা উপনীত শকাদি বিষয়ের অমুভবিতা বলিয়া ব্যবহৃত হয়, সেই প্রকারেই আত্মাও অনাত্মার বিবেকবিজ্ঞানরূপ বৃদ্ধিবৃত্তি বিদ্যা [প্রকৃত পক্ষে] অসত্য-ভূতা হইলেও তাহার সহিত ক্লিড সম্বন্ধপ্রযুক্ত প্রমার্থত: আত্মা অবিক্রিয় হইলেও 'বিধান' এই শব্দের খারা ব্যবহৃত হইয়া থাকে। বিধানের কর্ম সম্ভব নহে এই প্রকার বলাতে, শাল্পে বে সকল কর্ম বিহিত আছে, তাহা অজ্ঞানীর बच्चहै বিহিত,—ইহাই ভগবানের নিশ্চর, তাহা বুঝা যাইতেছে।

"বে ব্যক্তির বিভা নাই তাহারই বিভা বিহিত হইয়াছে, বেমন পিষ্ট বন্ধর পেষণ নিরর্থক, দেইরূপ যাহার বিভাপ্রাপ্তি হইরাছে, তাহার পকে বিষ্ণার বিধানও নির্থক; তাহাই যদি হইল, তবে অবিদানের বিহিত কর্ম বিশাদের নহে, এই প্রকার বিশেষ যুক্তিসঙ্গত হইতেছে না।" এই প্রকার আশবা করা বায় না; কারণ অবিহানের পক্ষে কর্মানুষ্ঠান সম্ভব ও বিহানের পক্ষে কর্মান্ত্রান অসম্ভব; এই বিশেষ হইতে পারে। অগ্নিহোত্র প্রভৃতি विविद्य अर्थ कान बहेरन शत्र अरनक नाथनमः श्रव्यक्ताराष्ट्र अञ्चलेनाइ अञ्चरहाळाति কর্ম, "আমি কর্তা, ইহা আমার কর্ত্তব্য" এই প্রকার জ্ঞান বাহার আছে; সেই অবিধানেরই বেমন অফুঠের হইতে পারে, "ন জায়তে," ইত্যাদি আত্ম-चक्रशक्कां ने ने निवास वर्षकार्ति शत विवास शतक के ने कि स्वास्त [कथनरे] अञ्चरं व स्टेर्ड शास्त्र ना ; "किन्न जानि कर्जा नहि, जानि छान्ता

नहि॰ हेलानि जामात একদ ও অকর্ডুদানিবিবরজ্ঞান হইতে বিভিন্নপ্রকার অন্ত কোন জ্ঞানই তাহার উৎপব্ন হইতে পারে না এই প্রকারে বিশেষ হইতে পারে। বে ব্যক্তি আত্মাকে আমি কর্তা এইরূপে জানিরা থাকে. ভাহার "बामात्र देश कर्डरा" এই প্রকার বৃদ্ধি অবশুম্ভাবিনী হয়; সেই বৃদ্ধিকে অপেকা क्तिबारे व्यविषान कर्ल्य व्यथिकाती रहेता शास्त्र , এर कात्रत्गरे व्यविषात्मत পক্ষেই কর্ম সকল বিহিত হয়। "উভৌ তৌ ন বিজ্ঞানীতঃ" (তাহারা চুইজনেই জানে না) ইত্যাদি শাব্ৰের ছারা এই প্রকার পুরুব অবিছান বলিরাই প্রতি-পाषिত **रहेशारक, এতাদুশ কর্জাদি জ্ঞান বাহার** নাই, তাহার পক্ষে "कथर স পুরুষ:" ইত্যাদি বচন দারা কর্মের আক্ষেপ করা হইরাছে [সেই জ্ঞ বুঝা যায় বে, এই প্রকার জ্ঞানীর পক্ষে কর্ম বিহিত নহে] সেই কারণে कर्डवाजिमानी वा वाङि श्टेरा विवान विवाकशवाब वाचा विकासरीन এই প্রকার জ্ঞান বাহার হইরাছে, সেই বিধান ও মুমুকু ব্যক্তির সর্বকর্মসন্ত্যাসেই অধিকার আছে। এই নিমিত্তই ভগবান নারায়ণ "কানবোগেন সাংখ্যানাং কর্মবোগেন বোগিনাম্' এই বচনের ছারা বিছান সাংখ্য ও অবিছান কর্মিগণের পকে প্রকৃষ্টরূপে বিভাগ করিয়া ছই প্রকার নিষ্টা (জ্ঞাননিষ্ঠা ও কর্মনিষ্ঠা) গ্রহণ করাইয়াছেন। দেইরূপ ভগবান্ ব্যাসও নিজ পুত্রকে ব**লিয়াছেন খে,** "জানী ও অজ্ঞানীর [পকে] এই গৃই প্রকার পথ" ইত্যাদি।

ভগবান্ বেদব্যাস আরও বলিয়াছেন বে, প্রথমে ক্রিয়াপথ পরে সংস্থাস, ইত্যাদি। ভগবান্ [বাস্থদেবও]পুন: পুন: [এই গীতাশাল্লে] এই প্রকার বিভাগ দেখাইবেন বে, অভত্ববিৎ ও অহবারবিমৃঢ়াত্মা 'আমি কর্ত্তা' বলিয়া অভিমান করিয়া থাকে, তত্ববিৎ আমি কিছুই করি না [ইহাই বুঝিয়া থাকে] এবং সর্বাক্ত্ম সংস্থাসপূর্বাক্ আত্মনিষ্ঠ হইয়া থাকে ইত্যাদি।

পূর্ব্বোক্ত বিভাগদরের প্রসঙ্গে কোন কোন পাণ্ডিভ্যাভিমানী বলিয়া থাকেন যে, "জন্ম প্রভৃতি ছর প্রকার ভাববিকারশৃন্ত, নির্মিকার, ও অকর্জা একমান্ত্র আমিই আত্মা" এ প্রকার জ্ঞান কাহারও উৎপঁর হর না, যে জ্ঞান হইলে [আপনাদের মতে] সকল প্রকার কর্ম্মের সন্ন্যাস উপদিষ্ট হয় [সেই অকর্জ্য জ্ঞান অসম্ভব]। [আমি বলি] এই মত যুক্তিসক্রত নহে; [কারণ এপ্রকার জ্ঞান হওয়া অসম্ভব হইলে, "আত্মার জন্ম হর না, ক্যাত্মা অকর্জা" ইত্যাদি অর্থে প্রযুক্ত] "ন জারতে" ইত্যাদি শাক্রবাক্য অনর্থক হইয়া পড়ে। ধর্ম্ম, গরলোক ও আত্মার দেহান্তর সম্বন্ধ প্রভৃতি [জ্ঞানোক্রিক বন্ধ] বে প্রাকার শান্ত্রোপদেশবলেই জ্ঞাত হইরা থাকে, সেইরূপ শান্ত্রপ্রমাণবলেই আত্মার একড় অকর্ত্ব প্রভৃতির বিজ্ঞান কেন উৎপর হইবে না, ইহা তাহাদিগকেই জিজ্ঞানা করা উচিত্ত। [যদি তাহারা বলে,—] "আত্মা ইন্দ্রিরাদির অগোচর [এই কারণে, তাহার জ্ঞান হইতে পারে না]" তাহাও হইতে পারে না ; কারণ শ্রুতি বলেন—"আত্মাকে মনের হারা দেখিতে হইবে" [অতএব অঙ্গীকার করিতে হইবে বে, আত্মজ্ঞান মনের হারা হইতে পারে ৷] শান্ত্র এবং আচায্যের উপদেশ, শম ও দম প্রভৃতি হারা সংস্কৃত হইলে, মন আত্মদর্শনের প্রতি কারণ হয় ৷ আরও আত্মজ্ঞানের অন্তর্কুল শান্ত্র ও অনুমান বিশ্বমান থাকিতে [আত্মার] জ্ঞান হইতে পারে না [এইপ্রকার বলা] সাহস মাত্র ৷ জ্ঞান উৎপর হইলে তাহার বিপরীত জ্ঞানকে বিনম্ভ করিয়া থাকে, ইহা অঙ্গীকার করিতেই হইবে ৷ "আমি হস্তা, আমি হতা [এইপ্রকার] যাহারা বুঝে, তাহারা আত্মতত্ব বুঝে না" [অর্থাৎ তাহারাই অঞ্জানী] এই সকল বাক্যে, সেই অজ্ঞানের স্বরূপ প্রদর্শিত হইরাছে ৷ এই বাক্যে হননক্রিয়ার কর্ত্বি, কর্ম্মত্ব ও প্ররোজকত্ব [যে] আত্মাতে অজ্ঞানকরিতে [তাহাই] দর্শিত হইয়াছে ৷

তাহা (আত্মার অকর্ত্য') সকল ক্রিয়াতেই একপ্রকার। আত্মার কর্ত্যাদি অবিদ্যাবদ্ধিত, [ইহার কারণ এই যে] আত্মা অবিক্রিয়। বিক্রিয়াযুক্ত কর্তাই নিজের কর্ম্মভূত কোন ব্যক্তিকে "তুমি [এইপ্রকার] কর" এই বলিরা প্রবর্ত্তিত করে। বিদানের কর্ম্মাত্রেই অধিকার নাই—ইহা বুঝাইবার জন্ত, ভগবান্ অবিশেষে (সামান্তরূপে) "বেদাবিনাশিনং" "কথং স পুরুষঃ" ইত্যাদি বাক্যের দারা বিদানের সকল ক্রিয়াতেই কর্তৃত্ব, কর্মাত্ত প্রয়োজকত্বের প্রতিষেধ করিয়াহেন। কোন্ বিষয়ে বিদানের অধিকার আছে ?—[এইপ্রকার প্রশ্লের উত্তর আমি] "জ্ঞানযোগেন সাম্যানান্" ইত্যাদি বাক্যে পূর্কেই বলিয়াছি, এবং জগবান্ "সর্ক্রেক্মাণি সংক্রত্ত" এই বাক্যের দারা [বিদ্যানের পক্ষে] সর্ক্রকর্ম সন্ধ্যানের উপদেশ করিবেন।

[সর্ককর্মাণি সংখ্যন্ত এই বাঁক্যের মধ্যে] "মনসা" এই পদটি আছে বলিরা [মানস কর্ম্মেরই সংস্থাস করিবে] কিন্ত কারিক ও বাচিককর্ম্মের সংস্থাস করিবে না [এই প্রকারও ভগবানের তাৎপর্য্য বর্ণন করা বাইতে পারে] এই প্রকার শহা করা বাইতে পারে না; কারণ [ঐ বচনে] "সর্ককর্ম্মাণি" এই পদটি বিশেষরূপে উলিখিত থাকাতে [সকল প্রকার কর্ম্মেরই সন্ন্যাস করিবে ইহা বুঝা যাইতেছে]। [বদি বল] মানস সর্ককর্মের [সন্ন্যাসই ঐ প্লোকেরু ভাংপর্য্য] ভাষাও হইতে পারে না। কারণ যত প্রকার কারিক বা বাচিক ব্যাপার আছে, সকলেরই পূর্নে মনের ব্যাপার [অবশুই হইরা পাকে]। [মুতরাং] মনের ব্যাপার না থাকিলে কারিক ও বাচিক ব্যাপার অমুপপর হয়। শান্ত্রবিহিত বাচিক ও কারিক কর্মের কারণ মানসব্যাপার ব্যভিরেকে অপর সকল প্রকার মানসব্যাপারের সন্ন্যাস করিবে [ইহাই নোকের ভাংপর্য্য] এই প্রকার শন্ধাও করা যায় না। "নৈব কুর্বন্ ন কারয়ন্" এই বিশেষণের দারা সামান্তরূপে সকল প্রকার কর্মেরই সন্মাস বিহিত হইয়াছে। বে ব্যক্তি মরিতেছে, তাহারই পক্ষে এই স্বর্ককর্ম সন্মায় বিষয়ে ভগবান্ উপদেশ দিয়াছেন, বে বাঁচিয়া থাকিবে তাহার প্রতি নহে—ইহাও বলা যাইতে পারে না; কারণ, তাহা হইলে, "নবদারে পুরে দেহী আত্তে" (নম্ব প্রকার দার্যক্ত দেহরূপ নগরের মধ্যে কোন কর্ম্ম না করিয়া কিংবা কোন কর্মের প্রয়োজক না হইয়া আত্মা বিদ্যমান থাকেন) এই প্রকার বিশেষণ অমুপপের হইয়া উঠে।

িকেন অনুপ্রন হয় ?] মৃত ব্যক্তির সর্ব্বকর্মসন্মাস পূর্ব্বক দেহে অবস্থান [কখনই] সম্ভবপর নহে। [যদি বল এ শ্লোকেন্ম] "দেহের উপরই সকল প্রকার কর্ম্ম নিক্ষেপ করিয়া স্বয়ং কোন প্রকার কর্ম্ম না করিয়া এবং কোন-প্রকার কর্ম্মের প্রয়োজক না হইয়া [আত্মা] ব্লিছ্টমান থাকেন" এই প্রকারই **षदत्र [क**तिराज व्हेर्रत], "रिनरह अवस्थान करतन" এই श्राकात अवस्त्र [इहेराज পারে না]; তাহাও হইতে পারে না; [কারণ] সকল অবস্থাতেই আত্মার [নিজমপে] অবিক্রিয়ভাব [শাস্ত্রে] অবধারিত আছে। অবস্থানরূপ ক্রিয়ারই অধিকরণাপেক্ষা আছে (অর্থাৎ "আন্তে" এই ক্রিয়ারই দেহে এই অধিকরণবোধক পদের সঙ্গে অবয় হওয়া উচিত) সন্যাদের অধিকরণাপেকা নাই; ["সংক্তত্ত" এই ক্রিয়ার পরিত্যাগরূপ অর্থে ব্যবহার হইয়াছে, ইহা স্বীকার করিলেও দেছে अहे व्यक्तित्रगटतांश्क शामत गहिल लाइत ना इहेटल दकान हानि इत ना]; [বদি বল নিক্ষেপ করিতে হইলে, কোন না কোন এক স্থানেই নিক্ষেপ করিতে रुष, **এইজন্ত "সংস্তুদ্রু" এই পদের অধিকরণ।পেক্ষা আছে বলিয়াই দেহে এই অধি** করণবোধক পদের সহিত অবম্ব হওয়া উচিত,—ইহার উপর বলা যাইতৈছে বে] 'দং' এই উপদর্শ বাহার পূর্বে বিশ্বমান আছে, সেই 'ভাদ' শব্দের নিকেপরূপ কর্ম হইতে পারে না; কিন্তু ত্যাগই অর্থ হয়। সেই জন্ত [বলা বাইত্তেছে বেঁ] গীড়াবাত্তে আত্মজ্ঞানবান্ পুরুবের সন্ন্যাসেই অধিকার আছে [ইহাই প্রতিপাদিজ

হইর।ছে] কর্ম্মে অধিকার নাই, এই বিষয়টি পরে সেই সেই আত্মজানপ্রকরণে প্রদর্শন করাইব॥ ২১

বাসাংসি জীর্ণানি যথা বিহায়
নবানি গৃহাতি নরোহপরাণি।
তথা শরীরাণি বিহায় জীর্ণাভাষানি সংযাতি নবানি দেহী॥ ২২

আন্তর্ম। বথা নরঃ জীর্ণানি বাসাংসি (বস্ত্রাণি) বিহার (পরিত্যজ্য) অপরাণি নবানি (বাসাংসি) গৃহাতি (পরিধত্তে), তথা দেহী (জীবঃ । জীর্ণানি শরীরাণি বিহার অস্তানি নবানি (শরীরাণি) সংবাতি (অঙ্গীকরোতি)॥ ২২

অনুবাদ। জীর্ণ বন্ধ সকল পরিত্যাগ করিয়া মানব বে প্রকার জঞ্জ নূতন বন্ধ সকল পরিধান করে, জীর্ণ দেহ সকল পরিত্যাগ করিয়া জীবও সেই প্রকার নূতন দেহ সকল জঙ্গীকার করে॥ ২২

ভাষ্য।—প্রকৃত্ত বক্ষামঃ, তত্রাদ্মনোহবিনাশিদ্ধ প্রতিজ্ঞাতং তৎ কিমি-বেভূচ্চতে বাসাংসীতি। বাসাংসি বস্ত্রাণি জীর্ণানি তর্ম্মলতাং গতানি বথা লোকে বিহার পরিত্যজ্ঞা নবান্তভিনবানি গৃহ্বাত্যুপাদত্তে নরঃ পুরুবোহপরাণ্যস্তানি তথা ভদ্বদেব শরীরাণি বিহার জার্ণান্তস্তানি সংঘাতি সংগচ্ছতি নবানি দেহ্বাদ্মা পুরুব-বদবিক্রির এবেত্যর্থঃ॥ ২২

আনক্ষণিরিটীকা। আন্ননাংবিক্রির্থনে কর্মাসন্তবং প্রতিপান্ধানিক্রের্থনের্বিক্রর্থনের্বান্ধনেবান্তর্প্রন্থনবিজ্যন্তনি প্রকৃতং দ্বিতি। বিং তৎ-প্রকৃতিশ্বিদ্ধানি প্রত্যাহ—তত্ত্রেতি। অবিনাশিদ্ধানিত্যুগলকণমনিক্রেয়ন্থনিক্রার্থা। তদেব দৃষ্টান্তেন স্পষ্টরিত্যুন্তরন্নোকর্ম্পাগর্গত—তদিত্যাদিনা। আত্মনং স্বতোবিক্রিয়াভাবেংগি পুরাতনদেহত্যাগে নৃতনদেহোপাদানে চ বিক্রিয়ান্বিক্রেয়ন্থনিকর্মনিমিতি চেন্তর্ভাহ—বাসাংসীতি। শরীরাণি লীর্ণানি বন্নোহানিং গভানি বলীপলিতাসক্ষানীত্যর্থা। বাসসাং প্রাতনানাং পরিত্যাগে নবানান্ধোপাদানে ত্যাগোপাদানকর্ভৃত্তলৌদ্কপ্রক্রন্তাপি অবিকারিছেনক-দ্মপ্রবদান্ধনোদেহত্যাগোপাদানরোরবিক্রমবিক্রির্থনিতি বাক্যার্থমাহ—পুরুষ্ধ বৃদ্ধিতি॥ ২২

আকুৰ্দি। (একণে) প্রক্তের অহসরণ করিব। পূর্বে আত্মার অবি-নাশির প্রতিকাত হইরাছে, কাই অবিনাশির কি প্রকার ? তাহাই [দৃষ্টাস্কোন্- ভাগ করিরা] বলা হইতেছে বে "বাদাংগীজাদি"। "বাদাংশি" বন্ধ সকল 'জৌর্ণানি" হর্মকলডাপ্রাপ্ত (অকর্মণা) ইইলে যেমন লোকে "বিহার" পরিত্যাগ করিরা "নবানি" অভিনব "গৃহাতি" উপাদান করে [কে ?] "নরঃ" পূরুষ [কি উপাদান করে ?] "অপরাণি" অভ (বন্ধসমূহ) "তথা" সেই প্রকারই জীর্ণ পরিত্যাগ করিরা "দেহা" আত্মা [প্রক্ষের ভার বন্ধত্যাগকালে] অবিক্রিম ভাবেই ন্তন শরীর পরিগ্রহ করিরা থাকে, ইহাই অর্থ ॥ ২২

নৈনং ছিন্দস্তি শস্ত্রাণি নৈনং দহতি পাবকঃ। ন চৈনং ক্লেদয়স্ত্যাপো ন শোষয়তি মারুতঃ॥ ২৩

অনুষ্য । এনং (আত্মানং) শত্তাণি ন ছিন্দন্তি এনং (আত্মানং) পাবকঃ (অনিঃ) ন দহতি। এনং (আত্মানং) আপঃ (জলানি) ন চ ক্লেদরত্তি (বিলেবরতি) মারুতঃ (প্রনঃ) [এনং] ন শোবয়তি॥ ২৩

অনুবাদ। এই আত্মাকে শত্র সকল ছিন্ন করিতে পারে না, এই আত্মাকে অগ্নি দথ্য করিতে পারে না, এই আত্মাকে জল বিশ্লিষ্ট করিতে পারে না এবং বায়ু শুক্ষ করিতে পারে না । ২৩

ভাষ্য। কন্মাদবিক্রির এবেত্যাহ নৈনং ছিলস্তীতি। এনং প্রকৃতং দেহিনং ন ছিলস্তি শস্ত্রাণি নিরবর্বভারাবরবভাগং কুর্বন্তি শস্ত্রাণা নিরবর্বভারাবরবভাগং কুর্বন্তি শস্ত্রাণা ভাষানি ভথা নৈনং দহতি পাবকোহরিরপি ন ভন্মীকরোতি তথা ন চৈনং ক্লেমস্ত্রাপঃ ভাপাংহি সাবরবস্ত বস্তুনঃ আর্জীভাবকরণেন অবরববিশ্লেষাপাদনে সামর্থ্যং তর নিরবর্ব আম্মনি সম্ভবতি। তথা মেহবৎ দ্রব্যং মেহশোবণেন নাশরতি বার্রেনং ভাষ্মানং ন শোবরতি মারুভোহপি॥ ২৩

আনন্দগিরি টীকা। পৃথিব্যাদিভ্তচভূষ্টরপ্রবৃক্তং বিক্রিরাভাক্তালাখ-নোৎসিদ্ধমবিক্রিরামিতি শহতে—কুম্মাদিতি। যতো ন ভূতাঞ্চান্ধানং গোচ-র্মিভ্মহ স্থাতো যুক্তমাকাশবৎ তন্তাবিক্রিয়দমিত্যাহ—আহেত্যাদিনা॥ ২০

অনুবাদ। কি কারণে আন্মা অবিক্রিরই, তাহা বলিতেছেন,—নৈনং ছিল্মনীত্যাদি প্লোকে এই প্রকৃত দেহীকে, শত্র সকলও ছির করিতে পারে না। [কারণ এই আন্মার] অবরব নাই অর্থাৎ কুঠার প্রভৃতি শত্র, [এই আন্মার অবরব নাই বলিরা] অবরব বিভাগ করিতে পারে না; সেই প্রকার ইহাকে পাবকও দহন করিতে পারে না অর্থাৎ অগ্নিও আন্মাকে ভনীভূত করিতে গারে না। সেই প্রকার কলও আন্মাকে ক্লিয় করিতে পারে না। শাবংব বস্তুকে আর্দ্র করিয়া অবরববিশ্লেষ করাই জলের সামর্থ্য; নিরবরশ আত্মাতে তাহাও সম্ভবপর নহে। স্নেহ শোষণ করিয়া স্নেহবিশিষ্ট প্রব্যকে বায়্ নষ্ট করিয়া থাকে, এই আত্মাকে বায়্ও গুক করিতে পারে না; কারণ, আত্মা জলাদির স্থায় স্নেহযুক্ত দ্রব্য নহে। যেহেতু আত্মাকে শস্ত্র প্রভৃতি ছিন্ন করিতে পারে না, এই জন্ম আত্মা "অচ্ছেছোহয়" নিত্যাদি, [রূপে প্রতিপাদিত হইতেছে]॥ ২৩

অচ্ছেন্তোহ্যমদাহোহ্যমক্রেন্তোহশোষ্য এব চ। নিত্যঃ সর্ববগতঃ স্থাণুরচলোহ্যং সনাতনঃ॥ ২৪

অনুয়া অরং (আত্মা) অচেছ্য:, অরং (আত্মা) অদাহঃ, অরং (আত্মা) অক্ষেয়:, [তথা] অশোয় এব, অরং (আত্মা) নিত্যঃ সর্বগতঃ স্থাণুঃ অচলঃ [তথা] সনাতনঃ ॥ ২৪

অনুবাদ। এই আত্মা অচ্ছেন্ত, অদাহ্য, অক্লেন্ত এবং অশোশ্য, [কারণ] এই আত্মা নিত্য, সর্কাগত স্থাণুসদৃশ, অচল এবং সনাতন ॥ ২৪

ভাষ্য। বতএবং তমাৎ অচ্ছেছোহয়মিতি যমাদয়োয়নাশহেত্নি তৃতানি এনম্ আয়ানং নাশয়িত্ং নোৎসহস্তে তমাৎ নিত্যো নিতাম্বাৎ সর্বলগত সর্বলিতাছাৎ স্থাণুরিবেতার্ছেও স্থিরমাদচলোহয়মায়া, অতঃ সনাতনন্দিরস্তনো ন কারণাৎ কুতন্দিয়িপয়োহভিনব ইতার্থঃ। নৈতেষাং মোকানাং পৌনক্ষক্তাং চোদনীয়ম্। যত একেনৈব মোকেনায়নো নিতামমবিকিয়মং চোকেং নি জায়তে ব্রিষ্টেতে বা ইত্যাদিনা। তত্র যদেবায়বিষয়ং কিঞ্ছিছচাতে তদেতমাৎ শ্লোকার্থায়াভিরিচাতে, কিঞ্ছিছপতঃ পুনক্তকং কিঞ্ছিদর্থত ইতি। ছর্কোধম্বাদায়রম্ভনঃ পুনঃ পুনঃ প্রসক্ষমাণাছ শকাস্তরেণ তদেব বস্তু নির্মপর্যতি ভগবান্ বাম্বদেবঃ, কথং স্থু নাম সংসারিণামব্যক্তং তবং বৃদ্ধিগোচরতামাপয়ং সৎ সংসারনিক্তরে ভানিতি।

আনন্দ গিরি টীকা। পৃথিব্যাদিভ্তপ্রযুক্তছেদনান্তথিক্রিরাভাবে বোগ্যতা ভাবং কারণমাহ—যতইতি। পূর্বার্দ্ধমূত্তরার্দ্ধে হেতৃত্বেন বোজয়তি—যুস্মাদিতি। নিত্যখাদীনামন্তোভং হেতৃহেতৃমন্তাবং স্চয়তি—নিত্যভাদিত্যাদিনা। ন চ নিত্য ং পরমাণ্যু ব্যভিচারাদ্যাধকং সর্বগতত্বভি বাচ্যং তেষামেবাঞামাণিক্বেন ব্যভিচারান্বভারার চ সর্বগতত্বেহপি বিক্রিরাশক্তিমত্বনাহ্বনাহিক্যতে নভিসি তদহপ্রভার চ বিক্রিরাশক্তিমত্বে

হৈর্য্যান্থাত্থ শক্যথ তথাবিধন্ত মৃদাদেরস্থিরন্থদর্শনাদিত্যাশরেনাহ—স্থিরত্বাদিতি। স্বতো নিত্যন্থেপি কারণারাশসন্তবাহুৎপত্তিরপি সন্তাবিতেতি কৃতকিরন্তনন্থনিত্যাশক্যাহ—ন কারণাদিতি। আত্মনোহবিক্রিরন্থন্ত "ন জারতে
ন্রিরতে বা" ইত্যাদিনা সাধিতত্বাত্তিত্ব প্নঃপ্নরভিধানে প্রনক্ষিরিত্যাশক্যাহ—
ন তেয়ামিতি। অনাশকনীয়ন্ত চোজন্ত প্রসক্ষং দর্শয়তি—যুক্তইতি। অতাে
"বেদাবিনাশিনম্" ইত্যাদে ন শক্ষ্যতে পৌনক্ষক্ত্যমিতি শেবঃ। কথং জ্ঞ্জ
পৌনক্ষক্ত্যাশকা সম্মিরতি জ্ঞাহ—তত্ত্রেতি। "বেদাবিনাশিনম্" ইত্যাদিক্লোকঃ সপ্তম্যা পরাম্পতে। শ্লোকশন্তেন "নজায়তে নির্লতে বা" ইত্যাদিক্লোকঃ সপ্তম্যা পরাম্পতে। শ্লোকশন্তেন "নজায়তে নির্লতে বা" ইত্যাদিক্লিয়াভাবো বিবক্ষ্যতে জ্ঞা কথ্যাভিরেকাভাবমাদায় পৌনক্ষক্ত্যঞ্জেত্তে
ভ্ঞাহ—ক্রিপ্রেদিতি। কথং ভর্হি পৌনক্ষ্যং ন চোদনীয়মিতি মন্ত্রসে
ভ্ঞারমাহ—ক্রথংয়িতি। প্নঃপ্নর্বিধানভেদেন বন্ধ নিরূপয়তাে ভগবতাহভিঞারমাহ—ক্রথংয়িতি। ২ও

অনুবাদ। যে কারণে, পরস্পার বিনাশহেতু, পৃথিব্যাদি ভূতসকল, এই আত্মাকে বিনষ্ট করিতে সমর্থ হয় না সেই কারণেই আত্মা] নিতা, নিতাম্বনিবন্ধনই [আত্মা] সর্বগত, সর্বগদ্ধপ্রযুক্তই [আত্মা] স্থাণু [এই শব্দের দারা বোধিত হয়] স্থাপু (শুক রক্ষের) সদৃশ আব্বা স্থির; [ইহা বুঝাইবার জন্তই স্থাপু এই শব্দের প্রয়োগ করা হইয়াছে ইহাই বুঝিবে] ষ্টিরম্ব আছে বলিয়াই এই আত্মা অচল, এই কারণেই আত্মা দনাতন অর্থাৎ চিরস্তন, কোন কারণ হইতে উৎপন্ন অভিনব পদার্থ নছে। "এই শ্লোক-সকলের দারা একই অর্থ বারংবার বলা হইয়াছে; কারণ "ন জায়তে দ্রিয়তে বা" ইতাদি শ্লোকের দারাই আত্মার নিতাম ও অবিক্রিয়ম্ব উক্ত হইরাছে. শেই শ্লোকে আত্মবিষয়ে যাহা কিছু বলা **হই**য়াছে, তাহা হইতে এই শ্লোকে বে কিছু নূতন অর্থ প্রকাশ করিয়াছে, তাহা নছে, কোন কোন ছলে শৰ্মাংশে প্নক্ষজি হইয়াছে, কোন কোন হলে অর্থাংশেও পুনক্ষজি হইয়াছে" এই প্রকার শঙ্কা করা উচিত নহে; কারণ আত্মবস্ত চুচ্চের; বারংবার প্রসঙ্গের অবতারণা করিয়া, কি প্রকারে সংসারাসক্ষ "ব্যক্তিগণের নিকটে এই অব্যক্ত আঁত্মতন্ত্ব প্রকাশিত হইয়া [তাহাদের] সংসার-নিবৃত্তির কারণ হইবে, তাহার প্রতি লক্ষ্য করিয়াই ভগবান্ বাস্থদেব [এইরূপে] আস্থান তবের নিরূপণ করিরাছেন। ২৪

অব্যক্তোহয়মচিন্ত্যোহয়মবিকার্য্যোহয়মূচ্যতে। তন্মাদেবং বিদিত্বৈনং নামুশোচিত্বমর্হসি॥ ২৫

আর্য়। অরশামা অব্যক্ত: [অতএব] অরং অচিস্ত্য: ; [তথা] অরং অবিকার্য্য: উচ্যতে ; তত্মাৎ [ফম্] এনং (আত্মানং) বিদিত্বা এবং অমুশোচিতৃৎ ন অর্কার ॥ ২৫

অনুবাদ। এই আঁআ অব্যক্ত (স্বতরাং) অচিস্তা এবং অবিকার্য্য [বলিয়া উক্ত হইয়া থাকে]। অতএব তুমি ইহাকে জানিয়া এইর্নপে শোক করিতে পার না॥ ২৫

ভাষ্য। কিঞ্চ অব্যক্তোহয়মিতি। অব্যক্তঃ সর্ককরণাবিষয়ভার ব্যক্তাতে ইতি অব্যক্তোহয়মাত্মা অতএব অচিস্তোহয়ং বৃদ্ধীল্রিয়গোচরং বস্তু তচিস্তাবিষয়ভ্বনাপত্ততে অরং ছাত্মা অনিশ্রিয়গোচরতাদচিস্তাঃ অবিকার্যোহয়য়। য়পা ক্ষীয়ং দধ্যাতঞ্চনাদিনা বিকারি ন তথা অয়মাত্মা। নিরবয়বতাচাবিক্রিয়ঃ ন হি নিরবর্ব কিঞ্চিদ্বিক্রিয়াত্মকং দৃষ্টম্। অবিক্রিয়তাদবিকার্যোহয়মাত্মোচ্যতে। তত্মাক্রেবং বথোক্তপ্রকারেণ এনমাত্মানং বিদিত্বা ত্বং নাম্বশোচিতুমর্হসি হস্তাহমেষাং
মর্মে হস্তত্তে ইতি॥ ২৫

আনন্দ গিরিটীকা।— ত্বংপদার্থপরিশোধনন্ত প্রকৃত্যাৎতত্ত্বৈব হেম্বস্তুন নাহ—কিঞ্চেতি। আত্মনা নিত্যছাদিলক্ষণন্ত তথৈব প্রথা কিমিতি ন ভবতি তত্ত্বাহ—অব্যক্তইতি। মা তর্হি প্রত্যক্ষমং ভূদছমেরত্বং ভূতত্ত্ব কিং ন ভাদিত্যাশস্থ্যাহ—অত্তরেতি। তদেব প্রপঞ্চয়তি— যজীতি। অতীক্তির্মান্দেশিলা লাইবিষয়ম্বং ভবিষ্যতীত্যাশক্ষ্য কৃটছেনাদ্মনা ব্যাপ্তিকিলাভাবাদ্মৈবমিত্যাহ—অবিকার্য্যইতি। অবিকার্যামে ব্যতিরেকদৃষ্টাস্তন্মানমাহ—কির্বয়বস্থাচেচতি। নিরবয়বজ্বতাত্বাং ঘটাদিবদিতি ব্যতিরেক্যুন্থমানমাহ—নিরবয়বস্থাচেচতি। নিরবয়বজ্বতাত্বাং ঘটাদিবদিতি ব্যতিরেক্যুন্থমানমাহ—নিরবয়বস্থাচেচতি। নিরবয়বজ্বতাত্বাং ঘটাদিবদিতি ব্যতিরেক্যুন্থমানমাহ—নিরবয়বস্থাচেচতি। নিরবয়বজ্বতাত্বাং ঘটাদিবদিতি ব্যতিরেক্যুন্থমানমাহ—নিরবয়বস্থাচিচতি। নিরবয়বজ্বতাত্বাদিতি বিক্রিয়াবজ্বদর্শনাং বিক্রাব্যক্ষে কা
ক্রিত্যাশস্থাহ—ন হীতি। সাবয়বং সক্রিয়ং ক্রীরাদি তদ্ধ্যাদিনা
বিক্রার্যাস্থাত্তি ন চাদ্মন: শ্রুতিপ্রমিতনিরবয়বজ্বতা সাব্যব্যমতাহবিক্রিয়ভারারং বিকার্য্যে ভবিত্মলমিতি কলিতমাহ—অবিক্রিয়ম্বাদিতি। আত্মবাধান্ম্যোপদেশমশোচ্যান্রশোচস্বন্ত্যুপক্রম্য ব্যাধাতমুপ সংহরতি——তন্ম্যুদিতি। অব্যক্তমাবিকার্যন্তন্তিয়্ব্যুর্য্যাবিকার্যন্ত্র্যুক্রিপ্রতাদিরপ্রে বন্ধান্ত্র্যা বিক্রিয়ম্বাবিকার্যন্ত্র্যুক্রের্যক্রমতাহির্ত্তাদানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্রান্ত্রান্ত্র্যানিকার্যান্ত্রান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যানিকার্যান্ত্র্যানিকার্যা

রিতন্তসান্তথৈব আতৃমুচিতন্তজ্ঞানক ফলবন্ধাদিত্যর্থ:। প্রতিবেধ্যমন্থণোক-মেবাভিনয়তি—হস্তাহমিতি॥ ২৫

অনুবাদ। অধিকন্ত এই আত্মা অব্যক্ত ইত্যাদি "অব্যক্ত" কোন ইন্দ্রির [-জনিত জ্ঞানের] বিষয় নহে, এই কারণ আত্মা অভিব্যক্ত হইতে পারে না; যাহা অভিব্যক্ত হয় না, তাহাই অব্যক্ত। এই কারণেই এই আত্মা অচিস্তা; যে বন্ধ ইন্দ্রিয় [-জনিত জ্ঞানের] গোচর, তাহাই চিন্তার বিষয় হইয়া থাকে; এই আত্মা কিন্তু ইন্দ্রিয়ের গোচর নহে বলিরাই অচিস্তা। এই আত্মা অবিকার্যা। দধি বা অমাদির সংযোগে হয় বে প্রকার বিকার প্রাপ্ত হয়, আত্মা সেই প্রকার বিকার প্রাপ্ত হয় না। নিরবর্বছ-নিবন্ধনও আত্মা অবিক্রিয়; যাহার অব্যব নাই, এমন বন্ধ বে [কোন কালে] বিকারস্বভাব হয়, তাহা দেখিতে পাওয়া যায় না। বেহেতু অবিক্রির, এইজন্ত অবিকার্য্য [বলিয়া]-উক্ত হইয়া থাকে। সেই কারণে মধোক্তপ্রকারে এই আত্মাকে জানিয়া তুমি, "আমি হননকর্তা, ইহারা আমার হনন-ক্রিয়ার কর্ম্ম" এই প্রকারে অন্থগোচনা করিও না॥ ২৫

> অথ চৈনং নিত্যজাতং নিত্যং বা মন্তদে মৃতম্। তথাপি জং মহাবাহো নৈনং শোচিতুমর্হসি॥ ২৬

আর্য়। অথ চ (यश्वि) নিত্যম্ এনং (আত্মানং) নিত্যজাতং (প্রতিশ্রীরং জাতং জাতং) তথা মৃতং (প্রতিশরীরনাশং বিনষ্টং বা) মন্ত্যে, [হে] মহাবাহো! তথাপি ত্বম্ এবং (উক্তপ্রকারেণ) শোচিতৃং (শোকং কর্তুং) নার্হিন (ন বোগ্যো ভবিসি) ॥ ২৬

অনুবাদ। এই নিতা আত্মাকে তুমি বদি প্রতি দেহের উৎপত্তিতে উৎপন্ন ও প্রতি দেহের বিনাশে মৃত বদিয়াও মানিয়া লও, ভাহা হইলেও হে মহাবাহো। তোমার এই প্রকার শোক করা উচিত হইতেছে না॥ ২৬

ভাষ্য ৷ আত্মনোহনিত্যত্বমভ্যুপগ্নেয়দমূচ্যতে অথ চৈনমিতি ৷ অথ চেত্যভ্যুপগমার্থ: এনং প্রক্লুতমাত্মানং নিত্যজাতং লোকপ্রসিদ্ধা প্রভ্যুনেক-শরীরোৎপত্তিং জাতো জাত ইতি মন্ত্রসে, তথা প্রতিভদ্বিনাশং নিত্যং বা মন্ত্রসে মৃতে মৃতোমৃতইতি, তথাপি তথা ভাবিস্তুপি আত্মনি তং মহাবাহো নৈবং শোচিত্মহ সি জন্মবতো জন্ম নাশবতো নাশন্চেত্যেতাবৰশ্বভাবিনাধিতি ॥ ২৬

আনন্দগিরিটীকা।—শাদ্ধনো নিত্যন্ত প্রাণেষ বিদ্যান্ত্রন্তরালায়ণ-পত্তিরিত্যাশ্র্যান্ত আত্মনতি। অনিত্যন্ত্রিত ছেদং। শাদ্যানাং গোকার-তানাং বা মতমিদমাপরাম্প্রতে। শ্রোত্রব্রুন্ত পূর্ব্বোক্তমাদ্মবাথাদ্মাং শ্রুদাণি তানিরির্বারণাদিকের রোম তরোরস্কৃতরমতাভ্যুপগমঃ শক্তিত্তদর্থো নিপাত্তর-প্ররোগ ইত্যাহ—অথটেতি। প্রকৃতস্তাদ্ধনা নিত্যন্তাদিলক্ষণত পুনঃ প্রনর্ভাত্তাভিমানো মানাভাবাদসন্তাবীত্যাশ্র্যাহ—লোকেতি। নিত্যন্তাভ্যাতিনিবেশে পৌনঃপ্রেল মৃত্যাভিনিবেশো ব্যাহতঃ ভাদিত্যাশ্র্যাহ—তথেতি। পরকীর্মতমন্ত্রাবিতমভ্যুপেত্য "অহো বত মহৎপাপং কর্ছ্ং ব্যবসিতাবয়ম্"ইত্যাদেক্তদীয়শোকত্র নিরবকাশন্তমিত্যাহ—তথাপীতি। এবমিত্যব্রুন্ত দৃত্তান্দক্তারির দর্শক্রিত্বা তত্র কর্ত্মবোগ্যন্তে হেতুমাহ—ক্রম্মবতইতি। ক্রমবত্যে নাশো নাশবতশ্চ জন্মত্যেভাববশ্রস্তাবিনেট মিথো ব্যাপ্তাবিতি ব্যক্তনা ॥২৬

অসুবাদ। [প্রমাণবিক্তক হইলেও অর্জুনকে কর্ত্তব্যকার্য্যে প্রেরণ করিবার জন্ত] আত্মার অনিত্যরূপতা মানিয়া লইয়া বলা যাইতেছে—অথ চৈনমিত্যাদি। "অথ চ" এই শব্দের অর্থ মানিয়া লওয়া 'এই' প্রকৃত, আত্মাকে, [যদি] "নিত্যজাত" [অর্থাৎ] লোক-প্রসিদ্ধির অনুসারে প্রতি শরীরের উৎপত্তির [সময়ে] 'জাত হইয়াছে জাত হইয়াছে' এই প্রকার বিবেচনা কর, সেই প্রকার প্রতিদেহ বিনাশের [সময়ে] এই নিত্য আত্মাকে "মৃত" অর্থাৎ মৃত হইয়াছে মৃত হইয়াছে [এই প্রকার বিবেচনা কর] তথাপি অর্থাৎ আত্মা এই প্রকার অনিত্য হইলেও, হে মহাবাহো! তুমি এই প্রকারে শোক করিতে পার না; [কারণ] জন্মবান্ পদার্থের নাশ, এই হুই বস্তু অবশ্রুজাবি॥ ২৬

জাতস্থ হি ধ্রুবো মৃত্যু ধ্রু বং জন্ম মৃতস্থ চ। তম্মাদপরিহার্ব্যেহর্থে ন স্থং শোচিতুমর্হসি॥ ২৭

আধ্য়। [বসাৎ] জাতন্ত (উৎপন্নন্ত) মৃত্যুঃ (মরণং) গ্রুবঃ (নিশ্চিতঃ) মৃতন্ত চ জন্ম (দেহান্তরসম্বন্ধঃ) গ্রুবং (নিশ্চিতং), তস্মাৎ (উক্তাদেব হেতোঃ) অপরিহার্ব্যেহর্পে (জননমরণরণে বিষয়ে) স্বং শোচিতৃং (শোকং কর্ছুং) নাহ দি (ন যোগ্যো ভবসি)॥ ২৭

অনুবাদ। উৎপন্ন ব্যক্তির মরণ নিশ্চিড, মৃত ব্যক্তির প্নর্জন্মও মিশ্চিড;

স্থুতরাং জন্ম ও মরণরপ অপরিহার্য্য বিষয়ে ভূমি [কিছুতেই] শোক করিতে পারিতেছ না॥ ২৭

ভাষ্য । তথা চ সতি জাতত্তেতি। জাতত হি লক্ষরনো ধ্বৈহিব্যতি-চারী মৃত্যুর্ম্মরণং ধ্ববং জনা মৃতত্ত চ তত্মাদপরিহার্য্যোহয়ং জন্মমরণলক্ষণোহর্বঃ, তত্মিয়পরিহার্য্যেহর্থে ন স্বং শোচিতুমহ্ সি॥ ২৭

আনন্দগিরিটীকা |—ত্রোরবশুংভাবিত্বে সতি অমুশোকশু অকর্ত্তব্যত্তে হেত্তস্তরমাহ—তথাচেতি ॥ ১৭

অনুবাদ। তাহাই যদি ২ইল [তবেই বলা যাইতে পারে] যে জাতস্তেত্যাদি। জাত ব্যক্তির অর্থাৎ লব্ধজনা জীবের "মৃত্যু" অর্থাৎ মরণ "গুব" অর্থাৎ অব্যক্তি-চারী। মৃতের জন্মও গুব (অব্যক্তিচারী); স্থতরাং এই জন্ম ও মরণ-রূপ অবস্থ অপরিহরণীয়, এই অপরিহার্য্য বিষয়ে তুমি শোক করিতে পার না॥ ২৭

> অব্যক্তাদীনি ভূতানি ব্যক্তমধ্যানি ভারত। অব্যক্তনিধনান্মেব তত্ত্ব কা পরিদেবনা॥ ২৮

অন্বয়। [হে] ভারত ! ভূতানি (পৃথিব্যাদীনি) অব্যক্তাদীনি (अमृष्टপূর্ব্বাবস্থানি) ব্যক্তমধ্যানি (উপলব্ধর্ত্তমানাবস্থানি) [তথা] অব্যক্তনিধনানি
(অজ্ঞাতভবিষ্যদবস্থানি) তত্ত্ব (এবমনিরতপূর্ব্বাপরাবস্থের্ ভূতের্) কা পরিদেবনা (কঃ প্রলাপঃ) ॥ ২০

অনুবাদ। এই পৃথিবী প্রভৃতি ও তাহা হইতে উৎপন্ন পুত্রমিত্ব প্রভৃতি ভূতসমূহের পূর্ববিদ্ধা উপলব্ধ নহে; ইহাদের ভবিষ্যদবস্থাও অপরি-জ্ঞাত অর্থাৎ ইহাদের পূর্ববিদ্ধা অবস্থা প্রত্যক্ষগোচর হইবার নহে; কেবল ইহাদের বর্ত্তমান অবস্থাই ব্যক্ত হইরা থাকে, স্নতরাং এই পূর্ববিদ্ধানরিত ক্ষণিক বন্ধর উৎপত্তি বা বিনাশে এই প্রকার মোহনিবন্ধন প্রলাপ কি প্রকারে [সঙ্গত হইতে পারে ?]॥ ২৮

ভাষ্য। কার্য্যকারণসংঘাতাত্মকান্তণি ভূতান্ত্যদিশু শোকো ন যুক্তঃ কর্তুং যতঃ অব্যক্তাদীনীতি। অব্যক্তাদীনি অব্যক্তমদর্শনমন্থপলন্ধিরাদির্যেবাং ভূতানাং পুত্রমিত্রাদিকার্য্যকারণসংঘাতাত্মকানাং তানি অব্যক্তাদীনি ভূতানি প্রাপ্তংপত্তেঃ। উৎপন্নানি চ প্রাক্ মরণাৎ ব্যক্তমর্থ্যানি অব্যক্তনিধনাক্তেব প্রনরব্যক্তমদর্শনং নিধনং মরণং বেষাং তানি অব্যক্তনিধনানি। মন্ত্রণাদ্দ্দিন্দ্রভাষের প্রতিপ্রস্তান্ত ইত্যর্ধঃ। তথা চোক্তম্ন

"অদর্শনাদাপতিতঃ পুনশ্চাদর্শনং গতঃ।
নাসৌ তব ন তস্ত খং বুথা কা পরিদেবনা ॥" ইতি
তক্ত কা পরিদেবনা কো বা প্রলাপঃ অদৃষ্ট-দৃষ্ট প্রনষ্ট-ভ্রাস্তি-ভ্তেম্ ভ্তে
বিত্যবং ॥ ২৮

আনন্দ্গিরিটীকা। আত্মানমুদিশ্রায়শোক্ত কর্ত্মযোগ্যত্তেংপি ভ্তসংঘাতাত্মকানি ভ্তায়্যদিশ্র তত্ত্ব কর্ত্বগ্রমাশক্ষাহ—কার্য্যতি। সমনন্তরশ্লোকন্তব্র হেত্রিত্যাহ - যতইতি। চাক্সদর্শনমাত্রন্তিং বাবর্ত্তমতি—অনুপলিদ্ধিনিতি। ন হি যথোক্তসংঘাতরপাণি ভ্তানি পূর্বমুৎপত্তেরপণভ্যত্তে তেন
তানি তথা বাপদেশভাঞ্জি ভবস্থীতার্থ:। কিং তন্মধ্যং যদেষাং ব্যক্তমিষ্যতে
তদাহ-—উৎপ্রানীতি। উৎপত্তেরদ্ধাং মরণাচ্চ পূর্বাং ব্যবহারিকং সন্ত্থং
মধ্যমেষাং বাক্তমিতি তথোচ্যতে। জন্মায়্যমারিত্বং বিলম্ম্য যুক্তমিতি মত্বা তাৎপর্য্যার্থমাহ—মরণাদিতি। উক্তেহর্থে পৌরাণিকসম্মতিমাহ—তথাচেতি।
তব্তেত্যন্তার্থমাহ—অদ্যেতিতি। পূর্বমদ্টানি সন্তি পুনদ্ টানি তান্তেব পুনন্ টানি
তদেবং ভ্রান্তিবিষয়তয়া ঘটীযন্ত্রবচ্চক্রীভূতের্ ভূতের্ শোকনিমিত্তক্ত প্রলাপশ্ত
নাবকাশেহন্তীত্যর্থ:॥২৮

অনুবাদ। কার্য্য-কারণভাবে সংহত এই সকল প্রাণিদেহকেও উদ্দেশ করিয়া শোক করা উচিত নৈহে, যেহেতু অব্যক্তাদীনীত্যাদি। 'অব্যক্তাদি" অব্যক্ত শব্দের অর্থ অদর্শন বা অন্থপলি ; পুত্রমিত্রাদিরূপ কার্য্যকারণভাবে সংহত যে সকল ভূতের অন্থপলিই আদি (অবস্থা), তাহারা অব্যক্তাদি [শব্দের প্রতিপাছ]। সকল ভূতই উৎপত্তির পূর্ব্বে অব্যক্তাদি [থাকে]; উৎপন্ন হইয়া মরণের পূর্বে ব্যক্তমধ্য [থাকে]; তাহার পরে], "অব্যক্তনিধন" অর্থাৎ পুনর্বার [পূর্বের স্থায়] অদর্শনই যাহাদের নিধন [বিলয়া কীর্ত্তিত হয়] তাহাদিগকেই অব্যক্তনিধন বলা যায়; অর্থাৎ মরণের পর তাহারা পুনর্বার অব্যক্ত ভাবই প্রাপ্ত হইয়া থাকে, ইহাই অর্থ। এই রূপ স্থলাস্তরে উক্ত হইয়াছে যে, "অদর্শন হইতে উৎপন্ন হইয়াছে—এবং পুনর্বার অদর্শন প্রাপ্ত হইয়াছে; স্নতরাং এই সংসাধ তোমার নহে, তুমিও তাহার নহ, তবে কেন রূথা এই পরিদেবনা।" এই বিচিত্রশ্বরূপ লান্তিমর ভূতসমূহের জন্ত এই প্রকার প্রলাপ [কি প্রকারে সঙ্গত হইতে পারেণ্ড]। ২৮

আশ্চর্য্যবৎ পশ্যতি কশ্চিদেন-মাশ্চর্য্যবদ্বদতি তথৈব চান্তঃ। আশ্চর্য্যবচ্চৈনমন্তঃ শৃণোতি শ্রুত্বাপ্যেনং বেদ ন চৈব কশ্চিৎ॥ ২৯

অনুয়। কশ্চিৎ এনন্ (আত্মানন্) আশ্চর্য্যবং (অস্কুত্মিব) পশ্চিতি। তথা এব অভঃ (জনঃ) [এনমাত্মানন্] আশ্চর্য্যবং বদতি। অভশ্চ (জনঃ) এনন্ (আত্মানন্) আশ্চর্য্যবং শৃণোতি; শ্রুত্মাপি এনং কশ্চিৎ ন চৈব বেদ (জানাতি)॥ ২৯

অনুবাদ। কোন ব্যক্তি এই আত্মাকে অভ্যুতের স্থায় দেখিয়া থাকে, কেহ আত্মাকে অভ্যুতের স্থায় বলিয়া থাকে, কেহ বা আত্মাকে অভ্যুতের স্থায় শুনিয়া থাকে। কিন্তু এই আত্মাকে দেখিয়া শুনিয়া বা বলিয়াও কোন ব্যক্তি [প্রকৃতরূপে] ইহার ত্বরূপ অবগত হইতে পারে না॥২৯

ভাষ্য।—ছর্ব্বিজ্ঞেয়াহয়ং প্রকৃত আত্মা কিঃ ত্বামেবৈকমুপালভে সাধারণে লান্তিনিমিতে। কথং ছর্বিজেয়োহয়মাত্মেতি আহ—আশ্চর্য্যবিদিতি। আশ্চর্য্যবদাশ্চর্য্যম্ অদৃষ্টপূর্ব্বমন্ত্তম্ অকল্মান্দ্ শুমানং ত্বেন ত্ল্যমাশ্চর্য্যবং আশ্চর্য্যনিনমাত্মানং পশুতি। কশ্চিং আশ্চর্য্যবংদনং বদতি তথৈব চাশ্তঃ। আশ্চর্য্যবংদনমন্তঃ শ্ণোতি। শ্রুত্বা দুই্বাক্ত্বাপ্যাত্মানং বেদ ন চৈব কশ্চিং। অথবা ঘোহয়ম্ আত্মানং পশুতি, স আশ্চর্য্যত্ব্যো যো বদতি যশ্চ শৃণোতি সোহনেক্সহক্রেষ্ কশ্চিদেব ভবতি, অতো ছর্ব্বোধ আংক্মতাভিপ্রায়ঃ॥ ১৯

আনন্দ্রিটিক। শু অর্জুনং প্রত্যুপালন্তং দর্শয়িষা প্রক্তস্তাত্মনো ছর্বি-জ্যেষ্টাত ও প্রতি উপাল্ডা ন সন্তবভীতি মন্বান: সন্নাহ—তুর্বিস্ক্রেয়ইতি। তথা চাত্মাজ্ঞাননিমিত্র বিভ্রমন্ত সাধারণম্বাদসাধারণোপালন্তন্ত নিরবকাশতেত্যাহ—কিং জ্বামেবেতি। অহম্প্রত্যরবেগ্রমাদাত্মনো ছর্বিবজ্ঞেয়ম্বমদিদ্ধিতি শঙ্কতে—কথমিতি। বিশিষ্টস্থাত্মনাহহংপ্রত্যয়ন্ত দৃষ্টপ্রেহপি কেবলন্ত তদভাবাদন্তি ছর্বিবজ্ঞেয়তেতি শ্লোক্ষমবতারয়তি—আহেতি। আকর্যাবদিতি আছেন পাদেনাত্মবিষদর্শনন্ত ছল ভত্তং দর্শয়িষা দ্রষ্ট্র দেলি ভ্যমুচ্যতে। বিতীয়েন তদ্বিবয়বদনন্ত ছল ভত্তেং দর্শয়িষা দ্রষ্ট্র দেলি ভ্যমুচ্যতে। বিতীয়েন তদ্বিবয়বদনন্ত ছল ভত্তেং দর্শয়িষা দ্রষ্ট্র দিলি ভাম্বতা তিরিক্রা ছল ভত্তে দর্শ্বির বান স্বল্ভির বিল্লিকা। শ্রবণদর্শনাক্তীনাং ভাবেহপি তদ্বিবয়সাক্ষাৎকারক্ত অত্যস্তায়াসলভ্যতং চতুর্বেনাভিপ্রেতিবিভাগঃ। আত্মগোচরদর্শনাদিহল ভত্ত

ষারা হর্ন্বোধন্বমাত্মনঃ সাধন্বতি—আশ্চর্য্যবদিতি। সংপ্রত্যাত্মনি ত্রষ্ট্র্বজুঃ শ্রোতৃঃ সাক্ষাৎকর্তুন্চ হর্লভন্বাভিধানেন তদীয়ং হর্ন্বোধন্বং কথন্বতি—অথবেতি। ব্যাখ্যানন্বরেহণি ফলিতমাহ—অত্ততি ॥ ২৯॥

অনুবাদ। এই প্রকৃত আত্মা গ্রহিবজ্ঞের [আত্মবিরের] লান্তির কারণ সাধারণ অর্থাৎ এই আত্মতন্ত্ব বিষয়ে সকল লোকই লান্তিযুক্ত; [অতএব] এইজন্ম তোমাকেই উপালম্ভ (তিরস্কার) করিয়া কি ফল ? এই আত্মা কিরূপ গ্রহিজ্ঞের তাহা বলিতেছেন, আশ্চর্য্যবদিত্যাদি। "আশ্চর্য্যবং" বাহা অকল্মাৎ দৃষ্ট হয়, যাহা অন্তৃত ও পূর্বে অদৃষ্ট, তাহাই আশ্চর্য্য আশ্চর্য্যের ভায়—এই অর্থে 'আশ্চর্য্যবং' শক্ষি ব্যবহৃত হইয়াছে; এই আত্মাকে কোন ব্যক্তি আশ্চর্য্যের ভায় দেখিয়া থাকে, সেই প্রকার কোন ব্যক্তি এই আত্মাকে আশ্চর্য্যের ভায় বর্ণনা করিয়া থাকে, অভ ব্যক্তি এই আত্মাকে আশ্চর্য্যের ভায় ল্রবণ করিয়া থাকে। শ্রবণ করিয়া, দেখিয়া বা বর্ণনা করিয়া, এই আত্মাকে [প্রকৃতপক্ষে] কেইই ব্রিতে পারে না। [অথবা এইরূপ অর্থ কলিতে ইইবে ব্] যে ব্যক্তি আত্মাকে দেখিতে পার, সে আশ্চর্য্যতুল্য, যে ব্যক্তি আত্মা সম্বন্ধে উপদেশ দেয় বা শ্রবণ করে, সেও আশ্চর্য্যতুল্য, এইরূপ আত্মাণশী আত্মোপদেন্তা বা আত্মশ্রোতা অনেক সহল্রের মধ্যে কদাচিৎ একজনই হয়। অতএব আত্মা ত্র্ব্যেধ, ইহাই অভিপ্রায়॥ ২৯

দেহী নিত্যমবধ্যোহয়ং দেহে সর্ববস্থ ভারত। তম্মাৎ সর্বাণি ভূতানি ন ত্বং শোচিতুমর্হসি॥ ৩০

আম্বয়। [হে]ভারত! সর্বস্থ দেহে অয়ৎ দেহী (আত্মা) নিতাৎ (সর্বদা) অবধ্যঃ (অবিনাশার্হঃ) তত্মাৎ তং সর্বাণি ভূতানি ন শোচিত্-মহসি॥২•

অকুবাদ। সকলের দেহে এই দেহী (দেহধারী আত্মা) সর্বাদা অবধ্য। হৈ ভারত! সেইজন্ত তুমি সকল প্রাণীকেই [ইহারা হত হইল বলিয়া] শোক করিতে পার না॥ ৩•

ভাষ্য। অথেদানীং প্রকরণার্থমূপসংহরন্ ব্রতে দেহীতি। বস্থাদেহী শরীরী নিভাং সর্বাদা স্বাব্দাস্থবধ্যো নির্বয়বছারিভাছাচ্চ ভ্রাবধ্যোহরং দেহে শরীরে সর্বান্ত সর্বগভন্থাৎ স্থাবরাদির স্থিভোহিশি সর্বান্ত দেহে বধ্যমানেহণি অন্নং দেহী ন বধ্যো যত্মাৎ তত্মান্তীমাদীনি সর্বাণি ভূতাঞ্চাদিশ্র ন মং শোচিত্মহঁসি ॥ ৩ •

আনন্দগিরিটীকা। শ্লোকান্তরমুখাপরতি—অথেতি। আশ্বনো হঞ্জনিশ্ব-প্রদর্শনানস্তরমিতি যাবং । বশ্ববৃত্ত্যপেক্ষয়া শোকমোহয়োরকর্ত্তবৃত্তং প্রকরণার্থঃ। দেহে বধ্যমানেহপি দেহিনো বধ্যছাভাবে ফলিতমাহ—যুস্মাদিতি। হেডুবিভাগং বিভন্ধতে—সর্ববস্থোতি। ফলিতপ্রদর্শনপরং শ্লোকার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—তুস্মাদ্ধ-ভীক্ষাদীনীতি॥ ৩•

অকুবাদ। অনম্ভর এক্ষণে প্রকরণার্থ উপসংহার করিয়া বলিতেছেন যে, দেহীত্যাদি। যেহেতু সকল প্রাণিগণের দেহ বিনাশ্র হইলেও এই আত্মা বধ্য হর না, সেই কারণ ভীম প্রভৃতি সকল প্রাণিগণকে উদ্দেশ্য করিয়া তোমার এইরপ শোক করা উচিত হইতেছে না॥ ৩০

> স্বধর্ম্মগপি চাবেক্ষ্য ন বিকম্পিভূমর্হদি। ধর্ম্ম্যান্ধি যুদ্ধাচেছ য়োহন্যৎ ক্ষত্রিয়স্থ ন-বিশ্বতে॥ ৩১

অনুষ্। অপি চ স্বধর্ম্ম অবেক্য [ত্বং] ন বিকম্পিত্মর্ছ দি হি (যত্মাৎ)
ধর্ম্যাৎ (ধর্মাদনপেতাৎ) যুদ্ধাৎ অন্তৎ ক্ষত্রিয়ন্ত শ্রেঃ ল বিস্তুতে ॥৩১

অকুবাদ। নিজ ধর্ম বিচার করিয়াও তোমার বিচলিত হওয়া অর্থাৎ বুদ্ধে নিবৃত্ত হওয়া উচিত নহে; কারণ, ক্ষত্রিয়ের ধর্ম্ম্যযুদ্ধ হইতে অপর কোন শ্রেয়:সাধন বিশ্বমান নাই ॥৩১

ভাষ্য। ইহ পরমার্থতত্বাপেকারাং শোকো নোহো বা ন সম্ভবতীত্যুক্তং, ন কেবলং পরমার্থতত্বাপেকারামের কিন্তু বধর্মমিতি। স্বধর্মমিপি স্বোধর্ম্মঃ তিরস্ত ধর্মঃ যুদ্ধং, তমপ্যবেক্ষ্য তং ন বিকম্পিতৃং প্রচলিতৃং নার্হ দি আভাবিকাং ধর্মাং আত্মস্বাভার্যাদিত্যভিপ্রায়ঃ। তচ্চ যুদ্ধং পৃথিবীল্মনারেণ থিং প্রজারক্ষণার্থকেতি ধর্মাদনপেতং পরং ধর্ম্মঃং, তন্মাৎ ধর্ম্মাৎ যুদ্ধাং শ্রেমাংখ্যং ক্ষাত্মস্ত ন বিস্তাতে হি বন্ধাং॥০১

আনন্দ খিরিটীকা। লোকান্তরমবতারয়ন্ রতং কীর্ডয়তি ইহেতি।
পূর্বলোকঃ সপ্তমার্থঃ। যৎ পারমার্থিকং তত্তং তদপেকারামের কেবলং শোকমাহরোরসভবো ন ভবতি কিন্ত, অধন্মনিপ চাবেক্ষ্যেভিসম্বন্ধঃ। অকীয়ং
কাত্রধর্মন্দ্রমার তত্তক্ষনং পরিহর্তব্যমিত্যর্থঃ। যদ্ধি কত্রিয়ভ ধর্মাদনপেতং
শ্বেরংসাধনং তদেব সমান্তবর্তিত্ব্যমিত্যাশভ্যাহ—ধর্ম্মাদিতি। জাতিপ্রস্কুৎ

ষাভাবিকং স্বধর্মমেব বিশিনষ্টি—ক্ষত্রিয়ুস্তেতি। পুনর্ন রোগোদানমন্বরার্থম্। প্রচলিত্নযোগ্যত্তে প্রতিযোগিনং দর্শন্তি—স্বাভাবিকাদিতি।
বাভাবিক্ষমশারীরন্ধনিতি শক্ষাং বারয়িত্বং তাৎপর্য্যাহং—আ্ত্রেতি।
আত্মনঃ স্বভার্জুন্ত স্বাভাব্যং ক্ষত্রিম্বভাবপ্রযুক্তং বর্ণাশ্রমোচিতং কর্ম
তন্মাদিত্যর্থঃ। ধর্মার্থং প্রজাপরিপালনার্থক প্রযতমানক্ত যুদ্ধাহপরিরংসা
শ্রদ্ধাতব্যেত্যাশক্ষ্যাহ—তচ্চতি। ততাহিপি শ্রেমন্বরং কিঞ্চিদ্যুঠাতুং
যুদ্ধাহপরতিক্ষচিত্তেত্যাশক্ষ্যাহ—তন্মাদিতি। তত্মাদ্যুদ্ধাৎ প্রচলনমন্ত্রিতিমিতি
শেষঃ॥ ৩১

অনুবাদ। এই প্রকার পরমার্থবস্তার বিচার করিলে, শোক বা মোহ হৈতে পারে না, ইহা বলা হইরাছে। কেবল পরমার্থবস্তা বিচার করিলেই [মেশোক বা মোহ হইতে পারে না] তাহা নহে, কিন্তু নিজ্ঞ ধর্মের দিকে দেখিলেও ইত্যাদি। ক্ষত্রিয়ের স্বধর্ম যুদ্ধ, সেই ধর্মাও অবেক্ষণ করিয়া তুমি "বিকম্পিত" অর্থাৎ (স্বধর্ম হইতে) বিচলিত হইতে পার না; স্বাভাবিক ধর্ম [মে কারণ] আন্মার স্বভাব [তাহা হইতে স্কতরাং আত্মার বিচলন হইতে পারে না] সেই যুদ্ধ (ক্ষত্রিয়ধর্ম) পৃথিবীজয় ঘারা ধর্ম ও প্রঞ্জাননের অন্তর্কুল [হইয়া থাকে], এই কারণে যুদ্ধ ধর্ম্ম্য অর্থাৎ ধর্ম হইতে অপগত নহে এবং যুদ্ধই [ক্ষত্রিয়ের] শ্রেষ্ঠ ধর্ম্ম। যুদ্ধ হইতে অন্ত শ্রেষ্ঠ [ধর্ম্ম] ক্ষত্রিয়ের বিভ্রমান নাই॥ ৩১

যদৃচ্ছয়া চোপপন্নং স্বৰ্গৰারমপার্তম্। স্থানঃ ক্ষত্রিয়াঃ পার্থ লভন্তে যুদ্ধমীদৃশম্॥ ৩২

অন্বয়। [হে] পার্থ! স্থানঃ (ভাগ্যশালিনঃ) ক্ষত্রিরাঃ যদ্চ্ছরা উপপক্ষম্ অপার্তং স্বর্গদারম্ [ইব] ঈদৃশং যুদ্ধং লভস্তে॥ ৩২

অনুবাদ। হে পার্ণ। অকস্মাৎ উপস্থিত, উন্মৃক্তস্বর্গদারের ন্তান্ন এই প্রকার যুদ্ধ, ভাগ্যশালী ক্ষত্রিয়গণই লাভ করিতে সমূর্ণ হয় ॥ ৩২

ভাষ্য। কৃতত তদ্যুদ্ধং কর্ত্তব্যম্ ইত্যুচ্যতে যদৃচ্ছয়েতি। যদৃচ্ছয়া চাপ্রাথি-তয়া উপপল্লমাগতং স্বর্গদারমপার্তমুদ্দাটিতং যে তদীদৃশং যুদ্ধং 'লভন্তে ক্ষত্রিরাঃ হে পার্থ কিল্প স্থানন্তে॥ ৩২

আনন্দগিরিটীকা, ।— যুদ্ধত গুর্বান্তনেকপ্রাণিহিংসাত্মকত অহিংসাশান্ত-বিরোধানাত্তি কর্ত্তব্যতেতি শহুতে—কুত্তেচ্চি । জন্মীবোমীন্বহিংসাবদ্ যুদ্ধ- মণি ক্ষত্তিরশু বিহিত্ত্বাদ্যুঠেরং সামান্তশাস্ত্রতো বিশেষশাস্ত্রশু বলীর্কাণিত্যাহ—
উচ্যত ইতি । তথাপি যুদ্ধে প্রবৃত্তানামৈহিকামুদ্মিক-স্থাদ্মিপ্রধানাহপরতিরেব ততো যুক্তা প্রতিভাতীত্যাশ্ব্যাহ—যদ্চহুয়েতি । চিরেণ চিরতরেণ
চ যাগাল্লফ্র্টারিনঃ স্বর্গাদিভাজো ভবস্তি যুধ্যমানাস্ত্র ক্ষত্রিয়া বহিমুপ্রভাবিহীনাঃ
সহসৈব স্বর্গাদিস্থপভোক্তারন্তেন তব কর্ত্তব্যমেব যুদ্ধমিতি ব্যাখ্যানেন স্ফুট্রতি—
যদ্চহুয়েত্যাদিনা । ইহামুত্র চ ভাবিস্থপবতামেব ক্ষত্রিয়াণাং স্বধর্মভূতযুদ্ধসিদ্ধেন্তাদর্থোনোখানং শোক্ষাহেই হিত্বা কর্ত্বব্যমিত্যর্থঃ ॥ ৩২

অমুবাদ। কেন সেই যুদ্ধ করিতে হইবে, ইহাই বলা যাইতেছে যে, যদৃচ্ছনা ইত্যাদি। যদৃচ্ছা শব্দের অর্থ অপ্রার্থনা; বিনা প্রার্থনার "উপপন্ন" আগত "অপার্ত" উদ্ঘাটিত, স্বর্গদার [দদৃশ] এই প্রকার, যুদ্ধ, যে সকল ক্ষত্রিয় লাভ করিতে পারে, হে পার্থ! তাহারা কি স্থধী নর ? ॥ ৩২

> অথ চেৎ ছমিমং ধর্ম্ম্যং সংগ্রামং ন করিষ্যসি। ততঃ স্বধর্ম্মং কীর্ত্তিঞ্চ হিত্বা পাপমবাপ্স্যসি॥ ৩৩

অন্তর্ম। অথ চেৎ ওম্ ইমং ধর্ম্যং সংগ্রামং ন করিষ্যাসি, ততঃ (তদা) স্বধর্মং কীর্ত্তিং চ হিছা (পরিত্যজ্ঞা) পাপম্ অবাস্যাসি ॥ ৩৩

অনুবাদ। পকান্তরে তুমি যদি এই ধর্মকর সংগ্রাম না কর, তাহা হইলে স্বধর্ম ও কীর্ত্তি পরিত্যাগ করিয়া পাপ প্রাপ্ত হইবে॥ ৩৩

ভাষ্য। এবং কর্ত্তব্যতাপ্রাপ্তমণি অপেতি। অপ চেৎ দ্বমিমং ধর্ম্মাৎ ধর্মাদনপেতং বিহিতং সংগ্রামং যুদ্ধ ন করিষ্যদি চেৎ ততন্তদকরণাৎ শ্বধন্মং কীর্ত্তিশ্ব মহাদেবাদিসমাগমনিমিত্তাং হিন্তা কেবলং গাপমবাক্ষ্যদি॥ ৩৩

আনন্দগিরিটীকা। "স্বধর্মত যুদ্ধতা শ্রদ্ধা করণে স্বর্গাদিমহাফলপ্রাপ্তিং প্রদর্শ্য তদকরণে প্রত্যবাদ্ধপ্রাপ্তিং প্রদর্শন্ধন্ উত্তরক্ষোকগতার্থশন্ধর্থং কথন্নতি— এবমিতি। বিহিতত্বং ফলবত্তমিত্যনেন প্রকারেণেত্যর্থঃ, অন্বন্নার্থং পুনশ্চেদিত্যন্ত্রতে। মহাদেবাদীত্যাদিশক্ষেন মহেক্রাদ্রোগৃহুন্তে॥ ৩৩

অনুবাদ। এদ প্রকার যদ তোমার পক্ষে কর্ত্তব্য বলিয়া পরিগণিত ইইলেও, পক্ষাস্তরে ভূমি বদি "ধন্ম্য" ধর্ম ইইতে অনপেত এই "সংগ্রাম"
যুদ্ধ না কর, তাহা ইইলে ধন্ম্য যুদ্ধের অকরণনিবন্ধন অধন্ম ও মহাদেবাদির সহিত যুদ্ধন্দনিত কীর্ত্তি পরিত্যাগ করিয়া কেবল পাপই লাভ
করিবে॥ ৩৩

অকীর্ত্তিং চাপি ভূতানি কথারিষ্যন্তি তেহব্যরাম্। সম্ভাবিতস্থ চাকীর্ত্তি ম'রণাদতিরিচ্যতে ॥ ৩৪

আৰয়। ভূতানি (প্রাণিনঃ) তে অব্যরাম্ (চিরস্থারিনীম্) অকীর্ত্তিং কথরিব্যক্তি চ। সম্ভাবিতস্ত (সন্মানিতস্ত) চ অকীর্ত্তিঃ (অবশঃ) মরণাং অভিরিচ্যতে (অতিশয়বতী ভবতি)॥ ৩5

অমুবাদ। প্রাণিগণ তোমার চিরস্থায়িনী অকীর্দ্তি দোষণা করিবে। সম্মানিত ব্যক্তির অকীর্দ্তি মরণ হইতেও অতিরিক্ত হইরা থাকে॥ ৩৪

ভাষ্য। ন কেবলং স্বধর্মকীর্ত্তিপরিত্যাগঃ অকীর্ত্তিঞাপি বৃদ্ধে ভূতানি কথরিষ্যন্তি তে তবাব্যয়াং দীর্ঘকালান্। ধর্মাত্মা শূরইত্যেবসাদিভিশু নৈঃ সন্তাবিতক্ত চাকীর্ত্তের্মানিভিশু নির্মান স্বাবিতক্ত চাকীর্ত্তের্মানিভিশু নির্মান স্বাবিতক্ত চাকীর্ত্তের্মানিভিশ্বর্ম মরণ-মিত্যর্থঃ॥ ৩৪

আনন্দগিরিটীকা। যুদ্ধাকরণে ক্ষত্রিয়ন্ত প্রত্যবারমামুখ্রিকমাপান্ত শিষ্টগর্হালকণং দীর্ঘকালভাবিনমৈহিকমপি প্রত্যবারং প্রতিলম্ভরতি—ন কেবল-মিতি। যুদ্ধে স্বমরণসন্দেহাৎ তৎপরিহারার্থমকীর্ত্তিরপি সোঢ়ব্যা স্বাত্মসংরক্ষণত্ত শ্রেম্বরন্ত্রাদিত্যাশক্যাহ—ধর্মাত্মেতি। মাত্যানামকীর্ত্তিবতি মরণাদপি ত্রংস্কৃতি তাৎপর্যার্থমাহ—সম্ভ্রাবিত্তস্তৈতি॥ ৩৪

আমুবাদ। কেবল [যে] স্বধর্ম ও কীর্ত্তি পরিত্যাগ [হইবে] তাহা নহে, প্রাণিগণ তোমার অকার্ত্তিও ঘোষণা করিবে। ঐ অকীর্ত্তি দীর্ঘ-কালস্থায়িনী [হইবে]। ধর্মাত্মা শ্র ইত্যাদি গুণসমূহের দারা সম্ভাবিত ব্যক্তির অকীর্ত্তি, মরণ হইতেও অতিরিক্ত হয়, সম্ভাবিত ব্যক্তির অকীর্ত্তি অপেকা মরণও ভাল [ইহাই তাৎপর্যা]॥ ৩৪

> ভয়াদ্রণাত্রপরতং মংস্তান্তে ত্বাং মহারথাঃ। যেষাং চ ত্বং বহুমতো ভূত্বা যাস্তাসি লাঘবম্॥ ৩৫

অন্ত্র্য়। মহারথাঃ (হুর্য্যোধনাদরঃ) দ্বাং ভরাং রণাছণরতং (নির্ত্তং,)
মাংস্তক্তে। বেষাং (হুর্য্যোধনাদীনাং) দ্বং বহুমতো ভূদা [হিভঃ] [তেবাং]
লাঘবং (লঘুতাং) বাস্তানি (প্রাম্পানি) ॥ ৩ঃ

আকুবাদ। [ছর্য্যোধন প্রভৃতি] মহারথগণ তোমাকে ভয়ে রণ হইতে নিবৃত্ত বলিয়া বিবেচনা করিবে। যে সকল ব্যক্তির নিকট ভূমি পূর্বে বহ গুণযুক্ত বশিরা সন্মানিত হইয়াছিলে, [ভাহাদিগের নিকটে] (একণে] লাঘব প্রাপ্ত হইবে॥ ৩৫

ভাষ্য। কিঞ্চ ভরাদিতি। ভরাৎ কর্ণাদিভ্যো রণাৎ যুদ্ধাগ্নপরতং নির্বং সংস্থান্ত চিন্তরিয়ন্তি ন রূপরেভি ছাং মহারণা গুর্ব্যোধনপ্রভৃতরঃ। বেরাঞ্চ ছং গুর্ব্যোধনাদীনাং বহুমতো বহুভিন্ত গৈযুক্ত ইত্যেবং বহুমতো ভূত্বা পুনর্বাস্তিসি শবুভাবমু॥ ৩৫

আনন্দণিরি টীকা। ইতশ্চ জন্ন যুদ্ধং কর্ত্তব্যমিত্যাহ—কিঞ্চেতি। প্রাণিন্ রূপনা নাহং যুদ্ধং করিব্যামীত্যাশক্যাহ—ভয়াদিতি। মহারথানেব বিশিন্টি—যেষাঞ্চেতি। ছর্য্যোধনাদিভিস্তবোপহাস্ততানিরসনার্থং সংগ্রামে প্রবৃত্তিরবশ্বস্তাবিনীত্যর্থঃ॥ ৩৫

জামুবাদ। কর্ণ প্রভৃতি হইতে ভয়ে রণ (র্দ্ধ) হইতে ভোমাকে উপরত (নির্ভ) [বলিয়া] ছয়োধন প্রভৃতি মহারণগণ মনে করিবে। যে ছর্য্যোধন প্রভৃতি মহারণগণের নিকট তুমি [পুর্বে] বছগুণমুক্ত বলিয়া সন্মানিত ছিলে, [একণে] [তাহাদিগের নিকটে] লাঘব (লঘুভাব) প্রাপ্ত হইবে॥ ৩৫

> অবাচ্যবাদাংশ্চ বহুন্ বদিয়স্তি তবাহিতাঃ। নিন্দস্তস্তব সামর্থ্যং ততো হ্রঃখতরং মু কিম্॥ ৩৬ 🔻

অন্তর্ম । তব সামর্থ্যং (শক্তিং) নিন্দস্তঃ (কুৎসন্নস্তঃ) অহিতাঃ (শত্রবঃ) তব বহুন্ অবাচ্যবাদান্ (নিন্দাবচনানি) বদিয়ান্তি। ততো মু কিং হঃথতরং (অধিকতর-ছঃথপ্রদং) [স্তাৎ] ॥ ৩৩

অনুবাদ। ভোমার সামর্থ্যের নিন্দা করিয়া শত্রুগণ ভোমার নানা প্রকার নিন্দা করিবে, তাহা হইতে অধিক ছঃখকর আর কি হইতে পারে ? ৩৬

ভাষ্য । কিঞ্চ অবাচ্যবাদানিতি। অবাচ্যবাদান্ অবক্তব্যবাদান্ চ বহননেকপ্রকারান্ বদিব্যস্তি তবাহিতাঃ শত্রবং নিন্দত্তঃ কুংসরস্তত্তব দ্বদীরং সামর্থ্য নিবাতকবচাদির্দ্ধনিমিন্তম্। তন্মান্ততো নিন্দাপ্রাপ্তের্ছংখাৎ ত্রংখতরং মুকিম্। তন্তঃ ক্টতরং হুঃখং নাস্তীত্যর্থঃ গ ৩৯

আনন্দগিরি-টীকা। ইত্চ মা তং যুদ্ধান্থপরমং কার্যীরিত্যাহ— কিঞ্চেতি। নমু ভীন্ধজোণাদিবধপ্রযুক্তং কটতরং ছঃপমসহমানো যুদ্ধানিমুব্তঃ স্বসামর্থানিন্দনাদি শক্রকৃতং সোদৃং শক্ষ্যামীত্যাশক্ষাহ—তত্ইতি॥ ৩৬ অনুবাদ। এবঞ্চ অবাচ্যবাদানিত্যাদি। তোমার অহিতগণ (শক্র-গণ) বছ (অনেকপ্রকার) অবাচ্যবাদ, (অফুচিত দোবারোপ) করিবে, তোমার নিবাভকবচাদিবধনিমিত্ত সামর্থ্যকে নিন্দা করিবে। তাহা হইতে (সেই নিন্দা-প্রাপ্তিরূপ ছঃথ হইতে) ছঃথতর আর কি [হইতে পারে] ? তাহা হইতে কন্ততর ছঃখ নাই, ইহাই অর্থ॥ ৩৬

হতো বা প্রাপ্স্যাদি স্বর্গং জিম্বা বা ভোক্ষ্যদে মহীম্। তত্মাছুত্তিফ কোন্তেয়! যুদ্ধায় কৃতনিশ্চয়ঃ॥ ৩৭

অনুয়। তং হতঃ বা স্বৰ্গং প্ৰাক্ষ্যসি, দ্বিশ্বা বা মহীং ভোক্ষ্যসে, তত্মাৎ হে কৌন্তেয়। গৃদ্ধায় কুতনিশ্চয়: [সন্] উত্তিষ্ঠ ॥ ৩৭

অনুবাদ। যুদ্ধে তুমি যদি নিহত হও, তাহা হালৈও স্বর্গণাভ করিবে, আর বদি জ্বনী হইতে পার, তবে পৃথিবী ভোগ করিতে পারিবে; অতএব হে কৌস্তের। দৃঢ়সঙ্কর হইরা যুদ্ধ করিতে উদ্বোগ কর॥ ৩৭

ভাষ্য। যুদ্ধে পুন:ক্রিরনাণে কর্ণাদিভিঃ হতো বেতি। হতো বা প্রাপ্সাসি স্বর্গং হতঃ সন্ স্বর্গং প্রাপ্সাসি, জিম্বা কর্ণাদীন্ শ্রান্ ভোক্ষাদে মহীম্। উভয়-থাপি তব লাভ এবেত্যভিপ্রায়ঃ। যত এবং তন্মাছন্তিষ্ঠ কৌস্তের বুদার ক্লভ-নিশ্চরঃ জেব্যামি শক্রন মরিব্যামি বেতি নিশ্চরং ক্লড্ডেগ্রঃ॥ ৩৭

আনন্দগিরি-টীকা। তার্চ যুদ্ধে গুর্বাদিবধবশারাধ্যস্থা নিলা ততো নির্ত্তী শত্রনিলেত্যুভয়তঃ পাশরজ্জ্রিত্যাশক্ষাহ—যুদ্ধে পুনরিতি। জ্বে পরাজ্বরে চ লাভ্রোব্যান্য্র্থান্মাবশুক্ষিত্যাহ—তুন্মাদিতি। ন হি পরিগুদ্ধকৃত্ত ক্ষাত্র্যস্থা যুদ্ধারোদ্যুক্ত ক্ষাত্র্যস্থান নাবশুক্ষিত্যাহ—তুন্মাদিতি। ন হি পরিগুদ্ধকৃত ক্ষাত্র্যস্থা ক্ষাদিনির্মাভাবেহিণি ব্যুতি। জ্বে পরাজ্বরে চেত্যেত্রভ্রথেত্যুচ্যতে। জ্যাদিনির্মাভাবেহিণি লাভনিরমে ফলিত্রাহ—হাত্ত্তি। ক্তনিশ্বর্যহ্বে বিশ্বর্যাভিন্তি—জ্যোন্ত্রীতি॥ ৩৭

আমুবাদ। পুনরায় কর্ণাদির সহিত যুদ্ধ করিলে কি হইবে, তাই বলিতে-ছেন—হতো বা ইত্যাদি। 'হতো বা প্রাপ্সাদি স্বর্গং" যুদ্ধে হত হইলে স্বর্গলাভ হইবে, আর কর্ণাদি বীরগণকে জয় করিলে পৃথিবী ভোগ করিবে, উভয় প্রকারেই তোমার লাভ, ইহাই অভিপ্রায়। যেহেতু এইরপ, অতএব হে কুন্তীননদন, 'যুদ্ধে হয় শক্র জয় করিব, কিংবা মরিব' এইরপ দৃঢ়সকর হইরা মুদ্ধ করিতে উথিত হও॥৩৭

স্থতুংথে দমে কৃত্বা লাভালাভো জয়াজয়ো। ততো যুদ্ধায় যুদ্ধায় নৈবং পাপমবাপ্যাদি॥ ৩৮

অনুয় । স্থুপত্যথে সমে [তথা] লাভালাভৌ জনাজনী চ গমৌ কুণা ততঃ খুনান (মুনার্থং) যুজাক (প্রারুতো ভব) এবং (মূনং কুর্বন্) ন পাপম্ ন্নাপ্যাসি (প্রাক্ষাসি)॥ ৩৮

অকুবাদ। স্থ, ছংখ, লাভ ও অলাভ, জয় ও পরাজয় সমান বিবেচনা করিয়া পশ্চাৎ যুদ্ধ করিতে প্রার্ভ হও, এই প্রকারে [সমবৃদ্ধিতে যুদ্ধ করিলে] পাপভাগী হইবে না॥ ৩৮

ভাষ্য। তত্র যুদ্ধং স্বধর্ম ইত্যেবং যুধ্যমানশু উপদেশমিনং শৃণ্— স্থত্বংধে দমে তুল্যে ক্বন্ধা রাগন্বেযাবপাক্তবেত্যেতং। তথা লাভালাভৌ জয়াজয়ে
চ সমৌ ক্বন্বা ততো যুদ্ধার যুক্তার ঘটর। নৈবং যুদ্ধং কুর্বন্ পাপফলমবাক্ষাদি
ইত্যেব উপদেশঃ প্রাসন্ধিকঃ॥ ৩৮

আনন্দ্রিরিটীকা। পাপতীক্তয়া যুদ্ধায় নিশ্চয়ং ক্রছা নোখাতুং
শক্ষোমীত্যাশঙ্কায়—তত্ত্রিতি। যুদ্ধশু অধর্ষতেয়াঁ কর্ত্তব্যক্ষে সভীতি যাবং।
স্বক্ষীবনমরণাদিনিমিন্তয়োঃ অথহঃখয়োঃ সমতাকরণং কথমিতি তত্রায়—
রাগদ্বেমাবিতি। লাভঃ শক্রকোষাদিপ্রাপ্তিং অলাভস্তদ্বিপর্যয়ঃ স্তায়েন
য়ুদ্দেনাপরিভূতেন পরশু পরিভবো অয়ন্তদ্বিপর্যয়ন্তময়ঃ তয়োঃ লাভালাভয়োজ্মাজয়য়োশ্চ সমতাকরণং সমানমেব, রাগদ্বেমাবক্রছেত্যেতদর্শয়িতুং তথেত্যুক্তম্। যথোক্তোপদেশবশাৎ পরমার্থদর্শনপ্রকরণে যুদ্ধকর্ত্তব্যভোক্তঃ সমুচরপরত্বং শাক্ষপ্ত প্রাপ্তমিত্যাশভ্যাহ—এমইতি। ক্রিয়ম্ব তব ধর্মপ্তয়ুদ্ধকর্ত্বব্যতায়্বাদ-প্রস্লাগভত্বাদস্যোপদেশস্য নানেন মিষেণ সমুচ্বঃ সিধ্যতীত্যর্থঃ॥ ৩৮

আকুবাদ। সেই প্রসাদে যুদ্ধ স্বধর্ম, এই বৃদ্ধিতে যুদ্ধ করিতে প্রবৃদ্ধ ব্যক্তির পক্ষে এই উপদেশ প্রবণ কর—স্বধহুংথে ইত্যাদি। হথ ও হঃথকে সম (তুল্য করিয়া) অর্থাৎ [হুথে) অহুরাগ ও [হুংথে] দেব না করিয়া এবং লাভ ও অলাভ জয় ও পরাজয়কে সমান করিয়া পরে, যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হও। এই প্রকারে যুদ্ধ করিলে পাগ প্রাপ্ত ইইবে না, ইহা প্রাসাদিক উপদেশ॥ ৩৮

> এষা তেইভিহিতা সাংখ্যে বুদ্ধির্যোগে দ্বিমাং শৃগু। বৃদ্ধা যুক্তো যয়া পার্থ কর্মবন্ধং প্রহাস্থসি॥ ৩৯

আৰুয়। [হে]পার্থ! এবা সাংখ্যে বুদ্ধি: তে (ডুছ্যং) অভিহিতা। যরা বৃদ্ধ্যা যুক্তা: [সন্] কর্মাবন্ধং প্রহান্তাসি (বিমোচরিষ্যাসি) [তাং] ইমাং বৌগে (বৃদ্ধিং) শৃগু॥ ৩১

অনুবাদ। হে পার্থ! এই পরমার্থ বস্তবিষয়ে বৃদ্ধি তোমার নিকট অভিহিত হইল। যে বৃদ্ধি লাভ হইলে, তৃমি কর্মবন্ধন ছিন্ন করিছে পারিবে; [এক্ষণে] এই সেই যোগবিষয়ে বৃদ্ধি [কি প্রকার তাহা] শ্রবণ কর॥ ৩৯

ভাষ্য। শোকসোহাপনয়নায় লৌকিকো ভায়ঃ অধর্মমপি চাবেক্ষেতাতাতেঃ
লোকৈককো ন তৃ তাৎপর্যোণ। পরমার্থদর্শনং দিহ প্রকৃতং তচ্চোক্তমুপসংভিরতে এবা তেহভিহিতেতি। শাল্পবিষয়বিভাগপ্রদর্শনায়। ইহ হি দর্শিতে
পূনঃ শাল্পবিয়য়বিভাগে উপরিষ্ঠাৎ স্কানমোগেন সাংখ্যানাং কর্মমোগেন (০)
যোগিনামিতি নিষ্ঠায়য়বিষয়ং শাল্পং মুগং প্রবর্তিষ্ঠাতে প্রোতারশ্চ বিয়য়বিভাগেন
মুগং প্রহীয়য়বিভাত আহ—এবা তে ইতি। এবা তে তৃভ্যমভিহিতোক্তা
সাংখ্যে পরমার্থবন্তবিবেকবিষয়ে বৃদ্ধঃ জ্ঞানং সাক্ষাৎ শোকমোহাদি-সংসারহেতৃ-দোষনিয়্তিকারণম্। যোগে তৃ তৎপ্রাপ্ত্যুপায়ে নিঃসক্তয়া দল্পহাণপূর্বক্ষীয়রায়াধনার্থে কর্ম্মযোগে কর্মায়্ষাহানে সমাধিষোগে চ ইমামনস্তরমেবোচ্যমানাং বৃদ্ধং শৃণ্। তাং বৃদ্ধিং স্টোভি প্ররোচনার্থং, বৃদ্ধ্যা বয়া যোগবিষয়য়া
মুক্রো ছে পার্থ কর্ম্মবন্ধং কর্ম্মের ধর্মাধর্মাথ্যো বন্ধঃ কর্ম্মবন্ধতং প্রহাস্তসীম্বরপ্রসাদনিমিতক্তানপ্রাপ্তরিভিভারঃ॥ ৩৯

আনন্দগিরিটীকা। নমু বধর্মপি চাবেক্ষোত্যাদিয়োকৈন্যারাবইন্তেন
শোকমোহাপনয়নত্য তাৎপর্য্যোজ্জবাৎ তন্মির প্রশ্নপণিত্যাদিভিরতীতৈঃ স্নোর্থদর্শনম্পাংছিরতে তত্রাহ—্শোকেতি। স্বধর্মপণিত্যাদিভিরতীতেঃ স্নোকঃ
শোকমোহরোঃ স্বজনমরণগুর্কাদিবধশকানিমিন্তরোঃ স্ম্যুগ্জানপ্রতিবক্ষরোরপনরার্থ্য বর্ণাশ্রমকৃতৎ ধর্মমুক্তিইতঃ স্বর্গাদি সিধ্যতি নাক্সপেত্যবয়ব্যতিরেকাম্মকো লোকপ্রসিদ্ধো ভায়ো বছপি দর্শিতস্তথাপি নাসৌ তাৎপর্য্যোজক
ইত্যর্থঃ। কিং তর্হি তাৎপর্য্যোগাক্তঃ তদাহ—প্রমার্থেতি। ন দ্বেবাহৎ
লাকু নাদ্মিত্যাদি সপ্রম্যা পরামূক্ততে। উক্তৎ—ন লারতে ব্রিরতে বাং
ইত্যাদিনোপপাদিতমিত্যর্থঃ। উপসংহারপ্রয়োজনমাহ—শাস্ত্রেতি। তত্ত
বন্ধারা বিবরো নির্চাবরং তত্ত বিজক্ত তেরেব বিভাগেন প্রদর্শন্ত উত্তর্যক্রব

শাব্রস্থ তদ্বিভাগপ্রবৃত্তিপ্রতিপত্যো: সম্ভবাদিতি তত্রাহ—ইছ হীতি। শাব্র-প্রবৃত্তে: শ্রোতৃপ্রতিপত্তেশ্চ দৌকর্য্যার্থমার্দো বিষয়বিভাগস্কচনমিত্যর্থ:। উপসংহারক ফলবন্ধমেবমুক্তা তমেবোপদংহারমবতারয়তি—অত আহেতি। পরমার্থাম্বতন্ধ-বিষয়াং জ্ঞাননিষ্ঠামুক্তামূপ্দংক্ত্য বক্ষ্যমাণাং দংগৃহ্লাতি—যোগেত্বিতি। তামেব বৃদ্ধিং বিশিষ্টফলববেনাভিষ্টোতি—বুদ্ধ্যেতি। তত্ত্বোপসংহারভাগ**ং** বি**ভন্সতে** —এবেত্যাদিনা। বৃদ্ধিশক্ষভাত্তঃকর বিষয়ত্বং ব্যাবর্ত্তরতি—জ্ঞানমিতি। তশু সহকারিনিরপেক্ষশু বিশিষ্টং ফলবন্ধসাচষ্টে—সাক্ষাদিতি। শোকমোহৌ রাগ-বেষৌ কর্তৃত্বং ভোক্তৃত্বমিত্যাদিরনর্থ: সংসারস্তত্ত হেতুর্দোষ: স্বাঞ্চানং তত্ত নিরুক্তৌ নিরপেক্ষং কারণং জ্ঞানমজ্ঞাননিবৃত্তে জ্ঞানস্থাবয়ব্যতিরেক-সমধিগতসাধনত্বা-দিতার্থ:। বোগেছিমামিত্যাদি ব্যাকুর্বন্ যোগশব্দ প্রকৃতে চিত্তবৃত্তিনিরোধ-বিষয়ত্বং ব্যবচ্ছিনত্তি—তৎপ্রাপ্তীতি। প্রকৃতং মৃক্ত্যুপযুক্তং জ্ঞানং ভৎপদেন পরামৃখতে। জ্ঞানোনরোপায়মেব প্রকটঃতি—নিঃসঙ্গতয়েতি। ফলাভিসন্ধি-বৈধুর্য্যং নিঃসঙ্গত্ম। বুদ্ধিস্ততিপ্রবাজনমাহ—প্রান্তনার্থমিতি। অভিষ্কৃতা হি বুদ্ধি: শ্রদ্ধাতব্যা সতামুগ্রাতারমধিকরোতি তেন স্তুতিরর্থবতীত্যর্থ:। কর্মামু-ষ্ঠানবিষয়বুদ্ধা কর্মবন্ধশু কুতো নিরুত্তিন হি তত্তভান্মস্তরেণ সমূলং কর্ম **হাতুং** শক্যমিত্যাশক্ষাহ—ঈশ্বব্ৰেতি॥ ৩৯

অনুবাদ। "স্বধর্মণ্ড বিলোকন করিরা" ইন্ড্যাদি শ্লোকসকলের বারা শোক ও মোহ অপনয়নের কারণ লোকদিদ্ধ যুক্তি উক্ত হইয়াছে; [বান্তব পক্ষে] ঐ সকল যুক্তিতে [প্রকৃত] তাৎপর্য্য নাই। [কারণ] পরমার্থ-দর্শনই এই গীতাশারে অধিকৃত। [এক্ষণে গীতাশারের প্রতিপাদ্ধ] বিষয়ের বিভাগ প্রদর্শন করিবার জন্ম "এবা তেহভিহিতা" ইত্যাদি শ্লোকের [অবতারণা] বারা সেই পরামর্থদর্শনের উপসংহার করা হইতেছে, এই স্থানেই শান্তের বিষয়ন্ধিতাগ প্রদর্শিত হইলে পরে "জ্ঞানযোগের বারা সাংখ্যগণের ও কর্মবোগের বারা বোগিগণের সিদ্ধি লাভ হয়" ইত্যাদি নিষ্ঠাত্বরবিষয়ে [বক্ষ্যমাণ] শান্ত্র অনায়াসেই প্রবৃত্ত হইতে পারিবে এবং শ্রোত্তগণ্ড বিষয়নবিত্তাগ থাকার অনায়াসেই বৃথিতে পারিবেন, এই কারণে বলা যাইতেছে যে, এষা তে ইত্যাদি। "এষা" এই "তে" তোমাকে "অভিহিতা" উক্ত হইয়াছে "সাংখ্যে" পরমার্থ বন্ধর প্রকৃত্তবন্ধণ বিষয়ে "বৃদ্ধি" জ্ঞান [যাহা] শোক মোহ প্রভৃতি সংসার-ক্ষের প্রকৃত্তবন্ধণ বিষয়ে গ্রেডির প্রতি কারণ। "যোগে" সেই জ্ঞান লাভ করিবার উপায়বিষয়ে [সেই উপায় কি ৽] ফর্টে আসক্ষ পরিত্যাগ পূর্ব্ধক

শীতোঞাদিদশ সহন করিরা ঈশ্বরারাধনার্থ কর্মবোগ অর্থাৎ বিহিতকর্মায়ন্তান ও [বক্ষামাণ] সমাধিবোগ। [এই প্রকার কর্মবোগবিষয়ে] বৃদ্ধি [কি প্রকার তাহা প্রবণ কর। প্ররোচনার জন্ত সেই বৃদ্ধির স্ততি করিতেছেন। যে বোগবিষরিণী বৃদ্ধির সহিত যুক্ত হইলে, হে পার্থ! "কর্মবন্ধ" কর্মাই ধর্মা ও অধর্মা স্থরূপ বন্ধ [এই তাৎপর্য্যে] কর্মবন্ধ [এই পদটি প্রযুক্ত হইরাছে] ঈশ্বরপ্রসাদনিমিক্তজানলাভ করিয়া সেই কর্মবন্ধ পরিত্যাগ করিতে পারিবে॥ ৩০

নেহাভিক্রমনাশোহস্তি প্রত্যবায়ো ন বিছতে। স্বল্লমপ্যস্থ ধর্মস্থ ত্রায়তে মহতো ভয়াৎ॥ ৪০

আর্য়। ইহ (নোক্ষার্গে) অভিক্রমনাশঃ (প্রারম্ভবৈফল্যং) নান্তি; [ভাষা] প্রভাবায়ঃ (অনিষ্টপ্রাপ্তিঃ) ন বিছতে। অভা ধর্মান্ত স্বরমণি মহতো ভামাৎ (সংসারভীতেঃ) কামতে (রক্ষতি)॥ ৪•

ভাসুবাদ। এই মোক্ষমার্গে আরন্তের বৈকল্য হয় না, এই পথে কোন আনিষ্ট প্রাপ্তিও হয় না; এই যোগধর্মের অলমাত্রও অস্ঠান মহৎ ভয় হইতে (সংসারভীতি হইতে) রক্ষা করিয়া থাকে॥ ৪•

ভাষ্য। কিঞান্তং নেহাভীতি। নেহ মোক্ষমার্গে কর্মবােগে অভিক্রমনাশােহভিক্রমণমভিক্রমঃ প্রারম্ভঃ তক্ত নাশাে নাস্তি, যথা ক্লয়াদের্যাগবিষধে প্রারম্ভক্ত নানৈকান্তিকফলছমিত্যর্থঃ। কিঞ্চ নাপি চিকিৎসাবং প্রভাবারাে বিশ্বতে, কিং তু ভবতি স্বরমপ্যস্ত যােগধর্মক্রাঞ্জিতং তারতে রক্ষতি মহতঃ সাংসারভারাং জন্মমরণাদিলক্ষণাং॥ ৪০

আনন্দ গিরিটীকা। নমু কর্দ্মায় ভানভাবৈন বাস্তিক্ষণ ছেনা কিঞ্ছিৎকরছাদনেকানর্থক ব্যিত্ত্বেন দোববছাচ্চ যোগবৃদ্ধিরপি ন প্রদেশ্বেতি তত্ত্বাহ—
কিঞ্ছেতি। অন্তচ্চ কিঞ্ছিচ্যতে কর্দ্মায় ভানভাবশুক্ষে কারণমিতি বাবং।
কর্মণা সহ সমাধেরমু ভাতুমনক্য ছাৎ অনেকান্তরাম্বসন্তবাৎ তৎক্ষণ চ সাক্ষাৎক্যারভ দীর্ঘকালাভ্যাসসাধ্য ভৈক্মিন্ অন্তভ্যনর্থাদ্য বোগী অপ্তভানর্থে চ
নিপতেদিত্য শঙ্ক্যাহ—নেত্তি। প্রতীক্ষেনাপান্তভ্ত নকারভ্ত, প্ররহমায়ভ্রণছেন নাত্তীভায়বাদঃ। যতু কর্দ্মায় ভানভাবৈ কান্তিক্ষণ ছেনাকিঞ্ছিৎকর্ম্বসূক্ত
তৎ দ্বরতি—যুত্থিতি। ক্ষবিবাণিজ্যাদেরারভ্তানিরভং ফলং সভাবনামাত্তোলনীত্তাম তথা কর্মণি বৈদিকে প্রারভ্ত ফলমনিরভং বৃদ্ধান্ত শান্ত্রির্মাদিন

দিত্যর্থ:। বন্ধুক্তমন্কোনর্থকপুবিভবেন দোববদম্ভানমিতি তত্তাহ—কিঞ্জেতি।
ইতোহণি কর্মান্তানমাবশুকমিতি প্রতিজ্ঞার ভেম্বরন্তমেব স্ফুটরতি—নাসীতি।
চিকিৎসারাং হি ক্রিরমাণারাং ব্যাধ্যতিরেকো বা মরণং বা প্রভাবারোহণি
সম্ভাব্যতে কর্মপাকশু ছর্বিবেক্ডার তথা কর্মান্তানে দোবোহন্তি বিহিত্তাদিত্যর্থ:। সংপ্রতি কর্মান্তানশু ফলং পৃচ্ছতি—কিং ছিতি। উত্তরার্জং
ব্যাকুর্বন্ বিবক্ষিতং ফলং কথরতি—স্কল্পমুপীতি। সম্যগ্জানোৎপাদন্তারেণ
রক্ষণং বিবক্ষিতং—

"দর্ব্বপাপপ্রদক্তোহপি ধ্যারন্ধিমিষমচ্যুতম্। ব ষতিস্তপন্ধী ভবতি পংক্তিপাবনপাবনঃ॥"

ইতি শ্বতেরিতার্থ:॥ ৪•

অনুবাদ। এই ঘোগমার্গে আরও কিছু বৈলক্ষণ্য আছে, তাহা দেখাই-তেছেন, নেহাভিক্রম ইত্যাদি শ্লোকে। এই মোক্ষমার্গে ক্ষমেরাগে "অভিক্রমনাশঃ" "অভিক্রম" অভিক্রমণ [অর্থাৎ] প্রারস্ত, তাহার নাশ নাই; বেমন ক্রমি প্রভৃতির [প্রযত্ন বিফল হয়], বোগবিষরে প্রারম্ভের নিক্ষলতা নাই, ইহাই ভাৎপর্য্য। আরও চিকিৎসার স্থায় ইহাতে প্রত্যাবায় নাই, ইহার বিলক্ষণ কল কিরপ হয় [তাহাই বলিতেছেন], এই বোগধর্ম্মের অরমাত্রও অনুষ্ঠান জন্মমরণাদিরূপ সহৎ সংসারভয় হইতে "ত্রাণ" রক্ষাশকরিয়া পাকে॥ ৪০

ব্যবসায়াজ্যিকা বৃদ্ধিরেকেহ কুরুনন্দন। বহুশাখা হুনস্তাশ্চ বৃদ্ধয়োহব্যবসায়িনাম্॥ ৪১

অন্বয়। ইহ (শ্রেমোমার্গে) [হে] কুরুনন্দন একা [এব] ব্যবসারাত্মিকা (নিশ্চরস্বভাবা) বৃদ্ধিঃ। অব্যবসায়িনাং (প্রমাণজনিতবিবেক-বৃদ্ধিরহিতানাং) বৃদ্ধাে অনস্তাশ্চ [ভবস্তি]॥ ৪১

অনুবাদ। হে কুক্লনন্দন। নিশ্চররপা বৃদ্ধি এক প্রকারই হইরা থাকে। বাহাদের প্রমাণজনিতবিবেকবৃদ্ধি উৎপন্ন হর নাই, সেই অব্যবসারিগণের বৃদ্ধি-সকল বছশাখাবিশিষ্ট (নালা প্রকারে বিভক্ত) এবং ঐ সকল বৃদ্ধির আশ্রয় করিলে সংসার হৃথের অস্ত হর না॥ ৪১

ভাষ্য। বেরং সাংখ্যে বৃদ্ধিরুক্তা বোগে চ বক্ষামার্ণককণা সা ব্যবসারেতি।

ব্যবসারাত্মিকা নিশ্চরস্বভাবা একৈব বৃদ্ধিরিতরবিপরীতবৃদ্ধিশাখাভেদত বাধিকা

ব্যাক্ প্রমাণ্ডনিভত্মাদিহ প্রেরোলার্গে হে কুরুনন্দি। বাঃ প্নরিতরা বৃদ্ধরে

যাসাং শাথাভেদপ্রচারবশাৎ অনস্তোহপারোহস্থপরতঃ, সংসারো নিত্যপ্রততো বিস্তার্থা ভবতি, প্রমাণজনিত-বিবেকবৃদ্ধি-নিমিত্তবশাচ্চোপরতাশ্বনস্তভেদ-বৃদ্ধিরু সংসারোহপ্যুপরমতে। তা বৃদ্ধরো বহুশাথা বহুবাঃ শাখা যাসাং তা বহুশাথা বহুভেদা ইত্যেতং। প্রতিশাখাভেদেন হুনস্তাশ্চ বৃদ্ধয়ঃ কেষামব্যবসায়িনাং প্রমাণ জনিতবিবেকবৃদ্ধিরহিতানাম্ ইত্যর্থঃ॥ ৪১

আনন্দগিরিটীকা। নমু বৃদ্ধিষয়াতিরিক্তানি বৃদ্ধ্যন্তর।ণ্যপি কাণাদাদি-শান্ত্রপ্রসিদ্ধানি বিশ্বস্তে তথা চ কথং বৃদ্ধিদ্বয়মেব ভগবতোপদিষ্টমিতি তত্রাহ— যেয়ুমিতি। দৈবৈকাপ্রমাণভূতা বৃদ্ধিরিত্যাহ—ব্যবসায়াত্মিকেতি। বৃদ্ধান্ত-রাণ্যবিবেকমূলাক্সপ্রমাণানীত্যাহ—বল্লুশাখা হীতি। ব্যবসায়াত্মিকায়া বুদ্ধে শ্রেমোমার্গে প্রবৃত্তায়া বিবক্ষিতং ফলসাহ—ইতব্রেতি। প্রকৃতবৃদ্ধিষয়াপেক্ষয়া ইতর। বিপরীতাশ্চাপ্রমাণজনিতাঃ স্বকপোলকক্সিতা যা বৃদ্ধয়স্তাদাং শাধাভেদঃ সংসারহেতৃস্তম্ভ বাধিকেতি যাবং। তত্র হেতৃ:--সম্যাগিতি। নির্দোষবেদ-বাক্যসমূখভাত্তক্ষমূপায়োপেয়ভূতং বৃদ্ধিদন্তং দাক্ষাৎ-পারম্পর্যাভ্যাৎ সংসারহেতু-বাধকমিত্যর্থ:। উত্তরার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—হাঃ পুনরিতি। প্রকৃতবৃদ্ধিবরাপেকরার্থা-স্তরন্থমিতরন্ত্রম্। তাসামনর্থহৈতৃত্বং দর্শরতি—হাসামিতি। অপ্রামাণিক-বুদ্দীনাং প্রসক্তান্থপ্রসক্ত্যা জায়মানানামতীব বুদ্ধিপরিণামবিশেষাঃ শাখাভেদাত্তেষাং প্রচারঃ প্রবৃত্তি: তদ্বশাদিতৈ তেও। অনস্তত্তং সম্যগ্রুগনমস্তরেণ নির্<u>তি</u>বির-**হিতত্বম্। অপারতং** কার্য্যন্তাব সতো বস্তুভূতকারণবির**হিত্ম**্। **অমুণ**রতত্বং ন্দোররতি—নিত্যেতি। কথং তর্হি তন্নিবৃত্ত্যা পুরুষার্থপরিদমাপ্তিস্তত্তাহ— প্রমাণেতি ৷ অবয়ব্যতিরেকাথ্যেনা(ণা) মুমানেনাগমেন চ পদার্থপরিশোধন-পরিনিশরা বিংবকাত্মিকা যা বৃদ্ধিস্তাং নিমিতীকৃত্য সমুৎপল্পসম্যগ্বোধামুরোধাৎ-প্রকৃতা বিপরীতবৃদ্ধয়ো ব্যাবর্তন্তে। তাম্বদংখ্যাতাম্র ব্যাবৃত্তাম্র সতীযু নিরাশঘন তয়া সংসারোহপি স্থাতুমশকুবর পরতো ভবতীত্যর্থঃ। যাঃ প্নরিত্যুপক্রাস্তান্তত্ত্ব-জানাপনোষ্ঠাঃ সংসারাম্পদভূতা বিপরীতবৃদ্ধীরক্ষক্রামতি—তা বুদ্ধায় ইতি। বুৰীনাং বৃক্ষন্তেব কুতো বহুশাধিত্বং তত্ত্ৰাহ—বহুভেদা ইত্যেতদিতি। একৈকাং বৃদ্ধিং প্রতি শাধাভেদোহবাস্তরবিশেষত্তেন বৃদ্ধীনামসংখ্যাত্বং প্রধ্যাত-মিজাহ--প্রতিশাথেতি। বুদীনামানস্ত্যপ্রদিদ্বিপ্রভোতনার্থো হিশব:। সম্যগ্জানবতাং যথোক্তব্দ্ধিভেদভাক্ত্মপ্রসিদ্দমিত্যাশঙ্ক্য প্রত্যাহ—কেষামি-जामिना ॥ ४>

অকুবাদ। এই যে সাংখ্য বিষয়ে বৃদ্ধি উক্ত হইল এবং বোগবিষয়ে বে

বৃদ্ধি উক্ত হইবে, [তাহা কি প্রকার] তাহাই বলিতেছেন বে, ব্যবসারেত্যাদি।
"ব্যবসারাদ্মিকা" নিশ্চরস্থভাবা [এবং তাহা] একই বৃদ্ধি ; [ঐ বৃদ্ধি] অন্ত সকল
প্রকার বৃদ্ধির শাণাভেদের বাধিকা। [কারণ] সম্যক্ প্রমাণদারা জনিত।
এই শ্রেরোমার্গে (মোক্ষপথে) হে কুরুনন্দন! অন্ত বে সকল বৃদ্ধি [আছে],
সে সকলের নানাবিধ শাণার প্রচার বশতঃ [এই] নিত্য প্রতত (সর্বাদা বিস্তৃত)
বিস্তীণ সংসার অনস্ত অপার অমুপরত হইয়া পাকে। [প্রমাণজনিত বিবেক-বৃদ্ধিরণ নিমিত্তবশে অনস্তভেদবৃদ্ধি বিনষ্ট হইলে কিন্তু এই সংসার নিবৃত্ত হইয়া
থাকে]। সেই সকল বৃদ্ধি বহুশাথা [অর্থাৎ] যাহাদের বহু শাথা বিদ্যমান
আছে, তাহাকে বহুশাথা বলা ধায়, বহুশাথা ইহার তাৎপর্য্যার্থ নানাভেদবতী
অর্থাৎ ভেদবৃদ্ধি। প্রতি শাথাভেদে ঐ সকল বৃদ্ধি অনস্ত। [এই প্রকার বৃদ্ধি]
কাহাদিগের হয় ? [তাহাই বলা যাইতেছে] অব্যবসায়িগণের অর্থাৎ বাহাদের
প্রমাণ্যনিতবিবেকবৃদ্ধি হয় নাই, তাহাদেরই। এই প্রকার অর্থা। ৪১

যামিমাং পুষ্পিতাং বাচং প্রবদন্ত্যবিপশ্চিতঃ। বেদবাদরতাঃ পার্থ নান্সদন্তীতিবাদিনঃ॥ ৪২

অন্বয়। [হে] পার্থ! বেদবাদরতাঃ (কর্মকাণ্ডমাত্রপ্রামাণ্যবাদিনঃ)
অন্তং (বর্গাদিফলদাধনাদতিরিক্তং বেদবেদ্ধং) নাস্তি ইতিবাদিনঃ অবিপশ্চিতঃ
(পরমার্থজ্ঞানশূস্তাঃ) বামিমাং (ক্রিয়াবিশেষবছলাং) পুশিতাং (পুশিতবৃক্ষবং
শোভমানাং) বাচং প্রবদস্তি॥ ৪২

অনুবাদ। হে পার্থ! "স্বর্গাদি ফলের সাধন যাগাদি ব্যতিরেকে বেদে অন্ত কিছুই প্রতিপাদিত হর নাই" এই প্রকার যাহারা বলিরা থাকে, সেই সকল বেদবাদরত (কর্মকাণ্ডের প্রামাণ্যবাদী) প্রমার্থজ্ঞানরহিত ব্যক্তিগণ এই যে সকল প্রশিত বৃক্ষের ন্তার শোভাবিশিষ্ট যে বাক্য বলিরা থাকে॥ ৪২

ভাষ্য। যেবাং ব্যবসায়াদ্মিকা বৃদ্ধিনান্তি তে যামিতি। যামিমাং বক্ষ্যমাণাং পুলিতাং পুলিতবৃক্ষ ইব শোভমানাং শ্রহমাণরমণীয়াং বাচং বাক্যক্ষণাং প্রবদ্ধি, কৈ? অবিপশ্চিতঃ অল্পেধসোহবিবেকিন ইত্যর্থঃ। বেদবাদরতাঃ বহুর্ববাদফলসাধনপ্রকাশকেষু বেদবাক্যেষু রতাঃ হে পার্থ নাশুং স্বর্গপ্রাদিফলসাধনভাঃ কর্মভ্যাহতীতােবং বাদিনো বদনশীলাঃ॥ ৪২

আনন্দগিরিটীকা। যদি সাংখ্যবোগরূপৈকৈব প্রমাণভূতা বুদ্ধিন্তহি সৈব সর্কেবাং চিত্তে কিমিতি ছিরা ন ভবতি তত্রাহ— হৈয়ামিতি।তে যামিমাং বাচং প্রবদন্তি তরাপয়তচেতসাং কামিনাং কামবশারিশ্বরাত্মিকা বৃদ্ধিন প্রার্থান্ত বিশ্বরা তবতীত্যাহ—তে যামিতি। ইমামিত্যগ্রন বধ্যপাত্তমেন প্রসিদ্ধাহণ কর্মকাগুরুপা বা বাচো বিবক্ষাতে। বক্ষামাণত্বং ক্রিরাবিশেববহলামিত্যাদৌ জইবাম্। কিংশুকো হি পূর্পাশালী শোভমানোহমুভ্রতে ন পূর্ক্ষ-ভোগ্যফল-ভাগী লক্ষাতে। তথেরমপি কর্ম্মকাগুত্মিকা শ্রেরমাণদশারাং রমণীয়া বাগুপলভ্যতে সাধ্যসাধনসম্বন্ধপ্রতিভানার স্বেষা নিরতিশর্ক্ষলভাগিনী ভবতি কর্মাষ্ট্রান-ফল-ভানিত্যমাদিত মন্বাহ —পূচ্পিতামিতি। বাক্যমেন লক্ষ্যতে অর্থবন্ধপ্রতিভানাং বন্ধবাক্যভাবিত মন্বাহ —পুচ্পিতামিতি। বাক্যমেন লক্ষ্যতে অর্থবন্ধপ্রতিভানাং বন্ধবাক্যভাবিত মন্বাহ —পুচ্পিতামিতি। বাক্যমেন লক্ষ্যতে অর্থবন্ধপ্রতিভানাং বন্ধবাক্যভাবিত হতি। বেদবাদা বেদবাক্যানি তানি চ বহুনামর্থবাদানাং কলানাং সাধনানাঞ্চ বিধিন্দেরাণাং প্রকাশকানি তেরু রতিরাসক্তিন্তিক্রহং তদ্বন্ধপি তেরাং বিশেষণমিত্যাহ—বন্ধবাদেতি। কর্মকাগুনিন্তকলং কথ্যতি—নান্যদিতি। ঈশ্বরো বা নোক্ষো বা নান্তীত্যবং নদস্যো নান্তিকাঃ সন্তঃ সম্যগ্জানবন্তো ন ভবতীত্যর্থ: ॥ ৪২

অনুবাদ। "যাহাদের ব্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধি নাই তাহারা" (যামিমামিত্যাদি। বৈ "এই" বক্ষ্যনাণ "পুলিতা" পুলিত বৃদ্ধের ন্থার শোভমান [আপাততঃ] ক্রমনাণ রমণীর স্বরূপ নাক্য বলিয়া থাকে। কে [তাহারাই]
"অবিপশ্চিতঃ" অলপ্রপ্রজাশালী [অর্থাৎ] অবিবেকী। [তাহারাই] "বেদবাদরত" অর্থাৎ নানাপ্রকার অর্থবাদ বারা ফল সাধনের প্রকাশক বেদবাক্যসমূহে রত। হে পার্থ [এবং] স্বর্গপ্রাপ্তি প্রভৃতি ফলসাধন কর্মা হইতে অন্ত
কিছুই [বেদে] নাই, এই প্রকার বাক্য-প্রয়োগকারী [অর্থাৎ] এই প্রকার
বলাই তাহাদের স্বভাব ॥ ৪২

কামাত্মানঃ স্বর্গপরা জন্মকর্মফলপ্রদাম্। ক্রিয়াবিশেষবহুলাং ভোগৈশ্বর্য্যগতিং প্রতি॥ ৪৩

আইয়। [তে চ] কামাত্মানঃ (কামপরাঃ) বর্গপরাঃ (বর্গপ্রধানাঃ) ভোগৈর্ব্য-গতিং প্রতি ক্রিরাবিশেষবহুলাং জন্মকর্মফলপ্রদাম্ [বাং বাচং প্রবদম্ভি ইতি পূর্ব্বেণাবরঃ] ॥ ৪৩

অনুবাদ। [সেই সক্ল] কামপরায়ণ স্বর্গপ্রধান (অর্থাৎ স্বর্গকেই বাহারা পরম পুরুষার্থ বলিয়া বোধ করিয়া পাকে ভাহারা) ভোগ ও ঐশ্বর্য্য- প্রাপ্তির জন্ম ক্রিমাবিশেষপরিপূর্ণ [এবং] জন্মরূপকর্মফলের হেড় [এইরূপ বাক্য ব্যায়া থাকে]॥ ৪০

ভাষ্য। তে চ কামাত্মান ইতি। কামাত্মানঃ কামস্বভাবাঃ কামপরা ইত্যর্থঃ।
স্বর্গপরাঃ স্বর্গঃ পরঃ পুরুষার্থো বেষাং তে স্বর্গপরাঃ স্বর্গপ্রধানাঃ জন্মকর্ত্মফলপ্রদাং কর্ম্মণ কলং কর্মফলং জনোব কর্মণঃ ফলং জন্মকর্মফলং তৎ প্রদানাতীতি
জন্মকর্মফলপ্রদা তাং বাচং প্রবদন্তীত্যমুবজ্যতে, ক্রিয়াবিশেষবছলাং ক্রিয়াণাং
বিশেষাঃ ক্রিয়াবিশেষাঃ তে বছলা যত্তাং বাচি তাং স্বর্গপগুপুজ্যন্তর্থাঃ বয়া বাচা
বাছল্যেন প্রকাশ্রন্থে, ভোগৈষর্য্যগতিং প্রতি ভোগশ্চ ক্রম্ব্যঞ্চ ভোগৈমর্ব্যে
তর্মোর্যতিঃ প্রাপ্তিঃ ভোগৈমর্ব্যগতিঃ তাং প্রতি সাধনভূতাঃ যে ক্রিয়াবিশেষাঃ
তদ্বছলাং তাং বাচং প্রবদন্তো মূঢ়াঃ সংসারে পরিবর্ত্তর ইত্যভিপ্রায়ঃ ॥ ৪৩

আনন্দ্রিরিটাকা। প্রক্লতান্ প্রবক্ত্নবিবেকিনো ব্যবসায়াদ্যকর্দ্ধিতাকাস্থবসিদ্ধার্থং বিধ্যস্তরেণ বিশিনষ্টি—তে চেতি। তেবাং সংসারপরিবর্তন-পরিদর্শনার্থং প্রস্তাং বাচমেব বিশিনষ্টি—ক্ত্রেমাতি। নম্ প্রাং কামস্থাবদ্ধান্ত্রকং চেতনভ্রেজাবতস্তদাত্মভারপপতেরিতি তজাহ—ক্রামপরা ইতি। তৎপরদ্ধ তত্তৎক্ষার্থিকেন তত্তহপায়ের কর্মধেব প্রকৃত্তত্তরা কর্ম্মপজাসপূর্বকাৎ জ্ঞানাদ্বিহিশ্বেদ্। নম্ কর্মনিষ্ঠানামণি পরমপ্রক্ষার্থাপেক্ষরা মোক্ষোপারে জ্ঞানে ভবত্যাভিষ্থামিতি নেত্যাহ—স্থ্রেতি। তৎপরত্বং ত্র্মিরেবাসক্তরা তদতিরিক্তপ্রদর্যারিত্য-নিশ্চরবন্ধ্ন। উচ্চাবচমধ্যমদেহপ্রভেদগ্রহণং জন্ম। বাচো যথোক্তক্তপ্রদ্বার্থারিতিত্য-নিশ্চরবন্ধ্ন। উচ্চাবচমধ্যমদেহপ্রভেদগ্রহণং জন্ম। বাচো যথোক্তক্তপ্রদানাম্পর্টানানাং বাগদানাদীনাং বিশেবা দেশকালাধিকারিপ্রযুক্তাঃ স্ব্রাহীনিকালমন্ত্রিনানাং বাগদানাদীনাং বিশেবা দেশকালাধিকারিপ্রযুক্তাঃ স্ব্রাহীনিকালকণান্তে থবস্থাং বাচি প্রাচুর্যোগ প্রভিজ্ঞান্তরেনত্যেতদ্বিশদর্ভি—স্থর্গতি। তথাপি তেবাং মোক্ষোপারত্বোপপন্তেন্তরিষ্ঠানাং মোক্ষাভিম্ব্যং ভবিশ্বতি নেত্যাহ—ভোগেতি। যথোক্তাং বাচমভিত্রদতাং পর্যবেদানং দর্শরতি—ভবিশ্বতাহি নেত্যাহ—ভোগেতি। যথোক্তাং বাচমভিত্রদতাং পর্যবেদানং দর্শরতি—ভবিশ্বন্তনামিতি। ১০

অনুবাদ। ভাহারা '[কি প্রকার, তাহাই বলা যাইতেছে] কামান্থান ইত্যাদি। "কামান্থা" কামসভাব [অর্থাৎ] কামপর। "স্বর্গপর" বাহাদের স্বর্গই পরম পুরুষার্থ, তাহারাই [স্বর্গপর] [অর্থাৎ তাহাদিগকেই] স্বর্গপ্রধান [কহা বার]। "জন্মকর্মফলপ্রদা" কর্মের ফলই কর্মফল জন্মরূপ কর্মফল, [এই কর্মের বার]। "জন্মকর্মফলপ্রদা" কর্মের ফলই কর্মফল জন্মরূপ কর্মফল, [এই তাহাকে] জন্মকর্মকর্মপর্যাণ [বলা যাম]; সেই [জন্মকর্মকর্মপর্যাণ] বাণীকে [তাহারা] বলিয়া থাকে [এই প্রকার অবমের] অম্বন্ধ হইতেছে। [সেই বাণীর আর একটি বিশেবণ] "ক্রিয়াবিশেববহুলা" ক্রিয়া সকলের বিশেব [এই অর্থে] ক্রিয়াবিশেব [এই শন্ধটি ব্যবহৃত হইয়াছে] সেই [ক্রিয়াবিশেব] যে বাক্যের বছ প্রকারে বিশ্বমান আছে। [অর্থাৎ] যে বাক্যের ঘারা স্বর্গ পশু প্রক প্রভৃতি ক্রিয়াফল বছলভাবে প্রকাশিত হইয়া থাকে [তাহাকেই "ক্রিয়াবিশেব বছল" বলা যায়]। "ভোগৈম্বর্য গতির প্রতি" ভোগ এবং এম্বর্য [এই অর্থে] ভোগেম্বর্য [এই শন্ধটি ব্যবহৃত হইয়াছে]। তাহাদের [অর্থাৎ ভোগ ও ক্রমর্থ্যের] "গতি" প্রাপ্তি তাহারই [ভোগেম্বর্য প্রাপ্তির] সাধনভূত যে সকল ক্রিয়াবিশেব, তদ্বহৃল সেই সকল বাক্যকে [যাহায়া বলিয়া থাকে] এমন বছতর মৃদ্ধ জন সংসারে পরিবর্ত্তন করিয়া থাকে, ইহাই অভিপ্রায় ॥ ৪৩

ভোগৈশ্বর্য্যপ্রসক্তানাং তয়াপহৃতচেতসাম্। ব্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধিঃ সমাধোঁ ন বিধীয়তে॥ ৪৪

অন্বয়। তরা (পুশিতরা বাচা) অপস্থতচেতসাং ভোগৈশ্ব্যপ্রসক্তানাং সমাধৌ (অন্তঃকরণে] ব্যবসায়াত্মিকা বুদ্ধিঃ ন বিধীয়তে ॥ ৪৪

আনুবাদ। দেই পুলিও বাক্যের দারা যাহাদের চিত্ত মোহিত, এবং বাহারা ভোগ ও ঐশর্ম্যে প্রসক্ত, তাহাদের ফদয়ে ন্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধি উৎপন্ন হয় না॥ 8৪

ভাষা। তেষাঞ্চ ভোগেতি। ভোগেশব্যপ্রসক্তানাং ভোগঃ কর্ত্তব্যমেশ্ব্য-ক্ষেতি ভোগেশব্যরোরের প্রণয়বতাং তদাব্মভূতানাং তয়া ক্রিয়াবিশেষবহলয়া বাচা অপহতচেতসামাচ্ছাদিতবিবেকপ্রজ্ঞানাং ব্যবসায়াত্মিকা সাংখ্যে যোগে বা বৃদ্ধিঃ সমাধী সমাধীয়তেহিদিন্ পুরুষোপভোগায় সর্কমিতি সমাধিরস্তঃকরণং বৃদ্ধিঃ ভিত্মিন্ সমাধী ন বিধীয়তে ন ভবতীত্যর্থঃ ॥ ৪৪

আনন্দ গিরিটীকা। নমু কর্মকাগুনিষ্ঠানাং কর্মাম্ম্ঠারিনামপি বৃদ্ধিভূদিবারেণাস্তঃকরণে সাধ্যসাধনভূতবৃদ্ধিবয়সমূদায়সভবাদক্ষতো মোক্ষো ভবিক্ষৃতি নেত্যাহ—তেষাঞ্চেতি। তদাত্মভূতানাং তয়োরের ভোগৈগর্ম্বারান্ধিকর্ব্রেরেনারোপিতয়োরভিনিবিষ্টে চেতসি তাদাত্ম্যাধ্যাসবতাং বহিক্র্পানামিত্যর্থঃ। তথাপি শাল্লাম্পারিণ্যা বিবেকপ্রক্রমা ব্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধিক্রেনাম্নের্ভীত্যাশক্যাহ—ত্রের্তি। নম্মু সমাধিঃ সংপ্রক্রাতাসংগ্রক্তাভ্রেদেন

ৰিষোচ্যতে তত্ত্ত বুৰিষম্বিধিরপ্রসক্তঃ সন্ কথং নিবিধ্যতে তত্ত্তাহ—স্মা-ধীয়ত ইতি॥ ⁸⁸

অনুবাদ। তাহাদের [কি হয়, তাহাই বলা বাইতেছে বে] ভোগ ইত্যাদি। "ভোগৈখর্য্য প্রসক্তদিগের" ভোগ এবং ঐখর্য্য সাধন করিতে হইবে এই প্রকারে বাহারা ভোগ ও ঐখর্ব্য আসক্তিমুক্ত [অর্থাৎ] ভোগ ও ঐখর্ব্য বাহাদের আত্মত্ত হয়। তাহাদিগের [তাহারা কিপ্রকার হয় ?] সেই ক্রিয়াবিশেব-বহল বাক্যের হারা অপহতেতেতা [অর্থাৎ ঐ সকল বাক্যের হারা তাহাদের] বিবেকপ্রক্তা আছোদিত হয়; [সেই সকল অবিবেকিগণের] "সমাধিতে" [পুক্রের উপভোগের জক্ত] [বাসনার্রণে] সকল বন্ধ বাহাতে সমাধিতে হয়, সেই অন্তঃকরণ [বা] ব্রিতিম্বকে সমাধি [বলা বার] সাংধ্য বা বোগবিবরিণী ব্যবসারাজ্মকা বৃদ্ধি কথনই বিধীরমান হয় না [অর্থাৎ] উৎপর হুইতে পারে না। ইহাই অর্থ ॥ ৪৪

ত্রৈগুণ্যবিষয়া বেদা নিস্ত্রৈগুণ্যো ভবার্চ্ছ্ন। নির্দ্ধ ক্ষো নিত্যসত্ত্বছো নির্য্যোগক্ষেম আত্মবান্॥ ৪৫

আৰ্য়। হে আৰ্কুন, বেলা: ত্রৈগুণ্যবিষয়া: (.আছিরফলপ্রতিপাদকা:) বং নিজৈগুণ্য: (নিকাম:) ভব, তথা নিজুন্ম: (স্থেগুংখরহিত:) নিত্যসবৃত্য: (সলা সম্বর্থাবলমী) নির্ব্যোগক্ষেম: (অলক্ষপ্রাপ্তিসক্পরিপালনপ্রবৃত্তিরহিতঃ) সাম্মবান্ (অপ্রযন্ত:) চ [ভব] ॥ ৪৫

অনুবাদ। তে অর্জুন! বেদ [কর্মকাণ্ড] সকল অন্থির সংসার-ফলেরই অতিপাদক—তুমি নিকাম, স্থগ্যংখরহিত, সদা সন্থগাবলমী, অলক্সাপ্তি ও লক্ষপরিপাদনে প্রবৃত্তিহীন ও প্রমাদরহিত হও॥ ৪৫

ভাষ্য। ব এবং বিবেকবৃদ্ধিরহিতাঃ তেবাং কামান্মনাং ত্রৈশুণ্যেতি।
বৈশ্বণাবিষরাঃ ত্রৈশুণ্যং সংসারো বিষয়ঃ প্রকাশরিভব্যা বেবাং তে বেদাত্রৈশুণ্যবিবরান্তর নিজ্রৈশুণ্যে ভবৃশ্জিন নিজামো ভবেত্যর্থঃ; নিজ্পাঃ স্থধহঃখহেত্
স্প্রতিপক্ষো পদার্থে । দক্ষশন্ধবাচ্যে ততো নির্গতো নিজ্পান্তর দং নিত্যসন্তর্গঃ
সদা সন্তথ্যপ্রিতা ভব; তথা নির্যোগক্ষেমাহত্বপান্তর্গোদানং বোগ উপাত্তভ্ব
সক্ষণং ক্ষেমঃ, বোগক্ষেমপ্রধানভ্ত শ্রের্সি প্রবৃত্তির্ভ্ ইরা ইত্যতো নির্বোগক্ষেমা
তব আন্মবানপ্রমন্ত্রণত ভব। এব তবোপদেশঃ স্বধ্র্যক্তির্ভতঃ ই ৪৫

ঁপানন্দগিরিট্রিক। পবিবেধিনামপি বেদাভ্যাসবভাং- বিবেধবৃদ্ধির-

দেৰ্যতীত্যাশভ্যাহ—য এৰমিতি। তৰ্হি বেদাৰ্থতন্না কামান্মতা প্ৰশক্ষেত্যাশভ্যাহ —নিষ্ট্রেগুণ্য ইতি। ভবেতি পদং নিষ্ দাদিবিশেষণেষণি প্রত্যেকং मक्शारक । खत्रांगार मकामीनाः खगानार शृगांशांशवामिश्रकर्याकरमनमक्ताः সমাহারত্ত্বৈশুণ্যমিত্যদীক্বতা ব্যাচন্টে—সংসার ইতি। বেদশব্দেনাত্ত কর্মকাঞ্চ মেৰ গৃহতে তদভ্যাদবতাং তদৰ্থামুষ্ঠানদারা দংশারগ্রোব্যার বিবেকাবদরোহন্তী-ভার্থ:। ভর্হি সংসারপরিবর্জনার্থ: বিবেকসিদ্ধরে কিং কর্ত্তব্যমিত্যাশব্যাহ— ত্বং ড্বিডি। কথং নিজ্ঞৈগুণ্যো ভবেতি গুণত্তরশু রাহিত্যং বিধীরতে নিত্যদন্ধহো ভবেভি বাক্যশেষবিরোধাদিত্যাশস্থাহ—নিক্ষাম ইতি। সপ্রভিপক্ষর পর-স্পরবিরোধিত্বস্। পদাথে শীতোকাদিলকণো। নিকামতে বলান্নির্গতত্বং শীতো-**কাদিসহিমূবং হেতুমুক্বা** তত্ৰাপি হেৰপেক্ষায়াং সদা সদ্**গুণা**প্ৰিতৰং হেতুমাহ— নিত্যেতি। বোগক্ষেমব্যাবৃত্তচেতগোরকত্তমোভ্যামসংস্পৃষ্টে সন্থমাত্রে সমাপ্রি-ভন্মশক্যমিত্যাশক্যাহ—তথেতি ৷ যোগক্ষেময়োর্জীবনহেতুভরা পুরুষার্থসাধন-দান্নিৰ্যোগক্ষেমো ভবেতি কুতো বিধিরিত্যাশভাহ—যোগেতি। প্রধানত্বং সর্বান্ত স্বারসিকমিতি ততো নির্গমনমলক্যমিত্যাশঙ্ক্যাহ—আত্মবানিতি। **ष्या । व्या मन्त्रा विषयपात्रव । प्रथ । प्रथ । व्या प्रशास्त्रा मृग्क्वियय । प्रथ । व्या ।** মুমুকুদ্বমিছ বিবক্ষিতমিতি নে গ্রাহ—এষ ইতি॥ ৪৫

অনুবাদ। বাহারা এইরূপ বিবেকবৃদ্ধিহীন, সেই সকল কামিগণের
[পক্ষে] ত্রৈগুণ্যত্যাদি "ত্রেগুণ্য-বিবর [শক্ষের অর্থ]; সংসার ; ত্রেগুণ্য অর্থাৎ
সেই সংসার বাহার বিবর [অর্থাৎ প্রতিপাম্ম], সেই বেদকে ত্রেগুণ্যবিবর
[কহে]। হে অর্জ্ন ! তুমি "নিত্রেগুণ্য" হও [অর্থাৎ] নিদাম হও।
"নিদ্দ্র্য" ক্র্যা ও হংথের কারণ পরম্পরবিরোধী পদার্থার হল্ম শক্ষের প্রতিপাম্ম।
সেই হল্ম হইতে নির্গত হও। তুমি "নিত্যসন্বস্থ" সর্বাদা সম্বর্গাপ্রিত হও;
এবং "নির্বোগক্ষম" অলম্ম বস্তুর লাভকে বোগ [কহে], লম্ম বস্তুর রক্ষণকে
ক্ষম [কহে]; বোগ ও ফেমই বাহার প্রধান [লক্ষ্য], তাহার শ্রেরোমার্গে
শ্রের্জি হ্লর; এইজ্ল তুমি বোগক্ষেমরহিত হও। "আর্বান্" ক্রপ্রান্ত হও;
বর্ধান্ত্রানকারী তোমার প্রতি ইহাই উপদেশ ॥ ১৫

যাবানর্থ উদপানে সর্বতঃ সংশুতোদকে।
তাবান্ সর্বেষু বেদেষু ত্রাক্ষণস্থ বিজ্ঞানতঃ ॥ ৪৬
অন্বয়। উদপানে (কুপানে) যাবান্ (কানপানাদিঃ) অর্থঃ, সর্বেডঃ

সংগ্রেজাদকে (মহাব্রদাদৌ) [যথা] তাবান্ অর্থঃ [এবং] সর্কের বেদের্ বাবান্ অর্থঃ [সম্পদ্ধতে] তাবান্ [সর্ক্তিব] বিজ্ঞানতঃ ব্রাহ্মণস্ঠ [ভ্রব-তীতিশেষঃ] ॥ ৪৬

অনুবাদ। স্বরজন [বছ] ক্পাদিতে স্নানপানাদি বে সকল প্রারোজন সাধিত হর, জলপরিপূর্ণ [একটিমাত্র] রহৎ জলাশরেও বেমন সেই সকল প্রকার সর্থই [অনার্বাসে] সাধিত হইরা থাকে, এই প্রকার সকল বেদে বে সকল প্রোজন সাধিত হর, একমাত্র ব্রহ্মজ্ঞানশালী ব্রাহ্মণেরও [অনার্বাসে] ভাহা সকলই সাধিত হর। [যাবভীর পরিচ্ছির স্থণ, তাহা সকলই অথও ব্রহ্মানশে অন্তর্ভূত আছে, ইহাই তাৎপর্য্য]॥ ৪৬

ভাষ্য। সর্কেষ্ বেলোজেষ্ কর্মন্ন যাহ্যক্রাঞ্চনস্তানি কলানি তানি নাপেকতে চেৎ কিমর্থং তানীখরায়েত্যস্থীয়ন্ত ইত্যুচ্যতে শৃণ্ বাবানিতি। যথা লোকে কৃপতড়াগান্তনেক মিন্ উপাদানে পরিচ্ছিয়োদকে যাবান্ যাবৎপরিমাণঃ স্বানপানাদিরর্থঃ কলং প্রয়োজনং স সর্কোহর্থঃ সর্বতঃ সংপ্লুভোদকে তাবানেব সংপদ্ধতে তত্ত্তান্তর্ভবতীত্যর্থঃ। এবং তাবাংস্তাবৎপরিমাণ এব সংপদ্ধতে সর্কেষ্ বেদেষ্ বেদোজেষ্ কর্মন্ন যোহর্থো বিজ্ঞানফলং সর্কতঃ সংপ্লুভি তাদকস্থানীয়ং পরমার্থতিকং বিজ্ঞানতো যোহর্থো বিজ্ঞানফলং সর্কতঃ সংপ্লুভি তাদকস্থানীয়ং তিমিংস্ভাবানেব সংপদ্ধতে তত্ত্ত্ববান্তর্ভবতীত্যর্থঃ। "সর্কাং তদভিসমেতি যৎকিঞ্চ প্রস্লাঃ সাধু কুর্কান্তি যন্তদ্বনেদ যৎ স বেদইতি শ্রুতঃ। 'সর্কাং কর্মাধিলম্' ইতি চ বক্ষ্যতি। তত্মাৎ প্রাক্ জ্ঞাননিষ্ঠাধিকান্মপ্রাপ্তেঃ কর্মণ্যবিদ্ধতেন কৃপতড়াগান্তর্থহানীয়মপি কর্ম্ম কর্ত্বব্যম্॥ ৪৬

আনন্দগিরিটীকা। ঈবরার্পণিধিরা অধর্মান্থভানেহিপি ফলকামনাভাবান্থ বৈষল্যং বোগমার্গন্তেতি মবানঃ শহতে—সূর্ব্বেষিতি। কর্মমার্গন্ত ফলবন্থং প্রতি-লানীতে—উচ্যুক্ত ইতি। কিং তৎফলমিত্যক্তে তদ্বিবরং ক্লোকমবতাররতি— শৃণি তি। বণোদপানে ক্পাদৌ পরিচ্ছিরোদকে লানাচমনাদয়োহর্থো বাবান্থৎ-শহতে স তাবানপরিচ্ছিরে সর্বক্তঃ সপ্লুতোদকে সমুল্লেহস্তর্ভবতি পরিচ্ছিরোদকা-নামপরিচ্ছিরোদকাংশত্বাৎ তথা সর্বেষ্ বেদোক্তেম্ কর্মান্থ বাবানর্থো বিবরবিশেবো-পরকঃ স্থাবিশেবো জারতে স তাবানাত্মবিদঃ স্বরূপভূতে স্থাবহস্তর্ভবতি পরিচ্ছিরানন্দানাম্ অপরিচ্ছিরানন্দান্তর্ভাবাভ্যুপগমার্থ "এতক্তৈবানন্দন্তান্তানি ভূডানি মাত্রাম্পন্তীবন্তি" ইতি শ্রুতেঃ। তথা চাপরিচ্ছিরাত্মানন্দপ্রান্তিপর্যান্ধান্য বাোজ বৈষল্যমিত্যাহ—যার্বানিতি। উক্তমর্থমক্ষ বোৰনরা প্রকটরতি--যুথেতি। উদকং পীরতেহমিরিতি ব্যুৎপত্ত্যা কুপানি-পরিচ্ছিরোদক বিষর্থমূদপানশক্ত দর্শরতি—কুপেতি। কুগাদিগতন্তা-खिरमञ्च मम्राज्यक्किवामख्याः कथिममिथिमिछा। महार्थमक्छ धाराकिनियमकः ব্যুৎপাদরতি—ফলমিতি। বংফলছেন লীয়তে তৎকলমিত্যুচ্যতে তৎ কথং তড়াগাদিকতং স্থানপানাদি তথেত্যাশক্ষ্য তন্তারীয়সো নাশোপণভেরিত্যাহ— প্রয়োজনমিতি ৷ তড়াগাদিপ্রযুক্তপ্রয়োজনত সমুক্রনিমিতপ্রয়োজনমাত্র-ষ্মবৃক্তম্ অক্তন্ত অক্তাম্বাহণণডেরিত্যাশভ্যাহ—ত্ত্ত্ত্তি। ঘটাকাশাদেরিব ৰহাকাশে পরিচ্ছিরোদককার্য্যস্ত অপরিচ্ছিরোদককার্য্যান্তর্ভাবঃ সম্ভবতি তৎ প্রাপ্তা-বিভরাপেকাভাবাদিতার্থ:। পূর্বার্কং দৃষ্টান্তভূতমেবং ব্যাখ্যায় দাষ্টান্তিক মুন্তরার্কং ব্যাকরোতি—এবমিত্যাদিন।। কর্মস্থ বোহর্থ ইত্যক্তৎ ব্যনক্তি—যুহুকর্ম-ফলমিতি। সোহর্থো বিজ্ঞানতো ব্রাহ্মণক্ত যোহর্থস্তাবানের সংপদ্ধত ইতি সৰকঃ । তদেব স্পষ্টয়তি—বিজ্ঞানেতি। তদিন্নস্তর্ভবতীতি শেবঃ। কথং সর্বাং কর্মফলং জ্ঞানফলেহস্তর্ভবতীত্যত্ত প্রমাণমাহ-সর্ব্বমিতি। বংকিমণি প্রস্লাঃ সাধু কর্ম কুর্বস্তি তৎসর্বাং স পুরুষোহভিসমেতি প্রাপ্নোতি যঃ পুরুষন্তদ্বেদ বিজ্ঞানাতি বদ্বস্থ স রৈক্রো বেদ তদ্বেম্বমিতি ঐতেরর্থ:। কর্মকলক্ত সঞ্জঞ্ জানফলেংস্তর্ভাবঃ সংবর্গবিছায়াং শ্রায়তে কথমেতাবতা নিগুণজ্ঞানফলে কর্মফলা-ন্তর্ভাবঃ সম্ভবতীত্যাশঙ্ক্যাহ—সূর্ব্বমিতি। তর্হি জ্ঞাননিষ্ঠেব কর্মব্যা ভাবতৈব কর্ম্মলক্ত লব্ধতরা কর্মাল্প্রানানপেক্ষণাদিত্যাশব্যাহ—তত্মাদিতি ৷ যোগ-মাৰ্গক্ত নিক্ষণভাবস্তচ্ছকাৰ্থ: ॥৪৬

অনুবাদ। দক্ল প্রকার বেদোক্ত কর্ম্মস্তে যে সকল অনম্ভ ফল
[উক্ত ইইরাছে] তাহা যদি [মুমুকুর] অপেক্ষিত না হর, তাহা ইইলে কেন
ঐ সকল কর্ম ঈশ্বরার্পণ-বৃদ্ধিতে অন্তুষ্ঠিত ইইরা থাকে? [এই প্রাপ্তের উন্তর]
বলা বাইতেছে, শুন—যাবানিত্যাদি। লোকে যে প্রকার কুপতড়াগপ্রভৃতি অনেক্ত "উদপানে" স্বরজলাশয়ে যাবৎ পরিমাণ স্থান পান প্রভৃতি "অর্থ"
ফল প্ররোজন [সাধিত হয়], সেই সকল প্রয়োজনই তাবৎপরিমাণেই দর্ববিতঃসংগ্লুতোদকে [জলপূর্ণ বৃহৎ জলাশয়ে] অনারাসে সম্পন্ন হয় [অর্থাৎ]
তাহাতেই অন্তর্ভূতি হয়। এই প্রকার তাবৎপরিমাণেই সম্পন্ন হয় [ক্ষেণ্ড]
সকল বেদে [অর্থাৎ] বেদোক্ত সকল কর্ম্মে যে এর্থ [ক্ষর্থাৎ]
বে কর্ম্মকল, সেই অর্থ সকল পরমার্থতিক্ত সন্ন্যাদী বাজ্ঞবির স্পর্মাণ্ড সম্পন্ন হইরা থাকে
সংগ্লুতোদকস্থানীর যে অর্থ, তাহাতে তাবৎ-পরিমাণেই সম্পন্ন হইরা থাকে

[অর্থাৎ তাহার মধ্যে নিবিষ্ট হয়]। এই বিষয়ে প্রমাণস্বরূপ শ্রুতিও আছে বে, "প্রজাগণ বাহা কিছু সৎ কর্ম করে, তাহার ফল সেই ব্রহ্মজ্ঞানের ফলের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া থাকে। সেই (রৈক) বাহা [ব্রহ্মবন্ধ] জানিতেন, সেই (ব্রহ্মবন্ধ) বে জানিবে" ইত্যাদি। সকল কর্ম্মই জ্ঞানের মধ্যে নিবিষ্ট হয়, ইহা এই গীতাতেও বলিবেন, স্মৃতরাং জ্ঞাননিষ্ঠার অধিকারপ্রাধ্যির পূর্ক্মেক্মাধিকারী জীবের কুপ্তড়াগাদিফলন্থানীয় হইলেও কর্মাকর্ম্বর্যা ৪৬

কর্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেরু কদাচন। মা কর্মফলহেতুভূ মা তে সঙ্গেহস্তকর্মণি॥ ৪৭

অনুষ্ । তে (তব) কর্মণি এব অধিকার:, ফলের্ অধিকার: (কর্মফল-ভূষণ) মা [ভবন্বিভি শেষ:]; বং কর্মফলহেত্ম । ভূ: ; । তথা] তে (তব)অকর্মণি (কর্মাকরণে) সঙ্গ: (প্রীতিঃ) মা (অন্ত) ॥ ৪৭

আমুবাদ। তোমার কর্মোতেই অধিকার আছে। কোন অবস্থাতেই ফলে অধিকার না হউক। তুমি কর্মফল লাভের জন্ত আসক্তি করিও না [এবং] কর্মের অকরণেও যেন তোমার প্রীতি না হয়॥৪৭

ভাষ্য। তব চ কর্মনীতি। কর্মণোবাধিকারো ন আননিষ্ঠারাং তে তব তত্র চ কর্ম কুর্মতো না ফলেমধিকারোইস্ত কর্মফলত্কা না ভূৎ কদাচন কন্তাকিদণ্যবস্থারামিতার্থ: বদা কর্মফলে তৃষ্ণা তে স্থাৎ তদা কর্মফল্প্রাপ্তে হেড্ছিঃ স্তাঃ এবং মা কর্মফলহেডুভূ বদা হি কর্মফলত্কাপ্রযুক্তঃ কর্মণি প্রবর্ততে তদা কর্মফলক্ষৈব জন্মনো হেড্রুবেৎ। বদি কর্মফলং নেয়তে, কিং কর্মণা হঃখ-রূপেণেতি মা তে তব সঙ্গোহস্তকর্মণ্যকরণে প্রীতিমাভিৎ॥ ৪৭

আনন্দ গিরিটীকা। তর্হি পরম্পরয়া প্রকার্থনাধনং বোগমার্গং পরিতাজ্য সাক্ষাদেব প্রকার্থকারণমাত্মজ্ঞানং তদর্থমুপদেষ্টবাং তব্দ হি ম্পৃহরতি
মনো মদারমিত্যাশঙ্ক্যাহ—তব চেতি। তর্হি তৎফলাভিলাবোহিপি ভাদিতি
নেত্যাহ—মা ফলেম্বিতি। পূর্ব্বোক্তমেবার্থং প্রপঞ্চরতি—মা কর্ম্বেতি।
ফলাভিসদ্ক্যমন্তবে কর্মাকরণমেব শ্রদ্ধ্যামীত্যাশঙ্ক্যাহ—মা ত ইতি। জ্ঞানানধিকারিণোহিপি কর্ম্বত্যাগপ্রসক্তিং নিবারয়তি—কর্মাণ্যেবেতি। কর্মণ্যেবেত্যেরকারার্থমাহ—ন জ্ঞানেতি। ন হি তত্রাত্রান্ধণশু স্পারপক্ষকারশু মুপ্যোহধিকারঃ সিধ্যজীতার্থঃ। ফলেন্তর্হি বন্ধো হর্বারঃ ভাদিত্যাশন্থাহ—তত্ত্রেতি।
কর্মণ্যাধিকারে সতীতি সপ্রমার্থঃ। ফলেন্থবিকারাভাবং ফোরয়তি—

কর্ম্মেতি। কর্মান্থপ্তানাৎ প্রাগৃর্জং তৎকালে চেত্যেতৎ কলাচনেতি বিবক্ষিতমিত্যাহ—ক্স্মাঞ্চিলিতি। ফলাভিসন্ধানে লোবমাহ—যুদ্দেতি। এবং কর্ম্মফলতৃক্ষা বারেণেত্যর্থ:। কর্মফলহেতৃত্বৎ বির্ণোতি—যুদাহীতি। তর্হি বিফলং ক্রেশাত্মকং কর্ম ন কর্ত্তব্যমিতি শক্ষামন্থভাব্য দ্বর্গতি—যুদ্দীত্যাদিনা।
অকর্মাণিতে সলোমা ভূলিত্যক্ষমেব স্পষ্টরতি—অকরণইতি॥ ৪৭

অকুবাদ। সেই বিষয়ে [বলা বাইতেছে বে] কর্মণীত্যাদি। "তে" তোমার জ্ঞান-নিষ্ঠায় অধিকার নাই [কিন্তু] কর্মেই অধিকার আছে। কর্ম্ম করিতে করিতে তোমার কলে অধিকার না হৌক [অর্থাৎ] কর্মফলে তৃষ্ঠা না হৌক। "কলাচন" কোন অবস্থাতেই ইহাই অর্থ। যখন তোমার কর্মফলে তৃষ্ঠা হইবে তখনই তৃমি কর্মফলপ্রাপ্তির হেতৃ হইবে, [তৃমি] এই প্রকার কর্মফলপ্রাপ্তির হেতৃ হইও না। যখন কর্মফলের তৃষ্ঠাবলে [লোক] কর্মে প্রবৃত্ত হয়, তখন [দে] কর্মফলের উৎপত্তির প্রতি কারণ হয়। ["বদি কর্মে ফলই অভিলবিত না হইল, তবে ছঃখকর কর্ম্ম কেন করিব ৽]" এই প্রকার সঙ্গ জোমার অকর্মে [বেন] না হয় [অর্থাৎ] কর্ম্মের অকরণে [বেন] প্রীতি না হয়॥ ৪৭

যোগস্থঃ কুরু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ধনপ্পয়। সিদ্ধাসিদ্ধ্যোঃ সমো ভূজা সমস্বং যোগ উচ্যতে॥ ৪৮

্ **অব্যা ।** [হে] ধন এয় ! সিদ্ধাসিদ্ধো: সমো ভূমা [তথা] সঙ্গং ভ্যক্তা বোগহ: [সন্] কর্মাণি কুরু। [সিদ্ধাসিদ্ধো:] সমস্বং (ভূস্যস্বং) রোগ: উচ্যতে ॥ ৪৮

অমুবাদ। হে ধনঞ্জ ! [অভিলখিত ফলের] সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে একরূপ থাকিয়া আসক্তি পরিহারপূর্বক যোগাবলম্বনে কর্ম সকল অমুঠান কর। সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে একরূপতাকেই যোগ বলে॥ ৪৮

ভাষ্য। যদি কর্মফলপ্রায়ক্তেন ন কর্ত্তব্যং কর্ম তর্হি কর্ত্তব্যমিত্যচ্যতে যোগস্থ ইতি। যোগস্থঃ সন্ কুরু কর্মাণি কেবলমীখরার্থং তত্তাপীখরো মে ভূষাভিতি সঙ্গং ত্যকা ধনপ্রয়। ফলত্কাশ্ন্তেন ক্রিয়মাণে কর্মণি সম্বভ্জিকা জ্ঞানপ্রাপ্তিলক্ষণা সিদ্ধিন্তব্বিপর্যয়কা অসিদ্ধিঃ তরোঃ সিদ্ধাসিজ্যোরণি সমঃ ভূষ্যোভ্জা কুরু কর্মাণি-। কোহসো যোগঃ যক্তম্বং কুর্বিভ্যুক্তমিদমেব তৎ সিদ্ধাসিজ্যোঃ সমৃত্ধ বোগ উচ্যতে॥ ৪৮

জানন্দণিরিটীক।। আগজিরকরণে ন যুক্তা চেন্তর্থি ক্লেশাক্ষকং কর্মা কিমুদ্দিশু কর্ম্বব্যমিত্যাশকামন্ত্র শ্লোকান্তরমবতারয়তি—যদিত্যাদিনা। বক্ষ্যন্দাগোস্দিশু তরিটো তৃষা কর্মাণি ক্লেশাত্মকান্তণি বিহিত্তাদমূতিঠেত্যাহ— যোগন্থঃ সিমিতি। কর্মান্তলাদেশুং দর্শয়তি—কেবলমিতি। কর্মান্তলাদেশুং দর্শয়তি—কেবলমিতি। কর্মান্তলাদেশুং তংপ্রসাদনার্থমন্তলানিত্যথঃ। তর্ধি ঈশরসজোবোহতি লাবগোচরীত্তো ভবিষ্যতি নেত্যাহ—ক্রাপীতি। ঈশরপ্রসাদনার্থে কর্মান্তলাদ্ধানিক ক্রিক্তি প্রেণি সম্বন্ধঃ। আকাজ্মিক প্রেরিত্বা সিদ্দিশার্থমাহ—ফলেতি। তদ্বিপর্যয়লা স্বাভিদ্দিকরা জ্ঞানাপ্রাপ্তিলকণেতি যাবং। কর্মাণাম্বতিঠতো যোগমুদ্দিশু শেষতরা প্রক্রতমাকাজ্ঞাপ্রকং প্রকৃতি—ক্রেইসাবিত্যাদিনা॥ ৪৮

অনুবাদ। যদি কর্মফলপ্রযুক্ত হইরা [অর্থাৎ কর্মের বাহা
ফল, তাহা আমিই ভোগ করিব, এই প্রকার বৃদ্ধিযুক্ত হইরা] কর্মের
অপ্রধান করিবে না, তবে কিরপে কর্ম করিতে হইবে ? [এই প্রকার
প্রপ্রের উত্তরে] বলা যাইতেছে যে—যোগন্ধ ইত্যোদি। যোগন্ধিত হইরা
কেবল ঈশরার্থ কর্মসকল কর। তাহাতেও [বিশেষ এই যে] "ঈশর আমার
প্রতি তৃষ্ট হউন" হে ধনঞ্জয়! এই প্রকার সক্ষও পরিত্যাগ করিরা
[কর্মান্মন্তান করিবে] । কর্মফলের প্রতি তৃকা পরিত্যাগ করিরা, কর্মান্মন্তান
করিবে সম্বন্ধনি ভারা যে জ্ঞানপ্রাপ্তি হয়; [তাহাকেই] সিদ্ধি বলা বার,
তাহারই বিপর্যায় (সন্থান্ডদি) জনিত অজ্ঞান প্রাপ্তি [ই] অন্তদ্ধি । সেই
সিদ্ধি ও অসি দ্ধিতে সম (তুল্য) হইরা কর্ম্ম কর । যে যোগ অবসম্বনে
কর্ম্ম করিতে হইবে—ইহা বলা হইরাছে, সেই যোগ কি প্রকার ?—
[তাহার উত্তর এই যে] সেই সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে সমতাকেই যোগ বলা
বার ॥ ৪৮

দূরেণ হ্বরং কর্ম বৃদ্ধিযোগান্ধনঞ্জয়। বুদ্ধো শরণমশ্বিচ্ছ রূপণাঃ ফলহেতবঃ॥ ৪৯

আত্ময়। হে ধনঞ্জ ! কর্ম বৃদ্ধিযোগাৎ দূরেণ (অতিশরেন) অবরং (নিরুষ্টং); [দং] বৃদ্ধো শরণম্ (আশ্রম্) অধিক (প্রার্থরত) রুপণাঃ (দীনা এব) ফলহেতবঃ [ভবস্তি] ॥ ৪৯

অকুবাদ। হে ধনঞ্জ ৷ [কামা] কর্ম, বুদ্ধিযোগ হইতে অভ্যন্ত

নিয়ন্ত স্থান প্রাথনা কর। বাহারা ক্রপণ .(ফ্র্রলব্দর), ভাহারাই ফলভ্রন্থব্রু [হইরা কর্মাহার্টান করে] ॥ ৪৯

ভাষ্য। বং পুনঃ সমন্বৃদ্ধিযুক্তমাবরারাধনার্থং কর্ম এতস্মাৎ কর্মণঃ
কুরেণেতি। দূরেণ অতিবিপ্রকর্মেণ হি অবরং নিক্কাইং কর্ম ফলার্থিনা ক্রিয়নাণং
বৃদ্ধিয়োগাং সমন্বৃদ্ধিযুক্তাৎ কর্মণো জন্মরণাদিহেতৃত্বাদ্ ধনপ্রয়। বত এবং
বোগবিষয়ারাং বুদ্ধো তৎপরিপাকজারাং বা সাধ্যবুদ্ধো শরণমাশ্রয়মভরপ্রাপ্তিকারণম্বিদ্ধ প্রার্থর পর্ম।র্থজ্ঞানশরণো ভবেত্যর্থঃ। যতোহবরং কর্ম
কুর্মাণাঃ ক্বপণা দানাঃ ফলহেতবঃ ফলতৃক্যাপ্রযুক্তাঃ সন্তঃ "যো বা এতদক্ষরং
কার্মি অবিদিয়া অন্নাৎ লোকাৎ প্রৈতি স ক্বপণঃ" ইতি শ্রুতঃ ॥ ৪৯

আনন্দগিরিটীক।। কিমিতি যোগছেন তত্ত্জানমুদিখ কর্ম কর্ত্তব্যং ফলাভিলাবেণাপি তদমুঠানত স্থলভবাদিত্যাশব্য বণোক্তবোগযুক্তং কর্ম স্থবত্ব-নস্তরক্লোকমুখাপরতি—য়ৎ পুনরিতি। অবরং কর্ম বৃদ্ধিসম্বদ্ধবিধুরমিতি শেষ:। বৃদ্ধিৰ্কত বৃদ্ধিৰোগাণীনং প্ৰকৰ্ষৎ স্চয়তি—বৃদ্ধীতি। বৃদ্ধিসম্বদ্ধাভ্যাং ৰুৰ্দ্মণি প্ৰবৰ্ধনিকৰ্বন্নোৰ্ভাবে করণীরং নিযচ্ছতি—বুদ্ধাবিতি। যভু ফলেচ্ছ-দ্বাপি কর্মান্ত্রানং স্করমিতি তত্তাহ—কুপণেতি। নিরুষ্টং কর্মেব বিশিনটি— ফলার্থিনেতি। কমাৎ প্রতিযোগিনঃ সকাশাদিদং নিরুষ্টমিত্যাশহ্য প্রতীক-সুপাদার ব্যাচষ্টে – বুদ্ধীত্যাদিনা। কলাভিলাবেণ ক্রিয়মাণক্ত কর্মণো নিরুষ্টমে হেতুমাহ—ক্র্যোতি। সমন্ত্রিযুক্তাৎ কর্মণঃ তদ্ধীনন্ত কর্মণো জন্মাদিহেতুম্বন মিক্টজে ফলিতমাৎ—য়ত ইতি। বোগবিষয়া বুদ্ধি: নমন্তবুদ্ধি:। বুদ্ধিশন্সার্থা-ভরমাহ—তৎপরিপাকেতি। তচ্চলেন সমন্বর্দ্দিসমন্বিতং কর্ম্ম গৃহতে। তন্ত পরিপাকতংফলভূতা বৃদ্ধিভদি:। শরণশক্ত পর্যারং গৃহীতা বিবক্ষিতমর্থমাহ— অভয়েতি। স্থমীমবিবক্ষিষা দিতীয়ং পক্ষং গৃহীষা বাক্যর্থমাহ-পরমা-র্থেতি। তথাবিধজ্ঞানশরণত্বে হেতুমাহ—যত ইতি। ফলহেতুবং বিরুণোতি —ফলেতি। তেন পরমার্থজ্ঞানশরণতৈব যুক্তেতি শেষ:। পরমার্থজ্ঞান-ৰ্হিৰ্পানাং ক্লপণৰে প্ৰতিং প্ৰমাণয়তি—যো• বা ইতি। অনুলাদিবিশেষণ মেভূদিভূাচ্যতে॥ ৪ :

অনুবাদ। দিখনানাধনার্থ সমন্ত্রিযুক্ত বে কর্ম, সেই কর্ম হুইছে [:কাম্যকর্ম কি প্রকার নিরুষ্ট তাহাই বলা বাইতেছে বে] দুরেণেত্যাদি "দুরেণ" • [ইহার অর্থ] অতিবিপ্রকৃত্তরপে "অবর" নিরুষ্ট [কি ? তাহা বলা বাইতেছে] ফলার্থী পুরুষ বে সকল কর্মের অনুষ্ঠান করে, তাহা [কাহা হুইতে ?] বৃদ্ধিবাগ হইতে (অর্থাৎ সমন্তবৃদ্ধিযুক্ত কর্ম হইতে)। হে ধনঞ্জয় [কাম্যকর্ম] জনমন্তবাদির কারণ [এই জন্ত সমন্তবৃদ্ধিযুক্ত কর্ম হইতে অভিশর নিক্ষ ট্রি বে কারণ কাম্যকর্মের এইরপ নিক্ষ ট্রা (এই নিমিন্ত] ভূমি বোগবিষরিণী বৃদ্ধি অথবা ভাহার পরিণামে উৎপন্ন সাভ্যাবৃদ্ধিতে "শরণ" অভন্নপ্রাপ্তির কারণ আশ্রম "অবেষণ কর" প্রার্থনা কর অর্থাৎ পরমার্থজ্ঞানপরায়ণ হও। কারণ, বাহারা "ফলহেভূ" ফলভ্রুবাবশে "অবর" নিক্ষ কর্মা থাকে, ভাহারা "ক্রপণ" দীন (হুর্বলহাদয়) "তে গার্গি, যে ব্যক্তি এই অবিনাশী ব্রশ্ধকে না জানিয়া, এই লোক হইতে পরলোকে গমন করে, সে ক্রপণ" এইশ্রুভিপ্রমাণের ছারা [ও ইহা] সিদ্ধ ইইয়াছে ॥ ৪৯

বৃদ্ধিযুক্তো জহাতীহ উত্তে স্থক্তত্বন্ধতে। তম্মাদ্ যোগায় যুজ্যস্ব যোগঃ কর্মস্থ কৌশলম্॥ ৫০

আন্তর্ । বৃদ্ধিযুক্তঃ (সমত্বৃদ্ধিনান্) ইহ (অসিন্ লোকে) উত্তে স্থক্ত ছক্কতে (প্ণ্যপাপে) জহাতি (পরিত্যজ্ঞতি) তসাৎ [হেতোঃ] যোগায় [মং] যুক্তাম্ব (প্রবৃত্তো ভব) কর্মান্ত কোনলং (ঈশরাপিতিধিয়া সমত্বৃদ্ধিঃ)যোগ উচ্যতে॥ ৫০

অকুবাদ। সমন্বৰ্জিযুক্ত ব্যক্তি এই লোকে পুণ্য ও পাপ পরিত্যাপ করিয়া থাকে। এই কারণ ভূমি যোগ করিতে প্রবৃত্ত হও—"ঈবরে চিত্ত দর্পণপূর্বক সমন্বৰ্জিরপ" কৌশলকেই যোগ বলা যায়॥ ৫•

ভাষ্য। সমস্বৃদ্ধিযুক্তঃ সন্ স্বধর্দামস্থিত বং কলং প্রাপ্নোতি তৎ
খণ্—বৃদ্ধীতি। বৃদ্ধিযুক্তঃ সমত্বিষয়া বৃদ্ধা যুক্তো বৃদ্ধিযুক্তো জহাতি পরিতাজতি ইহ অমিন্ লোকে উত্তে স্কুতগ্রুতে পুণাপাপে সম্বভ্দিজানপ্রাপ্তিবারেণ
যতন্তমাৎ সমত্বৃদ্ধিযোগায় যুজ্যস্থ ঘটসা। যোগো হি কর্মস্র কৌশনং স্বর্দ্ধাব্যেষু
কর্মস্ন বর্তমানত যা সিদ্ধাসিদ্ধ্যাঃ সম্ববৃদ্ধিরীশরার্দ্ধিতচেতন্তমা তৎকৌশনং
কুশনভাবঃ। তদ্ধি কৌশলং যদ্বদ্ধতাবাত্তি কর্মাণি সম্ববৃদ্ধা স্বভাবারিবর্তম্ভা তন্তমাৎ সমত্বৃদ্ধিযুক্তো ভব ত্বম্॥ ৫ •

আনন্দ পিরিটীক। প্রেজিদমনবৃদ্ধিযুক্ত বর্ধান্তর্ভানে প্রবৃত্ত কিং তাদিত্যাশব্যাহ—সমুদ্ধেতি। যুদ্ধিযুক্তঃ অধর্মাধ্যং কর্মান্তর্ভারিতি শেবঃ। বৃদ্ধিবাগত ফলবত্তে ফলিতমাহ—তুন্মাদিতি। পুর্বার্দ্ধং ব্যাচটে—বৃদ্ধী-ত্যাদিনা। নম্ম সমন্তবৃদ্ধিমাত্রার পুণ্যপাপনিবৃত্তির্তৃ পরমার্ধদর্শনবভত্ত-

নির্বাভি-প্রাসিদ্ধেরিতি জুলাই—সান্তব্ধিতি। উত্তর্গর্ধং ব্যাচাউ—ভুম্মাদিতি। বর্ধশমন্ত্রতিভাগে বংগাক্তবোগ্যার্থং কিমুর্থং মনো শ্লেজনীয়মিত্যাশভাগে— যোগেলি-ভাগিত। তর্তি বংগাক্তবোগসামর্থ্যাদের দর্শিক্তফলবিজেরনাস্থা অধ্যান্ত্রভানে প্রাপ্তেভাগিত। ক্ষরাপিভিচেতজ্ঞরা কর্মান বর্তমান জার্হভান-নির্ভত্ত যা যথোকা বৃদ্ধিন্তত্তের্ কৌশলমিতি যোজনা। কর্মণাং বন্ধসভাব-বান্তদহুটানে বন্ধান্তবন্ধঃ ত্যাদিত্যাশক্য কৌশলমের বিশাস্বতি—ভুদ্ধীতি। সমন্তব্দেরের ফলন্দে স্থিতে ফলিতমুগসংহরতি—ভুম্মাদিতি॥ ৫০

অনুবাদ। সমন্ব্ৰিযুক্ত হইয়া কৰ্মান্ত্ৰ্ঠানকারী যে ফল প্ৰাপ্ত হয়, তাহা প্রবণ কর ব্ৰীত্যাদি। বৃদ্ধিযুক্ত (সমন্ববিদ্ধিশী বৃদ্ধি যাহার আছে, সেই বৃদ্ধিযুক্ত) ব্যক্তি এই লোকে পাপ ও পুণ্য এই উভন্নই পরিত্যাস করিয়া থাকে। যে কারণ চিত্তক্তি ও জ্ঞান-প্রাপ্তি হারা [পাপ ও পুণ্য পরিত্যাগ করে], এইজন্ম তৃমি সমন্ব্ৰ্জিরপ যোগ লাভ করিতে যন্ত্রবান্ হও।
কর্মাসমূহে কৌললকে[ই] যোগ [বলা যায়]। স্বধর্মনামক কর্মাসমূহে বর্ত্তমান
ব্যক্তির [কর্মাফলের] সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে ঈশ্বরার্পিতিচিত্ততানিবন্ধন যে
সমন্বর্দ্ধি, তাহা কৌলন [অর্থাৎ] কুললতা। তাহাই কৌলল [হওয়া
উচিত] যাহার বলে বৈদ্কিকর্মাসকল বন্ধস্বভাব হইয়াও সমন্বর্দ্ধিয়ারা নিজ
স্বভাব হইতে নির্ভ হয় [অর্থাৎ আর স্থপত্তংথ পুণ্যপাপরণ বন্ধের কারণ হয় না]
সেই কারণে তুমি সমন্বর্দ্ধিযুক্ত হও॥ ৫০

কর্ম্মজং বৃদ্ধিযুক্তা হি ফলৎ ত্যক্তা মনীষিণঃ। জন্মবন্ধবিনিমুক্তাঃ পদং গচ্ছস্ত্যনাময়মু॥ ৫১

আন্থ্য়। বৃদ্ধিয়কা: কর্মজং ফলং ত্যক্তা মনীবিণ: [ভূষা] জন্মবন্ধবিনি-শুক্তা: [সন্তঃ] অনাময়ং পদং (মোকং) গচ্ছন্তি॥ ৫১

অনুবাদ। সমন্তর্জিযুক্ত মনীবিগণ, কর্মজন্ত ফল পরিত্যাগপুর্বক জন্মরপবন্ধ হইতে বিনিমুক্তি হইয়া অনাময়পদ (মোক্ষ) প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ৫>

ভাষ্য। যশাৎ কর্মজমিতি। কর্মজং ফলং তাজা ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধ: । ইষ্টানিষ্টনেহপ্রাপ্তিঃ কর্মজং ফলং কর্মজ্যো জাতং বৃদ্ধিযুক্তাঃ সমত্ব-বৃদ্ধিযুক্তা হি যশাৎ, ফলং, তাজা পরিতাজা মনীবিণঃ জ্ঞানিনো ভূতা জন্মবন্ধ-বিনিমুক্তা জ্ঞাবৈ বন্ধঃ জন্মবন্ধ: তেন বিনিমুক্তা জীবন্ত এব জন্মবন্ধবিনিমুক্তাঃ সন্তঃ পদং পরমং বিকোমে ক্লাখ্যং গছড়োনাম্বং সর্কোপ্রবর্তিভমিতার্থঃ। জথবা বৃদ্ধিযোগাদ্ধনপ্রহেত্যারভা প্রমার্থনশ্লকেশ্ব সর্কতঃ সংস্কৃতাদক-হানীয়া কর্মবোগজ-সন্তভ্জিজনিভা বৃদ্ধি শিতা সাক্ষাৎ স্কৃতত্ত্তপ্রহাণাদিহেত্ব-প্রবাৎ॥ ৫১

আনন্দগিরি-টীকা। সমত্ব্দিযুক্তস্য স্বকৃতহৃষ্ণততৎফলপরিত্যাগেৎপি কণং মোক্ষ: ভাদিত্যাশব্যাহ—যুন্মাদিতি | সম্বৰ্দ্ধ্যা ধন্মাৎ কৰ্মান্নভীন্নমাণং ছরিতাদি ভ্যানমতি ভন্নাৎ পরম্পররাসৌ মুক্তিহেতুরিভার্থঃ। মনীবিণো হি জানাতিশরবরো বৃদ্ধিযুক্তাঃ সম্ভঃ স্বধর্মাধ্যং কর্মাসূতিগ্রস্ততো জাতং ফলং (मर्थार्डमः रिषा अन्ननक्शाम्विनिर्मा्ङा देवस्वरः भमः मर्समःमात्रम्भन्तृसः প্রাপ্নবন্তীতি লোকোক্তমর্থৎ লোকবোজনয়া দর্শমতি—কর্মাজমিত্যাদিনা। हेर्छि (मरहा (मरामिनकरणाश्निरही (मरस्वित्रगामिनकनस्व आसिरत्र कर्याणा জাতং ফলং তদ্যথোক্তবৃদ্ধিযুক্তা জ্ঞানিনো ভূত্বা তদ্বলাদেব। পরিতাজ্য বন্ধবিনি-র্মোকপূর্বকং জীবন্মুক্তাঃ সম্ভো বিদেহকৈবল্যভাজো ভবস্তীত্যর্থ:। বুদ্ধষোগা-দিত্যাদৌ বৃদ্ধিশবস্থ সমন্তবৃদ্ধিররর্থো ব্যাখ্যাতঃ সম্প্রতি পরম্পরাং পরিষ্ত্য স্কৃতগৃষ্ণতপ্রহাণহেতৃত্বস্ত সমন্ববুদ্ধাবসিদ্ধেঃ বুদ্ধিশব্দস্ত বোগ্যমর্থান্তরং কণর্যতি-অথবেতি। অনবচ্ছিরবস্তগোচরত্বেনানবচ্ছিরতং তন্তাঃ স্চয়ন্ বুদ্ধান্তরাদ্-বিশেষং দর্শরতি—সর্ববিতইতি। অসাধারণং নিমিত্তং তত্তা নির্দ্দিশতি— কর্ম্মেতি। ষণোক্তবুদ্ধিশনাৰ্থতে হেতুমাহ-সাক্ষাদিতি। মে কিবাদিশলার্থঃ যন্ত্রিন কর্মণি ক্রিয়মাণে প্রমার্থদর্শনলক্ষণা বৃদ্ধিকদেখাতরা যুক্তাতে তত্মাৎ কর্মণঃ সকাশাদিতরৎ কর্ম তথাবিধাদেশুভূতবৃদ্ধিসম্বন্ধবিধুরমতি-শরেন নিষ্কব্যতে। অভশ্চ পরমার্থবৃদ্ধিমুদ্দেশুদ্বেনাপ্রিত্য কর্মাহঠাতব্যং পরি-চ্ছিন্নং ফলাস্তরমূদ্দিশু তদ্মষ্ঠানে কার্পণ্যপ্রসঙ্গাৎ, কিঞ্চ পরমার্থবৃদ্ধিমূদ্দেশ্রামাশ্রিত্য কর্মান্থতিষ্ঠুন্ অন্তঃকরণগুজিবারা প্রমার্থদর্শনসিদ্ধী জীবত্যেব দেহে স্বক্নতাদি হিদা মোক্ষমধিগচ্ছতি, তথাচ প্রমার্থদর্শনলক্ষণযোগার্থ মনো ধার্মিতব্যং বোগ-শব্দিতং হি প্রমার্থদর্শনমূদেশুভয়া কন্ম অসুভিষ্ঠতো নৈপুণামিনাতে। এদি চ ·পরমার্থদর্শনমৃদ্দিশ্র তদ্যুক্তা: সম্ভ: সমারভেরন্ কর্মাণি তদা তদ্যুঠান**জ**নিত-বুদ্ধিওদ্যা জ্ঞানিনো ভূষা কর্মজং ফলং পরিত্যজ্ঞা নিুমুক্তবদ্ধনা মুক্তিভাজো ভবস্তীভ্যেবমন্মিন্ পক্ষে শ্লোকত্রমাক্ষরাণি ব্যাখ্যাতব্যানি ॥ ৫১

অনুস্বাদ। যেহেতু কর্মজন্ত ইত্যাদি। "কর্মজ ফল পরিত্যাগ করিয়া" 'এই প্রকার দ্রায়য় [করিতে হইবে]। ইষ্ট বা অনিষ্ঠ দেহের প্রাপ্তিই, কর্মজ ফল, কর্ম্মের ফলই কর্মজ ফল [বলিয়া অভিহিত হয়]; যে কারণ বৃদ্ধিযুক্ত (সমত্ত্বিষ্ক্ত) ব্যক্তিগণ ফল পরিত্যাগ পূর্বক মনীয়ী (জ্ঞানী) হইরা, ক্ষাবন্ধবিনির্ম্ম্ব হইরা (জ্মারপ [যে] বন্ধ, [তাহা] ইইতে পরিত্রাণ লাভ করিয়া) বিষ্ণুর মোক্ষনামক পরমপদ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। [ঐ পরমপদ] অনামর (সর্বপ্রকার উপদ্রবর্হিত) ইহাই [মোকের] অর্থ। অথবা "বৃদ্ধিযোগান্ধনঞ্জন" ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া, পরমার্থক্তানরূপ "সর্বতঃ সংপ্লুতোদক" হানীয় কর্মযোগজনিত চিত্তভদ্ধির ফলবরূপ বৃদ্ধিই প্রদর্শিত হইয়াছে [কারণ এতাদৃশ বৃদ্ধিতেই] সাক্ষাৎ স্কৃত্ত ও চ্য়তের বিনাশ প্রভৃতির কারণতা শ্রুতিতে উল্লিখিত হইয়াছে॥ ৫১

যদা তে মোহকলিলং বৃদ্ধিব ্যতিতরিয়তি। তদা গস্তাসি নির্কেবং শ্রোতব্যস্থ শ্রুতস্থ চ ॥

আন্ময়। তে (তব) বৃদ্ধি: যদা (যশ্মিন্কালে) মোহকলিলং (অবিবেক-কালুয়াং) ব্যতিতরিষ্যতি (ব্যতিক্রমিষ্যতি) তদা (তশ্মিন্কালে) [দং] শ্রোতব্যস্থ শ্রুতস্থ চ নির্বেদং (বৈরাগ্যং) গস্তাসি (প্রাপ্যাসি)॥ ৫২

আমুবাদ। তোমার বৃদ্ধি যে সময় অবিবেকরূপ কালুষ্য পরিভ্যাগ করিবে, ভূমি সেই সময়ে [সর্ক্ষবিধ] শ্রুত ও শ্রোভব্য [বিষয়ে] বৈরাগ্য লাভ করিবে॥ ৫২

ভাষ্য। বোগাইছানজনিতসবশুদ্ধিজা বৃদ্ধি: কদা প্রাণ্যত ইত্যাচ্যতে
—বদেতি। বদা বন্ধিন্ কালে তে তব নোহকলিলং মোহাত্মকমনিবেকরপং
কাল্যাং বেন আত্মানাত্মনিবেকবোধং কল্মীক্লতা বিষয়ং প্রতি অন্তঃকরণং
প্রবর্ততে তৎ তব বৃদ্ধি ব্যতিতরিষ্যতি ব্যতিক্রমিষ্যতি শুদ্ধিভাবমাণংক্ততে
ইত্যর্থঃ। তদা তন্মিন্ কালে গস্তাসি প্রাপ্যাসি নির্বেদং বৈরাগ্যং শ্রোতব্যক্ত
ক্রতক্ত চ তদা শ্রোতব্যং শ্রুভঞ্চ নিক্ষলং প্রতিপ্রত ইত্যভিপ্রায়ঃ॥ ৫২

আনন্দণিরিটীকা। যথোজবৃদ্ধিপ্রাথিকালং প্রশ্নপূর্বকং প্রকটয়তি—
য়োগেতি। প্রতং শ্রোতব্যং দৃষ্টং দ্রষ্টবামিত্যাদৌ ফলাভিলারপ্রতিবন্ধান্ধার বৃদ্ধিকদেব্যতীত্যাশব্যাহ—হাদেতি। বিবেকপরিপাকাবস্থা কালশব্দেনাচ্যতে। কাল্যান্ত দোবপর্যাবসায়িত্বং দর্শয়ন্ বিশিনষ্টি—হোনেতি। তদনর্থরূপং কাল্যাং তবেত্যবয়ার্থং পূনর্বচনম্। বৃদ্ধিভদ্দিকলক্ত বিবেকক্ত প্রাপ্ত্যা বৈরাগ্যপ্রাপ্তিং দর্শয়তি—তদেতি। অধ্যাত্মশাস্ত্রাভিরিক্রং শাস্ত্রং প্রোভব্যাদিশক্ষেন গৃহতে।

উক্তং বৈরাগ্যমেব ক্ষোরম্বতি—(শ্রোত্ত্র্যমিতি। যথোক্তবিবেকসিমে সর্বামিন্-ক্ষনাক্মবিষয়ে নৈক্ষন্যং প্রতিভাতীভ্যর্থ: ॥ ৫২

আনুবাদ। বোগামুঠান হইতে উৎপন্ন চিত্তগুদ্ধির ফল [বিশুদ্ধ]
আন কোন্ সমরে পাওরা যায় ? [ইহাই বলা যাইতেছে] ষদা ইত্যাদি ।
বদা (যে সময়ে) তে (তোমার) মোহকলিল (মোহাত্মক অবিবেকরপ
কালুয়), ষাহার ধারা আত্মা ও অনাত্মার বিবেকবোধকে কলুষিত করিরা
বিষয়ের প্রতি অন্তঃকরণকে প্রবর্ত্তিত করে। দেই (মোহকলিলকে) তোমার
বৃদ্ধি ব্যতিতরিষ্যতি (ব্যতিক্রম করিবে) শুদ্ধিভাব প্রাপ্ত হইবে ইহাই
অর্থ। তদা (দেই সময়ে) গস্তা অসি (প্রাপ্ত হইবে) [কি ?] নির্কোদ
(বৈরাগ্য) [কোন্ বিষয়ে ?] প্রোতব্য ও শ্রুত [বস্তুর প্রতি] দেই সমর
ভোমার শ্রোত্ব্য ও শ্রুত পদার্থের কোন আবশুকতা গাকিবে না। [আত্মব্যতিরেকে সকল বিষয়েই বৈরাগ্য উৎপন্ন হইবে] ইহাই অভিপ্রায়॥ ৫২

শ্রুতিবিপ্রতিপন্না তে যদা স্থাস্থতি নিশ্চলা। সমাধাবচলা বৃদ্ধিস্তদা যোগমবাপ্যাসি॥ ৫৩

অনুয়। শ্রুতিবিপ্রতিপন্না তে (তব) বৃদ্ধি: বদা (বন্ধিন্ কালে)
নিশ্চলা (বিকেপেরহিতা ভূষা) সমাধৌ (আত্মনি) অচলা (বিকরবর্জিতা সতী)
স্থান্ঠতি তদা [তং] যোগমবাপ্যাসি ॥ ৫৩

আনুবাদ। নানাপ্রকার শ্রুতিদর্শনে বিক্লিপ্ত তোমার বুদ্ধি যে সময় বিক্লেপ পরিত্যাগপূর্বক আত্মাতে বিকরবর্জ্জিত হইয়া হৈছা অবলম্বন করিবে, দেই সময় ভূমি যোগ প্রাপ্ত হইবে॥ ৫৩

ভাষ্য। নোহকলিলাত্যয়ন্ত্রেণ লক্ষাত্মবিবেকজপ্রক্সঃ কদা কর্মধােগজং ফলং পরমার্থনােগমবাস্যামি ইতি চেৎ তৎ শূণ্—শ্রুতিবিপ্রতিপরাত। শ্রুতিবিপ্রতিপরা আনেকসাধ্যসাধনসম্বর্প্রকাশনশ্রুতিভিঃ শ্রবণৈবিপ্রতিপরা নানাপ্রতিপরা শ্রুতিবিপ্রতিপরা বিক্ষিপ্তা সতী তে তব বুদ্ধিঃ যদা যত্মিন্ কালে স্থান্ততি স্থিতিপরা বিক্ষিপ্তা ভবিষ্যতি নিশ্রলা বিক্ষেপচলনবর্জ্জিতা সতী সমাধাে সমাধীরতে চিন্তমন্মির্জি সমাধিরাত্মা তত্মিন্ আত্মনি ইত্যেতং। অচলা তত্রাপি বিকর্বজ্জিতেত্যেতং। বুদ্ধিরস্তঃকরণং তদা তত্মিন্ কালে যোগমবাস্যাস বিবেক্ব্রেজ্ঞাং সমাধিং প্রাক্ষানি॥ ৫০

व्यानम् शिति होका । वृष्कि कि वित्वक देवता गामिका विश शूर्त्वा कर्षि था थि-

কালো দৰ্শিতো ন ভবতীতি শহুতে—মোহেতি। প্রাপ্তক্তবিবেকাদিযুক্তবুদ্ধেন রাম্মনি হৈর্ব্যাবস্থারাং প্রকৃতবুদ্ধিসিদ্ধিরিত্যাহ—তৎুশৃগিতি। পৃষ্ঠং কালবিশে-বাধ্যং বস্তু ভদ্ধেনেল গৃহুতে। বুদ্ধে: শ্রুতিবিপ্রতিপন্নতং বিশদরতি—অনেক্তি। নানাপ্রতিপন্নতমেব সংক্রিপতি—বিক্ষিপ্তেতি। উক্তং হেতৃহন্ধমন্ত্রক্ষয় বৈরাগ্য-পরিপাকাবস্থা কালশকার্থঃ, নৈশ্চল্যং বিক্লেপরাহিত্যম্, অচলতং বিক্রেশ্রুত্তং, বিক্লেপো বিপর্যারো বিক্রঃ সংশ্র ইতি বিবেকঃ॥ ৫৩

আকুবাদ। নোহকলিল (অবিবেককালুয্য) বিনাশদার। আত্মবিবেক-প্রজ্ঞা লাভ করির। কোন্ সময়ে আমি কর্মযোগের ফল পরমার্থযোগ লাভ করিব? এই প্রকার [অর্জুনের] প্রান্তের উত্তর এই যে—যদা তে ইত্যাদি। "শ্রুতিবিপ্রতিপরা" অনেক প্রকার সাধ্য ও সাধনের সম্বন্ধবোধক নানাবিধ "শ্রুতি" প্রবাণের দারা বিপ্রতিপর [অর্থাৎ] নানাপ্রতিপত্তিযুক্তা বিক্রিপ্তা "তে" তোমার বৃদ্ধি "বদা" বে কালে "হাশ্রুতি" স্থিরীভূতা হইবে, "নিশ্চলা" বিক্রেপরপ্রতানবর্জ্জিতা হইরা "সমাধৌ" যাহাতে চিন্তু সমাহিত হয়, সেই আত্মাই সমাধি [শক্ষের অর্থ] সেই আত্মাতে [ইহাই সমাধৌ এই শক্ষের তাৎপর্য] "আচলা" সেই অবস্থাতেও বিক্রবর্জ্জিতা হইবে, ইহাই তাৎপর্য্য। "বৃদ্ধি" অন্তঃকরণ "তদা" সেইকালে "বোগম্ অবাপ্যাদি" বিবেকপ্রজ্ঞানামক সমাধি প্রীপ্ত হইবে॥ ৫৩

অৰ্জ্জন উবাচ।

স্থিতপ্ৰজ্ঞস্য কা ভাষা সমাধিস্থস্য কেশব। স্থিতধীঃ কিং প্ৰভাষেত কিমাসীত ব্ৰজেত কিম্॥ ৫৪

অৰুর। হে কেশব ! সমাধিস্থ্য স্থিতপ্রক্তপ্ত কা ভাষা (কিং ভাষণৰ ?) স্থিতধীঃ (স্থিতপ্রক্তঃ) কিং প্রভাষেত ? কিং [বা] আসীত কিং [বা] ব্রক্তে ? ৫৪

অকুবাদ। অর্জুন কহিলেন; হে কেশব, সমাধিষ্টিত স্থিতপ্রজ্ঞের প্রতি অপর ব্যক্তি কি প্রকার ভাষণ করে। স্থিতধী (স্থিতপ্রজ্ঞ) স্বয়ং কি প্রকার ভাষণ করেন। তিনি কি প্রকার আসন করেনও কি প্রকারেই বা গমন করেন। ॥ ৫৪

ভাষ্য। প্রশ্নবীশং প্রতিরভ্য অর্শ্বন উবাচ লন্ধসমাধিপ্রক্সন্ত লক্ষণবৃভূৎসন্ত্রী স্থিতপ্রক্সন্তেভি। স্থিতা প্রতিষ্ঠিতা অহমস্মি পরং ব্যন্ধতি প্রক্রা ষ্মান্ত স্থিত। প্রক্রম্বন্ধ কা ভাষা ? কিং ভাষণং বচনং কথমসৌ পরৈর্জাব্যতে সুমাধিছত সমাধী স্থিতত কেশব। স্থিতধীঃ স্থিতপ্রজঃ স্বয়ং বা কিং প্রভাষেত ? কিমাসীত ব্রজেত কিম্ ? আসনং ব্রজনং বা তত্ত্ব কথমিত্যর্থঃ। স্থিতপ্রক্রেক্ত কর্মান্তনেন প্লোকেন পৃচ্ছতি॥ ৫৪

আনন্দ্গিরিটীকা। বিবেক্ষারা জাতা প্রজ্ঞা প্রাণ্ডকা বৃদ্ধি: সমাধিন্তবৈব নিষ্ঠা সংস্থাসিনো জ্ঞাননিষ্ঠা তৎপ্রাপ্তিবচনং প্রশ্নবীবং পৃদ্ধজোহর্জুনক্রাভিপ্রায়মাহ—লক্ষেতি। লকা সমাধাবাত্মনি সমাধানেন বা প্রজ্ঞা পরমার্থদর্শনলক্ষণা বেন ভন্তেতি যাবং) নম্ব ভক্ত ভাষা ভন্তৎক্লার্যান্তরোধিনী
ভবিষ্যতি কিমিত্যুসৌ জিজ্ঞান্ততে ? তত্রাহ—কথমিতি। ভাননিষ্ঠত ক্রমণবিবক্ষরা প্রশ্নমবতার্য্য ভরিষ্ঠা-সাধনবৃভ্ৎসন্না বিশিনষ্টি—সমাধিক্সক্তি। ক্রমেন
বার্থজিন্বাং পৃচ্ছতি—স্থিত্রখীরিতি॥ ৫৪

অনুবাদ। প্রশ্নের অবসর প্রাপ্ত ইইয়া, অর্জুন সমাধি প্রভাবে প্রমার্থ-বিজ্ঞান-লাভকারী ব্যক্তির লক্ষণ জানিবার ইচ্ছায় বলিতেছেন,—ছিত-প্রজ্ঞত ইত্যাদি। "আমি প্রমন্ত্রন্ধ হইয়াছি" এই প্রকার প্রজ্ঞা বাহার "ছিত" প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, সেই স্থিতপ্রজ্ঞ; তাহার কিরূপ 'ভাষা' ভাষণ [ক্মর্থাৎ] বচন [কি প্রকার] ? এই ব্যক্তিকে লোকে, কি প্রকার বলিয়া পাকে ? [ইহাই তাৎপর্য্য] "সমাধিছের" [অর্থাৎ] সমাধিতে অবস্থিত ব্যক্তির। [হে] কেশব! "স্থিতধী" স্থিতপ্রজ্ঞ স্বয়ংই বা কি বলিয়া ভূথাকেন ? কি প্রকারে বসিয়া পাকেন, কি প্রকারেই বা গমন করিয়া পাকেন ? ভাষার আসন বা গমন কি প্রকার ? ইহাই অর্থ। এই শ্লোকের ছারা [অর্জুন] স্থিত-প্রজ্ঞের লক্ষণ ক্রিজ্ঞাসা করিতেছেন ॥ ৫৪

প্রীভগবান উবাচ।

প্রজহাতি যদা কামান্ সর্বান্ পার্থ মনোগতান্। আত্মন্তেবাত্মনা তুফীঃ স্থিতপ্রজন্তদোচ্যতে॥ ৫৫

আমুয়। হে পার্থ! আত্মনি প্রমার্থরপে) আত্মনা (স্থেনৈব) ভূই:
[সন্] ষদা সর্বান্ মনোগতান্ কামান্ (ইচ্ছোভেদান্) প্রজহাতি (পরিত্যজ্ঞতি)
তদা স্থিতপ্রজ্ঞ: উচ্যতে ॥ ৫৫

আকুবাদ। হে পার্থ! পরমাত্মসরূপ নিজরূপে পরিতৃষ্ট হইয়া যে সময় [যোগী] সকলপ্রকার মনোগত কাম (ইচ্ছাবিশেষ) পরিত্যাগ করে, সেই সময়ই তাঁহাকে স্থিতধী বলা যায়॥ ৫৫

ভাষ্য। যো হাদিত এব সংশ্রম্থ কর্মাণি জ্ঞানযোগনিষ্ঠায়াং প্রবৃত্তো
মন্চ কর্মযোগেন তয়োঃ স্থিতপ্রজ্ঞম্য প্রজ্ঞাতীত্যারভ্য অধ্যায়পরিসমাপ্তিপর্যন্তং স্থিতপ্রজ্ঞলকণং সাধনঞ্চ উপদিশুতে। স্ববত্রৈব হি অধ্যায়পরিসমাপ্তিক্ষর্তার্থলক্ষণানি যানি তান্তেব সাধনাম্যুপদিশুত্তে যত্মসাধ্যক্ষাং। যানি বত্মসাধ্যানি সাধনানি লক্ষণানি চ ভবস্তি তানি—শ্রীভগবামুবাচ প্রজ্ঞহাতীতি।
প্রক্রাতি প্রকর্ষেণ, জহাতি পরিত্যক্ষতি যদা যত্মিন্ কালে সর্বান্ সমন্তান্
কর্মান্ ইচ্ছাভেদান হে পার্থ মনোগতান্ মনসি প্রবিষ্টান্ ছদি প্রবিষ্টান্। সর্বান্
কর্মান্ইচ্ছাভেদান হে পার্থ মনোগতান্ মনসি প্রবিষ্টান্ ছদি প্রবিষ্টান্। সর্বান্
কর্মান্বিত্তাগে তৃষ্টিকারণাভাবাং শরীরধারণনিমিত্তশেষে চ সতি উন্মন্তপ্রমন্তব্যেব প্রবৃত্তিঃ প্রাপ্তেত্যত উচ্যতে—আত্মন্তেব প্রত্যগাত্মস্বরূপ এব
আত্মনা স্বেনিব বাহ্নলাভনিরপেকস্তুটঃ পর্মার্থদর্শনামূতরস্বাভেন অক্সন্মাদলংপ্রত্যের্থনান্ স্থিতপ্রক্তঃ স্থিতা প্রতিষ্ঠিতা আত্মানাত্মবিবেকজা প্রক্তা যক্ত স্
স্থিতপ্রক্তা বিহাংকদোচ্যতে। ত্যক্তপ্ত্রবিত্তলোকৈষণঃ সংক্রাসী আত্মারাম
আত্মন্ত্রীড়ঃ স্থিত প্রস্তু ইত্যর্থঃ॥ ১৫

আনন্দ্র্গিরিটীকা। প্রতিবচনমবতার্ত্তিত্ব পাতনিকাং করেছি—
যো হীতি। ছি শব্দেন কর্দ্মগঞ্জাসকারণীভূতবিরাগভাসম্পত্তিঃ হচ্তে,
আদিতো ব্রন্ধর্ট্যাবস্থায়ামিতি যাবৎ, জ্ঞানমেব যোগো ব্রন্ধভাবপ্রাণকদ্বাৎ
ভশ্মিষ্ঠাপরিসমাপ্তিক্তামিত্যর্থঃ, কর্ম্মেব যোগন্তেন কর্দ্মাণ্যসংক্তন্ত তরিষ্ঠায়ামেব
প্রবৃত্ত ইতি শেবঃ। নম্ব কর্পমেকেন বাক্যেনার্থিরমুপদিশুতে বৈধার্থে বাক্যভেদার চ লক্ষণমেব সাধনং কৃতার্থলক্ষণস্ত তৎস্বরূপদ্বেন ফলত্বে সাধনদ্বাম্বপশব্দেরিতি তত্তাহ—সর্ববিত্রবৈতি। বছ্পপি প্রকৃতার্থস্ত জ্ঞানিনো জ্ঞানলক্ষণং
ভদ্মপেণ ফলতার সাধনত্বস্পিচ্ছতি তথাপি জিজ্ঞাসোন্তদেব প্রযক্ষমাধ্যত্তরা
সাধনং সম্পদ্মতে লক্ষণঞ্চাত্ত, জ্ঞানসামর্থ্যলক্ষমন্ত্রতে ন বিধীয়তে বিহুবাে বিধিনিবেধাগোচরদ্বাৎ তেন জিজ্ঞাসোঃ সাধনামুষ্ঠানার লক্ষণামুবাদাদেক্ষিয়ের
সাধনামুষ্ঠানে তাৎপর্য্যমিত্যর্থঃ। উক্তেহর্থে ভগবদ্বাক্যমুখাপরতি—যানীতি।
লক্ষণানি চ জ্ঞানসামর্থ্যলভ্যাক্তযন্ত্রসাধ্যানীতি শেবঃ। স্থিতপ্রক্তন্ত কা ভাবেতি
প্রথমপ্রেলভাত্তরমাহ—প্রজ্রহাতীতি। কামত্যাগস্ত প্রকর্বো; বাসনারাহিত্যং
কামানামাদ্মনিষ্ঠহং কৈন্চিদিয়তে তদমুক্তং তেরাং মনোনিষ্ঠক্ষমতেরিত্যাশস্ব-

বানাহ—মনোগতানিতি। আত্মন্তবাদ্ধনেত্যাগ্যন্তরভাগনিরন্তং চোদ্ধমমু-বদতি—সর্বকামেতি। তহি প্রবর্জনভাবাদ্বিগ্নং সর্বপ্রব্রেরুপশান্তিরিতি নেত্যাহ—শরীরেতি। উন্মাদবাম্মন্তো বিবেকবিরহিতবুদ্ধিল্রমভাগী প্রকর্মেণ মদমমুভবন্ বিশ্বমানমপি বিবেকং নির্মান্ লান্তবদ্ব্যবহরন্ প্রমন্ত ইতি বিভাগং। উত্তরার্ধ্মবতার্য্য ব্যাকরোতি—উচ্যুক্ত ইতি। আত্মন্তবেত্যেবকারম্ভাত্মনেত্যালাপি সম্বন্ধং গোভরতি—স্থেনিবেতি। বাহ্যলাভনিরপেক্ষন্থেন তৃষ্টিমেব স্পষ্ট-রতি—পর্মার্থেতি। স্থিতপ্রস্তর্পদং বিভন্ধতে—স্থিতেতি। প্রজ্ঞাপ্রবিদ্ধাতা উক্তমেব প্রপঞ্চরতি—ত্যক্তেতি। আত্মানং জিজ্ঞাসমানো বৈরাগ্যনারা সর্বৈর্ধাত্যাগাত্মকং সংন্যাসমাসাম্ম প্রবণাভাব্র্যা তদ্ধ জ্ঞানং প্রাপ্য তন্মিরেবাসক্ত্যা বিষরবৈম্প্যেন তৎক্রভ্তাং পরিতৃষ্টিং তবৈর প্রতিলভ্যানঃ স্থিতপঞ্জব্যপদেশভাগিত্যর্থঃ॥ ৫৫

অনুবাদ। যে ব্যক্তি প্রথম চইতেই নিজ্য ও নৈমিত্তিক কর্মসকল পরি-ভাগে করিয়া জ্ঞানযোগনিষ্ঠাতে প্রবৃত হইমাছে [কিংবা] যে ব্যক্তি [উক্তস্বরূপ] কর্মধোগ মার্গ বিব্যাল করিয়া জ্বানধোগনিষ্ঠাতে প্রবৃত্ত হইষ্নাছে ব উভয়বিধ সাধকের মধ্যে যাহার প্রজ্ঞা স্থিত হইয়াছে, তাহার লক্ষণ ও সাধন, প্রজহাতি ইত্যাদি শ্লোক হইতে অধ্যায়-পরিদমাপ্তিপর্যাম্ভ উপদিষ্ট হইতেছে। সকল অধ্যাত্মশাস্ত্রেই ক্লতার্থ (জীবলুক্ত) ব্যক্তির যাহা লক্ষণ, ভাহাই সাধন স্বরূপে উপদিষ্ট হইয়া পাকে; কারণ এ সকল লক্ষণ যত্নসাধ্য। যে সকল সাধন বন্ধসাধ্য,তাহাই [ক্লতার্থ সাধকের] লক্ষণ হইয়া থাকে। 🕮ভগবান্ [তাহাই বলিতেছেন---"প্রজহাতি" ইত্যাদি [শ্লোকের দারা] "প্রজহাতি' [ইংার মর্থ] প্রকৃষ্টরূপে পরিত্যাগ করিয়া থাকে; "যদা" যে কালে [কি পরিত্যাগ করে তাহাই বলা হইতেছে ় "সর্বা" সমস্ত "কাম সকল" ভোগ্যবস্তুসমূকে ভোগ করিবার ইচ্ছাবিশেষনিবহ হে পার্থ "মনোগত" মনে স্থিত [অর্থাৎ] জনমে প্রবিষ্ট। সকল প্রকার কাম পরিত্যক্ত হইলে, মুস্তোষের কারণ থাকে না, এই নিমিত্ত শরীরধারণের নিমিত্ত মাত্রের যাহা অবশেষ তাহাই থাকিবে। এই কারণ [তৎকালে] উন্মন্ত প্রমন্ত ব্যক্তির স্থায় প্রবৃত্তি হইতে পারে, এই প্রকার আশর্কার পরিহারার্থে উক্ত হইতেছে যে, 'আত্মন্তেব' [অর্থাৎ] সর্কভৃতস্থিত অন্তরাত্মাতেই "আত্মনা" স্বয়ং বাহ্যবন্ধ স্কলের লাভ বিষয়ে অপেকাশ্য [ও] "ভূষ্ট" প্রমার্থ দর্শনরূপ অমৃত্রুসের আস্বাদে অন্ত সর্ক্বিধ পদার্গ হইতে বিগতভৃষ্ণ, স্থিতপ্রজ "স্থিত" প্রতিষ্ঠিত [হইরাছে] "প্রজা"

আত্মানাত্মবিবেকজ [বিজ্ঞান] যাহার, সেই বিষ্যান্ই স্থিতপ্রজ্ঞ [শব্দে] উক্ত হয়েন, পুত্রৈষণা বিভৈষণা ও লোকৈষণাকে যিনি পরিত্যাগ করিয়াছেন, যিনি সংস্থাসী, আত্মারাম ও আত্মকীড়, তিনিই স্থিতপ্রজ্ঞ ইহাই অর্থ॥ ৫৫

> তুঃখেদ্বসুদ্বিগ্নমনাঃ স্থাখেরু বিগতস্পৃহঃ বীতরাগভয়ক্রোধঃ স্থিতধীমু নিরুচ্যতে ॥ ৫৬

জন্য। [ষঃ] হংধেষ্ [প্রাপ্তেষ্] অমুণ্বিগ্ণমনাঃ (অব্যাকুলচেতাঃ)
[তথা] স্থেষ্ [প্রাপ্তেষ্] বিগতস্পৃহঃ (বিভৃষ্ণঃ) [তথা] বীতরাগভরক্রোধঃ
(পরিত্যক্তসমাসক্ষীতিকোপঃ) [সঃ] স্থিতধীঃ (স্থিতপ্রক্ষঃ) [তদা] মুনিঃ
(সংস্থাসী) উচ্যতে ॥ ৫৬

অনুবাদ। বাঁহার হৃদর তুঃধপ্রাপ্তি হইলেও উদ্বিগ্ন হয় না এবং স্থপ লব্ধ হইলেও বাঁহার স্পৃহা বাড়িতে থাকে না, বাঁহার রাগ ভয় ও ক্রোধ অপগত হইয়াছে, সেই স্থিতধী ব্যক্তিকেই সন্ন্যাসী বলা যায়॥ ৫৬

ভাষ্য। কিঞ্চ হৃংথেবিতি। হৃংথেষু আধ্যান্মিকাদিষু প্রাপ্তেষু নোদ্বিশ্বং ন প্রক্ষুভিতং হৃংথপ্রাপ্তো মনো ষশু দোহয়মমুদ্বিশ্বমনাঃ। তথা স্থেষ্
প্রাপ্তেষ্ বিগতা স্পৃহা তৃষ্ণা যশু নাগ্মিরিবেন্ধনাভাধানে স্থাশ্রম বিবর্দ্ধন্তে
স বিগতস্পৃহঃ। বীতরাগভন্নকোধঃ রাগশ্চ ভর্ক্ষ ক্রোধশ্চ যাতা বিগতা
যশ্মাৎ স বাতরাগভন্মকোধঃ স্থিতধাঃ স্থিতপ্রজ্ঞো মুনিঃ সংস্থাসী তদোচ্যতে॥ ১৯

আনন্দ গিরিটীকা। লক্ষণভেদামুবাদ্বারা বিবিদিবোরের কর্ত্ব্যান্তর-মুপদিশতি—কিপ্তেতি। জরশিরোরোগাদিরুতানি হংপাস্তাধ্যাত্মিকানি আদিশকেনাধিভৌতিকানি ব্যান্ত্রপণিদিপ্রযুক্তান্তাধিদৈবিকানি চাতিবাতবর্ষাদিনিমিত্তানি হংথানি গৃহন্তে, তেম্ পলকেষপি নোদ্বিগ্রং মনো যন্ত্র প তথেতি সম্বন্ধঃ। নোদ্বিগ্র মিত্যেতদ্ব্যাচঠে—ন প্রক্ষুভিতমিতি। হংথানামুক্তানাং প্রাপ্তে পরিহারাক্ষমন্ত্রতদম্ভবপরিভাবিতং হংথমুদ্বেগঞ্জেন সহিতং মনো যন্ত্র ন ভবতি স তথেত্যাহ—কুংথপ্রাপ্তিবিতি। মনো যন্ত্র নোদ্বিগ্রমিতি পূর্বেণ সম্বন্ধঃ। ম্বথান্তপি হংথবং তিবিধানীতি মন্ত্রা তথেত্যুক্তম্। তেমু প্রাপ্তের্ম্ব সংস্ক তেভ্যো বিগতা স্পৃহা ভৃষ্ণা যন্ত্র স বিগতস্কৃহ ইতি বোজনা। অজন্ত হি প্রাপ্তানি ম্বথান্তম্ব বিন্দ্রতে ভৃষ্ণা, বিহুষম্ব নৈব্যিত্যক্র বৈধর্ম্মাদৃষ্টান্তমাহ—নাগ্রিরিবেতি। যথা হি দাহুন্তেন্ধনাদের ভ্যাধানে বহ্নিরম্ববিদ্ধতে তথান্ত্রত্ব ম্বথান্ত্রস্ক্রম্ববিদ্ধতে তথান্তর্ত্ব ম্বথান্ত্রস্ক্রম্বিক্তিত তথান্তর্ত্ব ম্বথান্ত্রস্ক্রম্বিক্তিত তথান্তর্ত্ব বির্দ্ধান্ত্রতিত । বথা হি দাহুন্তেন্ধনাদের ভ্যাধানে বহ্নিরম্ববিদ্ধতে তথান্তর্ত্ব ম্বথান্ত্রস্ক্রম্বিক্তিত তথান্তর্ত্ব বির্দ্ধান্ত্রতিত । বথা হি দাহুন্তেন্ধনাদের তান্ত্রম্ব বির্দ্ধান্ত বির্দ্ধান্ত তথান্তর্ত্ব ব্রান্ধান্ত্রতিত । বথা হি দাহুন্তেন্তিত তথান্তর্ত্ব বির্দ্ধান্ত্রতিত তথান্তর্ত্ব স্বথান্ত্রস্ক্রম্বিক্তিত তথান্তর্ত্ব ব্রান্ধান্ত্রতিত তেন

জিজাস্থনা স্থপত্বংথরোত্কোদ্বেগৌ ন কর্ত্তব্যাবিত্যর্থঃ। রাগাদরশ্চ তেন কর্ত্তব্যা ন ভবন্তীত্যাহ—বীতেতি। অমূত্তাভিনিবেশো বিষরেষ্ রঞ্জনাত্মকত্ত্বাভেদো রাগঃ পরেণাপক্বতশু গাত্রনেত্রাদিবিকারকারণং ভরং ক্রোধন্ত পরবনীক্বত্যাত্মানং স্থপরাপকারপ্রবৃত্তিহেতুর্ জির্ভিবিশেবঃ। মহতে ইতি মুনিরাত্মবিদিত্যকীক্বত্যাহ —সংক্রাসীতি। স্থাদিবিষরত্কাদে রাগাদেশ্চাভাবাবস্থা তদেত্যুচ্যতে ॥ ৫৬

অনুবাদ। আরও হংথেষিত্যাদি। আধ্যাত্মিকাদিহংথ উপস্থিত হইলে, "উদ্বিগ্ন হয় না" হংথপ্রাপ্তিতে তাহার চিত্ত প্রকৃতিত হয় না, সেই ব্যক্তিই অনুদ্বিগ্নমনাঃ। সেই প্রকার হথ প্রাপ্ত হইলেও [তাহাতে] যাহার "স্পৃহা" তৃষ্ণা বিগত হইরাছে [অর্থাৎ] কাষ্ট্রসংযোগে অন্ধির স্লায় হথলাতে [যাহার তৃষ্ণা] বৃদ্ধিলাভ করে না, সেই ব্যক্তিই বিগতস্পৃহ। "বীতরাগভরক্রোধ" আসক্তি ভয় এবং ক্রোধ [যাহার] হাদয় হইতে "বীত" বিগত হইরাছে, সেই ব্যক্তি বীতরাগভরক্রোধ। "হিতধী" (স্থিতপ্রজই) "মুনি" সংস্থানী [বলিয়া] সেই সময়ে উক্ত হইরা থাকেন॥ ৫৬

যঃ দৰ্ব্বতানভিম্নেহস্তত্তৎ প্ৰাপ্য শুভাশুভম্। নাভিনন্দতি ন দ্বেষ্টি তম্ম প্ৰজ্ঞা প্ৰতিষ্ঠিতা॥ ৫৭

অনুমু | বাং সর্কাত্র অনভিমেহ: (রাগবিজ্ঞিত্ব:) তত্তৎ শুভাশুভং প্রাপ্য ন অভিনন্দতি (সম্ভ্রমান্তি) [তথা] ন দেষ্টি (প্রভিক্সমতি) তত্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা (স্থিরা ভবতি) ॥ ৫৭

অনুবাদ। যে ব্যক্তি সকল পদার্থেই আসক্তিরহিত, যে ব্যক্তি সেই সেই ভুত বা অভুত প্রাপ্ত হইয়াও সন্তোষ বা ছেষ প্রাপ্ত হন না, তাঁহারই প্রজ্ঞা স্থিরতা লাভ করে॥ ৫ ন

ভাষ্য। কিঞ্চ যা সর্বাত্তেতি। যো মুনিঃ সর্বাত্ত দেহজীবিতাদিবিপি অনভিন্নেহঃ অভিন্নেহবর্জ্জিতঃ তত্তৎ প্রাপ্য শুভাশুভং তত্তৎ শুভমশুভং বা শব্ধ, নাভিনন্দতি ন দ্বেষ্টি শুভং প্রাপ্য ন ভূষ্যতি ন হয়তি অশুভঞ্চ প্রাপ্য ন দেষ্টিভার্থঃ তত্তৈবং হর্ষবিষাদ্যর্জ্জিতভা,বিবেকজা প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা ভবতি ॥ ৫৭

আনন্দুগিরিটীকা। লক্ষণভেদামুবাদদারা বিবিদিবোরেব কর্ত্ব্যান্তর-মুপদিশতি—কিঞ্চেতি। বিবেকবতো বিবিদিবোর্বিবেকজ্ঞা প্রজ্ঞা কথং প্রতিষ্ঠিাং প্রতিপম্বতামিত্যাশক্ষ্যাহ—যঃ সূর্ব্বত্ত্রেতি। নমু দেহজীবিতাদৌ স্পৃহা শুভাশুভ-প্রাথী হর্ববিবাদৌ বিহুয়ো বিবিদিয়োশ্চাবর্জনীয়ো ইতি প্রজ্ঞাইস্থ্যাসিদ্ধিন্তত্তাহ— যো মুনিরিতি। তত্তদিতি শোভনবন্ধেনাশোভনবন্ধেন বা প্রসিদ্ধন্ধ প্রতিনি-দিখতে। তদেব বিভঙ্গতে—শুভুমিতি। বিষয়েশভিষণ্গাভাবঃ শুভাদিপ্রাপ্তৌ হর্ষাম্বভাবন্দ প্রজ্ঞাহৈর্ব্যে কারণমিত্যাহ—ত্তুস্তৃতি॥ ৫৭

অমুবাদ। আরও যঃ সর্বাত ইত্যাদি। "যে মুনি সর্বাত্ত দেহজীবনপ্রভৃতিতে "অনভিন্নেহ" অভিন্নেহ-(প্রগাঢ় আসক্তি) বর্জিত, ''সেই সেই
ভভাভত পাইরা' সেই দেই ভত কিংবা অভত লাভ করিরাও অভিনন্দন করেন
না বা দেবও করেন না [অর্থাৎ] ভত প্রাপ্ত হইরা ''ভূষ্ট হরেন না'' হর্ব প্রাপ্ত
হরেন না এবং অভত প্রাপ্ত হইরাও দেব করেন না—ইহা অর্থ। এইরূপ হর্ববিষাদরহিত সে ব্যক্তিরই বিবেকজনিত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত হয় (স্থিরতা লাভ করে)॥ ৫৭

যদা সংহরতে চায়ং কূর্দ্মোহঙ্গানীব সর্ববশঃ। ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেভ্য স্তস্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৫৮

আমৃয়। অরং (জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রবৃত্তঃ) কুর্মঃ অঙ্গানি ইব সর্বলং ইন্দ্রিরার্থেভ্যঃ ইন্দ্রিরাণি যদা সংহরতে [জদা] ভক্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা [ভবতি] ॥ ৫৮

. আমুবাদ। কচ্ছপ যে প্রকার নিজের অঙ্গসকলকে সংখাচিত করে, সেই প্রকার [জ্ঞাননিষ্ঠার প্রবৃত্ত যোগী] যখন সকল প্রকার ইন্দ্রিরের বিষয় হইতে ইন্দ্রির সকলকে উপসংহৃত করেন, [সেই সময়] তাঁহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত হইরা থাকে ॥ ৫ ৴

ভাষ্য। কিঞ্চ যদা সংহরতে ইতি। যদা সংহরতে সম্যক্ উপসংহরতে চ অয়ং জ্ঞাননিষ্ঠায়াং প্রবৃত্তো যতিঃ কুর্ম্মোহঙ্গানীব সর্বন্ধো যথা কুর্মো ভয়াৎ স্থানি অঙ্গানি উপসংহরতি সর্ব্বত এবং জ্ঞাননিষ্ঠ ইন্দ্রিয়াণি ইন্দ্রিয়ার্থেভ্যঃ সর্ব্ববিষ্ক্রেভ্য উপসংহরতে। তন্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা। ইতি উক্তার্থং বাক্যম্॥ ৫৮

আনন্দ গিরিটীকা। জিজাসোরের কর্ত্তব্যান্তরং স্চরতি—কিঞ্চেতি।
ইক্রিরাণাং বিষয়েত্যে বৈষ্ণান্ত প্রজ্ঞাইর্য্যকারণভাদাটো জিজাস্থনা তদমুঠেরমিত্যাহ—যদেতি। মুমুকুণা মোক্ষহেত্বং প্রজ্ঞাং প্রার্থরমানেন সর্ব্বেভ্যা বিষয়েত্যঃ
সর্বাণীক্রিরাণি বিষ্থানি কর্ত্তব্যানীতি প্লোকব্যাখ্যানেন কথয়তি—যদ্দত্যাদিনা।
উপসংহারঃ স্ববশ্বাপাদনং, তন্ত চ সম্যক্ষমতিদৃঢ়ত্বম্। অয়মিতি প্রক্রতন্ত্িতপ্রজ্ঞগ্রহণং ব্যাবর্ত্তরতি—ক্তাননিষ্ঠায়ামিতি। ইক্রিয়োপসংহারক্ত প্রদাররূপত্বং
ব্যাবর্ত্ত সংক্ষাচাত্মকত্বং দৃষ্টান্তের দর্শয়তি—কুর্মেইতি। দৃষ্টান্তং ব্যাকরোতি—

যথেতি। দাষ্টান্তিকে যোজ্যজ্ঞাননিষ্ঠপদং তত্র প্রবর্ত্তরতি—এবমিতি । ইক্সিগাং বিষয়েভ্যো বৈমুখ্যকরণং প্রজ্ঞান্তৈর্য্যহেতুরিত্যুক্তমুপসংহরতি—তস্ত্রেতি ॥ ৫৮

অমুবাদ। আরও [স্থিতপ্রজ্ঞের লক্ষণ এই যে] বদা সংহরতে ইত্যাদি। যে সমর "সংহার করে" সম্যক্প্রকারে উপসংহার করে "এই" জ্ঞাননিষ্ঠাতে প্রবৃত্ত সংস্থাসী কৃষ্ম (কচ্ছপ) অঙ্গ সকলকে, যে প্রকার [উপসংহার করে] সকল দিক্ হইতে [অর্থাৎ] ভয় পাইলে কচ্ছেপ যেমন সকল দিক্ হইতে নিজ অঙ্গ সকলের উপসংহার করে, এইরূপ জ্ঞাননিষ্ঠ (সন্ন্যাসী) ইন্দ্রিয়-নিচরকে "ইন্দ্রিয়ার্থ" সকল প্রকার বিষয় হইতে উপসংহার করেন, "তাঁহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত হয়" এই বাক্যের অর্থ পূর্বেই বলা হইরাছে॥ ৫৮

বিষয়া বিনিবর্ত্তন্তে নিরাহারস্থ দেহিনঃ। রসবর্জ্জং রসোহপ্যস্থ পরং দৃষ্ট্বা নিবর্ত্ততে ॥৫৯

আন্থর। নিরাহারশু দেহিন: (দেহবতো জীবস্ত) রসবর্জ্জং (রাগং বিহার) বিষয়া: বিনিবর্ত্তরে; অশু [যতেস্ত] পরং (পরমার্থত্ত্বং একা) দৃষ্ট্রা [স্থিভশু] রস: অপি (আসক্তিরপি) নিবর্ত্ততে॥ ৫১

অনুবাদ | রোগাদি বশত: বিষয় ভোগ ক্রিতে অসমর্থ ব্যক্তির নিকট হইতে বিষয়সমূহ নিবৃত্ত হইলেও, ভাহার বিষয়সমূহে আসক্তি নিবৃত্ত হয় না, কিন্তু এই [পূর্ব্লোক্ত] যোগীর ব্রশ্ধ-সাক্ষাৎকার হইলে, সেই বিষয়াসক্তি ও নিবৃত্ত হইয়া থাকে ॥ ৫৯

ভাষ্য। তত্র বিষয়ান্ অনাহরত আতুরস্থাপি ইন্দ্রিয়াণি নিবর্ত্তম্বে ক্মালানীব সংব্রিয়ন্তে ন তু তদ্বিষরো রাগঃ, স তু কথং সংব্রিয়ন্ত ইতি উচ্যতে বিষয়া ইতি। যপ্তপি বিষরোপলক্ষিতানি বিষয়শন্ধবাচ্যানি ইন্দ্রিয়াণি অথবা বিষয়া এব নিরাহারস্থ অনাব্রিয়মাণবিষয়স্থ কটে তপসি স্থিতস্থ মূর্য্বস্থাপি বিনিবর্ত্তম দেহিনঃ দেহবতো রসবর্জাং রসো রাগঃ বিষয়েম্ যন্তং বর্জারা। রসশব্দে রাগে প্রসিদ্ধা, স্বরসেন প্রবৃত্তো রুসিকো রসজ্ঞ ইত্যাদিদর্শনাৎ। সোহপি রসো রঞ্জনরপঃ ক্ষেন্তিস্থ যতেঃ পরং পরমার্থতন্তং ব্রন্ধ দৃষ্ট্রা উপলভ্য অহমেব তদিতি বর্ত্তমানস্থ নিবর্ত্তিতে নির্বীজং বিষয়বিজ্ঞানং সংপত্ততে ইত্যুর্থঃ। নাস্তি সম্যুগ্ দর্শনে রসজ্ঞোচ্ছেদঃ। তত্মাৎ সম্যুগ্ দর্শনাত্মিকারাঃ প্রজ্ঞারাঃ হৈর্যাৎ কর্তব্য-মিত্যভিপ্রায়ঃ॥ ৫৯

আনন্দগিরিটীক।। ইন্দ্রিগাণাং বিষয়েভ্যো বৈমুখ্যেছপি তদ্ধিবন্ধে

রাগাহরত্তে কথং প্রজ্ঞালাভঃ স্থাদিতি শঙ্কতে—তত্ত্রেতি। ব্যবহারভূমিঃ সপ্তম্যর্থঃ। বিষয়ান অনাহরতস্তত্বপভোগবিমুখস্তেত্যর্থঃ। রাগশ্চেয়োপসংব্রিয়তে, ন ভার্হি প্রজালাভঃ সম্ভবতি; রাগস্ত তৎপরিপদ্বিহাদিতি মন্বাহ—স কথমিতি। রাগনিবৃত্ত্ যুপান্তমুপদিশনু ত্তরমাহ—উচ্যতইতি। বিষয়োপভোগপরাব্যুখন্ত কুতো বিষয়পরাবৃত্তিন্তৎপরাবৃত্তিশ্চাপ্রস্ততেত্যাশক্যাহ—যুদ্যপীতি। ব্যাখ্যানমনাব্রিয়মাণবিষয়স্তেতি। যো হি বিষয়প্রবণো ন ভবতি তহ্যাত্যন্তিকে তপসি ক্লেশাত্মকে ব্যবস্থিতভা বিভাহীনভাপীব্রিয়াণি বিষয়েভ্য: সকাশাদ্যভাপি সংছিয়ত্তে তথাপি রাগোহবশিষ্যতে স চ তত্ত্তানাছচ্ছিত্তত ইত্যর্থ:। রসশব্দশ্ত মাধুর্য্যাদিষড় বিধরণবিষয়তং নিষেধতি—রুসশক্তি। বৃদ্ধপ্রয়োগমস্তরেণ কথং প্রসিদ্ধিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—স্বরুসেনেতি। স্বেচ্ছয়েতি বাবং। রসিকঃ স্বেচ্ছা-বশবর্সী রসজ্ঞো বিবক্ষিতাপেক্ষিতজ্ঞাতেত্যর্থঃ। কথং তর্হি তম্ম নির্ভিস্ততাহ— সোহপীতি। দৃষ্টিমেবোপলন্ধিপর্যারাং স্পষ্টয়তি—অহমেবৈতি। রাগাপগমে সিদ্ধ্যর্থমাহ—নিবীজমিতি। নমু সম্যগ্রানমন্তরেণ রাগো নাপগচ্ছতি চেৎ তদপগমাদৃতে রাগবতঃ সম্যুগ্জানোদ্যাযোগাদিতরেতরাশ্রয়তেতি নেত্যাহ— নাস্তীতি। ইন্দ্রিশাণাং বিষয়পারবঞ্চে বিবেকদারা পরিহৃতে স্থূলো রাগো ব্যাবর্ত্ততে। ততক সম্যগ্জানোৎপত্ত্যা স্ক্রন্থাপি রাগস্থ সর্বাত্মনা নির্ভ্যুপ-পত্তেনে তিরেতরাশ্রয়তেত্যর্থঃ। প্রজ্ঞান্তৈর্য্যন্ত সফলত্বে স্থিতে ফলিতমাহ— তস্মাদিতি। ॥ ৫৯

অনুবাদ। ব্যবহারভূমিতে বিষয় সকলকে আহরণ করিতে অসমর্থ আতুর ব্যক্তিরও ইন্দ্রিয়গণ [বিষয় সকল হইতে] কুর্ম্মের অঙ্গনিচয়ের স্থায় বিনিবৃত্ত হয় [বটে], কিন্তু বিষয়সমূহে আসক্তির নিবৃত্তি হয় না। সেই আসক্তি কি প্রকারে নিবৃত্ত হইতে পারে, তাহাই বলা যাইতেছে—বিষয়া বিনিবর্তত্তে ইত্যাদি। বিষয় দারা উপলক্ষিত ইন্দ্রিয়সকলই [এন্থলে] বিষয়শন্দবাচ্য, অথবা প্রসিদ্ধ শন্দাদি বিষয়সমূহই এন্থলে বিষয় [শন্দের অর্থ]। যম্বাপি "নিরাহার" বিষয়োপভোগপরার্ম্ম কেশকরতপ্রসানিরত মূর্য্বেরও [বিষয় সকল] বিনিবৃত্ত হয়, [তথাপি ঐ নিবৃত্তি] রস ব্যতিরেকে [হইয়া থাকে]; রস [শন্দের অর্থ] বিষয়ে অমুরাগ, তাহাকে বর্জন করিয়া (ইহাই রসবর্জ্জৎ এই শন্দের অর্থ)। রস শন্দ রাগর্মপ অর্থেও প্রসিদ্ধ আছে; [কারণ] স্বরসের সহিত প্রবৃত্ত, রসিক, রসজ্ঞ, ইত্যানি স্থলে রাগর্মপ অর্থেই রস শন্দের প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যায়।
 পরমার্থ তত্ত্ব বন্ধকে "আমিই সেই বস্ত্ব" এই প্রকারে দর্শন করিয়া

অবস্থিত এই যতির সেই স্ক্র রঞ্জনরূপ রসও নির্ত্ত হইরা থাকে [তাহার ব্রহ্মব্যতিরিক্ত] বিষয়বিজ্ঞান নির্বীক্ত হইরা থাকে—ইহাই অর্থ। সম্যক্ ক্রান না হইলে, রসের [অর্থাৎ বিষয়াসক্তির] উচ্চেদ হয় না। এই কারণে সম্যগ্দর্শনরূপ প্রক্রার স্থৈয়্য সম্পাদন করা উচিত, ইহাই অভিপ্রায়॥ ৫৯

যততো ছপি কোন্তেয় পুরুষস্থ বিপশ্চিতঃ। ইন্দ্রিয়াণি প্রমাণীনি হরন্তি প্রসভং মনঃ॥৬০

অন্তব্ম। হে কৌন্তের ! প্রমাণীনি ইন্দ্রিরাণি যততোহপি (যতমান-স্থাপি) বিপশ্চিত: (মেধাবিন: মপি) পুরুষশু মনঃ প্রদন্তং হরস্তি॥ ৩০

অনুবাদ। হে কুস্তীনন্দন! মেধাবী পুরুষ প্রবন্ধপর হইলেও, বিক্লেপকারী ইক্রিয়নিচয়, বলপূর্ব্বক তাহার মনকে হরণ করিয়া থাকে॥ ৬০

ভাষ্য। সম্যগ্দর্শনলক্ষণপ্রজ্ঞাইন্থর্যাং চিকীর্যতা আদৌ ইন্দ্রিয়াণি স্ববংশ স্থাপয়িতব্যানি যত্মাৎ তদনবস্থাপনে দোষমাহ ২০০০ ইতি। যত্তঃ প্রশঙ্ক কুর্ব্বতোহপি হি যত্মাৎ কৌস্তের বিপশ্চিতো মেধাবিনোহপি ইভি ব্যবহিত্তেন সম্বন্ধ:। ইন্দ্রিয়াণি প্রমাণীনি প্রমণনশীলানি বিষয়াভিম্থং হি প্রস্কং বিক্ষোভয়স্তি আকুলীকুর্বস্তি। আকুলীকৃত্য চ হয়স্তি প্রস্কং প্রসহ্ প্রকাশমেব পগ্রতো বিবেকবিজ্ঞানযুক্তং মনো যত্তত্ত্বাৎ॥ ৬০

আনন্দণিরিটীকা। শোকান্তরমবতারয়তি—সম্যুগদর্শনেতি। মনসঃ
স্ববশ্বাদেব প্রজ্ঞাইর্য্যসন্তবে কিমর্থমিন্টিয়াণাং স্ববশ্বাপাদনমিত্যাশঙ্ক্যাহ
—যাদ্যাদিতি। নম বিবেকবতো বিষয়দোষদর্শিনো বিষয়েত্যঃ স্বয়ম্বেলিয়্রাণি ব্যাবর্ত্তরে কিং তত্র প্রজ্ঞাইর্য্যং চিকীর্ধতা কর্ত্তব্যমিতি তত্তাহ—
যততো হীতি। বিষয়েয়্র্ ভূয়োভূয়ো দোষদর্শনমেব প্রয়ন্ধঃ। হিলম্বস্ত ম্মাদর্থত সমাপ্রে সম্বন্ধং বক্ষাতি। অপিশব্দস্ত প্রয়ন্ধং ক্র্ত্তিভোগীতি সম্বন্ধং গৃহীষা সম্বন্ধান্তরমাহ—পুরুষস্ত্যেতি। প্রমণনালক্ষং প্রকট্রতি—বিষয়েতি।
বিক্ষোভন্ত আকুলীকরণভ্ত ফলমাহ—আকুলীকৃত্ত্যেতি। প্রকাশমেবত্যক্তং বিশদয়তি—পশ্যত ইতি। বিপশ্চিতো বিছ্যোহিপি প্রকাশমেব প্রকাশনন্দ্রভবিবেকাথাবিজ্ঞানেন যুক্তমেব মনো হরস্কীক্রিয়াণীতি সম্বন্ধঃ। হিশব্দার্থমন্ম্র তত্মাদিক্রিয়াণি স্ববন্ধে স্থাপয়িতব্যানীতি পূর্বেণ সম্বন্ধমভিসন্ধায়াহ—যতন্তম্মাদিতি॥ ৬০

অনুবাদ। যে ব্যক্তি সমাগ্ দর্শনরপ প্রজ্ঞার হৈর্ঘ্য করিতে ইচ্ছা

করে, প্রথমে তাহার ইন্দ্রিয় সকলকে নিজের বশে স্থাপন করা উচিত।
বেহেতু ইন্দ্রিম-নিচয়ের বশীকরণ না করিতে পারিলে, দোষ [হয়], সেই
কারণে বলিতেছেন, "যততঃ" ইত্যাদি। "যততঃ" [ইহার অর্থ] প্রয়ম্ম করিলেও
"হি" যে কারণ "বিপশ্চিতঃ" নেধাবীরও এই দ্রবর্তীর সহিত অয়য় [করিতে
হইবে]; ইন্দ্রিয়সকল "প্রমাথী" প্রমথনশীল [অর্থাৎ ইন্দ্রিয়নিচয়] বিবয়াসকল
প্রক্ষকে "বিক্ষুদ্ধ করে" ব্যাকুল করিয়া থাকে। ব্যাকুল করিয়া "প্রসভ"
বলপূর্ব্বক প্রকাশতঃ দোষদর্শনকারীরও মনকে হরণ করে যে কারণে,
এইজন্ত ॥ ৬০

তানি দর্বাণি দংযম্য যুক্ত আসীত মৎপরঃ। বশে হি যম্মেন্দ্রিয়াণি তম্ম প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৬১

আর্য়। সর্বাণি ভানি (ইন্সিয়াণি) সংযম্য (সম্যক্ নিয়ম্য) যুক্তঃ (সমাহিতঃ) [সন্] মংপরঃ মাসীত; হি (যতঃ) যুক্ত ইন্সিয়াণি বংশ (আধীন্তে সন্তীতি শেষঃ) ততা প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৬১

অনুবাদ। অগ্রে সকল ইন্দ্রিরকে বশীভূত করিয়া, পরে সমাহিত ও মংপর হইরা অবস্থান করিবে। এইভাবে ইন্দ্রিয়-নিকর যাহার বশীভূত হয়, তাহারই প্রজা প্রতিষ্ঠিত হয়॥৬১

ভাষ্য। তানীতি। তানি সর্বাণি সংযম্য সংযমনং বশীকরণং রুত্বা যুক্তঃ সমাহিতঃ সন্নাসীত। মংপরঃ অহং বাস্থাদেবঃ সর্বপ্রেত্যগাত্মা পরো যক্ত স মংপরো নালোহহং তন্মাৎ ইতি আসীতেত্যর্থঃ। এবমাসীনশু যতেব শৈ হি যন্তেন্দ্রিয়াণি বর্ত্তরেহভাাসবলাৎ তশ্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা। ৬১

আনন্দগিরিটীকা। ইন্দ্রিরাণাং স্ববশ্বসম্পাদনানন্তরং কর্ত্ব্যমর্থমাহ—তানীতি। এবমাসীনন্ত কিং স্থাদিতি তদাহ—বশে হীতি। সমাহিড্কে বিক্লেপবিকলন্ত কথ্মাসনমিত্যপেক্ষায়ামাহ—মৎপর ইতি। পরাপরভেদশক্ষামপাক্বত্যাসনমেব ক্ষোরম্বতি—নান্দ্রোহ্ছমিতি। উত্তরার্জং ব্যাক্রোতি—এবমিতি। হিশলার্থং স্ট্রেতি—অভ্যাসেতি। পরস্নাদান্তনো
নাহমন্তোহন্বীতি প্রাপ্তভান্থসন্ধানন্তাদরেণ নৈরস্বর্ধ্যদীর্ঘকালাম্ক্রানসামর্থ্যাদিত্যর্থঃ।
অথবা বিবরের দাবদর্শনাভ্যাস-সামর্থ্যাদিন্দ্রিরাণি সংযতানীত্যর্থঃ॥ ৬১

অনুবাদ। তানি ইত্যাদি। সে সকলকে (ইক্সিয়কে) "সংযত করিয়া" 'নির্মিত (অর্থাৎ) বলীক্বত করিয়া "যুক্তঃ" সমাহিত চুইয়া অবস্থান করিবে [कि প্রকারে সমাধান করিবে তাহাই বলা হইতেছে যে] "মংপর" [হইরা]
আমি—সকল জীবের অন্তরাত্মা বাস্থদেবই বাহার পরম [বন্ধ] সেই মংপর
[অর্থাৎ] আমি সেই বাস্থদেব হইতে ভিন্ন নহি,—এই প্রকার ভাবনাকে
অবলম্বন করিয়া, সমাধি আশ্রার করিবে। এই প্রকারে সমাধিন্থিত যে সংস্থাসীর
অভ্যাদবলে ইন্তির্মক্ল বশীভূত হইয়া বায়, তাঁহারই প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত ॥ ৬১

ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গস্তেষুপজায়তে। সঙ্গাৎ সংজায়তে কামঃ কামাৎ ক্রোধোহভিজায়তে॥৬২

অম্ব্য়। বিষয়ান্ (ইষ্টশকাদীন্) ধ্যায়তঃ (চিন্তয়তঃ) পুংসঃ (পুরুষণ্ঠ) তেষু (বিষয়েষু) সঙ্গঃ (আসক্তিঃ) উপঞ্চায়তে; [তত্মাৎ] সঙ্গাৎ কামঃ সংজ্ঞায়তে, (সমুংপগুতে) কামাৎ ক্রোধোহভিজায়তে ॥ ৬২

অনুবাদ। বিষয় সকলের [রমণীয়তা] চিন্তা করিতে প্রাত্ত পুরুষের সেই সকল বিষয়ে আসক্তি জন্মে। [সেই] আসক্তি হইতেই কাম উৎপন্ন হর। [প্রতিহত] কাম হইতে ক্রোধ উৎপন্ন হয়॥ ৩২

ভাষ্য। অথেদানীং পরাভবিষ্যতঃ সর্বানর্থমূলমিদমূচ্যতে ধ্যারত ইতি। ধ্যায়তঃ চিম্বরতঃ বিষয়ান্ শলাদিবিষয়বিশেষান্ আলোচরতঃ পুংসঃ পুরুষম্ভ সঙ্গ আগক্তিঃ প্রীতিস্তেষ্ বিষয়ের্ উপজায়তে। সঙ্গাৎ প্রীতিঃ সঞ্চারতে সমুৎপত্যতে কামস্তৃষ্ণা। কামাৎ কৃতশ্চিৎ প্রতিহতাৎ ক্রোধোহভিজারতে॥ ৬২

আনন্দ্ গিরিটীকা। সমনন্তর শোক্ষর-তাৎপর্য্যমাহ—অত্থেতি।
পুক্ষার্থোপায়োপদেশানন্তর্য্যথশকার্থঃ। তরিষ্ঠম্বরাহিত্যাবস্থাং দর্শরতি—
ইদানীমিতি। পরাভবিষ্যতো মহাস্তমনর্থং গমিষ্যতো বিবেকবিজ্ঞানবিহীনস্তেতি যাবং। সর্কানর্থমূলং বিষয়ভিষ্যানং তক্ত তথাত্বমন্তবসিদ্ধমিতি বজুমিদমিত্যুক্তম্। বিষয়ের বিশেষত্বমারোপিতরমণীয়ত্বম্। প্রীতিরাসক্তিরিতি
সাধারণাসক্তিমাত্রং গৃহতে। তৃষ্ণেত্যু ডিক্রাসক্তিক্তা প্রতিবন্ধেন প্রণাশেন
বা প্রতিহতিঃ॥ ৬২

আনুবাদ। অনস্থর একণে মহান্ অনর্থ প্রাপ্ত হইতে উন্থুপ পুরুষের সকল অনর্থের মূল কি, তাহা বলা যাইতেছে যে—ধ্যায়তঃ ইত্যাদি। ধ্যায়তঃ [ইহার অর্থ] চিস্তা করিতে করিতে [অর্থাৎ] "বিষয়" শব্দ প্রেন্থতি বিষয়-বিশেষের আলোচনা করিতে করিতে পুরুষের সেই সকল বিষয়েতে "সক্ষ" আসক্তি [অর্থাৎ] প্রীতি উপজাত হয়। "সঙ্গ' প্রীতি হইতে "কাম" ভ্রুকা ''সঞ্জাত'' সমুৎপন্ন হয়। সেই কাম কোন কারণবশে যদি প্রতিহত হয়, তাহা হইলে, সেই কাম হইতেই ক্রোধ উৎপন্ন হয়॥ ৬২

> কোধাদ্ ভবতি সম্মোহঃ সম্মোহাৎ স্মৃতিবিভ্ৰমঃ। স্মৃতিভ্ৰংশাদ্বৃদ্ধিনাশো বৃদ্ধিনাশাৎ প্ৰণশ্যতি॥ ৬৩

স্থায় । ক্রোধাৎ সম্মোহ: ভবতি। সম্মোহাৎ স্থৃতিবিভ্রম: [ভবতি] স্থৃতিভ্রংশাৎ বুদ্ধিনাশঃ ভবতি। বুদ্ধিনাশাৎ প্রণশ্রতি॥ ১৩

আমুবাদ। ক্রোধ হইতে সম্মেহ (অবিবেক) উৎপন্ন হয়। সম্মেহ হইতে স্বৃতিবিভ্রম হয়। স্বৃতিভ্রংশ হইতে বৃদ্ধিনাশ হয়। বৃদ্ধিনাশ হইতে বিনাশ প্রাপ্ত হয়॥ ৬৩

ভাষ্য। ক্রোধাদ্ ভবতি সম্মেহঃ অবিবেকঃ কার্য্যাকার্য্যবিষয়:। ক্রুন্ধো

ह সন্মৃত্যু সন্ গুক্ষমপ্যাক্রোলতি। সম্মেহাৎ স্থতিবিভ্রমঃ লান্তাচার্য্যাপদেশা
হিতসংকারজনিতারাঃ স্থতঃ স্থাদ্ বিভ্রমঃ ভ্রংশঃ স্থত্যুৎপত্তিনিমিত্তপ্রাপ্তৌ

মন্থপত্তিঃ। ততঃ মৃ্তিভ্রংশাৎ বুদ্ধেনাশঃ। কার্য্যাকার্য্যবিষয়বিবেকাষোগ্যতা

মন্তঃকরণত্ত বুদ্ধেনাশ উচ্যতে। বুদ্ধেনাশাৎ প্রণশুতি। তাবদেব হি পুরুষো

যাবদন্তঃকরণং তদীয়ং কার্য্যাকার্য্যবিষয়বিবেক্ষোগ্যং তদ্যোগ্যতে নইএব

পুরুষো ভবতি অতত্তত অন্তঃকরণত বুদ্ধেনাশাৎ প্রণশুতি পুরুষার্থাযোগ্যো
ভবতীত্যর্থঃ: ১৩

আনন্দগিরিটীকা। কোষত্ত সংমোহহেতৃত্বমন্থভবেন দ্রুল্পিক্রুন্ধাহীতি। আক্রোশত্যধিক্ষিপতি তদবোগ্যবমণেরর্থঃ। সংমোহনার্ব্যং
কণয়তি—সংমোহাদিতি। য়তেনিমিন্তনিবেদনদারা স্বরূপং নিরূপয়তি—
শাস্ত্রেতি। কণিক্ষাদেব তত্তাঃ স্বতো নাশসন্তবার সংমোহাধীনত্বং তত্তেত্যাঃ
শন্ত্যাহ—স্মৃতীতি। মৃতিভ্রংশেহপি কথং বৃদ্ধিনাশঃ স্বরূপতঃ সিধ্যতি তত্তাহ
—কার্য্যেতি। নহু প্রুবত্ত নিত্যসিদ্ধত বৃদ্ধিনাশঃ স্বরূপতঃ সিধ্যতি তত্তাহ
তত্তাহ—তাবদেবেতি। কার্য্যাকার্য্যবিবেচনবোগ্যান্তঃকরণাভাবে সতোহপি
প্রুবত্ত করণাভাবাদপগততব্বিবেকতব্বিবক্ষরা নষ্ট্রব্যপদেশঃ। তদেতদাহ—
প্রুক্ষার্থেতি॥ ৬৩

অনুবাদ। ক্রোধ হইতে সমোহ [অর্থাৎ] কার্য্যাকার্য্য-বিষয়ক অবিবেক উৎপন্ন হয়। কুদ্দ ব্যক্তি সমৃত্ হইনা গুরুত্ব প্রতিও আক্রোন ক্রিয়া থাকে। সমোহ হইতে "সৃতিবিত্রম" [অর্থাৎ] শাল্ল ও আঁচার্ব্যের উপদেশ জন্ত সংস্কার-সমূহের ফলস্বরূপ যে স্থৃতি, "তাহার বিভ্রম" ভংশ হইরা থাকে। স্মরণ হইবার কারণ সজ্যটন হইলেও, স্মরণ করিতে না পারাই [স্থৃতি-বিভ্রম শব্দের অর্থ]। সেই স্থৃতিবিভ্রম হইতে বুদ্ধিনাশ হর—অন্তঃকরণের কার্যাকার্য্য বিষয়ে বিবেক্ষোগ্যতার অভাবই বৃদ্ধির নাশ বলিরা অতিহিত হয়। বুদ্ধিনাশ হইতেই বিনাশ হয়। পুরুষ সেই পর্যান্তই পুরুষপদ বাচ্য হইরা থাকে, যে কাল পর্যান্ত তদীর অন্তঃকরণ কার্য্য ও অকার্য্য বিষয়ে বিবেক্ষে যোগ্য থাকে। [অন্তঃকরণের] বিবেক্ষোগ্যতা না থাকিলে, পুরুষ নাইই হয়। এই কারণে অন্তঃকরণ [শক্ষবাচ্য] বৃদ্ধির নাশ হইতেই পুরুষ নাই হয় [অর্থাৎ] পুরুষার্থের অযোগ্য হয়। ইহাই অর্থ ॥ ৬৩

রাগদ্বেষবিমুক্তৈস্ত্র# বিষয়ানিন্দ্রিয়েশ্চরন্। আত্মবশ্যৈবিধেয়াত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি॥ ৬৪

অন্তব্ম। রাগদেষবিমুকৈ: আত্মবশ্যৈ: বিষয়ান্ চরন্ (উপভূঞ্জান:) বিধেয়াত্মা (বশীক্কতহৃদয়: পুরুষ:) প্রদাদম্ অধিগচ্ছতি (প্রাপ্রোতি)॥ ७৪

অনুবাদ। রাগ ও দেব হইতে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত ও আত্মবশীভূত ইক্সির-সমূহের দারা [শব্দম্পর্শাদি] বিষয়ের উপভোগ করিলেও, জিতেক্সির পুরুব, [শীঘ্রই আত্ম-] প্রসাদ লাভ করিয়া থাকে॥ ৬৪

ভাষ্য। সর্বানর্থস মৃলমুক্তং বিষয়াভিশ্যানমপেদানীং মোককারণমিদমূচ্যতে রাগদেবেতি। রাগদেববিমুক্তৈ: রাগদ্ধ বেশ্চ রাগদেবে তৎপুর:সরা হি
ইন্দ্রিরাণাং প্রবৃত্তি: স্বাভাবিকী । তব্ব যো মুমুকুর্ভবতি স তাভ্যাং বিমুক্তৈ: শ্রোবাদিভিরিন্দ্রিরে: বিষয়ান্ অবর্জনীয়াংশ্চরন্ উপলভ্যান আত্মবশ্রেরারনা বস্তানি বশীভূতানি তৈরাত্মবশ্রে: বিধেয়াত্মা ইচ্ছাতো বিধেয় আত্মা অন্তঃক্রণং যস্ত সোহয়ং প্রসাদমধিগচ্ছতি। প্রসাদঃ প্রসন্ধতা স্বাস্থ্যম্॥ ৬৪

আনন্দ গিরিটীকা। বিষয়াণাং শ্বরণমপি চেদনর্থকারণং স্কতরাং তর্ছি ভোগন্তেন জীবনার্থং ভূঞ্জানো বিষয়াননর্থং কথং ন প্রতিপক্ষত ইত্যাশক্ষ্য বৃত্তাক্ত্র্বাদ-পূর্বকমৃত্তরশ্লোকতাৎপর্য্যমাহ—সর্ব্বানর্থস্যেতি। অনর্থমৃলকথনানন্তর্য্যমথ-শব্দার্থ:। পরিহর্ত্তব্যে নির্ণীতে সতি তৎপরিহারোপার জিজ্ঞাসাং দর্শরতি—ইদানী-মিতি। রাগবেষপূর্বিকা প্রবৃত্তিরিত্যকাক্ষতবদর্শনার্থো হিশব্দ:, শান্তীরপ্রবৃত্তিব্যসেধার্থং স্বাভাবিকীত্যুক্তং তত্ত্বেত্যধিক্ষতানধিকত্য প্রয়োগঃ। অবর্জ্জনীয়ানশন-

^{*} বিবুকৈস্ত ইতি বা পাঠঃ।

পানাদীন্ দেহস্থিতিহেতৃনিতি যাবং। ইন্দ্রিয়াণাং বিষয়েষু প্রবৃত্তিশ্চেমিয়বামুপপত্তা। বর্জনীয়েষপি সা স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—আ্রতা । অন্তঃকরণাধীনত্বেহপীন্দ্রিয়াণাং তদনিম্নাৎ তেষামপি নিয়মান্থপপত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—বিশ্বেয়াল্মৈতি ॥ ৬৪

আনুবাদ। বিষয়াভিন্যানই সকল অনর্থের মূল [ইহা] উক্ত হইয়াছে।
আনস্তর এইকণে রাগদেষ ইত্যাদি [শ্লোকের দারা] নোক-কারণ এই
প্রকারে নির্দিষ্ট হইতেছে।—"রাগদেষবিমুক্ত" রাগ ও দেষ [এই হইটি
বস্তই] "রাগদেষ" [এই শন্ধটির অর্থ] ইন্দ্রিয়গণের প্রবৃত্তি রাগ ও দেষ
ইতে উৎপন্ন হয়। ইহা স্বাভাবিক, তাহা হইলেও যে ব্যক্তি গোক্ষার্থী,
সে সেই রাগ ও দেষ হইতে বিনির্দ্যুক্ত শ্রোত্রাদি ইন্দ্রিয়নিচয়ের দারা
অবর্জনীয় বিষয়সমূহের "চরন্" অহুভবিতা হয়। [ইন্দ্রিয়েরও কি প্রকার
হওয়া উচিত, তাহাই বলা হইতেছে যে] [অর্থাৎ] আত্মবগ্র, আত্মার "বশ্র"
বশীভূত সেই আত্মবশ্র ইন্দ্রিয়-সমূহের দারা [ইত্যাদি পূর্কের সহিত অন্বিত]
তপাণি বিধেয়াত্মা [অর্থাৎ] ইচ্ছামুসারে "আত্মা" অন্তঃকরণ বাহার "বিধেয়"
বশীভূত হয়, সেই বিধেয়াত্মা এই মুদুক্ প্রসাদ লাভ করিয়া থাকে। প্রসাদ
[শব্দের অর্থ] প্রসয়তা স্বাস্থ্য ॥ ৬৪

প্রসাদে সর্ব্বক্রংখানাং হানিরস্যোপজায়তে। প্রসন্ধচেতসো ছাশ্ভ বুদ্ধিঃ পর্য্যবতিষ্ঠতে॥ ৬৫

আর্য়। প্রসাদে [সতি] অস্ত [যতে:] সর্কহ:খানা: হানি: (বিনাশঃ) উপজারতে (ভবতি) হি (যন্নাৎ) প্রসন্নচেতস: (স্বস্থাস্ত:করণস্ত) বৃদ্ধি: আন্ত (শীত্রং) পর্যাবভিষ্ঠতে (নিশ্চলা ভবতি) ॥ ৬৫

আমুবাদ। প্রসাদ উপস্থিত হইলে, এই যতির সকল প্রকার ছঃধের বিনাশ হর; কারণ, প্রসন্নচিত্ত ব্যক্তির বৃদ্ধি [পর্মাত্মবিষয়ে] অতি শীপ্র নিশ্চল হইয়া থাকে॥ ৬৫

ভাষ্য। প্রসাদে সতি কিং সাদিত্যচাতে—প্রসাদ ইতি। প্রসাদে সর্পক্ষংধানামাধ্যাত্মিকাদীনাং হানির্বিনাশোহস্ত যতেরূপজায়তে। কিঞ্চ প্রসন্ধর্কেরণক্ষ হি যক্ষাদাশু শীঘুং বৃদ্ধিঃ পর্যাবৃতিষ্ঠতে আকাশমিব পরি সমস্তাদবতিষ্ঠতে আত্মস্বরূপেণৈব নিশ্চলীভবতীত্যর্থঃ। এবং প্রসন্ধর্কের ক্রত্ত্বতা যতঃ তক্ষাৎ রাগদেষবিমৃত্তৈঃ ইন্তিরেঃ শাস্তাবিরূদ্ধে অবর্জনীয়ের যুক্তঃ সমাচরেদিতি বাক্যার্থঃ॥ ৬৫

আনন্দ গিরিটীক। তথাপি নানাবিধহংথাভিভূতদার স্বাস্থ্যমাস্থাভূং শক্যাম্বাদ্ধান পুছতি—প্রসাদ ইতি। শ্লোকার্দ্ধেনান্তরমাহ—উচ্যতে ইতি। দর্কহঃথহান্তা বৃদ্ধিস্বাস্থ্যেহপি প্রকৃতং প্রজ্ঞাস্থৈর্যং কথং দিদ্ধমিত্যাশক্ষাহ—প্রসাদেতি। বৃদ্ধিপ্রসাদক্ষৈব ফলান্তরমাহ—কিঞ্চেতি। তত্মাৎ বৃদ্ধিপ্রসাদ্ধিং প্রযতিতব্যসিতি শেষঃ। শ্লোকদ্বর্ত্তাক্ষরোখমর্থমৃক্তা তাৎপর্য্যার্থমৃপসং-হরতি—এব্যতি। বৃক্তঃ সমাহিতো বিষরপারবশ্রশ্ভ্তঃ সন্নিতি যাবং॥ ৬৫

অনুবাদ। প্রসাদ হইলে কি হয়, তাহা বলা বাইতেছে যে—প্রসাদে ইত্যাদি। প্রসাদ উপস্থিত হইলে, সন্ন্যাসীর আধ্যাত্মিক প্রভৃতি সকল প্রকার ছঃথের "হানি" বিনাশ হইয়া থাকে। আরও প্রসন্নচেতার [অর্থাৎ] স্বন্ধান্তঃ-করণ ব্যক্তির যে কারণ "আশু" শীঘ্র বৃদ্ধি পর্য্যবস্থিত হইয়া থাকে [অর্থাৎ] আকাশের স্থান্ন সকল দিকেই আত্মস্বরূপে নিশ্চল হয়; ইহা অর্থ। এই প্রকার প্রসন্নচিত্ত ও স্থিরবৃদ্ধি ব্যক্তির যে কারণে ক্রতক্ত্যতা লাভ হয়, সেইহেতু রাগ ও দেষবর্জিত ইক্রিয়নিচয়ের দ্বারা শাস্ত্রাবিক্তম্ব অণ্ড অপরিহরণীয় [অন্নপানাদি] বিব্রনিচয়ে যুক্ত হইয়া [যতি] ব্যবহার করিবে, ইহাই, বাক্যার্থ॥ ৬৫

> নাস্তি বৃদ্ধিরযুক্তস্থ ন চাযুক্তস্থ ভাবনা। ন চাভাবয়তঃ শান্তিরশান্তস্থ কৃতঃ অ্থম্॥ ৬৬

অনুষ্য় । অযুক্তস্ত বৃদ্ধিং নান্তি। অযুক্তস্ত ভাবনা চ নান্তি। অভাবয়তঃ শান্তিং নান্তি; অশান্তস্ত স্থং কৃতঃ ? ॥ ৬৬

অনুবাদ। অযুক্ত ব্যক্তির আশ্ববিষয়িণী বৃদ্ধি বা আশ্বক্তানের অভিনিবেশ হইতে পারে না। যাহার অভিনিবেশ নাই, তাহার শান্তি হইতে পারে না; অশান্ত ব্যক্তির স্থথ কোথায় ? ৬৬

ভাষ্য। সেরং প্রসরতা স্ত্রতে—নান্তীতি। নান্তি ন বিশ্বতে ভবজীতার্থ:! বুদ্ধিরাজ্বরপবিষয়া অযুক্তন্ত অসমাহিতান্তঃকরণশু। ন চান্ত্যযুক্তন্ত
ভাবনা আত্মজানাভিনিবেশঃ। তুথা ন চান্ত্যভাবরতঃ আত্মজানাভিনিবেশমকুর্মতঃ শান্তিরুপশমঃ। অশান্তশু কুতঃ স্থেম্, ইন্দ্রিরাণাংহি বিষয়সেবাভৃষ্ণাতো
নির্দ্তিঃ যা তৎক্রথং ন বিষয়বিষয়া ভৃষ্ণা, হংখমেব হি সা, ন ভৃষ্ণায়াং স্ত্যাং
ক্রথপ্ত গন্ধমাত্রমপ্যপপন্থতে ইতার্থঃ॥৬৬

আনন্দগিরিটীকা। কিং পুনঃ সম্বভইদ্ধাব যুগোক্তবৃদ্ধিঃ সিধ্যতি নেত্যাহ

সেমুমিতি। অসমাহিতভাগি বৃদ্ধিমাত্তমুংগভমানং প্রতিভাতীত্যাশহ্য

বিশিন্তি—আত্মস্বরূপেতি। ন হি বিশিপ্তচিত্তভাম্বরূপবিষয়া বৃদ্ধিদদ্মহতীত্যর হেতুমাহ—ন চেতি। আত্মজানে শব্দাদাপাততো লাতে শ্বতিসন্তানকরণং সাক্ষাৎকারার্থসন্তিনিবেশা ভাবনেতি চোচ্যতে। ন চাসৌ বিশিপ্তবৃদ্ধেঃ
সিধ্যতীতি হেত্বর্থং বিবন্ধিছাহ—আত্মজ্ঞানেতি। ভাবনাদ্বারা সাক্ষাৎকারাভাবেৎপি কা ক্ষতিরিত্যাশন্ত্যাহ—তথেতি। অসমাহিত্তভ ভাবনাভাববাদেতি
যাবং। আত্মভাপাততো লাতে প্রবণাভার্তিরূপাং শ্বতিমনাত্মানস্তাপরোক্ষবৃদ্ধ্যভাবে নানর্থনিবৃত্তিঃ সিধ্যতীত্যাহ—উপশম ইতি। অনিবৃত্তানর্থভ পরমানন্দসাগরাদ্বিভক্তভ সংসারবারিধৌ নিমগ্রন্ত স্থাবির্ভাবো ন সম্ভবন্তীত্যাহ—অশান্তস্যোগাং হীতি। তৃক্যাক্ষন্ত শান্তপ্রসিক্ষান্ত্তিবিক্ষ স্থব্যমিতি বক্তুং হিশকঃ।
বিষয়সেবাত্তক্ষয়াপি বিষয়োপভোগদারা স্থম্পলন্ধিত্যাশন্ত্যাহ—তুঃখ্মেবেতি।
ভ্রাপি হিশক্ষাহ্মভবাবভোতী। ভদেব স্পষ্টয়তি—নেত্যাদিনা। ৬৬

অমুবাদ। এই সেই প্রসন্ধতারই স্ততি করা যাইতেছে বে নাস্তীত্যাদি।
"অযুক্ত" অসমাহিতচিত্ত ব্যক্তির আত্মবিষয়িণী বৃদ্ধি উৎপন্ন হইতে পারে না; অযুক্ত
ব্যক্তির "ভাবনা" আত্মজানে অভিনিবেশও হইতে পারে না। যাহার ভাবনা
নাই [অর্থাৎ] আত্মজানবিষয়ে যে ব্যক্তির অভিনিবেশ নাই, তাহার "শাস্তি"
উপশম হর না; অশাস্ত ব্যক্তির কিরূপে প্রথ হইতে পারে? ইন্দ্রিরসমূহের
বিষরভোগ-বিষয়ে ভৃকা হইতে বে নির্ত্তি, তাহাই প্রকৃত] স্থ্প, বিষয়ভোগের
ভৃকা স্থপ নহে [প্রকৃত পক্ষে] তাহাই হঃখ; [কারণ] ভ্কা থাকিতে স্থপের
বেশও উপপন্ন হইতে পারে না, ইহাই তাৎপর্যার্থ॥ ৬৬

ইন্দ্রিয়াণাং হি চরতাং যন্মনোহনুবিধীয়তে। তদক্ত হরতি প্রজ্ঞাং বায়ুর্নাবমিবান্তিসি॥ ৬৭

আৰুয় । হি (যশাৎ) চরতাম্ ইক্রিয়াণাং যৎ মনঃ অন্থবিধীয়তে তৎ [মনঃ] বায়ুঃ অন্তান নাবম্ ইব অস্ত প্রজ্ঞাং হরতি ॥ ৬৭

জানুবাদ। নিজ নিজ বিষয়ে প্রবর্ত্তমান ইন্দ্রিয়গণের সহিত যে হাদর প্রবৃত্ত হর, সেই হাদর—জলের মধ্যে বাছু যে প্রকার নৌকাকে ব্যাকুল করিয়া নষ্ট করে, সেই প্রকার—এই সাধকের প্রজাকে নষ্ট করিয়া থাকে॥ ৬৭

ভাষ্য । অব্ৰুক্ত ক্মান্ বৃদ্ধিন ত্তীভূচচতে—ইন্দ্রিনাণামিতি। ইন্দ্রিনাণাং হি যামাৎ চরতাং স্বাধিবরেষ্ প্রবর্তমামানাং হৎ মন্যেহস্বিধীরতে

ক্ষমপ্রবর্ত্ততে তদিন্তিরবিষরবিকরনেন প্রবৃত্তৎ মনোহত্ত যতের্ছ'রতি প্রক্রাষ্ট্রনাত্ত্বিরতি কথম ? বায়ন বিমিবাস্তদি উদকে জিগমিষতাৎ মার্গান্ত্র্কৃত্য উন্মার্গে বণা বায়ন বিং প্রবর্ত্তরতি এবমাত্মবিষরাং প্রক্রাং করোতি। যততো হুপীত্যুপহান্তত্ত অর্থহ্য অনেকধা উপপত্তিমৃত্বা তং চার্থমুপপাত্ম উপসংহরতি ॥ ৬৭

আনন্দগিরিটীকা। আকাজ্ঞাদ্বারা শ্লোকান্তরমূথাপবাছ—অযুক্তস্যেতি। বিক্ষিপ্তচেতসো ভাবনাভাবে সাক্ষাৎকারলক্ষণা বৃদ্ধিন ভবতীতি হেদ্বস্তরেণ সাধরতি—ইন্দ্রিয়াণামিতি। বৎপদোপাত্তং মনস্তৎপদেনাপি গৃহুতে। ইন্দ্রিয়াণাং শ্রোত্রাদীনাং বিষদ্ধাঃ শব্দাদরন্তেবাং বিকর্মনং মিণো বিভন্ন গ্রহণং ভেনেতি বাবং। দৃষ্টান্তং ব্যাকরোতি—উদক ইতি। করোতি বন্ধাং তন্মাদযুক্ত নোংপন্থতে বৃদ্ধিরিতি যোজনা। বততে হীত্যাদিশ্লোকাভ্যামৃক্তক্তৈবার্থক্ত প্রকৃতশ্লোকাভ্যামিপ কথ্যমানদানতি পুনক্ষক্তি-বিত্যাশক্ষা পরিহরতি—যৃত্তে। হীত্যাদিনা। ধ্যারতো বিবন্ধানিত্যাদিনা উপপত্তিবচন্মুরের্ম্ম্॥ ৬৭

অনুবাদ। অযুক্ত ব্যক্তির কি কারণে [আত্মবিষরিণী] বুদ্ধি থাকে
না, তাহাই উক্ত হইতেছে বে—ইন্দ্রিয়াণামিত্যাদি। "হি" বে কারণে
নিজ নিজ বিবরে প্রবর্ত্তমান ইন্দ্রিয়গণের পশ্চাৎ বে মন প্রবৃত্ত হয়, ইন্দ্রিয়বিষয়সমূহের বিকরপর সেই মনঃ এই যতির আত্ম ও অনাত্ম বস্তর বিবেকজনিত প্রজ্ঞাকে হরণ করে [অর্থাৎ] নাশ করে। কাহার কার ?
বায়ু নৌকাকে বেমন জলে [নিমগ্র] করে [অর্থাৎ] জলে গমন ক্রিতে অভিলাবী জনগণের গস্তব্যু মার্গ হইতে ফিরাইয়া ষেমন উন্মার্গেই বায়ু নৌকাকে প্রবর্ত্তিত করে, সেইরূপ তাদৃশ হৃদয় আত্মবিষরিণী প্রজ্ঞাকে হরণ করিয়া বিষয়বিষরিণী করিয়া থাকে। "যততো হৃপি" ইত্যাদি স্লোকে যে অর্থ উপন্তন্ত হইয়াছিল, নানাপ্রকার যুক্তি প্রদর্শন করাইয়া তাহারই উপসংগর [এই স্লোকে] করা হইতেছে ॥ ৬৭

তন্মাদ্ যদ্য মহাবাহে। নিগৃহীতানি দৰ্ব্বশঃ। ইন্দ্ৰিয়াণীন্দ্ৰিয়াৰ্থেভ্যন্তদ্য প্ৰজ্ঞা প্ৰতিষ্ঠিতা॥ ১৮৮

অন্বয়। হে মহাবাহো। তত্মাৎ ষত্ত ইন্দ্রিরাণি সর্বাণ ইন্দ্রিরার্বেড্যঃ নিস্হী-তানি, তত্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ৬৮ অনুবাদ। হে মহাবাহো। এই কারণে [বলিতেছি ষে,] বাহার ইন্তিরসমূহ [সকল প্রকার] ইন্তিরার্থ হইতে সর্বপ্রকারে নিগৃহীত হইরাছে, তাহারই প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত হইরাছে ॥ ৬৮

ভাষ্য। ইন্দ্রিরাণাং প্রবৃত্তৌ দোষ উপপাদিতো যন্ত্রাৎ—তন্মাদ্ যন্ত যতে: হে মহাবাহো নিগৃহীতানি সর্ব্ধশঃ সর্ব্ধপ্রকারে: মানসাদিভেদৈঃ ইন্দ্রিরাণি ইন্দ্রিরার্থেভ্যঃ শন্ধাদিভ্যন্তন্ত প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা॥ ১৮

আনন্দগিরিটীকা। তচ্ছস্পাপেকিতার্থোক্তিদারা শ্লোক্ষনতারম্বতি— ইন্দ্রিয়াণামিতি। অসমাহিতেন মনসা যত্মাদহবিধীয়মানানীক্রিয়াণি প্রসহ প্রজ্ঞামপহরস্তি তত্মাদিতি যোজনা॥ ৬৮

অনুবাদ। বেহেতু ইন্দ্রিরগণের প্রবৃত্তিতে দোষ উপপাদিত হইরাছে, সেই কারণে, যে যতির মানসাদি ভেদে সকল ইন্দ্রিরই ইন্দ্রিরার্থ শব্দাদি হইতে সর্ব্ধপ্রকারে নিগৃহীত হইরাছে, হে মহাবাহো, তাহারই প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিত ইইরাছে॥ ৬৮

> যা নিশা সর্ব্বভূতানাং দ্যাং জাগর্ভি সংযমী। যদ্যাং জাগ্রতি ভূতানি দা নিশা পশ্যতো মুনেঃ ॥৬৯

আনুর । সর্বভূতানাং যা নিশা তভাং সংযমী জাগর্জি (প্রব্ধাতে) বভাং [নিশারাং] ভূতানি জাগ্রতি, পশুতো মুনেঃ সা নিশা ॥ ৬৯

অমুবাদ। সকল প্রাণিগণের নিকট যাহা রাত্তি, তাহাতে জিতেজির ব্যক্তি জাগরিত থাকেন। সকল প্রাণিগণ যাহাতে প্রবৃদ্ধ থাকে, বিজ্ঞানশালী যতির নিকট তাহাই রাত্তি॥ ৬২

ভাষ্য। যোহয়ং লৌকিকো বৈদিকণ্ট ব্যবহার: স উৎপন্নবিবেকবিজ্ঞানস্ত স্থিতপ্রজ্ঞ অবিজ্ঞাকার্য্যথাৎ অবিজ্ঞানির্ন্তৌ নিবর্ত্তে। অবিজ্ঞান
রাশ্চ বিজ্ঞাবিরোধাৎ নিবৃত্তিরিত্যেতমর্থং স্ফুটীকুর্বনাহ—যা নিশেতি। বা
নিশা রাত্রি: সর্বপদার্থানামবিবেককরী তমঃস্বভাবত্বাৎ সর্বেষাং ভূতানাং
সর্ব্বভূতানাম্। কিং তৎ ? পরমার্থতত্বং স্থিতপ্রজ্ঞ বিষয়:। যথা নক্তঞ্চরাণাম্ অহরেব সৎ অন্তেষাং নিশা ভবতি, তদ্বৎ নক্তঞ্চরস্থানীয়ানাম্
অজ্ঞানাং সর্বভূতানাং নিশেব নিশা পরমার্থতত্বম্ অগোচরত্বাদতদ্ব্দীনাম্।
তক্তাং পরমার্থতত্বলক্ষণায়াম্ অজ্ঞাননিদ্রায়া: প্রবৃদ্ধা জ্ঞাগর্ত্তি সংযমী সংব্যবান্
জিতেজিয়া যোগীতার্থ:।

বস্তাং গ্রাহ্মপ্রাহকভেদগক্ষণায়াম্ অবিভানিশায়াং প্রস্থান্তেব ভূজানি জাগ্রতীত্যুচ্যতে বস্তাং নিশায়াং প্রস্থাইব স্বয়দৃশঃ সা নিশা অবিভারপদাং পরমার্থতকং পশুতো মুনেঃ। অতঃ কর্মাণি অবিভাবস্থায়ামেব চোছতে ন বিভাবস্থায়াম্। বিভারাং হি সত্যাম্ উদিতে সবিতরি শার্করমিব তমঃ প্রশাশ-মুপগচ্ছত্যবিভা। প্রাগ্বিভোৎপত্তেঃ অবিভা প্রমাণব্রুয়া গৃহ্মাণা ক্রিয়ালারক্ষণভেদরপা সতী সর্ক্রক্ষিহেতৃত্বং প্রতিপভতে। নাপ্রমাণব্রুয়া গৃহ্মাণায়াঃ কর্মাহেতৃত্বোপপত্তিঃ। প্রমাণভূতেন বেদেন মম চোদিতং কর্ত্ব্যং কর্মেতি হি কর্মণি কর্ত্তা প্রবর্ত্তে নাবিভামাত্রমিদং সর্কং নিশেবেতি।

বক্ত পুনর্নিশেব অবিভাষাত্রমিদং সর্কং ভেদজাতম্ ইতি আনং তক্ত আছ্মজন্ত সর্ক্রকর্মগঞ্জাস এবাধিকারো ন প্রবৃত্তী। তথা চ দর্শায়ন্তি —"ভদ্বৃদ্ধরন্তদাত্মানঃ" ইত্যাদিনা জ্ঞাননিষ্ঠায়ামেব তন্তাধিকারম্। তত্রাপি প্রবর্তকপ্রমাণাভাবে প্রবৃত্তাহুপপত্তিরিতি চেং, ন স্বাস্থ্যবিষয়ন্তাং আন্ধ্রন্তা। ন ভাষ্মনঃ স্বাস্থানি প্রবর্তকপ্রমাণাপেকতা আত্মান্তাবে ভদত্ত হাছে সর্ক্রপ্রমাণানাং প্রমাণ্ডম্ভা ন ভ্যায়ন্ত্রপাধিগমে সতি পুনঃ প্রমাণ্ডমেরবাহারঃ সন্তবিত। প্রমাত্ত্রং ভ্যায়নঃ নিবর্ত্তরভ্যাং প্রমাণ্ডম্বা বির্ত্তির্বাদর্শনাং প্রমাণ্ডা। উদ্যান্ত্রিবাদের কর্মণাধিকার ইতি সিদ্ধ্॥ ৬৯

আনন্দ্রগিরিটীকা। আয়বিদঃ স্থিতপ্রজন্ত সর্ক্রকশ্পরিত্যাগেৎধিকারঃ তদ্বিপরীতস্থাজন্ত কর্মণীত্যেতিমির্গে সমনস্তর্গ্রোক্ষরতালর তি—যোত্যু-মিতি। অবিভানিরত্তী সর্ক্রকর্মনির্ত্তিশ্চেৎ তরির্ত্তিরের কথমিত্যাশভাহ—অবিস্থায়ালেচতি। স্ট্রকুর্মন্ বাহাত্যস্তরকরণানাং পরাক্প্রত্যক্পর্ক্তিবং ওধাবিধে দর্শনে চ মিথো বিরুধ্যেতে পরাগ্দর্শনক্ত অনাভাদ্মাবরণাবিভাকার্যাং মাদ্মদর্শনক্ত চ তরিবর্জকত্বাৎ ততক্ষ আয়দর্শনার্থম্ ইন্সিয়াণি কর্পেন্ত্যোনিগৃত্বীয়াৎ ইত্যাহেতি বোজনা। সর্ক্রপ্রাণিনাং নিশা পদার্থাবিবেককরীত্যত্ত হেত্নাহ—তমঃস্বভাবত্বাদিতি। সর্ক্রপ্রাণিসাধারণীং প্রসিদ্ধাং নিশাং দর্শিয়িষা তামের প্রক্রতান্ত্রপ্রপত্তন প্রস্থপ্রকং বিশদর্যতি—কিং তদিত্যাদিনা। হিতপ্রজবিষক্ত পরমার্থতক্ত প্রকাশৈকস্বভাবস্য কথমজান্ প্রতি নিশাঘমিত্যা-ক্র্যাভ—যুথেতি। তত্র হেত্নাহ—অন্যোচরক্রাদিতি। অতদ্র্দ্রীনাং পরমার্থ-ত্বাতিরিক্তবৈতপ্রপঞ্চপ্রত্ব্দ্রীনামপ্রতিপরস্থাৎ প্রমার্থতক্ষং নিশেবাবিত্বা-

মিভার্থ:। তুল্যামিত্যাদি ব্যাচষ্টে—তুম্মামিতি। নিশাবছকারামবস্থারামিতি যাবংগে বোগীতি জ্ঞানী কথাতে।

· দ্বিতীরার্কং বিভঙ্গতে—যুস্থামিতি | প্রস্থপানাং জাগরণং বিরুদ্ধমিত্যাশঙ্কাহ -প্রস্থা ইবেতি। পরমার্থতক্তমন্থভবতো নির্ভাবিষ্ণস্ত সংগ্রাসিনো বৈতা-বস্থা নিশেত্যত্র হেভুমাহ—অবিদ্যারূপত্মাদিতি। পরমার্থাবস্থা নিশেবাবিছ্যাৎ বিছ্বাং তু বৈতাবস্থা তথেতি স্থিতে ফলিতমাহ—অত ইতি। অবিষ্থাবস্থায়ামেব বিম্বোদয়েছপি তংপ্ৰতিভানাবিশেষাং ক্রিয়াকারকফলভেদপ্রতিভানাদিতার্থ: পূর্বমিব কর্মাণি বিধীরেরন্নিত্যাশঙ্ক্যাহ—বিদ্যায়ামিতি। অবিখ্যানিবুক্তৌ বাধিতাহুরন্ত্যা বিভাগভানেহপি নান্তি কর্মবিধিঃ বিভাগাভিনিবেশাভাবাদিতার্থ:। ষবিখাবস্থায়ামেব কর্মণীভ্যুক্তং ব্যক্তীকরোতি—প্রাগিতি। পূর্বং বাধকাভাবাদবাধিতাবিদ্যা ক্রিয়াদিভেদমাপত্ত প্রমাণরপরা বুদ্ধ্যা গ্রাহ্মতাং প্রাপ্য কর্মহেতুর্ভবতি ক্রিয়াদিভেদাভিমানশু তদ্ধেতুত্বাদিত্যর্থ:। ন বিষ্থাবস্থায়া-মিত্যক্তং প্রপঞ্চাতি — নাপ্রমাণেতি। উৎপন্নারাঞ্চ বিভারাম্ অবিভারাঃ নিবৃত্তছাৎ ক্রিয়াদিভেদভানম অপ্রনাণমিতি বৃদ্ধিকৎপদ্মতে যথো কবিভাগভাগিস্তপ্যবিদ্যা ন কর্মহেতুত্বং প্রতিপল্পতে আভাসতন্মা তদ্ধেতৃত্বাযোগাদিত্যর্থ:। বিষ্ণাবিষ্ণাবিভাগেনোক্তমেৰ বিশেষং বিরু-পোতি—প্রমাণ্ডুতেনেতি'। যথোক্তেন বেদেন কামনাদিমতো মম কর্ম্ম বিহিতৎ সাধনত্বেন ময়া তৎকর্ত্তব্যমিতি মন্বানঃ সন্ কর্মণ্যজ্ঞোহধিক্রিয়তে তং প্রতি বিশেষবাদিনো বেদশু প্রবর্ত্তকভাদিত্যর্থ:। সর্ব্যমেবেদমবিক্সামাত্রং হৈতং নিশেৰেভি মধানম্ভ ন প্ৰবৰ্ত্ততে কৰ্ম্মণীতি ব্যাবৰ্ত্তামাহ—নাবিদ্যেতি।

বিশ্ববো ন কর্মণ্যধিকারশ্চেৎ তহ্যধিকারন্তর্হি ক্রেত্যাশব্দ্যাহ—যুদ্রোতি । তহ্য আত্মক্ত ফলভূতসংখ্যাসাধিকারে বাক্যশেষং প্রমাণয়তি—তথা চেতি । প্রবর্ত্তকং প্রমাণং বিধিন্তদভাবে কর্মম্বিব বিহুবো জ্ঞাননিষ্ঠায়ামণি প্রবৃত্ত্যন্তপণতেরাপ্রমাণীয়ে জ্ঞানবতোহণি বিধিরিতি শক্তে—তত্রাপীতি । কিমাম্মজানং বিধিমপেক্ষতে কিংবাম্মা নাছঃ ভহ্ম স্বরূপবিষয়ন্ত বংগা প্রমাণপ্রমেয়মুৎপত্তেঃ বিধ্যনপেক্ষাদিত্যাহ—ন স্বাজ্মেতি । ন দিতীয়ইত্যাহ—নহীতি । প্রবর্ত্তক প্রমাণশন্দিতহা বিধেঃ সাধ্যবিষয়ন্তাৎ আত্মনশ্চ অসাধ্যভাদিতি হেত্মাহ—আত্মতাদেবেতি । আত্মত্ম জ্ঞানয়োঃ বিধ্যনপেক্ষম্বেহণি জ্ঞানিনো মানমের-ব্যবহারপ্রতিনিয়মার্থং বিধ্যপেক্ষা ভাদিত্যাশব্যাহ—তদন্তত্বাচ্চেতি । সর্ব্বেষং প্রমিণানির্থ প্রামাণ্যন্ত আত্মজ্ঞানোদ্যাবসানতাৎ ত্রিয় ৎপরে ব্যবহারপ্র

নিম্বকাশদার তৎপ্রতিনির্মার জানিনো বিধিরিত্যর্থঃ। উক্তমেব ব্যক্তীকরোতি

—ন হীতি। ধর্মাধিগমবৎ আত্মাধিগমেছণি কিমিতি বংগাক্তো ব্যবহারো ম
ভবতীত্যাশদ্যাহ—প্রমাতৃত্বং হীতি। তরির্ভৌ কথমদৈতজ্ঞানন্ত প্রামাণ্যমিত্যাশদ্যাহ—নিবর্ত্তরাদেবেতি। প্রমাতৃত্বং নিবর্ত্তরদদৈতজ্ঞানং স্বয়ং নির্ত্তের্ম
প্রমাণমিত্যক্র দৃষ্টাস্তমাহ—স্বপ্নেতি। আত্মজ্ঞানন্ত বিধ্যনপেক্ষণ্ডে হেম্বস্তর্মাহ—
লোকে চেতি। ব্যবহারভূমৌ হি প্রমাণক্ত বস্তুনিশ্চরফলপর্যান্তর্মে গভি
প্রবর্তকবিধিসাপেক্ষণাম্পলন্তাৎ অদৈতজ্ঞানমপি প্রমাণদার বিধিমপেক্ষতে
রক্ষাদিজ্ঞানবদিত্যর্থঃ। আত্মজ্ঞানবতন্তরিষ্ঠারা বিধিমন্তরেণ জ্ঞানমাহান্ম্যোনৈব সিদ্ধদ্বাৎ তক্ত কর্ম্মগঞ্জাসেছধিকারো ন কর্মণীত্যুপসংহরতি—তুন্মাদিতি॥ ১৯

অনুবাদ। বাহা কিছু জ্ঞানগোচর লৌকিক কিংবা বৈদিক ব্যবহার আছে, বিবেকবিজ্ঞানসম্পন্ন স্থিতপ্রজ্ঞের সমক্ষে, ঐ সকল ব্যবহার অবিষ্ঠা-কার্যায়-নিবন্ধন, অবিষ্ঠা-নিবৃত্তি হইলেই, নির্ত্ত হইরা থাকে। বিষ্ণার সহিত বিরোধ থাকা নিবন্ধন [বিষ্ণার উদয় হইলেই] অবিষ্ঠার নির্ত্তি হয়, এই বিষয়টিকে বিশদ করিয়া বুঝাইবার জন্ম বলিতেছেন বে—বা নিশেত্যাদি।

নাহা "নিশা" রাত্রি [কাহাকে বলে ?] [যাহা] সকল পদার্থের অবিবেককরী। সকল প্রাণীরই তমঃস্বভাববশতঃ [তাহা রাত্রি], কি তাহা ? স্থিতপ্রজের জ্ঞানগোচর পরমার্থ আত্মতর। বেমন অন্তের নিকট যাহা দিন, তাহাই রাত্রিচর পেচক প্রভৃতির নিকট তাহাদের তমঃস্বভাবস্থ-নিবন্ধন রাত্রিই হইয়া থাকে; সেই প্রকার নিশাচরস্থানীর অক্স ব্যক্তিগণের নিকট, পরমার্থতত্ত্বই নিশা [অর্থাৎ] নিশার স্থার হইয়া থাকে; কারণ, অক্সান্থতাত অনাত্মবৃদ্ধি ব্যক্তিগণের তাহা ক্যানগোচর হইতে পারে না। অক্সানীর নিকট যাহা অন্ধকারময়ী নিশার স্থার প্রতীত হয়, সেই পরমার্থতত্ত্বপ অক্সানীর রাত্রিতে অক্সাননিলা হইতে প্রবৃদ্ধ, "সংয্মী" সংব্যবান্ [অর্থাৎ] ক্সিতেক্সির বোগী ক্যাগরণ করিয়া থাকেন—ইহাই অর্থ।

গ্রাহ্ ও গ্রাহকের ভেদজ্জানের কারণ যে অবিষ্ণা, সেই জরিষ্টারূপন রাজিতে প্রস্থুও প্রাণিনিচর, [ব্যবহারদশাতে] জাগরিত আছে বিলয়া, ব্যবহৃত হর এবং বাহাতে প্রস্থুও জীবগুণ স্বপ্নদর্শীর ক্লার স্বাণিয়া থাকে, পরমার্থ-তত্ত্বদর্শী যতির সনক্ষে অজ্ঞানস্থরপতা-নিবন্ধন তাহা [প্রকৃতপক্ষে] রাত্রিই হইরা থাকে; এই কারণে অবিভাবস্থাতেই (প্রাণিগণের) সকল-প্রকার কর্ম্ম বিহিত হয়, বিভাবস্থার বিহিত হইতে পারে না। বিভার উদর হইলে, সবিতার উদরে নৈশ অন্ধকারের ভায়, অবিভা বিনাশ প্রাপ্ত হয়। বিভার উদরের পূর্ব্বে প্রমাণবৃদ্ধির বিষয়ীভূত অবিভা ক্রিয়াকারক ও ফলাদি নানার্দ্ধণে পরিণত হইয়া সকল প্রকার কর্ম্মের হেতু হইয়া থাকে। অবিভা অপ্রমাণ বলিয়া গৃহীত হইলে, তাহাতে কর্ম্মহেতৃতা উৎপন্ন হইতে পারে না। "বেদ প্রমাণ, সেই বেদ এই কর্ম্ম আমার কর্ত্বর বলিয়া নির্দেশ করিতেছে" এই প্রকার জ্ঞান হইলেই কর্ত্তা কর্মের প্রের ছয়। এই সকলই অবিভামাত্র নিশার ভায় [পরমার্থ বস্তর আবরক] এই প্রকার জ্ঞান থাকিলে [কর্ত্তা কর্মেরত প্রবৃত্ত হয় না।

এই সকল [ক্রিরা-কারক ফলরূপে] ভেদ-ব্যবহার অবিস্থামাত্ত, এই প্রকার জ্ঞান বাহার হইরাছে, সেই আত্মজ্ঞব্যক্তির স্কর্কণ্ম সংস্থাসেতেই অধিকার আছে, প্রবৃত্তি [মার্গে] ত অধিকার নাই। "তদ্বুদ্ধয়ন্তদাত্মানঃ" ইত্যাদি বাক্যের দারা ভগবানও সেই ভাবেই দেখাইবেন যে তাহার জ্ঞান-নিষ্ঠাতেই অধিকার আছে। সকল প্রমাণ্ড বদি অবিভাষাত্র হইল, ভাষা হইদে, [তাহার পকে] সর্বপ্রকার প্রবর্ত্তক প্রমাণ না পাকার আত্মজ্ঞানেই বা আর্তি কি প্রকারে হইবে, এই প্রকার শঙ্কাও হইতে পারে না; [কারণ] আব্দ্রানের বিষয় আত্মা [অর্থাৎ বিষয় সন্নিহিত থাকিলেই তাহার জ্ঞান হইয়া থাকে, সেই জ্ঞান, প্রবর্ত্তক প্রমাশের অপেকা করে না; স্থতরাং আত্মজ্ঞানে প্রবর্ত্তক প্রমাণ না থাকিলে, ক্তির সম্ভাবনা কি ? । আত্মার নিজস্বরূপে প্রবর্ত্তক প্রমাণের অপেকা হইতে পারে না; কারণ, তাহা থেহেতু সকলের আত্মত সর্বপ্রকার প্রমাণের প্রমাণত্ব ও যে নিমিত আত্মপর্য্যবসায়ী। . আত্ম-শ্বরূপের জ্ঞান হইলে, আবার দে প্রমাণ প্রমেয় ব্যবহার সম্ভব হইবে, ইহা হইতে পারে না। বেদান্তরূপ শেষ প্রমাণ আত্মার [উপর কল্পিড] প্রমাতৃত্ব নিরুত্ত ক্ষার্যা পাকে ও নিবর্ত্তন করিয়া, পরে আপনিও অপ্রমাণ হইয়া উঠে; প্রবোধ ছইলে বেমন স্বপ্নাবস্থার প্রমাণ অপ্রমাণ হয়। ব্যবহারদশাতেও [দেখিতে পাওয়া বাব বে] প্রবাণ স্ববিষয় বন্ধর জ্ঞান করাইতে গিরা অস্ত কোন প্রবর্ত্তক ব্রমাণের অপেকা করে না। সেই কারণে আত্মবিৎ বতির কর্ম করিবার चिकान गाँह, देश निक रहेन ॥ ७৯

আপূর্য্যমাণমচলপ্রতিষ্ঠং

সমূদ্রমাপঃ প্রবিশক্তি যদ্বৎ। তদ্বৎ কামা যং প্রবিশক্তি সর্ক্রে স শান্তিমাপ্রোতি ন কামকামী ॥ ৭০

আন্বয়। আপ: (নদী-জনানি) বদ্বৎ (বথা) আপ্র্যমাণম্ অচল-প্রতিষ্ঠাং সমূদ্রং প্রবিশস্তি, তদ্বৎ (তথা) সর্ব্দে কামাঃ বং প্রবিশস্তি, স শান্তি-মাগ্নোতি, ন কামকামী [শান্তিম্ আগ্নোতি]॥ ••

অনুবাদ ৷ আপূর্যমাণ হইয়াও অচলভাবে অবস্থিত সমুদ্রের মধ্যে বেমন জলনিচয় প্রবিষ্ট হয়, সেই প্রকার [বিষয়লাভে অক্ক হাদয়] যে ব্যক্তির আত্মাতে সকল কাম বিলীন হয়, তিনি-ই শান্তি লাভ করেন, কামাসক্ত ব্যক্তি শান্তিলাভ করে না ॥ ९ •

ভাষ্য ৷ বিত্নবস্তাকৈষণত স্থিতপ্ৰজ্ঞত বতেরেব মোক্ষপ্রাপ্তিন দসর্গাদিন: কামকামিন: ইত্যেতমর্থং দৃষ্টান্তেন প্রতিপ্রাদিয়িষ্যরাহ—আপৃর্যমাণস্ অতি:, অচলপ্রতিষ্ঠি অচলতয়া প্রতিষ্ঠা অবস্থিতির্বস্ত তম্ অচলপ্রতিষ্ঠং সমুদ্রম্ আপ: দর্মতো গতাঃ প্রবিশন্তি স্বায়ন্তমবিক্রিয়মের সস্তং বদ্বং, তদ্বং কামা বিষয়সন্নিধাবপি দর্মতঃ ইচ্ছাবিশেরা বং পুরুষং দমুদ্রমিবাপঃ অপ্রতিকুর্মস্তঃ প্রবিশন্তি দর্মে আত্মন্তের প্রশায়ন্তে দ সায়বশং কুর্মন্তি, দ শান্তিং মোক্ষমাপ্লোতি নেতরঃ কামকামী কামান্ত ইতি কামা বিষয়াঃ তান্ কাময়িতুং শীলং বস্তু দ

আনন্দ গিরিটীকা। নম্বদ্ঞাসিনাপি বিভাবতাং বিভাক্ষণ নাক্ষ নাক্ষ লক্ং শক্ষাৎ কিমিতি বিহুমঃ সংস্থাসো নিম্ন্যুতে তত্ত্বাহ—বিহুম্ ইতি। আপাতজ্ঞানবতো বিবেকবৈরাগ্যাদিবিশিষ্টভৈষণাভ্যঃ সর্ব্বাভ্যোব্যুখিতক্ত প্রবাদিনা সমুৎপদ্মাক্ষাৎকারবতো মুখ্যক্ত সংস্থাসিনো নােক্ষা নাক্ষক্ত বিষয়ত্কা-গরিভ্তক্ত ইত্যেতক্ প্রান্তেন প্রতিপাদয়িত্মিছন্ রাগদেষবিমুক্তৈর ইতিনােকােজনেবার্থং পুনরাহেতি যােজনা। অদ্বিঃ সমুদ্রক্ত সমস্তাৎ পূর্যানাণকে ইন্মিনিরতা তদীয়া স্থিতিরাপতেদিত্যাশক্ষাহ—অচলেতি। ন হি সমুদ্রক্তিদ্বাদকাত্মকং প্রতিনিয়তং রূপং ক্লাচিদিপি বর্দ্ধতে ইসতে বা তেন ভদীয়া স্থিতিরেকর্মপবেতার্থঃ। তত্তমাদেয়াক্ষেদাণঃ সমুদ্রাভ্রমিতি তিহি তক্ত বিক্রিয়ানক্ষাপ্রতির্ভা ক্লাক্তিয়াহ—স্বাভ্রম্বিতি। ইছাবিশেষাঃ বিষয়াশাম-ক্ষাপ্রতির্ভা ক্লাক্তিয়াহ—স্বাভ্রম্বিতি। ইছাবিশেষাঃ বিষয়াশাম-

সন্নিধৌ বিছবি নির্নিকারে অপ্রবিশস্তোহণি সন্নিধানে তন্মিন্ প্রবিশস্তো বিকারমাপাদরের: ইত্যাশঙ্ক্যাহ—বিষয়েতি। প্রবেশং বিশদয়তি—সর্ব্ব ইতি।
যোহকাম ইত্যাদিশ্রুতের্বিষয়বিমুখন্ত নিজামন্ত মোকো ন কামকামুকন্তেত্যাহ—
স্থান্তিমিতি॥ १०

অসুবাদ। জননিবহের দারা পরিপ্র্যামাণ ও অচনপ্রতিষ্ঠ [অর্থাৎ] বাহার "প্রতিষ্ঠা" অবস্থিতি অচন, [তাহাকেই অচনপ্রতিষ্ঠ বলা যায়।] সেই অচনপ্রতিষ্ঠ সমূদ্রে সকল দিক্ হইতে প্রস্ত জলরাশি প্রবিষ্ঠ হয়, অথচ সেই জলরাশি, যেমন সমূদ্রের মধ্যে প্রবিষ্ঠ হইলেও সমূদ্র আত্মভাবেই সংস্থিত থাকে এবং কোন প্রকার বিকার প্রাপ্ত হয় না, সেই প্রকার কাম, [অর্থাৎ] বিষয়-সন্ধিথানে সকল প্রকারে তাহার ভোগের জন্ম ইছো, সমূদ্রে প্রবিষ্ঠ জলরাশির স্থায় বে প্রুষকে বিক্ত না করিয়াই তাহার অন্তঃকরণে বিলীন হইয়া যায়, [অর্থাৎ] নিজের অধীন করিতে সমর্থ হয় না, সেই ব্যক্তিই "শান্তি" মোক্ষ প্রাপ্ত হয়, অন্ত কামকামী প্রক্ষ মোক্ষ প্রাপ্ত হয় না; কামনার বিষয়ীভূত বস্তুই কাম শক্ষের অর্থ, সেই কামকে কামনা করাই যাহার স্বভাব, সেই কামকামী; ইহাই অর্থ ॥ ९ ০

বিহায় কামান্ যঃ সর্বান্ পুমাংশ্চরতি নিস্পৃহঃ। নির্মামো নিরহক্ষারঃ স শান্তিমধিগচ্ছতি॥ ৭১

জায়য় । যা নিস্তঃ পুমান্ (পুরুষঃ) সর্কান্ কামান্ বিহায় চরতি (জীবনমাত্রচেষ্টাশেষঃ সন্ পর্যাটতি) স নির্মাঃ নিরহকার চ শাস্তিম্ (মোকন্) জাধিগছেতি (প্রাপ্রোতি) ! ৭১

অনুবাদ। যে পুরুষ নিস্পৃহ হইয়া সকল কাম্য বস্তুর পরিহারপূর্বক জীবনধারণের অমুক্ল চেষ্টার উপর নির্ভর করিয়া বিচরণ করেন, সেই নিশ্মম ও নিরহকার পুরুষ মোক লাভ করেন॥ ৭১

ভাষ্য। যথাদেবং তথাৎ বিহারেতি—বিহার পরিত্যজ্য কামান্ যঃ সংক্রাসী পুমান্ সর্বান্ অশেষতঃ কাংল্যেন চরতি জীবনমাত্রচেষ্টাশেষঃ সন্ পর্যাট্ডি ইত্যর্থঃ। নিস্পৃহঃ শরীরজীবনমাত্রেহপি নির্গতা স্পৃহা যক্ত স নিস্পৃহঃ সন্ধিমাঃ শরীরজীবনমাত্রাক্ষিপ্তপরিগ্রহেহপি মমেদমিত্যভিনিবেশ-বর্জিতঃ নিরহন্ধারঃ বিভাবন্ধানিনিজ্যাত্মসন্তাবনারহিত ইত্যর্থঃ, স এবস্ত্তঃ স্থিতপ্রজ্ঞঃ বন্ধবিৎ শান্তিং শর্কসংসার্হ্যথোপর্মলক্ষণাং নির্বাণাখ্যামধিগচ্ছিত প্রাণ্থোতি ব্রক্ষ্ত্রে ভবতীত্যর্থঃ॥ १১

আনন্দণিরিটীকা। যদি গৃহস্থেনাপি মনসা সমস্তাভিমানং হিশা কৃষ্টশ্বং
ব্রহ্মাত্মানং পরিভাবয়তা ব্রহ্মনির্বাণমাপ্যতে প্রাপ্তং তর্হি মৌঢ্যাদিবিভৃত্বনমেবেত্যা
শক্ষাহ—যশ্মাদিতি। শক্ষাদিবিষয় প্রবণস্ত তত্তদিচ্ছাভেদভাগিনো ন মুক্তিরিতি
ব্যতিরেকস্ত সিদ্ধাবং পূর্ব্বোক্তময়য়য়ং নিগময়তুমনস্তরবাক্যমিত্যর্থ:। আশেষবিষয়ত্যাগে জীবনমপি কথমিত্যাশক্ষ্যাহ—জীবনেতি। সন্তব্যাগদেবাদিকে
দেশে নিবাসব্যার্ত্ত্যর্থং চরতীত্যেতদ্ব্যাগদ্ধি—পর্যুট্তীতি। বিহায় কামানিত্যনেন প্রক্লিকং পরিহরতি—শরীরেতি। নিম্পৃহত্বমুকা নির্ম্মত্বং প্রক্রিদন্ কথং
প্রক্লিকার্থিকীংন পশ্যতীত্যাশক্ষ্যাহ—শরীরজীবনেতি। সত্যহন্ধারে মমকারক্ত
আবশুক্তাদিরহন্ধারত্বং ব্যাকরোতি—বিত্যাবন্ত্বাদীতি। স শান্তিমাধ্যোতি
ইত্যক্তম্পসংহরতি—স এবস্তৃত ইতি। সংস্থাসিনো মোক্ষ্কাম্য সর্ব্বান্পরিত্যাগাদীনি শ্লোকোকানি বিশেষণানি বন্ধ্যায়নি তৎসম্পত্তিক্ষম্ম কৈবল্যমিত্যর্থ:॥ ৭১

অনুবাদ। যে নিমিত্ত এই প্রকার এই জ্যুই [বলা যাইতেছে যে] বিহারেতাদি। কাম সকলকে একেবারে সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করিয়া যে সন্মাসী পুরুষ কোনরূপে প্রাণধারণের জ্যুক্ল ব্যাপারমাত্র সম্পাদন করিয়া পর্যাটন করেন। নিম্পৃহ অর্থাৎ শরীর-ধারণ মাত্রেও বাঁহার ম্পৃহা নিবৃত্ত হইয়াছে, তিনিই নিম্পৃহ। নির্মা—জীবনমাত্র রক্ষার জ্যুল লব্ধ বন্ধর উপরও বাঁহার মমতা বোধ নাই, তিনিই নির্মান। নিরহক্ষার—বিভাবজাদি নিবন্ধন বাঁহার আত্মাভিমান নাই, তিনিই নির্ভিমান। সেই সংস্থাসী নিম্পৃহ, নির্মাম ও নিরহক্ষার হইয়া, যথন স্থিতপ্রজ্ঞ ও ব্রশ্ধবিৎ হইবেন, তথন তিনি সকল প্রকার সংসার-হৃথের নির্ভিরণ নির্মাণ-নামক শান্তি লাভ করিবেন [অর্থাৎ] ব্রক্ষায়ন্ধ হইবেন। ইহাই অর্থা। ৭১

এষা ব্রাক্ষী স্থিতিঃ পার্থ নৈনাং প্রাপ্য বিমুহ্ছতি। স্থিত্বাস্থামন্তকালেহপি ব্রহ্মনির্ব্বাণমুচ্ছতি॥ ৭২

অন্বয়। হে পার্থ! এবা এনিন্নী স্থিতিঃ [কথিতা]; এনাং [স্থিতিং] প্রাপ্য ন বিম্মৃতি (পুনর্মোহং ন প্রাপ্নোতি) অক্তাম্ অন্তকালেংপি স্থিতা বন্ধনির্বাণম্ (মোকং) ঋচ্ছতি (প্রাপ্নোতি)॥ ৭২

অনুবাদ। হে পৃথানন্দন। এই দর্ম-কর্ম-সংস্থাসপূর্মক ব্রন্ধেতে অবস্থান রূপ রামী স্থিতি ক্থিত হইল। এই রামী স্থিতি লাভ করিলে, সংস্থাসী আর মোহ প্রাপ্ত হন না। চরম কালেও এই ব্রাক্ষী স্থিতি লাভ করিতে পারিলে, জীব ব্রহ্মপ্রাপ্তিরূপ নির্কাণ লাভ করিয়া থাকেন॥ ৭২

ভাষ্য। দৈবা জ্ঞাননিষ্ঠা স্কৃষতে—এবা ব্রান্ধীতি। এবা বথোকা ব্রান্ধী ব্রন্ধণি ভবেরং স্থিতিঃ সর্বাং কর্ম সংগ্রন্থ ব্রন্ধরণেণৈর অবস্থান-মিত্যেতং। হে পার্থ, নৈনাং স্থিতিং প্রাপ্য লব্ধা ন বিমৃষ্ঠতি ন মোহং প্রাপ্নোতি। স্থিয়া অস্তাং স্থিতে ব্রান্ধ্যাং বথোকারাম্ অন্তকালেহিপি অন্তে বরন্তপি ব্রন্ধনির্বাণং ব্রন্ধনির্বতিং মোক্ষমৃচ্ছতি গচ্ছতি; কিমু বক্ষব্যং ব্রন্ধচর্ব্যাদের সংক্তন্ত বাবজ্জীবং যো ব্রন্ধণ্যেবাবতিষ্ঠতে স ব্রন্ধনির্বাণ-মৃচ্ছতীতি॥ ৭২

আনন্দ্গিরিটীকা। তত্র তত্র সংক্ষেপবিস্তর ভ্যাং প্রদর্শিতাং জ্ঞাননিষ্ঠাম্ অধিকারিপ্রবৃত্ত্যর্থকেন ব্যাতৃমূত্রর শ্লাক্যবতারয়তি — সৈষ্টেত। গৃহস্থঃ
সংস্থাসীত্যভাবিপ চেল্কিভাগিনো কিং তর্হি কটেন সর্কাগৈব সংস্থাসেনেত্যাশব্য, স ন্থাসিব্যতিরিক্ষানাম্ অন্তরায়সন্থবাদপেন্দিতঃ সংস্থাসো মুম্কোরিত্যাহ—
এবেতি। হিতিমেব ব্যাচ্টে — সর্ব্বমিতি। ন বিমন্ত্রীতি পুনন ক্রোহম্বকর্ষণমন্বরার্থম্। সংস্থাসিনো বিমোহাভাবেহিপি গৃহস্থো ধনহান্ত্যাদিনিমিন্তং প্রারেণ
বিমূত্তি বিচিত্তঃ সন্ পরমার্থবিবেকরহিতো ভবতীত্যর্থঃ। মথোক্তা ব্রান্ধী হিতিঃ
সর্বাক্ষরণাসপূর্ব্বিকা ব্রন্ধনিষ্ঠা, তন্তাং হিত্তা তামিমাম্ আয়ুষ্ণত্র্থেইপি ভাগে
ক্রেত্যর্থঃ। অপিশব্দেচিতঃ কৈম্তিকন্তায়মাহ—ক্রিমু ব্রুব্যুমিতি। তদেবং
তবং পদাথোঁ ওদৈক্যং বাক্যার্থঃ তল্প্রানাৎ একাকিনো মুক্তিন্তত্বপারশ্চ ইত্যেতেরামেকৈকত্র স্লোকে প্রাধান্তেন প্রদর্শিতিমিতি নিষ্ঠান্বম্পান্নোপেরভূত্বম্
অধ্যারেন সিক্ষ্। ৭২

অনুবাদ। এই সেই জাননিষ্ঠার ছতি করা যাইতেছে বে—এবা রান্ধীভ্যাদি। এই মণোক্ত রান্ধী ছিতি [অর্থাৎ] সকল কর্ম সংস্থাসপূর্বক বন্ধঅরপেতেই অবস্থান। এই ছিতিকে লাভ করিয়া মোহ প্রাপ্ত হয় না। এই মণোক্তস্থান্ধ বান্ধী ছিতিতে অন্তর্কালে অর্থাৎ চরম বয়সে অবস্থান করিতে পারিলে,
পুরুষ বন্ধনির্বাণ [অর্থাৎ] বন্ধারপে শান্তি অর্থাৎ মোক্ষ প্রাপ্ত হইতে পারে।
যখন এই প্রকার, তথন বাল্যকালে বন্ধাচর্য্য হইতেই সংস্থাস গ্রহণপূর্বক বান্ধী
ছিতির অবলঘন করিলে বে মোক্ষলাভ নিশ্চিত হইরা থাকে, তদ্বিষয়ে আর কি
বক্তব্য থাকিতে পারে ? ৭২

हैं जि विकी शाश्या मारा

তৃতীয়োহধ্যায়।

কর্মযোগঃ।

ভাষ্য। শাস্বভ প্রবৃত্তিনিবৃত্তিবিষয়ভূতে বে বৃদ্ধী ভগবতা নির্দিষ্টে সাংখ্যে বৃদ্ধিরিতি চ। তত্র "প্রজহাতি যদা কামান্"ইত্যায়ভ্য অধ্যায়পরিদ্রি সমাপ্তে: সাংখ্যবৃদ্ধাশ্রিতানাং সংস্থাসং কর্ত্তব্যমুক্তা তেষাং তর্মিষ্ঠতদ্বৈব কৃতার্থ-তোক্তা "এবা রাজী স্থিতি"রিতি। অর্জ্জ্নায় চ "কর্মাণ্যেবাধিকারত্তে" "মা তে সঙ্গোহত্তকর্মণি" ইতি কর্মের কর্ত্তব্যমুক্তবান্ যোগবৃদ্ধিমাশ্রিত্য, ন তত এব শ্রেয়ঃপ্রাপ্তি মুক্তবান্।

তদেতদালক্ষ্য পর্যাকুলী ভূতব্দিরজ্জ্ন উবাচ—কথং ভক্তার প্রেয়েহথিনে বং সাক্ষাচ্ছের:সাধনং সাংখ্যব্দিনিষ্ঠাং প্রাবিদ্ধা মাং কর্মণি দৃষ্টানেকানর্থবৃত্তে পাবক্রমের তিনকান্তিকশ্রের:প্রাপ্তিফলে নিযুজ্যাদিতি যুক্ত: পর্যাকৃলীভাবেহক্রেন্ত । তদক্রপণ্চ প্রায়: জ্যারসী চেদিত্যাদি। প্রশ্লাপাকরণবাক্যং চ ভর্মবতোক্তং বংগাক্তবিভাগবিবরে শাস্ত্রে।

কে চিত্ৰ অৰ্জুনশু প্ৰণাৰ্থমন্ত্ৰণা ক্লায়িত্বা তৎপ্ৰতিকৃলং ভগৰতঃ প্ৰতিবদ্ধং বৰ্ণয়ন্তি। যথা চাত্মনা সম্বন্ধগ্ৰে গীতাৰ্থো নিন্নপিতত্তৎপ্ৰতিকৃলং চেহ পুনঃ প্ৰশ্নপ্ৰতিবচনয়োন্নৰ্থং নিন্নপন্নত্তি। কথম্ ? তত্ৰ সম্বন্ধগ্ৰহে তাবং সর্কোষ্ মাশ্রমিণাং জ্ঞানকর্মণোঃ সমুচ্চয়ো গীতাশান্ত্ৰে নিন্নপিতোহর্থ ইত্যুক্তং পুন-বিশেষিতঞ্চ যাবজ্জীবশ্রুতিচোদিতানি কর্ম্মাণি পরিত্যন্ত্ব্য কেবলাদেৰ জ্ঞানাম্মাক্ষঃ প্রাপ্তিত ইত্যেতদেকাস্তেনি,বং প্রতিষিদ্ধানীই ত্বাশ্রমবিকল্পং দর্শন্তা যাবজ্জীবশ্রুতিচোদিতানানের কর্মণাং পরিত্যাগ উক্তঃ, তৎ কথমীদৃশং বিক্লমর্থম্ অর্জুনায় ক্রায়ন্তগ্রান্ শ্রোতা বা কথং বিক্লমর্থম্বধানয়েছে।

তবৈতৎ তাৎ গৃহস্থানামেব শ্রোতকর্মপরিত্যাগেন কেবলাদেব জ্ঞানামোকঃ প্রতিষিধ্যতে নতাপ্রমান্তরাণামিত্যেতদিপি পূর্ব্বোত্তরবিক্তমেব। কথম ? সর্বাশমিণাং জ্ঞানকর্মণাঃ সমুচ্চরঃ গীতাশাস্থে নিশ্চিতোহর্থ ইতি প্রতিজ্ঞায় ইহ কথং তদ্বিক্তমং কেবলাদেব জ্ঞানাম্যোক্তং ক্রয়াদাশ্রমান্তরাণাম্ ? অথ মতং শ্রোতকর্মাপেকরৈতদ্বচনং কেবলাদেব জ্ঞানাৎ শ্রোতকর্মারহিতাদ্ গৃহস্থানাং মোকঃ প্রতিষিধ্যত ইতি।

ভর গৃহস্থানাং বিগ্নমানমণি স্বার্ত্তং কর্ম অবিগ্নমানবহণেক্য জ্ঞানাদেব কেবলা-দিত্যুচ্যতে ইতি। এতদপি বিক্লম্। কথম্ ? গৃহস্থতৈত্ব স্নার্ত্তকর্মণা সমৃচ্চিতাৎ জ্ঞানান্মোক্ষঃ প্রতিবিধ্যতে নত্বাশ্রমান্তরাণামিতি কথং বিবেকিভিঃ শক্য-মবধারয়িতুম্।

কিঞ্চ বলি মোক্ষসাধনত্বন স্মান্ত।নি কর্মাণি উর্জরেতসাং সম্ক্রীরস্তে তথা গৃহস্থজাপীয়া ভাং স্মান্তিরের সম্ক্রয়ো ন শ্রোতিঃ। অথ শ্রোতিঃ স্মান্তিক গৃহস্থজৈব সম্ক্রয়ো মোকার উর্জরেতসাং তু সার্ত্তকর্মমাত্রসম্ক্রিভাৎ জ্ঞানাম্মোক ইতি। তত্তৈবং সতি গৃহস্থজারাসবাহল্যাৎ শ্রোতং স্মার্তং চ বছত্বংধরূপং কর্ম শিরজ্ঞানরাপিতং স্থাৎ।

অথ গৃহত্বৈশ্ববায়াসবাত্ল্যকারণান্মোক: স্থান্নাশ্ররণাং শ্রোতনিত্যকর্মনরিত্তানিতি। তদপ্যসং সর্ব্বোপনিষংস্থ ইতিহাসপুরাণ্যোগশান্তের্ চ জ্ঞানাঙ্গত্বেন মুম্কো: সর্ব্বকর্মণ্যোসবিধানাৎ আশ্রম-বিকরসমূচ্য্য-বিধানাচ্চ শ্রুত্যা:।

দিশ্বন্তর্থি সর্বাশ্রমিণাং জ্ঞানকর্মণাং সমুচচরঃ। ন মুমুক্লোঃ সর্বাকশ্বসংস্থাস-বিধানাং। "ব্যুখারাণ ভিক্ষাচর্য্যং চরস্তি" "তন্মাং সন্ম্যাসমেষাং তপদামতিরিস্ত-মাত্রঃ" "স্থাস এবাত্যরেচমং" ইতি, "ন কর্মণা ন প্রজন্মা ধনেন ত্যাগেনৈকে ২মৃত্যমানশুঃ" ইতি চ। "ব্রুজাচর্য্যাদেব প্রব্রেজং" ইত্যাম্থাঃ।

> "ত্যন্ধ ধর্মধর্মং চ উভে সত্যানৃতে ত্যন্ধ। উভে সত্যানৃতে ত্যক্ত্বা যেন ত্যন্ধনি তত্ত্যন্ধ।" "সংসারমেব নিঃসারং দৃষ্ট্বা সারদিদৃক্ষরা। প্রব্রস্কার্যান্বাহাঃ পরং বৈরাগ্যমাশ্রিতাঃ॥"

> > ইভি বৃহম্পতিঃ।

"কর্ম্মণা বধ্যতে জন্ধবিভিন্না চ বিমুচ্যতে। জন্মাৎ কর্ম ন কুর্বস্তি যতন্ত্র: পারদর্শিনঃ॥"

ইতি ভকামশাসনম্।

ইহাপি "সর্ক্রম্মাণি মনসা সংস্তৃত্যোদি। মোক্ষণ্ড চ অকার্য্যন্থাৎ মুমুক্রোঃ ক্রমানর্থক্যম্।

নিত্যানি প্রত্যবারপরিহারার্থমহুঠেরানীতি চেং, ন, অসংস্থাসিবিবয়্বছাৎ প্রভাবারপ্রাপ্তে:। ন হারিকার্যান্থকরণাৎ সংস্থাসিনঃ প্রত্যবারঃ করারিতৃং শক্যঃ বথা একচারিণামসংস্থাসিনামপি কর্মিণাম্। ন তাবরিত্যানাং কর্মণামভাবাদেব ভাবরপত্ত প্রত্যবারভোৎপত্তিঃ করমিতৃংশক্যা ক্থমসতঃ সজ্জারে<mark>ডেভ্যসতঃ</mark> সজ্জ্মাসন্তবশ্রুতেঃ।

বদি বিহিতাকরণাদসভাব্যমণি প্রত্যবারং ক্ররাদ্ বেদন্তদা অনর্থকরো বেদঃ
অপ্রমাণমিত্যুক্তং স্থাৎ, বিহিত্ত করণাকরণয়োহ থেমাত্রফলতাং। তথাচ কারকং
শাব্রং ন জ্ঞাপকমিত্যুস্পপন্নার্থং করিতং স্থাং। নচৈতদিষ্টম্। তত্মান্ন সংস্থাসিনাং
কর্মাণি অতো জ্ঞানকর্মণোঃ সমুচ্চরাম্পপত্তিঃ। "জ্যারসী চেৎ কর্মণত্তে মতা
বৃদ্ধিঃ" ইত্যুক্ত্রনন্ত প্রশ্নাম্পপত্তেশ্চ।

বদি হি ভগবতা বিতারেংধ্যারে জ্ঞানং কর্ম্ম চ সমুচ্চয়েন ত্বরা অহুঠেরমিত্যুক্তং ভাৎ ততোংর্জ্নভ প্রশ্নোংহ্বপপন্ন: "জ্যারসী চেৎ কর্মণন্তে মন্তা বৃদ্ধিঃ,'
ইতি। অর্জ্নার চেন্ বৃদ্ধিকর্মণী ত্বরা অনুঠেরে ইত্যুক্তে বা কর্মণো জ্যারসী বৃদ্ধিঃ
সাপ্যুক্তৈব ইতি 'তৎ কিং কর্মণি বোরে মাং নিয়োজয়িস কেশব' ইতি প্রশ্নো ন
কথঞ্চনোপপত্যতে। ন চ অর্জ্নৈভৈব জ্যারসী বৃদ্ধিন নিহুঠেরেতি ভগবতোক্তং
পূর্কমিতি কর্মাতুং যুক্তং যেন জ্যারসী চেদিতি প্রশ্নঃ ভাৎ।

বদি পুনরেকস্ত পুরুষস্ত জ্ঞানকর্মণো বিরোধান্ যুগপদমুষ্ঠানং ন সম্ভবতীতি ভিন্নপুরুষামুঠ্রেরং ভগবতা পূর্বমুক্তং স্থাৎ ততোহয়ং প্রশ্ন উপপন্নো জ্যায়নী চেদিভ্যাদি:। অবিবেকতঃ প্রশ্নকরনায়ামপি ভিন্নপুরুষামুঠ্রেরেন ভগবতঃ প্রতিবচনং নোপপস্থতে। ন চাজ্ঞাননিমিত্তং ভগবৎপ্রতিবচনং কর্যম্। অত্মাচ্চ ভিন্নপুরুষামুক্তরিবেন জ্ঞানকর্মনিষ্ঠয়ো ভগবতঃ প্রতিবচনদর্শনাৎ জ্ঞানকর্মণোঃ সমুচ্চয়ামুক্তপাত্তি:। তত্মাৎ কেবলাদেব জ্ঞানান্মোক্ষ ইত্যেষোহর্পং নিশ্চিতো গীতাক্স সর্বোগনিষ্ঠয়ে চ। জ্ঞানকর্মণোরেকং বদ নিশ্চিত্যেতি চৈক্বিষ্টয়ব প্রার্থনা অনুপপন্না উভয়োঃ সমুচ্চয়-সম্ভবে। "কুরু ক্রৈর্মব তত্মাত্ব"মিতি চ জ্ঞাননিষ্ঠাহসম্ভবমর্জ্ক্ন-স্থাবধারণেন দর্শবিষ্যুতি।

আনন্দ গিরিটীকা ।—পূর্বেলিররাধ্যায়য়োঃ সম্বন্ধ বকু । পূর্ববিদ্ধয়ধ্যায়ে বর্ষপ্থ সংক্ষিপ্যায়বদতি — শাস্ত্রস্তেতি । গীতাশাস্ত্রপ্রামন্তাপেক্ষিতং হেতৃ-ফলভূতং বুরিররং ভগবতোপদিষ্টমিত্যর্থঃ ৷ প্রাষ্ট্রেরজুনন্তাভিপ্রারং নির্দেষ্ট্র্ প্রেরজ্বর্মধান্তর-মন্থবদতি —তত্ত্রেতি । অধ্যায়য়োর্বির্দ্ধয়নিধারণং বা সপ্তমার্থঃ । পারমাধিকে তত্ত্বে বজ্জানং তরিষ্ঠানামশেষ-কামত্যাগিনাং কামযুক্তানাং কর্মিণামপি প্রতিপত্তিকর্ম্মবন্ত্যাগং কর্ত্বব্যক্ষেন ভগবাম্ক্রবানিত্যর্থঃ ৷ তথাপি মোক্ষ্পাধনে বিক্রসমৃচ্যর্মোরক্তত্ত্বস্থ বিবক্ষিতত্ত্ব্র্যা সম্নুম্বরপ্রপ্রক্রিক্তাশক্ষ্যাহ—উত্তেতি ৷ অর্ক্স্ক্র মনসি ব্যাক্রলতং প্রশ্নবীক্ষং দর্শয়িত্মুক্ত-

মর্থান্তরমন্থভাবতে—অর্জ্জুনায় চেতি। সাংখ্যবুদ্ধিমাশ্রিত্য কর্ম্মত্যাগমুক্বা প্নন্তব্যেব কর্ম্মতানাং কথাং মিথোবিক্ষং ব্রবীতীত্যাশঙ্ক্যাহ—যোগেতি। বথা
সাংখ্যবুদ্ধিমাশ্রিতানাং সংস্থাসন্থারা তরিষ্ঠানাং ক্লতার্থতোক্তা তথা যোগবুদ্ধিমাশ্রিত্য
কর্ম কুর্মতোহিপি ক্লতার্থত্বমুক্তমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ন তত এবেতি। "দুরেণ হ্বরং
কর্ম বুদ্ধিবোগা"দিতি দর্শনাদিতি শেষঃ।

বৃদ্ধিব্যাকৃলত্বং প্রশ্নবীত্বং প্রতিলভ্য প্রশ্নং করোতীত্যাহ—তদেতদিতি।
সাক্ষাদেব শ্রেরংসাধনং জ্ঞানমন্তেভ্যো দর্শিতং তদিত্যুচ্যতে, তদ্বিপরীতং কর্ম
বস্তাহঠেবদেনাক্তমেতদিতি নির্দিশ্রতে, ভগবহুক্তেইর্থে সংদিহ্নমানশু নির্ণরাক্তাইরেদ্ধনাক্তমেতদিতি নির্দিশ্রতে, ভগবহুক্তেইর্থে সংদিহ্নমানশু নির্ণরাক্তাইরেদ্ধনা প্রশ্নপ্রকার্যায়য়েয়য়প্রাপ্যোপাপাপকলক্ষণা সঙ্গতিরিত্যর্থঃ।
কর্ম্পনশু প্রশ্ননিমিত্তং পর্যাকৃলত্বং প্রপঞ্চরতি—কৃথ্মিত্যাদিনা। যদি সাক্ষাক্রেন্তে প্রশাধনং সাংখ্যশক্ষিতং পরমার্থতত্ববিষরবুদ্ধে নিষ্ঠারূপং তদন্তক্রৈ
প্রেরাহর্থিনে ভক্তার প্রাবিদ্ধা মাং পুনরভক্তমপ্রেরাহর্থিনমিব কর্মণে পুর্বেলিক্তাবিপরীতে কথং ভগবান্নিরোক্ত মুর্হতি ইত্যর্জ্জ্নশু পর্যাকৃলীভাবো যুক্তইতি সম্বন্ধঃ।
ক্রাননিষ্ঠাতো বৈপরীত্যং ক্ষোরমিতৃং কর্মা বিশিন্তি—দৃষ্টেতি। যুদ্ধে হি ক্ষত্রকর্মানি ক্রানিষ্ঠানার্যিও কর্মানিষ্ঠানিরতে মম ভক্তশু প্রেরোহর্থিনো নিয়োগো ভগবতা যুক্তো ম
ভবতীতি শেবঃ। যথোক্তং নিমিত্তং প্রশ্নস্য যুক্তং তদমুগুণদাৎ তম্যেতি ভ্যোতক্তমাহ—তদক্র্রপ্রেপ্টেতি। জ্ঞাননিষ্ঠানাং কতার্থতা কর্মনিষ্ঠানান্ত ন তথেত্যুক্ত-বিভাগভাগিশান্ত্রমিত্যত্র লোকেহম্মিরত্যাদিবাক্যস্যাপি ভ্যোতকত্বং দর্শমতি—প্রশ্নতি।

সাকাদেব শ্রেয়ঃসাধনমঞ্জে ভগবতোক্তং ন ত্ মছমিতি মন্ধা ব্যাকুলীভূতঃ
সন্ পৃচ্ছতীতি স্বাভিপ্রায়েণ সম্বন্ধমুক্রা বুলিকারাভিপ্রায়ং দ্বয়তি—কেচিন্ত্রিতি
ক্রানকর্মণোঃ সম্চরমবধারয়িতৃং প্রশাঙ্গীকারে সম্চয়াবধারণেলৈব প্রতিবচন
মুচিতং ন চ তথা ভগবতা প্রতিবচনমুক্তং তথা চ প্রশ্নস্য সম্চয়বিবয়ন্ধোপগমাৎ
প্রভ্যুক্তেশ্চ অসম্চয়বিয়য়াহাৎ তয়োমিণো বিরোধো বুলিকারমতে স্যাদিত্যর্থঃ।
কিঞ্চ কেবলং প্রশ্নপ্রতিবচনয়োরেব পরমতে পরম্পারবিরোধো ন ভবত্যপি তূ
পরেরাং স্বগ্রন্থেপি পূর্বাপরবিরোধোহন্তীত্যাহ— যথা চেতি। আন্ধা রন্তিকারেরিতি বাবং। সম্বন্ধগ্রে গীতাশাল্রারন্ডাপোদ্বাতঃ। ইহেতি তৃতীয়াধ্যায়ায়ভং
পরামৃশতি। তলেব বির্ণয়াকাজ্যামাহ—কথ্মিতি। পূর্বাপরাবরোধং ক্যোরিপ্রত্থ
সম্বন্ধান্ত্রেকি তাতে বির্ণয়াকাজ্যান্তি। প্রকীপরাবরোধং ক্যোরিপ্রত্থ
সম্বন্ধান্ত্রেকিত তাতে তি। পরকীয়া রন্তিঃ সপ্রম্যা সমুদ্ধিগ্রতে, সম্বন্ধ

গ্রান্তে তাবদয়মর্থ উক্ত ইতি সম্বন্ধ:। তমেবার্থং বিশদয়তি—সুর্বেব্যামিতি। সর্বকর্ম্মণ্যাসপূর্বকজ্ঞানাদেব কেবলাৎ কৈবল্যমিত্যশ্মিমর্থে শাস্ত্রস্য পর্য্যবসানার সমুচ্চরো বিবন্ধিতন্তত্ত্ত্ত্ত্তাশঙ্ক্যাহ—পুনরিতি। উক্তো গীতার্থো বৃত্তিকারৈরেব কর্মত্যাগাযোগেন বিশেষিতত্বাৎ নাবিবকিতোহলং ভবিতৃমুৎসহতে তথা চ শ্রোভানি কর্মাণি তাজ্বা জ্ঞানাদেব কেবলাঝুজির্ভবতীত্যেতৎ মতং নিয়মেনৈব যাবজ্জীবশ্রতিভিঃ বিপ্রতিষিদ্ধতালাভূগণগন্তমূচিতমিতার্থঃ। তথাপি কথং মিথো বিরোধধীরি গ্রাশক্ষ্যাহ—ইহ ত্রিতি। প্রথমতো হি সম্বন্ধগ্রন্থে সমুচ্চয়ো গীতা-প্রতিপান্তত্বেন বৃত্তিকৃতা প্রতিজ্ঞাতঃ শ্রোতকর্মপরিত্যাগশ্চ শ্রুতিবিরোধাদেব ন সম্ভবতীত্যক্তং তৃতীয়াধ্যায়ারেম্ভে পুনঃ সংখ্যাসিনাং জ্ঞাননিষ্ঠা কর্ম্মিণাং কর্ম্মনিষ্ঠে-ত্যাশ্রমবিভাগমভিদ্ধতা পুরুপ্রতিবিদ্ধকশ্বত্যাগাভ্যুপগমানিথো বিরোধো দর্শিতঃ স্যাদিত্যর্থ: ৷ নমু যথা ভগবতা প্রতিপাদিতং তথৈব বৃত্তিকৃতা ব্যাধ্যাতমিতি ন ত্রস্যাপরাধে।হস্তীত্যাশক্ষ্যাহ-ত্ত্কথমিতি। ন হি ইহ ভগবান বিক্লম্ব মর্থমভিধতে সর্বজ্ঞসা প্রমাপ্তসা বিক্লার্থবাদিত্বাযোগাৎ কিন্ত তদভিপ্রায়াপরি-জ্ঞানাদেব ব্যাখ্যাতৃৰ্ব্দিক্ষমাৰ্থবাদিতেত্যৰ্থ:। ভগৰতো• বিৰুদ্ধাৰ্থবাদিত্বাভাবে২পি শ্রোতুর্বিঞ্চদার্থপ্রতিপত্তিং প্রতীত্য ব্যাচক্ষাণো বৃত্তিকারো নাপরাধ্যতীত্য:-শঙ্ক্যাহ—শ্রেলাতা বেতি। অর্জ্জ্না হি শ্রোতা সোহপি বৃদ্ধিপূর্বকারী ভগ-বহুক্তমেবাবধারমন্ন বিরুদ্ধমর্থমবধার্মিভুমর্হ তি, তথা চ প্রদ্যৈব বিরুদ্ধার্থ বাদিতেতার্থ:।

বিরোধং পরিহরয়াশঙ্কতে — তত্ত্রেতি। সম্বদ্ধগ্রন্থে হি বৃত্তিকারস্তৈতদভিপ্রেতং গৃহস্থানামেব সতাং পরিপকজ্ঞানমন্তরেণ যাবজ্জীবশ্রুতিচাদিতায়িহোত্রাদিত্যাগেন কেবলাদেবাপাতিকাং আত্মজ্ঞানাং মোক্ষমপেক্ষমাণানাং যাবজ্জীবাদিশাক্তৈরসৌ নিষিধ্যতে ন তু স্বরূপেণের কর্ম্মত্যাগো জ্ঞানাম্মোক্ষো বা নিষেদ্ধ্রমিষ্যতে। তৃতীয়ে পুনরধ্যায়ে কর্মত্যাগিনাং গৃহস্থেভ্যো ব্যতিরিক্তানামের কেবলাদাত্মজ্ঞানাম্মোক্ষো বিবক্ষতে অতা ভিন্নবিষয়থাং নিষেধাভ্যমুক্তানয়ার্ম কিরোধাশক্ষেত্যাহাঁ। বিধাধরেণ অতা ভিন্নবিষয়থাং নিষেধাভ্যমুক্তানয়ার্ম বিরোধমেবাকাও কাদারা সাধ্যতি তবেণ বিরোধং দর্শয়নুত্ররমাহ — এতদ্পীতি। বিরোধমেবাকাও কাদারা সাধ্যতি তবাং কেবলাদাত্মজানাম্মোক্ষো নিষিণ্যতে ন তু গৃহস্থানাং ক্রানমাত্রাম্তং মোক্ষং প্রতিবিধ্যাত্মেবাং কেবলজানাধীনো মোক্ষো বিবক্ষ্যতে আশ্রমান্তরাণামলি স্মার্জেন কর্মণা সমুক্তরাভ্যপগমাদিতি চোদয়তি—অ্থেতি। এতৎপরামৃষ্টং বচমন্বোভিনয়তি—ক্রব্লাদিতি।

নমু গৃহস্থানাং শ্রৌতকর্ম্মরাহিত্যেহপি সতি স্মার্ত্তে কর্মণি কুতো জ্ঞানস্ত কেবশব্দ শভ্যতে বেন নিষেধাক্তিরর্থবতী তত্রাহ—তত্ত্রেতি । প্রকৃতবচনমেব সপ্তমার্থ:। প্রধানং হি শ্রৌতং কর্ম তত্রাহিত্যে সতি সার্ত্তস্ত কর্মণ: সতোহপ্যসন্তাবম্
অভিপ্রেত্য জ্ঞানস্ত কেবলত্বমুক্তমিতি যুক্তা নিষেধোক্তিরিত্যর্থ:। গৃহস্থানামেব শ্রৌতকর্ম্মস্ক্রয়ো নাস্তেবাম্, অন্তেবান্ত স্মার্ত্তেনেতি পক্ষপাতে হেবভাবং
মন্থান: সন্ পরিহরতি—এতদিপীতি। তমেব হেবভাবং প্রশ্নদারা বির্ণোতি—
কথমিত্যাদিনা। গৃহস্থানাং শ্রৌতসার্ত্তকর্মসম্চিতং জ্ঞানং মুক্তহেত্রিত্যভ্যপগমাৎ কেবলম্মার্ত্তকর্মসম্চিতাৎ তত্যে ন মুক্তিরিতি নিষেধো যুদ্ধাতে, উর্দ্ধরেত্সান্ত স্মার্ত্তকর্মমাত্রসমুচ্চিতাং জ্ঞানাল্যক্তিরিতি বিভাগে নাস্তি হেত্রিত্যর্থ:।

পক্ষপাতে কারণং নান্তি ইত্যুক্ত্বা পক্ষপাতপরিত্যাগে কারণমন্ত্রীত্যাহ—
কিঞ্চেতি। গৃহস্থানামপি ব্রহ্মজ্ঞানং স্বাত্তৈরের কর্মজ্ঞাঃ সম্চিতং মোক্ষসাধনং ব্রহ্মজ্ঞানবাদ্র্জিরেতঃস্থ ব্যবস্থিতব্রহ্মজ্ঞানবাদিতি..পক্ষপাতত্যাগে হেতৃং ক্ষুটয়তি—
যদীত্যাদিনা। বদি গৃহস্থানাং ব্রহ্মজ্ঞানং স্বার্ত্তিরের কর্মজ্ঞাঃ সম্চিতং
মোক্ষহেত্রিতি বিবক্ষিতঃ তদা তান্ প্রতি যাবজ্জীবশ্রুতির্বিরুধ্যেত, যদি
স্বাত্ত্রিতি বিবক্ষিতঃ তদা তান্ প্রতি যাবজ্জীবশ্রুতির্বিরুধ্যেত, যদি
স্বাত্ত্রিরি বিবক্ষিতঃ তদীরং জ্ঞানং মোক্ষসাধনং বিবক্ষ্যতে তদা
সিদ্ধসাধ্যতেতি প্রাপ্তক্রমভিপ্রেত্য চোদরতি—অ্যেতি । স্বাশ্রমান্তরাণাং
তর্ষি কেবলাদের জ্ঞানামুক্তিরিতি প্রাপ্তক্রবিরোধতাদবস্থামিত্যাশঙ্ক্যাহ—
উদ্ধরেত্রসাং ত্রিতি । যথোক্তে বিভাগে গার্হস্থাং ক্লেশাত্মকং কর্ম্মবাত্রল্যাৎ
অমুপাদেরমাপ্ত্রেতিত দ্বর্গতি—ত্ত্রেতি ।

সাধনভূরত্বে ফলভূরত্বমিতি ন্তারমাশ্রিত্য শহতে—অথেতি। ক্লেশবাহল্যোপেতং শ্রৌতং সার্ভঞ্চ বহু কর্ম তন্তার্ম্ভানাৎ গৃহস্ত মোক্ষ: ভাদেবেত্যর্থ:।

এবকারনিরক্তং দর্শরতি—নাশ্রমান্তরাণামিতি। তেবাং নান্তি মুক্তিরিত্যত্ত্ব

যাবজ্জীবাদিশ্রতিবিহিতাবশ্রাহুঠেরকর্মরাহিত্যং হেতুং স্ট্রতি—শ্রৌতেতি।
শাল্রবিরোধে স্থায়ন্ত নিরবকাশন্তমন্তিপ্রেত্য দ্বরতি—তদ্পীতি। ঐকাশ্রমান্ত্যা গার্হস্থাকৈব প্রাধান্তাদনধিকতানাদিবিষয়ং কর্মসংস্থাসবিধানমিত্যাশস্ক্যাহ—
ভানাঙ্গত্বেনতি। ন থপু অনধিকতানামন্ধাদীনাং সংস্থাস: শ্রবণান্থারভিন্নারা
ভানান্তং ভবিত্নসং তেবাং শ্রবণান্তভ্যাসাসামর্থ্যাদতঃ শ্রত্যাদীনাং বিরোধে নান্তি
গার্হস্থা প্রাধান্তমিত্যর্থ:। তন্ত প্রাধান্তাভাবে হেত্তর্বমাহ—আশ্রেতি।
ভক্তমর্থাং সমাপ্য গৃহী ভবেৎ গৃহাদ্বনী ভূষা প্রেক্রেৎ বদি বেতর্থা ব্রন্ধচর্য্যাদেব প্রব্রেহ্ণ গৃহাদ্বা বনাদ্বা" ইতি শ্রুতে তন্ত্যাশ্রমবিক্রমেকে ক্রবতে

ইতি ষমিছেৎ তমাবদেদিত্যাদিশ্বতৌ চাশ্রমাণাৎ সম্চেয়েন বিক**রেন চাশ্রমান্ত**র-মিচ্ছন্তং প্রতিবিধানাৎ ন গাহ*ঁ*হান্ত প্রধানত্বমি**ভ্যর্থঃ**।

ষদি সর্বেষামাশ্রমাণাং শ্রুতিমূলত্বং তর্হি তত্ত্তদাশ্রমবিহিতকর্ম্বণাং জ্ঞানেন সমুচ্চয়ঃ দিধ্যতীতি শক্তে—সিদ্ধস্তহীতি। যম্মপি জ্ঞানোৎপঞ্জাবা-শ্রমকর্মণাং সাধনত্বং তথাপি জ্ঞানমুৎপন্নং নৈব ফলে সহকারিত্বেন তান্তপেক্ষতে অন্তর্গা সংস্থাসবিধ্যক্রপণতেরিতি দ্বর্গতি—ন মুমুক্কোরিতি। সংস্থাসবিধান-মেবাহুক্রামতি—ব্যুত্থায়েত্যাদিনা। এবণাভ্যো বৈষুখ্যেনোথানং তৎপবিভ্যাগঃ আশ্রমসম্পত্ত্যনন্তরং তত্র বিহিতধর্শ্বকলাপামুষ্ঠানমপি কর্ম্বব্যমিত্যাহ—অপ্রেতি। প্রাপ্তকানাং সত্যাদীনামন্নফলম্বাৎ ভাসভা চ জ্ঞানদারা নোকফলম্বাদিত্যাহ— তস্মাদিতি। অতিরিক্তমতিশরবস্তং মহাফলমিতি বাবং। প্রকৃতকর্মান্ড্যঃ সকাশা-ষ্ক্যাস এবাতিশয়বানাসীৎ ইত্যুক্তেহর্থে বাক্যান্তরং পঠতি—ম্যাসএবেতি। লোক-অমহেতৃং সাধনত্তমং পরিত্যঞা সংসারাদ্বিরকা: সংখ্যাসপূর্বকাদাক্ষজানাদেব প্রাপ্তবন্থো মোক্ষমিত্যাহ—ন কর্ন্মণেতি। সতি বৈরাগ্যে নান্তি ক্রমাপেকা সত্যাৎ সামগ্র্যাৎ কার্য্যাপেকাম্পপতেরিত্যাহ—ব্রক্ষাচর্য্যাদেরেতি। ইত্যাদ্মাঃ সর্বাহন্দ্র সংগ্রাসবিধায়িন্ত: শ্রুতয়ো ভবস্তীতি শেষ:, আত্মানমেব লোকমিছেন্ত: প্রবন্ধন্তী-ত্যাদিবাক্যসংগ্রহার্থমাদিপদম্। তত্ত্রৈব স্থৃতীরুদাহরত্তি—ত্যুক্তেতি। ধর্মাধর্ময়োঃ সত্যান্তরোশ্চ সংসারারম্ভক হালুমুকুণা তত্ত্যাগে প্রযতিতব্য মিত্য**র্থঃ। ত্যক্ত ছাভি**-মানস্থাপি তত্তঃ স্বরূপসম্বন্ধাভাবাৎ ত্যাজ্যত্বমবিশিষ্টমিত্যাহ—যেনেতি। অহতবাহুদারেণ প্রমাতৃতাপ্রমুখস্ত সংদারস্ত তঃথফলত্বনালক্ষ্য মোক্ষতেতুসমাক্-জ্ঞানিসিদ্ধরে বন্ধচর্য্যাদের পারিবাজ্যমনুষ্ঠেয়ম ইত্যুৎপত্তিবিধিমুপক্তভাতি—সংসার-মিতি। ত্ৰজ্ঞানমূদ্দিশ্য ব্ৰহ্মচৰ্ণ্যাদেব কৰ্ম্মণ্যাসগামগ্ৰীমভিদধানো বিনিরোগ-বিধিং স্টেরতি —প্রমিতি i জ্ঞানকর্মণোরদমুক্তরার্থং ফলবিভাগং কথম্বতি— কর্মণেতি। উক্তৎ ফলবিভাগমন্থ জাননিষ্ঠানাং কর্মসংস্থাসন্থ কর্ত্তব্যত্তমাহ —তস্মাদিতি। বাক্যশেষেহপি সর্ব্বকর্ম্মণন্তাসো বিবক্ষিতোহন্তীত্যাহ—ইহা-পীতি। 🛎 নার্থিনো মুমুক্ষোঃ সংস্থাসবিধ্যমূপপত্তিবাধিতং সমুচ্চন্নবিধিবচনমিত্যুক্ত-মিদানীং মোকস্বভাবালোচনম্বাপি সম্চেরবচনমন্থচিতমিত্যাহ—মোক্ষস্থাচেতি ।

"অকুর্বন্ বিহিতং কর্ম নিন্দিতঞ্চ সমাচরন্। প্রসজ্জংশেচন্দ্রিয়াথেমুনরঃ পতনমূচ্ছতি।"

ইতি শ্বতে: মুমুকুণাপি প্রত্যবারনিবৃত্তরে কর্ত্তব্যুৎ নিত্যকর্মেতি শহতে— নিত্যানীতি। যো যশ্মিন্ কর্মণ্যধিক্বতত্তম্ভ তদকরণাৎ প্রত্যবারো ভবতি ন তু কর্মানধিকারিণঃ সংখ্যাসিনস্তদকরণাৎ প্রত্যবায়ঃ সম্ভবতীতি দ্বয়তি—নাসংশ্যা-দীতি। তদেব প্রপ্রিরতি—ন হীতি। সমিদ্ধোমাধ্যয়নাখ্যকরণাৎ, প্রত্যবায়ঃ সংখ্যাসিনো নাস্তীত্যর্থঃ। তত্র ব্যতিরেকোদাহরণমাহ—যথেতি। অকরণাৎ প্রত্যবাদ্বোৎপত্তিমভ্যুপেত্যোক্তং সম্প্রতি প্রতিষিদ্ধকরণাদেব প্রত্যবায়ো ন অকরণাদভাবাৎ ভাবোৎপত্তেরলোক্বেদ্বিক্দম্বাদিত্যাহ—ন তাবদিতি।

নমু নিত্যকর্মবিধায়ী বেদস্তদকরণাৎ প্রত্যবায়ো ভবতীতি ব্রব্রীতি তৎক্থ-মকরণাং প্রত্যবায়ো না ভবতীতি শ্রুতিমাশ্রিত্যোচাতে শ্রুতান্তরবিরোধাদিতি তত্রাহ-যদীতি। বিহিত্তাকরণে সত্যানর্থপ্রাপ্তের্ন নিভ্যকশ্ববিধায়ী বেদো-হনর্থকরত্বেনাপ্রমাণমিত্যাশক্ষ্যাহ—বিহিত্যস্তি। নহি বিহিত্স করণে পিতৃলোক প্রাপ্তিলক্ষণং ফলং ভবতেষ্যতে ধুমাদিনা নয়নপীড়াদি তঃখং ত প্রত্যক্ষ-নেবাকরণে চ প্রত্যবায়োৎপত্তিকভয়থাপি পুক্ষদ্যানর্থকরো বেলোহ প্রমাণমেব मानिजार्थः। नवजारमाणि ভাবেংপাদনদান্থাং বেদ: मन्नामशिवाजि छ्ला চ বিহিতাকরণপ্রত্যবায়পরিহারো বিহিতকরণে ফলিষ্যতীতি নেত্যাহ – তথা লোকপ্রদিদ্ধপদার্থশক্ত্যাশ্রমণেন শাস্ত্রপ্রবৃত্ত্যান্ত্রীকারাদপূর্ব্বশক্ত্যাধানা-বোগাং জ্ঞাপকমেব শাস্ত্রমিত্যর্থ:। কারকজে চ তদ্যাপ্রামাণ্যমপ্রত্যুহং দ্যাদি-ত্যাহ—কারকমিতি। ভবতু শাস্ত্রস্যাপ্রামাণ্যম্ ইত্যাশঙ্ক্যাপৌরুবেয়তরা অশেষ-দোষানাগন্ধিতথাৎ মৈব্যত্যাহ —ন চেতি । অনির্ব্বাচ্যামুপল্ভগ্য সংবেদনমভাষ-জ্ঞানে কারণং সমীহিত্যাধনজ্ঞানং তু চরণ্ডাগাদিপ্রবৃত্তিকারণম্ ইত্যঙ্গীক্ত্যোপ্ সংহরতি—তস্মাদিতি। অকরণাৎ প্রত্যবায়োৎপত্ত্যসম্ভবঃ তচ্চদার্থঃ। সংস্থা সিনাং জ্ঞাননিষ্ঠানাং কর্ম্মদংখ্যাসিত্বাদেব কর্ম্মাসম্ভবে ফলিতমাহ—অত্তইতি। সমূচ্যাত্বপপত্তৌ হেম্বস্তরমাহ—জ্যায়সীতি।

প্রশান্ত্রপথতিনের প্রপঞ্চয়তি—যদি হীতি | সমুচ্চয়োপদেশে প্রশ্নৈকদেশাছপপত্তেশ্চ ন তহপদেশোপপতিরিত্যাহ—অর্জ্জুনায়েতি | 'কর্মণ্যেবাধিকারস্তে
মা ফলেষু কদাচন' ইতি অর্জ্জুনং প্রত্যুপদেশাৎ তং প্রতি জ্যায়সী বৃদ্ধিনাক্তেতি
যুক্তং তৎকিমিত্যাহ্যপালস্ভবচনমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ন চেতি । যেন কল্পনেন জ্যায়সী
চেদিত্যারভ্য তৎ কিং কর্মণীত্যুপালস্ভাত্মা প্রশ্নঃ স্যাৎ তথা ন যুক্তং কল্পমিতুম্
'এবা তেহভিহিতা সাংখ্যে বৃদ্ধিঃ' ইতি বচনবিরোধাদিতি যোজনা।

কশ্বিন্ পক্ষে তর্হি প্রশ্নস্থোপপত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—যদীতি। ভগবছক্তেইর্থে প্রষ্টুর্বিবেকাভাবাৎ প্রশ্নঃ স্থাদিত্যাশঙ্ক্য পূর্ব্বোক্তমেবাধিকবিবক্ষয়া স্মান্তমতি— অবিবেক্ত ইতি। ভগবতোহপি প্রতিবচনমজ্ঞাননিমিতং প্রশান্ত্রমপত্তাদিত্যা শঙ্কাধিকং দর্শক্তি—ন চেতি। ভগবতঃ সর্বজ্ঞত্বপ্রসিদ্ধিবিরোধাদজ্ঞানাধীন-প্রতিবচনাথোগাদিতার্থঃ। ইতশ্চ সমূচ্চরশাক্তার্থোন ভবতীত্যাহ—জ্বন্দাচিতি। কন্তর্হি শাক্তার্থো বিবক্ষিতস্তত্তাহ—কেবলাদিতি। জ্ঞানকর্মণোঃ সমূচ্চরাম্বপণত্তী কারণাস্তর্বাহ—জ্বানেতি। বাক্যশেষবশাদিপ সমূচ্চরস্তাশাক্তার্যভেত্যাহ—কুরু কর্মিবৈতি।

তামুবাদ। গীতাশাত্রে নির্তি ও প্রবৃত্তি মার্গের বিষয়ভূত দিবিধ বৃদ্ধি চগবান্ নির্দেশ করিয়াছেন,—সাংখ্যবৃদ্ধি এবং যোগবৃদ্ধি [এই দিবিধ বৃদ্ধি যথাক্রমে নির্তিমার্গ ও প্রবৃত্তিমার্গের অবলম্বন]; তল্মধ্যে "প্রজহাতি যদা কামান্" ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া অধ্যাদ্ধের পরিসমান্তি পর্যান্ত সাংখ্য-বৃদ্ধির আশ্রয়কারী পুরুষগণের পক্ষে সেই সাংখ্যবৃদ্ধির পরিপাক্ষেই ক্বতক্ষত্যতা হইবে, ইহা "এষা রাদ্ধী স্থিতিঃ" ইত্যাদি শ্লোকের দারা ভগবান্ প্রতিপাদন করিয়াছেন। "কর্মণ্যোবাধিকারভ্তে" "মা তে সঙ্গোহত্তকর্মণি" ইত্যাদি বাব্যের নারা অর্জুনকে কর্মই কর্ত্ব্যা, এই প্রকার যে উপদেশ প্রদান করিয়াছেন, তাহা কেবল যোগবৃদ্ধিকে অবলম্বন করিয়াই বলিয়াছেন, কিন্তু এই কর্ম্মার্গে শ্লেয়ঃ-প্রাপ্তির কথা কিছুই বলেন নাই।

ইহা দেখিয়া অর্কুন অত্যস্ত ব্যাকুলিতচিত্তে জগবান্কে বলিরাছিলেন।
মামি ভক্ত; শ্রেয়ঃ প্রার্থনা করিতেছি, ভগবান্ কিন্তু শ্রেয়ঃপ্রাপ্তির সাকাং
নাধন যে সাংখ্যবুদ্ধিনিষ্ঠা, ভাহা আমাকে প্রবণ করাইয়াও দৃষ্টবহুতর অনর্থকালে
নিমূর্ণ এবং পরল্পরায় ও শ্রেয়ঃপ্রাপ্তির অনিশ্চিত সাধন কর্মমার্গে কেন নিমূক্ত
ফরিতেছেন, এই প্রকার ভাবিয়া, অর্জ্জুনের মনে ব্যাকুল ভাব হইভেই পারে।
ভারমী চেং" ইত্যাদি স্নোকের দারা অর্জুন যে প্রশ্ন করিয়াছেন, ভাহাও এই
প্রকার ব্যাকুলভার অন্তর্গেই হইয়াছে এবং এই জ্ঞান ও ক্রের বিবয়-বিভাগ
মধ্যনে প্রতিপাদিত হইয়াছে, গীতাশাল্রের সেই জংশে ভগবানের উক্ত বাক্য ও
মর্জুনের প্রশ্নের অন্তর্গে হইয়াছে।

কতকগুলি গীতাব্যাখ্যাতা অর্জুনের প্রশ্নার্থ জন্ম প্রকারে করনা করিয়া, চাহার প্রতিকৃশ ভগবানের প্রতিবচন [প্রদন্ত হইয়াছে] এই প্রকারে বর্ণনা চরিয়া থাকেন এক দেই ব্যাখ্যাতৃগণ গীতাশাস্ত্রের আরম্ভকালে সম্বন্ধপ্রতিপাদক । এই নিজেই সে প্রকারে গীতার অর্থ নিজপণ করিয়াছেন; এখানে কিন্তু ভাহারই ইতিকৃশভাবে প্রশ্ন ও প্রতিবচনের অর্থ নিজপণ করিয়া থাকেন। কি প্রকারে ? ভাহাও বলিভেছি]—

শেই লখন প্রছে তাঁহারা বলিয়াছেন যে, মোক্ষ লাভের জন্ম সকল আশ্রমীয়ই
পক্ষে আন ও কর্ম্মের সমুক্ষর আছে (অর্থাৎ মোক্ষার্গী যে কোন আশ্রমেই থাকুন
না কেন, কেবল জ্ঞানের ছারা তাঁহার মোক্ষলাভ হইবে না। কিন্তু কর্ম্ম ও
জ্ঞান এই ত্ইটি উপায় মিলিত হইয়াই মোক্ষলাভের কারণ হয়; কেবল জ্ঞানে
বা কেবল কর্ম্মে মোক্ষলাভ হইতে পারে না। এই প্রকার নতকেই জ্ঞান-কর্মের
সমুক্ষরাদ বাদ কহা বায়)। পরে তাঁহারা আরও বিশেষ করিয়া নির্দেশ
করিয়াছেন যে বিদে যে সকল কর্ম্ম যাবজ্জাব কর্ত্বর্য বলিয়া বিহিত হইয়াছে,
সেই সকল কর্ম্ম পরিত্যাগ করিয়া কেবল জ্ঞানের ছারাই মোক্ষ প্রাপ্ত হইবে,
ইহা কোন প্রকারেই সঙ্গত হইতে পারে না ইত্যাদি। এগানে কিন্তু তাঁহারাই
আশ্রমের বিকর দেগাইয়া যাবজ্জাব-বিহিত বেদোক্ত কর্ম্মেরই পরিত্যাগ করিতে
হইবে ইহা বলিয়াছেন। এই প্রকার পূর্বাপর বিরুদ্ধ অর্থ ভগবান কি প্রকারে
আর্ক্রের নিকট উপদেশ দিবেন ? এবং এই প্রকার বিরুদ্ধ অর্থ অর্জ্নেই বা কি

তাঁহাদের মতের যদি ইহাই তাৎপর্য্য হয় যে, "শ্রুতিবিহিত কর্ম্ম পরিত্যাগণপূর্কক কেবল জ্ঞানের হারা গৃহস্থগণেরই মোক্ষণাভ প্রতিষিদ্ধ হইরাছে; কিছু গৃহস্থ ব্যতীত অন্ত আশ্রমের পক্ষে এ প্রকার নহে।" তবে ইহাও ত পূর্ব্বাপর বিরুদ্ধ হইরা উঠিতেছে। কেন ? [তাহা বলি] সকল আশ্রমীর পক্ষেই জ্ঞান ও কর্মের সমুচ্চরই [মোক্ষের কারণ] ইহাই গীতা শাল্লের নিশ্চিত অর্থ, এই প্রকার প্রতিজ্ঞা করিয়া সেই প্রতিজ্ঞার সহিত বিরুদ্ধ, "আশ্রমান্তরের পক্ষে কেবল জ্ঞান হারাই মোক্ষ হয়," এই প্রকার সিদ্ধান্তকে কেবল জ্ঞান হারাই মোক্ষ হয়," এই প্রকার সিদ্ধান্তকে কেবল জ্ঞান হারাই গৃহস্থগণের মোক্ষ প্রথা বলা হইরাছে যে, শ্রোতকর্ম্মকৈ অবেক্ষা করিয়া এই কথা বলা হইরাছে যে, শ্রোতকর্ম্মকিরহিত কেবল জ্ঞান হারাই গৃহস্থগণের মোক্ষ প্রতিষ্ঠিত ইইতেছে এবং সেই পক্ষে গৃহস্থগণের পক্ষে মার্ভ কর্ম্ম বিশ্বমান থাকিলেও, তাহাকে অবিশ্বমানের ক্যার উপেক্ষা করিয়া, কেবল জ্ঞান হারা মোক্ষ হইরা থাকে, এই কথাই বলা হইরাছে।" এ প্রকার করনাও নিভান্ত বিশ্বদ্ধ। কেন ? [তাহা বলি] গৃহস্থেরই যে মার্ভকর্ম্ম-সমৃচ্চিত জ্ঞানহারা মোক্ষ প্রতিষিদ্ধ হইতেছে, আর অন্ত আশ্রমন্থ ব্যক্তিগণের পক্ষে তাহা প্রতিবিদ্ধ হইতেছে না, ইহা বিবেকিগণ কি প্রকারে নিশ্বম্ব করিবেন ?

আরও এক কথা এই বে, উর্জরেতা সন্ন্যাসিগণের পক্ষে, মোক্ষসাধন বলিয়া স্বতিশাস্থবিহিত কর্মসম্হের সহিত জ্ঞানের সমৃত্যু আছে, ইহা অলীকার ক্রিভে হইবে, কিন্তু শ্রোতকর্শ্বের সহিত তাঁহাদের পক্ষে জ্ঞানের সমুক্তর নাই। তাহা হইবে [আমি বলি যে—] সন্ন্যাসিগণের স্থায় গৃহস্থগণের পক্ষেও শার্ত্তকর্মাজের সহিতই জ্ঞানের সমুচ্চর অসীকার করা উচিত; শ্রোত কর্শ্বের সহিত তাহাদের পক্ষে জ্ঞানের সমুচ্চর মানিবার প্রয়োজন কি? যদি বল যে, "শ্রোত ও শার্ত্ত এই দিবিধ কর্শের সহিত সমুচ্চিত জ্ঞানই গৃহস্থগণের মোক্ষের প্রতি কারণ, জিতেজির সন্যাসিগণের পক্ষে কেবল শার্ত্তকর্শের সহিত সমুচ্চিত জ্ঞানই মোক্ষ লাভের কারণ হয়। তাহা হইবে [জ্ঞামার বিবেচনার] আয়াস বাহুল্য আছে বলিরা, শ্রোত ও শার্ত্ত এই দিবিধ মহাত্বংথকর কর্শের ভার গৃহস্থের মস্তক্ষের উপর চাপাইরা দেওয়া হয়।

বদি বল, গৃহস্থগণকে আয়াদ অধিক করিতে হয় বলিয়া, শ্রোতকর্মের অমুক্তান পরিত্যাগ-নিবন্ধন তাহাদেরই মোক হইবে, অস্তান্ত আশ্রমীর মোক হইবে না, তাহাও সাধু নহে; কারণ সকল উপনিবদ, ইতিহাস, পুরাণ ও নানাপ্রকার প্ররোগশাল্লেই দেখিতে পাওয়া যায় যে, মুমুক্গণের জন্ত জ্ঞানের সাধন বলিয়া সর্ক-কর্ম-সয়্কাসই বিহিত হইয়াছে। [যদি বল সকল আশ্রম হইতে গৃহস্থাশ্রমই অবশ্য অবলম্বনীয়; মৃতরাং গৃহস্থের প্রোধান্ত-নিবন্ধন তাহারই মোক হওয়া উচিত, তাহাও হইতে পারে না,] কারণ, শ্রুতি ও স্থৃতিতে আশ্রমের বিকল্প ও সমুচ্চয়, এই উভয়েরই বিধান দেখিতে পাওয়া যায় (অর্থাৎ যদি কেবল গৃহস্থাশ্রমই অবলম্বনীয় হয়, তাহা হইলে শ্রুতি বা স্থৃতিতে যে কোন আশ্রম গ্রহণ করিয়া জীবনাতিপাত করিতে পারিবে, এই প্রকার আশ্রম-বিকল্প এবং সামর্থ্য-পক্ষে সকল আশ্রমই যথাক্রমে গ্রহণ করিছে পারিবে, এই প্রকার আশ্রম সমুক্তর বিহিত হইতে পারিত না); এই কারণে ইহা দিদ্ধ হইতেছে যে, আশ্রমের বিকল্প ও সমুচ্চয় এই উভয়েরই শাস্ত্রে বিধান থাকা নিবন্ধন গৃহস্থাশ্রমেরই অবশ্রকর্ত্তব্যতা বশতঃ প্রাধান্ত আছে, ইরা কিছুতেই বলিবার সম্ভাবনা নাই।

যদি বল, শ্রুতিতে সকল আশ্রমই যখন বিহিত আছে, তথন সকল আশ্রমেই শ্রুতিবিহিত কর্মের সহিত জ্ঞানের সমূচ্যাই যে মোক্ষের কারণ, ভাহাও সিদ্ধ হইরা যাইতেছে। তাহাও হইতে পারে না; শ্রুতিতেই মোক্ষার্থীর পক্ষে সকল প্রকার কর্মের সংখ্যাসই বিহিত হইরাছে।

"কামনাত্রয় পরিত্যাগ করিয়া ভিকাচর্য্য অবলহন করিবে।" "দেই হেতু মুমুকুগণের পক্ষে সন্ন্যাসই সকল প্রকার তপ্তা হইতে শ্রেষ্ঠ।" শংখাসই [মুমুকুগণের] সকল কর্ম হইতে প্রধান হইনাছে।" "কর্ম প্রশ্না বা ধনের দ্বারা মোক্ষণাভ হইতে পারে না; কেবল একমাত্র ত্যাগের দ্বারা কতকগুলি সংস্থাদী মোক্ষণাভ করিয়াছেন।" ইত্যাদি প্রকারের অর্থ প্রতিপাদিত করিতে সমর্থ শ্রুতি আরও অনেক আছে। "ব্রহ্মচর্য্য হইতেই সংস্থাস আশ্রম করিবে"—এই প্রকার অর্থে পঠিত অনেক শ্রুতিও আছে।

বৃহশ্পতি বলিয়াছেন—"ধশ্ম ও অধশ্ম পরিত্যাগ কর। সত্য ও অনৃত এই হুইটিকেই পরিত্যাগ কর। সত্য ও অনৃত এই হুইটিকে পরিত্যাগ করিয়া, বাহার ছারা এই হুইটিকে ত্যাগ করিবে, তাহাকেও পরিত্যাগ কর। সংসারকে অসার ভাবিরা সার দর্শন করিবারই ইচ্ছায় বহুতর ব্যক্তি পরম বৈরাগ্যের আশ্রয় গ্রহণ-পূর্বক কুমার অবস্থাতেই সংস্থাস অবলম্বন করিয়াছেন।"

এই প্রকার শুকদেবেরও অমুশাসন আছে—"প্রাণী কর্ম্মের দ্বারাই বদ্ধ হয় এবং জ্ঞানের দ্বারাই মুক্তিলাভ করিয়া থাকে, এই কারণে পারদর্শী সংস্থানিগণ কর্মের অমুষ্ঠান করেন না।"

এই গীতাশান্ত্রেও উক্ত হইয়াছে যে,—"দর্বকশ্ম মনের দারা দল্ল্যাদ করিয়া" ইত্যাদি।

আরও একটি কথা এই হইতেছে যে, নোক্ষ জীবের নিত্যদিদ্ধ, তাহা ঘট পটাদির স্থায় জন্ম নহে; স্থতরাং মোক্ষের জন্ম মুমুকু ব্যক্তির কর্মা নিখন।

না করিলে যে প্রত্যবায়, তাহা নিরাকরণের জন্ম নিত্য কর্ম্মের জন্মধান সকলেরই কর্ত্তব্য, ইহা যদি বল, তাহাও সঙ্গত নহে; কারণ, নিত্যকর্মের অকরণে যে সন্মাসীর প্রভ্যবায় হইতে পারে, ইহা করনা করা যায় না। আরও দেখিতে হইবে যে, নিত্যক্মের অকরণ, অভাবপদার্থ; কেবল অভাব হইতে ভাবরূপ প্রত্যবায় (অর্থাৎ পাপ) উৎপন্ন হইতে পারে, ইহা করনা করিতে পারা যায় না; কারণ, "কথ্যসভঃ সজ্জায়েত" (কেমন করিয়া অভাব হইতে ভাবের উৎপত্তি হইবে।) এই শ্রুতি দারা প্রতিপন্ন হইমাছে যে, অভাব হইতে ভাবের উৎপত্তি হইবে।

বিহিত কর্ম্মের অনুষ্ঠানে পাপ সম্ভবপর না হইলেও, যদি বেদ তাহাই বোধ করার, তাহা হইলে অনুর্থকর বেদ প্রমাণ নহে, ইহাই বলিতে হয়। কারণ, বিহিত নিত্যকর্ম্মের অনুষ্ঠানেও ক্লেশ এবং অনুষ্ঠানেও ক্লেশহেতু ত্রদৃষ্টের উৎপত্তি; এই কারণে উভয় পক্ষেই বিহিত নিত্যকর্ম্ম, অধিকারী পুরুষের কেবল ত্রংপমাত্রেরই কারণ ইইডেছে, এই সিদ্ধান্ত নানিতে হয়। ভাহা হইলে

কিন্তু শাস্ত্র কারক, উহা জ্ঞাপক নহে, এই প্রকার নিতান্ত নির্গুক্তিক অর্থ করনা করিতে হয়; বাস্তবিক ইহা ইষ্ট নহে। [শাস্ত্র জ্ঞাপকই হইতে পারে, কারক হইতে পারে না,] এই কারণে অঙ্গীকার করিতে হইবে বে, সন্ত্যাসিগণের পক্ষেকোন কর্মাই বিহিত নহে; অতএব মোক্ষলাভের জন্ত জ্ঞান ও কর্ম্মের সমুচ্চরই যে কারণ, ইহা বলা বাইতে পারে না। আর এক কথা এই হইতেছে যে, জ্ঞান ও কর্ম্মের সমুচ্চরবাদিগণের মতে "জ্যারসী চেৎ কর্ম্মণস্তে মতা বুজিঃ" (কর্ম্ম হইতে জ্ঞানই যদি তোমার নিকট শ্রেষ্ঠ বলিয়া প্রতিপন্ন হয়)ইত্যাদি প্রকার অর্জুনের প্রশ্নও অনুপ্রণন্ন হইয়া পড়ে।

বিতীয়াধ্যায়ে যদি ভগবান্ অর্জুনকে বলিতেন যে, "তোমার জ্ঞান ও কর্মা এই উভয়ই অন্থেটর," তাহা হইলে, "কর্মা হইতে জ্ঞান যদি তোমার শ্রেষ্ঠ বলিয়া সম্মত" ইত্যাদি অর্জুনের প্রশ্ন একাস্ত অন্থপপম হইত। বৃদ্ধি ও কর্মা এই উভয়ই তোমার অন্থেটয়, এই কথা অর্জুনকে যদি বলিয়া থাকেন, তাহা হইলে, কর্মা হইতে শ্রেষ্ঠ যে বৃদ্ধি, তাহাও ত বলা হইয়াছে; তাহাই যদি হইবে, তবে "হে কেশব! আমাকে ঘোর কর্ম্মেন্ডেই কেন নিযুক্ত করিতেছ", ইত্যাদি প্রশ্নও কোন প্রকারেই উপপন্ন হইতে পারে না। অর্জুনের পক্ষেই কর্মা হইতে জ্ঞান শ্রেষ্ঠ, কিন্তু অন্থেটয় নহে, এই প্রকার উপদেশ যে ভগবান্ দিয়াছেন, তাহা ত কল্পনা করা যায় না। তাহা হইলে না হয় কোন প্রকারে অর্জুনের "ক্যায়সী চেদিত্যাদি" (যদি জ্ঞান কর্মা হইতে উৎকৃষ্ঠতর এই প্রকার) প্রশ্ন উপপন্ন হইতে পারিত।

পরম্পরিবরোধনিবন্ধন এক পুরুষের ঘারা এক কালে জ্ঞান ও কর্ম্মের অমুষ্ঠান সম্ভবপর নহে বলিয়াই জ্ঞান ও কর্ম্মের অমুষ্ঠান ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন প্রুম্বরেই হয়, ইহা যদি ভগবান পূর্বের বলিয়া থাকেন, তবে জ্ঞায়সী চেৎ" ইত্যাদি প্রকার অর্জুনের প্রশ্ন উপপন্ন হইতে পারে। না বুরিয়া অর্জুন প্রশ্ন করিয়াছিলেন, এ প্রকার কর্মনা পক্ষেও জ্ঞান ও কর্ম্ম বিভিন্ন পুরুষেরই অমুষ্ঠের, এই প্রকার ভগবানের প্রভ্যুম্ভর উপপন্ন হইতে পারে না। ভগবান্ও না বুরিয়া উত্তর দিয়াছিলেন, ইহা ত আর কর্মনা করা যায় না। জ্ঞান ও কর্ম্ম ভিন্ন ভিন্ন প্রক্রের অমুষ্ঠেয়, এই প্রকার ভগবানের প্রত্যুম্ভর দেখিয়াই [স্থির করিতে হইবে যে], জ্ঞাননিষ্ঠা ও কর্ম্মনিষ্ঠার সমূচ্চের মোক্ষলাভের প্রতি উপবোগী নহে। সেই জ্ঞাই কেবল জ্ঞানের দ্বারাই যে মোক্ষলাভ হয়, ইহাই গীতা ও সকল উপনিষ্কে নিশ্চিতরূপে প্রতিপাদিত হইয়াছে। যদি জ্ঞান ও

কশের সমূচ্যাণ সম্ভবপর হইত, তাহা হইলে, "তুমি এই জ্ঞান ও কর্মের মধ্যে যাহা আমার পক্ষে অমূক্ল হইবে, তাহাই নিশ্যু করিয়া বল" এই প্রকারে অর্জুনের প্রার্থনাও অন্থপপন্ন হইত; "তুমি কেবল কর্মাই কর," এই প্রকার যে ভগবান্ উপদেশ দিয়াছেন, তাহা অর্জুনের জ্ঞাননিষ্ঠাতে অধিকারের সন্তাবনা নাই বলিয়াই।

অর্জুন উবাচ।

জ্যায়সী চেৎ কর্ম্মণস্তে মতা বুদ্ধির্জনার্দ্দন। তৎ কিং কর্ম্মণি ঘোরে মাং নিয়োজয়সি কেশব॥ ১

জান্বয়। হেকেশব! হে জনার্দন! তে(তব) চেৎ (যদি) বুদ্ধিঃ (জ্ঞানং) কর্মপো জ্ঞারসী (শ্রেরসী মতা (তদা) ঘোরে (ভীষণে) কর্মণি নাং কিং (কথং) নিয়োজয়সি॥ ১

আকুবাদ। হে কেশব! হে জনার্দন! বুদ্ধি (জ্ঞান) কর্ম হইতে শ্রেষ্ঠতর, ইহা যদি ভোষার সম্মত হয়, তাহা হইলে তুমি আমাকে ভয়কর কর্মমার্ফে কারণে নিযুক্ত করিতেছ ?॥ >

ভাষ্য। জ্যারসী শ্রেরসী চেৎ বদি কর্মণঃ সকাশাৎ তে তব মতা মভিপ্রেতা বৃদ্ধি: জ্ঞানং হে জনার্দন! বদি বৃদ্ধিকর্মণী সম্চিতে ইষ্টে তদৈকং শ্রের:সাধনম্ ইতি কর্মণো জ্যারসী বৃদ্ধিরিতি কর্মণোহতিরিক্তকরণং বৃদ্ধেরম্পণসমর্মজ্নন ক্বতং স্থাৎ ন হি তদেব তত্মাৎ ফলতোহতিরিক্তং স্থাৎ। তথা কর্মণ: শ্রেরস্করী ভগবতোক্তা বৃদ্ধিরশ্রেরস্করং চ কর্ম ক্রিতি মাৎ প্রতিপাদয়তি তৎ কিং মু কারণমিতি ভগবত উপালস্তমিব ক্র্নন্ তৎ কিং ক্যাৎ কর্মণি ঘোরে ক্রের হিংসালক্ষণে মাং নিয়োজয়সি কেশবেতি চ বদাহ তচ্চ নোপপম্বতে। অথ স্মার্কেনেব কর্মণা সমৃত্রের: সর্বেষাং ভগবতোক্তোহর্জুনেন চাবধারিত্রশেহৎ তৎ কিং ক্রমণি ঘোরে মাং নিয়োজয়সীত্যাদি কথং যুক্তং বচনম্॥ >

আনন্দ্গিরিটীকা। প্রাথমিকেন সম্বর্ধগ্রেম সমস্তশাদ্রার্থসংগ্রাহকেণ তদ্বিবরণান্ধনাহস্ত সন্দর্ভক্ত নান্তি পৌনকক্তামিতি মন্থা প্রতিপদং ব্যাধ্যাতৃৎ প্রশ্নৈকদেশং সম্থাপরতি—জ্যায়সী চেদিতি। বেদাশ্চেৎ প্রমাণমিতিবচ্চেদিত্যক্ত নিশ্চরার্থন্থ ব্যাবর্ত্তরতি—যদ্দীতি। বৃদ্ধিশক্তান্তঃকরণবিষয়ন্তং ব্যব্দির্গ্তি—ক্তানমিতি। পূর্ব্যক্তিশক্তাক্তরগোজনাং ক্রন্থা সমুক্তরাভাবে তাৎপর্য্যনাহ—যদ্দীতি। ইট্টে ভগবতেতি শেষঃ। একং জ্ঞানং কর্ম্ম চ সমুক্তিত্বিতি

ষাবং। জ্ঞানকর্মণোরভীষ্টে সমৃচ্চয়ে সমৃচ্চিত্ত শ্রেরঃসাধনক্তৈকথাং কর্মণঃ সকাশাং জ্ঞানত পৃথক্করণমযুক্তমিত্যথাং। একমপি সাধনং ফলতোহতিরিক্তং কিং ন ত্যাদিতাশেল্যাই—ন হীতি। ন চ কেবলাং কর্মণো জ্ঞানত কেবলত্ত ফলতোহতিরিক্তবং বিবক্ষিষা পৃথক্করণং সমৃচ্চরপক্ষে প্রত্যেকং শ্রেরঃসাধনদ্বানভূপপামাদিতি ভাবং। পূর্বার্কিত্রেবোত্তরার্ক্তিপাপি সমৃচ্চরপক্ষে ভূল্যাম্বপাত্তিরিক্তাই—তথেতি। "দ্রেণ হ্বরং কর্মেত্ত্রে কর্মণঃ সকাশাৎ বৃদ্ধিঃ শ্রেরহুরী জগবতোক্তা কর্ম চ বৃদ্ধেঃ সকাশাদশ্রেরহ্মরমুক্তং তথাপি তদেব কর্মা কর্মণোন্বাধিকারন্তে মা ফলে বিতি সিশ্বং ভক্তক মাং প্রতি ক্রিবতি ভগবান্ প্রতিগাদ্মতি তত্ত্ব কারণাম্বলভাদযুক্তমতিক্ত্রে কর্মণি ভগবতো মন্নিরোজনমিতি বদর্জ্বনা ব্রবীতি তচ্চ সমৃচ্চরেপক্ষেইম্বপারং আদিত্যর্থঃ। বতু "বৃত্তিকারৈক্তকং প্রোভেন মার্ত্তেন চ কর্মণা সমৃচ্চরো গৃহস্থানাং শ্রেরঃসাধনমিতরেরাং মার্ত্তেনিবেতি ভগবতোক্তমর্জ্বনন চ নির্দ্ধারতমিতি তদ্যেত্বস্থান্তর্বাদিনো ভগবতো নিরোজনাভাবাদিতি দ্বরতি—তৎ ক্রিমিতি॥ > •

অনুবাদ। জ্যারসী [শব্দের অর্থ] শ্রেরদী ''চেৎ" [ইহার অর্থ] যদি, কৰ্ম হইতে "তে" তোমার "বৃদ্ধি" [অথ্যং] জ্ঞানই "মত" অভিপোভ হয়। হে জনার্দন! যদি বৃদ্ধি ও কর্মের সমূচ্চয় ইষ্ট হইত, তাহা হইলে, "একই শ্রেমের সাধন" "কর্ম হইতে জ্ঞানেরই শ্রে**ট**তা যদি হয়" ইত্যাদি বাক্যের দারা অর্জুন যে কর্ম হইতে বুদ্ধিকে অতিরিক্ত করিয়াছেন, তাহা কিছুতেই উপপন্ন হইতে পারে না। সেই বস্তুই যে ফলতঃ তাহা হইতে পুণক্, ইহা ত শছবপর নহে। আরও দেখিতে হইবে—জ্ঞান, কর্ম অপেকা শ্রেরস্কর, ইহা ভগবান বলিয়াছেন, অথচ তুমি অশ্রেয়ক্তর কর্ম কর, এই বলিরা আমাকে বুঝাইতেছেন, ইহার কারণ কি ?—এই প্রকার বুঝিতে না পারিয়া, যেন ভগ বান্কে ঈষৎ তিরস্কার করিয়া অর্জুন বলিয়াছেন যে, "তবে কেন আমাকে হিংসারপ অতি ক্রুর কর্মে নিযুক্ত করিতেছ, হে কেশ্ব'' তাহাও নিতান্ত অমূপপন্ন হইত। [যদি জ্ঞান ও কর্মের সমূচের সম্ভবপর হইত।] যদি বল ভগবান্ দক্ল আশ্রমীর পক্ষেই স্মার্ডকর্মের সহিত্ত জ্ঞানের সমূচ্য আছে, এই প্রকার বলিয়াছেন এবং অর্জুনও সেই প্রকারই অবধারণ করিয়াছেন, তাহাও হইতে পারে না; কারণ, তাহা হইলে "আমাকে ক্র কর্মে কেন নিরোগ করিতেছ," এই প্রকার অর্জনের বচন কি প্রকারে উপপক্ষ হটবে ?॥ >

ব্যামিশ্রেণেব বাক্যেন বুদ্ধিং মোহয়দীব মে। তদেকং বদ নিশ্চিত্য যেন প্রোয়েহ্যাপ্রুয়াম্॥ ২

আর্য় । ব্যামিশ্রেণ ইব বাক্যেন [জং] মে (মম) বৃদ্ধিং মোহয়সীব। তৎ (তত্মাৎ) একং (জ্ঞানং কর্ম্ম বা) নিশ্চিত্য বদ (উপদিশ) যেন (জ্ঞানেন কর্ম্মণা বা) অহং শ্রেয়ঃ অবাপ্রয়াম্ (প্রাপ্তঃ ত্যাম্)॥ ২

আকুবাদ। [আমার সন্তাবনা হইতেছে] বেন তুমি অবিস্পষ্ট বাক্যের দারা আমার বৃদ্ধির ব্যাসোহ সম্পাদন করিতেছ। তুমি নিশ্য করিয়া জ্ঞান বা কর্ম্ম একটি উপায় বিষয়ে আমাকে উপদেশ দাও, যাহা দারা আমি শ্রেয়: লাভ করিতে পারি॥ ২

ভাষ্য। কিঞ্চ ব্যামিশ্রেণেতি। ব্যামিশ্রেণেব ষ্মপি বিবিক্তাভিধায়ী ভগবান্ তথাপি মম মন্দবুদ্ধে: ব্যামিশ্রমিব ভগবহাক্যং প্রতিভাতি। তেন মম বৃদ্ধিং মোহয়দীব। মম বৃদ্ধিব্যামোহাপনয়ায় হি প্রবৃত্তত্বং তু কথং মোহয়দি অতো ব্রবীমি মোহয়দীব মে মমেতি। ত্বং তু ভিয়কর্তৃকয়ো ভানিকর্মণোরেক-প্রকার্ছানাদভবং বদি মভদে তরৈবং দতি তত্তরোবেকং বৃদ্ধিং কর্ম বা ইদমেবমর্জ্বভ যোগ্যং বৃদ্ধিশক্তাবস্থায়রপমিতি নিশ্চিত্য বদ ক্রহি। যেন জ্ঞানেন
কর্মণা বা অভতরেণ শ্রেমাহহম্ আগুয়াং প্রাপ্রাম্। যদি হি কর্মনিষ্ঠায়াং
ভণভূতমপি ভানং ভগবতোক্তং ভাৎ তৎ কথং তয়োরেকং বদেত্যেক্ষিয়ইরবার্ক্বভ শুলারা ভাৎ। ন হি ভগবতোক্তমভতরদেব জ্ঞানকর্মণো বর্ম্যামি
নৈব ষ্মমিতি; যেন উভয়প্রাপ্যসম্ভবমান্ধনো মন্তমান একমেব প্রার্থিরেং॥ ২

আনন্দণিরিটীকা। ইতশ্চ প্রশ্নসমূচরাত্মসারী ন ভবতীত্যাহ—
কিঞ্চেতি। ভগবতো বিবিকার্থবাদিয়াদয়কং ব্যামিশ্রেণেত্যাদিবচনমিত্যাশব্দাহ

—যুত্তসীতি। যদি ভগবদ্বচনং সংকীর্ণমিব তে ভাতি তর্হি তেন ঘদীয়বৃদ্ধিব্যামোহনমেব তম্ম বিবক্ষিতমিতি কিমিতি মোহরসীবেত্যচ্যতে তত্তাহ—মুমেতি।
ভানকর্মণী মিথো বিরোধাৎ যুগপদেকপুরুষান্মন্তেরতরা ভিন্নকর্তৃকে কথ্যতে তথা
চ তরোরক্তরমিরেব ঘং নিযুক্তো ন তু তে বৃদ্ধিব্যামোহনমভিমতমিতি ভগবতো
মতমন্ত্র্বদতি—ত্বংছিতি। তদেকমিত্যাদিল্লোকার্দ্ধেনোত্তরমাহ—ত্তত্ত্তি।
উক্তং ভাগবতং মতং সপ্তম্যা পরামুগুতে একমিত্যুক্তপ্রকারোক্তিঃ। একমিত্যুক্তমেব ক্টেমতি—বুদ্ধিমিতি। নিশ্চমপ্রকারং প্রক্ষুট্মতি—ইদ্মিতি।
বোগ্যমং ক্ষাভি—বৃদ্ধীতি। অত ক্ষিত্রত সতোহস্তঃকরণ্ড দেহশক্তঃ

সমরসমারস্ভাবস্থারাশ্চেদমেব জ্ঞানং কর্ম্ম বাহম্প্রণমিতি নির্দ্ধার্য ক্রছি ইন্ডার্থঃ।
নিশ্চিত্যাস্থতরোক্ষো তেন শ্রোভুঃ শ্রেরোহ্বাপ্তিদলমাহ—যেনেতি। তদেকমিত্যাদিবাক্যসাক্ষরোপ্তমর্থমুকা সম্ক্রেম্ম শাস্ত্রার্থিছাভাবে তাৎপর্যমাহ—যদি
হীতি। গুণভূতমণি ইত্যাদিনা প্রধানভূতমণি চেতি বিবক্ষিত্রম। নন্ত্রপ্রাপ্তাস্ত্রবমান্থনো মন্ত্রমানস্থার্জনস্থান্তত্রবিষয়া শুক্রমা ভবিশ্বতি নেত্যাহ—
ন হীতি। বংগাক্তভগবদ্বচনাভাবে হরপ্রাপ্তাস্তর্বন্ধ্যা নান্তরপ্রার্থনা সম্ভব্তীত্যাহ—যেনেতি। ন হি তথাবিধং ভগবদ্বচনং ভবতেইং ভগবতঃ সম্ক্রমন্বাদিহাদীকারাৎ অভন্তদভাবাহক্রক্র্যা ন যুক্তান্তত্রপ্রার্থনেত্যর্থঃ॥ ২

অমুবাদ। আরও [বলিতেছেন] ব্যামিশ্রেণেত্যাদি। ব্যামিশ্র [অর্থাৎ অবিস্পষ্টার্থ বাক্যের দারা বেন] বদিও ভগবান বিস্পষ্ট বাক্যই বলিয়াছেন, তথাপি আমি নন্দবৃদ্ধি, এই কারণ আমার নিকট ভগবানের বাক্য অবিষ্পষ্টার্থ বলিয়া বেন বোধ হইতেছে। তাহাতে [বোধ হইতেছে] বেন ভূমি আমার বৃদ্ধির মোহ উৎপাদন করিতেছ। আমার বৃদ্ধির ব্যামোহ নির্ভ করিবার জন্ম প্রবৃত হইয়া, তুমি বাস্তবিক পক্ষে কেন আমার বুদ্ধির মোহ উৎপাদন করিবে ? এই জন্মই বলিতেছি বে] যেন তুমি আমার বুদ্ধির ব্যানোহ করিতেছ। জ্ঞান ও কর্মের কর্ত্তা এক পুরুষ হইতে পারে না, এই জন্ত তুমি এক পুরুষের দারা এক কালে জ্ঞান ও কর্মের অনুষ্ঠান অসম্ভব, এই প্রকার যদি বিবেচনা কর, তাহা হইলে এই উভয়ের মধ্যে এক জ্ঞান বা কর্ম, যাহা অর্জুনের বৃদ্ধি, শক্তি ও অবভার অন্তর্ম ও যোগ্য হইবে, ভাহাই নিশ্চর করিয়া আমাকে বল, যে জ্ঞান বা কম্মের ছারা আমি শ্রেরঃ লাভ করিতে সমর্থ হইতে পারি। ভগবান যদি জ্ঞানকে কর্মনিষ্ঠার অঙ্গস্থরূপ বলিয়াও নির্দেশ করিতেন, তাহা হইলে জ্ঞান ও কর্ম্মের মধ্যে একই আমাকে বল, এই প্রকার অর্জ্বনের একটি উপায় নাত্র প্রবণ বিষয়ে ইচ্ছা কি প্রকার হইতে পারে ? ইহাও কিছু ভগ্যান বলেন নাই ষে. আমি তোমাকে জ্ঞান ও কর্মের মধ্যে একটিই বলিব, গুইটি বলিব না, যাহাতে নিজের [®]উভয়প্রাপ্তির সম্ভাবনা না দেখিয়া সর্জ্জুন উভয়ের মধ্যে একেরই প্রার্থনা করিতে পারেন। ২

শ্ৰীভগৰান্ উবাচ—

লোকে ২িন্মন্ দ্বিবিধা নিষ্ঠা পুরা প্রোক্তা ময়ানঘ। জ্ঞানযোগেন সাম্ব্যানাং কর্মযোগেন যোগিনাম্॥ ৩ জ্ম্বয়। হে জনৰ (পাণরহিত) নয়া পুরা (ইতঃ পূর্বং) জ্মিন্ লোকে দিবিধা নিষ্ঠা প্রোক্তা; [তত্ত্ব] জ্ঞানধোগেন [যা নিষ্ঠা সা] সাংখ্যানান্ [এবং] ক্রমধোগেন [যা নিষ্ঠা সা] ধোগিনান্ [ভবতীতি শেষঃ] ॥ ৩

আসুবাদ। এতগবান কহিলেন। হে জনদ। এই সমুষ্য-লোকে জান-কর্মভেদে দিবিধ নিষ্ঠার বিষয়ে পূর্কে উক্ত হইয়াছে; তাহার মধ্যে জানবোগের দারা সাংখ্যগণের [নিষ্ঠা সাধিত হয়] [এবং] কর্মবোগের দারা যোগিগণের [নিষ্ঠা সাধিত হয়]।

ভাষা। প্রশাসকপমের প্রতিবচনম শ্রীভগবাসুবাচ—লোকেৎমিরিভি। লোকেংমিন্ শাল্রার্থাস্কানাধিক্লতানাং দিবিধা দিপ্রকারা নিষ্ঠা স্থিতিরস্ঠেরতাৎ-পর্ব্যং পুরা পুর্বং দর্গাদৌ প্রজা: স্ফ্রা তাদামভ্যুদরনি:শ্রেরদপ্রাপ্তিদাধনং বেদার্থসন্থারামাবিচুর্বতা প্রোক্তা ময়া সর্বজ্ঞেনেখরেণ হে অন্য অপাপ ! তত্ত্ব **কা সা বিবিধা নিষ্ঠা**

 ইত্যাহ তত্ত্ব জানযোগেন জ্ঞানমেব যোগঃ তেন সাংখ্যানাং **সাম্বানাদ্মবিষয়বিবেকজান**বতাং ব্রহ্মচর্য্যাশ্রমাদের ক্রত**সং**স্থাসানাং বেদাস্ত-বিজ্ঞানস্থনি-চিতার্থানাং প্রমহংসপরিব্রাজকানাং বৃদ্ধান্যের অবস্থিতানাং নিষ্ঠা প্রোক্তা। কর্মবোগেন কর্ম্মিব যোগঃ তেন কর্মবোগেন যোগিনাং কর্মিণাং নিষ্ঠা প্রোক্তা ইতার্থঃ। যদি চ একেন পুরুষেণ এককৈ পুরুষার্থায় জ্ঞানং কর্ম **ह नम्**ष्ठिछा **अस्ट्रिश** खर्शनंदाल्डेम्डन वकामान वा नीलाङ व्यक्ति ह खेडन কথমিহার্জ্বনায় উপসন্নায় প্রিয়ায় বিশিষ্টভিন্নপুরুষকর্তৃকে এব জ্ঞানকর্মনিষ্ঠে জ্ঞবাং। ৰদি পুনরর্জ্জুনো জ্ঞানং কর্ম্ম চ হয়ং শ্রুতা স্বয়মেবাস্ট্রান্ততি অন্তেষাত্ত ভিন্নপুরুষামুষ্টেয়তাং বক্যামি ইতি মতং ভগবতঃ কল্পেত, তদা রাগদ্বেববান অপ্রমাণভূতো ভগবান্ করিত: তাৎ তচ্চাযুক্তম্। তন্তাৎ করাপি যুক্ত্যা ন সমুচ্চয়ো জানকর্মণো:। বদর্জুনেনোক্তং কর্মণো জ্যারত্ত্বং বুদ্ধেন্তচ্চ স্থিতসনিরাকরণাৎ। ভক্তাশ্চ জ্ঞাননিষ্ঠায়াঃ সংস্থাসিনামেবামুষ্টেরত্বং ভিন্নপুরুষামুষ্টেরত্ববচনাচ্চ ভগব্ত এবমেবামুমভম্ ইতি গম্যতে॥ ৩

আনন্দগিরিটীকা। সম্ভরবিরোধিতরা প্রশ্নং ব্যাধ্যার তবিরোধিছেনৈব প্রতিবচনম্থাপরতি—প্রশ্নেতি। বেষাং ব্যবহারভূমিরূপগভ্যতে তত্র যে তৈবর্ণিকাঃ জ্ঞানং কর্ম্ম বা শাস্ত্রীয়মমুঠাভূমধিক্রিয়স্তে তেরাং বিধা স্থিতির্ময়া প্রোক্তেতি
পূর্বার্মং বোজরতি—লোকেই স্মিন্নিতি। স্থিতিমেব ব্যাকরোতি—অমুতেরেতি। পূর্বং প্রবচনপ্রস্বং প্রদর্শরন্ প্রবক্তারং বিশিন্তি—সর্গাদাবিতি।
প্রবচনস্থাবধার্মধার্মকাং বারয়তি—সর্ব্রেজনেতি। অর্জুনক্ত ভগবত্পদেশ-

अवर्ग वांगापः रुष्मि जन्याचि । निर्दात्रगार्थ ज्यां मध्मी । जनर পরমার্থবন্তবিষয়ং তদেব যোগশব্দিতং বৃজ্ঞাতে অনেন ব্রহ্মণেতি ব্যুৎপত্তে**তেন**। निर्छाकुपर्डए । উङ्खानाभाष्रमूभिषिकुः সাংখ্যশন্থাৰ্থমাহ—জাত্ত্বতি। ভেষামেৰ কৰ্মনিষ্ঠত্বং ব্যাবৰ্জন্বতি—ব্ৰহ্মচৰ্যেয়তি। তেষাং ৰূপাদিপারবঞ্জেন শ্রবণাদিপরাঙ্মুথকং পরাকরোতি—বেদান্তেতি। উক্কবিশেষণবতাং মুখ্যসংস্তা-সিছেন ফলাবস্থতং দর্শরতি-পরমহংসেতি। কর্ম বর্ণাশ্রমবিহিতং ধর্মাধাং তদেব যুদ্ধাতে তেনাভাূদয়েনেতি যোগন্তেন নিষ্ঠা কর্ম্মিণাং প্রোক্তেত্যমূরকং তত্তৈব তাৎপৰ্য্যাৰ্থং কণয়তি—যদি চেতি। ইটভাপি হৰ্নোধৰমাশ্ৰ্যাৰ— উক্তেমিতি। জ্ঞানভাপি মূলবিকলতয়া বিভ্ৰমন্বমাশক্যাহ— বেদে<mark>ছিতি।</mark> তক্তাশিয়ত্ব্দ্যান্তথাকথনমিত্যাশস্ক্যাহ—উপসন্ধায়েতি। তথাপি তদ্মিটো দাদীন্তাদন্তথোক্তিরিত্যাশব্যাহ—প্রিয়ায়েতি। ব্রণীতি চ ভিরপুরুবকর্ত্বকং নিষ্চাছরং তেন সমুদ্ধরো ভগবদভীষ্টঃ শাস্ত্রার্থো ন ভবতীতি শেষ:। নছু অর্জনন্ত প্রেকাপূর্বকারিত্বাৎ জ্ঞানকর্মপ্রবণানস্তরম্ উভয়নির্দেশাস্থপত্যা সমুক্তরাস্থ্রানং সম্পংস্ততে তদ্যতিরিক্তানাম্ভ জ্ঞানকর্মণো র্ভিরপুরুষামুঠেরকং শ্রুছা প্রত্যেকং তদম্ভান ভবিষ্যতীতি ভগবতো মতং করাতে ত্যাৰ্জ্পনেইমুরাগাতিরেকাদিতরেষ্ চ তদভাবাদিতি তত্ত্রাহ—হাদি পুনরিতি। অপ্রমাণভূত্বমনাপ্ত**ৰ্ম্।** ন চ ভগৰতো রাগাদিমবেনানাপ্তবং যুক্তং "সম: সর্বেষু ভূতেষু তিঠন্তম্" ইত্যাদি-বিরোধাদিত্যাহ—তচ্চেতি। নিষ্ঠাদমশ্ত ভিন্নপুক্রাকুঠেরছনির্দেশফলমূপসংহ-নতি—তস্মাদিতি। কিমিতি ভগবতা বুদ্ধে র্জ্যায়স্থং **ল্যায়সী চেদিত্যত্ত্রোজ**-মুপেকিতমিতি তত্রাহ—যদ জ্লুনেনেতি। কিঞ্চ জ্ঞাননিষ্ঠারাং সন্ন্যাসিনামেবাধি-কারো ভগবতোহভিত্রেতোহম্বথা তদীয়বিভাগবচনবিরোধাদিতি বিভাগবচনদামর্ব্য-সিদ্ধন্যৰ্থনাহ—তত্মান্তেত।

আমুবাদ। অর্জুনের প্রশ্নের অমুরূপ প্রতিবচনই ভগবান্ বলিলেন বে—লোকেং দিরিত্যাদি। এই লোকে শান্ত-প্রতিপাদিত অর্থের অমুচানে অধিকৃত ব্যক্তাক করিয় ও বৈশ্রগণের মধ্যে দিবিধ (অর্থাৎ) হুইপ্রকার নিষ্ঠাণ (অর্থাৎ) স্থিতি (অথবা) অমুচেয়-তৎপরতা ইহা স্ষ্টির আদিতে সকল প্রজা নির্দ্যাণপূর্বক তাহাদের অভ্যাদয় ও নিঃশ্রেরসপ্রাপ্তির কারণ স্বরূপ, ইহা বেদার্থ সম্প্রদারকে আবিকৃত করিয়া আমি সর্বজ্ঞ ও ঈশ্বর-স্বরূপে নির্দেশ করিয়াছি। সেই দিবিধ নিষ্ঠা কি প্রকার তাহাই বলিতেছেন বে, সেই উভয় নিষ্ঠার মধ্যে জ্ঞানরূপ

কর্মপরিত্যাগমাত্রাদেব জ্ঞানরহিতাৎ সিদ্ধিং নৈকর্ম্মালকণাং জ্ঞানধাগেন নিষ্ঠাৎ সমধিগচ্ছতি ন প্রাপ্নোতি॥৪

আনন্দগিরিটীকা। ভর্হি বিভাগবচনামুরোধাদর্জ্জনস্তাপি সংস্থাস-পূর্ব্বিকারাং জাননিষ্ঠারামেবাধিকারো ভবিষ্যতি নেত্যাহ—মাঞ্চেতি। বুদ্ধের্জ্যায়ত্বমুপেত্যাপীতি চকারার্থ:। অর্জ্জুনমালক্য ভগবানাহেতি সম্বন্ধ:। অন্তরেণাপি কর্মাণি শ্রবণাদিভিজ্ঞানাবাপ্তির্ভবিষ্যতীতি পরবৃদ্ধিমহুক্ষ বিশিনষ্টি—কুর্ম্মেতি। বিভাগবচনবশাদসমূচ্চরশ্চেহভরোরপি জ্ঞানকর্মণোঃ স্বাভ-স্ত্রোণ পুরুষার্থহেতৃত্বমন্তথা কর্মবজ্ঞানমপি ন স্বাতস্ত্রোণ পুরুষার্থং সাধ্যেদিত্যা-শন্ধ্য সম্বন্ধান্তরমাহ—অথবেতি। তর্হি জ্ঞাননিষ্ঠাপি কর্ম্মনিষ্ঠাবং নিষ্ঠাবত্তা বিশেবার স্বাতন্ত্রেণ পুরুষার্থহেতুরিতি সমুচ্চরসিদ্ধিরিত্যাশক্যাহ—জ্ঞাননিষ্ঠা ক্মিতি। ন হি রর্জ্বতত্জানমুৎপদ্ধং ফলসিদ্ধৌ সহকারিসাপেক্যমানক্যতে তথেদমপি চোৎপরং মোকায় নাগুদপেকতে তদাহ—অন্মেতি। "বত হৈতৎ কৰ্মণ ইতি শ্ৰুতাবিৰ কৰ্ম্ম**শস্ত** ক্ৰিয়মাণবস্তবিষয়থমাশক্য ব্যাচটে ক্রিয়াণামিতি। তাশ্চ ন নিত্যনৈমিতিক্ত্বেন বিভল্কতে—যজ্ঞাদীনামিতি। অস্থ্রির জন্মসূষ্ট্তানাং কর্মণাং বুদ্ধিগুদ্ধিরা জ্ঞানকারণতে ব্রন্ধচারিণাং কুতো জ্ঞানোৎপত্তির্জন্মান্তরক্বতানাং কর্মণাং তথাবে গৃহস্থাদীনামৈহিকানি কর্মাণি ন জানহেতবঃ স্থারিত্যাশঙ্কানিয়মং দর্শরতি—ইচ্ছেতি। নেমানি সম্বন্ধ দিকারণাম্যুপাত্তহরিতপ্রতিবন্ধাদিত্যাশব্যাহ—উপাত্তেতি। তর্হি তাব-তৈব কভার্থানাং কুতো জ্ঞাননিষ্ঠাহেভূত্বং তত্ত্রাহ—তৎকারণত্ত্বেনতি। কর্মণাং চিত্তভদ্ধিরা জ্ঞানহেতুত্বে মানমাহ—জ্ঞানমিতি। অনারম্ভ-শব্দক্তোপক্রমবিপরীতবিষয়ত্বং ব্যাবর্ত্তরতি—অনুমুষ্ঠানাদিতি। নিরুশ্বণঃ সংস্থাসিনঃ কর্ম জানং নৈকর্ম্যমিতি ব্যাচষ্টে—নৈজক্ম্যুতি। কর্মাভাবাকস্থাং ব্যবচ্ছিনত্তি—জ্ঞানুযোগেনেতি। তত্তাঃ সাধনপক্ষপাতিত্বং ব্যাবর্জনতি-নিজ্ঞিয়েতি।

কর্দ্মার্ছানোপারণনা জ্ঞাননিষ্ঠা স্বতন্ত্রা পুমর্থহেত্রিতি প্রকৃতার্থসমর্থনার্থং ব্যতিরেক্বচনস্থাররে পর্যাবসানং মন্ত্রা ব্যাচষ্টে—কর্ম্মণামিতি। তদ্বিপর্যারমেব ব্যাচষ্টে—তেমামিতি। উল্কেহর্থে হেতুং পৃচ্ছতি—কর্ম্মাদিতি। বিজ্ঞানিতং হেতুমাহ—উচ্যত ইতি। উপায়ন্তেহপি তদভাবে কুতো নৈকর্ম্মানিনিরিভ্যা-শহ্যাহ—ন হীতি। জ্ঞানন্ত্রোগং প্রতি কর্মবোগক্ত উপায়ন্তে প্রতিস্থতী প্রমাণ্যতি—কর্ম্মহোগ্যতিশ প্রোতস্পারোপেরম্বপ্রতিপাদনং প্রকটরতি—

শ্রুজাবিতি। বন্ধু গীতাশান্তে কর্মবোগস্থ জানবোগং প্রত্যুপারত্বোপপাদনং তদিদানীমূদাহরতি—ইহাপি চেতি। ন কর্মণামিত্যাদিনা পূর্বার্দ্ধং ব্যাধ্যান্ত্রাদ্ধং ব্যাধ্যাকুমাশকয়তি—নিম্বতি। আদিশবেন "শাস্তোদান্তউপরতন্তিতিক্রং" "সংস্থাসযোগাদ্যতরঃ শুদ্ধসন্বাঃ" ইত্যাদি গৃহতে। তত্ত্বৈব লোকপ্রাসিদ্ধিনক্ষ্ক্রম্বতি—লোকে চেতি। প্রসিদ্ধতরম্—

"যতো যতো নিবৰ্ত্ততে ততস্ততো বিমৃচ্যতে। নিবৰ্ত্তনাদ্ধি সৰ্ব্যতো ন বেতি হঃখমগপি।

ইত্যাদিদর্শনাদিতি শেষ:। লোকিকবৈদিক প্রসিদ্ধিত্যাং সিদ্ধর্মবিশ্ব অতশ্চেতি। তত্ত্বোত্তরত্বেনোত্তরার্দ্ধমবতার্য্য ব্যাকরে।তি—অতআহেত্যা-দিনা। এবকারার্থমাহ—কেবলাদিতি।তদেব স্পষ্টয়তি—কর্ম্মেতি।উক্তরেব নঞ্জমন্থক্কর্য ক্রিয়াণ্টেদন সঙ্গতিং দর্শরতি—ন প্রাপ্রোতিতি॥৪

তামুবাদ। আমাকে বন্ধ-কারণ কর্মেতেই নিয়োগ করিতেছ, এই ভাবিয়া বিষয়মনা এবং আমি কর্মারস্ক করিবনা, এই প্রকার সংক্রাকারী অর্জ্ঞ্নকে লক্ষ্য করিয়া ভগবান্ বলিলেন,—ন কর্মণামিত্যাদি। অণুণা (এ প্রকারও এই শ্লোকের তাৎপর্য্য হইতে পারে বে) জ্ঞান-নিষ্ঠা ও কর্ম্ম-নিষ্ঠা পরস্পার বিরুদ্ধ; এই জ্ঞ এক পুরুষের দারা এককালে এই উভয়ের অর্প্র্যান সম্ভবপর না হওয়াতে, জ্ঞান ও কর্ম্ম পরস্পার পরস্পারের অপেক্ষা না করিয়া মোক্ষের প্রতি কারণ হইতে পারে, এই প্রকার সম্ভাবনা হইলে [তাহারই নিরাকরণের জ্ঞা] "কর্ম্মনিষ্ঠা জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রান্থির হেতৃভূত বলিয়া পরতম্বভাবে সোক্ষের কারণ স্বাতন্ত্রের কারণ নহে; কিন্ধ, জ্ঞাননিষ্ঠা কর্ম্মনিষ্ঠার কারণ কর্মনিষ্ঠার কারণ হর্মা প্রতম্বভাবেই নোক্ষের প্রতি কারণ হয় [এবং অপর কোন কারণের অপেক্ষা করে না] ইহাই দেথাইবার জ্ঞ ভগবান বলিলেন বে, "ন কর্ম্মণামিত্যাদি।"

কর্মসমূহের জনারন্ত হইতে (অর্থাৎ) জপ্রারন্ত হইতেই এখানে [কর্ম শব্দের অর্থ বজাদি ক্রিয়া]। ঐ সকল বজ্ঞাদি ক্রিয়া এই জ্বের বা জন্মান্তরে অন্তর্গ্রন্ত হইলে, পূর্বজন্মসঞ্চিত ত্রদৃষ্ট ক্রেরে কারণ হয়, এই জন্তই ঐ সকল ক্রিয়া চিত্ত-ভিদ্নির হেতু হয় বলিয়া জ্ঞানের উৎপত্তির দারা জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তিরও কারণ হইয়া থাকে। "পাপকর্ম্বের কর হইলে পুরুষগণের জ্ঞানের উদ্য হয় [এবং জ্ঞানের উদরে] জীব, আদর্শতলের ন্তার বিমল নিজ আত্মাতেই সেই পরমাত্মাকে দেখিতে পায় এ" এই প্রকার লোকপ্রসিদ্ধ শ্বতিশাল্রের দারাও [কর্মনিকরের জ্ঞান প্রাপ্তির প্রতি ত্রত্ত প্রতিপাদিত হইতেছে] সেই জ্ঞান প্রাপ্তির প্রতি অনুক্রন

কর্মপরিত্যাগমাত্রাদেব জ্ঞানরহিতাৎ সিদ্ধিং নৈকর্ম্ম্যলকণাং জ্ঞানবোগেন নিষ্ঠাৎ সমধিগচ্ছতি ন প্রাপ্নোতি॥৪

আনন্দগিরিটীকা। ভর্হি বিভাগবচনামুরোধাদর্জুনস্তাপি সংস্থাস-পূর্ব্বিকারাং জাননিষ্ঠারানেবাধিকারো ভবিষ্যতি নেত্যাহ—মাঞ্চেতি। বুদ্ধের্জ্যারত্বমূপেত্যাপীতি চকারার্থ:। অর্জ্জনমালক্ষ্য ভগবানাহেতি সম্বন্ধ:। অন্তরেণাপি কর্মাণি প্রবণাদিভিজ্ঞানাবাপ্তিভবিষ্যতীতি পরবৃদ্ধিমমুক্রশ্য বিশিনষ্টি—কর্ম্মেতি। বিভাগবচনবশাদসমুচ্চয়শ্চেত্তয়োরপি জ্ঞানকর্মণোঃ স্বাড-দ্রোণ পুরুষার্থহেতৃত্বমন্তথা কর্মবজ্ঞানমপি ন স্বাতদ্রোণ পুরুষার্থং সাধ্যেদিত্যা-শক্ষ্য সম্বন্ধান্তরমাহ—অথবেতি। তর্হি জ্ঞাননিষ্ঠাপি কর্মনিষ্ঠাবং নিষ্ঠাবন্ধা বিশেষার স্বাতদ্রোণ পুরুষার্থহেতুরিতি সমুচ্চরসিদ্ধিরিত্যাশক্যাহ—জ্ঞাননিষ্ঠা ভিত্তি। ন হি রৰ্জ্জতত্জানমুৎপন্নং ফলসিদ্ধৌ সহকারিসাপেক্ষ্যমালক্ষ্যতে তথেদমপি চোৎপরং মোকায় নাক্তদপেকতে তদাহ—অন্মেতি। "বত হৈতৎ কৰ্ম্ম" ইতি শ্ৰুতাবিৰ কৰ্ম্ম**শস্ত ক্ৰিয়মাণবস্ত**ৰিব**য়ত্বমাশ**ষ্ক্য ব্যাচ**ে** ক্রিয়াণামিতি। তাশ্চ নিত্যনৈমিত্তিক্ষেন বিভন্নতে—যজ্ঞাদীনামিতি। অস্মিরেব জনারামুটিতানাং কর্মাণাং বুদ্ধিগুদ্ধিবারা জ্ঞানকারণত্বে ব্রন্ধচারিণাং কুতো আনোৎপত্তির্জনান্তরকুতানাং কর্মণাং তথাতে গৃহস্থাদীনানৈহিকানি কর্ম্মাণি ন জ্ঞানহেতবঃ স্থ্যবিত্যাশঙ্কানিয়মং দর্শরতি—ইত্তিত। নেমানি সম্বন্ধ দিকারণাম্যুপাত্তহরিতপ্রতিবন্ধাদিত্যাশস্থ্যাহ—উপাত্ত্তেতি। তর্হি তাব-তৈব ক্বতার্থানাং কুতো জ্ঞাননিষ্ঠাহেভূদ্বং তত্ত্রাহ—তৎকারণুত্ত্বেনেতি। কর্মণাং চিত্তগুদ্ধিদারা জ্ঞানহেতুদ্বে মানমাহ—জ্ঞানমিতি। অনারম্ভ-শক্ষতোপক্রমবিপরীতবিষয়ত্বং ব্যাবর্ত্তরতি—অনুমুষ্ঠানাদিতি। নিকর্মণঃ সংস্থাসিনঃ কর্ম জানং নৈক্র্যামিতি ব্যাচষ্টে—নৈজ্বপ্রেতে। কর্মাভাবাবস্থাৎ ব্যবচ্ছিনত্তি—জ্ঞানযোগেনেতি। তন্তাঃ সাধনপক্ষপাতিত্বং ব্যাবর্জনতি— নিজ্রিনয়েতি।

কর্মাম্র্চানোপায়লনা জ্ঞাননিষ্ঠা স্বতন্ত্রা পুমর্থহেতুরিতি প্রক্নতার্থসমর্থনার্থং ব্যতিরেক্বচনস্থান্তর পর্যাবদানং মন্ত্রা ব্যাচষ্টে—কর্ম্মণামিতি। ভদিপর্যায়মেব ব্যাচষ্টে—ত্রেমামিতি। উল্লেখর্থে হেতুং পৃচ্ছতি—কর্ম্মাদিতি। জিজ্ঞানিতং হেতুমাহ—উচ্যত ইতি। উপায়ন্তেংপি তদভাবে কুতো নৈকর্ম্মানিমিত্যা-শহ্যাহ—ন হীতি। জ্ঞানন্যোগং প্রতি কর্মবোগক্ত উপায়ন্তে প্রতিস্থতী প্রমাণ্যতি—কর্ম্মাহান্তিশ প্রোতম্পান্যোপেয়ক্তপ্রভিপাদনং প্রকটয়তি—

শ্রেকারিতি। বন্ধু পীতাশান্তে কর্মবোগস্থ জানবোগং প্রত্যুপারত্বোপপাদনং তদিদানীমূদাহরতি—ইহাপি চেতি। ন কর্মণামিত্যাদিনা পূর্বার্দ্ধং ব্যাখ্যা-রোভরার্দ্ধং ব্যাখ্যাভূমাশক্ষতি—নিস্থিতি। আদিশবেন "শাস্তোদান্তউপরতন্তি-তিক্ষ্ণং" "সংস্থাসবোগাদ্যতরঃ শুদ্ধসন্থাং" ইত্যাদি গৃহতে। তত্ত্বৈব লোকপ্রাসিদ্ধিনম্প্রক্রিতি—লোকে চেতি। প্রসিদ্ধতরম্—

"যতো যতো নিবৰ্ত্ততে ততস্ততো বিমৃচ্যতে। নিবৰ্ত্তনাদ্ধি সৰ্ব্যতো ন বেতি হঃখমগপি।

ইত্যাদিদর্শনাদিতি শেষ:। লৌকিকবৈদিক প্রসিদ্ধিত্যাং সিদ্ধর্মধিনাহ—
অতশ্চেতি। তত্ত্বোত্তরত্বেনোত্তরার্দ্ধমবতার্য্য ব্যাকরে।তি—অতআহেত্যাদিনা। এবকারার্থমাহ—কেবলাদিতি।তদেব স্পষ্টয়তি—কর্ম্মেতি।উক্তনেব
নঞ্জমন্থক্য ক্রিরাপদেন সঙ্গতিং দর্শয়তি—ন প্রাপ্রোতীতি॥৪

অমুবাদ। আমাকে বন্ধ-কারণ কর্ম্মেতেই নিয়োগ করিতেছ, এই ভাবিরা বিষয়মনা এবং মামি কর্মারস্ত করিবনা, এই প্রকার সংকরকারী অর্জ্ঞ্নকে লক্ষ্য করিয়া ভগবান্ বলিলেন,—ন কর্ম্মণামিত্যাদি। অ্বণবা (এ প্রকারও এই স্নোকের তাৎপর্য্য হইতে পারে বে) জ্ঞান-নিষ্ঠা ও কর্ম্ম-নিষ্ঠা পরস্পার বিরুদ্ধ ; এই জ্লপ্ত এক প্রুম্বের হারা এককালে এই উভয়ের অমুষ্ঠান সম্ভবপর না হওয়াতে, জ্ঞান ও কর্ম্ম পরস্পার পরস্পারের অপেক্ষা না করিয়া মোক্ষের প্রতি কারণ হইতে পারে, এই প্রকার সম্ভাবনা হইলে [তাহারই নিরাকরণের জ্লপ্ত] "কর্ম্মনিষ্ঠা জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তির হেতৃভূত বলিয়া পরতম্ভভাবে মোক্ষের কারণ স্বাতন্ত্রের কারণ নহে ; কিন্তু, জ্ঞাননিষ্ঠা কর্ম্মনিষ্ঠার্ম উপারের অমুষ্ঠানে উদিত হইয়া স্বভম্বভাবেই মোক্ষের প্রতি কারণ হয় [এবং অপর কোন কারণের অপেক্ষা করে না] ইহাই দেখাইবার জন্ত ভগবান বলিলেন যে, "ন কর্ম্মণামিত্যাদি।"

কর্মসমূহের অনারস্ত হইতে (অর্থাৎ) অপ্রারস্ত হইতেই এথানে [কর্মা শব্দের অর্থ বজ্ঞাদি ক্রিয়া]। ঐ সকল বজ্ঞাদি ক্রিয়া এই জ্বো বা জনাস্তরে অক্সন্তিত হইলে, পূর্বজন্মসঞ্চিত ত্রদৃষ্ট করের কারণ হয়, এই জন্তই ঐ সকল ক্রিয়া চিত্ত-ভিন্ন হেতু হয় বলিয়া জ্ঞানের উৎপত্তির দ্বারা জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তিরও কারণ হইয়া থাকে। "পাপকর্ম্বের ক্রয় হইলে পুরুষগণের জ্ঞানের উদৃয় হয় [এবং জ্ঞানের উদরে] স্ত্রীব, আদর্শতলের স্তায় বিমল নিজ আত্মাতেই সেই পরমাত্মাকে দেখিতে গায়।" এই প্রকার লোকপ্রসিদ্ধ শ্বতিশান্ত্রের দ্বায়াও [কর্মনিকরের জ্ঞান প্রাপ্তির প্রতি হতুত্ব প্রতিপাদিত হইতেছে] সেই জ্ঞান প্রাপ্তির প্রতি অক্সক্রল

কর্মনিকরের অমুষ্ঠান না করিলেই যে পুরুষ নৈকর্ম্য লাভ করিতে পারে, তাহা নহে; নৈকর্ম্য শব্দের অর্থ নিকর্ম ভাব, (অর্থাৎ) কর্মশৃষ্ণতা, জ্ঞানযোগ ছারা নিষ্ঠা, প্রকৃত পক্ষে নিজ্ঞিয় আয়হরূপেই অবস্থিতি। এই প্রকার নৈকর্ম্য কেবল কর্মের অমুষ্ঠানেই কেহ প্রাপ্ত হইতে পারে না, ইহাই অর্থ।

কর্মের আরম্ভ না করিলে, নৈদ্ধর্ম্য-সিদ্ধি লাভ করিতে পারা যায় না, এইরপ বচনের দারা ইহা বৃঝিতে পারা যাইতেছে যে, কর্মের আরম্ভেই নৈদ্ধ্য লাভ হয় না [তাহা] বলা হাইতেছে —কর্ম্মের আরম্ভেই যে কারণে নৈদ্ধ্য্য লাভ হয় না [তাহা] বলা যাইতেছে —কর্ম্মের আরম্ভেই যে কারণে নৈদ্ধ্য্য লাভের কারণ, [এই কারণেই কর্মের অনারম্ভ দারা নৈদ্ধর্ম্য সিদ্ধি হইতে পারে না] কারণের অভাবে কথনই কার্য্য হইতে পারে না ৷ নৈদ্ধর্ম্য শব্দের অর্থ জ্ঞানযোগ, সেই জ্ঞানযোগের প্রতি কর্ম্মারম্ভই হেতু, তাহা শ্রুতি এবং এই ভগবদ্দীভাতেও প্রতিপাদিত হইরাছে ৷

আত্মরূপ লোকই বেছ (জের), তাহার জ্ঞানের প্রতি কি উপার, তাহা নির্দেশ করিতে গিয়া, শ্রুতিতে বলা হইয়াছে বে, "বেদের অধ্যয়ন, দান, ষজ্ঞ প্রভৃতি কর্মের দারা দেই এই আত্মাকে জানিবার জন্ম ব্রাহ্মণগণ প্রয়ত্ত্ব করিয়া পাকেন" এই অর্থে পঠিত শ্রুতি দারা কর্মযোগ যে জ্ঞানযোগ লাভের উপার, ভাহা প্রতিপাদিত হইয়াছে।

এই ভগৰণ্গীভাতেও -- [উক্ত হইয়াছে যে]

"হে মহাবাহো যোগের ধিদি ন। হইলে, সংখ্যাসাভাম গ্রহণ কেবল ছঃখের ভেডু হর।"

"চিত্ত শুদ্দির জন্ত আসক্তি পরিহারপূর্বক যোগিগণও কর্মের অনুষ্ঠান ক্রিয়া গাকেন।"

"বঞ্জ, দান ও তপস্থা মনীষিগণের শুদ্ধিলাভের উপায়।"

এই সকল বাক্যও, কর্মযোগ ও জ্ঞানযোগের প্রয়োজক, তাহা প্রতিপাদন ক্রিতেছে।

''সকল ভূতকে অভয়দানপূর্বক নৈদ্ধর্ম্মের আচরণ করিবে" ইত্যাদি শাস্ত্রীয় বাক্ষের দারা প্রতিপাদিত হইতেছে যে, কর্ত্তব্য কর্ম্মের পরিত্যাগ করিলেও, নৈদ্ধ্যা সিদ্ধি লাভ করিতে পারা যায়, লোকেও প্রসিদ্ধ আছে যে, কোন প্রকার কর্ম্মের আরম্ভ না করিলেই নৈদ্ধ্যা হইয়া থাকে, এই সকল কারণে, যে নৈদ্ধ্যা প্রথিনা করে, তাহার পক্ষে কর্ম্মারম্ভের আবশ্রকতা কি ৪ এই প্রকার মৃদ্

কেহ শহা করে, তবে তাহাকে ব্রাইবার কম্প বলা হইতেছে বে, 'নচ সংস্থান নাদেব' ইত্যাদি, [ইহার কার্থ এই বে] সন্ন্যাস কার্থাৎ, জ্ঞান হর নাই, কার্যচ কেবল কর্মা পরিত্যক হইরাছে—এ চাদৃশ অবস্থার বে নৈক্ষ্যা-লক্ষণ জ্ঞানবোগের হারা সিদ্ধি প্রোপ্ত হওয়া বার—তাহা নহে॥ ৪

> ন হি কশ্চিৎ কণমপি জাতু তিষ্ঠত্যকশ্মকৃৎ। কাৰ্য্যতে হ্বশঃ কৰ্ম্ম সৰ্ব্বঃ প্ৰকৃতিজৈগুৰ্'ণৈঃ॥ ৫

আৰ্য়। কণ্ডিং [জনঃ] জাড় (কলাচিদপি) কণ্মপি অকর্ণকং ন ডিঠডি। হি (বলাৎ) সর্বাঃ [এব জনঃ] অবশঃ (অবতরঃ) [সন্] প্রকৃতিলৈও গৈঃ কর্ণ কার্য্যভে ॥ ৫

অকুবাদ। কোন কালে কোন ব্যক্তিই ক্লণকালও কর্ম না করিয়া থাকিছে পারে না; কারণ, সকল প্রাণীই প্রকৃতিজাত (সহ রজঃ ও তসঃ) শুণের খারা অবশীক্ত হইয়া কার্য্যে প্রবর্ত্তিত হয়॥ ৫

ভাষ্য। কন্মাৎ পুন: কারণাৎ কর্ম্মগঞ্জাসমাত্রাদেব জ্ঞানরহিতাৎ সিবিধি নৈকর্মানকণাং পুরুবো নাধিগছতে ইত্যাকাঙক্লারামাহ—ন হাঙি। বহি যন্মাৎ ক্রণমণি কালং জাভু কলাচিৎ কন্চিৎ তিঠিতি অক্র্যুক্ত সন্। ক্রমাৎ ক্রণমণি কালং জাভু কলাচিৎ কন্চিৎ তিঠিতি অক্র্যুক্ত সন্। ক্রমাৎ ক্রমাণ ক্

আনন্দ্রিনিকা। উত্তেখ্য বৃত্ৎসিতং হেতৃং বকু মৃত্তরক্ষোক মুখাপরতি—কন্মাদিতি। কন্মার কর্মসংস্থাসাদের সিদিমধিগছেতীতি পূর্বেশ
সংক্ষঃ। কদাচিং ক্ষণমাত্রসপি ন কন্দিকর্মকং ডিঠতীত্যত্ত হেতৃংখনোতরার্ছং
ব্যাচঠে—কন্মাদিতি। সর্মান্ধাং জ্ঞানবানপি ওগৈরবদঃ সন্ কর্ম কার্যতে
ততন জ্ঞানবতঃ সংস্থাসবচনমনবকাশং স্থাদিত্যাশহ্যাহ—জ্ঞা ইতীতি। জ্মের
বাক্যশেষং বাক্যশেবার্হতেন স্পাইরতি—মৃত ইতি। আত্মানবতে ওগৈন্ধ
বিচাল্যতরা গুণাভীতত্ববচনাক্জতের সন্ধানিগণৈরিক্তাতেদেন কার্যকরণসংখাতং
প্রবর্তনিক্ষণকত জ্ঞিক্তার্যকরণসংখাতত ক্রিয়াস্থ প্রবর্তনামন্দ্রিক্তার্থঃ।
জ্ঞানবাগেনেজ্যাদিনা উক্সান্ধার্ম বাক্যশেবাপপতিরিত্যাহ—সাংখ্যাম্থা-

মিতি। জ্ঞানিনাং গুণপ্রযুক্তচলনাভাবেংশি স্বাভাবিক্চলনবলাং কর্মবোগো ভবিষ্যতীত্যাশস্থাহ—জ্ঞানিনাং ত্বিতি। প্রত্যগান্থনি স্বারসিক্চলনাসম্ভবে * গ্রাপ্তকং স্থারং স্থারয়তি—তথা চেতি॥ ৫

অনুবাদ। কি কারণে জ্ঞান না হইলে কেবল কর্ম্মণ্ডাসমাত্তেই পুরুষ নৈম্ম্যালকণসিদ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারে না—এই প্রকার জিজ্ঞাসা যদি কেহ করে, তাহা হইলে, তাহার উত্তর দেওয়া হইতেছে যে—ন হি ইত্যাদি।

ষে কারণ ক্ষণকাশও কোন সময়ে কোন ব্যক্তি কর্ম পরিত্যাগ করিয়া পাকিতে পারে না; কেন [থাকিতে পারে না?] যেহেত্ অবশ হইরা সকল প্রাণীই প্রকৃতি হইতে জাত সর রজঃ ও তমো গুণের হারা কর্মে প্রবর্ত্তিত হয়। এই বাক্যের শেবে অজ্ঞ এই পদটির পূরণ করিতে হইবে [অর্থাৎ অজ্ঞ ব্যক্তিই প্রকৃতির বশীভূত হইয়া কার্য্যে প্রবর্ত্তিত হয়] কারণ, পরে বলিয়াছেন যে, "গুলৈরো ন বিচাল্যতে" (অর্থাৎ যে ব্যক্তি গুণের হারা বিচালিত না হন, তিনিই জ্ঞানী) এই প্রকার বক্ষ্যমাণ শ্লোক-নিবহের হারা অজ্ঞ জীব হইতে সাংখ্য (মর্থাৎ জ্ঞানী) দিগের পৃথক করিয়া নির্দেশ করা হইয়াছে বলিয়া, [ইহাই ব্রিতে হইবে যে] যাহাদের জ্ঞান উৎপন্ন হয় নাই, তাহাদেরই কর্ম্মবোগের অমুষ্ঠান কর্ত্তব্য, জ্ঞানিগণের কার্য্য করিবার আবশ্রকতা নাই। জ্ঞানিগণ গুণের বশে পরিচালিত হয়েন না, তাহাদের কর্মযোগের আবশ্রকতা নাই। জ্ঞানিগণ গুণের বশে পরিচালিত হয়েন না, তাহাদের কর্মযোগের আবশ্রকতা নাই. "বেদা-বিনাশিনম্ ইত্যাদি শ্লোকেও এই প্রকার ব্যাখ্যা করা গিয়াছে॥ ৫

কর্ম্মেন্দ্রিয়াণি সংযম্য য আন্তে মনসা স্মরন্। ইন্দ্রিয়ার্থান্ বিমূঢ়াত্মা মিথ্যাচারঃ স উচ্যতে॥ ৬

আর্য়। যা কর্মেজিয়াণি সংযম্য (নিরুধ্য) মনসা ইজিয়ার্থান্ (বিষয়ান্)
শরন্ আতে স বিমৃঢ়াত্মা মিথ্যাচার: উচ্যতে ॥ ৬

আমুবাদ। বে ব্যক্তি [লোকলজ্জাদি হইতে পরিত্রাণ পাইবার জ্ঞান্ত বিশ্ব ইন্তিয় সকলকে বিষয়ের উপভোগ হইতে বিরত করিয়া, মনের ছারা [ইন্তিয়ভোগ্য] বিষয়-সম্হের [অনবরত] শ্বরণ করিয়া থাকে, সেই বিমৃচ্চেতা পুরুষকে মিখ্যাচার বলা যায় ॥ ৬

ভাষ্য। বন্ধনাক্ষজ্ঞশোলিতং কর্ম নারভতে ইতি তলসলেবেত্যার্থ—কর্ম্মে বিশ্বাশীতি। কর্মেবিয়োণি হন্তাদীনি সংবদ্য সংক্ত্য বঃ আন্তে ভিঠতি মদক্ষা

[🛊] ৰাভাবিকচলনাসন্তবে ইভি বা পাঠঃ।

গ্রন্ চিন্তরন্ ইন্সিগার্থান্ বিষয়ান্ বিষ্ঢ়াত্মা বিষ্ঢ়াত্তঃকরণঃ মিধ্যাচারঃ ম্বাচারঃ শাপাচারঃ স উচ্যতে ॥ ৬

আনন্দগিরিটীকা। আত্মবদনাত্মজ্ঞ।পি তর্হি কর্মাকুর্বতো ম প্রত্য-বারঃ শরীরেজ্রিরসংঘাতং নিরন্তমসমর্থস্থ মূর্যস্থাপি সংস্থাসসম্ভবাদিত্যাশঙ্ক্যাহ— যস্ত্রিতি। তক্ষ চোদিতাকরণং তচ্চন্দেন পরামৃশুতে—তদসদিতি। মিণ্যা-চারতাদিতিভাবঃ। মিধ্যাচারতামেব বর্ণরতি—কর্ম্পেক্সিরাণীতি॥ ৬

আসুবাদ। অনাত্মক ব্যক্তিও যে বিহিত কর্মের আরম্ভ না করে, তাহা ভাল নহে, ইহাই বলিতেছেন যে—কর্মেন্দ্রিগণীত্যাদি। কর্মেন্দ্রির [অর্থাৎ] হন্তপদাদি সংযত [অর্থাৎ] নিয়মিত করিয়া যে ব্যক্তি মনে মনে "ইন্দ্রিরার্থ" বিষয় সকলের স্মরণ [অর্থাৎ] চিন্তা করিতে থাকে, সেই ব্যক্তি বিমৃঢ়াত্মা [অর্থাৎ] মোহাক্রান্ত-হৃদর। [তাহাকে] মিথ্যাচার, ম্যাচার [অর্থাৎ কপটাচার বা পাপাচার] বলা যায়॥ ৬

যস্ত্রিক্রিয়াণি মনসা নিয়ম্যারভতেহর্জ্জ্ন। কর্ম্মেক্রিয়েঃ কর্ম্মযোগমসক্তঃ স বিশিষ্টতে॥ ৭

অনুষ্য। হে অর্জুন! যস্ত (য: পুন:) ইন্সিয়াণি মনসানিয়ম্য (সংক্ষ্য) অসকঃ [সন্] কর্মেন্সিইয়: কর্মাযোগম্ আরভতে স বিশিষ্যতে ॥ ৭

অনুবাদ। হে অর্জ্জন! কিন্ত যে ব্যক্তি মনের দারা বৃদ্ধীন্দ্রির নিচরকে নির্মিত করিয়া স্বয়ং অনাদক্ত হইয়া কর্ম্মেন্দ্রির-সমূহের দারা কর্ম্মেণোগের আরম্ভ করেন, সেই ব্যক্তিই শ্রেষ্ঠ বলিয়া বিশেষিত হন ॥ ১

ভাষ্য। যন্ধিতি। যন্ত পুন: কর্ম্মণ্যধিক্বত: অল্প: ৰুদ্ধীন্দ্রিয়াণি মনসা নির্ম্য আরভতে অর্জুন কর্ম্মেল্রিয়ে: বাক্পাণ্যাদিভি:। কিমারভত ইত্যাহ— কর্মবোগমসক: সন্ স বিশিষ্যতে ইতর্মান্মিণ্যাচারাৎ॥ ৭

আনন্দগিরিটীক। অনাগ্যজন্ত চোদিতমকুর্নতো জাগ্রতো বিবদান্তর-দর্শনপ্রীব্যাৎ মিধ্যাচারন্তেন প্রত্যবায়িত্বমুক্তা বিহিত্তমন্থতিষ্ঠতন্তকৈ ফলাভিলাব-বিকলন্ত সদাচারত্বেন বৈশিষ্ট্যমাচষ্টে—যন্তিব্রিক্রয়াণীতি। বিহিত্তমন্থতিষ্ঠতো মূর্থাৎ কর্ম ত্যজন্তো বৈশিষ্ট্যমক্ষরন্নোজনন্না স্পাইমতি—যন্ত্র পুনরিতি॥ १

আসুবাদ। বাৰভ্যাদি [শ্লোকের অর্থ এই] কৈছ যে ব্যক্তি ক্রেডিড অধিকত [অর্থাৎ] অনাত্মজ [এই জন্ত] চকুরাদি জ্ঞানেলির নিচরকে মনের বারা নির্মিত করিরা, বাক্পাণি প্রভৃতি কর্মেলির সম্হের বারা হে অর্জুন আরম্ভ করে। কি আরম্ভ করে? তাহাই বলিতেছেন যে, অনাসক্ত হইরা কর্মবোগের আরম্ভ করে, সেই ব্যক্তি ইতর মিধ্যাচার ব্যক্তি হইতে [শ্রেষ্ঠ বলিরা] বিশেষিত হইরা থাকে॥ १

> নিয়তং কুরু কর্ম সং কর্ম জ্যায়ে। ছকর্মণঃ। শরীর্যাত্রাপি চ তে ন প্রসিধ্যেদকর্মণঃ॥৮

আয়ুর। দং নিরতং কর্ম কুরু; হি (যন্তাৎ) অকর্মণঃ (কর্মণামনারভাৎ) কর্ম জ্যারঃ (শ্রেষ্ঠতরম্)। [কিং] চ সকর্মণঃ তে শরীরমাত্রাহিণি (শরীরন্থিতি-রণি) ন প্রসিধ্যেৎ॥ ৮

আমুবাদ। তুমি, [তোমার অধিকারের অন্তর্মণ] কর্মের অনুষ্ঠান কর।
কর্মের অনারস্ত অপেকা বিহিত কর্মের অনুষ্ঠান শ্রেরস্কর। [আরও
দেখ] তুমি যদি কর্ম না কর, তাহা হইলে তোমার শরীর্যাত্রাও সিদ্ধ হইতে
পারিবে না ॥ ৮

ভাষ্য। বত এবমু অতঃ নিয়ত্মিতি। নিয়তং নিতাং যো যদিন্ কর্মণি অধিকৃতঃ ফ্লায় চ অস্ত্রুৎ তরিয়তং কর্ম তৎ কুকু সং হে অর্জুন। বতঃ কর্ম জ্যায়োহধিকতরং ফলতো হি ষমাৎ অকর্মণঃ অকরণাৎ অনারভাৎ। কথং শরীরবাত্রা শরীরস্থিতিরপি চ তে তব ন প্রসিধ্যেৎ প্রসিদ্ধিং ন গচ্ছেৎ অকর্মণোহক্মণাৎ। অতো দৃষ্টঃ কর্মাকর্মণো বিশেষো লোকে॥ ৮

আনন্দগিরিটীকা। কর্দান্তারিনো বৈশিষ্ট্যমুপদিষ্টমন্ত তদমুঠানমধিকতেন কর্ব্যমিতি নিগমরতি—মৃত ইতি। উক্তমেব হেতুং ভগবদমুমতিকথনেন ক্টুরতি—কর্দ্মেতি। ইতশ্চ ধরা কর্ত্ব্যং কর্দ্মেত্যাহ—শরীরেতি
ভরিরজ্ঞং ভ্যাধিকততেতি সম্বন্ধঃ। বর্গাদিকলে দর্শপূর্ণমাসাদাবধিকতত ভদপি
নিজ্ঞাং ভাদিভ্যাশহ্য বিশিনষ্টি—ফলায়েতি। নিজ্ঞাং কর্মনিরমেন কর্ত্ব্যমিত্যক্র ক্রেমাহ—মৃত ইতি। হি শক্ষোপান্তমুক্তমেব হেতুমমুবদতি—মৃত্যাদিতি। কর্পভাকরণাজ্ঞায়ত্বং প্রশ্নপ্রকং প্রকটরতি—ক্রথমিত্যাদিনা।
সভ্যেব কর্মণি দেহাদিটেরীবারা শরীরং হাতুং পাররতি ভদভাবে জীবনমেব
ইল্ভং ভ্রেদিতি ফলিত্যাহ—জ্বত ইতি॥ ৮

আকুবাদ। বে হেড় এই প্রকার, সেই জয় [বলিতেছেন বে], নিরত মিত্যাদি। নিরত [এই শব্দের অর্থ] নিত্য, বে ব্যক্তি বে ক্রের্ডর অধিকারী, অধ্য বে কর্মের ফল শ্রুত হর নাই, সেই ব্যক্তির পক্ষে সেই কর্মই নিরত কর্ম। হে অর্জুন, তুমি সেই নিত্য কর্মের অমুষ্ঠান কর, বৈ হেতু অকর্ম হইতে, [অর্থাৎ] বিহিত কর্মের অনারম্ভ হইতে, ফলের অনক এই জন্ত বিহিত কর্মের অমুষ্ঠান শেরম্বর। কর্মের অমুষ্ঠান না করিলে, তোমার শরীর্বাতা [অর্থাৎ] শরীরম্বিতিও প্রসিদ্ধ হইতে পারে না; এই কারণে লোকে কর্ম ও অক্রেরে প্রস্পর বৈশক্ষণ্য পরিশক্ষিত হয়॥ ৮

যজ্ঞার্থাৎ কর্মণোহন্মত্র লোকোহয়ং কর্মবন্ধনঃ। তদর্থং কর্ম কোন্তেয় মুক্তদঙ্গঃ সমাচর॥ ৯

আমুয়। অরং লোক: বজ্ঞার্থাৎ (পরমেশ্বর-প্রীতিপ্রয়োজনাৎ) কর্মণো ২ন্তর (অক্তেন কর্মণা) কন্মনক্ষন: ভবতি। হে কৌন্তের [তত্মাৎ] মৃক্তসঙ্গঃ [সন্] তদর্থং (ঈশ্বরার্থং) কর্ম সমাচর ॥ ১

অকুবাদ। যজ্ঞের অর্থাৎ পরমেশরের প্রীভিকে উদ্দেশ না করিয়া যে কর্ম [কামনাবশে] ক্ষত হয়, সেই কর্মের দারাই লোক [সংসারে] বদ্ধ হইয়া থাকে, হে কুন্তীনন্দন! তুমি আসঙ্গ পরিত্যাগপূর্বক পরমেশ্বরের প্রীতির জক্ত বিহিত কর্মের অনুষ্ঠান কর॥ ১

ভাষ্য। যত সভাসে বন্ধার্থতাৎ কর্মান কর্ত্ত্যমিতি তদপাসং, কথম্—
যজ্ঞার্থাদিতি। "যজ্ঞো বৈ বিষ্ণুং" ইতি শ্রুত্তেঃ যজ্ঞা ঈশ্বরঃ, তদর্থং যৎ ক্রিয়তে
তদ্ যজ্ঞার্থং কর্মা তম্মাৎ কর্মাণোহন্তক্ত অন্তেন কর্মাণা লোকোহয়মধিকতঃ কর্ম্মকং
কর্মাবন্ধনঃ কর্মা বন্ধনং যন্ত সোহরং কর্মাবন্ধনঃ লোকো ন তু যজ্ঞার্থাৎ, অতন্তদর্থং
যজ্ঞার্থং কর্মা কোন্তের মুক্তসঙ্গঃ কর্মাকলসঙ্গবিজ্জিতঃ সন্স্মাচর নির্ক্ত্রের মুক্তসঙ্গঃ

আনন্দ গিরিটীকা। কর্মণা বধ্যতে জন্তরিতি মতের্বন্ধার্থং কর্ম তৎ ন শ্রেরোছর্থিনা কর্ত্ত্ব্যমিত্যাশবামন্ত্র দ্বয়তি—যচেত্যাদিনা! কর্মাধিকতত্ত্ব তদকরণমযুক্তমিতি প্রতিজ্ঞাতং প্রশ্নপূর্ব্ধকং বির্ণোতি—কথ্যমিত্যাদিনা। কলাভিসন্ধিমন্তরেণ যজ্ঞার্থং কর্ম কুর্বাণত্ত বদ্ধাভাষাৎ তাদর্থেন কর্ম কর্ত্তব্যমিত্যাহ—তদর্থমিতি। যজ্ঞার্থং কর্মেত্যযুক্তং ন হি কর্মার্থমেব কর্মেত্যাশব্দ ব্যাচষ্টে—যজ্ঞো বৈ বিষ্ণুরিতি। কণং তর্ছি কর্মণা বধ্যতে জন্তবিভিশ্বতিত্ত্রাহ—তন্মাদিতি। ঈশবার্গণবৃদ্ধ্যা ক্রভক্ত কর্মুণোর্মনার্থদাভাবে ফলিতন্মাহ—জত্ত ইতি॥ ১

অনুবাদ। যদি বিবেচনা কর যে কল, বৃদ্ধনের প্রতি হেতু, অতএব কর্ত্তব্য নহে, তাহাও সাধু নহে। কেন ? [তাহাই বলা বাইতেছে .ধে] বজার্থাদিতি। যজ্ঞই বিষ্ণু এই প্রকার শ্রুতির বচন আছে বলিরা যজ্ঞগব্দের অর্থ বিষ্ণু [অর্থাৎ,] ঈশর। তাঁহার [প্রীতির] জন্ম যে কম করা যার, তাহার নাম বজার্থ কর্ম, সেই যজ্ঞার্থ কর্ম হইতে অন্ত কর্মের আচরণ করিলেই লোক, [অর্থাৎ], সেই সেই বিহিত কর্মের অধিকারী কামনাবান্] প্রকর, কর্ম বন্ধন হয়, কর্ম ই বন্ধের প্রতি হেতু যাহার পক্ষে হয়, তাহাকেই কর্মাবন্ধন কহা যার। বজার্থ কর্মের অন্তর্গান কর্মবন্ধন হয় না; হে কোস্তেয়, [তুমি] তদর্থ (অর্থাৎ যজ্ঞার্থ), কর্ম্মের অন্তর্গান কর। [কি ভাবে কর্মের অন্তর্গান করিতে হইবে, তাহাও বলি,] "মুক্তসঙ্গ" কর্ম্মকল লাভের প্রতি আসক্তি পরিহার করিয়া কার্য্যের অন্তর্গান কর॥ ১

সহযক্তাঃ প্রজাঃ স্থক্ত্বা পুরোবাচ প্রজাপতিঃ। অনেন প্রসবিষ্যধ্বমেষ বোহস্ত্রিষ্টকামধুক্॥ ১০

আন্বয়। পুরা প্রজাপতিঃ সহযজাঃ প্রজাঃ স্বষ্ট্র। উবাচ [কিমিত্যাহ] আনেন (যজেন) প্রসবিষ্ধান্ম এব যজঃ বঃ (যুদ্মাকং) ইষ্টকামধুক্— (অভিলবিতফলবিশেব-সম্পাদকঃ) [ভবিষ্যতীতিশেবঃ] ॥ ১ •

অনুবাদ। পূর্ব্বে প্রজাপতি যজ্ঞের সহিত প্রজা সৃষ্টি করিয়া [তাহা-দিগকে] বলিয়াছিলেন বে [তোমরা] এই যজ্ঞের দারা বৃদ্ধি লাভ কর। এই যজ্ঞাই তোমাদের অভিলবিত ফল সকল প্রদান করিতে সমর্থ হউক॥ ১•

ভাষ্য। ইতশ্চাধিক্কতেন কর্ম কর্ত্ব্যম্—সংহতি। সহযজ্ঞাঃ যজ্ঞসহিতাঃ প্রজান্তরো বর্ণান্তাঃ স্ত্র্য উৎপান্ত পুরা সর্গাদৌ উবাচ উক্তবান্ প্রজাপতিঃ প্রজানাং প্রষ্ঠা,, জ্মনেন যজ্ঞেন প্রসবিষ্যধ্বং প্রসবো বৃদ্ধিক্ষৎপত্তিতাং কুরুধবম্। এব যজ্ঞঃ বো যুম্মাকম্ অন্ত ভবতু ইষ্টকামধুক্। ইষ্টান্ অভিপ্রেতান্ কামান্ ফলবিশেষান্ দোখীতি ইষ্টকামধুক্॥ ১০

আনন্দ গিরিটীকা। নিত্যস্ত কর্মণো নৈমিত্তিকসহিতস্থাধিকতেন কর্জ-ব্যক্তে, হেত্বস্তরপরত্বেন অনস্তরশ্লোকসবতারয়তি—ইতদেচতি। কর্থং পুনরনেন বজ্ঞেন বৃদ্ধিরশ্লাভি: শক্যা কর্জু মিত্যাশঙ্ক্যাহ—এম ইতি॥ >•

ভানুবাদ। এই কারণেও অধিকৃত ব্যক্তির কার্য্য করিতে হইবে, বে কারণ যজ্ঞের সহিত প্রজা [অর্থাৎ] ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশু এই তিন বর্ণকে স্বষ্টীর প্রথমে নির্মাণ করিয়া "প্রজাপতি" প্রজাগণের স্রষ্টা বলিরাছেন বে, এই বজ্ঞের দারা তোমরা প্রসব কর, প্রসব শব্দের অর্থ বৃদ্ধি, বা উৎপত্তি, [দ্বর্ণাৎ] বৃদ্ধি লাভ কর। এই যজ্ঞ তোমাদের ইট্টকামধুক্ হউক, ইট্ট শব্দের অর্থ অভিলয়িত, কাম শব্দের অর্থ ফল বিশেষ, সেই ইট্টকামকে যে দোহন করে (উৎপাদন
করে) তাহাকেই ইট্টকামধুক্ বলা যায়॥ ১০

দেবান্ ভাবয়তানেন তে দেবা ভাবয়স্ত বঃ। পরস্পারং ভাবয়স্তঃ শ্রেয়ঃ পরমবাপ্স্থথ॥ ১১

অনুয়। অনেন (যজেন) দেবান্ ভাবয়ত (বর্দ্ধরত) তে দেবা: [ভাবিতা: সন্ত:] ব: (যুদ্মান্) ভাবয়ন্ত (পরিতৃপ্তান্ কুর্বন্ত) [যুদ্ধ] পরস্পার্থ ভাবয়ন্ত: পরং শ্রেয়: [স্বর্গাদিরূপং] অবাপ্তাথ (প্রাপ্তা: ভবিষ্যুথ)॥ ১১

অসুবাদ। এই যজের দারা তোমরা দেবগণের তৃপ্তিসাধন কর, এবং পরিতৃপ্ত হইয়া সেই দেবতাগণও তোমাদের অভ্যুদর সাধন করুন, এই প্রকারে পরস্পরের রুদ্ধি করিয়া তোমরা সকলে পরম শ্রেয়ঃ লাভ কর॥ ১১

ভাষ্য। কথং—দেবানিতি। দেবান্ ইন্ত্রাদীন্ ভাবয়ত বর্দ্ধয়ত অনেন যজেন। তে দেবা ভাবয়ত্ত আপ্যায়য়ত্ত বৃষ্ট্যাদিনা বো যুম্মান্ এবং পবস্পারম্ মন্তোহং ভাবয়ত্তঃ শ্রেয়ঃ প্রমণি জ্ঞানপ্রাপ্তিক্রমেট অবাস্থ্যাও স্বর্গং বা পরং শ্রেষঃ অবাস্থ্যা ১১

আনন্দ গিরিটীকা। কথং পুনরভীষ্টফল বিশেষহেতুম্বং যজ্ঞ বিজ্ঞারতে ন হি দেবতা প্রসাদাদতে স্বর্গাদির ভ্যাদরো লভ্যতে নাপি সম্যাদর্শনমন্তরেশ নিংশ্রেমণ দেরুং পাররতীতি শক্ষতে—কথমিতি। তত্র শ্লোকেনোত্তরমাহ—দেবানিতি। মুমুক্ষবৃভুক্ষবিভাগেন শ্রেমণি বিক্রাঃ॥ ১১

অনুবাদ। বজ কি প্রকারে ইষ্ট ফল প্রদান করে? [তাহাই বলা যাইতেছে যে,] দেবানিত্যাদি। এই যঞের দ্বারা ইন্দ্রাদি দেবগণের বৃদ্ধি সাধন কর। সেই সকল দেবতাগণও বৃষ্টি প্রভৃতির দ্বারা তোমাদের পরিতৃথি সাধন করুন। এই প্রকার অন্তোক্ত অক্টোক্তের বৃদ্ধি সম্পাদন দ্বারা তোমরা জ্ঞানপ্রাথি দ্বারা পরম শ্রেয়: নির্বাণ, কিংবা স্বর্গাদিরপ পর্রম শ্রেয়: লাভ করিবে॥ ১১

> ইফীন্ ভোগান্ হি বো দেবা দাস্তস্তে যজ্ঞভাবিতাঃ। তৈৰ্শ্বভানপ্ৰদায়ৈভ্যো যো ভুঙ্জ্তে স্কেন এব সঃ॥ ১২

আমুয়। দেবা: বক্ষভাবিতা: সম্ভ: বো (যুম্মভাং) ইষ্টান্ (অভিদ্বিতান্) ভোগান্ দাক্তরে। তৈ: (দেবৈ:) দলান্ [ভোগান্] এভা: (দেবেভা:) অপ্রদার বো ভূইকে স স্তেন এব (চোর এব) ॥ ১২ আমুবাদ। দেবতাগণ বজেরখারা পরিতোষিত ইইয়া, তোমাদের অভি-লবিত ভোগ-সমূহ প্রদান করিবেন। দেবগণকে না দিয়া, যেব্যক্তি ঠাঁহাদের প্রদন্ত ভোগ্য বস্তু সকল শ্বয়ং ভোগ করিয়া থাকে, সে ব্যক্তি চোর ॥ ১২

ভাষ্য। কিঞ্ ইষ্টান্ ভোগানিতি। ইষ্টান্ অভিপ্রেতান্ ভোগান্ হি বো ব্যুভাং দেবা দান্তত্তে বিভরিষাত্তি স্ত্রীপশুপুরাদীন্ বজ্ঞাবিতা বজৈবর্দ্ধিতা স্তোবিতা ইত্যর্থ:। তৈ দৈ বৈদ্ভান্ ভোগান্ অপদায় অদত্তা আনৃণ্যসক্ষা ইত্যর্থ:, এভ্যো দেবেভ্যো যো ভূঙ্কে, স্বদেহেক্সিয়াণ্যেব ভর্পরতি তেন এব ভঙ্কর এব সঃ দেবাদিস্থাপহারী॥ ১২

আনন্দণিরিটীকা। ইতশ্চধিক্নতেন কর্ম কর্ত্তব্যমিত্যাহ—কিঞ্চেতি। কণমস্বাভির্ভাবিতাঃ সংস্তা দেবা ভাবরিষ্যন্তি অস্মানিতি তদাহ—ইফ্রানিতি। বজ্ঞান্দর্ভানেন পূর্ব্বোক্তরীত্যা স্বর্গাপবর্গরোর্ভাবেহিপি কণং স্ত্রীপশুপুরাদিসিদ্ধিরিত্যাশন্ত্য পূর্ব্বাদ্ধিং ব্যাকরোতি—ইফ্রানভিপ্রেতানিতি। পশাদিভিশ্চ বজ্ঞান্ধ জ্ঞানন্ধারা ভোগে নিবর্ত্তনীরেছিপা প্রত্যবাধ্রপ্রসঙ্গাদিত্যন্তরার্দ্ধং ব্যাচট্টে—তিরিতি। আন্ণ্যমক্ষেত্যরমর্থং—দেবানাম্বীণাং পিতৃণাঞ্চ যজ্ঞেন ব্রন্ধানিত্যেণ প্রজন্ম চর্ব্যেণ প্রজন্ম চর্ব্যেণ প্রজন্ম চ্বান্ত্রস্বাহ্ন কার্য্যকারণসংঘাত্মেব পোইং ভূঞানন্তর্করো ভবতীতি॥ ১২

অমুবাদ। বি কারণ মধিকারী পুরুষের পক্ষে কর্ম মবশ্র কর্ম্বব্য, তাহার] অন্ধ কারণও নির্দিষ্ট ছইতেছে যে—ইপ্লান্ ভোগানিত্যাদি। দেবগণ যজ্জ-সমূহের দারা ভাবিত—বর্দ্ধিত [মর্থাৎ] পরিভোবিত হইরা, তোমাদের মভিলবিত পুত্র ত্রী পশু প্রভৃতি ভোগের বস্তু প্রদান করিবেন। সেই দেবগণ কর্ম্ব প্রদান করিরা [মর্থাৎ] তাঁহাদের ঝণ হইতে আপনাদিগকে যজ্ঞাদিবারা মুক্ত না করিয়া, যে ব্যক্তি গ্রহণ করিয়া গাকে, সে জ্বেন [মর্থাৎ] উন্ধর, [কারণ] সে দেবতাপ্রভৃতির ধনাপহারী, কেবল নিজের ইক্সিয় ও দেহের ভৃপ্তিসাধনই করিয়া থাকে ॥ ১২

ষ**ন্ধ্যশিকাশিনঃ সন্তো** মূচ্যন্তে সর্ব্বকিল্পিষ্টো। ভু**ঞ্জ**তে তে ত্বহুং পাপা যে পচস্ত্যান্নকারণাৎ ॥- ১৩

জ্ঞ্যু । বজ্ঞশিষ্টাশিনঃ বজ্ঞাবশিষ্টভোজনশীলাঃ) সন্তঃ (সাধবঃ) সর্ক্ষিবিবৈঃ (সর্বপাপেঃ) ষ্চান্তে। যে তু পাপাঃ [জনাঃ] আত্মকারণাথ (আত্মন্ত্র্যুর্বমেব) পচন্তি, তে জ্বং (পাপং) ভূঞ্জতে (লভক্তে)॥ ১৩ অনুবাদ। যে সকল সাধ্ব্যক্তি, যজ্ঞের অবশিষ্ঠ অন্ন ভোক্ষন করিয়া থাকেন, তাঁহারা সকল প্রকার পাপ হইতে মুক্তিলাভ করিয়া থাকেন। যাহারা কিন্তু নিজের পরিতৃত্তির জন্ম অন্নাদি পাক করিয়া থাকে, তাহারা পাপই ভোক্ষন করে (অর্থাৎ পাপী হয়)॥ ১৩

ভাষ্য। যে পুন:—যজেতি। দেবযজ্ঞাদীন্ নির্বর্জ্য তচ্ছিষ্টমশনম্
অমৃতাথ্যম্ অশিকৃৎ শীলং যেবাং তে যজ্ঞশিষ্টাশিনঃ সস্তো মৃচ্যন্তে সর্বাকিবিহৈঃ
সর্ব্বপালৈঃ চুল্ল্যাদিপঞ্চহনাক্ততিঃ প্রমাদকতহিংসাদিজনিতৈশ্চালৈঃ। যেত্বাক্মন্তরয়ো ভূঞ্জতে তু অঘং পাপং স্বয়মপি পাপা যে পচন্তি পাকং নির্বর্জ্যন্তি আত্মকারণাদাত্মহেতোঃ॥ ১০

আনন্দ গিরিটীকা। দেবাদিভ্যঃ সংবিভাগনক্কথা ভূঞ্জানানাং প্রত্যবায়িত্বমুক্রা ভদন্তেয়াং সর্বনদোষরাহিত্যং দর্শয়তি—্যে পুনরিতি। যজ্ঞশিষ্টাশিনে
যে পুনরে ভাদৃশাঃ সন্তঃ সর্বকিষিধৈঃ মুচ্যন্ত ইতি যোজনা। তৈদ ভানিত্যাদিনোক্তং নিগনয়তি—ভূঞ্জত ইতি। দেবযজ্ঞাদীনিত্যাদিশব্দেন পিতৃষজ্ঞোমন্থ্যযক্তোভ্তযক্তো ব্রহ্মযজ্ঞাশুতি চত্বারো যজ্ঞা গৃহন্তে, চ্লীশব্দেন পিঠরধারণাভর্থক্রিয়াং কুর্বন্তো বিভাসবিশেববস্তম্ভয়ো গ্রাবাণোঁ বিবক্ষ্যন্তে। আদিশব্দেন
কণ্ডনী পেষণী মার্জন্মদককুন্তশেচত্যেতে হিংসাহেত্বো গৃহীতাঃ ভান্তেভানি পঞ্চ
প্রাণিনাং স্বনান্থানানি হিংসাকারণানি ভৎপ্রযুক্তৈঃ সর্বৈরপি বুদ্ধবৃদ্ধিপুর্ববিদ্
ভূরিতৈর্শ্ব্যন্ত ইতি সম্বন্ধঃ। প্রমাদো বিচারব্যতিরেকেণাবৃদ্ধিপুর্ববিদ্যুপনতং পাদপাতাদি কর্ম্ম, তেন প্রাণিনাং হিংসা সন্ভাব্যতে। আদিশব্দেনাভিচিসংস্পর্শাদি
গৃহীতং, ভছুবৈশ্চ পাপেম হাযজ্ঞকারিণো মুচ্যন্তে। উক্তং হি—

"কণ্ডনং (নী) পেষণং (ণী) চুল্লী উদকুন্তশ্চ মার্জ্জনী। পঞ্চ ফুনা গৃহস্থস্ত পঞ্চযজ্ঞাৎ প্রণশ্রতি ইতি॥" "পঞ্চ ফুনা গৃহস্থস্ক চুল্লী পেষণ্যবস্করঃ।

্ কণ্ডনী চৈব কুন্তশ্চ বধ্যন্তে ৰাম্ব বাহয়ন্ ॥" ইতি চ।—

সভারমর্থ: যা বথোক্তা: পঞ্চসংখ্যকা গৃহস্থ সনান্তা যো বাহররাপাদমন্
বর্ত্ততে তেন প্রাণিনো বুদ্ধিপূর্ব্বকমবৃদ্ধিপূর্ব্বকঞ্চ বধ্যন্তে তংপ্রযুক্তং সর্বমপি পাপং
মহাযজ্ঞাহঠানাৎ প্রণশ্রতীতি মহাযজ্ঞাহুঠানস্তত্যর্থং তদমুঠানবিম্থান্ নিন্দতি—
যে ত্বিতি। স্পান্মজ্ঞবিত্বমেব ক্ষোররতি—(য পটিস্ট্রীতি। স্বদেহেক্সির-পোবণার্থমেব পাকং কুর্ব্বতাং দেবযজ্ঞাদিপরাধ্ম্থানাং পাপভূরত্বং দর্শরতি—
স্কৃত্বত ইতি। পাঠক্রমত্মর্থক্রমাদপবাধনীয়: ॥১৩°

অনুবাদ। যাহারা কিন্তু [যজ্ঞাদি করে, তাহাদের বিষয়ে বলা যাইতেছে যে] যজ্ঞ ইত্যাদি। দেবযক্ত প্রস্তৃতি সম্পাদন করিয়া তাহা হইতে অবশিষ্ট অমৃত নামক [ভক্ষাবন্ধ] ভোজন করাই যাহাদের স্বভাব, তাঁহারা যজ্ঞশিষ্টাশী [এই শব্দের দ্বারা বোধিত হইয়া থাকে] সেই যজ্ঞশিষ্টাশী সংপ্রক্ষণণ সর্বপ্রকার পাপ, [অর্থাৎ] চুল্লা প্রভৃতি হিংসা-কারণ বন্ধর নিত্য-ব্যবহার-জনিত, গৃহস্থ জনের অপরিহরণীর পাপ এবং অজ্ঞানকত হিংসাজনিত অক্যান্ত পাপ হইতে মুক্তিলাভ করিয়া থাকে; যে সকল আত্মন্তরি প্রক্ষণণ আপনার ভৃপ্তির জন্মই অন্ধ প্রস্তৃত করে, তাহারা স্বয়ং পাপ-স্বরূপ হইয়া [অন্ধ ভক্ষণের ব্যপদেশে] কেবল পাপই ভক্ষণ করিয়া থাকে ॥ ১৩

অন্নাদ্ ভবন্তি ভূতানি পৰ্জ্জন্যাদমসম্ভবঃ। যজ্ঞাদ্ ভবতি পৰ্জ্জন্যো যজ্ঞঃ কৰ্মসমুদ্ভবঃ॥ ১৪

আনুর। অন্নাদ্ ভূতানি ভবস্তি, পর্জ্জন্তাৎ অন্নসম্ভব: [ভবতি], যজ্জাৎ পর্জ্জন্তা ভবতি, যজ্জ: কুর্ম্মমুদ্ধ:॥ ১৪

অনুবাদ। অন হইতে প্রাণিনিচয় উৎপন্ন হয়, বৃষ্টি হইতে অন সমৃভূত হয়, ষজ্ঞ হইতে বৃষ্টি উৎপন্ন হয়, ষজ্ঞ কর্ম হইতে উৎপন্ন হয়॥ ১৪

ভাষ্য। ইতশ্চাধিক্তেন কর্ম কর্ত্ব্যম্। জগচ্চক্রপ্রবিহেতুর্হি কর্ম। কণমিতি। উচ্যতে—অন্নান্ ভবস্তীতি। অন্নান্ ভ্কাৎ লোহিতরেতঃপরিণতাৎ প্রত্যক্ষং ভবস্তি জায়ত্তে ভ্তানি, পর্জ্জান্ বৃষ্টেরন্নশু সম্ভবঃ মন্নসম্ভবঃ, মজ্ঞান্ ভবতি—পর্জ্জাঃ—

অগ্নৌ প্রান্তাহতিঃ সম্যাগাদিত্যমূপতিষ্ঠতে।

আদিত্যাজ্জায়তে বৃষ্টিবৃষ্টেরয়ং ততঃ প্রকা: ॥" ইতি শ্বতেঃ যজ্ঞোহপূর্বং স চ যজঃ কর্মসমূদ্ভবঃ ঋতিগ্যজমানয়োশ্চ ব্যাপারঃ কর্ম ততঃ সমূদ্ভবো যশু যজ্ঞশু অপূর্ব্য স যজঃ কর্মসমৃদ্ভবঃ ॥ ১৪

আনন্দিগিরিটীকা। দেববজ্ঞাদিকং কর্মাধিক্বতেন বর্ত্তব্যমিত্যত্ত্র হেম্বস্তর-মিতঃশব্দোপাত্তমেয দর্শরতি—জগদিতি। নম ভূক্তমরং রেতোলোহিত-পরিণতিক্রমেণ প্রজারপেণ জারতে অচারং রষ্টিসম্ভবং প্রত্যক্ষদৃষ্ঠং তৎ কথং কর্মণো জগচক্রপ্রবর্ত্তকদ্বমিতি শহতে—কথমিতি। পারম্পর্য্যেণ কর্মণস্ত-ছেভূছং সাধরতি—উচ্যত্ত ইতি। উক্তেহর্থে স্বত্যস্তরং সংবাদরতি—আ্মা-বিক্তি। তত্ত্র হি দেবতাভিধ্যানপূর্বকং তত্তদ্বেশন প্রহিতাহতিরপূর্ব্বভাং গতা রশ্মিদারেণাদিত্যমাক্রম্থ রষ্ট্যান্মনা পৃথিবীং প্রাপ্য ব্রীহিযবান্তরভাবমাপন্ত সংস্কৃতো ভূত্বা শুক্রশোণিতরূপেণ পরিণতা প্রজাভাবং প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। যজ্ঞঃ কর্ম্মসমূত্তব ইত্যযুক্তং স্ববৈশ্বব সোন্তবে কারণজাবোগাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—ঋত্বিগিতি। দ্রব্যদেবতরোঃ সংগ্রাহকশ্চকারঃ॥১৪

অমুবাদ। এই জন্তও অধিকারী পুরুষের কর্ম্ম করা উচিত; কারণ কর্ম্ম সংসারচক্রের প্রবৃত্তির হেতু, তাহাও কি প্রকারে হর তাহাই বলা বাইতেছে বে, অন্নান্তবন্ধীত্যাদি। ভূক অন্ন, শুক্রশোণিতরূপে পরিণত হইলে, তাহা হইতে প্রাণিগণ জন্মণাভ করিয়া থাকে, ইহা সকলেরই অমুভূত। পর্জ্জন্ত [অর্থাৎ] বৃষ্টি হইতে অন্নের উৎপত্তি হর, বজ্ঞ হইতে পর্জ্জন্ত হইয়া থাকে। ধর্মশান্ত্রেও ইহা উক্ত হইরাছে যে,—"অগ্নিতে আহুতি অপিত হইয়া আদিত্যে উপস্থিত হর, আদিত্য হইতে বৃষ্টি হয়, বৃষ্টি হইতে অন্নের উৎপত্তি হয়, অন্ন হইতে প্রজা উৎপন্ন হয়।"—[এইস্থলে] যক্ত [শব্দের অর্থ] অদৃষ্ঠ,—সেই অদৃষ্ঠ, পুরোহিত ও যজন্মান-সাধ্য বাগাদিরপ কর্ম্ম হইতে উৎপন্ন হয়॥ ১৪

কর্ম্ম ব্রহ্মোদ্ভবং বিদ্ধি ব্রহ্মাক্ষরসমূদ্ভবম্। তত্মাৎ সর্ব্বগতং ব্রহ্ম নিত্যং যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিতম্॥ ১৫

আন্বয়। কর্ম (যজ্ঞাদিকং) এক্ষোন্তবং (বেদপ্রমাণকং) বিদ্ধি (জানীহি); এক্ষ (বেদঃ) অক্ষরসমূদ্ভবং (পরমেশ্বরাত্ৎপন্নম্) তত্মাৎ সর্বগতং এক্ষ যজ্ঞে নিতাং (সদা) প্রতিষ্ঠিতম্ (বর্ত্ততে) ॥ ১ €

অনুবাদ। যজ্ঞাদি বিহিত কর্ম্মের প্রবর্ত্তক বেদ। বেদ প্রমেশ্বর ইইতে উৎপন্ন। এই কারণে সেই সর্ব্বগত বেদ নিয়তই যজ্ঞে প্রতিষ্ঠিত স্থাছে॥১৫

ভাষা। তচ্চ—কর্মেতি। কর্ম ব্রেক্ষান্তবং ব্রহ্ম বেদঃ স উদ্ভবঃ কারণং বস্থা তৎ কর্ম ব্রেক্ষান্তবং বিদ্ধি জানীছি। ব্রহ্ম পুনবে দাখ্যমক্ষরসমূদ্ভবং, অক্ষরং বন্ধ পরমাত্মা সমূদ্ভবো যক্ত তৎ অক্ষরসমূদ্ভবং ব্রহ্ম বেদ ইত্যর্থঃ। যক্ষাৎ সাক্ষাৎ পরমাত্মাখ্যাৎ অক্ষরাৎ পুরুষনিশ্বাসবৎ সমূদ্ভ্তং ব্রহ্ম তত্মাৎ সর্বার্থপ্রকাশকভাৎ সর্বগতম্। সর্বগতমপি সন্ধিত্যং সদা যক্ষাবিধিপ্রধানত্বাদ্ যক্তে প্রতিষ্ঠিতম্॥ ১৫ ·

আনন্দগিরিটীকা। যদপূর্বহেত্ত্বেন কর্ম্মোক্তং তৎ কিং চৈত্যবন্দনাদি কিংবা অগ্নিহোত্রাদি ইতি সন্দিহানং প্রত্যাহ—কর্ম্মেতি। কিমিতি কর্মণো ব্রমোন্তব্যমূচ্যতে সর্বস্থ তহন্তবন্ধাবিশেষাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—ব্রহ্ম বেদ ইতি। ব্রহ্ম তর্হি বেদাখ্যমনাদিনিধনমিতি তত্ত্বাহ—ব্রহ্ম পুনরিতি। অক্ষরাত্মনো বেদস্থ পুনরকরেভাঃ সকাশাদেব সমূহবো ন সম্ভবতীত্যাশক্ষাহ—অক্ষরমিতি। বক্ষেত্যক্ষরমেবাক্তং, তৎ কথং তত্মাদেবোদ্ভবতীত্যাশক্ষ্য ব্রহ্মশক্ষার্থসূক্ষমেব মারয়তি—ব্রহ্ম বেদ ইতি। নম ব্রহ্মশক্ষিত্ত্য বেদস্থাপি পৌরুবেরত্বাৎ প্রামাণ্যসন্দেহাৎ কথং তত্তক্ষমগ্নিহোত্রাদিকং কর্ম নির্দ্ধারগ্নিত্থং শক্যতে তত্ত্বাহ—
যক্ষ্মাদিতি। কথং তর্হি তত্ত্ব যক্তে প্রতিষ্ঠিতত্বং সর্ববিগত্তমেল বিশেষাযোগাদিত্যাশক্ষ্যাহ— সর্ববিগত্মপীতি॥ ১৫

অমুবাদ। সেই কর্ম ইত্যাদি। কর্ম, ব্রন্ধোন্তব [অর্থাৎ] ব্রন্ধ শব্দের অর্থ বেদ, সেই বেদ যাহার উদ্ভব [অর্থাৎ] কারণ, তাহাকেই ব্রন্ধোদ্ভব বলিরা জান। সেই বেদ-নামক ব্রন্ধ অক্ষরসমূদ্ভব, [অর্থাৎ] অক্ষর শব্দের অর্থ সেই পরমাত্মা ব্রন্ধ, সেই ব্রন্ধই যাহার সমূদ্ভব [অর্থাৎ] উৎপত্তির হেতু, সেই বেদকে] অক্ষরসমূল্তব [শব্দের প্রতিপাত্ম বলিরা জানিবে।] যে কারণে সাক্ষাৎ পরমাত্মাশক্পপ্রতিপাত্ম অক্ষর হইতে পুরুষনিখাসের ভার [অনারাসে] এই বেদরপত্রন্ধ সমূৎপত্তি লাভ করিরাছে, এই কারণে সকল প্রকার অর্থের প্রকাশকত্ম নিবন্ধন সর্ব্ধগত ব্রন্ধ [অর্থাৎ] বেদ, কর্মবিধির প্রাধান্থ বেদে আছে বলিরা নিত্য (সদা) যক্তে প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে ॥ ১৫

> এবং প্রবর্ত্তিতং চক্রং নানুবর্ত্তয়তীহ যঃ। অঘায়ুরিন্দ্রিয়ারামো মোঘং পার্থ স জীবতি॥ ১৬

আনুয় ৷ যঃ [পুরুষঃ] এবং (প্রাক্কথিকরূপং) প্রবর্ত্তিওং চক্রং (বেদযজ্ঞ-পূর্বকং সংসারচক্রং) ইছ ন অনুবর্ত্তরতি, হে পার্থ ! সঃ অস্বায়ুঃ ইচ্ছিরারামঃ মোদং (নিম্নলং) শীবতি ॥ ১৬

অনুবাদ। এই প্রকার পরমেশ্বর কর্তৃক প্রবর্তিত, বেদমজ্ঞপূর্ব্বক সংসার-চক্রের যে ব্যক্তি অমুবর্ত্তন না করে, তাহার জীবন পাপময়, সে বাজি কেবল ইন্দ্রিয়ভূপ্তিকামী, [অতএব] তাহার বাঁচিয়া থাকা নিক্তল ॥ ১৬

ভাষ্য। এবনিতি। এবম্ ইথম্ ঈশবেণ বেদযজ্ঞপ্রকং জগচেকং প্রবিভিতং নামুবর্ত্তরতি ইহলোকে যঃ কর্মণি অধিকৃতঃ সন্। অধায়ঃ অবং পাপনায়ঃ জীবনং যত সঃ অধায়ঃ পাপজাবনঃ ইতি যাবং ইক্রিরারামঃ ইক্রিরেরারামঃ আরমণমাক্রীড়া বিষয়ের যত সঃ ইক্রিরারামো মোখং বুখা হে পার্থ স জীবতি। তিরাদক্ষেন অধিকৃতেন কর্ত্তবাদের কর্মেতি প্রকরণার্থঃ। প্রাগামুক্তাননিঠা-

ষোগ্যতাপ্রাপ্তেন্তাদর্থ্যেন কর্মধোগামুষ্ঠানমধিক্কতেন অনাত্মজ্ঞেন কর্ত্তব্যমেব ইতি
এতং "ন কর্ম্মণামনারস্তাং" ইত্যত আরভ্য "শরীরযাত্রাপি চ তে ন প্রসিধ্যেদকর্ম্মণঃ" ইত্যেবমন্তেন প্রতিপান্ত "যজ্ঞার্থাৎ কর্ম্মণোহন্তত্র" ইত্যাদিনা "মোদং পার্থ
স জীবতি" ইত্যেবমন্তেনাপি গ্রন্থেন প্রাদিকমধিক্রতন্ত অনাত্মবিদঃ কর্মামুষ্ঠানে
বহু কারণমুক্তং তদকরণে চ দোষদংকীর্তনং ক্রতম্॥ ১৬

আনন্দণিরিটীকা। অধিক্বতেনাধ্যয়নাদিদারা জগচ্চক্রমন্থবর্ত্তনীয়ম্ অন্তর্ণ থারাজ্ঞাতিলঙদিনন্তন্ত প্রত্যবায়: ত্যাদিত্যাহ—এব্মিতি। 'ন কর্মণামনারস্তা'দিত্যাদিনোক্তম্পদহেরতি—তুম্মাদিতি। জগচক্রত্য প্রাপ্তক্রপ্রকারেণান্থবর্তনে
বৃধাজীবনমদসাধনং যুমাৎ তত্মাজ্জীবতা নিয়তং কর্ম্ম কর্ত্তব্যমিত্যর্থ:। যুত্তধিক্বতেন
কর্ত্তব্যমেব কর্ম তর্হি কিমিত্যজ্ঞেনেতি বিশিয়তে জ্ঞাননিষ্ঠেনাপি তৎ কর্ত্বব্যমেবাধিক্বত্তমাবিশেবাৎ ইত্যাশক্ষ্য পূর্ব্বোক্তমন্ত্রবদতি—প্রাণিতি। ন হি জ্ঞানকর্মণোর্ব্বিরোধাৎ জ্ঞাননিষ্ঠেন কর্ম কর্ত্বং শক্যতে তথা চানাত্মজ্ঞেনৈব চিত্তক্ত্যাদিপরম্পরয়া জ্ঞানার্থং কর্মান্ত্রেয়মিতি প্রতিপাদিতমিত্যর্থ:। তর্হি যজ্ঞার্থাদিত্যাদি
কিমর্থং ন হি তত্র জ্ঞাননিষ্ঠা প্রতিপাত্যতে কর্মনিষ্ঠা তু পূর্ব্বমেবোক্তথান্তার বক্তব্যেত্যাশক্ষ্য বৃত্তমর্থাস্তরমন্ত্রবদতি—প্রতিপাত্যেতি। প্রাসিক্তমজ্ঞত্ম কর্মকর্তব্যভ্যোক্তপ্রসঙ্গাগতমিতি যাবং। বহুকারণমীশ্বরপ্রস্থানো দেবতাপ্রীতিশেভ্যাদি।
দোসংকীর্ত্তনং তৈর্দ্বতানপ্রদায়েত্যাদি॥১৬

অনুবাদ। এবনিত্যাদি [মোকের অর্থ] এবং [অর্থাৎ] এই প্রকার দিয়র কর্ত্ক, বেদযজ্ঞপূর্বক প্রবৃত্তিত জগচ্চক্রকে যে ব্যক্তি ইহলোকে বিহিত্ত কর্ম্মে অধিকারী হইয়াও অম্বর্ত্তন না করে, সে ব্যক্তি অঘায়; অঘ [শব্দের অর্থ] পাপ, এবং আয়ু [শব্দের অর্থ] জীবন, যাহার জীবন পাপস্বরূপ, তাহারই নাম অঘায়ু; [সে ব্যক্তি] ইন্দ্রিয়ারাম [অর্থাৎ] ইন্দ্রিয়-নিচয়ের ঘারা যাহার আরাম [অর্থাৎ] আরমণ বা আক্রীড়া বিষয়-সমূহে হইয়া থাকে, সেই ব্যক্তি ইন্দ্রিয়ারাম, এইরূপ আয়ু; ও ইন্দ্রিয়ারাম ব্যক্তি, হে পার্থ, বৃথা জীবন ধারণ করিয়া থাকে। এই কারণে অনাত্মক্ত অথচ কর্মাধিকারী লোকের পক্ষে কর্মই কর্ত্ব্য, ইহাই প্রকরণার্থ। "প্রকৃত্তরূপে আত্ম-তত্ত্ত্তান লাভের অম্বর্ত্ত্বল সামর্থ্য উৎপন্ন হইবার প্রের্ক, সেই সামর্থ্য লাভের অন্ত অনাত্মক্ত অধিকারীর, কর্ম্মেযোগের অম্কুটানই কর্ত্ব্য"—"ন কর্মণামনারস্তাৎ" ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া, শেরীয়যাত্রাপি চ তে ন প্রসিধ্যেদকর্ম্বণঃ" এই শ্লোক পর্যন্ত নাক্য-নিচয়ের ঘারা এবং
"যজার্থাৎ কর্মণোহগ্যক্ত" ইত্যাদি এবং "মোঘং পার্থ সঞ্জীবতি" এই পর্যন্ত প্রত্ত্বন্ত্র

ও প্রাক্ষক্রমে অনাত্মজ্ঞ অথচ অধিক্বত ব্যক্তির কর্মামুষ্ঠানের প্রতি বহুতর কারণ [ভগবান্] নির্দেশ করিয়াছেন, এবং কর্মের অকরণে দোষকীর্ত্তনও করিয়াছেন॥ ১৬

যস্ত্রাত্মরতিরেব স্থাদাত্মতৃপ্তশ্চ মানবঃ। আত্মন্ত্রেব চ সম্ভুষ্টস্তস্থ কার্য্যং ন বিহাতে॥ ১৭

আনুরা। যঃ মানবঃ আত্মরতিরেব ভাৎ, [তথা] আত্মত্পশ্চ, আত্মতোব সম্ভট্টশ্চ ভাৎ, তন্ত কার্য্যং ন বিহুতে ॥ ১৭

অনুবাদ। যে মানব, আক্ষরতি আত্মতৃপ্ত এবং আত্মাতেই সম্ভোষবান্ ২য়, জাহার পক্ষে কোন [বিহিত] কার্য্য বিছমান নাই॥ ১৭

ভাষ্য। এবং দিতে কিমেবং প্রবর্তিতং চক্রং দর্বেণামুবর্তনীয়ম্ আহোমিৎ
পূর্ব্বোক্তকর্মযোগামুষ্ঠানোপায়প্রাপ্যাম্ অনাঅবিদা জ্ঞানযোগেনৈর নিষ্ঠামাঅবিদ্ধিঃ
সাংধ্যৈরমুষ্ঠেয়াম্ অপ্রাপ্তেনৈর ইত্যেবমর্থমর্জুনস্থ প্রশ্নমাশন্ত্য, স্বয়মের বা শাস্ত্রার্থস্থ
বিবেকপ্রতিপত্ত্যর্থম্ এতং বৈ তমাআনং বিদিঘা নির্ত্তমিণ্যাজ্ঞানাঃ দন্তো প্রাহ্মণা
মিণ্যাজ্ঞানবদ্ভিরবশ্রুং কর্ত্রব্যভ্যঃ পুরুত্রধণাদিভ্যো ব্যুখায়াথ ভিক্ষাচর্য্যং শরীরস্থিতিমাত্রপ্রস্তুৎ চরন্তি ন তেবামাঅজ্ঞাননিষ্ঠাব্যতিরেকেণ অন্তং কার্যমন্তীত্যেবং
ক্রত্যর্থমিই গীতাশাল্তে প্রতিপিপাদয়িষত্রম্ আবিদ্ধুর্বন্ আই ভগবান্—
যন্ত্রিতি ॥ বস্তু সাংখ্য আত্মজ্ঞাননিষ্ঠ আত্মরতিরাত্মন্তের রতিন্ত্র বিষয়েষ্ যন্ত স
আত্মরতিরের স্থাং ভবেৎ আত্মন্ত্রণ্ড আত্মনৈর তৃপ্তঃ ন অয়রসাদিনা মানবো
মন্ত্র্যঃ সন্ত্র্যাসী আত্মন্তের চ সন্ত্রপ্তঃ সবর্বতো বীতত্ত্ক ইত্যেতং। য ঈদৃশ আত্মবিৎ
তন্ত কার্য্যং করণীয়ং ন বিছতে নাস্তীত্যর্থঃ ॥ > ১

আনন্দগিরিটীকা। বৃত্তমর্থমেবং বিভজ্যান্ত অনন্তরশ্লোকমাশক্ষ্যোত্তরত্বেন অবতারয়তি—এবমিতি। অর্জ্জন্ত প্রশ্নমিত্যেবমর্থমাশঙ্ক্যাহ ভগবানিতি সম্বন্ধ:। নবেষা শঙ্কা নাবকাশমাসাদয়তানায়জ্ঞেন কর্ত্তব্যং কম্মেতি বহুশো বিশেষিত-ভাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—স্বয়ুমেবেতি। কিমর্থং শ্রুত্যর্থং স্বয়মেব ভগবানত্র প্রতিপাদয়তি ইত্যাশঙ্ক্যাহ—শাস্ত্রার্থস্তৈতি। গীতাশাস্ত্রক্ত সসংস্থামং জ্ঞানমেব মুক্তিসাধনমর্থো নার্ধান্তরমিতি বিবেকার্থমিহ শ্রুত্যর্থং কীর্ত্তয়তীত্যর্থ:। তমেব শ্রুত্তর্থং সংক্ষিপত্তি—এভুমিতি। সিদ্ধঞ্চেদায়্মবেদনমনর্থকং তর্হি ব্যুত্থানাদীত্যাশক্ষ্য আপাতিকবিজ্ঞানফলমাহ—নিরুত্তেতি। ব্যক্ষণগ্রহণং তেষামেব

ব্যুখানে মুখ্যমধিকারিত্বমিতি জ্ঞাপনার্থম্। ক্লেশাত্মকতাদেষণানাৎ তাভ্যো ব্যুখা ः সর্বেষাং স্বাভাবিকত্বাৎ অবিধিৎসিতমিত্যাশঙ্ক্যাহ—মিথ্যেতি। ভিক্ষাচর্য্যৎ চর স্তীতি বচনং বৃত্থানবিরুদ্ধমিত্যাশঙ্ক্যাহ—শরীরেতি। তর্হি তদ্বদেব তেষা-মগ্নিহোত্রাছপি কর্ত্তব্যমাপছেতেত্যাশঙ্ক্য ব্যুখায়িনামাশ্রমধর্ম্মবৎ অগ্নিহোত্রাদেরস্কুটা-পকাভাবাদ্যৈবমিত্যাহ—ন তেষামিতি। যগোক্তং শ্রুত্যর্থমন্মিন গীতাশাস্ত্রে পৌর্বাপর্য্যেণ পর্য্যালোচ্যমানে প্রতিপাদিয়তুমিষ্টং প্রকটীকুর্বন কর্দ্তব্যমেব কর্ম জীবতেতি নিয়মে "জ্ঞানবোগেন সাংখ্যানাম্" ইতি কথমুক্তমিতি পরি-চোল্পরিহারম্পদর্শরতি ইত্যাহ—ইত্যেবমিতি। আত্মনিষ্ঠশু বিষয়সঙ্গরাহিত্যং . দৃষ্টৎ ভদনাত্মজ্ঞেন জিজ্ঞান্থনা কর্ত্তব্যমিতি মত্বাহ—যুস্তম সাংখ্য ইতি। কিঞ্চ আত্মজ্ঞ জ্ঞানেনাত্মনৈব পরিতৃপ্তত্বাৎ নান্নপানাদিনা সাধ্যা তৃপ্তিরিষ্টা তেন বিষ্ণার্থিনা সংস্থাসিনাপি নাররসাদাবাসজির্গুক্তা কর্ত্ত্বমিত্যাহ—আত্মতপ্ত ইতি। কিঞ্চ আত্মবিদঃ দর্ন্নতো বৈভৃষ্ণ্যং দৃষ্টং তদনাত্মবিদা বিষ্ঠাথিনা কর্ত্তব্যমিত্যাহ—আত্মন্যেবৃত্তি। রতিতৃপ্তিসম্ভোষাণাং মোদপ্রমোদানন্দবদ-বান্তরভেনঃ অথবা রতির্বিষয়াসক্তিঃ তৃপ্তিবিষয়বিশেয়সম্পর্কজং স্থুপং সম্ভোষোহ-ভাই বিষয়মাত্রলাভাধীনং স্থথসামান্তমিতি ভেদঃ। নরাত্মরতেরাত্মভপ্রস্তাত্মন্তের সম্ভষ্টভাপি কিঞ্চিৎ কর্ত্তব্যং মুক্তয়ে ভবিষ্যতীতি নেত্যাহ—ঈদৃশ ইতি ॥ ১৭

অনুবাদ। এই প্রকার সিদ্ধান্তের নিরূপণ হইবার পরে, "আত্মান্তর্জ্ঞ, সাংখ্যনামক সাধুগণ কেবল জ্ঞানযোগের দ্বারা যে নির্চা প্রাপ্ত হইরা থাকেন, কর্মযোগের অনুষ্ঠানরূপ উপায়দ্বারা সাধ্য সেই জ্ঞাননিষ্ঠা যে ব্যক্তি প্রাপ্ত হয় নাই, এই প্রকার অনাত্মবিৎ ব্যক্তিরই পূর্ব্বোক্তরূপে ঈশ্বর-প্রবর্ত্তিত এই জগচ্চক্রের [বিহিত কর্ম্বের অনুষ্ঠান দ্বারা] অনুবর্ত্তন করিতে হইবে? কিংবা আত্মপ্ত ও অনাত্মপ্ত এই উভরেরই জগচ্চক্রের অনুবর্তনের জ্ঞা তুল্যা-ভাবেই বিহিত কর্ম্বের অনুষ্ঠান করিতে হইবে?" এই প্রকার প্রশ্ন অর্জুনের মনে উদিত হইয়াছে, এই প্রকার সম্ভাবনা করিয়া. ভগবান্ তাহার উত্তর-ত্মরূপে বলিতেছেন যে, যত্মাত্ম ইত্যাদি; অথবা [এ প্রকার অবতারণার দ্বারাও যত্মাত্মবিত: ইত্যাদি শ্লোকের উথিতি হইতে পারে যে] সেই পরমেশ্বর হইতে বাস্তব পক্ষে অবিলয় জাবনান্ পুরুষণণ কর্ত্ত্ক অবশ্রকর্ত্তর ঐবণা প্রভৃতি হইতে বাহারা নিরন্ত হইয়া কেবল শরীর্ষাত্রার জন্ম ভিক্ষাচর্ব্য করিয়া থাকেন, সেই সকল সাধু ব্রান্ধণগণের আত্মজ্ঞাননিষ্ঠা ব্যতিরেকে ক্ষম্ভ কোন কার্য্যই

কর্ত্তব্য নহে, এই প্রকার শ্রুতির তাৎপর্যাই এই গীতাশাস্ত্রে, প্রতিপাদন করিছে। ইহা বিশেষরূপে প্রতিপাদন করিবার জন্ম ভগবান্ স্বরং বলিতেছেন—
ষম্বিত্যাদি।

সাংখ্য [অর্থাৎ] আত্মজ্ঞাননিষ্ঠ যে ব্যক্তি আত্মরতি [হয়] আত্মাতেই বাহার অন্তরাগ আছে, কিন্তু [শক্ষাদি] বিষয়ে [অন্তরাগ] নাই, সেই ব্যক্তিই আত্মরতি হয়, আত্মতৃপ্ত [অর্থাৎ] আত্মান্বারাই বাহার তৃপ্তি হয়, অয়য়সাদিন্বারা হয় না [তাহাকেই আয়তৃপ্ত বলা ঘায়] এবং যে ব্যক্তি আত্মাতেই পরিতৃষ্ট, সেই সয়্যাদী; সকল লোকেরই বাহার্থলাতে সম্ভোষ হয়, সেই বাহলাতের অপেক্ষা না করিয়া, আত্মাতেই সম্ভন্ত ব্যক্তিই [য়থার্থ] বীততৃষ্ণ, যে ব্যক্তি এই প্রকার বীততৃষ্ণ ও আত্মবিৎ হাহার কোন কার্য্য [অর্থাৎ] করণীয় নাই। ইহাই অর্থ ॥ ১৭

নৈব তম্ম কৃতেনার্থো নাকৃতেনেহ কশ্চন। ন চাম্ম সর্বভূতেযু কশ্চিদর্থব্যপাঞ্জয়ঃ॥ ১৮

আর্য়। ইহ ক্তেন (কর্মণা) তম্ম (আম্বিদঃ) কন্চিৎ অর্থঃ (প্রায়োজনং)ন [অন্তি: বিক্তেন] বা কর্মণা]কন্চন [অনর্থঃ]ন অস্ত (আ্মার্ বিদঃ) সর্বভূতেরু কন্চিৎ অর্থব্যপাশ্রয়ঃ (প্রয়োজনাপেকা)ন চ [অন্তি:]॥ ১৮

অনুবাদ। সেই আয়বিৎ ব্যক্তির কোন প্রকার কার্য্যের দারা কোন প্রশ্নেদ্ধন নাই, কোন বিহিত কর্ম্মের অকরণেও কোন অনর্থ নাই। এ দ্বগতে সর্বভূতের মধ্যে কাহারও নিকটে তাহার কোন প্রকার প্রয়োজনাপেক্ষাও নাই॥১৮

ভাষ্য। কিঞ্চ নৈবেতি। তম্ম পরমাত্মরতেঃ ক্লতেন কর্মণা অর্থঃ প্রেমান্ধনমন্তি। অন্ত তর্হি অক্লতেন অকরণেন প্রত্যবায়াথ্যো অনর্থো ন অক্লতেন ইহ লোকে কন্চন কন্চিদপি প্রত্যবায়প্রাপ্তিরূপ আত্মহানিলক্ষণো বা নৈবান্তি। ন চাম্ম সর্বভ্তেষ্ ব্রহ্মাদিস্থাবরাস্তেষ্ ভ্তেষ্ কন্চিদর্থব্যপাশ্রয়ঃ প্রয়োজননিমিন্তক্রিয়া-সাধ্যঃ ব্যপাশ্রয়ং ব্যপাশ্রয়ণম্। কঞ্চিদ্ ভ্তবিশেষমাশ্রিত্য ন সাধ্যঃ কন্চিদর্থেইন্তি। যেন তদর্থা ক্রিয়া অমুঠেয়া স্থাৎ। ন স্বমেতত্মিন্
সর্বতঃ সংপ্রতাদকস্থানীয়ে সম্যগ্দর্শনে বর্ত্তরে॥ ১৮

আনন্দ্গিরিটীক। ইতশ্চাত্মবিদো ন কিঞ্চিৎ কর্ত্তব্যমিত্যাহ—কিঞ্চেতি।
অক্সদর্মনিঃশ্রেমন্মোরম্বতরৎ প্রয়োজনং ক্রতেন স্করতেনাত্মবিদো ভবিয়াতীক্যা-

শক্ষাহ—নৈবেতি। প্রত্যাধানার বা কর্ম্ম স্থানিবাহি—নেত্যাদিনা। ব্রহ্মাদির স্থাবরাস্তের্ ক্ষিত্ত-বিশেষমাশ্রিত্য কলিদর্থোবিহ্ন সাধ্যা ভবিষ্যতি তদর্থং তেন কর্ত্তব্যং কর্ম্মেতাাশক্ষাই—ন চেতি। তত্রাজ্যং পাদমাদত্তে—নৈবেতি। তং ব্যাচ্টে—তস্ত্রেতি। আত্মবিদঃ স্বর্গান্ত ভূাদয়ানর্পিত্যং নিংশ্রেম্মস্থ প্রাপ্তমান্ত্র ক্র্মার্থবিদিত্যর্থঃ। আত্মবিদা চেৎ কর্ম্ম ন ক্রিমতে তর্হি তেনাক্বতেন তম্পানর্থো ভবিষ্যতাতি তৎপ্রত্যাধ্যানার্থং তম্ভ কর্ত্তব্যং কর্ম্মেতি শক্ষতে—তর্হীতি। দ্বিতীয়পাদেনোত্তরমাহ—নেত্যাদিনা। অতো ন তর্মির্জ্বার্থাই কৃতমর্থবিদিতিশেষঃ। দ্বিতীয়ণ ভাগং বিভক্ত্বতে—ন চাস্ত্রেতি। ব্যপাশ্রমণনালম্বনং নেতি সম্বন্ধঃ। পদার্থমুক্তা বাক্যার্থমাহ—কঞ্চিদিতি। ভূত-বিশেষস্থান্ত্রিভিত্তাপি ক্রিমান্থারা প্রয়োজন প্রস্বহেত্ত্বমিতি মন্থাহ—হ্যেনেতি। তর্হি ময়াপি বপোক্তং তর্জ্জানমাশ্রিত্য ত্যাজ্যমের কর্ম্মেত্যর্জ্বনন্ত মত্মাশক্ষ্যাহ—ন ভূমিতি। ১৮

অনুবাদ। আরও নৈব ইত্যাদি। সেই পরমাত্মনিরত ব্যক্তির [কোন] অনুষ্ঠিত কর্মের দারা কোন প্রয়োজন, সিদ্ধ হয় না। কোন কার্য্য করিলে যদি ফল লাভ না হয়, তাহা হইলে তাহার বিহিত কার্য্যের অকরণে পাপরপ অনর্থ হউক না [এ প্রকার আশস্কার উপর বলা ষাইতেছে যে] বিহিত কর্মের অকরণ দারা এই সংসারে তাহার কোন প্রকার প্রভাগরপ্রাপ্তিরপ বা আত্মহানিলক্ষণ অনর্থ হয় না। ক্রন্ধাদি স্থাবরাস্ত প্রাণিগণের মধ্যে কাহারও নিকটে তাঁহার কোন প্রকার অর্থের ব্যপাশ্রয় নাই। স্বার্থসিদ্ধির জন্ম কোন কার্য্যের দারা যাহা সম্পাদিত হয়, তাহাকেই ব্যপাশ্রয় বা ব্যপাশ্রয়ণ কহে] [তাৎপর্য্য ইহা হইতেছে যে] কোন প্রাণিবিশেষের দারা সাধিত হইতে পারে, এরূপ তাঁহার কোন প্রয়োজনই নাই, যাহাতে তাহার জন্ম কোন ক্রিয়ার অনুষ্ঠান তাঁহাকে, করিতে হইবে। [হে অর্জুন] তুমি কিন্তু এই সর্ব্যেণ্ড সংগ্লুতোদকস্থানীয় সম্যুগ্দর্শনে এখনও অবহিত নহ। ১৮

তত্মাদসক্তঃ সততং কার্য্যং কর্ম সমাচর।

অসক্তো হাচরন্ কর্ম পরমাপ্রোতি পূরুষঃ॥ ১৯

অবর। তত্মাং [হেতোঃ] ত্ম্ অসক্তঃ সন্ সততং কার্য্যং (কর্তব্যং) কর্ম

২৭

সমাচর (অমুতিষ্ঠ) হি (যগাৎ) পুরুষ: (জন:) অসক: [সন্] কর্ম আচরন্ (কুর্মন্) প্রং (প্রয়োজনং) আপ্লোতি (লভতে)॥ ১৯

আনুবাদ। দেই জন্ম অনাসক হইয়া [হে অর্জুন। তুমি কর্ত্তব্য কর্মের অনুষ্ঠান করিও; যে হেতু পুরুষ ফনাসক হইয়া কর্ত্তব্য কার্য্যের অনুষ্ঠান করিলে [কালে] পরম পুরুষার্থ পর্যান্ত লাভ করিতে পারে ॥ ১৯

ভাষ্য। যত এবং তথাদিতি। তথাদসক্তঃ সঙ্গবৰ্জিতঃ সততং সৰ্ব্বদা কাৰ্য্যং কৰ্ত্তব্যং নিত্যং কৰ্ম সমাচর নিৰ্ব্বন্তিয়। অসক্তো হি যথাৎ সমাচরন্ ঈশ্ববাৰ্থং কৰ্ম কুৰ্মন্ প্রং মোক্ষম্ আথোতি পূক্ষঃ সত্তগুদ্ধিদারেণেত্যুথঃ॥১৯

আনন্দ গিরি টাকা। সম্যগ্জান-নিষ্ঠপাভাবে কর্মামুষ্ঠানমাবশুক্মিত্যাহ—
যত ইতি। তম্মাৎ জ্ঞাননিষ্ঠার।হিত্যাদিতি যাবং। মোক্ষমেবাপেক্ষমাণশু
কথং কর্মাণি ফলাস্থরবতি নিয়োগঃ শু।দিত্যাশস্ক্যাহ—অস্ত্রে হীতি॥ >>

অনুবাদ। যে কারণে এই প্রকার, তম্মাদিত্যাদি সেই কারণে অসক [অর্থাৎ] সঙ্গবর্জিত [হইয়া] সর্বলা কার্য্য [অর্থাৎ] কর্ত্তব্য নিত্য কর্ম্মের সম্পাদন কর। যেহেতু সঙ্গবর্জিত হইয়া ঈশ্বরার্থ কর্ত্তব্য কর্মের অনুষ্ঠানকারী পুরুষ, পর [অর্থাৎ] মোক্ষ [পর্যান্ত] চিত্তশুদ্ধি দ্বারা লাভ করিতে পারে। ইহাই অর্থ ॥ ১৯

> কর্মণৈব হি সংসিদ্ধিমাস্থিতা জনকাদয়ঃ। লোকসংগ্রহমেবাপি সংপশ্যন্ কর্ত্তুমর্হসি॥ ২০

অনুয়। জনকাদয়: কর্মণৈব সংসিদ্ধিম্ আস্থিতা: (প্রাপ্তা:)[স্থং কর্মণা] লোকসংগ্রহমেব পশুন্ অপি [কর্ম্ম কর্ত্তুম্ অর্হ সি॥ ২ •

অনুবাদ। জনক প্রান্ততি [রাজর্ষিগণ] বিহিত কর্ম্মের অমুষ্ঠান দারাই সম্যক্ সিদ্ধিলাভ করিয়াছেন। তুমি, কর্মামুষ্ঠানের দারা লোকসংগ্রহ হইতে পারে, ইহা দেখিয়াও কর্মেরই অমুষ্ঠান করিতে যোগ্য হইতেছ।। ২০

ভাষ্য। যশাচ কর্মণৈবেতি। কর্মণৈব হি যশাৎ পূর্ব্বে ক্ষত্রিয়া বিদ্বাংসঃ
সংসিদ্ধিং নোক্ষং গন্তমান্থিতা প্রবৃত্তা জনকাদয়ঃ জনকাশপতিপ্রভ্তয়ঃ। যদি তে
প্রাপ্তসম্যগ্দর্শনাস্ততো লোকসংগ্রহার্থং প্রারন্ধকর্মপ্রাৎ কর্মণা সহৈব অসংক্রাইশ্রব কর্মসংসিদ্ধিমান্থিতা ইত্যর্থঃ। অথাপ্রাপ্তসম্যগ্দর্শনা জনকাদয়স্তদা কর্মণা সহুশুদ্ধিমান্থিতন ক্রমেণ সংসিদ্ধিমান্থিতা ইতি ব্যাথ্যেয়ঃ শ্লোকঃ। অথ মন্তসে
পূর্বেরিপি জনকাদিভিরপি অজানন্তিরেব কর্ত্ব্যং কর্ম কৃতং তাবতা নাবশ্রমঞ্জন কর্ত্তব্যং সম্যাগ্দর্শনবতা কৃতার্থেনেতি তথাপি প্রারন্ধকর্মায়ত্তঃ ত্বং লোকসংগ্রহ-মেবাপি লোকস্থোন্মার্গপ্রবৃত্তিনিবারণং লোকসংগ্রহঃ তমেবাপি প্রয়োজনং সংপ্রান্ কর্ত্তু মূহ্ সি॥ ২ •

আনন্দ্রিরিটীকা। যগপি জিতেক্সিয়োহপি বিবেকী শ্রবণাদিভিরজ্ঞং বন্ধণি নিষ্ঠাতুং শক্ষোতি তথাপি ক্ষত্ৰিয়েণ ত্বয়া বিহিতং কৰ্ম্ম ন ত্যাজ্যমিত্যাহ— যস্মান্তেতি। তত্মান্ত্ৰমপি কর্ম্ম কর্ত্ত্ব মর্হ দীতি সম্বন্ধঃ। ইতোহপি ত্বয়া বিহিতৎ কর্ম কর্ত্তব্যমিত্যাহ—লোকেতি। পূর্বার্দ্ধং বিভন্ধতে—কর্মাণৈবেতি। কথং জনকাদীনাং কর্মণা সংসিদ্ধিপ্রাপ্তিরুচ্যতে কর্মত্যজাং হি সম্যুগ-দর্শনবতাং প্রসিদ্ধা সংসিদ্ধিরিতি। তত্ত্ব কিং জনকাদয়োহপি প্রাপ্তসমাগ-দর্শনা: স্থ্য: উত অপ্রাপ্তসম্যুদর্শনা ভবেয়ুরিতি বিকল্পা প্রথমং প্রত্যাহ— যদীতি। লোকসংগ্রহার্থং কর্মণা সহৈব সংসিদ্ধিমাস্থিতা ইতি সম্বন্ধঃ। কর্মণা সহৈবেত্যেতৎ ব্যাকরোতি—অসংন্যুস্থৈত্যব কর্ম্মেতি। তত্ত্ব হেতুমাহ— প্রারন্ধেতি। জনকাদীনাং সত্যপি জ্ঞানিত্বে প্রারন্ধকর্মবশাৎ কর্মাপরিত্য**জ্যৈ**ব লোকসংগ্রহার্থং প্রবর্ত্তমানানাং জ্ঞানমাহাত্ম্যাত্রপপন্না সংসিদ্ধিরিত্যর্থ:। দ্বিতীয়-মন্ত পূর্লার্দ্ধেনৈবোত্তরমাহ—অথেত্যাদিনা। বিতীয়ার্দ্ধব্যাবর্ত্ত্যামাশঙ্কামুখা-প । তি—অথেতি। অজ্ঞেনাক্বতার্থেন কর্ত্তব্যং কর্মেত্যেতাবতা জ্ঞানবতা ক্বত-ক্নত্যেন ন তৎ কর্ত্তব্যমিত্যুক্তমঙ্গীকরোতি—তথাপীতি। তর্হি ময়াপি জ্ঞানবতা ক্বতার্থেন কর্ম্ম ন কর্ত্তব্যমিত্যাশঙ্কার্জনন্ত কর্ত্তব্যমেব কর্মেত্যুত্তরার্ম্ধ-ব্যাখ্যানেন কথয়তি—প্রারদ্ধেতি। ২০

অনুবাদ। যে কারণ কম্মের দারা ইত্যাদি। যে কারণ পূর্ব-কালিক জনক অশ্বপতি প্রভৃতি বিদান্ ক্রিয়গণ নোক্ষলাভ করিতে উষ্ণত হইরাও কর্ম্মার্থের হইরাছিলেন। যদি জনক অশ্বপতি প্রভৃতি ক্রিয়ে-শ্রেষ্ঠগণ সম্যগ্ জ্ঞান লাভ করিয়াছিলেন [এই প্রকার বিবেচনা করা নায়] তাহা হইলে [ইহাই স্থির করিতে হইবে যে] তাঁহারা লোক-সংগ্রহার্থই কর্ম্মের আরম্ভ করিয়া সম্যাসমার্গ অবলম্বন না করিয়াই কর্ম্ম করিতে করিতেই সংসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন। ইহাই তাৎপর্য্য। আর যদি তাঁহারা সম্যগ্ জ্ঞান লাভ করিয়াছিলেন। ইহাই তাৎপর্য্য। আর যদি তাঁহারা সম্যগ্ জ্ঞান লাভ করিছে পারেন নাই [এই প্রকার বিবেচনা করা বায়] তাহা হইলেও [ইহা স্থির করিতে হইবে যে] চিত্ত দ্বির সাধনভূত কর্মের অনুষ্ঠান দারা ক্রম্মে চিত্ত দ্বি ও পরে জ্ঞান দারা মোক্ষরপ সংসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন। এই প্রকারে ব্যাখ্যা করিতে হইবে। অথবা,

যদি সন্তাবনা কর যে "প্রাচীন জনক প্রভৃতি রাজ্বর্ষিগণ আত্মতব্জ না হইরাই কর্ত্তব্য কর্ম করিতেন, তাই বলিয়া আত্মতব্জ অতএব ক্বতার্থ অক্সকোন ব্যক্তি কোন কারণেই কর্ত্তব্য কর্মের পালন করিতে পারেন না," তাহা হইলেও, প্রারন্ধ কর্মের বশীভূত হইয়া তুমি লোক-সংগ্রহরূপ প্রয়োজনের প্রতি দৃষ্টি করিয়াও কর্ম করিতে সমর্থ হইতেছ। লোকগণের অসম্বার্গ হইতে প্রবৃত্তির নিবারণকে লোক-সংগ্রহ বলা যায়॥ ২•

যদ্ যদাচরতি শ্রেষ্ঠ স্তত্তদেবেতরো জনঃ। স যৎ প্রমাণং কুরুতে লোকস্তদনুবর্ত্ততে॥ ২১

আমুয়। শ্রেষ্ঠঃ জনঃ যদ্ যদ্ আচরতি, ইতরো জনঃ তৎ তদ্ এব [আচরতি] সঃ যৎ প্রমাণং কুরুতে, গোকঃ তদ্ অনুবর্ত্ততে॥২১

অমুবাদ। শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি নাহা বাহা জাচরণ করিয়া থাকেন, প্রাকৃত লোক সকলও তাহারই অমুসরণ করিয়া থাকে; সেই শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি নাহা প্রমাণ বলিয়া স্থির করেন, স্থারণ লোকও তাহাকেই প্রমাণ বলিয়া অমুসরণ করিয়া থাকে।। ২১

ভাষ্য। লোকসংগ্রহং কঃ কর্ত্ত্ব কথঞ্চেত্যচ্যতে যা যদিতি।

যাব্যং কর্ম আচরতি যেয়ু যেয়ু শ্রেষ্ঠঃ প্রধানঃ তৎ তৎ এব কর্মাচরতি ইতরো
হন্তঃ জনস্তদমুগতঃ। কিঞ্চ স শ্রেষ্ঠঃ যৎ প্রমাণং কুরুতে লৌকিকং বৈদিকং বা,
লোকস্তদমুবর্ত্তে তদেব প্রমাণীকরোতীত্যর্থঃ॥২১

আনন্দ্রিটীকা। জ্ঞানবতা ক্বত র্থেন লোসংগ্রহার্থনপি ন প্রবর্তিব্যানিত্যালকামুখাপ্য পরিহরতি—লোকেত্যাদিনা। শ্রুতাধ্যরনসম্পর্যকেন অভিমতো বদ্বদ্বিহিতৎ প্রতিষিদ্ধং বা কর্মামুতিষ্ঠতি তত্তদেব প্রাক্তভাজনোহমুবর্ত্ততে তেন বিদ্যাবতাপি লোকমর্য্যাদান্তাপনার্থং বিহিতং কর্ত্তব্যমিত্যর্থঃ। শ্রেষ্ঠামুসারিত্বম্ ইতরেষামাচারে দর্শয়িতা প্রতিপত্তাবপি দর্শয়তি—কিঞ্জেতি ॥ ২১

অনুবাদ। কোন্ ব্যক্তি কি প্রকারে লোকসংগ্রহ করিতে পারে, তাহাই বলিতেছেন বে, যদ্যদিত্যাদি। বে বে লোকসম্প্রদারের মধ্যে যে ব্যক্তি "শ্রেষ্ঠ" প্রধান, সে বে বে কর্মের আচরণ করে,সেই সম্প্রদারাত্মগতজ্ঞনও সৈই সেই কর্ম্মের আচরণ করিয়া থাকে। আর সেই শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি, লৌকিক কিংবা বৈদিক বে কোন বস্তুকে প্রমাণযুক্তপ অঙ্গীকার করে, সাধারণ লোকও তাহারই অন্তুবর্ত্তন করে [অর্থাৎ] তাহাই প্রমাণ বিশ্বা মানিয়া লয়॥২১

ন মে পার্থাস্তি কর্ত্তব্যং ত্রিষু লোকেষু কিঞ্চন। নানবাপ্তমবাপ্তব্যং বর্ত্ত এব চ কর্মণি॥ ২২

আন্ত্র্য়। [হে] পার্থ! ত্রিষ্ লোকেব্ মে (মম) কিঞ্চন (কিঞ্চিদপি) কর্ত্তব্যং
ন অন্তি [তথা কিঞ্চন] অনবাপ্তম্ অবাপ্তব্যম্ [অপি] ন [অন্তি] [তথাপি]
অহং কর্মণি বর্ত্তে এব ॥ ২২

অনুবাদ। হে পার্থ! ত্রিলোকে আমার কিছুই কর্ত্তব্য নাই, আমার ইদানীং অপ্রাপ্ত অতএব ভবিষ্যৎ কালে প্রাপ্তব্য এমন কোন বস্তুও নাই, তথাপি আমি কর্মেতেই বর্ত্তমান আছি॥ ২২

ভাষ্য ৷ যথা তে লোকসংগ্রহকর্ত্ব্যতায়াং বিপ্রতিপত্তি স্তর্হি মাং কিং
ন পশ্যসি—ন মে ইতি ন মে মম পার্থ নাস্তি ন বিষ্যতে কর্ত্ব্যং ত্রিম্বপি লোকেয়্
কিঞ্চন কিঞ্চিদপি ৷ কম্মাৎ ? নানবাপ্তম্ অপ্রাপ্তমবাপ্তব্যং প্রাপনীয়ং তথাপি
বর্ত্তব্য চ কর্মণি অহম্ ॥ ২২

আনন্দগিরিটীকা। কৃতার্থস্থাপি লোকসংগ্রহার্থং বিহিতং কর্ম্ম কর্দ্ধব্যমিত্যুক্তা তত্ত্বৈব ভগবস্তমুদাহরপত্বেনোপস্তস্থাতি—যদিত্যাদিনা। অপ্রাপ্তস্থাপ্তরে তবাপি কর্ত্ব্যসন্তবাৎ ন কিঞ্চিদপি বিস্ততে কর্ত্ব্যমিতি কথমুক্তমিত্যাশঙ্ক্যাহ—নানবাপ্তমিতি। প্রতীকমুপাদার ব্যাখ্যানদ্বারা বিস্তাবতোহপি
কর্মপ্রবৃত্তিং সন্তাবম্বতি—নেত্যাদিনা। অষয়ার্থং পুনন ঞোহমুবাদঃ। ভগবতো নাস্তি কর্ত্ব্যমিত্যেতদাকাজ্জাদ্বারা ক্ষোরম্বতি—ক্স্মাদিত্যাদিনা।
প্রয়োজনাভাবে ত্রমপি নামুঠেয়ং কর্ম্মেত্যাশস্ক্য লোকসংগ্রহার্থং মমাপি কর্ম্মান্স্ঠানমিতি মন্থাহ—তথাপীতি॥ ২২

অনুবাদ। এই জগতে লোকসংগ্রহের কর্ত্রতা বিষয়ে যদি তোমার কোন সংশয় থাকে, তবে আমাকেই কেন দেখিতেছ না ? ইঁহাই বুঝাইবার জন্ম ন ম ইত্যাদি শ্লোক রচিত হইয়াছে। হে পার্থ লোকত্রয়েও আমার কোন কর্ত্তব্য নাই; কারণ এমন কোন বস্তু নাই, যাহা আমার অপ্রাপ্ত, এই জন্ম অবাপ্তব্য, অথচ আমি [লোক-সংগ্রহের জন্মই] কার্য্যেতে বৃর্ত্তমান রহিয়াছি॥ ২ '

যদি হৃহং ন বর্ত্তের * জাতু কর্মণ্যতন্ত্রিতঃ ।
মম বন্ধানুবর্ত্ততে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্বৃশঃ ॥ ২৩

* বর্জেরমিডি বা পাঠঃ।

আন্বয় । জাতু (কদাচিদপি) যদি অহম্ অতন্ত্রিতঃ সন্ কর্মণি ন বর্ত্তের [হে] পার্থ ! মহুষ্যাঃ সর্কাশঃ মম বর্ম অন্নুবর্তন্তে ॥ ২০

অনুবাদ। কোন সময়েই যদি আমি অনলস হইয়া কার্য্য করিতে নিরুত্ত হই, তাহা হইলে, হে পার্থ,সকলেই আমার অহুস্ত মার্গেরই সর্ব্ব প্রকারে অহুসরণ করিবে॥২০

ভাষ্য। যদি পুনরহং ন বর্তের জাতু কদাচিৎ কর্মণি অতন্ত্রিতঃ অনলসঃ সন্মম শ্রেষ্ঠত সতঃ বর্ম মার্গমন্থবর্ত্তি মহুষ্যাঃ হে পার্থ সর্বাধঃ সর্বাধিকারিঃ॥২০

আনন্দগিরিটীকা। গোকসংগ্রহেংপি ন তে কর্ত্তব্যো বিকলম্বানিত্যা-শব্দাহ—যদি হীতি॥২৩

অনুবাদ। কোন সময়ে আমি যদি অনলস হইয়াও কার্য্যে বর্ত্তমান না থাকি [তাহা হইলে]. হে পার্থ, মহুষ্যগণ সর্বপ্রকারে আমার অবলম্বিত পথের অহুবর্ত্তন করিতে উন্নত হইবে॥ ২৩

> উৎসীদেয়ুরিমে লোকা ন কুর্য্যাং কর্ম্ম চেদহম্। সঙ্করম্ম চ কর্ত্তা স্থামুপহন্যামিমাঃ প্রজাঃ॥ ২৪

আন্য়। [তথা সতি] অহং চেং [যদি] কর্ম্মন কুর্যাং [তদা] ইমে লোকা উৎসীদেয়ুং, [অহং] সঙ্করশু কর্তা স্থামৃ [তথা] ইমাঃ প্রজাঃ উপহস্তাম্॥ ২৪

অনুবাদ। [স্বতরাং] আমি যদি কার্য্য না করি, তাহা হইলে এই সকল লোক বিনাশ প্রাপ্ত হইনে, এবং আমি বর্ণসঙ্করেরও কারণ হইন [এবং তদ্ধারা] সকল প্রজার ধ্বংসকারীও হইন॥ ২৪

ভাষ্য। তথা চ কো দোষ ইত্যাহ উদিতি। উৎসীদেয়ু: বিনশ্রেছু: ইমে দর্ব্বে লোকা: লোকস্থিতিনিমিত্তস্ত কর্মণোহভাবাৎ ন কুর্যাৎ কর্ম চেদহম্। কিঞ্চ দ্বন্ধস্ত চ কর্তা স্থাম্। তেন কারণেন উপহস্তামিমা: প্রজা: প্রজানামমু-গ্রহার প্রবৃত্ত উপহতিমুপহননং কুর্যামিতার্থ:। মম ঈশ্বরস্ত অমুরূপমাপত্যেত॥ ২৪

আনন্দ গিরিটীকা। শ্রেষ্ঠন্স তব মার্গান্ধবর্ত্তিখং মন্মন্যাণামুচিতমেবেত্যাশব্দ দ্বন্দতি—তথাচেত্যাদিনা। ঈশ্বরন্ত কর্ম্মণ্য প্রবৃত্তী তদম্বর্তিনামপি
কর্মান্দপপত্তেরিতি হেতুমার্ল—লোকস্থিতীতি। ইতদেচশ্বরেণ কর্ম কর্ত্তব্যমিত্যাহ—কিঞ্চেতি। যদি কর্মান কুর্য্যামিতি শেষঃ। সঙ্করকরণক্স কার্য্যং

কথয়তি—তেনেতি। প্রজ্ঞোপহতিঃ পরিপ্রাণ্যতে ক্যাদিতি তত্ত্বাহ—প্রজ্ঞানামিতি॥ ২৪ তব

অনুবাদ। তাহা হইলে কি দোষ ?—তাহাই বলিতেছেন যে—উদিত্যাদি। উৎসন্ন যাইবে [অর্থাৎ] বিনাশ পাইবে, [কে ?] এই সকল লোক;
আমি যদি কার্য্য না করি, [তাহা হইলে], লোকস্থিতির তি কারণ কর্ম্মের
অভাব হইবে, এই কারণ লোকস্থিতি অসম্ভব হইরা পড়ি আমি [এই
প্রকারে] সম্করেরও কর্ত্তা হইব ও সেই কারণে এই সকল প্রকার অমুগ্রহার্থ
প্রবৃত্ত হইরাও, ইহাদের বিনাশের প্রতি কারণ হইয়া উঠিব। ইহাই অর্থ
[বাস্তবপক্ষে] এই প্রকার ঈশ্বরে অনমুরূপ কার্য্য আমাতে [তাহা হইলে]
প্রসক্ত হইবে॥ ২৪

সক্তাঃ কর্ম্মণ্যবিদ্বাংসো যথা কুর্ব্বন্তি ভারত। কুর্য্যাদ্বিদ্বাংস্তথাসক্ত শ্চিকীর্মুর্লোকসংগ্রহম্॥ ২৫

অন্য় | হে ভারত! অবিদাংস: কর্মণি সক্তা: (ফলতৃষ্ণাবন্ত:) যথা
[কর্মা] ক্র্মিন্তি, তথা লোকসংগ্রহং চিকীর্ম্ বিদান্ অসক্ত: [সন্]
কুর্মাৎ॥২৫

অনুবাদ। হে ভারত! অবিদান্গণ কর্মের ফললাভে স্পৃহাবান্ হইয়া যে প্রকারে [বিহিত] কর্মের অমুষ্ঠান করিয়া পাকে, সেই প্রকারেই লোকসংগ্রহ করিতে ইচ্চুক বিদান্ও অনাসক্ত হইয়া কর্মের অমুষ্ঠান করিবেন॥২৫

ভাষ্য। যদি পুনরংমিব তং ক্বতার্থবুদ্ধিরাত্মবিদন্তো বা তহ্মাপ্যাত্মনঃ
কর্ত্তব্যভাবেহিপি পরাম্প্রাহ এব কর্ত্তব্য ইত্যাহ সক্তা ইতি। সক্তাঃ কর্মাণ
অহু কর্মণঃ ফলং মম ভবিষ্যতীতি কেচিদবিদাংসো যথা কুর্বস্তি ভারত, কুর্মাণ্
বিদান্ আত্মবিৎ তথা অসক্তঃ সন্ তদ্বৎ, কিমর্থং করোতি তচ্চ্ণু চিকীর্থঃ
কর্ত্তিমুহ্যু লোকসংগ্রহম্॥ ২৫

আনন্দ্গিরিটীকা। ত্থামনাচরস্তমন্থর্ততাং সর্বেষাং কো দোষঃ স্থাদিত্য-পেক্ষায়নীখরস্থ কুতার্থত্যা কর্মান্ত্রানাভাবে তদমুবর্ত্তিনামপি তদভাবাদেব স্থিতিহেত্বভাবাৎ পৃথিব্যাদিভূতানাং বিনাশপ্রসঙ্গাৎ বর্গাশ্রমব্যবস্থামূপপন্তেশ্চ অধিক্রতানাং প্রাণভূতাং পাপোপহতত্বপ্রসঙ্গাৎ পরামুগ্রহার্থং প্রবৃত্তিরীখরক্সেভূয়ক্তং সম্প্রতি লোকসংগ্রহার কর্ম কুর্মাণস্থ কর্ত্বাভিমানেন জ্ঞানাভিভবে প্রাপ্তে প্রত্যাহ—যদি পুনরিতি। কভার্থবৃদ্ধিষে হেতুমাহ—আত্মবিদিতি। বশাই বদাম্বানমবগদ্ধন কর্ত্ত্বাভিমানাভাবাৎ ক্বভার্থা ভবত্যেবেত্যর্থ:। অর্ক্সনান্দন্ত্রাপি জ্ঞানবতি ক্বতার্থ্বৃদ্ধিষং কর্ত্তব্যমভিমানহীনে তৃল্যমিত্যাহ—
আন্তো বেতি। তভ তর্হি কর্মামুদ্ধানমফলমাৎ অনবকাশমিত্যাশদ্ধ্যাহ—তুল্যাশীতি। কর্ত্তব্য ইত্যাম্বিদাপি পরামুগ্রগায় কর্ত্তব্যমেব কর্ম্মেত্যাহেতি শেষ:।
দৃষ্টান্তদাষ্টান্তিকরপং শ্লোকং ব্যাকরোতি—স্ক্রাইত্যাদিনা। অসক্তঃ সন্কর্ত্ত্বাভিমানং ফলাভিদদ্ধিং বাহকুর্বন্নিতি যাবং॥ ১৫

অনুবাদ। তুমি যদি আমার ন্তার ক্রতার্থরিক হও, কিংবা তাহা হইতে অন্ত কোন নিরভিমান আত্মতরগুও হও, তাহা হইলেও তোমারে নিন্ধ কর্ত্তব্য না থাকিলেও পরের উপর অনুগ্রহ প্রশক্ত তোমাকে কর্ম্ম করিতেই হইবে, ইহাই বলিতেছেন, সক্রা ইত্যাদি। কর্ম্মেতে সক্ত, [অর্থাং] কর্ম্মের ফল আমার হইবে এই প্রকার বৃদ্ধিশালী অনায়জ্ঞ ব্যক্তিগণ, যে প্রকারে কার্য্য করিয়া থাকে, হে ভারত, বিদ্ধান্ আত্মতত্ত্ত ব্যক্তিকেও সেই ভাবেই তাহারই ন্তায় কার্য্য করিতে হইবে; [কিন্তু] 'অনাসক্তভাবে। কেন কার্য্য করিবে, তাহা গুন। লোক সংগ্রহ করিবার ইচ্ছায় ॥ ২৫

ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদজ্ঞানাং কর্ম্মসঙ্গিনাম্। যোজয়েৎ সর্ববিদ্যাণি বিদ্বান্ যুক্তঃ সমাচরন্॥ ২৬

আনুষ্য । কর্মসঙ্গিনাম্ অজ্ঞানাং ন বুদ্ধিভেদং জনয়েৎ, বিদ্যান্ যুক্তঃ সন্ [স্বয়ং] সমাচরন্ সর্ককর্মাণি যোজ্যেৎ [কারয়েৎ] ॥ ২৬

অনুবাদ। কর্মসঙ্গী অজগণের কর্ম-বিষয়ে বিশ্বাসকে শিথিল করিবে না; বিদ্বান্ (আত্মতত্ত্বজ্ঞ) স্বয়ং অভিনিবিষ্ট হইয়া অনুষ্ঠানপূর্বক অনাত্মজ্ঞ-ব্যক্তিমাত্রকে বিহিত কার্য্যে প্রবর্তিত করিবেন ॥ ২৬

ভাষ্য ৷ এবং লোক সংগ্ৰহং চিকীর্ধোর্ন মমান্সবিদঃ কর্ত্তব্যমস্ত্যক্ত বা লোক সংগ্ৰহং মুক্ত্রা তভস্তসাত্মবিদ ইদমুপদিশুতে নেতি ৷ বুদ্ধের্ভেদো বুদ্ধিভেদো ময়েদং কর্ত্তব্যং ভোক্তব্যং চাস্ত কর্ম্মণঃ ফলমিতি নিশ্চয়রূপায়া বুদ্ধের্ভেদনং চালনং বৃদ্ধিভেদ স্তং ন জনয়েৎ নোৎপাদয়েৎ অজ্ঞানামবিবেকিনাং কর্মসঙ্গিনাং কর্মণি আসক্তানাম্ আসঙ্গবভাং, কিন্তু কুর্য্যাৎ যোজ্যেৎ কারয়েৎ সর্ব্বকর্মাণি বিশ্বান্ স্বয়ং তদেবাবিহ্বাং কর্ম যুক্তঃ অভিযুক্তঃ সমাচরন্॥ ২৬

আনন্দ গিরিটীক।। বুরুষন্ভোতরস্লোক্ষবতারমতি, এবমিতি। কর্ত্তবাং

কর্মেতি শেবং। পূর্কার্জমেবং ব্যাখ্যার উত্তরার্জং প্রশ্নপূর্ককম্ অবতার্য্য ব্যাচষ্টে
—কিন্তু কুর্য্যাদিতি। সর্কাকশাণি কারয়েত্তের্ প্রীতিং কুর্বারিতি শেবং।
কণং কারমেদিত্যাকাজ্ঞারামাত্র—তদেবেতি ॥ ২৬

অনুবাদ। এই প্রকার লোক-সংগ্রহের ইচ্ছায় প্রবৃত্ত, আমি কিংবা আন্ত কোন আত্মতারিবং ব্যক্তির লোকসংগ্রহরপ উদ্দেশ্য ব্যতিরেকে অন্ত কোন কর্লের জন্ত কোন প্রকার কার্য্য নাই; এই কারণ সেই [লোক-সংগ্রহে প্রবৃত্ত বিশ্বর আত্মবিদের পক্ষে উপদেশ দেওয়া যাইতেছে যে, ন ইত্যাদি। আমি এই কার্য্য করিব এবং ইছার ফল আমিই ভোগ করিব, এই প্রকার নিশ্চররপা বৃদ্ধির ভেদ, ভেদন [অর্থাৎ] পরিচালনই বৃদ্ধিভেদ [শব্দের অর্থ]; কর্ম্মস্কী [অর্থাৎ] কর্মেতে আসক্তিশুক্ত অবিবেকিব্যক্তিগণের বৃদ্ধিভেদ করিবে না। কিন্তু আত্মবিং ব্যক্তি সেই অবিদ্বানের পক্ষে বিহিত কার্য্য স্বন্ধং করিবেন, এবং [এই প্রকার] অভিনিবিষ্ট ছইয়া, কার্য্যের আচরণ দারা অন্তর্গকেও সেই কার্য্য নিয়োজিত করিবেন ॥ ২৬

প্রকৃতেঃ ক্রিয়মাণানি গুণৈঃ কর্মাণি, সর্ববশঃ। অহংকারবিমূঢ়াত্মা কর্ত্তাহমিতি মন্ততে॥ ২৭

অষ্য়। প্রকৃতে: গুণৈ: (স্বাদিভি:) পর্কশঃ ক্রিরমাণানি কর্মাণি অহবারবিষ্টাত্মা অহং [এব] কর্ত্তা ইতি সন্তাতে॥ ২৭ ·

অনুবাদ। প্রকৃতির সত্ব রজ: ও তম: এই গুণত্ররের পরিণামের **ছারাই** সকল কর্মা কৃত হইয়া থাকে। সকল প্রকারে অহঙ্কারবিম্চচেতা **প্রু**ষ সেই সকল কর্মোর, আমিই কর্ত্তা, এই প্রকার অভিমান করিয়া থাকে॥ ২৭

ভাষ্য। অবিদানজঃ কণং কর্মস্থ সজ্জত ইত্যাহ—প্রকৃতেরিতি।
প্রকৃতেঃ প্রকৃতিঃ প্রধানং সন্বরজন্তমসাং গুণানাং সাম্যাবস্থা ভক্তাঃ প্রকৃতেঃ
গুণৈঃ বিকারেঃ কার্য্যকারণর পেঃ ক্রিয়মাণানি কর্মাণি লৌকিকানি শান্তীয়াণি
চ সর্ক্রশং সর্কপ্রকারেঃ অহতারবিমৃঢ়ায়া কার্য্যকরণসভ্যাভাদ্মপ্রত্যরঃ অহতারঃ
তেন বিবিধং নানাবিধং মৃঢ় আত্মা অন্তঃকরণং যন্ত সোহয়ং কার্য্যকরণধর্মা
কার্য্যকরণাভিয়ানী অবিভার। কর্মাণি আত্মনি মন্তমানঃ ভত্তৎকর্মণামহং কর্মেভি
মন্ততে॥ ১৭

আনন্দগিরিটীকা। সজানাং কর্মসঙ্গিনামিত্যক্তং তেনোভরশ্লোকত্ব সঙ্গতিমাহ — অবিদ্বানিতি। কর্ত্তমান্মনোহবাস্তবর্ম ইত্যভ্যুপসমাৎ বিদান্ কথং কর্মনের তহাভাবং পশুতীত্যাশক্যাহ—প্রকৃতেরিতি। কর্মস্ববিহ্ন: সন্ধিপ্রকারং প্রকটনন্ ব্যাকরোতি—প্রকৃতেরিত্যাদিনা। প্রধানশক্ষেন মারাশক্ষিকচাতে মনিজ্যরত্যাভয়তঃ সংবধাতে॥ ২৭ .

আ বাদ। অনায়ক্ত মূর্ণ বাজি কি প্রকারে কর্মনিবহে আগজ হইয়া পাকে, তাহাই বলিতেছন যে, প্রক্লভেরিত্যাদি। প্রকৃতি [শব্দের অর্থ] প্রধান বিকল কার্গ্যের উপাদান [সত্ত রক্ত: ও তমোগুলের বৈষম্যহীন অবস্থাই প্রধান শব্দের তাৎপর্য্যার্থ] সেই প্রকৃতির গুণ [অর্থাৎ] কার্য্যকারণরপ বিকার, সেই বিকারসমূহ দ্বারা সকল প্রকার লৌকিক ও শান্ত্রীর কর্মা সকল সম্পাদিত হইয়া থাকে। [কিন্তু] 'অহলার বিমৃঢ়াত্মা' কার্য্য ও করণসমন্তির উপর যে আত্মপ্রত্যর, তাহাই অহলার; সেই অল্পকারের দ্বারা নানাবিধ ভাবে বাহার অন্তঃকরণ মোহপ্রাপ্ত হইয়াছে, সেই ব্যক্তি অহলারবিমৃঢ়াত্মা, সেই কার্য্য ও করণের ধর্ম্ম আপনার উপরে আরোপ করিয়া কার্য্যকরণাতিমানী জীব, সেই প্রকৃতিকৃত কর্মনিবহকে অবিভাবশে আপনার বোধ করিয়া, 'আমিই কর্ত্যা' এই প্রকার অন্তিমান করিয়া থাকে॥ ২৭

তত্ত্ববিভূ মহাবাহো গুণকর্ম্মবিভাগয়োঃ। গুণা গুণেযু বর্ত্তন্ত ইতি মন্থা ন সজ্জতে॥ ২৮

আহ্মা। তু (পরস্ত) হে মহাবাহো! গুণকর্মবিভাগয়োতত্ববিৎ, গুণা গুণেষু বর্ত্তরে ইতি মতা (বিভাব্য) [গুণেষু] ন সজ্জতে ॥ ২৮

আমুবাদ। পরস্ত গুণ ও কর্মের বিভাগ-বিষয়ে যথার্থ জ্ঞান বাঁহার আছে, সেই তত্ত্ববিৎ ব্যক্তি, ইক্সিররূপে পরিণত প্রকৃতিগুণ, বিষয়রূপে পরিণত প্রকৃতি-গুণেই ব্যাপুত হইয়া থাকে, ইহা বিবেচনা করিয়া তাহাতে আসক্ত হন না॥ ২৮

ভাষ্য। যং পুনবিধান্ তর্বিদিতি। তথবিত, মহাবাহো! কশু তথ-বিং! গুণকশ্বিভাগয়োঃ গুণবিভাগশু কশ্বিভাগশু চ তথবিং ইত্যর্থ: গুণাঃ করণায়কা গুণেষ্ বিষয়ায়কেষ্ বর্ত্তরে ন আত্মা ইতি মন্বা ন সজ্জতে সক্তিং ন করোতি॥ ২৮

আনন্দগিরিটীকা। মজন্ত কর্মস্থ সজিমুক্ত্বা বিছ্যন্তনভাবমভিদধাতি— যঃ পুনরিতি। তত্ত্বং যথাত্মাং বেজীতি ব্যুৎপত্ত্যা তত্ত্ববিদিতি তু শব্দেনা-ক্লাণ্বিশিষ্টে নির্দ্ধিটে প্রশ্নপূর্বকং দিভীয়পাদমবতার্য্য ব্যাচষ্টে—ক্ষ্ণোত্ত্যাদিনা। গুণানামেব গুণেকু বর্ত্তমান হমযুক্তং নিগুণিত্বাৎ তেরামিত্যাশন্ত্য বিভন্ততে—গুণা ইতি। কার্য্যকরণানামেব বিষয়ের প্রবৃত্তিরাম্মনম্ভ কৃটস্থান্মৈবমিতি কামা তত্ত্ববিৎ কর্মস্থ দৃঢ়তরং কর্ত্তব্যাভিমানং ন করোতীত্যর্থঃ॥ ২৮

অকুবাদ। যে ব্যক্তি বিদ্যান্ [সে কি প্রকার করে ? তাহাই দেখান হইতেছে যে] তথ্যবিৎ ইত্যাদি। হে মহাবাহো, দিস্ত [যে] তথ্যবিৎ, কোন্ বন্ধর তথ্যবিৎ ? িতাহাই বলিতেছেন যে] গুণবিভাগ ও কর্মবিভাগ, এই বিভাগ-ম্বরের যথার্থ জ্ঞান যাঁহার আছে,তিনিই তথ্যবিৎ; ইন্দ্রিয়াছ্মক গুণ বিষয়রূপ গুণেতে ব্যাপৃত হইতেছে মাত্র, কিন্তু আছ্মা ব্যাপৃত হর না, ইহ বৃঝিয়া তিনি [কোন কার্য্যেতেই] ছাসক্ত হন না ॥ ২৮

প্রকৃতে গুণসম্মূঢ়াঃ সজ্জন্তে গুণকর্মস্ব। তানকৃৎস্মবিদো মন্দান্ কৃৎস্মবিন্ন বিচালয়েৎ॥ ২৯

আনুয়। প্রকৃতে: গুণসমূচা: (অনাত্মতৎজ্ঞাঃ) গুণকর্মস্থ সজ্জে কংশ-বিং (আত্মতবজ্ঞঃ) তান্ অক্নংস্নবিদঃ (প্রকৃতিগুণস্চান্) ন বিচালয়েং (বৃদ্ধি-জেদবতো ন কুর্যাং)॥ ২৯

অনুবাদ। প্রকৃতির গুণনিবহের দারা বিমৃচ্চেতা পুরুষ, গুণজনিত কম্মসমূহে আত্মীয় বৃদ্ধিতে সংসক্ত হয়। কিন্তু সকলার্থবেক্তা আত্মতন্ত্র ব্যক্তি সেই সকল অন্নজ্ঞ মৃচ্ ব্যক্তির কর্মের প্রতি যে বিখাস আছে, তাহাকে বিচলিত করিবেন না॥ ১৯

ভাষ্য। যে পুন: প্রক্তেরিতি। প্রক্রতে: গুণৈ: সম্যঙ্ মূচা: সং-মোহিতা: সস্তঃ সজ্জে, গুণানাং কর্মান্ত গুণকর্মান্ত বরং কর্ম ক্র্মা: ফ্লারেডি, তান্ কর্মানহক্তমবিদ: কর্মফলমান্তদশিনো মন্দান্ মন্দ প্রজান্ ক্রংক্ষবিৎ বরং ন বিচালরেৎ বৃদ্ধিভেদকরণমেব চালন তর ক্র্যাৎ ইত্যর্থ: ॥ ২১

আনন্দ্গিরিটীকা। বিদানবিদ্যানিত্যভাবপি প্রক্লত্য বিদানবিদ্বো বৃদ্ধিভেদং ন ক্র্যাদিত্যপ্সংহরতি—যে পুনরিতি। প্রক্লতকক গুলৈদে হাদি-ভির্ক্কিটর: সংমৃঢ়ান্তানেবাছছেন মন্তমানা যে তে গুণানাং তেষামেব দেহাদীনাং কর্মস্থ ব্যাপারের সজ্জন্তে সক্তিং দৃঢ়তরামান্মীয়বৃদ্ধিং ক্র্ক্সীভ্যাহ— প্রকৃতে-রিত্যাদিনা। তেষামনাত্মবিদাং স্বয়্মাত্মবিৎ বৃদ্ধিভেদং নাপাদমেদিত্যাহ— ভানিত্যাদিনা॥ ২>

অনুবাদ। যাহারা কিন্ত প্রকৃতির গুণে ইত্যাদি। প্রকৃতির গুণসমূহের দারা মৃঢ় (অর্থাৎ) সম্মেহিত হইয়া গুণবিহিত ক্র্যানিকরে সম্ভ হয় (অর্থাৎ ষ্পতিমান করে)—"আমরাই ফল লাভের জন্ম কার্য্য করিয়া থাকি", সেই সকল কর্মসন্ধী অরজ,কর্মফলমাত্রদর্শী ও মন্দপ্রজ্ঞ ব্যক্তিগণকে, আত্মবিৎ স্বয়ং বিচালিভ করিবেন না; বুদ্ধিভেদ করণই চালন, তাহা করিবেন না, ইহাই অর্থ॥ ১৯

> ময়ি সর্ব্বাণি কর্ম্মাণি সংক্যস্থাধ্যাত্মচেতসা। নিরাশীর্নিশ্মমো ভূত্বা যুধ্যস্ব বিগতজ্বরঃ॥ ৩০

আর্য়। অধ্যাত্মচেতসা নয়ি (বাস্থদেবে) সর্বাণি কর্মাণি সংস্তস্ত, (নিক্ষিপা) বিগতজ্বঃ নিরাশীঃ নির্মাসণ্ড ভূতা যুধ্যস্ব ॥ ৩০

অনুবাদ। বিবেক বুদ্ধির সাহায্যে সকল কর্ম্মই আমার উপর সমর্পণ করিয়া আশা ও মমতা পরিত্যাগপূর্বক বিগতসন্তাপ হইরা যুদ্ধ কর॥ ৩০

ভাষ্য। কথং পুন: কল্মণ্যধিক্তেন অংজন মুমুকুণা কর্ম কর্তব্য-মিত্যচ্যতে—ময়ীতি। ময়ি বাহ্মদেবে প্রনেশরে সর্বজ্ঞে সর্বাত্মনি সর্বাণি কর্মাণি সংস্তৃত্ত নিক্ষিপ্য অধ্যাত্মচেতসা বিবেকবৃদ্ধা নাহং কর্তা ঈশবার ভূত্যবং করোমীত্যনরা বৃদ্ধা। কিঞ্চ নিরাশী: ত্যক্তাশী: নির্মান: মমভাবশ্চ নির্মতো বস্তু তব স সং নির্মানা ভূত্মা যুধ্যস্থ বিগতজ্জর: বিগতসন্তাপ: বিগত-শোক: সদ্ধিত্যর্থ: ॥৩০

আনন্দগিরিটীকা। 'বছপি কর্মণাজ্ঞাহধিক্রিয়তে তথাপি নোক্ষমাণেন তেন কর্ম তাক্তব্যং মোক্ষস্থ কন্মানাধ্যক্ষা ত তেন কন্ম কর্ত্বং শব্যং কর্মণাঃ নাপেকিভবিরোধিষাদিতি শহুতে—কথ্মিতি। গ্লোকেনোত্তরমাহ—উচ্যুত ইতি। বথোকে পরমিয়াত্মনি দর্মকন্মণাং সমর্পণে কারণনাহ—অধ্যাত্মেতি। বিবেকবৃদ্ধিমেব ব্যাকরোতি—অহমিতি। দর্শিতরীত্যা কর্মন্থ প্রবৃত্তক্ত কর্তব্যাভরমাহ—কিঞ্চেতি। তাক্তাশীঃ ফলপ্রার্থনাহীনঃ সন্ধিত্যপ্ত:। নির্মমো ভূষা প্রপ্রার্ত্তাদিছিৎ শেষঃ। নয় বুদ্ধে নিয়োগো নোপপছতে পুঞ্জনাত্রাদিছিৎসাত্মনত্তক্ত সন্তাপহেতোঃ নিয়োগবিষয়ত্বাযোগাদিতি তত্রাহ—বিগতেতি ॥ ৩০

অনুবাদ। কর্মেতে অধিকারী [অথচ] মুমুকু ব্যক্তির কি প্রকারে কর্ম করিতে হইবে, তাহা বলা বাইতেছে যে—মরি ইত্যাদি। সর্বজ্ঞে, পরমেখর, সর্বাদ্মা ও বাস্থদেব [এই সকল শব্দের প্রতিপান্ম] আমাতে সকল কর্ম, অধ্যাত্মবৃদ্ধিতে (অর্থাৎ) "আমি কর্তা নহি, কিন্তু পরমেখরের জন্ম, তাঁহার ভূতোর জারই কার্য্য করিতেছি", এই প্রকার বিবেকবৃদ্ধিতে, ভর করিয়া, ভূমি নিরাশী, মম-ভাবশ্ল ও বিগতসন্তাপ হইয়া যুদ্ধ কর, ইহাই অর্থ ॥ ৩•

যে মে মতমিদং নিত্যমকুতিষ্ঠস্তি মানবাঃ। শ্রদ্ধাবস্তোহনসূয়ন্তো মুচ্যন্তে তেহপি কর্ম্মভিঃ॥ ৩১

অম্বয়। যে শানবা: শ্রদ্ধাবন্তঃ অনস্মন্তঃ [চ সন্তঃ]মে (মম) ইদং মতম্ নিত্যম্ অমুতিষ্ঠিন্তি (অমুবর্ত্তরে), তেহপি কর্মাভিঃ মৃচ্যন্তে॥ ৩১

অনুবাদ। যে সকল মানব শ্রদ্ধা-সহকারে ও অস্কা পরিহারপূর্বক আমার এই মতের অন্থবর্তন করে, তাহারাও কর্মবন্ধন হইতে মুক্ত হয়। ৩১

ভাষ্য। যদেতকাম মতং কর্ম কর্ত্ত্রামিতি সপ্রমাণমূক্তং তত্ত্বথা থে ম ইতি। যে মে মদীয়মিদং মতমন্থতিষ্ঠত্তি অন্থ্যতিতে মানবাঃ মন্থ্যাঃ শ্রহ্মাবন্তঃ শ্রদ্ধানাঃ অনস্থান্তঃ অস্থাং চ ময়ি পরমান্তরৌ বান্ধদেবেহকুর্বস্থো মূচ্যন্তে তেহপােরং ভূতাঃ কর্মাভিধ শাংধশাবিধাঃ॥ ৩১

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতং ভগবতো নতমুক্তপ্রকারময়ুস্টেত্যব অমুভিষ্ঠতাং ক্রমমুক্তিফলং কথয়তি—যদেতদিতি। শাস্ত্রাচার্য্যোপদিষ্টে অদৃষ্টার্থে
বিশ্বাসবন্ধং প্রদ্ধানত্বং, গুণেষ্ দোষাবিদ্ধরণমস্যা, অপি র্যথোক্তায়া মুক্তেরমুখ্যত্যোতনার্থঃ॥৩১

অমুবাদ। এই বে অভিমত কর্ম কর্ত্ব্য, ইহা সপ্রমাণ উক্ত হ**ইল, তাহা** কলত: সেই প্রকারই, বে মে ইত্যাদি। বে দকল নমুষ্য শ্রহ্মাপরাধণ ⁹ও [সকলের] গুরু নাস্ক্রদেব যে আমি, সেই আমার প্রতি অন্ত্রাপরবশ নহে এবং আমার এই প্রকার মদভিমত কার্য্যের নিত্য অমুবর্ত্তন [অর্থাৎ] অমুষ্ঠান করে, তাহারাও ধর্ম ও অধ্যান্ত্রপ কর্ম হইতে মুক্ত হইয়া থাকে॥ ৩১

যে ত্বেতদভ্যসূয়ন্তো নাসুতিষ্ঠন্তি মে মতম্। সর্ববজ্ঞানবিমূঢ়াংস্তান্ বিদ্ধি নম্টানচেতসঃ॥ ৩২

আর্য়। যে তু[মানবাঃ] এতং মে (মম) মতম্ অভ্যস্য়স্তঃ ন অফু-ভিষ্ঠিস্, তান্ সর্বজ্ঞানবিমূঢ়ান্ অচেতসঃ নষ্ঠান্ বিদ্ধি (জানীহি)॥ ৩২

অনুবাদ ৷ সে সকল সানব, অস্থা-পরবশ ইইয়া আমার এই মতের অন্বর্তন করে না, সেই সকল সর্বজ্ঞানবিমৃত বিগতচেতা ব্যক্তিগণকে নষ্ট বলিয়া জানিবে ॥ ৩২

ভাষ্য। বে ভিতি। বে তু তদ্বিপরীতা [°]এতরম মতম্ অভ্য**ন্থর ভো**

নাম্বতিষ্ঠ বিবিধং মৃচা: তে, সর্ব-জ্ঞানবিম্চাংস্তান্ বিদ্ধি নষ্টান্ নাশং গতান্ অচেতসঃ অবিবেকিনঃ ॥ ৩২

আনন্দগিরিট কা। ভগবন্মতানমুবর্তিনাং প্রত্যবায়িৎং প্রত্যায়য়তি— বে ত্বিতি। ত্বিপরীতত্বং ভগবন্মতামুবর্তিভ্যো বৈপরীত্যং, তদেব দর্শয়তি— এতদিত্যাদিনা। অভ্যসমন্ত হতাসন্তমণি দোষমুদ্যবন্ধন্ত ইত্যর্থঃ সর্বজ্ঞানানি সন্ত্রণনিশু বিষয়াণি, প্রমাণপ্রমেরপ্রয়োজনবিভাগতো বিবিধত্বম্॥ ৩২

আমুবাদ। বে তু ইত্যাদি। বাহারা কিন্তু ইহার বিপরীতস্বভাব, [অর্থাৎ] আমার এই মতের উপর অস্থাপরবশ হইয়া ইহার অমুবর্ত্তন করে না, তাহারা সর্বজ্ঞানবিমৃত, [অর্থাৎ] সর্ববিধ জ্ঞানেতেই তাহাদের বিবিধ মৃত্তা আছে, সেই অবিবেকদিগকে নষ্ট [অর্থাৎ] নাশ-প্রাপ্ত বলিয়াই জানিবে॥ ৩২

সদৃশং চেষ্টতে স্বস্থাঃ প্রকৃতে জ্ঞানবানপি। প্রকৃতিং যান্তি ভূতানি নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি॥ ৩৩

অন্বয়। জ্ঞানবানপি [জনঃ] স্বস্থাঃ প্রকৃতেঃ সদৃশং চেষ্টতে ভূতানি প্রকৃতিং যান্তি, নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি ?॥ ৩৩

অনুবাদ। জ্ঞানবান্ হইয়াও [মখ্যা] নিজপ্রকৃতির অনুরূপ চেষ্টা করিয়া থাকে। সকল প্রাণীই নিজ প্রকৃতির অনুসরণ করিয়া থাকে, [মৃতরাং] নিপ্রাহ্ (প্রতিষেধবিধি) কি করিবে ?॥৩০

ভাষ্য। কন্মং পুন: কারণাং ঘদীয় মতং নাম্বতিষ্ঠন্তি প্রধর্মান্ অমুতিষ্ঠন্তি স্বধর্মাং চ নামুবর্ত্তন্তে, ছংপ্রতিকুলাঃ কথং ন বিভাৃতি ছচ্ছাসনাতিক্রমদোষাং, তত্তাহ—সদৃশমিতি। সদৃশমন্থরপং চেষ্টতে; কন্সাঃ স্বকারায়াঃ
প্রেক্তেঃ প্রকৃতিন মি পূর্বকৃতধর্মাধর্মাদিসংস্কারঃ বর্ত্তমানজনাদাবভিব্যক্তঃ সা
প্রকৃতিঃ ভক্তাঃ সদৃশমেব সন্বোজন্তক্র নিবানপি কিং পুনমুর্থঃ। তন্মাৎ প্রকৃতিং
ষান্তি ভূতানি নিগ্রহঃ কিং করিষ্যতি মম বা অক্সন্ত বা॥ ৩০

আনন্দ গিরিটীকা। ভগবন্ম তামুবর্ত্তনমন্তরেণ পরধর্মা মুষ্ঠানে স্বধর্মানমুষ্ঠানে চ কারণং পৃচ্ছতি—কস্মাদিতি। ভগবৎ প্রতিক্লন্তমেব তত্র কারণমিত্যাশক্ষ্যাহ—তৎপ্রতিকূলা ইতি। রাজামুশাসনাতিক্রমে, দোষদর্শনাৎ
ভগবদমুশাসনাতিক্রমেহণি দোবসন্তবাৎ প্রতিক্লন্তং ভয়কারণমিত্যর্থঃ। উত্তরম্বেন
স্কোক্ষবতারয়তি—সদৃশমিতি। তিত্রাহেতি । সর্বস্থ প্রাণিবর্গস্থ প্রকৃতিবশবর্ত্তিকে ক্রম্তিকভারং স্বচম্বতি—ভত্যানবানসীতি। সর্বাণ্যপি ভূতান্তনিচ্ছ-

স্ত্রাপি প্রকৃতিসৃদ্দীং চেষ্টাং গছ্মন্ত্রীতি নিগময়তি—প্রকৃতিমিতি। স্থানাং প্রকৃত্যধীনদ্বেংপি প্রকৃতির্ভগবতা নিগ্রাহ্মত্যাশক্ষ্যাহ—নিগ্রাহ্ ইতি। কা প্রারিয় প্রকৃতির্বাদ্য সারিয় ভূতানাং চেষ্টেতি পৃচ্ছতি—প্রকৃতির্নামেতি। ভগবদভিপ্রেতাং প্রকৃতিং প্রকটয়তি—পূর্বেতি। আদিশক্ষেন জ্ঞানেচ্ছাদি সংগৃহতে যথোক্তঃ সংস্কার: স্বস্বরা প্রবর্তকশেহৎ প্রলয়েহণি প্রবৃত্তিঃ স্থাদিত্যাশক্ষ্য বিশিনিষ্টি—বর্ত্তমানেতি। সর্বো জন্তুরিত্যক্তং বিবেকিপ্রবৃত্তেরতথাত্মাদিত্যাশক্ষ্য পর্যাদিভিশ্চাবিশেষাদিতি স্থায়মহাসরয়াহ—জ্ঞানবানিতি। জ্ঞানবতামজ্ঞান বতাঞ্চ প্রকৃত্যধীনত্মাবিশেষে ফলিতমাহ—তত্মাদিতি। প্রকৃতিং বাস্তি প্রকৃতিসৃদ্দীং চেষ্টাং গচ্ছস্তানিচ্ছস্ত্যাপি সর্বাণি ভূতানি ইত্যর্থ:। প্রকৃতের্ভগবতা তত্ত্বল্যেন বা কেনচিৎ নিগ্রহ্মাশক্ষ্য স্বতারিত্রত্ত্র্গপাদক্যার্থাপেকিতং প্রয়িত মম বেতি॥ ৩৩

অকুবাদ। কি কারণে [সন্থ্য] তোমার মতের অনুবর্ত্তন করে না, পর ধর্মের অনুষ্ঠান করে এবং স্বধর্মের প্রতিপালন করে না ? তোমার প্রতিকৃশ হইরা তোমার আজ্ঞালজ্ঞ্যনরপ দোবেও ভর পার না কেন ? এই প্রকার আর্জ্নের প্রশ্ন সন্থাবনা করিরা ভগবান্ বলিতেছেন যে—সদৃশমিত্যাদি। সদৃশ [অর্থাৎ] সন্থাবনা করিরা ভগবান্ বলিতেছেন যে—সদৃশমিত্যাদি। সদৃশ [অর্থাৎ] সন্থাবনা করিরা গাকে। কাহার ? নিজ প্রকৃতির। পূর্বাকৃত ধর্ম ও অধর্মাদি সংস্কার বর্ত্ত্যান জন্মের আরন্তে অভিব্যক্ত হয়, তাহাকেই প্রকৃতি বলা বায়। মৃথেরত কথাই নাই, জ্ঞানবান্ হইরাও সকল জীব নিজ নিজ প্রকৃতির অন্থামন করে, [বিধিনিষেধশাস্ত্ররপ] নিগ্রহ, [আমারই হউক আল্লেরই হউক না কেন] তাহার কি করিবে ? ॥ ৩০

ইন্দ্রিয়স্তোন্দ্রিয়স্তার্থে রাগদেষো ব্যবস্থিতো। তয়োর্ন বশমাগচ্ছেৎ তৌ ছস্ত পরিপন্থিনো॥ ৩৪

আর্য়। ইন্দ্রিস্থ ইন্দ্রিস্থ (সর্পেন্দ্রিগাণাং) আর্থ—[ইট্রে ছিট্রে বা] রাগদ্বেরী [মণাক্রমং] ব্যবস্থিতো। তারোব শং ন আগচ্ছেৎ; হি (মন্নাৎ) তৌ [রাগদ্বেয়া] মণ্ড [পুরুষস্থ] পরিপন্থিনো (শ্রেরোমার্গবিদ্নকরো)॥ ৩৪

অনুবাদ। সকল ইন্দ্রিয়েরই ভোগ্য শক্ষাদি বিষয় ইষ্ট্র বা **দ্বিষ্ট হইলে,** তাহাতে যথাক্রমে রাগু ও দ্বেষ ব্যবস্থিত আছে; পুরুষ এই রাগ ও দেবের বশীভূত হইবে না; কারণ, এই রাগ ও দেব, প্রুষ্টের শ্রেয়-প্রাপ্তির প্রতিবন্ধক হইয়া থাকে॥ ৩৪

ভাষ্য। যদি সর্কো জন্তঃ আত্মনঃ প্রকৃতিসদৃশ্যেব চেষ্টতে ন চ প্রকৃতিশৃশুঃ কশ্চিদন্তি ততঃ পুরুষকারশ্র বিষয়ান্ত্রপণতেঃ শাস্ত্রানর্থকাপ্রাথাবিদম্চ্যতে—ইন্দ্রিরভেতি। ইন্দ্রিরভেন্দিয়ভার্থে সর্কেন্দ্রিরাণামর্থে শক্ষাদিবিষয়ে ইপ্টে রাগঃ আনিষ্টে দ্বেং ইত্যেবং প্রতীন্দ্রিরার্থে রাগদ্বেরা অবশ্রমাবিনা। তত্রায়ং পুরুষ-কারশ্র শাস্ত্রার্থন্ত চ বিষয় উচ্যতে। শাস্ত্রার্থে প্রবৃত্তঃ পূর্বমেব রাগদ্বেয়াবিশং নাগচ্ছেং। বা হি পুরুষশু প্রকৃতিঃ সা রাগদ্বেমপুরঃসরেব স্বকার্য্যেপুরুষং প্রবর্তমবিভিদ্যা স্বধর্মাপরিত্যাগঃ পরধর্মানুষ্ঠানঞ্চ ভবতি। যদা পুনঃ রাগদ্বেসা তৎপ্রতিপক্ষেণ নিয়ময়তি তদা শাস্ত্রার্থিদ্ধিরেব প্রশ্বো ভবতি ন প্রকৃষশ্র পরিপদ্ধিনী ভেয়ো রাগদ্বের্যার্বশং ন গচ্ছেং। যতঃ তৌ হি মশু পুরুষশ্র পরিপদ্ধিনী শ্রেরারার্শন্ত বিষ্বক্রারৌ ভঙ্গরাবিবেত্যর্থঃ॥ ৩৪

আনন্দ গিরিটীকা ৷ সর্বস্থ ভূতবর্গস্থ প্রকৃতিবশনত্তিত্বে লৌকিকবৈদিক-পুরুষকারবিষয়াভাবাৎ বিধিনিষেধানর্থক্যমিতি শঙ্কাতে—এদীতি। নমু যশু ন প্রকৃতিরন্তি তন্ত পুরুষকারসম্ভবাদর্থবন্ধং তদ্বিষয়ে বিধিনিষেধয়োভবিদ্যতি নেত্যাহ—ন চেতি। শক্কিতং দোষং শ্লোকেন পরিগ্রতি—ইদমিত্যাদিনা। বীষ্দারাঃ সর্বকরণগোচরতঃ দর্শয়তি—সূর্বেতি। প্রত্যর্থং রাগছেষয়োর-ব্যবস্থায়াং প্রাপ্তে প্রত্যাদিশতি—ইফ্ট ইতি। প্রতিবিবয়ং বিভাগেন তয়ো-রক্সতরক্সাবশ্রকথেহপি পুরুষকারবিষয়াভাবপ্রযুক্ত্যা প্রাভকং সমাধেরমিত্যাশস্ক্যাহ—তত্ত্রেতি। তরোরিত্যান্তবতারিতং ভাগৎ বিভক্তে— শাস্ত্রার্থ ইতি। প্রক্লতিবশঘাৎ জম্ভোনৈ বি নিয়োজ্যখনিত্যাশস্ক্যাহ—যা হীতি। রাগ্রেষ্টারা প্রকৃতিবশ্বর্তিতে অধর্মত্যাগাদি ছর্বার্নিত্যক্রমিদানীং বিবেক-বিজ্ঞানেন রাগাদিনিবারণে শাস্ত্রীয়দৃষ্ট্যা প্রকৃতিপারবভাৎ পরিহর্ভুং শক্যমিত্যাহ— যদেতি। নিগ্যাঞ্জাননিবন্ধনৌ হি রাগদ্বেষৌ তৎপ্রতিপক্ষ বিবেকবিজ্ঞানন্ত মিণ্যাজ্ঞানবিরোধিত্বাদবধেরম্। রাগছেষরোর্ফালনিব্ত্যা নির্ত্তো প্রতিবন্ধধ্বংসে কার্য্যসিদ্ধিনভিসন্ধারে কুম্—তদেতি। এবকারশু অন্তরোগব্যবচ্ছেদকত্বং দর্শরতি—নেতি। পূর্ব্বোক্তং নিয়োগমুপসংহরতি—তত্মাদিতি। হেতুমাহ—যত ইতি। হিশব্দোপান্তো হেতুর্যত ইতি প্রকটিতঃ স চ পূর্বেণ তচ্চবেন সম্বন্ধনীয়:। পুরুষপরিপদ্বিত্তমেব তয়ো: সোদাহরণং, ক্ষোরম্বতি---শ্রেয়োমার্গস্থেতি॥ ৩৩

অন্ধবাদ। যদি দক্ল জীবই নিজ প্রকৃতির অমুরূপ চেষ্টাই করে এবং প্রকৃতিশুন্ত কেচহ না গাকে তাহা হইলে পুরুষকারের বিষয় মমুপপন্ন হওয়াতে শারের নিরর্থকতার আপত্তি হইতেছে, এইপ্রকার শক্ষা নিরাকরণ করিবার মন্ত্র বলা বাইতেছে যে—ইল্রির্গ্রেতাদি। ইল্রিরের ইল্রিরের [অর্থাৎ] সকল ইল্রিরেরই অর্থ শক্ষাদি বিষয়; সেই শক্ষাদি বিষয় ইপ্র ইইলে তাহাতে রাগ, এবং অনভিপ্রেত হইলে তাহাতে দ্বেষ, এই প্রকার প্রতিনিয়ত ইল্রিরার্থে রাগ ও দ্বেষ। এই প্রকার বস্ত্রবিভাগ হইলেও, পুরুষকার ও শাস্ত্রার্থের বিষয় নির্দিপ্ত ইইতেছে যে, শাস্ত্রীয় অর্থে প্রবৃত্ত পুরুষ পূর্ব্ব ইইতেই রাগ কিংবা দ্বেষের বশীভূত হইবে না। প্রক্ষের যে প্রকৃতি পূর্বের উক্ত ইইরাছে, তাহা রাগ ও দ্বেনকে দারস্বরূপে করিয়া, প্রক্ষকে স্কার্য্যে প্রবর্ত্তিত করে, সেই সময়ই স্বধর্মপরিত্যাগ ও পরদর্শ্যের অন্তর্ভান ঘটনা থাকে। যে সময় পুরুষ প্রতিকৃল ভাবে রাগ ও দ্বেনকে নিয়মিত করিতে পারে, তথন তাহার শাস্ত্রবিহিত বিষয়েই দৃষ্টি হয়, এবং দে প্রকৃতির বশীভূত হয় না। এই কারণ সেই রাগ ও দ্বেষর বশীভূত হইবে না; কারণ, সেই রাগ ও দ্বেষ পুরুষের পরিপন্থী [অর্থাৎ] তাহারা শ্রেরামার্যের বিয়কত্তা ঠিক দম্যুর ভায় ॥ ৩৪

শ্রোয়ান্ স্বধর্ম্মো বিগুণঃ পরধর্ম্মাৎ সনুষ্ঠিতাৎ। স্বধর্মে নিধনং শ্রোয়ঃ পরধর্মো ভ্য়াবহঃ॥ ৩৫

অনুয়। সমষ্ঠিতাৎ পরধর্মাৎ বিওপ: [মপি] সধন্ম: শ্রেয়ান্, স্বধর্মে নিধনং শ্রেয়: পরধর্মো ভয়াবহ: [ভবতি ।॥ ৩৫

আকুবাদ। স্চাক্তরপে অফুটিত প্রথশ্ম ইউতে অসম্পূণভাবে অফুটিত নিজ ধর্ম শ্রেমান্। স্বধর্মে নিধনও শ্রেমঃ, প্রধর্ম মিরণের প্রও নরকাদিলকণ] ভয়ের হেতু॥ ০৫

ভাষ্য। তত্র রাগদের প্রবৃক্তো মন্ততে শাস্ত্রার্থমপান্তপা প্রধর্ম্মাইপি
ধর্মজাদক্ষ্টের এব ইতি তদসং—শ্রেয়ানিতি। শ্রেয়ান্ প্রশক্তরঃ স্বোধর্মঃ
বিশুণোহিপি বিগতগুণোহিপি অফুন্তীরমানঃ পরধর্মাৎ বহুষ্ঠিতাৎ সাদ্শুণোন সম্পাদিতাদিপি। বধন্মে স্থিতন্ত নিধনং মরণমপি শ্রেয়ঃ প্রধর্মে স্থিতন্ত
জীবিতাৎ, কন্মাৎ প্রধর্মো ভর্বহঃ, নরকাদিলকণং ভর্ম আবহুতি যতঃ॥ ৩৫

আনন্দ গিরিটীকা। রাগদেষয়ো: শ্রেরোমার্গপ্রতিপকৃতং প্রকটিরতং পরমতোপন্তাসদারা সমনস্তরশ্লোকমবতারয়তি—তত্ত্রেত্যাদিনা। ব্যবহারভূমিঃ সপ্তম্যর্থ:। শাল্লার্থকান্ত্রণা প্রতিপত্তিমেব প্রত্যায়য়তি পরধর্মোহপীতি। অধর্মবিদিত্যপেরর্থ:। অনুমানং দ্বয়নুত্তরত্বেন শ্লোকমুখাপয়তি—তদসদিতি। কর্মধর্মাদ্ যুদ্ধাদ হরপ্রষ্ঠানাৎ পরিপ্রাড্ধর্মস্থ ভিক্ষাশনাদিলকণ্ড স্বমুঠেরতর।পি কর্ত্তব্যম্বং প্রাপ্রমিত্যাশক্ষ্য ব্যাচষ্টে—ক্রেয়ানিতি। উক্তেইর্থে প্রপ্রপ্রকং হেতুমাহ—ক্রুয়াদিত্যাদিনা। স্বধর্মমবধ্র পরধর্মমন্থতিষ্ঠতঃ স্বধর্মা-তিক্রমক্রতদোষত হৃপরিহরত্বাৎ ন তত্ত্যাগঃ সাধীয়ানিতার্থঃ॥ ৩৫

অনুবাদ। রাগও দেব-প্রযুক্ত হইরা [লোক] ধর্মকেও অধর্ম বলিয়া বোধ করে, এবং বিবেচনা করে যে, যে কারণ ইহাও ধর্ম, এইজন্ত ইহার অর্থাৎ পরধর্মেরও অনুষ্ঠান করা আবশ্রক। [লোকের] এ প্রকার জ্ঞান অসৎ [ভাহাই প্রতিপাদিত হইতেছে যে] শ্রেয়ানিত্যাদি। শ্রেয়ান্ [এই শব্দের অর্থ] প্রশক্তরে, [কাহা হইতে?] সকল অলের সহিত সম্পাদিত পরধর্ম হইতে [কি প্রশক্ষতর ?] অন্ধবৈশুণ্যের সহিত অনুষ্ঠীয়মান "স্বধর্ম্ম" মাত্মধর্ম্ম। স্বধর্মে স্থিত ব্যক্তির নিধন [অর্থাৎ] মরণও পরধর্মে স্থিত জীবনের অপেকা শ্রেয়ঃ, কেন ? [যে কারণ] পরধর্ম্ম ভয়াবহ [অর্থাৎ] নরকাদিরপ ভয়রেক উৎপন্ন করিয়া থাকে॥ ৩৫

অৰ্জুন উবাচ।

অথ কেন প্রযুক্তোহয়ং পাপং চরতি পূরুষঃ। অনিচছন্নপি বাফে য় বলাদিব নিয়োজিতঃ ॥ ৩৬

আহার। হে বাফেরি ! মনিচ্ছন্ মণি ময়ং পুরুষঃ কেন প্রযুক্তঃ [সন্] বলাং নিয়োজিত ইব পাপং চরতি (মহুতিষ্ঠতি)॥ ৩৬

আনুবাদ। অর্জুন বলিলেন,—হে র্ফিনন্দন! এই পুরুষ, অভিলাব না থাকিলেও, কাহার ছারা নিয়োজিত হইয়া বলের ছারা প্রেরিভের স্থায় পাপ কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে ১ !! ৩৬

ভাষ্য। বছপানর্থমূলং ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংলো রাগছেষৌ হন্ত পরি-পছিনাবিতি চোক্রং বিকিপ্তমনবধারিতং চ তছকং তৎ সংক্ষিপ্তং নিশিচতং চেদমেবেতি জাত্মিচ্ছয়র্জন্ উবাচ জ্ঞাতে হি তন্মিন্ তছচ্চেদায় যক্তং কুর্যামিতি কাংশতি। অথ কেন হেতুভূতেন প্রযুক্তঃ সন্ রাজ্ঞেব ভূত্যোহয়ং পাপং কর্ম চরত্যাচরতি পুরুষঃ স্বয়মনিচ্ছয়পি হে বাফেয় র্ফিক্লপ্রস্ত! বলাদিব নিয়োজিতো রাজ্ঞেবেত্যুকো দৃষ্টাস্তঃ॥ ৩৬

আনন্দগিরিটীকা । প্রাগেবানর্থম্লভোক্তরাৎ পুনস্তজ্জ্ঞাসয়া প্রশ্নাম্প-পত্তিরিত্যাশক্ষাত—যন্তপীতি। বিক্ষিপং বিবিধেষ্ প্রদেশেষ্ ক্ষিপ্তং দর্শিত- মিতি যাবং, অনবধারিতমনেকত্রোক্তত্বাদনেকধা বা বিবেককামাদিভির্ব্বিকরিতছাদিত্যর্থ:। নম্বনর্থমূলং পরিহর্ত্তব্যং তৎ কিমিতি জ্ঞাতৃমিষ্যতে তত্ত্রাহ—
জ্ঞাতে হীতি। কুর্য্যামিতি তজ্জ্ঞানমর্থবিদিতি শেষ:। বাক্যারজার্থদমর্থশব্দস্ত
গৃহীদ্বা প্রশ্নবাকং ব্যাকরোতি—অথেত্যাদিনা। অনিচ্ছতোহিপ বলাদের
ছশ্চরিত-প্রেরিত্ত্বে দৃষ্টান্তমাচষ্টে—রাজ্ঞেবেতি। বিনিয়োজ্যদ্বস্তেচ্ছাসাপেকাৎ
তদভাবে তদসিদ্ধিমাশক্ষ্য প্রাপ্তক্তং স্মারয়তি—রাজ্যেবৈত্যুক্তইতি॥ ৩৬

অনুবাদ। "ধ্যায়তো বিষয়ান্ প্ংসঃ" "তৌ হস্ত পরিপছিনোঁ" ইত্যাদি লোকের দারা, যাহা অনর্থের মূল তাহা যদিও উক্ত হইয়াছে [তথাপি] তাহা নানা স্থানে বিক্লিপ্ত এবং অনবধারিত রূপেই উক্ত হইয়াছে, সংক্লেপে "ইহাই নিশ্চিত অনর্থের মূল" ইহা জানিবার ইচ্ছায় অর্জুন জিজ্ঞানা করিতেছেন, [কারণ] নিশ্চিতরূপে তাহাকে জানিতে পারিলে, তাহার উচ্ছেদের জন্ত যত্ন করিতে পারা যাইবে; অথ ইত্যাদি।

জিজ্ঞাসা করি, রাজার দারা প্রেরিত ভৃত্যের স্থায় কাহার দারা প্রেরিত পুরুষ স্থাং ইচ্ছা না করিয়াও যেন বলের দারা নিয়োজিত হইয়া পাপ কর্ম্মের অহ্চান করিয়া থাকে, র্ফিকুলপ্রস্ত ? রাজার দারা প্রেরিত ভৃত্যের স্থায় এই দুগ্রান্ত পূর্কেই বুঝান হইয়াছে॥ ৩৬

ত্ৰীভগবাহুবাচ।

কাম এষ ক্রোধ এষ রজোগুণসমুদ্ভবঃ। মহাশনো মহাপাপাা বিদ্যোনমিহ বৈরিণম্॥ ৩৭

জান্বয়। মহাশনো মহাপাপাা রজোগুণসমূত্তবঃ এবঃ কামঃ, এবঃ [এব] জোধঃ [চ]; এনমু ইহ বৈরিণং বিদ্ধি (জানীহি)॥ ৩৭

অনুবাদ ৷ যাহা রজোগুণ ইইতে জাত, কিছুতেই বাহার পূর্ত্তি ইইবার সস্তাবনা নাই এবং বাহা ইইতে মহাপাপ সম্পোদ্তি হয়, সেই কাম এবং তাহার পরিণাম হইতে সম্ভূত ক্রোধকে এই সংসারে প্রক্রেয়র মহাবৈরী বলিয়া কানিও॥৩৭

ভাষ্য। শৃণু তং তং বৈরিণং সর্বানর্থকরং বং তং পৃচ্চসি,—
"ঐশব্যক্ত সমগ্রক্ত ধর্মক্ত বশসঃ শ্রের:।
বৈরাগ্যক্তাথ মোক্ষক্ত বগ্গাং তগ ইতীক্ষনা:॥"
ঐশব্যাদিষ্টকং যদ্মিন বাস্থাদেরে নিত্যমপ্রতিবদ্ধান্তন সামব্যেন চ বর্জতে।

"উৎপত্তিং প্রলম্বক্ষৈব ভূতানামগতিৎ গতিম্। বেত্তি বিভামবিভাঞ্চ স বাচ্যো ভগবানিতি॥"

উৎপত্ত্যাদিবিষয়ঞ্চ বিজ্ঞানং যন্ত স বাস্থাদেবো বাচ্যো ভগবান্ ইতি। কাম এষ সর্বলোকশক্রং যদ্ধিমিন্তা সর্বানর্থপ্রাপ্তিঃ প্রাণিনাং স এষ কাম: প্রতিহতঃ কেনচিৎ ক্রোধান্ত্বন পরিণমতে। অতঃ ক্রোধাহপ্যেষ এব, রজোগুণসমূত্তবঃ রজণ্চ তদ্গুণশ্চ স রজোগুণঃ স সমূত্তবো যন্ত স কামো রজোগুণসমূত্তবো রজোগুণভ বা সমূত্তবঃ। কামো হি উদ্ভূতঃ রজঃ প্রবর্ত্তরন্ পুরুষং প্রবর্ত্তরতি ভূক্তরা হুহংকারিত ইতি তঃবিতানাং রজঃকার্য্যে সেবাদৌ প্রবৃত্তানাং প্রলাপঃ শ্রেরতে মহাশনো মহদশনমন্ত্রেতি মহাশনোহতএব মহাপাপারা। কামেন হি প্রেরিতো জন্তঃ পাপং করোতি, অতো বিদ্যোলং কামমিহ সংসারে বৈরিণম্॥ ৩৭

আনন্দর্গিরিটাকা। সম্রতি প্রতিবচনং প্রস্তৌতি—শূর্ণিতি। তত্ত বৈরিদ্ধং ক্ষোরম্বতি—সূত্র্বৈতি। অপ্রস্তুতং কিমিতি প্রস্তুমতে তত্ত্রাহ— যং ত্বমিতি। ভগবচ্ছদার্থং নির্দ্ধারমিতৃং পৌরাণিকং বচনমুদাহরতি— ঐশ্বর্যান্ত্রেতি। সমগ্রন্থেত্যেতৎ প্রত্যেকং বিশেষণৈ: সমধ্যতে। অথশব্দ: তথাশক-পর্যায়: সমুচ্চরার্থ:। মে কশকেন ততুপারোজ্ঞানং বিবক্ষাতে। উদাসতবচসন্তাৎপর্য্যনাগ—এশ্রয্যাদীতি। স বাচ্যো ভগবানিতি সম্বন্ধ:। ভব্তৈব পৌরাণিকং বাক্যান্তরং পঠতি—উৎপত্তিমিতি। ভূতানামিতি প্রত্যেকমুৎপত্ত্যাদিভি: সম্বধ্যতে। করণাথোঁ চোৎপত্তিপ্রলম্নকৌ ক্রিরামাত্রভ পুরুষান্তরগোচরত্বসন্তবাৎ অগতির্গতিশ্চেত্যাগামিনৌ সম্পদাপদৌ স্থচ্যেত। বাক্যান্তরস্থাপি তাৎপর্য্যমাহ—উৎপত্ত্যাদীতি। বেত্তীত্যুক্ত: সাক্ষাৎকারো বিজ্ঞানমিত্যচ্যতে, সমগ্রৈশ্বর্যাদিসম্পত্তিসমূচ্চরার্থন্চকার:। উক্তলক্ষণো ভগবান্ কিমুক্তবানিতি তদাহ—কামইতি। কামগু দর্বলোকশক্রতং বিশদরতি —যদ্মিমিত্তেতি। তথাপি কথং তত্তৈব ক্রোধন্বং তদাহ—দ এম ইতি। কামক্রোধয়োরবহেয়ত্বভোতনার্থং কারণং কণয়তি —র্জোগুণেতি। কারণদারা কাসাদেরেব হেরত্বমূক্তা কার্য্যদারাপি তহ্স হেরতঃ স্বচরতি—রুজোগুণস্থেতি। কামত পুরুষপ্রবর্ত্তকজনের ন রজোগুণজনকত্বম্ ইত্যাশম্যাহ—কামো হীতি। তত্রৈবামুভবামুসারিণীং লোকপ্রসিদ্ধং প্রমাণয়তি—তৃষ্ণয়া হীতি। তত্ত যোগ্যাযোগ্যবিভাগ্যস্তুরেণ বছবিষয়ত্বং প্রদর্শরতি—মহাশন ইতি। বছবিবয়শ্বপ্রযুক্তৎ কার্য্যৎ নির্দ্দিশতি-ত্রত ইতি। সর্মবিষয়ছেৎপি কুতোহন্ত

পাপত্তমিত্যাশঙ্ক্যাহ—কামেনতি। কামস্ত উক্তবিশেষণবত্ত্ব ফলিতমাহ— অত ইতি॥৩৭

আনুবাদ। বাহার বিষয়ে তুনি প্রশ্ন করিতেছ, সেই দর্কানর্থকারী বেরী কে ? তাহা তুমি শ্রবণ কর [ইহা] ভগবান পলিতেছেন।—

"সমগ্র ঐশ্বর্য্য, ধর্ম্ম, যশঃ, জ্রী, বৈরাগ্য এবং মোক্ষ এই ছয়ট পদার্থের নাম ভগ; এই ঐশ্বর্যাদি ছয়ট পদার্থ যে বাস্কদেবে নিয়ত অপ্রতিবদ্ধ-ভাবে বিভামান আছে।" এবং "প্রাণিগণের উৎপত্তি ও প্রশায়, গমন ও আগমন, এবং বিভা ও অবিভা এই কয়টি পদার্থকে যিনি জ্ঞানেন, তাঁহাকেই ভগবান্ বলিয়া জ্ঞানিবে" [ইত্যাদি প্রমাণের দারা ইহা বুঝা বায় যে] উৎপত্তি প্রভৃতি ছয়টি বস্তুর বিশেষ জ্ঞান বাহার সর্ব্যাণ আছে, সেই বাস্কদেবই ভগবান এই পক্ষের বাচ্য। কাম ইত্যাদি প্লোকের অর্থ এই যে,—

বাহার জন্মই জীবগণের সকল প্রকার অনর্থপ্রাপ্তি হয়, বাছা প্রাণিনিবহের [সর্কপ্রধান] শক্র, সেই কামই কোন কারণে প্রতিহত হইলে, ক্রোধরূপে পরিণত হয়; এইজন্ম এই কামই কোধ [ইয় মৃলে উক্ত হইয়াছে] [এই কাম] রজোগুণসমূত্রব। [অর্থাৎ] রজোরূপ যে ৩৩ণ, তাহাই বাহার উদ্ভবের কারণ, তাহাকেই রজোগুণসমূত্রব বলা বায়, কিংবা রজোগুণের সমূত্রব বাহা হইতে হয়, তাহাই [রজোগুণসমূত্রব]; কারণ কামই প্রথমে উৎপন্ন হইয়া রজোগুণের পরিণাম দ্বারা পুরুষকে [কার্য্যাক্রে] প্রবৃত্ত করিয়া থাকে। ''ভৃক্কাই আমাকে এই কার্য্য করাইয়াছে'', রাজকার্য্য সেবা প্রভৃতিতে প্রস্তুত হঃখিত ব্যক্তিগণের মধ্যে এই প্রকার প্রলাণ [প্রান্তই] শুনিতে পাওয়া বায়। [এই কাম] মহাশন [অর্থাৎ] ইহার অশন (বিবন্ধ) মহৎ; অতএব ইহা মহাপাপায়। কানের দ্বারা প্রেরিত হইয়াই প্রাণী পাপাচরণ করে। এই কারণে এই সংসারে ভূমি এই কামকেই [জীবগণের] শক্রবলিয়া জানিও॥ ৩৭

ধ্মেনাব্রিয়তে বহ্নির্যথাদর্শো মলেন চ। যথোৱেনার্তো গর্ভস্তথা তেনেদমার্তম্॥ ৩৮

অনুয়। বহিন্দথা ধ্যেন আবিয়তে যথা আদর্শো (দর্পণঃ) মলেন [আবিয়তে] যথা উল্লেন (জ্বায়্ণা) গর্ভঃ [আবিগতে-] তথা তেন [কামেন] ইদং [জ্ঞানং] আবৃতম্॥ ৩৮ অনুবাদ। থেমন অগ্নি ধ্মের দারা আরত হয়, যে প্রকার দর্পণ মলের দারা আরত হয়, যেমন কুলিন্ত জীব জরায়ু দারা আরত হয়, সেই প্রকার কামের দারা এই জিন] আরত হয়। ৩৮

ভাষ্য। কথং বৈরীতি দৃষ্টান্তঃ প্রত্যায়য়তি—ধ্মেনতি। ধ্মেন সহজেন আব্রিয়তে বহিং প্রকাশাস্থাকঃ অপ্রকাশাস্থাকেন যথা বা আদর্শো মলেন চ যথা উবেন গর্ভবেষ্টনেন জরায়্ণা আবৃত আচ্ছাদিতো গর্ভস্তথা তেন ইদম্ আবৃতম্॥ ৩৮

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোক্যবতারয়তি—কথমিতি। অনেক-দৃষ্টাস্কোপাদানং প্রতিপত্তিসৌকর্য্যার্থম্। সহজন্ম ধ্যন্ত প্রকাশাত্মক্বহিং প্রতি আবরক্ত্বসিদ্ধ্যধ্বিশিনষ্টি—অপ্রকাশাত্মকেনেতি॥ ৩৮

অনুবাদ। কাম কি প্রকার শক্র, তাহা দৃষ্টান্ত-সমূহের দারা প্রতি-পাদন করিতেছেন, "ধ্মেনেভি" [যেমন সহজ অপ্রকাশাত্মক ধ্মের দারা প্রকাশাত্মক অগ্নি আরত হইরা পাকে, যেমন আদর্শ, মলের দারা [আরত হর], যেমন জঠরস্থ জ্লীব উব [অর্থাৎ] গর্ভবেষ্টন জরায়ু দারা আরত হইরা থাকে, মেই প্রকার কামের দারা ইহাও আরত হর ॥ ৩৮

> আর্তং জ্ঞানমেতেন জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণা। কামরূপেণ কোন্তের ক্লম্পুরেণানলেন চ॥ ৩৯

আন্বয় । হে কৌন্তের ! জ।নিনো নিত্যবৈরিণা কামরূপেণ ছপ্রেণ অনলেন জানম্ [নিত্যম্] আর্তম্॥ ৩৯

অনুবাদ। হে কুন্তীনন্দন, এই জ্ঞানিপুরুষের নিত্যবৈরী কামরূপ ছম্পূর অনশের দারা জ্ঞান [সর্কাণ] আরুত হইয়া থাকে॥ ৩৯

ভাষ্য। কিং পুনন্তদিদংশদ্বাচ্যং বং কানেনার্তনিত্যচ্যতে—আবৃত্তি। আবৃতনেতেন জানং জানিনো নিত্যবৈরিণা। জানী হি স্থানাতি অনেন অহমনর্থে প্রবৃক্তঃ পূর্বনেবেতি। হঃখী চ ভবতি নিত্যমেব। অতোহসৌ জানিনো নিত্যবৈরী ন তু মৃথস্ত। স হি কামং তৃষ্কাকালে মিত্রমিব পশ্তন্ তৎকার্য্যে হঃখে প্রাপ্তে স্থানাতি তৃষ্ণ্যা অহম্ তুঃশিদ্ধমাপাদিত ইতি ন পূর্বমেব অতো জ্ঞানিন এব নিত্যবৈরী। কিংক্রপেণ কামক্রপেণ কাম ইটেছব ক্রপমন্তেতি ক্রাম্বপত্তেন হুপ্পুরেণ হঃখেন পূরণমন্তেতি হুপ্পুরঃ তেনানলেন ন অন্ত অলং প্র্যাপ্তিবিভাতে ইত্যানলন্তেন॥ ৩৯

আনন্দণিরিটীকা। সামান্ততো নির্দিষ্টং বিশেষতো নির্দেষ্ট্র্ম্ আকাজ্ঞাপূর্ব্বকম্ অনন্তর্গ্রোক্যবতারয়তি—কিং পুনরিতি। কামগু জ্ঞানং প্রত্যাবরণসিদ্ধার্থং জ্ঞানিনো নিত্যবৈরিণেত্যাদিবিশেষণম্। প্রতীক্যাদায় ব্যাকরোতি—
আর্তমিত্যাদিনা। জ্ঞানিনাং প্রতি বৈরিষ্টেংপি নিত্যবৈরিষ্টং কামগু
কথমিত্যাশঙ্ক্যাহ—জ্ঞানী হীতি। অনর্গপ্রাপ্তিমন্তরেণ কামগু প্রস্কাবস্থা পূর্ব্বমবেত্যুচাতে, অতঃশব্দেন কামপ্রসক্তিরেব পরাম্প্রতে, নিত্যমেবেত্যুৎপন্ত্যবন্ধা কার্য্যাবস্থা চ কামগু কণ্যতে। নম্ব সর্বস্থাপি কামান্মতা ন
প্রশক্তেতি কামো নিত্যবৈরী ভবতি ততঃ কুতো জ্ঞানিবিশেষণমিত্যাশঙ্ক্যাহ—
ন ত্বিতি। অজ্ঞপ্ত নাসে নিত্যবৈরীত্যেত্ত্বপপাদয়তি-—স হীতি।
কার্যপ্রাপ্তিপ্রাগবস্থা পূর্ব্বমিত্যুক্তা। অজ্ঞং প্রতি বৈরিষ্ট্রে স্বত্যপি কামগু
নিত্যবৈরিষ্টাভাবে ফলিত্যাহ—ত্যত ইতি। স্বরূপতো নিত্যবৈরিষ্টাবিশেবহিশি
জ্ঞানাজ্ঞানাভ্যামবাস্তরভেদসিদ্ধিরিত্যর্গঃ। আকাজ্ঞানারা প্রকৃতং বৈরিণমেব
ক্ষোরয়তি—কিং রূপেণেত্যাদিনা। ৩১

অনুবাদ। বাহা কামের দারা সারত হয়, সেই ইদংশক্ষবাচ্য বস্তু কি, তাহাই বলা বাইতেছে বে,—আরতনিত্যাদি! জ্ঞানীর নিজ্যবৈরী এই কামের দারা জ্ঞান আরত [হইয়া থাকে]। জ্ঞানী পূর্ক হইতেই জানেন যে, এই কামের দারা আনি অনর্থে প্রেরিত [হইয়া এই কার্য্য করিতেছি] এবং [সেই কার্য্যের দারা] সর্কাদাই সে হঃমী হয়, এই কার্ম, জ্ঞানীর নিকট সর্কাটে বৈরী বলিয়া প্রতিপন্ন হইয়া থাকে; কিছ মুর্থের নিকটে নহে। কারণ, মুর্থ্যক্তি ইফ্ঞাকালে কামকে প্রিয়বন্তর স্থার পরিদর্শন করে এবং পরে তাহার পরিণামে হঃম প্রাপ্ত হইলে বুকিয়া থাকে যে, আনি ভৃষ্ণার দারাই এই হঃগ পাইলাম। এ বিষয় কিছ হঃম পাইবার] পূর্কে সে বুঝিতে পারে না। এই কারণেই কাম জ্ঞানীরই নিত্যবৈরী! কি-অরপ প কামরূপ [অর্থাৎ] কাম' ইচ্ছাই বাহার স্বরূপ, তাহাকে কামরূপ বলা যায়; সেই কামরূপ হৃষ্পুর অনল দারাই [জ্ঞানই আরত হয়] হঃথের সহিত যাহার পূরণ করিতে হয়, তাহাকে হুপুর কহে। যাহার অবংভাব অর্থাৎ পর্য্যাপ্তি সম্ভবপর নহে, তাহাকে অনল কহা যার॥ ৩২

ইন্দ্রিয়াণি মনো বৃদ্ধিরস্থাধিষ্ঠানমূচ্যতে। এতৈর্বিমোহয়ত্যেয় জ্ঞানমারত্য দেহিনম্॥ ৪০ আন্বয়। অশু [কামশু] ইন্দ্রিয়াণি (চক্রাদীনি) মন: (অস্তঃকরণং)
বৃদ্ধি: [চ] অধিষ্ঠানম্ (আশ্রয়:) উচ্যতে। এতৈ: (এভিরিক্রিয়াদিভি:) এবঃ
জ্ঞানমার্ত্য এনং দেহিনং (জীবং) বিমোহয়তি॥ ৪•

অনুবাদ। ইন্দ্রিস-সমূহ, মন ও বুদ্দি—এই কামের অধিষ্ঠান বলিয়া কথিত হইয়া থাকে। এই কাম ইন্দ্রিয়াদি দারা জ্ঞানকে আর্ত করিয়া দেহীকে বিমৃত্ করিয়া থাকে॥৪০

ভাষ্য। কিমধিষ্ঠানঃ পুনঃ কামো জ্ঞানস্থাবরণত্বেন বৈরী সর্বস্থেত্য-শেকায়ামাহ জ্ঞাতে হি শত্রোরধিষ্ঠানে স্থাপন শত্রনিবর্হণিং কর্ত্তাং শক্যাতে ইতি—ইন্দ্রিয়াণীতি। ইন্দ্রিয়াণি মনোবৃদ্ধিশ্চাস্থ কামস্থ অধিষ্ঠানমাশ্রয়ঃ উচ্যাতে। এতৈরিন্দ্রিয়াদিভিঃ আশ্রাম্যাঃ বিমোহয়তি বিবিধং মোহয়তি এব কামো জ্ঞানমাবৃত্য আছোত্থ দেহিনং শরীরিণম্॥ ৪০

আনন্দগিরিটীক। । কামশু নিরাশ্রয়শু কার্য্যকারকদ্বাভাবং মন্বা প্রশ্নপূর্বক-মাশ্রম্ম দর্শমতি—কিমধিষ্ঠান ইতি । কামশু নিত্যবৈরিদেন পরিজ্ঞাধিতান জ্বাগ্যতে তত্ত্বাহ—জ্ঞাতে হীতি । ইন্দ্রিমাদীনাং কামাধিষ্ঠানত্বং প্রকটরতি - এতৈরিতি । নম্বেভাভিরিতি বক্তব্যে কপ্মেতৈরিত্যচ্যতে তত্ত্বাহ—ইন্দ্রিমাদিভিরিতি ॥ ৪°.

অনুবাদ। কাহাকে আশ্রয় করিয়া জ্ঞানের আবরণদারা কাম সকলের বৈরী হইয়া থাকে, এই প্রকার জিজ্ঞাসার উত্তরস্বরূপ [ভগবান্] বলিতেছেন বে—ইন্দ্রিয়াণীত্যাদি। শক্রর আশ্রয় জানিতে পারিলে, অনায়াসে তাহার সমুছেদ করিতে পারা বায়: ইন্দ্রিয়নিচয়, অন্তঃকরণ ও বৃদ্ধি কামের "অধিষ্ঠান" আশ্রয়, [ইহা শাস্ত্রে] কণিত হইয়াছে। এই ইন্দ্রিয় প্রস্তৃতি আশ্রয়সমূহের সাহাব্যে কাম জ্ঞানকে আচ্ছাদিত করিয়া দেলী [অর্থাৎ] শরীরাভিমানী জীবকে নানাপ্রকারে মূঢ় করিয়া থাকে ॥ ৪০

তস্মাৎ স্বমিন্দ্রিয়াণ্যাদৌ নিয়ম্য ভরতর্যভ। পাপ্যানং প্রজহিহেনং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্॥ ৪১

আনুয়। হে তরতর্গত (ভরতকুলপ্রধান), তত্মাং ত্বম্ আদৌ ইন্দ্রিয়াণি নিয়ম্য জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনম্ এনং পাপানং (কামং) প্রজহিছি (পরিত্যজ) ॥ ৪১

অনুবাদ। হে ভরতকুলশ্রেষ্ঠ, সেই কারণে তুমি প্রথমে ইন্দ্রিরগণকে নিয়মিত করিয়া জ্ঞান-বিজ্ঞান-নাশন এই পাপস্বরূপ কামকে পরিহাত করি॥ ৪১ ভাষ্য । যত এবং তম্মাদিতি। তম্মাৎ ছমিন্রিরাণি আদে পূর্বাৎ বনীকৃত্য তরতর্বভ পাপাানং পাপাচারং কামং প্রস্তাহিই পরিত্যজ, এন্থ প্রকৃতং বৈরিণং জ্ঞানবিজ্ঞাননাশনং জ্ঞানং শাস্ত্রত আচার্য্যতশ্চ আত্মাদীনামববোধঃ বিজ্ঞানং বিশেষতঃ তদমূভবঃ তয়োক্সনিবিজ্ঞানয়োঃ প্রেয়ঃপ্রাপ্তিহেছোঃ নাশনং প্রস্তুহিই আত্মনঃ পরিত্যজ ইত্যর্থঃ ॥ ৪১

আনন্দ গিরিটীকা। তেষাং কামাশ্রয়ছে দিছে দাশ্রয় তম্ভ পরিহর্তব্যদ্দাহ—যত ইতি। তমাদিজিয়াদীনামাশ্রয়ছাদিতি যাবং, পূর্বং কামনিরোধাৎ, প্রাগবন্ধামামিত্যর্থ:। তেরু নিয়মিতেরু মনোবুজ্যোর্নিয়মঃ সিধ্যতি তং-প্রব্রেরিতর প্রবৃত্তিব্যতিরেকেণ অফলছাদিতিভাব:। পাপমূলতয়া কামস্ভ তছ্বব্যাচ্যত্বমুরেয়ম্। কামস্ভ পরিত্যাজ্যতে বৈরিছং হেতুং সাধয়তি—জ্ঞানেতি।
জ্ঞানবিজ্ঞানশৃদ্রোরর্থভেদ্যাবেদয়তি—জ্ঞানমিত্যাদিনা॥ ৪১

আনুবাদ। বে কারণ এইরূপ হয়, তন্মাদিত্যাদি! সেই কারণ তুমি পূর্ব হইতেই ইন্দ্রিমনিচয়কে বশীভূত করিয়া, হে ভরতর্বভ! পাপাচার কামকে পরিত্যাগ কর। এই কাম জ্ঞানবিজ্ঞাননাশুন, শাস্ত্র ও আচার্ব্যের নিকট হইতে লব্ধ আয়াদি পদার্থের [পরোক্ষ] বোধকে জ্ঞান কহা যায় এবং সেই সকল আয়প্রভৃতি বস্তুর অপরোক্ষ অনুভবকে বিজ্ঞান বলা যায়। সেই মোক্ষলাভের কারণ, জ্ঞান ও বিজ্ঞানের নাশ হেতু এই প্রকৃত্ত শক্র কামকে পরিত্যাগ কর, ইহাই অর্থ॥ ৪১

ইন্দ্রিয়াণি পরাণ্যাহুরিন্দ্রিয়েভ্যঃ পরং মনঃ। মনসস্তু পরা বুদ্ধি র্যো বুদ্ধে পরতস্তু সং॥ ৪২

অম্বয় । ইন্দ্রিরাণি (দেহাদিভ্য:) পরাণি (প্রকৃষ্টানি) আহঃ, ইন্দ্রিয়েভ্যঃ মনঃ পরম্ [আহঃ], বৃদ্ধির্মনিসম্ভ পরা, যস্ত বৃদ্ধেঃ পরতঃ স এব [পরমাত্মা] ॥ ৪২

অনুবাদ। দেহাদি স্থল ও বাহ্য বস্তু হইতে স্ক্রাও আত্তর ইন্দ্রিরগণ শ্রেষ্ঠ, ইন্দ্রিরগণ হইতে মন শ্রেষ্ঠা, মন হইতে বৃদ্ধি শ্রেষ্ঠ, বৃদ্ধি হইতেও মিনি আত্তর ও স্ক্রেডম, তাঁহাকেই পরমান্ধা বলা যায়॥ ৪২

ভাষ্য। ইন্দ্রিয়াণি আদৌ নিয়ম্য কামং শত্রুং কৃথিই ইত্যুক্তং, তত্র কিমাপ্রয়ঃ কামং জহাদিত্যচাতে—ইন্দ্রিয়াণিত। ইন্দ্রিয়াণি শ্রোত্রাদীনি গঞ্চ, দেহং সুলং বাহুং পরিছিয়ং চাপেক্য সৌলাক্তরস্থ্যাণিতাত্তপেক্য গ্রাণি প্রকৃষ্টান্তাহং পণ্ডিতাঃ। তথা ইন্দ্রিমেতাঃ পুরং মনঃ সক্রবিক্সা-স্কৃম্। তথা মনসন্ত প্রা বৃদ্ধিনিভ্রাত্মিকা। তথা যঃ স্ক্রিড্রেড্যো ৰুদ্ধান্তেভ্যোহভান্তরো বং দেহিনম্ ইন্দ্রিয়াদিভিরাপ্রটাঃ যুক্তঃ কামঃ জ্ঞানা-বরণদারেণ মোহরতীভাূতিং স বুদ্দের্জ্ঞ পরমান্মা॥ ৪২

ভানন্দগিরিটীকা। পূর্ব্বোক্তমন্ত কামত্যাগন্ত হ্ররথং মধানোরসোহাপন্ত ইত্যত্রোক্তমের স্পন্তীকর্ত্বং প্রশ্নপূর্বকং শ্লোকান্তরমবতারয়তি—ইন্দ্রিয়াণীত্যাদিনা। পঞ্চতি জ্ঞানেন্দ্রিয়বং কর্মেন্দ্রিয়াণাপি বাগাদীনি গৃহন্তে। কিমপেক্ষরা তেবাং পরত্বং তত্ত্রাহ—দেহমিতি। তথাপি কেন প্রবাবেণ পরত্বং তদাহ—সৌক্ষ্যেতি। আদিশন্দেন কারণভাদি গৃহতে।
ইন্দ্রিয়াপেক্ষরা স্ক্রভাদিনা মনসঃ স্বর্নপোক্তিপূর্ব্বকং পরত্বং কণয়তি—তথেতি।
মনসি দর্শিতং ক্লায়ং ব্রাবতিদিশতি—তথা মনসন্ত্রিত। যো ব্রেরত্যাদি ব্যাচন্টে—তথেত্যাদিনা। আয়্রনো যথোক্তবিশেষণভাপ্রকৃত্তমাশক্যাহ—যং
দেহিনমিতি ॥ ১২

অনুবাদ। প্রথমে ইন্সিরগণকে বশীভূত করিয়া কামরূপ শত্রুকে পরিহার করিবে, ইহা বলা হইয়াছে; এই প্রকার হইলে, কোন্ বস্তুকে আশ্রম করিয়া কামকে পরিত্যাগ করিতে হইবে, [এক্ষণে] তাহাই বলা যাইতেছে যে—ইন্সিয়াণীতি। তুল বাহ্ন ও পরিচ্ছিল্ল দেহ হইতে আস্তর্মণ, স্ক্রম্ম ও ব্যাপিত্ব নিবন্ধন শ্রোত্র প্রভৃতি পঞ্চ ইন্সিয় পর [অর্থাৎ] প্রকৃষ্ট; এই প্রকার ইন্সিয়গণ হইতে সঙ্কর্মবিক্রাত্মক মন প্রকৃষ্ট, মন হইতে অধ্যবসায়াত্মিকা বৃদ্ধি প্রকৃষ্ট। এই প্রকারে, বৃদ্ধিপর্যন্ত সকল দৃশ্য হইতেও বাহা অভ্যন্তর এবং যাহাতে দেহাভিমান আসিলে, ইন্সিয়াদি আশ্রমের সহিত যুক্ত হইয়া কাম জ্ঞানকে আরত করিয়া থাকে এবং মোল উৎপাদন করে, সেই বৃদ্ধির ও দ্রষ্টা আন্তর পদার্থকেই পর্মাত্মা বলা যায়॥ ৪২

এবং বুদ্ধেঃ পরং বুদ্ধা সংস্তভ্যাত্মানমাত্মনা।

জহি শত্রুং মহাবাহো কামরূপং হুরাসদম্॥ ৪৩

অনুয়। এবং বৃদ্ধেঃ পরং (আত্মানং) বৃদ্ধা আত্মনা (সংস্কৃতেন মনসা)
আত্মানং সংস্কৃত্য (সমাক্সমাধায়) হে মহাবাহো কামরূপং ত্রাসদং (ত্র্জিরং)
শক্রং জহি (বিনাশর)॥ ৪৩

অনুবাদ। এই প্রকারে বৃদ্ধি হইতে প্রকৃষ্ট আত্মার স্বরূপ বোধ পূর্বাক সংস্কৃত জনবের দারা আত্মানে সম্যক্রপে স্তন্তিত করিয়া (সমাধি অবলম্বন করিয়া) হে মহাবাহো, তুমি কামরূপ ফুর্জন শত্রুকে বিদাশ কর॥ ৪৩ ্ভাষ্য। এবমিতি এবং বুদ্ধে পরম্ আত্মানং বুদ্ধা জ্ঞাত্মা সংস্তভ্য সম্যক্ স্তভ্তনং ক্রতা ত্বেনৈবাত্মনা সংস্কৃতেন মনসা সম্যক্ সমাধার ইত্যথঃ। জহি এনং শক্তং হে মহাবাহো কামরূপং হ্রাসদং হৃঃখেন আসদ আসাদনং প্রাপ্তির্যক্ত তং হ্রাসদং হ্বিজ্ঞোনেকবিশেবমিতি॥ ৪৩

আনন্দগিরিটীকা। ইন্দ্রিয়াদিসমাধানপূর্বকমাত্মজানাৎ কামজন্ত্রো ভবতীভূগপসংহরতি—এবমিত্যাদিনা। সংস্কৃতৎ মনো মনঃসমাধানে হেতুরিতি হুচরতি
—সংস্কৃতিভূতি। প্রকৃতৎ শক্রমেব বিশিনষ্টি—কামরূপমিতি। তত্ত হরাসদত্বে
হেতুমাহ—ভূর্বিজ্যেত্রেতি। অনেকবিশেবোহতাদৃশো মহাশনতাদিত্তদনেনোগারভূতা কর্মনিষ্ঠা প্রাধান্তেনোকা উপেয়া ভূ জ্ঞাননিষ্ঠা প্রণত্বেনেতি বিবেক্তব্যম্॥ ১০

অনুবাদ। এবমিত্যাদি। এই প্রকারে বুরি হইতে প্রক্ত আত্মার স্বরূপ আনিয়া সম্যক্প্রকারে স্তন্তনপূর্বক নিজ সংস্কৃত আত্মা "অর্থাৎ" মনের দারা সম্যক্প্রকার সমাধি অবলম্বন পূর্বক [ইহাই তাৎপর্য্য] হে মহাবাহো কামরূপ শক্রকে [বিনাশ কর; এই কামরূপ শক্র] হুরাসদ, হুংথের সহিত্ত গাহার আসদন হয়, তাহাকেই হুরাসদ বলা যায়, অর্থাৎ কামের অনেক বিশেষ হ্বিজ্ঞের, [স্ব্তরাৎ ইহা হুরাসদ] ইতি ॥ ৪৩

ইতি ভূতীরোহধ্যারঃ সমাপ্তঃ।

অথ চতুর্থোহধ্যায়ঃ

কর্মাত্রকার্পণযোগঃ।

শ্রীভগবাহুবাচ।

ইমং বিবস্থতে যোগং প্রোক্তবানহমব্যয়ম্। বিবস্থান্ মনবে প্রাহ মনুরিক্ষাকবেহত্তবীৎ॥ ১

আমুয়। অহং ইনং অব্যয়ং বোগং বিবস্বতে (স্থ্যায়) প্রোক্তবান, বিবস্থান মনবে প্রাহ, মহু: [স্পুত্রায়] ইক্ষাক্রেছব্রীং॥ ১

আমুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন, আনি এই অবিনাশী যোগ বিৰয়ে [প্রথমে] স্থ্যকে উপদেশ দিয়াছিলাম, স্থ্য মহকে ইহা বলেন এবং মহ [স্বীয়পুত্র] ইক্ষাকুকে বলেন॥ >

ভাষ্য। বোহয়ং বোগোহধ্যায়দয়েনোকঃ জ্ঞাননিষ্ঠালকণঃ স সয়াসঃ
কর্মবোগোপায়ঃ যশ্মিন্ বেদার্থঃ পরিসমাপ্তঃ প্রস্তালকণো নির্ত্তিলকণাচ
গীতাস্থাচ সর্কাস্থ অয়মেব বোগঃ বিবক্ষিতো ভগবতা, অতঃ পরিসমাপ্তঃ বেদার্থঃ
মন্থানস্তং বংশকথনেন স্তৌতি শ্রীভগবান্।—ইমম্ অধ্যায়দয়েন উক্তং বোগং
বিবস্ততে আদিত্যায় সর্গাদৌ প্রোক্তবানহম্। জগৎপরিপালয়িত্ণাং ক্ষত্রিয়াণাং
বলাধানায়। তেন বোগবলেন যুক্তাঃ সমর্থাভবন্তি ব্রহ্ম পরিরক্ষিতৃং ব্রহ্মক্ত্রে
পরিপালিতে জগৎপরিপালয়িত্মলম্। অব্যয়মব্যয়ফলতাও। ন হাস্ত সম্যান্দর্শননিষ্ঠালকণান্ত মোক্ষাধ্যং ফলং ব্যেতি। স চ বিবস্থান্ মনবে প্রাহ ময়ঃ
ইক্ষাক্বে স্বপুরায় আদিরাজায় অব্বীও॥ ১

আনন্দ গিরিটীকা। পূর্বাভ্যামধ্যায়াভ্যাং নিষ্ঠাছয়াম্বনো যোগস্ত গীত
ছাৎ—বেদার্থস্ত চ সমাপ্তছাৎ বক্তব্যশেষাভাবাৎ উক্তযোগস্ত ক্তন্তিমন্ত্রামে
বংশকথনপূর্বিকাং স্থতিং ভগবাম্ক্রবানিত্যাহ— শ্রীভগবানিতি। তদেতভগবদ্বচনং বৃত্তাম্বন্যদদ্ধারেণ প্রস্তৌতি—যোহ্যমিতি। উক্তমেব যোগং বিভক্ত্যাম্ববদতি—সংস্থাসেনেতিকর্ত্তব্যতয়া সহিত্ত জ্ঞানাম্মনো য়োগস্ত কর্মাথো হোগো-

হেতুরত্তশ্চোপারোপেয়ভূতৎ নিষ্ঠান্বয়ৎ প্রতিষ্ঠাপিতমিত্যর্থঃ। উক্তে যোগন্বয়ে প্রমাণমুণক্তভাতি—যুশ্মিরিতি। অথবা জ্ঞানযোগভা কর্মবোগোপারত্বনেব ক্ট্রবিত —যুস্মিক্সিতি। প্রবৃত্ত্যা লক্ষ্যতে জ্ঞারতে কর্মবোগো নিবৃত্ত্যা চ লক্ষ্যতে জ্ঞানযোগইতি বিভাগঃ। যগ্তপি পূর্বস্থিন্ অধ্যায়দ্বরে যথোক্তনিষ্ঠা-ৰুমং ব্যাখ্যাতং তথাপি বিবক্ষ্যমাণাধ্যায়েষু বক্তব্যাস্তরমন্তীত্যাশক্যাহ**—গীতাস্থ** চেতি। কথং তর্হি সমনম্ভরাধ্যারত প্রবৃত্তি: অত আহ—অতইতি। বংশকথনং সম্প্রদারোপ্যাসঃ সম্প্রদারোপদেশ=6, ক্রত্তিমন্ত্রশকানিব্রস্ত্র্যা যোগ-ক্তে পর্য্যবস্থতি। গুরুশিশ্বপরম্পরোপন্তাসমেবারুক্রামতি—ইমমিতি। ইম-মিত্যস্ত সন্নিহিতং বিষয়ং দর্শন্নতি—অধ্যায়েতি। বোগং জ্ঞাননিষ্ঠালক্ষণং কর্মযোগোপায়লভামিতার্থ:। স্বয়মক্বতার্থানাং প্রয়োজনবাগ্রাণাং পরার্থপ্রবৃত্ত্য-মম্ভবাৎ ভগবতন্তপাবিধপ্রবৃত্তিদর্শনাৎ ক্বতার্থতা করনীয়েত্যাহ—বিবস্বতইতি। অব্যন্নবেদমূলত্বাদব্যন্নত্বং যোগভা গমন্বিতব্যং কিমিতি ভগবতা কুতার্থেনাপি বোগপ্রবচনং ক্রভমিতি তদাহ—জগদিতি। কথং যথোক্তেন যোগেন ক্ষতিয়াণাং বলাধানং তদাহ—তেনেতি। যুক্তাঃ ক্ষতিয়াইতি প্ৰয়ঃ। ব্ৰহ্মশব্দেন ব্ৰাহ্মণত্ব-জাতিকচ্যতে। যন্ত্রপি যোগপ্রবচনেন ক্ষত্রং রক্ষিতং তেন চ ব্রাহ্মণত্বং তথাপি কথং রমণীয়ং জগদশেষং র কিতমিত্যাহ—ব্রক্ষেতি। তাভ্যাৎ হি কর্মফলভূতং জগদমুষ্ঠানদ্বারা রক্ষিতৃং শক্যমিতার্থঃ। যোগভাব্যরত্বে হেম্বস্তরমাহ—অব্যু-ফলত্বাদিতি ৷ নম কর্মফলবহক্তযোগফলতাপি সাধ্যত্বেন ক্ষরিফুত্বমন্থ্যীয়তে নেত্যাহ - ন হীতি। অপুনরাবৃত্তিশ্রতিপ্রতিহতমহুমানং ন প্রমাণীভবতীতিভাব:। ভগবতা বিবন্ধতে প্রোক্তো যোগস্তবৈব পর্য্যব**স্থতীত্যাশঙ্ক্যাই—সচেতি।** ৰপুলায়েত্যভয়ত্ত সম্বধ্যতে। আদিরাজায়েতি ইক্ষাকোঃ সূর্য্যবংশপ্রবর্ত্তকত্ত্বন বৈশিষ্ট্যমূচ্যতে॥ ১

অনুবাদ। এই বে যোগ অধ্যায়দ্বরে উক্ত হইয়াছে, সন্ন্যাসের সহিত আননিষ্ঠাই যাহার স্বরূপ, কর্মবোগের দ্বারা যাহাতে পরিসমাপ্ত হইয়া থাকে, সেই প্রেই বোগাই সকল গীতাতে ভগবান্ স্বয়ং প্রকাশ করিতে অভিলাষ করিয়াছিলেন, [সেই যোগ বিষয়ে উপদেশ দ্বারা] সকল প্রকার বেদার্থই [সংক্ষেপে] বলা হইয়াছে ইহা বিবেচনা করিয়া, ভগবান্ সেই যোগের আচার্যাপরস্পরার উল্লেখ দ্বারা ভাহারই প্রশংসা করিতেছেন। এই [পূর্ক] অধ্যায়দ্বরে উক্ত যোগ আমি, বিশ্বান্ [অর্থাৎ] আদিত্যকে শৃষ্টির পূর্কে বিলয়াছিলাম, জগৎপালক ক্ষার্থিক

গণের বলাধান করিবার জন্তই [আমি এই বিষয় তাঁহাকে বলিয়া-ছিলাম], সেই যোগবলে যুক্ত হইয়াই ক্ষত্রিয়গণ প্রাহ্মণ জাতিকে রক্ষা করিতে সমর্থ হইয়া থাকেন; প্রাহ্মণ ও ক্ষত্রিয় পরক্ষারের দ্বারা পরিরক্ষিত হইলে সকল সংসারকে রক্ষা করিতে সমর্থ হয়। এই যোগ অব্যয়, [কারণ] ইহার ফল [মোক্ষ] অব্যয়, এই সম্যক্জ্ঞাননিষ্ঠারূপ যোগের ফল মোক্ষ কথনও বিনাশী হইতে পারে না। সেই বিবস্থান্ এই যোগ বিষয়ে মহুকে উপদেশ দিয়াছিলেন এবং মহুও নিজ পুত্র আদিগাজ ইক্ষাকুকে এই যোগের উপদেশ করিয়াছিলেন॥ >

এবং পরম্পরাপ্রাপ্তমিমং রাজর্বয়ো বিহুঃ। দ কালেনেহ মহতা যোগো নফ্টঃ পরন্তপ ॥ ২

আম্বয়। এবং পরম্পরাপ্রাপ্তম্ ইমং [যোগং] রাজর্বয়: বিছ: (জানস্তিষ্ঠ), হে পরস্তুপ স যোগঃ মহতা কালেন ইহ নষ্ট: ॥ ২

অনুবাদ। হে পরস্তপ, এই প্রকার ক্ষত্রি-পরম্পরার দারা প্রাপ্ত এই যোগ রাজর্ষিগণ অবগত হইয়াছিলেন, এই ভারতে এক্ষণে এই স্থদীর্ঘ কাল-বশে ঐ যোগ নই হইয়াছে ॥ ২

ভাষ্য। এবমিতি। এব ক্ষত্রিরপরম্পরাপ্রাথিনিং রাজর্ধরো রাজানশ্চ তে ঋষরশ্চ রাজর্ধরঃ বিচ্রিমং যোগম্। স ষোগঃ কালেনেই মহতা দীর্ঘেণ নষ্টঃ বিচ্ছিন্নসম্প্রদারঃ সংস্তঃ হে পরস্তপ, আত্মনো বিপক্ষ-ভূতাঃ পরা উচ্যস্তে তান্ শৌর্যতেজ্বোগভন্তিভিভামুরিব তাপ্রতীতি পরস্তপঃ শক্রতাপন ইত্যর্থঃ॥ ২

আনন্দগিরিটীকা। যথোজে যোগে পরম্পরাগতে বিশিষ্টজনসম্মতিমুদা-হরতি—এবমিতি। তম্ম কথং সম্প্রতি বক্তব্যত্বং তদাহ—দ কালেনেতি। পূর্বার্দ্ধং ব্যাকরোতি—এবমিত্যাদিনা। ঐশ্বর্যসম্পত্তী রাজত্বং বেষাং তেযামেব স্ক্রার্থনিরীক্ষণক্ষমত্বমৃত্তিমৃদ্ধন্ ইহেতি ভগবতোহর্জুনেন সহ সংব্যবহারকালো গৃহতে। পরস্তপতি সংবাধনং বিভজতে—আগুরুনইতি॥ ২

অনুবাদ। এই প্রকারে ক্রিরপরম্পরাপ্রাপ্ত এই যোগকে রাজর্বিগণ [অর্থাৎ] বাহারা রাজা হইরাও বস্তবপক্তে ঋষি ছিলেন [তাঁহাদিগকেই রাজর্বি কহা যার] জানিতে পারিরাছিলেন। সেই যোগ এই দেশে দীর্ঘকালে নষ্ট [অর্থাৎ] বিচ্ছিরসম্প্রদার ইংরাছে। হে পরস্তপ! আখনার বিপক্ষগণকেই পর কহে, যে ব্যক্তি স্বীর শৌর্য্য তেজঃ ও প্রতাপ দ্বারা সুর্যের ভার সেই পর-

সমূহকে তাপিত করেন, তাঁহাকেই পরস্তপ কহা যায়, পরস্তপ শব্দের অর্থ শক্ততাপন॥ ২

> দ এবায়ং ময়া তেহন্ত যোগঃ প্রোক্তঃ পুরাতনঃ। ভক্তোহদি মে দখা চেতি রহস্তং হেতত্ত্তমম্॥ ৩

অনুষ্ । অভ নয়া সএবায়ং পুরাতনো যোগা তে প্রোক্তঃ হি (যমাৎ) দ্বং মে ভক্তঃ স্থা চ অসি, এতং [চ] উত্তনং রহস্তম্॥ ৩

অনুবাদ। অন্থ আমি তোমাকে সেই এই পুরাতন বোগ বিষয়ে উপদেশ দিলাম। কারণ, তুমি আমোর ভক্ত এবং স্থা; আর এই যোগ-রূপ বিষয়ও একটি প্রম উৎকৃষ্ট রহস্ত ॥ ৩

ভাষ্য। হর্মলান্ অজিতেন্দ্রিয়ান্ প্রাপ্য নষ্টং যোগমিয়মুপলভ্য লোকং চ অপুক্ষার্থসম্বিদ্ধিনাং—সএবায়মিতি। স এবায়ং ময়া তে তুভাম্ অন্ম ইদানীং যোগঃ প্রোক্তঃ পুরাতনঃ, ভক্তোহসি মে স্থা চাসীতি রহস্যং হি যক্ষাদেতহত্তমং যোগো জ্ঞানমিত্যর্গঃ ॥ ৩

আনন্দ গিরিটীকা। কিমিতি বর্ত্তমানে কালে প্রক্রংতানোগঃ সম্প্রদায় বিজ্ঞান্ত ইত্যাশক্ষ্য অধিকার্য্য ভাবাদিত্যাহ — তুর্ব্বলানিতি। তদেব দৌর্বলা প্রক্রতাপনোগিছেন ব্যাকরোতি— অজিতেন্দ্রিয়ানিতি। যগুপি কামক্রোধাদি প্রধানান্ প্রকরান্ প্রতিলভা কামক্রোধাদিভিরভিভূয়মানো যোগো নপ্তৌ বিচ্ছিল্ন সম্প্রদায়ঃ সংজাতস্তপাপি যোগাদৃতে প্রক্ষার্থো লোকস্য লভ্যতে চেৎ কিমনেন বোগোপদেশেনেত্যাশক্ষ্য যথোক্তযোগাভাবে পরমপ্রকরার্থাপ্রাপ্তেম বম্ ইত্যাহ— লোকপ্তেতি। পূর্বো যোগো বিচ্ছিল্লসম্প্রদায়োহধুনাতু অভ্যোবাগো মদর্থ-মৃচ্যতে ভগবতেত্যাশক্ষ্যাহ— স এবেতি। কম্মাদন্তমৈ যদে কম্মিচিৎ পুরাতনোযোগা নোক্রো ভগবতেত্যাশক্ষ্যাহ— ভক্তোহ্সীতি। উক্তমধিকারিণং প্রতি যোগায় বক্তব্যহে হেতুমাহ— রহস্তং হীতি। আনাদিবেদমূলত্বাৎ যোগস্য প্রাতনত্ত্যা শর্ত্বা প্রতিস্তন্য যুক্তো নিজরপ্রপ্রক্ষয় ভক্তো বিক্ষিতঃ। সমানবন্ধাঃ স্লিগ্ধঃ সহায়ঃ সথেত্যুচ্যতে। এতদিতি কথং যোগো বিশিষ্যতে তত্ত্বাই—জ্বানমিতি॥ ৩

আমুবাদ। অজিতেজিয় ও হর্মল পুরুষগণকে প্রাপ্ত হই । এই যোগ নষ্ট হইয়াছে এবং এক্ষণে সকল ব্যক্তিই [প্রায়] অপুরুষার্থতেই নিরত হইতেছে দেখিয়া আমি সেই যোগ ইত্যাদি। অভ [ইদানীং] সেই এই পুরাতন যোগ বিষয়ে তোমাকে উপদেশ প্রদান করিলাম ; কারণ তুমি আমার ভক্ত এবং স্থা আর এই জ্ঞানরপ যোগও উৎক্লষ্ট রহস্ত ॥ ৩

অৰ্জুন উবাচ।

অপরং ভবতো জন্ম পরং জন্ম বিবস্বতঃ।
কথমেতদ্বিজানীয়াং ত্বমাদো প্রোক্তবানিতি॥ ৪

আমুর । ভবতো জন্ম অপরং (পশ্চাছ্তং), বিবস্বতঃ জন্ম পরং (পূর্ব-ভূতং) ম্মানে প্রোক্তবান্ ইতি এতং কগং বিজ্ঞানীয়াম্॥ ৪

আমুবাদ। অর্জুন কহিলেন, তোমার জন্ম পরে হইয়াছে, 'বিবস্থান্' সুর্যোর জন্ম [তাহার বহু] পূর্বের হইয়াছে, আমি কি প্রকারে বৃথিব যে তুমি সুর্যাকে এই যোগ বিষয়ে পূর্বের উপদেশ প্রদান করিয়াছ। ॥ ৪

ভাষ্য। ভগবতা বিপ্রতিষিদ্ধমুক্তমিতি মা ভূৎ কণ্ঠতিৎ বুদ্ধিরিতি পরি-হারার্থং চোন্ঠমিব কুর্বন্ [অর্জ্জন উবাচ] অপরমিতি। অপরমর্বাগ্ বস্থাদেবগৃহে ভবতো জন্ম, পরং পূর্বং সর্গাদৌ জন্ম উৎপত্তি বিবন্ধত আদিত্যন্ত, তৎ কথমেতদ্বিজানীয়াম্ অবিক্লমার্থতয়া যন্ত্রমেবাদৌ প্রোক্তবান্ ইমং যোগং স এব অমিদানীং মহুং প্রোক্তবানসীতি॥ ৪

আনন্দ গিরিটীকা। ভগবতি লোকস্তানীখরত্বশঙ্কাং নিবর্ত্ত মিতুং চোম্মুভাবমতি—ভগবতেতি। পরিহারার্থং ভগবতো মহুষ্যবদবস্থিতক্ত অনীখরত্বমূপেত্য
তদ্বচনে শন্ধিতবিপ্রতিবেধক্তেতি শেষঃ। ভগবতো নিজরপমূপেত্য নেদং চোম্মং
কিন্তু লীলাবিগ্রহং গৃহীত্বেতি বক্তুং চোম্মমিবেত্যুক্তম্। এতচ্ছকার্থমেব স্ফুটয়তি—
যস্ত্রমিতি॥ ৪

অনুবাদ। ভগবান্ যাহা বলিবেন তাহা মিথ্যা এই প্রকার বৃদ্ধি কাহারও না হউক, এই কারণ ঐ প্রকার [রুণা বৃদ্ধির] পরিহারার্থ অর্জ্বন আশস্কার ছলে বলিতেছেন, অপরমিত্যাদি। তোমার জন্ম বস্থাদেবের গৃহে হইরাছে, স্প্রকাং উহা] অপর [অর্থাৎ] পরবর্তী এবং বিবস্থান্ [অর্থাৎ] আদিত্যের জন্ম পর [অর্থাৎ] পূর্বের, স্মৃষ্টির প্রথম সময়ে হইরাছে; স্প্তরাং আমি কি প্রকারে ইহা অবিক্রমার্থ বলিয়া বৃনিব যে, যে ভূমি পূর্বের এই যোগ-বিষম [আদিক্যেকে] উপদেশ দিয়াছিলে, এবং সেই ভূমিই অন্ত আমাকেও [সেই বোগবিষরে] উপদেশ প্রদান করিতেছ। ৪

শ্রীভগবান উবাচ।

বহুনি মে ব্যতীতানি জন্মানি তব চাৰ্জ্জ্ন। তাম্মহং বেদ সর্ব্বাণি ন হং বেখ পরন্তপ॥ ৫

অধ্যা । তে অর্জ্ন । তব মে (মম) চ বছনি জ্মানি ব্যতীতানি (অতিক্রাস্তানি), অহং তানি সর্কাণি [জন্মানি] বেদ (জানামি), হে পরস্তপ, বংন বেখ (জানাসি)॥ ৫

ভাষ্য। যা বাস্থদেবে অনীখরাসর্বজ্ঞাশকা মুর্থাণাং তাং পরিহরন্
আভিগবান্থবাচ যদর্থো হুর্জুনস্য প্রশ্ন: বহুনীতি। বহুনি মে মম ব্যতীতানি
অতিক্রাস্তানি জন্মানি তব চ হে অর্জুন, তান্তহং বেদ জানে সর্বাণি ন ছং বেখ
জানীষে, ধর্মাধর্মাদিপ্রতিবদ্ধজ্ঞানশক্তিছাং। অহং পুনর্নিত্যগুদ্ধবৃদ্ধমৃক্তস্থভাবছাং
মনাবরণজ্ঞানশক্তিরিতি বেদাহং হে পরস্তপ॥ ৫

আনন্দগিরিটীকা। ভগবত্যজ্ঞানাং মহুষ্যত্বশঙ্কাং বার্ষিতৃং প্রতিবচন্দ্রবার্যতি—যা বাস্থাদেব ইতি। অন্তণাপ্রশ্নে কণমাশক্ষান্তরং পরিহর্ত্ত্ব্ ওপবচনমিত্যাশক্ষ্য প্রশ্নপ্রতিবচনয়োরেকার্যত্বমাহ—যদ্রেথি হীতি। যত্ত শক্ষিতত্ত্ব বিরোধত্য পরিহারার্যঃ যত্ত্ব প্রশ্নস্তমেব পরিহারং বক্তুং ভগবদ্রচনমিত্যর্থঃ। মতীতানেকজন্মবরং মনৈব নাসাধারণং কিন্তু সর্বপ্রপাণিসাধারণমিত্যাহ—ত্তব্ চেতি। তানি প্রমাণাভাবান্ন প্রতিভান্তীত্যাশক্ষ্যাহ—তানীতি। ঈশরভ্যানার্তক্ষানত্বাদিত্যর্থঃ। কিমিতি তর্হি তানি মম ন প্রতীয়ন্তে তবার্তজ্ঞানত্বাদিত্যাহ—ন ত্বমিতি। পরান্ পরিকল্পা তৎপরিহরার্থং প্রবৃত্তত্বাহ তব জ্ঞানাবরণং বিজেমিত্যাহ—পরন্তপেতি। অর্জ্বন্ত ভগবতো সহাতীতানেকজন্মবত্বে ত্বেত্ত্বাহিশিকেন রাগলোভাদয়ো গৃহত্তে। ঈশরভ্যাতীতানাগতবর্ত্তমান-সর্বার্থবিষয়জ্ঞানবত্বে হেতুমাহ—অ্ত্র্তি

অনুবাদ। মূর্থগণের, বাস্থদেবের উপর, যে ইনি স্থার বা সর্বজ্ঞ নহেন এই প্রকার [বিপরীত] বুদ্ধি আছে, তাহার নিরাকরণ জন্ম ভগবান্ বলিতেছেন যে, বহুনীত্যাদি। এই জন্মই [অর্থাৎ মূর্থগণের এইরূপ লাস্তি- নিবারণ জন্মই] অর্জুনেরও প্রশ্ন হইরাছিল। আমার এবং তোম।র বহু জন্ম মতীত (অতিক্রান্ত) হইরাছে, হে অর্জুন, আমি সেই সকল জন্মর্ভান্ত অবগত আছি; তুমি [কিন্তু] হে পরস্তপ, তাহা জানিতেছ না। তাহার কারণ এই বে, তোমার জ্ঞান-শক্তি, ধর্মা ও অধর্মা প্রভৃতিছারা প্রতিবদ্ধ; নিত্য গুদ্ধ বৃদ্ধ ও মৃক্তস্বভাব-নিবন্ধন আমার জ্ঞানশক্তিতে কোন প্রকার আবরণ নাই; এই কারণ আমি সকল বিষয়ই জানিতেছি॥ ৫

অজোহপি সন্নব্যয়াক্সা ভূতানামীশ্বরোহপি সন্। প্রকৃতিং স্বামধিষ্ঠায় সম্ভবাম্যাক্সমায়য়া॥ ৬

অনুয়। অজ: (জনারহিত:) সন্ অপি, অন্যাঝা (অনিনাশিস্ভাব:)
[সন্ অপি [তথা] ভূতানাম্ ঈখর: সন্ অপি সাং প্রকৃতিম্ (মম নৈক্রীং মারাম্)
অধিষ্ঠায় আক্ষমায়য়া সম্বামি ॥ ৬

অনুবাদ। আমি জনাহীন হইয়াও অবিনাশিস্বভাব [ছইয়াও | প্রাণি-নিবহের নিয়ন্তা হইয়াও নিজ প্রকৃতিকে বশীভূত করিয়া, আত্মমায়ার বশে জন্ম লাভ করিয়া পাকি ॥ ৬

ভাষ্য। কণং তহি তব নিত্যেখনশ্য ধর্দাধর্দাভাবেহপি জন্ম ইভাচ্যতে মজোহপীতি। অজোহপি জন্মনজিতোহপি সন্, তথা অন্যন্নাত্মা অক্ষীণজ্ঞান-শক্তিস্বভাবোহপি সন্, তথা ভূতানাং ব্রহ্মাদিন্তস্বপর্য্যস্তানাম্ ঈশ্বঃ ঈশ্নশীলোহপি সন্, প্রকৃতিং স্বাং মম বৈষ্ণবীং মান্নাং ত্রিগুণাত্মিকাং বস্তা বশে সর্বাং জগদ্বর্ত্ততে, ষ্যা মোহিতং সং স্বমান্থানাং বাস্থাদেবং ন জানাতি, তাং প্রকৃতিং স্বাম্ অধিষ্ঠান্ন বশীক্তা সম্ভবামি দেহবান্ ইব ভবামি জাতইব আত্মমান্ত্রা আত্মনো নান্ত্রা ন প্রমার্থতো লোকবং ॥ ৬

আনন্দগিরিটীকা। ঈশ্বরশ্ত কারণাভাবাৎ জন্মৈনায়ক্তম্ অভীতানেকজন্মবন্ধন্ধ দ্রোৎসারিতমিতি শঙ্কতে—কথমিতি। বস্থতো জন্মাভাবেহপি মায়ানশাজ্জন্ম সম্ভবতীত্যুত্তরমাত—উচ্যুত ইতি। পারমার্থিকজন্মাযোগে কারণং
পূর্বার্ক্ষেনানৃষ্ঠ প্রাতিভাষিকজন্মসম্ভবে কারণমাত্য—প্রকৃতিমিতি। প্রকৃতিশব্দশ্ত স্বরূপবিষয়ত্বং প্রভ্যাদেষ্টু ম্ আত্মমায়য়েত্যুক্তম্। বস্তুতো জন্মভাবে কারণামুবাদভাগং বির্ণোতি—অজোহপীত্যাদিনা। প্রাতিভাসিকজন্মসম্ভবে কারণকণনপ্রমূত্তরার্ক্ষং বিভজ্জে—প্রকৃতিমিত্যাদিনা। প্রকৃতিশব্দশ্ত স্বরূপশব্দপর্যায়ত্বং বারয়তি—মা্যুন্মিতি। তথ্যাঃ স্বাতন্মাং নিরাক্ত্য ভগবদধীনত্বমাত্

—মমেতি। তত্তান্চ অধিকরণদারেণানবচ্ছিরত্বং ক্চরতি—বৈশুবীমিতি।

নারাশক্তাপি প্রজ্ঞানামস্থ পাঠাৎ বিজ্ঞানশক্তিবিষয়ত্বমাশক্ষ্যাহ—ত্রিগুণাত্মিকামিতি। তত্তাং কার্য্যালক্ষমস্থানং ক্চরতি—যুস্তা ইতি। জগতো নারাবশবর্ত্তিত্বমেব ক্রুটয়তি—যুয়েতি। যথা লোকে কশ্চিজ্ঞাতো দেহবানালক্যতে

এবমহমপি নারামাশ্রিত্য তয়া স্ববশরা সম্ভবামি জন্মব্যবহারমম্ভবামি তেন

নারাময়মীশরত্ত জন্মত্যাহ –তাং প্রকৃতিমিত্যাদিনা। সম্ভবামি ইত্যুক্তমেব

বিভল্পতে—দেহবানিতি। অম্বদাদেরিব তবাপি পর্মার্থস্বাভিমানো জন্মাদিবিষয়ে

ত্যাদিত্যাশক্ষ্য প্রাপ্তক্রস্কর্পপরিজ্ঞানবত্বাদীশ্বরত্ত মৈবমিত্যাহ—ন প্রমার্থত

ইতি। আবৃতজ্ঞানবতো লোকত্ত জন্মাদিবিষয়ে পর্মার্থস্বাভিমানঃ সম্ভবতীত্যাহ—
লোকবদিতি॥ ৬

অনুবাদ। তুমি নিত্যেখন, তোমার ধর্মাধন্ম না থাকিলেও কি কারণে তবে জন্ম হইরা থাকে? [অর্জুনের] এই প্রকার আশহার উত্তর স্বরূপে বলিতেছেন যে—অজোহপীতি। অজ [অর্থাৎ] জন্মরহিত [এবং] 'অব্যয়াত্মা' অক্ষীণ-জ্ঞানশক্তিস্বভাব, (অর্থাৎ বাহার কিজানশক্তিস্বরূপস্থভাব কোন কালেই ক্ষীণ হইতে পারে না, তাহাকেই অব্যয়াত্মা বলা বায়), এবং একা হইতে শুসপর্য্যস্ত ভূতনিবহের জন্মর [অর্থাৎ] নিয়মকারী হইরাও, আনি নিজ বৈক্ষবী শক্তিকে বশীভূত করিয়া আত্মনায়াবশে জন্মগ্রহণ করিয়া থাকি; অর্থাৎ] জন্মগ্রহণানস্তর দেহাভিসানী জীবের প্রায় ব্যবহার করিয়া থাকি। বাস্তব পাক্ষে জীবের প্রায় আনার জন্ম সত্য নহে; বাহা সহ, রজঃ ও তামোগুণময় বাহার বশে সকল জগৎ বর্ত্তমান রহিয়াছে, বাহার দ্বারা মোহিত হইয়া জগৎ আত্মস্বরূপ বাহ্রদেবকেও জানিতে পারে না, সেই বৈক্ষবী মারাই আমার প্রকৃতি॥ ৬

যদা যদা হি ধর্মস্য গ্লানির্ভবতি ভারত। অভ্যুত্থানমধর্মস্য তদাত্মানং স্কাম্যহম্॥ ৭

অনুয়ু । হে ভারত ! যদা যদা হি ধন্মগু গ্লানিভবতি [তথা] অধন্মগু মঙ্যাথানং ভবতি, তদা অহম্ আক্মানং স্কামি ॥ ৭

অকুবাদ। হে ভারত! যে যে সময় ধন্মের প্রানি উপস্থিত হয়, এবং অধর্মের অভ্যুত্থান হয়, সেই সেই সময়েই আমি [মানুমাবলে] আত্মদেহের স্ষ্টি করিয়া থাকি॥ ৭ ভাষ্য। তচ্চ জন্ম কদা কিমর্থঞ্চ ইত্যুচ্যতে—বদেতি। বদা ঘদা হি ধর্মজ প্লানিহানিঃ বর্ণাশ্রমাদিলকণক্ত প্রাণিনামভ্যুদ্যনিঃশ্রেয়সসাধনক্ত ভবতি, ভারত। অভ্যুখানম্ উদ্ভবোহধন্মক্ত ভদা আত্মানং ক্ষান্যহং মার্যা॥ ৭

আনন্দগিরিটীকা। যদীখরশু মায়ানিবন্ধনং জন্মত্যুত্তং তশু প্রশ্নপুর্বকং কালং কথয়তি—তচেত্যাদিনা। চাতুর্বার্ণো চাতুরাশ্রম্যে চ বথাবদক্ষপ্তীয়মানে নান্তি ধর্মহানিরিতি ময়ানো বিশিনষ্টি—বর্ণোতি। বলৈরাশ্রমেস্তদাচারৈশ্চ লক্ষ্যতে লায়তে ধর্মঃ তন্তেতি যাবং। ধন্মহানৌ সমস্তপুরুষার্থভঙ্গো ভবতীতাভিপ্রেত্যাহ
—প্রাণিনামিতি। ন চ যথোক্তশু ধর্মগু হানিং দোঢ়ুং শক্তো ভবানিত্যাহ—ভারতেতি। ন কেবলং প্রাণিনাং ধর্মহানিরেব ভগবতো মায়াবিগ্রহশু পরিগ্রহে হেতুরপি তু তেষামধর্মপ্রবৃত্তিরপীত্যাহ—অভ্যুগ্থানমিতি। বদা বদেতি পুর্বেণ সম্বন্ধঃ॥ ৭

অনুবাদ। সেই জন্ম, কোন্সময়ে কি কার্য্যের জন্ত হইরা থাকে, তাহাই বলা হইতেছে যে—যদা ইত্যাদি। যে যে সময় প্রাণিগণের অভ্যুদয় ও মোক্ষের সাধন বর্ণ ও আশ্রমরূপ ধর্মের গ্লানি [অর্থাৎ] হানি হয়. হে ভারত, এবং অধর্মের অভ্যুথান [অর্থাৎ] উদ্ভব হয়, তখনই আনি সায়াবশে আত্মদেহ নির্মাণ করিয়া থাকি॥ ৭

> পরিত্রাণায় সাধুনাং বিনাশায় চ ত্রন্ধতাম্। ধর্মসংস্থাপনার্থায় সম্ভবামি যুগে যুগে॥ ৮

আন্তর্য়। [মহং] সাধুনাং পরিত্রাণায় (পরিরক্ষণায়) [তথা] হৃদ্ধতাং (পাপকারিণাং) বিনাশায় চ [তথা] ধর্মসংস্থাপনার্থায় য্গে য্গে (প্রতিষ্গং) সম্ভবামি (মায়য়া দেহবানিব ভবামি) ॥ ৮

অকুবাদ। সাধুগণের পরিত্রাণ, পাপকারিগণের বিনাশ ও ধর্মসংস্থা-পন করিবার জন্ম আমি যুগে ধুগে দেহ পরিগ্রহ করিয়া থাকি ॥ ৮

ভাষ্য। কিমর্থম্—পরিত্রাণায়েতি। পরিত্রাণায় পরিরক্ষণায় সাধ্নাং সন্মার্গস্থানাং বিনাশায় চ ত্রুতাং পাপকারিণাম্; কিঞ্চ ধর্ম্মসংস্থাপনার্থায় ধর্মক সম্যক্ স্থাপনং তদর্থং সম্ভবামি যুগে যুগে প্রতিযুগ্ম্॥৮ '

আনন্দগিরিটীকা। যথোজে কালে ক্নতক্ষতান্ত ভগবতো মান্নাক্ষতে জন্মনি প্রশ্নপূর্বকং প্রাঞ্জনমাহ—কিম্প্রিত্যাদিনা। যথা সাধ্নাং রক্ষণম্ অসাধ্নাং নিগ্রহশ্চ ভগবদবতারফলং তথা ফলাস্তরমণি তক্ষাস্তীত্যাহ— কিঞ্জেতি। ধন্মে হি স্থাপিতে জগদেব স্থাপিতং ভবত্যস্তথা ভিন্নমৰ্য্যাদং জগদসঙ্গতমাপ্ৰয়েত্তত্যৰ্থঃ॥৮

অনুবাদ। কি কারণে [জন্মপরিগ্রহ করি, তাহা বলিতেছি শুন]— পরিত্রাণায় ইত্যাদি। 'সাধু' সৎপথাবলম্বিগণের পরিত্রাণ [অর্থাৎ] পরিরক্ষণের নিমিত্ত, 'ছঙ্কৃত' পাপকারিগণের বিনাশের নিমিত্ত, এবং ধর্ম্মের সম্যক্ প্রকারে স্থাপন করিবার নিমিত্ত, আমি প্রতিযুগে আবিভূতি হইয়া থাকি ॥ ৮

> জন্ম কর্ম্ম চ মে দিব্যমেবং বো বেত্তি তত্ত্বতঃ। ত্যক্ত্বা দেহং পুনর্জন্ম নৈতি মামেতি সোহর্জ্জ্বন॥ ৯

আনুর্। তে অর্জুন এবং মে দিব্যং (অপ্রাক্তর:) জন্ম কর্ম্ম চ তত্ত্বতঃ (যাথার্থ্যেন) যো বেত্তি (কিজানাতি) [সঃ] দেহং ত্যক্তা পুনর্জন্ম নৈতি (নারাতি) [তথা] নাম্ এতি (প্রাপ্নোতি) ॥ ৯

অনুবাদ। হে অর্জুন! আমার এই প্রকার দিব্য জন্ম ও কন্ম বিষয়ে যথার্থ জ্ঞান যাঁহার হয়, সে ব্যক্তি দেহত্যাগের পর আর জন্মগ্রহণ করেন না এবং আমাকে প্রাপ্ত হন॥ ১

ভাষ্য। তং — জন্মতি। জন্ম নায়ারপঃ, কর্ম চ সাধুপরিত্রাণাদি মে
মন দিবাং অপ্রাক্তনৈধরম্ এবং যথোক্তং যো বেত্তি তত্তঃ তত্ত্বন যথাবং,
ত্যক্তা দেহন্ ইমং পুনর্জন পুনকংপত্তিং নৈতি ন প্রাণ্ডোতি মানেতি আগচ্ছতি
সমুচ্যতে হে অর্জুন ॥ ১

অনুবাদ। সেই জন্ম ইত্যাদি। আমার এই অলৌকিক ঈশ্বসম্বন্ধীয় যণোক্ত মারাময় জন্ম এবং সাধুপরিত্রাণাদি, প্রকৃত রূপে যে ব্যক্তি জানেন, তিনি এই দেহ পরিত্যাগ করিয়া আর জন্মান্তর লাভ ক্রেন না এবং আমাকেই প্রাপ্ত ইইয়া থাকেন [অর্থাৎ] মুক্ত হন ॥ ৯ বীতরাগভয়কোধা মন্ময়া মামুপাঞ্জিতাঃ। বহবো জ্ঞানতপদা পূতা মদ্ভাবমাগতাঃ॥ ১০

আনুষ্ । বীতরাগভয়ক্রোধা: মন্মনা মামুপাশ্রিতা: বহব: জ্ঞানতপদা পূতা: (পরাং শুদ্ধিং প্রাপ্তাং) [সস্তঃ] মন্ভাবম্ আগতাঃ ॥ ১০

অনুবাদ। আসার স্বরূপ-দর্শনকারী রাগ ভয় ও ক্রোধ-বর্জ্জিত বছ ব্যক্তি আমাকে আশ্রয়পূর্বক জ্ঞানরূপ তপ্যা দ্বারা পবিত্র হইয়া আমার ভাবপ্রাপ্ত হইয়াছেন অর্থাৎ মোক্ষ লাভ করিয়াছেন॥ ১০

ভাষ্য । নৈৰ মোক্ষনাৰ্গ ইদানীং প্রবৃত্তঃ কিং তর্হি পূর্ক্মপি—বীতরাগেতি। বীতরাগভয়ক্রোধাঃ রাগশ্চ ভয়ঞ্চ ক্রোধশ্চ বীতা বিগতা যেভ্যঃ তে বীতরাগভয়ক্রোধা মন্মরা ব্রহ্মবিদ ঈশ্বরাভেদদর্শিনঃ মানেব প্রমেশ্বরমূপাশ্রিতা কেবল-জ্ঞাননিষ্ঠা ইত্যর্থঃ। বহবোহনেকে জ্ঞানতপ্যা জ্ঞানমেব চ প্রমাত্মবিষয়ং তপত্তেন জ্ঞানতপ্যা পূতাঃ প্রাং শুদ্ধিং গতাঃ সন্তো মন্তাবম্ ঈশ্বরভাবং মোক্ষম্ আগতাঃ সমন্ত্রপ্রাপ্তাঃ ইতরতপোনিরপেক্ষজ্ঞাননিষ্ঠা ইত্যন্ত লিঙ্গং জ্ঞানতপ্রসেতি বিশেষণম্॥ ১০

আনন্দগিরিটীকা। সম্প্রতি প্রস্তব্যাক্ষমার্গস্থ নৃতন্ত্বন অব্যবস্থিতত্বমাশক্ষ্য পরিহরতি—নৈষ্য ইতি। মন্মরত্বস্থ মন্তাবগননেন অপৌনক্ষক্তাৎ
দর্শরতি—ব্রহ্ম-বিদ ইতি। আত্মনো ভিন্নত্বেন ভিন্নাভিন্নত্বেন বা ব্রহ্মণি বেদনং
ব্যাবর্ত্তর্বাভি-স্পান্তেতি। অভেদদর্শনেন সমুচ্চিত্য কর্মাষ্ট্রানং প্রত্যাচষ্টে—
মামেবেতি। তহুপাশ্ররত্বনেব বিশদরতি—কেবলেতি। নামুপাশ্রিতা ইতি
কেবলজ্ঞাননিষ্ঠত্বমুক্তা জ্ঞানতপ্যা পূতা ইতি কিমর্থং পুনক্ষচ্যতে তত্ত্রাহ—
ইতরেতি॥ ১০

অকুবাদ। এই মোক্ষমার্গ বে সম্প্রতি এ জগতে প্রবৃত্ত হইয়াছে, তাহা নছে; কিন্তু পূর্বকালেও [ইহা ছিল] [ইহাই বলা যাইতেছে যে] বীতরাগ ইত্যাদি। বীতরাগভয়ক্রোধ [এই শব্দটির অর্থ এইরূপ হইবে যে]রাগ, ভয় ও ক্রোধ এই তিনটি রৃত্তি হইতে বাহারা [সম্পূর্ণরূপে] বিমৃক্ত, [অর্থাৎ] বাহাদের রাগ, ভয় ও ক্রোধ অতীত হইয়াছে, তাহারাই বীভরাগভয়ক্রোধ, [এই শব্দের ছারা প্রতিপাদিত হন]ময়য় [অর্থাৎ] ব্রহ্মবিৎ, পরমেশ্বর হইতে আপনাকে অভিয়রূপে যিনি দর্শন করেন, তাহারে ব্রহ্মবিৎ বলা যায়। আমাকেই বাহারা আশ্রেয় করেন, [অর্থাৎ] বাহারা কেবল জ্ঞান-নিষ্ঠ, এই

প্রকার বহু ব্যক্তি পরমাত্মবিষয়জ্ঞানরপ তপস্তা দ্বারা পরমগুদ্ধি লাভ করিয়া মদ্রাব [অর্থাৎ] ঈশ্বরভাব, [বান্তবপক্ষে] মোক্ষই প্রাপ্ত ইইরাছেন। অন্ত তপস্তা প্রভৃতির অপেকা না করিয়া কেবল জ্ঞাননিষ্ঠ [ইইয়াই মোক্ষলাভ করিয়া থাকেন], ইহাই প্রতিপাদন করিবার জন্ম জ্ঞানতপ্রসা এই প্রকার বিশেষণ [উপন্তক্ত ইইয়াছে]॥১০

যে যথা মাং প্রপদ্মন্তে তাংস্তথৈব ভজাম্যহম্।
মম বলু নিবুবর্ত্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ দর্ববশঃ॥ ১১

আর্য়। যে মাং যথা প্রপছতে, অহং তান্ তথৈব ভজামি। হে পার্থ!
মনুষ্যাঃ সর্কাশঃ (সর্কপ্রকারে:) মম বর্জ অনুবর্ততে ॥ ১১

অকুবাদ। যে সকল ব্যক্তি যে প্রয়োজনের জন্ম আমাকে অবশয়ন করে, আমি তাহাদিগকে দেই প্রয়োজন দানে অনুগৃহীত করিয়া থাকি। সর্বপ্রকারেই মনুষ্যগণ আমারই পণের অনুসরণ করিয়া থাকে॥ ১১

ভাষ্য। তব তর্হি রাগদেষো স্তঃ, যেন কেভ্যুন্চিদেবাল্পভাবং প্রয়ন্থনি, ন সর্ব্বেভা ইত্যুচ্যতে—যে যথেতি। যে যথা যেন প্রকারেণ ষৎফলার্থিতরা নাং প্রপালন্ত, তাংস্তথৈব তৎফলদানেন ভজামি অনুগৃহ্লামি অহমিত্যেতং। তেবাং মোক্ষং প্রতি অনর্থিতাং। ন হেকস্থ মুমুক্ষ্ ফলার্থিত্বঞ্চ যুগপৎ সম্ভবতি। অতো যে ফলার্থিনঃ তান্ ফলপ্রদানেন, যে যথোক্তকারিণস্তৎ অফলার্থিনো মুমুক্ষবশ্চ, তান্ জ্ঞানপ্রদানেন, যে জ্ঞানিনঃ সন্মানিনো মুমুক্ষবশ্চ তান্ মোক্ষপ্রদানেন, তথা আর্ত্তান্ আর্ত্তিহরণেন ইত্যেবং যথা প্রপালস্তে যে তাংক্তানৈব ভজামীত্যর্থঃ। ন পুনঃ রাগদেষনিমিত্তং মোহনিমিত্তং বা কঞ্চিদ্ভজামি। সর্ব্বেগিপি সর্ব্বাবস্থিত মম ঈশ্বরন্থ বত্ব মার্গমন্ত্বিক্ত মন্ত্র্যাঃ। যৎকলার্থিত্বা যন্মিন্ কর্ম্বাণ অধিকৃতা যে প্রয়তন্তে তে মন্ত্র্যা উচ্যন্তে, হে পার্থ সর্ব্বশ্বকারিঃ॥ ১১

আনন্দগিরিটীকা। ঈশনঃ সর্বেভ্যো মোকং প্রযক্ষতি চেৎ. প্রাপ্তজ্ঞ-বিশেষণবৈরর্থং যদি তু কেভাশ্চিদেব মোকং প্রযক্ষেৎ তহি তহা রাগাদিমন্বাৎ অনীখনদাপপত্তিরিতি শকতে—তব তহীতি। যে মুমুক্ষবস্তুভ্যো মোক্ষমীখরো জ্ঞানসম্পদানদারা প্রযক্ষতি ফলাস্তরার্থিভ্যস্ত তত্ত্বপারাস্ক্রানেন তদেব দদাতীতি নাম্ম রাগদেবাবিতি পরিহরতি—উচ্যত ইতি। মুমুক্ষ্ণামীখরাম্মারিছেমপি ফলাস্তরার্থিনাং কৃতন্তদমুসারিছমিত্যাশস্ক্য ফলমত উপপত্তেরিতি ভারেন তৎফল-

শ্রেখরায়ত্তবাৎ তদম্বর্ভিমনাবশুক্ষিত্যাহ—মুম্রতি। ভগবদ্বচনভাগিনাং সর্বেষামের কৈবল্যমেকরপৎ কিমিতি নাহুগৃহতে তত্তাই—তেষামিতি | अञ्चामम्निः ट्यम्मार्थिषः आर्थनारेविष्ठारात्करेखव किः नखानिज्यानम् अर्थगारम् ভদমূপপত্তিং সাধন্বতি—ন হীতি। মুমুক্লুণাং ফলার্থিনাঞ্চ বিভাগে স্থিতে সতি অহগ্রহবিভাগং ফলিতমাহ—অত ইতি। ফলপ্রদানেনামুগৃহামীতি সম্বন্ধঃ। নিভানৈমিত্তিককর্মামুঠায়িনামেব ফলার্থিত্বাভাবে সতি চ মুমুক্ত্ব কথং তেম্মুগ্রহ ক্সাদিতি তত্ত্ৰাহ—যে যথোক্তেতি। জ্ঞানপ্ৰদানেন ভজামীত্যুত্তরত্ত্ব সম্বন্ধঃ। সস্তি কেচিৎ ত্যক্তসর্বকর্মাণো জ্ঞানিনো মোক্ষমেবাপেক্ষমাণাঃ তেম্বর্গ্রহপ্রকারং প্রকটয়তি—যে জ্ঞানিন ইতি। কেচিদার্ত্তাঃ সস্তো জ্ঞানাদিসাধনান্তররহিতা ভগৰস্তম্ এবাৰ্ত্তিমপহৰ্জ্মন্থবৰ্জন্তে তেষ্ ভগবতোহন্থগ্ৰহবিশেষং তথেতি। পূর্বাধ্ব্যাধ্যানম্পদংহরতি—ইত্যেবমিতি। ভগবতোৎস্থাহে নিমিত্তান্তরং নিবারয়তি—ন পুনরিতি। ফলার্থিতে মুমুক্তে চ জন্ত্নাং ভগবদমুসরণম্ আবশুকমিত্যন্তরার্দ্ধং বিভব্দতে — সর্ব্বেথা পীতি । সর্বাবস্থত্বং তেন তেনামানা পরতৈবেশ্বরভাবকানং, মার্গো জ্ঞানকর্মালকণ: । সমুষ্যগ্রহণাদিতবেষাম **ঈশ্বরদার্গামুবর্ত্তিস্ব**পর্যুদাস: স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—যুৎফলেতি। সর্ব্ব<u>ংপ্রকারৈর্ম</u>ন মার্গমন্থবর্ত্তন্তে ইতি পূর্ব্বেণ সম্বন্ধঃ॥ ১১

অনুবাদ। তবে ত তোমারও রাগ ও দেয় আছে, যে কারণ তুমি কোন কোন ব্যক্তিকেই আছাতাব প্রদান কর, সকলকে তাহা কর না, [এই প্রকারে ঈশরের পক্ষপাত আছে বলিয়া যদি কাহারও শলা হয়, তবে তাহার নিরাকরণ করিবার জন্ত] বলা যাইতেছে বে—বে, যথেতি। যে প্রকারে [অর্থাৎ] বে প্রয়োজনের বলে বে ফল লাভ করিবার জন্ত, যে সকল ব্যক্তি আমাকে আশ্রম করিয়া থাকে, তাহাদিগকে আমি সেই ফল প্রদান করিয়া অনুগৃহীত করিয়া থাকি, ইহাই তাৎপর্য্য। তাহারা মোক্ষ কামনা করে না। একই সময়ে একই ব্যক্তির মোক্ষাভিলাব ও ফ্লকামনা এই উভয়টি হইতে পারে না। অতএব বাহারা ফলপ্রার্থা, তাহাদিগকে ফল প্রদান করিয়া, যাহারা ফল কামনা করে না, অথচ বিহিত কর্ম্মের অনুষ্ঠান করে এবং মোক্ষ কামনাও থাকে, তাহাদিগকে জান প্রদান করিয়া, যাহারা জানী, সন্ন্যাসী ও মুমুক্, তাহাদিগকে মোক্ষ প্রদান করিয়া, এবং পীড়িত ব্যক্তিগণের পীড়া হরণ করিয়া,—এই প্রকার বে আমাকে বে ভাবে জন্তনা করে, তাহাকে সেই ভাবে আমি অনুগৃহীত করিয়া থাকি; ইহাই [আমার বাক্যের অর্থ]। রাগদ্বেষবদে বা নোহপ্রযুক্ত আমি কাহারও

সহিত ব্যবহার করি না। আমি সকল প্রকারেই সকল অবস্থাতে বিশ্বমান এবং ঈশর,—মন্ত্রগণ আমার মার্গ অন্তুসরণ করিরা থাকে, ফলকামনাপূর্বক কর্মে বাহারা অধিকৃত হইরা প্রবত্ন করে, তাহারাই এই স্থলে মন্ত্রাশক্ষের বারা উক্ত হউতেছে। সর্বশঃ এই শব্দের অর্থ সর্বপ্রকারে॥ ১১

কাজ্যস্তঃ কর্ম্মণাং সিদ্ধিং যজস্ত ইছ দেবতাঃ। ক্ষিপ্রং হি মাকুষে লোকে সিদ্ধির্ভবতি কর্মজা॥ ১২

জ্মসূর্। ইছ কর্মণাং সিদ্ধিং কাজ্জন্তঃ দেবতাঃ বজ্ঞান্তে; মামুবে লোকে কর্মলা সিদ্ধিঃ কিপ্রং হি ভবতি॥ ১২

অনুবাদ। এই জগতে অনুষ্ঠিত কর্ম্মসমূহের সিদ্ধির কামনা করির।
[মন্থ্যগণ] দেবতাগণের পূজন করিয়া থাকে। এই মন্থ্যলোকে কর্মজনিত
সিদ্ধি সম্বয় হইয়া থাকে॥ ১২

ভাষ্য। বদি তবেশবক্ত রাগাদিদোবাভাবাৎ সর্বপ্রাণিব অন্প্রিপ্তকারাৎ তুল্যারাৎ সর্বকলদানসমর্থে চ প্রন্নি সতি বাহ্নদেবঃ সর্বনিতি আনেনৈব মুমুক্তবঃ সন্তঃ কর্মাৎ থামেব সর্বে ন প্রতিপছন্তে ইতি শৃণু তত্র কারণম্,—কাজ্জন্ত ইতি। কাজ্জন্তেই কর্মাণা সিদ্ধিং কলনিপাত্তিং প্রার্থরন্তা বজন্তে ইহ আমিন্ লোকে দেবতা ইন্দ্রাগ্যান্তাঃ "অল যো হক্তাং দেবতান্পান্তে অন্তোহসৌ অক্তোহসমি হৃষ্ণস্থীতি ন স বেদ বলা পশুরেব স দেবানাম্" ইতি শ্রুতঃ। তেরাং হি ভিরদেবতাযান্তিনাং কলাকাজ্জিণাং ক্রিপ্রং শীত্রং হি বর্মাৎ মান্তবে লোকে মন্ত্র্যুলনকে হি শাত্রাধিকারঃ। ক্রিপ্রং হি মান্তবে লোকে ইতি বিশেষণাৎ অন্তেম্বাপি কর্মাকলিমিং দর্শরতি ভগবান্। মান্তবে লোকে বর্ণাশ্রমাদিকর্মাণীতি শেবঃ। তেরাং বর্ণাশ্রমান্তবিকর্মণাং কলসিদ্ধিঃ ক্রিপ্রাণ্ড কর্মানা

আনক্ষণিরিটীকা। অমুগ্রাহ্যাণাং জ্ঞানকর্মামুরোধেন ভগবতা তে অমুগ্রহ-বিধানাং তন্ত রাগদ্বেবা যদি ন ভবতন্তর্হি তন্ত রাগান্তভাবাদেব সর্কের্ প্রাণিবন্ধু-গ্রহেছা তুল্যা প্রাপ্তা ন চ তন্তাং সত্যামেব ফলভারীয়সঃ সম্পাদনে সামর্থ্যং ন তু জগবতো মহতো মোক্ষাথ্যন্ত ফলভ প্রদানে শক্তিরিতি প্রযুক্তমপ্রতিহতক্সানেছা-ক্রিয়ালক্তিমতন্ত্বব সর্কাফল প্রদানসামর্থ্যাৎ তথা চ বথোক্তামুক্তিলুক্তায়াং সত্যাং দরি চ বথোক্তামার্থ্যবৃত্তি সতি সর্কে ফল্কফলাদভূদেয়াৎ বিম্পা মোক্ষমেবাপেক্ষমাণাভানেন দ্বামেব কিমিতি ন প্রতিপঞ্জেরিতি চোদয়তি— যদীতি। মোক্ষাপেক্ষা-

ভাষাৎ ভত্নপায়ভূতজ্ঞানাদপি বৈম্প্যান্তগৰৎপ্রাপ্ত্যভাবে হেভুমভিদ্ধান: সমাধ্যে— मৃণিতি। কর্মফলসিদ্ধিমিচ্ছতা কিমিতি মাস্থবে লোকে দেবতাপূজনমিব্যতে क्रवाह—क्रिश्रः होिछ । কর্মফলসম্পত্যর্থিনাং ষষ্ট্ ষষ্টব্যবিভাগদর্শিনাং তদর্শনে কারণমান্মাজ্ঞানমিত্যতা বৃহদারণ্যকশ্রতিমুদাহরতি—অথেতি। অবিষ্যাপ্রকরণো-পক্রমার্থমথেত্যুক্তম্। উপারনং ভেদদর্শনমিত্যনৃত্য কারণমাত্মাঞানং তত্ত্বতি দর্শরতি—্নেতি। যথাক্রদাদীনাং হলবহনাদিনা পশুরুপকরোত্যেবমজ্ঞা দেবা-দীনাং বাগাদিভিক্লপকরোতীত্যাহ—যথেতি। কিমিতি তে ফলাকাজ্জিণো ভিন্নদেৰতাধাজিনো জ্ঞানমার্গং নাপেক্ষণ্ডে তত্তোতরার্মমুত্তরছেন থোজয়তি-তেষামিত্যাদিন।। তত্মাদ্যথোক্তানামধিকারিণাং কর্মপ্রযুক্তং ফলং লোক-ৰিশেৰে ৰাটিভি সিধ্যভি ভন্নাৎ ভেষাং মোক্ষমার্গাদক্তি বৈমুণ্যমিত্যর্থঃ। মাকুষ-. লোকৰিশেৰণং কিমৰ্থমিত্যাশঙ্কাহ—মনুষ্যুলোকে হীতি। লোকান্তরেৰু ভৰ্ষি কৰ্মফলদিদ্ধিনান্তীত্যাশক্য কিপ্ৰবিশেষণভ তাৎপৰ্ব্যমাহ—ক্ষিপ্ৰমিতি। **কচিৎ কর্ম্মনসিদ্ধিরবিল্যেন** ভবত্যস্তত্ত্ব তু বিল্যেনেতি বিভাগে কো হেতুরিত্যা-্ৰা**ৰ্য সামগ্ৰীভা**বাভাবাভ্যামিত্যাহ—মাকুষ্ইতি। মহুব্যলোকে কৰ্মফলসিন্ধে: শৈস্যাৎ তদভিমুধানাং জ্ঞানমার্গ বৈমুধ্যং প্রায়িকমিত্যুপসংহরতি — তেষামিতি ॥১২٠

অমুবাদ। তুমি ঈশ্বর, তোমার রাগ বা দ্বেষ নাই, এই কারণ সকল প্রাণীরই উপর অম্প্রাহেছা তোমার তুল্য এবং তুমিই সকলের সকল প্রকার ফলদানে সমর্থ, এই প্রকার হইলেও তুমি থাকিতে কেন সকল ব্যক্তি মুমুক্ হইরা
বাক্সদেবই সকল জগং, এই প্রকার যথার্থ জ্ঞানের দ্বারা তোমাকে প্রাপ্ত
হর না [ইহা যদি তোমার জিজ্ঞান্ত হর, তাহা হইলে] তাহার কারণ
[বলিতেছি] প্রবণ কর। কাজ্রুত্ত ইত্যাদি। কর্ম্ম সকলের সিদ্ধি (অর্থাৎ)
ফলনিপ্রিকে প্রার্থনা করিয়া, এই লোকে [মধিকারী জীবগণ] ইন্দ্রাদি
দেবতাদিগের [প্রীতির জন্ত] যাগান্তর্ভান করিয়া থাকে। "বে ব্যক্তি
ভিন্ন দেবতার উপাসনা করে এবং আমি একজন পৃথক এবং দেবতা আমা
হইতে ভিন্ন, এই প্রকার জ্ঞান যাহার আছে সে [ভ্রান্ত]; আত্মতজ্ঞান
ভাহার হয় নাই; সে দেবতাগণের নিকট পশুর প্রায় প্রত্যীত হয়," এই
প্রকার প্রতিতেও নির্দিষ্ট আছে। সেই সকল ফলাকাজ্জী ও ভিন্নদেবতাবাজ্বিগণের এই মন্ত্র্যালোকে শীঘ্রই কর্ম্মফলের সিদ্ধি হইয়া থাকে; মন্ত্র্যালোকে এই প্রকার বিশেষরূপে নির্দেশ দ্বারা [ইহা ব্রিতে হইবে বে] জন্ত

লোকেও ফলসিদ্ধি হইলেও এই মন্ত্র্যুলোকে শীঘ্র বেমন কর্ম্মকলের সিদ্ধি হর, সেই প্রকার শীঘ্র অন্ত লোকে ফলসিদ্ধি হর না; কারণ মন্ত্র্যুলোকেই শাস্ত্রাধিকার আছে, ইহাই ভগবান্ দেখাইভেছেন। সেই সকল বর্ণাশ্রমাধিকারী ব্যক্তিগণের কর্মজনিত ফলসিদ্ধি শীঘ্রই হইরা থাকে, ইহাই তাৎপর্য্য ! ১২

> চাতুর্বর্ণ্যং ময়া স্থাইং গুণকর্ম্মবিভাগশঃ। তম্ম কর্ত্তারমপি মাং বিদ্ধ্যকর্তারমব্যয়ম্॥ ১৩

আন্তর্ম। মরা গুণকর্মবিভাগশ: চাতুর্মণ্যং স্টং, তক্ত (চাতুর্মণ্যক্ত) কর্ত্তারম্ অপি মাম্ অক্তারম্ [তথা] অব্যবং বিদ্ধি (কানীহি)॥ ১৩

অনুবাদ। আমি গুণ ও কর্ম্মের বিভাগানুদারে বান্ধণ, ক্রির, বৈশ্র ও শৃদ্র এই চারি বর্ণের সৃষ্টি করিরাছি। এই চাতুর্কর্ণের সৃষ্টের প্রতি আমি কারণ হইলেও, তুমি, বাস্তব পক্ষে আমাকে অকর্তা ও অবিনাশী বিশিরা জানিবে॥ ১৩

ভাষ্য। মাছ্য এব লোকে বর্ণাশ্রমাদিকণ্টাধিকার: নান্তের্ লোকের্
ইতি নিরম: কিংনিমিন্ত ইতি। অথবা বর্ণাশ্রমাদিপ্রবিভাগোপেতা মন্থ্রা
মম বর্ত্বান্থবর্ত্তন্তে সর্কাশ ইত্যুক্তং কন্মাৎ পূন: কারণাৎ নিরমেন ভবৈব
বন্ধ অন্থবর্তন্তে সর্কাশ ইত্যুক্তং কন্মাৎ পূন: কারণাৎ নিরমেন ভবৈব
বন্ধ অন্থবর্তন্তে নান্তত্ত্ব ইত্যুক্তাতে চাতুর্ব্বর্গমিতি। চাতুর্ব্বর্গং চন্ধার এব
বর্ণাশ্চাতুর্ব্বর্গং, মরা ঈশ্বরেণ স্প্তমুৎপাদিতম্,—"ব্রান্ধণোহত্ত মুখ্মাসীং"
ইত্যাদিশ্রমতে:। গুণকর্ম্মবিভাগণঃ গুণবিভাগণঃ কর্ম্মবিভাগণণক। গুণাঃ
সম্বরজন্তমাংসি। তত্র সান্থিকত্ত সরপ্রধানত্ত ব্রান্ধণত্ত শ্রেণালাক্রপইত্যাদীনি;
সংবোপসর্জনরজঃপ্রধানত্ত কর্ত্রের্গত শৌর্যুতেজঃপ্রভৃতীনি কর্ম্মাণি; তমউপসর্জনন্তমঃপ্রধানত্ত শুলুক্ত গুল্মবৈব কর্ম্ম—ইত্যেবং গুণকর্ম্মবিভাগণঃ চাতুর্ব্বর্গ্যং মরা স্থাইমিত্যর্থঃ।
তচ্চেদং চাতুর্ব্বর্গাং নাত্যের লোকের্, অতো মান্নবে লোকে ইতি বিশেষণান্।
হন্ত তহি চাতুর্ব্বর্গাং নাত্যের লোকের্, অতো মান্নবে লোকে ইতি বিশেষণান্।
হন্ত তহি চাতুর্ব্বর্গাং নাত্যের ইতি। উচ্যতে। যন্ত্রপি মারাসংব্যবহারেণ
তত্ত কন্মণঃ কন্তার্মপি সন্তং মাং প্রমার্থতো বিদ্ধি অকন্তার্মতএব অব্যরমসংসারিণং চ মাং বিদ্ধি। ১০

আনন্দগিরিটীকা। মহযালোকে চাতুর্বর্ণ্যং চাতুরাশ্রম্যমিত্যনেন ছারেণ কর্মাধিকারনিরমে কারণং পৃচ্ছতি—মাকুষ্এবৈতি। আদিশব্দেনাবস্থাবিশেষা

विवकारह । श्रकातास्वरतम तृजाश्वामशृक्षकः हास्रम्थाभव्यक्त-व्याप्तिकार-দিনা। প্রশ্নবরং পরিহরতি—উচ্যতইতি। তর্হি তব কর্ত্বভোক্ত্বসম্ভবাৎ ব্দাদিতৃন্যদেন অনীখরছমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ত্ত্ত্তে। ঈখরশু বিষমস্টিং বিদ-ধানক্ত স্টেবৈষম্যনিৰ্কাহকং কণয়তি—গুণেতি। গুণবিভাগেন কর্মবিভাগ-ক্ষেন চাতুর্বর্ণান্ত স্ষ্টিমেবোপদিষ্টাং স্পষ্টরভি—তাত্তেতাাদিনা। প্রতিবিধানং প্রকৃতমুপদংহরতি—তচ্চেদ্মিতি। মহুষ্যলোকে পরং বর্ণাশ্রমাদি-পুর্বকে কর্মণ্যধিকায়ঃ তত্ত্বৈব বর্ণাদেরীখরেণ স্প্রত্থায় লোকান্তরেষু তত্ত্ব বর্ণা-**ভভাবাদীশ্ব**মেব চাতুর্বর্ণ্যাশ্রমাদিবিভাগিনোহধিকারিণোহমুবর্ত্তস্তে বর্ণাদেন্তদ্ব্যাপারত চ স্ট্রবাৎ তদ্ম্বর্জনত যুক্তবাদিত্যর্থ:। তত্তেত্যাদিবিতীয়ভাগা-পোহং চোম্বনমুদ্রবতি — হস্তেতি। यদি চাতুর্ব্বর্ণ্যাদিকর্ত্বাদীশ্বরম্ব প্রাপ্তকো-নিরমোহভিমতত্তহি তদ্বিষয়স্ট্যাদেশুরিষ্ঠব্যাপারত চ ধর্মাদেনিবর্ত্তকত্বাৎ তৎফলত কর্তৃগামিদ্বাৎ কর্তৃঘভোক্তৃ ময়োন্ধরি প্রসঙ্গাৎ নিত্যমুক্তদাদি তে ন স্থাদিত্যর্থ:। মাররা কর্তৃত্বং প্রমার্থত চাকর্তৃত্বমিত্যভাগগমারিত্যমূক্ততাদি সিধ্যতীভূয়েরমাহ— উচ্যতইতি ৷ মায়াপ্রবৃত্তেন * সংব্যবহারেণ চাতুর্বর্ণ্যাদেন্তৎকর্মণশ্চ ষম্বপি কর্ত্তাহং তথাপি তথাবিধং মাং পরমার্থতোহকর্তারং বিদ্ধীতি যোজনা। অকর্তৃত্বা-দেবাভোকুষনিদ্ধিরিত্যাহ—জাতএবেতি॥ ১৩

অনুবাদ। সম্ব্যলোকেই বর্ণ ও আশ্রমাদিবিহিত কমে অধিকার আছে, অন্ত লোকে নাই, এই প্রকার নিরমের কারণ কি ? [এইরপ অবতারণার চাতুর্বল্য ইত্যাদি শ্লোকের আরম্ভ হইতেছে]; কিংবা [অন্তপ্রকারেও এই স্লোকটির উথিতি কেন হইল, তাহা বলা বাইতে পারে] বাহাদের মধ্যে বর্ণ ও আশ্রম বিভাগ প্রচলিত আছে, সেই মম্ব্যুগণ সর্বপ্রকারে আমার বত্মে রই অম্বর্তন করে, ইহা বলা হইরাছে; কিন্তু কি কারণে তোমারই পথের অম্পূরণ করে, অন্তের পথের অম্পূরণ করে না ? এজন্ত (এই প্রকার প্রশ্নের উত্তর দিবার জন্ত) চাতুর্বর্ণ্যম্ ইত্যাদি শ্লোকের আরম্ভ ইইতেছে)।

বান্ধণ, ক্ষত্রির, বৈশ্য ও শুদ্র এই চারিটি বর্ণ ই চাতৃর্বর্ণ্য [শব্দের অর্থ]; আমি ঈশ্বর, এই চাতৃর্বর্ণোর উৎপাদন করিয়াছি। শ্রুতিতে উক্ত হইরাছে, "ব্রাহ্মণ ইহার (এই পরমেশ্বরের) মুথ [হইতে] উৎপন্ন হইন্নাছিল" ইত্যাদি। গুণবিভাগ ও কর্মবিভাগের অফুসারেই [আমি চাতৃর্বর্ণা স্টে করিয়াছি]।

মান্নাব্ৰন্তাদিসংব্যবহারেণ ইতিবা পাঠ: ।

শুণ শব্দের অর্থ সন্থ রক্ষঃ ও তমঃ। তাহার মধ্যে সান্ধিক (অর্থাৎ) সন্ধাধনপ্রধান ব্রাহ্মণের কর্ম, শম দম ও তপ্সা প্রভৃতি। বাহার সন্ধাধন প্রকৃতি নহে,
আগচ রজ্যোগুণই প্রধান, সেই ক্রিরজাতির কর্মা শৌর্য ও তেঙ্কঃ প্রভৃতি।
তমোগুণ বাহার অপ্রধানভাবে অর্ক্তিত এবং রজোগুণই বাহার প্রধান, সেই
বৈশ্য জাতির কর্মা ক্রিব বাণিজ্য প্রভৃতি। বাহার রজোগুণ অপ্রকৃত্তি ভাবে
অবস্থিত, অথচ তমোগুণই প্রধান, সেই শুদ্র জাতির কর্মা কেবল গুলাবা। এই
প্রকার গুণামুসারে কর্মবিভাগপূর্বক আমি ব্রাহ্মণ ক্রির বৈশ্য ও শুদ্র এই
চারিটি বর্ণের স্থাটি করিয়াছি, ইহাই [তাৎপর্য্য] অর্থ; এই সেই চাতুর্ব্বর্ণ্য অন্ত
লোকে বিশ্বমান নাই, ইহাই প্রতিপাদন করিবার জন্ম নাম্বলোকে এই প্রকার
বিশেষ করিয়া বলিয়াছেন। তুমি যদি চাতুর্ব্বণ্য স্থাটি করিয়া পাক, তাহা
হইলে, স্টিকর্মের কর্ত্ব এবং তাহার ফলের সহিত তোমার বোগ আছে;
স্থতরাং তুমি নিত্যমুক্ত এবং নিত্যেশ্বর হইতে পার না, এই প্রকার অর্জুনের
শহা সন্তাবনা করিয়া [ভগবান্] বলিতেছেন, বে যন্তুপি মায়াময় ব্যবহার বশতঃ
আমি সেই [জগৎ] স্টেরপ ক্রিয়ার কর্ত্তা তথাপি পারমাণিক ভাবে আমি
অকর্ত্তা, অব্যর এবং অসংসারী, এই ভাবেই তুমি আমাকে জানিও॥ ১৩

ন মাং কর্ম্মাণি লিম্পন্তি ন মে কর্ম্মফলে স্পৃহা। ইতি মাং যোহভিজানাতি কর্ম্মভির্ন দ বধ্যতে॥ ১৪

অন্বয় । কর্মাণি মাং ন লিম্পন্তি, কর্ম্মকলে মে স্পূহা [অপি ন বর্ত্ততে] ইতি (এবং প্রকারেণ) বঃ মাম্ অভিজানাতি, স কর্মন্তিন বধ্যতে ॥ ১৪

অনুবাদ। কর্মাসমূহ আমাকে লিপ্ত করিতে পারে না, জামার কর্মাফলেও স্পৃহা নাই। এইভাবে যে ব্যক্তি আমাকে জানিতে পারে, দে কর্মের ছারা [সংসারে] বদ্ধ হয় না॥ ১৪

ভাষ্য। যেষাং তু কর্মাণাং কর্ত্তারং মাং মস্ত্রস্থে, পরমার্থতন্তেরামকর্ত্তিবাহং যতঃ নেতি। ন মাং তানি কর্মাণি লিম্পস্তি দেহাস্তারম্ভকত্বেন অহক্ষারাভাবাং। ন চ তেবাং কর্ম্মণাং ফলেরু মে স্পৃহা তৃষ্ণা। যেষাং তু সংসারিণাম্ অহং কর্ত্তেত্তিমানঃ কর্মান্ত স্পৃহা তৎফলেরু চ, তান্ কর্ম্মণি লিম্পস্তি ইতি বুক্তম্, তদভাবার মাং কর্মাণি লিম্পস্তীত্যেবং, যোহস্কোহিপি মামাত্মহেন অভিজানাতি নাহং কর্ত্তা, ন মে কন্মফলে স্পৃহেতি স কর্ম্মতিন বধ্যতে। তস্যাপি ন দেহাস্থারম্ভকাণি কর্মাণি ভ্রস্তীত্যর্থ:॥১৪

আনন্দগিরিটীকা। ঈশরন্ত কর্ত্বভোক্ত্বরোর্জন্ততাহভাবে কর্মতংফল সংক্রাইবৃর্ধাং ফলতীত্যাহ—যেষাং ত্বিতি। কর্মতংফলসংস্পর্শন্তমীশ্বরং মাং পশ্রতো দর্শনাম্বরপং ফলং দর্শরতি—ন মামিতি। তানি কর্মণীতি ষেষাং কর্মপামহং কর্ত্তা তবাভিমতন্তানীতি বাবং। দেহেক্রিরাছারম্ভক্ষেন তেরাং কর্মপামীশ্বরে সংস্পর্শভাবে তক্ত তৎকরণাবস্থারামহঙ্কারাভাবং হেতৃং করোতি।—
আহঙ্কারাভাবাদিতি। কর্মফলত্কাভাবাচেশ্বরং কর্ম্মাণি ন লিম্পন্তীত্যাহ—
ন চেতি। উক্তমেব প্রপঞ্চরতি—হ্যাং ত্বিতি। তদভাবাং কর্ম্মস্বহং কর্ত্তেত্যভিমানক্ত তৎফলের্ স্পৃহায়াশ্চাভাবাদিত্যর্থ:। ঈশরক্ত কর্ম্মনির্দেশ্বেপি ক্ষেত্রভক্ত কিমারাতমিত্যাশব্যোক্তরার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—ইত্যেবমিতি। অভিজ্ঞানপ্রকারমতিনরতি—নাহ্মিতি। জ্ঞানফলং কথ্যতি— স কর্ম্মভিরিতি। কর্ম্মান্ত্রান্তরিতি ত্বির্ধানির্দ্ধিক্রিতি ত্বির্দ্ধির বিশ্বরতি—ত্বস্থাপীতি॥ ১৪

অমুবাদ। যে সকল কর্ম্মের কর্তা বলিয়া তুমি আমাকে জানিতেছ, পরমার্থতঃ আমি তাহাদের কর্তা নহি, যে কারণ—ন ইত্যাদি। দেহাদির আরম্ভক অহঙ্কার নাই ঘলিয়া, কর্ম্ম সকল আমাকে লিপ্ত করিতে পারে না। দেই সকল কর্ম্মের ফলসমূহেও আমার স্পৃহা (অর্থাৎ) তৃক্ষা নাই। যে সকল সংসারিগণের "আমি কর্ত্তা" এই প্রকার অভিমান আছে, কন্মসমূহ তাহাদিগকেই লিপ্ত করিয়া থাকে, [বাস্তবিক পক্ষে] এই প্রকারই হওয়া উচিত। সেই প্রকার অভিমান না থাকায়, কর্ম্ম সকল আমাকে লিপ্ত করিতে পারে না। ইবা এই প্রকারই [জানিবে] অক্সও যে কোন ব্যক্তি আমাকেই আত্মা বলিয়া জানেন, আমি কর্ত্তা নহি, আমার কর্ম্মফলেও স্পৃহা নাই, এই প্রকার ভাবেই [বিনি আমাকে জানেন] সে ব্যক্তিও কর্মের দ্বারা বদ্ধ হন না। কর্ম্ম সকল [অক্স্টিত হলৈও] তাঁহার দেহাদির আরম্ভক হয় না, ইহাই অর্থা।:৪

এবং জ্ঞাত্বা কৃতং কর্মা পূর্টেররপি মুমুক্ষুভিঃ। কুরু কর্মোব তম্মাৎ ত্বং পূর্টেরঃ পূর্ববতরং কৃতম্॥ ১৫

আত্ময়। পূর্বৈরপি (জনকাদিভি:) মুমুক্জি: এবং জ্ঞাড়া কর্ম ক্তম্, ভন্মং পূর্বে: পূর্বেতরং ক্তং কর্মেব ডং কুরু॥ ১৫

, জনুবাদ। এই প্রকার জানিয়াই, পূর্বতন মুমূকুগণও কার্ব্য করিয়াছেন, জভএব পূর্বতন মুমূকুগণ কর্তৃকও অমুষ্ঠিত এই অতি প্রাচীন [বৈদিক] কর্ম ভূমিও কর [বিহিত কর্ম তোমার পরিত্যাজ্য নহে] ॥১৫

ভাষ্য। নাহং কর্তা ন মে কর্মানলে স্পৃহেতি—এবমিতি। এবং জাদা কৃতং কর্ম পূর্বৈরপি অতিক্রান্তৈ মুমুকুভি:, কুরু তেন কর্মাব দং ন তৃক্ষীমাসনম, নাপি সন্ন্যাস: কর্ত্তব্য:। তত্মাৎ দং পূর্বৈরপি অনুষ্ঠিতদাৎ বছনাত্মজন্মং তদা আত্মজন্তং, তত্ত্বিক্রেলোকসংগ্রহার্থং পূর্বৈর্তনকাদিতিঃ পূর্বতরং কৃতং নাধুনাতনং কৃতং নির্বৃত্তিতম্ ॥ ১৫

আনন্দ্গিরিটীকা। তব কর্মতৎফলসম্বন্ধভাবে তথা জানবতন্ত তদ-সম্বন্ধ মমাপি কিং কর্মণেত্যাশক্ষ্য কর্মণি কর্তৃত্বাভিমানং তৎফলে স্পৃহাঞ্চাঞ্চম মুমুক্ত্বৎ দ্বয়া কর্ম কর্ত্বব্যমেবেত্যাহ—নাহমিত্যাদিনা। নাহং কর্ত্তেত্য-বমাদি পরাম্প্রতে। তেন পূর্ব্বের্ম্মুক্ত্বির্মন্তিভিত্তেন হেতৃনেত্যর্থ:। কর্মে-বেত্যেবকারার্থমাহ—নেত্যাদিনা। তংশকত ক্রিয়াপদেন সম্বন্ধ:। তন্মা-দিত্যুক্তমেব স্ট্টরতি—পূর্ব্বিরিতি। যহকং কিং মম কর্মণেতি তত্ত্ব দ্বমক্ষো বা তর্বিদ্বা বন্ধজ্ঞত্তদা চিত্তভ্জার্থং কৃক কর্মোত্যাহ—যদীতি। দিতীয়ং প্রত্যাই—তত্ত্ববিদিতি। কৃক কর্মোত সম্বন্ধ:। প্রক্রিম্ব্রিকিনিতোবাবতা কিমিতি বিবেকবতা ময়া তৎ কর্ম্বব্যমিত্যাশক্ষাহ—জনকাদিভিরিতি। তে তদ্বৈ * সম্পাত্ম কর্ম কৃত্বস্থো ন তদিদানীমপ্রামাণিকত্বাদক্ষ্যন্তর্মত্যাশক্ষাহ—পূর্ব্বত্র-মিতি॥ ১৫

অমুবাদ। আমি কর্ত্তাও নিই, আমার কর্মফলেও স্পৃহা নাই। এই প্রকার ইত্যাদি। পূর্ব্ব (অর্থাৎ) অতীত মুমুক্সগণও এই প্রকার জানিয়া, বে কারণ কর্মের অমুষ্ঠান করিয়া গিয়াছেন, তুমিও সেই কারণেই সেই কর্মের অমুষ্ঠান কর। চুপ করিয়া বিসয়া গাকা, বা সয়্ল্যাস, তোমার পক্ষে কর্ভব্য নহে। বে কারণে প্রাচীন মনীবিগণও কর্ম্ম করিয়া গিয়াছেন, এই কারণে তোমার কর্ম্মই কর্ত্তব্য; তুমি যদি অনাত্মক্ত হও, তবে আত্মগুদ্ধির জন্ম কর্মের অমুষ্ঠান কর; আর যদি তুমি তত্মক্ত হও, তবে লোকসংগ্রহার্থ কর্মের অমুষ্ঠান কর; আর যদি তুমি তত্মক্ত হও, তবে লোকসংগ্রহার্থ কর্মের অমুষ্ঠান কর; পূর্বব্যন জনক প্রভৃতি মনীবিগণও এই কর্ম্ম সম্পাদন করিয়া গিয়াছেন, অত্যব্য বাহ্য বাহ্য অধুনাতন নহে, ইহা অতি প্রাচীন [কাল হইভেই] প্রবর্ত্তিত [আছে] ॥ ১৫

কিং কর্ম্ম কিমকর্ম্মেতি কবয়োহপ্যত্র মোহিতাঃ। তৎ তে কর্ম্ম প্রবক্ষ্যামি যজ্জাত্বা মোক্ষ্যদেহশুভাৎ॥ ১৬

তাবদেবম্ ইতিবা পাঠঃ।

অন্বয়। কিং কর্ম (কর্ত্তব্যং), কিম্ অকর্ম (ন কর্ত্তব্যম্) ইতি জত্ত (বিবরে) কবরঃ (বিঘাংসঃ) অপি মোহিতাঃ (মোহং প্রাপ্তাঃ), তৎ (তন্মাৎ) তে (তুড্যং) কর্ম প্রবিক্যামি, বং (কর্মা) জ্ঞাড়া অক্তভাৎ মোক্যাসে॥ ১৬

অসুবাদ। কোন্ট কর্ম (কর্ত্তব্য), কোনট অকর্ম (অকর্ত্তব্য), এই বিবরে পণ্ডিতগণও মোহপ্রাপ্ত হইয়াছেন; অতএব আমি তোমাকে কর্ম-বিবরে উপদেশ প্রদান করিতেছি, যাহা জানিয়া তৃমি অণ্ডভ (সংসার) হইতে মুক্তি লাভ করিতে পারিবে॥ ১৬

ভাষ্য। তত্ত কর্ম চেৎ কর্ত্তব্যং, দ্বদ্বচনাদেব করোম্যহং কিং বিশেষিতেন পূর্বৈ: পূর্বভারং কৃত্তমিতি উচ্যতে, বন্ধান্মহদ্বৈষমং কর্ম্মণি কথং— কিং কর্মোতি। কিং কর্ম্ম, কিং চ অকর্মোতি কবরো মেধাবিনোহণি অত্ত ভাষ্মিন্ কর্মাদিবিষয়ে মোহিতাঃ মোহং গতাঃ। অতন্তে তৃভ্যমহং কর্ম অকর্ম্ম চ প্রবিক্যামি, বজ্জাদা বিদিদা কর্মাদি মোক্যাসে অগুভাৎ সংসারাহ॥ ১৬

আনন্দণিরিটীকা। কর্মবিশেষণমান্দিপতি—তত্ত্রতি। মন্থবালোকঃ
সপ্তম্যর্থ:। কর্মণি মহতো বৈষমান্ত বিশ্বমানদাৎ তম্ম পূর্বৈরম্প্রতিদেন পূর্বতরদ্বেন
চ বিশেষিত্রত্বে তর্মিন্ প্রবৃত্তিন্তব স্করেতি যুক্তং বিশেষণমিতি পরিহরতি—
উচ্যতইতি। কর্মণি দেহাদিচেষ্টারূপে লোকপ্রসিদ্ধে নাস্তি বৈষম্যমিতি
শব্দতে—কথমিতি। বিজ্ঞানবতামণি কর্মাদিবিষয়ে ব্যামোহোপপত্তেঃ স্নতরামেব তব তদ্বিষয়ে ব্যামোহসম্ভবাৎ তদপোহার্থমাপ্তবাক্যাপেক্ষণাদন্তি কর্মণি
বৈষম্যমিত্যন্তরমাহ—কিং কর্ম্মেতি। তত্তে কর্মোত্যনাকারাম্বন্ধেনাপি পদং
ভেক্তব্যন্। কর্মাদিপ্রবচনক্ত প্রয়োজনমাহ—যজ্ত্ত্তাত্ত্বতি। তৎকর্মাকর্ম্ম
চেতি সক্কঃ। অতো মেধাবিনামপি যথোক্তে বিষয়ে ব্যামোহক্ত স্বাদিত্যর্থঃ ॥১৬

অমুবাদ। কর্ম বদি করিতেই হয়, তবে তোমার বচনামুসারেই আমি করিব; এই কর্ম চিরস্তন এবং অতীত মনীবিগণও ইহার অমুষ্ঠান করিয়া গিরাছেন, এই প্রকারে এই কর্মে বিশেষণের উপস্থাস করিবার কি প্রয়োজন, [এই প্রকার বদি অর্জ্জ্ন মনে করেন, তাহা হইলে] ইহার উত্তর এই বলা বাইতেছে বে, বেহেতু কর্ম্মবিষরে মহৎ বৈষম্য [দেখিতে পাওয়া বার]; কি প্রকার ? [তাহা শুন] কিং কর্ম্ম ইত্যাদি ॥ কি কর্ম্ম ও কি অকর্ম্ম এই প্রকারে কন্মবিষরে কবি (অর্থাৎ) মেধাবিগণও মোহিত (অর্থাৎ) মোহপ্রাপ্ত। এই কারণে আমি তোমাকে কর্ম্ম ও অকর্ম্ম বিষরে উপদেশ প্রদান করিতেছি, বাহার জ্ঞান লাভ করিরা তুমি গ্রশুত (অর্থাৎ) সংসার হইতে মৃক্তি লাভকরিবে ॥ ১৬

কর্ম্মণোছপি বোদ্ধব্যং বোদ্ধব্যঞ্চ বিকর্ম্মণঃ। অকর্ম্মণশ্চ বোদ্ধব্যং গহনা কর্ম্মণো গতিঃ॥ ১৭

আন্থয়। হি (যগাৎ) কর্মণ: (শাস্ত্রবিহিতস্ত) বোদ্ধব্যম্ (অন্ধি); তথা বিকর্মণ: (প্রতিষিদ্ধস্ত কর্মণ:) বোদ্ধব্যম্ [অন্তি।] তথা অকর্মণ: চ [অপি] বোদ্ধব্যম্ [অন্তি]; কর্মণো গতি: (তবং) গহনা (ছক্তেরি)॥ ১৭

অনুবাদ। যে কারণে, শাস্ত্রবিহিত কর্মবিষয়েও জ্ঞাতব্য আছে, এই প্রকার শাস্ত্রে প্রতিষিদ্ধ কর্ম এবং অকর্ম (অর্থাৎ) কর্মনিবৃত্তিবিষয়েও [বহুতর] জ্ঞাতব্য আছে; কর্মের তত্ত্ব অতিশয় হুর্জের॥ ১৭

আনন্দ গিরিটীকা। কর্মণোৎকর্মণশ্চ প্রাসিদ্ধাৎ তন্ধিবরে ন কিঞ্চিন্-বোদব নিতি চোল্পমন্থ নিরন্ততি—ন চেতি। তওঁ হেছাকাজ্যাপূর্বকমনস্তর স্লোকমবতারয়তি—কৃত্মাদিতি। ত্রিছপি কর্মাকর্মবিকর্মস্থ বোদবামন্তীতি বন্মাদধ্যাহারস্তন্মান্দীয়ৎ প্রবচনমর্থবিদিতি যোজনা। বোদবাসন্তাবে হেতুমাহ—যন্মাদিতি। ত্রিতরং প্রক্কত্যান্তন্স্যা গহন্তবচনমর্ক্তমিত্যাশব্যান্তন্সহনস্যোগলকণার্থবমূপেত্য বিবক্ষিত্সর্থমাহ—কৃত্মাদীনামিতি॥ ১৭

অনুবাদ। ইহা তুমি বিবেচনা করিও না যে, দেহাদির চেষ্টাকেই কর্ম বলে, তাহা ত সর্কলোক-বিদিত; এইরপ দেহাদির অক্রিয়াই অকর্মা [তাহাও সকলে জানে], (অর্থাৎ) কর্মমাত্র পরিত্যাগ করিয়া অবস্থিতি; মতরাং সেই বিষয়ে [অধিক আর] কি ব্ঝিতে হইবেঁ ? [ব্ঝিতে বদি কিছু অবশিষ্ট না আনকে তবে] কেন, বলা হাইতেছে বে, কর্মণঃ ইত্যাদি। বে কারণ শাস্ত্রবিহত, কর্মের সম্বন্ধেও জ্ঞাতব্য আছে, [সেইরূপ] বিকর্ম (অর্থাৎ) প্রতিষিদ্ধ কর্ম বিষয়েও জ্ঞাতব্য আছে, এবং অকর্ম (কর্ম পরিহার প্র্বৃক্ষ অবস্থান) সম্বন্ধেও জ্ঞাতব্য আছে। খোদ্ধব্য (অর্থাৎ ক্ষাতব্য) এই পদটির অধ্যাহার তিন স্থলেই কর্ম্বর্য। কারণ, কর্মের গতি (অর্থাৎ) তত্ব গহন (আর্থাৎ)

বিষম, ছজের; কর্মণঃ এই পদটি উপলক্ষণমাত্র, এই পদের দারা বিকর্ম এবং অকর্মের গ্রহণ করিতে হইবে। কর্ম বিকর্ম এবং অক্রমের যথার্থ স্বরূপ ছজেরি, ইহাই অর্থ॥ ১৭

> কর্মাণ্যকর্ম যঃ পশ্যেদকর্মণি চ কর্ম যঃ। স বুদ্ধিমান্ মমুষ্যেয়ু স যুক্তঃ কৃৎস্নকর্মকৃৎ॥ ১৮

অনুষ্ । যা কামণি অকাম পাঞাং [তথা] যা অকামণি কাম চ পাঞাং, সাঃ [এব] মনুষোধু বুদ্ধিমান্, সাঃ [এব] যুক্তা, সাঃ [এব] কুংলকামিকং ॥ ১৮

আমুবাদ। যে ব্যক্তি কর্মে অকর্ম দেখিরা থাকেন এবং অক্রেম কর্ম দেখিরা থাকেন, সেই ব্যক্তিই মুখ্যগণের মধ্যে বৃদ্ধিমান্, সেই ব্যক্তি বোগী এবং তিনিই সক্ষ প্রকার কর্মের অফুঠাতা॥ ১৮

ভাষা। কিং পুনন্তবং কর্মাদের্যনবোদ্ধবাং বক্ষ্যামীতি প্রতিজ্ঞাতম্ ? উচ্যতে—কর্মণীতি। কর্মণি, কর্ম ক্রিয়ত ইতি ব্যাপারমাত্রং তন্মিন কর্মণি, অকর্ম কর্মাভাবং যা পশ্ভেদকর্মণি চ কর্মাভাবে কর্ভন্তম্বাৎ প্রবৃত্তিনিবৃত্ত্যোব স্থ্রপ্রাপ্যৈব হি সর্ব্ব এব ক্রিয়াকারকাদিব্যবহারঃ অবিভাভূমাবেব কর্ম্ম যঃ পঞ্চেৎ পশ্রতি স ৰুদ্ধিমান মহুংষ্যৰু, দ যুক্তো বে।গী ক্ৰংস্কৰ্মক্তে দ ইতি ভূষতে কৰ্মাকৰ্মণো-রিতরেতরদশী। নমু কিণিদং বিরুদ্ধমূচ্যতে কর্মণ্যকর্ম বং পঞ্চেদিতি অকর্মণ চ কর্মেতি। নহি কর্ম অকর্ম ভাদকর্ম বা কর্ম তত্র বিরুদ্ধং কণং পগ্রেদ দ্রষ্টা ? নমু অক্টের্যন প্রমার্থতঃ সংক্রাবদবভাসতে মৃচ্দৃষ্টেলে কিন্তু তথা কটার অকর্মবং, তত্র যথাভূতদর্শনার্থমাহ ভগবান্ কর্মণাকর্ম যঃ পঞ্চেদিত্যাদি। ন বিক্লম্। বৃদ্ধিমন্বাগ্যপপত্তেশ্চ বোদ্ধব্যমিতি চ যথাভূতদর্শনমূচ্যতে। নচ বিপরীতজ্ঞানাদশুভান্মোকণং স্থাদ যত্ন আজা মোক্যাসেহশুভাদিতি চোক্তম। তমাৎ কর্মাকর্মণী বিপর্যায়েণ গৃহীতে প্রাণিভি:—তদ্বিপর্যায়গ্রহণনিবৃত্তার্থং ভগৰতো বচনং "কর্ম্মণ্যকর্ম যঃ" ইত্যাদি। ন চাত্র কর্মাধিকরণমকর্মান্তি কুণ্ডে বদরাণীব, নাপ্যকর্মাধিকরণং কর্মান্তি কর্মাভাবদাকরণঃ। মতো বিপরীত-গ্ৰীতে এব কৰ্মাকৰ্মণী লৌকিকৈৰ্যথা মৃগভৃষ্ণান্ত্বামুদকং গুক্তিকানাং বা রক্তস্ ॥

নমু কর্ম কর্মের সর্বেষাং ন কচিদ্ব্যভিচরতি। তন্ন নৌস্তম্ব নাবি গচ্ছস্ত্যাং ভটন্থের অগতির নগের প্রতিক্লগতিদর্শনাৎ দ্রের চক্ষা অসন্ধিক্টের গচ্ছৎস্থ গত্যভাবদর্শনাৎ। এবমিহাপি অকর্মণি অহং করোমীতি কর্মদর্শনং কর্মণি চ অকর্মদর্শনং বিপরীতদর্শনং যেন তরিরাকরণার্থমূচ্যতে কর্মণ্যকর্ম যঃ
পশ্রেদিত্যাদি। তদেতত্ত্বপ্রতিবচনমিপি অসকং অত্যস্তবিপরীতদর্শনভাবিততরা
মোমুহ্মানো লোকঃ শ্রুতমপ্যসক্তব্বং বিশ্বত্য মিথ্যাপ্রসক্ষমবতার্য্যাবতার্য্য
চোদরতীতি পুনঃ পুনকত্তরমাহ ভগবান্ ছবি জ্ঞেয়তং চালক্ষ্য বস্তনঃ।
"অব্যক্তোহয়মচিস্ত্যোহয়ম্" "ম জায়তে মিয়তে" ইত্যাদিনা আত্মনি কর্মাভাবঃ
শতিস্বতিস্থারপ্রসিদ্ধ উক্তো বক্ষ্যমাণশ্চ। তিম্মন্ আত্মনি কর্মাভাবেহকর্মণি
কর্মবিপরীতদর্শনসত্যস্তনিরূচম্।

ষতঃ "কিং কর্ম কিমকর্মেতি ক্বরোহপ্যত্র মোহিতাঃ।" দেহাছাশ্রহং কর্ম আদ্ধান অধ্যারোপ্য অহং কর্ত্তা মনৈতৎ কর্ম ময়াছ্য ফলং ভোক্তব্যম্ ইতি চ। তথাহং ভূফীং ভবামি যেনাহং নিরায়াসোহকর্মা স্থা ছামিতি কার্য্যকারণা-শ্ররব্যাপারোপরমং তৎকৃতং চ স্থাধিত্বমাত্মনি অধ্যারোপ্য ন করোমি কিঞ্চিৎ ভূফীং স্থামানিত্যভিমন্ততে লোকঃ। তত্ত্রেদং লোকছা বিপরীতদর্শনাপনয়নায়াছ ভগবান্ কর্মণ্যকর্ম যঃ পশ্রেদিত্যাদি। অত্রচ কর্ম ক্রেম্বি সংকার্যকরণাশ্রমং কর্মরহিতেইবিক্রিয়ে আদ্মনি সর্কের্যন্তং যতঃ পণ্ডিতোহপ্যহং করোমীতি মন্ততে। অত আদ্মনমবেততয়া সর্কলোকপ্রসিদ্ধে কর্মণি নদীকুলস্থেষিব বৃক্ষেত্ব গতিঃ প্রাতিলোম্যেন অকর্ম কন্মাভাবং যথাভূতঃ গত্যভাবমিব বৃক্ষেত্ব যঃ পশ্রেদকর্মণিচ কার্যাকরণব্যাপারোপরমে কর্মবদান্যনি অধ্যারোপিতে ভূফীমক্র্ন স্থানাসে ইত্যহংকারাভিসন্ধিহেভূদ্ধাং তন্মিন্ অকর্মণি চ কন্ম বঃ পশ্রেম। য এবং কর্মাকর্মবিভাগজ্ঞঃ স ব্রিমান্ পণ্ডিতো মন্ত্রেম্ম্ স্ যুক্তো যোগী কুৎক্ষকর্মকচ সোহস্তভান্যাক্ষিতঃ, কৃতক্রত্যা ভবতীত্যর্থঃ।

অয়ং শ্লোকোহস্তণা ব্যাখ্যাতঃ কৈশ্চিৎ; কথং নিত্যানাং কিল কর্মণামীখরার্থেইস্কীরমানানাং তৎফলাভাবাদকর্মানি তাম্যাচ্যন্তে গৌণ্যা বৃত্ত্যা। তেরাঞ্চাকরণমকর্ম তচ্চ প্রত্যবারফলত্বাৎ কর্ম্মোচ্যতে গৌণ্যেব বৃত্ত্যা। তত্র নিত্যে
কর্মনি অকর্ম যঃ পশ্রেৎ ফলাভাবাদ্যথা ধেমুরপি গৌরগৌরুচ্যতে কীরাখ্যং ফলং
ন প্রযক্ত্তীতি তদ্বৎ। তথা নিত্যাকরণে ছকর্মনি কর্ম যঃ পশ্রেৎ নরকাদিপ্রত্যবারফলং প্রযক্ত্তীতি। নৈতদ্যুক্তং ব্যাখ্যানম্ এবং জ্ঞানাদগুভাম্মোকাম্পপতেঃ।
"যজ্জাত্বা মোক্যানেহগুভা" দিতি ভগবতোক্তং বচনং বাধ্যেত। কর্থং নিত্যানাম্
অম্ক্রীনাদগুভাৎ স্থারাম মোক্ষণং নতু তেবাং ফলাভাবজ্ঞানাং। নহি নিত্যানাং
ফলাভাবজ্ঞানম্ অগুভমুক্তিফলত্বন চোদিতং নিত্যকর্ম্ম জ্ঞানং বা। নচ ভগবজা
এব ইহোক্তম্।

এতেন অকর্মণি কর্মদর্শনং প্রত্যুক্তম্। নহুকর্মণি কর্মেতি দর্শনং কর্ত্ব্যুত্তয়েহ চোম্বতে, নিভ্যুক্ত তু কর্ত্ব্যতামাত্রম্। ' ন চাকরণান্নিভ্যক্ত প্রভ্যবারো ভবতীতি বিজ্ঞানাৎ কিঞ্চিৎ ফলং স্থাৎ। নাপি নিভ্যাকরণং জ্ঞেরত্বেন চোদিতম্। নাপি কর্মাকর্মেভি মিণ্যাদর্শনাদগুভান্মোক্ষণং বৃদ্ধিমন্তং যুক্তভা কংকর্মকর্মকর্মাদি চ ফলম্পপভতে স্ততির্বা। মিথ্যাজ্ঞানমেব হি সাক্ষাদগুভরূপং কুতোহুক্তমাদগুভান্মোক্ষণম্। নহি তমন্তমসো নিবর্ত্তকং ভবতি॥

নমু কর্মণি যদকর্মদর্শনম্ অকর্মণি বা কর্মদর্শনং ন তারিখ্যাজ্ঞানং কিং তার্হি গৌণং ফলাভাবনিমিত্তম্। ন কর্মাকর্মবিজ্ঞানাদপি গৌণাৎ ফলভাশ্রবণাৎ। নাপি শ্রুতহাল্পশুতপরিকল্পনয়া কন্টিচন্বিশেষোলভাতে। স্বশন্দেনাপি শক্যং বক্তব্ব নিত্যকর্মণাং ফলং নান্তি অকরণাচ্চ তেবাং নরকপাতঃ ভাদিতি। তত্ত্ব ব্যাক্তন পরব্যামোহরপেণ 'কর্মণ্যকর্ম যং পশ্রেং' ইত্যাদিনা কিম্। তত্ত্বৈবং ব্যাচক্ষাণেন ভগবতোক্তং বাক্যং লোকব্যামোহার্থম্ ইতি ব্যক্তং করিতং ভাও। নটৈতছেম্মরপেণ বাক্যেন রক্ষণীয়ং বস্তু নাপি শক্ষান্তরেণ পুনঃ পুনর্কচ্যমানং স্থাবাধং ভাদিত্যেবং বক্তব্র যুক্তম্ 'কর্মণ্যোবাধিকারত্তে' ইত্যক্ত হি ক্রুত্তর উক্তোহর্থো ন পুনর্বক্রো ভবতি। সর্বত্ত চ প্রশন্তং বোদ্ধব্যাহন কর্ত্তব্যাহনৰ ন নিপ্রযোজনং বোদ্ধব্যাহিত্যতাতে।

ন চ মিণ্যাজ্ঞানং বোদ্ধব্যং ভবতি তংপ্রভ্যুপস্থাপিতং বা বন্ধভাসম্। নাপি নিত্যানামকরণাদভাবাৎ প্রত্যবাস্থভাবোৎপত্তিঃ 'নাসতো বিশ্বতে ভাবঃ' ইতি বচনাৎ, কথমসতঃ, সজ্জায়েতেতি চ দর্শিতম্। অসতঃ সজ্জয়প্রতিষেধাৎ অসতঃ সহুৎপত্তিং ক্রবতা অসদেব সদ্ভবেৎ সচ্চাসদ্ ভবেদিত্যুক্তং স্থাৎ। তচ্চাযুক্তং সর্বপ্রমাণবিরোধাৎ। ন চ নিক্ষলং বিদ্ধ্যাৎ কম্ম শাস্ত্রং, হঃখস্বরূপতাদ্ হঃখস্থ চ বৃদ্ধিপূর্বকতয়া কার্যাত্মপুপপত্তেঃ। তদকরণে চ নরকপাতাভ্যুপগমে অনর্থারৈর উভয়্রথাপি করণেহকরণে চ শাস্ত্রং নিক্ষলং কল্লিতঃ প্রাথা তথা ক্রবতঃ। তম্মাদ্বথাক্ষত এবার্থঃ কর্ম্মণাক্রম্ম ইত্যাদেঃ। তথা চ ব্যাখ্যাভোহয়মমাভিঃ প্রোকঃ ॥ ১৮

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোকমাকাজ্ঞাপূর্বকম্পাদত্তে—কিং পুন-রিতি। প্রথমপাদস্যাক্ষরোথমর্থং কথয়তি—কর্ম্মণীত্যাদিনা। ছিতীর-পাদস্যাপি শব্দপ্রকাশিতমূর্থং নিদ্দিশতি—আকর্ম্মণি চেতি। কর্মাভাবে বং কর্মে প্রস্কৃতীতি সম্বন্ধঃ। প্রবৃত্তেরেব কর্মমানিরত্তেমভাবছাৎ তত্র কথং কর্মদর্শন-মিত্যাশব্য মনোরপি কারকাধীনছেনাবিশেষমভিপ্রেত্যাহ—কর্তৃত্তন্ত্রভাদিতি। প্রবৃত্তাবিব নিবৃত্তাবিপ কর্ম্মদর্শনমবিরুদ্ধমিতি শেষঃ। নমু নিবৃত্তের্বন্ধধীনদ্বাৎ কারকনিবন্ধনাভাবার তত্র কর্ম্মদর্শনং যুজ্ঞাতে তত্রাহ—বস্ত্তি। ক্রিরাকারক্ষরতাবহার সর্বভাবিতাবস্থারানেব প্রবৃত্তবাদ্বস্তমংস্পর্শস্তাৎ প্রবৃত্তবিরিবৃত্তাবিপ যঃ কর্ম্ম পশুতি স মহুব্যেষু বৃদ্ধিমানিতি সম্বন্ধঃ। কর্ম্মণ্যকর্ম অকর্ম্মণিচ কর্ম পশুতো বৃদ্ধিমন্থং যুক্তমং সমন্তকর্মকৃতঞ্চ কর্থমিত্যাশক্ষাহ—ইতি স্তৃ যুক্ত ইতি। শোকশু শক্ষোথেহর্থে দর্শিতে তাৎপর্য্যার্থাপরিজ্ঞানামিথোবিরোধং শক্ষতে—নিস্থিতি। কর্থমিদং বিরুদ্ধমিত্যাশক্ষাহ—কর্ম্মণীতি। বিষয়সপ্রমী বা শুদ্ধকরণসপ্রমী বেতি বিকর্মান্তোহ্যাকারং জ্ঞানমন্তাবস্থনমিতি স্পষ্টো বিরোধঃ শালিত্যাহ—ন হীতি। অক্যমান্তান্থাতাবোগাৎ কর্ম্মাকর্মণোরভেদাসম্ভবাদকর্মাকারং কর্মাবলম্বনং জ্ঞানমযুক্তমিত্যর্থঃ। দিতীয়ং দ্বয়তি—তত্ত্রেতি। কর্মাণ্যধিকরণে ততে৷ বিরুদ্ধমকর্মা কথমাধেয়ং দ্রন্তী দ্রন্থীটে ন হি কর্মানক্র্মণোমি পোরিক্রন্ধরোরাধারাধেয়ভবিঃ সম্ভবতীত্যর্থঃ।

বিষয়সপ্তমীমুপেত্য দিদ্ধান্তী পরিহরতি—নুত্রকুর্ন্মেবেতি। লোকস্থ মৃত্দৃষ্টেবিববেকবজ্জিতভা পরমার্থতো ব্রহ্মাকশ্মাক্রিয়মেব সং ভ্রাস্ত্যা কর্মসহিতং ক্রিয়াবদিব প্রতিভাতীত্যক্ষরার্থ:। পরস্পরাধ্যাসমূপেত্যোক্ত**েতথেতি**। যথা থন্ধকর্ম ব্রহ্মকর্মবহুপলভ্যতে তথা কর্ম সক্রিয়মেব দ্বৈতমক্রিয়ে ব্রহ্মণ্য-ধিষ্ঠানে সংস্টং তদ্বভাতীত্যক্ষরযোজনা। কর্মাকর্মণোরিতরেতরাধ্যাসে সিদ্ধে সম্যগ্দর্শনসিদ্ধ্যর্থং ভগবতো বচনমুচিতমিত্যাহ—তত্ত্রেতি। রঞ্জমিতি প্রতিপন্নং তদিদানীং ভক্তিসকলং পঞ্চেতি ভ্রমসিদ্ধরজ্ঞতক্ষপ-বিষয়াহবাদেন তদধিষ্ঠানং শুক্তিমাত্রমুপদিশুতে তথা ভ্রমসিদ্ধকর্মাপ্তাত্মক-বিষয়ামুবাদেন তদধিষ্ঠানং কর্মাদিরহিতং কুটস্থং ব্রহ্ম ভগবতা ব্যপদিশুতে তথা ভগবদ্বচনমবিরুদ্ধনিত্যাহ--অভইতি। ইতশ্চাধ্যারোপিতকর্মাম্মুবাদ-পূর্বকং তদধিষ্ঠানশু কর্মাদিরহিত্ত নির্বিশেষশু ব্রহ্মণো ভগবতা বোধ্যমানত্বার তত্ৰ বিরোধাশঙ্কাবকাশোভবতীত্যাহ—বু**দ্ধিমত্ত্বাদিতি।** কুটস্থাৎ ব্রন্ধণোহন্তস্ত দর্মন্ত মায়ামাত্রভাৎ অভ্যঞ্জানাদ্বৃদ্ধিমত্বযুক্তভ্দর্মক ব্রহত্তানামন্ত্রপাত্তরত চ वृक्षिमानिज्ञाषिन। वृक्षिमञ्चाषिनिर्दम्भार बक्षाञ्चानारम्य जन्नभरखः मर्वविकित्रा-রহিতব্রহ্মজ্ঞানমের বিবক্ষিতমিতার্থ:। বোধশন্বভ সম্যগ[্]জানে প্রসিদ্ধত্বাৎ কর্মাকর্মবিকর্মণাং স্বরূপং বোদ্ধব্যমন্তীতি বদতা সমগ্নে জ্ঞানোপদেশস্ত বিবক্ষিত-দাদপি কৃটস্বং বন্ধাত্রাভিপ্রেভমিত্যাহ—বোদ্ধব্যমিতি চেতি। ফলবর্চনপর্ব্যা-শোচনাগ্নামপি কৃটহুং ধ্রন্ধাত্রাভিপ্রেতং প্রতিভাতীত্যাহ—ন চেতি। সম্যগ্রানা-

ধীনফলমন্ত্র ন শ্রুতমিত্যাশস্ক্যাহ—যজ্জ্ঞাত্ত্বতি । অধ্যারোপাপবাদার্থৎ ভগবদ্বচনমনিক্বমিত্যুপপাদিতমুপসংহরতি— তুম্মাদিতি । তদ্বিপর্যয়েত্যন্ত্র জ্জ্বক্ষেন প্রাণিনো গৃহস্তে । বিষয়সপ্তমীপরিগ্রহেণ পরিহারমভিধায়াধিকরণসপ্তমীপক্ষে দর্শিতং দ্বণমনস্পাকারেণ পরিহরতি—ন চেতি । ব্যবহারভূ মিরত্রেত্যুচ্যতে,
বোগ্যত্বে সত্যমুপলক্ষেরিত্যর্থ: । অকর্মাধিকরণং কর্ম ন সম্ভবতীত্যন্ত হেম্বস্তরনাহ—কর্ম্মাভাবস্থাদিতি । ন হি তুজ্জ্ঞাধিকরণত্বং কচিদ্দু ই মিইক্বেত্যুর্থ: ।
নির্মান্যাণে কর্মাকর্মণোরধিকরণাধিকর্ত্ব্যভাবাসম্ভবে ফলিতমাহ—অতইতি ।
শাল্রপরিচরবিরহিণামধ্যারোপমুদাহরতি—যুথেতি ।

কর্মাকর্মণোরারোপিতত্বমুক্তমমৃষ্যরাশক্তে—নিব্রতি। কর্মা কর্মেবেত্যত্তা-কর্ম চাকর্মৈবেতি দ্রষ্টব্যং, বিমতং সত্যমব্যভিচারিত্বাৎ ব্রহ্মবদিত্যর্থ:। তত্র কর্ম-ভন্নতো নাব্যভিচারি কর্মথায়ৌস্বস্ত তট্তবুক্ষগমনবদিত্যাব্যভিচারিত্বং কর্মণ্য-সিন্ধমিতি পরিহরতি—ত্রেতি। অকর্মা চ তত্ততো নাব্যভিচারি কর্মা ভাবতাৎ দ্রপ্রদেশে চৈত্রমৈত্রাদিষু ,গচহৎক্ষেব চকুষা সল্লিধানবিধুরেয়্ দৃশুমানগত্য-ভাবাদিত্যাহ—দূরেম্বিতি। দুরত্বাদেব বিশেষতঃ সন্নিকর্ধবিরহিতের তেরু ব্দরপেণ চকু:সন্নিক্রান্তব্য চকুষা গত্যভাবদর্শনাদিতি যোজনা। গতিরহিতের তক্ষ্ গতিদর্শনবং প্রক্লতে ব্রহ্মণাবিজিয়ে কর্মদর্শনং স্ক্রিয়ে চ হৈতপ্রপঞ্চে গতিসংস্থ চৈত্রাদিরু গভাভাবদর্শনবৎ কর্মাভাবভা বিপরী তদর্শনং যেন হেতুনা সম্ভব ত তেন তম্ম বিপরীতদর্শনম্ম নির্দ্দনার্থং, ভগবদ্বচনমিতি দার্ষ্টান্তিকং নিগ্নয়তি-এব-মিত্যাদিন। নহু কর্ম তদভাবয়োরারোপিতথাদবিক্রিয়ন্ত ব্রহ্মণো জ্ঞানমাত্রাভি-প্রেতং চেদব্যক্তোহয়মচিস্ত্যোহয়ং ন জায়তে ত্রিয়তে বেত্যাদিনা পৌনক্ষক্তাং প্রাপ্তং তত্ত্বৈব ব্ৰহ্মাম্বনো নিৰ্ন্ধিকারম্বভোক্তমাদিতি তত্ত্বাহ—তদেতদিতি।তদেতদাম্বনি শন্ধিতং সক্রিয়ত্বমস্কৃতক্তপ্রতিবচনমণি নির্বিকারাত্মবস্তুপক্ষরাতাস্তবিপরীত-দর্শনং মিথ্যাঞ্জানং তেন ভাবিতত্বং তংসংস্কার প্রচয়বরুং ততোহতিশরেন মোহমাপত্ত-মানো লোকঃ শ্রুতমপি তত্তৎ বিস্তৃত্য পুনর্যৎকিঞ্চিং প্রসঙ্গমাপাত্ত সক্রিয়ন্ত্রমেবাত্ম-নশ্চোদম্বতীতি পুনঃপুনস্তব্ভূতমৃত্রং ভগবানভিধতে। বস্তনণ্চ ছর্বিজ্ঞেয়ত্বাৎ পুনঃ পুনঃ প্রতিপাদনং তত্তদ্ভ্রমনিরাকরণার্থমুপযুক্তাতে। তথা চ নান্তি পুনকক্তিরি-ভার্থঃ। অসক্বছঞপ্রতিবচনমেবামুবদতি—অব্যক্তোয়ুমিতি। কর্মাভাব উক্ত ইতি সম্বন্ধঃ। উক্তম্ভ ন জায়তে খ্রিয়তে বা বিপশ্চদিত্যাদিশ্রতৌ প্রকৃতস্থতাব-সঙ্গাদিকারেন চ প্রসিদ্ধখনতীত্যাহ—প্রফটীতি। ন কেবলমুক্ত: কর্মাভাব: কিন্ত সর্ববর্ণাণি মনসা সংস্কৃত্তত্যাদৌ বক্ষ্যমাণশ্চেত্যাহ—বক্ষ্যমাণশ্চেতি।

কর্ম্মণাং দেহাদিনির্মন্ত্রকথেন ত্রৈবিধ্যাৎ কৃটস্থপভাবস্থাম্মনোহস গ্রাপাররূপক্ত কর্ম্মণোহপ্রসিদ্ধতাৎ ন ত্রিয়কর্মণি বিপরীতত কর্মণো
ত্যাশক্ষাহ—ত্রিমান্তি। কর্মেন বিপরীতং তত্ত দর্শনমিতি যাবং ংকর্মেন
ত্যাত্মসমানাধিকরণত ব্যাপারস্তান্তভাগ কর্ম্মভ্রমস্তাবদাত্মতান্তর্মান্থেভীত্যর্থঃ।

আত্মনি কর্মবিভ্রমোহস্তীত্যত্ত হেতুমাহ—যতইতি। আত্মনো নিজিয়ত্তে কুতস্তব্দিন্ বংগাকে বিভ্ৰম: সন্তবেদিতাশিক্যাহ—দেহেতি | ইদানীমাত্মজকৰ্ম-ভ্রমমুদাহরতি—ত্তথেত্যাদিনা। যথা শুকৌ স্বাভাবিক্মরপ্যত্বং রূপ্তকারো-পিতং তদভাবোপ্যাবোপ্যাভাবত্বাদারোপ্পক্ষপাতী তথাত্মনোপি স্বাভাবিকন্দ-অবিক্রিয়বং পুনরধ্যন্তং তদভাবত্বাৎ কর্মাভাবোপ্যধ্যস্তএবেতি মন্থানঃ সন্ত্রপ্র সংহরতি—তত্ত্রেদমিতি। আত্মনি ক'মাদিবিজ্ঞমে লৌকিকে সিদ্ধে সভীদং কর্মাণীত্যাদিবচনৎ তৎপরিগরার্থং ভগবাত্মক্তবানিত্যর্থ:। সম্প্রা: ইক্তেইর্থে শ্লোকা-করণমন্বরং দর্শয়িতুং কর্মণীত্যাদি বাাচিথ্যাস্থ: ভূমিকাং করোতি—অত্ত চেতি ৷ ব্যবহারভূমৌ কার্য্যকারণাধিকরণং কর্ম স্বেইনব : পণ ব্যবস্থিতং সদাম্মন্তবিক্রিয়ে কার্য্যকরণারোপণদারেণ সর্বৈরারোপিত্রিত্রত হেতুমাহ—হত-অবিবেকিনাম্ব কর্ত্রাভিমানঃ হুত্রামিতি বকুমপিশন্ধঃ। এবমান্ধনি কর্মরোপম্পপান্ত প্রথমপাদং ব্যাচ্চ্ছ —অভইতি | আয়নি কর্মরহিতে কর্মা-রোপে দৃষ্টা স্তমাহ - নদ্যাতি। আরোপবশাদা স্থানিষ্ঠত্তেন কর্ম্মণি সর্বলোক-প্রসিদ্ধে কর্মাভাবং যঃ পঞ্জেং স বুদ্ধিমানিতি সম্বন্ধ: অকর্মদর্শনশু ষ্ণাভতত্তং সমাক্ষম্। তত্র দৃষ্টান্তমাহ—গত্যভাবমিবেতি। দিতীয়পাদং ব্যাকরোতি— অধ্যারোপমভিনয়তি—ভূষ্ণীমিতি। অকর্মণি চেতি। অকর্মণি কর্ম-मर्गत्न युक्तिगाश—ञाहक्कार्त्वि । पूर्वार्व्वताकिमनुष्णाखन्नार्वः विख्वत् যএবমিতি।

আত্মনি কার্য্যকরণসংঘাতসমারোপদারেণ তদ্যাপারমাত্রে কর্মণি শুক্তিকারামিব রক্ততমারোপিতবিষরে তদভাবমকর্ম্ম বস্ততো যো রক্ততাভাববদমুভবতি
অকর্মণি চ সংঘাতব্যাপারোপরমে তদ্ধারা স্বাস্থ্যভং তৃষ্ঠীমাসে স্থপমিত্যারোপিতে
গোচরে কর্মাহক্ষারহেতৃকং যক্তরতো মন্ততে স রূপ্যতদভাববিভাগহীনশুক্তিমাত্রবদাস্থমাত্রং কর্মাতদভাববিভাগশৃত্যং কৃত্তহং পরমার্থতোহবগচ্ছন্ বৃদ্ধিমানিত্যাদিঅতিযোগ্যতাং গচ্ছতীত্যেবং স্বাভিপ্রারেণ লোকং ব্যাধ্যার অত্র বৃত্তিকারব্যাধ্যানমুখাপরতি—অয়ুমিতি। অক্তণা ব্যাধ্যানমেব প্রশ্নদারা প্রকটরতি—কথ্যিত্যাদিনা। স্বিরার্থেনামুষ্ঠানে ফলাভাববচনং ব্যাহত্মিতি মন্বাহ—কিলেতি।

নিজ্যানামকর্ম্মপ্রপিদ্ধমিজ্যাশঙ্ক্য ফলরাহিজ্যগুণযোগাৎ তেযু অকর্মম্বব্যবহার: নিধ্যতীত্যাহ—(গ্ৰীণ্যেতি। নিত্যানামকরণং মুখ্যবুইত্ত্যবাকর্দ্মশব্দবাচ্যমিত্যাহ— তেষাঞেতি। তত্ত্ব কর্মশন্ত প্রত্যবাদ্বাধ্যফলহেতৃত্বগুণবোগাৎ গৌণ্যৈব বৃত্ত্যা প্রবৃত্তিরিত্যাহ—তচ্চেতি । পাতনিকামেবং ক্লম্বা লোকাক্ষরাণি ব্যাচষ্টে— তত্ত্তেতাদিনা। অব্দাণি চেত্যাদি ব্যাকরোতি—তথেতি। স বৃদ্ধিমানিত্যাদি পূর্ববং। পরকীয়ং ব্যাখ্যানং ব্যুদশুভি—নৈতদিতি। নিত্যং কর্মাকর্ম নিত্যা-করণং কর্মেতি জ্ঞানাৎ ছরিতনিবৃত্তামুপপত্তের্ভগবদবচনং বৃত্তিকারমতে বাধিতং ন্তাদিতার্থ:। ধর্মেণ পাপমপমূদতীতি শ্রুতের্নিত্যামুষ্ঠানাৎ ছরিতনিবর্হণ প্রদিদ্ধে-ন্তদমুঠানস্ত ফলাস্তরাভাৰাৎ তদকর্শ্বেতি জ্ঞাত্বা নিত্যামুঠানে ক্রিয়মাণে কথমগুত্ত-করো নেতি শক্কতে—কথমিতি। 'কেত্রজ্ঞতেখরজ্ঞানাদ্বিগুদ্ধি: প্রমা মতা' ইতি -শ্বরণাৎ কর্মণাত্যন্তিকাণ্ডভক্ষয়াভাবেৎপ্যঙ্গীকৃত্য পরিহরতি—নিত্যানামিতি। निजामूहीनाम अञ्चलस्थित नात्रिन अकतर जन्तिविक्वित वर खादा माकारमन ভভাদিতি জ্ঞানাদভভক্ষত প্রতিজ্ঞাতভাৎ ন চ তজ্জানফলভোববিষয়নেষিতব্য-মিত্যাহ—ন ত্বিতি। অণ্ড্ৰস্ত ফলাভাবাজ্ঞানকাৰ্য্যত্বাভাবাৎ ন ফলাভাব**জ্ঞানা**ৎ ক্ষয়ঃ নিধাতীতার্থঃ। কিঞাতীক্সিয়োহর্থঃ শাস্ত্রায়িশ্চীয়তে ন চ নিত্যকর্মাণাং কলা-ভাবজ্ঞানাং অন্তর্ভনিবৃত্তিরিত্যত্র শাস্ত্রমস্তীত্যাহ—ন হীতি। নিত্যাকরণং কর্মেতি জ্ঞানমপি নাক্তনিবৃত্তিফলত্বেন চোদিত্যস্তীত্যাহ—নিত্যকৰ্ম্মেতি। ভগবদ্বচন-মেবাত্র প্রমাণমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ন চেতি। সাধারণমেব যজ্জাত্বেত্যাদিভগবতো-বচনং ন তু নিত্যানাং ফলাভাবং জ্ঞাত্বেতি বিশেষবিষয়নিত্যর্থ:।

অগুভনোক্ষণাসম্ভব প্রদর্শনেন কর্ম্মণ্যকর্মদর্শনিরাকরণস্থায়েন অকর্মণি কর্মদর্শনং নিরাকরোতি—এতেনেতি । নাগাদির ফলায় ব্রহ্মদৃষ্টিবিধানাং নাগুভনোক্ষণামপণিবিরিত্যাশব্যাহ—ন হীতি। অত হি স্নোকে নিত্যক্ত কর্ত্বব্যতামাত্রং পরমতে বিবক্ষিতমতশ্চাকর্মণি কর্মদর্শনং বিধীয়তে তৎফলায়েতি করনা পরক্ত সিদ্ধান্তরিক্ষজেত্যাহ—নিত্যক্তা ত্রিতি। পরমতেহণি নিত্যক্ত কর্ত্বব্যতামাত্রমত্ত রোকে ন বিবক্ষিতং কিন্তু বিত্তামন্তানে প্রবৃত্তিসিদ্ধার্থং নিত্যক্ষরণাং প্রত্যবায়ো ভবতীতি জ্ঞানমণি কর্ত্বব্যস্থেনাত্র বিবক্ষিতমেবেত্যা-শব্যাহ—নচ্চিত্ত। ন তাবং প্রবৃত্তিরক্ত বিজ্ঞানক্ত ফলং নিয়োগাদেব তর্ত্বপত্তের্নাপি ফলাম্ভরমম্পলন্ডাদতোহফল্মাদকরণাং প্রত্যবায়ো ভবতীতি জ্ঞানং নাত্র কর্ত্বব্যন্থেন বিবক্ষিতমিত্যর্থঃ। কিঞ্চাকরণে কর্মদৃষ্টিবিধাবকরণক্ত অবলম্বন্ধন প্রধানম্বাৎ ক্ষের্মং বক্তব্যং ভক্ত ভূছ্ছেম্বাদম্পণরমিত্যাহ—নাপীতি।

অকরণক্সাসতো নামাদিবদাশ্রয়েরেন দর্শনাসম্ভবেহিপি সামানাধিকরণ্যেনেদং রক্তর্নি মিতিবদর্শনং উবিয়তীত্যাশঙ্ক্যাহ—নাপি কর্ম্মেতি আদিশবদন সর্ব্যোৎকর্মাদ্ গৃহতে, ফলবন্থং স্থতিব্বা সম্যাগ্জানত যুক্তং ন মিথ্যাজ্ঞানত অন্তপ্পত্তেরিত্যর্থঃ। সংগ্লে মিথ্যাজ্ঞানসপি ফলবহুপলন্ধমিত্যাশন্ক্য মিথ্যাজ্ঞানতাওভাবিরোধিবার তন্মান্তরিরত্যাহ—মিথ্যাজ্ঞানুমেবৈতি। অভভাদেবাওভানিবৃত্তী দৃষ্টান্তন্ন ন হীতি।

, অবিৰেকপূৰ্বক্ষিদং রজতমিতি সদদতোঃ সামানাধিকরণ্যাত্মিণ্যাজ্ঞানং বুক্তং कर्माकुर्यर्गाच विरवरकन ভागगानरहाः मामानाधिकत्रगाधीनः ज्ञानः मिश्हरमव-দত্তয়োরিব গৌণং ন মিণ্যাজ্ঞানমিতি শঙ্কতে – মন্থিতি। কর্মাকর্মেতি দুর্শনে কলাভাবো ধ্বঃ অকর্ম কর্মেতি দর্শনে তু কলাভাবো গুণস্তন্নিমিন্তসিদং জ্ঞানং গৌণমিত্যাহ—ফলেতি। বংগাক্তজ্ঞানক্ত গৌণছেহপি প্রামাণিকফলাভাবার তদেগাণভোচিতেতি দূষমতি—নেত্যাদিনা। কর্মাকর্মেত্যাদিগৌণবিজ্ঞানো-পঞ্চাদব্যাজেন নিত্যকর্মণ: কর্ত্তব্যতয়া বিবক্ষিতত্বাদ্গে পঞ্চানভাফলত্বমদূষণমিত্যা-জানাদণ্ডমাকণ্ড শ্রুত হানিরশ্রুত নিত্তাহর্চান্ড করনেত্যনেন ব্যাপারগৌরবেণ ন কশ্চিদ্বিশেষঃ সিধ্যতীত্যর্থ:। প্রপঞ্চয়তি—স্বশক্তেনিতি। নরকপাতঃ স্থাদতো বিধেরেবাস্থঠেয়ানি তানীতি (भयः । ्यर्शो क्वाहक भक् श्वरत्वा शारक्वार्शिक छार्थिति किमस्य उन्नवर्ण वास्ववहन-প্রক্লতে শ্লোকে বৃত্তিকৃতাৎ ব্যাখ্যানেন করনমমুচিতমিত্যাহ—ত্ত্রেতি। পরমাপ্তত্তৈব ভগনতো বিপ্রলম্ভকত্বমাপাদিতমিতি তদীরং ব্যাখ্যানমুপেক্ষিতব্য-মিতি ফলিতমাহ—তব্রৈবমিতি। নিত্যকর্মামুষ্টানসিদ্ধার্থং ব্যাব্ধরূপমিতি ভগবদ্-বচনমূচিতমিত্যাশঙ্কা স্থশন্দেনাপীত্যাদিপ্রাগুক্তপারিপাট্যাপি তদ্ম্ভানবোধনসম্ভবাৎ মৈবমিত্যাং—ন চৈতদিতি। বস্তুশব্দেন নিত্যকর্মামুষ্ঠানমূচ্যতে। বধাপপ্রতি-পাদনং স্কুরোধডিসিদার্থং পৌনংপ্রেন ক্রিয়তে তথা নিত্যানামপি কর্ম্মান্ व्यक्षेत्रक्ष वर्षानुकर्षाजानिमकाखरत्रातानामानः सर्वाधः जानिषि जनवणः मन्। ন্তরৎ যুক্তমিত্যাশঙ্কা তক্ত নিত্যামুষ্ঠানবাচকত্বাভাবাৎ মৈবমিত্যাহ—নাপীতি। কিঞ্চ পূর্বামেব নিত্যামুঠানস্ত স্পষ্টমূপদিষ্টভান্ন ভক্ত স্থাবোধভার্থং শব্দান্তরম্পেক্ষিত্-মিত্যাহ—কর্ম্মণ্যেবতি। কর্মাক্র্মাদিবিজ্ঞানব্যাক্তেন নিত্যকর্মাহ্র্গানকর্তব্য-তারাং তাৎপর্যামিত্যেতরিরাক্ত্য কর্মাকর্মাদিদর্শনং গৌণমিতি পলক দুর্বাস্তরমাহ লস্ক্রিক্তে চেতি। লোকে বেদে চ ষণা প্রশক্তং দেবভাদিতবং যচ কর্ত্ব্য-मह्यक्रीनार्रमिशिरहाजामि । जरमव (वास्तामिक्) । ग्राटक, न निक्नर काकमस्रोमि कर्म्भू।

কৰ্মদুৰ্শনম্ অকৰ্মণি চ কৰ্মদৰ্শনং গৌণছাদেবাপ্ৰশন্তমকৰ্ম্বব্যঞ্চ নাতন্তদ্বোদ্ধব্যমিতি বচনমৰ্হতীত্যৰ্থঃ।

কিঞ্চ কর্মাদেম রামাত্রখানগোণমপি তন্বিবয়ং জ্ঞানং মিথ্যাজ্ঞানমিতি ন তত্ত বোদ্ধবাদ্ব সিদ্ধিরিত্যাহ—ন চেতি। মিণ্যাক্তানশু বোদ্ধবাদ্বাভাবেহ পি ভদবিবরম্ভ বোদ্ধব্যতা সিধ্যেদিত্যাশক্ষ্য বন্ধাভানত্বাৎ মৈবমিত্যাহ—তৎপ্রভ্যুপ্-স্থাপিত্রঞ্তি। ষৎপুনরকরণক্ত প্রত্যবারহেতৃত্বম্ অকরণে গৌণ্যা বৃত্তা কর্মশন্ধপ্রয়োগে নিমিন্তমিতি তদ্বরতি—নাপীতি। অকরণাৎ প্রত্যবারো-ভবতীতাত্ত শ্রুতিবিরোধনমভিধায় যুক্তিবিরোধমভিদ্ধাতি—অস্তইতি। অসতঃ স্ত্রপেণ ভবনমভবনঞ নিঃস্বরপ্রাদ্রপ্পন্নং নিরস্তসমস্ততন্ত্র কিঞ্চিত-ষাভাপগমে সর্বপ্রমাণানামপ্রামাণাপ্রসঙ্গাদিত্যাহ—তচ্চেতি। যতু নিত্যানাং ফনরাহিতাং তত্তাকর্মনন্ধপ্রয়োগে নিমিত্তমিতি তরিবত্ততি—ন চেতি। কেবলং বিধ্যাদ্ধেশে অফলাভাবারিত্যানাং বিধ্যমূপপত্তিঃ অপি তু ধাত্বর্থন্ত ক্লেশাত্মক-দাৎত্ত্ত্বে শ্রুতক্লাভাবে নৈব বিধিরবকাশমানাদরেদিত্যাহ — দুঃখেতি। তৃ:ধরূপ-ভাপি ধাত্ববঁত সাধ্যত্বেন কাৰ্য্যত্বাৎ তদ্বিবরো বিধিঃ ভাদিতি চেরেত্যাই—তুঃখস্ত চেতি। স্বর্গাদিকলাভাবেহপি নিত্যানামকরণনিমিত্তনিরয়নিরামার্থং হুঃথরূপা-ণামপি ভাদহঠেরদ্বিত্যাশব্দাহ—তদকরণে চেতি। ফলান্তরাভাবেহপি মোকসাধনতাৎ মুমুকুণা নিত্যানি কর্মাণি অনুষ্ঠেয়ানি ইত্যাশভাহ—স্বাভ্যুপ্র-মেতি। বৃত্তিকারবাাখ্যানাসম্ভবে ফলিতমুপসংহরতি তুস্মাদিতি। কোইসৌ বণাশ্ৰতোহৰ্থ: লোকভেত্যাশকাহ—তথাচেতি ॥ ১৮

অমুবাদ। কর্ম ও অকর্ম প্রভৃতির যে বোদব্য তব বিষয়ে আমি বিনির, ইহা প্রতিজ্ঞা করিরাছি, তাহা কি, এক্ষণে তাহাই বলা বাইতেছে—কর্মনীত্যাদি। বাহা করা যার, দেই ব্যাপার মাত্রকেই কর্ম বলা বার; দেই কর্মেতে বে ব্যক্তি কর্মাভাব দেখিরা থাকে; এই প্রকার অকর্মে অর্থাৎ কর্মের অভাবেও বে ব্যক্তি কর্ম দেখিরা থাকে, [অকর্ম অর্থাৎ কর্মনির্বিত্তে কি প্রকারে কর্ম দেখিবে, এই প্রকার শক্ষা করা উচিত নহে, কারণ] প্রবৃত্তি ও বিবৃত্তি এই উহরই কর্তার অধীন, [স্কুতরাং নির্ত্তিতেও কর্ত্ব্যাপার আছে, ইহা নিশ্চিত]; [প্রকৃত কথা এই বে] বন্ধর স্থরপ না ব্রিরাই অর্থাৎ পরমার্থ সৎ সেই পরব্দারপ বন্ধর তত্ত্বান বাহার হর নাই তাহারই সকল প্রকার ক্রিরাই কারক প্রভৃতির ব্যবহার, অজ্ঞানক্ষেক্রেই [হইরা থাকে]। সেই ব্যক্তিই সমুদাগপের মধ্যে বৃদ্ধিমান, সেই ব্যক্তিই বৃক্ত (অর্থাৎ) বোগী এবং সেই ব্যক্তিই

ক্ষংশ্বকর্মক্রং (অর্থাৎ) সকল কর্ম্মেরই অমুর্কাতা। [এই সকল প্রাণংসা বাক্যের বারা] কর্ম ও অকর্মের বিবেকদর্শীর স্তৃতি করা বাইতেছে। [এই স্থলে এই প্রকার প্রশ্ন হইতে পারে বে] কর্মেতে যে অকর্ম দর্শন করে ও অকর্মেতে যে কর্ম্ম দর্শন করে ইত্যাদি বিক্রম বাক্য কি তাৎপর্য্যে বলা বাইতেছে ? কর্ম অকর্ম হইতে পারে না এবং অকর্মাও কর্ম হইতে পারে না; তাহাই যদি হইল, তবে প্রস্তা এই প্রকার বিক্রম দর্শন কি প্রকারে করিবে ?

া একণে সিদ্ধান্ত কি ? তাহাই বলা হইতেছে] বান্তবপক্ষে বাহা অকর্ণ (অর্থাৎ) পরমার্থ দৎ (ব্রহ্ম), তাহাই মৃঢ়দৃষ্টি লোকের সমক্ষে কর্মের স্থার প্রতি-ভাসমান হটরা থাকে এবং কর্মাই (প্রপঞ্চ) অকর্মের স্থার [পরমার্থ বিলরা] প্রতীত হয়। এই কারণে [ভগবান যাহা বলিয়াছেন তাহা] বিরুদ্ধ নহে। [ইহা বে বুঝিবে] সেই বুজিমান ইত্যাদি বাক্যের দারা, যে বুজিমন্তের কথা বলা হইয়াছে, তাহার উপপত্তি হইতে পারে এবং বোদ্ধব্যং ইত্যাদি বাক্যে যে পরমার্থ-তত্ত্বজ্ঞানের কথা বলা হইরাছে, তাহাও উপপন্ন হইতে পারে বিদি এই ভাবে এই লোকটির ব্যাখ্যা করা যায়]। বিপরীত জ্ঞানের দারা অণ্ডভ হইতে মোক হইবার সম্ভাবনা নাই। যাহা জানিয়া তুমি অগুভ হইতে মুক্তিলাভ করিবে ইহাও বলা হইয়াছে। সেই কারণে [ইহাই ক্রনা করিতে হইবে বে] প্রাণিগণ কর্মা ও অকর্মাকে বিপরীত ভাবেই গ্রহণ করিয়া থাকে: সেই বিপরীত জ্ঞানকে নিবৃত্ত করিবার জন্তই ভগবান বলিয়াছেন যে, যে ব্যক্তি কর্ম্মেতে অকন্ম দশন করে ইত্যাদি। বাস্তব পক্ষে এই বগতে কুণ্ড মধ্যে যেমন বদর ফল থাকে, সেইরূপ অকর্মে কম্ম থাকিবে, ইহা সম্ভবপর নহে; এই প্রকার অধর্মের অধিকরণও কর্ম হইতে পারে না; কারণ অকর্মত কর্মের অভাব-বরপ। এই কারণে [বলা গিয়াছে বে] মুগতৃকার জলের ভার এবং ওজি-ৰাতে রম্বতের ক্রায় ভ্রান্ত জীবগণ কর্ম্ম ও অকর্ম্মকে বিপরীত ভাবে গ্রহণ করিয়া থাকে। [ইহাই সংসারের স্বভাব]!

কর্ম কর্মই [এবং অকর্ম, অকর্মই আছে] ইহার ব্যভিচার ত কুআপি দৃষ্ট হর না। এই প্রকার শহা করাও উচিত নহে; কারণ [দেখিতে পাওরা বার বে] শ্নীকার্চ ব্যক্তি, নৌকা চলিতে থাকিলে ওটে হিত গতিহীন বুক্সমূহেও প্রতিকৃগ গতি দর্শন করিয়া থাকে এবং অতি দ্রবর্তী, স্বতরাং চক্স সহিত সম্যক্ প্রকারে অসম্বন্ধ বন্ধ নিকরে গৃতি থাকিলেও তাহা গতিহীন বলিয়াও লোকে দেখিয়া থাকে। এই প্রকারেই এ সংসারে, অকর্ম (অর্থাৎ)

আত্মতে কর্ম (প্রপঞ্চ) দর্শন হইরা বাকে এবং কর্ম (অর্থাৎ) প্রপঞ্চে আত্মত্রান্তি হইরা থাকে, ইহাকেই বিপরীত দর্শন বিলয়া থাকে, ইহারই নিরাক্তরণ করিবার জন্ত বলা হইতেছে, বে কর্মণ্যকর্ম ইত্যাদি। এই বিষয়ের উত্তর প্রদত্ত হইলেও, বারংবার অত্যন্ত ভ্রান্তিজ্ঞানের দ্বারা ভাবিত হর বলিয়া প্রাণিগণ অতিশন্ন মোহ-পরবশ হইরা থাকে; অনেকবার আত্মতত্ব বিষয়ে সহুপদেশ প্রাপ্ত হইলেও তাহা বিশ্বত হয় এবং মিধ্যা প্রসঙ্গ সকলের বারংবার অবতারণা করিয়া রুধা নানাপ্রকার শলা করিয়া থাকে; এই কারণে ভগবান্ পুনঃ পুনঃ এই বিষরের উত্তর দিতেছেন। পরমার্থতত্বের অত্যন্ত হজেরছ বিবেচনা করিয়াও[তিনি পুনঃ পুনঃ এইসকল উত্তর দিতেছেন]; "অব্যক্তোহরমচিক্ত্যোহরম্বর্গ এই লোক এবং 'ন জারতে দ্রিয়তে' ইড্যাদি প্লোকের দ্বারা প্রতিপাদন করা হইরাছে, আত্মতে কর্ম্ম হইতে পারে না, ইহা শ্রুতি ও স্তান্ত্রবেশ সিদ্ধ এবং এই বিষয়ে আরও অনেক কথা বলা যাইবে। সেই অকর্ম (অর্থাৎ) কর্ম্মাভাবরূপ আত্মাতে কর্ম্মরূপ বিপরীত পদার্থের ভ্রান্তিজ্ঞান চিরদিন হইতেই চলিয়া আসিতেছে।

বে কারণ [ভগবানই বলিয়াছেন যে] কি কর্ম এবং কি অকর্ম এই বিষয়ে পণ্ডিতগণও মোহিও ৷ কন্দের আশ্রর দেহ ও ইল্লিয় প্রভৃতি [কিন্তু] সেই দেহাদির ধন্ম কর্ম্মসূহ আত্মাতে আরোপিত করিয়া [ভ্রান্ত জীব] ভাবিয়া পাকে রে. "আমি কর্তা, আমার ইহা কর্ম, আমি ইহার ফলভোগ করিব।" এই প্রকার দেহ ও ইন্সিয়ের ব্যাপারনিবৃত্তি এবং দেই নিবৃত্তিজনিত স্থাধিত্বও আত্মাতে আরোপিত করিয়া [ভ্রান্ত জীব] বোধ করিয়া গাকে যে, "আমি একণে কিছুই করিতেছি না, আমি স্থির হইয়া রহিয়াছি এবং [নিক্রিয়ত্বপ্রকুক্ত] আমি একণে স্থী" ইত্যাদি। সেই এই প্রকার স্বভাবাক্রান্ত সংসারের লোকের এই প্রকার বিপরীত দর্শন নিরাকরণ করিবার জন্ত ভগবান্ "কর্মণ্য-कर्म" रेजामि এर वाका विज्ञाहिन। এर ऋता [रेरां किता करिए करेत (य] কর্ম কর্মাই [আছে] এবং দেহ ও ইন্দ্রিয়াদিই কর্মের আশ্রয়, [তথাপি] সেই কর্ম অবিক্রিয়; স্থতরাং কর্মরহিত আত্মাতে সকল লোকই কর্মের আরোপ করিয়া পাকে; কারণ [দেখিতে পাভয়া যায় বে] "আমি-করিতেছি" এই প্রকার অভিমান পণ্ডিতেরও আছে। এই কারণে আক্ষার ধর্ম বলিয়া কর্ম সকলের জানগোটর হইলেও প্রতিলোমভাবে অকর্ম অর্থাৎ কর্মের [একাশ্বিক] জভাব বে ব্যক্তি প্রকৃতভাবে দর্শন করিয়া থাকে; (বেমন নৌকার্রু ব্যক্তির

নিকট তীরস্থ বৃক্ষনিকরে গতি প্রতীত হইলেও, বিবেকদর্শ ব্যক্তি ঐ সকল বৃক্ষে প্রকৃতপ্রস্তাবে গতির অভাবই বিলোকন করেন বি, এইরূপ অকর্ম অভাব হি বালাকন করেন বি, এইরূপ অকর্ম অভাব হি বালাকন করেন বি, এইরূপ অকর্ম অভাব হি বালাক আত্মাতে আরোপ করিয়াই ব্যবহার করিয়া থাকে যে, "আমি এইক্ষণে কিছুই করিতেছি না, আমি বেশ স্থ্পে আছি" ইত্যাদি] ঐ সকল পূর্ব্বোক্ত ক্রিয়ার অভাবেও বে ব্যক্তি কর্ম (অর্থাৎ) সংসারধর্ম রহিয়াছে, ইহা দেখিয়া থাকেন, সেই ব্যক্তিই প্রকৃত্রপে কর্ম ও অকর্মের বিভাগ ব্রিয়া থাকেন; সেই ব্যক্তি মহ্ব্যগণের মধ্যে পণ্ডিত এবং সেই ব্যক্তিই বোগী; তিনিই সকল কর্মের অন্তর্ভাত এবং তিনিই সকল প্রকার অভ্যাব এবং তিনিই সকল প্রকার অভ্যাব এবং তিনিই সকল প্রকার অভ্যাব হিয়া থাকেন—ইহাই তাৎপর্ব্যার্থ।

কোন কোন পণ্ডিত এই শ্লোকটির আর এক প্রকার ব্যাখ্যা করিয়াছেন. কি প্রকার ? [তাহা বলা বাইতেছে] ঈশ্বরার্থ বাহার অনুষ্ঠান করা ধার, দেই সকল নিত্যকর্মাই অকর্ম পন্দের প্রতিপাদ্য: কারণ ঐ **সকল কর্মের** ছারা সংসারবন্ধরণ ফল হর না। কর্মশন্দের এই প্রকার অর্থ [অবশু] গৌণীবৃত্তি দারা প্রকাশিত হইয়া থাকে; [গৌণীবৃত্তি লক্ষণাবিশেব, অভিবের অর্থের অবর বাধিত হইলে পলের যে শক্তিবিশেবের দারা অভিধের অর্থের সদৃশ আর একটি বস্তু প্রতিপন্ন হয়, দেই লক্ষণাপক্তিকেই গৌণীবৃত্তি বলা যায়]। নিত্য কর্মসমূহের অকরণ কর্মশন্তের অর্থ: নিত্যকর্ম না করিলে বেছেতু নরকাদি প্রত্যবায়রূপ ফল হয়, এই কারণে নিত্যকর্মের অকরণও গৌণীবৃত্তির দারা কল্মশন্দের অর্থ [বলিয়া বুঝিতে হইবে]; তাহার মধ্যে যে ব্যক্তি নিভাকর্মে ফল (নরকাদি) হয় না বলিয়া তাহাকে অকর্ম বলিয়া বোধ করে, যেমন ধেছ গো হইলেও যদি ছগ্নাদি ফল না দের, তাহা হইলে, তাহাকে "অগৌ" বলা যায়, সেইরূপ নিত্যকর্মের অকরণরূপ অকর্মে ডে ব্যক্তি নরকাদি ফলদারিছ আছে বলিয়া, 'উহা কর্দ্ম' এইরূপ জ্ঞান করিয়া থাকে, সেই ব্যক্তিই বুদ্ধিমান্ [ইত্যাদি]; এই প্রকার ব্যাখ্যা করা যুক্তিযুক্ত নহে। কারণ, এই প্রকার জানের খারা অভত হইতে মোক্ষলাভ কিছুতেই সম্ভবপর নুহে। এই প্রকার ব্যাখ্যা করিলে, "বাহা জানিয়া ভূমি অশুভ হইতে মুক্তিলাভ করিতে পাঁরিবে" **थरे ध्वकात छंग्रवात्मत्र वाका विक्रक इंदेश छैंछै। कि ध्वकारत ? [डिंग्रा** বলি] নিতাকৰের অনুষ্ঠানে অনুভ হুইতে নোক হুইতে পারে ইহা সীকার

করিতে পারা বাইলেও, নিত্যকর্শের ফল নাই এই প্রকার জ্ঞানমাত্রেই বৈ
অগুত হইতে মোক হইবে, ইহা কখন সম্ভবপর হইতে পারে না। নিত্যকর্শের
ফলাভাব-জ্ঞান অগুত-মোক্ষের কারণ বলিয়া কোন স্থলে বিহিত হয় নাই,
এবং নিত্যকর্শের জ্ঞানও অগুতের মোকহেত্ বলিয়া কোন স্থলে উক্ত হয়
নাই; ভগবান্ও গীতাশাস্ত্রের কুত্রাপি এই প্রকার বলেন নাই।

এই দোব আছে বলিয়া অকর্মেতে কর্মদর্শন [করিতে হইবে এই প্রকার ব্যাখ্যাও বৃক্তিসঙ্গত নহে বলিয়া] নিরস্ত হইতেছে। অকর্মেতে কর্ম দর্শন করিতে হইবে, এই প্রকার এই স্থানে বিহিত হইতেছে, ইহা বলা বায় না; নিত্যকর্মের অকরণে প্রত্যবায় হয় বলিয়া, তাহার জ্ঞানে বে অভ্জনিয়ান্তিরপ কোন ফল হইবে, তাহা হইতে পারে না। নিত্যকর্মের অকরণ এম্বলে ক্রেয় বলিয়াও বিহিত হইতেছে না। কর্মকে অকর্ম বলিয়া দর্শন করাকে মিধ্যাজ্ঞান হইতে অভ্জ নির্ত্তি, বৃদ্ধিমন্তা বৃক্ততা ও রুৎয়কর্ম-কারিম্বাদিরপ [গীতোক্ত] ফল বে হইতে পারে, ইহা সন্তবপর নহে এবং এতাদৃশ মিধ্যাজ্ঞানের স্ততিও সন্তবপর নহে। মিধ্যাজ্ঞানই সাকাৎ অভ্জরেপ। তাহার দারা আবার কি প্রকারে অন্ত অভ্জ হইতে মোক্ষলাভ হইবে ? অন্ধলার অন্ধলারের নিবর্ত্তক হইতে পারে না।

ষদি বল, কর্ম্মে বে অকর্ম দর্শন কিংবা অকর্মে বে কর্ম-দর্শন, তাহা মিথা।
আন নহে, তবে কি ? উহা ফলাভাবরূপ সান্য-নিবন্ধন গৌণদর্শন [কোন
একটি শব্দ দারা তাহার শক্যার্থ প্রকাশ না করিয়া শক্যার্থর সদৃশ অর্থ বিদ
লক্ষ্মা দারা প্রকাশ করা হয়, তবে সেই শক্যার্থ সদৃশ বস্তুর জ্ঞানকে গৌণদর্শন
কহা য়ায়; বস্তুর বরূপ একেবারে না বুবিয়া তাহাকে অভ্যরূপে বিদ বুঝা য়ায়,
তাহা হইলে ঐ জ্ঞানকে মিথা।জ্ঞান কহা য়ায়; বেমন শুক্তিতে রজ্জ্জ্ঞান
মিথা।জ্ঞান; কিন্তু উহা গৌণদর্শন নহে। তেজন্মী কোন প্রকরকে দেখিয়া বিদ
বলা বায় য়ে, এই ব্যক্তি সিংহ, তাহা হইলে এই সিংহ শব্দের শক্যার্থ সদৃশ ঐ
তেজন্মী ব্যক্তির যে জ্ঞান সিংহ শব্দের দারা হইয়া গাকে, তাহাকে গৌণসিংহ
জ্ঞান কহে; এই প্রকার জ্ঞানকেই গৌণদর্শন কহে; ইহা মিথা।জ্ঞান হইতে
পারে না; তাহার কায়ণ এই বে, এইরূপ স্থলে, প্রকৃত বন্ধর স্বরূপ না
বুরিয়া অভ্যরূপে তাহার জ্ঞান হয় না।] তাহাও ঠিক নহে; কায়ণ, শাত্রে
গৌণ কর্মাকর্ম, বিজ্ঞান হইতেও কোন প্রকার ফল শ্রুন্ত হয় নাই। এই
প্রকার শ্রুত্ত-হানি এবং অশ্রুত-পরিকর্মনা করিয়া যে কোন বিশেষ ফললাভ

হইতেছে, তাহাও বলা যায় না। স্পষ্ট শব্দের ছারাও ত ইহা বলা বাইতে পারিত বে, নিত্যকর্মের করণে কোন প্রকার ফল নাই। কিন্তু তাহাদিগের অকরণে নরকে পতন হয়। এই প্রকার স্পষ্টভাবে বলা সম্ভবপর হইলেও "কর্মাণ্যকর্ম যঃ পশ্রেং" ইত্যাদিরপে পরব্যামোহকর কপটমার্গ অবলয়ন করিবায় প্রয়োজন কি ? এই প্রকার কপট বাক্যের ছারা কোন বস্তুকে রক্ষা করিতে হইবে, তাহাও বলা যায় না। এই প্রকার বক্র রীতিতে বারংবার অন্ত শব্দের ছারা উপদেশ প্রদান করিলেই বে বন্ধ ভাল করিরা বৃথিতে পারা যায়, তাহাও নহে। তোমার কর্ম্মেতেই অধিকার আছে, এই বাকেয়ুর ছারা এই প্রকার অর্থ অতি ক্ষ্টভাবেই বলা হইরাছে। এ বিষর আবার বলিবারও কোন প্রয়োজন নাই। সর্বান্ত বাহা প্রশন্ত ও কর্ত্তব্য, তাহারই বোধ করান উচিত; যাহা নিশ্রয়োজন তাহা [শাল্মে] বোদব্যরূপে নির্দিষ্ট হইতে পারে না।

মিধাজ্ঞান কথনই বোদ্ধবা হইতে পারে না, সেই মিধাা জ্ঞানের দারা প্রতুপস্থাপিত অসং অর্থ ব্ঝিয়াও কোন ফল নাই'। [আর একটি বিষয় দেখিতে হইবে যে] নিত্য কর্মের অকরণ এই শক্ষ দারা আমরা দালা বুঝি ভালা অভাব: দেই অভাব হইতে প্রভাবায়রূপ ভাব বস্তুর উৎপত্তি হইতে পারে না. "নাগতো বিপ্ততে ভাবঃ" এই প্লোকের ব্যাখ্যাকালেও "কেমন করিয়া অসং হইতে সং উৎপন্ন হইবে" ইত্যাদি ই€ির উল্লেখ করিয়া, এই বিষয়ট আমি প্রদর্শন করিয়া আদিরাছি যে, অসং হইতে সতের জন্ম কিছুতেই হইতে পারে না। অসং হইতে সতের জন্ম হয় এই কথা বিনি বলেন, তিনি ইহাও বলিতে পারেন বে, সং অসং হর এবং অসংও সং হর। প্রক্রতপক্ষে এই প্রকার হইতে পারে না: কারণ ইহা সর্ব্ধপ্রকার প্রমাণের বিরুদ্ধ। শান্তও বে নিচ্চল কর্ম্মের বিধান করিতে পারে, তাহাও স্বীকার করা যাইতে পারে না। নিতাকর্ম্বের অফুঠান হঃখবরপ: অথচ ী তাহার ছারা কোন ফল লাভও হর না ৷ [কেহই] জ্ঞান পূর্মক নিফল অথচ ছঃথকর কার্য্যের অভ্রান করে না। নিতাকশের অকরণে নরকপাত হর, ইহা স্বীকার করিলেও শাল্র অনর্থকরই रहेश डिर्फ। कांत्रण निष्ठाकर्त्यत कतर्गं क्रम, अकत्रराध नत्रकां मित्रण क्रम, উভর প্রকারেই শান্ত নিক্ষল ইহাই ক্রিত হইরা উঠে। নিভাকর্শের বারা মোক্ষণাভ হয়, ইছা ব্লিয়া আবার বদি বল বে নিতাকর্ম নিফল, ভালা হইলে নিজের অভাগমের সহিতই বিরোধ হইরা উঠে। এই সক্ল কারণে [বলিতে

হইতেছে বে] "কর্ম্মণাকর্ম বঃ" ইত্যাদি প্লোকের বথাক্রত মর্থ ই করিতে হইবে . এবং বেই প্রকারেই আমরা এই প্লোকের ব্যাখ্যাও করিয়াছি ॥ ১৮

> যক্ত সর্ব্বে সমারম্ভাঃ কামসঙ্কল্পবর্ভিজতাঃ। জ্ঞানাগ্রিদগ্ধকর্ম্মাণং তমাহুঃ পণ্ডিতং বুধাঃ॥ ১৯

জ্বারা। যত সর্কে সমারম্ভা: (কর্মাণি) কামসকরবর্জিতাঃ, বুধাঃ তং জানালিদ্যাকর্মাণং পণ্ডিতম্ আছঃ ॥ ১৯

অনুবৃদ্ধ। থাহার সকল কার্যাই কাম ও সক্ষরহিত, জ্ঞানিগণ, সেই জ্ঞানরূপ অগ্নিঘারা দগ্ধকর্মা পুরুষকে পণ্ডিত বলিয়া গাকেন ॥ ১৯

ভাষ্য। তদেতৎ কর্মণি অকর্মাদিদর্শনং স্কৃরতে বস্তেতি। বস্থ যথোক্তদর্শিনঃ সর্বে বাবস্তঃ সমারস্তাঃ কর্মাণি, সমারস্তাস্ত ইতি সমারস্তাঃ কামসকল-বিজ্ঞিতাঃ কামৈস্তৎকারণৈঃ সকলৈ বিজ্ঞিতাঃ মুধৈব চেষ্টামাত্রম্ অনুষ্ঠীরস্তে। প্রবৃত্তেন চেৎ লোকসংগ্রহার্থং নির্ন্তেন চেৎ জীবনমাত্রার্থং তং জ্ঞানাগ্রিদক্ষকর্মাণং কর্মাদা কর্মাদিদর্শনং জ্ঞানং তদেবাগ্রিস্তেন জ্ঞানাগ্রিনা দ্থানি ভ্রাক্তসক্ষণানি কর্মাণি বস্তু তম্ সাতঃ পরনার্থ হং প্রিসং ব্রা ব্দাবিদঃ ॥ ১৯

আনন্দগিরি নীকা। কর্মণ্যকর্মনশনং প্রেলিজং স্টের্ম্বরপ্লেকং প্রেলিজং প্রেলিজং প্রেলিজং প্রেলিজং প্রেলিজং প্রেলিজন্মর্ম। সমারজ্ঞানসভ্য কর্মবিষয়ত্বং ন রুঢ়া কিন্ত ব্ংপেন্ত্যেত্যাহ—সমরাভ্যক্তইতীতি। কামসভ্যবজ্ঞিতত্বে কথং কর্মণামস্টানমিত্যাশব্যাহ—মুধৈবেতি। উদ্দেশুকলাভাবে তেরামস্টানং বাদ্চ্ছিকং ভাদিত্যাশব্য প্রব্রেন নির্ত্তেন বা তেরামস্টানং বাদ্চ্ছিকং ভাদিতি বিকর্জমেণ নির্ভতি—প্রব্রেনেত্যাদিনা। জ্ঞানামীভ্যাদি বিভন্তত—কর্মাদাবিতি। যথোক্জ্ঞানং যোগ্যমেব দহতি নাধোগ্যমিতি বিব্রক্তিত্বাৎ তিম্মন্নিপ্রদান বিপোক্তিভানবিরহিণামণি বৈশেষকাদীনাং প্রিভ্রত্বপ্রসিদ্ধিমাশব্য ভেষাং প্রিভাভাসত্বং বিব্রক্তিয়া বিশিন্তি পর্মার্থতইতি ।

অসুবাদ। নেই এবংবিধ কর্মে অকর্মানি দর্শনের স্থতি করা বাইতেছে বে যজেত্যাদি [যণোজদর্শী যে ব্যক্তির সকল সমীরস্ত (অর্থাৎ) কর্ম, বাহা আরম্ভ করা যার তাহাকে সমারস্ত কহে, [এই কারণে সমার্ম্জু শক্ষের অর্থ কর্ম, কর্মেন্সও আরম্ভ হয়] কামসঙ্করবর্জ্জিত (অর্থাৎ) কাম ও আহার কারণ সঙ্কর ইইতে একেবারে নিস্কৃত। (অর্থাৎ) সে ব্যক্তির রাহ্য কিছু কর্মা, তাহা কেবল সতঃ প্রয়োজনশৃত্ত, কেবল চেষ্টা স্বরূপেই অমুষ্ঠিত হইরা থাকে। সে ব্যক্তি যদি সাংসারিক কার্য্যে প্রবৃদ্ধিপর হয়, তাহা হইলে তাহার ফল লোকসংগ্রহ ব্যতিরিক্ত আর কিছুই নহে। আর সে ব্যক্তি যদি সর্যাসী হয়, তাহা হইলে তাহার যাহা কিছু চেষ্টা, তাহা কেবল [কোনরূপে] জীবন ধারণের জক্ত। সেই জ্ঞানান্নিদগ্ধকর্মা পুরুষকে ব্রহ্মবিদ্রগণ প্রমার্থতঃ পণ্ডিত বলিয়া থাকেন। [ইহার ভাবার্থ এই যে—কর্মাদিতে অকর্মাদিদর্শনকে জ্ঞান কহা যায়—সেই জ্ঞানত্রপ অন্নি যাহার শুভাগুভ কর্ম্ম সকলকে দগ্ধ করিয়াছে অর্থাৎ যাহার কর্ম্মস্থ আর তৃঃখ বা স্থপরূপ ফল প্রসব করিতে সমর্থ হয় না; এই কারণ তাহার কর্ম্ম দগ্ধ হইয়াছে—এইরূপ নির্দেশ করা হইতেছে; তাহাকেই জ্ঞানান্নিদগ্ধকর্ম্মা বলা যায়]॥ ১৯

ত্যক্তা কর্ম্মফলাসঙ্গং নিত্যতৃপ্তো নিরাশ্রয়ঃ। কর্মাণ্যভিপ্রব্যক্তোহপি নৈব কিঞ্চিৎ করোতি সং॥২০

আনুয়। [য:] কর্মানসং তাজা নিতাত্থ: (বিষয়ের নিরাকাজ্জ:)
নিরাশ্র: [চ] সন্ কর্মাণাপি অভিপ্রত: [ভবতি] দ নৈব কিঞ্ছিৎ করোতি
ক্মাদলেন যুক্তো ন ভবতীতার্থ:)॥ >•

অনুবাদ। যে ব্যক্তি বিষয়ে আকাজ্ঞাহীন এবং নিরবলম্ব হইয়া কর্মফলে আসক্তিপরিহারপূর্বক [বিহিত] কর্ম্মে প্রবৃত্ত হন, প্রেক্কত পক্ষে] সেব্যক্তি কিছুই করেন না॥ ২•

ভাষ্য। বৰ্ত্বাদিদশী সোহক্বাদিদশনাদেব নিক্বা সংস্থাসী লীবনমাত্রাৰ্থিচেইঃ সন্ ক্বাণি ন প্রবর্ত ে বছপি প্রাণ্বিবেকতঃ প্রবৃত্তঃ। বন্ত প্রান্তক্বা সন্ধ্রকালম্ৎপন্নাত্মসমাগ্দশনঃ স্থাৎ স ক্বাণি প্রয়োজনমপশ্রন্ সমাধনং কর্বা পরিত্যজ্ঞতাের। স কুতল্টিরিমিন্তাং কর্ম্মপরিত্যাগাসন্তবে সতি, কর্মণি ভংকলে চ সঙ্গরহিততাা স্থারোজনাভাবাং লোকসংগ্রহার্থং পূর্ববং কর্মণি প্রবৃত্তােহণি নৈব কিঞ্চিৎ করােতি জ্ঞানান্নিদ্বাক্ষণাং তদীয়ং কর্ম কর্মনির সম্পন্ততে ইত্যেভমর্থং দর্শবিষ্যান্নাহ ত্যক্তেন্তি। ত্যক্তা কর্মস্থ অভিনানং ফলাসঙ্গঞ্জ গুণোক্তেন জ্ঞানেন নিত্যত্থাে নিরাকাজ্জো বিষয়েবিত্যর্থ:। নিরাশ্রম আশ্রমরহিতঃ। আশ্রমোনাম বদাশ্রিত্য সিসাধ্যিবতি। দৃষ্টাদ্র্টেইনফলসাধনাশ্রমরহিতঃ ইত্যর্থ:। বিহুষা ক্রিয়মাণং কর্ম্ম প্রমার্থতাহকর্মের তক্ত্মনিরাক্ষাত্মদর্শনসম্পন্নতাং। তেনৈবংভ্তেন প্রয়োজনাভাবাং সঙ্গাধনং কর্ম্ম

পরিত্যক্তব্যমেবেতি প্রাপ্তে ততো নির্গমাসন্তবাৎ লোকসংগ্রহচিকীর্ধয়া শিষ্টবিগ-র্ক্বণাপরিজিহীর্ধয়া বা পূর্ববৎ কর্ম্মণ্যভি প্রবৃত্তোহিপি নিক্রিয়াত্মদর্শনসম্পদ্মতারৈব কিঞ্চিৎ করোতি সঃ॥২০

আনন্দ্রিটাকা। বিবেকাৎ পূর্বং কর্মণি প্রবৃত্তাবপি সতি বিবেকে তত্ত্ব ন প্রবৃত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাঙ্গীকরোতি—যৃস্তিতি। বিবেকাৎ পূর্ব্বমভিনিবেশেন প্রবৃত্তন্ত বিবেকানস্তরমভিনিবেশাভাবাৎ প্রবৃত্ত্যসন্তবেপি জীবনমাত্রমুদ্দেশ প্রবৃত্তাভাদ: মন্তবতীত্যর্থ:। সত্যপি বিবেকে তত্তৎসাক্ষাৎকারামুদয়াৎ কর্মণি প্রবৃত্তপ্ত কথং তত্ত্যাগঃ স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—যুদ্ধ প্রাবৃত্তের তি। ত্যক্তে,ত্যাদি-সমনস্তরশ্লোকমবতার্য়িতুং ভূমিকাং কৃত্বা তদবতারণপ্রকারং দর্শয়তি —স কৃতশ্চিদিতি। লোকসংগ্রহাদিনিমিত্তং নিবক্ষিতং কর্মপরিত্যাগাসম্ভবে সতি তন্মিন্ প্ররেরাহপি নৈব করোতি কিঞ্চিতি সম্বন্ধঃ। কর্মণি প্ররুক্তোন করোতি কর্ম্মেতি কণমূচ্যতে তত্তাহ—স্বপ্রয়োজনাভাবাদিতি। কণং তর্হি প্রবর্ত্তত তত্রাহ—লোক্তে। প্রবৃত্তেরর্থক্রিয়াকারিম্বাভাবং পশাদিভিশ্চাবিশেষাদিতি ভায়েন ব্যাবর্ত্তরতি—পূর্ববিদিতি। কণং তর্হি বিবেকিনামবিবেকিনাঞ বিশেষ: ভাদিত্যাশস্ক্য কর্মাদেট সঙ্গাসঙ্গাভ্যামিত্যাহ —কর্ম্মণীতি। উত্তেখর্থে সমনন্তরশ্লোক্যবতারম্বতি—জ্ঞানাগ্রীতি। এতমর্থং দর্শয়িষাল্লমং : শ্লোকমাহেতি যোজনা। যথোক্তং জ্ঞানং কৃটস্থাত্মদর্শনং তেন শ্বরূপভূতং স্থাং সাকাদমূভূর কর্মণি তৎফলে চ সঙ্গমপাশু বিষয়েষু নিরপেক্ষণেচ-**डे**ट्ड विद्यानिकाश्—जुरुक्कुकुरां मिना। वेष्टेगाधनगरभक्त क्रका नितरभक्तप्र-মিত্যাশক্ষ্য বিশিন্টি—নিরাশ্রায়ইতি। যদাশ্রিত্যেতি যচ্চকেন ফলসাধনমুচ্যতে। আশ্রয় রহিত ইত্যক্তার্থং স্পষ্টয়তি – দুষ্টেতি। তেন জ্ঞানবতা পুরুষেণৈবস্তৃতেন ভ্যক্তা কর্মফগাসঙ্গমিত্যাদিনা বিশেষিতেনেতার্থঃ। ততঃ সমাধানাৎ কর্মণঃ সকাশাদিতি যাবং। নির্গমাসম্ভবে হেতুমাহ—লোকেত্যাদিনা। পূর্কবিৎ জ্ঞানোদরাৎ প্রাগবস্থারামিবেত্যর্থ: অভিপ্রবৃত্তোহপি লোকদৃষ্ট্যেতি শেষ:, নৈব করোতি কিঞ্চিদিতি স্বদুষ্ঠোতি দ্রষ্টবাস্॥ ২०

. অমুবাদ। যে ব্যক্তি অকর্মাদিদশী [অর্থাৎ ব্রহ্মবিৎ] তিনি অকর্মাদি
দর্শনের প্রসাদেই নিক্রিয় ও সন্ন্যাসী, কেবল জীবন মাত্র রক্ষার জন্ত কর্ম্মে
প্রবৃত্ত সেই ব্যক্তি, বিবেক জ্ঞান হইবার পূর্বেপ প্রবৃত্ত হইলেও সেই অবস্থার
কোন বিহিত্ত কর্মে আর প্রবৃত্তিমান্ হন্না। যে ব্যক্তি কিন্তু, প্রথমে কর্মের
প্রবৃত্ত হইয়া পরে সম্যক্ প্রকারে আত্মদর্শন লাভ করিতে সমর্থ হন, সেই

ব্যক্তিও কর্মে কোন প্রকার প্রয়োজন না দেখিতে পাইয়া, তাহা পরিত্যাগই করিয়া থাকেন। কিন্তু কোন কারণে কর্ম পরিত্যাগ [তাঁহার নিকটে] অসম্ভব হইলে, কর্মে ও তাহার ফলে সঙ্গ না থাকায় নিজের কোন: প্রকার প্রয়োজন না থাকিলেও লোকসংগ্রহার্থ সেই ব্যক্তি পূর্ববৎ কর্ম্মে প্রবৃত্ত হন; কিন্ত প্রবৃত্ত হইলেও, বান্তব পক্ষে কিছুই করেন না। জ্ঞানরূপ অগ্নিদারা তাঁথার কর্ম দক্ষ হইয়াছে বলিয়া, তাঁথার কর্ম কর্মাই নহে, ইহা দেখাইবার জন্ম ভগবান বলিতে:ছন যে ত্যকে ত্যাদি। বিহিত কর্মসমূহে অভিমান ও ফলাসক্তি পরিত্যাগপুর্বক যথোক্ত জ্ঞানের সাহায্যে নিত্যতৃপ্ত (অর্থাৎ) বিবয়সমূহে নিরভিলাষ এবং নিরাশ্রয় (অর্থাৎ) দৃষ্ট ও অদৃষ্ট সাধনসমূহে আশ্রয়-বর্জ্জিত; বাহাকে অবলম্বন করিয়া লোক পুরুষার্থ দাধন করিতে ইচ্ছা করিয়া থাকে. তাহারই নাম আশ্রয়। আত্মতত্ত্তপুরুষ কোন কর্ম করিলেও [বাস্তব পক্ষে] ঐ কর্ম্ম কর্ম্মই নহে; কারণ তিনি নিক্রিয় আত্মার প্রক্রত স্বরূপের উপলব্ধি করিয়াছেন। সেই নিরাশ্রয় ও নিতাতৃপ্ত আত্মতত্ত্ত ব্যক্তির, স্বীয় কোন প্রকার প্রয়োজন নাই বলিয়া, সাধনের সহিত কর্মা পরিত্যাগ করাই উচিত, এই প্রকার সম্ভাবনা যদি করা যায়, তাহা হইলে, তাহারও নিরাকরণ করিবার জন্ম [ভগবান বলিতেছেন বে] [জীবিত ব্যক্তির পক্ষে] কর্ম একেবারে না করিয়া থাকা অনন্তব; এই জন্ত দেই বাজি [পূর্ণ্ণোক্ত প্রকারে] ল্যেক-সংগ্রহের জন্মই হটক কিংবা শিষ্ট্রনের নিকট সম্ভাবিত নিন্দার পরিহার করিবার ইচ্ছাব্বই হউক, পূর্বের ভায় কম্মে প্রবৃত্ত হইলেও নিক্রিয় আত্মার তব্জ্ঞান তাঁহার হইয়াছে বলিয়া [প্রক্বতপক্ষে] তিনি কিছুই করেন না॥ ২•

> নিরাশীর্যতচিত্তাত্মা ত্যক্তসর্ববপরিগ্রহঃ। শারীরং কেবলং কর্ম্ম কুর্বিন্নাপ্নোতি কিল্লিষম্॥ ২১

আনুরা। নিরাশী: যতচিত্তাআ [তথা] ত্যক্তসূর্বপরিগ্রহ: [সন্] কেবলং শারীরং কর্ম কুর্বন্ [জ্ঞান] কি লিখং (পাপং পুণ্যং বা) ন আপ্লোতি॥ ২১

অনুবাদ। কামনাহীন, জিতেক্রিয় এবং সকল প্রকার বিষরে আসজিত বর্জিত জ্ঞানী কেবল শরীরস্থিতিমাত্রহেতু কর্ম্মের অমুষ্ঠানু করিলেও কোন প্রকার পাপ বা পুণ্য লাভ করেন না॥ ২১

ভাষ্য ৷ য: পূন: পূর্ব্বোক্তবিপরীত: প্রাঞ্জব কর্মারন্তাৎ ব্রহ্মণি সর্বান্তরে প্রত্যগাত্মনি নিক্রিরে সংস্থাতাত্মদর্শন: স দৃষ্টাদৃষ্ট-বিষয়ানীর্বিবর্জিততয়া দৃষ্টাদৃষ্টার্থে কর্মণি প্রয়োজনমপশ্রন্ স্সাধনং কর্ম সংক্রম্থ শরীর্ষাত্রামাত্রচেষ্ট্রঃ বিজ্ঞাননিষ্টো মূচ্যতে ইত্যেতমর্থং দর্শয়িতুমাহ—নিরিতি। নিরাশীর্নির্মতা আশিবো বত্মাং স নিরাশীঃ বতচিত্রাত্মা চিত্তমস্তঃকরণমাত্মা বাহ্যঃ কার্যকরণ-সজ্যাতঃ তাব্ভাবপি বতৌ সংবতৌ বেন স বতচিত্তাত্মা। ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ ত্যক্তঃ সর্বঃ পরিগ্রহো বেন স ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ শারীরং শরীরস্থিতিমাত্রপ্রয়োজনং কেবলং তত্রাপি অভিমানবর্জ্জিতং কর্ম কুর্বন্ নাপ্রোতি ন প্রাপ্রোত কিবিষম্ অনিষ্টাধ্যং পাপং ধর্মণ চ বিশ্বেহিপ মুমুক্ষোঃ কিবিষমেব বন্ধাপাদ কত্মাং।

কিঞ্চ শারীরং কেবলং কর্মোত্যক্ত কিং শরীরনির্বাস্ত্যং শারীরং কর্ম অভিপ্রেতম্ আহোখিৎ শরীরন্থিতিমাত্রপ্রয়েজনং শারীরং কর্মেতি। কিঞ্চাতো বদি শরীর-মির্বাস্ত্যং শারীরং কর্মে, বদি বা শরীরস্থিতিমাত্রপ্রয়েজনং শারীরমিতি ? উচ্যতে বদা শরীরনির্বাস্ত্যং কর্ম শারীরমিভিপ্রেতং তাৎ তদা দৃষ্টাদৃষ্টপ্রয়োজনং কর্ম্ম প্রতিষিদ্ধমিপ শরীরেণ কুর্বায়াগ্রোতি কিবিযমিতি ক্রবতো বিরুদ্ধাভিধানং প্রসঙ্গেত।

শারীয়ং চ কন্ম দৃষ্টাদৃষ্টপ্রয়েঞ্জনং শরীরেণ কুর্মরাপ্রোতি কিধিবমিত্যপি ক্রবতাহপ্রাপ্তপ্রতিবেধপ্রসঙ্গঃ। শারীয়ং কর্ম কর্ময়িতি বিশেষণাৎ কেবলশন্ধ-প্রয়োগাচ্চ বাজনসনির্ব্বত্যং কন্ম বিধিপ্রতিষেধবিষয়ং ধর্মাধর্মশন্ধবাচ্যং কুর্মন্ প্রাথোতি কিবিবমিত্যক্তং ভাও। তত্তাগি বাজনসাভ্যাং বিহিতামুদ্ধানপক্ষে কিবিবপ্রাপ্তিবচনং বিরুদ্ধানপত্তেও। প্রতিবিদ্ধসেবাপক্ষেৎপি ভূতার্থামুবাদনাত্রমনর্থকং ভাও। যদা ভূ শরীয়ন্থিতিমাত্রপ্রয়েজনং শারীয়ং কর্মাভিপ্রেতং ভবেৎ তদা দৃষ্টাদৃষ্টপ্রয়েজনং কর্ম বিধিপ্রতিষেধগম্যং শরীয়বাজনসনির্বর্ত্তাম্বজন কর্ম বিধিপ্রতিষেধগম্যং শরীয়বাজনসনির্বর্ত্তাম্বজন কর্মক্র তৈরেব শরীয়াদিভিঃ শরীয়ন্থিতিমাত্রপ্রয়েজনং কেবলশন্পপ্রয়োগাদহং করোমীত্যভিমানবর্জ্জিতঃ শরীয়াদিচেষ্টামাত্রং লোকদৃষ্ট্যা কুর্মন্ নাপ্নোতি কিবিষম্ব। এবংভূতক্ত পাপশন্ধবাচ্যকিবিষপ্রাপ্তাসম্ভবাৎ কিবিষং সংসারং নাপ্নোতি জ্ঞানামিদগ্রসর্বাকর্মগ্রাৎ অপ্রতিবন্ধেন মৃচ্যতে এবেতি পূর্ব্বোক্ত-সম্যগ্রদর্শনক্ষাম্বাদ এবৈষঃ! এবং শারীয়ং কেবলং কর্ম্মেত্যক্রার্থক্ত পরিগ্রহে নিরব্রমং ভবতি॥ ২১

আনন্দগিরিটীকা। সত্যপি বিক্ষেপকে কর্মণি কুটস্থাখাস্থসন্ধানশু সিন্ধে কৈবল্যহেতৃত্বে বিক্ষেপাভাবে স্থতরাং তম্ম তদ্ধেতৃত্বসিদ্ধিরিত্যভিপ্রেত্যাহ—যঃ পুনরিতি। পুর্কোঞ্চবিপরীতত্বং লোকসংগ্রহাদিনিরপেক্ষম্ম, তদেব বৈপরীত্যং ক্ষোরম্বতি—প্রাধেতি। সমাধনসর্কবর্মসংখ্যাসে শরীমন্থিতিরপি কথ্যিত্যা- শন্ধাহ—শ্রীরেতি। তর্হি তথাবিধচেষ্টানিবিষ্টচেতন্তমা সম্যম্ জ্ঞানবহিদ্ধ্বশ্র ক্তোম্ব্রিক্তাশন্ধ্য যথোপদিষ্টচেষ্টামামনাদরাদ্যৈবমিত্যাহ—জ্ঞাননিষ্ঠ ইতি।
ইতি দর্শমিত্মিমং শ্লোকং প্রাহেতি পূর্ববং। আশিষঃ প্রার্থনাভেদান্ত্র্যাবিশেষাঃ।
আশিষাং বিহুষোনির্গত্ত্বে হেতুমাহ—যতেতি। চিত্তবদাত্মনঃ সংষমনং কথমিত্যাশন্ধ্যাহ—আত্মা বাহ্য ইতি। ছয়োঃ সংষমনে সত্যর্থসিদ্ধমর্থমাহ
—ত্যক্তেতি। সর্বপরিগ্রহপরিত্যাগে দেহন্থিতিরপি হঃস্থা ভাদিত্যাশন্ধ্যাহ
শরীরমিতি। নাত্রশব্দেন পৌনক্ষ্ক্যাদনর্থকং কেবলং পদমিত্যাশন্ধ্যাহ—তত্রাপীতি।

শারীরং কেবলমিত্যাদৌ শারীরপদার্থং স্ফুটীকর্জ্ মুভরথা সম্ভাবনয়া বিকরমতি

শারীরমিতি। শরীরনির্বর্জ্যং শারীরমিত্যামিন্ পক্ষে কিং দ্বণং শরীরছিতিমাত্রং শারীরমিত্যামিন্ বা পক্ষে কিং ফলমিতি পূর্ব্বাদী পৃচ্ছতি—
কিঞ্চেতি। শরীরনির্বর্জ্যং শারীরমিত্যামিন্ পক্ষে সিদ্ধান্তী দ্বণমাহ—

—উচ্যক্ত ইতি। শরীরেণ যদ্ধির্জ্যং তং কিং প্রতিষিদ্ধং বিহিতংবা প্রথমে
বিরোধঃ স্থাদিত্যাহ—যদেতি। প্রতিষিদ্ধান্তরণেগপি নানিষ্টপ্রাপ্তিরিত্যক্ষেপ্রতিবেধণান্ত্রবিরোধঃ স্থাদিত্যর্থঃ।

বিতীয়ে বিহিতকরণে সত্যনিষ্টপ্রাপ্তাভাবাদপ্রাপ্তপ্রতিষেধঃ স্থাদিত্যাহ—
শাস্ত্রীয়ুক্তেতি। দৃইপ্রয়োজনং শারীর-কার্য্যাদিকং কর্মাদৃষ্টপ্রয়োজনং স্বর্গসাধনং
জ্যোতিষ্টোমাদিকং কর্ম্মেতি বিভাগঃ। শরীরনির্ব্দর্ত্তাং কর্ম্ম শারীরমভিমতনিতি
পক্ষে দ্যণান্তরমাহ—শারীরমিতি। বাচা মনসা বা কর্মণোহম্বন্ধানে সংস্থাসিনো
ভবত্যেব কিবিষপ্রাপ্তিরিত্যাশব্যাহ—তত্রাপীতি। বাদ্মনাভ্যাং বিহিতাম্বন্ধানে
বা প্রতিবিদ্ধকরণে বা কিবিষপ্রাপ্তিঃ সংস্থাসিনঃ স্থাদিতি বিকর আত্তে
জপধ্যানবিধিবিরোধঃ স্থাদিত্যুকা দ্বিতীয়ং দ্বয়তি—প্রতিষিদ্ধেতি। শরীরনির্ব্বর্তাং কর্ম্ম শারীরমিতি পক্ষমেবং প্রতিক্ষিপ্য দিতীয়পক্ষে লাভং দর্শেরতি—
যদা ত্রিতি। অন্তদেধন্থিতিপ্রয়োজনাৎ কর্ম্মণঃ সকাশাদিতি শেবঃ। তত্রাপি বিছ্বঃ
স্বদৃষ্ট্যা ন প্রবৃত্তিরিতি স্বচয়তি—লোকেতি। বিদ্বাম্বক্রয়া রীত্যা বর্ত্তমানো
নাথ্রোতি কিবিমমিত্যক্র বিবন্ধিতমর্থমাহ—এবস্তৃত্বস্থেতি। বিধিনিবেধগস্যং
কর্ম্ম দেহন্থিতিহেত্ব্যতিরিক্তমকুর্বতইত্যর্থঃ। শারীয়ং কেবলমতি বিশেষণদ্ধরং
কির্দেশ্বং সিধ্যতীতি ফলিতমাহ—এবিমিতি॥ ২১

অমুবাদ। যে ব্যক্তি কিন্তু, পুর্বোক্ত সাধক হইতে বিলক্ষণ (অর্থাৎ)

কর্মারন্তের পূর্বেই সকল পদার্থেরই অন্তঃস্থিত নিক্রির ও সর্বাত্মভূত প্রব্রহ্মতেই আত্মভাবে দর্শন করিতে সমর্থ ইইয়াছেন, সেই ব্যক্তি দৃষ্ট ও অদৃষ্টবিষরে আকাজনানা থাকা প্রযুক্ত দৃষ্ট বা অদৃষ্ট ফলের সাধন কর্ম্মে কোন প্রয়োজন না দেখিতে পাইয়া, কেবল শরীরধাত্রা নির্বাহের জন্মই বাহ্ম চেষ্টা করেন, সেই জ্ঞাননিষ্ঠ যতি মোক্ষলাভ করেন, ইহাই ব্রাইবার জন্ম ভিগবান বিলতেছেন যে, নিরাশীনিরত্যাদি। "নিরাশীঃ" যাহার হৃদয় ইইতে আশীঃ (ভোগ ভৃষা) নির্ত্ত ইয়াছে, তিনি নিরাশীঃ। "যতচিত্তাত্মা" চিত্ত শব্দের অর্থ অন্তঃকরণ এবং আত্মা এই শব্দটির অর্থ [এই স্থলে] বহিরিক্রিয় ও স্থল দেহ; এই সকল বস্ত্র যাহার সংযত ইয়াছে, তাঁহাকেই যতচিত্তাত্মা বলা যায়। "ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ" সকল পরিগ্রহ যে ব্যক্তি পরিত্যাগ করিতে পারিয়াছেন, তিনিই ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ । [এই প্রকার বিশেষণযুক্ত] "শারীর" (অর্থাৎ) শরীরস্থিতিমাত্রের হেতু "কেবল" তাহাতেও অভিমান বর্জ্জিত ইইয়া কর্ম্মের অমুষ্ঠান করিলেও "কিবিষ" অনিষ্টরূপ পাপ এবং পূণ্য লাভ করেন না; বন্ধের কারণ হয় বলিয়া ধর্ম্মও মুমুক্ষ্ক্ ব্যক্তির নিকট কিবিষ শব্দের দ্বারা প্রতিপাদিত ইইয়া থাকে [কিবিষ শব্দের প্রস্কৃত অর্থ পাপ]।

ি এন্থলে এই প্রকার প্রশ্ন হইতে পারে যে], কেবল শারীর কর্ম—এন্থলে শারীর শক্ষির অর্থ কি ? শরীরের দ্বার। বাহাই সাধিত হইতে পারে, তাহাই কি শারীর কর্ম বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে ? কিংবা শরীরস্থিতিমাত্রই বাহার উদ্দেশ্য সেই কর্মই এইস্থলে শারীর কর্ম, এই শক্ষির অভিপ্রেত অর্থ। যদি বল এই প্রকার আশক্ষা করিবার তাৎপর্য্য কি ? শরীরের দ্বারা যাহা কিছু কর্ম্ম নিশাদিত হয়, তাহাই যদি শারীর শক্ষের অর্থ হয়, তাহা হইলেই বা কি হয়, অথবা শরীর-স্থিতিমাত্র প্রয়োজন যে কর্ম, তাহাই যদি শারীরশঙ্কের অভিপ্রেত অর্থ হয়, তাহা হইলেই বা কি হয়, [ইহার এই তুইপ্রকার অর্থের মধ্যে কোন্ অর্থ চি সাধু এবং কোন্টি সাধু নহে, সেই বিষয়ে] বলা যাইতেছে যে, যদি শরীরের দ্বারা সম্পাদিত কর্ম্ম নাত্রই শারীর শক্ষের অভিপ্রেত অর্থ হয়, তাহা হইলে প্রতিধিদ্ধ দৃষ্ট,বা অদৃষ্ট ফলের হেতু কর্ম্ম করিলেও পাপভাগী হয় না, এই কথা যিনি বলেন, তাহার কথা নিতান্ত শান্ত্র-বিপরীত হইর। উঠে;

শান্তবিহিত, দৃষ্ট এবং অদৃষ্ট ফলের কারণ কর্ম, শরীরের **ধারা করিলে** পাপভাক্ হর না, এই প্রকার তাৎপর্য্য বর্ণন করিলেও যাহা অপ্রাপ্ত তাহারই প্রতিবেধের আপত্তি হইরা পড়ে। [অর্থাৎ শাস্তবিহিত কর্মের অফুঠান

করিলে কাহারও পকে যখন পাপ হইবার সম্ভাবনাই নাই তথন শাস্ত্রীয় কর্ম. শরীরের ছারা করিলে পাপভাগী হয় না. ইহা বলা নিরর্থক হইয়া উঠে; পাপ হইবার দক্ষাবনা না থাকিলে তাহার প্রতিবেধ নিপ্রয়োজন]; [এই প্রকার ব্যাখ্যা করিতে গেলে আরও দোষ এই যে] শারীর কর্ম এই প্রকার বিশেষ করিয়া বলা হইরাছে, এইজ্বন্থ এবং "কেবল" এই শব্দটির ও প্ররোগ করা হইরাছে বলিয়া প্রকারান্তরে ইহাই উক্ত হইয়া যায় যে, বাক্য ও মনের দারা বে সকল কর্ম্মের নিশাদন হইতে পারে, ঐ দকল দৃষ্টাদৃষ্টপ্রয়োজন ধর্ম ও অধর্মের সাধুন কর্ম করিলে কিলিব প্রাপ্ত হয়। সে পক্ষেও বাক্য ও মনের ছারা সম্পাদনীয় শান্তবিহিত কর্ম্মের অনুষ্ঠান পক্ষেও পাপপ্রাপ্তিবচন নিতান্ত বিরুদ্ধ হইয়া উঠে। শাস্ত্রনিষিদ্ধ কর্মের অমুষ্ঠান :পক্ষেও পাপ প্রাপ্তিবচনও নিস্প্রয়েজন ভূতার্থামুবাদ মাত্র (বাহা দকলেরই বিদিত, ভাহারই পুনঃ কথন) হইয়া উঠে, কারণ, নিবিদ্ধ কর্মা করিলে পাপ হয়, ইহা সকলেরই বিদিত আছে। যদি শরীর-শ্বিতিসাত্র প্রয়োজন কর্মাই এইস্থলে শারীর কর্ম [বলিয়া] অভিপ্রেত হয়, তাহা হইলে [এই প্রকার তাৎপর্ব্য বর্ণনও করিতে হয় যে] বিধিশাস্ত্রের প্রতিপাত দৃষ্ট বা অদৃষ্ট কলের হেতু, শরীর, বার্কা ও মনের দ্বারা সাধ্য অভ্য ষাবং কর্ম পরিত্যাগ করিয়া; বাক্য, মন ও শরীরের দারাই, আমি করিতেছি এই প্রকার অভিনান পরিহারপূর্বক, শরীর-স্থিতির জন্ত শরীরাদির চেষ্টা বাহতঃ করিলেও পাপভাগী হন না। কারণ এইপ্রকার নিরভিমান ব্যক্তির পাপশন্ধ-বাচ্য কিবিষ প্রাপ্তির সন্তাবনাই নাই। জ্ঞানরূপ অগ্নিছারা কর্মবীক नक्ष रहेबाट विनया, विना वाशाय मिहे खानी मूकि नाफ कतिया शास्त्रन. ইহাই এখানে তাৎপর্য্যার্থ এবং ইহার দ্বারা পূর্ব্বোক্ত তত্ত্বজ্ঞানের ফলেরই অফুবাদ কর। হইতেছে। "শারীরং কেবলং কর্মা" ইত্যাদির এই প্রকার অর্থ ক্রিলে কোনপ্রকার দোষ থাকে না॥ ২১

> যদৃচ্ছালাভসম্ভক্টো দ্বন্দাতীতো বিমূৎসরঃ। সমঃ সিদ্ধাবসিদ্ধো চ কুত্বাপি ন নিবধ্যতে॥ ২২

অনুয়। বদৃজ্যাশাভসম্ভষ্ট: (অবাচিতোপনত-পরিভূষ্ট:) দুন্দাতীতঃ (শীতোফাদিসঙ্গেপ নির্বিকার:) বিমৎসর: (নির্বৈরশ্দি:) সিদ্ধৌ অসিদ্ধৌ চ সম: (হর্ববিবাদবর্জ্জিত:)[সন্] ক্রমাহপি ন নিবধ্যতে ॥ ২২

অকুবাদ। অবাচিত অথচ প্রাপ্ত বস্তুর লাভেই বাহার আকাজ্ঞা

নিক্তি হয়, শীভোকসম্পর্কেও বাঁহার বিকার নাই, অয়াচিত বস্তুত্ত প্রাপ্তি বা অপ্রাপ্তিতে বিনি হর্যবিবাদবিরহিত ,ুসেই জানী পুরুষ কার্য্য করিয়াও সংসালে বন্ধ হয়, না ॥ ১২

ভাষ্য। ত্যক্তসর্কপরিগ্রহন্ত বতেরলাদে: শরীরন্থিতিহেতো: পরিগ্রহ-ভাভাৰাৰ বাচনাদিনা শরীরস্থিতো কর্ত্তব্যতারাং প্রাপ্তারান্ "অবাচিতনসংক্ প্র-· মুপপর্লং বদৃদ্দ্রা" ইত্যাদিনা বচনেনাক্সজাতং যতেঃ শরীরস্থিতিহোতারলাদেঃ প্রান্তিদারম্, আবিমুর্বন্নাহ বদুচ্ছেতি। বদুচ্ছালাভসম্ভষ্টোহপ্রার্থিতোপনতো **নাডঃ** বদূহোনা**ডঃ তেন সম্বুটঃ সংজ্ঞাতাল**ণ্ডাত্যরঃ দন্দাতীতো দন্দৈঃ শীতোকাদি-ভি**র্ম্বরানে।২পি অবিষ**ণ্ণচিক্তঃ দ্বন্দাতীত উচ্যতে। বিদৎসরো বিগতমৎসরো নির্কৈরবৃদ্ধি: ' সমন্ত্রল্য: বদৃচ্ছালাভক্ত সিদ্ধাবসিদ্ধে চ। য এবস্থৃতো যতিরলাদে: শরীরত্বিতিকেতোর্লাভালাভয়ো: সম: হর্ষবিবাদবর্জ্জিত: কর্মাদাবকর্মাদিদশী বধাভূতাস্মদর্শন নিষ্ঠঃ শরীরস্থিতিমাত্র প্রয়োজনে ভিকাটনাদিকর্মণি শরীরাদি নির্বর্জে "নৈব কিঞ্ছিৎ করোমাহং" "গুণাগুণের্ বর্ত্তরে" ইত্যেবং সদা সংপরি-চকাণ আত্মনঃ কর্ত্যাভাবং প্রান্ত কৈঞ্চিল ভিকাটনাদিকং কর্ম করোতি লোকবাবহারদামান্তদর্শনেন গৌকিকৈরারোপিতকর্তুত্বে ভিক্ষাটনাদৌ কর্ম্মণি কর্ত্তা ভৰতি। স্বায়ন্তবেন তু শান্তপ্রমাণাদিজনিতেন অকত্তিব। স এবং পরাধ্যা-রোপিতকর্ত্তবং শরীরস্থিতিমাত্রপ্ররোজনং ভিকাটনাদিকং কর্ম কুত্বাপি ন নিবধাতে বন্ধহেতোঃ কর্মণঃ সহেতুকত জ্ঞানাগ্নিমা দগ্ধদাদিত্যকামুবাদ अदेवयः । २२ ः

আনন্দ্রিরিটীকা। পূর্বসোকেন সঙ্গতিং দর্শরন্ন ভরস্কোকমুখাগরতি—
ভ্যক্তেতি। অরাদেরিভাদিশবেন পাছকাচ্ছাদনাদি গৃহতে, বাচনাদিনেভ্যাদিপর্বেশ নেবাক্র্যান্থ্যপাদীরতে, ভিক্ষাটনার্থমুদেবাগাং প্রাক্রকালে কেনাপি বোগ্যেন
নিবেদিতং ভৈক্যমবাচিতম্। অভিশতং পভিতঞ্চ বর্জয়িদ্বা সম্বন্ধমন্তরেণ পঞ্চত্যঃ
সপ্রভ্যোবা গৃহেভ্যঃ সমানীতং ভৈক্যমসংক,প্রম্। সিদ্ধমন্তরং ভক্তকনিঃ অসমীপমুপনীতমুপপরম্। বদৃচ্ছরা অকীয়প্রবন্ধবন্ততিরেকেণেতি বাবং। আদিশক্ষেন—

"মাধুকরমসংক,প্তং প্রাক্ প্রণীতম্যাচিতম্। তাৎকালিকোপপন্নঞ্চ ভৈক্ষ্যং পঞ্চবিধং স্মৃতম্॥"

ইত্যাদি গৃহতে, আবিহুর্করিদং বাক্যমাহেতি যোজনীয়ন্। পরোৎকর্বামর্বপূর্কিকা অক্ষোৎকর্বাভিবালা বিগতা বন্মাদিতি ব্যুৎপত্তিমাশ্রিত্য বিবক্ষিতমর্থমার
শ্রিক্রেক্তি। সংক্ষেপতো দর্শিতমর্থৎ বিশদয়তি—যু এবস্তুত ইতি। তথাপি

প্রকৃতক বজেজিনটনালে। কর্ত্বং প্রতিভাতি তদভাবে ভিকাটনাম্বভাবেন লীবনাভাবপ্রসাদিত্যাপদ্যাহ—(লাক্তি। লাকিকৈরবিবেনিভিঃ সহ ব্যবহারত মানাচমনভোজনাদিলকণত বিহুবাপি সামাজেন দর্শনাং তদর্থসীরেণ লোকিকৈরধ্যারোপিতকর্ত্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বশ্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বশ্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বশ্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বভাজাং বিহানপি লোকদৃষ্টা ভিকাটনাদে। কর্ত্বভাজার ক্রাপীত্যাদিচত্বপাদং ব্যাচষ্টে—স এব্যাত্তি। ভিকাটনাদিনা প্রভিজাসিকেন কর্মণা বিহুবো বছভাজবেহপি কর্মান্তরেশ নির্দ্বত্বং ভবিষ্যতীত্যাশহ্যাহ—ব্যক্তি। জ্ঞানামিদগ্রভালিত্যবং শারীরং ক্রেল-মিত্যাদাব্রভারমন্থবাদ ইতি বোজনা। যপোক্তত্ব কর্মণো যুক্ত্যা, মহাবিরোধাভাপগমস্চনার্থেহিপিশক্ষঃ॥ ২২

অফুবাদ। সকল প্রকার পরিগ্রহ যে ব্যক্তি পবিত্যাগ করিয়াছেন, তাদৃশ সংস্থাসীর পরিগ্রহ না থাকা নিবন্ধন যাচনাদির দারা শরীরবাতার নির্বাহপ্রসক্ত হইলে, অবাচিত অসংক,প্র এবং বদৃচ্ছাবশতঃ উপনীত [অরের দারা দ্বীবিকা নির্বাহ করিবে] ইত্যাদি বচন দারা সংস্থাসীর শরীরস্থিতির প্রতি কারণ অল্লাদির প্রাপ্তির উপায় আবিকার করিবার ক্স বলিডেছেন বে বদুচ্ছেত্যাদি। "বদুছোলাভসম্ভই" অপ্ৰাৰ্থিত হইয়া উপস্থিত লাভকে বদুছোলাভ বলা বাদ, ভাহাতেই বে ব্যক্তি সম্ভষ্ট (অর্থাৎ) ইহাই বংগষ্ট হইল্লাছে, এই এথকার বৃদ্ধিশালী, তাঁহাকেই বদুজ্ঞালাভদন্তই বলা যায়। "বন্দাতীত" বন্দ (वर्षा ९) नीछ ও উक প্রভৃতি ছারা बाहত হইরাও বে ব্যক্তি বিবয়ী চিঠা হন না, তাঁহাকেই দলাতীত বলা বার। "বিমৎসর" বিগত মৎসর (অর্থাৎ) বৈরবৃদ্ধি বাঁহার একেবারে পুথ হইরাছে, তাঁহাকেই বিমৎসর বলা বার। সম (अर्था९) তুল্য, বদুচ্ছালাভের সিদ্ধি বা অসিদ্ধিতে [তুল্য। ইহাই ভাৎপৰ্য]। এই প্রকার যে সন্নাসী শরীরস্থিতিহেতু অন্নাদির লাভ বা অলাভে সন্ধ (অর্থাৎ) व्यविवामविक्ति [शूर्व्साक थकात] कर्षामिएक क्षवर्षामिमर्गनकात्री धवर শরীরাদিসাধ্য অথচ শরীরস্থিতিমাত্রপ্রয়োজন ডিকার্থ ভ্রমণাদি কার্য্যে আমি কর্ত্তা নহি, গুণনিচয় গুণসমূহেই ক্রিয়া করিতেছে" এই প্রকার সর্বাদা বৃথিয়া আপনার অক্ট্রৰ দর্মদা দর্শনপূর্মক প্রকৃতপক্ষে ভিকাটনাদি কোন কার্য্যই क्रुन्नन मा। किन्त वाछ लारकत गरिष्ठ गुरुरात विवस्त गामुछ थाका निरद्धन, লোকগণকর্ত্ক আরোণিত ডিক্লাটনাদি কর্মের কর্মা [বণিয়া ব্যবস্তু হন], ব্যাহ শান্ত ও প্রমাণ হারা কনিত স্বাহতবের হারা বিনি আপনাকে প্রকৃতি

পক্ষে অকর্তা বলিয়া বৃঝিয়া থাকেন। সেই [ব্রহ্মজ্ঞাননিষ্ঠ] সংস্থাসী অপর ব্যক্তি যাঁহার কর্ত্ব আরোপ করিয়া থাকে, সেই যতি ভিক্মটনাদি কর্ম্ম করিয়াও [সংসারে] বদ্ধ হন না; কারণ অবিস্থার সহিত বন্ধহেতু কর্মম [তাঁহার পক্ষে] জ্ঞানামি দারা দক্ষ হইয়াছে। জ্ঞানীর স্বরূপ বর্ণন করিয়া বাহা কিছু বলা হইয়াছে, এস্থলে ভাহাই [ভাল করিয়া বৃঝাইবার জন্ম প্রকারান্তরে] আবার বলা হইল॥ ২২

গতসৃঙ্গন্ত মুক্তন্ত জ্ঞানাবস্থিতচেতসঃ। যজায়াচরতঃ কর্ম্ম সমগ্রং প্রবিলীয়তে॥ ২৩

আর্য়। গতসক্ষ (আসকিশ্রুষ্ঠ) মুক্ত (ধর্মাধর্মবন্ধনরহিত্ত) জানাবস্থিতচেত্র: (তথ্জানসমাহিত্যনসঃ) যজায় কর্ম আচরতঃ (কর্ত্ব্যানিতি বুদ্ধৈব বিহিত্যস্থতিষ্ঠতঃ) সমগ্রং কর্ম প্রবিলীয়তে (সংসারবন্ধনহেভূত্থ ন ভক্তে)॥২০

অসুবাদ। যে ,ব্যক্তি আসন্তিশ্য ও ধর্মাধর্মবন্ধন-রহিত, বাঁহার স্থান্য তব্জানের জন্ম সর্বাদা একাগ্র এবং যে ব্যক্তি 'কর্ত্ব্য' এই প্রকার জ্ঞানেই কর্মাচরণ করিয়া থাকেন, তাঁহার সকল কর্মাই বিলীন হয় (অর্থাৎ সংসারবন্ধের প্রতি কারণ হয় না)॥২৩

ভাষ্য। তাজ্য কর্মফলাসঙ্গমিত্যনেন শ্লোকেন যঃ প্রারক্ত্মা সন্
বলা নিজিম্বজ্রায়দর্শনসম্পন্ন: স্থাৎ, তদা তহ্ম আত্মনঃ কর্তৃকর্মপ্রয়োজনাভাবদর্শিনঃ কর্মপরিত্যাগে প্রাপ্তে কৃত্শিচন্নিমিত্তাৎ তদসন্তবে সতি পূর্ববিৎ তন্মিন্
কর্মণি প্রবৃষ্টোহিশি নৈব কিঞ্চিৎ করোতি স ইতি কর্মাভাবঃ প্রদর্শিতঃ।
বিশ্বেবং কর্মাভাবো দর্শিতস্তাইত গডসঙ্গম্ম সর্বতা নির্ভাসক্তেঃ ভানাবস্থিতচেতসঃ জ্ঞান এব অবস্থিতং চেতঃ যন্ম সেমগ্রং জ্ঞানাবস্থিতচেতান্তক্ম যজ্ঞার
যক্ষ্মনির্ক্ত ন্ত্রার্থম্ আচরতো নির্ক্তিয়তঃ কর্ম সমগ্রং সহাগ্রেণ ফলেন সহ বর্ত্ততে
ইতি সমগ্রং কর্ম তৎ সমগ্রং প্রবিলীয়তে বিনশ্রতীত্যর্থঃ॥ ২০

আনন্দ্রিনিকা। গতসঙ্গপ্রেত্যাদিলোকত ব্যবহিতেন সমন্ধং বজুং বৃত্তং কার্ত্তরতি—ত্যুক্তে। অনেন শ্লোকেন নৈব কিঞ্চিৎ করোতি স ইত্যত্ত্ব কর্মাভাবঃ প্রদর্শিত ইতি সমন্ধঃ। কন্ত কর্মাভাবপ্রদর্শনমিত্যাশঙ্কামামাহ—যঃ প্রারক্তে । প্রারক্তমা দুন্ যোহবতিষ্ঠতে তক্ত কর্মাভাবঃ প্রদর্শিতশেষেরাধঃ ভাদিত্যাশঙ্কাবস্থাবিশেষে তৎপ্রদর্শনাব্রৈবিষত্যাহ—যুদ্ধতি। স্বন জ্ঞানবতঃ

ক্রিরাকারকফলাভাবদর্শিনঃ কর্মপরিত্যাগঙ্গোব্যাৎ কর্মাভাববচনমপ্রাপ্তপ্রতিষেধঃ আদিত্যাশক্ষাহ—আত্মনইতি। লোকসংগ্রহাদিনিমিত্তং প্রাণেবােক্তমবিভাবস্থান্যামিব পূর্ববিদিত্যুক্তম্। এবং বৃক্তমন্ভােতরশ্লোকসবতারয়তি—যুদ্রভাত । ধর্মাধর্মাদিত্যাদিশক্ষেন রাগবদ্ধাক্তভাপি বিভাবতো মুক্তভা ভগবংপ্রীত্যর্থং কর্মান্তভানোপলস্তাং ততা বন্ধারভঃ সন্তাব্যেতত্যাশক্ষাহ—যুক্তা্যুত্তি। ধর্মাধর্মাদীত্যাদিশক্ষেন রাগব্রেষাদিসংগ্রহঃ, তক্ষ বন্ধনত্তং কর্মবৃহপত্তাা প্রতিপত্তব্যম্। যজ্ঞনির্ক্ ত্তাং বজ্ঞশক্ষিতভা ভগবতাে বিক্ষোর্নারয়ণভা প্রীতিসম্পত্যর্থমিতি ধাবং। জ্ঞান্মের বাঞ্তো জ্ঞানভা প্রতিবন্ধকং কর্ম পরিশক্ষিতং পরিহরতি—ক্রেম্তি। সমত্রেণেত্যক্ষীক্ষতা ব্যাচন্টে—স্ত্ত্যাদিনা॥২৩

অনুবাদ। ত্যক্তা কর্মফলাসঙ্গম্ ইত্যাদি শ্লোকে প্রতিপাদিত হইয়াছে যে, যে ব্যক্তি কর্মারন্তের পর নিজ্ঞির ব্রহ্মকেই আয়ররূপে ব্রিতে পারিয়াছেন, তাঁহার পক্ষে সেই সময় নিজের সম্বন্ধে কর্ত্তা করা উচিত হইলেও যদি কোন কর্মরণবশতঃ পূর্বের স্থার তাঁহার দেই কর্মেতেই প্রবৃত্তি গাকিয়া যার, তবে কর্মেতে প্রবৃত্ত হইলেও প্রকৃত পক্ষে তিনি কোন কর্ম্ম করেন না ইত্যাদি স্লোকের দ্বারা তাঁহার প্রকৃতপক্ষে কর্মাভাবই দর্শিত হইয়াছে, যাঁহার এই প্রকার কর্মাভাব দর্শিত হইয়াছে, তাঁহারই বিষয়ে বিলয় বারা বাইতেছে লে বিজ্ঞান কর্ম্মাভাব দর্শিত হইয়াছে, তাঁহারই বিষয়ে বিলয় বাহতেছে লে বিজ্ঞানেতেই যাঁহার চিত্ত অবর্থিত গাকে, সেই জ্ঞানাবন্থিতচেতা (অর্থাৎ) ধর্ম্ম এবং অধর্ম্মরূপ বন্ধন হইতে বিনিম্ম্ ক্তি। জ্ঞানাবন্থিতচেতা (অর্থাৎ) জ্ঞানেতেই যাঁহার চিত্ত অবর্থিত গাকে, সেই জ্ঞানাবন্থিতচেতা, এই প্রকার বিশেষণযুক্ত ব্যক্তি কেবল যজ্ঞের নিম্পাদনের জন্মই কর্মের অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন, ফলের সহিত তাঁহার সকল কর্ম্মই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অ্যঞ্গান্ধের অর্থ কল, ফলের সহিত তাঁহার সকল কর্মই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অ্যঞ্গান্ধের অর্থ কল, ফলের সহিত তাঁহার সকল কর্মই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অ্যঞ্গান্ধের অর্থ কল, ফলের সহিত তাঁহার সকল কর্মই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অ্যঞ্গানের অর্থ কল, ফলের সহিত তাঁহার সকল কর্মই বিনাশ প্রাপ্ত, ইহাই অর্থ॥ ২৩

ব্রহ্মার্পণং ব্রহ্ম হবিব্র ক্মাগ্রেম ব্রহ্মণা হতম্। ব্রহ্মেব তেন গস্তব্যং ব্রহ্মকর্ম্মসমাধিনা॥ ২৪

আমুয়। অর্পণং এক [এব] হবিঃ একা, একার্যো একাণা (কর্জ্বা) হতং [অপি একৈব] একাকর্মসমাধিনা (তেন] গস্তব্যং [অপি ফলং] একার ॥ ২৪

অনুবাদ। বাহা দারা হবিঃ অমিতে প্রক্রিপ্ত হর, তাহা একা (এক্র-ক্রমেণ্ট প্রক্রবিদ্ ব্যক্তির সমক্ষে প্রতীয়মান হর, এইরূপ) হবনীয় দ্বাও ব্ৰহ্ম, যে অন্নিতে হবনীয় দ্ৰব্য প্ৰক্ৰিপ্ত হয়, তাহাও ব্ৰহ্ম। হবনক্ৰিয়াও ব্ৰহ্ম এবং ব্ৰহ্ময়প হবনক্ৰিয়াতে বাহার সমাধি আছে, ঠাঁহার দ্বারা যে ফল লব্ধ হইয়া থাকে, তাহাও [ব্ৰহ্মজ্ঞ যতির নিকট] ব্ৰহ্ম বিলিয়াই প্ৰতীয়মান হয়]॥২৪

ভাষ্য। কন্মাৎ পুনঃ কারণাৎ ক্রিরমাণং কর্ম স্বকার্য্যারস্তমকুর্বৎ সমগ্রং প্রবিদীয়ত ইত্যুচ্যতে যতো ব্রহ্মতি। ব্রহ্মার্পণং যেন করণেন ব্রহ্মবিদ্ হবিরয়ো অর্পরতি তদ্ ব্রহ্মবেতি পশুতি তহ্নায়ব্যতিরেকেণাভাবং পশুতি যথা শুক্তিকারাং রজতাভাবং পশুতি তহ্নাতে ব্রহ্মবার্পণমিতি। যথা যদ্রজ্জতং তৎ শুক্তিকৈবেতি। ব্রহ্ম, অর্পণমিত্যসমস্তে পদে। যদর্পণবুদ্ধা গৃহতে লোকে তদন্ত ব্রদ্ধবিদো ব্রহ্মবেত্যুর্থ:।

ব্ৰহ্ম হবিস্তপা যদ্ হবিবৃদ্ধ্যা গৃহ্যমাণং তদ্ ব্ৰহ্মৈবাস্ত। তথা ব্ৰহ্মাধাবিতি সমস্তং পদম্। অগ্নিরপি ব্ৰহ্মিব যত্ৰ হ্যতে ব্ৰহ্মণা কৰ্ত্ৰণ ব্ৰহ্মিব কর্ত্তেত্র্থং। যত্তেন হতং হবনক্রিয়া তদ্ব্ৰহ্মৈব। যতেন গন্তব্যং ফলং তদপি ব্ৰহ্মিব। ব্ৰহ্মকর্মাধিনা ব্ৰহ্মিব কর্ম্ম ব্ৰহ্মকর্ম তন্মিন্ সমাধিবাত্ত স ব্রহ্মকর্মসমাধিনা ব্রহমেব গন্তব্যম্। এবং লোকসংগ্রহং চিকীর্ণাপি ক্রিয়মাণং কর্মা পর্মার্থতোহকর্ম ব্রহ্মবৃদ্ধাপম্দিতভাব।

এবং . সতি নিবৃত্তকর্মণোহিপি সর্বাক্ষয়াসিনঃ সমাগ্দশনশ্বতার্থং যজ্ঞজ্মশাদনং জ্ঞানস্থ স্থতরামুপপ্রতে। নদপণাদি অধিগজ্ঞে প্রসিদ্ধ ডদস্থাবাদ্ধ ত্রইন্ধব প্রমার্থদশিনঃ ইতি। অন্তথা সর্বস্থ প্রদ্ধছেহপ্ণাদীনাং
বিশেষতো ব্রহ্মছাভিধানম্ অনর্থকং স্থাও। তন্মাদ্ এক্ষেবেদং সর্বামিত্যভিজ্ঞানতো
বিহুষঃ সর্বাক্ষরাভাবঃ। কারকবৃদ্ধাভাবাচে। ন হি কারকবৃদ্ধিরহিতং যজ্ঞাধ্যং
কর্ম্ম দৃষ্টিয়। সর্বামেবাগ্লিহোঞাদিকং কর্ম শন্তমার্শিতদেবতাবিশেষসম্প্রদানাদিকারকবৃদ্ধিমংকর্ভ্যাভিমানফলাভিসন্ধিমচে দৃষ্টম্। নোপম্দিতক্রিয়াকারক- ফলভেদবৃদ্ধিমংকর্ড্যাভিমানফলাভিসন্ধিরহিতং বা। ইদং তু ব্রহ্মবৃদ্ধাপ্দিন
তার্পাদিকারকক্রিয়াফলভেদবৃদ্ধিমংকর্ম অতোহকর্মের তও ॥

তথা চ দর্শিতং "কণাণ্যকর্ম যা পশ্রেৎ" "কর্মণাভিপ্ররুত্তাহিপি নৈব কিঞ্চিৎ করোতি সং" "গুণা গুণেষু বর্ত্তন্তে" "নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি কুকো মন্তেত তর্বাবিং" ইত্যাদিভিঃ। তথা চ দর্শন্ধগুত্ত তত্ত্ব ক্রিয়াকারকফলভেদবৃদ্ধ্যুপ-মর্দিং করোতি। দৃষ্টা চ কাম্যান্নিহোত্রাদৌ কামোপমর্দেন কাম্যান্নিহোত্রাদিহানিঃ। তথাচ মতিপূর্বকামতিপূর্বকাদীনাং কর্মণাং কার্য্বিশেষ্ভারভক্ষং

দৃষ্ঠম্। তথেহাপি এক্ষব্ৰু গ্ৰম্পিতাপ্ণাদিকারকক্রিরাফলভেদবুদ্ধেব ছিচেষ্টামাত্রেণ কন্মাপি বিহুবোহকর্ম সংপ্রতে। অভউক্তং সমগ্রং প্রবিদীয়ত ইতি॥

অত্র কেচিদান্তঃ यन्त्रका তদর্পণাদীন। ত্রকৈর কিল অর্পণাদিনা পঞ্চবিধেন কারকাত্মনা ব্যবস্থিতং সং তদেব কর্ম করোতি। তত্র নার্পণাদিবুদ্ধিনিবর্দ্ত্যতে कि ख व्यर्गभामियु बक्तत्रिक्ताधीयरा । यथा প্রতিমায়াং বিষ্ণাদিবৃদ্ধি: यथा বা নামাদৌ ব্রহ্মবুদ্ধিরিতি। সত্যমেবমপি ভাৎ যদি জ্ঞানযজ্ঞস্তত্যর্থং প্রকরণং ন ভাং। অত্তু সম্গ্দশ্নং জ্ঞান্যজ্ঞশব্ভিসনেকান্যজ্ঞশব্ভিসারিশে-বামপগুল "শ্রেরান জব্যমরাদ্যজ্ঞাজ্জানযজ্ঞ:" ইতি জ্ঞানং স্তৌতি। অত্তচ সমর্থ-মিদং বচনং ব্রহ্মার্পণমিত্যাদি জ্ঞানস্থ যজ্ঞত্বসম্পাদনে। অন্তথা সর্বস্থি ব্রহ্মছে অর্পণাদীনামেব বিশেষতো ত্রশ্বছাভিধানমনর্থকং স্থাৎ যে ত্বর্পণাদিরু প্রতি-মায়াং বিষ্ণুদৃষ্টিবৎ ব্রহ্মদৃষ্টিঃ কিপ্যতে নামাদিষিব চেতি ক্রবতে ন তেবাং ব্রহ্ম-বিজ্যোক্তা ইহ বিবক্ষিতা স্থাৎ অর্প্ণাদিবৃদ্ধিবিষয়ত্বাৎ জ্ঞানস্থ। নচ দৃষ্টিসম্পাদন-জ্ঞানেন মোক্ষফলং প্রাপ্যতে। "ব্রন্ধৈব তেন গন্তব্যম্" ইতি চোচ্যতে। বিরুদ্ধং চ সম্যগ্দর্শনমস্তরেণ মোক্ষফলং প্রাপ্যতে ইতি। প্রক্রভবিরোধণ্ট। সম্যুগ্ দর্শনঞ্চ প্রকৃতং "কর্ম্মণ্যকর্ম যঃ পঞ্জেৎ" ইত্যক্ত অত্তেচ সম্যুগ্ দর্শনং ততৈখনোপদংহারাথ। "শ্রেয়ান্ দ্রব্যময়ান্যজ্ঞানযজ্ঞানযজ্ঞান । "জোনং লক্ষ্পরাং শান্তিম্" ইত্যাদিনা সমাগ্দশনস্তুতিমেব কুল্ল, উপক্ষীণোহধ্যায়:। তত্ত্ৰাকস্মাৎ অপ্ণাদৌ ব্রহ্মদৃষ্টিরপ্রকরণে প্রতিমায়ামিব বিষ্ণৃষ্টরন্চ্যত ইত্যুত্বপর্মন্; তত্মান্ যথাব্যাখ্যাতার্থ এবারং শ্লোক:॥ ২৪

আনন্দ্গিরিটীকা। 'নাভুক্তং ক্ষীয়তে কন্ম ইতি শ্বতিমাশ্রিত্য শঙ্কতে

কন্মাদিতি। সমস্তত্ত ক্রিয়াকারকফলাত্মকত হৈতত্ত ব্রহ্মমাত্রত্বেন বাধিতছাৎ প্রন্ধবিদাব্রন্ধমাত্রত্ত কর্ম প্রবিলীয়তে সর্ব্ধমিতি যুক্তমিত্যাই—উচ্যুত্ত
ইতি। ব্রন্ধবিদাব্রন্ধৈন সর্বাং ক্রিয়াকারকফলজাতং হৈতমিত্যক্র হেভূবেনানস্তরলোকমনতারয়তি—যুক্তইতি। অর্পণশক্ষত করণাবিষয়ত্বং দর্শয়র্মপণং ব্রন্ধেতি
পদন্দ্রপ্রপক্ষে সামানাধিক: গ্যং সাধ্যতি—হোলেতি। ব্রন্ধ্রতং সা শুক্তিরিতিবং
বাধায়ামিদং সামানাধিকরণ্যমিত্যাই—ত্রন্ত্রতি। তক্র দৃষ্টাস্তমাই—যুগুতি।
উক্তেহর্থে পদক্ষমনতারয়তি—ত্রত্যুত্তইতি। উক্তমেবার্থং প্রস্তাতি—যুগা
যদিতি। সমাসশক্ষাং ব্যাবর্জয়তি—ব্রন্ধোতি। পদন্দ্রপক্ষে বিবক্ষিতমর্থং কর্থরতি—যুদ্প্রিতি।

ব্ৰহ্ম হৰিব্নিতি পদৰয়মৰতাৰ্য্য ব্যাচষ্টে—ব্ৰেক্সেত্যাদিনা। বদৰ্পণবৃদ্ধা

গৃহতে তদুব্ৰন্ধবিদো বন্ধৈবেতি যথোক্তং তণেহাপীত্যাহ—তথেতি ৷ অত্যেতি वन्नविषमधिकरत्राणि। পूर्ववष्ममानमागकः वागवर्वत्रम् भूषाञ्चत्रमवजार्गः বন্ধী ব্যাকরে।তি—তথেতি। প্রাপ্তকাদমাদবদিতি ব্যতিরেকঃ; তত্র বিবক্ষিতমর্থ-মাহ—অগ্নিরপীতি। বন্ধণেতি পদ্যাভিমতমর্থমাহ—ব্রহ্মণেতি। কর্ত্তাহুয়ত-ইতি সম্বন্ধ:। কর্ত্তা ব্রহ্মণঃ সকাশাদব্যতিরিক্তো নাস্তীত্যেতদভিপ্রেতমিত্যাহ— ব্ৰৈক্সৈবেতি। হতমিতাশ্ৰ বিবক্ষিতমৰ্থমাং- যন্ত্ৰেনেতি। ব্ৰক্ষৈব তেনে-ত্যাদিভাগং বিভন্নতে—ব্ৰক্ষৈবেত্যাদিনা। ব্ৰহ্মকৰ্মেত্যান্তবতাৰ্য্য ব্যাকরোতি —ব্রেক্ষেতি। কর্মত্বং ব্রহ্মণো জেরত্বাৎ প্রাপ্যত্বাচ্চ প্রতিপত্তবাম। এবং বন্ধার্পণমন্ত্রত অকরার্থমৃক্ত্য তাৎপর্য্যার্থমাহ—এব্যাতি। নিরুত্তকর্মাণং সন্মাসিনং প্রতি কথমশু মন্ত্রন্থ প্রবৃত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—নিব্বত্তেতি। যথা বাহ্ণ-বজামুষ্ঠানাসমর্থসাজ্ঞস সঙ্গরাত্মকবজ্ঞো দৃষ্টত্তথা জ্ঞানস্ত বজ্ঞত্বসম্পাদনং স্বত্যর্থং স্বতরামুপণছতে তেন স্বতিশাভাং কল্পনায়া: স্বাদীনম্বাচ্চেত্যর্থ:। জ্ঞানস্ত বজ্ঞত্বসম্পাদনমভিনম্বতি – যদর্পণাদীতি। কেন প্রমাণেনাত্র বজ্ঞত্বসম্পাদনমব-গভমিত্যাশঙ্কা অর্পণাদীনাং বিশেষতো ব্রহ্মডাভিধানামূপপত্ত্যেত্যাহ—অন্যথেতি। ষক্তত্তে সম্পাদিতে ফলিতসাহ—ত্রুসাদিতি। আছৈবেদং সর্জ-মিত্যাত্মব্যতিরেকেণ সর্বস্থাবস্তুত্বং প্রতিপ্রমানস্ত কর্মাভাবে হেড্রুরমাহ— কারকেতি। কারকবুরেত্তে ভাষানভাভাবেহিপ কিমিতি কর্মান ভাদিত্যা-শক্যাহ—ন হীতি। উক্তমেবাধ্বব্যতিরেকাভ্যাং দুচ্বতি—সর্ব্যমেবেতি। इक्सारब्रज्ञानिना भरकन ममर्भिरजा त्वरजाविरभयः मञ्जानानकात्रकमानिभक्षीशानि-করণকারকং তধিবয়বুদ্ধিনৎকর্ত্তাহস্মীত্যভিনানপূর্ব্বকং ভোক্ষ্যে ফলমস্ত্রেতি ফলাভি-সন্ধিমচ্চ কর্ম্ম দৃষ্টমিতি যোজনা। অধ্বয়মুকা ব্যতিরেকমাহ—নেত্যাদিনা। উপমৃদিতা ক্রিয়াদিভেদবিবরা বৃদ্ধির্যস্ত তৎকর্ম তথা কর্ত্ত্বাভিমানপূর্বকো ভোক্যে ফলমস্তেতি বোহভিসন্ধিস্তেন রহিতঞ্চ ন কর্মা দৃষ্টমিত্যন্বয়:। ব্ৰন্ধবিদো ভাসমানকৰ্মাভাবে, কিমায়াতমিত্যাশক্ষ্যাহ—ইদমিতি। ব্রহ্মবিদো দুখ্যমানং কর্ম্ম তদহমন্মি ব্রহ্মেতি বুদ্ধ্যা নিরাক্তকারকাদিভেদ্বিষয়-वृक्षिमहर्णक करेयाव न खविछ उद्युख्यात मिछ व्यानकः कांत्रकांनि व्यावर्श्वमानः ব্যাপ্যং কর্মাপি ব্যাবর্ত্তয়তি তত্ত্বিদঃ শরীরাদিচেষ্টা কর্মাভাসঃ কর্মব্যাপক-রহিতদাৎ স্বযুপ্তচেষ্টাবদিত্যর্থ:।

জানবভোদৃশুমানং কর্মাকশৈরেভ্যত্র ভগবদমুমভিমাহ—তথাচেতি। বন্দ-বিদো দৃষ্টং কর্ম নাস্তীত্যুক্তেহশি তৎকারণামুপমর্দাৎ পুনর্ভবিষ্যতীত্যাশঙ্কাহ— তথা চ দর্শয়ন্ধিতি। অবিধানিব বিধানপি কর্মণি প্রবর্ত্তমানো দৃশুতে তথাপি ভশু কর্মাকর্মৈবেত্যত্র দৃষ্টাস্তমাহ—দৃষ্টা চেতি। বিষৎকর্মাণি কর্মমাবিশেবাদিতর-কর্মাবৎ ফলারম্ভকমিতাপি শঙ্কা ন যুক্তেত্যাহ—তথেতি। ইদং কর্মাবং কর্ম্ভব্যমন্ত চ ফলং ভোক্তব্যমিতি মতিস্তৎপূর্ব্বকাণ্যতৎপূর্ব্বকাণি চ কর্ম্মাণি তেষামবাস্তরভেদ-সংগ্রহার্থনাদিপদম। দার্ভাস্তিকমাহ—তথেতি। সপ্তম্যা বিষংপ্রকরণং পরামৃষ্টং ষষ্ঠে সমানাধিকরণে। উক্তেখ্যে পুর্ববাক্যমনুকৃলয়তি—অভইতি। ব্যাখ্যানমুক্তা স্বযুগ্যব্যাখ্যানমন্থ্ৰদতি—অত্ৰেতি। না প্রসিদ্ধবিধানক কায়ছোল প্রসিদ্ধোদ্ধেশেন প্রসিদ্ধবিধানং কথমিত্যাশস্ক্রাহ —বে কাবেতি। কিলেতামিন ব্যাখ্যানে সিদ্ধান্তিনোহসংপ্রতিপত্তিং হৃচমতি। কর্তৃকর্মকরণসম্প্রদানাধিকরণরপেণ পঞ্চবিধেন এক্সৈব ব্যবস্থিতং কর্ম্ম করো-ভী তাদীকারাং তদপ্রদিদ্ধাভাবাং তদম্বাদেনার্পণাদিমবিরুদ্ধন্তদ্ ষ্টিবিধিরিতার্থ:। দৃষ্টিবিধিপকে সিদ্ধা স্তাদিশেষং দর্শন্তি—তত্ত্তেতি। মর্পণাদিষু কর্তব্যাং এক্ষবৃদ্ধিং দৃষ্টাস্তাভ্যাং স্পষ্টয়তি—যুথেত্যাদিনা। দৃষ্টিবিধানে বিধেয়দৃষ্টে মানসক্রিয়াত্তেন সমাগ্ জ্ঞানত্বাভাবাৎ প্রকরণভন্ধ: স্থাদিত্যভিপ্রেত্য পরিহরতি – সত্তামেবমিতি। বিধিংসিতদৃষ্টিস্কৃতিপরমেব প্রকরণং ন জ্ঞানস্কৃতিপরমিত্যাশক্য প্রকরণপর্য্যা-লোচনরা জ্ঞানস্বতিরেবাত্র প্রতিভাতীতি প্রতিপাদয়তি—অত্রে ত্নিতি। ব্রদার্পণমন্ত্রখাপি সমাগ্রানস্তকো সামর্থাঃ প্রতিভাতীত্যাহ—অত্রে চেতি। নম্বর্ণাদিযু ব্রহ্মদৃষ্টিং কুর্বতামপি ব্রহ্মবিগ্রৈথাত বিবক্ষিতেতি পক্ষভেদাসিদ্ধিরিতি চেৎ ততাহ—যে ত্বিতি। যথা ব্ৰহ্মদৃষ্ট্যা নামাদিকমুপান্তং তথাৰ্পণাদিবু ব্ৰহ্মদৃষ্ট-করণে সত্যর্পণাদিকমেব প্রাধান্তেন জ্ঞেরমিতি ব্রহ্মবিস্থা যথোক্তেন বাক্যেন বিব-কিতা ন খাদিতাৰ্থ:। কিঞ্চ ব্ৰক্ষৈৰ তেন গন্তবামিতি ব্ৰহ্মপ্ৰাপ্তিফলাভিধানাদ্দি দৃষ্টিবিধানমমিষ্টমিত্যাহ—ন চেতি। ন চার্পণাম্বালম্বনা দৃষ্টির্বন্ধ প্রাপন্নত্যপ্রতী-কালম্বনান্নয়তীতি ভারবিরোধাদিতিভাব:। দৃষ্টিবিধানেহপি নিয়োগবলাদেব স্বৰ্গবদদৃষ্টো মোকো ভবিষ্যতীত্যাশস্ক্যাহ—বিব্ৰুদ্ধতি। জ্ঞানাদেব কৈবল্যমুকা মার্গাস্তরাপবাদিন্তা শ্রুত্যা বিরুদ্ধং মোকত অবিন্তানিবৃত্তিলকণত দৃষ্টত নৈয়োগিক-ব্বচনমিত্যর্থ:। দৃষ্টিনিয়োগানোকো ভবতি ইত্যেতং প্রকরণবিক্লদ্ধঞ্চ্যাহ— প্রকৃতেতি। তদেব প্রপঞ্যতি—সম্যুগ্ দর্শনঞ্চিত্। অত্তে চ সম্যুগ্ দর্শনং প্রকৃতমিতি সম্বন্ধঃ। তত্ত্ব হেতৃঃ—ত্র স্মান্তি। সম্যাণ্ডানেনোপক্রম্য তেনৈবোপদংহারেহপি মধ্যে কিঞ্চিদক্তকুমিতি প্রকরণভাতদ্বিবর্ত্বমিত্যাশঙ্কাহ —(শ্রেমানিতি। প্রকরণে সম্যগ্জানবিষরে সত্যন্ত্রপপল্লো দর্শনবিধিরিতি ফলিড-

মাহ—তত্ত্বেতি। ত্রন্ধার্পণমন্ত্রে পরকীয়ব্যাখ্যানাসম্ভবে স্বকীয়ব্যাখ্যানং ব্যবস্থিত।
মিত্যুপসংহরতি—তুম্মাদিতি॥ २৪

অমুবাদ। কিন্তু কি কারণে কর্ম্মের অমুষ্ঠান করিলেও ঐ কর্ম্ম [নিকাম কর্মামুষ্ঠানকারীর পক্ষে] ফলের সহিত প্রবিদান হইয়া যায় এবং নিজ ফলদানে সমর্থ হয় না ৄ [তাহারই উত্তর স্বরূপ] বলা যাইতেছে বে, যে কারণে ত্রন্ধার্পনিত্যাদি। "ত্রন্ধার্পনিত যে কারণের ঘারা ত্রন্ধবিং অগ্নিতে হবনীয় ব্রব্য অপ্র করিয়া থাকেন, সেই কারণকে সে ব্যক্তি ব্রন্ধার্মার্থাকেন (অর্থাৎ) আত্মস্বরূপত্রন্ধব্যতিরেকে ঐ বস্তুর কোন সন্তাই নাই, ইহাই ব্রিয়া থাকেন। যেমন শুক্তিতে [রক্ষত দৃষ্ট হইলেও, বাস্তবপক্ষে] রক্ষতের অভাবই লোকে দেখিয়া থাকে, সেই রূপই বলা যাইতেছে যে অর্পনি ব্রন্ধই। যেমন [লোকে বলিয়া থাকে যে] যাহা রক্ষত বলিয়া দৃষ্ট হইতেছে, তাহা বাস্তবিক শুক্তি ব্যতিরিক্ত অন্ত কিছুই নহে। ব্রন্ধ অর্পনি এই তুইটি পদে সমাদ করা হয় নাই। যে বস্তুকে লোকে অর্পনি বুদ্ধিতে গ্রহণ করিয়া থাকে, তাহাই বন্ধবিদের সমক্ষে ব্রন্ধবৃদ্ধিতেই গৃহীত হইয়া থাকে, ইহাই তাৎপর্য্য।

"ব্রহ্ম হবিঃ", হবিঃ এই বৃদ্ধিতে যে বস্তু গৃহীত হয়, ভাহাও ব্রহ্মবিং যতির সমক্ষে ব্রহ্মই। সেই প্রকার 'ব্রহ্মায়ো' এই স্থলেও ব্রহ্মায়িপদটি সমস্ত। ব্রহ্মবর্দ্ধপ করেন, তাহাও ব্রহ্ম এবং হবি প্রক্ষেপ-কর্ত্তাও ব্রহ্ম। ইহাই মর্থ। সেই প্রক্ষেপকর্ত্তা যে হবনক্রিয়ার অমুষ্ঠান করেন, তাহাও ব্রহ্ম। এবং সেই হবনক্রিয়ার দারা যে ফল লাভ হয়, তাহাও ব্রহ্ম। 'ব্রহ্মকর্ম্মসমাধি' ব্রহ্মস্বর্মপ কর্মকের্ম বলা যায়, সেই ব্রহ্মকর্মে বাহার সমাধি আছে, তাঁহার নাম ব্রহ্মকর্ম্মসমাধি, সেই ব্রহ্মকর্ম্মসমাধি ব্যক্তিও ব্রহ্মকে প্রাপ্ত ইইয়া থাকেন। এই প্রকার লোকসংগ্রহের অভিলাবে ব্রহ্মবিং বে কর্ম্ম করিয়া থাকেন, তাহাও বাস্তব পক্ষে বন্ধের হেতু [কর্ম্ম নহে], কারণ ঐ কর্মের ফলোৎপাদিনী শক্তি ব্রহ্মজানের দারা বিনষ্ট হইয়া থাকে॥

এই প্রকার এই শ্লোকের তাৎপর্য বর্ণন করিলে, যিনি কর্ম হইতে নির্ব্ত, সেই সর্বাক্মপংস্থাসীর সম্যুগ্দর্শনের স্থাতির নিমিত্ত তদীয় ব্রহ্মজ্ঞানেরও যজ্জত্ব সম্পাদন [যজ্জের সহিত রূপক করিয়া স্থাতি করা] স্থাপ্রভাবে সংলগ্ধ হইয়া বার । [এই শ্লোকের ইহাই প্রকৃত তাৎপর্য বলিতে হইবে যে] লোকে যজ্ঞান্ত বে বস্তু অপ্রপাদি শন্দের হারা অভিহিত হইয়া পাকে, সেই সকল বস্তুই প্রমার্থদলী যতির সমক্ষে সর্বাশ্বভূত ব্রহ্ম ব্যতিরিক্ত আর কিছুই নহে। এই

প্রকার ভাৎপর্য্য যদি না হয়, তাহা হইলে দকল পদার্থেরই ব্রহ্মস্বরূপতা ত দিদ্ধই আছে, তাহার মধ্যে আবার বিশেষ করিয়া অপণাদি পদার্থেরই ত্রন্ধ-রূপতাভিধান নিরর্থক হইয়া পড়ে। সেই কারণে সিদ্ধ ইইতেছে বে, "এই সকল বিশ্বপ্রপঞ্চ ত্রন্ধ ব্যতিরেকে আর কিছুই নহে," এই প্রকার জ্ঞান গাঁহার হইয়াছে, দেই বিদ্বান যতির কোনরূপ কর্মাই হইতে পারে না। কারণ তাঁহার [কর্ত্তা, করণ, সম্প্রদান প্রভৃতি] কারকবৃদ্ধি নাই ; কারকবৃদ্ধি না থাকিলে, যঞ্জ-নামক কর্ম হইতে পারে, এমন ত দেখা যায় না। অগ্নিষ্টোম প্রভৃতি স্কল বিহিত কর্ম্মের এই স্বরূপ যে, তাহারা দেবতা-বিশেষরূপ সম্প্রদান প্রভৃতি কারক শব্দের ছারা প্রথমে বোধিত হয়, ঐ সকল বস্তুর জ্ঞান এবং নিজের উপর কর্ত্ত্বাভিমান যাহার আছে, এই প্রকার কর্ত্তাই ঐ সকল যজ্ঞ করিয়া থাকে. ইহা দর্বতেই পরিদৃষ্ট হয় ৷ " 'এইটি ক্রিয়া', 'ইহা কারক' এবং 'ইহা ফল', এই প্রকার ভেদজ্ঞান তিরোহিত হইলে, যজ্ঞাদি কোন কার্যাই হইতে পারে না, ইহাও দেখিতে পাওয়া যায় এবং কর্ত্ত্বাভিমান এবং ফলাভিসন্ধি না থাকিলেও ঐ সকল কর্ম সম্পন্ন হয় না, ইহাও দেখা যায়। ব্রশ্বজ্ঞানের দ্বারা ক্রিয়া. কারক এবং ফল বিষয়ে ভেদজ্ঞান তিরোহিত হয় বলিয়া, ব্রহ্মযতিগণের কর্ম্ম প্রকৃত পক্ষে কর্মাই হইতে পারে না॥

"কর্মণ্যকর্ম যা পশ্রেৎ" (যে ব্যক্তি কর্মেতে অকর্ম দেখিয়া থাকেন,)
কর্মণ্যভিপ্রবৃত্তাহিপি নৈব কিঞ্চিৎ করোতি সং" (কর্মেতে অভিপ্রবৃত্ত হইয়াও
তিনি কিছুই করেন না;) "গুণা গুণের বর্তত্তে" (গুণ সকল গুণেতেই
প্রবৃত্ত ইইয়া থাকে,) "নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি মুক্তো মন্তেত তন্ধবিৎ"
(সমাহিতচেতা তন্ধবিৎ বিবেচনা করিয়া থাকেন যে, আমি কিছুই করিতেছি
না) ইত্যাদি শ্লোকের দারা সেই প্রকারই দেখান হইয়াছে, এইরূপ উপদশ্দ
দিয়া ভগবান্ ক্রিয়া কারক ও ফলের মধ্যে পরস্পার ভেদ বুদ্ধির উপমর্দ্দন
করিয়াছেন। কাম্য অগ্লিহোত্রপ্রভৃতি যাগে কামনার নিবৃত্তি হইলে, ঐ কাম্য
অগ্লিহোত্রাদিরও নিবৃত্তি হইয়া থাকে ইহাও দেখিতে পাওয়া যায়। ফলাভিসন্ধান এবং ফুলের অনভিসন্ধানপূর্ক্ত কত কর্ম্মের ফলেও বিশেষ হইয়া থাকে,
ইহাও দেখিতে পাওয়া যায়। সেই প্রকার এথানেও অপর্ণাদিকারক, ক্রিয়া,
ও ফলের পরস্পার ভেদবৃদ্ধি, ব্রক্ষজ্ঞানের দারা উৎসাদিত ইইয়াছে বলিয়া বিদ্ধানের
বাহ্যচেষ্টামাত্র কর্ম্মও প্রকৃত পক্ষে [পাণ পুণ্যের হেতু] কর্ম্ম হয় না। এই
কারণেই বলা ইইয়াছে "তাহার সমগ্রই প্রবিলীন হয়॥"

এই শ্লোকের ব্যাখ্যা প্রসঙ্গে কোন কোন ব্যক্তি বলিয়া পাকেন যে, যে ন্স তাহাই অপ ণাদি (অর্থাৎ) ব্রহ্মই পঞ্চবিধ কারক স্বরূপে ন্যবস্থিত হইয়া দেই কর্ম্ম সম্পাদন করিয়া থাকেন। স্ক্তরাং দেই স্থলে অপ্ণাদি বৃদ্ধির নিরাকরণ করা হইতেছে না; কিন্তু অপ্ণাদি বস্তুতে ব্রহ্মবৃদ্ধির উৎপাদন করা চইতেছে; বেমন প্রতিমাদিতে বিষ্ণু প্রভৃতির বুদ্ধি কিংবা নামে তে ব্রহ্ম বুদ্ধির উৎপাদন করা গিয়া থাকে। সত্য, এইপ্রকার ব্যাখ্যাও হইতে পারিত, যদি এই স্থানটি জ্ঞানযজের প্রকরণ না হইত। এই অধ্যারে কিন্তু জ্ঞানযক্ত শঙ্কের প্রতিপাত সম্যাগ দর্শনরূপ জ্ঞানকে, অনেকে যজ্ঞাব্দপ্রতিপাত ক্রিয়া বিশেষের নাম দারা উল্লেখ করিয়া, পরে "দ্রবাময়যক্ত হইতে জ্ঞানযক্তই মুখ্যতর" ইত্যাদি বাকোর দারা স্তৃতি ক্রিয়াছেন। ব্রহ্মাপুণিং ইত্যাদি শ্লোকবাক্যও জ্ঞানের যক্তত্ব সম্পাদনে সমর্থ। তাহা না হইলে সকল পদার্থেরই সাধারণ ভাবে ত্রন্ধ-রূপতা থাকিলেও বিশেষ করিয়া অপুণাদি কতিপর বল্পবিশেষেরই ব্রহ্মন্থ প্রতিপাদন অনর্থক হইয়। উঠে। বাঁহারা বলিয়া থাকেন ষে, প্রতিমাতে বিষ্ণু-বুদ্ধি কিংবা নামে ব্রহ্মবুদ্ধির ভাগ এছলে অপণাদিতে ব্রহ্মবুদ্ধি আরোপিত হইতেছে, তাঁহাদের মতামুদারে এম্বলে স্পষ্ট ভাবে উক্ত ব্রহ্মবিস্থাও বিবৃক্ষিত হইতে পারে না; করেণ, এন্থলে [তাঁহাদের মতে] যে জ্ঞানের কণা বলা হইয়াছে, তাহাও অবৈত্ত্ৰন্ধ বিষয়ক নহে : কিন্তু তাহা অপুণাদি বৈত্তবিষয়ক। কোন একটি বস্তুতে ব্রহ্মদৃষ্টি করিতে হইবে, এই প্রকারের জ্ঞানের দারা মোক্ষ ফল হইতে পারে না; জ্ঞানবান্ই ব্ৰহ্মকে প্ৰাপ্ত হইয়া থাকেন, ইহাও বলা হইতেছে; [অথচ] সম্যগুদর্শন ব্যতিরেকে মোকলাভও হয়, ইহা বিরুদ্ধ [হইলেও] বলা হইতেছে িইহা কি প্রকারে সঙ্গত হইতে পারে: বি প্রকার ব্যাখ্যা করিলে প্রক্রত বিরোধ [ও উপস্থিত হয়] ৷ [ইহা সম্যগ্র দর্শনেরই প্রকরণ] স্কুতরাং সম্যগ্র-দর্শনই এই অধ্যায়ে প্রকৃত (প্রতিপান্ত); "কর্মণ্যকর্ম" ইত্যাদি শ্লোকে সম্যগ্-দর্শনের আরম্ভ করিয়া অধ্যায়ের অত্তে সেই সম্যুগুদর্শনেরই উপসংস্থার করা হইরাছে। "দ্রব্যময় যজ্ঞ হইতে জ্ঞানমর যজ্ঞই মুখ্যতম", "জ্ঞান লাভ করিয়া পরম শান্তি লাভ করেন," ইত্যাদি বাক্যের দারা জ্ঞানেরই স্তুতি করিয়া এই অধ্যায়টি পরিদমাপ্ত হইয়াছে। স্কুতরাং অপ্ণাদি পদার্থে ত্রহ্মদৃষ্টির ইহা প্রকরণ নহে বলিয়া, প্রতিমাতে বিষ্ণুবৃদ্ধির স্থায় অপ্রকরণে এইস্থলে অপুণাদিতে ব্রহ্মদৃষ্টি বলা হইতেছে, এইপ্রকার ব্যাখ্যা করা সম্বত নহে। সেই কারণে এই ল্লোকটির ষে প্রকার ব্যাখ্যা করা গিয়াছে, তাহাই সঙ্গত [ইহা জ্বানিতে হইবে] ॥ २৪

দৈবমেবাপরে যজ্ঞং যোগিনঃ পর্য্যুপাসতে। ব্রহ্মাগ্রাবপরে যজ্ঞং যজ্ঞেনৈবোপজুহ্বতি॥ ২৫

, আনুয়। অপরে যোগিনঃ (কর্মিণঃ) দৈবমেব যজ্ঞং পর্য্যুপাসতে। অপরে (জ্ঞানিনঃ) ব্রহ্মায়ের যজ্ঞং (আত্মানং) যজ্ঞেনৈব (আত্মনৈব) উপজ্হ্বতি (তেদবুদ্ধিনিরাকরণেন একমিতি ভাবয়ন্তি) ! ২৫

অনুবৃদি। বন্ধজানহীন কর্মিগণ দেবপ্রীতির জন্ত (অগ্নিষ্টোনাদি)
যজ্ঞের অমুষ্ঠান করেন। ব্রহ্মবিদ্গণ ব্রহ্মরূপ অগ্নিতে স্বয়ংই আপনাকে হবন করিয়া থাকেন, অর্থাৎ ভেদবৃদ্ধির নিরাকরণ করিয়া আত্মা ও ব্রহ্ম এক, এই প্রকার ভাবনা করিয়া থাকেন॥২৫

ভাষ্য। তত্রাধুনা সম্যগ্দর্শনন্ত যজ্ঞবং সম্পাত্ম তৎস্বত্যর্থম্ অন্তেহপি যজ্ঞা উপক্ষিপ্যস্তে। দৈবমেবেত্যাদিনা। দৈবমেব দেবা ইজ্যস্তে যেন যজ্ঞেন আসৌ দৈবো যজ্ঞস্তমেব অপরে যজ্ঞং যোগিনঃ কর্মিণঃ পর্যাপাসতে কুর্বস্তি ইত্যর্থঃ। ব্রহ্মাগ্রে 'সত্যং জ্ঞানমনন্তং ব্রহ্ম', 'বিজ্ঞানমানন্দং ব্রহ্ম' 'যৎ সাক্ষাৎ অপরোক্ষাদ্ব্রহ্ম' 'য আত্মা সর্বাস্তরঃ' ইত্যাদিবচনোক্তম্ অশনায়াদিসর্বসংসার-ধর্মবর্জিতঃ নেতি নেতীতি নিরস্তাশেষবিশেষং প্রক্ষাপদেনোচ্যতে; ব্রহ্ম চ তদন্ত্রিণ্ড স হোমাধিকরণবিবক্ষয়া ব্রহ্মাগ্রিঃ। তাম্মন্ প্রক্রেণ্ডা অপরেহন্তে ব্রহ্মবিশেষ ব্রহ্মপ্রত্রপদ্বাচ্য আত্মা আত্মনামন্ত্র যজ্ঞানস্ক্র পাঠাং। তমাত্মানং যজ্ঞং যজ্ঞান্দরাচ্য আত্মা আত্মনামন্ত্র যজ্ঞানস্ক্র পাঠাং। তমাত্মানং যজ্ঞং পরমার্থতঃ পরমেব ব্রহ্ম সন্তং বুদ্ধ্যাত্যপাধিসংযুক্তমধ্যস্তসর্ব্বোপাধিধক্মকম্ আত্মতিকরপং যজ্ঞেনৈব আত্মনৈব উক্তলক্ষণেন উপজ্ক্রতি প্রক্ষিপন্তি। সোপাধিকত্ম আত্মন: নির্দ্ধাধিকেন পরব্রহ্মস্বরূপণৈব যদর্শনং স তম্মিন্ হোমস্তং কুর্বস্তি ব্রহ্মাইত্রক্ষাননির্দ্ধান ইত্যর্থঃ। সোহরং সম্যগ্দর্শনলক্ষণো যজ্ঞো দৈব্যজ্ঞাদির্ যজ্ঞেষ্ উপক্ষিপ্যতে নক্ষাপ্রস্তি হাদিলোকৈঃ। 'প্রেয়ান্ দ্ব্যস্ত্রাদ্ধান্য স্ক্রাজ্ঞানযুক্ত পরস্তর্প ইত্যাদিন। স্থত্যর্থম্॥ ২৫

আনন্দণিরিটাকা। জ্ঞানশু বজ্ঞছং সম্পান্থ পূর্বল্লোকে স্থিতে সভাধুনা তত্তৈব জ্ঞানশু স্বভার্থং যজ্ঞান্তরনির্দ্দেশার্থন্, উত্তরপ্রপ্রপ্রপ্তি: ইড়াহ—তত্তেতি। • সর্বস্থ শ্রেঃগাধনশু মৃগ্যনাণরভিজ্ঞাং যজ্ঞছং দর্শন্তন্ আদৌ যজ্ঞঘন্তনাদিনা। দৈবমেবেতি প্রতীক্যাদার দৈবযজ্ঞং বাচ্ছে—দেবাশ্ইতি। সম্যগ্জ্ঞানাখ্যং যজ্ঞং বিভল্পতে—ব্রহ্মাগ্লাবিতি। তত্ত্র ব্রহ্মশার্থং শ্রুত্বস্থিজন স্পষ্টরতি—স্ত্যমিতি। যথ অজ্ঞ্ম অনুত্বিপরীতন্

অপরিচ্চিন্নং বন্ধ তম্ভ পরমানন্দত্বেন পরমপুরুষার্থত্বমাহ—বিজ্ঞানমিতি। তম্ভ জ্ঞানাধিকরণত্বেন জ্ঞানত্বম্ ওপচারিকমিত্যাশঙ্ক্যাহ—যৎ সাক্ষাদিতি। জীব-ব্রন্ধবিভাগে কথমপরিচ্ছিন্নতম্ ইত্যাশক্য বিশিনষ্টি—যুত্তাত্তি। পরশ্বৈবাদ্মতং সর্বন্দাৎ দেহাদেরবাাকতান্তাৎ অন্তর্জেন সাধয়তি—সর্ববন্তর ইতি। বিধিম্বং সর্ব্বমেবোপনিষদাক্য বন্ধবিষয়মুপনিষদাক্যমশেষমেবার্থতো নিবগ্নাতি— অশনায়েতি। বন্ধণ্যন্ত্ৰিশৰপ্ৰবোগে নিমিত্তমাহ—স হোমেতে। বুদ্ধান্ত্তনা সর্বস্তি দাহকত্বাদ্বিলয়ত বা হেতুত্বাদিতি দ্রষ্টবাম্। যজ্ঞশক্ষতাত্মনি তংপদার্থে প্ররোগে হেতুমাহ—আত্মনামস্থিতি। আধারাধেন-ভাবেন বাস্তবভেদং ব্রহ্মান্থনোর্ব্যাবর্ত্তরভি-পরমার্থতইতি। কথং তহি হোমো ন হি তত্তৈব তত্র হোম: সম্ভবতীত্যাশক্যাহ—বৃদ্ধ্যাদীতি। উপাধিমংযোগফলং কণয়তি – অধাস্তেতি। উপাধ্যধ্যাসদারা তদ্ধর্মাধ্যাদে প্রাপ্তমর্থং নির্দ্দিশতি— আহতীতি। ইখন্থতলক্ষণাং ভূতীয়ামেব ব্যাকরোতি—উক্তেতি। অশনায়াদি-সর্বসংসারধর্মবর্জ্জিতেন নির্বিশেষেণ স্বরূপেণেতি যাবং। আত্মনো ব্রহ্মণি হোমমেব প্রকটরতি—সোপাধিকস্থেতি। স্বপর ইত্যন্তার্থং কোরয়তি—ব্রব্রেতি। উক্তপ্ত জ্ঞানৰজ্ঞপ্ত দৈবৰজ্ঞাদিযু ব্ৰহ্মাপ্ ণিনিত্যাদিলোকৈ কুপক্ষিপ্যমাণ্ডং দুৰ্শয়তি —সোহয়মিতি। উপক্ষেপ-প্রয়োজনমাহ—ভোয়ানিতি॥ ২**৫**

তাহারই স্থাতির জন্ত, অন্ত যজেরও প্রস্তাব করা যাইতেছে—দৈবনেবেত্যাদি লোকের ঘারা। দেবগণ যাহার ঘারা সৎকৃত হইয়া থাকেন, তাহাকে দৈব যজ্ঞ বলা যায়, অপর যোগীরা (কর্মীরা) দৈব যজের পর্যুপাসনা করিয়া থাকেন (অর্থাৎ) অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন "সত্য জ্ঞান এবং অনন্ত [ইহাই] ব্রন্ধের স্বরূপ," "বিজ্ঞান এবং আনন্দ ব্রন্ধের স্বরূপ," "যাহা সাক্ষাৎ ভাবে প্রত্যক্ষ, তাহা ক্রন্ধ" "যে আত্মা সর্বান্তর" ইত্যাদি প্রতিবাক্যের ঘারা প্রকাশিত, কৃৎপিপাসা প্রভৃতি সকল প্রকার সংসারধন্ম বিজ্ঞাত, মেতি নেতি ইত্যাদি বাক্যাবোধিত, সকল প্রকার ভেদবর্জ্ঞিত সেই পরমাত্মবস্তই ব্রন্ধান্দের অর্থ; হোমের আপ্রম্বাত্মবন্ধার সেই ব্রন্ধই অন্ধিরণে প্রতিপাদিত হইতেছেন, ব্রন্ধরণ অন্থিতে অপর যোগিগণ (অর্থাৎ) ব্রন্ধবিদ্যাণ যজ্ঞের ঘারা যজ্ঞকে আত্মতিরূপে অর্পণ করিয়া থাকেন, বস্তুতন্ত্ব যাহা পরব্রন্ধন্ধরণ হইয়াও বৃদ্ধি প্রভৃতি উপাধির সহিত্ব বােগবর্শতঃ সংসারের হঃথিত্ব প্রভৃতি ধর্মের আপ্রম্ব বিদ্যা প্রতীত হয়, সেই শ্রাণান্ধীরই এই স্থান যক্ত এই শক্তির ঘারা প্রতিপাদিত হইতেছেন, [কারণ,

শ্রুতিতে] আত্মার নামগণের মধ্যে যজ্ঞ শৃক্টিও দেখিতে পাওরা যার। সংসারধর্ম বরূপ উপাধিবিশিষ্ট আত্মার নিরুপাধিক পরব্রহ্ম বরূপে বে দর্শন, তাহাই করিয়া থাকেন (অর্থাৎ) যাহারা জীব ব্রহ্মের অভেদ দর্শনশীল সয়্যাসী [তাঁহারাই এই প্রকার হোম করিয়া থাকেন]। দেব যজ্ঞ প্রশৃতি যজ্ঞের মধ্যে 'ব্রহ্মাপ'ণং' ইত্যাদি শ্লোকের হারা সম্যুগ্দর্শনরূপ যজ্ঞের উপক্ষেপ করা যাইতেছে [ইহার প্রয়োজন] 'প্রেয়ান্ প্রবাময়াদ্ যজ্ঞাজ ভানযজ্ঞা? ইত্যাদি শ্লোকের হারা এই জ্ঞানযজ্ঞের স্বতি [ব্যতিরেকে অন্ত কিছুই নহে]॥ ২৫

শ্রোত্রাদীনীন্দ্রিয়াণ্যন্যে সংযমাগ্নিযু জুহ্বতি।
শব্দাদীন্ বিষয়ানন্যে ইন্দ্রিয়াগ্নিযু জুহ্বতি॥ ২৬

অনুয়। অন্তে শ্রোতাদীনি ইক্রিয়াণি সংযমাগ্নির্জুহ্বতি, অন্তে ইক্রিয়াথির্শকাদীন্ বিষয়ান্ জুহ্বতি॥ ২৩

অকুবাদ। যোগিগণ সংযমরূপ অগ্নিসমূহে ,ইন্দ্রির সকলের হবন করিয়া থাকেন এবং বিষয়াসক্ত ব্যক্তিগণ ইন্দ্রিররূপ অগ্নিতে শব্দাদি বিষয়ের হবন করিয়া থাকেন॥২৬

ভাষ্য। শ্রোত্রাদীনীতি। শ্রোত্রাদীনি ইন্দ্রিরাণি অতে বোগিনঃ
সংযমান্ত্রিপু প্রতীল্রিরং সংযমো ভিছত ইতি বহুবচনম্। সংযমা এব অগ্নয়ন্তের্
জ্বৈতি ইল্লিয়ন্থ্যমন্যেব কুর্বন্তি ইন্দ্রাগ্রিষ্ জ্বেতি শ্রোত্রাদিভিরবিক্লমবিষরগ্রহণং হোসং মহান্তে ॥ ২৬

আনন্দগিরিটীকা। সম্প্রতি যক্ত্বরমুপগুগুতি— শ্রোত্রাদীনীতি।
বাহানাং করণানাং মনিদ সংযমস্থৈকতাৎ কথং সংবদায়িদিতি বছবচনমিত্যাশ্বাহ—প্রতীন্দির্মাতি। সংবদানাং প্রত্যাহারাধিকরণদেন ব্যবস্থিতানাং
মনোরূপাণাং হোমাধারতাদপ্রিত্বং ব্যপদিশতি—সংঘ্যা ইতি। বিবরেভ্যোহস্বর্বাহানীন্দ্রিরাণি প্রত্যাহরস্তীতি সংবদ্যক্তং সংক্ষিপ্য দর্শরতি—ইন্দিরেতি।
শ্রোত্রাদীন্দ্রিরাগ্রিকু শ্বাদিবিষর-হোমগু তত্তদিন্দ্রিরস্তত্তদ্বিষরোপভোগলকণশু সর্বসাধারণত্বমাশক্র প্রতিবিদ্ধান্ বর্জয়িতা রাগবেষরহিতো ভূষা প্রাপ্তান্ বিবয়ান্ ভূমতে।
তৈত্তৈরিন্দ্রিরিতি বিবক্ষিতং হোমং বিশ্বরতি—শ্রোত্রাদিভিরিতি॥২৬
অনুবাদ। "শ্রোত্রাদীনি" ইত্যাদি [প্রোক্রের অর্ধ] অপর বোগিগণ

সংযমরূপ অগ্নিসমূহে (প্রতি ইন্দ্রিয়ভেদে সংযম ভিন্ন ভিন্ন বলিয়া "সংযমান্তির্" এইস্থানে বছবচন নির্দেশ করা হইরাছে) শ্রবণ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়ের হবন করিয়া থাকেন (অর্থাৎ) ইন্দ্রিয়সংযমই করিয়া থাকেন। অপর ব্যক্তিগণ শন্ধ প্রভৃতি বিষয়সমূহের ইন্দ্রিয়র প অগ্নি সকলে হবন করিয়া থাকেন (অর্থাৎ) শ্রবণ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়-নিবহের দ্বারা অনিষিদ্ধ বিষয়সমূহের ভোগকেই হোম বলিয়া বোধ করিয়া থাকেন॥ ২৬

সর্বাণীন্দ্রিয়কর্মাণি প্রাণকর্মাণি চাপরে। আত্মসংযমযোগাগ্রো জুহ্বতি জ্ঞানদীপিতে॥ ২৭

অমৃয় । অপরে সর্বাণি ইন্দ্রিরকর্মাণি প্রাণকর্মাণি চ জানদীপিতে আত্মসংযমযোগাগ্রৌ জুহবতি॥ ২৭

অনুবাদ। অপর যোগিগণ জ্ঞানের দ্বারা প্রকাশিত আত্মসমাধি যোগ-রূপ অগ্নিতে সকল ইন্দ্রিয়ের ব্যাপার এবং প্রাণবায়্র ব্যাপার সকলের হবন করিয়া থাকেন॥ ২৭

ভাষ্য। কিঞ্চ সর্বাণীতি। সর্বাণি ইন্দ্রিয়কর্মাণি ইন্দ্রিয়াণাং কর্মাণি ইন্দ্রিয়কর্মাণি, তথা প্রাণকর্মাণি প্রাণো বায়্রাধ্যাত্মিকন্তৎকর্মাণি আকৃঞ্চন-প্রসারণাদীন তানি চ অপরে আঅসংবনযোগায়ো আঅনি সংবন আঅসংবনযোগায়ো ক্রিবিত প্রেলিপন্তি জানদীপিতে ক্রেহেনের প্রদীপিতে বিবেকবিজ্ঞানেন উজ্জ্বভাবমাপাদিতে প্রবিলাপর্ম্বী-ত্যর্থঃ। ২৭

আনন্দ গিরিটীকা। বজান্তরং কণয়তি—কিঞ্চেতি। ইন্দ্রিয়াণাং শ্রবণবদনাদীনি। আত্মনি সংঘমো ধারণাধ্যানসমাধিলক্ষণঃ। সর্ব্বমপি ব্যাপারং নিরুধ্য আত্মনি চিত্তসমাধানং ক্র্নিস্তীত্যাহ—বিবেক্তেতি॥২৭

অনুবাদ। দর্বাণীত্যাদি শ্লোকের অর্থ—ইন্দ্রিরসমূহের ক্রিরাকে ইন্ধ্রির-কর্ম বলা বার; আধ্যাত্মিক বার্ই প্রাণশব্দের অর্থ; দেই প্রাণের কর্ম (অর্থাৎ) আকৃঞ্চন প্রদারণ প্রস্থৃতিকেই প্রাণের কর্ম বলা বার। দেই সকল ইন্দ্রিরকর্ম ও প্রাণকর্ম-নিচয়ের আত্মাতে সংব্যত্মপ যে যোগান্তি, ত্রপর যোগিগণ তাহাতেই হবন করিয়া থাকেন অর্থাৎ নিক্ষেপ করিয়া থাকেন। তাঁহাদের সেই আত্মসংব্য-যোগান্তি জ্ঞানের নারা দীপিত (অর্থাৎ) তৈলের হ্বলাতিবিক্ত বিবেকবিজ্ঞানের নারা উজ্জ্ঞলীকৃত [তাঁহারা প্রাণ ও ইন্দ্রিমের ব্যাপার-

নিচরকে জ্ঞানপ্রদীপিত স্বাস্থানমাধিতে প্রকৃষ্টরূপে বিলীন করিয়া দেন, ইহাই তাৎপর্যা]॥ ২৭

দ্রব্যযজ্ঞান্তপোযজ্ঞা যোগযজ্ঞান্তথাপরে। স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশ্চ যতয়ঃ সংশিতব্রতাঃ॥ ২৮

আনুর । [কেহপি] দ্রব্যজ্ঞাঃ, [কেহপি] তপোষজ্ঞাঃ। তথা অপরে বোগ্যজ্ঞাঃ, [তথা কেচন] সংশিতব্রতা যতগ্নঃ স্বাধ্যায়জ্ঞানযজ্ঞাশচ ভবস্তি॥ ২৮

অমুবাদ। কোন কোন তীব্রত যতিগণ দ্রব্যত্যাগকেই যজ্ঞ বোধ করিয়া তাহারই অমুষ্ঠান করিয়া পাকেন, তাঁহাদিগকে "দ্রব্যযক্ত" বলা যায়। যাহারা যজ্ঞবৃদ্ধিতে তপস্থার অমুষ্ঠান করিয়া পাকেন,সেই তপস্থিগণকে "তপোরক্ত" বলা যায়। প্রাণায়ান প্রস্থৃতি গোগকেই যজ্ঞবৃদ্ধিতে যাহারা অমুষ্ঠান করেন, তাঁহাদিগকে "বোগয়জ্ঞ" বলা যায়। যথাবিধি বেদাভ্যাসকে যক্ত বৃদ্ধিতে যাহারা অমুষ্ঠান করেন, তাঁহাদিগকে "সাধ্যায়যজ্ঞ" বলা যায়। এই প্রকার বাহারা শাস্ত্রীয় অর্থের জ্ঞানকেই যজ্ঞবৃদ্ধিতে অমুশীলন করিয়া থাকেন, তাঁহাদিগকে "জ্ঞানয়জ্ঞ" বলা বায়॥ ২৮

ভাষ্য। দ্বেডি। দ্রব্যজান্তীর্থেষ্ দ্রব্যবিনিযোগং যজ্ঞবৃদ্ধা কুর্বন্তি যে তে দ্রব্যজাঃ, তপোযজাঃ যে তপস্থিনতে তপোযজাঃ, যোগযজাঃ প্রাণানাম-প্রত্যাহারাদিলকণাে যে:গাে যেবাং তে যোগযজাঃ, তথা স্পরে স্বাধ্যার-জ্ঞানযজাংক, স্বাধ্যায়ো যথাবিধি ঋগান্তভ্যাসো যজাে যেবাং তে স্বাধ্যায়য়জাঃ জ্ঞানযজাঃ জ্ঞানং শাস্ত্রার্থপরিজ্ঞানং যজাে যেবাং তে জ্ঞানযজাংক, যতরাে যতনশীলাঃ স্ংশিতব্রতাঃ সম্যক্শিতানি তন্কতানি তীক্ষীক্রতানি ব্রতানি বেবাং তে সংশিতব্রতাঃ ॥ ২০

আনন্দ গিরিটীকা। যজ্ঞষট্ ক্ষমবতারয়তি—দ্রেন্তেটিত। তত্ত্ব দ্রবন্ধান্দ বিভজ্জে—তীর্থেছিতি। তপিন্ধনো যজ্ঞবুদ্ধা তপোহমু-তিষ্ঠস্তো নিম্ননস্ত ইত্যর্থ:। প্রত্যাহারাদীত্যাদিশক্ষেন যমনিম্নমাসনধ্যানধারণা-সমাধয়ো গৃহুস্তে, যথাবিধি প্রান্ধ্যমুখন্থপবিত্রপাণিদাক্ষ্মবিধিমনতিক্রম্যেতি যাবং। ব্রতানাং তীক্ষ্মকর্মনতিদৃত্বম্॥ ২৮

অনুবাদ। দ্রবায়জ্ঞ ইত্যাদি লোকের অর্থ—'দ্রবমজ্ঞ' তীর্থসমূহে যজ্ঞ-বৃদ্ধিতে বাঁহারা দ্রব্য দান করিয়া থাকেন, তাঁহারাই দ্রব্যযজ্ঞ [শম্পের দার্না এইছলে বোধিত হইতেছেন], 'তপোষঞ্জ' বাঁহারা তপস্বী, তাঁহারা তপোষঞ্জ [শব্দের বারা অভিহিত হইরা থাকেন], 'বোগবজ্ঞ' প্রাণারাম ও প্রত্যাহার প্রভৃতি বোগই বাঁহাদের বজ্ঞ, তাঁহারা বোগবজ্ঞ [শব্দের প্রতিপাত্ম]; এই প্রকার অপর "স্বাধ্যায়বজ্ঞ" ও "জ্ঞানবজ্ঞ"; স্বাধ্যার (অর্থাৎ) ঋগ্, বজুঃ প্রভৃতি বেদের যথাবিধি অভ্যাসই বাঁহাদের যজ্ঞ, তাঁহারাই স্বাধ্যায়বজ্ঞ; এই প্রকার শাস্ত্রার্থের জ্ঞানই বাঁহাদের যজ্ঞ, তাঁহারা জ্ঞানবজ্ঞ; [ইহারা সকলেই] যতি অর্থাৎ বিহিতকলের জন্ম যথাবিধি প্রযত্নপরায়ণ এবং সংশিত্রত, বাঁহাদের ব্রভ্ত অত্যন্ত তীক্ষ্ণ, তাঁহারাই সংশিত্রত [শব্দের প্রতিপাত্ম] ॥ ২৮

অপানে জুহ্নতি প্রাণং প্রাণেহপানং তথাপরে। প্রাণাপানগতী রুদ্ধা প্রাণায়ামপরায়ণাঃ॥ ২৯

অন্বয়। অপরে প্রাণাপানগতী রুদ্ধা প্রাণান্নামণরার্নাঃ [তথা অপরে] অপানে প্রাণং, [তথা অপরে] প্রাণে অপানং [চ] জুহুবতি ॥ ২৯

অনুবাদ। অপর যোগিগণ প্রাণ ও অপানের গতিকে রুদ্ধ করিয়া, প্রাণারামপরারণ হন এবং অপর যোগিগণ অপানে প্রাণের হবন করিয়া থাকেন, এইপ্রকার কেহ প্রাণে অপানের হবন করিয়া (অর্থাৎ) রেচক, পূর্ক ও কুম্ভক এই অবয়বত্তারে বিভক্ত প্রাণায়ামের অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন॥ ২৯

ভাষ্য। কিঞ্চ অপান ইতি। অপানে অপানরতী জুহ্বতি প্রক্ষিপন্তি প্রাণং প্রাণর্তিং পূরকাধ্যং প্রাণারামং কৃর্বন্তীত্যর্থঃ। প্রাণাহিলাং তথাপরে জুহ্বতি, রেচকাধ্যং চ প্রাণারামং কুর্বন্তীত্যেতং। প্রাণাপানগতী মুধনাসিকাদ্যাং বারোনির্গমনং প্রাণম্ভ গতিন্তদ্বিপর্যয়েণ অধোগমনমপানম্ভ তে প্রাণাপানগতী এতে কন্ধা নিক্ষা প্রাণারামপরায়ণাঃ প্রাণারামতংপরাঃ কুন্তকাধ্যং প্রাণারামং কুর্বন্তীত্যর্থঃ॥ ২>

আনন্দগিরিটীকা। প্রাণায়ামাধ্যং বজ্ঞমুদাহরতি—কিঞ্চেতি। প্রাণায়াম-পরায়ণাঃ সম্ভো রেচকং পূরুকঞ্চ ক্বতা কুন্তকং কুর্বস্তীত্যাহ—প্রাণেতি॥ ২৯

অকুবাদ। আরও অপানে ইত্যাদি। অপানে (এর্থাৎ) অপান বাহুর বৃত্তিতে প্রাণ (অর্থাৎ প্রাণবাহুর্ত্তির) হবন (অর্থাৎ) প্রক্ষেপ করিয়া থাকেন; পূরক-নামক প্রাণায়াস করিয়া থাকেন, ইহাই অর্থ। এই প্রকার অপর, বোগিলণ প্রাণে অপানের হবন করিয়া থাকেন, ইহাই তাৎপর্যা। এইরূপ িঅপর কেহু কেহ] প্রাণ-ও অপানের গতির নিরোধ করিয়া, প্রাণায়ামতৎপর্য ইইয়া থাকেন; কুক্তক-নামে প্রাণায়ামের অমুঠান করিয়া থাকেন, ইহাই অর্থ। মুধ ও নাদিকার দারা [অভ্যন্তরহিত] বায়ুর নির্গমনকেই প্রাণের গতি কছে; ভাহার্ট বিপরীভঞ্চাবে বায়ুর অধোগমনকে অপানের গতি কছে। ু এই দিবিধ গতিরই নিরোধ করিয়া কুন্তক প্রাণায়াম করিতে হয়]॥ ২৯

অপরে নিয়তাহারাঃ প্রাণান্ প্রাণেষু জুহ্বতি। সর্বেহপ্যেতে যজ্জবিদো যজ্জকপিতকল্মযাঃ॥ ৩০

অনুষ্ । মপরে (যোগিন:) নিয়তাহারা: [সন্ত:] প্রাণের্ প্রাণান্ জুহবতি। এতে সর্বেহিপি বন্ধবিদ: [মতএব] বক্তকপিতকবারাঃ ভিবন্তি } ৩০

অফুবাদ। অপর যোগিগণ, আহারের নিম্ন অবশ্বন করিয়া প্রাণ-বায়ুতে প্রাণের [বায়ু-বিশেষের] হবন করিয়া থাকেন। ইহায়া সকলেই বজ্ঞবিং এবং বজ্ঞবারা পাপ সকলের বিনাশ করিয়া থাকেন॥ ৩০

ভাষ্য। কিঞ্চ অপর ইতি। অপরে নির্ভাহারাঃ নির্ভঃ পরিবিভঃ
আহারো বেষাং তে নির্ভাহারাঃ সন্তঃ প্রাণান্ বার্ভেদান্ প্রাণেশ্বের কুষাতি।
বস্ত বত বারোর্জয়ঃ ক্রিয়তে ইতরান্ বার্ভেদান্ তরিন্ ত্রিন্ জুমাতি, তে
তত্র প্রবিষ্টা ইন ভবন্তি। সর্কেহপ্যেতে বজ্ঞবিদঃ বজ্ঞকণিতকল্পবাঃ বলৈশ্বেইভঃ
ক্পিতাঃ নাশিতাঃ কল্পবাঃ বেষাং তে বজ্ঞকণিতকল্পবাঃ ॥ ৩০

আনন্দগিরিটীকা। প্রাণাপানয়োর্গতী যাসপ্রযাসী নিরুধ্য কিং কুর্বজীভ্যপেকায়ামাহ—কিঞ্চেতি। প্রাণাপানগতিনিরোধরূপং কুর্বজীত্যর্থঃ। আহারক্ত পরিমিতবং হিতবমেধ্যভোপলকণার্থন।
প্রাণানাং প্রাণের হোমমেন বিভন্গতে—যুস্তেতি। জিতের বার্ভেদেবজিতানাং
ভেরাং হোমপ্রকারং প্রকটয়তি—তে তত্ত্তেতি। প্রকৃতান্ বজারুপদংহরতি—
সর্বেহিপীতি ॥ ৩০

আকুবাদ। আরও পরে ইত্যাদি। "নিয়তাহার" নিয়ত অর্থাৎ পরিমিত আহার বাহারা করেন, তাঁহারাই নিয়তাহার; অপর বােগিপণ নিয়তাহার হইয়া প্রাণনামক বায়্বিশেষকে প্রাণবায়্সমূহে হবন করিয়া থাকেন। বিনি বে বায়ুকে বনীভূত করেন, তিনি সেই বায়ুতে অক্তান্ত বায়ুরু হবন করিয়া থাকেন, (অর্থাৎ) সেই সকল বায়ু সেই বনীভূত বায়ুর মধ্যে প্রবিষ্ঠবৎ হইয়া থাকে। ইহারো সকলেই বক্তবিৎ এবং বক্তকণিতকরার অর্থাৎশ্বথোক্ত বক্ত-মন্ত্রে ছারা ইহারের সকল পাপ বিনাশিত হইয়াছে॥ ৩০ যজ্ঞশিষ্টায়তভুজো যান্তি ব্রহ্ম সনাতনম্। নায়ং লোকো২স্ত্যযজ্ঞস্থ কুতো২স্তঃ কুরুসত্তম ॥ ৩১

আনুষ্ । যজ্ঞশিষ্টামৃতভূক: সনাতনং এক যান্তি, হে কুরুসন্তম ! অবঙ্কত কারং লোকো নান্তি, অন্তঃ কুতঃ [স্থাৎ] ? ॥ ৩১ ॥

অকুবাদ। যাহারা ষজ্ঞাবশিষ্ট অমৃত ভোজন করিয়া পাকেন, তাঁহারা সনাতন ব্রহ্মপদ লাভ করিয়া থাকেন। হে কুরুসন্তম! যে ব্যক্তি [এই কর্য প্রকার যজ্ঞের মধ্যে একটি যজ্ঞও] করে না, তাহার এই লোকই শুভ হয় না, উৎক্ষট পরলোক তাহার কি প্রকারে হইতে পারে ?॥৩১

ভাষ্য। এবং বংগাকান্ যজ্ঞান্ নির্বান্ত্য যজ্ঞানিষ্টামৃতভূকো যজ্ঞানাং শিষ্টং যজ্ঞানিইং বজ্ঞানিইঞ্চ তদমৃতক্ষেতি যজ্ঞাশিষ্টামৃতভূকঃ, বংগাকান্ বজ্ঞান্ কথা তচ্ছিষ্টেন কালেন বগাবিধি-চোদিতমমৃতাধ্যমন্ত্রং ভূঞাত ইতি বজ্ঞানিষ্টামৃতভূকো বাস্তি গচ্ছস্তি ব্রহ্ম সনাতনং চিরস্তনং মুমুক্ষবশ্চেৎ কালাতিক্রমাপেক্ষরা ইতি সামর্থ্যাদ্গম্যতে। নারং লোকঃ সর্বাপাসাধারণোহপান্তি যথোকানাং যজ্ঞানামেকোহপি যজ্ঞাে যত নাত্তি সোহযজ্ঞত্ত কুতোহন্তো বিশিষ্টসাধনসাধ্যঃ কুক্ষসত্তম ৩১

আনন্দগিরিটীকা। বণোক্ত-বজ্ঞনির্বর্তনানস্তরং ক্ষীণে কল্পবে কিং ক্রাদিত্যাশব্যাহ— এবমিতি। বণোক্তানাং বজ্ঞানাং মধ্যে কেনচিদপি বজ্ঞানবিশেবিতন্ত পুরুষন্ত প্রত্যবারং দর্শরতি—নায়ুমিতি। কথং বণোক্তব্দ্ধান্থ বিষ্টারিনামবশিষ্টেন কালেন বিহিতার-ভূজাং ব্রন্ধপ্রত্যিলিভাগ মুমুক্ত্বে সতি চিত্তক্ষ্মানেত্যাহ—মুমুক্ষবশেচদিতি। তৎ কিমিদানাং সাক্ষাদেব মোক্ষা বিবক্ষিতঃ, তথা চ গতিশ্রুতিবিরোধঃ স্তাদিত্যাশব্য গতিনির্দেশসামর্থ্যাৎ ক্রমমুক্তর্বাভিপ্রেতেত্যাহ—কালাতীতি। তৃতীরং পাদং ব্যাচষ্টে—নায়ুমিতি। বিবক্ষিতং ক্রেমুতিক্তার্মাহ—কুক্তইতি। সাধারণ লোকাভাবে পুনরসাধারণলোকপ্রাপ্তিদ্বিনিরন্তেত্যর্থঃ। বুদ্বিসমাধানং কুক্কুল-প্রধানস্থাক্ত্রন্ত ক্রায়াসলভ্যমিতি বক্তং কুক্রস্ত্রেমেত্যুক্তম্॥ ৩১

ত্তি আকুবাদ। এই প্রকার যথোক যজ্ঞসমূহের অনুষ্ঠান করিয়া [বাহারা]
বালশিষ্টামৃতভূক [হন] (অর্থাৎ) বজ্ঞসকলের অবশিষ্ট বাহারা ভোজন করেন,
ভাঁহারাই বৃজ্ঞশিষ্টামৃতভূক । (অর্থাৎ) বাহারা যথোক বজ্জসকলের অনুষ্ঠান
করিয়া, অবশিষ্টকালে যথাবিধি বিহিত অর ভোজন করিয়া থাকেন, ভাঁহারা

"সনাতন" চিরন্তন ব্রন্ধকে প্রাপ্ত হইরা থাকেন। (অর্থাৎ) তাঁহারা যদি মোককানী হন, তাহা হইলে বিহিত্তকাল অতিক্রম করিরা ক্রমে মোক্ষণাত করিরা থাকেন, ইহা [এথানে যদিও শব্দের ছারা স্পষ্ট উক্ত হর নাই, তথাপি] বোগ্যতাবলে ব্রিতে পারা যাইতেছে। এই পূর্ব্বোক্ত যথোক্ত যজ্ঞসমূহের মধ্যে কোন একটি যজ্ঞের বে ব্যক্তি অষ্ঠান না করে, তাহাকে অষ্ঠ্ঞ কহে; হে কুক্সহম! অষ্ক্র ব্যক্তির এই সর্ব্বপ্রাণিসাধারণ লোকই নাই; বিশক্ষণ যজ্ঞাদি ছারা বাহার আর্ক্রন হর, সেই বর্গাদি লোক তাহার হইবার সন্তাবনা কোথার ?॥ ৩১

এবং বহুবিধা যজ্ঞা বিততা ব্রহ্মণো মুখে। কর্মজান্ বিদ্ধি তান্ সর্বানেবং জ্ঞাত্বা বিমোক্যসে॥৩২

অনুয়। বন্ধা: (বেদস্ত) মুথে (ছারেণ) এবং (ষথোক্তা:) বহুবিধা: যক্ষা: বিভতা: (প্রকাশিতা:), তান্ সর্কান্ (যজ্ঞান্) কর্মঞ্জান্ (ক্রিয়াসস্তবান্) বিদ্ধি, এবং জ্ঞাত্মা (বিদিয়া) বিমোক্ষাসে (মুক্তিং প্রাংস্যাসি) ॥ ৩২

আকুবাদ । বেদের দারা এই প্রকার বছবিধ • যজ্ঞ প্রকাশিত হইরাছে, এই সকল যজ্ঞই কর্মান্ধ, ইহা জান; এই প্রকার জানিরা অণ্ডভ হইতে মোক্ষলাভ করিতে পারিবে ॥ ৩২

ভাষ্য । এবনিতি। এবং যথোক্তা বছবিধা বছপ্রকারা যক্তা বিত্তা বিত্তীপা বন্ধনে। বেদক্ত মুখে বাবে বেদবারেণাবগম্যমানা বন্ধণো মুখে বিত্তা উচ্যক্তে। তদ্বধা "বাচি হি প্রাণং জুহ্ম" ইত্যাদয়:। কর্মজান্ কায়িকবাচিক-কর্মোদ্ভবান্ বিদ্ধি তান্ সর্কান্ অনাঅজান্। নির্ক্যাপারোহাল্মা। অভ এবং আমা বিমাক্যসে অভভাং। ন মন্ব্যাপারা ইমে নির্ক্যাপারোহহমুদাসীন ইত্যেবং জামা অসাং সম্গ্র্দনাং মোক্যসে সংসারবন্ধনাদিত্যর্থঃ॥ ৩২

আনন্দগিরিটীকা। উক্তানাং যজানাং বেদমূলবেনাংভপ্রকানিবন্ধনম্থ নিরপ্ততি—এব্যিতি। আত্মবাপারসাধ্যম্মককর্ষণামাশস্কা দুবরতি—কর্ম্ম-জানিতি। আত্মনা নির্ব্ব্যাপারস্কানে ফলমাহ—এব্যিতি। কথং যথো-জানাং বজানাং বেদত্ত মুথে বিস্তীর্ণঘমিত্যাশস্কাহ—বেদদ্বারেণেতি। তেনা-ব্যম্মানস্বমেবোদাহরতি—তদ্যথেতি। "এজ দ্ব বৈ তৎপূর্বে বিদাংস আহং" ইত্যপক্রম্যাধ্যমনাভাক্ষিপ্য হেষাকাজ্জারামুক্তং—বাচি হীতি। জ্ঞানশক্তিমদিবন্ধে ক্রিমাশক্তিমন্ত্রপসংহারোহত্ত বিবক্ষিতঃ, "প্রাণে বা বাচং বো স্থেব প্রস্তরঃ স্ এবাপ্যমঃ" ইতি বাক্যমাদিশস্বার্থঃ, জ্ঞানশক্তিমতাং ক্রিমাশক্তিমতাং চাজোক্তোই পতিপ্রশারণভাবে নাধ্যরনাদিশিদ্ধিরিত্যর্থ:। কর্মণামাদ্মব্যাপারজস্তবাভাবে হেডুমাহ—নির্ব্যাপারো হীতি। তক্ত চ নির্ব্যাপারদ্ধ ফলবন্ধাজ্ঞাতব্যমিজ্যাহ—জ্ঞতইতি। এবং জ্ঞানমেব জ্ঞাপয়ন্ উক্তং ব্যনজ্ঞি—নেত্যাস্ক্রিনা। ৩২

আকুবাদ। এবমিত্যাদি শ্লোকের অর্থ এইরূপ যথোক্ত বছপ্রকার যজ্ঞ, "ব্রহ্ম" বেদের "মুখে" "হারে বিত্তত" বিস্তীর্ণ আছে। বেদের মুখে বিত্তত আছে ইহার তাৎপর্য্য এই হইতেছে যে, বেদের হারা প্রকাশিত হইরাছে। সপ্তমী বিভক্তির এইপ্রকার হেতৃতারূপ অর্থ বেদেও দেখিতে পাওরা যার; যেমন "বাচি প্রাণং জুহ্ম" ইত্যাদি, (বাক্যে প্রাণের হবন করিরা থাকি)। এই সকল যজ্ঞকেই কর্ম্মজ (বিলিরা) জানিবে (অর্থাৎ) কারিক, বাচিক ও মানসক্রিরা হারাই ঐ সকল যজ্জের সিদ্ধি হইরা থাকে; স্থতরাং এ সকল যক্ত আত্মজন্ত নহে; কারণ আত্মা নিক্রির। এই কারণেই [বলিতেছেন যে], এই এই প্রকার জানিরা অণ্ডভ হইতে মোক্ষলাভ করিতে পারিবে। এই সকল যজ্জের অনুষ্ঠান আমার (আর্থাৎ আত্মার) ব্যাপায় নহে; আমি নিক্রির, এবং উদাসীন, এই প্রকার জানিরা এই সম্যণ্দর্শনের প্রসাদে সংসার-বন্ধন হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারিবে, ইহাই অর্থ॥ ৩২

শ্রোন্ দ্রব্যময়াদ্ যজ্ঞাজ্ জ্ঞানযজ্ঞঃ পরস্তপ।
সর্বাং কর্মাখিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে॥ ৩৩

আৰুয়। হে পরস্তপ! দ্রব্যমরাৎ (হবিরাদিসাধ্যাৎ) যজ্ঞাৎ জানধজঃ শ্রেরান্। হে পার্থ! সর্কাং কর্ম অথিলং (অপ্রতিবন্ধং যথাতাৎ তথা) জ্ঞানে পরিষমাপাতে॥ ৩৩

অনুবাদ। হে শক্রতাপন। দ্রব্যধারা নিপাদিত যক্ত অপেকা জ্ঞানরূপ বজ্জই শ্রেষ্ঠ; কারণ, হে প।র্জ! সকল প্রকার কর্মই সম্পূর্ণভাবে জ্ঞানে পরিসমাপ্ত হইয়া থাকে॥ ৩৩

ভাষ্য । বন্ধার্শনিক্তাদিলোকেন সম্যান্দর্শনক বজজং সম্পাদিতন্, বজ্ঞান্চানেক উপদিষ্টাকৈঃ নিজপুরুষার্থপ্রেলেনিজ্ঞানং ক্রতে। ক্রমণ প্রেলানিজ্ঞানিক বিশ্বনিজ্ঞান ক্রান্ত্রানিক বিশ্বনিজ্ঞান ক্রানিক ক্রান্ত্রানিক ক্রানিক ক্রানিক

সংগ্লুতোদকস্থানীয়ে পরিসমাপ্যতেহস্তর্ভবতি ইত্যর্থঃ। "যথা ক্বতার বিশিষ্টা-রাধরেরাঃ সংগস্ত্যেবমেনং সর্বাং তদভিদমেতি যৎ কিঞ্চিৎ প্রস্লাঃ সাধু কুর্বান্তি যন্তদ্বেদ যৎ স বেদ" ইতি শ্রুতেঃ॥ ৩৩

আনন্দগিরিটীকা। কর্মযোগেখনেকধাভিহিতে সর্কস্ত শ্রেয়ঃসাধন্ত কৰ্মাস্থকৰ প্ৰতি গভা৷ কেবলং জ্ঞানমনাজিয়মাণমৰ্জ্নমালক্য বৃত্তাহ্বাদপ্ৰকিষ্ উত্তরশ্লোকন্স তাৎপর্য্যমাহ—ব্রক্ষোত্যাদিনা। সিদ্ধেতি। সিদ্ধং পুরুষার্যভূতং পুরুষাপেক্ষিতলক্ষণং প্রয়োজনং বেষাং যজ্ঞানাং তৈরনস্তরোপদিষ্টেরিতি বাবং। প্রশ্নপূর্বকং স্ততিপ্রকারং প্রকটরতি—কথমিত্যাদিনা। জ্ঞানবজ্ঞস্ত প্রবার ক্লাৎ প্রশন্ততরত্বে হেতুমাহ – সর্ব্বমিতি। দ্রব্যসাধনসাধ্যাদিত্যুপলক্ষণং স্বাধ্যারা-দেরপি। ততেহিপি জ্ঞানয়জ্ঞাত্ত শ্রেরন্থাবিশেষাং দ্রব্যমন্নাদিয**্জে**ভ্যে জ্ঞান্যজ্ঞত প্রপঞ্চরতি—দ্রব্যময়ো হীতি। ফলস্ত অভ্যুদরস্তেত্যর্থঃ, ন ফলারম্ভকো ন কন্তচিৎ ফলভোৎপাদকঃ, কিন্তু নিত্যসিদ্ধশু মোকন্ত অভিবাঞ্জক ইভ্যৰ্থ:। ভক্ত প্ৰশৃষ্ণভরত্বে হেম্বস্তরমাহ—হত্তইতি। সমন্তং কর্ম্মেভাৱি-হোত্রাদিকমুচ্যতে। অথিলমবিভাষানং ধিলং শেক্তাহভোত্যনরং মহতরমিতি বাবৎ, সর্বমধিলমিতি পদহয়োপাদানমসকোচার্থম। সর্বং কর্ম জ্ঞানেহস্তরতী ভ্যত্র ছান্দোগ্যশ্রুতিং প্রমাণরতি—যুথেতি। চতুরারকে হি দ্যুতে কন্চিদার-শ্চতুরকঃ সন্ ক্লভশক্ষেনোচ্যতে তলৈ বিজিতায় ক্লতায় তাদর্থ্যেনাধরেরাঃ তক্ষাদধস্তান্তাবিনন্ত্রিব্যেকাঙ্কান্ত্রেভাদাপরকলিনামান: সংযন্ত্যারা: চতুরক্ষে থবায়ে ত্রিঘ্যেকাকানামায়ানামন্তর্তাবো ভবতি মহাসংখ্যায়ামবাতর-সংখ্যাস্তর্ভাবাবশ্রস্তাবাদেবমেনং বিদ্যাবস্তং পুরুষং সর্বং তদাভিমুখ্যেন সমেতি সঙ্গছতি। কিং তৎ সৰ্বাং বদ্বিছষি পুৰুবেহস্তৰ্ভবতি তদাহ—যৎকিঞ্চিদিতি। প্রজাঃ সর্বা যৎ কিমপি সাধু কর্ম্ম কুর্বস্তি তৎসর্বমিত্যর্থ:। এমমভিসমেতীত্যুক্তং তমেৰ বিশ্বাৰস্তং পুৰুষং বিশিনষ্টি—যুক্তদিতি। কিং তদিত্যক্তং তদেব বিশদয়তি: য়ৎ সৃষ্ট্তি। স রৈকো বত্তবং বেদ তত্তবং বোহস্মেহপি জানাতি তমেনং সর্বং সাধু কর্মাভিসমেতীতি যোজনা॥ ৩৩

অনুবাদ। ব্রহাপণম্ ইত্যাদি শ্লোকের দারা আত্মত বজানের বজ্জপতা সম্পাদিত হইরাছে। বজ্ঞও অনেক প্রকার কথিত হইরাছে, অধিকারী প্রব-গণের প্রয়োজনসিদ্ধির জন্ম অপেকণীর সকল যজ্ঞের দারা একণে জ্ঞানের স্বৃতি করা ইইভেছে বে, শ্রেরামিত্যাদি—

🚎 "শ্রুব্যবন্ধ" [অর্থাৎ] দ্রুব্য সাধনের ছারা সাধ্য যে সকল বক্ত ভাহা হইতে

জ্ঞানরপ বন্ধ শ্রেরান্, [অর্থাৎ] প্রশন্ততর; হে পরন্তপ ! দ্রব্যময় বজ্ঞ [অনিত্য] ফলের উৎপাদক; [কিন্তু] জ্ঞানরপ যক্ত [অনিত্য] ফলের উৎপাদক নহে। কেন [এরপ বলা ইইতেছে ?] যে হেতু, সকল সাধনের সহিত সম্পূর্ণভাবে অফুটিত সর্বপ্রকার কর্মই সর্বতঃ সংগ্লুতোদক-[মহাসমুদ্র]-বৎ অনস্তকলহেতু জ্ঞানেতেই পরিসমাপ্ত হয় [অর্থাৎ] অস্তর্ভূত হইয়া পাকে। শ্রুতিতেও এই বিষয়টি [দৃষ্টাস্ত ছারা এই ভাবে । প্রতিপাদিত হইয়াছে যে, বেমন দ্যুতক্রীড়াতে চৌওরানামক দান যাহার আয়ত হইয়াছে, তাহার তিয়া, হয়া, প্রভৃতি দানের ফল সকলও আয়ত্ত হয়। সেই প্রকার লোকে যাহা কিছু সাধুকর্মের অমুষ্ঠান করে, ব্রক্ষজানের ফলে সেই সকল কর্মের ফলই অস্তর্ভু ক্র হয়॥ ৩০

তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন পরিপ্রশ্নেন সেবয়া। উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্ত্বদর্শিনঃ॥ ৩৪

্ আর্যু । তৎ (জ্ঞানলাভকারণং) বিদ্ধি (জানীহি) [কথমিড্যাহ]
প্রেণিপাতেন পরিপ্রশ্নেন ফ্লেবরা চ [আচার্য্যাণাং], তত্ত্বদর্শিনঃ জ্ঞানিনঃ তে জ্ঞানম্
উপদেক্ষ্যন্তি ॥ ৩৪

অনুবাদ। [আচার্য্যগণের] দেবা প্রণিপাত এবং [যথাবসরে] তব্ধবিষয়ে বিনীত প্রশ্নের দ্বারা, জ্ঞানলাভের উপায় কি, তাহা জান। তব্দশী জ্ঞানিগণ [এইপ্রকার হইলে] তোমাকে সম্যগ্জ্ঞান-বিষয়ে উপদেশ প্রদান ক্রিবেন॥ ৩৪

ভাষ্য। তদেতদ্বিশিষ্টং জ্ঞানং তর্হি কেন প্রমাণেন প্রাপ্যত ইত্যুচ্যতে
—তদ্বিদ্ধীতি। তব্বিদ্ধি বিজ্ঞানীহি যেন বিধিনা প্রাপ্যত ইতি আচার্য্যানভিগম্য প্রকর্ষেণ নীচৈঃ পতনং প্রণিপাতো দীর্ঘনমন্ধারন্তেন কথং বন্ধঃ কথং মোক্ষঃ কা বিল্লা কা চাবিল্লা ইতি পরিপ্রশ্নেন, দেবয়া গুরু শুক্রমণয়া এবমাদিনা প্রপ্রদেশ আবর্জিনা আচার্য্যা উপদেক্ষ্যন্তি কথিয়্যন্তি তে জ্ঞানং যথোক্তবিশেষণং জ্ঞান-বজ্ঞোহিণি কেচিদ্ যথাবং তত্ত্বদর্শনশীলা, অপরে ন, অতো বিশিন্তি তত্ত্বদর্শিন ইতি, যে সম্যান্দর্শিনকৈয়কপিটিং জ্ঞানং কার্যাক্ষমং ভবতি নেতর্মিতি ভগবতো মত্ত্ম। ৩৪

আনন্দগিরিট্টিকা। বদেবং প্রশন্ততরমিদং জ্ঞানং তর্হি কেনোপারেন ডৎপ্রাপ্তিরিভি পৃচ্চতি—তদেতদিতি। জ্ঞানপ্রাপ্তৌ প্রত্যাদরমুপারমুপদিশতি —উচ্যতইতি। তন্বিজ্ঞানং গুরুভো বিদ্ধি গুরুবন্চ প্রণিপাতাদিভিক্নপারৈঃ মাবজ্জিতচেতসো বদিবাস্তীত্যাহ—তদ্বিদ্ধীতি। উপদেই ষমুপদেশকর্ত্বয়। পরোক্ষজাননাত্রেণ ন ভবতীত্যাহ—উপদেক্ষ্যন্তীতি। ভদিতি প্রেক্ষিতং জ্ঞানসাধনং গৃহুতে যেন বিধিনেতি বিশেবদর্শনাৎ। যদা বেনাচার্য্যাবর্জন-প্রকারেণ ভত্পদেশবশাদপেক্ষিতং জ্ঞানং লভাতে তথা ভক্ষজানমাচার্য্যেভ্যোলভবেত্যর্থ:। তদেব ক্ষুটরতি—আচার্য্যানিতি। এবমাদিনেত্যাদিশকেন শমাদরো গৃহুত্বে, এবমাদিনা বিদ্ধীতি পূর্ব্বেণ সম্বন্ধ:। উত্তরার্ধং ব্যাচঠে—প্রশ্রেয়েণেতি। প্রশ্রারা ভক্তিশ্রমাপৃর্বকো নিরভিশরোহ্বনভিবিশেবঃ, বণোক্তবিশেবণং পূর্বাক্তেন প্রকারেণ প্রশাস্তমমিত্যর্থ:। বিশেবণক্ত পৌনক্ষক্তিপরিহারার্থমর্থভেদং কথয়তি—জ্ঞানবন্তোহ্পীতি। জ্ঞানিন ইত্যুক্তা পুনস্তবদর্শিনইতি ক্রবতো ভগবতোহভিপ্রান্তমাহ—যে সম্যাগিতি। বহু-বচনক্ষৈতদাচার্য্যবিষয়ং বহুভ্যঃ শ্লোতব্যং বহুধা চেতি সামাক্তমারাভ্যমুক্তানার্থং ন দ্বাত্মজানমধিক্ষত্য আচার্য্যবহুত্বং বিবক্ষিতং তক্ত ত্বসাক্ষাৎকারবদাচার্য্যমাহ ব্রোপদেশাদেবোদ্যসম্বর্গব। ৩৪

অনুবাদ। এই সেই বিলক্ষণ জ্ঞান তবে কি উপায়ে লাভ করা হাইতে পারে ? [ভাহারই উত্তর দেওয়া হইতেছে বে] তদ্বিদ্ধীত্যাদি। বে উপায়ের দারা সেই জ্ঞান পাওয়া যাইতে পারে, তাহা জান; আচার্যাগণের নিকট ৰাইয়া "প্ৰণিপাত" [প্ৰক্লুইভাবে নিয়ে পতন] অৰ্থাৎ দীৰ্ঘ নমস্কার, [প্ৰভৃতিৰ হারা জান] কি প্রকার [সংসার] বন্ধ ? কি প্রকার মোক্ষ ? বিছা কাহাকে বলে ? অবিভা কি ? ইত্যাদি প্ৰশ্ন এবং গুৰুগুশ্ৰৰা প্ৰভৃতি বিনয়-ব্যবহারের দারা সম্বষ্টচিত্ত হইয়া আচার্য,গণ তোমাকে বধোক্তপ্রকার জ্ঞানবিবরে উপদেশ প্রদান করিবেন। [বাঁহারা উপদেশ দিবেন, তাঁহারা কি প্রভার, তদ্বিষয়ে বলা বাইতেছে যে] জ্ঞানী এবং তত্ত্বদৰ্শী। অনেক ব্যক্তি [শান্তের ` প্রতিপাম্বস্ত বিবয়ে] জানসম্পর, অথচ বণাবগু ভাবে তব্বস্থা প্রকৃত স্ক্রণ অনুভব করিতে সমর্থ; অপর কেহ বা অসমর্থ; এই জয়ুই এখানে জানী এই কথা বলিয়াও ঐ সকল অসম্যগ্দশী জ্ঞানিগণের প্রত্যাধ্যান করিবার অন্ত আবার তত্ত্বদর্শী এই প্রকার বিশেষণের তুপাদান করিয়াছেন। বাহারা সম্যগ্দশী, তাঁহারা যে জ্ঞানের উপদেশ দেন, তাহাই কার্যক্ষম হয়; তঃবিপরীত ব্যক্তির নিকট হইতে লব্ধ জ্ঞান কার্য্যক্ষফহয় না, ইহাই ভগবানের মত ৷ ৩৪

যজ্জাত্বা ন পুনমে হিমেবং যাস্থাসি পাণ্ডব।

যেন ভূতান্যশেষেণ দ্রক্ষ্যস্থাত্মশুথো ময়ি॥ ৩৫

অন্বয়। হে পাণ্ডব! যজ্জাত্বা পুনরেবং মোহং ন যাস্থাসি, যেন চ

জ্ঞানেন বিশো অংশ্যেণ ভূতানি আত্মনি ময়ি দ্রক্ষ্যাসি॥ ৩৫

অনুবাদ। হে পাণ্ডুপুত্র! যে জ্ঞানলাভ করিয়া তুমি আর এই প্রকার মোহের বশ হইবে না এবং যে জ্ঞানের প্রসাদে তুমি সকলের আত্মতৃত জ্ঞামাতে সকল ভূতই [প্রবিষ্ট আছে ইহা] দেখিতে পাইবে॥ ৩¢

ভাষ্য। তথাচ সতি ইদম্ অপি সমর্থং বচনং বদিতি। বজ্জাদা
यজ্জানং তৈরুপদিষ্টমধিগম্য প্রাপ্য প্নভূঁলো মোহমেবং বথেদানীং মোহং
গতোহিদি পুনরেবং ন যাশুদি হে পাণ্ডব। কিঞ্ধেবন জ্ঞানেন ভূতানি অশেবেণ
ব্রহ্মাদীনি স্তম্পর্যান্তানি দ্রক্ষাদি সাক্ষাদাত্মনি প্রত্যাগাত্মনি মৎসংস্থানীমানি ভূতানি
ইতি, অথো অপি ময়ি বাস্থদেবে প্রমেশ্বরে চেমানি ইতি ক্ষেত্রজেশ্বরৈক্দং
সংক্ষাপনিবংপ্রসিদ্ধং দ্রক্ষাসীত্যর্থঃ॥ ৩৫

আনন্দ্গিরিটীক্ । বিশিষ্টেরাচার্ট্যেরপদিষ্টে জ্ঞানে কার্য্যক্ষমে প্রাপ্তে সতি সমনস্তর্বচনমপি যোগ্যবিষয়মর্থবন্তবতীত্যাহ—তথাচেতি । অতস্তমিন্ বিশিষ্টে জ্ঞানে ঘদীয়মোহাপোহহেতৌ নিষ্ঠাবতা ভবতা ভবিতব্যমিতি শেষঃ। তত্র নিষ্ঠাপ্রতিষ্ঠারৈ তদেব জ্ঞানং পুনর্বিশিনষ্টি—হোনেতি । যজ্জ্ঞান্বেত্যযুক্তং জ্ঞানেঘাগাদিত্যাশল্য প্রাপ্তার্থন্তমধিপূর্বস্ত গমেরঙ্গীকৃত্য ব্যাকরোতি—অধিগম্যেতি । ইতশ্চাচার্য্যোপদেশলত্যে জ্ঞানে ফলবতি প্রতিষ্ঠাবতা ভবিতব্যমিত্যাহ—কিঞ্চেতি । জীবে চেশ্বরে চোভয়ত্র ভূতানাং প্রতিষ্ঠিতত্বপ্রতিনির্দেশে ভেদবাদান্তমতিঃ স্থাদিত্যাশল্যাহ—ক্ষেত্রভিত্তি । মূলপ্রমাণাভাবে কথং তদেকত্বদর্শনং স্থাদিত্যাশল্যাহ—সুর্বৈতি ॥ ৩৫

অনুবাদ। সেইরূপ হইলে এই বচনটি সার্থক হইরা উঠে যে, যদিত্যাদি।
বে জ্বেরকে জানিরা (অর্থাৎ) সেই সকল আচার্য্যগণ কর্ত্বক উপদিষ্ট যথার্থ
জানলাভ করিরা, হে পাগুব! তুমি একণে যে প্রকার মোহ প্রাপ্ত হইরাছ,
আর এইরূপ মোহ প্রাপ্ত হইবে না। আরও বলি, যে জ্ঞানের বলে তুমি
এক্ষর্ক্তপ নিজ আছাতে ব্রহ্মাদি স্থাবরপর্যাস্ত সকল ভূতকেই সাক্ষাৎ দেখিতে
পাইবে এবং বাস্থানের ও প্রমেশ্বর-স্বরূপ আমাতেও সকল ভূত দেখিতে
পাইবে। অর্থাৎ সেই জ্ঞানের দ্বারা] সকল উপনিষৎ-সিদ্ধ জীব ও প্রমেশ্বেরর
এক্ষ তুমি সাক্ষাৎ করিবে, ইহাই অর্থ॥ ৩৫

অপি চেদসি পাপেভ্যঃ সর্বেভ্যঃ পাপরুত্তমঃ। সর্ববং জ্ঞানপ্লবেনৈব রুজিনং সম্ভরিষ্যসি॥ ৩৬

আয়ুয় । সর্ব্বেভাঃ পাপেভাঃ অপি পাপকৃত্তমঃ চেদসি, [তথাপি] জান-প্লবেনৈৰ সর্ব্বং বৃজিনং সম্ভরিষ্যসি ॥ ৩৬

অনুবাদ। তুমি যদি সকল পাপিগণ হইতেও অধিক পাপকারী হও, তাহা হইলেও জ্ঞানরপ ভেলার সাহায্যে সকল পাপ-সমূদ্র পার হইতে পারিবে॥ ৩৬

ভাষ্য। কিঞাৈতত জ্ঞানত নাহাত্মান্। জপীতি—জপিচেদসি পাণেতাঃ পাপকৃত্যঃ সর্বেভাঃ অতিশয়েন পাপকৃৎ পাপকৃত্যঃ, সর্বেং জ্ঞানপ্লবেনৈব জ্ঞানমেব প্লবং কৃত্যা বৃজ্ঞিনং বৃজ্ঞিনার্গবং পাপং সন্তরিষ্যসি ধর্মোহপীহ মুমুক্ষোঃ পাপমূচ্যতে ॥ ৩৬

আনন্দ্গিরিটীকা। ভানত প্রকারান্তরেণ প্রশংসাং প্রভৌতি—
কিঞ্চেতি। পাপকারিভাঃ সর্ব্বেভাঃ সকাশাদতিশরেন পাপকারিজমেকরিল্লসম্ভাবিতমপি জানমাহান্ম্যপ্রসিদ্ধার্থমঙ্গীকৃত্য ব্রবীভি—অপি চেদিতি।
ব্রহ্মাথ্যক্যজ্ঞানত সর্ব্বপাপনিবর্ত্তকংইন মাহান্ম্যমিদানীং প্রকটরতি— সর্ব্বমিতি।
অধর্মে নির্ভেইপি ধর্মপ্রতিবন্ধাৎ ন জ্ঞানবতোইপি মোক্ষঃ সম্ভবতীত্যাশক্ষাহ—
ধর্ম্মোইপীতি। ইহেত্যধ্যান্মশান্তং গৃহতে ॥ ৩৬

অনুবাদ। আরও এই জ্ঞানের মাহাত্ম্য বলা যাইতেছে থে,
অপিচেদিত্যাদি। "পাপ" অর্থাৎ সকল পাপকারিগণ হইতেও যদি তৃষি
পাপক্ষম হও অর্থাৎ অধিক পাপকারী হও, তাহা হইবেও জ্ঞানপ্রব (অর্থাৎ) জ্ঞানরূপ ভেলার সাহায্যে বৃদ্ধিন অর্থাৎ বৃদ্ধিনরূপ অর্থব (পাপসমূল) পার হইতে পারিবে। মুমুক্ষ্বাক্তির নিকট ধর্মন্ত পাপ বলিরাই
কীর্ত্তিত হইরা থাকে॥ ৩৬

> যথৈধাংসি সমিদ্ধোহয়ির্ভস্মসাৎ কুরুতেহর্জ্ব। জ্ঞানাগ্নিঃ সর্ববর্ত্মাণি ভস্মসাৎ কুরুতে তথা॥ ৩৭

আনুষ্ । ° তে অৰ্কুন ! সমিদ্ধোহ'লঃ বথা এধাংসি ভ্ৰসাং কুকতে, তথা জানালিঃ স্ক্ৰণাণি ভ্ৰসাং কুকতে ॥ ৩৭

অনুবাদ। হে অর্জুন, প্রদীপ্ত অগ্নি যে প্রকার কার্চসমূহকে ভাষসাৎ করে, সেই প্রকারে জ্ঞানাক্ষীপ্ত সকল কর্মকে ভাষসাৎ করিয়া থাকে॥ ৩৭ ৩৯. ভাষ্য। জানং কণ: নাশন্তি পাপমিতি সদৃষ্টান্তমুদ্যক্তে—যথেতি।
যথা এধাংসি কাষ্টানি স্বিদ্ধঃ সম্যাগিদ্ধঃ দ্বীপ্রেইছিঃ ভন্মণ ভন্মীভাবং কুকতে
অর্জুন, জ্ঞানমেবান্বিজ্ঞানাত্তিঃ সর্ক্ষকর্মাণি ভন্মসাং কুকতে নির্বীজ্ঞাকরোতি
ইত্যর্থঃ। নহি সাক্ষাদেব জ্ঞানাত্তিঃ সর্ক্ষকরাণীস্কনবং ভন্মীকর্ত্বুং শক্রোতি,
ভন্মাং সম্যাগৃদর্শনং সর্ক্ষকর্মণাং নির্বীদ্ধত্বে কারণমিত্যভিপ্রান্তঃ। সামর্থাৎ
বেন কর্মণা শরীরমারকং তৎপ্রবৃত্তকলভাছপভোগেনৈব ক্ষীয়তেহতো বাল্যপ্রবৃত্তকলানি জ্ঞানোৎপত্তেঃ প্রকৃত্তানি জ্ঞানসহভাবীনি চ অতীতানেকজন্মক্রতানি
চ ভান্তোব কর্মণি ভন্মসাং কুকতে॥ ৩৭

আনন্দ্রগিবিটীকা। জানে সভাপি ধর্মাণ্দ্রগ্রেরপ্রস্তাৎ কুতন্তভো-নিবৃত্তিরিত্যাশঙ্কা জ্ঞানত ধর্মাধর্মনিবর্তকত্বং দৃষ্টান্তেন দর্শয়িতুম্ অনন্তরক্ষোক্ষব-ভারম্বতি —জ্ঞানমিতি। যোগাযোগাবিভাগেন নিবর্ত্তকভানিবর্ত্তকভবিভাগম্ উদাহরতি—যুখেতি। দুষ্টান্তামুরূপং দাষ্টান্থিকমাচষ্টে—জ্ঞানাগ্নিরিতি। ষোগ্যবিষয়েছপি দাহক হমগ্নেরপ্রতিবন্ধাপেক্ষয়েতি বিবক্ষিত্বা বিশিনষ্টি—সম্ম্ গিতি। দার্ভান্তিকং বাাচর্টে—জ্ঞানমেবেতি। নম্ব জ্ঞানং সাক্ষাদেব কর্ম-দাহকং কিমিতি নোচাতে, নিৰ্বীজীকরোতি কৰ্মেতি কিমিতি ব্যাণ্যানমিত্যা-**শ্ব্যাহ্—ন হীতে।** জ্ঞানন্ত স্বপ্রমেয়াবরণাজ্ঞানাপাকরণে সামর্থ্যন্ত গোকে দৃষ্টবাদবিক্রিয়ব্রন্ধাত্মজ্ঞানমপি ভদজানং নিবর্ত্তয়ন তজ্জ্যকর্ত্বত্রমং কর্মনীকভ্তং নিবর্ত্তয়াতি ভারবেরী চ কর্মাণি ন স্থাতুং পারয়স্তি ন তু সাক্ষাৎ কর্মাণাং নিবর্ত্তকং জ্ঞান্য অজ্ঞানভৈব নিবর্তুকমিতি ব্যাপ্তেম্বদনিবৃত্তী তু পুনর্পি কর্ম্মোম্ভবসম্ভবাদি-তার্থঃ। গুণনশু সাক্ষাৎ কর্মনিবর্ত্তকখাভাবে ফলিতমাহ—তত্মাদিতি। সমাগ্জানং মূলভূতাজ্ঞাননিবৰ্ত্তনেন কমনিবৰ্ত্তকমিষ্টঞ্চেং আরক্ষকভাপি কর্মণো-নিবৃত্তিপ্রসঙ্গাৎ জ্ঞানোদয়সমকালমেব শরীরপাত: ভাদিত্যাশঙ্ক্যাহ-সামর্থা-मिकि । **कारनामग्रममनमग्रामन रमशालाहि जन्म**र्मिकिक्शिक्षे कानः कन्दिषि जगरम् वाम्य वाधिकस्थाननातार्गानाचात्रवास्त्रभाषा थात्रक्षकक्रनम्भाषक-মজ্ঞানলেশ ন নাশরতি জ্ঞানমিত্যর্থ:। কথং তর্হি প্রারক্ষলং কর্ম মগ্রতীত্যা-শন্ধাহ—বেনেতি। তর্হি কথং জ্ঞানাগ্নিঃ সর্বাকশ্বাণি ভশ্মসাং করোতীতাক্তং তত্ত্ৰাহ—অত্তইতি। জ্ঞানাদারনফলানাং কর্ম্মণাং নির্ভ্যমূপণত্তেরনারনফলানি যানি কর্মাণি পূর্বং জ্ঞানোদয়াদশ্মিয়েব জ্মানি ক্লডানি জ্ঞানেন চ সহ বর্ত্তমানানি প্রাচীনের চানেকের জন্ম অজিতানি তানি সর্বাণি জ্ঞানং কারণনিবর্ত্তনেন নিবৰ্ত্তৰভীত্যৰ্থ: ॥ ৩৭

ভাষ্যামুবাদ। জ্ঞান কি প্রকারে পাপ নাশ করিরা থাকে, তাহাই দৃষ্টান্ত সহকারে বলা যাইতেছে বে, যথা ইত্যাদি। হে মর্জ্নণ ! সম্যক্রপে প্রদীপ্ত অগ্নি যে প্রকার কাষ্ট্রস্থকে ভন্মীভূত করিরা থাকে, সেইরূপ জ্ঞানরূপ অগ্নিও সকল কর্মকেই ভন্মীভূত করিরা থাকে (অর্থাৎ) কর্ম্মসমূহের বীজভাবকে নষ্ট করিরা থাকে [ইহার তাৎপর্য্য এই যে জ্ঞান হইলে কর্মের জ্ঞোগসম্পাদিকা শক্তি বিনষ্ট হইরা থাকে], জ্ঞানাগ্নি সাক্ষাৎ ইন্ধনের স্থার কর্মকে ভন্মীভূত করিতে পারে না, এই কারণে বলিতে হইবে যে, জ্ঞান [অজ্ঞানরূপ সহকারি কারণের বিনাশ করিরা] কর্মনিকরের নির্বীজ্ঞতার প্রতি কারণ হইয়া থাকে। যে কর্মের দারা এই শরীর আরক্ষ হইয়াছে, তাহার কল প্রস্তুত্ত হইয়াছে; স্ক্রোং কলের উপভোগ হইলেই ভাহার ক্ষর হইয়া থাকে। এই কারণে যোগ্যভাম্নারে কল্পনা করিতে হইবে যে, জ্ঞানোৎপত্তির পূর্ব্বে এই জন্ম যে সকল কর্ম্ম কৃত হইয়াছে এবং পূর্ব্ব পূর্ব্ব জন্মে রুত দে সকল কর্মকলের আরম্ভ হয় নাই, জ্ঞানরূপ অগ্নি সেই সকল কর্ম্ম এবং জ্ঞানোৎপত্তিকালে কৃত কর্ম ও মতীত বহুতর ক্ষমন্ত্রত সকল কন্মই ভন্মসাৎ করিরা থাকে॥ ৩৭

নহি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রমিহ বিন্ততে। তৎ স্বয়ং যোগসংসিদ্ধঃ কালেনাত্মনি বিন্দতি॥ ৩৮

আমুয়। ইহ (সংসারে) জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রং ন হি বিশ্বতে। স্বয়ন্ [এব] [মুম্কুঃ] যোগসংসিদ্ধঃ [সন্] [মহতা] কালেন আত্মনি তং (জ্ঞানং) বিক্তি (সভতে)॥ ৩৮

অকুবাদ। এই সংসারে জ্ঞানের সদৃশ পনিত্র বস্তু আর কিছুই নাই, স্বয়ং সমাধিসিদ্ধ হইয়া [মোকার্থী পুরুষ] সেই জ্ঞান আপনাতেই লাভ করিতে সমর্থ হন। ৩৮

ভাষ্য। যত এবমতঃ নহীতি। নহি জানেন সদৃশং তৃল্যং পৰিত্ৰং পাৰনং ভদ্ধিকরমিহ বিষ্ণতে। তজ্জানং স্বরমেব যোগসংসিদ্ধঃ বোগেন কর্মযোগেন সমাধিযোগেন চ সংসিদ্ধঃ সংস্কৃতঃ যোগ্যতামাপন্নঃ মুমুক্ষ্ণ কালেন মহতা আত্মনি বিন্দতি সভতে ইত্যর্থঃ॥ ৩৮

আনন্দ্রিটীকা । নম্ন অন্তেনের পরমপরিশুদ্ধিকরের্ণ কেনচিদ্ধনেধাদিনা পরমপ্রধার্থসিকেঃ অলমাজ্মজানেন ইত্যাশব্যাহ— যৃত্তীক্তি । পূর্বোজ্ঞেন প্রকাশ্রের জ্ঞানমাহাত্ম্যং বতঃ সিদ্ধমৃতন্তেন জ্ঞানেন তুল্যং পরিশুদ্ধিকরং পরমপ্রকাশে

পরিকমিং ব্যবহারভূমে নাজীত্যর্থ:। তৎপুনরাশ্ববিদ্ধং জ্ঞানং সর্বেষাং কিমিডি ঝটিডি নোৎপদ্মতে ভ্রাহ—তজ্ জ্ঞানং স্বয়মিডি। মহতা কালেন বংগাক্তেন সাধনেন যোগ্যভামাপদ্ধঃ তদধিক্বতঃ স্বয়ং তদান্ধনি জ্ঞানং বিন্দতীতি বোজনা। সর্বেষাং ঝটিভি জ্ঞানামুদ্ধো যোগ্যভাবৈধুর্যাদিতি ভাবঃ॥ ৩৮

অনুবাদ। বে হেতু এই প্রকার [জ্ঞানের স্বভাব], এই জন্ত —নহি জ্ঞানেন ইত্যাদি। জ্ঞানের "সদৃশ" তুল্য "পবিত্র" পাবন (অর্থাৎ) শুদ্ধিকর বন্ধ এই জ্ঞাতে নাই। স্বরংই কর্মাযোগ ও সমাধিষোগের দারা সংস্কৃত হইরা মুমুক্ষ্ ব্যক্তি, বহুকালের পর আত্মাতেই সেই জ্ঞানকে লাভ করিতে সমর্থ হন, ইহাই ভাৎপর্য ৪ ০৮

শ্রদ্ধাবাল্ল ভতে জ্ঞানং তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিয়ঃ। জ্ঞানং লব্ধা পরাং শাস্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি॥ ৩৯

আন্ব্য়। তৎপর: সংযতে জির্শ্চ [সন্] শ্রদ্ধাবান্ জ্ঞানং সভতে, [তথা] জ্ঞানং সন্ধা অচিরেণ পরাং শান্তিম্ অধিগচ্ছতি ॥ ৩৯

আকুবাদ। তৎপর, জিতেন্দ্রির ও এজাসম্পর [যোগী] জ্ঞানলাভ করেন ; জ্ঞানলাভের পর শীঘই পরম শান্তি (মোক) লাভ করিতে সমর্থ হন॥ ৩৯

ভাষ্য। যেন একান্তেন জ্ঞানপ্ৰাপ্তিৰ্ভবিত দ উপায় উপদিশ্যতে শ্ৰহ্মাননিতি। শ্ৰহ্মানান্ শ্ৰহ্মান্, লভতে জ্ঞানম্ শ্ৰহ্মান্তেইপি ভবিত কন্চিন্দ্ৰেলান, লভ আহ তৎপরঃ গুরুপাসনাদৌ অভিবৃক্তো জ্ঞানলভ্ব্যুপায়ে শ্ৰহ্মানান্ ভংগরোহপি অজিতেক্সিয়ঃ ভাৎ ইত্যুত আহ সংযতেক্সিয়ঃ। সংযতানি বিবরেভ্যো নিবর্ত্তিভানি যভেক্সিয়াণি দ সংযতেক্সিয়ঃ য এবংভূতঃ শ্রহ্মানান্ ভংশরঃ সংযতেক্সিয়ণ্চ সোহবশ্রং জ্ঞানং লভতে। প্রণিপাতাদিভ বাহ্যোহ-নৈকান্তিকোহপি ভবতি মায়াবিবাদিসভ্বাৎ নতু তচ্ছ দ্রাবদ্বাদৌ ইতি একান্তভো জ্ঞাননভ্ব্যুপায়ঃ। কিং প্রজ্ঞানলাভাৎ ভাৎ ইত্যুচ্যুতে জ্ঞানং লক্ষ্যা পরাং মাহ্মাধ্যাং শান্তিম্ উপরতিম্ অচিরেণ ক্ষিপ্রমেব অধিগচ্ছতি। সম্যক্ দর্শনাৎ ক্ষিপ্রমেব মাক্ষোভবতীতি সর্ব্ধশান্তভার প্রসিদ্ধঃ স্থনিন্চিতোহর্থঃ॥ ৩১

আনন্দ গিরিটীক।। কর্মবে।গেন সমাধিবোগেন চ স্পের্ভ জ্ঞানোৎ-পত্তী অভরজসাধনমুপদিশতি—বেনেতি। জ্ঞানলাভে প্রেরোজনমাহ—জ্ঞান-মিতি। ন কেবলং শ্রুভানুত্মেব সহারং জ্ঞানলাভে হেতুরপি তৃ তাৎপর্যামণী-ভাাহ—শ্রুভানুত্বহুলীতি। মন্দপ্রস্থানত্বং তাৎপ্র্যবিধ্রবং, ন চ ভত্তোপদিই-

মণি জ্ঞানমুংপত্ত্মীষ্টে তেন ভাৎপর্য্যমণি তত্ত্ব কারণং ছবতীত্যাহ— আত-আহেতি। অভিযুক্তো নিষ্ঠাবান্। উপাসনাদাবিত্যাদিশবেন শ্রবণাদি গৃহতে। ন কেবলং শ্রদ্ধা তাৎপর্য্যঞ্চ ইভ্যুভরনেব জ্ঞানকারণং কিন্তু সংবতে ক্রিয়ড ১পি, তদভাবে প্রদাদেরকিঞ্চিৎকরত্বাৎ ইত্যাশয়েনাহ প্রদ্ধাবানিতি। উক্তসাধনানাৎ জ্ঞানেন সহৈকান্তিকত্বমাহ—য় এবস্ভূত ইতি। "তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন" ইত্যাদৌ প্রাণেব প্রণিপাতাদেজ নিহেতোককত্বাৎ কিমিতীদানীং হেম্বন্তরমূচ্যতে ভত্রাহ— প্রণিপাতাদিন্তিতি। তদ্ধি বহিরঙ্গমিদং পুনরস্তরক্ষং, ন চ তত্র জ্ঞানেন প্রতিনিয়মো মনস্তরণা ক্সন্তা বহিরস্তথা প্রদর্শনাত্মনো মায়াবিত্বস্ত সম্ভবাদ্বিপ্রদন্ত -কন্বাদেরপি সন্তাবনোপনীতভাদিতার্থ:। মায়াবিত্তাদে: শ্রদ্ধাবত্তাৎপর্য্যাদারপি সম্ভবাৎ অনৈকান্তিকত্বমবিশিষ্টমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ন ত্বিতি। ন হি মায়রা বিপ্রবস্তেন বা শ্রহ্মাতাৎপর্য্যসংবসাভিয়োগতো নিষ্ঠাতুমর্হতীত্যর্থঃ। উত্তরার্দ্ধং প্রশ্নপূর্বক-মৰভাৰ্ব্য ব্যাকরোতি—কিং পুনরিত্যাদিনা। সম্যগ্জানাৎ অভ্যাসাদিমাধনান-পেক্ষান্মোকো ভবতীত্যত্ত প্রমাণমাহ—সম্যুগ্দর্শনাদিতি। শান্তশব্দেন তেমেব বিদিদা" "জ্ঞানাদেব তু কৈবলাম্" ইত্যাদি বিবক্ষিতং, আয়ন্ত জ্ঞানাদজ্ঞাননির্জে: রজ্জাদৌ প্রদিদ্ধত্বাৎ আত্মজ্ঞানাদপি নিরপেকাৎ অজ্ঞান-তৎকার্যাপ্রকারলকণো মোক: ভাদিতোবং লক্ষণ:॥ ৩১

অনুবাদ। যে উপায় হারা নিশ্চয়ই জ্ঞানলাভ করিতে পারা হার,
সেই উপায়ের উপদেশ করা হইতেছে, জ্ঞানং লকা ইত্যাদি। প্রকাবান্
(অর্থাৎ প্রকাল্) জ্ঞান লাভ করে; প্রকাল্ হইয়াও কেহ কেহ সাধনামন্তানে
একাগ্র হয় না। এই কারণ বলিতেছেন যে, তৎপর [হইতে হইবে];
জ্ঞানলাভের উপায়ে বিশ্বাসযুক্ত হইয়া গুরুর উপাসনা প্রভৃতি [জ্ঞানলাভের]
উপায়ের অমুষ্ঠান [নিয়ত] যে করে, তাহাকেই তৎপর বলা হায়। তৎপর
হইয়া হদি অজিতেক্রিয় হয়, তজ্জ্ঞ বলিতেছেন (সে ব্যক্তি যে জ্ঞানলাভ করিতে
পারে না, ইহাই প্রকারান্তরে বলিতেছেন) [তাহাকে] সংযতেক্রিয়. [হইতে
হইবে]; সংযত (অর্থাৎ) বিষয়সমূহ হইতে নিবর্ত্তিত যাহার ইক্রিয় সকল
[এই প্রকার হয়] সে সংযতেক্রিয়। যে ব্যক্তি এইয়প শ্রদ্ধাবান, তৎপর, ও
সংযতেক্রিয়, সেই ব্যক্তি অবশুই জ্ঞানলাভ করে। প্রণাম প্রভৃতি উপায় বায়্
এবং উহা হারা সকল সময়ে ফলও হয় না; কারণ ইহাতে প্রতারণা প্রভৃতির
সম্ভাবনা আছে। কিন্তু শ্রদ্ধা প্রভৃতি আন্তরিক উপায়ের প্রতারণাদির সন্তাবনা
নাই বলিয়া এই সকল আন্তর উপায়ে ফল অবশ্রই হয়; স্বতরাং এই কয়টিই

জ্ঞানলাভের অব্যভিচরিত উপায়। জ্ঞানলাভে কি হয় তাহাই বলিতেছেন ধে জ্ঞানলাভ করিয়া পরম শান্তিকে অচিরে (অর্থাৎ) শীঘ্রই লাভ করিয়া থাকে; পরম শাস্তির (আত্যস্তিক সংসার-নিতৃত্তির) নামই মোক্ষ। সম্যুগ্দর্শনলাভের পরেই মোক্ষলাভ, ইতাই সর্বশাস্ত্র-ভারাদিতে প্রসিদ্ধ স্থানিশ্চিত অর্থ॥ ৩৯

> অজ্ঞশ্চাশ্রদ্ধানশ্চ সংশয়াত্মা বিনশ্যতি। নায়ং লোকোহস্তি ন পরো ন স্থখং সংশয়াত্মনঃ॥ ৪০

অনুয়। [য:] অজ: (অনাযুক্ত:) অশ্রদ্ধান: (অশ্রদ্ধানু:) সংশ্যাত্মা (সর্বত্ত সন্দিক্ষচিত:) চ [স:] বিনশুতি। সংশ্যাত্মন: অয়ং লোকো নান্তি, ন পর: [লোকোহন্তি], ন স্লুখং [অপি] অন্তি॥ ৪•

অকুবাদ। যে ব্যক্তি অজ, শ্রদ্ধাহীন ও সংশব্ধাত্মা (বিশ্বাসহীন), সে ব্যক্তি বিনষ্ট হয়, তাহার এই লোক, পরলোক এবং সুখ নাই ॥ ৪০

ভাষ্য। অত সংশ্রোন কর্ত্তবাঃ পাপিছোহি সংশরঃ, কথ্ম ? উচাতে অজ্ঞান্দেতি। অজ্ঞানাত্মজ্ঞা অশ্রদ্ধানণ্চ সংশ্রাত্মা চ বিনগুতি। অজ্ঞাশ্রদ্ধানী বন্ধানি বিনগুতঃ তথাপি ন তথা বথা সংশ্রাত্মা, সংশ্রাত্মা তু পাপিষ্ঠঃ সর্ক্রোম্। কথ্ম ? নারং সাধারণোহপি লোকোহন্তি তথা ন পরো লোকো ন স্থং তত্রাপি সংশ্রোপপত্তঃ, সংশ্রাত্মনঃ সংশ্রচিত্ত । তত্মাৎ সংশ্রোন কর্ত্তবাঃ ॥ ৪ ০

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোকস্ত পাতনিকাং করোতি—অত্ত্রেতি।
যথোক্তসাধনবান্ উপদেশমপেক্য অচিরেণ ব্রহ্ম সাক্ষাৎকরোতি সাক্ষাৎকৃতব্রহ্মদেহচিরেণৈর মোক্ষং প্রাগোতীত্যেবাহর্থঃ সপ্তম্যা পরামূপ্রতে। সংশর্মস্থ অকর্ত্তব্যদে হেতৃমাহ—পাপিস্তো হীতি। উক্তং হেতৃং প্রশ্নপূর্বকমূত্তরশ্লোকেন
সাধরতি—কথ্মিত্যাদিনা। অজ্ঞাদশ্রদানাচ্চ সংশর্ষিত্তক্ত বিশেষমাদর্শরতি—
নায়মিতি। বিতীরভাগবিভ্রনার্থং ভূমিকাং করোতি—অত্ত্রেতি।
অজ্ঞাদীনাং মধ্যে সংশরাদ্মনো বং পাপিষ্ঠত্বং তং প্রশ্নধারা প্রকটরতি—কথ্মিতি। লোক্ষরত্ব তৎপ্রযুক্তমূপত্র চাভাবে হেতৃমাহ—তত্রাপীতি। সংশর্রচিত্তক্ত সর্ব্বর সংশরপ্রবৃত্তের্গনিবারত্বাদিত্যর্থঃ। সংশর্ষ্কানর্থমূলত্বে হিতে ফলিতমাহ- ভক্যাদিতি॥ ৪০

অনুবাদ। এই বিষয়ে সংশন্ন করা উচিত নহে; সংশন্ন অতিশন্ন পাপ্রের হেডু; কি প্রকারে ? তাহাই বলা গাইতেছে যে ২জ ইত্যাদি। অঞ্চ (অর্থাৎ) জনাজ্ঞ, অপ্রদর্ধান (প্রজাবিহীন) এবং সংশরাত্মা বিনাশ প্রাপ্ত হয়। জঞ্জ ও প্রজাহীন এই বিবিধব্যক্তি বদিও বিনাশ প্রাপ্ত হয়, তথাপি সংশরাত্মা বে রূপে বিনাশ প্রাপ্ত হয়, এই বিবিধ ব্যক্তি সেরূপে বিনাই হয় না, সংশরাত্মাই সর্ব্বাপেকা পাণিঠ। কেন ? [তাহা বলিতেছেন], এই (পরিদ্রুষ্ঠমান) সাধারণ লোক এবং সেইপ্রকার পরলোক সংশরাত্মার পকে [ভঙ্জকর হয় না]। সংশরপ্রত্বক্ত পরলোকেও তাহার হথ হইবার সন্তাবনা নাই। সংশরাত্মা এই শব্দের অর্থ সন্দিগ্ধচেতা। সেইজ্ঞ [বলা হইতেছে যে] সংশর [কথনই] কর্ত্তব্য নহে॥৪০

যোগসংস্তস্ত্রকর্মাণং জ্ঞানসংচ্ছিন্নসংশয়ম্। আত্মবন্তং ন কর্মাণি নিবধন্তি ধনপ্রয়॥ ৪১

অনুয় । হে ধনঞ্জয় ! কর্মাণি যোগসংস্তত্তকর্মাণং জ্ঞানসংচ্ছিন্নসংশয়ন্ পাছবস্তং (অপ্রমন্তং) ন নিবপ্নস্তি ॥ ৪১

অমুবাদ। হে ধনঞ্জা! বিনি জ্ঞানবোগের প্রভাবে কর্মা সকলের সংস্থাস করিয়াছেন এবং তত্ত্বজ্ঞানের দারা যাঁহার সংশন্ন ছিল্ল হইয়াছে এবং বিনি অপ্রমন্ত, কর্মাসমূহ তাঁহাকে সংসারে আবদ্ধ করিতে পারে না॥ ৪১

ভাষ্য। কমাৎ ? বোগেতি। বোগসংস্তত্তকর্মাণং প্রমার্থদর্শনলকণেন বোগেন সংস্তত্তানি কর্মাণি বেন প্রমার্থদর্শিনা ধর্মাধর্মাখ্যানি তং বোগসংস্তত্ত-কর্মাণম্ কথং যোগসংস্তত্তকর্মেত্যাহ—জ্ঞানেন আছেম্ববৈক্দদর্শনলকণেন সংক্ষিত্র: সংশর: যস্ত স জ্ঞানসংক্ষিত্রসংশর:। ব এবং বোগসংস্তত্তকর্মা তমাত্মবন্তম্ অপ্রমন্তং গুণচেষ্টার্মণেণ দৃষ্টানি কর্মাণি ন নিবগ্গন্তি অনিষ্টাদিরূপং ফলং নারভন্তে, তে ধনস্কর॥ ৪১

আনন্দগিরিটীকা। যভাগ সংশন্ধঃ সর্বানর্থহেত্থাৎ কর্তব্যা ন ভবিছি তথাপি নিবর্ত্তকাভাবে তদকরণম্ অস্বাধীনমিতি শঙ্কতে—কস্মাদিতি। শুভিন্য্তিশ্রম্কন্দক জ্ঞানং তন্নিবর্ত্তকমিত্ তরমাহ—জ্ঞানেনেতি। সংশন্ধরহিত্ত স্থাপি কর্মাণি অনর্থহেতবো ভবস্তীত্যাশস্ক্যাহ——্যোগেতি। বিষয়পর্বশন্ধ প্র্যো বোগাবোগাৎ কুতো বোগসংক্তত্তকর্ম্বন্ম ইত্যাশস্ক্যাহ আজ্মবস্তুমিতি। পরমার্থদর্শনতঃ সংশরোজিতৌ তহুজেদকজ্ঞানমাহাত্ম্যাদেব কর্ম্মণাঞ্চ নিবৃত্তে অপ্রমন্তক্ত প্রতিভাসিকানি কর্মাণি বন্ধহেতবো স ভবস্তীত্যাহ—ন কর্ম্মাণ্শিতি। কর্মবোগাদেব কর্ম্মণ্ডাস্ক্রাম্পণিতিমাশস্ক্য আছৎ পাদং বিভন্ততে—

পরমার্থেতি । তচ্চ বৈধদংস্থাসপক্ষে পরোক্ষং ফলসংস্থাসপক্ষে ত্বপরোক্ষমিতি বিবেক: । যথোক্তজানেন সংস্থান্তকর্মত্বমেব সতি সংশরে ন সিধ্যতি সংশরবন্তন্তদ্ব বোগাদিতি শঙ্কতে—কথমিতি । দিতীরং পাদং ব্যাকুর্বন্ পরিহরতি—আহেত্যাদিনা । পাঠক্রমাদর্থক্রমন্ত বলীয়ত্বাদাদৌ দিতীয়ং পাদং ব্যাধ্যার পশ্চাদান্তং পাদং ব্যাচক্ষীতেত্যাহ—য এবমিতি । সর্বমিদং প্রমাদবতো বিষয়ণরবশন্ত ন সিধ্যতীত্যভিসন্ধার আত্মবন্তং ব্যাকরোতি—অপ্রমন্তমিতি । কর্ম্মাণীত্যাদিফলোক্তিং ব্যাচষ্টে—গুণ্চেফেতি । অনিষ্টাদীত্যাদিশক্ষেন ইইং মিশ্রঞ্চ গৃহতে ॥ ৪ ১

অমুবাদ। কেন [সংশয় কর্ত্তব্য নহে] তাহা প্রকারাস্তরে বলা হইতেছে যে যোগেত্যাদি। পরমার্থদর্শনিরপ যোগের দ্বারা যে ব্যক্তি কর্মসমূহের সংস্থাস করিয়াছেন, সেই পরমার্থদর্শীই যোগসংস্থস্তকর্মা; এই স্থলে কর্ম শব্দের অর্থ ধর্ম ও অধর্ম; বোগসংস্থস্তকর্মা কি প্রকারে হয়, তাহাই বলিতেছেন যে, জ্ঞান-সংচ্ছিয়-সংশয়। জীব ও ঈশ্বরের একত্ব দর্শনরূপ জ্ঞানের উদয়ে বাহার সকল প্রকার সংশয় ছিয় হয়, তাহারই নাম জ্ঞানসংচ্ছিয়সংশয়। যে ব্যক্তি এই প্রকার যোগসংস্থস্তকর্মা [এবং জ্ঞানসংচ্ছিয়সংশয়] সেই অপ্রমন্ত ব্যক্তিকে, গুণের চেষ্টারূপে পরিদৃষ্ট কর্মসমূহ বন্ধন করিতে পারে না। [অর্থাৎ ভাহার পক্ষে] কোন প্রকার অনিষ্টাদি ফলের আরম্ভ করে না। হে ধনপ্রয়॥ ৪১

তক্মাদজানসমূতং হুৎস্থং জ্ঞানাসিনাত্মনঃ। ছিত্রৈনং সংশয়ং যোগমাতিষ্ঠোত্তিষ্ঠ ভারত॥ ৪২

আন্বয়। তত্মাৎ হে ভারত। জ্ঞানাসিনা আত্মনঃ অজ্ঞানসভূতং কংস্থ্
এনং সংশয়ং ছিত্বা যোগম্ আতিষ্ঠ (সাধনাস্থানং ক্রু), উত্তিষ্ঠ [ইলানীং
যুদ্ধং কর্তুম্]॥১২

অনুবাদ। হে ভারত! তথুজানরপ অসি ঘারা আত্মার ব্যক্তান হইতে উৎপন্ন এই স্নদান্থিত সংশয়কে বিচ্ছিন্ন করিয়া জ্ঞানলাভের উপার অনুষ্ঠান কর এবং এক্ষণে যুদ্ধের জন্ম উথান কর॥ ৪২

ভাষা। বন্দাৎ কর্মবোগার্ম্ভানাৎ অগুদ্ধিকরতেত্কজ্ঞানসংচ্ছিন্নসংশরো ন নিবধ্যতে কর্মভিজ্ঞানাগ্নিদগ্ধকর্মছাদেব বন্দাত জ্ঞানকর্মান্মপ্তানবিষয়ে সংশয়-ধান বিনশ্রতি তন্মাৎ ইতি।

ভন্মাৎ পাণিষ্ঠম গানসভূতজ্ঞানাৎ অবিবেকাজ্জাতং হুৎস্থং হৃদি বুদ্ধৌ স্থিতং

জ্ঞানাসিনা শোকমোহাদিদোবহরং সম্যগ্দর্শনং জ্ঞানং তদেবাসিঃ পঞ্চান্তেন জ্ঞানাসিনা আত্মনঃ স্বস্ত অবিভাবিষয়তাৎ সংশয়ত। নহি পরস্ত সংশয়ঃ পরেণ ছেন্তব্যতাং প্রাপ্তো বেন স্বস্যেতি বিশেষ্যতে অত আত্মবিষয়েছিপ স্বল্যৈৰ ভবতি। ছিবৈনং সংশয়ং স্ববিনাশহেতৃ-ভূতং, যোগং সম্যান্দর্শনাপায়কর্মান্ত্রানম্ আতিঠ কুর্নিত্যর্থঃ। উত্তিঠ ইদানীং যুদ্ধায় ভারতেতি॥ ৪২

আনন্দগিরিটীকা। তত্মাদিত্যাদিসমনস্তরশ্লোকগততৎপদাপেক্ষিতমর্থমাহ — যুস্মাদিতি। সতাং কর্মণামম্মদাদিযু ফলারম্ভক্ষোপলন্তাৎ বিগ্নহাপি ভেষাং তন্তাব্যমনপৰাধমিত্যাশঙ্ক্যাহ—জ্ঞানাগ্ৰীতি। নম্থ সন্দিহানম্ভ তৎপ্ৰতি-বন্ধার কর্মযোগানুষ্ঠানং নাপি তদ্ধেতৃকং জ্ঞানং তত্তাপি সংশয়াবভারাৎ ইত্যা-শক্যাহ—যুস্মাক্ষেতি। শ্লোকান্ধাণি ব্যাচষ্টে—তত্মাদিতাাদিনা। পাপিষ্ঠমিতি সংশয়শু সর্কানর্থমূলত্বেন ত্যাক্ষ্যত্বং স্চ্যতে। বিবেকাগ্রহপ্রস্তত্বা-তস্থাবহেরত্বমবিবেক্সানর্থকরত্বপ্রসিদ্ধেরিত্যাহ—অবিবেকাদিতি। ন চ তম্ম চৈতম্বনাম্মনিষ্ঠথাদত্যাজ্যখং শঙ্কিতব্যমিত্যাহ—হাদীতি। শোক-মোহাভ্যামভিভূতভ পুংসো মনসি প্রাহর্ভবতঃ সংশয়ভ প্রবৃত্পতিবদ্ধকাভাবেনৈব প্রধ্বংসঃ সিধ্যেদিত্যাশক্যাহ—জ্ঞানাসিনেতি। স্বাশ্ররত সংশরত স্বাশ্ররেণৈর জ্ঞানেন সমুচ্ছেদসম্ভবাৎ কিমিতি স্বস্তেতি বিশেষণমিত্যাশক্ষ্যাহ—আ্তাবিষয়ত্ত্বা-श्राधानिविषयः সংশयः তिष्वित्यं कार्तन दमवनखनिष्ठंन उन्निष्ठां वान-ৰ্দ্ত্যতে প্ৰকৃতে ত্বাত্মবিষয়ন্তদাশ্ৰয়ন্চ সংশয়ঃ তথাবিধেন জ্ঞানেন অপনীয়তে তেন বিশেষণমর্থবদিত্যর্থ:। তদেব প্রপঞ্চয়তি—ন হীতি। আত্মালমত প্রকৃতে সংশয়ে সিদ্ধত্বেনাবিবক্ষিতত্বাৎ তদ্বিষয়স্ত তদ্বিষয়েণৈৰ তস্ত তেন নিবৃত্তিৰ্ব্বিবক্ষিতে-ত্যুপসংহরতি—অতইতি। সংশয়সমুচ্ছিত্ত্যনম্ভরং কর্ত্তব্যুপদিশতি—চিটুন্তন-মিতি। অগ্নিহোত্রাদিকং কর্ম্ম ভগবদাজ্ঞরা ক্রমেণ করিব্যামি যুদ্ধাৎ পুনরু-পরিরংসৈবেত্যাশঙ্ক্যাহ—উদ্ভিক্তিতি। ভরতার্বরে মহতি ক্ষত্রিরবংশে প্রস্থৃতত্ত সমুপস্থিতসমরবিষুপত্বম্ অমুচিতমিতি মবানঃ সন্নাহ—ভারতেতি। যোগত কৃত্রিমত্বং ভগবতোহনীশ্বরত্বঞ্চ নিরাক্তত্য কর্মাদাবকর্মাদিদর্শনাদান্ত্রনঃ বন্ধভাবমভিদধতা সর্বসাহৎকৃষ্টে তশিরসংশরানস্থাধিকারাদশেব্দোববস্তং সংশবং হিছোত্তমক্ত জাননিষ্ঠাহপরক্ত কর্মনিষ্ঠেতি স্থাপিতম্॥ ৪২

জ্বনুবাদ। বে কারণে কর্মবোগের জহুঠান বারা চিত্তভূদি হইলে জানের উদর হর এবং জানের বারা যাহার সংশয়চ্ছেদ হইরাছে, তাদৃশ ব্যক্তি আর কর্মের ধারা বদ্ধ হয় না; কারণ, তাহার কর্মবীজ জ্ঞানরপ অধির ধারা मध इंदेशाएइ, এবং यে कांत्रन ब्लान ७ कर्पाष्ट्रशानिवरत य वाकि मः नताया. তাহার বিনাশ হয়, সেই কারণেই-পাপিষ্ঠ অজ্ঞানসম্ভূত (অর্থাৎ) অবিবেকজ, হৃদয়ে (অর্থাৎ) বৃদ্ধিতে স্থিত এই সংশয়কে জ্ঞানরূপ অসি দারা ছিন্ন করিয়া, হে ভারত তমি সমাক দর্শনলাভের উপায়স্বরূপ কর্মের অমুষ্ঠান কর। এই সংশ্রেতে 'আত্মনঃ' এই বিশেষণটি আছে; ইহার অর্থ আত্মার সংশব্ধ; িএকণে জিজ্ঞান্ত হইতে পারে যে বৈকহ আত্মপ্ররোজন সাধন করিতে বাইলা পরের সংশয় নোচন করে না, তবে এখানে 'আত্মনঃ' এই প্রকার বিশেষণ কেন দেওয়া হইল ৮ ইহার উত্তর এই হইতেছে যে, প্রারই দেখিতে পাওয়া যার যে, সংশ্রী পুরুষের সংশ্রবিষয়বস্তু তাহার আত্মা হইতে পৃথকু; যেমন কোন পুরুষের সংশ্ব হয়, "এইটি গুল বুক্ষ, কি পুরুষ", এন্থলৈ কিছু যে সংশ্ব হইতেছে তাহার বিষয় সংশয়ী পুরুষের আত্মা হইতে পৃথক নহে; অর্থাৎ বে ব্যক্তি সংশয় করিতেছে, সে নিজের আত্মাকেই সংশ্যের বিবন্ধ করিতেছে, ইছাই সংসারের সকল জঃথের হেতু সংশয়; ইছাই বুঝাইবার জন্ত 'আত্মন:' (অর্থাৎ আত্মার) এই বিশেষণ দেওয়া হইয়াছে; ইহার তাৎপর্য্য এই যে, ভূমি নিজেই নিজস্বরূপ বিষয়ে সংশয় পরিত্যাগ করিয়া যোগের অফুষ্ঠান কর, ইহাই বিশদরূপে অর্জুনকে বুঝান হইয়াছে। একণে তুমি যুদ্ধ করিবার জন্ম উত্থান কর [ইহাই হইল ভগবানের অর্জুনের প্রতি উপদেশের প্রক্রত তাৎপর্য্য 🛚 ॥ ৪২

ইতি চতুর্থোহধ্যার: সমাপ্ত:।

অথ পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

অৰ্জুন উবাচ।

সংস্থাসং কর্মাণাং কৃষ্ণ ! পুনর্যোগঞ্চ শংসসি। যচ্ছের এতয়োরেকং তম্মে ক্রহি স্থনিশ্চিতম্॥ :

আমুয়। অর্জুন উবাচ—হে কৃষ্ণ, [সং] কর্মাণাং সংস্থাসং পুনঃ বোগং চ শংসসি। এতরো: [মধ্যে] যং শ্রেয়ঃ তদেকং মে স্থানিশ্চতং ক্রছি॥ ১

অকুবাদ। অর্জ্ন কহিলেন—হে ক্বন্ধ জুমি একবার শাস্ত্রীয় কশ্মসমূহের সংস্থাস করিতে বলিতেছ; আবার শাস্ত্রীয়কর্মের অফুঠানও করিতে বলিতেছে, এই ছুইটি উপায়ের মধ্যে যাহা প্রকৃত পক্ষে শ্রেয়ঃ, তাহা স্থানিশ্চিত করিয়া আমাকে উপদেশ দাও॥৮

ভাষ্য। "কর্মণ্যকর্ম যং পশ্রেং" ইত্যারভ্য "স যুক্তং কংশ্বকর্মক্রং", "জ্ঞানামিদগ্ধকর্মাণং", "শারীরং কেবলং কর্ম ক্র্বন্", "যদ্জ্ঞালাভসম্ভট্টং" "ব্রহ্মার্পণং ব্রহ্ম হবিং", "কর্মজান্ বিদ্ধি তান্ সর্বান্", "সর্বাং কর্মাধিলং পার্থ", "জ্ঞানামিঃ সর্ম্মকর্মাণি", "যোগ-সংক্তকর্মাণং", ইত্যেতৈর্বচনৈঃ সর্বাক্র্মগংখ্যাসমবোচ্ডগবান্। "ছিইন্থনং সংশন্মং যোগমাতিষ্ঠ" ইত্যানেন বচনেন যোগঞ্চ কর্মান্থগ্যানকর্মসন্ত্রাস্থান তর্মাক্রভরোশ্চ কর্মান্থগানকর্মসন্ত্রাসরোঃ ছিতিগতিবং পরস্পরবিরোধাৎ একেন সহ কর্ত্মশক্যম্বাৎ কালভেদেন চ অমুষ্ঠানবিধানাভাবাৎ অর্থাৎ এতয়ারক্তরকর্ম্বত্যতাপ্রাপ্তেটী সত্যাং যৎ প্রশক্তরন্মজনেঃ কর্মান্থগ্রানকর্মসংখ্যাসন্ত্রোঃ তৎ কর্তব্যং নেতরদিত্যেবং মন্ত্রমানঃ প্রশক্তরবৃত্ত্ৎসন্ত্রা অর্জ্ক্ন উবাচ সংখ্যাসং কর্মণাং ক্রক্ষেত্যাদিনা।

নহ্চ আত্মবিদো জ্ঞানবোগেন নিষ্ঠাং প্রতিপিপাদয়িষ্যন্ পূর্ব্বোদাহ্যতৈর চনৈঃ ভগবান্ সর্বাকর্মসংস্থাসমবোচৎ নতু অনাত্মজ্ঞ অতশ্চ কর্মায়্র্ঠানকর্মসংস্থাসমোঃ ভিন্নপুরুষবিষয়ভালঞ্জয়ক্ত প্রশৃষ্ঠতর্ম্বকুত্বরা প্রশ্লোহন্তপ্রঃ। সত্যমেব দদভিপ্রায়েণ প্রশ্লো নোপপছতে প্রষ্ট্র; স্বাভিপ্রায়েণ পুনঃ প্রশ্লো বৃদ্ধাত এবেতি বদাম: । কথন্ ? পূর্ব্বোদাহতেঃ বচনৈঃ ভগবতা কর্ম্মসংস্থাসন্ত কর্তব্যতরা বিবক্ষিতভাৎ প্রাধান্তমন্তবেগ চ কর্তারং তক্ত কর্তব্যভাসভবাৎ । অনাত্মবিদপি কর্ত্তা পক্ষে প্রাধান্তমন্ত এব, ন পুনরাত্মবিৎকর্তৃকত্বমেব সংস্থাসন্ত বিবক্ষিত-মিতি । এবং মন্বানন্ত অর্জুনন্ত কর্মান্ত্রচানকর্মসংস্থাসয়েঃ অবিহৎ-পুরুষ-কর্তৃক্মসান্তীতি পূর্ব্বোজেন প্রকারেণ তয়োঃ পরশারবিরোধাৎ অন্ততরক্ত কর্ত্তব্যবে প্রাপ্তে প্রশন্ততরং চ কর্তব্যং নেতরৎ ইতি প্রশন্ততরবিবিদিষয়া প্রশ্লো নাত্রপপরঃ। প্রতিবচনবাক্যার্থনিরপণেনাপি প্রষ্টুরভিপ্রায় এবমেবেতি গম্যতে।

কথং সন্ন্যাসকর্মযোগৌ নিঃশ্রেরসকরাবৃত্তো তয়োক্ত কর্মযোগা বিশিব্যতে ইতি প্রতিবচনমেতল্লিরপ্যং কিমনেনাত্মবিৎকর্তৃকয়োঃ সংন্যাসকর্মবোগয়োঃ নিঃশ্রেম্বসকরত্বং প্রয়োজনমৃক্ত্যা তয়োরেব কৃতশ্চিদ্বিশেষাৎ কর্ম্মসংন্যাসাৎ কর্ম্ম-বোগত বিশিষ্ট্রমূচ্যতে ? আহোস্থিৎ অনাত্মবিৎকর্তৃকয়োঃ সংন্যাসকর্মবোগয়োগ্ত-ছভরমূচ্যতে ইতি। কিঞ্চাতো বছাত্মবিৎকর্ত্করোঃ সংন্যাসকর্মবোগরোঃ নিঃশ্রেরসকরত্বং তরোভ কর্মসংন্যাসাৎ কর্মযোগতা বিশিষ্ট্রমূচ্যতে বদি বা অনাত্মবিৎকর্ত্বকরোঃ সংন্যাসকর্মযোগরোত্তহভরমূচ্যত ইতি। আত্মবিৎকর্ত্তকরোঃ সংন্যাসকর্ত্মবোগরোঃ অসম্ভবাৎ তরোঃ নি:শ্রেরসকরত্মবচনং তদীয়াচ্চ কর্মসংন্যাসাৎ কর্মযোগস্থ বিশিষ্ট্ডাভিধানম ইত্যেততভয়মমুপপল্লম। ষম্মনাত্মবিদঃ কর্ম্মসংন্যাসঃ তৎপ্রতিকৃলন্চ কর্মান্ত্র্চানলকণঃ কর্মষোগঃ সংভবেতাং তদা তয়োঃ নিঃশ্রেরসকরছোক্তিঃ কর্মবোগশু চ কর্মসংস্থাসাদ্বিশিষ্ট্রাভিধান-মিত্যেতহভরমুপপ্ছতে। আত্মবিদস্ত সংস্থাসকর্মগোগরো: অসম্ভবাৎ তরোর্নিঃ-শ্রেরদকরত্বাভিধানং কর্ম্মগঞ্জাসাচ্চ কর্মযোগো বিশিষ্যতে ইতি চাতুপপন্নম। অত্তাহ কিমাত্মবিদঃ সংস্থাসকর্মবোগরোরপাসম্ভবঃ আহোস্থিৎ অন্তত্তরস্থাসম্ভবঃ ষদাচাক্তরন্তাসম্ভবঃ তদা কিং কর্মসংস্থাসন্ত উত কর্মবোগন্তেতি অসম্ভবে কারণং চ বক্তব্যমিতি।

অত্যোচ্যতে, আত্মবিদো মিরগুমিথ্যাজ্ঞানথাৎ বিপর্যয়জ্ঞানমূলক কর্মধোগক্ত অসম্ভবঃ ক্রাৎ, জনাদিসর্কবিক্রিয়ারহিতত্বেন নিক্রিয়মাত্মানং আত্মত্বেন বো বেভি তত্তাত্মবিদঃ সম্যগ্দর্শনেন অপান্তমিণ্যাজ্ঞানক নিক্রিয়াত্মত্বনাব্দান-লক্ষণ সর্ক্রকর্মান্ত্রাসমূক্ষা তদ্বিপরীতভ মিথ্যাজ্ঞানমূলকর্জ্যাভিমানপুরঃসরক্ত সক্রিয়াত্মত্বরূপাবস্থানরূপক কর্মধোগক্তেহ শাল্পে তত্ত্ব তত্তাত্মত্বরূপনিক্রপণ-

প্রদেশের সম্যাগ্জানমিথ্যাজ্ঞানতৎকার্যবিরোধাৎ অভাবঃ প্রতিপান্থতে বন্ধাৎ তন্মাৎ আত্মবিদো নিবৃত্তমিধ্যাজ্ঞানক বিপর্যয়জ্ঞানমূলঃ কর্মধোগো ন সম্ভবতি ইতি যুক্তমূক্তং স্যাৎ।

কেবৃ কেবৃ প্নরাত্মস্বরূপনিরূপণপ্রদেশেবৃ আত্মবিদঃ কণ্মাভাবঃ প্রতিপান্ধত ইতি ? অত্যোচ্যতে "অবিনাশিতৃ তদিদ্ধি বেন সর্কমিদং ততম্" ইতি প্রকৃত্য "যএনং বেতি হস্তারং" "বেদাবিনাশিনং নিত্যম্" ইত্যাদৌ তত্র তত্র আত্মবিদঃ কণ্মাভাব উচ্যতে।

নমু চ কর্ম্মবোগোহপি আত্মস্বরপনিরপণপ্রদেশেষু তত্র তত্র প্রতিপান্থত এব তদ্ধণা "তম্মাদ্ যুধ্যস্ব ভারত", "স্বধ্যমিপি চাবেক্ষ্য", "কর্মণোরাধিকারত্তে" ইত্যাদৌ অতশ্চ কথমান্মবিদঃ কর্মযোগস্যাসম্ভবঃ স্যাদিন্তি। অত্যোচ্যতে সম্যগ্জান-মিথ্যাজ্ঞান-তৎকার্য্যবিরোধাৎ। "জ্ঞানযোগেন সাঝ্যানাম্" ইত্যনেন সাঝ্যানাম্ আত্মতম্বিদাম্ অনাত্মবিৎকর্তৃককর্মযোগনিষ্ঠাতো নিজ্ঞিরাত্মস্বরপা-ব্রানিক্সাত্মস্বরপা-বৃদ্ধানক্ষণায়া জ্ঞানযোগনিষ্ঠায়াঃ পৃথক্করণাৎ কৃতক্বত্যত্বন আত্মবিদঃ প্রব্যোক্ষনভাবাৎ তস্য কার্য্যং ন বিহুতে ইতি কর্ত্ব্যান্তরাভাববচনাচ্চ।

"ন কর্মণামনারস্তাৎ" "সংস্থাসস্ত মহাবাহো হঃথমাপ্ত মুম্বোগতঃ" ইত্যাদিনা চ
আত্মজানাক্ষত্মন কর্মযোগস্য বিধানাৎ। "বোগার্ড্রন্য তস্তৈয়ব শনঃ কারণমৃচ্যতে" ইত্যানেন চ উৎপন্নসম্যগ্ দর্শনস্য কর্মযোগাভাববচনাৎ। "শারীরং
কেবলং কর্ম কুর্মনাপ্রোতি কিবিবম্" ইতি চ শরীরস্থিতিকারণাতিরিজ্ঞস্য
কর্মণো নিবারণাৎ। "নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি যুজো মস্তেত তত্ত্বিং"
ইত্যানেন চ শরীরস্থিতিমাত্রপ্রযুক্তেম্বপি দর্শনশ্রবণাদিকর্মস্থ আত্মবাধান্ম্যবিদঃ
করোমীতি প্রত্যন্ত্রস্য সমাহিতচেতস্তর্মা সদা অকর্ত্ব্যত্বোপদেশাৎ আত্মতম্বিদঃ
সম্যগ্ দর্শনবিক্ষনো মিথ্যাজ্ঞানহেত্কঃ কর্মবোগঃ স্বপ্রেহপি ন সম্ভাবন্ধিতৃং
শক্যতে কর্মাৎ তত্মাৎ অনাত্মবিৎকর্ত্করোরেব সংস্থাসকর্মবোগরোঃ নিঃশ্রেরশকরত্ববচনং তদীরাচ্চ কর্ম্মগংস্থাসাৎ পূর্ব্বোক্তাত্মবিৎকর্ত্ক-সর্মকর্মাদিসহিতদ্বেন
চ হ্রস্থান্তিরাৎ স্থকরন্থেন চ কর্মবোগস্য বিশিষ্ট্রভাভিধানমিত্যেবং প্রতিবচনবাক্যার্থনিক্রপণেনাপি পূর্ব্বাক্তঃ প্রষ্টুরভিপ্রাধ্যো নিশ্চীরতে ইতি স্থিতম্।

"জ্যারসী চেৎ কর্ম্মণন্তে" ইত্যত্ত জ্ঞানকর্মণো: সহাসন্তবে "বচ্ছের এত-রোক্তমে ক্রহি" ইত্যেবং পৃষ্টোহর্জুনেন ভগবান্ সাংখ্যানাং সংস্থাসিনাং জ্ঞান-বোগেন নিষ্ঠা পুন: কর্মবোগেন বোগিনাং নিষ্ঠা প্রোক্তেতি নির্ণয়ং চকার। ন চ সয়াসনাদেব কেবলাৎ সিদ্ধিং সমধিগচ্ছতীতি বচনাৎ জ্ঞানসহিত্য সিদ্ধিন সাধনদ্বমিষ্ঠং কর্মবোগস্ত চ বিধানাও। জ্ঞানরহিতঃ সংস্থাসঃ শ্রেয়ান্ কিংবা কর্মবোগঃ শ্রেয়ান্ ইত্যেতয়োর্বিলেষব্রুৎসয়া অর্জ্ঞ্ন উবাচ—সংস্থাসং পরিত্যাগং কর্মণাং শাস্ত্রীয়াণাম্ অর্জ্ঞানবিশেষাণাং শংসসি কথয়সীত্যেতৎ। প্নর্বোগঞ্চ তেষামেবার্ম্ভানমবশুক্তিবাং শংসসি অতো মে কতরচ্ছে য় ইতি সংশয়ঃ কিং কর্মান্মভান্য শ্রেয়ঃ কিংবা তদ্ধানং প্রশাস্তরং চার্ম্ভেয়মতশ্চ বচ্ছেয়ঃ প্রশাস্তরমেতয়োঃ কর্মসংস্থাসকর্মান্মভানয়োর্যদক্ষানাচ্ছেয়োবাপ্তিম মিস্বাদিতি মন্ত্রসে তদেকমন্তর্গং সহৈকপুরুষান্মভানজ্বান্ম ক্রহি স্থানিতত্বতং তবেতি॥ ১

আনন্দিরিটীকা। ' পূর্কোতরাধ্যারয়ো: সম্বন্ধনভিদধানো র্ত্তামবাদ-পূর্বকমর্জ্বনপ্রশ্নস্যাভিপ্রায়ং প্রদর্শয়িতৃং প্রক্রমতে — কর্ম্মণীত্যাদিনা। ইত্যা-রভ্যকর্মণ্যকর্মদর্শনমূকা তৎপ্রশংসা প্রসারিতেত্যাহ—স যুক্তইতি। জ্ঞান-বস্তং সর্বাণি কর্মাণি লোকসংগ্রহার্থং কুর্বন্তং জ্ঞানলক্ষণেনাগ্নিনা দগ্ধসর্ব্ কর্মাণং কর্মপ্রযুক্তবন্ধবিধুরং * বিবেকবস্তো বদন্তীতি। অধানবতো জ্ঞানফল-ভূতং সংস্থাসং বিবক্ষন্ বিবিদিষো: সাধনরূপমপি সংস্থাসং ভগবান্ বিবক্ষিত-বানিত্যাহ-জ্ঞানাগ্রীতি। নিরাশারিত্যারভ্য শরীরম্বিতিমাত্তকারণং কর্ম-শরীরস্থিতাবপি সঙ্গরহিতঃ সন্ সমাচরন্ ধ্যাধ্যাফলভাগী ন ভবতীভাপি পূর্ব্বোত্তরাভ্যামধ্যায়াভ্যাং দ্বিবিধং সংস্থাসং স্থচিতবানিত্যাহ—শারীর্মিতি। বদুচ্ছেত্যাদাবপি সংখ্যাস: হচিত: তদ্ধর্মকলাপোপদেশাদিত্যাই †—যুদ্ধেছতি। क्कानच वक्कचमन्नामनभूर्वकः अनश्मावहनामनि कर्यमश्चारमा मर्नित्वा खान-নিষ্ঠস্যেত্যাহ—ব্রহ্মার্পণমিতি। জ্ঞানযজ্ঞস্কত্যর্থ বিহিতারানাবিধান্ যজ্ঞান-मुख তেষাং দেহাদিব্যাপারজক্তব্বচনেনাত্মনো নির্ব্যাপারত্বজ্ঞানফলাভিলাষাদিপি যথোক্তমাত্মানং বিবিদিষোঃ সর্বাকর্ম্মণ্ডাদেহধিকারো ধ্বনিতইত্যাহ—কর্ম্ম-জানিতি। সমস্তব্যৈবাবশ্বেবর্জিত্স্য কর্মণো জ্ঞানে পর্য্যবসানাভিধানাচ্চ 'জিক্ষাসো: সর্ববিশ্বসংস্থাস: স্থচিতইত্যাহ—সূর্ব্বমিতি | তদ্বিদ্ধীত্যাদিনা জ্ঞান-প্রাপ্ত্রাপায়ং প্রণিপাতাদি প্রদর্শ্য প্রাপ্তেন জ্ঞানেনাতিশয়-মাহাত্ম্যবভা সর্ব-কর্মাণাং নির্ভিরেবেতি বদতা চ জ্ঞানার্থিনঃ সংস্থাসেহধিকারোঁ দর্শিতো ভগ-বতেত্যাহ - জ্ঞানাগ্নিরিতি। জ্ঞানেন সমুচ্ছিন্নসংশন্নৎ তন্ত্মাদেব জ্ঞানাৎ

कॅच्चिय्रक्लनमंबनिध्द्रम्—देखि वा भाष्टः । † जन्नर्यलगाताभाष्ट्रभाविष्ठि वा भाष्टः ।

কর্মাণি সংস্কৃদ্য ব্যবস্থিতমপ্রমন্তং বনীক্ষতকার্য্যকরণদংঘাতবন্তং প্রাতিভাসিকানি কর্মাণি ন নিবপ্রস্তি ইতাপি দ্বিবিধঃ সংস্থাসো ভগবতোক্তইত্যাহ—যোগেতি। কর্ম্মণিত্যারভ্য যোগসংগ্রন্থকর্মাণমিত্যাইক্রদান্থতির্ব্বচনৈক্রতং সংস্থাসমূপসংহরতি —ইত্যুক্তৈরিতি। তর্হি কর্ম্মণংগ্রাসক্রৈব জিজ্ঞান্থনা জ্ঞানবতা চাদরণীর্ম্বাং কর্মান্থলান-মনাদেরমাপন্নমিত্যাশক্ষ্যেক্যর্থাস্তর-মন্থবদতি———ছিত্ত্বনমিতি। কর্মান্থলানেকেইনব প্রক্রেণান্থটেরম্বসন্থবান্ন বিরোধাহন্তীত্যাশক্ষ্য ব্রগপদ্বা ক্রমেণ বান্থটানমিতি বিকল্পান্থাং দ্বর্গতি—উভ্যোত্তেতি। দিতীরং প্রত্যাহ—কালভেদেনেতি। উক্রেণ্ডির বিরোধাহন্তিরাদ্যাহরেক প্রক্রেণান্থটেরম্বান্থবেক কথং কর্ত্ব্যম্বদিনিতি। ব্যান্তক্রেরারেকেন যুগপৎক্রমাত্যামন্থট্যানান্থপন্তেরিত্যর্থঃ। অন্তব্যয় কর্ত্ব্যম্বে কতর্স্যাতি কুত্যে নির্ণরো হয়োঃ সন্নিধানাবিশেবাদিত্যাশক্ষ্যাহ—য্ত প্রশাস্থতর্মিতি। ভগবতা কর্মণাং সংস্থানো যোগন্টোক্রো ন চ তয়োঃ সমুর্চিতামুটানং তেনাম্প্রক্রন্ত ক্রেট্রাল্যন্তর্বন্ত ক্রেল্যাক্রিম্বর্তানং তেনাম্প্রক্রন্ত্রাপসংহরতি—ইত্যেব্যাতি।

নামং প্রষ্টুরভিপ্রায়ঃ কর্ণ্মসংস্থাসকর্ণ্মযোগমোর্ভিমপুরুষামুষ্টেম্বরেস্তাক্তবাদে-কমিন্ পুরুষে প্রাপ্যভাবাদিতি শঙ্কতে—ন্নিতি ৷ চোজনঙ্গীরুত্য পরিহরতি— স্ত্যমেবেতি। কীদৃশতুহি প্রষ্টুরভিপ্রায়ো যেন প্রশ্নপ্রবৃত্তিরিতি পৃচ্ছতি— কথমিতি। একমিন্ পুরুষে কর্মতত্ত্যাগয়োরন্তি প্রাপ্তিরিতি প্রষ্ট্রভিপ্রারু প্রতিনির্দেষ্ট্ং প্রারভতে—পূর্কোদান্ত তৈরিতি । বণা "স্বর্গকামো বজেভেতি" স্বর্গকামোদেশেন যাগো বিধীয়তে ন তু ওতৈবাধিকারো নালভেতাপি, প্রতি-পান্ততে বাক্যভেদপ্রসঙ্গাৎ তথানাত্মবিৎকর্তা সংস্থাদপক্ষে প্রাপ্তোহনৃত্যতে নচাত্ম-বিংকর্ত্তকত্বমের সংস্থাসন্থ নিষ্ম্যতে বৈরাগ্যমাত্তেণাজ্ঞভাপি সংস্থাসবিধিদর্শনাৎ ভন্মাৎ কর্ম্মতন্ত্যাগয়োরবিদ্ধকর্তৃকত্বমন্তীতি মন্বানস্যাৰ্চ্জ্নস্য প্রশ্নঃ সম্ভবতীতি ভাব:। ভবতু সংস্থাসস্য কর্ত্তব্যত্ববিবক্ষা তপাপি কথং প্রশ্যাতরবৃভূৎসয়া প্রশ্ন-প্রবৃত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—প্রাধান্যমিতি। তথাপি কৃথমেকন্মিন্ পুরুষে তন্ত্রোর-প্রাপ্তাবৃক্তাভিপ্রায়েণ প্রশ্নবচনং প্রকল্পাতে তত্তাহ—অনাত্মবিদপীতি। স্থাস্থ-বিদো বিস্থাসামর্থ্যাৎ কর্মত্যাগধৌব্যবদিতরস্যাপি সতি বৈরাগ্যে তত্ত্যাগ-স্যাবশ্রকভাৎ তত্ত্ব কর্ত্তাদৌ প্রাপ্তোহত্তানৃত্ততে তথা চ কর্ম-তত্ত্যাগয়োরেকমিন্ন-বিহুৰি প্রাপ্তের্ব্যক্তত্বাহুক্তাভিপ্রায়েণ প্রশ্নপ্রবৃত্তিরবিরুদ্ধেত্যর্থঃ। সংস্থাসন্তান্ধ-বিংকজ্কত্বমেবাত্ত বিবক্ষিতং কিং ন স্যাদিত্যাশঙ্কা কর্দ্তু স্তর্পযু দাসঃ সংস্থাস-বিধিশ্চেত্যৰ্ভেদে বাক্যভেদপ্ৰসন্থাৎ মৈৰ্মিত্যাহ—ন পুনব্ৰিতি ৷ ইতিশব্দো

বাক্যভেদপ্রসঙ্গতে বিশ্বতাশিক্য ফলিতমাহ—এবমিতি।
কর্মান্থটান-কর্মসংখ্যাসয়োরবিদ্বংকর্তৃক্ষমণ্যন্তীত্যেবং মন্বানস্যার্জ্বন্য প্রশাসতরবিবিদিষরা প্রশ্নো নামপুপরইতি সম্বন্ধঃ। তয়োঃ সমুচ্চিত্যামুটানসম্ভবে কথং
প্রশাস্তরবিবিদিয়ে প্রশাসকাহ—পূর্ব্বোক্তেনেতি। উভয়োশেত্যাদাবুকপ্রকাবেল কর্মত্যাপয়োর্মিথো বিরোধার সমুচ্চিত্যামুটানং সাবকাশমিত্যর্থঃ। ভবতু
তর্হি যদ্য ক্যাচিদন্ততরস্যামুঠেরত্বিতি কুতো যথোক্তাভিপ্রায়েণ প্রশ্নপ্রবিধিক্রতাশক্ষাহ—অন্যতরস্থেতি। উভয়প্রায়্রপার্মায়পুপরাবন্ততরপরিপ্রছে
বিশেষস্যাঘেষ্যত্বাভিপ্রায়েণ প্রশ্নোপপত্তিরিত্যর্থঃ। ইতশ্চাবিদ্বংকর্জ্কয়োঃ
সংখ্যাসকর্মযোগ্রোঃ কতরঃ প্রেয়ানিতি প্রাষ্টুরভিপ্রায়ো ভাতীত্যাহ—প্রতিব্রুক্তি।
বিচনেতি।

কিং তৎ প্রতিবচনং কথংবা তরিরপণমিতি পৃচ্ছতি—কথমিতি। তত্ত্র প্রতিবচনং দর্শরতি—সংস্থাসৈতি। তরিরপণং কথয়তি—এতদিতি। তছভরং নিংশ্রেসকরত্বং কর্মবোগস্থ শ্রেষ্ঠতকেত্যর্থ:। গুণদোষবিভাগবিবেকার্থং পৃচ্ছতি—কিঞ্চেতি। অতাহিম্মিরাজে পক্ষে কিং দ্বণম্ অমিন্ বা বিতীরে পক্ষে কিং ফলমিতি প্রশার্থ:। তত্ত্র সিদ্ধান্তী প্রথমপক্ষে দোষমাদর্শয়তি—আত্রেত্যাদিনা। তদেবামপপরত্বং ব্যতিরেক্ষারা বির্ণোতি—যদীত্যাদিনা। নিংশ্রেমকরত্বোক্তিরিতাত্র পারম্পর্যোণতি দ্রন্থবাম্, বিশিষ্ট্রাভিধানমিতি প্রতিবোগিনোহসহায়্রদাস্থ চ শুদ্দিরা জানার্থবাদিত্যর্থ:। আত্মক্রশ্র কর্মসংন্যাসকর্মন্বাগরেররমন্তবে দর্শিতে চোদয়তি—অত্রাহেতি। চোদয়তা নির্দ্ধান্থং বিমৃশতি—কিমিত্যাদিনা। অন্যতরাসন্তবেহিতি। চোদয়তা নির্দ্ধান্থং বিমৃশতি—কিমিত্যাদিনা। অন্যতরাসন্তবেহিতি। কোর্মাহবতরতীত্যাহ অদ্ধা চেতি। বস্থ কন্মচিন্যভরস্থাসন্তবা ভবিষ্যতীত্যাশক্ষ্য কারণমন্তরেশ-সন্তবোভবন্নতিপ্রসন্ধী স্থাদিতি মন্তান: সন্ধাহ—অন্যন্তবৃহিতি।

আন্ধবিদঃ সকারণং কর্ণবোগাসন্তবং সিদ্ধান্তী দর্শরতি—অত্তেতি।
সংগ্রহবাক্যং বির্থনাত্মবিদ্ধং রির্ণোতি—জন্মাদীতি। তম্ম যহকং নির্ত্তমিধ্যাআনদ্ধং তদিদানীং ব্যনজি—সম্যুগিতি। বিপর্যয়জ্ঞানমূলভেত্যাদিনোকং
প্রথপঞ্চরতি—নিজ্রিনুরেতি। যথোক্তসংখ্যাসমূলা ততো বিপরীতম্ম কর্মবোগভাভাবং প্রতিপান্তত ইতি সম্বন্ধঃ। বৈপরীত্যং ক্যোর্যন্ কর্মবোগমেব বিশিনষ্টি—
মিধ্যাজ্ঞানেতি। মিধ্যা চ তদজ্ঞানঞ্চেত্যনাভনির্বাচ্যমজ্ঞানং তন্মূলোহহং
কর্মেত্যাত্মনি কর্ত্ত্বাভিমানতজ্জ্মভেতি যাবং। যথোক্তং সংখ্যাসমূক্য
যথোক্তকর্মবোগস্থাসন্তবংপ্রতিপাদনে হেতুমাহ—সম্যুগ জ্ঞানেতি। কুরু তদ্ধ-

ভাবপ্রতিপাদনং তদাহ—ইহেতি। উকং হেতুং ক্লমাক্তত কর্মবোগাসভবে ফলিতমাহ—যুদ্দাদিতি। ইহ শাল্তে তত্ত্ব তত্ত্বেত্যাদাবুকমেব ব্যক্তীকর্জ্বং প্রুছিত—ক্রেম্ব ব্যক্তীকর্জ্বং প্রুছিত—ক্রেম্বিত। তানেব প্রদেশান্ দর্শরতি—অত্ত্রেতি।

व्याश्च वक्षणिक्षणान्य मः जामश्रीक्षणामनामाञ्चितः मः भागा विविक्षिष्ठ--দেৎ ভর্চি কর্মবোগোহপি তম্ম কমার ভবতি প্রকরণাবিশেবাদিতি শহতে—রক্ত্-আত্মবিভাপ্রকরণে কর্মধোগপ্রতিপাদনমূদাহরতি—ভদ্য**থেতি।** েচেতি। প্রকরণাদাত্মবিদোহণি কর্মযোগশু সম্ভবে ফলিতমাহ—অত্তেচ্চি । क्षारमाशायाचनाशि श्रकतः भारतिका ज्यामानुका अतिकार कर्य क्यायाज्यान् মিতি পরিহরতি—**অন্ত্রোচ্যত ইতি।** সম্যগ্জাননিগাজানরোত্তৎকার্যুরোক अम्पनितृ खिल्म महावरता मिरिया विरताधा कर्ड चामिल्म म्ल मार्क मार्क का नाम् कर न সম্ভবতীত্যর্থ:। আত্মজন্ত কর্মবোগাসম্ভবে হেম্বস্তরমাহ—জ্ঞানযোগেনেতি। ইতশ্চাত্মবিলো জ্ঞানাদূৰ্দ্ধং কৰ্মযোগো ন বৃক্তিমানিত্যাহ—কৃতকৃত্যুত্ত্বনেতি। জ্ঞানবতো নাস্তি কর্মেন্ড্যত্র কারণাস্তরমাহ—তস্ত্রেতি। তর্হি জ্ঞানবতা কৰ্মবোগন্ত হেরদবজ্জিজান্থনাপি তন্ত ত্যাজ্যদং জ্ঞান প্রাপ্ত্য। তন্তাপি পুরুষার্থসিদ্ধে-রিত্যাশক্য বিজ্ঞানোরন্তিকর্মযোগাপেকা ইত্যাহ—ন কর্ম্মণামিতি। স্বরূপোপকা-ব্যঙ্গমস্তরেণাঙ্গিস্থরপানিষ্পত্তেজ্ঞ নার্থিনা কর্মধোগস্ত গুদ্ধানিদারা জ্ঞানহেতোরাদে-র্ছমিতার্থ:। তর্হি জ্ঞানবতাপি জ্ঞানফলোপকারিছেন কর্মবোগো মৃগ্যতামিত্যাশ-ক্যাহ—যোগারুচন্ত্রেতি। উৎপর্মমাগ্রানস্থ কর্মাভাবে শরীরন্থিতিহেতার্প কর্মণোহসম্ভবান্ন তক্ত শরীরম্ভিতিশুদস্থিতো চ কুতো জীবন্মজিক্তদভাবে চ কল্পো-পদেষ্ট অমুপদেশাভাবে চ কুতো জ্ঞানোদয়: স্থাদিত্যাশন্তাহ—শারীরমিতি। বিহুৰোহপি শরীরস্থিতিরাস্থিতা চেত্তনাত প্রযুক্তের দর্শনশ্রবণাদির কর্তৃত্বাভিমানোহপি তম্ভ ভাদিত্যাশব্যাহ—নৈবেতি। তথবিদিত্যনেন চ সমাহিতচেতত্তরা করোমীতি প্রভারত সদৈবাকর্ত্রতথাপদেশাদিতি সম্বন্ধঃ। যতু বিছ্বঃ শরীরন্থিতিনিমিত্ত-ক্ৰাভাত্তানে তশ্বিন কৰ্ত্বাভিমানোহপি ভাদিতি ততাহ—শরীরেতি। আত্মাণাত্মাবিদঃ তেম্বপি নাহককরোমীতি প্রত্যয়শু নৈব কিঞ্চিৎ করোমীত্যাদাব কর্ন্থাপদেশাৎ ন কর্ত্বাভিমানসম্ভাবনেত্যর্থঃ। বথোক্ষোপদেশা**হুসন্ধানাভাবে** . বিহুৰোহপি করোমীতি স্বাভাবিকপ্রত্যয়গারা কর্মবোগঃ স্তাদিত্যাশক্যাহ— আত্মতত্ত্তি। বছপি বিশ্বন্ যথোক্তম্পদেশং কদাচিলাত্মকতে তথাপি ভন্ধবিভাবিরোধান্দিণ্যাক্ষানং তরিমিত্তং কর্ম বা তক্ত প্রভাবরিতুমশক্যমিত্যর্থ:। ্জান্ধবিৎকর্তৃকরোঃ সংস্থাসকর্দ্ধাগ্রোর্যোগাৎ তরোনিঃশ্রেরসকর্ত্বস্থ অস্ততর

বিশিষ্টত্বনিত্যে তন্ন্কনিতি সিদ্ধত্বাদ্ধিতীয় পক্ষমনীকান্ত্ৰাতি – সম্মাদিত্যাদিনা। তদীয়াচে কৰ্মসংখ্যাসাৎ কৰ্মযোগস্ত বিশিষ্টত্বাভিধানমিতি সৰদ্ধঃ। নম্
কৰ্মনোগেন ভক্তকেঃ সংখ্যাসো ভাষমানস্তন্মাত্তংক্ষণ্ডতে, কথং তন্ধাৎ কৰ্মযোগস্ত
উৎকৃষ্টক্বাচো মৃক্তিপুক্তেতি তত্ত্ৰাহ—পূৰ্বেবাস্ক্তেতি। বৈশক্ষণ্যমেব স্পষ্টপ্ৰতি
—সত্ত্যেবেতি। স্বাশ্রমবিহিতশ্রবণাদৌ কর্ত্ববিজ্ঞানে সভোব পূর্কাশ্রমোপাত্তকর্মৈকদেশবিষয়সংখ্যাসাৎ কর্মযোগস্ত শ্রেম্বত্ত্বনং শ্রেভাদৃশং ত্রাহ্মণশুনিত্তি
বিশ্বস্থানীয় ইত্যাদিশ্বতিবিক্রমিত্যাশক্যাহ—যম্মনিয়মাদীতি।

"আনৃশংশুং ক্ষমা সত্যমহিংসা দম আর্জ্বন্। প্রীতিঃ প্রসাদো মাধুর্যমক্রোপশ্চ যমা দশ।" "দানমিক্সা তপো ধ্যানং স্বাধ্যায়োপস্থনিগ্রহৌ। ব্রতোপ্রাসৌ মৌনঞ্চ স্থানঞ্জিরমা দশ॥"

ইত্যুকৈর্যমনির মৈর কৈ ভাশান্ধ শৈর্থি শিষ্ট ছেনা মুঠাতু মশক্য ছাত্তক সংস্থাসাং কর্মধান কর্মধা

নমু তৃতীরে যথোজপ্রশ্নন্ত ভগবতা নির্ণীত্যায়াত্র প্রশ্নপ্রতিবচনয়োঃ
সাবকাশ্বমিত্যাশ্বর বিস্তরেণাক্তমেব সম্বন্ধং পুনঃ সংক্ষেপতো দর্শরতি—জ্যায়সী
চেদিতি। সাংখ্যবোগয়োর্ভিরপুরুষায়ঠেরবেন নির্ণীত্বার পুনঃ প্রশ্নবোগ্যমিত্যর্থঃ
ইতোহপি ন তরোঃ প্রশ্নবিবর্ত্বমিত্যাহ—ন চেতি। এবকারবিশেষণাব্ধ জ্ঞানসহিতসংস্থাসন্ত সিদ্ধিসাধনম্ব ভগবতোহভিমতং "ছিবৈনং সংশরং যোগমাতির ইতি চ কর্মযোগন্ত বিধানাৎ তন্তাপি সিদ্ধিসাধনম্বিষ্ঠং ততশ্ব নির্ণীত্যার প্রশ্নম্বন্ধির সিধ্যতীত্যর্থঃ। কেনাভিপ্রায়েণ তর্হি প্রশ্নঃ স্থাদিত্যাশ্বর জ্ঞানরহিত্বংক্তামাহ কর্মবার্থক প্রশাভ্তরত্ববৃত্ৎসরেত্যাহ—জ্ঞানরহিত ইতি। প্রেই রভিপারমেবং প্রদর্শ্য প্রশ্নেগপত্তিমুক্তা প্রশ্নমূখাপরতি—সংস্থাসমিতি। তর্হি বরং ব্যাহ্রের্মিত্যাশ্বর তদশক্তেরক্তর্থৎ প্রশাভতরত্বান্তহিনার্থং তদিদমিতি নিশ্চিত্য বক্তবানিত্যাহ—যাচেত্র যু ইতি। কাস্যানাং প্রতিসিদ্ধানাঞ্চ কর্মণাং পরিত্যাগো

.020

ময়োচাতে ন দর্বেবামিত্যাশন্ত্য কর্মণ্যকর্মেত্যাদৌ বিশেষদর্শনাক্রৈবমিত্যান্ত শাস্ত্রীয়াণামিতি। অন্ধ তর্হি শাস্ত্রীয়াশাস্ত্রীয়রেররেমেররিপ কর্মণোল্ডাগো নেত্যাহ—পুনরিতি। তর্হি কর্মত্যাগন্তদেবাগন্দেত্যুভয়মান্ত্রিবানিত্যাশন্ত্র বিরোধান্মেবমিত্যভিপ্রেত্যান্ত অত্তইতি। বর্মেরেকেনামুদ্ধানাযোগক্তাকরাৎ কর্ত্ব্যন্থোক্তেশ্চ সংশয়ো জায়তে তমেব সংশয়ৎ বিশদয়তি—কিং কর্মেতি। প্রশন্তত্তরবৃত্ৎসা কিমর্থেত্যাশন্ত্যাহ -প্রশন্ত্যতরক্তেতি। তব্তে-বামুদ্ধানাদিতি। তদেকমন্তত্তরমে ক্রহীতি সম্বন্ধঃ। উভয়োকক্ততে সভিষ্টিনিত্যেকং বক্রব্যমিতি নিষ্ক্রাতে তত্তাহ—সত্তেতি। কর্মতন্ত্রাগরোর্মিথো বিরোধাদিত্যর্থঃ॥ ১

অমুবাদ। "কর্মণ্যকর্ম যঃ পঞ্ডেৎ" (কর্মে যে ব্যক্তি অকর্ম দর্শন করে) ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া 'স যুক্ত: রুৎস্কর্শক্তং" (সেই ব্যক্তিই যুক্ত এবং সেই ব্যক্তি সকল কৰ্মের অমুষ্ঠাতা), "বদুচ্ছালাভসৰ্জ্ঞ" (यह ছোলাভে সম্ভ), "এক্ষাৰ্পণং এক্ষ হবি:", (এক্ষই হবি,,এক্ষই অৰ্পণ) "কৰ্মজান বিদ্ধি তানু সর্বান্" (সেই সকলকে কর্মজন্ত বলিয়া বোধ কর), "সর্বাং কর্মাধিলং পার্থ" (হে পার্থ দকল কর্মই সম্পূর্ণভাবে জ্ঞানে পরিদমাপ্ত ২র), "জ্ঞানাগ্নিঃ সর্বকর্মাণি" (জ্ঞানরপ অগ্নি সকল কর্মকেই) "বোগসংস্তত্তকর্মাণং" (বোগের-দারা কর্ম্মের দংস্থাদকারী), এই পর্য্যন্ত বচনসমূহের দারা ভগবান দর্বকর্ম-সন্ত্রাদের উপদেশ প্রদান করিয়াছেন। "ছিত্তৈনং সংশয়ং যোগমাতিষ্ঠ" (এই সংশব্ন ছেদ্দ করিয়া জ্ঞানলাভের উপায়ের অনুষ্ঠান কর) এই বচনের ঘারা কর্মামুর্রান কর, এই কথাও বলিয়াছেন। কর্মামুর্রান ও কর্মসংন্যাস এই ছুইটি বস্তুর মধ্যে স্থিতি ও গতির ভার পরস্পর বিরোধ থাকার, একজন এককালে কোন প্রকারেই কর্মামুষ্ঠান ও কর্ম্মণ্যাস করিতে পারে না; কালভেদে এই তুইটির অমুষ্ঠান করিতে হইবে, এ কথাও ভগবান্ এ প্র্যাস্ত স্পষ্ঠ নির্দেশ করেন নাই। এই সকল দেখিয়া আপাততঃ বুঝা যায় যেন, কর্মান্তান এবং কর্ম-मश्चारमत मरशा এक दित अकुष्ठी नहें कर्खना; जाहारे निम रहेन, जरन এই क्रहेरित, মধ্যে বেটি অপেকারুত প্রশন্ত তাহাই করা উচিত, এই প্রকার বিবেচনা করিয়া এই চুইটির মধ্যে কোন্টি অপেকাক্বত অধিক প্রশস্ত মোক্ষণান্ডের উপার, তাহা বুঝিবার ইচ্ছায় অর্জুন বলিতেছেন যে, সংন্যাসং কর্মণাঞ্জঞ ইত্যাদি।

ষদি কেছ এপ্রকার শঙ্কা করে যে, যে ব্যক্তি আত্মতত্ত্ত, তাঁহারই জ্ঞানযোগের

দারা নোক লাভ হয়, ইহাই প্রতিপাদন করিবার অভিপ্রায়ে ভগবান সর্ককর্ম-সংন্যাসবিষয়ে উপদেশ দিয়াছেন, অনাত্মজ্ঞ পুরুষের জন্ম কর্মসংন্যাসযোগ বিহিত হয় নাই, এই কারণে কর্মানুষ্ঠান ও কর্ম্মদ্ন্যাস এক পুরুষের অমুষ্ঠেয় নহে. এই হুইটির অধিকারী একজন হুইতে পারেনা; স্থতরাং ইহার মধ্যে একটি অপরটির অপেকা প্রশস্ততর —ইহা ব্রিবার জন্ম প্রশ্ন (প্রকৃত পকে) যুক্তিযুক্ত হইতেছে না। ইহার উত্তরস্বরূপে বলি যে, সত্য বটে তোমার অভিপ্রারামুসারে প্রার্ম উপপন্ন নহে; কিন্তু প্রশ্নকর্তা অর্জুনের অভিপ্রান্ন্যারে প্রশ্ন যুক্তিযুক্তই হইরাছে। কেন ? [তাহা বলি] পূর্ব্বোদান্তত বচন সমূহের দারা কর্ম্মণন্যাদের কর্ত্তব্যত্ব বিবন্ধিত হওয়ায় তাহার প্রাধান্ত আছে [ইহা অবশ্রই স্বীকার্য্য], কর্ত্তা না থাকিলে কর্ম্ম সংন্যাসের কর্ত্তব্যত্বও অফুপপন্ন, আত্মবিদের স্থান্ধ অনাত্মবিদ্ও সামান্ততঃ কত্ত্রিরপে প্রাপ্ত হইয়াছে: স্থতরাং তাহারও কর্ত্তরূপে কথন অসকত নহে: অতএব সংন্যাস যে কেবল আত্মবিদের অনুষ্ঠেয়, তাহা নহে; এই প্রকার বিবেচনা করিয়া অর্জ্জন যে প্রশ্ন করিয়াছেন, তাহা অনুপ্রপন্ন নহে; কারণ উক্ত বিবেচনাত্মারে তিনি ভাবিয়াছিলেন যে, কর্মাত্মগান ও কর্মসংন্যাস এই উভয়ই বিশ্বানের ক্রায় অবিশ্বানের পক্ষেও বিহিত; অথচ পূর্ব্বোক্ত প্রকারে কর্মাহুষ্ঠান ও কর্মসংন্যাদের বিরোধ হয় বলিয়া অন্ততরের কর্ত্তব্যত্ব-প্রাপ্তি হইতেছে ; স্থতরাং এই তুইটির মধ্যে যেটি প্রশস্ততর তাহাই কর্ত্তব্য এবং অপরের আপেকিক অগ্রাশস্ত্য-নিবন্ধন অমুষ্ঠান উচিত নহে : এই প্রকার উৎক্রন্টতর উপায় জানিবার ইচ্ছাতেই অর্জুন এই প্রকার প্রশ্ন করিয়াছেন। ভগবান যে প্রতিবচনবাক্য ব্লিবাছেন, তাহার তাৎপর্য্য নিরূপণ করিলেও প্রশ্নকর্তার যে এই প্রকার অভিপ্রার, ইহা স্পষ্ট বুঝিতে পারা যায়।

কেন এই প্রকার বলা যাইতেছে ? [তাহা বলি] সংন্যাস এবং কর্মধার্গ, এই উভরই নিংশ্রেসকর; এই উভরের মধ্যে কর্মধোর্গই বিশিষ্ট হইরা থাকে; এই প্রতিবচনবাক্যের ঘারাই ইহা নিরূপণ করা যাইতেছে। [একণে দেখিছে হইবে যে] এই পঞ্চমাধ্যারের প্রথম শ্লোকটি ঘারা আত্মবিং পুরুষকর্ভৃক অফুটিত সংন্যাস ও কর্মধোর্গের ফল মোক এইরূপ নির্দেশ করিরা ঐ উভরের মধ্যে কোন বিশেষ কারণপ্রযুক্ত আবার কর্মধোর্গের প্রাধান্য উক্ত ইইতেছে। অথবা অনাত্মবিং পুরুষকর্ভৃক অফুটিত সংন্যাস ও কর্মধোর্গের নিংশ্রেরসকরত বিলয়া ঐ উভরের মধ্যে কর্মধোর্গের প্রাধান্য উক্ত ইইতেছে। যদি আত্মবিং কর্ভৃক অফুটিত কর্ম্মগন্যাস ও কর্মধোর্গের নিংশ্রেরসকরত বিলয়া ঐ উভরের মধ্যে কর্মধোর্গের প্রাধান্য উক্ত হইতেছে। যদি আত্মবিং কর্ভৃক অফুটিত কর্ম্মগন্যাস ও কর্মধোর্গের নিংশ্রেরসকরত হর এবং এই উভরের মধ্যে

कर्षमधनाम व्हेरज कर्षरवार्णत श्राधानां छेक वस, जावा व्हेरनहे वा कि वस ? অপবা যদি অনাত্মবিৎ কর্ত্তক অমুষ্ঠিত কর্ম্মগংন্যাস ও কর্মযোগের নিঃশ্রেমসহেতৃত্ব বলিয়া পরে কর্ম্মগংন্যাস হইতে কর্মযোগের প্রাধান্য উক্ত হয়, তাহা হইলেই ৰা কি হইতে পারে? এই ভাবে যে কয়টি আশঙ্কা হইতে পারে, ভাহা নিরাকরণ করিবার জন্য] ইহার উত্তরস্বরূপে বলা যাইতেছে, আত্মতত্ত্ত ব্যক্তি যে কর্মসংন্যাস এবং কর্মাত্মভান করিবে, তাহার সম্ভাবনা নাই; স্থতরাং ভাহার পক্ষে কর্মাংন্যাস ও কর্মযোগ এই উভয়ই মোককারণ, এই প্রকার বলা কথনই সঙ্গত হইতে পারে না এবং তাহার পক্ষে কর্মসংন্যাস হইতে কর্মবোগের প্রাধান্য এই প্রকার উক্তিও একান্ত অমুপপর হয়। যদি অনাম্মবিদের পক্ষে কর্ম্মণন্যাস এবং সংন্যাসের প্রতিকৃল কর্মাত্মন্তান, এই তুইটি সম্ভবপর হয়, তাহা হইলে সেই উপায়ছয়ের মোক্ষসাধনত্বকথন সঙ্গত হইতে পারে এবং কর্মসংন্যাস হইতে কর্মযোগের প্রাধান্য প্রতিপাদন ও উপপত্তি হইতে পারে। আত্মবিদের পকে সংন্যাস ও কর্মযোগ এই উভয়ের অফুঠান একাস্ত অসম্ভব; এই কারণ তাহার পক্ষে কর্ম্মণন্যাস ও কর্মবোগ এই ছুইটির মোক্ষের প্রতি কারণ এবং সেই উপার্ছয়ের মধ্যে সংন্যাস হইতে কর্মবোগের প্রাধান্য আছে, এই প্রকার প্রতিপাদন করা কথনই সঙ্গত হইতে পারে না।

এই প্রসঙ্গে কেহ এই প্রকার প্রশ্ন করিয়া থাকেন যে, আত্মবিং ব্যক্তির পক্ষে কর্মযোগ ও সংন্যাসযোগ এই উভয়ই অসম্ভব ? অথবা এই ছইটির মধ্যে একটির অফুষ্ঠান অসম্ভব ? যদি একটির অসম্ভব হয়, তাহা হইলে কোনটির অসম্ভব ? কর্মসংন্যাসের অসম্ভব অথবা কর্মযোগামুষ্ঠানের অসম্ভব ? এবং কেন অসম্ভব ? তাহার কারণও নির্দেশ করিতে হইবে।

ইহার উত্তরস্বরূপ বলা যাইতেছে যে, যে ব্যক্তি আত্মবিং [অর্থাৎ] যাহার মিগ্যাজ্ঞান নির্ত্ত হইরাছে, তাহার মিগ্যাজ্ঞানমূলক কর্মযোগ [একাস্ত] অসম্ভব হইরা থাকে। "আত্মা নিজ্ঞির, জন্ম প্রভৃতি বিকার আত্মার নহে", এই ভাবে আত্মার প্রকৃত তত্ব যে ব্যক্তি জানিতে পারিরাছে, সেই আত্মবিদের সম্যুগদর্শমর প্রভাবে সকল প্রকার মিণ্যাজ্ঞান উন্মূলিত হইরাছে, শাস্ত্রে সেই জাত্মতত্ত ব্যক্তির নিজ্ঞির আত্মস্বরূপেই অবহানরূপ সর্ক্রকর্মসংন্যাস প্রতিপাদন করিরা, শাস্ত্র ইহাও প্রতিপাদন করিরাছে যে, তত্ত্বজ্ঞানের বিপরীত যে মিণ্যা জ্ঞান, তাহাই আত্মাতে কর্ভ্ডাভিমানের মূল; এই কর্ভ্ডাভিমানের কার্য্য কর্মযোগ, (অর্থাৎ) আত্মা ক্রিরাবান্ এই প্রান্তিবশতঃ

আত্মার আরোপিত স্বরূপে অবস্থান, স্থতরাং এই কর্মবোগ জ্ঞানীর পক্ষে কিছুতেই সম্ভবপর নহে। এই শাল্রে আত্মস্বরূপনিরূপণার্থ কোন কোন স্থলে সম্যুগ্ জ্ঞানের সহিত, মিণ্যাজ্ঞান ও তাহার কার্য্যের বিরোধ স্থাচিত হইরাছে, এই কারণে আত্মবিদের কর্মবোগ হইবার সম্ভাবনা নাই, ইহা স্থির। এই জন্য বলিতে হইবে যে, যাহার মিণ্যাজ্ঞান নির্ত্ত হইরাছে, সেই আত্মবিদের মিণ্যাজ্ঞান-প্রস্তুত কর্মবোগ সম্ভব নহে, এইরূপ বচন যুক্তিযুক্তই হইরাছে।

কোন্ কোন্ আত্মবরূপ প্রতিপাদক অংশে এই গীতাশাস্ত্রে আত্মবিদের কর্মাভাব উক্ত হইয়াছে ? ইহার উত্তর এই হইতেছে বে, "অবিনাশি তু তদিদ্ধি" (তাহাকে বিনাশশূন্য বলিয়া জান), ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া "বএনং বেত্তি হস্তারং" (বে ব্যক্তি আত্মাকে হনন ক্রিয়ার কর্ত্তা বলিয়া জানে) ও 'বেদাবিনাশিনং নিত্যং' (আত্মাকে অবিনাশী নিত্য বলিয়া বে জানে) ইত্যাদি শ্লোকে সেই সেই স্থানে আত্মবিদের কর্মাভাব উক্ত হইয়াছে।

একণে প্রশ্ন হইতে পারে যে, গীতাশান্তে আত্মার স্বরূপ-প্রতিপাদক সেই সেই স্থানে, "কর্মবোগত্ব করিতে হইবে" ইহাও প্রতিপাদিত হইয়াছে; যথা " তত্মাদ যুধ্যত্ব ভারত " (হে ভারত, সেই জন্য তুমি যুদ্ধ কর), " অংথর্মপি চাবেক্ষ্য" (নিজ ধর্ম এই প্রকার বিবেচনা করিয়া), "কর্মণ্যেবাধিকারত্তে", (তোমার কর্ম্মেতেই অধিকার) ইত্যাদি শ্লোকে (শ্লোকের দারাও কর্ম্মবোগের কর্ত্তব্যতা প্রতিপাদিত হইয়াছে), তবে কি প্রকারে ইহা সঙ্গত হইতে পারে যে আত্মবিদের পক্ষে কর্মধোণের অন্তর্গান সম্ভব নহে ৷ ইহার উত্তর এই বে, সম্যগ্ দর্শন ও তাহার কার্য্যের সহিত মিখ্যাজ্ঞান এবং তাহার কার্য্যের অত্যস্ত বিরোধ আছে। "জ্ঞানবোগেন সাংখ্যানাং" (সাংখ্য অর্থাৎ আত্মতত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তিগণের জানবোগের ঘারাই নিঃশ্রেরস্বাভ হয়) ইত্যাদি বাক্যের ঘারা সাংখ্য (অর্থাৎ আত্মতৰজ্ঞব্যক্তি) গণের পক্ষে জ্ঞাননিষ্ঠা অর্থাৎ নিজ্ঞির আত্মস্বরূপে অবস্থানকে অনামবিংকত কর্মবোগনিষ্ঠা হইতে পৃথক্ করা হইয়াছে; আত্মতত্বল্ল কৃতক্বত্য হয়; স্থতরাং তাহার কর্মযোগদাধ্য কোন প্রয়োজনেরই অপেকা নাই এবং "ভন্ত কাৰ্য্যং ন বিষ্ণতে" (তাহার পক্ষে কোন কাৰ্য্যই নাই) ইত্যাদি বচনের দারা আত্মবিদের কর্মবোগের অভাব প্রতিপাদিত হইরাছে। এই সকল হেড পারা স্পষ্টই বুঝা যায় যে, আত্মবিদের পক্ষে কোন কর্ম্মের অমুষ্ঠান সম্ভব নহে।

"ন ক্র্মণামনারভাং" (ক্র্মসমূহের আরম্ভ না ক্রিলেই, পুরুষ সে নৈক্র্য্য-মিজি (অর্থাৎ মোক্ষ লাভ ক্রিডে পারে তাহা নহে), "সংখ্যাসস্ত মহাবাহো

ছঃখমাপু,মবোগতঃ" (বোগব্যতিরেকে সংন্যামাশ্রম কেবল ছঃখেরই কারণ হয়) ইত্যাদি বাক্যের ধারা আত্মতভ্জানের উপায় স্বরূপে কর্মধোগেয় বিধান করা হইরাছে। ''যোগারুত্ত তত্তৈব শমঃ কারণমূচ্যতে'' (ক্ষান্যোগে আরুচ্ হইলে তাহার কর্মনিবৃত্তিই নোকলাভের কারণ হইয়া থাকে) এই বচনের দারা বাহার সম্যাপ্তান উৎপন্ন চইয়াছে, তাহার কর্মবোগের অভাব প্রতিপাদিত হইয়াছে। "শারীরং কেবলং কর্ম কর্মরাপ্রোতি কিবিষ্ণ" (কেবল শ্রীররক্ষার জন্য কর্মের অমুষ্ঠান করিলে পাপভাক হয় না) এই বচনের দারা শরীরস্থিতির অমুকুল কর্মাভিন্ন অন্ত যাবতীয় কর্মের নিবারণও করা হইয়াছে। "নৈব কিঞিৎ করোমীতি যুক্তো মন্তেত তত্ত্বিং" (তত্ত্বিং দেহের ক্রিয়া হইলেও আমি কিছুই করিতেছি না এই প্রকার বোধ করিবেন) এই বচনের দারা ইহাও প্রতিপাদিত হইয়াছে যে, শরীরস্থিতিনিবন্ধন অবগ্রস্তাবি দর্শনশ্রবণাদি কার্য্য হুইলেও ঐ সকল কার্য্যে আয়তহজ ব্যক্তি চিত্তের সমাধান পূর্বক 'আমি ক্রিতেছি' এই প্রকার অভিমান কোন সময়ই ক্রিবেন না : এই স্কল কারণে শী কার করিতে হইতেছে যে, আত্মতত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তির পক্ষে সমাগ্দর্শনের বিরুদ্ধ মিগ্যাজ্ঞানমূলক কর্মযোগের সম্ভাবনা স্বগ্নেও করা যাইতে পারে না। এই কারণে সন্ত্র্যাস ও কর্মযোগ এই উভয়েরই নিঃশ্রেয়সকরত্ব যাহা উক্ত হইরাছে. ভাহা অবিদ্বানের পকেই সঙ্গত হইতে পারে। সেই অবিদ্বানের সংভাস, বিদ্বানের সংস্থাস হইতে সম্পূর্ণ বিলক্ষণ; কারণ অবিঘানের সন্ন্যাস, আত্মার উপর কর্জ্ছা-ভিমান সমকাণীন এবং ঐ সংভাসকালে যম নিয়ম প্রভৃতি কতকগুলি ক্লেশকর কর্মের অনুষ্ঠান অবশ্রকর্ত্তব্য; এই কারণে অবিদানের পক্ষে তাদৃশ সংস্থাস তুরভূষের তাহার পক্ষে কর্মযোগ অল্পকেন হ স্থতরাং সংস্থাস অপেকা কর্মবোগই তাহার পকে বিশিষ্ট অর্থাৎ উৎকৃষ্ট উপায়রশে নির্দিষ্ট হইয়াছে; এই প্রকার প্রতিবচনের তাৎপর্য্য দেখিলে প্রশ্নকর্তার পুর্ব্বোক্তপ্রকার স্বভিপ্রায় ম্পষ্টরূপে বুঝিতে পারা বায়। ইহা সিরই আছে।

"জ্যারসী চেৎ কর্মণস্তে" (কর্ম হইতে বৃদ্ধি যদি শ্রেষ্ঠ) ইত্যাদি শ্লোকে জ্ঞান ও কর্ম্মের এককালীন অমুষ্ঠান হওয়া অসম্ভব বলিয়া এই ফুইটির মধ্যে যাহা শ্রেয়:, তাহা আমাকে বল, এই প্রকার অর্জ্জ্ন জিজ্ঞাসা করিলে পর ভগবান্ এইপ্রকার নির্ণয় করিয়াছেন যে, জ্ঞানী সংস্থাসিগণের গমোকপ্রাপ্তি কেবল জ্ঞানবোগের দারাই হয়; কর্মযোগিগণের পর্ক্ষে মোক্ষপ্রাপ্তির প্রতিপ্রধান করিল কর্মযোগ (কর্মযোগদারা চিত্তভদ্দি হইলে তাহারা জ্ঞানলাডে

সমর্থ হইয়া পরে মোকলাত করিতে পারে), "নচ সংমাননাকের বিভিৎ সমনি।
গছতি" (কেবল সংন্যাসের ছারাই সিদ্ধি লাত করিতে পারে না) এই প্রকার
বাক্যের ছারাও ইহাই প্রতিপাদিত হইয়াছে যে, জ্ঞানের সহিত সম্যাসই সিদ্ধির
কারণ [এবং জ্ঞানের উদয় না হওয়া পর্যান্ত] কর্মবোগই কর্জব্য । [ইহার
প্রকৃত বিবেক অবধারণ করিতে অসমর্থ হইয়া] অর্জুন "জ্ঞান-রহিত সংন্যাস
শ্রেমঃ কিংবা কর্মবোগ শ্রেমঃ, ইহাই জানিবার ইচ্ছায় বলিতেছেন যে সংন্যাসমিত্যাদি । "সংন্যাস" অর্থাৎ শাস্ত্রীয় কতকগুলি বিশেষ কর্ম্মের অন্তর্জান
পরিত্যাগ [তাহাই] করিবার উপদেশ দিতেছ, অথচ আবার সেই সকল কর্ম্মের
অন্তর্জান বে অবশ্রুকর্জব্য, তাহাও বলিতেছ; স্কৃতরাং এই ছইটির মধ্যে কোনটি
শ্রেমঃ (অর্থাৎ) কর্ম্ম শ্রেমঃ কিংবা কর্ম্ম পরিত্যাগ করা শ্রেমঃ (এইরূপ
সংশ্র হইতেছে); ছইটি উপায়ের মধ্যে যাহা উৎকৃষ্ঠতর, তাহারই অন্তর্জান
কর্জব্য; অত্রেব কর্ম্মেন্যাস ও কর্মবোগ এই ছইটির মধ্যে যাহা উৎকৃষ্ঠতর
কর্মাৎ বাহার অন্তর্জান করিলে আমার শ্রেমোলাত হয়, তাহাই (অর্থাৎ) তোমার
বাহা উৎকৃষ্ট বলিয়া অভিপ্রেত, তাহা নিশ্চয় করিয়া আমাকে বল; কারণ এই
ছইটি উপায় এককালে একটি পুরুবের অন্তর্টের হইতে পারে না॥ ১

ঐভগবাসুবাচ।—

সংন্যাসঃ কর্ম্মযোগশ্চ নিঃশ্রেয়সকরাবুভো । তয়োস্ত কর্ম্মসংন্যাসাৎ কর্মযোগো বিশিষ্যতে ॥২

অন্বয় । শ্রীজগবান্ উবাচ—সংস্থাসঃ কর্মবোগঃ চ [ইতি] উজি [মন্ত্রিণ] নিঃশ্রেষসকরৌ, ভূ (তপাপি) তয়োঃ [মধ্যে] কর্মনংস্থাসাৎ কর্মবোগো বিশিব্যতে (শ্রেষ্কেন নির্ণীয়তে) ॥ ২

আমুবাদ। এভগবান্ কহিলেন,—সংস্থাস এবং কর্মবোগ ছইটিই মোক্ষ-সাধন; কিন্তু এই ছইটির মধ্যে কর্মবোগই কর্ম সংস্থাস হইতে উৎক্লাভর ॥ ২

ভাষ্য ৷ সাজিপ্রায়মাচকাণো নির্ণয়ায় (প্রীভগবায়বাচ) সংস্থাসঃ কর্ম্মণাং পরিত্যাগঃ কর্মধোগন্চ তেবামমুঠানং তাব্ভাবণি নিঃশ্রেয়সকরৌ নিঃশ্রেয়সং মোক্ষং কুর্মাতে জ্ঞানোৎপত্তিহেতুছেন, উভৌ ষম্বণি নিঃশ্রেয়সকরৌ তথাণি তয়োল্ত নিঃশ্রেয়সহেছোঃ কর্ম্মসয়াামাৎ কেবলাৎ কর্মধোগো বিশিব্যুত ইতি কর্মধোগং তৌতি ॥ৎ

আনন্দগিরিটীকা। প্রশ্নমেবম্খাণ্য প্রতিবচনম্খাণয়তি – স্বাভি-

প্রায়মিতি | নির্বায় তন্থারেণ পরত সংশর্জনিয়ন্তার্থমিতার্থঃ । এবং প্রশ্নে প্রব্রম্ভ কর্মবাগন্ত সৌক্র্যামভিপ্রেতা প্রশাসভব্যব্যমভিবিৎস্পর্জাবান্ প্রভিবচনং কিমুক্ত-বানিভ্যাশক্যতে—সংস্থাসইতি । উভয়োরণি ভুলান্থশকাং বারম্বিভ তায়োস্তিবিভি । কথং তর্হি ভয়োরেব মোক্ষোপায়ন্তং বিবক্ষাতে ভজাক—জ্ঞানোৎপত্তীতি । তর্হি ব্য়োরণি প্রশাস্ত্যমপ্রশাস্ত্রন্থ বা ভুলামিত্যাশক্যাহ—উভাবিভি । জ্ঞানসহায়ন্ত কর্ম্মগংস্থাসন্ত কর্মবোগাপেক্ষরা বিশিষ্ট্রক্রবিক্ষর বিশিন্টি—কেবলাদিতি ॥২

অনুবাদ। অর্জুনের নিশ্চর উৎপন্ন করিবার জন্ত নিজের অভিপ্রার প্রকাশ করিয়া ভগবান্ বলিতেছেন বে, সংস্থাস (অর্থাৎ) কতকগুলি বিহিত কর্মের পরিত্যাগ এবং কর্ম্মবোগ (অর্থাৎ সেই কতকগুলি কর্মের অনুষ্ঠান, এই ছইটি উপান্নই নিঃশ্রেমসকর, (অর্থাৎ) জ্ঞানের উৎপত্তির প্রতি কারণ; এই জন্ত মোক্ষের পরম্পরায় সাধন ধরপ হইনা থাকে; তথাপি মোক্ষের এই ছইটি কারণের মধ্যে জ্ঞানহীন কর্ম্মপন্তাস অপেকা কর্ম্মবোগই বিশিষ্ট অর্থাৎ উৎকৃষ্ট এই বাক্যের দারা কর্ম্মবোগর প্রশংসা করা হইতেছে॥ ২

জ্ঞেয়ঃ দ নিত্যদংখ্যাদী যো ন ছেষ্টি ন কাজ্ফতি। নিদ্ধ'ন্দ্ৰো হি মহাবাহো স্থং বন্ধাৎ প্ৰমূচ্যতে॥৩

অন্নয় । স: (কর্মবোগী) নিত্যসন্ন্যাসী [ইতি] জ্বের: (জ্ঞাতব্য:) ব: ন বেটি ন কাজ্জতি; হি (বন্ধাৎ) নিন্দুন্দ: (রাগবোদি হীনঃ) হে মহাবাহো, স্থাৎ (অনায়াসেন) বন্ধাৎ (সংসারাৎ) প্রমুচ্যতে ॥ ৩

অনুবাদ। বাঁহার বেষ বা আকাজ্জা নাই, সে ব্যক্তি কর্মবোগী হইলেও তাঁহাকে নিত্যসংস্থাসী বলিয়াই জানিবে; কারণ হে মহাবাহো, যে ব্যক্তি অভিলাব ও বেষ প্রভৃতি ঘল্ব হইতে বিমুক্ত, তিনি অনায়াসেই সংসারবন্ধন হইতে মুক্ত হইয়া থাকেন॥ ৩

ভাষ্য ৷ কমাদিত্যাহ জেরইতি—জেরো জ্ঞাতব্য: স কর্মবােগী নিত্য-সংন্যাসীতি বাে ন ছেটি কিঞ্চিন্ন কাজ্জতি স্বধহৃংথে তৎসাধনে চ এবংবিধাে বঃ কর্মণি বর্ত্তমানোহণি স নিত্যসংন্যাসীতি জ্ঞাতব্য ইত্যর্থ: ৷ নির্দ্ধ ক্ষমণ বন্ধাদনান্তানে প্রমূচ্যতে ॥ ৩

আনন্দগিরিটীকা। কর্ম হি বন্ধকারণং প্রাসিন্ধং তৎ কথং নিঃশ্রেরস-করং সাদিতি শহতে—কুস্মাদিতি। অকর্তাত্মবিজ্ঞানাৎ প্রাগণি সর্মদাসৌ সংন্যাসী জেয়ে। যো রাগদেয়ে। কচিদপি ন করোজীতাহ—ইত্যাহেতি।
যথানমুন্তীয়মানানি কর্মাণি সংন্যাসিনং ন নিবন্ধস্তি কজানি চ বৈরাগ্যেজিয়সংবমাদিনা নিবর্ত্তরে * তথৈবানভিসংহিতকলানি নিত্যনৈমিজিকানি যোগিনমপি ন
নিবন্ধস্তি নিবর্ত্তরস্ভিত সঞ্চিতং তরিতমিতাভিপ্রেত্যাহ—নিদ্ধ দ্বো হীতি। কর্মযোগিনো নিত্যসংন্যাসিত্বজ্ঞানমন্যপাজ্ঞানস্বাৎ মিণ্যাজ্ঞানমিত্যাশক্ষ্যাহ—এবংবিধইতি। কর্মিণোহপি রাগদেমা ভাবেন সংন্যাসিত্ব
রাগদেবরহিত্তানায়াদেন বন্ধপ্রধ্যসিদ্ধেশ্চ যুক্তং তক্ত সংন্যাসিত্বমিত্যাহ—
নিদ্ধ দ্ব ইতি॥ ৩

অনুবাদ। কেন এই প্রকার বলা হইল, তাহার করণ বলা যাইতেছে যে, জ্রের ইত্যাদি,—জ্রের (এই শব্দটির মর্থ) জ্ঞাতব্য (অর্থাৎ) সেই কর্ম্মযোগীকেও নিত্যসন্নাসী বলিয়া জানিবে [কাহাকে তাহাই বলা যাইতেছে]
যিনি তৃংথ ও তৎ-সাধনের উপায়ে ছেষ করেন না এবং স্থুথ ও তৎসাধনে যাহার আকাজ্জা নাই, ঈদৃশ ব্যক্তি কর্মান্ত্র্টান করিলেও তিনি নিত্যসংন্যাসী ইহা জ্ঞানিবে । হে মহাবাহো, বিনি নির্দ্ধ অর্থাৎ দুক্রর্জিত,
তিনিই স্থাপ (অর্থাৎ) অনায়াসে সংসার্বক্ষ হইতে মুক্তি লাভ করেন॥ ৩

সাংখ্যযোগো পৃথগ্বালাঃ প্রবদন্তি ন পণ্ডিতাঃ। একমপ্যান্থিতঃ সম্যগুভয়োর্ব্বিন্দতে ফলম্॥৪

আহুর। বালঃ (এব) সাংখ্যনোগৌ পূণগ্বদন্তি ন পণ্ডিতা:। একমপি উভয়োরান্তিঃ সম্যক্ ফলং বিন্দতে ॥ ৪

আনুবাদ। বাহারা অনভিজ্ঞ, তাহারা সাংখ্য ও যোগকে পৃথক্ বলিয়া থাকে; কিন্তু পণ্ডিতগণ বলেন না; এই সাংখ্য ও যোগের মধ্যে যে কোন একটিরও যথাবিধি মহুঠান করিলে উভরেরই ফল লাভ করিতে পারা যায় ॥৪

ভাষ্য। সংখ্যাসকর্দ্বোগয়োভিরপুক্ষান্তের রেরাঃ বিরুদ্ধরাঃ ফলেছপি বিরোধাে যুক্তো নতুভয়োনিঃশ্রেরসকরন্ত্রেরেতি প্রাপ্ত ইদম্চাতে। সাংখ্যবোগাবিতি সাংখ্যবোগে পৃথগ্ বিরুদ্ধকলো বালাঃ প্রবদন্তি ন পণ্ডিতাঃ। পণ্ডিতান্ত জ্ঞানিন একং ফলমবিরুদ্ধমিচ্ছন্তি। কথং ? একমপি সাংখ্যবোগরোঃ সম্যাগান্তিঃ সম্যাগমুষ্ঠিতবান্ ইত্যর্থঃ। উভয়োবিন্দতে ফলম্ভয়োভ্তদেব হি নিঃশ্রেদং ফ্লমতো ন ফল্ডে বিরোধােহন্তি। নমু সংখ্যাসকর্ম্বোগশকেন প্রস্তৃত্য

সংয্যাণীনি ফলাভিসন্ধিরহিতানি—ইত্যাদিপাঠ: কচিৎ দৃশুতে।

সাংখ্যযোগরোঃ ফলৈকত্বং কথমিহাপ্রকৃতং ব্রবীতি ? নৈব দোবঃ। ষত্মপ্যর্জ্জুনেন সংস্থাসং কর্মযোগঞ্চ কেবলমভিপ্রেত্য প্রশ্নঃ ক্যতো ভগবাংশ্ব তদপরিত্যাগেনৈব স্বাভিপ্রেতং চ বিশেষং সংযোজ্য শব্দাস্তরবাচ্যতয়া প্রতিবচনং দদৌ সাংখ্যযোগা-বিতি। তাবেব সংস্থাসকর্মযোগৌ জ্ঞানতত্বপায়সমবৃদ্ধিত্বাদিসংস্কৌ সাংখ্যযোগ-শব্দবিচ্যা ইতি ভগবতো মতমতো নাপ্রকৃতপ্রক্রিয়েতি ॥ ৪

আনন্দ গিরিটীকা। যত্ত্রং সংস্থাসকর্মযোগয়োঃ নিঃশ্রেরসকরবং তদা-কিপতি — সংস্যাদেতি। তত্তাতরত্বেনোত্তরশ্লোকমবতারবতি—ইতি প্রাপ্ত ইতি। বিবেকিনন্তহি কথং বদস্তীত্যাকাজ্ঞারামাহ—একমিতি। মাম্মসমীক্ষামহ তীতি সাংখ্যঃ সংস্থানো বোগস্ত কর্মদোগন্তাবুভাবপি পুণগিত্য-ভার্থমাহ-বিরুদ্ধেতি। শাস্ত্রার্থে বিবেকশৃত্তত্বং বাল্ডম্। উত্তরার্দ্ধমব-তারমিতৃৎ ভূমিকাং করোতি—পণ্ডিতান্তিতি। জ্ঞানিনো যোগিনশ্চৈতিশেষ:।. ছয়োরবিরুদ্ধফলস্বমেব প্রশ্ন গুর্বাকং প্রকটয়তি—কথমিত্যাদিনা। একং সাধন-মহাষ্ঠতবতো দ্বারেপি ফলং ভবতীতি বিরুদ্ধনিত্যাশঙ্কাহ— উভয়োরিতি। সাংখ্যযোগয়োঃ সংস্থানকর্মাত্রস্থানয়োতত্বজানদারা নিঃশ্রেয়দফলবার বিক্লক-কলম্বশকা ইত র্থঃ। সাংখ্যাবাগারোরেকফলম্বর্চনং প্রকরণানমুগুণ্মিতি শক্ষতে —নন্ত্রিত। অপ্রক্রত্বনাদ নিতি পরিংবতি—নৈষ দেয়ে ইতি। সংস্থাসঃ কথাণামিত।[দিনা সংন্যাসং কর্ত্তবোগঞালীকুতা প্রপ্রে সংন্যাস্থ কর্ত্তসাগণেচভাঃ[দিনা ভবৈধৰ প্ৰতিবচনে কথা সাংখ্যায়োগ্যায়ে কফলত্বমপ্ৰক্সতং ন ভৰতীভাচাতে ভত্তাহ —যুদ্রাপীতি। প্রতিবচনমপি তদমুরূপমেব ভগবতা নিরূপিতমিতি বিশেষামূপ পত্তিরিত্যাশক্ষাহ ভগবাংস্থিতি ৷ তাপরিত্যাগেনেত্যত্র তৎপদেন প্রষ্ট্রা প্রতিনির্দিষ্টো কর্ম্মণ-ন্যাসস্য যোগাবুচ্যতে, সাংখ্যযোগাবিতি শকান্তরবাচ্যতয়া তয়োবেব দংন্যাসকর্মধোগপরিত্যাগেন স্বাভিপ্রেতঞ্জ বিশেষং সংযোজ্য ভগবান্ প্রতিবচনং সন্দর্গাবিতি যোজনা। ধতুকং স্বাভিপ্রেতঞ্চ বিশেষং সংযোজ্যেতি তদেতৎ ব্যক্তীকরোতি—তাবেবতি। সমবৃদ্ধিত্বাদীত্যাদিশবেন জ্ঞানোপায়-ভূতঃ শ্নাদিরাদীয়তে। প্রকৃতয়োরেব সংন্যাসক্ষ্যযোগয়োর পাদানে ফলিতমাং---অতইতি | সাংখ্যেযোগাবিত্যাদিল্লোকব্যাখ্যানসমাপ্তিরিতিশব্দার্থ: ॥ ৪

অনুবাদ। সংস্যাস ও কর্মযোগ এই ছইটি এককালে একই পুরুষের অমুঠের হইতে পারে না, এই কারণ এই ছইটি যেমন পরস্পর বিরুদ্ধ, এইরূপ এই ছইটি উপারের ফলও পরস্পর বিরুদ্ধ হওরা উচিত। এই কারণে এই ছইটি উপারের ফল বৈ একই মোক্ষ হইবে, ইহা কথনও সম্ভবপর নহে; এই প্রকার শঙ্কা

উপস্থিত হইলে, তাহার নিরাকরণ করিবার জন্য এই বলা ঘাইতেছে যে সাংখা-योगाविकि। **अनिक्कि वाक्तिगर्गरे** विषया थार्क य मारथा এवर योग **१५क्**, (वर्था९) हेशामत कन भवन्भत विक्रक ; किन्छ भिष्ठिशन व श्रकांत वरनन ना ; তাঁহারা এই উভয় উপায় দ্বারা একই ফলকে প্রাপ্ত হইতে ইচ্ছা করেন। কেন ? [তাঁহারা এইরূপ ইচ্ছা করেন তাহাই বলা ঘাইতেছে যে] সাংখ্য ও যোগ এই উভয়েরই মধ্যে সমাক প্রকারে একটিরও অফুষ্ঠান করিলে, উভয়ের যাহা ফল, তাহাই লাভ করিতে পারা যায়। সাংখ্য ও যোগ এই উভয়েরই একরূপ কল— মোক। স্বতরাং এই উপায়দ্বয়ের ফলে কোন প্রকার বিরোধ নাই। এম্বলে এই প্রকার আশকা হইতে পারে যে, সংন্যাস ও কর্মযোগ শব্দের দারা সাংখ্য ও যোগের প্রস্তাব করিয়া, এক্ষণে কেন অপ্রক্বতভাবে এই হুইটির ফলের একতা ্প্রতিপাদন করিতেছেন ? ইহার উত্তর এই যে, এই প্রকার দোষ হইবার সম্ভাবনা নাই: কারণ, যদিও অর্জ্জন কেবল সংন্যাস ও কর্ম্মযোগের বিষয়ে অভি-প্রান্ন করিয়া প্রশ্ন করিয়াছিলেন, কিন্তু ভগবান তাহা পরিত্যাগ না করিয়াই তাহাতে নিজের অভিথ্রেত পদার্থ-বিশেষের সংযোজন পূর্বক শব্দাস্তরের ছারা প্রতিপাদন করিয়া 'সাংখ্যযোগৌ' ইত্যাদি বচনের ছারা প্রতিবচন দিয়াছেন। সেই সংস্থাস ও কর্মযোগ, জ্ঞান এবং জ্ঞানের উপায় সমবুদ্ধি ধাদির সহিত যুক্ত হইলে সাংখ্য ও যোগ শক্ষের বাচ্য হইয়া থাকে. ইহাই ভগবানের মত; স্থতরাং এই স্থলে কোন প্রকার অপ্রাসঙ্গিক বলা হয় নাই॥ ৪

> যৎ সাংখ্যৈঃ প্রাপ্যতে স্থানং তদ্যোগৈরপি গম্যতে। একং সাংখ্যঞ্চ যোগঞ্চ যঃ পশ্যতি স পশ্যতি॥ ৫

জান্বয়। সাংখ্যৈ: (জ্ঞাননিষ্ঠে: সন্ন্যাসিভি:) যৎ স্থানং প্রাণ্যতে, তৎ বোগৈরপি গম্যতে, সাংখ্যং বোগঞ্চ য: একং পশুতি স পশুতি ॥ ৫

আসুবাদ। জ্ঞানবিষ্ঠ সংস্থাসিগণ বে স্থান প্রাপ্ত হন, ফলাজি-সন্ধানবর্জ্জিত কর্ম্মযোগিগণও সেই স্থান প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। সাংখ্য ও যোগ এই ছইটি উপায়কে যিনি এক বলিয়া দেখিতে পারেন, তিনিই যথার্থ বস্তু দর্শন করিয়া থাকেন॥ ৫

ভাষ্য। একস্তাপি সম্যগন্ধ।নাৎ কথম্ভরোঃ ফলং বিন্দত ইত্যাচ্যতে বলিতি। বং সাংবৈধ্য জ্ঞাননিটোঃ সংন্যাসিভিঃ প্রাপ্যতে স্থানং মোক্ষাথ্যং, তৎ-বোগৈরপি জ্ঞানপ্রাপ্ত্রপার্থেন ঈশরে সমর্প্য কর্মাণি আত্মনঃ ফলমনভিসন্ধার উচ্ছুতিঠন্তি বে তৈ যোগিনঃ তৈরপি পরমার্থজ্ঞানসংস্থাসপ্রাপ্তিধারেণ গম্যত ইত্যভিপ্রারঃ, অত একং সাংখ্যং যোগঞ্চ যং পশুতি ফলৈকত্বাৎ স সম্যক্ পশুতি ইত্যর্থঃ ॥ ৫

আনন্দণিরিটীকা। প্রশ্নপ্রকং শ্লোকান্তরমবতারমতি—একস্থাপীতি। কেচিদেব তরোরেকফলত্বং পশুন্তীত্যাশক্ষ্য তেষামেব সম্যাগ দর্শিবং নেতরেষামিত্যাহ—একমিতি। তিষ্ঠত্যমিন্ ন চাবতে পুনরিতি বৃৎপত্তিমাশ্রিত্যাহ—
মোক্ষাখ্যমিতি। যোগশন্দার্থমাহ—জ্ঞানপ্রাপ্তীতি। যে হি জিজ্ঞাসবঃ
সর্বাণি কর্মাণি ভগবৎপ্রীত্যর্থদেন তেষাং ফলাভিলাষমক্ষত্ম জ্ঞানপ্রাপ্তীক বৃদ্ধিভদ্ধিনারেণোপায়্মমেনাম্নতিষ্ঠন্তি তেহত্র যোগা বিবক্ষ্যন্তে। অচ্প্রত্যমন্ত মন্বর্থমং
গৃহীঘোক্তং যোগিন ইতি। সর্বোহিপি হৈতপ্রপ্রেণ ন বস্তভ্তে মায়া বিলাদম্বাৎ
আত্মা তু অবিক্রিরোহিনিতীয়ো বস্ত সমিতি প্রয়োজকজ্ঞানং পরমার্থজ্ঞানং তৎ
পূর্বক্রমংখ্যাস ন্থারেণ কর্মিভিরপি তদেব স্থানং প্রাপ্যমিত্যেকফলত্বং সংন্যাসকর্ম্বযোগরোরবিক্রমিত্যাহ—তৈর্পীতি। ফলৈকত্বে ফলিতমাহ—অত্ইতি। ৫

অনুবাদ। একটিরই সম্যক্ প্রকারে অনুষ্ঠান করিলে, কিরপে উভরেরই ফল লাভ করে, তাহাই বলা যাইতেছে, যে যদিত্যাদি। সাংখ্য (অর্থাৎ) জ্ঞাননিষ্ঠ সংস্থাসিগণ, যে মোক্ষ নামক স্থান প্রাপ্ত ইয়া থাকেন, তাহা যোগের দ্বারাও লব্ধ হয়। জ্ঞানপ্রাপ্তির উপায় হয় বলিয়া, ঈশরে কর্ম্মের অর্পণ করিয়া এবং নিজের ফলাভিসন্ধান না করিয়া, যাহারা কর্মান্তর্ভান করেন, তাঁহারাই যোগী; সেই যোগিগণ এই যোগের দ্বারা পরমার্থজ্ঞান ও সংস্থাস লাভ করিয়া ক্রমে মোক্ষকল লাভ করিয়া থাকেন। ইহাই অভিপ্রায়। এই কারণেই [বলা হইয়াছে যে,] সাংখ্য ও যোগ এই ত্ইটিকে যিনি একই বিলিরা জ্ঞানেন অর্থাৎ এই তুইটির একই ফল, এই প্রকার জ্ঞানেন, তিনিই সম্যক্ জ্ঞানবান হন। ইহাই অর্থ॥ ৫

সংস্থাসস্ত মহাবাহো ছঃখমাপ্ত মযোগতঃ। যোগযুক্তো মুনিত্র ন্ম ন চিরেণাধিগচ্ছতি॥ ৬

অন্বয়। হে মহাবাহো, সংস্থাসঃ অযোগতঃ (যোগং *বিনা) তু (কেবলং) হঃখমাপ্ত্ং [ভবতি], যোগযুক্তো মুনিঃ ন চিরেণ [পরং,] ব্রহ্ম অধিগছতে॥ ৬ অকুবাদ। হে মহাবাহো, যোগব্যতিরেকে সংস্থাসাশ্রম কেবল

্তঃখলাভের হেতু হইয়া থাকে। যোগয়্ক্ত মুনি শী**ন্তই পরবন্ধের স্ব**রূপ নিশ্চন্ন করিতে সমর্থ হন॥ ৬

ভাষ্য। এবং তহি যোগাং সংস্থাস এব বিশিষ্যতে। কথাং তহি ইদমুক্তং—তয়োস্ত কর্মসংস্থাসাৎ কর্মযোগো বিশিষ্যতে ইতি ? শূণু তত্র কারণম্। ত্বয় পৃষ্ঠং কেবলং কর্মসংন্যাসং কর্মযোগঞ্চাভিপ্রেত্য তয়োরন্যতয়ঃ কঃ শ্রেয়ান্ ? তদমুরূপং প্রতিবচনং ময়োক্তং কর্মসংন্যাসাৎ কর্মযোগা বিশিষ্যত ইতি জ্ঞানমনপেক্ষ্য। জ্ঞানাপেক্ষন্ত সংন্যাসঃ সাংখ্যমিতি ময়া অভিপ্রেতঃ। পরমার্থযোগশ্চ স এব। যস্ত কর্মযোগো বৈদিকঃ স তাদর্থ্যৎ যোগঃ সংন্যাস ইতি চোপচর্যাতে। কথং তাদর্থামিত্যচ্যতে—

সংন্যাসম্ভ পারমার্থিকো তঃখমাপ্ত্ং প্রাপ্ত্র্মধোগতো যোগেন বিনা। বোগবৃক্তো বৈদিকেন কর্মধোগেন ঈশ্বরসমর্পিতরপেণ ফলনিরপেকেণ যুক্তো মুনির্মাননাদীশ্বরস্বরপশু মুনির্মাপরমার্থজ্ঞানলকণডাৎ প্রকৃতঃ সংন্যাস্যা বিক্ষোচ্যতে, "ন্যাস ইতি ব্রহ্মা", "ব্রহ্মা হি পরঃ" ইতি শ্রুতেঃ। ব্রহ্ম পরমার্থ-সংন্যাসং প্রমাত্মজাননিষ্ঠালকণং ন চিরেণ ক্ষিপ্রমেবাধিগচ্ছতি প্রাপ্তো। অতো ময়োক্তং কর্মধোগো বিশিষ্যত ইতি॥ ৬

আনন্দ্গিরিটীকা। যদি বংগাক্জানপূর্বক্ষণ-ন্যাসদারা কণ্মণামণি ক্রেরোহনাথিরিটা তহি সান্যাসট্বার শের হং প্রাপ্তমিতি চোদয়তি—এবং তহাঁতি। সংন্যাসভ শ্রেভতে কর্মযোগন্ত প্রশন্তবিদ্যান কর্মযোগন্ত প্রশন্তবিদ্যান কর্মযোগন্ত প্রশন্তবিদ্যান কর্মযোগন্ত প্রশন্তবিদ্যান কর্মযোগন্ত প্রশন্তবিদ্যান কর্মযোগন্ত বিশিষ্টক্ষবদনং তত্রেতি পরামৃষ্টম্। তদেব কারণং কথয়তি—ভূয়েয়ত্যাদিনা। কেবলং বিজ্ঞানরহিতমিতি যাবৎ। তয়োরন্যতরঃ কঃ শ্রেয়ানিতি ইতিশন্দেহধ্যান্তবিধা বিশান কর্মানিতি ইতিশন্দেহধ্যান্তবিধা বিশান সংন্যাসাৎ যোগন্ত বিশিষ্টক্ষমিতি ময়োক্তমিতা।ই—তদ্মুর্বসমিতি। জ্ঞানাপেক্ষঃ সংন্যাসন্তর্মি ক্রিলিত্যাশক্ষাহ—জ্ঞানেতি। তহি কর্মযোগে কথং যোগশন্দাং সংন্যাসন্দ্রে বিশ্বরুষ্টি ক্রিলিত্যাশক্ষাহ—জ্ঞানেতি। তহি কর্মযোগে কথং যোগশন্ত সংন্যাসন্দ্রে বা প্রস্তৃত্যতে ত্রাহ—হাস্ত্রিতি। তাদর্থাৎ পরমার্থ-জ্ঞানান্তবিধা বাবং। তদেব তাদর্থাৎ প্রশ্নপূর্বকং প্রসাধন্তি— কথিমিত্যা-দিনা। কর্মাম্টানাভাবে বৃদ্ধিজ্ঞাভাবাৎ পরমার্থনংন্যাসন্ত সর্মার্গজ্ঞানান্তনে। ন প্রাপ্তিরিতি ব্যতিরেকমুপন্যন্ত অন্তর্মপুন্যন্ততি—যোগেতি। পারমার্থিকঃ সম্যুক্তজানান্তকং সামগ্রুজ্ঞান ক্রাম্পান্তির মুক্তেতি মন্ধাহ—তুঃথমিতি। যোগন্তুক্তম্ব ব্যাচিষ্টে—বৈদিকেনেতি। ক্রম্বস্ক্রপন্ত সবিশেষতেতি শেষঃ। ব্রেছেতি

ব্যাধ্যেরং পদম্পাদার ব্যাচষ্টে—প্রকৃতইতি। তত্ত ব্রহ্মশন্থরোগে হেতুমাহ—পরমাত্মেতি। লক্ষণশন্দো গমকবিষয়ঃ। সংখ্যাসে ব্রহ্মশন্থরোগে তৈত্তিরীয়কশ্রতিং প্রমাণয়তি—ন্যাসইতি। কথং সংখ্যাসে হিরণাগর্ভবাচী ব্রহ্মশন্ধঃ
প্রযুজ্যতে ধরোরপি পরতাবিশেষাদিত্যাহ—ব্রহ্মা হীতি। ব্রহ্মশন্ম সংখ্যাসবিষয়ত্বে ফলিতং বাক্যার্থমাহ—ব্রহ্মেত্যানিনা। নভাঃ শ্রোতাংসীব নিয়প্রবণানি কণ্মভিরতিত্রাং পরিপক্ষ্মায়ম্ম করণানি সংর্গতো ব্যার্ভানি নিরন্তাশেষ-বিশেষ-কৃটস্থ-প্রত্যগান্ধাবেষণ-প্রবণানি ভবন্তীতি। কর্মগোগন্ধ পর্মার্থসংখ্যাসপ্রাপ্ত গণায়ত্বে ফলিত্যাহ—জ্বতইতি॥ ত

অনুবাদ। এই প্রকারই যদি হয়, তাহা হইলে যোগ হইতে সংস্থাসই ত উৎরুপ্ত হইয়া উঠিল। কেন তবে বলা হইয়াছে যে, "সেই উভয়ের মধ্যে কর্মাণন্যাদ হইতে কর্মযোগই উৎরুপ্ত ?" কেন এই প্রকার বলা হইয়াছে, তাহার কারণ ওন—তৃমি কেবল জ্ঞানরহিত কর্ম্মণন্যাদ এবং কর্মযোগ এই চুইটিকে মনে করিয়া, তাহাদের মধ্যে কোন্টি উৎরুপ্ত তাহাই জিপ্তাদা করিয়াছ, তাহারই অন্ধ্রনপ প্রতিবচনও আমি বলিয়াছি যে, কর্ম্মণন্যাদ হইতে কর্মযোগ উৎরুপ্ত। জ্ঞানকে অপেকা না করিয়াই, আমি সংন্যাদ হইতে কর্মযোগ উৎরুপ্তই বর্ণন করিয়াছি। জ্ঞানের উদয় হইলে যে সংন্যাদ হয়, তাহাই সাংখ্য ; ইহাই আমার অভিপ্রেত। সেই সংন্যাদকেই পরমার্থ যোগ কহা বায়। যে কর্মযোগ বেদবিহিত, তাহাও সেই পরমার্থ-কর্মযোগ-প্রাপ্তির উপায়, এই জন্যই তাহাকেও কর্মযোগ ও সংন্যাদকের দ্বারা লক্ষণার্তির দাহায্যে প্রতিপাদন করা গিয়াছে। কেন কর্মযোগ সংন্যাদপ্রাপ্তির কারণ, তাহা বলা যাইতেছে।

যোগ না হইলে পারমার্থিক সংন্যাস কেবন হঃপপ্রাপ্তিরই কারণ হইরা থাকে। যোগযুক্তঃ (অর্থাৎ) ফলাকাজ্ঞাবর্জ্জিত ও ক্রারসমর্পিত, বেদবিহিত কর্মার্থ্রটান রূপ যোগ যাহার আছে, সেই যোগযুক্ত এবং মুনি (অর্থাৎ) ঈশ্বরের মননকর্ত্তা; যে ব্যক্তি এইরূপ বিশেষণযুক্ত, তিনি অতি শীঘ্রই পরব্রহ্মকে প্রাপ্ত হন। আত্মজ্ঞানেরই স্বরূপ সংন্যাস, এই জন্য এন্থলে পরব্রহ্মশক্ষারা সংন্যাসই প্রতিপাদিত হইতেছে। শ্রুভিতেও উক্ত আছে যে, "ন্যাস (অর্থাৎ) সংন্যাসই ব্রহ্মা" এবং "ব্রহ্মাই পর"- [শক্ষের প্রতিপাত্ত], এই কারণেই বিদ্যাছি যে কর্মবোগই [জ্ঞানরহিত সংন্যাস হইতে] উৎকৃষ্ট ॥ ৬

যোগযুক্তো বিশুদ্ধাত্মা বিজিতাত্মা জিতেন্দ্রিয়ঃ। সর্ব্বভূতাত্মভূতাত্মা কুর্ববন্ধপি ন লিপ্যতে॥ ৭

অন্বয় । [য:] যোগযুক্ত: বিশুদ্ধাঝা বিজিতাঝা জিতেন্তিয়: সর্বভূতাঝ-ভূতাঝা [স:] কুর্বলপি ন লিপাতে ॥ ৭

অনুবাদ। যে ব্যক্তি যোগযুক্ত, বিশুদ্ধাত্মা, বিজ্ঞিতাত্মা জিতেক্সিয় ও সর্বভূতাত্মভূতাত্মা, তিনি কর্মের অনুষ্ঠান করিয়াও লিপ্ত হন না॥ ۹

ভাষ্য। যদা পুনরয়ং সমাগ্দর্শনপ্রাপ্ত্রাপায়ত্বেন বোগেন যুক্তো যোগযুক্তো বিশুদ্ধাঝা বিশুদ্ধসন্থো বিজিতাঝা বিজিতদেহো জিতেলিয়শ্চ
সর্কভূতাঝাভূতাঝা সর্কেষাং ত্রন্ধাদীনাং স্তম্পর্যাস্তানাং ভূতানামাঝাভূত আত্মা প্রত্যক্চেতনো যম্ম সাক্রভূতাঝাভূতাঝা সমাগ্দর্শী ইতার্থঃ। সাতত্ত্বৈং বর্ত্ত-মানো লোকসংগ্রহার কর্ম কুর্বন্ধপি ন লিপাতে ন কর্মভির্বধাত ইত্র্থঃ॥ ৭

আনন্দ গিরিটীক। নমু পারিব্রাজ্যং পরিগৃহ্য শ্রবণাদিসাধনমসক্ষদমুতিষ্ঠিতে।
লক্ষসমাগ্ বোধস্থাপি যথাপূর্বাং কর্মাণ্যপলভান্তে তানি চ বন্ধহেতবা * ভবিযান্তীভাশের শ্লোকান্তরমবভারয়তি—মদা পুনরিতি। সম্যাগ্দর্শনপ্রাপ্ত গোদ্ধদেন যদা পুনরয়ং পুরুষো যোগযুক্তবাদিবিশেষণঃ সম্যাগ্দর্শী সম্পন্ততে তদা প্রাতিভাসিকীং প্রবৃত্তিমমুস্তত্য কুর্বায়পি ন লিপাত ইভি যোজনা। যোগেন নিত্যনৈমিত্তিকর্মামুষ্ঠানেনেতি যাবং। আদৌ নিত্যান্তমুষ্ঠানবতো রক্তমামলাভ্যাং
ক্রম্বিতং সন্ধং সিধ্যতীভাহি—বিশুদ্ধেতি। বৃদ্ধিভ্রে কার্য্যকরণসংঘাতস্থাপি
স্বাধীনত্বং ভবতীভ্যাহ—বিজিতেতি। তত্ত যথোক্তবিশেষণবতো ক্লায়তে
সম্যাক্ষণিত্বমিত্যাহ—সর্বভূতেতি। সম্যাক্ষণিনন্তর্হি কর্মামুষ্ঠানং কুতন্ত্যং
তদমুষ্ঠানে বা কুতো বন্ধবিশ্লেষ্ট্রিক্ত্যাশক্যাহ—স্বত্তিতি। সম্যাক্ষণিনং
সপ্তম্যর্থ: ॥ ৭

অনুবাদ। পরস্ত যথন এই [সাধক] সম্যাগ্দর্শন প্রাপ্তির উপার-ভূত পূর্ব্বোক্ত বোগের অফুষ্ঠাতা [ইহাই বোগযুক্ত শব্দের অর্থ], [বে ব্যক্তি] বিশুদ্ধাত্মা (অর্থাৎ) বিশুদ্ধসন্ধ, [বে ব্যক্তি] বিজ্ঞিতাত্মা (অর্থাৎ) বনীকৃতদেহ এবং জিতেজির, [বে ব্যক্তি] সর্বভূতাত্মভূতাত্মা (অর্থাৎ) বন্ধ হইতে শুদ্ধ পর্ব্যস্ত সকৃল ভূতের আত্মাই বাঁহার আত্মা হইরাছে, অর্থাৎ বে ব্যক্তি সম্যাগ্

 ^{&#}x27;বছহেতৃনি' ইতিবা পাঠ:।

জ্ঞানবান, সেই ব্যক্তি এইরূপ হইরাও কেবল লোকসংগ্রহের জন্ম যদি কর্ম করেন, তাহা হইলে, তিনি লিপ্ত হন না, অর্থাৎ কর্ম দারা বদ্ধ হন না॥ १

> নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি যুক্তো মন্মেত তত্ত্ববিৎ। পশ্যন্ শৃণুন্ স্পৃশন্ জিন্তন্নশ্মন্ গচ্ছন্ স্বপন্ শ্বসন্॥ ৮ প্রলপন্ বিস্তজন্ গৃহন্ উন্মিষন্ নিমিষন্নপি। ইন্দ্রিয়াণীন্দ্রিয়ার্থেষু বর্তন্ত ইতি ধারমন্॥ ৯

আহায়। তৰবিৎ যুক্ত: [সন্] পশুন্ শৃগন্ শিল্প শন্ পিলন্ আমান্ গৰুন্
অপন্ শসন্ প্ৰলপন্ বিস্পন্ গৃহন্ উলিয়েন্ নিমিযন্ মপি ইন্দ্রিয়াণি ইন্দ্রিয়াণি বিজেয়ার্থের বর্ততে ইতি ধাবয়ন্নৈব কিঞিৎ করোমি ইতি মন্তেত ॥ ৮ ॥ >

অকুবাদ। দর্শন, শ্রবণ, স্পর্শ, ছাণ, ভোজন, গমন, স্বপ্ন, খাস, প্রবাপ, বিসর্গ, গ্রহণ, উন্নেষ ও নিমেষ প্রভৃতি কার্য্য করিয়াও তত্বজানী ও সমাহিতচেতা ব্যক্তি বিবেচনা করিয়া থাকেন যে, ইন্দ্রিয়সকল [স্বভাবের বশে] ইন্দ্রিয়ার্থে প্রবৃত্ত হইতেছে। [আমার ইহাতে কোন বিকার নাই; স্বতরাং] তিনি ইহাই ভাবিয়া থাকেন যে, আমি কিছুই করিতেছি না॥ ৮॥ ৯

ভাষ্য। ন চাসৌ প্রমার্থতঃ করোতি, অতঃ নৈব কিঞ্চিৎ করোমীতি যুক্তঃ সমাহিতঃ সন্ মন্তেত চিস্তরেং। তথবিং আত্মনো বাধাত্মাং তত্ত্বং বেন্তি ইতি তর্বিং প্রমার্থদর্শী ইত্যর্থঃ। কদা কথং বা তত্ত্মনধার্যন্ মন্তেত ইত্যুচ্যতে,—মন্তেতেতি পুর্বেণ সম্বন্ধঃ। যক্তৈবং তত্ত্ববিদঃ সর্ব্বাধ্যকরণচেষ্টাত্ম কর্মান্থ অকদৈর্মব পশ্চতঃ সম্যাণ্দনিনন্তশু সর্ব্বাধ্যকর্মাংশ্রাস এবাধিকারঃ কর্মণোহভাবদর্শনাং। নহি মৃগত্ফিকায়ামুদকবৃদ্ধ্যা পানার প্রবৃত্ত উদকাভাবজ্ঞানেহিশি
ভব্তিবে পানপ্রয়োজনার প্রবর্ততে ॥৮॥ >

আনন্দগিরিটীকা। কর্মাণ্যসীক্ষত্য তৈরঙ্গ বিহুষো বন্ধো নাস্তীত্যক্ত-মিদানীং বন্ধতন্তগ্র কর্মাণ্যের ন সন্তীত্যাহ—ন চেতি। গোকদৃষ্টা বিহুষোহিশি কর্মাণি সন্তীত্যাশক্ষ্য স্বদৃষ্টা তদভাবমভিপ্রেত্যাহ—নৈবেতি। সার্ধং সম-মন্তরক্ষোক্মাক্ষাক্রপ্রেক্স্থাপরতি —কৃদেত্যাদিনা। চক্রাদিজানেক্রিকৈ-র্বাগাদিকর্মেক্রিরে: প্রাণাদিবার্ভেদেরক্তংকরণচভূষ্টরেন চ্চ তভচ্চেটানির্বর্জনা-বন্ধারাং তরদর্থের্ সর্বা প্রবৃত্তিরিক্রিরাণামেবেত্যস্থসন্ধানো নৈব কিঞ্চিৎ করো-নীতি বিদ্বান্ প্রতিপন্থতে ইত্যর্থ:। বথোক্তপ্ত বিহুষো বিধ্যভাবেহণি বিদ্যানামর্থ্যাৎ প্রতিপত্তিকর্মভূতং কর্মসংস্থাসং ফলাত্মকমভিলবতি—যুস্তেতি। অজ্ঞতেব বিহুবোহপি কর্মস্থ প্রবৃত্তিসম্ভবাৎ কুতঃ সংস্থাসেহধিকারঃ স্থাদিত্যাশস্থাহ— ন হীতি॥৮॥৯

অনুবাদ। এই তন্তক্ত ব্যক্তি প্রমার্থতঃ কোন কার্য্যই করেন না;
এই জন্ত তব্ববিৎ (অর্থাৎ) প্রমার্থদশী সমাহিতচেতা হইয়া চিন্তা করিবেন যে,
আমি কিছুই করি না; আত্মার যাথাত্মা যে ব্যক্তি জানেন, তাঁহাকেই তত্ববিৎ
বলা যায়। কথন, কোন সময়ে, আত্মার তব্ব অবধারণ পূর্বক এইভাবে
বিচার করিবেন, তাহাই বলা যাইতেছে যে,—এই শ্লোকেও 'মন্তেত' এই
ক্রিয়ার সহিত সম্বন্ধ আছে। যে ব্যক্তি এই প্রকার তত্ত্ববিৎ (অর্থাৎ) সকল
প্রকার কার্য্য ও করণের চেষ্টাতে যে ব্যক্তি নির্বিকার ব্রন্ধের স্বরূপ দর্শন
করিয়া থাকেন, সেই সম্যাগ্দশীর সর্ববিদ্যালয়াসেই অধিকার আছে; কারণ
ভাঁহার কর্ম্মেব অভাব দর্শন হইয়াছে। যে ব্যক্তি মৃগতৃষ্কার জলল্রান্তিতে প্রবৃত্ত
হইয়াছে, পরে তাহাতে তাহার যদি জলাভাব জ্ঞান হয়, তাহা হইলে তাহাতেই
আবার তাহার পানাদি প্রয়োজনের জন্ত প্রবৃত্তি কথনও সন্তব্পর নহে॥ ৮॥ ৯

ব্রহ্মণ্যাধায় কর্মাণি সঙ্গঃ ত্যক্তা করোতি যঃ। লিপ্যতে ন স পাপেন পদ্মপত্রমিবাস্ক্রসা॥ ১০

অমৃয়। যঃ বন্ধণি আধার সঙ্গং ত্যক্তা কর্মাণি করোভি, সঃ অন্তসা পশ্ম-প্রমিব পাপেন ন নিপ্যতে ॥ ১•

অকুবাদ। বে ব্যক্তি ঈখরে ফল নিক্ষেপ করিয়া সঙ্গত্যাগপুর্বক কর্ম্মের অফুঠান করেন, তিনি পাপে লিগু হন না, বেমন পদ্মপত্র জলে লিগু হর না॥ ১০

ভাষ্য । যন্ত পুনরতত্ত্বিৎ প্রবৃত্তশ্চ কর্মবোগে ব্রন্ধণি ঈশ্বরে আধার নিকিপ্য, তদর্থৎ করোমীতি ভৃত্য ইব স্বাম্যর্থৎ সর্বাণি, কর্ম্মাণি মোক্ষেহপি কলে সঙ্গং ত্যক্তা করোতি যঃ সর্বাক্সাণি, লিপ্যতে ন স্পাপেন ন সম্বধ্যতে পদ্মপত্রমিব অন্তসা উদকেন ॥ >•

আনন্দ গিরিটীক।। তর্ধি বিভাবানিবাবিভাবানপি কর্মণি ন প্রবর্ত্তেত পাপোপহতিসম্ভবাদিত্যাশঙ্কাহ—যৃত্ত্বিত। যথা ভৃত্যঃ স্বাম্যর্থং কর্মণি করোতি ন স্বফলমপেকতে তথৈব বোহবিদান মোক্ষেহপি সঙ্গং ত্যক্তব্য ভগবদর্থমের সর্বাণি কর্মণি করোতি ন স কন্মণা বধ্যতে ন হি পদ্মপত্রমম্ভসা সম্বধ্যতে তদ্বদিত্যর্থঃ॥ > •

অনুবাদ। বে ব্যক্তি তত্মজ্ঞান লাভ করিতে পারেন নাই, অথচ কর্মবােগে প্রবৃত্ত, তিনি একো (অর্থাৎ) ঈখরে কর্মফল নিক্ষেপ করিয়া মাক্ষরণ ফলেতেও সঙ্গ পরিত্যাগ পূর্বক সকল কর্মের অনুষ্ঠান করেন, তিনি পাপের দারা লিপ্ত হন না; বেমন পদ্মপত্র জলের দারা লিপ্ত হর না॥ ১০

> কায়েন মনসা বুদ্ধ্যা কেবলৈরিন্দ্রিয়েরপি। যোগিনঃ কর্ম্ম কুর্ব্বন্তি সঙ্গং ত্যক্তাত্মশুদ্ধয়ে॥ ১১

আনুয়া বাগিন: সঙ্গং তাজা আন্মণ্ডময়ে কায়েন মনসা যুদ্ধা কেবলৈ: ইন্দ্রিয়েরপি কর্ম কুর্বস্তি॥ ১১

অমুবাদ। যোগিগণ আসক্তি পরিহার করিয়া চিত্ত ৬ দির জন্ত, দেহ, মন, বৃদ্ধি ও কেবল ইন্দ্রিয় সকলের দারা কর্মের অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন॥ ১১

ভাষ্য। কেবলং সন্ধণ্ড দিমাত্রফলমেব তশু কর্মণ: শুণং, ষশাং— কারেন মনসা বৃদ্ধাচ কেবলৈম মদবর্জিতেরীখরারৈব কর্ম্ম করোমি ন মম ফলার ইতি মমদ্ববৃদ্ধিশৃলৈরিল্রিরেরপি, কেবলশন্দঃ কারাদিভিরপি প্রত্যেক-মভিদম্বাতে সর্বব্যাপারেষ্ মমতাবর্জনার যোগিনঃ কর্মিণঃ কর্ম্ম কুর্মন্তি সঙ্গং ভাজ্যা ফলবিষরমাত্ম দর্ভদ্ধে ইত্যর্থঃ। তত্মাৎ তত্ত্বৈ ত্বাধিকারঃ ইতি কুক্ কর্মেব॥ ১১

আননদ্গিরিটীকা। অবিহ্যন্তর্হি ক্ততেন কর্মণা কিং স্থাদিত্যাশক্ষ্যাহ—
কেবলমিতি। অজ্ঞান্তর্গেশব্দ্যাহটিতং কর্ম বৃদ্ধিগুদ্ধিকানমতাত্ত্রৈব হেতৃনাহ—হাম্মাদিতি। কেবলশন্ত প্রত্যেকং সম্বন্ধে প্রয়োগনমাহ—স্ক্রিব্যাপান্ত্রেম্বিতি। কর্মণশ্চিত্রগুদ্ধিকালমে তাদর্থ্যেন কর্মাহ্রানমেব তব
কর্ম্ব্রামিতি ষম্মাদিত্যস্থাপেন্দিতং বদন্ ফ্রিত্যাহ—ক্রম্মাদিতি॥ ১১

অনুবাদ। কেবল চিত্তভূদিই তাহার কর্মের ফল হয়, যে হেতু দেহ
নন ও বুদ্ধিনারা এবং কেবল ইন্সিয়নিচয়ের দারা যোগী (অর্থাৎ) কর্মিগণ
সকল ব্যাপারেই নমতা বর্জন করিবার জন্ত সদ পরিত্যাগ করিয়া আমন্তদ্ধি
(অর্থাৎ) চিত্তভূদির জন্ত কর্মের অনুষ্ঠান করিয়া পাঁকেন। এই শ্লোকে
"কেবল" এই শক্ষ্টির অর্থ নমন্তবুদ্ধিশৃত্ত (অর্থাৎ) নমতাব্রজ্জিত, আমি ঈশরার্থ
কর্ম করিতেছি, ইহার ফল আমার লক্ষ্য নহে, এই প্রকায় বুদ্ধিনারা বে ইন্সিয়
পরিচালিত হয়, তাহাকেই 'কেবল' ইন্সিয় বলা বায়। দেহাদি প্রত্যেক

পদার্থের সহিত এই 'কেবল' শব্দের অষয় করিতে হইবে; [যেহেতু ইন্দ্রিরাদি দেহ পর্যান্ত যাহা কিছু আত্মাভিমানের বিষয়] সেই সকলের যাহা কিছু ব্যাপার হইতে পারে সেই সকলেই মমত্ব বৃদ্ধির বর্জন করিতে হইবে এবং এরূপ করিরা যোগিগণ চিত্তগুদ্ধির জন্ম ফল ও বিষয়সঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া কর্ম্মের অন্তর্চান করিয়া থাকেন। সেই কারণে কর্মেতেই তোমার অধিকার [অতএব] তুমি কর্মাই কর॥ ১১

> যুক্তঃ কর্মফলং ত্যক্ত্বা শান্তিমাপ্নোতি নৈষ্ঠিকীম্। অযুক্তঃ কামকারেণ ফলে সক্তো নিবধ্যতে॥ ১২

অনুষ্ম। যুক্তঃ কর্মফলং ত্যক্ত্বা নৈষ্ঠিকীং শান্তিমাপ্লোতি, অবুক্তঃ কাম-কারেণ ফলে সক্তঃ নিবধ্যতে॥ ১২

অনুবাদ। ঈশরার্থ কর্মকর্তা কর্মফল ঈশরে অর্পণ করিয়া নৈঠিকী শাস্তি লাভ করেন। অধ্ক্ত (ঈশরার্থ কর্মের অনুষ্ঠান যে না করে, তাদৃশ) ব্যক্তি কামনা বশে ফলে আসক্ত হইয়া নিব্দ হর॥ ১২

ভাষ্য। যন্ত্ৰাচ্চ যুক্ত ঈশ্বায় কৰ্মাণি ন মম ফণায় ইভ্যেবং সমাহিতঃ সন্ কৰ্মফলং ত্যক্ত্বা পরিত্যজ্ঞা শাস্তিং মোকাথ্যাম্ আপ্নোভি নৈঠিকীং নিঠায়াং ভবাং সত্ত্বভাকি আপ্তি-দৰ্ককৰ্মসংস্থাস-জ্ঞান-নিঠাক্রমেণ ইতি বাক্যশেষঃ। যন্ত্ৰ পূনরযুক্তোহসমাহিতঃ কামকারেণ করণং কারঃ কামস্ত কারঃ কামকারঃ তেন কামকারেণ কামপ্রেরিভতয়া ইত্যর্থঃ। মম ফণায় ইদং করোমি কর্ম ইভ্যেবং ফলে সক্তো নিবধ্যতে, অভত্তঃ যুক্তোভবেত্যর্থঃ॥ ১২

আনন্দ গিরিটীকা। ইতশ্চ সঙ্গং ত্যক্তা কর্মান্দ্র হানং ব্রা কর্বন্য নিত্যাহ

—যুদ্ধান্তি । বৃক্তঃ সন্ ফলং ত্যক্তা কর্ম কুর্বন্ মোক্ষাধ্যাং শান্তিং
বন্ধানাথাতি তন্মাচ দ্বরা সঙ্গং ত্যক্তা কর্ম কর্বন্য নিতি বোজনা। বিপক্ষে
দোষমাহ—অযুক্তাইতি। যুক্ত ঘং ব্যাকরোতি—ঈশ্বরায়েতি। ফলং পরিভ্যন্ত্য কর্ম কুর্বনিতি শেষঃ। নৈষ্ঠিকা শান্তিরিভ্যেতদেব বিশদয়তি - স্ত্রেতি।

বিভীয়মর্জ বিভন্ততে যন্ত্রিতি। অসমাধানে দোষাদর্জন্ন ভানিরোগং দর্শয়তি

—অভস্তমিতি॥ ১২

অনুবাদ। [মারও]যে কারণে যুক্ত (অর্থাৎ) ঈশবের জন্তই অর্থাৎ ইহার অনুষ্ঠান ভগবানের অভিত্রেত এই কারণেই ইহা কর্ত্তব্য কর্ম, আনার ফলের জন্ত নহে, এই প্রকার নিশ্চরবিশিষ্ট (কর্মী) কর্মফল পরিত্যাস কর্মিরা, নৈষ্ঠিকী (অর্থাৎ) জ্ঞাননিষ্ঠার ক্লেম্মন্ত্রণ মোক্ষনামক শান্তিকে লাভ করিয়া থাকেন, (অর্থাৎ) কর্মায়ন্ত্রান করিতে করিতে ক্রমে চিন্তভূদি, জ্ঞানপ্রাধ্যে, সর্কাকর্মায়ভাল ও জ্ঞাননিষ্ঠা লাভ করিয়া [পরে নোক্ষলাভ করিতে পারেন], এতদ্র পর্যন্ত বাক্যের শেষাংশ। যে ব্যক্তি কিন্তু অযুক্ত, (অর্থাৎ) অসমাহিত [বাহার ফলে কামনা আছে, ঈশ্বরার্থ কর্ম্মের অমুষ্ঠান নাই তাহাকেই অসমাহিত বলা যায়], লে ব্যক্তি কামকার দারা, (অর্থাৎ) "আমি ফল লাভের জ্ঞা কার্য্য করিতেছি," এই বৃদ্ধিবশতঃ ফলে আসক্ত হইরা নিবদ্ধ হয়। কার শক্ষের অর্থ করণ, কামের করণ এই তাৎপর্য্যে কামকার শক্ষি এই স্থানে প্রযুক্ত হইরাছে; কামকার দারা এই প্রকার প্রয়োগ করিলে বৃঝা যায় যে, কামের প্রেরণায়। এই কারণে তৃমি যুক্ত হও ইহাই অর্থ ॥ ১২

দর্বকর্মাণি মনদা দংগ্রস্থান্তে স্থং বলী। নবদারে পুরে দেহী নৈব কুর্ববন্ ন কারয়ন্॥ ১৩

আন্তর্য়। বশী (জিতেজিয়:) দেহী সর্কাকর্মাণি মনসা সংক্রম্ভ নৈব কুর্বান্, ন [বা] কারয়ন্, নবধারে পুরে স্থং [যণাস্তাৎ তণা] আন্তে॥ ১৩

অকুবাদ। জিতেন্দ্রির দেহী নিজে কোনপ্রকার কর্ম না করিয়া, কিংবা কাহারও ঘারা না করাইয়া, বিবেকবৃদ্ধিঘারা সকল প্রকার কর্মের মন্তিনান পরিহার পূর্বক নবছার যুক্ত পুরস্থরূপ এই দেহে স্থাপে বিভ্যান পাকেন॥ ১৩

ভাষ্য। বন্ধ প্রমার্থদর্শী স সর্কাণি কর্মাণি সর্ক্রকর্মাণি সংশ্রম্ভ পরিত্যক্তা নিতাং নৈমিরিকং কাম্যং প্রতিবিদ্ধং চ সর্ক্রকর্মাণি ভানি মনসা বিবেকবৃদ্ধা কর্মাণাবকর্মদর্শনেন সংত্যক্তে,তার্থ:। আন্তে তিষ্ঠতি স্থাং ত্যক্তবাঙ্গমন:কারচেষ্টো নিরারাসঃ প্রসম্ভিত্তঃ আত্মনোহত্ত্র নির্ব্তবাহ্সর্ক্রপ্রাক্তন ইভি স্থানাত্তে ইভ্যুচ্যতে। বন্ধী ক্তিভেন্তির ইভ্যুথ:। ক ক্থমান্তে ইভ্যাহ—নব্যারে প্রে সপ্ত শীর্ষণ্যানি আত্মন উপলব্ধিরারাণি অর্কাণ্ বে কৃত্রপূরীষবিসর্গার্থে তৈর্দ্ধারৈর্নবিদ্বারং প্রম্চ্যতে শরীরং প্রমিব প্রমাইত্মক্তর্শামিকং ত্দর্থপ্রাত্ত ক্রিব্রাধিষ্টিভং তন্মিন্ নব্যারে প্রে দেহী সর্কং কর্ম সংক্র্যান্তে।

কিং বিশেষণেন ? সর্বো হি দেহী সংস্থানী অসংস্থানী বা দেহ এবাজে, তালানর্থকং বিশেষণমিতি। উচ্যতে, বস্তু অজ্ঞো দেহী দেহেক্রিয়নংরাভাত্মদর্শী, ন সর্বোহণি গেহে ভুমাবায়নে বা আস ইতি মন্ততে। নহি দেহমাক্রায়- দর্শিনো গেছ ইব দেহ আস ইতি প্রত্যন্তঃ সম্ভবতি। দেহাদিসংঘাতব্যতিরিক্তাআদর্শিনন্ত দেহ আস ইতি প্রত্যন্ত উপপন্ততে। পরকর্মণাঞ্চ পরশ্বিন্ আত্মনি
অবিভাগা অধ্যারোপিতানাং বিভাগা বিবেকজ্ঞানেন মনসা সংভাস উপপন্থতে।
উৎপন্নবিবেকজ্ঞানন্ত সর্ব্বকর্মসংভাসিনোহপি গেছ ইব দেহএব নবছারে পুরে আসনং
প্রারক্ষককর্মসংস্কারশেবাত্বন্ত্যা দেহএব বিশেষবিজ্ঞানোৎপত্তেদে হএবাত্তে ইত্যভাবে বিশেষণ্টকং বিশ্বদ্বিছৎপ্রত্যন্ত ভেদাপেক্ষত্বাৎ।

ষষ্ঠিপ কার্য্যকরণকর্মাণি অবিষ্ণয়া আত্মনি অধ্যারোপিতানি সংস্তষ্ঠাতে ইত্যুক্তং তথাপি আত্মসমবারি তু কর্তৃত্বং কাররিতৃত্বঞ্চ স্থাদিত্যাশস্ক্যাহ নৈব কুর্বন্ স্বয়ং ন কার্য্যকরণানি কারয়ন্ ক্রিয়াস্থ প্রবর্ত্তরন্। কিং যৎ তং কর্তৃত্বং কাররিতৃত্বঞ্চ দেহিনঃ স্বাত্মসমবারি সং সংস্থাসায় ভবতি যথা গচ্ছতো গতির্গমনব্যাপার-পরিত্যাগে ন স্থাৎ, তহং। কিংবা স্বত এবাত্মনো নাস্তীতি। অব্যোচ্যতে নাস্ত্যা-ত্মনঃ স্বতং কর্তৃত্বং কারয়িতৃত্বঞ্চ। উক্তং হি—"অবিকার্য্যোহয়ম্মচ্যতে" "শরী-রস্থেছিপি কৌন্তেয় ন করোতি ন লিপ্যতে" ইতি। "ধ্যায়তীব লেলায়তীব" ইতি চ শ্রুডেঃ ॥ ১০

व्यानम् शिति होका । उर्हि करन मिल उन्ना मर्देश ति कर्ष कर्खनामिक কর্ম্মণ্ডাদন্ত নিরবকাশত্বমিত্যাশঙ্কা অবিহুব: সকাশাদ্বিহুবো বিশেবং দর্শরতি— দর্মকর্মপরিত্যাগে প্রাপ্তং নরণং ব্যাবর্ত্তয়তি—আন্তইতি। যস্তিতি। বুক্তিং লভমানোহপি শরীর তাপেনাধ্যাত্মিকাদিনা তণ্যমানস্তিষ্ঠতীতি চেল্লেভ্যাহ— ম্রখমিতি। কার্যকরণদংঘাতপারবশ্রং পর্য্যদশ্রতি – বশীতি। আসনসা-পেক্ষিতমধিকরণং নির্দ্দিশতি—নবেতি। দেহসম্বন্ধাভিমানাভাসবস্তমাহ— (महीिक । भनमा मर्सक ईमश्कारमश्री लाकमश्वाशर्थः विशः मर्सः कर्ष कर्खवा মিতি প্রাপ্তং প্রত্যাহ—নৈবেতি। তান্তেব সর্বাণি কর্মাণি পরিত্যান্যানি বিশি-নষ্টি—নিত্যমিতি। তেষাং পরিত্যাগে হেতুমাহ—তানীতি। বছতং ক্রথমান্তইতি তত্রপণাদয়তি—ত্যুক্তেতি। জিতেন্দ্রিম্বং কায়বশীকারস্তাপি উপলক্ষণং, বে শ্রোত্রে দে চাকুষী থে নাসিকে বাগেকেতি সপ্তশীর্ষণ্যানি শিরো-পতানি শৰাহাপলবিধারাণি। অধাপি কথং নবধারত্বমধাগতাভ্যাং পারু-পস্থাভ্যাৎ সহেত্যাহ—অর্ক্বাগিতি। শরীরত প্রদান্যৎ স্থামিনা পৌরৈশ্চাধি ষ্ঠিতবেন দর্শরতি—আত্মেত্যাদিনা। যগপি দেহে জীবনম্বান্দেহসম্মাভি মানাভাসবানবভিঠতে তথাপি প্রবাসীব পরগেহে তৎপূজাপরিভবাদিভিরপ্রহান্তর বিবীদন্ ব্যামোহাদিরহিতশ্চ তিঠতীতি সম্বাহ—ত্তিস্মিতি।

বিশেষণমান্দিপতি—কিমিতি। তদম্পপত্তিমেবাদর্শমতি—সর্বোহীতি। দর্বসাধারণে দেহাবস্থানে সংস্থান্ত দেহে তিষ্ঠতি বিদানিতি বিশেষণমকিঞিৎকরমিতি ফলিতমাহ—তাত্রেতি। বিশেষণফলং দর্শবন্ধ তরমাহ—উচাতে ইতি। কিন অবিবেকিনং প্রতি বিশেষণানর্থক্যং চোল্পতে কিংবা বিবেকিনং প্রতীতি বিক-র্যাক্তমন্দীকরোভি—যুক্তিভি। অক্তবং দেহিছে হেজু:। তদেব নেইবং ক্ট্রতি—দেহেতি। সংবাতাত্মদর্শিনোহপি দেহে স্থিতিপ্রতিভাস: স্থাদিতি চেম্বেডা। হ- ন হীতি। विভীরং দ্বরতি—(দহাদীতি। গৃহাদির দেহস্তাব-স্থানেনাত্মাবস্থানভ্ৰমব্যাবৃত্ত্যৰ্থং দেহে বিশ্বানাস্তইতি বিশেষণমূপপ্লতে, বিবেক্বডো দেহেছবস্থান প্রতিভাগসম্ভবাদি তার্থঃ। নমু বিবেকিনো দেহাবস্থান প্রতিভানেছিপ বান্ধনোদেহব্যাপারান্ধনাং কর্মণাং ভিমিন্ প্রদঙ্গাভাবাৎ ভন্ত্যাগেন কুভন্তভ দেহেইবস্থানমুচ্যতে তথ্ৰাহ—পুরুকুর্মুণাঞ্জিতি। নমু বিবেকিনো দিগাল্পনবচ্ছিত্র-বাহ্যাভ্যস্তরাবিক্রিয়ত্রদ্ধাত্মতাং মন্যমানস্ত কুতো দেহেংবস্থানমাস্থাভুং শক্যতে তত্ত্বাহ—উৎপদ্মতি। তত্ত্ব হেতুসাহ—প্রাব্তক্তি। বন্ধি প্রাব্তক্ষণং ধর্মাধর্মাত্মকং কর্ম তভোপভৃক্তভ শৈবাদমূপভৃক্তাদৈহাদিসংস্কারোহমুবর্কতে তদমুব্রাচ তত্ত্বৈব দেহে বিশেষবিজ্ঞানমবস্থানবিষয়মূপপন্থতে অভো বিবেক্বতঃ সংস্থাসিনো দেহেহবস্থানবাপদেশঃ সম্ভবতীতার্থঃ অবিদংপ্রত্যন্তাপেকয়া বিশেষ-ণাসম্ভবেপি বিশ্বৎপ্রভারাপেক্ষরা বিশেষণমর্থবিদিভাগসংহরতি—দেহ এবেতি। দেতে স্থাবস্থানবিষয়ো বিভৎপ্রতায়স্তদবিষয়শ্চাবিভৎপ্রতায়স্তরোরেবং ভেদে বিভৎ-প্রত্যন্ত্রাপেক্ষরা বিশেষণমর্থবিদিত্যুপদংহরত্নেব হেতুৎ বিশদর্গতি—বিদ্বাদিতি।

আরোপিত কর্ত্তান্ত ভাবেংপি স্থাত কর্ত্তাদির্হ্মার মিত্যাশকামন্ত দ্বরতি—
যতাপীত্যাদিনা। ক্রিরাস্থ প্রবর্ত্তররাস্ত ইতি পূর্বেণ সক্ষঃ পূর্বতাপি শতুরেবমের
সক্ষঃ। কর্ত্তরং কাররিতৃত্বকালনো নেতাক্র বিচাররতি—কিমিতি। যৎ কর্তৃত্বং
কাররিতৃত্বক তৎ কিং দেহিনং স্বাত্মসমবারি সদেব সংস্থাসার ভবতীত্যুচাতে বথা
গচ্ছতো দেবদক্ত স্থাত্যৈব গতিঃ তৎন্তিত্যা ত্যাগার্ম ভবতি অথবা স্বারক্তেন
কর্তৃত্বং কাররিতৃত্বকালনো নাস্তীতি বক্তব্যমান্তে সক্রির্ত্তং বিতীরে ক্টর্ছমিত্যর্থঃ।
বিতীরং পক্ষমান্তিত্যোত্তরমাহ—অন্ত্রেতি। উক্তেহর্থে বাক্যোপক্রমসমূকৃক্
রতি—উক্তং হীতি। তত্রৈব বাক্যাশেষমণি সংবাদয়তি—শ্রীরেক্ত্রাহ্শীতি।
বৃত্যক্তেহর্থে শ্রুতিমণি দর্শরতি—ধ্যায়তীবেতি। উপাধিগতৈব সর্বা বিক্রিয়া
নান্ধনি স্বত্যেহন্তীত্যর্থঃ । ১৩

আফুবাদ। বে ব্যক্তি কিন্তু প্রমার্থকর্মী, ডিনি সকল কর্ম (অর্থাৎ)

নিত্য নৈমিন্তিক কাম্য ও প্রতিষিদ্ধ এই সর্বপ্রকার কর্মা, মনঃ (অর্থাৎ) বিবেক বৃদ্ধির ছারা কর্মাদিতে অকর্মাদৃষ্টির সাহায্যে পরিত্যাগ করিয়া বশী, (অর্থাৎ) ক্রিজের [হইয়া] প্রথে অবস্থিতি করেন, (অর্থাৎ) বাক্য মনঃ ও কায়ের চেটা পরিহার পূর্বক, বিনা আয়াসে, প্রসন্নচিত্তে, আত্মবাতিরিক্ত সকল বস্তুত্তে বাহু প্রয়েজন বৃদ্ধির নির্ত্তি করিয়া অবস্থিতি করাকেই, প্রথের সহিত অবস্থান বলা যায়। কোথায়, কি প্রকারে অবস্থিতি করেন ? [তাহাই বলা হইয়াছে] নবছারস্কুত্র পূরে। আয়ার উপলব্ধির হারস্করণ সাতটি ছিদ্র মুখমগুলে এবং মুক্ত প্রীবের পরিত্যাগের জন্ত নিয়দেহে ছইটি ছিদ্র, এই নয়টি ছারের সৃহিত মুক্ত শরীরকে পুর বলা যায়; কারণ ইহাও পুরের ন্তায় একমাত্র প্রভূমানীয় আস্মার ভোগের সাধন; ইক্রিয় মন এবং বৃদ্ধির বিষয়, আস্মার ভোগসাধন, নানাজাতীয় ফল ও বিজ্ঞানের উৎপাদক—শক্ষম্পর্ণাদিরপ পুরবাসিজনও এই দেহরূপ পুরে বাস করিয়া পাকে; সেই নবছারসুক্ত পুরে পুর্বোক্ত জিতেক্রিয় ব্যক্তি স্থপে বাস করিয়া পাকেন।

'দেহে বিশ্বসান থাঞ্চেন' এইভাবে বিশেষ করিয়া বলিবার কি প্রয়োজন ? সংস্থাসী বা অসংস্থাসী সকল দেহাই দেহেতেই অবস্থান করিয়। পাকেন: স্থতরাং क्रिःशिक्षत्र उत्रक्षांनी त्राहर उत्राप भारकन, এই প্রকার বিশেষ করিয়া বলা নিপ্রাক্তন । এই প্রকার শকার সমাধান করিবার জন্ত বলা যাইতেছে বে. বে বাক্তি অজ্ঞ (অর্থাৎ) দেহ ও ইক্রিয়নিচয়ে বাহার আত্মাভিমান আছে, সাধারণতঃ সে বিবেচনা করিয়া থাকে যে, আমি ভূমিতে বা আসনে আছি। যাহার দেহেতে আত্মজ্ঞান আছে, সে যেমন গৃহে আছি ইহা ভাবিয়া থাকে, সেইরূপ আমি দেহে আছি এই প্রকার ভাবিতে পারে না। বে ব্যক্তি কিন্তু দেহ ও ইব্রিয়াদি হইতে আত্মাকে পথক বলিয়া জানিয়াছেন, তাঁহারই "আমি দেহেতে আছি" এই প্রকার প্রতীতি হইতে পারে। আত্মা হইতে ভিন্ন দেহাদির কর্ম, অবিদ্যা প্রভাবেই আত্মতে আরোপিত হইয়া থাকে, সেই সকল আরোপিত কর্ম্মের সংস্থাসও বিষ্মার श्रिकात्वर इतेश शास्त्र । यात्रात्र विदिक्तकान छेरभन्न इहेनाएक धवर दव वाकि नर्सकर्षमध्यामी, छाहात शत्करे धरे नवदात्रवृक्त शूत चत्रश लट्ट गृट्य श्राप्त স্থিতি প্রেভিপন্ন হর। বে গ্রারন কর্মগুলি ফল দিতে আরম্ভ করিয়াছে, তাহার অবশিষ্টাংশ ও ভাহার সহকারী সংস্কারের অমুবৃত্তি অপরিহার্যা; এই কারণ এই দেহ থাকিতে থাকিতেই তাহার বিশেষ জানের উৎপত্তি হইলেও জিনি त्तरहर्छहे सूर्य प्रवृत्तिक करतेन। यहे कातर् यहे खकात विरम्भ कतिता

নির্দেশ করা যুক্তিযুক্তই হইরাছে। বিদান ও অবিধানের আনের পার্থকাকে আপেকা করিয়াই, এই প্রকার বিশেষ নির্দেশ করা হইয়াছে।

विन ह अहे ऋत्न नामाञ्चलः वना श्हेत्राष्ट्र त्व, "कार्गा (त्नर) अ कत्रन (ইক্সির) প্রাকৃতিব ধর্ম অঞ্চানের হারা আত্মাতে আরোপিত হইরা পাকে; ভাছার সংস্থাস করিয়া দেহে অব্স্থিত হয়।" তথাপি আয়া নিজেই করে বা করাইরা থাকে -- ইহাও ত হইতে পারে ? এই প্রকার শকা করিয়া তাহার উত্তর স্বরূপে বলা হইতেছে বে, আত্মা নিজেও কোন প্রকার কার্য্য না করিয়া অথবা দেহ বা ইন্দ্রিং-নিচয়কে কোন কার্য্যে প্রবর্ত্তিত না করিয়া, এই দেহে স্থাপে অবস্থিতি করিয়া পাকেন। এইকণে জিজ্ঞাসা হইতেছে যে, বেমন কোন ব্যক্তি বরং গমন করে এবং তাহার গমনামুক্লব্যাপারের নিবৃত্তি হইলে, সেই ব্যক্তির গমনের মভাব হয়, সেইরূপ মান্তার স্বভাবগিদ্ধ কর্তৃত্ব কিংবা কারমিড়া (মর্থাং কার্য, কার্যা করা বা অপরের ছারা কার্য্য করান) সংস্তাসের দারা নিবৃত্ত হইয়া থাকে, ইহাই কি বুঝান হইতেছে । অথবা স্বতই আদ্মাতে কর্ত্ত বা কার্মিত্ত নাই, ইহাই বুঝান হইতেছে ? ইহার উত্তর স্বরূপে এই বলা হইতেছে যে, আত্মার হতঃ কর্ত্ব বা কার্মিতৃত্ব নাই; কারণ এই শীতাশাল্পেট বলা হট্যাছে বে. "অবিকার্য্যোহ্যমূচ্যতে" (আশ্বা অবিকারী বলিয়া শাস্ত্রে নির্দিষ্ট হইয়া গাকেন), "শরীরস্থোছপি কৌস্তেয় ন করোতি ন লিপাতে" (হে কৌন্তের, আত্মা শরীরস্থিত হইলেও কিছু করেন না এবং কোন প্রকার পাপপুণ্যে বিপ্ত হন না) এবং শ্রুতিতেও উক্ত হইরাছে বে "খ্যারতীব, লেলারভীব" (আত্মা ধ্যাতা ও ক্রীডাকর্তার ন্থার প্রতীত হন) ॥ ১৩

> ন কর্তৃত্বং ন কর্মাণি লোকস্ম স্বন্ধতি প্রভুঃ। ন কর্মফলসংযোগং স্বভাবস্তু প্রবর্ত্ততে॥ ১৪

জানুষ্। প্ৰভু: (ভান্মা) লোকস্ত কৰ্তৃৎ কৰ্মাণি বা ন স্কৃতি [তথা] কৰ্মফলসংযোগং ন স্কৃতি, স্বভাবস্ত প্ৰবৰ্ততে ॥ ১৪

অনুবাদ। প্রভূ (মান্মা) লোকের কর্ত্ব, কর্ণনিচর কিংবা কর্ণকল-সংবদ্ধের স্ষ্টি করেন না, কিন্তু খভাব (মায়া) বয়ং প্রবৃত্তু হইয়া ধাকে ॥ ১৪

ভাষ্য। ন কর্ত্মতি। ন কর্ত্বং স্বতঃ ক্রিতি নাপি কর্মাণি রথষট-প্রাসাকীনি ক্রিভিডমানি গোকত ক্রেতি উৎপাদরতি প্রভূরাম্মা, নাপি রথাদি-ক্তর্তঃ তৎক্লেন সংযোগ, ন ক্রেক্সসংযোগন্। যদি কিঞ্চিপি স্তে, নু করোতি ন কারয়তি চ দেহী কন্তর্হি কুর্বন্ কারয়ংশ্চ প্রবর্তত ইত্যুচ্যতে—
স্বভাবস্ত স্বোভাবঃ স্বভাবঃ অবিফালকণা প্রকৃতির্মায়া প্রবর্ততে দৈবী হীত্যাদিনা
বক্ষামাণা ॥ : ৪

আনন্দগিরিটীকা। আত্মনো বহুক্তং কার্মিতৃত্বং নান্তীতি তৎ প্রপক্ষরিভি—নেত্যাদিনা। বহুপি লোকস্থ কর্ভ্বং ন স্প্রজীতি নান্তীতি কার্মিচুত্বং তথাপি রপশকটাদীনি কুর্বন্ ভবতি কর্বেত্যাশক্যাহ—ন কর্ম্মাণীতি।
তথাপি ভোজমিতৃত্বন বিক্রিয়াবহুং গুপরিহার্মিত্যাশক্যাহ—ন কর্ম্মোতি। কন্ত তর্হি প্রবর্ত্তবহুং তনাহ—সভাবস্তি তি। কুর্বিতি কর্ভ্বং লোকস্ত ন স্প্রজ্ঞাত্মেতি সম্বন্ধঃ। রুণাদীনাং কর্ম্মবং সাধ্যতি—ঈ্পিস্তেতি। আত্মনো দেহাদিস্থানিত্বন প্রভূবং রুণাদিকত্বতো লোকস্ত রুণাদিফলেন সম্বন্ধপি ন স্প্রজ্ঞান্মতি আ্মানো ভোজমিতৃত্বং প্রত্যাচ্টে—নাপীতি। চুর্থপাদং শক্ষেত্রক্ষেনাবতার্মতি—যুদ্দিত্যাদিনা। স্বভাববাদক্ষ্মিত্যাশল্প ব্যাক্রোতি— আবিদ্যালক্ষণেতি। প্রক্রতের্কিন্সভাবত্বং ব্যাদ্যকৃত্বং মামেত্যক্রং গাচ সপ্রমে বৃদ্যতে তেন প্রধানবিলক্ষণেত্যাই দ্বী হীতি। ১৪

অনুবাদ। ন কর্তৃষম্ ইত্যাদি [সোকের অর্থ] "প্রভূ" আত্মা শ্বরং কোন প্রকারে কর্তৃত্ব করেন না এবং "তুমি কর্ম্ম কর" ইত্যাদি প্রকারে প্রেরণা ছারা কাহাকেও রথ ঘট বা প্রাসাদাদি নির্মাণ কার্য্যে প্রবর্তিত করেন না। কিংবা যে ব্যক্তি রুণাদি কার্য্যের উৎপাদন করে, তাহার অভিলবিত করের সম্বন্ধরপ যে কর্মফল-যোগ তাহাও করেন না। আত্মা যদি স্বরং কিছুই না করেন এবং অপরের ছারাও না করান, তাহা হইলে কে তবে করে বা করাইরা থাকে ? এই প্রকার জিজ্ঞাসার উত্তর স্বন্ধপে বলা যাইতেছে বে, স্বভাব (অর্থাৎ) অবিস্থারূপিণী প্রকৃতি—মারাই প্রবৃত্ত হইয়া থাকে; দৈবী হেলা ইত্যাদি রোকে এই স্বভাবের পরিচয় দেওয়া যাইবে॥ ১৪

নাদত্তে কস্মচিৎ পাপং ন চৈব স্থক্তং বিভুঃ।

অজ্ঞানেনাবৃতং জ্ঞানং তেন মুহুন্তি জন্তবঃ॥ ১৫

অনুয়া বিভঃ কন্সচিৎ পাপং ন আদতে, [তথা কন্সচিৎ'] স্কুডং ন চৈব [আদত্তে] অজ্ঞানেন জ্ঞানম্ আবৃতং, তেন জন্তবঃ মুক্তি॥ ১৫

অনুবাদ ৷ আত্মা কৃংহারও পাপ বা পুণ্য গ্রহণ করেন না ; অজ্ঞানের দ্বারা জ্ঞান আরুত হইরাছে, সেই জন্ম প্রাণিসকল মুগ্ধ হর ॥ ১৫ ভাষ্য। পরমার্থন্ত নাদত্তে ন গৃহাতি ভক্তকাপি কন্সচিৎ পাপং নটেবাদত্তে স্কৃতং ভক্তৈ: প্রস্কৃতং বিভূ:। কিমর্থং তর্হি ভক্তৈ: পুজাদিলক্ষণং বাগদানহোমাদিকং চ স্কৃতং প্রযুজ্ঞাতে ইত্যাহ—অজ্ঞানন আবৃতং জ্ঞানং বিবেক্বিক্সানণ, তেন মুক্তন্তি করোমি কারয়ামি ভোক্ষ্যে ভোক্ষমামি ইত্যেবৎ মোহং গছন্তি স্বিবেক্নি: সংসারিণো জন্তবঃ ॥ ৪৯

আনন্দ্গিরিটীকা। কর্ত্বভাক্টের্য্যাণ্যাত্মনাহবিভাক্তানীত্যক্রমিন্দানীমীশ্বরে সংক্তবসমন্তব্যাপারভা তদেকশরণভা হরিতং স্কৃতং বা তদমূগ্রহার্থৎ ভগবানাদ:ত মদেকশরণো মংপ্রীভ্যর্থং কর্ম কুর্মাণো হঙ্গভান্তপনোদনেনামুগ্রাছ্যে মরেতি প্রভারভাক্কাদিত্যাশক্ষ্য সোহপি পরমার্থতো নাভান্ত্যবিক্রিয়ন্তাদিত্যাহ—পরমার্থতন্তি বিত্তা কণং তর্হি ভক্তানামন্ত্রাহ্থনীয়রভান্ত্রহাত্মনিতি প্রসিদ্ধিভান্তভাক্ত বাহিল অজ্ঞানেনিতি। প্রনির্দ্ধিভান্তভাক্তরাহিল অজ্ঞানেনিতি। প্রনির্দ্ধিভান্তভাক্তরাহিল আজ্ঞানিতাতি কিম্প্রিত্যাদিনা। ১৫

অমুবাদ। পরমার্থতঃ কিছু প্রভু (আত্মা) কোন ভক্তেরও পাপ গ্রহণ করেন না অথবা ভক্তগণের প্রদন্ত প্রাণ্ড গ্রহণ করেন না। [তিনি বদি গ্রহণ না করেন] তবে ভক্তগণ কেন পূজা বা জপ হোমাদিরপপুণ্য তাঁহাকে অর্পণ করে? [ইহার উত্তর এই যে] অজ্ঞানের হারা [জীবগণের] বিবেক-বিজ্ঞান আবৃত হইয়া থাকে, এই করেণে অবিবেকী সংসারী জীবগণ "আমি করিতেছি, আমি করাইতেছি, আমি ভোগ করিতেছি, আমি ভোগ করাইতেছি" ইত্যাদি প্রকার নোহ প্রাপ্ত হইয়া থাকে । ১৫

জ্ঞানেন তু তদজ্ঞানং যেষাং নাশিতমাত্মনঃ। তেষামাদিত্যবজ্জানং প্রকাশয়তি তৎপরম্॥ ১৬

আম্বয়। বেষাং তু তদজ্ঞানম্ আত্মনঃ জ্ঞানেন নাশিতং, তেষাং জ্ঞানম্ আদিত্যবং তৎপরং (প্রমার্থতত্তং) প্রকাশর্যতি ॥ ১৬

আমুবাদ। বাহাদের কিন্ত সেই অজ্ঞান, বাত্মতত্বজ্ঞানের ধারা নাশিত হইরাছে, তাঁহাদের আদিত্যের স্থায় [নিমাল] জ্ঞান পুরব্রন্ধের স্বরূপ প্রকাশ ক্রিয়া থাকে॥ >>

ভাষ্য। জানেনেতি। জানেন তু বেন অজ্ঞানেনার্তা মুহস্তি লক্তবঃ তদভানং বেযাং লক্ত্নাং বিবেকজানেন তু আত্মবিষয়েণ নাশিতনাত্মনো ভব্ছি ভেষামাদিত্যবদ্ যথা আদিত্য: সমস্তং রূপজাতং প্রকাশরতি, তদ্বজ ্জানং জেরং বস্তু সর্বং প্রকাশরতি। তৎপরং প্রমার্থতত্ত্ম্∥১৬

আনন্দগিরিটীকা। তর্হি সর্বেষামনাম্বজ্ঞানার্যজ্ঞানদ্বাৎ ব্যানোহাপোহা-ভাষাক্ত কৃতঃ সংসারনিবৃত্তিরিভি তত্ত্বাহ জ্ঞানেনিতি। সর্বামিভি পূর্ণদ্বমূচ্যতে। ক্ষেরক্তেব বন্ধনন্তৎপরমিভি বিশেষণম্। তদ্ব্যাচষ্টে—প্রমার্থতক্তমিতি।

আমুবাদ। জ্ঞানেন ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। বে অজ্ঞানের দারা আরত হইরা প্রাণিগণ মোহ প্রাপ্ত হর, সেই অজ্ঞান, বাঁহাদের আত্মবিষয় বিবেক-বিজ্ঞান দারা নাশিত হর, আদিত্য বে প্রকার সকলরপকে অবভাসিত করে, সেইরূপ তাঁহাদের সেই জ্ঞান জ্ঞেয় বস্তু (অর্থাৎ) সেই প্রমার্থতত্ত্ব ব্রহ্মকে সর্বাধ্যরাপ প্রকাশ করিরা থাকে॥ ১৬

> তদ্বুদ্ধয়স্তদা আনস্তন্মিষ্ঠাস্তৎপরায়ণাঃ। গচ্ছস্ত্যপুনরাবৃত্তিং জ্ঞাননিধূ তকল্মষাঃ॥ ১৭

আন্ত্র্য। ভদ্বুদ্ধ > তদাত্মান: তরিষ্ঠা: তৎপরারণা: জ্ঞাননিধ্ তকব্ববা: ক্পুনরাবৃত্তিং (মোক্ষং) গছুত্তি (লভুত্তে) ॥ ১৭

আকুবাদ। বাঁহাদের র্দ্ধি পরমান্মবিষরিণী, বাঁহারা পরব্রহ্ধকৈই আত্মা বলিরা ব্রিয়াছেন, বাঁহাদের পরব্রহ্ধেই নিষ্ঠা, বাঁহাদের পরব্রহ্ধাই পরারণ (পরম-গতি) এবং বাঁহাদের জ্ঞানের উদয়ে সকল প্রকার পাপ দূর হইরাছে, তাঁহারাই অপুনরারতি অর্থাৎ মোক্ষলাভ করিতে পারেন॥ ১ গ

ভাষ্য। যৎপরং জ্ঞানংপ্রকাশিতম্—ত্মিন্ গতা বুদ্ধির্যাং তে তদ্বদ্ধরঃ, তদাম্মানঃ তদেব পরং ব্রহ্ম আ্মা যেবাং তে তদাম্মানঃ, তরিষ্ঠা নিষ্ঠা অভিনিবেশহাৎপর্যাং সর্কাণি কর্মাণি সংগ্রন্থ ব্রহ্মণ্যের অবস্থানং বেষাং তে ভরিষ্ঠাঃ, তৎপরারণাশ্চ তদেব পরময়নং পরাগতির্বেষাং ভবতি তে তৎপরারণাঃ কেবলাম্মরতর ইত্যর্থঃ। যেবাং জ্ঞানেন নাশিতমাম্মনোহজ্ঞানং তে গচ্চস্তোবং-বিধা অপুনরাবৃত্তিম্ অপুনদে ইসম্বন্ধং জ্ঞাননিধ্তিকক্ষরা যথোক্তেন জ্ঞানেন নির্দ্তে নাশিতঃ কক্ষরঃ পাগাদিসংসারকারণদোষো যেবাং তে জ্ঞাননিধ্তিকক্ষরা মতর ইত্যর্থঃ। ৭

আনন্দ গিরিটিক। বিছবাং বিবিদির্ণাঞ্চান্তরকাণি বিভাপরিপাকসাধ-নানি ইত্যুপদিদিকুক্ত বিক্লোকভাপেকিডং প্ররতি—য্ৎপরমিতি। ভাষিন্ পর্যার্থততে প্রস্থিন্ বৃদ্ধণি বাহাং বিষয়মপোঞ্চ গতা প্রবৃদ্ধা প্রবশ্যনননিদিবাদি- নৈরসক্বদন্থতিতের্ জিঃ সাক্ষাৎকারলকণা বেবাং তে তথেতি প্রথমবিশেষণং বিভক্তে—তিন্মিন্তি। তর্হি বোজা জীবো বোজবাং ব্রক্ষেতি জীববজ্ধ-ভেদাভ্যুপগমো নেভ্যাহ—তদাত্মনইতি। করিঙং বোজ্ বোজবাজং বজ্জাভ্যুপগমো নেভ্যাহ—তদাত্মনইতি। করিঙং বোজ্ বোজবাজং বজ্জাভ্যুপগমো নেভ্যাহ—তদাত্মনইতি। করিঙং বেজি বাজবাজাভি-মানমপনীর ব্রহ্মণোবাহমনীত্যবন্থানং তত্তদন্থতীয়মানকর্মপ্রতিবদ্ধার দিখ্যতীভ্যা শহ্য বিশেষণান্তরমাদত্তে—তরিষ্ঠাইতি। তত্ত্ব নিষ্ঠাশকার্থং দর্শরন্ বিবক্ষিত-নর্থমাহ—নিষ্ঠেত্যাদিনা। তথাপি প্রক্রার্থান্তরমাণেক্ষাপ্রতিবদ্ধাং কথং বংগাক্তে ব্রহ্মার্যাবিদ্ধান পরসপ্রক্রার্থান্তরমানতিরেকাং নাল্ল্ডাসভিরিভি তাৎপর্যার্থ মাহ—ক্রেব্রেভি । নন্থ যথোক্তবিশেষণবভাং বর্ত্তমানদেহণান্তহিপি ক্রেহ্ব্যুত্রভারা কুতো বংগাক্তে ব্রহ্মানমান্ত্রভং শক্যতে তত্ত্বাহ—ব্যামিতি। সভি সংসারকারণে ছরিভাদে সংসারপ্রসরভ হর্বার্থান্ত্রা-প্রার্তিসিজিরিভাশক্যাহ—ভ্যানেতি। উক্তবিশেষসক্ষত্তা দর্শিভ্যক্ত-শালিজমাশ্রমান্তরেক্সভাবিভমিতি মন্থানো বিশিন্তি—ত্ত্যুইতি॥ ১৭

ভাষ্যাক্সবাদ। যে পরমতত্ব জ্ঞানের দারা প্রকাশিত হয়; তাহাকেই বাহাদের বৃদ্ধি অবলয়ন করে, তাঁহারাই "তদ্মুদ্ধি" [এই শব্দের দ্বারা প্রতিপাদিত হন], সেই পরব্রহ্মই বাহাদের নিকট আয়া বলিয়া প্রতিভাত হন, তাঁহারাই "তদাত্মা" [এই শব্দের দ্বারা প্রতিপাদিত হইতেছেন], সেই পরব্রহ্মই বাহাদের অবস্থান, তাঁহারাই "তর্মিষ্ঠ", এই নিষ্ঠাশন্দের অর্থ অভিনিবেশ অর্থাৎ তৎপরতা; সেই পরব্রহ্মই বাহাদের পরম গতি, তাঁহারাই "তৎপরামণ" (অর্থাৎ) কেবল আয়াতেই বাহাদের অন্থরাগ, [তাঁহারাই এই সকল বিশেষণের দ্বারা প্রতিপাদিত হইতেছেন], বাহাদের সেই আক্ষবিষয়ক অজ্ঞান, জ্ঞানের দ্বারা নাশিত হইরাছে, তাঁহারাই জ্ঞাননিধ্তিকলার হইরা (অর্থাৎ) পাপ প্রভৃত্তি সংসারকারণ দোব সকল, জ্ঞানের দ্বারা বিনাশিত করিয়া "অপুনরাবৃত্তি" পুনর্কার দেহের সহিত্ত অসম্বন্ধ (অর্থাৎ) মোক্ষ লাভ করিয়া গাকেন, বতিগণই এই প্রকার লক্ষণ-সম্পন্ধ, ইহাই অর্থ ॥ ১৭

বিষ্ঠাবিনয়সম্পন্নে ব্ৰাহ্মণে গবি হস্তিনি। শুনি চৈব শ্বপাকে চ পণ্ডিতাঃ সমদর্শিনঃ॥ ১৮

আৰুয়। পশুতাঃ বিভাবিনরসম্পন্নে ব্রাহ্মণে, গবি, গবিনি, শুনি, শুপারক চ'নক্ষণিনঃ (অবিজিন্নপশিনঃ) [শুব্সি] ॥ ১৮ অনুবাদ। বাঁহাদের আত্মতবজ্ঞান হইয়াছে, তাঁহারা বিছা ও বিনম্যুক্ত-আন্ধান, গো, হন্তী, কুরুর ও খাপাক (চণ্ডাল) প্রভৃতি দকল জীবেই সমদৃষ্টি যুক্ত হইয়া থাকেন । ১৮

ভাষ্য ৷ বেবাং জ্ঞানেন নাশিতমাত্মনোহজ্ঞানং তে পণ্ডিতাঃ কথং তত্ত্বং পশুন্তীত্চাতে—বিভাবিনয়সম্পার বিভা চ বিনয়ম্চ বিভাবিনয়ৌ বিনয় উপশমঃ তাজ্যাং বিভাবিনয়াজ্যাং সম্পারো বিভাবিনয়সম্পারো বিভাবিনয়সম্পারো বিভাবিনয়সম্পারো বিভাবিনয়সম্পারো বিভাবিনয়সম্পারা বিভাবিনয়সম্পারে উত্তমসংক্ষারবাতি ব্রাক্ষণে সাত্মিকে মধ্যমায়াং চ রাজ্ঞাং চ গবি সংক্ষারহীনায়াং অভ্যন্তমেব কেবল তামসে হত্ত্যাদোচ সন্থাদিঞ্চণৈঃ তকৈজ্ঞান্ত সংক্ষারৈয়ভ্যা রায়নৈয়পা তামনৈশ্চ সংক্ষারেয়ভ্যন্তমেবাম্পৃষ্টং সমদেকমবিক্রিয়ং ব্রক্ষ ভট্টং শীলং বেষাং তে পণ্ডিতাঃ সমদর্শিনঃ ॥ ১৮

আনন্দণিরিটীকা। যদপ্নরার্তিসাধনং তত্তজানং ও তদেব প্রশ্নধারণ বির্ণোতি—যেষামিত্যাদিনা। বিজ্ঞা বেদার্থবিজ্ঞানমিত্যাদীরুত্য বিনয়ং ব্যাচ্টে—বিনয় ইতি। উপশ্নো নিরহকারত্বমনৌকত্যং পদার্থমেবমুক্তা বাক্যার্থং দর্শয়তি—বিদ্বানিতি। গ্রীত্যাত্বনৃত্য বাক্যার্থং কণয়তি—বিদ্বেতি। হত্ত্যাদৌ পণ্ডিতাঃ সমদর্শিন ইত্যন্তরত্র সম্বন্ধঃ। তত্ত্ব তত্ত্ব প্রাণিভেদেয় তত্ত্বদু ভংগিস্তত্ত ক্রিমিন্তসংস্কারেশ্ব সংস্পৃষ্টবসন্ত্রণায় ব্রহ্মণঃ সমত্বমিত্যাশক্ষ্যাং সন্ত্রাদীতি। তত্ত্তিশেভতাত্র তচ্চদেন সন্থমেব গ্রহতে। সান্ধিকসংস্কারেরিব রাজসসংস্কারেরিপ সর্বানেসংস্কৃত্তি ব্রহ্মেবাস্পৃষ্টমিত্যাহ—তথা তামসৈরিতি। ব্রহ্মণোহনিতীয়তং কৃতত্ত্ব-জ্বসন্ধান্তেহর্থে হেতুরিতি মন্ধা সমশক্ষার্থমাহ—সম্বানিতি। সমদর্শিত্তমেব পাণ্ডিত্যং ত্র্যাচ্টে—ব্রিক্তি । ব্রহ্মিতি। সমদর্শিত্তমেব পাণ্ডিত্যং ত্র্যাচ্টে—ব্রক্ষাতি ॥ ১৮

অনুবাদ। বাঁহাদের আত্মবিষয়ক অজ্ঞান, জ্ঞানের ঘারা নাশিত হয়,
সেই সকল পণ্ডিতগণ কিরূপ ত্র দর্শন করিয়া পাকেন [তাহাই বলা যাইতেছে
যে], "বিভাবিনয়সপার" বিভা ও বিনয় [এই প্রকার তাৎপর্য্যে] বিভাবিনর
[শক্টি ব্যবহৃত হইয়াছে], সেই বিভাবিনয় যাহার আছে, সে বিভাবিনয়সম্পন্ন।
এই স্থলে বিনয় শক্ষের অর্থ উপশম, (অর্থাৎ) বিঘান্ ও বিনীত ব্রাহ্মণে,
গরুতে, হাতীতে, কুরুরে এবং চণ্ডালে (সর্ব্রেই) পণ্ডিতগণ সমদর্শী হইয়া
থাকেন। ব্রাহ্মণ উত্তমসংস্কারযুক্ত ও সম্প্রাক্তিসপার, গাভী—রজ্ঞাপ্রকৃতিসপার
এবং এক্বোরে সংস্কারবিহীন এবং কেবল তম্প্রকৃতিসপার হত্তিপ্রকৃতি

এইরপ [ত্রিবিধপ্রকৃতিভেদে , বিভিন্নপ্রকার জীবের মধ্যে অবস্থিত হইরাও বাহা, স্থাদিশুণ তজ্জনিত সংস্থার এবং রাজস ও তামস সংস্থার বারা একেবারে শ্রুষ্ট নহে, সেই সম এক অবিক্রিয় ব্রহ্মকেই দর্শন করাই বাহাদের স্বভাব, ভাহারাই সমদর্শী পণ্ডিত॥ ১৮

> ইহৈব তৈৰ্জ্জিতঃ সৰ্গো যেষাং সাম্যে স্থিতং মনঃ। নিৰ্দোষং হি সমং ব্ৰহ্ম তত্মাদ্ব্ৰহ্মণি তে স্থিতাঃ॥ ১৯

জ্বারু । বেবাং মন: সাম্যে ছিতং তৈরিহৈব সর্গো জিতঃ ; হি (বত্মাৎ) ব্রহ্ম সমং নির্দেবিং ; তত্মাৎ তে ব্রহ্মণি ছিতাঃ ॥ ১৯

অনুবাদ। বাঁহাদের মন: সাম্যে সবহিত, তাঁহারা এই লোকেই জন্ম জন্ম করিতে সমর্থ হইয়াছেন; যে কারণ ব্রহাই নির্দোষ সম, এই কারণ তাঁহারা ব্রহ্মতেই অবস্থিত॥ ১৯

ভাষ্য। নৰভোজ্যান্নান্তে দোৰবন্তঃ "সমাসমাভ্যাং বিৰম্পমে পূজাতঃ" ইতি স্বুক্তে, ন তে দোৰবন্তঃ কণং ইট্ডৰ জীবন্তিরেব তৈঃ সমদলিভিঃ পণ্ডিতৈজি তা বশীক্তঃ সর্গঃ জন্ম, বেষাং সাম্যে সর্কভ্তেষ্ ব্রহ্মণি সমজ্ঞাবে স্থিতং নিশ্চলীভূতং ননোহন্তঃকরণ্ম। নির্দোষণ যন্ত্রিপ দোষবৎস্থ স্পাকাদির্ মৃট্ডেন্তানোবিদে বিভাব্যতে, তথাপি তদ্যোবৈরস্পৃষ্টমিতি নির্দোষং দোষবিজ্ঞাই হি যন্মাৎ নাপি স্বন্ধাভদিজিল নির্ধানিতেভক্ত, বক্ষাতি চ ভগবান্ ইচ্ছাদীনাং ক্ষেত্রধর্ম্মক্ অনাদিছান্তিগুলিজাচ। নাপাস্থ্যা বিশেষা আত্মনো ভেদকাঃ সন্তি প্রতিশ্বরারং তেষাং প্রমাণান্ত্রপাত্তরতঃ সমং ব্রহ্ম একঞ্চ ভন্মান্ত্রহ্মণ্যেব তে হিতান্তন্মান্ত্র দোষগদ্মাত্রমণি তান্ স্পৃশতি দেহাদি-সংঘাতাত্মদর্শনাভিমানাভাবাৎ। দেহাদিসংঘাতাত্মদর্শনাভিমানাভাবাৎ। দেহাদিসংঘাতাত্মদর্শনাভিমানাভাবাং বিষম্পম্ম পূজাত ইতি পূজাবিষরত্মবিশেষণাং। দৃশুতে চ ব্রহ্মবিৎ বড়ঙ্গবিচ্ছত্র্কেদিবিদিতি পূজাদানাদে ভণবিশেষসম্ভ্যং কারণং ব্রহ্ম স্মাসমাভ্যাম্ ইত্যাদি, ইদং তু সর্ক্বর্শ্মন্যাসিবিষয়ং প্রস্তুৎ সর্ক্রন্দানি মনসা ইত্যারন্ত্য আ অধ্যান্ধারিসমাপ্রেঃ॥১৯

আনন্দ্গিরিটীকা। শাধিকের রাজদের তামদের চ সংবর্ সমন্দর্শন-মন্থচিতমিতি শবতে—নিহাতি। সর্বান্ত সমদর্শিনঃ ভাছদেন পরামৃত্তরে। তেবাং বোৰব্যাদভোজ্যারত্মিতাক প্রমাংনাং—স্মাস্মাভ্যামিতি। সমা-

नायश्वमानिष्ः সমানধর্মকাণাং বস্তালকারাদিপুরুরা বিষমে প্রতিপত্তিবিশেষে ক্রিরমাণে স্ত্যুদ্মানাঞ্চ অস্মানধর্মকাণাং ক্সচিদেকবেদ্ভমপ্রস্ত বিবেদ্ভমিত্যালি ধর্মবতাং প্রাঞ্জভরা পুদ্ধরা সমে প্রতিপত্তিবিশেষে পূদ্ধয়িতা পুরুষবিশেশং জ্ঞাত্বা প্রতিপত্তিমকুর্বনি ধনান্ধর্মাচচ হীয়তে তেন সাত্মিকে রাজসভামসয়োক সমবৃদ্ধিং কুর্পন্ প্রত্যবৈতীত্যর্থ:, উত্তরছেনোত্রপ্রোক্ষরতারম্বতি ন তে দোষবস্তুইতি। স্বত্যবইন্ডেন সর্মসন্তের সমন্দর্শিনাৎ দোষবন্ধমূক্তৎ কথং নাত্তীতি প্ৰতিজ্ঞামাত্ৰেণ সিধ্যতীতি শক্ষতে—কথমিতি। স্বতেৰ্গতিম**ে**গ্ৰ विषयान् निर्द्शायप्र रमप्रवर्गिनाः विश्वष्ठि—ইट्रेट्टिवि । সর্বেষাং চেতনানাং সাম্যে প্রবণ্মন্সাং ব্রহ্মলোকগ্মন্মস্তরেণ ত্রিসায়েব দেহে পরিভূত্তক্মনামশেব-দোৰরাহিত্যে হেতুমান —িনিদ্দোমং হীতি। বর্ত্তমানো দেহঃ সপ্তম্যা-পরিগৃহতে। তানেব সমদর্শিনো বিশিনষ্টি—(যুষামিতি। নমু এক্সণো-निर्द्धावयम् निष्कः द्यावयद्यः अभावाभिषु ज्यादार्विद्धावयः वाभवस्य व्याव যদ্পশীতি। ৰকাৎ ভ্রিকোষং ভকাৎ ভ্রিন্ বন্ধণি স্থিতৈর্নির্দোবেঃ সর্গো জিভ ইভি সম্বন্ধ: একাণো গুণভূষ্ত্বাৎ শ্লীয়ান দোষোহপি আদিত্যাশক্সাহ— নাপীতি। চেত্তনশু গুণবিশেষে বিশিষ্ট্রননিষ্ট্রণ নি গুণ্রশ্রবণাদিত। যুক্তমিছা-দীনাং পরিশেষাদায়ধর্মারভ কৈশ্চিলিশ্চিত্রাদিত্যাশস্ক্যাহ—বক্ষাতি চেতি। আমুনোনি প্রণিতে বাক্যশেষং প্রমাণয়তি—অনাদিতাদিতি। চকারো বক্ষ্য-ভীজ্যনেন সম্মার্থ:। গুণদোর শোদার্মনা ভেদাভাবেহপি ভেদোহস্তাবিশেরেভো ভবিষ্যতীতি প্রদল্পাল্য দুষরতি—নাপীতি। প্রতিশরীরমাত্মভেদসিক্ষৌ ভদ্মেতৃত্বেন তেষাং সহং তেষাঞ্চ সত্ত্বে প্রতিশরীরমাত্মনো ভেদসিদ্ধিরিতি পরস্পরাশ্ররমভিপ্রেতা হেতুমাহ—প্রতিশরীরমিতি। আত্মনো ভেদকা-ভাবে ফলিতমাহ—অতইতি। সমন্বনেব ব্যাকরোভি—একঞ্চেতি। বন্ধণো-मिर्किएनरएक्टेनकषाक्कीयानाक एक काकार्यनेक प्रकार कार्याक प्राप्त कार्याक कार्य ৰীৰব্ৰদ্ধণোৱেষ্টব্যমিত্যাহ—কুন্মাদিতি। জীববৃদ্ধণোৱেকদে জীবানাং ব্ৰহ্মবন্ধি-র্জোবন্ধং সিধ্যতীভ্যাহ—তম্মান্ত্রেতি। তচ্চ্পার্থমেব স্ফুটরতি—দেহাদীতি। বদি দৰ্কদৰেৰু দমত্বদৰ্শনমত্তমিষ্টং তহি কথং গৌতমহত্তমিত্যাশ্ব্যাহ—দেহাদি-সংঘাতেতি। হত্তত বণোক্তাভিমানবদ্বিবয়তে গমকমাহ—পুক্তেতি। বদি **डक्ट्रर्स्क्रानात्यव मछार शृक्या देववमार विक वा इक्ट्रर्स्क्रानार वक्रक्रविकार अक्षाविका** পুরুরা সান্যং ভদা তেবানুকপুরাবিষয়াণাং কেবাঞ্চিয়নোবিকারসম্ভবে কর্তা वाकारेनको क्वित्रम्बर राज्य वाकिजाकी कार्यः। क्रिक्त हामूक्वमम्भूनार्यस्मा-

দাহরতি—দৃশ্যতে হীতি। দেহাদিসংঘাতাভিমানবতাং গুণাদাবাসম্বন্ধসম্ভ বাৎ তদ্বিষয়ং স্ত্রমিত্যক্তমিদানীং ব্রহ্মাত্মতি। ইতক্ত নেদং স্ত্রং ব্রহ্মবিদ্বিষয়মিত্যাহ—ক্রমীতি। তবৈ পৃক্ষাপরিভবসম্ভবাদিত্যর্থ:। নমু ষত্র সমত্বদর্শনং তবৈব ত্বিদং স্ত্রং ন তু কর্মিণ্যকর্মিণি বেতি বিভাগোহন্তি তত্রাহ—ইদং ত্বিতি। সমত্বদর্শনশ্ব সংক্রাসিবিষয়ত্বেন প্রস্তুত্ত্বে হেতুমাহ—স্ব্রক্রমাণীতি। অধ্যায়পরিসমাপ্তে: সর্বকর্মাণীত্যারভ্য তত্র তত্ত্ব সর্বকর্মানাভিধানাৎ তথ্বিষয়মিদং সমত্বদর্শনং গম্যতে তত্র চ নিরহন্ধারে নিরবকাশং স্ত্রমিত্যর্থ:॥১৯

অনুবাদ। একণে এই প্রকার শহা হইতেছে যে, চণ্ডাল প্রস্তৃতির অন্ত্র-ভোজন করিতে নাই, স্কুতরাং তাহারা সদোষ। "উৎকৃষ্ট ও অপকৃষ্ট ব্যক্তিকে যধাক্রমে অপকৃষ্ট ও উৎকৃষ্ট পূজা করিলে [পাপ হয়]" এই প্রাকার শ্বতি প্রিমাণ দ্বারা ইহা জ্বানা যায় যে, ঐ সকল অপকৃষ্ট ব্যক্তিকে ও উৎকৃষ্ট ব্যক্তিকে একরপ জ্ঞান করা উচিত নহে] ইহার উপর, এই বলা যাইতেছে বে, তাহারা [ব্রন্ধজ ব্যক্তির নিকট] দোষ্যুক্ত নহে কেন ? [তাহাই এই শ্লোকের দারা বলা হইতেছে) দেই সকল সমদৰ্শী পণ্ডিতগণ বাঁচিয়া থাকিতে থাকিতেই দর্গ (অর্থাৎ) জন্মকে বলীক্বত করিয়া থাকেন, যাঁহাদের মন (অর্থাৎ) অন্ত:করণ সাম্যে (অর্থাৎ) সকল প্রাণীতেই সমন্তাবে অবন্ধিত বন্ধতেই দ্বিত (व्यर्था९) निक्तन इटेबा थारक ; य कात्र उन्न निर्द्धाय ७ मम. यद्य शि ह्या व्यक्त খণাকাদিতে [স্থিত বলিয়া] মৃঢ়গণ সেই খণাকাদির দোষে ব্রহ্মকেও দোষযুক্তের স্থায় বোধ করিয়া থাকে, তাহা হইলেও প্রক্লুত পক্ষে ব্রহ্ম নির্দোষ, অর্ধাৎ সকল প্রকার দোষবর্জিত : যে কারণ চৈত্ত নিগুণ এবং নিশুণছনিবন্ধনই উহা স্বগত গুণবিশেষবশতঃ বিভিন্ন হইতে পারে না। ভগবান্ও ৰলিবেন বে, 'ইচ্ছা প্রভৃতি গুণ ক্ষেত্রের ধর্ম, আত্মার অনাদিত্ব ও নিগুণত্ব নিবন্ধন' [পরমাত্মা বিকারী নহেন] ইত্যাদি। এবং প্রত্যেক নিত্য দ্রব্যে বিষ্ণমান বৈশেষিক মতু দিছা বিশেষনামক বস্তুর ছারাও আত্মার [নানাত্মরূপ] ভেদ সাধিত হইতে পারে না; কারণ প্রতিশরীরভেদে আত্মগত তাদৃশ বিশেষ বস্তুর স্বীকারে কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না।। এইজভ ব্রহ্ম সম এবং এক, এইবর তাঁহারা ব্রহ্মতেই স্থিত; হওরাং [পর্মার্থ দৃষ্টিতে] তাঁহাদের अनुमाज । लादव म्थर्न रहेरा थात ना । कातुन जारामत परानिमञ्जारण আস্থাদর্শনন্ধনিত অভিমান নিবৃত্ত হইয়াছে। "সম এবং অসম ব্যক্তির বিষম ও সমভাবে পূজা করিলে প্রভাবায় হয়," এই ধর্মণান্তের বিষয় দেহাদিসভাতে আত্মানিমানশালী জীব। সেই প্রকার জীবের পক্ষেই ব্রন্ধবিং বড়কবিং, চতুর্মেদবিং ইত্যাদি পাত্রগত গুণভেদে পূজা ও দানাদিতে বিশেষ বিধানও দেখিতে পাওয়া বায়। কির পরমার্থতঃ সর্বজগতের কারণ ব্রন্ধ স্থকার গুণ ও দোষ হইতে বিনিগুলি, এই কারণে তাঁহারা ব্রন্ধেতেই অবস্থিত, এইরূপ বাহা পলা হইয়াছে, তাহা গলিম্বুলই হইয়াছে।

ম্শ ইত্যাদি ধর্মশশেরের বিষয় কর্ম্মী জীব। "সর্বকর্মাণি সংস্কৃত হত্যাদে শ্লোক হইতে হারত্ত করিয়া এই স্বাধারের পরিসমান্তি পর্যান্থ বাহা কিছু বলা হইয়াছে, তাহা সর্বক্র্মণংস্থাসীকে উদ্দেশ্য করিয়াই বলা হইগাছে; কারণ তাহাই এ স্থলে প্রক্রান্ত। ই

ন প্রছাব্যেৎ প্রিয়ং প্রাপ্য নোদ্বিজেৎ প্রাপ্য চাপ্রিয়ম্। স্থিরবুদ্ধির্সংমৃঢ়ো ত্র ক্ষবিদ্ ত্রক্ষণি স্থিতঃ॥ ২০

আনুর । স্থিরবৃদ্ধি: অসম ৄঢ়: (সম্মেহশৃত্তঃ:) বন্ধণি স্থিতঃ বন্ধবিৎ প্রিরং প্রাপ্য ন প্রসংখ্য [তথা] অপ্রিয়ং প্রাপ্য ন উদ্বিজেৎ ৮॥ ২০

আমুবাদ। ব্রহ্মজ্ঞ ব্যক্তি, স্থিরবৃদ্ধি, সম্মোহশৃত্ত এবং সর্বনা ব্রহ্মদর্শন-তৎপর [হইবেন], তিনি প্রিরবন্ধ লাভ করিলে হাই হইবেন না এবং অপ্রির প্রাপ্তিতে উদ্বিগ্ন হইবেন না॥ ২০

ভাষ্য। যত্মাৎ নির্দেশিং সমং ব্রহ্ম, আত্মা, তত্মাৎ ন প্রহারের প্রথাৎ কুর্যাৎ প্রিয়মিষ্টং প্রাণ্য লক্ষ্য, নোছিজেৎ প্রাণ্যের চাপ্রিয়ম্ অনিষ্টং লক্ষ্য, দেহমাত্রাত্মদর্শিনাং হি প্রিয়াপ্রিয়প্রাপ্তী হর্ষবিষাদস্থানে। ন কেবলাত্মদর্শিনস্তত্ত প্রিয়াপ্রিয়প্রাপ্তাসন্তবাং। কিঞ্চ সর্বভূতের এক: সমো নির্দ্ধোর আত্মা ইতি ত্বিয়া নির্বিচিকিৎসা বৃদ্ধির্যন্ত স ত্বিরবৃদ্ধিঃ; অসমৃতঃ সন্মোহবর্জিতশ্চ তাৎ যথোক্তবন্ধবিদ্ বন্ধাণি ত্বিতাহকর্মকুৎ সর্বকর্মসংস্থাসীত্যর্থঃ॥ ২০

আনন্দগিরিটীকা। নম্থ ইষ্টানিষ্টপ্রাপ্তিভ্যাং হর্ষবিষাদৌ বিদানপি কুর্বন্
নির্দোবে বন্দাি কণং স্থিতিং লভেতেত্যাশস্থাকাজ্জিতং পূর্যন্ উত্তরশ্লোকমুখাপর্বতি—যুক্ত্যাদিতি। আয়জ্ঞাননিষ্ঠাবতো বিহুবাে হর্ষবিষাদনিমিত্তাভাষার
ভাব্চিতাবিত্যাহ—স্থির্বুজ্বিরিতি। নম্থ হর্ষবিষাদনিমিত্তবং প্রিয়াঞ্জির্বাঃ
সিন্ধািতি কথং তৎপ্রাপ্তাা হর্ষেবেগে ন কর্মবাাবিতি নিবুল্যতে ভ্রমাহ—

দেছেতি। বিছবোহণি প্রিয়াপ্রিরপ্রাপ্তিদামর্থ্যাদেব হর্ষবিবাদৌ হর্কারাবিত্যা-অধিতীয়দর্শনশীলস্ত ব্যতিরিক্তপ্রিয়াপ্রিয়প্রাপ্তা-শঙ্যাহ—ন কেবলেতি। ৰোগাল তলিমিত্তে হৰ্যবিষাদাবিত্যৰ্থ:। ইতোহপি বিহুষো হৰ্যবিষাদাবসম্ভাবিতাবি-ত্যাগ—কিঞ্জেতি। নির্দোবে বন্ধণি প্রাণ্ডকে দৃঢ়প্রতিপতিঃ সম্মেহেন ह्वीमिट्डूना त्रहिट्डा यथारङ मर्सरमायत्रहिट्ड बन्नगःहमन्नीडि विश्वानात्मध-দোষশুক্তে ভদ্মিরেব ব্রহ্মণি স্থিতগুদমুরোধাৎ কর্মাণ্যমূষ্যমাণো নৈব হর্ষবিষাদভাগী ভবিত্মশমিত্যর্থ: ॥ ২০

অনুবাদ। যে কারণ ব্রহ্ম নির্দোব, সম এবং আত্মা, সেই কারণে প্রির (অর্থাৎ) ইষ্টলাভ করিরা প্রহার্ট হইবেন ন। এবং অপ্রির (অর্থাৎ) অনিষ্ট লাভ করিয়া উদিয় হইবেন না। বাহারা শরীরেতেই আত্মাভিমানী তাহাদেরই প্রের বা অপ্রির বস্তুর প্রাপ্তি বথাক্রমে হর্ব বা বিষাদের কারণ হয়। একাই আত্মা, এই প্রকার জ্ঞান যাঁহার হইরাছে, তাঁহার প্রিয় বা অপ্রিয় প্রাপ্তির সম্ভাৰনা নাই। আরও সকল প্রাণিতেই এক ও সম আত্মা কোন প্রকার শোষসংস্ঠ নহেন, এই প্রকার স্থির (অর্থাৎ) সংশয়হীন বুদ্ধি বাঁহার হইরাছে, তাঁহাকেই স্থিরবৃদ্ধি বলা যায়। স্থিরবৃদ্ধি ও সম্মোহবর্জ্জিত হইবেন। [এবং] বংশক্ত বন্ধবন্ধপকে জানিয়া বন্ধস্থিত (অর্থাৎ) "অকর্মকুৎ" দর্বকর্মসংস্থাসী [इहेरवन], हेहाई व्यर्थ ॥ २०

> বাহ্সপশেষদক্তাত্মা বিন্দত্যাত্মনি যৎ স্থখম। স ব্রহ্মযোগযুক্তাতা। হথমক্ষয়মগুতে॥ ২১

আত্মনি ষৎ স্থাং বিলভি [৩ৎ] অক্ষয়ং স্থাং বাহাস্পর্শের অসক্তাত্মা বন্ধবোগযুক্তাত্মা স: [যোগী] অগ্নতে ॥ ২১

জাকুবাদ। আত্মাতেই যে হথ বিছ্যান রহিয়,ছে সেই অকর হুধ তাহারই হইরা থাকে, যে ব্যক্তির অন্তঃকরণ বাজুবিষয়সমূহে আগক্ত নহে এবং বন্ধবিষদ সমাধিতে বাঁহার অন্ত:করণ সর্বদা যুক্ত থাকে॥ ২১

ভাষা ৷ কিঞ্চ বন্ধণি স্থিতঃ বাহাস্পর্শের বাহাস্ট তে স্পর্শাস্ত বাহাস্পর্শাঃ শুগুত্তে ইতি শার্শা: শন্ধাদয়ো বিষয়াত্তেরু বাহস্পর্শেষু অসক্ত আত্মা অন্তঃকরণং বক্ত নোহরম্ অসক্তাত্মা বিষয়েষু প্রীতিবর্জিত: সন্ বিন্দতি লভতে আত্মনি ৰং স্থাৎ ভদ্বিন্দতীভ্যেতং। স বন্ধবোগযুক্তাত্মা বন্ধণি বোগঃ সমাধিঃ বন্ধ-বোগতেন ব্রথবোগেন যুক্তঃ লমাহিতত্তমিন্ ব্যাপৃত আত্মা অন্তঃকরণং খৃষ্ঠ স ব্রহ্মধোগযুক্তাত্মান্ত্রখমকরমর্গ্র ব্যাপ্নোতি ; তন্মাদ্বাহ্যবিষয়প্রীতেঃ ক্ষণিকারা ইব্রিয়াণি নিবর্ত্তরেদাত্মক্রকর্মধার্থীত্যর্থঃ॥ ২১

আনন্দ গিরিটীকা। শব্দাদিবিষয়প্রীতিপ্রতিবন্ধান্ন কন্সচিদপি ব্রহ্মণি ছিতিঃ
সিধ্যেদিত্যাশস্ক্যাহ—কিঞ্জেতি। ন কেবলং পূর্ব্বোক্তরীত্যা ব্রহ্মণি ছিতো হর্ববিষাদর্শ্বিতঃ কিন্তু বিস্থান্তরেণাপীত্যর্থঃ। যাবদ্যাবদ্বিষয়েষু রাগরূপমাবরণং
নিবর্ত্তে তাবতাবদাত্মস্থরপ্রথমভিব্যক্তং ভবতীত্যাহ—বাহ্যেতি। ন কেবলমসক্তাদ্মা শমবশাদেব স্থথং বিন্দতে কিন্তু ব্রহ্মসমাধিনা সমাহিতান্তঃকরণঃ স্থমনস্তং
ব্যাগ্যোতীত্যাহ—স ব্রক্ষেতি। তত্র পূর্ব্বার্ধ্বং ব্যাচষ্টে—বাহ্যাদেচ্তি। সমাধানানীনসম্যগ্জানদ্বারা নির্ভিশয়স্থপ্রাপ্তিমৃত্তরার্ধব্যাখ্যানেন কণম্বতি
ব্রহ্মণীত্যাদিনা। শব্দাদিবিষয়বিমৃথস্থানস্তম্পথাপ্তিসম্ভবাৎ তদর্থিনা প্রবন্ধেন
বিষয়বৈমৃধ্যং কর্ত্ব্যমিতি শিষ্যশিক্ষার্থনাহ—তন্মাদিতি॥ ২১

অনুবাদ। আরও ব্রন্ধেতে অবস্থিত [হইতে হইলে কি হইতে হইবে তাহা বলিতেছেন], বাহস্পর্শসমূহে (অর্থাৎ) বাহিরের শব্দাদিভোগ্য বিষয়নিচয়ে অসক্তামা, যাঁহার আত্মা (অর্থাৎ) অন্তঃকরণ অনাসক্ত, তিনি অসক্তামা
অর্থাৎ বিষয়ে. প্রীতিবর্জিত হইলে, আত্মাতে যে স্লখ [তাহাই লাভ করিয়া
থাকেন]। সেই ব্রন্ধযোগযুক্তামা অক্ষয় স্লখলাভ করিয়া থাকেন, ব্রন্ধে যোগ
(অর্থাৎ) সমাধি [এই অর্থে] ব্রন্ধ যোগ [এই শব্দটি ব্যবহৃত হইয়াছে],
যাহার আত্মা (অর্থাৎ) অন্তঃকরণ সেই ব্রন্ধযোগেতে সূক্ত (অর্থাৎ) ব্যাপৃত
আছে, তিনিই ব্রন্ধযোগযুক্তামা। সেই কারণে আত্মার সহিত নিতা-সম্বন্ধ
অক্ষয় স্লখকে অনুভব করিতে যিনি কামনা করেন, তিনি ক্ষণিক বাহ্যবিষয়প্রীতি
হইতে ইক্রিয় সকলকে নিবৃত্ত করিবেন ইহাই অর্থ॥ ২১

যে হি সংস্পার্শজা ভোগা তুঃখযোনয় এব তে। আগ্রন্তবন্তঃ কোন্তেয় ন তেযু রমতে বুধঃ॥ ২২

ভাষ্য । েই কৌন্তেয় ! যে ভোগাঃ সংস্পর্শকাঃ তে তৃঃখবোনয়ঃ এব [ভণা] আত্মন্তবন্তঃ, তেমু বৃধঃ ন রমতে ॥ ২২

অমুবাদ। [এই কারণেও বাহুবিষয়প্রীতি হইতে মনকে নিবৃত্ত করিবে; কারণ] বিষয়ের সহিত ইন্দ্রিয়ের সংস্পর্শজনিত যে স্থুখভোগ সকল হয়, তাহা হঃখের কারণ হইরা থাকে,। হে কোন্তেয়, ঐ সকল ভোগ আদি ও অন্তযুক্ত; পণ্ডিত ব্যক্তি ঐ সকল বাহুবিষয়ভোগে প্রীতিলাভ করেন না॥ ২২ ভাষ্য। ইতশ্চ নিবর্ত্তরেৎ যে হি ষমাৎ সংস্পর্শকা বিষয়েজিয়সংস্পর্শভো জাতা ভোগা ভুক্তয়ঃ হঃখবোনয় এব অবিছারুতভাৎ। দৃশুস্তে
হি আধ্যাত্মিকাদীনি হঃখানি তরিমিত্তাশ্রেব। যথেহ লোকে তথা পরলোকেহপি
গম্যতে এব শব্দাৎ। ন সংসারে স্থখন্ত গন্ধমাত্রমণ্যন্তীতি বৃদ্ধা বিষয়মৃগতৃষ্ণিকায়া ইন্দ্রিয়াণি নিবর্ত্তরেৎ। ন কেবলং হঃখবোনয়ঃ, আছন্তবন্তশ্চ আদিবিষয়েজিয়সংযোগো ভোগানামন্তশ্চ তদ্বিয়োগ এবাত আছন্তবন্তোহনিত্যামধ্যকণভাবিত্বাদিত্যর্থঃ। কৌন্তেয় ন তেয়ু রমতে বৃধঃ ভোগেষু বিবেকী অবগতপরমার্থতব্বাহত্যন্তম্টানামের বিধয়ের রতিদ্ভিতে যথা পশ্চপ্রভূতীনাম্॥ ২২

আনন্দগিরিটীকা। তত্ত্বৈব হেম্বস্তরপরম্বেনোতরশ্লোকমুদাহরতি—ইত-বিষয়েভ্যঃ সকাশাদিলিয়াণীতি শেষঃ। বৈরাগ্যার্থমেব বৈষয়িকাণি অথানি দ্ষয়তি—যে হীতি। নহ বিষয়েক্তিয়সংপ্রয়োগসভূতের ভোগের **জ্ঞু**নামভিক্রচিদর্শনাৎ কুতন্তেষাং ছঃখযোনিত্বমিত্যাশঙ্ক্যাবিবেকিনাং তে**ষাসঙ্গেহ**শি ন বিবেকিনামিত্যাহ—আত্মন্তব্স্তুইতি। যশাদাধিব্যাধিজরামরণাদিসহিতেভাঃ সমাগমনাদিক্লেশরপভাগিভাশ বিষয়েক্রিয়সম্বন্ধেভায় ভোগা: মুধলবামুভবা কায়ন্তে তত্মাৎ তে হঃথহেতবো ভবস্তীতিয়ে।জনা। অবিল্য,কার্য্যছাদ্ধু:ধানাৎ কুতো ভোগ-জন্তব্যনিত্যাশস্ক্য ভোগানামবিত্যাপ্রযুক্তবাৎ তরিবন্ধনত্বং হু:খানা**ং** যুক্তমিত্যভি-প্রেত্যাহ—অবিস্তেতি। ভোগানাৎ হঃথয়েনিরে মানমন্থভবমুপ্রস্থতি—দৃশ্যুস্তে হীতি। ঐহিকানাং ভোগানাং ছঃখনিমিত্তবেপি নামুমিকাণাং তপাছমহভবাভা-বাৎ ইতা শঙ্কা অবধারণসামর্থ্য সিদ্ধমর্থ শাহ — মৃথেতি | পূর্বাৰ্দ্ধ স্থা স্করার্থ স্কু না তাৎপর্য্যার্থমাহ—নেত্যাদিনা। ইতশ্চ বিষয়েভ্যঃ সকাশাদিন্দ্রিয়াণি নিবর্ত্তরিত-ব্যানীত্যাহ-ন কেবলমিতি। আগন্তবত্তে মধ্যক্ষণবর্ত্তিত্বেন ক্ষণভঙ্গুর্ঘাহপে-ক্ষণীয়ত্বং ভোগানাং সিধ্যতি। অন্তি হি তেয়াং ক্ষণভসুরত্বং ক্ষণিকবিষয়াকার-মনোবৃত্তিব্যঙ্গাধাণিতিমন্বানঃ সন্নাহ—অত ইতি। বৃদ্ধিপূর্বকারিণাং বিবেকবতাং ভোগেষ্ পেক্ষোপলব্বেক্ত তেষামাভাসত্বং প্রতিভাতীত্যাহ—ন তেম্বিতি । প্রতী-কোপাদানমান্তমিদং পুনর্কাখ্যানমিতি ন পুনক্জি:। নমু কেবাঞ্চিত্তাগেছভিক-চিক্লপ**শ**ভাতে তত্ৰাহ—অত্যন্তেতি॥ ২২

আমুবাদ্য এই কারণেও নিবৃত্ত করিবে, কারণ বিষয় ও ইব্রিরের পরস্পর সংযোগ হইতে উৎপন্ন যে সকল ভোগ (অর্থাৎ) ভূক্তি, তাহারা হংথকারণ; কারণ, ঐ সকলই অজ্ঞানের কার্য্য। দেখিতেও পাওরা যার, আধ্যাত্মিক প্রভৃতি হুংধের নিমিত হইয়া থাকে। বেমন এই লোকে হইয়া থাকে, সেই প্রকারে পরলোকেও হইরা থাকে; শান্তপ্রমাণ-বলে ইহা বৃথিতে পারা বার। এই সংসারে স্থথের লেশমাত্রও নাই, ইহা বৃথিয়া বিষয়মূগতৃক্ষা হইতে ইক্রিয় সকলকে নির্ব্ত করিবে, তাহারা কেবল যে ছংখবোনি ভাহাই নহে; ভাহাদের আদি ও অস্ত আছে; বিষয়ের সহিত ইক্রিয়ের সংবাগই ভোগের আদি এবং ভাহার বিয়োগই ভোগের অস্ত; স্কতরাং সকল ভোগই অনিভ্য; কারণ ভোগ আদিভেও নাই, পরেও থাকে না, কেবল মধ্যেই থাকে। হে কৌস্তের, বুধ (অর্থাং) বিবেকী সেই ভোগসমূহে প্রীতি লাভ করেন না; কারণ ভিনি ভোগের অসারভা বৃথিয়াছেন এবং নিভ্য ব্রেদ্ধেরও অ্বরূপ ক্লানিতে পারিয়াছেন। পশুপকী প্রস্তৃতির ভার যাহারা অত্যন্ত মৃঢ়, ভাহাদেরই বিষরসমূহে প্রীতি দেখিতে পাওয়া যার॥ ২২

> শক্রোতীহৈব যঃ সোঢ়ুং প্রাক্ শরীরবিমোক্ষণাৎ। কামক্রোধোদ্ভবং বেগং স যুক্তঃ স স্থুখী নরঃ॥ ২৩

অন্তর্য়। ইতৈব শরীরবিমোকণাৎ প্রাক্ কামক্রোধোন্তবং বেগং সোচূং যঃ শক্রোভি স নরঃ স্ক্র: স্থী [চ]॥২৩

অনুবাদ। এই লোকেই মরণের পুর্নেক কাম ও ক্রোধের বেগ ধারণ করিতে যিনি সমর্থ তিনিই যুক্ত এবং তিনিই স্থণী ॥ ২৩

ভাষ্য। অরং চ শ্রেরেমার্গপ্রতিপক্ষী কইতমো দোষ: সর্বানর্থপ্রাপ্তিহত্ত্ব নিবার্যান্টেতি তৎপরিহারে বল্লাধিক্যং কর্ত্তবানিত্যাহ ভগবান্। শর্মোত
উৎসহতে ইহৈব জীবরেব যঃ সোদুং প্রসহিত্যু প্রাক্ পূর্বং শরীরবিমাক্ষণাদামরণাং। মরণসীমাকরণং জীবতোহ্যগুভাবী হি কামক্রোধোন্তবো বেগোহনস্তনিমন্তবান্ হি স ইতি যাবলারণং তাবর বিশ্রন্তণীর ইত,র্যঃ। কাম ইন্তির্গোচরপ্রাপ্তে
ইট্রে বিবরে শ্রারমাণে হর্যামাণে বাহাত্তে স্থাহেতৌ যা গর্মিগুকা স কামঃ। ক্রোধশ্চ
আত্মনঃ প্রতিকৃত্বের হুঃখহেতুর্ দৃগুমানের অর্যামাণের বা বো দ্বেয়ঃ স ক্রোধঃ।
তৌ কামক্রোধা উত্তবো যক্ত কামক্রোধান্তবো বেগঃ। গাত্রপ্রকল্পপ্রক্রেমন্দেইার্গপ্রান্তবানাদিনিক্যঃ ক্রোধোন্তবো বেগঃ। গাত্রপ্রকল্পপ্রক্রেমন্দ্রের্গপ্রটান্তবনক্রাদিনিক্যঃ ক্রোধোন্তবো বেগঃ। তং কামক্রোধান্তবং বেগং য উৎসহতে
প্রসহতে সোদুং প্রসহিত্যু স যুক্তো বোগী স্থানী চেহ লোকে নরঃ। ৩

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লেকণ্ড তাৎপর্যাগাহ—অয়ুক্ষেতি। শ্রেরো-দার্শপ্রতিপক্ষরং কঠতমধ্যে হেতৃতক্তৈব হেম্বস্তরমাহ—সূর্ক্তে। প্রথমাধি- কাল কর্ত্তবাদে হেতৃং স্চয়তি—ত্নিবার্য্যইতি। প্রাসিদ্ধং হি কামক্রোধান্তবাল বেগল গ্রনিবার্দ্ধং বেন মাতরমণি চাধিরোহতি পিতরমণি হন্তি ভনবশুং পরিহর্ত্তবাং দশরতি—শক্রোতীতি। বংগাল্জং বেগং বহিরনর্থরপেণ পরিণামাৎ প্রাণেব দেহান্তরুৎপর্য়ং বঃ সোদৃং ক্ষমতে তং স্তৌতি—সংযুক্তইতি। মরণসীমাকরণক্ত তাৎপর্য্যমাহ—মরণেতি। প্রাসিদ্দিরী হি শব্দঃ। তত্ত্ব হেতৃমাহ—আনস্তেতি।, ব্যাধ্যপহতানাং রদ্ধানাঞ্চ কামাদিবেগো ন ভবতীত্যাশল্যাহ—যাবদিতি। কামক্রোধান্তবং বেগং ব্যাধ্যাতুমাদ্দৌ কামং মনোবিকারবিশেবদ্বেন ব্যাচ্টে—কাম ইতি। কথ্যক্ত মনোবিকারবিশেবহুং তদাহ—ইন্দিয়েতি। কামো গৃধিস্থক্তেতি পর্যায়াঃ সন্তঃ শক্ষা মনোবিকারবিশেবহুং তদাহ—ইন্দিয়েতি। কামো গৃধিস্থক্তিত পর্যায়াঃ সন্তঃ শক্ষা মনোবিকারবিশেহ পর্যবন্তরীত্যর্থঃ। ক্রোধন্দ মনোবিকারবিশেবক্তবিদ্যাহ—ক্রোধন্দিতি। তমেব ক্রোধ্যক্তি—আ্রুনইতি। এবং কামক্রোধে ব্যাধ্যায় তয়োরুৎকট্যাবন্থান্তনা বেগক্ত তাভ্যামুৎপত্তিমুপক্তক্তি—তাবিতি। বথোক্তবেগাবগ্রমাপারমুপদিশতি—রোমাঞ্চনন্ত্রটনেত্রেত্যাদিনা। উভরবিধ্বেগং যো জীবরেব সোচৃং শক্রেতি তং প্রক্রমির্য্যক্তন স্তৌতি—তমিত্যাদিনা।

অনুবাদ। এইটিই মোকমার্গের প্রতিপক্ষ এবং মত্যস্তক্ষেশসাধ্য দোব এবং ইহাই সকল মনর্থপ্রাপ্তির হেতু, এই মস্ত ইহার নিবারণ করা উচিত এবং ইহার পরিহার করিবার হুন্ত বিশেষ যুত্র করিতে হুইবে, ইহাই বলিতেছেন ভগবান্—

এই লোকেই (মর্থাৎ) জীবিত অবস্থায় যে ব্যক্তি মরণের পূর্বকাল পর্যন্ত কামক্রোগোন্তব বেগ সহন করিছে সমর্থ হয়; মরণ পর্যন্ত সীমা করিবার হাৎপর্য্য এই যে, কাম ও ক্রোধ হইতে উৎপন্ন বেগ, জীবিতব্যক্তির পক্ষে অবশুদ্ধারী; কারণ তাহার নিমিত্ত অনস্তঃ। স্থতরাং আমরণ উহাকে বিশ্বাস করিবে না। অভিলবিত স্থপকর বন্ধ ইন্দ্রিরের সহিত মিলিত হইলে মথবা শ্রুত্ত হিল বিশ্বা কোন কারণ বলতঃ স্বরণপথে উপস্থিত হইলে, তাহার উপর বে গর্জি অর্থাৎ ভূঞা হয়, তাহারই নাম কাম। যে সকল বন্ধ হঃথহেতু, স্থতরাং আত্মার প্রতিকৃল, সেই সকল বন্ধর দর্শন শ্রবণ বা শ্রবণ হইতে ঐ সকল বন্ধর উপর যে বের উৎপন্ন হয়, তাহাকেই ক্রোধ বলা যায়। সেই কাম ও ক্রোধ হইতে যে বেগ উৎপন্ন হয়, তাহাকেই কাম কামেরের বেগ বলা বায়। শরীরে রোমাঞ্চ হইনেত্র ও ক্রইবদন প্রকৃতি চিক্তের হারা অন্তঃকরণের বে চাঞ্চল্য অনুষ্ঠিত হয়, তাহারই নাম কামোন্তব বেগ বলা বায়। ক্রেক্তির বিশ্ব করে, তাহারই নাম কামোন্তব বেগ।

শরীরে কম্প, প্রায়েদ, অধরোঠের দংশন, আরক্ত নেত্র প্রভৃতি চিচ্ছের অন্তঃকরণের যে চাঞ্চল্য অন্থমিত হয়, তাহাকে ক্রোধোন্তর বেগ কহা যায়। বে ব্যক্তি সেই কাম এবং ক্রোধ হইতে উৎপন্ন বেগকে সহন করিতে সমর্থ হন, তিনিই যুক্ত (অর্থাৎ) যোগী এবং ইহলোকে তিনিই সুধী॥২৩

ষোহন্তঃস্থাহন্তরারামস্তথান্তর্জ্যোতিরেব যঃ। স যোগী ভ্রন্ধনির্বাণং ভ্রন্মভূতোহধিগচ্ছতি॥ ২৪

আনুরা। যা অন্তঃস্থা অন্তরালামা তথা যা অন্তর্জ্যাতিঃ এব স বোগী একাভূতঃ [সন্] ব্রহ্মনির্কাণম্ অধিগচ্ছতি (প্রাপ্রোতি)॥ ২৪

অনুবাদ। যিনি ষয়:স্থ, যাঁহার মন্তর অর্থাৎ আত্মাতেই ক্রীড়া এবং আত্মাই যাঁহার নিকট জ্যোতিঃস্বরূপে প্রকাশমান, সেই যোগী ব্রহ্মস্বরূপ হইয়া [এই জীবনেই] ব্রহ্মনির্বাণ লাভ করিয়া থাকেন॥ ২৪

ভাষ্য। কণংভূতণ বৃদ্ধি স্থিতো বৃদ্ধ প্রাপ্নোতীত্যাই। যোহস্কঃস্থঃ অস্তরান্মনি স্থং যন্ত সোহস্তঃস্থঃ তথা অস্তরেবাত্মনি আরাম আক্রীড়া যন্ত সোহস্তরারামস্তবৈবাস্ত্রাইন্মব ক্যোতিঃ প্রকাশো যন্ত সোহস্তর্জ্যোতিরেব য স্কৃদৃশঃ স যোগী বৃদ্ধনির্জ্যাণ বৃদ্ধি ক্রি নির্কৃতিং মোক্ষমিই জীবন্নেব বৃদ্ধান্ত প্রাপ্রামিক্তিত প্রাপ্নোতি॥ ২৪

আনন্দগিরিটীকা। আনস্থাত্যস্তমন্তরঙ্গমাথ্যমাত্রনিরতথং দর্শরন্ প্রকৃতং বন্ধবিদ্দেব বিশিন্তি কথ্যুত্তে কি । বথাস্তরের স্থাং ন বাহৈর্বির্বয়ন্তথাস্তরের জ্যোতির্ন শ্রোত্রাদিভি: অতো বিষয়াস্তরবিজ্ঞানরহিত ইত্যাহ—তথেতি ।
বধোক্তবিশেষণসমাধিমান্ জীবরের মুক্তিমধিগচ্ছতীতাাহ—স যোগীতি । আত্মস্তন্ধাক্ত বাহ্যবিষয়নিরপেক্ষথং বিবন্ধিত্যসন্তর্গরামত্বক ব্যাদিবিষয়াপেক্ষামন্তরেণ কীড়াপ্রযুক্তফলভাক্ত্মভিমতমিন্তিয়াদিজ্যপ্রকাশস্থ্যমাথ্যজ্যোতিইমিন্তম্ । বধোক্তবিশেষণসম্পন্ন: সমাহিতশ্য জীবরের ব্রন্ধভাবং প্রাপ্নোভি
বন্ধাণ পরিপূর্ণে নির্বৃতিং সর্বানর্থনিবৃত্ত্ব্পলক্ষিতাং স্থিতিমনতিশ্বানন্দাবিজ্ঞাবক্ষণাং প্রাপ্নোতীত্যাহ -- য্ স্ট্রন্ধ ইতি ॥ ২৪

অনুবাদ। কি প্রকার হইলে লোকে ব্রন্ধে স্থিত হইয়া ব্রন্ধ প্রাপ্ত হইতে পারে ? [তাহাই বলা যাইতেছে] বে "অন্তঃ ন্থ" (অন্তঃ শব্দের অর্থ আছা) আদ্মাতেই বাহার ন্থপ, তাঁহাকেই অন্তঃ ন্থপ বলা বার, বে ব্যক্তি "অন্তরারাম" আদ্মাতেই বাহার আরাম (অর্থাৎ) আক্রীড়া, তিনিই অন্তরারাম, এইরপ বিনি আন্তর্জ্যোতিঃ, আত্মাই বাঁহার জ্যোতিঃ (অর্থাৎ দর্মনা) প্রকাশ, তিনিই অন্তর্জ্যোতিঃ। এই প্রকার লক্ষণ-সম্পন্ন যিনি যোগী, তিনি ব্রন্ধনিম্পাণ (অর্থাৎ) অক্ষেতেই 'নিবৃতি' মোক্ষ লাভ করেন; (অর্থাৎ) এই লোকেই বাঁচিরা থাকিতে থাকিতে দেই ব্যক্তি ব্রন্ধের স্বরূপ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ২৪

> লভন্তে ব্রহ্মনির্বাণমূষয়ঃ ক্ষীণকল্মষাঃ। ছিন্নদৈধা যতাত্মানঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ॥ ২৫

অনুয়া। ক্ষীণকল্মবাঃ ছিল্লবৈধা যতাত্মানঃ সর্বভৃত্তিতে রতাঃ ঋষরঃ ব্রহানিকাণং লভত্তে॥ ২৫

অনুবাদ। বিগতপাপ সংশয়শৃষ্ট সমাহিতচেতা এবং সর্বভৃতহিতনিরত
শবিগণ বন্ধনির্বাণ লাভ করিয়া থাকেন॥ ২৫

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ ব্রন্ধনির্বাণং মোক্ষ্যরঃ সম্যগ্দর্শিনঃ সংস্থাসিনঃ কীণ-কল্মবাঃ ক্ষীণপাপাদিদোষাশ্ছিরবৈধাশ্ছিরসংশয়া যতাত্মানঃ সংযতে ক্রিয়াঃ সর্বভৃত-হিতে রতাঃ সর্বেষাং ভূতানাং হিতে সামুক্ল্যে রতাঃ সহিংস্কা ইত্যর্থঃ ॥ ২€

আনন্দ গিরিটীকা। মুক্তিংগেজ্জানত সাধনান্তরনাত—কিঞ্জেতি।
বজ্ঞাদিনিত্যকর্দ্মান্থলানং পাপাদিলক্ষণং কল্মবং ক্ষীয়তে তত্ত প্রবণান্তার্ত্তেঃ
সম্যক্ দর্শনং জান্বতে ততো মৃক্তির প্রবন্ধেন ভবতীত্যাহ—লভন্ত ইতি। জ্ঞানপ্রাপ্ত্যাপান্তরং দর্শন্তি—ছিন্ত্রেতি। শ্রবণাদিনা সংশ্যনিরসনং কার্য্করন্ধ্রনিরমনঞ্চ দরালুছেনাহিংসকছমিত্যেতদপি সম্যগ্জ্ঞানপ্রাপ্তে।
ক্ষের্ব্যাধ্যানং স্পষ্টমান ব্যাধ্যান্তে। ২৫

অনুবাদ। আরও "ঋবি" সমাগ দর্শনশীল সংস্থাসী, "কীণকল্মব" পাপাদি-দোবহীন, "ছিরুবৈধ" সংশয়শৃত্ত, "যতাত্মা" সংবতেক্রিয় ও সর্বভূতের মঙ্গলপ্রারণ (অর্থাৎ) অহিংসক ব্যক্তিগণ "ব্রন্ধনির্বাণ" মোক্ষ লাভ করিয়া থাকেন॥ ২৫

> কামক্রোধবিযুক্তানাং যতীনাং যতচেতসামৃ। অভিতো ব্রহ্মনির্ব্বাণং বর্ত্ততে বিদিতাত্মনাম্॥ ২৬

অন্বয়। বিদিতাম্বনাং কামক্রোধবিযুক্তানাং বতচেতসাং বতীনান্ অভিতঃ (দেহপাতাহুভয়তঃ) ব্রন্ধনির্মাণং বর্ত্তে॥ ২৬

অমুবাদ। বাহারা সম্যগ্দশী, বাহাদের কাম ও ক্রোধ নাই এবং বাহারা সংযতচেতা সেই যতিগণের উভয়তঃ (অর্থাৎ দেইপাতের পূর্বেও পত্রে) মোক হইরা থাকে॥ ২৬ করা বার, তাহারই নাম কর্মবোগ; সেই কর্মবোগ ক্রমে সন্ত্তি ক্কামপ্রাপ্তিও সর্ক্রন্ম-সংস্থাস দারা মোক্রের কারণ হর, এই কথা ভগবান্ পদে
পদে বলিয়াছেন ও বলিবেন। অনন্তর এইক্রণে সম্যগদর্শনের অন্তরক্ষমাধন
বে ধ্যানবোগ, তাহা বিস্তরতঃ বলিব এই ভাবিয়া ভগবান্ ধ্যানবোগের হ্রেলক্রানীর কতকগুলি প্লোকের উপদেশ করিতেছেন। স্পর্ল (অর্থাৎ) শব্দাদি
বাহ্ন বিষয়কে বাহিরে করিয়া [ইহার তাৎপর্য্য এই বে] শ্রোত্র প্রভৃতি ইন্দ্রির দারা বুদ্ধির মধ্যে বাহ্মশব্দাদি বিষয় প্রবেশিত হইলেও এ সকল
বিবরের চিন্তা না করাই বাহ্মশব্দাদি বিষয়কে বাহিরে করা হয়। সেই
শব্দাদি বিষয়কে বাহিরে রাথিয়া ও চকুর্দ্রকে ক্রম্নের মধ্যে সন্নিবেশিত
করিয়া (এখানে ক্রমা এই পদটির অন্তর্ম্ব করিতে হইবে) এবং প্রাণ ও অপান
নামক বায়্বর্মকে নাসাভ্যন্তর্চারী ও সমান করিয়া—

বতে ক্রির ইত্যাদি (শ্লোকের অর্থ) "যতে ক্রিয়-মনোবৃদ্ধি" ইক্রির, মন ও বৃদ্ধি বাঁহার যত (অর্থাৎ) সংযত [হইরাছে] তিনিই যতে ক্রিয়মনোবৃদ্ধি; "মূনি" [আত্মার] মনন করা নিবন্ধন সংক্রাসীই মূন [শন্ধের হারা অভিহিত হম]; "মোকপরারণ" যাঁহার দেহের স্থিতি এই প্রকার এবং মোক্ষই বাঁহার পরম অরন (অর্থাৎ) পরাগতি তিনিই মোক্ষপরারণ মূনি হইবেন। "বিগতে ছাভার ক্রোধ" ইচ্ছা ভর এবং ক্রোধ এই তিনটি যাঁহার অপগত হইরাছে, তিনিই বিগতে ছাভারকোধ; যে সংস্থাসী সর্বাদা এই প্রকারে অবস্থান করিতে পারেন, সেই ব্যক্তি মুক্তই হইরা আছেন [জানিবে]; তাঁহার পক্ষে অন্ত যোক্ষ কর্ত্তব্য [বিলায়া উপদিষ্ট] হইতে পারে না (অর্থাৎ মোক্ষই তাঁহার স্বাভাবিক অবস্থা ইইরা পড়ে; স্থতরাং অজ্ঞানান্ধ ব্যক্তির প্রেম্ম বেমন মোক্ষ তাহা হইতে ভির বিলয়া কর্ত্তব্য ইইয়া থাকে, তাঁহার প্রেম্ম বেমন মোক্ষ তাহা হইতে ভির বিলয়া কর্ত্তব্য ইইয়া থাকে, তাঁহার প্রেম্ম বেমন হার বা) ॥ ২৭—২৮

ভোক্তারং যজ্ঞতপদাং দর্ববেলাকমহেশ্বরম্। স্থ্যদং দর্ববিভূতানাং জ্ঞাত্বা মাং শান্তিমূচ্ছতি॥ ২৯

আন্ময়। যজতপদাং ভোক্তারং দর্মভূতানাং স্থলদং দর্মদোক্মহেশ্বরং মাং কাছা [দ সংস্থাদী] শাস্তিম্নাছতি (লভতে)।। ২৯

- অমুবাদ। আমি বজ ও তপতা-সৰ্হের তোজা, সকল ভূতের স্বৰুত্

এবং সর্বলোকের মহেশ্বর, আমাকে জানিয়াই (পুর্ব্বোক্ত সংস্থাসী) শাস্তি লাভ করিয়া থাকেন।। ২৯

ভাষ্য । এবং সমাহিতচিত্তেন কিং বিজ্ঞেরমিত্যচাতে—ভোক্তারং বজানাং তপসাঞ্চ কর্ত্তরপেণ দেবতারপেণ চ সর্বলোকমহেশ্বরং সর্বেবাং লোকানাং মহান্তমীশ্বরং সর্বলোকমহেশ্বরং স্থহদং সর্বভূতানাং সর্বপ্রাণিনাং প্রভূতাকার-নিরপেকতরোপকারিণং সর্বভূতানাং ক্রদরেশরং সর্বকর্মফলাধ্যকং সর্বক্রতারাক্ষণং নারারণং জাত্বা শান্তিং সর্বসংসারোপরতিম্ ঋচ্ছতি প্রাণ্ডোতি॥ ২৯

আনন্দ্গিরিটীকা। অধিকারিণা বথোক্তন্ত কর্ত্ব্যাভাবে জ্ঞাভব্যমণি
নাজীত্যাশক্ষ্য পরিহরতি—এব্মিত্যাদিনা। প্রসিদ্ধ ভোক্তারং ব্যবচ্ছিনন্তি—
সর্ব্বলোকেতি। ততোহন্ত বন্ধবিপর্যয়াবিতি হায়েন সর্বাফলদাভূমং দর্শয়তি—মুহাদমিতি। উক্তেশরজ্ঞানে ফলং কথয়তি—জ্ঞাত্ত্বতি। বজ্ঞের্
ভপঃস্ক চ দিধা ভোক্তমং ব্যনক্তি—কর্ত্ত্ রূপেণেতি। হিরণ্যগর্ভাদিব্যবচ্ছেদার্থং বিশিন্তি—মহান্তমিতি। বপরিকরোপকারিণং য়াজানং ব্যাবর্ত্তরতি
—প্রত্যুপকারেতি, ঈশরক্ত তাটন্থাং ব্যাদক্ততি—সর্বব্যভূতানামিতি। তর্হি
তত্ত্ব তত্ত্ব ব্যবস্থিতকর্মতৎকলসংস্থিতং স্থাদিত্যাশক্ষাহ—সর্ববিকর্ম্মেতি। ন চ
তক্ত বৃদ্ধিতত্ত্ব তিসম্বন্ধাহিপি বস্তুতোহস্তীত্যাহ—সর্ববিপ্রত্যুক্তে। যথোক্তেশ্বরপরিজ্ঞানকলমভিদ্যাতি—মাং নারায়ণ্মিতি। তদেবং কর্ম্মেণাক্তাম্থ্যসংজ্ঞাসাপেক্ষয় প্রশন্তম্বেহিপি ততাে মুখ্যসংক্রাসক্রাধিক্যাৎ তন্ধতাে বৃদ্ধিভদ্মাদিযুক্তক্ত কামক্রোধান্তরং বেগমিইবে সােচুং শক্তক্ত শমদ্যাদিমতাে বােগাধিক্বতক্ত
স্বং পদার্থাভিজ্ঞক্ত পর্মান্থানং প্রত্যক্ত্বন জানতাে মুক্তিরিতি সিদ্ধ্য। ২৯

অনুবাদ। এই প্রকার সমাহিত চিত্ত হইয়া কি জানিতে হইবে, তাহাই বলা ষাইতেছে বে, "যজ্ঞ এবং তণোনিচরের কর্ত্তা ও দেবতারূপে ভোক্তা" "সর্ব্ধ-লোকমহেশ্বর" অর্থাৎ সকল লোকের মহান্ ঈশ্বর, এবং সর্ব্বভূতের (অর্থাৎ) প্রকল প্রাণীর স্কৃষ্ণ (অর্থাৎ) প্রত্যুপকারের অপেক্ষা নাই অথচ সর্ব্বদা সকল জীবের উপকার্নিরত, সকল প্রাণীর হাদরেশ্বর, সকলের বৃদ্ধির সাক্ষী ও সকল কর্ম্মকলের অধ্যক্ষ নারারণ স্বরূপ আমাকে জানিয়া শান্তি (অর্থাৎ) সকল প্রকার সংসারের নিবৃত্তি (বোক্ষ) প্রাপ্ত হন ॥ ২৯

ইতি পঞ্চমোহধ্যারঃ সমাপ্তঃ।

অথ ষষ্ঠোহধ্যায়ঃ।

--:•:---

শ্রীভগবামুবাচ।

অনাশ্রিতঃ কর্মফলং কার্য্যং কর্ম্ম করোতি যঃ। স সন্ন্যাসী চ যোগী চ ন নির্মান চাক্রিয়ঃ॥ ১

অন্থয়। ব: কর্মকলমনাশ্রিত: [সন্] কার্যাৎ কর্ম করোতি স সন্ন্যাসী চ বোগী চ [বিজ্ঞের:]; ন নিরন্ধি: ন [বা] অক্রিয়: [এব সন্ন্যাসী বোগী বা ভবতি]॥১

অকুবাদ। কর্মান্তর বাসনা পরিত্যাগ করিয়া বে ব্যক্তি কর্ত্তব্য কর্মের অফুটান করেন, তিনি সন্ন্যাসী ও বোগী [বলিয়া উক্ত হন]; যে ব্যক্তি অধি পরিত্যাগ করিয়াছেন রা ক্রিয়া পরিত্যাগ করিয়াছেন, তিনিই যে সন্ন্যাসী বা বোগী হইবেন, তাহা নহে॥ ১

ভাষ্য। অতাতানন্তরাধ্যারান্তে ধ্যান্যোগশু সম্যগ্দর্শনং প্রত্যন্তর রক্ষন্ত হত্ততাঃ লোকাঃ—ক্ষণনি কথা বহিরিত্যাদর উপদিষ্টাঃ তেবাং বৃত্তি-ছানারোহরং বর্টোধ্যার আরভ্যতে। তত্র ধানযোগশু বহিরক্ষং কর্ম ইতি বাবদ্ধ্যানযোগারোহগাসমর্থঃ তাবৎ গৃহংশুন অধিক্রতেন কর্ত্তব্যং কর্ম্মেত্যতন্ত ওং ভৌতি। নমু কিমর্থং ধ্যানযোগারোহগাসীমাকরণং যাবতা অনুষ্ঠেরমেব বিহিতং কর্ম্ম যাবজ্জীবম্ । নমু কিমর্থং ধ্যানযোগারোহগাসীমাকরণং যাবতা অনুষ্ঠেরমেব বিহিতং কর্ম্ম যাবজ্জীবম্ । ন, "আরুক্সক্রমামুনির্গণিং ক্রম কারণমূচ্যতে" ইতি বিশেষণাৎ আরুক্ত চ শমেনের সংবদ্ধকরণাৎ। আরুক্সক্লোঃ আরুক্ত চ শমং কর্ম চোভরং কর্ম্বরেরভেনেন বিশেষণং বিভাগকরণং চানর্থকং স্থাৎ।

ভত্তাশ্রমিণাং কশ্চিদ্যোগমার্ক্তর্ক্তরভ্যার্ক্তর কশ্চিদন্তে নার্ক্তর্করে ম চার্ক্টান্তানপেক্য আরুর্ক্তরার্ক্ত চেতি বিশেষণং বিভাগকরণং চ উপপত্ততে এবেতি চেং, ন ভত্তৈর ইতি বচনাং প্নর্যোগগ্রহণাচ্চ যোগার্ক্তভেতি ব আসীং পূর্বং যোগমার্ক্তর্ক্তর্ত্তরার্ক্ত শমএব কর্ত্তব্যং কারণং যোগফলং প্রভ্যাচ্যতে ইতি। অতো ম বাবজ্ঞীবং কর্ত্তব্যপ্রপ্রাপ্তিঃ ক্সচিদ্সি কর্ণঃ, বোগবিশ্রট- বঁচনাচ্চ। গৃহত্বস্ত চেৎ কর্মিণো বোগো বিধিতঃ বর্ষ্তেধ্যায়ে স যোগবিত্রটোছণি কর্ম্মগতিং কর্মফলং প্রাপ্রোতি ইতি তক্ত নাশাশকাম্পপনা স্থাৎ। অবশ্রং হি ক্ষতং কর্ম কামাং নিত্যং বা মোক্ষস্ত নিত্যখাদনারভ্যকে স্বং ফলম্ আরগুড় এব। নিত্যস্ত চ কর্মণো বেগানবৃদ্ধখাৎ ফলেন ভবিতব্যমিত্যবোচাম অন্তথা বেদ-স্থানর্থক্যপ্রসঙ্গাদিতি। ন চ কর্মণি সতি উভয়বিত্রষ্টবচনমর্থবং-কর্মণো বিজ্ঞংশ-কারণামূপপত্তেঃ। কর্ম কৃত্যীশ্বরে সংস্তত্তেত্যতঃ কর্ত্তরি কর্ম ফলং নারভত ইতি চেন্ন; ঈশ্বরে সন্ন্যাসন্থাধিকতরফলহেত্যোপপত্তেঃ। মোক্ষাহৈবতি চেৎ কর্মণাং ক্রতানামীশ্বরে স্থানো মোক্ষাহৈব ন ফলাস্থরায় যোগসহিতো যোগাচ্চ বিত্রষ্ট ইত্যতন্তং প্রতি নাশাশরা যুক্তেবেতি চেন্ন, "একাকী যতচিত্তায়া নিরাশীর-পরিগ্রহং" "ব্রহ্মচারিব্রতে স্থিতঃ" ইতি কর্ম্মগ্রাসবিধানাৎ।

ন চাত্র ধ্যানকালে স্বীসহায়য়াশকা বেন একাকিছং বিধীয়তে। ন চ গৃহত্বপ্ত
নিরাশীরপরিপ্রহ ইত্যাদিবচনসমূক্লম্। উভয়বিভ্রষ্টপ্রশাস্থপদেশেচ। আনাপ্রিভ
ইত্যনেন কর্মিণএব সন্ন্যাসিছং যোগিছং চোক্রং প্রতিবিদ্ধং চ নিরয়েরজিয়প্ত চ
সন্ন্যাসিছং যোগিছঞ্চেতি চেৎ ন, ধ্যানযোগং প্রতি বহিরয়প্ত সতঃ কর্ম্মণঃ ফলাকাজ্যাসন্ত্যাসপ্ততিপরছাং। ন কেবলং নিরয়িরজিয়এব সন্ন্যাসী বোগীচ কিন্তর্হি ?
কর্ম্মী অপি কর্মফলাসঙ্গং সন্ন্যুক্ত কর্মযোগমন্থতির্চন্ সহগুদ্ধার্থং স সন্ন্যাসী চ বোগী
চ ভবতীতি স্তুয়তে। ন হৈকেন বাক্যেন কর্মফলাসঙ্গসন্থাসন্ততিশ্বপ্রশাস্থিতিবেশ্ছে উপপ্রতে। নচ প্রসিদ্ধং নিরয়েরজিয়প্ত পরমার্থসন্থাসিনঃ শ্রুতিক্রমাণতিহাসযোগশান্ত্রের্ প্রসিদ্ধং সন্ন্যাসিত্বং বোগিত্বক্ষ প্রতিবেশ্ভি ভগ্রান্।
অতিবেশ্যাচিহাসযোগশান্ত্রের্ প্রসিদ্ধং সন্ন্যাসিত্বং বোগিত্বক্ষ প্রতিবেশ্ভি ভগ্রান্।
অবচনবিরোধাচে।

সর্কারণ মনসা সংগ্রন্থ নৈব কুর্কন্ ন কাররন্নান্তে মৌনী সন্ধান্তা বেল কেনচিদনিকেতঃ স্থিরমতির্বিহার কামান্ যং সর্কান্ প্মাংশ্চরতি নিস্পৃহং সর্কারক্তণ পরিত্যাগীতি চ তত্র তত্র স্বচনানি দর্শিতানি তৈর্বিরুধ্যেত চতুর্থাশ্রমপ্রতিবেধঃ। তত্মান্ত্রনর্বোগমারুরুক্ষোঃ প্রতিপন্নগাহ স্থান্য অন্নিহোত্রাদি ফলনিরপেক্ষমন্ত্রীরমানং ধ্যানবোগারোহণদাধনত্বং সন্থভজিন্বারেণ প্রতিপন্থতে ইতি স সন্ন্যাসী বোগী চেভি ক্ষতে। অনাঞ্জিতঃ ন আশ্রিতঃ অনাশ্রিতঃ কিন্ ? কল্মফলং কর্লাঃ ফলং বং তৎ অনাশ্রিতঃ কর্মকলত্কাবিরহিত ইত্যর্থঃ। বো হি কর্মফলে তৃক্ষাবান্ স কর্মক কলমাশ্রিতো ভবতি অন্তরং তু ত্রিপরীতঃ, অভোহনাশ্রিতঃ কর্মকলম্ এবজুতঃ সন্ কার্যাং কর্ম্বন্য নিত্যং কাম্যবিপরীতমন্নিহোত্রাদিকং করোতি নির্কর্মন্ত। বং কিন্দিন্ত হিত্যব্যধ্নাহ স সংভাগী চ বোক্ষ চেতি। সম্যাসঃ পরিত্যাগঃ স যস্যান্তি স সম্যাসী চ যোগী চ যোগনিচ দ্বসমাধানং স বস্যান্তি স যোগী চ ইত্যেবং গুণদম্পান্নাছরং মস্তব্যোন কেবলং নিরন্তির এব সংস্থাসী যোগীচ ইতি মস্তব্যঃ। নির্গতা অগ্নয়ঃ কর্মাঙ্গভূতা যমাৎ সঃ নির্গ্রিঃ অক্রিরশ্চ অন্ত্রিসাধনা অপ্যবিশ্বমানাঃ ক্রিয়াস্তপোদানাদিকা যস্য অসৌ অক্রিয়ঃ॥ >

আনন্দগিরিটীকা। ধ্যানধােগ প্রস্তাবানস্তরং তদেশ্যাগ্যতাহেতৃকর্মণঃ স্তুতিং ভগবামুক্তবানিত্যাহ—জ্রীভগবানিতি। পূর্ব্বোত্তরাধ্যারয়ো: সঙ্গতি-মভিদধানো বৃত্তমনুষ্ঠাণ্যায়ান্তরমবতারয়তি—অতীতেতি। সমাগদর্শনপ্রকরণে ধ্যানযোগস্য প্রদশাভাবং ব্যাদস্যতি—সমাগিতি। সংগ্রহবিবরণরোরতী-তানস্তরাধ্যাররোযুঁক্তং হেতুহেতুমন্ত্রনিতি ভাব:। অধ্যারসম্বন্ধমভিধার অনাশ্রিত: কর্মফলমিত্যাদিশ্লোকবন্ধস্য তাৎপর্য্যমাহ—তত্ত্রেতি। কর্মধোগদ্য সংস্থাদহেতো-মর্য্যাদাং দর্শয়িতৃং সাক্ষঞ্ বেগেং বিচারয়িত্মধ্যায়ে প্রব্রুত্তে সতীতি সপ্তম্যর্থঃ। কর্ত্তব্যং কর্ম্মেত্যেবং প্রতিভাসং ব্যুদস্যতি—গৃহস্থেন্তি। কর্ত্তবাত্বং স্থতিযোগতানতঃশব্দার্থঃ সমুক্তরবাদী সীমাকরণমান্দিপতি—নৃত্তিতি ষাবজ্জীবঞ্রতিবশাৎ ধানারোহণসামর্থ্যে সত্যপি কর্মামুষ্ঠানস্থ হর্মারম্বাদিতি। হেতৃমাহ— –যাবতেতি। ভার্য্যাবিয়োগাদিপ্রতিবদ্ধাদ্বাবজ্জীবশ্রতিচোদিত-কর্মানমুষ্ঠানবৎ বৈরাগ্য প্রতিবন্ধাদপি তদনমুষ্ঠানসম্ভবাদ্ভগবতো বিশেষবচনাচ্চ ন যাৰজ্জীবং কর্মামুষ্ঠান প্রসক্তিরিতি পরিহরতি। নারুকুকুক্রোবিতি। উক্তমেবার্থং ব্যতিরেক্দারেণ বিরুণোতি—আরুরুক্টোরিত্যাদিনা। আরোচুমিচ্ছতীতি আক্রকক্ষিত্যত্ত আরোহণেছা বিশেষণমারোহণং ক্লভবানিভ্যারত ইভাত্ত পুনরিছাবিষয়ভূতমারোহণং বিশেষণমেবং শমকর্মবিষয়মোর্ভেদেন বিশেষণং মর্ব্যাদাকরণাদ্ধীকরণে বিরুদ্ধমাপত্মেত, তরোরের বিভাগকরণঞ্চ ভাগবতং সীমানদীকারে ন যুদ্ধ্যেতেতার্থ:।

বিশেষণবিভাগকরণয়োরয়থেগপারিমাশকতে—তত্ত্রিতি। ব্যবহারভূমিঃ
সপ্তম্যর্থ:, বটা নির্দ্ধারণে। ভবছধিকারিণাং ত্রৈবিধ্যং তথাপি প্রকৃতে বিশেষণাদৌ
কিমারাতমিত্যাশক্ষাং তৃতীরাপেক্ষরা তহুপপত্তিরিত্যাহ—তানপেক্ষ্যেতি।
আক্রন্ধারার্ভ্রন্ত চ ভেদে তত্তৈনেতি প্রকৃতপরামর্শাহ্মপপত্তিরিতি দ্বরতি—ন
তত্ত্বেতি। ব্যক্তাক্রক্ষ্ণ প্রবমপেক্য আক্রন্ধারিতি বিশেষণং তন্ত চ কর্মারোহণকারণমনার্ভ্রন্ধ প্রবমপেক্যার্ভতেতি বিশেষণং তন্ত চ শমঃ সংস্থানোবোগক্রপ্রাথে কারণ মিতি বিশেষণবিভাগকরণরোক্রপাত্তিত্বলাক্রক্ষেনার্ভ্রন্থ

চ ভিন্নথাং প্রকৃতপরামর্শিনঃ তচ্ছকভামুপপত্তেন যুক্তমিখং বিশেষণাত্যপপাদন-মিতার্থ:। কিঞ্চ যোগমারুককোন্তদারোহণে কারণং কর্ম্মেত্যুক্তা পুনর্যোগারুড়-ভেতি যোগশব্দপ্রয়োগাৎ যো যোগং পূর্বমারুরুকুরাসীৎ তভৈবাপেক্ষিতং যোগ-মারুচন্ত তৎফলপ্রাপ্তে কর্ম্মণস্থাসঃ শমশব্দবাচ্যো হেতুদ্বেন কর্ত্তব্যইতি বচনা-দাকককোরারতেন্ত চাভিন্নত্বপ্রতাভিজ্ঞানার তরোভিন্নতং শক্তিকং শক্যমিত্যাহ— পুনরিতি। বন্ধু বাবজ্জীবশ্রতিবিরোধাৎ যোগারোহণসীমাকরণং কর্মণো-হয় চিতমিতি তত্তাহ—ছাত ইতি। পুর্নোক্তরীত্যা কর্মতন্ত্যাগরোর্নি-ভাগোণপত্তো শ্রুতেরন্তবিষয়ত্বাৎ যোগমারুচন্ত মুমুক্ষোর্জিজ্ঞাসমানন্ত নিত্যনৈ-মিজিককর্মবিপি পরিত্যাগসিদ্ধিরিতার্থ:। ইওঁশ্চ যাবজ্জীবং কর্ম্ম কর্ম্মবাং ন ভবতীত্যাহ—যোগেতি। সংস্থাদিনো যোগভ্ৰষ্টস্থ বিনাশশঙ্কাবচনাল বাৰজ্জীবং কর্ম কর্ত্তব্যং প্রতিভাতীত্যর্থঃ। নমু যোগভ্রষ্টশব্দেন গৃহস্থলৈখালাং তল্ভৈ-वाश्वित्रशास्त्र स्वागविधानात्मवागारताश्वरागारत मछानि यावब्जीवः कर्म कर्खवा-মিতি নেত্যাহ—গৃহস্থস্তেতি। তেনাপি মুমুকুণা ক্বতন্ত কর্মণো মোকাতিরিক্ত-ফ্লানারস্তক্ষাদ্যোগভ্রটোহসৌ ছিল্লাভ্রমিব নশুতীতি শঙ্কা-সাবকাশেত্যাশস্ক্যাহ— অবশ্যং হীতি। অপৌরুবেয়ারির্দোষাধেদাৎ ফলদায়িনী কর্মণঃ স্বাভাবিকী ব্ৰদ্বভাৰভ চ স্বতঃপিদ্ধান কৰ্মফল্মতো মোকাভিরিক্তভৈৰ ফল্ম কর্মারস্ককমিতি কর্মিণি যোগভ্রষ্টেহণি কর্মগতিং গচ্ছতীতি নিরবকাশা-শক্কেতার্থঃ।

নমু মুমুক্ণা কাম্যপ্রতিষিদ্ধরোরকরণাৎ ক্বরোশ্চ নিত্যনৈমিন্তিকরোর-কল্বাৎ কথং তদীয়ন্ত কর্মণো নিয়মেন ফলারম্ভকত্বং তল্লাহ—নিত্যন্ত চেতি।
চকারেণ নৈমিন্তিকং কর্মায়ক্বয়তে। বেদ-প্রমাণকত্বেহপি নিত্যনৈমিন্তিকরোর-ফলত্বে দোরমাহ—অন্যথেতি। ইতি কর্মণোহমুষ্ঠতন্ত ফলারম্ভকত্বঙৌব্যাৎ গৃহত্বো যোগল্রষ্টোহপি কর্ম্মগতিং গছতীতি ন তন্ত নাশাশক্ষেতি শেষঃ। ইত্যোহপি গৃহত্বো যোগল্রষ্টাহপি কর্ম্মগতিং গছতীতি ন তন্ত নাশাশক্ষেতি শেষঃ। ইত্যোহপি গৃহত্বো যোগল্রষ্টাহপান ভবতীত্যাহ—ন চেতি। জ্ঞানং কর্মচেত্যুভরং ততাে বিল্রষ্টোহয়ং নশ্রতীতি বচনং গৃহত্বে কর্মণি সতি নার্থবন্তবিত্রমলং তন্ত কর্মনিষ্ঠন্ত কর্মণাে বিল্রংশে হেল্পভাবাৎ তৎফলস্থাবশ্রক্তাদিত্যর্থঃ। কতন্ত কর্মণাে মৃমুক্ণা ভগবতি সমর্পণাং কর্ম্ভরি ফলানারম্ভক্তাদন্তি বিল্রংশ-কারণমিতি শহতে—কর্ম্মন্তি। রাজ্যারাধনবৃদ্ধ্যা ধনধান্তাদিসমর্পণস্থাধিক-কলহেত্বগোপনস্ভাদীশরে সমর্পণাং ন লংশকারণমিতি দ্বর্মতি—নেত্যাদিনা।
অধিক্ষলহেত্ব্যেহিণ মোক্ষহেত্ব্যমির্যভামিতি শহতে—মোক্ষায়েতি। তদেব

চোন্ধং বির্ণোতি—স্বকর্মণামিতি। সহকারিসামর্থ্যাৎ তম্ম ফলান্তরং প্রত্যুপারত্বাসিদ্ধিরিতি হেতৃং স্চরতি—যোগেতি ধ্যানসহিতম্ম সংস্থাসম্ভ মোক্ষীপরিকত্বে কৃতো বোগভ্রষধিক্বতা নাশাশক্ষেত্যাশক্ষাহ—যোগাচেতি। সহ
কার্য্যভাবে সামগ্র্যভাবাৎ ফলামুপপত্তের্বৃক্তা নাশাশক্ষেত্যর্থ:। ধ্যানসহিতমীশবে
কর্ম্মসর্পনং মোক্ষারেত্যত্ত্ব প্রমাণাভাবাৎ গৃহস্থো বোগভ্রষ্টশন্ধবাচ্যো ন
ভবতীতি দ্বরতি—নেতি। গৃহস্থম্ভ বোগভ্রষ্টশন্ধবাচ্যভাবে হেম্ম্বরমাহ—
একাকীতি।

ন থবেতানি বিশেষণানি গৃহস্থসমবায়িনি সম্ভবস্তি তেন তক্ত খ্যানযোগ-বিধ্যভাবাৎ ন তং প্রতি বৈাগভ্রষ্টশব্দবচনমূচিতমিত্যর্থ:। একাকিম্বরচনং গৃহস্বস্থাপি ধ্যানকালে স্ত্রীসহায়ত্বাভাবাভিপ্রায়েণ ভবিষ্যতীত্যাশস্ক্য অগ্নিহোত্রাদি-পত্নীসাধ্যমভাবাদপ্রাপ্তপ্রতিবেধপ্রসঙ্গানৈবমিত্যাহ—ন চাত্তেতি বিশেষণান্তরপর্য্যালোচনয়াপি নাম্নেকাকিশন্দো গৃহস্থপরো ভবিতুমই তীত্যাহ— ন চেতি। কিঞ্চ গৃহস্থপ্তৈবৈকাকিছাদি বিবক্ষিছা ধ্যানযোগবিধৌ তং প্রত্যু-ভয়ন্ত্রপ্রশ্লো নোপপন্থত ইত্যাহ—উভয়েতি। ন হি গুহন্তং প্রতি উভয়ন্ত্রাজ-জ্ঞানাৎ কর্ম্মণন্ড বিভ্রন্থমুপেত্য প্রষ্টুং যুজ্যতে তক্ত জ্ঞানাদ্ভংশেহপি কর্ম্মণস্তদ-ভাবাদমুষ্ঠীয়মানকর্মভংশেহপি প্রাগমুষ্ঠিতকর্মবশাৎ ফলপ্রতিলম্ভাদতো রপোক্ত-প্রশ্নালোচনয়া ন গৃহস্থং প্রতি ধ্যানবিধানোপপত্তিরিত্যর্থঃ। নমু ভগবতা সংস্থাসভ্র প্রতিষিদ্ধখানগৃহস্থলৈর যোগবিধানাৎ তত্তৈর যোগভ্রষ্টশন্দবাচ্যছমিতি শঙ্কতে— **অনাশ্রিতইত্যনেনেতি।** ভগবন্ধাক্যং ন প্রতিষেধপরমিতি পরিহরতি— ন ধ্যানেতি। স্থতিপরস্বমেব ক্ষোরমতি—ন কেবলমিতি। সন্বন্ধার্থ-মন্থতিষ্ঠলিতি সম্বন্ধঃ। বাক্যভোভয়পরত্বমাশক্য বাক্যভেদপ্রসঙ্গান্মব্মিত্যাহ— ন চেতি। ইতোহপি ভগবতঃ সংস্থাসাশ্রমপ্রতিবেধোহভিপ্রেতো ন ভবতী-ত্যাহ—ন চ প্রসিদ্ধমিতি। তম্ম প্রসিদ্ধ সংস্থাসিত্বং যোগিত্বঞ্চে সম্বন্ধ:। প্রাসিদ্ধন্থনের ব্যাকরোতি—শ্রুতীতি। ইতোহপি সংস্থাসাশ্রমং ভগবার প্রতি বেধতীত্যাহ — স্ববচনেতি। বিরোধমেব সাধরতি — সর্ববকর্ম্মাণীতাদিনা। অনাশ্রিতইত্যাদিবাক্যক ষ্ণাশ্রতার্থস্বামূপপত্তেঃ স্বতিপরস্বমূপপাদিতমূপসংহরতি-তত্মাদিতি।

কর্মকলসংস্থাসিত্বমত্র মুনিশন্বার্থঃ। স্বতিপরং বাক্যমক্ষরধোজনার্থমূদাহরতি—
আনাঞ্জিত ইতি। কর্মফলেহভিলাবো নাস্তীত্যেতাবতা কথং তদনাপ্রিতস্ব
বাচো যুক্তিরিত্যাশন্য ব্যতিরেকমুখেন বিশদরতি—যো হীতি। কর্মি-

মিত্যাদি ব্যাকরোতি—এব্স্তৃতঃ সন্ধিতি। কথং কর্মিণঃ সংস্থাসিষং বোগিষক কর্মিম্ববিরোধাদিত্যাশব্যাহ—য ঈদৃশ ইতি। স্বতেরত্র বিবক্ষিত্যানাস্থপণতি-শ্রেদানীরেতি মন্বানঃ সন্নাহ—ইত্যেব্যমিতি। ন নির্মিরিত্যাদেরর্থমাহ—ন কেবলমিতি। অপ্তরো গার্হপত্যাহবনীরাবাহার্য্যপচন-প্রস্কৃতরঃ। নম্ব অনমিম্বে সিদ্ধাক্রিম্বম্বির্মির্যাধ্যম্বাৎ ক্রির্মাণাৎ তথা চ ন নির্মিরিত্যেতাবতৈবাপেক্ষিত্তি সিদ্ধেন চাক্রির ইত্যনর্থকমর্থপুনক্ষক্রেরিতি তত্তাহ—অন্মীতি॥ >

অমুবাদ। অব্যবহিত অতীত অধ্যারের শেবে "ম্পর্শান্ কথা বহিঃ" ইত্যাদি শ্লোকে উপদিষ্ট হইরাছে, "ধ্যানবোগ, আত্মতজ্ঞানের অন্তরক্ষ উপার" এই বিষয়ের উপদেশে ঐ করটি শ্লোক স্ত্রস্থানীর (অর্থাৎ ধ্যানবোগের বিষরে বাহা কিছু সারভূত তাহা অতি সংক্ষেপে এই করটি শ্লোকে বলা হইরাছে) সেই করটি শ্লোকেরই বিশদ ব্যাধ্যার জন্ম এই বর্ষ অধ্যারের আরম্ভ করা হইতেছে। সেই প্রসঙ্গে দেখিতে হইবে বে] কর্ম্ম ধ্যানবোগের বহিরক্ষ সাধন; এই কারণ অধিকারী গৃহস্থ যে পর্যান্ত ধ্যানবোগে আরোহণ করিতে অসমর্থ হইবে, সে পর্যান্ত তাহার কর্মাই কর্ত্ববা; এই নিমিন্ত [এক্ষণে ভগবান্] কর্মের প্রশংসা করিতেছেন।

এই স্থলে এই প্রকার শক্ষা হইতে পারে যে, ধ্যানবোগে আরোহণই কর্মান্থানের দীমা, এই প্রকার নির্দেশ করা নিরর্থক; কারণ ব্যক্তিমাত্রেরই বাবজ্জীবন বিহিত কর্ম্ম করিতেই হইবে। [ইহার উত্তর এই যে] এ প্রকার শক্ষা ঠিক নহে; কারণ, "ধ্যানযোগে আরোহণ করিতে অভিলাবী সাধকের পক্ষে বিহিত কর্ম্মই ধ্যানযোগ প্রাপ্তির উপার" এই প্রকার বাক্যের দারা ধ্যানযোগে আরোহণেচ্ছু ব্যক্তির পক্ষেই বিশেষভাবে কর্ম্মের সম্ম প্রতিপাদিত হইরাছে এবং ধ্যানবোগারু ব্যক্তির পক্ষে শমের (অর্থাৎ কর্ম্মনির্ত্তির) সম্ম প্রদর্শিত হইরাছে। যদি যোগারোহণেচ্ছু ও যোগারুত এই উভরেরই অবিশেষে কর্ম্ম ও সম্মাস এই ছইটি উপারই কর্ত্তব্যরূপে অভিপ্রেত হইত, তাহা হইলে, কর্ম্ম ও সম্মাসরূপ বিষয়ভেদে যোগারোহণেচ্ছু ও যোগারুত এই ছইটি শব্দের দারা ছই প্রকার সাধকের বিশেষণ ও বিভাগ করা অনর্থক হইত।

এই ব্যবহার ক্ষেত্রে আশ্রমধর্মাবলম্বিগণের মধ্যে কৈছ যোগারোহণে অভিলাষী হয়, কেছ বা যোগারাড় হয়, আবার অনেকে এমনও আছে, যাহারা বোগারোহণ করিতে চাহে না এবং যোগারাড়ও নহে, এই প্রকার বে সকল আশ্রমী তাহাদিগকে পৃথক করিবার জন্তই যোগারোহণেচ্ছু এবং বোগারাট

এই বিশেষণদ্ব ও বিভাগকরণ উপপন্ন হইতে পারে, এই প্রকার কল্পনা করাও উচিত নহে; কারণ, ঐ ল্লোকে "তক্তৈব" (অর্থাৎ তাহারই) এই প্রকার নির্দেশ হইরাছে এবং "বোগার্ক্" এই বিশেষণের মধ্যে পুনর্কার যোগ এই শন্টির গ্রহণ করাও হইয়াছে [ইহা দারা ইহাই বুঝিতে পারা ষাম্ব বে. আক্রুককোর্ম নের্যোগমিত্যাদি শ্লোকের দারা ইহাই প্রতিপাদিত হইতেছে যে] যে ব্যক্তি পূর্বে যোগারোহণাভিলাষী হয়, সেই ব্যক্তিই বোগার্চ হইলে তাহার পক্ষে শম (সন্ত্রাসই) বোগফল (মোক্ষ) লাভের প্রতি কর্ত্তব্য কারণ বলিয়া উক্ত হইয়াছে। এই কারণে কোন কর্ম্মেরই ষাৰজ্জীবন কর্ত্তব্যত্ব শাস্ত্রের দ্বারা বিহিত হইতে পারে না: বোগভাই বিষয়ে ষাহা কিছ বলা হইরাছে, তাহা দারাও এই সিদ্ধান্তই দৃঢ়ীকত হয়; কারণ িপুর্ব্বপক্ষীদিগের মতামুসারে বিদি ষষ্ঠ অধ্যারে গৃহস্থ অথচ কল্মীর পক্ষে ধ্যানুযোগ বিহিত হইয়া থাকে, তাহা হইলে দেই কল্মী গৃহস্থ ধাানুযোগ হইতে এট হইলেও নিজ গৃহস্থাশ্রম-বিহিত কর্ম্মের গতি (অর্থাৎ) ফল নিশ্চরই প্রাপ্ত হইবে;, স্থতরাং তাহার নাশের আশকা একেবারে অমুপ-পন্ন হইয়া পড়ে; কারণ, নোক্ষরপ ফল নিত্য, এই জন্ম উহা কর্ম্মের ছারা আরভ্য না হইলেও কাম্য বা নিত্য কর্ম সম্যক্ অমুষ্ঠিত হইলে তাহারা নিজ নিজ বিহিত ফল [সময়ে] অবশুই প্রদান করিবে [মুতরাং ভোমাদের মতে নিত্য-কর্ম্ম-নিরত ব্যক্তি যোগারু হইয়া, পরে যোগ-ভ্রষ্ট হইলে, তাহার একেবারে বিনাশের আশঙ্কা কি প্রকারে হইতে পারে १ । ॥

নিত্যকর্ম, বেদরূপ প্রমাণের দারা বোধিত হইরাছে; এই কারণ তাহার ফল অবগুই হইবে, ইহা আমরা বলিয়াছি; কারণ তাহা না হইলে, বেদ নির্মণ্ডক হইরা পড়ে। কন্মের অমুষ্ঠান হইতেছে এইরূপ অবস্থায় উভর [কর্ম ও ধ্যানযোগ] হইতে বিভ্রুই হইবার কারণ দেখিতে পাওয়া যায় না। ইদি বল, ঈশ্বরে ফল অর্পণ করিয়া অমুষ্ঠিত হয় বলিয়া, কর্ম্ম অমুষ্ঠা-ভার ফল উৎপাদন করিতে পারে না, ভাহাও ঠিক নহে; কারণ ঈশ্বরে ফল অর্পণ করিয়া কর্ম্মের অমুষ্ঠান করিলে, ঐ কর্মের আইফতর ফলই হইরা থাকে। যদি বলা বায়, ঈশ্বরে কর্ম্মসয়্যাস মোক্ষেরই কারণ হয় (অর্থাৎ) ধ্যানবাগের সহিত ঈশ্বরে কর্ম্মসয়্যাস কেবল মোক্ষেরই কারণ হয় (অর্থাৎ) ধ্যানবাগের সহিত ঈশ্বরে কর্ম্মসয়্যাস কেবল মোক্ষেরই কারণ হয়

ব্যক্তি [কোন কারণে] বদি ষোগল্রন্ত হন, তাহা হইলে, বিনষ্ট হইবার আশবা যুক্তিসিদ্ধ হইরা পড়ে [কারণ যোগল্রন্ট হওরার তাঁহার মোক্ষ হইল না এবং যোগ-সহকৃত কর্ম মোক্ষব্যতিরিক্ত অন্ত কোন ফলেরও ক্ষমক হইতে পারিল না; এই জন্ম সে কর্মফলও পাইল না, মোক্ষও পাইল না—এই ভাবিরাই অগ্রে অর্জ্জুন তাহার বিনাশ শবা করিয়াছেন—এই প্রকার করনা করিলে, সকলকেই যাবজ্জীবন বিহিত কর্ম করিতে হইবে এই সিদ্ধান্তটিই বুক্তিযুক্ত হইতে পারে] তাহাও ঠিক নহে; "একাকী যতচিন্তম্মা নিরাশীর-পরিগ্রহং" ও "ব্রেদ্ধচর্মান্ত স্থিতঃ" ইত্যাদি শ্লোকে যোগারু ব্যক্তির পক্ষে বিহিত কর্ম্মেরও সন্ত্যাস বিহিত হইরাছে॥

এইপ্রকার সিদ্ধান্ত সাধু নহে [কারণ ঐ বচনে যে একাকিছের বিধান করা হইরাছে, তাহা গৃহত্তের পক্ষে বিহিও হইতে পারে না] খ্যানযোগ কালে গৃহত্তের স্ত্রীসমাগমসম্ভাবনা প্রসক্ত নছে; স্থতরাং তাহার নিরাকরণ করিবার জন্ত যে ঐ বাক্যে গৃহত্তের একাকিছ বিধান হইতে পারে না, নিরাশী: অপরিগ্রহ এই ছইটি বিশেষণও গৃহস্থের পক্ষে অমুকূল হইতেছে না এবং তাহার পক্ষে উভয় বিভ্রন্তৈরে (অর্থাৎ কর্মবোগ ও ধ্যানবোগ এই উভরমার্গ হইতে ভ্রপ্ত হইবার) শকাও উত্তমরূপে উপপন্ন হইতে পারে না; কারণ, ধ্যানযোগসহকত বিহিতকর্মের অফুষ্ঠান মোক্ষব্যভিরিক্ত অভ কোন ফলের কারণ হয় না,—এই প্রকার করনার অত্তকুল কোন প্রমাণ দেখিতে পাওয়া যায় না। যদি বল অনাশ্রিত ইত্যাদি **শ্লোকের দারা** কর্মপরায়ণ গৃহস্থেরই সন্ন্যাসিত্ব ও যোগিত্ব উক্ত হইয়াছে এবং নির্বন্ধি এবং শাস্ত্রামুদারে কর্মসন্ন্যাদকারীর সন্ন্যাদিত্ব ও বোগিত্ব, প্রতিবিদ্ধ হইনাছে, তাহাও ঠিক নতে; কারণ, ঐ বচনটির ছারা ধ্যানখোগের বহিরক্সাধন কর্ম্মের ফলাকাজ্ঞা পরিত্যাগেরই প্রশংসা করা হইরাছে। কেবল নির্**ন্ধি ও অক্রিরই** যে সন্ন্যাসী ও যোগী, তাহা নহে; কিন্তু কর্মফলের আসঙ্গ পরিত্যাগপূর্বক সহওছির জন্ম যে ব্যক্তি কর্মামুষ্ঠান করে, তাহাকেও সন্ন্যার্সী ও যোগী বলিয়া জানিতে হইবে, এই প্রকার প্রতিপাদন করিয়া ভারুণ কর্মী ও গৃহত্বের স্বতিই করা হইরাছে। একটি বাক্য একবার প্রযুক্ত হইরা, কর্ম-ফলাসক পরিত্যাগের স্থতি ও সন্ন্যাসাত্রম পরিগ্রহের নিষেধ---এই দিবিধ মর্থ এক সঙ্গে প্রতিপাদন করিতে পারে না। ভগবান, নিরপ্তি এবং অক্রিয় পর্যার্থসন্মাসীর শ্রুতি স্থুত্রাণ ও ইতিহাসে বিহিত এবং সর্বলোকে

প্রসিদ্ধ সন্ন্যানিত্ব ও যোগিত্বের যে প্রতিষেধ করিতেছেন, ইহা সম্ভবপর নছে; এই প্রকার নিষেধ করিলে, তাহা তাঁহার নিজের বচনের সহিতই বিক্লদ্ধ হইয়া পড়ে॥

"সর্ব্বকর্মাণি মনসা সংশুশু, নৈব কুর্বন্ ন কারয়য়ান্তে" (সকল কর্মেরই মনের ছারা সংখ্যাস করিয়া ও নিজে কোন প্রকার কর্মের আরম্ভ না করিয়া বা কাহার ছারা না করাইয়া অবস্থান করিবে) "মৌনী সম্ভষ্টো যেন কেন-চিং" (মৌনী ও বে কোন বস্তুতেই সম্ভষ্ট) "অনিকেতঃ হিরমতিঃ" (আবাস হীন ও হিরমতি) "বিহায় কামান্ যঃ সর্বান্ পুমাংশ্চরতি নিম্পৃহঃ" (যে পুরুষ সকল কাম পরিত্যাগ পূর্বক নিম্পৃহ হইয়া বিচরণ করে) "সর্বারম্ভ-পরিত্যাগী" (সকলপ্রকার আরম্ভের পরিত্যাগকারী) ইত্যাদি প্রকারের বে সকল বচন ভগবান্ নির্দেশ করিয়াছেন, তাহার সহিত সংখ্যাস আশ্রমের প্রতিষেধ বিরুদ্ধ হইয়া পড়ে, [এইজ্ঞ সর্ব্বকর্মায়াস গীতার প্রতিপাম্ম নহে— এই কথা বলা বাইতে পারে না] সেই কারণে [ইহাও প্রতিপাম হইতেছে বে] বে ব্যক্তি গৃহস্থাশ্রম স্বীকার করিয়াছে, অথচ ধ্যানযোগে আরোহণ করিতে অভিলাবী ও মননশীল হইয়াছে, তাহার পকে ফলাকাজ্জা পরিহার পূর্বক অন্নিহোত্রাদি, কর্মের অম্বন্ধান চিত্তগুদ্ধি ছারা ধ্যান বোগারোহণের সাধন হইয়া থাকে, এই কারণে তাহাকেই সন্ন্যাসী ও যোগী এই শন্দ ছইটি ছারা স্তৃতি করা হইতেছে॥

"অনাপ্রিত" (যে আশ্রয় করে না সেই অনাশ্রিত), কি ? [আশ্রয় করে না তাহাই বলা হইতেছে যে] কর্মফল (অর্থাৎ) কর্মের যাহা ফল তাহা যে ব্যক্তি আশ্রয় না করে, সেই অনাপ্রিত [শব্দের হারা প্রতিপাদিত হইতেছে]; কর্মফল-তৃষ্ণাশৃত্য ইহাই অর্থ। যাহার কর্মফলে তৃষ্ণা আছে, সেই কর্মফলকে আশ্রয় করিয়া থাকে। এই ব্যক্তি তাহা হইতে বিভিন্ন, এই কর্মফলকে আশ্রয় করে না এইপ্রকার হইয়া, কার্য্য অর্থাৎ কর্ম্বয় নিত্য অর্থাৎ কাম্য বিপরীত অগ্রিহোত্রাদি কর্ম্ম করিয়া থাকে। যে কর্ম্মণরামণ অধিকারী এতাদৃশ-মভাবসম্পন্ন সে অস্তান্যকর্মী হইতে বিশিষ্ট, ইহাই বলা হইতেছে বে, সেই সম্যাসী ও যোগী। সম্যাস শব্দের অর্থ পরিত্যাগ, তাহা বাহার আছে তিনি সম্যাসী; "যোগী" যোগশব্দের অর্থ চিন্তসমাধান, তাহা বাহার আছে তিনি যোগী। এই প্রকার গুণসম্পান ব্যক্তিকেও সম্যাসী ও যোগী বিলয়া জানিবে; কেবল মিরম্নি ও অক্রিম

ব্যক্তিই বে বথাক্রমে সন্ন্যাসী ও বোগী হইন্না থাকে, তাহা নছে। কুর্শ্বের সাধন অগ্নিত্রর বাঁহার নিকট হইতে নির্গত হইন্নাছে, অর্থাৎ বিনি কর্ম্মাধন অগ্নিত্ররকে একেবারে পরিত্যাগ করিয়াছেন, তাঁহাকে নিরগ্নি কহা ধার; অগ্নিছারা বাঁহাদের সাধন না হন্ন, এই প্রকার তপঃ দান প্রভৃতি ক্রিয়ার অস্থ্রান বিনি না করেন, তাঁহাকে অক্রিয় বলা বার।। ১

যং সংস্থাসমিতি প্রান্থ র্যোগং তং বিদ্ধি পাণ্ডব।
ন স্থাসংস্থাসংকল্পো যোগী ভবতি কশ্চন॥ ২

অনুয় । হে পাণ্ডব বং সন্ন্যাসমিতি প্রাহ্ণ তং যোগং বিদ্ধি, হি (বন্ধাৎ)
ক্ষাসংস্তস্তমংকল্প: কশ্চন যোগী ন ভবতি ॥ ২

অমুবাদ। হে পাণ্ডব, বাহাকেই (প্রাচীন ঋষিগণ) সন্মান বলিয়াছেন, তাহাকেই তুমি যোগ বলিয়া জানিবে; কারণ যে ব্যক্তি সঙ্করের সন্মান করে নাই, সে কখনও যোগী হইতে পারে না॥ ২

ভাষ্য। নমু চ নিরগ্নেরক্রিরশুব শ্রুতিবাগশান্ত্রের্ সন্ন্যাসিদ্ধং নোগিদ্বং চ প্রসিদ্ধং, কথমিহ সাগ্নেঃ সক্রিয়ন্ত সন্ন্যাসিদ্ধং বোগিদ্বধাপ্রসিদ্ধমূচ্যতে ইভি। নৈব দোবঃ। ক্য়াচিদ্গুণরস্ত্যা উভয়ন্ত সংপিপাদিয়িবিতদ্বাং। তৎ কথম ? কর্মফলসক্রন্যাসাৎ সংন্যাসিদ্বাং, যোগাক্ষ্মেন চ কর্মান্ত্রানাৎ কর্মন্ত্রন্য বা চিত্তবিক্ষেপহেতোঃ পরিত্যাগাদ্যোগিদ্বং চেতি গৌণমূভয়ম্ ন প্রন্ম্বিং, সন্মাসিদ্ধং যোগিদ্ধং বোগিদ্ধং বাজিদ্ধান্ত্রিত্রমিত্যেত্রমর্থং দ্বান্ত্রিত্রমাহ।

যৎ সর্ক্রক্ষ্ক্রণপরিত্যাগলকণং পরমার্থসয়্যাসমিতি প্রান্থ: ঐতিস্থৃতিবিদঃ
বোগং কর্মান্থচানলকণং তং পরমার্থসংখ্যাসং বিদ্ধি জানী হৈ পাশুব। কর্মান্থনি প্রের্বান্ত প্রবিত্তনকণশু তদ্বিপরীতেন নির্বিত্তলকণেন পরমার্থসংখ্যাসেন কীদৃশং সামাখ্যমঙ্গীক্রত্য তন্তাব উচ্যত ইত্যপেকারামিদম্চ্যতে। অন্তি পরমার্থসয়্যাসেন সাদৃশুং কর্ত্বারকং কর্মবোগশু। বো হি পরমার্থসংখ্যাসী স ত্যক্তসর্বকর্মনাধনতরা সর্ক্রক্ষ্মতংক্রবাবিষয়ং সলয়ং প্রবৃত্তিহেত্বামকারণং সংশ্রমতি। অরমপি কর্মবোগী কর্ম কুর্বাণ এব ফলবিষয়ং সলয়ং সংশ্রমতীত্যতমর্থং দর্শরনাহ নহি যাথে অসংশ্রম্ভসয়য়োহসংখ্যভোহপরিত্যক্তং ফলবিষয়ঃ সয়য়োহানিহিন সোহসংশ্রম্ভসয়য়ঃ কন্টন কন্টিদিপি কর্মী বোগী সমাধানবান্ ন সম্বতীত্যর্থঃ। ফলসম্বন্ধ চিত্তবিক্ষেপহেত্বাং। তন্মান্থঃ কন্টনিক্ষ্মিক্ষ্মেংক্রের্বান্তবেং স বেন্ধি সমাধানবান্ অবিক্রিক্তিতাে ভরেং

চিত্তরিক্ষেপহেতো: ফণদহরত সংস্কৃত্তরাদিত্যভিপ্রার:। এবং প্রমার্থসর্যাস-কর্মবাগরো: কর্ত্ত্বারকং সংস্কাসদামান্তমপেক্ষ্য "বং সংস্কাদমিতি প্রান্তর্যাগৎ তং বিদ্ধি পাণ্ডব", ইতি কর্মবোগন্ত স্তত্যুধ্ধ সংস্কাসমূক্তম্ ॥ ২

আনন্দ্গিরিটীকা। উত্তরশ্লোকস্ত তাৎপর্যাৎ দর্শন্নিতুং ব্যাবর্জ্যামাশকাং দর্শন্নতি—নমু চেতি। প্রদিদ্ধং পরিত্যজ্ঞ্যাপ্রদিদ্ধিরূপাদীয়মানা প্রদিদ্ধিরিক্র-ক্ষেতি চোজং দ্বন্নতি—নৈম দোষইতি। উভয়স্ত সাগ্নো সক্রিয়ে চ সংস্থাসিত্বন্ত বোগিত্বন্ত চেত্যর্থ:। গুণর্জ্যোভরসম্পাদনং প্রশ্নপূর্ককং প্রকটন্নতি—তৎ কর্থমিত্যাদিনা। সম্ভবতি মুখ্যে সংস্থাসিত্বাদেশ কিমিতি গৌণমুভরমজীষ্টমিত্যাশক্ষ্য মুখ্যস্ত কর্মিণাসম্ভর্তবাদেশাণমেব স্তৃতিসিদ্ধার্থং তদিষ্টমিত্যভিপ্রেত্যাহ—
ন পুনরিতি। চিত্রব্যাকুল্মহেত্কামনাত্যাগাচিত্রসমাধানসিদ্ধের্থাগিত্বং কর্মিগোহণি যুক্তং সংস্থাসিত্বং তু তম্ভ বিক্রদ্মতি শঙ্কমানং প্রত্যুক্তেহর্থে শ্লোক্ষরভারন্থতি—ইত্যুত্মিতি।

পরমার্থসংস্থাসং প্রাহরিতি সম্বন্ধঃ। ইতীখং সংস্থাসন্ত প্রামাণিকাভ্যুপগতঘাদিতীতিশক্ষা যোজ্যঃ। যোগং ফলতৃষ্কাং পরিত্যক্স্য সমাহিতচেতন্তরেতি
শেষঃ। বহক্তং সংস্থাসিদং যোগিত্বক্ষ গৃহস্কস্ত গৌণমিতি তহন্তরার্দ্ধযোক্ষর ব্যক্তিরিত্মুব্ররার্দ্ধম্থাপয়তি —কর্ম্মাগোস্তাতি। কর্মযোগস্ত পরমার্থসংস্থাসেন কর্ত্বারকং সাম্যমুক্তং ব্যক্তীকরোতি—যো হীতি। ত্যক্তানি সর্পাণি কর্মাণি
সাধনানি চ মেন স তথোক্তন্তম্ভ ভাবন্তন্তা তয়া সর্ককর্মবিষয়ং তৎফলবিষয়ক্ষ
সংকর্মং তামতীত্যর্থঃ। সংকরত্যাগে তৎকার্য্যকামত্যাগঃ তন্ত্যাগে তজ্জ্বপ্রব্রন্তিত্যাগন্দ বিধ্যতীত্যভিদন্ধায় বিশিন্তি—প্রবৃত্তীতি। কর্মণ্যপি বথোক্তসংকর্মংস্থাসিদ্ধর্মন্তীত্যাহ—জ্বামুস্পীতি। তদপরিত্যাগে ব্যাকুলচেতন্তরা
কর্মান্থ্রানন্তির হঃশক্ষাদিত্যর্থঃ। উক্তমেব সাম্যং ব্যক্তীকুর্বন্ ব্যতিরেকং
দর্শরতি—ইত্যোতমিতি। ফলসংকর্মাপরিত্যাগে কিমিতি সমাধানবন্তাভাবঃ
ভ্রাহ—ফল্লেতি।ব্যতিরেকমুখেনোক্তমর্থমন্ত্রমুখনেনিসমংহরতি—তন্মাদিতি।
হি শক্ষার্থন্ত ক্মাদিত্যকন্ত তন্মাদিত্যনেন সম্বন্ধঃ। কর্ম্মিণং প্রতি যথোক্তবিযৌ
হেজুহেতুমন্তাবন্ধভিপ্রত্য হিতীয়বিধৌ হেতুমাহ—চিত্তবিক্ষেপেতি। পূর্বশ্লোকে পূর্বোক্রার্দ্ধাত্যামুক্তমন্ত্রণতি—এব্যিতি॥ ২

অনুবাদ। একণে আশহা এই প্রকার হইতে পারে বে, শ্রুতি স্থৃতি এবং বোগশালে নির্মি এবং অক্রিয় ব্যক্তিরই সন্ন্যাসিত্ব ও বোগিত্ব প্রসিদ্ধ আছে; এই তুলে কেন সান্নিক ও সুক্রিয় ব্যক্তির সন্ন্যাসিত্ব ও বোগিত্ব অপ্রসিদ্ধ हरेर्ग ७ डेक रहेरलह १ हेरात डेखत धरे रा, वाखिवक धरे थाकात डेकिएड কোন দোষ নাই। কারণ গৌণী লক্ষণাদ্বারা এই উভয়কে প্রতিপাদন করিবার ইচ্ছাতেই এই প্রকার বলা হইয়াছে; তাহা কি প্রকার? কর্মকলবিষয়ে সংকর পরিত্যাগ করা হয় বলিয়া [তাদৃশ কন্মীর] সন্ত্যাসিত্ব [উক্ত হইরাছে]; धानत्यात्मत नाधन विवया कर्जात अञ्चीन कता इत्र विवया अथेवा हिन्दिरक्रिश्त হেতৃ কর্মানলসংকল্পের পরিত্যাগ করা হয় বলিয়া, তাহার বোগিছ [শাজে উক্ত হইয়াছে]। এই সন্ন্যাসিত্ব ও বোগিত গৌণ, মুখ্য সন্ন্যাসিত ও বোগিত এ স্থলের অভিপ্রেত নছে, এই বিষয়টি দেখাইবার জক্ত [ভগবান্] বলিতেছেন [বে]--- শ্রুতি ও স্থানির বেভুগণ, যে সর্কাকশাফল পরিত্যারপ প্রমার্থ সন্ত্রাস বলিয়া থাকেন. কর্মান্ত্র্ঠানলকণ যোগকেও সেই পরমার্থ সন্ত্র্যাস বলিয়াই তুমি জানিও, হে পাওব ! প্রবৃত্তিলকণ কর্মযোগের ও তাহার বিপরীত নিবৃত্তিসক্ষণ প্রমার্থ-সন্ন্যাদের মধ্যে কি প্রকার সাধর্ম্মাকে অবলম্বন করিয়া উভয়ের একরপতা কণিত হইতেছে, এই প্রকার প্রশ্নের উত্তর দিবার জন্ত এই বলা হইতেচে যে, পরনার্থ সন্ন্যাদের স্থিত কর্মানোকের কর্ত্বারক সাদৃত্য আছে; [কর্ড্রারক সাদুখ কি প্রকার তাহা বলা হইতেছে] বে ব্যক্তি প্রমার্থসন্ম্যাসী, তিনি সকল কর্ম্মরূপ সাধন প্রিত্যাগ করেন, এই জন্ত প্রবৃত্তি-হেতু কামের কারণ, সকল প্রকার কর্ম ও তৎফল-বিষয়ে সকরেরও সন্ত্যাস করিয়া থাকেন: পূর্কোক্ত] এই কর্মহোগীও কর্মের অনুষ্ঠান কালেই ফলবিষয়ে সম্বল্প পরিত্যাগ করিরা গাকেন . এই **প্রকার [উভর সার্গেরই** কর্ত্বরের সংখ্য] পরস্পর সাদৃশ্য প্রতিপাদন করিবার জন্ত বলা হইতেছে বে, যে কারণ "অসংস্তসদ্ধর" (বে ব্যক্তি ফলবিবরে সন্ধর (অভিসন্ধি) পরিভ্যাগ করে না, তাদৃশ) কোন ব্যক্তি যোগী অর্থাৎ সমাহিতচেতা হইতে পারে না; কারণ কলবিষয়ক সঙ্কল, চিত্তৈর বিকেপের প্রতি হেতু, সেই কারণ যে কোন কর্মী কর্মফলের সঙ্কল্প পরিভ্যাগ করিয়াছেন, তিনি সমাহিতচেভা (অর্থাৎ) অবিকিথটিত হন; কারণ চিত্তবিকেপের হেতু ফলবিষয়ক সম্বন্ধ ভিনি পরিত্যাগ করিরাছেন। ^{*}ইহাই অভিপ্রার। এ প্রমার্থ সন্ন্যাস ও কর্মবো<mark>গের এই প্রকার</mark> কর্ত্বারক সন্ন্যাসরপ সাধারণ ধর্মকে অপেকা করিয়া বাহাকে সন্ন্যাস বলিনা-ছেন, ভাহাকেই ভূমি যোগ বলিয়া জানিবে, হে পাণ্ডব !" এই বাক্যের দারা কর্মধাগেরই অভিন জন্ত . তাহার (অর্থাৎ কর্মফোগের) সন্নাসম কীর্ষিত व्हेंबारक ॥ २

আরুরুক্তে মু নের্যোগং কর্ম কারণমূচ্যতে। যোগারুদুস্থ তক্তিব শমঃ কারণমূচ্যতে॥ ৩

আৰুয়। বোগম্ আরুরুক্ষো: মুনে: কর্ম কারণম্ উচ্যতে; তত্তৈব [পুনঃ] বোগারুত্ত শমঃ কারণম্ উচ্যতে॥ ৩

অনুবাদ। ধ্যানযোগে আরোহণার্থী মননশীল ব্যক্তির পক্ষে কর্ম্মই
[ধ্যান যোগ লাভের] কারণ [বলিয়া] উক্ত হয়। সেই ব্যক্তিই যোগার্কা
ইইলে তাঁহার পক্ষে শম (অর্থাৎ) সর্বাকর্মনিবৃত্তিই [ইইনিজির কারণ বলিয়া]
কীর্তিত হইয়া থাকে॥ ৩

ভাষ্য। ধ্যানবাগন্ত ফলনিরপেকঃ কর্দ্মবোগঃ বহিরদসাধনমিতি তৎ সংক্রাসন্থেন গুদ্ধা অধুনা কর্দ্মবোগন্ত ধ্যানবোগসাধনতাং দর্শরতি—আরুক্সকেনারারাচু মিচ্ছতোহনার্চ্ন ধ্যানবোগেহবস্থাভুমশক্তন্তৈব ইত্যর্থঃ। কন্সারুক্সকোঃ ? ধ্যাগন্য কর্ম্মকলসংক্রাসিনঃ ইত্যর্থঃ। কিমারুক্সকেনাঃ ? ধ্যোগম্। কর্ম্ম কারণং সাধনমূচ্যতে। বোগার্চ্নত পুনস্তবৈত্ব শমঃ উপশমঃ দর্ককর্মত্যো নির্বিঃ কারণং বোগারুচ্নত সাধনমূচ্যতে ইত্যর্থঃ। যাবদ্যাবৎ কর্মাভ্য উপরমতে তাবৎ তাবৎ নিরারাস্ত জিতেন্দ্রিক্ত চিত্তং সমাধীরতে। তথা সতি স ঝাটতি বোগারুচ্নত তবিত। তথাচোক্তং ব্যাসেন—

"নৈতাদৃশং ব্রাহ্মণস্যান্তি বিত্তং যথৈকতা সমতা সত্যতা চ। শীলং স্থিতিদ গুনিধানমার্জ্জনং ততন্ততংশ্চাপরমঃ ক্রিরাভ্যঃ ॥" ইতি

আনন্দগিরিটীকা। পরমার্থসংশ্রাসশু কর্মধােগান্তর্ভাবে কর্মধােগশৈতব
সদা কর্জবাদাপভেত তেনেতরশ্রাপি ক্বতবসিদ্ধেরিত্যাশক্যােকান্থবাদপূর্বকস্করক্ষােকভাৎপর্যমাহ—ধ্যান্যোগস্থেতি। ভাবিশ্রা রক্তাা মুনের্যাগমারে।
নুদ্ধেরার্যমাণশু বােগারেছিণশু কর্ম হেতুশেচদপেক্ষিতং বােগমারিড্রাপি তৎকলপ্রাপ্তা তদেব কারণং ভবিষ্যতি তশু কারণত্বে ক,পুশক্তিত্বাদিত্যাশস্থাহ—
যোগারিড্স্প্রতি। অনার্ভ্রেভ্রেতিশ্রেবার্থং স্ট্রুতি—ধ্যানেতি। মুনিত্বং
কর্ম্মকলসংখাসিল্রোপচারিকমিত্যাহ—কর্ম্মকলেতি। সাধনং চিত্তভূদ্ধিরা
ব্যানযোগপ্রাপ্তীচ্ছায়ামিতি শেবঃ। তন্তেতি প্রকৃতন্ত কর্মিণাে গ্রহণম্, এবকারে।
ভিন্নক্রমঃ শন্দব্দেন সম্বধ্যতে। ক্সান্তবােগরেরার্বছেদেন শ্রেনা হেতুরিভি
ভক্তাহ—যোগার্ভৃত্বস্থেতি। সর্বব্যাপারে।পরমন্ধপোণশমশ্র বােগার্ভ্রে

কারণমং বির্ণোতি—যাবদ্যাবদিতি। সর্ককর্মনির্ভাবারাসাভাবান্যশীকৃতত ইন্তিরগ্রামন্ত চিত্তসমাধানে বোগারুচ্ছং সিধ্যতীত্যর্থঃ। সর্কবর্গ্রামন্ত প্রকার্থ-সাধনতে পৌরাণিকীং সন্মতিমাহ—তথা চেতি। একতা সর্কের্ ভূতেমু বন্ধতো বৈভাভাবোপলক্ষিতছমিতি প্রতিপতিঃ শমতা তেবেবোপাধিকবিশেষেংশি বতো নির্কিশেবছধীঃ। সভ্যতা তেবামেব হিতবচনম্। শীলং বভাবসম্পদ্ধিঃ। হিতিঃ ক্রেয়ম্। দগুনিধানমহিংসনম্। আর্জবিমবক্রছম্। ক্রিরাভ্যঃ সর্কাভ্যঃ সকাশাহ্দপরতিক্ষেত্যতত্ত্তং সর্কাং যথা বাদৃশমেভাদৃশং নাক্সদ্বাহ্মণশ্ত বিত্তং পুমর্থসাধনমত্যর্থঃ॥ ৩

অনুবাদ। ফলনিরপেক কর্মবোগ, ধ্যানবোগের বহিরক সাধন [ধ্যান-বোগের বিষয় ধ্যের বন্ধ, কর্মবোগের বিষয় নছে, অথচ কর্মবোগ চিত্তভন্তি ছারা ধ্যানযোগের কারণ হয়, এই জন্ম ধ্যানযোগের বহিরদ অর্থাৎ বাহ সাধন বলিরা শাল্রে কর্মবোগের নির্দেশ হয়], এই কারণ সন্মাসরূপে তাহার ছতি করিয়া একণে কর্মযোগ বে ধ্যানবোগের সাধন, তাহাই দেখাইতেছেন,---"আক্রক্র" আরোহণ করিতে অভিলাষী, অনার্চ্চ (অর্থাৎ) ধ্যানযোগে অবস্থিতি করিতে অসমর্থ ব্যক্তির পক্ষে—ইহাই অর্থ। আক্ষক্ষ কিরুপ ? মুনি অর্থাৎ কর্মফল সম্ন্যাসী, কিনে আরোহণ করিতে অভিলাষী ? বোগে. [এই প্রকার ব্যক্তির] কর্মাই কারণ (অর্থাৎ) সাধন উক্ত হয়। ব্যক্তিই যোগারত হইলে [তাহার পকে] "শম" উপশম (অর্থাৎ) দর্ব কর্ম **হইতে** নির্তিই কারণ (অর্থাৎ) যোগার্চুত্তের সাধন উক্ত হয়। বেমন ধেমন কর্ম হইতে উপরত হয়, তেমন তেমন নিরায়াস ও জিভেজিয় ব্যক্তির চিত্ত সমাহিত হয়, এইরূপ হইলে সে শীঘ্র যোগারত হইরা থাকে। ব্যাসও এই প্রকারই বলিয়াছেন যে "একত্বপ্রতায়, সমতা, সত্যব্যবহার, শীল, হৈব্যু, অহিংসা, সারদ্য এবং ক্রমে ক্রমে ক্রিয়ানিচর হইতে উপরতি, এই কর্মচর ভার ব্রাহ্মণের পক্ষে অক্স কোন ধন নাই॥ ৩

> যদা হি নেন্দ্রিয়ার্থেরু ন কর্মস্বস্থক্ততে। সর্ববসকল্পসন্ধ্যাসী যোগারুত্তদোচ্যতে॥ ৪

আৰ্যা। বদা সর্বসভালাসী ইক্রিয়ার্থেষ্ কর্মক্ত ন অসুবজ্ঞতে তদা বোগান্নচ উচাতে ॥ ৪

অকুবাদ। বে সমর সর্বপ্রকার সকলের পরিভ্যাগকারী [কর্মী]

ইজিরার্থ কর্মসমূহে আর কর্ত্তব্যস্থ জ্ঞান করেন না, তথন সেই ব্যক্তি বোগারুড় বলিরা ক্থিত হন ॥৪

ভাষ্য। অথেদানীং কদা যোগারটো ভবতীত্যুচ্যতে। বদা সমাধীরমানচিন্তো যোগী হি ইন্দ্রিরার্থের্ ইন্দ্রিরাণামর্থাঃ শব্দাদরত্তের্ ইন্দ্রিরার্থের্ কর্মান্ত চ
নিত্যনৈমিত্তিকলাম্প্রতিবিদ্ধের্ প্রেরাজনাভাববৃদ্ধা নাত্র্যক্ষতে অন্ন্রন্থক কর্ত্ব্যভাবৃদ্ধিং ন করোভি ইত্যর্থঃ। সর্ক্রসংক্রসংস্থানী সর্কান্ সক্রান্ ইহামুত্রার্থকামহেতৃন্ সংক্রসিত্থ শীলমন্তেতি সর্ক্রমক্র্রান্নীতি বচনাৎ প্রবাংশত কামান্
সর্কাণি চ কর্মাণি সংক্রসেদিত্যর্থঃ। সঙ্করম্বা হি সর্ক্রে কামাঃ—

"সংকরমূলঃ কামো বৈ যক্তাঃ সম্বরসম্ভবাঃ। কাম জানামি তে মূলং সংকরাৎ তং হি জারসে। ন তাং সম্বরমিয়ামি তেন মে ন ভবিষ্যসি॥"

रेजामिश्रदः।

সর্কামপ্রিত্যাগে চ সর্ক্কশ্বদংস্থাস: সিজে। ভবতি "স বথাকামো ভবতি তৎক্রুত্তবিতি বৎক্রত্ত্বতি তৎ কর্ম ক্রুতে।" ইত্যাদি শ্রুতিভাঃ। "বদ্ধি ক্রুতে
কর্ম তত্তৎ কামস্ত চেষ্টিতম্॥" ইত্যাদিস্থতিভাগচ। আরাচ্চ। নহি সর্কসংক্রসংন্যাসে কশ্চিৎ স্পন্দিতুমণি শক্তঃ। তন্মাৎ সর্ক্সংক্রসন্ন্যাসীতি বচনাৎ সর্কান্
কামান্ সর্কাণি কর্মাণি চ ত্যাক্রমতি ভগবান্॥৪

আনন্দগিরিটীকা। যোগপ্রাপ্তে কারণকথননেন্তরং তৎপ্রাপ্তিকালং দর্শরিত্বং শ্লোকান্তরমবতারয়তি—অত্থিতি। সমাধানাবস্থা বদেত্যুচ্যতে। অত এবোক্তং সমাধীরমানচিত্তো যোগীতি। শন্ধাদিয় কর্মস্থ চাম্বরস্থ বোগারোহণ-প্রতিবন্ধকর্মাৎ তদভাবস্থ ভত্নপারছং প্রাসিদ্ধমিতি ভোতরিত্বং হীত্যুক্তম্। সর্বেষানপি সংক্রানাং বোগারোহণপ্রতিবন্ধক্ষমভিপ্রেত্য সর্বসংকরসংন্যাসীত্যত্র বিব-ক্ষিত্যর্থমাহ—স্ব্বানিতি। সর্বসংকরসংন্যাসেহিপি সর্বেষাং কামানাং কর্মণাঞ্চ প্রতিবন্ধক্ষমন্তবে কুতো যোগপ্রাপ্তিরিত্যাশব্যাহ—স্ব্বেতি। সর্বসংকরপরি-ত্যাগে বণোক্তবিধ্যুম্প্রানমবন্ধনিদ্ধমিতি মধানং সন্নাহ—সংক্রেতি। মুলোন্ধ্বনে চ তৎকার্যনিব্ভিরবন্ধস্থলভেতি ভাবং। তত্র প্রমাণমাহ—সংক্রের্ম্বল্বন্তি। তত্ত্বাধ্যরবৃত্তিরক্ষাক্তিতে ভাবং। তত্ত্ব প্রমাণমাহ—সংক্রের্ম্বল্বন্তি। তত্ত্বাধ্যরবৃত্তিরক্ষাবভিত্তেভাক্তমুপপাদরতি—কামেতি। সর্বসংক্রাভাবে কামাভাববং কর্ম্বাভাবত সিদ্ধন্থে ক্র্মণাং কামকার্য্যন্থাৎ তন্তির্ভিতি

প্রকৃষণি নির্ভিমুপন্ততি—সর্বকামেতি। বছতং কর্মণাং কামকার্যসং
তত্ত্ব শ্রুতিশ্বতী প্রমাণয়তি—স যথেতি। সপ্রবঃ স্বরপমজানন্ বংকলকামো
ভবতি তৎসাধন্ময়ুঠেয়তয়া বুদ্ধৌ ধারয়তীতি তৎ ক্রতুর্ভবতি বচ্চায়ুঠেয়তয়া গৃহাতি
তদেব কর্ম্ম বহিরপি করোতীতি কামাধীনং কর্ম্মান্তমিতি শ্রুতার্থঃ। কামজন্যং
কর্ম্মেত্যয়য়য়াতিরেকসিদ্ধমিতি ছোতয়িতুং স্মতৌ হিশসঃ। ন্যায়মেব দর্শয়তি—
নহি সর্বসংকয়েতি। স্থাপাদাবদর্শনাদিত্যথঃ। নিত্যনৈমিত্তিককর্মায়্রতানং
দ্রনিরস্তমিতি বক্তুম্পিশকঃ। শ্রুতিন্যায়সিদ্ধর্মপুসংহয়তি—ত্ম্মাদিতি॥৪

অনুবাদ। অনস্তর এইকণে কোন্ সময়ে [সাধক] যোগার হন, তাহাই
বলা হইতেছে—বে সময় সমাধীয়মানহাদর (অর্থাৎ বাহার চিন্ত সমাহিত হইরাছে
তাদৃশ) যোগী, ইন্দ্রিরার্থ সমূহে (ইন্দ্রিরের অর্থ অর্থাৎ শব্দাদি বিষয় ও ইন্ধ্রিরের
ক্রিয়া এই দিবিধ পদার্থ ইন্দ্রিরার্থ শব্দের দারা এইস্থানে অভিহিত হইতেছে) এবং
নিত্য নৈমিন্তিক কাম্য ও প্রতিষিদ্ধ কর্ম্মসমূহে, নিস্প্রােজনম্ব জ্ঞাননিবদ্ধন আর
পূর্বের ন্যায় অনুষক্ত হয় না অর্থাৎ "অনুষক্ত"-কর্ত্রাম্ব বোধ করে না। [এবং]
"সর্ব্বসন্থরসংন্যাদী" ঐহিক ও পার্ত্রিক সকল প্রকার কান্দের হেতু সংকর্মনিচরকে
পরিত্যাগ করাই বাহার স্বভাব, তিনিই সক্ষমংক্রসংন্যাদী [এই প্রকার হইলে]
দেই সময়ে [ঐ ব্যক্তি] যোগার্জ (অর্থাৎ) লব্ধযোগ বলিয়া উক্ত হন।
সর্ব্বসংক্রসন্ম্যাদী এই বিশেষণ দারা প্রতিপাদিত হইতেছে বে, সকল প্রকার
সম্বর্ধ ও সকল কণ্মের সন্মাদ ক্রিতে হইনে, কারণ সংক্রই সকল কান্মের মূল।

"সকল প্রকার কামই সংকল্প হইতে উৎপদ্ধ হয়। হে কাম, আমি তোমার মূল কারণকে জানিরাছি, তুনি সঙ্কল্প হইতে উৎপদ্ধ হও। তোমাকে আদি সংকল্পের বিষয় করিব না; তাহা হইলেই তুমি আমার [হাদরে] উৎপদ্ধ হইতে পারিবে না।" এই প্রকারের বাক্য, স্মৃতি শাস্ত্রে দেখিতে পাওয়া বাদ্ধ।"

সর্কান পরিত্যাগ করিলে সর্ককর্মের সংন্যাস সিদ্ধ হয়। "সেই পুরুষ বে প্রকার কামনা করে, সেইরূপ যাগকে সাধনবৃদ্ধিতে গ্রহণ করে, বে প্রকার যাগাদি ক্রিয়াকে সাধন বৃদ্ধির বিষয় করে, সে সেই প্রকার যাগাদিকর্মের অষ্ট্রান করিয়া থাঁকে", এই প্রকার শ্রুতিবাক্য দারাও ইহা প্রমাণ হইতেছে—

"লোক বাহা কিছু কর্ম করে, তাহা সকলই কামেরই বিলাস মাত্র", এই প্রকার স্বতিবাক্যও ইহাতে প্রমাণ বলিয়া গৃহীত হইয়া থাকে। বৃক্তিন বলেও ইহা সিদ্ধ হইতে পারে; কারণ সর্বপ্রকার সংক্রের সন্ন্যাস হইলে, নীব শানিত হইতেও পারে না। সেই কারণে [বিশ্ব করিতে হইবে বে, বোগার্ক ব্যক্তির পক্ষে] সর্বসংক্রসম্ভাসী এই পদটির উল্লেখ বারা ভগবান্ সকল প্রকার কাম ও সকল প্রকার কর্মের পরিত্যাগ করাইতেছেন॥ ৪

> উদ্ধরেদাত্মনাত্মানং নাত্মানমবদাদয়েৎ। আত্মৈব হাত্মনো বন্ধুরাত্মৈব রিপুরাত্মনঃ॥৫

আন্ত্র্য় । আত্মনা আত্মানম্ উদ্বেৎ। ন আত্মানম্ অবসাদক্ষেৎ; হি
(বভঃ) আত্মা এব আত্মনঃ বন্ধুঃ [তথা] আত্মা এব আত্মনঃ রিপুঃ ॥৫

জ্বনুবাদ। আপনি আপনার উদ্ধার করিবে, আপনাকে অবসর করিবে না, আত্মাই জাজ্বার বন্ধু এবং আত্মাই আত্মার রিপু হর ॥৫

ভাষ্য। বনৈবং বোগার্জ্ত্তদা তেন আত্মা আত্মনা উদ্তো ভবতি সংসারাদনর্থজাতাৎ অতঃ। উদ্ধরেৎ সংসারসাগরে নিমগ্রমাত্মনা আত্মানং তত উৎ উদ্ধি হরেছ্দরেও। যোগার্জ্জ্তামাপাদরেদিত্যর্থঃ। ন আত্মানমবসাদরেদ্ধাধো নরেদ্ধাধো গমরেও। আইন্ধৈব হি যত্মাৎ আত্মনো বদ্ধঃ। নহলুঃ কন্চিদ্বদ্ধঃ সংসারস্ক্রের ভবতি। বদ্ধরিপ তাবৎ মোক্ষং প্রতি প্রতিকৃল এব স্নেহাদি-বদ্ধনার-ভনত্বাৎ তত্মাদ্ যুক্তসবধারণমাইত্মব হাত্মনো বদ্ধরিতি। আইত্মব রিপু: শক্রর্থোং ভোহপকারী বাহাঃ শক্রঃ সোহপ্যাত্মপ্রস্কুক এবেতি যুক্তমেবাবধারণমাইত্মব রিপুরাত্মন ইতি॥৫

আনন্দগিরিটীকা। বোগার্
ভ্রন্থ কিং স্থাদিত্যাশক্ষাহ—হাদৈব্যিতি।
বোগারোহন্ত দুষ্টাদ্ষ্টোপারেরবপ্তকর্ত্তবাতারৈ মুক্তিহেতুত্বং তদ্বিপর্যয়স্থাধঃপতন-হেতৃত্বক দর্শর্মভি—অতইতি। তত্র হেতুমাহ—আত্মৈব হীতি। উদ্ধরণাপে-কামান্ধনঃ হুচরতি—সংসারেতি। সংসারাদ্র্দ্ধং হরণং কীদৃগিত্যাশক্ষাহ—
যোগার্
ভাতি মিতি। বোগপ্রাপ্তাবনান্থা তু ন কর্ত্তবেত্তাহ — নাত্মান্মিতি।
বোগপ্রাপ্তামিতি। বোগপ্রাপ্তাবনান্থা তু ন কর্তবেত্তাহ — নাত্মান্মিতি।
বোগপ্রাপ্তামিতি। বোগপ্রাপ্তাবনান্থা তু ন কর্তবেত্তাহ — নাত্মান্মিতি।
বোগপ্রাপ্তামিতি। বোগপ্রাপ্তাবনান্থা তু ন কর্তবেত্তাহ — নাত্মান্মিতি।
বোগপ্রাপ্তামিতি। বাগপ্রাপ্তাবনান্থা তু ন কর্তবেত্তাহ — নাত্মান্মিতি।
বোগপ্রাপ্তামিত ভালিতার্থা লাত্মান্য ক্রেল্ডাই বিষয়ে ক্রেল্ডাইন্ত্রাক্রিক্রির্যাদিশকাৎ তদম্প্রপ্রাপ্তিবিষয়ে প্রস্তৃতে। আত্মাতিরিক্র্যাপি শ্রোরপর্কারিশঃ স্প্রিসিদ্ধাদ্বধারণমন্ত্রচিত্রিভ্যানন্থ্যাহ— যোক্স্তু ইতি ॥৫

অনুধান । বে কালে এই প্রকার বোগারত হইবে, সেই সমর [সাধক]
অনর্থসমূহপূর্ণ সংসার হইতে আপনা হইতেই উদ্ভ হয়। [ইহাই বলা হইডেছে]
সংসারনিমগ্ন আত্মাকে আত্মার সাহাব্যেই সেই সংসার হইতে উদ্ধে উঠাইবে
অর্থাৎ ধ্যানযোগে আরুত করিবে। আত্মাকে অবসর করিবে না অর্থাৎ অধঃপাতিত করিবে না, কারণ আত্মাই আত্মার বন্ধু; [লোকপ্রসিদ্ধ] বন্ধু প্রকৃত্ত পক্ষে মোক্ষের প্রতিকৃত্তই হয়, কারণ ঐ বন্ধু স্লেহরূপ সংসারবন্ধনের হেতু। এই
অন্ত অবধারণ করা হইয়াছে যে, আত্মাই আত্মার বন্ধু [অপর ব্যক্তি বন্ধু নহে]
আত্মাই আত্মার শক্র, বাহিরের যদি কেহ অপকারী শক্র হয়, সে আত্মন্ধত বাবহারের ফলেই শক্র হয়; এই কারণে [এক্খলেও] অবধারণ করা হইতেছে বে,
আত্মাই আত্মার শক্র [অপর কেহ নহে] ॥৫

বন্ধুরাত্মাত্মনস্তস্থ্য যেনাজ্মৈবাত্মনা জিতঃ। অনাত্মনস্ত্র শক্রতে বর্ত্তেতাত্মৈব শক্রবৎ ॥৬

আনুয়। বেন আত্মনা এব আত্মা জিতঃ তস্য আত্মা আত্মন: বন্ধু: জনাত্মন: (মজিতেন্দ্রিয়স্য) আত্মা এব শক্রবৎ শক্রতে বর্তে ॥৬

অনুবৃদি। যে বাক্তি আন্থার (অর্থাৎ মনের) বলে দেহাদি জয় করিতে পারিয়াছেন, সেই বাক্তির আত্মাই আপনার বন্ধু হয়, যে বাক্তি অজিতেক্সিয়, ভাহার আত্মাই শত্রবৎ অন্থোর অহিভাচরণ করিয়া পাকে॥৬

ভাষ্য। সাবৈদ্যৰ বন্ধরাথৈর রিপুরাশ্বন ইত্যক্তং তত্র কিংলক্ষণ আত্মনো বন্ধ্ন কিংলক্ষণো বাশ্বনো রিপুরিত্যচাতে—বন্ধরাত্মাথ্যনন্তস্য তস্য আত্মনঃ স্ আত্মা বন্ধঃ যেন আত্মনা আত্মৈর জিতঃ আত্মা কার্য্যকারণসভ্যাতঃ যেন বনীকৃতঃ জিতেক্সির ইত্যর্থঃ। অনাত্মনন্ত অজিতাত্মনন্ত শক্রতে শক্রভাবে বর্ত্তেত আত্মের শক্রবদ্ বথা শক্ররাত্মনোহপকারী তথা আত্মা আত্মনোহপকারে বর্ত্তেত অনাত্মা ইত্যর্থঃ॥৬

আনন্দগিরিটীকা। উজ্জ্মন্ত প্রশ্নপূর্বকং শ্লোকান্তর্মবভাররতি—
আত্মিবেত্যাদিনা। একস্যৈবাদ্ধনো মিথো বিরুদ্ধং বর্ত্ত্বং রিপুদ্ধ লক্ষণভেদমন্তরেণাযুক্তমিতি চোদিতে বশীক্ষতসংঘাতস্যাজ্ঞানং প্রতি বৃদ্ধ্যমিতরস্য শক্ষদমিত্যবিরোধং দর্শমতি—বন্ধুরিত্যাদিনা। বশীক্ষতসংঘাতস্য বিক্ষেপাভাবাং
আত্মনি সমাধানসম্ভবাহ্নপর্মাজ্ঞানং প্রতি বন্ধ্যমিতি লাধরতি—ত্তেত্ত্বি।
অবশীক্তসংঘাতস্য প্নবিক্ষেপাপপত্তেরাদ্ধনি সমাধানাবোগাদাদ্ধানং প্রতি শক্ষ-

ভাবে প্রসিদশক্রবৎ আবৈর শক্রছেন বর্জেতেত্যুত্তরার্দ্ধং ব্যাকরোভি—অনাজ্মন-ইতি । দৃষ্টান্তং ব্যাচষ্টে—যুথেতি ৷ উক্তদৃষ্টান্তবশাদবশীক্রতসংঘাতঃ স্বস্য হিতানাচরণাদাশ্মানং প্রতি শক্ররেবেতি দার্গ্রিকমাহ—ত্রেণ্ডি ॥৬

অসুবাদ। আত্মাই আত্মার বন্ধ ও শক্ত ইহা বলা হইয়াছে। বিরূপ আত্মা আত্মার বন্ধু এবং কিরূপ আত্মাইনা আত্মার শক্ত হয়, তাহা বলা হইতেছে। সেই আত্মাই আত্মার বন্ধু, যে আত্মার দারা আত্মা জিত অর্থাৎ বশীকৃত হইয়াছে, এই হলে আত্মা এই শক্টির অর্থ দেহ ও ইন্দ্রির সমূহ। জিতেন্দ্রির ব্যক্তির আত্মাই আত্মার বন্ধু (ইহাই তাৎপর্য্য); অনাত্মা (অর্থাৎ) অজিতেন্দ্রির ব্যক্তির আত্মাই শক্তর ক্রায় শক্তভাবে (অর্থাৎ) অপকার করিতে প্রবৃত্ত হয়। অজিতেন্দ্রির আত্মা আপনিই আপনার অপকার করিয়া গাকে ইহাই অর্থ॥ ৬

> জিতাত্মনঃ প্রশান্তস্য পরমাত্মা সমাহিতঃ। শীতোক্ষপ্রথহঃখেষু তথা মানাপমানয়োঃ॥ ৭

অনুষ্য । জিতাত্মন: প্রশান্ত (সংস্থাসিন:) শীতোঞ্জ্পত্ঃধে**রু** তথা মানাপমানরো: প্রমাক্সা সমাহিতঃ (সাক্ষাদাত্মভাবেন প্রকাশিতঃ) ভবতি ॥ ৭

আনুবাদ। দেহ ও ইন্দ্রিসকলকে যিনি জয় করিতে পারিয়াছেন ও বাঁহার অস্তঃকরণ প্রসর, সেই সয়্যাসীর শীত উষ্ণ ও তঃখ সম্পর্কে এবং মান বা অপ্যানেও প্রমান্ত্রা সক্ষোৎ আ্রাভাবে প্রকাশ পাইয়া পাঁকেন। ৭

ভাষ্য। বিশিতাত্মন ইতি। জিতাত্মন: কার্য্যকারণাদিরপ্সব্যাত আত্মা বিতো বেন স বিভাত্মা তম্ম বিভাত্মন: প্রশাস্তম্ম প্রসাম্ভাকরণাম্ম সঙ্গাসিন: প্রমাত্মা সমাহিতঃ সাক্ষাদাত্মভাবেন বর্ত্তে ইত্যর্থ:। কিংচ শীতোত্ম-ক্ষ্যহাবের তথা মানে চ অপুমানে চ মানাপ্যানয়ো: পূ্জাপ্রিভবয়ো:॥ ৭

আনন্দগিরিটীকা। কণং সংযতকার্য্যকরণশু বন্ধরাম্মেতি ততাহ— জিতাতান ইতি। জিতকার্য্যকরণসংঘাতশু প্রকর্ষোপরতবাঁহাভ্যস্তরকরণশু পরমাম্মা বিকেশেণ পুনঃ পুনরনভিভ্রমানো নিরন্তরং চিত্তে প্রথতইত্যর্থঃ। জিতাম্মানং সংস্তরসমন্তর্কর্মাণম্থিকারিণং প্রদর্শ্য যোগালানি দর্শরভি— লীতৈতি। সমঃ স্যাদিতাধ্যাহারঃ। পূর্বার্ধং ব্যাচ্টে—জিতেত্যাদিনা। ক'কেবলং তদা প্রমাম্মা সাকাদাম্মভাবেন বর্ত্তত-কিন্তু শীডোঞ্চাদিক্রিপু নাুর্ চাল্যতে তর্জানাদিভাররার্দ্ধং বিভঙ্গতে—কিঞ্ছেতি। তেরু সমঃ স্যাদিভি ব্যক্ষঃ ॥ ৭

অসুবাদ। জিতাখন ইত্যাদি [শ্লোকের মর্থ] "জিতাখা" দেহ ও ইব্রিয়াদির সমষ্টিরপ আখা জিত হইয়াছে যৎকর্তৃক, তিনি জিতাখা; "প্রশাস্ত" প্রসন্নচিত্ত, জিতাখা ও প্রসন্নচিত্ত হইলে সংস্থাসীর প্রমাখা সমাহিত [হয়] অর্থাৎ সাকাৎ আয়ভাবে প্রকাশ পায়; শীত উষ্ণ [ও তজ্জনিত] স্থকঃখসমূহে এবং মানে বা অপমানে [সকল অবস্থাতেই প্রমাখা সমাহিত হয়]; মান ও অপমান শক্ষের অর্থ পূজা ও প্রিভিব ॥ ৭

জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা কৃটস্থো বিজিতেন্দ্রিয়ং।
যুক্ত ইত্যুচ্যুতে যোগী সমলোফীশাকাঞ্চনঃ॥ ৮

আনুর্। জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্যাত্মা কৃটস্থ: বিজিতে ক্রিয়: সমলোষ্টাশাকাঞ্চনো বোগী যুক্তঃ (সনাহিতঃ) ইতি উচ্যতে ॥ ৮

অনুবাদ। জ্ঞান ও বিজ্ঞানের দারা বাঁহার আঁছা হুপ্ত, যিনি কুটস্থ (অপ্রকম্পিত) বাহার ইন্দ্রিয়নিচয় বশীক্ষত, লোষ্ট প্রস্তর ও কাঞ্চনে বাঁহার সমতাবৃদ্ধি হইয়াছে, দেই বোগীই যুক্ত (অর্থাৎ সমাহিত) বলিয়া নির্দিষ্ট হন॥ ৮

ভাষা। জানেতি। জানবিজ্ঞান স্থায়া জানং শারোকপদার্থানাং পরিজ্ঞানং, বিজ্ঞানং দু শারতো জ্ঞানাং তথৈব বামুভবকরণং তাভ্যাং জ্ঞানবিজ্ঞানভাগং দুগুঃ সংজ্ঞাতালংপ্রত্যয়ঃ সায়া সন্তঃকরণং বস্তু স জ্ঞানবিজ্ঞানদুগুাত্মা কৃটভোহপ্রকম্পো ভবভীত্যর্থঃ। বিজিতে নিয়শ্চ। য ঈদৃশঃ যুক্তঃ
সমাহিত ইতি দ উচ্যতে কথ্যতে। স যোগী সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ লোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ লোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ নানি সমানি বস্তু সঃ সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ ॥ ৮

আনন্দ্গিরিটীকা ৷ চিত্তসমাধানমেব বিশিষ্টকলঞ্চেদিষ্টং তর্হি কণভূতঃ
সমাহিতো ব্যবহিন্নতে তত্রাহ—জ্ঞানেতি ৷ পরোক্ষাপরোক্ষাভ্যাং জ্ঞানবিজ্ঞানাভ্যাং সংজ্ঞাতালং প্রত্যয়েহক্রিয়ো হর্ষবিধাদকামক্রোধাদিরহিতো যোগী যুক্তঃ
সমাহিত ইতি ব্যবহারভাগী ভবজীতি পাদত্রন্নব্যাখ্যানেন দর্শরতি—জ্ঞানমিত্যাদিনা ৷ সচ যোগী পরমহংসপরিব্রাজকঃ সর্পাত্রোপেকার্ছিরনতিশরবৈরাগ্যভাগীতি কথরতি—স যোগীতি ৷ ৮

অকুবাদ। জ্ঞান ইত্যাদি (শ্লোকের অর্থ) ^{ট্র}জানবিজ্ঞানভৃথাত্মা জ্ঞান [শক্ষে অর্থ] শালীয় বিষয় সমূহের পরিজ্ঞান; বিজ্ঞান [শক্ষের অর্থ] শাল্লের ছারা পরিজ্ঞাত সেই, পদার্থ সমূহকে সেইভাবে নিজের অমুভবের বিষয় করা এই প্রকার জ্ঞান ও বিজ্ঞানের দারা বাঁহার আত্মা (অর্থাৎ অস্তঃকরণ) তৃপ্ত হইরাছে (অর্থাৎ) অস্ত সকল বস্তুর প্রতি বাঁহার অপেক্ষণীয়তা নাই, এই প্রকার বৃদ্ধি হইরাছে, তিনিই জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা [এই শব্দের দারা অভিহিত হইতেছেন]। এবং "কূটস্থ" অপ্রকলপ হন। "বিজিতেজ্ঞিয়", যিনি ঈদৃশ হন, তিনিই যুক্ত (অর্থাৎ) সমাহিত উক্ত হইরা পাকেন। সেই যোগী "সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চন" লোষ্ট (চেলা) অশ্যা (প্রস্তুর) কাঞ্চন (স্বর্ণ) এই তিনটি বস্তুই বাঁহার নিকটে সমান তিনিই সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চন॥ ৮

স্হৃদ্মিত্রার্ দোসীনমধ্যস্থদেষ্যবন্ধুরু। সাধুম্বপি চ পাপেষু সমবুদ্ধির্বিশিষ্যতে॥ ৯

অনুয়। স্থলি আর্গুদাদীন মধ্যস্থ ছেষ্যবন্ধ্ সাধুষ্ অপি চ পাপের্ সমব্দিঃ
[বোগী] বিশিষ্তে (সর্কোৎকুটো ভবতীত্যর্থঃ) ॥ ১

অমুবাদ। স্থলৎ, মিত্র, অরি, উদাসীন, মধ্যস্থ, দ্বেষা, বন্ধ প্রভৃতি, সাধু বা পাপকারী বাক্তিগণের উপর যাহার সমতাক্ষান হয়, সেই যোগীই সকল যোগিগণের মধ্যে উৎকৃষ্ট॥ ১

ভাষ্য। কিঞ্চ স্থানি লোকার্ননেকং পদন্। সুস্দিতি প্রভ্যুপকার মনপেক্ষ্য উপকর্ত্তা, নিজ্ঞ সেহবান্, অরি: শক্তঃ, উদাসীনো ন কস্তাচিৎ পক্ষং ভক্তে। মধ্যন্থো যো বিরুদ্ধরোক ভাষাঃ হিতৈষী। দেয়া আয়ানোহপ্রিয়া। বন্ধু: সম্বাধী ইতি এতের্, সাধুষু শাস্তাহ্মবর্তিমপি চ পাপেষ্ প্রতিষিদ্ধকারিষু—সর্কেষ্টেত্রে সমর্দ্ধি: কঃ কিং কর্মেত্যব্যাপ্তবৃদ্ধিরিত্যর্থাঃ। বিশিষ্যতে, বিমৃচ্যতে ইতি বা পাঠান্তরং যোগার্ভানাং সর্কেবানয়নুক্ম ইত্যর্থাঃ॥>

আনন্দ গিরিটাক।। যোগার্কান্থ প্রশন্ত ইনিভাগে যোগস্থান্দান্তরং দর্শরতি—কিঞ্চেত। পদচ্ছেদঃ পদার্থোক্তিরিতি ব্যাখ্যানাক্দং সম্পাদরতি—স্কুছেদিতি। অরিন নি পরোক্ষমপকারকঃ প্রভাসমপ্রিয়ো দ্বেষ্ট্রতি বিভাগঃ। সমস্কিরিতি ব্যাচাই কঃ কিমিতি। প্রথমো হি প্রশ্নো জাতিগোত্রাদিবিষয়ঃ বিভীরো ব্যাপারবিষয়ঃ। উক্তপ্রকারেণাব্যাপ্তবৃদ্ধিছে সর্কোৎকর্ষোবা সর্ক্র-পাপবিমাক্ষো বা সিধ্যতীত্রাহ—বিশিষ্যতইতি। পাঠবরেহপি সিদ্ধার্থং সংগৃষ্থ কথরতি—যোগার্কাঢ়ানামিতি॥ ১

অকুবাদ। আরও। স্ফ্লিড্যাদিশ্লোকের সর্বভাগই একটি পদ [হইরাছে

জানিবে]। প্রত্যুপকারের অপেকা না করিয়া বে উপকার করে, সে স্থছৎ;
বে অপকার করে সে অরি; যে কাহারও পক্ষ অবলম্বন না করে সে উদাসীন;
পরস্পর বিরুদ্ধ ব্যক্তিদ্বরেরই যে হিত কামনা করে সে মধ্যস্থ, যাহাকে ভাল লাগে
না সেই দ্বেষ্য; যে সম্বন্ধী সেই বন্ধু,—ইহারা এবং সাধু (অর্থাৎ) শাস্ত্রান্থবর্ত্তী
অথবা পাপ (অর্থাৎ) প্রতিষিদ্ধের আচরণকারীই হউক, উভয়থাই ইহাদের
উপর বাহার সাম্যবৃদ্ধি আছে অর্থাৎ ইহাদের মধ্যে কে কি কর্ম্ম করিতেছে,
এই ভাবিয়া যাহার চিত্ত ব্যাপ্ত হয় না, তিনিই বিশিষ্ট বলিয়া পরিগণিত .
হন (অর্থাৎ) যোগারু ব্যক্তিগণের মধ্যে সেই ব্যক্তিই সর্ব্বাপেকা উত্তম।
এই শ্লোকে, বিশিয়তে এই স্থলে বিমৃত্যতে, এই প্রকার পাঠান্তরও আছে
(তাহার অর্থ বিমৃক্ত হইয়া গাকে)॥

যোগী যুঞ্জীত সততমাত্মানং রহসি স্থিতঃ।
একাকী যতচিভাত্মা নিরাশীরপরিগ্রহঃ॥ ১০

অনুয়। রহসি স্থিতঃ একাকী যতচিত্তাত্মা নির্মেশীঃ অপরিগ্রহঃ [সন্] যোগী আত্মানং সততং সূঞ্জীত॥ >•

আমুবাদ। নির্জনে স্থিত একাকী বীতভৃষ্ণ ও প্রতিগ্রহবর্জিত হইয়া যোগী চিত্ত ও দেহের সংযম পূর্বক সর্বদা আত্মার সমাধান করিবেন ॥ ১০

ভাষ্য। অতএবমূত্রফ লপ্রাপ্তরে যোগী ধ্যায়ী যুঞ্জীত সমাদধ্যাৎ, সততং সর্বাদা, আত্মানম্ অস্তঃকরণম্, রহসি একান্তে, গিরিগুহাদৌ স্থিতঃ সন্ একাকী অসহারঃ। রহসি স্থিত একাকী চেতি বিশেষণাৎ সন্ধ্যাসং ক্ষতেতার্থঃ। মতচিত্তাত্মা চিত্তমস্তঃকরণং আত্মা দেহণ্চ সংযতে বস্তু স বতচিত্তাত্মা, নিরাশীঃ বীতত্কঃ, অপরিগ্রহঃ পরিগ্রহরহিত ইত্যর্থঃ। সংস্থাসিত্বেংগি ত্যক্তসর্বপরিগ্রহঃ সন্ যুঞ্জীত ইত্যর্থঃ॥ ১•

আনন্দণিরিটীকা। বংগাঞ্চবিশেষণবতো বোগারুটের্ উত্তমতে যোগায়ুর্চানে প্রযতিতব্যমিত্যঙ্গাভিদানানন্তরং প্রধানমভিদধাতি—অত্প্রব্যমিতি। আদর-নৈরন্তর্যাদীর্ঘকারতং বিশেষণত্তরং যোগত হচয়তি—সত্তমিতি। তত্তৈব গঞালাছাপত্তত্তি—রহসীত্যাদিনা। সর্বদেত্যাদরদীর্ঘকালযোক্ষপলক্ষণম্। প্রত্যগাত্মানং ব্যাবর্ত্তর্যভি—অন্তঃক্রণমিতি। গিরিপ্তহাদাবিত্যাদিশক্ষেন বোগপ্রতিবন্ধকত্ত্র্জনাদিবিধুরো দেশো গৃহতে। বিশেষণদ্বয়ত তাৎপর্যামাহ—রহসীতি। যোগং যুঞ্জানত সংস্থাসিনো বিশেষণান্তরাণি দর্শগতি—যুক্তেতি।

সতি সংস্থাসিত্বে কিমিতাপরিএহগ্রহণমর্থপুনক্বক্তেরিত্যাশঙ্কা কৌপীনাচ্ছাদনাদি-ৰূপি সক্তিনিবৃত্ত্যর্থমিত্যাহ—সংস্থাসিত্তেইপীতি॥ ১০

অমুবাদ। এই কারণে এইরূপ চরমকল পাইবার জন্ত "যোগী" ধ্যায়াঁ বাগে (অর্থাৎ) সমাধান করিবে, "সতত" সর্ব্যাণ [কাহার ?] 'আআার' অর্থাৎ আন্তঃকরণের ; একান্তে পর্বাতগুহাদিতে অবস্থিত ও 'একাকী' অসহায় হইয়া ; একান্তে স্থিত ও একাকী এই চইটি বিশেষণ পাকাতে 'সংক্রাস করিয়া' এই প্রকার অর্থই [পাওয়া যাইতেছে]। 'সতচিন্তাআা' (এথানে) চিত্ত শব্দের অর্থ অন্তঃকরণ, আআা এই শক্ষটির অর্থ দেহ, এই হুইটি পদার্থ যাহার সংযত হুইরাছে, তাহাকেই 'যতচিন্তাআা' [বলা বায়]। 'নিরাশীঃ' বীততৃক্ষ, 'অপরিগ্রহ' পরিগ্রহরহিত ইহাই অর্থ। সংক্রাসাশ্রম গ্রহণ করিয়াও [সর্বাঞ্রহারে] পরিগ্রহ ত্যাগপুর্বাক চিত্ত সমাধান করিবে, ইহাই তাৎপর্যাণ ১০

শুচৌ দেশে প্রতিষ্ঠাপ্য স্থিরমাসনমাত্মনঃ।
নাত্যুচ্ছ্রিতং নাতিনীচং চৈলাজিনকুশোভরম্ ॥ ১১
তত্ত্বৈকাগ্রং মনঃ কৃত্যা যতচিত্তেন্দ্রিয়ক্তিয়ঃ।
ভিপবিশ্যাসনে যুঞ্জ্যাদ্ যোগমাত্মবিশুদ্ধয়ে॥ ১২

অন্বয় । শুটো দেশে চৈলাজিনকুণোজনং নাত্যচ্চিত্র নাতিনীচং স্থিপম্ আত্মনঃ আসনং প্রতিষ্ঠাপ্য। বতচিত্তেন্দিয়ক্তিয়ঃ তত্ত্ব (আসনে) উপবিশ্ব একাগ্রং মনঃ ক্বতা আত্মবিশুদ্ধর বেগাং বুজ্ঞাৎ ॥ ১১।১২

অনুবাদ। পবিত্র দেশে, নীচে কুশ তাহার উপর মৃগচর্ম্ম এবং তাহার উপরে বস্ত্র এই প্রকার সনতি উচ্চ এবং অতিনিয় নিজের আসন সংস্থাপন করিয়া, চিত্ত ও ইক্রিয়ের ক্রিয়া সংযত করিয়া. সেই আসনে উপবেশন করিয়া মনের একাগ্রতা সম্পাদন পূর্বক চিত্তের বিশুদ্ধির জন্ম সমাধি অবলম্বন করিবন॥ ১১।১২

ভাষ্য। অথেদানীং যোগং যুক্ততঃ আসনাগারবিহারাদীনাৎ যোগসাধনত্বেন নিরমো বক্তব্যঃ, প্রাপ্তযোগস্ত লক্ষণং তৎফলাদি চ ইত্যত আরভ্যতে। তত্ত্বা-সনমেব তাবৎ প্রথমম্ উচ্যতে। শুচৌ শুদ্ধে বিবিক্তে স্বভাবতঃ সংস্কারতো বা

চেলাজিনকুশোন্তরমিতি বা পাঠঃ

আনন্দগিরিটীকা। যোগং যোগাঙ্গানি চোপদিশ্র উত্তরসন্তশ্র তাৎপর্য্য-মাহ—অপ্রেতি। যোগস্বরূপকতিপয়তদঙ্গপ্রদর্শনানস্তর্য্যথশবার্থঃ। বিহার। मीनामिन्त्रामिनास्य गरशाकामनामिश्वावाखतरकमश्रद्भ उरक्नामि हिल्लामिन শব্দেন যোগফলং সম্যাগ জ্ঞানঞ্চ তংফলং কৈবল্যং ততো ভ্রষ্টপ্রভাত্যস্তিকাবিনষ্টত্ব-মিত্যাদি গৃহতে। এবং সমুদায়তাৎপর্য্যে দশিতে কিমাসীন: শ্রানন্তিষ্ঠন গছন কুর্বন বা যুঞ্জীতেত্যপেকায়ামনগুরশ্লোকতাংপর্য্যমাহ - তত্ত্তেতি। সপ্তমী। প্রথমং যোগানুষ্ঠানস্থ প্রধানমাসীনঃ সম্ভবাদিতি স্থায়াদিতি যাবং। বিবি-ক্তমং দেধা বিভন্ধতে—স্বভাবতইতি। আসনস্থাইছর্য্যে তত্ত্রোপবিশ্র বোগমমু-ভিষ্ঠতঃ সমাধানাযোগাৎ যোগাসিদ্ধিরিত্যভিসন্ধার বিশিন্টি—অচলনমিতি। মান্ততেংশিলিতি ব্যুৎপত্তিমমুস্ত্যাহ—আসন্মিতি। আত্মনইতি পরকীয়াসন-ব্যুদাসার্থং পতনভয়পরিহারার্থং নাত্যুচ্চমিত্যুক্তং, নাপ্যতিনীচমিতি ভূতলপাযাণাদি **সংশ্লেষে** বাতক্ষোভাগ্নিমান্দ্যাদিসম্ভাবিতদোষনিরাসার্থং, টেলং বস্ত্রমঞ্জিনং চর্ম্ম পশ্নাৎ তচ্চ মৃগক্ত কুশা দর্ভাক্তে চোত্তরে যশ্মিলুপরিষ্ঠাদারভা তত্তথোক্তম্। . প্রথমং চৈলং ততোহজিনং ততশ্চ কুণাইতি প্রতিপন্নপাঠক্রমমতিক্রম্যানৌ কুশান্তভোজিনং ভতশৈচলমিতি ক্রমং বিবক্ষিত্বাহ—বিপরীতোহত্তেতি। যথোক্তমাসনং সম্পাদ্য কিং কর্ত্তব্যমিতি প্রশ্নপূর্বকং কর্তব্যং তল্লিদ্দিশতি-প্রতিষ্ঠাপোতি। যোগং যুঞ্জানশ্রেতিকর্ত্তব্যতাকলাপং পৃছতি—কথমিতি। স্র্বেভ্যো বিষয়েভাঃ সকাশাৎ প্রত্যাহত্য সনসো যদেকশ্রিরেব ধ্যেরে বিষয়ে সমাধানং, বচ্চিত্তস্তেন্দ্রিয়াণাঞ্চ বাহ্যক্রিয়াণাং সংব্যানং তত্ত্তরং ক্লম্বা বোগমফু-তিঠেদিত্যাহ—সূৰ্ত্বেতি। আসনে বথোক্তে স্থিতা বংগাক্তমা রীত্যা বোগাসু-ষ্ঠানক্ত প্রশ্নপূর্বকং ফলমাহ—স কিমর্থমিত্যাদিনা ॥১১১।১২

অনুবাদ। অনন্তর একণে যোগীর বোগের প্রতি সাধনস্বরূপ আসন

আহার ও বিহারাদির নিয়ম বলিতে হইবে এবং যোগার্চ ব্যক্তির লক্ষণ ও ষোগ প্রাপ্তির ফলও বলিতে হইবে, এই জন্ম আরম্ভ করা যাইতেছে। তাহার নধ্যে প্রথমে আসন [কিপ্রকার] তাহাই বলা যাইতেছে। শুচি (অর্থাৎ) স্বভাবতঃ অথবা গোময়াদি লৈপরূপ সংস্কার দারা বিশুদ্ধ দেশে (অর্থাৎ) স্থানে. স্থির অচল নিজের আসন সংস্থাপিত করিয়া; [সেই আসনের বিশেষণ দেওরা হইতেছে] 'নাত্যুচ্ছিত' অতীব উন্নত নহে এবং নাতিনীচ (অর্থাৎ) অত্যন্ত নিম্নও নহে 'চৈলাজিনকুশোত্তর' অর্থাৎ প্রথমে কুশাসন, তাহার উপর মৃগচর্ম এবং তাহার উপর চেল বন্ত্র পাতিয়া আদন করিতে হইবে । 'চেলাজিন কুশোত্তর' এই পদটিতে যে প্রকার পাঠের ক্রম আছে, এথানে কিন্তু তাহার বিপরীত ক্রমই গ্রহণ করিতে হইবে পাঠক্রমান্ত্রপারে প্রথমে চৈল বস্ত্র, তাহার উপর দর্ম ও তাহার উপর কুশ, এই প্রকার অর্থ হইলেও উহা গ্রহণ না করিয়া অতাে কুশ তত্নপরি চর্মা ও তত্নপরি চৈল গ্রহণ করিতে হইবে, ইহারই নাম পাঠক্রম হইতে বিপরীত ক্রম]। [এইরূপ] আসন স্থাপন করিয়া [কি করিবে ?] সেই আসনে উপবেশন করিয়া যোগের অনুষ্ঠান করিবে। কি প্রকারে ? সকল বিষয় হইতে উপসংসত করিয়া চিত্তের একাগ্রতা করিবে [এবং] যতচিত্তে ক্রির-ক্রির [হইবে] ; চিত্ত ট্রিরসমূহ [এই অবর্থে] চিত্তেন্দ্রিয় [এই পদটি ব্যবস্তু হইরাছে]। সেই চিত্ত ও ইলিয় নিচয়ের ক্রিয়া সকলকে যে সংযত করিয়াছে, সে বতচিত্তেলিয়ক্রিয়। দে কি ফললাভের জ্বন্সূ এই প্রকার যোগের অন্তান করিবে? তাহাই ৰলিতেছেন,—আত্মবিশুদ্ধির জন্ম অর্থাৎ অন্তঃকরণের বিশুদ্ধিরূপ ফলের জন্ম; ইহাই তাৎপর্য্য ॥ ১১৷১২

> সমং কায়শিরোগ্রীবং ধারয়ন্নচলং স্থিরঃ। সংপ্রেক্ষ্য নাসিকাগ্রং স্থং দিশশ্চানবলোকয়ন্॥ ১৩

অনুষ্ । কারশিরোগ্রীবং সমং [তগা] অচলং পারয়ন্ সং নাসিকাগ্রং সংপ্রেক্য দিশঃ অনবলোকয়ন্ চ ॥ ১৩

অমুবাদ। দেহ মন্তক ও গ্রীবাকে সমভাবে এবং নিশ্চলভাবে ধারণ করিবে এবং দিক্ সকলের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ না করিয়া নিজের নাসিকাগ্রে স্থির দৃষ্টি বিশ্রাস পূর্বক [বোগ করিবে] ॥ ১৩

ভাষ্য ৷ বাহমাসনমূক্তম্ অধুনা শরীরধারণং কথমিত্যুচ্যুতে,---সমং

কান্ধশিরোগ্রীবং কান্নশ্চ শিরশ্চ গ্রীবাচ কান্নশিরোগ্রীবং তৎ সমং ধারমন্
অচলং চ সমং ধারমতঃ চলনং সম্বতি অতো বিশিনষ্টি অচলমিতি। স্থিরঃ
স্থিরোভূষা ইত্যর্থঃ। বং নাসিকাগ্রং, সংপ্রেক্ষ্য সম্যক্প্রেক্ষণং দর্শনং ক্লম্বেতি
বৈশক্ষোলুপ্তো জন্তব্যঃ। নহি স্থনাসিকাগ্রসংপ্রেক্ষণমিহ বিধিৎসিতং,
কিং তহি, চক্ষ্যোদ্ ষ্টিসন্নিপাতঃ। স চান্তঃকরণসমাধানাপেক্ষো বিবক্ষিতঃ।
স্থনাসিকাগ্রসংপ্রেক্ষণমেব চেদ্বিবক্ষিতং মনস্তব্রৈব সমাধীয়েত নাম্মনি।
আক্মনি হি মনসঃ সমাধানং বক্ষাতি আত্মসংস্থং মনঃ ক্লম্বেতি। তত্মাদিবশক্ষ্যালিপেন অক্ষোদ্ ষ্টিসন্নিপাত্রেব সংপ্রেক্ষ্য ইত্যুচ্যতে। দিশশ্চানবলোক্সন্
দিশাং চাবলোকনমন্তরা অকুর্বন্ ইত্যর্থঃ॥১৩

আনন্দগিরিটীকা। উক্মন্তানন্তরশ্লোকত প্নক্রক্মর্থনাহ—বাত্ত-মিতি। সমত্মজুত্বং কারঃ শরীরমধ্যম। অচলমিতি বিশেষণ্মবভার্ষ্য ভক্ত তাৎপর্যামাহ—সমমিতি। কার্য্যকরণয়োর্বিষয়পারবশুশূন্তব্মচলত্বং হৈর্ব্যম্। কিমিতি ইবশন্ধলোপোহত কল্পাতে স্বনাসিকাগ্রসংপ্রেক্ষণমেব যোগান্ধদোত্ত বিধিৎসিতং কিং ন স্থাদিত্যাশঙ্ক্ষাচ—ন হীতি। তহি বিমত্ত বিবক্ষিতমিত প্রশ্নপূর্ব্বকমাহ—কিং তহীতি। দৃষ্টিসন্নিপাতো দৃষ্টেশ্চক্ষ্যো রূপাদিবিষয়প্রবৃদ্ধি-রাহিত্যম। কণমসাবনায়াসেন সিধ্যতি ততাই—সচেতি। সমাধানশু প্রাধান্তে-নাত্র বিবক্ষিতথাৎ দুষ্টের্কহির্কিষয়ত্বেন তম্ভঙ্গপ্রসঙ্গাৎ তম্ভা বিষয়েভ্যো ব্যাবুজ্যা-স্থারের সন্নিপাতো বিবৃক্ষিতো ভাতীতার্থঃ। তথাপি কথং স্বনাসিকাগ্রসংপ্রেক্ষণমত শ্রতমবিবক্ষিত্রনিত্যাশক্ষাহ—স্বনাসিকেতি। তত্ত্রৈব মন:সমাধানে কা হানি-রিত্যাশঙ্কা বাক্যশেষবিরোধান্মৈনমিত্যাহ—আত্মনি হীতি। বিং তর্হি সংপ্রেক্ষ্যেত্যাদে বিবক্ষিত্মিত, শেক্ষ্যাহ—তন্মাদিতি । দক্ষিণোত্তরচকুষোর্ঘা দৃষ্টি প্রতা বাহাদবিষয়াদ্বৈমুখ্যেনাস্তরেব সন্নিপতনমত্র স্বকীয়ং নাসিকাগ্রং নাসি-কান্তং সংপ্রেক্ষোভি বিবক্ষিভমিত্যর্থঃ। তত্ত্রৈবোত্তরমপি বিশেষণমমুক্রনমিত্যাহ— দিশক্ষেত্তি। অনবলোকয়য়াসীতেত্যভরত সম্বন্ধঃ। অন্তরান্তরা দিশামবলোকন নপি যোগপ্রতিবৃদ্ধকমিতি তৎপ্রতিষেধ: ॥ ১৩

অনুবাদ। বাফ আসন বলা হইয়াছে, একণে কি প্রকারে শরীরকে ধারণ করিবে, তাহাই বলা হইতেছে। দেহ, মন্তক ও গ্রীবাকে সমভাবে ও নিশ্চলভাবে ধারণপূর্বক, সমভাবে ধারণ করিলেও কুম্পের সম্ভাবনা আছে; এই জন্ম বিশেষ করিয়া বলিতেছেন যে, নিশ্চলভাবে [ধারণ পূর্বক], স্বরং স্থির হইয়া ইচাই, তাৎপর্যার্থ। এবং নিজের নাসিকার অঞ্ভাগকে যেন

সম্যক্ প্রকারে দর্শন করিয়া [এখানে যেন এই অর্থে প্রয়ক্ত ইব শক্টি নাই বলিয়া, তাহার লোপ হইয়াছে, ইহা বুঝিতে হইবে], কারণ এই স্থলে নিজ নাসিকাগ্রের সম্যক্দর্শন বিধান করিবার অভিলাষ [ভগবানের] ছিল না; তবে কি ? [বিধান করিয়াছেন ?] নাসিকাগ্রে চক্ষ্র্যয়ের দৃষ্টির সংনিপাত [এই স্থলে বিহিত হইয়াছে]; তাহাও চিত্তের বাহাতে একাগ্রতা হইতে পারে, তাহার জন্মই বিবক্ষিত হইয়াছে । নিজের নাসিকাগ্রের প্রতি সম্যগ্ দর্শনই যদি এই স্থলে বিবক্ষিত হইত তাহা হইলে, মনও সেই থানেই সমাহিত হইত, আত্মাতে সমাহিত হইতে পারিত না । "আত্মসংস্থং মন: ক্রত্রা" (মনকে আত্মাতে সমাহিত করিয়া) ইত্যাদি শ্লোকে কিন্তু, আত্মাতেই মনের সমাধান করিতে হইবে, ইহা পরে বলিবেন; সেই কারণে, এই স্থলে ইব শব্দের লোপ ছারা নম্বনের দৃষ্টিসন্নিপাত (নাসিকার অগ্রভাগে বাহ্ম নমন ব্যাপারের স্থিরতা সম্পাদনই) 'সংপ্রেক্ষণ করিয়া' এই শব্দের অর্থ [বুঝিতে হইবে] এবং দিক্ সকলকে না দেখিয়া (অর্থাৎ) সমাধিকালের মধ্যে বাহিরের দিকে দৃষ্টিপাত না করিয়া [যোগ করিবে], ইহাই তাৎপর্যা ॥ ১৩

প্রশান্তাত্মা বিগতভীর্ত্র ক্ষচারিব্রতে স্থিতঃ। মনঃ সংযম্য মচিত্তো যুক্ত আসীত মৎপরঃ॥ ১৪

আনুষ্ । প্রশাস্তাত্মা বিগতভী: বন্ধচারিব্রতে স্থিতঃ মচিকো: মৎপর: যুক্তঃ [সন্] মন: সংযম্য আসীত ॥ ১৪

অনুস্বাদ। প্রশাস্তিক, ভয়রহিত, শুরুশুক্রারা প্রস্তৃতি ব্রন্ধচারি-ব্রতে রত, মচিন্তানিরত এবং মৎপ্রায়ণ হুইয়া মনের সংযম পূর্বক উপ্রেশন করিয়া গাকিবে॥ ১৪

ভাষ্য। কিঞ্চ। প্রশান্তাত্মা প্রকর্ষণ শান্ত সাত্মা সন্তঃকরণং যন্ত সোহয়ং প্রশান্তাত্মা, বিগতভীবিগতভয়ঃ, ব্রহ্মচারিব্রতে স্থিতঃ ব্রহ্মচারিশো বতং ব্রহ্মচর্যাং গুরুক্তপ্রাক্তিকাভুক্ত্যাদি, তন্মিন্ স্থিতঃ তদমুষ্ঠাতা ভবেদিত্যর্থঃ। কিঞ্চ মনঃ সংযায় মনসঃ বৃত্তীরূপসংস্কত্য ইত্যেতং। মচিত নুমরি পরমেশবরে চিত্তং যন্ত সোহয়ং মচিতেঃ, যুক্তঃ সমাহিতঃ সন্ আসীত উপবিশেৎ; মৎপরঃ অহং পরো যন্ত সোহয়ং মৃৎপরঃ। ভবতি, কশ্চিৎ রাগী স্ত্রীচিত্তঃ নতু ক্রির্মেব পরত্বেন গৃহ্লাতি, কিং তর্হি রাজানং মহাদেবং বা অয়ং তু মচিত্রো মৎপরশ্য॥ ১৪

আনন্দ্রগিরিটীকা। যোগং বুঞ্জানস্থ বিশেষণাস্তরাণি দর্শয়তি-কিঞ্চেতি।

ষ্ণস্তঃকরণত প্রশান্তিঃ রাগদেষাদিদোষরাহিত্যং, ততাশ্চ প্রকর্ষে রাগাদিহেতো-রিপ নিবৃত্তিঃ। বিগতভয়তং সর্কর্মপরিত্যাগে শান্তীয়নিশ্চরবশায়িঃসন্দিগ্ধবৃদ্ধিত্বম্, ভিন্দাভূক্ত্যাদীত্যাদিশন্দেন ত্রিববণ-মানশৌচাচমনাদি গৃহতে। বিশেবণাস্তরমাহ
ক্রেণ্ডেতি। উপসংহত্য যোগনিষ্ঠো ভবেদিতি শেষঃ। মনোবৃত্ত্যপসংহারে ধ্যানমপি ন সিধ্যেৎ তত্ত তদ্বৃত্ত্যাবৃত্তিরপদ্ধাৎ ইত্যাশক্ষ্যাহ—মচ্চিত্তইতি। বিষয়াস্তরবিষয়মনোবৃত্ত্যপসংহারেণ আত্মন্তব তল্লিয়মনান্ন ধ্যানাম্বপপত্তিরিত্যর্থঃ। মচিত্তত্বে নৈব মৎপরহদিদ্ধত্বাং মৎপরইতি পৃথগ্ বিশেবণমনর্থক্সিত্যাশক্ষাহ—
ভব্তীতি। অপ্তঃকরণ দ্বিগোগ্রাবান্তর্কলম। ১৪

অনুবাদ। আরও [যোগীর বিশেষণ বর্ণিত হইতেছে], "প্রশাস্তাত্মা" আয়া (অর্থাৎ) অন্তঃকরণ, যাহার প্রকৃষ্টরূপে শাস্ত হইয়াছে, সেই যোগীই প্রশাস্তায়া; "বিগতভী" ভয়শৃত্ম; "প্রক্ষানিরতে স্থিত" প্রক্ষানিরত প্রক্ষার্যা (অর্থাৎ) গুরুগুলারা এবং ভিক্ষাভোজনাদি; তাহারই অমুষ্ঠানকারী হইবে, ইহাই অর্থ! আরও মনের সংয়ম-করিয়া (অর্থাৎ) বাছ বিষয়ে মনের বৃত্তি সমূহের উপসংহার করিয়া, ইহাই তাৎপর্যা; আমি পরমেশ্বর; আমার প্রতি যাহার চিত্ত [সংনিবিষ্ট হয়], তাঁহারই নাম মচ্চিত্ত; এই প্রকার সমাধিনিরত হইয়া উপবেশন করিবে। আমিই যাহার পরম [গতি], তাঁহাকে মৎপর কহা যায়। কোন আসক্ত ব ক্তি স্ত্রীচিত্ত হয় বটে; কিন্তু একেবারে স্ত্রীকেই পরম বিলয়া গ্রহণ করে না, কি তবে ? রাজা অথবা মহাদেবকে পরম বিলয়া আশ্রম করিয়া গাকে; এই যোগী কিন্তু সচিত্ত এবং মৎপর হইবেন॥ ১৪

যুঞ্জন্মেবং সদাস্থানং যোগী নিয়তমানসঃ। শাল্ডিং নির্বাণপারমাং মৎসংস্থামধিগচ্ছতি॥ ১৫

অন্ত্রয়। এবং (উক্তপ্রকারেণ) নিয়তমানসঃ [সন্]সদা আত্মানং সূঞ্জন্ যোগী মৎসংস্থাং নির্দ্ধাণপ্রমাং শান্তিং সমধিগচ্ছতি ॥ ১৫

অকুবাদ। এই প্রকারে সংযতচেতা হইয়া যোগী সর্বাদা আত্মবিষয়ে সমাধি করিলে, আমার অধীন যে মোকপর্যাবসানরপ শান্তি, তাহা লাভ করিতে সমর্থ হন॥ >৫

ভাষ্য। অথেদানীং যোগফলম্চাতে। যুঞ্জন্ সমাধানং কুর্বন্ এবং য়থোক্তেন বিধানেন সদা আত্মানং যোগী নিয়তমানসঃ নিয়তং সংযতং মানসং মূলো যুক্ত সোহয়ং নিয়তমানসঃ, শান্তিম্ উপরতিং নির্বাণপরমাং নির্বাণং মোকস্তৎ প্রমা নিষ্ঠা যস্তাঃ শাস্তেঃ সা নির্কাণপ্রমা, তাং নির্কাণপ্রমাৎ মৎসংস্থাৎ মদধীনাম্ অভিগচ্ছতি প্রাপ্নোতি ॥ ১৫

আনন্দগিরিটীকা। সংপ্রতি পরমফলকথনপরত্বেন অনন্তরশ্লোকমাদত্তে—
আথেতি। বোগস্বরূপং তদক্ষাসনমপি তৎকর্ত্বিশেষণমিত্যভার্যন্ত প্রকথনানন্তর্মিত্যর্থশব্দার্থ: আয়ানং যুঞ্জয়িতি সম্বন্ধ: । আয়াশব্দো মনোবিষয়: । বণোক্তো
বিধিরাসনাদি: । উক্তবিশেষণত্রয়ভোতনার্থং সদেত্যক্তম্, যোগী ধ্যায়ী সংভাসীত্যর্থ: । মন:সংযমন্ত যোগং প্রত্যসাধারণত্বং দর্শয়তি—নিয়তেতি । শান্তিশব্দিতোপরতে: সর্ব্যসংসারনির্ত্তিপর্য্যসায়্তিং মন্তা বিশিন্তি—নির্বাণ্ডে ।
বণোক্তায়া মুক্তের্ক্রন্থরপাবস্থানাদনর্থান্তরয়মাহ—য়ৎ-সংস্থামিতি । নদধীনাং
মদান্থিকামিত্যর্থ: ॥ ১৫

অনুবাদ। অনস্তর এইকণে যোগের ফল বলা যাইতেছে,—এই প্রকার যথোক্তবিধানে "নিয়তমানদ" দংযতিতিত্ত [হইয়া] দর্মদা আত্মার যোগ (অর্থাৎ) সমাধান করিতে করিতে যোগী আমারই অধীন যে নির্মাণপরমা শান্তি, কাহাকে (অর্থা^৬। উপর্জিকে লাভ করিয়া থাকেন। "নির্মাণপরমা" [ইহার এর্থ] নির্মাণ শক্ষের সর্থ মোক্ষ, তাহাই যাহার শেষ সীমা, তাহারই নাম নির্মাণপরমা শান্তি॥ ১৫

নাত্যশ্বতম্ভ যোগোহস্তি ন চৈকান্তমনশ্বতঃ। ন চাতিস্বপ্রশীলম্ম জাগ্রতো নৈব চার্ল্জন॥ ১৬

অন্থ্য় | অতি (বহুতরম্) অগ্নতঃ (ভক্ষয়তঃ) ন যোগঃ অস্তি [তথা] একাস্তঃ (নৈরস্তর্যোগ) অনশ্নতঃ (অভ্যানস্ত) [ন যোগঃ অস্তি], অতিষপ্নশীলস্ত [তথা] অতিজ্ঞাগ্রতঃ [ন যোগোহস্তি] হে অর্জ্ন ॥ ১৬

অনুবাদ। হে অর্জুন! যে অতিশয় ভোজন করে, তাহার যোগ হয় না; যে একেবারে ভোজন করে না; তাহারও যোগ হয় না, যে অতিশয় নিদ্রালু তাহারও যোগ হয় না এবং যে অতিশয় জাগরণ করে, তাহারও যোগ হয় না॥ ১৬

ভাষ্য। ইদানীং গোগিন সাহারাদিনিয়ম উচ্যতে। নাতাপ্লতঃ আছা-সংমিতমন্ত্রপরিমাণমতীতা অপ্লতঃ অতাপ্লতঃ ন যোগোহন্তি। নচৈকান্তমনপ্লতঃ যোগোহন্তি। "মত হ বা আছাসংমিতমন্ত্রং তদব্তি তন্ত্র হিনন্তি বদ্ভূরো হিনন্তি তৎ যৎ ক্নীয়ো ন তদব্তি" ইতি শ্রুতেঃ। তথাদ্ যোগী নাম্বসংমিতাদ্রাদ- ধিকং ন্যানং বাশ্লীয়াৎ। অথবা বোগিনো যোগশান্তে পরিপঠিতাদন্নপরিমাণাদতি-মাত্রমশ্লতো যোগো নান্তি। উক্তং হি—

"অর্জমশনশু সব্যঞ্জনশু ভৃতীরমুদকশু ভূ।

বারোঃ সঞ্চরণার্থস্ত চতুর্থমবশেষয়েৎ॥"—ইত্যাদি পরিমাণ্ম। তথা ন চাতিস্বল্পশীলস্ত যোগো ভবতি, নৈব চাতিসাত্রং জাগ্রতো বোগো ভবতি চ অর্জুন॥ ১৬

আনন্দ্ গিরিটীক। আহারাদীত্যাদিশব্দেন বিহারজাগরিতাদি চোচ্যতে, আঅসংমিতমরপরিমাণমন্ত্রগাদি আহারনিরমে শতপথশ্রুতিং প্রমাণারতি—যতু হ বা ইতি । তদরং ভূজ্যমানং যহ হ বা ইতি প্রসিদ্ধা শ্রুত্যান্দিতমবতি অষ্ঠানবোগ্যতামাপাত্মার্হ্রগান্ধারেণ ভোক্তারং রক্ষতি ন প্নস্তদরমন্তানর্থার ভবতীত্যর্থঃ। যৎ প্রার্থারংমিতাদ্ ভূরোহিধিকতরং শান্ত্রমতিক্রমা ভূজ্যতে তদাআ্লানং হিনন্তি ভোক্ত্রনর্থার ভবতি। যচ্চারং কনীরোহরতরং শান্ত্রনিশ্রমাভাবাদম্বতে ভদরম্ অষ্ঠানবোগ্যতাদিঘারা ন রক্ষিতৃং ক্ষতে। তত্মাদত্যধিকমত্যরঞ্চারং ভোগমাক্ত্রক্ষানিবোগ্যতাদিঘারা ন রক্ষিতৃং ক্ষতে। তত্মাদত্যধিকমত্যরঞ্চারং ভোগমাক্তর্ক্ষানিবাল্যাক্রিয়ানভ্রেমাহ—অথ বেতি। কিং তদরপরিমাণ্য বোগশান্ত্রোক্রং যদধিকং নূনাং বা অভ্যবহরতো বোগামুগপত্তিরিত্যাশস্ক্যাহ—উক্তং হীতি।

"পূরয়েদশনেনার্দ্ধং তৃতীয়মুদকেন তু: বায়োঃ সঞ্চরণার্থার চতুথনবশেষরেং।" ইতি বাক্যমাদিশব্দার্থঃ। যথা * অত্যন্তমন্ধতোহনশ্রতশ্চ যোগো ন সম্ভবর্তি তথা অত্যন্তং ব্রপতো জাগ্রতশ্চ ন যোগঃ সম্ভবতীত্যাহ—তৃথেতি ॥ ১৬

অনুবাদ। এইকণে যোগীর আহারাদির নিরম বলা হইতেছে; "অতিশয় অশনকারীর" অর্থাৎ আত্মপরিমিত অন্নপরিমাণ হইতে অধিক ভক্ষণকারীর বোগ হয় না। একান্ততঃ অনশনকারীরও যোগ হয় না; শ্রুতি প্রমাণের দারা ইহা জানিতে পারা যায়। কারণ শ্রুতিতে কথিত হইয়াছে যে, যাহা আত্মপরিমিত অন্ন, তাহাই [শরীর] বক্ষার প্রতি হেতু, তাহা [শরীরের] কোন হানি করে না; যাহা পরিমাণের অধিক, তাহা [শরীরের] হানি করে এবং যাহা পরিমিত হইতে অন্ন তাহা শরীর রক্ষা করিতে পারে না। সেই কারণে যোগী আত্মসংমিত অন্ন হইতে অধিক বা ন্যুন অন্ন ভক্ষণ করিবেন

নাত্যস্তমশ্বতোহনশ্বতশ্বেতি পাঠঃ প্রারেণ সর্কেবের গ্রন্থের্ দৃগ্যতে। পাঠোহয়ং প্রানাদিক

এব।

না। অথবা যোগশান্তে বোগীর পক্ষে যেরপ অন্নের পরিমাণ উক্ত ইইরাছে, তাহা হইতে অতিমাত্র ভক্ষণকারীর যোগ হয় না [এই প্রকারই এইস্থলে তাৎপর্য্য বর্ণন করিতে হইবে]; কারণ যোগশান্তে অয় পরিমাণ সম্বন্ধে এইরূপ উক্ত হইরাছে যে, অর্দ্ধভাগ ব্যঞ্জন সহিত অন্নের দারা [পূর্ণ করিবে], তৃতীয় ভাগ জলের [দ্বারা পূর্ণ করিবে] এবং বায়ুসঞ্চরণের জন্ম চতুর্থ ভাগ অবশিষ্ট রাখিবে। আর অতিশর নিদ্রাপর ব্যক্তির যোগ হয় না এবং অতিমাত্র জাগরণ-কারীরও যোগ হয় না ॥১৬

যুক্তাহারবিহারস্থ যুক্তচেষ্টস্থ কর্মান্ত। যুক্তস্বপ্লাববোধস্থ যোগো ভবতি হুঃখহা॥ ১৭

আর্ম। য্কাহারবিহারত কর্মস্থ গ্কচেষ্টত যুক্তস্বপ্লাববোধত [যোগিনঃ] বোগঃ গ্রঃথহা ভবতি ॥ ১৭

অনুবাদ। বাঁহার আহার ও ভ্রমণ নিয়ত পরিনাণ, বাঁহার বিহিত কর্মে চেষ্টা নিয়ত-পরিমাণ, এবং বাহার নিদা ও জাগরণ নিয়ত কালে হয়, সেই যোগীর বোগই তঃগহর হইয়া থাকে॥ ১৭

ভাষ্য ৷ কণং পুনর্যোগো ভবতী ভাচাতে—গ্লাহারবিহারশু আছিনত ইত্যাহার: অন্নন্, বিহরণং বিহার: পাদক্রম: তৌ যুক্তো নিম্নতপরিমাণো বস্তু, তণা যুক্তচেষ্টস্ত যুকা নিম্নতা চেষ্টা যস্ত কর্মান্ত্র, তথা যুক্তস্বপ্লাববোধস্ত যুক্তো স্থান্ত অববোধন তৌ নিম্নতকালো যস্ত তম্ব যুক্তাহারবিহারশু যুক্তচেষ্টস্ত কর্মান্ত্র যুক্তবিপ্লাববোধস্ত বোগিনো যোগো ভবতি হঃধহা হঃথানি সর্বাণি হস্তীতি হঃধহা সর্বসংসারহঃথক্ষরক্রন্যোগো ভবতীত্যর্থ: ॥১৭

আনন্দ্রিটীকা। আহারনিদ্রাদিনিয়ন-বিরহিণো বোগব্যতিরেকমুক্ষা তরিষ্কাবহতা বোগার্বাই ব্যাচষ্টে—কৃথ্ পুনরিত্যাদিনা। অম্নন্ত নিয়ত্ত্বমর্কাশনন্তেত্যাদি, বিহারক্ত নিয়ত্ত্বং বোজনায় পরং গচ্ছেদিত্যাদি, কর্মান্ত চেষ্টায়া নিয়ত্ত্বং বাজনায় পরং গচ্ছেদিত্যাদি, কর্মান্ত চেষ্টায়া নিয়ত্ত্বং বাঙনিয়্মাদি, রাজৌ প্রথমতো দশঘটকাপরিমিতে কালে জাগরণং, মধ্যতঃ স্বপনং, পুনরপি দশঘটকাপরিমিতে জাগরণমিতি স্বপ্নাববোধয়োনিম্নতকালত্বন্ এবং প্রবতমানক্ত বোগিনো ভবতি। যোগক্ত ফলমাহ—কুঃখত্তে । সর্বাণিত্যাধ্যাত্মিকাদিতেদভিন্নানীত্যর্থঃ। যথোক্তবোগমন্তরেণাপি স্বপ্নাদৌ হঃখনবৃত্তিরক্তীতি বিশিন্টি—স্বর্ক্তি । বিশুদ্ধবিক্তানম্বারেতি শেষঃ ॥ ১৭

অকুবাদ। কি প্রকারে যোগ হয় তাথাই বলা যাইডেছে; "যুক্তাহার-

বিহার" যাহা আহত (অর্থাৎ ভক্ষিত হয়) তাহার নাম আহার, অয়ই [আহার-শব্দের অর্থ]; বিহার শব্দের অর্থ বিহরণ (অর্থাৎ) পাদবিক্ষেপ এই ছইটি বস্তু যাঁহার যুক্ত অর্থাৎ নিয়তপরিমাণ হয় [তিনি যুক্তাহারবিহার]; কর্ম্মে "যুক্তচেষ্ট" যুক্ত (অর্থাৎ) নিয়ত যাঁহার চেষ্টা [তিনি যুক্তচেষ্ট], "যুক্তস্বপ্লাব-বোধ" স্বপ্ল (নিজা) অববোধ (জাগরণ), সেই স্বপ্ল ও অববোধ যাঁহার যুক্ত (অর্থাৎ) নিয়তকালভাবী হয় [তাঁহার নাম যুক্তস্বপ্লাববোধ]; সেই যুক্তাহার-বিহার, কর্ম্মনিচয়ে যুক্ত-চেষ্ট এবং যুক্তস্বপ্লাবোধ যোগীর পক্ষে যোগ ছঃথহা হয় ; সকল প্রকার ছঃথকে যে হনন করে, তাহারই নাম ছঃথহা [অর্থাৎ তাঁহারই] যোগ সংসার-ছঃথের ক্ষমকারী হয় ॥ ১৭

যদা বিনিয়তং চিত্তমাত্মতোবাবতিষ্ঠতে। নিঃস্পৃহঃ সর্বকামেভ্যো যুক্ত ইত্যুচ্যতে তদা॥ ১৮

আনুয়। যদা [যোগিনঃ] বিনিয়তং চিত্তম্ আত্মনি এব অবতিষ্ঠতে, [বদা] চ [বোগী] সর্বকামেভ্যঃ নিঃম্পৃহঃ [ভবতি] তদা [সঃ] যুক্তঃ ইত্যুচ্যতে ॥ ১৮

অনুবাদ। যে কালে যোগার সংযত চিত্ত নিজের আত্মাতেই স্থিতি লাভ করে, এবং যে সময় যোগী সর্মপ্রকার কাম হইতে নিঃস্পৃহ হয়, সেই কালে তাঁহাকে যুক্ত বলা যায়॥ ১৮

ভাষ্য। অথাধুনা কদা যুক্তো ভবতী হাচাতে—যদা বিনিয়তং বিশেষেণ নিয়তং সংযতনেকাগ্রতামাপন্নং চিত্তং হিন্তা বাহুচিস্তামান্মন্তেব কেবলে অব-তিষ্ঠতে স্বাচ্মনি স্থিতিং লভত ইত্যৰ্থঃ। নিঃস্পৃহঃ সর্বাকানেভাঃ নির্গতা দৃষ্টা-দৃষ্টবিষয়েভাঃ স্পৃহা তৃষ্ণা যশু যোগিনঃ স যুক্তঃ স্মাহিত ইত্যুচাতে তদা তামিন্ কালে॥ ১৮

আনন্দ্গিরিটীকা। সফলত সাক্ষত্ত যোগতোজ্যনন্তরং বদাহীত্যাদাবৃক্তন লাম্বাদেন সুক্তং লক্ষয়তুমনন্তরশ্লোক প্রবৃত্তিং দর্শরতি—অথাধুনেতি। বিশেষেণ সংযত্ত্বমেব সংক্ষিপতি—একাগ্রতামিতি। আত্মন্তেবেত্যেকারার্থং কণরতি—হিত্তেতি। কেবলন্বমিন্তিয়ন্ত্বম্য তত্ত্বাত্মন্তিং বির্ণোতি—স্বাত্মন্তি। চিত্তত্ত হি কল্লিভভাত্মৈব তত্ত্বং তৎ পুনরগ্রতঃ সৃর্কতো নিবারিভমনিদান নিমানং তিঠতীতি ভাবঃ। তত্তামবস্থামাং সর্কেভ্যো বিষয়েভ্যো ব্যায়ন্ত্রন্ত্রেগ ব্যবহিন্নত ইত্যাহ—নিঃক্ষৃত্ত ইতি ॥ ১৮

অনুবাদ। অনস্তর একণে কোন্ সময়ে [যোগী] বৃক্ত হয়, তাহা বলা হইতেছে; যে সময়ে বিনিয়ত (অর্থাৎ) বিশেষরূপে নিয়ত, সংযত, একাগ্রতাপর চিত্ত, বাছ বিষয় পরিত্যাগ করিয়া, গুদ্ধ আস্মাতেই অবস্থিত হয় (অর্থাৎ) স্থিরতা লাভ করে; সকল কাম হইতে [যে সময় যোগী] নিঃস্পৃহ হন, ঐহিক ও পারলোকিক বিষয় হইতে বাহার "স্পৃহা" ভৃষণ নির্গত হইয়াছে, সেই ব্যক্তিই সর্বকাম হইতে নিঃস্পৃহ, সেই যোগী সেই সময়ে "যুক্ত" সমাহিত [বলিয়া] কণিত হন॥ ১৮

> যথা দীপো নিবাতস্থো নেঙ্গতে সোপমা স্মৃতা। যোগিনো যতচিত্তস্থ যুঞ্জতো যোগমাত্মনঃ॥ ১৯

অনুয় । নিবাতস্থ: দীপ: যথা ন ইঙ্গতে (বিচনতি) যতচিত্তস্ত আন্মন: বোগং যুক্তত: যোগিন: সা উপমা স্থতা ॥ ১৯

আমুবাদ। নির্বাতদেশে দীপ যেমন বিচলিত হয় না, প্রয়ত চিত্ত আত্মসমাধিপর যোগীর 'চিত্তের সেই [নির্বাতস্থ দীপের সহিত] উপমা শাস্ত্রে স্বত হইয়া থাকে॥ ১৯

ভাষ্য। তন্ত যোগিন: সমাহিতং বচ্চিত্রং তন্তোপমা উচাতে। বথা দীপ: প্রদীপ: নিবাতস্থো নিবাতে বাতবজ্জিতে দেশে স্থিতো নেঙ্গতে ন চল্লিড, সোপমা উপমীয়তেহনয়া ইত্যুপমা যোগজৈশ্চিত্তপ্রচারদর্শিভি: স্থতা চিন্তিতা। বোগিনো যভচিত্তক্ত সংযতান্তঃকরণক্ত বৃঞ্জতো বোগমন্থতিষ্ঠতঃ আত্মন: সমাধি-মন্থতিষ্ঠত ইত্যর্থ: ॥ ১৯

আনন্দ্রিটীকা। উপমা যোগিনশ্চিত্তস্থৈর্যক্রোদাহরণমিত্যর্থ:। উপমাশব্দশ্য প্রদীপবিষয়ত্বসিদ্ধ্যথং দর্শগতি—উপমীয়ত ইতি। যোগিনো যথোক্তবিশেষণবতশ্চিত্তস্থৈর্যদ্যতি শেষ:॥১৯

অনুবাদ। যোগীর যে সমাহিত চিন্ত, তাহার উপমা বলা হইতেছে।
নিবাত (অর্থাৎ) বায়্বজ্জিত দেশে অবস্থিত দীপ, যেমন বিচলিত হয় না,
ভাহাই উপমাস্তরূপে, যোগজ্ঞ (অর্থাৎ) চিন্তপ্রচারদর্শিগণ কর্ত্তক স্থত (অর্থাৎ)
চিন্তিত হইয়া থাকে; বাহার দারা উপমিত হয়, তাহাই এ স্থলে উপমা
শক্ষের অর্থ। [উপমেয় কি? তাহাই প্রদর্শন করা হইতেছে যে] যতচিত্ত,
(অর্থাৎ) সংযতাস্তঃকরণ এবং আত্মার সমাধির অন্তর্হাতা যোগীর [চিত্তই
উপমেয় ইহাই তাৎপর্য্য]॥১৯

যত্ত্রোপরমতে চিত্তং নিরুদ্ধং যোগদেবয়া। যত্র চৈবাক্সনাক্মানং পশুন্ধাক্মনি ভুষ্যতি॥ ২০

আন্তর্য়। বোগদেবরা নিরুদ্ধং চিত্তং যত্ত উপরমতে, যত্ত আত্মনি আত্মানম্ আত্মনা পশুন্ তুষ্যতি এব ॥ ২ •

আকুবাদ। বোগ সেবা দারা নিরুদ্ধ চিত্ত যে অবস্থার উপরতি (অর্থাৎ বিষয় সমূহ হইলে নিবৃত্তি) লাভ করে এবং যে অবস্থার আত্মাকে আপনিই দর্শন করিয়া যোগী আত্মাতেই সম্ভষ্ট হন॥ ২০

ভাষ্য। এবং যোগাভ্যাসবলাৎ একাগ্রীভূতং নিবাভপ্রদীপকরং সং যত্র যন্ত্রিন্ কালে উপরসতে চিত্তমুপরতিং গছতি, নিরুদ্ধং সর্কতো নিবারিত-প্রচারং যোগসেবয়া যোগান্থছানেন। যত্র চৈব যন্ত্রিংশ্চ কালে আত্মনা সমাধি-পরিভদ্দেন অন্তঃকরণেন আত্মানং পরং চৈত্তসজ্যোতিঃকরপং পশুন্ উপলভ্যানঃ ক্ষে এব আত্মনি তুয়াতি ভূষ্টিং ভদ্ধতে॥ ২•

আনন্দ গিরিটীকা। বিবিধঃ সমাধিঃ সংপ্রজ্ঞাতাই সংপ্রজ্ঞাত হচ, ধ্যেরৈকানারদ্বর্ত্তিভেদেন কথঞ্জিং জ্ঞারমানা সংপ্রজ্ঞাতঃ সমাধিঃ কথমপি পৃথগ্জারমানা দৈব সহর্ত্তিরসংপ্রজ্ঞাতঃ সমাধিগ্র সামান্তেন সমাধিলকণমভিধার অসংপ্রজ্ঞাত সমাধেরধুনা লক্ষণং বিবক্ষরাহ—এব্যাতি। কালে সমাধাণলকিতে, এবকারস্বয়তীত্যনেন সম্বয়তে। চকারস্য সম্বন্ধমাত—যাস্মাংকেচতি। কালস্থ পূর্ববং। কর্মকারক্ষেন নির্দিষ্টমান্থানং তৎপদার্থন্দেন ব্যাচষ্টে—প্রামিতি। আন্থানীত্যস্য জংপদার্থবিষম্বস্থমাহ—স্থ এবৈতি। পরমান্থানং প্রতীচ্যেব তদ্তাবেনাপরোকীকুর্বন্নতৃষ্টিহেছভাবাৎ তৃষ্যত্যেবেত্যর্থঃ। তত্মিন্ কালে বোগসিন্ধি-র্ভবতীতিশেষঃ॥ ২০

অনুবাদ। এই প্রকার যোগাভ্যাসবলে একাগ্রীভূত [অতএব]
নিবাতদীপ সদৃশ হইরা চিত্ত, যে কালে যোগদেবা (অর্থাৎ) যোগাম্ছানের
দারা অন্ত সকল বিষয়ে নিবারিতপ্রচার হইবে, এবং যে কালে সমাধিবিশুদ্ধ
অস্তঃকরণের দারা দেই চৈতন্ত-জ্যেতিঃস্বরূপ প্রমাত্মাকে দেখিতে পাইরা [সেই
যোগী] নিজের আত্মাতেই প্রিভোষ লাভ করেন॥ ২০

স্থমাত্যন্তিকং যত্তদ্বৃদ্ধিগ্ৰাহ্ণমতীন্তিয়ন্। বেক্তি যত্ৰ ন চৈবায়ং স্থিতশ্চলতি তত্ত্বতঃ॥ ২১ আন্তর্ম। যত্র, বৃদ্ধিগ্রাহ্য মতীন্ত্রিমন্ মাত্যস্তিকং যৎ স্থং তৎ বেক্তি, [যত্র চ] স্থিতঃ অরং তর্তঃ ন চলতি ॥ ২১

আনুবাদ। যাহা ইন্দ্রিগোচর নহে, যাহা অনস্ত এবং একমাত্র সমাহিত বুদ্ধি দারা গ্রাহা, সেই স্থাকে যে অবস্থায় অফুভব করিতে পারেন এবং যে অবস্থায় স্থিত যোগী আর তত্ত্ব হইতে বিচলিত হন না॥ ২১

ভাষ্য। কিঞ্চ স্থানাতান্তিকনতান্তনেব ভবতীত্যাতান্তিকননন্তনিত্যথা।
যজদে বৃদ্ধিগাহাৎ বৃদ্ধাব ইন্দ্রিনরপেক্ষা গৃহুতে ইতি বৃদ্ধিগাহান, অতীন্ত্রিম ইন্দ্রিরগোচরাতীতন্ অবিবয়দনিতনিত্যথা। বেতি তদীদৃশ স্থানমূভবতি, বত্ত বিশ্বন্ কালে ন চ এব অয়ং বিদ্বান্ আত্মধ্যাধে হিতন্ত প্রাক্তিব চলতি তত্ত হত ত্তেম্বর্গার প্রচাবত ইতার্থা। ১১

আনন্দণিরিটীকা। যোগদিদিকালং প্রকারস্থরেণ প্রকটয়তি—
কিঞ্জেতি। বৃদ্ধিশ্বঃ স্বাস্থ ভববিষয়:। ইন্দ্রিয়নিরপেকস্বাস্থভবগম্যছোক্তেরতীন্দ্রিমতি পুনরুক্তমিত্যাশক্যাহ—অবিষ্ট্রেতি। পদক্ষেদঃ—ন চেত্যাদি।
অপেক্ষিত্রপূরণন্—আত্মস্রপ্রস্তি। তন্মাৎ তবত ইতি সম্বন্ধঃ,
নৈবেত্যেবকারসম্বন্ধাক্তিঃ চকারঃ সপ্রম্যা সম্বন্ধনীয়ঃ। যত্ত্রেতি পূর্ব্ববৎ
সম্বন্ধঃ। ২১

অনুবাদ ৷ আরও, স্থ [বাহা] "আত্যন্তিক", অন্তকে অতিক্রম করিয়া বাহার সন্তা হয়, তাহার নান আত্যন্তিক অর্থাং অনস্ত [এবং] যে সেই [মুখ] বৃদ্ধিগ্রাহ্ন, 'ইন্দ্রিয়-নিরপেক্ষ' (অর্থাং কোনপ্রকার বাহা ইন্দ্রিয়ের সহিত বিষয়ের সম্বন্ধকে অপেক্ষা না করিয়া—কেবল) বৃদ্ধি দারা বাহার অন্তভব করিতে পারা বায়, তাহাই বৃদ্ধিগ্রাহ্ন, অর্থাং বিষয়েক্রিয়ের সমাগম হইতে যাহা উৎপন্ন হয় না, সেই এই প্রকার স্থা যে সময় অন্তভব করিতে পারেন, এবং যে কালে এই আত্মস্বরূপে অবস্থিত বিদান্ সেই আত্মতবন্ধরূপ হইতে বিচলিত হন না, ইহাই অর্থ ৷ ২১

যং লব্ধ চাপরং লাভং মন্ততে নাধিকং ততঃ । যশ্মিন্ স্থিতো ন হুংখেন গুরুণাপি বিচাল্যতে ॥ ২২

আর্য় । যং শৃক্ষ অপরং লাভং ততঃ অধিকং ন মন্ততে, যশ্মিন্ ছিজঃ শুরুণা অপি ছংখেন ন বিচাল্যতে ॥ ২২

অ্বসুবাদ। বাহাকে লাভ করিয়া, অন্ত কোন বাভকেই ভাহা হইতে

শ্বিক বলিয়া বোধ করেন না, যাহাতে অবস্থিত হইলে অত্যস্ত হুঃপ কর্তৃকও [যোগী] বিচালিত হন না॥ ২২

ভাষ্য। কিঞ্মং লক্ষ্যনাত্মণাতং লক্ষ্পাপ্য চ অপরম্ অন্তল্পাভা দ্বরং ততোহধিকমন্তীতি ন মন্ততে ন চিন্তমতি। কিঞ্মনিন্ আত্মতত্ত্ব স্থিতো হুঃধেন শন্ত্মনিপাতাদিলক্ষণেন গুরুণা মহতাহপি ন বিচাল্যতে॥ ২২

আনন্দ গিরিটীকা। প্রকারান্তরেণ প্রক্লতং যোগং বিশিনষ্টি—কিঞ্চেতি
আত্মণাভারপরং বিশ্বত ইতি স্মৃত্যা ব্যাচটে—যুমাত্মলাভমিতি। লাভান্তরং
পুরুষার্থভূতং, ততন্তমাদায়লাভাদিতি যাবং, তং বিশ্বাদিত্যন্তরের সমন্ধঃ। বিশ্বন্
ইত্যান্তবতারয়তি—কিঞ্চেতি। অপরিপক্ষোগো বথা দর্শিতেন ছঃখেন প্রচ্যান্যতে নৈবং বিচাল্যতে যমিন্ স্থিতো যোগী তং যোগং বিশ্বাদিতি পূর্ববং॥২২

অনুবাদ। মারও, যাহাকে লাভ করিয়া (অর্থাৎ) বে স্বাত্মলাভকে প্রাপ্ত হইয়া, অন্ত (অর্থাৎ) লাভান্তরকে এই লাভ হইতে স্কমিক বলিয়া চিস্তা করেন না, আরও যে আত্মতন্তে অবস্থিত [ব্যক্তি] শস্ত্রনিপাতাদিলক্ষণ মহাহঃখের দ্বারাও বিচালিত হন না॥ ২২

> তং বিভাদ্ ছঃখসংযোগবিয়োগং যোগসংজ্ঞিতম্। স নিশ্চয়েন যোক্তব্যো যোগোহনিবিধাচেতসা॥ ২৩

অনুমু । তং হঃখদংযোগবিয়োগং যোগদংক্তিতং বিদ্যাং । অনির্বিপ্তচেত্রনা দ যোগঃ নিশ্চয়েন যোক্তব্যঃ ॥ ২৩

অনুবাদ। সেই হঃখ-সংযোগের বিরোগকেই যোগ বলিরা জানিবে, [মুমুকুব্যক্তির পকে] নির্কেদশৃশুচিত্ত হইয়া অধ্যবসায় সহকারে সেই যোগেরই অনুষ্ঠান করিতে হয়॥ ২৩

ভাষ্য । যত্রোপরমতে চিত্তমিত্যাভারত্য যাবন্তির্বিশেষণৈর্বিশিষ্ট আন্ধানবন্ধানিকা কর্মানবিশেষ যোগ উক্তঃ তং বিভাল বিজ্ঞানীরাল ছঃধনংযোগবিরোগং ছঃধৈঃ নংযোগো ছঃধনংযোগঃ তেন বিরোগঃ ছঃধনংযোগবিরোগঃ তং ছঃধনংযোগিবিরোগঃ তং ছঃধনংযোগিবিরোগঃ তং ছঃধনংযোগিবিরোগং যোগ ইত্যেবসংজ্ঞিতং বিপরীতলক্ষণেন বিভাল্বিজ্ঞানীয়াৎ ইত্যর্ধঃ। যোগকলম্পানংস্কৃত্য পুনর্বারজ্ঞেণ যোগত কর্ত্তব্যভোচ্যতে, নিশ্চয়ানির্কেদয়োর্যোগ্নাধনত্বিধানার্থম। স চ যণোক্তফলো যোগো নিশ্চরেন অধ্যবসারেন বোক্তব্যোদ্দিরিরচিতসা ন নির্বিরমনির্বিরাং কিং তং । চেতঃ। তেন নির্কেদরহিত্তেক চেতাগ চিত্তেন ইত্যর্থঃ॥ ২৩

আনন্দণিরিটীকা। "তং বিছাৎ" ইত্যান্তপেক্ষিতং প্রয়য়বতারয়তি—
যত্ত্রেতি। তমিত্যান্মাবস্থাবিশেষং পরামূশতি। ছংখসংযোগন্স বিয়োগো বিয়োগন্
সংক্ষিতো গুলাতে স কথং মোগসংজ্ঞিতঃ স্থানিত্যাশক্ষাহ—বিপারীতেতি।
ইয়ং হি যোগাবস্থা সমুংথাতনিধিলছঃখভেদেতি ছংখসংযোগাভাবো যোগসংজ্ঞান
মইতীত্যর্থ:। উপসংলতে যোগফলে কিমিতি পুনর্যোগন্ত কর্ত্তব্যস্চাতে তত্ত্রাহ
—যোগফলমিতি। প্রকারান্তরেণ যোগন্ত কর্ত্তব্যদাপদেশারজ্ঞোহত্তান্বারস্থ:।
বোগং যুল্লানন্তৎক্ষণাছক্রাং সংসিদ্ধিনলভ্যানঃ সংশ্বানো নিবর্ত্তেতি তল্পিবৃত্তার্থং
পুনঃ কর্ত্তবাজোপদেশোহর্থবানিতি মন্থাহ—নিশ্চয়েতি। তরোঃ সাধনন্থবিধানমের অক্রবোজনয়া সাধয়তি—স যথেতি। ইহ ক্রমনি ক্রমান্তরে বা
সেংস্কতীত্যধ্যবসায়ো যোক্তব্যঃ কর্ত্তব্যঃ ॥ ২৩

অক্রবাদ। "যত্ত্রোপরমতে" (যেখানে চিত্ত উপরত হয়) ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া এই লোক পর্যান্ত প্রদর্শিত বাবদ বিশেষণের বারা বে বিলক্ষণ আত্মাবস্থাবিশেষকে যোগ বলা হইয়াছে, দেই যোগকে "ছঃখসংযোগ-বিয়োগ" বলিয়া জানিবে; হুংখের সহিত সংযোগ হুঃখসংযোগ, তাহার সহিত (অর্থাৎ তঃপদংযোগেরর সহিত) বিয়োগই তঃপদংযোগবিয়োগ, দেই তঃপদংযোগ-বিয়োগকেই "বোগ" এই সংজ্ঞায়ক্ত বলিয়া বিপরীত লক্ষণার সাহায়েয় कानित्व। [रवांग এই मक्टिंत मूथा वर्ष 'मश्रवांग'; এथान किन्क रवांग শন্ধটির অর্থ 'দংযোগ' নছে: কিন্তু তাহার বিপরীত 'বিয়োগ', এই কারণে এই শন্ধার যাহা শক্যার্থ হইতে বিপরীত, তাহাই বুঝান হইতেছে: সেইজন্ত এখানে বিপরীত লক্ষণার আশ্রর করিতে হইয়াছে ইহাই তাৎপর্য্য। বোপের ফল-কথন-প্রস্তাব শেষ পূর্ব্বক আবার তাহার আরম্ভ করিয়া, যোগের কর্ত্তব্যতা विषय छेपाम थाना कतिराजहान,—निका । निर्द्धनाञा । এই इंडोर्ड वञ्चरा বোগের সাধনতা আছে; ইহাই প্রতিপাদন করিবার জন্ত [এই পুনরারস্ত করা হইরাছে]। সেই যগোক্তফলসম্পন্ন যোগ, নিশ্চয় (অর্থাৎ) অধাবসান্ত্রের সহিত্ত অমুঞ্জিত হওয়া উচিত। [এবং সেই বোগের অমুষ্ঠান] অনির্বিপ্লচেতঃ খিরো করিতে হইবে]; নির্দেদ (নৈরাশ্র) যাহার আছে, তাহাকে নির্বিশ্ব কচে, যে নিবিল্ল নচে, ভাগাৰ নাম অনিবিল্ল; কে সে ? চেডঃ (অর্থাৎ) वकःकत्रन, य विष्ठ वैनिर्वित्रत्न, जागारकर 'व्यनिर्वित्रत्राहकः' वना यात्र, देशरे व्यर्थ । २७

সংকল্পপ্রভবান্ কামাংস্ত্যক্তা সর্বানশেষতঃ। মনসৈবেন্দ্রিয়গ্রামং বিনিয়ম্য সমস্ততঃ ॥ ২৪

আন্নয়। সর্কান্ সংকরপ্রভবান্ কামান্ অশেষতঃ ত্যক্তা মনসৈব ইজির-গ্রামং সমস্ততো বিনিরম্য॥ ২৪

অনুবাদ। সংকরপ্রত সকল কামকে অশেষরূপে পরিত্যাগ করিয়া এবং মনের দারা ইন্দ্রিসমূহকে সকলপ্রকারে নির্মিত করিয়া॥ ২৪

ভাষ্য। কিঞ্চ সংকরপ্রভবান সংকর: প্রভবো বেরাং কামানাং তে সকরপ্রভবা: কামান্তা পরিত্যজ্য সর্বান্ অশেষতো নির্দেশন। কিঞ্চ মনসৈব বিবেকষ্ক্তন ইক্রিপ্রগ্রামং ইক্রিপ্রস্ম্লায়ং বিনিয়ম্য নির্মনং ক্ষমা সমস্তত: সমস্তাং ॥ ২৪

আনন্দগিরিটীকা। ইতশ্চ বোগশু কর্ত্তবাদ্বনিত প্রতিজ্ঞানীতে—
কিঞ্চেতি। কেন জ্রমেণ কর্ত্তবাদ্বনিত্যক্ষেরামাহ—সংক্ষেতি। সংকরঃ
শোভনাধ্যাস:। সর্বানিত্যক্ষা পুনরশেষত ইতি পুনরুক্তিরিত্যাশস্ক্যাহ—নির্নেত্র পোনিতি। যথা শেষো ন ভবতি তথা সর্বেষাং কামানাং শোভনাধ্যাসাধীনানাং
ত্যাগশু যোগামুদ্বানশেষদ্বনদ্বিবেকযুক্তেন মনসা করণসমুদাদ্বশু সর্বতো নিরমনমপি তত্র শেষত্বেন কর্ত্তবামিত্যাহ—ক্রিপ্রেতি॥ ২৪

অনুবাদ। আরও [দ্রষ্টবা এই বে] সংকল্পই বাহাদিগের উৎপত্তিহেতৃ, সেই সংকল্পপ্রতাব কামসকলকে অশেষতঃ (অর্থাৎ) নিলিপ্তভাবে পরিত্যাগ করিয়া এবং বিবেকযুক্ত মনের দারা ইন্দ্রিয়নিচয়কে সকল বিষয় হইতে নিরমন করিয়া॥ ২৪

> শনৈঃ শনৈরুপরমেদ্ বুদ্ধ্যা প্রতিগৃহীতয়া। আত্মসংস্থং মনঃ কৃত্বা ন কিঞ্চিদিপি চিন্তয়েৎ॥ ২৫

অনুয়। ধৃতিগৃহীতরা বৃদ্ধা শলৈঃ শলৈঃ উপরমেৎ। মনঃ আত্মসংস্থ কৃষা কিঞ্চিদপি ['অন্তৎ] ন চিন্তরেৎ॥২৫

অনুবাদ। ধীরে ধীরে ধৈর্যাযুক্ত বুদ্ধির সাহায়্যে উপরতি অবলম্বন করিবে এবং মনকে আন্ধাতে অরক্তদ্ধ করিয়া অন্ত কোন বিবরের চিন্তা করিবেনা। ২৫

ভাষ্য। गरेनः गरेनः न नहना डेनद्रस्य डेन्द्रस्य क्र्यार। कृषा

বৃদ্ধা ? কিংবিশিষ্টনা ? শ্বতিগৃহীতরা শ্বত্যা থৈর্যোণ গৃহীতরা শ্বতিগৃহীতরা বৈর্যোণ যুক্তরা ইত্যর্থ:। আত্মসংস্থমাত্মনি সংস্থিতমাত্মৈব সর্বাং ন ততোহন্তং কিঞ্চিদন্তীত্যেবম্ আত্মসংস্থং ননঃ ক্রতা ন কিঞ্চিদণি চিন্তয়েৎ এষ বোগন্ত পর্বুমা বিধিঃ॥ ২৫

আনন্দগিরিটীকা। কামত্যাগদারেণ ইন্দ্রিয়াণি প্রত্যাহৃত্য কিং কুর্ব্যাদিতি শক্কিতারং প্রত্যাহ—শনৈঃ শনৈরিতি। সহসা বিষয়েভাঃ সকাশাহুপরমে মনসোন বাদ্বাং সম্ভবতীত্যভিপ্রেভ্যাহ—ন সৃহসেতি। তত্র সাধনং বৈর্ঘ্যাকৃত্যাহ—ক্ষা ইত্যাদিনা। ভূম্যাদীরব্যাকৃতপর্যান্তাঃ প্রক্তার্মীর পূর্বপূর্বত ধারণং ক্লোভরোত্তরক্রমেণ প্রবিলাপরেদিতি ভাবঃ। অব্যক্তমান্ত্রনি প্রবিলাপ্য আত্মমাত্রনিষ্ঠং মনো বিধায় চিন্তায়িত্যাভাবাদতিস্বস্থো ভবেদিত্যাহ—আত্মতি। তত্র সংস্থিতিমেব মনসো বির্ণোতি—আত্মত্বতি। যোগবিধি-মুণ্কম্য কিমিদমুক্তমিত্যাশক্ষ্যাহ—এম ইতি। বন্মনসো নিশ্চন্যমিতি শেষঃ॥ ৫

অনুবাদ। শনৈ: শনৈ: (অর্থাৎ) সহসা নহে, কিন্তু ধীরে ধীরে উপরতি করিবে, [কাহার সাহাধ্যে ?] বুদ্ধি দারা; কি প্রকার বুদ্ধি ? ধৃতিগৃহীতা, ধৃতি শক্ষের অর্থ ধৈর্য্য, গৃতিগৃহীত অর্থাৎ ধৈর্য্যসম্পন্ধ। এবং এইরপ মনকে আত্মগংস্থ অর্থাৎ আত্মাতে সংস্থিত করিয়া ["আত্মাই সর্বর্ধ, তাহা হইতে পৃথক্ বস্তু কিছুই নাই, এই ভাবনাযুক্ত হইলোই মনঃ আত্মসংস্থ হয়"], এই প্রকার আত্মসংস্থ মনঃ করিরা অন্ত কোন বস্তুর চিন্তা করিবে না, ইহাই যোগীর পরম বিধি॥ ২৫

ষতো যতো নিশ্চরতি মনশ্চঞ্জনমস্থিরম্। ততন্ততো নিয়মৈয়তদান্তত্তের বশং নয়েৎ॥ ২৬

আৰ্য্য । চঞ্লম্ [অতএব] অন্থিরং মনঃ যতো যতো নিশ্চরতি, ততপ্ততঃ নির্ম্য এতং (মনঃ) আত্মন্তেব বশং নরেং ॥ ২৬

আমুবাদ। ক্রিয়াশীল অস্থির মন বে যে বিষয়রূপ নিমিন্তের বশে বিক্ষেপ প্রাপ্ত হয়, [বোগী] সেই সেই বিষয় হইতে নিয়মিত করিয়া মনকে আত্মাতে বশীভূত করিবে॥ ২৬

ভাষ্য। তত্ত্বৈনান্দ্ৰসংস্থং মনঃ কর্ত্ত্বং প্রের্ডো বোগী, বজো বজো ধন্দাদ্ ধন্দান্দ্রমিন্তাচ্ছলাদেনিশ্চরতি নির্গচ্ছতি স্বভাবদোবান্মনশ্চঞ্চনমতার্থং চলন্ অতএবাছিরং ততত্তত্ত্বস্বান্তস্বাচ্ছলাদেঃ নিমিন্তান্নিরম্য তত্তনিমিতং বাধান্ম্যা- নিরূপণে আভাসীকৃত্য বৈরাগ্যভাবনয়া চ এডয়ন আত্মতেব বশং নয়েং আত্মব বশুতামাপাদয়েৎ এবং যোগাভ্যাদবলাদ্যোগিন আত্মতেব প্রশাম্যতি মনঃ ॥ ২৬

আনন্দ্গিরিটীকা। নমু মনসঃ শকাদিনিমিত্তামুরোধেন রাগদ্বেবশানতামুরচঞ্চলভান্থিরভ তত্র তত্র স্বভাবেন প্রবৃত্তভ কুতো নৈশ্চল্যং নৈশ্চিস্তাঞ্চেতি তত্রাহ—তত্রেতি। যোগপ্রারম্ভঃ সপ্তমার্থঃ। এবশব্দেন মনসৈবেত্যাদি উক্ত-প্রকারো গৃহতে। স্বাভাবিকো দোষো মিণ্যাজ্ঞানাধীনো রাগাদিঃ শকাদের্মনসোনিয়মনং কণ্মিত্যাশক্যাহ—তত্ত্রিমিত্তুমিতি। যাণাত্মানিরপণং ক্ষরিমুত্তভূংখ-সংমিশ্রত্বাভালনং তেন তত্র তত্র বৈরাগ্যভাবনয়া তত্তদাভাসীক্বত্য ততন্ততানিয়ন্যৈতক্মন ইতি সম্বন্ধঃ। মনসো বশীকরণেনোগশ্মে কিং ভাদিত্যাহ—এব্-মিতি। যোগাভ্যাসো বিষয়বিবেকদারা মনোনিগ্রহাত্মার্তিঃ, প্রশাস্তমাত্মত্ব প্রশীনমিতি যাবং॥ ২৬

অনুবাদ। দেই অবস্থাতে মনকে আত্মসংস্থিত করিতে প্রবৃত্ত বোগী [কি করিবেন, তাহাই বলা হইতেছে] যে যে শব্দাদিরপ নিমিন্তবশে মনঃ নির্মত হইয়া গাকে; (অর্থাৎ আত্মরূপ ধ্যেয় বস্তুকে •পরিত্যাগ করিয়া বাহিরে আসিয়া পড়ে) [মনঃ কি প্রকার ?] স্বভাবদোষনিবন্ধন অত্যন্ত চল, এই জন্ত অন্থির। দেই সেই বিষয় হইতে নিয়মিত করিয়া (অর্থাৎ) আত্মার প্রকৃতস্থর্মপ নিরূপণ দ্বারা সেই দকল শব্দাদি নিমিন্তকে কল্লিত বস্তু এই প্রকার নিশ্চম্ন করিয়া, এই মনকে আত্মাতেই বশীভূত করিবে। এই প্রকার যোগাভ্যাসবলে বোগীর মন আত্মাতেই শান্তিলাভ করিয়া গাকে॥ ২৬

প্রশান্তমনদং ছেনং যোগিনং স্থখমুত্তমম্। উপৈতি শান্তরজদং ব্রহ্মভূতমকল্মধম্॥ ২৭

অন্বয়। প্রশান্তমনসম্ শাস্করজসম্ অকলবং বন্ধাভূতম্ এনং হি বোগিনম্ উত্তমং স্থমূপৈতি॥ ২৭

আনুবাদে । প্রশাল চিত্ত শাস্তরজোর্ত্তি নিম্পাপ ও দর্কত ব্রহ্মদৃষ্টিযুক্ত এই যোগাকে প্রমন্থ আশ্রয় করিয়া থাকে (অর্থাৎ এইরূপ যোগী জীবমুক্ত হইয়া ব্রহ্মানন্দের অনুভব করিয়া থাকেন)॥ ২৭

ভাষ্য। প্রশান্তমনসং প্রশান্তং মনো ষষ্ঠ স প্রশান্তমনান্তং প্রশান্তমনসং হি এনং বোগিনং স্থমুত্তমং নিরতিশয়মুপৈতি উপগছতে। শান্তরজসং প্রকীণমোহাদিক্রেশরজসম্ ইত্যর্থ: ব্রক্ষভূতং জীবমুক্তং ব্রক্ষেব সর্কমিত্যেবং নিশ্চয়বস্তং ব্রক্ষভূতমকলাবম্ অধ্পাদিবজ্জিতম্॥ ২৭

আনন্দগিরিটীকা। মনস্তব্ ত্যোরভাবে শ্বরপভূতস্থণবির্ভাবন্ত স্বাপাদৌ প্রসিদ্ধিং ছোত্তরিতৃং হিশব্দ:। মোহাদিক্রেশপ্রতিবন্ধাদ্ যোগিনি যথোক্তস্থা-প্রাপ্তিমাশক্ষ্য মনোবিলরমূপেত্য পরিহরতি—শান্তেতি। তত্যাম্মাদিবিলক্ষণদ্ধাহ—ব্রক্রভূতমিতি। অম্মাদেরপি স্বতো ব্রক্ষভূতমেত তুল্যং জীবন্ধুক্তদ্ধাত্যাশক্ষ্যাই—ব্রক্রিবেতি। ধর্মাধর্মপ্রতিবন্ধাদন্তা যথোক্তস্থপ্রাপ্তিরিত্যা-শক্ষ্যোক্তন্—অকলামমিতি॥২৭

আমুবাদ। "প্রশাস্তমনাঃ", যাহার মনঃ প্রকৃষ্টরূপে শাস্ত, তিনিই প্রশাস্তমনাঃ; দেই প্রশাস্তমনা এই যোগীকে "উত্তম" নিরতিশয় স্থথ আশ্রয় করিরা
থাকে। [সেই যোগীর বিশেষণ প্রদর্শন করিতেছেন যে] "শাস্তরজাঃ",
যাহার মোহাদি ক্লেশরূপ রজোর্ত্তি প্রকৃষ্টরূপে ক্ষীণ হইয়াছে, তাঁহাকে শাস্তরজাঃ
কহা বার। "ব্রহ্নভূত" জাবমূক, সকল বস্তই ব্রহ্ম এইরূপ নিশ্চয় বাঁহার আছে,
তিনিই ব্রহ্মভূত, ইহাই তার্থপিয়ার্থ। "অকল্মব" অধ্পাদিবজ্জিত॥২৭

যুপ্তন্নেবং সদাত্মানং যোগী বিগতকল্মষঃ। স্থানে ব্ৰহ্মসংস্পাৰ্শমত্যন্তং স্থথমশুতে॥ ২৮

আমুয়। [মনেন প্রকারেণ] সদা মান্তানং যুঞ্জন্ বোগী বিগতকক্ষর: [সূন্] স্থেন (মনায়াসেন) একাসংস্পর্নত্যস্তং স্থনসাত্তে ॥ ২৮

অমুবাদ। এই প্রকারে আত্মসমাধিনিরত যোগী বিগতপাপ হইয়া অনায়াদে, ব্রহ্মসংস্থ নিরতিশয় স্থাপাভ করিয়া থাকেন॥২৮

ভাষ্য। বৃঞ্জন্নিতি যুঞ্জন্ এবং যথোক্তক্রমেণ যোগী বোগান্তরায়বর্জ্জিতঃ সদা আত্মানং বিগতকল্মবঃ বিগতপাপঃ স্থংখন অনায়াসেন ব্রহ্মসংস্পর্শং ব্রহ্মণা পরেণ সংস্পাদা বস্তু ডদ্বেক্ষাসংস্পর্শং স্থুখমতান্তম্ অন্তমতীত্য বর্ত্ততে ইতি অত্যন্তম্ উৎকৃষ্টং নিরতিশয়ং স্থুখমশ্বতে ব্যাপ্লোতি॥ ১৮

আনন্দ গিরিটীকা। উত্তমং মুধং যোগিনো ভব্ছীত্যুক্তং তদেব স্ফুটরতি
— যুঞ্জন্মিতি। ক্রমো যগোক্তো মনসৈবেন্দ্রিরগ্রামমিত্যাদিঃ যোগান্তরারো
রাগবেষাদিঃ সদাত্মানং যুঞ্জন্মিতি সম্বন্ধঃ। পাপপদমুপলক্ষণং পুণ্যস্তাপি। সংস্পর্শভাদাত্মীকরক্তম উৎকর্ষে বিষয়াসংস্পর্ণঃ॥ ২৮

व्यकृतीम । এই यथान्यकाम वांगान्यतामपक्किं वांगी नर्यमा वांगाविषयक

বোগের সম্প্রান করিতে করিতে বিণতকথাষ (মর্থাৎ) নিম্পাপ হইয়া অনারাসে ব্রহ্মদংস্পর্ল (অর্থাৎ) পরব্রহ্মের সহিত বাহার সমাক্ সম্বন্ধ আছে, তাহার নাম 'ব্রহ্মদংস্পর্ল' 'ও অত্যন্ত (অর্থাৎ) যাহা অন্তকে অভিক্রম করিয়াছে অর্থাৎ যাহা নিবভিশর, তাহাকেই 'অত্যন্ত' নল। যায়; এভাদৃশ হুখ লাভ করিয়া থাকেন। ২৮

দৰ্বভূতস্থমাত্মানং দৰ্বভূতানি চাত্মনি। ঈক্ষতে যোগযুক্তাত্মা দৰ্বত্ৰ দমদৰ্শনঃ॥ ২৯

অনুয় । যোগযুক্তাত্মা সৰ্বতে সমদৰ্শনঃ [সন্] আত্মানং সৰ্বভৃতস্থীকতে [তথা] সৰ্বভ্তানি আত্মনি [ঈকতে]॥ ২৯

আকুবাদ। সমাহিতচেতা [যোগী] সর্কবস্তুতেই সমদৃষ্টিসম্পন্ন হইয়া আত্মাকে সকল ভূতের মধ্যে দেখিয়া থাকেন এবং আত্মাতে সকল ভূতকে প্রতিষ্ঠিত দেখিয়া থাকেন॥ ২৯

ভাষ্য। ইদানীং যোগস্থ যৎ কলং একৈকস্বদর্শনং সর্ক্সংসারবিচ্ছেদকারণং তং প্রদর্শতে। সর্কভ্তত্বং সর্কেষ্ ভূতেষু স্থিতং স্বমায়ানং, সর্কভ্তানি চ আছানি ব্রহ্মাদীনি স্তস্পর্যানাচ সর্কভ্তানি আছানি একছং গতানি ঈক্তে পশুতি যোগ্যক্তায়া সমাহিতাস্তঃকরণঃ সর্কত্ত সমদর্শনঃ সর্কেষ্ ব্রহ্মাদিস্থাবরাস্তেষ্ বিষমেষ্ সর্কভ্তেষ্ সমং নির্কিশেষং ব্রহ্মাইয়েকস্ববিষয়ং দর্শনং জ্ঞানং ষ্ম্প সর্কত্ত সমদর্শনঃ ॥ ২৯

আনন্দগিরিটীকা। যোগনহতিষ্ঠতো ব্রন্ধত্ত সর্বানর্থনিরতিনিরতিশর্মধ্যাপ্তিলকণো দিবিধা মোকো হেতুনা কেন ভাদিতি শঙ্কমানং প্রত্যাহ—ইদানীমিতি। ব্যাত্মানমীকত ইতি সম্বন্ধঃ। সর্বভৃতান্তপি তদ্বিশেষণদ্বেল পশুতি চেল্ল শুদ্ধবস্তুজানমিতি নাবিভানিরতিরিত্যাশ্ব্যাহ—সর্বভৃতানীতি। উক্তে দর্শনে চিত্তসমাধানমুপায়ং দর্শরতি—যোগৈতি। বিশমেষ্পাধিষ্ তদহরোধাদ্বিষ্মমেব দর্শনং তত্তপদর্শিতদর্শনপ্রতিবন্ধকং প্রত্যাশ্ভতি—সর্বত্তিতি । ইন

আকুবাদ। একণে সকল সংসারের বিচ্ছেদকারণ, বোগের ফল বে ব্রকৈকদ্ব-জ্ঞান, তাহাই প্রদর্শিত হইতেছে। "সর্বভূতস্থ", সকল ভূতেই অবস্থিত নিজের আত্মাকে, এবং নিজ আত্মাতে ব্রহ্মাদিন্তদ্বপর্যান্ত সকল ভূতই আত্মাতে একতা প্রাপ্ত হইয়াছে এইভাবে দর্শন করিয়া থাকেন কর্ষাং প্রত্যক্ষ দেখিরা থাকেন। [কে দেখিয়া থাকেন?] "যোগস্কাত্মা" সমাহিতহাদয়, [এবং] "সর্ব্বিত্ত সমদর্শনঃ", সর্ব্বত্ত (অর্থাৎ) ব্রহ্মাদি স্থাবরাস্ত যাবং বিষম-প্রাণিনিচয়ে ''সম'' (অর্থাৎ) নির্বিশেষ, জীব ও ব্রহ্মের ঐক্যবিষয়ক "দর্শন" জ্ঞান থাহার আছে, তিনিই সর্ব্বত্ত সমদর্শন॥ ২৯

যো মাং পশ্যতি সর্বত্ত সর্বাং চ ময়ি পশ্যতি। তদ্যাহং ন প্রণশ্যামি স চ মে ন প্রণশ্যতি॥ ৩০

আম্বা। বং সর্কতি মাং পশুভি, ময়ি চ সর্কং পশুভি, তন্ম অংশ ন প্রণশুমি, সূচমেন প্রণশুভি॥৩•

অনুবাদ। যে ব্যক্তি সর্বত্তি আমাকে দেখিয়া পাকেন এবং সকল বস্তকেও আমাতে দেখিয়া থাকেন, তাঁহার নিকটে আমি [কখনই] অদৃষ্ট পাকি না। তিনিও আমার অদৃষ্ট হন না॥ ৩০

ভাষ্য। এতত আবৈষ্ণ কৰ্মন্ত চলম্চাতে। যো মাং পশুতি, বাহ্নদেবং সর্বাত্ত আত্মানং সর্বাত্ত সর্বাত্ত সর্বাত্ত বাহ্মদেবং সর্বাত্ত আত্মানং সর্বাত্ত সর্বাত্ত সর্বাত্ত বাহ্মদেবং সর্বাত্ত আত্মানং সর্বাত্ত সর্বাত্ত ক্রিয়াল ক্রিয

আনন্দ গিরিটীকা। উক্ত তৈক মজানশু ফল বিকল্প মান গৈ শিথিল রতি—
এত শ্রেতি । তত্ত্বক মদর্শনমন্ত্রণ তি—যো মামিতি । তৎফল মিদানী মুপশ্তশ্রুতি — তত্ত্বেতি । জ্ঞানাম্বাদভাগং বিভজতে—যো মামিতি । তৎফলোজিভাগং ব্যাচষ্টে — তত্ত্বেমিতি । অনেক মদর্শিনোহপী মরো নিতামার প্রণশুতীত্যাশস্থাহ—নেতি । জহং পরমানন্দো ন তং প্রতি পরোক্ষো ভবামী তার্ধং ।
স চেত্যাদি ব্যাচষ্টে — বিদ্বানিতি । বিদ্বানিবাবিদ্বানপী মরশু ন নশ্রুতী ত্যাশঙ্কোজং — নেত্যাদিনা । অবিছ্বশ্চ স্বরূপেণ সতোহপি ব্যবহিত মাদবিদ্য রা
নইপ্রায়তে তার্থং । ঈশ্বরশু বিভ্রশ্চ পরম্পরমপরোক্ষ হে হৈত্মাহ — ত্স্যু

(চিতি । আইমাক্ষ মেহিপি কথং মিথোহপরোক্ষ হে তেত্রাহ — স্বান্ত্রেতি ।
বিদ্বান্ধর প্রবিভত্তব্যমিতি শেবং ॥ ৩০

असूर्याम । এই बारेबाककार्यतन्त्र कन वना स्टेएउएस, आसि वास्रामन,

এবং সকলেরই আত্মা; বিনি আমাকে সকল ভূতেই অবস্থিত দেখিয়া থাকেন এবং সকলের আত্মস্বরূপ আমাতে ব্রন্ধাদিস্তস্থ পর্য্যস্ত সকলভূতকে দর্শন করিয়া থাকেন, সেই আত্মৈকত্বদর্শীর নিকট আমি ঈশ্বর প্রনষ্ট হই না (অর্থাৎ) অদৃষ্ঠ হই না এবং সেই বিদ্বান্ত আমার নিকট [কদাপি] প্রনষ্ট হন না ' অর্থাৎ) সর্বাদাই তিনি আমার নিকট বিশ্বমান থাকেন; এইজন্ত কোন কালেও অদৃষ্ট থাকেন না; ইহার কারণ তাঁহার ও আমার আত্মার প্রক্রা সাধিত হইয়া থাকে। ইহা সর্ব্বজনসিদ্ধ যে আত্মার প্রশ্নই হইয়া থাকে; কারণ সর্ব্বাত্মেক্যদর্শী আমা হইতে ভিন্ন নহেন॥ ৩০

দৰ্বভূতস্থিতং যো মাং ভজত্যেকত্বমাস্থিতঃ। দৰ্ববিথা বৰ্ত্তমানোহপি দ যোগী ময়ি বৰ্ত্ততে॥ ৩১

অনুয়। একত্বমান্থিতঃ বঃ সর্বভূতন্থিতং মাং ভদ্ধতি, স যোগী সর্বাধা বর্ত্ত-মানোহপি মন্নি [এব] বর্ত্তে ॥ ৩১

অকুবাদ। জীব ও ব্রন্ধের একখদশী বে ব্যক্তি আমাকে সর্বভৃতস্থিত এই বৃদ্ধিতে ভজনা করিয়া থাকেন, সেই যোগী [এই জগতে] বে কোন অবস্থাতে থাকুন না কেন, [প্রক্লভ পক্ষে সর্বদা] তিনি আমাতেই বিষ্ণমান থাকেন (অর্থাৎ তিনি জীবমুক্তি লাভ করিয়া থাকেন)॥৩১

ভাষ্য। ইত্যেতৎ পূর্বশ্লোকার্থং সম্যগ্দর্শনমন্ত তৎফলং মোক্ষোহতি-ধীরতে। সর্বাধা সর্বপ্রকারের্বর্ত্তমানোহপি সম্যগ্দর্শী বোগী মন্নি বৈক্ষবে পরমে পদে বর্ত্ততে নিত্যমুক্ত এব সঃ। ন মোক্ষং প্রতি কেনচিৎ প্রতিবধ্যতে ইত্যর্থঃ॥ ৩১

আনন্দণিরিটীকা। পূর্বার্দ্ধেনান্ছোত্তরার্দ্ধেন ফলবিধিরিতি মন্বাহ— ইত্যেতদিতি। রাগাদিরহিতত বমনিয়মাদিসংকারবতঃ বৈরপ্রবৃত্তাসন্তবেহণি তামদীক্বতা আনং স্তোতি—সর্বস্থেতি। প্রতিভাষতোহণি যথেইচেইাদীকারে কুতা আনবতো নিতামুক্তত্বং প্রাতীতিক্ত্রাচারপ্রতিবন্ধাদিত্যাশভ্যাহ—ন মোক্ষমিতি ॥৩১

অনুবাদ । পূর্বলোকার্দ্ধে উক্ত সম্যগ্ দর্শনের পুন: কৃতিন করিয়া একণে এই লোকটিতে সম্যগ্ দর্শনের ফল কীর্ত্তিত হইতেছে। সর্বাণ (অর্থাৎ) সর্ব্বেঞ্জনারে বিভ্যমান থাকিয়াও সেই সম্যগ্ দর্শী বোগী আমাতে (অর্থাৎ) পরম বৈক্ষব পদেই বিভ্যমান থাকেন, (অর্থাৎ) সে ব্যক্তি নিভ্যমুক্তই, তাঁহার মৃত্তিলাভের প্রতি কেই প্রতিবন্ধ করিতে পারে না॥ ৩১

আক্মোপম্যেন সর্বত্ত সমং পশ্যতি যোহর্চ্ছ্ন। স্থং বা যদি বা দ্বঃখং স যোগী পরমো মতঃ॥ ৩২

আন্বয়। হে অর্জুন! যা সর্বত্ত আত্মোপদ্যেন স্থাং বা যদি বা ছাখং সমং পশুতি স যোগী পরমো মতা। ৩২

আকুবাদ। হে অর্জুন, সকল ভূতেই আঝার [অভেদনিবন্ধন] ঔপম্য আছে জানিয়া যিনি [পরের] হথ বা ছঃখ [সকল বস্তকেই] [আপনার] সম বলিয়া বৃঝিয়া থাকেন, সেই বোগীই সর্কশ্রেষ্ঠ॥ ৩২

ভাষ্য। কিঞ্চান্তং আত্মৌপম্যেন আত্মা স্বয়্যমেব উপমীয়তে [জনয়া]
ইত্যুপমা তহ্যা উপমায়া ভাব ওপমাং তেন আত্মৌপম্যেন সর্বত্ত স্বর্ষ্ সমং ত্লাং পশুতি বোহর্জ্ন। স চ কিং সমং পশুতীত্যুচাতে বধা মম স্থমিষ্টং তথা সর্বপ্রাণিনাং স্থমমুক্লম্। বা শঙ্কণার্থে। বদি বা বচ্চ হঃখং
মস প্রতিক্লমনিষ্টং যথা তথা সর্বপ্রাণিনাং হঃখমনিষ্টং প্রতিক্লম্ ইত্যেবম্
আত্মৌপম্যেন স্থহঃথে অমুক্লপ্রতিক্লে তুলাতয়া সর্বভূতের্ সমং পশুতি ন
কন্তচিং প্রতিক্লমাচরত্যহিংসকে ইত্যর্থঃ। য এবমহিংসকঃ সম্যুগ্দর্শনিষ্ঠিঃ স
যোগী পরম উৎক্রো মতোহভিপ্রতঃ সর্ব্যোগিনাং মধ্যে॥ ৩২

আনন্দণিরিটীকা। বৈরাচরণস্তাপ্রতিবন্ধকত্বকথনাৎ প্রপীড়নস্থ বোগিনঃ সম্যাগ্দর্শনং প্রত্যপ্রতিবন্ধকত্বপ্রসক্তাবৃক্তং—কিঞ্চেতি। অন্তদণি কিঞ্চিত্চ্যতে, পরম্যোগিনো নির্দেশ্বারা যোগমাহান্ম্যমিত্যর্থঃ। উপমৈবৌপম্যম্, আত্মা চ তদৌপম্যঞ্চ তেন সর্বভ্তেষু ষঃ সমং পশ্রতীত্যক্তে তদেব সমদর্শনং প্রশ্নপ্রকাৰং বির্ণোতি—কিমিত্যাদিনা। বিকরার্থত্বং বারয়তি—কাশক্ষ-ইতি। উপদর্শিতসমদর্শনফলমভিলপতি—ন ক্সাচিদিতি। কিমপেক্ষয়া তম্ন পরমন্বং ত্তাহ—সর্বেতি ॥ ৩২

অনুবাদ। আরও কিঞ্চিৎ [এই বিষয়ে বলা বাইতেছে যে] বাহার ছারা বস্তু উপমিত হয়, তাহার নাম 'উপমা'; সেই উপমার ধর্ম্মের নাম 'উপমা'; আল্মা নিজেই বাহার ছারা উপমিত হন, তাহার নাম 'আল্মোপম'; তাহার ধর্মের নাম 'আল্মোপমা'; সেই আল্মোপমাের সহিত সকল ভূতেতেই বিনি সমন্ত্র দর্শন করিয়া থাকেন; কোন্ বস্তুকে সম বলিয়া দর্শন করেন? ভাহাই বলা হইতেছে যে, আমার যেমন স্থুখ অভিল্যিত, সেই প্রকার সকল প্রাণীরই স্থুখ অভিল্যিত। এই ল্লোকে যে 'বা' শন্ধ আছে, তাহার অর্থ সমুক্তর। এবং

বেমন আনার হংথ অনিষ্ট [স্থতরাং] প্রতিকৃল, সেই প্রকার সকল প্রাণীরই হংথ অনভিলবিত এবং প্রতিকৃল; এই প্রকার আত্মোপম্যসহকারে সকল ভ্তেতেই অনুকৃল ও প্রতিকৃল স্থা ও হংথকে সমভাবে যিনি দেখেন (প্রথাৎ বাহা পরের প্রতিকৃল, তাহা আপনারও প্রতিকৃল বলিয়া বোধ করেন এবং বাহা পরের অন্থকুল তাহা নিজেরও অন্থকুল বলিয়া বোধ করেন ইহাই তাৎপর্য) হে অর্জুন! কাহারও প্রতিকৃলাচরণ না করেন অর্থাৎ অহিংসক, এই প্রকার বিশেষণবিশিষ্ট সেই যোগী সকল বোগীর মধ্যে উৎকৃষ্ট বলিয়া আভ্রমত হইয়া থাকেন॥ ৩২

অৰ্জুন উবাচ।

যোহয়ং যোগস্ত্রয়া প্রোক্তঃ সাম্যেন মধুসূদন। এতস্থাহং ন পশ্যামি চঞ্চলত্বাৎ স্থিতিং স্থিরাম্॥ ৩৩

আরুর। অর্জুন: উবাচ। হে মধুস্দন, অরং, যা সাম্যেন যোগা দ্বরা প্রোক্তা এতত দ্বিরাং স্থিতিং চঞ্চলদাৎ [মনস:] অহং ন পশ্যামি॥ ৩০

আমুবাদ। অর্জুন বলিলেন, হে মধুস্দন! তুমি এই যে সাম্য যোগের বিষয়ে উপদেশ প্রদান করিলে, মনের চঞ্চলতাবশতঃ আমি ইহার জির মর্যাদা দেখিতে পাইতেছি না॥ ৩০

ভাষ্য ৷ এতক্ত যথোক্তক্ত সম্যুগ্ দর্শনলক্ষণক্ত যোগক্ত জ:খদম্পাল্ডভামলক্ষ্য শুক্রার্থ তিং প্রাপ্ত গুপারম্—বোহনং যোগক্ত্যা প্রোক্ত: সাম্যোন সম্ত্বন হে মধুস্থান, এতক্ত যোগক্ত অহং ন পশ্চানি নোপলভে চঞ্চলত্বানানসঃ কিং স্থিরামচলাং স্থিতিং প্রসিদ্ধমেতং ॥ ৩৩

আনন্দি গিরিটীকা। ননশ্চঞ্চলমন্থিরমিত্যুপশ্রুতা নির্কিশেষে চিত্তইের্ব্যং হংশকমিতি মন্থানস্তত্পারবৃত্ত্ৎসরা পৃচ্চতীতি প্রশ্নমুখাপরতি—এতস্ত্রেতি। তৎপ্রাপ্ত্যুপারং ভশ্রমুরিতি সম্বন্ধঃ মনসশ্চঞ্চলত্বেহিপি তরিগ্রহন্বারা যোগত্বৈর্ব্যং সম্পান্থতামিত্যাশক্যাহ—প্রাসিদ্ধানিতি॥ ৩৩

অকুবাদ। এই সম্যগ্দশনরপ যথোক্ত যোগ, হঃথের দ্বারা লাভ করিতে পারা বার, ইহা দেখিরা, ইহার নিশ্চিত প্রাপ্তির উপীয় কি, তাহা [ভাল করিয়া] প্রবণ করিবার ইচ্ছায় [অর্জুন বলিলেন] হে মধুস্দন! এই বে তুমি সমন্ত্রনেণে [দর্শনরূপ] যোগ বিষয়ে উপদেশ প্রদান করিলে, মনের চ্ঞ্বল্ডা- প্রযুক্ত আমি, হে মধুস্দন, এই যোগের অচল স্থিতি (মর্যাদা) দেখিতে পাইতেছি না, ইংার অর্থ প্রসিদ্ধই রহিয়াছে॥ ৩০

চঞ্চলং হি মনঃ কৃষ্ণ প্রমাথি বলবদ্দৃদ্ম্। তস্তাহং নিগ্রহং মন্তে বায়োরিব স্বত্রকরম্॥ ৩৪

আর্য়। হে ক্লক ! হি (যন্ত্রাৎ) মনঃ চঞ্চলং প্রমাথি বলবদ্ দৃঢ়ং [চ] আহং তক্স বামোরিব নিএহং স্কল্পরং মতে॥ ৩৪

আমুবাদ। হে কৃষ্ণ [বে কারণ] ননঃ চঞ্চল, শরীর ও ইব্রিয়ের বিকেপক, প্রবল এবং দৃঢ়, [এই কারণে] আমি বায়ুর স্তায় তাহার নিগ্রহকে স্থায়কর বলিয়া বিবেচনা করি॥ ৩৪

ভাষ্য। চঞ্চলমিতি। চঞ্চলং হি নন: ক্ষেতি ক্বতেবিলেখনার্থস্ত ক্রপং ভক্তক্সনপাণাদিদোবাকর্ষণাৎ ক্ষয়:। ন ক্বেলমত্যর্থং চঞ্চলং, প্রমাথি প্রমথনশীলম্; প্রমথাতি শরীরমিন্দ্রিয়াণি চ বিক্ষিপতি পরবশীকরোতি। ক্ষিঞ্চ দৃঢ়ং তন্তনাগবদচ্ছেত্বম্। তত্তৈবংভূতক্ত মনসঃ অহং নিগ্রহং নিরোধং মজে বায়োরিব। যথা বায়োহ্ছরো নিগ্রহস্ততোহপি মনসো চ্ছরং মজে ইত্যভিপ্রায়ঃ॥ ৩৪

আনন্দ্গিরিটীকা। নন্দশ্ঞলংগ্রেপ কঞ্চণদপরিনিশান্তিপ্রকারং স্চয়তি—কুষ্ণেতীতি। কগং কর্ষক্ষমাপ্তকামশু ভগবতঃ সম্ভবতীতাা-শক্ষাহ—ভত্তেতি। প্রিরিকান্মিকসর্বসম্পদামাকর্ষণশীলঘাচেতি দুইবাম্। প্রমণাতি কোভয়জি। তদেব কোভকগ্রং প্রকটয়তি—বিক্ষিপ্তীতি। কুনিবারস্থাভিপ্রতাদ্বিধরাদাক্রপুমানকারং বিশেষণা ঘরনাহ-—কিঞ্জেতি। আছেশ্বং বিশেষণাম্ভরমাহ—কিঞ্চ দৃঢ়িমিতি। তম্ভনাগো বক্ষণাশশবিতে। জলচারী পদার্থেহিত্যন্তিল্লা ছেতুম্পক্যম্বন প্রসিদ্ধা বিবক্ষিতঃ। বারো-রিবেত্যুক্তং ব্যাক্তি—যুথ্তি॥ ৩৪

অনুবাদ। চঞ্চলং ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। কারণ মনঃ চঞ্চল, হে কৃষণ; বিলেখন: (অর্থাৎ কর্ষণ) যাহার অর্থ, সেই কৃষ ধাতৃ হইতে কৃষ্ণ এই পদটি নিশার হইয়াছে; ভক্তজনের পাপাদিরপ দোষ সকলের আকর্ষণ করেন বিলার [তিনি] কৃষ্ণ [শন্দের প্রতিপাল্য]; মন যে কেবল চঞ্চল তাহাই নছে, তাহা প্রমথনশীল, এ অর্থাৎ) শরীর ও ইন্দ্রিয় নিচরকে সেই বিশিপ্ত ক্রিয়া থাকে অর্থাৎ পরবশ ক্রিয়া দেয়। আরও তাহা বলবৎ, কেহ তাহাকে

নিরমিত করিতে পারে না; আরও তাহা দৃঢ় তন্তনাগের (জলচরজন্তবিশেষ) জায় অচ্ছেদ্য। সেই এই প্রকার মনের নিগ্রহকে আনি বায়ুর [নিগ্রহের জায়] বোধ করিয়া থাকি। বায়ুর নিগ্রহ বেমন ত্কর, তাহা হইতেও মনের নিগ্রহ আরও ত্কর ইহাই অভিপ্রায়॥ ৩৪

ঐভগৰাহবাচ।

অসংশয়ং মহাবাহো মনো ছর্নিগ্রহং চলম্। অভ্যাসেন তু কোন্তেয় বৈরাগ্যেণ চ গৃহতে॥ ৩৫

অন্তর্য়। জ্ঞীভগবান উবাচ—হে মহাবাহো মনঃ ছর্নিগ্রহং চলম্ [ইতি এডং] অসংশরং ভূ (কিন্তু) হে কৌন্তের [তং] অভ্যাদেন বৈরাগ্যেণ চ গৃহতে (নিরুধ্যতে)॥ ৩৫

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন। হে নহাবাহো মন বে চঞ্চল এবং ফ্রিগ্রহ, এই বিষয়ে সংশয় নাই; কিন্তু হে কৌন্তেয়। অভ্যাস ও বৈরাগ্য দারা এই মনকে বশীভূত করিতে পারা যায়॥ ৩৫

ভাষ্য। এবমেতদ্ যথা এবাবি—অসংশয়ং নাস্তি সংশয়ো মনো ছনিগ্রহং চলমিতাত্ত হে মহাবাহো। কিন্তু অভ্যাসেন অভ্যাসো নাম চিত্ত-ভূমো কস্তাঞ্চিং সমানপ্রত্যমারতিশ্চিত্ত । বৈরাগ্যং নাম দৃষ্টাদৃষ্টভোগেষ্ দোষদর্শনাভ্যাসাদ্ বৈভূক্ষ্যং তেন চ বৈরাগ্যেণ গৃঞ্জতে। বিক্লেপর্নপঃ প্রচার-শিক্তিকাং করানঃ গৃঞ্জে নিগ্ কাডে নিক্ষাত ইত্যর্থ:॥ ৩৫

শাননদ গিরিটানা। পশ্যদীকতা প্রতিবচনগ্র্যাপরতি — ত্রীভগ্রানিতি। ক্র সংশ্ররাহিত্য তরাহ—মন ইতি। কথং তহি মনোনিরোধাে ভবতি তরাহ—কিন্তুতি। অভ্যাসস্বরূপং সামাঞ্জন নিদর্শরতি—অভ্যাসোনামেতি। ক্যাঞ্চিত্তভূমাবিত্যবিশেষিতাে ধ্যেরাে বিষয়াে নির্দিশ্রতে, সমানপ্রত্যরাবৃত্তিবিজাতীয়প্রত্যরানস্তরিতেতি শেষঃ। চিত্তভেতি বটা প্রত্যরশ্ব তবিকার্যদাতনার্থম্। বৈরাগ্যস্বরূপং নির্প্রতি—বৈরাগ্যমিতি। তেযু বৈতৃষ্ক্যং বৈরাগ্যং নামেতি সম্বন্ধঃ। তক্র হেতৃং স্চম্নতি—দােষতি। বিবরের্ বিভ্রাবিষরের্ দােষদর্শনমভান্ততে তেন বৈতৃষ্ক্যং জারতে। নিগ্র্মাণং নির্দিশিতি—বিক্রেপতি। ত্রিন্ গ্রীতে নিরুদ্ধে বন্দানিরাধ্যেক কিং শ্বাদিত্যপ্রকারামান্ত—এর্ব্রিতি। অভ্যাসহেতৃক্ব-

বৈরাগ্যন্থারা চিত্তপ্রচারনিরোধে নিরুদ্ধর্তিকং মনো বিষয়বিষ্থমন্তর্নি**ঠং** ভবতীত্যর্থ:॥৩৫

অকুবাদ। তুমি ধাহা বলিতেছ, তাহা এই প্রকারই; মন যে হর্নিগ্রহ এবং চঞ্চল এই বিষয়ে সংশর নাই। হে মহাবাহো! কিন্তু অভ্যাস এবং
বৈরাগ্যের দারা এই চিত্তের নিরোধ হইতে পারে; যে কোন চিন্তভূমিতে
একজাতীর রন্তির পুন: পুন: আর্ত্তিকে 'অভ্যাস' বলা যার। ঐহিক ও
পারত্রিক ভোগসমূহে দোষদর্শননিবন্ধন বিভ্যাকে 'বৈরাগ্য' বলা যার; সেই
প্রচার অর্থাৎ বিক্লেপযুক্ত চিত্ত অভ্যাস ও বৈরাগ্য দারা নিরুদ্ধ হর,
ইহাই অর্থ॥ ৩৫

অসংযতাত্মনা যোগো ছুপ্পাপ ইতি মে মতিঃ। বশ্যাত্মনা তু যততা শক্যোহবাপ্তমুপায়তঃ॥ ৩৬

আনুয়া অসংযতাত্মনা যোগঃ হুপ্রাপ ইতি মে মতিঃ। তু (কিন্তু) যততা (যতমানেন) বস্থাত্মনা উপায়তঃ [যোগঃ] অবাধ্যুং শক্যঃ॥ ৩৬

অনুবাদ। অনিতেন্দ্রির ব্যক্তির পক্ষে বোগ হবভি, ইহাই, আমার মতি। যে ব্যক্তি কিতেন্দ্রির এবং প্রবন্ধপরায়ণ তিনি উপায়ের দারা বোগ-লাভ করিতে পারেন॥ ৩৬

ভাষ্য। যা পুনরসংযতাত্মা তেন অসংযতাত্মনা অভ্যাসবৈরাগ্যাভ্যাম-সংযত আত্মা অন্তঃকরণং বস্ত সোহরমসংযতাত্মা তেন অসংযতাত্মনা যোগো চ্প্রাপ: চ্:থেন প্রাপ্যতে ইতি যে মতিঃ। যন্ত পুনর্বপ্রাত্মা অভ্যাস-বৈরাগ্যাভ্যাং বক্সতামাপাদিও ভাজ্মা ননো যক্ত সোহরং ব্রাত্মা, তেন ব্রাত্মনা ভূষততা ভূরোহপি প্রযন্ত্র কুর্মতা শক্যোহ্বাপ্ত্র বোগ উপায়তঃ বথোক্তাত্ম-পারাধ। ৩৬

আনন্দগিরিটীকা। সংযতাত্মনো যোগপ্রাপ্তি: স্থলভেত্যক্তা কতি-রেকং দর্শরতি—যঃ পুনরিতি। ব্যতিরেকোপঞ্চাসপরং পূর্বার্দ্ধনন্দ্য ব্যাক-রোতি—অসংযতেতি। পূর্ব্বোক্তায়রব্যাখ্যানপরমূত্তরার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—যৃত্ত্বি-ত্যাদিনা। অন্তঃকরণভ স্ববশত্বে সিদ্ধেহিপ বৈরাগ্যাদাবাছ।বতা ভবিতব্য-মিত্যাহ—যৃত্ততি । উপারো বৈরাগ্যাদিপূর্ব্বকো মনোনিরোধঃ॥ ৩৯

আনুবাদ। বে ব্যক্তি কিন্ত, অসংযতাতা, সে ব্যক্তির পকে যোগ তৃত্যাণ অর্থাৎ বিশেষ ক্লেশের ছারা শভ্য, ইহাই আমার মতি। আসায়া শব্দের অর্থ [এই স্থলে] অন্তঃকরণ; অভ্যাস ও বৈরাগ্যের বারা, সেই অন্তঃকরণ যাহার বশীক্ষত হয় নাই, সেই অসংযতাত্মা। যিনি বশ্যাত্মা, তিনি পূনঃ পূনঃ প্রযত্ন করিলে যথোক্ত উপায়ের সাহায্যে যোগলাভ করিতে পারেন; [এখানেও] আত্মা এই শব্দের অর্থ অন্তঃকরণ, অভ্যাস ও বৈরাগ্যের দারা সেই অন্তঃকরণ গাঁহার বশীভূত হইয়াছে, তিনি বশ্যাত্মা॥ ৩৬

অর্জুন উবাচ।

অযতিঃ শ্রদ্ধয়োপেতো যোগাচ্চলিতমানদঃ। অপ্রাপ্য যোগদংসিদ্ধিং কাং গতিং কৃষ্ণ গচ্ছতি॥ ৩৭

অম্ব্র। অর্জুন উবাচ—শ্রদ্ধা উপেতঃ অযতিঃ যোগাৎ চলিতমানসঃ [সন] যোগসংসিদ্ধিম্ অপ্রাপ্য হে রুফা! কাং গতিং গছতি ?॥৩৭

আমুবাদ। অর্জুন বলিলেন—হে ক্লফ! বাঁহার যোগমার্গে বিশাস আছে, অথচ যোগসিদ্ধির জন্ম তাদৃশ যত্নপরায়ণ নহে, সেই যোগীর মানস (অস্তঃকরণ) যদি যোগ হইতে ভ্রষ্ট হয়, স্কুতরাং সে যোগসিদ্ধিও প্রাপ্ত হয় না, এরূপ স্থলে তাহার [দেহাস্কে] কীদৃশ গতি লাভ হইয়া থাকে ?॥ ৩৭

ভাষ্য ৷ তত্র নোগাভ্যাসাসীকরণেন পরলোকেহলোকপ্রাপ্তিনিমিন্তানি কর্মাণি সংগ্রন্তানি বোগদিদ্ধিকলং চ মোক্ষমাধনং সম্যগ্দর্শনং ন প্রাপ্তমিতি বোগী বোগমার্গাকালে চলিত্চিত্ত ইতি তত্ত নাশমাশত্ত অৰ্জুন উবাচ, অবতিরপ্রবন্ধনা বোগমার্গে শ্রদ্ধা আন্তিক্যবৃদ্ধ্যা চ উপেতো বোগমার্গাদন্তকালেহপি চলিতং মানসং মনো যতা স চলিতমানসঃ অক্তম্বতিং সোহপ্রাপ্য বোগসংসিদ্ধিং বোগফলং সম্যগ্ দর্শনং, কাং গতিং হৈ ক্লম্প সন্থতি ॥ ৩৭

আনন্দ্গিরিটীকা। প্রশান্তরমুখাপয়তি—তত্ত্রেত্যাদিনা। মনো-নিরোধন্য হঃখনাধ্যমাশক্য পরিষ্ঠতে সতি প্রষ্টা প্নরবকাশং প্রভিনভ্যো-বাচেতি সম্বন্ধঃ। লোকবরপ্রাপককর্মসন্তবে কুতো বোগিনো নাশাশকেত্যা-শক্যাহ—যোগাভ্যাসেতি। তথাপি যোগাম্ছানপরিপাকপরিপ্রাপিতসম্য-গ্রুপ্নসামর্থ্যান্মোক্ষোপপত্তৌ কুতন্তস্য নাশাশক্ষেতি চেন্মৈবম্ অনেকান্তরায়-বন্ধাব্যাপ্ন্যাহ ক্মনি প্রারেণ সংসিক্ষেরসিদ্ধিরিত্যভিস্কার্যাহ—যোগসিদ্ধীতি। অভ্যুদন্দনিংশ্রেম্বনবহির্ভাবো নাশো যোগমার্গে তৎকলস্য সম্যগ্ দর্শনাদিতি শেষঃ। তর্হি ততোবহির্ম্ প্রমেবাত্যন্তিকং সংবৃত্তমিত্যাশক্ষাহ-—-শ্রেদ্ধায়েতি। তর্হি বোগমার্গমাশ্রহতে নেত্যাহ—যোগাদিতি। মরণকালে ব্যাকুলেন্দ্রিরস্য জ্ঞান-সাধনাক্ষ্যানাবকাশাভাবাদ্য্কং ততশ্চলিতমানস্থমিত্যাশক্ষাহ-—-শ্রুক্তি। প্রস্বার্থঃ সামাত্যশ্রহীত গতিঃ পুরুষার্থঃ সামাত্যশ্রমস্কর্ভাব্য বিশেষ প্রশ্নো দ্রন্তব্যঃ॥ ৩৭

অনুবাদ। এই প্রকার বোগাভ্যাদের অঙ্গীকরণ নিবন্ধন প্রবােক এবং ইহলাকের সাধন সকল কর্মই সন্ন্যন্ত হইরাছে, অথচ নােকের সাধন, বােগসিদ্ধির ফল যে সম্যগ্দর্শন, তাহাও পাওয়া গেল না, এইরপ ভাবিয়া যে যােগীর মানস যােগমার্গ হইতে অন্তকালে চলিত হয়, সে ত একেবারে নাশই পাইল, এই প্রকার শকা করিয়া [অর্জ্জ্ন বলিলেন], অযতি (অর্থাৎ) অপ্রবন্থবান্, [অর্থচ] আন্তিক্যব্দির্রপ শ্রদাসম্পন্ন এবং অন্তকালেও যােগ হইতে বিচলিত মান (অর্থাৎ) শ্রষ্টমৃতি [এই প্রকার যে যােগী] সে "যােগ-সিদ্ধি" যােগফল যে সম্যঞ্দর্শন তাহা না পাইয়া, হে ক্ষা ! কোন গতিকে পাইয়া গাকে ? ৩৭

কচ্চিনোভয়বিভ্রুষ্টশ্ছিন্নাভ্রমিব নশ্যতি। অপ্রতিষ্ঠো মহাবাহো বিমৃঢ়ো ভ্রহ্মণঃ পথি॥ ৩৮

আনুষু । হে মহাবাহো একাণঃ পথি অপ্রতিষ্ঠঃ উভয়বিত্রষ্ঠঃ ছিরাত্রমিব বিষ্কৃঃ [সন্] কচিৎ ন নগুতি ? ৩৮

অনুবাদ। ইংলোক ও পরলোক হইতে এই হইরা বিচ্ছির মেম্বধণ্ডের স্থার কর্মমার্গে অপ্রতিষ্ঠ এবং মোক্ষপণেও বিমৃচ্ সেই ব্যক্তি কি (একেবারে) বিনই হর না ? ॥ ৩৮

ভাষ্য। কচিচদিতি। কচিৎ কিং ন উভরবিভ্রষ্ট: কর্মার্গাদ্ বোপ-মার্গাচ্চ বিভ্রষ্ট: সংচ্ছিরাভ্রমিব নশুতি কিংবা ন নশুতি অপ্রতিষ্ঠ: নিরাশয়: হে মহাবাহো বিমৃত্: সন্ ব্রহ্মণ: পথি ব্রহ্মপ্রাপ্তিমার্গে॥ ৩৮

আনন্দিগিরিটীকা। প্রশ্নমেব বির্ণোতি—কচ্চিদিতি। প্রশন্তপ্রশ্নার্থকং কচ্চিদিতাভালীকতা বাচিষ্টে—কিমিতি। উভয়বিভষ্টকং স্পষ্টরতি—কর্ম্পে-ত্যাদিনা। বায়্না ছিয়ং বিশকলিতমভং বধা নগুতি তদ্বদিত্যাহ—ছিম্নেতি। নাশাশকানিমিত্তমাহ—নিরাশ্রেয়ইতি। কর্ম্মার্গরপাবস্টম্ভাভাবেহিপি জ্ঞানমার্গা-বইম্বন্ত ভবিষ্যতীত্যাশক্যাহ—বিষ্যুতঃ সৃদ্ধিতি। ন হি কর্মিণং প্রতীয়মাশকা

ফলাভিলাবং তাজেখনে সমর্প্যাসমর্প্য বা কর্মামুতিষ্ঠতো নিরুপচারেণ তদ্ভুংশ-বচনাসম্ভবাৎ সর্বাকর্মসন্ন্যাসিনস্ত বিহিতানাং ত্যাগাৎ জ্ঞানোপান্নাচ্চ বিচ্যুতেরনর্থ-প্রাপ্তিশঙ্কাযুক্তেতি ভাবঃ ॥ ৩৮

আকুবাদ। কচিচিদিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। কচিচং [এই শক্টি]
"কিং" [এই মর্থে প্রযুক্ত], উভরবিল্রষ্ট (অর্থাং) জ্ঞানমার্গ ও
কর্মমার্গ হইতে বিল্লষ্ট [হইয়া] সংচ্ছিন্ন মেঘের ক্লায় (সেই বোগী) কি
নষ্ট হয় অথবা নষ্ট হয় না ? [কারণ] অপ্রতিষ্ঠ (অর্থাং) নিরাশ্রয়
এবং ব্রন্ধের পথে অর্থাৎ জ্ঞানপ্রাপ্তির উপায় বিষয়ে [সে ব্যক্তি] বিমৃঢ়
[হয়]॥ ৩৮

এতনো সংশয়ং কৃষ্ণ চ্ছেত্ত্ব্মর্হস্যশেষতঃ। স্থানতঃ সংশয়স্থাস্থ চ্ছেত্তা নহ্যপপদ্মতে॥ ৩৯

ভাষ্য়। তে কৃষ্ণ ছিং] নে এতং সংশয়ং অশেষতঃ ছেত্রু সহসি হি (স্থাং) অস্ত সংশ্রম্ভ ডেডা ইন্সঃ, !কোহপি। ন উপ-প্রতে॥ ৩১

হাতুবাদ। তে রুঞ্ছ। আমার এই সংশয়টি ভূমিই সম্পূর্ণরূপে উচ্চেন্দ করিতে পার; কারণ, ভূমি ভিন্ন আর কেইই আমার সংশ্রের নিরাকরণ করিতে পারে বলিয়া বোধ হয় না॥ ৩১

ভাষা । এতদিতি। এতামে নম সংশাসং কৃষণ কেছেনুনপনেতৃমাজ দি অংশবতঃ, অদক্তঃ ক্তোহেতা ঋষিদে বাৈ বা চেছেতা নাশ্রিতা সংশার্ত অভানহি যত্মাত্পপভাতে সম্ভবতি অতস্থানৰ চেছেতুমাজ সীতাৰ্থঃ॥৩৯

আনন্দগিরিটীকা। বথোপদর্শিতসংশয়াপাকরণার্থন্ সর্জ্নো ভগবস্তং প্রেরয়য়াহ—এতদিতি। মত্তোহক্তঃ কশ্চিদ্যির্কা দেবো বা দ্বদীয়ং সংশয়ং ছেংস্থতীত্যাশক্ষ্যাহ—ত্বদন্য ইতি। অক্তস্ত সংশয়চ্ছেত্রভাবে কলিতমাহ— অত ইতি॥ ৩৯

অনুবাদ। এতদিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। এই সামার সংশয় হৈ ক্ষণ অশেষরূপে অপনয়ন করিতে [তুমি] সমর্থ হও; কারণ, তুমি ভিন্ন অন্ত কোন ঋষি বা দেব আমার এই সংশয়ের অপনয়ন করিতে সমর্থ হইবে, ইহা সম্ভব নহে। [অতএব] একা তুমিট্র এই সংশয়ের অপনয়ন করিতে পার, ইহাই অর্থ॥ ৩১

প্রীভগবামুবাচ।

পার্থ নৈবেহ নামুত্র বিনাশস্তস্থ্য বিহাতে। ন হি কল্যাণকৃৎ কশ্চিদ্দুর্গতিং তাত গচ্ছতি॥ ৪০

আর্য়। জীভগবান্ উবাচ—হে পার্থ ওস্থাইহ নৈব বিনাশঃ বিষ্ণতে [তথা] আমূত্র (পরলোকে) নৈব [বিনাশঃ বিষ্ণতে] হি (যন্ত্রাৎ) হে তাত ! কল্যাণক্কৎ কশ্চিৎ হুর্গতিং ন গচ্ছতি॥ ৪ •

আকুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন, হে পার্থ, ইহলোকে বা পরলোকে তাহার বিনাশ হইতে পারে না; কারণ, হে তাত! কল্যাণকর্ম্মের অমুষ্ঠাতা কোন জন [কথনও] হুর্গতি প্রাপ্ত হয় না॥ ৪০

ভাষ্য। পার্থেতি। হে পার্থ নৈবেহ লোকে নামূত্র পরশ্মিন্ বা লোকে বিনাশস্তম্ভ বিছতে নাস্তি নাশো নাম পূর্কিশাং হীনজনপ্রাপ্তিঃ স যোগভ্রম্ভ নাস্তি। ন হি যশাং কল্যাণক্তং গুভক্তং কন্চিং ভূর্গতিং কুংসিতাং গতিং হে তাত! তনোতি আত্মানং প্রক্রপণেণতি পিতা তাত উচ্যতে, পিত্রৈব পুত্র ইতি প্রোহ্ণি হাত উচ্যতে, শিষ্যাহ্ণি পুত্র উচ্যতে, গছ্তি॥ ৪ •

আনন্দ গিরিটীকা। যোগিনো নাশাশকাং পরিহরন্ উত্তরমাহ— প্রীভগ্নানিতি। যহ ক্রম্ভয়ল্টো যোগী নশুভীতি তত্তাহ—পার্থেতি। তত্ত হেতৃনাহ—ন হীতি। যোগিনো সার্গছয়াদ্বিভ্রষ্টশু ঐহিকো নাশঃ শিষ্টগহালকণো ন ভবতীতি শ্রদ্ধাদেঃ সন্থাবাৎ তথাপি কথমামুম্মিকনাশশূল্লম্বিত্যাশক্ষ্য তদ্ধপনিরপণপূর্বকং তদভাবং প্রতিজানীতে—নাশো নামেতি। তত্ত হেতৃভাগং বিভন্ততে—ন হীত্যাদিনা। উভয়ভ্রষ্টশাপি শ্রদ্ধেন্দ্রয়সংয্যাদেঃ সামিক্তশ্রবণাদেশ্চ ভাবাত্পপন্নং ভভক্তব্য। তাতেতি কথং পুত্রস্থানীয়ঃ শিষ্যঃ সম্বোধ্যতে পিতৃরেব তাতশক্ষাদিত্যাশক্ষ্যাহ—ত্রোতীতি। তেন পুত্রস্থানীয়শ্ল শিষ্যশ্ল তাতেতি সম্বোধনমবিক্রমিত্যর্থঃ। ন গছতি কুৎসিতাং গতিং কল্যাণকর্ম্বাদিতি নাশাভাবঃ ॥ ৪০

অনুবাদ। পার্থ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ—হে পার্থ, এই লোকে অথবা পরলোকে তাহার বিনাশ নাই; নাশ শব্দের অর্থ পূর্ব্ব জন্ম হইতে নিরুষ্ঠ জন্মপ্রাপ্তি, তাহা যোগজ্ঞের হয় না 👂 কারণ কল্যাণক্তং (অর্থাৎ) শুভকারী [জন] হুর্গতি (অর্থাৎ) কুৎসিতগতি প্রাপ্ত হয় না। হে তাত। আত্মাক্ষাকে পুত্ররূপে যে পরিণত করে, তাহাকে তাত রলা যায়; পিতাই পুত্র; এই কারণে পুত্রও তাত শব্দের দারা অভিহিত হয়; শিষ্যকেও পুত্র বলা যায়
[এই কারণে তাত শব্দের দারা শিষ্যস্থানীয় অর্জ্জুনকে ভগবান্ সম্বোধন করিয়াছেন] ॥ ৪ •

প্রাপ্য পুণ্যকৃতাং লোকানুষিদ্বা শাশ্বতীঃ সমাঃ। শুচীনাং শ্রীমতাং গেহে যোগভ্রফৌ২ভিজায়তে॥ ৪১

আনুয়। পুণাক্কতাং লোকান্ প্রাপ্য [তত্ত্র] শাখতীঃ সমাঃ উষিত্বা যোগ-ভঃ: গুচীনাং শ্রীমতাং গেহে অভিজায়তে ॥ ৪১

অনুবাদ। নোগভ্রষ্ট ব্যক্তি পুণ্যাত্মাদিগের লোকে গমন করিয়া [সেই-থানে] অনেক বংসর বাসপূর্বক, পবিত্র অথচ সম্পন্ন ব্যক্তিগণের গৃহে জন্মলাভ করিয়া থাকেন ॥ ৪১

ভাষ্য। কিম্বল্ল ভবতি ? বোগমার্গে প্রবৃত্তঃ সন্ন্যাসী সামর্থ্যাৎ প্রাপ্য গদ্ধা পূণ্যক্তামশ্বমেধাদিশাজিনাং লোকান্, তত্র চ উদ্বিদ্ধা বাসমস্থল্ন শাশতীঃ নিজ্যাঃ সমাঃ সংবৎসরান্ তড়োগক্ষরে শুচীনাং যথোক্তকারিণাং শ্রীমতাং বিভৃতিনতাং গ্রেহ বোগভ্রষ্টোহভিজারতে ॥ ৪১

আনন্দণিরিটীক। বোগভ্রষ্ট লোকদ্বরেংশি নাশাভাবে কিং ভবতীতি পৃচ্ছতি—কিংজ্বিতি। তত্র শ্লোকেনোত্তরমাহ—প্রাপ্রেতি। কথং সংস্থাসীতি বিশেষ্যতে তত্রাহ—সামর্থ্যাদিতি। কর্মণি ব্যাপৃত্ত কর্মিণো যোগমার্গ-প্রবৃত্তান্তপপত্তিস্তৎপ্রবৃত্তাবিপি কলাভিলাধবিকলন্তেশ্বরে সমর্পিতসর্বাকশ্বভিত্তংশা-শঙ্কানবকাশাদিত্যর্থঃ। সমানাং নিত্যত্বং মামুষসমাবিলক্ষণত্বম্। বৈরাগ্যাভাব-বিবক্ষরা বিভৃতিমতাং গৃহে জন্মতি বিশেষ্যতে॥ ৪১

অনুবাদ। ইং।র তবে কি হর ? [এই জিজাসার উত্তরস্বরূপ বলা হইতেছে যে] "যোগমার্গে প্রবন্ধ সন্ন্যাসী" [এইটুকু না থাকিলেণ্ড আকাজ্জা-বশতঃ বুঝা যাইতেছে] [যদি যোগল্রন্থ হর তাহা হইলে সেই] যোগল্রন্থ, পুণ্যকারী (অর্থাৎ) অশ্বমেধাদি পুণ্যকর্মান্থন্ধাতাদিগের [গস্তব্য] লোকে গমন করিয়া, সেথানে নিত্য (অর্থাৎ বহুতর) বৎসর বাস করিয়া, সেই স্থুখ ভোগের ক্ষমকালে শুচি (অর্থাৎ) যথোক্ত কারী, শ্রীমান্ (অর্থাৎ) সম্পত্তিশালী মন্ত্যগণের গ্রেহে জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন॥ ৪১

স্বথবা যোগিনামেব কুলে ভবতি ধীমতাম্। এতদ্ধি তুর্ল ভতরং লোকে জন্ম যদীদৃশম্॥ ৪২

তার্য়। অথবা [সঃ] ধীমতাং বোগিনাম্ এব কুলে ভবতি (জন্ম লভতে); ঈদৃশং যৎ জন্ম [তং] এতং হি (নিশ্চিতমেব) লোকে ফ্রন্তি-তরম্॥ ৬২

অনুবাদ। অথবা ধীমান যোগীদিগের কুলে [সেই যোগন্রই ব্যক্তি] জন্ম লাভ করিয়া থাকেন; মনুষালোকে এই প্রকার যোগিগণের কুলে জন্ম [যোগ নুষ্টগণের পক্ষে] তুর্ল ভিতর ॥ 6২

ভাষ্য। অথেতি। অথবা প্রীমতাং কুলাদগ্রন্মিন যোগিনামেব দরিদ্রাণাং কুলে ভবতি জায়তে থীমতাং বৃদ্ধিমতাম্। এতদ্ধি জন্ম ষদ্ দরিদ্রাণাং যোগিনাং কুলে হল ভতরং গ্রংগলভাতরং পূর্বিমপেক্ষ্য লোকে জন্ম ষদীদৃশং যথোক্তবিশেষণে কুলে॥ ৪২

আনন্দ্গিরিটীকা। শ্রদ্ধাবৈরাগ্যাদিকল্যাণাধিক্যে পক্ষান্তরমাহ—অথ বৈতি। রোগিনামিতি ক্মিণাং গ্রহণং মা ভূদিতি বিশিন্টি—ধীমতামিতি। ব্রহ্মবিভাবতাং শুচীনাং দরিলাণাং কুলে জন্ম তলভাদিপি ত্লভং প্রমাদকারণাভাবাদিত্যাহ—এতদ্ধ্রীতি। কিমপেক্ষ্যান্ত জন্মনো হংখলভ্যাদিপি চংখলভ্যতরহং ভদাহ —পূর্ব্বমিতি। যভাপি বিভূতিমতামপি শুচীনাং গৃহে জন্ম হংখলভ্যং তথাপি তদপেক্ষা ইদং জন্ম হংখলভ্যতরং যদীদৃশং শুচীনাং দরিদ্রাণাং বিভাবতামিতি বিশেষণোপেতে কুলে লোকে জন্মলক্ষণমিত্যর্থ: *॥ ৪২

অনুবাদ। অথবা ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। অথবা ধনীদিগের কুল ব্যতিরেকে দরিদ্র অথচ বৃদ্ধিমান্ যোগীদিগের কুলে [যোগভ্রষ্ট ব্যক্তি] জন্মগ্রহণ করিয়া থাকেন। এই যে দরিদ্র যোগীদিগের কুলে জন্ম, ইহা [যোগভ্রষ্ট ব্যক্তিগণের পক্ষে] ধনবান্দিগের কুলে জন্ম অপেক্ষা ছলভ্তর; যথোক্ত বিশেষণম্ভক দরিদ্র যোগিগণের কুলে [জন্মই স্পৃহয়ণীয়তর ইহাই তাৎপর্য্য]॥ ৪২

> তত্র তং বৃদ্ধিসংযোগং লভতে পৌর্ব্বদেহিকম্। যৃততে চ তত্তো ভূয়ঃ সংসিদ্ধৌ কুরুনন্দন॥ ৪৩

[🛊] জন্ম ৰক্ষ্যমাণমিতি বা পাঠ:।

অন্তর্য়। তত্ত্ব তং পৌর্বদৈহিকং বুদ্ধিযোগং [সঃ] লভতে, ততক্ষ হে কুরুনন্দন! ভূয়: সংসিদ্ধৌ ষততে॥ ৪৩

আমুবাদ। সেই জন্ম [সেই যোগল্রষ্ট ব্যক্তি] পূর্বজন্মকৃত বৃদ্ধিসংযোগ (অর্থাৎ পূর্বজন্মার্জিত যোগসংস্কার) প্রাপ্ত হন এবং তাহার পর যোগসিদ্ধি লাভ করিবার জন্ম পুনর্বার যত্ন করিয়া থাকেন॥ ১৩

ভাষ্য ৷ যক্ষাৎ তত্ত্ব যোগিনাৎ কুলে তং বুদ্ধিসংযোগং বুদ্ধা সংযোগং বৃদ্ধিসংযোগং লভতে পৌর্বাদেহিকং পূর্ববিদ্ধিন দেহে তবং পৌর্বাদেহিকং যততে চ প্রযন্ত্রং করোতি, ততত্ত্ব্বাৎ পূর্বাকৃতাৎ সংস্থারাৎ ভূয়ো বহুতরং সংসিদ্ধৌ সংসিদ্ধিনিমিত্তং হে কৃক্তনন্দন ॥ ৪৩

আনন্দগিরিটীকা। বছত্তমতরং জন্মোকং তভোত্তমত্তে হেত্বস্তরমাহ—
যাস্মাদিতি। বুদ্ধোত্যাত্মবিষয়েতি শেব:। পূর্বস্থিন্ দেহে তবং তত্তাত্মিষ্টিতসাধনবিশেষযুক্তমিতার্থ:। তর্হি যথোক্তজন্মনি সাধনামন্তানমস্তরেশৈব বুদ্ধিসম্বন্ধঃ
ভাদিত্যাশক্ষাহ—যততে চেতি। প্রয়ঃ শ্রবাছ্মন্ত্রীনবিষয়:॥ ৪৩

অনুবাদ। যে কারণে সেই যোগিগণের কুলৈ বৃদ্ধিসংযোগ (অর্থাৎ) পূর্ব্ধ [জন্মার্জিত] জ্ঞানের সংস্কার লাভ করিয়া গাকে; [ঐ সংস্কার কি প্রকার তাহাই লিগিতেছেন] পৌর্বদেহিক (অর্থাৎ) পূর্বজন্মের দেহে উৎপন্ন, সেই কারণে সেই সংস্কারের বশে খোগদিদ্ধি লাভ করিবার নিমিত্ত বহুতর প্রযন্ত করিয়া পাকেন, হে কুরুনন্দন॥ ৪৩

পূর্ব্বাভ্যাদেন তৈনৈব হ্রিয়তে হ্বশোহপি সং। জিজ্ঞাস্থরপি যোগস্থ শব্দব্রক্ষাতিবর্ত্ততে॥ ৪৪

জ্মস্ত্র । সং অবশোহণি [সন্] তেনৈব পূর্ব্বাভ্যাসেন ছিয়তে । বোগন্ত জিজাহরণি শক্রশ্ব অতিবর্ত্তে ॥ ৪৪

আকুবাদ। তিনি অবশ হইয়া সেই পূর্ব্বাভ্যাসের দারা বোগমার্গে প্রবর্ত্তিত হন। বে ব্যক্তি বোগের জিজ্ঞাস্থ, তিনিও সমগ্র কর্ম্মকাণ্ডরূপ বেদের ফলকে অতিক্রমণ করিতে পারেন [বে ব্যক্তি বোগ করিয়া থাকেন, তাঁহার ত কথাই নাই]॥ ৪৪

ভাষ্য। কথং পূর্বনেহবৃদ্ধিসংবোগ ইতি তত্ন্যতে। **বঃ পূর্বজন্মনি** ক্লতঃ অভ্যাদঃ দ পূর্বনিভ্যাদঃ তেনৈব বলবতা ছিম্মতে হি যক্ষাৎ অবশঃ অপি দ যোগভাগৈ ন ক্লতং চেৎ যোগাভ্যাদসংস্কার্দ্বলবস্তুরমধন্দাদিলক্ষণং কর্ম তদা

বোগ্যাভ্যাসজনিতেন সংস্কারেণ ছিন্নতে। অধর্মশেচদ্বলবন্তর: ক্বতন্তেন বোগ-জোহপি সংস্কারোহভিভূনত এব। তৎক্ষরেভূ যোগজঃ সংস্কারঃ স্বরমেব কার্য্য-মানভতে ন দীর্ঘকালস্থভাপি বিনাশস্তভান্তীত্যর্থঃ। জিজ্ঞাস্থরপি যোগভ স্বরূপং জ্ঞাভূমিচ্ছন্ যোগমার্গে প্রবৃত্তঃ সন্ন্যাসী বোগভ্রন্তঃ সামর্থ্যাৎ সোহপি শব্দবন্ধ বেদোক্তকর্দ্মাস্থ্যানফলমতিবর্ত্ততে অপাকরিষ্যতি, কিমৃত বৃদ্ধ যো যোগং ভন্নিঠোহভ্যাসং কুর্যাৎ॥ ৪৪

আনন্দ্রিনিকা। यদি পূর্ব্যক্ষারোহন্তেচ্ছামুপনয়ন্ ন প্রবর্ত্তরতি তথা চ প্রবৃত্তিরনিচ্ছরা স্তাদিত্যাশঙ্কাহ—পূর্ট্বেতি । স হি যোগভ্রষ্ট: সমনস্তরজনাক্তত-সংস্থারবশাহন্তরন্মিন্ জন্মনি অনিচ্ছন্নপি যোগং প্রত্যেবাক্সপ্তো.ভবতীত্যর্থ:। তত্ত্ব কৈমৃতিকন্তারং স্কারতি—জিজ্ঞাস্পরিতি। পূর্বার্দ্ধং বিভন্ধতে—যঃ পূর্ব্বেতি। তস্মান্ত্রেচ্ছরা তম্ম প্রবৃত্তিরিতি শেষ:। যোগভ্রষ্টমাধর্মাদিপ্রতিবন্ধেহপি তর্হি পূর্বাভ্যাসবশাদ্ব্দিসম্বন: স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—্রেত্যাদিনা। यদি যোগল্ডেন যোগাভ্যাসন্ধনিতসংস্থারপ্রাবল্যাং প্রবলতরমধর্মপ্রভেদরূপং কর্ম ন রুতং স্থাৎ তদা তেন সংস্কারেণ বশী ভূতঃ সন্নিচ্ছাদিরহিতোহপি বুদ্ধিসম্বন্ধভাগ ভবতীত্যর্থ:। বিপক্ষে যোগসংস্থারস্থাভিভূতত্বার কার্য্যারম্ভকত্বমিত্যাহ—অধর্মানেচদিতি। যোগজদংস্কারস্তাধর্মাভিভূতস্ত কার্য্যমক্কবৈবাভিভাবকপ্রাবল্যে প্রণাশঃ স্তাদিত্যা-শক্যাহ—তৎক্ষয়ে ত্বিতি। কালব্যবধানান্নিবৃত্তিং শঙ্কিছোত্তং—্রেতি। তৃণজ্বলোকাদৃষ্টান্তশ্রুতা সংকারশু দীর্ঘতায়া: সমধিগত্বাদিতি ভাব:। কৈমৃতিক-স্থায়োজপরমূত্তরার্দ্ধং বিভঙ্গতে—জিজ্ঞাস্থরপীত্যাদিন।। অত্রাপি সন্ন্যাসীতি বিশেষণং পুৰ্ববদবধেয়মিত্যাহ-সামর্থ্যাদিতি। ন হি কর্মী কর্মমার্গে প্রবৃত্তততো ভ্রষ্ট: শঙ্কিতুং শক্যতে ; অতঃ সন্ন্যাসী পুর্ব্বোক্তৈর্বিশেষণেঃ বিশিষ্টো বোগল্ঞীহভীষ্ট সোহপি বৈদিকং কর্ম তৎফলঞ্চাতিবর্ত্ততে কিমৃত যোগং বৃদ্ধা তরিষ্ঠ: সদাভ্যাসং কুর্বন্ কর্ম তৎফলঞ্চাতিবর্ত্ততে কিমিতি বক্তব্যমিতি যোজনা। বোগনিষ্ঠস্ত কর্মতৎফলাভিবর্ত্তনং ততোহধিকফলাবাপ্তির্বিক্ষ্যতে॥ ৪৪

অনুবাদ। পূর্বদেহের বৃদ্ধিসংযোগ কি প্রকারে হর, তাহাই বলা হইতেছে। পূর্ব জয়ে বে অভ্যাস করা হইরাছে, তাহাকেই 'পূর্বাভ্যাস' বলা বার। সেই বলবান পূর্বাভ্যাসের দারা পরবশ হইরা, সেই যোগত্রই ব্যক্তি হত (অর্থাৎ যোগমার্গে প্রবর্ত্তিত হর); বদি যোগাভ্যাসজনিত সংস্কার অপেকা প্রবল অধর্মাদিলকাণ নিন্দিত কর্ম, সে ব্যক্তি না করিয়া থাকে, তাহা হইলে, সেই যোগাভ্যাসজনিত সংশ্বারের দারা ঐ নোগত্রই ব্যক্তি হত হইরা

থাকে; আর যদি সেই সংস্কার হইতে প্রবশতর কোন অধর্মের অনুষ্ঠান করিয়া ফেলে, তাহা হইলে, সেই অধর্মের দারা তৎকালে সেই যোগজ সংস্কারও পরিভূত হইয়া থাকে; কিন্তু ঐ অথর্মের ক্ষয় হইলে, [সময়ে] সেই যোগজ সংস্কার [আবার] নিজ কার্য্য করিতে প্রবৃত্ত হয়; আনেককাল [অব্যক্তভাবে] থাকিলেও, ঐ যোগজ সংস্কারের একেবারে বিনাশ হয় না—ইহাই অর্থ। যে ব্যক্তি যোগের স্বরূপ জানিতে ইচ্ছাকরিয়া "যোগমার্গে প্রবৃত্ত হয় এবং কর্মান্ত সংস্থাস করে" [এতটুকু মূলে না থাকিলেও সামর্থ্যবশতঃ বৃঝিয়া লইতে হইবে] অথচ যোগভাই হয়, সেও শন্ধবন্ধকে অতিবর্ত্তন করে অর্থাৎ বেদোক্ত কর্মান্ত কারের ফলকে অপাক্ষত করিতে পারে; যে ব্যক্তি কিন্তু যোগের স্বরূপ বৃঝিয়া তাহার অনুষ্ঠানপরায়ণ হইয়া অভ্যাস করে, ভাহার পক্ষে আর কি বলা বাইবে ?॥ ৪৪

প্রযন্ত্রাদ্যতমানস্ত যোগী সংশুদ্ধকিল্পিয়। অনেকজন্মসংসিদ্ধস্ততো যাতি পরাং গতিম্॥ ৪৫

ভারুয় । প্রবিজ্ঞান্ বভ্যান: সংশ্ক্ষকিলিয়ো বোগী আনেক্জনাসংসিদ্ধ: [সন্]তত: প্রাং গতিং বাতি ॥ ৪৫

ভানুবাদ। প্রযন্ত্রপর্কক অভ্যাদ করিতে করিতে ক্ষীণপাপ যোগা অনেক জন্মের পরে সম্যক সিদ্ধি লাভ করিয়া তৎপরে প্রমাগতি লাভ করিতে পারেন॥ ৪২

ভাষ্য। কৃত চ বোগিছং শ্রের ইতি প্রবন্ধান্যতমানঃ অধিকং যতমান ইত্যর্থ:। তত্র বোগী বিদ্যান সংশুদ্ধকিবিষঃ বিশুদ্ধকিবিষঃ সংশুদ্ধপাপঃ, অনেকেয়ু জন্ম হা কিঞ্ছিৎ কিঞ্ছিৎ সংস্থারজাতম্প্চিত্য তেনোপচিতেন অনেক-জন্মক্তেন সংসিদ্ধঃ অনেকজন্মসংসিদ্ধঃ ততঃ লন্ধসম্যগ্দর্শনঃ সন্যাতি পরাং প্রকৃষ্ঠাং গতিম্॥ ৪৫

আনন্দ্রিটীকা। যোগনিষ্ঠ শ্রেষ্ঠত্বে হেছন্তরং বজু ন্ উত্তরক্ষোক্ষবতারয়তি—কুতিন্চেতি। মৃত্প্রয়েহিপি ক্রমেণ মোক্ষ্যতে চেদধিকপ্রয়ন্ত্রগ্রেমের প্রকৃটয়তি—প্রয়াদিতি।
তত্ত্ব যোগবিষয়ে প্রয়ন্তাতিরেকে সতীত্যর্থ:। ততঃ সঞ্চিতসংস্কারসমুদায়াদিতি
যাবং। সমুৎপরসম্যগ্দর্শনবশাৎ প্রকৃষ্টা গতিঃ সংক্রাসনা বভ্যতে তেন শীঘ্রং
মৃক্তিমিচ্ছয়ধিকপ্রয়ন্ত্রা ভবেদয়প্রয়ন্ত্রন্ত্র চিরেবৈর মুক্তিভাগীত্যর্থ:॥ ৪৫

অকুবাদ। কেন যোগিত শ্রেয়ঃ [তাহাই বলা হইতেছে]। প্রযক্ত পূর্বক বতমান (অর্থাৎ) অতিশর বত্তকারী, সেই যোগবিষয়ে, "যোগী" বিছান্, "সংভদ্ধকিবিষ" বিভদ্ধকিবিষ (অর্থাৎ) বিগতপাপ, অনেক জয়ে অয় অয় সংস্থারসমূহের সঞ্চয় করিয়া সেই অনেক জয়য়ত সঞ্চিত সংস্থারসমূহের সামর্থ্যে সম্যক্তাকার সিদ্ধ (অর্থাৎ) লদ্ধবাথার্থজ্ঞান হইয়া পরে প্রকৃষ্ট গতিকে লাভ করিয়া থাকেন॥ ৪৫

> তপস্বিভ্যোহধিকো যোগী জ্ঞানিভ্যোহপি মতোহধিকঃ। কর্মিভ্যশ্চাধিকো যোগী তম্মাদ্ যোগী ভবার্জ্জ্ন॥ ৪৬

আন্থয়। যোগী তপস্থিতা: অধিক: (শ্রেষ্ঠ:) নত: [তথা] জ্ঞানিভ্যোহিপি (শাস্ত্রবিদ্ধোহিপি) অধিক: [নত:] [তথা] কর্মিন্ড্যাহিপি অধিক: [নত:] তথাৎ হে অর্জুন তং যোগী ভব॥ ৪৬

অকুবাদ। যোগী তপস্বিগণ হইতেও শ্রেষ্ঠ বলিয়া সম্মত, যোগী জ্ঞানিগণ হইতেও অধিক বলিয়া স্বাক্তত এবং যোগী কমিগণ হইতেও অধিক বলিয়া বিবেচিত, এই কারণে হে সর্জ্জ্ন তুমি যোগী হও॥ ১৬

ভাষ্য। বশাদেবং তথাং তপস্বিভ্যোহধিকো বোগী, ক্ষানিভ্যোহণি জ্ঞানমত্র শাস্ত্রপাণ্ডিত্যং তদ্বদ্যোহণি নতো আছোহধিক: শ্রেষ্ঠ ইতি কর্মিভ্যঃ অমিহোত্রাদি কর্ম তদ্বভ্যঃ অধিকো যোগী বিশিষ্টঃ যথাং তথাদ্ বোগী ভবার্জুন ॥ ৪৬

আনন্দণিরিটীকা। সম্যগ্জানদারা মোকহেতৃত্বং যোগস্থোক্তমন্ত বোগিনঃ সর্বাধিকত্বমাহ—যুস্মাদিতি। যোগস্থা সর্বস্বাহৎকর্বাদবশুকর্ত্তব্যদার যোগিনঃ সর্বাধিক্যং সাধ্যতি—তপ্সিভ্য ইতি। যোগিনো জ্ঞানিনশ্চ পর্ব্যাম্বত্বাৎ কথং তম্ম জ্ঞানিভ্যোহধিকত্বমিত্যাশঙ্ক্যাহ—জ্ঞানমিতি। যোগিনঃ সর্বাধিকত্বে ফলিত্যাহ —তস্মাদিতি॥ ৪৬

অমুবাদ। যে কারণে এই প্রকার, সেই কারণে যোগী তপস্থিগণ হইতে অধিক, এবং জ্ঞানিগণ হইতেও অধিক (অর্থাৎ) শ্রেষ্ঠ ; এখানে শাস্ত্রপাণ্ডিত্যই জ্ঞানশব্দের অর্থ। এই প্রকার কর্ম্মিগণ হইতেও যোগী অধিক অর্থাৎ বিশিষ্ট ; যেহেতৃক এই প্রকার, সেই জন্ম, হে অর্জ্ঞ্ন, তৃমি যোগী হও॥ ৪৬

-যোগিনামপি সর্কেষাং মদ্গতেনান্তরাত্মনা। শ্রদ্ধাবান্ ভক্ততে যো সাং স মে যুক্ততমো মতঃ॥ ৪৭ অন্তব্য । সর্কেবামপি বোগিনাং [মধ্যে] বঃ শ্রদ্ধাবান্ [সন্] মদ্গতেন অন্তরাত্মনা মাং ভজতে গঃ (বোগী) মে (মম) যুক্ততমো মতঃ ॥ ৪৭

অকুবাদ। সকল যোগীদিগের মধ্যে যে যোগী শ্রহ্মাবান্ হইয়া মৎপরায়ণ অন্তঃকরণের ছারা আমাকে ভজনা করেন, সকল যোগী অপেকা সেই যোগীই মুক্ততম ইহা সামার মত ॥ ৪৭

ভাষ্য। বোগিনামপি সর্কেষাং ক্ষদ্রাদিত্যাদিধ্যানপরাণাং মধ্যে মদ্গতেন মরি বাস্থদেবে সমাহিতেন অন্তরাত্মনা অন্তঃকরণেন শ্রহাবান্ শ্রহণানঃ সন্ ভক্ততে সেবতে যো মাং স মে মম ব্রুত্তমোহতিশরেন যুক্তো মতোহভিপ্রেত ইতি॥ ৪৭

আনন্দ্গিরিটীকা। নথাদিত্যো বিরাডাত্মা স্ত্রং কারণমক্ষরমিত্যেতেথামুগাসকা ভূয়াংসো বোগিনো গম্যন্তে তেবাং কতমঃ শ্রেরানিব্যতে তত্ত্বাহ—
যোগিনামিতি। বো ভগবস্তং সগুণং নিগুণং বা বথোকেন চেতসা শ্রুদ্ধানঃ
সন্ধনবরতমন্ত্রসন্ধতে স যুক্তানাং মধ্যেহতিশরেন যুক্তঃ শ্রেরানীখরস্তাভিপ্রেতঃ ন হি
তদীরোহভিপ্রারোহস্তথা ভবিত্নহ তীত্যর্থঃ। তদনেনাধ্যারেন কর্মবোগন্ত সংস্থানহেতোর্মব্যাদাং দর্শরতা সাক্ষং চ বোগং বির্থতা মনোনিগ্রহোপারোপদেশেন
বোগন্তইন্তাত্যন্তিকনাশশন্তাবকাশং শিথিলয়তা ত্বংপদার্থাভিজ্ঞ জ্ঞাননিষ্ঠত্বোক্যা
বাক্যার্থজ্ঞানান্ত্রক্রিতি সাধিতম্ ॥ ৪৭

আমুবাদ। বোগিনামিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। রুদ্র কিংবা আদিত্যাদির ধ্যানপরারণ সকল বোগীর মধ্যে যে বোগী শ্রজাযুক্ত হইরা আমাতে অর্থাৎ বাস্থ্যদেব- [পদবাচ্য পরমেশ্বর]-শ্বরূপে চিন্তের সমাধান পূর্বক আমাকেই ভজনা করেন, আমার নিকটে সেই ব্যক্তি, সকল বোগী হইতে অভিশর বৃক্ত অর্থাৎ উৎক্লন্ত বিলিয়া বিবেচিত ॥ ৪৭

ইতি वर्क्षार्थात्रः नमार्थः।

অথ সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

-:*:-

শ্রীভগবামুবাচ।

মধ্যাসক্তমনাঃ পার্থ যোগং যুঞ্জন্ মদাশ্রেয়ঃ। অসংশয়ং সমগ্রং মাং যথা জ্ঞাস্থসি তচ্ছৃণু॥ ১

আন্তর্য়। এ ভগবান্ উবাচ—হে পার্থ ময়ি আসকুমনাঃ মদাশ্রয়ঃ বোগং যুঞ্জন্[সন্] সমগ্রং মাং বথা অসংশয়ং জ্ঞান্তসি তৎ শুণু ॥ ১

অনুবাদ। জ্রীভগবান্ বলিলেন, হে পার্থ, আমাতে হাদর আসক্ত করিয়া মৎপরারণ হইয়া যোগ সাধন করিতে করিতে বে প্রকারে সমগ্র আমাকে নিঃসন্দিগ্ধভাবে জানিতে পারিবে, তাহা [বলিতেছি], শ্রবণ কর ॥ ১

ভাষ্য। "বোগিনামপি সর্ব্বেষাং মদ্গতেনাস্তরাত্মনা। শ্রদ্ধাবান্ ভক্তে বো মাং সমে যুক্ততমো মতঃ।" ইতি প্রশ্নবীক্ষমপঞ্জ স্বর্মের ঈদৃশং মদীরং তত্মমবং মদ্গতান্তরাত্মা স্থাদিত্যেতদ্বিবক্ষ্:—শ্রীভগবান্ উবাচ মরি বক্ষ্যমাণ-বিশেষণে পরমেশ্বরে আগক্তং মনো যক্ত স মধ্যাসক্তমনাঃ, হে পার্থ যোগং যুক্তন্ মনঃসমাধানং কুর্বন, মদাশ্রয়ঃ অহমেব পরমেশ্বর আশ্রেষা যক্ত স মদাশ্রয়ঃ বোহি কন্চিৎ পুরুষার্থেন কেনচিদর্থী ভবতি, স তৎসাধনং কর্ম্ম অন্নিহোত্রাদি তপোদানং বা কিঞ্চিদাশ্রয়ং প্রতিপন্ততে, অরং তু যোগী মামেব আশ্রমং প্রতিপন্ততে হিত্বা অন্তৎ সাধনান্তরং মধ্যেবাসক্তমনা ভবতি। যল্পমেবংভূতঃ সন্ অসংশরং সমগ্রং সমস্তং বিভূতিবলশক্ত্যেশ্র্যাদিগুণসম্পন্নং মাং যথা যেন প্রকারেপ জ্ঞান্থিনি সংশেষসন্তরেণ এবমেব ভগবানিতি তৎ শৃণু উচ্যমান্ং ময়া॥ ১

আনন্দ্গিরিটীকা। কর্মসংখ্যাসাত্মক্ষাধনপ্রধানং স্বংপদার্থপ্রধানংবা প্রথমবৃত্বং ব্যাধ্যার মধ্যমবৃত্বকুশৃশাশুনিষ্ঠং তৎপদার্থনিষ্ঠং বা ব্যাধ্যার মধ্যমবৃত্বরাজ্ঞনানঃ সমনস্করাধ্যারমবতারয়ভি—্যোগিনামিতি। অতীতাধ্যারাজ্ঞে মদ্গতেনাস্করাত্মনা বো ভক্তে মামিতি প্রশ্নবীক্ষং প্রদর্শ্য কীদৃশং ভগবতন্তক্ষং কথং বা মদ্গতাস্তরাত্মা শ্লাদিত্যক্ষ্নশ্ল প্রশ্নরে কাতে ব্রমেব ভগবান অপৃষ্টমেব তদ্বক্ষুমিক্সর্ক্ষানি-

ত্যর্থঃ। প্রমেশ্বরশু বক্ষ্যমাণবিশেষণত্বং সক্ষম্পদায়তনত্বাদিনানাবিধবিভূতিভাগি-ত্বং তত্রাসব্ধির্মনসো বিষয়াস্তরপরিহারেণ তন্নিষ্ঠত্বম্। মনসো ভগবভ্যেবাসকৌ তেতু-মাহ—যোগমিতি। বিষমান্তরপরিহারে হি গোচরমালোচ্যমানে ভগবভ্যেব প্রতিষ্ঠিতাং ভবতীত্যর্থ:। তথাপি স্বাশ্রয়ে পুরুষো মন: স্থাপয়তি নাম্মত্রেত্যাশ-ক্যাহ—মদাশ্রেয় ইতি। যোগিনো বদীখরাশ্রমত্বন তন্মিন্ধেবাসক্তমনত্বমূপঞ্জতং তহুপপানয়তি—যো হীতি। ঈশ্বরাখ্যাশ্রয়শু প্রতিপত্তিমেব প্রকটয়তি— হিত্তেতি। অন্ত যোগিনন্তদাশ্রমপ্রতিপত্ত্যা মনসন্তব্যেবাসক্তিত্তথাপি মম কিমা-রাতমিত্যাশক্য বিতীয়ার্দ্ধং ব্যাচষ্টে—যৃস্তুমেব্মিতি। এবস্তৃতো যথোক্তধ্যান-निर्वेश्कवरात्रव मयागिकमना यद्धः म दः छथाविधः मन्नमः ममानः मः मरमादा वज জ্ঞানে তদ্বথা ভারণা মাং সমগ্রং জ্ঞান্তসীতি সম্বন্ধঃ। সমগ্রমিত্যভার্থমাহ— সমন্তেতি। বিভৃতির্নানাবিধৈখর্য্যোপায়সম্পত্তি:। বলং শরীরগতং সামর্থ্যম্। শক্তिर्मत्नागञ्श প্রাগ্ল্ভ্যম। ঐশ্বর্যমীশতব্যবিষয়মীশনসামর্থ্যম, স্বাদিশক্ষেন জ্ঞানেচ্ছাদয়ো গৃহস্তে। অসংশয়মিতি পদস্ত ক্রিয়াবিশেষণত্বং বিশদরন্ ক্রিয়াপদেন সম্বন্ধ কথয়তি—সংশ্যুমিতি। বিনা সংশয়ং ভগব্তব্পরিঞানমেব ক্লোর-রতি—এবমেবেতি। ভগবততত্ত্ব জ্ঞাতব্যে কথং মম জ্ঞানমূপদেক্ষ্যতি • ন হি স্বামৃতে তছপদেষ্টা কশ্চিদন্তীত্যাশক্যাহ—তচ্চ্ ৃ ণিবৃতি ॥ >

অকুবাদ। "সকল বোগিগণের মধ্যে মদ্গতিহৃদয়ে শ্রহাবান্ ইইরা বে ব্যক্তি আমাকে ভদ্ধনা করেন, তিনিই আমার নিকট যুক্ততম বলিয়া সন্মত" এই বাক্যের হারা প্রশ্নের বীল নিজেই হুচনা করিয়া, "আমার এই প্রকার তত্ত্ব—এইরূপে মদ্গতচেতা ইইতে হয়" ইত্যাদি উত্তর বলিবার অভিপ্রায়ে ভগবান্ বলিলেন আমাতে [আমার কি বিশেষণ তাহা বলা ষাইবে এবং আমিই পরমেশ্বর ইহাও বলা যাইবে] যাহার হৃদয় আসক্ত হয়, তাঁহাকেই আমাতে 'আসক্তমনাঃ' বলিয়া জানিবে। হে পার্থ [এবং] যোগকে অবলম্বন করিয়া (অর্থাৎ) মনঃ সমাধান করিয়া মদাশ্রয়, আমি একমাত্র পরমেশ্বরই বাহার আশ্রয়, তিনিই 'মদাশ্রয়', যে কোন ব্যক্তি কোন স্বর্গাদিরূপ পুরুষার্থের কামনা করিয়া থাকে, সেই ব্যক্তি সেই স্বর্গাদি প্রয়োজনের সাধন অগ্নিহোত্রাদি কর্ম্ম, তপস্তা 'বা দান প্রস্কৃতি কোন আশ্রয়কে প্রাপ্ত হয়, এই ব্যক্তি কিন্তু অস্ত্রসকল উপার পরিত্যাগ করিয়া, আমাকেই আশ্রয়নুঁছিতে অবলম্বন করেন এবং আমাতেই আসক্তেচতা হল। হে অর্জ্বন্ন, তুমিও এই প্রকার হইয়া বে

^{. +} উদেবাতীতি বা পাঠ:।

প্রকারে সমস্ত, বিভৃতি বল শক্তি ও ঐশ্বর্যাদি গুণযুক্ত আমাকে অথওভাবে, বিনা সংশরে, জানিতে পারিবে (অর্থাৎ) ভগবান্ সর্বাদা এই প্রকারই, এইরূপ নিঃসন্দিগ্ধভাবে অন্ধূভব করিতে সমর্থ হইবে, তাহা আমি বলিতেছি, শ্রবণ কর॥ ১

জ্ঞানং তেহহং সবিজ্ঞানমিদং বক্ষ্যাম্যশেষতঃ। যজ্জ্ঞাত্বা নেহ ভূয়োহন্মজ্জ্ঞাতব্যমবশিষ্যতে॥ ২

আনুষ্য়। অহং তে সবিজ্ঞানম্ ইদং জ্ঞানম্ অশেষতো বক্ষ্যামি, বগ্জাছা ইহ ভূয়ঃ অভং জ্ঞাতব্যং ন অবশিষ্যতে ॥ ২

অনুবাদ। আমি ভোমাকে এই স্বাকুভবযুক্ত জ্ঞান সম্পূর্ণরূপে উপদেশ দিতেছি, বে জ্ঞান লাভ করিতে পারিলে, এ জগতে কোন বস্তু আর জ্ঞাতব্য বলিয়া অবশিষ্ট থাকিবে না (অর্থাৎ সর্বজ্ঞ হইতে পারিবে)॥ ২

ভাষ্য। তচ্চ মদ্বিবরং—জ্ঞানং তে তুভামহং সবিজ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং স্বান্থভবসংযুক্তমিদং বক্ষ্যামি কথরিব্যামি অশেষতঃ কাংলৈন। তজ্ জ্ঞানং বিবিক্ষিতং ভৌতি শ্রোত্রভিমুখীকরণার। বং জ্ঞাতা বজ্জানং জ্ঞাতা নেহ ভূমঃ পুনজ্ঞাতিব্যং পুরুষার্থসাধনম্ অবশিষ্যতে নাবশেষো ভবতীতি মত্তব্জ্ঞোষঃ স্ক্রিজ্ঞা ভবতীত্যর্থঃ। অতো বিশিষ্টফলত্বাৎ হুর্লভং জ্ঞানম্॥ ২

আনন্দগিরিটীকা। জাস্তদীত্যজ্ঞা পরোকজ্ঞানশন্ধারাং ভরিবৃত্তার্থং ভত্তজিপ্রকারমের বির্ণোভি—তচ্চতি। ইদমপরোক্ষং জ্ঞানং চৈতগুম্। তক্ত দবিজ্ঞানস্থ প্রতিলম্ভে কিং স্থাদিত্যাশন্ধ্যাহ—যুজ্জ্ঞাত্ত্তি। ইদমা চৈতগ্রস্থ পরোক্ষণং ব্যাবর্ত্ত্যতে। তদের দবিজ্ঞানমিতি বিশেষণেন ক্ষুটরতি। অশেষতঃ অনবশেষেণ। তদেদনফলোপস্থাসেন শ্রোভারং তচ্ছুবণপ্রবশং করোভি—তজ্জ্ঞানমিতি। একবিজ্ঞানেন দর্কবিজ্ঞানশ্রুতিমাশ্রিত্যান্তরার্ধ্ধ তাৎপর্যামাহ—যুজ্জ্ঞাত্তি। ভগবতত্ত্ত্জানস্থ বিশিষ্টফল্ডমৃত্বা ফলিতমাহ আত ইতি।

অকুবাদ। সেই মদ্বিষয়ক জ্ঞান আমি তোমাকে বিজ্ঞান অর্থাৎ অফুভবের সহিত এই অশেষভাবে বলিতেছি। একণে সেই বিবক্ষিত জ্ঞানের ভতি করিতেছেন, উদ্দেশ্য শ্রোতার শুনিবার জন্ম আগ্রহ বর্দ্ধন করা; বে জ্ঞানকে প্রাপ্ত হইলে, এই সংসারে পুনর্কার কোন জ্ঞাতব্য পুরুষার্থ সাধন অবশিষ্ট থাকে না অর্থাৎ অবশেষ থাকিয়া বার না; আমার তথকে বে জানে, সে সর্বজ্ঞ হয়; ইহাই অর্থ। এই প্রকার বিলক্ষণ ফল লাভের প্রতি হেতু বলিয়া এই জ্ঞান ছলভি॥ ২

> মন্ত্ব্যাণাং সহস্রেষু কশ্চিদ্ যততি সিদ্ধয়ে। যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিমাং বেত্তি তত্ত্তঃ॥ ৩

অমৃয়। মহব্যাণাং সহম্রেষ্ কশ্চিৎ সিদ্ধারে যততি (যততে), যততাং (যতমানানাং) সিদ্ধানাং [মধ্যে] কশ্চিৎ [এব] মাং তত্তঃ বেস্তি॥ ৩

অনুবাদ। সহস্র সহস্র মহ্বাগণের মধ্যে কোন একজন সিদ্ধি লাভের জন্ম বত্ব করে, আবার যেই যত্নপর যোগিগণের মধ্যে কোন একজন আমাকে যথার্থরূপে জানিতে সমর্থ হয়॥ ৩

ভাষ্য। কথমিত্যচ্যতে মহুব্যাণ্যাং মধ্যে সহস্রেষ্ কশ্চিদ্ যততি প্রযক্ত্বং করোতি সিদ্ধয়ে সিদ্ধার্থন্। তেষাং যততামপি সিদ্ধানাং সিদ্ধা এব হি তে যে মোকায় যতত্তে তেষাং, কশ্চিদেব মাং বেক্তি তত্ততো যথাবং॥ ৩

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞানশু হর্ণ ভত্বং প্রশ্নপূর্ব্বকং প্রকটয়তি—কথ্-মিত্যাদিনা। সংস্রশব্দশু বছবাচকত্বমুপেত্য ব্যাকরোতি—অনেকেম্বিতি। সিদ্ধরে সম্বন্ধদিরারা জ্ঞানোৎপত্ত্যর্থমিত্যর্থঃ। সিদ্ধার্থং যতমানানাং কথং সিদ্ধত্ব-মিত্যাশঙ্ক্যাহ—সিদ্ধা এবৈতি। সর্বেষাগেব তেষাং জ্ঞানোদয়াৎ তস্য স্থলভত্ব-মিত্যাশঙ্ক্যাহ—তেষামিতি॥ ৩

অনুবাদ। কেন এইরূপ, তাহা বলা হইতেছে, অনেক সহস্র মন্ব্যুগণের মধ্যে কোন একজন সিদ্ধিলাভের জন্ত প্রযন্ত্র করিয়া থাকে, সেই সকল প্রবন্ধপর সিদ্ধাণের মধ্যে (বাহারা মোক্ষ লাভের জন্ত যন্ত্র করে, তাহারাই সিদ্ধ; সেই সিদ্ধাণের মধ্যে) কোনও একজন আমাকে যথার্থরূপে জানিতে পারে॥ ৩

> ভূমিরাপোহনলো বায়ুং খং মনো বৃদ্ধিরেব চ। অহস্কার ইতীয়ং মে ভিন্না প্রকৃতিরউধা॥ ৪

আনুষু । ভূমি: আপ: অনল: বায়ু: থং মন: বৃদ্ধি: আহদার: এব চ ইতি আইধা ভিয়ামে প্রস্তৃতি:।

অনুবাদ। পৃথিবী জল অনল বায়ু আকাশ,মনঃ বৃদ্ধি ও অহঙার—এই অষ্ট ভাগে আমার প্রকৃতি বিভক্ত হইয়া থাকে॥ ৪

ভাষ্য। শ্রোতারং প্ররোচনেনাভিমুধীক্বত্যাহ। ভূমিরিতি পৃথিবী-ভন্মাত্রমূচ্যতে, ন স্থুলা, ভিন্না প্রকৃতিরষ্টধা ইন্ডি বচনাং। ভথাবাদরোহণি তন্মাত্রাণ্যেব উচ্যস্তে। আপোহনলঃ বায়ুং খং মন ইতি মনসঃ কারণমহকারঃ
গৃহতে। বৃদ্ধিরিত্যহঙ্কারকারণং মহস্তব্দ, অহঙ্কার ইতি অবিস্থাসংযুক্তমবাক্তম্ব।
বধা বিষসংযুক্তমরং বিষমুচ্যতে এবমহকারবাসনাবদব্যক্তং মূলকারণমহকার
ইত্যাচ্যতে, প্রবর্ত্তক্তাদহকারশু। অহকার এবহি সর্বস্থি প্রবৃত্তিবীজং দৃষ্টং লোকে।
ইতীরং যথোক্তা প্রকৃতিমে মম ঐখরী মায়াশক্তিরষ্টধা ভিন্না ভেদমাগতা॥ ৪

আনন্দ গিরিটীকা। জ্ঞানার্থং প্রযন্ত্রগু তদারা জ্ঞানলাভশু তহুভর্মারেণ মুক্তেশ্চ হল ভশাভিধানন্ত শ্রোতৃপ্ররোচনং ফলমিতি মন্বাহ—প্রোতারমিতি। দর্কাত্মকত্বেন পরিপূর্ণত্বমবতারয়ন্নাদাবপরাং প্রকৃতিমূপগুশুতি— আহেতি। ভূমিশব্দ ব্যবহারযোগাস্থলপৃথিবীবিষয়ত্বং ব্যাবর্ত্তয়তি—ভূমিরি-তীতি। তত্ত্ব হৈতৃমাহ—ভিন্নেতি। প্রকৃতিসমভিব্যাহারাৎ গন্ধতন্মাত্রৎ স্থূপ-পৃথিবীপ্রকৃতিকৃত্তরবিকারো ভূমিরিত্যুচ্যতে ন বিশেষইত্যর্থঃ। ভূমিশব্দবাদি-শব্দানামপি স্ক্রভূতবিষয়ত্বমাহ—তথেতি। তেষামপি প্রকৃতিসমানাধিকৃতত্বা-বিশেষাৎ তন্মাত্রাণাং পূর্ব্বপূর্বপ্রকৃতীনামৃত্তরোত্তরবিকারাণাং ন বিশেষস্বসিদ্ধি-রিতার্থ:। মন:শব্দস্ত সংকরবিকরাত্মককরণবিষয়ত্বসাশঙ্ক্যাহ—মন ইতীতি। ন থবহুকারাভাবে সম্বল্পবিকল্পয়োরসম্ভবাৎ তদাত্মকং মনঃ সম্ভবতীত্যর্থঃ। নিশ্চয়লক্ষণা বুদ্ধিরিত্যভাপগনাদ্বৃদ্ধিশন্ত নিশ্চয়াত্মককরণবিষয়ত্বমাশয়্যাহ—বৃদ্ধিরিতীতি। নহি হিরণাগর্ভসমষ্টিবুদ্ধির পমস্তরেণ বাষ্টিবুদ্ধিঃ সিধ্যতীত্যর্থঃ। অহঙ্কারস্তাভিমান-বিশেষাত্মকরেণপ্রভেদত্বং ব্যাবর্ত্তরতি—অহঙ্কার ইতি। সংযুক্তমিত্যবিষ্ঠাত্মকমিত্যর্থ:। কগং মূলকারণস্ঠাহকারশব্দত্বমিত্যাশক্ষ্যোক্তমর্থং দৃষ্টান্তেন স্পষ্টমতি—যুখেত্যাদিনা। মূলকারণস্থাহন্ধারশব্বতে হেতুমাহ— প্রবর্ত্তকত্বাদিতি। তক্ত প্রবর্ত্তকত্বং প্রপঞ্চয়তি—অহস্কার এবেতি। সত্যে-বাহন্বারে মম-কারোভবতি তয়োশ্চ ভাবে দর্কা প্রবৃত্তিরিতি প্রসিদ্ধমিত্য**র্থ:।** উক্তাং প্রকৃতিমূপদংহরতি—ইতীয়ুমিতি। ইয়মিত্যপরোক্ষা দাক্ষিদৃশ্রেতি ঐশরী তদাশ্রয়া তদৈশর্যোপাধিভূতা। প্রক্রিয়তে মহদাম্বাকারেণেতি প্রকৃতিব্রিপ্তণং জগহপাদানং প্রধানমিতি মতং ব্যুদশুতি—মায়েতি। তশান্তত্তং-কার্য্যাকারেণ পরিণামযোগ্যস্বং স্থোতয়তি—শক্তিরিতি। অষ্ট্রেটে। অষ্ট্রভিঃ প্রকারৈরিতি যাবং ॥ ৪

অমুবাদ। প্ররোচকবাক্যের দ্বারা শ্রোতাকে শুনিবার জন্ম আগ্রহানিত করিরা বণিতেছেন যে ভূমি: ইত্যাদি। এই যে ভূমি শক্টি প্রযুক্ত হইরাছে, ইহার অর্থ পৃথিবীতন্মাত্র (অর্থাৎ স্থুল পৃথিবীর উপাদান গন্ধময় ডন্মাত্র) স্থুল পৃথিবী ইহার অর্থ নহে। কারণ "আমার প্রকৃতি এই অন্ঠভাগে বিভক্ত" এই প্রকার বচন রহিরাছে [অর্থাৎ প্রকৃতি শব্দের অর্থ কারণ "উপাদান" ছ্লভ্ত পৃথিবী প্রভৃতি কোন তব্বের কারণ বা উপাদান নহে; ইহারা তন্মাত্তরূপ তব্বের কার্য্য; স্থতরাং ইহারা কথনই প্রকৃতি শব্দের ঘারা অভিহিত হইতে পারে না; এইজ্যু, এইস্থানে ভূমিশব্দের অর্থ পৃথিবীতন্মাত্রই বলিতে হইতেছে]। এই প্রকার জল প্রভৃতি শব্দের ঘারাও সেই সেই তন্মাত্রেরই উক্তি হইরাছে [ইহা জানিবে]; এইরূপ, জল, অনল, বায়ু এবং আকাশ। মনঃ শব্দের অর্থ এইস্থলে মনের কারণ অহঙ্কারকে গ্রহণ করিতে হইবে। বৃদ্ধি শব্দের ঘারা অহঙ্কারের কারণ মহন্তর্ককে গ্রহণ করিতে হইবে। বৃদ্ধি শব্দের ঘারা অহঙ্কারের কারণ মহন্তর্ককে গ্রহণ করিতে হইবে। অহঙ্কার এই শঙ্কাটির অর্থ অবিস্থাসংযুক্ত অব্যক্ত। যেমন বিষসংযুক্ত অব্যক্ত বিষ বলা যার, সেইরূপ অহঙ্কারবাসনাযুক্ত অব্যক্ত মূলকারণও অহঙ্কার শব্দের ঘারা অভিহিত হয়; কারণ অহঙ্কারবী প্রতির প্রতি হেতু। লোকেও দেখিতে পাওয়া যার যে সকলেরই প্রবৃত্তির বীজ অহঙ্কারই হইরা থাকে। এই যে প্রকার বলা হইল, (অর্থাৎ) ভূমি প্রভৃতি অইভাগে বিভক্ত আমার প্রকৃতি ইহাই আমার গ্রেখরী শক্তি, ইহাকেই মারা বলিয়া জানিবে॥৪

অপরেয়মিতস্ত্বন্যাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্। জীবভূতাং মহাবাহো যয়েদং ধার্য্যতে জগৎ॥ ৫

আনুয়। হে মহাবাহো ইয়ং (প্রকৃতিঃ) অপরা, ইতঃ তু অন্তাং জীবভূতাং মে অপরাং প্রকৃতিং বিদ্ধি; যয়া (প্রকৃতা) ইদং জগৎ ধার্যতে ॥ €

অনুবাদ। হে মহাবাহো, এই পূর্ব্বোক্ত প্রকৃতি অপরা; ইহা হইতে ভিন্ন আমার যে প্রকৃতি আছে, তাহাকে জীব বলা যায়; তাহাই আমার পরা প্রকৃতি এবং তাহার হারাই এই জগৎ বিশ্বত হইতেছে॥ ৫

ভাষ্য। অপরেতি। অপরা ন পরা নিক্নন্তী অশুদ্ধা অনর্থকরী সংসার-বন্ধনাত্মিকের্মিতোহস্তা যথোক্তারা ত্মসাং বিশুদ্ধাং প্রকৃতিং মমাত্মভূতাং বিদ্ধি মে পরাং প্রকৃত্তীং জীবভূতাং ক্ষেত্রজ্ঞলক্ষণাং প্রাণধারণনিমিত্তভূতাং মহাবাহো বর্মা প্রকৃত্যা ইদং জ্বাৎ ধার্য্যতে জগদস্তঃপ্রবিষ্টরা॥ ৫ ক

আনন্দ গিরিটীকা। অচেতনবর্গমেকীকর্ত্বং প্রক্তরেষ্টধা পরিণামম্-শুভিধার বিকারাবচ্চিরং কার্য্যকরং চেতনবর্গমেকীকর্ত্বং প্রক্ষস্ত চৈতন্ত্রস্ত বিশ্বাশক্ত্যবিদ্ধিস্তাপি প্রকৃতিবং ক্থিরিত্যুক্তাং প্রকৃতিমন্ত দর্শরিতি— অপরেতি। নিক্টবং স্পটরতি—অনর্থকরীতি। অনর্থকরন্থমের ক্ষোররতি
—সংসারেতি। কথঞ্চিদপ্যনন্তত্ববারত্ত্যর্থস্থশব্দ: অন্তামত্যন্তবিদক্ষণামিতি
বাবং। অভ্যথমের স্পটরতি—বিশুদ্ধামিতি। প্রকৃতিশব্দান্তপ্রপ্রকৃত্যার্থাস্তরমাহ—মুমেতি। প্রকৃতিন্দর ভোকৃত্বেন স্পটরতি—জীবভূতামিতি।
প্রকৃত্যন্তরবান্তরবিশেষমাহ—হায়েতি। নহি জীবরহিতং
ক্রপন্ধার্মিতুং শক্যমিত্যাশরেনাহ—অন্তরিতি॥ ৫

অনুবাদ। অপরা (অর্থাৎ) পরা নহে, নিকুটা অশুদ্ধা অনর্থকরী, (কারণ) ইহাই সংসারবন্ধনাত্মিকা অর্থাৎ জীবগণকে সংসারে বদ্ধ করাই ইহার বভাব; এই যথোক্ত অপরা প্রকৃতি হইতে "মন্তা" বিশুদ্ধ আমার আত্মতুত প্রকৃতিকে উৎকৃষ্ট বলিয়া জানিবে; ঐ প্রকৃতি জীবভূত (অর্থাৎ), কেত্রজ্ঞাক্ত ইহাই প্রাণিগণের প্রাণ ধারণের নিমিন্তীভূত; হে মহাবাহো অস্তঃ-প্রবিষ্ট হইরা যে জীবভূত পরা প্রকৃতি হারা এই জগৎ বিশ্বত হর [তাহাই আমার আত্মত্ররপ উৎকৃষ্ট প্রকৃতি]॥ ৫

এতদ্যোনীনি ভূতানি সর্বাণীত্যুপধারয়। অহং কুৎস্লস্থ জগতঃ প্রভবঃ প্রলয়স্তথা॥ ৬

অব্যা নর্বাণি ভূতানি এতদ্যোনীনি ইভ্যুপধারয়। ক্রংসভ জগতঃ অহং [এব] প্রভবঃ তথা প্রলয়: [অমি] ॥ ৬

অফুবাদ এই দিবিধ প্রক্লতি হইতেই সকল ভূতের উৎপত্তি হইয়াছে, ইহা ভূমি অবধারণ কর, [স্থতরাং] আমিই এই সমস্ত বিশ্বের উৎপত্তি ও প্রালয়ের প্রতি একমাত্র হেভু॥ ৬

ভাষ্য । এতদিতি। এতদ্যোনীনি এতে পরাপরে ক্ষেত্রজ্ঞলকণে প্রকৃতী যোনিঃ যেষাং ভূতানাং তানি এতজ্ঞানীনি ভূতানি সর্বাণীভূয়পধারম জানীহি! যন্মান্ম প্রকৃতী যোনিঃ কারণং সর্বভূতানাম, অতোহহং কংসভ্ত সমস্তত্ত জগতঃ প্রভব উৎপত্তিঃ প্রদায়ো বিনাশস্তণা প্রকৃতিষম্বারেণাহং সর্বজ্ঞ ঈশরো জগতঃ কারণমিত্যর্থঃ ॥ ৬

আনন্দগিরিটীকা। উক্তপ্রকৃতিবন্ধে কার্যালক্ষম্মানং প্রমাণরতি— এতদ্যোনীনীতি। প্রকৃতিবন্ধ জগৎকারণত্বে কথমীশ্বরত্ব তত্বপগতমিত্যা-শহ্যাহ—অহ্মিতি। এতদ্যোনীনীতুক্তে সমনস্তরপ্রকৃতজীবভূতপ্রকৃতাবেজজ্ব-ক্ষাব্যবধানাং প্রবৃত্তিমাশহ্য ব্যাক্রোতি—এতে ইতি। স্কাণি চেতনাচেতনানি ন্ধনিষ্টীত্যর্থ:। সর্বভূতকারণম্বেন প্রকৃতিদ্বয়নদীক্বতঞ্চেৎ কথমহমিত্যাদ্যক্তনিত্যাশ্বদাহ—যুদ্মাদিতি । মন প্রকৃতী পরমেশ্বরজ্ঞাপাধিতরা স্থিতে ইত্যর্থ:। তর্হি প্রকৃতিদ্বয়ং কারণমীশ্বরশ্চেতি জগতোহনেকবিধকারণাদীকরণং স্থাদিত্যাশ্বদাহ—প্রকৃতীতি। অপরপ্রকৃতেরচেতনম্বাৎ পরপ্রকৃতেশ্চেতনম্বেহণি কিঞ্চিজ্জ্ঞাৎ দ্বার্থকৈ সর্ব্বজ্ঞ সর্ব্বকারণম্বং যুক্তমিত্যাহ—স্ব্রব্ ইতি।

আমুবাদ। এতদিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। এই পর ও অপর রুইটি প্রকৃতি বে সকল ভূতের যোনি (অর্থাৎ) কারণ, তাহাদিগকে 'এতদ্যোনি' বলা বার; সকল ভূতই এতদ্যোনি ইহা তুমি জান। যে কারণে আমারই এই প্রকৃতিদ্ব এই সকল ভূতের উৎপত্তি-হেতু, এইজভ আমিই কৃৎস (অর্থাৎ) সমস্ত বিশের উৎপত্তি ও বিনাশ (এই হুইটির কারণ), এই হুইটি প্রকৃতিকে দারস্বরূপ করিয়া সর্বজ্ঞ ও ঈর্ধরস্বরূপ আমি জগতের উৎপত্তির কারণ [হুইয়া থাকি] ইহাই অর্থা ৬

মক্তঃ পরতরং কিঞ্চিমান্সদস্তি ধনঞ্জয়। *
ময়ি দর্ববিদিং প্রোতং দূত্রে মণিগণা ইব॥ ৭

আনুয়। হেধনঞ্জয় অভাৎ কিঞ্চিং [অপি] মক্তঃ পরতরং নান্তি, স্ত্রে মণিগণাইব মন্ত্রি ইদং সর্বং প্রোতম্॥ ৭

আমুবাদ। হে ধনঞ্জয়, আমা হইতে প্রতর অন্ত কোন বস্তুই [এই বিশ্বের কারণাস্তর রূপে] থাকিতে পারে না: হুত্রে মণিগণের ন্তার আমাতেই এই সকল গ্রাথিত হইরা রহিয়াছে॥ ৭

ভাষ্য। যতন্তক্ষাৎ মত্তঃ পরমেশ্বরাৎ পরতরম্ অন্তৎ কারণান্তরৎ কিঞ্চিয়ান্তি ন বিভাতে অহমেব জগৎকারণমিতার্থঃ। হে ধনঞ্জয়, যক্ষাদেবং তক্ষান্ময়ি পরমেশ্বরে সর্বাণি ভূতানি সর্বমিদং জগৎ প্রোতমন্ত্রভূতমন্থগতমন্থ-বিদ্ধং গ্রণিতমিতার্থঃ। দীর্ঘতন্তমু পটবৎ স্ত্রে চ মণিগণা ইব ॥

আনন্দগিরিটীকা। প্রধানং পরতোহক্ষরাৎ পুরুষবৎ পরমান্ধনোহিশি পরাদন্তৎ ; পরঃ স্তাদিত্যাশক্ষ্য প্রকৃতিদয়দারা সর্বকারণস্থমীখরস্তোক্তমুপজীব্য পরিহরতি—হাভস্তস্মাদিতি। নাল্লন্ডি পরমিত্যতা হেত্মাহ—ময়্মীতি। পর-তরশকার্থমাহ—অন্যদিতি। স্বাতন্ত্রাব্যাবৃত্ত্যর্থমস্তরশক্ষ্য, নিষেধফলং ক্থমতি—
অহমেবেতি। সর্বজ্ঞাৎকারণছেন সিদ্ধমর্থৎ দিতীয়ার্ধ্ব্যাধ্যানেন বিশদমতি—

মন্ত: প্ৰতরং নাক্তৎ কিঞ্চিদন্তি ধনপ্লয়—ইতি বা পাঠ:।

যশ্মীদিতি। অতো দীর্ষের ভির্যান্দ্র চ পটঘটিতের ভদ্ধর পটফাবগতিরবগম্যতে তর্বন্ধয়েবাম্বগতং জগদিত্যাহ—দীর্মেতি। বথা চ মণরঃ স্বত্তেহসুস্থাতান্তেনৈব ধিরন্তে তদভাবে বিপ্রকীর্যান্তে, তথা মরৈবাত্মভূতেন সর্বাৎ ব্যাপ্তং ততো নির্কৃষ্টং বিনষ্টমেব ফাদিতি শ্লোকোক্রং দৃষ্টান্তমাহ—সূত্র ইতি ॥ ৭

অনুবাদ। যে কারণ এই প্রকার, সেই জন্তই, আমিই পরমেশর; স্থতরাং আমা হইতে পরতর অন্ত কোন কারণাস্তর নাই। আমি জগতের কারণ ইহাই অর্থ। হে ধনঞ্জর, যে কারণে এইরূপ এই জন্তই পরমেশর স্বরূপ আমাতে সর্বভূত (অর্থাৎ) এই পরিদৃশ্রমান সকল বিশ্ব "প্রোত" অনুগত অনুস্তুত অনুবিদ্ধ অর্থাৎ গ্রথিত রহিয়াছে, যেমন দীর্ঘতস্তুসমূহে পট কিংবা স্ত্রে মণিগণ গ্রাথিত থাকে॥ ৭

> রসোহহমপ্রু কোন্তেয় প্রভাক্সি শশিস্র্যয়োঃ। প্রণবঃ সর্ববেদেয়ু শব্দঃ থে পৌরুষং নৃষু॥ ৮

অমৃত্য । হে কৌন্তের, অহং অপ্সূরসোহন্দি, শশিস্ব্যরোঃ প্রভা অন্ধি, সর্কান্দের্ প্রথবঃ [অন্ধি], গে শব্দঃ [অন্ধি], নৃর্ পৌরুষম্ [অন্ধি] ॥ ৮

অকুবাদ। হে কৌন্তের আমি জলে রস স্বরূপে বিশ্বমান আছি, এই প্রকার চক্র ও স্থা্যে প্রভারূপে বিশ্বমান আছি, আমি দকল বেদের মধ্যে প্রণবরূপে বিশ্বমান আছি, আমি আকাশে শব্দ ও মহুব্য-নিবহে পৌকুষ রূপে বিশ্বমান আছি॥৮

ভাষ্য। কেন কেন ধর্মেণ বিশিষ্টে ছবি সর্ক্ষিদং প্রোতমিত্যুচাতে। রসোহযুপাং বং সারঃ স রসঃ, তত্মিন্ রসভূতে মরি আপঃ প্রোতাঃ ইত্যর্থঃ। এবং সর্করে। বথাহমপ্যু রসঃ এবং প্রভাষ্মি শশিক্ষ্যুরোঃ। প্রণৰ ওছারঃ সর্ক্রেদেষ্, তত্মিন্ প্রণৰভূতে মরি সর্ক্রে বেদাঃ প্রোতাঃ। তথা থে আকাশে শবঃ সারভূতন্তমিন্মরি বং প্রোতম্। তথা পৌরুষং প্রন্মন্ত ভাবঃ যতঃ পুংবৃদ্ধিন্র্ তিমিন্ মরি প্রন্মাঃ প্রোতাঃ॥ ৮

আনন্দগিরিটীকা। অবাদীনাং রসাদিষ্ প্রোত্তরপ্রতীতেন্ধব্যের সর্বং প্রোতমিত্যযুক্তমিতি মন্ধা পৃচ্ছতি—কোনতি। তরোন্তরমূত্তরগ্রন্থেন দর্শরতি— উচ্যতাইতি। সারো মধুরো হেত্রিতি বাবং। রসোহহমিতি কথং তত্তাহ— তিন্মির্মিতি। অপুস্ক বো রসঃ সারতদিম্মিরি মধুররসে কারণভূতে প্রোভা শাপ ইতিবন্ধুত্তরত্ত সর্বত্ত ব্যাখ্যানং কর্তব্যমিত্যাহ—এব্যমিতি। উক্তমর্থং দৃষ্টান্তং ক্বৰা প্ৰভাগীতাদি ব্যাচষ্টে—যুপ্তি। চন্দ্ৰাদিতারোর্যা প্রভা তছুতে মরি ছেন্তু প্রোতাবিত্যর্থ:। তত্ত্ব বাক্যার্থং কথরতি—ত্তিম্মির্মিতি। প্রণবভূতে তরিন্ বেদানাং প্রোত্ববদাকাশে যঃ নারভূতঃ শব্দক্তমণে প্রমেশ্বরে প্রোত্মাকাশমি-ত্যাহ—ত্তথেতি। পৌরুষং নৃষিতিভাগৃং পূর্ববিভজ্পতে—ত্তথেত্যাদিনা। প্রক্ষম্বমেব বিশদরতি—যুক্ত ইতি। প্র্যুদ্যামান্তাল্পকে প্রমিন্নীশ্বরে প্রোতাত্ত-বিশেষাগুত্পাদানত্বন তৎস্বভাবন্ধাদিত্যর্থ:॥৮

অনুবাদ। কোন্ কোন্ ধর্মের দারা বিশেষিত তোমাতে এই সকল বিশ্ব প্রোত রহিরাছে [এই প্রকার অর্জুনের জিজ্ঞাসা সম্ভাবনা করিরা] তাহার উত্তর দিতেছেন। জলের যাহা সার তাহারই নাম রস; সেই রসম্বর্জণ আমাতে সকল জল প্রোত রহিয়াছে ইহাই অর্থ। এইরূপ ব্যাখ্যা অর্থে সর্ব্জিই [করিতে হইবে], বেমন আমি জলসমূহে রস, সেইরূপই চক্র ও সুর্ব্যে প্রভাম্বরূপে আমি বিশ্বমান আছি। প্রণব [শব্দের অর্থ] ওরার, [তাহা] সকল বেদেতেই [আছে], সেই প্রণবরূপী আমাতে সকল বেদ প্রোত রহিয়াছে। সেই প্রকার শব্দই আকাশের সারভূত, সেই শব্দরূপী আমাতে আকাশ প্রোত রহিয়াছে। সেইরূপে পৌরুষ [শব্দের অর্থ] প্রক্রবের স্বভাব, যাহা দারা লোকে এই ব্যক্তি প্রক্র এই প্রকার বৃদ্ধি উৎপাদিত হয়, সেই প্রকার সভাব অর্থাৎ পৌরুষরূপে অবৃদ্ধিত আমাতে পুরুষগণ প্রোত রহিয়াছে॥ ৮

পুণ্যো গন্ধঃ পৃথিব্যাঞ্চ তেজশ্চান্মি বিভাবদো। জীবনং সর্ববস্থূতেযু তপশ্চান্মি তপস্বিযু॥ ৯

অন্বয়। [অহং] পৃথিব্যাং পুণ্য: গদ্ধ: অন্ধি বিভাবসৌ চ তেজ: [অন্ধি] সর্বভূতের্ জীবনং [অন্ধি] তপন্থির্ চ তপ: [অন্ধি] ॥ ১

আকুবাদ। পৃথিবীতে আমি পুণ্য গন্ধরূপে বিশ্বমান আছি, অয়িতে আমি তেজোরূপে রহিয়াছি, সকল প্রাণীতে আমি জীবনরূপে বর্ত্তমান আছি, তপবিগণের মধ্যে আমি তপঃস্বরূপে বিশ্বমান আছি॥ ১

ভাষ্য। পুণ্য ইতি পুণ্য: স্থ্যভির্গন্ধ: পৃথিব্যাং চাহং তদ্মিনায়ি গদ্ধরণে পৃথিবী প্রোভা। পুণাদং গদ্ধশু পৃথিব্যাং স্বভাবতএব দর্শিতমবাদির রসাদেঃ পুণাদেশপাকশার্থম্। অপুণাদ্ধ গদ্ধাদীনাম্ অবিভাধন্দ্রান্তপেকং সংসারিণাং মুডবিশেষসংস্কৃনিমিন্তং ভবজি। তেলোদীবিশ্চান্দ্রি বিভাবসো করোঁ। ভণা

জীবনং সর্বভৃতের বেন জীবন্তি সর্বাণি ভৃতানি তজ্জীবনম্। তপশ্চান্মি তপন্থির তন্মিন তপসি ময়ি তপন্থিনঃ প্রোতাঃ ॥ ১

আনন্দ্গিরিটীকা। মরি সর্কমিদং প্রোতমিত্যকৈব পরিমাণার্থং প্রকার্নার্থনাহ—পূণ্যইতি। পৃথিব্যাং পূণ্যশিদিতো যং স্থরভির্দ্ধঃ দোহহমন্ত্রীত্যক্ত বাক্যার্থং কথরতি—তিন্মিন্ধিতি। কথং পৃথিব্যাং গন্ধক্ত পৃণ্যম্বং তত্ত্রাহ—পূণ্যমৃতি। যত্ত্ব পৃথিব্যাং গন্ধক্ত স্বাভাবিকং পুণ্যম্বং দর্শিতং তদবাদির্ব্বসাদেরপি স্বাভাবিকপৃণ্যমৃত্যভাপলক্ষণার্থমিত্যাহ—পৃথিব্যামিতি। প্রথমোৎপন্ধাঃ পঞ্চাপি গুণাঃ পূণ্যাএব সিদ্ধাদিভিরেব ভোগ্যমাদিভিভাবঃ। কথং তর্হি গন্ধাদীনামপুণ্যপ্রপ্রতিভানং তত্ত্রাহ—পুণ্যম্বংদ্বিতি। তদেব স্ফুটরতি—সংসারিণানমপুণ্যপ্রপ্রতিভানং তত্ত্রাহ—পুণ্যম্বংদ্বিতি। তদেব স্ফুটরতি—সংসারিণানমিতি। গন্ধাদরঃ স্বকার্য্যভূ তৈঃ সহ পরিণমমানাঃ প্রাণিনাং পাপাদিবশাদপুণ্যাঃ সম্পদ্ধ ইত্যর্থঃ। যচ্চাগ্রেঃ তেজঃ তত্ত্তে মরি প্রোভোহন্নিরিত্যাহ—তেজইতি। জীবনভূতে চ মরি সর্কাণি ভূতানি প্রোভানীত্যাহ—তথেতি। জীবনশন্ধার্থমাহ—
যেনেতি। অন্নরসেনামৃতাধ্যেনেত্যর্থঃ। তপশ্বানীত্যাদেন্তাৎপর্যমাহ—তিন্মিন্তি। চিত্তৈকাগ্র্যমনাশকাদি বা তপন্তদাত্মনীত্যাদেন্তাৎপর্যমাহ—তিন্মিন্তি। চিত্তকাগ্র্যমনাশকাদি বা তপন্তদাত্মনীব্রে প্রোভান্তপন্থিনো-বিশেষণাভাবে বিশিষ্টপ্ত বন্তনো ভাবাদিত্যর্থঃ॥ >

অমুবাদ। পুণ্য ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। পৃথিবীতে আমি 'পুণ্য' স্থরতি পদ্ধ [রূপে বিশ্বমান] আছি, অর্থাৎ গদ্ধস্বরূপ আমাতে এই পৃথিবী অধিষ্ঠিত রহিয়াছে; পৃথিবীতে যে গদ্ধ আছে, তাহার পবিত্রতাই স্বাভাবিক। জলাদিতেও রস প্রভৃতিগুণেরও এই প্রকার স্বাভাবিক পুণ্যতা (পবিত্রতা) আছে, ইহাও স্টিত হইতেছে। পার্থিব গদ্ধ বা জলাদির গুণ রসাদিতে যে অপুণ্যন্ত, ভাহা অবিশ্বা ও অধর্মের দ্বারা প্রবর্তিত অপবিত্র ভৃতবিশেষের সংসর্গ নিবদ্ধনই ইইয়া থাকে। "বিভাবস্থ" অর্থাৎ অগ্নিতে আমি 'দীপ্তি' তেজঃস্বরূপে বিশ্বমান আছি, এবং সর্ব্বপ্রাণিনিচয়ে আমি জীবনস্বরূপে বিশ্বমান, মাহার দ্বারা প্রাণিগণ জীবন ধারণ করিয়া থাকে, তাহাকেই জীবন বলা বার। আমিই তপস্থিগণের তপস্থা অর্থাৎ তপস্থারূপ আমাতেই তপস্থিগণ প্রোত রহিয়াছে ইহাই তাৎপর্য্য ॥১

বীজং মাং সর্ববস্থতানাং বিদ্ধি পার্থ সনাতনম্। বৃদ্ধিবুদ্ধিমতামন্মি তেজন্তেজস্বিনামহম্॥ ১০

আন্ত্ৰয়। হে পাৰ্থ সনাতনং মাং সৰ্বভূতানাং বীজং বিদ্ধি, [আহং]
বুদ্ধিমতাং বৃদ্ধি: অমি। [তথা] তেজম্বিনাং তেজঃ [চ] অমি॥ ১০

অনুবাদ। হে পার্থ আমাকে সর্বভৃতের আদিকারণ বলিয়া জানিও; আমি সনাতন; আমি বৃদ্ধিমান্গণের বৃদ্ধি এবং আমি ভেজস্বিগণের ভেজঃ॥ >•

ভাষ্য। বীজ্ঞমিতি। বীজং প্ররোহকারণং মাং বিদ্ধি সর্বভৃতানাং হে পার্থ, সনাতনং চিরস্তনম্। কিঞ্চ বৃদ্ধিবিবেকশক্তিঃ অস্তঃকরণশু বৃদ্ধিমতাং বিবেকশক্তিমতাং অগ্নি ভেজঃ প্রাগল্ভ্যং তরতাং তেজস্বি-নামহম্॥ >•

আনন্দণিরিটীক।। নম সর্বাণি ভূতানি স্বকারণে প্রোতানি কথং তেষাং
দরি প্রোতত্বং তত্তাহ—বীজমিতি। বীজান্তরাম্বপেক্ষরানবস্থাং বারম্বতি—
সনাতনমিতি। চৈত্যুক্তাভিব্যঞ্জকং ত্বনিক্ষর্যামর্থাং বৃদ্ধিন্তবতাং যা বৃদ্ধিন্তদুতে ময়ি সর্ব্বে বৃদ্ধিমন্তঃ প্রোতা ভবন্তীত্যাহ—কিঞ্চেতি। প্রাগল্ভ্যবতাং
যং প্রাগল্ভ্যং তভুতে ময়ি তদ্বন্তঃ প্রোতা ইত্যাহ—তেজ্ইতি। তদ্ধি প্রাগল্ভ্যং যং পরাভিভ্বসামর্থ্যং পরৈক্যপ্রযুদ্ধ॥ >•

অনুবাদ। বীজং ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। হে পার্থ, আমি "সনাতন"
চিরস্তন, সকল ভূতের "বীজ" প্ররোহকারণ অর্থাৎ অস্কুরের হেতু বলিরাও
আমাকেই জানিও। আমি বুদ্ধিমান্গণের (অর্থাৎ) বিবেকশক্তিযুক্ত জীবগণের
বুদ্ধি অর্থাৎ অন্তঃকরণের বিবেকশক্তি, এবং তেজস্বী (অর্থাৎ) প্রাগল্ভ্যশালী
ব্যক্তিগণের আমিই "তেজঃ" প্রগল্ভতা॥ ১•

বলং বলবতাং চাহং কামরাগবিবর্জ্জিতম্। ধর্মাবিরুদ্ধো স্থুতেযু কামোহন্মি ভরতর্বভ !॥ ১১

আনুরা। অহং বলবতাং কামরাগবিবর্চ্চিতং বলং [অস্মি], হে ভরতর্বভ ভূতেরু অহং ধর্মাবিক্লন্ধ: কাম: অসি॥ ১১

অনুবাদ। আমিই বলবান্গণের কাম ও রাগবর্জিত বল, হে ভরতকুলশ্রেষ্ঠ, আমি প্রাণিগণের [অভ্যস্তরে] ধর্মাবিরুদ্ধ কামরূপে বিশ্বমান আছি॥ ১১ [°]

ভাষ্য। বলমিতি। বলং সামর্থ্যমোজোবল্পবতামহং তচ্চ বলং কামরাগবিবর্জিতং কাম-চ রাগন্চ কামরাগৌ কামন্তৃক্ষা অসন্নিকৃষ্টেব্ বিষয়ের্ রাগো
রঞ্জনা প্রাপ্তের্ বিষয়ের্, তাভ্যাং বিবর্জিতং দেহদিধারণার্থং বলমন্দ্রি মতু
বং সংসাদিশাং ভূকা রাগকারণম্। কিঞ্চ ধর্মাবিকৃদ্ধো ধর্মেণ শাল্লার্থন ভারীশ্রম্মা

যঃ প্রাণির্ ভূতের্ কামো যথা দেহধারণমাত্রান্তর্থঃ অশনপানাদিবিষয়ঃ কামোহস্মি হে ভরতর্বভ ॥ ১১

আনন্দগিরিটীকা। যচ্চ বলবতাং বলং তভুতে মন্ত্রি তেবাং প্রোত্ত্ব-মিত্যাহ—বলমিতি। কামক্রোধাদিপূর্বকন্তাপি বলন্তান্থ্যতিং বারম্বিতি— তচ্চেতি। কামরাগরোরেকার্থত্বমাশঙ্ক্যার্থভেদমাবেদয়তি—কামস্তুষ্টেত্ত্যা-দিনা।বিশেষণদামর্থ্যদিজং ব্যাবর্ত্ত্যং দর্শরতি—নৃত্ত্বিতি। শাস্ত্রার্থাবিক্লজকামভূতে-মন্ত্রি তথাবিধকামবতাং ভূতানাং প্রোতত্ত্বং বিবক্ষিত্বাহ—কিঞ্চেতি। ধর্ম্মা-বিক্লজং কামমুদাহরতি—যুথেতি॥ >>

অনুবাদ। বলন্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ—বলশন্দের অর্থ 'ওজঃ' সামর্থ্য, আমি বলবান্গণের (ওজঃ) হইরা আছি, সেই বল [কিন্তু] কামরাগ-বিবর্জ্জিত। কাম ও রাগ [এই অর্থে ছন্দ্দমাস করিলে] কামরাগ [এই পদটি নিম্পন্ন হর]; অসন্নিক্ট [অথচ প্রিয়] বস্তু সকলকে পাইবার অস্তু যে অভিলাব, তাহাকে কাম বলা যার; সন্নিক্ট বিষয়সমূহে যে ভোগ-বাসনা, তাহাই রাগ [-শন্দ প্রতিপাম্ব]; সেই কাম ও রাগ-বিবর্জ্জিত [বলরূপে আমি বলবানগণের মধ্যে বিশ্বমান আছি এই প্রকার অব্যর]; ইহার তাৎপর্য্য এই যে প্রাণিগণের দেহ ধারণের উপযোগী বলই আমার স্বরূপ; কিন্তু তৃষ্ণা ও রাগ-নিমিন্ত বল নহে। এবং ধর্ম অর্থাৎ ধর্মশাস্ত্রের প্রতিপান্থ অর্থের সহিত্ত অবিক্লম যে কাম [প্রাণিসমূহে] বিশ্বমান আছে ও যে কামের ছারা দেহধারণের জন্ম অশন-পানাদি হইরা থাকে, আমি সেই কাম [-রূপে দেহিগণের মধ্যে] বিশ্বমান আছি, হে ভরতর্জ্ভ! (হে ভরতক্লশ্রেষ্ঠ)॥ ১১

যে চৈব সান্ত্ৰিকা ভাবা রাজসাস্তামসাশ্চ যে। মন্ত্ৰ এবেতি তান্ বিদ্ধি নত্বহং তেষু তে ময়ি॥ ১২

আস্বা । বে চ সাধিকা: ভাবা:, বে রাজসা: [ভাবা:], বে চ তামসা: [ভাবা:] তান্ [সর্কান্] মত্ত: এব [উৎপন্নান্] বিদ্ধি (জানীহি); অহং ভেষু ন [বর্জে], তে তু মরি [বর্জন্তে] ॥ ১২

অকুবাদ। যে সকল পদার্থ সান্তিক রাজস বা তামস, সে সকলই আমা হইতে উৎপন্ন ইহা জানিও; ঐ সকল পদার্থ আমাকে অবলম্বন করিয়া রহিনাছে, আমি কিন্তু তাহাদিগকে অবলম্বন করিয়া থাকি না॥ ১২ ভাষ্য। বিঞ্চ, বেচৈব সান্থিকাঃ সন্থানির্ব্তা ভাবাঃ পদার্থাঃ, রাজসাঃ রজোনির্ব্তাঃ, তামসাঃ তমোনির্ব্তাশ্চ যে কেচিৎ প্রাণিনাং স্বকর্মবশাৎ জারত্তে ভাবাঃ, তান্ মন্ত এব জারমানান্ বিদি, সর্বান্ সমস্তানেব। যক্তপি তে মন্তো জারত্তে, তথাপি ন তু স্বহং তেয়ু তদধীনঃ তদ্বশঃ, যথা সংসারিণঃ; তে প্নম্রি মন্ধশাঃ মদধীনাঃ॥ ১২

আনন্দণিরিটীকা। চিদানন্দরোরভিব্যঞ্জকানাং ভাবানাম্ ঈশ্বরাশ্বঘাভিধানাদগ্রেষামতদাত্মপ্রপ্রপ্রপ্রপ্রকং—কিঞ্চেতি। প্রাণিনাং ত্রৈবিধ্যে হেতৃং
দর্শরন্ বাক্যার্থমাহ—যে কেচিদিতি। তর্হি পিতৃরিব প্রোধীনত্বং ঘণ্ডো লারমানাৎ তদধীনত্বং তবাপি স্থাদিতি বিক্রিয়াবত্বদ্যাত্মপ্রসক্তিরিত্যাশক্ষ্যাহ—
যান্ত্যপীতি। মম পরমার্থছাৎ তেষাং করিভদ্বান্ন তদগুণদোষৌ মন্নি স্থাভামিত্যর্থ:।
তেষামপি তদ্বদেব স্বতন্ত্রতাসম্ভবাৎ কিমিতি করিত্যমিত্যাশক্ষ্যাহ—তে
পুনরিতি। ত্রিবিধানাং ভাবানাং ন স্বাতন্ত্র্যমীশ্বরকার্য্যছেন-তদধীনত্বাৎ তথা
চ করিতস্থাধিষ্ঠানসত্তাপ্রতীভিভ্যামেব তহুত্বাৎ তন্যাত্রসিদ্ধিরিত্যর্থ:॥ ১২

অকুবাদ। আরও [ভন] যে সকল "ভাব" পদার্থ "সান্ধিক" সন্থওণ হইতে উৎপন্ন হয়, যাহারা "রাজস" রজোগুণ হইতে উৎপন্ন হয় এবং "তামস" তমোগুণ হইতে উৎপন্ন হয় অর্থাৎ প্রাণিগণের নিজ নিজ কর্মবশে এ জগতে বাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তাহা সকলই আমা হইতেই উৎপন্ন হইয়া থাকে। যথপি সেই সকল পদার্থ আমা হইতে উৎপন্ন হয়, তথাপি আমি তাহাদের অধীন নিছ অর্থাৎ সংসারী জীবগণের ভায় আমি ঐ সকল বল্বর বশীভূত নিহি; কিছু তাহারাই আমাতে রহিয়াছে অর্থাৎ [প্রাণিকর্মার্জ্জিত] সকল পদার্থই আমার বশীভূত, আমার অধীন রহিয়াছে॥ ১২

ত্রিভিগু নময়ৈর্ভাবৈরেভিঃ সর্বামিদং জগৎ। মোহিতং নাভিজানাতি মামেভ্যঃ পরমব্যয়ম্॥ ১৩

আনুয়। এডিও গমরৈ: ত্রিভি: ভাবৈ: ইদং সর্বং ব্দগৎ মোহিতং [সৎ] এডা: পরং মাম অব্যয়ং নাভিকানাতি ॥ ১৩

অকুবাদ। এই ত্রিবিধ গুণমর ভাব (রাগ ছেব ও মোহ) দারা মোহিত এই সকল জগৎ এই ভাবত্তর হইতে অতীত এবং অব্যর আমাকে কানিতে পারে না॥ ১৩ ভাষ্য। এবভ্তমপি পরমেশ্বং নিত্যশুদ্ধমুক্তযভাবং সর্বভূতাত্মানং সংসারদোষবীক্তপ্রদাহকারণং মাং নাভিজানাতি ক্রগদিত্যসুক্রোশং দর্শরিতি ভগবান্। তচ্চ কিংনিমিত্তং জগতোহজ্ঞানমিত্যচ্যতে। ত্রিভি: গুণমরৈ: গুণবিকারৈ: রাগদেষমোহাদিপ্রকারে: ভাবৈ: পদার্থেরেভি: যথোকৈ: সর্ব্মিদং প্রাণিজাতং ক্রগং মোহিতম্ অবিবেক্তামাপাদিতং সন্নাভিজানাতি মাম্ এভ্যঃ যথোক্তগুণেভ্যঃ পরং ব্যতিরিক্রং বিলক্ষণং চ অব্যন্তং ক্রনাদিসর্বক্তাববিকারবর্জ্জিতম্ ইত্যর্থ:॥১৩

আনন্দগিরিটীকা। শতীখনস্থ সাতন্ত্রে নিতাগুদ্ধবাদৌ চ কুতো জগত-স্তদাদ্দক্ষ সংসারিদ্বিমিত্যাশক্ষ্য তদজানাদিত্যাহ—এবস্তুতমুপীতি। বহু-প্রপঞ্চোহবিক্রিয়ণ্ট বং কমারামান্মভূতং স্বয়ংপ্রকাশং সর্বো জনস্তথা ন জানা-তীতি মন্বা শক্ষতে—তচ্চেতি। শ্লোকেনোত্তরমাহ—উচ্যুক্ত ইতি। এভ্যঃ পরমিত্যপ্রপঞ্চমুচ্যতে। অব্যয়মিতি সর্ববিক্রিয়ারাহিত্যম্॥ ১৩

অনুবাদ। এই আমার শ্বরূপ বর্ণিত হইল, আমি সর্বাণ শুদ্ধ ও জ্ঞান শ্বরূপ, আমিই সর্বভৃতের আত্মা অথচ নিগুর্ণ, আমিই একমাত্র সংসার দোষবীজের প্রদাহ-হেতু (অর্থাৎ অজ্ঞানরূপ যে সংসার হেতু, তাহার বিনাশ করিতে
হইলে, আমারই আশ্রয় গ্রহণ করিতে হয়; অথচ হায়!) জগৎ আমার শ্বরূপ
ছদমুক্তম করিতে পারে না; এইজন্ম জগতের প্রতি ভগবান্ নিজ অন্তুক্তোশ
প্রদর্শন করিতেছেন ও জগতের এই অজ্ঞান কেন হয়, তাহা বলিতেছেন।—
ভিনটি "শুণময়" শুণবিকার (অর্থাৎ) রাগ বেষ ও মোহাদি এই ত্রিপ্রকার
ভাবের দ্বারা এই সকল প্রাণনিচিম্বরূপ জগৎ মোহিত হইয়াছে। (অর্থাৎ)
বিবেকশৃলীক্বত হইয়াছে; এই প্রকার বিবেকশৃল্প হইয়া আমাকে এই শুণবিকার
ত্রিবিশভাব হইতে পৃথক্ বলিয়া অন্তুভব করিতে পারিতেছে না [এবং ইহাও
বুরিতেছে না বে] আমি "অব্যয়" ব্যয়রহিতঅর্থাৎ জন্ম প্রভৃতি ছয় প্রকার
ভাবিকার আমাতে নাই॥ ১৩

দৈবী ছেষা গুণময়ী মম মায়া ছুরত্যয়া। মামেব যে প্রপদ্মস্তে মায়ামেতাং তরস্তি তে॥ ১৪

অনুষ্ম । এবা গুণমন্ত্রী দৈবী মন নারা ছরত্যনা (ছরতিক্রমণীরা); বে মানেব প্রপন্তত্তে (জাশ্রন্তি) তে এতাং নারাং তরন্তি ॥ ১৪

অকুবাদ ৷ এই দৈবী ও গুণমন্ত্রী সামার মানা ছ্রতিক্রমণীরা; বাহারা

স্পামাকে আশ্রয় করে, ভাহারাই এই নারা উত্তীর্ণ হইতে অর্থাৎ এই নারা হইতে পরিকাণ লাভ করিতে পারে ॥ ১৪

ভাষ্য। কথং পুনদৈ বীমেতাং ত্রিগুণাত্মিকাং বৈক্ষবীং মারামতিকান্ত্রীত্যুচ্যতে—দৈবী দেবজ মমেশ্বরজ্ঞ বিক্ষোঃ স্বভূতা হি ষক্ষাৎ এবা বথোক্তা গুণমরী মম মারা হরত্যরা হুংখেন অত্যরোহতিক্রমণং যক্তাঃ সা হরত্যরা। ভবৈবং সতি সর্বধর্মান্ পরিত্যক্ত্যু মামেব মারাবিনং স্বাত্মভূতং সর্ববিদ্ধান্ পরিত্যক্ত্যু মামেব মারাবিনং স্বাত্মভূতং সর্ববিদ্ধান্ বেপ্রস্তান্তে তে মারামেতাং সর্বভূতমোহিনীং তরন্তি অতিক্রামন্তি সংসারবন্ধমান্ত্রু ইত্যুর্থঃ॥১৪

আনন্দ গিরিটীকা। বণোক্তানাদিসিদ্ধমারাপারবশুপরিবর্জনাযোগাজ্জ-গতো ন কদাচিদপি তর্বোধসমুদরসম্ভাবনেত্যাশকতে—কথং পুনরিতি। জগবদেকশরণতরা তর্বজ্ঞানদারেণ মারাতিক্রমঃ সম্ভবতীতি পরিহরতি—উচ্যুক্তেইতি। কথং হরতারদ্বেন তদত্যরঃ স্থাদিতি তত্ত্রাহ—মামেবেতি। প্রধানক্রেব সাজ্রাং ব্যদশুতি—দেবস্থেতি। স্বাতন্ত্র্যে মারাদার্থপপত্তিং হিশন্দগোভিতাং হেতৃকরোতি—যুদ্মাদিতি। অহুভবসিনা সা নাক্সাদপলাপনহিতীত্যাহ—এমেতি। জগতত্ত্বপ্রতিপত্তিপ্রতিবন্ধভূতা গুণাঃ সন্ধাদরঃ। মমেতিপ্রাপ্তক্রমেব মারারাঃ সম্বন্ধমন্থ বিধিৎসিতং হরতার্থং বিভন্ধতে—ত্তুংশ্বেনেতি। মামেবেত্যাদি ব্যাচন্তে—ত্ত্ত্ত্ত্তি। তত্মিন্ মারান্ধপে বণোক্তরীত্যা হরভারে সভীতি যাবং। মামেবেত্যেবকারেণ মারারা বেছকোটনিবেশাভাবো বিবন্ধতে। সর্বাত্মনা কর্মাহন্তানাদিব্যপ্রতামস্তরেণত্যর্থঃ। মারাতিক্রমে মোহাতিক্রমো ভবতীতি মন্ধা বিশিনন্তি—সর্ক্তি। মারাতৎপ্রযুক্তমোহন্নোরতিক্রমেহিণি কথং পুরুষার্থসিদ্ধিরিত্যাশক্ষ্যাহ—সংসাব্রতি। ১৪

অনুবাদ। কি প্রকারে এই ত্রিগুণাত্মিকা বৈষ্ণবী মারাকে অতিক্রমণ করিতে পারে, তাহাই বলা হইতেছে—"দৈবী" দেব অর্থাৎ পরবেশর বিষ্ণুম্বরূপ আমি; আমারই আত্মতা মারা [এই কারণে উহা] দৈবী; এই মারার স্বরূপ বলিরাছি; ইহা গুণমরী; এই প্রকার আমার সেই মারা "হরত্যরা," অনেক ক্লেলে বাহার অতিক্রম করা বার, তাহাকেই 'হরতার' বলা বার; এই প্রকার মারার স্বভাব হইলেও বে সকল জীব, মকল ধর্ম পরিত্যাণ করিরা সেই মারার আপ্রর ও নিজের আত্মস্বরূপ আমাকে আপ্রর করিরা থাকেন, ভাহারাই এই সর্ক্রত্তমোহিনী মারা হইতে উদ্ধার পান অর্থাৎ ভাহারাই সংসার-বন্ধন হইতে সোক্ষ লাভ করিছে পারেন ॥ ১৪

ন মাং হৃদ্ধতিনো মূঢ়াঃ প্রপায়ন্তে নরাধমাঃ। মায়য়াপদ্বত্ঞানা আহুরং ভাবমাশ্রিতাঃ॥ ১৫

অন্তর্ম। মার্রা অপহতজ্ঞানা আহ্বং ভাবন্ আশ্রিতা হৃদ্ধতিনঃ (পাপিষ্ঠাঃ) ম্লাঃ নরাধমাঃ ন মাং প্রপন্তত্তে (আশ্রম্ভি)॥১৫

অমুবাদ। মারার প্রভাবে অপহতবোধ, আহরভাববিশিষ্ট, ছ্রদ্টশালী ও মৃঢ় নরাধমগণ আমাকে আশ্রয় করে না॥ ১৫

ভাষ্য। যদি তাং প্রপন্না মারামেতাং তরস্তি কন্মাৎ তামেব সর্বে ন প্রপন্তত্তে ইত্যুচ্যতে —ন মাং পরমেশ্বরং হৃত্ততিনঃ পাপকারিণঃ মৃচাঃ প্রপন্তত্তে নরাধমা নরাণাং মধ্যেহধমা নিক্সাত্তে চ মার্রা অপক্তজ্ঞানাঃ আফুরং ভাবং হিংসান্তাদিলকণমাশ্রিতাঃ॥ ১৫

আনন্দ গিরিটীকা। ভগবন্ধিষ্ঠায়া মারাতিক্রমহেতৃত্বে তদেক নির্বাহমেব সর্বেষামুচিতমিতি পৃচ্ছতি—যদীতি। পাপকারিবেনাবিবেক্তৃয়ন্তরা হিংসানৃতাদি ভ্রম্বাভ্রমাং জন্ত্নাং ন ভগবনির্গ্রহিদিদ্ধিরিত্যাহ—উচ্যত ইতি। মৌঢ়াং পাপকারিবে হেত্রত এব নিকর্মঃ। সংম্বিতমিব তিরম্বতং জ্ঞানং স্বস্কপ্রতিভ্রমবামিতি তে তথা॥ ১৫

অনুবাদ। বদি তোমার আশ্রম লইলেই সকলে মারা হইতে উদ্ধার পার, তবে কেন সকল লোকই তোমার আশ্রম গ্রহণ করে না ? এই প্রকার আশাকার উত্তর হইতেছে যে [আমি] পরমেশ্বর, আমাকে "হৃদ্ধতী" পাপকারী মৃঢ় "নরাধম", মহুবাগণের মধ্যে নিক্নষ্ট ব্যক্তিগণ আশ্রম করে না ; তাহাদের জ্ঞান মারাকর্তৃক অপহাত হয় এবং হিংসা ও মিণ্যা-ব্যবহার প্রভৃতি অন্তর-জনোচিত স্বভাবকেই তাহারা পরিগ্রহ করে ॥ ১৫

> চতুর্বিবধা ভজন্তে মাং জনাঃ স্থক্ততিনোহর্জ্জ্ব। আর্ত্তো জিজ্ঞাস্থরর্থার্থী জ্ঞানী চ ভরতর্বভ ॥ ১৬

অন্বয়। হে ভরতর্বভ, অর্জুন, আর্ত্ত: জিজ্ঞাস্থ: অর্থার্থী জ্ঞানী চ [ইন্ড্যেকে] চতুর্বিধাঃ স্কৃতিনঃ জনাঃ মাং ভজন্তে॥ ১৬

অসুবাদ। হে ভরতকুলশ্রেষ্ঠ অর্জ্জুন! পীড়িত, তত্ত্বজিজ্ঞাস্থ, ধনার্থী ও জ্ঞানী এই চারি প্রকার প্ণ্যাত্মা ব্যক্তিগণ আমাকে ভঙ্গনা করেন। ১৬

ভাষ্য। বে পুনর্বরান্তমা: পুণ্যকর্মাণ:। চতুর্বিধাশ্চতু:প্রকারা: ভলতে সেবত্তে মাৎ জনা: স্কৃতিন: পুণ্যকর্মাণ: হে অর্জুন।, আর্ত্তঃ আর্ত্তি- পরিগৃহীত গুরুরব্যাশ্বরোগাদিনাভিত্তঃ আপরো বিজ্ঞান্মর্ভগব কর্ম আতুমিছেতি বোহর্ষার্মী ধনকামো জ্ঞানী বিক্ষোন্তত্ববিচ্চ হে ভরতর্ষভ ॥ ১৬

আনন্দগিরিটীকা। তেখাং তর্হি তরিষ্ঠতা স্করেতি তত্তাহ—যে পুন-রিতি। তে ভন্নস্কে ভগবস্তবিতি শেষ:। যে খাং ভল্নস্কে তে কিং দর্বে মারাং তরন্তি নৈব প্রার্থনাবৈচিত্র্যাদিত্যাহ—চতুর্বিব্রধা ইতি। আপরস্করির্ভিমিচ্ছ-রিতি শেষ:। তত্ত্ববিদিতি। শক্তানবানাত্মতত্ত্বসাক্ষাৎকারমাত্রার্থী মুমুক্রিত্যর্থ:॥১৬

অনুবাদ। বাঁহারা মহবাগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ [অতএব] পূণ্যকর্মা, [তাঁহারা কি করেন, তাহাই বলা হইতেছে], "চত্র্বিধ" চারি প্রকার "স্কৃতী" পূণ্যকর্মকারী জনসমূহ আমাকে "ভজনা করে" সেবা করিয়া থাকে। [ভাহারা কে কে?] "আর্ত্ত" আর্ত্তিবৃক্ত (অর্থাৎ) ভয়র রোগ ও ব্যাঘ্র প্রভৃতি হিংল্ল জয়র বারা নিপীড়িত, অর্থাৎ আপদ্গ্রন্ত। "জিজ্ঞান্ত" [যে ব্যক্তি] ভগবত্তবন্ধ জানিতে ইচ্ছা করে [সে], যে ব্যক্তি "অর্থার্থী" ধনকাম [সে] এবং জ্ঞানী বিষ্ণুর তত্ত্বিৎ, হে ভরতশ্রেষ্ঠ॥ ১৬

তেষাং জ্ঞানী নিত্যযুক্ত একভক্তির্বিশিষ্যতে। প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যর্থমহং স চ মম প্রিয়ঃ॥ ১৭

অনুয় । তেষাং (চতুর্ণাং মধ্যে) নিতাযুক্ত: একভক্তি: জ্ঞানী বিশিষ্যতে; অহং জ্ঞানিন: অত্যর্থং প্রিয়: স চ মম প্রিয়: ॥ ১৭

আকুবাদ। সেই চারি প্রকার মংসেবকগণের মধ্যে নিত্যযুক্ত এবং একভক্তি (একমাত্র ভগবানে ভক্তিবিশিষ্ট)জ্ঞানীই প্রধান, জ্ঞানীর আমি অত্যন্ত প্রির এবং জ্ঞানীও আমার প্রিয় ॥১৭

ভাষ্য। তেবামিতি তেবাং চতুর্ণাং মধ্যে জ্ঞানী তত্ত্ববিং তত্ত্ববিশ্বাং
নিত্যযুক্তো ভবতি একভক্তিশ্চ অস্তস্ত ভজনীয়স্তাদর্শনাদতঃ দ একভক্তিঃ
বিশিষ্যতে বিশেষমাধিক্যমাপস্থতে অতিরিচ্যতে ইত্যর্থঃ। প্রিয়ো হি ষম্মাদহমাদ্মা
জ্ঞানিনোহতন্ত্বস্তাহমত্যর্থং প্রিয়া। প্রদিদ্ধং হি লোক আত্মা প্রিয়ো ভবতীতি।
তত্মান্ত্র্জানিন আত্মদাবাস্থদেবঃ প্রিয়ো ভবতি ইত্যর্থঃ। দ চ জ্ঞানী মম
বাস্থদেবক্ত আব্যৈবেতি মম অত্যর্থং প্রিয়া॥১৭

আনন্দ্রিটীকা। চতুর্বিধানাং তেবাং স্ক্রুতিনাং ভগবদভিমুথানাং ছুল্যহুমালহ্যাহ—তেষামিতি। তম্ম বিশিষ্যমাণত্বে হেতুমাহ—প্রিয়ো হীতি। নিত্যযুক্তমং ভগবত্যাত্মনি সদা সমাহিতচেতত্ত্ব। অনারে সংসারে ভগবানেব সার: সোহহমস্মীত্যেক স্মিন্ন ছিত্তীরে স্থান্য স্তান্ত অভিছে সেহবিশে-বোহস্তেত্যকভক্তি:। তস্য আধিক্যে হেতৃং বির্ণোতি—প্রিয়ো হীত্যাদিনা। ভগবতোজ্ঞানিনন্দ পরস্পরং প্রেমাস্পদত্তে প্রসিদ্ধিং প্রমাণয়তি—প্রসিদ্ধিং হীতি। আত্মনো জ্ঞানিনং প্রতি প্রির্ত্তেহিণি ভগবতো বাহ্নদেবস্য কথং তং প্রতি প্রিরত্তমিত্যাশব্যাহ—তত্ম্মাদিতি। অহং জ্ঞানিনো নিরুপাধিকপ্রেমাস্পদং পরমপ্রবার্থবেনাত্মতেন চ গৃহীতত্মাদিত্যর্থ:। জ্ঞানিনোহণি ভগবন্তং প্রতি প্রিরত্বং প্রকটরতি—স চেতি ॥১৭

জানীর পালা বিনিয় বাহাদেব (জগবদ্ভক্তগণের) মধ্যে 'জানী'' ভর্ববিং; তর্ববিং বিলয়ই নিত্যযুক্ত এবং একভক্তি; [কারণ] [তাঁহার নিকটে] জন্ত কেই ভক্তির পাত্র ইইতে পারে না; এই কারণ সেই একভক্তি জানী বিশিষ্ট হন। 'বিশেষ'' আধিক্য লাভ করিয়া থাকেন অর্থাৎ সকলের লপেকা উৎকৃষ্টতা প্রাপ্ত হন। যে কারণে জ্ঞানী আমাকে] আত্মস্বরূপ বিলয়া ব্রিডে পারেন, এই কারণে জ্ঞানীর আমি অত্যন্ত প্রিয়; ইহা লোকে প্রসিদ্ধই আছে যে, আত্মা [সর্বাপেকা] প্রিয় হইয়া থাকে, সেই কারণে জ্ঞানীর আত্মা বিলয়া বাহ্মদেব [অত্যন্ত] প্রিয় হয়েন ইহাই অর্থ। সেই জ্ঞানীও বাহ্মদেব স্বরূপ আমার অত্যন্ত প্রিয়; কারণ তিনি আমার আত্মাই হইয়াছেন॥১৭

উদারাঃ দর্ব্বএবৈতে জ্ঞানী ত্বাজ্যৈব মে মতম্। আহিতঃ দ হি যুক্তাত্মা মামেবাসুত্তমাং গতিম্॥ ১৮

অন্তব্য । এতে সর্ব্বে এব উদারা: ; জ্ঞানী তু আছৈব [ইতি] মে মতম্। হি (মন্ত্রাৎ) স যুক্তাত্মা মামেব অন্তব্যাং গতিম আছিত: ॥ ১৮

আমুবাদ। ইহারা সকলেই উৎক্ষ ; কিন্ত জ্ঞানী আমার আত্মাই, ইহাই আমার মত। কারণ, সেই সমাহিতমনা জ্ঞানী আমাকেই সর্ব্বোৎক্ষপ্ত আশ্রয় ৰিন্না অবশ্যন করিতে উন্ধত হন॥ ১৮

ভাষ্য। ন তর্হি আর্তাদয়ত্রয়ঃ বাহ্নদেবস্থ প্রেয়া:। ন, কিং তর্হি ?— উদারা: উৎক্রষ্টা: সর্ব্দ এব এতে এয়োহিশি মম প্রিয়া এব ইত্যর্থ:। নহি কন্টি-শ্বন্তক্ত: মম বাহ্নদেবস্থ অপ্রিয়ো ভবতি; জানীতু অত্যর্থং প্রিয়ো ভবতীতি বিশেষ:। তৎ কমাদিত্যাই জানী তু আর্ম্মিব নাজে। মন্ত ইতি মে মন্ম মতং নিশ্চর:। আছিতঃ আরোচূং প্রবৃত্তঃ স জ্ঞানী হি ষম্বাৎ অহমেব ভগবান্ বাহ্নদেবঃ নাভোহনীত্যেবং যুক্তাত্মা সমাহিতচিতঃ সন্ মামেব ব্রহ্ম গন্তব্যম্ অফুক্তমাং গতিং গন্তং প্রবৃত্ত ইত্যর্থঃ॥ ১৮

আনন্দ্গিরিটীকা। জ্ঞানী চেদত্যর্থমীশ্বর প্রিয়ো ভবতি তর্ছি বিশেষণসামর্থ্যাদিতরেরামপ্রিয়মং প্রাপ্তমিতি শক্তে—ন তর্হীতি। তেবাং ভগবন্ধং
প্রতি প্রিয়মত্র বিবক্ষিতমিত্যাহ—নেতি। অত্যর্থমিতি বিশেষণাত তর্হি
কিং প্রয়োলনমিতি পৃচ্ছতি—কিং তর্হীতি। সর্কোবাং ভগবদভিমুধ্ছাছংকর্বেইপি জ্ঞানিনি তদতিরেকমলীকত্য বিশেষণমিত্যাহ—উদারা ইতি। কিং
তত্ত্ব প্রমাণমিত্যাশব্য ঈশ্বরজ্ঞানমিত্যাহ—মে মত্রমিতি। জ্ঞানীয়াইন্দ্রবৈত্যত্র
হেতুমাহ—আহিত ইতি। সর্কাশক্ত জ্ঞানিব্যতিরিক্ষবিষয়মাহ—ত্রয়োহপ্রীতি। জ্ঞানিব্যতিরিক্ষানাং ভগবদভিমুধ্বেপি জ্ঞানাভাবাপরাধার ভগবংপ্রীতিবিষয়তেত্যাশব্যাহ—ন হীতি। কন্তর্হি জ্ঞানবতি বিশেষস্তত্তাহ—
ক্রানী ত্বিতি। তমেব বিশেষং প্রশ্নপূর্বকং প্রকট্রতি—তৎক্স্মাদিত্যাদিনা। সর্কমান্থানং পশ্বতোহপি তত্ত্ব তব কথং বংগাজো নিশ্চয়ঃ ভাদিত্যাশক্যাহিত ইত্যেতদ্ব্যাকরোতি—আরোঢ় মিতি। আরোহে হেতুং হচয়তি—
স্ব্রানীতি। আরোঢ়ং প্রবৃত্তমেব স্ফুট্রতি—মামেবৈতি। ১৮

অনুবাদ। তবে কি আর্ত প্রভৃতি তিন প্রকার ভক্ত তোমার প্রিয় নহেহ ? না, কি তবে ? এই সকল ভক্ত (অর্থাৎ আর্ত প্রভৃতি ত্রিবিধ ভক্তই) "উদার" উৎকৃষ্ট অর্থাৎ [তাহারা সকলেই] আমার প্রিয়। কোন ভক্তও আমার (অর্থাৎ বাস্থাদেবের) অপ্রিয় হইতে পারেন না, ইহাই তাৎপর্যা। কিছু জ্ঞানী আমার অত্যন্ত প্রিয়, ইহাই বিশেষ। তাহা কেন হর, তাহাই বলা হইতেছে—জ্ঞানী আমার আত্মাই। আমা হইতে তিনি [কোন প্রকারে] ভিন্ন নহেন, ইহা আমার "মত" নিশ্চয়। কারণ, সেই জ্ঞানী "আমিই ভগবান্ বাস্থাদেব, ভাঁহা হইতে আমি পৃথক নহি" এই প্রকার সমাহিত্যনিত হইয়া গস্তব্য পর-ব্রহ্মরপ আমাকে পাইবার জন্ম অত্যুৎকৃষ্ট পথে যাইতে উত্যত হইয়াছেন—ইহাই তাৎপর্যা॥ ১৮

বছুনাং জন্মনামন্তে জ্ঞানবান্ মাং প্রপাছতে। বাস্থদেবঃ দর্বমিতি স মহাত্মা স্বর্ছুর্ল ভঃ॥ ১৯

আর্য । বহুনাং জন্মনাম্ অস্তে "বাহুদেবঃ সর্কাম্" ইতি জ্ঞানবান্ [সন্] সাং প্রাপদ্যতে, [ব এবং] স মহাদ্মা সুত্রভঃ ॥ ১৯ অনুবাদ। বহু জন্ম অতীত হইলে পর "সকল বস্তুই বাহুদেব" এই প্রকার জ্ঞান লাভ করিয়া [সাধক] আমাকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। সেই প্রকার মহাত্মা [জগতে] অত্যন্ত হুল্ভি॥১৯

ভাষ্য। জ্ঞানী পুনরপি স্ত্রতে—বহুনাং জ্মানাং জ্ঞানার্থসংস্থারাশ্রয়াণাম্ ক্রে সমাপ্তে। জ্ঞানবান্ প্রাপ্তপরিপাকজ্ঞানো মাং বাস্থদেবং প্রত্যগাত্মানং প্রত্যক্ষতঃ প্রপদ্মতে। কথং, বাস্থদেবং সর্কমিতি। য এবং সর্কাত্মানং মাং প্রতিপদ্মতে স মহাত্মা ন তৎসমোহভোহন্তি অধিকো বা। অতঃ স্কুর্গভঃ মন্ত্রাণাং সহস্রেষ্ ইত্যুক্তম্॥ ১৯

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোকস্য গতার্থবং পরিহরতি—জ্ঞানীতি।
জ্ঞানার্থসংশ্বারো বাসনা তত্তজ্জননি পুণ্যকর্দাস্থগানজনিতা বৃদ্ধিভদ্ধিভদাশ্রমাণাং
ত্বতামনস্তানাং জন্মনামিতি বাবং। জ্ঞানবন্ধং প্রাক্তনেষপি জন্মস্থ সম্ভাবিতমিত্যাশব্দাহ—প্রাপ্তেতি। জ্ঞানবতো ভগবংপ্রতিপত্তিং প্রশ্নধারা বিরুণোতি—
ক্থমিতি। বথোক্তজ্ঞানস্য তব্তশ্চ হল্ ভব্ধং স্চরতি—য এবমিতি।
মহৎ সর্বোৎকৃষ্টমাত্মশন্ধিতং বৈভবমস্যেতি [মহাত্মা]। মহাত্মত্বে ফ্লিতমাহ—
আত ইতি। তত্ত্ব বাক্যোপক্রমাত্মক্ল্যাং কথ্যতি—ম্মুষ্যাণামিতি॥ >>

অনুবাদ। পুনর্বার জ্ঞানীর স্তৃতি করা হইতেছে। তত্ত্বজ্ঞানের অমুক্ল সংস্কার যে সকল জন্ম উত্তরোত্তর রুদ্ধি পাইয়া থাকে, সেই প্রকার বছ জন্মের অস্তে (অর্থাৎ) সমাপ্তি হইলে পর জ্ঞানবান্ (অর্থাৎ গাঁহার জ্ঞান পরিপক্ষ হইয়াছে, তিনি , আমাকে বাহ্মদেব (অর্থাৎ) সকল জীবের অস্তরাত্মা বলিয়া প্রত্যক্ষতঃ পাইয়া থাকেন। কি ভাবে পান ? [তিনি তথন দেখেন] "সকল বস্তুই বাহ্মদেব"। যে ব্যক্তি এই প্রকারে সকলের অস্তরাত্মা আমাকে পান, তিনিই মহাত্মা, "তাঁহার সমানও কেহ থাকে না এবং তাঁহা হইতে অধিকও কেহ থাকে না বলিয়া" স্মৃত্র্লভ—অর্থাৎ সহস্র সক্ষ্ম্যগ্রেগরে মধ্যে,—এ কথা পুর্ব্বেও বলা হইয়াছে॥ >>

কামৈন্তৈক্তিজ্ঞানাঃ প্রপাছতে হল্যাদবতাঃ। তং তং নিয়মমান্থায় প্রকৃত্যা নিয়তাঃ স্বয়া॥ ২০

আনুয়। স্বরা প্রক্রত্যা নিরতাঃ তৈত্তৈঃ কামৈর্হ তজ্ঞানাঃ [সস্তঃ] তৎ তৎ নিরমম্ আন্থার অন্তদেবতাং প্রপন্ততে॥ ২০

অকুবাদ। প্রাকৃত জীব মাত্রেই নিজ নিজ প্রকৃতির বনীভূত; এই স্বারণে

তাহারা কামাদির আবেশ রশত: বিবেকজ্রত্ত হয় এবং সেই সেই নিয়ম অবলম্বন-পূর্বাক ভিন্ন ভিন্ন দেবতার উপাসনা করিয়া থাকে॥ २०

ভাষ্য ৷ আবৈর অর্বং বাস্থদের ইত্যেবমপ্রতিপত্তী কারণমূচ্যতে— কামৈতৈতৈঃ প্রপশুস্বর্গাদিবিষরেঃ সতজ্ঞানা অপস্থতবিবেকবিজ্ঞানাঃ প্রপশুস্তে-হক্তদেবতাঃ প্রাপ্ন বস্তি বাস্থদেবাদায়নোহন্তা দেবতাঃ তং তং নিয়মং দেবতারাধনে প্রসিন্ধো যো বো নিয়মতং তম্ আস্থায় আশ্রিত্যপ্রকৃত্যা স্বভাবেন জন্মান্তরার্জিত-সংস্কারবিশেষেণ নিয়তা নিয়মিতাঃ স্বয়া আত্মীয়য়া ॥ ২ •

আনন্দ্গিরিটীকা। কিমিতি তর্হি দর্বেষাং প্রত্যগ্রুতে ভগবতি বংগাক্তজানং নোদেতাত্যাশক্ষ্য ন মামিত্যত্ত্রাক্তং হদি নিধার জ্ঞানাহদরে হেম্বস্করমাহ—আত্মৈবৃত্তি। কামৈনানাবিধৈরপদ্ধতবিবেকবিজ্ঞানদ্য দেবতান্তর নির্দ্ধমেব প্রত্যগ্রুতবিতা প্রতিপত্ত্যভাবে কারণমিত্যাহ—কামেরিতি। দেবতান্তরনির্দ্ধরে হেতুমাহ—তং তমিতি। প্রসিদ্ধো নিরমো জ্পোপবাস-প্রদক্ষিণনমস্বারাদিঃ। নিরমবিশেবাশ্ররণে কারণমাহ—প্রকৃত্ত্যতি॥ ২০

অনুবাদ। এই সকল বিশ্বই বাস্থদেব এবং বাস্থদেবই আত্মা এই প্রকার জ্ঞান সকলের কেন না হয়, তাহার কারণ বলা হইতেছে। সেই সেই পুত্র পশুও স্বর্গাদি বিবয়ে কামনার বলে "হুতজ্ঞান" (অপহতবিবেকবিজ্ঞান হইয়া মন্ত্র্য়পণ) অক্ত দেবতার উপাসনা করিয়া থাকে [তাহারা বিবেচনা করে হে] ঐ সকল দেবতা, সকলের আত্মভূত বাস্থদেব হইতে ভিন্ন। যে বে দেবতার আরাধনায় যে যে নিয়ম প্রসিদ্ধ আছে, সেই সকল নিয়ম অবলম্বন করিয়া [তাহারা] "স্বীয়" আত্মীয় "প্রকৃতি" হারা নিয়মিত [হইয়া থাকে]॥২০

যো যো যাং যাং তনুংভক্তঃ শ্ৰদ্ধয়াৰ্চিতৃমিচ্ছতি। তম্ম তম্মাচলাং শ্ৰদ্ধাং তামেব বিদধাম্যহম্॥ ২১

অনুয় । বো বো ভক্তঃ শ্রদ্ধরা বাৎ বাং তমুম্ অর্চিত্মিচ্ছতি তস্য তস্য (তদ্যাং তদ্যাং তনৌ) তামেব অচলাং শ্রদ্ধাম্ অহং বিদ্যামি॥ ২১

অনুবাদ.। যে যে ভক্ত শ্রদাসহকারে যে যে দেবতাবিগ্রহকে পূজা করিছে ইচ্ছা করে, আমি [সেই সেই দেবতাবিগ্রহের প্রক্তি] সেই সেই ব্যক্তির সেই শ্রদাকে অচলা করিয়া থাকি॥ ২১

ভাষ্য। তেবাং চ কামিনাং বো যঃ কামী যাঁং বাং দেবতাতহং শ্রহ্মা সংযুক্তো ভক্তক সন্ অচ্চিত্রং পুজয়িত্মিছতি, তস্য তস্য কামিনঃ অচলাং স্থিরাং শ্ৰহ্মাং ভাষেৰ বিদধামি স্থিরীকরোমি ষরের পূর্বাং প্রার্ভঃ স্বভাষতঃ ৰো বাং দেবভাতমুং শ্রহ্মার্চিত্মিচ্ছতীতি ॥ ২১

আনন্দগিরিটীকা। তত্তদেবতাপ্রসাদাৎ কামিনামপি সর্বেশরে সর্বাদ্বকে বাস্থদেবে ক্রমেণ ভক্তিভবিষ্যতীত্যাশস্ক্যাহ—তেমাঞ্চিত। স্বভাবতো
ক্রমান্তরীরসংস্কারবশাদিত্যর্থ:। ভগবিহিতরা স্থিররা প্রন্ধা সংস্কারাধীনরা
দেবতাবিশেষমারাধরতোহপি ভগবদক্প্রহাদেব ফলপ্রাপ্তিরিত্যাহ—যো যোযামিতি॥২১

অনুবাদ। সেই সকল কামিগণের মধ্যে যে যে কামী শ্রদ্ধায়ক্ত ও ভক্ত হইরা যে যে দেবতাবিগ্রহকে পূলা করিতে ইচ্ছা করে, সেই সেই কামীর সেই শ্রদ্ধাকে আমিই "অচলা" স্থিরা করিরা থাকি (অর্থাৎ) আমি তত্তদ্ দেবতার প্রতি তাহার সেই শ্রদ্ধার স্থিরত্ব সম্পাদন করিরা থাকি; যে শ্রদ্ধার বশে স্বভাবতঃ পূর্বক্রেমে সে যে দেবতার পূজা করিতে অভিলাষী হয় [সেই দেবতার প্রতি তাহার সেই শ্রদ্ধারই স্থিরতা বিধান করিয়া থাকি] ॥ ২১

় স তয়া শ্ৰন্ধয়া যুক্তস্তস্তা রাধনমীহতে। লভতে চ ততঃ কামান্ ময়ৈব বিহিতান্ হি তান্॥ ২২

আনুষ্য়। তয়া শ্রদ্ধা যুক্ত: স তভা রাধনম্ ঈহতে ততঃ মরৈব বিহিতান্ তান্কামান্ (ঈপিত-পদার্থান্) লভতে হি॥ ২২

অনুবাদ। সেই শ্রনাযুক্ত হইরা সেই ভক্ত সেই দেবতারই আরাধন করিরা থাকে এবং সেই দেবতার নিকট হইতে সেই সকল কাম লাভ করিরা থাকে, বাস্তবিক কিন্তু আমিই তাহার ঐ সকল কামের বিধাতা॥ ২২

ভাষ্য। স তরেতি। স তরা মদ্বিহিতরা শ্রন্ধরা যুক্তঃ সন্ তস্তা দেবতাতবা আরাধনম্ দীহতে চেষ্টতে, লভতে চ ততন্তসা আরাধিতারা দেবতাতবা কারানীপিতান্ মরৈব প্রমেশ্বরেণ স্ব্রিজ্ঞন কর্মফলবিভাগঞ্জতরা বিহিতান্ নির্ম্মিতান্ তান্ হি যন্নাৎ তে ভগবতা বিহিতাঃ কার্মান্তনাৎ তানবশ্রং লভতে ইত্যর্থঃ। হিতান্ ইতি পদচ্ছেদে হিতদং:কা্মানামুপ্চরিতং ক্রাং ন হি কা্মাঃ হিতাঃ ক্সচিৎ ! ২২

আনন্দ্রিটীক। ঈহতে নির্বপ্তরতীত্যর্থঃ আরাধিতদেবভাগ্রসাদাৎ ফলপ্রাপ্তে কিনীখরেণেত্যাশহ্য ভক্ত সর্বজ্ঞে সর্ববিদ্ধানিত গাভিজ্ঞত তত্ত-ক্ষেত্রতাবিঠাতৃত্বাৎ তত্তৈব ফলদাভৃত্বমিত্যাহ—সূর্ববিদ্ধানেতি। "একো বহুনাং

বো বিদধাতি কামান্" ইত্যাদিশ্রতিমাশ্রিত্য হি তানিতি পদৰন্নং ব্যাচষ্টে— যুস্মা-দিতি। হিতানিত্যেকং পদমিতি পক্ষং প্রত্যাহ—হিতানিতি। মুখ্যমসম্ভবে কিমিত্যৌপচারিকত্বমিত্যাশব্যাহ—ন হীতি॥ ২২

অনুবাদ। স তয় ইত্যাদি স্লোকের অর্থ। সেই ব্যক্তি মদ্বিহিত শ্রদ্ধালাভ করিয়া সেই দেবতার "রাধন" আরাধনা করিয়া থাকে ও সেই আরাধিত দেবতার নিকট হইতে তাহার ঈস্পিত ফল লাভ করিয়া থাকে। আমি প্রমেশ্বর সর্বন্ধে; স্তরাং সকল প্রকার কর্মফলের বিভাগ আমিই জানি; এই কারণ প্রকৃত পক্ষে ঐ সকল ফলের নির্মাণকর্তাও আমিই। "বে কারণ সেই সকল কাম ভগবান্ই দিয়া থাকেন, এই কারণ সেই ব্যক্তি অবশ্রুই সেই কামসকলকে লাভ করিয়া থাকে।" (হি শব্দের দ্বারা এই প্রকার অর্থ স্থোতিত হইতেছে) "হিতান্" এই প্রকার পদচ্ছেদ করিলে কামসকলের হিতত্ব [এই স্থলে] উপচারিক বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে। প্রকৃতপক্ষে কামসমূহ ত কাহারও হিতকর হইতে পারে না॥ ২২

অন্তবত্তু ফলং তেষাং তদ্ভবত্যল্পমেধসাম্। দেবান্ দেবযজো যান্তি মদ্ভক্তা যান্তি মামপি॥ ২৩

অনুয়। তেষাম্ অরমেধসাং তৎ ফলম্ অস্তবং তু ভবতি; হি (ৰশ্নাৎ) দেবৰজঃ দেবান্ বাস্তি, মন্তকা অপি মাং বাস্তি॥ ২৩

অনুবাদ। সেই অরবুদ্ধি (ভিরদেবতাধাণী) দিগের ফলও বিনশ্বর হয়; কারণ, ভিরদেবতার উপাসকগণ সেই সেই দেবলোক প্রাপ্ত হয়; কিন্তু আমার ভক্তরণ আমাকেই পাইয়া থাকে। ২৩

ভাষ্য। বন্ধাদন্তবৎসাধনব্যাপারা অবিবেকিনঃ কামিনশ্চ তে অতঃ—
অন্তবদ্বিনাশি তু ফলং ডেবাং:তদ্ ভবতি অন্তমেধসাশ্ অন্তপ্রজ্ঞানান্; দেবান্
দেববজে: যান্তি -দেবান্ বজন্তীতি দেববজ্ঞানে দেবান্ যান্তি। মদ্ভক্তা বান্তি
মামপি। এবং সমানেহপ্যান্থাসে মামেব ন প্রপদ্মন্তহনন্তফলায় অহো পল্
কণ্টং বর্ত্তন্তে ইত্যন্ত্রোশং দর্শন্তি ভগবান্॥ ২৩

আনন্দগিরিটীকা। প্রেক্ষাপূর্বকারিণ কামানাং ইতদাভাবে হেডু-মাহ—যুস্মাদিতি। বিঞ্চ বে কামিনস্তেন বিবেকিনন্ততশ্চাবিবেকপূর্বকদাং কামানাং কুতো হিডছাশকেত্যাহ—অবিবেকিন ইতি। কামানামনন্তফলছেন হিতত্বমাশস্থাহ—অন্ত ইতি। তেষামবিবেকপূর্ব্বক্ষমতঃশন্ধার্থঃ। তুশব্দোহব - ধারণার্থঃ। কামফলত বিনাশিছে কিমিতি কামনিষ্ঠছং জস্তুনামিত্যাশস্থ্য প্রজ্ঞা-মান্যাদিত্যাহ—অন্ত্রেতি। কিং তর্হি সাধনমনস্তফলারেত্যাশস্থা ভগবন্ধকি-রিত্যাহ—মন্ত্রকা ইতি। অক্ষরার্থমুকা শ্লোকত তাৎপর্য্যার্থমাহ—এবমিতি। দেবতাপ্রাপ্তেটি চেতি শেষঃ। মামেবেত্যাদৌ দেবতাবিশেষং প্রপত্যন্তে অন্তবং কলারেতি বক্ষব্যম্। উক্লবৈপরীত্যে কারণমবিবেকাতিরিক্রং নাজীত্যভিপ্রেত্যাহ —অহে। খল্লিতি॥ ২০

অনুবাদ। যে কারণ তাহাদের সাধনামুদ্ধান অনস্ত-ফলদায়ক নহে ও তাহারা অবিবেকী ও কামপরবশ, এই কারণে সেই "অরমেধাঃ," অরব্দি কামিগণের কর্মফল "অন্তবং" বিনাশীই হইয়া থাকে। যাহারা দেববন্ধ (দেববান্ধা), তাহারা দেবগণকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে, যাহারা দেবগণের প্রীতিকে উদ্দেশ্য করিয়া যাগ করে, তাহারাই "দেববন্ধ্ব"। আমার ভক্তগণ আমাকে প্রাপ্ত হয়। এই প্রকার [উভয় দিকেই] আয়াস তুল্য হইলেও অনস্তম্পলের হেতৃস্বরূপ যে আমি, সেই আমাকেই তাহারা ভন্ধনা করে না। অহো অবিবেকিগণ কিরূপ ক্রেশে জীবনযাপন করে! এইরূপে ভগবান্ তাহাদের প্রতি অমুকম্পা দেখাইতেছেন॥ ২৩

অব্যক্তং ব্যক্তিমাপন্নং মন্যন্তে মামবুদ্ধয়ঃ। পরং ভাবমজানন্তো মমাব্যয়মসুত্তমম্॥ ২৪

অনুষয়। মম অব্যরম্ অন্ত্রমং (নিরতিশরং) পরং ভাবমদানস্তঃ অবৃদ্ধরঃ (অবিবেকিনঃ) মাম্ অব্যক্তং (অপ্রকাশং) ব্যক্তিমাপরং (প্রকাশং গতং) মন্ত্রস্তে॥ ২৪

অনুবাদ। অবিনাশী নিরতিশয় ও প্রকৃষ্ট মদীয় সন্তাকে বুঝিতে না পারিয়া অবিবেকিগণ বিবেচনা করিয়া থাকে যে, আমি সাধারণ ভৃতসমূহের ফ্লায় জন্মের পূর্ব্বে অপ্রকাশ ছিলাম, পরে প্রকাশ পাইয়াছি॥ ২৪

ভাষ্য ৷ কিং নিমিত্তং মামেব ন প্রপশ্বতে ইত্যুচ্যতে — অব্যক্তম্ অপ্রকাশং, ব্যক্তিম্ আপল্লং প্রকাশং গতমিদানীং মন্ততে মাং নিত্যদিদ্দমীশরমণি সম্ভম্ অবৃদ্ধরোহবিবেকিনঃ পরং ভাবং পরমাত্মত্তরপম্ অকানস্তোহবিবেকিনঃ মন অব্যরং ব্যারহিতিম্ অন্তেমং নিরতিশরং মদীয়ং ভাবম্ অকানস্তঃ মন্ততেইত্যর্পঃ ॥ ২৪

আনন্দ গিরিটীক।। ভগবভজনভোত্তমফলত্বেহপি প্রাণিনাং প্রারেপ তর্নিষ্ঠত্বাভাবে প্রশ্নপূর্বকং নিমিন্তং নিবেদয়ভি—কিংনিমিন্তমিত্যাদিনা। অপ্রকাশং শরীরগ্রহণাৎ পূর্বমিতি শেষঃ। ইদানীং দীলাবিগ্রহণরিগ্রহাবস্থারামিত্যর্বঃ। প্রকাশস্ত তর্হি কাদাচিৎকত্বং ভগবতি প্রাপ্তং নেত্যাহ—
নিত্যেতি। কথং তর্হি ভগবস্তমাগন্তকপ্রকাশং মন্তত্তে তত্তাবৃদ্ধয়ইত্যুত্তরং তদ্বিরণোতি – পর্মিতি। পরমন্ত্রমমিতি বিশেষপদরং সোপাধিকনিক্ষপাধিকভাবার্থম্॥ ২৪

অনুবাদ। কি কারণে তাহারা আমাকেই আশ্রয় করে না, তাহাই বলা হইতেছে। আমি নিত্যসিদ্ধ ঈশ্বর হইলেও আমাকে সাধারণ প্রাণীর স্থায় প্রথমে অব্যক্ত অপ্রকাশ [থাকিয়া] পরে এইক্ষণে ব্যক্ত প্রকাশপ্রাপ্ত বিদিয়া ভাহারা বিবেচনা করে। 'পর' পরমাদ্মান্তরূপ স্বভাব না ব্রিয়া অবিবেকিগণ, "অব্যয়" ব্যর্রহিত "অমৃত্তম" নিরতিশয় বে মদীয় ভাব, তাহা না ব্রিয়াই এই প্রকার বিবেচনা করিয়া থাকে। ইহাই অর্থ॥ ২৪

> নাহং প্রকাশঃ দর্ববস্থ যোগমায়াসমার্তঃ। মূঢ়োহয়ং নাভিজানাতি লোকো মামজমব্যয়ম্॥ ২৫

আনুর্। বোগমারাসমাবৃত: অহং সর্বস্থ ন প্রকাশ:; মৃঢ়: (অজ্ঞ:)
[অরং] লোক: অজম্ অব্যরং (জন্ম্তুস্থীনং) মাং ন অভিজানাতি ॥ ২৫

অনুবাদ। আমি বোগমারাসমারত, এইজন্ত সকলের নিকট প্রকাশমান নহি। মৃঢ় জীব বৃঝিতে পারে না যে, আমি জন্ম ও মৃত্যু এই উভয়বিরহিত॥২৫

ভাষ্য। ভদীরমজ্ঞানং কিংনিমিন্তমিত্যুচ্যতে—নাহং প্রকাশঃ সর্বস্থ লোকস্ত কেবাঞ্চিদেব মদ্ভক্তানাং প্রকাশোহহমিত্যভিপ্রারঃ। বোগমারাসমা-রতঃ বোগো গুণানাং যুক্তিঃ ঘটনং সৈব মায়া বোগমায়া তরা বোগমাররা সমার্তঃ সংজ্ঞ্জ ইত্যর্থঃ। অতএব মুঢ়ো লোকোহরং নাভিজানাতি মামজ-মব্যরম্॥ ২৫

আনন্দ গিরিটীকা। অবিবেকরপমজ্ঞানং ভগব্দরিষ্ঠা-প্রতিবন্ধকমূকং তশ্মি-মিপি নিমিত্তং প্রশ্নপ্রকমনাম্বজ্ঞানম্পক্তমতি—তদীয়মজ্ঞানমিত্যাদিনা। বিভিন্ত পর্মারেরিত্যনৌপাধিকরপস্থাপ্রতিপত্তী কারণমূক্তম্ অত্ত গোপাধিক-স্থাপীতি বিশেষং গৃহীদা ব্যাচঠে—নাছমিতি। তর্হি ভগবছক্তিরন্ত্পমূক্তেত্যা- শন্ধাহ—ক্ষোঞ্চিদিতি। সর্বাস্থ লোকস্থ ন প্রকাশোহহমিত্যত্ত হেতৃমাহ— যোগেতি। অনাম্বনির্বাচ্যাজ্ঞানাচ্ছন্নখাদেব মহিবরে লোকস্থ মৌঢ্যং ভড্ডদ মদীরস্বন্ধপবিবেকাভাবান্মন্নির্ভদ্যাহিত্যমিত্যাহ— অত এবেতি ॥ ২৫

অকুবাদ। আমাকে লোক কেন বুঝিতে পারে না, তাহাই বলা ইইতৈছে—আমি সকল লোকের [সমকে] প্রকাশ নহি, আমার কতকশুলি ডক্তের সমক্ষেই আমি প্রকাশ হই, ইহাই অভিপ্রার। [কারণ] আমি যোগ-মারা-সমাবৃত। সন্থ রঞ্জঃ ও তমঃ এই গুণত্ররের যোগই এই হলে বোগ শব্দের অর্থ অর্থাৎ গুণত্ররের ঘটনাই বোগ। সেই বোগই নায়া "বোগমায়া" তাহার বারা "সমাবৃত" সংচ্ছের ইহাই অর্থ। এই কারণেই মৃঢ়লোক জন্ধ ও অব্যর বলিরা আমাকে জানিতে পারে না॥ ২৫

> বেদাহং সমতীতানি বর্ত্তমানানি চার্চ্জ্ন। ভবিষ্যাণি চ ভূতানি মাং তু বেদ ন কশ্চন॥ ২৬

আহ্বয়। হে অর্জুন, অহং সমতীতানি, বর্ত্তমানানি, ভবিষ্যাণি চ ভূতানি বেদ; মাং তু কশ্চন ন বেদ॥ ২৬

অনুবাদ। হৈ অৰ্জুন আমি অতীত, বৰ্ত্তমান ও ভবিষ্যৎ সকল প্ৰাণীকেই আনি: আমাকে কিন্তু কেহই জানে না॥২৩

ভাষ্য। বরা বোগমায়য়া সমারতং মাং লোকো নাভিজানাতি নাসৌ বোগমায়া মদীয়া সতী মমেশ্বরস্থ মায়াবিনো জ্ঞানং প্রতিবয়্লাতি। বথা অক্তস্তাপি মায়াবিনো মায়া জ্ঞানং তদ্বং। বত এবমতঃ—অহং তু বেদ জানে সমতীতানি সমতিক্রাস্তানি ভূতানি বর্ত্তমানানি চ অর্জুন ভবিষ্যাণি চ ভূতানি বেদাহং মাং তু বেদ ন কশ্চন মন্তক্তং মচ্ছরণমেকং মুক্তা মত্তব্বেদনাভাবাদেব ন মাং ভল্লতে॥ ২৬

আনন্দগিরিটীকা। মারয়া ভগবানার্তদেৎ তন্তাপি গোকন্তের জ্ঞানপ্রতিবন্ধ: তাদিত্যাশকাহ—যুয়েতি। ন হীরং মায়া মায়াবিনো বিজ্ঞান: প্রতিবগ্গতি মায়াছাৎ গৌকিকমায়াবং। অথবা নেখরো মায়াপ্রতিবন্ধজ্ঞানো মায়াবিছাৎ গৌকিকমায়াবিবদিত্যর্থ:। ভগবতো মায়াপ্রতিবন্ধজ্ঞানছাভাবে সর্বজ্ঞদ্বনপ্রতিবন্ধং সিন্ধমিত্যাহ—যুত্ত ইতি। গোকন্ত মায়াপ্রতিবন্ধবিজ্ঞানছাদের
ভগবদাভিমুখ্যশৃত্তদমিত্যাই—মাং ত্বিতি। কালত্রয়পরিজ্ঞিয়াপরিজ্ঞিয়সমৃত্তবন্ধপরিজ্ঞানে প্রতিবন্ধো নেখরতাতীতি ভোতনার্থস্তপল; মাং ত্বিতি গোকত্ত

ভগবন্তব্ বিজ্ঞানে প্রতিবন্ধং ভোতয়তি। তর্হি তম্ভক্তির্বিফলেত্যাশস্থ্যাহ— মদ্ভক্তমিতি। তর্হি দর্ব্বোহপি সম্ভক্তিষারা যাং জ্ঞান্ততি নেত্যাহ—মৃত্তন্ত্রেতি। বিবেকবতো মন্তজ্বনং নতু বিবেকশূল্যন্ত সর্বব্যাপীত্যর্থঃ॥ ২৬

অকুবাদ। বে বোগমারা ছারা সমারত হইরা লোক আমাকে জানিতে পারে না, দেই বোগমারা আমারই অধীন। আমিই মারাবী ও ঈশর, এই কারণে সেই বোগমারা আমার জ্ঞানকে প্রতিক্ষম করিতে পারে না। বেমন কোন লোকিক মারাবার মারা তাহার জ্ঞানকে প্রতিক্ষম করে না [কিন্ত উহা দর্শকদিগের বৃদ্ধিকেই প্রতিক্ষম করে] এই কারণেই—আমি কিন্ত "সমতীত" অতিক্রান্ত, বর্ত্তমান এবং ভবিষ্য প্রাণিগণকে জানি, কিন্ত আমার ভক্তব্যতিরেকে অপর কেহই আমাকে জানে না। [স্রতরাং ইহাই স্থির হইল বে] আমার ভন্ত জানে না বিলিয়াই প্রাণিগণ আমাকে ভন্তনা করে না॥ ২৬

ইচ্ছাদ্বেষসমুখেন দ্বন্ধমোহেন ভারত। সর্ব্বভূতানি সম্মোহং সর্গে যান্তি পরন্তপ ॥২৭

আন্ময়। হে পরস্তপ ভারত! ইচ্ছা-দ্বেৰ-সমুখেন দ্বন্মাহেন সর্বভূতানি সর্গে (উৎপত্তিকালে) সম্মোহং (সংমৃত্তং) যান্তি (প্রাপ্লুবন্তি॥২৭

অনুবাদ! হে পরস্তপ ভারত! ইচ্ছা ও দ্বেষ এই উভয় হইতে সমুখিত (উৎপন্ন) স্থতঃখাদিবিষয়বিষয়ক দ্বুনোহের প্রভাবে সকল প্রাণীই স্ষ্টিকালে সম্মোহ (সম্যক্মোহ) প্রাপ্ত হয়॥ ২৭

ভাষ্য। কেন পুনর্ম গুরুবেদনপ্রতিবন্ধেন, প্রতিবদ্ধানি সপ্তি জারমানানি সর্বভ্তানি মাং ন বিদন্তি ইত্যপেকারামিদমাহ—ইচ্ছাদ্বেসম্থেন ইচ্ছা চ ', দেবশ্চ ইচ্ছাদ্বেরা তাভ্যাং সমৃত্তিগ্রতীতীচ্ছাদ্বেসম্থতেন ইচ্ছাদ্বেসম্থেন কেন ইতি বিশেষাপেকারামিদমাহ—ছন্দমোহেন ছন্দনিমিত্তো মোহং ছন্দমোহং তাবেৰ ইচ্ছাদ্বেরা শীতোক্ষবৎ পরক্ষরবিক্ষন্ধে স্থতঃখতদ্বেত্ত্বিব্য়ে বথাকালং সর্ব-ভ্তৈঃ সংবধ্যমানো ছন্দশবেদনাভিধীরতে। তত্র বদা ইচ্ছাদ্বেরা স্থতঃখ- ক্তিছের সংবধ্যমানো ছন্দশবেদনাভিধীরতে। তত্র বদা ইচ্ছাদ্বেরা স্থতঃখ- ক্তিছের পরমার্থান্মতেন ভববন্ধজানোৎপত্তিপ্রতিবন্ধকারণং মোহং জনরতঃ। ন ইিইচ্ছাদ্বেদ্বেনশীক্তিচিন্তক্ত বথাভ্তার্থবিষয়জ্ঞানমুৎপদ্ধতে বহিরপি কিমু বক্তব্যং, তাভ্যামার্বিইবুদ্ধেঃ সংমৃত্ত্ব প্রত্যগান্ধানি বছ্প্রতিবন্ধে জ্ঞানং নোৎপদ্ধতে ইতি। অতত্ত্বন ইচ্ছাদ্বেসমূথেন ছন্দমোহেন ভারত ভরতাব্যক্ত সর্বভ্তানি সংমোহিন

তানি সন্তি সংমোহং সংস্চৃতাং সর্গে জন্মনি উৎপত্তিকালে ইতি এতদ্ বাত্তি গচ্ছত্তি হে পরস্তপ। মোহবশান্তেব সর্বভূতানি জায়মানানি জায়ন্তে ইত্যভি-প্রায়ঃ। যতএবমতন্তেন দ্বন্মোহেন প্রতিবদ্ধপ্রজ্ঞানানি সর্বভূতানি সংমোহি-তানি মামাত্মভূতং ন জানন্তি অতএবাত্মভাবেন মাং ন ভজন্তে ॥ ২৭

আনন্দগিরিটীকা। ভগবত্তব্বিজ্ঞানপ্রতিবন্ধকং মূলাজ্ঞানাতিরেকং প্রশ্নদারেণোদাহরতি—কেনেত্যাদিনা। পুনঃ শব্দাৎ প্রতিবন্ধকাস্তরবিবক্ষা গম্যতে। অপরোক্ষমবাস্তরপ্রতিবন্ধকমিদমা গৃহতে। বিশেষমাকাজ্ঞাপূর্বকং নিক্ষিণতি—কেনেতি বিশেষাপেক্ষায়ামিতি। ছল্খকেন গৃ**হী**তরোরপি ইচ্ছাৰেবয়োগ্ৰহণং দদ্দশস্থাৰ্থোপলক্ষণাৰ্থম ইত্যভিপ্ৰেত্যাহ—তাবেবেতি। তরোরপর্য্যাম্বনেক্ত্রামুপপত্তিং গৃহীত্বা বিশিনষ্টি—যথাকালমিতি। নচ তয়োর-নধিকরণং কিঞ্চিদপি ভূতং সংসারমগুলে সম্ভবতীত্যাহ—সর্ব্বভূতৈরিতি। তথাপি কথং তরোমে হিহেতুত্বমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ত্ত্ত্ত্ত্তি। তয়োরাশ্রম: সপ্তম্যর্থ:। উক্তমেবার্থং কৈমৃতিকস্তায়েন প্রপঞ্চয়তি—ন হীতি। পূর্বভাগামুবাদ-পূর্বকমুব্ররভাগেন ফলিতমাহ—অত ইতি ৷ প্রত্যগাত্মস্তহঙ্কারাদিপ্রতিবন্ধ-প্রভাবতো জ্ঞানোৎপত্তেরসম্ভবোহত:শব্দার্থ: । কুলপ্রস্ব্যাভিমানেন স্বরূপশক্ত্যা চ যুক্তস্তৈব যথোক্তপ্রতিবন্ধপ্রতিবিধানসামর্থ্যমিতিছোতনার্থং ভারত পরস্তপেতি সংখাধনদ্বম্। তৰ্জ্ঞান প্ৰতিবন্ধে প্ৰকৃতমবাস্তৱকারণমূপসংহরতি—মোহেতি। ব্যারমান-ভূতানাং মোহপরতন্ত্রত্বে ফলিতমাহ—যুক্তইতি। ভগবত্তব্ববেদনাভাবে তিরিষ্ঠম্ববৈধুর্ব্যং ফলতি ইত্যাহ—অতএবেতি ॥২৭

আনুবাদ। আমার তবজানের প্রতিবন্ধকারণ বস্তুটি কি, বাহা দারা প্রতিবন্ধ হইরা প্রাণিগণ স্টেদশাতে আমাকে জানিতে পারে না? এই প্রকার আশহা হইলে তাহার উত্তর দেওরা বাইতেছে, "ইচ্ছাদ্বেবসমূখ" ইচ্ছা ও বেব (এই তাৎপর্ব্যে) ইচ্ছাদ্বেব (এই শন্ধটি ব্যবহৃত)। সেই ইচ্ছাদ্বেব হইতে বাহা সমূখিত হয় তাহারই নাম "ইচ্ছাদ্বেব-সমূখ"। এই বিশেষণের দারা কে বিশেষত হইতেছে? [তাহার উত্তর] "হল্বমোহ" হল্বনিমিত্ত মোহই হল্বমোহ (শীত, উষ্ণ, অথ, হঃথ প্রভৃতি পরস্পরবিক্ষম পদার্থকে "হল্ব" বলা বায়) সেই ইচ্ছা ও বেব, শীত এবং উক্ষের স্থায় পরস্পরবিক্ষম-স্বভাব, [বিলয়া লোকে প্রসিদ্ধ আহে] স্থাধ ও স্থাবের সাধন ইচ্ছার বিষয়, হঃথ ও হঃবের সাধন বেবের বিষয়; এই ইচ্ছা ও বেব নির্দিষ্টকালে সকল প্রাণীর সহিত মিলিত হইয়া হল্ব এই শন্ধটির দারা অভিহিত হইয়া থাকে। তাহার পর বে সময় সেই ইচ্ছা ও বেষ, মুখ হঃখ হার

ও তাহার হেত্র প্রাপ্তিতে আত্মলাভ করে, সেই সময় ঐ ইচ্ছা ও দেব সকল প্রাণীর প্রজ্ঞাকে নিজের বনীভূত করিয়া, পরমার্থতন্ধ ব্রন্ধের জ্ঞান যাহাতে না হয়, এইরূপ প্রতিবন্ধের কারণ মোহকে উৎপন্ন করিয়া দেয়। বে ইচ্ছা ও দেবকে বনীভূত করিতে পারে না, তাহার বাহ্যবন্ধ বিষয়েও বথার্থ জ্ঞান হইতে পারে না। সেই ইচ্ছাদ্বেরের উদয়ে কলুবিতচেতা বিমৃত্ ব্যক্তির বহু ব্যাঘাতযুক্ত পরমাত্মজ্ঞান বে একবারে হইতেই পারে না, ইহা বিশেষ করিয়া বলাই নিশ্রেরাজন। হে ভারত, এই কারণ সেই ইচ্ছাদ্বেসমুখ দ্বেমাহের বন্দে সকল প্রাণীই সংমোহিত হইয়া আছে এবং উৎপত্তিকালে তাহাদের মোহ সেই দ্বেমাহের বশে আরও ঘনীভূত হয়; মোহবশীভূত সকল জীবই উৎপত্তিকালে সংমৃত্ হইয়া জনিয়া থাকে, ইহাই অভিপ্রায়। বে কারণে এইরূপ হয়় থাকে এবং সেইজ্লুই তাহারা আত্মভাবে আমাকে ভজনা করিতে পারে না ॥২৭

যেষাং ত্বন্তগতং পাপং জনানাং পুণ্যকর্ম্মণাম্। তে দ্বন্দ্মোহনির্ম্মুক্তা ভদ্ধন্তে মাং দৃঢ়ব্রতাঃ ॥২৮

জ্মনুয়। বেষাং পুণ্যকর্মণাং জনানাং তু পাপম্ অন্তগতং তে দৃঢ়ব্রতাঃ দক্ষোহনিমুক্তাঃ সন্তঃ মাং ভঙ্কন্তে॥ ২৮

অনুবাদ। বে সকল পবিত্রকর্মা ব্যক্তির পাপ বিনষ্ট হয়, সেই সকল দৃত্বত (মহাত্মারা) দৃদ্দমোহবিনিমুক্তি হইয়া আমাকে ভজনা করেন॥ ২৮

ভাষ্য ৷ কে পুনরনেন হল্দমাহেন নির্মুক্তা: সম্ভব্বাং বিদিত্বা বথাশাস্ত্রমাত্মভাবেন ভব্বস্তে ইত্যপেক্ষিতমর্থং দর্শয়িতুম্চাতে ৷ বেষাং তু পুনরস্তগতং
সমাপ্তপ্রায়ং ক্ষীণং পাপং জনানাং পুণ্যকর্মগাং পুণ্যং কর্ম বেষাং সন্তভ্জিকারণং
বিশ্বতে তে পুণ্যকর্মাণস্তেষাং পুণ্যকর্মগাম, তে হল্দমোহনির্মুক্তা: বথোক্তেন
হল্দমোহেন নির্মুক্তা: ভব্বস্তে মাং প্রমাত্মানং দৃচ্ত্রতা: এবমেব প্রমার্থতক্ত্বং
নাস্তথা ইত্যেবং নিশ্চিতবিজ্ঞানা দৃচ্ত্রতা ইত্যুচ্যস্তে॥ ২৮

আনন্দ্রিট্রিক। । বদি সর্বাণি ভ্তানি জন্মপ্রতিপ্তমানানি সংস্চানি সন্তি ভগবত্তবপরিজ্ঞানশ্রানি তগবত্তজন-স্চামানমধিকার্য্যভাবাদনর্থকমাপজেতেতি শহুতে—কে পুনরিতি। অনেকের্ জন্মস্থ স্কৃতবশাদপাকত ছরিতানাং ছন্দ্রপ্রস্কুমোহবিরহিশাং বন্ধচর্য্যাদিনিয়ম-বভাং ভগবত্তজনাধিকারিষার শাস্ত্রবিরোধাহন্তীতি পরিহরতি—উচ্যত ইতি।

তুশন্ধভাত্যমর্থমাহ—পুনরিতি। উজার্থ মাত্রসিদ্ধার্থং সমাপ্তপ্রারমিত্যক্তং প্রক্রণে দর্শনিত্ব বিশিন্তি—স্ত্রেতি। উভন্নবিধভদ্দের দিনিষ্টিলেমাহনিবৃত্তিফলমাহ—তে দ্বন্দ্বেতি। মোহনিবৃত্তের্ভগবিষ্টাপর্ব্যভজন্ত ইতি। তেবাং নানাপরিগ্রহবতাং ভগনত্ত দ্বনপ্রতিহিতিমাশক্ষাহ—দৃঢ়েতি॥ ২৮

অমুবাদ। তাহারা কে যাহারা এই হল্দোহ হইতে নিশু জ হইরা তোমাকে বর্ণাশাস্ত্র জানিয়া আত্মভাবে ভজনা করে? এই অপেক্ষিত বিবরের উত্তর দেওরা যাইতেছে বে, বে সকল ব্যক্তির পাপ "অস্তগত" সমাপ্তপ্রায় (অর্থাৎ) কীণ হইয়াছে [তাহারা কেমন] "পূণ্যকর্মা" পবিত্র (অর্থাৎ) বিশুদ্ধ হইয়াছে চিন্তগুদ্ধিকারণ কর্ম যাহাদের, তাহারাই "পূণ্যকর্মা," সেই সকল পূণ্যকর্মকারী ব্যক্তিগণ যথোক্ত হল্দমোহ হইতে নিমুক্ত হইয়া পারমাত্ম-স্বরূপ আমাকে আত্মতাবে ভজনা করে (তাহাদের কি প্রকার হইয়া থাকে?) "দূত্রত" এই আত্মাই পরমার্থতির, ইহার কোন প্রকারে অক্সথা হইতে পারে না, এই প্রকার নিশ্চয় জ্ঞান বাহাদের আছে, তাহারাই দূত্রত বলিয়া উক্ত হয়॥ ২৮

জরামরণমোক্ষায় মামাশ্রিত্য যতন্তি যে। তে ব্রহ্ম তদ্বিত্য: কৃৎস্নমধ্যাত্মং কর্ম্ম চাখিলম্॥ ২৯

অনুষ্য । মান্ আশ্রিত্য যে জরানরণমোক্ষায় বতন্তি (যতন্তে) তে তৎ-কুংকুন্ অধ্যাত্ম অধিলং ত্রদ্ধ অধিলং কর্ম চ বিহঃ॥ ২>

আমুবাদ। আমাকে আশ্রয় করিয়া বাহারা জরা ও মরণ হইতে নিয়তি লাভ করিবার জন্ম বত্ন করে, তাহারা সেই প্রত্যগাত্মন্থিত অর্থণ্ড প্রক্ষ ও সকল প্রকার কর্ম্মের অরপ জানিতে পারে॥ ২১

ভাষ্য। তে কিমর্থং ভক্তস্কে ইত্যুচ্যতে। জরামরণনোক্ষার জরামরণ-নোকার্থং মাং পরনেশ্বরমাশ্রিত্য মৎসমাহিত্চিত্তাঃ সস্তো হতন্তি প্রযতন্তে যে তে বন্ধু পারং তবিহঃ ক্রংলং সমস্তম্ অধ্যাত্মং প্রত্যুগাত্মবিবরং বন্ধ তবিহঃ কর্ম চ অধিলং সমস্তং বিহঃ ॥,২৯

আনন্দণিরিটীকা। যথোজানামধিকারিণাং ভগবন্তজনফলং প্রশ্নধার।
দর্শরভিত তি কিমর্থক্ষিতি। জরামরণাদিলকণো বোবদ্ধভিবিশ্বোর্থং ভগবত্তজনমিতার্থঃ। সম্প্রতি সপ্তপক্ত সপ্রপঞ্চত মধ্যমান্তগ্রহার্থং ধ্যেরছমাহ—মামাশ্রিত্যৈক্তি। জরাদিসংসারনিবৃত্ত্যর্থং নিশুণং নিম্প্রপঞ্চং মাসুক্রমাধিকারিণো

জানত্তীত্যুক্তং "মামেব বে প্রপশ্বতে" ইত্যাদাবিত্যাহ—জ্বৈতি। মধ্যমানধিকারিণঃ প্রত্যাহ—মামিতি। পরমেশ্বরাশ্রমণং নাম বিষয়বিমুধছেন ভগবদেক-নিষ্ঠমিত্যাহ—ম্পুসমাহিতেতি। প্রযতনং ভগবদ্ধিগাসিদ্ধ্যথং বহিরদাণাং যজ্ঞাদীনামন্তরকাণাঞ্চ শ্রবণাদীনামন্ত্র্চানম্। প্রাপ্তক্তং জগত্পাদানং পরং ব্রহ্মকথং ব্রহ্মবিত্রিত্যপেক্ষারাং সমস্তাধ্যাত্মবস্তবেন সকলকর্মছেন চ তদ্বিত্রিত্যাহ—কৃৎস্মিতি॥২>

আমুবাদ। জরা ও মরণ হইতে মোক পাইনার জন্ত প্রমেশ্বরকে (আর্থাৎ)
মানাকে আশ্রম করিয়া (অর্থাৎ) আনাতেই চিত্ত সমাধানপূর্বকি বাঁহারা মৃত্র
করিয়া থাকেন, তাঁহারা দেই সকল ভূতের উণাদান যে প্রব্রহ্ম তাঁহাকে, অধ্যাত্ম
(মর্থাৎ) প্রত্যগান্মভাবে অবস্থিত যে বস্তু তাঁহাকে এবং নিথিল কর্মস্বরূপকেও
জানিতে সমর্থ হন ॥ ২৯

সাধিস্থৃতাধিদৈবং মাং সাধিযজ্ঞং চ যে বিছঃ। প্রয়াণকালেহপি চ মাং তে বিছুর্যুক্তচেতসঃ॥ ৩০

আনুয়। সাধিভ্তাধিদৈবং সাধিযজ্ঞং চমাং যে বিহঃ, তে যুক্তচেভসঃ প্রয়াণকালেহপি চমাং বিহঃ॥ ১৯

অনুবাদ। অধিভূত, অধিদৈব এবং অধিষজ্ঞের সহিত আমার স্বরূপ বাঁহারা (শাস্ত্রামুদারে) জানেন, তাঁহারাই প্রয়াণকালে সমাহিত-ফদরে আমার প্রকৃত স্বরূপ অনুভব করিতে পারেন॥ ৩•

ভাষ্য। সাধীতি। সাধিভ্তাধিদৈবং অধিভ্তং চ অধিদৈবং চ অধিভ্তাধিদৈবং সহাধিভ্তাধিদৈবেন সাধিভ্তাধিদৈবং চ মাং যে বিহঃ, সাধিবজ্ঞং চ সহ অধিবজ্ঞেন সাধিবজ্ঞং যে বিহঃ, প্রস্নাণকালেহপি চ নরণকালেহপি চ মাং তে বিহঃ যুক্তচেতসঃ সমাহিতচিতা ইতি॥ ৩০

আননদণিরিটীকা। ন কেবলং ভগবলিষ্ঠানাং সর্বাধ্যাত্মককশ্মান্মকবন্ধবিশ্বনেব কিন্তুধিভূতাদিসহিতং তন্তেদিন্তমপি সিধ্যতীত্যাহ—সাধিভূতেতি।
মধ্যাত্মং কশ্মীধিভূতমধিদৈবমধিযজ্ঞানেতি পঞ্চকমেতদুদ্ধ যে বিহুত্তেবাং
বথোকজানবতাং সমাহিতচেতসামাপদবস্থায়ামপি ভগবত্তবজ্ঞানমপ্রতিহতং
ভিষ্ঠতীত্যাহ—প্রয়াণেতি। অপিচেতি নিপাতাভ্যাং তক্সাবস্থায়াং করণগ্রামন্ত ব্যগ্রত্যা জ্ঞানাসন্তবেহপি সমাহিতচিত্তানামুক্তজানবতাং ভগবত্তবজ্ঞানমবন্ধভামিতি ভোত্যতে। তদনেন সপ্তমেনোত্তমমধিকারিণং প্রতি জ্লেমং

নিরপরতা তদর্থমেব সর্বাত্মকতাদিকমুপদিশতা প্রকৃতিবরবারেণ সর্বাত্মবাদিতি
চ বদতা তৎপদবাচাৎ তল্লক্যকোপদিশুম্॥ ৩০

অনুবাদ। সাধিভূত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ,—"সাধিভূতাধিদৈব" অবিভূত ও অধিদৈব (এই অর্থ) অধিভূতাধিদৈব (এই শক্টি ব্যবহৃত হইয়াছে), অধিভূতাধিদিব (এই শক্টি ব্যবহৃত হইয়াছে), অধিভূতাধিদিবের সহিত বিভ্যমান (এই অর্থে) সাধিভূতাধিদৈব (এই শক্টি ব্যবহৃত) এবং "সাধিষ্ড্র" * অর্থাৎ) অধিষ্ত্রের সহিত বিভ্যমান ; (এইতাবে) আমাকে বাহারা জানিতে পারিয়াছেন, তাঁহারা প্ররাণকালেও আমাকে প্রত্যক্ষ ক্রিতে সমর্থ হন॥ ৩০

ইতি সপ্তমোহধ্যায়: সমাপ্ত:।

ঋষিভূত অধিদৈব এবং অধিষক্ত এই তিনটি শব্দের প্রকৃত বিশদ অর্থ পরে বিবৃত
হইরাছে।

অথ অষ্ট্ৰমোহধ্যায়ঃ

-:*:--

অৰ্জুন উবাচ।

কিন্তন্ত্র স্মা কিমধ্যাত্মং কিং কর্ম পুরুষোত্তম।
অধিভূতঞ্চ কিং প্রোক্তমধিদৈবং কিমুচ্যতে ॥ ১
অধিযক্তঃ কথং কোহত্র দেহেহিস্মিন্ মধুসূদন।
প্রশ্নাণকালে চ কথং জ্যোহিস নিয়তাত্মভিঃ॥ ২

শ্বর । অর্জুন উবাচ — হে পুরুষোত্তম ! কিং তন্ত্র সা ? কিম্ অধ্যাত্মম্ ? কিং কর্মা ? কিং চ মধিভূতং প্রোক্তং ? কিং [বা] অধিনৈবম্ উচ্যতে ? হে মধুস্বন ! অত্ত দেহে কঃ অধিষজ্ঞঃ ? কথং বা [স চিন্তনীয়ঃ ?], প্রাণকালে চ [মং] নিয়তাম্বভিঃ কথং জ্ঞেয়ঃ অসি ?॥ >—- ং

অনুবাদ। অর্জুন কহিলেন—হে প্রবোত্তম সেই ব্রেশ্বর স্বরূপ কি ? কাহাকে অধ্যাত্ম করা যার? কর্ম কি ? কাহাকেই বা অধিভূত বলা হর ? অধিদৈবই বা কাহাকে বলা যার ? কাহাকে অধিযক্ত বলা যার ? সেই অধিযক্তকে কি প্রকারে ভাবিতে হইবে ? হে মধুস্থদন ! প্ররাণকালে নির্তাত্মা (সাধক) গণ কেমন করিরা ভোমাকে জানিতে পারেন ? ১—২

ভাষ্য। "তে ব্ৰহ্ম ভদ্বিহঃ ক্ৰংস্থম্ ইত্যাদিনা ভগৰতা অৰ্জ্ব্নস্ত প্ৰশ্ন-বীকাম্যাপদিষ্টানি অতন্তংপ্ৰশ্লাৰ্থন্।

আনন্দ্রিনিক। । সপ্তমাধ্যারাস্তে "বেষাং ঘন্তগতং পাপম্" ইত্যাদিনা বেষাং ব্রহ্মাদীনামন্থসন্ধানমুক্তং যক্ত প্রয়াণকালে ভগবতঃ শ্বরণং দর্শিতং তদিদং জিজ্ঞাসমানঃ সন্ পৃচ্ছতীতি প্রশ্নসম্পারমবতাররতি—তে ব্রেক্সেতি। প্রশ্নবীজ্ঞানি ভিষ্করভূতানি ব্রহ্মাদীনি বস্তুনীতি যাবং। বৃভূৎদিতবিষরপ্রতিশভ্যানস্তরং ভেষাং প্রশ্নন্ধরা নির্ণার্থমিত্যাহ — অত ইতি। যহক্তং তে ব্রহ্ম ভিছিরিতি তৎ কিং সোপাধিকং নিরুপাধিকং বা ব্রহ্মশন্তোভর্ত্রাপি সম্ভবাদিতি মন্ধাহ—কিং ভিদিতি। বচ্চোক্তং কুৎসমধ্যাত্মমিতি তত্ত্বাজ্ঞানং দেহমধিকৃত্য তথ্তিমঞ্জিনে

ভিঠতীত্যধ্যাত্মশব্দেন শ্রোত্রাদিকরণগ্রামো বা প্রত্যগ্রভূতং ব্রহৈদ্ধব বা বিবক্ষিত-মিত্যাহ—কিমধ্যাত্মমিতি। "বিজ্ঞানং যজং তমুতে কর্মাণি তমুতেহপি চ" ইতি শ্রুতো কর্মণো দৈবিধ্যনির্দ্ধারণাৎ কর্ম চাধিলমিত্যত্ত কীদৃক্ কর্ম গৃহীভমিতি পৃচ্ছতি—কিমিতি। করাক্ষরাভ্যাৎ কার্য্যকারণাভ্যাম্ অতীতশু ভগবতো ন কিঞ্চিদবেম্বসন্তীতি হৃচয়তি—পুরুষোত্তমেতি। সাধিভূতাধিদৈবমিত্যত্ত অধি-ভূতশব্দেন পৃথিব্যাদিষু ভূতেষু বর্ত্তমানং কিঞ্চিদেব গৃহতে কিংবা সমস্তমেব কার্যামিতি নির্দ্ধিারয়িষয়া পৃষ্কতি—অধিভূতমিতি। অধিদৈবমিতি চ দৈবত· বিষয়মমুধ্যানং বা দৈবতেখাদিত্যমগুলাদিয় বর্ত্তমানং চৈতন্তং বা জিল্পকিতমিতি প্রশাস্তরং প্রস্তৌতি—অধিদৈবমিতি। সাধিযক্তঞ্চেত্যত্র অধিবজ্ঞশব্দেন যজ্জমধি-গতো বিজ্ঞানাত্মা বা পরদেবতা বেতি প্রশ্নান্তরং প্রকরোতি—অধিযুক্ত ইতি। স চ কথং কেন প্রকারেণ ব্রহ্মত্বেন চিন্তনীয়ঃ কিং তাদাত্ম্যেন কিংবাত্যস্তাভেদে-নেতা। হ—কথমিতি। সর্বাপাপি স কিমামিন দেহে বর্ত্তাতে ততো বহির্বা, দেহে চেৎ স কোহত্র বুদ্ধ্যাদিস্তদ্বাতিরিক্তো বেতি বিজ্ঞাসয়া ক্রতে—কোহত্তেতি। অধিবজ্ঞ: কথ: কোহত্তেতি ন প্রশ্নভেদক: কথমিতি তু প্রকারভেদবিবক্ষয়েতি खहेराम्।. य**ड**्र मगोश्चिष्ठिखानामुकः ७९ श्रद्यागकारमञ्जूष ভগবनस्मन्नानः তদ্যুক্তমুৎক্রমণদশারাং করণগ্রামবৈরগ্র্যাচ্চিত্তসমাধানামুপপত্তেরি ত্যভিপ্ৰেত্যাহ—প্ৰয়াণেতি ॥ ১—২

অকুবাদ। "তে ত্রন্ধ তদ্বিহঃ" ইত্যাদি দারা ভগবান্ অর্জুনের প্রশ্নবীজগুলি উপদেশ করিয়াছেন; অতঃপর অর্জুন প্রশার্থ কহিতেছেন॥ ১।২

গ্রীভগবান্থবাচ।

় অক্ষরং ব্রহ্ম পরমং স্বভাবোহধ্যাত্মমূচ্যতে। ভূতভাবোদ্যবকরো বিদর্গঃ কর্ম্মদংক্ষিতঃ॥ ৩

অব্যুয় । শ্রীভগবান্ উবাচ—অক্ষরং পরমং ব্রহ্ম, স্বভাব: অধ্যাস্থ্রম্ উচ্যতে ; ভূতভাবোদ্ভবকর: বিদর্গ: কম্মসংক্ষিত: ॥ ৩

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন, যাহার বিনাশ নাই, তাহাই সেই পরবন্ধ ; স্বভাবকেই অধ্যাত্ম বলা যায় ; যাহা ধারা ভূতনিচয়ের উৎপত্তি হয়, সেই বিসর্গ (অর্থাৎ দেবতাগণের প্রীতির জন্ত দ্রব্যবিসর্জন) কর্ম সংজ্ঞাধারা অভিহিত হয় ॥ ৩ ভাষ্য। এবাং প্রশ্নানাং বথাক্রমং নির্ণয়ায়—"অক্রমং" ন ক্রবতীতি পর আছা "এতন্ত বা অক্ররন্ত প্রশাসনে গার্গি" ইতি শ্রুডে:। ওঁকারন্ত চ ওঁ ইত্যেকাক্ররং রক্ষেতি পরেণ বিশেষণাদগ্রহণম্। পরমমিতি চ নিরতিশরে ব্রন্ধণি অক্ষরে উপপন্নতরং বিশেষণম্। তত্তিব পরস্ত ব্রন্ধণঃ প্রতিদেহং প্রত্যগাত্মভাবঃ স্বভাবঃ। স্বভাবোহধ্যাত্মমূচ্যতে, আত্মানং দেহম্ অধিকৃত্য প্রত্যগাত্মভারা প্রবৃত্তং পরমার্থব্রন্ধাবসানং বস্ত স্বভাবোহধ্যাত্মমূচ্যতে অধ্যাত্মশন্দেনাভিধীয়তে। ভূতভাবোদ্ধকরঃ ভূতানাং ভাবঃ ভূতভাবঃ তন্ত উদ্ভবঃ ভূতভাবোদ্ধবান্ধবঃ তং করোতীতি—ভূতভাবোদ্ধবকরঃ ভূতবন্ত্ৎপত্তিকর ইতার্থঃ। 'বিসর্গঃ' বিসর্জ্জনং দেবতোন্ধেশেন চরুপুরোডাশাদেঃ দ্রব্যক্ত পরিত্যাগঃ—স এব বিদর্গলক্ষণো যজ্ঞঃ কর্মসংক্রিতঃ কর্মশন্ধিত ইত্যেতং। এতন্মান্ধি বীজভূতাদ্ বৃষ্ট্যাদিক্রমেণ স্থাবর-জঙ্গমানি ভূতানি উদ্ভবস্তি॥ ৩

আনন্দ্রি টিকা। ব্যাখ্যাতপ্রশ্নসপ্তকশু প্রতিবচনং ভাগবতমবতারতি— এষামিতি। ক্রমেণ ক্বতানাং প্রশ্লানাং ক্রমেণেব প্রতিবচনে প্রষ্টুরভীষ্টপ্রতি-পত্তিসৌকর্যাঞ্চ সিধ্যতীতি বুধ্যমানো বিশিনষ্টি—যুখাক্রমমিতি। তত্ত্ব প্রশ্নতন্ত্রং নির্ণেতৃং ভগবদ্বচনমুদাহরতি— অক্ষরমিতি। কিং তদুক্ষেতি প্রশ্নন্ত প্রতি-বচনম্—অক্ষরং ব্রেক্ষপরমমিতি। ততাক্ষরশব্দশু নিরুপাধিকে পরিশ্বি**রাত্ম**গু বিনাশিষব্যাপ্তিমন্ত্রসম্বন্ধাৎ প্রবৃত্তিং বৃৎপাদয়তি— অক্ষর্রমিত্যাদিনা। কণং পুনরক্ষরশক্ষ যণোক্তে পরমান্ধনি বৃদ্ধপ্রয়োগমন্তরেণ বুৎপন্ত্যা প্রবৃত্তিরাশ্রীয়তে ব্যুৎপত্তেরর্থান্তরেহপি সম্ভবাদিত্যাশক্ষ্য ভাবাপৃথিব্যাদিবিষয়নিরভুশ-প্রশাসনন্ত পরস্মাদক্ষস্মিগ্রসম্ভবাৎ তথাবিধপ্রশাসনকর্ত্ত্বেন শ্রুতসক্ষরং ব্রস্কৈবেত্যাহ—এত স্থেতি। রুঢ়ির্যোগমপহরতীতি স্থায়াৎ ওঁকারে বর্ণসমুদারাত্মকরশবস্থ রুঢ়া। প্রবৃত্তিরাশ্রমারত্বসূচিতেত্যাশঙ্কাহ— ওঁ কারস্ত্রেতি। প্রতিবচনোপক্রমে প্রকান্তম্ ওকারাখ্যমক্ষরমেবোত্তরত্র বিশেষিতং ভবিষ্যতীতাশক্ষ্য পরমবিশেষণবিরোধাৎ প্রক্রম: সম্ভবতীত্যাহ—পরম্মিতি চেতি। কিমধ্যাম্মমিতি প্রস্লান্যো &রং স্বভাবোহধ্যাত্মমিত্যাদি তদ্যাচষ্টে—ত্র স্মৈবৈতি। স্বকীয়ো ভাব: মভাবঃ শ্রোতাদিকরণগ্রামঃ স চ আত্মনি দেহেহহংপ্রত্যয়বেত্যো বর্ততে ইতি অমুং প্রতিভাসং ব্যাবর্ত্ত্য স্বভাবপদং গৃহ্লাতি—স্বভাব ইতি। এবং বিপ্রহ-পরিগ্রহে স্বভাবোহধ্যাত্মমূচ্যতে ইতাস্যায়মর্থো নিপ্সন্নো ভবতীতামবাদপূর্বকং ক্ষমতি—স্বভাব ইতি। তক্তৈৰ প্রদ্যেত্যাদিনোক্তৎ ন বিশ্বর্ত্তব্যমিতি বিশিনট

—পরমার্থেতি। পরমেব হি ব্রন্ধ দেহাদৌ প্রবিশু প্রত্যগান্ধভাবমন্থভবতি তৎ কর্ট্রা তদেবামুপ্রাবিশদিতি শ্রুতেরিভার্থঃ। কিং কর্মেতি প্রশ্নভাবরমুপাদক্তে— ভূতেতি। ভূতান্তের ভাবান্তেরাম্ উদ্ভবঃ সমুৎপত্তিঃ তাং করোতীতি ব্যুৎপত্তিং দিনবংকতা বিধান্তরেশ ব্যুৎপাদরতি—ভূতানামিতি। ভাবঃ সম্ভাবঃ বস্তভাবঃ অতএব ভূতবস্তুৎপত্তিকর ইতি বক্ষ্যতি। বৈদিকং কর্ম্ম অত্যোক্তবিশেষণং কর্মাশনিতমিতি বিদর্গশন্ধাথং দশরন্ বিশদরতি—বিদর্গ ইত্যাদিনা। কথং প্নর্বধোক্তশ্ব বক্ষশ্ব ভূতের্ স্টিস্থিতিপ্রলম্মহতুত্বন তত্ত্তবকর্ম্বমিত্যা-শৃত্র্য প্রান্তাহিতিং' ইত্যাদিশ্বতিমন্তুস্ত্যাহ—এত্যাদ্ধ্রীতি ॥৩

অকুবাদ। এই দকল প্রশ্নের যথাক্রমে নির্ণয় করিবার জন্ত (ভগবান্ বলিলেন) "অক্ষর" যাহা বিনষ্ট হয় না, তাহাই [অক্ষর শব্দের অর্থ], পরম আত্মা "এই অক্ষরের শাসনামুসারে হে গাগি [চক্র সূর্য্য বিশ্বত হইয়া রহিয়াছে ও তাপ প্রদান করিতেছে]" ইত্যাদি শ্রুতির দারাও ি অক্ষর শব্দের অর্থ যে প্রমাত্মা] ভাহা দিদ্ধ হইতেছে, এখানে অক্ষর শব্দের দারা প্রণবেরও গ্রহণ হইতেছে না ্কারণ] ওমিত্যেকাক্ষরং ত্রন্ধ ইত্যাদি শ্লোকে যে অক্ষর শব্দের অর্থ গ্রহণ করা হইয়াছে, তাহাতে "পর" এই বিশেষণ নাই, এপানে কিন্তু "পর" এই বিশেষণ দেওয়া ছইয়াছে; এইজয় এ স্থানে অক্ষর শব্দের দারা প্রণব গ্রহণ হইতে পারে না। "পরম" এই বিশেষণটি নিরতিশয় এক্ষরপ অক্ষরেই প্রযুক্ত হইয়াছে, এই প্রকার মতই উপপন্নতর হয়। সেই পরব্রন্ধেরই প্রতিদেহে প্রত্যগাত্মভাবে অবস্থিতিকেই "ৰ ভাব" কহা যায় ; ইহাই "বভাব" অধ্যাত্ম [বলিয়া] উক্ত হইয়া থাকে। দেহরপ আত্মাকে অধিকৃত করিয়া প্রতিপুরুষের আত্মভাবে অবস্থিত সেই পরব্রহ্মরূপ পরমার্থ বস্তু পর্যান্ত দকল পদার্থকেই স্বভাব বা অধ্যাত্ম শক্ষের ৰারা প্রতিপাদন করা হইতেছে। "ভূতভাবোত্তবকর" ভূত (অর্থাৎ) পৃথিবী প্রস্কৃতি বে ''ভাব'' (অর্থাৎ) বস্তু, তাহাই 'ভূতভাব' এই শন্দটির অর্থ—সেই ভূত-ভাবের "উন্তব'' (উৎপত্তি) ভূতভাবোত্তব, তাহাকে ধে করে, তাহার নাম 'ভূতভাবোত্তবকর'; "বিদর্গ' এই শব্দটির মর্থ বিদর্জন অর্থাৎ ইন্দ্র প্রভৃতি দেবতা-গণের তৃত্তির উদ্দেশে যে পুরোডাশ প্রভৃতি দ্রব্যের ত্যাগ, তাহাই বিসর্গ শঙ্কের অর্থ এই বিসর্গ ই ভৃতভাবোদ্ধবকর, অর্থাৎ (অদৃষ্টের উৎপাদন দারা) ভৃতনিচয়ের উৎপাদক। সেই বিদর্গ শব্দের প্রকৃত তাৎপর্য্যার্থ যজ্ঞ ; এই যজ্ঞই কর্ম্মংজ্ঞিত, অর্থাৎ কর্মনকের দারা বজ্ঞই অভিহিত; এই বজ্ঞরপ বীজ হইতে স্থাবর জল্মরপ विविध चुंछनिहत्रई छेरशत रह ॥ ०

অধিভূতং ক্ষরো ভাবঃ পুরুষশ্চাধিদৈবতম্। অধিযজ্ঞোহহমেবাত্র দেহে দেহভূতাং বর॥ ৪

অন্তর্য। ক্ষর: ভাব: অধিভূতম্, পুরুষ: চ অধিদৈবতম্; হে দেহভূতাং বর, অত্ত দেহে অহমেব অধিষজ্ঞ: ॥ ৪

অনুবাদ। বিনশ্বর বন্ধ মাত্রই অধিভূত, (আদিত্যমণ্ডলমধ্যবন্তী) পুরুষই অধিদৈব; হে প্রাণিগণের শ্রেষ্ঠ। এই দেহে আমিই অধিষক্ত ॥ ধ

ভাষ্য। অধিভূতমিতি। অধিভূতং প্রাণিজ্ঞাতমধিকতা ভবতীতি। কোহসৌ করঃ করতীতি করঃ বিনাশী ভাবো যৎকিঞ্চিৎ জনিমদ্ বস্তু ইতার্থঃ। পুরুষঃ পূর্ণমনেন সর্কমিতি পুরশয়নাদ্বা পুরুষ আদিত্যান্তর্গতঃ হিরণাগর্ভঃ সর্কপ্রাণিকরণানামনুগ্রাহকঃ সোহধিদৈবতম্। অধিষক্তঃ সর্কষ্প্রভাতিমানিনী দেবতা বিষ্ণাধ্যা 'যজ্ঞো বৈ বিষ্ণুং' ইতি শ্রুতেঃ। স হি বিষ্ণুরহমেবাত্রাত্মিন্ দেহে বো যক্ত স্তুষ্টাহমধিষক্তঃ যজ্ঞো হি দেহনিকর্ত্তাত্মেন দেহসমবান্নীতি দেহাধিকরণো ভবতি দেহভূতাং বর॥ ৪

আনন্দগিরিটীকা। সংপ্রতি প্রশ্নতরভাতরমান—অধিভূতমিতি। মধিভূতঞ কিং প্রোক্তমিত্যস্ত প্রতিবচনমধিভূতং করে। ভাব ইতি। তত্তাধি-ভূতপদমনৃত্ব বাচ্যমর্থং কথয়তি অধিভূতমিত্যাদিনা৷ তক্ত নির্দেশমন্তরেণ নিজ্ঞাতুমশক্যথাৎ প্রশ্নধারা তন্নির্দিশতি—কোহসাবিতি। কার্য্যমাত্রমত্র সংগৃহীতমিতি বক্তুমুক্তমেব ব্যনক্তি—যুৎ কিঞ্চিদিতি। অধিদৈবং কিমিতি প্রশ্নে পুরুষশেত্যাদি প্রতিবচনং তত্ত্র পুরুষশব্দমন্ত্য মুখ্যমর্থং তত্ত্যোপঞ্জন্ত — পুরুষ ইতি। তত্তৈব সন্তাবিতমর্থাস্তরমাহ—পুরি শয়নাদ্বেতি। বৈরাজঃ (महमात्राच आंतिरुप्रश्वनानिषु देनवर्ष्ठम् अञ्जतिकरणा निकाचा वाहिकन्न**ा**च्-গ্রাহকোহত্ত পুরুষশবার্থ:। স চাধিদৈবতমিতি স্ফুটরতি—আদিত্যেতি। अধি-ৰজঃ কথমিত্যাদি প্রশ্নং পরিষরমধিবজ্ঞশব্দার্থনাহ—অধিযুক্ত ইতি। কথমুক্তারাং দেবতারামধিবজ্ঞাব্য: ভাদিত্যাশক্ষ্য শ্রুতিমমুদরন্নাহ—যুক্ত্রে বৈ ইতি। পরৈব দেবতা অধিযজ্ঞশব্দেনোচ্যতে। সা চ ব্রহ্মণঃ স্কাশাদ্ত্যস্তাভেদেন শাূস্ত্রীয়ব্যবহারভূমিন্নকেভূয়কা। অতিপত্তব্যেত্যাহ—স হি বিষ্ণুরিতি। দেহশামানাধিকরণাদ্বাত্তেত্যশু ব্যাণ্যানম্—অস্মিন্নিতি। কিমধিবজ্ঞো বহিরম্বর্কা দেহাদিতি সন্দেহো মা ভূদিত্যাহ—দেহ ইতি। নমু যজ্জ দেহাধি বরণভাতাবাৎ কথং তথাবিধবজ্ঞাভিমানিদেবতাত্বং ভগবতা বিবক্ষাতে তত্ত্বাহ—য**ভোহীতি।**

এতেন তত বুজানিবাতিরিকত্যুক্তনবধেরম্, ন হি পরা দেবতা দর্শিতরীতারি-বজ্ঞশন্ধিতা বুজানিষস্কর্ভাবমন্থভাবন্নিত্মলম্; দেহান্ বিভ্রতীতি দেহভূতঃ সর্ক্বে প্রাণিনন্তেবামেষ বর: প্রেষ্ঠঃ যুক্তং হি ভগবতা সাক্ষাদেব প্রতিক্ষণং সংবাদং বিদ্যানস্থাজুনিস্ত সর্কেভ্যঃ শ্রৈষ্ঠ্যম্ ॥ ৪

অমুবাদ। অধিভূতমিত্যাদি শ্লোকের [তাৎপর্য্য এই যে] প্রাণিগণের ভোগের জন্ত যাহা উৎপন্ন হয়, তাহাকেই অধিভূত কহা যায় [সে কি?]; "কর" যাহা বিনষ্ট হয়, তাহাই ক্ষর, এমন যে "ভাব" তাহাই অধিভূত, অর্থাৎ বাহা কিছু উৎপন্ন হয়, এমন সকল বস্তই অধিভূত শব্দের হারা অভিহিত হয়। "পুরুষ" যাহা হারা জগৎ সকলই পরিপ্রিত অথবা যিনি দেহরূপ পুরে বিরাজমান, তিনিই পুরুষ। [তিনি কে?] সেই আদিত্যমগুলমধ্যবর্ত্তী সকল প্রাণীর সকল ইন্দ্রিয়ের নিয়স্তা হিরণ্যগর্ভ; সেই পুরুষই অধিদৈবত [শব্দের হারা অভিহিত হন]। "অধিযজ্ঞ" সকল যক্তের উপর আত্মীয়ন্তাভিমান যে দেবতার আছে, সেই বিষ্ণুই অধিযজ্ঞ [শব্দের হারা অভিহিত,] শ্রুতিতেও নির্দিষ্ট আছে যে;—বিষ্ণুই যজ্ঞ, সেই বিষ্ণু আমিই, এই দেহে অধিযজ্ঞরূপে আমিই বিষ্ণুমান আছি। দেহের হারা নিম্পাদিত হইয়া থাকে এইজন্ত যজ্ঞ (অর্থাৎ) যক্তের ফল দেহে থাকে, অর্থাৎ লিঙ্ক শরীরকে আশ্রম করিয়া পাকে [দেহাধিকরণ] স্মৃতরাং যজ্ঞাভিমানিনী দেবতাও এইরূপ পিরম্পারা সহন্দে দেহে পাকেন] হে দেহভূদ্গণের শ্রেষ্ঠ ॥ ৪

অন্তকালে চ মামেব শ্বরন্ মুক্তা কলেবরম্। যঃ প্রয়াতি স মন্তাবং যাতি নাস্ত্যত্র সংশয়ঃ॥ ৫

অন্তব্য । অন্তকালে চ মান্ এব শ্বন্ কলেবরং মূকা ব: প্রয়াতি স মন্তাবং মাতি অত্ত সংশব: ন অন্তি॥ ৫

অনুবাদ। সরণসময়ে কেবল আমাকেই শ্বরণ করিতে করিতে বে ব্যক্তি শরীর পরিত্যাগ করিয়া যান, তিনি আমার ভাবকে প্রাপ্ত হন; এই বিষয়ে কোন সংশয় নাই॥ «

ভাষ্য। অস্তকালে ইতি। অস্তকালে চ মরণকালে মামেব প্রমেশ্বরং বিষ্কৃৎ শ্বরন্ মৃত্যু পরিতাজা কলেবরং শরীরং যঃ প্রধাতি গচ্ছতি স মদ্ভাবং বৈষ্কৃবং তবং বাতি; নাস্তি ন বিভাতেহতান্মিন্ অর্থে সংশব্যে বাতি বা ন বেতি ॥ ই আনন্দ্রিটিকা। যতু প্রধাণকালে চেত্যাদি চোদিতং ভত্তাহ— অন্তকালে চেতি। মানেবেত্যবধারণেন অধ্যাদ্মাদিবিশিষ্টদ্বেন শ্বরণংব্যাবর্ত্যতে। বিশিষ্টশ্বরণে হি চিত্তবিক্ষেপার প্রধানস্থরণমণি ভাৎ। ন চ মরণকালে কার্য্যকরণ-পারবঞ্চান্তগবদস্থরবাগিদিঃ সক্ষণৈব নৈরস্তর্যোগ আদরধিরা ভগবভি সমর্শিক্তচেত্রসঃ তৎকালেহপি কার্য্যকরণজাতমগণরতো ভগবদস্থলনানিছেঃ। শরীরং তিমিরংমমাভিমানাভাবাদিতি বাবং। প্রশাতীত্যক্র প্রক্রতশরীরমণাদানম্। "ব্রহ্মবেদ ব্রদ্ধের ভবতি" ইত্যাদিশ্রুতিমাশ্রিত্যাহ—নাস্তীতি। ব্যাসেধ্যং সংশয়-মেবাভিনরতি—হাতি বেতি॥ ৫

অনুবাদ। অন্তকালে ইত্যাদি শ্লোকের মর্থ। "অন্তকালে" মরণ কালে আমাকেই (মর্থাৎ) পরমেশ্বর বিষ্ণুকে শ্লবণ করিতে করিতে 'কলেবর' শরীরকে পরিত্যাগ করিয়া যে প্রয়াণ করে (মর্থাৎ) [লোকান্তরে] গমন করে দে 'মন্তাব' বৈষ্ণুব তব্বকে প্রাপ্ত হয়, এই বিষয়ে কোন সংশয় (অর্থাৎ বৈষ্ণুব গদ পায় কি না এই প্রকার সন্দেহ) বিভ্যমান নাই॥ ৫

> যং যং বাপি শ্মরন্ ভাবং জ্যজত্যন্তে কলেবরম্। তং তমেবৈতি কোন্তেয় দদা তদ্ভাবভাবিতঃ॥ ৬

আমুয়। হে কৌন্তেয়! আন্তেষং যং বাপি ভাবং আরন্ কলেবরং ভ্য**জতি** সদা তব্ভাবভাবিত: [সন্] তং তম্ এব এতি ॥ ৬

অনুবাদ। হে কুম্বীনন্দন, মরণ কালে বে বে ভাববিশেষকে শারণ করিতে করিতে জীব দেহত্যাগ করে, সর্বাদা সেই ভাববিশেষের ভাবনার বশীভূত হওয়া নিবন্ধন সেই সেই ভাবকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে [পরলোকেও]॥ •

ভাষ্য ৷ ন মধিবর এবারং নিরমঃ কিং তর্হি—যং বং বাপি বঃ বং ভাবং দেবতাবিশেবং শ্বরংশিস্তয়ন্ ত্যজতি পরিতাজতি অভে প্রাণবিরোগকালে কলেবরং তং তমেব শ্বতং ভাবমেব এতি নাজং, কৌজের, সদা সর্বদা তদ্ভাবভাবিতঃ তশ্বিন্ ভাবঃ তভাবঃ সঃ ভাবিতঃ শ্বর্যমাণতয়া অভ্যভো বেন স তভাবভাবিতঃ সঁন ॥ ৬

আনন্দ গিরিটীকা। অন্তকালে ভগবন্তমন্থ্যারতো ভগবংপ্রাপ্তিনিরমবদন্তন্দ্রি তৎকালে দেবাদিবিলেবং ধ্যারতো দেহং ত্যত্তত্তৎপ্রাপ্তিরবন্তভাবিনীতি দর্শরতি—নেত্যাদিনা। কথং পুনরন্তকালে প্রবশন্ত নিরভবিবরশ্বতিভবিক্তৃন্দ্র্বিত তত্ত্বাহ—স্বদ্ধতি। দেবাদিবিশেষত্তবিদ্ধিতি সপ্তম্যর্থঃ। ভাবো ভাবনা

বাদনা স ভাবো ভাবি জ সম্পাদিতো বেন প্ংসা সঃ তথাবিধঃ সন্ ধং ধং ভাবং শ্বরতি তং তমেৰ দেহত্যাগাদ্ধিং গচ্চতীতি সম্বন্ধঃ ॥ ৬

অসুবাদ। আমার বিষয়েই যে এই নিয়ম, তাহা নহে; তবে কি ?— [ইহারই উত্তর এই ইইতেছে যং যং বাপি ইত্যাদি] যে যে ভাব অর্থাৎ দেবতা-বিশেষকে স্মরণ করিয়া অস্তে অর্থাৎ প্রাণবিয়োগকালে কলেবরকে [জীব] পরিত্যাগ করে, হে লীস্তের, "সদা" সর্বদা "তদ্ভাবভাবিত" হইয়া সে সেই দেবতাবিশেষকেই প্রাপ্ত হইয়া পাতে। সেই দেবতার প্রতি ভাব [এই অর্থে তদ্ভাব শক্ষটি ব্যবহৃত]। তদ্ভাব যাহা দ্বারা "ভাবিত" অনবরত স্মৃতির বিষয় হইয়া অভ্যন্ত হয়, সেই তব্ভাবভাবিত ॥ ৬

> তন্মাৎ সর্বেষু কালেষু মামকুশ্মর যুধ্য চ। ময্যপিতিমনোবৃদ্ধির্মামেবৈয্যস্তসংশয়ঃ॥ ৭

আনুয়। তত্মাৎ সর্কের্কালের্মান্ অসুত্মর যুধ্য চ, মরি অপিতমনোবৃদ্ধিঃ অসংশয়ঃ[সন্] মান্ এব এবাদি॥ ৭

অকুবাদ। সেই কারণে সকলদময়ে আমাকে শ্বরণ করিতে থাক এবং বুদ্ধও কর। আমার উপর মনঃ ও বৃদ্ধিকে সমর্পণপূর্বক সর্বসংশয় হইতে মুক্ত হইয়া আমাকেই প্রাপ্ত হইবে॥ গ

ভাষ্য। যন্ত্ৰাক্ষর ভাষনা দেহাস্তরপ্রাপ্তী কারণম্—তন্ত্রাৎ সর্বের্ কালেরু মাম্ অফুলর মথাশারঃ যুধ্য চ যুদ্ধং চ অধর্মং কুরু, ময়ি বাহ্মদেবে অর্পিতে মনোবৃদ্ধী ষম্ভ তব স অং ম্যাপিতিমনোবৃদ্ধিঃ সন্ মামেব যথাস্বতম্ এয়াসি আাগমিষঃসি অসংশ্রো ন সংশ্রোহত্ত বিশ্বতে ॥ ৭

আনন্দ্গিরিটিক।। সততভাবনা প্রতিনিয়তফলপ্রাপ্তিনিমিন্তান্ত্রপ্রভারতেত্বিতালীকতানিত্রয়োক্ষরতারয়তি—যুস্মাদিতি। বিশেষণান্তরজানতাভগৰদমুম্মরণস্ত ভগবৎপ্রাপ্তিত্ত্বং তমাদিত্যচাতে। সর্বের্ কালেদারনৈত্রব্যাভ্যাং সহেতি যাবং। ভগবদমুম্মরণে বিশেষণান্তরসাহিত্যং ষথাশান্ত্রমিতি
স্থোত্তে। ভগবদমুমন্ধানং কর্ত্তব্যুক্তা তেন সহ স্বর্ধমাপ কুরু যুদ্ধমিত্যুগদিশতা
ভগবত্যা সমুক্তরো জ্ঞানকর্মণোরলীকতো ভাতীত্যাশক্যাহ—ম্যুীতি। মনোবুদ্ধগোচনং ক্রিরাকারকফলজাতং সকলমপি এক্সেবেতি ভাবরন যুধ্যম্ম চেতি,
ক্রেক্তা ক্রিরাদিকলাপত্য ব্রম্মাতিরিক্তপ্রাভাবাভিলাপান্ত্র সমুক্তরো বিবঞ্জিত

ইতার্থ:। উক্তরীত্যা স্বধর্মমন্থবর্তমানক্ত প্ররোজনমাহ—মামেবেতি। উক্ত-সাধনবর্শাৎ ফলপ্রাণ্ডৌ প্রতিবন্ধাভাবং স্চয়তি—অসংশয় ইতি॥ १

অনুবাদ। বে কারণে এই প্রকার মরণকালের ভাবনা দেহান্তর প্রাথির প্রতি কারণ, এই জন্তই সকল কালেই আমার শ্বরণ করিতে থাক এবং বধাশান্ত্র বৃদ্ধ কর। [কারণ] যুদ্ধ তোমার স্বধর্ম। বাহার মনঃ ও বৃদ্ধি আমাতে অর্থাৎ বাহ্মদেবে অর্পিত হইরাছে, এতাদৃশ তৃমি "মন্নি অর্পিত-মনোবৃদ্ধিঃ" হইরা আমাকে বেমন শ্বরণ করিবে, তদমুসারে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে, এই বিবরে কোন সংশর নাই॥ ৭

অভ্যাসযোগযুক্তেন চেতদা নান্তগামিনা। পরমং পুরুষং দিব্যং যাতি পার্থামুচিন্তয়ন্॥ ৮

আম্বয়। হে পার্থ! অভ্যাসবোগবৃক্তেন ন অন্তগামিনা চেতসা অনুচিত্তমন্-দিব্যং পরমং পুরুষং যাতি॥ ৮

অনুবাদ। হে পার্থ, অনম্রপরায়ণ ও অভ্যাসবাগযুক্তমনে সর্বাদ। চিন্তা করিতে করিতে [সাধক] সেই দিব্য অর্থাৎ আদিত্যমগুলমধ্যবর্তী পরমপুক্তমকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥ ৮

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ অভ্যাসবোগযুক্তেন মন্ত্রি চিত্তসমর্পণবিষয়ভূতে একমিন্
তুল্যপ্রভারাবৃত্তিলক্ষণো বিলক্ষণপ্রভারানন্তরিভোহভ্যাসঃ স চ অভ্যাসো যোগঃ
তেন যুক্তং তত্ত্বৈব ব্যাপৃতং যোগিনক্ষেতঃ তেন চেত্সা নাস্তগামিনা ন অক্তর্জ্ঞ বিষয়াস্তরে গন্তং শীলমন্তেতি নাস্তগামি তেন নাস্তগামিনা পরমং নিরভিশ্রং
পূক্ষং দিবাং দিবি স্থ্যমণ্ডলে ভবং যাতি গচ্ছতি হে পার্থ, অহুচিত্তরন্
শাস্তাচার্য্যোপদেশমন্ধ্যারন ইত্যেতং ॥৮

আনন্দগিরিটীকা। ইতক পূর্বলোকোকার্থান্ট্রালী ভগবন্তমন্তকালে প্রায়োতীত্যাহ—কিকেতি। অভ্যাসং বিভন্ততে—ম্য়ীতি। ন হি চিন্তসম-পণ্ড বিষয়ভূতং ভগবতোহর্থান্তরং বন্ধ সদস্তীতি মহানো বিশিনষ্টি—চিত্তেতি। অন্তরালকালেইণি বিজাতীয়প্রতায়ের বিচ্ছিত্য বিচ্ছিত্য জারমানেহণি সল্লাতীয়-প্রতায়ার্ত্তিরংবাগিনোহণি ভাদিত্যাশক্যাহ—বিলক্ষণুণ্তি। অভ্যাসাথেয়ন বোগেন যুক্তবং চেতসো বির্ণোতি—তত্তিত্তিতি। তৃতীয়য়া পরাম্ট্রেইড্রাস-বোগঃ সপ্তম্যাহণি পরাম্ভাতে। নম্ব প্রাক্তানাং চেতত্তথেত্যাশক্য বিশিনষ্টি—বোগিনইতি। তচেচেতো বিষয়ান্তরং পরাম্পাত্র তহি পর্মপুক্রবার্থপ্রাঞ্চিক

হেতৃঃ সাদিত্যাশব্যাহ—নান্যগামিনেতি। প্রামাদিকং বিষয়ান্তরপারবশ্ব-বভারকাতৃং তাজীল্যপ্রতায়ন্তেন তাৎপর্যাদপরামৃষ্টার্থান্তরেল পরমপ্রশ্বনিষ্ঠেন ইতার্থঃ। তদেব প্রশ্বস্থ নিরতিশয়তঃ বং অপরামৃষ্টার্থিলানর্থত্বম্ অনতি-শয়ানক্ষত্বক তচ্চ প্রাণেব ব্যাখ্যাতং নেহ ব্যাখ্যানমপেক্ষতে। "বশ্চাসাবা-দিত্যে" ইত্যাদি প্রতিমহুস্ত্যাহ—দিবীতি। তত্র বিশেষতোহভিব্যক্তিয়েষ ভবনম্। পূর্বোক্তেন চেত্রসা বথোক্তং পুরুষনন্ত্রিস্তয়ম্ বাতি তমেবেতি সম্বন্ধঃ। অমুচিন্তর্মিত্যক্র অমুশব্যার্থং ব্যাচষ্টে—শাস্ত্রেতি। চিন্তম্মিতি ব্যাকরোতি—ধ্যায়্রিতি॥ ৮

আমুবাদ। আরও [বক্তব্য এই যে] চিত্তসমর্গণের একনাত্র বিষয়ভূত আমাতেই একাকার চিত্তবৃত্তির যে আরুত্তি অথচ যাহার মধ্যে অস্ত কোন বিলকণ বৃত্তির উদর না হয়, সেই আরুত্তিই অভ্যাস [শব্দের প্রতিপায়]। সেই অভ্যাসই বোগ, এই প্রকার অভ্যাসযোগেতেই যোগীর যে চিত্ত ব্যাপৃত থাকে, তাঁহাকেই 'অভ্যাসযোগযুক্তচিত্ত' বলা যায়। সেই চিত্ত অনহুগামী [ও হওয়া চাই]। মধ্যতিরিক্ত অস্ত কোন বিষয়ে সংলগ্ন হওয়া বাহার অভাব, সেই চিত্তকে 'অস্তগামী' কছে; যে চিত্ত এ প্রকার নহে, তাহাই 'নাস্তগামি' চিত্ত। সেই নাস্তগামি এবং অভ্যাসযোগযুক্ত চিত্তের সাহাযো শাস্ত্র ও আচার্য্যের উপদেশামু-সারে সেই আদিত্যমণ্ডলমধ্যবর্তী পরম পুরুষকে চিত্তা করিতে করিতে [সাধক] উহাকেই প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ৮

কবিং পুরাণমনুশাসিতারম্
অপোরণীয়াংসমনুত্মরেদ্ যঃ।
সর্ববস্থ ধাতারমটিন্ত্যরূপম্
আদিত্যবর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ॥ ৯

্ আহায়। বং তমসং পরস্তাং [বর্ত্তনানম্] আদিত্যবর্ণম্ অচিস্তারূপং সর্বস্থাতারম্ অণোঃ [অপি] অণীরাংসম্ পুরাণম্ (চিরস্তনম্) অনুসাসিতারং কবিম্ (সর্ব্তন্তম্) অনুসারেৎ (ধ্যারেৎ)॥ ৯

অমুবাদ। [অবিশ্বারূপ] অন্ধকারের বহিত্তি, আদিত্যবর্ণ অচিষ্ট্ররূপ, সকল কণতের বিধাতা, অণু হইতেও অণ্তর, সকল কণতের শাসিতা—সেই পুরাতন কবিকে বে ব্যক্তি সর্বদা সরণ করিয়া থাকেন॥ ১ ভাষ্য। কিং বিশিষ্টং চ পুরুষং যাতীত্যচ্যতে। কবিং ক্রান্তদর্শিনং সর্বজ্ঞং, পুরাণং চিরন্তনম্, অমুশাসিতারম্ সর্বস্ত জগতঃ প্রশাসিতারম্, অণোঃ স্মাদিপি অণীয়াংসং স্ক্রতরম্ অমুমরেৎ বঃ কশ্চিৎ, সর্বস্তি কর্মফলজাতস্ত ধাতারং বিচিত্রতরাণ প্রাণিভ্যো বিভক্তারং বিভক্তা দাতারম্, অচিন্তারূপং নাস্ত রূপং নির্ভং বিভ্যানমপি কেনচিং চিন্তরিত্থ শক্যতে ইতি অচিন্তার্রপন্তম্, আদিত্যবর্ণম্ আদিত্যকেব নিত্যটেচত্তপ্রপ্রকাশো বর্ণো যন্ত তমাদিত্যবর্ণম্, তমসঃ পরস্তাৎ অক্তানলক্ষণান্মোহান্ধকারাৎ পরং তম্ অমুচিন্তরন্ যাতীতি পুর্বেশিব সম্বন্ধঃ। ১

আনন্দ্রিনিকা। কং বিশিষ্টং পুরুষমন্থতিস্তর্মাতি সম্বন্ধঃ। চকারাং করা বা নাড্যোৎক্রামারিতান্ত্রহুষ্যতে। তত্র ধ্যানদারা প্রাপাস্ত পুরুষস্ত বিশেষণানি দর্শরতি—উচ্যুত ইতি। ক্রান্তদর্শিত্বমতীতাদেরশেষস্ত বন্ধনো দর্শনদীলত্বম্। তেন নিশারমর্থমাহ—সর্ব্বস্তুমিতি। চিরস্তনমাদিমতঃ সর্বস্ত কারণদানাদিমিত্যর্থঃ, ক্রমাকাশাদি ততঃ ক্রমতরং তত্রপাদানদাদিত্যর্থঃ। যো বথোক্তমন্থ-চিস্তরেৎ স তমেবাম্বচিন্তরন্ বাতীতি পুর্বেশের সম্বন্ধ ইতি বোজনা। নম্ব বিশিষ্ট-জাত্যাদিমতো বথোক্তমন্থচিন্তনং কলবত্ত্বতি ন ত্রমাদানীনামিত্যাশক্যাহ—য়ঃক্রানিকিতো বংগাক্তমন্থচিন্তনং কলবত্ত্বতি ন ত্রমাদানীনামিত্যাশক্যাহ—য়ঃক্রানিতি লাভিনাপ্রিত্যাহ—অচিন্ত্র্যার্ক্রাপ্রিত্যা ন হি পরস্ত কিঞ্চিদ্রাদ্র রম্বনিতি ক্রম্বতাহন্তি অর্নপ্রদেব হীতি ন্তায়াৎ করিত্যাপি নাম্মদাদিভিঃ শক্যতে চিন্তম্বিত্যাহ—নাস্ত্রেতি। মূলকারণাদজ্ঞানাৎ তৎকার্য্যাচ্চ পরস্তাহপরিষ্টাদ্ব্রাবৃত্তিৎ প্রমার্থতোহজ্ঞান-তৎকার্য্যাম্প্রিমিত্যাহ—ত্রম্নইতি॥ ৯

অনুবাদ। কি প্রকার বিশেষণযুক্তপুরুষকে প্রাপ্ত হয়, ভাহাই বলা হইছেছে। "কবি" অতীতদর্শী (অর্থাৎ) সর্বজ্ঞ, "পুরাণ" চিরস্তন, "অয়ু-শাসিতা" সকল জগতের প্রশাসিতা, "অণু" হয় হইতেও "অণীয়ান্" হয়তর, "সকলের ধাতা" সকল প্রকার কর্মকলের বিভাগকারী, বিচিত্র কর্মকলনিচয়েয় যথাযোয্য বিভাগপূর্বক প্রদাতা, "অচিন্তারপ" যাহার রূপ নিয়ত বিশ্বমান থাকিলেও কেইই চিন্তা করিয়া উঠিতে পারে না, "আদিত্যবর্ণ" আদিত্যের স্লায় নিত্যটৈতক্ত প্রকাশরূপ বর্ণ যাহার আছে, তিনিই আদিত্যবর্ণ; এই প্রকার বিশেষণযুক্ত পুরুষকে বে কোন ব্যক্তি অমুম্মরণ করেন অর্থাৎ চিন্তা করেন, ভিনিই সর্বাদ চিন্তা করিতে করিতে তাহাকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন, এই প্রকার পূর্ব বাক্যের সহিত্ত ইহার সম্বন্ধ আছে॥ ১

প্রয়াণকালে মনসাহচলেন ভক্ত্যা যুক্তো ষোগবলেন চৈব। জ্বোম ধ্যে প্রাণমাবেশ্য সম্যক্ স তং পরং পুরুষমুপৈতি দিব্যম্॥ ১০

জ্যন্ত্র । প্ররাণকালে অচলেন মনসা ভক্তা যোগবলেন চ এব যুক্তঃ ক্রবোঃ মধ্যে প্রাণং সম্যক্ আবেশু চ স তং পরং দিবাং পুরুষম্ উপৈতি ॥ ১০

আকুবাদ। মরণকালে নিশ্চনহৃদয় দেই ব্যক্তি জন্বয়ের মধ্যে প্রাণকে সম্যক্ আবিষ্ট করিয়া, ভক্তি এবং যোগবলেই সেই আদিত্যমগুলমধ্যবর্তী পরম পুরুষকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ১০

ভাষ্য। কিঞ্চ। প্রয়ণকালে মরণকালে মনসা অচলেন চলনবজিতেন
ভজ্ঞা বুজো ভজনং ভজিং তয়া বুজো যোগবলেন চৈব যোগস্ত বলং যোগবলং
তেন সমাধিজসংস্কারপ্রচয়ন্দনিতচিত্ততৈর্ঘালকণং যোগবলং তেন চ যুক্ত ইত্যর্থ:।
পূর্বং হলয়পুগুরীকে বশীক্ষতা চিত্তং তত উর্দ্ধামিন্তা। নাড্যা ভূমিজয়ক্রমেণ
ক্রনেম ধ্যে প্রাণমাবেশ্য স্থাপয়িত্বা সম্যক্ অপ্রমন্তঃ সন্স এবং বুদ্ধিমান্ যোগী
কবিং পুরাণমিত্যাদিলকাণং তং পরং পুরুষম্ উপৈতি প্রতিপন্ততে দিব্যং
স্থোতনাত্মকম্ । ১০

আনন্দ গিরিটীকা। ইতশ্চ ভগবদমুম্মরণং সফলমাদমুঠেরমিত্যাহ—
কিঞ্চেতি। কলা ভদমুম্মরণে প্রয়াতিরেকোহভ্যুর্থতে তত্রাহ—প্রয়াণকালইতি। কথং ভদমুম্মরণমিত্যুপকরণকলাপমপেক্যুমাণং প্রত্যাহ—মনুসেতি।
বোহমুম্মরেৎ দ কিমুপৈতি তত্রাহ—দ তমিতি। মরণকালে ক্লেশবাহুল্যেহপি
প্রাচীনাভ্যাদপ্রদাদাদাদিতবৃদ্ধিবৈভবো ভগবস্তমমুম্মরন্ যথামুভমেব দেহাভিমাননির্গমানস্করমুপগচ্ছতীত্যুর্থ:। ভগবদমুম্মরণশু সাধনং মনসৈবামুদ্ধপ্রয়মিতি শ্রুত্বপদিষ্টমাচ্টে—মনুসেতি। তশু চঞ্চলভাল হৈর্গ্যমীশ্বরে সিধ্যতি তৎ কথং
তেন ভদমুম্মরণমিত্যাশক্ষ্যাহ—আচলেনেতি। ঈশ্বরামুম্মরণে প্রয়েশন প্রবৃদ্ধি
ক্রিতং বিষয়বিমুখং ভদ্মিরেবামুম্মরণযোগ্যে পৌনঃপুত্রেন প্রবৃদ্ধ্য নিশ্চলীক্বজং
তক্তদলনবিকলং তেনেতি ব্যাচ্টে—চলনেতি। সংপ্রত্যমুম্মরণাধিকারিশং
বিশিন্টি—ভক্ত্যেতি। পর্মেশ্বরে পরেণ প্রেম্পা সহিতো বিষয়ান্তমবির্ধাহন্থস্বর্গ্রেগ্রেং। বোগবলমেব স্থারম্ভি—স্মাধিক্রেতি। যোগঃ স্মাধিঃ

চিত্তপ্ত বিষয়স্তরত্ত্তিনিরোধেন পরিষিধ্যের স্থাপনং তক্ত বলং সংস্থারপ্রচয়োধ্যাকরণং তেন তত্ত্বৈর স্থৈমিত্যর্থঃ। চকারস্থিচিতমন্বাচ্টে—ত্তেম চেতি। বন্ধু করা নাড্যোৎক্রামন্ বাতীতি তত্ত্বাহ—পূর্ব্বমিতি। চিত্তং হি স্থাবতো বিষয়ের ব্যাপৃতং তেভ্যো বিম্থীকতা হাদরে পুগুরীকাকারে পরনাম্মানে বন্ধতঃ স্থাপনীয়ন্। "অথ বিদদমিন্দিন্ত ইতাদিশ্রুতক্ত্ত্ত্ত্ত্ব চিত্তং বলীকতা আদাবনন্তরং কর্ত্তবামুপদিশতি—তত্ত ইতি। ইডাপিঙ্গলে দকিণোত্তরে নাড্যো হাদহ প্রাণমানীর কর্তাবান্ধিতস্ত্রন্দিশং মাংস্থত্তং প্রাপ্রা তেনাধ্রনা ক্রেরার্যার্থ্য ত্রাবেশ্য ক্রাবেশ্য ক্রাবিশ্র ক্রাব্রাহ্য হাদ্য ক্রাব্রাহ্য বশীকরং তত্ত্ব তত্ত্ব স্বাধীনচেটাবৈশিন্ত্যং তদ্বারেণেত্যেত্ত হচ্যতে। স্ত্রিত্যাদি ব্যাচটে—স্ব্রেমিতি । ১০

অনুবাদ। প্রয়াণকালে অর্থাৎ মরণকালে নিশ্চনছাদয়ে ভক্তিযুক্ত ও যোগবলযুক্ত হইয়া ভ্রয়ের মধ্যে, উর্জগানিনী নাড়ীয়ারা [যোগাশ্রম্ন সিদ্ধি] ভূমিজয়ক্রনে প্রাণকে আবিষ্ট করিয়া সন্যক্ অপ্রমন্ত সেই বৃদ্ধিনান্ যোগী, সেই কবি পুরাণ ইত্যাদি নামের প্রতিপাত্য পরম পুরুষকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে, সেই পুরুষ দিব্য—অর্থ স্তোতনায়া। এই শেলকের ভক্তিশব্দের অর্থ ভক্তন, বোগের বল [এই তাৎপর্য্যে] যোগবল [এই শক্ষটি ব্যবহৃত হইয়াছে], সমাধিসংকার-সমূহের ধারা উৎপাদিত যে চিত্তবৈর্থ্য ভাহাই এছলে যোগবল শব্দের অর্থ। যোগীর এই প্রকার অবস্থার পূর্বে হাদরপ্রাক্রীকে ধারণা ধারা চিত্তকে বশীক্তক করিতে হয়, তাহার পর ভূমিজয় ও স্বন্মা নাড়ী দারা প্রাণকে ভ্রমধ্যে স্থাপন করিতে হয়। [ভূমি জয় শব্দের অর্থ পঞ্চভূতের বশীকরণ] ॥ ১০

যদক্ষরং বেদবিদো বদন্তি
বিশন্তি যদ্যতয়ো বীতরাগাঃ।
যদিচ্ছন্তো ব্রহ্মচর্য্যং চরন্তি
তৎ তে পদং সংগ্রহেণ প্রবক্ষ্যে॥ ১১

আৰুয় । বেদবিদঃ ষৎ অঞ্চরং বদস্তি, বীতরাগা যতম্বঃ ষৎ বিশস্তি, ষৎ ইচ্ছস্তঃ ব্রহ্মচর্য্যং চরস্তি, তৎ পদং তে সংগ্রাহেণ প্রবক্ষ্যে ॥ ১১ আমুবাদ। বেদবিদ্যণ বে অবিনাশি বস্তুর বর্ণনা করিয়া থাকেন, বীতরাগ সম্যাসিগণ বে পদে প্রবিষ্ঠ হইয়া থাকেন, বাঁহাকে পাইবার ইচ্ছা করিয়া [ব্রহ্মচারিগণ] ব্রহ্মচর্যাব্রত করিয়া থাকেন, আমি চোমাকে সংক্রেপে সেই [ব্রহ্ম] পদ বিষয়ে প্রকৃষ্ঠ উপদেশ প্রদান করিতেছি॥ ১১

ভাষ্য । * পুনরপি বক্ষ্যমাণেন উপায়েন প্রতিপিৎসিতস্ত ব্রহ্মণো বেদবিদ্বদনাদিবিশেষণবিশেষ্তাভিধানং করোতি ভগবান্। যদক্ষরং ন করতীত্যকরম্
অবিনাশি, বেদবিদো বেদার্থজ্ঞা বদন্তি। ''তদ্বাএতদক্ষরং গার্গি ব্রাহ্মণা অভিবদস্থি' ইতি ক্রতেঃ। সর্ক্বিশেষনিবর্ত্তকরেন অভিবদপ্তি অভ্নমনণ ইঙ্যাদি।
কিঞ্চ বিশস্তি প্রবিশন্তি সন্যাগ্দর্শনপ্রাপ্তে) সতাং যদ্যতয়ঃ যতনশীলাং সন্যাসিনঃ
বীতরাগা বিগতো রাগঃ যেভ্যন্তে বীতরাগাঃ। যক্রাক্ষরমিন্তজ্ঞা জ্ঞাতুমিন্তি
বাক্যশেষঃ। ব্রহ্মচর্যাং গুরো চরস্তি তং তে পদং তদক্ষরাখ্যং পদং পদনীরং
তে ভূভ্যং সংগ্রহণ সংগ্রহঃ সংক্ষেপঃ তেন সংক্ষেপণ প্রবক্ষ্যে কথ্যিষ্যামি॥ ১১

অকুবাদ। যাহাকে বুঝিবার জন্ত, অর্জুন, সর্মদা অভিলাষপর, বেদবিদ্গণ যাহার স্বরূপ বর্ণনা করিয়া থাকেন, ইত্যাদি নানা বিশেষণের যাহা বিশেষ, সেই ব্রন্ধের তত্ত্ব ক্ষ্যমাণ উপায়ের দারা ভগবান্ পুনর্কার প্রতিপাদন করিতে-ছেন। যাহার করণ অর্থাৎ ধ্বংস হর, তাহাকে 'কর' কহে; 'যাহা কর নহে, তাহাই 'অক্ষর'। "বেদবিং" বেদার্থজ্ঞ ব্যক্তিগণ যাহাকে "অক্ষর" অবিনাশী

^{*} অত্র—"বোগমার্গাম্পননেনৈব ব্রহ্মবিদ্যামন্তরেণাপি ব্রহ্ম প্রাপ্যত ইত্যেবং **প্রাপ্ত ই**দ্যুচ্য**তে**" ইত্যবিকং কচিৎ দৃশুতে।

বিনাধি নির্দেশ করিয়া পাকেন (কারণ) শ্রুতিতে এইরূপ উক্ত হইয়াছে বে, "হে গার্গি, ব্রাহ্মণগণ এই পরমান্ধাকে অন্তর বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন" অর্থাৎ পরব্রহ্ম সকলপ্রকার ভেল বিনির্দ্দৃক্ত; এই কারণ তিনি স্থুলও নহেন, ফল্লও নহেন, ইত্যাদি প্রকারে ব্রাহ্মণগণ পরব্রহ্মেরই স্বরূপ প্রতিপাদন করিয়া থাকেন। আরও 'বতি' প্রয়ন্থপর সংক্রাসিগণ, "বীতরাগ" (অর্থাৎ বাহাদের রাগ নির্ত্ত হইয়াছে) হইয়া সম্যক্ জ্ঞানপ্রাপ্তির পরে বাহাতে প্রবিষ্ট হইয়া পাকেন। বে অক্লরকে ["ব্রিবার জন্ত" এই অংশটুকু বাক্যের মধ্যে পূর্ণ করিয়া লইতে হইবে] অভিলাব করিয়া [ব্রহ্মচারিগণ] শুরুগৃহে বাস করিয়া ব্রহ্মচর্য্যের অন্তর্গান করিয়া থাকেন, সেই "অক্লরনামক পদ" [চরম গন্তব্য বন্ধ] আনি তোমাকে সংগ্রহে বলিতেছি—সংগ্রহ শক্ষের অর্থ সংক্ষেপে অর্থাৎ সংক্রেপে বলিতেছি ইহাই তাৎপর্যা॥ ১১

সর্ববিধারাণি সংযাস্য মনো হৃদি নিরুধ্য চ।
মূদ্ধ্যাধায়াত্মনঃ প্রাণমাস্থিতো যোগধারণাম্॥ ১২

আন্তর্য়। সর্বহারাণি সংখ্যা জাদি মনো নিরুধ্য আয়েনঃ প্রাণং সূর্দ্দি আধায় চ যোগধারণামান্থিতঃ [ভবেৎ] ॥ ১২

অনুবাদ। সকল ইব্রিয়নার নিরুদ্ধ করিয়া জদরপুগুরীকে অস্তঃকরণকে সমাহিত করিয়া ও আত্মপ্রাণ মূর্দ্ধদেশে (মস্তকে) আহিত করিয়া [সাধক] যোগ ধারণাকে অবলম্বন করিবে॥ >২

ভাষ্য। "দ বো হ বৈ তদ্ ভগবন্ মহবেয়ব্ প্রয়াণান্তমোকারমভিধ্যারীত কতমং বাব দ তেন লোকং জয়তি ইতি তদৈর দ হোবাচ এতকৈ সত্যকাম পরং চাপরং চ ব্রহ্ম বদোকার:" ইত্যুপক্রম্য "যঃ পুনরেতং ত্রিমাত্রেশ ওমিত্যেতেনৈবাক্ষরেণ পরং পুরুষমভিধ্যারীত" ইত্যাদিনা বচনেন "অক্সম্র ধর্মানক্সরাধর্মাৎ" ইতি চ উপক্রম্য "দর্বে বেদা ষৎপদমামনন্তি তপাংদি দর্মাণি চ যা বদন্তি। যদিছেক্তো ব্রহ্মচর্যাৎ চরন্তি তত্তে পদং সংগ্রহেণ ব্রবীমি ও ইত্যেতং ॥" ইত্যাদিভিশ্চ বচনৈঃ পরক্ত ব্রহ্মণো বাচকর্মণেণ প্রতিমাবংপ্রতীকর্মণেণ চ পরব্রহ্মপ্রতিগতিসাধনক্ষেন মন্দমধ্যমবৃদ্ধীনাং বিব-ক্ষিত্রত্ব ওকারক্ত উপাদনং কালান্তরে মৃক্তিক্ষলমুক্তং যত্তি চে উপক্রম্ভত পরক্ত ব্রহ্মণাসিতারম্" "বদক্ষরং বেদবিদা বদন্তি" ইতি চ উপক্রম্ভত পরক্ত ব্রহ্মণা প্রক্রিক্রমণেণ প্রভিপত্যাণায়ভূতক্ত ও কারক্ত কালান্তরমুক্তিকলমুপাসনং

যোগধারণাসহিতং বক্তব্যং প্রসক্তাত্মপ্রসক্তঞ্চ যৎকিঞ্চিৎ ইত্যেবমর্থ উত্তরে। প্রস্থ আরভ্যতে ।

সর্ববারাণি সর্বাণি চ তানি ঘারাণি চ সর্বঘারাণি উপলক্ষো তানি সর্বাণি সংযম্য সংযমনং কৃষা মনো হৃদি হৃদয়পুগুরীকে নিরুধ্য নিরোধং কৃষা নিপ্রচারমাপাত্ত তত্ত্ব বশীক্বতেন মনসা হৃদয়াদ্র্দ্ধগামিতা নাড্যা উর্দ্ধমাকহু মুর্দ্ধনি আধায় আত্মনঃ প্রাণমান্থিতঃ প্রবুতো যোগধারণাং ধার্মিতুম্॥ ১২

আনন্দ গিরিটীকা। বক্ষ্যমাণেনোপায়েনেভ্যক্তং ব্যক্তীকুর্বলোঙ্কারছার। ব্ৰহ্মোপাদনং শ্ৰুত্যক্তমমূক্তামতি—স যো হেতি। পত্যকামেনাভিধ্যানফলং পিঞ্জাস্থনা ভগবন্ধিতি পিপ্পলাদঃ সম্বোধ্যাভিম্থীক্রিয়তে। নিপাতৌ তু প্রসিদ্ধ-মর্থমেবজ্যোতরস্তাবভিধ্যানত ফলবত্ত্বন কর্ত্তব্যথমাবেদয়ত:। মনুষোধু মধ্যে স যোহধিক্কতোমসুষ্য তৎপ্রসিদ্ধমভিধ্যানং মণা সিধ্যতি তথা সর্ববেদসারভূতমোন্ধার-মাভিমুখ্যেন ধ্যায়ীত। তচ্চাভিধ্যানমাপ্রয়াণাদিতি ভায়েন মরণাস্তমফুঠেরম্। স চৈবমন্থতিষ্ঠন্ প্রক্তেনাভিধ্যায়েন লোকানাং ভেতব্যানাং বছত্বাৎ কতমং লোকং জয়তীতি প্রশ্নে প্রত্তবতে সত্যকাসায় পিপ্ললাদনামা কিলাচার্য্য: প্রতিবচনং প্রোবাচ। তত্ত প্রথমং অভিধ্যেরমোকারং পরাপরব্রহ্মত্বেন মহীকরোভি— এতদ্বা ইতি। ত্রিমাত্রেণাকারোকারমকারাগ্নকেনেতি যাবং। যোহভিধ্যাদ্ধী [সঃ] তমেব বর্ণাভিধ্যানং পুরুষমধিগচ্ছতীত্যাদি বচনেনোপাসনমোকারভোক্তমিত্যর্থ:। প্রশ্নশ্রতিবৎ কঠবল্লী চ তত্তৈবার্থে প্রবৃত্তেতাাই—অন্যত্তেতি। স্বব্যবধানে-নোপনিষদাং ব্যবধানেন চ কর্ম্মশ্রতীনাং প্রশ্বিদ্বাত্মনি পর্য্যবদানং দর্শব্ভি-সর্ব্ব ইতি। তপসামপি সর্ব্বেষাং চিত্তগুদ্ধিবারা তত্ত্বৈব পর্ব্যবসান্মিত্যাহ— তপাংসীতি। তবৈষৰ চ জ্ঞানাৰ্থমন্তাঙ্গং বন্ধচৰ্যাং তত্ত্ব বিহিতমিত্যাহ— যদিচছন্ত ইতি। তত্ত পদনীয়ত বন্ধণঃ সংক্ষেপেণ কথনমোৱার্বারকমিতি কণরতি—প্রমিত্যেতদিতি। উদাস্তবচনানাং তাৎপর্য্যং দর্শরতি— পরস্থেতি ৷ ভক্ত বাচকরূপেণ বা তক্তৈব প্রতীকরূপেণ বা বিব**ক্ষিতক্তোহা**-রক্ষোপাসনং যথোকৈর্বচনৈককেমিতি সম্বন্ধঃ। নমু প্রশ্মিন বন্ধাণি তত্ত্বমন্তাদি-্বাক্যাদেব প্রতিপত্তিরধিকারিণো ভবিব্যতি কিমিভ্যুপাসনমো**দারভোপঞ্চততে** তত্তাহ—প্রেতি। যত্তপি বিশিষ্টস্তাধিকারিণো বিলৈবোপাসনমুপনিষধ্যো বন্ধণি প্রতিপব্রিক্রৎপদ্মতে তথাপি **মধ্যমানাঞ্চ ভন্ধীহেতৃদ্বেনোক্যারো মন্দানাং**

^{, *} **প্রচারাভাবমিতার্থ:**।

বিবন্ধিতঃ তচ্চোপাদনং বন্ধদৃষ্ঠা শ্রতিভিদ্নপদিষ্ঠমিত্যর্থঃ। তক্ত ক্রমমুক্তিফলম্বাদ্যরেতি। ভবভোবং শ্রতনিং প্রবৃত্তিস্তাবভা প্রকৃতে কিমায়াতমিত্যাশক্ষাহ—উক্তং যদিতি। তদেবেহাপি বক্রবামিত্যাদিনা। প্র্নোক্তমণেণত্যভিধানম্বেল প্রতীক্ষেন চেত্যর্থঃ। শ্রৌতস্তোপাদনন্তান্ত্যমানক্ত গোপন্তর্বত ব্যাপিতি। তর্হি কথম্—'অনক্তচেতাঃ সততম্' ইত্যাদি বক্ষ্যতে তত্ত্রাহ—প্রস্কৃতি। প্রকারোপাদনং প্রদক্তং তদনন্তরং তৎফলমন্ত্রপক্তং তদ্বারা চাপ্নরাবৃত্ত্যাদি বক্রব্রেক্যটিনিবিষ্টমিত্যর্থঃ। উক্তেহর্থে সমনন্তরগ্রহ্ম্থাপরতি—ইত্যুব্যর্থ ইতি।

শ্রোত্রাদীনাং কুত্র বারষং তত্রাহ—উপ্রস্কাবিতি। তেষাং সংব্যনং বিষয়েষ্ প্রবৃত্তানাং দোষদর্শনহারা তেভ্যো বৈম্থ্যাপাদনম্। কোহয়ং মনগো হদরে নিরোধস্তত্তাহ—নিষ্প্রচারমিতি। মনসো বিষয়াকারবৃত্তিং নিরুধ্য হৃদি বশীরুত্ত কার্য্যং দর্শয়তি—তত্ত্তেতি। উর্জমিত্যত্রাপি হৃদয়াদিতি সম্বধ্যতে সর্বাণ্যপলিবারাণি শ্রোত্রাদীনি সংনিরুধ্য বায়ুমপি সর্বতো নিগৃহ্ছ হৃদয়মানীয় তত্তো নির্গত্রা স্বয়ুয়য়া কণ্ঠক্রমধ্যললাটক্রমেণ প্রাণং মৃষ্কভাধায় যোগধারণামারট্রে বন্ধ ব্যাহরন্ মাঞ্চ তদর্থমহুম্মরন্ পরমাং গতিং যাতীতি সম্বন্ধঃ॥ ১২

অনুবাদ। "হে ভগবন্, মন্থ্যগণের মধ্যে দেই যে ব্যক্তি মরণকাল পর্যান্ত ওঁকারের খ্যান করিয়া থাকে, সে কোন্ লোককে জয় করিতে পারে
এই প্রেল্লের উত্তর স্থরপ তিনি তাহাকে বলিলেন যে, হে সত্যকাম! এই যে
ওঁকার, ইহা পর ও অপর"—শ্রুতি উপক্রমে এই প্রকার নির্দেশ করিয়া
বলিয়াছেন যে, "বে ব্যক্তি এই ত্রিমাত্র ওঁকারের দ্বারা সেই পরম পুরুষকে ধ্যান
করিবে," ইত্যাদি; আবার শ্রুতির অক্সন্থানে—"যাহা ধর্ম্মের দ্বারা পাওয়া
যায় না ও বাহা অধর্মের দ্বারাও পাওয়া যায় না" এই প্রকার উপক্রম করিয়া
পরে অভিহিত হইয়াছে যে, "সকল বেদ যে পদকে প্রকাশ করিয়া থাকে, সকল
তপস্থা যাহারে স্বরূপ প্রতিপাদন করে, যাহাকে পাইবার ইচ্ছার ব্রশ্ধচর্ম্যের
অক্ষর্মান করিতে হয়, সেই পদ আমি তোমায় সংক্রেপে বলিতেছি। ওঁকারই
সেই পদ।" এই সকল বচন দ্বারা বুঝিতে পারা যায়ু যে, ওঁকার পরব্রজের
বাচক এবং প্রতিমাদির স্থায় ওঁকার পরব্রজের ধ্যেয়মূর্ত্তি। বাহারা মন্মরুদ্ধি
অধবা মধ্যমমুদ্ধি, তাহাদের পক্ষে এইভাবে ওঁকারের উপাসনা কালান্তরে মুক্তিরূপ
ফল প্রদান করিয়া থাকে। ইহাই হইলে উক্ত শ্রুতির তাৎপর্য্য এই যে বিষয়টি

বেদে উক্ত হইরাছে, তাহাই একণে প্রতিপাদন করিবার ক্ষম্ন উত্তর প্রস্থের আরম্ভ হইতেছে। [শুধু বৈদে কেন] এই গীতা শাস্ত্রেও "কবি পুরাণ ও অফুশাসিতা" "বেদবিদ্গণ বে অক্ষর বিবরে উপদেশ দেন" ইত্যাদি বাক্যে বে পরব্রহ্মের উপভাস করা হইরাছে, সেই ব্রহ্মের প্রতিপত্তির সাধন ওঁকার পূর্বোক্ত-প্রকারে হইরা থাকে, সেই ওঁকারের উপাসনা কালান্তরে মুক্তিরাপফলের সাধন হর; তাহাই এইকণে যোগধারণার সহিত বলিতে হইবে এবং তাহার প্রসঙ্গে আরও কিছু বলিতে হইবে, এই কারণে উত্তর গ্রন্থের আরম্ভ করা হইতেছে।

সর্বার অর্থাৎ জ্ঞানলাভের উপারস্বরূপ ইন্দ্রিররূপ সকল স্থারকে সংবত করিয়া, হৃদরপুগুরীকে মনকে নিরুদ্ধ করিয়া অর্থাৎ তাহার বিক্ষেপ বন্ধ করিয়া, সেইস্থানে বশীকৃত অস্তঃকরণের দ্বারা হৃদর হইতে উর্দ্ধগামিনী নাড়ীর ভিতর দিয়া উর্দ্ধে মুর্দ্ধাদেশে আপনার প্রাণকে তুলিয়া বোগধারণা অবলম্বন করিতে প্রস্তু [হইবে]॥১২

ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম ব্যাহরন্ মামনুস্মরন্। যঃ প্রযাতি ত্যজন্ দেহং স যাতি পরমাং গতিম্॥ ১৩

আনুয়। ওঁইতি একাক্ষরং একা ব্যাহরন্ [তগা] নান্ অকুক্ষরন্দেহং ত্যক্ষন বঃ প্রয়াতি স প্রমাং গতিং বাতি ॥ ১৩

আনুবাদ। [তাহার পর] ওঁ এই একটি অক্ষররূপ ব্রহ্ম উচ্চারণ পূর্বক আমাকে শ্বরণ করিতে করিতে যে ব্যক্তি দেহ পরিত্যাগ করিয়া বাইতে পারেন, তিনি পরম গতি লাভ করিয়া থাকেন॥ ১০

ভাষ্য। তত্ত্বৈ চ ধারমন্— ওমিত্যেকাক্ষরং একা অক্ষণোছভিধান-ভূতমোকারং ব্যাহরন্ উচ্চারমন্ তদর্গভূতং মানীশ্বম্ অনুস্থারন্ অকুচিন্তারন্ বা প্রবাতি শ্রিমতে স ত্যজন্ পরিত্যজন্ দেহং শরীরং ত্যজন্ দেহমিতি প্রমাণ-বিশেষণার্থং দেহত্যাগেন প্রমাণমাত্মনো ন স্বরূপনাশেন ইত্যর্থ:। স এবং তাজন্বাতি গছতে প্রমাং প্রস্কুটাং গতিম্॥ ১৩

আনন্দগিরিটীকা। বংগাক্তবোগণারণার্থং প্রবৃত্তা মূর্দ্ধনি প্রাণমাধার ধারগ্নন্তিং কুর্য্যাদিত্যাশস্থ্য অনস্তরশ্লোকমবতাররতি—তত্ত্রেবৈতি। একক তৎ
অক্ষরং চেতি একাক্ষরমোমিত্যেবং রূপং তংকগং ব্রন্ধেতি বিশিষ্যতে তত্ত্তাহ—
ব্রক্ষণ ইতি। বঃ প্রবাতীতি মরণমূকা ত্যন্ত্রন্ দেহমিতি ক্রবতা প্রকৃত্তিরাশ্রিতা
ভাদিত্যাশস্থা বিশেষণার্থং বিবৃণোতি—দেহেতি। এবমোক্ষারমূক্তাররর্ম্থং

চাভিধ্যারন্ ধ্যাননিষ্ঠঃ স পুমানিভার্থঃ। পরমামিতি গতিবিশেষণং ক্রমমুক্তিবিবক্ষরা জন্তব্যম্॥ ১৩

অকুবাদ। দেই স্থানেই প্রাণকে স্থাপিত করিয়া যে ব্যক্তি ওঁ এই একটি অকরম্বরূপ ব্রহ্ম অর্থাৎ ব্রহ্মের বাচকশন্ধটিকে উচ্চারণ করিয়া এবং দেই ওঁকারের অর্থ ঈশ্বরম্বরূপ যে আমি, দেই আমাকে চিন্তা করিতে করিতে করিতে দেহে শরীর পরিত্যাগ পূর্বক প্রয়াণ করেন অর্থাৎ মৃত্যুলাভ করেন, এখানে দেহ পরিত্যাগ করা বিষয়ে যে কথা বলা হইল, তাহা দারা মৃত্যুরই পরিচর দেওয়া ইইয়াছে; ইহার তাৎপর্য্য এই যে, দেহের সহিত সম্বন্ধনাশই আত্মার প্রয়াণ (মৃত্যু); আত্মার প্রয়াণ অর্থে ক্রম্প বিনাশ কথনই হইতে পারে না [কারণ আত্মা অবিনাশী] এই প্রকারভাবে দেহ পরিত্যাগ পূর্বকি যিনি প্রয়াণ করেন, তিনি "পরম" প্রকৃষ্ট গতিকে লাভ করিয়া থাকেন॥ ১৩

জনম্যচেতাঃ সততং যো মাং স্মরতি নিত্যশঃ। তস্মাহং স্থলভঃ পার্থ নিত্যযুক্তস্ম যোগিনঃ॥ ১৪

আর্য়। হে পার্থ সত্তন্ অন্তচেতা: [সন্] যো মাং নিত্যশ: শ্রতি ততা নিত্যবৃক্ত যোগিন: অহং স্থলভ: ॥ ১৪

অনুবাদ। হে পার্থ, সর্বাদা অনক্রচেতা হইয়া যিনি আমাকে স্বরণ ক্রেন, সেই নিত্যযুক্ত যোগীর পক্ষে আমি স্থলভ ॥ ১৪

ভাষ্য। কিঞ্চ অন্তচেতা: নান্তবিষয়ে চেতো যক্ত সোহয়মন্তচেতা যোগী সভতং সর্বাদা যো মাং পরমেশ্বরং শ্বরতি নিত্যশ:। সভতমিতি নৈরস্তর্যাদ্রাতে। নিত্যশ ইতি দীর্ঘকাণজ্মুচাতে। ন বগাসং সংবৎসরং বা, কিং তর্হি যাবজ্জীবং নৈরস্তর্যোগ যো মাং শ্বরতীত্যর্থ:। তক্ত যোগিন: অহং স্থলভ: স্থেন লভ্যঃ, পার্থ নিত্যযুক্ত সদা সমাহিত্ত যোগিন:। যত এবম্ অতঃ অন্তচেতা: সন মরি সদা সমাহিতো ভবেৎ॥১৪

আনন্দি গিরিটীকা। নম বার্নিরোধবিধুরাণাম্ উদীরিতরা রীত্যা স্বেচ্ছাপ্রথক্তোৎক্রমণাসম্ভবাদ্ ল তা পরমা গতিরাপতেদিতি তত্তাহ—কিঞ্চেতি।
ইতক্ত ভগবদমুম্মরণে প্রয়তিতব্যমিত্যর্থঃ। সততং নিত্যপ ইতি বিশেষণ্রোরপ্রকৃত্তমাহ—সত্তত্মিত্যাদিনা। উক্তমেবাপৌনর্ক্ত্যং ব্যক্তীকরোতি—
নেত্যাদিনা। ক্রিভাস্থরিচ্ছয়া দেহং ত্যক্তি তদিতরস্ত কর্মকরেলৈবেতি

বিশেষং বিবশ্বরাহ—যুক্ত ইতি ৷ অনম্ভচেতসং সমাহিতচেতসং প্রতীশ্বরষ্ঠ সৌলভ্যমেবমিত্যুচ্যতে ॥ ১৪

আকুবাদ। আরও "জনপ্তচেতাঃ' অন্ত বিষয়ে যাহার চিত্ত থাকেনা। সেই ব্যক্তিই 'জনপ্তচেতাঃ'। এইরপ অনপ্তচেতাঃ হইরা যে যোগী "গতড" সর্বাদা আমাকে (অর্থাৎ) প্রমেশ্বরকে নিত্য শ্বরণ করিয়া থাকেন। "গতড" এই শব্দের দ্বারা নৈরস্তর্য্য কথিত হইতেছে, "নিত্যশঃ" এই শব্দের অর্থ দীর্ঘকাল ব্যাপিরা এইরপ ব্যান হইতেছে; ছরমাস নহে, একবৎসর নহে, কিন্ত যতদিন বাঁচিবে, ততদিন নিরস্তর যে ব্যক্তি আমাকে শ্বরণ করিবে, ইহাই তাৎপর্য্য। সেই "নিত্যযুক্ত" সর্বাদা সমাহিত যোগীর, হে পার্থ, আমি স্থলভ অর্থাৎ অনায়াসলভ্য। যে কারণ এইরূপ, এইজন্ত আমাতে অনন্তচেতা হইরা সর্বাদা সমাহিত হইবে॥ ১৪

মামুপেত্য পুনর্জন্ম হুঃখালয়মশাশ্বতম্। নাপুবন্তি মহাত্মানঃ সংসিদ্ধিং পরমাং গতাঃ॥ ১৫

আয়ৢয়ৢ । মহাস্থানঃ মাম্ উপেত্য পরমাং সংসিদিং গতাঃ [সস্তঃ] ছঃখালয়ম্ অশাখতং জনা পুনন প্রাপ্রুবস্তি॥ ১৫

অকুবাদ। মহাত্মাগণ আমাকে প্রাপ্ত হইয়া প্রমসিদ্ধিলাভ পূর্বক আর হঃধপূর্ণ অনিত্য জন্মলাভ করেন না॥১৫

ভাষ্য। তব সৌলভোন কিং স্থাদিত্যচাতে শৃণু তন্ম সৌলভোন বল্ভবতি—মামুপেতা মাম্ ঈশ্বরমুপেতা মল্ভাবমাপত্ত পুনর্জনা পুনরুৎপত্তিং ন প্রাপ্নুবস্তি। কিংবিশিষ্টং পুনর্জনা ন প্রাপ্নুবস্তীতি তদিশেষণমাহ—ছঃখালয়ং ছঃখানামাধ্যাত্মিকালীনামালয়মাশ্রম্। আলায়স্তে যশ্মিন্ ছংখানি ইতি ছঃখালয়ং জন্ম। ন কেবলং ছঃখালয়মশাশ্রতম্ অনবস্থিতস্বরূপং চ নাপ্লুবস্তীদৃশং পুনর্জনা নহাত্মানঃ যতয়ঃ সংসিদ্ধিং মোক্ষাখ্যাং প্রমাং প্রকৃষ্টাং গতাঃ প্রাপ্তাঃ। বে পুনর্মাং ন প্রাপ্নুবস্তি তে পুনরাবর্ত্তে ॥ ১৫

আনন্দগিরিটীকা। কিং ঘাং প্রাপ্তান্তব্যেবাবতিষ্ঠন্তে কিংবা প্নরাবর্ত্তন্তে চক্রলোকাদিবেতি সন্দেহাৎ পৃচ্ছতি—ত্রেতি। তত্ত্বোত্তরশ্লোকেন নিশ্চরং দর্শরতি—উচ্যুক্ত ইতি। ঈশরোপগমনং ন সামীপ্যমাত্তমিতি ব্যাচষ্টে—মস্তাবমিতি। প্নর্শ্বনাংনিষ্টহং প্রশ্নদারা স্পষ্টরতি—কিমিত্যাদিনা।
মহাত্মহং প্রকৃষ্টসন্তবৈশিষ্ট্যন্। যতরত্তিরেবেশরে সমুৎপল্পসম্যাগ্ দর্শিনো ভূত্তিতি

শেবঃ ভগবস্তম্পগভানাম্ অপুনরার্ত্তী ভত্তো বিমুধানামমূপজাভদন্যগ্ধিয়াং পুনরার্ত্তিরর্থসিদ্ধেত্যাহ—যে পুনরিতি ॥ ১৫

অসুবাদ। তুনি স্থলভ হইলে কি হয় ? ইহারই উত্তর দেওরা বাইতেছে। আনি স্থলভ হইলে বাহা হয়, তাহা [বলিতেছি] শ্রবণ কর। আনাকে (অর্থাৎ) ঈশ্বরকে প্রাপ্ত হইয়া অর্থাৎ আনার স্থভাব প্রাপ্ত হইয়া অর্থাৎ আনার স্থভাব প্রাপ্ত হইয়া অর্থাৎ আনার স্থভাব প্রাপ্ত হয়রা "প্রকর্ম কিরুপ, বাহাকে প্রাপ্ত হয় না ? তাহার বিশেষণ বলিতেছেন, "হঃখালয়" আধ্যাত্মিক প্রভৃতি ত্রিবিধ হঃথের আলয়; যাহাতে সকলপ্রকার হঃথ আলীন থাকে, নেই জয়কেই হঃখালয় বলা বায়। কেবল হঃখালয়ই বে, তাহা নহে, "আলাশত" অনবস্থিতভাবে। বাহারা "মহাত্মা" বতি সংখ্যাসী, তাঁহারা এই প্রকার প্রক্রেশ প্রাপ্ত হয়য় বাহারা আনাকে প্রাপ্ত হয়য়া থাকেন। বাহারা আনাকে প্রাপ্ত না হয়, তাহারাই সংসারে প্রাবর্তন করিয়া থাকে॥ ১৫

আব্রহ্মভুবনাল্লোকাঃ পুনরাবর্ত্তিনোহর্জ্ব । মামূপেত্য তু কোন্তেয় পুনর্জন্ম ন বিভতে॥ ১৬

আনুয়। হে অর্জুন, আব্রন্ধভ্বনাৎ লোকা: পুনরাবর্ত্তিন: [ভবপ্তি] হে কৌন্তেয়, মাম্ উপেত্য তু পুনর্জন ন বিশ্বতে ॥ ১৬

আনুবাদ। হে অর্জুন, ব্রন্ধলোক হইতে আরম্ভ করিরা অধন্তন অস্তান্ত সকল লোকস্থিত ব্যক্তিগণই এ সংসারে পুনুর্বার আবর্তন করে। কিছু হে কৌন্তের, আমাকে প্রাপ্ত হইলে আর পুনুর্ব্ব হর না॥ ১৬

ভাষ্য। কিং পুনন্তবোহন্তংপ্রাপ্তা: পুনরাবর্ত্তবে ? ইত্যুচ্যতে আবন্ধভ্বনাৎ ভবন্তি যশ্মিন্ ভ্তানি ইতি ভ্বনং বন্ধভ্বনং বন্ধলোক: ইত্যর্থ:।
আবন্ধভ্বনাৎ সহ বন্ধভ্বনেন লোকা: সর্বে পুনরাবর্ত্তিন: পুনরাবর্ত্তনন্তায়া
হে অর্জ্জ্ন। মামেকম্পেত্য তু কৌন্তের পুনর্জ্ব পুনরুৎপত্তিন বিশ্বতে । এ

আনন্দ গিরিটীকা। "সপান গোমমম্তা অভ্ন" ইতিশ্রুতেঃ স্বর্গাদিগতানান্দি সমানৈবানার্ত্তিরিতি আশহতে—কিং পুনরিতি। অর্থবাদশ্রুতে কর্মিণামম্ভবভাগেক্ষিক্ষং বিবক্ষিষা পরিহরতি—উচ্যত ইতি। এতেন ভ্রাদিলোকচতুইন্ধং প্রবিষ্টানাং পুনরাবৃত্তাবিপি জনাদিলোকজন্ধং প্রাথানাম-প্রারৃত্তিরিতি বিভাগোক্তিরপ্রামাণিক্ষাদ্বহেরেত্যবধেরম্। তর্হি ভর্দেবেশ্বরং

প্রাপ্তানামপি পুনরার্ত্তিঃ শক্ষ্যতে নেত্যাহ—মামিতি। যাবৎসম্পাতশ্রুতিবদীশ্বরং প্রাপ্তানাং নিবৃত্তাবিষ্ঠানাং পুনরার্ত্তিরপ্রামাণিকীত্যর্থঃ বস্ত স্বাভাবিকী বংশপ্রযুক্তা চ শুদ্ধিস্তব্যেকেহর্থে বৃদ্ধিস্কদেতীতি মন্বা সম্বৃদ্ধিষয়ম্॥ ১৬

অকুবাদ। তবে তুমি ছাড়া অন্ত কাহাকেও পাইলে কি পুনরাবর্ত্তন করিতে হয় ? তাহারই উত্তর এই হইতেছে যে, "ব্রহ্মভ্বন" বাহাতে প্রাধিণ গণ উৎপত্তি লাভ করে, তাহার নাম ভ্বন; ব্রহ্মার (চতুরাননের) ভ্বন ব্রহ্মভ্বন অর্থাৎ ব্রহ্মলোক। ব্রহ্মভ্বন হইতে অর্থাৎ ব্রহ্মলোকের সহিত আর সকল লোকই পুনরাবর্ত্তী অর্থাৎ পুনরাবর্ত্তনস্থভাব; হে অর্জ্ক্ন! আমাকে প্রাপ্ত হয়া কিন্ত হে কোন্তের, পুনরুৎপত্তি হয় না॥ ১৬

সহস্রযুগপর্য্যন্তমহর্যদ্ত্রক্ষণো বিহুঃ। রাত্রিং যুগসহস্রান্তাং তেহহোরাত্রবিদো জনাঃ॥ ১৭

অনুয়া। অফোরাত্রিদো জনা: যৎ সহস্ত্রপর্য্যসং তদ্রশ্বণ: মহর্ষিত্: [তথা] যুগ্সহস্তাস্থাং [বৃদ্ধানা] রাতিং বিচঃ ॥ ১৭

. আমুবাদ। অংহারাত্রবিৎ পণ্ডিতগণ জানিয়াছেন যে, ব্রহ্মার দিন এক সহস্র যুগ পর্যাস্ত, এবং ব্রহ্মার রাত্রিও এক সহস্র যুগ পর্যাস্ত ॥ ১৭

ভাষ্য । ত্রন্ধলোকসহিতা লোকাঃ কমাৎ পুনরাবর্ত্তিনঃ কালপরিচ্ছিঃপ্বাৎ কথম্—সহস্রযুগপর্যান্তং সহস্রং যুগানি পর্যান্তঃ পর্যবদানং ষস্তান্তঃ তদহঃ সহস্রযুগপর্যান্তং ত্রন্ধাণঃ প্রজ্ঞাপতের্বিরাজঃ বিছঃ, রাত্তিমপি যুগসহস্রান্তাম্ অহঃপরি-মাণামেব। কে বিছ্রিত্যাহ তে অহোরাত্রবিদঃ কালস্থ্যাবিদঃ জনাঃ ইত্যর্থঃ। ষত্ত এবং কালপরিচ্ছিন্নান্তেহতএব পুনরাবর্ত্তিনঃ লোকাঃ॥ ১৭

আনন্দণিরিটীকা। ব্রশ্নলোকসহিতানাং লোকানাং পুনরার্ত্তৌ হেতৃং প্রশ্নরার দর্শরতি—ব্রক্ষেতি। উক্তমেব হেতুমাকাজ্জাপূর্বকমৃত্তরশ্লোকেন সাধরতি—কথমিত্যাদিনা। বথোজাহোরাত্রাবরবমান্ত্র রনসন্বংসরাবরবশত-সংখ্যায়্রবিচ্চন্নতাং প্রজাপতেন্তদন্তর্বর্তিনামিপ লোকানাং বণাযোগ্যকালপরিচ্ছিন্নত্বন প্নরাবৃত্তিরিত্যভিপ্রেত্য ব্যাচষ্টে—সহস্ত্রেত্যাদিনা। জ্বক্ষরার্থমৃত্বা তাৎপর্যার্থমাহ—যত ইতি॥ ১৭

অমুবাদ। ব্রহ্মলোকের সহিত সকল লোকই কেন পুনরাবর্ত্তন করে? ব্যেহেতুক সকললোকই কালের ছারা পরিচ্ছিন্ন। কিরূপ কালের ছারা পরি-ছিন্ন? তাহাই বলা হইতেছে। "সহস্র যুগ পর্যাস্ত্র" সহস্র যুগ ধাহার পর্যাস্ত অর্থাৎ পর্যাবসান, ভাহার নাম 'সহস্রযুগ পর্যান্ত'। অহঃ অর্থাৎ দিন, ব্রহ্মা অর্থাৎ প্রজাপতি বৈরাজপুরুষের দিনের পরিমাণ এক সহস্রযুগ, তাঁহার রাজিরও এইরূপ যুগসহস্রপর্যান্ত অর্থাৎ তাঁহার দিনের যাহা পরিমাণ, রাজিরও সেই পরিমাণ এই পরিমাণ কাহারা জানে ? সেই অহোরাজবিৎ অর্থাৎ কালপরিমাণজ্ঞ ব্যক্তিগণ এই প্রকার ব্রহ্মার দিন ও রাজির পরিমাণ জানেন। বে কারণে ঐ সকল লোক কালপরিছিল, এই কারণেই ভাহারা পুনরাবর্ত্তনস্বস্ভাব, ইহাই তাৎপর্যা॥ ১৭

অব্যক্তাদ্ব্যক্তয়ঃ সর্ববাঃ প্রভবত্যহরাগমে। রাত্র্যাগমে প্রলীয়ন্তে তত্ত্বৈবাব্যক্তসংজ্ঞকে॥ ১৮

আমুয়। অহরাগমে সর্বা ব্যক্তর: (স্থাবরজঙ্গমলকণা:) অব্যক্তাং প্রভবন্ধি, রাত্রাগমে তত্ত্বৈব অব্যক্তসংক্তকে প্রণীরস্তে ॥ ১৮

আকুবাদ। স্থাবরজঙ্গশাত্মক দকলব্যক্তিই সেই এক্সার দিনকালে অব্যক্ত হইতে প্রকাশিত হয় এবং রাত্রির আগমনে আবার তাহারা সেই অব্যক্তেই বিলীন হইয়া থাকে॥ ১৮

ভাষ্য। প্রকাপতেরহনি বদ্ ভবতি রাত্রো চ তছচ্যতে। অব্যক্তাৎ অব্যক্তং প্রকাপতে: স্থাপাবস্থা, তত্মাদব্যক্তাৎ ব্যক্তরঃ ব্যক্তয়ে ইতি ব্যক্তরঃ স্থাববন্ধক্ষমলক্ষণাঃ সর্ব্ধাঃ প্রভবস্তি অভিব্যক্তান্তে; অহু আগমঃ অহরাগমঃ তত্মিন্ অহরাগমে কালে ব্রহ্মণঃ প্রবোধকালে তথা রাত্র্যাগমে ব্রহ্মণঃ স্থাপকালে প্রদীরন্তে সর্ব্ধা ব্যক্তরঃ তত্ত্বৈব পূর্ব্বোক্তে অব্যক্তসংজ্ঞকে॥১৮

আনন্দ্রিনিকা। যং প্রজাপতেরহস্তদ্ব্গসহস্রপরিমিতং যা চ তক্ত রাজিঃ সাপি তথেতি কালবিদামভিপ্রারমমূসতা রাজকাহোরাত্রক কালপরিমাণং দর্শরিষা তত্রৈব বিভজ্য কার্য্যং কথমতি—প্রজাপতেরিতি। অব্যক্তমব্যাক্তমিতি শকাং বারমতি—অব্যক্তমিত্যাদিনা। লাভিপ্রতিযোগিভূতা ব্যক্তীব্যাবর্ত্তমন্ত্রিত। অসহংপত্তিপ্রসক্তিং প্রত্যাদিশতি—অভিব্যজ্যন্ত ইতি। প্রেরাক্তমব্যক্তসংক্তকং স্বাপাবন্থং ব্রহ্ম প্রজাপতিশব্দিতং ত্রিপ্রিতি যাবং ॥ ১৮

অকুবাদ। প্রজাপতির দিবসেও রাত্রিতে বে কার্য্য হয়, তাহাই বলা
ইংতেছে—প্রজাপতির নিদ্রাবস্থাকে অব্যক্ত বলা যায়, সেই অব্যক্ত হইতে
সকল ব্যক্তি অর্থাৎ স্থাবর ও জলমস্বরূপ আফুডিবিশিষ্ট বস্তু সকল উৎপন্ন

হইরা থাকে। [কোন্ সমরে উৎপন্ন হয়, তাহাই বলিতেছেন] দিবদের আগমনে অর্থাৎ প্রজাপতির জাগরণ কালে; এইরূপ রাত্রির আগমনে অর্থাৎ প্রজাপতির নিদ্রাকালে, দেই সকল স্থাবরজঙ্গমলক্ষণ আকৃতিবিশিষ্ট বস্তু, পূর্ব্বোক্ত অব্যক্ত-সংজ্ঞক প্রকৃতিতে বিলীন হইয়া থাকে॥১৮

> ভূতগ্রামঃ স এবায়ং ভূত্বা ভূত্বা প্রলীয়তে। রাত্র্যাগমেহবশঃ পার্থ প্রভবত্যহরাগমে॥ ১৯

আনুয়। স এবায়ং ভূতগ্রামঃ ভূতা ভূতা অবশঃ [সন্, রাত্যাগমে প্রকীয়তে; হে পার্থ! [পুনঃ] অহরাগমে প্রভবতি ॥ ১৯

আকুবাদ। সেই এই প্রাণিসমূচ [কর্মাবশে] বারংবার জন্ম লাভ করিয়া ব্রহ্মার রাত্রিকাল আদিলে অবশ হইয়া আবার সেই অব্যক্তে লীন হইয়া থাকে। আবার হে পার্থ, ব্রহ্মার দিন আদিলে পুনর্কার উৎপত্তি লাভ করিয়া থাকে॥ ১৯

ভাষ্য। অক্কতাভ্যাগমক্কতবিপ্রণাশদোষপরিহারার্থং বন্ধমোক্ষশান্ত-প্রবৃত্তি-সাফল্যপ্রদর্শনার্থন্ অবিভাদিক্ষেশমূলকর্মাশরবশাচ্চ অবশো ভূতগ্রামঃ ভূষা ভূষা প্রলীয়তে ইত্যতঃ সংসারে বৈরাগ্যপ্রদর্শনার্থঞেদমাহ। ভূতগ্রামঃ ভূতসমূদায়ঃ স্থাবরজন্মলক্ষণো যঃ পূর্বিমিন্ করে আসীৎ স এবায়ং নাভো ভূষা ভূষা অহরাগ্রে, প্রলীয়তে পুনঃ পুনঃ রাত্র্যাগমে অহুঃ করে অবশঃ অক্ষতন্ত্রঃ এব পার্থ প্রভবৃতি অবশ এবাহরাগমে॥ >>

আনন্দণিরিটীকা। নমু প্রবেধকালে এন্ধণো যো ভ্তগ্রামো ভ্রা তথ্যৈব স্বাপকালে বিলারতে তন্মাদন্তো ভূরো ত্রন্ধণোহহরাগমে ভূরা পুনঃ রাজ্রাগমে পরবশো বিনশুতি, তদেবং প্রত্যবাস্তরকল্পং ভূতগ্রামবিভাগো ভবেদিত্যাশক্রানস্তরশ্লোক-তাৎপর্য্যমাহ——অকুত্তিতি। প্রতিকল্পং প্রাণিনিকারশু ভিল্পত্বে সতি অক্ততাভ্যাগমাদিদোরপ্রসঙ্গাৎ তৎপরিহারার্থং ভূতগ্রামশু প্রতিকল্পম্ ক্র্যমান্ত্র্যমিতার্থঃ। যদি স্থাবরজঙ্গমলক্ষণশু প্রাণিনিকারশু প্রতিকল্পমন্ত্র্যমিতার্থঃ। যদি স্থাবরজঙ্গমলক্ষণশু প্রাণিনিকারশু প্রতিকল্পমন্ত্র্যমিতার্থঃ। যদি স্থাবরজঙ্গমলক্ষণশু প্রাণিনিকারশু প্রতিকল্পমন্ত্র্যমিতার্থঃ। বদ্ধমান্ত্রাবাহ কাঞ্ডর্যাগ্রনো বন্ধমান্ত্রাপ্রশাল্পশুলিরত্যাহ—বন্ধেতি। কথং পুনভূতিসমুদারোহশ্বতন্ত্রঃ সল্লবশোভ্রা প্রবিলীরতে তত্তাহ—অবিত্যাদ্বিতি। আদিশন্দেনাশ্বিতারাগ্রেষাভিনিবেশা গৃহস্তে। যথোক্তং ক্লেশঞ্চকং মূলং প্রতিলভ্য ধর্মাধর্মান্ত্রকর্ম্বাশি-

ক্ষন্তবিত তদ্বশাদেবাস্বতন্ত্রো ভূতসমুদায়ো জন্মবিনাশাবমুভবতীতার্থঃ। প্রাণিনিকারস্য জন্মনাশাভ্যাসোক্তেরর্থমাং—ইত্যত ইতি। সংসারে বিপরিবর্ত্ত-মানানাং প্রাণিনামস্বাভন্ত্যাদবশানাংমব জন্মমর্ণপ্রবন্ধাং অলমনেন সংসারেণেতি বৈভ্ষ্যাং তন্মিন্ প্রদর্শনীয়ং তদর্থঞ্চেনং ভূতানামহোগাত্রমার্ত্তিবচনমিত্যর্থঃ। সমনস্করবাক্যমিদমা পরাম্প্রতে। রাত্র্যাগনে প্রলয়মমূভবতোহহরাগমে চ প্রভবং প্রতিপঞ্চমানস্য প্রাণিবর্গস্য ভূল্যং পারবশুনিত্যাশয়বানাহ—অহ্নইতি॥ ১৯

অনুবাদ। বে কর্ম করিল না ভাহার ফল লাভ হইল আর বে কর্ম করিল, তাহার কোন লাভ হইল না, এইরূপ দোষকে 'কুডরাল' বা 'অকডান্ড্যাগম দোষ' কহে। প্রকৃতস্থলে এইরূপ দোষ পরিহার করিবার জন্ত, বন্ধ ও মোকপ্রতিপাদক শাস্ত্রপাঠ করিয়া যে লোকের প্রবৃত্তি হর, সেই প্রবৃত্তির সাফল্য প্রদর্শন করিবার জন্ত, এবং অবিভাদি ক্রেশনিমিন্ত কর্মাশরের বলে অস্বতন্ত্র প্রাণিনিচয় পুনঃ পুনঃ জন্ম লাভ করিয়া মরিয়া বায়, এই কারণে সংসারে বৈরাগ্য হয়, ইহাও প্রদর্শন করাইবার জন্ত ভিগবান্ বিলিতেহেন যে—"ভূতগ্রাম" প্রাণিসম্দায়, স্থাবর ও জক্ম এই উভয়বিধ, যাহা পূর্ব্ব কয়ে ছিল, তাহাই মাবার পরিদ্ভামানরূপে উৎপত্ত হয়া থাকে, অন্ত নহে। দিনের আগমন হইলে এইরূপে ভূতগ্রাম উৎপত্ত হয়া [একার] রাত্রির আগমনে পুনঃ পুনঃ বিলীন হইয়া যায়। "মবশ" অস্বতন্ত্র; আবার দিবদের আগমনে সেইরূপ অবশ হইয়াই উৎপত্তি লাভ করে॥ ১৯

পরস্তম্মাত্ত্ব ভাবোহন্যোহব্যক্তোহব্যক্তাৎ সনাতনঃ। যঃ স সর্বেষু ভূতেষু নশ্যৎস্থ ন বিনশ্যতি॥ ২০

আনুষ্য়। তত্মাৎ অব্যক্তাৎ পর: তু অন্তঃ যোহব্যক্তঃ সনাতনঃ ভাবঃ স সর্কেষু ভূতেষু নশুৎস্থ ন বিনশুতি ॥ ২•

অনুবাদ । দেই পূর্বোক্ত অব্যক্ত হইতে পর অর্থাৎ বিলক্ষণস্বরূপ ষে অব্যক্ত সনাতন সন্তারূপ ভাব বিজ্ঞমান আছে, এই ভূতনিচয়ুবিনট হইলেও তাহা বিনট হয় না॥ ২০

ভাষ্য। বহুপশ্রস্তমক্ষরং তন্ত প্রাপ্ত্যুপায়ো নির্দিষ্ট ওমিত্যেকাক্ষরং ত্রেদ্ধে-ভাাদিনা অংগদানীমক্ষরত্তৈব স্বরুপনির্দিদিক্ষা ইদমুচ্যতে সনেন বোগমার্কেণ ইনং গম্বব্যমিতি পরো ব্যতিরিক্তঃ ভিন্ন:। কুতঃ তমাৎ পুর্ব্বোক্তাৎ। তুশব্দোহক্ষরন্ত বিবক্ষিতন্ত অব্যক্তাদ্বৈদক্ষণ্যবিশেষণার্থঃ। * ভাবোহক রাধ্যং পরং
বন্ধ। ব্যতিরিক্তম্বে সত্যপি সালকণ্যপ্রসন্দোহক্তীতি তদ্বিনিবৃদ্ধ্যর্থমাহ অন্ত ইতি।
অন্তো বিলক্ষণঃ স চাব্যক্তোহনিদ্রিরগোচরঃ। পরস্তমাদিত্যক্তং কমাৎ পুনঃ
পরঃ পুর্ব্বোক্তাদ্ ভৃতগ্রামবীজভূতাদ্বিভালমণাদ্ব্যক্তাৎ। সনাতনশ্চিরস্তনঃ।
যঃ স ভাবঃ সর্ব্বেবৃ ভূতেমু—ব্রক্ষাদিরু নশুৎস্ক ন বিনশ্রতি॥ ২০

আনন্দণিরিটীকা। অক্ষরং ব্রহ্ম প্রমমিত্যুপক্রম্য তদম্প্যুক্তং কিমিদমগ্রুত্বনিত্যাশস্ক্য বৃত্তমন্ত্রানন্তরগ্রন্থ দিল নিত্র প্রমন্ত্রানন্তরগ্রন্থ দিল নিত্র কিমিদমব্রহ্মপে নিদিদিকিতে তিমিন পূর্ব্বোক্ত বোগমার্গান্ত কথমুপ্রোগঃ স্থাদিত্যাশস্ক্য
তৎপ্রাপ্ত্যুপার্মদেনত্যাহ—অনেনিতি। গন্তব,মিতি বোগমার্গান্তি রূপযুক্তনিত্রে পূর্ব্বাক্তাদিতি সম্বন্ধঃ। প্রশক্ষ ব্যতিরিক্তবিষরত্বে তুশক্ষেন
বৈশক্ষণ্যমুক্তা পুনরগ্রশক্ষপ্রয়োগাৎ পৌনক্ষক্যমিত্যাশস্থাহ—ব্যতিরিক্ত
ইতি। তুনা গ্রোতিতং বৈশক্ষণ্যমন্ত্রশক্ষেন প্রকৃতিত্র্য়। যতো ভিরেম্বিপ ভাবভেদেরু সালক্ষণ্যমালক্যতে ততশ্চাব্যক্তাভির্বেহিপি ব্রহ্মণস্তেন সাদৃশ্রমাশক্ষতে
তরিবৃত্ত্যর্থমন্তপদ্মিত্যর্থঃ। যদা প্রশক্ষ প্রকৃত্বিবাচিনো ভাববিশেষণার্থকে
পুনক্ষিশক্ষৈব নাস্ত্রীতি দ্রন্থবান্য বিনাধীকি ক্ষর্বান্তং পুক্ষান্তং পুক্ষান্তং বিনা্রভিত্ত সতু বিনাশহেম্বভাবার বিনাই মূর্যতীত্যর্থঃ॥ ২০

অমুবাদ। "ওমিত্যেকাক্ষরং ব্রহ্ম" ইত্যাদি শ্লোকের ঘারা যে অক্ষরের বিষর বলা হইরাছে, তাহার প্রাপ্তির উপায়ও নির্দিষ্ঠ হইরাছে। এক্ষণে যে প্রকার বোগমার্গ ঘারা তাঁহাকে পাওয়া যায়, তাহা বুঝাইবার অভিপ্রায়ে জপ্রে সেই ব্রহ্মের স্বরূপ নির্দেশ করিবার জন্ত বলিতেছেন যে—'পর" ব্যতিরিক্ত,—ভিন্ন, কাহা হইতে ? সেই পূর্কোক্ত (অব্যক্ত) হইতে। ঘাহার বিষয়ে বলিতেইক্রা করা হইরাছে, সেই ব্রহ্ম যে অব্যক্ত হইতে অত্যন্ত বিলক্ষণ তাহাই 'তু' শব্দের ঘারা স্টিত হইতেছে। 'ভাব' অক্ষরাথ্য পরব্রহ্ম অব্যক্ত হইতে বিলক্ষণ হইতেও তাহার সহিত অব্যক্তের সালক্ষণ্য অর্থাৎ একই প্রকার লক্ষণ হইতেপারে, এই সন্তাবনার নিরাকরণ করিবার জন্ত বলিতেছেন,—"অন্ত" অন্ত [শব্দের অর্থ] বিলক্ষণ, সেই ব্রহ্মও যন্তপি 'অব্যক্ত' অর্থাৎ ইন্দ্রিরের গোচর নহেন, সেই অব্যক্ত ব্রহ্মও প্রকৃতি নামে প্রসিদ্ধ বে অব্যক্ত, তাহা হইতে পর,

^{*} বৈলক্ষণ্য প্ৰদৰ্শনাৰ্থ: ইতি বা পাঠ:।

ইহা বলা হইরাছে। কাহা হইতে পর ? সেই পূর্ব্বোক্ত ভূতগ্রামের বী**জভূত** অবিষ্<mark>ঠালকণ অব্যক্ত</mark> হইতে। "সনাতন" চিরগুন। এই প্রকার যে "ভাব" তাহা ব্রন্ধাদি সকল জগৎ নষ্ট হইলেও নষ্ট হয় না॥

> অব্যক্তোহক্ষর ইত্যুক্তস্তমাহুঃ পরমাং গতিম্। যং প্রাপ্য ন নিবর্ত্তক্তে তদ্ধাম পরমং মম॥ ২১

আনুরুয়। অব্যক্তঃ অক্ষরঃ ইতি [বো ভাবঃ] উক্তঃ তং পরমাং গতিম্ আছঃ। বং (ভাবং) প্রাপ্য ন নিবর্ত্তরে তৎ মম প্রমং ধাম ॥২১

অনুবাদ। যে ভাব, অব্যক্ত ও অক্ষর শব্দের দারা প্রতিপাদিত হই-রাছে, তাহাকেই পরম গতি বলিয়া শাস্ত্রকারগণ নির্দেশ করিয়া থাকেন। যাহা প্রাপ্ত হইলে আর পুনরাবর্ত্তন করিতে হয় না, তাহাই আমার পরম ধাম॥ ২১

ভাষ্য। অব্যক্ত ইতি। যোহসৌ অব্যক্ত: অক্ষর ইত্যুক্ত: তমেবাক্ষর-সংজ্ঞকম্ অব্যক্তং ভাবন্ আহু: প্রমাং প্রকৃষ্টাং গতিম্। যং ভাবং প্রাপ্য গছা ন নিবর্ত্তরে সংসারায় তদ্ধান স্থানং প্রমং প্রকৃষ্টাং মন বিষ্ণো: প্রমং প্রদিষ্টিত্যাই: ॥২১

আনন্দগিরিটীকা। যথোক্তেংব্যক্তে ভাবে শ্রুতিদম্ভিমাহ—অব্যক্ত ইতি। তত্ত পরমগতিত্বং সাধরতি—যং প্রাপ্যেতি। যোহসাবব্যক্তো ভাবোহত্র দর্শিতঃ সঃ "যেনাক্ষরং পুরুষং বেদ সত্যম্" ইত্যাদিশ্রতাবক্ষর ইত্যক্তঃ তং চাক্ষরং ভাবং পরমাং গতিং "পুরুষার পরং কিঞ্চিৎ সা কাঠা সা পরা গতিঃ" ইত্যাদ্বাঃ শ্রুতিরো বদন্তীত্যাহ—যোহসাবিতি। পরমপুরুষত্ত পরমগতি-দমুক্তং বানক্তি—যং ভাবমিতি। "ত্রিকোঃ পরমং পদম্" ইতি শ্রুতিমত্র সংবাদরতি— ত্তদ্ধামেতি॥ ২১

আনুবাদ। অব্যক্ত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। সেই অব্যক্তই অকর বিনিয়া নির্দিষ্ট হইয়া থাকে, তাহাই (সেই অকর নামক অব্যক্ত ভাবই) [শান্তকারগণ] "পরম" প্রকৃত্ত গতি বিনিয়া উল্লেখ করিছেন। বে ভাবকে প্রাপ্ত হইয়া লোকে আর সংসারভোগ করিছে প্নরাগমন করে না, সেই "পরম" প্রকৃত্তি স্থানই আমার ধাম অর্থাৎ তাহাই বিষ্ণুর পরমপদ। ইহাই অর্থ॥ ২১

পুরুষঃ স পরঃ পার্থ ভক্ত্যা লভ্যস্ত্বনন্তরা। যদ্যান্তঃস্থানি ভূতানি যেন সর্ব্বমিদং ততম্॥ ২২

আনুয়॥ হে পার্থ, ভূতানি যত অন্তঃস্থানি যেন ইদং সর্কং ততং, স পরঃ পুরুষ: অনক্রয়া ভক্তা লভ্যঃ॥ ২২

আনুবাদ। হে পার্থ, ভূতসমূহ যাহার অভ্যস্তরে অবস্থিত, বিনি এই নিধিল জগৎকে ব্যাপিয়া আছেন, সেই পরম পুরুষ [কেবল] অনগ্রভক্তিশারাই লভ্য॥ ২২

ভাষ্য। তল্লজেরপার উচ্যতে—পুরুষ: পূরি শরনাৎ পূর্ণস্থাদ্বা স পর: পার্থ পরো নিরতিশয়ো যস্মাৎ পুরুষাৎ ন পরং কিঞ্চিৎ স ভক্তা বভ্যন্ত জ্ঞানলক্ষণরা অনন্তরা আত্মবিষয়য়া। যস্ত পুরুষস্তান্ত:-স্থানি মধ্যস্থানি কার্য্যভূতানি ভূতানি! কার্য্যং হি কারণস্যান্তর্বন্তি ভবতি। যেন পুরুষেণ সর্মমিদং জগং ততং ব্যাপ্তম্ আকাশেন ইব ভটাদি॥২২

আনন্দগিরিটীকা। নমু ব্যক্তাদতিরি ক্স তি বিশক্ষণ প্রমপুক্ষস্থ প্রাপ্তে কিন্দাধারণে হেত্রেষিতব্যা যশ্মিন্ প্রেকাপূর্বকারী তৎপ্রেপ্সয়া প্রবাধা নির্বণাতি তত্রাই — তল্লাক্রেরিতি। পরস্থ পুক্ষন্য সর্বকারণতং সর্বাধানকর্ম্ব বিশেষণ্ডর মৃদাহরতি — যস্মেতি । নিরতিশয়তং বিশদয়তি— যুস্মাতি । তৃশব্দোহবধারণার্থঃ । ভক্তিভজনং সেবা প্রদক্ষিণপ্রণামাদিলক্ষণা তাং ব্যাবর্ত্তর ভিল্কা ভক্তেবিষয়তো বৈশিষ্ট্যমাই — অনন্যয়েতি। বোহসৌ পুক্রেষা বিষয়া ভক্তিত্বপ্রাপ্তে পর্যাপ্রেত্যাশক্ষোব্রাদ্ধং ব্যাচষ্টে— যুস্মেতি। কণজ্তানাং তদজ্বংস্থং তত্রাই — কার্য্যং হীতি। "স পর্যাগাং" ইতি ক্রতিমান্তিত্যাই — যুস্মেতি॥ ২২

অনুবাদ। তাঁহাকে পাইবার উপায়, বলা হইতেছে। "পুরুষ" [দেহরূপ] পুরে শয়ন করেন বলিয়া অথবা স্বয়ং পূর্ণ বলিয়া | তাঁহাকে পুরুষ বলা বায়] হে পার্থ, সেই "পর" (অর্থাৎ) নিরতিশয় "বেহেতু তাঁহা হইতে পর অর্থাৎ শ্রেষ্ঠ কোন বন্ধ নাই সেই" পুরুষ, কেবল অন্তভক্তি (এই ভক্তি শন্ধের অর্থ জ্ঞান) দ্বারাই লভ্য [হইয়া থাকেন]। (এথানে বে "ড়নত্ত" শন্ধ আছে, তাহার অর্থ আত্মবিষয়ক) এই কার্যান্বরূপ ভূতনিচয় বাহার "অন্তঃহু" মধ্যবন্ত্তী। কার্য্য কারণেরই সন্তর্নিবিষ্ট হইয়া থাকে। বে

পুরুষের ছারা এই সমস্ত জগৎ ঘটাদি যেমন আকাশের ছারা ব্যাপ্ত, সেই-রূপ ব্যাপ্ত রহিয়াছে॥ ২২

> যত্র কালে স্থনার্ত্তিমার্ত্তিং চৈব যোগিনঃ। প্রযাতা যান্তি তং কালং বক্ষ্যামি ভরতর্বভ॥২৩

আনুয়। হে ভরতর্বভ! যোগিনঃ যত্রকালে প্রয়াতাঃ আবৃত্তিম্ অনার্ব্তিং চ গচ্ছত্তি তং কালং বক্যানি॥২০

অনুবাদ। হে ভরতকুলাশ্রেষ্ঠ, যোগিগণ যে কালে মৃত্যুলাভ করিলে এ সংসারে পুনরাবৃত্তি করেন অথবা অপুনরাবৃত্তি লাভ করিয়া থাকেন, আমি সেই কালের বর্ণন করিতেছি॥ ২৩

ভাষ্য। প্রকৃতানাং যোগিনাং প্রণবাবেশিতব্রন্ধবৃদ্ধীনাং কালান্তরমুক্তিভাজাং ব্রন্ধপ্রতিপত্তয়ে উত্তরো মার্গো বক্তব্যঃ ইতি যত্র কালে ইত্যাদি বিবক্ষিতার্থসমর্পূর্ণার্থমুচ্যতে। আর্ত্তিমার্গোপস্থাস ইতরমার্গস্তত্যর্থ:—যত্র কালে
প্রধাতা ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধঃ। যত্র যন্মিন্ কালে তু জনার্ত্তিম্ অপুনর্জন্ম
আর্ত্তিং তিবিপরীতাং চৈব। যোগিন ইতি যোগিনঃ কন্মিণশ্চ উচ্যস্তে।
কন্মিণস্ত গুণতঃ 'কর্মযোগেন যোগিনাম্' ইতি বিশেষণাং যোগিনঃ। যত্র
কালে প্রধাতা মৃতা যোগিনঃ জনার্তিং যান্তি যত্র কালে চ প্রধাতা আর্ত্তিং
যান্তি তং কালং বক্যামি ভরতর্যভ॥২৩

আনন্দ্গিরিটীকা। নম জানায়তা পরমপ্রথপ্রাপ্তিরুক্তা ন চ জ্ঞানং
মার্গমপেক্য ফলায় কয়তে বিহুষো গত্যুৎক্রান্তিনিষেধক্রতে: তথাচ মার্গোক্তরযুক্তেত্যাশস্ক্য সপ্তণশরণানাং তহুপদেশে,হর্থবানিত,ভিপ্রেত্যাহ—প্রকৃতানামিতি। বক্তব্য ইতি য়ত্রকাল ইত্যাহ্যুচ্যুতে ইতি সম্বন্ধঃ। সচেদ্বক্তব্যস্তর্হি কিমিত্যধাত্মাদিভাবেন সবিশেষং ব্রহ্ম ধ্যায়তাং ফলাপ্তরে মৃর্ক্তনাড়ীসম্বন্ধে দেবমানে পথ্যপাস্যত্মায় বক্তব্যে কালো নির্দিশ্যতে তত্রাহ—বিবক্ষিতেতি। সোহর্থো মার্গপ্রহৃত্তিশেষত্বেন কালোভি রিত্যর্থঃ। পিতৃষাণমার্গোপত্যাসন্তর্হি কিমিতি ক্রিয়তে তত্রাহ—আব্রুত্তীতি। মার্গান্তরক্ষার্রতিফলত্বাদিস্য চানার্ত্তিফলত্বাৎ তদপেক্ষয়া মহীয়ানয়মিতি শুভির্বিবিক্ষিতেতি ভাবঃ।
বোগিন ইতি ধ্যায়িনাং কর্ম্মিণাঞ্চ তন্ত্রেণাভিধানমিত্যাহ—ব্যাগিন ইতি।
কথং কর্মিব্ বোগিশক্ষো বর্ত্তামিত্যাশস্ক্যান্তর্ভানগুণযোগাদিত্যাহ—কর্ম্মিণ্
স্থিতি। গুণতো ধোগিন ইতি সম্বন্ধঃ। তত্ত্রব বাক্যোপক্রমস্যান্তর্ক্ল্য-

মাহ—কর্ম্মযোগেনেতি। অবশিষ্ঠান্তকরাণি ব্যাচক্ষাণো বাক্যার্থমাহ— যুত্ত্বেতি। যোগিনে। খ্যান্নিনোহত্র বিবক্ষিতা আবৃত্তাবধিক্কতা যোগিনঃ কর্মিণ ইতি বিভাগঃ॥ ২০

অকুবাদ। প্রণবে বাঁহারা ব্রহ্মবৃদ্ধি করিয়া থাকেন, দেই সকল বোগীই-এখানে প্রকৃত যোগী; তাঁহাদের দেহপাতের পর কালান্তরে মুক্তি হইয়া খাকে। তাঁহাদের এই ব্রহ্মপ্রাপ্তির পথ উত্তর মার্গ একণে বলিতে হইবে। এই কারণেই যত্রকালে ইত্যাদি শ্লোকের বারা বিবঞ্চিত অর্থ প্রতিপাদন করিবার অমুকুল বস্তুর বর্ণন করা হইতেছে। আরুত্তি নার্গের উপ্সাদ্ধারা ইতরমার্গেরই স্তুতি করা হইয়াছে। অর্থাৎ যে মার্গে গমন করিলে আর এই সংসারে ফিরিয়া আসিতে হয় না, সেই উত্তর মার্গেরই প্রশংসা করা ঃইতেছে—"যে কালে" ইহার "প্রয়াত" এই দুরস্থিত পদের সহিত সম্বন্ধ। "ষত্ৰ" বে কালে "অনাবৃত্তি" অপুনর্জন্ম, "আবৃত্তি" তাহার বিপরীত অর্থাৎ পুনর্জন্ম, "বোদী" এই শব্দের ছারা যোগী ও কর্মী এই উভয়ই প্রতি-পাদিত হঠতেছে। কর্ম্মিগণই গুণবোগে বোগী হইয়া থাকেন। "কর্মবোগের ছারা বোগিগণের" ইত্যাদি শ্লোকের দারা কর্ম্মিগণই যে যোগী বলিয়া অভিহিত ্ছইতে পারেন; তাহা বুঝিতে পারা যায়। [তাৎপর্যা এই ২ইতেছে যে] যে কালে "প্রশ্নাত" মৃত হইয়া যোগিগণ অনাবৃত্তিকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন এবং বে কালে মৃত হইয়া আবৃত্তিকে প্রাপ্ত হন, হে ভরতবর্ষভ, আমি তোমাকে সেই কালের বিষয়ে একণে বলিতে উন্ধত হইতেছি॥ ২৩

> অগ্নির্জ্যোতিরহঃ শুক্লঃ যথাসা উত্তরায়ণম্। তত্ত্ব প্রয়াতা গচ্ছন্তি ত্রন্ধা ত্রন্ধাবিদো জনাঃ॥ ২৪

আনুরা। অধি: জ্যোতি: অহ: শুক্ল: বগাসা উত্তরায়ণম্ [চ] ব্রন্ধ-বিদো জনা: প্রয়াতা: [সস্তঃ] তত্ত্র বন্ধ গছন্তি ॥ ২৪

অনুবাদ। স্থাবন্ধের উপাসকগণ মৃত হইলে, যথাক্রমে অগ্নি, জ্যোতিঃ, অহঃ, শুক্রপক্ষ, যথাস ও উত্তরায়ণ এই কয়জন কালাভিমানিনী দেবতাগণের দ্বারা অধিষ্ঠিত পথ অবলয়ন করিয়া বন্ধ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ২৪

ভাষ্য। তং কালমাহ। অগ্নি: কালাভিমানিনী দেবতা, তথা জ্যোতি-দেবিতৈব কালাভিমানিনী। অথবা অগ্নিজ্যোভিষী বথাশ্রুতে এব দেবতে। ভূষসাং তু নির্দ্দেশঃ বজু কালে তং কালমিতি আয়ুবণবং। তথা অহদেবিতা মহঃ শুরুণ শুরুণকদেবতা। বথাসা উত্তরায়ণং তত্রাপি দেবতা এব মার্গভূতা। ইতি স্থিতোংক্তর স্থায়:। তত্র তন্মিন্ মার্গে প্রয়াতা মৃতা গচ্ছপ্তি ব্রহ্ম ব্রহ্ম ব্রহ্ম বিলো ব্রহ্মোপাসনপরা জনাঃ। ক্রনেণেতি বাক্যশেষঃ। ন হি সন্তোম্জিভালাং সম্যুগ্দনিনিষ্ঠানাং গতিরাগতিবা কচিদন্তি "ন ত্য্য প্রাণা উৎক্রামন্তি" ইতি শ্রুতঃ। ব্রহ্মসংলীনপ্রাণা এব তে ব্রহ্মময়া ব্রহ্মভূতা এব তে। ক্রমেণ ভূগছ্পি ব্রহ্ম ব্রহ্মবিদো জনাঃ॥ ২৪

আনন্দ্রিরিটীকা। কালপ্রাধান্তেন মার্গবরোপস্থাসমুপক্রম্য তরেব
প্রধানীক্বতা দেববানং পদ্ধানমবতারয়তি—তং কালমিতি। বংগাপক্রমং
ব্যাথ্যায় বর্থাক্রতং ব্যাথ্যাতি—অথবৈতি। কথং তর্চি দেবতানামতিনেত্রীণাং গ্রহণে কালপ্রধান্তেন নির্দেশঃ প্রিষ্যতে তত্রাহ—ভূমুসান্ত্রিতি।
মার্গবরেহপি কালাগুভিমানিস্তো দেবতাঃ কালশন্দেনোচ্যন্তে কালাভিমানিনীনাং ভূয়ত্বাৎ কালশন্দেন সর্কাসাং দেবতানামুপলক্ষ্যতং বিবক্ষিত্রা কালকথনমিত্যর্থঃ। বথামাণাং ভূয়ত্বাদ্বিভ্যমানেশ্বপি ক্রমান্তরের আন্তরেবে বনং
নিন্দিশ্রতে তদ্বিদিত্যুদাহরণমাহ—আন্ত্রিতি। নম্মার্গচিক্রানাং ভোগভূমীনাং বা তত্তভ্রমেকপাদানসন্তরে কিমিতি দেবতাগ্রহণম্ ইত্যাশক্ষ্য মাতিবাহিকান্তলিক্রাদিতি স্থায়েনোত্রমাহ—ইতি স্থিত ইতি। তেবামগ্র্যাদীনাং
সমীপমিতি সামীপ্যে তত্তেতি সপ্তমী। বন্ধ কার্য্যোপাধিং পরং বা বন্ধ
পরন্ধামুক্রালন্থনমতএব ক্রমেণেভ্যুক্তম্। নিশ্বণিমপ্রপঞ্চং বন্ধান্ধীতি বিভাবতো ব্যবচ্ছিনতি—ব্রেক্রাপাসনেতি। নম্ম বন্ধান্দ্র্যার্থমার্থং পরবন্ধবিদামেবেরং গতি ক্রচতে ন বাদ্য্যধিকরণবিরোধান্তিয়াহ—ন হীতি॥ ২৪

আকুবাদ। সেই কাল বলিতেছেন। "অগ্নিতে অভিমান বাহার আছে, সেই দেবতাই [অগ্নিশব্দের ঘারা এভিপাদিত হইতেছেন;] এই প্রকার "জ্যোতিঃ" ও কালাভিমানিনী দেবতা। অথবা অগ্নি ও জ্যোতিঃ ইহাঁরা বথাশুত দেবতাই। বাহা বেশী, তাহা ঘারাই বাহা অর তাহার নির্দেশ হর, এই প্রকার ভার আছে বলিরা অগ্নি ও জ্যোতিঃ ইহাঁরা কালাভিমানিনী দেবতা না হইলেও, "সেই কাল ব্লিতেছি" এই উপক্রমে পঠিত কতকগুলি কালাভিমানিনী দেবতার মধ্যে অগ্নি ও জ্যোতির নাম করা হইরাছে বলিরা এই ছই দেবভাও কাল শব্দের ঘারা প্রতিপাদিত হইরা থাকেন। কালাভিমানিনী দেবতাই বন্ধলোকপ্রাপ্তির মার্গভৃত হইরা থাকেন, এই নিরম অন্তক্ত প্রদর্শিত হইরাছে। বেমন আব্দের গাছ অথিক থাকিলে অন্ত গাছ থাকিলেও লোকে আন্তর্গা

বিষয়ই নির্দেশ করে, এইথানেও কাল শব্দের উল্লেখও তদ্ধপ। সেইরূপ অহঃ এই শব্দের অর্থ দিনের অধিষ্ঠাতী দেবতা, ওক্ল শব্দের অর্থ ভক্লপক্ষাভিমানিনী দেবতা, বন্মাস ও উত্তরারণ শব্দের অর্থও তত্তদভিমানিনী দেবতা। সেই এই মার্গে বন্ধবিৎ অর্থাৎ সপ্তণ ব্রহ্মোপাসনাপর বোগিগণ ব্রহ্ম (অর্থাৎ ব্রহ্মলোক) প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। এই ব্রহ্মলোক প্রাপ্তি ক্রমেই হয়, ইহাই বাক্যের শেষাংশ। বাহারা সভ্যোমুক্তিভাক (সভ্যোমুক্তি-প্রাপ্তির যোগ্য) অর্থাৎ বাহারা সম্যাগ্দর্শনির্চি, তাঁহাদের কোন স্থানে গমন বা আগমন সম্ভবপর নহে। কারণ, তাঁহাদের বিষয়ে প্রতিতে এইরূপ উল্লিখিত হইয়াছে যে, "তাঁহার প্রাণ উৎক্রাম্ভ হয় না"। তাঁহাদের প্রাণ ব্রহ্মে সংলীন হয়,— তাঁহারা ব্রহ্মভূত,—ব্রহ্মময়ই হইয়া য়ান। বাহারা সগুণ ব্রহ্মোপাসক, তাঁহারাই ক্রমে কর্মের ফলে অগ্নি প্রভৃতি [আতিবাহিকী] দেবভাগণের অধিষ্ঠিত পথকে অবলম্বন করিয়া ব্রহ্মপ্রাপ্ত হন ॥২৪

ধূমো রাত্রিস্তথা কৃষ্ণঃ ষণ্মাদা দক্ষিণায়নম্। তত্র চান্দ্রমদং জ্যোতির্যোগী প্রাপ্য নিবর্ত্ততে ॥২৫

অন্বয়। ধ্ন: রাত্রি: তথা রুক্ত: বগ্যাসা: দক্ষিণায়নম্—তত্র চান্ত্রমসং জ্যোতি: প্রাপ্য যোগী নিবর্ত্তে॥ ২৫

অনুবাদ। ধুমাভিমানিনী দেবতা, রাত্রিদেবতা, ক্লঞ্চপক্ষদেবতা ছয় মাসের দেবতা ও দক্ষিণায়ন দেবতা এই প্রকার যে মার্গক্রম আছে, সেই পণে যাইয়া কেবল কর্মপর যোগী চন্দ্রলোকের ভোগ অহভব করিয়া পুনর্কার সংসারে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া থাকে॥ ২৬

ভাষ্য । ধুম ইতি। ধ্মো রাত্রিঃ ধুমাভিমানিনী রাত্র্যভিমানিনী চ দেবতা। তথা রুক্ষঃ কুঞ্চপক্ষদেবতা। বগ্মাসা দক্ষিণায়নমিতি চ পূর্ববদ্দেবতৈব। তত্ত্ব চক্রমসি ভবং চান্দ্রমসং জ্যোতিঃ ফলমিষ্টাদিকারী যোগী কর্মী প্রাপ্য ভূজ্বা তৎক্ষরান্নিবর্ত্তভে॥২৫

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতং দেবধানং পছানং স্তোড়ং পিতৃবাণম্ উপরক্তাত—ধুম ইতি। অত্রাপি মার্গচিহ্নানি ভোগভূমীশ্চ ব্যবচ্ছিত্র আতিবাহিক-দেবতাবিষয়থং ধুমাদিপদানাং বিভব্তত—ধুমেত্যাদিনা। তত্ত্রতি সপ্তমী পূর্ববদেব সামীপ্যার্থা। ইষ্টাদীত্যাদিশব্দেন পূর্বদত্তে গ্রেতে। কৃতাত্যয়েহছ্ম-শেরবানিতি স্তায়ং স্চয়তি—তৎক্ষয়াদিতি ॥ ২৫

অকুবাদ। ধুম ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। ধুম ও রাত্তি (শব্দের তর্থ)
ধুমাভিমানিনী ও রাত্র্যভিমানিনী দেবতা। সেইরূপ 'রুক্ষ' এই শব্দের অর্থ
রুক্ষপক্ষাভিমানিনী দেবতা। এইরূপ 'বগাদ' ও 'দক্ষিণায়ন' শব্দেরও অর্থ পূর্বের
ভার দেবতা। সেই এইপথে কেবল কর্মপর যোগী (অর্থাৎ) "বাগাদির
অকুষ্ঠানকর্তা" চাক্রমাদ জ্যোতিঃ অর্থাৎ চন্দ্রলোকোন্তব নিজ নিজ কর্ম্মের
ফলস্বরূপ যে স্থা, তাহা ভোগ করিয়া সেই কর্ম্মের ক্ষম হইলে পুনর্ব্বার [এই
সংসারে] প্রত্যাবর্ত্তন করে॥ ২৫

শুক্রক্ষে গতী হেতে জগতঃ শাশ্বতে মতে। এক্য়া যাত্যনাবৃত্তিমন্ময়াবর্ত্ততে পুনঃ॥ ২৬

অনুয় । ৰুগতঃ এতে শুক্লক্কফে গতী শাখতে মতে একয়া অনাবৃত্তিং বাতি অন্তর্মা পুনঃ আবর্ত্ততে ॥ २७

আনুবাদ। জগতের এই শুক্ল ও ক্লফ দ্বিবিধ গতি চিরস্তন বলিরা সম্মত; এই হুইটি গতির মধ্যে একটি গতির দ্বারা অনাবৃত্তি লাভ করা ধার, আর অন্ত গতিটির দ্বারা পুনরাবর্ত্তন করিতে হয়॥ ২৬

ভাষ্য। শুক্লেতি। শুক্লককে জ্ঞানপ্রকাশকর্বাৎ শুক্লা, তদভাবাৎ ককা। এতে শুক্লককে শুক্লা চ ককা চ শুক্লককে হি গতী জগত ইতি অধিকতানাং জ্ঞানকর্মণোঃ, ন জগতঃ সর্বস্থৈবৈতে গতী সম্ভবতঃ। শাশ্বতে নিত্যে সংসারশু নিত্যহাৎ মতে অভিপ্রেতে। তত্র একরা শুক্লরা বাতি অনার্ভিষ্ অক্লয়া ইতর্বা আবর্ত্তে পুনভূরিঃ॥ ২৬

আনন্দগিরিটীকা। আরোহাবরোহয়োরভ্যাসবাচিনা। পুন:শব্দেন
সংসারস্থানাদিবং প্রচাতে। রাজাদৌ মৃতানাং ব্রন্ধবিদামব্রদ্ধপ্রাপ্তিশন্ধানিবৃত্তার্থম্
অভিমানিদেবতাগ্রহণার মার্গরোর্নিতাত্তমাহ—শুকুতি। জ্ঞানপ্রকাশকত্বাদবিভাপ্রাপ্যত্বাৎ অর্চিরাদিপ্রকাশোপলক্ষিতত্বাচ্চ। শুরা দেববানাখ্যা গভিত্তদভাবাজ্জ্ঞানপ্রকাশকত্বাভাবাৎ ধুমান্তপ্রকাশোপলক্ষিতত্বাদবিভাপ্রাপ্যত্বাচ ক্রকা
পিতৃবাণলক্ষণা গতিঃ তয়োর্গত্যোঃ শ্রুভিস্বভিপ্রসিদ্ধার্থো হিশব্দঃ। জগভ্তব্নত্ত
জ্ঞানকর্মাধিকতবিবরত্বেন সক্ষোচে হেতুমাহ—ন জগত ইতি। অভ্যথা জ্ঞানকর্মোপদেশানর্থক্যাদিতার্থঃ। তয়োর্নিত্বতে হেতুমাহ—সংসারস্ত্রেতি। মার্গরোবাবৎ সংসারভাবিত্বে ফলিতমাহ—তত্ত্রেতি। ক্রমম্ক্রিরনার্তিঃ। ভূরো
ভোক্তব্যক্রক্রেরে শেষকর্ম্বণাদিতার্থঃ॥ ২৬

অকুবাদ শুরু ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। শুরু এবং রুক্ষ (এই অর্থে)
শুরুরকে [এই শন্দটি] ব্যবহৃত হইরাছে। জ্ঞানের প্রকাশক বলিরা প্রথম
গতিটিকে শুরুগতি বলা বার, তাহা না থাকার বিতীর গতিটিকে রুক্ষ বলা বার।
এই শুরু ও রুক্ষনামক গতিষর জগতের অর্থাৎ জ্ঞানমার্গ ও কর্মমার্গে অধিকারী
জীবগণের পক্ষে "শাখত," নিত্য বলিয়া "নত" অভিপ্রেত; জগতে সকল জীবেরই
ভ আর হই প্রকার গতি সম্ভবপর নহে। সংসার নিত্য, এই জ্ম্ম এই চুইটি
গতিও নিত্য। এই তুইটি গতির মধ্যে একটি অর্থাৎ শুরুগতির বারা আনাবৃত্তি
লাভ করে, ইতর গতিটির বারা পুনরাবৃত্তি (অর্থাৎ পুনর্জন্ম) লাভ করিরা
থাকে॥ ২৬

নৈতে স্থতী পার্থ জানন্ যোগী মুহ্ছতি কশ্চন। তন্মাৎ দর্কেষু কালেষু যোগযুক্তো ভবাৰ্জ্জ্ন॥ ২৭

আন্ত্রা । হে পার্থ ! এতে স্থতী জানন্ কশ্চন্ বোগী ন মুহুতি ; ভস্মাৎ হে আর্কুন ! সর্কেরু কালেরু বোগরুকো ভব ॥ ২৭

্ অনুবাদ। হে পার্থ, যে কোন যোগী এই ছইটি গতির বিষয় অবগত আছেন, তিনি কথনও মোহকে প্রাপ্ত হন না; অতএব হে অর্জুন, তুমি সকল সমরেই যোগযুক্ত হও। ২১

ভাষ্য। নৈতে ইতি। নৈতে যথোক্তে স্তী মাগৌ পার্থ জানন্ সংসারায় একা, অঞা মোক্ষায় চেতি; যোগী ন মুহতি কশ্চন কশ্চিদ্পি; তত্মাৎ সর্বেষ্ কালেয় যোগযুক্তঃ সমাহিতো ভব অর্জুন॥ ২৭

আনন্দগিরিটীকা। গতেরপাশুদার তদিজানং ঝেতি—নৈতে ইতি। বোগশু মোহাপোহকতে কলিতমাহ—তুম্মাদিতি। জ্ঞানপ্রকার মন্থ্যকতি—সংসারায়েতি। মোক্ষার ক্রমমূক্ত্যর্থমিত্যর্থঃ বোগী ধ্যাননিষ্ঠো গতিমপি ধ্যারবৈ মুহুতি কেবলং কর্মা দক্ষিণনার্গপ্রাপকং কর্মব্যাত্তন প্রত্যেত্তীত্যর্থঃ বোগস্তাপুনরার্ভিফলতে নিত্যকর্ত্র্যত্তং দিদ্দমিত্যুপসংহর্মতি— ভ্রমাদিতি॥২৭

অসুবাদ। নৈতে ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। এই বথোক "ক্ডী" মার্গদরকে বানিরা—একটি মার্গ সংসারে কিরিরা আসিকার আরু অন্তটি মোকলাভের কয় এই প্রকার জানিয়া কোন যোগী মোহপ্রাপ্ত হন মা। সেই কারণে হে অর্কুন, তুমি সকল সময়েই "যোগধুক্ত" সমাহিত হও॥২৭

বেদেরু যজ্ঞেরু তপঃস্থ চৈব দানেরু যৎ পুণ্যফলং প্রাদিষ্টন্। অত্যেতি তৎসর্বমিদং বিদিত্বা যোগী পরং স্থানমূপৈতি চাল্মমু॥ ২৮

ইতি অষ্টনোহধ্যায়ঃ।

আর্য়। বেদের যজের তপঃস্থ চ দানের চ এব যৎ পুণাফলং প্রদিষ্ঠং যোগী ইদং বিদিম্বা তৎ সর্বমত্যেতি [তথা] আন্তং পরং স্থানষ্ উপৈতি চ॥ ২৮

অনুবাদ। সমুদায় বেদপাঠে, সকল যজ্ঞের সম্পাদনে, সকল তপস্তার অমুষ্ঠানে এবং সকল প্রকার দান করিলে যে পুণ্যফল হয় বলিয়া শাস্ত্রে কথিত হইয়াছে, এই পূর্ব্বোক্ত বিষয়টি জানিলে যোগী ঐ সকল পুণ্যফলেরও অতিক্রমণ করেন এবং সেই আন্ত পরম পুরুষকে প্রাপ্ত হন॥ ২৮

ভাষ্য ৷ শৃণু বোগশু নাহান্ম্যং বেদের সম্যাগধীতের যজের চ সাদ্গুণ্যেনাম্ন ঠিতের তপঃস্ক চ স্থতপ্তের দানের চ সম্যাগদতের বদেতের পুণ্যফলং পুণ্যশু ফলং পুণ্যফলং প্রদিষ্টং শাস্ত্রেণ অত্যেতি অতীত্য গচ্চতি তৎসর্বাং ফলজাতম্ ইদং বিদিদ্ধা সপ্তপ্রশ্ননির্বারেণ উক্তং সম্যাগবধার্য অনুষ্ঠার যোগী পরং প্রকৃষ্টনৈশ্বরং স্থানম্পৈতি প্রতিপদ্ধতে, আদ্মুম্ আদৌ ভবং কারণং ব্রেক্তর্যাঃ ॥ ২৮

আনন্দ গিরিটীকা। শ্রদার্দ্ধার্থ বোগং স্তোতি—শৃণিতি। পবিত্রপাণিপ্রান্ধ্যুথস্থাদিসাহিত্যমধ্যরনক্ত সম্যক্তম্। অঙ্গোপালোপেতত্বম্ অনুষ্ঠানক্ত
সাদ্গুণ্ম্। তপসাং স্কৃতপ্রতং মনোব্দ্ধ্যাকৈত্বাগ্র্যপুর্বকত্বম্। দানক্ত চ সম্যক্তথ
দেশকালপাত্রাম্পুণত্বম্। ইদং বিদিত্বেত্যত্রেদং শব্দার্থমেব স্ফুটর্নতি—
সপ্তেতি। যক্তাপ "কিং তদ্বেদ্ধা" ইত্যাদৌ "অধিযক্তঃ কণং কোহত্র" ইত্যত্র
প্রশ্বরং প্রতিভাসাম্পারেণ কৈশ্চিত্বকং তথাপি প্রতিবচনালোচনারাং বিদ্বপ্রতীত্যভাবাৎ প্রকারভেদবিবক্ষরা চ শব্দ্বরক্ত প্রতিনিয়তত্ব্যান সপ্তেতি বিক্ষয়তে।
ন চেদং বেদনমাপাতিকং কিত্তমুগ্রানপর্যন্তমিত্যাহ—সম্যুগিতি। প্রক্তাে
ধ্যাননির্চো বােগীভূচ্যতে। ঐশ্বরং বিক্ষোঃ পরমং পদং তদেব তির্গতান্ধ্যিক্তান্দিনেং ক্রেন্থ কর্ত্বং শক্ত্য-

মিতি ভাবঃ। তদনেন সপ্তপ্রশ্নপ্রতিবচনেন বোগমার্গং দর্শরতা ধ্যেরছেন তৎ-পদার্থো ব্যাখ্যাতঃ॥ ২৮

অনুবাদ। বোগের মাহাত্মা শ্রবণ কর—সম্যাগ্ভাবে বেদ অধ্যয়ন করিলে, সর্বাদ্দের সহিত যজ্ঞের অনুষ্ঠান করিলে, এবং বিশেষ-ক্লেশের সহিত তীব্রতপঞ্চা করিলে এবং সকল প্রকার দানের যথাবিধি অনুষ্ঠান করিলে, অথবা এই সকল কার্য্য মিলিত হইরা অনুষ্ঠিত হইলে যে পুণ্য ফল অর্থাৎ পুণ্যের ফল স্থাদি হয় বলিয়া শাস্ত্রে নির্দিষ্ঠ আছে, এই সপ্ত প্রশ্নের নির্ণন্ন ছারা উপদিষ্ঠ যোগবিষয়টি জানিতে পারিলে, যোগী সেই সকল পুণ্যফলকে অতিক্রম করিয়া বান এবং এই যোগের বিষয়ে সম্যক্ প্রকার অবধারণ করিয়া অনুষ্ঠান করিলে যোগী "পরম" প্রয়ষ্ঠ ঈশরভাবস্বরূপ স্থান প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। ঐ স্থান 'আন্ত' আদিতে ভব অর্থাৎ কারণ ব্রহ্মস্বরূপ ইহাই অর্থ ॥ ২৮

ইতি অইমোহধাায়: সমাপ্র:

অথ নবমোহধ্যায়ঃ।

গ্রীভগবাহুবাচ।

ইদং তু তে গুহুতমং প্রবক্ষ্যাম্যনসূয়বে। জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজ্জাত্বা মোক্ষ্যসেহশুভাৎ॥ ১

অনুয়। শ্রীভগবান্ উবাচ। অনস্থাবে তে ইদং ভূ গুহুতমং বিজ্ঞান-সহিতং জ্ঞানং বক্ষামি যজ্জাত্বা অঞ্ভাৎ মোক্যাসে॥ ১

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ বলিলেন। তুমি অস্রাশৃন্ন, তোমাকে এই পরম গোপ্য বিজ্ঞানের সহিত জ্ঞান বলিতেছি, যাহা জানিলে তুমি অণ্ডত হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারিবে॥ >

ভাষ্য। অষ্টমে নাড়ীধারেণ যোগং সগুণ উক্তঃ। তম্ম চ ফলমন্ত্র্য জিরাদিক্রমেণ কালান্তরে ব্রহ্মপ্রাপ্তিলক্ষণমেবানার্ত্তিরূপং নির্দিষ্টম্। তত্তানেনৈব প্রকারেণ মোক্ষপ্রাপ্তিফলমধিগম্যতে নাজ্যথেতি তদাশক্ষাব্যাবির্ৎসরা—ইদং ব্রক্ষজানং
বক্ষ্যমাণমুক্তং চ পূর্বেধখ্যায়ের তদ্বুদ্ধে সন্নিধীক্তভাদমিত্যাহ। তু শব্দো
বিশেষনির্দারণার্থ:। ইদমেব সম্যাগ্জানং সাক্ষান্মোক্ষপ্রাপ্তিসাধনং "বাম্বদেবঃ
সর্ব্মমিতি" "আব্রৈবেদং সর্ব্ধং" "একমেবাধিতীয়ম্" ইত্যাদিশ্রুতিজ্যঃ।
নাজং। "অথ বেহস্তথাছতো বিত্রক্তরাক্ষানঃ তে ক্ষ্যলোকা ভবন্তি" ইত্যাদিশ্রুতিজ্ঞান তে তুভাং গুহুতমং গোপ্যতমং প্রবক্ষ্যামি কথমিয়্যামি অনস্করে
অস্বারহিতায়। কিং তং ? জ্ঞানং, কিংবিশিষ্টং ? বিজ্ঞানসহিতমন্থভবয়্কম্।
বজ্জানং জ্ঞাত্বা প্রাপ্য মোক্যাসে অভভাং সংসারবন্ধনাং॥ ১

আনন্দ্রিটীকা। অতীতেনাগামিনোহধ্যারস্তাগতার্থং বক্তুং বৃত্তমন্থবদতি—অন্তম ইতি। নাড়ী স্ব্য়াখ্যা ধারণাথ্যেনাঙ্গেন যুক্তো বোগো
ধারণাবোগঃ। সগুণঃ সর্ব্বারসংযমনাদিঃ গুণস্তেন সহিত ইত্যর্থঃ। তৃৎফলোক্ত্যর্থমনস্বর্গাধ্যারারম্ভমাশস্থ্যাহ—তস্ত চেতি। অগ্নির্ক্রিরত্যাদিনা উপলক্ষিতেন
ক্ষমবন্তা দেববানেন পথেতি বাবং। জ্ঞানানস্তর্মের ব্থোক্তম্কলনাডাং অলমনেন

অথ নবমোহধ্যায়ঃ।

গ্রীভগবাহুবাচ।

ইদং তু তে গুহুতমং প্রবক্ষ্যাম্যনসূয়বে। জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজ্জাত্বা মোক্ষ্যসেহশুভাৎ॥ ১

অনুয়। শ্রীভগবান্ উবাচ। অনস্থাবে তে ইদং ভূ গুহুতমং বিজ্ঞান-সহিতং জ্ঞানং বক্ষামি যজ্জাত্বা অঞ্ভাৎ মোক্যাসে॥ ১

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ বলিলেন। তুমি অস্রাশৃন্ন, তোমাকে এই পরম গোপ্য বিজ্ঞানের সহিত জ্ঞান বলিতেছি, যাহা জানিলে তুমি অণ্ডত হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারিবে॥ >

ভাষ্য। অষ্টমে নাড়ীধারেণ যোগং সগুণ উক্তঃ। তম্ম চ ফলমন্ত্র্য জিরাদিক্রমেণ কালান্তরে ব্রহ্মপ্রাপ্তিলক্ষণমেবানার্ত্তিরূপং নির্দিষ্টম্। তত্তানেনৈব প্রকারেণ মোক্ষপ্রাপ্তিফলমধিগম্যতে নাজ্যথেতি তদাশক্ষাব্যাবির্ৎসরা—ইদং ব্রক্ষজানং
বক্ষ্যমাণমুক্তং চ পূর্বেধখ্যায়ের তদ্বুদ্ধে সন্নিধীক্তভাদমিত্যাহ। তু শব্দো
বিশেষনির্দারণার্থ:। ইদমেব সম্যাগ্জানং সাক্ষান্মোক্ষপ্রাপ্তিসাধনং "বাম্বদেবঃ
সর্ব্মমিতি" "আব্রৈবেদং সর্ব্ধং" "একমেবাধিতীয়ম্" ইত্যাদিশ্রুতিজ্যঃ।
নাজং। "অথ বেহস্তথাছতো বিত্রক্তরাক্ষানঃ তে ক্ষ্যলোকা ভবন্তি" ইত্যাদিশ্রুতিজ্ঞান তে তুভাং গুহুতমং গোপ্যতমং প্রবক্ষ্যামি কথমিয়্যামি অনস্করে
অস্বারহিতায়। কিং তং ? জ্ঞানং, কিংবিশিষ্টং ? বিজ্ঞানসহিতমন্থভবয়্কম্।
বজ্জানং জ্ঞাত্বা প্রাপ্য মোক্যাসে অভভাং সংসারবন্ধনাং॥ ১

আনন্দ্রিটীকা। অতীতেনাগামিনোহধ্যারস্তাগতার্থং বক্তুং বৃত্তমন্থবদতি—অন্তম ইতি। নাড়ী স্ব্য়াখ্যা ধারণাথ্যেনাঙ্গেন যুক্তো বোগো
ধারণাবোগঃ। সগুণঃ সর্ব্বারসংযমনাদিঃ গুণস্তেন সহিত ইত্যর্থঃ। তৃৎফলোক্ত্যর্থমনস্বর্গাধ্যারারম্ভমাশস্থ্যাহ—তস্ত চেতি। অগ্নির্ক্রিরত্যাদিনা উপলক্ষিতেন
ক্ষমবন্তা দেববানেন পথেতি বাবং। জ্ঞানানস্তর্মের ব্থোক্তম্কলনাডাং অলমনেন

মার্ণেণেত্যাশস্ক্যাহ—কালান্তর ইতি। মর্চিরাদিমার্ণেণ বন্ধপার্থে মুক্তে: মার্গায়ত্তত্তাৎ "ন তক্ত" ইত্যাদিশ্রুতিবিরোধঃ স্থাদিত্যাশয়েন শক্তে—ত্ত্তেতি। বুলোহর্থ: সপ্তমার্থ: উক্তাশকানিবৃত্তার্থমনন্তরাধ্যারমুখাপরতি—তদাশক্ষেতি। সংপ্রযুক্তত্বেনাপরোক্ষত্বাভাবেংপি পূর্ব্বোত্তরগ্রন্থালোচনয়া বৃদ্ধিসরিধানাৎ ইদংশব্দেন ব্ৰক্ষজানং গৃহীতমিত্যাহ—তদ্ধুদ্ধাবিতি। প্ৰক্ষতাদ্ধ্যানাৎ জ্ঞানস্থ বৈশিষ্ট্যাবত্যোতী তুশব্দ ইত্যাহ—তুশব্দ ইতি। নিপাতাৰ্থমেব ক্ষ্ট্যতি— **ইদমেবেতি।** তত্মির্বর্থে সংবাদকত্বেন শ্রুতিস্থৃতী দর্শয়তি—বাস্তদেব অবৈতজ্ঞানবৎ হৈতজ্ঞানমপি কেষাঞ্চিন্মোক্ষহেতুরিত্যাশ্ব্যাহ— নান্যদিতি। বৈভজানং মোক্ষায় ন ক্ষমিতাত্র শ্রুতিমুদাহরতি—অথেতি। অবিস্থাপ্রকরণোপক্রমার্থোহ্থশ**বঃ**। অতোহ**দৈ**তাদন্তথা বিহন্তত্ত্বমিতি শেষ:। বৈতশু হর্ণিরপত্তেন কল্লিতত্বাৎ তজ্ঞানং রজ্জুসর্পাদিজ্ঞান-তুল্যভান্ন ক্ষেমপ্রাপ্তিহেতৃরিতি চকারার্থ:। অস্রা গুণেষু দোষাবিষরণং জনুহিতায় জ্ঞানাধিকতায় ইত্যর্থ:। জ্ঞানং বন্ধাচৈতত্তং তদ্বিষয়ং বা প্রমাণ্ড্যানং তত্ত ভেনৈব বিশেষিতথামূপপত্তিমাশঙ্কা ব্যাকরোতি— অনুভবেতি ৷ বিজ্ঞান-মনুভব: সাক্ষাৎকারন্তেন সহিত্যিতার্থ:। উক্তজানং প্রাপ্তত্ত কিং ভাদিত্যা-শক্যাহ-যজ্জানমিতি॥ >

অনুবাদ। অন্তম অধ্যায়ে নাড়ীদারা সগুণ ধারণায়োগ উক্ত হইরাছে।
আমি ও অর্চিঃ প্রভৃতি নার্গায়্ননারে কালান্তরে ব্রহ্ম প্রাপ্তি-লক্ষণ অপুনরাবৃত্তিরূপ
ফলও ধারণায়োগের দারা পাওরা বার, তাহাও বলা হইরাছে। তাহার পর এইকণে এই একই প্রকারে মোক্ষপ্রাপ্তিরূপ ফল লাভ হইতে পারে [ইহাতে অক্ত
কোন উপার হর ত নাই] এই প্রকার শক্ষা নিবৃত্ত করিবার অভিলামে [ভগবান্
বলিতেছেন যে] "এই" বক্ষামাণ ও পূর্ববর্ত্ত্রী অধ্যায় সমূহে উক্ত যে ব্রহ্মজ্ঞান
তাহাই মনে করিয়া "ইদং—এই" এই শক্ষটি ব্যবহার করিয়াছেন। "তৃ" এই
শক্ষটির দারা বিশেষ নির্দ্ধারণ করা হইরাছে [ইহার তাৎপর্য্য এই যে], এই
তব্তজানই সাক্ষাৎ মোক্ষপ্রাপ্তির সাধন। "বাস্কদেবই সকল পদার্থ" "এই সকল
বন্ধ আত্মাই" "সেইআত্মা একই অন্বিতীর" ইত্যাদি স্থৃতি ও প্র্ণুতি দারা ইহা
প্রমাণিত হয়। "যে সকল সাধারণ নৃপতিগণ এই আত্মাতে ভেদ দৃষ্টি করিয়া
থাকেন, তাহারা প্রেরার্ভি লাভ করেন" ইত্যাদি ক্রতির দারাও প্রমাণ
হইতেছে যে, এই অবৈত ব্রক্ষ্ণান ব্যতিরেকে অন্ত কোন উপারই মোক্রপ্রাক্তিক
সাধন হইতে পারে না। "তে" তোমাকে ত্র্মি কেনন] "কানস্ত্র" অস্থাক্তিক

"গুড়তন" গোপাতন 'পাব'ামি' বলিব। কি তাহা ? 'জান''; কিব্ৰুপ জান ? বিজ্ঞান সহিত অৰ্থাৎ অহতবযুক্ত। বে:জানকে 'কানিয়া'';পাইয়া [তুমি] "অগুড'' সংমারবদ্ধন হইতে মোক্ষণাভ করিবে॥ >

> রাজবিতা রাজগুহুং পবিত্রমিদমূত্রমম্। প্রত্যক্ষাবগমং ধর্ম্ম্যং স্কুস্থং কর্ত্তুমব্যয়ম্॥ ২

আয়ুয়। ইদং (আয়জানং) রাজবিভা, রাজগুহুম্ উত্তমং পবিত্রম্; প্রত্যকাবগমং ধর্ম্যং কর্তুং স্কুম্পন্ অব্যয়ম্॥ ২

অকুবাদ। এই (সাত্মজান) সকল বিভার শ্রেষ্ঠ এবং সকল প্রকার রহজ্বের সার; ইহা উত্তম, পবিত্র; ইহা প্রত্যগাত্মভব ও ধর্মাবিরুদ্ধ, ইহার সম্পাদন করিতে স্বারাস হয় না, ইহার ফল স্ববিনশ্বর ॥ ২

ভাষ্য। তর্ক রাজবিভা বিভানাং রাজা দীপ্যতিশয়দাং। দীপাতে হীরমতিশরেন ব্রহ্মবিভা দর্কবিভানাম। তথা রাজগুঞ্ং গুঞ্চানাং রাজা। পবিত্রং পাবনমিদমুন্তমং সর্কেবাং পাবনানাং গুদ্ধিকারণমিদং ব্রহ্মজ্ঞানমুৎক্ষ্টতমম্। অনেকজন্মসহস্রদক্ষিতমিপ ধর্মাধর্মাদি সম্বাং কর্ম কণমাত্রাদ্ ভন্মীকরোভি বতঃ, অতঃ কিং তক্ত পাবনদং বক্তব্যম্। কিঞ্চ প্রত্যক্ষাবগমং প্রত্যক্ষেপ স্থাদেরিব অবগমঃ বক্ত তৎ প্রত্যক্ষাবগমম্। অনেকগুণবতোহিপি ধর্মবিক্ষম্বং দৃষ্টমু, ন তথা আত্মলানং ধর্মবিরোধি কিন্তু ধর্ম্যাং ধর্মাদনপেতম্। এবমপি স্থাদ্ধঃসম্পাত্মম্ ইত্যত্ আরু স্কুর্থং কর্তুং যথা রম্ববিবেকবিজ্ঞানম্। তত্র অরারাসানাং কর্মণাং স্থসম্পাত্মমার বিরোধি কিন্তু বার্মবিবেকবিজ্ঞানম্। তত্র অরারাসানাং কর্মণাং স্থসম্পাত্মমার বিরোধি কিন্তু বার্মবিবেকবিজ্ঞানম্। তত্র অরারাসানাং কর্মণাং ক্রমস্পাত্মমার মহাফলতং দৃষ্টমিতি ইদং তু স্থসম্পাত্মমাং ক্রম্মান্তানম্। ২

আনন্দ্রগিরিটীকা। তদাভিমুখ্যদিদ্ধে তজ্জানং ভৌতি—তাচেতৃ ।
বন্ধবিদ্যা বিষ্ণানাং রাজা শ্রেষ্ঠ ইত্যত্র হেতুমাহ – দীপ্রীতি। কুতো বন্ধবিদ্যারাঃ
বিদ্যান্তরেভ্যো দীপ্তাতিশরিদ্ধং তদাহ—দীপ্যতে হীতি। দৃশ্যতে হি বিষদন্তরেভ্যো লোকে ,প্জাতিরেকো বন্ধবিদামিতি ভাবঃ। উৎক্রইতমং শুদ্ধিকারণং
বন্ধজানমিত্যেতত্বপপাদয়তি—অনেক্তেতি। তত্র চ শ্রুতিস্থতী প্রমাণয়িত্তরে। ন
শাব্রৈকগম্যমিদং জানং কিন্তু প্রত্যাক্রমেমিত্যাহ—কিঞ্চেতি। প্রত্যক্রমবগম্যমানমন্দ্রিদ্ধিত তথা, বহা অবগম্যত ইতি জবগমঃ ফলং প্রত্যক্রেহবগমোহত্তেভি
দৃষ্টকলন্ত্রং জানভোচ্যতে। ধর্ম্যমিত্যেভদ্ব্যাক্রোতি—জ্নপ্রিতিতি। ধর্মপ্রেহ

তশু ক্লেশনাধ্যত্বমাশক্যাহ —এবমপীতি। বন্ধবিষয়ং বিবেকজ্ঞানং সম্প্রানোগছিল পদেশাপেকাদনারাদেন দৃষ্টং তথেদং ব্রহ্মজ্ঞানমিত্যাহ—যথেতি। অব্যর্থমিতি বিশেষণমাশকাপূর্বকং বির্ণোতি—তত্ত্রেত্যাদিনা। ব্যবহারভূমিঃ সপ্তমার্থঃ। জ্ঞানসাক্ষর্ফলত্বে ফলিতমাহ—অত ইতি॥ ২

অনুবাদ। সেই (আত্মজান) "রাজবিভা" বিভা সকলের রাজা: কারণ ইছার দীপ্তি অপর সকল বিভা হইতে অধিক। সকল বিভার মধ্যে এই বন্ধবিভা অভিশন্ন দীপ্তি পাইরা থাকে। সেইরূপ [ইহা] "রাজগুহু" গুহু অর্থাৎ রহস্তসমূহের ইহা রাজা। "প্রতিত্র" পাবন "উত্তম" সকল পাবন বস্তুরও 🖰 দ্ধির কারণ এই ব্রহ্ম-জ্ঞান ; এইজন্ম ইহা উৎকৃষ্টতম পবিত্র। অনেক সহস্রজন্মের সঞ্চিত ধর্ম্মাধর্ম্মাদি যাবং-কর্মাই মৃলের সহিত যে ব্রহ্মজ্ঞানের উদয়ে ক্রণমাত্রেই ভস্মীভূত হয়, তাহার পবিত্র-তার বিষয়ে আর কি বলা বাইতে পারে ? আরও এই ব্রন্ধজ্ঞান "প্রত্যক্ষাবগন" স্থাদি বন্ধর ক্রায় বাহার অমুভব প্রত্যক্ষ হয়, তাহাকেই 'প্রত্যক্ষাবগম' কহা বায়। वह खन थाकित्व छ कान कान वन्न धर्मितिक इंटरिंग भारत, देश (मंथा वाह्र), कि ह এই আত্মজান সেই প্রকার নহে ; ইহা "ধর্ম্ম্য" অর্থাৎ ধর্ম্ম হইতে অনপেত। এরপ হইলেও হয় ত ইহার সাধন করিতে বড়ই ক্লেশ পাইতে হয়, এই প্রকার আশস্কার নিরাকরণ করিবার জন্ত বলিতেছেন যে,—ইহা করিতে আয়াস হয় না. এইজন্ত এই আত্মজান অসম্পাদনীয়, যেমন রত্ববিবেক জ্ঞান। সংসারে এমনও দেখিতে পাওয়া যার বে. যে কার্য্যে আয়াস অন্ধ এবং যাহা স্থাপের সহিত সম্পাদিত হর. সেই কর্ম্মের ফল অব হইয়া থাকে, আর চন্ধর কর্মসমূহের ফল মহৎ হইয়া থাকে। এই আছজানও সেই নিরমামুসারে অর্থাৎ স্থপস্পান্তত্ব নিবন্ধন কীণ হর অর্থাৎ ইহার ফল বিনাশী হইতে পারে, এই প্রকার সম্ভাবনা দূর করিবার অস্ত বলিতে-ছেন, "অবার" ফলের ক্ষিত্তনিবন্ধন কর্ম যে প্রকার বিনাশী হয়, ইহার সেই প্রকার বিনাশ হইতে পারে না, এই কারণে ইহা অব্যয় ; অতএব এই আত্মজানের প্রতি তোমার শ্রদ্ধা করা উচিত॥ ২

> অপ্রদর্শনাঃ পুরুষা ধর্মস্রাস্থ পরস্তপ। ' অপ্রাপ্য মাং নিবর্তন্তে মৃত্যুসংসারবন্ধ নি॥ ৩

জন্ম । হে পরস্তপ ! অভ ধর্মন্ত অপ্রদ্ধানাঃ (প্রদা বিরহিতাঃ) পুরুষাঃ মাং অপ্রাণ্য মৃত্যুসংসারবন্ম নি নিবর্ত্তমে ॥ ৩

व्यक्रूताम । तर भवत्वभ । अहे धर्म वाशामत विवास नाहे, त्रहे

পুরুষগণই আমাকে না পাইরা মৃত্যুমর সংসারের পথে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া থাকে ॥ ৩

ভাষ্য। যে পুনঃ অশ্রদ্ধানাঃ শ্রদ্ধাবিরহিতা আত্মজানত ধর্মপ্রাত বরূপে তংফলে চ নান্তিকাঃ পাপকারিণঃ অস্থরাণামুপনিষদং দেহমাত্রাত্মদর্শনমেব প্রতিপরা অস্ত্রত্পঃ পুরুষাঃ পরস্তপ অপ্রাপ্য মাং পরমেশ্বরং মৎপ্রাপ্তে নৈবাশকা ইতি মৎপ্রাপ্তিমার্গনভেদভক্তিমাত্রবপি অপ্রাপ্য ইত্যর্থঃ। নিবর্ত্তপ্তে নিশ্চরেন আবর্ত্তপ্তে। ক ? মৃত্যুসংসারবন্ধ নি, মৃত্যুষ্ক্তঃ সংসারঃ মৃত্যুসংসারঃ তন্ত বন্ধ নরক-তির্যুগাদিপ্রাপ্তিমার্গন্তিরিরেব বর্ত্তপ্তে ইত্যর্থঃ॥ ৩

আনন্দগিরিটীকা। আত্মজানাখ্যে ধর্মে শ্রদ্ধাবতাং তরিষ্ঠানাং প্রমপদপ্রাপ্তিক্ষ্পা ততো বিমুখানাং সংসারপ্রাপ্তিমাহ—যে পুনরিতি। আত্মজান-তৎকলবোর্নান্তিক্যমেব বিশিনষ্টি—পাপেতি। উক্তানামাত্মজ্রীণাং ভগবৎপ্রাপ্তিসম্ভাবনাভাবাদপ্রাপ্য মামিত্যপ্রসক্তপ্রভিবেধঃ স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—ম্থাপ্তাবিতি॥ ৩

অকুবাদ। বাহারা কিন্ত "অশ্রদ্ধান" এই আত্মন্তানরূপ ধর্মের স্বরূপ ও ফলে শ্রদ্ধান্ত (মর্থাৎ) বাহারা নান্তিক—পাপকারী—মুহুরগণের উপনিষদ্ অর্থাৎ দেহমাত্রেই আত্মদর্শনকে বর্ণার্থ বলিয়া মানিয়া লয়, সেই ইক্রিয়প্রীতিনিরত গুরুষগণ আমাকে (অর্থাৎ) পরমেশ্বরকে প্রাপ্ত না হইয়া, আমার প্রাপ্তির সন্তাবনাও নাই, কিন্তু আমার প্রাপ্তির প্রতি উপায়ের মধ্যে অক্সতম উপায় বে ভক্তিমাত্র, তাহাও না পাইয়া,—ইহাই অর্থ, নির্ত্ত হইয়া থাকে—অর্থাৎ তাহারা নিশ্চয়ই আবর্ত্তন করে। কোপায় ? এই "মৃত্যুসংসারবজ্বে" মৃত্যুযুক্তসংসারই মৃত্যুসংসার শব্দের অর্থ, তাহার বল্ব অর্থাৎ নরক বা তির্যাগ্ জন্ম প্রস্তৃতির প্রাপ্তিমার্গ—সেই মৃত্যুসংসারবজ্বে ই তাহারা পরিবর্ত্তন করে—ইহাই অর্থ ॥ ও

ময়া ততমিদং সর্বাং জগদব্যক্তমূর্ত্তিনা। মংস্থানি সর্বাভূতানি ন চাহং তেম্ববিছতঃ॥ ৪

ভাষ্য । অব্যক্তমূর্ত্তিনা ময়া ইদং সর্কাং জগৎ ততং (ব্যাপ্তং) সর্কাভূতানি
মংস্থানি; ন চ অহং তেবু অবস্থিত: ॥ ৪

অকুবাদ আমার মূর্ত্তি অব্যক্ত; আমি এই সর্বল ৰগৎকে ব্যাপিরা অবস্থান করিতেছি, সকল প্রাণীই আমাতে অবস্থিত রহিয়াছে—আমি কিন্তু সেই প্রাণিগণকে আশ্রর করি না॥ ৪ ভাষ্য। তথা অর্জুনমভিমুখীরুত্যাহ। ময়া মম যঃ পরো ভাবত্তেন ভতং ব্যাপ্তং দর্শমিদং জগৎ অব্যক্তমূর্ত্তিনা ন ব্যক্তা মূর্ত্তিঃ অরপং বস্ত মম দোহহম-ব্যক্তমূর্ত্তিঃ তেন ময়া অব্যক্তমূর্ত্তিনা করণাগোচরস্বরূপেণেত্যর্থঃ। তদ্মিন্ ময়ি অব্যক্তমূর্ত্তে হিতানি মংস্থানি দর্শকৃতানি ব্রক্ষাণীনি তত্বপর্যক্তানি। নহি নিরা-অবং কিঞ্চিশ্ভূতং ব্যবহারায় অবক্রতে অতো মংস্থানি ময়া আত্মনা আত্মবন্তেন হিতানি অতো ময়ি হিতানি ইতি উচ্যক্তে। তেয়াং ভূতানাং অহমেব আত্মা ইত্যতন্তের হিত ইতি মূঢ়বৃদ্ধীনাম্ অবভাসতে, অতো ব্রবীমি ন চাহং তের ভূত্তের্ অবহিতঃ মূর্ত্বৎ সংশ্লেষাভাবেন আকাশস্তাপি অন্তর্গুনো হ্রহম্। নহি অসংসর্গি বস্তু কিচিদাধেরভাবেন অবহিত্যং ভবতি॥ ৪

আনন্দ্রিরিটীকা। অতিনিন্দান্তাং জ্ঞাননিষ্ঠাং মহীক্বতা জ্ঞানং ব্যাখ্যাতৃনারভতে—স্তুত্যেতি। সোপাধিকত্ম বাধ্যসন্তবমভিপ্রেত্য বিশিনষ্টি—মমেতি। অনবচ্ছিন্নত ভগবজনত নিরুপাধিকত্মেব সাধ্যতি—কর্পেতি। ব্যাপ্যব্যাপ্কবেদন অগতো ভগবজন পরিচ্ছেদমাশব্যাহ—তিশ্মিমিতি। তথাপি ভগবজোভ্তানাঞ্চাধারাধেরত্মেন ভেদঃ তাদিভাশব্যাহ—ন হীতি। নিরাক্ষত্মত ব্যবহারানর্হত্মে ফলিতনাহ—অত ইতি। ঈশব্যত ভ্তাত্মত্মে তেমু হিভিঃ তাদিভ্যান্দ্রাহ—তেম্মিতি। তত্ম তেমু হিত্যভাবং ব্যবস্থাপরতি—মূর্ভ্রিদিতি। সংশ্লেষাভাবেহিপি কিমিতি নাধেরত্মত আহ—ন হীতি॥ ৪

অনুবাদ। আত্মজানের প্রশংসাপূর্বক অর্জুনকে ওনিবার জন্ত প্রস্তুত করিরা বলিতেছেন, "আমাঘারা" আমার বে পরভাব (অর্থাৎ পারমার্থিকসন্তা) তাহা বারা এই পরিদৃশুমান বিশ্ব "তত" ব্যাপ্ত রহিরাছে [আমি কি প্রকার ?] "অব্যক্তমূর্ত্তি" অব্যক্ত (অর্থাৎ) ব্যক্ত নহে, "মূর্ত্তি" অরপ বাহার, সেই অব্যক্তমূর্ত্তি অর্থাৎ আমার বরপ ইন্দ্রিরের অগোচর। সেই অব্যক্তমূর্ত্তি আমাতে ব্রক্ষালি তব্ব পর্যন্ত সকল ভূতই অবস্থান করিতেছে; কোন বন্তই নিরাম্মক হইরা ব্যক্তারাই হইতে পারে না। এই কারণে সকল ভূতই আমাতে অবস্থান করিতেছে (অর্থাৎ) আমিই সকল বন্তর আত্মা; স্মৃতরাং আত্মন্তরূপ যে আমি সেই আমার সহিত সম্বন্ধ আছে বলিরাই সকল বন্ত আত্মবিলিট ইইরাছে; এই কারতেছে । সেই সকল প্রাণীর আমিই আত্মান আমাতে বর্ত্তমান আছে, ইহা বলা যাইতেছে। সেই সকল প্রাণীর আমিই আত্মা; এই কারণে,আমি তাহাদিগকৈ আশ্রের করিরা অবস্থান করিতেছি, এইরূপ মৃঢুবৃদ্ধিগণ বৃবিরা থাকে; এই কল্প আনি বলিতেছি, আমি সেই সকল প্রাণীকে অবন্থন করিয়া অবস্থান করি না। পরিচ্ছির বন্তর সংবাগে আছে

বলিয়া ভাষা বেমন সংযুক্ত হইয়া কোন বস্তুকে শ্ববশ্বন করিয়া থাকে, আমার কিন্তু, সেই প্রকার পরিছেদ নিবন্ধন বস্তুবিশেষের সহিত সংযোগ হইতে পারে না। কারণ, আমি আকাশেরও অন্তরতম (স্কুতরাং অপরি-ছিয়) বে বস্তুর সংসর্গ নাই, তাথা কথনও কোন আধারের আধের হইতে পারে না॥ ৪

> ন চ মৎস্থানি ভূতানি পশ্য মে যোগমৈশ্বরম্। ভূতভূম চ ভূতস্থো মমাত্মা ভূতভাবনঃ॥ ৫

অস্বয়। ভূতানি চ [অপি] ন চ মংস্থানি, যে ঐশরং বোগং পশ্র, মন আশ্বা ভূতভাবনঃ ভূতভূৎ [কিন্তু] ন চ ভূতস্থঃ [ভবতি] ॥ ৫

আকুবাদ। প্রাণিনিচরও বে বাস্তবিক আমাতে আছে, তাহা নহে। আমার ঐশব্যবাগ দেখ, আমার আত্মা ভূতনিচয়ের উৎপাদক; ভূতগণের ধারক, অথচ তাহাদিগকে ইহা অবদম্বন করিয়া বর্ত্তমান নহে ॥৫

ভাষ্য়। অতএবাসংসর্গিদ্বারম ন চ মংস্থানি ভূতানি ব্রহ্মাদীনি, পশু মে বোগং বৃক্তিং ঘটনং মে মম ঐশ্বরং ঈশ্বরশ্রেমং ঐশ্বরং বোগমাত্মনো বাথাত্ম্যানিত্যর্থ:। তথাচ শ্রুতিরসংসর্গিদ্বাদসক্ষতাং দর্শরতি "অসঙ্গো নহি সজ্জতে"ইতি। ইদং চ আশ্চর্যাম্ অশুং পশু ভূতভূদসঙ্গোহপি সন্ ভূতানি বিভর্তি ন চ ভূতস্থো যথোক্তেন স্থারেন দর্শিত্তাদ্ ভূতস্থাক্সপপন্তে:। কথং পুনক্ষচ্যতে-হসৌ মমাত্মেতি, বিভঞ্জা দেহাদিসক্ষাতং ত্মিরহংকারম্ অধ্যারোপ্য লোকবৃদ্ধিনমুসরন্ ব্যশিদ্ধতি মম আত্মেতি, ন পুনরাত্মন আত্মা অশু ইতি শোকবৃদ্ধানন্। তথা ভূতভাবন: ভূতানি ভাবরতি উৎপাদরতি বর্দ্ধতি ইতি বা ভূতভাবন:॥ ৫

আনন্দ গিরিটীক। পরমেখরশু ভূতের স্থিত্যভাবেহণি ভূতানাং তত্র স্থিতিরাস্থিতেতি কুতোহসঙ্গবং ? তত্তাহ—অত এবেতি। ন চেত্যত্র চকারোহবধারণার্থঃ।
ভূতানামীখরেণের স্থিতিরিভ্যত্র হেতুমাহ—প্রশুতি! আত্মনোহসঙ্গবং বরপমিত্যত্র প্রমাণনাহ—তথা চেতি। অসঙ্গশ্চেদীখরস্তর্হি কথং মংস্থানি ভূতানীভূতিং কণঞ্চ ওঁণোক্ষা নচ মংস্থানীতি তবিক্রদম্দীরিতমিত্যাশুদ্যাহ—ইদক্ষেতি
তর্হি ভূতসবহঃ শ্রাদিতি নেত্যাহ—ন চেতি। বথোক্ষেন স্থারেন অসঙ্গবৈনতি
বাবং। অসঙ্গতরা বন্ততো ভূতাসবদ্ধেহণি কর্মনয়া তদবিরোধার মিথো বিরোধাহস্থীতি তাবঃ। আত্মনঃ সকাশাদাত্মনোহস্থাবোগাং কুতঃ সব্বোক্তিরিত্যাশক্ষাহ

—অসাবিতি (বিভজ্যেতি)। যথা লোকো বস্তত্ত্বম্ অজ্ঞানন্ ভেদমারোপ্য মমারমিতি সম্বন্ধমন্থভবতি ন তথেহ সম্বন্ধবাপদেশঃ আত্মনি স্বভো ভেদাভাবাদতো ভেদেহসত্যেব লোকে সম্বন্ধবৃদ্ধিদর্শনমন্থসরন্ ভগবানাত্মনো দেহাদিসংঘাতং বিভজ্যাহরারং তিম্মারোপ্য অসৌ মমাত্মেতি ভেদং ব্যপদিশতি। তথাচ সংঘাতস্ত মমেতি ব্যপদেশাত্ততো নিরুষ্টস্ত স্বর্মপ্রাত্মশন্দেন নির্দ্দেশার ভূতত্ত্বাহসাবিত্যর্থঃ। প্র্বোক্তাসঙ্গবাঙ্গীকারেণের আত্মা ভূতানি ভাবরতীত্যাহ—ত্ত্থিতি॥ ৫

অকুবাদ। আমার এই প্রকার অসংসর্গিত আছে বলিয়াই, ব্রহ্মাদি প্রাণি নিচরও [পারমার্থিক ভাবে] আমাতে সংযুক্তরূপে অবস্থিত নহে। আমার "ঐশরবোগ" দেখ, এথানে যোগশব্দের অর্থ যুক্তি—ঘটনা, যাহা ঈশ্বরের, তাহাকেই 'এশর' বলা যায়। এশরযোগ এই শব্দের তাৎপর্য্য পরমাত্মার যথার্থ-স্বরূপ। "অসঙ্গ এই কারণে আত্মা কোন বস্তুতে সক্ত নহে" এইরূপ শ্রুতিও অসংসর্গিত্ব নিবন্ধন আত্মার অসঙ্গতা প্রতিপাদন করিতেছে। এই আর একটি আশ্চর্যাও দেখ, আমি অসঙ্গ হইয়াও প্রাণিগণের ভরণ করিয়া থাকি, অথচ আমি ভূতস্থ নহি; আমি যে কোন ভূতস্থ নহি, তাহা পূর্ব্বোক্ত যুক্তি ধারা প্রতি-পাদিত হইরাছে। স্থতরাং আমি যে প্রাণিগণকে অবলম্বন করিরা অবস্থান করিব, ইহা কথনই উপপন্ন হইতে পারে না। ইহা আমার আত্মা, ইহা কি প্রকারে বলা বাইতেছে ? (অর্থাৎ ঈশ্বরই আত্মা, ঈশ্বরের আবার আত্মা কি প্রকারে হইতে পারে ?) দেহাদি সমষ্টিকে বিভাগ করিয়া তাহার মধ্যে কোন একটিতে লৌকিক পুরুবের স্থান্ন অংকারের আরোপ করিরা লোৎসুদ্ধির অহুদরণ পূর্বক ভগবান নির্দেশ করিতেছেন বে, আমার আত্মা আত্মার আর একটি আত্মা হইতে পারে না,—ইহা বেমন লোকে বুঝে না, ভগব।ন্ বে সেইরূপ না বুঝিরা বলিয়াছেন, তাহা নহে। আরও [আমার আত্মা] "ভূতভাবন" বাহা ভূতগণকে উৎপাদন করে, অথবা তাহাদিগকে বাড়াইয়া থাকে, তাহারই নাম "ভূতভাবন ॥" ৫

> যথাকাশস্থিতো নিত্যং বায়ুঃ সর্ব্বত্রগো মহান্। তথা সর্ব্বাণি ভূতানি মৎস্থানীভ্যুপধারয়॥ ৬

জাষ্যু,। যথা আকাশহিতো বায়ু: দৰ্জনা: মহান্তথা দৰ্জানি ভূজানি মংখানি ইতি উপধারয় ॥৬

আকুবাদ। বেমন সর্বত্তি বিচরণশীল মহান্ বায়ু সর্বাদা আকাশে অবস্থান করিতেছে, সেইরূপ সকল ভূতনিচয় সর্বাদা আমাতে [অসকভাবে] বিভ্যমান আছে, ইহা তুমি জান ॥ ৬

ভাষ্য ৷ যথোক্তেন শ্লোকন্বরেন উক্তমর্থং দৃষ্টান্তেনোপপাদয়ল্লাহ—বথা লোকে আকাশস্থিত আকাশে স্থিতো নিত্যং সদা বায়ু: সর্ব্বেগচ্ছতীতি সর্ব্ববেগো মহান্ পরিমাণতত্তথা আকাশবৎ সর্ব্বগতে মরি অসংলেবেশৈব হিতানীত্যেব-মূপধারয় জানীহি॥৬

আনন্দ্রিরিটাকা। স্টেন্থিতিসংহারাণামসঙ্গাস্থাধারত্বং 'মরা ততমিদম্'
ইত্যাদিল্লেক্ষেরেনাক্রেহর্পতং দৃষ্টান্তেনোপপাদরন্নাদৌ দৃষ্টান্তমাহেতি বোজনা।
সদেত্যুৎপত্তিস্থিতিসংহারকালো গৃহতে। আকাশাদেম হতোহক্রাধারত্বং কথমিত্যাশব্যাহ—মহানিতি। যথা সর্ব্বগামিত্বাৎ পরিমাণতো মহান্ বারু কোশে সদা
তিষ্ঠতি তথা আকাশাদীনি মহান্ত্যপি সর্বাণি ভৃতান্তাকাশকলে পূর্ণে প্রতীচ্যাক্রে
প্রস্থিনাত্মনি সংশ্লেষসন্তরেণ স্থিতানীতঃর্থঃ॥ ৬

শ্রুবাদ। প্রেলিক শ্লোকঘরের ঘারা যে ভাবে প্রমার্থ বস্তুর পরিচ্য দেওয়া ইইয়াছে, এইকলে সেই ভাবেই দৃষ্টান্তের উপস্থাস করিয়া ভাষাকে বিশদভাবে বুঝান ইইডেছে। যেমন লোকে "আকাশস্থিত" আকাশে অবস্থিত [ইইয়াই] "নিত্য" সর্বাদা বায়ু "সর্বাত্রগ" সর্বাত্র বিচরণ করিয়া থাকে, [এবং] ঐ বায়ু পরিমাণতঃ মহান্ [ও বটে], সেইরপ আকাশের স্থার সর্বাত্ত আমাতে অসংশিষ্টভাবেই [সর্বাভূত] অবস্থান করিতেছে, ইহা ভূমি অবধারণ করা॥ ৬

> দৰ্বভূতানি কোন্তেয় প্রকৃতিং যান্তি মামিকাম্। কল্লক্ষয়ে পুনস্তানি কল্লাদৌ বিস্কাম্যহম্॥ ৭

জ্ময় । হে কৌন্তের ! সর্বভূতানি করকরে মামিক!ং প্রকৃতিং বাস্তি, করাদৌ পুনঃ জহং তানি বিস্কামি ॥१

অকুবাদ,। হে কৃত্তীনন্দন। ভূতসমূহ প্রলয়কালে মদীয় প্রকৃতিতে বিলীন হয়। পুনর্কার স্ষ্টিকালে আমি তাহাদিগকে স্ষ্টি করিরা থাকি ॥৭

ভাষ্য। এবং বার্রাকাশ ইব মরি স্থিতানি সর্বাঞ্তানি স্থিতিকালে তানি সর্বভূতানি কোঁত্তের প্রকৃতিং ত্রিগুণাত্মিকাশ্ অপরাং বাস্তি মামিকাং মনীরাং করকরে প্রাল্যকালে। পুনভূরিজানি ভূতানি উৎপত্তিকালে ক্লাদৌ বিস্কামি উৎপাদরামি অহং পূর্ববং ॥ গ

আনন্দগিরিটীকা। আকাশে বাবাদিন্থিতিবদাকাশাদীন ভূতানি স্থিতিকালে পরমেশরে স্থিতানি চেৎ তর্হি প্রলয়কালে ততোহন্তত্র তিঠেমুরিত্যাশস্কাহ—
এবমিতি। প্রকৃতিশব্দক স্থভাব-বচনন্দং ব্যাবর্ত্তরতি—ত্রিপ্তাণীত্মকামিতি।
সা চাপরেরমিতি প্রাগেব স্কৃতিভেত্যাহ—অপুরামিতি। তত্যাশেশমাধীনন্দেনাস্বাতম্যমাহ—মদীয়ামিতি। প্রলয়কালে ভূতানি যপোক্তাং প্রকৃতিং বাস্থি
চেহৎপত্তিকালেহপি ততন্তেবামুৎপত্তিরীখরাধীনত্বং ভূতস্প্টেন সাদিত্যাশস্ক্যাহ—
পুনরিতি॥

অমুবাদ। এইরপ বায় যেমন আকাশে অবস্থিতি করে, সেইরপ শ্বিতি-কালে সকল ভূতই আমাতে অবস্থিতি করিয়া পাকে, সেই ভূতসমূহ "করক্ষরে" প্রালরকালে "মামিকা" মদীর ত্রিগুণাত্মিকা অপরা প্রকৃতিকে প্রাপ্ত হয়। পুনর্কার সেই ভূতনিচরকে স্প্রকালে আমি পূর্কবিং উৎপাদন করিয়া থাকি ॥৭

> প্রকৃতিং স্বামবষ্টভ্য বিস্তজামি পুনঃ পুনঃ। ভূতগ্রামমিমং কৃৎস্নমবশং প্রকৃতের্বশাৎ॥৮

অনুয়। স্বাং প্রকৃতিন্ অবষ্টভা (বনীক্ষত্য) [মহং] প্রকৃতের্ণাৎ অবশম্ ইমং কুংস্নং ভূতগ্রামং পুনঃ পুনঃ বিস্জামি॥৮

অনুবাদ। নিজ প্রকৃতিকে বশীভূত করিয়া প্রকৃতির বশে অবস্থিত, স্থতরাং অবশ এই প্রাণিনিচয়কে আমি পুনঃ পুনঃ সৃষ্টি করিয়া গাকি॥ ৮

ভাষ্য। এবমবিভালকণাং প্রকৃতিং স্বীরান্ অবইভ্য বশীক্বত্য বিস্কামি
পুন: পুন: প্রকৃতিতঃ জাতং ভ্তগ্রামং ভ্তসমুদারমিমং বর্ত্তমানং ক্বংসং সমগ্রমবশমন্বতন্ত্রম্ অবিভাদিদোবৈঃ পরবশীক্বতং প্রকৃতের্বশাৎ স্বভাববশাৎ ৮৮

আনন্দ্রিটীকা। তর্হি কীন্দ্রী প্রকৃতিঃ সা চ কথং স্টার্পযুক্তেগা-শব্যাহ—এব্যাতি। সংসারস্থানাদিষজ্যোতনার্থং পুনঃ পুনরিত্যুক্তম্। ভূত-সমুদারস্থাবিষ্ণাশ্বিতাদিদোষপরবশ্বে হেতুমাহ—স্বভাববশাদিতি ॥৮

অমুবাদ। এই প্রকার অবিষ্ঠালকণ স্বীয় প্রকৃতিকে বশীভূত করিয়া পুন: পুন: সেই প্রকৃতি হইতে সমুভূত এই বর্ত্তমান ভূতসমূহকে আমি স্ষষ্টি করিয়া থাকি, [এই সকল ভূতসমূদায়] প্রকৃতির বশে (অর্থাৎ) স্বভাবের বশে "অবশ' অস্বত্তম, অবিষ্ঠাদিদোবের দারাই ইহারা পরবশীক্তত ॥৮

> ন চ মাং তানি কর্মাণি নিবশ্বস্তি ধনঞ্জয়। উদাসীনবদাসীনমসক্তং তেয়ু কর্ম্মস্থ ॥৯

অনুয়। হে ধনঞ্জ, তেমু কর্মান্ত অসক্তং, (কলাগজিন্তীনং) উদাসীনবদ্ আসীনং তানি কর্মাণি মাং ন নিবগ্নতি॥৯

অকুবাদ। হে ধনঞ্জয়! সেই সকল কর্ম্মে অনাসক্ত—উদাসীনের স্থায় আসীন আমাকে সেই কর্ম্মসমূহ বন্ধন ক্রিতে সমর্থ হয় না॥৯

ভাষ্য। তর্হি তপ্ত তে পরমেশ্বরশু ভূতগ্রামং বিষমং বিদশতন্তরিমিন্তান্ত্যাং ধর্মাধর্মান্ত্যাং সম্বন্ধ: তাদিভীদমাহ ভগবান,—ন চ মামীশং তানি ভূতগ্রামশ্র বিষমবিদর্গনিমিন্তানি কর্মাণি নিবপ্ত ধনঞ্জয়। তত্ত্ব কর্মণামসম্বন্ধকে কারণমার —উদাসীনবদাসীনং বথা উদাসীন উপেক্ষকন্তদ্বদাসীনং আন্ধনোহবিক্রিম্বাৎ অসক্তং ক্লাসক্লরহিত্য অভিমানবর্জ্জিতমহং ক্রোমাতি তেয় কর্মস্থ। অতোহক্ত-শ্রাপি কর্ম্বাভিমানাভাব: ফ্লাসক্লাভাবশ্চাবদ্ধকারণমন্ত্রণা কর্মাভির্ধ্যতে মৃচ্য ক্রোক্লারবিদ্যুভিপ্রায়ঃ॥১

আনন্দ গিরিটীকা। বদি প্রাক্তং ভূতগ্রামং স্বভাবাদবিষ্ণাতন্ত্রং বৈষমং
বিদ্যাসি তর্হি তব বিষমস্টিপ্রযুক্তং ধর্মাদিমস্থমিত্যনীশ্বরন্থাপন্তিরিতি শব্দতে
—তহীতি। তত্ত্বতি সপ্তম্যা পরমেশবো নির্কানতে। ঈশব্দ ফলসঙ্গাভাবাৎ
কর্ত্বভালমানাভাবাক্ত কর্মাসম্বন্ধবদীশ্বরাদক্তপ্রাণি তত্ত্তরাভাবো ধর্মাক্তসম্বন্ধে
কারণমিত্যাহ—অত্যেহিস্তাস্থতি। বদি কর্মস্থ কর্ত্বভাতিমানো বা ক্সভিৎ
কর্মকলসংযোগো বা * সাৎ তত্তাহ—অন্যথেতি॥৯

অনুবাদ। তুমি পরমেশ্বর, নানাপ্রকার ভূতসমূহকে তুমি সৃষ্টি করিয়া থাক, তাহাই বদি হইল, তবে সেই প্রাণিস্টির নিমিত্ত ধর্ম ও অধর্মের সাহত তোমার সম্বন্ধ আছে, এই প্রকার শব্ধার নিরাকরণ করিবার কল্প ভগবান্ বলিতেছেন বে, সেই প্রাণিগণের স্টেইনিমিত্ত কর্মনিচর আমাকে (অর্থাৎ) ঈশ্বকে বন্ধন করিতে পারে না, হে ধনপ্রর! সেই কর্মের সহিত সম্বন্ধ না হওয়ার কারণ বলিতেছেন—"উদাসীনবৎ আসীন।" বেমন কোন উদাসীন [সকল বস্তুরই] উপেক্ষা করিয়া থাকে, আমিও সেই প্রকার উন্দিসীন। আত্মার অবিক্রির স্বভাব বশতঃ "অসক্তে" ফলাসঙ্গ রহিত (অর্থাৎ) "আমি করিতেছি" এই প্রকার অভিযান আমাতে নাই। [কোন্ বস্তুতে অভিযান নাই ?] সেই সেই কর্মেতে। এই কারণে, অন্ত কোন ব্যক্তি বদি এই প্রকার কর্তৃত্বাভিষান ও ফ্রামন্ধ পরিত্যাগ করিতে পারে, তবে তাহারও কর্মের বন্ধন হর না; কর্তৃত্বাভ

^{🛊 &#}x27;কণ্ডচিৎ কলাসকো বা' ইভি বা পাঠ:।

ভিমান ও ফলাসঙ্গ পরিত্যাগ করিতে না পারিয়াই মৃঢ় জন্ত কোষকারের (গুটি-পোকার) ক্লায় বন্ধ হইয়া থাকে। ইহাই অভিপ্রায় ॥>

> ময়াধ্যক্ষেণ প্রকৃতিঃ সূয়তে সচরাচরম্। হেতুনানেন কোন্তেয় জগদ্বিপরিবর্ত্ততে॥ ১০

' **অনু**য় । প্রকৃতি: মরা অধ্যক্ষেণ সচরাচরং স্থয়তে; হে কৌঞ্চের **অনেন** হেতুনা জগৎ বিপরিবর্ত্ততে ॥১০

় অকুবাদ। প্রকৃতি আমার অধ্যক্ষতার বশেই এ সচরাচর বিশ্ব প্রসব করে; হে কৌন্তের! এই কারণেই জগৎ পরিবর্ত্তন করিতেছে॥১•

তত্র ভূতগ্রামমিমং বিস্কামি উদাসীনবৎ আসীনমিভিচ বিক্লদ্ধ-মূচ্যতে ইতি তংপরিহারার্থমাহ –ময়া সর্বতো দৃশিমাত্রস্বরূপেণ অবিক্রিরান্মনা অধ্যক্ষেণ মম মারা ত্রিগুণাত্মিকা অবিস্থালকণা প্রকৃতিঃ হরতে উৎপাদরতি সচরাচরং জগং। তথাচ মন্ত্রবর্ণ: "একো দেবঃ সর্বভূতের গুঢ়ঃ, সর্বব্যাপী সর্ব্ব-ভূতান্তরাত্ম। কর্মাধ্যক্ষ: সর্মভূতাধিবাস:, সাক্ষী চেতা: কেবলো নিশুর্ণক' ইতি। হেতুনা নিমিত্তেন অনেন অধ্যক্ষয়েন কৌস্তেয় জগৎ সচরাচরং ব্যক্তা-ব্যক্তাত্মকং বিপরিবর্ত্ততে সর্কাবস্থায়। দৃশিকর্মত্বাপত্তিনিমিন্তা চি জগতঃ সর্কা প্রবৃত্তি: অহমিদং ভোক্ষ্যে পঞামীদং শুণোমীদং স্থপমমুভবামি তঃখনমুভবামি তদর্থমিদং করিব্যামি এতদর্থমিদং করিবো জাতামি ইত্যাভা অবগতিনিঠা অবগতাবসানৈব। "বো অভাধ্যকঃ পরমে ব্যোমন্" ইত্যাদয়শ্চ মন্ত্রা এতদর্থং দর্শরন্তি। ততকৈকভ দেবভ সর্কাধ্যকভূতটৈত ক্মাত্রস্ত প্রমার্থতঃ সর্কভোগানভিসম্বন্ধিনো হন্তস্ত চেতনা-ন্তরন্তাভাবে ভোক্তুরন্তন্তাভাবাৎ কিং নিমিন্তেরং স্টিরিত্যত্র প্রশ্নপ্রতিবচনে "কো অন্ধা বেদ ক ইহ প্রবোচং কৃত আজাতা কৃত ইরং বিস্ফট:।" ইত্যুদিমন্ত্রবর্ণেভ্য: দর্শিতং চ ভগবতা "অজ্ঞানেনারতং জ্ঞানং তেন মুহুন্তি জন্তব:" ইতি॥ ১•

আনন্দগিরিটীকা। ঈশবে শ্রষ্ট্ ছমৌদাসীশ্বত্ব বিক্লমিতি শহতে তত্ত্ত্তি। পূর্বপ্রস্থং সংস্থার । বিরোধপরিহারার্থমূত্তরশ্লোকমবতাররতি তদিতি। তৃতীরাধরং সমানাধিকরণমিত্যভূপেত্য ব্যাচষ্টে—ময়েত্যাদিনা। প্রকৃতিশবার্থমাহ—মুমতি। তথা অপি জ্ঞানছং ব্যাবর্তরতি — ত্তিগুণেতি। পরাভিপ্রেতং প্রধানং ব্যুদশুতি—অবিদ্যোতি। সাক্ষিত্বে প্রমাণমাহ—ত্ত্বা

চেতি। মূর্ভিত্রদান্মনো ভেদং বারমতি—এক ইতি। মধগুং স্বাডাং প্রজাহ— দেব ইতি। আদিত্যবং তাটস্থাং প্রত্যাদিশতি—সর্ব্বভূতেম্বিতি! বিমিতি তর্হি সবৈনে পিলভ্যতে ভত্তাহ—গৃঢ় ইতি। বৃদ্যাদিবং পরিচ্চিন্নতং ব্যবচ্ছিনতি —সর্বব্যাপীতি। তর্হি নভোবদনাত্মকত্বং নেত্যাহ—সর্ববৃভূতেতি। তর্হি তত্ৰ তত্ৰ কৰ্মতংফলসম্বন্ধিষ্ণ ভাৎ তত্ৰাহ—কৰ্ম্মেতি। সৰ্বাধিষ্ঠানত্বমাহ— সুর্ব্বৈতি। সর্কের্ ভূতের সন্তাস্ফুর্ভিপ্রদত্বেন সন্নিধির্বাদোহজোচ্যতে। ন কেবলং কর্ম্মণামেবারমধ্যক্ষোহপি তু তদ্বতামপীত্যাহ—সাক্ষীতি। দর্শনকর্তৃত্ব-শঙ্কাং শাতরতি—চেত্তেতি। অধিতীয়ন্তং কেবলন্ত্র । ধর্মাধর্মাদিরাহিত্যমাই —নিগু ণ ইতি। কিং বছনা সর্ববিশেষশৃষ্ম ইতি চকারার্থ:। উদাসীনন্তাপি ঈশরত দাক্ষিমাত্রং নিমিত্তীকৃত্য জগদেতং পোনঃপুত্তেন দর্গদংহারাবহুভবতী-ভাাহ—হেভুনেতি। কার্য্যবৎ কারণভাপি সাক্ষ্যীনা প্রবৃত্তিরিতি বন্ধুং, ব্যক্তাব্যক্তাত্মকমিত্যুক্তং সর্কাবস্থাস্বিত্যনেন স্ষ্টিস্থিতিসংখারাবস্থা গৃহতে। তথাপি অগতঃ সর্গাদিভ্যো ভিন্না প্রবৃত্তিঃ স্বাভাবিকী নেশ্বরায়তা ইত্যাশক্যাহ —দৃশীতি। নহি দৃশিব্যাপ্যত্বং বিনা জড়বর্গস্ত কাপি প্রবৃত্তিরিতি **হিশন্ধার্থ: i** ভামেব প্রবৃত্তিমুদাহরতি—অহমিত্যাদিনা। ভোগশু বিষয়োপলম্ভাভাবেৎসম্ভবাৎ নানাবিধাং বিষয়োপলব্ধিং দর্শরতি-পৃশ্যামীতি। ভোগফলমিদানীং কথরতি —মুখমিতি। বিহিত-প্রতিষিদ্ধাচরণনিমিত্তং মুখং তু:খক্ষেত্যাহ—তদর্থমিতি। ন চ বিমর্থপূর্বকং বিজ্ঞানং বিনামুগ্রানমিত্যাহ—ইদুমিতি। ইত্যাভা প্রবৃত্তিরিতি সম্বর:। সাচ প্রবৃত্তিঃ স্কাঁ দৃক্কর্ম্মমুররীক্তিতাব বিরুণোতি ইত্যুক্তং নিগমরতি—অবগতীতি। তত্ত্বৈ চ প্রবৃত্তেরবসানমিত্যাহ— অবগত্যবদানেতি। পরস্থাধ্যক্ষমাত্ত্রেণ জগচেষ্টেত্যত্ত প্রমাণমাহ— যোহস্তেতি। অন্ত জগতো যোহধ্যকো নির্বিকার: স পরমে প্রকৃষ্টে হাদে ব্যোরি খিতো চুর্বিজ্ঞের ইতার্থ: ! ঈশরত সাকি স্বমাত্রেণ প্রষ্টু ছে খিতে ফলিতমাহ---তত্তে। কিং নিমিন্তা পরস্যেরং সৃষ্টিন তাবভোগার্থা পরস্ত পরমার্থতো ভোগাসম্বিদ্বান্তস্য সর্বসাক্ষিভৃতচৈতক্তমাত্রমার চাক্তো ভোক্তা চেতনান্তরাভাবা-मीयतरेगाकचामर्टेंग्डनगारखाक्कवात्र ह अहे त्रश्वर्गाथी उवित्ताधिचारेत्रवर श्रद्धा वा जम्बूक्रभर श्राजिरहनर वा युक्तर भवगा मात्रोनिवस्तन मर्ग्य जञ्चानवकाभवाषिजार्थः। পরস্যাত্মনো ছবিজ্ঞেরত্বে শ্রুতিমুদাহরতি—ক্রে অন্তেতি। ভারিন্ প্রবক্তাপি সংসারমণ্ডলে নাস্তীত্যাহ—ক ইতেতি। জগতঃ স্ষষ্টকর্ত্ত্বেন পরস্য জেরছমাশস্ক্য কুটব্রমাৎ ততো ন **শটন্ত** ভিত্তাহ—কুক্ত ইক্তি। ন হীরং বিবিধা শটরন্তরাদাদি

ক্সান্ধিছণপদ্ধতে অন্নস্য বন্ধনোহভাবাদিত্যাহ—কুত ইতি! কণং তৰ্হি স্টীরিত্যাশস্যান্ধানাধীনেত্যাহ—দ্বশিত্যঞ্জি ॥ >•

অনুবাদ। পূর্বোক্তবাক্য সমূহের মধ্যে "আমি প্রাণিসমূহকে স্ষষ্টি করি, উদাসীনের স্তার অবস্থিত।" পরম্পার বিরুদ্ধ এই ছুইটি বাক্য ভগবান্ বলিয়া ফেলিয়াছেন, এই প্রকার আশকার নিরাকরণ করিবার জন্ত [ভগবান] ৰণিতেছেন বে, আমি সকল স্থানেই একমাত্র জ্ঞানস্বরূপে বিরাজমান: আমার কোন প্রকার বিকার নাই: আমিই অধ্যক্ষরণে প্রেরণা করি বলিয়া: আমার মারা ত্রিশুণাত্মিকা অবিভালকণা প্রকৃতি এই সচরাচর জগৎকে প্রসব করিরা থাকে। মন্ত্রপ বেদেও ইহাই উক্ত হইয়াছে; যথা—"সেই ছ্যাতিমর আত্মা অভিতীয়, তিনি সকল প্রাণীতে গুঢ়ভাবে অবস্থিত, তিনি সকলের ব্যাপক এবং সকল প্রাণীর অন্তরাম্বা, তিনি কর্মমাত্রেরই অধ্যক্ষ, সকল ভূতই তাঁহাকেই আশ্রয় করিয়া বিভ্নমান আছে. তিনি সাক্ষী চৈতন্ত্রস্বরূপ এক ও নিগুণ।" এই আমার অধ্যক্ষতারূপ নিমিত্তের বশেই হে কৌন্তের, এই চরাচরাত্মক ব্যক্ত ও অব্যক্ত জগৎ বিপরিবর্ত্তন করিতেছে অর্থাৎ ব্যবহারিক নানা অবস্থাতে পরিবর্ত্তন করি-তেছে। জগতের যতপ্রকার ব্যবহার হইতে পারে, জ্ঞানের বিষয় হয় বলিয়াই ঐ সকল ব্যবহার আছে বলিয়া স্বীকৃত হয়। "আমি ইহা ভোগ করিব, আমি ইহা দেখিতেছি, আমি ইহা শুনিতেছি, আমি স্থথামূভব করিতেছি, আমি স্থাপর জন্ম এই কার্য্য করিব, এই হঃধনিবৃত্তির জন্ম আমি ইহা করিব, ইহা জানিব" ইত্যাদি যভগ্রকার প্রবৃত্তি আছে, জ্ঞানের অবলম্বনেই ইহারা সং বলিয়া অঙ্গীকৃত হর এবং জ্ঞানেতেই ইহাদের অবসান হইরা থাকে। "এই পরিদুর্ভমান প্রপঞ্চের বিনি অধ্যক্ষ, তিনি পরম আকাশে বিরাজমান।" এই সকল মন্ত্র-ভাগও এই অর্থ প্রদর্শন করিতেছে। তাহাই যদি হইল, তবে ইহা স্থির যে, সেই সর্বাধ্যক্ষ ম্বোডনাত্মা কেবল চেতনম্বভাব, পরমার্থত তাঁহার কোন প্রকার ভোগের সহিত সম্বন্ধ নাই এবং তাঁহা ছাড়া অন্ত কোন ভোক্তা চেতনান্তরও দাই ; স্থতরাং এই স্ষষ্টি কোথা হইতে আদিল ? এই প্রকার প্রশ্ন এবং ই**হা**র উত্তর ছইটি অছুণপন্ন (অর্থাৎ এই স্বষ্টি প্রমার্থতঃ অনির্বাচনীর থিগ্যা; বাহা মিখ্যা তাহার কটি স্থিতি বা প্রলয়ও মিখ্যা ছাড়া আর কি হইতে পারে ? ভাছাই বদি হইল, তবে স্থাষ্ট কর্ত্তম্ব-নিবন্ধন প্রমান্তার বিকার হইবার সম্ভাবনা কোধার ? "এই স্টির তত্ত্ব পরমার্থক্রণে কে বুঝে ? কেই বা জগতে এই স্টে বিষয়ে উপদেশ क्तिन ? এই बंगर दंशाधा हरेए छर्भन्न हरेन ? दंगहे वा अहे स्ट्री

হইল।" এই সকল বেদমদ্রের দারাও ইহা বেশ বুঝা বাইতে পারে। ভগবান্ও দেখাইরাছেন বে, অজ্ঞানের দারা জ্ঞান আরত, এই কারণেই জীবগণ মোহ প্রাপ্ত হয় ॥>•

> অবজানন্তি মাং মৃঢ়া মানুষীং তনুমাগ্রিতম্। পরং ভাবমজানন্তো মম ভূতমহেশ্বরম্॥ ১১

অন্বয়। মম ভূতমহেশবং পরং ভাবম্ অজানতো মূঢ়া মাং মাহ্যীং তহুস্ আশ্রিতম্ অবজানতি (অবজাং কুর্কতি)॥১১

অকুবাদ। প্রাণিসমূহের উপর সর্বপ্রকারে ঐশ্বর্য্যপূর্ণ আমার পরম ভাব বোধে অসমর্থ হওরার অজব্যক্তিগণ, মনুষ্যমূর্ত্তিধারী সামান্ত জীব বলিরা আমাকে অবজ্ঞা করিরা থাকে ॥১১

ভাষ্য। এবং মাং নিত্যগুদ্ধবৃদ্ধসুক্তবভাবং সর্বজ্ঞ নামাত্মানমপি সন্তম্—
অবজানত্তি অবজ্ঞাং পরিভবং কুর্বন্তি মাং মৃঢ়া অবিবেকিনো মাম্রবীং মন্ত্র্যসম্বন্ধিনীং ভহুং দেহন্ আশ্রিভং মন্ত্র্যদেহেন ব্যবহরস্তম্ ইত্যেভং। পরং প্রকৃত্তিং
ভাবং পরমাত্মভব্মাকাশকরম্ আকাশাদপি অন্তর্তমমজানস্তো ভূতমহেশ্বরং
সর্বভূতানাং মহাস্তমীশ্বরং ক্রমাত্মানং তভক্চ ভক্ত মমাবজ্ঞানভাবনেনাহতা
বরাকাল্ডে॥১১

আনন্দ্রিটিক। সর্বাধ্যক্ষ: সর্বভ্তাধিবাসো নিতামুক্তশ্চেৎ স্থং তর্হি কিমিতি দ্বামেবাল্পদেন ভেদেন বা সর্ব্বেন ভক্তন্তে তত্রাহ—এবুমিতি। বিপর্বান্তবৃদ্ধিত্বং ভগবদবজ্ঞায়াং কারণমিত্যাহ—মৃঢ় ইতি। ভগবতো মহুষ্যদেহসম্বদ্ধাৎ তত্মিন্ বিপর্য্যাস: সম্ভবতীত্যাহ—মানুষ্বীমিতি। অম্পদাদিবদেহতাদাল্মাভিমানং ভগবতো ব্যাবর্ত্তরতি—মনুষ্ব্যেতি। ভগবস্তমবজ্ঞানতামবিবেকমৃশাজ্ঞানং হেতৃনাহ—পরমিতি। ঈশ্বাবজ্ঞানাৎ কিং ভবতীত্যপেক্ষায়াং তদবজ্ঞানপ্রতিবদ্ধার শোচ্যা ভবন্তীত্যাহ—তত্তেশ্চতি। ভগবদবজ্ঞানাদেব হেতোরবজ্ঞানশ্বন্তে কন্তবো বরাকাঃ শোচ্যাঃ সর্বপ্রস্থার্থবাহাঃ স্থারিতি সম্বন্ধঃ। তত্র হেতৃং স্ক্রেন্তি—ত্তুম্বৃত্তি। প্রকৃত্যা ভগবতোহবজ্ঞানমনাদরণং নিন্দনং বা ভস্য ভাবনং পৌনঃপৃক্তা ভেনাহতাত্তজ্ঞনিতত্ত্রিতপ্রভাবাৎ প্রতিবদ্ধবৃদ্ধর ইত্যর্থঃ ॥১১

আসুবাদ। আমার বভাব নিত্যমুক্ত ও নিত্যবৃদ্ধ এবং আমিই সকল জীবের আত্মা, তথাপি "মৃচ্গণ" অবিবেকী জনসমূহ আমাকে "অবজ্ঞা করিয়া থাকে" পরিভূত করিয়া থাকে। "মাছ্বী" মহুব্য সম্বিদ্ধনী তহুকে আশ্রয় করিলেও অর্থাৎ মহুষ্যদেহকে আশ্রর করিয়া ব্যবহার করিলেও আমি প্রক্তপক্ষে "ভূতমহেশর" জীবসমূহের পরমেশর অর্থাৎ অন্তরাত্মা; আমার পরম "ভাব"
পরমাত্মতর বাহা আকাশকর অথচ আকাশ হইতেও অন্তরতম, তাহাকে না
ব্রিরাই আমাকে মৃঢ়গণ অবজ্ঞা করিয়া থাকে (অর্থাৎ) আমার প্রতি এই
প্রকার অবজ্ঞাভাবনা করে বলিয়া তাহারা সংসারে অত্যন্ত অকিঞ্চন ও শোচনীয়
দশাগ্রন্ত হইয়া থাকে ॥১১

মোঘাশা মোঘকর্মাণো মোঘজ্ঞানা বিচেতসঃ। রাক্ষসীমান্তরীকৈব প্রকৃতিং মোহিনীং শ্রিতাঃ॥ ১২

অন্থয়। [বে মাম্ অবজানস্তি তে] রাক্ষণীম্ অস্থরীং চ মোহিনীৎ প্রাকৃতিষ্ এব প্রিতাঃ (আপ্রিতাঃ সস্তঃ) মোঘাশাঃ (নিক্ষণাশাঃ) মোঘকর্মাণো মোঘজানা বিচেতসঃ [চ] [ভবস্তি]॥ ১২

আমুবাদ। [বাহারা আমাকে অবজ্ঞা করে তাহারা] মোহকারিণী রাক্ষ্যী ও আমুরী প্রকৃতিকেই আশ্রয় করে; তাহাদের আশানিফল হয়, তাহাদের কার্য্য সফল হয় না, তাহাদের জ্ঞানও নিশ্রার্মজন হয় এবং তাহারা বিক্বতচিত্ত হইয়া থাকে ॥১১

ভাষ্য। কথম ?—মোঘাশা বৃথা আশা আশিষো বেষাং তে মেঘাশাঃ। তথা মোঘকশ্বাণো বানি চ অগ্নিহোত্রাদীনি তৈরমুগ্রীয়মানানি কর্ম্বাণি তানি চ তেবাং ভগবতঃ পরিভবাৎ বাত্মভূতশু অবজ্ঞানাৎ মোঘাশ্রেব নিক্ষলাশ্রেব কর্ম্বাণি ভবন্ধি ইতি মোঘকর্মাণঃ। তথা মোঘজ্ঞানা জ্ঞানমপি তেবাং নিক্ষলমেব শ্রাৎ। বিচেতসঃ বিগতবিবেকাশ্চ তে ভবন্তীত্যভিপ্রায়ঃ। কিঞ্চ তে ভবন্তি রাক্ষ্যীং রক্ষ্যামেব প্রকৃতিং স্বভাবম্, আমুরীম্ অমুরাণাঞ্চ প্রকৃতিং মোহিনাং মোহকরীং দেহাত্মবাদিনীং প্রিতা আপ্রিতাশ্হিদ্ধি ভিদ্ধি পিব খাদ প্রস্থমপহর ইত্যেবং বদনশীলাঃ ক্রুরকর্মাণো ভবন্তীত্যর্থঃ; "অমুর্যা নাম তে লোকাঃ" ইতিশ্রুতঃ ॥১২

আনন্দগিরিটীক। ভগবন্তমবন্ধানতাং প্রশ্নপূর্বকং শোচ্যবং বিশদরতি—কথমিতি। ভগবন্ধিনাগাণ ন কাচিদপি প্রার্থনা অর্থবতীত্যাহ—ব্রুথেতি। নক্ষ্ ভগবন্তং নিন্দতোহপি নিত্যং নৈমিত্তিকং বা কর্মায়তিঠন্তি তদমুগ্রানাচ্চ তেবাং প্রার্থনাঃ সার্থা ভবিষ্যন্তীতি নেত্যাহ—ত্তথেতি। পরিভবন্তিরম্বরণম্। অবজ্ঞান-মনাদরণম্। ভেবামপি শাস্ত্রার্থজ্ঞানবতাং তন্ধারা প্রার্থনার্থব্যমিত্যাশন্ধ্যাহ—তথা মোহেতি। তথাপি বৌক্তিক্বিবেক্বশাৎ ওৎপ্রার্থনাগাফ্যাস্ক্যাশন্ত্যাশন্ত্যাহ—

বিচেত্তস ইতি। ন কেবলমুক্তবিশেষণবন্ধমেব তেষাং কিন্তু বর্ত্তমানদেহপাতাদন-ন্তরং তত্তদতিক্রবোনিপ্রাপ্তিশ্চ নিশ্চিতেত্যাহ — কিঞ্চেতি। মোহকরীমিতি প্রকৃতিষয়েহপি তুল্যং বিশেষণং, ছিদ্ধি ভিদ্ধি পিব থাদেতি প্রাণিহিংসারূপো রক্ষ্যাং স্বভাবোহস্করাণাং স্বভাবস্ত ন দেহি ন জুহুধি পরস্বমপহরেত্যাদিরূপঃ। মোহো মিথ্যাজ্ঞানম্। উক্তমেব ক্টুর্ভি — ছিদ্ধীতি ॥ ১২

অকুবাদ। কেন [তাহারা এমন শোচনীর দশাগ্রন্থ হর] ? 'মোছাশা' বুথা বাহাদের 'আশা' অভিলাব: তাহাদিগকে মোছাশ বলা বার [ঐ সকল ব্যক্তির আশাও রথা হয়] সেইরূপ তাহারা মোছকর্মা হইয়া থাকে, আমাকে অর্থাৎ তাহাদের পরমাত্মাকে অবজ্ঞা করে বলিয়া তাহাদের অমিহোত্র প্রস্তৃতি কর্ম্মসূহও নিক্ষণ হয়, তুত্রাং তাহারা মোছকর্মা হইয়া থাকে। সেই প্রকার তাহারা 'মোছজ্ঞান' নিক্ষণজ্ঞান হয়, তাহাদের জ্ঞানও নিক্ষণ হইয়া থাকে। তাহারা 'মোছজ্ঞান' নিক্ষণজ্ঞান হয়, তাহাদের ক্ঞানও নিক্ষণ হইয়া থাকে। তাহারা বিচেতা হয়, তাহাদের সদসৎ বিবেক থাকে না, ইহাই অভিপ্রায়। আরও তাহারা 'রাক্ষসী' রাক্ষসগণের 'প্রকৃতি' স্বভাবকে প্রাপ্ত হয় এবং আস্থরী অস্থর-গণের প্রকৃতিকেও প্রাপ্ত হয়। এই রাক্ষসী ও আস্থরী প্রকৃতি 'মোহিনী' মোহকারী—অর্থাৎ ইহা দেহেতে আস্মবৃদ্ধি [-রূপ যে মোহ তাহা] করিয়া থাকে, এই প্রকার স্বভাবের বশবর্জী হইয়া তাহারা 'ছিয় কর, ভিয় কর, পান কর, ভাজন কর, পরের ধন অপহরণ কর, এই প্রকার বলিতে আরম্ভ করিয়া জগতে সকল প্রকার ক্রকর্দেম্ব প্রস্তুত হইয়া থাকে; ইহাই অর্থ। শ্রুভিভেও কথিত আছে যে, তাহারা 'জ্ঞানহীন লোক প্রাপ্ত হয়'॥১২

মহাত্মানস্ত মাং পার্থ দৈবীং প্রকৃতিমাঞ্রিতা:। ভজস্ত্যনন্তমনসো জ্ঞাত্বা ভূতাদিমব্যয়ম্॥ ১৩

অনুষ্য়। হে পার্থ, দৈবীং প্রকৃতিমাশ্রিতা মহাত্মানঃ মাং ভূতাদিম্ অব্যয়ং জাত্ম অনক্রমনসঃ [সন্তঃ] ভক্তে ॥১৩

অনুবাদ। হৈ পার্থ! দৈবী প্রকৃতির আশ্রর মহাম্মাগণ আমাকে ভূত- গ্রন্থর আদি ও ব্যর্বহিত (অবিনাশী) জানিরা অনন্তচেতা হইরা আমাকে ভজনা করেন ॥১৩

ভাষ্য ৷ বে পুনঃ শ্রহণানা ভগবদ্ভজিলকণে মোক্ষমার্গে প্রবৃত্তা মহাত্মা-নতৃত্বটেত্তা মানীবরং পার্থ দৈবীং দেবানাং প্রকৃতিং শন-দম-দমা-শ্রহাদিলকণাম্ আশ্রিতাঃ সন্তো ভক্তত্তি দেবত্তে অনক্তমনসঃ অনক্তচিতা সাম্বা ভূতাদিং ভূতানাং বিরদাদীনাং প্রাণিনাঞ্চ আদিং কারণমব্যরম্ ॥১৩

আনন্দণিরিটীকা। কে পুনর্ভগবন্তং ভব্দত্তে তানাহ—যে পুনরিতি।
মহান্ প্রকটো বজ্ঞাদিভি: শোধিত আত্মা সন্থং বেষামিতি বৃৎপত্তিমাপ্রিভ্যাহ—
অক্ষুদ্রেতি। তুশকোহবধারণে। প্রকৃতিং বিশিনষ্টি—শামেতি। অঞ্চমিন্
প্রত্যগভূতে মরি পরন্ধিরেব মনো বেষামিতি বৃৎপত্ত্যা ব্যাকরোতি—অনক্যচিত্তা ইতি। অজ্ঞাতে সেবাম্পপত্তেং শাস্ত্রোপপত্তিভ্যামাদৌ জ্ঞাত্বা ততঃ সেবঙ্কে
ইত্যাহ—জ্ঞাত্ত্বিতি। অব্যয়মবিনাশিনম্॥ ১০

অমুবাদ ৷ বাহারা কিন্ত শ্রদ্ধাসম্পন্ন এবং ভগবদ্ভক্তিরূপ মোক্ষমার্গে প্রবৃত্ত — [সেই সকল] 'মহাত্মা' অক্সেচিত ব্যক্তিগণ 'দৈবী' দেবতাগণের 'প্রকৃতি' অর্থাৎ শম দম-দয়া-শ্রদ্ধাদিলক্ষণ স্বভাব প্রাপ্ত [হইরা এবং] 'অনক্তমনাঃ' অনক্ত-চিত্ত হইরা আমাকে (অর্থাৎ) ঈশ্বরকে 'ভূতগণের' আকাশাদির ও প্রাণিগণের 'আদি' কারণ ও অব্যর জানিয়া 'ভজনা' সেবা করিয়া ধাকে ॥১০ °

সততং কীর্ত্তরম্ভো মাং যতন্তশ্চ দৃঢ়ব্রতাঃ। নমস্তন্তশ্চ মাং ভক্ত্যা নিত্যযুক্তা উপাসতে॥ ১৪

অনুয় । মাং সহতং কীর্ত্তন্তর বতত্তঃ (যতমানাঃ) দৃঢ়ব্রতা মাং নমশুস্তশ্চ ভক্ত্যা নিত্যযুক্তাঃ উপাসতে ॥১৪

অনুবাদ। সর্বাদ আমার কীর্ত্তন করিয়া থাকেন ও দৃঢ়ব্রত হইয়া [জ্ঞানলাভের জন্ত] প্রযত্ন করিয়া থাকেন—ভক্তিপূর্ব্বক সর্বাদা আমাকে নমন্বার
করিয়া থাকেন—এই ভাবেই নিতাযুক্ত হইয়া সাধকগণ আমার উপাসনা করিয়া
থাকেন ॥১৪

ভাষ্য ৷ কথং ?—সততং সর্বাদা ভগবন্তং ব্রহ্মস্বরূপং মাং কীর্ত্তরা যতন্তক্ত ইন্ত্রিরোপসংহারশমদমদয়াহিংসাদিলক্ষণৈঃ ধর্ণৈঃ প্রযতন্তক্ষত দৃঢ়ব্রভাঃ দৃঢ়ং স্থির-মচাঞ্চল্যং ব্রতং বেষাং তে দৃঢ়ব্রতা নমস্তন্তক্ষত মাং হৃদরেশরমান্ধানং ভক্ত্যা নিত্য-যুক্তাঃ সন্ত উপাসতে সেবস্তে ॥১৪

আনন্দগিরিটীকা। ভন্ধনপ্রকারং পৃচ্ছতি—কথমিতি। তৎপ্রকার-মাং—স্তত্মিতি। সর্বাদেতি প্রবণাবস্থা গৃহতে, কার্ত্তনং বেদারপ্রবণং প্রণাবস্থা গৃহতে, কার্ত্তনং বেদারপ্রবণং প্রণাব-মুণাক। 'ব্রতং ব্রন্ধচর্যাদি। নমস্যস্থো মাং প্রতি চেত্রসা প্রস্কৌত্তবন্ধা ভিন্তার্থকাঃ সদা সংস্কুজাঃ ॥১৪ অনুবাদ। কি প্রকারে? [তাহারা উপাসনা করিয়া থাকে তাহাই বলা হইতেছে] 'সতত' সর্বদা আমাকে (অর্থাৎ) ব্রহ্মস্বরূপ ভগবান্কে কীর্তিত করিতে করিতে [এবং] যত্নপর হইয়া (অর্থাৎ) ইক্রিয়ের প্রত্যাহার, শম, দয়, দয়া ও অহিংসাদি রূপ ধর্মদারা [চিত্তগুদ্ধি লাভ করিবার জন্ম] প্রযত্নপরায়ণ হইয়া—[এবং] "দূঢ্রত" দৃঢ় স্থির অর্থাৎ চাঞ্চল্যরহিত ব্রতের অনুষ্ঠান বাহারা করে, তাহারাই 'দূঢ্রত'। এইরূপ দৃঢ়্রত হইয়া সকলের ফদয়স্থিত আত্মস্বরূপ আমাকে [সর্বাদা] নমস্কার করিতে করিতে নিত্যযুক্তগণ [যোগিগণ] আমার উপাসনা করিয়া থাকেন ॥১৪

জ্ঞানযজ্ঞেন চাপ্যন্তে যজজে মামুপাসতে। একত্বেন পৃথজ্ঞেন বহুধা বিশ্বতোমুখম্॥ ১৫

আনুয়। অপিচ অন্তে জ্ঞানবজ্ঞেন যজন্ত: নাম্ উপাসতে [কেচন] একছেন [কেচন] পৃথক্ছেন [কেচন] বহুধা বিখতোমুথম্ [মামুপাসতে ইতি শেষ:]॥ >৫

অনুবাদ ৷ জ্ঞানযজ্ঞধারা পূজা করিয়া কোন কোন ব্যক্তি আমার উপাদনা করিয়া থাকেন, সেই জ্ঞান কাহারও এক অধিতীয় ব্রশ্ধবিষয়ক, কেহ বা চন্দ্র স্থ্য প্রভৃতি নানা আকারে ভাবিয়া উপাদনা করেন, কেহ বা বহুভাবে অবস্থিত সর্বব্যাপক ভাবিয়াও আমার উপাদনা করিয়া থাকেন ॥১৫

ভাষ্য। তে কেন কেন প্রকারেণ উপাসতে? ইত্যাচাতে—জ্ঞানযজ্ঞেন জ্ঞানমের ভগবদ্বিষয়ং বজ্ঞানে জ্ঞানযজ্ঞেন বজ্ঞাঃ পূজ্যান্তা নামীখরং চাগ্যান্তে আলাম্পাসনাং পরিভাজ্য উপাসতে। তচ্চ জ্ঞানম্ একদেন একমের পরং ব্রহ্ম ইতি পরমার্থদর্শনেন বজ্ঞা উপাসতে। কেচিচ্চ পৃথজ্ঞান আদিত্যচন্দ্রাদিভেদ্নে স এব ভগবান্ বিষ্ণুরাদিত্যাদিরপোবস্থিত ইতি উপাসতে। কেচিদ্ বছ্ধা অবস্থিতঃ স এব ভগবান্ বিশ্বতোম্বাং সর্বতোম্বাং বিশ্বরূপ ইতি তং বিশ্বরূপং সর্বতোম্বাং বছ্ধা বছ্প্রকারেণ উপাসতে॥ ১৫

আনন্দর্গিরিটীকা। উপাসনপ্রকারভেদপ্রতিপিৎসরা পৃচ্ছতি—তে কেনেতি। তৎপ্রকারভেদোদীরণার্থং শ্লোক্ষবতার্রন্ধতি—উচ্যুত ইতি। ইব্যুতে পূব্যুতে প্রমেশরোহনেনেতি প্রকৃতে জ্ঞানে যজ্ঞপন্থ:। ঈশ্বরশ্বেতি চকারোহবধারণে। দেবতান্তরধ্যানত্যাগমণিশব্দহিতিৎ দর্শরতি—অন্যামিতি। মঙ্কে চ ব্রন্ধনিষ্ঠামিতি যাবং। জ্ঞানযক্ষমেব বিভক্ষতে—তচ্চেতি। উর্ব্ধাধি- কারিণামুপাসনমূকা মধ্যমানাম্ অধিকারিণাম্ উপাসন প্রকারমাহ--কোষ্ঠতেভি।
তেবামের প্রকারান্তরেগোপাসনমূদীরয়ভি—কৈচিদিভি। বই প্রকারেশারাদিভ্যাদিরপেণেভি যাবং ॥>৫

অমুবাদ। তাঁহারা কোন্ কোন্ প্রকারে উপাসনা করিয়া থাকেন ?
তাহাই বলা হইতেছে, "জ্ঞানয় ত্রের দ্বারা" ভগবদ্বিষয় জ্ঞানই বজ [বলিয়া উক্ত
হইয়াছে] "সেই জ্ঞানরূপ বজ্ঞের দ্বারা পূলা করিয়া এবং অন্ত প্রকার উপাসনা
পরিত্যাগ করিয়া কোন কোন সাধকগণ আমার উপাসনা করিয়া থাকেন। সেই
জ্ঞান [কি প্রকার হয় ?] একর প্রকারে মর্থাৎ একমাত্র প্রত্তর্মই সৎ এইরূপ
গরমার্থ দৃষ্টি দ্বারাই তাঁহারা ('গহাদের মধ্যে কেহ কেহ) আমার পূজা করিয়া
উপাসনা করিয়া থাকেন। কোন সাধক পৃথক্ভাবে (অর্থাৎ) আদিত্য
বা চক্রাদিভেদে [আমার] উপাসনা করিয়া থাকেন—একই সেই ভগবান্ বিষ্ণু
আদিত্যাদি নানারূপে মবস্থিত আছেন—ইহাই ভাবিয়া তাঁহারা [আমার]
উপাসনা করিয়া থাকেন। আবার কোন কোন সাধক ভাবিয়া থাকেন বে,
নানারূপ নানাপ্রকারে অবস্থিত হইলেও সেই একমাত্র ভগবান্ বিষ্ণুই "বিশ্বতোমুথ" সর্ব্বতোমুণ মর্থাৎ বিশ্বরূপ মর্থাৎ তাঁহারা সেই সর্ব্বতোমুণ বহুভাবে অবস্থিত
ভগবান্কে বহুপ্রকারে উপাসনা করিয়া থাকেন॥১৫

অহং ক্রতুরহং যজ্ঞঃ স্বধাহমহমৌষধম্। মস্ত্রোহহমহমেবাজ্যমহমগ্রিরহং হুতম্॥ ১৬

অনুষ্যু । অহং ক্রতু:, মহং যজ্ঞা, অহং স্থা, অহম্ ঔৰধন্, অহং মস্ত্র, অহমেব আজ্যন্, অহম্ অগ্নিঃ, অহং হুতম্ [চ]॥ ১৬

অনুস্বাদ। আমি ক্রতু, আমি বজ্ঞ, আমি বধা, আমি ঔবধ, আমি বন্ধ, আমিই মৃত, আমি অগ্নি এবং আমি হোম ॥১৬

ভাষ্য। যদি বহুভিঃ প্রকারৈকপাসতে কথং ছামেব উপাসতে ইত্য আহ শ্বহং ক্রত্য শ্রোভকর্মভেদঃ সহমেব। অহং যজঃ সার্ত্তঃ। কিঞ্চ স্বধা জন্ত্রম্ আহং যৎ পিতৃভ্যো দীয়তে। অহমৌবধং সর্বপ্রাণিভির্বদদ্যতে তৎ উষ্ধশশ্ববাচ্যম্ অথবা স্বধেতি সর্বপ্রাণিসাধারণমন্ত্রম্, ঔষধমিতি ব্যাধ্যুপশ্বমার্থং ভেষ্কম্। মন্ত্রোহ্বং যেন পিতৃভ্যো দেবতাভ্যাক হবিদীয়তে। অহমেব আজ্যং হবিশ্চাহম্ অন্নির্বাদিন্ হ্রতে গৌহন্ত্রিরহমেব। অহং হতং হবনকর্মচ।।১৬

व्यानन्त्रशिक्षा । ज्यवत्त्वविषयम्भागनः जर्दि न निधाजीक् भृद्धक

—বাদীতি। প্রকারভেদমাদার ধ্যারস্তোহণি ভগবস্তমেব ধ্যারস্তি তক্ত সর্বা-শ্বকাদিতাহ অত আহেতি। ক্রভ্রক্তন্তরারনরোরণৌনকক্তাং কর্শরন্ ব্যাচটে শ্রোত ইতি। ক্রিরাকারকফলজাতং ভগবদতিরিক্তং নাতীতি সম্পারার্থ: ॥১৬

অনুবাদ। যদি অনেক প্রকারে [তাঁহারা] উপাসনা করিরা থাকেন, তবে তোমাকেই বে উপাসনা করেন, ইহা কিরূপে সক্ষত হর ? এই প্রশ্নের উত্তর অর্ক্রপ বলা ইইতেছে বে—আমি ক্রতু। আমি যজ্ঞ (অর্থাৎ) বেদবিহিত [বে] কর্মবিশেব, আমিই সেই ক্রতু। আমি যজ্ঞ (অর্থাৎ) শ্বতিবিহিত [বজ্ঞনামক] কর্মবিশেব। আরও আমি "বধা" যাহা পিতৃগণের উদ্দেশে অর্পিত হর সেই অরই [বধা শক্ষের অর্থ]; আমিই 'ঔবধ' সকল প্রাণী বাহা জক্ষণ করে, তাহাই ঔসধ-শক্ষ-বাচ্য; অথবা স্থধা শক্ষের অর্থ সর্ব্ধ-প্রশিব্যাবারণের অর ; ব্যাধির শান্তির ক্রন্থ যে ভেষক ব্যবহৃত হর, তাহাই ঔবধ শক্ষের অর্থ। যে বাক্য পাঠ করিয়া দেবতা ও পিতৃগণের উদ্দেশে হবিঃ প্রদান করা যার, সেই বাক্যকে "মন্ত্র" কহে, আমিই সেই মন্ত্র। আমিই "আজ্য" হবিঃ, যাহাতে হবন করা যায়, সেই অগ্নিও আমিই, আর যে হোমক্রিরা, তাহাও আমিই। ১৬

পিতাহমস্থ জগতো মাতা ধাতা পিতামহঃ। বেল্যং পবিত্রমোস্কার ঋক্ সাম যজুরেবচ॥ ১৭

আম্বয়। অংম্ অভ জগতঃ পিতা, মাতা, ধাতা, পিতামহঃ [চ] [তথা অহমেব] পবিত্রং বেভুম্ ওকারঃ, ঋক্, সাম, বজুরেবচ ॥ ১৭

আকুবাদ। আমি এই জগতের পিতা মাতা ধাতা ও পিতামহ এবং আমিই পবিত্র ও বেদ্য ওঁকার, আমি ঋক্ যজুঃ ও সাম ॥ ১৭

ভাষ্য | কিঞ্চ, পিতা জনমিতা অহম্ অন্ত জগতঃ, মাতা জনমিত্রী, ধাতা কর্মিকলস্য প্রাণিড্যো বিধাতা, পিতামহঃ পিতৃঃ পিতা, বেছং বেদিডব্যং পবিত্রং পাবমম্ ও কায়্ব-চ ঋক্ সাম বজুরেব চ ॥ ১ ৭

আনন্দগিরিটীকা। ইতক্ষ ভগবতঃ সর্বীশ্মকত্বমন্থ্যমিত্যাহ— কিঞ্চেতি। পবিত্রং পূর্ভেংনেনেতি বৃংপত্ত্যা পরিগুদ্ধিকারণং পূণ্যং কর্ম্মে-ভাহ—পাবনমিতি। বেদিতব্যে ব্রহ্মণি বেদনসাধনমোকারন্তত্ত্ব প্রমাণমূগাদি। চিকারাদথকাদিরসো গৃহন্তে॥ ১৭ অমুবাদ। আরও আমি এই লগতের "পিতা" অনক, "মাডা" জননী [আমি] "ধাতা" প্রাণিগণের উদ্দেশে কর্ম সকলের ফলবিভাগকর্তা, ও "পিতামহ" পিতারও পিতা; [আমি] "পবিত্র" পাবন ও "বেছ" জ্ঞাতব্য ও কার, [আমিই] শক্ষত্ব ও সাম ! > ?

গতির্ভত্তা প্রভূঃ সাক্ষী নিবাসঃ শরণং স্ক্রহং। প্রভবঃ প্রলয়ঃ স্থানং নিধানং বীজমব্যয়ম্॥ ১৮

অনুমু । [অহং] গতিঃ ভর্তা প্রভূ: দাক্ষী নিবাদঃ শরণং ক্ষরৎ প্রভবঃ প্রদয়: স্থানং নিধানং [তথা] অব্যয়ং বীজম্ ॥ ১৮

অনুবাদ। [আমিই] গতি, ভর্তা, প্রভূ, সাক্ষী, নিবাস, শরণ, স্থহৎ, প্রভব, প্রশন্ত, স্থান, নিধান ও অব্যয় বীজ্ঞ। ১৮

ভাষ্য । কিঞ্চ গতিঃ কর্মকলং, ভর্তা পোষ্টা, প্রভুঃ স্বামী, সাক্ষী প্রাণিনাং কুতাক্কতস্য, নিবাসো যদ্মিন্ প্রাণিনো নিবসন্তি, শরণমার্জানাং মং-প্রপদ্মানাম্ আর্তিহরঃ, স্করং প্রত্যুপকারনিরপেকঃ সন্ উপকারী, প্রভবঃ উৎপত্তির্জগতঃ, প্রলয়ঃ প্রলীয়তে যদ্মিন্ ইতি । তথা স্থানং তিষ্ঠত্যন্মিন্ ইতি । নিধানং নিক্ষেণঃ কালাস্তরোপভোগ্যং প্রাণিনাং, বীজং প্ররোহকারণং প্ররোহধর্মিণাম্ । অব্যয়ং বাবৎসংসারভাবিশ্বাৎ অব্যয়ম্ । নহুবীজং কিঞ্চিৎ প্ররোহতি । নিত্যং চ প্ররোহদর্শনাৎ বীজসন্ততির্ন ব্যেতীতি গম্যতে ॥১৮

আনন্দ্রিটিক।। ভগবতঃ সর্বাছ্মকত্বে হেছন্তরমাহ—কিঞ্চেতি।
গম্যত ইতি প্রকৃতিবিনয়পর্যান্তং কর্মকলং গতিরিত্যাহ—কর্ম্মতি পোষ্টা।
কর্মকলক্তৈব প্রদাতা। কার্য্যকারণপ্রপঞ্চন্তাধিষ্ঠানমিত্যাহ—নিবাস ইতি।
শীর্ন্যতে হঃখমমিরিতি বৃংপজিমাশ্রিত্যাহ—শর্ণমিতি। প্রভবত্যমাজ্জগদিতি
বৃংপত্তিমাদারোক্তম্—উৎপত্তিরিতি। কারণক্ত কথমব্যমন্দ্রমিত্যাশঙ্ক্যাহ—হাব্দিতি। কারণমন্তরেণাপি কার্যাং কদাচিত্বদেব্যতি কিং কারণেনেত্যাশঙ্ক্যাহ—ন্
হাতি। মাভূৎ তহি সংসারদশারামেব কার্য্যেপতিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—নিত্যং
চিতি। কারণব্যক্তেন শিমদীক্তত্য ভদক্ততমব্যক্তিশৃগ্রন্থং পূর্বকালক্ত নান্ধীতি
সিদ্ধবংক্বত্য বিশিনষ্টি—বীজেতি ॥১৮

অমুবাদ। আরও [আমি] "গতি" কর্মফল, "ভর্তা" পোৰণকারী, "প্রভূ" বামী, "মান্দী" প্রাণিগণের ক্বত ও অক্বত কর্ম্মের জন্তা, "নিবাস" বাহাতে প্রাণিগণ নিবাস করে [তাহাকেই নিবাস কহে], "শরণ" আওঁ হইরা বাহার। শাষার মাশ্রর গ্রহণ করে, তাহাদের আর্ত্তিকে আমি হরণ করি, "মুস্কং" প্রত্যুপকার-নিরপেক্ষ উপকারকারী, "প্রভব" কগভের উৎপত্তি, "প্রলয়" যাহাতে
[ক্ষাং] প্রদীন হয় । এইরূপ [আমি] "হানং" বাহাতে অবহান করে আহার
নাম 'হান'], "নিধান" প্রাণিগণের কালান্তরে উপভোগ্য ফলসমূহ নিক্ষেপ করা
বার যে স্থানে, [তাহাকে 'নিধান' বলে], "বীক্ষ" প্ররোহধর্মি কগতের প্ররোহের
কারণ, "অব্যয়" যতদিন সংসার, ততদিন [সেই বীজ] বিশ্বমান বলিরা অব্যর,
এই কগতে বীক্ষ না থাকিলে প্ররোহ হইবার সন্তাবনা নাই । প্রভ্যুহই সংসারে
প্ররোহ দেখা বার বলিয়া সংসারের বীক্ষপ্র অব্যর, ইহা বুঝা বার ॥১৮

তপাম্যহমহং বর্ষং নিগৃহাম্যুৎস্কামি চ। অমৃতক্ষৈব মৃত্যুশ্চ সদসচাহমর্জ্জুন॥ ১৯

আন্বয়। অহং তপানি, অহং বর্ষন্ নিগ্লামি, অহন্ উৎস্ঞানি, [আহং] অমৃতং মৃত্যু: চ হে অর্জুন, অহং সং অসচচ॥ ১৯

আকুবাদ। আমি তাপ দিয়া থাকি, আমিই বৃষ্টি, আমিই গ্রহণ করি, আমিই [বর্ধাকালে] উৎসর্গ (ত্যাগ) করি, আমিই অমৃত ও মৃত্যু, হে অর্জুন, আমিই সং ও অসং ॥ ১৯

ভাষ্য। কিঞ্চ তপানি অহং আদিত্যো ভূষা কৈশ্চিৎ রশ্মিভিক্রণৈ: অহং বর্ষং কৈশ্চিৎ রশ্মিভি:, উৎস্কলানি উৎস্কল পুনর্নিগৃহানি কৈশ্চিৎ রশ্মিভিরন্তিমানে: পুনক্রৎস্কানি প্রার্ষি। অমৃতং চৈব দেবানাং, মৃত্যুশ্চ মর্জ্যানাম্। সং
বস্য বৎসম্বন্ধিতরা বিভ্নানং তদ্বিপরীতমসৎ চৈবাহমর্জ্ন। ন পুনরত্যস্তমেবাসদ্ ভগবান্ স্বরং কার্য্যকারণে বা সদস্তী। যে পুর্বোক্তরমুবৃত্তি প্রকারেরেক্ত্পৃথক্তাদিবিজ্ঞানৈর্বজৈ: মাৎ পুক্রস্ত উপাসতে জ্ঞানবিদত্তে বথাবিজ্ঞানং
নামেব প্রাপ্নুবৃত্তি॥১৯

আননদিগিরিটীকা। ইতশ্চ সর্বাত্মতে ভগবতো ন বিবদিভব্যমিত্যাহ—
কিঞ্চেতি। "আদিত্যাজ্জায়তে বৃষ্টিং"ইতি স্থৃতিমবইভ্য ব্যাচ্টে—কৈশিচ্নিতি।
বর্ষোৎসর্গনিগ্রহাবেককৈশ্বন্ কালে বিক্লে ইত্যাশক্যাহ—অফ্টভিরিতি।
কুত্রভেদেন বর্ষস্থ নিগ্রহােতে তদিহ সদিত্যাচ্যতে, কারণসম্বন্ধনানভিব্যক্তং
কারণমেব অনভিব্যক্তনামরূপমসদিতি ব্যবহিরতে তদেতদাহ—সদিতি। শৃষ্ক-

ৰাদং ব্যাক্তভি—ৰ পুনরিতি। ভগবতোহতান্তাসত্ত্বে কার্যকারণকলনা নিরধিক্রানা ন তিঠেদিত্যর্থঃ। ভর্হি র্যপাশ্রতং কার্যক্ত সবং কারণক চাসবন্ধত্ত্বরমিত্যাশন্ত্য বাশব্দেন নিরেধতি—কার্য্যুতি। তহি কার্যক্তাতান্তিকং সবং
বাচারন্তগশ্রতেন পিতরক্তাতান্তিকম্ অসবং "কৃতন্ত থল্" ইত্যাদিশ্রতেরিত্যর্থঃ।
উক্তৈজ্ঞ নিনইজ্ঞর্জগবদভিধ্যানাভিনিবিপ্তবৃদ্ধীনাং কিং ফলমিত্যাশন্ত্য সন্ত্যো বা
ক্রমেণ বা মৃক্তিরিত্যাহ—যে ইতি ॥১৯

অনুবাদ। আরও, আমি আদিত্য হইরা কতকগুলি তীব্রমী ধারা বর্ষণ করিয়া থাকি। আমিই জল বিসজ্জন করিয়া আবার ঐ জলরাশি আটমাসে শোষণ করিয়া লই এবং বর্ষাকালে [পুনরায়] আবার তাই বর্ষণ করিয়া থাকি। আমি দেবগণের পক্ষে অমৃত ও মর্ত্ত্যগণের পক্ষে মৃত্যু। আমি সং, বে কারণে সম্বন্ধিরূপে রে কার্য্য বিশ্বমান থাকে, সেই কারণে তথন সেই কার্য্যকে সং বলা যায়। কার্য্য রখন কারণে অনভিব্যক্ত অবস্থায় থাকে, তথন তাহাকে অসং, বলা বায়। জগবান্ ত আর একবারে অসং নহেন; অথবা সং এই শব্দের অর্থ কারণ, অসং এই শব্দের অর্থ কার্য; হে অর্জ্যুন, আমি সং ও অসং এই উভয়ম্বরূপ। পুর্বের্ব উপাসনার যে প্রকার রীতি বর্ণিত হইয়াছে, সেই রীতি অনুসারে (অর্থাৎ নিজ নিজ সামর্থ্যানুসারে) একড রূপে বা পৃথক্রপে ভাবনারূপ জ্ঞানময় যজ্ঞের ঘারা পূজা করিয়া যাহারা আমার উপাসনা করে, তাহাদিগকে জ্ঞানবিৎ' কহে। সেই জ্ঞানবিদ্যণ নিজ নিজ বিজ্ঞানামুসারে আমাকেই প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥১৯

ত্রৈবিছা মাং সোমপাঃ পৃতপাপা যজৈরিষ্ট্রা স্বর্গতিং প্রার্থয়ন্তে। তে পুণ্যমাসাছ স্থরেন্দ্রলোক-মশ্বন্তি দিব্যান্ দিবি দেবভোগান্॥২০

আন্নয়। ত্রৈবিখাঃ সোমপাঃ পূতপাপাঃ বজৈঃ মান্ ইট্র। ন্বর্গতিং প্রার্থরত্তে; তে প্রাং স্থারেক্তনোক্ষ আসাম্ভ দিবি দিব্যান্ দেবভোগান্ অক্লন্তি ॥২০

অনুবাদ।। ঋক্ যজু: ও সামবেদবিং সোমযাগকারী ও বিগতপাপ ব্যক্তিগণ যজ্ঞসমূহের ছারা আমারই উপাসনা করিয়া বর্গে বাইতে অভিলাব করেন। তাঁহারা পবিত্র স্থরেজ্ঞলোক প্রাপ্ত হইয়া বর্গে দিব্য দেবভোগসমূহের উপভোগ করিয়া থাকেন॥২০ ভাষ্য। বে পুনরজ্ঞাঃ কানকামাঃ— ত্রৈবিষ্যাঃ ঋগ্ যজুংসামবিদঃ মাং বস্থাদিক্লেবশ্ধনিগং সোমপাঃ সোমং পিবস্তি ইতি সোমপাঃ তেনৈব সোমপানেন পুভপাপাঃ
ভদ্ধকিবিধা বজৈঃ অগ্নিষ্টোমাদিভিঃ ইটু । পুজরিছা স্থাতিং স্থাগ্যমনং স্থাভিতাং
প্রার্থরতে। তে চ পুণ্যং পুণ্যকলম্ আসাম্ম স্থারন্দ্রলোকং শভক্রতাঃ স্থামং
স্থাপ্তি ভ্রতে দিব্যান্ দিবি ভবান্ দেবভোগান্ দেবানাং ভোগান্তান্॥২০

আনন্দগিরিটীকা। ভগবস্তক্তানামপি নিম্নামানামের মুক্তিরিতি দর্শবিতৃৎ সকামানাং পুংসাং সংসারমবতারমতি—য়ে পুনরিতি। তিলো বিশ্বা অধীরতে বিদন্তীতি বা তে ত্রৈবিদ্ধা বেদবিদস্তদাহ—খাগিতি। বস্বাদীত্যাদিশক্ষেন সবন-ঘরেশানাদিত্যা রুদ্রাশ্চ গৃহত্তে। শুদ্ধকিবিষা নিরস্তপাপা ইতি যাবং ॥২০

অনুবাদ। যাহারা জ্ঞানহান [স্তত্রাং] কামকাষী [ভাহাদের অবস্থা কিরূপ, তাহাই বণিত হইভেছে] "ব্রৈবিদ্ধা" ঋক্ যজু: ও সামবেদবিং 'সোমপ' যাহারা সোম পান করে, তাহাদিগকে সোমপ বলা যায়; এবং [বিহিত] সোম পানের দ্বারা 'পৃত্রপাপ' পাপবিনিম্মুক্ত হইয়া [ভাহারা] অগ্নিষ্টোম প্রভৃতি নানাবিধ বজ্ঞের দ্বারা 'আমাকে' [বস্থ প্রভৃতি দেবরূপীকে] পূজা করিয়া 'স্বর্গতি' স্বর্গমন অভিলাষ করিয়া থাকে এবং তাহারাই পূণ্য অর্থাৎ নিজ পুণ্যের ফল বরূপ স্থরেক্রলোক অর্থাৎ ইন্দ্রপদকে প্রাপ্ত হইয়া স্বর্গে দিব্য অর্থাৎ স্বর্গীয় দেব-গণের ভোগ্য অপ্রাকৃত বস্তু সমূহের উপভোগ করিয়া থাকে ॥২০

তে তং ভুক্তা স্বৰ্গলোকং বিশালং ক্ষীণে পুণ্যে মৰ্ত্তালোকং বিশস্তি। এবং ত্ৰয়ীধৰ্মমনুপ্ৰপন্না * গতাগতং কামকামালভন্তে॥২১

অম্বয়। তে তং বিশালং স্বৰ্গলোকং ভূকা পূণ্যে কীণে [সভি] মৰ্জ্যলোকং বিশব্ধি; এবং কামকামাঃ [জনাঃ] ত্রয়ীধর্মম্ অমুপ্রপন্নাঃ গতাগতং লভয়ে॥ ১

অনুবাদ। তাহারা বিশালম্বর্গলোক ভোগ করিয়া পুণ্যক্ষরে [আবার]
মর্ত্তালোকে প্রবেশ করে এইরূপ বেদোক্ত [কাম্য] ধর্মীকে বাহারা আশ্রয় করে,
সেই সকল কামকামী ব্যক্তি এই প্রকারেই গ্রমনাগ্রমন করিয়া থাকে॥২১

[#] এবং ত্রৈধর্দ্মসমুপ্রপন্না ইতি ভাব্যকুৎ দশ্মতঃ পাঠ:।

ভাষ্য। তে তমিতি। তে তং বর্গলোকং বিশালং বিস্তীর্ণং ক্ষীণে পুণ্যে মর্জালোকমিমং বিশন্তি আবিশন্তি। এবং হি যথোক্তেন প্রকারেণ তৈধর্ম্যাং কেবলং বৈদিকং কর্ম অমুপ্রপন্না গভাগতং গভং চ আগভঞ্চ গভাগতং গমনাগমনং কাম্-কামাঃ কামান্ কামন্তে ইতি কামকামা লভন্তে গভাগতমেব নতু স্বাভন্তাং কচিৎ লভত্তে ইভার্থঃ ॥২১

আনন্দণিরিটীকা। তর্হি স্বর্গপ্রাপ্তিরপি ভগবৎপ্রাপ্তিভ্ন্যা ইত্যাশক্ষাহ—তে তুমিতি। পূণ্যে স্বর্গপ্রাপ্তিহেতাবিতি বাবৎ, প্রসিদ্ধার্থা ছিশক্ষঃ, ত্রয়াণাং হৌত্রাদীনাং বেদত্রয়বিহিতানাং ধর্মাণাং সমাহারপ্রিধর্মং তদেব ত্রৈধর্ম্মং তদমুপ্রপদ্মপ্রতা ইতি বাবং। কামকামানাং গমনাগমনবারা
কামিতফলাপ্তিশ্চেদিইমেব চেষ্টিত্যিত্যাশক্যাহ—গতেতি ॥১১

অনুবাদ। "তে তম্" ইত্যাদি লোকের মর্থ—তাহারা সেই "বিশাল" বিস্তীপ স্বর্গনাক ভোগ করিরা পুণ্য ক্ষীণ হইলে, এই মর্ত্তালোকে পুনর্কার প্রবেশ করিরা থাকে। এইরূপ বথোক্ত প্রকারে "ত্রৈপর্ম্ম্য" কেবল [জ্ঞানহীন] বৈদিক ধর্ম [কর্ম] আশ্রয় করিরা "গতাগত" গত আগত (অর্থাৎ) গমনাগমন লাভ করিয়া থাকে অর্থাৎ স্বাতন্ত্র্য লাভ করিতে পারে না। [কাহারা ?] কামকামিগণ, বাহারা কামতে (অর্থাৎ ভোগ্যবস্থকেই) কামনা করে, ভাহাদিগকেই "কামকামী" বলা বার ॥২১

অনন্যাশ্চিম্বয়ন্তো মাং যে জনাঃ পর্যুগাসতে। তেষাং নিত্যাভিযুক্তানাং যোগক্ষেমং বহাম্যহম্॥ ২২

আন্নয়। যে জনাঃ অনস্থাঃ চিন্তরন্তঃ মাং প্য ূপাসতে নিত্যাভিযুক্তানাং তেৰাম্ অহং যোগকেমং বহামি ॥২২

অসুবাদ। বাহারা অস্ত কার্য্য হইতে বিরত ও অনবরত ধ্যানপরায়ণ হইরা সর্বাদা আমার উপাসনা করিয়া থাকে, সেইনিত্যাভিযুক্ত ব্যক্তিগণের যোগ ও কেম আমিই সম্পাদন করিয়া থাকি ॥২২

ভাষ্য। বে প্নর্নিকামাঃ সম্যগ্দর্শিনঃ 'অনভাঃ' অপৃথগ্ভূতাঃ পরং দেবং নারারণ্য আত্মদেন গতাঃ সন্তান্ডিররন্তো মাং বে জনাঃ সন্ত্যাসিনঃ পর্যাপাসতে তেবাং পরমার্থদর্শিনাং নিত্যাভিযুক্তানাং সততাভিবোগিনাং বোগক্ষেমং বোগঃ অপ্রাপ্তগা প্রাপণং ক্ষেমন্ডদ্রকণং তহ্ভরং বহামি প্রাপরামি অহম্। "জানী ছাল্মের মে মতং' 'স চ মম প্রিরং' বসাং তেমাং তে মমাজ্জুতাঃ প্রিরান্টেভি। নমু অভ্যো-

মপি ভক্তানাং যোগক্ষেমং বহত্যেব ভগবান্। সত্যমেব বহত্যেব। কিং দ্বন্ধং বিশেৰাহন্তে যে ভক্তাঃ ভে স্বান্থানং স্বন্ধপি যোগক্ষেমনীহন্তে অনক্তাদর্শিনন্ত নাদ্বার্থং যোগক্ষেমনীহন্তে। ন হি তে জীবিতে মরণে বা আত্মনো গৃদ্ধিং কুর্কন্তি কেবলমেব ভগবচ্ছরণান্তে। অতো ভগবানেয় তেরাং যোগক্ষেমং বহতীতি ॥১২

আনন্দ্রিরিটীকা ফলমনভিগন্ধার ছামেবারাধরতাং সমাগ্দুর্শননিষ্ঠা-নামতাস্ত্রনিকামানাং কথং যোগকেমৌ স্থাতামিত্যাশঙ্কাহ—যে পুনরিতি। তেবাং যোগকেমং বহামীভূত্তরত্ত সম্বন্ধঃ। বেভ্যোহন্তো ন বিশ্বত ইতি বাৎপত্তি-মাশ্রিত্যাহ—অপুথগিতি। কার্যান্তেব কারণে তাদাম্মং ব্যাবর্ত্তরতি— প্রমিতি। সহমেব বাপ্নদেবঃ সর্বান্ধান মত্তোহন্তৎ কিঞ্চিদন্তীতি জ্ঞাত্বা তমেব প্রতাঞ্চং সদা ধ্যায়ন্ত ইত্যাহ—চিন্তয়ন্ত ইতি। প্রাক্রতান্ ব্যাবর্ত্তা মুণ্যানধি-কারিণো নির্দ্দিশতি-সংস্থাসিন ইতি। পর্যাপাসতে পরিতঃ সর্বভাষনবঞ্চিত্র-তমা পশুষ্ঠীত্যর্থ:। নিত্যাভিযুক্তানাং নিত্যমনবরতমাদরেণ ধ্যানে ব্যাপুতানা-মিত্যাহ—স্তত্তি। যোগণ্চ ক্ষেশ্চ যোগক্ষেম্। তত্তাপুনরাক্তমর্থমাহ— যোগ ইতি। কিমর্থং পরমার্থদর্শিনাং বোগক্ষেমং বহদীত্যাশঙ্ক্যাহ—জ্ঞানী ত্বিতি। অতত্তেবাং যোগক্ষেমং বহামি ইতি সম্বন্ধঃ। সম্যগ্দর্শননিষ্ঠানামেৰ যোগক্ষেমং বহতি ভগবানিতি বিশেষণমম্ব্যমাণঃ শৃক্ষতে—নশ্বিতি। 'অভেষা-মপি ভক্তানাং ভগবান্ যোগকেমং বহতীত্যেতদদীকরোতি—স্তামিতি। তহি ভক্তের জ্ঞানির চ বিশেষে। নাস্তীভি পৃচ্ছতি—কিং ড্বিভি। তত্ত্ব বিশেষং প্রতিজ্ঞার বিরুণোতি—অযুমিতাদিনা। বোগকেনমুদ্দিশু বর্মীহন্তে চেষ্টাং কুর্বস্তীতি যাবং। আত্মবিদাং স্বার্থং যোগক্ষেমমূদিশ্র চেষ্টাভাবং স্পষ্টরতি— ন হীতি। গৃদ্ধিরপেকা কামনা তামিত্যেতং। জ্ঞানিনাং তর্হি সর্ব্বভানাছেত্যা-শন্ধাৰ—কেবলমিতি। তেবাং তদেকশরণতে ফলিতমাহ—অত ইতি। ইতিশক্ষো বিশেষশব্দেন সম্বধ্যতে ॥২২

অসুবাদ। বাহারা কিন্তু নিকাম ও তন্ত্বদর্শী [তাঁহাদের স্বরূপ বর্ণিত হইতেছে যে] 'জনক্ত' বাহারা [পরমাত্মা হইতে] আপনাকে পৃথক বলিয়া বোধ না করেন, তাঁহাদিগকে 'অনক্ত' কহে অর্থাৎ ভগবান নারায়ণকে বাহারা আত্মভাবে প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাঁহারাই অনক্ত। যে সকল অনক্ত সন্ত্র্যাসিগণ অনবরত চিন্তাপর হইয়া আমারই উপাসনা করেন, সেই পরমার্থদর্শী ও 'নিত্যাভিযুক্ত' অর্থাৎ সনবরত আদরের সহিত আমার ধ্যাননিরত ব্যক্তিগণের, যোগ ও ক্ষেমের

সম্পাদন আমিই করিয়া থাকি। যাহা নাই, এমন অভিলয়িতবন্তর প্রথম প্রাপ্তিকে 'বোগ' কহা বার; সেই লব্ধ বস্তুর প্রতিপালনকে 'কেম' কহা যার। জ্ঞানী আমার আত্মা, ইহা আমার মত্ত; যে কারণে সেই আমার প্রিয়, সেই কারণে ঐ সকল সাধকগণ আমার আত্মতুত; স্থতরাং প্রিয়ই হইয়া থাকেন। এই স্থানে এই প্রকার শক্ষা করা বাইতে পারে বে, অক্সভক্তগণেরও ত ভগবান্ই বোগক্ষেম সম্পাদন করিয়া থাকেন। সত্য ভগবান্ই তাহাদের বোগক্ষেম বহন করেন বটে, বিশেষ এই যে—অক্স যাহারা (পৃথক্দর্শী) ভক্ত, তাহারা নিজের ভোগের ইচ্ছায় নিজেই আপনার আপনার যোগক্ষেম সম্পাদন করিবার জক্ম প্রয়াস করিয়া থাকে। কিন্তু বাহারা অপুথগ্দর্শী, তাহারা কথনও নিজের ভোগের ইচ্ছায় বোগক্ষেম সম্পাদনের চেষ্টা করেন না। কি জীবনে, কি মরণে, সকল অবস্থাতেই তাঁহারা আপনার ভোগ কামনা করেন না, কারণ, তাঁহারা সকল সমন্বই একমাত্র ভগবান্কেই আশ্রয় করিয়া থাকেন। এইজক্য ভগবান্ও তাঁহাদের বোগক্ষেম বহন করিয়া থাকেন॥২২

যেহপ্যন্তদেবতাভক্তা যজন্তে শ্রহ্মান্বিতাঃ। তেহপি মামেব কোন্তেয় যজন্ত্যবিধিপূর্ব্বকম্॥২৩

আন্তর্ম। বেংপি স্তাদেবতাভকা: শ্রন্ধা (আন্তিকাব্দ্ধা) অবিতা: [সম্ভঃ] বন্ধরে (পূজরন্তে) হে কৌরের তেংপি অবিধিপূর্বকং (অজ্ঞানপূর্বকং) মামেব বন্ধন্তি॥২৩

অনুবাদ। বাহারা অন্ত দেবতার ভক্ত অথচ শ্রদ্ধার সহিত [অন্ত দেবতার] উপাসনা করিয়া থাকে, হে কৌন্তেয় তাহারাও অবিধিপূর্কক আমারই উপাসনা করিয়া থাকে॥২৩

ভাষ্য ৷ নৰজা অপি দেবতান্তমেব চেং অন্ভক্তাশ্চ থামেব ৰজত্তে সভ্যমেবং বেংপি অভনেবতাভত্তা অভাস্থ দেবতাস্থ ভক্তা অভনেবতাভক্তা: সজো ৰজত্তে পুৰুষত্তে শ্ৰদ্ধা আন্তিক্যবৃদ্ধ্যা অন্বিতা অনুগতান্তেংপি মামেব কৌন্তের বজন্তি অবিধিপূর্বকৃষ্ অবিধিরজ্ঞানং অজ্ঞানপূর্বকং বজন্তে ইতার্থ: ॥২৩

আনন্দ্রিটিক। তত্তদেবতাত্মনা পরস্তৈবাত্মনঃ স্থিত্যভ্যুপগমাৎ দেব-ভাত্তরপরাণামপি ভগবচ্ছরণত্তাবিশেষাৎ তদেকনিষ্ঠতমকিঞ্চিৎকরমিতি মধানঃ শহুডে—নৃত্যুিত । উক্তমনীকৃত্যু পরিহরতি সৃত্যুমিত্যাদিনা। দেবতাত্তর- বাৰিনাং ভগ্ৰদ্যাৰিভ্যো বিশেষমাহ—অবিধীতি। উদ্ ব্যাকরোতি— অবিধিরিতি॥২৩

অকুবাদ। [এই প্রকার শহা হইতে পারে যে], তুমিই যথন অক্ত সকল দেবতার স্বরূপ, তথন যে কোন ব্যক্তি বাহারই উপাসনা করুক না কেম, সকলেই ত তোমার ভক্ত [এবং তোমারই উপাসনা করিয়া থাকে]। সত্যবটে [এই প্রকারে তাহারা আমারই উপাসনা করিয়া থাকে, কিন্তু, বিশেষ এই বে] বাহারা অক্ত দেবতার ভক্ত হইয়া প্রদা অর্থাৎ আন্তিকাবৃদ্ধিসমন্বিত হইয়া থাকে, হে কৌন্তেয়, তাহারাও অবিধিপূর্কক আমারই উপাসনা করিয়া থাকে। এই স্থানে অবিধি শব্দের অর্থ অজ্ঞান অর্থাৎ তাহারা অজ্ঞানপূর্কক আমারই উপাসনা করিয়া থাকে ॥২৩

> অহং হি সর্ব্বয়জ্ঞানাং ভোক্তা চ প্রভুরেব চ। নতু মামভিজ্ঞানন্তি তত্ত্বনাতশ্চ্যবন্তি তে॥ ২৪

অমৃয় । হি অহং সর্কাবজ্ঞানাং ভোক্ত। চ প্রভূরেব চ ; [তে] মাং তদ্বেন ন অভিজানস্থি অতঃ চ্যবস্থি ॥২৪

আনুবাদ। আমি সকল প্রকার যজ্জের ভোক্তাও প্রভু; [তাহারা] যথার্থরূপে আমাকে জানে না, এই কারণেই তাহারা [শ্রেয়ঃ পণ হইতে] ভ্রষ্ট হইরা থাকে ॥২৪

ভাষ্য। কন্মাৎ তে অবিধিপূর্বকং যজ্জে ইত্যুচ্যতে যন্মাৎ—অহং হি সর্ব্যক্ষানাৎ শ্রোভানাং ন্মার্জানাং চ সর্ব্যেষ্টানাং বছানাং দেবতাত্মত্মেন ভোজা চ প্রভুরেব চ। মংখামিকো হি যজ্জঃ "অধিযজ্ঞোহহমেবাত্র" ইতি হি উক্তম্। তথা ন তু সামভিজানস্তি তত্মেন বথাবিং। অতশ্চ অবৃদ্ধিপূর্বকিমিট্রা যাগফলাচ্চ্যবন্তি প্রচাবন্তে তে ॥২৪

আনন্দণিরিটীকা। নম বসাদিত্যেক্রাদিজ্ঞানপূর্বকমেব তম্ভক্তান্তদ্বাদ্ধিনা তবন্তীতি কণমবিধিপূর্বকং তেবংং বঙ্গনমিতি শক্তে—কুম্মাদিতি। দেবতান্তরবার্মিনাং বজ্ঞনমবিধিপূর্বকমিতাত্র হেত্বর্থছেন শ্লোক্ররমুখাপরতি—উচ্যক্ত ইতি। সর্ব্বেবাং বিবিধানাং বজ্ঞানাং বস্বাদিদেবতাছেন অহমেব ভোক্তা বেনান্তর্ব্যামিরপেণ প্রভূক্তাহমেবেতি, প্রসিদ্ধমেতদিতি হিশক্ষঃ। প্রভূরেব ক্রেড্যক্তং বির্ণোভি—ম্থ্যামিকে। হীতি। তত্র পূর্বাধ্যারগতবাক্যং প্রমাণকৃতি—অধিষত্তে। ইত্তিতি। তথাপি দেবতান্তরয়াজিনাং বজনমবিধিপূর্বক

মিতি কৃতঃ সিদ্ধং তত্রাহ—তথেতি। মমৈব বজেবু ভোক্তাত্বে প্রভূত্বে চ সতীতি বাবং। তরোর্ভোক্তপ্রভোগ্রাবস্তবং তেন ভোক্তাবেন প্রভূত্বেন চ মাং বথাবদ্বতো ন জানন্তি অতো ভোক্ত্বাদিনা মমাজ্ঞানাশ্মন্নি অনর্শিতকর্মাণ-শ্চাবন্তে কর্মাফলাদিত্যাহ —অত্যাশ্চতি ॥২৪

অমুবাদ। কেন এই কথা বলা হইল যে তাহারা অবৃদ্ধিপূর্বক যক্ত করিয়া থাকে ? তাহার উত্তর এই যে,—যে কারণে আমি বেদবিহিত ও ধর্মশান্ত বিহিত সকল প্রকার বজের ভোক্তা এবং প্রভূ। আমি দেবতা রূপে যজের ভোক্তা 'অধিযক্তোহহমেবাত্র' এই শ্লোকে ইহাই বলা হইরাছে যে, আমিই বজের অধিছাতা প্রভূ। কারণ, আমিই বজের স্বামী। [অন্ত দেবতাভক্তগণ] আমাকে বথার্থ ভাবে জানিতে পারে না, এই জন্তই তাহারা অবৃদ্ধিপূর্বক উপাসনা করিয়াও উপাসনার সম্যক্ ফল হইতে প্রচ্যুত হইয়া থাকে ॥২৪

যান্তি দেবত্রতা দেবান্ পিতৃন্ যান্তি পিতৃত্রতাঃ। ভূতানি যান্তি ভূতেজ্যা যান্তি মদ্যাজিনোহপি মাম্॥২৫

আৰুয়। দেবৰতা: দেবান্ বান্তি, পিতৃৰতা: পিতৃন্ যান্তি, ভূতেজ্ঞাঃ ভূতানি যান্তি, মদ্বাজিনোহপি নাং বান্তি ॥২৫

অনুবাদ। দেবোপাসকগণ দেবগণকে প্রাপ্ত হর। যাহার। পিভূগণের উপাসক, তাহারা পিভূগণকে প্রাপ্ত হর। যাহারা ভূতোপাসক তাহারা ভূতনিচয়কে প্রাপ্ত হয়, আর যাহারা আমার উপাসনা করে, তাহারা আমাকেই প্রাপ্ত হইরা থাকে ॥২৫

ভাষ্য। বেংণাঞ্চদেবতাভকিনবেন অবিধিপূর্বকং যজতে তেবানপি বাগফলমবশুস্থাবি, কথম ?—বাস্তি গছেন্তি দেবব্রতা দেবের্ ব্রতং নিরমো ভক্তিশ্ববাং তে দেবব্রতা দেবান্ বাস্তি। পিতৃন্ অগ্নিবাস্তাদীন বাস্তি পিতৃব্রতাঃ শ্রাদাদিকিয়াপরাঃ পিতৃভকাঃ। ভ্তানি বিনায়কমাতৃগণচতৃঃষ্টিবোগিঞ্জাদীনি * বাস্তি ভ্তেজ্যাঃ ভ্তানাং পূজকাঃ। বাস্তি মদ্যাজিনো মদ্যজনশীলা বৈক্ষবাঃ মানেব। সমানেহপ্যায়াসে মামেব ন ভক্তে অজ্ঞানাং। তেন ভেইক্লফলভাজ্যো ভবকীত্যর্থঃ ॥২৫

আনন্দগিরিটীকা। ব্যক্তরদেবতাভক্তা ভগবত্তবাজ্ঞানাৎ কর্মফলাচ্চাবত্তে

^{*} চতুভঁগিক্সাদীনি—ইতি বা পাঠঃ

ভর্ষি তেবাং দেবতান্তর্মক্ষনমকিঞ্চিৎকরমিত্যাশস্ক্যাহ—যেহপীতি। দেবতান্তরবাজিনামনাবৃত্তিফলাভাবেহপি তত্তদেবতামাগান্তরপফলপ্রাপ্তিটোব্যার তদকিঞ্চিৎকরমিত্যর্থ:। দেবতান্তরমাজিনানাবশুক্তৎফলমাশস্কাপূর্ককমূদাহরতি—কথ্যি
ত্যাদিনা। নিরমো বল্যপহারপ্রদক্ষিণপ্রহ্বীভাবাদিরিত্যর্থ:। দেবতান্তরারাধনস্তান্তবৎফলমূক্ত্রা ভগবদারাধনস্তানন্তফলছমাহ—হাস্ত্রিতি। ভগবদারাধনক্তানন্তফলত্বে দেবতান্তরারাধনং ত্যক্তা ভগবদারাধনমেব যুক্তমারাসসাম্যাৎ
কলাতিরেকাচ্চেত্যাশস্থ্যাহ—সমানেহপীতি। অজ্ঞানাধীনদ্বেন দেবতান্তরারাধনবতাং ফলতো ন্নতাং দর্শরতি—তেনেতি॥ ২৫

অনুবাদ। বাহারা ভক্তিমান্ অথচ অবিধি পূর্বক অন্ত দেবতার উপাসনা করে, তাহাদেরও বাগফল অবশুস্তাবি। কেন? [এরপ হয়? তাহা বলা বাইতেছে যে]—"দেবত্রত" দেবতাগণের প্রীতির উদ্দেশে ব্রত নিয়ম অর্থাৎ দেবতার প্রতি ভক্তি বাহারা করে, তাহাদিগকে 'দেবত্রত' কহা যায়; যাহারা দেবত্রত, তাহারা [নিজ নিজ ইট্ট] দেবগণকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে। যাহারা "পিতৃত্রত" শ্রাদ্ধাদি ক্রিয়া-পরায়ণ, তাহারা অগ্নিষান্তাদি নামে প্রসিদ্ধ পিতৃগণকে প্রাপ্ত হয়। এইরপ যাহারা ভৃতগণ (অর্থাৎ) বিনারক, মাতৃগণ ও চতুংবিট বোগিনী প্রভৃতিকে উপাসনা করে, তাহারাও ভৃতগণকেই প্রাপ্ত হয়। কিন্ত যাহারা আমার উপাসনা করে, তাহারা আনাকেই প্রাপ্ত হয়। তাহাদিগকেই 'বৈক্তর' বলে। [অন্ত দেবতার পূজার জন্ত বে প্রয়াস, আমার পূজাতে দেই প্রকারই প্রয়াস] প্রয়াস সমান হইলেও লোক অঞ্জান বশতঃ আমাকে ভজনা করে না; স্কৃতরাং, তাহারা অর ফল লাভ করিয়া থাকে॥২৫

পত্রং পুষ্পাং ফলং তোয়ং যো মে ভক্ত্যা প্রয়ছতি। তদহং ভক্ত্যুপহৃতম্ অশ্লামি প্রয়তাত্মনঃ॥ ২৬

আর্য্য । যো ভক্তা মে পত্রং পূপুং ফলং তোরং [বা] প্রয়ছতি, প্রয়তাত্মন: [ভক্ত]ভক্ত্যুপস্তং ডং অহম্ অগ্লামি॥ >৬

আকুধান। ভজি-পূর্বক বে কোন ব্যক্তি আমাকে পত্র পূপা ফল বা জল [বাহা কিছু] অর্পণ করে, সেই প্রযতাত্মা ব্যক্তির ভজিপূর্বক উপহৃত সেই সকল দ্রব্য আমি জক্ষণ করিয়া থাকি॥ ২৬

ভাষ্য। न क्विन मन्छ्कानाम् जनावृत्तिनक्रणमनस्यमनः स्थाताधन-

কাহং কথং—পত্তং পূশং ফলং তোরমুদকং যো মে মহং ভক্ত্যা প্রয়ন্থতি তদহং পত্তাদি ভক্ত্যা উপস্থতং ভক্তিপূর্বকং প্রাপিতং ভক্ত্যুপস্থতমশ্লামি গৃহামি প্রয়তাত্মনঃ ওদ্ধবৃদ্ধেঃ । ২৬

আনন্দগিরিটীকা। অনন্তফগদারাধনমের কর্ত্ত্রামিত্যুক্তং স্করছাচ্চ তথেত্যাহ—ন কেবলমিতি। ভগবদারাধনদ্য স্কর্তমের প্রশ্নপূর্বকং
প্রপঞ্চরতি—কথমিত্যাদিনা। বদ্ধি পুপাদিকং ভক্তিপূর্বকং মদর্থমর্পিতং
তেনারং ভদ্ধচেতাঃ তপস্বী মামারাধরতীত্যহন্ অবধারবামীত্যাহ—প্রেমিত্যাদিনা। ২৬

অনুবাদ। কেবল যে আমার ভক্তগণের নির্বাণরপ অনস্ত ফললাভ হর, তাহাই নহে; আমার উপাসনাও কিন্তু বড় স্থলভ [ইহাই বলা যাইতেছে] পত্র পূলা ফল "ভোর" জল [প্রভৃতি যাহা কিছু হউক না কেন] যে আমাকে ভক্তির সহিত অর্পণ করিবে, সেই "প্রয়ভাত্মা" অর্থাৎ শুদ্ধবৃদ্ধির প্রদত্ত [সেই সকল পত্র প্রভৃতি] "ভক্ত্যুপক্তত" ভক্তির সহিত উপক্ত [বস্তাগুলি] আমি "ভক্ষণ"—গ্রহণ করিরা থাকি ॥২৬

> যৎ করোষি যদশাসি যজ্জুহোষি দদাসি যৎ। যৎ তপশুসি কোন্তেয় তৎ কুরুম্ব মদর্পণম্॥২৭

আনুষু । হে কৌন্তের ! যৎ করোবি যৎ অপ্লাসি (ভক্ষসি) যৎ জুহোবি যৎ দদাসি যৎ তপশুসি তৎ মদর্শণং কুরুছ ॥২ ৭

অকুবাদ। হে কুন্তীনন্দন, তুমি বাহা কর, বাহা ভোজন কর, যে হোম কর, যে দান কর ও যে তপ্তা কর, সে সকলই আমাতে অর্পণ কর ॥২৭

ভাষ্য। যত এবমতঃ—যৎ করোবি, স্বতঃপ্রাপ্তং যৎ অপ্লাসি, যচ জুহোষি, হবনং নির্বপ্তিয়সি শ্রোতং স্মার্ত্তং বা, যৎ দদাসি প্রযক্ষ্মির ব্রাহ্মণাদিভ্যো হিরণ্যান্না-জ্যাদি, যৎ তপশ্তসি তপশ্চরসি, কৌস্তেয় তৎ কুরুষ মদর্পণং মৎসমর্পুণম্ ॥২৭

আনন্দগিরিটীকা। তদারাধনশু স্থকরত্বে তদেবাবশুক্ষিত্যাহ— যত ইতি। স্বভঃ শাস্ত্রাদৃতেঃ প্রাপ্তং গমনাদীতি ববিং বদপ্রাসি বং কঞি-ভোগং ভূঙকে। হবনশু স্বতন্ত্রং বারম্বতি—্রেতিমিতি। মৎসমর্পণং তং-সর্বাং মঞ্ছং সমর্পরেত্যর্বঃ ॥২ ৭

অকুবাদ । যে কারণ এইরূপ, সেই জন্ম ভূমি যাহা কর (জর্বাৎ) খুভুঃ (গমনাদি), যাহা ভক্ষণ কর, যে শ্রোত জ্ঞাবা স্মার্ভ হোম কর,যে স্বর্ণজন্ম স্থৃতাদি

ব্রাহ্মণদিগকে দান করিয়া থাক এবং যাহা কিছু তপস্যাচরণ কর, তাহা [সকলই] আমাতে সমর্পণ কর ॥২৭

> শুভাশুভফলৈরেবং মোক্ষ্যদে কর্ম্মবন্ধনৈঃ। সন্ম্যাসযোগযুক্তাত্মা বিমুক্তো মামুপৈয়দি॥ ২৮

অন্তব্য । এবং [সতি] শুভাশুভফলৈ: কর্মবন্ধনৈ: মোক্ষ্যসে [তথা] সন্ম্যানবোগযুক্তাত্মা বিমুক্তো মাম্ উপৈষ্যসি ॥ ২৮

অকুবাদ। শুভ এবং অশুভ ফলের হেতৃ কর্মবন্ধন হইতে এই ভাবে [কর্ম করিলে] তৃমি মুক্ত হইতে পারিবে। [এই প্রকার] সন্ত্যাসবোগযুক্তাত্মা ও বিমুক্ত হইয়া আমাকে লাভ করিবে॥ ২৮

ভাষ্য। এবং কুর্নতন্তব বদ্ভবতি তচ্ছুণু। গুভাগুভফলৈ: গুভাগুভফলৈ: গুভাগুভফলৈ: ইটানিই ফলে বেবাং তানি গুভাগুভফলানি কর্মাণি তৈ: গুভাগুভফলৈ: কর্মনিকানে: কর্মনি: কর্মাণি এব বন্ধনানি তৈ: কর্মনিকানে: এবং মংসমর্পণং কুর্মন্ মোকানে। সোহয়ং সন্ন্যাস্যোগো নাম সন্যাস্ফাসো মংসমর্পণ্ডয়া কর্মাস্যোগেল। ইতি তেন সন্যাস্যোগেন যুক্ত আত্মা অন্তঃকরণং বদ্য তব স অং সন্ন্যাস্যোগ্যুক্তায়া সন্বিমৃক্তঃ কর্মনিকানে: জীবন্নেব পতিতে চাম্মিন্ শ্রীরে মামুশৈয়াস আগমিবাসি॥ ২৮

আনন্দ গিরিটীকা। কিমতো ভবতি তদাহ—এব্মিতি। ভগবদর্শন বৃদ্যা সর্ব্বকর্ম কুর্বতো জীবন্মকণ্ড প্রারন্ধর্মাবসানে বিদেহকৈবন্যমাবশুক-মিত্যাহ—শুভেত্যাদিনা। ভগবদর্শনকারণান্ম্জিং সংশ্রাস্থাগাচেতি সাধন-ব্যাহাং শাত্যতি—সোহ্যুমিতি ॥২০

অমুবাদ। এই প্রকার কর্ম করিতে করিতে তোমার কি হইবে, তাহা তন। তত ও মতত (অর্থাৎ) ইষ্ট ও অনিষ্ট ফল যাহাদের হয়, তাহাদের নাম 'ওভাওত ফল'। ওভাওতফল বলিলে কর্মই ব্রায়। সেই কর্মই বন্ধন স্বরূপ হইয়া থাকে এবং এই প্রকারে আমাতে কর্ম সমর্পণ করিয়া চলিলে সেই ওভাওত ফল কর্মবন্ধন হইতে মোকলাভ করিবে। এই সেই সন্ন্যাসবোগ অর্থাৎ ইহা সন্ন্যাস হইয়াও যোগ; কারণ, আমাকে ফলার্পণ করিয়া কর্মাছ্ঠানই ইহার স্বরূপ। লেই সন্ন্যাসবোগের সহিত যাহার "আত্মা" অভ্যক্রণ রুক্ত হইয়া থাকে, ভাহাকে 'সন্ন্যাসবোগ্যক্তাআ' কহা বার; তুমি এইরুপ সন্ন্যাসবোগস্ক্তায়া ও কর্মবন্ধন হইতে জীবিতাবস্থাতেই বিমুক্তি লাভ করিয়া, পরে এই দেহ পতিত হইলে, আমাকে প্রাপ্ত হইবে (অর্থাৎ) মদ্ভাবকে লাভ করিবে ॥২৮

> সমোহহং সর্বভূতেরু ন মে দ্বেধ্যোহস্তি ন প্রিয়ঃ। যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা ময়ি তে তেরু চাপ্যহম্॥২৯

আনুরা। অহং দর্পভূতেরু সমঃ; মে ছেবোনান্তি [তথা] প্রিয়োন [অব্তি] যে তুমাং ভক্তনা ভক্তি ময়ি তে তেরুচ অহমপি॥২৯

অনুবাদ। আমি দকণ ভূতেই দমান, আমার দ্বেষ্য বা প্রিয় নাই। বে দকণ ব্যক্তি ভক্তিপূর্ব্বক আমাকে ভলনা করে, তাহাদিগের আত্মাতে আমার দক্তা প্রকাশ পায় এবং তাহারাও আমাতে বিজ্ঞমান থাকে ॥২৯

ভাষ্য। রাগদ্বেবান্ তর্হি ভগবান্ যতো ভক্তানেবান্থগুল্লাতি নেতরান্ ইতি তয়—সমস্তল্যাহহং সর্বভৃতেবু ন মে বেয়োহস্তি ন প্রিয়ঃ, অগ্লিবদহং দূরস্থানাং বপাগ্নিঃ শীতং নাপনয়তি সমীপমুপস্পতামপনয়তি তথাহং ভক্তানহ্বগুল্লামি
নেতরান্। বে ভক্তস্তি তু মামীখরং ভক্তা, ময়ি তে বভাবত এব ন মন রাগনিমিত্রঃ ময়ি বর্ত্তস্তে। তেবু চাপ্যহং বভাবত এব বর্ত্তে নেতরেষ্ নৈতাবতা
তেবু বেয়ো মম॥ ১৯

আনন্দ গিরিটীকা। ভগবতো রাগদেববদ্বেনানীখরস্বমাশকাং পরিহরতি—
রাগেত্যাদিনা। তর্হি ভগবস্তজনমকিঞ্চিৎকরমিত্যাশক্ষাহ —আগ্লিবদিতি।
তৎ প্রপঞ্চনতি—যথেতি। ভজানভক্তাংশ্চ অন্ধ্যুহ্লভোহনন্থ্যুহ্লভণ্ড ভগবতো ন
কথং রাগাদিমস্বমিত্যাশক্ষাহ—যে ভজন্তীতি। বে হি বর্ণাশ্রমাদিধদৈর্মাং
ভল্পতি তে তেনৈব ভলনেনাচিন্তামাহাম্মোন পরিশুদ্ধকুরো মির মৎসমীপে বর্জত্তে
মদভিব্যক্তিযোগ্যচিত্তা ভবত্তি। তৃশক্ষোহন্ত বিশেষক্ত ভোতনার্থঃ। তেরু চ সমীপে
সমক্ষং তেষামহমপি স্বভাবতো বর্জমানস্তদন্ত্রহপরো ভবামি। বথা ব্যাপক্ষপি
সাবিত্তাং ভেলঃ স্বচ্ছে দর্পণাদৌ প্রতিক্লতি তথা পরমেশ্রোহবর্জনীর্তরা ভক্তিনিরন্তসমন্তকল্বসন্থেব্ সন্নিধতে দৈবীং প্রকৃতিমাপ্রিতানাং মাং ভল্পত্তীত্যুক্রিলিতার্থঃ॥ ২৯

অনুবাদ। তাহা হইলে ভগবানেরও রাগ ও বেব আছে; বে হেড় তিনি ভক্তগণের প্রতিই অমুগ্রহ করেন, অন্তের প্রতি করেন না, ইহা ঠিক নহে, কারণ—মামি সকল ভূতেই সমান। আমার বেষ্যও নাই, প্রিয়ও নাই; আমার বভাব অগ্নির ভার। অগ্নি মেনন দুর্ছ ব্যক্তিগণের শীত অপ্তরণ করে না, কিন্তু, সমীপে আগমনকারিগণের শীত নাশ করে , সেই রূপ আমার স্বভাব এই যে আমি জন্তগণের প্রতি অনুগ্রহ করি ; মন্তের প্রতি করি না। আমি ঈশ্বর, আমাকে ভক্তি-পূর্বক বাহারা ভল্পনা করে, স্বভাবতঃই আমাতে তাহারা থাকে ; আমি ভালবাসি বলিয়া যে তাহারা আমাতে থাকে, তাহা নহে। সেইরূপ তাহাদিগের মধ্যেও আমি স্বভাবতঃ থাকি, অল্পের মধ্যে গাকি না. ইহাই হইল আমার স্বভাব। ইহা হারা [ইহা বুঝা উচিত] নহে যে. অল্পের প্রতি আমার বিধেষ আছে॥ ১৯

অপি চেৎ স্থতুরাচারো ভদ্ধতে মামনশ্যভাক্। সাধুরেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ব্যবসিতো হি সঃ॥ ৩০

আহায়। স্থত্রাচারোহপি চেৎ অনক্সভাক্ [সন্] মাং ভঙ্গতে, স সাধুরের মন্তব্যঃ; হি (ষতঃ) সঃ সম্যাধ ব্যবসিতঃ ॥৩০

অকুবাদ। অত্যন্ত ছরাচার ও বদি অনগ্রভাক্ হইয়া আমাকে ভলনা করে, তাহা হইলে তাহাকে সাধু বলিয়হি বিবেচনা করা উচিত; বেহেতু, বে ব্যক্তি সম্যাগ্ ব্যবসিত (অর্থাৎ তাহার নিশ্চয়টি সাধু) ॥৩•

ভাষ্য ৷ শৃণ্ মন্ভক্তেন হিলায়াম্—অপি চেৎ ষল্প স্থাই ছরাচার: স্থারাল চার: অতীবকুৎদিভাচারোহপি ভন্ধতে মামনক্তাক্ অনক্তভিঃ সন্, মাধুরেব সম্যাগ্র্ত্ত এব স মন্তব্যঃ জ্ঞাতব্যঃ সম্যাগ্ ষথাবৎ ব্যবসিতো হি ষক্ষাৎ সাধুনিশ্চরঃ সং ॥৩০

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতাং ভগবস্তজিং শ্ববন্ পাপীরসামপি তত্ত্বাধিক।রোহত্তীতি হচরতি—শৃনিবতি। সম্যগ্রস্ত এব ভগবস্তজো জ্ঞাতব্য ইত্যত্ত্বে হত্ত্বাহ—সম্যাগিতি ॥৩•

অনুবাদ। আমার ভক্তির মাহাত্ম শ্রবণ কর;—বছণি "স্ত্রাচার" অর্থাৎ অত্যন্ত কুৎসিতাচার হইরাও আমাকে ভন্ধনা করে [কেমন হইরা ভঙ্কনা করে १] "অনভভাক্" অনভভক্তি—[তাহা হইলে সেই ব্যক্তিকে] "সাধ্" সমাক্চরিত্র বলিরা মানিবে (অর্থাৎ) ব্রিবে। কারণ, ঐ ব্যক্তির "ব্যবসায়" অর্থাৎ নিশ্চর সাধু॥৩•

ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মাত্মা শশ্বচ্ছান্তিং নিবচ্ছতি।* কোন্তেয় প্রতিজ্ঞানীহি ন মে ভক্তঃ প্রণশ্যতি॥ ৩১

^{* -} বিশ্বছণ্ডি ইডি বা পাঠ;।

আন্তর্ম। [সঃ] কিপ্রাং (শীঘাং) ধর্মান্মা ভবতি, শবাং (নিত্যাং) শাবিং নিযছতি, (প্রাণ্মোতি) হে কৌন্তের প্রতিকানীহি (প্রতিক্রাং কুরু) মৈ ভক্তঃ ন প্রণশুতি ॥৩১

আমুবাদ। [সেই, ব্যক্তি] শীদ্রই ধর্মাত্মা হয়, সর্বাদা শান্তিকে লাভ করিয়া থাকে—হে কুন্তীনন্দন —ভূমি প্রতিজ্ঞা [করিয়া ঘোষণা] কর বে, আমার ভক্ত কথনও প্রনষ্ঠ হয় না ॥৩১

ভাষ্য। উৎকজ্য চ বাহাং হুরাচারতামন্তঃসম্যগ্ব্যবসায়সামর্থাৎ কিপ্রং শীরং ভবতি ধর্মাঝা ধর্মচিত্ত এব শখং নিত্যং শাস্তিং চোপশমং নিষ্ফ্রতি প্রাপ্নোতি। শৃণ্পরমার্থ কৌন্তের প্রতিজ্ঞানীহি নিশ্চিতাং প্রতিজ্ঞাং কুরু ন মে মম ভক্তঃ মরি সমর্শিতান্তরাম্মা মদ্ভক্তঃ প্রণশ্রতি ইতি ॥ ৩১

আনন্দণিরিটীকা। হেম্বর্থমেব প্রপঞ্চরতি—উৎস্ক্ত্যেতি। ভগবন্তং ভন্দমানত্ম কথং হরাচারতা পরিত।কা ভবতীত্যাশক্ষ্যাহ — ক্ষিপ্রমিতি। সভি হরাচারে কথং ধর্মচিত্তমং তদাহ—শশুদিতি। উপশমো হরাচারাহপরম:। কিমিতি মন্তক্তত্ম হরাচারাহপরতিরুচ্যতে হরাচারোপহতচেতন্তরা কিমিত্যসৌ ন নঙ্ক্যতীত্যাশক্ষাহ—শৃণিতি॥ ৩১

অনুবাদ। বাহু ছরাচারতাকে পরিত্যাগ করিয়া আন্তরিক সাধু
নিশ্চয়ের সামর্থ্যে [সেই ব্যক্তি] শীঘ্র "ধর্মাত্মা" ধর্মচিত্তই হুইয়া থাকে [এবং]
নিত্য শান্তিকে প্রাপ্ত হয়। হে কুন্তীনন্দন! তুমি পরমার্থ প্রবণ কর। [তুমি
লোক মধ্যে] এই নিশ্চিত প্রতিজ্ঞা কর যে, আমার ভক্ত (অর্থাৎ) আমাতে
বাহার অন্তরাত্মা সমর্পিত ইইরাছে, সে কোন অবস্থাতেই প্রনষ্ট হয় না ॥৩১

মাং হি পার্থ ব্যপাশ্রিত্য যেহপি স্থাঃ পাপযোনয়ঃ। স্ত্রিয়ো বৈশ্যান্তথা শূদ্রাস্তেহপি যান্তি পরাং গতিম্॥ ৩২

্ অস্থ্য। হে পার্থ ! যে পাপযোনরঃ স্তিরঃ বৈশ্রাঃ তথা শূদ্রা অপি মাং হি ব্যপাশ্রিত্য স্থাঃ তেহপি পরাং গতিং যান্তি ॥৩২

ত্ত্বাদ। হে পার্থ যে সকল পাপযোনি (পাপজনা) দ্রী বৈশ্র অথবা শূদ্রগণ আমাকে আশ্রয় করিয়া থাকে, তাহারাও পরমগতি লাভ করিয়া থাকে ॥৩২

ভাষ্য। বিঞ্চ মাং হীতি। মাং হি যন্ত্ৰাৎ পাৰ্থ বাপাঞ্জিতা মামাঞ্জনেন

গৃহী**দা বেহপি স্থাঃ ভবেয়ুঃ পাপ**ষোনরঃ পাপা ষোনির্যেষাং তে পাপষোনরঃ পাপ-জন্মানঃ। কে তে ? ইত্যাহ—দ্বিরো বৈখ্যান্তথা শূক্তান্তেহপি বান্তি পরাং প্রক্লষ্টাং গতিম্ ॥৩২

আনন্দগিরিটীকা। ইতক্ত ভগবন্তক্তির্বিধাতব্যেত্যাহ—কিঞ্চেতি। ন মে ভক্তঃ প্রণশ্রতীত্যক্ত হেতুমাচক্ষাণো, ভক্ত্যধিকারে জাতিনিরমো নাস্তীত্যাহ— মাং হীতি ॥৩২

আমুবাদ। আরও [শুন] হে পার্থ—আমাকে আশ্রয়রপে গ্রহণ করিরা
—বে সকল "পাপয়োনি" অর্থাৎ পাপজনা অবস্থিতি করে, তাহারা কে ?—ব্রীজাতি, বৈশ্র ও শূদ। [বেহেত্ তাহারা আমাকে আশ্রয় করে, এই জন্ম]
তাহারাও প্রকৃষ্ট গতি লাভ করিয়া থাকে॥ ৩২

কিং পুন ব্রাহ্মণাঃ পুণ্যা ভক্তা রাজর্ষয়ন্তথা। অনিত্যমন্ত্রখং লোকমিমং প্রাপ্য ভজন্ব মাম্॥৩৩

অনুয়। কিং পুন: পুণ্যা: ভক্তা: [চ] বাহ্মণা রাজর্বর: তথা [গতিং বাস্তি
ইতি বক্তব্যম্] ইমং লোকম্ অনিভ্যম্ অন্তথং প্রাপ্য মাং ভক্তর ॥২৩

অকুবাদ। [মাহারা জন্মতঃই পবিত্র] সেই সকল ভক্ত ব্রাহ্মণ ও রাজ্ঞবিগণ যদি আমাকে আশ্রয় করেন, তবে তাঁহারা যে প্রকৃষ্টগতি প্রাপ্ত হন, তাহা আর কি বলিতে হইবে ? [অভএব] এই অনিত্য ও স্থধহীন মহুষ্যলোক প্রাপ্ত হইরা আমাকে ভজনা কর ॥ ৩৩

ভাষ্য। কিং পুনরিতি। কিং পুনর্ত্তান্ধান্য পুণ্যান্ধানর ভক্তাঃ রাজর্বর: রাজানশ্চ তে ঋষয়শ্চেতি রাজর্বর:। যত এবমতঃ অনিত্যং কণ্ডকুরম্ অক্থং চ ক্থবর্জ্জিতম্ ইমং মন্ত্র্যালোকং প্রাপ্য পুরুষার্থসাধনং মন্ত্র্যান্ধং লক্ষ্য সেবস্থ মাম্ ॥৩০

আনন্দ্রিটীকা। বদি পাপযোনিঃ পাপাচারশ্চ পরাং গতিং গছতি তর্হি কিম্ব্রমজাতিনিমিত্তেন সংখ্যাসাদিনা কিংবা সন্ধ্রেনেত্যাশঙ্ক্যাহ—কিং পুনব্লিতি। উত্তমজাতিমতাং ব্রাহ্মণাদীনামতিশয়েন প্ররা গতির্বতো লভ্যতে অতো ভগবন্তক্রনং তৈঃ একান্তেন বিধাতব্যমিত্যাহ—যুক্ত ইতি। মন্থ্যাদেহাতি-রিক্তেম্ পখাদিদেহের ভগবন্তক্রনযোগ্যভাতাবাং প্রাপ্তে মন্থ্যাদে মন্তজনে প্রবৃতি-ভাস্মিত্যাহ—তুক্র ভিমিতি ॥৩০

অনুবাদ। কিং পুনরিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। [তাহাদের সবদ্ধে] আর কি বলিতে হইবে ? [বাহারা] "পুণ্য" পুণ্যযোনি ব্রাহ্মণ [ও] ভজিসম্পর রাজর্বি, বাহারা রাজা হইরা ঋষি, তাহাদিগকে রাজর্বি কহা যায়। বে কারণ এইরূপ, এই জন্ত "অনিত্য" নণ্ডকুর "অন্ত্থ" স্থবর্জিত এই "লোক" মন্ত্র্যাক লোক পাইয়া (অর্থাৎ) পুরুষার্থনাধন ছল্ভ মন্ত্র্যুজন্ম লাভ করিয়া, আমাকে ভজনা কর :।৩০

> মন্মনা ভব মদ্ভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুরু। মামেবৈষ্যাদি যুক্তৈনুবমান্মানং মৎপরায়ণঃ॥ ৩৪

ইতি নবমোহধারি:।

আস্থ্য়। মন্মনা ভব, মদ্ভক্ত: [ভব], মদ্ধাজী [ভব], মাং নমস্কা। এবং যুক্তা মৎপরায়ণঃ সন্ আত্মানং নামেব এব্যসি॥ ৩৪

আমুবাদ। আমাতে মন সমর্পণ কর, আমার ভক্ত হও, আমার উদ্দেশে যজ্ঞ কর এবং আমাকে নমস্কার কর। এই প্রকার যোগ সাধন পূর্বক মৎপ্রারণ হইরা আত্মভূত আমাকে প্রাপ্ত হইবে।।৩৪

আনন্দ্রিটীকা। ভগবন্তকেরিখন্তাবং পূচ্ছতি—কথ্মিতি। ঈশ্বনভন্ধনে ইতিকর্ত্তবাতাং দর্শরতি—মন্মনা ইতি। এবং ভগবন্তং ভন্ধনানশু মন
কিং শুদিত্যাশব্যাহ—মামেবৈতি। সমাধার ভগবত্যেবেতি শেবঃ। এবমান্ধানমিত্যেতদ্বির্ণোতি—অহং হীতি। অহনেব পরময়নং তবেতি মৎপরারণস্তর্ণাভূতঃ সন্ মামেবান্ধানমেষাসীতি সম্বন্ধঃ। তদেবং মধ্যমানাং ধ্যেয়ং নিরূপ্য
নবমেন অধ্যানামারাধ্যাভিধানমূথেন নিজেন পার্মাণিকেন রূপেণ প্রভ্যক্তেন
জ্ঞানং পরমেশ্বরশু পরমারাধনমিত্যভিদ্ধতা সোপাধিকং তৎপদবাচ্যং নিরূপাধিকঞ্চ
ভ্রেপদলক্ষ্যং ব্যাক্ষাতম্ ॥৩৪

অকুবাদ। কি প্রকারে ?— মমানা হও (অর্থাৎ) আমাতে মনকে

নিবেশিত কর। সেইরূপ আমার ভক্ত হও। "মদ্যাজী" আমার উদ্দেশে বাগ-কর্মনিরত হও। আমাকেই নমন্তার কর। [এই প্রকার করিলে] আমাকে (অর্থাৎ) পরমেশ্বরকে প্রাপ্ত হইবে। [কি করিরা?] এই প্রকারে মনকে সমাহিত করিরা। এইরূপে আত্মাকেও প্রাপ্ত হইবে; আমিই সকল ভূত্তের আত্মা, পরা গতি ও প্রকৃত্তর "অরন" আশ্রয়। সেই "সর্বাত্মভূত" আমাকে প্রাপ্ত হইবে, এই অতীত পদের সহিত সম্বন্ধ [করিয়া ব্যাখ্যা করিতে] হইবে [কিরূপ হইতে হইবে ? তাহাই বলিতেছেন] "মৎপরারণ—" (অর্থাৎ) অনক্যশরণ।।৩৪

ইতি নবমোহধ্যায়ঃ সমাপ্তঃ।

অথ দশমোহধ্যারঃ।

ীভগবা**হ্**বাচ—

ভূষ এব মহাবাহে। শূণু মে পরমং বচঃ। যৎ তে২হং প্রীয়মাণায় বক্ষ্যামি হিতকাম্যয়া॥১

আর্য্য । শ্রীভগবান্ উবাচ। হে মহাবাহো ভূম এব মে পরমং বচঃ শৃণু; ষৎ প্রীয়মাণায় তে অহং হিতকাম্যয়া বক্ষ্যামি ॥>

আসুবাদ। আভগবান কহিলেন, হে মহাবাহো, তোমার [মদ্বাক্য শ্রবণে] প্রীতি হইলাছে [এই কারণ] তোমার মঙ্গলের কামনায় আমি যে বাক্য বিশিব [তুমি] আমার সেই উৎকৃষ্ট বাক্য পুনর্কার শ্রবণ কর ॥১

ভাষ্য। সপ্তমেহধ্যায়ে ভগৰতত্ত্বং বিভৃতরুশ্চ প্রকাশিতা নবমে চ। অথেদানীং বেষু বেষু ভাবেরু চিন্ত্যো ভগবান, তে ভাবা বক্তব্যাঃ। তবং চ ভগৰতো বক্তব্যমুক্তমপি ছব্বিজ্ঞেরছাৎ ইত্যতঃ—ভূর এব ভূরঃ পুনঃ হে মহাবাহো, মে মদীরং প্রমং প্রকৃইং নিরতিশম্বস্তনঃ প্রকাশকং বচো বাক্যং, যৎ প্রমং তে ভূভ্যং প্রীয়মাণায় মদ্বচনাৎ প্রীয়সে ছমতীবাম্তমিব পিবন্। ততো বক্স্যামি ছিত্রকাম্যয়াহিতেছয়ে॥।>

আনন্দণিরিটীকা। অধ্যান্ত্র সিদ্ধর্থং সংক্ষেপতোইন্থভারতে—
সপ্তম ইতি। তত্ত্বং সোপাধিকং নির্মণাধিকঞ্চ বিভূতরঃ সবিশেবনির্ম্ধিশেবরূপপ্রতিপত্ত্যুপরোগিনঃ। উত্তরাধারস্রাধ্যান্ত্রেন সম্বন্ধ বদরধ্যারাপ্তরমবভাররতি—অথেতি। বক্তব্যাঃ সবিশেষধ্যানে নির্মিশেবপ্রতিপত্তৌ চ
শেবদেনতি পেবঃ। নম্ম সবিশেবং নির্মিশেষঞ্চ ভগবতোরূপং প্রাণেব তত্ত্র
তত্ত্রোক্তং তৎ কিমিতি পুনক্ষচ্যতে তত্ত্রাহ—উক্তমপীতি। তদ্বদি তত্ত্ব তত্ত্রাক্তং তণাপি পুনর্মক্তব্যং হর্মিজ্ঞেন্তাদিতি যতো মন্ততেহত ইতি বোজনা।
প্রকৃষ্টবং বচনঃ স্পষ্টরতি—নির্মিতিশয়েতি। তদেব বচো বিনিন্ধি—
যৎপরমন্ধিতি। সম্বত্তকেরর্থসিদ্ধেরসক্ত্বিকরনর্থকেত্যাশক্ষাহ—প্রীয়মাধা,

য়েতি। ততো ৰক্ষামি ইতি তৃভ্যমিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। হিতকাম্যন্না হিতং ক্রিজেন্নং তত্বজ্ঞানম্॥১

অমুবাদ। সপ্তম এবং নবম অধ্যান্তে ভগবানের তত্ত্ব ও বিভৃতি প্রকাশিত হইরাছে। অনস্তর এইকণে বে বে বস্তুতে ভগবান্কে চিন্তা করিতে হইবে, সেই সকল বস্তুর পরিচর দিতে হইবে। এবং ভগবানের তত্ত্ব উক্ত হইলেও অত্যক্ত হক্তের বলিয়া [এই অধ্যান্তে] পুনর্কার তাহা কথিত হইবে। "ভূয়" পুনর্কার, হে মহাবাহো! আমার 'পরম' প্রকৃত্তি—নিরতিশর বস্তুর প্রকাশক বে বাক্য তাহা ভূমি শ্রবণ কর। ভূমি আমার বাক্যে, [লোকে] অমৃত পান করিয়া বেমন অতীব প্রীতি লাভ করে, সেইরূপ প্রীতি লাভ করিতেচ। এই জন্ত ভোমাকে পরম বাক্য বলা বাইতেছে, [তাহা শ্রবণ কর] তোমার হিতের ইন্ধার [আমি ইহা বলিতেচি] ॥>

ন মে বিছঃ স্থরগণাঃ প্রভবং ন মহর্ষয়ঃ। অহম দির্হি দেবানাং মহর্ষীণাঞ্চ সর্ব্বশঃ ॥২

অন্যু। স্বরগণা: (এক্সাদয়:) মহর্ষয়: (ভ্রাদয়: চ) মে প্রভবং (উৎ-পত্তিং) ন বিচ: (ভ্রানম্ভি), হি (যত্মাৎ) অচং দেবানাং মহ্যীণাঞ্চ সর্ব্বশ: (সর্বপ্রকারে:) আদি: (কারণম্)॥২

অনুবাদ। সুরগণ ও মহর্ষিগণ আমার [কোণা হইতে ও কিরুপে] উৎপত্তি হর, তাহা অবগত নহেন; বেহেতু আমি দেবগণ ও মহর্ষিগণের সর্ব্ধ প্রকারেই আদি অর্থাৎ কারণ।।২

ভাষ্য । কিমর্থমহং বক্ষ্যামীত্যত আহ—ন মে বিছঃ ন জানন্তি সুরগণাঃ বন্ধাদর: । কিং তে ন বিছঃ ? মম প্রভবং প্রভূশক্ত্যতিশর্ম, অথবা প্রভবং প্রভ্শক্ত্যতিশর্ম, অথবা প্রভবং প্রভ্বনম্ উৎপত্তিম্ । নাপি মহর্বরো ভ্যাদরো বিছঃ । কন্ধাৎ তে ন বিছ্রিভূ্যচ্যতে—অহমাদিঃ কারণং হি যন্ত্রাৎ দেবানাং মহর্বীণাঞ্চ সর্ব্বশঃ প্রকারৈঃ ॥২

আনন্দ্রিনিক।। কশ্চিদজোহণি পরমং বচো মহুং বক্ষাতি তেন
চ মম তব্জানং ভবিষ্যতাতো ভগবদ্বচনমকিঞ্চিৎকর্মিতি শবিদা পরিহরতি—
কিমর্থমিত্যাদিনা। ইজাদরো ভ্যাদরশ্চ ভগবংপ্রভাবং ন বিদ্তীভার্ত্ত প্রমুক্তিং হেতুমাহ—কন্মাদিতি। নিমিত্তবেনোপাদানদেন চ হত্তো দেবাদীনার ভগবানেব হেতুরতত্তদ্বিকারতে ন তত্ত প্রভাবং বিছরিক্তার্থ্য ধহ অনুবাদ। কেন মানি বলিব ?—ইহার উত্তর বলা হইতেছে যে, "স্থাগণ" বন্ধাদি দেবগণ আমার জানেন না। তাঁহারা কি জানেন না ? আমার "প্রভব" প্রভাব (অর্থাৎ প্রভূশক্তির আতিশব্য অথবা প্রভব শক্তের অর্থ প্রভবন—উৎপত্তি। ভ্রু প্রভৃতি মহর্ষিগণও জানেন না। কেন ? ইহার উত্তর বলা হইতেছে বে, যেহেতু, আনি দেবগণ ও মহর্ষিগণের সকল প্রকারেই কারণ॥২

যো মামজমনাদিঞ্চ বেত্তি লোকমহেশ্বরম্। অসংমূঢ়ঃ স মর্ত্ত্যেষু সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে॥ ৩

আর্য়। বা অসমূঢ়া [সন] মাম্ অজম্ অনাদিং সর্কাকেমহেশবং বেতি স মর্থ্যোক্ সর্কাপাপৈঃ প্রমূচ্যতে ॥৩

অনুবাদ। যে ব্যক্তি মোহ-পরবশ না হইয়া আমাকে অনাদি [অতএব] জন্ম-রহিত (এবং) সকল লোকেরই পরমেশ্বর এই বলিয়া বৃঝিয়া পাকে, মর্ক্তাগণের মধ্যে সে ব্যক্তি সকল পাপ হইতে মুক্তিলাভ করিয়া পাকে ॥৩

ভাষ্য। কিঞ্চ—যো সামজননাদিক বন্ধাৎ অহমাদিদে বানাং মহবীশাক ন মমান্ত আদিবিভাতে, অভোহহমজোহনাদিক, অনাদিঘমজদে হেডুং, তং মাম-জমনাদিক যো বেত্তি বিজ্ঞানতি। লোকমহেশ্বরং লোকানাং মহাস্তমীশ্বরং তুরীরমজ্ঞানতংকার্যবিজ্ঞিতম্ অসংমৃঢ়ং সমোহবিজ্ঞিতঃ স মর্ত্তোর্ মনুষোষ্ সর্ব-পালৈঃ সর্বৈঃ পালেঃ মতিপূর্বামতিপূর্বকৃতিঃ প্রমৃচ্যতে প্রমোক্যতে॥ ৩

আনন্দণিরিটীকা। ইত• কশ্চিদেব ভগবংপ্রভাবং বেস্ত্রীত্যাহ— কিঞ্চেতি। কোহসৌ প্রভাবো ভগবতো যং বহবো ন বিছরিত্যপেক্ষারাং পার-মার্থিকং প্রভাবং তদধীনফলঞ্চ কথরতি—যো মামিতি। পদ্ধরাগৌনকক্ত্য-মাহ—অনাদিত্বমিতি ॥৩

অসুবাদ। আরও বিল গুন বি কারণ, আমি দেবগণ ও মহর্বিগণের আদি এবং আমার আদি (কারণ) কেহই নাই, সেই জন্ত আমি অজ ও জনাদি, আমার আদি কেহই নাই বলিরাই আমি অজ (জন্মরহিত); সেই জনাদি এবং জন্ম-রহিত আমাকে যে ব্যক্তি "অসংমৃতঃ" সন্মোহবর্জ্জিত হইরা লোকমহেশ্বর বলিরা জানিরা থাকে, লোকমহেশ্বর শব্দের অর্থ লোকসমূহের মহান্ ঈশ্বর (অর্থাৎ) সেই তুরীর, অর্থাৎ অজ্ঞান এবং তাহার কার্য্যের সহিত অসম্বন্ধ (ব্রন্ধ) নে ব্যক্তি "মর্ত্ত্তার্গণের মধ্যে (থাকিরাও) জ্ঞানকৃত বা অজ্ঞানকৃত সক্ত্র প্রকার পাণ হইতে বুরিজ্ঞাত ক্রিবে ॥৫

বৃদ্ধিজ্ঞ নিমসম্মোহং ক্ষমা সত্যং দমং শমঃ।

স্থাং জংখাং ভবোহভাবো ভয়ঞাভয়মেব চ॥ ৪

অহিংসা সমতা তৃষ্টিস্তপো দানং যশোহযশঃ।
ভবস্তি ভাবা ভূতানাং মস্ত এব পৃথগ্বিধাঃ॥ ৫

আহা । মত্তএব ভূতানাং বুদ্ধি: জ্ঞানম্ অসম্মোহ:, ক্মা, সতাং, দমঃ, শমঃ, স্থং, জঃখং ভবঃ, অভাবঃ, ভয়ং চ অভয়ম্ এব চ অহিংসা, সমতা, ভূটঃ, তপঃ, দানং, বশঃ, অবশঃ, [চ ইত্যেতে] পৃথগ্বিধা ভাবা ভবস্তি॥ ৪-৫

অনুবাদ। আমা হইতেই প্রাণিগণের বৃদ্ধি জ্ঞান, অসম্মোহ, ক্ষমা, সত্য, দম, শম, স্থ, হঃধ, ভব, অভাব, ভর,, অভর, অহিংসা, সমতা, তৃষ্টি, তপঃ, দান, বশঃ ও অবশঃ এই সকল নানাবিধ ভাব উদিত হইয়া থাকে ॥৪-৫

ভাষ্য। ইতশ্চাহৎ মহেশরো লোকানাম্—বৃদ্ধিরস্ত:করণস্থ স্ক্রাম্মর্থাব-বোধনসামর্থাম্। তদ্বস্তং বৃদ্ধিমান্ ইতি হি বদন্তি। জ্ঞানমাম্মাদিপদার্থামববোধ:। ক্ষমামাছঃ প্রত্যুপপরের বোদ্ধেরার্ বিবেকপূর্বিকা প্রবৃদ্ধি:। ক্ষমা আকুইস্থ তাড়িওস্থ বা অবিকৃত্তিভাতা। সত্যৎ বথাকৃইস্থ বথাক্ষত্ম চ আক্রাম্ভবস্থ পর্বৃদ্ধিকাত্মরে তথৈবোচার্ব্যমাণা বাক্ সত্যমূচ্যতে। দমো বাহেজিয়োপশম:। শমোহতঃকরণস্থ। স্থ্যমাহলাদ:। হৃঃখং সন্তাপ:। ভবঃ উদ্ধব:। অভাব-ক্রাম্বিধ্যারঃ। ভরং চ তাক:। অভাবন্য চ তদ্বিপ্রীতম্।

আহিংসেতি। আহিংসা অপীড়া প্রাণিনাম্। সমতা সমচিত্ততা। তুটিঃ
সংস্থোবঃ পর্যাপ্তবৃদ্ধিল তিত্ব। তপ ইন্তিরসংযমপূর্বকং দরীরপীড়নস্। দানং
বথাশক্তি সংবিভাগঃ। বশো ধর্মনিমিন্তা কীর্তিঃ। অবশব্ধর্মনিমিন্তাংকীর্তিঃ।
ভরম্ভি ভাবা বথোক্তা বৃদ্যাদরো ভূতানাং প্রাণিনাং মন্ত এবেশ্বরাৎ পৃথপ্যবিশাঃ
নানাবিধাঃ অকর্মান্তরপেণ ॥৪-৫

আনক্ষিরিটীকা। ভগবতো লোকমহেশ্বরতে হেম্বরমাহ — ইতক্ষেতি।
মুমুস্থ টিরারাধ্যখাঁ দিকরে বক্ষমাক্ষমাধনং প্রস্কৃত্যাশেষকাগৎপ্রকৃত্যধিষ্ঠাত্ত্বকাশণং
সোপাধিকং ভগবংপ্রভাবমভিধত্তে— বৃদ্ধিরিতি। হক্লাদীত্যাদিশকেন হক্ষতরঃ
হক্ষত্তমশ্চার্থো গৃহতে। উক্তং সামর্থাং বৃদ্ধিরিত্যাশির্মর্থে প্রদিক্ষং প্রমাণরতি—
ক্রেট্রিমিন্তি। আক্লাদীতি ভদববোধবত্তং হি কানিনং বদন্তি। অভ্যক্ষরণভোগশমো বিষয়েত্যো ব্যার্ভিরিতি শেষঃ॥

আনন্দগিরিটীকা। যথাশক্তীতি। পাত্রে শ্রন্ধরা স্থাক্তিমনতিক্রমা-র্ধানাং দেশকালায়গুণ্যেন প্রতিপাদনমিত্যর্থ:। উক্রানাং বৃদ্ধ্যাদীনাং সাশ্ররাণা-মীশরাহুৎপত্তিং প্রতিজ্ঞানীতে—ভবস্তীতি। নানাবিধন্দে হেতৃমাহ— স্বকর্মেতি। কপঞ্চিদপি তেবামাদ্মাতিরেকেণাভাবান্মন্ত এবেত্যুক্তম্ ॥৪-৫

অকুবাদ। এই কারণেও আমি লোকসমূহের মহেশর—[যে কারণ] আমা হইতেই প্রাণিগণের বৃদ্ধি প্রভৃতি [বক্ষামাণ] নানা প্রকার ভাব সমূহ কর্মান্থ সারে উৎপত্তি লাভ করে [সেই সকল ভাব কি, তাহাই বলিতেছেন যে] "বৃদ্ধি" মনের স্প্রাদি হজের বস্তুনিচরের বোধাস্থকুল শক্তি; কারণ, এই শক্তি বাহার আছে, তাহাকেই লোকে 'বৃদ্ধিমান' বলে। "জান" আআদি পদার্থের বিশেষ বোধ। "অসম্মোহ" বোধের যোগ্য বিষয় উপস্থিত হইলে তাহা বৃদ্ধিরা বিবেকপূর্বাক কার্য্যে প্রবৃত্তি। "ক্ষমা" কেহ আক্রোশ করিলে বা তাড়না করিলে মনের অবিকার। "সত্য" নিজে যে ভাবে কোন বিষয় দেখা যার বা শুনা যার, ঠিক সেই ভাবে সেই বিষয়টি অপরকেও বৃঝাইবার জন্ত যে বাক্যের উচ্চারণ করা যার, তাগাকেই 'সত্য' বলা যায়। "দম" বহিরিজ্রিয়ের নিগ্রহ; "শম" অন্তরিজ্ঞিয়ের নিগ্রহ। "ত্রখ" আফ্রাদ। "তঃখ" সন্ত্যপ। "ভব" উৎপত্তি। "অভাব" উৎপত্তির বিপর্যার। 'ভর' ত্রাদ। 'জভর' ভরের বিপরীত।

[অহিংসা ইত্যাদি লোকের অর্থ] 'অহিংসা' প্রাণিগণকে পীড়া না দেওরা। 'সমতা' সমচিত্ততা। 'ভৃষ্টি' সংস্থাব—বাহা কিছু পাওয়া বার, তাহাতেই পর্যাপ্ত বৃদ্ধি। 'তপঃ' ইন্দ্রিয়-সংঘমপূর্কক শরীরকে পীড়ন করা। 'দান' যথাশক্তি, অপরকে স্বীয় ধন বিতরণ। 'যশঃ' ধর্মনিমিত্ত কীর্ত্তি। 'অযয়ং' অধ্যাচরণ-নিবন্ধন নিন্দা—পূর্কোক্ত বৃদ্ধ্যাদি নানাবিধ ভাবসমূহ, ঈশার বে আমি, সেই আমা হইতে প্রাণিগণের কর্মান্ধসারে ইইয়া থাকে ॥৪-৫

মহর্ষয়ঃ সপ্ত পূর্বের চন্থারো মনবস্তথা।
মদ্ভাবা ম.নসা জাতা যেযাং লোক ইমাঃ প্রজাঃ ॥৬

অন্থ্য । মন্তাবাঃ পূর্বে (অতীত-কাল-সম্বন্ধিনঃ) সপ্ত (ভৃথাদরঃ) মহর্বরঃ তথা চছারঃ মনবঃ মানসা জাতাঃ, বেষাং লোক ইমাঃ প্রজাঃ ॥৭

অনুবাদ। আমার প্রতি দৃঢ়ভজিসপার পূর্ববর্তী সাত জন নহর্ষি এবং চারিজন মন্থ আমারই মন হইতে উৎপন্ন হইরাছেন। এই পরিদৃশ্রমান গোকে ছাবর ও জলম এই উভন্ন প্রকার জীবই তাহাদের প্রকার

ভাষ্য। কিঞ্চ মহর্বরঃ সপ্ত ভ্যাবরঃ পূর্বেহতীতকালসম্বন্ধিনশ্চমারঃ মনবতথা সাবর্ণা ইতি প্রসিদ্ধাঃ। তে চ মন্ভাবা মন্গতভাবনা বৈক্ষবেন সামর্থ্যেনোপেতাঃ মানসা মনলৈবোংপাদিতা, মগ্ন জাতা উৎপন্না বেষাং মন্নাং নহর্বীণাং
চ স্কটির্লোক ইমাঃ স্থাবরজক্ষমাত্মকাঃ প্রজাঃ ॥৩

আনন্দণিরিটীকা। ন কেবলং ভগবতঃ সর্বপ্রেক্তিত্বমেব কিন্তু সর্বজ্ঞত্বসর্বেশ্বরত্বরূপমাধিচাত্ত্বমপীত্যাহ—কিঞ্জেতি। আন্তা ভৃথাদরো বশিষ্ঠান্তাঃ
সর্বজ্ঞা বিদ্যাসংপ্রদারপ্রবর্ত্তকাঃ তথেতি মন্নামণি পূর্ববেদান্তত্বমন্ত্রহান্তে।
কে তে মনবন্ধত্রাহ—সাবর্ণা ইতীতি। প্রসিদ্ধাঃ প্রাণের প্রজানাং
পালকাঃ স্বরমীশ্বরাশ্চেতি শেবঃ। মহর্বীণাং মন্নাঞ্চ ভূল্যং বিশেষণং—তে
চিতি। মরি সর্ববজ্ঞে সর্বেশ্বরে গতা ভাবনা যেবাং তে তথা। ভাবনাকলমাহ—বৈষ্ণবেনেতি। বৈষ্ণব্যা শক্ত্যাধিষ্ঠিতত্বেন জ্ঞানৈশ্বর্যাবস্ত ইত্যর্থঃ।
তেষাং জন্মনো বৈশিষ্টামাচাই—মানসা ইতি। মন্বাদীনেব বিশিনাই—
যেষামিতি। বিশ্বরা জন্মনা চ সন্ততিভূতা মন্বাদীনামন্মিন্ লোকে সর্বাঃ
প্রজা ইত্যর্থঃ।৬

আকুবাদ। আরও [বলি শুন] ভ্লু প্রভৃতি সাত জন মহর্ষি এবং সাবর্ণ নামে প্রসিদ্ধ চারিজন ময়ু [ইইারা সকলেই] পূর্বকালবর্ত্তী [এবং] "মন্তাব" মন্ভাবনাপর, বৈক্ষবীশক্তিসম্পন্ন ও সকলেই আনার মন হইতে উৎপন্ন হইরাছেন। যে মমুগণ ও মহর্ষিগণের স্বষ্টি—এই লোকে স্থাবর ও জঙ্গম এই উভরবিধ প্রকা॥৬

এতাং বিস্কৃতিং যোগঞ্চ মম যো বেত্তি তত্ত্বতঃ। সোহবিকম্পেন # যোগেন যুক্ত্যতে নাত্ৰ সংশয়ঃ॥৭

আর্যু । বঃ মম এতাং বিভৃতিং যোগঞ্চ তম্বতঃ বেন্তি, সঃ অবিকম্পেন বোগেন যুক্তে [ইডি' অত্য সংশরঃ ন [অস্তি] ॥৭

অমুবাদ। বে ব্যক্তি আমার এই বিভৃতি ও যোগকে বথার্থভাবে জানিতে পারেন, তিনি দৃঢ়যোগযুক্ত হন, এই বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই ॥१

ভাষ্য। এতামিতি। এতাং বথোক্তাং বিভূতিং বিস্তারং বোগং চ বুক্তিং চ আত্মনো ঘটনম্ অথবা বোগৈষহাসামর্থাং সর্বজ্ঞাং বোগক্তং বোগ

 [&]quot;সোহবিকলেন" ইভি পাঠ: কচিৎ দৃশতে।

উচ্যতে। यम मनीवर तो বেश्वि उन्नज्यसम्बद्धान वर्षाविष्टाज्ञ । त्यारिकाल्यः व्यक्तिमाज्ञ । त्याराम ममान्यः नामान्यः नामान्यः । व्यक्तिस्ति ॥ १

আনন্দগিরিটীকা। গোণাধিকং প্রভাবং ভগবতো দর্শায়িধা ওবা আনদ্দন ৰাহ—এতামিতি। বুদ্যাহাপাদানদেন বিবিধা ভৃতিওবনং বৈভবং নর্মান্তকদং তদাহ—বিস্তারমিতি। ঈশরত তভদর্থসম্পাদনসামর্থাং বোগন্তদাহ—আজুন ইতি। বোগন্তংফলনৈশর্থাং নর্মজন্ম নর্মেশ্বর্মক মদীয়ং শক্তিজানলেশমান্তিত্য নবাদরো ভ্র্যাদরশ্চেশতে জানতে চ তদাহ—অথুবৈতি। বুণা তৌ বিভৃতি-বোগৌ তথা নিরম্পাধেকজানে বারমিত্যাহ—সোহ্বিকস্পেনেতি। উক্তেংর্থে প্রতিবদ্ধাভাবমাহ—নাশ্বিজিতি॥

প্রতিবদ্ধাভাবমাহ—নাশ্বিজিতি॥

অমুবাদ। এতান্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ এই (অর্থাৎ) পূর্বে বে প্রকার বলা হইল, আমার 'বিভৃতি' বিস্তার (অর্থাৎ বিভৃতা) এবং 'যোপ' কৃষ্ঠি——আমার আত্মঘটনা, অথবা যোগের দ্বারা উৎপাদিত যোগৈশ্বর্যসামর্থ্য (অর্থাৎ) সর্বজ্ঞত প্রভৃতিই এইস্থলে যোগশন্ধ দ্বারা প্রতিপাদিত হইল। বিনি আমার এই বিভৃতি ও যোগকে 'তত্মতঃ' যথাযথরূপে জানেন, তিনি অবিকম্পিত বোগ অর্থাৎ তত্মজ্ঞানহৈশ্য লাভ করিতে পারেন, এই বিষয়ে কোন সংশয় নাই॥ ৭

অহং দৰ্ব্বস্থ প্ৰভবো মত্তঃ দৰ্ব্বং প্ৰবৰ্ত্ততে। ইতি মন্থা ভজন্তে মাং বুধা ভাবদমন্বিতাঃ॥৮

আনুষ্ম। ভাবসম্বিতাঃ বুধাঃ ''অহং সর্বস্থি প্রভবঃ (উৎপক্তিঃ) মন্তঃ সর্বং প্রবর্ত্তি ইতি মন্থা মাং ভক্তান্তে ॥ ৭

অ্মুবাদ। "আমি (বাস্থাদেব) সকল পদার্থের উৎপত্তিহেতু এবং সকল জগৎও আমা হইতে প্রবর্ত্তিত হয়" এই প্রকার বিবেচনা করিয়া ভক্তিমান্ পশ্তিত-গণ আমাকে ভক্তনা করিয়া থাকেন ॥৮

ভাষ্য। কীদৃশেন অবিকশ্পেন বোগেন মুজ্যতে ইভাূচাতে। আহং পরং বন্ধ বাফ্লেবাধাং সর্বস্থ জগতঃ প্রভবঃ উৎপত্তিঃ মন্ত্রের স্থিতিনাশক্রিয়াফলো-পভোগলক্ষণং বিক্রিয়াক্ষপং সর্বাং জগৎ প্রবর্ততে ইভাূেবং মন্ধা ভল্লতে সেক্তে মাং বৃধা অবগততত্ত্বার্থা ভাবসমন্বিতা ভাবো ভাবনা প্রমার্থতত্বাভিনিবেশক্তেন সমন্বিতাঃ সংযুক্তা ইত্যর্থঃ ॥৮

আনক্ষণিরিটীকা। কথং তাৰকবিভূতৈ গ্রেষ্ঠা জ্ঞানযুক্ত বাগত হৈত্ রিভি
নদ্ধা গৃছতি কীদৃশেনেতি। উজ্জ্ঞানমাহাদ্মাৎ প্রতিষ্ঠিতা ভগবরিষ্ঠা
নিগ্যতীতাহ উচ্চতে ইতি। প্রভবতামাদিতি প্রভবং সর্বপ্রক্রতিঃ সর্বাক্ষেত্রাহ উৎপত্তিরিতি। সর্বজ্ঞাৎ সর্বেখরাম্মন্তো নিমিন্তাৎ সর্গন্থিতিনাশাদি
ভবতি ময়া চান্তর্যামিনা ে গ্র্মাণাৎ সর্বাং ষথাবং মর্য্যাদামনতিক্রম্য চেইতে
ভদাহ স্ত্র ইতি। ইথং মস সর্বাত্মিন্তং সর্বপ্রকৃতিকং সর্বেখরতং সর্বজ্ঞবৃঞ্চ
মহিমানং জ্ঞান্থা নহোব নিষ্ঠাবন্তো ভবন্তীত্যাহ ইত্যেব্যমিতি। সংসারাসারতাজ্ঞানবতাং ভগবন্তজ্ঞানহিদ্যারং জ্যোত্রতি অবগতেতি। পরমার্থতক্ষে
প্রব্যাহ ক্রীত্যা জ্ঞাতে প্রেমাদরাবভিনিবেশাখ্যে ভবতত্বেন সংযুক্ত মঞ্চ ভগবন্তজ্ঞান
ভবতি হেত্রিত্যাহ —ভাবেতি ॥৮

অনুবাদ। কীদৃশ অবিকম্প যোগ দারা যুক্ত হয়, তাহাই বলা হইতেছে বে, "আমি" বাফ্লেবাখ্য পরব্রস্থই সকল জগতের "প্রভব" উৎপত্তি, এবং আমা হইতেই ছিতি বিনাশ ও ক্রিরাকলভোগরূপ বিকারময় সকল জগৎ প্রবর্তিত হইরা থাকে,—এই প্রকার ভাবিয়া আমাকে ভজনা করিয়া থাকে [কে ভজনা করে ?] "ব্দগণ" তব্জানিগণ; [তাহারা কি প্রকার ?] "ভাবসমন্বিত" ভাব শক্ষের অর্থ ভাবনা—পরমার্থ তব্তে অভিনিবেশ। তাহা যাহাদের আছে, তাঁহারাই ভাবসমন্বিত। ইহাই তাৎপর্য। ৮

মচ্চিত্ত। মদ্গতপ্রাণা বোধয়ন্তঃ পরস্পরম্। কথয়ন্তশ্চ মাং নিত্যং তুষ্যন্তি চ রমন্তি চ ॥৯

অমৃয়। সচিত্তা: মদ্গতপ্রাণা: পরম্পরং মাং বোধয়ন্ত: কথয়ন্তশ্চ নিত্যং তুর্যন্তি চ রমন্তি চ ॥৯

অনুবাদ। [সেই বুধগণ] মদ্গতহাদর ও মদ্গতপ্রাণ এবং পরস্পর আমার বিষয়ে উপদেশ প্রদান পূর্বক এবং আমারই গুণ কীর্ত্তনাদি করিয়া পরি-ভৃষ্টি লাভ করিয়া পাকেন এবং পরম গতি লাভ করিয়া পাকে ন॥১

ভাষ্য ।° কিঞ্চ—মচিন্তাঃ মরি চিন্তং বেবাং তে মচিন্তা মন্গতপ্রাণাঃ মাং গভাঃ প্রাপ্তাশক্ষ্রাদরঃ প্রাণা বেবাং তে মন্গতপ্রাণা মন্গতপ্রাণা ইত্যর্থঃ। অথবা মন্গতপ্রাণা মন্গতজীবনা ইত্যেতং। বোধয়ন্তঃ পরম্পারম্ অক্তোন্তং কথরন্তো জ্ঞানবদ্বীর্ব্যাদিধশৈর্বিশিষ্টং মাং, তুষ্যন্তি চ পরিতোবম্পবান্তি রমন্তি চ রতিং প্রাপ্ত প্রাপ্ত প্রসংগত্যেব ॥> আনন্দণিরিটীকা। ন কেবদমুক্তমেব ভগবন্তজনে সাধনান্তরঞ্গান্তীতাহ

কিন্ধেতি। ঈশবাৎ প্রতীচঃ প্রাপ্তকাদক্তর চিত্তপ্রচাররাহিত্যং ভগবন্তজনোপারমাহ—ময়ীতি। চকুরাদীনাং ভগবত্যপ্রাপ্তিন্তদগোচরত্বাৎ তক্তত্যাশব্দাহ—ময়ুপসংহৃতেতি। ভগবদতিরেকেণ জীবনেহণি নাদরন্তদণি
মব্যোপিতং ভক্তানামিতাাহ—অথবৈতি। আচার্য্যেভ্যঃ শ্রুত্বা বাদকণরা
পরস্পরং ভগবন্তং সব্রন্ধচারিণো বোধয়ন্তি তদণি ভগবন্তজনসাধনমিত্যাহ—
বোধয়ন্ত ইতি। আগমোপপন্তিভ্যাং ভগবন্তমেব বিশিষ্টধর্ম্মাণং শিব্যেভ্যোশুরবো বৃশদিশন্তি তদণি ভগবন্তজনমেবেত্যাহ—কথয়ন্ত ইতি। ভক্তানাং
ভূত্তিরতী বরসতঃ স্থাতামিত্যাহ—তুম্যুন্তীতি। মনোরপপ্র্যা রতিপ্রাপ্তৌ কামুকসম্মতমুদাহরণমাহ—প্রিয়েতি ॥১

অনুবাদ। আরও [বলি শুন] "মচিত্ত আমাতেই বাঁহাদের চিন্ত সংলগ্ন
থাকে, তাঁহারা মচিত্ত ; "মদ্গতপ্রাণ," বাঁহাদের প্রাণ অর্থাৎ চকু: প্রভৃতি ইন্দ্রির-রৃত্তি
উপসংহত হইরা থাকে, তাঁহাদিগকেই 'মদ্গতপ্রাণ' কহা বার। অথবা
মদ্গতপ্রাণ এই শব্দের অর্থ 'মদ্গতজ্বীবন'। [এই প্রকার বিশেষণ-যুক্ত
পণ্ডিতগণ] আমাকেই পরস্পা। (মিলিভ হইরা পরস্পরের) বোধ বিবর
করাইরা থাকেন এবং বলবীর্যা জ্ঞান প্রভৃতি ধর্ম্মের আশ্ররভৃত যে আমি, সেই
আমারই কথা পরস্পর কহিরা থাকেন, [এইরূপে] তাঁহারা পরম পরিভোব
প্রাপ্ত হইরা থাকেন এবং [স্ত্রীগণ] প্রিয়-সমাগমে বেরূপ রতি-লাভ করিরা
থাকে, সেইরূপ উৎকট প্রীতিরূপ রতিকে লাভ করিরা থাকেন ॥৯

তেষাং সততযুক্তানাং ভজতাং প্রীতিপূর্বকম্। দদামি বুদ্ধিযোগং তং যেন মামুপযান্তি তে॥ ১০

আন্বয় । প্রীতি-পূর্বকং ভঞ্জাং সভত্যুক্তানাং ভেষাং তং বৃদ্ধিষোগং দদামি বেন তে নাম্ উপবাত্তি॥ ১০

' অমুবাদ।। জীতিপূর্বক ভলনাপর সেই সততবৃক্ত সাধকগণকে আনি সেই বৃদ্ধিবোগ দান করিয়া থাকি, যাহার বারা তাঁহারা আমাকে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন ॥১০

ভাষ্য ৷ বে যথোক্তপ্ৰকারেরওকত্তে মাং ভক্তা: সন্তঃ— তেৰাং সভত-

যুক্তানাং নিত্যাভিষ্কানাং নিবৃত্তদর্মবাহৈষণানাং ভজতাং দেবমানানাং, কিমর্থিভাদিনা কারণেন নেত্যাহ প্রীতিপূর্ব্ধকং প্রীতিঃ শ্লেহঃ তংপূর্ব্ধকং ভজতামিত্য র্থঃ।
দদামি প্রযক্ষামি বুদ্ধিযোগং বৃদ্ধিঃ সম্যাগদর্শনং মন্তর্ভবিষয়ং তেন যোগঃ বৃদ্ধি-বোগঃ
তং বৃদ্ধিযোগম্। যেন বৃদ্ধিযোগেন সম্যাগদর্শনলক্ষণেন মাং পর্মেশ্বরমাত্মত্তমাত্মভেনোপরান্তি প্রতিপভ্তেত কে তে ? যে মচিত্তভাদিপ্রকার্ত্রের্মাং
ভক্তে ॥১০

আনন্দগিরিটীকা। যত্ত্বং গোহবিকন্পেনেত্যাদি তদর্থং ভূমিকাং ক্ষা তদিদানীমূদাহরতি—যে যথোক্তেতি। নিত্যাভিযুক্তানামনবরতং ভগবত্যৈকাগ্র্যসম্পন্নানামিতার্থ:। পুরাদিলোকত্তরতেষ্ধিন্ধেন বা গর্ভদাসন্থেন। প্রাদিলোকত্তরতেষ্ধিন্ধেন বা গর্ভদাসন্থেন। প্রান্তবাদিনা। প্রান্তবাং জ্ঞানাখ্যাং ভক্তিং স্লেহেন কুর্ন্নতামিত্যর্থ:। তেভ্যোহহং ভন্মজ্ঞানং প্রবন্ধানীত্যাহ—দদামীতি। উক্তব্দিসম্বদ্ধত কলমাহ—বেনেতি। ধ্যানজ্ঞপ্রক্র্যক্রাগতান্ত:করণপরিণামে নিরন্তাশেষত গবজ্ঞপপ্রাপ্তিহেত্টো বৃদ্ধিয়েশে প্রপ্র্ক্র্যুক্তানিধিকারিণা দর্শ্বতি—কে তে ইতি॥১০

অনুবাদ। পূর্বে বে উপার বলা গিরাছে, সেই উপার বারা যাঁহারা ভক্তি ভাবে আমাকে ভজনা করেন—তাঁহাদের [তাঁহারা কি প্রকার?] "সভতবৃদ্ধ" নিত্যাভিযুক্ত, অর্থাৎ বাছ বিষয়ে যাঁহাদের সকল প্রকার কামনা নিবৃত্ত হইরাছে, তাঁহারাই 'সততবৃক্ত'। তাঁহারা কি তবে অন্ত কোন প্রার্থনার বলে আমাকে ভজনা করিয়া থাকেন? না; এতদর্থে বলিতেছেন বে প্রীতি-পূর্বেক; প্রীতিশক্ষের অর্থ সেহ; তাঁহারা সেহপূর্বেক ভজনা করিয়া থাকেন। তাঁহাদিগকে আমি সেই বৃদ্ধিযোগ দান করি, যে বৃদ্ধিযোগের প্রসাদে তাঁহারা আমাকে (অর্থাৎ) সকলের আত্মত্ত পরমেশ্বরকে আত্মভাবে প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। বৃদ্ধিযোগ এই শক্তির অর্থ এই প্রকার বে, বৃদ্ধি শক্ষের অর্থ গরমেশ্বরবিষয়ক বথার্থ জ্ঞান, সেই জ্ঞানের সহিত সম্বন্ধই বৃদ্ধিযোগ শব্দের অর্থ। তাঁহারা কে? [কাহারা এই প্রকার বৃদ্ধিযোগের অধিকারী হয়?] পূর্বে মচ্চিত্তত্ব প্রভৃতি যে সকল ধর্মা উপদিষ্ট হইয়াছে—সেই সকল ধর্মামন্ত্রানপর হইয়া যাহ্যরা আমাকে ভজনা করেন, [তাঁহারাই ঐ বৃদ্ধিযোগ লাভ করিয়া থাকেন।]॥১০

^{* &#}x27;পভ ৰাস-দাসম্বেন' ইতি বা পাঠঃ।

তেষামেবাসুকম্পার্থমহমজ্ঞানজং ভমঃ। নাশয়াম্যাত্মভাবহো জ্ঞানদীপেন ভাস্বতা॥১১

আহ্য়। অহং তেষাম্ এব অমুকম্পার্থম্ আত্মভাবস্থঃ [সন্] ভাত্বতা জ্ঞানদীপেন অজ্ঞানজং তমঃ নাশয়মি ॥১১

আমুবাদ। তাঁহানিগের উপরই দরাপরবশ হইরা আমি তাঁহাদের অক্তঃ-করণে আত্মসন্তার প্রকাশ পূর্বক, দীপ্তিময় তত্তজানরূপ দীপ ছারা তাঁহাদের অজ্ঞানজনিত তমোগুণকে নষ্ট করিয়া থাকি ॥১১

ভাষ্য ৷ কিমর্থং কশু বা তৎপ্রাপ্তিপ্রতিবন্ধহেতোন শিকং বৃদ্ধিবোগং তেবাং ঘণ্ডকানাং দদাসীত্যাকাজ্ঞারামাহ—তেবামেব কণং নাম শ্রেরঃ শুণ্ড ইত্যুম্বক্রপার্থং দরাহেতোরহমজ্ঞানজম্ অবিবেকতো জাতং মিণ্যাপ্রত্যুয়লক্ষণং মোহান্ধকারং তমো নাশরামি আত্মভাবস্থঃ আত্মনো ভাবোহস্তঃকরণাশরঃ তত্মিরেব স্থিতঃ সন ৷ জ্ঞানদীপেন বিবেকপ্রত্যুরন্ধপেণ ভক্তি-প্রসাদ-স্নেহাভিষিক্তেন মন্ভাবনাভিনিবেশবাতেরিতেন ব্রন্ধচর্য্যাদিসাধনসংস্কারবৎপ্রজাবর্ধিনা বিরক্তাস্তঃকরণাধারেণ বিষর্ব্যাবৃত্তিভরাগছেবাকল্বিতনিবাতাপবারক্ষেন নিত্যপ্রবৃত্তিকাগ্রিধ্যানজনিতসম্যগ্রুদর্শনভাস্বতা জ্ঞানদীপেন ইত্যর্থঃ ॥১১

আনন্দণিরিটীকা। ভগবৎপ্রাপ্তেব্ দিনাধ্যতে সভ্যনিত্যভাপত্তেব্দশি ভক্তেভ্যা বৃদ্ধিযোগং দদাসীত্যযুক্তমিতি শব্দতে—কিম্প্রিমিতি। তেবাং বৃদ্ধিবাগং দদাসীতি সম্বন্ধঃ। ভগবংপ্রাপ্তি প্রতিবন্ধকনাশকো বৃদ্ধিরোগত্তেন নান্তি ভংপ্রাপ্তেরনিত্যমিত্যাশক্ষাহ—কস্তেতি। ভক্তানাং ভংপ্রাপ্তিপ্রভিবন্ধকং বিবিচ্য দর্শরতি—ইত্যাকাঙক্ষায়ামিতি। শবিবেকো নামাজ্যানং ততে। লাভং নিথাজানং তহুভরমেকীক্ষত্য তমা বিবক্ষাতে। ন চ তক্ষাশক্ষণ জড়স্ত কন্ততিং তদস্তভূতি সুক্তং তেনাহং নাশরামীভূত্তিম্। কেবলটেতক্তত জড়বৃদ্ধিরুত্তেরিবাজ্ঞানাজনাশক্ষমাশক্য বিশিন্তি—আত্মেতি। ভত্তাশরতরিটো বৃত্তিবিশেবং। বাব্যোখবৃদ্ধিরুত্তভিব্যক্তশিলাআ সহারসামর্গ্যাদজ্ঞানাদিনির্ভিহেত্রিত্যর্থং। বৃদ্ধীদ্ধরেত্ত ভিব্যক্তশিলাআ সহারসামর্গ্যাদজ্ঞানাদিনির্ভিহেত্রিত্যর্থং। বৃদ্ধীদ্ধরেতাভিব্যক্তশিলাআ সহারসামর্গ্যাদজ্ঞানিদিনির্ভিক্তিরিত্যর্থানিতি। কেহাজব্যক্তাভানাআবর্গাতিরিক্তবন্ধপাচরত্ব ক্রমিতি পক্ষান্তরমাহ—ক্রানেতি। কেহাজব্যক্তাভানাআবর্গাতিরিক্তবন্ধপাচরত্ব মাহ—বিব্রেক্তি। ভগবতি সদা বিহিত্যা ভক্ত্যা তক্ত প্রসাদোহক্ষরহং সঞ্জব

 ^{&#}x27;বৃদ্ধিদ্ধ বোধন্ত' ইতি পাঠান্তরম্।

লেহজেনাসেচনদ্বারা অক্টোৎপতিমাহ—ভক্তীতি। ময়েব ভাবনায়ামভিনিবেশোবা অভন্তেন প্রেরিভোহন্নং জারতে, ন হি বাতপ্রেরণমন্তরেণাদৌ দীপস্যোৎপত্তিরিভাহ—মৃদ্ভাবনেতি। ব্রন্ধচর্যমন্ত্রাঙ্গমাদিশব্দেন শর্মাদিগ্রহঃ। তেন হেতুনা-আহিতদংস্কারবর্তী বা প্রজ্ঞা তথাবিধবর্ত্তিনির্ভন্চারং ন হি বর্ত্তাভিরেকেণ দীপো নিবর্ত্তাভে ভদাহ—ব্রেক্সচর্ট্রেতি। ন চাধারাদৃতে দীপক্তোৎপত্তিরদৃষ্টবাদি-ভ্যাহ—বিরক্তেতি। যদিবরেভ্যো ব্যাবৃত্তং চিত্তং রাগান্তকল্মভিং তদেব নিবা-ভ্যমণবারকং তত্ত স্থিতত্তমন্ত দর্শরতি—বিষয়েতি। ভাষতেতি বিশেষণং বিশদরতি—নিত্যেতি। সদাতনং চিত্তৈকাগ্রাং তৎপূর্বকং ধ্যানং তেন জনিতং সম্যাগ্দেশনং ফলং তদেব ভাঃ ভদ্বতা তৎপর্যান্তেনেত্যর্থঃ। তেনাজ্ঞানে সকার্য্যেনিবৃত্তে ভগবভাবঃ স্বয়্যমেব প্রকাশীভবতীতি মন্থা ব্যাথ্যাত্যমেব পদসন্ত্রদতি—ভ্যানৈতি॥১১

তোমাকে পাইবার প্রতিবন্ধক কিরূপ বন্ধর নাশক সেই অন্মবাদ। ৰুদ্ধিযোগ তোমার ভক্তগণের মধ্যে কাহাকে কিনের জন্মই বা দান করিয়া থাক, এই প্রকার আকাজ্ঞার সমাধান করিবার জন্ত [ভগবান্] বলিতেছেন বে---কি প্রকারে তাহাদের মোক্ষ লাভ হইবে ? 'এই প্রকার ভাবনায় অমুগ্রহ করিবার জন্ম আমি ''অজ্ঞানজ' অবিবেক হইতে উৎপন্ন মিধ্যা জ্ঞানরূপ ''তম' মোহাছ-কারকে "আত্মভাবস্থ" অস্ত:করণাশয়স্থিত হইয়া বিনষ্ট করিয়া থাকি। [কিনের ছারা নষ্ট করি ?] জ্ঞানদীপের ছারা; [সেই জ্ঞানদীপ কিরূপ ?] ভক্তিকনিত চিত্তের প্রসাদরণ তৈলের দ্বারা সেই বিবেকবোধরণ জ্ঞান-দীপ অভিবিক্ত. ঈশ্বরভাবনাভিনিবেশরপ বায় দারা তাহা প্রথমে পরিচালিত বা প্রজালিত, ত্রন্ধ-চর্ব্যাদি সাধন দ্বারা জনিত সংস্কারের সহিভ মিলিত প্রজ্ঞাই সেই প্রদীপের বর্দ্ধি. वित्रक अन्तः कत्रवेह तिह मीत्यत्र आधात, तार्ग ७ त्यस्त जेमस्य गाहा कमृतिक इत ना, त्महे विवत्रिक्षाविशोन िखक्रण (य आवृत्र गृह, जाशालाहे त्महे मील निक्रण-ভাবে জনিতে থাকে। সর্বাদা বিশ্বমান যে একাগ্রতা এবং ধ্যান, তাহা ছারা উৎপাদিত द वर्थार्थ कानक्रभ প্রভা, তাহ। दाता मেই कानमीপ সর্বদা উদ্ভাসিত। এইরপ দীপ্তিময় জ্ঞান-দীপের হারা তাঁহাদের অজ্ঞানজনিত মোহাদ্ধকারকে षाभिष्टे नष्टे कत्रियां शांकि॥ ১১

অর্জুন উরাচ।

পরং ব্রহ্ম পরং ধাম পবিত্রং পরমং ভবান্। পুরুষং শাশ্বতং দিব্যমাদিদেবমঙ্গং বিভূম্॥ ১২

আহুস্বায়্ষয়ঃ দৰ্কে দেবৰ্ষিন রিদস্তথা। অসিতো দেবলো ব্যাসঃ স্বয়ং চৈব ব্রবীষি মে॥১৩

ভার্য়। আর্ক্ন: উবাচ—ভবান্ পরং ব্রন্ধ, পরং ধাম, পরমং পবিত্রং
[চ]। [বশিষ্ঠাদর:] সর্বে ধ্বয়: তথা দেবর্বি: নারদ:, অসিভ:, দেবল:,
ব্যাস:, ডাং শাখতম্ অজং দিব্যম্ আদিদেবং বিভূং পুরুষম্ আহ:। স্বরং চ
এব মে [তথা] ব্রবীবি চ ॥১২—১৩

অকুবাদ। অর্জুন বলিলেন, তুমিই পরবন্ধ, প্রকৃষ্ট জ্যোতি: এবং পরম পবিত্র। [বশিষ্ঠাদি] ঋষিগণ, দেবর্ষি নারদ, অসিত, দেবল ও ব্যাসও বলেন বে, তুমি সনাতন পুরুষ, তুমি দিব্য, তুমি আদিদেব, তুমি জন্মহীন ও সর্ব্বব্যাপী এবং তুমি নিজেও আমাকে এই প্রকারই বলিতেছ॥ ১২-১৩

ভাষ্য। যথোক্তং ভগৰতো বিভৃতিং বোগং চ শ্রুদা— [क्यक्त উবাচ] পরং ব্রন্ধ পরমাদ্মা, পরং ধাম পরং তেকঃ, পবিত্রং পাবনং পরমং প্রকৃষ্টং ভবান। প্রকৃষং শাখতং নিত্যম্, দিব্যং দিবি ভবম্, আদিদেবং সর্বদেবানামাদৌ ভবম্, ক্ষক্ষম্, বিভূং বিভবনশীলম্।

জ্বদৃশম্ আতঃ কথরতি ছাম্ ঋবরঃ বশিষ্ঠাদরঃ সর্কে, দেবর্বিঃ নারদঃ তথা জ্বসিতঃ দেবলোহপি এবমাহ ব্যাসন্চ, স্বর্ধেণ্ব ব্রীষি মে। ১২-১৩

আনন্দ্রিনিটাক। নিরন্তাশেষবিশেষং নির্দ্রণাধিকং সোণাধিকঞ্চ সর্বান্দ্রদাদি ভগবতো রূপং তদ্ধীফলঞ্চ শ্রন্থা নির্দ্রপাধিকরূপন্ত প্রাক্তবৃদ্ধানব-গান্থোক্তিপূর্ব্বকং মন্দান্থগ্রহার্থং সর্বাদা সর্ববৃদ্ধিগ্রাহুং সোণাধিকং রূপং বিস্তরেণ শ্রোতৃমিচ্ছন্ পৃচ্ছতীত্যাই—যুথোক্তিমিতি । পরং ব্রন্ধ ভবানিতি লক্ষ্যনির্দ্দেশঃ, ভস্য লক্ষণার্থং পরং ধামেত্যাদিবিশেষণত্তরম্ । ধামশক্ষ স্থানবাচিছং ব্যাবর্ত্তরন্ ব্যাচন্টে—তেক্ত ইতি । তন্ত চৈতন্তন্ত পরমন্বং জন্মাদিরাহিত্যেন কৌটস্থং প্রকৃষ্টং পাবনমত্যন্তক্ষদ্ধসূচ্যতে যদেবংলক্ষণং পরমং ব্রন্ধ ভদ্ধবানের নান্তন্ত্রের্ধঃ। ক্তৃত্তব্যেমবমজ্ঞাসীরিত্যাশক্ষ্যাগ্রবাক্যাদিত্যাহ—পুরুষ্মিতি । দিবি পরমে ব্যামি ভবতীতি দিব্যঃ সর্বপ্রপঞ্চাতীতং দীব্যতি ভোতত ইতি দেবং স্কাদিঃ সর্ব্বস্বত্তাৎ অত্রবান্ধন্তং সর্ব্বগত্মাচ্রিতি সম্বন্ধঃ ।

উক্তবিশেষণং স্বাস্থ্য সর্বে বন্দাদান্তক্ষাৎ তদ্বনাৎ তবোক্তং ব্রহ্মন্থ বৃক্তবিত্যাহ—ক্ষুদৃশমিতি। পবিগ্রহণেন গৃহীতানামপি নারদাদীনাং বিশিষ্ট্রন্থ পৃথক্গ্রহণ্ম; অসিতো দেবলক্ষ পিতা। কিমক্তৈন্ধং ব্যমেবাস্থানমুক্তরূপং মন্ত্র্যুক্তবানিজ্যাহ—ক্ষুমুক্তে॥ ১২-১৩

অকুবাদ। ভগবানের যথোক্ত বিভূতি ও যোগ প্রবণ করিয়া আর্কুন বলিলেন,—তৃমি "পরব্রশ্ন" পরমাত্মা, "পর ধান" পরম তেজঃ, "পরম পবিত্র" প্রকৃষ্ট পাবন। বলিষ্ঠাদি সকল ঋষিগণ, দেবর্ষি নারদ, দেবল ও অসিত এবং ব্যাসও বলিরা থাকেন বে, তৃমি প্রকৃষ, "শাখত" নিত্য, "দিব্য" অর্থে অবস্থিত, "আদিদেব" সকল দেবতার আদিতে বিরাজমান "দেব" (স্থোতনশীল) "বিভূ" ব্যাপকস্বভাব, তৃমি নিজেও আমাকে [এই প্রকারই] বলিতেছ॥ ১ ১৩

> দৰ্বনেতদৃতং মন্তে যশ্মাং বদসি কেশব। ন হি তে ভগবন্ ব্যক্তিং বিহুদে বা ন দানবাঃ ॥১৪

অধর। হে কেশব মাং বদ্বদিসি এতং সর্কম্ ঋতং (সত্যং) মাঞ (জানামি)হে ভগবন্! হি (মন্মাৎ) তে ব্যক্তিং (প্রকাশং)দেবাং ন বিহুঃ (জানস্কি)[তথা]দানবাং [অপি] ন [বিহুঃ]॥১৪

অনুবাদ। হে কেশব, তুমি যাহা বলিতেছে, তাহা সকলই আমি সভ্য বলিয়াই বোধ করিতেছি। কারণ, হে ভগবন্, তোমার প্রভব (প্রকাশ) দেবতাগণও বুঝেন না, দানবগণও যুঝেন না ॥১৪

ভাষ্য। সর্কমিতি। সর্কমেতদ্ যথোক্তম্ ঋবিভিত্তরা চ তদৃতং সত্যমেব মজে। বন্নাং প্রতি বদসি ভাষসে হে কেশব। ন হি তে তব ভগবন্ ব্যক্তিং প্রভবং বিছঃ ন দেবা ন দানবাঃ ॥১৪

আনন্দ্গিরিটীকা। শ্ববিভিত্তরা চোক্তছাহক্তং সর্বাং সত্যমেবেতি মম মনীবেত্যাহ—সর্ব্বমিতি। কিং তদিত্যাশক্ষ্যাত্মনপমিত্যাহ—হান্মামিতি। দেবাদিভিঃ সর্বৈশ্বচ্যমানতরা ত্বজ্বপে বিশিষ্টবক্তগ্রহণমনর্থকমিত্যাশক্ষাহ— ন্
হীতি। প্রতবো নাম প্রভাবো নিরূপাধিকস্বভাবং, যদা দেবাদীনামপি ছর্বিজ্ঞেরং তব রূপং তদা কা কথা মহাযাগামিত্যর্থঃ ॥১৪

অনুবাদ। সর্বাদ। সর্বাদ [শ্লোকের সর্থ এই যে] যে সকল বিষয় ঋষি-গণ ও তুমি যে ভাবে বলিয়াছ, তাহা সকলই সেই ভাবেই সভ্য বলিয়া আমি বোধ করিতেছি। তুমি [নিজে] ভোমার [যে স্বরূপের বিষয়] বলিয়াছ, সেই স্বরূপ দেবভারাও জানেন না, দানবগণও জানেন না ॥১৪

> স্বয়মেবাত্মনাত্মানং বেত্থ ত্বং পুরুষোত্তম। ভূতভাবন ভূতেশ দেবদেব জগৎপতে ॥১৫

আন্ত্র্য়। হে ভূতভাবন ! ভূতেশ ! দেবদেব ! কগংপতে ! পুরুরোক্তম ! দং স্বয়মেব আত্মনা আত্মানং বেখ জোনাসি ॥ ১৫

অকুবাদ। হে ভূতভাবন! ভূতেশ! দেবদেব! জগৎপতে। পুরুষোত্তম! ভূমি নিজেই আপনার প্রভাবে আপনাকে জান[অপর কেহই পূর্ণভাবে ভোমাকে জানিতে পারে না] ॥>৫

ভাষ্য। বতত্ত্বং দেবাদীনামাদিরতঃ—স্বন্ধমেবাত্মনা আত্মানং বেথ ত্বং নিরতিশরজ্ঞানৈখর্য্যবলাদিশক্তিমস্তমীখরং প্রুবোত্তম। ভূতানি ভাবরতীতি ভূত-ভাবনো হে ভূতেশ ভূতানামীশিতঃ হে দেবদেব জগৎপতে ॥ ১৫

আনন্দ্রিনিক।। কশ্চিদের মহতা কটেনানেকজন্মসংদিছো জানাতি
বদ্ধসূত্হীতস্তজপ্রিতাভিপ্রেতাহ—হত্তি। স্বর্গনেরোপদেশমস্তরেণেতার্থঃ
আত্মনা প্রত্যক্ষেনাবিবরতরেতি বাবং। আত্মানং নিরুপাধিকং রূপম্। ন
চ তব সোপাধিকমপি রূপমন্তুত্ত গোচরে তিষ্ঠতীত্যাহ—নির্বৃত্তিশয়েতি।
পুক্রশাসাব্তমশ্চেতি ক্রাক্ষরাতীতপূর্ণ চৈতন্তন্তরপত্বং সম্বোধনেন বোধাতে।
সর্বপ্রকৃতিত্বং সর্বাকর্ত্ত্বক্ষ কথয়তি—ভুতানীতি। সর্বেশরম্বনাহ—ভুতানামিতি। উক্তং তে সোপাধিকং রূপং দেবাদীনামারাধ্যতামধিগচ্ছতীত্যাহ—
দেবেতি। জগতঃ সর্বান্ত সামিছেন পালয়িত্ত্বমাহ—জ্গদিতি॥১৫

অনুবাদ। হে পুরুষোত্তম, হে ভৃতভাবন (যিনি প্রাণিগণের জন্মদাতা, তিনিই ভৃতভাবন) হে ভৃতেঈখর, হে দেবদেব, জগৎপতে, বে কারণে তৃমি দেবাদি সকল প্রাণীর প্রথম, সেই কারণেই তৃমি সেই আপনাকে আপনি বৃদ্ধিতে পার বে, তোমার জ্ঞান, ঐখর্য্য ও বল প্রভৃতি শক্তি অসীম, তৃমিই ঈখর॥ ১৫

বক্তুমর্হস্থাশেষেণ দিব্যা হাত্মবিভূতয়ঃ। যাভির্বিভূতিভিলে কানিমাংস্থং ব্যাপ্য তিষ্ঠদি॥ ১৬

অষ্যু ।

पः যাভির্বিভৃতিভিঃ ইমান্ লোকান্ ব্যাপ্য তিষ্ঠসি [তাঃ] দিব্যাঃ

শাদ্মবিভৃতয়ঃ (আত্মবিভৃতীঃ) অশেবেণ বক্তুমহসি ॥১৬

অসুবাদ। তুমি যে সকল বিভূতির দারা এই [পরিদ্খমান]লোক-সম্হকে ব্যাপিয়া অবস্থান করিয়াছ, সেই সকল দিব্য বিভূতি কি প্রকার, তাহা [আমাকে] সম্পূর্ণভাবে বল॥ ১৬

ভাষ্য। বক্তুমিতি। বক্তু: কথরিত্মর্হসি অশেষেণ দিব্যা হাত্মবিভূত্র:

আত্মনো বিভূতরো যাতাঃ বক্তুমুহসি। বাভিবিভূতিভিরাত্মনো মাহাত্মবিতারৈ-রিমান্ লোকান্তং ব্যাপ্য ভিঠসি ॥১৬

আনন্দ গিরিটীকা। বন্ধানশাদৃশামগোচরন্তবাত্মা জিজাসিতশ্চ ভন্মাৎ ঘরৈৰ তজ্ঞপং বক্তব্যমিত্যাহ—বক্তবুমিতি। দিব্যমপ্রাক্তবন্। সংপ্রত্যবন্ধনাচঠে—আজুনইতি। বক্তব্যা বিভৃতীবিশিনষ্টি—হাভিরিতি। বন্ধারা লোকান্ পুরবিদা বর্তমে তা বিভৃতীরশেষেণ বক্তব্যহিনীত্যর্থ: ॥১৬

অনুবাদ। বকুন ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। বে সকল নিল "বিতৃতি" ও মাহাত্ম-বিস্তার দারা তুমি এই সকল লোককে ব্যাপিরা অবস্থিত রহিরাছ, সেই সকল "দিব্য" অপ্রাকৃত আত্মবিভৃতি (অর্থাৎ) নিজের বিভৃতি বলিতে তুমিই একমাত্র যোগ্য হও॥১৬

> কথং বিভামহং যোগিন্ ছাং সদা পরিচিন্তয়ন্। কেষু কেষু চ ভাবেষু চিন্ত্যোহসি ভগবন্ ময়া ॥১৭

আন্তর্ম । হে বোগিন্ সদা পরিচিন্তরন্ [আহং] ছাং কথং বিভাস্ ? হে ভগবন্ কেয়্ কেমু ভাবেয়ু মরা ছং চিন্তো। ২সি চ ॥১৭

অনুবাদ। হে যোগিন, সর্বাদা কি প্রকারে চিন্তা করিলে আমি তোমাকে জানিতে পারিব ? হে ভগবন, কোন্ কোন্ বস্তুতে আমি তোমার ধ্যান করিব ? ১৭

ভাষ্য। কথমিতি। কথং বিজ্ঞাং বিজ্ঞানীয়াম্ অহং হে বোগিন্ ছাং সদা পরিচিন্তরন্। কেবু কেবু চ ভাবেরু বস্তব্ চিন্ত্যোহসি বেরাছসি ভগবন্ ময়া॥ ১৭

আনন্দ্রিট্রিকা। কিমর্থং বিভূতী: শ্রোত্মিছতীত্যাশন্থ ধ্যানসৌকর্ব্যপ্রকারপ্রশ্নেন ফলং কথয়তি — ক্রথমিতি। বোগো নামেশ্বরং তদন্তাতীতি
বোগা তম্ম সম্ব্রেন, হে বোগিয়হং স্থবিষ্ঠমতিস্থাং কেন প্রকারেণ সততমমুসন্দ্রধানো
বিশুদ্ধবৃদ্ধিভূপা নিরুপাধিকং স্থাং বিজ্ঞানীয়ামিতি প্রশ্নঃ। প্রশ্নাস্তরং প্রত্যোতি—
ক্রেয়ু ক্রেম্নিভি [চেতনাচেতনভেদাত্বপাধিবহুসাচ্চ বহুবচনম্॥১৭

অনুবাদ। কথমিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। কি প্রকারে হে বোগিন, সর্বাদ চিন্তা করিতে করিতে আমি তোমাকে বিশেবরূপে অবগত হইতে পারিব? কোন্ তোবে অর্থাৎ বস্তুতে হে ভগবন, আমি ভোমাকে চিন্তা করিব অর্থাৎ ধ্যান করিব ? ১৭

বিস্তরেণাশ্বনো যোগং বিস্তৃতিঞ্চ জনার্দ্দন। স্থাঃ কথয় তৃপ্তির্হি শৃণুতো নাস্তি মেহমৃতম্ ॥১৮

আত্ময়। হে জনার্দন, আত্মনো বোগং বিভূতিং চ বিস্তরেণ ভূরঃ কথর; হি (বক্তঃ) অমৃতং শুগুতো মে ভৃত্তিনান্তি ॥১৮

অসুবাদ। হে জনার্দন, তুমি পুনর্কার বিস্তীর্ণভাবে নিজের যোগ ও বিভূতি বর্ণন কর; কারণ, [ভোমার মুধ হইতে নি:স্ত বাক্যরূপ] অমৃত পান করিরা আমি এখনও তৃপ্তিলাভ করিতে পারিতেছি না ॥১৮

ভাষ্য । বিশ্বরেণেতি। বিশ্বরেণ আত্মনো বোগং বোগৈখর্যাশক্তিবিশেবং বিভৃতিক বিশ্বরং ধ্যেরপদার্থানাং হে জনার্দন অর্দতের্গতিকর্প্রণো রূপম্। অস্থ্যাগাং দেব প্রতিপক্ষভূতানাং জনানাং নরকাদিগময়িতৃত্বাজ্ঞনার্দন। অভ্যুদর-নিঃশ্রেরসপুক্রবার্থপ্ররোজনং সর্বৈর্জ নৈর্যাচ্যতে ইতি বা। ভূরঃ পূর্বমুক্তমণি কথয়, তৃপ্তিই পরিতোবো বসাং নান্তি মে শুণুতত্বমুখনিঃস্ভবাব্যামৃতম্॥ ১৮

আনন্দ্রিটীকা। প্রকৃতপ্রশ্নপুসংহরতি— বিস্তরেণেতি। অদতি
গতিকর্মণা জনার্দনেতি রূপং তদ্ব্যুৎপাদরতি—অন্ত্রাণামিতি। প্রকারান্তরেণ
শবার্থং ব্যুৎপাদরতি—অভ্যুদ্যেতি। নম্ন পূর্বনেব সপ্রমে নবমে চ বিতৃতিরৈশ্ব্যঞ্জেশবক্ত দর্শিতং তৎকিমিতি প্রোভূমিব্যতে ভত্তাহ—ভূমু ইতি।
অমৃতমমৃতপ্রধ্যমিত্যর্থ: ॥১৮

অকুবাদ। বিভারেণ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। বিভারের সহিত ভোমার
নিজের "বোগ" বোগৈর্ব্যাশক্তিবিশেব এবং বিভূতি (অর্থাৎ) ধ্যের বস্তুনিবহের
বিত্তর আধিকা "ভূরঃ" একবার পূর্বে বলা হইলেও পুনর্বার বল, হে জনার্দন!
(গতিকর্ম্মক অর্দ্দ ধাতু হইতে অর্দন এইরপ্টি-নিশার হইরাছে) জনগণের
(অর্থাৎ) দেবশক্র অস্ত্রগণের নরকাদিলোকপ্রাপ্তির পক্ষে কারণ বলিরা [ভিনি]
জনার্দ্দন নামে অভিহিত হইরা থাকেন; এই জক্তও তাঁহাকে জনার্দন বলা
বাইতে পারে। বে কারণ তোমার মুথ হইতে নির্গত বাক্যরূপ অমৃত পান
করিরা আমার [এক্ষণণ্ড] "ভূপ্তি" পরিতোব হর নাই॥১৮

গ্রীভগবাসুবাচ।

হন্ত তে কথরিষ্যামি দিব্যা হাত্মবিভূতরঃ। প্রাধাষ্যতঃ কুরুশ্রেষ্ঠ নাস্ত্যন্তো বিস্তরস্থ মে ॥১৯ অব্য়। এভগবান্ উবাচ—হস্ত হে কুক্সপ্রেষ্ঠ, তে দিব্যা: আত্মবিভূতর: (আত্মবিভূতী:) প্রাধান্ত : কণরিষ্যামি। হি (বত:) মে বিশুরত (বিভূতিবিশুরত) অস্তো নাস্তি ॥১৯

অমুবাদ। এজগবান কহিলেন, হে কুকশ্রেষ্ঠ। আমার দিব্য আত্ম-বিভূতিসমূহের মধ্যে ষেগুলি প্রধান, সেইগুলি ভোমাকে বলিব; কারণ, আমার বিভূতির বিস্তার অনস্ত ॥১৯

ভাষ্য। হস্ত তে ইত্যাদি। হস্তেদানীং তে দিবি ভবা: দিব্যা আজ্ব-বিভূতর: আজ্বনো মম যা বিভূতর: তা: কণরিব্যামি ইত্যেতং। প্রাধান্ততো বত্ত বত্ত প্রধানা যা যা বিভূতিস্তাং তাং প্রধানাং প্রাধান্ততঃ কণরিব্যাম্যহং কুক্সপ্রেষ্ঠ। অশেষতত্ত্ব বর্ষশতেনাপি ন শক্যা বজুম্। যতো নাস্ত্যস্তো বিশ্বরক্ত মে মম বিভূতীনামিত্যর্থ: ॥>>

আনন্দগিরিটীকা। প্রষ্টারং বিশ্রম্ভরিতৃং ভগবাহকবানিতাহ—
শ্রীভগবানিতি। হস্তেতামুমতিং ব্যাবর্ত্ত্য বিজ্ঞাসাবিদ্ধিরং কালং দর্শরতি—
ইদানীমিতি। দিবি ভবন্ধপ্রাক্তত্ত্বমন্দগোচরন্ধং বাক্যাবরং ভোতরতি—
যাস্তা ইতি। সর্ববিভূতীনাং বক্তব্যবপ্রাপ্তাবৃক্তব্য—যুত্ত্রেতি। কিমিন্ডানবশ্বেতো বিভূতরো নোচ্যন্তে তত্ত্রাহ—অশেষত্তিম্বৃত্তি। তত্ত্ব বেদৃং—
যত ইতি ॥>>

অনুবাদ। হস্ত তে ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। হস্ত এইটি (হর্ষস্চক অব্যর) একণে তোমাকে "দিব্য" (স্বর্গীর) আত্মবিভূতি অর্থাৎ আমার নিজের বিভূতি বলিতেছি, ইহাই তাংপর্য। "প্রাধান্ততঃ" অর্থাৎ বেখানে বেখানে আমার বে বে প্রধান বিভূতি আছে, সেই সেই প্রধান বিভূতিই প্রাধান্ততঃ নির্দেশ করিব। আমার বত কিছু বিভূতি আছে, তাহা শত বর্ধ বলিরাও শেষ করা বার না। কারণ, আমার বিভূতির-বিস্তারের অস্ত নাই। ইহাই অর্থ ১১৯ শ

অহমাত্মা গুড়াকেশ সর্ব্বভূতাশয়স্থিতঃ। অহমাদিশ্চ মধ্যঞ্চ ভূতানামস্ত এব চ॥২০

আনুয়। বেঁ গুড়াকেশ! (বিতনিজ!) অবং সর্বভূতাশয়ন্থিতঃ আত্মা, অবন্ এব ভূতানাম আদিশ্চ মধ্যঞ্জ অস্তুশ্চ ॥২ •

অনুবাদ। হে জিতনিত্র ! আমি সকল প্রাণীর ক্ষরমধ্যে অবস্থিত আছা, আমিই সকল ভূতের আদি, মধ্য এবং অস্ত ॥২• ভাষ্য। তত্র প্রথমমের তাবচ্ছ গু। অহমান্মা গুড়াকেশ গুড়াকা নিদ্র।
তত্তা ঈশঃ গুড়াকেশঃ জিতনিদ্র ইন্ডার্থ:। ঘনকেশ ইতি বা। সর্বের্ধার্থ
ভাবের চিস্তোহ্যান্থ শক্যঃ বন্দাদ্বমের আদিভূতানাং কারণং তথা
মধ্যক হিতিরগুঃ প্রবন্ধ ॥২০

আনন্দ গিরিটীকা। বিভৃতিপ্রদর্শনে প্রস্তুতে সত্যাদাবেব পারমার্থিকং পারমেশবং রূপং দর্শরিত্বং শ্রোত্বর্জ্নত মনঃসমাধানার্থং বততে—তৃত্রেতি। সোপাধিকমপি কারনিকং পরত্ত রূপং পশ্চাদ্বক্যমাণং শ্রোত্বং চিত্তসমাধানঞ্চ কর্ত্বসমেবেত্যান—তাবদিতি। আন্দেরতেহন্মিন্ বিভাকর্মপূর্বপ্রজ্ঞা ইত্যাশরো হৃদরং সর্ব্বেষা ভ্রতানাং হৃদরে অস্তঃস্থিতো যঃ প্রত্যাগায়া সোহহমেবেতি বাক্যার্থনাহ—স্ক্রেষামিতি। বন্ধ মন্দো মধ্যমো বা পরমান্ধানমান্মত্বেন ধ্যাত্বং নালং তং প্রত্যাহ—তদশক্তেনেতি। বক্ষ্যমাণাদিত্যাদির্ পরত্ত ন ধ্যেরত্বমন্তদেব কারণং কিঞ্জিৎ তত্ত্ব তত্ত্ব ধ্যেরমিত্যাশক্ষ্যাহ—যুদ্মাদিতি। সর্ব্বারণ্ডেন্তান্দির্বার্থক্রতেত্যর্থঃ ॥> •

অসুবাদ। তাহার মধ্যে প্রথমেই সম্পূর্ণভাবে গুন। হে 'গুড়াকেশ' গুড়াকা [শব্দের অর্থ] নিদ্রা—তাহার ঈশ অর্থাৎ জিতনিদ্র অথবা [গুড়াকেশ শব্দের অর্থ] ঘনকেশ। আমি আত্মসকলের আত্মা (অর্থাৎ পরবন্ধ) [সেই আত্মার কি স্বরূপ?] সকল প্রাণীর আশরে (অর্থাৎ) অন্তর্জ দরে অবস্থিত। অর্থাৎ সর্বভূতের প্রত্যুগাত্মা,—এইরপেই আমার সর্বাদা ধ্যান করা উচিত। বে ব্যক্তি এই প্রকারে আমার ধ্যান করিতে অসমর্থ, দে বক্ষ্যমাণ বন্ধনিচরের মধ্যে নিজের প্রদায়সারে বে কোন একটিতে আমার ধ্যান করিবে; কারণ, আমিই সর্বভূতের 'আদি' কারণ 'মধ্য' স্থিতি এবঃ 'অন্ত' প্রশান্ধ ॥ ২০

আদিত্যানামহং বিষ্ণুর্জ্যোতিষাং রবিরংশুমান্। মরীচির্মরুতামন্মি নক্ষত্রাণামহং শশী॥ ২১

আৰ্য়। অহম্ আদিত্যানাং বিষ্ণু: [অস্মি] জ্যোতিষাম্ সংশুমান্ রবিঃ
[অসি] মকতাং মরীচিঃ [অসি] অহং নক্রাণাং শশী [অসি] ॥২১,

अकुर्वान । जानि पानन जानिकाशानत माथा निक् नामक जानिका।

ব্যোতিঃ অর্থাৎ প্রকাশক বস্তুনিচয়ের মধ্যে আমি রশিমান্ সূর্যা। মঙ্গুৎ এই নাবে প্রথিত দেবতাগণের মধ্যে আমি মরীচি। এবং আমিই নক্ষত্তানিবহের মধ্যে চক্ষ্র বিষয়মান আছি] ॥২১

ভাষ্য। এবং চ ধ্যেরোইহং— মাদিত্যানাং দাদশানাং বিষ্কৃত্র মি আদিত্যো-ইহং জ্যোতিষাং রবি: প্রকাশরিত গাম্ সংশুমান্ রশ্মিমান্। মরীচিন্মি মরুতাং মরুদ্দেবতাভেদানাম্ অসি। নক্ষ্যাগামহং শশী চক্রমা: ॥২১

আনন্দগিরিটীক। উক্তব্যানাশক্তেভ্যে ব্যস্তং বিভৃতিবোগমুপদিশতি — এবঞ্চিত। তত্র তত্র প্রধানত্বেন পরস্ত ধ্যেরত্বস্। এবংশন্দার্থনেব দর্শরিতি — আদিত্যানামিত্যাদিনা ॥২১

আমুবাদ। এই প্রকারে ধ্যান করিতে হইবে – দাদশ আদিত্যের নধ্যে আমি বিষ্ণু নামক আদিত্য। জ্যোতিঃ অর্থাৎ প্রকাশকারী পদার্থগণের মধ্যে আমি অংশুমান্ স্থা। মরুং এই নামে প্রসিদ্ধ দেবতাগণের মধ্যে আমি মরীচি। এবং নক্জনিচরের মধ্যে আমি চক্রমাঃ ॥২১

বেদানাং সামবেদোহস্মি দেবানামস্মি বাসবঃ। ইন্দ্রিয়াণাং মনশ্চাস্মি ভূতানামস্মি চেতনা॥২২

আন্ত্রয়। [भश्र] বেদানাং সামবেদঃ অন্ধি, দেবানাং বাসবঃ অন্ধি। ইন্দ্রিয়াগাং চ মনঃ অন্ধি, ভূতানাং চেতনা অন্ধি॥ ২১

আকুবাদ। আমি চারি বেদের মধ্যে সামবেদ; দেবসমূহের মধ্যে ইক্স; ইক্সিয়গণের মধ্যে অন্তঃকরণ এবং প্রাণিগণের মধ্যে চেতনা [স্বরূপে বিশ্বমান] রহিরাছি॥ ২২

ভাষ্য। বেদানামিতি। বেদানাং মধ্যে সামবেদোংশি। দেবানাং কল্যাদিত্যাদানাং বাসব ইচ্ছোংশি। ইচ্ছিয়াণাম্ একাদশানাং চক্রাদীনাং সঙ্কর-বিকল্পাঞ্চকং মন্শ্চাশি। ভূতানাম্ সন্মি চেতনা কার্যকরণসজ্বাতে নিত্যাভিব্যক্তা বৃদ্ধিবৃত্তিশেতকা ॥২২

আনন্দর্গিরিটীকা। মন্ত্রান্ধণসমুদায়ানামুগাদীনাং মধ্যে সামবেদোশীতি ধ্যানান্তরমুদাহরতি—বেদানামিতি। সংঘাতে জীবাধিষ্ঠতে বাবৎ পঞ্চম্বং সর্ব্বে ব্যাপিনী হৈতক্তাভিব্যঞ্জিকতি শেষঃ ॥২২

अक्रूवाम । द्वनानाम् रेजामि शादकत वर्ष। हातिष्ट द्वरमत्र मरश्य व्याम

সামবেদ। দেবগণের অর্থাৎ রুজ ও আদিত্যাদির মধ্যে আমি "বাসব" ইক্স।
ইক্সিরগণের অর্থাৎ চক্ষু: কর্ণ প্রভৃতি একাদশ ইক্সিরগণের মধ্যে আমি
মন। যে অন্তঃকরণে সংকর ও বিকর নামে বৃত্তিদর উৎপর হর, সেই অন্তঃকরণকে
'মন' কহে, আমি সেই মন। ভূতগণের মধ্যে আমি চেতনা। এই কার্যা
ও করণের সভ্যাতরগদেহে নিত্য অভিব্যক্ত বৃদ্ধিবৃত্তিই চেতনা [শক্সের
প্রতিপাছা]। [এই দেহের মধ্যে আমিই সেই চেতনারণে আছি]॥২২

রুদ্রাণাং শঙ্করশ্চাস্মি বিভেশো যক্ষরক্ষসাম্। বসুনাং পাবকশ্চাস্মি মেরুঃ শিখরিণামহম্॥২৩

অনুয়। রুদ্রাণাং চ শঙ্কর: অসি, ধক্ষরক্ষাং বিত্তেশঃ [অসি], বস্থনাং পাবকঃ [অসি], অহং শিধরিণাং মেরুঃ [অস্মি] ॥২৩

অনুবাদ। আমি একাদশ রুদ্রের মধ্যে শঙ্কর। যক্ষও রাক্ষসগণের মধ্যে কুবের। বস্থগণের মধ্যে পাবক এবং পর্বতগণের মধ্যে স্থমের ॥২৩

ি ভাষ্য । রুদ্রাণামিতি। রুদ্রাণামেকাদশানাং শ্বরুন্চাম্মি। বিব্রেশঃ কুবেরঃ যুদ্রর্ক্ষসাং যুক্ষাণাং রক্ষ্মাং চ। বস্থনামন্তানাং পাবকশ্চাম্মি অগ্নিঃ। মেরুঃ শিশ্ববিণাং শিশ্ববতামহম্॥২৩

আনন্দগিরিটীকা। • ॥২৩

অ্কুবাদ। রুদ্রাণাম্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। একাদশ রুদ্রের মধ্যে আমি শহর। যক্ষ ও রক্ষোগণের মধ্যে আমি বিত্তেশ (কুবের)। অষ্ট বস্থুর মধ্যে আমি পাবক (অন্নি) এবং উচ্চশৃঙ্গযুক্ত পর্বতিগণের মধ্যে আমি স্থমের ॥২৩

> পুরোধসাঞ্চ মুখ্যং মাং বিদ্ধি পার্থ রহস্পতিম্। সেনানীনামহং কলঃ সরসামন্মি সাগরঃ ॥২৪

অন্তব্ম । হে পার্থ মাং পুরোধসাং মুধ্যং বৃহস্পতিং বিদ্ধি। সেনানীনামহং ক্ষম: (কার্জিকেয়ে:) [অম্মি]; সরসাং [অহং] গাগর: অম্মি ॥১৪

আসুবাদ। হে পার্থ, আমাকে পুরোহিতগণের শ্রেষ্ঠ বৃহস্পতি জানিও। আমি সেনাপতিগণের মধ্যে কার্তিকেয় এবং জ্বাশরসমূহের মধ্যে সমুস্ত ॥২৪

ভাষ্য । প্রোধনামিতি। প্রোধনাং রাজপুরোহিতানাং মৃণ্যং প্রধানং মাং বিদ্ধি জানীহি হে পার্থ বৃহস্পতিম্। ব হি ইক্সভেতি মুধ্যঃ ভাৎ পুরোধাঃ। সেনানীনাং সেনাপতীনাম্ অহং ককঃ দেবসেনাপতিঃ। সরসাং বানি দেবপাতানি সরাংসি তেবাং সরসাং সাগরোহন্তি ভবামি ॥২৪

আনন্দরিটীকা। প্রোহিতের বহপতের্প্রদে হেতুমাহ—স হীতি 📭 🕏

অকুবাদ। প্রোধনামিত্যাদি শ্লোকের অর্থ। প্রোধাগণের (অর্থাৎ) রাজপুরোছিতগণের মধ্যে জামাকে "মুখ্য" প্রধান বৃহস্পতি বলিরা জানিবে। বৃহস্পতি ইজের পুরোছিত, এই কারণে প্রধান। সেনানী (অর্থাৎ) সেনাপতি-গণের মধ্যে জামি "স্কন্দ" দেবসেনাপতি। "সরঃ" অর্থাৎ যে সকল দেবখাত জলাশর আছে, তাহাদিগের মধ্যে জামি সাগর ॥২৪

মহর্ষীণাং ভৃগুরহং গিরামস্ম্যেকমক্ষরম্। যজ্ঞানাং জপযজ্ঞোহস্মি স্থাবরাণাং হিমালয়ঃ ॥২৫

. আর্যু । অহং মহর্বীণাং ভৃতঃ, গিরাম্ একমকরম্ অন্মি, বজানাং জপ-যজোহন্দি, স্থাবরাণাং হিমালরঃ জন্মি ॥২৫

অকুবাদ। আমি মহর্ষিগণের মধ্যে ভৃগু; পদসমূহের মধে। আমি এক অকর ওঁকার; যজ্ঞসমূহের মধ্যে আমি জপযজ্ঞ; স্থাবরগণের মধ্যে আমি হিমালর॥২৫

ভাষ্য। মহর্ষীণামিতি। মহর্ষীণাং ভৃগুরহং, গিরাং বাচাং পদলক্ষণানাম্ একমক্ষরম্ ও কারোহমি। বজ্ঞানাং জপবজ্ঞোহমি, স্থাবরাণাং স্থিতিমভাং হিমালয়ঃ ॥২৫

আনন্দ্রিটীকা। একমিত্যোদারশু ব্রশ্নপ্রতীক্ষেন তদভিধানদ্বেন চ
প্রধানত্বমূচ্যতে। জপষজ্ঞ যজ্ঞান্তরেভ্যো হিংসাদিরাহিত্যেন প্রাধান্তমূপেত্যাহ

—যজ্জানামিতি। শিধরবভামূদ্ধি তানাং পর্বতানাং মধ্যে মেক্বরহমিত্যুক্তে
২পি স্থিতিশীলানাং তেষামেব হিমবান্ পর্বতরাজোহন্দ্রীত্যর্থভেদং গৃহীদ্বাহ

—স্থিতিমৃতামিতি ॥ ২৫

অকুবাদ। মহর্বীণাষ্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। মহর্বিগণের মধ্যে আমি ভ্রু। "গীঃ" অর্থাৎ পদরূপ শব্দনিচরের মব্যে আমি "অক্ষর" প্রণব। বজ্ঞসমূহের মধ্যে আমি জপবজ্ঞ। "স্থাবর" স্থিতিমান্ পদার্থসমূহের মধ্যে আমি হিমালর॥২৫

অশ্বত্থঃ সর্ববন্ধনাণাং দেবর্ষীণাঞ্চ নারদঃ। গন্ধর্বাণাং চিত্ররথঃ সিদ্ধানাং কপিলো মুনিঃ॥ ২৬ আৰুর । [অহং] সর্ববৃক্ষাণাস্ অখথঃ, দেবর্বীণাং নারদঃ, প্রকাণাং চিত্রবথঃ, সিদ্ধানাং চ কপিলো মুনিঃ [অশ্বি] ॥ ২৬

অমুবাদ। আমি] সকল বুকের মধ্যে অখখ, দেববিগণের মধ্যে নারদ, গব্ধর্বগণের মধ্যে চিত্রবর্থ এবং সিদ্ধগণের মধ্যে কপিল নামে মুনি॥ : ♦

ভাষ্য। অখথ ইতি অখথ: সর্ববৃক্ষাণাং দেববীণাঞ্চ নারদ: দেবা এব সন্তঃ ঋবিদ্ধং প্রাপ্তা মন্ত্রদর্শিকাং তে দেবর্ধরঃ, তেবাং নারদোহত্মি। গর্ক্ষাণাং চিন্তরপ: নাম গন্ধকোহত্মি। সিদ্ধানাং জন্মনৈব ধর্মজ্ঞানবৈরাগৈয়খর্য্যাতিশরং প্রাপ্তানাং কপিলো মুনিঃ ॥ ২৬

আনন্দগিরিটীকা। শর্কর্কাণামিত্যত্র শর্কশব্দেন বনস্পত্রো-গৃহস্তে॥ ২৬

অনুবাদ। অখথ ইত্যানি লোকের অর্থ। সকল রক্ষের মধ্যে (আমি)
অখথ। দেবর্ষিগণের মধ্যে আমি নারদ; দেবতা হইরা বাহারা মন্ত্রদর্শন
করিরাছেন বলিয়া ঋষিত্ব লাভ করিরাছেন, তাঁহাদিগকে 'দেবর্ষি' কছে; সেই
দেবর্ষিগণের মধ্যে আমি নারদ [ইহাই তাৎপর্য্য]। গন্ধর্কগণের মধ্যে আমি
চিত্ররথ নামে গন্ধর্ক। সিদ্ধগণের [মধ্যে] আমি কণিল নামে প্রসিদ্ধ মুনি।
জন্ম হইতেই বাহারা ধর্ম, জ্ঞান, বৈরাগ্য ও এখর্য্যের অভিশর প্রাপ্ত হন, তাঁহাদিগকে 'সিদ্ধ' বলে॥ ২৬

উচ্চৈঃ শ্রবসমশ্বানাং বিদ্ধি মামমুতোদ্ভবম্। ঐরাবতং গজেন্দ্রাণাং নরাণাঞ্চ নরাধিপম্॥ ২৭

আন্ত্রম । অখানাং [মধ্যে] মাম্ অমূতোন্তবম্ উচ্চৈ:শ্রসং বিদি, গলেঞাণাম্ জরাবতং [বিদি] নরাণাঞ্চ নরাধিপম্ [বিদি] ॥: ৭

অকুবাদ। অখগণের মধ্যে আমাকে অমৃতনিমিত্ত সম্ক্রমন্থন-জাত উচ্চৈঃশ্রবা বলিরা জানিবে; গজেক্রগণের মধ্যে [আমাকে] ঐরাবত বলিরা জানিবে;
'মনুষ্যগণের মধ্যে আমাকে নরপতি বলিরা জানিবে॥২৭

ভাষ্য। উচৈচরিতি। উচৈচ:শ্রবসমখানাষ্ উচৈচ:শ্রবা নাম অখঃ তং মাং বিদ্ধি জানীহি অমৃতোদ্ভবম্ অমৃতনিমিন্তমথনোদ্ভবম্। ঐরাবতম্ ইরাবজ্যা অপভ্যং গজেন্তাগাং হতীখরাণাং তং মাং বিদ্ধি ইতি অমুবর্ততে। নরাণাং মন্ত্র্যাণাং চ নরাধিপর্বাজানং মাং বিদ্ধি জানীতি ॥২৭

- সানন্দগিরিটীকা। •॥ ২৭

আমুবাদ। উতৈ: ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। অখগণের মধ্যে আমাকে উতৈ: শ্রমা বলিরা জান; উতৈ: শ্রমা একটি অখ, ঐ অথ অমৃত লাভের কর বে সমর সমুদ্রমণন হর, সেই সমর আবিভূতি হইরাছিল। জামাকে সেই উতি: শ্রমা অথ বলিরা বুঝিবে [ইহাই তাৎপর্য্য]। গজেন্ত অর্থাৎ হতিশ্রেষ্ঠ-গণের মধ্যে আমাকে ঐরাবত বলিরা জানিবে। "জানিবে" এই পদটির অমুর্ত্তি হইতেছে। ইরাবতীর অপত্যকে 'ঐরাবত' কহে। "নর" অর্থাৎ মন্ত্র্যাগণের মধ্যে আমাকে "নরাধিপ" অর্থাৎ রাজা বলিরা জানিবে॥ ২৭

আয়ুধানামহং বজ্রং ধেনূনামন্মি কামধুক্। প্রজনশ্চান্মি কন্দর্পঃ দর্পাণামন্মি বাস্ত্রকিঃ॥ ২৮

আম্ব্য়। অংম্ আয়্ধানাং বক্তম্ [অমি]; ধেনুনাং কামধুক্ [অমি] প্রজনঃ কন্দর্পশ্চ [অমি] সর্পাণাং বাস্থকিঃ অমি ॥ ২৮

অকুবাদ। আমি অন্ত্রসমূহের মধ্যে বজ্ঞ, পরস্বিনী গাভীগণের মধ্যে কামধেহ, আমি লোকস্টির কারণ কলপ্, সর্পগণের মধ্যে আমিই বাস্ত্রকি ॥২৮

ভাষ্য । আয়্ধানামিতি। আয়্ধানাম্ অহং বজ্ঞং দধীচান্থিসম্ভবং, ধেন্নাং দোগ্ধীণাম্ অস্মি কামধুক্ বশিষ্ঠস্ভ, সর্বকামানাং দোগ্ধী, সামাস্তা বা কামধুক্। প্রজনঃ প্রজনয়িতা অস্মি কন্দর্পঃ কামঃ। সর্পাণাং সর্পভেদানাম্ অস্মি বাস্থকিঃ সর্পরাজঃ॥ ২৮

আনন্দগিরিটীকা। প্রজনয়তীতি বাংপত্তিমাশ্রিত্যাহ—প্রজনয়িত্তি। দর্শা নাগান্চ জাতিভেদাং ভিছন্তে॥ ২৮

অকুবাদ। আৰুধানাম্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "আয়্ধগণের" অন্তগণের মধ্যে আমি "বজ্র"; দধীচি নামক মুনির অন্থি হইতে উৎপন্ন [প্রাসিদ্ধ অন্থ-বিশেষ]। ধেমু অর্থাৎ প্রচুর হগ্ধবতী গাভীগণের মধ্যে আমি "কামধূক্" [ঐ নামে প্রসিদ্ধ] মহর্ষি বলিঠের ধেমু অথবা সাধারণ কামধেমু। আমি "প্রজন" উৎপত্তি হেতু "কলপ" কাম, এবং সর্পগণের অর্থাৎ সর্পবিশেষগণের মধ্যে আমি বাস্কৃকি সর্পরাজ। ২৮

অনস্তশ্চান্মি নাগানাং বরুণো যাদসামহম্। পিতৃণামর্য্যনা চান্মি যমঃ সংযমতামহম্॥ ২৯ অন্তর্য়। নাগানাং চ অনন্তঃ অস্ত্রি, বাদসাম্ অহং বরুণঃ [অস্ত্রি], পিভূণাম্ অধ্যমা চ অস্ত্রি, অহং সংবমতাং বমঃ [অস্ত্রি]।। ২৯

অনুবাদ। আমি নাগগণের মধ্যে অনস্ত; আমি জলচর প্রাণিগণের মধ্যে বঙ্গুণ; পিতৃগণের মধ্যে অর্থামা এবং লোকনিয়ন্তুগণের মধ্যে বম ॥২৯

ভাষ্য। অনন্ত ইতি। অনন্তশ্চামি নাগানাং নাগবিশেষাণাং নাগরাঞ-শ্চামি। বক্লণো বাদসামহম্ অব্দেবতানাং রাজাহম্। পিতৃণাম্ অর্থ্যমা নাম পিতৃরাজশ্চামি। বমঃ সংবমতাং সংব্যনং কুর্বতান্ অহম্॥২৯

আনন্দগিরিটীকা। ।॥ २৯

অকুবাদ। অনস্ত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। 'নাগ' অর্থাৎ নাগবিশেষ-গণের মধ্যে আমি 'অনস্ত' নাগরাজ। যাদঃ অর্থাৎ জলদেবতাগণের মধ্যে আমি বরুণ অর্থাৎ তাহাদের রাজা। পিতৃগণের মধ্যে আমি অর্য্যমা নামে পিতৃ-রাজ। "সংযমৎ" অর্থাৎ লোকনির্ভাদিগের মধ্যে আমি যম॥ ২৯

> প্রহুলাদশ্চান্মি দৈত্যানাং কালঃ কলয়তামহম্। মুগাণাঞ্চ মুগোন্দোহহং বৈনতেয়শ্চ পক্ষিণাম্॥ ৩০

অন্তব্য়। দৈত্যানাং চ প্রহলাদ: অমি। অহং কলয়তাং কালোহমি। অহং স্গাণাঞ্চ মৃগেন্দ্র:, পক্ষিণাঞ্চ বৈনতেয়: (গরুড়ঃ) [অমি] ॥৩০

আকুবাদ। আমি দৈত্যগণের মধ্যে প্রহলাদ; হননকারিগণের মধ্যে আমি কাল; মৃগগণের মধ্যে আমি মৃগেক্ত এবং পক্ষিগণের মধ্যে আমি গরুড়।।০০

ভাষ্য। প্রহলাদ ইতি। প্রহলাদো নাম চাম্মি দৈত্যানাং দিভিবংখানাং কাল: কলয়তাং কলনং গণনং কুর্বতামহং, মৃগাণাঞ্চ মৃগেল্ড: সিংহো ব্যাঘোষা অহম, বৈনতেরশ্চ গরুষান্ বিনতাস্থতঃ পক্ষিণাং পত্রিণাম্॥ ৩•

जानमिशिविणिका। ।॥ ०।

আকুবাদ। প্রহলাদ ইত্যাদি স্নোকের অর্থ। ''দৈত্য" অর্থাৎ দিতি-ব্ংশীরগণের মধ্যে আমি প্রহলাদ। ''কলরং'' অর্থাৎ গণনকারিগণের মধ্যে আমি ''কাল''। মৃগগণের মধ্যে ''মৃগেক্স'' সিংহ কিংবা ব্যান্ত। ''পক্ষী'' পতজ্ঞি-গণের মধ্যে আমি বৈনভের (অর্থাৎ) বিনতার পুত্র গরুড়॥ ৩•

> ্পবনঃ পবতামন্মি রামঃ শদ্রভৃতামহম্। ব্যাণাং মকরশ্চান্মি স্রোতসামন্মি জ্বাহ্নবী॥৩১

আরয়। অহং প্রতাং প্রন: অস্মি, শস্ত্রভাং রামোহস্থি, ঝ্রাণাং চ মক-রোহস্মি, স্রোতসাং জাহ্নী অস্মি॥ ৩১

অনুবাদ। অ্যাম পবিত্রতাকারিগণের মধ্যে পবন; শরধারিগণের মধ্যে আমি রাম; মৎস্তগণের মধ্যে আমি মকর; নদীগণের মধ্যে আমি গঙ্গা॥ ৩১

ভাষ্য । পৰন ইতি। প্ৰনো বাৰু: প্ৰতাং পাৰ্ষিত্ণাম্ অন্ধি, রামঃ
শস্ত্তাং শস্ত্ৰাণাং ধার্মিত্ণাং দাশর্থী রামোহ্ছন্; ঝ্ৰাণাং মংক্তাদীনাং মধ্যে
মকরঃ নাম জাতিবিশেষঃ মহম্। স্ত্ৰোত্ৰাং স্ৰবস্তীনাম্ সন্ধি জাহ্নী গলা॥ ৩১

আনন্দগিরিটীকা • ॥ ৩১

অনুবাদ। পবন ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। পবৎ (অর্থাৎ) পবিত্রতাকারী, তাহাদের মধ্যে আমি "পবন" বায়ু; "শস্ত্রভূৎ" অর্থাৎ বাহারা শাস্ত্রধারণ করে, তাহাদিগের মধ্যে আমি রাম দশরথের পূত্র। "ঝব" অর্থাৎ মৎস্তাদি জনচর জীবগণের মধ্যে আমি "মকর" [জনচর জাতিবিশেব]; "স্রোতঃ" [শক্ষের অর্থ] নদী, সেই নদীগণের মধ্যে আমি "জাফ্বী" অর্থাৎ গঙ্গা॥ ৩১

সর্গাণামাদিরস্তশ্চ মধ্যং চৈবাহমর্জ্ন। অধ্যান্তবিভা বিভানাং বাদঃ প্রবদতামহম্॥ ৩২

আর্য়। হে অর্কুন! অহম্ এব সর্গাণাম্ আদি: মধ্যম্ অস্ত ; [আহং] বিভানাম্ আধ্যাত্মবিভা, অহং প্রবদতাং বাদ: [চ অত্মি]॥ ৩২

অনুবাদ। আমিই এই স্টবস্তগণের আদি মধ্য এবং আন্ত: আমি বিভা সমূহের মধ্যে ব্রহ্মবিভা; আমি বাদিগণের [ত্তিবিধ কথার মধ্যে] বাদ [নামে প্রসিদ্ধ কথাবিশেষ] ! ৩২

ভাষ্য । দর্গাণামিতি। স্থানামাদিরস্তক্ষ মধ্যকৈবাহন্ৎপতিস্থিতিবিলরা অহমর্জুন। তৃতানাং জীবাধিষ্ঠিতানাম্ এব আদিরস্তক্ষ ইত্যাগ্যকর্পক্ষমে ইহ তু দর্গমাত্রকৈব ইতি বিশেষ:। আখ্যাত্মবিদ্ধা বিদ্ধানাং মোকার্যভাং প্রধানমন্ত্রি। বালোহর্থনির্গ্রহত্ত্বাং প্রবদ্ভাং প্রধানম্ অতঃ দোহহমন্ত্রি প্রবক্ষারেণ বদনভোদান্মেব বাদক্ষবিত্তানামিহ গ্রহণং প্রবদ্ভামিতি ॥ ৩২

আনন্দণিরিটীকা। অহমাদিশেচত্যাদাবুক্তমেব প্রনরিহোচ্যতে তথাচ প্রক্ষিরিত্যাশব্যাহ—ভূতানামিতি। সর্গশব্দেন স্বাস্ত ইতি সর্বাণি কার্ব্যাণি বৃহত্তে।—অধ্যাভাবিত্যেতি। আত্মন্তত্তঃকরণপরিণতিরবিদ্যানিবাহিকা গৃহীতা। প্রবদতাং সম্বন্ধী বাদো বীতরাগকণা তম্বনির্ণয়াবসানা। যদা প্রবদতামিতি লক্ষণয়া কথাভেদোপাদানং তদা নির্দ্ধারণে যম্ভাত্যাহ—প্রবক্তি তি॥ ৩২

অকুবাদ। সর্গাণামিত্যাদি স্নোকের অর্থ। স্বাধ সমূহের আমিই আদি মধ্য ও অন্ত (অর্থাৎ) আমিই উৎপত্তি স্থিতি ও প্রলম। হে অর্জুন। এই অধ্যায়ের প্রারয়ে আদি ও অন্ত আমিই ইই,—এইরপ যে বলা ইইরাছে, তাহার তাৎপর্যা এই যে, আমি জীবাধিষ্ঠিত ভূতনিবহের আদি ও অন্ত। এথানে কিন্ত সকল পদার্থেরই আদি ও অন্ত ভগবান, ইহাই সামান্তাকারে বলা ইইল [এই বিশেষ]। সকল বিদ্যার মধ্যে আমি অধ্যাত্মবিদ্যা [কারণ] মোক্ষহেতৃ। এই জন্ত ঐ বিদ্যাই অন্ত নানাপ্রকার বিদ্যা ইইতে শ্রেষ্ঠ। বাগ্মিগণের নিকটে আমি বাদ কথা (অর্থাৎ) জন্ধ বিভণ্ডা ও বাদ এই তিনভাগে বিভক্ত কথার মধ্যে পদার্থনির্ণয় বাদ-কথাতেই হয়; এই জন্ত ঐ ত্রিবিণ কথার মধ্যে বাদকথাই প্রধান; এই কারণ আমিই সেই বাদ-কথা। যদিচ এই স্নোকে বক্তা-দিগেরই নাম উল্লিখিত হইরাছে, তথাপি এই স্থানে বক্তাকে ছারত্বরপ করিয়া বদন অর্থাৎ বাদ জন্ধ ও বিভণ্ডা-নামক কথাত্রয়েরই গ্রহণ করা হইন্নছে অর্থাৎ শ্রাগ্মিগণের মধ্যে। এই বাক্যটির অর্থ এইরূপ করিতে ইইবে যে, বাগ্মিগণের ত্রিবিণ কথার মধ্যে॥ ৩২

অক্ষরাণামকারোহস্মি দ্বন্ধঃ সামাসিকস্ত চ। অহমেবাক্ষয়ঃ কালো ধাতাহহং বিশ্বতোমুখঃ॥ ৩৩

অন্ত্র্য়। [অহম্] অকরাণাম্ অকারোহন্মি; সামাসিকত বলোহন্মি; অহমের অক্যঃ কালোহন্মি; অহং বিশ্বতোমুধঃ ধাতাহন্মি॥৩৩

অনুস্বাদ। আমি অক্ষরগণের মধ্যে অকার; সমাসগণের মধ্যে ছন্দ সমাস। স্মামিই অক্ষয় কাল; আমিই বিশ্বতোমুখ ধাতা॥ ৩৩

ভাষ্য । অক্ষরাণামিতি। অক্ষরাণাং বর্ণানাম্ অকারো বর্ণোহস্থি, দল্লেহস্থি সামাসিকত সমাসসমূহত। কিঞ্চ অহমেব অক্ষয়ঃ অক্ষীণঃ কালঃ প্রসিদ্ধঃ কণাভাগ্যঃ অথবা পরমেশ্বরঃ কাল্ডাপি কালঃ অস্থি। ধাতাহহং কর্ম্মকলত বিধাতা সর্বজ্ঞগতো বিশ্বতোমুখঃ সর্ব্বতোমুখঃ ॥ ৩৩

আনন্দগিরিটীকা। । ॥ ৩৩

'অকুবাদ। অকরাণাষ্ ইত্যাদি রোকের অর্থ। "অকর" বর্ণসংগ্র নিষ্টে অকারনামে বর্ণ আমি। "সামাসিক" সমাস্যসূত্রে মধ্যে আমি, ভুলু সমাস। জারও আমি "অক্ষর" অফীণ কাল, ফণাদিরপে প্রাসিদ্ধ কাল [এইছলে কালণক্ষের অর্থ]; অথবা [এথানে কালণক্ষের অর্থ] কালেরও কাল পরনেখর। জামি "ধাতা" সর্ক্ষণতের কর্মফলের বিধাতা 'বিখতোমুথ'' সর্ক্তোমুথ ॥ ৩৩

> মৃত্যুঃ সর্বহরশ্চাহম্ উদ্ভবশ্চ ভবিষ্যতাম্। কীর্ত্তিঃ শ্রীবাক্ চ নারীণাং স্মৃতিমেধা ধৃতিঃ ক্ষমা॥ ৩৪

আহ্বয়। অহং সর্কহরঃ মৃত্যুঃ; ভবিষ্যতাঞ্চ উদ্ভবঃ; [তথা] নারীণাং কীর্ষ্টি: ঞ্জী: বাক স্থতি: মেধা ধৃতি: ক্ষমা চ।। ৩৪

অকুবাদ। আনি সর্কাহর মৃত্যু। আনি ভবিষ্যুদ্বস্তুগণের উদ্ভব; আনিই নারীগণের কীর্ত্তি, শ্রী, বাক্, স্থৃতি, মেধা, ধৃতি ও ক্ষমা॥ ৩৪

ভাষ্য। মৃত্যুঃ দ্বিবিধঃ ধনাদিহরঃ প্রাণহরণ্ট সর্কহর উচাকে সোহহমিতার্থঃ। দ্বগবা পর ঈখরঃ প্রলয়ে সর্কহরণাৎ সর্কহরঃ সোহহম্। উত্তব উৎকর্ম: জনুদারঃ তৎপ্রাপ্তিহেতুশ্চাহম্। কেবাম্ ? ভবিষ্যতাং ভাবিকল্যাণানা-মুৎকর্মপ্রিযোগ্যানামিতার্থঃ। কীর্ত্তিঃ শ্রীবর্ষিক্ চ নারীণাং স্থৃতিঃ ক্ষমা ইভ্যেতা উত্তমাঃ জ্রীণামহমিশ্রি বাসানাভাসমাত্রসম্বন্ধেনাপি লোকঃ ক্ষতার্থমান্থানং মন্ত্রতে॥ ৩৪

আনন্দ গিরিটীকা। সর্বাহরশক্ষ মৃথ্যমর্থান্তরমাহ— অথবেতি। ভাবিক্ল্যাণানামিত্যক্ষমেব স্পষ্টয়তি—উৎ কর্ষেতি। কীত্রিধার্শ্বিক্ষনিমন্ত্রখাতি: আনন্দী: কান্তি: শোভা বাক্ বাণী সর্বাহ্য প্রকাশিকা, স্বভিশ্বিরামূভূত-শ্বরণশক্তি:, মেধা গ্রন্থখারণশক্তি:, ধৃতিধৈ ব্যম্ ক্ষমা মানাপমানয়ায়বিক্লভচিত্রভা ৷ ত্রীমু কীত্রাদীনামূত্রমন্থ মুপপাদয়তি ៖—হালামিতি। ॥ ৩৪

অফুবাদ। মৃত্য ছই প্রকার [প্রথম যে ব্যক্তি] ধনাদি হরণ করে [বিতীয় যে ব্যক্তি] প্রাণ হরণ করে [তাহাকেও মৃত্যু কহা যায়]; স্থতরাং বে মৃত্যু সর্বহের বলিয়া কীর্ত্তিত হয়, আমি সেই মৃত্যু। মধবা আমি সেই পরম ঈশরস্বরপে প্রলয়কালে সমুদর হরণ করি বলিয়া, সেই সর্বহের মৃত্যু আমিই। "উত্তব" [এই শক্তির অর্থ] উৎকর্ষ অর্থাৎ অভ্যাদয় এবং তাহার প্রাপ্তির কারণ, "ভবিষাৎ" যাহারা কল্যাণাম্পদ হইয়া উৎপন্ন হইবে, অর্থাৎ বাহারা উৎকর্ষ-প্রাপ্তির বোগা, তাহাদের [আমি উৎকর্ষ]। আমি নারীগণের কীন্তি, বাক্, ক্রি, ব্রতি, মেধা, ধৃতি ও ক্ষমা এই কয়িট উত্তম দ্রীস্থভাব [-রূপে বিরাজ্যান

 ^{* &}quot;কীর্ত্তাদীনামুক্তবমুগগাদরতি" ইঙি কৃচিৎ দৃশতে।

সাছি] যাঁহাদিগের মাভ:সরূপ সম্বন্ধ লাভ করিলেও লোক আপনাকৈ কুতার্থ বোধ করিয়া থাকে॥ ১৪

র্হৎসাম তথা সাম্নাং গায়ত্রী চ্ছন্দসামহম্। মাসানাং মার্গশীর্ষো২হম্ ঋতূনাং কুস্থমাকরঃ॥ ৩৫

আনুর্ । তথা সামাং বৃহংসাম [অস্মি]; ছন্দসাং গারত্রী (অস্মি)। অহং মাসানাং মার্গনীর্ব: [অস্মি]। পাতৃনাং কুসুমাকর: [অস্মি]॥ ৩৫

অনুবাদ। আরও আমি সামগানের মধ্যে রহৎসামনামক প্রধান সামগান। ছন্দঃসম্ভের মধ্যে আমি গারজী,ছন্দঃ। মাসনিবছের মধ্যে আমি মার্গনীয়। আমি ঋতুছয়টির মধ্যে কুসুমাকর (বসস্ত)॥ ৩৫

ভাষ্য) বৃহৎসামেতি—বৃহৎসাম তথা সায়াং প্রধানমন্মি। গায়ত্রী ছন্দসাং গায়ত্র্যাদিছেন্দোবিশিষ্ঠানাম্ ঋচাং গায়ত্রী ৠক্ অহম্ ইত্যর্থঃ। মাসানাং মার্গশীর্ষোহ্যম্ ঋতৃনাং কুসমাকরো বসস্তঃ।।৩৫

আনন্দগিরিটীকা। বেদানাং সামবেদাহন্দী হ্লাক্তং তন্ত্রাবাস্থরবিশেষনাই

 নুহদিতি। ছন্দসাং সধ্যে গায়ন্ত্রী নাম বচ্চন্দস্তদহিমিত্যযুক্তম্। ছন্দসামূগ্ভোগিতিরেকেণ স্বরূপাভাবাদিত্যাশক্ষাই—গায়ন্ত্রাদ্বীতি। বিজ্ঞাতের্দিতীয়জন্মজননীত্বাদিত্যর্থ:। মার্গনীর্বো মুগনীর্বেণ যুক্তা পৌর্ণমান্তন্মিরিতি মার্গনীর্বো
মাস: সোহহং প্রশ্ভাভবাদিত্যাই—মাসানামিতি। বসক্তো রম্ণীর্ম্বাদিতি
শেষ:। ৩৫

অনুবাদ। — রহৎদাম ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। সামগানসমূহের মধ্যে প্রধান রহৎদাম নামক গান—আমিই। ছলঃসমূহের মধ্যে আমি গারত্রী (অর্থাৎ) গারত্রী প্রভৃতি ছলোযুক্ত মন্ত্রগণের মধ্যে আমি গারত্রীছলোযুক্ত মন্ত্র। মাদগণের মধ্যে আমি মার্গণীর্ধ (অগ্রহারণ) এবং ঋতৃগণের মধ্যে আমি "কুসুমাকর" বসস্ত॥ ৩৫

দ্যুতং ছলয়তামশ্মি তেজস্তেজস্বিনামহম্। জয়োহশ্মি ব্যবসায়োহশ্মি সন্ত্রং সন্তবতামহম্॥৩৬

অনুষ্যু।—অংং চলরতাং দ্যুতম্ অস্তি; তেজবিনাং তেজঃ অস্ত্রি; জরঃ অস্তি; ব্যবসায়ঃ অস্তি; অংং সন্ত্বতাং সন্তম্ অস্তি॥ ৩৬

আকুবাদ। আমি ছলনাকারিগণের দৃতে। তেজস্বিগণের তেজঃ; আমি জন্ম, আমি ব্যবসার, আমি বলবান্ প্রাণিগণের বল ॥৩৬

ভাষ্য। দৃত্যমিতি। দৃত্যক্ষণে বনাদিলকণং ছলমতাং ছলম কর্ত্বানিম। তেজত্তেজবিনামহন্। জয়োহমি জেতৃণাম্, ব্যবসায়োহমি ব্যবসায়িনাম্। সন্ধং সক্রতাং সান্ধিকানাসংম্॥ ৩৬

আনন্দ্রিটীক। দ্যতমুক্তলকণং দর্মস্থাপহারকারণমন্ত্রাস্থাপদেশেন পরাভিপ্রেতং নিম্নতাং স্থাভিপ্রেতং বা সম্পাদয়তামিত্যাহ—ছলুস্থেতি। তেজোহপ্রতিহতাজ্ঞা, উৎকর্ষো জয়ঃ, ব্যবসায়ঃ ফলহেতৃক্তুসঃ। ধর্মজ্ঞানবৈরাগ্যাদি সম্বর্ষাং সন্ত্র্ম ৩৬

অনুবাদ। দ্যতমিত্যাদি শ্লোকের মর্থ। "দ্যত" মক্ষকীড়াদিরপ; স্বামি ছলনাকারিগণের [দ্যত]। আমি তেজস্বিগণের তেজঃ জয়কারিগণের স্ব। ব্যবসায়িগণের ব্যবসায় এবং "সম্বান্" সান্বিকগণের স্ব॥ ১৬

র্ষ্ণীনাং বাস্থদেবোহস্মি পাগুবানাং ধনঞ্জয়ঃ। মুনীনামপ্যহং ব্যাসঃ কবীনামুশনাঃ কবিঃ॥ ৩৭

অনুমূঃ । [অংব] র্ফীনাং বাস্থদেবোহন্মি; পাওবানাং ধনঞ্জরঃ [অন্মি]; এহং মুনীনামপি ব্যাসঃ; কবীনাম্ [অহং] উপনাঃ কবিঃ ॥ ৩৭

আকুবাদ। রক্ষিকুলের মধ্যে আমি বাস্থদেব; পাণ্ডবগণের মধ্যে আমি ধনঞ্জ; মুনিগণের মধ্যে আমি ব্যাস এবং কবিগণের মধ্যে আমি কবি উদনাঃ (শুক্রাচার্য্য) ॥৩৭

ভাষ্য। বৃষ্ণীনামিতি। বৃষ্ণীনাং বাহ্নদেবোহন্দি অন্তবোহং ত্বংস্থা, পাগুবানাং ধনজন্ত্বমেব, মূনীনাং মননশীলানাং স্বপদার্থজ্ঞানিনামপ্যহং ব্যাসঃ, ক্বীনাং ক্রান্তদ্শিনাম্ উশনাঃ ক্বির্মি ॥৩৭

আনন্দগিরিটাকা। উশনাঃ শুক্র: কবিশব্দোহত্র যৌগিকো ন রুঢ়ঃ পৌনক্ষক্তাৎ ॥৩৭

অকুবাদ । বৃষ্ণীনাম্ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। বৃষ্ণিগণের মধ্যে আমি বাস্থদেব এই তোমার স্থা আমিই। পাণ্ডবগণের মধ্যে আমি ধনশ্রম অর্থাৎ তুমি। "মুনি" অর্থাৎ মননশীল সর্বজ্ঞগণের মধ্যেও আমি ব্যাস। "কবি" অর্থাৎ অতীত বন্ধনিচয়দর্শির্গণের মধ্যে আমি উপনাঃ নামে কবি ॥৩৭

দণ্ডো দময়তামশ্মি নীতিরশ্মি জিগীবতাম্। মৌনং চৈবাশ্মি গুহানাং জ্ঞানং জ্ঞানবতামহম্॥৩৮

অনুষ্ । দমরতাং দড়োংশ্মি; জিগীবতাং নীতিঃ অসি; গুহানাং চৈব মৌনম্ অসি; জানবতাম্ অহং জানম্ অসি ॥১৮

অসুবাদ। দমনকারিগণের আমি দণ্ড. বিজয়েচ্ছুগণের আমি নীতি, শুহুগণের মধ্যে আমি মৌন, জ্ঞানিগণের আমি জ্ঞান ॥১৮

ভাষ্য। দও ইতি। দঙ্গো দমরতাং দমরিতৄণাম্ অস্মি আদান্তানাং, দম-কারণম্। নীতিরস্মি কিগীবতাম্, মৌনং চৈবাস্মি গুঞানাং গোপ্যানাম্, আনং জানবতামহম্॥৩৮

আনন্দণিরিটীকা। অদাস্তামংপণান্ পণি প্রবর্তরতাং দণ্ডোহমংপণ-প্রবৃত্তো নিগ্রহে হেড়্রিত্যর্থ:, নীতিন গ্রায়ো ধর্মান্ত জ্বোপায়ন্ত প্রকাশক:, মৌনং বাচঃ সংযমত্ব্যুত্তনা বা চতুর্থাশ্রমসৃত্তিঃ প্রবণাদিধারা পরিপ্রস্কামধিজন্তং সমাগ্-জ্ঞানম্॥৩৮

অকুবাদ। "দমরং" অর্থাৎ দমনকারিগণের আমি "দও" অদাস্তজনগণের দমনের হেতু আমি; "জিগীবং" জয়েচ্ছুগণের আমি নীতি। "গুছ্" গোপাগণের মধ্যে আমি মৌন এবং জানবান্গণের আমি জ্ঞান ॥৩৮

যচ্চাপি সর্ব্বভূতানাং বীজং তদহমর্জ্বন। ন তদন্তি বিনা যথ স্থানায়া ভূতং চরাচরম্॥৩৯

অনুয়। হে অর্জুন, বচাপি সর্বভূতানাং বীজং তৎ অহম্ [এব আমি]; মন্নাবিনা ভূতং বং স্থাৎ তৎ চরাচরং ন অভি ॥৩৯

আনুবাদ। হে অর্জুন! সকল ভূতের যাহা কিছু বীজ, তাহা আমিই। যাহাতে আনি নাই, এমন চর বা অচর বস্তু অর্থাৎ স্থাবর বা জঙ্গন কিছুই হইতে পারে না ১৩৯

ভাষ্য। বচ্চাপীতি—সর্বভূতানাং বীক্ষং প্ররোহকারণং তদহমজ্জ্ন। প্রক-রণোপসংহারার্থং বিভূতিসংক্ষেপমাহ ন তদন্তি ভূতং চরাচরং চরমচরং বা মরা বিনা বং স্তাদ্ভবেৎ মরা অপক্ষন্তং পরিত্যক্তং নিরাত্মকং শৃষ্ঠং হি তৎ স্তাৎ অতো মদাত্মকং স্কমিত্যর্থঃ ॥৩>

আনন্দগিরিটীক। লাড্যমাত্রপ্রতিবিধিতং চৈতন্তং বীল্লম্। কিষিতি

স্থাবরং জন্মং বা বদভিরেকেণ ন ভবতি তক্তাহ—মুমেতি। তপ্তাপি স্বরূপেণ সন্থ্যাশস্কোক্তং—শূন্তং হীতি। আত্মনোহপকর্বাদিত্যর্থঃ। মরৈব সচিদানন্দ-স্কর্মেণ সর্বস্তি সিদ্ধেরিত্যভঃশবার্থঃ॥৩৯

অনুবাদ। বচ্চাপি ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। বাহা কিছু সকল ভূতের "বীক" অর্থাৎ প্ররোহকারণ, হে অর্জুন, আমিই তাহা। প্রকরণের উপসংহার করিবার জন্ম বিভূতির সংক্ষেপ করিয়া বলিতেছেন বে,—চরই হউক বা অচরই হউক, এমন কোন ভূতই থাকিতে পারেনা, বাহা আমার সহিত সংস্টে নহে; বে বন্ধতে আমি নাই, আমি বাহা পরিত্যাগ করি, ভাহাই শৃষ্ট অর্থাৎ নিরাত্মক; [স্কুতরাং তাহা থাকিবে কি প্রকারে ?] এই কারণে সকল পদার্থই মদাত্মক অর্থাৎ আমি সকল বন্ধর আলা ॥৩১

নান্তোহন্তি মম দিব্যানাং বিষ্ণৃতীনাং পরন্তপ। এষ ভূদ্দেশতঃ প্রোক্তো বিভূতের্বিস্তরো ময়া ॥৪০

অন্তর্য়। হে পরস্তপ ! মম দিব্যানাং বিভৃতীনাম্ অস্তো নাস্তি ; এব তৃ বিভূতে: বিশুরো ময়া উদ্দেশতঃ প্রোক্তঃ ॥৪•

্ <mark>অনুবাদ।</mark> ২ে পরস্তপ! আমার দিব্য বিভূতিগণের অস্ত নাই। এই মদীয় বিভূতির বিস্তার আমি যৎকিঞিং বলিলাম ॥৪•

ভাষ্য। নাজোহন্তীতি। নাজোহন্তি মম দিব্যানাং বিভূতীনাং বিশুরাণাং পরস্কপ। নহীশ্বরত স্বাত্মনো দিব্যানাং বিভূতীনাম্ ইয়ন্তা শক্যা বন্ধুং জ্ঞাতুং বা কেনচিং। এষ তু উদ্দেশতঃ একদেশেন প্রোক্তো বিভূতেবিস্তরো ময়া ॥৪০

আনন্দগিরিটীকা। দিবাানাং বিভৃতীনাং পরিমিতদশকাং বাররতি— নেত্যাদিনা। তদেবোপপাদয়তি—ন হীতি। কথং তর্হি বিভূতের্বিস্তরো-দশিতস্তত্তাহ—এম ত্বিতি ॥৪॰

আমুবাদ। নাশ্বোহন্তি ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। হে পরস্তপ। আমার দিব্য "বিভৃতি" বিস্তরের অস্ত নাই। সর্বাদ্ধা ঈশরের দিব্য বিভৃতি-সমূহের ইয়ন্তা কেহ বর্ণনা করিতে বা জানিতে পারে না। আমার বিভৃতির বিস্তর এই আমি "উদ্দেশতঃ" অর্থাৎ একদেশতঃ বলিলাম ।.৪•

> যদ্ যদ্ বিভূতিমৎ সন্ধং শ্ৰীমদূৰ্চ্জিতমেব বা। তত্তদেবাৰগচ্ছ স্থং মম তেজোহংশসম্ভৰম্ ॥৪১

আৰুয়। বং বং সৰং (বন্ধ) বিভৃতিমং শ্রীমং উৰ্জ্জিত: বা তন্তং এব স্থং মম তেলোহংশসম্ভবম্ অবগচ্ছ ॥৪১

অমুবাদ। বে বে বস্ত বিভূতিসম্পন্ন, স্থন্দর ও উৎসাহণরিপূর্ণ সেই সেই বস্তুকেই তুমি আমার তেজোমর অংশ হইতে উৎপন্ন বলিয়া জানিবে।।৪১

ভাষ্য। বন্ধদিতি। যদ্ বল্লোকে বিভৃতিমদ্ বিভৃতিমুক্তং সন্ধং বন্ধ শ্রীমদ্ উদ্ভিতম্ এব বা শ্রীল শ্লীস্তয়া সহিতম্ উৎসাহোপেতং বা ভত্তদেবাবগচ্ছ দং জানীতি মম ঈশবস্ত তেজসঃ অংশ একদেশঃ সম্ভবো ষস্ত তৎ তেজোহংশসম্ভবম্ ইতাবগচ্ছ দম্ ॥৪১

আনন্দ্রিটিক। অমুক্তা অপি পরস্থ বিভূতীঃ সংগ্রহীতৃং লক্ষণমাহ— যদ্যদিতি। বস্ত প্রাণিজাতং শ্রীমৎ সমৃদ্ধিমদ্বা শোভাবদ্বা কান্তিমদ্বা। সপ্রাণং বলবদুজ্জিতং তদাহ—উৎসাহেতি। সম্ভবত্যস্মাদিতি সম্ভবঃ। তেপ্রসন্দৈতক্তস্থেশ্বংশক্তের্বাংশন্তেজোহংশঃ সম্ভবোহক্তেতি তেজোহংশসম্ভবং তদাহ—তেজস ইতি ॥৪১

অনুবাদ। যদ্যদ্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। লোকে বাহা বাহা "সত্ব" বস্তু "বিভূতিমং" বিভূতিসূক্ত 'শ্রী' শব্দের অর্থ লন্ধী, সেই লন্ধীর সহিত যুক্ত, বা 'উর্জিড' উৎসাহসমন্বিত, তাহাকে তাহাকেই তুমি আনার 'তেজোহংশসন্তবঃ' বিলিয়া জান, তেজোহংশ শব্দের অর্থ আনার অর্থাৎ ঈশ্বরের তেজের একদেশ, তাহাই বাহার উৎপত্তিহেতু, তাহাকেই তেজোহংশসন্তব বলা বায় ॥৪১

অথবা বহুনৈতেন কিং জ্ঞাতেন তবাৰ্চ্জ্ন। বিষ্টভ্যাহমিদং কুৎস্লমেকাংশেন স্থিতো জগৎ ॥৪২ ইতি দশমোহধ্যায়:॥

আস্ত্রয়। অপবাহে অর্জুন, তব এতেন বহুনা জাতেন কিম্ ? অহম্ একাং-শেন ইদং কংসং জগৎ বিষ্টভা ছিতঃ ॥৪২

অনুবাদ। অথবা হে অর্জুন, তোমার এই সকল বিশেষ করিয়া জানিয়া কি লাভ ? এইমাত্র জানিলেই সথেষ্ট হইবে যে আমি নিজের একাংশ মাত্রের দারা এই সমুদর বিশ্ব ব্যাপিয়া বিভ্যমান আছি ॥৪২

ভাষ্য। অথবেতি। অথবা বছনা এতেন এবমাদিনা কিং জাতেন তবাৰ্চ্ন ভাং সাবশেবেণ। অশেষতব্দিমমর্থমূচ্যমানং শৃণু বিষ্ঠভা বিশেবেণ স্তম্ভনং কৃষা ইদং ক্রংস্কং জগদেকাংশেন একাবরবেন একপাদেন সর্বভূতস্বরূপেণ ইত্যেতং। তথা চ মন্ত্রবর্ণ: "পাদোহস্ত বিশা ভূতানি" ইতি স্থিতোহহমিতি ॥৪২ আনন্দ্রিনিক।। সর্বেষাং স্থগমন্বায়াবয়বশো, বিভৃতিমৃত্বা ভক্তামুগ্রহার্থং * সাকলোন তামাহ—অথবৈতি। পক্ষান্তরপরিগ্রহার্থমথবেত্যক্তম্ †।
বহুনা ‡ বিস্তীর্ণেনৈতেন গ্রন্থেন সংজ্ঞাতেন সাবশেষেণ তব শক্তম্ম ন কিঞ্জিং কলং
ফাদিত্যাহ—বহুনেতি। ন হি বিভৃতিমৃক্তাস্থ জ্ঞাতাস্থ সর্বাং জ্ঞান্নতে কাগাঃ
ক্ষিদেব বিভৃতীনামুক্তমাদিত্যর্থ:। তর্হি কেনোপদেশেনাল্লাক্ষরেণ সর্ব্বার্থাজ্ঞাত্থ শক্যতে তত্ত্রাহ—অশেষত ইতি। বিশেষতঃস্তম্ভনং বিধরণং সর্ববৃত্তস্বরূপেণ সর্ব্বপ্রধাপাদানশক্র্যুপাধিকেনৈকেন পাদেন ক্রৎসং ক্লগৎ বিধৃত্য
স্থিতাহন্দ্রীতি সম্বন্ধ:। তত্ত্বিব শ্রুতিং প্রমাণরতি—তথাচেতি। তদনেন
ভগবতো নানাবিধবিভৃত্তীর্দেগ্রিন্থেন ক্ষের্থেন চোপদিশুক্তে। সর্ব্বপ্রক্ষান্মকং
ধ্যেরং রূপং দর্শ্যিন্থা 'ত্রিপাদস্থামুতং দিনি' ইতি প্রপঞ্চাধিকং নির্ক্রপাধিকং তত্ত্বমৃপদিশতা পরিপূর্ণস্চিদনিনন্দকতানঃ তৎপদলক্ষ্যোহর্থো নির্দ্ধান্তঃ ॥৪২

আনুবাদ। অপবা ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। অপবা বছ এই প্রকার আনেক বিশেষভাবে জ্ঞাত ইইলে হে অর্জুন! তোনার কি ফল ইইবে? আশেষভাবে [সামান্তরূপে] যাহা বলিভেডি, তাহা ছন। 'একাংশ' একটিমাত অবয়ব অর্থাৎ নিজের একটি পাদ, বাহা সর্বভূতস্বরূপ, তাহা দ্বারা এই সমগ্র জগৎকে বিশেষরূপে স্তব্দ করিয়া (সর্বাংশে ব্যাপিয়া) আমি অবস্থিত রহিয়াছি। বেদের মন্ত্রাক্ষরেও আছে যে, "এই প্রমেশ্রের একটি মাত্র পাদস্বরূপ এই ভূতনিচয়" ইত্যাদি॥৪২

ইতি দশমোহধাার: সমাপ্ত:।

শক্তামুগ্রহার্থমিতিবা।

[†] পকান্তরপরিহারার্থমিতি বা।

^{! &#}x27;बह्भा' ইंভिना। .

व्यदेशकामरमार्थायः।

অৰ্জুন উবাচ

মদসুগ্রহায় পরমং গুহুমধ্যাত্মসংজ্ঞিতম্। বৎ স্বয়োক্তং বচস্তেন মোহোহয়ং বিগতো মম॥১

অমুয়। অর্জুন: উবাচ— তরা নদকুগ্রহার বৎ প্রমং গুজুম্ অধ্যান্মসংজি তং বচ: উক্তং তেন সম অরং মোহঃ বিগতঃ ॥ ১

অনুবাদ। অর্জুন উবাচ। অর্জুন কহিলেন, তুমি আমার প্রতি অনুগ্রহ করিয়াবে পরম গোপনীর আয়বিষয়ক বাক্য বলিয়াছ, ভাষা দারা আমার এই মোহ অপগত হইয়াছে ॥১

ভাষ্য। ভগনতো বিভূতর উক্তা স্তত্র চ "বিষ্টভাহিমিদং ক্লংসকাংশেন স্থিতো জগং।" ইতি ভগবতাংভিহ্নিতং শ্রুতা যজ্জগদাত্মরূপমাত্মশ্ররং তৎ সাক্ষাৎকর্তুমিছেন্ (অর্জুন উবাচ) মদন্তগ্রহার মমান্তগ্রহার্থং পরমং নিরভিশরং শুহুং গোপ্যম্ অধ্যাত্মসংক্ষিতম্ আত্মানাত্মবিবেকবিষরং যৎ ত্রোক্রং বচঃ বাক্যং ভেন তে বচসা মোহোহরং বিগতো মম অবিবেকবৃদ্ধিরপগতেত্যর্থঃ॥১

আনন্দ গিরিটিক। তেন তেনাম্বনা ভগবদমুসন্ধানার্থমুক্বা বিষ্ণৃতীরমূ-বদতি—ভগবতইতি। পরস্ত সোপাধিকং নিরূপাধিকঞ্চ চিত্রপং ধ্যেরম্বেন জ্যেরম্বেন চোক্তমিত্যর্থ:। সোপাধিকমৈশ্বং রূপনশেষকগদাম্মকং বিশ্বরপাধ্যমধিকতাধ্যারান্তরমবভারয়য়নন্তরপ্রশ্লোপযোগিছেন বৃত্তং কীর্ত্তমুক্তি—তত্ত্বে চেতি। বদেতদশেষপ্রপঞ্চাম্মকমথিলক্তৈতন্ত জগতঃ কারণং দর্মজ্ঞং সর্মেশর্যবিদ্ধপমুক্তং তিদিং শ্রুছা তন্ত সাক্ষাংকারং বিষাচিষ্রাদৌ পৃষ্টবানিত্যাহ—শ্রুভত্ত্বিতি। ময়ি করুণাং নিমিন্তীরুভোগিকারোহমূগ্রহন্তদর্থমিতি বচসো বিশেষণম্, নির্তিশ্রুছং পরমপ্রবার্থসাধনম্বন্। অশোচ্যানিত্যাদি মংপদার্থপ্রধানং বাক্যম্ মোহ-ভারমিত্যান্থসাক্ষিকত্বং দর্শরতি। অবিবেকবৃদ্ধিরজ্ঞানবিপর্যাসান্ধিকা॥ ১

অকুবাদ। [পূর্ব অধ্যারে] ভগবান্ আত্মবিভৃতিসমূহের পরিচর দিরাছেন;
[ঐ পরিচরদান প্রসদে] "আমি এই সমগ্র জগৎকে আমার একাংশ দারা

ব্যাপিয়া রহিয়াছি" এই প্রকার ভগবানের কথিত বাক্য প্রবণ করিয়া, ভগবানের যে আছ ঐশব ক্ষগদাত্মস্বরূপ, তাহা প্রত্যক্ষ করিবার জন্ত (অর্জুন বিলিডেছন) যে, আমার অন্থাহার্থ যে "পরম" নিরতিশর (অর্থাৎ সর্বোৎক্রই) "গুছ" গোপ্য এবং "অধ্যাত্মসংজ্ঞিত" আত্মা ও অনাত্মার বিবেকপ্রকাশক যে সকল বাক্য তুমি বলিলে, তাহার ছারা (অর্থাৎ) ভোমার সেই বাক্যের ছারা আমার এই মোছ বিগত হইয়াছে। তাংপগ্যার্থ এই হইডেছে যে আমার অবিবেক বৃদ্ধি বিনষ্ট হইয়াছে। ১

ভবাপ্যয়ে হি ভূতানাং শ্রুতো বিস্তরশো ময়া। স্বত্তঃ কমলপত্রাক্ষ মাহাত্ম্যমপি চাব্যয়ম্॥ ২

অন্তব্য । হে কমলপত্রাক্ষ ! খতঃ ভূতানাং ভবাপ্যয়ৌ উৎপত্তিপ্রলয়ৌ বিস্তব্যঃ
মন্না শ্রুতৌ ; অব্যবং মাহাত্ম্যম্ অপি [শ্রুতম্] চ ॥ ২

• আকুবাদ। হে পদ্মপলাশলোচন! তোমার নিকট হইতে ভূতসমূহের উৎপত্তি ও প্রলয় বিস্তর্ত্তপে শ্রবণ করিয়াছি এবং তোমার অবিনাশী মাহাত্ম্যও [সবিস্তর শ্রবণ করিয়াছি] ॥ ২

ভাষ্য। কিঞ্চ ভব উৎপত্তিঃ অণ্যরঃ প্রলায়ঃ ভূতানাং তৌ ভবাপ্যয়ে।
ক্রান্ত বিস্তরশো ময়া ন সংক্ষেপতঃ ততঃ ত্বস্বাশাৎ কমলপত্রাক্ষ কমলস্ত পত্তং
ক্মলপত্তিং তদ্বদক্ষিণী ষশু তব সত্বং কমলপত্রাক্ষঃ, হে কমলপত্রাক্ষ ! মাহাম্মাসি
চ অব্যয়ষ্ অক্ষয়ং ক্রতমিত্যমূবর্ততে ॥ ২

আনক্ষণিরিটীকা। সপ্তমাদারভ্য তৎপদার্থনির্ণরার্থমপি ভগবছকং বচো
মরা শ্রুতমিত্যাহ—কিঞ্চেতি। তৌ ভূতানামুৎপত্তিপ্রলয়ৌ দত্তঃ শ্রুতাবিত্যাভ্যাৎ
সম্বধ্যতে, মহাত্মনত্ত্ব ভাবো মাহাত্ম্যং পারমাধিকং সোপাধিকং বা সর্বাত্মতাদিরূপং শ্রুতমিতি পরিণমাামুর্তিং ছোত্রিতুম্ অপি চেত্যুক্তম্॥ ২

অকুবাদ। সারও [বজব্য এই যে] "ভব" [শব্দের অর্থ উৎপত্তি] "অণার" [শব্দের অর্থ] প্রালয়, ভূতনিবহের সেই ভব ও অণায় (উৎপত্তি ও লয়) আমি তোমার নিকট হইতে প্রবণ করিরাছি। "বিস্তরশঃ" সংক্ষেপে নহে [কিন্তু অতি বিস্তৃতভাবে] হে "কমলপত্রাক্ষ" "কমলের" (অর্থাৎ) পদ্মের পত্ত্র অর্থে] কমলপত্ত্র (এই শক্ষটি প্রযুক্ত হইরাছে], সেই কমলপত্ত্রের ভার বে তোমার ছইটি চক্ষ্ আছে, সেই তোমার নাম 'কমলপত্ত্রাক্ষ' [সেই কমলপত্ত্রাক্ষ শব্দের সংবাধনে] কমলপত্ত্যাক্ষ ! [এই পদটি নিপার হয়] এবং [তোমার]

"অব্যর" অক্ষর মাহাত্মাও "তোমার নিকট হইতে গুনিরাছি" এই কয়টি পদের অমুর্ক্তি হইতেছে। ২

> এবমেতদ্ ষণাত্ম স্বমাত্মানং পরমেশ্বর। দ্রুফটু মিচ্ছামি তে রূপমেশ্বরং পুরুষোত্তম॥ ৩

আমুয়। হে পরমেশর, ডং যথা আত্মানম্ আখ (ব্রবীষি) তৎ এবমেব ; হে পুরুষোত্তম, তে ঐশরং রূপং [ইদানীং] দ্রষ্ট্রম্ ইচ্ছামি ॥ ৩

অকুবাদ। হে পরমেশ্বর, তুমি যে প্রকারে নিজের শ্বরূপ বর্ণন করিয়াছ, তাহা সেই রূপই। হে পুরুষোত্তম, আমি [এক্ষণে] তোমার ঐশ্বর শ্বরূপ দেখিতে ইচ্ছা করিতেছি॥ ৩

ভাষ্য। এবমিতি। এবমেতরাস্তথা বথা বেন প্রকারেণ আখ কণরসি দ্বন্ আস্থানং পরমেশ্বর! তথাপি দ্রষ্ট্ মিচ্ছামি তে তব জ্ঞানৈশ্বগ্যশক্তিবলবীর্য্য-তেজোভিঃ সম্পরম্ ঐশ্বরং বৈক্ষবং রূপং, পুরুষোত্তম ॥ ৩

আনন্দগিরিটীকা। বহুকেংথেংবিধাসাভাবাং ন ওমিন্ দিদৃকা, কিন্ত কতার্থীবৃত্বরা ইত্যাহ—এবনেতদিতি। যেন প্রকারেণ সোপাধিকেন নিরূপা-ধিকেন চেতার্থ:। বদি মমাপ্তবং নিশ্চিত্য মধাক্যং তে মানং তর্হি কিমিতি মছক্তং দিদৃক্ষতে ক্রতার্থীবৃত্বরেত্যুক্তং মধাহ—তথাপীতি। চতুর্ভুলাদি-রূপনিব্রার্থমাহ—ঐশ্বরমিতি। তদ্ব্যাচ্টে—জ্ঞানেত্যাদিনা॥ ৩

অনুবাদ। তুমি বে প্রকার সাত্মস্বরূপ বর্ণন করিরাছ, তাহা ঠিক; সেই বিবরে অন্তপা হইতেই পারে না। তথাপি হে প্রমেখর। তোমার জ্ঞান, ঐখর্যা, বল ও বীর্যাযুক্ত সেই ঐখর (অর্থাৎ) বৈষ্ণবরূপ আমি, দেখিতে ইচ্ছা করি, হে পুরুষোত্তম॥ ৩

> মন্তবে যদি তচ্ছকাঃ ময়া দ্রফ্টুমিতি প্রভা। যোগেশ্বর ততো মে স্থং দর্শরাস্থানমব্যয়ম্॥ ৪

আন্ত্রয় । হে প্রভো! যদি তৎ (রূপং) মরা এই ংশ্ক্রম্ ইতি মক্তরে ততো হে বোগেশর অম্ অব্যরমান্তানং মে দর্শর ॥ ৪

অকুবাদ। হে প্রভো! যদি সেইরপ দেখিবার শক্তি আমার আছে, এই প্রকার আপনি বিবেচনা করেন, ভাষা হইলে হে বোগেখর, আপনি আমাকে আপনার সেই অবিনাশী স্বরূপ দর্শন করিতে দিন ॥ ৪ ভাষ্য | মন্ত্রসে ইতি ৷ মন্ত্রসে বদি চিত্তরসি মরা অর্ক্নেন তৎ শব্যং এই মিতি প্রভা স্বামিন্ বোগেশর ! বোগিনো বোগাতেবামীশরঃ বোগেশরঃ হে বোগেশর বন্ধানহমতীবার্থী প্রচুৎ ততত্ত্বান্মে মদর্থৎ দর্শর স্বম্ আন্থানন্ অব্যরম্ ৪

আনন্দণিরিটীকা। এই নবোগ্যে কুতো দিদ্কেত্যাশক্যাহ—মন্তস ইতি। প্রভবতি স্টেক্টিভিসিংহারপ্রবেশপ্রশাসনেভ্যঃ ইতি প্রভূঃ। লক্ষণরা বোগ-শক্ষার্থনাহ—ব্যোগিন ইতি। তত ইত্যাদি ব্যাচটে— যুক্মাদিতি॥ ৪

অনুবাদ। মন্তবে ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। মন্তবে (এই পদটির অর্থ)
মনে কর [কি ?] বদি "আমি" অর্জুন সেই রূপ দেখিতে পারিব, তাহা হইলে
হে "প্রভা" স্বামিন, হে "বোগেশ্বর" [এই স্থানে] বোগ শন্তের অর্থ বোগী, সেই
বোগিগণের [বিনি] ঈশ্বর, [তিনি] বোগেশ্বর হে বোগেশ্বর ! বে কারণ আমি
সেই রূপ দেখিবার জন্ত অত্যন্ত অর্থী, সেই কারণেই তুমি আমারই জন্য আমাকে
তোমার অব্যর আত্মা প্রদর্শন করাও॥ ৪

শ্ৰীভগৰামুবাচ।

পশ্য মে পার্থ রূপাণি শতশোহথ সহস্রশঃ। নানাবিধানি দিব্যানি নানাবর্ণাকৃতীনি চ॥ ৫

আন্বয় । এভগবান্ উবাচ হে—পার্থ নানাবিধানি নানাবর্ণাকৃতীনি চ শতশঃ সহস্রশঃ মে দিবানি রূপাণি অধ পঞা॥ ৫

আমুবাদ। প্রীভগবান্ কহিলেন, হে পার্থ, নানা বর্ণ ও নানা আরুতিবিশিষ্ট আমার নানাবিধ শত শত ও সহস্র সহস্র দিব্যরূপ দর্শন কর॥ ৫

ভাষ্য। এবং চোদিতোহর্জুনেন (শ্রীভগবাছবাচ) পশ্র মে পার্থ রূপাণি শতশোহথ সহস্রশঃ অনেকশঃ ইত্যর্থঃ। তানি চ "নানাবিধানি" অনেক-প্রকারাণি দিবি ভবানি দিব্যানি অপ্রাক্কতানি "নানাবর্ণাক্কতীনি চ" নানাবিশক্ষণা নীলপীতাদিপ্রকারা বর্ণান্তথা আক্কতরঃ অবরবসংস্থানবিশেষা ধেবাং রূপাণাং তানি নানাবর্ণাক্কতীনি চ॥ ৫

আনন্দগিরিটীকা। অর্জুনমতিভক্তং স্থায়ং প্রাধিতপ্রতিশ্রবণেনাশা-স্বিতুমাহ—এব্যাতি ॥ ৫

অনুবাদ। এই প্রকারে অর্জুন প্রার্থনা করিলে (ভগবান কহিলেন) হে

পার্থ "শতশং" ও "সহস্রশং" অর্থাৎ অনেক প্রকার আমার রূপনিবহ তুমি দর্শন কর। সেই সকল রূপ [কেমন ?] "নানাবিধ" বহুপ্রকার, "দিব্য" স্বর্গীর অর্থাৎ অপ্রাকৃত, এবং "নানাবর্ণাকৃতি" বর্ণ শব্দের অর্থ নীলপীতাদি স্বরূপ অনেক রুত্ব, আকৃতি শব্দের অর্থ অবরববিস্থাদ, সেই বর্ণ ও আকৃতি নানা প্রকার ভাবে বে সকল রূপে বিশ্বমান আছে, তাহাদিগকে 'নানাবর্ণাকৃতি' কহে॥ ৫

পশ্যাদিত্যান্ বসূন্ রুদ্রান্ অধিনো মরুতন্তথা। বহুন্যদৃষ্টপূর্ব্বাণি পশ্যাশ্চর্য্যাণি ভারত॥ ৬

অষ্ত্র । আদিত্যান্ বহন্ রুদ্রান্ অবিনৌ তথা মরুতঃ পশু; হে ভারত ! বহুনি অদৃষ্টপূর্কাণি আশ্চর্যাণি পশু॥ ৬

অনুবাদ ! [আমার দেহের মধ্যে] দ্বাদশ আদিত্য, অষ্টবস্থ, একাদশ রুজ, অমিনীকুমারদ্বর, মরুৎ এই নামে প্রাসিদ্ধ দেবগণ এবং অনেক অদৃষ্টপূর্ব আশুক্র্য বস্তুসমূহও দর্শন কর॥ ৬

ভাষ্য। পশাদিত্যানিতি। পশা আদিত্যান্ দ্বাদশ, বস্ন্ অষ্টৌ, ক্লান্ একাদশ, অশ্বিনৌ দৌ, মক্তঃ সপ্তসপ্তগণা যে তান্তথা বহুনি অপি অদৃষ্টপূৰ্কাণি মসুব্যলোকে দ্বা দ্বোহস্তেন বা কেনচিৎ, পশা আশ্চৰ্যাণি অভ্তানি ভারত॥ ৬

আনন্দগিরিটীকা। দিব্যানি রূপাণি পশ্যেত্যক্তং তান্তেব লেশতোহমু-ক্রামতি—পশ্যাদিত্যানিতি। তান্ মরুতন্তথা পশ্যেতি সম্বন্ধঃ। নানা-বিধানীত্যক্তং তদেব ক্ষুটয়তি—বহুনীতি। অদৃষ্টপূর্বাণি পূর্বমদৃষ্টানি নানা-বর্ণাক্ষতীনীত্যক্তং ব্যানজি—আশ্চয্যাণীতি॥ ৬

আমুবাদ। পশ্যাদিত্যান্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "পশ্য" দেখ [কি १] আদিত্য অর্থাৎ ঘাদশ আদিত্য, কড় [ইহারা] একাদশ, বহু [ইহারা] আটজন, অশ্বী [ইহারা] ছই জন, মকং [ইহারা] এক এক দলে সাতজন [করিয়া থাকেন], মোট ইহাদের সাভটি দল আছে [অর্থাৎ সর্বসমেত ইহারা উনপঞ্চাশৎ দেবতা] সেই মক্ষদ্গণকেও দেখ। এই প্রকার তুমি বা তুমি ভিন্ন অন্য কোন মহুলা বাহা কখন দেখে নাই, এইরূপ অনেক "আশ্চর্য্য" অভূত বন্তনিচয়ও তুমি দর্শন কর। ৬

·ইহৈকস্থং জগৎ কৃৎস্নং পশ্যাত্য সচরাচরম্।

মম দেহে গুড়াকেশ যচ্চান্সদ্ দ্রফটু মিচ্ছসি॥ ৭

আনুষ্যঃ। হে গুড়াকেশ। ইহ মম দেহে একস্থং সচরাচরং ক্রংমং জগৎ পশ্য, বচ্চ জন্যৎ ক্রষ্ট্রিচ্ছসি [তদপি পশ্য] ॥ ৭

অমুবাদ। হে নিদ্রাজরকারিন, এই জামার দেহে সচরাচর সকল বিশ্ব একতা সমাবেশিত রহিয়াছে দেখ এবং জন্য বাহা কিছু দেখিতে ইচ্ছা কর, তাহাও দেখ। ৭

ভাষ্য। ন কেবলমেতাবদেব। ইছৈকছং একস্মিন্ ছিতং জগৎ কুংলং সমস্তং পশ্যান্থ ইদানীং সচরাচরং সহ চরেণ অচরেগ চ বর্ত্ততে মম দেহে ওড়াকেশ যচোন্যং জয়পরাজয়াদি যং শহনে "বলা জয়েম যদি বা নো জয়েয়য়ৄং" ইতি যদবোচঃ তদপি এই ধনীচ্ছিদি ॥ १

আনন্দ্রিটীকা। ন কেবলমাদিত্যবস্থান্তেব মজ্রপং দ্বরা দ্রষ্ট্রং শক্যং কিন্তু সমস্তং জ্বলপি মন্দেহস্থ: দ্রষ্ট্র্মর্হসীত্যাহ—নেত্যাদিনা। সপ্তমীদ্বরং মিথঃ সম্বধ্যতে সমাসান্তর্গতাপি সপ্তমী ভবৈত্ববাহিতা; বদীচ্ছসি তর্হি ইবৈব পশ্রেভি সম্বন্ধ: ॥৭

অনুবাদ। কেবল যে ইহাই তাহা নহে [আরও বলি ওন] এই সচরাচর অর্থাৎ স্থাবর ও জঙ্গমের সহিত বর্ত্তমান এই সমুদর বিশ্ব আমার এই দেহে বিশ্বমান রহিয়াছে, ইহা তুমি দেখ [কিরপে আছে ?] তাহাই বলিতেছেন "একস্থ" এক [আমার দেহকেই] আশ্রর করিয়া রহিয়াছে আর কিছু (অর্থাৎ) জয় পরাজরাদি [যাহা] তুমি শকা করিতেছ, কারণ পূর্কেই তুমি শকা করিয়াছ, যে আমরা বিজয়ী হইব বা হইতে পারিব না ? ইত্যাদি আমার এই দেহে তুমি যদি দেখিতে ইচ্ছা কর [তাহা হইলে, তাহাও তুমি দেখিতে পাইবে] ॥৮

ন তু মাং শক্যসে দ্রুষ্ট্র্মনেনৈব স্বচক্ষ্মা। দিব্যং দদামি তে চক্ষুঃ পশ্য মে যোগমৈশ্বরম্॥৮

আরুয় । অনেন স্বচকুবা মাং স্রস্ট্র্ছ ডু [দ্বং] নৈব শক্যসে [স্বহং] তে দিব্যং চকু: দদামি মে ঐশ্বরং বোগং পশু ॥৮

আমুবাদি। তুমি তোমার এই [লোকিক] চকুর দারা আমাকে দেখিতে সমর্থ হইবে না। তোমাকে দিব্য চকু দিতেছি। স্থামার ঐশ্বরিক যোগসামর্থ্য অবলোকন কর॥৮

ভাষ্য। কিঞ্চন তুমামিতি। ন তুমাং শক্তমে ন স্বকীরেন চক্ষ্যা মাং বিশ্বরূপধরং শক্তমে অইুমনেন আক্লেতেন স্বচক্ষা স্বকীরেন চক্ষ্যা বেন তু শক্তানে জটুং দিব্যেন তদ্দিব্যং দদামি তে তুভ্যং চকুল্ডেন পশু মে মম যোগ-নৈশবং ঈশবক্ত মনৈশবং যোগং যোগশভ্যতিশয়মিত্যর্থঃ ॥৮

আনন্দ গিরিটীকা। মন্ত্রেস ধদীত্যক্তমমুবদতি—কিঞ্চিতি। সপ্রপঞ্চ মনবিজ্ঞিং মাং স্বচক্ষা ন শক্রোবি দ্রষ্ট্রমিত্যাহ—ন ত্ত্বিতি। কথং তর্হি স্বাং ক্রষ্ট্রং শক্ষু রামিত্যাশক্ষাহ—যেনেতি। দিব্যস্ত চক্ষো বক্ষ্যমাণযোগ-শক্তাতিশয়দর্শনে বিনিযোগং দর্শগনিত—তেনেতি॥৮

আকুবাদ। ন তুমান্ইত্যাদি লোকের অর্থ। কিন্ত "প্রাক্ত" স্বাভাবিক এই নিজ চকু দারা "বিশ্বরূপধর" বিশ্বরূপধারী আমাকে দেখিতে সমর্থ হইবে না। বে দিব্যচকু দারা আমাকে দেখিতে সমর্থ হইবে, আমি তোমাকে সেই দিব্যচকু দিতেছি, তদারা আমার "ঐশ্বরযোগ" দেখ। ঈশ্বর্স্বরূপ আমার মহান্ বোগশক্তির অতিশয় [অলোকিক শক্তিসমূহ] দেখ।৮

সঞ্জয় উবাচ।

এবমুক্ত্বা ততো রাজন্ মহাযোগেশ্বরো হরিঃ। দর্শরামাস পার্থায় পরমং রূপমৈশ্বরম্॥৯

আৰুষ্য । সঞ্জয় উবাচ—(হে) রাজন্, মহাযোগেখরো হরিঃ এবম্ উল্বা ততঃ পার্থার পরমন্ ঐখরং রূপং দর্শরামাস ॥>

আমুবাদ। সঞ্জর কহিলেন, হে রাজন্, সেই মহান্ ও বোগীদিগের প্রভূ হরি এইক্সপ বলিরা ভৎপরে অর্জুনকে শীর পরম ঐশবিক রূপ দেখাইলেন ॥>

ভাষ্য। এবং তং যথোক্তপ্রকারেণোক্ত্র ততোহনশুরং রাজন্ গুতরাষ্ট্র মহাংশ্চাসৌ বোগেখরশ্চ মহাবোগেখরো হরিন রিয়গঃ দর্শিয়ামাস দ্শিতবান্ পার্থার পুথাকুতার প্রমং রূপং বিশ্বরূপমৈখরম্ ॥১

আনন্দগিরিটীকা। ইমং বৃত্তান্তং ধৃতরাষ্ট্রায় সঞ্জয়ে নিবেদিতবানিত্যাহ—সঞ্জয় ইতি। মদীরং বিশ্বরূপাখ্যং রূপং ন প্রাকৃত্বেন চকুষা নিরীকিতৃং ক্ষমং কিন্ত দিবোন ইত্যাদি যথোক্তপ্রকারঃ। অনস্তরং দিব্যচকুষঃ প্রদানাদিতি-শেষঃ, হরভ্যবিদ্ধাং সকার্য্যামিতি হরিঃ। যদীশ্বরশু মায়োপহিতশু পরম্মুংকৃষ্টং রূপং তদর্শরামভূবেত্যাহ—পরম্মিতি ॥১

আকুবাদ। এইরূপে অর্থাৎ পূর্বে বেরূপ বলা হইরাছে, সেইভাবে বলিয়া ভংপরে হে "রাজন্" গৃতরাষ্ট্র, "মহাবোগেখর"—[ইনি] মহান্ও [বটেন] এবং বোগেখরও (বোগ অর্থে এখানে বোগী, তাঁহাদের ঈশর অর্থাৎ প্রভূ) [বটেন],

'এই অর্থে মহাযোগেখর শব্দ এখানে ব্যবহৃত হইয়াছে] "হরি" নারারণ "পার্থকে" পৃথাপুত্রকে (অর্জুনকে)পরম ঐখররূপ অর্থাৎ বিশ্বরূপ দেখাইলেন ॥৮-

অনেকবক্তনয়নমনেকাস্কৃতদর্শনম্।
অনেকদিব্যাভরণং দিব্যানেকোন্ততায়ুধম্ ॥১০
দিব্যমাল্যাম্বরধরং দিব্যগন্ধাসুলেপনম্।
সর্বাশ্চর্য্যময়ং দেবমনন্তং বিশ্বতোমুখম্॥১১

অনুয়। কিন্দং তৎ রূপন্ । আনেকবক্ত্রারনম্ আনেকাদ্ভূতদর্শনম্ আনেকদিব্যাভরণং দিব্যানেকোগতায়ুধং দিব্যমাল্যাদরধরং দিব্যগদ্ধামুলেপনং স্কাশ্চর্যামরং দেবম্ অনস্তং বিখতোমুধম্॥১০—১১

অনুবাদ। [কেমন রপ দেখাইরাছিলেন ?] অনেকবদন ও নয়ন বিশিষ্ট, বহু বিশায়কর দর্শন, অসংখ্য স্বর্গীয় আভরণ-শোভিত ও অনেক অভ্যু-ছত দিব্য আযুধনিচয়ে পরিশোভিত, সেই দেহে দিব্য বস্ত্র ও মান্য বিশ্বমান ছিল, স্বর্গীয় গন্ধদ্রব্য দারা উহা অন্থলিপ্ত, জগতের সকল একার বিশায়জনক বস্তু-নিচয় ঐ দেহে বিরাজ করিতেছিল। ঐ দেহ দীপ্তিশালী, উহা জনম্ভ এবং বিশ্বতোম্থ॥>•—>>

. ভাষ্য । অনেকেতি। "অনেকবজুনয়নম্" অনেকানি বজুাণি নয়নানি চ যশিন্ তৎ অনেকবজুনয়নম্। ''অনেকাছুতদর্শনম্'' অনেকানি অহুতানি বিশ্বাপকানি দর্শনানি যশিন্ রূপে তদনেকাছুতদর্শনম্। তথা ''অনেকদিব্যাভয়ণম্' অনেকানি আভয়ণানি যশিন্ তদনেকদিব্যাভয়ণন্। তথা ''দিবাানিকোভাতাযুধম্'' দিব্যানি অনেকানি উভতানি আয়্ধানি যশিন্ তৎ দিব্যানেকোভাতাযুধম্। দর্শয়ামাসেতি পূর্বেশ সম্বন্ধঃ ॥

কিঞ্চ "দিব্যমাণ্যাম্বরধরম্" দিব্যানি মাণ্যানি প্শাণি অবরাণি বস্তাণি চ বিরম্ভে যেন ঈশবেণ তং দিব্যমাণ্যাম্বরধরম্। "দিব্যগদ্ধাম্বেশনম্" দিব্যং গদ্ধাম্বেশনম্। "সর্বাশ্চর্যমরং" সর্বাশ্চর্যপ্রারং দেবম্ "অনস্তং" নাপ্তান্তোহস্তাং বিশ্বতোম্বং সর্বতোম্বং সর্বভোশ্বাহং দর্শরামান অর্জুনো দদর্শ ইতি বা অধ্যাহিরতে ॥১০—১১

আনন্দ্গিরিটীকা। তদেব রূপং বিশিনটি—অনেক্তে। দিবানি আতরণাদীনি হারকেয়ুরাদীনি ভূবণানি উন্থতানি উদ্ভিতানি ॥১• উক্তরণবস্তং ভগবস্তং প্রকারাস্তরেণ বিশিনষ্টি—কিঞ্চেতি। আর্জুন ইতি] অধ্যাহারেহণি পদসংঘটনাসম্ভবাৎ ॥১১

অকুবাদ। অনেক ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "অনেকবক্তুনরন" মুখ ও নরন ধে ধে দেহে অনেক, তাহাকে 'অনেকবক্তুনরন' বলা যার। "অনেকাছুতদর্শন" বে দেহে অনেক বিশ্বরঞ্জনক দর্শনীর বস্তু বিশ্বমান আছে, তাহাকে
'অনেকাছুতদর্শন' বলা যার। "অনেকদিব্যাভরণ" যে রূপে অনেক স্বর্গীর
অলম্বার আছে, তাহাকে 'অনেকদিব্যাভরণ' বলা যার। সেইরপ "দিব্যানেকোভুতার্ধ" অনেক দিব্য অস্ত্র যে দেহে সর্বাদা উদ্ধৃত করিয়া রাখা হইয়াছে, তাহাকে
'দিব্যানেকোভুতার্ধ' বলা যার। এই প্রকার রূপ "দেধাইয়াছিলেন" এই পূর্বশ্লোকস্থ ক্রিরার সহিত্ত অব্র করিতে হইবে।

আরও 'দিব্যমাল্যাম্বরধর' যে ঈশ্বর দিব্য 'মাল্য' পুলারাশি ও 'অম্বর' বস্তানিচয় ধারণ করিয়া থাকেন, তাঁহাকে 'দিব্যমাল্যাম্বরধর' বলা যায়। 'দিব্যগন্ধামলেপন' বাঁহার গন্ধামূলেপনও স্বর্গীর, তাঁহাকে 'দিব্যগন্ধামূলেপন' বলা যায়। 'সর্কাশ্র্য্যান্মর' সকল প্রকার আশ্চর্য্য পদার্থে পরিপূর্ণ, 'দেব' দীপ্তিময়, 'বিশ্বতোম্থ' অর্থ যে দেহে মুথ সকল দিকেই আছে, তাহাকে 'বিশ্বতোম্থ' বলা যায়। তিনি যে কারণ সকল ভূতের আহ্মা, এই কারণে [তিনি বিশ্বতোম্থ'] এই প্রকার রূপ 'দেথাইয়াছিলেন' কিংবা অর্জুন এই প্রকার 'দেথিয়াছিলেন' এইপ্রকার ক্রিয়ার স্বধ্যাহার করিয়া ইহার অব্য করিতে হইবে॥১০—১১

দিবি সূর্য্যসহস্রস্থ ভবেদ্ যুগপদ্ধখিতা। যদি ভাঃ সদৃশী সা স্থাদ্ ভাসস্তস্থ মহাত্মনঃ ॥১২

আৰুষু। বদি দিবি ক্ৰ্য্যসহস্ৰস্ত ভাঃ যুগপদ্ উথিতা ভবেৎ, তদা সা ভাঃ ডক্ত মহাত্মনো ভাসঃ সদৃশী ভাৎ ॥১২

আমুবাদ। যদি আকাশে যুগপৎ সহস্র সুর্য্যের প্রভা উথিত হয়, তবে নেই প্রভা সেই মহাত্মার প্রভার সদৃশ হইতে পারে ॥১২

ভাষ্য। যা প্নর্ভগবতো বিশ্বরূপক্ত ভাক্তা উপনা উচ্যতে-দিবি অস্তরীক্ষে ভৃতীয়কাং বা দিবি স্থ্যাণাং সহস্রং স্থ্যসহস্রং তক্ত যুগপছখিতক্ত যা যুগপছখিতা ভাঃ না যদি সদৃশী ক্তাৎ তক্ত মহাত্মনঃ বিশ্বরূপক্ত ভাসঃ যদি বা ন ক্তাৎ ততোহপি বিশ্বরূপক্ত ভা অভিরিচ্যতে ইত্যভিপ্রায়ঃ ॥১২

আনন্দ্রগিরিটীকা। নমু প্রকৃতন্ত ভগবতো রূপন্ত দীপ্তিরন্তি ন, বা এচেৎ

কাঠাদিসাব্যং বভাত কীদৃশী সেত্যাশস্থাহ—হা। পুনারিক্তি। সা ধদি ভাৎ ভতাসঃ সদৃশী সেতি বোজনা। অসম্ভাবিতাভাপগমার্থো বদিশবঃ, ভাত্তবো নিশ্চরার্থং। সা কথা বদৃশী সম্ভবতি ন ভূ ভবতোবেতি বিবনিশ্বাহ—বৃদ্ধি ব্রক্তি ॥३২

অসুবাদ। সেই বিশ্বরূপ তগবানের বে প্রভা, তাহার উপরা দেওরা যাইতেছে। "দিবি' এই শব্দটির অর্থ অন্তরীক্ষে অথবা ভৌঃ এই নামে প্রেসিক সর্কোপরি স্থিত তৃতীর আকাশে; সহস্র সূর্য্য যদি এককালে উথিত হর একং সেই সহস্র স্থান্তর রশিনিচর বদি এক সঙ্গে (একহানে) উদিত হর, ভারা হইলে সেই (সহস্র স্থান্তর্থিত) রশ্মনিচর, সেই মহাত্মা বিশ্বরূপের প্রভার বদি সমান হর, অথবা হরই না অর্থাৎ তাহা হইতেও বিশ্বরূপের প্রভা অভিরিক্ত হর, তাহাই তাৎপর্য্য ॥১২

> তত্ত্বৈকন্থং জগৎ কৃৎস্নং প্রবিভক্তমনেকধা। অপশ্যদ্ দেবদেবস্ত শরীরে পাণ্ডবস্তদা॥১৩

অস্থ্যু। তদা পাশুবঃ (অর্জুনঃ) দেবদেবস্থ তত্ত্র শরীরে অনেকধা প্রবিভক্তং কংলং (সমগ্রং) জগৎ একস্থম্ অপশ্রৎ ॥১৩

অনুবাদ। সেই সমরে পাণ্ডব [অর্জুন] সেই দেবদেবের শরীরে নানা প্রকারে বিভক্ত সকল জগৎ একত্ত অবস্থিত দেখিয়াছিলেন ॥ ১৩

ভাষ্য) কিঞ্চ তত্ত্ত তিমিন্ বিশ্বরূপে একমিন্ হিতং একমং জগৎ কুৎমং ঐবিভক্তমনেকথা দেবপিতৃমমুখ্যাদিভেদৈরপশুৎ দৃষ্টবান্ দেবদেবভ হরেঃ শ্রীরে গাওবোহর্জনভাগ । ১৩

আনেক্ষণিরিটীক। ন কেবলমুক্তমেবার্ক্তনো দৃষ্টবান্ কিন্ত তত্তৈব বিশনপে সর্বাৎ অপদেকশিলবন্থিতমপুর্তবানিত্যাহ—কিঞ্চেতি। তদা বিশ্বরূপক্র

গপবজ্ঞপক্ত দর্শনং দর্শনামীতার্থঃ ॥ ১০

আসুবাদ। আরও, সেই বিশরণ দেববেব হরির শরীরে সেই ব্ররে বের গড় ও মহুবাাদি নানারণে প্রবিভক্ত সমগ্র জগৎকে "পাশুব" আর্জুন একস্থানেই বিশ্বিত দেখিতে পাইরাছিলেন॥ ১৩

> ততঃ স বিস্ময়াবিফৌ ছফঁরোমা ধনঞ্জয়ঃ। প্রণম্য শিরশা দেবং কুতাঞ্জলিরভাষ্ত ॥ ১৪

আনুয়। ততঃ বিশারাবিষ্টা ক্টরোমা স ধনপ্রয়া কৃতাঞ্চলিঃ সন্দেবং শিরসা প্রশাম অভাবত ॥ ১৪

অমুবাদ। তাহার পর বিশ্বরাবিষ্ট রোমাঞ্চিতাক অর্জুন ক্বতাঞ্চলি হইরা সেই দেবকে মন্তক অবনত করিয়া নমস্বার পূর্বক বলিলেন ॥ ১৪

ভাষ্য। তত ইতি। ততত্তং দৃষ্টা স বিশ্বরেনাবিষ্টো বিশ্বরাবিষ্টো হাটানি রোমাণি যত সোহরং হাটরোমা চাভবং ধনঞ্জর: প্রণম্য প্রকর্বেণ নমনং ক্রমা প্রহরীভূত: সন্ শিরসা দেবং বিশ্বরূপধরং ক্রতাঞ্জলিন মন্ধারার্থং সংপ্তীকৃতহন্তঃ সন্ধারত উক্তবান্॥ ১৪

আনন্দ্রিটিকা। বিশ্বরূপধরন্ত ভগবতন্ত্রিন্ একীভূতজগতক উক্ত বিশেষণক্ত দর্শনানন্তরং কিমকরোদিত্যপেক্ষায়ামাহ—তত্ত ইতি। আক্চর্যাবৃদ্ধি-বিশ্বরঃ রোন্নাং হুষ্টবং পুলকিতত্বং প্রকর্ষো ভক্তিশ্রদ্ধরোরভিশয়ঃ ॥ ১৪

আমুবাদ। ততঃ ইত্যাদি শ্লোকের ব্যাখ্যা—অনন্তর তাঁহাকে (ভগবান্কে)
দেখিরা তিনি (অর্জুন) বিশ্বরে অভিভূত হইরা, বাহার রোম সকল হাই, তাহাকে
'হাইরোমা' বলা বার; ধনঞ্জর হাইরোমা হইরা প্রণাম করিরা বিনীত হইরা দেব বিশ্বরূপধারীকে (ভগবান্কে) ক্রতাঞ্জলি (বদ্ধাঞ্জলি) অর্থাৎ নমশ্বার জন্ত সম্পূর্টীক্তত্ত হইরা বলিতে লাগিলেন ॥ ১৪

অৰ্জুন উবাচ।

পশ্যামি দেবাংস্তব দেব দেহে, দর্ববাংস্তথা ভূতবিশেষসঞ্জান্। ব্রহ্মাণমীশং কমলাসনস্থ-, মৃষীংশ্চ দর্ববাসুরগাংশ্চ দিব্যান্॥ ১৫

অন্থয় । অর্জ্ন: উবাচ—হে দেব তব দেহে সর্বান্ তথা ভূতবিশেষসভ্যান্ ব্রহ্মাণম্ ঈশং কমলাসনন্থং সর্বান্ দিব্যান্ ধাষীন্ উরগাংশ্চ পঞ্চামি ॥ ১৫

অসুবাদ ৷ অর্জুন কহিলেন—হে দেব ! আমি আপনার দেহে দকল দেবতা, সকল প্রকার জীবগণ, ঈশর কমলাসনস্থিত ব্রহ্মা, দুকল দিব্য শ্ববি ও উরগগণকে দেখিতেছি ॥১৫

ভাষ্য ৷ কথং যবনা দৰ্শিতং বিশ্বরূপং তদহং পশ্রামীতি স্বাহ্নতবমাবিহুর্বন্
(স্বর্জুন উবাচ) পশ্রামি উপলভে, হে দেব ৷ তব দেহে দেবান্ সর্বান্ তথা
ভূতবিশেবসভব।ন্ ভূতবিশেবাগাং স্থাবরজ্ঞসানাং নানাসংস্থানবিশেবাগাং সভবাঃ
ভূতবিশেবসভবাতান্ ৷ কিঞ্ ব্রন্ধাণং চতুসুবিশ্ স্থান্ সিনিভারং প্রজ্ঞানাং;

- ক্ষণাশনত্বং পৃথিবীপল্পমধ্যে মেরুকর্ণিকাসনত্বমিত্যর্থঃ। ধ্ববীংশ্চ বশিষ্ঠাদীন্ সর্বাহরপাংশ্চ বাস্থকিপ্রভৃতীন্ দিব্যান্ দিবি ভবান্ ॥১৫

আনক্ষণিরিটীকা। কথং ভগবন্তং প্রত্যর্জুনো ভাবিতবানিতি পৃছ্জি-কথমিতি। তৎপ্রশ্নমণেকিতং প্রয়য়বতারয়তি—যৃত্ত্রেতি। ভৃতবিশেষ-সংঘাতের দেবতানামন্তর্ভাবেহিপি—পৃথক্ করণমুংক্তরান্ত্রমণঃ সর্বদেবতাত্মতেহিপি
তেভ্যো ভেদকথনং তত্ৎপাদকঘাদিতি মন্বাহ—কিঞ্জেতি। খবীশামুরগাণাঞ্চ কিঞ্চিবৈষম্যাৎ পৃথক্তম ; দিব্যানিত্যুভরেষাং বিশেষণম্॥১৫

অকুবাদ। কেননা ?— তৃমি বে প্রকার বিশ্বরূপ দেখাইলে, আমি ভাহা শাষ্ট দেখিতে পাইতেছি। এই কথা অর্জুন বলিতেছেন বে। হে দেব, তোমার দেহে সকল দেবগণকেই আমি দেখিতেছি (অর্থাৎ) অমুভব করিতেছি। সেই প্রকার আরও সকল "ভৃতবিশেবসক্ত"কে [ও দেখিতেছি] "ভৃতবিশেব" অর্থাৎ সাবর ও জলমাত্মক নানা আকারবিশিষ্ট প্রাণিবিশেব, তাহাদেরও সক্ত অর্থাৎ সমূহকে 'ভৃতবিশেবসক্তা' বলা যায়। আরও চতুর্মুখ প্রজাগণের ঈশ্বর ব্রহ্মাকেও দেখিতে পাইতেছি। ঐ ব্রহ্মা "কমলাসনত্ব" পৃথিবীপশ্মধ্যে মেকুরূপ কর্দিকাসনে বিনি অবস্থান করেন, তাঁহাকে 'কমলাসনান্থ' বলা যায়। ঐরপ বিশিষ্টাদি ঋষিগণ এবং বাস্থাকি প্রভৃতি 'দিব্য' স্বর্গীয় উরগগণকেও দেখিতে পাইতেছি॥১৫

অনেকবাছুদরবক্ত্রনেত্রং, পশ্যামি ত্বা # সর্বতোহনস্তরূপম্। নাস্তং ন মধ্যং ন পুনস্তবাদিং, পশ্যামি বিশ্বেশ্বর বিশ্বরূপ ॥১৬

আনুষ্ম। হে বিষেশ্বর বিশ্বরূপ অনস্তবাহুদরবক্তুনেত্রং অনস্তরূপং দা সর্বতঃ পঞামি; তব অস্তং ন পঞামি ন মধ্যং ন পুনরাদিং [পঞামি] ॥১৬

আমুবাদ। হে বিশেষর হে বিশ্বরূপ, আমি সকলদিকেই তোমাকে দেখিতে পাইতেছি। ভোমার বাহু উদর ও নেত্র অনেক; তোমার আকার অনন্ত। আমি তোমার আদি, মধ্য ও অন্ত দেখিতেছি না ॥১৬

ভাষ্য ৷ 'অনেকবাহদরবন্ধুনেত্রম্' অনেকে বাহব উদরাণি বন্ধুণি নেত্রাণি চ বন্ধ ভব স অম্ অনেকবাহদরবন্ধুনেত্তক্ষ্ অনেকবাহদরবন্ধুনেত্রং পঞ্জামি ছা ছাং সর্বভঃ সর্বতি অনন্তরগং অনন্তানি রূপাণি অন্ধ ইত্যনন্তরপন্তম্ অনন্তর্কাং নাত্তম্ অন্তেহিব্সানং ন মধ্যং মধ্যং নাম ছয়োঃ কোট্যোরন্তরং ন

[্] পৃঞ্চাৰি ছাং সর্ব্তোহনুজনপ্রিতি বা পাঠঃ।

'প্ৰক্ৰবাদিং তব দেবস্থ নাক্তং পঞ্চামি ন মধ্যং পঞ্চামি ন প্ৰয়াদিং পঞ্চামি হে বিষেশ্বর হে বিশ্বরূপ ॥১৬

আনন্দগিরিটীকা। বত্র ভগবদেহে দর্বমিদং দৃষ্টং জ্বেব .বিশিনটি— অনেক্তে। আদিশব্দেন মূলমূচাতে। নাজং ন মধ্যমিভাত্রাণি পঞ্চামীভাত্ত প্রভাব্দং সম্বন্ধং হচরতি—নাজ্ঞং পশ্যামীতি ॥১৬

আনুবাদ। 'অনেকবাহুদরবজ্বতে' বে তোমার বাহ উদর সুখ ও নরনসমূহ অনেক, সেই তুমি 'অনেকবাহুদরবজ্বতে', তোমাকে অনেকবাহুদরবজ্ব নেজ দেখিতেহি; 'সর্বাজ্ঞ' সর্বাজ্ঞ 'অনন্তরূপ' বাহার রূপের অন্ত নাই, দে 'অমন্তরূপ' জোমাকে অনন্তরূপই দেখিতেছি। অন্ত [অর্থে] অবসান, মধ্য [অর্থে] তুইটি সীমার অন্তর্গ প্রদেশ; আমি তোমার অন্তর দেখিতেছি না, মধ্য দেখিতেছি না, আদিও দেখিতেছি না, হে বিশেশর, হে বিশ্বশর্প॥১৬

কিরীটিনং গদিনং চক্রিণঞ্চ, তেজোরাশিং সর্বতো দীপ্তিমস্তম্। পশ্যামি ছাং ছুর্নিরীক্ষ্যং সমস্তাৎ, দীপ্তানলার্কল্যুতিমপ্রমেয়ম্ ॥১৭

আনুষ্ম। কিরীটনং গদিনং চক্রিণং তেজোরাশিং সর্কতো দীপ্তিমন্তং ছর্নিরীক্ষাং দীপ্তানলার্কছ্যতিম্ অপ্রমেরং সমস্তাৎ পশ্চামি ॥১৭

অকুবাদ। আমি তোমাকে সকল দিকেই দেখিতেছি। তুমি কিরীটধারী, তুমি গদাপাণি, তোমার হস্তে চক্র, তুমি সর্বাদিকে দীপ্তিমান্ তেকোরাণি; তোমার হাতি হুর্ব্য ও অনলের ভার প্রদীপ্ত, তুমি যে কত বড়, তাহার ইর্ন্তা করা বার না ৪১৭

ভাষ্য । কিরীটনং কিরীট: নাম শিরোভ্যণবিশেষস্তদ্যভান্তি স কিরীটী তং কিরীটনং তথা গদিনং গদা যন্ত বিভাতে ইতি গদী তং গদিনং তথা চক্রিশং চক্রমন্তান্তি ইতি চক্রী তং চক্রিশং চ। তেলোরাশিং তেলাগ্র্পুং সর্ব্বতো দীপ্তিমন্তং সর্ব্বতো দীপ্তিমন্তং সর্ব্বতো দীপ্তিমন্তং পঞ্চামি স্বাং ছির্নিরীক্ষ্যং ছঃথেন নিরীক্ষ্যে ছর্নিরীক্ষ্যং হর্নিরীক্ষ্যং সমস্তাৎ সমস্ততঃ সর্ব্বক্র দীপ্তানলার্কছাতিং দীপ্তাবনলার্কে। তর্মেছ্র্যুতিরিব জ্যুতিন্তেলো যন্ত তব স্বং দীপ্তানলার্কছাতিঃ তং দাং দীপ্তানলার্কছাতিম্ । অপ্রমেরং ন প্রমেরমপ্রমেরং ক্ষান্তারিছেদ্যন্ত্র্যাহ্য । ১৭

আনন্দ্রগারটাকা। বিষরগবন্তং তগবন্তমেব প্রকারান্তরেশ প্রদাকরতি— কিঞ্চেডি। পরিছিন্নমং ব্যাবর্ত্তরতি—সর্ব্বত ইতি। র্মনিরীক্ত প্রভাষীত্য- ষিকারিভেদাদবিক্ষন্। প্রতো বা পৃঠতো বা পার্বতো বা নান্ত দর্শনং কিছ দর্শবেতা। — সমস্তত ইতি। দীথিমখং দৃষ্টান্তেন স্পষ্টরতি—দীথেতি॥>१

অমুবাদ। 'কিরীটিনং' [এই শক্টির অর্থ] কিরীট (অর্থাৎ) মন্তকের ভ্রশবিশেষ; তাহা বাহার আছে, তাহাকে 'কিরীটা' কহা যার, সেই তাহাকে [এই অর্থ] কিরীটিনং এই শক্টি প্রযুক্ত হইরাছে। সেই প্রকারে 'গদিনং' এই শক্ষে অর্থ এই বে, বাহার গদা আছে, তাহাকে; দেইরূপ 'চক্রিণং' ইহার অর্থ এই বে, বাহার চক্র আছে, তাহাকে, [তোমাকে এইরূপে আনি দেখিতেছি] "তেলোরাশি' অর্থাৎ তুমি তেজঃপ্র এবং 'সর্বতোদীপ্রিমান্' বাহার সকলদিকে দীপ্তি ছড়াইরা পড়িরাছে, তাহার নাম 'সর্বতোদীপ্রিমান্', তুমি সর্বতোদীপ্রিমান্ [তোমাকে সেইরূপেই আমি দেখিতেছি] তুমি 'দীপ্রানলার্কক্রাতি' [ইহার অর্থ এই বে] দীপ্ত অনল ও অর্ক (অরি ও স্বর্য) এই অর্থে দীপ্রানলার্ক এই শক্ষি বাবহৃত হইরাছে, দেই দীপ্রানলার্কের জার বাহার হ্রাতি, তাহাকে দীপ্রানলার্কহ্যতি বলা বার [তোমাকে আমি দীপ্রানলার্কহ্যতিরূপে দেখিতেছি, ইহাই তাৎপর্য্য] 'অপ্রমের' বে প্রমের নহে অর্থাৎ বাহার সীমা নাই, সেই অপ্রমের। তুমি অপ্রমের [ইহাও আমি দেখিতেছি] ইহাই অর্থ ॥১৭

স্বমক্ষরং পরমং বেদিতব্যং, স্বমস্থ বিশ্বস্থ পরং নিধানম্। স্বমব্যয়ঃ শাশ্বতধর্মগোপ্তা, সনাতনস্থং পুরুষো মতো মে ॥১৮

আন্তর্য়। তং পরমং বেদিতব্যম্ অক্সরম্। তম্ অস্ত বিশ্বস্ত পরং নিধানম্, তম্ অব্যরং, শাবতধর্মগোপ্তা [চ] তং সনাতনঃ পুরুষো মে মতঃ ॥১৮

অনুস্বাদ। তৃমিই পরম জ্ঞাতব্য অকর (অবিনাশি ব্রহ্ম); তৃমিই এই বিষের সর্বশ্রেষ্ঠ আশ্রের, তৃমি অব্যর, তৃমিই সনাতন ধর্মের রক্ষাকর্তা, আমার বিবেচনার তৃমিই একমাত্র সনাতন পুরুষ ॥১৯

ভাষ্য । ইত এব তে বোগশক্তিদর্শনাদম্মিনোমি, স্বন্ধরং ন কর্মতীতি পরমং এক বেদিভবাং জাতবাং মুম্কুভিঃ। স্বন্ অন্ত বিশ্বন্ত সমস্তই জগতঃ পরং প্রকৃষ্টং নিধানং নিবীরভেছ্মিন্ ইতি নিধানং পর আশ্রের ইত্যর্থঃ। কিঞ্চ বন্ধ্যারঃ ন তব ব্যরো বিশ্বন্ত ইত্যব্যরঃ, শাশ্বভধর্শক্ষান্তা শক্তব্য শাশ্বভঃ নিত্যঃ ধর্মক্ত গোপ্তা শাশ্বভধর্মগোপ্তা সনাতনশ্চিরভ্যন্ত্র প্রস্কার পর্যো মতোইতিক্রেভো বে মুম্নার্থ

আনন্দ্রনিরিটাকা ৷ সপ্রগঞ্চে ভগবজাগে প্রস্কৃতে প্রকরণবিস্কৃত্বং স্বাক্তর

মিত্যাদি নিরুপাধিকবচনমিত্যাশস্ক্যাহ—ইতএবেতি। বোগশক্তিরৈশ্বর্যাতিশরং, ন করতীতি নিশুপঞ্চস্কুচাতে, পরমপুরুষার্থছাৎ পরমার্থছাক জ্ঞাতব্যক্ষ্। বিশ্বন্ হোঃ পৃথিবীত্যাদো প্রপঞ্চারতনক্তৈব ততো নিরুষ্টক জ্ঞাতব্যক্ষরণাৎ কুতো বন্ধণো জ্ঞাতব্যক্ষ ত্তাহ—ত্বমুস্তেতি। নিশুপঞ্চক বন্ধণো ক্রেরুক্ষে হেকন্তরমাহ—কিঞ্জেতি। অবিনাশিছাৎ তবৈ জ্ঞাতব্যক্ষাতিরিক্তক্ত নাশিক্ষেন হেরুছাদিত্যর্থং, জ্ঞানকর্মাত্মনো ধর্মক্ত নিত্যকং বেদপ্রমাণককং ধর্মনংস্থাপমার্থার সম্ভবামীত্যক্তবাদ্ গোপ্তা রক্ষিতা।।১৮

অকুবাদ। তৃমি এই যে বোগশক্তি দর্শন করাইলে, ইহা ছারা আমি অহমান করিতেছি বে, তৃমি 'অক্ষর'; বাহার করণ হয় না, সেই বস্তু 'অক্ষর'; তৃমি 'পরম' পর (ব্রহ্ম); 'বেদিতব্য' অর্থাৎ মৃষ্কুগণের তৃমিই একমাত্র জ্ঞাতব্য (পরবন্ধ); তৃমি এই বিধের অর্থাৎ সমস্ত জগতের একমাত্র পরম "নিধান"; বাহাতে পদার্থ সকল নিহিত হয়, তাহার নাম 'নিধান'; তৃমিই পরম নিধান অর্থাৎ প্রস্তুই আশ্রয়। আরপ্ত তৃমি অব্যয় অর্থাৎ তোমার ব্যয় নাই; স্মৃতরাং তৃমি অব্যয়; এবং তৃমিই 'শাখতধর্মগোপ্রা' যে ধর্ম সর্বাদা বিভ্যমান থাকে, তাহাকে 'শাখত' (অর্থাৎ) নিত্য ধর্ম কহে, সেই শাখত ধর্মের বিনি রক্ষা করেন, তিনিই 'শাখতধর্মগোপ্রা' এবং তৃমিই সেই 'সনাতন' চিরস্তন পরম পুরুষ (অর্থাৎ অন্থিটীয় ব্রহ্ম)— ইহাই আমার অভিপ্রায় ॥১৮

অনাদিমধ্যান্তমনন্তবীর্য্য,-মনন্তবাহুং শশিসূর্য্যনেত্রম্।
পশ্যামি বাং দীপুত্তাশবক্ত্রুং, স্বতেজদা বিশ্বমিদং তপান্তন্ ॥ ১৯
আন্তর্য়। অনাদিমধ্যান্তম্ অনন্তবীর্য্যম্ অনন্তবাহুং শশিস্ব্যনেত্রং দীপুত্তাশবন্ধঃ স্বতেজদা ইদং বিশং তপন্তং বাং পশামি॥:১

আমুবাদ। তোমার আদি মধ্য বা অন্ত নাই। তোমার পরাক্রম অনস্ত; চক্স ও সূর্ব্য ভোমার নেত্র; প্রদীপ্ত হতাশনই তোমার বদন; আমি দেখিতেছি যে, তুমিই নিহ্নতেক্যের দারা এই বিশ্বকে সন্তাপিত করিতেছ॥১১

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ, অনাদিমধ্যান্তম্ আদিশ্চ মধ্যঞ্চ অন্তণ্ড বন্ত নোহরম্ অনাদিমধ্যান্তঃ তং তামনাদিমধ্যান্তম্ অনন্তবীর্যাং ন তব বীর্যায়ান্তোহন্তীতি অনন্তবীর্যান্ত তামনন্তবীর্যাম্ তথা অনন্তবাহ্ম্ অনন্তা বাহবো বন্ত তব স ক্ষেত্রনাহন্তং, তামনন্তবাহ্ম্ শশিস্ক্রনেত্রম্ শশিস্ক্রনেত্রতং তাম শশিস্ক্রনেত্রতং তাম শশিস্ক্রনেত্রতং তাম শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনেত্রতং তাং শশিস্ক্রনার তাল বিশ্বতাশন্ত তাম কাং শশিস্ক্রনার তাং শীষ্ট্রন্তাশন

বিজ্ঞানীপ্রশাসো হতাশন্চ স বক্তুং যন্ত তব সাজং দীপ্তহতাশ্বক ং তং সাং দীপ্তহতাশ্বক্তঃ স্বতেজ্যা বিশ্বমিদং তপ্তং তাপরস্ক্র ॥ ১৯

আনন্দগিরিটীকা। ভগবতো বিশ্বরূপাখ্যং রূপমের পুনর্বিরূপোতি— কিঞ্চেতি। হুত্যমাতীতি হুতাশো বহিঃ॥ ১৯

অনুবাদ। [আরও দেখিতেছি বে তুমি] "অনাদিমধ্যান্ত" বে তোমার আদি মধ্য ও শব্ত নাই, সেই তুমি 'অনাদিমধ্যান্ত', সেই অনাদিমধ্যান্ত ভোমাকে [দেখিতেছি]। "অনন্তবীর্য্য," বে ভোমার বীর্যাের অন্ত নাই সেই তুমি 'অনন্তবীর্য্য' তোমাকে [দেখিতেছি]। সেইরুপ "অনন্তবাহ" বে তোমার বাহসমূহ অনন্ত, সেই তুমি, 'অনন্তবাহ' তোমাকে [দেখিতেছি]। "শশিস্ব্যনেত্র" বে তোমার নেত্রদ্বর চক্র ও স্ব্যা, সেই তুমি 'শশিস্ব্যানেত্র' সেই চক্রস্ব্যানয়ন তোমাকে [দেখিতেছি]। "দীপ্রহতাশবক্র" দীপ্ত হতাশ অর্থাৎ অন্তি তোমার বক্ত্র (অর্থাৎ) মুধ, সেই তুমি 'দীপ্রহতাশবক্র' সেই দীপ্রহতাশবক্র তুমি তোমার বিশ্বরেই তেজের দ্বারা এই বিশ্বকে প্রতপ্ত করিতেছ, ইহা আমি দেখিতেছি ॥১৯

ভাবাপৃথিবোরিদমন্তরং হি, ব্যাপ্তং ছয়ৈকেন দিশশ্চ সর্বাঃ।
দৃষ্ট্বাহদুতং রূপমিদং তবোগ্রং, লোকত্রয়ং প্রব্যথিতং মহাত্মন্ ॥২০

আন্ময়। [হে] মহাস্থন, স্বরা হি একেন ইদং ভাবাপৃথিবাোরস্তরং ব্যাপ্তং, সর্বা দিশক [ব্যাপ্তা:]। তব ইদস্ অভ্তম্ উগ্রং রূপং দৃষ্টা লোক্তরং প্রবাধিতম্॥২০

অকুবাদ। হে মহাত্মন্, তুমি একাকীই বেহেতু এই ছালোক ও পৃথিবীর মধ্যভাগ ব্যাপিরা অবস্থান করিতেছ, এবং সকলদিক্ [ও তুমি ব্যাপিরা রহিরাছ] সেই হেতু তোমার এই অভ্ত অথচ ভরত্বর রূপ বিলোকন করিরা জিলোক [জিলোকীস্থ জনগণ] ব্যথা পাইতেছে॥ ২•

ভাষ্য। ছাবাপৃথিব্যোরিদমন্তরং হন্তরীক্ষং ব্যাথাং দরা একেন বিশরপধরেশ দিশত সর্কা, ব্যাথাঃ দৃষ্ট্য উপলভ্য অভুতং বিস্থাপকং রূপমিদং ভবোগ্রাং ক্রুরং লোকানাং ক্লবং প্রব্যাধিতং ভীতং প্রচলিতং বা মহাত্মন্ অকুদ্রস্কভাব ॥ ২০

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতভগবদ্ধণন্থ ব্যাপ্তিং ব্যনক্তি—স্তাবা-পৃথিব্যোরিদমিতি। তত্তৈব ভয়বর্ষনাচষ্টে—দৃষ্ট্পেতি॥ ২•

অনুবাদ। তো এবং পৃথিবীর এই অন্তর অর্থাৎ অন্তরীক্ষকে ভূমি একাই বার্টিগরা স্বন্ধিয়াছ এবং দিক্সমূহও ভূমি ব্যাপিরা ইবিয়াছ। তোমার অভ্তত বিশয়স্থনক এবং "উগ্রাশ ক্র এই প্রকার রূপ দেখিয়া এই "লোকনান" ভিনাট লোক (অর্থাৎ বর্গ মর্জ্য ও রসাতন) "প্রব্যথিত" অর্থাৎ ভীত বা প্রচলিত ইইতেছে। হে মহাম্মন্ (অর্থাৎ) অকুদ্রস্থভাব ॥ ২০

ষমী হি ছাং স্থরসজ্ঞা বিশস্তি, কেচিন্তীতাঃ প্রাঞ্জনয়ো গৃণন্তি। স্বন্তীত্যুক্তা মহর্ষিসিদ্ধসজ্ঞাঃ, স্তবন্তি ছাং স্তুতিভিঃ পুক্ষলাভিঃ ॥২১

আন্ত্রয় । অমী স্থরসজ্বাদ্বাং বিশস্তি, কেচিং [স্থরসজ্বাঃ] ভীতাঃ প্রাঞ্জবরঃ [সন্তঃ] দ্বাং গৃণন্তি (স্থবন্তি)। মহর্বিসিদ্ধসজ্বাঃ স্বন্তি ইত্যুক্তা পুন্নাতিঃ (প্রচুরাভিঃ) স্বতিভিঃ দ্বাং শুবন্তি ॥ ২১

আকুবাদ। এই কতকগুলি দেবতা তোমার মধ্যে প্রবিষ্ট হইডেছেন, আবার কতকগুলি দেবতা ভয় পাইয়া ও বদাঞ্চলি হইরা তোমার ছতি। করিতেছেন; মহর্ষি ও সিদ্ধগণ স্বস্তি এই শক্ষোচ্চারণপূর্বক অণণ্ড স্কৃতিনিবহের ঘারা তোমারই প্রণ কীর্ত্তন করিতেছেন॥ ২১

ভাষ্য। অথাধুনা পুরা "বহা জয়েম যদি বা নো জয়েয়্র" ইত্যর্জ্নত সংশয়
আসীৎ তরিপরার পাওবজরনৈকান্তিকং দর্শরামীতি প্ররুৱো ভগবান্ তং পঞ্চরাহকিঞ্চ অমী হি যুধ্যমানা বোদ্ধারঃ তা তাং স্করসভবা বেহত্র ভূভারহরপারাবভীপা
বস্বাদিদেবসভ্যা মহ্ব্যসংস্থানাত্বাং বিশক্তি প্রবিশস্তো দৃগুস্তে। তত্র কেচিদ্ভীতাঃ
প্রাঞ্জনরঃ সন্তঃ গৃণন্তি ভবন্তি ভামত্তে পলারনেহপ্যশক্তাঃ নতঃ যুদ্ধে প্রভূত্যপহিতে
উৎপাতাদিনিমিন্তান্ত্যপলক্য স্বত্যন্ত জগত ইত্যক্তা মহর্ষিসক্ষসভ্যাঃ মহর্ষীণাং
সিদ্ধানাঞ্চ সভ্যাঃ ভবন্তি তাং ব্রভিতিঃ পুরুলাতিঃ সম্পূর্ণাতিঃ ॥ ২১

আনক্ষমিরিটিক। অনী হীত্যাদি সমনন্তরগ্রহত তাংপর্যমাহ—অথেতি।
তং ভগৰতং পাঞ্চলছমনভাত্তিকং দর্শরতং পশ্মন্ত নো ব্রবীতীত্যাহ—তং পশ্মাদ্মিতি। বিশ্বরূপত্তৈব প্রপঞ্চনার্থমনন্তরগ্রহ্মাতমিতি দর্শরতি —কিপ্রেক্তি
অক্সরশ্যা ইতি পদং হিম্মা ভূতারভূতা হর্ষ্যোধনাদরন্তাং বিশবীত্যাণি চ বক্তব্যম্
উভরোরণি সেনরোরবন্থিতের বোদ্ধ্ কামেনবান্তরবিশেষণ্যাহ—ত্ত্ত্ত্তি।
সমরভূমৌ সমাগভানাং এই কামানাং নারদপ্রভূতীনাং বিশ্বনাশ্যাশক্ষমানানাং
তং পরিজিহীর্বতাং স্থতিপদের ভগবদ্বিব্যেষ্ প্রবৃত্তিপ্রকারং দর্শরতি—মুদ্ধাইতি । ২১

আফুবাদ 4 একণে "আমরা জরী হইব বা আমাদিগকে [ভাহারা] জর করিবে পু" এইপ্রকার বে সংশয় অর্জুনের হইরাহিল, ভাহার বিশিয়ার প্রাঞ্জবের লয় বে মবক্তভাবী, তাহা দেখাইব," এই ভাবে ভগবান্ প্রবৃত্ত হইলেন। তাহা দেখিয়া অর্জ্বন আরপ্ত বলিতেছেন, বে,—এই বুদ্ধে প্রবৃত্ত বোদ্ধূগণ [ইহায়া] দেবসমূহ (অর্থাৎ) ভূমির ভারহরণ করিবার লভ বে সকল বস্থ প্রভৃত্তি দেবগণ অবতীর্ণ হইরাছেন, তাঁহারাই মহুব্য আকার ধারণ পূর্বক [যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইরাছেন ও] একণে তাঁহারাই "দা" তোমার দেহেতে প্রবিট্ট হইতেছেন, ইহা দেখা বাইতেছে। তাঁহাদের মধ্যে [আবার] কেহ বা ভীত হইরা অঞ্জলিবদ্ধসহকারে তোমার গুণবর্ণনা করিতেছেন। [আবার] পলারনে অসমর্থ হইরা [এবং] এই উপস্থিত যুদ্ধে উৎপাতাদি নানা ভরনিমিত্ত দর্শন করিরা "কগতের মঙ্গল ভউক" এই কথা উচ্চারণ পূর্বক তাঁহারা অন্তান্ত মহর্ষি ও সিদ্ধাণ সম্পূর্ণরূপে নানাবিধ স্থতি দারা তোমার সন্তোষ উৎপাদন করিবার জন্ত প্রবৃত্ত করিতেছেন। ২১

রুদ্রাদিত্যা বদবো যে চ সাধ্যা, বিশেহখিনো মরুতশ্চোত্মপাশ্চ। গন্ধর্বযক্ষাস্থরসিদ্ধসঞ্জা, বীক্ষন্তে ত্বাং বিস্মিতাশ্চৈব সর্বে॥ ২২

আন্থ্যু । বে ক্লাদিত্যা বসবং সাধ্যাং বিখে (দেবাঃ) মক্লতঃ উন্নপাঃ চ গদ্ধর্বকলাহুরসিদ্ধসভ্যাশ্চ [তে] সর্ব্বে বিশ্বিতা এব দাং বীক্ষত্তে ॥ ২২

অকুবাদ। বে সকল কন্ত, আদিত্য, বস্থ, সাধ্য, বিশ্ব, অখিনীকুমারহর, মক্তং নামক দেবতাগণ এবং উন্নপানামক পিতৃগণ [আছেন] তাঁহারা এবং গন্ধর্ক, যক্ষ, অস্থ্র ও সিদ্ধগণ সকলেই বিশ্বিত হইয়া ভোমাকে দেখিতেছেন॥ ২২

ভাষ্য ৷ কিঞান্তৎ কদ্ৰাদিত্যা বসবো বে চ সাধ্যা কদ্ৰাদরঃ গণাঃ, বিৰে, অবিনো চ দেৰো, মক্ষতশ্চ, উন্নপাশ্চ পিতরঃ, গন্ধবিষলাহ্মরসিদ্ধসভাঃ গন্ধবি চাহাছ্ত্প্রভূতরঃ বক্ষাঃ কুবেরাদরঃ অহুরা বিরোচনপ্রভূতরঃ সিদ্ধাঃ কপিলাদরঃ তেবাং সভ্যাঃ গন্ধবিক্ষান্থরসিদ্ধসভ্যাঃ তে বীক্ষত্তে পঞ্জি ছা ছাং বিক্ষিতা বিশ্বরমাপরাঃ সম্ভত্তে সর্ম্ব এব ॥ ২২

আনন্দগিরিটীকা। দৃশ্যমানত ভগবজপত বিশ্বরকরত্বে হেরওরমার— কিঞ্চেতি। ত এবোকা ক্র্যাদরঃ সর্বে বিশ্বরমাপরাক্ত পশ্যতীতি সম্বন্ধঃ ॥২২

অনুবাদ। আরও রুদ্র ও আদিতাগণ, বস্তু ও সাধানামর্ক দেবগণ, বিবদেবগণ ও অবিনীকুমারবয়, মরুৎসংজ্ঞাধারী দেবগণ ও উন্নপানামধারী পিতৃগণ,—এবং হার্যা ও ইতু মার্মক গর্ম্মগণ, কুবের এক্তি ফ্লগণ, বিরোচন প্রমুখ অম্বরগণ ও কণিল প্রভৃতি সিদ্ধাণ [এই সকল দেব তাদিগের সমৃহ একত্র হইরা] বিশ্বরসহকারে সকলেই তোমাকে দেখিতেছেন ॥ ২২ রূপং মহৎ তে বহুবক্তু নেত্রং, মহাবাহো বহুবাহুরুপাদম্ । বহুদরং বহুদংষ্ট্রাকরালং, দৃষ্ট্বা লোকাঃ প্রব্যথিতান্তথাহম্ ॥ ২৩

অনুষ্ । হে মহাবাহো, তে বহুবক্তুনেত্রং বহুবাহুরুপাদং বহুদরং বহুদংখ্রী-ক্রালং মহৎ রূপং দৃহ। লোকা: তথা অহং চ প্রব্যথিতা: ॥২৩

আকুবাদ। হে মহাবাহো এই বছ মুখ ও নয়নযুক্ত, অনেক বাহ, উক্ল ও পাদযুক্ত, অসংখ্য উদরযুক্ত এবং বহুদন্ত-সমষ্টিতে ভয়ন্কর তোমার এ প্রকাণ্ড বপুঃ দেখিরা এই সকল লোক এবং আমিও নিতান্ত প্রব্যথিত হইতেছি॥২৩

ভাষ্য ৷ বন্ধাৎ রূপং মহদতিপ্রমাণং তে তব বহুবক্তুনেত্রং বহুনি
বক্ত্রাণি মুথানি নেত্রাণি চকুংবি যন্মিন্ তক্রপং বহুবক্তুনেত্রং হে মহাবাহো
বহুবাহুক্পাদম্ বহুবঃ বাহুবঃ উরবঃ পাদাশ্চ বন্মিন্ রূপে তদ্ বহুবাহুক্পাদম্
কিঞ্চ বহুদরং বহুদং হ্রাকরালং বহুভিঃ দং ট্রাভিঃ করালং বিক্লতং বহুদং ট্রাকরালং
দৃষ্ট্রা রূপম্ ঈদৃশং লোকাঃ প্রাণিনঃ প্রব্যথিতাঃ প্রচলিতা ভরেন তথাহমপি ॥২৩

আনন্দগিরিটীকা। লে।কত্রয়ং প্রব্যথিতমিত্যক্তম্পসংহরতি—যুদ্মাদিতি। ঈদৃশং ষক্ষাৎ তে রূপং তক্ষাস্বাং দৃষ্ট্রেতি যোজনা। ভরেন লৌকিকবদহমিপি ব্যথিতো ব্যথাং পীড়াং দেহেক্সিমপ্রচলনং প্রাপ্তোহশীত্যাহ—ত্তথেতি।। ২৩

অনুবাদ। বে কারণ—তোমার এইরপ (শরীর) "মহং" অতি বৃহৎ [এবং] "বহুবক্তুনেত্র" বহু (অর্থাৎ) অনেক "বক্তু" মুথ এবং "নেত্র" চকুঃ বে রূপে আছে, তাহা 'বহুবক্তুনেত্র', হে মহাবাহো [এবং ঐরপ] "বহুবাহুরুপাদ বে রূপে অনেক 'বাহু উর্ন্ধ' এবং পাদ আছে, তাহাই 'বহুবাহুরুপাদ' এবং "বহুদর" (অর্থাৎ) অসংখ্য উদর বে রূপে বিশ্বমান আছে, তাহা 'বহুদর,' এবং বহুদর্শীকরাল অর্থাৎ অসংখ্য দম্বরাজি হারা "করাল" বিক্বত [ভর্কর] এই প্রকার তোমার ভর্কর রূপ দেখিয়া "লোক" লৌকিক প্রাণিগণ এবং আমিও শপ্রব্যুথিত" ভরে প্রচলিত হইতেছি ॥২৩

नजः स्पृत्राः मीखमत्नकवर्णः, व्याखाननः मीखिविमानत्नक्य्।
मृद्रेश हि षाः ध्वयाथिजाखनात्रा, श्रुजिः न विन्मामि ममः চ विस्था॥२८

জান্বয় । হে বিকো, নভঃশশ্ শং দীপ্তম্ অনেকবর্ণং ব্যান্তাননং, দীপ্তবিশাল-নেত্রং দাং দৃষ্টা প্রব্যথিতান্তরাদ্মা [জহং] ধৃতিং শমং চ ন রিন্দামি ॥ ২৪ সাল আনুবাদ। হে বিকো, তোমার দেহ গগনস্পর্লী এবং দীপ্রিমান, তোমার বর্ণ অনেকপ্রকার, তুমি মুখব্যাদান করিয়া রহিয়াছ; তোমার নেত্র অতি বিভূত ও দীপ্রিময়; ভোমাকে দেখিরা আমার অন্তরাত্মা ব্যথা পাইতেছে; আমি ধৈর্য ও শান্তিলাভ করিতে পারিতেছি না॥ ২৪

ভাষ্য ৷ নভঃম্পৃশং ছাম্পৃশমিতার্থ: দীপ্তং প্রজ্ঞলিতমনেকবর্ণম্ জনেকে বর্ণা ভরঙ্করা নানাসংস্থানা যশ্মিন্ ছিন্ন তং ছামনেকবর্ণং ব্যান্তাননং ব্যান্তানি বিশ্বতানি জাননানি মুখানি যশ্মিন্ ছিন্ন তং ছাং ব্যান্তাননং দীপ্তবিশালনেত্রং দীপ্তানি প্রজ্ঞলিভানি বিশালানি বিস্তীর্ণানি নেত্রাণি যশ্মিংছিন্ন তং ছাং দীপ্তবিশালনেত্রং দৃষ্ট্ । হি ছাং প্রব্যথিতাস্তরাছ্মা প্রব্যথিতঃ প্রভীতোহন্তরাছ্মা মনো বক্ত মম সোহহং প্রব্যথিতাস্তরাছ্মা সন্ ধৃতিং ধৈর্য্যং ন বিন্দামি ন লভে শমং চ উপশমং মনস্তুটিং হে বিক্ষো॥ ২৪

আনন্দগিরিটীকা। অর্জ্নন্ত বিশ্বরূপদর্শনেন ব্যধিতত্বে হেতৃমাহ— তত্ত্তেতি ॥২৪

অমুবাদ। "নভঃশ্পূশ্" অর্থাৎ গগনম্পর্শী—'দীপ্ত' প্রজ্ঞানত 'অনেকবর্ণ' অর্থাৎ ভরদায়ক বিচিত্রাকার রূপ যাহার আছে, তাহার নাম 'অনেকবর্ণ'—তৃমি দেই অনেকবর্ণ, 'ব্যান্তানন' ব্যান্ত অর্থাৎ বিবৃত হইরাথে আননসমূহ অর্থাৎ মুখ-নিচর যে তোমার সেই তৃমি 'ব্যান্তানন', 'দীপ্তবিশালনেত্র' 'দীপ্ত' প্রজ্ঞানত 'বিশাল' বিস্তৃত হয় নেত্রসমূহ যে তোমার, সেই তৃমি 'দীপ্তবিশালনেত্র' এই প্রকার (বিচিত্রাকার) তোমাকে দেখিরা হে বিজ্ঞো, আমি 'প্রব্যথিতান্তরাত্মা' যাহার 'অন্তরাত্মা' মন প্রব্যথিত, অতিশয় ভয়য়ুক্ত হইয়াছে, সেই আমি 'প্রব্যথিতান্তরাত্মা' হৈইতেছি] এবং "য়ৃতি' ধৈর্য্য লাভ করিতে পারিতেছি না ও ''শম'' উপশম অর্থাৎ মনজ্ঞীও [লাভ করিতে পারিতেছি না] ॥ ২৪

দংষ্ট্রাকরালানি চ তে মুখানি, দৃষ্টেব কালানলসন্নিভানি। দিশো ন জ্ঞানে ন লভে চ শর্মা, প্রসীদ দেবেশ জগন্নিবাস॥ ২৫

আন্ত্রয় । দংষ্ট্রাকরালানি কালানলসন্নিভানি তে শ্র্থানি দৃষ্ট্রা দিশো ন জানে ম চ শর্ম লভে, হে দেবেশ জগনিবাস প্রসীদ ॥ ২৫

অকুবাদ। তোমার মুখসমূহ দং বারাজি বারা অতি ভরতর বলিরা বোধ হইতেছে। জ মুখ সকল যেন প্রলয়কালীন হতাশনের স্তার জ্বলিতেছে। ঐ সকল মূপ দেখিয়া আমি দিগ্লান্ত হইয়াছি, আমি কিছুতেই হব পাইতেছি না। হে দেবেশ ! হে জগরিবাল ! তুমি প্রালয় হও ॥ ২৫

ভাষ্য। কনাৎ ? দংট্রাকরালানি দংট্রাভিঃ করালানি বিক্নতানি তে তব মুখানি দৃট্টেব উপলভ্য কালানলসন্থিনি প্রলয়কালে লোকানাং দাহকোহনিঃ কালানলন্তংসন্নিভানি কালানলসদৃশানি দৃষ্টেবৃত্যেতং দিশঃ পূর্বাপরবিবেকেন ন কানে দিগুন্দো কাতোহন্দি অতো ন লভে চ নোপলভে চ শর্ম স্থেমতঃ প্রদীদ প্রসন্ধো ভব হে দেবেশ কারিবাস ॥ ২৫

আনন্দ্রিনিকা। দৃশ্যমানেহপি ভগবদেহে পরিতোবাছভাবে কারণাওক্ষ শুশ্বপ্রক্ষাহ—কুল্মাদিতি। দৃট্টেবেভ্যেকারেণ প্রাপ্তির্ব্যাবর্ত্ত্যতে ॥ ২৫

আকুবাদ। কি কারণে ?—"দংট্রাকরাল" দন্তরাজি বারা করাল অধাৎ বিক্বত তোমার মুধসমূহকে দর্শন করিয়া; [কিরপ মুধ ?] "কালানলসন্নিভ" প্রবাহকালে লোকসমূহদাহকারী বে অন্তি, তাহাকে 'কালানল' করে, সেই কালানলের সন্নিভ অর্থাৎ সদৃশ [তোমার মুধ] দেখিয়া এই দিক্টি পূর্ব্ব এইটি পশ্চিম এই প্রকার পৃথক্ভাবে আমি দিক্সমূহকে বুঝিতে পারিভেছি না অর্থাৎ আমি [ভরে] দিহুমূচ হইয়াছি এবং "শর্মাশ্ব্যথ লাভ করিতে পারিভেছি না। হে দেবেশ, হে জগন্নিবাস, তুমি প্রসন্ন হও॥ ২৫

আমী চ দ্বাং ধৃতরাষ্ট্রস্থ পুক্রাঃ, দর্ব্বে দহৈবাবনিপালদক্রৈঃ। ভীন্মে। দ্রোণঃ দূতপুক্রস্তথাহদো, দহাস্মদীয়ৈরপি যোধমুখ্যৈঃ॥২৬

অনুয়। অনী ধৃতরাট্রস্ত পূত্রাঃ সর্ব্ধে [এব] অবনিপালসকৈঃ (রাজগণৈঃ) সহ [তথা] ভীন্ন: দ্রোণঃ অসৌ স্তপ্রশ্চ (কর্ণ-চ) অন্দীরৈঃ বোধমুখ্যৈঃ সহ দাং [বিশস্তি]॥ ২৩

অনুবাদ। ঐ গ্বতরাষ্ট্রের পূত্র সকল অবনিপালগণের সহিত তোমার মধ্যে প্রবেশ করিভেছে এবং ঐ ভীম ঐ দ্রোণ এবং ঐ হতপুত্রও আমাদের পক্ষের প্রধান প্রধান বোদ্ধু শ্রেষ্ঠগণের সহিত ভোমাতে মিশিরা বাইভেছে॥ ২৬

ভাষ্য । বেভ্যো মম পরাজরাশকা আসীৎ সা চাপগতা; যতঃ অমী চ ছাৎ ধৃতরাইপুলাঃ হুর্ব্যোধনপ্রভ্তরঃ "দ্বরমাণা বিশক্তি" ইতি ব্যবহিত্তেন সম্বর্ধাং সক্রে সহৈব সংহতা অবনিপালসকৈ: অবনিং পৃথীং পালরন্ধি ইতি অবনিপালাতেবাং সক্রে:। কিঞ্চ ভীমঃ জোণঃ স্তপুল্রঃ কর্ণঃ তথাসৌ, সহামদীরেরপি ধৃইছ্যারক্রেভিভিঃ বোধমুধ্যৈঃ প্রধানেঃ সহ ॥ ২৬

व्यक्तिविका । वामान्य नगर गतनाः गतानग्रक मिन्नकः ग्रांकिः

ইতাহ—যেত্য ইতি। তব হেত্দেন প্লোকমবতাররতি—যত ইতি। ন কেবলং হর্ব্যোধনাদীনামের পরাজরঃ কিন্ত ভীয়াদীনামপীত্যাহ—কিঞ্জেতি। ২৬

অমুবাদ। বাহাদের নিকট হইতে আমার পরাজরের আশহা ছিল, একণে সেই আশহা অপগত হইরাছে, কারণ [তাহারা অর্থাৎ] ধৃতরাষ্ট্রের প্রগণ [অর্থাৎ] ছুর্ব্যোধন প্রভৃতি অবনিপতিগণের সহিত "জ্বার্ক্ত হইরা তোমার দেহের মধ্যে প্রবেশ করিতেছে" এই ব্যবহিত ব্যক্যাংশের সহিত ইহার অবর করিতে হইবে; অবনি অর্থাৎ পৃথিবীকে বাহারা পালন করে, তাহাদিগকে 'অবনিপাল' করে, তাহাদের সভ্য অর্থাৎ সমূহ এই অর্থে অবনিপালসভ্য এই শক্টি প্রবৃক্ত হইরাছে। আরও ভীয়, দ্রোণঃ এবং স্তপুত্র কর্ণ ইহারাও আমাদের শক্ষের বোদ্ প্রধান ধৃইছায় প্রভৃতির সহিত [তোমার দেহে প্রবেশ করিতেছে] "বোধমুধ্য" বোধশক্ষের অর্থ বোদা, তাহাদের প্রধান প্রক্ষরগণকে 'বোধমুধ্য' বলা বার ॥ ২৩

বক্তাণি তে ত্বরমাণা বিশস্তি, দংষ্ট্রাকরালানি ভয়ানকানি। কেচিছিলগ্রা দশনাস্তরেয়ু, সংদৃশ্যন্তে চূর্ণিতৈরুত্তমাক্ষঃ॥ ২৭

আন্তর্য়। বরমাণা: [এতে ছর্বোধনাদয়:] তে দংট্রাকর্যুলানি ভরানকানি বক্তাণি বিশক্তি, কেচিৎ দশনাস্তরের বিলগ্না চুর্ণিতৈক্তরমাকৈ: সং দৃশ্রস্তে ॥ ২৭

অনুবাদ। [এই সকল হর্যোধন প্রস্তৃতি] দ্বার সহিত তোমার দংট্রাবিষম ভরানক মুখনিবহের মধ্যে প্রবিষ্ট হইতেছে, কেহবা তোমার দশনরাজি মধ্যে বিশায় রহিরাছে, উহাদের মন্তক্সকল [তোমার দন্তাদাতে] চূর্ণিত হইরা গিরাছে॥ ২৭

ভাষ্য । বজুাণি মুথানি তে তব দ্বমাণান্তরাযুক্তা: সন্তো বিশক্তি কিং বিশিষ্টানি মুথানি ? দংখ্রীকরালানি ভয়ানকানি ভয়দ্বরাণি। কিঞ্চ কেচিৎ মুখানি প্রবিষ্টানাং মধ্যে বিলগ্না দশনান্তরেষ্ দন্তান্তরেষ্ মাংসমিব ভক্ষিতং সংদৃশ্যক্তে উপলভ্যকে চুর্ণিতৈশ্চু শীক্ষতৈক্তমালৈ: শিরোভি: ॥ ২৭

আনন্দগিরিটীকা। ভগবজপভোগ্রাম্বে হেম্বন্তরমাহ—কিঞ্ছেতি। প্রবিষ্টানাং মধ্যে কেচিদিতি সমন্ধঃ ॥ ২৭

অনুবাদ। "দরশাণ" দরাযুক্ত হইলা [ইহারা] "তে" তোমার "বক্তু"
মুখের মধ্যে প্রবিষ্ট হইভেছে। কিরুপ মুখ ় "দংট্রাকরাণ" ও "ভরানক"
ভরত্তর ! আরও ভোমার মুখের মধ্যে যাহারা প্রবিষ্ট হইভেছে, তাহাদের মধ্যেই

কেহ কেহ তোমার "দশনান্তর" নন্তসমূহের মধ্যে ভক্ষিত মাংসথণ্ডের স্থার লাগিরা রহিরাছে, এইরূপ দেখা বাইতেছে। তাহাদের "উত্তমাদ্র" মন্তকসমূহ [দন্তাঘাতে] "চুর্ণিত" চুর্ণীক্বত ২ইতেছে॥ ২৭

যথা নদীনাং বহবোহস্থুবেগাঃ, সমুদ্রমেবাভিমুখা দ্রবন্তি। তথা তবামী নরলোকবীরা, বিশন্তি বক্ত্রাণ্যভিবিজ্বন্তি॥ ২৮

জ্মন্তুর্। যথা বহবো নদীনাং অমুবেগাঃ সমুদ্রম্ এব অভিমুখাঃ [সন্তঃ] ক্রবন্তি, তথা অমী নরলোকবীরা অভিবিজ্ঞলন্তি তব বক্সাণি বিশক্তি॥ ২৮

অনুবাদ। বেমন নদীগণের অনেক জলবেগ সমুদ্রের অভিমুখে ধাবমান হয়, তাহাতে বেগের সহিত প্রবিষ্ট হয়। সেইরূপ এই সকল মহুজ্বীরগণ তোমার ঐ প্রদীপ্ত মুখনিবহু মধ্যে প্রবেশ করিতেছে॥ ২৮

ভাষ্য। কথং প্রবিশস্তি মুখানি ইত্যাহ যথা নদীনাং প্রবস্তীনাং বহবোহ-নেকে অম্বৃনাং বেগা অম্বেগান্থরাবিশেষাঃ সমুদ্রমেবাভিমুখা প্রতিমুখা ক্রবস্তি প্রবিশক্তি তথা তহুৎ তব অমী ভীমাদয়ঃ নরলোকবীরা মমুষ্যলোকশ্রা বিশস্তি বজ্রাণি অভিবিজ্ঞলন্তি প্রকাশমানানি ॥২৮

আনন্দ্রিনিকা। উভয়োরপি সেনয়োরবস্থিতানাং রাজ্ঞাং ভগবন্মুখ-প্রবেশনং নিদর্শনেন বিশদয়তি—কথমিত্যাদিনা।। ২৮

অসুবাদ। কিরপে মুখের মধ্যে প্রবেশ করিতেছে, তাহাই বলিতেছেন। বেমন "নদী" স্রোভস্বতীগণের "বহু" অনেক "অম্বুবেগ" জলের "বেগ" ম্বাবিশেষে অভিমুথ হইরা সমুদ্রে প্রবেশ করিয়া থাকে, "তথা" সেইরপ এই ভীন্ন-প্রভৃতি "নরলোকবীর" মহ্ব্যলোকের শ্রগণ সর্বতঃ প্রকাশমান তোমার মুখনসমূহের মধ্যে প্রবেশ করিতেছে॥ ২৮

যথা প্রদীপ্তং স্থলনং পতঙ্গা, বিশস্তি নাশায় সমৃদ্ধবেগাঃ। তথৈব নাশায় বিশস্তি লোকা, স্তবাপি বক্ত্রাণি সমৃদ্ধবেগাঃ॥ ২৯

আন্ত্রয়। যথা সমূদ্ধবেগাঃ প্রজ্ঞা নাশার প্রদীপ্তং জ্ঞানং বিশস্তি, তথা সমূদ্ধবেগা লোকা নাশার ত্বাপি বক্তাণি বিশস্তি এব ॥ ২৯

অনুবাদ। বেমন পতকগণ খীয় বিনাশের জন্ত অত্যন্তবেগে প্রদীপ্ত বহিতে প্রবিষ্ট হয়, সেইরূপই লোকসমূহও তোমার মুখমধ্যে বিনাশের জন্ত জড়ি বেগে প্রবেশ করিতেছে।১৯ ভাষ্য। তে কিমৰ্থং প্ৰবিশস্তি কথং চ ইত্যাহ। বথা প্ৰদীপ্তং ব্ৰথন-মন্ত্ৰিং পভলাঃ পক্ষিণঃ বিশস্তি নাশার সমৃদ্ধবেগাঃ সমৃদ্ধ উভূতো বেগো গভিবেঁবাং তে সমৃদ্ধবেগাঃ তথৈব নাশার বিশস্তি লোকাঃ প্রাণিনঃ তবাপি বন্দ্রাণি সমৃদ্ধবেগাঃ ॥২>

আনন্দগিরিটীকা। প্রবেশপ্ররোজনং তৎপ্রকারবিশেষঞ্চোদাহরণাস্তরেশ ন্দোরম্বভি—তে কিমর্থমিত্যাদিনা ॥২>

অমুবাদ। তাহারা কেন এবং কি প্রকারেই বা প্রবেশ করে ? তাহাই বলিতেছেন যে, যেমন প্রদীপ্ত "জ্বন" অগ্নির মধ্যে "সমৃদ্ধবেগ" সমৃদ্ধগতি "পতঙ্গ" পক্ষিণণ "নাশ" অর্থাৎ বিনাশের জন্তই প্রবেশ করে, সেইরূপ তাহারাও সমৃদ্ধবেগ হইরা বিনাশের জন্তই তোমার মৃথসমৃহমধ্যে প্রবেশ করিতেছে ॥২৯ লেলিহ্নে প্রসমানঃ সমস্তা, ল্লোকান্ সমগ্রান্ বদনৈজ্লিন্তিঃ। তেজোভিরাপূর্য্য জগৎ সমগ্রং, ভাসস্তবোগ্রাঃ প্রতপস্তি বিশ্বো ॥৩০

অনুয়। সমস্তাৎ জনছিব দিনৈপ্র সমান: [খং] লোকান্ লেলিছসে; হে বিকো তব উপ্রা ভাস: তেজোভি: সমগ্রং জগৎ আপূর্ব্য প্রতপত্তি ॥ ৩০

অনুবাদ ৷ তৃমি চারিদিকে প্রজ্ঞলিত বদনমগুলের হারা লোকনিবহকে গ্রাস করিবার জন্ম বারংবার লেহন করিতেছ; হে বিহ্নো, তোমার ভয়হর প্রভারাশি সকল জগৎকে তেজোরাশি হারা আছের করিয়া প্রভশ্ত করিতেছে ॥৩•

ভাষ্য । বং পুন: লেলিছ্স ইতি। লেলিছ্সে আস্বাদর্যি গ্রসমানোহত্তঃ প্রবেশরন্ সমস্তাৎ সমস্ততো লোকান্ সমগ্রান্ বদনৈর্বকৈ আলিজিলীপ্যমানৈত্তে- জোভিরাপূর্ব্য সংব্যাপ্য জগৎ সমগ্রং সহাগ্রেণ সমস্তমিত্যেতৎ; কিঞ্চ ভাসোদীপ্রস্থাবোগ্রা: প্রতুপন্তি প্রতাপং কুর্বন্তি হে বিক্ষো ব্যাপনশীল ৪০০

আনন্দগিরিটীকা। বোদ্কামানাং রাজাং ভগবন্ধপ্রবেশপ্রকারং প্রদর্শ্য তত্থাং দশারাং ভগবতন্তভাসাঞ্চ প্রবৃত্তিপ্রকারং প্রভ্যারম্বতি—জুং পুনরিতি। ভগবৎপ্রবৃত্তিমেব প্রভ্যাষ্য তদীয়ভাসাং প্রবৃত্তিং প্রকটয়তি— কিঞ্চেতি ॥৩০

অসুবাদ। [তুমি] দীপ্যমান বদনসমূহ দারা, চতুর্দিকে সমস্ত লোককে নিজ অভ্যস্তরে প্রবেশ করাইরা আখাদন করিতেছ। হে বিকো ব্যাপনশীল, তেবের দারা, "সমগ্র" অগ্রের সহিত বর্তমান অর্থাৎ সমস্ত অগৎকে "আপুর্য়"। ব্যাপ্ত করিয়া [রহিরাছ] অপরত্ত তোমার "উগ্রত্ত অর্থাৎ ক্রে দীপ্তিরাদি [অগৎকে] প্রকৃষ্টরূপে তাপ দিতেছে ॥০০

আখ্যাহি মে কো ভবাসুগ্ররূপো, নমোহস্তু তে দেববর প্রসীদ। বিজ্ঞাতুমিচ্ছামি ভবস্তমাগ্রং, ন হি প্রজানামি তব প্রবৃত্তিম্ ॥৩১

আন্তর্য। কো ভবান্ উগ্রহ্ণ: [ইভি] মে আখ্যাহি; হে দেববর! কে নমোহত্ত প্রসীদ; আছা ভবতাং বিজ্ঞাতুন্ ইচ্ছামি তব প্রবৃত্তিং হি [বভঃ]ন প্রজানামি ॥৩১

অকুবাদ। এই ভগানকরপ আপনি কে? ইহা আমাকে বনুন। ছে দেবশ্রেষ্ঠ, তোমাকে নমস্বার করি, তুমি প্রসন্ন হও, আদিপুরুষ আপনাকে বিশেষরূপে জানিতে ইচ্ছা করি। আপনার চেষ্টা কি, তাহা আমি ভাল করিয়া বুঝিতে পারি না ॥৩১

ভাষ্য। বত এবম্গ্রভাব: বত: আখ্যাহি কণর মে মহাং কো ভবান্ উগ্রহ্ণ: ক্রাকার:। নম: অন্ত তে তৃভ্যং হে দেববর দেবানাং প্রধান, প্রদীদ প্রদানং কুক, বিজ্ঞাতুং বিশেষেণ জ্ঞাতুম্ ইচ্ছামি ভবস্তমান্তং আদৌ ভবমান্তম্। ন হি যামাং প্রকানামি তব দ্বীরাং প্রবৃত্তিং চেষ্টাম্॥ ৩১

আনন্দগিরিটীক। ভগবজ্ঞপঞ্চার্জ্নেন দৃষ্টপূর্ম্বছাৎ তন্ত তন্ত্রির বিজ্ঞা-সেত্যাশভাব্য-যতইতি। উপদেশং ভশ্রবমাণে নোপদেশকর্ত্ত; প্রভ্রীভবনং কর্জব্যমিতি হচরতি—নুমোহ্স্তিতি। ক্রোর্যাত্যাগং সমর্থরতে—প্রসাদমিতি। স্বমেব মাং জানীবে কিমর্থমিখমিদানীমর্থরদে মদীয়াং চেষ্টাং দৃষ্ট্। তথৈব প্রতি-প্রস্বাভ্যাশভ্যাহ—ন হীতি॥ ৩১

অনুবাদ। বে কারণ আপনি এত উগ্রস্থতাব, সেই কারণ বলুন "মে"
আমার কাছে কে আপনি "উগ্রন্ধ" ক্রাকার, তোমাকে নমন্ধার করি। হে
"দেববর"! দেবগণের প্রধান! প্রসন্ধ হও অন্ধ্রাহ কর "আভ" সকলের
আদিতে উৎপন্ন আপনাকে বিশেষ করিয়া জানিতে ইচ্ছা করি, বে কারণ আমি
আপনার "প্রবৃত্তি" চেষ্টা বুবিতেছি না॥ ৩১

🗐ভগবাহুবাচ।

কালোহস্মি লোকক্ষয়ক্তৎ প্রবৃদ্ধা, লোকান্ সমাহর্তুমিহ প্রবৃদ্ধঃ।
ঋতেহপি দান ভবিষ্যন্তি সর্বেব, যেহবস্থিতাঃ প্রত্যনীকেরু রোধাঃ ॥৩২

আৰ্য় । শ্ৰীভগৰান্ উবাচ—লোকক্ষয়ক্তং প্ৰবৃদ্ধঃ কালোইংম্ ইং লোকান্ সমাহৰ্ত্ত্ প্ৰব্ৰোহন্মি। প্ৰভানীকেষ্ যে বোধাঃ অবস্থিতা [তে] সৰ্কেহণি দাম্তে (দাং বিনাপি) ন ভবিষ্যস্তি॥ ৩২

অমুবাদ। জীভগবান্ কহিলেন,—আমি কাল; লোক ক্ষয় করাই আমার স্বভাব। আমি অতি পুরাতন। এই লোকসকলকে সংহার করিবার জন্তই আমি উন্থত হইয়াছি। এই প্রতিপক্ষ দেনার মধ্যে যে সকল যোজ্বর্গ অবস্থিত আছে, তাহারা সকলেই [এই যুদ্ধে] বিনষ্ট হইবে, কেবল তুমি বিনষ্ট হইবে না ॥ ৩২

ভাষ্য। কালোহস্মীতি। কালোহস্মি লোকক্ষরকং লোকানাং ক্ষঃ
করোতীতি লোকক্ষরকং প্রবৃদ্ধো বৃদ্ধিং গতঃ। যদর্থং প্রবৃদ্ধভদ্ধূ লোকান্
সমাহর্ত্তং সংহর্ত্, সিচ্ছন্ ইহ অস্মিন্ কালে প্রবৃত্তঃ। ঋতেহিপি বিনাপি স্বা স্থাং ন
ভবিষান্তি ভীমন্ত্রোণকর্ণ প্রভৃতয়ঃ সর্বে বেভান্তবাশঙ্কা বেহবন্থিতাঃ প্রভানীকের্
অনীক্ষনীকং প্রতি তেরু প্রভানীকের্ প্রতিপক্ষভূতের্ অনীকের্ বোধাঃ
বোদারঃ॥ ৩২

আনন্দ্রিটিকা। যদর্থা চ স্বপ্রবৃদ্ধি: তৎসর্কাং ভগবান্ধক্রবানিত্যাহ

ক্রীভগবানিতি। কাল: ক্রিয়াশক্ত্যুপহিতঃ পরমেশ্বর: অস্মিন্নিতি বর্ত্তমানযুদ্দোপলক্ষিতত্বং কালস্ত বিবক্ষিত্রন্। লোকসংহারার্থং বংপ্রবৃদ্ধবিদি নাসাবর্থবতী প্রতিপক্ষাণাং ভীমাদীনাং মৎপ্রবৃদ্ধিং বিনা সংহর্তুমূলক্যন্তাদিত্যাশক্ষ্যাহ—খাতেইপীতি ॥ ৩০

অনুবাদ। কালোহন্দীতি [শ্লোকের অর্থ] আমি কাল হই "লোককয়রং" লোক সকলের ক্ষয় করিয়া থাকি যে, সেই লোক-কয়রুৎ [আমি] এবং "প্রবৃদ্ধ" বৃদ্ধি পাইতেছি। কেন বৃদ্ধি পাইতেছি? তাহার কারণ লোকসকলকে সংহার করিবার জন্ম, অর্থাৎ সংহার করিবার ইচ্ছায় আমি প্রবৃত্ত। "প্রত্যানীক" মর্থাৎ প্রতিপক্ষ দেনাদলের মন্ধ্য যে সকল ভীয় দ্রোণ প্রভৃতি বীরয়োদ্ধ্ গণ আছেন এবং ভূমি যাহাদের নিকটে পরাজ্যের আশস্কা করিতেছ, ভূমি ছাড়া ভাহারা কেহই থাকিবে না॥ ৩২

তন্মাৎ সমুন্তিষ্ঠ যশো লভম, জিছা শত্রন্ ভূঙ্কু রাজ্যং সমৃদ্ধম্। ময়ৈবৈতে নিহতাঃ পূর্ববিমেব, নিমিত্তমাত্রং ভব সব্যসাচিন্॥ ৩৩

আনুয়। তত্মাৎ অম্ উত্তিষ্ঠ যশঃ লভস্ব; শক্রন্ জিম্মা সমূদ্ধ রাজ্যং ভূত্তক হে স্বাসাচিন্ এতে পূর্কমেব মধ্যৈব নিহতাঃ, সং নিমিন্ত্যাক্রং ভব ॥ ৩৩ আকুবাদ। সে কারণ তুমি উঠ, কীর্ত্তি লাভ কর; শত্রুনিকরকে বধ করিয়া সমৃদ্ধ রাজ্য ভোগ কর, আমিই ইহাদিগকে মারিয়া রাখিয়াছি। হে সব্যসাচিন্, তুমি নিমিত্তমাত্র হও॥ ৩৩

ভাষ্য। বন্ধাদেবং তন্মাৎ ত্বমুন্তিষ্ঠ ভীন্ধদ্রোণপ্রভৃতরোহতিরথা অজেরা দেবৈরপ্যর্জ্বনেন জিতা ইতি যশো লভন্ন, কেবলং পুগৈর্হি তৎ প্রাপ্যতে, জিত্বা শক্রন্ ছর্ব্যোধনপ্রভৃতীন্ ভূঙ্ক রাজ্যং সমৃদ্ধমসপত্মকন্টকম্। মরেবৈতে নিহতা নিশ্চরেন হতাঃ প্রাণৈর্বিয়াজিতাঃ পূর্বমেব। নিমিত্তমাত্রং ভব তং হে সব্যসাচিন্ সব্যেন বামেনাপি হত্তেন শরাণাং ক্ষেপাৎ সব্যসাচীত্যুচ্যতে অর্জ্ক্নঃ॥ ৩৩

আনন্দ গিরিটীকা। তবৌদাসীন্তেহপি প্রতিক্লানীকন্থা মৎপ্রাতিক্ল্যাদেব ন ভবিষ্যস্তীত্যেবং যন্নান্ধিনিতং তন্মাৎ ঘদৌদাসীন্তমকিঞ্চিৎকর্মিত্যাহ— যন্মাদিতি। উন্তিষ্ঠ যুদ্ধার উন্মুখীভবেত্যর্থ:। যশোলাভমভিনন্নতি— ভীম্মেতি। কিং তেনাপুমর্থেনেত্যাশব্যাহ—পূুণ্টারিতি। রাজ্যভোগেহপে-ক্ষিতে কিমনপেক্ষিতেনেত্যাশব্যাহ—জিত্বেতি। ভীন্মাদিঘতিরথেয় সংস্থ কুতো জরাশবা ইত্যাশব্যাহ—ম্যৈবৈত ইতি। তর্হি মৃতমারণার্থং ন মে প্রবৃত্তিত্ত্তাহ—নিমিত্তেতি। সব্যুগাচিপদং বিভব্ধতে—বা্মেনেতি ॥৩০

অনুবাদ। সেই হেতু তুমি উঠ, তীম দ্রোণ প্রভৃতি অতিরপ বীরগণ দেবগণেরও অজের, অথচ অর্জুন তাহাদিগকে জয় করিয়াছেন, এই প্রকার কীর্দ্তি তুমি লাভ কর। এই প্রকার কীর্দ্তি বছ পুণ্যের দ্বারাই প্রাপ্ত হওয়া য়ায়। আমিই ইহাদিগকে নিহত করিয়াছি অর্থাৎ নিশ্চয়ই মারিয়া রাখিয়াছি—প্রাণ-বিহীন করিয়া রাখিয়াছি; তুমি নিমিন্তমাত্র হও। হে সব্যসাচিন্ সব্য অর্থাই বাম হন্তের দ্বারাও বে শরক্ষেপ করিতে পারে, তাহাকে সব্যসাচী কহে; অর্জুনও ভাহা করিতে পারিভেন বলিয়া তাঁহার সম্বোধন ইইয়াছে, সব্যসাচিন্ ॥৩০

দ্রোণঞ্চ ভীষ্মঞ্চ জয়দ্রথঞ্চ, কর্ণং তথাহস্তানপি যোধবীরান্। ময়া হতাংস্থং জহি মা ব্যথিষ্ঠা, যুধ্যস্ব জেতাহসি রণে সপত্নান্॥৩৪

আনুষ্য়। দং মরা হতান্ দ্রোণং চ ভীমং চ জয়দ্রথং চ কর্ণং তথা জ্ঞান্ জাপি ষোধবীরান্ জাহি, মা ব্যথিষ্ঠাঃ, যুধ্যস্ব রূপে সপত্মান্ জ্ঞেতা অসি ॥৩৪

অনুসুবাদ। জোণ ভীম ক্ষমত্রথ কর্ণ এবং অন্তান্ত বীর বোদ্ধ্যণকে আমিই মারিয়া রাধিরাছি, তুমি তাহাদিগকেই নিহত কর; তুমি ব্যাধিত হইও না, (ভর পাইও না) যুদ্ধকর, এ যুদ্ধে তুমি গক্রগণকে [নিশ্চরই] পরাজিত করিবে ⊪০৪

ভাষ্য। দ্রোণঞ্চেতি, দ্রোণং চ ষের্ ষের্ বোধের্ অর্জনুনস্থাশন্ধা তাংস্থান্
ব্যপদিশতি ভগবান্ ময়া হতানিতি। তত্র দ্রোণভীয়য়োস্তাবং প্রাসিদ্ধাশনাকারণং দ্রোণো ধমুর্বেদাচার্য্য: দিব্যাস্ত্রসম্পন্ন আত্মনশ্চ বিশেষতো শুরুর্গরিঠো
ভীয়ঃ স্বচ্ছন্দমৃত্যুদিব্যাস্ত্রসম্পন্নশ্চ পর শুরামেণ ছন্দ্রমুদ্ধমগমন্ন চ পরাজিতঃ। তথা
ক্ষমন্তথঃ—যক্ত পিতা তপশ্চরতি মম পুত্রস্ত শিরো ভূমৌ পাতিরিষ্যতি যঃ ভঙ্গাপি
শিরঃ পতিব্যতি ইতি। কর্ণোহপি বাসবদন্তরা শক্ত্যা জমোঘরা সম্পন্নঃ স্ব্যাপুত্রঃ কানীনঃ অতস্তর্লায়ৈব নির্দেশঃ। ময়াহতাংস্থং জহি নিমিত্তমাত্রেণ, মা
ব্যথিষ্ঠান্তেভ্যো ভয়ং মা কার্যার্ধ্যস্ত জেতাসি ছর্ব্যোধনপ্রভৃতীন্ রণে যুদ্ধে সপদ্ধান্
শক্রন্ ॥৩৪

আনন্দগিরিটীকা। মরৈবেত্যাদিনোক্তং প্রপঞ্চয়তি—দ্রোণ্ঞ্কেতি।
কিমিতি কতিচিদেবাত্র দ্রোণাদয়ে গণাস্তে তত্রাই—্যেস্থিতি। দ্রোণাদয়
কৃতঃ শক্ষেত্যাশয়্য বয়োঃ শয়ানিমিয়্রমাহ—ত্রেত্যাদিনা। য়য়দ্রথেইপি
শয়ানিমিয়্রমাহ—তথেতি। দিব্যাক্রসম্পন্ন ইতি সম্বন্ধঃ। তত্র শয়ায়ায়
কারণাস্তরমাহ—যুস্তেতি। কর্ণেইপি তৎকারণং কথয়তি—কর্ণোইপীতি।
পূর্ববদেব সম্বন্ধঃ। হেত্বস্তরমাহ—বাসবেতি। সা থবমোদা পুরুবমেকমত্যস্তন্মর্থং ঘাতয়িত্বৈ নিবর্ত্ততে। য়য়নাপি তত্ত শয়নীয়ন্তমাই—সূর্ব্যতি।
কৃত্তী হি ক্লাবস্থায়াং মন্ত্রপ্রভাবং জ্ঞাতুমাদিত্যমাজ্বাব। তত্তভামেবাবস্থায়ায়রস্কৃত্ব তদাহ—কানীন ইতি। এতদেবাভিপ্রেত্য কর্ণগ্রহণমিত্যাহ—যুত্ত
ইতি। উক্তেম্বন্তের্য চ ন মন্না শক্ষিত্ব্যমিত্যাহ—মায়্রতি।।৩৪

অনুবাদ। দ্রোণঞ্চ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। দ্রোণ—বে যে বীরের উপর অর্জুনের আশকা তাহাদেরই নাম নির্দেশ করিয়া (ডগবান্) বলিতেছেন যে, তাহাদিগকে আমি নিহত করিয়াছি। তাহাদের মধ্যে দ্রোণ এবং ভীম যে আশকার কারণ তাহা প্রসিদ্ধই ছিল—কারণ দ্রোণ ধহুর্কেদের আচার্য্য, দিব্যাম্ত্র-সম্পন্ন এবং বিশেষতঃ সাক্ষাৎ শুরু ছিলেন। ভীম—বিশেষতঃ পূজ্য তাঁহার মৃত্যুও তাঁহারই ইচ্ছার উপর নির্ভর করিত, অনেক দিব্য, অন্তরও তাঁহার অধিকৃত ছিল, তিনি পরগুরামের সহিত দ্বন্ধ যুদ্ধ করিয়াছিলেন অথচ পরাজিত হরেন নাই। সেইরপ করম্রথও ভরের কারণ [ছিলেন, কারণ,] করম্ভণের পিতা এইরপ বরের জন্ত ভপস্তা করিতেছিলের যে, যে আমার পুত্রের মন্তক ভূমিতে

ফেলিবে তাহার মন্তকও তৎক্ষণাৎ ভূমিতে পতিত হইবে। কর্ণও ইক্সপ্রান্ত অমোধ শক্তি ধারণ করিতেন এবং ভিনি হর্য্যের পুত্র ছিলেন। কুন্তীর বখন বিবাহ হয় নাই, সেই সময় কর্ণ তাঁহার গর্ভে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন এই জন্ত [ভগবান্] তাঁহার নাম ধরিয়াই নির্দেশ করিলেন। এই সকল দ্রোণ প্রভৃতিকে আমিই নিহত করিয়া রাথিয়াছি, তুমি নিমিত্ত মাত্র হইয়া ইহাদিগকে বধ কর। ভূমি ব্যথিত হইও না। এই যুদ্ধে তুমি হুর্য্যোধন প্রভৃতি শক্রবর্গকে জন্ম করিতে পারিবে, ক্সতরাং তাহাদিগের নিকট ভীত হইও না॥ ৩৪

সঞ্জয় উবাচ।

এতচ্ছুত্বা বচনং কেশবস্তা, কৃতাঞ্জলির্বেপমানঃ কিরীটী।
নমস্কৃত্বা ভূয় এবাহ কৃষ্ণং, সগদ্গদং ভীতভীতঃ প্রণম্য ॥৩৫

আমুয় । সঞ্জয়: উবাচ—কেশবস্থ এতৎবচনং শ্রুতা বেপমান: স কিনীটা কুতা-ঞ্জনি: সন্ নমস্কুত্বা তথা ভীতভীত: স ভূম্ন এব প্রণম্য চ কুষণং সগদ্গদং আহ ॥৩৫

জ্মনুবাদ। সঞ্জ বলিলেন, কেশবের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া কম্পানান অজ্বন ক্বতাঞ্জলি হইয়া ভগবান্কে নমস্বার করিলেন। তিনি আবার অত্যন্ত ভীত হইয়া—আবার প্রণাম করিয়া, গদগদকণ্ঠে তাঁহাকে এইরূপ বলিতে লাগিলেন ॥৩৫

ভাষ্য। এতছে ছেতি। এতছ ুছা বচনং কেশবস্ত পূর্ব্বোক্তং কুতাঞ্জলিঃ সন্বেপমানঃ কন্সানঃ কিরীটা নমস্কছা ভূয়ঃ পুনরের আহ উক্তবান্ রুক্তং সগদগদং ভয়াবিষ্ঠস্ত ছঃখাভিঘাতাৎ স্নেহাবিষ্টস্ত চ হর্ষোদ্ভবাৎ অপ্রপূর্ণনেত্রছে সতি সেমপা কণ্ঠাবরোধঃ ততশ্চ বাচোহপাটবং মন্দশক্ষয়ং যৎ স গদগদঃ তেন স্হ বর্ততে ইতি সগদগদং বচনমাহেতি বচনক্রিয়াবিশেষণমেতং। ভীতভীতঃ পুনঃপুনর্ভয়াবিষ্টচেতাঃ সন্প্রণম্য প্রহ্বীভূছা আহ ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধঃ। ক্রথং পুনাবিষ্টচেতাঃ সন্প্রণম্য প্রহ্বীভূছা আহ ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধঃ। অক্রাবসরে সঞ্জয়বচনং মাভিপ্রায়ম্। ক্রথং পু দ্রোণাদির অর্জ্বনেন নিহতের অব্যেব্য চতুর্ নিরাশ্রয়ো ছর্য্যোধনো নিহত এবেতি মন্ধা ধৃতরাষ্ট্রঃ জয়ং প্রতি নিরাশঃ সন্ সন্ধিং করিষ্যতি ততঃ শান্তিক্রভয়েষাং ভবিষ্যতি ইতি। তদপি নাশ্রোমীং ধৃতরাষ্ট্রো ভবিতব্যবশাং ॥০৫

আনন্দুগিরিটীকা। পরাজয়ভয়াৎ করিষ্যতি সন্ধিমিতি বৃদ্ধা সঞ্জান রাজে বৃত্তাত্তমুক্তবানিত্যাহ—সঞ্জয় ইতি। পূর্বোক্তবচনং কালোহস্মীত্যাদি

বিশ্বরূপদর্শনদশায়ামজুনন্ত ভগবতা সংবাদবচনং কিমিতি সঞ্জয়ো রাজ্ঞে ব্যক্তিজ্ঞপদভাগেল্য তহুক্তেন্তাৎপর্য্যমাহ—অত্ত্রেতি। তমেবাভিপ্রায়ং প্রশ্নদারা বিশদর্যতি —কথমিত্যাদিনা। তর্হি সঞ্জয়বচনং শ্রুদা কিমিতি রাজা সন্ধিং ন কারয়ান্যাসেতি তত্ত্বাহ—তদপীতি॥ ৩৫

অনুবাদ। এতছ ্বা ইত্যাদি লোকের অর্থ। এই পূর্ব্বোক্ত কেশবের বাক্য শুনিয়া কুতাঞ্জলি ও কম্পানান হইয়া ''কিরীটী'' অর্জ্জুন নমন্বার পূর্বক शूनर्सात क्रकटक এই कथा विषयाहित्तन। छांशत कथा ভवा अनुनन बहेता পড়িরাছিল [গদ্গদ শব্দের অর্থ কি ?] যে ভয়ব্যাকুল তাহার হঃখাভিভবে— এবং বে স্নেহ্ময়, তাহার হর্ষের আবেগে—নেত্র অঞ্সিক্ত হয় ও শ্লেমার দারা কণ্ঠাবরোধ হয় : স্থতরাং বাগিন্দ্রিয়ের সামর্থ্য কমিয়া যায় এইরূপ অবস্থায় ধে কণ্ঠ হইতে [বিক্লুত ভাবে] মন্দ শব্দ বহিৰ্গত হয়, তাহাকেই 'গদগদ' কহা যায়। অর্জ্জনের যে বাক্য দে সময় উচ্চারিত হইয়াছিল তাহা গদগদের সহিতই হইয়াছিল বলিয়া উহারই বিশেষণ হইতেছে "দগদগদং"; তিনি ভীত ভীত অর্থাৎ অত্যন্ত-ভরাবিষ্টচেতা হইয়া নমস্কার পূর্ব্বক অতি বিনীতভাবে বলিলেন [এই অবস্থাট একট্ দুরাম্বর হইল] এই সময়ে সঞ্জয়ের বচনে একটা অভিপ্রান্ন আছে ; কিরূপ 📍 "দ্রোণ ভীম কর্ণ ও জয়দ্রথ এই চারিজন মহাবীবের বিনাশ হইলে হুর্য্যোধন নিরাশ্রম্ম হইবে এবং [নিশ্চমই] বিনষ্ট হইবে" এই প্রকার বিবেচনা করিয়া ধৃতরাষ্ট্র জন্ম সম্বন্ধে নিরাশ হইয়া হয় ত সন্ধির প্রস্তাব করিতে বাধ্য হইবেন এবং তাহা হইলে উভয় পক্ষেই শান্তি স্থাপিত হইবে; এই প্রকার মনে করিবাই সঞ্জয় এই সকল কথা বলিয়াছিলেন ; কিন্তু ভবিতব্যবশে ধৃতরাষ্ট্র, সঞ্জয়ের এই কথায়ও কর্ণপাত করেন নাই ॥৩৫

অৰ্জুন উবাচ।

স্থানে হুষীকেশ তব প্রকীর্ত্ত্যা, জগৎ প্রহুষ্যত্যসুরজ্যতে চ। রক্ষাংসি ভীতানি দিশো দ্রবন্ধি, সর্বের নমস্থান্তি চ সিদ্ধসঞ্জাঃ ॥৩৬

অন্বয়। 'অর্জুনঃ উবাচ—হে হ্বীকেশ, তব প্রকীর্ত্তা বং জগৎ প্রশ্নব্যতি অনুরক্তাতে চ.তৎ স্থানে (যুক্তমেব); [তথা] রক্ষাংসি জীতানি দিশো দ্রবস্থি, সর্বেষ্ঠি সিদ্ধসজ্লাশ্চ নমশুস্তি [তদপি যুক্তমেব]॥ ৩৬

'অনুবাদ। অর্জুন কহিলেন—হে হ্বীকেশ, তোমার ঋণ কীর্জনে ধে কাং

আনন্দ অনুভব করে ও ভোমার প্রতি অনুরক্ত হয়, তাহা সমূচিতই বটে, এবং রাক্ষসগণ ভীত হইয়া বে চারি দিকে পলায়ন করে এবং সিদ্ধগণ যে নমস্বার করেন, তাহাও সমূচিত ॥ ৩৬

ভাষ্য। স্থানে ইতি। স্থানে যুক্তং, কিং তৎ ? তব প্রকীর্ত্ত্যা জন্মাহাত্মান কীর্ত্তনেন শ্রুতেন, হে হ্ববীকেশ! বং জগং প্রহ্নয়তি প্রহর্ষমূপৈতি তৎ স্থানে যুক্তমিত্যর্থ:। অথবা বিষয়বিশেষণং স্থানে ইতি যুক্তো হর্ষাদিবিষয়ো ভগবান্। বত ঈশবঃ সর্কাত্মা সর্কভৃতস্ক্লচেতি তথা অন্তরজ্যতে অন্তরগঞ্চ উপৈতি তচ্চ বিষয় ইতি ব্যাখ্যেরম্। কিং চ রক্ষাংসি ভীতানি ভয়াবিষ্টানি দিশো দ্রবস্থি গচ্চন্তি তচ্চ স্থানে বিষয়ে। সর্ক্ষে নমস্কুর্কন্তি চ সিদ্ধসংঘা: সিদ্ধানাং সমুদারাঃ কপিলাদীনাং তচ্চ স্থানে॥ ৩৬

আনন্দগিরিটীকা। কিং তদজ্নো ভগবস্তং প্রতি সগলাদং বচনমুক্তবানিতি তদাহ—অর্জ্জুন ইতি বিষয়বিশেষণথমেব ব্যনকি—যুক্ত ইতি।
ভগবতো হর্বাদিবিষয় ব্দ্ধমিতাত্র হেতুমাহ—হত ইতি। তব প্রকীর্ত্ত্যা
হর্ববদমুরাগঞ্চ গচ্ছতি জগদিত্যাহ—তথেতি। তচ্চেত্যমুরাগগমনম্। রক্ষঃ ম্ব
জগদেকদেশভূতের প্রতিপক্ষের্ কৃতো জগতো ভগবতি হর্বামুরাগাবিত্যাশক্ষাহ—কিঞ্জেতি। ইতশ্চ জগতো ভগবতি হর্বাদিযুক্তমিত্যাহ—সর্ব্ব
ইতি॥ ৩৬

অসুবাদ। স্থানে ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ "স্থানে" অর্থাৎ উচিত; কি উচিত তাহাই বলিতেছেন, তোমার প্রকীর্ত্তিতে অর্থাৎ তোমার মাহাত্ম্য কীর্ত্তন ও প্রবণ করিয়া, বে জগৎ প্রহর্ষ লাভ করে, তাহা স্থানে অর্থাৎ উচিতই বটে—তথা স্থানে এই শন্ধটি প্রহর্ষের বিশেষণ নয়, কিন্তু প্রহর্ষের বিষয় যে ভগবান্ তাহারই বিশেষণ। তাৎপর্য্য এই যে, ভগবান্ লোক সকলের হর্ষের উপযুক্ত বিষয়। আরও সেই সকল জগৎ যে তোমার প্রতি অমুরক্ত হয় তাহাও উচিত, অথবা (পূর্ব্বেৎ) ভগবান্ই লোকামুরাগের উপযুক্ত বিষয়, এই প্রকার অর্থও হইতে পারে। আরও রাক্ষসগণ যে ভীত হইয়া অর্থাৎ ভয়াবিষ্ট হুইয়া চারিদিকে পলায়ন করে, তাহাও উচিত বটে এবং কিপলাদি সিদ্ধগণের সংঘ অর্থাৎ সমুদায়ও বে আপনাকে নমস্কার করেন, তাহাও উচিতই বটে॥ ৩৬

কস্মাচ্চ তে ন নমেরন্ মহাত্মন্, গরীয়দে ব্রহ্মণোহপ্যাদিকর্ত্ত্র। ত্মনম্ভ দেবেশ জগন্নিবাস, ত্মক্ষরং সদস্তৎ পরং যৎ ॥ ৩৭, আনুষ। হে মহামান্ ব্রহ্মণোছণি গরীরসে মাদিকর্ত্তে [জুডাং] তে [সিদ্ধসভবাঃ] কমাৎ ন নমেরন্ হে অনস্ত ! হে দেবেশ ! হে অগরিবাস স্বং অকরং ছমেব সং অসং যৎ তৎপরং সদসদতীতং ভং অপি স্বমেব ॥ ৩৭

অমুবাদ। হে মহান্মন্ আপনি চতুরানন ব্রন্ধা হইতেও গরীয়ান্, কারণ আপনিই আদিকপ্তা। আপনাকে সেই কপিলাদি সিদ্ধগণ কেন নমন্ধার না করিবেন ? হে অনস্ত, হে দেবেশ, হে জগদাধার, আপনি অবিনাশী, আপনিই কার্য্য এবং আপনিই কারণ। এবং কার্য্য ও কারণ ব্যতিরিক্ত যে বল্ল আছে, আপনিই সেই বস্তু॥ ৩৭

ভাষ্য। ভগবতো হর্ষাদি বিষয়ত্বে হেতুং দর্শয়তি। কন্সাচচ হেতোত্তে তুভাং ন নমেরন্ নমস্কূর্যাঃ হে মহাত্মন্ গরীয়সে গুরুতরার বতো ব্রহ্মণো হিরণাগর্ভভাগি আদিকর্ত্তা কারণম্ অতন্তম্মাদাদিকর্ত্তে কথমেতে ন নমস্কুর্যুরতো হর্ষাদীনাং নমস্কারভা চ স্থানং ত্বমহের্থা বিষয় ইত্যর্থাঃ। হে অনস্ত দেবেশ জগারিবাস ত্বমক্ষরং তৎপরং যদ্ বেদাস্তেষ্ শ্রেমতে কিং তং সদস্থ, সং বিশ্বমানং অসচ্চ যক্র নান্তি ইতি বৃদ্ধিঃ তে উপধানভূতে সদস্তী ষত্ত অক্ষরভা ষ্ট্রারেণ সদস্দিত্যুপচর্যাতে। পরমার্থতন্ত সদস্তঃ পরং তদ্ বদক্ষরং বেদবিদো বিদ্ধিত তৎ ত্বেব নাভাদিতি অভিপ্রায়ঃ॥ ৩৭

আনন্দণিরিটীকা। উচ্চেথথে থেম্বর্থনোত্তরশ্লোক্মবতারয়ভি—ভগবত-ইতি। মহাম্মমক্রচেতত্তম্। শুক্লতরম্বার্লমারারাদিযোগ্যমাহ—গুক্লত-রায়েতি। তত্ত্বৈব হেম্বন্তরমাহ—হাতইতি। মহাম্মমাদিহেতৃনাম্কানাং কল-মাহ—অতইতি। তত্ত্বৈব হেম্বন্তরাণি স্চয়ভি—হে অনস্তেতি। অন-বিজ্লম্বং সর্বাদেবনিয়ভূম্বং সর্বজ্ঞগালাশ্রম্বঞ্চ তব নমম্বারাদিযোগ্যমে কারণ-মিত্রার্থ: তিত্তবি হেম্বন্তরমাহ—ত্বমিতি। তত্ত্ব মানমাহ—হাদিতি। ক্থ-মেক্টেশ্রব সদস্যাপ্রথং তত্ত্বাহ—তে ইতি। কথং সতোহসত-চাক্ষরং প্রত্যুগাধিম্বং তদাহ—হাদ্ধারেণেতি। তৎপরং যদিত্যেত্ব্যাচন্টে—পরমার্থতিস্থিতি। অনক্রাদিনা ভগবতো নমম্বারাদিযোগ্যমুক্তম্॥ ৩৭

অনুবাদ। হে মহাত্মন কি কারণে ইহারা তোমাকে নমন্বার না করিবে ? তুমি গরীয়ান্ অর্থাৎ শুরুতর, যে হেতু তুমি 'ব্রন্ধা' হিরণ্যগর্জেরও প্রথম উৎপাদক [এই কারণে তোমাকে নমন্বার করা উচিত ইহাই তাৎপর্য] এই জন্তুই তুমি নমন্বার ও হর্বের স্থান অর্থাৎ উপযুক্ত পাত্র, ইহাই অর্থ। হে অনন্ত, হে দেবেশ, হে জগরিবাস, তুমিই সেই পর অক্ষর যাহা বৈদাপ্তবাক্যসমূহে শ্রুত হয়। তাহা কি ? তাহা সং ও অসং। সং এই শক্ষতির অর্থ বর্ত্তমান অর্থাৎ ভাববন্ধ, অসং এই শক্ষতির অর্থ তাহা—যাহাকে অবলয়ন করিয়া, নাই এই প্রকার বৃদ্ধি হয় [অর্থাৎ নাই বলিলে আমরা যাহা বৃদ্ধি, তাহাকেই লোকে অসং বিদায়া থাকে] সেই সং ও অসং এই হই প্রকার পদার্থ যে ব্রক্ষের উপাধিস্থরূপ, সেই পরব্রহ্মই এই স্থানে সং ও অসং এই হইটি শক্ষের দ্বারা নির্দিষ্ট হইতেছে। বাস্তবিক ধরিতে গেলে সং এবং অসং হইতে যাহাকে ভিন্ন বলিয়া বেদবিদ্পণ নির্দেশ করিয়া থাকেন, সেই বন্ধ তৃমি ছাড়া অন্ত কিছুই নহে, ইহাই অভিপ্রায় ॥ ৩৭

ত্বমাদিদেবঃ পুরুষঃ পুরাণ, স্থমস্ম বিশ্বস্থ পরং নিধানম্। বেক্তাসি বেল্পঞ্চ পরং চ ধাম, ত্বা ততং বিশ্বমনন্তরূপ। ৬৮

অস্থ্য। তং আদিদেবঃ, তং পুরাণঃ পুরুষঃ, তম্ অস্ত বিশ্বস্ত পরং নিধানং, তং বেতা অসি, তং বেতং পরং ধাম অসি, তয়া হে অনস্তরূপ বিশং ততম্॥ ৩৮

অকুবাদ। তুমি আদিদেব, তুমি পুরাতন পুরুষ, তুমিই এই বিখের একমাত্ত আশ্রয়, তুমিই বেক্তা আবার তুমি সেই বেষ্ঠ প্রম ধাম; হে অনস্তরপ তুমি এই জগৎকে সর্বপ্রকারে ব্যাপিয়া রহিয়াছ॥ ৩৮

ভাষ্য। প্নরপি ভৌতি। ত্বমাদিদেবং জগতঃ শ্রষ্ট্ ত্বাং, প্রকার প্রি শরনাং, প্রাণশ্চিরস্তনঃ ত্বমেবাস্থ বিশ্বস্থ পরং প্রকৃষ্টং নিধানং নিধীরতেহিন্দিন্ জগৎ সর্বাং মহাপ্রলয়াদাবিতি। কিং চ বেল্ডাসি বেদিতাসি সর্বাস্তিত বেক্তলাত স্বচ্চ বেল্ডং বেদনাহ হ তচ্চাসি। পরং চ ধাম পরমং পদং বৈক্ষবম্। ত্বয়া ততং ব্যাপ্তং বিশ্বং সমস্তমনস্তরূপ। অস্তোন বিশ্বতে তব রূপাণাম্॥ ৩৮

আনন্দণিরিটীকা। দশুতি জগৎস্রষ্ট্ থাদিনাপি তদ্যোগ্যথমস্তীতি অতি
ছারা দর্শরতি—পুনরপীতি। জগতঃ স্রষ্টা প্রক্রো হিরণ্যগর্ভ ইতি পক্ষং
প্রত্যাহ—পুরাণ ইতি। স্রষ্ট্র্যং নিমিন্তমেবেতি তটন্থেম্বরাদিনজান্
প্রত্যাহ্বং—ত্তমেবেতি। মহাপ্রলয়াদাবিত্যাদিপদমবান্তর প্রলয়ার্থম্। ঈশরস্তোভর্মা কারণহং সর্বজ্ঞান্দেন সাধয়তি—কিঞ্চেতি। বেল্পবেদিত্ভাবেন আইতাল্পপত্তিমাশভ্যাহ—যুচ্চেতি। মুক্ত্যালয়নশু ব্রহ্মণোহর্পা ম্বর্যঃং আশহিভাল্পপত্তিমাশভ্যাহ—ত্তিতি। মুক্ত্যালয়নশু ব্রহ্মবেতি সম্বর্ষ্ণ। তশ্ব
পূর্বহ্মাহ—ত্ত্রেতি। ব্যাপ্যব্যাপক্ষেন ভেদং শহিষা ক্রিত্থান্তশ্ব স্থিত।
মিত্যাহ—ক্সনস্তৈতি। ৩৮

अकामद्रशाह्याम्

অকুবাদ। পুনর্কার অর্জ্ন স্বতি করিতেছেন তুমিই আব তুমিই জগতের স্টেকর্তা; তুমি পুরুষ, কারণ, দেহরূপ পুরীতে তুমিই শরন করিরা থাক। তুমি পুরাণ অর্থাৎ চিরন্তন। তুমিই এই বিশ্বের 'পর' অর্থাৎ প্রকৃষ্ট নিধান; যাহাতে প্রলমাদি কালে সমুদয় জগৎ নিহিত থাকে, তাহারই নাম 'নিধান'। আরও তুমিই বেতা অর্থাৎ জগতের যাবতীর বস্তুনিচরের একমাজ্র জাতা [অর্থাৎ তুমি সর্ব্বজ্ঞ]; যাহা "বেত্ত" জানিবার যোগ্য বন্ধ, তাহাও তুমি; হে অনন্তরূপ! কারণ, তোমার যে কতরূপ তাহার অস্তু নাই, তুমিই সেই পরমধাম অর্থাৎ বৈক্ষবপদ॥ ৩৮

বায়ুর্যমো২গ্রিব রুণঃ শশাঙ্কঃ, প্রজাপতিত্ত্বং প্রপি মহশ্চ। নমো নমস্তেহস্ত সহস্রকৃত্বঃ, পুনশ্চ ভূয়োহপি নমো মস্তে॥ ৩৯

আব্য়। বং বায়ুং, বং যনঃ, বন্ অগ্নি, বং বরুণঃ, বং শশাবঃ, বং প্রজাপতিঃ, বং প্রপিতাসহস্চ। তে (তুভাং) সহস্রক্ষঃ (সহস্রশঃ) নমঃ অভঃ তে নমঃ, তে] পুনঃ নমঃ [তে] ভূয়োহপি নমঃ অভঃ ॥ ১৯

অনুবাদ। তুমি বায়, তুমি মম, তুমি বরুণ, তুমি চন্ত্র, তুমি প্রজাপতি, তুমি প্রপিতামহ, তোমাকে সহস্রবার নমস্বার করি; পুনর্কার তোমাকে নমঃ, স্বাবার তোমাকে নমস্বার করি। ৩১

ভাষ্য। কিঞ্চ বাযুত্বং বনশচায়িব ক্লণোহণাংপতিঃ লশাছশক্রমাঃ
প্রজাপতিত্বং ক্লাপাদিঃ, প্রপিতামহঃ পিতামহন্তাপি পিতা ব্রহ্মণোহিপি পিতা
ইত্যর্বঃ। নমো নমত্তে ত্ত্যম্ অস্ত সহস্রহুত্বঃ প্রশ্চ ভূরোহিপি নমো নমস্তে।
বছলো নমস্বারক্রিয়াভ্যাসার্ত্তিগণনং ক্রম্মনোচ্যতে। প্রশ্চ ভূরোহিপি ইতি
শ্রহাভক্তাতিশ্রাদপরিতোব্যাম্বনো দশ্রতি॥ ৩৯

আনন্দ গিরিটীকা। তত্ত সর্বাদ্ধবে হেবন্তরমাহ—কিঞ্চেতি। কণ্ডপাদিরিত্যাদিশবেন বিরাটদক্ষাদরো গৃহস্তে। পিতামহো ব্রহ্মা তত্ত পিতা ক্রাছ্ম প্রর্য্যামী চেত্যাহ—ব্রহ্মাণো প্রপীতি। সর্বা দেবতাত্বমেবেত্যুক্তে ফলিতমাহ—
নম ইতি। সহত্রক্ষইতি ক্রন্থহো বিবিক্ষতমর্থমাহ—বৃদ্ধাইতি। প্রক্রাজ্জি
ভাংপর্যাহাহ—পুনুদ্ধেতি। প্রদ্ধাভক্ত্যারতিশরাৎ ক্রতেহপি নমন্ধারে পরিভোষাভাবো বুদ্ধেরাত্মনোহলংপ্রত্যররাহিত্যং ভদ্দনার্থং প্রক্রিক্সিত্যর্থঃ ॥১১

. অনুসুৰাদ। আরও বিতি করিতেছেন বে] তুনিই বায়ু, বম, জরি ও

বন্ধণ অর্থাৎ সকল জলের অধিপতি, তুমি শশাক অর্থাৎ চন্দ্রমা:, তুমিই কশ্রুণাদি প্রকাপতি, তুমি প্রণিতামহ অর্থাৎ পিতামহেরও পিতা—বন্ধারও পিতা। তোমাকে নমস্কার—নমস্কার, তোমাকে সহস্রবার নমস্কার করি, আবার [বিল] তোমাকে প্রচুর নমস্কার। "সহস্রকৃত্বং" এই শক্তি সহস্রশক্ষের উত্তর কৃত্ত্বচ্চ নামে তদ্বিত প্রত্যার হইতে নিপার্ম হইরাছে। কৃত্ত্বচ্চ এই প্রত্যারের অর্থ এই স্থানে নমস্কার বাহুল্যের পূনঃ পূনঃ অনুষ্ঠান রূপ আরুত্তি। এই প্রকার পূনঃ পূনঃ নমস্কার করিয়া করিয়া অর্জুন ভগবানের প্রতি নিজের প্রকা ও ভক্তির আতিশব্য দেখাইতেছেন এবং তাঁহাকে বারংবার নমস্কার করিয়াও যে, তৃপ্তি হইতেছে না তাহাই দেখাইতেছেন ॥৩৯

নমঃ পুরস্তাদথ পৃষ্ঠতস্তে, নমোহস্ত তে দর্বত এব দর্বা। অনস্তবীর্য্যামিতবিক্রমস্ত্রং, দর্ববং দমাপ্রোষি ততোহদি দর্বাঃ ॥৪০

আৰ্যা। তে (তুভাং) প্রস্তাৎ নমঃ; পৃষ্ঠতঃ নমঃ; হে সর্বা! সর্বাত এব তে নমোহস্ত; তুম্ অনস্থবীর্যামিতবিক্রমঃ, তং [যতঃ] সর্বাং সমাপ্রোধি ততঃ সর্বোহিদি ॥৪•

অকুবাদ। তোমাকে সন্মুখে নমস্বার করি, তোমাকে পশ্চাৎদিকে নমস্বার করি; হে সর্বস্থার ৷ আমি তোমাকে সকল দিকেই নমস্বার করি, তোমার বীর্য্যের অস্ত নাই, তোমার পরাক্রমেরও সীমা নাই। বেহেতু তুমি সকল বস্তুকেই ব্যাপিয়া রহিরাছ, এই জ্ঞাই তুমি সর্বস্থার ॥৪০

ভাষ্য। তথা নম: প্রভাৎ পূর্বজাং দিশি তৃভ্যমণ পৃষ্ঠতত্তে পৃষ্ঠতোহ্ণিচ তে। নুমোহর তে সর্বত এব সর্বাহ্ম দিকু সর্বত হিতায় হে সর্ব। অনস্ত বীর্যামিতবিক্রম: অনস্তং বীর্যং ষত্ত অমিতো বিক্রমণ্চ বীর্য্যং সামর্থ্যং বিক্রমঃ পরাক্রমঃ। বীর্যাবান্ অপি কণ্টিৎ শস্ত্রাবিষয়ে ন পরাক্রমতে মন্দপরাক্রমো বা। সং তৃ অনস্তবীর্য্যঃ অমিতবিক্রমণ্ট ইত্যানস্তবীর্য্যামিতবিক্রমঃ সর্বং সমস্তং অগৎ সমাপ্রোধি সম্যক্ একেন আত্মনা ব্যাপ্রোধি যতস্তক্রাদসি ভবসি সর্বঃ, ত্বয়া বিনাভ্তং ন কিঞ্চিদন্তি ইত্যর্থঃ ॥৪০

আনন্দণিরিটীক।। বিধান্তরেণ ভগবন্তং স্বত্যা নমন্থর্মরভিমুধীকরোভি
—ত্তথেতি। বজাং দিশি সবিতোদেতি গা পূর্বা দিওচাতে ভজাং ব্যবস্থিতসর্বাং বনেব তাম তে তুভাং নমেইবিত্যাব—ন্মইতি। অধশবঃ সমূচরে।

পশ্চাদিশি স্থিতং সর্বাং মনেব তবৈ তে তৃত্যং নমেহিন্বতাহ—অথেতি। কিং বহুনা বাবত্যো দিশন্তক সর্বাং বদ্বর্জতে তদশেবং মনেব তবৈ তৃত্যং প্রহ্মীভাবঃ তাদিতাহ—নুমোইন্তিতি। ফলিতং সর্বাত্মন্তং স্বচ্চতি—হে সর্বেতি। বীর্বাবিক্রমন্নোর্ন পৌনক্রন্তামিত্যাহ—বীর্ব্যমিত্যাদিনা। বীর্বাবতো বিক্রমান্তাভিচারাদর্থপৌনক্রন্তামাশক্যাহ—বীর্ব্যবানিতি। তগবতি লোকতো বিশেষনাহ—ত্বংত্বিতি। উত্তং সর্বাত্মন্তং প্রপঞ্চয়তি—সর্ব্বমিতি। সপ্রপঞ্চয়ং বারম্বতি—তৃত্যুতি॥ ৪০

অনুবাদ। সেইরপেই তোমাকে পূর্বদিকে নমস্বার করিতেছি এবং পৃষ্ঠদেশেও তোমাকে নমস্বার করিতেছি, তুমি সকল দিকে সর্ব্ধ স্থানে অবস্থিত;
স্থতরাং সকল দিকেই তোমার প্রতি নমস্বার হউক। হে সর্ব্ধ, তুমি "অনস্তবীর্য্যামিতবিক্রম" যাহার বীর্য্যের অন্ত নাই এবং বাহার বিক্রমেরও দীমা নাই, সেই
অনস্তবীর্য্য ও অমিত-বিক্রম, বীর্য্য শব্দের অর্থ দামর্থ্য এবং বিক্রম শব্দের অর্থ
পরাক্রম; জগতে এমন অনেক লোক আছে, বাহার দামর্থ্য আছে বটে, কিন্তু
অন্তব্যবহার কালে পরাক্রম নাই; তুমি কিন্তু অনস্তবীর্য্য ও অমিতপরাক্রম; এই
কান্ত তোমার নাম '' অনস্তবীর্য্যামিতবিক্রম'' তুমি নিজস্বরূপ এই সকল জগৎকে
ব্যাপিরা রহিরাছ; সেইজন্মই তুমি সর্ব্ব, অর্থাৎ এ সংসারে এমন কোন বন্তই নাই
যাহা তোমা ছাড়া হইরা থাকিতে পারে ॥৪০

স্থেতি মত্বা প্রসভং যত্নজ্ঞং, হে কৃষ্ণ হে যাদব হে স্থেতি। অজ্ঞানতা মহিমানং তবেদং, ময়া প্রমাদাৎ প্রণয়েন বাপি॥১১

আনুয়। স্থাইতি মন্বা মিয়া] হে ক্ষক, হে যাদব, হে সংখ, ই জি প্রস্তং যহকং [কিংভূতেন ময়া ?] ইদং (বিশং) তব মহিমানম্ অজ্ঞানতা [তথা] প্রমাদাৎ প্রণয়েন বা যহক মৃ॥৪১

আকুবাদ। [এই বিশ্ব ভোমারই মহিমা ইহা আমি জানিতে পারিজনাই; কিন্তু] তুমি আমার স্থা ইহাই বুঝিরা প্রমাদ বা প্রণরের বলে আমি হঠাৎ ভোমাকে হে ক্লক। হে বাদব। ও স্থে। ইত্যাদি বাহা, কিছু বলিরাছি॥ ৪১

ভাষ্য । বতোহহং ক্রাহাক্মাপরিজ্ঞানাপরাধী অতঃ—সধা সমানবর্দাঃ ইতি মদা জ্ঞাদা বিপরীতবৃদ্ধা প্রসভম্ অভিভূব প্রসন্থ বছকাং হে রক্ষ হে বাদব হে সংগতি চালানতা ক্ষঞানিনা মুড়েন। কিমলানতা ইত্যাহ মহিমানং মাহাক্মং তবেদনীখনত বিশ্বরূপন্ তবেদং নহিমানন্ অঞ্চানতা ইতি বৈর্থিকরণোন সম্বন্ধঃ। তবেমনিতি পাঠঃ বছন্তি তদা সামানাধিকরণোন অবয়ঃ। ময়া প্রমাদাং বিশিশুচিত্ততরা প্রণারেন বাপি প্রণারো নাম স্নেহনিমিন্তো বিশ্রন্তঃ। তেনাপি কারণেন
বছ্কবানস্মি ॥৪১

আনন্দণিরিটাকা। অজ্ঞাননিষিত্তমপরাধং ক্ষমাপরতি—যৃত্ইতি। ইনং
শব্দাধনাহ—বিশ্বরূপমিতি। ন হাদমিত্যশু মহিমানমিত্যশু চ সামানাধিকরণ্যং বিশ্বব্যত্যরাদিত্যাহ—তবেতি। পাঠান্তরসম্ভাবনারাং সামানাধিকরণ্যোপাপতিমাহ—তব্বত্যাদিনা। যহক্তবানশ্বি ভদহং ক্ষামরে তামিতি সম্বর্জঃ ॥৪১

অনুবাদ। বে কাঃণ আমি তোমার মাহাত্ম্য জানি না, স্থতরাং আমি অপরাধ করিয়াছি, এইজফুই [বলিতেছি বে] সথা অর্থাৎ বয়স্ত এই প্রকার ভাবিরা অর্থাৎ বিপরীত বৃদ্ধির বশে ও হঠাৎ অভিভব করিয়া বাহা বলিরাছি "(ह कुक रह वापव ७ रह मरथ" हेलापि [सिंह मकन डेकि किंड] ना कानिवाहे [হইরাছে]। কি না জানিয়া? [ভাহাই বলিতেছেন] ভোমার "মহিমা" মাহাত্মাই অর্থাৎ এই বিশ্বরূপ এই বিশ্বরূপময় তোগার মাহাত্ম্য না জানিয়া [ইহাই ভাৎপর্য্য]; এই 'ইদং' শক্ষটি ক্লাবলিক এবং 'মহিমানং' এই পদটি পুংলিকের বিতীয়ার একবচন ; স্থতরাং ইহাদের মধ্যে যে পরম্পর অবয় হইতেছে, তাহাকে বৈশ্বধিকরণ্যে অব্বয় হইল ইহা বুঝিতে হইবে। যদি কোন পুস্তকে 'মহিমানং ভবেমং" এই প্রকার পাঠ থাকে, তাহা হইলে 'ইমং' এই [বিশেষণ বা বিশেষ্য] পদটিতে পুংলিদের দির্ভীয়ার একবচন থাকায় 'মহিমানং' এই পদটির সহিত উহার যে অবয় হইবে, তাহাকে সামানাধিকরণ্যেরই অবয় বলা সাইতে পারে; [কারণ ছইটি পদে তুল্য বিভক্তি থাকিয়া অন্বয় হইলে বৈদ্বাকরণগণ ঐ বীবয়কে সামানাধিকরণ্যের অবয় বলিয়া থাকেন; এইরূপ অবয় ভিন্ন আর সকল প্রকার অবরকে তাঁহারা বৈয়ধিকরণ্যের অধ্বর বলিয়া পাকেন]; আমি 'প্রমাদ'' অর্থাৎ চিত্তবিক্ষেপবশতঃ অথবা ''প্রণয়'' স্নেহনিবন্ধন বিখাদের বলে ও যাহা কিছু বলিয়া বিসমৃছি ॥৪১

যচ্চাবহাসার্থমসংক্তোহসি, বিহারশয্যাসনভোজনেষু। একোহথবাহপ্যচ্যুত তৎসমক্ষং, তৎ কাময়ে স্বামহমপ্রমেয়ম্॥৪২

व्यवश्च । १ वर्षे के वर्षे वर्

মরা বং অসংক্রতোহিদি অথবা সমকং [জনানামিতিশেবঃ] বং অসংকৃতশ্চাদি তং দর্কং অহম্ অপ্রমেয়ং দ্বাং কামরে ॥৪২

অমুবাদ। হে অচ্যুত! ইহা ছাড়াও পাদচারণকালে, শরনে, আসনে ও ভোজনকালে একাকী তোমাকে [লোকজনের অসমক্ষে] আমি পরিহাসপ্রসঙ্গে অস্তার কথা বলিয়া বা অস্তার ব্যবহার করিয়া বে অসংকার করিয়াছি বা লোকের সমক্ষেও ঐ প্রকার ব্যবহারের ছারা তোমার প্রতি বে অমুচিত আচরণ করিয়াছি, অত্য আমি ভোমার নিকট তাহার জন্ত ক্যা প্রার্থনা করিতেছি ॥৪২

ভাষ্য ।—বচ্চেতি। যক্ত অবহাসার্থং পরিহাসপ্রয়োজনার, অসংক্রতঃ পরিভূতঃ অনি, ভবসি, ক ? বিহারশব্যাসনভোজনেষু বিহরণং বিহারঃ পাদব্যাপারঃ, শয়নং শয়া, আসনম্ আয়ায়িকা, ভোজনমদনম্, ইতি এতেরু বিহারশব্যাসনভোজনেষু—একঃ পরোকঃ সন্ অসংক্রতোহসি পরিভূতোহসি অথবাহপি হে অচ্যুত! তৎসমকং তক্তকঃ ক্রিয়াবিশেষণার্থঃ, প্রভাক্ষ বা অসংক্রতোহসি তৎসর্বম্ অপরাধজাতং ক্রাময়ে ক্রমাং কারয়ে স্বাম্ অহম্ অপ্রমেরং প্রমাণাতীতম্য ৪২

আনন্দ্গিরিটীকা। বদযুক্তমুক্তং তৎ কস্তব্যমিত্যের ন কিন্তু বৎ পরীহাসার্থং ক্রীড়াদির ডারি তিরন্ধরণং ক্বতং তদপি সোঢ়ব্যমিত্যাহ—যুচ্চেতি। বিহরণং ক্রীড়া ব্যায়ামো বা শয়নং তরাদিকম্ আস্থারিকা আসনং সিংহাসনাদেকপলকণম্ এতের বিষয়ভূতেছিতি যাবং। একশনো রহসি স্থিতমেকাকিনং কথয়তীত্যাহ—পরোক্ষঃ সন্মিতি। প্রত্যক্ষং পরোক্ষং বা তদসংকরণং পরিভবনং যথা স্থাৎ তথা যায়া ত্বম্ অসংক্রতোহসি তৎ সর্কমিতি যোজনামন্ত্রীক্ত্যাই—তচ্ছিক ইতি। ক্ষমা কার্যিভব্যেত্যক্রাপরিমিতত্বং হেতুমাই—অপ্রাম্যাবিতি॥ ৪২

অকুবাদ ৷ যচ ইত্যাদি স্নোকের অর্থ ৷ অবহাস অর্থাৎ পরিহাসমাত্র প্রয়েজনের জন্ত তোমাকে আমি যে অসৎকৃত অর্থাৎ পরিভূত করিরাছি, কোথার ! বিহার, শ্যা, আসন ও ভোজন এই ক্রম্বলে; বিহার শব্দের অর্থ বিহরণ—চরণ-ব্যাপার অর্থাৎ পাদচারণ, শ্যা—শুইবার স্থান, আসন,—বিশ্বার স্থান, ভোজন — আহার করা, এই ক্রটি ব্যাপারে এক অর্থাৎ তুমি যথন লোকের শাক্ষান্ত ছিলে না, সেই সমন্ন তোমাকে পরিহাস প্রসঙ্গে বাহা কিছু অসৎকৃত করিরাছি অথবা সাক্ষাৎ অর্থাৎ লোকসমক্ষে বাহা কিছু পরিভব করিরাছি ভাহা অর্থাৎ দেই পরিভব ক্রারপ আমার শুক্তর অপরাধনিচরকে বাহাতে ভূমি ক্ষা কন্ধ, তাহার জন্ত আমি তোমার নিকটে ক্ষমা প্রার্থনা করিতেছি; তুমি অপ্রমের অর্থাৎ প্রমাণের অগোচর॥ ৪২

পিতাহিদ লোকস্ম চরাচরস্ম, ত্বমস্ম পূজ্যশ্চ গুরুর্গরীয়ান্। ন ত্বৎসমোহস্ত্যভ্যধিকঃ কুতোহস্মো,লোকত্রয়েহপ্যপ্রতিমপ্রভাব॥৪৩

আয়য়ৢ । হে অপ্রতিমপ্রতাব । তং চরাচরস্থ লোকস্থ পিতা অসি ; ছম্ অস্ত (চরাচরস্থ) পূজ্যা, শুরুঃ, অসি ; [তথা] গরীয়ান্ চ অসি । লোকত্রয়ে ছংসমঃ ন অস্তি, অধিকঃ কুডঃ [অস্তি অপিতৃ নৈবান্তি] ॥ ৪৩

অনুবাদ। হে অপ্রমের-প্রভাব! তুমি এই চরাচর লোকের পিতা; তুমি ইহার পূজনীর শুরু, অথবা তুমি শুরু হইতেও উৎক্ষপ্রতর; ত্রিভ্বনে কেহই তোমার সমান নাই; তোমার অপেকা অধিক আর কে হইতে পারে ? ॥৪৩

ভাষ্য। পিতাংসি জনরিতাংসি; লোকস্ত প্রাণিজাতস্ত চরাচরস্ত হাবরজ্ঞকমন্ত, ন কেবলং ছমস্ত জগতঃ পিতা, পূজ্যক পূজাংকি, যতো গুরুঃ গরীরান্ গুরুতরঃ, কমাং গুরুতরত্বমিতাাই ন ছংসমঃ দ্বন্তুলাঃ অন্তঃ অন্তি নহীশরহরং সম্ভবতি অনেকেশ্বরছে ব্যবহারামূপপত্তেঃ। ছংসম এব তাবদন্তো ন সম্ভবতি, কুত এবাস্থোহভাধিকঃ স্থাং। লোকঅয়েহপি সর্কম্মিন্ অপ্রতিমপ্রভাব প্রতিমীয়তে বয়া বা প্রতিমা ন বিছাতে প্রতিমা বস্ত তব প্রভাবস্ত স দ্বম্ অপ্রতিম-প্রভাবঃ হে অপ্রতিমপ্রভাব নিরতিশরপ্রভাব ইত্যর্থঃ॥ ৪৩

আনন্দগিরিটীকা। গুণাধিক্যাৎ পূজার্ছং ধর্মাত্মজ্ঞানসম্প্রদারপ্রবর্ত্তন্ত্রন শিক্ষরিভ্রাৎ গুরুষং গুরুণামপি স্ব্রাদীনাং গুরুষালগরীরত্বং তদেব প্রশ্নবারা সাধরতি—কুস্মাদিতি। ঈশ্বরান্তরং তৃদ্যং ভবিষ্যতীত্যাশস্ক্যাহ—
ন হীতি। ঈশ্বরভেদে প্রত্যেকং স্বাভন্ত্রাৎ তদৈক্মত্যে হেম্বভাবাৎ নানামতিছে চৈক্ত সিস্কারামগ্রক্ত সংজিহার্বাসন্ত্রাদ্ব্যবহারলোপাদযুক্তমীশ্বরনানাদ্মিত্যর্থঃ।
আভ্যাধিকাসম্বং কৈমৃতিক্ত্যারেন দর্শরতি—তৃত্ব সমূহতি। তত্ত্ত হেতুমবতার্ব্য ব্যাকরোভি—অপ্রতিমেত্যাদিনা ॥ ৪৩

আকুবাদ। চরাচর অর্থাৎ স্থাবর ও জন্ম এই ছিবিধ "লোকের" প্রাণিগণের তুমিই পিতা [অর্থাৎ] জন্মণাতা; কেবল বে তুমি এই জগতের পিতা, ভাহা নহে; তুমি এই জগতের "পূক্য" পূজার বোগা শুক; [শুধু শুক নহ] শুক হইডেও শুকুতর; কেন তুমি সর্বাপেকা শুকুতর? ভাহাই বলা বাইতেছে বে, ভোমার

সদৃশ এ স্বগতে কেহই নাই; তাহার কারণ এই যে, এক স্বগতে হুইটি ঈশর থাকিতে পারেন না; বে হেতু ছুইটি ঈশর হুইলে সকল প্রকার ব্যবহারেরই লোপ হুইরা উঠে। বখন কেহ তোমার সমানই হুইতে পারে না, তখন তোমা অপেকা অধিক কেহ হুইবে কি প্রকারে ? তুমি "অপ্রতিমপ্রভাব" যাহার সহিত কোন বস্তর সাদৃশ্য দেওয়া যার, তাহার নাম 'প্রতিমা'; যাহার প্রভাবের প্রতিমা নাই, তাহাকেই 'অপ্রতিমপ্রভাব' বলা যার; তুমি অপ্রতিমপ্রভাব অর্থাৎ ভোমার প্রভাব অপরিসীম। ইহাই তাৎপর্যা॥60

তস্মাৎ প্রণম্য প্রণিধায় কায়ং, প্রসাদয়ে ত্বামহমীশমীড্যম্। পিতেব পুত্রস্থ সথেব সখ্যঃ, প্রিয়ঃ প্রিয়ায়ার্হ সি দেব সোঢ়ুম্ ॥৪৪

অন্তর্য। তন্মাৎ কারং প্রণিধার প্রণম্য ঈড়াম্ ঈশং ত্বাম্ অহং প্রদাদরে ; পিতা প্রতেব স্থা স্থারিব প্রিয়: প্রিরায়া ইব [অপরাধং] দেব সোঢ়ুম অহ সি॥ ৪৪

অনুবাদ। সেই কারণে আমি নতদেহে প্রণাম করিয়া তোমাকে প্রশন্ত করিতেছি; তুমিই স্বতির পাত্র [কারণ তুমি ঈশ্বর]—পিতা বেমন প্ত্রের— স্থা বেমন স্থার—প্রিয় বেমন প্রিয়ার অপরাধ ক্ষমা করিয়া থাকে, তুমিও আমার অপরাধ সেইরূপে ক্ষমা করিও॥ ৪৪

ভাষ্য । যত এবং তত্মাৎ প্রণম্য নমস্কৃত্য প্রণিধার নীটের্ধ্বা কারং শরীরং প্রসাদরে, প্রসাদং কাররে, বামহন্ ঈশন্ ঈশিতারন্ ঈভ্যং অত্যম্। বং প্রাঃপ্রভাপরাধং শিতা বথা ক্ষমতে সর্বাং সথেব চ সখ্যা অপরাধং বথা বা প্রিরারা অপরাধং প্রিয়া ক্ষমতে এবমহাসি হে দেব সোচুং প্রসহিত্যু ক্ষম্ভ মিত্যর্থঃ ॥.৪৪

আনন্দগিরিটীকা। নিরতিশয়প্রভাবং হেতৃক্বত্যাপ্রতিমেত্যাদিনা প্রসাদরে প্রণামপূর্বকং দামিত্যাহ—যত ইতি। প্রসাদনানম্বরং ভগবতা কর্ত্তব্যং প্রার্থ-রতে—ত্বং পুনরিতি। প্রিয়ইব প্রিয়ায়া ইতীবকারোহমূবজ্যতে প্রিয়ায়াহ সীতি ছোলসঃ সদ্ধিঃ। ক্ষন্তং মদপরাধজাতনিতি শেবঃ॥ ৪৪

অনুবাদ। বেহেত্ এই প্রকার তুনি, সেই কারণেই আমি "কার" দেহকে প্রণিহিত করিরা অর্থাৎ নত করিয়া তোমাকে প্রসন্ন করিতেছি; তুনি ঈশ অর্থাৎ জগতের নিরস্তা এবং তুনি "ঈড়া" স্ততির পাত্র। তুনি কিন্তু দেব, বেমন পিতা প্তের অপরাধকে সহিরা থাকেন বেমন স্থা স্থার অপরাধ ক্ষমা করেন এবং বেমন কাস্ত কাস্তার অপরাধ ক্ষাকরির একার অকার অপরাধ করি করিয়া থাকেন, সেইরপ সামার সকল প্রকার অপরাধ সত্ত্ব করিও অর্থাৎ ক্ষাকরিও ॥ ৪৪

च्चमृर्थे श्रृद्धिः इति । इत

অন্তর্য়। অদৃষ্টপূর্বাং রূপং দৃষ্ট্র। হৃষিতোহন্মি, ভয়েন মে মনঃ প্রব্যথিতঞ্চ; হে দেব, মে তদেব রূপং দর্শন্ন; হে দেবেশ হে জগন্নিবাস প্রসীদ॥ ৪৫

অনুবাদ। তোমার এই অদৃষ্টপূর্ব রূপ দেথিয়া আমি হাই হইয়াছি, অথ6 আমার মন ভয়ে ব্যথিত হইতেছে; হে দেব। আমাকে আবার তোমার সেইরূপ দেখাও; হে দেবেশ, হে জগরিবাদ, তুমি প্রদন্ম হও॥ ৪৫

ভাষ্য ৷ অদৃষ্টপূর্কমিতি, অদৃষ্টপূর্কং ন কদাচিদপি দৃষ্টপূর্কমিদং বিশ্বরূপং তব ময়া অভৈবা তদহং দৃষ্ট্য হৃষিতোহম্মি ভয়েন চ প্রব্যথিতং মনো মে, অভঃ ভদেব মে মম দর্শয় হে দেব রূপং যৎ মৎস্থং প্রসীদ দেবেশ জগিয়বাস জগতো নিবাসো জগিয়বাসঃ হে জগিয়বাস ॥ ৪৫

আনন্দ গিরিটীকা। হেতৃজিপূর্বকং বিশ্বরূপোপসংহারং প্রার্থরতে— অদুষ্টেতি। হবিতো হুইস্বষ্ট ইতি যাবং। ভয়েন তদ্ধেতৃবিক্বতদর্শনেনেত্যর্থ:॥৪৫

অনুবাদ। অদৃষ্টপূর্কান্ ইত্যাদি লোকের অর্থ। "অদৃষ্টপূর্কে" আমি কিংবা অন্ত কেহ বাহা পূর্কে দেখে নাই, তাহাই অদৃষ্টপূর্ক ; তোমার এই অদৃষ্টপূর্ক বিশ্বরূপ দেখিয়া আমি হাবিত হইয়াছি, অথচ আমার মন ভরে প্রব্যাধিত হইতেছে; এই কারণে তুমি আমাকে তোমার সেই রূপ (অর্থাৎ বে রূপকে আমি আমার স্থা বলিরা জানি) পুনর্কার দেখাও; হে দেব, হে জগরিবাল, তুমি প্রসন্ধ হও; জ্বাৎ বাহাকে আশ্রম করিয়া আছে, তাঁহারই নাম, জগরিবাল, জ্বারিবাল ইহা ভগবানের সম্বোধন ।। ৪৫

কিরীটিনং গদিনং চক্রহস্তম্, ইচ্ছামি ছাং দ্রফ্ট্রমহং তথৈব। তেনৈব রূপেণ চতুর্ভুজেন, সহস্রবাহো ভব বিশ্বমূর্ত্তে॥ ৪৬

আৰ্য়। অহং থাং তথৈব কিরীটিনং গদিনং চক্রছন্তং চ দ্রষ্ট্র ইচ্ছার্মি; হে সহস্রবাহো হে বিশ্বসূর্ত্তে থং তেনৈব চতুভূত্তিন রূপেণ ভব (আবির্ভব) ॥৪৬

অসুবাদ। আমি তোমাকে সেই প্রকার পূর্বের ভার কিরীটভূবিত, গদাধারী এবং চক্রহন্ত দেখিতে চাহি; হে বিখমূর্তে, বে সহস্রবাহো, তুমি আবার পূর্বের ভার সেই নিজ চতুর্ভুজরূপে আবিভূতি হও॥ ৪৬

ভাষ্য ৷ কিরীটিনমিতি, কিরীটিনং কিরীটবস্তং তথা গদিনং গদাবস্তং

চক্রহন্তমিচ্ছামি বাং প্রার্থরে বাং দ্রষ্ট্রমহং তথৈব পূর্ববিদ্তার্থঃ। বত এবং তথাৎ তেনৈব রূপেণ বস্থদেবপুত্ররূপেণ চতুত্ জেন, সহস্রবাহো বার্ত্তমানিক্রেন বিশ্বরূপেণ, ভব বিশ্বমূর্ত্তে, উপসংহাত্য বিশ্বরূপং তেনেব রূপেণ বস্থদেবপুত্ররূপেণ ভব ইত্যর্থঃ ॥৪৬

আনন্দগিরিটীকা। তদেব দর্শরেত্যক্তং কিং তদিত্যপেক্ষায়ামাহ— কিরীটিনমিতীতি। চক্রং হস্তে ষশু তমিতি বৃংপক্তিং গৃহীম্বাহ—চক্রেতি। মদীরেছাফলপর্যায়া কর্তব্যত্যাহ—যত ইতি। চতুর্ভত্তে কর্পং সহস্রবাহম্বং তত্রাহ—বার্ত্তমানিকেনেতি। সতি বিশ্বরূপে কর্পং পূর্বরূপভাকুং তত্ত্বাহ— উপসংহৃত্যেতি ॥৪৬

অকুবাদ। কিরীটনম্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ ''কিরীটা" কিরীটবান্
[মুক্ট-শোভিত] "গদী", গদাধারী এবং চক্রহস্ত তুমি বেমন পূর্ব্বে ছিলে, এখন
আমি তোমাকে সেইরূপেই দেখিতে ইচ্ছা করি অর্থাৎ আমি তোমার সেই রূপ
আবার দেখিবার জন্ত প্রার্থনা করি। বেহেতু আমার এইরূপ প্রার্থনা, সেই জন্ত
হে সহস্রবাহো হে বিশ্বমূর্ত্তে তুমি আবার তোমার গেই বীর চতুর্ভু জরূপে বস্কুদেবতন্ম হও—তোমার এই বিশ্বরূপ পরিহার কর ॥৪৬

শ্ৰীভগবাসুবাচ।

ময়া প্রসঙ্গেন তবাৰ্জ্বনেদং, রূপং পরং দর্শিতমাত্মযোগাৎ। তেজোময়ং বিশমনস্তমাত্যং, যম্মে ত্বদক্তেন ন দৃষ্টপূর্ব্বম্ ॥৪৭

আনুয়। অস্বয়। প্রীভগবান্ উবাচ—হে অর্জুন, প্রসরেন মরা আত্মবোগাৎ তব ইনং পরং রূপং দর্শিতং, বং তেজোমরম্ অনস্তম্ আত্যং বিবাং [রূপং] ক্লক্ষেন [কেনাপি] ন দৃষ্টপূর্কাম্ ॥৪৭

অনুবাদ। শ্রীভগবান কহিলেন—হে অর্চ্ছন আমি প্রসর ইইরা নিজবোগপ্রভাবে মামার এই পরমরূপ ভোমাকে দেখাইরাছি, এই তেজােমর আদিম অনস্ত এবং সর্ববিরূপ মামার রূপ—তুমি ছাড়া আর কেই পূর্বে কথনও দেখিতে পার নাই ॥৪৭

ভাষ্য ৷ অর্জুনং ভীতমুপণভা উপনংস্বতা বিশ্বরণং প্রির্বচনেন মাখানরন্—(প্রীভগবান্ উবাচ) ময়া প্রসরেন প্রসাদো নাম দ্বি অন্তর্গুরুদ্ধভা, প্রসরেন ময়া তব হে অর্জুন ইদং পরং রূপং বিশ্বরূপং দর্শিতম্ আত্মবোগাৎ আত্মন ঐশর্যান্ত সামর্থ্যাৎ, তেজোময়ং তেজঃপ্রায়ং বিশ্বং সমস্তং অনস্তমন্তর হিতম্ আদৌ ভবমান্তং যৎ রূপং মে মম স্বদক্তেন স্বতোহক্তেন কেনচিং ন দৃইপুর্মম্ ॥ ৪৭

আনন্দণিরিটীকা। অর্জুনেন স্থানে দ্বীকেশেত্যাদিনোকস্থ ভগবতো বচনমবভাররতি—অর্জ্জুনমিতি। ভগবৎপ্রদাদৈকোপারলভ্যং তদর্শনমিত্যা-শরেনাহ—ময়েতি॥৪৭

অনুবাদ। অর্জুনকে ভীত দেখিয়া বিশ্বরূপের উপসংহারপুর্বক শ্রীভগবান্
আর্জুনকে প্রিরবচনের হারা আশাসিত করিবার জন্ত বলিলেন যে—মানি প্রসন্ন
হইরা [অর্থাৎ তোমার প্রতি অহুগ্রহ বৃদ্ধির নাম "প্রসাদ"; সেই প্রসাদয্ক হইরা]
হে অর্জুন তোমাকে এই সর্কোৎক্রই বিশ্বরূপ দেখাইলাম, [আমি এই যে বিশ্বরূপ
দেখাইলাম তাহা কেবল] আমার নিজ্যোগবলে অর্থাৎ আমার মুখ্যপ্রপ্রভাবেই
[ইহা দেখাইরাভি] এই "তেজাময়" প্রচুরতেজঃসম্পন্ন "অনস্ত" অস্তরহিত
"আছে" স্টের প্রথমোৎপন্ন বিশ্বরূপ, ভূমি ছাড়া অন্ত কেহই এ পর্যান্ত দেখিতে
পার নাই ॥ ৪৭

ন বেদযজ্ঞাধ্যয়নৈ ন' দানৈ, ন'চ ক্রিয়াভিন' তপোভিরুত্রৈঃ। এবংরূপঃ শক্য অহং নূলোকে, দ্রন্থুং স্বদন্তেন কুরুপ্রবীর॥ ৪৮

আনুয়। হে কুরপ্রবীর ! নুলোকে ওদন্তেন কেনাপি এবংরপঃ অহং বেদযজ্ঞাধ্যরনৈ ন জিইং শকাঃ [তথা] ন দালৈঃ [জেইং শকাঃ] ন চ ক্রিয়াভিঃ [জেইং শকাঃ] তথা উত্তাঃ তপোভিঃ ন [জেইং শকাঃ] ॥ ৪>

অমুবাদ। হে ক্রপ্রবীর এই মন্ব্যলোকে তুমি ছাড়া অন্ত কোন ব্যক্তি, বেদ, বজ্ঞ বা অধ্যয়নের দারা আমার এই রূপ, দেখিতে পারে না, কেহ প্রচুর দান করিয়াও দেখিতে সমর্থ হয় না, কেহ নানাবিধ ব্রতপ্রভৃতি ক্রিয়াদারাও দেখিতে পায় না, কেহ উগ্র ভপস্থার প্রভাবেও দেখিতে পায় না। ৪৮

ভাষ্য। আত্মনো মম রুপসন্দর্শনেন কুতার্থএব তং সংবৃত্ত ইতি তৎ ভৌতি—ন বেদযজাধ্যরনৈন দানৈ: চতুর্ণামপি বেদানামধ্যরনৈ: যথাবদ্ বজ্ঞাধ্যরনৈশ্চ বেদাধ্যরনৈরেব যজ্ঞাধ্যরনক্ত সিদ্ধত্বাং পৃথগ্ যজ্ঞাধ্যরনক্তবং রক্তবিজ্ঞানোপলক্ষণার্থম্। তথা ন দানৈজ্ঞগাপুরুষাদিভি: ন চ ক্রিরাভিরন্ধিহোত্রা-দিভি: শ্রৌতাদিভি: নাপি তপোভিরুবিগ্রশাক্ষারণাদিভি: উব্রৈর্বোব্রে: এবংরূপ: যথা দর্শিতৃৎ বিশ্বরূপং যক্ত সোহহমেবংরূপ: শক্যো ন শক্যোহহং মুলোক্সে আনন্দ গিরিটীক। । তদ্ধবেন প্রক্রতং দর্শনং পরামুখতে। বেদাধ্যরনাৎ পৃথক্ বজ্ঞাধ্যরনপ্রহণং পুনক্ষকেরযুক্তমিত্যাশস্থ্যাহ—বেদ্যেতি। ন চ বেদাধ্যরনপ্রহণাদেব বজ্ঞবিজ্ঞানমপি গৃহীতমধ্যরনভার্থাববোধাস্তথাদিতি বাচ্যং তভাক্ষর-প্রহণাস্তত্তরা বৃদ্ধৈঃ সাধিতত্বাৎ ইতি ভাবঃ। শ্লোকপূরণার্থমসংহিতকরণং ঘণ্ডোহ-স্তেন মদমুগ্রহবিহীনেনেতি শেষঃ॥ ১৮

অকুবাদ। আমার রূপ দর্শন করিয়া তুমি ক্বতার্থ হইয়াছ এই ভাবে জগবান্ সেইরূপ দর্শনের প্রশংসা করিতেছেন যে "বেদবজ্ঞাধ্যয়ন" বেদের এবং বজ্ঞসমূহের অধ্যয়ন; বেদের অধ্যয়ন বলিলেই যম্প্রপি যজ্ঞেরও অধ্যয়ন ব্রায় [কারণ বেদের কর্মাকাণ্ডে বজ্ঞই প্রতিপাদিত হইরাছে] তথাপি আবার বজ্ঞের পূণগ্ ভাবে যে নাম করা হইয়াছে, তাহা বারা ব্রিতে হইবে যে, এখানে যে বজ্ঞাধ্যয়ন শক্ষি রহিয়াছে, তাহার অর্থ যজ্ঞের বিজ্ঞানশান্ত্র [অর্থাৎ শুবুত্তর প্রক্রবিদ্যার অধ্যয়নকে ব্রাইতেছে] এইরূপ বেদ বজ্ঞাধ্যয়ন "দান" অর্থাৎ তুলা-পূরুষ-দানাদি, "ক্রিয়া" অগ্নিহোক্ত প্রভৃতি বৈদিক ক্রিয়া এবং "উগ্রতপত্তা" অর্থাৎ অতি কঠোর চাক্রায়ণ প্রভৃতি ব্রত, এই সকল উপারের অনুষ্ঠান বারাও এ পর্যাস্ত হে কুক্রপ্রবীর আমার এই বিশ্বরূপ, তুমি ছাড়া জ্মার কেহ দেখিতে সমর্থ হয় নাই ॥ ৪৮

মা তে ব্যথা মা চ বিমূচ্ভাবো, দৃষ্ট্বা রূপং ঘোরমীদৃঙ্মমেদম্। ব্যপেতভীঃ প্রীতমনাঃ পুনস্ত্বং, তদেব মে রূপমিদং প্রপশ্য॥৪৯

অন্তর্ম। মম ঈদৃক্ ঘোরং রূপং দৃষ্ট্। তে ব্যথা মা [অন্ত], মা চ বিমৃচ্ভাবঃ
[অন্ত], বং প্ন: ব্যপেতভীঃ প্রতিমানাঃ—সন্ মে তদেব ইদং রূপং প্রপশু॥ ৪৯

 অনুস্বাদ। আমার এই প্রকার ভরত্বর রূপ দেখিরা তুমি ব্যথিত

 ইইও না, এবং ইহা দেখিরা তোমার বেন মোহ না আসে, তুমি নির্ভর

 হও, এবং প্রসর্লত্তে এই আমার সেই [তোমার অভিপ্রেত] রূপ ভাল

 করিরা দেখ॥ ৪৯

ভাষ্য । মা তে ব্যথেতি। মা তে ব্যথা মা ভূত্তে ভন্নং মা চ বিমৃচ্ভাবঃ বিমৃচ্চিত্ততা দৃষ্ট্বা উপলভ্য রূপং বোরম্ ঈদৃক্ বথা দর্শিতং মমেদং ব্যপেতভীঃ বিগতভন্নঃ প্রীতমনাশ্চ সন্ পুনভূরিঃ দং তদেব চতুভূরিং শৃথাচক্রগদাধরং তবেইং রূপম্ ইদং প্রপশ্য ॥ ৪৯

আনন্দ গিরিটীকা। বিশ্বরূপদর্শনমেবং স্তমা यत्यत्राक् अमाना विष्कृति छहि

তছপদংহরামীত্যাহ—মা তে ব্যথেতি। বছবিধমমুকৃতত্বমভিপ্রেত্য ঈদৃগ্ ইত্যুক্তম্, ইদমিতি প্রত্যুক্ষবোগ্যন্তম্ ॥৪৯

আকুবাদ। মা তে ব্যথা ইত্যাদি লোকের অর্থ—তোমার কোন প্রকার ব্যথা না হউক, আমার এই পূর্ব প্রদর্শিত ভরত্বর রূপ দেখিরা তোমার চিত্ত বিমৃত্ না হউক, তোমার ভর বিগত হউক, তুমি প্রীতিমনা হইয়া আমার এই সেই রূপ অর্থাৎ সেই তোমার ইষ্ট চতুর্ভু ল শহ্যচক্রগদাধর মূর্ব্তি ভাল করিয়া দেখ ॥৪৯

সঞ্জয় উবাচ।

ইত্যৰ্চ্ছ্নং বাহ্নদেবস্তথোজ্বা, স্বকং রূপং দর্শয়ামাস ভূয়ঃ। আখাসয়ামাস চ ভীতমেনং, ভূত্বা পুনঃ সৌ্ম্যবপুর্মহান্সা॥৫০

আনুষু । সঞ্জর উবাচ—মহাত্মা বাস্থদেবঃ অর্জুনন্ ইত্যেবং তথা উক্তা বকং রূপং দর্শরামাদ, পুনশ্চ [সঃ] সৌম্যবপুঃ ভূতা ভীত্যেনং আখাদ্যামাদ ॥৫ •

অকুবাদ। সঞ্জয় কহিলেন—মহাত্মা বাস্ত্রদেব অর্জুনকে এই কয়টি কথা বলিয়া আবার সেই নিজরূপ দর্শন করাইলেন এবং সৌম্যুর্দ্ত হইয়া সেই ভীত অর্জুনকে পুনরায় আখাস প্রদান করিলেন। ৫০

ভাষ্য। ইত্যৰ্জনমিতি। ইত্যেবম্ অর্জুনং বাস্থদেবহুণাভূতং বচনমুক্তা স্বকং বস্থদেবগৃহে জাতং রূপং দর্শরামাস দর্শিতবান্। ভূর: পুনরাখাসরামাস চ আখাসিতবাংশ্চ ভীতমেনং ভূষা পুন: সৌম্যরপু: প্রসন্ধদেহো মহাত্মা ॥৫•

আনন্দগিরিটীকা। তদিদং বৃত্তং রাজ্ঞে হতো নিবেদিতবানিত্যাথ— স্পঞ্জয় ইতি। তথাভূতং বচনং ময়া প্রসল্লেনেত্যাদি, চতুর্ভু জং রূপম্। কিং তন্ত রূপন্ত পরিচিতপূর্বক প্রদর্শনেন প্রসল্লেদহত্বেন চার্জ্ঞ্নং প্রত্যাশ্বাসনং ভগবতো বৃক্তমিত্যক্র হেতুমাথ—মহাযুক্তি॥ ৫•

্ অকুবাদ। ইত্যর্জন্ম ইত্যাদি লোকের অর্থ। বাস্থদেব অর্জ্নকে পূর্বোক্তরূপ বাক্য বলিয়া "স্বক" নিজ অর্থাৎ বস্থদেবগৃহে জাত "রূপ" শরীর আবার দেখাইলেন। আবার সেই মহান্না বাস্থদেব "সৌম্যবপূঃ" প্রসন্ধান ইবা ভীত অর্জ্নকে আখাসিত করিয়াছিলেন ॥৫০

अर्जुन खेवाह।

দৃষ্ট্বেদং মাসুষং রূপং তব সোম্যং জনার্দন। ইদানীমস্মি সংরুত্তঃ সূচেতাঃ প্রকৃতিং গতঃ ॥৫১ আত্ময়। অর্জুন উবাচ। হে জনার্দন, ইদং সৌম্যং তব মাস্থবং রূপং দৃষ্ট্র। ইদানীয় অহং সচেতাঃ প্রকৃতিং গতশ্চ সংরুজোহন্মি॥ ৫১

অকুবাদ। অৰ্জুন কহিলেন, হে জনার্দন ভোমার এই শান্ত মন্থ্যাশরীর । দেখিয়া একণে আমি পুনরায় স্বন্ধ্যদর এবং প্রকৃতিস্থ হইতে পারিয়াছি ॥৫১

ভাষ্য। দৃষ্টে দমিতি। ইদং মান্তবং রূপং মৎস্থং প্রসন্ত্রং তব সৌম্যং জনার্দন ইদানীম্ অধুনা অস্থি সংবৃত্তঃ সঞ্জাতঃ, কিং ? সচেতাঃ প্রসন্তরিঃ প্রকৃতিং সভাবং গতশ্চাস্থি॥ ৫১

আনন্দগিরিটীকা 👂 এবং ভগবদাখাসিতঃ সরর্জ্নন্তং প্রত্যুক্তবানিত্যাহ—
অর্জ্জন ইতি ॥ ৫১

আকুবাদ। দৃষ্টে দৃষ্ট বিদা ইত্যাদি ক্লোকের অর্থ। হে জনার্দন, তোম।র এই সৌম্য মুর্জি [যে মুর্জিতে আমার সধা বলিয়া আমার বিধাস আছে] বিলোকন করিয়া আমি এখন হইলাম, কি হইলাম? "সচেতাঃ" প্রসন্ত্রিত হইলাম এবং আমি আমার নিজ "প্রকৃতি" বভাবকে পুনর্কার প্রাপ্ত হইয়াছি। ৫১

🗐ভগবাস্থবাচ।

স্থৃত্বদিশ্মিদং রূপং দৃষ্টবানসি যন্মম। দেবা অপ্যস্থ রূপস্থ নিত্যং দর্শনকাঞ্জিণঃ॥৫২

অন্বয়। শ্রীভগবান্ উবাচ—যৎ ইদং স্তর্দর্শং রূপং ছং দৃষ্টবান্ অসি, দ্বো অপি নিত্যম্ অন্ত রূপক্ত দর্শনকাজ্জিণঃ॥ ৫২

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন, এই বে আমার অত্যন্ত "স্থ্রছর্দর্শ" (বাহাকে দেখিতে ক্লেশ বোধ হয় অথবা বাহার দর্শন অত্যন্ত হল ভ) রূপ ভূমি দেখিতে পাইয়াছ দেবগণও নিত্য এইরূপের দর্শনাভিলাষী ॥৫২

ভাষ্য। স্বহর্দশমিতি স্বহর্দশং স্বৰ্চ হঃথেন দর্শনমশু ইতি স্বহর্দশ্ম ইদং রূপং দৃষ্টবান্ অসি বন্মম, দেবা অপি অক্ত রূপক্ত নিজ্যং সর্বাদা দর্শনেপ্সবোহপি ন স্বামিব দৃষ্টবন্ধঃ ন দ্রুকান্তি চ ইত্যভিপ্রায়ঃ। ৫২

আনন্দগিরিটীকা। উপাক্তবার বিশ্বরূপং তোডুং ভগবছক্তিন্ উত্থাপরতি
— শ্রীভগবানিতি। বহাতিরিক্তানামিদং রূপং দ্রন্থ্রমূশক্যমিত্যেতবিশদরতি
— দেবা অপীতি ॥ ৫২

অনুবাদ। স্থৰ্দৰ্শন্ ইত্যাদি স্নোকের অৰ্থ "স্থৰ্দৰ্শ" অত্যন্ত হংখের সহিত

বাহা দর্শন করিতে হয় ভাহাকে 'স্কর্দর্শ' বলা বার। তুমি আমার বে স্কর্দর্শরূপ দেখিরাছ দেবগণও "নিত্য" সর্বাদা এই রূপ দেখিবার জন্ত অভিনারী; কিন্তু তুমি বেমন দেখিরাছ, সেইরূপ, তাঁহারা অভিনারী হইরাও দেখিতে পান নাই এবং পাইবেনও না, ইহাই অভিপ্রায়। ৫২

> নাহং বেদৈর্ন তপদা ন দানেন ন চেজ্যয়া। শক্য এবংবিধো দ্রেষ্ট্রং দৃষ্টবানদি মাং যথা॥ ৫৩

ভাষ্যা। তথ যথা মাং দৃষ্টবান্ অসি এবংবিধঃ এমছং ন বেলৈঃ ন তপসা ন দানেন ন চ ইক্যায়া জাইঃ [কেনাপি] শক্যা ॥ ৫৩

অনুবাদ। তুমি আমাকে যে প্রকারে দেখিয়াছ, সেইরপে কেহ বেদাধ্যরন, তপস্তা, দান বা যক্ত করিয়া আমাকে দেখিতে সমর্থ হয় না॥ ৫৩

ভাষ্য। কলাৎ?—নাহং বেলৈ: ঋগ্যজ্ংসামাথর্কবেলৈশ্চতুর্ভিরপি ন তপসা উত্রেণ চাক্রায়ণাদিনা ন দানেন গোভূহিরণ্যাদিনা ন চ ইজ্যয়া যজেন পূজরা বা শক্য এবংবিধো যথাদশিতপ্রকারং ক্রষ্ট্ং দৃষ্টবান্ অসি মাং যথা দৃষ্য ৫৩

আনন্দগিরিটীকা। দর্শনোপায়াভাবাৎ ছদ র্শগমিতি শহতে—কস্মাদিতি। বেদাদির্পারের সংবর্গি ভগবান্তরূপো ন শক্যো এই,মিত্যাহ—নাহমিতি। তর্হি দর্শনাবোগ্যথাৎ এই,মশক্যথমিত্যাশঙ্ক্যাহ—দৃষ্টবানিতি॥ ৫৩

আকুবাদ। কেন? [দেবতারাও দেখিতে পান্না?], "বেদ" অর্থাৎ শক্ বজুং সাম ও অথর্ক এই চারিটি বেদ, "তপং" চান্তারণ প্রভৃতি উগ্র তপঞা, "দান" গোঁ ভূমি ও হিরণ্য প্রভৃতির দান, "ইজ্যা" যজ্ঞ অথবা পূজা এই সকল উপায়ের সাহায্যে কেহই আমার এইরপ দেখিতে সমর্থ হয় না; ভূমি এইমাজ্র বে প্রকারে এইরপ দেখিলে॥ ৫৩

> ভক্ত্যা স্বনশ্বয়া শক্যঃ অহমেবংবিধোহৰ্জুন। জাতুং দ্ৰুফুং চ তত্ত্বেন প্ৰবেষ্ট্যুং চ পরস্তপ॥ ৫৪

অনুষয়। হে পরস্তপ অর্জুন, অনস্তরা ভক্ত্যা এবংবিধোহহং জ্ঞাতুং স্তষ্টুং তদ্বেন প্রবেষ্ট্রং চ শক্যোহসি॥ ৫৪

অনুস্বাদ। হে শক্তাপন অর্জুন! অনগুভক্তির প্রসাদে আমার এই ক্লপ প্রথমে সামাগ্র ভাবে বুরিতে পারা যায় এবং পরে মিজের প্রভ্যক্ষ গোচর করিতে পারা যায় এবং শেষে ইহার মধ্যে তত্তঃ (স্বরূপতঃ) প্রবিষ্টও ইইতে পারা যায় ॥ ৫৪

ভাষ্য । কথং পুনঃ শক্য ইত্যাচাতে—ভক্তা। তু কিংবিশিষ্টরা ইত্যাহ—
অনস্তরা অপুণগ্ ভূতরা ভগবতোহস্তত্ত পৃথক্ ন কদাচিদপি যা ভবতি সা তু
অনস্তা ভক্তিঃ সর্কৈরপি করণৈব স্থিদেবাদস্তর উপলভ্যতে ধরা সা অনস্তা ভক্তিঃ
তরা ভক্তা। শক্যোহহম্ এবংবিধাে বিশ্বরূপপ্রকারো হে অর্জ্ঞ্ন জ্ঞাতুং শাস্ত্রতঃ, ন
কেবলং জ্ঞাতুং শাস্ত্রতঃ দ্রষ্ট্রং চ সাক্ষাংকর্ত্রং তরেন তত্তঃ প্রবেষ্ট্রং চ মোকং
চ গঙ্কং পরস্তপ ॥ ৫৪

আনন্দ গিরিটীক। কেনোপারেন তর্হি দ্রন্থ ইং শব্দ্যে ভগবানিতি পৃষ্কতি—কথমিতি। শান্তামজ্ঞানদারা তদর্শনং সফলং সিধ্যতীত্যাহ—উচ্যক্ত ইতি। ন ভক্তিমাত্রং তত্ত্ব হৈত্রিতি তুশন্দার্থং স্ফুটমতি—কিমিত্যাদিনা। অনস্তাৎ ভক্তিমেব ব্যনজি—সুক্রৈরিতি॥ ৫৪

অনুবাদ। কি প্রকারে আমাকে দেখিতে পাওরা বার ? [তাহাই বলি] কেবল ভজিব প্রসাদে; কিরপ ভজি ? অনসভজি—যে ভজি অপৃথগ্ভূত সর্থাং ভগবান্ ছাড়া অন্ত কোন বস্তুতে যে ভজি কথন পৃথগ্ভাবে হর না, সেই ভজিকেই "অনসভজি" কলা বার। যে ভজি হইলে, জীব সকল, ইল্লিয়ের হারাই বাহা কিছু ব্রে, তাহা ভগবান্ হইতে পৃথক এই প্রকার ব্রে না [কিছু সকল বস্তুতেই সর্বালা ভগবৎসন্তারই উপলব্ধি করে] তাহাকেই "অনসভজি" কহা বার। সেই অনসভজির হারাই আমাকে এইরূপে অর্থাৎ এই বিশ্বরূপ প্রকারে জানিতে পারা বার, সেই জানা যে কেবল শাস্তুজনিত পরোক্ষ জ্বাবে জানা, তাহাই নহে; কিন্তু [সেই ভজির প্রসাদে] আমাকে বাস্তুতির বিবর করা হার, এবং তাহার ফলে আমাতে প্রবেশ করিতে পারা বার অর্থাৎ মাক্ষ পর্যন্ত লাভ করিতে পারা বার; হে পরস্কপ ॥ ৫৪

মৎকর্মাকৃন্মৎপরমো মদ্ভক্তঃ সঙ্গবর্জিতঃ। নিবৈরঃ সর্ববভূতেয়ু ষঃ স মামেতি পাণ্ডব॥ ৫৫

ইতি একাদশোহধ্যায়:।

আনুষু । হে পাশুব ! যা মৎকর্মকং, [যা] মংপরমা, [যা] মন্তকা, [যা] সন্ধভূতেরু নিবৈরিঃ, স মাম্ এতি ॥ ৫৫

অ্সুবাদ হে পাণ্ডব, বে আমার কর্ম করে, বে আমাকেই সর্বোৎক্র

বলিয়া আশ্রম করিয়া থাকে, বে আমারই ভক্ত, যাহার বিষয়ে আসজ্জি নাই ও যাহার কোন প্রাণীতে কোন প্রকার বৈরবৃদ্ধি নাই অর্থাৎ শক্ততা নাই, সেই আমাকে পাইয়া থাকে॥ ৫৫

ভাষ্য। অধুনা সর্বস্থিত গীতাশাস্ত্রস্থ সারভূতোহর্থ: নিংশ্রেরসার্থোহনুঠেরছেন সমৃচ্চিত্য উচ্যতে—মৎকর্মকং মদর্থং কর্ম মৎকর্ম তৎ করোতি ইতি মৎকর্মকং, মৎপরম: করোতি ভ্তা: স্বামিকর্ম ন ছাম্মন: পর্মা প্রেত্য গস্তব্যা গতিরিতি আমিনং প্রতিপন্ততে অরং তু মৎকর্মকং মামেব পরমাং গতিং প্রতিপন্ততে ইতি মৎপরম: অহং পরম: পরা গতির্যস্ত দোহরং মৎপরম: । তথা মদ্ভক্ত: মামেব সর্ব্যপ্রকারে: সর্বাদ্ধনা সর্ব্বোৎসাহেন ভঙ্গতে ইতি মদ্ভক্ত: । সঙ্গবিজ্ঞত: ধনপুত্রমিত্রকলত্তব্রুবর্গের্ম সঙ্গবিজ্ঞত: সঙ্গ: প্রীতি: ক্ষেহস্তদ্বিজ্ঞিত: । নির্বৈর: নির্গত্রবর: সর্বভ্তিত্ব শক্রভাবরহিত: আম্মন: অত্য গ্রাপকারপ্রব্রেশ্বি। ব স্কিন্দোম্যক্তক: স মামেত্যহমেব তন্ত পরা গতি: নাক্তা গতি: কাচিৎ ভবতারং ত্রোপদেশ: ইষ্ট: ময়া উপদিষ্ট: হে পাগুব! ইতি॥ ৫৫

আনন্দ গিরিটীকা। ভক্তা দিতি। বিশেষণাদ শ্রেষামহে তুষমাশহ্যাহ—
আধুনেতি। সম্চিত্য সংক্ষিপ্য পৃঞ্জীক্বত্যেতি যাবং। মংকর্মক দিতৃযুক্ত
মংপরমন্ষ আর্থিকম্ ইতি পুনরুক্তিরিত্যাশহ্যাহ—করোতীতি। ভগবানের
পরমা গতিরিতি নিশ্চরবতন্ত কৈব নিষ্ঠা সিধ্যতীত্যাহ—তথেতি.। ন তকৈব
সর্ব্ধ প্রকারের্ভন্তনং ধনা দিলে হাক্ত ইয়া দিত্যা শহ্যাহ—সঙ্গেতি। বেষপূর্বকানিটাচরণং বৈরম্, অনপকারির তদভাবেহিপি ভবত্যেবাপকারিছিতি শহিষাহ—
আত্মন ইতি। এতচ্চ সর্বং সংক্ষিপ্যাম্প্রচানার্থ মুক্তমেবমন্থতি ঠতো ভগবংপ্রাপ্তিরবক্ত ভাবিনীত্যপসংহরতি—অয়ুমিতি। তদেবং ভগবতো বিশ্বরূপত্ত
সর্বাদ্ধনঃ সর্বজ্ঞত সর্বেশ্বরন্ত মংকর্মক দিত্যা দিলারেন ক্রমমৃক্তিফ লম ভিখান মভিবদতা তৎপদবাচ্যাহর্থো ব্যবস্থাপিতঃ ॥ ৫৫

ইতি একাদশোহধ্যার:।

অমুবাদ। একণে সকল গীতা শাস্ত্রের বাহা সারভূত অর্থ এবং বাহা একমাত্র নিংশ্রেরস (মোক্ষ) লাভের উপার তাহার অমুষ্ঠানার্থ উপদেশ দিতেছেন (ভগবান্)—"মৎকর্মক্রং" আমার যে কর্ম তাহার নাম 'মংকর্ম্ম'; সেই মংকর্ম যে করে, তাহাকে 'মংকর্মক্রং' কহা বার। ভৃত্যন্ত প্রভূর অক্ত কর্ম করিয়া থাকে, আপনার কর্ম করে না; কিন্ত তাহা হইলেই গেই প্রভূকে নিজের প্রলোকেরও গতি বা আশ্রের বিনরা বিবেচনা করে না। ক্রিক্ত আমার

কর্ম করে যে ভক্ত, সে মানাকেই এইক ও পারকোকিক একমাত্র গতি বলিরা বোধ করে, বে এইরূপ বোধ করে, তাহাকেই "মংপরম" বলা বার। "মন্তক্ত" বে আমাকেই সর্বপ্রকারে ও সকলের আত্মা ভাবিরা ভজনা করে, সেই "মন্ডক"। "সঙ্গবর্জিত" ধন পুত্র মিত্র পত্নী ও বন্ধুবর্গে বাহার সঙ্গ আর্থাৎ শ্রীতি বা বেহ নাই তাহাকেই "সঙ্গবর্জিত" কহা যার। "নির্বৈর" সকল প্রাণীতেই অর্থাৎ যদি কেহ তাহার অত্যন্তাপকার করিতেও প্রবৃত্ত পাকে, তাহা হইলে ভাহারও উপরে বাহার শক্রতা বৃদ্ধি হর না (অর্থাৎ ভাহার অনিইকামনা সে ব্যক্তি কথনও করে না) সেই 'নির্বৈর'। এই প্রকার অন্যন্তনারনা যে ভক্ত সেই আমাকে পাইরা পাকে, অর্থাৎ আমিই ভাহার পরম গতি হই, তাহার আর অন্ত কোন গতি থাকে না. কে পাণ্ডব এই ভোমার মিত্রলিইত উপদেশ আমি করিলাম, ইহাই অর্থ। ৫ ৫

डेडि এकाम्र(मारुशांतः मुमार्थः ।

অথ দ্বাদশোহধ্যায়ঃ।

ভক্তিযোগঃ।

অৰ্জুন উবাচ—

এবং সতত্তযুক্তা যে ভক্তাস্তাং পর্য্যপাসতে। যে চাপ্যক্ষরমব্যক্তং তেমাং কে যোগবিভ্রমাঃ॥ ১

আন্ত্রয়। অর্জুন উবাচ—এবং সততবৃক্ষা যে ভক্তাঃ দাং পর্গুপোসতে যে চ অব্যক্তম্ অক্তরং [পর্গুপোসতে] তেষাং [মধ্যে] কে যোগবিস্তমাঃ ॥১

্রু অকুবাদ। অর্জুন বলিলেন—(হে ভগবন্) এইরপে বে ভক্তগণ নিরন্তর অনক্তপরারণ হইরা তোমার এই বিশ্বরূপের উপাসনা করেন এবং বাঁহারা ইন্তিরাদির অগোচর (নামরপ বর্ক্তিত) সেই অবিনাশি পরব্রন্ধের উপাসনা করেন, এই ছই প্রকার উপাসকের মধ্যে কোন্প্রকারের উপাসকগণ বোগবিত্তম ? অর্থাৎ কাহারা শ্রেষ্ঠ যোগী ॥>

ভাষ্য। বিভীরপ্রভৃতিষধ্যায়ের বিভৃত্যন্তের পরমান্ধনো ব্রন্ধণোৎকরণ্ঠ বিধ্বন্তদর্কবিশেবণপ্ত উপাদনমূক্তং দর্কবিশেবণিপ্ত উপাদনমূক্তং দর্কবিশেবণিপ্ত উপাদনমূক্তং দর্কবিশেবণিপ্ত উপাদনং তক্ত তক্ত উক্তম্, বিশ্বরূপাধ্যায়ে তু ঐশ্বরমান্তং দমন্ত-কাদান্দর্কপং বিশ্বরূপাং ঘদীয়ং দর্শিতমুপাদনার্থমেব দ্বরা, তচ্চ দর্শয়িদ্বা উক্তবানিদি মৎকর্মক্রদিত্যাদি, অতোহ্যম্ অনরোক্রভয়োঃ পক্ষয়োঃ বিশিষ্টতরবৃতৃৎসরা দাং প্রদামীতি [অর্জ্জ্ব উবাচ]—এবমিতি অতীতানস্করলোকেন উক্তমর্থং পরামূশতি মৎকর্মকং ইত্যাদিনা, এবং সত্তযুক্তা নৈরন্ধর্মোণ ভগবৎকর্মাদৌ বথোক্তেহর্থে সমাহিতাঃ দল্তঃ প্রকৃত্ত ইত্যর্থঃ। বে ভক্তা অনক্রশরণাঃ দল্তঃ দাং বথাদশিতং বিশ্বরূপাং পর্যাপাসতে ধ্যায়ন্তি, বে চ অল্পেছণি ত্যক্তসর্কর্মণাঃ সন্ধ্যপ্তসর্ককর্মাণঃ
ক্রপথিতং ব্রন্ধাকরং নিরন্তসর্কোপাধিদাৎ অব্যক্তমক্রপগোচরং বন্ হি লোকে করপগোচরং তন্ ব্যক্তম্করিশাগিতাত অল্পের্থা তোতংকর্মকর্মাণ ইনং তু অক্তরং ভিনিরীতং শিক্তিক উচ্যমানৈর্বিশেষণৈর্বিশিষ্টং তন্ত্ব বে চালি পর্যাপাসতে তেবামূভরেষাং মধ্যে কে বোগবিক্সমাঃ ক্রে অভিশবেন বোগান্ধাঃ—ইত্যর্থঃ ॥>

আনন্দগিরিটীক। অশোচ্যানিজ্যাদির বিভূত্যধ্যারাবসানের অধ্যারের নিৰুপাধিকত এক্ষণো জ্ঞেমছেনাত্মদ্বানমূক্তমিতি বৃত্তং কীৰ্ত্তমতি—দ্বিতীৰ্ত্তিত অভিক্রান্তের ভত্তদশ্যারের সোপাধিকত ত্রহ্নণো ধ্যেরত্বেন প্রক্রিশাদনং ক্রিক্র মিত্যাহ—সূর্বেতি। দর্কসাপি প্রপঞ্চ যোগো ঘটনা এর ব্রিভিডক প্রবেশ নিরমনাখ্যা তত্ত্বৈর্ধাং সামর্থ্যং তেন সর্বত্ত জ্ঞেরে প্রতিবন্ধবিধুররা জ্ঞানশভ্যা বিশিইত সম্বাহ্যপহিতত্ত ভগবতো ধ্যানং তত্ত্ব তত্ত্ব প্রসঙ্গমাপায় মন্দমধ্যমরোরত্ত্ব-একাদশে রন্তমন্থবদতি—বিশ্বরূপেতি। অধ্যারীতে গ্ৰহাৰ্থসুক্তমিতাৰ্থ:। ভগবছপদেশমন্থ্রদতি—তাক্তেতি। অতীতানস্তরল্লোকেনোক্তমর্থং পরামুশতি— মংকর্ম্মকুদিতি। বণাধিকারং তারতন্যোপেতানি সাধনানি নিরন্তমধ্যারাত্তর-মবভারররাদৌ প্রশ্নমুখাপয়তি—অত্তইতি। গোপাধিকধ্যান**ত** নিরুপাধি**কজানত্ত** চোক্তঘাদিতার্থ:। এবং শকার্থমূক্। তমন্ম সততর্কাইতি ভাগং বিভক্তে— এবমিতি। যে ভক্তা ইত্যনৃত্ব ব্যাচষ্টে—অনুন্যুতি। মন্দমধ্যমাধিকারিণঃ সগুণশরণাস্থকু। নিগুণনিষ্ঠামুন্তমাধিকারিণো নির্দ্দিশতি—্যে চেতি। स्था-বিশেষিত্যনিদে খ্রং সর্ব্যঞ্জগমচিস্তাং কুটস্থমিত্যাদিব ধ্যমাণবিশেষণবিশিষ্টমিত্যর্থঃ ন করতার তে বেতাকরম্। অব্যক্তমিভ্যেতদ্ব্যাচষ্টে – নিরুক্তেতি। করণা-গোচরত্বং ব্যতিরেক্দারা ক্ষোরম্বতি—যদ্ধীতি। যথ।বিশেবিতমিভ্যুক্তং স্পষ্টমতি —শিক্টৈন্চেতি। পূর্কার্কগতক্রিরাপদভাহবঙ্গং হচরতি—তদিতি। সর্কে তাৰদেতে যোগাং সমাধিং বিক্সন্তীতি যোগবিদ:। কে পুনরতিশরেনৈষ্ধ মধ্যে বোগবিদো বোগিন ইভি পৃচ্ছতি—কে অতিশয়েনেতি ॥>

ভাষ্যাকুবাদ ৷ "বিভীয় অধ্যায় হইতে দশন অধ্যায় পর্যন্ত গীতা শাল্লৈ [প্রধানতঃ] ছইটি বিষয় বলা হইরাছে; প্রথম, সেই অবিনাশি সকল-প্রকার নামরূপ বিনিশ্ ক্রনির্ক্তিশেবণ পরপ্রকার উপাসনা; বিতীয়, সর্বপ্রকার বোগৈখর্য্যু-সম্পার সর্বপ্রকার বিজ্ঞানশক্তি-সম্বিত যে [মায়া নামক] সন্ধ, ভাগার দারা বিশেষিত যে পরমেশ্বর তাঁহারও উপাসনা; এই বিবিধ উপাসনার বিষর দশম অধ্যায় পর্যন্ত গীতাশাল্লে প্রতিপাদন করিয়া বিশ্বরূপাধ্যারে অর্থাৎ একাদখাধ্যারে প্রথমত: সকল অগতের আত্মস্বরূপ আত্ম ঈশ্বর সম্বন্ধি দদীয় বিশ্বরূপ দেখাইয়াছ, তাহাতে দেখাইয়াছ যে কেবল উপাসনার জন্ম [সে বিষয়ে সম্বেক্ত নাই] এইপ্রকার বিশ্বরূপ দেখাইয়া তুমি [হে ভগ্রন্] পরে মৎকর্শ্বরুৎ ইন্ডাছি স্নোকের স্বান্ধা ইহাও বুলিরাছ যে, এই বিশ্বরূপের উপাসক্রপণ তোমাকে প্রান্ধ্র হাও কুলিরাছ যে, এই বিশ্বরূপের উপাসক্রপণ তোমাকে প্রান্ধ্র হার থাকেন; উথেই ফলতঃ সাড়াইতেছে যে, নিওণি প্রশ্নোপাসনা এবং

স্থা ব্ৰেমাপাননা এই ছিবিধ উপাদনাই ভূমি গীতাশাল্লে বুঝাইয়াছ; একণে **এই ছুইটি উপাদনার মধ্যে [মানুপরাক্তির পক্ষে] কোনটি উৎবর্ভতর ভাহাই** বৃদ্ধিবাদ ইচ্ছার আমি তোমাকে জিজাসা করিতেছি" এই প্রকার মনে করিরা **वर्ज**न तिम्राज्यक्त रा।--- धवः धवे नक्ति, व्याजि वर्षाता सरकर्मकर हेजानि পোকের দ্বারা যে অর্থ বলা ছইরাছে, তারাই বোধ করাইতেছে। অর্থাৎ এইরপে "সভত যুক্ত"—নিরন্তর ভগৰংগ্রীতির কল বিহিত কার্য্য সমূহে সর্বাদা মিরত থাকিয়া অর্থাৎ অনম্ভারণ হট্যা যে সকল ভক্তগণ তোমার সেই দর্শিত বিশ্বরূপের উপাসনা করেন-ধ্যান করিয়া থাকেন, এবং মাঁচারা সকল প্রকার কামনাশৃত হইরা, সকলপ্রকার কর্ম সরাত্ত করিরা, সেই পূর্বাকথিত चक्र न चक्र न व्यवित्मन विक्र के वाक भवाक भवाक के भागना करतन, तिर धर বিবিধ উপাসকগণের মধ্যে কোন উপাসকগণ বোগবিত্তম অর্থাৎ অভিশয়রূপে বোগ জানেন ? এই শ্লোকে বে অব্যক্ত শস্টি ব্যবহার করা হইয়াছে, ভাহার অর্থ সকলপ্রকার ইলিয়জনিত জানের অবিষয়, বে বস্তু ইলিয়ের গোচর, তাহাকেই "ব্যক্ত" কহে,—বি উপদর্গের দহিত ছাঞ্জি ধাতুর কর্ম ইচ্ছিরগোচর वज्रहे इहेन्ना शास्त्र: नकन श्रकात छेशाधि मध्य-विक्रिष्ठ विनेत्रा भन्न बिल्नन-গোচর বা বাস্ক নহেন: এই কারণে তাঁহাকে "অব্যক্ত" বলা যায়। व्यवाक ना इहेरन ९ व्यक्षारताश्रवाम आरत व्यवाद विधियरथ ना इहेरन ९ নিবেধরপে, কতকগুলি বিশেষণের দারা কোনপ্রকার শাল্তে লকিত হইয়া থাকেন। >

ঞ্জীভগবাছবাচ।

ময্যাবেশ্য মনো যে মাং নিত্যযুক্তা উপাদতে। শ্রেদ্ধা পরয়োপুেতান্তে মে যুক্ততমা মতাঃ॥ ২

আহ্বয়। এউগবাহবাচ—বে নিত্যসূক্তা মরি মনঃ আবেশু পররা শ্রহরা উপেতাঃ সক্তঃ মাং উপাদতে তে যুক্তমাঃ [ইতি]মে মতাঃ॥ ১ '

আৰুৱাদ। আজগবান কহিলেন। বে সকল নিজাৰুক ওঞ্চণ আয়াতে অবঃকরণ নিবেশিত করিয়া প্রমশ্রকাসহকারে আমার উপান্তা করিয়া থাকেন, ভাঁহারাই আমার নিকটে ব্রুক্তন বলিয়া বিবেচিক হইরা থাকেন। ২ ভাষ্য। যে তু অক্ষরোপাসকাঃ সমাগ্দশিনঃ নির্তৈষণাঃ তে তাবৎ তিইন্ত তান্প্রতি ষদ্বক্তবাং তত্পরিষ্টাৎ বক্ষ্যামঃ। যে তু ইত্রে। ময়ি বিশ্বরূপে পরমেশবে আবেশু সমাধার মনঃ যে ভক্ত্যাঃ সন্তঃ মাং সর্ক্রযোগেশরাগামধীরারং সর্ক্তমং বিমুক্তরাগাদিকেশতিমিরদৃষ্টিং নিতাযুক্তা অভীতান হুরাধাারান্তোক্ত-ল্লোকার্যক্তারেন সভতযুক্তাঃ সন্তঃ উপাসতে শ্রদ্ধরা পররা প্রকৃষ্টিরা উপেতাঃ তে মে মম মতা অভিপ্রতা যুক্ততমা ইতি। নৈরস্তর্যোগ হি তে মচিত্ততরা অহোরাত্তমতি বাহরন্তি মতো যুক্তং তান্প্রতি যুক্ততমা ইতি বক্ত্রুং॥ ২

আনন্দণিরিটীকা। কিমনরোর্যোগরোর্দ্মধ্যে স্থাক্যো বোগে বা পৃচ্ছতে কিং বা সাক্ষায়োক্ষহেভূরিতি বিকল্প ক্রমেণোত্তরং ভগবান্তকানিত্যাহ—

শ্রীভগবানিতি। বদি দিতীয়ন্তপাবিধযোগন্ত বক্ষ্যমাণদাং ন প্রাইব্যতেত্যাহ—
যে ক্বক্ষরেতি। যন্তান্তক্তরাহ—যেত্বিতি। সর্ব্যোগেশ্বরাণাং সর্ব্বেরাং বাগমধিতিঠতাং বোগিনামিত্যর্থ: বিম্কা তাক্তা রাগান্ধাণ্যা ক্রেশনিমন্তভূতা তিমিরশন্ধিতানান্তকানকতা দৃষ্টিরবিন্ধা মিথ্যা ধীর্যন্ত ভমিতি বিশিন্তি—বিমুক্তেতি। নিত্যযুক্তমং সাধরতি—অতীতেতি। তত্ত্বোক্তো বোহর্ষো মংকর্মক্বদিত্যাদি ভন্মিলিন্তবেনান্তনমান্ধো গমনং তন্ত নির্মেনান্থনানং তেনেত্যর্থ:। উপাসতে মরি স্থৃতিং সদা কুর্বস্তীত্যর্থ:। ত্রক্তোসাসসকানাং যুক্ততমত্বং ব্যনক্তি—বিরন্তর্ব্যোগেতি। তদেব স্ফুটরতি—অত্যারাত্রমিতি। অভি চ রাজৌ চাতিমাত্রমতিপরেন মামেব বিষরান্তর্ববিষ্ণাশ্রিক্তর্মন্তীত্যর্থ:॥ ২

অনুবাদ। (প্রীভগবান্ কহিলেন) বাহারা তব্জানী এবং সকল প্রকার কামনা পরিত্যাগ করিয়া দেই অধ্বর অব্যক্ত পরপ্রন্ধের উপাসনা করেন, তাঁহারা এখন থাকুন, তাঁহাদের বিষয়ে বাহা বক্তব্য, তাহা পরে বলিতেছি—বাঁহারা কিন্তু সেইরপভাবে পরপ্রন্ধের উপাসক নহেন, কিন্তু আমার এই বিশ্বরূপে মন আবেশিত করিয়া অর্থাৎ সমাহিত করিয়া, ভক্তিসহকারে একাদশাধ্যারের শেবে উক্ত শ্লোকের অর্থান্থসারে সতত যুক্ত হইয়া আমার উপাসনা করিয়া থাকেন—আমি কি রূপ । সকল বোগেশ্বরগণেরও ঈশ্বর, সর্বজ্ঞ ও রাগ্রেবাদিরপ-অবিভামর-তিমিরদৃষ্টিবর্জ্জিত, এই ভাবে আমাকে বুঝিরা পরম শ্রদ্ধার সহিত বাঁহারা আমার উপাসনা করেন অর্থাৎ সর্বাদা ধ্যান করিয়া থাকেন, আমার কাছে তাঁহারা স্কুত্ম বলিয়া বিবেচিত হইয়া থাকেন। অবিভিন্ন ভাবে আমাতেই চিত্ত শ্লাহণ উহিদিগকে যুক্ততম বলিয়া দিন রাজ্ঞি অতিকাহিত করিয়া থাকেন, এই কারণে ভাহাদিগকে যুক্ততম বলিয়া নির্দেশ করাই উচিত । ২

যে ত্বক্ষরমনির্দ্দেশ্যমব্যক্তং পর্যুপাসতে।
সর্ব্বত্রগমচিন্ত্যঞ্চ কৃটন্থমচলং ধ্রুবম্ ॥৩
সংনিয়ম্যেক্রিয়গ্রামং সর্ব্বত্র সমবুদ্ধয়ঃ।
তে প্রাপ্নুবন্তি মামেব সর্বব্স্ত্তহিতে রতাঃ॥৪

আর্য়। বে তু সর্কভৃতহিতে রতাঃ সর্কত্তি সমবৃদ্ধঃ ইক্রিয়গ্রামং সংনির্ম্য সর্কত্তিসম্ অচলং কৃটস্থং ধ্রুবন্ অনির্দেশ্রম্ অব্যক্তম্ অকরং পর্যুপাসতে তে মামেব প্রাপ্নুবন্ধি ॥ ৩—৪

অমুবাদ। যাহারা সকল জীবের হিত করিতে সর্ব্ধদা প্রবৃদ্ধ এবং সর্ব্বজ্ঞ বৃদ্ধান্ত একং সর্ব্বজ্ঞ বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধান বৃদ্ধান্ত বৃদ্ধ

ভাষ্য। কিমিতরে যুক্তভান ভবন্ধি ?—ন, কিন্তু তান্ প্রতি বদ্বক্তব্যং তং শৃণ্—বৈ তু—অক্ষরম্ অনির্দেশ্যম্ অব্যক্তখাদ্ অশব্দগোচরমিতি ন নির্দেষ্ট্যং শক্যতে অতোহনির্দেশ্যম্ অব্যক্তং ন কেনাপি প্রমাণেন ব্যক্ত্যতে ইত্যব্যক্তং পর্যুপাসতে পরি সমস্তাৎ উপাসতে। উপাসনং নাম বধাশান্তমুপাশ্যন্ত অর্ধপ্র বিষয়ীকরণেন সামীপামুপগম্য তৈলধারাবং সমানপ্রত্যরপ্রবাহেণ দীর্ঘকাণ্যং যদ্-আসনং ভত্নপাসনমাচক্ষতে। অক্ষরক্ত বিশেবণমাহ সর্বজ্ঞগং ব্যোমবদ্ব্যাপি অভিন্তাং চ অব্যক্তখাদচিন্ত্যম্। যদ্ধি করণগোচরং তত্মনসাহপি চিন্তাং ত্রিপনীত্রাৎ অভিন্তাম্ অক্ষরং কৃটস্থং দৃশ্রমানগুণমন্তর্দে বিং বন্ত কৃটং "কৃটরূপং কৃটন্দার্য ইত্যাদৌ কৃটশব্যং প্রসিদ্ধা লোকে। তথাচ অবিভাগ্তনেকসংসারবীক্ষমন্তদে বিব্যায়াহব্যাক্তাদিশক্ষাচ্যতরা—"মারাং তু প্রকৃতিং বিভাগ্যায়িনং তু মহেশ্বরম্," "মম মারা হ্রভারা" ইত্যাদৌ প্রসিদ্ধং বং তৎ কৃটং তত্মিন্ কৃটে ক্রিয়ং তদধ্যক্ষতরা অথবা রাশিরিব স্থিতং কৃটস্থম্ অতএবাচনং ক্ষাদ্দলং ভ্রাদ্ধেবং নিত্যমিত্যর্ধং।

সংনিরম্যেতি। সংনিরম্য সমাঙ্নিরম্য সংহত্য ইক্রিরপ্রামন্। ইক্রির্স্ সমুদারং সুর্বাক্ত সর্বাদ্ধিন্ কালে সমব্দ্ধরঃ সমা তুল্যা বৃদ্ধির্বোম্ ইটানিইপ্রাথীে তে সমবৃদ্ধরঃ তে যে এবংদিধাঃ তে প্রাপ্পুবস্তি মামেব সর্বভৃতহিতে রভাঃ। নতু তেবাং বক্তব্যং কিঞ্ছিৎ মাং তে প্রাপ্নবন্তীতি। জ্ঞানী ছালৈব মে মতমিতি
যুক্তম্ব ন নহি ভগবংশ্বরূপাণাং সতাং যুক্তমন্বমযুক্তসন্ত্রং বা বাচাম্॥ ৩—৪

আনন্দ্রিনিকা। বক্যামন্তহপরিষ্টাদিত্যক্তং প্রশ্নপুর্বেকং প্রকটরতি-कि शिकामिना । शृर्विष्ठाः कनाका वित्नवार्थस्वनमः। अवाक्तवमितानार হেতুরিত্যাহ—অব্যক্তেত্বাদিতি। বতোহবাক্তমতোহনির্দেগুমিতি বোজনা। নিৰুপাধিকেহক্ষরে কণমুপাদনেতি পৃহতি—**উপাসন্মিতি**। শাব্রতোহকরু আৰা তহপেত্যাশ্বৰেনোপগম্যোপাদতে তথৈৰ তিষ্ঠত্তি পূৰ্ণচিদেকতানমক্ষর-মাত্মানমেব সদা ভাবমন্তীতোতদিহ বিবক্ষিতমিত্যাহ—যথেতি। অব্যক্তমুমেবা-চিষ্ট্যমেহপি হেত্রিত্যাহ—যদ্ধীতি। কুটশক্ষাক্তার্থবং বুদ্ধপ্রয়োগতঃ সাধরতি—কৃটরূপমিতি। মাদিপদমন্তার্থম্। প্রকৃতে কিং তদনৃতং কূট-শৰিত্মিত্যাশব্যাহ –তথাচৈতি। উক্তরীতা। কুটশব্য অনুতার্থছে সিছে যদনেকশু সংসারশু বীঞ্জং নিরুপ্যমাণং নানাবিধদোবোপেতং তদ্ধেরং তর্হাব্যাক্ততং নারাত্ত প্রকৃতিং মম মারেড্যানে মায়াশব্দিততয়া প্রসিদ্ধনবিভাদি তদিহ কুট-শৰিতমিত্যৰ্থ:। তত্ৰাবন্থানং কেন রূপেণেত্যাশকায়ামাহ—**তদ্ধ্যক্ষত**য়েতি। কৃটস্থশব্দক্ত নিক্রিশ্বত্বর্থান্তরমাহ—অথবেতি। পূর্ব্বমূপজীব্যানস্তরবিশেষণদ্ধ-প্রবৃত্তিমাহ—অতএবেতি। কথমক্ষরমূপাসতে তহুপাসনে বা কিং ভাদিতি তদাহ—সংনিয়ম্যেতি। তুল্যা হর্ষবিষাদরাগছেষাদিরহিতা সম্যগ্রানে-নাজ্ঞানস্তাপনীতত্বাৎ। ক্রমপরাপেক্রোরদস্তবং বিব**ক্ষি**ছাহ—তে য ইতি। সর্বেন্ড্যো ভূতেভ্যো হিতে রতাঃ সর্বেভ্যো ভূতেভ্যো হিভমেব চিশ্বরন্ত ন্তদেবাচরন্তি। জ্ঞানবতাং যথাজ্ঞানং ভগবৎপ্রাপ্তেরর্থসিদ্ধত্বাদ্মাত্রমেড-জ্ঞানিনো ভগবৎপ্রাপ্তিঃ দিকৈবেত্যত্ত্ব প্রমাণমাহ— দিত্যাহ—নত্বিতি। জ্ঞানী ত্বিতি। জ্ঞানবতাং ভগবংখাগ্রে ত এব বৃক্ততমা বক্তব্যাঃ। কথং সপ্তণত্ৰন্ধোপাসকান্ যুক্ততমামুক্তবানসীত্যাশস্থাহ —নহীতি 🛭 ৩---৪

অমুবাদ। তবে কি অন্তপ্রকারের উপাসকগণ (অর্থাৎ অব্যক্তোপাসক-গণ) যুক্তন নহেন? তাহা নহে, কিন্তু তাঁহাদের বিষয় যাহা বক্তব্য তাহা এক্ষণে বলা হইতেছে। বাঁহারা অক্ষরের উপাসনা করেন, সে অক্ষর কেমন? "অনির্দ্দেশ্র" যে হেতু তাহা ব্যক্ত নহে; স্থতরাং কোন প্রকার শব্দের গোচর নহে এই কারণে তাহা 'অনির্দেশ্র', যাহাকে শব্দের দারা নির্দেশ করিতে পারা যায় না, তাহার নাম অনির্দেশ্র; সক্ষর অর্থাৎ অবিনাশি এক নির্দেশ্র নহে। সেই অক্ষর অব্যক্ত, কারণ, কোন প্রমাণের দারা তাহা ব্যক্ত হর না; এই কারণে তাহা অব্যক্ত, সেই অব্যক্তের বাঁহারা উপাসনা করেন, উপাসনা কার্ছেক বলে। भावीय উপদেশের সাহায্যে, উপাস্তবস্তুর স্বরূপ প্রথমতঃ হৃদরক্ষম করিয়া, ভাছার পর সেই উপাস্তবন্তর সামীপ্যলাভ করিয়া অর্থাৎ সেই উপাস্ত বন্ধ ভিন্ন আর সকল পদার্থ হইন্ডে চিত্তকে প্রত্যাহত করিয়া, সেই উপাত্ত বিষয়কে অবলয়ন পূর্বক বে একাকার ধারাবাহিক মনের বুভিসমূহ, বে বুভিধারা ভৈলধারার ভার मीर्यकान ও অবিভিন্ন, দেই উপাস-বিষদ্ধিণী মনের সদৃশ বৃত্তিধারাকেই উপাসনা वना यात्र । त्मरे व्यक्तत्तत्र व्यक्त वित्ययं वना श्रेटालह .- विश मर्सवाग-व्याप चाकात्मत जात्र डेश नर्सवाभी ; डेश चिविद्या, त्य त्वज् चवाक विहे कांद्रलहे **অচিন্ত্য**; বাহা ইন্দ্রিরের বিষর তাহাকেই মনে চিন্তা করিতে পারা বার. এই অকর ইন্দ্রিরের বিষয় নহে, স্থতরাং উহা 'অচিস্তা'; উহা "কৃটস্থ" বাহার বাহিরে খুণ দেখা যায় কিন্তু ভিতরে যাহা দোষে পরিপূর্ণ, তাহাতেই কূট শব্দের প্রয়োগ লোকে করিরা থাকে, যেমন সাধারণের ব্যবহার আছে "কৃটরূপ" 'কৃট সাক্ষা" প্রভৃতি। প্রকৃত স্থলেও বাহা অবিদ্যা প্রভৃতি অনর্থময় সংসারের বীজ, বাহা ভিতরে দোবে ভরা—"প্রকৃতিকে মানা বলিয়া জানিবে মহেশ্বরকে মানী বলিয়। ৰানিবে," "আমার মায়া অপরিহার্য্য" এই সকল শাস্ত্রীয় বাক্যে প্রসিদ্ধ যে মায়া এবং অব্যাক্ত প্রভৃতি শব্দের ঘারাও যাহার নির্দেশ হইয়া থাকে, সেই জগৎকারণ বন্ধকে ''কুট'' বলা যায় ; সেই কুটে যিনি অবস্থিত মর্থাৎ বিনি সেই কৃটশন্ধবাচ্য মারার অধিষ্ঠাতা বা অধ্যক্ষ তাঁহাকেই "কৃটছ" বলা বার ৷ অথবা কৃট শব্দের অর্থ রাশি বেমন অচল অবিকৃত ভাবে বিভ্যমান থাকে, দেইরূপ সেই আকরও অচল ও অবিকৃত ভাবে বিভ্যান। যে হেতু কুটছ এই অভই অচল; (व कांत्रल कहन. এই क्रम्बेट क्ष्य वर्षाए निका ; देशेट वर्ष।

সংনিদ্ধয় ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। সম্যক্ প্রকারে নিম্নমিত করিয়া অর্থাৎ প্রত্যান্ত করিয়া বা সংবত করিয়া—কাহাকে? ইন্দ্রিয়গ্রামকে, অর্থাৎ ইন্দ্রিয় সমুদায়কে [যাহারা সেই অক্ষরের উপাসনা করেন তাঁহারা কিরপ ?] "সর্বত্তি সমৃদৃষ্টি" কি ইন্ন কিন্তি সকল প্রকার বন্ধ প্রাথিতে বাহাদের বৃদ্ধি একই প্রকার, তাঁহাদিগকে "সমবৃদ্ধি" বলা বার। যাহারা এই প্রকার হইয়া সেই অক্ষরের উপাসনা করেন, তাঁহারা আমাকে প্রাথি হইয়া থাকেন। আমাকে বে তাঁহারা প্রাথি হইয়া থাকেন এ বিবরে আর অধিক কি বলা যাইবে ? জানী আমার আত্মা এই কথাত পূর্বেই বলা হইয়াছে, বাহারা একেবারে তগবানের স্বরূপ প্রাথি হইরাছেন, তাঁহাদের সক্ষে যুক্তমেত বা অধুক্তমত্ব কিছু—বলিবার আবস্কৃত্য আছে কি ? ॥ এঃ

ক্রেশোহধিকতরত্তেষামব্যক্তাসক্তচেতসাম্। অব্যক্তা হি গতিত্ব :খং দেহবন্তিরবাপ্যতে ॥ ৫

আনুষ্ম । অব্যক্তাসকচেতসাং ক্লেশঃ অধিকতরঃ [ভবতি]; হি (যতঃ) দেহবঙ্কিঃ অব্যক্তা গতিঃ হঃথম্ [যথাস্তাৎ তথা] অবাপ্যতে ॥ ৫

অনুবাদ। সেই অব্যক্ত অর্থাৎ নিরুপাধি ব্রন্ধে বাঁহাদের চিত্ত আসক্ত, তাঁহাদের [সিদ্ধি লাভ করিতে] ক্লেশ অধিকতর [হইরা থাকে]; কারণ বতকণ দেহাভিমান থাকে, ততকণ—সেই অ্করাত্মক গতি লাভ করিতে বড়ই ছঃথ সঞ্করিতে হর ॥ ৫.

ভাষ্য। কিন্তু ক্লেশঃ অধিকতর:—বভাপি মৎকর্মাদিপরাণাং ক্লেশোহধিক এব ক্লেশোহধিকতরস্ত অকরাজনাং পরমার্থদর্শিনাং দেহাভিমানপরিত্যাগনিমিতঃ। অব্যক্তাসক্তচেতসাম্ অব্যক্ত আসক্তং চেতো বেবাং তে অব্যক্তাসক্তচেতসঃ তেবাম্ অব্যক্তাসক্তচেতসাম্। অব্যক্তা হি বন্ধাং বা গতিরক্ষরাত্মিকা হঃবং সা দেহবদ্ভিঃ দেহাভিমানবদ্ভিঃ অবাপ্যতে; অতঃ ক্লেশঃ অধিকতরঃ। মক্ষরোপাসকানাং বদ্বর্জনং তত্তপরিষ্ঠাদ্বক্ষামঃ॥ ৫

আনন্দিগিরিটীকা। সপ্তণোপাসকেষপি কথমিত্যাহ—কিন্তিতি।
অধরোপাসনত হুকরছাহুপাসনাস্তরত স্থকরছাদিত্যভিপ্রেত্যাহ—ক্রেশইতি।
অধিকএবেতরেভ্যো বৈতদর্শিত্যা কামিত্যইতি শেবঃ। তেবাং ক্রেশতাবিক্ষে
হেতৃং মদা বিশিনটি—দেতেতি। অব্যক্তমত্যক্তমং নির্বিশেবসক্তরং তরিন্
আসক্তম্ অভিনিবিষ্ঠং চেতো বেবাং তেবামিতি বাবং। অক্রোপাসকানাং
ক্রেশতাধিকতরকে ভগুবানেব হেতুমাহ—অব্যক্তেতি। ছঃখং ছঃখেন
ক্রেল্ডে বাবং, অতো দেহাভিমানত্যাগাদিত্যর্থঃ। তে কথং বর্ত্তরে ত্রাহ—
আক্রেরিতি। গ

অকুবাদ। তাঁহারা আমাকে প্রাপ্ত হরেন বটে, কিন্ত তাঁহাদের ক্লেশ অধিকতর; বদিও বাঁহারা মংকর্ম প্রভৃতি ছরুহ ব্যাপার সাধন করিরা বিশ্বরূপের উপাসনা করেন, তাঁহাদের [সাধন মার্গে] ক্লেশ আছে বটে, কিন্ত, রাঁহারা সেই অবিনাশি অক্টরকেই পরমার্থ তন্ধ বলিরা দেখিতে প্ররাস করেন, তাঁহাদের [সাধন-মার্গে] ক্লেশ অধিকতর; কারণ দেহাতিনীন পরিত্যাগের অক্তই [তাঁহাদিগকে অধিকতর ক্লেশ সহিতে হয়] বাঁহাদের চিত্ত সেই অব্যক্ত অক্তরে আসক্ত, তাঁহাদিগকেই 'অব্যক্তাসক্তচেতা' বলা বার। [কেন এমন অবিক ক্লেশ তাঁগাদের হয়?] বাঁহাদের দেহাভিমান আছে, তাঁহাদের পক্ষে গেই অকরাত্মক গতি লাভ করিতে বিশেষ হঃথ সহিতে হয়, এই জন্তই দেহাভিমানীর পক্ষে অব্যক্তোপাসনার ক্লেশ অধিকতর। অক্ষরোপাসকগণের ব্যবহার সহস্কে যাহা বক্তব্য, তাহা পরে বলিব ॥ ৫

যে তু সর্বাণি কর্মাণি ময়ি সংস্থান্থ মৎপরাঃ।
অনম্যেনৈব যোগেন মাং ধ্যায়ন্ত উপাসতে॥ ৬
তেষামহং সমুদ্ধর্তা মৃত্যুসংসারসাগরাৎ।
ভবামি ন চিরাৎ পার্থ মধ্যাবেশিতচেতসাম্॥ ৭

আঁয়ুয় । যে তু সর্কাণি কর্মাণি মরি সংস্কৃত মৎপরাঃ সম্ভ: অনজেন বাৈগেন মাং ধ্যায়স্ত: উপাদতে, হে পার্থ! মরি আবেশিতচেতদাং তেবাম্ অহং মৃত্যু-সংসারসাগরাৎ ন চিরাৎ উদ্ধৃত্তা তবামি ॥ ৩—१

আনুবাদ। বাঁহারা সকল কর্ম আমাতে সন্ধ্যন্ত করেন এবং মংপর হইরা অনস্ত বোণের সাহায্যে আমাকে ধ্যান করিরা উপাসনা করেন, হে পার্থ। সেই সকল আমাতে আবেশিতচিত্ত উপাসকগণকে আমি শীঘ্রই মৃত্যুমর সংসার-সাগর হইতে সমৃদ্ধৃত করিরা থাকি॥ ৬— ৭

ভাষ্য। যে ছিতি। যে তু সর্কাণি কর্মাণি ময়ি ঈশরে সংগ্রন্থ মৎপরা মহং পরে।
বেষাং তে মৎপরা: সন্ত: অনজেনৈব অবিজ্ঞমানমন্তদালম্বনং বিশ্বরূপং দেবসাম্মানং
মূকা বস্ত সোহনক্ত: তেনানক্তেন এব বোগেন সমাধিনা মাং ধ্যারক্ত: চিত্তরক্ত:
উপাসতে। তেবাং কিম্ ? তেবাং মহুপাসনৈকপরাণাম্ অহমীশরঃ সমুদ্ধর্জা।
কৃত: ইত্যাহ মৃত্যুসংসারসাগরাৎ মৃত্যুযুক্ত: সংসারঃ মৃত্যুসংসারঃ স এব সাগরঃ
হৃষ্ণজ্জহাৎ, তত্মাৎ মৃত্যুসংসারসাগরাৎ অহং তেবাং সমুদ্ধর্জা ভবামি ন চিরাৎ;
কির্থ তিই ? কিপ্রমেব, হে পার্থ ! মধ্যাবেশিতচেতসাং মরি বিশ্বরূপে আবেশিতং
প্রবেশিতং সমাহিতং চেতো বেষাং তে মধ্যাবেশিতচেতসাং তেবাম ॥৩—৭

আনন্দ গিরিটীক। । যজকরোপাসকা মামেবাপু বস্তীতি বিশেষ্যক্ত তৎ কিং সভগোপাসকাঝাং নাপু বস্তি ? ন, তেষামপি ক্রমেণ মৎপ্রাপ্তেরিভ্যাহ—যে ভিতি । তৃশবং শকানিবৃত্ত্যর্থঃ । তেষাং ভগবদ্ধারিনাং কিং ফলতীতি শকামমুভাষ্য কলমাহ—তেষামিত্যাদিনা । সমুদ্ধর্গ সম্যপূর্দ্ধং নেভা জ্ঞানাবইভাদানেনেভার্থঃ, মৃত্যুরজ্ঞানং মর্মাণ্যনর্থহেতৃত্বান্তেন কার্যভন্ধা ক্তঃ সংসারঃ ॥ ৬—৭

ভাষুবাদ। বে ছু ইত্যাদি সোকের অর্থ। বাঁহারা কিন্তু মংপরারণ, এবং বাঁহারা আমাতে অর্থাৎ জগদীখরে, সকল কর্ম সংস্থাস করিয়া সান্ত্র
বোলের ছারা আমার অরপ্যানরপ মহপাসনা করেন—এখানে যে বোগ শলটি
ব্যবহৃত হইরাছে, তাহার অর্থ সমাধি; সেই সমাধি কেমন? "অনক্ত" সেই মদীর
বিশ্বরূপ আত্মভূত দেবকে পরিত্যাগ করিয়া অন্ত কোন আলম্বনেই যে সমাধি
হইতে পারে না, সেই সমাধিকেই 'অনক্ত যোগ' কহা বায়। সেই অনক্ত যোগের
ছারা বাঁহারা আমার উপাসনা করেন। তাঁহাদের কি হয়? হে পার্প আমি
বিলম্বে নহে কিন্তু শীত্রই, তাঁহাদিগকে মৃত্যুসংসারসাগর হইতে উদ্ধার করিয়া
থাকি। যে সংসারে মরণ লাগিয়াই আছে, তাহাকে 'মৃত্যু-সংসার' বলা বায়;
সাগর যেমন হস্পার, সেইরূপ এই মৃত্যু-সংসারও হুসার; এই অন্ত ইহাকে
'মৃত্যুসংসারসাগর' বলা গিয়াছে। বাঁহাদের সেই মৃত্যুসংসার-সাগর হইতে আমি
উদ্ধান করি, তাঁহারা কিরূপ? "ম্ব্যাবেশিতচেতাঃ" আমাতে অর্থাৎ মদীর
বিশ্বরূপে তাঁহাদের চিত্ত আবেশিত অর্থাৎ সমাহিত হইয়াছে; এই অন্তই তাঁহাদিগকে 'ম্ব্যাবেশিতচেতাঃ' বলা বায়; এই প্রকার ভক্তগণকে আমি মৃত্যুসংসারসাগর হইতে শীত্রই উদ্ধার করিয়া থাকি ॥ ৬—৭

ময্যেব মন অধৎস্ব ময়ি বুদ্ধিং নিবেশয়।
নিবসিষ্যসি ময়েব অত উৰ্দ্ধং ন সংশয়ঃ॥ ৮

আৰুষু । মরি এব মনঃ আধংস্ব, মরি বৃদ্ধিং নিবেশর, [এবং দতি] আতঃ উর্দ্ধং মরি এব নিবসিষ্যসি [অত্র] সংশয়: ন [অস্তি]॥৮

আনুবাদ। আমাতেই মনকে সমাহিত কর আমাতেই বৃদ্ধিকে নিবেপিত কর; [এইরপ করিতে পারিলে] ইহার পর ভূমি আমাতেই বাস করিতে পারিবে; [এই বিষয়ে] কোন সন্দেহ নাই॥৮

ভাষ্য। যভ এবং জন্মাৎ ময়ি এব বিশ্বরূপে ঈশবে মনঃ সংকরবিকরাত্মকম্ আধৎস্ব স্থাপর, ময়ি এব অধ্যবদারং কুর্বজীং বৃদ্ধিম্ আধৎস্ব নিবেশর। তততে কিং তাৎ ইউি শৃণ্—নিবসিবাসি নিবংভসি নিশ্চরেন মদাত্মনা ময়ি নিবাসং ক্রিবাসি এব অতঃ শরীরপাতাদুর্দ্ধং, ন সংশরাইতা ন কর্মবাঃ॥ ৮

আনন্দগিরিটীকা। ভগৰছপাসনা বিশিষ্টফলেভ্যেবং বভঃ সিদ্দরভো ভগ-বিশ্বহারাং প্রবভিতব্যমিত্যাহ—যুক্ত ইক্তি। অসংহিতাকরণং শ্লোকপুরণার্থম্। মনোব্দ্যোর্জ্যবভাবহাপনে প্রশ্নপূর্বকং ফলমাহ—তত ইতি। ভগবর্মিইছ ভং-প্রাথ্যে প্রভিবদ্ধাভাবং হচরতি—সংশ্রোেইত্ত্রেতি ॥ ৮

ভাসুবাদ। বে হেতু এইপ্রকার, সেই কারণে—তুমি আমাতেই অর্থাৎ বিশ্বরূপ পরমেশ্বরে তোমার সংক্রমিকরমর অন্তঃক্রপকে আহিত কর অর্থাৎ হাপিত কর, এবং আমাতেই তোমার অধ্যবসারবতী বৃদ্ধিকে নিবেশিত কর। এই প্রকার করিলে ভোমার কি লাভ হইবে ? তাহা শুন; তাহা হইলে ভূমি আমাতে নিবাস করিতে পারিবে; কবে ? এই তোমার দেহপাতের পর, তুমি আমার স্বরূপ হইরা আমাতে নিবাস করিতে পারিবে, এই বিবরে সংক্রম নাই॥৮

> অথ চিত্তং সমাধাতুং ন শক্রোষি ময়ি স্থিরম্। অভ্যাসযোগেন ততো মামিচ্ছাপ্তুং ধনঞ্জয়॥ ৯

আনুষ্য়। হে ধনঞ্জা ! অথ ময়ি চিত্তং স্থিরং সমাধাতৃং ন শক্লোবি, ততঃ অভ্যাসবোগেন মাম্ আপ্তাৰ্ইছে॥ »

অকুবাদ। হে ধনঞ্জর, বদি তুমি আমাতে স্থিরভাবে চিত্তকে সমাহিত করিতে না পার, তাহা হইলে অভ্যাসবোগের হারা আমাকে পাইতে ইচ্ছা কর ॥৯

ভাষ্য ূ। অথেতি অথৈবং যথা অবোচাম তথা মরি চিত্তং সমাধাতৃং স্থাপরিতৃৎ দ্বিরম্ অচলং ন শকোষি চেতং, ততঃ পশ্চাৎ অভ্যাসবোগেন চিত্তত একস্মিন্ আলম্বনে সর্বতঃ সমাহাত্য পুনঃ পুনঃ স্থাপনমভ্যাসঃ তৎপূর্বকো বোগঃ .সমাধানলকণঃ—তেন অভ্যাসবোগেন মাং বিশ্বরপমিছ প্রার্থর আপ্তং প্রাপ্তং হে ধুনক্ষর ॥ >

আনন্দণিরিটীক। মতপ্রদর্শনপূর্বকং ভগবৎপ্রাপ্তার্পারান্তরমাহ— অপ্রেত্যাদিনা। একমালম্বনং স্থূলং প্রতিমাদি সমাধানং তভোহভ্যস্তরে, বিশ্বরূপে চিক্তৈবাগ্রাম্॥ ১

আকুবাদ। আমি বে প্রকার বলিরাছি, সে ভাবে বদি আমাতে চিত্ত সমাধান করিতে না পার, ভাহা হইলে অভ্যাসবোগের বারা আমাকে পাইবার বাহা ইছো কর অর্থাৎ প্রার্থনা কর। একটি কোন আলম্বনে, অন্ত সকল বিষর হইতে প্রভ্যান্ত করিয়া, চিত্তের বে পুনঃ পুনঃ সংস্থাপন ভাহার নাম 'অভ্যাস'; এই প্রকার অভ্যাস পূর্বক বে বোগ অর্থাৎ সমাধি, ভাহাই অভ্যাসবোগ। হে ধনজন (িনেই অভ্যাস বোগ দারা আমাকে প্রাপ্ত হইতে ইচ্ছা কর; টুহাই অভিপ্রার] ॥ ৯

> অভ্যাদেহপ্যসমর্থোহসি মৎকর্মপরমো ভব। মদর্থমূপি কর্মাণি কুর্ব্বন্ সিদ্ধিমবাপ্স্যসি॥ ১০

অনুয় । [यिन] অভ্যাসেৎপি অসমর্থঃ অসি, [তদা] মৎকর্মপরমঃ তব । মদর্থমপি কর্মাণি কুর্বন্ সিদ্ধিম্ অবাপ্ স্যাসি ॥ ১০

আমুবাদ। তুমি বদি [এই প্রকার] অভ্যাস করিতে সমর্থ না হও, ভাহা হইলে আমার জন্ত কার্য্য করিতে আরম্ভ কর; [কারণ] আমার জন্ত কার্য্য করিতে করিতে তুমি সিদ্ধি লাভ করিতে পারিবে॥ ১০

ভাষ্য। অভ্যাদেৎপীভি। অভ্যাদেৎপি অসমর্থ: অসি অশক্তোৎসি, তর্হি মৎকর্মপরমো ভব; মদর্থং কর্ম মৎকর্ম তৎপর্মঃ মৎকর্মপ্রধান ইত্যর্থ:। অভ্যাদেন বিনা মদর্থমপি কর্মাণি কেবলং কুর্মন্ সিদ্ধিং সম্বন্ধনিযোগজ্ঞান-প্রাপ্তিয়ারেণ অবাপ্তসি॥ ১০

আনন্দগিরিটাকা। বৈতাতিনিবেশাদভ্যাসাধীনে বোগেহপি সমর্থ্যাভাবে পুনরুপারান্তরমাহ—অভ্যাসেহপীতি। অভ্যাসবোগেন বিনা ভগবদর্থং কর্মাণি কুর্ব্বাণক্ত কিং ক্তাদিত্যাশক্যাহ—অভ্যাসেনেতি। সিদ্ধিঃ ব্রন্ধভাবঃ। অপিরিহ অবধিস্টনার্থঃ। ১০

অকুবাদ। অভ্যানেহপি ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। তুমি যদি অভ্যানেও "অসমর্থ" অপক্ত হও, তাহা হইলে "মৎকর্মপরম" হও। আমার কম্ম বে কর্ম তাহাই মৎকর্মা, মৎকর্মাই হইরাছে বাহার পরম, তাহাকে 'মৎকর্মপরম' বলা বার অর্থাৎ মৎকর্ম-প্রধান হও। অভ্যান ব্যতিরেকেও কেবল আমার কম্ম কার্য্য করিতে করিতেও নিদ্ধিলাভ করিতে পারিবে অর্থাৎ ক্রমে চিত্তত্তি ও জ্ঞানপ্রান্তি হারা [নিদ্ধি অর্থাৎ মোক্ষ লাভ করিতে পারিবে] ॥১০

> षरिश्वनिशामारकारिन कर्वूः मन्त्यागमाञ्जितः। मर्क्ककप्रकन्जागः ठवः कूक यञाज्ञवान्॥ ১১

আন্ত্র । অথ চেৎ, এতদ্ অপি কর্ত্ব্ অশক্তেব্ধনি, তদা মদ্বোগমাশ্রিতঃ বভাস্থবান্ সন্ সর্কবর্ণাফলত্যাগং কুরু ॥১১

অকুষাদ। বদি ইহাও করিতে সর্থ না হও, তবে ইন্সিন-সংবদ সহকারে
' আমার বোগ আশ্রম করিয়া সকল কর্মের ফল ত্যাগ করু॥ ১১

ভाষা। वारेपछिष्ठिः। वर भूनरतकाणि गङ्कः मदक्रपणवर्षः छः
हर्षु म् वानाः छोत्। मन्राणमाञ्चिषः मित्र किवनाणानि कर्षाणि मरकः तर नवन जिनाम् व्यक्षानः म मन्राणाः छम् वाञ्चिषः मन् मर्तकर्यक्रमञ्जानः मर्र्वताः कर्मणाः कन्मणाः मर्त्वकर्यक्रमञ्जानः जर्षकर्यक्रमञ्जानः मरक्षिः। मन् हेळावः ॥ >>

আনন্দগিরিটীকা। ভগবংকর্মপরত্বমপ্যশক্যমিতি শক্তে—অথেতি। বহিবিবরাক্টচেতত্বাদিতার্থ:। তর্হি ভগবংপ্রাপ্ত্যপারত্বেন সংবতচিত্তো ভূতা কর্মকলসংস্থাসং কুর্মিত্যাহ—মদেযাগমিতি॥ >>

অকুবাদ। অথৈতদ্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ এই,—যে মংকশ্বপরমন্ত্রের কথা বলিলাম, ইহাও যদি করিতে সমর্থ না হও, তাহা হইলে আমার যোগকে আশ্রের করিরা অর্থাৎ বাহা কিছু কার্য্য করা যার তাহা সকলই আমাতে সমর্পণ করিরা যদি অনুষ্ঠিত হয়, তাহা হইলে সেইপ্রকার অনুষ্ঠানকে আমার যোগ কহা যার। এইরূপ আমার যোগকে আশ্রের করিরা এবং সংযতিতিত হইরা তুমি সর্ক্রকশ্বকল ত্যাগ কর অর্থাৎ সকল প্রকার কর্ম্বের ফল আমাতে সংক্রাস করে।। ১১

শ্রেয়ে হি জ্ঞানমভ্যাসাজ্ জ্ঞানাদ্ধ্যানং বিশিষ্যতে।
ধ্যানাৎ কর্মফলত্যাগন্ত্যাগাচ্ছান্তিরনন্তরম্॥ ১২

আনুযুদ্ধ অভ্যাসাৎ জ্ঞানং শ্রের:—জ্ঞানাৎ ধানং বিশিষ্যতে, ধ্যানাৎ কর্ম্মকলত্যাগঃ (বিশিষ্যতে), [কুডঃ] ত্যাগাৎ অনস্তরং শাস্তিঃ [ভবতি] ॥১২

অমুবাদ। অভ্যাস হইতে জ্ঞান উৎক্লষ্ট, জ্ঞান হইতে ধ্যান উৎক্লষ্ট, ধ্যান হইতে কৰ্মকণ্ডাগ উৎক্লষ্ট, কারণ ভ্যাগের পরই শান্তি লাভ হয়॥ ১২

ভাষ্য। ইদানীং দর্ববর্ণজাগং ভৌভি। শ্রেরাহি প্রশন্তবরং জ্ঞানং কর্মাং ? অবিবেকপূর্বকাদভ্যাসাং তর্মাদপি জ্ঞানাং জ্ঞানপূর্বকং ধ্যানং বিশিবতে জ্ঞানবতো ধ্যানাদপি কর্মফলভ্যাগো বিশিবতে ইত্যমুবজ্যতে। এবং কর্মফলভ্যাগাং পূর্ববিশেবণবতঃ শান্তিরূপশনঃ সহেতৃক্ত সংসারভানন্তরমেব ভাং ন ভূ কালান্তরমপেকতে। অজ্ঞ কর্মণি প্রবৃত্তত পূর্বোগদিটোগার্ম্ভানাশক্তৌ সর্ববর্ণশাং কলভ্যাগঃ শ্রেরঃসাধনমুপদিটং ন প্রথমমেব, অভল্ড শ্রেরো হি জ্ঞানমন্ত্যাসানিভূতিরোত্তরবিশিইছোপদেশেন সর্ববর্মকলভ্যাগঃ ভূরতে। সম্পর্মনাম্র্ভানাশক্তৌ অকুঠেরছোপ শ্রেরা হা ক্রম্বর্ম শ্রুড্রানাশক্তৌ অকুঠেরছেন শ্রুড্রাহা। কেন সাধর্মোণ শ্রুডির্ম ? শ্রেদা

দর্শ্বে প্রমৃচ্যন্তে ইতি দর্শকামপ্রহাণাদমৃতত্বমূক্তং তংগ্রাদিষ্ ন কামান্ত দর্শবি প্রাতি নার্বি কর্মান্ত কর্মানি । তন্ত্যাগে চ বিছ্বো জ্ঞাননিষ্ঠ অনন্তরেব শাবিঃ ইতি দর্শকামত্যাগদামান্যম্ অজ্ঞকর্মাফলত্যাগল্ভান্তীতি তৎসামাল্ভাং দর্শবিশ্বক্ষানত্যাগালভিরিয়ং প্ররোচনার্থা। বথা অগন্ত্যেন ব্রাক্ষণেন সমূদ্রং পীত ইতি ইদানীস্থনা অপি ব্রাহ্মণা ব্রাহ্মণন্তসামাল্ভাং ভূয়ন্তে। এবং কর্মাফলত্যাগাং কর্মবোগল্ভ প্রেয়ংশাধনত্বসভিহিতম্॥ ২২

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোকতাৎপর্যানাহ—ইদানীমিতি। জ্ঞানং শৰ্ষ্কিভ্যানাম্বনিশ্যঃ, অভ্যানো জ্ঞানার্থশ্রণাভ্যানো নিশ্যপূর্বকো ধ্যানা-ভ্যাসো বা। তথ্ বিশিশ্বসাণ্ডে দাকাংকারছেতুত্বং হেতুঃ। ত্যাগ্র বিশিষ্ট্রে হেতুমাহ—এবমিতি। প্রীণাত ভগবানিতি ভশ্মিন কর্মসংস্থাসপূর্বক্ষিতার্থঃ। পুর্ববিশেষণবতো নিয়তচিত্তত পুংসো যথোক্তত্যাগাদিত্যর্থ:। অনস্তরমেবেত্যুক্তং ব্যনজ্ঞি—নত্নিতি। নমু কর্মফলত্যাগন্ত দন্তঃ শান্তিকরত্বে সমাগ্ধীরেব তথেতি শ্রুতিস্থতিপ্রসিদ্ধির্ব্বিরুধ্যেত তত্ত্বাহ—অন্তরুস্তেতি। দীর্ঘেণ কালেনাদরনৈরস্বর্ধ্যা**ত্ত্ব** দ্বিতাৎ ধ্যানাদস্কলাকাৎকার্দারা সংগারত:খোপশান্তেরপাবিধাৎ ধ্যানাৎ ভাগেত বিশিষ্টবোক্তেন্তদীয়ন্ততিরতেষ্টেত্যাং—অত**েচ**তি। ত**র হেতু**মাহ—সম্প**ন্নেতি।** সম্পন্নানি প্রাপ্তানি সাধনাক্তকরোপাসনাদীনি তেষাং মধ্যে পূর্ব্যপুর্বভাষ্ঠানাশজা-বুতরোত্তরত অহুষ্টেরত্বেনোপদেশাৎ ত্যাগে চোপদেশপর্যাবসানাদিতার্থঃ। ত্যাগে বিশিষ্টব্ৰচনন্ত কেন সাধৰ্মোণ তং প্ৰতি শ্বতিশ্বমিতি পৃক্তভি—কেনেডি। উত্তরমাহ—হাদেতি। অমৃতত্বমুক্তম্ অথমতে ্যাহমূতো ভবতীতি শেবাদিতিশেবঃ। কামপ্রহাণভায়ভদ্বাধ্বমধাকামরমান ইত্যাদাবণি দিন্ধবিত্যাহ—ভদিতি। কামত্যাগভামৃতৰহেতৃৰেহণি কথং কৰ্মকলভ্যাগভ ভৱেতৃদ্দিভ্যাশভ্যাহ— কামান্তেতি। কর্ম্বলত্যাগাদেব শান্তিশ্রেৎ জ্ঞাননিঠোপেক্তিত্যাশহ্যাহ— তন্ত্ৰাপৈ চেতি। তথাপি কথমজ্ঞত্ব কৰ্মফলত্যাগম্ভতিরিত্যাশস্থাহ - ইতি-সূৰ্ব্বেতি। বিভাবতন্তাগবদবিষন্ত্যাগস্থাপি ত্যাগদাবিশেবাদ্বিশিষ্টদোকির্কেতি -স্বতিমুণসংহরতি—ইতি তৎসামাম্যাদিতি। কিমর্থা **স্ব**তিরিত্যাশ**র্চ্চ** ত্যাগে ক্ষতিমুৎপাল্প ' প্ৰবৰ্ত্তরিভূমিত্যাহ-প্রান্তনার্থেতি। ত্যাগন্ততিং দৃষ্টান্তেন স্পষ্টরভি—যুথৈতি। ফলত্যাগঃ শ্রেরোহেতুশ্চেৎ কুর্ম্মত্যাগাদিশি ফলত্যাগ্-সিদ্ধেরলং কর্মান্ত্রীনেনেভ্যাশস্থাহ—এবং কর্ম্মেতি। ফলাভিলাবং ত্যক্তা কর্মাহঠানভার্পিতভেখনে শ্রেয়েহেতৃতারা বিবক্ষিতভারাহঠানানর্থক্যমিত্যর্থঃ ॥১২ - অনুস্বাদ। একৰে সর্বকর্মনভাগের ছতি করা বাইভেট্টি—জান শ্লেরঃ

े অর্থাৎ প্রশক্তর ; কাহা হইতে ? অভ্যাস ইইতে। কিরূপ অভ্যাস ? অবিবেক-পূৰ্বক অভ্যান, অৰ্থাৎ অবিবেক পূৰ্বক অভ্যান হইতে জ্ঞান শ্ৰেরঃ। সেই আন হইতেও ধ্যান প্রশস্তবর, এবং জ্ঞানবান্ পুরুবের ধ্যান হইতেও কর্মকলত্যাগ "বিশিষ্ট" অর্থাৎ প্রশশুভর হয়, এই কথাটি পূর্ব্ব হইতেই অমুষক্ত হইতেছে। এই রূপ 'পূর্বকিথিত কর্মাফলত্যাগের অব্যবহিত পরেই শান্তি অর্থাৎ উপশ্ম—অবিস্থার সঙ্গে সংগারের শান্তি হয়; তাৎপর্য্যার্থ [এই যে] এই শান্তি লাভ করিতে আর কালবিলম্বর না। বে ব্যক্তি অজ্ঞ অথচ কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছে, সে বদি পূর্ব্বক্থিত উপার সকলের অফুষ্ঠান করিতে অসমর্থ হর, তাহা হইলে তাহার পক্ষে সর্ববিদ্যালয় প্রেরঃপ্রাণ্ডির সাধন, ইহাই উপদিষ্ট হইরাছে এইমাত্র: ইছাই বে প্রথম বা প্রধান, তাহা বলা হইতেছে না ; এই কারণেই "শ্রেরো ছি জ্ঞানম" ইত্যাদি শ্লোকের দারা পূর্ব্বপূর্ব কারণ হইতে উত্তরোত্তর কারণকে ি সামর্থ্যামুসারে ভিন্ন ভিন্ন অধিকারীর অমুঠের এইজক্ত্র বিভ্রা স্বতি করা হইতেছে। কারণ সর্বাদসম্পন্ন সাধনের অমুষ্ঠান করিতে না পারিলে, এই কর্মক্তাগ করিতে পারিলেও কালে সিদ্ধি লাভ করিতে পারা বার; এই কারণে ইহাও অফুঠের। [জ্ঞানপূর্বক কর্মসন্ত্র্যাদের সহিত] এই অজ্ঞের কর্ম-সন্মানের এমন কি সাদৃত্য আছে, বাহার জন্ত এরপ স্বতি করা হইতেছে !---ভাহার উত্তর এই বে] "বদা সর্ব্বে প্রমূচ্যন্তে" এই প্লোকে সকল প্রকার কামনার বিনাশে মোক্ষলাভ হয়, ভাহা পূর্ব্বে বলা হইয়াছে, এবং ভাহা প্রাসিদ্ধ আছে, কাম (অৰ্থাৎ উপভোগ্য শকাদি বিষয়) সকলই শ্ৰৌত ও স্বাৰ্ত্তকৰ্মনিবছের ফল: সেই কাম ত্যাগ করিয়া বিয়ান বদি কেবল জ্ঞানমাত্রনিষ্ঠ হরেন, তাহা क्टेरन छांहात खरिनरवर्दे भावि नाफ हत । यह छार नर्सकर्मकनमःकार कानीव পকে শান্তিলাভের কারণ। অজ ব্যক্তিরও কর্মসন্ত্রাস জ্ঞানপূর্বক না হইলেও ভাল কর্মফলসর্যাস বটে। একই শব্দের বারা উভরেরই প্রতিপাদন হইতে পারে। এই সমান শব্দ দারা প্রতিপান্তরূপ সামার ধর্ম উভরেতেই আছে বলিরা, বিছানের কর্মসন্ন্যাসের ন্যার অজ্ঞেরও কর্মসন্ন্যাসের স্বতি করা গিরাছে। এই স্বতির ফল কি ?—অজ ব্যক্তিকে কর্মফল ত্যাগ করিতে প্ররোচনা করা [ছাড়া আর কিছুই নছে]; বেমন অগত্তা একজন বান্ধণ; তিনি সমুজ পান করিতে পারিরাছিলেন বলিয়া, এখনকার বাহ্মণকেও স্বতি করা বার: কারণ সেই জনন্ত্য এবং এখনকার ব্রাহ্মণ উভরেই ব্রাহ্মণস্বরূপ একটি সমান ধর্ম আছে। এই বাকারে কর্মকণত্যাগপুর্বক কর্মবোগামুছানের শ্রেরংসাধনতা কথিছ হইরাছে ॥১২

অদ্বেক্টা সর্ব্বস্থূতানাং মৈত্রঃ করণ এব চ।
নির্মমো নিরহঙ্কারঃ সমত্রঃখহুখঃ ক্ষমী ॥ ১৩
সপ্তক্তঃ সততং যোগী যতাত্মা দৃঢ়নিশ্চয়ঃ।
নয্যপিতিমনোবুদ্ধির্যো মদ্ভক্তঃ স মে প্রিয়ঃ ॥ ১৪

অনুয়। যো নণ্ডক: সর্বভ্তানাম্ অবেষ্ঠা, নৈত্র:, কর্মণ: এব, [ভত্তাপি] নির্দান:, নিরহকার:, সমহ:ধহ্রথ:, ক্মী, সততং সম্ভষ্টঃ, যোগী, যতাত্মা, দৃঢ়নিক্ষয়, মিয় অপিতিমনোবৃদ্ধি: চ স মে প্রিয়: ॥ ১৩—১৪

অনুবাদ। আমার বে ভক্ত কোন প্রাণীর বিদ্বেষ্টা করেন, বাহার মৈত্রী সকল প্রাণীতে বিজ্ঞান, বিনি সকলের প্রতি করুণাপর, বাহার মমতা-বৃদ্ধি নাই, বাহার অহংভাব লুপ্ত হইয়াছে, বাহার কাছে স্থাও হংখ সমান, বিনি ক্ষালীল, বিনি সর্বাদা সম্ভ্রষ্ট ও বোগনিরত, বাহার চিত্ত সংবত, বাহার অধ্যবসার দৃঢ় আর বাহার মন ও বৃদ্ধি আমাতেই অর্পিত, তিনিই আমার প্রেয়॥ ১৩—18

অত্র চ আত্মেশ্বরভেদমাশ্রিতা বিশ্বরূপে ঈশ্বরে চেতঃসমাধান-লকণ: যোগ উক্ত: ঈশ্বরার্থং কর্মামুষ্ঠানাদি চ। 'অবৈতদপ্যশক্তোহদি' ইত্যক্তান-কাৰ্য্যস্তনাং ন অভেদদৰ্শিন: অকরোপাসকন্ত কর্মযোগ উপপদ্ধতে ইভি মুর্শ্বতি. তথা কর্মযোগিন: অক্ররোপাসনামূপপতিং দর্শরতি ভগবান 'তে প্রাপ্নরুৱ মামেব' ইতি। অক্ষরোপাদকানাং কৈবল্যপ্রাপ্তো স্বাতভ্রাম উক্তা ইডরেবাং পারতম্যমীশ্বরাধীনতাং দশিতবান 'তেবামহং সমুদ্ধর্তা' ইতি। যদি হি ঈশ্বর-ভাত্মভাতাত্তে মতা অভেদদৰ্শিশ্বাৎ অক্ষররূপা এব তে ইতি সমুদ্ধরণকর্ত্মবচনং ভান প্রতি অপেশনং স্থাৎ। যন্মাচ্চ অর্জ্জনস্থাত্য হুমেব হিতৈষী ভগবান তস্য সম্যাগ-দর্শনানবিতং কর্মবোগং ভেদদৃষ্টিমন্তমেব উপদিশতি। ন চাম্মানমীশারং প্রমাণতো বৃদ্ধ কস্যাচিদ্ গুণভাবং জিগমিষতি কশ্চিদ্ বিরোধাৎ। **তন্ত্রাদকরোপাসকানাং** সম্যুগ্ৰশননিষ্ঠানাং সংস্থাসিনাং ত্যক্তসবৈষ্ণানাম 'অৰেষ্টা সৰ্বভূভানাং' ইভাদি ধর্মপুরাং সাক্ষাৎ অমৃতত্বকারণং বক্ষামীতি প্রবর্ততে। অবের সর্বভূতানাং— ন বেষ্টা আত্মনো হঃখহেতুমণি ন কিঞিৎ বেষ্টি—সর্বাণি ভূতানি আত্মতেন হি পশ্রতি। মৈত্র: মিত্রভাবো মৈত্রী মিত্রভয়া বর্ত্ত ইতি মৈত্র:। 🕶 🕶 এব 🕫 করুণা কুণা ছঃথিতেমু দরা তথান্ করুণঃ সর্কৃতাভরপ্রদঃ সর্বাসী ইভার্থঃ। নিশ্বম: নমপ্রত্যন্ত্রবর্জিত:। নিরহকার: নির্গতাহং প্রত্যর:। সমহংগর্পে সমে

ত্বৰহাণে বেষরাগরোরপ্রবর্তকে যদ্য দ সমহঃধন্তথঃ। ক্ষমী ক্ষমাবান্ আক্র্ষ্টো-ইভিহতো বা অবিক্রিয় এবাতে।

সঙ্ক ইতি। সন্ধাঃ সততং নিত্যং দেহস্থিতিকারণস্থ লাভে অলাভে চ উৎপন্নালংপ্রত্যরঃ তথা গুণবল্লাভে বিপর্যারে চ সন্তঃ: সততং যোগী সমাহিত-চিকো বতাত্মা সংবতস্বভাব: দৃঢ়নিশ্চয়ঃ দৃঢ়: স্থিরো নিশ্চয়ঃ অধ্যবসায়ঃ যস্থ আত্মতত্ত্ববিষরে স দৃঢ়নিশ্চয়ো মযার্পিতমনোবৃদ্ধিঃ সংকল্পাত্মকং মনঃ অধ্যবসায়-লক্ষণা বৃদ্ধিঃ তে মযোবার্পিতে স্থাপিতে যস্থ সংস্থাসিনঃ স মযার্পিতমনোবৃদ্ধিঃ য ঈদৃশো মদ্ভকঃ স মে প্রিয়ঃ। "প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যর্থমহং স চ মম প্রিয়ঃ" ইতি সপ্তমে অধ্যারে স্চিতং তদিহ প্রপঞ্চাতে ॥ ১৩-১৪

আনন্দগিরিটীকা। সম্প্রতাধেষ্টেত্যান্তবতারমিতৃং বৃত্তং কীর্তন অত্র চেতি। তয়েতিদাত্যস্তিকোহভেদোন তর্হি ঈশ্বরে মনঃসমাধানরপো বোগোহতাস্তাভেদে ধ্যাতৃধ্যেয়ত্বাভাবাৎ ন চাত্যস্তাভেদে কর্মাফুষ্ঠানং তৎফল-ত্যাগোবা পরম্পরৎ তদ্বোগাদিত্যর্থ:। ভগবছক্তিসামর্থ্যাদপি কর্মবোগাদিনা ভেদদৃষ্টিমতো ভবতীত্যাহ—অথেতি। অক্রোপাসকভ কর্মবোগাযোগবৎ কর্মবোগিনোহকরোপাসনামুপপত্তিরপি দর্শিতেত্যাহ—ত্রথতি। অক্ষরোপা-সকাঃ সমাগ্ধীনিষ্ঠা যথাজ্ঞানং ভগবস্তমেবাপু বস্তি ন তথা কর্মিণঃ সাক্ষান্তদাপ্তা-ৰুচিতান্তথা চ কর্মিণো নাক্ষরোপাসনসিদ্ধিরিত্যর্থ:। ইতশ্চাক্ষরোপাসনং কর্মান্থর্চানং ন চৈকত্র যুক্তমিত্যাহ—অক্ষরেতি ৷ নমু অক্ষরোপাসকবদন্তেষা-মপি ঈশরাব্যতাবিশেষাৎ কুতত্তদধীনত্বং তত্তাহ—যদীতি। কর্দ্মবোগভাক্ষরোপা-জেক * যুগপদেকতাবোগে হেম্বন্তরমাহ—যুদ্দান্তিতি। কুরু কর্ম্মেবেত্যাদা-বিভি শেষঃ। কিঞ্চ অক্ষরোপাসকো বাক্যাদীখরমাত্মানং বেন্তি নাসৌ ক্রিয়ায়াং **ঋণদ্বেন কর্তৃত্বসমূভ**বতি গুণবেশবুত্বয়োরেকতা ব্যাঘাতাদতোহপি নাক্ষরোপাসনং কর্মানুষ্ঠানকৈকত্ত যুক্তমিত্যাহ—ন চেতি। অক্রোপান্তিকর্মবোগমোরেকত্ত † পর্যায়াবোগে ফলিতমাহ—তত্মাদিতি। অজ্ঞানাং কর্মিণাং বক্ষ্যমাণধর্মজাতত সাকল্যেনাবোগাদকরনিষ্ঠানামেবেদমূচ্যতে অবিরুদ্ধাংশশু তু সর্বার্থদ্মিষ্টমেবে-ত্যর্থ:। নর্কেষাং ভূতানাং মধ্যে যো হঃথহেতুঃ তং বিধানপি ধেষ্ট্রোবেত্যাশঙ্ক্যাহ— ু আপুন ইতি। তত্ত্ব হেতু: সর্বাণীতি। সর্বভূতানামিত্যুভয়তঃ সম্ধ্যতে

অত্ত বুলপচ্ছকঃ পর্যারস্তাপ্যপলককঃ।

⁺ व्यवज्ञ भर्याम्भरमां योगभगञ्जाभागमकः।

মমপ্রত্যয়বজিতো দেহেংপীতি শেষঃ, বৃত্তস্বাধ্যায়ক্কতাহন্বার নিজ্ঞান্তত্বমাহ— নির্গতেতি॥

সকরোপাদকস্ত জ্ঞানতো বিশেষণাস্তরাণ্যাহ—সৃদ্ধেই ইতি। সভতমিতি দর্পতি দর্পতি, কার্য্যকারণদংঘাতঃ স্বভাবশবার্থঃ, স্থিরত্বং কৃতর্কাদিনানভিত্রবনীয়হম্। মন্তক্ষো মন্তর্জনপরো জ্ঞানবানিতি বাবং। জ্ঞানবতো ভগবংপ্রিয়ত্বে প্রমাণমাহ— প্রিয়ো হীতি। কিমর্থং তহি পুনক্ষচাতে তত্তাহ—তদিকি ॥১৪

অনুবাদ ৷ এই ছলে জাব ও ঈখরের [ব্যবহারিক] ভেদ অস্পাকার করিয়া বিশারপ ঈশবে অন্ত:করণকে স্মাহিত করিবার উপদেশ দেওয়া হইয়াছে: দেই বিশ্বরূপে অন্তঃকরণের সমাধানই "কর্মুযোগ"। এই কর্মুযোগ এবং জ্বুয়ার্থ কর্মামুষ্ঠান প্রভৃতিও [দেই ভেদদর্শী সাধকের কর্ত্তবা বলিয়া] উক্ত হইয়াছে "অথৈতদপ্যশক্তোহদি" (যদি ইহাও করিতে না পার) এই স্কল শ্লোকের দারা দেখানে যে অজ্ঞানের কার্য্য রহিয়াছে তাহাও দেখান হইয়াছে। অভেদদর্শী যে অক্রোপাদক, তাহার পক্ষে এই কর্মবোগ যে কিছুতেই উ**পপন্ন নহে, ইহাও** তিনি দেখাইয়াছেন। সেইরূপ িভদদর্শী বি কর্মধোগী তাহার সেই অক্সরো-পাসনাও অনুপপন্ন, তাহাও ভগবান্ দেখাইতেছেন "তে প্রাপ্নুবস্তি মামেব" িতাহারা আমাকেই প্রাপ্ত হয়] ইত্যাদি স্লোকের বারা অক্রোপাসকগণের নিৰ্বাণশাভে যে স্বতম্বতা আছে, তাহাই বলা হইয়াছে এবং এপ্ৰকার বলিয়া "তেষা-নহং সমুদ্ধর্তা" [আমি তাহাদের উদ্ধার করিব] ইত্যাদি শ্লোকের ছারা ভেদদর্শী বিশ্বরূপের উপাসকগণের ঈশ্বরাধীনম্বরূপ পরতন্ত্রত্ব দেথাইয়াছেন। **যদি তাঁহারা** ঈশ্বরেরই আত্মভূত অর্থাৎ ঈশ্বরের সহিত তাঁহাদের কোন রূপ ভেদ নাই [এই ৰান্তৰ জ্ঞান তাঁহাদের পাকে ৷ তাহা হইলে তাঁহারা ঈশবস্বরণ: মুভরাং তাঁহাদের ঈশ্বর উদ্ধার করিবেন, এই প্রকার উদ্ধার কর্ম্মের কথন তাঁহাদের পকে একান্ত অসঙ্গত হইয়া পড়ে। ভগবান যে কারণে অর্জ্জনের অত্যন্ত হিতৈষী এই জন্মই তিনি [অর্জ্জনের অধিকার যোগাতামুদারে] তাঁহাকে ভেদজাননিয়ত কর্মধোগেরই উপদেশ দিতেছেন, এই কর্মধোগের সহিত সম্যগ্রদর্শনের সম্বন্ধ হইতে পারে ²না। কোন ব্যক্তি প্রমাণের বলে আপনাকে ঈশর [হইতে পরমার্থতঃ] বলিয়া যদি বুঝিতে পারে, তাহা হইলে সে কথনও আর কাহারও निक्छ अधीनভाव श्रीकात कतिए देखा करत ना ; रक्नना क्रेयत्राचा ७ अधीनडा এই ছুইটি বস্তু পরস্পর-বিরুদ্ধ। এই কারণে একণে বাহারা সেই অকরোপাসক, যাহারা সর্বকামনাকে পরিত্যাগ করিয়াছেন, যাহারা সমাগ্রদর্শননিষ্ঠ এবং বাহারা প্রকৃত সন্ত্রাসী, তাঁহাদের সাক্ষাৎ অমৃতপদলাভের উপার্যরূপ যে সকল সদ্প্রণরাশির উদয় হয়, তাহাই বলিবার জয় একণে ডগবান্ আরম্ভ করিতেছেন।—সকল প্রাণীর অছেটা—ছেম করেন না—যাহার ছারা আত্মার ছঃথ হয় এমন বস্তুকেও তিনি বেষ করেন না—কারণ সকল ভূতকেই তিনি আত্মভাবে দেখেন। "মৈত্র" মিত্রভাবকে মৈত্রী কহে, সেই মৈত্রী বাহার আছে, তিনিই মৈত্র, অর্থাৎ সকলের সহিত তিনি মিত্রভাবে ব্যবহার করিয়া থাকেন। "ক রুণ" করুণা অর্থাৎ রুপা—ছঃথিতগণের প্রতি দয়া, সেই দয়া বাহার আছে, তিনিই করুণ অর্থাৎ কেই সন্ত্রাসী সকল ভূতকে অভয় দিয়াছেন; "নির্মাম" মমতাবোধবর্জ্জিত; "নিরহুজার:" অহৎ বোধ বাহার লুপ্ত হইয়াছে, তিনি; "সমহঃথস্তুপ" বাহার নিকট স্থাও ছঃখ সমান অর্থাৎ স্থে বাহার হৃদয়ে অনুরাগ জল্ম না এবং ছঃখে বাহার জ্বন্ধে ত্রংখ বাহার করে ত্রংগ ক্রমান করে, কিছুতেই তাহার বিকার হইবে না। বিনি এই প্রকার অবিক্রিয়, তিনিই ক্রমী।

সম্ভইই ইত্যাদি স্নোকের অর্থ—সর্বাদ সম্ভই—দেহরক্ষার কারণ অন্নাদির লাভ বা অলাভে বাঁহার উপেক্ষাবৃদ্ধি সর্বাদমরেই আছে, তাঁহাকেই "সতত সম্ভই" কংহ, এইরপ গুণবান্ পদার্থের লাভ বা তাহার বিপর্যায়ে বাঁহার উপেক্ষাবৃদ্ধি আছে, তিনিও 'নিত্য সম্ভই'। "যোগী" সমাহিতচেতা; "যতাআ্বা" সংযতস্বভাব; "দৃঢ়-দিশ্দর" বাঁহার আত্মতরবিবয়ে স্থির অধ্যবসায় হইয়াছে, তিনি 'দৃঢ়নিশ্দর'; "মব্যপিতমনোবৃদ্ধি" সংকরময় অন্তঃকরণকে 'মনঃ' কহে, অধ্যবসায়যুক্ত অন্তঃকরণকে 'বৃদ্ধি' কহে, সেই মন ও বৃদ্ধিকে আমাতে যে ব্যক্তি স্থাপিত করিয়াছেন, তিনিই "মব্যপিতমনোবৃদ্ধি"। যে ভক্ত এই প্রকার গুণগণসম্পন্ন, তিনিই আমার প্রিয়। "প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যর্থম্ অহং স চ মম প্রিয়ঃ" (আমি জ্ঞানার প্রিয়। "প্রিয়ের ক্লিনীও আমার প্রিয়) এই যে কথা সপ্তমাধ্যায়ে উক্ত হইয়াছে, তাহাই এই স্থানে প্রপঞ্চিত হইয়াছে। ১৩-১৪

যশ্মামোদ্বিজতে লোকো লোকামোদ্বিজতে, চ যঃ। হর্ষামর্বভয়োদ্বেগৈমুক্তি। যঃ স চ মে প্রিয়ঃ।।১৫

অন্যায়। লোক: বশাৎ ন উদ্বিজ্ঞতে, যা চ লোকাৎ ন উদ্বিজ্ঞতে, যাক হবামর্ভরোশ্বেগৈম্ভি: স চ মে প্রিয়া ॥ ১৫

আকুবাদ। বাঁহা হটতে লোকে উদ্বিগ না হয় এবং বিনি অস্ত কোন

ব্যক্তি হইতেও উদিশ্ন হন না, যিনি হর্ব ক্রোগ ভন্ন এবং উদ্বেগ হইতে **সুক্ত**, তিনিও স্থামার প্রিয় ॥১৫

ভাষ্য। যশাদিতি—যশাৎ সন্ন্যাসিনঃ নোদ্বিজতে নোদ্বেগং গছতে ন সস্তুপ্যতে ন সংক্ষৃত্যতে লোকঃ। তথা লোকাৎ ন উদ্বিজতে চ ষঃ। হর্ষামর্ব-ভরোদ্বেবৈঃ হর্ষণ্ট অমর্বণ্ট ভরঞ্চ উদ্বেগণ্ট তৈহর্ষামর্বভরোদ্বেগৈঃ মুক্তঃ। হর্বঃ প্রিয়লাভে অন্তঃকরণস্ত উৎকর্বঃ রোমাঞ্চনাশ্রুপাতাদিলিকঃ অমর্বঃ অস্থিকুতা ভরং আসঃ উদ্বেগঃ উদ্বিশ্বতা। তৈমুক্তঃ যঃ স চ মে প্রিরঃ॥১৫

আনন্দ্রগিরিটীকা। উবেগাদিরাহিত্যমপি জ্ঞানবতো বিশেষণমিত্যাহ—
যস্মাদিতি। ন কেবলমুবেগংপ্রত্যপাদানত্বযেব সংস্থাসিনোহমূপপরং কিন্তু
ডৎকর্ত্ত্বমপীত্যাহ—তথেতি। অসহিষ্ণুতা পরকীয়প্রকর্ষস্থেতি শেষঃ। ত্রাসত্রম্বাদিদর্শনাধীনঃ; উদ্বিশ্বমচেতনাচ্চেতনাধীনস্থ লোকাদিতি যাবং॥১৫

অনুবাদ। বে সন্ত্যাসী হইতে লোক উদ্বেগ পাগ না [মর্থাৎ বাহার সহত বাবহারে] জীব সন্তাপ মহন্তব করেনা—সংক্ষ হন না এবং বে সন্ত্যাসীও কোন ব্যক্তির সহিত ব্যবহারে নিজেও উদ্বেগ পান না। বিনি হবামর্যভারোদ্বেগ হইতে মুক্ত; [হর্ষ অমর্য ভর ও উদ্বেগ এই চারিটি পদের হল্দ সমাসে হ্যামর্যভারোদ্বেগ এই পদটি নিশার হইয়াছে]। "হর্ষ—" ইটবন্তর লাভে অন্ত:করণের প্রসার, যাহা রোমাঞ্চ ও অশ্রুপাতাদি দ্বারা অভিব্যক্ত হর, তাহাকেই 'হর্ষ' কহে, "অমর্য—" সহিতে না পারা অর্থাৎ ক্রোধ; "ভর" ত্রাস, "উদ্বেগ" উদ্বিগতা এই সকল মানস ধর্ম হইতে যিনি মুক্ত, তিনিও আমার প্রির ॥১৫

অনপেক্ষঃ শুচিদ ক উদাসীনো গতব্যথঃ। সর্ব্বারম্ভপরিত্যাগী যো মন্তক্ষঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১৬

অনুষ্য়। যো মদ্ভক্ত: অনপেক: শুচি: দক্ষ: উদাসীন: গতব্যথ: সর্বারম্ভ-পরিত্যাগী চ স মে প্রির: ॥১৬

আমুর্বীদ। নিরপেক, পবিত্র, কুশল, উদাসীন, বিগত-ভন্ন ও সর্বারম্ভ-পরিত্যাগী—এতাদৃশ যে আমার ভক্ত, তিনিও আমার প্রিয় ॥১৬

ভাষ্য। জনপেক ইতি। দেহেক্সিরবিষয়সম্বাদিষণি অপেকাবিষরের অনপেকঃ নিস্পৃহঃ শুচির্বাফ্টেনাভ্যস্তরেণ চ শৌচেন সম্পন্ন: দকঃ প্রত্যুৎপরের্ শকার্যের্—স্ভোম্থাবৎ প্রতিপক্ত সমর্থঃ। উদাসীনঃ ন কন্তচিন্মিজাদেঃ পক্ত ভব্ধতে বং স উদাসীন: যতিং। গতব্যথা গতভরং। সর্বারম্ভপরিতাপী, আরভ্যন্তে ইত্যারস্তাঃ ইহামুক্তফলভোগার্থানি কামহেত্নি কর্মাণি সর্বারস্তাঃ তান্ পরিতাকুং শীলমস্ত ইতি সর্বারম্ভপরিত্যাগী যো মন্তক্তঃ স মে প্রিরঃ ॥১৬

আনন্দণিরিটীকা। নিরপেক্ষাদিকমণি জ্ঞানিনো বিশেষণমিত্যাহ—
অন্পেক্ষ ইতি। আদিপদ্মপেক্ষণীয়সর্বসংগ্রহার্থং, প্রতিপত্তব্যের্ প্রতিপত্তিং
কর্ত্তব্যের্ কর্তৃংক্ষত্যর্থ:। পরৈস্থাড়িত্স্থাণি গতা ব্যথা ভরমক্তেতি ব্যুৎপত্তিমাশ্রিত্যাহ—গতেতি। ন চ ক্ষমীত্যনেন পৌনক্ষক্ত্যং প্রত্যুৎপদ্মারামণি
ব্যথায়ামপকর্ত্বনপকর্ত্তং ক্ষমিত্মত্যভূপগ্যাৎ॥১৬

অনুবাদ। অনপেক ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "অনপেক্ষ", দেহ ইন্দ্রির ও বিষয়ে সংবদ্ধ যে সকল বস্তুর উপর লোকে নির্ভ্র করিয়া থাকে, সেই সকল বস্তুতেই থাহার নির্ভর বোধ নাই অর্থাৎ যিনি নিঃস্পৃহ, তাঁহাকেই অনপেক্ষ বলে। "শুটি" থাহার বাহ্ ও আদ্যন্তর এই দ্বিবিধ শৌচ আছে, তিনিই শুচি; "দক্ষ" যে কোন কার্যাই উপস্থিত হউক্ না কেন, তাহা তৎক্ষণাৎ ঠিক্ করিয়া বুঝিরা লইতে যিনি সমর্থ, তিনি দক্ষ; "উদাসীন" কোন মিত্র প্রভৃতির পক্ষ যিনি অবলম্বন না করেন, তিনি উদাসীন; "গভব্যথ" নির্ভর; "সর্কারম্ভপরিতার্গী" বাহা কিছু আরন্ধ (অর্থাৎ অমুষ্ঠিত) হয়, তাহার নাম 'আরম্ভ' অর্থাৎ এইক ও পারত্রিক ফলভোগের উপার স্বরূপ যত কিছু কর্ত্ব্য কার্য্য, সেই সকলই এই স্থলে সর্কারম্ভ শব্দের দারা প্রতিপাদিত হইতেছে। সেই সর্কারম্ভকে পরিত্যাগ করাই থাহার স্বভাব, তিনি সর্কারম্ভপরিত্যাগী; এই প্রকার গুণসম্পন্ন যে মন্তক্ষ, তিনি আমার প্রির॥১৬

যো ন হুষ্যতি ন ছেষ্টি ন শোচতি ন কাজ্ফতি। শুভাশুভপরিত্যাগী ভক্তিমান্ যঃ স মে প্রিয়ঃ ॥১৭

অন্বয়। যোন স্ব্যতি, ন দেষ্টি, ন শোচতি, ন কাজকতি [চ], যঃ [চ] ভভাভভপরিত্যাগী ভক্তিমান্স মে প্রিয়ঃ ॥১৭

অনুবাদ। থাঁহার হর্ষ বা বেষ নাই, থাঁহার শোক বা আকাজ্ঞা নাই, বিনি শুভ ও অশুভ এই উভরকেই পরিত্যাগ করিরাছেন, বিনি আমাতে ভক্তি-যুক্ত, তিনিই আমার প্রির ॥১৭

ভাষ্য। কিঞ্চ যোন হুব্যতি ইইপ্রাপ্তৌ, ন দ্বেষ্ট অনিইপ্রাপ্তৌ, ন শোচ্তি

প্রিরবিরোগে, ন চাপ্রাপ্তং কাজ্জতি, গুডাগুডে কর্মনী পরিত্যজন্থ শীলমণ্ডেডি গুডাগুডপরিত্যাগী, ডক্তিমান্ যং স মে প্রিয়ঃ ॥১৭

আনন্দ গিরিটীকা। বেবংর্ণাদিরাহিত্যমণি জ্ঞানিনো লক্ষণমিত্যাহ—
কিঞ্চেতি। সর্বারম্ভণরিত্যাগীত্যনেন বিহিতকাম্যত্যাগস্থোকতাদ্বিহিতাদক্তম
মাশকোচীতি বিশিনষ্টি—শুভাশুভেতি ॥১৭

অকুবাদ ৷ আরও [বলি শুন] যিনি ইউলাভে ছাই হন না এবং আনিই লাভে বিদ্বেষ্কু হন না—বাঁহার কোন অপ্রাপ্ত বন্ধতে আকাজ্জা নাই এবং প্রির্বিরোগে বাঁহার শোক নাই, মঙ্গল ও অমঙ্গল এই দ্বিধি কর্ম্বই পরিত্যাগ করা বাঁহার স্থভাব এবং যিনি ভক্তিমান্, তিনিই আমার প্রিয় ॥১৭

সমঃ শত্রে চ মিত্রে চ তথা মানাপমানয়োঃ।
শীতোক্তপ্রথহুংথেষু সমঃ সঙ্গবিবর্জ্জিতঃ॥১৮
তুল্যনিন্দাস্ততির্মোনী সস্তকৌ যেন কেনচিৎ।
অনিকেতঃ স্থিরমতির্জজিমান্মে প্রিয়োনরঃ॥১৯

আনুর্। শত্রে চ মিজে চ সমঃ, তথা মানাপমানয়োঃ [সমঃ], শীতোঞ্জ স্থতঃথেযু সমঃ, সঙ্গবিবজ্জিতঃ, তুলানিকাছতিঃ, মৌনী, বেন কেনচিৎ সস্তঃ, অনিকে ৪ঃ, স্থিরমতিঃ, ভক্তিমানু [চ]নরঃ মে প্রিয়ঃ [ভবতি] ॥১৮-১১

অনুবাদ। বিনি শক্ত ও মিত্তে সম, বিনি মান ও অপমানে সম, বিনি শীত ও উক্তে এবং ক্ষথ ও হঃথে সম, বিনি আসক্তিশৃন্ত, বাঁহার নিকটে স্ততি ও নিন্দা তুল্য, বিনি সকল প্রকারেই সম্ভোষপরারণ, বাঁহার কোন নির্দিষ্ট বাসগৃহ নাই, বাহার বৃদ্ধি স্থির এবং বিনি ভক্তিমান, সেই মন্থ্য আমার প্রির হইরা গাকেন॥ ১৮-১৯

ভাষ্য। সম ইতি। সম: শত্রো চ মিত্রে চ তথা মানাপমানরোঃ পূজাপরি-ভবরোঃ শীতোকস্থতঃথেষু সমঃ সবর্ব ত চ সঙ্গবন্ধিতঃ। কিঞ্চ — ভূগ।নিলাস্ততিঃ নিলা চ স্ততিশ্চ নিলাস্ততী, তে ভূগ্যে যস্ত স ভূগ্যনিলাস্ততিঃ, মৌনী মৌনবান, সম্ভটো যেন কেনচিৎ শরীরস্থিতিমাত্রেণ। তথা চোক্তম্—

"বেন কেনচিদাচ্ছন্নো বেন কেনচিদানিত:। যত্ৰ কচন শান্নী ভাৎ তং দেবা ব্ৰাহ্মণং বিহুঃ"॥ ইতি

কিঞ্চ অনিকেতঃ নিকেতঃ আশ্রয়ো নিবাসো নিয়তোন বিস্ততে যস্ত সঃ

ষ্দ্রনিকেতঃ ''অনাগারঃ'' ইত্যাদি স্বৃত্যস্তরাং। স্থিরমতিঃ স্থিরা প্রনার্থ-বস্তবিষয়া মতির্যক্ত স স্থিরমতিঃ ভক্তিমান্, মে প্রিয়ো নরঃ ॥১৮-১৯

আনন্দগিরিটীকা। বৈষম্যবুদ্ধাভাবাদিপ জ্ঞানিনো বিশেষণমিত্যাহ— সম ইতি। অন্তেইত্যাদিনা দ্বোদিবিশেষভাব উক্ত: সম্প্রতি সর্ক্টেরবাবিকৃত-চিত্তমূচ্যতে সর্ক্ত চেতনে স্তাদাবচেতনে চ চল্লনাদাবিত্যর্থ:। বাগ্যত্তাদি-বিশেষণমপি জ্ঞাননিষ্ঠস্তান্তীত্যাহ—কিঞ্চেতি। নিলা দোষসন্ধীর্ত্তনম্, স্তুতি প্রণ-গণনম্ দেহস্থিতিমাত্রফলেনান্নাদিনা জ্ঞানিন: সম্ভূইত্বে স্থৃতিং প্রমাণয়তি— তথাচেতি। নিয়তনিবাসরাহিত্যমপি জ্ঞানবতো বিশেষণমিত্যাহ—কিঞ্চেতি।

"ন কুড়াং নোদকে সঙ্গো ন চৈলে ন ত্রিপুন্ধরে। নাগারে নাগনে নায়ে যস্ত বৈ মোক্ষবিভূ সঃ"॥

ইতি শ্বতিমুক্তেহর্থে প্রমাণয়তি—্নেত্যাদিনা। প্ন: প্নর্জকে প্রথিকানভোগায়ভার্থয়্॥ ১৮১১৯

অনুবাদ। সম ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। শক্র এবং মিত্রে সম, মান এবং অপমানে অর্থাৎ সৎকার ও তিরস্কারে সম, শীত উষ্ণ স্থপ এবং হৃঃথে সম, এবং সর্পত্র সন্ধারি সন্ধার । আরও নিলাও স্ততি এইরপ ঘল্ট সমাস করিয়া নিলাস্ততি এই পদটি ইইয়াছে। সেই নিলাও স্ততি বাঁহার কাছে সমান, "মোনী" মৌনবান্ অর্থাৎ বাঁহার বাগিন্দ্রির সংবত, তিনিই গোনী; অনায়াসলক বাহা কিছু শরীররক্ষার সাধন, তাহাতেই বাঁহার সংযোব আছে, তিনিই "সম্ভই"। শাল্পেও এই কথা বলা ইইয়াছে বথা—'বে ব্যক্তি, বে কোন প্রকার বল্পে দেহের আবরণ করিয়া, থাকেন, বাহা কিছু ভালমল থাক্তরের বাঁহার আহারক্রিয়া নিপার হর, বে কোন ছানে বিনি শয়ন করিয়া থাকেন (এমন বে বিরক্ত) তাঁহাকেই দেবগণ এান্ধাণ বিলয়া বোধ করিয়া থাকেন"। আরও [কিরপ ?] "অনিকেত" বাহার কোন নির্দিষ্ট বাসন্থান নাই, সেই অনিকেত। স্থতিতেও উক্ত ইইয়াছে বে "অনাগার" (আবাসহীন) "হিরমতি" বাহার মতি ন্তির অর্থাৎ সর্পাণ সেই পরমার্থবস্তক্তে অবলম্বন করিয়া থাকে, তিনিই ন্তিরমতি; এই প্রকার ভক্তিমান্ মানব আমার প্রিয়া ১৮—১০

যে তু ধর্ম্ম্যামৃতিমিদং যথোক্তং পর্যুপাসতে। #
শ্রদ্ধানা মৎপরমা ভক্তান্তেহতীব মে প্রিয়াঃ॥ ২০
ইতি দাদশোহধানঃ।

বে তু ধর্মামৃতিমিদম্ ইতি বা পাঠঃ।

আন্ময়। যে তু শ্রদধানা: মৎপরমা ভক্তা: ইদং ধর্দ্মামৃতং বধোকং পর্যাপাদতে তে অতীব মে প্রিয়া: [ভবস্তি]॥২০

অনুবৃদি। মদেকপরায়ণ যে সকল শ্রদ্ধান্বিত ভক্তগণ এই ধর্ম্মামৃতরূপ উপদেশকে যথোক্তভাবে গ্রহণ করিয়া পালন করিতে পারেন, **ভাঁহারা আমার** মতাস্ত প্রিয় হইয়া থাকেন॥ ২০

ভাষ্য। অদেষ্টা সর্বভ্তানামিত্যাদিনা অক্ষরোপাসকানাং নির্ত্তসইর্মবণানাং সংস্থাসিনাং পরমার্থজ্ঞাননিষ্ঠানাং ধর্মজ্ঞাতং প্রক্রান্তম্ উপসংছ্রিতে।

— যে তু সংস্থাসিনঃ ধর্ম্মামৃতং ধর্মাদনপেতং ধর্মংচ তদমৃতঞ্চ তদমৃত্যুহেত্যাৎ
ইলং যথোক্তম্ "অদেষ্টা সর্বভ্তানাম্" ইত্যাদিনা পর্য্যাপাসতে অমৃতিষ্ঠিত্তি
শ্রুদ্ধানাঃ সন্তঃ মৎপর্মাঃ যথোক্তঃ অহং অক্ষরাত্মা পর্মঃ নির্তিশ্রা গতির্ব্বাং
তে মৎপর্মাঃ মন্ভক্তাশ্চ উত্তমাং পর্মার্থজ্ঞানলক্ষণাং ভক্তিমাশ্রিতাঃ তে অতীব
মে প্রিয়াঃ। প্রিয়ো হি জ্ঞানিনোহত্যর্থমিতি বং স্টেতং তদ্ ব্যাখ্যার ইহ
উপসংস্কৃতং "ভক্তান্তেহতীব মে প্রিয়াঃ" ইতি। যন্মান্ধ্যামৃত্মিদং যথোক্তমমৃতিষ্ঠিন্
ভগবতো বিক্ষাঃ পর্মেশ্বরশ্ব অতীব মে প্রিয়ো ভবতি তত্মাদিনং ধর্ম্মামৃতং
মৃমুক্ষুণা যন্ত্রতাহমুঠেরং বিক্ষোঃ প্রিয়ং পরং ধাম জিগমিষুণা ইতি বাক্যার্থঃ ॥ ২০

আনন্দ গিরিটীকা। অংশং ইত্যাদি ধর্মজাতং জ্ঞানবতো লকণমুকং
তহপপাদিত্যন্ত্যোপসংহার শ্লোকমবতার মতি—অ্দ্রে ইত্যাদিনা। চতুর্থপাদত
তাৎপর্যানাহ—প্রিয়োহীতি। যত্তপি যথোকং ধর্মজাতং জ্ঞানবতো লক্ষণং
তথাপি জিল্লাসনাং জ্ঞানোপায়ছেন যত্ত্বাদমুঠেয় নিতি বাক্যার্থমুপসংহরতি—
যুদ্মাদিতি। তদেবং গোপাধিকাভিধ্যানপ্রিপাকারিকপাধিকমহলন্দধানতাছেই
সর্ক্ত্তানামিত্যাদি ধ্রাবিশিপ্তত্ত মৃথ্যতাধিকারিণঃ শ্রবণাত্যাবর্ত্তরত্ত্বদাক্ষাৎকারসম্ভবাৎ তত্তা মৃক্ত্রাপপত্তেত্ত দ্বেত্বাক্যার্থধী বিষয়ত্ব যোগ্যন্ত ৎপদার্থোহ হুসদ্বেদ্ধ
ইতি সিদ্ধম্॥২০

অনুবাদ। "অন্বেটা দর্শভূতানাং" (দকল প্রাণীরই অন্থেটা) ইত্যাদি লোক হইতে আরম্ভ করিয়া অক্ষরোপাদক নিদ্ধান ও পরমার্থজ্ঞাননিষ্ঠ সন্ধ্যাসিগণের যে দক্ল ধর্মা বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন, এইক্ষণে তাহারই উপসংহার করা হইতেছে। ধর্মা হইতে যাহা অপগত নহে, তাহাকে "ধর্ম্মা" কহা যার এবং অমৃত পদ লাভ করিবার যাহা কারণ, তাহাই এথানে "অমৃত" শব্দের দারা উলিখিত হইরাছে। যাহা ধর্ম্মা এবং অমৃত তাহাই "ধর্ম্মামৃত" ! এই "ক্রেটা দর্মজ্জানাং" ইত্যাদি শ্লোকের দারা যে ধর্ম্মামৃতের উপদেশ দেওয়া হইল, তাহা

বে সকল সংস্থাসিগণ উপাসনা করেন অর্থাৎ অফুঠান করেন, [কিরুপ হইয়া উপাসনা করেন ?]—''শ্রুদ্ধান'' অর্থাৎ শ্রদ্ধাবশীভূত এবং ''মৎপরম'' আমি আর্থাৎ সেই পরব্রহ্মরূপ অকরাত্মাই যাঁহাদের পরম নিরতিশয় গতি, তাঁহারাই "মৎপর'', এইপ্রকার এবং যাঁহারা পরমার্থ বস্তুর জ্ঞানরূপ ভক্তিকে আশ্রম করিয়াছেন, সে সকল ভক্তই আমার অতিশয় প্রিয় হইয়া থাকেন। ''প্রিয়োছ জ্ঞানিনোহত্যর্থম্'' (আমি জ্ঞানীর অত্যস্ত প্রিয়) ইত্যাদি শ্লোকের দারা বাহা স্টিত হইয়াছিল, তাহাই এখানে "ভক্তান্তেহতীব মে প্রিয়াঃ" এই শ্লোকে উপসংক্ত হইল। যে কারণে এই যথোক্ত ধর্ম্মামৃতের অফুঠান করিতে করিতে সেই জগবান্ পরমেশ্বর বিষ্কুর অতীব প্রিয় হইতে পারা যায়, সেই কারণে বাহারা সেই বিষ্কুর পরমপদ লাভ করিছে ইচ্ছা করেন, এইরূপ মুমুকুগণ যরপুর্ব্বক এই ধর্ম্মামৃতের অফুঠান করিবেন, ইহাই তাৎপর্যার্থ ॥ ২০

ইতি দাদশোহধ্যার: সমাপ্ত:।

অথ ত্রোদশোহধ্যায়ঃ।

-:•:----

প্রকৃতি-পুরুষ-বিবেক-যোগঃ। জীভগবান্থবাচ—

ইদং শরীরং কৌস্তেয় ক্ষেত্রমিত্যভিধীয়তে। এতদ্যো বেত্তি তং প্রাহুঃ ক্ষেত্রজ্ঞ ইতি তদ্বিদঃ॥ ১

অনুয়। হে কৌন্তের ইদং শরীরং ক্ষেত্রম্ ইতি অভিধীরতে এতদ ধো বেত্তি, তং তদ্বিদঃ ক্ষেত্রজ্ঞ ইতি প্রাহঃ॥১

অনুবাদ। হে কুন্তীনন্দন, এই দৃশ্রমান শরীরকে "কেত্র" এই শক্তে জাতি-হিত করা বায়; এই ক্ষেত্রকে বিনি বুঝিয়া থাকেন, তাঁহাকে ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞবিদ্গণ ক্ষেত্রজ্ঞ বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন॥>

ভাষা! সপ্তমে অধ্যায়ে স্টেভে ছে প্রকৃতী ঈশরক্ত। ত্রিগুণান্দিকা অষ্ট্রধা ভিন্না অপরা সংসারহেতুত্বাৎ, পরা চাক্তা জীবভূতা ক্ষেত্রজ্ঞলকণেশ্বরাত্মিকা চ। বাভ্যাং প্রকৃতিভ্যাম ঈশবো জগহংপত্তিস্থিতিলয়হেভূমং প্রতিপদ্ধতে। তত্ত্ব ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞন ন ণ-প্রকৃতিবয়নিরপণবারেণ তদ্বত ঈশ্বরস্ত তত্ত্বনির্দারণার্ধং কেত্রাধ্যার আরভ্যতে। অতীতানস্তরাধ্যারে চ—"অবেষ্টা সর্বাস্থৃতানাম্" ইত্যাদিনা বাবদধ্যারপরিসমাপ্তিঃ তাবৎ তব্জ্ঞানিনাং সন্ন্যাদিনাং নিষ্ঠা বধা তে বর্ত্তরে ইত্যেতহুক্তং, কেন পুনত্তে তৰ্ম্ঞানেন যুক্তা বণোক্তধর্মাচরণাৎ ভগৰত: প্রিয়া ভবস্তি ইত্যেবমর্থশ্চায়মধ্যায় আরভ্যতে । প্রস্কৃতিশ্চ ত্রিগুণাত্মিকা— সর্ব্বকার্যকেরণবিষয়াকারেণ পরিণতা পুরুষক্ত ভোগাপবর্গার্থকর্ম্বরাতরা रेमः भन्नीत्रः जरमज्द দেহেন্দ্রিয়ান্তারেণ সংহক্ততে সোহয়ং সংঘাতঃ ি শ্রীভগবারুবাচ] ইদমিতি সর্বানামোক্তং বিশিনষ্টি শরীরমিতি। হে কৌক্তের ক্ষতত্ত্বাণাৎ ক্ষাৎ করণাৎ ক্ষেত্রবদ্বা অন্মিন কর্মফলদিরুত্তেঃ ক্ষেত্রমিতি। ইতি শব্দ এবংশব্দপদার্থক: ক্ষেত্রম্ ইত্যেবম্ অভিধীরতে কথ্যতে। এতৎ শরীরং ক্ষেত্রং যো বেজি-বিজ্ঞানাতি আপাদতশমগুৰুং জ্ঞানেন বিষয়ীকরোতি-

স্বান্ডাবিকেন ঔপদেশিকেন বা বেদনেন বিষয়ীকরোতি বিভাগশঃ তং বেদিতারং প্রান্থ: কথয়ন্তি ক্ষেত্রক্ত ইতি। ইতি শব্দ এবংশব্দপদার্থক এব পূর্ববিৎ ক্ষেত্রক্ত ইত্যেবমান্থ: । কে ? তদ্বিদঃ তৌ ক্ষেত্রক্ষেত্রক্তা বে বিদন্তি তে তদ্বিদঃ ॥১

আনন্দ্রিরিটীকা। প্রথমনধ্যময়োঃ ষট্কয়োল্বংতৎপদার্থারকৌ অন্তিমন্ত বট্কো বাক্যার্থনিষ্ঠ: সম্যুগ্ধীপ্রধানোহধুনারভ্যতে। তত্র ক্ষেত্রাধ্যায়মন্তিম্ বট্কাছমবভিতারমিষ্ব্যবহিতং বৃত্তং কীর্ত্তয়তি—সপ্তম ইতি। প্রকৃতিষমশ্র খাওন্ত্রং বারম্বতি—ঈশ্বরুস্তেতি। ভূমিরিত্যাদিনোক্তা সন্তাদিরূপা প্রাকৃতির পরেতাত্ত হেতুমাহ—সংসারেতি। ইতন্ত ্তামিত্যাদিনোক্তাং প্রকৃতিমন্থকামতি —পরা চেতি। পরত্বে হেতৃং হচয়তি—ঈশ্বরাত্মিক্তি। কিমর্থনীশ্বরশু প্রকৃতিষম্মিত্যাশঙ্কা কারণত্বার্থমিত্যাহ—যাভ্যামিতি। বুত্তমনৃত্ব বর্তিয়ামাণা-ধ্যাম্বারম্ভ প্রকারমাহ—তাত্রেতি। ব্যবহিতেন সম্বন্ধমুক্তাহব্যবহিতেন তং বিবক্ষুর-ব্যবহিতমত্বদত্তি— অতীতেতি। নিষ্ঠোক্তেতি সম্বন্ধ:। নিষ্ঠামেব ব্যাচষ্টে— যথেতি। বর্ত্তরে ধর্মজাতমহুতিষ্ঠন্তি তথা পূর্ব্বোক্তেন প্রকারেণ সর্ব্বমুক্তমিতি বোজনা। অব্যবহিত্যেবানুগ তেনোত্তরশু সম্বন্ধং সঙ্গিরতে—কেনেতি। তৎজ্ঞানোক্তেরুক্তার্থন সমুচ্চয়ার্থ-চকার:। জীবানাং স্থুপতঃখাদিভেদভাজাং প্রতিক্ষেত্রং ভিন্নানাং নাক্ষরেণৈক্যমিত্যাশঙ্ক্য সংসারস্ত আত্মধর্ম্মত্বং নিরাক্ষত্য সংখাতনিষ্ঠখং বক্তুং সংখাতোৎপত্তিপ্রকারমাহ—প্রকৃতি কেচিত। ভোগশ্চা-প্রবর্গনাথে তরোরের কর্ত্তব্যত্তরেতি যাবং। নরনন্তরশ্লোকে শরীরনির্দেশাং অক্তোৎপত্তিৰ্কক্তব্যা কিমিতি সংঘাতস্ভোচ্যতে তত্ৰাহ -- সোহয়মিতি। উক্তেহৰ্থে ভগবদ্বচনসবতারমতি—তদ্বেতদিতি। তত্র দ্রষ্ট্রেন সংঘাতদৃশ্রাদক্তমাত্মানং নির্দিশতি—ইদমিতি। উত্তং প্রত্যক্ষদৃশ্রবিশিষ্টং কিঞ্চিদিতিশেষ:। শরীর-স্তাত্মনোহস্তত্বং ক্ষেত্রনামনিরুক্ত্যা ব্রতে—ক্ষুত্তেতি। ক্ষয়ো নাশঃ করণমপক্ষয়:। ষথা ক্ষেত্রে বীক্ষমুপ্তং কলতি তদ্বদিত্যাহ—ক্ষেত্রবদূবেতি। ক্ষেত্রপাদাহপরি-**স্থিতমিতিপদং ক্ষেত্রশন্দ**বিষয়মন্তথা বৈমুর্থ্যাদিত্যাহ — ইতিশব্দ ইতি। ক্ষেত্র-বিভ্যেবমনেন ক্ষেত্রশব্দেনেতার্থঃ। দৃশ্রং দেহমুক্তা ততোহতিরিক্তং প্রস্তারমাহ— এতদিতি। স্বাভাবিকং নমুয়্যোহ্যমিতি জ্ঞানম্ ঔপদেশিকং, দেহো নাম্মা দৃশ্রবাদিত্যা দি বিভাগশঃ স্বতোহতিরিক্তত্বেনেত্যর্থঃ। ক্ষেত্রমিত্যত্রেতিশব্দবদত্তা-পীতিশবশু ক্ষেত্ৰজ্ঞশব্ধবিষয়ত্বমাহ—ইতিশব্দ ইতি। ক্ষেত্ৰজ্ঞ ইভেচ্বং ক্ষেত্ৰজ্ঞ শব্দেন তং প্রাছরিতি সম্বন্ধ:। প্রবক্তুন্ প্রশ্রপ্রক্মাহ—কে ইত্যাদিনা ॥১

আনুবাদ। ত্রিগুণাত্মকা---সংসারের উপাদান; স্থতরাং অপরা এই

একটি আর একটি—জীবরূপা ও ক্ষেত্রজ্ঞরূপে ঈশ্বরাত্মিকা; স্বতরাং পরা, এই হুইটি প্রকৃতিছয়ের সাহাব্যে ঈশ্বর জগতের উৎপত্তি স্থিতি ও প্রশারের কারণ হুইরা থাকেন। এই জর্থাৎ ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ স্বরূপ প্রকৃতিছয়ের তত্ত্ব নির্দ্ধান দেই প্রকৃতিছয়-সম্পন্ন ঈশ্বরের তত্ত্ব নির্দ্ধারণ করিবার জন্ত এই ক্ষেত্রাধ্যায়ের আরম্ভ করা হুইতেছে। দ্বাদশাধ্যায়ে "অছেটা সর্বভূতানাং" (সকল প্রাণীতে বিদ্বেরহিত) ইত্যাদি শ্লোকের দ্বারা ঐ অধ্যায়-শেষ পর্যাস্ত তত্ত্বজ্ঞানী সন্ম্যাসিগণের নিষ্ঠা—অর্থাৎ তাঁহায়া কি প্রকার ব্যবহার করেন, তাহা বলা হুইয়ছে। কিরূপ তত্ত্বজ্ঞানযুক্ত হুইয়া যথোক্ত ধর্ম্মসমূহের আচরণ দ্বারা তাঁহায়া ভগবানের প্রিয় হুইয়া থাকেন, তাহাও বুঝাইবার জন্ত এই অধ্যায়ের আরম্ভ হুইয়াছে। প্রকৃতি ত্রিগুণাত্মিকা—ঐ প্রকৃতি সকল প্রকার কার্য্য, করণও বিষয়রূপে পরিণত হুইয়া থাকে—এবং জীবের ভোগ ও অপর্বর্গ সিদ্ধির জন্ত দেহ ও ইন্দ্রিয়াদির আকারেও সংহত হয়। সেই সংঘাতেই এই শরীয়, এই বিষয়টিই ভগবান্ বলিতেছেন যে—ইদং ইত্যাদি।

"ইদং" এই সর্ধনাম পদের দ্বারা যাহা উক্ত হইয়াছে, তাহা কি ? তাহাই বিশেষ করিয়া বলা হইতেছে যে, উহা "শরীর"। হে কৌন্তেয়, এই শরীরকে ''ক্ষেত্র" বলা যায়। কেন ? কারণ, ইহার দ্বারা ক্ষত হইতে ত্রাণ পাওয়া যায়; এই জয় ইহাকে 'ক্ষেত্র" বলে। অথবা ইহার ক্ষয় হয়, এই জয়ও ইহাকে 'ক্ষেত্র' বলে। কিংবা ক্ষেত্রে যেরপ বীজ বপন করিলে ফল লাভ হয়, সেইরপ এই দেহরুত কর্ম্মেরও [শুভাশুভ] ফল ভোগ হয়; এই কারণেও এই দেহকে 'ক্ষেত্র' বলা যায়। ইতি শব্দের অর্থ 'এবং' অর্থাৎ 'এই প্রকার'—এই শরীরকে ক্ষেত্র এই প্রকারে নির্দেশ করা হইয়া থাকে, ইহাই তাৎপর্য্য। এই শরীররক ক্ষেত্রতে যিনি জানেন অর্থাৎ পাদতল হইতে মন্তক পর্যান্ত এই শরীরকে যিনি নিজ জ্ঞানের বিষয় করিয়া থাকেন, অর্থাৎ স্বাভাবিক অথবা উপদেশ-জনিত অম্বভবের বিষয় করিয়া থাকেন, দেহ হইতে পূথগ্ভাবে সেই দেহবেত্তাকে, ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞবিদ্ পঞ্জিতগণ, 'ক্ষেত্রজ্ঞা' বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন.। এই থানেও মে ইতিশৃক্ষটি আছে, পূর্বের, য়ায় তাহারও অর্থ 'এবং' অর্থাৎ এই প্রকার। ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞা এই ছইটি পদার্থকেই বিভক্তভাবে বাহারা জানেন, তাঁহারাই এহলে 'তদ্বিদঃ' এই শক্ষটি হারা অভিহিত হইতেছেন॥ ১

ক্ষেত্রজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি সর্ববিক্ষতের ভারত। ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞানং যতজ্জানং মতং মম॥ ২ জান্বয়। হে ভারত ! সককে কেতে যু কে জন্ম অপি মাং চ [এব] বিদ্ধি। কেত-কেজজানোর্যৎ জ্ঞানং তৎ [সম্যক্ জ্ঞানম্ইতি] মে মতম্॥ ২

আমুবাদ। হে ভরতবংশোন্তব ! সকল কেত্রেতেই কেব্রম্ভকে আমা ২ইতে অভিন্ন বলিয়া জানিবে। কেব্র ও কেব্রম্ভ এতদ্ভরের বে জ্ঞান, তাহাই সম্যগ্-জ্ঞান, আমার অভিপ্রায় ॥২

ভাষ্য। এবং কেত্রকেত্রজ্ঞাবুক্তৌ—কিমেতাবন্মাত্রজ্ঞানেন জ্ঞাতব্যে ইতি ? নেত্যচাতে কেত্রজং বথোক্তলকণং চাপি মাং প্রমেশ্রম্ অসংসারিণং বিদ্ধি লানীহি। সক্ষর্কেত্রের্ বং কেত্রজ্ঞঃ ব্রন্ধাদিস্তম্পর্যাস্তানেককেত্রোপাধিপ্রবিভক্তঃ তং নিরস্তসক্রেপিধিভেদং সদসদাদিশক্পপ্রত্যরাগোচরং বিদ্ধি ইতি অভিপার:। হে ভারত! বন্ধাৎ কেত্রকেত্রজ্ঞার্যগাভ্যাব্যতিরেকেণ ন জ্ঞানগোচরমন্তদবশিষ্টমন্তি তন্ধাৎ কেত্রকেত্রজ্জারাজ্ঞেরভূতরো র্যৎ জ্ঞানং কেত্রকেত্রজ্ঞার বিদ্ধারণ আনেন বিষ্মীক্রিরেতে তৎ জ্ঞানং সম্যগ্রজ্ঞানম্ ইতি মতম্ অভিপ্রায়ঃ মম স্পারস্ত বিক্ষোঃ।

নহু সর্ক্ কেত্রেয়্ এক এবেশ্বরঃ নাম্মঃ তদ্ব্যতিরিক্রো ভোক্তা বিশ্বতে চেৎ তত ঈশ্বরক্ত সংসারিত্বং প্রাপ্তম্ ঈশ্বরব্যতিরেকেণ বা অক্তক্ত সংসারিণোহভাবাৎ সংসারাভাবপ্রসম্পন্তচোভয়মনিষ্ঠং বন্ধমোকহেতুশাস্ত্রানর্থক্যপ্রসঙ্গাৎ প্রত্যক্ষাদি প্রমাণবিরোধাচ্চ। প্রত্যকেণ তাবৎ স্থ্যহংখতদ্বেত্লগণঃ সংসার উপলভ্যতে।

জগদ্বৈচিত্রোপলকে ধর্মাধর্মনিমিত্তঃ সংসারোহস্থমীয়তে। সর্ব্রেমত দমুপপরমান্মের্যরৈক্ষে। ন, জ্ঞানাজ্ঞানরোরভ্রম্থেনোপপত্তেঃ। "দ্রমেতে বিপরীতে বিবৃচী অবিভা বাচ বিভ্রেতি জ্ঞাতা"। তথা চ তরোবিজ্ঞাবিভাবিষররোঃ ফল-ভেদোহপি বিক্লাে নির্দিষ্টঃ শ্রেমশ্চ প্রেরশ্চেতি। বিভাবিষরঃ শ্রেমঃ প্রেরশ্চাবিজ্ঞাকার্যমিতি। তথা চ ব্যাসঃ—"ছাবিমাবথ পছানো" ইত্যাদি "ইমে৷ ছাবেব পছানো" ইত্যাদি চ॥ ইহ চ দ্বে নির্দ্ে উল্লে। অবিভা চ সহ কার্যোণ বিভ্রমা হাতব্যেতি শ্রুতিভারেভ্যঃ অবগম্যতে। শ্রুতরতাবং "ইহ চেদবেদীদথ সভ্যমন্তি ন চেদিহাবেদীয়হতী বিনষ্টিঃ।" "তমেবং বিদ্বান্ অমৃত্য ইহ ভবতি" "নাভ্যঃ পছা বিভ্রতেহ্রনায়"। 'বিদ্বান্ ন বিভেতি কৃতশ্চন'। অবিভ্রম্বন্ত 'আব তত্ত ভয়ং ভবতি'। 'মবিভারামন্তরে বর্ত্তমানঃ'। 'ব্রদ্ধ বেদ ব্রক্ষৈব ভবতি' 'ক্রেভাহসাবভাহহমন্ত্রীতি ন স বেদ বর্ধা পশুরেবং স দেবানাম্"। 'আক্সিব্রুত্ব বৃহ্ণং স্বর্থ ভবতি'। "বাদা চর্ম্বর্থ ইত্যান্ধাঃ সহব্রশঃ। স্বৃত্রশ্চ—"জ্ঞানেনা-

বৃতং জ্ঞানং তেন মুখন্তি কন্তবঃ" "ইহৈব তৈজিজতঃ সর্গো যেষাং সাম্যে স্থিতঃ মনঃ" "সমং পশুন্ হি সব্ব ত্র" ইত্যাভাঃ। স্থায়তশ্চ।

সর্পান্ কুশাগ্রাণি তথোদপানং জ্ঞাজা মন্থুল্যাঃ পরিবজ্জ রস্তি।

অজ্ঞানতস্তত্ত পতস্তি কেচিল্ জ্ঞানে ফলং পশু যথা বিশিষ্ট্র ॥'
তথাচ দেহাদিঘাত্মবৃদ্ধিরবিধান্ রাগদেযাদিপ্রযুক্তঃ ধর্মাধর্মাসুষ্ঠানকৃজ্জারতে
গ্রিরতে চ ইত্যবগম্যতে দেহাদিব্যতিরিক্তাত্মদর্শিনঃ রাগদেযাদিপ্রহাণাপেক্ষধর্মা।
ধর্মপ্রযুক্ত স্পশমান্ত্যক্তে ইতি ন কেনচিং প্রত্যাধ্যাতুং শক্যং ভারতঃ।

তত্ত্বৈং সতি কেব্ৰক্ষণ্ঠ ঈশ্বরসৈয়ব সতঃ অবিভাক্কতোপাধিভেদতঃ সাংসারি-ছমিব ভবতি। বথা দেহাভাত্মছমাত্মন:। সর্বজ্ঞ নাং হি প্রাসন্ধাে দেহাদিযু অনাত্মস্থ আত্মভাবো নিশ্চিতোহবিছাক্বতঃ বথা স্থাণে পুক্রনিশ্চরঃ ন চৈতাবভা পুরুষধর্মঃ স্থাণোর্ডবতি স্থাণুধর্মো বা পুরুষদ্য তথা ন চৈতন্তং ধর্মঃ দেহধর্মো বা স্থগঃ:থমোহাত্মকত্বাদিরাত্মনঃ ন যুক্তোহবিভাক্কতত্বাবিশেবাৎ জরামৃত্যুবং। ন অতুল্যম্বাদিতি চেং—স্থাণুপুরুবৌ জ্ঞেরাবেব সন্তৌ জ্ঞাত্তা অন্তোন্তবিন অধ্যক্তী অবিষয়া—দেহামুনোস্ত জ্ঞেরজ্ঞাতোরেবে তরেভরাধ্যাস ইতি ন সমো দৃষ্টান্তঃ অতো দেহধর্মো জ্ঞেয়োহপি জ্ঞাতুরাত্মনো ভবতীতি চেং— ন অতৈতভাদিপ্রদঙ্গাৎ। যদি হি জ্ঞেরভ দেহাদে: ক্ষেত্রভ ধর্মা: রূপছ:ধ্যোহেজাদর: জাতুর্ভবন্তি তর্হি জ্ঞেরক্ত ক্ষেত্রক্ত ধর্মাঃ কেচনাত্মনো ভবস্তি অবিদ্যাধ্যারোপিতা জরামরণাদয়স্ত ন ভবস্তি ইতি বিশেষহেতুর্ব জব্যঃ। নভবস্তীত্যস্তমানম অবিভাখ্যারোপিতত্বাৎ জরাদিবৎ ইতি হেরত্বাৎ উপাদেরত্বাক্ষেত্যাদি। তত্ত্বৈবং সভি কর্ত্বভোক্তবলকণ: সংসার: জেরছো জাতরি অবিশ্বরা অধ্যারোপিত ইতি ন তেন জাতৃঃ কিঞ্চিৎ ছ্যাতি। যথা বালৈরধ্যারোপিতেন আকাশভ তলমলবন্ধাদিনা। এবং চ সতি সর্বক্ষেত্রেছপি সতো ভগবতঃ ক্লেব্ৰক্ত ঈশবন্ত সংসারিত্বগদ্ধমাত্রমপি নাশক্ষাম্। ন হি ক্ষচিদপি লোকে অবিভাধ্যভেন ধর্ম্মেণ কন্সচিত্রপকারোহপকারো বা দৃষ্টা। যভূক্তং ন সমো দৃষ্টান্ত ইতি। তদসং। কথম্ ? অবিভাগ্যাসমাত্রং হি দৃষ্টান্তদার্ভাত্তিকরোঃ সাধর্ম্য বিবঞ্চিষ্। তন্ত্র ব্যভিচরতি। য়ঙু জাতরি ব্যভিচরতি ইতি মন্ত্রসে তন্তাপানৈকান্তিকদং দর্শিতং জরামরণাদিভি:। অবিভাবত্বাৎ কেত্রজন্ত সংসারিত্বমিতি চেৎ। ন, অবিভারা-ন্তামসদাং। তামসো হি প্রতায় আবরণাত্মকদাৎ অবিষ্ঠা বিপরীভঞাহক: সংশয়োপত্বাপকো বা অগ্রহণাত্মকো বা। বিবেকপ্রকাশাভাবে ভক্তাবাং। তামদে চ আবরণাত্মকে ভিমিরাদিদোবে সত্যগ্রহণাদেরবিপ্তাত্তরক উপলব্ধে।

জ্ঞাহ এবং তর্হি জ্ঞাতৃধর্মোহবিছা। ন, করণে চকুষি তৈমিরিক্ডাদিলোবো-প্লব্ধে:। বতু মন্ত্রসে জ্ঞাতৃধর্ম্মোহবিষ্ঠা তদেব চ অবিষ্ঠাধর্মবন্ধ: ক্ষেত্রস্ত্রস্ত সংসারিত্ব; তত্র বছকুমীখরএব কেব্রজঃ ন সংসারী ইত্যেতদযুক্তমিতি। তর यथा कतरंग हक्कवि विभवी छ्याहकामिरमावस्य मर्मनार न विभवी छामिश्रहणः তরিমিত্তো বা তৈমিরিকত্বাদিদোবো গ্রহীতঃ। চকুবঃ সংস্কারেণ তিমিরে व्यननीरा शरीजुन्नमर्नाए नशरीपरिया यथा जला मर्सरेखन व्यश्नक्-বিপরীতসংশন্ন প্রত্যন্না ত্তরিমিন্তা: করণভৈব কন্সচিৎ ভবিত্মহন্তি ন জ্ঞাত: ক্ষেত্রক্ত । সংবেশ্বহাচে তেবাং প্রদীপপ্রকাশবর জাতৃধর্মত্ব । সংবেশ্বত্বাদেব স্বাত্মব্যতিরিক্তনংবেগ্রত্ম। সর্বকরণবিষোগে চ কৈবল্যে সর্ববাদিভিরবিগ্রাদি-দোষবন্ধানভাপগমাং। আত্মনো যদি ক্ষেত্ৰক্তভা অধ্যক্ষবং স্বো ধর্মপ্ততো ন কদাচিৎ অপি তেন বিয়োগ: স্থাৎ। অবিক্রিয়ন্ত চ ব্যোমবৎ সর্ব্বগতন্ত অমুর্ব্ত প্রাত্মনঃ কেনচিৎ সংযোগবিয়োগামুপপত্তেঃ। সিদ্ধং কেত্রজন্ত নিত্যমেবেশ্বরত্বম। अनानिश्वात्रिश्व नेशानिकानितिकनोकः। नस् এवः সতি সংসারসংসারিश्वोकाति শাস্ত্রানর্থক্যাদিদোবঃ স্থাৎ ইতি। ন সর্বৈর্ভুগগতত্বাৎ। সর্বৈরেবাত্মবাদি-ভিরভাগগতো দোষ: নৈকেন পরিহর্তব্যো ভবতি। কথমভাগগত ইতি? মুক্তাত্মনাং সংসার-সংসারিত্বব্যবহারাভাবঃ সর্ট্রেরেবাত্মবাদিভিঃ ইব্যতে। ন চ তেবাং শাস্ত্রানর্থক্যাদিদোষপ্রাপ্তিরভাগগতা। তথা নঃ ক্ষেত্রজ্ঞানামীখরৈকত্বে সতি শাস্ত্রানর্থক্যং ভবতু। অবিভাবিষয়ে চার্থবন্ধ্য। বথা বৈতিনাং সর্ক্ষেরাং वक्षावश्वादायव भाजाण्यवस्य न मुक्तावश्वादायवम्। नम् आसाना वक्षमुक्तावत्त्र প্রমার্থতএব বস্তুভূতে হৈতিনাং নঃ সর্ফোবামতো হেয়োপাদেয়তৎসাধনসদ্ভাবে শান্তাপ্তর্থবন্তং স্থাৎ হৈতিনাং পুনদ্ধৈ তিস্থাপরমার্থস্থাৎ অবিষ্যাকৃতস্থাৎ রন্ধ।বস্থায়াশ্চ আত্মনাহপরমার্থছে নির্কিষরতাৎ শাস্ত্রাভানর্থক্যমিতি চেৎ। ন. আত্মনোহবন্তা-ভেদারুপপত্তে:। যদি তাবং আত্মনো বন্ধমুক্তাবত্তে যুগপৎ স্থাতাং ক্রমেণ বা। যুগপৎ তাবৎ বিরোধাৎ ন সম্ভবতঃ স্থিতিগড়ী ইব একস্মিন। ক্রমভাবিস্কেচ ·নিনিমিন্ততে অনিমেশিক প্রসঙ্গোহন্তনিমিন্ততে চ স্বতোহভাবাদপরমার্থত্ব-প্রস**লঃ**। তথা চ সতি অভ্যাপগমহানি:। কিঞ্চ বন্ধমুক্তাবন্ধরো: পৌর্বাণির্যানিরূপণারাং বদ্ধাবস্থা পূর্বং প্রকল্প অনাদিমতী অস্তাবতী চ। তচ্চ প্রমাণবিক্লম্। তগা মোক্ষাবন্ধা আদিমতী অনস্তা চ প্রমাণবিক্লকৈবাভূয়পগম্যতে। ন চ অবস্থারতো-ছবছাঞ্চরং গচ্ছতো নিভাত্বমুপপাদয়িতৃং শক্যম্। অথানিভাত্বদোষপরিহারায় বন্ধস্কাবস্থাভেদো ন ক্য়াতে মতোংগৈতিনামিব বৈতিনামপি শালানর্থক্যাদিয়োবঃ

অপরিহার্য্য এবেতি সমানতাৎ ন অদ্বৈতবাদিনা পরিহর্ত্তব্যো দোষ:। ন চ শাস্ত্রানর্থক্যং যথা প্রসিদ্ধাবিদ্বৎপুরুষবিষয়ত্বাচ্ছান্ত্রন্ত । অবিত্রষাং হি ফলহেন্দোরনা-অনোরাআদর্শনম । ন বিছ্যাং, বিছ্যাং হি ফলছেতৃভ্যাম্ আল্পনোহন্তল্পর্দর্শনে সতি তরোরহমিত্যাত্মদর্শনামুপপতে:। নহি অত্যন্তমূঢ় উন্মন্তাদিরপি জলাগ্ন্যোশ্ছারা-প্রকাশয়োবা ঐকাষ্মাং পশুতি, কিমৃত বিবেকী গ তত্মাৎ ন বি,ধপ্রতিবেধশাস্ত্রং তাবৎ ফলহেতুভ্যামাত্মনো হল্লত্ত্বদর্শিনো ভবতি। নহি দেবদত্ত ত্বিদং কুক্ক ইতি ক্সিংশিচৎ কর্ম্মণি নিযুক্তে বিষ্ণুসিজোইহং নিযুক্ত ইতি তত্ত্বং নিয়োগং শুগ্নমপি প্রতিপন্ততে। নিয়োগবিষয়বিবেকাগ্রহণাৎ তু উপপন্ততে প্রতিপত্তিত্ত**া ফল**-হেছোরপি। নতু প্রাক্তসম্বন্ধাপেক্ষরা য**ৈক্ত**ব প্রতিপত্তি: শালার্থবিষয়া ফলহেত্ভ্যামন্তাম্মহদর্শনেহপি . সতি ইষ্টফলহেতৌ—প্রবর্ত্তিতাহিম **অনিষ্ট**-ফলহেতোশ্চ নিবর্ত্তিতোহস্মি ইতি। যথা পিতাপুত্রাদীনাম ইতরেতরাত্মান্তত্বদর্শনে সভাপি অন্তোন্ত্রিরাগপ্রতিবেধার্থপ্রতিপত্তিঃ। ন, ব্যতিরিক্তা**ত্মদর্শনপ্রতিপত্তেঃ** প্রাগের ফলহেরো: আয়াভিমানস্ত সিদ্ধর্যাৎ। প্রতিপন্ননিরোগপ্রতিবেধার্থো হি ফলহেতৃভ্যামাত্মনোহন্তত্ত্বং প্রতিপদ্মতে ন পূর্ব্বম্। তত্মাৎ বিধিপ্র**তিবেধশান্ত্রম**-বিশ্বহিষয়মিতি সিদ্ধন্। নতু "স্বৰ্গকামো যজেত" "কলঞ্জং ন ভক্ষরেং" ইত্যাদৌ মান্মবাতিরেকদর্শিনামপ্রবৃত্তৌ — কেবলদেহাভাত্মদৃষ্টীনাঞ্চ। অতঃ কর্ত্ত্রভাবাৎ শান্তান্ত্রিত ১৫। ন, যথাপ্রসিদ্ধিত এব প্রবৃত্তিনিবৃত্ত্যুপপতে:। ঈশর-ক্ষেত্রকৈছনশী এন্ধবিৎ তাবর প্রবর্ততে। তথা নৈরাম্বাবাছপৈ নান্তি পরলোক যথাপ্রসিদ্ধিতন্ত্র বিধিপ্রতিষেধশারশ্রবণারপারপারপার ই'ত ন প্রবর্ত্ত অফুমিতাত্মান্তিত্ব আত্মবিশেষানভিজ্ঞ: কর্মফলসঞ্জাততৃক্ষ: - শ্রদ্ধানভন্না চ প্রবর্ততে ইতি সর্বেষাং নঃ প্রত্যক্ষনতো ন শাস্ত্রানর্থক্যম্। বিবেকিনামপ্রবৃত্তি-দর্শনাৎ তদত্বগামিনামপ্রবুটে শাস্তানর্থক্যমিতিচেৎ। ন, কন্সচিদেব বিবেকো-পপতে:। अत्मत्कवू वि थानियू - क "किएनव वित्वकी छा था रेमानीम्। न क বিবেকিনমন্থবর্ত্তরে মূঢ়া রাগাদিদোবতম্বর্থাৎ প্রবুত্তে:। अভिচরণাদে। চ প্রবিদর্শনাৎ। স্বাভাব্যাচ্চ প্রবৃত্তে:। স্বভাবস্ত প্রবর্ত্ততে ইভ্যুক্তম্। তস্মাদ্বিস্থামার্ত্রং সংসার: যণাদৃষ্টবিষয় এব। ন কেত্রজন্ত কেবলত স্পবিস্থা তৎকার্য্যঞ্, ন চ মিণ্যাজ্ঞানং প্রমার্থবস্ত দূষয়িতৃৎ সমর্থম্। ন হি উবরদেশং ক্ষেহেন পদ্ধীকর্ত্তুং শক্লোতি মরীচ্যুদক্ষ্। তথাহবিত্তা কেত্ৰজ্ঞত ন কিঞ্ছিৎ কর্ত্তংশক্রোতি। অতশ্চেদমুক্তন—"কেত্রজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি" "অফ্রানেনাবৃত্তং कानम् हेि ह । अथ कि मिन् मश्मातिनामिव चहरम्बर मरेमरवनम् हेि शिखा-

নামপি। শৃণু ইদং তৎপাণ্ডিত্যং যৎ ক্ষেত্র এবাত্মদর্শনম্। যদি পুনঃ ক্ষেত্রজ্ঞ-মবিক্রিরং পশ্রেয়্ক্ততো ন ভোগং কর্ম বা আকাজ্কেয়ুর্ম ম স্থাৎ ইতি। বিক্রিইয়ব ভোগকর্মণী। অথৈবং দতি ফলার্থিখাদবিদ্বান প্রবর্ত্ততে। বিছয়ঃ পুনর-ৰিক্রিয়াত্মদর্শিনঃ ফলার্ণিত্বাভাবাৎ প্রবৃত্তামুপপত্তৌ কার্য্যকরণসংখাতব্যাপারো-পরমে নির্ভিরূপচর্য্যতে। ইদং চাত্তৎ পাণ্ডিত্যং কন্সচিৎ। অস্ত ক্ষেত্রজ ম্বার এব ক্ষেত্রং চাক্তং ক্ষেত্রজ্ঞক্ত বিষয়:। আহং তু সংসারী স্থা ইংখী চ। সংসারোপরমশ্চ মম কর্ত্তব্যঃ কেত্রকেত্রজ্ঞবিজ্ঞানেন ধ্যানেন চ ঈশ্বরং কেত্রজ্ঞং সাক্ষাৎক্রত্বা তৎস্বরূপাবগমেন ইতি। যদৈচবং বুধ্যতে যশ্চ বোধয়তি নাসৌ **ক্ষেত্রক্ত ইতি। এবং মধানো য: স পণ্ডিতাপসদ: সংসারমোক্ষয়ো:** শারত চ অর্থবন্ধ করোমীতি। আত্মহা স্বয়ং মূঢ়োহগ্রাংশ্চ ব্যামোহয়তি শান্তার্থসম্প্রদাররহিতত্বাৎ শ্রুতহানিস্প্রতক্রনাঞ্চ কুর্বন্। তস্মাৎ অসম্প্রদারবিৎ সর্কশাস্ত্রার্থবিদপি মূর্থবহুপেক্ষণীয়:। যত্ত ক্রমীশ্বরত ক্ষেত্রতৈ ক্রে সংসারিত্বং প্রাপ্নোতি ক্ষেত্রজানাং চ ঈশ্বরৈকত্বে সংসারিগোহভাবাৎ সংসারাভাবপ্রদঙ্গ ইঙি। এতৌ দোবৌ প্রভ্যুকৌ বিভাবিশ্বয়ো বৈ নক্ষণ্যাভ্যুপগমাৎ ইভি। কপম্ ? অবিস্থাপরিকল্পিতদোবেণ তদ্বিষয়ং বস্তু পারমার্ণিকং ন ত্র্যতীতি। তথা চ দুষ্টাক্তো দর্শিতঃ মরীচান্তসা উষরদেশো ন পঙ্কীক্রিয়তে ইতি। সংসারিণোহ-ভাবাৎ সংসারাভাবাপ্রসঙ্গদোযোহপি সংসারসংসারিণোরবিত্যাকরিতত্বোপপত্তা প্রত্যুক্তঃ। নমু অবিস্থাবন্ধনেব ক্ষেত্রজ্ঞস্ত সংসারিত্বদোষঃ তৎকৃতং চ হঃথিত্বাদি প্রত্যুক্ত-মুপলভাতে। ন জেরছম্ম কেত্রধর্মথাৎ জাতৃ: কেত্রজম্ম তৎক্রতদোয়ামুপপত্তে:। বাবং কিঞ্চিৎ ক্ষেত্রজন্ত দোষজাতম্ অবিজ্ঞমানম্ আসঞ্জয়সি তত্ত জেয়ত্বোপপত্তেঃ ক্ষেত্রধর্মস্থানের ন ক্ষেত্রজ্ঞধর্মস্থা। ন চ তেন ক্ষেত্রজ্ঞো হ্যাতি জ্ঞেয়েন জ্ঞাতু: সংসর্গামুপপত্তে:। যদি হি সংসর্গ: স্থাৎ জ্ঞেয়ন্ত্রেমব নোপপত্মেত। যন্ত্রাত্মনো ধর্মোহবিষ্যাবন্ধ হ:থিত্বাদি চ কথং ভো: প্রত্যক্ষমুপলভাতে ? কথং বা কেত্রজ্ঞ-ধর্মঃ ? জেয়ং চ সর্বাং ক্ষেত্রং জ্ঞাতিব ক্ষেত্রজ্ঞ ইত্যবধারিতে অবিস্থাতঃ বিশ্বাদেঃ ক্ষেত্রজ্ঞবিশেষণত্বং ক্ষেত্রধর্মত্বং তম্ম চ প্রত্যক্ষোপগভাত্বমিতি বিরুদ্ধমূচ্যতে হবিছা-মাত্রাবইস্তাৎ কেবলম্। অত্রাহ সা অবিভা কন্তেতি ? যন্ত দুপ্ততৈ তত্তৈব। কন্ত ্ দৃখ্যতে ইতি ? অত্যোচ্যতে অবিভা কণ্ড দৃখ্যতে ইতি প্রশ্লোহনর্থকঃ, কর্পং দৃখ্যতে চেৎ অবিষ্যা তদন্তমণি পশুসি। ন চ তবতি উপলভ্যমানে সা কল্ডেন্ডি গ্রানা युक्तः। ন হি গোমতি উপলভামানে গাবঃ কক্ষেতি প্রশ্লোহর্থবান্ ভবেৎ। নমু বিষমো দৃষ্টান্তঃ গবাং তদ্বতক্ষ প্রত্যক্ষসিদ্ধত্বং তৎসম্বন্ধোহণি প্রত্যক্ষঃ ইতি প্রশ্নো নির্থক:। ন তথা অবিছা তদ্বাংশ প্রত্যাকে। বতঃ প্রশ্নো নির্থক: ভাং। অপ্রত্যক্ষেণ অবিভাবতা অবিভাসম্বন্ধে জ্ঞাতে কিং তব স্থাৎ ? অবিভায়া অনর্থ-হেতৃত্বাৎ পরিহর্তব্যা ভাৎ। বভাবিভা দ তাং পরিহরিষাতি। নমু মনৈবাবিভা। জানাসি তর্হি অবিভাং তদ্বন্তং চাত্মানম্। জানামি ন তু প্রত্যবেণ। অনুমানেন চেৎ জানাসি কথং সম্বরগ্রহণম্। ন হি তব জাতুজ্জেরভূতয়া অবিভয়া তৎকালে সম্বন্ধো গ্রহীভূং শক্যতে। অবিভাষা বিষয়ত্বেনৈব জ্ঞাভুক্লপযুক্তত্বাং। ন চ জ্ঞাতুরবিভারাশ্চ সম্বন্ধশু যজ্জানং চ অন্তং তদ্বিষয়ং সম্ভবতি <mark>অনবস্থাপ্রাপ্তে। যদি</mark> জাতাপি জ্বেরসম্বন্ধো জায়েত অস্তো জাতা করা: স্থাৎ তন্তাপ্যন্ত: তন্তাপ্যন্ত: ইত্যন-বস্থা অপরিহার্য্যা। যদি পুনরবিভা জেয়া অভদ্ বা জেয়ং জেয়মেব তথা জাতাণি জ্ঞাতৈব ন জ্ঞেরং ভবতি। যদা চৈবম্ অবিস্থা হঃখিম্বাজ্য: ন জ্ঞাভূ: ক্লেক্স কিঞ্চিৎ হ্যাতি। নমু অন্নমেব দোষঃ যদ্দোষবৎক্ষেত্রবিজ্ঞাতৃত্বম্। ন বিজ্ঞান-স্বরূপসৈব অবিক্রিয়ন্ত বিজ্ঞাতভোপচার। । যথোঞ্চতামাত্তেণ **অগ্নেন্ত থিক্রিয়ো**-পচারতদ্বৎ! যথা অত্র ভগবতা ক্রিয়াকারকফলাত্মভাব আত্মনি স্বভ এব দর্শিতঃ অবিভাধ্যারোপিতৈরেব ক্রিয়াকারকাদি স্বাস্থ্যনি উপচর্য্যতে তথা তর্ত্ত তত্ত্ব "য এনং বেত্তি হস্তারম্" "প্রক্লতে: ক্রিয়মাণানি স্তুণৈ: কর্মাণি সর্বাশঃ" "নাদত্তে ক্সচিৎ পাপম্" ইত্যাদি প্রকরণের দর্শিতং তথৈব চ ব্যাখ্যাতমন্মাভিঃ। উত্তরের চ প্রকরণেয় দর্শয়িষাাম:। হন্ত তর্হি আত্মনি ক্রিরাকারক-ফ্লা**ছতায়া: ব**ত এবাভাবে অবিভয়া চাধ্যারোপিতত্তে কর্ম্মাণি অবিদ্বৎকর্ত্তব্যাঞ্চের ন বিচ্ছা-মিতি প্রাপ্তম্ মত্যমেবং প্রাপ্তম্। এতদেব চ "ন হি দেহভূতা শক্ষমু" ইত্যক দর্শয়িষ্যামঃ। সর্বশাস্তার্থোপসংহার প্রকরণে চ "সমাসেটনব কৌতের নিষ্ঠা জ্ঞানস্ত যা পরা" ইত্যত্র বিশেষতো দর্শয়িষ্যান:। অলমিছ বছপ্রপঞ্চেন ইত্যুপদংক্রিয়তে ॥২

আনন্দ্গিরিটীকা। দৃখানাং হংথাদীনাং ভেদকানাং বাবদেহভাবিনামনাত্মধর্মন্থ সিদ্ধার দ্রন্তারং দেহাদক্তমুক্র। সাংখ্যানামিব তাবন্মাত্রেণ মুক্তিনির্ভরে,
তক্ত সর্বদেহেবৈক্যোক্তিপূর্বকং খেন পুরমার্থেনাক্ষরেণৈক্যং বভ্তমন্ত প্রশ্নারা
দর্শরতি—এইমিত্যাদিনা। যথোক্তলকণং দৃখ্যাদেহান্নিছাইং দ্রন্তারমিত্যর্থঃ।
চাপীতি নিপাতৌ জীবভাক রম্বজানভ দেহাদক্তম্বজানেনু সমুক্তরার্থে। ভিদ্ধকানা
ন ক্ষেত্রভাং সাংখ্যবদ্ খ্যাদভাদেব বিদ্ধি কিন্তু মাঞ্চাপি বিদ্ধীতি সম্বাতে। বঃ
দর্বক্ষেত্রের্ একং ক্ষেত্রভাঃ তং মামেব বিদ্ধীতি দম্বরং স্চরতি—সর্ব্বৈতি।
তত্তৎক্ষেত্রোপাধিকভেদভারঃ তত্তক্ষ্মীগোচরভ কথং ত্রিপরীত্রশ্বষ্মীরিত্যা-

শন্বাহ—ব্ৰহ্মাদীতি। উত্তরার্দ্ধে বিভম্বতে—যুস্মাদিতি। বিশিনটি—ক্ষেত্রেতি ৷ ন চ ভেদবিষয়ত্বাল সম্যগ্ঞানং তদিতি যুক্তং তপ্ত বিবেকজ্ঞানস্থ বাক্যার্থজ্ঞানদারা মোক্ষোপ্রিকছেন সম্যক্ত্রিদিরিতি ভাবঃ জীবেশ্বয়োরেকত্বে ৰীবেশ্বরেরেকত্বমুক্তমাক্ষিপতি—নম্বিতি। **স্থেরে বা তত্ত জীবে** বাস্তর্ভাবো নাছো জীবস্থ পরস্থাদন্তবাভাবে সংসারস্থ নিরাশ্যনভামুণপত্ত্যা পর্যৈত্ব তদাশ্রয়ত্বপ্রসঙ্গাদিত্যর্থ:। ''অনগ্রহত্যো অভিচাক-শীতি" প্রতেন তিন্ত সংসারিতেত্যাশক্ষ্য দিতীয়ং দুষয়তি—ঈশ্বরেতি। জীবে চেদীশবোহস্কর্ভবতি তদাপি ততোহস্তসংসার্য্যভাবাৎ তম্ভ চ সংসারোহনিষ্ট: ইতি। সংসারো অগত্যতং গচ্ছেদিতার্থ:। প্রসঙ্গবরতে ইতং নিরাচ:ই — তাচ্চেতি। সংসারা-ভাবে "তয়োরঞ্চঃ পিণ্পলং স্বাধৃতি"ইত্যাদিবন্ধশাস্ত্রস্থ তদ্ধেতুকর্মবিষয়কর্মকাণ্ডপ্ত চানর্থকামীব্রাশ্রিতে চ সংসারে তদভোক্ত ত্রশ্রত: জ্ঞানকাণ্ডভ মোক্ষতদ্বেত্ জানার্থস্তানর্থক্যম মতো ন প্রদক্ষরোরিষ্ঠতেত্যর্থ:। সংসারাভাব প্রদক্ষসানিষ্ঠত্তে হেত্ব-ন্তরমাহ-প্রত্যক্ষাদীতি। তত্র প্রত্যক্ষবিয়োধং প্রকটয়তি-প্রত্যক্ষেণেতি। আদিশস্বোপাত্তমনুমানবিরোধমাহ—জগদিতি ! বিমতং বিচিত্রহৈতুকং বিচিত্র-কার্য্যাৎ প্রাসাদাদিবদিত্যর্থ:। প্রত্যক্ষাত্মানাগমবিরোধাদ্যুক্তমৈক্যমিত্যুপসং-**হরতি—সর্ব্বমিতি।** ঐক্যেথপি সংসারিত্বমবিভাতো বিভাতোৎসংসারিত্বমিতি বিভাগালামূপপত্তিরিত্যুক্তরমাহ—্নেত্যাদিনা। তয়োঃ ২রূপতো বিলক্ষণত্বে 🚁 তিমাহ—দূরমিতি। অবিভাষা চ বিভেতি প্রদিদ্ধে এতে বিভাবিত্তে দূরং বিপরীতে অত্যন্তবিক্লদ্ধে ইত্যর্থ:। বিষ্ চী নানাগতী ভিরফলে ইত্যর্থ:। স্বরূপতো বিরোধবৎ কলতোহপি নোহস্তীত্যাহ—তথেতি । ফলভেদোজিনেব ব্যন**ন্ধি**—বিদ্যেতি। তয়োর্বিধাবিলকণতে বেদব্যাসম্ভাপি সম্মতিমাহ— তথাচেতি। উক্তেহর্থে ভগবতোহপি সম্মতিমূদাহরতি—ইহ চেতি। বরোরপি নিষ্ঠরোজ্বাসুপাদেরত্বনিতি শকাং শাতরতি—অবিদ্যা চেতি। অবিদ্যা সকার্য্যা হাতব্যেতা ব শ্রুতিকদাহরতি—প্রাত্তয়স্তাবদিতি। ইহেতি জীবদবস্বোচ্যতে. टिक्स्ट्रा विष्णामग्रदानीन ভाष्णाजी, वादमीमशः बास्त्राणि विमिजवानिजार्थः। व्यथ বিষ্যানস্তরমেব সত্যমবিতথং পুনরাবৃত্তিব জিতং কৈবল্যং গ্রাদিত্যাহ—আথেতি। অবিষ্যাবিষয়েহপি শ্রুতিমাহ — নচেদিতি। জন্মরণাদিরপা সংস্তির্বিনষ্টিঃ ততা মহবং সমাগ্ জানং বিনা নিবর্ত্তিমূলকাত্বন্। বিভাবিষয়ে শ্রুতান্তরমাহ---ত্রেবমিতি। পরমাত্মানং প্রত্যক্তেন যঃ সাক্ষাৎ ক্রতবান্স দেহী জীবলেব মুক্তো ভবতীত্যর্থঃ। বিভাগ বিনাপি হেত্বস্তরতো মুক্তিমাশঙ্ক্যাহ—(নতি।

ভন্নহে হুমবিস্থাং নিরাকুর্বতী তজ্জং ভন্নমণি নিরস্ততি বিশ্বেত্যত্র বাক্যাস্তরমাহ —বিদ্বানিতি। অবিষ্ণাবিষয়ে বাক্যান্তরমাহ—অবিদ্রুষ ইতি। চ্যেকরঙ্গে স্বন্ধমণি ভেদং ম্প্রমানস্য ভেদদৃষ্ট্যন ওরমেব সংসার্থৌব্যমিত্যর্থঃ। তহৈব শ্রুতান্তরমাহ—অবিদ্যায়ামিতি। তন্মধ্যে তৎপরবশতরা স্থিতান্তত্তি-মজানত্তো দেহান্তভিমানবস্তো মৃঢ়া: সংসরস্তীত্যর্থ:। বিন্তাবিষয়ে শ্রু হান্তরমাহ— ব্রক্ষেতি। অবিভাবিষয়ে শ্রুতান্তরমাহ—অন্তোহসাবিতি। ভেদদৃষ্টিঃন্ভ তল্পিনানমবিষ্ণেত্যাহ—নেতি। স চ মহুব্যাণাং পণ্ডবদ্দেবাদীনাং প্রের্ভাং প্রাপ্নোতীত্যাহ—যথেতি। বিভাবিষয়ে বাক্যান্তরমাহ—আতাবিদিতি। ইদং সর্বং প্রত্যগ্রুতং পূর্ণং ব্রহ্মেতার্থ:। জ্ঞানাদেব তু কৈবলামিতাত্র শ্রুতান্তর-মাহ—যুদ্ধেতি। ন থবাকাশং চর্দ্মবন্মানবো বেষ্টমিতুমীষ্টে তথা পরমান্মানং প্রতাকে,নামভুয় ন মুচ্যতে ইতার্থ: i সাদিশকেনামুকা বিভাবিভাফণভেদার্থা: শ্রুতরো গৃহুন্তে। তাদাং ভূরন্ত্বেন প্রামাণ্যং হচয়তি **—সহস্রশ ইতি। বিছা**-বিভাবিষয়ে স্থতিরুদাহরতি—স্মৃত্যুক্তি। তত্রাবিদ্যাবিষয়ং বাক্যমাহ— অজ্ঞানেনেতি। বিভাবিষয়ং বাক্যহয়ং দর্শরতি—ইত্ত্যোদিনা। বিত্যাফলমনর্থধ্বস্তিরবিত্যাফলমনর্থাপ্তিরিত্যেতদন্তমব্যতিরেকাপ্যস্তায়াদপি সিধ্য-ভীত্যাহ—ন্যায়তকেতি। তবৈৰ প্রাণসম্বতিমাহ—সর্পানিতি। উদপানং কৃপং বর্থাত্মজ্ঞানে বিশিষ্টং ফলং দ্যাৎ তথা পশ্রেতি বোজনা স্থান্নতন্দেত্যমন্ত্রব্যতি-রেকাণ্যং সারমূক্তং বির্ণোতি—তথাচেতি। তত্তাদাবৰম্মা । । मिश्चि । यन। श्वनिर्स्ता । विश्वात् जिल्ला । त्रहामायना श्वशास्त्र । प्रमापना श्वशास्त्र । प्रमापना श्वरा । प्रमापना श्वरा । प्रमापना । प्रमाप তদব্যক্তা রাগাদিনা প্রের্যাতে তৎ এযুক্ত চ কর্মামুতিষ্ঠতি তৎকর্ত্তা চ বপাকর্ম ন্তনং দেহমাদত্তে পুরাতনং ত্যজ্জীত্যেবমবিস্থাবত্তে সংসারিত্বং দিদ্ধমিত্যর্থ:। বাতিরেক।মদানীং দর্শমতি — দেহাদীতি। শ্রুতিযুক্তিভাাং রাগাদিধবন্ত্যা কর্মোপরমাদশেষসংসারাদিদ্ধিরিত্যবিষ্ণারাহিত্যে বন্ধপঞ্জিরিতার্থ:। উক্তামমাদেরক্তথানিদিং শিথিলমতি—ইতি নেতি। উক্তমন্বয়াদিবাদিনা কেনচিদপি স্থায়তো ন শক্যং প্রত্যাব্যাতৃং তদস্তথা-সিদ্ধিসাধকান্তাবাদিত্যর্থঃ। অন্বয়াদেরনস্তথাসিদ্ধত্বে চোন্তমপি প্রাচীনং প্রতিনীত-মিত্যাহ—তাত্ত্রতি। জ্ঞানাজ্ঞানরোকক্ত্রভারেন স্বর্গভেদে কার্যাভেদে চ পরাপরয়োটরকোহপি বৃদ্ধাাগ্যপাধিভেদাদাবিশ্বকমাত্মনঃ সংসারি-দ্বমান্তাসরূপং প্রতিভাসিকং সিধ্যতীতার্থঃ। আত্মনো বন্ধতা স্বতশ্চেদ্ধ-মিত্যাত্মভাবেন বন্ধতাপি ভাষাদিত্যাশব্যাহ—যুথেতি | দেহাত্মতিরিককাত্মতানা বৈদিকপক্ষে স্বভন্তেহপি তশ্বিরহমিতি ভাত্যের তদতিরিক্তত্বং ন ভাতি কিং ছবিষ্যাতো দেহাম্মাত্মতমেব বিপরীতং ভাদতে তথাত্মনো ব্রহ্মতে স্বাভা-বিকেহণি ভদ্মিন ব্ৰহ্মত্বং ন ভাত্যবিদ্যাতোহব্ৰহ্মত্বমেব ত্বদ্য ভাদ্যতীত্যৰ্থ:। আত্মনো দেহাস্থাত্মতাবিদ্যকং ভাতীত্যকং অমুভবেন স্পষ্টরতি—সার্বেবতি। অতস্মিংস্তৰ দ্বিরবিদ্যাক্বতেত্যত্র দৃষ্টান্তমাহ — মুখেতি। পুরান্থিতে বস্তুনি বস্তুতঃ হাণাববিদ্যারা পুমানিতি নিশ্চয়ো জারতে তথা দেহাদাবনাত্মভাত্মধীরবিদ্যাতো নিশ্চিতেতার্থ:। দেহাত্মনোরৈক্যজ্ঞানে দেহধর্মস্য জরাদেরাছ্মগ্রাত্মধর্মসাচ ১ৈতনাস্য দেহেংপি নিম্ন: স্যাদিত্যাশস্থাহ—নচেতি। স্থাণোঁ পুরুষত্বং প্রান্ত্যা ভাতীত্যেতাবতা পুরুষধর্ম: শির:পাণ্যাদিন স্থাণোর্ভবতি তদ্ধর্মোবা বক্রতাদি পুংলো দৃশ্যতে মিথ্যাধান্তভাদাত্মাদ্বস্ততো ধর্মাব্যতিকরাদিতি। দুধান্তমুকু। দাষ্টান্তিকমাহ—ত্ত্থিতি। জরাদেরনাত্মধর্দ্মতেহপি স্থথাদেরাত্মধর্ম্মত্বনিতি কেচিৎ তান্ প্রত্যাহ—স্তুখেতি। কামদঙ্করাদিশ্রতেরনাত্মক্কানাদিত্যর্থ:। কিঞ্চ বিমতো নাশ্বধর্মোহবিদ্যাক্কতত্বাজ্জরাদিবর চ হেবসিদ্ধিরতস্থিংস্তৰ দ্বিবিষয়ধেন স্থানৌ পুৰুষৰবদবিদ্যাক্কতৰসোক্তৰাদিতি মন্বাহ—অবিস্তোতি। স্থাণৌ পুৰুষত্ব-বদাবিদ্যস্থং দেহাদেরযুক্তং দৃষ্টান্তদাষ্টান্তিকয়োটর্মবন্যাদিতি শকতে—নেতি। তদেব প্রপঞ্চমতি—স্থাণিত্যাদিনা। জ্ঞেমন্ত জ্ঞেমান্তরেহধ্যাসাদত্ত চোভদ্মো-জ্জেরখং ব্যাপকব্যার্ত্ত্যা ব্যাপ্যাধ্যাসভাপি ব্যার্ত্তিরিত্যর্থ:। দেহাত্মবুদ্ধেত্র মখা-ভাবে ফলিতমাহ—অত ইতি ৷ উপাধিধর্মাণাং স্থপাদীনামুপহিতে জীবে বস্তুষ্মস্ক্রমতিপ্রসঙ্গাদিতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। অতিপ্রসঙ্গমেব প্রকট-मिकि । स्थानीनामाञ्चसर्यायः हिन्द्रशासिधर्मायानहेन्छ अत्रानिकका-ত্মনো হুর্কারং তাদিত্যর্থ: স্থাদিরাত্মধর্মো নেতি পক্ষেহপি নান্তি বিশেষ-হেতুরিত্যাশস্ক্যাহ—নেতি। তদেবামুমানং সাধয়তি—অবিস্তোতি। বিমতং নাম্বধর্ম: আগমা-পারিছাৎ সংসারবদিত্যকুমানাস্তরমাহ—হেয়ুত্তাদিতি। আদিশবাদ শুত্রজড়তাদি গৃহতে। স্থাদীনাং জরাদিবদাত্মধর্মবাভাবে তহু বস্তুতোহসংসারিতেতি ফলিতমাহ—তত্ত্তেতি। সারোপিতেনাধিষ্ঠানক বস্তু-ভোহস্পর্নে দৃষ্টান্তমাহ—যথেতি। পরাভিন্নগ্রাত্মনঃ সংগারিত্মধ্যত্তমিতিস্থিতে যৎপরক্ত সংসারিত্বাপাদনং তদযুক্তমিত্যাহ—এবঞ্জেতি। আত্মমি সংসারক্তা-সারো পিতমাৎ তদভিমে পরন্মিন্মাশকৈব তহ্যাযুক্তেতোতৎ উপপাদয়তি— न होि । शांनी भूकविनकत्रवाचादाना त्वहांशाचाव-निक्तशाधाखाखान्। দৃষ্টাস্বত জেনমাত্রবিষরত্বাদিতরত জেনজাতৃবিষরত্বাদিত্যুক্তমন্থবদতি—যুক্তিতি।

বৈষম্যং দূৰমতি —তদসদিতি। তৰ্হি কেন সাধৰ্ম্যামতি পৃচ্ছতি কথমিতি। অভীষ্টসাধৰ্ম্মাৎ দৰ্শন্নতি—অবিদ্যোতি। তভোভননামগতিশাহ—তন্নেতি। জেরান্তরে জেরভারোপনিয়মাৎ জাতরি নারোপঃ ভাদিত্যাশভ্যাহ—যন্তিতি। নায়ং নিয়া জাতরি জরাতারোপত্যোকতানিত্যাহ—ভ্রস্তাপীতি। জেরান্তরেহধ্যাসনিরমক্তেতি যাবং। অতো জ্ঞাতরি নারোপব্যভিচারশঙ্কেতার্থঃ। আত্মন্তবিভাষ্যাদে তত্রাবিভাষা: স্বাভাবিক্তাৎ তদধীনতং সংসারিত্মপি তথা স্তাদিতি শহুতে—অবিদ্যাবজাদিতি। কাবিষ্যা ? বিপরীতগ্রহাদির্বানাম্ব-নিৰ্ব্বাচ্যাজ্ঞানং বা ? নাজো বিপরীতগ্রহাদেন্তম:শব্দিতানির্ব্বাচ্যাজ্ঞান-কার্য্যখাৎ তরিষ্ঠস্থাত্মধর্মজাযোগাদিত্যাহ—্রেত্যাদিন।। তদেব প্রণঞ্চরতি - তামুদ্রো-আবরণাত্মকত্বং বস্তুনি সম্যক্ প্রকাশপ্রতিবন্ধকত্বং বিপরীতগ্রহণাদের-বিভাকার্য্যন্থং বিভাপোহন্দেন সাধয়তি—বিবেকেতি। নচ কারণাবিদ্যানাদ্য-নির্বাচ্যাত্মধর্ম: ভাদিতি যুক্তমনির্বাচ্যত্মদেব তহ্যাত্তমুর্মত হর্বচ্ছাদিতি ভাব:। কিঞ্চ বিপরীতগ্রহাদেরবয়ব্যতিরেকাভ্যাং দোবলপ্রমাদপি নাম্মধর্মতেভাাত —তামসেচেতি। তম:শবিতাঞ্জানোখবস্তপ্রকাশপ্রতিবন্ধক ন্তিমিরকাদ্যাদি-দোষ স্থান্মিন সত্যজ্ঞানং মিথ্যাধীঃ সংশয়শ্চেতি, ত্রয়স্থোপলস্থাদস্তি তশ্বিদ্র-প্রতীতেরবয়ব্যতিরেকাভ্যাৎ বিপরীতজ্ঞানাদেদে বিধীনভাধিগমান কেবলাভ্যধর্ম-(७७)र्थः । त्वावक निभित्वचार ভावकार्यात्माभाननिव्यावनिव्याधानाः সন্মতেরাবৈদ্ধব বিপর্যায়াদের পাদানমিতি চোদয়তি—অক্রান্তেতি। গ্রহাদের্দেবাথ বং সপ্তমার্থঃ। অগ্রহাদিত্রিতরমবিদ্যা। বিপর্ব্যরাদেঃ সভ্যো-পাদানত্ত্বে সত্য হপ্রসঙ্গালাত্মা তত্তপাদানং কিন্তু দোবত চকুরাদিধর্শ্বকত্ত্রহণাদেরপি দোষত্বাৎ করণধর্মত্বে কারণসবিদ্যোখনতঃকরণং ন চ তত্ত্বেত্রকিয়া হসিছেতি বাচ্যমজ্ঞোহহমিত্যকুভবাৎ স্বাপে চ অজ্ঞানপরামর্শাৎ তদবগুমাৎ কার্যালক্ষকান্ত-সানাদাগমাচ্চ তৎপ্রসিদ্ধেরিতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। পরিহাররোন্চোদাং বির্ণোতি—যুদ্ধিতি | অবিদ্যাবত্ত্বংপি আতুরসংসারিত্বাৎ উৎপাতদংষ্ট্রোরগবৎ অবিদ্যা কিং করিষ্যতীত্যাশস্থ্যাহ—তদেবেতি। জানাদিমন্বমৈবাত্মনঃ সংগারিদ্বমিতি স্থিতে ফলিতমাহ—তত্ত্তেতি। চকুষীত্যাদিনোক্তমেব পরিহারং প্রপঞ্চরতি—তক্ষেত্যাদিনা। তিমিরাদিদোৰ-ন্তংক্তো বিপরীতগ্রহাদিশ ন গ্রহীতুরাত্মনোহন্তীত্যত্ত হেতুমাহ—চক্ষম ইতি। তলাভেনাঞ্চনাদিসংস্থারেণ ভিমিরাদৌ পরাক্ততে দেবদত্তত প্রহীভূর্দোবাল্যমূপলভাং ন তত্ত তদ্ধপ্ৰম্ অতো বিমতং তম্বতো নাম্মধর্মো দোবছাং তংকার্যাদ্বা

সমতবদিতার্থ:। কিঞ্চ বিপরীতগ্রহাদিস্তব্তো নাত্মধর্মো বেদ্যভাৎ সম্প্রতিপন্নবদি-जार-मश्रुवण्याकि । किश्व बन्दनगर ७९ याणितिकरवनगर वंशा मौभानि ইতি ব্যাপ্তের্বিপরীতগ্রহাদীনামপি বেদ্যম্বাদতিরিক্তবেদ্যম্বে সংবেদিতা ন সংবেদ্য-ধর্মবান বেদিতৃত্বাদ্যপা দেবদত্তো ন স্বদংবেদ্যরূপাদিমানিত্যমুমানাস্তরমাহ-সংবেদ্যত্বাদেবেতি ৷ কিঞ্চ বিপরীতগ্রহাদয়গুরুতো নাম্মধর্মা ব্যভিচারিত্বাৎ কৃশ্বাদিৰদিত্যাহ - সূৰ্ব্বেতি। উক্তমেব বিবুণনাত্মনো বিপরীতগ্রহাদিঃ স্বাভাবিকো বাগন্তকো বেতি বিক্ল্যাদ্যং দূষয়তি—আত্মন ইতি। ছনির্ম্মোকোছবিদ্যাতজ্জধক্তেরসন্তাবাদিতি ভাবঃ। আগস্ককোছপি স্বতশেচদ-মুক্তি: পরতক্ষেৎ তত্তাহ—অবিক্রিয়স্তেতি। বিভূষাদবিক্রিয়ধাদমুর্জন্বাচ্চামা ব্যোমবন্ন কেনতিৎ সংযোগবিভাগাবন্থভবতি ন হি বিক্রিয়াভাবে ব্যোগ্নি বস্তুতঃ সংযোগৰিভাগা বসঙ্গ বাচ্চাত্মনস্তদসংযোগায় পরতোহপি তল্মিন বিপরীতগ্রহাদী-ভাৰ্থঃ। তত্তাত্মধৰ্মবাভাবে ফলিতমাহ—সিদ্ধমিতি। আত্মনো নিৰ্দ্ধক্ষে ভগবদমুমভিমাৰ—অনাদিস্থাদিতি। ঈশবৰে সত্যাত্মনোহসংসারিছে বিধি-শান্ত্রভাধ্যকাদেশ্চানর্থক্যাৎ তাত্ত্বিকমেব তহু সংসারিত্বমিতি শহতে—নম্বিতি বিদ্যাবস্থান্নামবিদ্যাবস্থানাং বা শাস্ত্রানর্থক্যমিতি বিক্র্যাদ্যং প্রত্যাহ—ন সার্কেরিতি। বিহুষো মুক্তন্য সংসারতদাধারয়োরভাবন্য সর্কবাদিনশ্বতত্বাৎ তত্ত্ব শাস্ত্রানর্থক্যাদি চোদ্যং মরৈব-ন প্রতিবিধেয়মিত্যর্থঃ। সংগ্রহবাক্যং বিবুণোতি —সার্কেরিতি। অভিপ্রায়জ্ঞানাৎ প্রশ্নে স্বাভিপ্রায়মাহ—কথমিত্যাদিনা। তর্হি মুক্তান্ প্রতি বিধিশাস্ত্রসাধ্যকাদেশ্চানর্থক্যমিত্যাশঙ্ক্যাহ---ন চেতি। ন হি ব্যবহারাতীতেষু তেষু গুণদোষাশঙ্কেত্যর্থ:। দৈতিনাং মতে মুক্তাত্মধিব অস্মৎপক্ষেহপি কেত্রজ্ঞস্যেশ্বরত্বে তং প্রতি চ শাস্ত্রাদ্যানর্থক্যং বিদ্যাবস্থান্বাদ্যা স্তিতমিতি ফলিতমাহ—তথেতি। বিতীয়ং দ্বয়তি—অবিদ্যোতি। দষ্টান্তেন বিরণোতি—যুথেতি। এনসংঘতিনামপি বিদ্যোদয়াৎ প্রাগর্থবঙ্গ শান্তাদেরিতিবিশেষ:। বৈতিভিরবৈতিনাং ন সাম্যমিতি শহুতে—নিম্বতি 🖟 অবস্থরোর্যম্বন্দে তন্মতে শাস্ত্রাভর্থবন্ধ ফলিত্যাহ—অত ইতি ৷ সিদ্ধান্তে ভ নাবস্থয়ো র্বস্তুতেতি বৈষম্যমাহ—অট্নৈতিনামিতি। ব্যবহারিকং দ্বৈতং তদ্মতেহিপ . বীকুতমিত্যাশক্ষাহ—অবিদ্যেতি। ক'ছিতহৈতেন ব্যবহারার তক্ত বস্তুতেত্যর্থঃ। াৰদ্বাৰীয়াৰ বস্তবাভাবে দোষাস্তরমাহ—বস্ত্রেতি 🕽 সাম্মনোস্তবতোহবস্থাভেদো বৈতিনামণি নাজীতি পরিহরতি—নেতি। অমূপপত্তিং দর্শন্তিত্বং বিকল্পন্তি — যদীতি। তত্রাভং দ্বরতি—যুগপদিতি। বিতীরেংপি ক্রমভাবিজ্ঞার-

বহুরোর্নিনিমিত্তবং সনিমিতত্বং বেতি বিকর্মান্তে সদা প্রসঙ্গাদবন্ধমোকরোর ব্যবস্থা স্থাদিত্যান—ক্রেমেতি। করাস্তরং নিরস্থতি—জ্যান্তর । বর্মশাবাবে ন পরমার্থে অস্বাভাবিকত্বাৎ স্ফটিকলৌহিত্যবদিতি স্থিতে ফলিতমাহ—ত্রথা চেতি। বস্তব্যাহ্রবস্তব্যাপ্রবস্তব্যাপ্রাদিত্যর্থঃ। ইতশ্চাবস্থয়ান বস্ত্র-দ্মিতাাহ — কিঞ্চেতি। অবস্থয়োর্বস্তব্দিছতা তরোর্বে গণভাবোগাদবাকে। ক্রমে বন্ধস্ত পূর্বজ্বং মুক্তেশ্চ পাশ্চাতামিতি স্থিতে বন্ধসাদিদকতং দোৰমাহ— বন্ধেতি ৷ তস্তাশ্চাকতাভ্যাগমক্তবিনাশনিবৃত্তরেহনাদিছমেইবামস্কবল্বঞ্চ মুক্তার্থ-মাক্তেমং তচ্চ যদনাদিভাবরূপং তল্পিতাং যথাম্মেতি ব্যাপ্তিবিক্লদ্ধমিতার্থ:। মোকত পাশ্চাত্যকৃতং দোষমাহ—তথেতি। সা হি আনাদিমাধ্যবাদাদিমতী পুনরাবৃক্ত্যনঙ্গীকারাদনস্তা চ তচ্চ যৎ সাদিভাবরূপং তদন্তবদ্যণা পটাদীজি ব্যাপ্তান্তরবিক্লমিতার্থ:। কিঞ্চ ক্রমভাবিনীভ্যামবন্থাভ্যামান্মা স্বধ্যতে ন বা প্রণমে পূর্ব্বাবস্থয়া সহৈবোভারাবস্থাৎ গছতি চেছত্তরাবস্থায়ামপি পূর্ব্বাবস্থানাদ-নির্দ্দোকঃ যদি পূর্ববিস্থাং তাকে বিরাবস্থাং গছতি তদা পূর্বত্যাগোর্তনাথ্যোরা-ন্মন: সাতিশয়ম্বালিত্যবামুপপত্তিরিত্যাহ—ন চেতি। আমনেহিবস্থাম্বর্গম্বন্ধো নান্তীতি বিতীয়নন্ত দ্বয়তি—অথেত্যাদিন।। তৰ্হি পক্ষব্যেহপি দোষাবিশে-বান্নাহৈ তমতা হুরাগে হেতুরিত্যাশঙ্ক্যাবিষ্ঠাবিষয়ে চেত্যুক্তং বিরুণোতি—ন চেতি। তদেব স্ট্যতি—অবিত্যাং হীতি। ফলং ভোক্তৰং কৰ্ত্বং, হেতৃ:, বৰা ফলং দেই-বিশেষো হেতুরদৃষ্টং তয়োরনাঝনোর্ভোক্তাহং কর্ত্তাহং মহুয়োহহমিত্যাভাত্মনর্শনমধি-कात्रकात्रनः एकनाविषम्विषयः विधिनित्यधभाविभिज्ञार्थः। विष्ट्रवामि मसूरवां १३-**মিড্যাদিব্যবহারাৎ তদ্বিবয়ং শালং কিং ন ভাদিভ্যাশস্যাহ—নেতি ∤** ভোক্ত ঘকর্ত্বাভ্যাং ব্রাহ্মণ্যাদিমতো দেহাৎ ধর্মাধর্মাভ্যাঞ্চ আত্মনোহরুদং প্রক্রো বিধিনিষেধাধিকারিত্বমুক্তফলাদাবাত্মীয়াভিমানাসম্ভবাদিতার্থঃ। प्रशासन्त्रअष्ठमर्निता न प्रशासायाच्यशैतिराजाञ्जूभभाषत्राज - नहीि । ন বিধিনিষেধাধিকারিতেত্যুক্তমূপসংহরতি—তুম্মাদিতি। জমিব বিষদ্বিষয়ভ্যমিপ মন্তব্যমুভয়োরপি শান্তপ্রবণাবিশেষাৎ ইত্যাশভ্যাহ---নহীতি। তত্ত্বা যশ্মিন্দেশে দেবদ বঃ স্থিতত্তিবে বর্ত্তমানঃ সন্নিতার্থঃ। নছ **एमनमरल नियुक्त निक्**मिरवाश्य कर्माविश्वयुक्ताश्यील अलिश्वरफ, मुख्य नित्ताशविषमानित्माकाा वाचानी वित्वकाश्रहणा नित्ताकाक्कारंकप्रिजाह-নিয়োগেতি। অবিবেকিনো নিয়োগধীর্তবতীতি 🔸 দৃহাস্তমূর্বী কলে হেতে

^{* &}quot;নিমোজাধী র্বতীতি" ইতি কচিং দৃশাতে।

চামুদৃষ্টিবিশিষ্ট্রস্যাবিত্বঃ সম্ভবত্যেব বিধিনিবেধাধিকারিম্বমিতি দার্ভাস্তিকমাহ-জ্ঞাতি। বিধিনিবেধশান্ত্রমবিহদ্বিষরমিতি বদতা শান্ত্রানর্থক্যং স্বাহিতং সম্রতি শাস্ত্রক্ত বিষদ্বিষয়দেনৈবার্থবন্ধং শক্যসমর্থনমিতি শঙ্কতে—নুম্মৃতি। প্রকৃতিরবিদ্যা ততো জাতো বো দেহাদাবভিমানাত্মা সম্বন্ধো বিভোদয়াৎ প্রাগমু-ভৃতত্তদপেক্ষয়া বিধিনা প্রবর্ত্তিতোহশ্মি নিষেধেন নিবর্ত্তিতোহশ্মীতি বিধিনিষেধ-বিষয়া সন্ত্যামপি বিভায়াং ধীর্হকৈবেত্যর্থ: । বিহুষোহপি পূর্বমাবিত্যং সম্বন্ধমপেক্ষ্য বিধিনিবেধবিষরাৎ ধিরমুক্তামেব ব্যক্তীকরোজি—ইটেডি। নর্যবিছয়ে মিথ্যা-ভিমানবন্ধ বিছয়ং দোহতুবৰ্ত্ততে তথা চাবিছসম্বন্ধাপেক্ষয়া ন যুক্তা বিছয়ো যণোকা ধীরিতি তত্ত্বাহ—যূপেতি। পিতা পুত্রো ভাতেত্যাদীনাং মিথোহন্তবদুষ্ঠাবপ্যস্তোন্ত-নিরোগার্থন্ত নিবেধার্থন্ত চ ধীন্দু ছা পিতরমধিক্বত্য বিধৌ নিবেধে বা তন্ত তদম্ভানাশকৌ পুত্রত তদবিবয়া ধীরিষ্টা ''অপাত: সম্প্রতি * র্যদা প্রৈয়ামন্ততেইণ প্রমাহ দ্বং বন্ধ দ্বং বঞ্জঃ দ্বং লোকঃ" ইত্যাদি সম্প্রতিপত্ত্যা 🕆 শ্রুত্যাশেষাত্র্যানভ পুত্রকার্য্যতাপ্রতিপাদনাং। পুত্রঞাধিক্বত্য বিধিনিবেধপ্রথক্তে তত্ত তদশক্তৌ পিতৃত্তপা ধীক্ষপগতা তথা ভ্রাত্রাদিষ্পি জ্বষ্টব্যম্ এবং বিছবো হেতুফলাভ্যামন্তত্ত্ব-मर्नत्तरुषि श्रीकानौनाविश्वरमशामित्रकामविक्रका विधिनित्यधार्था धीतिरुश्:। পুলাদীনাং মিথ্যাভিমানাঝিথো নিয়োগধীযুঁকো তৰ্দৰ্শিনস্ত দেহাদিসম্মাধীনা নিমোগধীরিতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। কিঞ্চ সর্বাপেকা চ বজাদিশ্রতেরখবদিতি সর্বাপেকাধিকরণে সমাগ জানভাদুষ্টসাখ্যছোক্তের্বি-ধিনিবেধার্থাস্থষ্ঠানং সম্যগ্জানাৎ পূর্কমিতি কুতো বিহুষত্তদমুষ্ঠানমিত্যাহ— সত্যদৃষ্টে সম্যগ্ধীদৃষ্টেরস্তি প্রতিপন্নেতি। চাঙ্গবুদেন্তদভাবাদ-वन्नवाजित्त्रकान्त्राः विविधियावाकार्क विधिनित्यधार्ष्ट्रानाः शूर्यः न त्रमान्धी-রিজাহ—ন পূর্ব্বমিতি। বিধিনিষেধরোর্বিষদ্বিষরতাষোগে ফলিতমাই— জন্মাদিতি। শান্তপ্তাবিদদ্বিষয়ত্বেনোক্তমর্থবন্ধমাকেপসমাধিভ্যাং প্রপঞ্চয়িতুমা-চকারাদুর্দ্ধমপ্রবৃত্তিরিতি সম্বধ্যতে। আত্মনো দেহান্ত-কিপতি--নিম্মতি। তিরেকং পশ্রতাং দেহাছভিমানরূপাধিকারহেছভাবাদ্বিধিতো য়াগাদাবপ্রবৃত্তি-নিবেধাচ্চাভক্যভক্ষণাদেন নিবৃত্তিরতত্তেষাং প্রবৃত্তিনিবুত্ত্যোরভারে দেহাদাবাত্মত্ব-মছভবভামপি ন তে যুক্তে তেষাং পারলৌকিকভোক্ত প্রতিপত্যভাবাদিত্যর্থ:। বিজ্ঞানবিজ্ঞাঞ্চ প্রবৃত্তিনিবৃত্তাভাবে ফলিতমাহ—অত্তইতি। আত্মনো দেহান্ত-

সশুভি: ইতি কচিং দৃশুতে

[🕂] সম্প্রত্তিপত্তা। ইতি চ কেচিং পঠস্থি।

তিরেকং পরোক্ষমপরোক্ষঞ্চ দেহাভাত্মতং পশুতঃ শান্তামুরোধাদেব প্রবৃত্তিনিবৃত্ত্যু-পপত্তেন শান্তানৰ্থক্যমিত্যুত্তরমাহ—্নেত্যাদিনা। প্রদিদ্ধিরত শান্তীরাভিমতা। এতদেব বির্থন অন্ধবিদো বা নৈরাত্মাবাদিনো বা পরোক্ষজানবতো বা প্রবৃত্তি-নিবুত্তী বিৰক্ষণীতি বিকল্পাত দুৰন্নতি—ঈশ্ববেতি। ন নিবৰ্ত্ততে চেত্যপি জুইবাম। ষিতীয়ং নিরম্ভতি তথেতি। পূর্ববদত্তাপি সম্বন্ধঃ। তৃতীয়মশীকরোতি— যুথেতি। বিধিনিষেধাধীনাং প্রাসিদ্ধিমতুরুদ্ধানঃ সন্ধিতি বাবং চকারান্ধি-বর্ত্ততে চেত্যমুক্কয়তে। ত্রন্ধবিদং নৈরাত্মাবাদিনঞ্চ তা**জা দেহাগুতিরিক্ত**-নাত্মানং পরোক্ষসপরোক্ষঞ্চ দেহাভাত্মতং পশ্রতো বিধিনিবেধাধিকারিতে সিদ্ধে ফলমাহ—অত ইতি। বিধান্তরেণ শান্তার্থানর্থক্যঞ্চোদরতি—বিবেকি-নামিতি। দুগা হি তেষাং বিধিনিবেধয়োরপ্রবৃত্তিন হি দেহাদিভ্যো নিম্নষ্টনাত্মানং দৃষ্টবতাং তরোহধিকারন্তেন তান প্রতি শাস্ত্রং নার্থবন্ধ চ দেং। গাত্মবদৃশন্তত্রাধিক্রিরন্তে তেষাং বদ্বদাচরতীতি **স্তারেন বিবেকিনোংসুগচ্চতাং** বিধ্যাদাৰপ্ৰব্ৰতেরতোহধিকাৰ্য্যাভাৰাদ্বিধ্যাদিশান্ত্ৰন্ত তদমুদারিশিটাচারন্ত চানর্থক্য-মিত্যর্থ:। কিং সর্কোষাং বিবেকিস্বাদধিকার্য্যভাবাদানর্থক্যং শারভোচ্যতে কিংবা কণ্ডচিদেব বিবেকিত্বেহপি তদ্মুবর্তিশ্বাদম্ভেবামপ্রবুতেরামর্থক্যং চোছতে তত্ত্ব প্রথমং প্রত্যাহ—ন কস্যচিদিতি। সমুব্যাণাং সহস্রেদ্বিতি স্থারেনোক্তমেব ক্ষুট্রতি—অনেকেম্বিতি। তত্তামূভবামুরোধেন দৃষ্টান্তমাহ—যুপ্তি। বিভীবং দুশরতি — ন চেতি। কিঞ্চ বিবেকিনাম প্রবৃত্তাবত্তেষামপ্য প্রবৃত্তিরিত্যাশঙ্কাং নিরসিতৃং খেলাদৌ তদপ্রবৃত্তাবপি ইতরপ্ররুত্তেরিত্যাহ—**অভিচরণাদৌ চেতি।** অবিবেকিনাং রাগাদিদারা প্রবৃত্তাম্পদং সর্বং সংগ্রহীতুমাদিপদম্। ইতক্ষ প্রবৃত্ত্যভাবেহপি নাজ্ঞপাপ্রবৃত্তিরিত্যাহ—স্বাভাবাদেচতি। বিধেকিনাং স্বভাবাখ্যাজ্ঞানকাৰ্য্যদ্বে ভগৰদ্বাক্যম**মুক্দর**তি—স্বভাবন্তিতি। প্রবন্ধে: প্রব্যুত্তরজ্ঞানজত্বে বিধিনিষেধাধীনপ্রবৃত্তিনিবৃত্ত্যাত্মকবন্ধস্থাবিভামাত্রবাদবিভদ-বিষয়ত্বং শাস্ত্ৰভ দিন্ধমিতি ফলিতমাহ—তস্মাদিতি। দৃষ্টদেবাছদারম্বনিধান যথাদুইন্তন্বিষয়ন্তদাশ্রয়: সংসারন্তথা চ প্রবৃত্তিনির্ত্ত্যাত্মকসংসারগ্রাবিষদ্বিষয়-দ্বাৎ তদ্ধেতৃৰ্বিধিশাস্ত্ৰন্তাপি তৰ্বিষয়ত্বনিত্যৰ্থ:। নৰবিদ্বা ক্ষেত্ৰন্তমাশ্ৰয়ন্তী স্বকাৰ্য্যং সংগারমণি তদ্মিমাধতে তেন তত্তৈব শাস্ত্রাধিকারিকং নেত্যাহ—নেতি। অবিভাদে: শুদ্ধে ক্ষেত্ৰজে বস্তুতোহসম্বন্ধেহণি তল্মিল্লারোপিতং তমেব হংশী-.করোতীত্যত্রাহ—ন চেতি। তদেব দৃষ্টান্তেন স্পষ্টরতি—নহীতি। কেত্রক্ত বন্ধতোহবিভাসম্বন্ধে ভগৰদ্বচোহপি ভোতকমিত্যাহ—আতইতি। কেন্দ্ৰভ

খররোরৈক্যে কিমিতাসাবাত্মানমহদিতি বুধানানোহপি স্বস্থেখরস্বনীশ্রোহসীতি ন বুখ্যতে ভত্তাহ—অফ্রানেনেতি। আত্মনো বস্তুতঃ বিষদস্কতববিরোধঃ স্থাদিতি চোদরতি —অপ্রেতি। এবমিত্যাভিজাত্যাদিবৈশিষ্ট্য-মুক্তম্, ইদমা কেত্রকলত্রাদি, পণ্ডিতানামপি প্রতীতং সংসারিষমিতি শেষ:। কিং পাণ্ডিভ্যং দেহাদাবাত্মদর্শনং কিংবা কৃটছাত্মদৃষ্টিরাহো সংসারিত্মাদিধীরিভি বিক্র্যান্তং নিরাকুর্বন্নাহ—শৃণিতি। তচ্চ বস্ততোহসংসারিবাবিরোধি প্রাতি-ভাসিক্ত্^{ন্ন}সংসারিদ্বনিষ্টমিতিশেষঃ। বিতীয়ং দূষয়তি—যদীতি। ন গি কৃট-স্থান্দবিষয়ং সংসারিদ্ধং প্রতীয়তে যেন বস্তুতোহসংসারি বং বিরুধ্যেত কৃটস্থান্দধী-বিক্লমারাঃ সংসারিত্ব-বুদ্দেরনবকাশিতাদিত্যর্থঃ। আত্মানমক্রিয়ৎ পশুতোৎপি ·**ৰুতো ভোগকৰ্ম**ণী ন স্থাতামিত্যাশঙ্কাহ—বিক্রিয়েতি। অবি'ক্রমাম্মবুদ্রের্ভোগ-কর্মাকাজ্বরারভাবে কণ্ড শাস্ত্রে প্রবৃত্তিরিত্যাশক্যাহ—অথেতি। ফলার্থিতা-ভাবাদ্বিহুবো ন কর্মণি প্রবৃত্তিরিত্যেবং স্থিতে সত্যনস্তরমবিধান্ ফলাথিষাৎ তহপায়ে কর্মণি প্রবর্ততে শাস্ত্রাধিকারীত্যর্থ:। বিহুষো বৈধপ্রবৃত্ত্যভাবেহপি নিবেধাধীননিরভেরপি ছর্কচন্ধাৎ ওক্ত নির্ত্তিনিঠন্বাসিদ্ধিরিত্যাশঙ্কাহ—বিচুষ ইতি। তৃতীৰস্থাপৰতি—ইদক্ষেতি। দিদ্ধান্তাদবিশেষমাশক্য ক্ষেত্রভাৎ বস্তুতো ভিন্নছেন তদ্বিবয়ন্তাঙ্গীকারাবৈয়বমিত্যাচ—ক্ষেত্রপ্তে। **অহংধীবদ্বক্তাত্মনো বন্ধত:** সংসারিত্বস্বীকারাচ্চ সিদ্ধান্তাব্ভেদোহতীত্যাহ—অহং **ত্বিতি। সংসারিম্বনেব ক্লোরম্বতি—স্তুখীতি**। সংসারিম্বন্স বস্তুদে তদনিবৃত্ত্যা পুমর্থাসিদ্ধিরিত্যাশঙ্ক্যাহ-সংসারেতি। কথং তর্পরমস্ত হেতুং বিনা কর্ত্তব্য-ষমিত্যাশব্যাহ—ক্ষেত্ৰেতি। কেত্ৰং জ্ঞাহা ততো নিকৃষ্টগু কেত্ৰজ্ঞগু জ্ঞানং কথং সংসারোপরতিমুৎপাদয়েদিত্যাশক্যাহ—ধ্যানেনতি। সংসারি হুমাত্মনো ·**বুধ্যমানস্ত তন্ত্রহিতাদীখরাদন্তত্তং** বক্তব্যমিতি বক্তব্রমিতিশ**ন্তঃ**। তদেবান্তবমুপপাদর্গতি —যুদ্রেচ তি। সম সংসারিণো সংসারী ধরত্বং কর্ত্তব্যসিত্যেবং যো বুধ্যতে বো ্বা ভথাবিধং জ্ঞানং তব কর্ত্তব্যমিত্যুপদিশতি স ক্ষেত্রজ্ঞাদীখরাদজ্যে জ্ঞেরোংখ্য-থোপদেশানর্থক্যাদিত্যর্থ:। আত্মা সংসারী পরস্থাদাত্মনোহগুত্ত ধ্যানাধীনজ্ঞানে-নেশ্রম: কর্ত্তবামিত্যেতৎ জ্ঞানং পাণ্ডিত্যমিতি মতং দ্বরতি—এবমিতি। "অর-नाषा वक" रेखााचाना वक्कप्रशंकितिरताशामिकार्थः। न मश्मःत्रस्र वस्त्रवाकीकातार তংপ্রতীত্যবস্থায়াং কর্মকাওভার্থবত্বং সংসারিত্বনিরাসেনাত্মনো ত্রহ্মতে ধ্যানাদিনা দাৰিতে মোকাবছায়াং জ্ঞানকাওভার্থবন্ধং তৎ কণং যথোক্তজ্ঞানবান পণ্ডিভাগ-সদক্ষেনাব্দিপ্যতে তত্ত্বাহ—সংসানেতি। করোমীতি মক্সমানো यः স পগুতাপ-

गमहेलि शृद्यंन गर्दः। कर्षकाश्वः हि क्ष्रिकः गर्गात्रिकारिक्का गांधामाधनः সম্বন্ধবাধপদার্থবিদিষ্ট: * জ্ঞানকাগুমপি তথাবিধং সংসারিছং পরাক্সভ্যাথগ্রৈকরসে প্রভাগ্রন্দণি পর্য,বক্তদর্থবন্তবেদিতার্থ:। কিঞ্চাত্মন: শাস্ত্রসিদ্ধ ব্রন্ধাত্ম ভারতা বন্ধ করররান্মহ। ভূষা লোকদরবহিভূতিঃ স্থাদিত্যাহ—আতাতেতি। "ক্ষেত্ৰজ্ঞাপি নাং বিদ্ধি" ইত্যানেন সর্বক্ষেত্রাস্তর্যামী পরো জীবাদন্তো নিক্ষচাতে ন জীবস্তেশ্বরত্বমত্র প্রতিপান্ততে তৎ কপনিখমান্দিশ্যতে তত্ত্বাহ—স্বয়**মিতি। কিঞ্চ** ত্ত্বমসীতিবং প্রসিদ্ধক্তেজ্ঞাত্ত্বাদেনাপ্রসিদ্ধ 🛦 তত্তেশ্বর্থনিহোপদেশ্বতঃ 🚁তং তক্ত হানিমশ্রক্ত চ জীবেশরয়োস্তাবিকভেদক করনাং কুর্বন্ কথং ব্যাসুচো ন শ্রাদিত্যাহ—শ্রুত্তিতি। নমু কেচন ব্যাখাতারো যপোক্তং পাণ্ডিত্যং পুরস্কৃত্য ক্ষেত্রজ্ঞকাপীত্যাদিলোকং ব্যাধনাত্তবন্তঃ ৩ৎ কথমুক্তং পাণ্ডিত্যমান্থাতুর্ব্যামূচ্বং তত্তাহ —তত্মাদিতি। ক্ষেত্রজ্ঞকাপীত্যত্র ক্ষেত্রজ্ঞেখনমোরৈক,ং স্বাভীষ্টং স্পষ্টনিভূং প্রভূত্ত মেব চোম্বমন্থলবতি—যুদ্ধক্রিমিতি। তাদ্বিকমেকত্বমতাদ্বিকং সংসারিদ্বমিত্যঙ্গী-ক্তোক্রেব সমাধিং স্নারয়তি—এতাবিতি। ঈশ্বরশু সংসারিত্বং সংসার্ব্য-ভাবেন সংসারাভাবশ্চেত্যুক্তৌ দোবে বিস্থাবিশ্বরোবৈ লক্ষণ্যেছপি কথং প্রভ্যুক্তা-বিতি পুদ্ধতি—কথমিতি। করিতসংসারেণ করনাধিষ্ঠানমন্বরং বস্তু বস্তুতো ন সন্ধ্বমিতি পরিহরতি—অবিদ্যেতি। তন্বিবরং করনাপাদমধিষ্ঠানমিতি বাবং। ক্সিতেনাধিষ্ঠানশু বস্তুতোহসংম্পর্শে দৃষ্টান্তং স্মাররতি—তথাচেতি। ঈষরত সংসারিত্বাপ্রসঙ্গং প্রকটীক্বত্য প্রসঙ্গান্তরনিরাসমন্ত্রসাররভি—সং-সারিণইতি। নৈতাবদবিভা সংসারং সাংসারিণঞ্চ করম্বতি **স্বতন্ত্রা তত্ত্ব**-ব্যাঘাতাৎ পারতন্ত্রে চাশ্রয়ান্তরভোবাৎ ক্ষেত্রক্ত তদ্বত্বে সংসারিত্মিতি শহতে —নশ্বিতি। ন চাবিভাবত্বমবিভাক তমনবন্থানাদিতি ভাব:। যত উৎপাতদংগ্রো-রগবদবিদ্যা কিং করিব,ভীতি তত্রাহ—তৎকুত্তঞ্চেত্ত। অবিদ্যাতজ্জরোজের: পান্নাত্মধর্মতেত্যুক্তরমাহ—্রেড্যাদিনা। তদেব প্রপঞ্চরতি—যাবদিতি। জেয়ত ক্ষেত্ৰধৰ্মছেংপি ক্ষেত্ৰহারা ক্ষেত্ৰজ্ঞত তৎক্বতদোষবন্ধেত্যাশস্থাই—ন চেতি। ক্ষেত্রতাপি জ্বেরবার ডেন চিতো বস্ততঃ স্পর্শোহন্তীভূযুপপাদরভি— যদীতি। ধর্মধর্মিছেন সংসর্গেহপি জেরছে কা ক্ষতিরিত্যাশস্থাহ – যদীতি। আত্মধর্মপ্রাত্মনা জেরত্বে অভাগি জেরত্বাগত্তা। কর্তৃকর্মবিরোধ: ग্যাদিজর্থ:। কিঞ্চ বিমতং ন কেত্ৰজ্ঞান্ত্ৰিতং তণ্বেভয়াদ্ৰপাদিবদিত্যাহ—কথংবেতি। কিঞ্চ মহাভূতানীত্যাদিনা জেরমাত্র্য্য ক্ষেত্রান্তর্তাবালাবিভাদেক ভূমর্মতেত্যাহ—

 [&]quot;…नवकः (वांवकवर्षविष्ठिः" हैं ि क्विंदि गठिख्नि।
 व्यक्तिं क्रिचेत्र

জ্যেকৃতি। কিঞ্চ এতদ্যোবেতীত্যুক্তৰাৎ কেব্ৰজ্ঞ জ্ঞাতৃত্বনিৰ্ণায় তত্ৰ জ্ঞেয়ং কিঞ্চিৎ প্রবিশতীত্যাহ—জ্ঞা**তিত্তত্বি**তি। কেত্রক্ষেত্রজ্ঞরোরেবং স্বাভাব্যে সিঙ্কে নিদ্ধং ক্ষেত্ৰধৰ্মনৰিম্বাদেরিভি ফলিতমাহ—ইত্যবধারিত ইতি। বিরোধাচ্চ ন ক্ষেত্ৰক্ষধৰ্মাৰম্ অবিষ্ঠাদে পিত্যাহ—ক্ষেত্ৰতে তেওঁতি। বিৰুদ্ধবাদিৰে মূলং দৰ্শগতি— অবিদ্যেতি। নাত্রপদশু ব্যাবর্জ্যং মানযুক্ত্যাখামবষ্টম্ভান্তরমিতি * বক্তুং কেবল পদম্। মণা হবিশ্বয়া † বিক্লমণি নির্বোঢ্ং শক্যতে তক্তাঃ স্বাতন্ত্র্যাভাষাচ্চিত্রে। **২ম্বজাবিত্মনানবেনাতদাশ্ররবাৎ , তত্তাবিত্তাস্বভাবতরা** তদাশ্রর **হ**ব্যাঘাতাদাশ্রয়-জিজ্ঞানরা পৃচ্ছতি—অত্রাহেতি। আশ্রমাত্রং পৃক্ততে তদ্বিশেষো বা, প্রথমে প্রশ্লভানবকাশবং মন্বাহ—যুক্তেতি। অবিভা দৃখ্যাদৃখ্যা বা দৃখ্যত্বে পারতন্ত্রাৎ কিঞ্চিরিষ্ঠত্বেনৈব ভদ্ষ্টেন প্রির্মাতঃ প্রস্তব্যমদুশ্তবে বা অপ্রকাশহাদসিদ্ধিরে স্থাদিত্যর্থঃ। বিজীয়মালম্বতে — ক্স্রেডি। অবিভাষা দৃশ্যমানবাদাশ্রয়বিশেব-ভাত্মনাহপি স্বামুভবসিদ্ধত্বাৎ প্রশ্নন্ত নিরবকাশতেত্যুত্তরমাহ—আন্ত্রেতি। প্রশ্লানর্থক্যং প্রশ্নবারা ক্লোরয়তি—কথমিত্যাদিনা। তণাপি কণং প্রশ্লাসিদ্ধি-ন্তভাৰ—ন চেতি। তদেব দুষ্টান্তেন স্পষ্টন্নতি—ন হীতি। দুষ্টান্তদাৰ্চান্তি-করোর্কৈবম্যৎ চোদয়তি—নশ্বিতি। অজ্ঞানাশ্রয়ত পরোক্ষতেহপি প্রশ্নরর্থক্য-মিত্যাহ—অপ্রত্যক্ষেণেতি। অবিষ্ঠাবতোহপ্রত্যক্ষরেছপি তেনাবিষ্ঠানম্বন্ধ সিদ্ধে প্রষ্টু, গুর প্রশ্নানর্থকাসমাধিন ক-িটদিতার্থ:। অবুদ্ধপরাভিসন্ধিঃ শঙ্কতে —অবিভায়া ইতি। অবিভাবতত্তৎপরিহারালাক্তেন প্রবতিতব্যমিত্যা*হ*— যুস্ত্রেতি। মনৈবাবিষ্ঠাবত্তাত্তৎপরিহারে ময়া প্রযতিতব্যমিতি শক্ষতে—নশ্বিতি। তৰ্হি প্ৰশ্নানৰ্থক্যমিতি দিদ্ধান্তে স্বাভিদদ্ধিমাহ—জানাসীতি। সাত্মানমবিষ্ঠাবস্তং জানন্ত্ৰপি তদ্বিষরাধ্যক্ষাভাবাৎ পৃচ্ছামীতি শক্তে—জানামীতি। অবিগ্ৰা-বভোহপ্রত্যক্ষরং বদতা তস্তাহমবিভাবানবিভাকার্য্যবস্থাদ্ব্যতিরেকেণ সুক্রাম্বর্দি-ভান্থনেরত্বনিষ্টনিতাভ্যূপেতা দ্বরতি — অনুমানেন্তি। আত্মনাংবিভাগৰন্ধগ্রহে কাহমুপপ্রিরিত্যাশক্য জাতৈবাত্মা স্বস্থাবিত্যাসম্বন্ধং বুধাতেহস্তো বা জাতেতি বিৰুদ্ধান্থং দূৰদ্বতি—নহীতি। তংকালে স্বস্তাবিদ্ধাং প্ৰতি জ্ঞাতৃৰাবস্থায়ানিতি বাবং। অবিষ্ঠাং বিষয়দেন গৃহীয়া তজ্জাতৃত্বেনৈবোপযুক্তস্যাত্মনওদ্যাঃ স্বাত্মনি কুতঃ সম্বন্ধজাভূম্বদেক্দ্য কৰ্মকৰ্জ্ৰবিরোধাদিত্যাহ—অবিদ্যায়া ইতি । বিতীমং নির্স্যতি—ন চেতি। যো গ্রহীতা স ন সম্ভবতীতি সম্বন্ধঃ। তদ্বিষয়মিতি

শাঁত্রশদন্ত ব্যাবর্ত্তাশান: বুক্তাখ্যসবইস্থান্তর্মতি কুত্রচিং।

[†] বন্ধা বিজ্ঞানা ইত্যাদি তত্ত্ব দৃশুতে।

জাতুরবিভারাত সমন্তভ্রমার্থ:। অনবস্থামের প্রপঞ্চরতি—যদীতি। আত্মনঃ স্বপরজ্ঞের রাযোগাৎ ত্রিষ্টবিভাসম্বন্ধস্যাপ্রামাণিকদাৎ নিত্যামূভবগম্যদে হিতে ফলিতমাহ—যদি পুনব্লিতি। ধদা চৈবং তদেত্যধ্যাহার্ধ,ম্। জ্ঞাতুরাত্মনো ন কিঞ্ছিৎ দ্যাতীত্যেতদম্যামাণঃ শঙ্কতে—নশ্বিতি। কিং জাভৃঃং জানক্রিয়া-কর্ত্বং জ্ঞানস্বরূপন্বং বা, নাগুল্ডদনভাপগ্যাৎ তৎপ্রযুক্তদোষাভাবাৎ, বিতীয়ে জাতৃঃভ ওপচারিকভার তৎক্তের দোষোহতীত্যাহ—নেত্যাদিন। অসত্যামণি ক্রিরায়াং ক্রিয়োপচারং দৃষ্টাস্তেন ক টুয়তি।—যুপ্তি। আত্মনি বস্তুতো বিক্রিয়াভাবে ভগবদমুমভিং দর্শন্তি—যুপাঽত্তেতি। গীতাশাল্তং সপ্তম্যর্থ:। স্বত এবায়নি ক্রিয়াখাত্মভাবো ভগবতা শাস্ত্রে যথোক্ত**থে**ব ব্যাখ্যাভনুসাভি-রিতি সম্বন্ধ:। কথং তর্হি ক্রিয়াদিরাম্মনি ভাতি তত্রাহ—অবিস্তেতি। বস্তুতো নান্ত্যাত্মনি ক্রিয়াদিরূপচারাত্ত ভাতি তথা তত্ত তত্ত্বাতীতপ্রকরণের ভগৰতা ক্বতো বত্ন ইত্যাহ—ত্রেথতি। ন কেবলমতীতেম্বের প্রকরণেমু বাস্তব-ক্রিয়াপ্তভাবাদাস্মন্তাধ্যাসিকা তদ্ধীককা কিন্তু বক্ষামাণপ্রকরণেছপি তথৈব ভগবদভি-প্রায়দর্শনং ভবিষ্যতীত্যাহ—উত্তরেষু চেতি। সাম্বানি বাস্তবক্রিরাছভাবেছ-ধ্যাসাচ্চ তৎসিদ্ধৌ কর্মকাণ্ডস্তাবিদ্বদধিকারিত্বপ্রাপ্তৌ বিশ্বান বজেত জ্ঞাত্বা কর্মারভেতেত্যাদিশাস্ত্রবিরোধঃ স্যাদিতি শঙ্কতে—হন্ত্রেতি। শাস্ত্রস্থাতরে-কবিজ্ঞানাভি প্রায়ন্তাদর্শনায়ামভীতাঅধীবিধুরত্তৈব কর্মকাঞাধিকারিতেভাঙ্গী-করোতি— সৃত্যমিতি । কথমজ্ঞান্যৈক কর্মাধিকারিছমূপপর্মীত্যাশস্থাই— এতদেব চেতি। জ্ঞানিনো জ্ঞাননিষ্ঠায়ামেবাধিকারো নিষ্ঠান্তরে १ জানিনো সংহারপ্রকরণে বিশেষতো ভবিষ্যতীত্যাহ—সুঠ্বেতি। তদেবা**হুকাম**ভি— সমাসেনেতি। জীববৃদ্ধানৈক্যাভাপগমে ন কিঞ্চিদব্ভমিভ্যুপসংহরতি-অলমিতি ॥২

অনুবাদ। এই প্রকারে কেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ উক্ত হইল। এইরপ জ্ঞান
মাত্রেই কি এই চুইটি পদার্থ জানিলেই হইল ? তাহা নহে। ইহা বলা হইতেছে
— যাহার স্বরূপ পূর্বের বলা হইরাছে, দেই ক্ষেত্রজ্ঞ ও বে আমি অর্থাৎ অসংসারী
পরমেশ্বর, তাহা তুমি জান। বাহা ব্রহ্মা হইতে স্তম্ব পর্যান্ত অনেক শরীরে নানা
উপাধি দ্বারা বিভক্ত বলিয়া প্রতীরমান, তাহা বাত্তবিক সকল প্রকার উপাধির
সহিত অসংস্প্রট; স্ক্তরাং উপাধিকত ভেদবিরহিত এবং সং অথবা অসং এই
প্রকার কোন শন্ধ-জনিত প্রতীতির অবিষয়, ইহাও তুমি জানিবে, ইহাই
(তগবানের) সভিপ্রার। হে তরতকুলোত্তব !—ক্ষেত্রত ও ক্ষেত্রজ্ঞ স্বরূপ ক্ষরীর

এই হুইয়ের বধার্থ স্বরূপ জ্ঞান ব্যতিরেকে অন্ত কোন জ্ঞাতব্য বন্ধ নাই : অতএব এই কেত্র ও কেত্রজের যে জ্ঞান অর্থাৎ যে জ্ঞানে এই কৈত্র ও কেত্রজের প্রকৃত-বরণ বুঝিতে পারা যায়, দেই জ্ঞানই যথার্থ জ্ঞান। ইহাই জামার (ঈশ্বর---বিষ্ণুর) "মত" অভিপ্রায়। "যদি সকল দেহেই এক ঈশরই বিশ্বমান, তিনি ভিন্ন অন্ত কোন ভোকো বিশ্বমান নাই" [ইহাই দিদ্ধান্ত হয়] তবে ঈশ্বরও সংসারী জীব হইয়া উঠিলেন মধবা ঈশ্বর ব্যতীত অন্ত কোন সংসারী ভোত্তা জীব না পাকার সংসারেরই অভাব হইরা উঠিন: এই ছুইটি আপত্তিই ইষ্ট হইতে পারে না। কারণ তাহা হইলে বন্ধ ও মোক এবং মোককারণ প্রতিপাদক শান্ত এই সকলই অনর্থক হইয়া উঠে এবং প্রত্যক্ষাদি প্রমাণের সহিতও বিরোধ উপস্থিত হর। কারণ এই সুখ ও হ:খ এবং তৎসাধন বরূপ যে সংসার, তাহারও উপলব্ধি, প্রত্যক প্রমাণবারা আমাদের হইয়া থাকে। জগতের বৈষম্য দেখিয়াও অনুমান করিতে পারা যায় যে, এই বিচিত্র সংসারের কারণ ধর্ম ও অধর্ম। আত্মা এবং ঈশ্বর যদি একই বস্ত হয়, তাহা হইলে এই সকলই অফুপপন্ন হয়। এই প্রকার আশকার সমাধান এইকণে বলা হইতেছে বে, এই প্রকার শকা হইতে পারেনা; काরণ বধন জ্ঞান ও অজ্ঞান এই হুইটির প্রভেদ আছে, তথন সকলই উপপন্ন হইতে পারে, [জ্ঞান ও অঞ্জান স্বরূপত: ও ফলত: অত্যস্ত বিভিন্ন প্রকার, তাহাও শ্রুতি ও স্থতিতে দেখিতে পাওয়া যার] "এই চুইটি বস্তু যাহা বিভাও অবিভা বলিয়া জ্ঞাত আছে, ইহাদের মধ্যে অত্যস্ত পার্থকা আছে;" 'ইহাদের গতি বিভিন্ন প্রকার।' এইপ্রকার বিদ্যা ও অবিদ্যার বভাব বর্ণন করিরা শান্ত্র তাহার ফলছরও যে পরস্পর বিরুদ্ধ, তাহাও দেথাইরাছেন; যথা ''[বিদ্যার ফল] শ্রের: (মোক), [অবিদ্যার ফল] প্রের: (মুখ)" ব্যাসও বলিবাছেন "এই হুইটি পরস্পর পুথক পথ" এই হুইটিই পথ ইত্যাদি। এই গীতা শান্ত্রেও হুই প্রকার নিষ্ঠার কণা বলা হইয়াছে। ভানের সাহায্যে কার্য্যের সহিত অজ্ঞানকে বিনাশ করা উচিত, ইহাও শ্রুতি পুষ্ঠির হারা বৃঝিতে পারা যায়। শ্রুতিগুলিও এইপ্রকার অর্থই প্রতিপাদন করিয়া থাকে; যথা ''এই जात्म यनि दुवा यात्र, जांश श्रेटलिंट भन्नमार्थ नांछ इत्र ; जांत यनि ना दुवा বায়, তাহা হইলে মহান্ বিনাশ।" "সেই আত্মাকে এইক্লপে বুঝিলে মরণ হইতে উদ্ধার পাওয়া বায়।" "আত্মতত্ত্বজ্ঞান ছাড়া মোক্ষণাভের অন্ত কোন পথ নাই" "বিধান কোন কারণেই ভর পান না।" আজা ব্যক্তির [বিষয়েও শ্রেতি বলিতেছে] যে ''ভাহার ভয় হয়'' "তাহারা অবিদ্যার ক্লেকে বর্ত্তমান

থাকে" "বে ব্রহ্মকে জানে সে ব্রহ্মই হয় আর বে ভাবে যে আমি পৃথক এ ব্যক্তি আমা হইতে পৃথক, সে বুঝেনা যে,আমরা যেমন পশুকে ভাবিয়া থাকি দেবতায়াও তাহাকে সেইরপ ভাবিয়া থাকেন।" "বে আত্মবিৎ সেই সর্ববিরূপ হয়" ইত্যাদি। এই বিষয়ে বহুতর স্থতিও আছে, বেমন, 'অজ্ঞানের ছারা জ্ঞান আবৃত, দেই কারণেই লোকনিচর মোহ-প্রাপ্ত হয়।" "বাহাদের মনঃ সাম্যে অবস্থিত, তাহারা এই দেহেই জন্ম হইতে পরিত্রাণ পার।" "[বিদ্বানগণ] সর্বত্তই বন্ধ দর্শন করিয়া পাকেন।" এই প্রকার আরও অনেক স্বৃতি আছে। যুক্তি মারাও [ইহা বুঝিতে পারা যায় যে] "সমুষ্যাগণ জানিতে পারিয়া সর্প কুশাগ্র এবং কৃপকে পরিত্যাগ করিয়া থাকে, কিন্তু কেহ কেহ আবার না ব্রিয়া পতিত হইরা পাকে। ইহা বারাই বৃঝিয়া লও বে, অজ্ঞান হইতে জানের ফল কত পৃথক্"। যে অবিধান অর্থাৎ বাহার দেহ প্রভৃতিতে আত্মবৃদ্ধি আছে. সেই রাগ ও ছেষের অধীন হইয়া সদসৎকার্য্যে প্রবৃত্ত হয় এবং পাপ ও পুণা অর্জন করে; তাহারই ফলস্বরূপ দে জন্ম ও মৃত্যু প্রাপ্ত হয়, অপর দিকে বাহারা আত্মাকে দেহ প্রভৃতি হইতে পুণগ্ভাবে দর্শন করেন, তাঁহাদের রাগ ও বেষ বিনষ্ট হয়; অভ্যাং তাঁহাদের ধর্ম বা অধর্মে প্রবৃত্তির উপশম হয়; তাহার ফলে ঠাহারা মুক্তি লাভ করেন, এই দিদ্ধাস্তটিকে কেহই যুক্তির বারা প্রত্যাধ্যান क्तिएक शास्त्र ना । हेरारे यनि शिक्ष रहेन, जारा रहेरन स स्रोत, स वाखितक দ্বার হইলেও অবিদ্যাক্ত্রিত যে সকল উপাধি ভাহাদেরই ভেদপ্রযুক্ত সে বেন সংসারী বলিয়া প্রতিপন্ন হইরা থাকে বিস্তৃতঃ সংসারী হইতে পারে না] বেমন আত্মাকেও লোকে দেহাদি হইতে অভিন্ন বলিয়া বুঝিয়া থাকে। সকল প্রাণি-গণের মধ্যেই দেখিতে পাওয়া যায় যে, দেহ ইন্সিয় প্রভৃতি অনাত্ম বস্তুতে আত্মভাব আরোণিত হইরাছে। ইহা বে অবিদ্যার কার্য্য, তাহা স্থির। বে্মন দেখিতে পাওরা বার বে, স্থাণুতে মর্থাৎ শুক বৃক্ষে দূর হইতে পুরুষবৃদ্ধি হয়; এই পকার বৃদ্ধি হর বলিয়া কি প্রকষের ধর্ম স্থাপুতে হয় বা স্থাপ্র ধর্ম প্রকষে হয় ? [কথনই নহে] त्रहे श्रकांत्र त्रहरक जान्ना वित्रा खम इत्र वित्रा, त्रह-धर्म जान्नात्र हरेल्ड পারে না বা আঁত্মার ধর্মত দেহে আসিতে পারে না; বেমন বরা ও মৃত্যু चित्रात्र कार्या, এই व्यष्ठ छेरा जाचात्र शर्म रहेर्ड शास्त्र ना, त्रहेत्रश स्थ इःथ ७ মোহ প্রভৃতিও অবিদ্যার কার্ব্য বলিয়া উহারাও কথন আঁদ্মার ধর্ম হইতে পারে ना। यमि वन, इंश इट्रेंटिज शास्त्र ना ; कात्रण, मुद्रीख ठिक इट्रेंटिक ना अधीर [देशारें वना वेदेरकाह (व] कान् ७ शूक्य (व्यर्थार शूक्यमंत्रीय) धारे हरेकि वक्कर

জের আর একজন জাতা, এই ছুইটির মধ্যে একের ধর্ম আর একটির উপর অজ্ঞানবশতঃ আরোপিত করিয়া থাকে, কিন্তু দেহ এবং আত্মা একটি জ্ঞের অপরটি জ্ঞাতা, ইহাদের মধ্যে প্রস্পরের ধর্ম প্রস্পরের উপর আরোপিত হইতেছে [দৃষ্টান্তরূপে প্রদর্শিত স্থাণু ও পুরুষের স্থায় অপর তৃতীয় ব্যক্তি কেইট আরোপ করিতেছে না]; স্থতরাং দৃষ্টান্তও মিলিতেছে না। এই প্রকার শঙ্কা করা ঠিক নহে; কারণ, দেহধর্ম যদি আত্মার হয়, ভাহা হইলে দেহের ক্সায় আত্মাও জড বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। স্থপ ও ছঃপ প্রভৃতি ধর্মা দেহের এবং দেহ জের পদার্থ [জ্ঞান নছে]; জের দেহের ধর্ম হুইয়াও সুথ হুঃথ মোহ প্রভৃতি কতকগুলি আত্মার ধর্ম হুইতে পারে, আর হ্বরা মরণ প্রভৃতি দেহধর্মগুলি আত্মার হইতে পারে না; এইপ্রকার বিশেষ করনা কেন [নৈয়ায়িকগণের মধ্যে] হয় ? তাহার কারণ নির্দেশ করা উচিত। ঐ সকল স্থুপ ফু: প মোহ প্রভৃতি ধর্ম্ম বে আত্মার হইতে পারে না, ইহা অনুমানের সাহায্যে বেশ বুঝিতে পারা যায়। কারণ জিরা ও মরণের স্তায়] ঐ সকল ধর্মত অবিভা দারা আত্মাতে আরোপিত। ঐ সকল ধর্ম হেয় ও উপাদের বাহা হেয় বা উপাদের, তাহা জড়ধর্মের মধ্যেই পরিগণিত। জ্ঞানরূপে আত্মাতে কোন হেয় বা উপাদের ধর্ম থাকিতে পারে না।] তাহাই যদি হইল, তবে কর্ত্তর এবং ভোক্তত্ব এই হুই প্রকার সংসার—জের অর্থাৎ জড় বস্তুরই ধর্ম, আত্মার ধর্ম নহে; কিন্তু অবিদ্যা দ্বারা ইহা জ্ঞাতা অর্থাৎ আত্মাতে আরোপিত হইরা থাকে। স্থতরাং এইরপ আরোপিত সংসার থাকার আত্মার কিছুই দূবিত হইতে পারে না। বেমন অজ্ঞ ব্যক্তিগণ আকাশে ভূতলের মলিনতার আরোপ করিয়া থাকে [তাছাতে আকাশ কি প্রকৃত পক্ষে মলিন হইয়া যায় ? কথনই নহে]। এই প্রকারই ৰদি সিদ্ধ হইল, ভবে সকল দেহে [সমভাবে] বিশ্বমান সেই একমাত্র ক্ষাতা ঈশবেরও কোন প্রকারে বাস্তবিক সংসারিছের গন্ধমাত্রও শক্তিত হুইতে পারে না। লোকে অবিষ্ঠা দারা আরোপিত ধর্ম্মের দারা কাছার কোন প্রকার উপকার বা অপকার কোন স্থানেই দেখিতে পাওরা বার না। धरे रय रेजःशृर्स धरे निकारि पाय अमर्नन कतिवात अन नमा रहेताहिन বে. স্বাপু ও পুরুষের দৃষ্টাস্তটি বিষম হইয়াছে (অর্থাৎ প্রকৃতির সহিত উহার সায়শ্য নাই, প্রত্যুত বৈষম্য আছে) তাহাও ঠিক নহে। কেন ? দুষ্টাস্ত ও मार्डे चिक वर्षा १ जेनाहरून ७ श्राकुछ श्रानत मानृगा, त्कवन व्यविश्वा शाता

य चर्म चार्त्वाभिक, कांशांक चवनवन कतिवां अपनिक श्रेत्रांक। [चर्थाः পুরুবের ধর্ম বেমন অজ্ঞানবশতঃ স্থাণুতে [শুক্রকে] আরোপিত হয়, সেইরপ দেহের ধর্ম জাগরণাদিও অবিস্থার দারাই আত্মাতে আরোপিত হয়. এই সাদৃত্য দৃষ্টান্ত ও দার্চান্তিকে ত স্পষ্টই রহিয়।ছে)। সেই সাদৃশ্যের ত আর বাধ হইতেছে না। তুমি ভাবিতেছ বে, জ্ঞাতাতে জ্ঞেয় বস্তুর সাদৃশ্য থাকিতেছে না [স্বতরাং দৃষ্টান্ত অসঙ্গত] তাহাতেও আমার বক্তব্য এই বে, তোমার নিজ মতের মধ্যে যে অসঙ্গতি, তাহা জরামরণাদি বারা দেখান হইয়াছে (অর্থাৎ বেমন জ্বামরণাদি দেহধর্মগুলি তোমার মতে আত্মাতে আরোপিত হয়, আর স্থবিদ্ব হঃধিদ্ব প্রভৃতি যে হেতৃ জ্ঞেয়, এইজস্ত দেহধর্ম হইলেও তোমার মতে উহারা দেহধর্ম নহে; কিন্তু আত্মার স্বতঃসিদ্ধ ধর্ম, ইহা কি প্রকার সম্ভবপর 📍 স্থথিত্ব বা ছঃখিত্ব মধন জের, তথন উহা জের বস্তুরই ধর্ম ; স্থভরাৎ উহারা কিছুভেই আত্মার ধর্ম হইতে পারে না); ক্ষেত্রজ্ঞ ঈশ্বরে যথন অবিদ্যা রহিয়াছে, তথন সংসারিম্বও থাকিবে, এই প্রকার যদি শল্পা হয়, তাহাও ঠিক নহে, কারণ-অবিভাও তামস ্রিতরাং বান্তব পক্ষে ইহাও জড়ের ধর্ম: আত্মাতে কোন প্রকারেই জড়ধর্ম থাকিতে পারে না; এইজন্ম অবিয়াও আত্মার আরোপিত ধর্ম, বাস্তব ধর্ম নছে] তমো ওণের কার্যাম্বরূপ যে প্রতীতি বা আন্তর বৃত্তি, তাহাকেই অবিষ্ঠা কহা যায়—এই তামস প্রতীতি বা অবিন্ঠা কি করে ? ইহা অস্ত वश्राक षाग्र প্रकारत मिथाहेन्ना थारक,—हेश मश्मारतत उर्थामन करत अवर ইহা প্রক্লত বন্ধর স্বরূপ গ্রহণ করিতে দেয় না। বেখানে বিবেক-প্রকাশ (অর্থাৎ বস্তুতজ্ঞান) বিগুমান আছে, দেখানে অবিগ্রা নাই। আবরণ-খভাব যে তিমিরাদি দোব, তাহার সম্ভাবেই বিপরীত জ্ঞান, সংশর বা অজ্ঞানরূপ ত্রিবিধ অবিভা উপলব্ধ হয়। এখানে কেহ এরূপও বলিভে পারেন বে, এরপ, যদি হইল, তবে অবিদ্যা ত জ্ঞাতৃপুরুষেরই ধর্ম হইরা উঠিল। এই প্রকার বলাও ঠিক নহে, কারণ—তৈমিরিকত্ব প্রভৃতি বে দোষ (অর্থাৎ রার্তকাণা হওয়া) তাহা চকু অর্থাৎ জ্ঞানের করণ ইক্রিয়েই উপলব্ধ হর [উহাকে ত ভাতার ধর্ম বলা যায় না]; আরও যে তুমি ভাবিতেছ— "অবিভা ত জ্ঞাতার ধর্ম, অবিভারণ ধর্ম বাহাতে আছে, সেই ত সংসারী; তাহাই বৃদি হইল, তবে যাহা বলিয়াছ, ক্ষেত্ৰক্ত (জীব) ঈশ্বর ছাড়া আর क्ट नरह अवर क्लाइ वर्धन मेर्चत, जर्धन जाहात मश्मातिष किहूराई हहेराड

পারে না,—ইহাও একান্ত অমুপপন।" তাহাও ঠিক নহে, কারণ, বিপন্নীত জ্ঞানের কারণ যে সকল তিমিরাদি দোব, তাহা করণত্বরূপ চক্ষুতেই থাকে [জ্ঞাতাতে থাকে না]; স্থতরাং বিপরীত প্রতীতি বা তাহার কারণ ভৈমিরিকত্ব প্রভৃতি দোব জাতার ধর্ম নহে ইহা জানকরণ ইঞ্জিরেরই ধর্ম্ম] [কেন জ্ঞাতার ধর্ম নহে ?] চিকিৎসার সাহাব্যে চকুর সংস্কার ৰারা তিমিরাদি চকুর দোব অপনীত হইলে, আর ত জ্ঞাতার সেই প্রকার পুর্বের ক্লার বিপরীভজ্ঞানাদিরণ অবিদ্যা উপলব্ধ হর না; স্থভরাং ঐ ভিমিরাদি দোব চকুরই ধর্ম, জ্ঞাতার ধর্ম নহে: এইরূপ সর্বব্রেই বিপরীত-গ্রহণ, সংশয়, এবং অগ্রহণ-এই তিন প্রকার অবিষ্ঠা কোন করণেরই ধর্ম, উহা জ্ঞাতা কেত্রজের ধর্ম হইতে পারে না। স্থথঃখ প্রভৃতি বধন জ্বের, তথন উহারা প্রদীপ-প্রকাশের ক্রায় আত্মার ধর্ম হইতে পারে না। যাহারা জের, তাহারা কথনই আপনার হারা জের হইতে পারে না; তাহারা নিজের প্রকাশের জন্ত আত্মবাতিরিক্ত প্রকাশের অপেকা করিয়াই থাকে। বে সময় সকল প্রকার ইন্দ্রিরের সহিত আত্মার বিয়োগ হয় অর্থাৎ কৈবল্য লাভ হয়, সে সময় আত্মাতে কোন প্রকার অবিফাদি দোব থাকে না; ইহা সকল বাদিগণই স্বীকার করিয়া থাকেন। অন্থির উষ্ণতা থেমন স্বতঃসিদ্ধ ধর্মা, এইরূপ সুথতঃথ ও অবিষ্ঠাদি যদি আত্মার স্বতঃসিদ্ধ ধর্ম হইত, তাহা হইলে অগ্নির যেমন উঞ্চতা কথনই বিনষ্ট হয় না. সেইরূপ আত্মারও ঐ সকল ধর্ম কথনও বিনষ্ট হইতে পারিত না। আত্মা আকাশের ন্তার অবিকার, সর্বব্যাপক; স্থতরাং আত্মা অপরিচ্চিত্র; এই কারণে আত্মার সহিত কোন পদার্থের সংযোগ ও বিয়োগ এই উভয়টিই অমুপপন্ন। এই সকল যুক্তির সাহায্যে ক্ষেত্রজ্ঞজাবের ঈশ্বরম্বভাব সর্ব্বদাই সিদ্ধ হইতেছে। "আত্মা অনাদি" "আত্মা নিগুর্ন" ইত্যাদি ভগবানের বাক্যের দারাও আত্মার यनि वाखिविक मश्मात ও मश्माती कीव त्कर ना तरिन, छत्व वस्तामात्कत वावशाभक भाजाछ नित्रर्थक हरेन, रेशरे छ लाव इरेटछ ह। विरे श्रकात শহাও ঠিক নহে; কারণ, আত্মার অমরত থাঁহারাই অঙ্গীকার করিয়াছেন, उाँशता मकरनरे এरे श्रकात भारत्वत्र नितर्धकपत्रश साथ मानिता नरेत्राह्म। একজন-আত্মবাদী কেন সেই দোষের উদ্ধার করিতে প্রয়াস করিবেন ? কিরূপে সকল আত্মবাদিগণ এই দোষটি মানিয়া লইয়াছেন ? [ভাহাও বলি]---সকল

जाजावीनिशलबर हे हेरा में उत्तर यथन याचा मूक रहेता. उथन त्महे मूक जाजाव পক্ষে সংসার ও সংসারী এই প্রকার বাবহারের ঐকাস্তিক অভাব হইরা থাকে। তাহাদের শাস্তাদির নিরর্থকত্বরূপ দোষকেই তোমরা ত মানিতে চাহনা, জীবাত্মা-গণের সহিত বাস্তবিক ঈশ্বরের একতাবাদিগাণের মতেও সেইরূপ শাস্তানর্থকারূপ ্দাব হউক, তাহাতে কতি কি ? অবিভাবস্থার শাস্ত্রাদির সার্থকতা আছে। বেমন বৈতবাদিগণের মতে আত্মার বন্ধাবস্থাতেই শাস্ত্রাদির সার্থকতা আছে. কিছু দুক্তাবস্থাতে শাস্ত্রাদি প্রমাণ নিরর্থক, সেইরূপ অবৈতবাদীর মতে অবিজ্ঞা-বন্ধার শাস্ত্রাদির সার্থক্য আছে, পরমার্থতঃ শাস্ত্রাদিপ্রমাণ নিরর্থক। এই স্থলে এইরূপ শঙ্কা করিতে পারে যে, আমাদের সকল হৈতবাদিগণের মতেই আত্মার বদ্ধাবস্থা ও মুক্তাবস্থা এই হুইটি যথার্থই সত্যা, ইহা মিখ্যা নছে; স্থতরাং হের [গ্র:খ] উপাদের [স্থাবা গ্র:খ-নিবৃত্তি] এবং উহাদের সাধন, এই সকল বস্ত যথন দ্ভাস্তাই বিভাষান আছে, তথন বন্ধমোক্ষ-ব্যবস্থাপক শাল্লের সার্থক্য আমাদের মতে ১ইতে পারে. কিন্তু বাহারা অবৈতবাদী, তাহাদের আত্ম-ব্যতিরিক্ত যখন সকল বস্তুই অসং-কারণ আত্মব্যতিরিক্ত সকল বস্তুই অবিদ্যা-প্রস্থত এবং মাত্মার বদ্ধাবস্থা যে হেতু অবিস্থাকার্য্য, এইবস্ত উহাও অপার-মার্থিক অর্থাৎ মিণ্যা, তথন পাল্কের বিষয় একেবারে মিথ্যা হইল; স্থতরাং অবৈতবাদীর মতে শাস্তানর্থক্যরূপ দোষ হস্পরিহর হইরা উঠিতেছে; বৈত-বাদীর মতে ঐ দোব হইতেই পারিতেছে না। এইপ্রকার শঙ্কাও ঠিক নহে; কারণ আত্মার বন্ধ ও মোক এই হুইটি বিভিন্ন অবস্থা কিছুতেই হইতে পারে না। আছো আরও জিজ্ঞান্ত এই যে, আত্মার যে বন্ধ ও মোক্ষরপ হইটি অবস্থা, তাথা কি এক সময়েই আত্মাতে থাকে ? অথবা ক্রমে হয় ? বন্ধ ও মোক্ষ এই ছইটি অবস্থা পরস্পার বিক্রম্ব; স্কুতরাং এই ছুইটি অবস্থা একই সময়ে একই আত্মাতে থাকিতে পারে না; বেমন ম্বিতি ও গতি এই ছুইটি বিৰুদ্ধ ধৰ্ম এককালে এক বস্তুতে থাকিতে পারে না। ব্দি বল, এই বন্ধ ও মোক্ষরপ অবস্থাবর আত্মাতে ক্রমিক হয়, তাহাও ঠিক নহে: কারণ বন্ধ বাদ বিনা কারণে আত্মার হয়, তাহা হইলে আত্মার আর মুক্তির সম্ভাবনা থাকে না; কারণ, কারণ না থাকিলেও আবার বন্ধ হইতে পারে। ধাদ বল, বন্ধ আত্মব্যতিরিক্ত অন্ত কোন কান্তণের কাৰ্য্য, তাহাও হইতে পারে না; কারণ তাহা হইলে বন্ধ আত্মার স্বাঞা-विक थन हहेग ना ; खुछतार वस जानात्रमाधिक हहेता छेठिंग। बस्राक

যদি অপারমার্থিক অর্থাৎ মিথ্যা বলিয়া মানিয়া লও, তাহা হইলে তোমাদের নিজের সিদ্ধান্তের হানি হইল কারণ বৈতবাদীর মতে আত্মার বন্ধ পারমার্ধিক, মিথাা নহে]। আরও একটি কথা এই যে, আত্মার এই বদাবহা ও মুক্তাবস্থার মধ্যে কোন্টি পূর্বে, ইহা নিরূপণ করিতে হইলে, व्यवश्र विद्यावश्राहे त्य भूकी हरेएं निष्क हेशहे कन्नना कविएक हहेत्व; छत्वहे ফলে দাঁড়াইতেছে যে, আত্মার বদ্ধাবস্থা অনাদি অথচ ইহার অন্ত আছে, এই প্রকার কল্পনা প্রমাণ-বিরুদ্ধ; [কারণ বে বস্তর আদি নাই, তাহার অন্ত কিরুপে সঙ্গত হইতে পারে ৷] সেইরূপ ইহাও করনা করিতে হইবে বে, আত্মার মুক্তাবস্থা আদিমতী এবং অস্তহীনা; এই প্রকার কর্মনাও প্রমাণবিরুদ্ধ [কারণ যাহার আদি আছে তাহার অন্ত নাই, ইহা কি প্রকারে সম্ভবপর হইবে ?] তবে যদি বল আত্মার অনিভ্যতারূপ দোষ পরিহার করিবার জন্ম তাহার এই প্রকার বন্ধ ও মোক্ষরণ হুইটি অবস্থা পারমার্থিক বলিয়া স্বীকার করিব না, তাহা হইলে দ্বৈতবাদিগণের মতেও বন্ধনোকাদিশাল্রের অনর্থকতাদিরপ দোষ অপরিহার্য হইরা উঠিল। এইরপ ছলে যে দোষ উভয়পক্ষেই সমান হইয়া উঠিল, তাহাকে খণ্ডন করিবার জন্ম অবৈতবাদী কেন প্রবাদ করিবে ? স্থতরাং অবৈতবাদীর পকে এ দোষ পরিহর্তব্য হইতেছে না। বাস্তবিক শাস্ত্র যে একেবারেই অনর্থক, তাহা নহে; কারণ লোকপ্রসিদ্ধ যে সকল অনাত্মজ্ঞ পুরুষ, শাস্ত্র তাহাদের জক্তই শার্থক; কারণ, যাহারা অবিধান অর্থাৎ অনাত্মজ্ঞ, তাহারাই কার্য্য ও কারণ অনাত্ম হইলেও তাহাতেই আত্মদৃষ্টি করিয়া থাকে। যাহারা বিদ্যান আত্ম-ভবজ, তাহাদের পক্ষেই শাস্ত্র নিরর্থক। কারণ, বিদান্গণ কার্য্য ও কারণ হইতে আত্মাতে পৃথক বলিয়া বুঝিয়া গাকে; স্থতরাং সেইরূপ জ্ঞান থাকিতে তাহারা কথনও কার্য্য ও কারণে আত্মবৃদ্ধি করিতে পারে না। যে অত্যস্ত ষ্ট ও উন্মত্ত, সেও-জল ও অগ্নিতে, অথবা ছাগা ও প্রকাশে, ঐক্যবৃদ্ধি করিতে পারে না। যে বিবেকী, সে যে এইরূপ ভ্রান্তিমান্ হর না, ভাহা कि आत्र बनिया मिएछ इटेर्स ? जत्तर निष्क इटेन स्व - स्य वाक्ति आधारक সকল প্রকার কার্য্য ও কারণ হইতে পৃথক স্বরূপ বলিয়া বুঝিতে পারিয়াছে, তাহার পক্ষে বিধি ও প্রতিবেধশান্ত অনর্থক। দেবদত্ত। তুমি এই কার্য্যটি क्त्र, अहे. विनिष्ठा (क्ह [मिवमखरक] क्लान कार्या नियुक्त क्लिम विकू-मिख रम्थात्न थाकिया थे वाका [क्रांतिल क्षेत्रहे त्रहं कार्या जामि

নিযুক্ত হইয়াছি,—এই প্রকার বিবেচনা করে না। কিন্তু সে যদি সেই নিয়োগের পাত্র দেবদত্ত হইতে আপনাকে তিম বলিয়া বোধ না করে, তাহা হইলেই তাহার একপ বোধ হইতে পারে। দেইরূপ কার্য্য ও কারণ-সজ্বাতে বাহার আত্মবোধ আছে, সেই ব্যক্তি বিধি ও নিষেধ-শাস্ত্রের অধিকারী বলিয়া আপুনাকে বোধ করে— যাহার কিন্তু কার্য্য কারণ হইতে আত্মাকে পৃথক বলিয়া বোধ জন্মিরাছে, সে কথনই ঐক্লপ বোধ করিতে পারে না]। এই প্রকার ফল ও হেতুর [ভোক্তম্ব ও কর্ত্তম আত্মাতে আরোপিত] ছইরা পাকে। একণে এইপ্রকার শবা হইতে পারে যে, দেহ প্রস্তৃতি প্রাক্তত বস্তুতে অভিমান প্রযুক্ত সাধারণ লোকের এই প্রকার কর্তৃত্ব ভোকৃত্ব হইতে পারে বটে, কিন্তু শান্ত্রীয় বাবহার স্থলেও ত এই প্রকার দেখিতে পাওয়া যায়; কারণ, শাস্ত্রীয় ব্যবহারে লোকের যে প্রবৃত্তি হয় ভাহাতে দেহাদি হইতে আত্মার পুণক্তভান পাকিলেও বে প্রবৃত্তি হয়, ভাছা ভ আর অফুচিত প্রবৃত্তি এ কণা বলা ঘাইতে পারে না। শাস্ত্রীয় ব্যাপারে ত বিখান লোকই প্রবৃত্ত হইরা পাকেন এবং শান্ত্রনিষিদ্ধ ব্যাপার হইতে নিবৃত্তও হইয়া থাকেন; অণচ এই প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তিকালে তাঁহার দেহাদি ছইতে আত্মার পার্থক। জ্ঞান নাই, তাহাও বলিবার যো নাই। তবে কি করিরা এই সিদ্ধান্ত সঙ্গত হইতে পারে বে, দেহাদি হইতে আত্মাকে পুথক বলিয়া বুঝিতে পারিলে আর সৎ বা অসৎ কার্য্যে লোকের প্রবৃত্তি বা নিবৃত্তি সম্ভব হইতে পারে না। ইহাও ত দেখিতে পাওয়া বার বে. পিতা আপনাকে পুত্র হইতে পুণক বলিয়া জানিয়াও পুত্রের জন্ম কার্য্য করিতে প্রবৃত্ত হয়, পুত্রও দেইরূপ পিত। হইতে আপনাকে পুথক বলিয়া জানিয়াও পিতার জন্ম কার্য্য করিতে প্রবৃত্ত হইয়া পাকে; স্থতরাং পৃথক্ত জান থাকিলেই যে প্রবৃত্তি বা নিবৃত্তি হইতে পারে না, এই প্রকার সিদ্ধান্ত প্রমাণসিদ্ধ হইতে পারে না। এই প্রকার শহাও ঠিক নহে: কারণ বাস্তবিক দেহ প্রভৃতি হইতে আত্মার পুণক্ষ জ্ঞান হইবার পূর্বেই কার্য্য ও কারণে আত্মাভিমান সম্ভবপর—[দকল প্রকার জের বস্তু হইতে পুঞ্জত্ব জ্ঞান হইলে কোন প্রকারেই ঐ জাতীয় অভিমান পাকিতে পারে না]। বিহিত ও প্রতিবিদ্ধ কর্ম্মের অমুষ্ঠানও ত্যাগ করিলে কালক্রমে চিত্ত বিশুদ্ধ হইলে. তবে কার্য্য ও কারণ হইতে আত্মার পৃথক্ত জ্ঞান হয়, ভাছার शृदर्भ रत्न ना ;-- ञ्चा तार हेरारे निक स्टेटिंग्स एवं, विविभाद ७ व्यक्तिसम

भाख कानामुक वाकित्वरे विषय कतिया थातक विश्वर सनामुक बाकिरे শান্ত্রীর বিধি ও নিষেধের অধিকারী]। একণে এরূপ শহা হইতে পারে বে—"বর্গকাম ব্যক্তি যাগ করিবে" "কলঞ্জ ভক্ষণ করিবে না" ইত্যাদি বিধারক ও প্রতিবেধক শাস্ত্রে আত্মতব্জ ব্যক্তির অধিকার নাই, তাহা ছাড়া বাহারা কেবল দেহ প্রভৃতিকেই আত্মা বলিয়া বিশ্বাদ করে, ভাহা-দেরও উহাতে অধিকায় নাই। তাহাই যদি হইল, তবে অমুষ্ঠান-কর্ত্তার অভাব হওয়াতে ঐ সকল বিধি ও নিবেধ-শাস্ত্র নিশুয়োক্তন হইয়া পড়িল। ইছার উত্তর এই যে, এই প্রকার শ্রাও ঠিক নহে : কারণ-লোকিক প্রসিদ্ধি বেমন দেখিতে পাওয়া যায়, তদহুসারে ঐ সকল শাস্ত্রীয় অর্থে লোকের প্রবৃত্তি বা নিবৃত্তি উপপন্ন হইতে পারে [অর্থাৎ বাহার ছুল দেহে আনু-দৃষ্টি নাই, অথচ পারলোকিক আত্মসতায় বিশ্বাস আছে, সেই বাক্কিই শান্তীর ৰিধি ও নিষেধে অধিকারী হইবে] জীব ও ঈশ্বরের একত জ্ঞান বাহার ছইরাছে, সে কথনই বিধি বা নিষেধ শাল্রের অফুসারে প্রবৃত্ত হইতে পারে না। এবং যাহার আত্মার অন্তিত্বে বিশ্বাস নাই বিশ্বাৎ এই স্থলদেহের বিনাশকেই যে আত্মবিনাশ বলিয়া বিশ্বাস করে] সে "পরলোক নাই" এই ভাবিয়া— শাল্লীয় উপদেশের অফুদারে প্রবৃত্ত হয় না। এই ছই প্রকারের মতুল ছাড়া অর্থাৎ বাহার দেহকেই আত্মা বলিয়া বিশাস এবং বাহার জীব ও প্রমাত্মার মধ্যে কোন পার্থক্য নাই এই প্রকার বিশ্বাস হইরাছে, এই ছই প্রকার মমুদ্য ব্যতিরেকে] লৌকিক প্রসিদ্ধির অমুসারে [যে চলে সেই শাস্ত্রীর কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হয় বিধি ও প্রতিবেধ শাস্ত্রের সার্থক্য অন্ত কোন প্রকারে উপপন্ন হইতে পারে না: এই জন্ত আত্মার পারগৌকিক সন্তার অনুমান করিয়া যে সামান্তভাবে পরকালে আত্ম-সন্তার বিশাস করে. অবচ আত্মার প্রকৃত অরপ কি তাহা ভাল করিয়া বুঝে না, তাহার যদি শাস্ত্রে কথিত কর্মফলের প্রতি অর্থাৎ বর্গস্থাধের প্রতি আকাজ্ঞা হয় এবং শাস্ত্রীয় সিদ্ধান্তে শ্রদ্ধা থাকে, তাহা হইলেই সে শাস্ত্রীয় কর্ম্মের অমুষ্ঠান ক্রিতে প্রবৃত্ত হয়, ইহা ত আমাদের সকলেরই প্রত্যক্ষিত্র; স্বতরাং ্বিধি প্রতিবেধ শাল্কের অনর্থকতা হইতে পারে না। যদি বদ, বাহারা वित्वकी वर्षाए वाचाववक, जाशासत वाधाविक स्मित्रा नाशांत्रण लाटक শাস্ত্রীর কর্মে মার প্রবৃত্ত হইবে না; স্থতরাং বিধি প্রতিষেধ শাস্ত্র মাবার অনর্থক হইয়া পড়িতেছে: এই প্রকার আশহাও ঠিক নহে; কারণ, জগতে

অতি অর ব্যক্তিরই বিবেক অর্থাৎ আত্মতত্ত্তান হইতে পারে ৷ এখনকার স্তার পূর্বকালেও অনন্ত প্রাণিগণের মধ্যে কোন একজন ব্যক্তিই বিবেকী ছিলেন। [আরও একটি কথা এই] বাহারা মৃঢ় [অর্থাৎ খোর সংসারী] ভাহারা বিবেকীর অমুবর্ত্তন করে না, তাহাদের প্রবৃত্তি [স্বভঃসিদ্ধ] রাগ ও বেব প্রভৃতি দোবের ফল। কারণ, সচরাচর দেখিতে পাওরা বার, লোকে অভিচার প্রভৃতি নিন্দিত কার্য্য করিতেও প্রবৃত্ত হইরা থাকে। লোকের প্রবৃত্তি সভাবনশতঃই হইরা থাকে। এই গীতাতেই নলা হইরাছে বে. শ্বভাবই প্রবৃত্ত হইরা থাকে।" সেই কারণে এই সংসার অবিক্যা মাত্র, এই সংসারে বিষয় গুলি বে ভাবে দৃষ্ট হয়, বাবহারকারে সেইভাইে মানিয়া লইতে হয়। এই ক্ষেত্রত নিজ স্বরূপে বর্জদা এক। স্লুতরাং অবিদ্যা বা অবিদ্যাকার্য্য সংসার –সেই একমাত্র সম্বন্ধ কেত্রজের সহিত সম্বন্ধ হইতে পারে না: কারণ মিগাঞান কথনই প্রমার্থ বস্তুকে দৃষিত করিতে পারে না। সঙ্গ-সরীচিকার কল্পিড জল কথনই মক্ষভূমিকে কর্দমে পরিণত করিতে পারে না। এই জন্তই বলা হইয়াছে বে, "আমাকেই ক্ষেত্ৰজ্ঞ বলিয়া জানিবে" "অজ্ঞানের ৰারা জ্ঞান আবৃত" ইত্যাদি। একণে জিজ্ঞাসা হইতে পারে বে, বেমন "আমি এই" "ইহা আমার" এই প্রকার ভ্রমে সংসারী জীব পতিত. সেই প্রকার পশ্তিতগণেরও এই সকল ভ্রম কেন হর ? ইহার উদ্ভর শুন। সেই সকল পঞ্জিতের পাণ্ডিতা কি ? তাহা দেহে আত্মদৃষ্টি ছাড়া সম্ভ কিছুই নছে। বদি ভাহারা ক্ষেত্রজ্ঞকে অবিক্রিয় বলিয়া জানিত, তাহা হইলে নিশ্চরই তাহারা ভোগ বা ভোগ সাধন কর্ম্মের আকাজ্ঞা করিত না অর্থাৎ 'আমার ভোগ হউক', 'ভোগসাধন কর্ম আমার সম্পন্ন হউক', এইরূপ আকাজনা ভাহারা কখনই করিত না। ভোগ এবং ভোগসাধন কর্ম এই ছইটি বছ विकाब वाजीज आब किछ्टे नार । जाहारे यमि ट्टेन, जात रेरां दिव (व, व्यविदान वर्थाए वानायक वाकिं कनकामात्र श्रव हरेत्रा थाकि । विनि বিধান, তিনি আত্মার বভাব অসুভব করিয়া থাকেন; স্থতরাং কোন কার্ব্যের ফলেই তাঁহার আকাজ্ঞা থাকে না। এই জন্ত তাঁহার কোন কার্ব্যেই প্রবৃত্তি হর না। কাবে কাবেই তাঁহার সকল প্রকার দেহ ও ইচ্ছির প্রভৃতির কার্য আপনা আপনিই উপরত হয়; সেই উপরতাবস্থাকেই নিবৃত্তি শক্ষের দারা বুঝান যার [ভাছা বলিরা ভাঁছার যে সংসারী পুরুবের স্থার কোন कार्या क्हेर्ल (बब्दनक्ल: मित्रुक्ति इत्, लाहा बना बात्र मा] ; धहे रव शाक्तिरहात्र

পরিচর দেওয়া হইল, এই পাণ্ডিত্য কোন একব্যক্তিরই হইরা থাকে। "ক্ষেত্রক্ষই বাস্তবিক ঈশ্বর: কেতা ঈশ্বর হইতে ভিন্ন এবং ইহা তাঁহারই জ্ঞানের বিষয়, আমি কিন্তু সুখী ও হুঃখী (জীব) সংসাররূপ ছুঃখের উপশম আমারই কর্ত্তব্য কেত্র ও কেত্রজ্ঞ এই উভরের জ্ঞান ও ধ্যানের বারা ক্ষেত্রক্ত ঈশ্বরের সাক্ষাৎকার লাভ করিয়া তাঁহার স্বরূপে অবস্থান করিয়া িআমার সংসারকে উপশাস্ত করিব] এই প্রকার বিনি বুঝিয়া থাকেন এবং এই প্রকারে যিনি অন্তকে বুঝাইয়া থাকেন, তিনি কথনই ক্ষেত্রক হইতে পারেন না" এইরপ অভিমান থাঁহার আছে দে ব্যক্তি পণ্ডিতাধম : আমি এইরপে বন্ধ ও মোকের প্রতিপাদক শাস্ত্রের সার্থক্য করিব, এই প্রকার বাহার জ্ঞান, ভাহাকেই আত্মতাতী বলা যায়, দে নিজে মৃঢ় এবং অক্ত ব্যক্তিরও মোহ জনাইয়া থাকে। সেই ব্যক্তি শাস্তার্থসম্প্রদায়শৃত্য; কারণ সে শাস্ত্রের প্রকৃত অর্থ পরিহার করিয়া অঞ্চত অর্থের করনা করিয়া থাকে। এই সকল কারণে সে শান্তার্থসম্প্রদায় জানেনা; সে সর্বাশান্ত্রবিৎ হইলেও মূর্থের ক্রায় উপেকণীয়। ঈখর যদি ক্লেক্ত हातन. छाहा हहेरन छिनि मश्मात्री जीव हहेत्रा शासन এवः क्लाबक यपि क्रेश्वत हन. তাহা হইলে সংসারের অভাব হইয়া পড়ে। এইরূপ বে হুইটি দোষ পুর্বের ক্রণিত হইরাছে, দেই ছুইটি দোষও এ পকে নিরাক্বত হইতেছে; কারণ বিছা ও অবিষ্ণার বৈলকণ্য স্বীকার করিলেই সকল প্রকারে উপপত্তি হয়। কিরূপ ? [তাহাও বলি] অবিভার ঘারা যে দোষ পরিক্রিত হয়, সেই পরিক্রিত দোষের ৰাব্লা বাস্তবিক বস্তু কোন প্ৰকারেই দূষিত হইতে পারেনা। এই বিষয়ে দৃষ্টাস্তও দেখান হইয়াছে,—বেমন মরুমরীচিকার জলে মরুভূমি পদ্ধীক্লত হইতে পারে না। সংসারীর অভাব হইলে সংসার বিলুপ্ত হয়, এই প্রকার দোবও নিরাক্কত হইয়াছে: কারণ সংসার ও সংসারী এই ছইটি বস্তুই অবিভাকল্লিত; [স্থতরাং এই ছুইটি বন্ধর বাস্তব সন্তা নাই ; যথন সন্তাই নাই, তথন সংসারে অভাব ত সিদ্ধই আছে : স্থভরাং সংসারের অভাব হইতে পারে, এপ্রকার আগত্তি গ্রাহ্ন হইতে পারে না]। ৰদি বল, অবিষ্ঠা সম্বন্ধই কেত্ৰজ্ঞের সংসারিত দোব এবং কেত্ৰজ্ঞের ছঃথিত্ব প্রভৃতি ধর্ম অবিভাসম্বন্ধেরই ফল। এই প্রকার বলাও ঠিক নহে; কারণ, বাহা জ্ঞের অর্থাৎ জ্ঞানের বিষয়, তাহা ক্ষেত্রেরই ধর্ম ; যাহা ক্ষেত্রের ধর্ম, তাহার দারা ক্ষেত্রজ্ব কোন প্রকার দোব বা গুণের প্রসক্তি হইতে পারে না। বাহা কিছ ক্ষেত্রজ্ঞ না থাকিলেও তুমি ক্ষেত্রজ্ঞের উপর আরোপ করিতেছ, সে সকল দোব वयन् का वर्षा कारनत विवत् जथन के नकन लाव का कारवाहर धर्मा

ক্ষাতা কেত্রজের ধর্ম হইতে পারে না। স্থতরাং সেই সকল ধর্মের সংসর্গে কেত্রজ কোন রূপেই হুট হুইতে পারেনা: কারণ জ্ঞের ধর্মের সহিত জ্ঞাতার কোন প্রকারই সম্বন্ধ হইতে পারে না। বদি ঐ সকল ধর্মের সহিত জাতা ক্ষেত্রজের সংসর্গ হয়, ইহা স্বীকার কর, তাহা হইলে ঐ সকল ধর্ম কথনই জের হইতে পারে না। অবিদ্যা বা অবিদ্যাক্তত হঃখিদাদিধর্ম বদি ভাতা ক্ষেত্রেঞ্চের হর, তাহা হইলে উহা কিপ্রকারে প্রত্যক্ষ জ্ঞানের বিষয় অর্থাৎ জ্ঞের হইবে ? [বাহা জাতৃধর্ম তাহা কোন প্রকারেই জের হইতে পারে না ! আর কিরপেই বা উহা ক্ষেত্রজের ধর্ম হইবে ? বাহা কিছু জের তাহাকেই "ক্ষেত্র" বলা বার; আর কেত্রভ জ্ঞাতাই হইতে পারে, কখনই জ্ঞের হইতে পারেনা। हेहारे यनि श्रमार्गत बाता निनिष्ठ रहेन, जारा रहेरन प्रःथिपश्रश्रिक क्या ধর্ম বলিয়া স্বীকার করা এবং উহাদিগকে প্রত্যক্ষ জ্বের বলিয়া অঙ্গীকার করা এক প্রকার নিতান্ত বিরুদ্ধ করনা ছাড়া আর কি হইতে পারে ? ক্লেবকের गरिङ यि भी भी भाषा भाषा अवस्त रहा, जाहा हरेला छेशासह स्कार स्टिस्ट পারে না। অবিক্যা বা অবিক্যার কার্য্য হঃখিত্বপ্রস্থৃতি ধর্ম বদি কেত্রজ্ঞ আত্মার হর, তাহা হইলে কি প্রকারে উহাদিগকে প্রত্যক জ্ঞানের বিবর করা বাইবে ₹ স্তরাং কিরুপে উহারা কেত্রজ্ঞের ধর্ম হইবে ? বাহা কিছু জের, তাহা সকলই কেত্র, আর যে জ্ঞাতা তাহাকেই "কেত্রজ্ঞ" বলা যার, ইহাই বদি অবধারিত হইল, তবে অবিস্থাও হঃখিছাদি ক্ষেত্রজ্ঞধর্ম বা ক্ষেত্রজ্ঞের বিশেষণ, অথচ উহারা প্রত্যক্ষের বিষয়, এই প্রকার কথন নিতান্তই বিরুদ্ধ এবং অজ্ঞানবশেই লোকে এইরূপ বিরুদ্ধ কথা বলিরা থাকে। এইস্থানে পূর্বপক্ষকর্তা এইরূপ প্রশ্ন করির। থাকেন বে, এই অবিফা কাহার ? [ইহার উত্তর এই বে] যাহার দেখা বাইতেছে, তাহার। কাহার দেখা বাইতেছে ? । ইহার উত্তর এই বে] অবিষ্যা কাহার দেখা যাইতেছে, এই প্রকার প্রশ্ন নিরর্থক। কেন ? অবিষ্ঠা ষদি দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে বাহার অবিদ্যা, নিশ্চরই তাহাকে দেখিতে পাইরাছ; অতএৰ অবিদ্যা কাহার এই প্রশ্ন নিরর্থক হইরা পড়িতেছে। কেহ ৰদি গো-স্বামীকে এদখিতে পার, তথন সে যদি জিজাসা করে বে, এই গো-সকল কাহার ? এক্প ছলে তাহার এই প্রশ্ন কখনই সার্থক হইতে পারে না। ভূমি বলিতে পার বে দৃষ্টাস্তটি ঠিক হইতেছে না; কারণ গো সকল ও তাহাদের স্বামী ইহারা প্রত্যক্ষসিদ্ধ; কিন্ত অবিভা ও অবিভাবান এই ছইটি বন্ধ ত আর প্রত্যক্ষসিদ্ধ নছে। এইবান্ত বলিতে হইডেছে বে, প্রশ্ন নির্গ্ত

हरेए हि मा। देशत डेखत धरे रा, विशासन येन वर्ध डाक्स हत, डाहा হইলে তাহাকে জানিয়া তোমার কি লাভ ? [যদি বল] অবিভা অনর্থহৈড়, লে কোথার আছে, তাহা জানিতে পারিলে তাহার উচ্ছেদ করা বাইতে পারে। हिंशत छेखत थहे या शहात व्यविष्ठा. त्मरे छात्रात छेत्कम कतिरव। বিদি বল) আমারই অবিকা। ি তাহার উপর বক্তব্য এই বে) তাহা হইলে क्षिय व्यविष्ठा ७ व्यविष्ठायुक व्याचारक कान। [यनि यन] कानि वर्षे. কিছ প্রভাকত: কানি না, [স্থভরাং প্রভাক্ষভাবে কিলে বুঝা যায়] ভাহারই জ্ঞ প্রাপ্ত করিতেছি]; ইহার উত্তর এই বে, তুমি যদি অনুমানের **বারা** অবিভাবানকে জানিয়া থাক, তাহা হইলে, বিজ্ঞান্ত এই বে. অসুমানের কালণ বে সম্বন্ধ অর্থাৎ ব্যাপ্তিজ্ঞান, তাহা তোমার কিরূপে হইল ? সেই সময় জাতার—জেরভূত অবিভার সহিত সেই অবস্থার কোন প্রকার সময় আছে, ইহা কোন প্রকারেই বুঝিবার যোগ্যতা নাই। কারণ, অবিভা ত জ্ঞাভার জানের বিষয় ভাবেই প্রকাশিত হইতেছে [বদি বল] জ্ঞাতা, অবিদ্যা আর অবিভার সহিত জাতার সহন, এই তিনটি বন্ধর বে প্রহীতা, তাহাকে ধে জ্ঞানের দারা প্রকাশ করা যার, সেই জ্ঞানেরও ত সম্ভাবনা লাছে, ইহাও किंक नरह: जाहा इहेरल, এইक्रभ कक्रनात्र अनवशा इहेरल भारत। [किक्रभ জ্ঞানবন্তা হয়, তাহা বলি] যদি জ্ঞাতা ও জ্ঞাতার সহিত জ্ঞেয় বস্তুর সম্বন্ধও ক্রানের বিবর হর, তাহা হইলে, সেই জ্ঞানের আঞ্রয় বলিয়া আর একজন জ্ঞাতাকে করনা করিতে হর। আবার সেই জ্ঞাতার সহিত জের সহজের যে জ্ঞান হয়, তাহার আশ্রয় বলিয়া অন্ত একটি জ্ঞাতার ক্রমা ক্রিতে হর। সেই জাতারও যে জান হয়, সেই জানের আশ্রয় ৰনিরা আরও একটি জাতাকে করনা করিতে হয়। এইরপ ভাবে জাড়-क्क्रमात्र अक्ठा त्मर शांख्या यात्र मा; हेरांत्करे व्यनवद्या करह । विम অবিদ্যা জের অথবা অন্ত জের পদার্থ কেবল জেরই হর জিতারসহিত সম্ম না হয়] তাহা হইলে ফাতা বে আত্মা, সে কেবল জাতাই इहेरव, क्षाने स्टा रहेरछ शास्त्र ना। देशहे यमि खित हरेन, छाहा हरेरन অবিভা ও তৎকার্ব্য হঃখিদাদি দোবসমূহের হারা ক্ষেত্রক আত্মা কোন প্রকারেই क्रि हरेएड शास्त्र ना। यनि वन अरे मायरे धामक रहेएड शास्त्र स्कृषा 🖼 হুইলেও লোববুক্ত কেত্রের বিজ্ঞাতা; এই প্রকার বলাও ঠিক নহে। কারণ---আত্মা শ্ৰতঃ বিজ্ঞান শ্বরূপ। তাহাতে কোন সময়ে কোন প্রকার বিকার হইতে

পারে না। এই ক্ষেত্রবিজ্ঞাতৃত্বরূপ ধর্ম দেই বিজ্ঞান-স্বভাব আত্মাতে উপচরিত অধাৎ আরোপিত হইরাছে মাত্র; বাস্তবিক আত্মা বিজ্ঞাতা নহে, উহা বিজ্ঞান মাত্র। বেমন উঞ্চতা বহুির বভাব বলিয়া তাপক্রিয়া ভাষার উপর আরোপিত হয়, সেইরূপ বিজ্ঞান-স্বভাব বলিয়া ভাহাতেও বিজ্ঞাতুত্ব আরোপিত হইরা शांत । এই इत छशवान् त्यमन (मशहेट उट्टन त्य, चान्नार किश कांत्रक छ ফলরপতার অভাব বতঃসিদ্ধ অবিভাবশে আরোপিত, ধর্মসমূহের দারা আত্মাতে ক্রিরা কারকাদি স্বভাব আরোপিত হইরা থাকে। সেইক্লপ সেই সেই স্বলে অর্থাৎ "ব এনং বেক্তি হস্তারম" িবে ইহাকে হস্তা বলিয়া বোধ করে] "প্রক্লডেঃ ক্রিরমাণানি খণ্ডে: কর্মাণি সর্বানঃ" [প্রাকৃতির খণসমূহের ছারাই সকল কর্ম সম্পাদিত হয়] "নাদত্তে কন্তচিৎ পাপং" [আত্মা কাহারও পাপ গ্রহণ করেন. না] এই সকল প্রকরণে সেইরপই [ভগবান] দেথাইয়াছেন, আমরাও সেইছলে এইরপ ব্যাখ্যাই করিয়াছি। অগ্রেও যে সকল প্রকরণ আসিবে, তাহাতেও আমরা এইরপই দেখাইব। তবে একণে শবা করিতে পার বে, আত্মতে ক্রিরা কারক ও ফল এই ত্রিবিধ উপাধির যদি ঐকান্তিক অভাব হুইল এবং ঐ সকল বস্ত যদি অবিভানিবন্ধনই আত্মাতে আরোপিত, এই প্রকার সিদ্ধান্ত ১ইল, তাহা হইলে, কর্ম সকল অবিধানেরই কর্ত্তব্য হইয়া দাঁড়াইল.—বিধানের পকে আর কোন প্রকার কর্ম্ম কর্ত্তব্য থাকিতেছে না, এই প্রকার আগত্তি হইতেছে. ইহার উত্তর এই যে, এই প্রকার আপত্তি সত্য সত্যই হইরা পড়িতেছে, ইহা অস্বীকার করিতে পারা যার না; বাস্তবিক পক্ষে এই আপত্তির নিরাকরণ কিরপে হইতে পারে, তাহা "ন হি দেহভুতা শক্যং" [দেহাভিমানী জীবের ইহা শক্য নহে | এই শ্লোকটির ব্যাখ্যা প্রদক্ষে আমরা ভাল করিয়া প্রদর্শন করিব। "সমাসেনৈব কৌত্তের নিষ্ঠা জ্ঞানত বা পর।" (হে কুন্তীনশ্বন। জানের বাহা পরা নিষ্ঠা] এই স্লোকের ব্যাখ্যা প্রসঙ্গে আদি বখন দর্মশাস্তার্থের উপসংহার প্রদর্শন করিব, সেই সময়ও এই বিষয়টিকে ভাল করিয়া বুঝাইব। **এখানে এই বিষয়টির আর বছ বিস্তারে লাভ নাই; এই জন্ত এই বিচারের** ষাণাতত: উপসংহার করা বাইতেছে ॥২

তৎ क्या यह यापृक् ह यम्विकान्नि यज्ञ स्ट । म ह त्या यह अज्ञावण्ड जह ममातम्ब स्य मृनू ॥

ख्युत्र । उर त्काबर वर, वामृक्, वमृविकात्रि, वक्षः (काश्रमार), वर (कार्यार) । ह, क्षा म ह वः, वरव्यकावन्ह [हेरकाकर नर्वर] नमारनन स्म मृत् ॥ ० অনুবাদ। সেই কেন্দ্র কিরপ, তাহার বিকারই বা কিরপ, উহা কি উপাদানে গঠিত, উহার ধর্মই বা কি এবং সেই কেন্দ্রজ্ঞও কিরপ, উহার প্রভাবই বা কি প্রকার, এই সকল বিষয় আমার নিকট সংক্রেপে প্রবণ কর॥ ৩

ভাষ্য। ইদং শরীরমিত্যাদি-শ্লোকোপদিষ্টক্ত ক্ষেত্রাধ্যারার্থক্ত সংগ্রহ-শ্লোকোহরমুপদিশ্রতে—তৎ ক্ষেত্রং যচেত্যাদি ব্যাচিথ্যাসিতক্ত ক্তর্থক্ত সংগ্রহোপ-ক্যাসো ক্রাষ্য ইতি। বর্নির্দিষ্টমিদং শরীরমিতি তৎ তচ্চক্ষেন পরামূশতি। বচ্চেদং নির্দিষ্টং ক্ষেত্রং তদ্ যাদৃক্ যাদৃশং স্বকীরেধ দৈর্ম:। চশকঃ সম্চরার্থঃ। বদ্বিকারি বো বিকারোহক্ত তদ্ যদ্বিকারি যতো বন্ধাৎ চ যৎকার্য্যমূৎপদ্ধতে ইতি বাক্যাশেষঃ। স চ ষঃ ক্ষেত্রক্তো নির্দিষ্টঃ স যৎপ্রভাবো যে প্রভাবা ক্রপাধিকতাঃ শক্তরো যক্ত স বৎপ্রভাবশ্চ তৎ ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞারোর্যাধান্ম্যং যথা-বিশেষিতং সমাসেন সংক্ষেপেণ মে মম বাক্যতঃ শৃণু, শ্রুষা অবধারর ইত্যর্থঃ। ত

আনন্দ্গিরিটীকা। এবং শ্লোক্ষমং ব্যাখ্যায় শ্লোকান্তরমবতারয়তি—
ইলমিতি। কুর সংগ্রহোক্তিরপর্জ্ঞাতে তর্রাহ—ব্যাচিখ্যাসিতস্থেতি।
প্রতিপন্তিসৌকর্যার্থং সংগ্রহোক্তিরপ্রতিত্যর্থঃ বক্ষামাণেহর্থে শ্রোত্তম নঃসমাধানার্থং স্ব্রেতবাক্যার্থেগায়বিবরণপ্রতিজ্ঞামভিপ্রেত্যাহ—য্লির্দ্ধিইমিতি।
ইলং শরীরমিতি বর্লির্দ্ধিং তচ্ছরীরং তচ্ছকেন পরামুশতি প্রক্রতার্থত্বাৎ তত্তেতি
বোজনা। তৎক্রেরং জ্ঞাতব্যমিত্যধ্যাহারঃ। বচ্চেতি যেন রূপেণ রূপবদিতি
তদেব ক্রেরং বিশেষ্যতে। তত্ত ক্রেত্তত্ব স্বকায়া ধর্মা জন্মাদরত্তৈর্বিশিষ্টত্ত
জ্ঞেরত্বে হেরন্থং ফলতি। চশব্দপঞ্চকত্বেতরেরসমূচরার্থক্ষমাহ—চশব্দ ইতি।
বিকারিন্থেনাপি হেরন্থং স্চয়তি—যদ্বিকারীতি। বং কার্যাৎ তৎসর্বং
ক্রান্ত্রংপঞ্চতে তৎকারণ্যাজ্জাতব্যমিত্যাহ—য্তইতি। ক্রেমিব ক্রেজ্ঞং
জ্যাতব্যং দর্শরতি—স চেতি। স জ্ঞাতব্য ইতি সম্বন্ধঃ। চক্র্রান্ত্রপাধিকতদৃষ্ট্যাদিশক্তিবশাৎ তত্ত জ্ঞাতব্যত্বং স্চয়তি—য্ত্-প্রভাবইতি। তেনাক্তেন
প্রভাবেণ তত্ত জ্ঞাতব্যতেতি শেষঃ। কথং বণাবিশেষ্তিং ক্রেং ক্রেজা বা
শক্রো জ্যাতুমিত্যাশন্ধ্য ভগবদ্বাক্যাদিত্যাহ—তদিতি॥ ৩

অকুবাদ। "ইদং শরীরম্" ইত্যাদি শ্লোকের দারা উপদিষ্ট বে ক্ষেত্রাধ্যারের প্রতিপান্ত অর্থ, ভাহারই সংগ্রহ শ্লোক এইটি উপন্তত হইতেছে। সেই ক্ষেত্রাধ্যারের অর্থের বিবরণ প্রকাশ করা এই স্থানে অভিপ্রেত; স্থতরাং তাহার সংক্ষেপে প্রথম তঃ] উপন্থাস করাই উচিত হইরাছে। "ইদং শরীরং" এই শব্দের দারা বাহা পূর্বে নির্দিষ্ট হইরাছে, তাহাই এই স্থানে "তং" এই শক্ষতির দারা প্রতিপাদিত হইতেছে। এই যে ক্ষেত্র নির্দিষ্ট হইরাছে, ইহা "বাদৃক্" অর্থাৎ ইহা স্বকীর ধর্মসমূহের দারা বাদৃশ প্রতীত হর]। এই যে "চ" শক্ষতি আছে, ইহার অর্থ সমূচের। "বদ্বিকারি" অর্থাৎ বাহা ইহার বিকার, বাহা হইতে যে কার্য্য উৎপন্ন হয়, ইহাই বাক্যের প্রতিপাল্প। সে, বে ক্ষেত্রজ্ঞের কথা বলা হইরাছে, সে "বংপ্রভাব" অর্থাৎ বাহা তাহার প্রভাবই অর্থাৎ উপাধিক্ষত শক্তিসমূহ [তাহাও কিরূপ ?] এবং সেই ক্ষেত্রজ্ঞও স্বরূপে কিরূপ ?— এইরূপ দেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের যে বথার্থ স্করূপ এবং সেই স্করূপ যে ভাবে বিশেষিত, তাহা সকলই সংক্ষেপে আমার বাক্য হইতে শুন এবং শুনিয়া ভাল করিয়া বুঝিরা লও, ইহাই তাৎপর্য্য ॥ ৩

ঋষিভির্ব্বহুধা গীতং ছন্দোভির্বিবিধৈঃ পৃথক্। ব্রহ্মসূত্রপদৈশ্চৈব হেতুমন্তির্বিনিশ্চিতঃ॥ ৪

অমৃত্য । [তৎ ক্ষেত্ৰক্ষেত্ৰক্ষতবং] ঋষিভিৰ্বন্ধা গীতং, বিৰিধৈ: ছন্দোভিঃ পৃথক্ [গীতং], তথা হেতুমন্তিঃ বিনিশ্চিতৈৰ্ক্সন্ত্ৰপদৈশ্চ [পৃথক্ গীতম্] ॥ ৪

অনুবাদ। বিসিষ্ঠ প্রান্থতি] ঋষিগণ সেই কেজের ও কেজজের বর্ণনা করিয়াছেন। ঋক্ প্রভৃতি বেদচভূষ্টয়ও পৃথক্ভাবে সেই তন্ধ প্রতিপাদন করিতেছে এবং [আত্মেত্যেব উপাসীত ইত্যাদি] ব্রহ্মান্মভাববোধক বৃক্তিবৃক্ত বাক্যের হারাও ঐ কেজকেজজ্জবাধান্ম বিশদভাবে বর্ণিত হইয়াছে॥ ৪

ভাষ্য। তৎ কেত্রকেত্রজয়োর্যাণাত্মাং বিবক্ষিতং স্টোতি শ্রোভূবুদ্ধিপ্ররোচনার্থম। ঋষিভির্বসিষ্ঠাদিভির্বছধা বহুপ্রকারং গীতং ক্ষিতং ছলোডিঃ ছলাংসি ঋগাদীন তৈশ্ছলোভির্বিবিধঃ—নানাপ্রকারেঃ পৃথক্ বিবেক্তো গীতম্। কিঞ্চ ব্রহ্মস্ত্রপদৈশ্চিব ব্রহ্মণঃ স্বচকানি বাক্যানি ব্রহ্মস্ত্রাণি তৈঃ প্রতে গম্যতে জায়তে ব্রহ্ম ইতি তানি পদাস্যচ্যস্তে। তৈরেব চ ক্লেক্তেজরোর্যাণাত্ম্যং, গীতমিত্যসূবর্ত্ততে। "আত্মেত্যেব উপাসীত" ইত্যাদিভির্হি ব্রহ্মস্ত্রপদেরাত্মা জায়তে। হেতুমন্তিঃ যুক্তিযুক্তঃ বিনিশ্চিতে ন সংশয়রূপৈঃ—নিশ্চিতপ্রত্যরোৎপাদকৈরিত্যর্থং॥ ৪

আনন্দ্গিরিটীকা। শ্লোকান্তরত তাৎপর্য্যমাহ—তদিত্যাদিনা। বিবন্দিতং জিজ্ঞাসিতমিত্যর্থ:। শ্বতিফলমাহ—(প্রোব্রিতি। ন কেবল-মাথোক্তেরের ক্রোদিয়াধান্মাং সম্ভাবিতং কিন্তু বেদবাক্যাদ্শীত্যাহ— ছলোভিদেচ তি। ঝগাদীনাং চতুর্ণামপি বেদানাং নানা প্রকার বং শুখা-ভেদাদিইন্। ন কেবলং প্রতিবৃতিসিদ্ধমূক্যং বাথান্মাং কিন্ত বৌক্তিকক্ষেত্যাহ— কিঞ্চেতি। কানি তানি স্ব্রাণীত্যাশব্যাহ—আ্রাড্রেত্যেবেতি। আদি-পদেন "ব্রদ্ধবিদাশ্লোতি পরম্" "অথ বোহস্তাং দেবতাম্" ইত্যাদীনি বিশ্বাবিদ্ধা-স্ব্রাণ্যকানি। আন্বেতি ক্ষেত্রজ্ঞোপাদানং তচ্চ ক্ষেত্রোপলকণম্। "অথাতো ব্রদ্ধবিজ্ঞানা" ইত্যাদীক্সপি স্ব্রাণ্যব্র গৃহীতাক্তরণা চ্ছলোভিরিত্যাদিনা পৌনক্ষ্যো-দিতি মন্ধা বিশিনষ্টি—হৈতুমন্তিরিতি॥ ৫

অমুবাদ। সেই কেত্র ও কেত্রজের প্রক্লভন্তরপ বাহা বিবন্ধিত [হইরাছে] তাহারই প্রশংসা করা হইতেছে; প্রয়োজন—বাহারা ভনিবে, তাহাদের বুদ্ধির প্রারোচনা [ছাড়া আর কিছুই নাই]। ঋবিগণ অর্থাৎ বসিষ্ঠ প্রভৃতি, বছ প্রকারে এই কেত্র ও কেত্রজের তত্ব বর্ণনা করিরাছেন। ছন্দোগণ এখানে ছন্দঃ এই শন্টির অর্থ ঋক্ বজুং সাম ও অণর্থ সংহিতা অর্থাৎ ঋক্ প্রভৃতি বিবিধ বেদচভূষ্টরও বিস্পিইভাবে ইহার প্রতিপাদন করিতেছে। আর ও "ব্রহ্মস্থাত্ত পদ" ব্রহ্মের স্বরূপ-প্রকাশক বে সকল মহাবাকা, তাহাদিগকেই "ব্রহ্মস্থাত্ত" বলা বার। ঐ সকল বাক্যের সাহায্যে ব্রহ্মের স্বরূপ বৃথিতে পারা বার, এইজ্জ ঐগুলিকে "পদ"ও বলা বার; তাহা হইলে এই হইল বে ব্রহ্মস্থার্মণ প্রতিপাদক "আত্মেত্যেব উপাসীত" (আত্মা এই ভাবিরাই উপাসনা করিবে] ইত্যাদি বেদবাক্যসমূহের হারা অসন্দিশ্বভাবে এই কেত্রক্লেক্তর্জ্ব প্রতিপাদিত হইরাছে। ঐ সকল বাক্য হেত্রমৎ অর্থাৎ বৃক্তিযুক্ত। ঐ সকল বাক্যের হারা বে জ্ঞান হয়, তাহা সংশ্রহ নহে; কিন্তু ঐ সকল বাক্য [লোকের জন্মের] নিক্রয়াত্বক্ত জ্ঞানকেই উৎপাদন করিরা থাকে, ইহাই তাৎপর্যা ॥ ৪

মহাভূতাক্তহক্ষারে। বৃদ্ধিরব্যক্তমেব চ। ইন্দ্রিয়াণি দশৈকঞ্চ পঞ্চেন্দ্রিয়গোচরাঃ॥ ৫

ख्यस्य । সহাজ্তানি [পঞ্চ], অহকার:, বৃদ্ধি:, অব্যক্তং চ, দশ একং চ ইন্দ্রিয়াণি, পঞ্চ ইন্দ্রিয়েগোচরাঃ চ ॥ ৫

অকুবাদ। পৃথিবী, জল, অগ্নি, বায়ু এবং 'আকাশ—এই পঞ্চ মহাকৃত, অহতার, বৃদ্ধি, অব্যক্ত, একাদশ ইন্তির এবং শব্দ, স্পর্ণ, রূপ, রূপ ও পদ্ধ এই পাঁচ প্রকার ইন্তিরের বিষয় ॥ ৫

— ভাষ্য। বভা অভিস্থীভূতার অর্কুনার আহ—মহাভূতানি মহাতি

চ তানি সর্কবিকারব্যাপকদাৎ ভূতানি চ স্ক্রাণি। স্থুলানি তু ইন্দ্রিরগোচরশব্দেন অভিধারিষ্যন্তে। অহকার: মহাভূতকারণমহংপ্রভারনকণ:। অহকারকারণং
বুদ্ধিরধ্যবসায়লকণা। তৎকারণম্ অব্যক্তমেব চ, ন ব্যক্তম্ অব্যক্তম্
ক্রীরশক্তি: "মম মারা হ্রতারা" ইত্যুক্তম্। এবশন্ধ: প্রক্রতারধারণার্থ:।
এতাবত্যেব অপ্তধা ভিন্না প্রকৃতি:। চশন্দ: ভেদসমুচ্চরার্থ:। ইন্দ্রিরাণি
দশ শ্রোত্রাদীনি পঞ্চ বৃদ্ধুত্বপাদকভাদ্ বৃদ্ধীন্দ্রিরাণি বাক্পাণ্যাদ্রীনি পঞ্চ
কর্মনির্বস্তিকভাৎ কর্ম্মেন্তিরাণি তানি দশ। একঞ্চ কিং তৎ ? মন: একাদশং
সক্রমান্তাত্মকম্। পঞ্চ চেন্দ্রিরগোচরা: শন্ধাদয়ো বিষরা:। তান্তেভানি
সাংখ্যাশ্চতুর্বিংশভিতন্তানি আচক্ষতে॥ ৫

আনন্দগিরিটীকা। কেত্রাদিনাথান্মাঞ্চ্যা প্রলোভিতার কিং তদিতি জিজ্ঞাসবে বণোদেশং কেত্রং নির্দ্দিশতি—স্তুত্যেতি। মহত্বে হেডুমাহ
—সর্ব্বেতি। ভ্তশব্দেন স্থূলানাসপি বিশেষাভাবাদ্গ্রহে কা হানিরিত্যান্দ্র্যাহ—স্থূলানীতি। মহকারোহংপ্রত্যরলক্ষণ ইতি সম্বন্ধঃ। ভ্তানাং প্রাতীতিকরেনাজিমানমাত্রাত্মন্থং মন্ধা মহক্ষারং বিশিনষ্টি—মহাভূতেতি। মহতঃ পরমিত্যাদৌ প্রদিন্ধং মহক্ষ্বার্থমহকারহেতুমাহ—অহ্স্কারেতি। ঈর্বর্দ্ধরিত্যুক্তে চৈত্তক্ত্যাপি শক্ষাত তদর্থমাহ—মুমেতি। অবধার্ম্পুরূপমর্থমেব স্ট্রিতি—এতাবত্যেবেতি। পঞ্চত্রাত্রাণ্যহকারো মহদব্যাক্তমিত্যপ্রধা ভিন্নমন্। ম্লপ্রক্রত্যা সহ তন্মাত্রাদিভেদানাং সমুক্তর্যন্তকারার্থঃ। দশেক্রিয়াণ্যেব বিভল্য ব্যুৎপাদয়তি—ক্রোত্রেত্যাদিনা। তদেব প্রশ্ন বারা স্ট্রেতি—কিং তদিতি। শলাদিবিবর্গন্ধেন স্থ্লানি ভ্তানি গৃহস্তে। উক্তেব্ ত্যাত্রাদিব্রুত্যায় প্রাতিনির্দ্ধান্তিরবিক্তিমহিদান্তাঃ প্রকৃতিরবিক্তিমহিদান্তাঃ প্রকৃতিরবিক্তয়ঃ সপ্ত। বাড্পক্ষ বিকারঃ ইতি পঠিত্ত। হে

অকুবাদ। প্রশংসা বারা অর্জুনকে [বক্ষামাণ উপদেশ ভানিবার জন্ত অভিমুপ করিয়া—[ভগবান] বলিতেছেন বে, মহাভূত সমূহ, এইখানে বে 'মহং' এই শক্ষতির উপাদান করা হইরাছে, তাহার অর্থ বৃহৎ অর্থাৎ ব্যাপক। সকল প্রকার বিকারের ব্যাপক বলিয়া ত্বল ভূতসমূহের কারণস্বরূপ যে স্ক্ষভূতসমূহ তাহাই এখানে "মহাভূত" বলিয়া গ্রহণ করিতে হইবে,। পরে যে 'ইক্রিরগোচর' এই শক্ষতির প্রয়োগ করা হইরাছে, তাহার বারা পঞ্চ স্থুলভূতের গ্রহণ করা হইরাছে। অহংকার—সেই স্ক্ষ ভূতনিচয়ের কারণ; 'আমি' এই প্রকার বৃদ্ধিই বাহার লক্ষণ, সেই অন্তঃকরণকেই "অহন্ধার" বলা বার। বাহা [সেই] অহন্ধারের কারণ এবং

মধ্যবসায়াত্মিকা বৃত্তিই যাহার লক্ষণ, তাহাকেই "বৃদ্ধি" কহা যায়। সেই বৃদ্ধিরও
বাহা কারণ, তাহাই "অব্যক্ত?"। যাহা কার্যরূপে ব্যক্ত নহে, তাহারই নাম
অব্যক্ত। এই অব্যক্তকে অব্যাক্তও বলা বায়! 'আমার মারা হরতিক্রমণীয়া'
এই প্রকার উক্তির হারা যাহার পরিচয় পূর্বে দেওয়া হইয়াছে, সেই ঈশ্বরশক্তি
মারাই অব্যক্ত। এই হুলে যে এব শক্ষটি প্রবৃক্ত হইয়াছে, তাহার অর্থ অবধারণ
অর্থাৎ প্রকৃতি এই আট প্রকারেই বিভক্ত; এই বিভাগ ৮ হইতে ন্যনও নহে,
অধিকৃত্ত নহে; ইহাই 'এব' শব্দের হারা বুঝান হইয়াছে। চ শক্ষটি এই
প্রকার বিভাগকে স্মরণ করাইয়া দিতেছে। দশ ইক্রিয় অর্থাৎ প্রবণ প্রভৃতি
পাঁচটি ইক্রিয় বৃদ্ধির উৎপাদন করিয়া দেয়; এইজয় উহারা "বৃদ্ধীক্রিয়"; আর
বাক্পাণি প্রভৃতি পাঁচটি ইক্রিয় বচনাদি ক্রিয়ারই সম্পাদন করে বিলয়া, ঐ
পাঁচটি ইক্রিয়কে "কর্মেক্র" বলা যায়। মিলনে এই দশটি ইক্রিয়। আরও
একটি ইক্রিয়—কি তাহাণ্ট "মন"; মনই একাদশ সংখ্যার পূরক ইক্রিয়; সংকল্প
ও বিকর প্রভৃতি বৃত্তিই মনের লক্ষণ। ইক্রিয়গোচর অর্থাৎ শক্ষাদি ভোগ্য
বিষয়। এগুলিও পাঁচপ্রকার—অতএব এই সকল পদার্গই সাংখ্যমতে চতুর্নিংশতি ক্রম্ব বলিয়া কথিত থাকে॥৫।

ইচ্ছা দ্বেষঃ স্থুখং তুঃখং সংঘাতশ্চেতনা ধৃতিঃ। এতৎ ক্ষেত্রং সমাসেন সবিকারমুদাহূতম্॥৬

আনুয়। ইছা, দেবঃ, স্থং, ছঃখং, সংঘাতঃ, চেতনা, ধৃতিঃ [চ] এতৎ সর্বং সবিকারং কেত্রম্ ইতি সমাসেন উদাহতম্ ॥৬

অনুবাদ। ইচ্ছা, দেব, সুথ হঃখ, সজ্যাত (দেহ), চেতনা ও রতি— এই সকল পদার্থ এবং যাবতীয় সবিকার বস্তু সকলই, সংক্ষেপতঃ "ক্ষেত্র" এই শক্ষের দারা অভিহিত হইয়া থাকে।

ভাষ্য। অণ ইদানীং আত্মগুণা ইতি যান্ আচক্ষতে বৈশেষিকাত্তেহণি কেত্রধর্মা এব ন তৃ কেত্রজ্ঞ ইত্যাহ ভগবান্—ইচ্ছা যজ্জাতীয়ং স্থপহেতৃমর্থমূপ-লব্ধনান্ পূর্বং পুনস্তজ্জাতীয়মুপলভমানস্তমাদাতৃমিচ্ছতি স্থপহেতৃরিতি সেয়মিচ্ছা অন্তঃকর্পধর্মঃ জ্ঞেরতাৎ কেত্রম্। তথা ছেবঃ যজ্জাতীয়মর্থং তঃথহেতৃত্ত্বন অন্তু-ভূতবান্ পুনস্তজ্জাতীয়মুপলভমানন্তং ছেটি সোহয়ং ছেবঃ জ্ঞেরতাৎ কেত্রম্। ভূথা সুধ্মসূক্লং প্রসন্থং সভাষ্যকং জ্ঞেরতাৎ কেত্রমেব। তঃধং প্রতিকৃলাত্মকং জেরষাৎ তদপি ক্ষেত্রন্। সংঘাতো দেহেন্দ্রিরাণাৎ সংহতিঃ তস্তামভিব্যক্তাব্যঃকরণর্ত্তিঃ তপ্ত ইব লোহপিণ্ডে অগ্নিঃ আত্মটেতস্তাভাসরস্বিদ্ধা চেতনা সা চ ক্ষেত্র্যং জেরছাৎ। ধৃতির্যরা অবসাদপ্রাপ্তানি দেহেন্দ্রিরাণি প্রিরপ্তে সা চ ক্ষেত্র্যং ক্ষেত্রন্। সর্বাস্তঃকরণধর্মোপলক্ষণার্থম্ ইচ্ছাদিগ্রহণং যত উক্তং তত্বপসংহরতি—
এতৎ ক্ষেত্রং সমাসেন স্বিকারং সহ বিকারেণ মহদাদিনা উদান্ধতম্ উক্তম্।
যন্ত ক্ষেত্রজন্তস্ত সংহতিরিদং শরীরং ক্ষেত্রমিত্যক্তং তৎ ক্ষেত্রং ব্যাখ্যাভং
মহাভূতাদিভেদভিরঃ ধৃত্যস্তম্ ॥৬

আনন্দগিরিটীকা। অব্যক্তাহরারাদীনাং ত্রৈগুণ্যাভিমানাদিধর্শ্বক্তং व्यनिषयि । भनागीनात्मव श्रद्धा कर्त्यक्तिशाणाः विवशाञ्चरकर्द्यक्रभावाः কেত্রনিরপণস্থ চ প্রকৃতত্বাৎ স্বরপনির্দেশেনৈর তৎ কেত্রং যচ যাদুক চেডি ব্যাখ্যাতমিদানীমিচ্ছাদীনামাত্মবিকারম্বনির্ত্তয়ে ক্ষেত্রবিকারম্বনিরূপণেন ষদ্বিকারী-তে।তন্ধিরূপর্য়তান্তরনিবৃত্তিপর**ং**দন শ্লোক্মবতার্য়তি—অপ্রেতি। সর্বজ্ঞান্তি-বিরোধান্দেরং বৈশেষিকং মতমিতি মথোক্তং—ভগবানিতি। উপলব্ধকাতীয়ত্ত-উপলভ্যমানশু আদানেদ্ধায়াৎ হেতুমাহ—স্তুখেতি। ইতিশন্ধো হেত্য**র্থ: স্থ**ৰ-হেতৃ ছাত্ত শিলিছেত যুৰ্থ:। ইচ্ছাং প্ৰথতদ্বেতৃ বিষয়বেন ব্যাখ্যা মাখ্য শ্বং ভঞাৰা দ-শুতি — সেয়মিতি। তথাপি কণং ক্ষেত্রাস্তর্ভুক্ত বং তত্রাহ— জ্রেত্বাদিতি। ইচ্ছাবৎ দ্বেনে।হপি ধর্মো বুদ্ধেরিত্যাহ--ত্রথেতি। কোহসৌ দ্বেষো যন্ত বুদ্ধিধর্ম্মত্বং তত্রাহ- যজ্জাতীয়মিতি। তত্তাপীছাবৎকেত্রান্তর্ভাবমাহ-সোহয়মিতি। ইচ্ছাবেষবদ্বৃদ্ধিশর্মঃ স্থমণীত্যাহ—ত্তথিতি। তন্তাপি স্বরূপোক্তা ক্রেতান্তঃ-পাতিত্বমাহ—অনুকুলমিতি। হঃধভাপি স্বরূপোক্ত্যা ক্ষেত্রমধ্যবর্ত্তিত্বমাহ— দ্রঃখমিতি। দেহেন্দ্রিয়াম্মবাদৌ বাুদ্দিতৃৎ কেত্রাস্তর্ভূতিমেব সঙ্ঘাতৎ বিভব্বতে —দেহেতি। বিজ্ঞানবাদং প্রত্যাহ—তত্মামিতি। তথে লৌহপিতে বঙ্গে-রভিব্যক্তিবছক্তসংহতৌ বুদ্ধিরন্তিরভিব্যজাতে। তত্র চামিরভিব্যক্তো লোহপিও-মেবাগ্নিবৃদ্ধ্যা গ্রাহয়তি। তথাস্মতৈতক্তং বৃদ্ধিবৃত্তাবভিব্যক্তং তামেবাস্থতয়া বোধয়-ভাতত্তদাভাসামূৰিদ্ধা দৈৰ চেতনেভাচাতে। সা চ মুখাং চেতনং প্ৰতি জ্ঞেরদাদ-ভদ্ৰপদ্বাৎ কেত্ৰমেবেভাৰ্থ:। ধৃতিস্বরূপোক্তা। কেত্রদং ভঞা দর্শর্মতি—পুতি-বিজ্যাদিন। । নম্বন্সেংপি সঙ্করাদরো যে মনোধর্মাঃ সন্তি তে কিমিতাত ক্ষেত্রদেন নোচ্যন্তে তত্তাহ—সূৰ্ব্বেতি। তক্তোপলক্ষণাৰ্থত্বে হেতুমাহ—যুক্তইতি। ইচ্ছাদিবৎ ্ অস্মিরবসরে সম্বরাদীনামপি দর্শিতত্বং সিদ্ধবংকুত্য প্রকরণবিভাগার্থং বতো ভগব-ক্ষেত্রমূপসংহরত্যতো যুক্তমিচ্ছাদিগ্রহত সর্বান্তকবৃদ্ধিধর্মোপলকণার্থ-

ষমিতার্থ: বিরক্তম জ্ঞানেহধিকারায় বৈরাগ্যার্থৎ ক্ষেত্রৎ ব্যাখ্যাতমিত্যমুবদতি— যস্মেতি। ক্ষেত্রভেদজাতস ব্যষ্টিদেহবিভাগস সর্বস্থেত্যর্থ:। সংহতিঃ সমষ্টিঃ শরীরম্॥৬

অকুবাদ। তাহার পর এক্ষণে, বৈশেষিকগণ ষেগুলিকে আত্মার গুণ ণবলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন, দেই ইচ্ছা প্রভৃতি গুণ-সমূহও বে কেত্রেরই ধর্ম্ম, ক্ষেত্রজ্ঞ আত্মার ধর্ম নহে, তাহাই ভগবান্বিলিতেছেন—ইচ্ছা [কাহাকে বলে] পূর্ব্বে স্থাধন বলিয়া যে জাতীয় বস্তুকে লোকে অমুভব করে, পরে আবার কোন সময়ে সেই জাতীয় বস্তকে দেখিতে পাইয়া তাহাকে গ্রহণ করিবার জন্ত লোকে ইচ্ছা করিয়া থাকে। সেই ইচ্ছা অন্তঃকরণের ধর্মা, স্থতরাং জ্ঞের এবং **জ্ঞের বলিরা** উহাও ক্ষেত্র। এইরূপ দ্বেব [ও জ্ঞানিবে অর্থাৎ] যে প্রকার বন্ধকে ছংখের কারণ বলিয়া পূর্ব্বে অমুভব করা যায়, সেই প্রকার বস্তুকে জাবার দেখিতে পাইলে লোকে তাহার প্রতি বেব করিয়া থাকে। সেই এই বেষও জ্ঞের, এই কারণ ইহাও ক্লেত্রের ধর্ম অর্থাৎ ক্লেত্র [ক্লেত্র্জের ধর্ম নহে]। এইরূপ হংখ [ও জানিবে, হংখের লক্ষণ কি ?] যাহা অমুকূল ও প্রসাদময় এবং সন্থ-ঋণের পরিণাম, তাহাই এই স্থলে কেত্র-ধর্ম স্থধ, [বলিয়া বুঝিতে হইবে]; সেই স্থও জেয়। এই কারণ স্থও কেত্রের ধর্ম অর্থাৎ কেত্র, [কেত্রজের ধর্ম নহে]; প্রতিকৃল স্বভাব বে হঃখ, তাহাও জেয়, এই কারণ তাহাও কেত্রের ধর্ম [কেত্রজ্ঞের ধর্ম নহে]। সংখাত [শব্দের অর্থ] দেহ ও ইন্দ্রিরগণের সংহতি [সমূহ] প্রতপ্ত লৌহপিতে অগ্নির ভার সেই সংঘাতে অভিব্যক্ত যে অস্ত:করণের বৃত্তি হয় এবং বে বৃত্তি আত্মটৈতন্তের আভাসরূপ রদে আগ্লুত হয়, সেই অভিব্যক্ত **অন্তঃকর**ণরন্তিকেই চেতনা বলা যায়। সেই চেতনাও যে কারণে চ্ছের, এই बन्न উহাও কেব। ধৃতি [কাহাকে বলে ?] অবসন্ন হইয়াও দেহ ও ইক্রিয় নিচয় ৰাহার প্রভাবে বিশ্বত হইরা থাকে, সেই শক্তিবিশেষকে ধৃতি কহা যায়। সেই শ্বতিও জের। এই কারণে উহাও কেতা। সকল প্রকার অন্তঃকরণের ধর্মকে প্রতিপাদিত করিবার জন্মই ইচ্ছাদির, উপাদান বে কারণে করা হইয়াছে, সেই कातराहे त्महे ভारवहे छेनमश्हात कतिराज्यहन त्य, এই मश्कारण मिवसात व्यवीर বিকার বা পরিণামের সহিত সম্বন্ধ মহন্তব প্রভৃতি যাবতীয় দৃশ্য বস্তুমাঞ্জই ক্ষেত্র বলিরা উক্ত হইরা থাকে।. বে সকল ক্ষেত্র-সমূহের সমষ্টি শ্বরূপ এই দেহরূপ ক্ষেত্র এইরূপ বলা হইরাছে; মহন্তম্ব হইতে খৃতি পর্য্যস্ত যে সকল পদার্থের স্বরূপ এই ভাবে এই স্থলে ব্যাখ্যাত হইল, মহাভূতাদি দৃষ্ঠত ঐ কেত্রের অন্তর্ভুত 🌬

অমানিত্বমদম্ভিত্বমহিংসা ক্ষান্তিরার্জ্জবম্। আচার্য্যোপাসনং শৌচং দ্বৈর্যমাত্মবিনিগ্রহঃ॥৭

অমুর । অমানিত্বম্ অদন্তিরম্ অহিংসা ক্ষান্তিঃ আর্ক্রেম্ আচার্য্যোপাসনং শৌচং হৈর্য্যম্ আত্মবিনিগ্রহঃ ॥१

অসুবাদ। অভিমানশৃক্ততা, দন্তের অভাব, অহিংসা, কমা, সর্কতা, আচার্য্যের উপাসনা, শৌচ, স্থিরতা ও জিতেন্দ্রিরতা॥ ৭

ভাষ্য। ক্ষেত্রজ্ঞা বক্ষামাণবিশেষণঃ—বস্ত সপ্রভাবত্ত ক্ষেত্রজ্ঞত পরিজ্ঞানাৎ অমৃতত্বৎ ভবতি, তং "জ্ঞেরং বং তৎ প্রবক্ষামি" ইত্যাদিনা সবিশেষণং স্বর্থের বক্ষাতি ভগবান্। অধুনা তু তজ্ঞানসাধনগণসমানিভাদিককণং বন্দিন্ সতি তজ্ঞেরবিজ্ঞানে বোগ্যোহধিক্ততো ভবতি। বংপরঃ সন্ন্যাসী জ্ঞাননিষ্ঠ উচ্যতে তমমানিভাদিগণং জ্ঞানসাধনত্বাৎ জ্ঞানশন্ধবাচ্যং বিক্ষাতি ভগবান্। অমানিত্বং মানিনো ভাবঃ মানিহম্ আত্মনঃ প্লাভনং তদভাবোহমানিত্বম্ । অদ্ভত্তিং স্বধর্মপ্রকটীকরণং দন্তিত্বং তদভাবঃ। অহিংসা অহিংসনং প্রাণিনামণীত্নম্। ক্ষান্তিঃ পরাপরাধপ্রাপ্তো অবিক্রিয়া। আর্জ্ঞবম্ ঋজ্ভাবঃ অবক্রত্বম্ । আচার্য্যোপাসনং মোক্ষমাধনোপদেষ্ট্রং আচার্য্যন্ত শুক্রাবাদিপ্রয়োগেণ সেবনম্ । শৌচং কার্মলানাং মৃজ্ঞলাভ্যাং প্রকালনম্ অস্তন্ত মনসঃ প্রতিপক্ষভাবনয়া রাগাদিমলানামপনয়নং শৌচম্। হৈর্য্যং দ্বিরভাবঃ মোক্ষমার্গে এব ক্বতাধ্যবসামন্তম্। আত্মবিনিগ্রহঃ আত্মন উপকারকত্ব আত্মক্ষবাচ্যক্ত কার্য্যকারণসংভাতত্ত বিনিগ্রহঃ স্বভাবেন সর্মতঃ প্রবৃত্তত্ব সন্মার্গএব নিরোধঃ আত্মবিনিগ্রহঃ ॥৭

আনন্দগিরিটীকা। নমু উজে ক্ষেত্রে ক্ষেত্রজ্ঞা বন্ধব্যক্তং হিদ্বা কিমিত্যস্থাহচাতে তর্রাহ—ক্ষেত্রক্তর ইতি। অনাদিনদিত্যাদিনা বক্ষ্যমাণবিশেষণং
ক্ষেত্রজ্ঞাং স্বর্থনৈ ভগবান্ বিবক্ষিতবিশেষণসহিতং জ্ঞেরং যন্তদিত্যাদিনা বক্ষ্যতীতি সম্বন্ধঃ। কিমিতি ক্ষেত্রজ্ঞা বক্ষ্যতে তত্রাহ—যুস্তেতি। জ্ঞেরং বন্তদিত্যতঃ প্রান্ধনগ্রন্থ তাৎপর্য্যমাহ—অধুনেতি। অমানিদ্বাদিলক্ষণং বিদ্যাতীত্যন্তরক্ত সম্বন্ধঃ। জ্ঞানসাধনসমুদারবোধনং কুত্রোপষ্ক্যতে তত্ত্বাহ—
যন্ত্রিক্সিতি। বোগ্যমধিক্ষতমেব বিবুণোতি—যুৎপর্ক ইতি। এতৎ জ্ঞানমিতি
বচনাৎ কথমিদং জ্ঞানসাধনমিত্যাশক্ষ্যাহ—ক্ত্রিতি। তিবিধানত কর্ক্ষারা
দার্চ্চাৎ স্বচন্ধতি—ক্রগ্রানিতি। অমানিদ্বাদিনিক্টত্যন্তর্ধিরো জ্ঞানমিতি বিশ্বম্বর্ধ-

মাহ—অমানিত্বমিতি। মানন্তিরোহিতোহ্বলেপ:। স চ আত্মনি উৎকর্যারোপহেত্: সোহস্তেতি মানী ন মান্তমানী তক্ত ভাবেছিমানিত্বমিতি ব্যাকরোতি—অমানিত্তমিত্যাদিনা। প্রতিষোগিম্থেনাদন্তিত্বং বির্ণোতি—অদন্তিত্বমিতি।
বাঙ্মনোদেহৈরপীড়নং প্রাণিনামহিংসনম্, তদেবাহিংসেত্যাহ—অহিংসেতি।
পরাপরাধক্ত চিত্তবিকারকারণক্ত প্রাপ্তাবেবাবিক্বতচিত্তবেনাপকারসহিক্ষুত্বং ক্লান্তিরিত্যাহ—ক্লান্তিরিতি। অবক্রত্বমকোটিন্যাং বণা হন্তম্ব্যবহার: সদৈকরপপ্রবৃত্তিনিমিত্তবং চেত্যর্থ:। "উপনীয় তু য: শিষ্যম্" ইত্যাদিনোক্তমাচার্য্যং
ব্যবচ্ছিনত্তি—(মান্ত্র্যাতি। শুশ্রবাদীত্যাদিপদং নমন্বাদিবিষয়ম্। বাজ্যমাভ্যন্তরঞ্চ বিপ্রকারং শৌচং ক্রমেণ বিভক্তে—(শৌচমিত্যাদিনা। মনসোরাগাদিনানামিতি সম্বন্ধ:। তদপনরোপারমুপদিশতি—প্রতিপক্ষেতি। রাগাদিপ্রতিক্রক্ত ভাবনা বিষয়েষ্ দোষদৃষ্ট্যা বৃত্তিভয়েতি বাবং। হিরভাবমেব
বিশ্বদৃত্তি—(মান্ত্র্যুতি। আত্মনো নিত্যসিক্ষ্তানাধেয়াতিশয়ন্ত কুতো বিনিগ্রহন্ত্রাহ—আ্যুন ইতি॥
ব

অকুবাদ। কেত্রজের বিশেষণসমূহ পরে বলা হইবে। প্রভাবসম্পন্ন বে ক্ষেত্রজ্ঞান হইলে মোক্ষলাভ হয়, "বাহা জ্ঞাতব্য তাহা বলিতেছি'' ইত্যাদি ন রাক্যের দারা সেই সবিশেদণ কেত্রভের তত্ত্ব নিজেই ভগবান্ বলিবেন। একণে বে ব্লুকল সাধনের দ্বারা সেই ক্ষেত্রজ্ঞের জ্ঞানে অধিকারী সাধক যোগ্যতা লাভ করিতে পারে এবং সন্ন্যাসী যে সকল উপায়ের অনুষ্ঠানে নিরত হইলে, জ্ঞান-নিষ্ঠ বলিয়া অভিহিত হয়, সেই সকল অমানিত প্রভৃতি জ্ঞানসাধন সমূহের বিধান ভগবান্ এই স্থানে করিতেছেন, এই সকল সাধন জ্ঞানপ্রাপ্তির উপায় বিলয়া জ্ঞান শব্দের ধারাই অভিহিত হইয়াছে। ''অমানিশ্ব'' মানীর ভাব মানিত্ব অর্থাৎ আত্মলাঘা সেই আত্মলাঘার অভাবই অমানিত্ব [শক্ষের অর্থ]। "আদম্ভিত্ব" নিজের ধার্ম্মিকতাকে [দশের কাছে] প্রকাশ করিয়া বলার নাম मखिष, সেই मखिष्दत অভাবই অमखिष [শट्मत অর্থ]; "অহিংসা" অহিংসন , অর্থাৎ প্রাণিমাত্তেরই অপীড়ন। "কান্তি" পরের অপরাধ দেখিয়াও মনের মধ্যে কোনপ্রকার বিকার না আসিতে দেওয়াই ক্ষান্তি [শব্দের অর্থণী ; ''আর্জব'' ঋকুভাব অর্থাৎ অবক্রতা। [অর্থাৎ সর্ব্বথা কোটিল্যের পরিহার]'। "আচার্য্যো-পাসন" বে আচার্য্য মোক্ষনাধনের উপদেশ করেন, ভশ্রমাদি দারা তাঁহারা সেবা। "(मोठ" मृखिका ७ अलात बाता : स्मरहत मृत ध्यकानन এवर बांखाखत व्यर्थार ম্নের মূল যে রাগাৰের প্রস্তৃতি, প্রতিকৃত্য ভাবনা ধারা তাহাদের অপনয়নও

শৌচ [শব্দের অর্থ]। "হৈষ্য়" দ্বির ভার অর্থাং নোক্ষমার্গেই দৃঢ়তর অধ্যব-সায়। "আত্মবিনিগ্রহ" আত্মার উপকারক যে দেহেন্দ্রিয়াদি, তাহাই এইছলে আত্ম শব্দের অর্থ, সেই, আত্মার বিনিগ্রহ অর্থাৎ স্বভাবতঃ তাহার সকল দিকেই যে পর্বতি হয়, সেই প্রবৃত্তিকে নিরুদ্ধ করিয়া সন্মার্গেই প্রবৃত্তির স্থিরতা সম্পাদন; তাহাই এই স্থলে আত্মবিনিগ্রহ [শব্দের অর্থ] ॥ ৭

> ইন্দ্রিয়ার্থেয়ু বৈরাগ্যমনহঙ্কার এব চ। জন্মমৃত্যুজরাব্যাধিত্বঃখদোষানুদর্শনম্॥৮

অনুয়। ইব্রিয়ার্থেয় (বিষয়েয়ু) বৈরাগাম অনহংকার: এবচ এবমমৃত্যুজরাব্যাধিছ:থদোষাত্বদর্শনম্॥৮

আনুবাদ। ইন্দ্রিরভোগ্য বিষয়সমূহে বৈরাগ্য, অহঙ্কারের জ্বভাব এবং জন্ম মৃত্যু জরা ব্যাধি ও ছঃখ রাশির প্রতি দোষ দর্শন ॥ ৮

ভাষ্য। কিঞ্চ ইন্দ্রিয়ার্থেয় শব্দাদিয় দৃষ্টাদৃষ্টেয়্ ভোগেয়্ বিরাগভাবঃ বৈরাগ্যম্!

য়নংয়য়েঃ অংকারাভাব এব চ। জন্মসূত্যুজরাব্যাদিয়ংপদোষায়দর্শনং জন্ম চ

য়ৢত্যুল্চ জরা চ ব্যাধয়শ্চ ছ.খানি চ তেয়্ জন্ম দিয়ংখায়েয়্ প্রত্যুকং দোয়ায়দর্শনম্।

জন্মনি গর্ভবাসঃ যোনিয়ারা নিঃসরণং দোয়ঃ তত্যায়দর্শনম্ আলোচনম্। ভূপা

মৃত্যে) দোয়ায়দর্শনম্। তথা জরায়াং প্রজ্ঞাশক্তিতেজানিরোধদোয়ায়দর্শনং
পরিভূততা চেতি। তথা ব্যাধিয়্ শিরোরোগাদিয়্ দোয়ায়দর্শনম্। তথা ছঃশেয়্

য়াধ্যাআধিভূতাধিদৈবনিমিত্তেয়্। অথুবা ছঃখাত্তেব দোয়ঃ ছঃখদোয়ত্ত জন্মাদিয়্
পূর্ববদয়দর্শনম্। ছঃখং জন্ম ছঃখং মৃত্যুঃ ছঃখং জরা ছঃখং ব্যাধয়ঃ ছঃখনিমিত্তবাৎ

জন্মাদয়ো ছঃখং ন পুনঃ স্বরূপেশেব ছঃখমিতি। এবং জন্মাদিয়্ ছঃখদোয়ায়্র
দর্শনাক্ষেক্রেরিয়য়ভোগাদিয়্ বৈরাগ্যমুপজায়তে। ততঃ প্রত্যগাআনি প্রার্ত্তিঃ

করণানামাঅদর্শনায়। এবং জানহেতুম্বাৎ জ্ঞানমূচ্যতে জন্মাদিয়্বখদেবিনম্॥৮

আনন্দণিরিটীক। ন কেবলমমানিধাদীতেব জ্ঞানস্তান্তরঙ্গনাধনানি কিছ বৈরাগ্যাদীতাপি তথাবিধানি সন্তীভাহ—কিপ্রেভি। দৃষ্টাদৃষ্টেধনেকার্থের্ রাগে তংপ্রতিবঁদ্ধং জ্ঞানং নোংপভেতেতি মদা ব্যাকরোভি—ইন্দ্রিপ্রেভি। আবিভূতি। গর্ম্বোহ্রভারেডদভাবোহপি জ্ঞানহেত্রিভ্যাহ—অনহক্ষার ইতি। ইন্দ্রিরার্থের্ বৈরাগ্যমুক্তমুপপাদয়ভি—ক্রন্মেভি। প্রত্যেকং দাবামুদর্শন-মিত্যুক্তং তত্ত্ব জন্মনি দোবামুদর্শনং বিশাদয়ভি—ক্রন্মনীতি। বথা জন্মনি

দোবাস্থসন্ধানং তথা মৃত্যে দোবস্থ সর্ব্ধমম নিক্কনাদেরালোচনং কার্য্যমিত্যাহ—তথেতি। জন্মনি মৃত্যে চ দোবাস্থসন্ধানবজ্জরাদিশ্বপি দোবাস্থসন্ধানং কর্ত্ব্যমিত্যাহ—তথেতি। ব্যাধির দোবস্থাসহতারপ্রসন্ধানং হৃংথের ত্রিবিধেশপি দোবাস্থসন্ধানং প্রসিন্ধ । ব্যাধ্যানাস্তরমাহ—ত্যথবেতি। যথা জন্মাদির হৃংখাস্তের্ দোবদর্শনমূক্তং তথা তেম্বে হৃংথাখ্যদোবস্থ দর্শনং ক্ষুটরতি—ত্যুখমিত্যদিনা। কথং জন্মাদীনাং বাহ্মেন্তিরগ্রাহ্যাগাং হৃংখনং ত্রাহ—ত্যুখেতি। জন্মাদির দোবাস্থদর্শনকৃতং ফলমাহ—এব্মিতি। বৈরাগ্যে সত্যান্মদৃষ্ট্যর্থং করণানাং তদাভিমুখ্যেন প্রবৃত্তিরিতি বৈরাগ্যফলমাহ—ত্ত ইতি। জন্মাদিহুংখদোবাস্থদর্শনং জ্ঞানহেতুর্ কিমিত্যপ্রসন্থ্যাত্মিত্যাশন্ধ্য বৈরাগ্যন্ধারা ধীহেতুত্বাদিত্যাহ— এব্মিতি।

অকুবাদ। আরও ইল্রিয়ার্থ অর্থাৎ এহিক বা পারত্রিক শব্দাদি ভোগ্য-বস্ত্রনিবহে "বৈরাগ্য" বিরাগ-ভাব। "জন্ম-মৃত্যু-জরা-ব্যাধি-ছ:খ-দোষামুদর্শন" জন্ম মরণ বার্দ্ধক্য ব্যাধিসমূহ ও অন্তান্ত হংখসমূহ এই কয়টি বস্তুর প্রত্যেকটিতেই দোষ দেখা। জন্মলাভে দোষ গর্ভবাস ও যোনি দারা নিঃসরণ, সেই দোবের দর্শন অর্থাৎ আলোচনা করা। এই প্রকার মৃত্যুতেও দোষদর্শন। এইরূপে জরাতেও দোব দর্শন, অর্থাৎ প্রজ্ঞা শক্তি ও তেজের নিরোধ এবং স্কল লোকের নিকট পরিভব এই সকল জরা-দোষ। এইরূপ ব্যাধিতে অর্থাৎ শিরোবেদনা প্রভৃতিতে দোব-দর্শন। এই প্রকারই ছ:খসমূহে অর্থাৎ আধ্যাত্মিক আধিভৌতিক ও আধিদৈবিক হু:থনিবহে দোষামুদর্শন। অথবা ছঃখসমূহরূপই দোষ—এইরূপ তাৎপর্য্যে ছঃখদোষ এই শব্দটির প্রয়োগ করা হইরাছে। সেই হঃখ-দোষশক্টির জন্মাদি প্রত্যেক পদার্থের সহিত অবন্ধ করিতে हरेरव। अन्त-१:४, मृड्य-१:४, अता-१:४, वाशिनमूर् १:४। এই अन्त अपृ হুংথের কারণ, এই জন্ম হুংখ বলিয়া কীর্ত্তিত হুইল ; বাস্তবিক ইছারা স্বরূপতঃ তুঃশীনহে। এই প্রকার জন্ম প্রভৃতিতে ছঃখদোষামুদর্শনের ছারা দেহ ইক্রিয় ও বিষরভোগসমূহে বৈরাগ্য উৎপন্ন হয়। তাহার পর সেই সকলের অফুষ্ঠান-স্বরূপ পরমান্তার দর্শনার্থ প্রবৃত্তি উৎপর হয়। এই প্রকার ক্রুয়াদি ছঃখদোরাছদর্শনও জ্ঞানের সাধন বলিয়াই জ্ঞান শব্দের দারা অভিহিত হইয়াছে ॥৮

> অসক্তিরনভিধঙ্গঃ পুত্রদারগৃহাদিয়ু। নিত্যঞ্চ সমচিত্তত্বমিফীনিফৌপপত্তিযু়॥ ৯

আন্থর। [বিষয়ের্] অসক্তিঃ (অনমুরাগঃ) পুত্রদারগৃহাদির্ অনভিষ্কঃ ইষ্টানিষ্টোপপত্তির্নিতাং সমচিতত্ত্ব ॥১

আনুবাদ। বিষয়সমূহে অপ্রীতি, পুত্র পত্নী ও গৃহ প্রভৃতিতে অসাসজি, ইষ্টপাভ বা অনিষ্ঠ প্রাপ্তিতেও চিত্তের অবিকৃত স্বভাব ॥ ১

ভাষ্য। কিঞ্চ — অসজিঃ সজিঃ, সঙ্গনিমিত্তের্ বিষয়ের্ প্রীতিমাত্রং তদভাবঃ অসজিঃ। অনভিদ্বন্ধ অভিদ্বলো নাম সক্তিবিশেষঃ স এব অন্যাত্মভাবনা-লক্ষণঃ বথা অভ্যাত্মিন হঃখিনি বা অহমেব স্থী হঃখী চ, জীবতি মৃতে বা অহমেব জীবামি মরিব্যামি চেতি। ক ? ইত্যাহ প্রেদারগৃহাদির্ প্রের্ দারের্ অভ্যের্ গৃহের্ অপি অত্যন্তেইের্ দাসবর্গাদির্। তচ্চোভন্নং জ্ঞানার্থনাং জ্ঞানমূচ্যতে। নিত্যং চ সমচিত্তমং ত্ব্যাচিত্ততা। ক ? ইষ্টানিষ্টোপপত্তির্ ইষ্টানাম্ অনিষ্টানাং চ উপপ্তরঃ সংপ্রাপ্তরঃ তাস্ক ইষ্টানিষ্টোপপত্তির্ নিত্যমেব ত্ব্যাচিত্ততা ইষ্টোপপত্তির্ ন হয়তি ন ক্পাতি চ অনিষ্টোপপত্তির্। তচ্চ এতং নিত্যং সমচিত্তমং জ্ঞানম্॥৯

আনন্দ গিরিটীকা। জ্ঞানস্থান্তরঙ্গনেব হেম্বন্তরমাই—কিঞ্চেতি। নম্ব্রু অসক্তিরেবাভিম্বন্নভাবন্তথা চ পুনক্ষজিরিত্যাশব্যাভিম্বন্ধাক্তিমারা নিরস্তৃতি—
অভিম্বস্থো নামেতি। অস্থান্ত্রির পুরাদাবস্থাধিরা তলগতে স্থাদাবাদ্ধনি
তদ্ভাবনাথ্যং সক্তিবিশেষমেবোদাহরতি—যুগেতি। উক্তবিশেষণরোরাকাজ্ঞানারা বিষয়মাহ—ক্ত্যোদিনা। উক্তবিশেষণয়োজ্ঞনিশন্দ্র্যোপতিমাহ—
তচ্চেতি। সদা হর্ষবিষাদশ্ভমনত্ত্যপি জ্ঞানহেত্রিত্যাহ—নিত্যক্ষেতি।
তদ্বেৰ বিভম্বতে—ইফেতি। তম্ম জ্ঞানহেত্ত্বং নিগমরতি—তচ্চিতদিতি ॥৯

অনুবাদ। আরও "অসক্তি" সঙ্গহেতু [শলাদি] বিষয়সমূহে বে প্রীতিমাত্র তাহার নাম "সক্তি," এই সক্তির অভাবই "অসক্তি"। "অনভিষদ," অভিষদ [শন্দের মর্থ] আসক্তিবিশেষ, [অর্থাৎ] যাহা আত্মা নহে, তাহাকেই আত্মা হইতে অভিন্ন বলিয়া বে ভাবনা করা যার [তাহাই অভিষদ]; বেমন অন্ত ব্যক্তির মুখ হইলে আমি মুখী হইলাম, অন্ত ব্যক্তির হঃখ হইলে আমি হঃখী হইলাম, অল্তের জীবনে বা মরণে আমি বাঁচিলাম বা আমি মরিলাম এই প্রকার ভাবনা। কোথার এই প্রকার ভাবনা হইরা থাকে ? তাহাই বলিভেছেন বে পুত্র দার গৃহ প্রভৃতিতে। পুত্রসমূহে পত্নীতেও গৃহ প্রভৃতিতে; আদি শক্ষের গ্রহণ দারা অত্যন্ত ইষ্ট দাসবর্গাদিতে [অভিষদ তাহাও বুঝা যাইভেছে]। এই অসক্তি ও অনভিষদ হইটিই জ্ঞানের সাধন বলিয়া জ্ঞান শন্দের দারা অভিহিত হইয়াছে। নিত্য "সমচিত্ত্ব" তুল্যচিত্ততা; কোথায় ? ইষ্টানিষ্টোপান্তিসমূহে, অভিলয়িত বা অনভিলয়িত বিষয়-সমূহের উপপত্তি (প্রাপ্তি) ছইলেও সর্বাদা তুল্যচিত্ততা, অর্থাৎ ইষ্টলাভে হাই হয় না এবং অনিষ্ট প্রাপ্তিতেও কুদ্ধ হয় না—সেই এই সমচিত্তম্ব [জ্ঞানের সাধন বলিয়া] জ্ঞান [শব্দ মারা অভিহিত ছইতেছে]॥ >

ময়ি চানশ্যযোগেন ভক্তিরব্যভিচারিণী। বিবিক্তদেশদেবিত্বমরতির্জনসংসদি॥ ১০

আরুয়। মরি চ (ঈশ্বরে) অন্সংবাগেন অব্যভিচারিণী ভক্তি: বিবিক্ত-দেশদেবিদ্ধ জনসংসদি অরতি: ॥ > •

অমুবাদ। অনস্থাগের সহিত আমাতে অব্যভিচারিণী (অর্থাৎ আচলা) ভক্তি, নির্জ্জন দেশ-সেবন এবং জনতার প্রতি অরুচি ॥ ১ •

ভাষ্য। ময়ি চ ঈশ্বরে অনস্থযোগেন অপৃথক্সমাধিনা, ন অস্তো ভগবতো বাহ্মদেবাৎ পরোহস্তি, অতঃ সএব নো গতিরিত্যেবং নিশ্চিতা অব্যভিচারিণী বৃদ্ধিঃ অনস্থযোগঃ তেন, ভজনং ভক্তিঃ ন ব্যভিচরণশীলা অব্যভিচারিণী। সা চ জ্ঞানম্। বিবিজ্ঞদেশসেবিত্বং বিবিক্তঃ স্বভাবতঃ সংস্থারেণ বা অভ্যাদিভিঃ সর্পব্যাম্মাদিভিঃ চ রহিতঃ অরণ্যনদীপ্লিনদেবগৃহাদিঃ, বিবিক্তো দেশঃ তং সেবিতুং শীলমস্থেতি বিবিক্তদেশসেবী তদ্ভাবঃ বিবিক্তদেশসেবিত্বম্ । বিবিক্তের্ হি দেশের্ চিত্তং প্রসীদতি যতঃ তত আত্মাদিভাবনা বিবিক্তে উপজায়তে, অতো বিবিক্তদেশসেবিত্বং জ্ঞানমুচ্যতে। অরতিঃ অরমণং জনসংসদি জনানাং প্রাক্ততানাং সংস্থারশূলানামবিনীতানাং * সংস্থা সম্বায়ঃ জনসংস্থান ব্যারকাং বিনীতানাং সংস্থা তল্পা জ্ঞানোপকারকত্বাং। অতঃ প্রাক্ত-জনসংসদি অরতিঃ জ্ঞানার্থন্থ জ্ঞানম্॥১•

আনন্দণিরিটীকা। সাধনান্তরমাহ—কিঞ্চেতি। অনন্তবোগমেব সংক্ষিপ্তং ব্যনজি—নেত্যাদিনা। উজধীদারা জাতায়া ভজের্ভগবতি হৈর্ঘ্যং দর্শরতি—নেতি। তত্তাপি জ্ঞানশবস্তদ্ধেতৃদাদিত্যাহ—সা চেণ্ডি। দেশস্থ বিবিক্তদং দিবিধমূদাহরতি—বিবিক্ত ইতি। তদেব স্পষ্টরতি—অরুণ্যেতি। উজ্জদেশসেবিদ্বং কথং জ্ঞানে হেতৃত্বতাহ—বিবিক্তে স্থিতি। স্পাদ্ধাদীত্যাদি-

[🛊] কলহোত্মবিতচিত্তানান্ ইত্যবিক: কচিৎ দুখতে।

শব্দেন পরমান্মা বাক্যার্থশ্চোচ্যতে। নমু অরতিবিষরশ্বেনাবিশেষতো জনসংসন্মাত্রং কিমিতি ন গৃহতে তত্রাহ—তত্ত্যা ইতি। সম্ভঃ * সম্বন্ধ ভেষ্পমিত্যুপদস্তা দিত্যর্থঃ॥১০

অকুবাদ। আরও আমাতে [অর্থাৎ] ঈশরে অনন্তবোগের সহিত অব্যক্তিচারিণী ভক্তি [অনক্রযোগ কাহাকে বলে ?] ভগবান্ বাহ্নদেব হইতে শ্রেষ্ঠ অন্ত কেং নাই, এই প্রকার নিশ্চর,—যে নিশ্চরের ব্যতিক্রম কোনকালে হর না,—দেই এই প্রকার নিশ্চরকে "অনক্তযোগ" বলা যায়। সেই অ নক্তরোগের সহিত বে ভক্তি অর্থাৎ ভক্তন [কেমন ভক্তি ? অব্যভিচারিণী ভক্তি, বে ভক্তির কোনকালেই অন্তথাভাব বা অভাব হয় না, তাহাই "অব্যভিচারিণী" ভক্তি, সেই ভক্তিও [জ্ঞানের উপায় এইজ্ঞ] জ্ঞান [শক্ষের বারা অভিহিত হইরাছে]। ''বিবিক্তদেশদেবিৰ" যে স্থান স্বভাবত: বা ক্লুত্রিম উপায় প্রয়োগ দারা অন্তচি-বর্জিত এবং যে স্থানে ব্যাত্মাদি হিংল্ল জন্ত বিচরণ করে না, সেই স্থানকে "বিবিক্তদেশ" বলা যায়; যেমন অরণ্য নদীপুলিন বা দেবগৃহ প্রভৃতি; সেই विविक्तराम रमवा कता याशात अजाव, जाशात नाम "विविक्तरामरमवी", जाशात ভাব "विविक्टरम्भरतिष्ठ" (अर्थाए मर्खमा निर्द्धान ও পवित एएम वाम कता) ; কারণ বিবিক্ত দেশসমূহে [যে ব্যক্তি বাদ করেন তাঁহার] চিত্ত প্রশন্ত হয়, সেইজ্ঞ তথার স্বত:ই আত্মাদি স্ক্র বিষয়ে ভাবনা [মানসে] উদিত হয়, এজন্য বিবিক্তদেশসেবিত্বকেও জ্ঞান বলা হইয়াছে। "অর্ডি" ভাল না লাগা [কোথার] জনসমূহের সমাগমে, যাহারা লেখাপড়া জানেনা, অবিনীত ও যাহাদের হৃদর সংস্থারহীন, সেই সকল সাধারণ লোকের যে সমবায় বা সংহতি ভাহাকে "জনসংসং" কৰে: সংস্থারসম্পন্ন ও বিনীত ব্যক্তিগণের যে সংসং, তাহা এখানে "জনসংসং" এই শস্কৃটির অর্থ নহে, কারণ এপ্রকার সংসং জ্ঞান লাভের উপায়। প্রাকৃত জনগণের সমবারে যে অর্ডি, তাহা জ্ঞানের কারণ; এইজন্ত উহাও জ্ঞান বলিয়া অভিহিত হইতেছে ॥১০

অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্ত্বজ্ঞানার্থদর্শনম।

,এতজ্জানমিতি প্রোক্তমজ্ঞানং যদতোহক্তথ।। ১১

অন্বয়। .অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বং তত্মজানার্থনর্শনম্ [ইতি] এতং [সর্বাং] জানম্ ইতি প্রোক্তম, অতঃ বং অন্তথা তং অজ্ঞানম্ ॥১১

অকুবাদ। সর্বাদ আত্মজানের নিষ্ঠা এবং তত্তজানের যে ফল মোক,

শতঃ সলক ভেবলমিতি সুগমঃ পাঠঃ।

তাহার আলোচন,—এই দকল বন্ধকেই জ্ঞান বলিয়া [শান্ত্রে] নির্দেশ করা হইয়াছে; এই দকল হইতে যাহা বিপরীত, তাহাই অজ্ঞান ॥১১

ভাষ্য। কিঞ্চ-অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্বম্ আত্মাদিবিষরং জ্ঞানমধ্যাত্মজ্ঞানং তত্মিন্ নিত্যভাবং নিত্যত্বম্। অমানিত্বাদীনাং জ্ঞানসাধনানাং ভাবনাপরিপাক-নিমিত্তং তত্ত্জানং তত্মাথোঁ মোক্ষঃ সংসারে।পরমঃ তত্ম আলোচনং তত্ত্জানার্থ-দর্শনম্। তত্ত্জানফলালোচনে হি তৎসাধনামুষ্ঠানে প্রবৃত্তিঃ তাৎ ইতি। এতদ-মানিত্বাদিতত্ত্জানার্থদর্শনান্তম্ উক্তং জ্ঞানম্ ইতি প্রোক্তং জ্ঞানার্থত্বাৎ। অজ্ঞানং বদত্যেহম্মাৎ যথোক্তাৎ অক্তথা বিপর্যায়েণ মানিত্বং দন্তিত্বং হিৎসা ক্ষান্তিরনার্জ্ঞ্বনিত্যাদি অজ্ঞানং বিজ্ঞেরং পরিহরণায় সংসারপ্রবৃত্তিকারণত্বাৎ ইতি॥১১

আনন্দি গিরিটীকা। সাধনান্তরমাহ—কিঞেতি। আত্মাদীত্যাদিশব্দোহ
নাত্মার্থন্ত দিবরং জ্ঞানং বিবেকন্ত শিলিত্যন্তং তবৈর নিষ্ঠাবন্তং বিবেকনিষ্ঠো হি
বাক্যার্থজ্ঞানসমর্থো ভবতি। তেবাং ভাবনাপরিপাকো নাম যত্নেন সাধিতানাং প্রকর্ধপর্যান্তবং তল্লিমিন্তং তন্তজ্ঞানমৈক্য সাক্ষাৎকারঃ। তৎফলালোচনং কিমর্থমিত্যাশঙ্ক্যাহ—তত্ত্বিতি। প্রবৃত্তিঃ স্থাদিত্যতন্তন্ত জ্ঞানার্থদর্শনমর্থবদিতি শেষঃ। জ্ঞানক্যান্তরক্তে হুকু মুপসংহরতি—এত দিতি। কিমিতি তক্ত বিজ্ঞের দ্বমিত্যাশঙ্ক্যাহ—পরিহরণায়েতি। তত্ত্ব হেতৃং—সংসারেতি। তক্ত প্রবৃত্তিকংপ্রিন্তরে হুবান্মানিত্বাদি ত্যাল্যং জ্ঞাতে চ ত্যাল্যন্তং তেন তক্ত ক্ষেরতেত্যর্থং।
ইতিশক্ষং সাধনাধিকারসমাপ্ত্যর্থং॥১১

অমুবাদ। আরও "অধ্যাত্মজ্ঞাননিত্যত্ব" আত্মা ও দেহ প্রভৃতির দে জ্ঞান, তাহাই "অধ্যাত্মজ্ঞান", সেই অধ্যাত্মজ্ঞানের "নিত্যত্ব" [অর্থাৎ] নিত্যতাব, [তাৎপর্য্য এই যে] সর্মাদা ইহার অমুশীলন। অমানিছ প্রভৃতি জ্ঞানসাধনগুলির যে তাবনা-পরিপাক [অর্থাৎ সংস্কারের দৃঢ়তা] তাহার হারা উৎপন্ন হর যে তত্মজ্ঞান, তাহার যে অর্থ, অর্থাৎ প্রয়োজন বা উদ্দেশ্য মোক্ষ, সেই মোক্ষের দর্শন অর্থাৎ মোক্ষের আলোচনা করিলে তত্মজ্ঞানের যাহা সাধন, তাহাতে প্রবৃত্তি হয়। এই অমানিছ হইতে তত্ত্ব-জ্ঞানার্থ দর্শন পর্যান্ত সাধনগুলিকে জ্ঞান বলিয়া নির্দেশ করা হয়; ফ্রারণ, এই-জ্ঞাল জ্ঞানের সাধন। এই সকল হইতে বাহা "অক্সথা" বিপরীত [অর্থাৎ] মানিছ দন্তিছ হিংসা অক্ষান্তি ও কপটতা প্রভৃতি—অজ্ঞান বলিয়া জানিবে; [কেন ?] পরিহার করিবার জন্ম। কারণ এই দন্তিছ প্রভৃতিই সংসার-প্রবৃত্তির কারণ॥১১

জ্ঞেয়ং যৎ তৎ প্রবক্ষ্যামি যজ্জ্ঞাত্বাহয়তমশ্বতে। অমাদিমৎ পরং ব্রহ্ম ন সৎ তন্নাসন্ত্ত্তে॥১২

আনুয়। বং জেরং তং প্রবক্যানি; [কীদৃশং জেরং?] বং জাদা অমৃতম্ (মোক্ষম্) অর্লুতে (প্রাপ্রোভি); [কিং তং?] অনাদিমং পরং ব্রহ্ম, তং ন সং উচ্যতে ন [অপি] অসহচ্যতে ॥১২

আমুবাদ। বাহা জ্ঞের তাহা বলিতেছি; বাহা জানিতে পারিলে অমৃতত্ত্ব (মোক) লাভ করিতে পারা বার। সেই জ্ঞের অনাদিমৎ, তাহাই পর ব্রহ্ম, সেই পরব্রহ্ম কার্য্যও নহে, কারণও নহে ॥১২

যথোক্তেন জ্ঞানেন জ্ঞাতব্যং কিম্ ইত্যাকাজ্ঞায়াম আহ জ্ঞেরং ষৎ তদিত্যাদি। নমু যমা নিরমাশ্চ অমানিত্বাদয়: ন তৈজেরিং জারতে। ন हि अभानियांनि कश्चिति वज्जनः भतित्रक्रमकः नृष्टेम्। मर्विटेखव यन्विवयकः छानः তদেব তম্ম জেমুম্ম পরিচ্ছেদকং দুশুতে। নহি অন্তবিষয়েণ জ্ঞানেন অন্তৎ উপলভ্যতে। যথা ঘটবিষয়েণ জ্ঞানেন অগ্নি:। নৈষ দোষ: জ্ঞাননিমিত্তছাৎ জ্ঞান মূচ্যতে ইতি হাবোচাম। জ্ঞানসহকারিকারণখাচচ।—জ্ঞেরং জ্ঞাতব্যং বং তৎ প্রবক্ষ্যামি প্রকর্ষেণ দথাবৎ বক্ষ্যামি। কিংফলং তৎ ইতি প্রব্যেচনেন শ্রোতুরভিমুখীকরণায় আহ—যজ্জেরং জাছা অমৃতম্ অমৃতত্মৃ অলুতে ন পুনর্মিরতে ইতার্থ:। অনাদিমৎ আদিরস্থান্তীতি আদিমৎ--ন আদিমৎ অনাদি-মৎ। কিং তৎ । পরং নিরতিশয়ং ব্রহ্ম ক্রেয়মিতি প্রক্রতম্। অত কেচিৎ অনাদি মৎপরমিতি পদং ছিন্দন্তি বহুত্রীহিণা উক্তেহর্থে মতুপ আনর্থক্যমনিষ্টং খ্যাদিতি। অর্থবিশেষং চ দর্শয়স্তি-অহং বাস্থদেবাখ্যা পরা শক্তির্যন্ত তৎ মৎপরম ইতি। সত্যমেবম্ অপুনক্তং ভাৎ অর্থন্ডেৎ সম্ভবতি, নম্বর্থ: সম্ভবতি; ব্রহ্মণঃ সর্ববিশেষ প্রতিষেধেনৈব বিজিজ্ঞাপয়িষিতত্বাৎ ন সভ্তমাসহচ্যতে ইতি। বিশিষ্ট-শক্তিমন্ব প্রদর্শনং বিশেষ প্রতিষেধণ্ট ইতি বিপ্রতিষিদ্ধম। তন্মান্মতুপো বছত্রীহিণা সমানার্থছেহপি প্রয়োগ: শ্লোকপূরণার্থ:। অমৃতত্বফলং জ্ঞেরং ময়া উচ্যতে ইতি প্ররোচনেন অভিমুখীকৃত্য আহ—ন দৎ তজ্ঞেরমুচ্যতে নাপি অসত্তহচ্যতে। নম্ব মহতা পরিকরবন্ধেন 🛊 কণ্ঠরবেণ উদ্ঘুষ্য জ্ঞেরং প্রবক্ষ্যামীতি অনমুরূপমুক্তং ন সত্তন্নাসহচ্যতে ইতি। ন, অহুরূপমেব উক্তম্। কথং সর্বাস্থ হি উপনিবংস্থ জ্বেরং ব্রহ্ম "নেতি নেতি অস্থ্রমনণ্" ইত্যাদি বিশেষপ্রীভিষেধেনৈব নির্দিশ্রতে নেদং তৎ ইতি বাচোহগোচরত্বাৎ। নমু ন তদন্তি যদ্বস্থ অন্তিশক্ষেন নোচ্যতে।

^{*} করিকরবজেন ইতি কেচিৎ পঠন্তি।

তথাত্তিশব্দেন নোচ্যতে * নান্তি তব্বজন্ম। বিপ্রতিষিদ্ধং চ জেন্ধং তদন্তি-শব্দেন নোচ্যতে ইতি চ। ন তাবলান্তি নান্তিবুদ্ধ্যবিষয়ত্বাৎ। নমু সর্বন বুদ্ধরঃ অন্তিনান্তিবৃদ্ধ্যকুগতা এব । তত্ত্বৈবং সতি জেন্নমণি প্রত্যন্ত্রবিষয়ং বা স্থাৎ নান্তিবদ্ধানুগতপ্রতায়বিষয়ং বা স্থাং। ন, অতীক্রিয়ত্বেন উভয়বৃদ্ধানুগতপ্রতায়া-বিষয়ত্বাং। যদ্ধি ইন্দ্রিয়গম্যং বস্তু ঘটাদিকং তদন্তিবৃদ্ধামুগতপ্রত্যন্ত্রবিষয়ং বা স্তাৎ নান্তিবৃদ্ধাযুগতপ্রতায়বিষয়ং বা স্তাৎ। ইদং তু জ্ঞেয়মতীক্সিয়দ্বেন শবৈক-প্রমাণগম্যভার ঘটাদিবহুভরবুদ্ধান্থগতপ্রতারবিষয়ন্ ইত্যাতো ন সত্তরাসদি-ভাূচাতে। ষত্তুকং বিক্লম্চাতে জ্ঞেমং তৎ ন সতন্নাসহচাতে ইতি। ন বিরুদ্ধর "অন্তদেব তদবিদিতাদথো অবিদিতাদধি" ইতি শ্রুতে:। শ্রুতিরপি विक्रकार्था हेलि (५९ - वर्था वक्षात्र भागामात्रला (का हि जन्दवन वश्चमूत्रिन् लाटक অস্তি বা ন বেতি ইত্যেবমিতি চেং। ন, বিদিতাবিদিতাত্যাম অন্তত্বশ্রতের-বশুবিজেরার্থ-প্রতিপাদনপরস্বাৎ। বল্পমুশ্মিন ইত্যাদি তু বিধিশেবোহর্থবাদঃ। উপপত্তেশ্চ সদস্দাদিশবৈ: ব্রহ্ম নোচ্যতে ইতি। সর্বো হি শব্দ: অর্থপ্রকাশনায় প্রযুক্ত: শ্রায়মাণশ্চ শ্রোতৃভির্জাতিক্রিয়াগুণসম্বন্ধবারেণ সঙ্কেতগ্রহণং সব্যপেক্ষ: অর্থং প্রত্যায়য়তি। নাক্তপা অদুষ্টবাৎ। তদ্যপা গৌরশ্ব ইতি বা ছাতিতঃ, পচতি পঠতীতি বা ক্রিয়াত:, শুক্ল: ক্লফ ইতি বা গুণত:, ধনী গোমান ইতি বা সম্বন্ধতঃ। ন তু ব্ৰহ্ম জাতিমৎ অতো ন সদাদিশকবাচ্যং, নাপি গুণবৎ যেন গুণশব্দেন উচ্যেত নিগুণিত্বাৎ, নাপি ক্রিরাশব্দবাচ্যং নিক্রিরত্বাৎ "নিচ্চলং নিক্রিরং শান্তম্" ইতি শ্রুতে:। ন চ সম্বন্ধি একডাৎ অন্বয়ত্বাৎ অবিষয়ত্বাৎ আত্মত্বাচ্চ ন কেনচিৎ শব্দেন উচ্যতে ইতি যুক্তং "যতো বাচো নিবৰ্ত্তব্তে" ইভাদি শ্ৰুভিভাশ ॥ ১২

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরগ্রহণবতাররতি—যথেণাক্তেনেতি।
আমানিখাদীনাং জ্ঞানখনাক্ষণতি—নিম্বিত। বন্ধপরিজ্ঞেদকথাং জ্ঞানখনালক্ষ্যাহ—নহীতি। পরিছেদকথাং জ্ঞানখং জ্ঞানখাং পরিছেদকথমিত্যজ্ঞোস্থাতিরেকথারা বিশদরতি—নহীতি। ব্যতিরেকদৃষ্টাস্তমাহ—যথেতি।
আমানিখাদীনাং জ্ঞানখমাকিথং প্রতিক্ষিপতি—নৈষ্ দোষ্ঠ ইতি। ত্রু
হেতুবেনাক্তং স্নাররতি—জ্ঞানেতি। তেরু জ্ঞানশব্দে গ্রেম্বরমাহ—
জ্ঞানেতি। আমানিখাদীনাং জ্ঞানখম্ক্রা জ্ঞাতব্যমবতাররতি—ক্রেয়ুমিতি।

⁺ यৎ ইতাধিকং কচিৎ।

প্রশ্নবারা জ্বেরপ্রবচনত্ত ফলমুক্ত্রা প্ররোচনং কৃষা তেন শ্রোতুরাভিমুখ্যমাপাদরিতৃং প্রবচনফলোক্তিপরম্ অনস্তর বাক্যমিত্যাহ — কিমিত্যাদিনা। তদেব বিশিনষ্টি— অনাদিমদিতি। আদিমন্বরাহিত্যমব্যাক্বতন্তাপি অন্ত্যতো বিশেষং দর্শরতি— কিং তদিতি। ভোক্তুরপি ভোগ্যাৎ পরত্বম্ ইত্যতো বিশিন⁸—ব্রেক্সেতি। অনাদীতোকং পদং মৎপরমিতি চাপরমিতি পদচ্ছেদাৎ ন পুনক্ষকিরিতি মতাস্তর-মুখাপয়তি —অত্ত্ৰেতি। একপদন্বসম্ভবে কিমিতি পদন্বমিত্যাশব্যাহ—বস্তুত্ৰী ভিৰ্ণেতি। আদিরশু নান্তীতি যো বছবীছিণোক্তোহর্থ: তশ্মিমাদিমন্থনিবেধে নান্তি মৃত্পোহর্থবন্তমিতি। মৃত্বানর্থক্যমনিষ্ঠং ভাদিতি মন্ত্রা পদং ছিলস্ভীতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। আদিরশু নাস্তীত্যনাদীত্যকা মৎপর্মিত্যুচ্যমানে কোহর্থ: স্থাদিত্যাশঙ্কাহ -অর্থেতি । উক্তব্যাখ্যানস্থাযুক্তবাৎ নায়ং পুনক্ষকিনমাধি-রিত্যাহ—স্তামিতি। অর্থাসম্ভবং সমর্থরতে—ব্রহ্মণ ইতি। তথাপি বিশিষ্ট-শক্তিমন্তং কিং ন স্থাদিত্যাশকাাহ—বিশিষ্টেতি। তথাপি মতুপো বছবীহিণা তুল্যার্থস্ত কথং নানর্থক্যং তত্তাহ—তত্মাদিতি। অনাদিমৎপরং ব্রশ্বেত্যত্ত পকান্তরং প্রতিক্রিণ্য অপকঃ দমর্থিতঃ সম্প্রতি ব্রহ্মণো ব্রহ্মছাদেব কার্য্যকারণ্:-অক হপ্রাপ্তে উক্তান্থবাদদারা ন সদিত্যান্তবভারম্বতি—অমৃতত্ত্বতি। সৎকার্য্য-মভিব্যক্তনামরূপরাৎ অসৎ কারণং তদ্বিপর্যয়াদিতি বিভাগ:। জের প্রবচনমনির্বাচা বিষয়ত্বাৎ প্রক্রম প্রতিকৃলমিত্যাক্ষিপতি—নৃদ্বিতি। নির্কিশেষশু বস্তুনা জ্ঞেয়ত্বাৎ তণ্বিষয়ং প্রবচনং প্রক্রমান্তক্লমিত্যন্তরমাহ—নেত্যাদিনা। অনির্বাচ্যত্তে ন সতন্নাসৎ ইত্যু: চুনামে কথ মিদম**ন্থ**রপমিতি পৃচ্ছতি—কথমিতি। ব্ৰহ্মাত্মপ্রকাশ**ত** সিদ্ধত্বাৎ তদৰ্থং বিধিমুখেনোপদেশাযোগাৎ অধ্যস্ততদ্ধৰ্মনিবৃত্তদ্বে নিবেধৰাক্লোপদেশক বেদাস্তেযু প্রদিদ্ধেরারোপিতবিশেষ নিষেধক্ষপমিদং প্রবচনম্চিতমিতি পরিহরতি —সর্বাস্থিতি। জেমস্ত বৃদ্ধাণ বিধিমুখোপদেশাঘোগে হেতুমাই—বাচ ইতি। ব্রহ্মণোহন্তিশব্দাবাচ্যতে নরবিষাণবৎ নান্তিত্বমিত্যনিষ্টমাশক্ষতে—নম্বিতি। এব-মুৎসর্গেহপি বন্ধনি কিমায়াতমিত্যাশব্যাহ—অত্থেতি। জ্ঞেয়স্তান্তিশব্দাবাচ্যত্তে ব্যাদাতশ্চেত্যাহ—বিপ্রতিষিদ্ধঞ্চেত। অন্তিশন্দাবাচ্যদাবন্ত ব্রন্ধেত্যত্ত অপ্রবেশ্বেক্রমাহ—ন তাবদিতি। নাভিব্দিবিষয়ত্বমেব অবস্তুত্বে নিনিমত-खन्ভाবान् बन्नात्। नावख्वा हेट्डाज्यन्व वाक्नोक्ख्ः कामद्रजि—निविजि। সর্কাদাং ধিরাম্ অতিধীত্বেন নাতিধীধেন বা অহুগতত্বে অন্ততরধীগোচরছাভাবে বন্ধণোহনির্বাচ্যত্বং হর্বারমিতি ফলিতমাহ—তত্ত্তেতি। বন্ধণো ঘটাদিবৈলকণ্যাৎ উভন্নু ব্যাবিষয় থেহপি নানির্বাচ্য তেত্যাহ—নেত্যাদিন। বটাদেরি ক্রিয়গ্রাহ্য

উভয়বৃদ্ধিবিষয়ত্বে২পি ব্ৰহ্মণস্তদ্গ্ৰাহ্মস্ত নোভয়ধীবিষয়ত্বং তপাপি নানিৰ্ব্বাচ্যত্বং সচ্চিদেকজানক শব্দপ্রমাণাদবিষয়ত্বেন দৃষ্টবাদিত্যক্তমেব প্রপঞ্চয়তি—যদ্ধীতি। পরোক্তং বিরোধমম্বন্দতি —যান্তিতি। শ্রুতাবষ্টন্ডেন নিরাচষ্টে—ন বিরুদ্ধমিতি। সাপি বিৰুদ্ধাৰ্থপাৎ ন মানং ঘোধকত অবিরোধাপেক্ষপ্তাদিতি শহতে—ভাততি রিতি। তম্মা বিরুদ্ধার্থবেনাপ্রামাণ্যে দৃষ্টান্তমাহ—যথেতি। প্রাচীনবংশং করোজীতি পারলৌকিকফলযজ্ঞামুষ্ঠানার্থং শালানির্দ্ধাং প্রস্তুত্য কো হি তদ্-বেদেত্যাছা প্রশোক্দত্তে সন্দিহানা যথা বিরুদ্ধার্থা শ্রুতির প্রমাণ্মেরং বিদিতা বিদিতাক্ত্বশ্রুতিরপীতার্থ:। নেরং শ্রুতিবিক্লরার্থত্বেনামানতরা হাতব্যা ব্রহ্মণ্য-षिতীয়ে প্রত্যকাপ্রতিপাদনেন মানহাদিত্যুত্তরমাহ—ন বিদিত্তেতি। विक्रकार्थएक दका शैकुमाञ्चल जनमन्थवानच विधित्मवच चार्थ जार्भग्रामिलाह — যদীতি। যত্ৰ জাত্যাদিমত্বং তত্ৰ বাচ্যত্বং বথা গবাদো ন ব্ৰহ্মণি জাত্যাদি-মন্ত্রম অভস্তস্তাবাচ্যন্থান্নিবেধেনৈব বোধ্যন্থমিত্যাহ—উপপ্রেক্ত্রেক্তি। নোচ্যত हेकि निर्दिर्देनव ज्ञाशितम हेकिःभवः। क्राजािष्मराजार्श्यका वाह्यस তত্ত্বৈব সঙ্গতিগ্ৰহাদিতি প্ৰপঞ্চয়তি—সূৰ্ব্বো হীতি। মঞ্চত স্পাত্যাদি-ছারেণাঞ্জাতসঙ্গতের্বা শব্দশু ন বোধকত্বসদৃষ্টেরিত্যাহ – নান্যথেতি। জাত্যাদে: সচ্চস্পবিষয়ত্বমূলাহরতি—তদযথেত্যা দিনা। বন্ধণস্বগোত্রত্বমবর্ণত্বমিত্যাদি-ঞ্ৰতেঃ জাত্যাদিমস্বাভাবাৎ ন শন্ধবাচ্যতেত্যাহ—ন ত্বিতি। কেবলো নিগুণ শ্চেতি শ্রুতে গুণিবারা ব্রন্ধণো ন বাচ্যতেত্যাহ—নাপীতি। নিজ্ঞিরত্বে মানমাহ — নিক্ষলমিতি। ব্রহ্মণোহরমুখ্যাশেবোপনিষৎস্থ সিদ্ধ খান্বিশিষ্ট্য সম্বন্ধত ভশ্বিদ্ধসিদ্ধেন তদ্বারাপি তম্ম বাচ্যতেত্যাহ—ন চেতি। বন্ধণ্যভিধাবৃত্ত্যা শনাপ্রবত্তো হেম্বন্তরাণ্যাহ—অন্বয়ত্বাদিতি। ব্ৰহ্মণোহবাচ্যত্ত্বে সংবাদয়তি – যত ইতি॥ ১২

অনুবাদ। পূর্বে যে সকল জ্ঞানের নির্দেশ করা হইরাছে, তাহা ছারা কি জানিতে হইবে ? এইপ্রকার প্রশ্নের [উত্তর] বলিতেছেন ভগবান্ যে, বাহা জ্ঞের ইত্যাদি। একণে শক্ষা করা যাইতে পারে যে, পূর্বে যাহা কিছু বলা হইরাছে, তাহা সকলই যম বা নির্দের অন্তর্নিবিষ্ট; ঐ সকলের ছারা কোন বন্ধই ত জ্ঞাত হইতে পারে না, অমানিত্ব প্রভৃতি কোন বিষয়ের প্রকাশক কথনই হইতে পারে না। সকল স্থলেই দেখিতে পাওয়া যার যে, যে জ্ঞানের যে বিষয়, সেই জ্ঞানই তাহার প্রকাশক হইরা থাকে; একবিষয়ক জ্ঞানেরথারা অন্ধ বন্ধ কথনই প্রকাশিত হইতে পারে না; যেমন ঘট বিষয়ক জ্ঞানের ছারা অন্ধি [কিছুতেই

প্রকাশিত হয় না]। এই প্রকার শকারূপ দোব হইতে পারে না; কারণ-এই বে জ্ঞান শক্তির প্রয়োগ করা হইয়াছে, উহার অর্থ জ্ঞান নহে; কিন্তু জ্ঞানের সাধন: এইরূপ তাংপর্য্যেই এই স্থানে জ্ঞান শব্দটি প্রযুক্ত হইরাছে। ইহাই আমি বলিয়াছি ঐ সকল অমানিত্ব প্রভৃতি জ্ঞানের সহকারি-কারণ: এই অক্সই ঐগুলিকে ভাল করিয়া বুঝাইবার জন্ত জ্ঞান শব্দের প্রয়োগ করা হইরাছে। "জ্ঞের" জ্ঞাতব্য যাহা, তাহা এক্ষণে আমি প্রকৃষ্টরূপে বলিতেছি। সে জ্ঞেরকে জানিরা লাভ কি ? তাহার নির্দেশ দারা শ্রোতার শুনিবার প্রবৃত্তিকে উত্তেজিত করিবার জন্ত বলিতেছেন যে, যাহার জ্ঞান হইলে লোক "অমৃত" অমৃতত্ব লাভ করিয়া থাকে অর্থাৎ আর তাহাকে মরিতে হয় না : "অনাদিমৎ" বাহার আদি चाहि, जाराक "यानिमर" कहा गांत, याहा व्यानिमद नट्ट जाहाहे "अनानिमद"। ্দেই অনাদিমং বস্তু কি ? তাহাই "পর" নিরতিশয় ব্রহ্ম.—তাহাই জেরুক্রপে এথানে প্রক্রান্ত হইয়াছে। কোন কোন ব্যক্তি "অনাদিমৎপর" এই পদটিকে ছই ভাগে বিভক্ত করিয়া থাকেন অর্থাৎ 'অনাদি' এই একটি পদ আর একটি 'মৎপর'। কেন এইপ্রকার করেন [ইহার উত্তরস্বরূপে তাঁহারা বলেন] বছবীতি সমাসের ৰারাই বে অর্থ বুঝান যায়, তাহাই বুঝাইবার জন্ত যদি তাহার উত্তর ম**ুপ**্রপ্রত্যর করা যায়, তাহা হইলে মতুপ প্রতায়টি বুণা হয় ি অর্থাৎ যাহার আদি নাই এই बार्थ वह्योहि कतिया 'ब्यनामि' এই भक्षि निष्पन्न इहेत्ल, উहात बाता त्य व्यथं त्याध হয়, অনাদি শব্দের উত্তর মতুপ্ প্রত্যয় করিয়া "অনাদিনং" শব্দটি নিশার করিয়া তাহার দারা বদি ঐ অর্টিই বোধ করান হয়, তাহা হইলে মতুপ্ প্রত্যের ক্রি-বার কোন আবশুকতা বোধ হয় না; কারণ অনাদিমৎ বলিলেও বাহা বুঝা বায়. খনাদি বলিলেও তাহাই বুঝা যার; এরূপ খলে অতিরিক্ত প্রয়োগ করিবা কি লাভ ?] এইরূপ বুণা পদের প্রয়োগ কথনই ইষ্ট হইতে পারে না; [এবং বিভীয় অর্থাৎ "মৎপর" এই শন্ধটির] অর্থবিশেষেও তাঁহারা এইপ্রকার দেখান যে, আমি অর্থাৎ বাস্তদেব বাহার পরা শক্তি সেই মৎপর। সত্য বটে এই প্রকার পদ্ধর করনা করিলে পুনক্ষক্তিরপদোবের পরিহার হইতে পারে; কিন্তু, বদি এইরপ ব্যাখ্যার অর্থ সক্ষত হর. তাহা হইলেই এইপ্রকার ব্যাখ্যা গ্রহণ করা বাইতে পারে। বাস্তবিক এইরপ ব্যাখ্যার অর্থ সঙ্গত হইতে পার্কে না।ু কারণ, এইস্থানে যে জ্ঞের ব্রহ্মকে প্রতিপানন করিবার ইচ্ছা করা হইরাছে, তাহা কি প্রকার? সকল প্রকার বিশেষ অর্থাৎ উপাধির নিবেধ করিয়া সেই নির্বিশেষ ব্রশ্বকেই জের বিলয়া ৰুঝাইবার ইচ্ছাই এথানে প্রকাশ পাইতেছে। তাহাই বদি হইল, তবে;

সেই ব্রন্ধে বিশিষ্ট শক্তি আছে অথচ সেই ব্রহ্ম সকল প্রকার উপাধিবর্জিত. এই-श्रकात विक वर्गना कता यात्र, जावा वहेरान धहेत्राभ वर्गना श्रुक्ताभन्न विककार्थ बहेता পতে। এরপ বিপ্রতিষিদ্ধ ভাষণের আপত্তি উপস্থিত হইতে পারে। তাহা ঠিক নহে। বাহাকে জানিলে মরণের হস্ত হইতে নিক্ষতি পাওয়া বার, সেই বস্তুর স্বরূপ আমি বলিতেছি বলিয়া শ্রোভাকে গুনিবার জ্বন্ত উৎস্থক করিয়া, একণে বলিতেছেন বে সেই জের সং ইহাও বলা যায় না এবং উহা অসং তাহাও বলা বার না। এক্ষণে এইপ্রকার শঙ্কা হইতে পারে যে, মহানু আড়ম্বর করিয়া উচ্চকণ্ঠরবে বোষণা ক্রিয়া বলা হইল বে, এইবার আমি যাহা জের, তাহা বলিতেছি; তাহার পরই वना इंडेन (व. तमहे (व क्किव, जाहारक मध्य वना यात्र ना, जमध्य वना यात्र ना ; ইহা নিতান্তই অবোগ্য ভাষণ হইতেছে। এই কারণ এই প্রকার শঙ্কা হইতে পারে না: এখানে এই প্রকার বলাই (অর্থাৎ আমি যে ভাবে তাৎপর্কা বর্ণন করিলাম সেই ভাবে) ঠিক সঙ্গত হইরাছে। কি প্রকারে ? [তাহাও বলিতেছি । সকল উপনিবদে যথনই পরব্রন্ধের নির্দেশ করা হইরাছে, তখনই "তাহা স্থল'নতে, তাহা অণু নহে" ইত্যাদি বাক্যের দ্বারা সকল প্রকার উপাধির নিবেধ শারাই তাহার স্বরূপ প্রতিপাদন কর। হইয়াছে। ইহা তাহা নহে-এইভাবে মাই বস্তুসমূহের নিষেধ ঘারাই ভাহা বুঝান সম্ভব; কারণ সাক্ষাৎ-ভাবে কোন বচনের বারা তাহা বুঝান যাইতে পারে না। এথানে আবার শ্রহা হইতে পারে বে-সে বন্ধ থাকিতেই পারে না, যাহা "অন্তি" আছে এই ্রাকার ঃশক্ষের ছারা নির্দিষ্ট হয় না। যদি অস্তি এই শক্ষের ছারা সেই জেয় क्ख निर्मिष्ठ इंदेरा भारत ना अज्ञभ इम्र, जादा इटेलाहे [मानिया नहेरा इटेरा ৰে । ভাহা দাই। তাহা জের অণচ তাহা 'অন্তি' এই প্রকার শব্দের বারা িনির্দিষ্ট ইইতে পারে না, এইরূপ বাক্যদর পরস্পর-বিরুদ্ধ। [ইহার উত্তর এই ্বে] এইপ্রকার শহাও টিকিতে পারে না ; কারণ, সেই জ্ঞের নাই এই প্রকার [वना हहेरजह] ना। कावन, जाश "नाहे" धहेन्नभ स्नात्नन विवन नहि। পুনর্কার শকা হইতেছে যে, যত প্রকার জ্ঞান আছে, সেই সকল জ্ঞানই হয় 'অন্তি' [আছে] এইরূপ বৃদ্ধির সহিত মিলিত কিংবা, 'নান্তি' [নাই] এইপ্রকার ৰুদ্ধির সহিত মিলিউ। ভাহাই বদি হইল, তবে এই জেয় [ব্রহ্ম] হর অভি এই প্রকার বৃদ্ধির সহিত মিলিত বে জ্ঞান, তাহার বিষয় হইবে; किश्ता नान्धि धरे थाकात वृषित्र महिष्ठ मिनिष्ठ व कान, छाहात विषत्र हरेव। এই প্রকার শকাও ঠিক নহে। কারণ, রন্ধ অতীব্রিয় , এইবায় ভাষা এই

উভয় প্রকার বুদ্ধির মধ্যে কোন একটি বুদ্ধির সহিত মিশ্রিত বে বুদ্ধি, তাহার विवत रहेएक भारत ना। य नकन वस है क्षियत शांकत-विमन वह धाक्कि, তাহারাই 'অন্তি' এই প্রকার বৃদ্ধির সহিত মিলিত জ্ঞানের গোচর হয়; অথবা 'নান্তি' এই প্রকার বৃদ্ধির সহিত মিলিত জ্ঞানের গোচর হয়। কিন্তু, এই বন্ধ-স্বরূপ বে জের, তাহা অতীক্সির এবং একমাত্ত বেদরূপ শব্দপ্রমাণেরই বিষয়। এই जा विशेषि हिन्ति त्र क्षेत्र कात्र थहे हुई ध्येकात विषेत्र माथा कान्य একটি বৃদ্ধির বিষয় হইতে পারে না। এইজন্তই বলা হইরাছে, ভাষা 'मर' हेराও वना वात्र ना ; व्यावात्र जारा 'व्यमर' हेराও वना वात्र ना । चात এको कथा वना इहेताहिन त्व. "हेहा विक्रम वना इहेन [कि विक्रम ?] उक्क (खड़ अथंठ छेड़। मध्य नार्ट अमध्य नार्ट"। हेटांच विक्क नार्ट: কারণ শ্রুতিই বলিতেছেন বে, সেই ব্রন্ধ "বিদিতও নহে, অবিদিতও নহে"। াষ্ট্রিবল, এই শ্রুতির অর্থন্ত বিরুদ্ধ (এই প্রকার বিরুদ্ধার্থ শ্রুতি আরও অনেক দেখিতে পাওয়া যায়] যেমন যজ্ঞের জন্ত গৃহ নির্মাণারভের পর "কে তাহা জানে যে পরলোকে ইহা থাকে অথবা থাকে না^{*} এই শ্রভিও সেইক্লপ হইবে। এই প্রকার শক্ষা করাও ঠিক নহে, কারণ এই বে বিদিত হইতেও বিলক্ষণ এবং অবিদিত হইতেও বিলক্ষণ ইত্যাদি শ্রাভ 👔 ইহা কর্ম প্রকরণের নহে], অবশ্র বিজেয় কোন বস্তুর স্বরূপ প্রতিপাদন করিতেছে; কিন্ত "কে জানে পরলোকে আছে কি না, ইত্যাদিরূপ যে শ্রুতি, তাহা কর্মবিধির শেষ : স্থতরাং তাহা [অর্থবাদ বিহিত কর্ম্মের স্বতি বা প্রতিবিদ্ধ কর্ম্মের নিন্দাই व्यर्थनाम वाटकात जारश्यार्थ हहेन्ना शाटक]। जर वा व्यत्रर **এই नकन महिन्द्र** দারা ধে ব্রহ্মবরূপ প্রকাশিত হইতে পারে না, এই প্রকার সিদ্ধার্ত বৃক্তির দারাও ব্যবস্থাপিত হইয়া থাকে; [কি প্রকারে হয় ? তাহাও দেখাৰ্প হাইছেছে], অর্থবোধ করাইবার ভক্ত প্রযুক্ত সকল শব্দই শ্রোভগণের কর্পে থাবিষ্ট হইরা [কি প্রকারে অর্থবোধ করার ?] জাতি ৩ণ ক্রিয়া ও সম্বন্ধ এই করটি বস্তুর ৰারা পরিছিত্ব বে বন্ধ তাহাই আমরা শব্দপ্রমাণের বারা ব্রিয়া থাকি. [এইরূপই দেখিতে পাওরা যায়], শব্দ অন্ত কোন প্রকারে বে অর্থ বোধ করাইরা থাকে. এ প্রকার দেখিতে পাওরা বার না। তাহার উদাহরণ—বেমন গো বা অর্থ এই সকল শব্দ জাতিবিশিষ্ট বস্তুকে বোধ করাইরা থাকে, পচতি বা পঠতি এই প্রকারের শব্দগুলি ক্রিরার দারা পরিচ্ছির বস্তুকেই বোধ করাইরা থাকে, শুক্ল বা ক্লফ ইত্যাদি শব্দ গুণবুক্ত বস্তুকে বোধ করাইরা থাকে। ধনী গোমান

ইত্যাদি শব্দ সম্বন্ধযুক্ত বস্তুকে বোধ করাইরা থাকে। এইছানে বক্তব্য এই বে, ব্রহ্মের কোন জাতি নাই; স্থতরাং উহা সদাদিশব্দের বাচ্য হইতে পারে না। ব্রহ্ম গুণবিশিষ্টও নহে বে, উহা গুণবাচক শব্দের ঘারা নির্দিষ্ট হইবে; কারণ, ব্রহ্ম নিগুণি [এইরূপ শাস্ত্রে উক্ত হইরা থাকে]; কোন প্রকার পরিণামাদি ক্রিয়াও ব্রহ্মে নাই; এই কারণ কোন ক্রিয়াবাচক শব্দের ঘারা ব্রহ্মের নির্দেশ হইতে পারে না; কারণ শ্রুতি বলিতেছেন—"ব্রহ্ম নিজন, নির্দ্রিয় এবং শাস্ত"। কাহারও সহিত যে ব্রহ্মের সম্বন্ধ আছে, তাহাও নহে; কারণ ব্রহ্ম এক অদ্বর্ম অবিষয় এবং সকলেরই আত্মা; স্থতরাং ব্রহ্ম যে কোন প্রকার শব্দের ঘারা [সাক্ষাৎ ভাবে] নির্দিষ্ট হইতে পারে না, ইহাই যুক্তিযুক্ত। "যাহা হইতে বাক্য সকল নির্ত্ত হইয়া থাকে" এইরূপ বহু শ্রুতি ঘারাও এই প্রকারই সিদ্ধ হইরা থাকে। ১২

সর্ব্বতঃ পাণিপাদং তৎ সর্ব্বতোহক্ষিশিরোমুখম্ সর্ব্বতঃ শ্রুতিমল্লোকে সর্ব্বমারত্য তিষ্ঠতি॥ ১৩

জন্ম । তৎ সর্বতঃ পাণিপাদং, সর্বতোহক্ষিশিরোম্থং, সর্বতঃ শ্রুতিমৎ [সং]লোকে সর্বন্ আর্ত্য তিষ্ঠতি॥ ১৩

অনুবাদ। সেই [একা] দকল দিকেই [অনন্ত] হস্ত ও পাদযুক্ত, তাঁহার নমন মন্তক ও মুথ দকল দিকেই রহিয়াছে, দকল দিকেই তাঁহার কর্ণ [বিশ্বমান আছে] তিনি এই বিশ্বের দকল প্রাণিশরীরকেই নিজ্পতায় [সম্পূর্ণক্ষণে] আরুত করিয়া বর্তুমান রহিয়াছেন ॥১০

ভাষ্য । সক্ষম প্রত্যয়াবিষয়য়াৎ অসন্থাশকারাং জ্ঞেয়য় সর্বপ্রাণিকরণোপাধিবারেণ তদন্তিত্বং প্রতিপাদয়ন্ তদাশকানিবৃত্ত্যর্থমাহ—দর্বতঃ পার্ণিপাদং
সর্বতঃ পাণয়ঃ পাদাশ্চ অস্ত্রেতি সর্বতঃ পাণিপাদং তজ্ব জ্ঞেয়ম্ । সর্বা প্রাণিকরণোপাধিতিঃ ক্ষেত্রজ্ঞান্তিত্বং বিভাব্যতে । ক্ষেত্রজ্ঞশ্চ ক্ষেত্রোপাধিত উচ্যতে । ক্ষেত্রজ্ঞশ্চ পোণিপাদাদিভিরনেকধা ভিয়ম্ । গে ত্রোপাধিভেদক্ষতং বিশেষজ্ঞাতং মিথার
ক্ষেত্রজ্ঞান্তিত তদপনয়নেন জ্ঞেয়ম্ম উক্রং ন সং তৎ নাসত্চ্যতে ইতি উপাধিক্বতং
মিথ্যারূপমণি অন্তিত্বাধিগমায় জ্ঞেয়ধর্মবিৎ পরিক্রয় উচ্যতে সর্বতঃ পাণিপাদম্
ইত্যাদি । তথা হি সম্প্রদামবিদাং বচনম্—''অধ্যারোপাপবাদাভ্যাং নিম্প্রপঞ্চং
প্রপঞ্চাতে । ইতি । সর্বত্র সর্বদেহাবয়বন্ধেন গম্যমানাঃ পাণিপাদাদয়ঃ জ্ঞেয়শক্তিসভাবনিমিত্তকার্য্যা ইতি ক্রেয়সভাবে লিকানি ক্রেয়ন্তেতি উপচারত উচ্যত্তে ।

তথা ব্যাখ্যেরন্ অন্তং সর্বতঃ পাণিপাদং তজ জেরম্। সর্বতোহক্ষিশিরোমুখং সর্ববাক্ষীণি শিরাংসি মুখানি চ যম্ম তং সর্বতোহক্ষিশিরোমুখন্। সর্বতঃ শ্রুতিমং শ্রুতঃ প্রবণেশ্রিরং তং যম্ম তং প্রতিমং লোকে প্রাণিনিকারে সর্বম্ আর্ত্য সংব্যাপ্য তিষ্ঠতি স্থিতিং লভতে ॥১৩

আনন্দ্ গিরিটীকা। সর্কবিশেষরহিত ভাবাঙ্ মনসংগাচরছ " অদৃষ্টে: দৃষ্টেশ্চ বিপরীতম্ব প্রাপ্তে ব্রহ্মণঃ শূন্যত্বে প্রত্যক্ত্বেনেক্রিয়প্রবৃত্তাদিহেতুত্বেন করিত-বৈতসত্তাক্তৃত্তিপ্রদম্বেনেখরত্বেন চ সত্তং দর্শরন্নাদৌ দেহাদীনাং প্রাকৃতিমতাং রণাদিবদচেতনানাং প্রেক্ষাপূর্ব্বকপ্রবৃত্তিমন্বাৎ চেতনাধিষ্ঠিতন্বমন্থমিমানন্তৎ প্রত্যক্-চেতনং বক্ষেত্যাহ—সচ্ছব্দৈতি। তদন্তিত্বমিতি তচ্চনো জেয়ব্রহ্মার্থ:। তদা-শঙ্কেতি ভচ্ছবেদনাসন্তমূচ্যতে। নমু সর্বাদেহেযু পাণিপাদমন্তেতি কথং পাণীনাঞ দেহস্থপেনাত্মধর্মপথ ওতাহ—সূর্ত্তেতি। করণপ্রবৃত্তী রথাদিপ্রবৃত্তিবৎ প্রেকা-পূর্ব্বকপ্রবৃত্তিখাচেতনাধিষ্ঠাতৃপূর্ব্বিকেতার্থ:। উক্তপ্রবৃত্ত্যা চেতনান্তিখনিদাবশি ক্থং ক্ষেত্ৰজ্ঞান্তিস্থমিত্যাশক্ষ্য চেতনক্তৈব ক্ষেত্ৰোপাধিনা ক্ষেত্ৰজ্ঞস্বাচ্চেতনান্তিস্থমেবে-ত্যাহ—ক্ষেত্রজ্ঞদৈচতি। তম্ম কেত্রোপাধিছেহপি কথং পাণিপাদাক্ষিশিরো-মুণাদিমন্বমিত্যাশঙ্ক্যাহ ক্ষেত্রপ্তৈ। অতশ্চোপাধিতন্তন্মিন বিশেবােজি-রিভিশেষঃ। কথং তঠি ন সং তন্ত্রাসদিতি নির্বিশেষদোক্তিরিত্যাশস্থ্যাহ - ক্রেতি। পাণিপাদাদিমন্থমৌপাধিকং মিখ্যা চেৎ জ্ঞেরপ্রবচনাধিকারে কর্থং তছ্তি রিত্যাশঙ্ক্যাহ—উপাধীতি। মিণ্যারপমণি জ্বেরবস্তুজ্ঞানোপবোগী-ত্যত্ত বৃদ্ধসম্মতিমাহ—তথাহীতি। পাণিপাদাদীনামন্তগতানাম্ আত্মধর্মদেনা-রোপ্য ব্যপদেশে কো হেত্রিতি চেৎ ভতাহ—সর্বত্তিতি। জ্ঞেরভ বন্ধণঃ শক্তিসন্নিধিমাত্ত্রেণ প্রবর্ত্তনসামর্থ্যং তৎসত্ত্বং নিমিন্তীক্বত্য স্বকার্য্যবস্তো ভবন্তি, পাণ্যাদর ইতি ক্ষতি যোজনা। সর্বতোকীত্যাদাবুক্তমতিদিশতি—তথেকি। তৎ জেরং যথা সর্বত:-পাণিপাদমিতি ব্যাখ্যাতং তথেত্যুক্তমেব ক্টুরতি-সর্বত ইতি। সর্বতোক্ষীত্যাদের স্বরার্থমাহ-স্বব্রতো হক্ষীতি। অক্ষ-व्यवगरवमर्गिष्ठेकारनक्षित्रवस्य शागिशाषम् ४वत्यकः व्यवगिष्ठेकर्त्यक्षित्रवस्य मरना-বুদ্ধাদিমন্ত চোপলম্পন্। একন্ত সর্বত্র পাণ্যাদিমন্ত্রং সাধরতি— সর্ব্বমিতি ॥ ১৩

অমুবাদ। সং এই শব্দের দারা যে জ্ঞান হর, সেই জ্ঞানের বিষর না হওরার ত্রন্ধ নাই এই প্রকার শকা হইতে পারে, এই কারণে, সকল প্রাণিনিবছের ইক্রিয়সমূহরূপ যে উপাধি, তাহা দারা সেই ত্রন্ধের অন্তিম্ব প্রতিপাদন দারা ঐ

আশহা নিবৃত্তির জন্ত বলিতেছেন বে, "সর্বতঃপাণিপাদ" সকল দিকে যাহার পাৰি এবং পালসমূহ বিশ্বমান, তাহার নাম "সর্বতঃপাণিপাদ" সেই ব্রহম্বরূপ **ख्यत्र वश्चल "मर्क्कजः**शाणिशाम।" मकन श्वकात्र कीर्यानवरस्त्र देखित्रनिहस्त्रत দারা আমরা সর্বত্তেই জীবভাবে সেই ব্রন্মের অন্তিত্ব বুঝিয়া থাকি। ক্ষেত্রস্বরূপ উপাধির সহিত সম্বন্ধ হয় বলিয়াই ত ব্রহ্মকে 'মে ব্রক্ত' বলা যায় : পাণিপাদ প্রভৃতি নানা অবয়ব-ভেদপ্রবৃক্ত ক্ষেত্রও ভিন্ন ভিন্ন; স্থতরাং এই ক্ষেত্ররূপ অনির্বাচনীর উপাধিনমূহের ভেদপ্রযুক্ত আত্মাতে বে ভেদ কল্পনা করা বার, তাহা মিথ্যা [ছাড়া আর কি হইতে পারে ?] সেই ক্ষেত্ররূপ উপাধিকে অপনীত করিয়া সেই চ্ছের ব্রন্দের স্বরূপ দেখান হইতেছে বে, "তাহা সংও নহে, তাহা অসংও নহে", কেবল উপাধি ছারা কোনরূপে তাহার স্বরূপকে ভানের বিষয় করিবার জন্তই এইরপ নির্দেশ করা হইরাছে যে, ''তাহা সর্বতঃপাণিপাদ''। এই ভাবেই সম্প্রদারবিদ্ আচার্য্যগণও বলিয়া থাকেন যে, সেই সর্কোপাধিশৃত নিম্প পঞ্চ রক্ষ, অধ্যারোপ এবং অপবাদের সাহায্যে কোন প্রকারে নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। ै সুক্র দেশে সকল কালে সকল দেহের অবয়ব বলিয়া যত কিছু হততপাদ আখাদের জ্ঞানের বিষয় হইতে পারে—সেই সকল হস্তপাদ প্রভৃতির যাহা কিছু ধারণ ও বিহরণাদি ব্যাপার, তাহা সকলই ত সেই জীবভাবে দেহপ্রবিষ্ট ত্রন্ধের সম্ভাবক্তে স্চনা করিয়া থাকে; এই কারণে ঐ সকল ইন্দ্রিয়কে ক্লের ব্রন্ধের সন্তার ভাশক विनम्न कीर्जन कन्ना श्रेमारह । এই প্রকার প্রয়োগকে "উপচার" বলা বাম । अर्थाई हेश बाजा माक्ना९ छाटन निर्द्भण ना कतित्रा शीगछाटन निर्द्भण कता रहेजारह है त्यमन ভाবে ''नर्क्जःशानिशान'' এই सम्बंदित व्याशा कता हहेन, এইक्ररशः क्रम्र বিশেষণ পদগুলিরও ব্যাখ্যা করিতে হইবে। "সর্বতোহক্ষিশিরোমূখ" সকল-मित्क्हे वाहात्र नम्न मछक अवर मूर्थममूह विद्राक्षमान दिशाह्न, छाहात्क्हे "नर्स-ভোহক্ষিশিরোমুখ" বলা যার। "সর্ব্বতঃ শ্রুতিমং" যাহার শ্রুতি অর্থাৎ শ্রবণেক্রির সকল স্থানেই আছে, তাহাকে "সর্বতঃ শ্রুতিমং" বলা যার . এই ভাবে সকল দেহের সকল প্রদেশ ব্যাপিয়া সেই জেয় বস্তু সর্বত্ত বিভ্রমান রহিয়াছেন ॥১৩

> সর্বেন্দ্রিয়গুণাভাসং সর্বেন্দ্রিয়বিবর্জ্জিতম্। অসক্তং সর্বভূচিচব নিগুণং গুণভোক্ত্ চ॥ ১৪

আন্ত্র । [তৎ জেরং পুনঃ কিংভূতম্ ?] সর্বেজিরগুণাভাসন্, সর্বেজির-বিবর্জিতম, অসক্তম্, সর্বভূৎ, নিগুণং, গুণভোক্ত চ এব ॥ ১৪ অকুবাদ। [সেই জের ব্রন্ধ কি প্রকার ? তাহাই পুনর্কার বলা হইতেছে—] উহা সমূদর ইন্দ্রির গুণে প্রতিভাসমান, অথচ উহার কোন ইন্দ্রিরই বর্ত্তমান নাই; উহা কাহারও সহিত সংসক্ত নহে, অথচ উহা সকল পদার্থকে ধারণ করিয়া রহিয়াছে; উহাতে কোন গুণ বিশ্বমান নাই, অথচ উহা সকল গুণের ভোক্তা॥১৪

ভাষা। উপাধিভূতপাণিপাদাদীশ্রিয়াধ্যারোপণাৎ জ্ঞেরত তন্বতাশহা মা ভূদিত্যেবংৰ্থ: শ্লোকারন্ত:—সর্বেজির গুণাভাসং সর্বাণি চ তানি ইজিরাণি শ্রোক্সাদীনি বুদ্ধীক্রিয়কর্শেক্সিরাখ্যানি অন্তঃকরণে চ বুদ্ধিমনসী ক্সেরোপাধিছত তুল্যম্বাৎ সর্বেক্তিয়গ্রহণেন গৃহত্তে। অপি চ অন্তঃকরণোপাধিবারে েব শ্রোক্রা-দীনামপি উপাধিত্বম্ ইত্যতোহস্তঃকরণবহিষ্করণোপাধি<mark>ভূতিঃ সর্কেন্তিরগুণৈঃ অধ্য</mark>-বসারসংকরপ্রবণবচনাদিভিঃ অবভাসতে ইতি সর্ব্বেলিরগুণাভাসং সর্ব্বেলির ব্যাপারের্ব্যাপত্মিব তল্পুরেমিতার্থ:—"ধান্নতীব লেলান্নতীব" ইতি শ্রুডে:। ভন্মাৎ পুন: কারণাৎ ন ব্যাপতমেব ইতি গৃহতে ইতাত আহ—সর্বেক্তিরবিবিভিতং স্ক্রিরণরহিতমিত্যর্থ:। অতোন করণব্যাপারে: ব্যাপুতং ভদ্রভেরম। ° অল্বিং নম্ভঃ—'অপাণিপাদো জবনো গ্রহীতা, পশুতাচকুঃ দ শৃণোত্যকর্ণঃ'' ইত্যাদিঃ দ সংক্রেরোপাধিগুণামুগুণ্যভ্রনশক্তিমৎ তঙ্গু জেরম্ ইত্যেবং প্রদর্শনার্থ: ন ডু जाकारत करनानिकियावर अनर्गनार्थः । "अस्ता मनिमितन्तर" हेजानिमजार्थनर তত্ত্ব মন্ত্রতার্থঃ। যশাৎ সর্ককরণবর্জিতং জেরং তত্মাদসকং সর্কসংশ্লেষবর্জিতম। 'ৰ্ভাপ্যেবং তথাপি সর্বভ্টেচব। সদাম্পদং হি সর্বং সর্বতি সদ্বৃদ্ধান্তগমাৎ। ন হি *মুগ্রুফ্টিকাদয়োহপি নিরাশ্পদা ভবস্তি। অতঃ সর্বভূৎ সর্বং বিভর্ত্তীতি। ভাদিদং চাল্লক জের্লু স্বাধিগ্মহারং নিগুণিং সহর্জ্বসাংসি গুণাঃ তৈর্বজিতং তজ জেরম্। তণাপি গুণভোক্ত চ গুণানাং স্বরজন্তমসাং শ্বাদিঘারেণ স্থত্বঃধ-মোহাকারপরিণভানাং ভোক্ত চ উপলব্ তৎ জেন্নমিত্যর্থ: ॥ ১৪

আনন্দ গিরিটীকা। আরোপাদতে সাক্ষাদেব জ্লেরশু পাণ্যাদিমন্ধমাশস্ক্রাহ
—উপাধীতি। ইন্দ্রির বিশেষণীভূতদর্বশক্ষাৎ জ্লেরোপাধিবস্তারাবিশেষাকার
বৃদ্ধাদেরপি গ্রহণমিত্যাহ—অন্তঃকরণে চেতি। শ্রোজাদীনাং জ্ঞেরোপাধিবস্ত মনোবৃদ্ধিবারবাদি তরোরিফ গ্রহণমিত্যাহ—অপি চেতি। তরোরপীহোপাদানে ফণিতমাহ—ইত্যক ইতি। অকরার্থসূক্রা বাক্যার্থমাহ—সর্বেতি।
উপাধিবারা করিভব্যাপারবন্ধে মানমাহ—ধ্যায়তীতি। করিভমেবাস্ত ব্যাপারবন্ধ্বন বাত্তবমিত্য ভগবতোহপি সম্বতিমাকাজ্ঞাবারা দর্শরতি—কন্মাদিত্যাদিনা। সর্ববিশাদিকিরাবিতায় নাল্লবর্ণিকরাৎ কুতোহশু করণব্যাপারেরব্যাপৃত্তপত্ব ইত্যাশক্ষাক্রবাদপূর্ববিশ্ব মন্ত্রশ্র প্রকাশকার্লিকরাব মন্ত্রপ্রিকর্ণ করণব্যাপারেরব্যাপৃত্তপত্ব ইত্যাশক্ষাক্রবাদপূর্ববিশ্ব মন্ত্রশ্র প্রকাশকার বিশ্ব মন্ত্রশ্র প্রকাশকার মন্ত্রশাদিকিরাবর প্রদর্শনপরত্বে মন্ত্রশ্র মৃথ্যার্থন্ধং স্যাদিত্যাশক্ষ তদসন্তবারের মিত্যাহ—অহ্র ইতি। অর্থবাদস্য শ্রুতেহর্থে তাৎপর্য্যাভাবার প্রকৃত প্রতিকুলতেত্যর্থ:। সর্ববিশ্বরাহিত্যং তল্ব্যাপাররাহিত্যক্যোপাককণমিত্যঙ্গীক্তোক্তনের হেতুং কর্ষা বন্ধতঃ সর্ব্বসঙ্গবিভিত্যমাহ—যুদ্দাদিতি। বন্ধতঃ সর্ব্বসন্ধাভাবেহিদি সর্বাধিষ্ঠানক্ষাহ—যুত্যপীতি। স্বসন্তামাত্রেণাধিষ্ঠানতরা সর্বেশ্বরাধ্যতাত্ত্রতহুপণাদরতি—স্দিতি। বিমতং সতি করিতং প্রত্যেকং সদস্থবিদ্ধাবাধ্যত্বাৎ প্রত্যেকং চন্দ্রভেদান্থবিদ্ধাবাধ্যাচন্দ্রভেদবদিত্যর্থ:। সর্বাং সদাম্পদ্দিতি বির্বাধ্যক্র ক্রিত্ব নির্বিষ্ঠানদাবোগারিরপ্যমাণে তদধিষ্ঠানং সদেবেতি সর্ব্বস্থ সতি করিত্ব করিক্রমিত্যর্থ:। সর্বাধিষ্ঠানত্বন জ্যেন্ত্র বন্ধাবিত্যাহ—স্থাদিদ্বঞ্চৈতি। ন হি তল্পোপ্লক্ষ্ ক্রম্পন্তে বিশ্বতাত্যর্থ: ॥ সর্বাধিষ্ঠানত্বন জ্যেন্ত্রত বন্ধাবিভ্যান্ত্রত ক্রমণ্যক্র বন্ধাত্যত্ত্রত্ব না হি তল্পোপ্লক্ষ্ ক্রমণন্ত্রতি । করি বিধ্যতীত্যর্থ: ॥ ১৪

অনুবাদ। সেই জ্ঞের আত্মা যথন দেহ ও ইন্দ্রির প্রভৃতি উপাধির সহিত মিলিত, তথন বাস্তবিক উহা দেহ প্রভৃতি উপাধিবিশিষ্ঠ অর্থাৎ জড় বা পরিচ্ছিন্ন নিরাক্তরণ করিবার জক্তরই এই ক্লোকটির আরম্ভ করা হইতেছে। "সর্কেন্দ্রির গুণাভাস্" শ্রবণ প্রভৃতি পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রির হস্ত প্রভৃতি পঞ্চ কর্মেন্দ্রির ও মনঃ এবং বৃদ্ধিরপ কুইটি অস্তঃকরণ—মোট এই বারটি ইন্দ্রিরই এন্থানে ইন্দ্রির শন্দের অর্থ ; কারণ এই কুরটি করণই সেই জ্ঞের ব্রন্ধের উপাধি ; স্ক্তরাং ঐ সকল ইন্দ্রিরই এইছলে 'সর্কেন্দ্রির প্রতিপাত্ম অর্থ হইতেছে। আরপ্ত দেখিতে হইবে, বহিরিন্দ্রিরগুণ্ডলিও অস্তঃকরণরূপ মনঃ ও বৃদ্ধির সহিত সম্বদ্ধ হয় ; এজন্য আত্মার উপাধি বলিয়া পরিগণিত হয়। সাক্ষাৎ ইহারো আত্মার উপাধি বলিয়া পরিগণিত হয়। সেই সর্কেন্দ্রিরের যাহা কিছু গুণ অর্থাৎ অধ্যবসার ও সংকর প্রভৃতি, সেই গুণের ঘারাই আত্মা ব্যবহারভূমিতে প্রকাশ পাইয়া থাকে, অর্থাৎ আমাদের বোধ হয় বন আত্মা সর্কাশ সকলপ্রকার ইন্দ্রিরব্যাপারে ব্যাপৃত রহিয়াছে। শ্রুভিত্তও উক্ত আছে বে, "সেই আত্মা বেন ধ্যান করে, যেন ইন্দ্রির-ব্যাপারে ব্যাপৃত হয়"

বলিয়া প্রতীত হয়। ব্যাপুতের ন্তায় বোধ হয় অপচ বাস্তব পক্ষে ব্যাপুত হয় না; ইহার কারণ কি ? উত্তর এই যে [আত্মা] "সর্কেক্তিয়বিবর্জিত" অর্থাৎ বন্ধত: আত্মার সহিত করণ বা ইলিগনিবছের কোন সম্বন্ধ নাই। এইবন্ধট আত্মা করণসমূহের ম্যাপারে ব্যাপৃত হইতে পারে না। "তাহার হত্ত নাই অধ্চ বন্ধগ্রহণ করিয়া থাকে; তাহার পদ নাই অপচ তাহা বেগবান (গভিশীন) এবং তাহার চকু নাই কিন্তু সে দেখিয়া থাকে; তাহার কর্ণ নাই কিন্তু সে এবণ করে" এইরূপ যে একটি মন্ত্র বেদে দেখিতে পাওয়া যায়, তাহারও তাৎপর্য্য এই নে—মান্মাতে বাস্তবিক যে গতি প্রভৃতি ক্রিয়া আছে, তাহা নছে: ক্রিয়াবান উপাধির সহিত আধ্যাসিক সম্বন্ধ হয় থলিয়াই আত্মাও ক্রিরাবানের স্থায় ব্যবহার-ৰুগতে প্ৰতীত হয়। আৰু একট মন্ত্ৰে বেমন আছে—"অন্ধ মণি দেখিতে পাইয়াছিল" ইহার অর্থ ষেমন করিয়া করিতে হয় অর্থাৎ "অন্ধ বেন মণি দেখিতে পাইয়াছিল" ইত্যাদি, দেইরূপ এইস্থানে প্রকৃত মন্ত্রটিরও দেই প্রকার ব্যাখ্যাই করিতে হইবে। সেই জের আত্মায়ে কারণে সর্বকরণবর্জিত, এই জন্তই ভাষা 'অসক্ত' অর্থাৎ কোন প্রকার সংশ্লেষক্ষণ সংযোগ আত্মাতে নাই। যদিও উহা সর্বসন্থবর্জ্জিত, তাহা হইলেও উহা সুকল পদার্থের একমাত্র আশ্রয়, উহা সকল বস্তুকেই ধারণ করিয়া থাকে। এজগতের সকল বস্তুই সেই সংকে (প্রমান্ত্রাকে) মাশ্রর করিয়া রহিয়াছে : কারণ, সকল বৃদ্ধির সঙ্গে সদ্বৃদ্ধি সর্বাদা অসুগত আছে। মুগড়ফিকা প্রভৃতি অসৎ বস্তুও একেবারে অসৎ বৃদ্ধির বিষয় নছে, ভাছাত্তেও সদ্বৃদ্ধি অনুগত ভাবে হইয়া থাকে [সম্ভাবকে একেবারে ছাড়িয়া দিয়া আমরা কোন বস্তুই ভাবিতে না ব্ঝিতে সমর্থ হই না]; এই কারণে সেই সংস্করণ আত্ম সকল বস্তুকেই ধারণ করিয়া রহিয়াছে। এই আরও একটি বিশেষণ শ্রের: বছর বন্ধপ বৃঝিবার পক্ষে অমুকুল; কি সে বিশেষণ ?—"নিগুণ" অথচ "গুণভোক্ক"। গুণ শক্ষের অর্থ সত্ত রক্তঃ ও তম:। সেই জ্রের বস্তুপি এই গুণ্রব্রবির্হিত, তথাপি ইহা ঋণভোক্তা অৰ্থাৎ শব্দ ম্পৰ্শ প্ৰভৃতি বিষয় দারা মুখ ছঃখ বা ৰোহ-রূপে পরিণত ঐ সন্থ রঞ্জঃ ও তমঃ এই তিনটি নামে প্রসিদ্ধ খণ্ডারের আত্মাই खाका वर्षार উপन्ना-अकानविका, এই প্रकातहे त्मरे **खा**व। हेशहे हहेन সোকের তাৎপর্যার্থ॥ ১৪

বহিরন্তশ্চ ভূতানামচরং চরমেব চ।
সূক্ষাত্বাৎ তদবিজ্ঞেয়ং দূরন্থং চান্তিকে চ তৎ ॥ ১৫

আনুষ্ । তৎ ভূতানাং বহিঃ অস্তশ্চ [বর্ত্ত], তৎ অচরং চরমেব চ;

[তৎ] ক্ষম্বাদ । আহা (আমা) প্রাণিগণের বাহিরে এবং ভিভরে বিশ্বমান

আছে। তাহা স্থিরও বটে গতিশীলও বটে। ক্ষম বলিয়া তাহা অবিজ্ঞেয়;
ভাহা দুরস্থও বটে আবার তাহা নিকটেও বহিরাছে ॥১৫

ভাষ্য। কিঞ্চ বহিত্বকৃপর্যান্তং দেহমান্বাহেন অবিন্তাকল্পিতমণেক্ষ্য ভনেবাবধিং ক্লবা বহিক্ষচ্যতে। তথা প্রত্যগান্ধানমণেক্ষ্য দেহমেবাবধিং ক্লবা বহিরক্ষণ ইত্যুক্তে মধ্যে অভাবে প্রাপ্তে ইদমূচ্যতে অচরং চরমেব চ বচরাচরং দেহাভাসমণি তদেব জ্লেরং যথা রজ্মপ্রভিদান:। যদি অচরং চরমেব চ ব্যবহারবিষয়ং সর্বাং জ্লেরং কিমর্থম্ ইদমিতি সর্ব্বেন বিজ্ঞেয়ম্ ইতি। উচ্যতে—সত্যং সর্বাভাসং তৎ, তথাপি ব্যোমবং স্ক্রম্ অতঃ স্ক্রমণ বেন রূপেণ তদ্ জ্লেরমণি অবিজ্ঞেরমবিছ্বাম্। বিছ্যাং তু "আক্রিবেদং সর্ব্বম্" 'ব্রক্রৈবেদং সর্ব্বম্" ইত্যাদি-প্রমাণতো নিত্যং বিজ্ঞাতম্য। অবিজ্ঞাততরা দ্রস্থং বর্ষসহল-কোট্যাপি অবিভ্রামপ্রাণ্যাৎ। অন্তিকে চ তদাত্মতাং বিভ্রাম্॥ ১৫

আনন্দগিরিটীকা। ইতোহপি জ্বেরং ব্রন্ধাণীত্যাহ—কিঞ্চেতি। বহিরিতি ব্যাধ্যেরমাদার ব্যাচষ্টে—ত্বনিতি। ভূতেভ্যো বহির্নাহ্যবিষয়াত্মকমিত্যর্থ:। কথম-নান্ধন এবাত্মত্বকরনমেত্যাহ -- আত্মত্বেনেতি। সন্তঃশব্দার্থনাহ – তথেতি। ভূতানাং চরাচরাণামন্তর্মধ্যে প্রত্যগ্ ভূতমিত্যর্থ:। বিতীয়ং পাদমবতার্য্য ব্যাচষ্টে— विविद्यालिना । यनार्था ज्ञाचकः नानाविधानशाचना जाममानः जनि জেরাস্তর্ভ তবং সদিত্যর্থ:। কথং চরাচরাত্মনো ভূতজাতত জেরত্বং তত্রাহ— ষ্ঠেতি। অধিষ্ঠানে রজ্জাৎ কল্লিতসর্পাদেরস্তর্ভাববদেহাভাসক্তাপি জ্ঞেরাস্ত-র্ভাবালাসকং মধ্যে জেয়ন্ত শব্ধিতব্যমিতার্থ:। সর্বাত্মকঞ্চেৎ জেয়ং সর্বৈরিদমিতি গুছেতেতি শহুতে—যদীতি। ইদমিতি গ্রাহ্ছবোগ্যন্বাভাবান্তেত্যাহ— উচ্যত ইতি। সর্ববন্ধাত্মনা ভাসতে তদবোগ্যন্থং কথমিত্যাশব্যাহ—সত্যমিতি। হক্ষবেহণি কিং ভাদিত্যাশব্যাহ—অত ইতি। হক্ষবসতীক্রিয়ত্বন্। তভাবিক্লেরতে কৃতত্তৰ জানাৰ্জিততাহ—অবিজুষামিতি। বিশেষণফলমাহ—বিজুষান্তিতি। তেৰামাত্মদেন জাতং চেৎ কথং দূরত্বদমিত্যাশক্ষাহ—অবিজ্ঞাতত্ত্বেতি। কথং ভৰ্ষি ভক্ত প্ৰত্যক্ত্ৰ তত্ত্ৰাহ—অন্তিকে চেতি। বিষদবিষভেদাপেক্ষরা "দূরাৎ সুদ্রে তদিহান্তিকে চ" ইতি শ্রুতি: তদর্বোহত্র প্রসন্ধাদন্দিত ইভার্থ: ॥১৫ অনুবাদ ৷ পারও-[বলা হইতেছে যে] আত্মা বাহিরে ও অন্তরে

٠,

আছে। एक् পर्गास (महत्क व्यविष्यायमण्डः व्याद्या विनद्गा প্রতিপন্ন হয়। সেই দেহকে অপেক্ষা করিয়া অর্থাৎ সেই দেহকে অবধি শ্বরূপ ধরিয়া বাহিরে বলা হইয়াছে। অর্থাৎ এই আত্মভাবে প্রতীত দেহেরই বহির্দেশ এছলে বহিঃশক্টির অর্থ। এইরূপ প্রত্যগাত্মাকে অপেকা করিয়া দেই দেহকে অব্ধি ধরিয়া **অন্ত**র, বা ভিতর বলা হইরাছে। অর্থাৎ অন্ত:—মধ্যে। কাহার ? দেহের। বাহিরে ও অন্তরে আছে। তবে কি মাঝামাঝি দেশে আত্মা নাই? এই শকার নিরাকরণ করিবার জন্ম বলা হইতেছে বে, তাহা চরও বটে অচরও বটে। এই সংসারে বাহা কিছু চরাচর, ভাহাতেই আত্মভাব আরোপিত হয়, ভাহা সকলই আছা তাৎপর্য্য এই যে, আত্মব্যতিরেকে এ সংসারে অস্ত কোন পদার্থই সং হইতে পারে না। যেমন রজ্জুতে প্রতিভাত সর্প—ৰাত্তবিক রজ্জু ভিন্ন অন্ত কোন পদার্থ হইতে পারে না, সেই প্রকার সেই সং আত্মাতে পরিকল্পিড বাবতীর বস্তুই সেই আত্মা ছাড়া অস্ত কিছুই হইতে পারে না। বদি সেই ব্রহ্ম চরাচর সকল বস্তুই হইল, "তবে এই ব্ৰহ্ম" এইভাবে সকলে তাহাকে বুঝিতে পারে না কেন ? ভাহার উত্তর এই যে, ইহা সত্য বটে বে, সেই ব্রহ্মবন্ধপ আত্মা সকল প্রতিভাসেই স্ফুরিড হয়; তাহা হইলেও আকাশ বেমন সর্বব্যাপী হ**ইলেও স্ক্ল বলির। প্রত্যক্ষ হ**র না, সেইরপ স্ক্র বলিয়াই আত্মা স্বীয়রূপে জের হইরাও অজের হইরা থাকে। অবশ্র যাহারা অবিহান্ তাহাদের নিকটেই আত্মা অবিজ্ঞের, কিন্তু বাহারা বিহান্ মর্থাৎ তৰ্জ, তাঁহাদের নিকট আত্মা আত্মভাবেই সর্বদা প্রকাশ পান। "আত্মাই সকল ৰস্তু, আসরা যাহা বৃঝি, তাহা সকলই ব্ৰহ্ম এই প্ৰকার বেদান্ত-প্ৰমাণের সাহাযে বিদ্বান আত্মরূপ ব্রহ্মকে সর্ব্বত্ত সর্ব্বত্তরপেই দেখিয়া থাকেন। বাহারা তাঁথাকে বুঝে না, তাহাদের নিকট আত্মা দূরন্থ অর্থাৎ বর্ষদহল্র-কোটতেও তাহারা আত্মাকে খুঁজিয়া পায় না। বিহান্গণের কিন্তু আত্মা অতি নিকটে; কারণ, তাহারা নিজরূপে আত্মাকে সর্বদা প্রত্যক্ষ করিয়া থাকেন ॥১৫

> অবিভক্তং চ ভূতেষু বিভক্তমিব চ স্থিতম্। 'ভূতভৰ্ক্ চ তজ্জেয়ং গ্ৰাসিষ্ণু প্ৰভবিষ্ণু চ॥ ১৬

অনুয়া তং জেনং ভৃতের্ অবিভক্তম্ [অপি] বিভক্তমিব চ হিতম্; [তং জেনম্] ভূতভর্ এসিফু প্রভবিফু চ ॥ ১৬

অকুবাদ। সেই জের ভূতনিবহের মধ্যে অবিভক্ত অথচ বিভক্তের

স্থার অবস্থিত। তাহা ভূতগণের ভর্ত্তা, তাহা বিশ্বকে গ্রাস করে এবং তাহাই আবার বিশ্বের প্রভবিতা।।১৬

ভাষ্য। কিঞ্চ-অবিভক্তং চ প্রতিদেহং ব্যোমবং তদেকং ভূতের সর্বা-প্রাণির বিভক্তমিব চ স্থিতং দেহেশ্বেব বিভাব্যমানত্বাং, ভূতভর্ক্ চ ভূতানি বিভর্তীতি ভঙ্গ জেরং ভূতভর্ক্ চ স্থিতিকালে। প্রলয়কালে গ্রসিফ্ গ্রসনশীলম্। উৎপত্তিকালে প্রভবিষ্ণু চ প্রভবনশীলং বথা রক্ষাদিঃ সর্পাদের্মিণ্যাক্রিভক্ত ॥১৬

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞেরস্থান্তিষে হেম্বন্তরমাহ—কিঞ্চেতি। তাদ্ধ প্রতিদেহং নভোবদেকং তন্তেদে মানাভাবাৎ ভিন্নধেঁচ ঘটবৎ অনাম্মছাপাতাৎ অতাহিবিতীরং সর্ব্ব প্রত্যাপ্ততং জ্ঞেরং নাস্তীত্যতিসাহসমিত্যাহ—অবিভিক্তং চেতি। কথং তর্হি দেহাদের্ভেদধীরিত্যাশক্ষ্য কর্মনয়েত্যাহ—ভূতেম্বিতি। তত্ত্ব হেতৃ:—দেহেম্বিতি। কার্য্যাণাং স্থিতিহেতৃষাচ্চ জ্ঞেরমস্তীত্যাহ—ভূতেতি। নিমিজোপাদানতরা ভেষাং প্রলয়ে প্রভবে চ কারণনাচ্চ তদন্তীত্যাহ—প্রলয়েতি। তর্হি কার্য্যবারণন্ত বস্তুদান্তিবেত্যাশক্যাহ—যুগ্রিতি॥ ১৩

অনুবাদ। আরও সেই জ্বের আকাশের ভার সকল প্রাণীতেই অবিভক্তভাবে বিশ্বমান থাকিয়াও বেন প্রতিদেহ-ভেদে বিভক্তের ভার প্রতীত হন;
ইহার কারণ এই বে, দেহেতেই তাঁহার অভিব্যক্তি হইয়া থাকে। সেই জ্বের
আছা কগতের স্থিতিকালে ভূতগণকে ধারণ করেন, প্রলয়কালে গ্রাস করেন,
আবার স্প্রীকালে তিনিই সকল বস্তুকে স্প্রী করিয়া থাকেন। যেমন রজ্জু মিগ্যাকরিত সর্পের [উৎপত্তি স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ, সেইরূপ আছাই এই অবিশ্বাকরিত প্রপঞ্চের উৎপত্তি স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ, সেইরূপ আছাই এই অবিশ্বাকরিত প্রপঞ্চের উৎপত্তি স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ] ॥১৬

জ্যোতিষামপি তজ্জ্যোতিস্তমসঃ পরমুচ্যতে। জ্ঞানং জ্ঞেয়ং জ্ঞানগম্যং হৃদি সর্বব্য বিষ্ঠিতম্ ॥* ১৭

আহ্বর । তৎ জ্যোতিষামপি জ্যোতি:, [তৎ] তমসঃ পরম্ উচ্যতে, [তৎ] জানং, [তৎ] ক্রেরং, [তৎ] জ্ঞানগম্যং, [তৎ] সর্বাদ । সেই আত্মা জ্যোতিঃসমূহেরও জ্যোতিঃ, তিনি ত্মোগুণের জতীত, তিনিই (আত্মাই) জ্ঞান, তিনিই জ্ঞের, তিনিই জ্ঞানের ফল এবং তিনিই প্রাণিসমূহের ক্লমধ্যে নিবিষ্ট রহিরাছেন ॥১৭

ভাষ্য। কিঞ্চ সর্বত বিশ্বমানং সং নোপলভাতে চেৎ জ্বেরং তমন্তর্হি।

* হদি সর্বান্ত থিটিতম্ ইতি বা পাঠঃ।

ন; কিং তহি ?— জ্যোতিষামাদিত্যাদীনামপি তল্প জেরং জ্যোতিঃ। আত্মতৈতন্ত্র-জ্যোতিষা ইন্ধানি হি আদিত্যাদীনি জ্যোতীংবি দীপান্তে। ধ্বেন স্থান্তপতি তেলদেনঃ" "তক্ত ভাদা সর্পমিদং বিভাতি" ইত্যাদিশ্রতিভাঃ। স্থান্তেশ্চ ইইবে "বদাদিত্যগতং তেলঃ" ইত্যাদেঃ। তমদোহজ্ঞানাৎ পরম্ অস্পৃষ্টম্ উচ্যতে। জ্ঞানাদেঃ তঃসম্পাদনবৃদ্ধ্যা প্রাপ্তাবশদক্ত উত্তনার্থমাহ জ্ঞানমমানিষ্ধাদি। জ্যেরং বং তৎ প্রবক্ষ্যামি" ইত্যাদিনা উক্তম্। জ্ঞানগম্যং জ্যেরনেব জ্ঞাতং সং জ্ঞানফলম্ ইতি জ্ঞানগাম্যুল্লত। জ্ঞারমানং তু জ্ঞান্যম্। তদেতৎ জ্যমপি হৃদি বুদ্ধো সর্বাপ্ত প্রাণিজাতক্ত বিষ্ঠিতং বিশেষেণ স্থিতম্। তত্ত্বেব হি জ্ঞারং বিভাবাতে। ১ ১

আনন্দগিরিটীকা। ইতাহপি জ্ঞেরস্থান্তিঘমিত্যাহ—কিঞ্ছেত হৈত্বস্ত্রমেব ক্ষোরিয়ত্বং শক্ষতে—স্ক্রিত্রেতি। ন ত এমো মন্তব্যমিত্যাহ—নেতি। তহি কিং তহ্ম রপমিতি পৃচ্ছাত—কিং তহাঁতি। তত্রোত্তরম্—জ্যোতিয়ামিতি। ক্র্যাদীনাং বৃদ্ধ্যাদীনাঞ্চ প্রকাশকত্বাং অন্তি জ্ঞেরং ব্রন্ধেত্যাহ—জ্যোতিয়ামিতি। তদেবোপপাদরতি—আয়েতি। তত্র শ্রুতিঘরং প্রমাণরতি—য়েনেতি। উক্তেহর্থে বাক্যশেষমপি দর্শর্যতি—স্মৃতেক্তেতি জ্ঞেরস্থাতমত্বেহপি তমঃস্পৃষ্টত্বমাশক্ষোক্তম্—তম্ম ইতি। উত্তরার্ভ্রন্থ তাৎপর্য্যাহ—জ্ঞানাদেরিতি। উত্তরমুদ্দীপনং প্রকটীকরণমিতি যাবং। জ্ঞানন্দ্রাদি করণব্যুৎপত্যোতিশেষঃ। জ্ঞানগম্যং জ্ঞেরমিতি প্রক্রন্ধিক শ্রুত্রমাত্ত ত্রের্মিতি। উক্তর্যক্ত বৃদ্ধিত্বত্রা প্রাকটাং প্রকটরতি—তদ্তেদিতি ত্রাহ্বত্রম্মতি। উক্তর্যক্ত বৃদ্ধিত্বত্রা প্রাকটাং প্রকটরতি—তদ্তেদিতি ত্রাহ্বত্রমাত্র—তাত্রেরেতি॥১৭

অনুবাদ। আরও [এই প্রকার শহা হইতে পারে যে] যদি ঐ জ্যের বিশ্বমান অথচ উপলব্ধ হর না—তাহা হইলে উহা নিশ্চরই তমঃ হইবে। এইপ্রকার শহাও ঠিক নহে, তবে দে বস্তু কি ? তাহাই বলিতেছেন বে, তাহা জ্যোতিঃসমূহের অর্থাৎ ক্র্য্য চক্ত প্রভৃতি দীপ্তিমর বস্তুনিবহেরও জ্যোতিঃ। আত্মনরপ ১৯তক্তের জ্যোতির দারা প্রদীপ্ত হইরাই তাহারা প্রকাশ পাইরা থাকে "বে জ্যোতির দারা প্রদীপ্ত হইরা করে" "তাহারই দীপ্তিতে সকল বস্তু প্রকাশ পাইরা থাকে" ইত্যাদি প্রকারের প্রভৃতিবাক্যের দারাও ইহা প্রমাণিত হইরা থাকে। "আদিত্যগত বে তেজঃ এই অথিল বিশ্বকে উদ্থানিত করে" ইত্যাদি স্বৃতিবাক্যের দারা এই গ্রন্থেও ইহাই প্রতিপাদিত হইরাছে। নেই জ্যের অক্ষানরূপ তমঃ হইতে পর অর্থাৎ অক্ষান তাহাকে স্পর্শ করিতে পারে না। জ্যান

প্রবারহেত্তে বে অনাদী সত্যো সংসারত কারণম্। ন আদী অনাদী ইতি তৎপুরুষসমাসং কেচিদ্বর্ণয়স্তি। তেন হি কিলেয়রত কারণমং সিধ্যতি। যদি পুনঃ প্রকৃতিপুরুষাবেব নিত্যো তাতাং তৎকুতমেব জগং নেয়রত জগতঃ কর্ত্বম্ন। তদসং, প্রাক্ প্রকৃতিপুরুষরোক্ষৎপত্তেঃ ঈশিতব্যাভাবাদীশরত অনীশরত প্রকৃতিপুরুষরোক্ষৎপত্তেঃ ঈশিতব্যাভাবাদীশরত অনীশরত প্রকাশরত প্রকাশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদীশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদীশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদীশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদীশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদীশরত প্রকৃতিব্যাভাবাদ্বিকারান্ ব্যাদিক্তিরিভাবান্ গুণাংশ্চ ক্রতরাশ্বরত ক্রমাণান্ বিকারান্ বৃদ্যাদিক্তিরিভাবান্ প্রকৃতিব্যাভাবান্ প্রকৃতিব্যালাং গুণানাঞ্চ তান্ বিকারান্ গুণাংশ্চ বিদ্ধি প্রকৃতিসভ্বান্ প্রকৃতিপরিণামান্॥ ১৯

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতিমিত্যাদি বক্ষ্যমাণ্মনস্তর-পূর্দ্ধগ্রন্থসম্বদ্ধীত্যা-শক্ক্য ব্যবহিতেন সম্বন্ধার্থং ব্যবহিতমমূবদন্তি—তাত্ত্রেতি। তারোশ্চ প্রক্রত্যো-ক্লব্ধং ভূতকারণম্বমিত্যাহ—এতদিতি। ভূতানামিব প্রক্লত্যোরপি প্রক্লত্যস্তরা-পেকশ্বানবস্থানাৎ ন ভূতংঘানিতেতি শঙ্কতে—ক্ষেত্ৰেতি। তত্ৰাক্কতা ভ্যাগমাদি-বারণায় বন্ধস্থ নিদানজ্ঞানার্থমাত্মনো বিক্রিয়াববাদিদোষনিরাসার্থঞ্চ প্রকৃতি-পুরুষয়োরনাদিম্বং ক্ষেত্রম্বেনোক্তানাং প্রকৃতিং প্রতি বিকারভাবঞ্চ দর্শরতি— আয়ুমর্থ ইতি। স চ যো বংম্বভাবশ্চেত্যাদিষ্টং বাচষ্টে—প্রকৃতিমিতি। ঈশ্বরম্ভ অপরা প্রকৃতিরত্ত প্রকৃতিশব্দেনোক্তা পরা তু প্রকৃতির্জীবাধ্যা পুরুষশব্দেন বিবক্ষিতেতি ব্যাকরোতি—ঈশ্বরুস্তোতি। তমোরনাদিম্বং ব্যুৎপাদয়ভি— নেত্যাদিনা। তত্ত্ব যুক্তিমাহ—নিত্যেশ্বরত্বাদিতি। ঈশবত্তোক্তপ্রকৃতি-ৰয়বন্ধং কণমিত্যাশঙ্ক্যাহ—প্ৰাকৃতীতি। তম্ম জগজ্জনাদৌ স্বাতন্ত্ৰ্যমেব ঈশ্বর ১ং ন প্রকৃতিবরবন্ধনিত্যাশক্ষাহ—যাভ্যামিতি। প্রকৃত্যোরনাদিবং কুরোপযুক্ত-মিত্যাশক্ষাহ—তে ইতি। মতান্তরমাহ—নেত্যাদিনা। তরোম্পকারণদা-ভাবে কন্ত তদেষ্টব্যমিত্যাশস্থাহ – তেন হীতি। প্রক্রভ্যোরেব মূলকারণত্তে শ্ৰুতিস্কৃতিসিদ্ধনীখনত তথাতং ন তাদিত্যাহ—যদীতি। প্ৰকৃতিবহত কাৰ্য্যকু-পক্ষ প্রত্যাহ—তদুস্দিতি। কিঞ্চ প্রকৃতিৎরমনপেক্য ঈশরভ সংগারভেড্ড বাতন্ত্রাস্কানামণি ততঃ সংসারাপ্তেরনিবেধাৎ মোকশাল্লাপ্রামাণ্যাৎ ন তল্তৈব সংসারহেত্তেত্যাহ—সংসারস্থেতি। নির্নিমিত্তং প্রকৃতিবরাপেকামুতে পর-ক্তৈব নিমিত্তথমিতি বাবং ৷ কিঞ্চ কাৰ্য্যন্তে প্ৰক্লত্যোত্তলবাৎ পূৰ্বং বন্ধাভাৱে

তদ্বিশ্লেষাত্মনো মোকস্থাভাবাৎ কদাচিহুভয়াভাবে পুনস্তদপ্রসঙ্গাৎ ন প্রকৃতিদরত কার্য্যতেত্যাহ—ব্দ্রেতি। প্রকৃত্যোর্য কারণদ্বেন অহুপপত্তিরিত্যাহ—
নিত্যত্ম ইতি। স্বপকে দোষাভাবং প্রশ্নপূর্বকং প্রপঞ্চয়তি—ক্থমিত্যাদিনা।
সম্ভবং স্ব্যাপ্রাপকো হেডুং। প্রকৃতেরনাদিকে বিকারাণাং গুণানাঞ্চ তৎকার্য্যদাদান্মনো নির্বিকারত্বং নিগুণ্ডঞ্চ সিধ্যতীতি ভাবং॥ ১৯

অনুবাদ। দেই সপ্তম অধ্যায়ে ঈশবের ছইটি প্রকৃতির কথা বলা হইরাছে। সেই ছইটি প্রকৃতির নাম বথাক্রমে 'পরা' ও 'অপরা'। পরা প্রকৃতিকে 'ক্ষেত্রজ' এবং অপরা প্র<u>কৃতি</u>কে 'ক্ষেত্র' বলিয়াও নির্দেশ করা হইয়াছে। পূর্ব্বে ষার একটি কথা বলা হইয়াছে যে, "ভূতসমূহও এই পরা ও অপরা প্রকৃতি হইতে উৎপন্ন হইন্না থাকে।" কিরূপে দেই পরা ও অপরা প্রকৃতি মহাভূতসমূহের কারণ হয়, তাহাই প্রতিপাদন করাইবার জন্ত এই স্লোকের আরম্ভ করা হইতেছে। প্রকৃতি এবং পুরুষ (কেত্রজ্ঞ) এই ছুইটিই ঈশ্বরের প্রকৃতি। এই প্রকৃতি ও পুরুষ উভয়ই অনাদি অর্থাৎ ইহাদের আদি নাই; স্থতরাং ইহাদিগকে 'অনাদি' বলা যায়। যে কারণে ঈশবের ঈশবত নিতাদিদ্ধ, সেই কারণে ঈশবপ্রকৃতিদয়ও নিত্য হওয়াই উচিত। প্রকৃতিধন্ন আছে বলিন্নাই ত ঈশ্বরের ঈশ্বরত্ব। বে প্রকৃতিছয়ের সাহায্যে ঈশ্বর জগতের উৎপত্তি স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ হইয়া থাকেন, দেই প্রকৃতিছয় অনাদি হইয়াই সংসারের কারণ হইয়া থাকে। কেছ কেহ ব্যাখ্যা করেন এইরূপ যে, [এই অনাদি শব্দটির যেরূপ অর্থ করা হইরাছে, তাহা ঠিক নহে কিন্তু] অনাদি এই শক্টি নঞ্তৎপুরুষ সমাসে নিশার হইরাছে [ইহা বছত্রীহি সমাসে নিষ্ণন্ন নহে]; ইহার অর্থ হইতেছে এই বে, আদি অর্থাৎ প্রথম বা কারণ নহে, তাহাকেই 'অনাদি' কহা যায়। ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞরূপ প্রকৃতি-**হ**র আদি নহে [অর্থাৎ জগতের প্রথম নহে, ইহারাও কার্য্যের মধ্যে পরিগণিত : क्रेबत । देश बाता चित्र बहेन या, क्रेबतहे नकरनत आपि अर्थाए कातन। यपि প্রকৃতি ও পুরুষ নিতা হইত, তাহা হইলে জগতের কারণ তাহারাই হইত: ঈর্বর তাহা হুইলে জগতের কর্ত্তা হুইতে পারিতেন না"। এই প্রকার ব্যাখ্যা সঙ্গত হইতে পারে না ; কারণ, এই প্রকার হইলে এই দাঁড়ায় যে, প্রক্তি ও পুরুষ স্টে হইবার পূর্বে কোন প্রকার ঈশিতব্য বর্ম্ব না থাকার, ঈশরের তৎ-কালে ঈশব্যন্থই লোপ পায় [অর্থাৎ এই মতে ঈশব্যের নিত্য ঐশব্য সিদ্ধ হইতে পারে না], আরও এই মতে সংসারের পক্ষে অন্ত কোন নিমিত্ত না থাকায় সর্বদাট

> কার্য্যকরণকর্ত্ত্বে * হেতুঃ প্রকৃতিরুচ্যতে। পুরুষঃ স্থধত্বঃখানাং ভোক্তৃত্বে হেতুরুচ্যতে॥২০

আন্তর্ম । প্রকৃতিঃ কার্য্যকরণকর্ত্ত হেতুঃ উচ্যতে; পুরুষঃ [পুন:] স্থ-ছঃধানাং ভোকৃত্তে হেতুঃ উচ্যতে ॥ ২•

অনুবাদ। কার্য্য ও করণের কর্ভ্স বিষয়ে প্রকৃতিই কারণ বিদয়া [শাস্ত্রে] কথিত হইয়া থাকে; পুরুষ কেবল স্থুপ ও হঃথের ভোগ বিষয়ে হেড় বলিয়া অভিহিত হন॥ ২০

ভাষ্য। কে পুনন্তে বিকারা গুণাশ্চ প্রকৃতিসম্ভবাঃ ?—কার্য্যকরণকর্ত্বে কার্য্যং শরীরং করণানি ওংস্থানি ত্রেরাদশ। দেহস্তারম্ভকানি ভূতানি বিষয়াশ্চ প্রকৃতিসম্ভবাঃ পূর্বোক্তা ইহ কার্য্যগ্রহণেন গৃহন্তে। গুণাশ্চ প্রকৃতিসম্ভবাঃ স্থাত্বঃধনোহাত্মকাঃ করণাশ্রমত্বাং করণগ্রহণেন গৃহন্তে। তেষাং কার্য্যকরণানাং কর্ত্বিম্ উৎপাদকত্বং বং তৎ কার্য্যকরণকর্ত্বং, তন্মিন্ কার্য্যকরণকর্ত্বে হেতুঃ কারণমারম্ভক্তেন প্রকৃতিক্ষচ্যতে। এবং কার্য্যকরণকর্ত্বেন সংসারস্ভ কারণং প্রকৃতিঃ। কার্য্যকারণকর্ত্বি ইত্যন্মিন্ অপি পাঠে কার্য্যং যদ যন্ত বিপরিণামন্তৎ

^{*} কার্যকারণকর্ত্তে ইতি পাঠ্যান্তরম্।

তন্ত কার্য্যং বিকার: ; বিকারি কারণং তরোবিকারবিকারিশো: কার্য্যকারণরোঃ
কভৃষ্ ইতি। অথবা বোড়শ বিকারা: কার্য্যং সপ্ত প্রকৃতিবিকৃতর: কারণং
তান্তেব কার্য্যকারণানি উচ্যন্তে। তেবাং কভৃষ্ণে হেতৃ: প্রকৃতিবিকৃতর: কারণং
ক্ষেত্রেব। প্রকৃষণ সংসারত্ত কারণং যথা আৎ তহুচ্যুতে প্রকৃষ: জীব: ক্ষেত্রজো
ভোকা ইতি পর্য্যার: স্থত্ঃখানাং ভোগ্যানাং ভোক্ত্রের উপলব্ধ্ হে হেতৃক্চাতে।
কথং পুনরনেন কার্য্যকারণকর্ভ্রেন স্থত্ঃখারো: ভোক্ত্রেন চ প্রকৃতিপ্রক্ররোঃ
সংসারকারণম্ব্যুতে ইতি। অত্যোচ্যতে কার্য্যকরণ-স্থতঃখারণেণ হেতৃফ্লাম্মনা
প্রকৃষেত পরিণামাভাবে পুরুষত্ত চেতনত্ত অসতি তহুপলব্ধ্ হে কৃতঃ সংসার: তাৎ।
বদা পুন: কার্য্যকরণস্থতঃখারপেণ হেতৃফ্লাম্মনা পরিণতরা প্রকৃত্যা ভোগ্যারা
প্রকৃষত্ত তব্বিপরীতত্ত ভোক্ত্রেন অবিভারপ: সংযোগ: তাৎ, তদা সংসার: তাৎ
ইতি। অতো যৎ প্রকৃতিপুরুষ্যো: কার্য্যকরণকর্ভ্রেন স্থেতঃখতভেক্ত্রেন চ
সংসারকারণম্ব্যুক্তং তদ্যুক্তম্। ক: পুনরয়ং সংসারো নাম স্থেতঃখনজাগ:
সংসারঃ পুরুষত্ত চ স্থতঃখানাং সংভোক্তরং সংসারিদ্বিতি॥ ২০

আনন্দগিরিটীকা। বিকারাণাং গুণানাং প্রক্তেন্চ স্বরূপমাকাজ্ঞা-দারা নির্ণেভূম্ত্রক্ষোকপূর্কার্দ্ধং পাতয়তি—কে পুনরিতি। প্রুবজ্ঞানাদিদ্ধ-কতং বন্ধহেতৃত্বমাহ-পুরুষ ইতি। পূর্বার্দ্ধং বাচটে-কার্য্যমিত্যাদিনা। क्षानि खित्र शक्षकः कर्ष्य कित्र शक्षकः मत्ना वृष्कित्र इक्षति एक विद्यानि कत्र शानि । তথাপি ভূতানাং বিষয়াণাঞ্চাগ্রহণাৎ কণং তেষাং প্রকৃতিকার্য্যতেত্যাশঙ্ক্যাহ— তথাপি গুণানামিহাগ্রহণাৎ ন প্রকৃতিকার্য্যন্থ তত্তাহ— দেহস্তেতি। উক্তরীত্যা নিশারমর্থমাহ—এবমিতি। গুণান্চেতি। ব্যাখ্যাপূর্বকমর্থাভেদমাহ—কার্য্যেত্যাদিন। ব্যাখ্যান্তরমাহ—অথবেতি। একাদশেন্দ্রিরাণি পঞ্চ বিষয়া ইতি বোড়শসংখ্যাকো বিকারোহত কার্য্যশন্ধার্থ:। মহানহংকারো ভূততন্মাত্রাণীতি প্রকৃতিবিকৃত্য: সপ্তকারণং, তেবামারম্ভকছেন কর্ত্বেন হেতুরাশ্ররো মূলপ্রক্বতিরিত্যর্থ:। উত্তরাদ্ধস্ত তাৎপর্য্যমাহ— পুরুষদেচতি। ভশু পরমাত্মধং ব্যবচ্ছিনত্তি—জীব ইতি। ধারণনিমিক্ত তদর্থং চেতনত্বমাহ—ক্ষেত্রক্ত ইতি। তত্তানৌপাধিকত্বং বারম্বতি—ভোক্তেতি। তয়ো: সংসারকারণ্ডমূপপাদমিতৃং শক্ষতে— কথমিতি। অধনব্যতিনেকাভ্যাং তনোত্তথাস্বনিত্যাহ—অত্তেতি। ব্যতিরেকং দর্শরতি—কার্য্যেতি। ন হি নিভাযুক্তবাদ্মনঃ স্বতঃ সংসারোহ-ইদানীসৰম্মাহ—যুদ্ৰেতি। অন্বন্নাদিফলমুপসংহম্বভি—জ্বত ন্তীতার্থঃ।

ইতি। আত্মনোংবিক্রিয়ণ্ড সংসরণং নোচিতমিত্যান্দিপতি—ক: পুনরিতি।
স্থপত্রংধান্ততরসাক্ষাংকারো ভোগঃ স চাবিক্রিয়ন্তৈব দ্রষ্ট্রঃ সংসারঃ তথাবিধ-ভোক্ত বমন্ত সংসারিদ্ধনিত্যন্তরমাহ—স্তুখেতি। শোকব্যাখ্যাসমাপ্তাবিতি
শব্দঃ ॥ ২০

ভাষ্যাত্রবাদ। দে গুণ ও বিকার কি, যাহারা প্রকৃতি হইতে উৎপন্ন হয় ? [এক্ষণে তাহাই বলা হইতেছে বে] "কাৰ্য্যকরণকর্ত্তে" [এই শব্দটির অর্থ বে] কার্য্য [শব্দের অর্থ] দেহ, করণ [শব্দের অর্থ] শরীরস্থিত ত্রয়োদশ প্রকার করণ [পঞ্চ কর্ম্মেন্ত্রিয় পঞ্চ জ্ঞানেন্ত্রিয় মন: অহঙ্কার ও বুদ্ধি এই ত্রয়োদশ] ইহা ছাড়া দেহের আরম্ভক যে পঞ্চভূত শব্দম্পর্ণাদি বিষয় এবং প্রক্বতিসম্ভব গুণ এই করটি বস্তু ও বাহা পূর্বে উক্ত হইয়াছে, তাহা সমুদয়ও যে হেতু কার্য্যকে আশ্রয় করিয়া পাকে—এইজন্ম কার্য্যের গ্রহণ করিলে ইহাদেরও গ্রহণ করা হয়; স্থতরাং এখানকার কার্য্য শব্দের অর্থক্রপে এই সকল বস্তুও পরিগৃহীত হইতেছে। প্রকৃতিসম্ভব স্থধতঃখনোহাত্মক গুণকরটিও করণ শক্ষের দারা পরিগৃহীত হইতেছে। সেই সকল কার্য্য ও করণ-সমূহের যে কর্তৃত্ব অর্থাৎ উৎপাদকত্ব সে বিষয়ে প্রকৃতি হেতু অর্থাৎ প্রকৃতিই ঐ দক্ত বস্তুর আরম্ভক অর্থাৎ উপাদান কারণ। ফলে দাঁড়াইভেছে যে, প্রকৃতি কার্য্য ও করণসমূহের কর্তৃত্বরূপে সংসারের কারণ। [কোন কোন পুস্তকে] 'কার্য্যকারণকর্তুত্বে' এই পাঠ আছে, তাহার ব্যাখ্যা এইরূপ করিতে হইবে বে, কার্য্য অর্থাৎ বাহা বাহার পরিণাম, তাহা তাহার কার্য্য; বিকারই কার্য্য এবং বিকারীই কারণ। সেই কার্য্য ও কারণ অর্থাৎ বিকার ও বিকারী এই দ্বিবিধ পদার্থেরই উপাদান বিষয়ে প্রকৃতিই হেতু। অথবা কার্য্য শব্দের অর্থ বোড়শ প্রকার বিকার [যথা—একাদশ ইন্দ্রিয় এবং পঞ্চ ছুলভূত] কারণ শন্দের অর্থ সপ্তপ্রকার প্রকৃতিবিক্বতি [বধা-পঞ্চ ক্ষুভূত, অহরার ও বৃদ্ধি] এই কর্মট পদার্থই কার্য্য-কারণ শব্দের অর্থ। সেই কার্য্য ও কারণের কর্ত্তম্বে প্রকৃতিই হেতৃ অর্থাৎ প্রকৃতিই ইহাদের আরম্ভক কারণ। পুরুষ কি প্রকারে সংসারের কারণ ্হইরা থাকে, তাহাই [একণে] বলিতেছেন যে, পুরুষ অর্থাৎ জীম [কেঞ্জ এবং ভোক্তা এই হুইটি শব্দের হারাও জীবের স্বরূপ প্রতিপাদন হইতে পারে], ভোগ্য-মুখ ও হংখের ভোকৃষ অর্থাৎ ভোগের প্রতি হেতু বলিরা শাস্ত্রে উক্ত হইরা থাকে। ভোকুত্ব শব্দের অর্থ উপলব্ধ অর্থাৎ উপলব্ধি বা ভোগ। এই কার্য্যকরণকর্ত্ত্ব এবং স্থপছঃপভোক্ত্ত্ব এই ছইটি রূপে সংসারের প্রক্লতি ও পুরুষ কিরপে কারণ হইতে পারে ? ইহার উত্তর এই যে—কার্য্য রা করণ ক্রথ বা হংথ এই দিবিধ রূপে অর্থাৎ হেতৃরূপে এবং ফলরূপে যদি প্রকৃতির পরিণাম না হয় এবং চেতন-স্বরূপ পুরুষ যদি সেই প্রকৃতির পরিণাম অর্থাৎ ভোগ্যবস্তর উপভোক্তা না থাকে, তাহা হইলে সংসার কিরপে হইবে ? যদি কার্য্য করণ ও প্রথ হংথরূপ হেতৃ ও ফলরূপে পরিণত প্রকৃতি ভোগ্য হর এবং সেই প্রকৃতিবিলক্ষণ পুরুষেরও সেই ভোগ্যা প্রকৃতির ভোক্তার্য করণ অনাদি সংযোগ [যাহাকে অবিল্লা বলা যার] সিদ্ধ হয়, তাহা হইলেই ত সংসার সিদ্ধ হয়। এই কারণে প্রকৃতি ও পুরুষকে যথাক্রমে কার্যক্রনকর্তৃত্ব এবং প্রথহংখভোক্ত্য্বরূপে সংসারের কারণ বলিয়া যে নির্দেশ করা হইয়াছে, তাহা প্রস্কৃতই হইয়াছে। এই যে পরিদ্রশ্যান সংসার, ইহার স্বরূপ কি ?—স্বর্থ ও হংথের ভোগই ত সংসার, এই স্বথ ও হংথের ভোক্ত্যই পুরুষের সংসারিত্ব। ২০

পুরুষঃ প্রকৃতিছো হি ভূঙ্ক্তে প্রকৃতিজান্ গুণান্। কারণং গুণসঙ্গোহস্ত সদসদ্যোনিজন্মস্থ॥ ২১

অনুয়া পুরুষ: পরুতিস্থ: [সন্] হি (বতঃ) প্রাকৃতিজ্ঞান গুণান্ ভূঙ্কে [অতঃ] গুণসঙ্গঃ (এব] অস্য সদসদ্যোনিজন্মস্থ কারণম্॥ ২১

অনুবাদ। যে কারণে পুরুষ প্রকৃতিস্থিত হইরাই প্রকৃতিজ্ঞাত গুণ-সম্হের ভোগ করেন, এই কারণ [বলিতে হয় যে] গুণসঙ্গই এই পুরুষের সং বা অসং জন্মলাভের হেতু হইরা থাকে॥ ২১

ভাষ্য। যৎ প্রুষ্ণা স্থবহংখানাং ভোক্তৃত্বং সংসারিত্বমিত্যক্তং তস্য তৎ কিং নিমিত্তমিত্যচাতে। প্রুষ্ণা ভোক্তা প্রকৃতিত্বং প্রকৃতি অবিভালকণারাং কার্যকারণরপেণ পরিণতারাং স্থিতঃ প্রকৃতিত্বঃ প্রকৃতিমাত্মদেন গতঃ ইত্যেতৎ হি যন্ত্বাৎ ভূঙ্কে উপলভতে ইত্যর্থং। প্রকৃতিজান্ প্রকৃতিতো জাতান্ স্থাহঃখমোহাকারাভিব্যকান্ গুণান্ স্থা হংখী মৃঢ়ং পণ্ডিতোহহমিত্যেবম্। সত্যামিল অবিভারাং স্থাহংখমোহের গুণের ভূজ্যমানের বং সক্ষ আত্মভাবং সংসারক্ত স প্রধানং কারণম্, জ্মানং "স বথাকামো ভবতি তৎক্রতুর্ভবিতি" ইত্যাদি প্রতেং। তদেতদাহ কারণং হেতৃঃ গুণসক্ষঃ গুণের্ সক্ষঃ অক্ত প্রকৃষ্ণ ভোকুঃ, সদসদ্যোনিজন্মস্থ সত্যাক অসত্যাক্ত যোনরং সদসদ্যোনিজন্মস্থ বিষয়াভূতের কারণং যোনির জন্মনি সদসদ্যোনিজন্মস্থ বিষয়াভূতের কারণং

শুণসঙ্গঃ। অথবা সদসদ্যোনিজন্ম অন্ত সংসারশ্ত কারণং গুণসঙ্গঃ ইতি সংসারপদমধ্যাহার্যাম্। সদ্যোনন্ধঃ দেবাদিযোনন্ধঃ অসদ্যোনন্ধঃ পশাদিযোনন্ধঃ। সামর্থ্যাৎ সদসদ্যোনন্ধঃ মমুন্ত্যোনন্ধঃ অপি অবিক্ষাঃ দেপ্তব্যাঃ। এতক্তথা ভবিত প্রকৃতিস্থাখ্যা অবিতা৷ শুণেষ্ চ সঙ্গঃ কামঃ সংসারশ্ত কারণম্ ইতি। তচ্চ পরিবর্জনার উচ্যতে। অশু চ নিবৃত্তিকারণং জ্ঞানবৈরাণ্যে সসন্মানে * গীতাশাল্রে প্রসিদ্ধৃ। তচ্চ জ্ঞানং প্রস্তাত্পগ্রস্তং ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞবিষয়ম্। "বজ্জ্ঞান্ধ্যুত্মশ্লুতে" ইত্যুক্তঞ্চ অস্তাপোহেন অতদ্বাধ্যারোপেণ চ॥ ২১

আনন্দগিরিটীকা। শ্লোকান্তরং প্রশ্লোতরত্বেনাবতারয়তি -যদিতি। নিমিত্তং বক্তুমাদৌ সংসারিত্বমশু অবিজৈক্যাধ্যাসাদিত্যাহ—পুরুষ ইতি। যশ্মণ প্রকৃতি-মাত্মত্বেন গতন্তস্মামুঙ কে ইতি বোজনা। গুণবিষয়ং ভোগমভিনয়তি—স্তুখীতি। অবিষ্ঠারা ভোগহেতুত্বাৎ কিং কারণাবেবণরেত্যাশক্ষ্যাহ—সত্যামপীতি। সঙ্গগু জন্মাদৌ সংসারে প্রধানহেতুত্বে মানমাহ—স যথেতি। টক্তেহর্থে দ্বিতীন্নার্দ্মবতার্য্য-ব্যাচষ্টে—তদেতদিত্যাদিনা। শাধ্যাহারং যোজনাস্তরমাহ—অথবেতি। সদ্-সদ্যোনীর্কিবিচ্য ব্যাচট্টে—সদুযোন্য ইতি। যোনিষয়নিদে শাৎ মধ্যবর্ত্তিভো মহুদ্য যোনম্বোহপি ধ্বনিতা ইত্যাহ—সাম্প্যাদিতি। সঙ্গস্ত সংসারকারণত্বেনাবিস্থায়ান্তৎ কারণদ্বমেকস্মাদেব হেভোগুহুপপত্তেরিত্যাশঙ্ক্যাহ—এতদিতি। অবিছোপাদানং সঙ্গো নিমিন্তমিত্যুভয়োরপি কারণবং দিধ্যতীত্যর্থ:। দ্বিধহেতুক্তের্কিবক্ষিতং ফ**লমাহ—তক্তেতি। দাদক্ষাজ্ঞানন্ত স্বতো**হনিবুত্তেন্তন্ধিবর্ত্তকং বাচ্যমিত্যা-শঙ্কাহ—অন্ত্রেতি। বৈরাগ্যে সতি সন্ন্যাদন্তৎপূর্ব্বকং জ্ঞানং সাসঙ্গাঞ্জাননিব-র্ক্তমিত্যর্থ:। উক্তে জ্ঞানে মানমাহ—গীতেতি। অধ্যায়াদৌ চোক্তং জ্ঞানম্ উদাহতমিত্যাহ—তচ্চেতি। তদেব জ্ঞানং যজ্ঞাত্বেত্যাদিনা ন সৎ তন্নাসদি-ত্যবেন অন্তনিবেধেন সর্বতঃ পাণিপাদমিত্যাদিনা চ অতদ্বর্দ্ধাধ্যাসেনোক্তমিত্যাহ —যজ্জাত্বেতি॥ ২১

আকুবাদ। স্থা ও হংথের ভোক্ত ছই প্রথের সংনারিত্ব এই যে বলা হইল, ইহারও কি নিমিত্ত ? তাহার উত্তর এই যে, "পুরুষ" ভোক্তা "প্রকৃতিস্থ" অর্থাৎ প্রকৃতিকে আত্মভাবে প্রাপ্ত হইয়াই (তাৎপর্য্যার্থ এই বে, দেহও ইন্সিয়াদি-রূপে পরিণত প্রকৃতিতে আত্মভাব আরোপিত করিয়াই) ভোগ করিতে সমর্থ হয়। এই স্থানে প্রকৃতি শব্দের অর্থ কার্যা ও কারণরূপে পরিণত অবিস্থা।

^{*} জানং বৈরাগ্যে সসংস্থাসম্ ইতি কেচিৎ পঠস্তি।

িকি ভোগ করে ? ইহার উত্তর এই যে] প্রকৃতিজাত গুণসমূহকে ভোগ করে। প্রকৃতি হইতে যাহা উৎপন্ন, তাহাকেই প্রকৃতিক বলা যায়, অর্থাৎ সূর্থ হাথ বা মোহাকারে পরিণত—অভিব্যক্ত প্রকৃতিই "প্রকৃতিক গুণ"। [প্রকৃতিক গুণের ভোগ কি প্ৰকাৰ ?] আমি স্থণী, আমি হংণী, আমি মৃঢ় বা আমি পঞ্জিত, এই প্রকার ভাবে যে জ্ঞান. তাহাই পুরুষের প্রকৃতিজ্ঞাত গুণের ভোগ। এই অবিস্থার বর্ত্তমানতা দশায় উপভূজামান স্থুখ ছঃখ এবং মোহরূপ গুণে যে সঙ্গ অর্থাৎ আয়ভাব, তাহাই এই সংসারের উৎপত্তির প্রধান কারণ। শ্রুতিও বলিতেছে, "সে যে প্রকার কামনা করে, সেই প্রকার কার্য্য করিয়া থাকে।" সেই এই বিষয়টিকে বিশদভাবে বলিতেছেন যে, এই পুরুষের—অর্থাৎ এই স্থ ও হু:খকে যে ভোগ করে, সেই ভোক্তা পুরুষের—সং ও অসং বোনিতে যে জন্মলাভ হয়, তাহার কারণ গুণসঙ্গ। এইখানে 'সংসারে' এই পদটি অধ্যাহার করিতে হইবে (অর্থাৎ এই সংসারে সং বা অসৎ যোনিতে যে জন্মলাভ হয়. তাহার কারণ গুণসঙ্গ)। দেবাদি যোনিই সদ্যোনি, পশুপ্রভৃতি যোনি---— अनुप्राचीन, आत मञ्जारयानि — नननप्रयानि । नननप्रयानि এই अक्टित এই প্রকার ত্রিবিধ ব্যাখ্যাই সঙ্গত বলিয়া করা যাইতে পারে। এই কথা বলা হইতেছে বে "প্রকৃতিস্থতা" অর্থাৎ অবিছা এবং "গুণসঙ্গ" অর্থাৎ কাম, এই চুইটি বস্তুই সংসারের কারণ। এই ছুইটি বস্তু পরিবর্জ্জনীয়; এই জন্মই এন্থনে ইহা বলা হইতেছে। এই ছুইটি নিবৃত্তির কারণ হইতেছে—সন্ন্যাস-সহকৃত জ্ঞান ও বৈরাগ্য, ইহা গীতাশাল্রে প্রসিদ্ধ। সেই জ্ঞান যে ক্ষেত্রও ক্ষেত্রজ্ঞকে বিষয় করিয়া পাকে (অর্থাৎ কেত্র ও কেত্রজ্ঞ যে জ্ঞানের বিষয়, এই স্থলে জ্ঞান শঙ্গে সেই क्कानरे वृक्षिए हरेरत) जारा शृर्त्वरे वना रहेश्राष्ट्र । रेशां वना रहेश्राष्ट्र (य. "যাহা জানিয়া মোক্ষণাভ করিতে পারা যায়" সেই জ্ঞানকে কি উপায়ে লাভ করিতে পারা যায় ? তাহাকে লাভ করিবার উপায় অন্তাপোহ এবং অতদ্ধর্মা-রোপ। [যাহা ব্রন্ধ নহে অর্থাৎ জড়, তাহার সন্তার অপলাপ "অন্তাপোহ": ব্রন্ধের ধর্ম যে প্রকাশ, স্থথ বা নিতাম্ব প্রভৃতি, তাহার আরোপ জড়েতে না করাই "অতদ্বৰ্শ্বগ্ৰাপ"] ॥২ >

> উপদ্রফীমুমস্তা চ ভর্ত্তা ভোক্তা মহেশ্বরঃ। পরমাত্মেতি চাপ্যুক্তো দেহেহিম্মিন্ পুরুষঃ পরঃ॥ ২২

অন্ত্রয় । অন্মিন্ নেহে পর: প্রুষ: উপদ্রন্তা অন্ত্রমন্তা ভর্তা ভোকা মহেশর: প্রমান্মা ইত্যপি চ উক্ত: ॥২২ আমুবাদ। এই দেহে যে দেহাদি-বিলক্ষণ পুরুষ [বিজ্ঞমান রহিরাছেন] তিনিই উপদ্রষ্টা, অহ্মস্তা, ভর্জা, ভোক্তা, মহেশ্বর এবং প্রমাত্মা বিদিয়া উক্ত হইরা থাকেন ॥২২

ভাষ্য। তত্তৈৰ পুন: সাক্ষাৎ নিৰ্দেশঃ ক্ৰিয়তে—উপদ্ৰষ্ঠা সমীপন্থ: সন দ্ৰষ্ঠা। স্বয়মব্যাপতো ষধা ঋষিগ্ যজমানেষু যজ্ঞকর্মব্যাপতেষু ভটস্থোহস্তোহব্যাপতো যজ্ঞবিষ্টাকুশনঃ ঋত্বিগ্রন্থমানব্যাপারগুণদোষাণামীক্ষিতা তারবং কার্য্যকরণব্যা-পারেষু অব্যাপতোহন্তো বিলক্ষণন্তেষাং কার্য্যকরণানাং স্ব্যাপারাণাং সামীপ্যেন ক্রপ্তা উপদ্রপ্তা। অথবা দেহচকুম নোবুদ্ধাাত্মানো ক্রপ্তারঃ তেষাং বাছো ক্রপ্তা দেহস্তত আরভ্য অন্তরতমশ্চ প্রত্যকৃসমীপ আত্মা দ্রন্তী। যতঃ পরোহন্তরো নান্তি দ্রন্তী त्माश्किनत्रमामीत्थान क्रष्टे घां ६ छेशक्ष्ठी छा । यत्काशक्ष्टे वन्ता मर्सिवियत्रीकत्रभान् ত্বপদ্রষ্টা। অমুমস্তা চ অমুমোদনমমুমননং কুর্বংস্থ তংক্রিয়াস্থ পরিতোবস্তৎকর্তা অমুমস্তা চ। অথবা অমুমন্তা কার্য্যকরণপ্রবৃত্তিবু স্বয়মপ্রবৃত্তোহপি প্রবৃত্ত ইব ভদমুকুলো বিভাব্যতে তেনামুমস্তা। অথবা প্রবৃত্তান্ স্বব্যাপারেষু তৎসাক্ষিভূতঃ क्तांहिनिश न निवांत्रवृष्ठि देखि अञ्चनस्था। छर्खा छत्रशः नाम त्मरहित्तव्यस्तान्द्रहोनाः সংহতানাং চৈত্ঞামণারার্থেন নিমিত্তভূতেন চৈত্ঞাভাসানাং বৎস্করপধারণং তকৈতন্তাস্মন্ততমেরেতি ভর্তা আত্মা ইত্যুচ্যতে। ভোকা অগ্নাঞ্চবৎ নিত্যচৈতন্ত্র-স্থান্ত বুল্লেঃ স্থাপ্ত থ-মোহাত্মকাঃ প্রত্যায়াঃ সর্ববিষয়বিষয়াঃ চৈত্যাত্মগ্রস্ত ইব জারমানা বিভক্তা বিভাব্যন্তে ইতি ভোক্তা আত্মা ইত্যুচ্যতে। মহেশ্বঃ সর্বাত্মত্তাৎ শ্বতত্ত্রপাচ্চ মহান ঈশ্বরণ্ট ইতি মহেশ্বর:। প্রমাত্মা দেহাদীনাং বৃদ্ধান্তানাং প্রত্যগাত্মদেন করিতানামবিভয়া পরম উপদ্রুগ্রাদ্বিলক্ষণ আত্মেতি পরমাত্মা সোহতঃ প্রমাত্মা ইত্যানেন শব্দেন চাপ্যক্তঃ ক্থিতঃ প্রতো। কাসাব্দিন দেহে পুরুষ: প্রোহ্ব্যক্তাৎ। ''উত্তম: পুরুষস্বত্য: প্রমান্মেত্যুদাহৃত:' ইতি যো বক্ষ্য-মাণঃ "কেত্ৰজ্ঞঞাপি মাং বিদ্ধি" ইত্যুপগুস্তো ব্যাখ্যায় উপসংস্তশ্চ ॥২২

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতভৈব মোক্ষহেতোজ্ঞানশু সাক্ষান্নিদে শার উত্তর স্নোক্ম্থাপরতি—তন্মেতি। কার্য্যক্রণানাং ব্যাপারবতাং সমীপে স্থিতঃ সন্নিধিমাত্রেণ তেবাং সাক্ষীত্যেবমর্থবেন উপদ্রষ্টেতি পদং ব্যাচট্টে—সমীপিস্থ ইতি। লৌকিকন্থেব প্রষ্ট্র রুখাপি ব্যাপারবিশিষ্টতরা নিক্রিয়ন্থবিরোধমাশঙ্ক্যাহ—স্বয়ুমিতি। স্বব্যাপারাদৃতে সন্নিধিরেব প্রস্টব্যম্। দৃষ্টান্তেন স্পষ্টরতি—যুথেতি। উপদ্রষ্টেত্যক্লার্থান্তরমাহ—অথবেতি। বহুনাং প্রষ্টু ক্ষেহপি কন্তোপপ্রস্টু ত্বং ভ্রোহ—তেষামিতি। উপোপসর্গশু সামীপ্যার্থবেন প্রত্যগর্থবাৎ তবৈব সামীপ্যাবসানাৎ

প্রভাগাৰা চ এটা চেত্যপত্রটা সর্বসাকী প্রভাগাৰোত্যর্থ ে উক্ষ্যের বার্তি यक हैकि। वर्षा वनमानक श्रीकाश वक्कवर्षान श्रन् हार्य वा नर्सकाविकः সন্পত্ৰতা বিষয়ীকলোতি তথাগনাত্মা চিন্মাত্ৰতাবঃ সৰ্বং গোচৰৰতীভূাপ্ৰতি পক্ষাস্তরমাহ—যুক্তেন্তি। অহুমন্তা চেত্যেতৎ ব্যাকরোতি—অনুমৃত্তি। বে বনং কুর্বস্তো ব্যাপারবস্তো ভবতি ভেবু কুর্বৎত্ব সংস্থ বাস্তেবাং জিল্লান্তান্ত পাৰ হস্ত পরিতোবোহমুননাং তচ্চামুমোদনং তত সরিধিমাত্ত্বেণ কর্ত্তা বঃ সোহমু-ব্যাখ্যান্তরনাহ—অথবেতি। তদেব স্কুটরতি—কার্য্যুতি। অর্থান্তরমাহ—অথবেত্যাদিন।। ভর্ত্তে পদনাদার কিং ভরণং নামেডি পৃষ্কতি—ভূৰ্ট্কেতি। তদ্ৰপং নিৰূপন্নশ্বনা ভৰ্তৃহং সাধন্নতি—দ্বেচ্ছি । ভোক্তেত্যুকে ক্রিয়াবরে প্রাপ্তে ভোগশ্চিদবদানতেতি স্থায়েন বিভন্তে— অগ্লীতি। বিশেষণাস্তরমাদায় ব্যাচষ্টে—মতেশ্বর ইতি। পরমাত্মমুপপাদরতি — দেহাদীনামিতি। অবিভগা কলিতানামিতি সম্বরঃ। প্রমন্থ প্রস্কৃত্বমু। সঃ পূর্ব্বোক্তবিশেষণবানিতি যাব**ে। পরমাত্মশত্বক্ত প্রকৃতাত্মবিষয়তে শ্রুতি**মন্থ-ৰুলমতি—অস্ত ইতি। তম্ব তাটহাং প্ৰশ্নবানা প্ৰত্যাচন্টে—ক্ৰেতি। ৰুদ্ৰাৎ পরস্বং তদাহ—অব্যক্তাদিতি। তত্তৈব বাক্যশেবাস্থক্ল্যমাহ—উত্তম ইতি। শোহস্মিন্ দেহে পর: পুরুষ ইতি সম্বন্ধ:। শোধিতার্থয়োটরক্যজ্ঞানং এপাঞ্জকং ফলোক্যা ভৌতি—ক্ষেত্ৰজ্ঞতে॥ ২২

অমুবাদ। সেই পরমান্বার একণে সাকাৎ নির্দেশ করা হইতেছে—
"উপদ্রভা" সমীপে থাকিরা বে দেপে, তাহাকেই "উপদ্রভা" কহে; অধন সে নিজে
ব্যাপৃত হর না। বজমান ও ঋষিক্ প্রভৃতি বে সমরে বজকর্পে ব্যাপৃত থাকে,
দেই সময় অন্ত একজন বজ্ঞবিষ্ঠাকুশল ব্যক্তি বেমন নিজে কোনপ্রকার কার্ব্যে
লিপ্ত না হইরা ঋষিক্ ও বজমানের কার্ব্যে অণ বা দোবের দর্শন নাল করিরা
থাকেন, সেইরপ দেহ ও ইন্সিরসমূহের বে সকল ব্যাপার হইতেছে, তাহা নিকটে
থাকিরা আত্মা দেখিরা থাকেন মাত্র,কোন কার্ব্যে শ্বহং নিপ্ত হন না; এই কার্বের
আত্মানে "উপদ্রভা" বলা বার। অথবা [এইরপ ভাবও হইতে পারে বে] দেহ,
চক্ষুং প্রভৃতি বহিরিন্তির, মনঃ, বৃদ্ধি এবং আত্মা এই ক্রটি পদার্থ ই শুদ্ধার সাক্ষার
লাম চক্ষ্য: এই প্রকারে অভান্ত সকল দ্রভা হইতে আত্মাই প্রকৃত্যকে "আত্মর
লাম চক্ষ্য: এই প্রকারে অভান্ত সকল দ্রভা হইতে আত্মাই প্রকৃত্যকে "আত্মর
লাম চক্ষ্য: এই প্রকারে অভান্ত সকল দ্রভা হইতে আত্মাই প্রকৃত্যকে আত্মার
লাম চক্ষ্য: এই প্রকারে অভান্ত সকল দ্রভা হইতে আত্মাই প্রকৃত্যকে আত্মার
লাম ক্রান্ত করা নাম্বার স্বর্গাৎ আত্মন্তানে, সাক্ষাৎ প্রবিদ্যাতা হইরা, সকল

বস্তুর দর্শন করেন; এইজন্ত আত্মাকে "উপদ্রন্তা" বলা যার। অথবা বাহা অপেকা অধিকভাবে কেহই দেখিতে পায় না, গেই সর্বাতিশায়ী আন্তর দ্রন্তাকে "উপদ্রন্তা" वना वाहेरछ भारत । अथवा वक्करर्यंत्र मर्गरकत्र छात्र मकन विवत्रहे आचा स्मर्थन মাত্র, এই কারণেই আত্মাকে "উপদ্রপ্তা" বলা বাইতে পারে। "অমুমন্তা" অমুমনন भरकत वर्ष व्यष्ट्रसामन वर्षाए लाटक कार्या कतिए अतृ ह ब्हेरन, छाहारमत राहे কার্য্যের উপর বে পরিতোষ,দেই পরিতোষ বাঁহার হয়,তিনিই "অমুমস্তা" [আত্মাও এই প্রকার অনুমন্তা]; অথবা [অনুমন্তা এই শব্দটির অর্থ এইরূপ যে] দেহ ও ইক্সিয়সমূহের ব্যাপার নিকরে শ্বয়ং কোন প্রকারে ব্যাপৃত না হইয়াও নিজে বেন অমুকৃল ভাবে ব্যাপৃত হইয়াছে বলিয়া আপাততঃ প্রতীত হয়; এই কারণে আত্মাকে 'অফুমন্তা" বলা যাইতে পারে । অথবা নিজনিঞ্চ ব্যাপারে প্রবৃত্ত দেহ ও ইস্তিয়সমূহকে কোন সময়ে নিবারণ করে না বলিয়া আত্মাকেই ''অসুমন্তা'' বলা ষাইতে পারে। "ভর্তা এখানে ভরণ শব্দের অর্থ [এইরূপ করিতে হইবে বে] यिषठ (षर रेखिय ও মन: रेराता পরম্পর সংহত ও জড়, তাহা रेरेलেও रेराता হৈত্তক্তময় আস্থার ব্যবহারিক ভোগ দিদ্ধ করিবার জক্ত দেই চৈতক্তময় আত্মাব ্চৈতস্তাভাবে উদ্ভাগিত হইয়া থাকে। ইহাদের গেই হৈতস্তাভাগ দারা প্রকাশ कतिया (वं चक्रात्भव अवशावन आया कतिया भारकन, त्रहे चक्रभावशावनहे अभारन ভরণ বলিরা বুঝিতে হইবে। যে হেতু আত্মা এই প্রকার ভরণ করেন, এইজভ আত্মাকে "ভর্তা" বলা বার। "ভোকা" [আত্মাকে কেন ভোকা বলে, ভাহার কারণ এই বে] অগ্নির উক্ষরভাব বেমন সর্বাদাই বিভ্যমান থাকে, সেই প্রকার চৈতন্ত্রই আত্মার নিত্য বভাব। এই নিত্যচৈতন্ত্রময় বভাব বশতঃ আত্মা বুদ্ধির মুখ ছাখ ও মোহ স্বৰূপ সৰ্কবিষয়িণী বৃত্তিকে যেন নিজ চৈডক্তগ্ৰস্ত করাইয়া পুথগু ভাবে বিভক্তাকারে প্রকাশ করিয়া থাকেন; এইব্যক্ত-আত্মাকে "ভোক্তা" বলা বার। [আত্মাই] "মহেখর" [কারণ,] আত্মা সকলেরই আত্মা; স্থতরাং মহানু এবং আত্মা স্বতর; স্বতরাং আত্মা ঈশর। বে মহানু অথচ ঈশর, তাহাকে "महस्यत्र" वना यात्र । आचा महान् वत्ते, श्रेयत्र वत्ते ; এই कात्रल आचाहे "পরমাত্মা"; কারণ, দেহ হইতে বৃদ্ধি পর্যান্ত সংবাত—যাহা আত্মারই অবিভার ৰাবা পরিক্রিড—সেই সংবাত অভেতন হইলেও, অনাত্মা হইলেও বে আত্মার চৈতন্ত্ৰপক্তির প্রভাবে চৈতন্তর্ক ও "আত্মা" এই ভাবে বাবহারগোচর হর, সেই [कांचा [-त्क कि कांत्रल] ; भत्रभांचा [वना ना बाहेरव ?] त्महे और मकन विरम्पन-विनिष्टे जाजा धरे तिरस्त्र मत्न जीवज्ञाकात्व वावशाज्ञत्यांतत्र सरेताक वांचित्र धरे আঘাই পরমান্বা বলিরা প্রতিতে উক্ত হইরাছে। কোথার এই আঘাই পরমান্বা বলিরা উক্ত হর ? এই দেহেই উক্ত হর । সেই আত্মা "পর" অর্থাৎ অব্যক্ত হইতে "পর" বিলক্ষণ "উক্তম পুরুষ ("আত্মা এবং সে) পরও; সেই আত্মাই "পরমাত্মা" বলিরা উদাহত। এই ভাবেই এই গীতাতে আত্মার পরিচর পরে দেওরা হইবে। "আমাকেই এই দেহে ক্ষেত্রজ্ঞ বলিরা জানিও" এই ভাবে বে আত্মা উপক্রান্তম হইরাছে, এক্ষণে তাহাই এই ভাবে উপসংহত হইলামং২

> য এবং বেভি পুরুষং প্রকৃতিঞ্চ গুণৈঃ সহ। সর্ব্বথা বর্ত্তমানোহপি ন স ভূয়োহভিজায়তে ॥২৩

অনুয় । য এবং পুরুষং গুণৈ: সহ প্রাকৃতিঞ্চ বেত্তি সর্বাধা বর্ত্তমানোহণি স ভূম: ন অভিজায়তে ॥২৩

আমুবাদ। বে ব্যক্তি এই আন্ধা এবং শুণের সহিত বর্ত্তমান প্রকৃতিকে এই ভাবে জানিতে পারেন, বে কোন অবস্থাতে বর্ত্তমান থাকিলেও তাঁহার আর এ সংসারে জন্মগ্রহণ করিতে হয় না ॥২৩

ভাষ্য। তমবং বংথাক্তলকণমাত্মানম্—য এবং বংথাক্তপ্রকারেণ বেজি প্রকাবং সাক্ষাদহমিতি প্রকৃতিক বংথাক্তামবিদ্যালকণাং ওলৈ স্ববিকারৈঃ সহ নিবভিতামভাবমাণাদিতাং বিভয়া সর্বাথা সর্বপ্রকারেণ বর্তমানোহপি স ভূবঃ পূনঃ পতিতেহিন্দ্ বিভছরীরে দেহাস্তরার নাভিজারতে নোৎপভতে দেহাস্তরং ন গৃহাতীতার্থঃ। অপি শকাং কিমু বক্তবাং সর্ব্ভক্ষা ন জারতে ইত্যভিপ্রায়ঃ; নম্ম বছপি জ্ঞানোৎপত্ত, নস্তরং পুনর্জ্জ্মাভাব উক্তথাপি প্রাণ্ জ্ঞানোৎপত্তঃ কতানাং কর্মণাং উত্তরকাশ্তাবিনাক বানি চাতিক্রাস্তানেকজ্মক্রতানি তেবাং কলমদরা নাশো ন যুক্ত ইঙ্গি স্থান্ত্রাণি জ্মানি। কতবিপ্রণাশো হি ন যুক্ত ইভি। বথা ফলে প্রব্রানামারক্ষপ্রনাং কর্মণাম্। ম চ কর্মণাং বিশেষোহবগম্যভে। তন্মাং বিপ্রকারাণি অপি কর্মাণি ত্রীণি জ্মানি আরভেরন্ সংহতানি বা সর্কাণি একং জ্মা জ্মারভেরন্। অন্তথা ক্রত বিনাধশ সতি সর্ব্বানামাস্ত্রসক্ষ শান্তানর্থক্য চ তাৎ ইত্যভ ইদমবৃক্তমূক্তং ন স ভূরোহভিজারত ইভি ন, "ক্ষারভে চাল্ক কর্মাণি" "বন্ধ বেদ ব্রক্ষৈর ভবতি" "তন্ত তাবদের চিরমিবীকাতৃস্বং সর্বাকর্মাণি অনুরক্ষে ইত্যাদিক্রতিশতেভাঃ উক্তো বিহুবঃ সর্বকর্মণাহঃ। ইহাপি চোক্তো বহিষাংসি ইত্যাদিনা সর্বাকর্মনাহঃ। বক্ষাতি চ উপপত্তেশ্চ। অবিভালাব্রেশ্বাক্র

বীন্ধনিমন্তানি হি কর্মাণি জন্মান্তরাঙ্কুরমারভন্তে। ইহাণি চ সাহস্বারাভিসন্ধীনি কর্মাণি ফলারন্তকাণি নেতরাণি ইতি তত্র তত্র ভগবতোক্তম্—

"বী জাক্সায়্য পদঝানি ন রোহন্তি যথা পুন:। জ্ঞানদঝৈ তথা ক্লেনৈ নাজা সম্পদ্ধতে পুন:।।" ইতি চ

অন্ত তাবজ্ঞানোৎপত্যুত্তরকালফুতানাং কর্মণাং জ্ঞানেন দাহঃ জ্ঞান-সহভাবিদ্বাং। ন দ্বিছ জন্মনি জ্ঞানোৎপত্তঃ প্রাক্তনাম্ অতীতানেকজন্মান্তরক্তানাঞ্চ দাহো যুক্তঃ। ন, সর্ব্বকর্মাণীতিবিশেষণাং। জ্ঞানোত্তরকালভাবিনামের সর্ব্বকর্মণামিতি চেৎ ন, সঙ্কোচে কারণামূপপত্তেঃ। বভুক্তং বথা বর্ত্তমান-জন্মারজ্বাণি কর্ম্মণি ন ক্ষীরত্তে ফলদানার প্রবৃত্তানি এব সভ্যপি জ্ঞানে তথা অনার্ব্বকলানামপি কর্মণাং করো ন যুক্তঃ ইতি। তদসং। কথং, তেষাং মুক্তেবৃবৎ প্রবৃত্তফলহাং। বথা পূর্বং লক্ষ্যবেধার মুক্ত ইর্ধ্ হ্রো লক্ষ্যবেধাত্তরকালমপি আরব্ধবেগক্ষরাং পতনেনৈর নিবর্ত্ততে এবং শরীরারভ্তকং কর্মান্তর্মান্ত প্রবিত্ত বিভ্তপ্রান্তনে নিব্রক্তেশ্বিশ আসংস্কারবেগক্ষরাং পূর্ববং বর্ত্তএব। স এবেরুঃ প্রবৃত্তিনিমিত্তানারব্দ্রক্রেশ ধ্রুষি প্রযুক্তোহপি উপসংছিরতে তণানারব্দ্রকানি কর্মণি স্থান্তর্ভান্তন নিব্রিজ্বিক্রিরত ইতি পতিতহিন্দির্বিদ্বন্ত্রীরে "ন স ভূরোহভিজায়তে" ইতি যুক্তমেবোক্তমিতি সিদ্ধম্ ॥২৩

আনন্দ্রিরিটীকা। যথোকেন প্রকারেণ জাবেধরাদিসর্ব্বক্ষনাধিগান্দ্রেরিটীকা। যথোকেন প্রকারেণ জাবেধরাদিস্ব্বক্ষনাধিগান্দ্রেরিটাকা। সাক্ষাদপরোক্ষ ছেনেতি বাবং। যথোক্তামনাগানিব্যার স্বান্দ্রান্দর্বার্যার প্রক্রিক ছবোরির প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার প্রক্রিকার কর্মান্তান্ত করেই কর্মান্তান্ত করেই কর্মান্তান্ত করেই কর্মান্তান্ত করেই কর্মান্তান্ত কর্মান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্ত কর্মান্তান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত

ফলবেন বলববার জানাৎ তরিগুত্তিনে ত্যাহ—ন চেতি। জ্ঞানোখ্যেন স্তানবিরোধিত্বাবিশেষাৎ প্রবৃত্তা প্রবৃত্তফল্ডুমমূপযুক্তমিতি ভাবঃ। কর্মণাৎ ফলম-দৰা নাশাভাবে ফলিডমাহ—তন্মাদিতি। নমু কৰ্মণাং বছৰাৎ ভৎকলের জন্মস্থ কৃতত্ত্বিদ্যারম্ভকর্মণাং ত্রিপ্রকার্যাদিতি চেৎ ন অনার্ভ্তনৈকপ্রকার্য-সম্ভবাৎ তত্তাহ—সংহতানীতি। নান্তি জ্ঞানকৈকান্তিককলম্মতিশেবঃ। উক্তকর্মণাং জন্মানারম্ভকদে প্রাপ্তক্তং দোবমমূভাব্য ভক্তাভিপ্রসঞ্জকদমাহ— অন্যথেতি। সর্বত্যোরত্তকর্মস্বপীতি যাবং। ফলজনকত্বানিশ্চরোহনাখাসঃ। কর্মণাং জন্মানারস্তকত্বে কর্মকাণ্ডানর্থক্যং দোবাস্তরমাহ—শাস্ত্রেতি। অনারন কর্মণাং সভ্যপি জ্ঞানে ক্যান্তরারন্তক্ষএোব্যে ফ্লিডমাহ—ইত্যত ইতি। क्षणावहेरखन পরিহরতি—(नजामिना। खानामनात्रककर्षमारः **छ**शवरजाशिन সমতিমাহ— ইহাপীতি। জ্ঞানাধীনসর্বকর্মদাহে সর্বধর্মান পরিতাজ্যেতি বাক্যশেবাংপি প্রমাণীভবতীত্যাহ — বক্ষাতি চেতি। জ্ঞানাদনারকাশেবকর্শকরে যুক্তিরপি বকুং শক্যেত্যাহ—উপপত্তেশ্চেতি। তামেব বিরুগোতি—অবি-প্রেতি ৷ অঞ্জাবিভারাগবেষাভিনিবেশাধ্যক্রেশাত্মকানি সর্বানর্ধরীকানি তামি নিমিক্টাকুত্য যানি ধর্মাধর্মকর্মাণি তানি ক্সান্তরারম্ভকাণি, বানিত্ বিভাদগ্ধক্লেশবীলভ প্রতিভাসমাত্রশরীরাণি কৰ্মাণি ন শরীরাস্তকাণি দগ্ধপটবদর্থক্রিয়াসামর্থ।ভাবাদিতার্থঃ। প্রতীতিমাত্রদেহানাং কর্মাভাগানাং ন ফলারম্ভকতেত্যস্মিন্নর্থে ভগবতোহপি ইহাপীতি। তর্জানাদূর্দ্ধং প্রাতীতিকক্রেশানাং কর্মধারা দেহানারভক্তে বাক্যান্তরমণি প্রমাণয়তি—বীজানীতি। জানানন্তরভাবিকর্মণাং জানেন দাহমঙ্গীকরোতি—অন্তিতি। বিরোধিগ্রন্তানাম্ এবোৎপত্তিরিতি[।] হেতুমাহ— জ্ঞানেতি। অমিন জননি জনাত্তরে বা জানাং পূর্বভাবিকর্মণাং ন ততো দাহো বিরোধিনং বিনা প্রব্যক্তরিত্যাহ— ন ত্বিতি। শ্রুতিস্থতিবিরোধা-রৈবমিতি পরিহরতি—্রেত্যাদিনা। সর্বাশ্বশ্রতঃ সংলাচং শহতে— জ্ঞানেতি। প্রকরণাদিসংকোচকাভাবারৈবমিত্যাহ—নেতি। আব্দেপদশা-রাষ্ক্রমন্মানমন্বদতি যাজিতি । আভাগবাদিদমসাধকমিতি প্ৰস্তি তল-সদিতি। ব্যাধ্যাদিনৰে কণমাভাসম্বনিতি পৃচ্ছতি—কথমিতি। **অমুম্ব**-ফলছোপাধিনা হেতোব গাঁথিভদাদাভাগৰবীরিভ্যাহ—তেমামিতি। ভদেব अभक्षत्रि - श्रुश्का क्रिया । शक्ष्यः नैकानातियुक्ति वनवर अधिकक्षका-ভাবে মধ্যে ন পভতি তথা প্রবলপ্রতিবন্ধকং বিনা প্রবৃত্তফলালাং কর্মণাং

ভোগাদৃতে ন করে। ন চ তত্ত্বজ্ঞানং তাদৃক্ প্রতিবন্ধকম্ উৎপঞ্জাবেব পূর্বপ্রপ্রয়েশ কর্মণা প্রতিবন্ধশক্তিদাদিত্যর্থ: । যত্ত্ব জ্ঞাননাদাহত্ত্বং তত্ত্ব প্রয়েশুক্ষণত্ত্বা নরেছেপি যত্ত্বাপ্রপ্রক্ষণত্ত্বং তত্ত্ব জ্ঞানদাহত্বমিতি ন ব্যতিরেকসিদ্ধিরিত্যাশক্ষ্যাহ — স এবেতি । প্রবৃত্ত্বৌ নিমিত্তভূতো নারনো বেগোহনেনেতি বিগ্রহঃ । স্বাধ্যমন্থানি সাভাসান্তঃকরণনিষ্ঠানীতি যাবং । বিমতানি তত্ত্বীনিমন্তনির্ভীনি তৎক্ষতকারণনির্ভিত্বাং রক্ষ্মপাদিবদিতি ব্যতিরেকসিদ্ধিরিভিভাবঃ । বিহুষো বর্ত্তমান দেহপাত্তে দেহান্তরে হেঘভাবাং তত্ত্বীরৈকান্তিক্ষণেত্যুপসংহরতি—প্রতিত ইতি । ২৩

অকুবাদ। সেই এই যথোক্তপ্রকার পুরুষকে যেমন ভাবে শাস্ত্রে নির্দেশ করা হইরাছে, সেই ভাবে যে জানে অর্থাৎ আমি সাকাৎ ব্রহ্ম এই ভাবে [বে জানে] এবং গুণ অর্থাৎ বিকারসমূহের সহিত অবিম্যারূপ এই প্রকৃতিকেও বে জানে [কি ভাবে জানে ?] এই প্রকৃতির বাস্তবিক কোন সতা নাই, বিষ্ণাই ইহার বিনাশ করিয়া থাকে, এই ভাবে বে প্রকৃতিকে জানে, সে ব্যক্তি বে কোন অবস্থাতেই থাকুক না কেন, সেই দকল অবস্থাতেই একবার এই দেহ পতিত হইলে আর পুনর্কার জন্মলাভ করে না অর্থাৎ আয় তাহার নৃতন দেহ লাভ করিতে হয় না। এই যে অপি শব্দের প্রয়োগ, ইহা **দা**রা স্থচিত হইতেছে যে, যে নিজের ধর্মে থাকিয়া এই প্রকার প্রশ্নতি ও পুরুষের জ্ঞান লাভ করিতে পারে, তাহার যে আর জন্ম লাভ হয় না, সে বিষয়ে আর অধিক কি বক্তব্য আছে ? এইস্থানে এইপ্রকার শঙ্কার উদয় হইয়া থাকে বে, "যদিও এই স্থানে জ্ঞানলাভের পর আর জন্ম হয় না", এই কথা বলা হইয়াছে, তাহা হইলেও জ্ঞানের উৎপত্তির পূর্ব্বে এই জ্বন্মে যে সকল কর্ম্ম করা যায়, জ্ঞানোৎপত্তির পরেও বে সকল কর্ম্মের অমুষ্ঠান হয় এবং অতীত অসংখ্যের পূর্বে জন্মের অমুষ্টিত যে সকল কর্ম সঞ্চিত আছে, তাহারা যে নিজ নিজ ফল ভোগ না করাইরা একেবারে বিধবন্ত হইবে, ইহা কথনই যুক্তিসঙ্গত হইতে পারে না; স্থতরাং শীকার করিতে ছইবে. এই তিন প্রকার কর্ম জ্ঞানোৎপত্তির পর অন্ততঃ তিনটি জন্ম লাভ নিশ্চরই করাহরা থাকে। কর্ম করিলাম অথচ তাহার ফল ভোগ করিতে হুইবে না, हेरा कथनरे मख्य नत नरह। त्यमन आवस्तक या याश कन मान अध्य रहेशारह, ভাহা ফল সম্পূর্ণরূপে ভোগ না করাইয়া বিনাশ পায় না, সেইরূপ এই পূর্ব্বোক্ত তিন প্রকার কর্মন্ত নিজ নিজ ফল জ্বেগ না করাইয়া কিছুতেই বিনাশ প্রাপ্ত **ब्हेट** शास्त्र ना। এই कर्षां कि कन मान कतिरत जात এहे कि कन मान कतिरत

না, এই প্রকার কর্ম্মের মধ্যে যে একটা বিলক্ষণর্ভা আছে, তাহাতে ত কোন প্রমাণ দেখিতে পাওরা যার না। স্থতরাং বলিতে হইবে বে, এই তিন প্রকার কর্ম জ্ঞানোংপত্তির পরও তিনটি জন্ম উৎপাদন করিবে অথবা ঐ তিবিধ কর্ম একত্র মিলিত হইয়া অন্ততঃ একটি জন্মও উৎপাদন করিবে। এই প্রকাব স্বীকার না করিলে এই প্রকার আপত্তি হয় যে, কর্ম্ম করিলাম অথচ তাহার ফলভোগ হইল না এবং ফলের জন্ম করিতে যে সকল শাস্ত্রের উপদেশ আছে, ভাহা নিরর্থক হইরা পড়ে। এই জন্ম স্বীকার করিতে হইবে যে, এই যে জ্ঞানোৎ-পত্তির পর আর জন্মণাভ হয় না বলিরা গীতা উপদেশ দিতেছে, ইহা যুক্তিসকত হইতে পারে না। এই প্রকার শকা করা ঠিক নহে; কারণ শ্রুতিতেই উক্ত আছে, 'বেশ্বজ্ঞানীর কর্মসমূহ ক্ষয় প্রাপ্ত হয়" "বে ব্রহ্মকে জানে, দে ব্রহ্মই হর" ''বেমন অভিসম্পর্কে তৃলরাশি দগ্ধ হয়, সেইরপ বিক্ষজ্ঞানের প্রভাবে] সর্বপ্রকার কর্ম ক্ষয় প্রাপ্ত হর"। এই প্রকার শত শত শ্রুতি দারা ইহা [স্কুম্পষ্ঠ] প্রতিপন্ন হইতেছে যে, তত্তত পুরুষের সর্ববিধ কর্মাই দ্ব হটয়া পাকে। এই গীতাশাস্থেও 'বেমন সমিদ্ধ অগ্নি কাঠসমূহকে ভত্মসাং করিয়া পাকে" ইত্যাদি বাকোর দারা সর্বপ্রকার কর্মের দাহ উক্ত হইয়াছে: এবং এই বিষয়ে আরও বলা হইবে। তাহা ছাড়া ইহাতে যুক্তিও দেখিতে পাওয়া যায়। অবিভা কাম ও ক্লেশরপ বীক্ষই ত কণ্মের নিমিন্ত। এই নিমিত্ত কয়টির সহিত মিলিত হইয়াই কর্ম্মনিবহ জন্মান্তররূপ অন্তরের উৎপাদন করিয়া থাকে। এই গীতাশাস্ত্রেও তত্তৎস্থানে ভগবান বলিয়াছেন বে, অহঙ্কার ও অভিসন্ধির সহিত মিলিত হইয়াই কর্মসমূহ ফলের উৎপাদক হয়। বে সকল কর্ম এই অহন্বার ও অভিসন্ধির সহিত মিলিত হইতে পারে না, তাহারা त्कानं करणबहे छे९भावक हटेएछ भारत ना। अञ्चल छेक हटेब्राइ द. "रायम वीक्षमभूष्ट् अधिश्रामधः हरेला आत अद्भारतत छेरशामक रह मा, सिर्देक्षण অবিভাদি ক্লেশ ৰদি একবার জানের দারা দগ্ধ হয়, তবে আর তাহারা আত্মার জন্মলাভের হেতৃ হইতে পারে না।'' [একণে শকা হইতে পারে যে] জ্ঞানের উৎপত্তির পরে যে সকল কর্ম অনুষ্ঠিত হয়, তাহাদেরই জ্ঞানের বারা দাহ হউক; কারণ, তাহারা আনের সমকালব্দী। এই জন্ম জানোংপত্তির পূর্বে যে সকল কর্ম অমুষ্ঠিত হয় এবং পূর্ববর্তী অসংখ্য জয়েও বে সকল कर्म अञ्चित्र रहेत्राष्ट्र, जाशासत नकटकैंद्रेट त्य ब्लाद्मत वाता नार रहेत्व, देश क्थनहे वृक्तिवृक्त हरेएछ शास ना।—धरे थकात नहा कता किन नहर;

काबन-भारत व्यक्ति विभिष्ठेष्ठारव निर्द्धन कता श्रहेबाह्य खानाधि गर्स कर्मात मारू कबिया थाटक। यमि वन, এই य नर्स नर्कांडेत श्रादांश बहेबाहरू, देशत অর্থ বে একেবারে সকল কর্ম, তাহা নহে; কিন্তু জ্ঞানোৎপত্তির পর বে সকল কর্ম অনুষ্ঠিত হয়, সেই সকল কর্মাই এই স্থলে সর্বাধান্তর তাৎপর্য্যার্থ। এই প্রকার ব্যাখ্যাও ঠিক নহে। কারণ, এই প্রকার ব্যাখ্যা করিলে, সর্ব্ধ শব্দের অর্থের সঙ্কোচ করিতে হয়। তাহা কেন করা যাইবে ? সর্ব্ব শব্দের এই প্রকার অর্থসভোচে কোন প্রকার প্রমাণ দেখিতে পাওয়া যায় না। আরও अकिं कथा वला इहेबाहिल दर. "दियमन वर्त्तमान करमात्र आंत्रहरू दर मकल कर्मा. ভাষারা ভাষাদের ফলপ্রদান করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছে, এই কারণ ভাষারা জ্ঞানের ছারা দল্ম হর না, তাহারা জ্ঞান হইলেও নিজ নিজ কণভোগ করাইয়াই পাকে, ভাছারাও প্রারন্ধ কর্মের ভায় ফলভোগ করাইয়া তবে বিনষ্ট হইবে। জ্ঞান তাহাদিগকে দগ্ধ করিতে পারিবে না। এই প্রকার মতও দাধু হইতে পারে না। কারণ, ধরুক হইতে প্রকিপ্ত শরের ভার ঐ সকল প্রারন্ধ কর্ম ফলদানে প্রবৃত্ত হুইয়াছে: স্কুতরাং উহার। ফলদান করিয়াই বিনষ্ট হুইবে। যেমন ধুফুক হুইতে জাতি বেগে যদি একটি শর প্রাক্ষিপ্ত হয়, তাহা হইলে ঐ শর বেমন বেগবশতঃ লক্ষ্য বেধ করিয়াও কিছুকণ অগ্রসর হয় এবং যতকণ উহা ভূমিতে পতিত না হয়, ততকণ উহার বেগকর হয় না। অর্থাৎ ঐ বেগের কর না হইলে উহার ভূমিতে পতন হর না; এইরূপ বে সকল কর্ম এই বর্জমান শরীরের আরম্ভক, তাহারা শরীরম্বিতিরূপ প্রয়োজনের নিবৃত্তি হইলেও যতকণ সংস্থার-রূপ বেগ বিষ্ণমান থাকিবে, ততক্ষণ সে পরিত্যক্ত শরের ক্সায় কার্য্য করিতেই থাকিবে। আবার যদি সেই বাণ্টিতে কোন প্রকার বেগপ্রদান না করা যার, এবং তাহা যদি ধমুক হইতে প্রক্রিপ্ত না হর, তাহা হইলে উহাকে ধমুকের উপর আরোপিত করিরাও বেমন—ইচ্ছা হইলেই উপসংহার করা যায়, সেইরূপ (व नक्न कर्य धिकिश भारतत जात कामारन धात्र इस नारे-श्रामण इंटरज কেবল জীবকে আশ্রম করিয়া রহিয়াছে মাত্র. তাহারা জ্ঞানের দারা দথ্বীঞ্কর হইয়া থাকে এবং এই শরীর পতিত চইলে আর বিহালের পুনৰ্জন্মলাভের কারণ হয় না; স্বতরাং পূর্বে বলা হইবাছে যে "দে (বিধান) আর জন্মলাভ করে না", ভাহা ঠিকই বলা হইরাছে--ইহা সিদ্ধ रहेंने ॥ २१

ধ্যানেনাত্মনি পশ্যন্তি কেচিদাত্মানমাত্মনা। অস্তে সাংখ্যেন যোগেন কর্মযোগেন চাপরে॥ ২৪

আৰ্য়। কেচিং আত্মনা আত্মনি আত্মানং ধ্যানেন পশুন্তি, অন্তে সাংখ্যেন বোগেন [আত্মানং পশুন্তি]। অপরে কর্ম্মবোগেন [আত্মানং পশুন্তি]॥ ২৪

অকুবাদ। কোন কোন সাধক বিশুদ্ধ অস্তঃকরণের সাহাব্যে ধ্যানের দারা আত্মাতেই পরমাত্মাকে দর্শন করিয়া থাকেন, কেহ বা সাংখ্যবোগের দারা [আত্মদর্শন করেন] আবার কেহ কেহ বা কর্মযোগের দারা [আত্মদর্শন করিয়া থাকেন] ॥২৪

ভাষ্য। অত্ত আছাদর্শনে উপায়বিকরা ইমে ধ্যানাদর উচান্তে। 'ধ্যানেন' ধ্যানং নাম শব্দাদিভাো বিষয়েভাঃ শ্রোত্রাদীনি করণানি মনস্থাপদংকত্য মনশ্চ প্রভাক্ চেতরিতরি একাগ্রতরা যক্তিস্তনং তব্ ধ্যানম্। তথা ধ্যারতীব বকো ধ্যারতীব প্রতিষ্ঠ প্রতিষ্ঠ বিচিন্তর প্রতাহবিচিন্তর প্রতাহবিচিন্তর প্রতাহবিচিন্তর প্রতাহবাদিনং তেন ধ্যানেন আয়নি বৃদ্ধী পশুতি আয়ানং প্রত্যক্চেতনং আয়ানা ধ্যান-সংস্কৃতেন অস্তঃকরণেন কেচিব্ যোগিনঃ। অস্তে সাংখ্যেন যোগেন সাংখ্যং নাম—ইমে সন্তর্গত্রসাংসি গুণা ময়া দৃশ্রাঃ অহং তেভ্যোহন্তঃ তদ্ব্যাপারসাকিভ্তঃ নিত্যো গুণবিলক্ষণঃ আয়্রেতি চিন্তন মে এব সাংখ্যো যোগঃ তেন পশুন্তি আয়ানম্ আয়্রনেতি বর্ত্ততে। কর্মযোগেন কর্ম্মের যোগ ঈশ্বরার্পণবৃদ্ধা অমুন্তীরমানং ঘটনক্রণং যোগার্থদিব্ ব্যাগ উচ্যতে। গুণতঃ তেন সন্বশুদ্ধিজ্ঞানোৎপশ্বিদ্ধারেণ চাপরে ॥২৪

আনন্দ্রিটিক। জেরং যতদিত্যাদিনা তৎপদার্থবংপদার্থন্চানন্তরমেব শোধিতো তরোরৈক্যঞ্চ কেত্রজ্ঞঞ্চাপি মাং বিদ্ধীত্যক্তমিদানীং তদ্ষ্টিহেতৃন্ বথাধিকারং কথরতি—অন্ত্রেতি। ধ্যানাথ্যসাধনং কিংরুপমিতি পৃচ্চতি—ধ্যানং নামেতি। জজ্ঞপং বদর্প্তরমাহ—শব্দাদিভ্যইতি। একাগ্রভরোপ-সংক্ত্যেতি সম্বন্ধ:। কিং ভচ্চিন্ত্রেতি সম্বন্ধ: । কিং ভচ্চিন্ত্রেতি সম্বন্ধ: । কিং ভচ্চিন্ত্রেতি সম্বন্ধ: । কিং ভচ্চিন্ত্রেতি কৃষ্টান্তরারা প্রভাবইন্তেন ধ্যানং প্রপঞ্চরতি—তথেতি । বিবক্ষিত-ধ্যানাম্ব্রোধেনৈতি যাবং, আত্মানং পশ্চন্তি প্রমাত্মত্রেতিশেব: । কেচিদিত্যু-জ্যাধিকারিণো গৃহত্তে। সধ্যমানধিকারিণো নির্দিশতি—অন্য ইতি । সাংখ্যান্দিত্ব সাধনং কিং নামেত্যুক্তে বিচারজ্ঞং জ্ঞানং তদেব জ্ঞানং হেতৃত্বা বোগভূত্যান্থং বোগশন্ধিত্যিত্যাই—সাংখ্যামিতি। অধ্যমানধিকারিণঃ সংগিরতে—

কর্ম্মেতি। চিট্রেকাগ্রাং যোগং তাদর্থ্যং কর্ম্মণং শুদ্ধিহেতোরস্তি তেন গৌণাা বৃত্ত্যা যোগশন্দিতং কর্ম্মেত্যাহ—গুণ্ত ইতি। অপরে পশুস্থ্যাত্মানমাত্মনেতি পূর্ববদম্মকীক্ষত্যাহ—তেনেতি ॥২৪

এইস্থলে আত্মদর্শনের কতকগুলি বৈকল্পিক উপায় দেখান याहेराज्य । "धारानत वाता" धान [काहारक नरम ?] मन्नामि विषय्रनिवह हहेराज শ্রবণ প্রভৃতি ইন্দ্রিয় কয়টিকে মনেতে এবং মনকে আত্মাতে উপসংস্থাত করিয়া একাগ্রভাবে যে চিন্তা, তাহারই নাম ''ধ্যান''; শাস্ত্রেও ধ্যানের উপমা এই ভাবেই দেখান হইয়াছে: যেমন "বক যেন ধ্যান করিতেছে, পৃথিবী যেন ধ্যান করিতেছে, পর্বতসমূহ যেন ধ্যান করিতেছে"। তৈলধারার স্থায় অবিচ্ছিয় মনোবৃত্তিই "ধাান" ; সেই ধ্যানের ছারা "আত্মাতে" মর্থাৎ বুদ্ধিতে আত্মাছারা—অর্থাৎ ধাানের ছারা সংস্কৃত অন্তঃকরণের সাহায্যে—কোন কোন যোগী "আত্মাকে" প্রত্যক-চেতনকে দর্শন করিয়া থাকে। অন্ত কোন কোন যোগী 'সাংখ্য যোগের' ছারা আস্মাকে আস্মার দারা দর্শন করিয়া থাকে। সাংথা [কাছাকে বলে ?] সত্ত্ব, রজঃ ও তমঃ এট গুণতার আমার দৃগ্র, আমি এই গুণতার হইতে সম্পূর্ণরূপে বিলক্ষণ, এবং এই গুণত্রার যাথা কিছু ব্যাপার, আমি ভাগারই দ্রষ্টা; আমি অবিনাশী, অপরিণামী এবং আত্মা এই প্রকার চিম্তাই "দাংখাযোগ"। দেই দাংখাযোগবলে সংস্কৃত আত্মা—অর্থাৎ অন্তঃকরণের ধারা, কেহ কেহ আত্মাকে দর্শন করিয়া থাকেন; ইহা পূর্ব হইতেই অমুরত হইতেছে। 'কর্ম যোগের বারা' কর্মই যোগ এই অর্থে "কর্ম-যোগ" [এই শব্দটি ব্যবহৃত হইয়াছে]; ঈশ্বরে ফলার্পণবুদ্ধিতে বে কর্মের অমুষ্ঠান করা যায়, সেই কর্মাই "বোগ"; যোগ শব্দের অর্থ সাধারণতঃ ঘটনা এই প্রকার কর্মাও মোক ঘটনার কারণ; স্কুতরাং ইহাও "যোগ"। সর্ভন্ধি এবং জ্ঞানোৎপত্তিকে দারস্বরূপ করিরা প্রকৃত পক্ষে এই প্রকার কর্ম্ম-পরম্পরায় মোক্ষের কারণ, এইজন্ত ইহাকেও "যোগ" বলা যায়। অপর যোগিগণ এই প্রকারে কর্মবোগের হারা আত্মাকে দেখিয়া থাকেন ॥২৪

> অন্যে ত্বেবমজানন্তঃ শ্রুত্বাহন্যেভ্য উপাসতে। তেহপি চাতিতরন্ত্যেব মৃত্যুং শ্রুতিপরায়ণাঃ॥ ২৫

ক্সন্ত্রয়। অত্যে তৃ এবম্ অন্সানন্তঃ অন্তেড্যঃ [আচার্য্যেভ্যঃ] শ্রুদ্বা উপাদতে; শ্রুদ্বিপরারণাঃ তেহপি মৃত্যুম্ অতিতর্ম্ভি (অতিকামস্তি) এব ॥২৫

আমুবাদ। অন্ত সাধকগণ এই সকল উপায়ের কোন একটিও না জানিতে পারিয়া, অপরের নিকট শ্রবণ পূর্বক উপাসনা করিয়া থাকে; তাহারা শ্রুতি-পরায়ণ, এইজন্ম তাহারাও মৃত্যুকে অভিক্রম করিতে পারে ॥২৫

ভাষ্য। অন্তেখিতি। অন্তেড্ এয় বিকরেষ্ অন্ততরেণাণ্যেবং বথোক্তনান্যানম্ অজানত অন্তেভ্য আচার্য্যেভ্যঃ শ্রা "ইদমেব চিন্তরত" ইত্যুক্তা উপাদতে শ্রদ্ধানাঃ দন্তঃ চিন্তরন্তি। তেছপি চ অতিতরন্ত্যেব অতিক্রামন্তি এব মৃত্যুং মৃত্যুযুক্তং সংসারদ্ ইত্যেতং। শ্রুতিপরায়ণাঃ শ্রুতিঃ শ্রুবণং পরমন্ত্রনং গমনং মোক্রমার্গপ্রন্ত্রী পরং সাধনং বেষাং তে শ্রুতিপরায়ণাঃ কেবলপরোপদেশপ্রমাণাঃ শ্রুৎ বিবেকরহিতাঃ ইত্যভিপ্রায়:। কিম্ বক্তব্যং প্রমাণং প্রতি স্বভন্না বিবেকিনো মৃত্যুমতিতরন্তি ইতি অভিপ্রায়: ॥২৫

আনন্দ গিরিটীকা। অধমতমানধিকারিণো মোক্ষমার্গে প্রবৃত্তিং প্রতিশন্তবি নির্বাচিন আনু জিতি। আচার্য্যাধীনাং শ্রুতিমেবাভিনয়তি—ইদমিতি। উপাসনমেব বিবৃণোতি—শ্রুদ্ধানা ইতি। পরোপদেশাৎ প্রবৃত্তানামপি প্রবৃত্তঃ সাফলামাহ—তৈহপীতি। তেষাং মুখ্যাধিকারিছং বাবের্ত্তরতি —শ্রুতীতি। তেহপীত্যপিনা হচিত্মর্থমাই—কিমিতি ॥২৫

অনুবাদ। অন্তে ই ইত্যাদি শ্লোকের মর্থ—মত্ত বাজিগণ এই পুর্নোক বিভিন্ন প্রকার উপায় কয়ির মধ্যে—কোন একটি উপায়ের বারা যপোক্ত আত্মার ব্রুক্ত জানিতে সনর্থ না ইইয়া, আচার্য্যগণের মুথে শ্রবণ করিয়া, মর্থাৎ 'তোমরা এই প্রকার চিন্তা করিতে থাক' এইরূপে উপদিষ্ট ইইয়া, উপাসনা করিয়া থাকে অর্থাৎ শ্রহ্মাপর ইইয়া সেই উপদেশার্মারে চিন্তা করিতে থাকে। তাহারাও মৃত্যু অর্থাৎ মৃত্যুযুক্ত সংসারকে অতিক্রমণ করিয়া থাকে। [কারণ] তাহারা 'শ্রুতিপরায়ণ' শ্রুতি শব্দের অর্থ শ্রবণ [আচার্য্যের উপদেশবাক্য] ইহাই য়াহাদের 'পর' প্রধান 'অয়ন' গমন অর্থাৎ মোক্তমার্গপ্রন্ততে প্রকৃষ্ট সাধন—হইয়া থাকে, তাহা রাই ''শ্রুতিপরায়ণ''—অর্থাৎ তাহাদের কোন প্রকার আত্মপ্রমাণের উপর নির্ভর নাই—ক্রিক্ত আচার্য্য যাহা বিলয়া দিবেন—তাহারা তাহাই সার বিলয়া প্রহণ করিয়া থাকে—আত্মীয় বিবেকের প্রতি তাহাদের বিশাস নাই, এই প্রকার ব্যক্তিগণও যথন মৃত্যুকে অতিক্রম করিতে সমর্থ^হয়, তথন বাহারা বিবেকবান্ বাহাদের সম্পূর্ণরূপে স্বাধানতা আছে, তাহারা বে মৃত্যুকে অতিক্রমণ করিবেন, ইহা আর অধিক কি বলা যাইবে॥২৫

যাবৎ সংজায়তে কিঞ্চিৎ সন্ত্বং স্থাবরজঙ্গমম্। ক্ষেত্র-ক্ষেত্রজ্ঞসংযোগাৎ তদ্বিদ্ধি ভরতর্বভ ॥২৬

অনুষু ৷ হে ভরতর্যভ ৷ যাবৎ কিঞ্চিৎ স্থাবরজঙ্গমং সঙ্গ সংজারতে, তৎ-ক্ষেত্রক্ষসংযোগাৎ [এব জারতে] ইতি বিদ্ধি (বিজ্ঞানীহি) ॥২৬

অকুবাদ। হে ভারতকুলশ্রেষ্ঠ স্থাবর ও জন্ম বাহা কিছু বন্ধ উৎপব্ধ হর, ভাহা সকলই এই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের সংযোগ হইতেই হইরা থাকে ইল কানিবে ॥২৬

কেত্ৰজেখবৈক্ষবিষয়ং জ্ঞানং মোক্সাধনং যজ্ জাত্বামৃত্যশ্ৰুত ইত্যক্তং তৎ কন্মাদ্ধেভোরিতি তদ্ধেতৃপ্রদর্শনার্থং শ্লোক আরভ্যতে। যাবৎ বৎ-কিঞ্চিৎ সংজারতে সমুৎপদ্মতে সবং বস্তু কিমবিশেষেণ ইত্যাহ—স্থাবরজ্জমং স্থাবরং অঙ্গমঞ্চ ক্ষেত্ৰক্ষেত্ৰজ্ঞ-সংযোগাৎ ভজ্জায়তে। ইত্যেবং বিদ্ধি স্বানীহি হে ভরতর্বভ। কঃ পুনররং ক্ষেত্রকেত্রজ্ঞরোঃ সংযোগঃ অভিপ্রেতঃ। ন তাবং রজ্জ্বে ঘট্টা বরবসংশ্লেবছারক: সম্বন্ধবিশেষ: সংযোগ: কেত্রেণ কেত্রজ্ঞত সম্ভবতি, আকাশ-বন্ধিরবয়বদ্বাং। নাপি সমবায়লকণঃ তন্ত্রপটয়োরিব ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞয়োরিভরেভর কার্য্যকারণভাবানভাপগমাৎ ইতি। উচ্যতে, কেত্রকেত্রস্তরো: বিবয়বিবয়িগো: ভিরস্থাবয়ো: ইতরেতরতর্দুগাধ্যাসলকণ: স্ংযোগ: কেব্রকেব্রপ্রস্বরপ্রিকো-ভাবনিবন্ধনো রজ্জ্ জ্ঞকি কাদীনাং তদ্বিবেকজ্ঞানাভাবাৎ অধ্যারোপিত্রপ্রক্ষতাদি-সংযোগবং। সোহযুমধ্যাসরপঃ কেত্রকেত্রপ্তসংযোগো মিধ্যাজ্ঞানলকণঃ। যথা-শাস্ত্রং ক্ষেত্রজ্ঞলকণভেদপরিজ্ঞানপূর্বকং প্রাগ্দর্শিতরূপাৎ ক্ষেত্রাৎ মুঞ্জাদি-বেষীকাং যথোক্তলকণং ক্ষেত্ৰজ্ঞং প্ৰবিভজ্য ন সং তন্ত্ৰাসমূচ্যতে ইত্যনেন নিরন্ত-সর্কোপাধিবিশেবং জেরং ব্রহ্মস্বরূপেণ যঃ পগুতি ক্ষেত্রঞ্চ মারানির্দ্মিতহত্তিস্বপ্নদৃষ্টবন্ত গন্ধর্মনগরাদিবৎ অসদেব সদিব অবভাগ্ততে ইত্যেবং নিশ্চিতবিজ্ঞানো যন্ত্রপ্ত যথোক্তসম্যগ্দর্শনবিরোধাৎ অপগচ্চতি মিণ্যাজ্ঞানং তত্ত জন্মহেতোরপগমাৎ। 'ৰ এবং বেক্তি পুক্ৰৰং প্ৰকৃতিঞ্চ গুণৈ: সহ' ইত্যানেন বিদ্বান্ ভূয়ো নাভিজ্ঞায়তে ইভি যহকং তত্বপান্নসূক্তম্ ॥২ ৬

আনন্দ গিরিটীক। । ঐক্যধীম কিংহত্রিতি প্রাপ্তক্ষন্ম প্রশ্নপূর্বকং বিজ্ঞানিতহেত্পরবেন স্নোক্ষনতারয়তি—ক্ষেত্রেতি। দর্বত প্রাণিকাতত্ত ক্রেক্তেজ্পদক্ষাধীনা যশ্নাহৎপত্তিত্তশ্বাৎ ক্ষেত্রজাত্মকপরমাত্মাতিরেকেণ প্রাণিক্ষিত্রভাবাদৈক্যজ্ঞানাদেব মুক্তিরিত্যাহ—ক্স্মাদিতি। ক্ষেত্রজ্ঞান

সংক্ষ্ত্রমান্দিপতি—কঃ পুনরিতি। কেত্ত্ত্তে কেত্রেণ সংক্ষঃ সংযোগো বা সমবারো বেভি বিকর্যান্তং দূষয়তি – ন তাবদিতি। বিভীয়ং নিরস্ততি— নাপীতি। বাত্তবসম্বন্ধাভাবেংপি তয়োরধ্যাসরূপ: সোহন্তীতি পরিহরতি—উচ্যত ইতি। ভিন্নস্বভাবত্বে হেতুমাহ – বিষয়েতি। ইতরেতরবৎ কেত্রে কেত্রজ্ঞে বা তদ্বস্থিত কেতানধিকরণত কেত্রজ্ঞগতত চৈত্যত কেত্রজানাধারত চ কেত্রনিষ্ঠত জাডাদেরারোপরপো যোগন্তয়োরিত্যাহ—ইতরেতি; তত্র নিমিন্তমাহ— **क्षिट्र कि । व्य**विदवकानारताभि छमः रयारा मुद्देशस्यार- तुष्टि । সৰদ্ধং নিগমরতি—সোহয়মিতি। তম্ম নিবৃত্তিযোগবং স্বচরতি—মিপ্রেডি। কথং তর্হি মিণ্যাজ্ঞানশু নিবৃত্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ – যথেতি। বোহয়ং বিজ্ঞানমর: প্রাণেষিত্য।দি ষংপদার্থবিষয়ং শাল্লমমুস্বত্য বিবেকজ্ঞানমাপাল্প মহাভূতাদিধৃত্য-ন্তাৎ ক্ষেত্ৰাছপদ্ৰষ্ট থাদিলকণং প্ৰাণ্ডক্তং ক্ষেত্ৰজ্ঞং মুঞ্জেষীকান্তাৱেন বিবিচ্য সর্কোপাধিবিনিমু ক্রত্মশ্বরূপেণ জ্ঞেয়ং যোহমুভবতি তহা মিণ্যাজ্ঞানমপগচ্ছতীতি সম্বন্ধঃ। কথমশু নির্বিশেষত্বং কেত্রজ্ঞ স্বিশেষত্বহেতোঃ স্বাদিত্যাশ্র্যাহ— ক্ষেত্রকৈতি। ৰহদুপ্তান্তোকের্বহবিধন্বং কেত্রন্ত দ্যোত্যতে। উক্তঞানা-ন্মিণ্যাজ্ঞানাপগমে হেতুমাহ—যুগোক্তেতি। তথাপি কথং পুরুষার্থসিদ্ধিঃ কালা-স্তব্যে তুল্যজাভীয়মিণ্যাজ্ঞানোদয়সম্ভবাদিত্যাশক্ষাহ—তুস্ত্রেতি। সম্যগ্রানাদী-জ্ঞানতৎকার্যানিবৃত্ত্যা মৃক্তিরিতি স্থিতে ফলিতমাহ—য এবমিতি ॥২৬

অনুবাদ । জীব ও পরমেশ্বরের অভেদজ্ঞানই মোন্দের সাধন ইহা 'ধাছা জানিয়া মোক্ষলাত করিতে পারা যায়।' ইত্যাদি শ্লোকের ছারা বণিত হইয়ছে, এই প্রকার সিদ্ধান্ত কেন মানিতে হইবে ? এই জিল্পাসার উত্তর দিবার [অর্থাৎ এই সিদ্ধান্তের কি হেতু, তাহাই দেখাইবার] জ্জু এই শ্লোকের আরম্ভ করা হইতেছে, 'যাবং' যাহা কিছু 'সত্ব' বস্তু সঞ্জাত হয় অর্থাৎ উৎপন্ন হয়, সেই বস্তু কি, তাহাই অবিশেষভাবে বলিতেছেন যে 'স্থাবর জঙ্গম' স্থাবর এবং জঙ্গম—ঘাহা কিছু উৎপন্ন হয়, ভাছা সকলই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের সংযোগ হইতেই উৎপন্ন হয়া পাকে, ইহা তুমি জ্ঞানিও হে ভরতর্বভ! এই যে ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের সংযোগ বলিয়া নির্দ্ধিট্ট হইল, ইহার তাৎপর্য্য কি ? অর্থাৎ কি প্রকার সংযোগ এই স্থলে [ভগবানের] অভিপ্রেত ? [তাহাই বুঝাইবার জঞ্জ বলা হইতেছে যে] বেমন রজ্জুর সহিত ঘটের অবয়বসংযোগমূল্ফ পরম্পর সংযোগ হয়—ক্ষেত্র এবং ক্ষেত্রু ক্ষেত্র সেই প্রকার সংযোগ কথনই হইতে পারে না; কারণ, আফাশের জ্ঞায় ক্ষেত্রজেরও কোন প্রকার অবয়ব লাই নাই [স্মৃতরাং অবয়ব-সংযোগকে ছারা

कतिया क्कि ७ क्कि छा नर्यांग कि तर्य हरेरव १ । जन्न वर्ष भर्षेत्र स्थमन সমবাররূপ সম্বন্ধ আছে, কেত্র ও কেত্রজ্ঞের মধ্যে সেই প্রকার সমবায়রূপ সম্বন্ধই र्य अञ्चल मश्रयोग भरमत व्यर्थ, जाहा ९ वना यात्र ना ; कात्रन, ज्ह्र ७ भरतेत्र मरधा একটি কারণ এবং অপরটি কার্য্য; এই জন্ম তাহাদের মধ্যে যেমন কার্য্য-কারণ ভাব আছে বলিয়াই তম্ভ ও পটের পরস্পর সমবায়ম্বরূপ সম্বন্ধ স্বীকৃত হয়, কেত্র ও **क्विट अ**त्र सर्पा (म श्रेकात कार्याकात्रण जात्र मारे ; এই कातरण उँशारात्र মধ্যে পর**ন্দা**র সমবায়রূপ সম্বন্ধ কোন প্রকারেই থাকিতে পারে না। এই প্রকার শঙ্কার উত্তর দেওয়া যাইতেছে যে, ক্ষেত্রজ্ঞ ও ক্ষেত্র বাস্তব বিলক্ষণস্বভাব ; ক্ষেত্রজ্ঞ স্বয়ং জ্ঞান-স্বরূপ ক্ষেত্র জ্ঞানের বিষয় [ইহাদের মধ্যে বাস্তব কোন সংযোগ না ণাকিলেও] পরম্পরের মধ্যে অধ্যাসরূপ যে সম্বন্ধ আছে, তাহাই এই স্থলে "সংযোগ" শব্দের অর্থ ; অর্থাৎ ক্ষেত্রজ্ঞের ধন্ম ক্ষেত্রে আরোপিত হয় এবং ক্ষেত্রের ধর্ম কেত্রজ্ঞে আরোপিত হয়; তাগ ছাড়া কেত্রের তাদাত্মা কেত্রজ্ঞে আরোপিত হয় এবং ক্ষেত্রজ্ঞের ধর্ম ও তাদাত্ম্য গেত্রে আরোপিত হয়; এইপ্রকার পরস্পরের স্বরূপ ও ধর্ম্মের পরস্পরে যে আরোপ হয়, সেই আরোপ বা অধ্যাদই কেত্র ৪ কেত্রজের "সংযোগ" [এই সংযোগই সংসারের কারণ] ; কেত্র কেত্রজের স্বরূপগভ বিবৈকের অভাবই এই সংযোগের কারণ; যেমন ভক্তি ও রজতের বিবেক জ্ঞান না থাকিলে, গুক্তিতে রজত এবং দেই রজতের ধন্ম আরোপিত হয় [এই ে এজ ও কেত্রের পরম্পরাধ্যাসও দেই প্রকার অবিবেকমৃকক] এই সেই অধ্যাসরূপ কেতা ও কেত্ৰজের সংযোগই মিগ্যাজ্ঞান। শাল্রে যেমন উপদিষ্ট হইয়াছে, তন্-মুসারে কেত্র ও কেত্রজ্ঞের স্বরূপ অগ্রে জানিতে ইইবে—তাহার পর মুঞ্জনামক ভূণমধ্য হইতে ইবীকাকে যেমন পূপক্ করা যায়, সেই প্রকার এই ক্ষেত্র হইতে কেত্রজ্ঞকে পুণক্ স্বরূপে বিভাগ করিয়া 'তাহা সংও নহে, তাহা অসং বলিয়াও भारत कथिक इत्र ना।" এই সকল भारत्र नाशास्त्र एमें नर्स अकात रेशांवि হুইতে বিনিমুক্তিশ্বভাব পরব্রহ্মকে যে ব্যক্তি দর্শন করিতে পারে—এবং সেই সঙ্গে এই यে ক্ষেত্র ইহা মায়ানির্মিত হতী বা স্বপ্রদৃষ্ট গন্ধর্বনগরাদির স্থায় অসৎ ; ইহা অসৎ হ**ইলে সতের স্থার** বিজ্ঞাত হইয়া থাকে—এই বিশ্বাসের সহিত এই ক্ষেত্রকৈও দেখিয়া থাকে, তাহার মিথ্যা জ্ঞান একেবারে অবগত হয়; কারণ তর্জ্ঞান মিথ্যা জ্ঞানের বিনাশক; স্থতরাং তত্তজানের উদয়ে তাহার মিথ্যা জ্ঞান বিলয় প্রাপ্ত হয় ; তথন তাহার আর পুনর্জ্জনের কারণও থাকে না ; স্থতরাং "যে এই প্রকার গুণসমূহের সহিত প্রকৃতি এবং [সর্বস্তিণশৃক্ত] আত্মাকে জানিতে পারে'

ইত্যাদি স্লোকের দারা স্থচিত যে বিধানের মোক বাভ, ভাহাও ভাহার পক্ষে স্থলভ হয়; অর্থাৎ সেই ব্যক্তি মোক বাভ করে; স্থভরাং বিদ্যান বে আর জন্মবাভ করেন না—এই ভাবে যে উপদেশ দেওয়া হইয়াছে, ভাহা স্থাস্কভই হইয়াছে॥২৬

দমং দর্কেষু ভূতেষু তিষ্ঠস্তং পরমেশ্বরম্। বিনশ্যৎস্ববিনশ্যন্তং যঃ পশ্যতি দ পশ্যতি ॥২৭

অনুয়। বিনশুৎস্থ সর্কের্ ভূতের্ অবিনশুস্তং সমং তি**ঠস্তং প্রমেশ্রং বঃ** পশুতি স পশুতি ॥২৭

আনুবাদ। বিনাশশীল সকল ভূতেই অবিনাশী এবং সমভাবে বিশ্বমান পরমেশ্বরকে যিনি দেখিতে পান, তিনিই [প্রক্রতভাবে তক্ব] দর্শন করিয়া থাকেন ॥২৭

ভাষ্য ৷ ন স ভূরো হ ভিজারতে ইতি সম্গণ্দশনফলম্ মবিভাদিসংসার-বীজনিবুতিলারেণ জন্মাভাব উক্ত:। জন্মকারণঞ্চ মবিভানিমিত্তক: কেত্রকেত্রজ্ঞ-সংযোগ উকঃ। অংকভা অবিভায়ানিবউকিং সন্সগুদর্নমূক্মণি পুনঃ শৃক্ষা-স্থরেণ উচাতে —সনং নির্দ্ধিশেবং তিইস্তং স্থিতিং কুর্বস্তং রু ? সর্বেযু ভূতেমু-হপেকা প্রমেশ্র স্তং সর্কের্ ভূতের্ সমং তিষ্ঠ স্তম্। তানি বিশিন্তি বিনশ্রং বিভিন্ তং চ পরমেশ্বরং অবিনশান্তম্ ইতি ভৃতানাং পরমেশ্বস্থ চাত্যন্তবৈলক্ষণ্যপ্রদর্শ-নার্থম। কণং দর্কেষাং হি ভাববিকারাণাং জনিলক্ষণো ভাববিকারো মুলং জন্মোত্তরভাবিনোহন্তে দর্কে ভাববিকারা বিনাশাস্তা:। বিনাশাৎ পরো ন কশ্চিদন্তি ভাববিকারো—ভাবাভাবাং। সতি হি ধর্ম্মিণি ধর্ম্মা ভবন্তি অতোহস্তা-ভাববিকারাভাবাম্বাদেন পূর্বভাবিন: সর্বে ভাববিকারা: প্রতিষিদ্ধা ভবস্তি সহ कार्रिशः। जन्मार मर्ल्स्ट्रिजः देवनकग्रमज्यस्य भत्रतम्बतः मिन्नर निर्दित्सयकः মেকত্বঞ। য এবং যথোক্তং প্রমেশ্বরং পশ্রতি স পশ্রতি। নমু সর্ব্বোছিপি লোকঃ পঞ্চতি কিং বিশেষণেনেভি, সত্যাং পশুতি কিন্তু বিপরীতং পশুতি : অতো বিশিনষ্টি স এব পশ্রতীতি। যণা তিমিরদৃষ্টিরনেকং চক্রং পশ্রতি তমপেক্য এক-চক্তদর্শী বিশিষ্যতে স এব পশ্মতীতি তথৈবেহাপি একমবিভক্তং যথোক্তমান্তানং ষঃ পশুতি স বিভক্তানেকাত্মবিপরীতদর্শিভ্যো বিশিষ্যতে স এব পশুতীতি। ইতরে পশ্যস্তোহপি ন পশ্যস্তীতি বিপরীতদর্শিদাৎ অনেকচন্দ্রদর্শিবদিতার্থ: ॥১৭

আনন্দগিরিটীক।। উত্তরগ্রন্থমবতার্মিতৃং ব্যবহিতং বৃত্তিং কীর্ত্তমতি — (AGT) मिना ; व्यविद्यानाश्चिनिर्साठामञ्जानः विशास्त्रानः खरमः वात्रकानिः শকার্থ:। ব্যবহিতমন্তাব্যবহিতমমুবদতি—জন্মেতি। ব্যবধানাব্যবধানাজ্যাং সর্বানর্থমূলস্থাদজ্ঞানশু তল্পিবর্ত্তকং সম্যগ্রানং বক্তব্যমিত্যাহ—অত ইতি। তভাসকৃত্ কৰাৎ তহকাৰ্থ প্ৰবৃত্তিৰ্জ্ থেত্যা শঙ্যাতি হন্দাৰ্থত শন্ধভেদেন পুন: পুন-র্বাচনমধিকারিভেদামুগ্রহায়েতি মন্বাহ—উক্তমিতি। সর্বাত্ত পরক্তৈকন্বাৎ নোৎ-কর্ষাপকর্ববন্ধমিত্যাই—সমুমিতি। পরমন্ধ্যীশ্বরন্ধাপপাদয়তি—দেতেতি। আত্মা জীবন্ত মত্যাদিনা হয়ে কিঃ। আশ্রয়নাশাদা শ্রিতভাপি নাশমাশহ্যাহ— ত্রপ্রেতি। অবিনশুন্তমিতি বিশিন্ধীতি সম্বন্ধ: উভন্নত্র বিশেষণদ্বয়ন্ত তাৎপর্ব্য-মাহ—ভূতানামিতি। নাশানাশাভ্যাং বৈলকণােহপি কথমতাস্তবৈলকণাং সবি-শেষৰভিন্নত্বোন্তল্যভাদিতি শহুতে—কুথুমিতি। ভূতানাৎ স্বিশেষত্বাদিভাবে২পি পরভ তদভাবাদতা স্তবৈলকণা মিতি বক্তুং জন্মনো ভাববিকারেমাদিম্মাহ— সূর্ব্বেধামিতি। তত্র হেতুমাহ—জুন্মেতি। নহি জন্মান্তরেণোত্তরে বিকারা যুদ্ধান্তে জনাবতগুলুপল্ডাদিতার্থঃ। বিনাশানন্তরভাবিনোহণি বিকারত কলচিলপ-পত্তেন তিন্তা স্থাবিক।রহ মত্যাশক্ষাহ—বিনাশাদিতি। তিনাস্থাবিকারছে সিংদ ফলিতমাহ -অত ইতি। তেষাং জন্মাদীনাং কার্য্যাণি কাদাচিৎকসন্থানি তদ্ধি করণানি তৈঃ সহেতি বাবং। প্রমেশ্বরম্ম ভূতেভ্যোহত্যন্তবৈলক্ষণামুপসংহরতি ক্রস্মাদিতি। নির্বিশেষয়ং সর্বভাববিকারবিরহিততং কৃটস্থতমেকত্বমদিতীয়ন্তম্। ষঃ পশুতীভ্যাদি ব্যাচষ্টে – যু এব্মিতি। উক্তবিশেষণমীশ্বং পশুৱেৰ পশুতী-ভাজমাক্ষিপতি—নিম্বতি। ঈশরপরাত্মপ্রভানাত্মনিষ্ঠত তদর্শিত্তেছপি বিপরীত-দর্শিদ্বাদীশ্বরপ্রবণজ্ঞৈব সম্যাগ্ দর্শিন্থমিতি বিবক্ষিতা বিশেষণমিতি পরিহরতি— সত্যমিতি। উক্তমেব দুৱান্তেন বিরুণোতি—যথেত্যাদিনা। বঃ পশুতী-ত্যাদেরর্থমুপদংহরতি—ইতন্ন ইতি। পরবস্তনিষ্ঠেভ্যো ব্যতিরিকা ইতার্থ: ॥২৭

অমুবাদ। "সে পুনর্কার জন্মগ্রহণ করে না" এই বাক্যের দারা ইহা প্রতিপাদিত হইতেছে যে আত্মতত্তলানের ফল—সংসারে আর না আসা; সেই সংসারে পুনর্কার না আসার পক্ষে দার হইতেছে অবিল্লা প্রভৃতি সংসারবীজের নির্ত্তি। ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের যে অজ্ঞাননিবন্ধন সংযোগ, তাহাই জন্মের কারণ; ইহাও উক্ত হইয়াছে। এই জন্ম সেই অবিল্লার নিবর্ত্তক যে সম্যাগ্ জ্ঞান, ভাষা উক্ত হইলেও, পুনর্কার মন্তপ্রকার বাক্যের দারা [ভাল করিয়া ব্যাইবার জন্ম]' বলা ইইতেছে—"সম" অর্থাৎ নির্কিশেষ [ভাবে] হিত; কোথায় ? সকল ভূতেই, অর্থাৎ বন্ধা হইতে স্থাবর পর্যান্ত সকল প্রাণীর মধ্যে অবস্থিত [সেই আত্মাকে যিনি জানিতে পারেন, তাঁহারই জ্ঞান বথার্থ ুকে অবস্থিত ? [ইছার উত্তর] পরমেশ্বর। দেহ ইন্সিয় মন বৃদ্ধি অব্যক্ত এবং আত্মা [অর্থাৎ জীবান্মা] হইতে পরম যে ঈশর, তিনি সকল ভূতেই অবস্থিত [তাঁহাকে যিনি জানেন, তিনিই যথার্থ জ্ঞানবান্]; সেই সকল প্রাণিগণের বিশেষণ ছারা পরিঃর দেওরা হইতেছে যে 'বিনশ্রৎ' অর্থাৎ ঐ ভূত সকল বিনাশশীল হইলে সেই সর্বভূতাত্মা প্রমেখর অবিনখর; ভূতগণ ও প্রমেখরের মধ্যে যে আতান্তিক বৈলক্ষণা আছে. তাহাই দেখাইবার জন্ত ইহা বলা হইয়াছে। কেন ? [তাহারা বিনাশী ?] সকল প্রকার বিকারের মধ্যে জন্ম অর্থাৎ উৎপত্তি রূপ যে বিকার, তাহা সকল প্রকার বিকারের মাদি: অপচয় উপচয় প্রভৃতি বিনাশ পর্য্যস্ত অন্তান্ত বত প্রকার বিকার ভাববস্তুর হইয়া থাকে. তাহা সকলই জন্মের পরবর্তী। বিনাশের পর আর কোন প্রকার বিকার সন্তবপর নচে; কারণ বিনাশের পর আর সেই ভাব-বস্তু নিজেই থাকে না ; [স্কুতরাং কাহার বিকার হইবে ?] ধর্মী অর্থাৎ আশ্র যদি থাকে, তাহা হইলে, তাহার ধর্ম সকলের অবন্তিতি সম্ভবপর—সেই প্রমেশ্বরে—স্কল প্রকার ভাব-বিকারের শেষ যে বিনাশরূপ বিকার, তাহার প্রতিবের করা হইতেছে; ইহা দারা বৃঝিতে হইবে যে—বিনাশের পূর্বভাবী ষত্ত প্রকার বিকার আছে, তাহা সকলই দেই আত্মাতে প্রতিষিদ্ধ হইতেছে; স্বতরাং কোন প্রকার বিকারের কার্য্যও তাগতে সম্ভবপর নহে। এই হেতৃ স্**র্বাপ্রকা**র ভূত হইতে আত্মার বৈলক্ষণ্য সিদ্ধ হইতেছে, এবং সেই আত্মা ৰে নির্মিশেষ এবং এক, তাহাও সিদ্ধ হইতেছে। যে ব্যক্তি এইরূপে পরমেশ্বরকে দেখিরা থাকেন তিনিই প্রক্লতপকে দর্শন করিয়া থাকেন। একণে এরপ শঙ্কা হইতে পারে, স্কল লোকই ড অর্থাৎ যাহার চকু আছে এমন সকল লোকই] দেখিয়া খাকে তবে আবার এই প্রকার আত্মদর্শনকারীর পক্ষেই কেন এইরূপ বিশেষ ভাবে वना हहेट एक एक वाकि है प्रिथम थारकन ? [हेशत छेखत थहे य] मुखा বটে সকল লোকেই দেখিয়া থাকে; কিন্তু প্রায়ই তাহারা বিপরীত দর্শন করিয়া थात्क : এই न्कांतरा चाचाज्यमनीत এই विरमयन रमञ्जा बरेबाह्य रा, रमहे वाक्कि দেখিয়া থাকেন । বেমন তিমির নামক রোগে যাহার নেত্র আক্রান্ত হইয়াছে, সে चानक हक्ष पूर्वन करत ; किन्ह रव वाकि अक हक्ष पूर्वन करत्—रत के वाकि অপেকা ষ্পার্থদর্শী বলিয়া ক্থিত হয় ; সেইরূপ এস্থলেও যে ব্যক্তি এক অবিজ্ঞ यरशास आधारक मर्नन कतिया शारक,रम विख्क नानाचमर्ननकाती अर्थाए विश्वतीक দর্শনকারী, অপেকা প্রকৃত প্রস্তাবে যথার্থদর্শী; স্কুতরাং বিপরীতাম্মার্শিগণ হইতে তাঁহাকে পৃথগ্ভাবে বিশেষ করিয়া নির্দেশ করা হইতেছে যে,—তিনিই প্রকৃত পক্ষে দেখিয়া থাকেন, অপর স্রষ্ট্রগণ দেখিয়াও প্রকৃতপক্ষে দেখিতে পায় না,—কারণ, তাহারা বিপরীত ভাবেই আত্মাকে দর্শন করিয়া থাকে, যথা অনেক চক্রদর্শী—সেইরূপ॥ ২৭

সমং পশুন্ হি সর্বত্ত সমবস্থিতমীশ্বর্ম। ন হিনস্ত্যাত্মনাত্মানং ততো যাতি পরাং গতিম্॥ ২৮

আমৃয়। সর্বাজ সনং সমবস্থিতম্ ঈশ্বরং পশুন্ [জন:] আয়ানা আয়ানং ন হিনন্তি। ততঃ (তত্মাৎ) প্রাং গতিং যাতি॥ ২৮

অনুবাদ। যিনি সর্বভৃতে সমভাবে অবস্থিত ঈশ্বরকে দেখিয়া থাকেন, সেই ব্যক্তি নিজে আত্মাকে বিনষ্ট করিতে পারেন না এবং সেই আজ্ঞতব্জ্ঞানের দ্বারা প্রম গতি [মোক] লাভ করিয়া থাকেন ॥২৮

ভাষ্য। যণোকত সম্যগ্দর্শনত ফলবচনেন স্থতি: কর্ত্তব্য ইতি শ্লোক
সারভাতে। সমং পশুন্ উপলভমানো হি যত্মাৎ সর্বত্য স্মবৃদ্ধিতং
তুল্যতয়াবৃদ্ধিতমীয়রম্ অভীতানস্তরশ্লোকোকলক্ষণন্ ইত্যর্থ:। সমং পশুন্
কিং ন হিনন্তি হিংসাং ন করোতি আয়ুনা স্থেনৈর স্থমান্থানং ততন্তমহিংসনাৎ
যাতি পরাং গতিং মোক্ষাথাম্। নমু নৈর কন্চিৎ প্রাণী স্বয়ং স্থমান্থানং হিনন্তি
কথম্চাতে অপ্রাপ্তং নৈর হিনন্তীতি। যথা "ন পৃথিব্যামগ্লিক্ষেতব্যো নান্তরিক্ষে"
ইত্যাদি। নৈর দোরঃ, অজ্ঞানামান্থাতিরস্করণোপপত্তে:। সর্ব্বো হজঃ অত্যন্তপ্রসিদ্ধং সাক্ষাদপরোক্ষাদান্থানং তিরস্কৃত্য অনান্থানমন্থাদন্তে নবং তলৈবং হত্যা
অন্তমান্থানম্পাদন্তে নবং তলৈবং হত্যা অন্তমেবং তমপি হত্যা অন্তমিত্যেবন্
উপাত্তম্পান্তমান্থানং হত্তি আয়ুহা সর্ব্বোহজঃ। যন্ত্র পরমার্থান্থা অসাবপি
সর্ব্বদা অবিন্তমা হত ইব বিশ্বমানকলাভাবাৎ ইতি সর্ব্ব আয়্বহন এবাবিদ্বাংসঃ।
যন্তিরো যথোক্তাত্মদশী স উভয়্বণাপি আয়ুনা আয়্বানং ন হিনন্তি; তত্যে বাতি
প্রাং গতিং যথোক্তং ফলং তন্ত ভবতি ইত্যর্থঃ ॥২৮

আনন্দগিরিটীকা। প্রকৃতসম্যগ্জানেন কিমিত্যপেক্ষারাং তৎফলোজ্যা

[🛊] তমপি ধৰ্দ্মাধৰ্শৈ: কৃষা ইতি কেচিৎ পঠস্থি।

ভব্তৈব ৰত্যা তদ্ধেতো পুৰুষং প্ৰবৰ্ত্তন্নিতৃং শ্লোকাস্তনমিত্যাহ—যুথোক্তস্থেতি । বন্ধাদিত্যক্ত ততঃশব্দেন সম্বন্ধ:। সর্বভূতের তুলাতরাবস্থিতং পূর্বোজলক্ষণমীশ্বরং নির্কিশেষং পশুরাত্মানমাত্মনা যত্মার হিনন্তি ততন্তত্মান্মোক্ষাখ্যাং প্রাং গতিং ষাতি ইতি যোজনা। তত্র পাদত্রয়েণ জ্ঞানাদজ্ঞানধ্বস্তা। ধ্বস্তিরনর্থস্থোক্তা। অজ্ঞান-मिथाकानत्यात्रावत्रगाः नात्म मर्त्वाएकृष्टीर भण्डिर भत्रमभूकृषार्थर भत्रमाननम् অহতবতি বিদ্বানিতি চতুর্থপাদার্থ:। ন হিনন্ত্যাত্মনাত্মানমিতি যথাশ্রুতমাদায় চোদয়তি—নম্বিতি। ন পৃথিব্যানিতি প্রাপ্তিধারা নিষেধবল্লান্তরিকে ন দিবীতি প্রাপ্তাভাবাচ্চায়ং নিষেধাে মুখ্যাে নেষাতে তথেহাপি প্রাপ্তিং বিনা নিষেধাে ন যুক্তিমানিত্যাহ—যুথেতি। অজ্ঞানামান্মনৈবান্মহিংদাসম্ভবাদবিহুষাং তম্ভাবোক্তি যুঁক্তেতি সমাধত্তে— নৈষ দোষ ইতি। সংগ্রহবাক্যং বিরুগোতি—সুর্বেরা হীতি। অনাত্মশন্দো দেহাদি-বিষয়ঃ। অবিহ্যাম্ আরোপিতাত্মহস্তু দং নিগময়তি— ইত্যাত্মহেতি। তথাপি পারমার্থিকস্তাত্মনো হননাভাবার তেষাং সর্বেষামূ আত্ম-হন্তৃত্বশ্ ইত্যাশস্ক্রাহ—যুক্তিতি। উক্তরীত্যা সর্বেষামবিহ্যা**দ্ আত্মহন্তৃত্বং দিহ্ন** ইত্যুপসংহরতি—সুর্ব্ব ইতি। আত্মনৈবান্মহননমবিত্নবাং দৃষ্টং তদিহ বিদ্বদ্বিষয়ে শক্যং নিষেদ্ধিত্যাহ—যস্ত্রিতর ইতি। উভয়থাপীতি। আরোপানারোপা-ভ্যামিত্যর্থ:। জ্ঞানাদনর্থভ্রমভ্রংশে পূর্বোক্তং প্রমানন্দপ্রাপ্ত্যা পরিতৃপ্তত্তং যুক্ত-মিত্যাহ—তত ইতি ॥২৮

অনুবাদ। যথোক্ত সম্যাগ্দর্শনের ফলকীর্ত্তনদ্বারা স্থাতি করা উচিত, এই কারণে এই লোকের আরম্ভ করা হইতেছে। অতীত প্লোকে যে রূপে পরিচয় দেওয়া গিয়াছে, তদমুসারে সেই পরমেশ্বরকে সর্বভৃতে একভাবে অবস্থিত — স্থতরাং সর্বত্ত একই বলিয়া, যে ব্যক্তি দর্শন করেন, তিনি কি করেন ? তিনি আপনাকে আপনি হিংসা করেন না এবং আত্মহিংসা করেন না বলিয়াই তিনি পরম্বাতি অর্থাৎ মোক্ষ লাভ করিয়া থাকেন। একণে এরপ শঙ্কা হইতে পারে বে, কোন প্রাণীই আপনাকে [নিজের আত্মাকে] নিজে হিংসা করিতে পারে না; কারণ আত্মা নিত্য বস্তু, তাহার বিনাশ বা হিংসা কর্থনই সম্ভব নহে]; তবে কি প্রকারে এই প্রকার অপ্রাপ্তবিষয়ের প্রতিষেধ করা হইতেছে যে, তিনি আত্মাকে আত্মার দারা বিনাশ করেন না? যেমন শাস্তে আছে "পৃথিবীতে অন্নি চয়ন করিবেনা, অস্তরিক্ষে অন্নি চয়ন করিবে না" [এই প্রকার প্রতিষেধ্ব অপ্রাপ্ত প্রতিষেধ; কারণ অস্তরিক্ষে কেইই কোন প্রকারে অন্নি চয়ন করিতে পারে না; স্থতরাং অস্তরিক্ষে অন্নিচয়নের প্রাপ্তি নাই; অথচ তাহারই প্রতিষেধ করা হইরাছে;

এখানেও সেই প্রকার কেহই যথন কোনরূপে আত্মার হিংগা করিতে পারে না. তথন बाबहिश्मा मर्स्वश्रकातः ब्रथाश्र ब्रथाः जाशांत्र श्रजित्यथं श्रहेराज्यः ; हेशं कि श्रकातः সন্ধত হইবে ?] ইহার উত্তর এই যে, এই প্রকার অসন্ধতিরূপদোষ এই স্থান হইতে পারে না। কারণ যাহারা অজ্ঞ [অর্থাৎ দেহাত্মদশী] তাহাদের পক্ষে আত্মার স্বরূপ সর্বাদা আরত হইয়া রহিয়াছে। প্রায় সকল জীবই অত্যন্ত প্রসিদ্ধ নিত্য প্রত্যক্ষ আত্মাকে স্বীয় অজ্ঞানে আরত করিয়া যাহা আত্মা নহে, সেই দেহ প্রভৃতিকে আত্মা বলিয়া অঙ্গীকার করিয়া থাকে. এবং ধর্মাধর্মের সঞ্চর করিয়া আত্মভাবে করিত দেহাদিকে একবার শ্বীকার করে আবার পরি ত্যাগ করে, আবার গ্রহণ করে এবং আবার পরিত্যাগ করে,—এই ভাবে বারং-বার আত্মাকে হনন করে; স্নতরাং যাগার আত্মতত্ত্তান নাই, সেই আত্মহা। ধাহা বাস্তবিক প্রমার্থ আত্মা, তাহাও অজ্ঞানের আবরণে যেন হত বলিয়া প্রতীত হয়। কারণ, বিশ্বমান থাকিলেও অজ্ঞানাবৃত বলিয়া, তাহার বিশ্বমানতার কার্য্য (বিষয় সংবেদনাদি) মধ্যে মধ্যে বিলুপ্ত হয় ; এই জন্ত লোকে নিজের অবিনাশী আত্মাকেও হত বলিয়া মনে করে: স্থতরাং অজ্ঞ ব্যক্তিমাত্রেই এই ভাবে আত্মঘাতী হইয়া পাকে। কিন্তু যিনি আত্মতন্ত্ত, তিনি আরোপিতভাবে বা অনারোপিতভাবে কোনরপেই আত্মাকে হনন করেন না। স্থতরাং তিনি পরম গতি লাভ করিয়া থাকেন অর্থাৎ শাস্ত্রে আত্মদর্শনের যে ফল উক্ত ইইয়াছে, সেই ব্যক্তি ভাষা প্রাপ্ত হন। ইহাই মর্থ গ্রহ

> প্রকৃত্যৈর চ কর্মাণি ক্রিয়মাণানি দর্ব্বশঃ। যঃ পশ্যতি তথাত্মানমকর্তারং দ পশ্যতি ॥২৯

আৰুয় । যঃ সর্কাশঃ কর্মাণি প্রক্রটৈতাব ক্রিয়মাণানি [পশুতি], তথা আব্যানম্ অক্রারং পশুতি সঃ [এব] পশুতি ॥২৯

অমুবাদ। বে ব্যক্তি দেখিয়া থাকে, যে প্রকৃতিই সকল প্রকার কর্দ্রের কর্ত্রী এবং আত্মা [নির্কিকার, স্থতরাং] কোন ক্রিয়াই করেন না, তিনিই প্রকৃত [আত্মা] দর্শন করিয়া থাকেন ॥২৯

ভাষ্য ৷ সর্বভ্তস্থমীশং সমং পশুন্ ন হিনপ্তি আত্মনা আত্মানমিত্যক্তং জনস্থপন্তং অপকর্মবৈলক্ষণ্যভেদভিল্নের্ আত্মস্থ ইত্যেতদাশঙ্কাহ—প্রক্লত্যা প্রকৃতির্ভগবতো মায়া ত্রিগুণাত্মিকা, "মায়াং তৃ প্রকৃতিং বিস্থাৎ" ইতি মন্ত্রবর্ণাৎ, তরা প্রকৃত্যৈব চ নান্তেন মহদাদিকার্য্যকারণাকারপরিণতরা কর্মাণি বাঙ্মনঃ-কারারভ্যাণি ক্রিয়নাণানি নির্কৃত্যানানি সর্বাশ স্বপ্রপারেঃ যং পশুতি উপল-ভতে, তথা আত্মানং ক্ষেত্রজ্ঞমকর্ত্তারং সর্বোপাধিবিবর্জ্জিতং পশুতি স পরমার্থ-দশীতাভিপ্রারঃ। নি শুণিখাকর্ত্ত্বনির্বিশেষখ্য আকাশশ্রেব ভেদে প্রমাণামুপ-প্রিরিত্যর্থঃ॥২৯

আনন্দ্ গিরিটীকা। শ্লোকান্তরং শক্ষোত্তরত্বেনাবতার্
রিত্ত্র্ক্রমন্থবদতি—
সর্ব্বৈতি। প্রতিদেহং ধর্মাধর্মাদিমবেনাত্মনো ভেদভানার সমাক্ দর্শনিতি
শক্ষতে—তদিতি। স্বপ্তণৈঃ স্থথহঃথাদিভিঃ স্বকর্মভিন্দ ধর্মাধর্মাধ্যৈর্হৈকিক্দণাং
প্রতিদেহং ভেদে তদ্বিশিষ্টেষাত্মস্থ কণং সাম্যেন দর্শনিমত্যেতদাশক্ষ্য পরিহরতীত্যাহ—এতদিতি। প্রকৃতিশক্ষ্য স্বভাববাচিত্বং ব্যাবর্ত্তরতি—প্রকৃতিরিতি।
মারাশক্ষ্য সন্দিৎপর্যায়ত্বং প্রত্যাহ—ত্রিপ্তণেতি। উক্তাপরস্থ শক্তিমারেত্যত্ত
শ্রুতিসংমতিমাহ—মারাজ্বিতি। অস্তেন কেনচিৎ ক্রিরমাণানি ন ভবন্তি
কর্মাণীত্যেবকারার্থমাহ—নান্যেনেতি। কিন্তুদল্লিবিং সর্মাণানি ন ভবন্তি
প্রোলিধাপ্যা প্রকৃতিরিত্যাহ—মহদাদীতি। সর্মপ্রকারত্বং কাম্যত্তনিষ্কিত্বাদিনা প্রকারবাহ্ল্যমাত্মানমুক্রবিশেষণং যঃ পশ্রতীত পূর্কেণ সম্বন্ধঃ। স
পশ্রতীত্যযুক্তং পুনক্রেরত্যাশক্ষ্যাহ—স পর্মার্থেতি। আত্মনাং প্রতিদেহং ভিরত্বে তের্ সমদর্শনমযুক্রমিত্যক্ত্য কঃ স্মাধিরিত্যাশক্ষ্যাহ—
নির্ত্রণিস্তেতি॥ ৯

অনুবাদ। সর্বভূতে অধিষ্ঠিত প্রমেশ্বরকে [আয়ভাবে] সর্বাত্র সমভাবে যিনি দেখিয়া থাকেন, তিনি আত্মাকে আত্মার দারা হিংসা করেন না, ইহা বলা হইয়াছে। একণে এই প্রকার শকা হইতে পারে যে—এই যে কথা বলা হইল, ইহা প্রমাণবিক্লদ্ধ; কারণ, জীবের গুণ ও কর্মের বৈলক্ষণ্য দেখিয়া ইহাই প্রমাণিত হইয়া থাকে যে, দেহভেদে আত্মাও ভিন্ন ভিন্ন [সকল ভূতে এক আত্মা সমভাবে থাকিতে পারে না; তাহাই যদি হইত, তবে কেহ স্থণী কেহ বা তঃখী, কেহ জানী কেহ বা অজ্ঞ, এই প্রকার জীবগণের মধ্যে ব্যবস্থা হইতে পারিত না।] এই প্রকার শকার নিরাকরণ করিবার জন্ম [এই প্রোকে] বলিতেছেন যে, প্রকৃতি শব্দের অর্থ ভগবানের মায়া; সেই মায়া বিশ্বণাত্মিকা; শ্রুতিতেও আছে যে "মায়াকে প্রকৃতি বলিয়া জানিবে"। মহন্তব্ব প্রভৃতি কার্য্য ও কারণক্রণে পরিণত প্রকৃতিই কর্ম্ম করিয়া থাকে; প্রকৃতি ব্যতিরেকে অন্ত কেহ কর্তা হইতে পারে না। এই সকল কর্মণ্ড তিন প্রকার—বাচিক মানসিক এবং কার্মিক।

দর্মপ্রকারে প্রকৃতিই সকল প্রকার কার্য্য করিয়া থাকে; আত্মা ক্ষেত্রজ্ঞ কর্ত্তা নহে; কারণ, আত্মা সর্মপ্রকার উপাধিবর্জিড; এই প্রকারে প্রকৃতি ও আত্মার স্বরূপ যিনি দেখিয়া থাকেন, তিনিই প্রমার্থদর্শী ইহাই তাৎপর্য্য। যাহা নিগুণ, স্মৃতরাং অকর্তা, সেই আকাশের ন্থায় নির্মিশেষ ও নিরুপাধি আত্মা বে প্রতিদেহে ভিন্ন, দে বিষয়ে কোন প্রকার প্রমাণ দেখিতে পাওয়া যার না। ইহাই শ্লোকের অর্থ॥২৯

যদা ভূতপৃথগ্ভাবমেকস্থমনুপশ্যতি। তত এব চ বিস্তারং ব্রহ্ম সম্পদ্মতে তদা॥ ৩০

আমুয়। বদা [সাধক:] ভূতপুণগ্ভাবম্ একত্বম্ অমুপশ্যতি, তত এব বিস্তারং চ [অমুপশ্যতি] তদা [সঃ] ব্রন্ধ সম্পন্ততে ॥৩০

আনুবাদ। যে সময় [সাধক] সকল ভূতের পৃথক্ ভাবকে এক মাত্র ব্ৰক্ষেই অবস্থিত দেখিয়া থাকেন এবং ইহাও বুঝিয়া থাকেন যে এই সমগ্র জগতের উৎপত্তি ব্ৰহ্ম হইতেই হইরাছে, সেই সময় [তিনি] ব্ৰহ্মস্বরূপ হইয়া থাকেন [মর্থাৎ মোক্ষলাভ ক্রিতে সমর্থ হন] ॥ ৩•

ভাষ্য। পুনরপি তদেবসম্যাদ্দর্শনং শক্ষান্তরেণ প্রপঞ্চয়তি—যদা যশ্মিন্
কালে ভূতপৃথগ্ভাবং ভূতানাং পৃথগ্ভাবং পৃথক্তম্ একস্থম্ একপ্রিন্ আয়নি
স্থিতমেকস্থম্ অমুপশ্যতি শাস্তাচার্যোগদেশতো ময়। আয়প্রত্যক্ষেন পশ্যতি
আব্যৈবেদং সর্কমিতি। তত এব চ তত্মাদেব চ বিস্তারম্ উৎপত্তিং বিকাশম্
আত্মতঃ প্রাণঃ আত্মত আশা আয়তঃ শ্বরঃ আয়ত আকাশ আয়তত্তেজ্ আয়তঃ
আপঃ আয়ত আবির্ভাবতিরোভাবো আয়তভাহয়ম্ ইত্যেবমাদিপ্রকারেঃ বিস্তারং
বদা পশ্যতি ব্রন্ধ সম্পত্তে ব্রন্ধিব ভবতি তদা তপ্রিন্ কালে ইত্যর্থঃ ॥৩০

আনন্দগিরিটীকা। প্রক্তেন্ধিকারাণাঞ্চ সাংখ্যবং প্রুষাদম্বপ্রসক্তে
প্রত্যাহ—পুনরপীতি। উপদেশজনিতং প্রত্যক্ষদর্শনমন্থবদতি—আত্মিবেতি।
ভূতানাং বিকারাণাং নানাছং প্রকৃত্যা সহায়মাত্রতরা প্রলীনং পশ্যতি নহি ভূত-পৃথক্তং সভ্যাং প্রকৃতে কেবলে পর্মিন্ বিলাপরিত্থ শক্যত ইত্যর্থঃ। পরি-পূর্ণাৎ আত্মনএব প্রকৃত্যানের্ধিশোস্তম্ভ স্বরূপণাভম্পলভ্য তন্মাত্রতাং পশ্যতীত্যাহ
—তত্ত এবেতি। উক্তমেব বিস্তারং শ্রুতাবষ্টস্তেন স্পষ্টয়তি—আত্মন ইতি।
ব্রহ্মদেশন্তিন মি পূর্ণছেনাভিব্যক্তিরপূর্ণছহেতোঃ সর্ধ্সাত্মসাৎকৃত্তনাদিত্যাহ—
ব্রক্রিবেতি। জ্ঞানসমানকাবৈর মৃক্তিরিতি স্বচ্বতি—তদ্বিত ॥৩০

অনুবাদ। পুনর্কার অন্তপ্রকার শব্দের দারা সমাগ্দর্শনের বরূপ বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করিতেছেন। যে সময় "ভূত-পূণগ্ভাব" অর্থাৎ ভূতগণের পার্থকাকে "একস্ত" এক আত্মাতেই অবস্থিত বলিয়া দেখিতে পান অর্থাৎ শাস্ত্র ও আচার্য্যের উপদেশামুসারে মনন করিয়া, আত্মপ্রত্যক্ষের বিষয় করেন অর্থাৎ আত্মই এই বিশ্ব, এই ভাবে প্রত্যক্ষ করেন এবং দেখেন বে, আত্মা হইতেই এই জগতের "বিস্তার" উৎপত্তি অর্থাৎ বিকাশ "আত্মা হইতেই প্রাণ, আত্মা হইতেই আশা, আত্মা হইতেই কাম, আত্মা হইতেই আকাশ, আত্মা হইতেই তেজঃ, আত্মা হইতেই জ্বল, আত্মা হইতেই আবির্ভাব ও তিরোভাব" ইত্যাদি শাক্ষাক্ষ প্রকারে [ব্রন্ধ হইতেই দকল বিশ্ব আবির্ভূতি হইয়াছে] দেখিয়া থাকেন, তথনই, [সাধক] ব্রন্ধই ইইয়া থাকেন — ইহাই অর্থ॥৩০

অনাদিত্বান্নিগুণত্বাৎ পরমাত্মায়মব্যয়ঃ। শরীরস্থোহপি কোন্তেয় ন করোতি ন লিপ্যতে॥৩১

অনুষ্ । অয়ং প্রনাত্ম। অনাদিছাৎ নি গুণছাৎ চ অবায়ঃ। হে কৌক্তের শ্রীরস্থে। ২পি [অয়ং প্রনাত্মা] ন করোতি ন লিপাতে॥ ৩১

অনুবাদ। এই প্রমায়া জনাদি এবং নিশুণ; এই কারণে ইহা অবিনাশী। এই প্রমায়া শ্রীরে স্থিত হইয়াও কোন কার্যা করেন না; স্থভরাং কোন প্রকার পাপ বা পুণোর দারা লিপ্তও হয়েন না॥৩১

ভাষ্যা। একপ্রায়নঃ দর্বদেহাত্মতে তদ্দোৰদম্ব প্রাপ্ত ইদমূচ্যতে—
অনাদিত্মং অনাদের্ভাবঃ অনাদিত্ম আদিঃ কারণম্, তদ্ ষশু নান্তি তদনাদি।
বদ্ হি আদিমং তং প্রেনায়না ব্যেতি অয়ং তৃ অনাদিত্মং নিরবয়ৰ ইতি ক্বড়া
ন ব্যেতি। তথা নিশুর্ণহাং সপ্তণোহি প্রণবায়াং ব্যেতি, অয়ং তৃ নিশুর্ণছায়
ব্যেতি, ইতি পরমায়ায়ম্ অব্যয়ঃ, নাশু ব্যয়ো বিশ্বতে ইত্যবায়ঃ। ষত এবম্
অতঃ শরীরস্থোহণি শরীরেষ্ আত্মন উপলন্ধির্ভবতীতি শরীরস্থ উচাতে তথাপি
ন করোতি। তদকরণাদেব তৎফলেন ন লিপাতে। যো হি কর্তা স কর্ম্মন্তনন লিপাতে, অয়ং ত্বর্তা, অতো ন ফলেন লিপাতে ইত্যর্থঃ। কঃ প্রদেশে
হেষ্ করোতি লিপাতে চ। যদি তাবং অঞ্জং পরমাত্মনো দেহী করোতি লিপাতে
চ, তত ইদম্ অয়পপয়মুক্তং ক্ষেত্রজ্ঞেশবৈকত্মং ক্ষেত্রজ্ঞং চাপি মাং বিদ্ধি ইত্যাদি।
অধ নাতীশ্বরাদন্যো দেহী কঃ ক্রোতি লিপাতে চ ইতি বাচ্যং পরো বা নাতীতি।

সর্বাধা ছর্বিজ্ঞেরং ছর্বাচাং চৈতি ভগবংপ্রোক্তমৌপনিষদং দর্শনং পরিত্যক্তং বৈশেষিকৈঃ সাংখ্যাহতবৌদ্ধৈত। তত্রায়ং পরিহারো ভগবতা স্বেনবোক্তঃ "স্বভাবস্ত প্রবর্ত্তে" ইতি। অবিস্থামাত্রং স্বভাবো হি করোতি লিপাতে ইতি ব্যবহারো ভবতি ন তু পরমার্থত একস্মিন্ পরমাত্মনি তদন্তি। অত এতস্মিন্ পরমার্থনাংখ্যদর্শনে স্থিতানাং জ্ঞাননিষ্ঠানাং পরমহংসপরিব্রাক্ষকানাং তিরস্কৃতা-বিস্থাব্যবহারাণাং কর্মাধিকারো নাস্তি ইতি তত্র তত্র দর্শিতং ভগবতা ॥৩১

আনন্দ্রিনিটীকা। পরিপূর্ণত্বেন সর্বাত্মতে প্রাপ্তমাত্মনো দেহাদিগতেন কর্তৃত্বাদিনা তদ্ববং দৃইং হি পবিত্রস্তাপি পঞ্চগব্যাদেরপবিত্রসংসর্গাৎ তদ্ধোষেণ ছষ্ট্রমত্যাশস্ক্যমনৃষ্ঠোত্তরত্বেন শ্লোকমবতারম্বতি—একস্থ্রেতি। অনাদিরমেব সাধরতি—আদিরিতি। তথাপি কিং স্থাদিত্যাশঙ্ক্য কার্য্যস্কৃতব্যরাভাবঃ সিধ্যতীত্যাহ—যদ্ধীতি। তথাপি গুণাপকর্ষনারকো ব্যয়ো ভবিষ্যতি নেত্যাহ— তথেতি। নিরবয়বস্থাদেব অবয়বদারকস্থ নিগুণিসাদ্গুণদারকস্থ চ ব্যয়স্থা-ভাবেহণি স্বভাবতো ব্যয়ঃ স্থাদিত্যাশক্যাহ—প্রমান্মেতি। প্রমান্মনঃ স্বতঃ পুরতো বা ব্যয়াভাবে ফলিডমাহ— যৃত ইতি। স্বমহিমপ্রতিষ্ঠস্ত কণং শরীরস্থত্তং ভত্তাহ—শরীরেম্বিতি। সর্বগতত্ত্বন সর্বাছ্মত্তেন চ দেহাদৌ স্থিতোহিপ স্বতো দেহাপ্তাত্মনা বা ন করোতি কৃটহত্বাদেহাদেশ্চ কল্লিভতাদিভার্থ:। কর্ত্বা-ভাবেহপি ভোক্তৃত্বং স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ—তদকরণাদিতি। তদেবোপপাদর্গত —(যা হীতি। পরশু কতৃত্বাদেরভাবে কন্ত তদিষ্টমিতি পৃচ্ছতি—কঃ পুনরিতি। পরশাদগুশু কশুচিজ্জীবশু কর্তৃপাদীত্যাশক্ষামমূবদতি—যদীতি। ত্মিন্ পক্ষে প্রক্রমভঙ্গ: স্থাদিতি দ্বয়তি—তত ইতি। ঈশরাতিরিজঞীবা-নঙ্গীকারাৎ নোপক্রমবিরোধোইজীতি শঙ্কতে—অ্থেতি। তহি প্রতীত-কর্ত্বাদেরধিকরণং বক্তব্যমিতি পূর্ববাভাহ—ক ইতি। পরত্তৈব কর্ত্বাভাধার-ষান্নান্তি বক্তব্যমিত্যাশঙ্ক্যাহ—পরো বেতি। নাস্ত্রীতি বাচ্যমিতি পূর্ব্বেণ সম্বন্ধ:। নহি কর্ত্থাদিভাক্তে পরস্তামদাদিবদীশ্বর্থমিতিভাব:। পরস্তাস্তস্ত বা কর্ত্বাদাববিশিষ্টে শরীরস্থোহপীত্যাদিশ্রতিমূলমপি জ্ঞাতৃং বক্তুঞাশক্যদাৎ ত্যাব্যমেবেতি পরীক্ষকসন্মত্যোপসংহরতি—সর্ববৈথেতি। পরক্ত বস্তুজেৎকর্ত্ত্র-ভোকু শাবিষ্ণরা তদারোপাদাদেরমেব + ভগবন্মতমিতি পরিহরতি—তত্ত্তিতি। ভবেষ পরিহারং প্রণঞ্চয়তি—অবিদ্যোতি। ব্যবহারিকে কর্জ্বাদাবিটে পারণার্থিকমেন কিং নেবাতে তত্তাহ—ন্ত্রিতি। বাস্তনকভূ**র্থাভভাবে বিশ্ব-**মুপ্**সস্তি—অত্**ইতি ॥ ১১

অনুবাদ, এক আত্মাই ৰদি সকল দেহের আত্মা হরেন, তাহা হইলে দেহকত দোষের সহিত আত্মার সম্বন্ধ হইতে পারে, এই প্রকার আশহা যদি কাহারও হয়, তবে তাহার নিরাকরণ করিবার জন্ম বলিতেছেন। "অনাদিছ" অর্থাৎ অনাদির স্বভাব। আদি শব্দের অর্থ কারণ; তাহা বাহার নাই, তাঁহাকে "অনাদি" কহা যায়। যে সকল বস্তু আদিনৎ, তাহারাই নিজস্বরূপে বিনাশী হইয়া থাকে; এই আত্মা অনাদি, এই কারণে ইহার বিনাশ হর না অর্থাৎ আত্মা নিরবয়ব: এই কারণে ইহার বিনাশ হইতে পারে না ৷ ''নি গুণিছ' হেড় ছারাও বুঝা যায়, আত্মার বিনাশ নাই। যে বস্তু সগুণ, ভাহার গুণের অপচয় ছইলে বিনাশ হয়। এই আত্মানি প্রতি: স্তত্তাং ইতার বিনাশ তইতে পারে না। যে কারণে এ প্রকার হইল আত্মার সর্রপ্ এই কারণেই আত্মা শ্রীরস্থ হইরাও कान श्रकांत कार्या करतन ना। अवः कार्या करतन ना विद्या कार्यात कान প্রকার ফলের দারা লিপ্তও হন না। শরীরেই আত্মার উপলব্ধি হইয়া থাকে: এই कातरा श्राह्मारक "नतीत्रष्ट" वना इहेबारह । এই প্रकारत श्राह्मा नतीत्रष्ट इहेबा । কোনরপ কার্য্য করেন না। যে কর্ম্ম করে, সে কর্মফলের দ্বারা লিপ্ত হয়। এই আত্মা কর্ম করেন না; স্কুতরাং কর্মফলেও লিপ্ত হন না। ইহাই অর্থ। তিক্ষণে এই প্রকার জিজাসার উদয় হইয়া পাকে বে] দেহ সমূহের মধ্যে তবে কে কার্য্য করিয়া পাকে ? পরমায়া হইতে অতিরিক্ত কোন দেহী যদি করে এবং লিপ্ত হয়, তাহা হইলে "মামাকে কেত্ৰজ্ঞ বলিয়া জানিবে" এই রূপে উক্ত জীব ও স্বারের অভেদ অমুপপর হইয়া পড়ে। যদি ঈশ্বর হইতে পুথক কোন দেহী না থাকে. তাহা হইলে কে করে এবং কেইবা লিপ্ত হয় ? তাহা বলিতে হইবে। অথবা _ বলিতে হইবে, ক্ষেত্ৰক্স ব্যতিরিক্ত কেহই নাই। ি এই সকল অনুপপত্তি দেখিয়া সীকার করিতে হয় যে] ভগবান যে ওপনিষদ আত্মতত্ত্বের উপদেশ করিয়াছেন. তাহা সর্বপ্রকারে চল্জের এবং ফ্রবাচ্য। এই কারণেই বৈশেষিক, সাংখ্য, আর্হত এবং নৌদ্ধ দার্শনিকগণ এই প্রকার মত পরিত্যাগ করিয়াছেন। এই প্রকার শঙ্কার ঘাঁহা পরিহার, তাহা ভগবান নিজেই করিয়াছেন ; [কি প্রকারে ? তাহার উত্তর তিনিই দিয়াছেন যে] "সভাবই প্রবৃত্ত হইতেছে।" সভাব অর্থাৎ क्विन अविश्वाहे करत এवः निश्च हम्र अर्थाए (कहहे करत ना कहहे निश्च हम्र ना। মণ্ড লোকে এই প্রকার ব্যবহার মাত্রই হইরা থাকে। প্রকৃতণকে প্রমা**দ্ধাতে**

কোন প্রকার কার্য্য বা কার্য্যফলের সম্বন্ধ হইতে পারে না। এই হেতু এই পরমার্থ সাংখ্য দর্শনকে যাহারা অবলম্বন করিরাছেন, যাহাদের পক্ষে সকল প্রকার অবিদ্যাপ্রযুক্ত ব্যবহারই মিখ্যা বলিয়া প্রতীত হইয়াছে, সেই পরমহংস পরিপ্রাক্ষকণণের কোন প্রকার কার্য্যে অধিকার নাই। ইহা ভগবান্ সেই সেই স্থলে প্রদর্শন করিয়াছেন। ৩১

যথা সর্ব্বগতং সৌক্ষ্যাদাকাশং নোপলিপ্যতে। সর্ব্বত্রাবস্থিতো দেহে তথাত্মা নোপলিপ্যতে॥৩২

আম্বয়। সর্ব্বগত্তম্ আকাশং সৌন্ধ্যাৎ যথা ন উপলিপ্যতে, [তথা] আত্মা সর্ব্বরে দেহে অবস্থিতোহপি নোপলিপ্যতে ॥৩২

আমুবাদ। আকাশ যেমন সর্বগত হইরাও অত্যন্ত স্ক্রতা নিবন্ধন কোন বস্তুর সহিত উপলিপ্ত (মিলিড) হর না, এইরূপ আত্মা সকল দেহে বিশ্বমান থাকিরাও কিছুতেই লিপ্ত হন না॥৩২

ভাষ্য ৷ কিমিতি ন করোতি ন লিপাতে ইত্যত্ত দৃষ্টান্তমাহ—যথা
. দর্বগৃতং ব্যাপি অপি সং দৌক্ষ্যাৎ স্থকভাবাৎ আকাশং খং নোপলিপাতে ন
সংবধ্যতে দর্শব্রাবন্ধিতো দেহে তথাত্বা নোপলিপাতে ॥ ৩২

আনন্দ গিরিটীকা। স্ক্রভাবাদপ্রতিষ্ঠত বভাবহাদিতার্থ:। ন সম্বধ্যতে প্রাদিভিরিতি শেষঃ ॥৩২

আমুবাদ। কি কারণে আয়া করেন না বা লিগু হন না, তাহার দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিতেছেন। যেমন আকাশ "সর্কগত" ব্যাপক হইয়াও স্ক্রতা নিবন্ধন লিগু হয় না, অর্থাৎ কাহারও সহিত সংবন্ধ হয় না, এইরূপ সকল দেতে অবস্থিত হইয়াও আয়া কোন বন্ধর সহিত সংবন্ধ হন না ৪৩২

> ষথা প্রকাশয়ত্যেকঃ কুৎস্নং লোকমিমং রবিঃ। ক্ষেত্রং ক্ষেত্রী তথা কুৎস্কং প্রকাশয়তি ভারত ॥৩৩

আমৃষ্য । যথা একঃ রবিঃ ক্লংমন্ (সমগ্রম্) ইমং লোকং শ্রেকাশরতি, হে ভারত ! কেত্রী (আআ)) ক্লংমং কেত্রং তথা প্রেকাশরতি ॥৩০

আনুবাদ। বেমন স্থ্য এক অথচ এই সমগ্র লোককে প্রকাশ করিরা থাকেন, হে ভারত। "কেত্রী" [আত্মা এক হইরাও] সমগ্র দেহকে সেইরূপ প্রকাশ করিরা থাকেন ॥৩৩ ভাষ্য। কিঞ্চ বথা প্রকাশরতি অবভাসরতি এক: ক্বংরং লোকমিমং রবিঃ
সবিতা আদিত্যন্তথা তদস্বহাভূতাদিধৃত্যন্তং ক্ষেত্রমেক: সন্ প্রকাশরতি। ক: ?
ক্ষেত্রী পরমাত্মা ইত্যর্থঃ। রবিদৃষ্টান্তোহত্ত আত্মন উভরার্থোহপি ভবতি রবিবৎ
সর্কক্ষেত্রের্ এক আত্মা অলেপকশ্চেতি ॥৩৩

আনন্দিগিরিটীক। ন ক:রাতি ন লিপ্যতে চেত্যত্ত স্তষ্ট্রেন দৃশ্যধর্মশৃশুদ্ধ হেতৃমাহ—কিঞ্জেতি। দৃষ্টান্তেন বিবক্ষিত্তমর্থং দর্শরতি—রবিরিতি।
উভরবিধধর্মার্থমের ক্ষুটরতি—রবিবদিতি ॥৩৩

অনুবাদ। আরও [বলা হইতেছে বে] যেমন সূর্য্য এক অথচ তিনি সকল ভ্বনকেই প্রকাশিত—অর্থাৎ অবভাসিত করেন, সেইরূপ এই মহাভূত হইতে ধৃতি পর্য্যন্ত সমগ্র ক্ষেত্র অর্থাৎ দেহকে সেই ক্ষেত্রী পরমাঘাই প্রকাশিত করিরা থাকেন। এই স্থলে সূর্য্যকে বে আত্মার দৃষ্টান্তরূপে নির্দেশ করা হইরাছে, তাহার তাংপর্য্যার্থ তুইটি অর্থাৎ সুর্য্যের স্তান আত্মা সকল ক্ষেত্রেই এক এবং স্বর্ম নির্দিপ্র ॥৩৩

ক্ষেত্রজ্ঞয়োরেবমন্তরং জ্ঞানচক্ষ্মা। ভূতপ্রকৃতিমোক্ষঞ্চ যে বিহুর্যান্তি তে পরম্॥৩৪

रें ि जरमान त्नार्थामः।

অনুয়া। যে কেত্রকেত্রজয়ো: এবমস্তরং ভৃতপ্রকৃতিমোক্ষং চ জ্ঞান-চক্ষ্বা বিহঃ (জানস্তি) তে পরং যান্তি॥ ৩৪

অনুবাদ। বাঁহারা জ্ঞাননেত্রের দারা এই বথোক্তপ্রকারে ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞের পরম্পর বৈলক্ষণ্য এবং ভূতপ্রকৃতি অর্থাৎ অবিদ্যা হইতে মোক্ষ কি প্রকার, তাহাও বুঝিতে সমর্থ হন, তাঁহারা নির্মাণ লাভ করেন॥ ৩৪

ভাষ্য। সমন্তাধ্যাঘার্থোপসংগারার্থাছরং স্লোক:—কেন্দ্রক্জেজারাং
বপাব্যাধ্যাতরোরেবং যথাপ্রদশিভপ্রকারেণ অন্তরম্ ইতরেভরবৈলক্ষণ্যবিশেষং
জ্ঞানচকুষা শাস্তাচার্য্যোপদেশক্ষিতম্ আত্মপ্রতারিকং জ্ঞানং চকু: তেন জ্ঞানচকুষা
ভূতপ্রকৃতিমোকং চ ভূতানাং প্রকৃতিরবিভালক্ষণা অব্যক্তাধ্যা ভক্তা ভূতপ্রকৃতেঃ
মোক্ষণমভাবগমনং চ যে বিছঃ বিজ্ঞানন্তি যান্তি গচ্ছন্তি তে পরং প্রমার্থভন্থং ব্রহ্ম
ন প্রক্ষেদ্যাদ্যতে ইত্যর্থ: ॥ ৩৪

আনন্দ্রগিরিটীকা। অধ্যারার্থৎ সফলমূণসংহরতি—সমন্তেতি। বিশেষং কৌটস্থ্যপরিণামাদিলকণম্। তদেবমমানিছাদিনিষ্ঠতয়া ক্ষেত্রকেক্সজ ষাথান্ম্যবিজ্ঞানবত: সর্বানর্থনিবৃত্ত্যা পরিপূর্ণপরমানন্দাবির্ভাবলক্ষণপুরুষার্থসিছি-রিতিসিদ্ধম্ ॥ ৩৪

অসুবাদ। অন্ধোদশ অধ্যায়ে যাহা কিছু বলা হইয়াছে, একণে তাহারই উপসংহার করিবার জন্তই এই শোকটি বলা হইতেছে—কেত্র এবং কেত্রজ্ঞের করেপ যে ভাবে ব্যাখ্যাত হইয়াছে, ঠিক সেইভাবে ইহাদের (অর্থাৎ কেত্র ও কেত্রজ্ঞের) "অন্তর" পরস্পরের বৈলকণ্য অর্থাৎ বিশেষকে যাহারা জ্ঞানচকুর দ্বারা অর্থাৎ শাস্ত্র এবং আচার্য্যের উপদেশজনিত আত্মবিখাসকর জ্ঞানরূপ বে চকু, তাহার দ্বারা হৃদয়ঙ্গম করিতে সমর্থ হন এবং "ভৃতপ্রকৃতিমোক" অর্থাৎ ভৃতগণের প্রকৃতি যাহার নাম অবিদ্যা ও অব্যক্ত, সেই ভৃতপ্রকৃতিমোক" অর্থাৎ ভৃতগণের প্রকৃতি যাহার নাম অবিদ্যা ও অব্যক্ত, সেই ভৃতপ্রকৃতির মোক (অর্থাৎ) অভাব-গমন—নিক্ষতি সেই এই ভৃতপ্রকৃতিমোককেও যে সকল ব্যক্তি জানেন অর্থাৎ কি করিয়া সংসারবীজভূত অবিদ্যার বিলয় করিতে হয়, ইহাও জ্ঞানচক্ষর দ্বারা ব্রিতে সমর্থ হন, তাঁহারা "পর" পরমার্থতত্ত্ব ব্রক্ষকে প্রাপ্ত হন অর্থাৎ তাঁহাদিগকে আর এ সংসারে জন্ম লাভ করিতে হয় না, ইহাই তাৎপর্য্য ॥ ৩৪

ইতি ত্রোদশোহধারেঃ সমাপ্তঃ।

অথ চতুৰ্দশোহধ্যায়ঃ।

ঐভগবান্থবাচ।

পরং ভূয়ঃ প্রবক্ষ্যামি জ্ঞানানাং জ্ঞানমূত্তমম্। যজ্ জ্ঞাত্বা মুনয়ঃ দর্ক্তে পরাং দিদ্ধিমিতো গতাঃ॥১

আনুর । শীভগবাহুবাচ। ভূয়: জ্ঞানানাম্ উত্তমং পরং জ্ঞানং প্রবক্ষ্যামি, বজ্জাত। দর্শ্বে মূনয়: ইতঃ পরাং দিদ্ধিং গ্রা: ॥>

অনুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন,—পুনর্কার [আমি তোমাকে] পরম-বস্ত-বিষয়ক জ্ঞানের উপদেশ দিতেছি। সেই জ্ঞান সকল প্রকার জ্ঞান হইতে শ্রেষ্ঠ। [ইহা—সেই জ্ঞান] যাহাকে লাভ করিয়া মুনিগণ এই দেহ-পাতের পরই পরম সিদ্ধি লাভ করিয়াছেন॥১

ভাষ্য। "সর্কম্থপগুমানং ক্ষেত্রক্ষেত্রক্তসংযোগাহংপগুতে ইত্যুক্তং তৎ কথমিত তংপ্রদর্শনার্থং "পরং ভূর" ইত্যাদিরধ্যার আরভ্যতে। অথবা ঈশ্বরপরত্ররাঃ ক্ষেত্রক্ষেত্রক্তরোঃ ক্ষাৎকারণকং ন তু সাংখ্যানামিব স্বতন্তর্রোঃ হত্যেবমর্থং প্রকৃতিস্থত্বং গুণেষু চ সঙ্গং সংসারকারণমিত্যুক্তং কন্মিন্ গুণে কথং সঙ্গং কে বা গুণাং কথং বা তে বগ্পন্তি ইতি গুণেজ্যুক্ত নোক্ষণং কথং স্থানুক্তপ্ত চ লক্ষণং বক্তব্যম্ ইত্যেবমর্থক—পরং জ্ঞানম্ ইতি ব্যবহিতেন সংবদ্ধঃ। ভূরঃ পুর্বেষ্ সর্কের্ অধ্যারেষ্ অসক্তক্তমণি প্রবন্ধ্যামি। তচ্চ পরং পরবন্ধ-বিষয়বাৎ, কিং তৎ, জ্ঞানং সর্কের্যাং জ্ঞানানাম্ত্রমম্ উত্তমফলত্বাৎ। জ্ঞানানামিতি ন অমানিদ্বাদীনাম্, কিং তর্হি যজ্ঞাদিজ্যেবস্ত্ববিষয়াগাম্ ইতি। জানি ন মোক্ষায় ইদং তু মোক্ষায় ইতি পরোত্তমশক্ষাভ্যাং স্তৌতি শ্রোত্বৃদ্ধিক্চ্যুৎপাদনার্থম্। যৎ জ্ঞাত্বা যৎ জ্ঞানং জ্ঞাত্বা প্রাপ্য মূনরঃ সংস্থাসিনঃ মননশীলাঃ দর্বের পরাং সিদ্ধিং মোক্ষ্যাখ্যাম্ ইত্যেহন্মান্দেহবন্ধনাদৃদ্ধং গ্রাহ্ণান্থাঃ॥১

আনন্দ্গিরিটীকা। কেত্রকেত্জসংযোগন্ত দকোৎপত্তিনিমিত্তমজাতৎ
জাপয়িতুম্ অধ্যায়ান্তরমধতারয়ন্ অধ্যায়য়োকথাপ্যোথাপকত্রপাৎ সঙ্গতিমাহ—

স্বৰ্মিতি। বিধান্তরেণাধ্যাদ্বাদ্বন্তং হচন্বতি—অথবেতি। তদেৰ ৰকু মুক্তমমূবদতি — ঈশ্বরেতি। প্রকৃতিত্বরং পুরুষত্ত প্রকৃত্যা সহৈক্যাধ্যাসঃ ভত্তৈৰ গুণেষু শবাদিবিৰরেষু সঙ্গোহভিনিবেশ:। ষড্বিধামাকাজকাং নিকিপ্য তহ্তরদ্বেনাধ্যারারস্তে পূর্ববদেব পূর্বাধ্যারসম্বন্ধসিদ্ধিরিত্যাহ —কিম্মিন্সিতি। পূর্ব্বোক্তেন।র্থেনাভাধ্যারভ সম্ক্রয়ার্থশ্চকারঃ। পরমিত্যশু ভাবিকালার্থত্বং ব্যাবর্ত্তবিত্বং সঙ্গতিমাহ—পরমিতি। ভ্রঃশক্তাধিকার্থন্তমিহ নান্তীত্যাহ— পুনরিতি। পুন:শবার্থমেব বির্ণোতি-পুর্বেছিতি। পুনক্ষজি-ন্তহীত্যাশন্ব্য স্ক্লবেন হর্কোধন্বাৎ পুনর্কচনমর্থবদিত। হত তেচেতি। বিশেশুং প্রশ্নবারা নির্দিশতি—কিং তদিতি। নির্দারণার্থাং ষষ্ঠীমাদার তম্ম প্রকর্ষৎ দর্শরতি সুর্বেষামিতি । পরসুত্তমমিতি পুনক্ষজিমাশকা বিষয়ফলভেদানীর-মিত্যাহ—উত্তমেতি ৷ জ্ঞানং জেয়মিত্যাদৌ জ্ঞানশব্দেনামানিত্বাদীনামুক্তত্বাৎ ভন্নধ্যে চ জ্ঞানভ সাধ্যহেনোত্তমত্বাৎ ন তন্ত ৰক্তব্যতেত্যাশক্যাহ— জ্ঞানানামিতি। নামানিদাদীনাং গ্রহণমিতিশেষ:। ইতিশব্দাদৃদ্ধং পূর্ববদেব শেৰো দ্ৰষ্টব্য:। যথোক্তজানাপেক্ষা কৃতন্তজ্জানন্ত প্ৰকৰ্মভঞাহ—তানীতি। স্কৃতিফলমাহ—শ্রোভৃবুদ্ধীতি। জ্ঞানং জ্ঞাত্বা ক্সানস্ত ক্রেরছোপগমাদন-বস্থেত্যাশক্যাহ—প্রাপ্রেত। মুনিশক্ত চতুর্থাশ্রমবিষয়তে তলাত্রাদেব জানাযোগাং কুতন্তেবাং মুক্তিরিত্যাশক্যাহ—মনুনেতি। নিদ্ধেজনিতং পরামিতি বিশেষণাদ্ব্যাবর্ত্তা মূক্তিত্বমাহ—মোক্ষাখ্যামিতি। দেহাখ্যস্ত বন্ধনন্তাধ্যক্ষদাহ—অস্মাদিতি ॥১

অসুবাদ। যাহা কিছু উৎপন্ন হয়, তাহা সকলই ক্ষেত্ৰ ও ক্ষেত্ৰজ্ঞ এই ছইএর সংযোগ হইতেই উৎপন্ন হয়, ইহা পূর্ব্বে বলা হইরাছে, তাহা কি প্রকারে সম্ভবপর, তাহাই একণে বুঝাইবার জন্ত "পরং ভূন্নঃ" ইতাাদি সধ্যায়ের আরম্ভ করা হইতেছে। অথবা আন্ত প্রকার আশায়েও এই সধ্যায়ের অবতারণা হইতে পারে ক্রেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ জগতের কারণ হইলেও তাহারা ঈশ্বরের অধীন। সাংখ্যমতে বেমন স্বতন্ত্র ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ জগতের কারণ [বলিয়া নির্দিষ্ট হইরাছে], সেরুপ নহে। [ঈশ্বরের ইছোম্পারেই ক্ষেত্র ক্ষেত্রজ্ঞ জগতের কারণ, ইহাই ব্রহ্মবাদিগণের সিদ্ধান্ত] এই সিদ্ধান্তই প্রতিপাদন করিবার জন্ত পূর্বের বলা হইরাছে বে, প্রকৃতিছছ এবং শুণসমূহে সঙ্গ এই তুইটি বল্ব সংসারোৎপত্তির কারণ—[একণে জিজ্ঞান্ত হইতে পারে বে,] কোন্ গুণে ক্রিপা সঙ্গ [সংসারের হেতু] ? সে শুণ সকলই বা কি প্রকার ? কি

প্রকারেই বা সেই প্রণ সকল বন্ধের কারণ হইয়া থাকে এবং সেই প্রণসমূহ **হইতে মুক্তি পাইবার উপায়ই বা কি** ? আরও মুক্ত পুরুষের লকণ--এই সকল বিষয় বলিতে হইবে, এই জন্ত [ভগবান্ বলিতেছেন যে] ["পর" এই শব্দটির ব্যবহিত "জ্ঞান" এই পদটির সহিত সম্বন্ধ] "ভূমঃ" পুনর্বার অর্থাৎ পূর্ববর্ত্তী অধ্যায়সমূহে যদিও বলা হইয়াছে, তাহা হইলেও কিছু বিশেষ বুঝাইবার জন্ম বলিতেছি, সেই জ্ঞান পর; কারণ "পর" ব্রংদ্মার স্বরূপ প্রকাশ করিরা থাকে। তাহা কিরপ? তাহা সকলপ্রকার জ্ঞান হইতে উত্তম, কারণ, তাহার ফল সর্ব্বোৎক্ষট্ট। এই যে অস্তান্ত জ্ঞানের কথা বলা হইতেছে, ঐ সকল জ্ঞান কিরূপ জ্ঞান ? পূর্বেবে অমানিত্ব প্রভৃতি জ্ঞানের কথা বলা इरेब्रारह, त्मरे मकन ख्वात्नत मर्था अविष्ठे नरह। जरव तम मकन स्त्रांन कि [বাহা হইতে এই বক্ষামাণ জ্ঞান সর্কোংক্ট ?] তাহা যক্সাদি জ্ঞেয় বস্তুর প্রকাশক জ্ঞানসমূহ; কারণ ঐ সকল [যজ্ঞাদি-বিষয়ক] জ্ঞান মোক লাভের উপায় নহে; কিন্তু এই বক্ষ্যাণ জ্ঞান মোকের উপায়। এই কারণে "পর" এবং "উরুম" এই তুইটি বিশেষণ পদের বারা ঐ জ্ঞানের প্রশংসা করা হইয়াছে। শ্রেতার বৃদ্ধি লাভের অনুকৃল কচি উৎপাদন করিবার জন্তই এই প্রকার প্রশংসা করা হটয়াছে। যে জ্ঞানকে জানিয়া অর্থাৎ যে জ্ঞানকে লাভ করিয়া মুনিগণ অর্থাৎ ধ্যানপ্রায়ণ সংস্থাদিগণ সকলেই মোক্ষরপ প্রম সিদ্ধিকে লাভ করিয়াছেন। [কোন্সময়ে ?] দেহবন্ধন ছিল্ল হইবার পর অর্থাৎ মৃত্যুর পর [নির্কাণ লাভ করিয়াছেন] ॥১

> ইদং জ্ঞানমুপাঞ্জিত্য মম সাধর্ম্ম্যমাগতাঃ। সর্গেহপি নোপজায়ন্তে প্রলয়ে ন ব্যথন্তি চ ॥২

আনুর । ইদং জ্ঞানন্ উপাশ্রিত্য মম সাধর্ম্ম আগতাঃ সর্গে অপি ন উপজারত্তে প্রলয়ে [অপি] ন ব্যপস্তি চ ॥২

অমুবাদ। এই জ্ঞানকে আশ্রয় করিয়া বাঁহারা মামার সাধর্ম্য প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাঁহারা স্ষ্টকালে আর মন্মগ্রহণ করেন না এবং প্রলয়কালেও ব্যথিত হয়েন না ॥২

ভাষ্য। অভাশ্চ সিদ্ধেরৈকান্তিকত্বং দর্শন্তি—ইদং জ্ঞানং বথোক্ত-মুপাশ্রিক্তা জ্ঞানসাধনমন্ত্রীয় ইত্যোতং। মম প্রমেশ্বরত সাধর্ব্যং মংশুরূপতা- মাগতাঃ প্রাপ্তা ইত্যর্থঃ। ন তু সমানধর্মতাং সাধর্ম্মাং কেত্রক্তেশ্বরেমর্ভেদান-ভূপেগমাদ্ গীতাশাস্ত্রে। ফলবাদশ্চায়ং স্কত্যর্থমূচ্যতে। সর্গেছিপ স্ষ্টিকালেছপি নোপজায়স্তে নোৎপত্যন্ত। প্রলয়ে ব্রহ্মণোছপি বিনাশকালে ন ব্যথস্তি চ ব্যথাং নাপত্যন্ত ন চাবস্তীত্যর্থঃ॥২

আনন্দগিরিটীক।। জ্ঞানফলশু কর্মফলবৈলকণ্যমাহ—অস্থান্দেতি।
কথং জ্ঞানাশ্রমণং তদ্বেতুশ্রবণাদিসামগ্রীসম্পতিদ্বারেত্যাহ—জ্ঞানেতি।
সাধর্ম্মের গোগবয়য়োরিব বিদ্বদীশ্বয়য়ারপি ভেদঃ শুদিত্যাশঙ্ক্যাহ—
মৎস্বরূপতামিতি। সাধর্ম্মশুশু মুখ্যুদ্ধে ভেদুপ্রৌব্যাদ্গীতাশাস্ত্রবিরোধঃ
শুদিত্যাহ—নিছিতি। জ্ঞানস্তত্যে তৎফলশু বিবক্ষিত্বাচ্চ নাত্র সারূপ্য
মিষ্টমিত্যাহ ফলেতি। সারূপ্য ধীফলং হিন্তা ধ্যানফলমপ্রস্তত্ত।
প্রসক্ষ্যেতেত্যর্থঃ। ঈশ্বরাত্মতাং গভানামেব অবান্তরদর্গাদৌ জন্মাগ্রভাবেহিপি
মহাস্কাদৌ তদ্ববিষ্যভীত্যাশক্ষ্যাহ—স্ক্রেইপীতি॥২

অনুবাদ। এই প্রকার সিদ্ধি যে ঐকান্তিক, তাহাই একণে দেখাইতেছেন। এই (অর্থাৎ) যথোক জ্ঞানকে আপ্রায় করিয়া অর্থাৎ জ্ঞান-সাধনের সমাক্ প্রকারে অনুধান করিয়া "আমার"—পরমেখরের "সাধর্মা" অর্থাৎ মংস্করপতা প্রাপ্ত হইয়াছেন; [কে পুর্বিশ্লোকোক সন্ন্যাসিগণ] এই সাধর্মা শব্দের অর্থ সমানরপতা নহে [ইহার অর্থ অভেদ]; কারণ, গীতাশাস্ত্রে জীব এবং ঈশ্বরের পরম্পর ভেদ অঙ্গীক্তত হয় নাই। ইহা জ্ঞানের ফল-কণন, ইহার হারা যথোক জ্ঞানের স্থতি করা হইতেছে। [তাহারা] সর্ব অর্থাৎ স্পৃত্তিকালেও "উপজ্ঞাত হন না" উৎপত্তি লাভ করেন না এবং শপ্রলকালেও [চতুরানন] ব্রহ্মার বিনাশ-সময়েও ব্যথিত হন না অর্থাৎ স্বর্মান্ত্রত হন না। ইহাই অর্থ॥২

মম যোনির্মহদ্বেক্ষা তিম্মন্ গর্ভং দধাম্যহম্। সম্ভবঃ সর্ববভূতানাং ততো ভবতি ভারত॥৩

্ অন্বয় । মহদ্বকা মম ঝোনি: তক্মিন্ অহং গর্জং দধামি। হে ভারত ! ততঃ সর্কভূতানাং সম্ভবঃ ভবতি ॥৩

ভাকুবাদ। মহৎ এই নামে প্রাসিদ্ধ যে ব্রহ্ম, তাহাই আমার যোনি (সর্বা কার্য্যের উপাদান), তাহাতেই আমি গর্ভের আধান করি। তাহারই ফলে, হে ভারত, সর্বভূতের উৎপত্তি হইয়া থাকে॥৩ ভাষ্য। কেত্রকেত্রজ্ঞসংবোগ ঈদুশো ভূতকারণমিত্যাহ—মম বভূতা
মদীরা মারা ত্রিগুণাত্মিকা প্রকৃতির্বোনিঃ সর্বভূতানাং সর্বকারেণ্ডাঃ মহন্বং ভরণাচ্চ স্ববিকারাণাং মহদ্বক্ষেতি বোনিরেব বিশিষ্যতে। তন্মিন্ মহতি ব্রহ্মণি বোনৌ গর্ভং হিরণ্যগর্ভন্ত জন্মনো বীজং সর্বভূতজন্মকারণং বীজং দথামি নিক্ষিপাম। কেত্রকেত্রজ্ঞ প্রকৃতিদ্বস্পক্তিমানীশ্বরোহহম্ অবিভাকামকর্ব্বোপাধি-ব্রহ্মপাস্থবিধারিনং কেত্রজ্ঞং কেত্রেণ সংযোজয়ামীত্যর্থঃ। সংভব উৎপত্তিঃ সর্বভূতানাং হিরণ্যগর্ভোৎপত্তিশ্বারেণ ভতন্তস্মান্ গর্ভাধানান্তবতি হে ভারত ॥০

আনন্দগিরিটীক।। জ্ঞানস্বত্যা তদভিমুথারাবহিতচেতদে বিবন্ধিতমর্থমাহ—ক্ষেত্রেতি। স্বরূপদ্দেন স্বভূতবং বারয়তি—মদীয়েতি। স্বরূরীং
চিচ্ছাক্রং ব্যাবর্ত্তরতি—ক্রিগুলাজ্যিকেতি। সাংখ্যীয়প্রকৃতিরপি মদীয়েতি
ব্যাবর্ত্তিতা। যোনিশন্দেন সর্বাণি ভবনযোগ্যানি কার্য্যাণি প্রভূগোদানম্বনভিপ্রেতমিত্যাহ—সর্ব্বভূতানামিতি। প্রকৃতের্শ্বহরং দাধয়তি—সর্ব্বেতি। সর্ব্ববাদ্য
ব্যাপ্তিমাদার যোনাবেব ব্রহ্মশন্ধ:। কিঙ্গবৈষম্যান্মহন্ত্রেকেত্যপাস্তরং কিঞ্চিদিত্যাশক্ষ্যাহ—যোনিরিতি। তন্মিয়ত্যাদি ব্যাচষ্টে—তন্মিয়িতি। ঈদৃশক্ত
ক্রেকেত্রত্বসংযোগক্ত ভূতকারণমিতি বক্ত্মুপক্রম্য কিনিদ্মক্রদাদর্শিতমিত্যাশক্ষ্যাহ
—ক্ষেত্রেতি। গর্ভশব্দেনাক্রসংযোগক্ত ফলং দর্শয়তি সম্ভব ইতি।
"আদিকর্ত্তা দ ভূতানাম্" ইতি স্বত্বা হিরণ্যগর্ভকার্যন্থাবগ্নাভূতানাং কণং যথোক্তগর্ভাধাননিমিত্ত্বমিত্যাশক্ষ্যাহ—হিরণ্যগর্ভকার্যন্থাবগ্নাভূতানাং কণং যথোক্তগর্ভাধাননিমিত্ত্বমিত্যাশক্ষ্যাহ—হিরণ্যগর্ভিত ॥০

অমুবাদ। এই প্রকার ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞর সংযোগই যে প্রাণিস্টির কারণ, তাহাই বলিতেছেন—আমার আত্মস্বর্রণা—মদীয়া যে মায়া [যাহা শাস্ত্রে] ত্রিগুণাত্মিকা [এবং] প্রকৃতি [বলিয়া নির্দিষ্ট] সেই মায়াই যোনি অর্থাৎ সর্বাভূতের উৎপত্তি কারণ—যে কারণ এই প্রকৃতি সকল প্রকার কার্য্য হইতে প্রধান এবং আত্মবিকারশ্বরূপ সকল কার্য্যের ভরণ করিয়া থাকে, এই কারণে সেই প্রকৃতিই এই স্থানে মহৎ ও ব্রহ্ম এই হুইটি বিশেষণের দায়া বিশেষিত হইয়াছে। সেই মহৎ ও ব্রহ্মশ্বরূপ যোনিতে আমি গর্ভের আধান করিয়া থাকি। এই স্থলে গর্ভ শক্ষের অর্থ হিরণাগর্ভেরও জন্মহেতু বীজ অথবা সর্বাভূতের জন্মকারণশ্বরূপ বীজ। সেই বীজকেই আমি সেই প্রকৃতিরূপ যোনিতে আহিত করি। [ইহার বিশদ তাৎপর্য্য এই যে] ক্ষেত্রভূত ক্ষর্যরের শক্তি। এই দিবিধ প্রকৃতিই ঈশ্বরের শক্তি। এই দিবিধ পক্তিমান্ পুরুষই জ্পার। কাম ও কর্ম্বরূপ স্থীয় উপাধিবলে স্বরূপ গ্রহণ করিছে

উত্তত জীবগণকে কেত্রের সহিত সংযোজিত করিয়া থাকেন। এই প্রকার দংযোজনই গর্ভের আধান। [তাই ভগবান বলিতেছেন যে, আমি সেই যোনিতে গর্ডের আধান করিয়া থাকি] সেই গর্ভাধানেরই ফল হইতেছে, সর্বপ্রকার ভূতগণের সম্ভব অর্থাৎ উৎপত্তি। এই সর্ব্বভূতের উৎপত্তি হিরণ্যগতের উৎপত্তির প্রবিহা । হে ভারত ॥০

সর্ববোনিষু কৌন্তেয় মূর্ত্তয়ঃ সম্ভবন্তি যাঃ। তাসাং ব্রহ্ম মহদ্যোনিরহং বীজপ্রদঃ পিতা ॥৪

আন্তর্ম । হে কৌন্তের ! সর্বধোনিব যা মৃত্রিঃ সন্তবন্তি, তাসাং মহদ্রক্ষ বোনিঃ অহং [ভূ] বীক্রপ্রদঃ পিতা ॥ ৪

অনুবাদ। হে কুস্তীনন্দন! সর্বপ্রকার যোনিতে যে সকল মৃর্তি উৎপত্তি লাভ করে, তাহাদের যোনি [পুর্বোক্ত] মহৎ ব্রহ্মই হইরা থাকে, আমিই ভাহাদের বীজ্ঞদাতা পিতা॥ ৪

ভাষ্য । সর্কযোনিখিতি। দেবপিত্মমুখ্যপশুম্গাদিসর্কযোনিষ্ কৌন্তের মুর্জন্ন: দেহসংস্থানলকণা: মুর্জিভাঙ্গাববো মূর্জন্ন: সম্ভবস্তি যান্তাসাং মূর্জীনাং ব্রহ্ম মহৎ স্কাবস্থং যোনি: কারণম্ অহমীশো বীজপ্রদ: গর্ভাধানশু কর্তা পিতা ॥ ৪

আনন্দগিরিটীকা। নম্ম কণমুক্তকারণামুরোধেন হিরণ্যগর্ভোত্তবমভ্যপেত্য ভূতানামুৎপত্তিক্ষচ্যতে দেবাদিলাতিবিশেষের দেহবিশেষাণাৎ কারণাস্তরসম্ভবাৎ ভত্তাহ—সর্ব্বযোনিস্থিতি। তত্ত্র তেওম্বরপ্রতিভাগে কুডোহশু হেতৃত্বমিত্যা-শক্ষ্য তত্ত্রজপেণাগ্যৈবাবস্থানাদিত্যাহ—সর্ববাবস্থামিতি॥ ৪

আনুবাদ। দকল বোনিতে অর্থাৎ দেব পিতৃ-মন্থয্য-পশু ও মৃগাদি বোনিতে, হে কৌস্কেন, যে দকল মূর্ত্তি [বাহার অবয়ব সকল অভিব্যক্ত ও _ কার্য্যক্ষম, এই প্রকার দেহই এন্থলে মূর্ত্তি শব্দের অর্থ] উৎপন্ন হয়, সেই সকল মূর্ত্তিরই সকল প্রকার উপাধিবিশিষ্ঠ মহৎ এই নামে প্রাসিদ্ধ ব্রহ্মই বোনি অর্থাৎ কারণ এবং আমি তাহাদের "বীজ্ঞান পিতা"—গভাধানের কর্ত্তা পিতা॥ ৪

> দত্তং রজস্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসম্ভবাঃ। নিবপ্পন্তি মহাবাহো দেহে দেহিনমব্যয়ম্॥ ৫

• অন্ত্র্য়। প্রকৃতিসম্ভবা: দৰং রজ: তম: ইতি গুণা: তে মহাবাহো। দেহিনম্ অব্যরং দেহে নিবগ্ধন্তি॥ ৫ আনুবাদ। প্রকৃতি হইতে সস্তৃত সন্ধ রক্ষা ও তমা এই তিনটি ওণই, হে মহাবাহো, অবিনাশী দেহীকে দেহে নিবদ্ধ করিয়া থাকে॥ ৫

ভাষ্য। কে গুণা: ? কথং বগন্তি ?—ইত্যুচ্যতে সন্তং রজন্তম ইত্যেবংনামানো গুণা ইতি পারিভাষিকশন্তঃ ন রূপাদিবদ্দ্রব্যাশ্রিভাঃ। ন চ গুণগুণিনোরগ্রমত্র বিবক্ষিতম্। তত্মাৎ গুণা ইব নিত্যপরতন্ত্রাঃ ক্ষেত্রজ্ঞং প্রতি
অবিভাত্মকত্বাং ক্ষেত্রজ্ঞং নিবগ্ধন্তীব তমাস্পদীক্ষত্য আত্মানং প্রতিবৃত্তন্তে ইতি
নিবগ্ধন্তি ইত্যুচ্যতে। তে চ প্রকৃতিসম্ভবা ভগবন্মায়াসম্ভবাঃ নিবগ্ধন্তীর হে
মহাবাহো মহান্তৌ সমর্থতরৌ আজামুপ্রশক্ষেবা বাহু যক্ত স মহাবাহঃ হে মহাবাহো
দেহে শরীরে দেহিনং দেহবন্তম্ অব্যয়ম্ অব্যয়ম্ ত্রাক্ষণ চোক্তম্ অনাদিত্যাদিপ্রোক্তে। নম্ব দেহা ন লিপ্যতে ইত্যুক্তং ৬ৎ কথমিহ নিবগ্ধন্তীতি অক্তবোচ্যতে, ব্রিক্রত্মশ্যাভিরিবশন্তেন নিবগ্ধন্তীবেতি॥ ৫

আনন্দ গিরিটীকা ৷ এবং কেত্রকেত্রজ্ঞসংযোগাজ্ঞগহুৎপত্তিং দর্শরতা ব্রক্ষৈবাবিভাষা সংসরতীত্যুক্তম্ ইদানীমধ্যায়াদৌ উক্তমাকাজ্জাদ্বয়ং অনস্তরশ্লোকেনোত্তরমাহ—কে গুণা ইতি। সন্তাদির কথং গুণশস্ত্ প্রবিত্তিরত্যাশক্য পরতন্ত্রখাদিত্যাহ—গুণা ইতি। রপাদিখিব গুণশব্দ: স্থাদিযু দ্রবাশ্রিতত্বং নিমিত্তীক্বত্য কিং ন স্থাদিত্যাশঙ্কা প্রক্রতাাছকানাং ভেষাং দর্কাশ্রয়ত্বালৈবমিত্যাহ—ন রূপাদিবদিতি। গুণানাং পৃথ ওক্তেরক্ততে কুতত্তেষাং প্রকৃত্যাত্মগমিত্যাশঙ্কাহ—ন চ গুণেতি। অত্যন্ত ভেদে গৰাৰ্থৰ তন্তাবাসম্ভবাদিতাৰ্থ:। ভেদাভেদে চ তন্তাবাসম্ভবাদ্বিশেষাং কৃতন্তের্ গুণপরিভাষেত্যাশক্যাহ—তম্মাদিতি। কেত্রজং প্রতি নিত্যপারতন্ত্রে হেতুমাহ—অবিদ্যেতি। কে গুণা ইত্যস্তোত্তরমুক্তং কথং বন্ধস্তীত্যস্তোত্তরমাহ— তদেবোপপাদয়তি—তমাস্পদীক্কত্যেতি। প্রাক্ষভানাং ক্ষেত্ৰজ্ঞমিতি। গুণানাং প্রক্লত্যাত্মকত্মাহ—তে চেতি। সম্ভবত্যস্মাদিতি সম্ভবঃ প্রক্লতিঃ সম্ভবো বেষাং তে তথেতি। সাংখ্যীরাম্প্রকৃতিং প্রধানাখ্যাং ব্যাবর্ত্তরতি— ইবকারামুবন্ধেন নিতরাং বগ্নস্তি স্ববিকারবন্তরোপদর্শরন্তীতি ভগবদিতি। ক্রিরাপদং ব্যাধ্যায় মহাবাহশব্দং ব্যাচষ্টে—মহাস্তাবিতি। দেহবস্তং দেহমাত্মানং মক্তমানং দেহস্বামিনমিত্যর্থঃ। কৃটস্থক্ত কথং বধ্যমানদ্বমিত্যাশঙ্ক্য কুর্য্যান্দ্রেরাবণু-ধিন্নমিতিক্তারেন মান্নামাহাত্ম্যমিদমিত্যাহ—অব্যয়ুমিতি। বা ব্যব্তবাহিত্যমিত্যপেকারামাহ—অব্যয়ত্বপ্লেতি। নিপাতে ন স পাপেন ইত্যনেন বিৰুদ্ধমিশং নিবধন্তীতি বচনমিতি শঙ্কতে—নিশ্বতি। ইবকারানু

বন্ধেন ক্রিরাপদং ব্যাচক্ষাণৈরস্মাভিরস্থ চোম্বস্থ পরিহতভারেবমিত্যাহ – পরিহতমিতি॥ ^৫

অকুবাদ। খণ কাহাকে বলে ? এবং কিরুপেই বা তাহারা বন্ধন করিব। शांक ? जाशरे वना इरें एक इर [अरे श्लीक त] अन भन [नावश्रक रहें शांक, উহা] পারিভাবিক। রূপ রুস প্রভৃতি দ্রব্যাশ্রিত ধর্মগুলি সাধারণতঃ লোকে গুণ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে; এখানে সেই সকল গুণ গৃহীত হইতেছে না; কিছ এই গুণ শব্দের দারা এখানে সম্ব রক্ষ: এবং তম: এই তিনটি পদার্থকে ৰুঝান হইতেছে। [অধৈতবাদিগণের মতে] দ্রব্য এবং তদাশ্রিত গুণ পরস্পর ভিন্ন এইরূপ বিবৃক্তি হয় না। এই তিনটি পদার্থকে গুণ বলিরা নির্দেশ করা হইয়াছে কেন ? িইহার উত্তর এই যে] কারণ—গুণ যেমন পরতন্ত্র অর্থাৎ আশ্রয়দ্রব্যের অধীন, এই সন্ধ রক্তঃ ও তমঃ নামে প্রসিদ্ধ বস্তু তিনটিও সর্বাদা সেই ক্ষেত্রজ্ঞ আত্মার অধীন। কারণ, সেই ক্ষেত্রজ্ঞাশ্রিত অবিদ্যা ছইতেই এই গুণত্রয় উৎপন্ন। এই কারণে এই তিনটি পদার্থও গুণ শব্দের দারা নির্দিষ্ট হইরা থাকে। এই গুণত্রমণ্ড অবিভাত্মক; এইজন্ত ইহারাণ্ড সেই ক্ষেত্রজ্ঞ আত্মাকে বন্ধন করিয়া থাকে অর্থাৎ ইহারা বাস্তবিক আত্মাকে বন্ধন না করিলেও বেন বন্ধন করিয়া থাকে, এই প্রকার বোধ হইয়া থাকে। হে মহাবাহো— (বাহার বাহ্রর মহৎ অর্থাৎ আজামুলম্বিত এবং বীরোচিত কার্য্য করিতে সমর্থ-তর, তাহাকে মহাবাছ বলা যায়; মহাবাহু এই শব্দের সম্বোধনে মহাবাহো এই भन्ति निष्मन बहेशाएक) त्नरह व्यर्थाए नतीरत ; [काहारक वीधिया शास्क १] "तमही" দেহবান ক্ষেত্রজ্ঞাকে। এই দেহী অব্যয়; আত্মার অব্যয়ত্ব "অনাদিত্বাৎ" ইত্যাদি শ্লোকে [বিশদভাবে] প্রতিপাদিত হইয়াছে। একণে শকা হইতে পারে যে, আত্ম किছুতেই निश्च हन ना, देश उ शूर्त्स तना हरेग्नारह; उत्त এখানে आवात कि श्रकात वना इंहेरजरह रा, जेक खनजर जाचारक वन्नन कतिया शास्क १ এह প্রকার শঙ্কার বাথা উত্তর, তাহা পূর্নেই দেওয়া হইরাছে; কারণ-পূর্নে বলা इदेशां ह त्य, रेयन वसन करत्र व्यर्था९ এই क्लांटिक रव "निवधित्र" এই পদটি व्याह्म, তাহার সহিত 'ইব' শন্ধটির যোগ করিয়া ব্যাখ্যা করিতে হইবে॥ ৫

> তত্র সত্ত্বং নির্ম্মলত্বাৎ প্রকাশকমনাময়ম্। স্থসঙ্গেন বগ্নাতি জ্ঞানসঙ্গেন চান্য॥ ৬

অনুয়। হে অনব! তত্ত্ব (তেবু গুণেবু) নির্মালমাৎ অনামরং (নিরাপত্তবং) প্রাকাশকং সবং স্থাসলেন জ্ঞানসলেন চ বগাতি॥ ৬

আমুবাদ । হে মপাপ ! সেই ত্রিবিধ গুণের মধ্যে সন্থ নামে প্রাসিদ্ধ বে শুণ, তাহা নির্মান-স্থভাব ; এইজ্জ উপদ্রবরহিত এবং প্রকাশক ; সেই সন্ধ [ক্ষেত্রজকে] সুখসঙ্গ এবং জ্ঞানসঙ্গ ধারা বন্ধন করিয়া থাকে॥ ৬

ভাষ্য। তত্ত্ব সন্ধ্যিতি। তত্ত্ব সন্ধাদীনাং সন্ধান্তব তাবয়কণমূচাতে নির্মান্তবাং ক্ষতিক্ষণিরিব প্রকাশক্ষনাময়ং নির্মান্তবাং সন্ধং তথা নিবশ্বাতি। কথং ? সুখসঙ্গেন 'সুখী অহম্' ইতি বিষয়ভূতত্ত্ব সুখত্ত বিষয়িণ আত্মনি সংশ্লেষাণালনং মূবৈব স্থাখে সঞ্জনম্ ইতি। সৈবা অবিভা। ন হি বিষয়ধর্মো। বিষয়িশো ভবতি। ইচ্ছাদিগুত্যন্তং কেত্রতৈত্ব বিষয়ত্ত ধর্ম ইত্যুক্তং ভগবতা। অভাহ-বিভারের ক্ষরীয়ধর্মাভূত্যা বিষয়বিষ্যাবিবেক্লক্ষায় অস্বায়ভূতে স্থাধ সঞ্জয়তীব সঞ্জমিব করোতি অস্থানং স্থানমিব। তথা জ্ঞানসঙ্গেন চ। জ্ঞানমিতি স্থানাহচর্য্যাৎ ক্ষেত্রজ্ঞতৈত্বাস্তঃক্রণস্য ধর্ম্ম: নাত্মনঃ। আত্মধর্মত্বে সঙ্গান্ধপত্তেঃ বন্ধান্থপত্তেশ্বন স্থাইব জ্ঞানাদৌ সঙ্গো মন্তব্যঃ হে অনম্ব অব্যানন। ভ

আনন্দগিরিটীকা। কিংলকণো ওণ: কেন বগাতীত্যপেকায়ামাহ— তত্ত্তেতি। নির্দারণার্থতয়া সপ্তমীং বাচষ্টে—তত্ত্ত সন্তাদীনামিতি। পুন-ন্তবেত্যমূবাদমাত্রং নির্মালন্ত্রং বচ্ছত্বমাবরণবারণক্ষমন্ত্র: তন্ত্রাৎ প্রকাশকং চৈত্ত্রা-ভিব্যঞ্জকং, নিক্ষপদ্ৰবমিতি নিৰ্ম্মলং সং স্থান্তাভিব্যঞ্জকমিতাৰ্থঃ। কেন দ্বারেণ ভদাস্থানং নিবগ্নতীতি পৃচ্ছতি—কথমিতি। স্বধ্যক্ষেন বগ্নাতীত্যুস্করং ভদেব বির্ণোতি—সুখী অহমিত্যাদিনা। স্থাস্থভাভিব্যঞ্কসম্বশরিণামোহত বিষয়সংভূতং স্থম্চ্যতে। সংশ্লেষাপাদনমেব বিশদরতি—মুবৈতি। किमिणि मृत्येत्वि वित्मयनः मन्न वस्त्वप्रस्वामिण्डामन्ह्याह—देन्त्यि । নমু ইচ্ছা সঙ্গোহভিনিবেশশ্চেতি একোহর্থ: তত্তেক্ছাদেরাত্মধর্মধাৎ কিম-বিশ্বদেত্যাশক্ষ্য মনোধর্মতা দিচ্ছাদেন বিশ্বধর্মতেত্যাহ-নহীতি । ইচ্ছাদেরনাত্ম-ेधर्मा । কং প্রমাণমিত্যাশক্ষাহ—ইচ্ছাদি চেতি। ত গ্রাশ্বধর্মধাসম্ভবে ফলিতমাহ—অত ইতি। সঞ্জ্মতীব সন্ধুমিতি শেব:। ইবকারপ্রয়োগে হেতুমাহ — অবিদ্যায়েতি। ততা বস্ততো নাম্মনম্বরণাপি সম্বন্ধান্তরাভাবাদস্বাতস্ত্রাচ আত্মধর্মস্বমাপাত দৃষ্টত্বমাচষ্টে—স্বকীয়েতি। বৃত্তিমদস্তঃকরণত বিষয়ভাদাস্থনঃ সাধকদ্বেন তণ্বিষয়দেহণি তদবিবেকরপাবিছেতি তৎস্বরূপমাহ—বিষয়েতি। যথোক্তাবিভামাহাত্মামিদং যদস্থরূপে অভদ্ধর্মে চ সক্তিসম্পাদনমিত্যাহ— —অস্বেতি। তদেৰ স্ট্রতি—সক্তমিবেতি। প্রকারীস্বরেণ সম্বত নিবদ্ধ মাহ—ত্ত্রপৈতি। জারতেহনেনেতি সম্বপরিণামো জ্ঞানং জেন জান্তহমিতি বিপরীতাভিমানেন সৰ্মান্থানং নিবশ্বাতীত্যাহ—জ্ঞানমিত্যাদিনা। বিপক্ষে দোৰমাহ—আত্মিতি। স্বাভাবিকছেন প্রাপ্তথাৎ তত্ত্ব স্বতঃসংযোগাৎ তদ্দারা বদ্ধে চ তরিবৃত্তামূপণত্তেন ন্মধর্মধনিত্যর্থঃ। জ্ঞানেমর্থ্যাদাবপি ক্ষেত্রধর্মে সঙ্গন্ত পূর্ববদাবিভকত্তং স্বচয়তি—স্তথ্ ইবৈতি। পাপাদিদোষহীনভৈবাত্ত শালেহ-ধিকার ইতি ভোত্রতি—অনুষ্থিতি॥ ৬

অমুবাদ। তত্র সন্থমিত্যাদি স্লোকের অর্থ-সন্থাদি তিনটি গুণের মধ্যে প্রথমে সন্ত্রপ্রবর্ত্ত লক্ষণ বলা হইতেছে। নির্মাণত প্রযুক্ত সত্ত্রণ ক্ষতিকমণি-সদৃশ। এই সম্বন্তুণ প্রকাশক এবং অনাময় অর্থাৎ উপদ্রবশূন্ত : সেই এই সম্বন্ত [কেন্ত্রেজ আত্মাকে] বন্ধন করিয়া থাকে। কি প্রকারে ? সূথ সঙ্গ দারা—আনি स्थी এই প্রকার জ্ঞান, যাহা সকল জীবেরই হইয়া গাকে— সেই জ্ঞানের বিষয় স্থুখ এবং বিষয়ী আত্মা। কিন্তু এইপ্রকার প্রতিভাগ হয়, যেন বিষয় স্থুখ বিষয়ী আত্মার সহিত সংযুক্ত। এইপ্রকার সংযোগ করিয়া দেওয়াই আত্মার স্থুপ সঙ্গ, আর এই সুখ-সঙ্গুই ত অবিজা। কারণ বাহা বিষয় অর্থাৎ জড়ের ধর্ম, তাহা বিষয়ী অর্থাৎ আত্মার ধর্ম কিছুতেই ২ইতে পারে না। ভগবান নিজেই বলিরাছেন বে, ইচ্ছা প্রভৃতি ধৃতি পর্যান্ত সকল গুণই বিষয়ের অর্থাৎ জড়ের ধর্ম। এই কারণেই [বলিতে হয় যে] বিষয় ও বিষয়ীর পরস্পর অবিবেকরণে অবিদ্যা দারা এই সর্গুণ আত্মা হইতে সম্পূর্ণ পুথক্ বিষয়স্থথে আত্মাকে যেন আসক্ত করিয়া থাকে। অর্থাৎ বিষয়স্থথ আত্মার ধর্ম নহে, তপাপি যেন আত্মাকে স্থপী বলিয়া বোধ করাইয়া থাকে। এইপ্রকার জ্ঞানসঙ্গের দ্বারাও এই সন্ত্রপ আত্মাকে বন্ধন করিয়া থাকে। এই যে জ্ঞান, ইহা বৃত্তিরূপ অন্তঃ-করণধর্ম : কারণ, স্থথের সহিত ইহার একত্র উল্লেখ হইয়াছে। ইহা যদি আত্মার ধর্ম যে জ্ঞান, তাহা হইত, তাহা হইলে সঙ্গ এবং বন্ধন এই তুইটি শব্দের প্রয়োগ অফুপপর হইত। হে "অন্দ" বাসনরহিত, সংখের স্থায় জ্ঞান প্রভৃতি বস্তুতে আত্মার সঙ্গ এইরূপই বিবেচনা করিও॥ ৬

> রজো রাগাত্মকং বিদ্ধি তৃষ্ণাসঙ্গসমূদ্ভবম্। তন্মিবগ্নাতি কোন্তেয় কর্ম্মসঙ্গেন দেহিনম্॥৭

•**অনুযু**। হে কৌন্তের ! রাগাত্মকং র**জঃ** তৃকাসলসমূত্তবং বিদ্ধি। তৎ কর্মসন্তেন দেহিনং নিবগ্নাতি॥ ৭ অমুবাদ। হে কুঞ্চীনন্দন, রাগই রজোগুণ, এই রজোগুণ হইতে ভৃষ্ণা ও সঙ্গ উৎপন্ন হয় এবং ইছা কর্ম্মদঙ্গের ছার। দেহীকে বন্ধন করে ॥ ৭

ভাষ্য। রজো রাগাত্মকমিতি। রজো রাগাত্মকং রঞ্জনাং রাগঃ
গৈরিকাদিবং রাগাত্মকং বিদ্ধি জানীহি; তৃষ্ণানঙ্গসমূদ্ভবং তৃষ্ণা অপ্রাপ্তাভিদায়ঃ,
আসকঃ প্রাপ্তে বিষয়ে মনসঃ প্রীতিলক্ষণঃ সংশ্লেষঃ, তৃষ্ণানক্ষয়েঃ সমূদ্ভবং তৃষ্ণানক্ষয়ত্তবং তরিবগ্লাতি তং রজঃ কৌন্তের কর্মানকেন দৃষ্টাদৃষ্টার্থের কর্মানকং
তৎপরতা কর্মানকত্তেন নিবগ্লাতি রজঃ দেহিনম্॥ ৭

আনন্দগিরিটীকা। রজন্ত কিংলকণং কথং বা পুরুষং নিবশ্বাতীত্যাশঙ্কাহ—রক্ত ইতি। রজ্যতে সংস্কল্পতে অনেন পুরুষো দৃষ্টেরিতি রাগ্য, অসৌ
আত্মা অস্তেতি রাগাত্মকং রজো জানীধীত্যাহ—রপ্তনাদিতি। সমুন্তবত্যাদিতি
সমুন্তবঃ তৃষ্ণা চাদকণ্ট তৃষ্ণাদকৌ তয়োঃ সমুন্তবঃ তমিতি বিগ্রহং গৃহীদ্বা কার্যাদ্বারা
রজো বিবক্ষুস্থাদক্ষের্যার্থভেদমাহ—তৃষ্ণেত্যাদিনা। রজ্গো লকণমুকা
নিবন্ধ্পপ্রকারমাহ—তদ্রেজ ইতি। কর্ম্মকং বিভজ্তে—দৃষ্টেতি। অকর্তারমেব পুরুষং করোমি ইত্যভিনানেন প্রবর্ত্যতীত্যর্থঃ॥ ৭

অনুবাদ। রজো রাগাত্মকম্ ইত্যাদি লোকের অর্থ—রজোঙণ রাগাত্মক অর্থাৎ দেমন গৈরিক প্রভৃতি দ্রব্য বাহাতে সংলগ্ন হয়, তাহাকেই রঙাইয়া, পাকে, দেইরপ এই রজোগুণও পুরুষকে রঙাইয়া থাকে। এইজয়্ম রাগই (রঙানই) ইহার স্বভাব। এই রজোগুণ হইতে তৃষ্ণা ও আসক এই হুইটি উৎপন্ন হয়। বাহা নাই, দেই বস্তুটিকে পাইবার জয়্ম যে অভিলাব, তাহাই তৃষ্ণা; যাহা আছে, দেই বস্তুতে মনের প্রীতিরূপ যে সংশ্লেষ, তাহাই আসক; হে কুষ্মীনন্দন, রজোগুণই এই তৃষ্ণা ও আসকরপ হুইটি গুণের কারণ। এই রজোগুণই কর্ম্মসঙ্গের খারা দেহীকে বন্ধন করিয়া থাকে। দৃষ্টার্থ হিহলোকে যাহার ফল পাওয়া যায় ব্রুষ্পাননই কর্ম্মসঙ্গ। এইপ্রকার কর্মতৎপরতারূপ কর্ম্মসঙ্গের খারা রজোগুণ দেহীকে বন্ধ করিয়া থাকে॥ ৭

ত্রমস্বজ্ঞানজং বিদ্ধি মোহনং দর্ব্বদেহিনাম্। প্রমাদালস্থনিদ্রাভিন্তন্মিবগ্গাতি ভারত ॥৮

অন্বয়। হে ভারত! তম: তু জজানজং সর্বদেহিনাং মোহনং বিদি। তং প্রমাদালস্থনিদ্রাভিঃ নিবগ্নাতি॥৮

অনুবাদ। হে ভারত! তমোগুণ অজ্ঞান হইতে ইংপন্ন হয় এবং ইছা সক্ষণ প্রাণীরই মোহকর, ইহা জানিবে। এই তমোগুণ, প্রমাদ আলক্ত এবং ক্সিন্তা হারা [দেহীকে] বন্ধন করিয়া থাকে ॥৮

ভাষ্য। তমন্থিতি। তম: তৃতীয়ো গুণ: অজ্ঞানজম্ অজ্ঞানাৎ জ।তম্
অজ্ঞানজং বিদ্ধি নোহনং মোহকরম্ অবিবেককরং সর্বদেহিনাং সর্বেষাং দেহবতাং প্রমাদালগুনিদ্রাভি: প্রমাদশ্চ আলম্ভঞ্জ নিদ্রা চ প্রমাদালগুনিদ্রা: তাভিত্তৎ তম:
নিবগ্লাতি ভারত ॥৮

আনন্দগিরিটীকা। তমন্তর্হি কিংলমণং কথং বা পুরুষং নিবগ্রাতি ভতাহ—তমন্ত্রিতি। গুণানাং প্রকৃতিসম্ভবদাবিশেষেপি তমসোহজ্ঞানজন্ধ-বিশেষণং তদ্বিপরীতম্বভাবানাপত্তেরিতি মঘাহ—অজ্ঞানাদিতি। মুক্তি জনেন ইতি মোহনং বিবেকপ্রতিবন্ধকমিতি। কার্য্যদারা তমো নির্দিশতি—মোহনমিত্যাদিনা। লফণমুক্তা তমসো বন্ধনকরত্বং দর্শগ্রতি—প্রমাদেতি। কার্য্যান্তর্যাদিনা। লফণমুক্তা তমসো বন্ধনকরত্বং দর্শগ্রতি—প্রমাদেতি। কার্য্যান্তর্যা চিকীর্ষিতক্ত কর্ত্ব্যক্ত অকরণং প্রমাদঃ, নিরীহত্ত্যা উৎসাহপ্রতিবন্ধস্ব আলক্ষং, স্বাপো নিদ্রা তাভিঃ আন্মানমবিকারমেব তমোহপি বিকারর হীত্যর্থঃ ॥৮

ভাকুবাদ। তমস্ত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ—তম: তৃতীয় গুণ—ইহা "অজ্ঞানজ" অজ্ঞান হইতে উৎপন্ন হর, ইহা জানিও; এই তমোগুণ "মোহন" মোহকর অবিবেকের হেতৃ। সকল দেহারই অর্থাৎ সকল প্রকার দেহাভিমানী জীবের [ইহা মোহকর]। হে ভারত! সেই তমোগুণ প্রমাদ আলস্ত এবং নিদ্রা হারা [দেহাকৈ] বন্ধন করিয়া থাকে ॥৮

> সত্ত্বং স্থাপে সঞ্জয়তি রক্ষঃ কর্মাণ ভারত। জ্ঞানমার্ত্য তু তমঃ প্রমাদে সঞ্জয়ত্যুত॥৯

অনুষুমু। হে ভারত! সৰং স্থংধ সঞ্জয়তি, রজঃ কর্মণি সঞ্জয়তি, তমঃ তু ক্লানমার্ত্য প্রমাদে সঞ্জয়তি উত॥১

আমুবাদ। সৰ্থণ স্থে আসক্ত করিয়া থাকে; রজোগুণ কর্মে সংশ্লিষ্ট করে এবং তমোগুণ—হে ভারত। জ্ঞানকে আর্ত করিয়া প্রমাদের হেতৃ হইয়া থাকে॥১

ভাষ্য। পুনর্কাণানাং ব্যাপারঃ সংক্ষেপত উচ্যতে—সবং হংখে সঞ্জবিত সংশ্লেষত, রঞ্জা কর্মণি হে ভারত, সঞ্জবতীতি বর্ততে। জ্ঞানং সম্বর্তীত

বিবেকমারত্য আচ্চান্ত তু তমঃ ধেন আবরণাত্মনা প্রমাদে সঞ্জয়তি উত্ত প্রমাদো নাম প্রাপ্তকর্ত্তব্যাকরণম্ ॥৯

আনন্দগিরিটীকা। উক্তানাং নধ্যে কম্মিন্ কার্য্যে কম্ম গুণক্তোং-কর্মগুত্রাহ—পুনরিতি। স্থান্ধ সাধ্যে বিষয়ে সম্ৎক্ষয়তে সন্থামিত্যাহ—সন্ত্রমিতি। কর্মণি সাধ্যে রক্ষঃ সম্ৎক্ষয়তে ইত্যাহ—রক্ষ ইতি। প্রসাদে প্রাধান্তং তমসো দর্শরতি—
ভ্যানমিতি॥>

অনুবাদ। পুনর্কার গুণত্রের কার্য্য সংক্ষেপতঃ বলা হইতেছে—সক্তাণ [জীবকে] স্থাথে সংশ্লিষ্ট করিয়া থাকে—হে ভারত ! রজোগুণ কর্মে [সংশ্লিষ্ট করিয়া থাকে, ইহা পূর্ব্য বাক্য হইতেই অনুবৃত্ত হইতেছে।] "জ্ঞান" মর্থাৎ সত্ত্যপক্ষত বিবেক, সেই বিবেককে আবৃত করিয়া—অর্থাৎ আচ্ছাদন করিয়া—তামোগুণ জীবকে প্রমাদে সংশ্লিষ্ট করিয়া থাকে। প্রমাদ শক্ষের অর্থ বর্থাসময়ে কর্ত্তব্যক্ষের অক্রণ ॥১

রজন্তমশ্চাভিভূয় সত্ত্বং ভবতি ভারত। রজঃ সত্ত্বং তমশ্চৈব তমঃ সত্ত্বং রজন্তথা॥১০

আনুয়া হে ভারত ! সহং, রজঃ তমশ্চ অভিভূয় ভবতি, রজঃ, সন্ধং তমঃ চ [অভিভূয় ভবতি] তথা তমঃ, সবং রজশ্চ [অভিভূয় ভবতি] ॥১•

অনুবাদ। হে ভারত! সহপ্তণ, রজঃ এবং তমোগুণকে অভিডব করিয়া প্রবৃত্ত হয়। রজোগুণ সত্ব এবং তমোগুণকে অভিভব করিয়া থাকে এবং তমোগুণও সত্ব এবং রজোগুণকে অভিভব করিয়া থাকে॥১•

ভাষ্য। উক্তং কার্য্যৎ কদা কুর্বস্তি গুণা ইত্যুচ্যতে—রক্ষঃ তমশ্চ উভাবপি অভিভূর সবং ভবতি উদ্ভবতি বর্দ্ধতে বদা তদা লকাত্মকং সবং স্বকার্য্যৎ জ্ঞানস্থাদি আরভতে হে ভারত। তথা রজোগুণা: সবং তমশ্চৈব উভাবপি অভিভূর বর্দ্ধতে যদা তদা কর্ম্মতৃষ্ণাদি স্বকার্য্যমারভতে। তম-আব্যোগুণা: সবং রক্ষণ্ট উভাবপি অভিভূর তথৈব বর্দ্ধতে যদা তদা জ্ঞানাবরণাদি স্বকার্য্য আরভতে।

ভবার্য্য আরভতে।

ভবার্য্য আরভতে।

ভবার্য্য ক্ষার্য্য আরভতে।

ভবার্য্য ক্ষার্য্য আরভতে।

ভবার্য্য ক্ষার্য্য আরভতে।

আনন্দ গিরিটীকা। ইতরেতরাবিরোধেন বা সন্তাদয়ো গুণা যুগপত্ন-ক্ষয়স্তে বিরোধেন বা ক্রমেণ বেতি সন্দেহাৎ পুচ্ছতি—উক্তমিতি। সম্বোধ- কর্বার্থিনামিতরাভিভবার্থং ক্রমপক্ষমাশ্রিত্যোত্তরমাহ—উচ্যত ইতি। সর্বাভিব্রদিনের বিরুণোতি—তদেতি। রজ্ঞমদোল্ডিরোধানদশায়ামিতি যাবং। রজ্ঞদো বৃদ্ধিপ্রকারং তৎকার্যাঞ্চ কথয়তি—তথেতি। তমদোহপি বিবৃদ্ধিং তৎকার্যাঞ্চ নির্দিশতি—তম ইতি॥>•

অমুবাদ। ওণত্তর কোন্ সময় যথোক কার্য্য করিয়া থাকে, তাহাই বলা হইতেছে। বে সময় রজোগুণ ও তমোগুণকে অভিভূত করিয়া সবগুণ উত্ত হয় অর্থাং বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়, সেই সময়ই সবগুণ—জ্ঞান ও স্থথ প্রভৃতি নিজ কার্য্যের উৎপাদন করে। সবগুণ এবং তমোগুণকে অভিভূত করিয়া বে সময় রজোগুণ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়, সেই সময়, উহা—কর্ম তৃফা প্রভৃতি নিজ কার্য্য করিয়া থাকে। এইরূপ সবগুণ এবং রজোগুণকে অভিভূত করিয়া যথন তমোগুণ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, সেই সময় উহা অর্থাং তমোগুণ জ্ঞানের আবরণাদিরূপ নিজ কার্য্য করিয়া থাকে॥১•

> সর্ববারেষু দেহেহস্মিন্ প্রকাশ উপজায়তে। জ্ঞানং যদা তদা বিভাদ্বিরুদ্ধং সন্ত্রমিত্যুত॥১১

অনুয় । যদা অম্মিন্দেহে সর্কাধারেষু প্রকাশং জ্ঞানম্ উপজায়তে, তদা সন্তং বির্দ্ধন্ ইতি বিভাৎ উত ॥১১

অনুবাদ। যে সময় এই দেহে সকল ইন্দ্রিয়েই প্রকাশরূপ জ্ঞান উৎপন্ন হর, তথন জানিবে যে, সম্বশুণ রুদ্ধি লাভ করিয়াছে ॥১০

ভাষ্য। যদা যো গুণ উদ্বুতো ভবতি তদা তম্ভ কিং বিশ্বনিত্যচ্যতে—
সর্ব্যারেষ্ আত্মন উপলবিধারাণি শ্রোত্রাদীনি সর্বাণি করণানি তেযু সর্ব্বারেষ্
অন্তঃকরণ স্থায়ন ইবিঃ প্রকাশঃ দেহেংশিন্ উপজায়তে তদেব জ্ঞানম্। যদা
এবং প্রকাশঃ জ্ঞানাথ্য উপজায়তে, তদা জ্ঞানপ্রকাশেন বিদ্যাদ্ বিবৃদ্ধ
উদ্ভূতং সন্তম্ ইতি উতাপি ॥>>

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশোকত্তরতাকাজ্জাং দর্শরতি — যদেতি। সম্বোভবলিন্দর্শনার্থমনস্তরং স্নোকমুখাপরতি — উচ্যত ইতি। সর্ববারে বিত্যাদি সপ্তমী নিমিত্তে নেতব্যা, উত্তশব্দোহপিশন্দপর্য্যায়োহপ্যতিশরার্থঃ ॥১১

অনুবাদ। যে কালে যে গুণ র্দ্ধিপ্রাপ্ত হর, সে সময় তাহার কিরূপ চিহ্ন [দেখিতে পাওয়া যায়], তাহাই বলা হইতেছে—সকল ছারে অর্থাৎ আআর উপলন্ধির ধারস্থরপ ইন্সিয়সমৃহে ষে সময় "বৃদ্ধির" অস্তঃকরণের বৃত্তি—
জ্ঞানরপ প্রকাশ এই দেহে উৎপন্ন হয় —প্রকাশ ও জ্ঞান একই বস্ত —সেই সময়
সেই জ্ঞানপ্রকাশরূপ হেতুর ধারা বৃঝিতে হইবে যে, সন্বস্তুণ বৃদ্ধি পাইয়াছে অর্থাৎ
উদ্ভূত হইয়াছে। উত্ত এই শন্ধটির অর্থ অপি [অর্থাৎ ইহাই যে সম্বস্তুণরৃদ্ধির
চিহ্ন, তাহা নহে; ইহা ছাড়াও অন্ত চিহ্নের ধারা সন্বস্তুণের বৃদ্ধি বৃঝা ধাইতে
পারে। তাহা কি ? প্রসাদ, লাঘব প্রভৃতি] ॥১১

লোভঃ প্রবৃত্তিরারন্তঃ কর্ম্মণামশমঃ স্পৃহা। রন্ধস্থেতানি জায়ন্তে বিরুদ্ধে ভরতর্বভ॥১২

আনুরু। হে ভরতর্বভ ! রজসি বিরুদ্ধে লোভ:, প্রার্ডি:, কর্মাণাম্ আরম্ভ:, অশম:, স্পুহা [চ ইতি] এতানি জায়ন্তে ॥১২

অনুবাদ। হে ভরতশ্রেষ্ঠ, রজোগুণ র্দ্ধিলাভ করিলে লোভ, প্রবৃত্তি, কর্ম্মসমূহের আরম্ভ, অশান্তি এবং ম্পৃহা (ভোগেচ্ছা) এই সকল চিহ্ন উৎপন্ন হইয়া থাকে ॥১২

ভাষ্য। রজস উদ্ভুতস্ত ইদং চিহ্নম্—লোভ: পরদ্রব্যাদিৎসা, প্রবৃত্তিং প্রবর্ত্তনং সামান্তচেষ্টা, আরম্ভঃ, কন্ত ? কর্ম্মণাম্। অশম: অমুপশমঃ, হর্ষরাগাদিপ্রবৃত্তিঃ, স্পৃহা সর্ক্রামান্তবস্ত্রবিষয়া ভূষণা, রঙ্গসি গুণে বিবৃদ্ধে এতানি নিশানি জায়স্তে হে ভরতর্বভ ॥১২

আনন্দ গিরিটীক। অতিশরেনে ভুতশু রজসো লিক্সমাহ—রজ্ঞস ইতি। উপক্রমপর্য্যারশুর ওপ্ত বিষয়ং পৃচ্ছতি—কুস্থেতি। কাম্যানি নিষিকানি চ লৌকিকানি কর্মাণি বিষয়ত্বেন নির্দ্দিশতি—কর্ম্মণামিতি। অন্ত্রপশ্যো বাহান্ত:করণানামিতিশেব:। লোভাগ্যপলম্ভাৎ রজোর্কির্কোক্র্যা ইতি ভাব: ॥ ১ ›

অকুবাদ। রজোগুণ র্দ্ধিলাভ করিলে এই তাহার চিহ্ন—"লোভ" পরের জব্য লইবার ইচ্ছা। "প্রবৃত্তি" প্রবর্ত্তন (অর্থাৎ সর্বাদা কার্য্যে লাগিয়া থাকা) সামান্ত চেষ্টা। "আরম্ভ" কিসের ? কর্ম্মস্হের। "অশম" উপশমের অভাব [অর্থাৎ সদা অশান্তি]—হর্ষ ও অহ্বরাগ প্রভৃতির, প্রবৃত্তি, "ম্পৃহা" সকল বস্তু ভোগ করিবার জন্ত সাধারণতঃ যে ইচ্ছা হয়, রজোগুণ বৃদ্ধিলাভ করিলে এই সকল চিহ্ন উৎপন্ন হয়, হে ভরতবর্ষভ॥ ১২

অপ্রকাশোহপ্রবৃত্তিশ্চ প্রমাদো মোহ এব চ। তমস্তেতানি জায়ন্তে বিবৃদ্ধে কুরুনন্দন॥ ১৩

আনুষ্ম। অপ্রকাশ: (অবিবেক:) অপ্রবৃত্তি: প্রমাদ: মোহ: এব চ হে কুফনন্দন তমসি বিরুদ্ধে এতানি জায়ন্তে॥ ১৩

অনুবাদ। অপ্রকাশ অপ্রবৃত্তি প্রমাদ মোহ—হে কুরুনন্দন! তমোগুণ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইলে, এই সকল চিহ্ন প্রকাশ পাইয়া থাকে॥ ১৩

ভাষ্য। অপ্রকাশ ইতি। অপ্রকাশ: অবিবেক: অত্যস্তমপ্রবৃত্তিশ্চ প্রবৃত্ত্যভাব: তৎকার্য্যৎ প্রমাদো মোহ এব চ অবিবেকো মৃঢ্তা ইত্যর্থ:। তমসি শুণে বিরুদ্ধে এতানি শিঙ্গানি জায়ত্তে হে কুরুনন্দন॥ ১৩

আনন্দগিরিটীকা। উভ্তত্ত তমসো নিজমাহ— অপ্রকাশ ইতি। সর্ববৈধ জ্ঞানকর্দ্মণোরভাবো বিশেষণাভ্যামুক্তঃ। তৎকার্যামিতি তদ্ধ্যে দর্শিতাবিবেকার্থঃ। প্রমাদো ব্যাখ্যাতঃ। মোহো বেদিতব্যক্ত অন্তথাবেদনম্। তত্ত্বৈব মৌঢ়্যান্তরমাহ—অবিবেক ইতি। অবিবেকাতিশয়াদিনা প্রবৃদ্ধৎ তমো জ্ঞেয়-মিতিভাবঃ॥ ১৩

আফুবাদ। "অপ্রকাশ" অবিবেক, "অপ্রবৃত্তি" প্রবৃত্তির অতিশয় অভাব, তাহারই কার্য্য "প্রমাদ" এবং "মোহ" দদসদ্জ্ঞানের অভাব এবং মৃঢ়তা। তমো-শুণ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইলে, হে কুফানদন, এই সকল চিহ্ন উৎপন্ন হইয়া থাকে॥ ১৩

সদা সত্ত্বে প্রব্রদ্ধে তু প্রলয়ং যাতি দেহভূৎ।
তদোত্তমবিদাং লোকানমলান্ প্রতিপল্লতে॥ ১৪

অনুষুমু । সংস্থ প্রার্গ্ধে তু বদা দেহভূৎ প্রশন্ধ যাতি, তদা উত্তমবিদাম্ অমশান্ শোকান্ প্রতিপভ্যতে ॥ ১৪

অনুস্বাদ। সম্বন্ধণ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইলে যে সময় দেহী মৃত্যুলাভ করে, সে সময় সে ব্যক্তি উত্তম জ্ঞানীদিগের অমল লোকসমূহ প্রাপ্ত হইয়া থাকে॥ ১৪

ভাষ্য। মরণখারেণ।পি যৎফলং প্রাপ্যতে তদপি সঙ্গরাগহেতৃকং সর্বং গৌণমেবেতি দর্শরন্ধাহ—যদা সত্ত্বে প্রবৃদ্ধে উদ্ভূতে তু প্রলব্ধং মরণং বাতি প্রতি-পর্জতে দেহভূদাত্মা তদা উত্তমবিদাং মহদাদিতস্ববিদাম্ ইত্যেতং। লোকান্ ভাষান্ মান্বহিতান্ প্রতিপন্থতে প্রাপ্লোতি ইত্যেতং ॥ ১৪ আনন্দ গিরিটীকা। সাজিকাদীনাং ভাবানাং পারলৌকিকং ফলবিভাগম্ উদাহরতি—মরণেতি। সঙ্গ: সজীরাগঃ ভৃষ্ণা তদ্বলাম্ছানদারা লভ্যমান-মিত্যর্থ:। গৌণং সন্ধাদিগুণপ্রবৃক্তমিতি বাবং। তত্ত্ব সন্ধৃগুণবৃদ্ধিকৃতফলবিশেষ-মাহ—যদেতি। মলরহিতান্ রক্তমদোরপ্রতরভোত্তবো মলং তেন রহিতান্ আগমসিদান্ বন্ধলোকাদীনিত্যর্থ:॥১৪

অনুবাদ। মরণ ঘারাও [এই সকল গুণর্জির] যে ফল প্রাপ্ত হওয়া
যায়, তাহাও গৌণ কল; কারণ, ঐসকল কলের হেতু বিষয়ে অহরাগ ও
আসক্তি; এতৎ প্রতিপাদনার্থ নির্দেশ করিতেছেন যে, যথন—সবগুণ প্রবৃদ্ধ
হইলে "দেহভূং" আত্মা "প্রলয়" মরণ প্রাপ্ত হন, তথন তিনি "উর্ভুমবিদ্"
অর্থাৎ মহদাদিতত্ত্ববিদ্গণের "অমল" মলরহিত লোকসমূহ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন;
ইহাই তাৎপর্যা॥ ১৪

রজসি প্রলয়ং গত্বা কর্ম্মসঙ্গিয়ু জায়তে। তথা প্রলীনস্তমসি মূঢ়যোনিয়ু জায়তে॥ ১৫

অন্বয় i রঞ্জি [প্রবৃদ্ধে] প্রলয়ং গরা [দেহভূৎ] কর্ম্মাঙ্কিষু কায়তে। তথা তমসি প্রলীনঃ [দেহভূৎ] মৃঢ়যোনিষু জায়তে॥ ১৫

আনুবাদ। রজোগুণের রৃদ্ধিকালে মরণ প্রাপ্ত হইলে [জীব] কর্মো আদক্ত জীবগণের মধ্যে জন্ম লাভ করে। সেইরূপ তমোগুণে মৃত্যুলাভ করিলে [জীব] মৃদ্ধোনিগণের মধ্যে জন্ম লাভ করে॥১৫

ভাষ্য ৷ রজিদি গুণে বির্দ্ধে প্রলমং ময়ণং গতা প্রাণ্য কর্মানিকৃষ্ কর্মান সক্তিযুক্তেষ্ মন্থ্যেয় জায়তে ৷ তথা তন্বদেব প্রলীনো মৃতঃ তমি বির্দ্ধে মৃচ্যোনিষ্ পর্যাদিযোনিষ্ জায়তে ॥ ১৫

আনন্দিগিরিটাকা। রজঃসমুদ্রেকে মৃতত্ত ফলবিশেষং দর্শরতি—
রজসীতি। জায়তে শরীরং গৃহাতীত্যর্থঃ। যথা সত্ত্বে রজসি চ প্রার্থকে মৃতঃ
ব্রহ্মলোকাদিয়ু মন্ম্যলোকে চ জায়তে দেবাদিয়ু মন্ত্রেয়েরু চ জায়তে তথৈবেত্যাহ
—তদ্বন্দিতি॥ ১৫

অনুবাদ। রজোগুণ প্রবৃদ্ধ হইলে "প্রণয়" মরণ প্রাপ্ত [দেহী] "কর্মসিলগণের" মমুষ্যগণের মধ্যে জন্ম লাভ করে। "তথা", সেইরূপ তমোগুণের বৃদ্ধিকালে "প্রলীন" মৃত হইলে [দেহী] "মৃঢ্যোনি" পশুপ্রভির মধ্যে জন্ম লাভ করিয়া থাকে॥ ১৫ কর্মণঃ স্থকৃতস্থাত্থ সাধিকং নির্ম্মলং ফলম্। রজসম্ভ ফলং চুঃখমজানং তমসঃ ফলম্॥ ১৬

আন্ত্রয়। স্থকত সাধিক স্থা কর্মণঃ নির্মাণং সাধিকং ফলম্, রজসম্বর্জ হংখং ফলম্, তমসঃ অজ্ঞানং ফলং প্রাহঃ॥ ১৭

অমুবাদ। স্থকত (সান্তিক) কর্ম্মের সান্তিক ফল নির্মাণ, রঞ্জোগুণের ফল ছথে, তমোগুণের ফল অজ্ঞান, [ইহা শাস্ত্রকারগণ] বলিরা থাকেন॥ ১৬

ভাষ্য। অতীতশ্লোকার্থ সৈব সংক্ষেপ উচ্যতে—কর্মণঃ স্কৃতস্ত সান্ত্রিক ইত্যর্থ:। আহু: শিষ্টাঃ সান্ত্রিকমেব নির্মাণং ফলমিতি। রজসন্ত কলং হুঃধং রাজসন্ত কর্মণঃ ইত্যর্থ:। কর্মাধিকারাৎ ফলমিপ হুঃধমেব, কারণামু-রূপ্যাৎ রাজসমেব। তথা অজ্ঞানং তমসঃ তামসন্ত কর্মণোহধর্মন্ত পূর্ববিৎ ॥ ১৬

আনন্দ গিরিটীকা। ভাবানাং ফলমুকা সান্ধিকাদীনাং কর্মণাং ফলমাহ—
অতীতেতি। স্কৃতত শোভনত কৃতত পুণ্যতেত্যর্থ:। সান্ধিকতাভদিরহিততেতি বাবং, সান্ধিকং সন্ধেন নির্বৃত্তং নির্ম্মণং রক্তস্তমঃসমুদ্ধবানালারিক্রান্তব্।
রক্তঃশবত রাজনে কর্মণি কুতো রন্তিত্তরাহ—কর্মোতি। হঃখনেব হঃখবহলং
হঃখনেবেত্যর্থ:। কথমিখং ব্যাখ্যারতে তত্তাহ—কার্নেণ্তি। পাণমিশ্রত
পুণাত রক্তোনিমিত্ত কারণমাং তদমুরোধাৎ ফলমপি রক্তোনিমিত্তং বলোকং
যুক্তমিত্যর্থ:। অজ্ঞানমবিবেক প্রায়ং হঃখং তামসাধর্মকলমিত্যাহ—ত্তেথ্তি॥ ১৯

অসুবাদ। অতীত শ্লোকের অর্থই সংক্ষেপে [পুনর্বার] বলা ইইতেছে

—স্কৃত কর্ম্ম অর্থাৎ সাধিক কর্মা; শিষ্টগণ সাধিক কর্মের ফলকেও সাধিক এবং
নির্মানই বলিরা থাকেন। রজোগুণের অর্থাৎ রাজস কর্মের ফল ছঃখই ইইরা
থাকে। কর্মের প্রস্তাব চলিতেছে বলিরা রজঃ শব্দের অর্থ এন্থলে রাজসকর্ম।
কারণের অসুরূপই ফল ইইরা থাকে [এই কারণে ছঃখমর রাজসকর্মের ফলও
ছঃধর্মণ হর]; এইরূপ তমঃ অর্থাৎ তামস কর্মের ফল অজ্ঞান, তমঃ শব্দের অর্থও
এইত্বলে পূর্বের ক্লার তামস কর্ম্ম অর্থাৎ অধ্যাই গৃহীত ইইতেছে॥ ১৬

সন্ধাৎ সঞ্জায়তে জ্ঞানং রজসো লোভ এব চ্। প্রমাদমোহো তমসো ভবতোহজ্ঞানমেব চ॥ ১৭

আৰুরু । স্বাৎ জানং সঞ্জারতে, রন্ধসঃ গোডঃ [সঞ্জারতে] তমসঃ প্রমাদ-মোহৌ ভবতঃ, জঞ্জানং চ [ভবতি] এব ॥ > १ আনুবাদ। সৰ হইতে জ্ঞান উৎপন্ন হর, রন্ধ: হইতে লোভ উৎপন্ন হর, তমোগুণ হইতে প্রমাদ মোহ এবং জজ্ঞান উৎপন্ন হইরা থাকে॥ ১৭

ভাষ্য। কিঞ্চ গুণেভ্যো ভৰতি ?—সন্থাৎ লক্কাত্মকাৎ সঞ্চায়তে সমূৎ-পক্ষতে জ্ঞানং রঞ্জনো লোভ এব চ। প্রমাদমোহো চোভো ভ্রমসো ভৰতঃ অজ্ঞানমেব চ ভবতি ॥ ১৭

আনন্দগিরিটীকা। বিহিতপ্রতিবিদ্ধজ্ঞানকর্মাণি স্বাদীনাং লক্ষণানি সংক্ষিপ্য দর্শরতি—কিঞ্জেতি। জ্ঞানং সর্ককরণদারকৃষ্ অজ্ঞানং বিবেকা-ভাব: ॥ ১৭

আকুবাদ। গুণ এর হইতে কি হর ?—[তাহার উত্তর হইতেছে যে] সত্থ যে সময় আত্মলাভ করিয়া থাকে, তথন তাহা হইতে জ্ঞান [-রূপ কার্য্য] উৎপর হয়। রজোগুণ হইতে লোভ উৎপর হয়। প্রমাদ এবং মোহ এই ছইটি এবং অক্সান—এইগুলি তমোগুণ হইতে উৎপর হয়॥ ১৭

> উদ্ধিং গচ্ছস্তি সম্বস্থা মধ্যে তিন্ঠস্তি রাজদাঃ। জনস্তুণর্ভকা * অধাে গচ্ছস্তি নামদাঃ॥ ১৮

অন্বয় | সৰস্বা উৰ্দ্ধ (দেবলোকাদিয়ু) গচ্ছন্তি, রাজসা মধ্যে (মাজুবেৰু) তিঠন্তি, জ্বন্তপ্তণর্তক্তা: তামসা অধঃ গচ্ছন্তি ॥ ১৮

আমুবাদ। সৰ্পান্থিত ব্যক্তিগণ স্বৰ্গাদি উৰ্দ্ধলোকে গমন করে, রাজস ব্যক্তিগণ মধ্যলোকে অবস্থান করে, জবস্ত গুণের বৃত্তিতে যাহারা সর্বাদা ব্যাপৃত —সেই সকল তামস ব্যক্তিগণ অধোলোকে গমন করিয়া থাকে॥১৮

ভাষ্য। কিঞ্চ—উর্জং গছেন্তি, দেবলোকাদিয় উৎপছতে সন্তন্তঃ সন্তগুণবৃত্তহাঃ। মধ্যে তিঠনি মহবোর উৎপছতে রাজসাঃ। "জনস্পুণবৃত্তহাঃ"
কন্তন্তন্তন্তি প্রক্ষা মৃঢ়া অধঃ গছেন্তি প্রাদিষ্ উৎপছতে ভামসাঃ॥ ১৮

আনন্দ গিরিটীকা। শাবিকাদিজ্ঞানকর্মকলায়াকা অহস্তসংগ্রহার্থং শামান্তেনোপসংহরতি—কিঞ্চেতি। বক্ষামাণকল্যারাপি স্বাদিজ্ঞানমিত্যর্থঃ। সৰ্ধণশু বৃত্তং শোভনং জ্ঞানং কর্ম বা তত্ত্ব তিঠন্ত্রতি তথা। রাজসা রজ্যোধ্বণ-নিমিত্তে জ্ঞানে কর্মণি বা নিরভাঃ॥ ১৮

অমুবাদ। আরও [উক্ত হইতেছে] "সন্তম্ন" সন্বপ্তণের বাহা বৃত্ত
[অর্থাৎ পরিণাম] ভাষাতে বাহারা অবস্থিত [তাহারা] উর্দ্ধে গমন করে,
[অর্থাৎ] দেব প্রভৃতি লোকে উৎপন্ন হইরা থাকে। রাজসগণ মধ্যে অবস্থান
করে [অর্থাৎ] মমুব্যগণের মধ্যে জন্মলাভ করে। [বাহারা] "জন্মগুণবৃত্তম্ব,"
ক্ষম্ম যে গুণ অর্থাৎ তমোগুণ তাহার বৃত্ত [অর্থাৎ] নিদ্রা ও আলস্থ প্রভৃতি,
ভাষাতে স্থিত ব্যক্তিগণই জন্মগুণবৃত্তম্ব, [তাহারা] অধ্যোলোকে গমন করে।
-[অর্থাৎ] তামস ব্যক্তিগণ পশু প্রভৃতির মধ্যে জন্মলাভ করে॥ ১৮

নান্তং গুণেভ্যঃ কর্ত্তারং যদা দ্রফীন্মপশ্যতি। গুণেভ্যশ্চ পরং বেত্তি মদ্ভাবং সোহধিগচ্ছতি॥ ১৯

আস্থ্য়। যদা দেঠা গুণেভ্য: অন্তং কর্তার ন অনুপশুতি [তদা] গুণেভ্য: পরং [আত্মানং] বেত্তি [তদা] স: মদ্ভাবম্ অধিগঞ্তি ॥ ১৯

অনুবাদ। বে সমর গুণসমূহ হইতে পুণক্ কাহাকেও কঠা বলিয়া না দেখে এবং আত্মাকে গুণসমূহ হইতে বাতিরিক্ত বলিয়া বৃঝিয়া পাকে, [সে সময়] দেই স্ত্রী মন্তাব অর্থাৎ ঈশ্বরজপতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে॥ ১৯

ভাষ্য। প্রক্ষত প্রকৃতিত্বরূপেণ মিথ্যা জ্ঞানেন যুক্ত ভাগ্যেষু গুণেষু স্থপত্থেশাহাত্মকেরু স্থপী তংপী মৃঢ়োহ্হমি ইত্যেবংরূপো যঃ সঙ্গঃ তৎকারণং প্রকৃত্য সদসদ্বোনিজন্ম প্রাপ্তিলক্ষণত সংসারত ইতি সমাসেন প্রবাধ্যায়ে বহুক্তং তদিহ "সন্থং রক্ষত্তম ইতি গুণাঃ প্রকৃতিসন্তবাং" ইত্যুত আরভ্য গুণস্বরূপং গুণর্ত্তং স্বর্ত্তেন চ গুণানাং বন্ধকত্বং গুণর্ত্তনিবন্ধত চ প্রকৃত্য যা গতিরিভ্যেত্তং সর্বাং মিথ্যাজ্ঞানমজ্ঞানমূলং বন্ধকারণং বিস্তরেণ উল্লা অধুনা সম্যগ্দর্শনান্মোক্ষো বক্ষবা ইত্যাহ—ভগবান্ নাত্যং কার্য্যকারণবিষয়াকারপরিণতেভ্যঃ গুণেভ্যঃ কর্তারম্ অঞ্য বদা দ্রন্থী বিদ্যান্ সন্ নাত্যপ্রতি। গুণা এব স্ব্যাবস্থাঃ সর্বাক্ষণাং কর্তার ইত্যেবং পশ্রতি। গুণাভ্যাং প্রবাক্ষা করিছেত্তং বেত্তি মন্তাবং মম ভাবং স দ্রন্থী অধিগচ্ছতি॥ ১৯

আনন্দগিরিটীক।। কমিন্ গুণে কথমিত্যাদি প্রশ্নান্ প্রত্যাধ্যার ধণেভ্যো মোকণং কথমিতি প্রত্যাধ্যানার্থং বৃত্তাহ্যবাদপূর্বকং মিথ্যাজ্ঞাননিবর্ত্তকং সম্যগ্জানং প্রস্তৌতি—পুরুষ্স্তেগ্যত্যাদিনা। পুরুষশু বা গতিঃ সা চেতি শেবঃ। মোকো গুণেভ্যো বিশ্লেষপূর্বকো ব্রহ্মভাবঃ। সম্যগ্জানোজিপরং শ্লোকং ব্যাধ্যাতুং প্রতীকমাদত্তে—নান্যুমিতি। সন্দাদিবিবরগ্র গুণ-

শব্দ বিবক্তিমর্থনাই—কার্য্যেতি। বিম্নানম্বর্গমন্থশবার্থ:। সকরার্থমুকা
পূর্বার্দ্ধভার্থিকমর্থনাই—প্তুণা এবেতি। সর্বাবেয়াত্তরৎকার্যাকরণাকারপরিপতা
ইতি যাবং। সর্বাকর্মণাং কারিকবাচিকমানসানাং বিহিতপ্রতিবিদ্ধানামিত্যর্থ:।
পরং ব্যতিরিক্তম্। ব্যতিরেকমেব ক্লোররতি—প্তুণেতি। নির্ধাধ্বক্ষাদ্ধানমিত্যর্থ:। মন্তাবং ব্রহ্মাত্মতামসৌ প্রাপ্নোতি ব্রহ্মভাবোহভাতিব্যক্ষ্যতে
ইত্যর্থ:॥ ১৯

অনুবাদ। পুরুষ মিথ্যাজ্ঞানের সহিত সম্বদ্ধ; এই মিথ্যাজ্ঞানই প্রকৃতিস্থতা। এই প্রকারে প্রকৃতিস্থতা যে জীবের আছে, তাহার**ই গুণত্ররে** আসঙ্গ হয়। এই গুণ ত্রিবিধ অর্থাৎ স্থুপ হুঃখ এবং মোহ এই তিনপ্রকার; আমি সুখী, আমি তঃখী, আমি মৃঢ়-এই প্রকার বোধই পুরুষের ওণত্তরে সভ; এই সঙ্গই পুরুষের সংসারের কারণ; সং বা অসং জাতির মধ্যে যে জন্ম, তাহাই "मरमात"। এই मकन विषया পूर्वाधाय मरकार वाश छेक रहेनाएक, এই অধ্যায়েও "সর রজঃ ও তনঃ এই তিনটি গুণ প্রকৃতিসম্ভব" এই শ্লোক হইতে আরম্ভ করিয়া, তাহাই বলা হইয়াছে; অর্থাৎ ওণ কি ? ওণের কার্য্য কি ? খণের কার্য্যের দারা গুণ কি ভাবে বন্ধের কারণ হয় ? খুণ-নিবদ্ধ পুরুষের গতি কি প্রকার ৪ ইত্যাদি প্রশ্নের উত্তরস্বরূপে দেখান হইয়াছে বে, অবিভাষুণক মিথ্যাজ্ঞানই বন্ধের কারণ। একণে সম্যগ্দর্শনই যে মোকের উপার, তাহাই ৰলিতে হইবে: এইজন্ত আরম্ভ করিতেছেন যে, কার্য্য কারণ ও বিষয় এই ভিনটি রূপে পরিণত গুণত্রর হইতে অন্ত কেং কর্ত্তা হইতে পারে না, এইরূপ [বে ব্যক্তি] দর্শন করিয়া থাকেন অর্থাৎ সকলপ্রকার অবস্থাতে গুণসমূহই সকল কর্মের কর্ত্তা,-এই প্রকার বৃঝিয়া থাকেন এবং গুণ হইতে সম্পূর্ব পৃথক্ সেই গুণব্যাপারের সাক্ষীকেও দেখিরা থাকে, সেই ত্রন্তা মদ্ভাব [অর্থাৎ] আমার স্বভাবকে [সেই সময়] প্রাপ্ত হইয়া থাকেন॥ ১৯

> গুণানেতানতীত্য ত্রীন্ দেহী দেহসমুদ্ভবান্। জন্মযুত্যুজরাহঃখৈর্বিমুক্তোহয়তমশ্বুতে॥ ২০

ভাষ্য । দেহী দেহ সমূতবান্ এচান্ জীন্ গুণান্, অতীতা জনমৃত্যুজরা-ছাথৈঃ বিমৃক: [সন্] অমৃতম্ আগুতে ॥ ২ •

অনুবাদ। দেহসমূত্র (দেহোৎপত্তির বীক্সরপ) এই ঋণক্রকে অভিক্রম

করিতে পারিলে, দেহী জন্ম মৃত্যু এবং জরা-নিবন্ধন ছংথ হইতে বিমুক্ত ছইরা নির্বাণ লাভ করিয়া থাকে॥ ২০

ভাষ্য । কথমধিগছতে ইত্যুচাতে—গুণান্ এতান্ বথোক্তান্ অতীভ্য জীবন্ এবাতিক্রম্য মায়োপাধিভূতান্ ত্রীন্ দেহী দেহসমুদ্ধবান্ দেহোৎপত্তিবীক্ত-ভূতান্, জন্মভূযুজরাহঃথৈঃ, জন্ম চ মৃত্যুশ্চ জরা চ হঃথানি চ তৈঃ জীবল্লেব বিমুক্তঃ সন্বিধান্ অমৃত্মল্লুতে। এবং মণ্ভাবম্ অধিগছতে ইত্যুৰ্থঃ ১২০

আনন্দ্গিরিটীকা। অনর্থরাতরূপমপোহ্ বিধান্ ব্রহ্মত্বং প্রাপ্নোতীত্যেত্বং প্রশ্নধারা বির্ণোতি—কথমিত্যাদিনা। যথোকানিত্যেতদেব ব্যাচষ্টে—মায়েতি। মারৈবোপাধিস্তভূতান্ তদাত্মনঃ সন্ধাদীননর্থরূপানিত্যর্থঃ। এভ্যঃ সমুদ্ভবন্ধীতি সমুদ্ভবাঃ দেহস্ত সমুদ্ভবা দেহসমুদ্ভবাঃ তানিতি বাংপত্তিং গৃহীত্বা ব্যাচষ্টে—দেহোৎপত্তীতি। যো বিধান্ অবিভাগরান্ গোন্ জীবরেবাতিক্রম্য ভিতর্থমেব বিশিন্টি—জ্বান্তি। প্রস্তাদ্বিস্তরেগোক্তর্ত প্রসন্ধাদ্ত্র সংক্ষিপ্তক্ত সম্যুক্তানক্ত ফলমুপসংহরতি—এব্যাতি ॥২০

অনুবাদ। কি প্রকারে প্রাপ্ত হয়, তাহাই বলা হইতেছে—এই যথোক্ত মায়ার উপাধিভূত তিনটি গুণকে—জীবিত পাকিতে থাকিতেই অতিক্রম করিয়া দেহী—জন্মগৃত্যুজরানিবন্ধন হঃথ হইতে মৃক্তিলাভপূর্কক অমৃতপদ লাভ করিয়া পাকে। এই প্রকার হইলেই মন্তাব অর্থাৎ ঈধরভাব প্রাপ্ত হয়, ইহাই তাৎপর্যা। পূর্কোক্ত গুণজর দেহসমূদ্রব অর্থাৎ দেহোৎপত্তির মূল হেতু॥২ •

অৰ্জুন উবাচ।

কৈর্লিক্সৈন্ত্রীন্ গুণানেতানতীতো ভবতি প্রভো। কিমাচারঃ কথং চৈতাংস্ত্রীন্ গুণানতিবর্ত্ততে ॥২১

আন্মা । অর্জুন উবাচ। হে প্রভো! কৈর্নিক্টেং (চিক্টেং) ত্রীন্ এতান্ গুণান্ অতীত (অতিক্রাস্তঃ) ভবতি [ইতি বিজ্ঞায়তে] কিমাচার:—কণং চ এতান্ ত্রীন্ গুণান্ অতিবর্ত্তে ॥১১

আমুবাদ। অর্চ্জুন কহিলেন, হে প্রভো! কিরূপ চিক্লের দারা [সাধক]
এই গুণত্রর হইতে মুক্তিলাভ করিতে সমর্থ হইরাছে, ইহা বুরিতে পারা বার দূ
বিনি শ্বণত্ররকে অতিক্রম করেন, তাঁহার আচার কি প্রকার দু এবং কিরুপ উপারে ডিনি এই ডিনটি অতিক্রম করিয়া থাকেন ॥২১ ভাষ্য। জীবরেব গুণান্ মতীত্য অমৃতমন্নুতে ইতি প্রশ্নবীব্ধ প্রতিষ্ঠা — কৈনিকৈন্টিহে: ত্রীন্ এতান্ ব্যাখ্যাতান গুণান্ মতীতোহতিক্রাস্তো তবতি প্রতো। কিমাচার: কোহত আচার: ইতি কিমাচার:, কথং কেন চ প্রকারেণ এতান্ ত্রীন্ গুণান্ মতিবর্ততে ॥২১

আনন্দ্রিটীকা। সম্যগ্ধীফলং গুণাতিক্রমণপূর্বকমমৃতত্বমুক্তং প্রশাস্ক্র লক্ষণ বজব্যমিতি প্রকৃতং বিবক্ষিত্র প্রশ্নম্থাণয়তি—জীব্রেবেতি। বে ব্যাথ্যাতাঃ সন্থাদয়ে গুণাঃ ভংপরিণামভূতান্ অধ্যাসান্ অভিক্রান্তঃ সন্ কৈলিকৈক্তাতো ভবতি ইতি ত।নি বক্তব্যানি সিদ্বার্থং পূর্বমন্থ্রেয়ানি পশ্চাদবদ্ধন লভ্যানি নিক্রানি, কানি তানীতি পৃচ্ছতি—কৈরিতি। যথেষ্টচেষ্টাব্যার্ভ্যর্থং প্রশাস্তরং—কিমাচার ইতি। জ্ঞানগু গুণাত্যয়োপায়ভোক্তরাং উপারপ্রকারজিক্সাসরা প্রশাস্তরং—কৃথ্যিতি॥২১

অনুবাদ। জীবন থাকিতে থাকিতেই গুণ্ডারকে অতিক্রম করিয়া
অমৃত লাভ করিয়া থাকে, এই প্রকার বাক্যের মধ্যে প্রশ্নের বীজ উপলব্ধি
করিয়া অর্জুন বলিলেন, হে প্রভা! [দেহী] এই যথোক্ত বর্ণিত গুণ্ডারকে
কি প্রকার চিহ্নসমূহের দারা অতিক্রমণ করিয়াছে [ইহা ব্বিতে পারা বার] ?'
যে ব্যক্তি গুণ্ডারকে অতিক্রম করে, তাহার আচার কি প্রকার ? এবং কোন্
উপায়ের অমুঠানে সে ব্যক্তি গুণ্ডারকে অতিক্রম করিতে সমর্থ হয় ?২১

শ্রীভগবান্থবাচ।

প্রকাশং চ প্রবৃত্তিং চ মোহমেব চ পাণ্ডব। ন ছেষ্টি সম্প্রবৃত্তানি ন নিরুত্তানি কাঙ্ক্রতি ॥২২

আহ্বয়। শ্রীভগবামুবাচ। হে পাণ্ডব! প্রকাশং চ প্রবৃত্তিং চ মোহৰ্ এব চ [এতানি ঝীণি] সম্প্রবৃত্তানি ন ৰেষ্টি, তথা নির্ভানি ন কাজ্কতি ॥২২

অমুবাদ । শ্রীভগবান্ কহিলেন,—হে পাণ্ডব,প্রকাশ, প্রবৃত্তি ও মোহ এই তিনটি গুণকে সম্প্রবৃত্ত দেখিয়া বিষেষ করেন না এবং ইহাদিগকে নির্ভ হইতে দেখিয়াও [পুনর্কার] পাইবার অন্ত অভিনাষ করেন না ॥২২

ভাষ্য । খণাতীতত লকণং খণাতীতখোপারং চ অর্ক্নেন পৃষ্টা অসিন্ শ্লোকে প্রশ্নবার্থং প্রতিবচনন্—বভাবং কৈনিকৈ বুজো খণাতীভো ভবতীতি ভক্ত্ পু—প্রকাশং চ সন্ধার্যায়, প্রার্থিং চ রক্ষাকার্যায়, মোহমেব চু তমঃকার্যায় ইজ্যেকানি ন বেটি সংপ্রবৃত্তানি সম্গ্রিষরভাবনোভূতানি শ্লিম ভাষসঃ প্রভারো জাতন্তেনাহং মৃচ্য তথা রাজসী প্রবৃত্তির্গ্নমোৎপন্না হুংথাদ্বিকা তেনাহং রজসা প্রবর্তিন্তঃ প্রচলিতঃ স্বরূপাৎ কষ্টং মন বর্ত্ততে যোহরং মৎস্বরূপাবস্থানাদ্ বংশঃ। তথা সান্ধিকো গুণঃ প্রকাশাল্বা মাং বিবেকিত্বমাপাদরন্ স্থথে চ সঞ্জরন্ বশ্বাতি ইতি তানি খেটি অসন্যগ্দর্শিন্তেন। তদেবং গুণাতীতো ন খেটি সংপ্রবৃত্তানি। যথা চ সান্ধিকাদিপুরুষঃ সান্ধিকাদিকার্যাণি আত্মানং প্রতি প্রকাশ নিবৃত্তানি কাজ্জতি ন তথা গুণাতীতো নিবৃত্তানি কাজ্জতি ইত্যর্থঃ। এতর পরপ্রত্যক্ষং লিঙ্গং কিং তর্হি শ্বাত্মপ্রত্যক্ষণাদাত্মবিষয়মেইবতরক্ষণম্। ন হি স্বাত্মবিষয়ং ধ্বেমাকাজ্জাং বা পরঃ পশ্বতি ॥২২

আনন্দগিরিটীকা। প্রশ্নস্থরপমন্ত তহতরং দর্শরতি—গুণাতীত-স্থেতি। পৃষ্টো ভগবানিতি সম্বন্ধ:। কিং বৃত্তক্ত বিধা প্ররোগদর্শনাৎ প্রশ্নম্বর্গার্থনিতি দ্রন্থবান্ন। উত্তরমবতার্যানন্তরশ্লোকতাৎপর্য্যমাহ—
যন্তাবদিতি। তানি সমাগদর্শী ন ঘেটি ইত্যুক্তমেব স্পষ্টরিতৃং নিষেধ্যমসমাগ্র্দর্শনা বেষং তেরু প্রকটরতি—মুমেত্যাদিনা। সম্যাগদিনা সম্প্রান্তর প্রকাশাদিয় ঘেবাভাবমুপসংহরতি—তদেব্যিতি। ন নির্ব্তানি ইত্যাদি ব্যাচষ্টে
—যথা চেতি। তেষামনাত্মীয়ত্বং সম্যক্ পশুল্লাভাক্ত্রক্তারোপণেন নাদ্বিকতে তেভাশ্চ ন স্পৃহর্তীত্যর্থ:। স্বামুভবসিদ্ধং গুণাতীতক্ত্র লক্ষণমুক্ত-মিত্যাহ—এত্রের্তি। পরপ্রত্যক্ষত্বাভাবং প্রপঞ্চরতি—ন হীতি। আশ্রয়ো বিষয়: ॥২২

অসুবাদ। গুণাতীত কিরপ চিক্সম্হের দারা প্রতীত হয়, এইরপ বে প্রশ্ন করিয়াছিলে, তাহার উত্তর শ্রবণ কর [ইহাই ভগবান বলিতেছেন]—"প্রকাশ" সঞ্ভবের কার্য্য, "প্রবৃত্তি" রজোগুণের কার্য্য, "মোহ" তমোগুণের কার্য্য [যে সময়] সংপ্রবৃত্ত হয় অর্থাৎ সম্যক্ প্রকারে বিষয়ভাবনা হইতে প্রাছত্ত হয়। [কিরপে হয় এবং তাহাদিগের প্রতি বিদ্নেই বা কি ভাবে হয় ? তাহাই দেখাইতেছেন।] "আমার তামসীবৃত্তি উৎপন্ন হইয়াছে, সেই কারণে আমি মৃঢ় হইতেছি," এই প্রকার "আমার রাজসী প্রবৃত্তি উৎপন্ন হইয়াছে, এই প্রবৃত্তি আমার ছংখের কারণ, সেই কারণে আমি রজোগুণের দারা প্রবৃত্তি বিদ্নাই বা কি ভাবে কারণে আমি রজাগুণের দারা প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি আমার ছংগের কারণ, সেই কারণে আমি রজোগুণের দারা প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি আমার ছংগের কারণ, সেই কারণে আমি রজোগুণের দারা প্রবৃত্তি আমার হংশ—ইহা আমার পক্ষে বড়ই ক্লেশকর," এইরপ "সান্বিক্ প্রকাশক্ষণ গুণ আমার বিবেক উৎপাদন করিতেছে এবং আমাকে স্থথে আসক্ষ করিয়া ভূলিণ্ডেছে," এই প্রকার ভাবনার বণ্ণে অসম্যাগ্দশী জীব ঐ গুণ্ডারের

কার্যাগুলির প্রতি 'বিষেষপরায়ণ হইরা থাকে। [যে পুরুষ সন্থ প্রভৃতি গুণারর বা তৎকার্যা বৃত্তিসমূহে আত্মভাব আরোপিত করে, সেই পুরুষই গুণারুসারে যথাক্রমে সাধিক রাজস বা তামস পুরুষ বলিরা কথিত হয়] সাধিকাদি পুরুষ যেমন আত্মসমক্ষে একবার প্রকৃতিত হয় ৷ পুনর্ম্বার নিবৃত্ত সন্থাদিগুলের কার্য্যাবলীর প্রতি আকাজ্জাসম্পন্ন হয়, সেই গুণাতীত পুরুষ কোনপ্রকার গুণকার্য্যের প্রতি সেইরূপ আকাজ্জাযুক্ত হয় না, ইহাই তাৎপর্যার্থ। এই বে চিক্ত উক্ত হইল, ইহা পরের প্রত্যক্ষযোগ্য ভিক্ত নহে। ইহা গুণাতীত ব্যক্তির আত্মপ্রত্যক্ষসিদ্ধ চিক্ত। আত্মবিষয়ক ধেষ বা আকাজ্জা অপরে কথনই প্রত্যক্ষ করিতে পারে না ॥২২

উদাসীনবদাসীনো গুণৈর্য্যোন বিচাল্যতে। গুণা বর্ত্তন্ত ইত্যেব# যোহবতিষ্ঠতিণ নেঙ্গতে॥২৩

জ্বাস্থ্য । যা উদাদীনবদ্ আদীনা গুণৈ: ন বিচাল্যতে । গুণা এব বর্জস্তে ইতি যা অবতিষ্ঠতি ন ইঙ্গতে ॥২০

অকুবাদে। যে ব্যক্তি উদাসীনের স্থায় অবস্থিত, গুণসমূহ বাঁহাকে বিচলিত করিতে পারে না, গুণেরই পরিণাম হয় এই ভাবিয়া যিনি স্বয়ং স্থিরভাবে থাকেন এবং কোন প্রকারেই আত্মস্ভাব হইতে চ্যুত হন না ॥২৩

ভাষ্য। অংগদানীং গুণাতীতঃ কিমানার ইতি প্রশ্নস্থ প্রতিবচনমাহ— উদাসীনবদ্ যথা উদাসীনঃ ন কণ্ডচিৎ পক্ষং ভজতে তথায়ং গুণাতীতছোপার-মার্কেইবন্ধিত আসান আত্মবিদ্ গুণৈর্যঃ সন্ন্যাসী ন বিচাল্যতে বিবেকদর্শনা-বস্থাতঃ। তদেতৎ স্ফুটাকরোতি গুণাঃ কার্য্যকারণবিষয়াকারপরিণতাঃ অস্ত্রোক্তমিন্ বর্ত্তস্তে ইতি যঃ অবতিষ্ঠতি। ছন্দোভঙ্গভন্নাৎ পরস্থৈপদপ্ররোগঃ। যোহস্থতিষ্ঠতি ইতি বা পাঠান্তরম্। নেঙ্গতে ন চলতি স্বরূপাবস্থ এব ভবতীত্যর্থঃ॥২৩

আনন্দগিরিটাকা। কৈলিকৈরিতাদি পরিষ্ঠ বিতীরং প্রশ্নং পরিষ্বতি—অপেতি। দৃষ্টাস্তং ব্যাচষ্টে—যুথেতি। উপেক্ষকত পক্ষপাতে তত্বাবোগাদিত্যর্থ:। আত্মবিদাত্মকৌটস্থ্যজ্ঞানেনাসীনো নির্ভকর্ত্বাভিমানো অপ্রযতমানো ভবতীতি দাষ্টান্তিকমাহ—ত্তথেতি। অগাতীতত্বোপারমার্গো জ্ঞানমের। শক্ষাদিভির্বিষয়েরত কৃটস্বজ্ঞানাৎ প্রচাবনমাশক্ষাহ—গুলৈরিতি।

इत्छावम् इकि वा भावः ।

[†] বোহস্তিইতীতি পাঠাতসৰ্ 1

উপনতানাং বিষয়াগাং রাগছেবছারা প্রবর্তকছমিত্যেতং প্রপঞ্চয়তি—
তদেতদিতি । বোহবতিষ্ঠতি স গুণাতীত ইত্যুত্তরত্ত সম্বন্ধঃ । অবপূর্বশু
তিষ্ঠতেরাত্মনেপদে প্রয়োজ্কব্যে কথং পরস্মৈপদমিত্যাশঙ্ক্যাহ—ছন্দোভক্তেতি ।
পাঠান্তরে তু বাধিতাত্মর্ত্তিমাত্তমত্মঠানম্ । করণাকারপরিণতানাং গুণানাং
বিষয়াকারপরিণতেষ্ তেষ্ প্রবৃত্তিন মমেতি পশুন্ অচলতয়া কৃটস্বদৃষ্টিমাত্মনো ন
কহাতীত্যাহ—নেক্সত ইতি ॥২৩

অনুবাদ। এইকণে গুণাতীতের আচার কি প্রকার ? এই প্রশ্নের উত্তর দিতেছেন—উদাসীনের স্থার অবস্থিত, বেমন উদাসীন ব্যক্তি কোন পক্ষই অবস্থন করে না, সেইরূপ এই গুণাতীতত্বরূপ উপারমার্গে অবস্থিত আত্মবিৎ সন্ধ্যাসী—বিনি গুণাতীত]; এই বিষয়টিকে আরও বিশদ করিতেছেন, কাব্য করণ ও বিষয় [অর্থাৎ দেহ ইক্রিয় এবং শন্ধাদি ভোগ্য -রূপে পরিণত গুণসমূহই পরম্পর মিলিত হইয়া সর্ব্যপ্রকার ব্যাপার নির্বাহ করিতেছে, এইরূপ বুঝিয়া যিনি আত্মস্বরূপে অবস্থান করেন। অনুতিঠিতি (অনুষ্ঠান করেন) এই প্রকার পাঠান্তর আছে; এবং প্রচলিত হন না অর্থাৎ সেই ব্যক্তি আত্মস্বরূপেই প্রকার থাকেন ॥২৩

সমত্রঃখন্তথঃ স্বস্থঃ সমলোফীশ্মকাঞ্চনঃ। তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়ো ধীরস্তল্যনিন্দাত্মগংস্তুতিঃ॥২৪

অমুয়। সমহংধহধং স্বস্থ: সমলোটাশ্মকাঞ্চন: তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়: ধীরঃ তুল্যনিন্দাদ্মসংস্কৃতিঃ চ২৪

আমুবাদ। বাঁহার স্থপ ও হংপ সমান, বাঁহার নিকটে লোট্র প্রন্তর ও স্থবর্ণ সমান, প্রিয় এবং অপ্রিয় বাঁহার ভূল্য, যিনি ধীর, এবং বাঁহার নিকটে । নিকা ও আত্মপ্রশংসা একরূপ, তিনিই গুণাতীত ॥২৪

ভাষ্য। কিঞ্চ--সমতঃথক্তথং সমে তঃথক্তথে যক্ত স সমতঃথক্তথা। স্বন্ধঃ বে আত্মনি স্থিতঃ প্রসন্ধঃ। সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ লোষ্টং চ অশা চ কাঞ্চনং চ সমানি বক্ত স সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চনঃ। তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়ঃ প্রিরং চ অপ্রিয়ং তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়ঃ। ধীরো ধীমান্। তুল্যমিক্ষাত্মসংস্কৃতিঃ নিকা চ আত্মসংস্কৃতিক তুল্যে নিক্ষাত্মসংস্কৃতী যক্ত যতেঃ, স তুল্যমিক্ষাত্মসংস্কৃতিঃ ॥২৪

আনন্দণিরিটীকা। গুণাতীতশু লিক্ষান্তরমাহ—কিঞ্চেতি। তরোঃ
সমন্ধ রাগবেবান্থংপাদকতরা স্বকীর্ম্বাভিমানানাম্পদম্য। প্রশার্থ সাম্বাদ-প্রচাতিরবিক্রিয়ম্ব্য। বিষদ্ধ্যা প্রিরাপ্রির্মেররস্ক্তবেহণি লোকদৃষ্টিমাপ্রিত্যাহ—প্রিয়ঞ্জিত। প্রিরাপ্রির্যাহ্রণন গৃহীতানাং কাঞ্চনাদীনাং ব্রাহ্মণপরিব্রান্ধকবং পৃথগ্গ্রহণম্। নিন্দা দোবোক্তিরাত্মসংস্তৃতিরাত্মনো গুণকীর্ত্তনম্।।২৪

আনুবাদ। আরও "সমত্থের্থ" ত্থে এবং স্থা বাহার নিকটে সমান, তাঁহাকেই সমত্থের্থ বলা যায়। "ব্যস্থ" স্থ অর্থাৎ নিজের আত্মার বিনি অবস্থান করেন অর্থাৎ যিনি প্রসর, তিনিই বস্থ। "সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চন" লোষ্ট (মৃৎথণ্ড) অশ্মা (প্রস্তর্থণ্ড) এবং কাঞ্চন (স্থা) এই সকল বস্তুই বাঁহার নিকটে সমান, তিনিই "সমলোষ্টাশ্মকাঞ্চন"। "তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়" প্রিয় এবং অপ্রিয় এই তুইটি বস্তুই বাঁহার নিকটে সমান, তিনিই "তুল্যপ্রিয়াপ্রিয়"। "ধীর" ধীমান্। "তুল্য-নিন্দাত্মসংস্কৃতি" নিন্দা এবং আত্মপ্রশংসা বে সন্ন্যাসীর সমান, তাঁহাকেই "তুল্য-নিন্দাত্মসংস্কৃতি" কহা বার ॥ ২৪

মানাপমানয়োস্তুল্যস্তল্যো মিত্রারিপক্ষধােঃ। সর্বারম্ভপরিত্যাগী গুণাতীতঃ স উচ্যতে॥ ২৫

অনুষ্ । মানাপমানয়ো: [য:] তুল্যা, মিত্রারিপক্ষরো: [য:] তুল্যাঃ, [য়ঃ] সর্বারম্ভপরিত্যাগী চ স গুণাতীত উচ্যতে ॥ ২৫

অনুবাদ। যে ব্যক্তি মান ও অপমানকে সমানভাবে বুঝিরা থাকেন, যিনি মিত্র ও শত্রুপকে সমান, যিনি সকল প্রকার আরম্ভ পরিত্যাগ করিয়াছেন, তিনিই গুণাতীত বলিয়া কথিত হন॥ ২৫

ভাষ্য। কিঞ্চ—মানাপমানরোজন্যঃ সমো নির্বিকারঃ। তুল্যো মিত্রারিপক্ষরোঃ, বছপুনাসীনা ভবস্তি কেচিৎ স্বাভিপ্রায়েণ তথাপি পরাভিপ্রায়েণ মিত্রারিপক্ষরোরিব ভবস্তি ইতি তুল্যো মিত্রারিপক্ষরোরিত্যাহ। সর্বারম্ভপরি-ত্যাগী দৃষ্টাদৃষ্টার্থানি কর্মাণি আরভ্যন্তে ইত্যারম্ভাঃ সর্বান্ আরম্ভান্ পরিভ্যক্তঃ শীলমক্ত ইতি সর্বারম্ভপরিত্যাগী। দেহধারণমাঞ্জনিমিন্তব্যতিরেকেণ সর্বাকর্মণ পরিভ্যাগী ইত্যর্থঃ। গুণাতীতঃ স উচ্যতে। উদাসীনবদিত্যাদি গুণাতীতঃ স উচ্যতে ইত্যেভদস্তম্ উক্তং বাবদ্ বন্ধসাধ্যৎ ভাবৎ সম্ল্যাসিনা অমুঠেরং গুণাতীতক্ষ সাধনং সুমুক্ষোঃ শ্বিরীভূতং তু স্বসংবেশ্বং সদ্গুণাতীতক্ত বতের্দ কণং ভবতীতি । ২৫

আনন্দগিরিটীকা। ইতক খণাতীতঃ শক্যো আত্মিত্যাহ—ক্ষিত্তে।

মানঃ সংকারন্তিরন্ধারোহপমানঃ। পরদৃষ্ট্যা যৌ স্থিশক্ত তরোঃ পক্ষরোঃ নির্বিধিশেরা ন কন্সচিৎ পক্ষে তিষ্ঠতীত্যাহ—তুল্য ইতি। বিছ্নো মিত্রাদিবৃদ্ধ্য-ভাবাৎ তুল্যো মিত্রারিপক্ষরোরিত্যযুক্তমিত্যাশক্যাহ—যৃত্যসীতি। সর্বকর্মত্যাগে দেহধারণমপি নিমি রাভাবার স্থাদিত্যাশক্যাহ—দেহেতি। উক্তবিশেষণো গুণাতীতো জ্ঞাতব্য ইত্যাহ—গুণাতি। যহক্তম্পেকক্ষাদি তদ্বিজ্ঞাদরাৎ পূর্বিং বম্বসাধ্যৎ বিভাধিকারিণা জ্ঞানসাধনদ্বনাহঠেরম্ উৎপন্নারাম্ভ বিশ্লারাৎ শীবন্ধক্তভাক্তধর্মকাতৎ স্থিরীভূতং স্বামুভ্বসিদ্ধলক্ষণম্বেন তিষ্ঠতীত্যকে ধর্মজাতে বিভাগৎ দর্শরত—উদাসীনবদিত্যাদিনা॥ ২৫

অকুবাদ। আরও মান ও অপমানে তুল্য অর্থাৎ সম-নির্বিকার এবং মিত্র ও অরি-পক্ষে তুল্য। যদিচ সন্ন্যাসিগণ নিজে মনে মনে সকল পকেই উদাসীনই হইয়া থাকেন, [স্বতরাং তাঁহাদের আবার অরি বা নিত্র কিরূপে সম্ভব। তাহা হইলেও অপরের অভিপ্রায়ামুদারে সন্ন্যাদীরও অরি ও মিত্র বলিরা কেই কেই ব্যবহাত ইইতে পারে। সেই অপরের কল্পিত অরি ও মিত্রপক্ষে সন্ন্যাসী [সর্বাদা] তুল্যই পাকেন, ইহাই বলা হইতেছে। "সর্বারম্ভপরিত্যাগী" ঘাহার আরম্ভ করা বার, তাহাই "আরম্ভ" শব্দের অর্থ। দৃষ্ঠ ও মদৃই ফললাভের **জন্ম বে সকল** ·ক্রের আরম্ভ হয়, সেই সকল কর্মই এই স্থলে "সর্কারম্ভ" পদের অর্থ বলিয়া ধরিরা লইতে হইবে। দেই সকল প্রকার কর্মের পরিত্যাগ করাই বাহার স্বভাব, দে "সর্বারম্ভপরিত্যাগী"। যে কর্ম্মের ঘারা কেবল দেহধারণ মাত্র প্রব্যোজন সিদ্ধ হয়, সেই কর্ম ছাড়া অন্ত সকলপ্রকার কর্মই যে পরিত্যাগ করে, **म्बर्ग प्रस्तावस्त्र श्री है है है अर्थ।** [बड़े ध्वकांत्र विस्मवनवृक्क व नज्ञानी] তিনিই গুণাতীত বলিয়া উক্ত হইয়া থাকেন। উদাসীনবদ আসীন ইত্যাদি এবং গুণাতীতঃ স উচ্যতে ইত্যস্ত গ্রন্থের দারা যাহা কিছু গুণাতীতের লক্ষণ বলা হইরাছে, তাহার মধ্যে বাহা কিছু বত্নের দারা সাধিত হইতে পারে, তাহার জভ সন্ন্যাসীর যত্ন করা উচিত। মুমুকু সন্ন্যাসীর গুণাতীতত্ব লক্ষণ বধন স্থির হইরা बाब, वथन छाहा (महे मद्यामीत श्वमश्रत्य नक्ष गहे हहेबा थाएक ॥ २०

> মাং চ যোহব্যভিচারেণ ভক্তিযোগেন সেবতে। দ গুণান্ দমতীতৈ্যতান্ ব্রহ্মভূয়ায় কল্পতে॥ ২৬

জাল্বয় । বং জব্যভিচারেণ ভক্তিযোগেন মাৎ সেবভে, স এতান্ গুণান্ সমতীতা বন্ধভূষায় করতে ॥ ২৬ আকুবাদ। অব্যক্তিচার ভক্তিবোগের সহিত বে ব্যক্তি মামার গেবা করেন, তিনি, এই সকল গুণকে অতিক্রম করিয়া নির্বাণ লাভ করেন ॥২৬

ভাষ্য ৷ অধুনা কথং চ এন গুণান্ অভিবৰ্ততে ইতি প্ৰশ্নস্ত প্ৰতিব**চনশাস্থ**——নাং চেশবং নারারণং দর্মভূতজনরাশ্রিতং যো যতিঃ কর্মী বা অব্যতিচারেণ্
ন কলাচিদ্ যো ব্যভিচবতি তেন ভক্তিযোগেন ভজনং ভক্তিঃ সৈব বোগজেন ভক্তিযোগেন দেবতে স গুণান্ সমতীত্য এতান্ যথোক্তান্ ব্রহ্মভূষায় ভবনং ভূরঃ ব্রহ্মভূষায় ব্রহ্মভ্বনায় মোকায় কল্পতে সমর্থে। ভবতীত্যর্থঃ ॥২৬

আনন্দ গিরিটীকা। প্রশ্ন ধন্দ গরিষ্ঠা তৃতীয়ং প্রশ্ন পরিষ্কৃত্য তৃতীয়ং প্রশ্ন পরিষ্কৃত্য তৃতীয়ং প্রশ্ন পরিষ্কৃতি । অধুনেতি । নছক্ষ সংগারিবিষ্কৃত্য ব্যাবর্ত্তর তি তৃত্ত তাটস্থাং ব্যবচ্ছিন ভি—স্কৃত্বতি । মুখ্যামুখ্যাধিকাবিভেনে বিকর: । ভক্তিযোগস্থ বাদ্চিকেশ্বং ব্যবচ্ছেত্ ম্ব্যভিচারেণেত্যুক্তম্, তন্ব্যাচ্টে—নেতি । ভলনং প্রমপ্রেমা স এব বৃদ্ধাতেংনেনেতি বোগ: । সেবতে প্রাকৃতিভতাং বিনা সদাস্থ্যক্ষণাতীত্যর্থ: স ভগ্রদক্র্ত্তহন্দ্র ভ্রস্ম্যাণ্ ধীসম্পন্নে বিশ্বান্ জীবরেবেত্যর্থ: ॥ ২৬

অনুবাদ। এমণে কি প্রকারে তিনটি গুণকে অতিক্রম কবিতে পাবা বায়—এই প্রশ্নেব উত্তব দিতেছেন। আমি সর্বভূতেব হৃদয়ে আশ্রিত, আমিই ঈশ্বন—নাবায়ণ, আমাকে যে সন্নাসী বা কর্মী অব্যভিচাব প্রক্রিয়ারের হারা দেবা কবেন; ভক্তিই যে,গ এই অর্থে ভক্তিযোগ শন্দটি ব্যবহৃত হইয়াছে। বে ভক্তিযোগ কোন সম্যেই অন্তথাভাব প্রাপ্ত হয় না, সেই ভক্তিযোগই শন্মান্তি চার'। [বে ব্যক্তি এই প্রকাব অব্যভিচার ভক্তিযোগের হারা আমার সেবা করেন] তিনি এই যথাকণিত গুণত্রয়কে অতিক্রম কবিয়া ব্রহ্মভূয়কে লাভ করিতে সমর্থ হন। 'ভূয়' শন্দের অর্থ ভবন অর্থাৎ হওয়া—ব্রহ্মভূয় শন্দের অর্থ ব্রহ্মভক্ত অর্থাৎ ব্রহ্ম হওয়া—নির্মাণ। [উক্ত মৎসেবক] মোক লাভ করিতে সমর্থ হয়, ইহাই ভাৎপর্যার্থ:॥২৬

ব্রহ্মণো হি প্রতিষ্ঠাহমমৃতস্থাব্যয়স্থ চ।
শাস্ত্রিক্ত চ ধর্মায় স্থাব্যেকান্তিক্ষা চ ॥ ২৭
ইতি চতুর্দশোহধ্যার্হ: ।

জ্মস্বর । জহম্ জমৃতত জন্যরত বজণ: তথা শাবজত (নিভাত) মর্পন্ধ ঐকান্তিকত (জন্যভিচারিণ:) মূপত চ প্রতিষ্ঠা ৪২৭ ছাকুবাদ। আমি অমৃত অধ্যয় ব্রন্ধের প্রতিষ্ঠা; সনাতন ধর্ম এবং ঐকান্তিক স্থেরও আমিই প্রতিষ্ঠা ॥২৭

ভাষ্য। কৃত এতদিত্যচাতে—ব্রহ্মণঃ প্রমাত্মনঃ হি যক্ষাৎ প্রতিষ্ঠা ক্ষং প্রতিতিষ্ঠতামিনিতি প্রতিষ্ঠাহং প্রত্যগায়া। কীদৃশস্থ ব্রহ্মণে হিম্পত্ত ক্ষবিনাশিনোহ্ব্যর্তাবিকারিণঃ শাখতত চ নিত্যন্ত ধর্মন্ত * জ্ঞানযোগধর্মপ্রাপ্যত্ত ক্ষপ্তান্দরণত ঐকাঞ্জিকত অব্যতিচারিণঃ। অমৃতাদিক্ষভাবত প্রমাত্মনঃ প্রত্যগায়া প্রতিষ্ঠা সমগ্য জ্ঞানেন প্রমাত্মতার নিশ্টায়তে। তদেতদ্ ব্রহ্মভূষায় ক্রাতে ইত্যুক্তম্। যয় চেশ্রমজ্ঞা ভক্তাক্সগ্রহাদিপ্রয়োজনায় ব্রহ্ম প্রতিষ্ঠতে প্রবর্জতে সা শক্তির ক্ষৈবাহং শক্তিশক্তিমতোর্নভাত্মাদিপ্রয়োজনায় ব্রহ্ম প্রতিষ্ঠত প্রবর্জতে সা শক্তির ক্ষেবাহং শক্তিশক্তিমতোর্নভাত্মাদিতাভিপ্রায়ঃ। অগবা ব্রহ্মশক্তাত্ম বিক্রকং ব্রহ্ম তত্ম ব্রহ্মণো নির্মিকরকোহহম্ † এব নাত্মং প্রতিষ্ঠা আশ্রয়ঃ। কিং বিশিষ্টত ? অমৃতত্ম অমরণধর্মকত্ম অব্যয়ত্ম ব্যায়রহিত্ত । কিং চ লাখতত্ম চ নিত্যন্ত ধর্মত জ্ঞাননিষ্ঠালকণত্ত স্থপত্য তজ্জনিত্ত ঐকান্তিকত্ম একান্তিনিয়ত্ত চ প্রতিষ্ঠা অহমিতি বর্ততে ॥২৭

আনন্দণিরিটীকা। বিষান্ একৈবেত্যন্ত হেতুং পৃচ্ছতি—কুত ইতি।
ভ্রেন্তর্মাহ—উচ্যুত ইতি। ব্রহ্মশন্ত্যাগতি বাধকে মুখ্যার্থগ্রহণমভিপ্রেত্যাহ
—পরমাত্মন ইতি। তং প্রতি প্রত্যাগায়নো বং প্রতিষ্ঠাতীত তং কিংবিশেষণপ্রতিতিষ্ঠতীতি। বদ্বন্ধ প্রত্যাগ্রনি প্রতিতিষ্ঠতীতি তং কিংবিশেষণমিত্যপেক্ষারামুক্তন্—অমৃতস্থেত্যাদি। তন্তামুতলক্ষেনাব্যয়শন্ত পুনক্ষক্তং
পরিহরতি—অবিকারিণ ইতি। নিত্যমুগক্ষরাহিত্যং তেন পূর্বাভ্যামপৌনক্ষন্ত্যন্। প্রসিদ্ধার্থস্থ ধর্মশন্ত্য ব্রহ্মগন্ত্রপত্রিমাশক্ষাহ—জ্ঞানেতি। অর্থেক্রিয়ন্
সম্বন্ধার্থং স্কর্থং ব্যাবর্ত্তরিত্নকান্তিকক্ষেত্যুক্তন্। অক্ষরার্থমুক্ত্যা বাক্যার্থনাহ—
অমৃতাদীতি। প্রতিষ্ঠা রত্মাদিতি পূর্বেণ সম্বন্ধঃ। তত্মাৎ প্রত্যগাত্মা পরমাত্মঅমৃতাদীতি। প্রতিষ্ঠা রত্মাদিতি পূর্বেণ সম্বন্ধঃ। তত্মাৎ প্রত্যগাত্মা পরমাত্মত্রা নিশ্চারতে সম্যগ্জানেনেতি যোজনা। অস্ত শ্লোক্স পূর্বল্লোকেনৈকবাক্যতামাহ—তদেতদিতি। বিবক্ষিতং বাক্যার্থং প্রপঞ্চরতি—যুয়েত্যি।
সা শক্তিঃ ব্রক্ষৈবেতি। কথং সামানাধিকরণ্যং তত্তাহ—শক্ত্রীতি। ব্যাধ্যানান্তরমাহ—অথবৈতি। বিশেষণানি পূর্ববদপৌনক্ষক্ত্যানি নেতব্যানি। তদনেনাধ্যারেন ক্ষেক্তেজ্জসংযোগস্ত সংসারকারণক্ষং পঞ্চপ্রানিরপণবারেণ চ সম্যগ্-

^{*} ধর্মজানসা ইতি কচিৎ দৃখ্যতে।

[†] নিৰ্বিৰনোহহনবাচাঃ ইতি কেটিৎ পঠিছ।

জ্ঞানপ্ত সকলসংসারনিবর্ত্তক ৰমিত্যেতৎ উপপাদরতা মুমুকোঃ মন্ত্রনাধ্যৎ গুলৈরচাল্যবাদি মুক্তপাযুদ্ধিং লক্ষণমিতি নির্দ্ধারিতম্ ॥২৭

অনুবাদ। কেন এই প্রকার হয়, তাহাই বলা হইতেছে। যে কারণে ''এক্ষের" পরমাত্মার আমিই প্রতিষ্ঠা, বাহাতে [বস্তু] প্রতিষ্ঠিত হয়, তাহারই নাম "প্রতিষ্ঠা"। প্রতিষ্ঠা শক্ষাটর প্রকৃত অর্থ সর্বব্যাপী আআ। সেই ব্রহ্ম কীদৃশ ? তাহা "এমৃত" অবিনাশী, "অব্যয়" অবিকারী, শাখত" নিত্য, 'ধর্মা কান-যোগরূপ ধর্দ্দের ধারা প্রাপ্য. "স্থপ" আনন্দরূপ এবং "ঐকান্তিক" অব্যভিচারী (অর্থাৎ সর্বপ্রকার ব্যভিচার-রহিত) এই প্রকার অমৃতাদি-স্বভাবসম্পন্ন প্রমান্মার প্রত;গাস্থা (নিরুপাধি ব্রন্ধই) "প্রতিষ্ঠা"। এই প্রত্যগাম্মা অর্থাৎ নিরুপাধিক এক্ষই পরমান্মরূপে অর্থাৎ প্রমেশ্বর হইতে অভিন্নভাবে সমাক্ জ্ঞানের বারা নির্ণীত हरेश शारकन। **এই বিষয়টিই "अश्व**न्नशांत्र क्वारु" **এই পূর্বোক্ত লোকে উক্ত** হইয়াছে। ভক্তগণের প্রতি মহুগ্রহ প্রভৃতি প্রয়োদন নির্বাহের দ্বস্ত বন্ধ যে ঐশীশক্তি ষরূপে [এই সংসারক্ষেত্রে] প্রবৃত্ত হইয়া থাকেন, সেই ঐশীশক্তিও ব্রহ্ম ভিয় আর কিছুই নহে এবং আমিই সেই ব্রন্ধ; কারণ, শক্তি ও শক্তিমান এই ছুইটির বান্তবিক কোন প্রকার পার্থক্য নাই। অথবা এইথানে ব্রহ্ম শব্দের বাচ্য **অর্থ** হইতেছে স্বিক্লক (অর্থাৎ সোপাধিক) ব্রহ্ম, সেই স্বিক্ল ব্রহ্মের প্রতিষ্ঠা হইতেছে নির্কিকরক (অর্থাৎ নিরুপাধিক) ব্রন্ধ, এবং আনিই [**প্রক্তপকে**] সেই নিবিক্ল এম। স্থতরাং আমি ছাড়া অন্ত কেইই স্বিক্ল এ**ল্লে**র প্রতিষ্ঠা বা আশ্রয়, ইহা সম্ভব নহে। সেই সবিকল্প ব্রন্ধের বিশেষণ কি ? তি। হাই বলা ধ্ইতেছে যে] তাহা ''অমৃত'' মরণরূপ ধন্ম-বির্হিত, ''অব্যয়'' ব্যরম্<mark>হত, আ</mark>রও ''শাখত'' নিত্য, তাহা ''ধশা' অর্থাৎ জ্ঞাননিষ্ঠারূপ ধর্ম, তাহা "সুখ' অর্থাৎ সেই ধর্মাজনিত স্থাধের স্বরূপ এবং তাহা ''ঐকান্তিক'' একান্তনিয়ত। এই প্রকার বিশেষণসম্পন্ন স্বিক্ল ব্ৰহ্মের আমিই প্রতিষ্ঠা অর্থাৎ আত্রর। ইহা পূর্বে হইতেই আসিতেচে ॥২৬

रेजि हर्कात्नार्यातः मराश्वः।

অথ পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ।

শ্রীভগবামুবাচ।

উদ্ধিমূলমধঃশাখমশ্বং প্রাক্তরব্যয়ম্। . ছন্দাংসি যক্ত পর্ণানি যস্তং বেদ স বেদবিৎ॥ ১

আনুর। শ্রীভগবান্ উবাচ—উর্দ্র্ম অধঃশাথম্ অখথম্ অব্যাধং প্রাতঃ— বস্তু পর্ণানি ছন্দাংসি তং [অখথং] যো বেদ স বেদবিং ॥>

অকুবাদ। শ্রীভগবানু কহিলেন—[বেদবিদ্গণ] বলিয়া থাকেন বে,
[সংসাররপ] অখথের মূল উর্দাকে এবং তাহার শাথাসমূহ অধোগামী এবং
তাহা অবিনাশী। যে অখথের পত্রসমূহ বেদমন্ত্রময়, সেই অখথকে যিনি জানেন,
তিনিই বেদবিৎ ॥>

ভাষ্য। ধন্দানদধীনং কর্মিণাং * কন্মফলং জ্ঞানিনাং চ জ্ঞানফলম্
আতে। ভক্তিবোগেন মাং বৈ সেবস্থে তে নংপ্রসাদাং জ্ঞানপ্রাপ্তিক্রমেণ গুণাতীতা
মোক্ষং গছেন্তি কিমু বক্তব্যমান্মনস্তর্মের সম্যাগ্রিজ্ঞানতঃ ইত্যতো ভগবান্
আর্জুনেনাপৃষ্টমূপি আত্মনস্তবং বিবক্জুবাচ—উদ্দ্রমিত্যাদি। তত্ত্ব ভাবদ্রক্রপক-কন্মনা বৈরাগ্যহেতোঃ সংসারস্বর্ধং বর্গয়তি। বিরক্ত্য হি সংসারাদ্
ভগবত্তব্জ্ঞানেহধিকারো নাজ্যভাতি।—উদ্মৃদং কালতঃ স্ক্র্যাৎ কারণভান্নিত্যভাব মহরাচ্চ উদ্মৃদ্যতে ব্রহ্ম অব্যক্তমান্নাশক্তিনত্ত্ব্লুলমন্তেতি সোহ্যং সংসারস্কঃ
উদ্মৃদ্যং। শ্রুতেশ্চ — উদ্মৃদ্যোহ্র্কাক্শাখং ইতি। প্রাণে চ—

'অব্যক্তমূলপ্রভবন্ত জৈবাম্ব গ্রেহাখিতঃ।
ব্দিস্কন্দর ইন্দ্রেরাম্বরকোটরঃ॥
মহাভূতবিশাখন্ট বিষয়ৈঃ পত্রবাংস্তথা।
ধর্মাধর্মসূপুশুন্চ স্থপতঃথফলোদয়ঃ॥
আজীব্যঃ সর্বভূতানাং ব্রহ্মবৃক্ষঃ সনাতনঃ।
এতদ্রশ্বনং হৈব ব্রহ্মাচরতি নিত্যশঃ॥

* প্রাণিনামিতি বা পাঠঃ।

এতজ্ঞিবা চ ভিবা চ জ্ঞানেন প্রমাসিনা। ভত্তকাত্মরতিং + প্রাপ্য বন্দান্নাবর্ত্তরে পুনঃ ॥' ইত্যাদি

তমুর্দ্ধমূলং সংসারমার্মেয়ং রুক্ষমধংশাথং মহদহন্ধারতন্মাত্রাদরঃ শাথা ইব অঙ্কাবো ভবস্তি ইতি দোহরমধংশাথং তমধংশাথং ন খোহপি স্থাতা ইতি অর্থণঃ তং গণপ্রধ্বংসিনমন্থথং প্রান্তঃ কগরন্তি। † অব্যরং সংসারমার্মায়য়য়্ অনাদিকাল-প্রের্জাৎ দোহয়ং সংসারর্ক্ষঃ অব্যরঃ অনাভনন্তদেহাদিসন্তানাশ্রঃ হি স্প্রপ্রান্ধঃ তনব্যরম্। তত্তিব সংসারর্ক্ষভ ইদমন্তদ্বিশেবণং ছন্দাংসি ছাদনাদ্ ঋগ্রজুংসামলক্ষণানি যত্ত সংসারর্ক্ষভ পর্ণানীব পর্ণানি। যথা রুক্ষভ পরিরম্বণার্থানি
পর্ণানি তথা বেদা সংসারর্ক্ষপরিরক্ষণার্থা ধর্মাধর্মতন্ত্রভূকলপ্রকাশনার্থনাৎ।
যথা ব্যাখ্যাতং সংসারর্ক্ষং সমূলং যন্তং বেদ স বেদবিং বেদার্থবিদিত্যর্থঃ। ন
হি সংসারর্ক্ষণে অস্মাৎ সমূলাৎ জ্বেয়ঃ অন্তঃ অনুমাত্রোহপি অবশিষ্টোহন্তি অতঃ
সর্বজ্ঞঃ স যো বেদার্থবিদ্ ইতি সমূলবুক্জনাং স্তৌতি॥১

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞানেন গুণাত্যয়ে দশিতে নাশিতে তেযাং বিনা জ্ঞানেনানত্যয়াদনাশিত্বে তেনাপি তদ্যোগ্যন্তাল জ্ঞানং গুণাত্যরহেতুরিভ্যাশক্ষাং নির্ভ সাকাদের প্রবাদিহেতৃং সন্তাসং বিধিৎস্থ: ব্রহ্মত্বভ প্রমপুরুবার্থতাঞ্চ বিবক্রধ্যাধাস্তরমারভতে—হাস্মাদিতি। কর্মিণো জ্ঞানিন*চ শাস্ত্রেই পরুতা: ভত্র কর্মিণাং কর্মামুধুলং ফলমীশ্রায়ত্তং "ফলমত উপপত্তে:" ইতি স্থায়াৎ জ্ঞানি-নামপি তৎফলমীশ্বরায়ত্তমেব ততো হস্ত বন্ধবিপ্র্যায়াবিত্যুক্ত্রাদ্। বস্মাদেবং ত্সাদ্ যে ভক্ত্যাখ্যেন যোগেন মামেৰ দেবত্তে তে মংপ্রমাদদারা জ্ঞানং প্রাপ্য গুণাতীতা মুক্তা ভবন্তীতি স্থিতমিতার্থঃ। যে তু আত্মনস্তর্মের সন্দেহাছপোছেন জানস্তি তে তেন জ্ঞানেন গুণাতীতাঃ সন্তো মুক্তিং গচ্ছস্তীতি কিমু বক্তব্যমিত্যর্থ-শিদ্ধনর্থসাহ-কিমু বক্তব্যমিতি। আত্মতবাজ্ঞানং যতঃ সংগারহেতুঃ, জ্ঞানং মোকাতুকুলম্ অতোহৰ্জুনেন কিং তদিত্যপৃষ্টমপি তত্তং ভগবাতুকবান প্ৰশ্ন-ভাবেহপি ওম্ব তব্বাৎপাদনাভিমানাদিত্যাহ—তত ইতি। তত্ত্বে বিবক্ষিতে। কিমিতি সংসারো বর্ণাতে তত্রাহ—তত্ত্রেতি। অধ্যান্নাদিঃ নপ্তমার্থঃ। বৈরাগ্য-মপি কিমিতি মৃগ্যতে তত্তাহ—বিব্নক্ত;দ্যতি। ইতি বৈরাগ্যায় সংসারবর্ণনিমিতি পেবঃ। নাশদন্তাবনারৈ বৃক্ষরপকং বন্ধহেতোদ্র্শিয়তি—উদ্ধায়ুল্মিতি। কথং কালতঃ হক্ষ হং ওদাহ –কারণ্ড্বাদিতি।. তদেব কথং কার্য্যপেক্ষয়া নিয়ত-

[🔹] ততকামরতাং প্রাপা তথালাবর্ততে পুনঃ । ইতি বা পাঠঃ।

^{🕇 &}quot;শুভাদৌ" ইভাবিকং কচিদ্মগুতে।

পূৰ্বজাবিৰাদিভাগ্ন – নিত্যজ্বাদিভি। দৰ্বব্যাপিৰাচ্চোৎকৰ্বং সম্ভাবৰতি — মহত্বাচেতি। উর্নমৃচ্ছি তমুৎক্ষ সৈতি বাবং। তত্ত কুটস্বত্ত কথং মূলছনি ত্যা-শঙ্কাহ-জাব্যক্তেতি। শ্বতিমূলংখন শ্রতিমূদাবরতি-শ্রুতিতে । অর্পাঞ্যো নিরুটা: শাখাইব মহদাভা বস্তু স তথা। প্রকৃতে সংসারবুক্ষে পুরাণ-সম্মতিমাহ—পুরাণে (চতি। অব্যক্তমব্যাকৃতং তদেব মৃলং তন্মাৎ প্রভবনং প্রভবোষত্র স্বতা তত্ত্বৈর মূলভাব্যক্তভাত্তাহাৎ অতিদৃদ্বাহ্থিত: দম্দ্রিত:। তক্ত লৌকিকরশনাধর্ম্মাহ—বুদ্ধীত্যাদিনা। রুগ ত হি শাখাঃ হন্ধাৎ উদ্ভবস্তি, সংসারস্ত চ বৃদ্ধেঃ সকাশাং নানাপরিণামা জায়ত্তে তেন বৃদ্ধিরেব স্কলঃ তন্মরস্তং-প্রচুরোহরং সংসারতক: ইক্রিয়াণামস্তরাণি ছিদ্রাণি কোটরাণি বস্থ স তথা। মহান্তি ভূতানি পুথিব্যাদীক্তাকাশাস্তানি বিশাখা স্তম্ভা যক্ত স তথা। আজীব্যস্থ্য-জীবান্তং, ব্রহ্মণাধিষ্ঠিতো বৃক্ষো ব্রহ্মবৃক্ষন্তথাপি জ্ঞানং বিনাছেত্রমণকাতরা সনাতনঃ এতচ ব্ৰহ্মণঃ প্রস্থাত্মনো বনং বননীয়ং সম্ভল্পনীয়মত হি এক প্রতিষ্ঠিতং তম্ম বৃষ্ণম সংগারখাম তদেব বন্ধ সারভূতম্, অথবাম্ম বন্ধ বৃদ্ধমানবর্তিষ্কস্য সংসারমণ্ডলস্য তদেতদ্ একা বনমিব বনং বননীয়ং সম্ভদ্দনীয়ং নহি একাতিরিভং সংসারস্যাম্পদমন্তি ব্রৈক্ষবাবিশ্বরা সংসরতীত্যভাপগমাদিত্যর্থ:। অহং এক্ষেতি দৃঢ়-· জ্ঞানেনোক্তং সংসারবৃক্ষং ছিত্তা প্রতিবন্ধকাভাবাদাত্মনিষ্ঠো ভূতা পুনরার্ত্তি-রহিতং কৈবল্যং প্রাপ্নোতীত্যাহ—এতদিতি। অধঃশাথমিত্যেতদ্ব্যাচ:ষ্ঠ —মহদিতি। আদিশবেদলিজাদিসংগ্রহ:। সংসার বৃক্ষ ভাতিচঞ্চলত্বে প্রমাণমাহ —প্রান্তরিতি। কণধাংদিনোহবায়ত্বং বিরুদ্ধসিত্যাশব্যাহ—সংসারেতি। ্তদেবোপপাদয়তি—অনাদীতি। ছাদনং রক্ষণং প্রাবরণং বা কর্মকাণ্ডানি বুগৰি তে তানি ছন্দাংদি পর্ণানীব ভবস্তীত।র্থঃ। তদেব প্রপঞ্চয়তি—যুগেতি। উক্তেহর্থে হেতৃমাহ—ধর্ম্মেতি। কর্মকাণ্ডানাং বেদানামিতিশেষ:। কর্ম্ম-ব্ৰশাখ্যসৰ্কবেদাৰ্থস্য ভত্ৰান্তৰ্ভাবমুপে হ্য ব্যাচটে—বেদাপুতি। সমূলস সার-বুকজ্ঞানে অমূলং হিছা মূলমেব নিষ্কয় জ্ঞাভূং শক্যমিতি ভজ্জানাৰ্থং প্ৰয়তি-তব্যমিতি মন্ত্ৰা তল জ্ঞানস্ততিরত্র বিবক্ষিতেত্যাহ—ন হীতি॥১

আকুবাদ। কর্মিগণের কর্মকল এবং জ্ঞানিগণের জ্ঞানকল যে কারণে আমারই আয়ন্ত, এইহেত্ বাঁহারা ভক্তিযোগের দারা আমার দেবা করেন, তাঁহারা আমারই অমুগ্রহে ক্রমে জ্ঞান লাভ করেন এবং গুলাতীত হইরা মোক প্রস্তুত্ত লাভ করেন। কিন্তু বাঁহারা আত্মার তত্ত্ব বর্ণার্থভাবে জ্ঞানিতে সমর্থ হন, তাঁহারা

य गांकीर माक नांड कतिरंड भारतन, त्म विवास आत अधिक किं विनिधास আছে ? এজন্ত ভগবান্—অর্জুনের [এ বিবরে আপাততঃ] প্রশ্ন না পাকিলেও সাকাদ্ভাবে আত্মতত্বের উপদেশ দিতে ইচ্চুক হইয়া বলিতেছেন যে, উদ্ধৃত ইত্যাদি। প্রথমেই বৈরাগ্য যাহাতে হর, সেইজ্ব এই বুকের সহিত সাদৃশ্র ক্রনা বারা সংসারের স্বরূপ বর্ণন ক্রিতেছেন। সংসারে বির্ক্তটিত ব্যক্তিই ভগবানের তত্ত্ব জানিতে অধিকারী হন, অবিরক্ত পুরুবের তাহাতে অধিকার নাই। "উর্দ্দৃল" অব্যক্ত মায়াশক্তির থারা বিশেষিত ব্রহ্মই এই স্থলে "উর্দ্ধ" भरमत वर्ष; कांत्रग जानुभ अन्त कारनत निक निता राशिरान श्रृंता। [বেহেতু ঐ এদা] কারণ নিত্য এবং সহং। সেই উর্দ্ধ অর্থাৎ অব্যক্ত মারাশক্তিযুক্ত ত্রন্ধ যাণার মূল, সেই এই সংসাররূপ মারামর বুক্ক, উর্জুমূল। শ্রুতিতেও [সংসারের এইরূপ বর্ণনা] আছে যে, "উর্দ্ধৃন এবং আবার্শাখ"। প্রাণেও সংসারবৃক্ষের এইরূপ বর্ণনা আছে; যথা—"এই সংসাররূপ এক तृतकत भूग व्यवाख्त ; कातन, व्यवाख्त स्टेर्लिट देशात व्यमा। त्रहे व्यवाख्तकत्रहे শহুগতে ইবার উপান হইরাছে; ইহার কম বৃদ্ধি; ইক্রিয়ঞ্জিত ওলি ইহার কোটর, ক্ষিতিপ্রভৃতি পঞ্চ নহাভূত ইহার বড় বড় শাখা—শব্দ স্পর্শ প্রভৃতি বিষয়গুলি ইহার পত্রস্থানীয়; ধর্ম ও অধর্ম ইহার শোভাকর পূলা, সুথ এবং ছঃখ ইহার ফল, এই সনাতন ব্রহ্মতুক সকল প্রাণীরই একমাত অবলম্বন। ব্রহ্ম এই সংসার**রূপ** ব্রহ্মবনে নিত্য বিচরণ করিয়া থাকেন। জ্ঞানরূপ উৎকৃষ্ট অসির ছারা এই সংসাররপ বৃক্ষের ছেনন ও ভেদন করিয়া [জীব] আত্মরতি লাভ করে এবং তাহার প্রসাদে আর তাহাকে এই সংসারে ফিরিয়া আসিতে হয় না।'' ইত্যাদি দেই এই উর্দ্ধৃল সংসায় মায়াময় বৃক্টি অধংশাখ অর্থাৎ ইহার শাধাস্থানীয় মহন্তব অহংকার প্রস্তৃতি বিকারগুলি ক্রমশঃই অধোগামী হইতেছে—এই কারণে ইহাকে ं "अधः माथ" वना यात्र । এई मश्नातत्रकृष्टि अध्यथ, कात्रन, चः अर्थाए आग्रामी कन्। পর্যান্তও বাহার স্থিতি নাই. তাহার নামই ত "অশ্ব খ" অর্থাৎ এই দংসারবুক্ষ ক্ষণ-विश्वः मी, এই ভাবেই এই সংসারবৃক্ষের বর্ণনা [বেদবিদ্গণ] করিয়া থাকেন।

এই সংসার—ইহা মারামর বৃক্ষই—অবার, কারণ, ইহা আনাদি কাল হইছে।
প্রাবৃত্ত ; এই কারণেও এই সংসারবৃক্ষ অব্যর ; বেহেতু আনাদি এবং আনস্ক,
বহুদেহসমূহের এই সংসাররপ স্থাসিদ্ধ বৃক্ষ আশ্রর। সেই সংসাররপ বৃক্ষের
আরও একটি বিশেষণ এই বে, ছলাংসমূহ অর্থাৎ অগ্ যজুঃ ও সামরূপ ভিনটি
বেদই, বেহেতু সংসারের আছোদন হেতু, এই কারণে এই বেদতার্যই এই বিশেছনাঃ

শব্দের অর্থ ; সেই ছলঃসমূহ অর্থাৎ বেদত্তর এই সংসাররূপ রুক্ষের পত্রসমূহ অর্থাৎ বেদ পত্রসমূহ। বেরূপ পত্র গুলি বৃক্ষের রক্ষার প্রতি হেতু, সেইরূপ এই বেদত্তর প্রসংসাররূপ বুক্ষের পরিরক্ষক [এই কারণেই বেদত্ররকে সংসাররুক্ষের পত্র বিলয়া নির্দেশ করা হইরাছে]। বেহেতু বেদের ছারাই ধর্ম ও অবর্ম এবং ধর্মাধর্মের কারণ এবং ফল প্রকাশিত হইরা থাকে, এই কারণেই বেদকে সংসারের পরিরক্ষণে পায় বলা যায়। যে ভাবে এই সংসাররূপ সমূল বুক্ষের বর্ণনা করা হইল, এই ভাবে এই সংসাররুক্ষকে যে ব্যক্তি জানিতে পারেন, সেই ব্যক্তিই বেদবিৎ, অর্পাৎ বেদার্থবিৎ। কারণ, সমূল সংসাররুক্ষ ব্যতিরেকে অন্ত আর মণুমাত্রও কিছু জ্ঞাতব্য বস্ত্ব থাকিতে পারে না; স্কুতরাং গিনি সমূল সংসারবৃক্ষকে জানেন, তিনিই [প্রকৃত পক্ষে] বেদার্থবিং, এইরূপ উক্তি ছারা সমূল বুক্ষের যে জ্ঞান, ভাহার স্তুতি করা হইতেছে॥১

অধশ্চের্দ্ধিং প্রস্থতান্তম্য শাখা, গুণপ্রবৃদ্ধা বিষয়প্রবালাঃ। আধশ্চ মূলান্যসুসন্ততানি, কর্মানুবন্ধীনি মনুষ্যলোকে ॥২

্ অনুষ্য়। গুণপ্রবৃদ্ধাঃ বিষয়প্রবালাঃ ততা শাথা অধঃ উদ্ধং চ প্রস্থতাঃ ক্যায়বন্ধীনি মূলানি মনুষ্যলোকে অধঃ চ অমুদন্ততানি ॥২

অসুবাদ। সেই সংসাররকের শাথাসমূহ গুণত্তরের দারা বৃদ্ধি পাইয়া থাকে, শব্দপর্শ প্রভৃতি বিষয়গুলি প্রবালের স্থায় (নৃতন প্রবের স্থায়) সেই সকল শাথা হইতে অন্ধ্রিত হইয়া থাকে, সেই শাথাসমূহ উর্দ্ধি ও অধ্যভিগে ছড়াইয়া পড়িয়াছ। এই সংসারবক্ষের মূলসমূহ ধর্মাধর্মরপ কর্মের কারণ; এই মূলসমূহ নহালোকে ক্রমে অধোভাগে প্রস্ত হইতেছে॥২

় ভাষ্য। ততৈ সংসারবৃক্ষভাপরাবয়বকয়না উচ্যতে— অথো মন্থ্যাদিভ্যো বাবং স্থাবয়মূর্কং চ যাবদ্রক্ষা বিশ্বস্থা ধর্ম ইত্যেতদন্তং বণাকর্ম যথাশ্রুতং জ্ঞানকর্মফলানি তন্ত বৃক্ষন্ত শাথা ইব শাথাঃ প্রস্তুতাঃ প্রগতা গুণ প্রবৃদ্ধা গুলৈঃ সররজ্জমোভিঃ প্রবৃদ্ধাঃ স্থাক্ষতা উপাদানভূতিঃ বিষয়প্রবালাঃ বিষয়াঃ শন্দাদয়ঃ প্রবালা ইব দেহাদিকর্মফলভাঃ শাথাভ্যঃ অন্ধ্রীভবন্তীব তেন বিয়য়প্রবালাঃ শাথাঃ। সংসারবৃক্ষন্ত পরমমূলমূপাদানং কারণং পূর্কমূক্তম্, অথেদানীং কর্মফলজনিতরাগ্রেষাদিবাসনা মূলানীব ধর্মাধর্মপ্রবৃদ্ধিকারং।নি অবাস্তরভাবীনি তা ন অধন্দ দেহাগ্রপেক্ষা * মূলানি অনুসন্ততানি অন্থবিষ্টানি কর্মান্থ্রীনি

^{*} দেবাজপেকরা ইতি পাঠভেদ:।

কর্ম ধর্মাধর্মকশন্ অহবর: পশ্চাদ্ভাবী বেবাস্ উদ্ভূতিমস্ভবতীতি তানি কর্মাহ্বরীনি মহবালোকে বিশেষতোহত্ত হি মহব্যাণাং কর্মাধিকার: প্রসিদ্ধঃ ॥২

আনন্দ্গিরিটীকা। অবরবসন্ধরিন্তপরা প্রাঞ্জাদতিরিক্তা করনা ইতি বাবং। আনমুব্যলোকাং আবিরিঞ্চেরিতাধঃশলার্থমাহ—মুমুব্যাদিত্য ইতি। জন্মাদেবারতা সত্যলোকাদিত্যর্ধশলার্থমাহ—যাবদিতি। লাখাশলার্থ্য দর্শরতি — জ্ঞানেতি। তেবাং হেত্বমুগুণছেন বছবিধরং স্চরতি—য়ুপুতি। প্রভ্যকাশাং শলাদিবিবরাশাং প্রবাদরং লাখাম্ম পরবছন। অন্তর্নতং ক্ষোররতি—দেহাদীতি। উর্ধন্দমিত্যর সংসারবৃক্ষক মৃলমুক্তং কিমিদানীমধন্চ মৃলানীভূচাততে জ্ঞাহ—সংসারেতি। অন্তর্পবিভিত্তং সর্বের্ লিকেন্তমুগততরা সন্তত্তম্ অবিভিন্তপন্। রাগাদীনাং কর্ম্মলক্ষত্তং প্রকটরতি—কর্মেতি। কর্মণাং রাগাদীনাং মিথো হেত্হেত্মপন্ত তেবাং তথাছেনানবিভিন্নতরা * প্রবৃত্তি। বিশেবতো মন্ত্রালোকে ভবতীত্যর হেত্মাহ—অত্রে হীতি। কর্মবৃৎপদ্যা প্রাণিনিকারো লোকঃ মন্তর্শানিশে লোকক্ষেত্যধিকতো বান্ধণ্যাদিবিশিষ্টো দেহো মন্ত্রালোকঃ ৪২

অমুবাদ। সেই সংসারবৃক্ষেরই অন্ত অবরব-কর্মনা [কি প্রকারে হইডে পারে, ডাহাই] বলা হইডেছে, "অধঃ" মমুব্যাদি হইডে স্থাবরপর্য্যন্ত [অধঃ শব্দের অর্থ] "উর্ক" [মমুব্যাদি হইডে] ত্রন্ধা বিশ্বস্তাই পণ এবং ধর্ম পর্যান্ত [উর্কেশব্দের অর্থ] "উর্ক" [মমুব্যাদি হইডে] ত্রন্ধা বিশ্বস্তাই পণ এবং ধর্ম পর্যান্ত [উর্কেশব্দের অর্থ] ; বেরপ জ্ঞান ও বেরপ কর্ম, তদমুসারে জ্ঞান ও কর্মের ফলস্বরূপ বাহা কিছু হইডে পারে, তাহা সকলই এই সংসারবৃক্ষের "শাখা" অর্থাৎ শাখার জ্ঞার । ঐ সকল শাখা প্রস্তুত, অর্থাৎ [চারিদিকেই] প্রকৃষ্টরূপে ছড়াইরা পড়িরাছে । [ঐ শাখাপ্তলির আর একটি বিশেষণ এই বে, উহারা] "ওপপ্রকৃষ্ণ" অণ শব্দের অর্থ সন্থ রক্ষঃ এবং তমা প্রকার অণ ; এই ত্রিপ্তপের হারা অর্থাৎ উপাদানস্থরূপ সন্ধ রক্ষঃ এবং তমোপ্তণের হারা প্রস্তুত্ব— ছুলীক্ষত । [ঐ শাখাসমূহের আরও একটি বিশেষণ এই বে] "বিষরপ্রবান্য" বিষর শব্দের অর্থ শক্ষাল্যন্ত ক্রির্যান্ত (কর্মকলরূপ শাখাসমূহ হুইতে প্রবানসমূহের আর অনুরিত হুইরা থাকে, এইজন্ত ঐ শাণাসমূহকে "বিষরপ্রবান" এই বিশেষণের হারা বিশেষিত করা হুইরাছে । সংসারবৃক্ষের হাহা পর্যান্ত অর্থাৎ উপানান কারণ, তাহা পূর্বেই বলা হুইরাছে । এক্ষণে বে মুন্সের কথা বলা হুইতেছে, তাহা প্রধান মূল নহে, কিছ ভাহাঁ অবান্তর মূল । ভাহা কি ছু

ভবাবেশাবভিন্নভরা ইতি কেটিৎ পঠিতি।

কর্মকলন্ধনিত রাগদেবাদি বাসনা, সেই রাগদেববাসনাই ধর্মাধর্ম প্রবৃত্তির কারণ;
স্থাতরাং রাগদেববাসনাই এই বৃক্ষের অপ্রধান মূলয়ানীর। সেই সকল মূল অধােদিকে অর্থাৎ দেহাদি কার্য্য অপেকা করিয়া অধােদিকে "অত্সন্তত" (অত্প্রবিষ্ট)
ইইয়া থাকে। [ঐ মূল গুলি কি প্রকার ?] উহারা "কর্মাত্মবিদ্ধি" এই স্থলে
কর্মপান্দের অর্থ ধর্ম্ম এবং অধর্ম। ধর্ম এবং অধর্মপরভাবি বলিয়া বে সকল
মূলের অপেকা করিয়া উৎপত্তি অত্যভব করে—সেই সকল মূলকে 'কর্মাত্মবিদ্ধি'
বলা বার। সেই মূলগুলি মন্ত্রালাকেই বিশেষতঃ কর্মাত্মব দ্ধ ইইয়া থাকে।
ভাহার কারণ এই যে, মন্ত্র্যাণেরেই কর্মাধিকার বিশেষরূপে প্রসিদ্ধ আছে॥২

ন রূপমদ্যেহ তথোপলভ্যতে, নাস্তো ন চাদি ন'চ সম্প্রতিষ্ঠা। অখথমেনং স্থবিরূচ্মূল, মসঙ্গস্ত্রেণ দূঢ়েন ছিত্তা॥৩

আৰুর। ইং অত রগং ন উপলভ্যতে তথা ন অবঃ ন চ আদি: ন চ সম্প্রতিষ্ঠা [উপলভ্যতে]। এবং স্থবিরুত্মৃত্য অবখং দৃঢ়েন অসদশত্রেণ ছিত্বা [তৎপদং পরিমার্গিতবাম্]॥ ৩

. **অনুবাদ।** ইহার রূপ এই সংসারে উপলব্ধ হয় না, ইহার আদি অস্ত এবং সম্প্রতিষ্ঠারও উপলব্ধি হয় না। অসক্ষরণ শক্তের দারা এই স্নৃত্ন্ন অশ্বথকে ছিন্ন করিয়া [সেই ব্রহ্মপদের অবেষণ করা উচিত]॥ ৩

ভাষ্য। বন্ধরং বর্ণিতঃ সংসারবৃক্ষঃ—ন রূপমন্তেই বথা বর্ণিতং তথা নৈবোপশভাতে স্থানমীচ্যুদক্মারাগন্ধর্কনগরসমন্বাদ্ দৃষ্টনষ্টস্বরূপো হি স ইত্যুত এব নাস্থো ন পর্যাস্তো নিষ্ঠা সমাপ্তিঃ বা বিশ্বতে। তথা ন চাদিরিত আরভ্য আরং প্রবৃত্ত ইতি ন কেনচিদবগম্যতে। ন চ সংপ্রতিষ্ঠা স্থিতিঃ মধ্যমন্ত ন কেনচিদ্পশভাতে। অস্বধ্যমেনং যথোক্তং স্থবিরুত্মশৃলং স্কৃত্ব বিরুত্তানি বিরোহং প্রতানি মৃশানি বন্ত তমেনং স্থবিরুত্মশৃলম্ অসকশন্ত্রেণ অসলঃ প্রুবিস্তলোকৈ-বণাদিভ্যো ব্যুত্থানং তেনাসক্ষশন্ত্রেণ দৃঢ়েন প্রমান্তাভিমুত্তানিশ্বদৃদ্ধীক্বতেন প্রমান্তির্বাসাশ্বনিশিতেন ছিন্বা সংসারবৃক্ষং স্বীক্রম্কৃত্য ॥ ৩

আনন্দগিরিটীক।। পুনঃ পুনঃ রাগাদিনা প্রব্রুত্তবনানাদ্যার সংসারবৃদ্ধঃ
বর্ত্তব্রুত্ত ন চোল্লেড্র্ং শক্যতে কেনাপীতানিভ্যাহ — যৃদ্ধিতি। বথা পূর্বং
বর্ণিতং বথা চ লোকে প্রসিদ্ধ তথাত রূপমিহ শালাদক্ষমীরতে তথা চাত জানাগনোছারং যুক্তমিত্যাহ—যুধ্বতি। ততাপ্রমিতত্বে হেডুমাহ—স্বন্ধেতি। ততা

ব্যাদিনমনে দৃষ্টনষ্টশ্বরূপকং হেতৃং করেভি—দৃষ্টেতি। ইত্যমেরতেতি শেবঃ। তনেবামেরকং হেতৃং ক্ত্যাবদানমণি তন্ত ন ভাতীত্যাহ—অন্তএবৈতি। আবং বিনা প্রান্তিবাদনাকর্মণামন্ত্রান্তনিমন্তরাং নাবদানমন্তীতার্থঃ। ইনং এবদকাশি নান্ত পরিক্ষেত্রং শক্যমিত্যাহ—তথেতি। আগন্তবন্ধগ্যমিণ নান্ত প্রামাণিক-মিত্যাহ—মধ্যমিতি। সংসারবৃক্ষতাশ্বখশন্তিভ কণভঙ্গুরক্ত শ্বরমেবোক্ষেন্দরাং তন্তক্ষেদার্থং ন প্রয়তিত্বামিত্যাশক্ষ্যাহ—অশ্বথমিতি। শ্বাখানং বৈরাগ্যপ্রকং পারিপ্রান্ত্রান্ধ। দৃট্যকৃত্বমেব বিবেকপূর্বক্ষেন ক্ষ্টরতি—পূনঃ: পুনরিতি॥ ত

অনুবাদ। এই বে সংসাররূপ বৃক্ষ বর্ণিত হুইল, এই সংসারে ইহার প্রকৃত বক্ষণ কি [অর্থাৎ যে ভাবে বর্ণিত হইল] তাহা উপলব্ধ হর না। বাম মরীচ্যুদক (হুর্য্যরশ্রিতে আরোপিত জন) বা গন্ধর্কনগর বেমন দেখিতে দেখিতেই ' নষ্ট হইরা বার, সেইরূপ এই সংসারের বে স্বরূপ, তাহাও দেখিতে দেখিতে মিশাইরা বার, এই কারণে ইহার প্রহৃত রূপ কি, তাহা বুঝিতে পারা বার না। ইহার "আদি" অ্থাৎ কোন সমর হইতে ইহার আরম্ভ হইরাছে,তাহাও কেহ ব্বিতে পারে না। ইহার "অন্ত"--পর্যান্ত--নিষ্ঠা অর্থাৎ সমাপ্তিও উপলব্ধ হর না। ইহার "সংপ্রতিষ্ঠা" হিভি—মধ্যও কি প্রকার, তাহাও বৃঝিতে পারা বার না। 'স্বির্চ্মৃশ" স্বষ্ঠ অর্থাৎ ভাল করিয়া যাহার মূল দকল 'বিরুচ্' বিশেষরূপে রচ় হইরাছে, তাহার নান 'হুরিরচ়মূন'; সেই এই হুৰিরচ় মূল অখথবু দকে অসঙ্গরূপ দৃঢ় শন্ত্রের হারা ছিন্ন করিরা অর্থাৎ বীব্দের সহিত একেবারে উৎপাটিত ক্রিয়া; [এইস্থানে] অসঙ্গ শন্ধের অর্থ পুত্র বিস্তু ও লোক এই ত্রিবিধ বস্তুর প্রতি বে আভ্যন্তিক কাম, ভাহা হইতে নিবৃত্তি অর্থাৎ ভীত্র বৈরাগ্যই '**অসক'**। নেই অসক্ষরণ শল্প বধন প্রমান্ত্রাভিম্পাপ্র নিশ্চর বারা দৃচীক্ষত হর এবং পুনঃ পুনঃ বিবেকাভ্যাসরূপ প্রস্তারে শাণিত হয়, তথন সেই অসক্ষাত্র সূচ্ इहेबा थाटक। [त्रहे व्यमक्रका मृत्र मद्यात बाता मतीक मश्माततृत्कत छेत्व्हममाधन করিরা সেই পরম পদের অমুসন্ধান করিতে হর] এইরপ পূর্ব শ্লোকের অর্থেক্ক সহিভ ইহার সম্বন্ধ করিতে হইবে॥ ৩

ভতঃ পদং তৎ পরিমার্গিতব্যং, যশ্মিন্ গতা ন নিবর্ত্তন্তি ভূরঃ। ভমেব চাষ্ঠাং পুরুষং প্রপত্মে, যতঃ প্রবৃত্তিঃ প্রস্তা পুরাণী ॥ ৪ অবস্থা। ব্যিন্ গতা ভ্রঃ ন নিবর্ত্তন্তি (নিবর্ত্তন্তে) তৎপদং ভক্তা পরিমার্গি- ভব্যম্। যতঃ প্রাণী প্রবৃত্তিঃ প্রকৃত। তমেব চ মাছং প্রকৃষং প্রপত্তে [ইডি থিরা পরিমার্গিতব্যম্] ॥ ৪

আমুবাদ। যে পদ প্রাপ্ত হইলে আর এই সংসারে প্রভ্যাবর্ত্তন করিছে হয় না, তাহার পর সেই পদের পরিমার্গণ (অবেষণ) করিবে। [কি ভাবে করিবে ?] বাহা হইতে পুরাতন প্রবৃত্তি প্রস্তুত হইরাছে, সেই আছা পুরুষকে আমি আশ্রুর করিতেছি [এইপ্রকার বৃদ্ধিতে তাহার পরিমার্গণ করিবে] ॥ ৪

ভাষ্য । তত ইতি। ততঃ পশ্চাৎ পদং বৈক্ষবং তৎ পরিমার্পিতব্যং পরিমার্গণম্ অবেষণং জ্ঞাতব্যবিত্যর্থঃ। বিনিন্ পদে গতাঃ প্রবিষ্টা ন নিবর্ত্তিতি নাবর্ত্তিকে ভূরঃ পুনঃ সংসারায়। কথং পরিমার্গিতব্যমিত্যাহ তমেব চ বঃ পদশব্দেন উক্তঃ, আছম্ আদে ভবং পুক্রবং প্রপত্তে ইতেবং পরিমার্গিতব্যং
তক্ষেরণভায়া ইত্যর্থঃ। কোহসৌ-পুরুষ ইত্যুচাতে যতঃ বন্ধাৎ পুরুষাৎ সংসারমারাবৃক্ষপ্রবৃত্তিঃ প্রস্তা নিঃস্তা প্রক্রজানিকাদিব মারা পুরাণী চিরন্তনী 🛙 ৪

আনন্দ গিরিটীকা। উদ্ত্য কিং কর্ত্তব্যং তদাহ—তত্ত ইতি। পশ্চাদখথাদুর্দ্ধং ব্যবস্থিতমিত্যর্থ:। কিং তৎ পদং যদন্বিব্য জ্ঞাতব্যং তদাহ—যৃত্মিদ্ধিতি।
বেন সর্বাং তং পূর্ণং পূর্বা শরানং পুরুষং প্রপত্থে শরংং গতোহন্দীত্যর্থ:। বিবর্ত্তবাদান্থরোধিনং দৃষ্টান্তনাহ—ঐন্তে ॥৪

অমুবাদ। তত ইত্যাদি [স্নোকের অর্থ এই যে] ততঃ [এই শক্ষ্টির অর্থ] পশ্চাৎ সেই বৈক্ষব পদ পরিমার্গিতব্য, পরিমার্গণ শব্দের অর্থ অবেবণ অর্থাৎ আতব্য। বে পদে গত—প্রবিষ্ট হইলে আর নিবর্ত্তন করিতে হর না। কি প্রকারে পরিমার্গণ করিতে হইবে, তাহা বলিতেছেন। সেই [অর্থাৎ] বাহাকে প্রের্থার পরিমার্গণ করিতে হইবে, তাহা বলিতেছেন। সেই [অর্থাৎ] বাহাকে প্রের্থার পদশক্ষ ঘারা নির্দেশ করা হইরাছে, সে আদিতে আবিভূতি প্রক্রমকে আমি প্রপন্ন হইতেছি, এই প্রকার বৃদ্ধির ঘারা তাঁহার পরিমার্গণ করিতে হইবে অর্থাৎ তাঁহারই শরণ গ্রহণ করিতে হইবে। কে সেই প্রক্রম ? তাহাই বলা হইতেছে বে, বাহা হইতে অর্থাৎ বে প্রক্রম হইতে গ্রন্থালিক হইতে মান্নার স্পার প্রাতন প্রবৃত্তি অর্থাৎ এই সংসারত্রগ মান্নামর বৃক্ষের নির্দ্ধাণ্ডবর্থত্ব প্রক্রমত হইরাছে॥৪

নির্মাননোহা জিতসঙ্গদোষা, অধ্যাত্মনিত্যা বিনির্ভকামাঃ।

ক্রিক্রিমুক্তাঃ স্থত্ঃখসংক্তৈ,র্গচ্ছস্ত্যমূলঃ পদমব্যরং তৎ ॥ ৫

আৰুর । নির্মানমোহা জিতসকদোষা অধ্যাত্মনিত্যা বিনির্ভকাষাঃ হত্ত-ছঃধসংক্রৈঃ বল্ডোঃ অসূঢ়াঃ তৎ অব্যরং পদং গছেভি ॥ ৫

অকুবাদ। বাঁহাদের অভিমান ও মোহ নাই, বাঁহারা পরমান্ধার বরূপ জানিবার জন্ত সর্বাদা তৎপর, সঙ্গরুপ দোবকে বাঁহারা জন করিছে পারিরাছেন, বাঁহারা নিকাম, সূথ এবং হঃখ এই বন্দ হইতে বাঁহারা বিশেবরূপে বিমৃক্ত এবং বাঁহারা জ্ঞানী, তাঁহারাই সেই অব্যন্ত পদকে প্রাপ্ত হইরা থাকেন॥ ৫

ভাষ্য ৷ কথংভূতান্তংপদং গছেন্তি ইভূাচাতে—নির্দ্ধানমোহাঃ মানশ্চ মোহল্চ মানমোহোঁ তৌ নির্গতো বেভান্তে নির্দ্ধানমোহাঃ মানমোহবর্জিতা জিত-সঙ্গদোবাঃ সঙ্গএব দোবঃ সঙ্গদোবাঃ জিতঃ সঙ্গদোবাে বৈত্তে জিতসঙ্গদোবাঃ অধ্যাত্মনিত্যাঃ পরমাত্মররূপালোচননিত্যান্তংপরা বিনির্ত্তকামাঃ বিশেবভা নির্দেশিন নির্ভাঃ কামা বেষাং তে বিনির্ভ্তকামা বতরঃ সংক্রাসিনঃ ঘলৈঃ প্রিরাপ্রিরাদিভিঃ বিমৃকাঃ স্থতঃখসংজৈঃ পরিত্যক্তা গছুন্তি অমৃঢ়া মোহবর্জিতাঃ পদমব্যরং তং বংগাক্তম্ ॥৫

আনন্দ্রিটীকা। পরিমার্গণপূর্বকং বৈশ্ববং পদং গছতাম্ অকান্ত-রাণ্যাকাজ্ঞাপূর্বকং কথরতি—কথ্মিত্যাদিনা। মানোহহছারঃ মোহস্ববিবেকঃ কিতসক্লোষাঃ শক্রমিত্রসপ্লিধাবপি বেবপ্রীতিবর্জ্জিত। ইত্যর্থঃ। তৎপরত্বং প্রবণাদিন নিষ্ঠবং, সন্ন্যাসিনো বৈরাগ্যবারা ত্যক্তসর্বকর্মাণ ইত্যর্থঃ,আদিশব্দেন তদ্বেত্বগ্রহঃ। মোহবর্জ্জিতত্বস্ক্রহেত্তঃ সংজ্ঞাতসম্যুগ্ধীত্বম্ ॥ ৫

আনুবাদ। কি প্রকার স্বভাবসম্পার ব্যক্তিগণ সেই পদ প্রাপ্ত হন, তাহাই বলা চইতেছে যে, "নির্মানমোহ" মান এবং মোহ এই গ্রইটি বন্ধ যাহাদের অন্তঃকরণ হইতে একেবারে বাহির হইরা গিরাছে, তাহারাই নির্মানমোহ। "জিতস্কদোব" সলই দোব এই অর্থটিকে ব্যাইবার জন্ত সলদোব এই শল্পটি প্রাবৃত্ত হইরাছে, বাহারা এই সলদোবকে জয় করিরাছেন, তাঁহারাই "জিতসললোব"। "অধ্যাত্মনিত্য" সেই পরমাত্মার কিরুপ রূপ, তাহারই আলোচনা সর্বাদা করাই বাহাদের স্বভাব অর্থাৎ বাহারা তৎপর, তাঁহারাই "জধ্যাত্মনিত্য"। 'বিনির ক্রমান' বাহাদের কামনা বিশেবরূপে অর্থাৎ একেবারে নিরুত্ত হইরা গিরাছে অর্থাৎ উহার 'লেগ' অর্থাৎ সংস্পর্শনাত্র নাই, তাহারাই 'বিনির্ভকান'; বাহারা বিভিন্দ সন্ত্রানী, তাঁহারাই বিনির্ভকান। ত্ব অর্থাৎ প্রির বা অপ্রির প্রভৃতি পরস্কার বিক্রকান, রূপ ও গুংথ এই স্কর্টি সংজ্ঞা হারাও বন্ধের বির্দ্ধের বন্ধু

লেই এই হ'ব হইতে বাহারা একেবার মৃক্ত অথচ বাহারা "অমৃচ্" মোহবৰ্জিত, তাঁহারাই সেই বথোক্ত অব্যয় পদকে প্রাপ্ত হইরা থাকেন ॥ ঃ

> ন তদ্ভাসয়তে সূর্য্যো ন শশাক্ষো ন পাবকঃ। যদ্ গত্বা ন নিবর্ত্তন্তে তদ্ধাম পরমং মম॥ ৬

আহ্বয়। ক্ষ্যঃ তৎ ন ভাসরতে, তথা শশাস্কঃ ন [ভাসরতে] পাবকঃ ন [ভাসরতে], যৎ পদা ন নিবর্ত্তরে তৎ মম প্রমং ধাম ॥»

আমুবাদ। স্থ্য চন্দ্র ও পাবক কেইই সেই ধামকে উত্তাসিত করিতে পারেন না। বে পদকে প্রাপ্ত ইইলে আর সংসারে ফিরিতে হর না, তাহাই আমার পরম ধাম ॥৬

ভাষ্য। তদেব পদং পুনবিশিশ্বতে—তন্ ধামেতি ব্যবহিতেন ধারা সম্বন্ধ:। ধাম তেজোরপং পদং ন ভাসরতে সুর্য্য আদিত্য: সর্ব্যবভাসনশক্তি-মক্ষেপি সতি। তথা ন শশাভঃ চক্রো ন পাবকো নামিরপি। যদ্ ধাম বৈক্ষবং পদং গদ্ধা প্রাপ্য ন নিবর্ত্তক্তে যক্ত সুর্য্যাদির্ন ভাসরতে তদ্ধাম পদং পরমং মম বিক্ষোঃ ॥

আনন্দগিরিটীকা। তচ্চেৎ পদং বেছং কর্ত্বন্তৎ কম্মেতি বৈভাপাতো-হবেছং চেদপুনর্থহাৎ প্রেপিতজাসিদ্ধিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—তদেবেতি ॥৬

অকুবাদ। সেই পদেরই পুনর্কার বিশেব করিয়া পরিচয় দেওয়া ইইতেছে বে, "সেই ধান" এই দ্রন্থ পদটির সহিত ইহার সম্বন্ধ। সেই ধান অর্থাৎ তেলোরপ পদ, সর্কাবভাসনশক্তি থাকিলেও স্থা অর্থাৎ স্বরং আদিতাও সেই পদক্তে প্রকাশিত করিতে পারেন না, সেইরপ "শশারু" চক্র এবং "পাবক" অগ্নিও সেই পদক্তে প্রকাশিত করিতে পারেন না। বে, 'ধান' বৈক্ষব পদকে প্রাপ্ত হইরা আরু সংসারে জন্ম লাভ করিতে হয় না এবং বে পদকে স্থা প্রভৃতি তেলঃও অবভাসিত করিতে পারেন না, তাহাই আনার অর্থাৎ বিষ্ণুর পরম "ধান" পদ ॥৬

मरेगवाः शोवरनारक कीवक्रुः मनाजनः । मनः यष्टांनी सिद्यांनि श्रकृष्टिशानि कर्षि ॥ १

আৰ্যু। জীবলোকে মনৈব সনাতনঃ জীবভূতঃ অংশঃ প্রস্কৃতিস্থানি সন্তঃ-বছাৰি ইন্সিয়াণি কর্ষতি ॥१ আমুবাদ। এই সংসারে আমারই সনাতন জীবরূপ স্থান, প্রকৃতিহিত মনঃ ও পঞ্চেল্রেরক আকর্ষণ করিয়া থাকে॥৭

ভাষ্য। যদ গছা ন নিবর্ত্তরে ইত্যুক্তম্। নমু সর্কা হি গতিরাগত্যন্তা সংবোগা বিপ্ররোগান্তা ইতি হি প্রসিদ্ধন্দ, কথমুচাতে তদ্ধানগতানাং নাত্তি নিবৃত্তিকি । শৃণ্ তত্র কারণন্—মনৈব পরমান্তনোহংশো ভাগোহবর্ত্তর একদেশ ইত্যর্থান্তরং জীবলোকে জীবানাং লোকে সংসারে জীবভূতঃ ভোকা কর্ত্তা ইতি প্রসিদ্ধঃ সনাতনঃ। যথা জলস্থ্যকঃ স্থ্যাংশো জলনিমিন্তাপারে স্থ্যামেব গলা ম নিবর্ত্তরে তথায়মপ্যংশঃ তেনৈবাত্মনা সংগছতে বমেব, বথা বা বটাত্যপাধিপরিছিন্নঃ ঘটাভাকাশঃ আকাশাংশঃ সন্ ঘটাদিনিমিত্তাপারে আকাশং প্রাপ্যে ন নিবর্ত্তরে ইত্যেবমত উপপন্নমুক্তং যদ্ গলা ন নিবর্ত্তরে ইতি। নমু নিরবর্ত্ত পরনাত্মনঃ ক্তোহবর্ত্ব একদেশোহংশঃ ইতি। সাবয়বত্বে চ বিনাশপ্রসঙ্গঃ অবয়ব-বিভাগাং। নৈব দোবঃ, অবিভারতোপাধিপরিছিন্ন একদেশোহংশ ইব করিতো মতঃ। দর্শিতশ্চায়মর্থঃ কেত্রাধ্যান্তে বিভরশঃ। স চ জীবঃ মদংশাদ্ধন করিতঃ কথং সংসরতি উৎক্রামতি চ ইত্যুচ্যতে মনঃবর্ত্তানি ইন্দ্রিয়াণি শ্রোজাদীনি প্রকৃতিভানি স্থানে কর্ণশাল্যানে প্রকৃত্তা স্থিতানি কর্বতি আকর্ষতি । প

আনন্দগিরিটীকা। ইজন্ অন্য আজিপতি—যদ্গত্তেত। তত্ত্ব

ক্রেসিন্ধিং প্রমাণরতি— সংযোগা ইতি। গ্রমন্ত্রাগমনান্তরপ্রসিদ্ধেরস্ক্রং

ফল্যবেত্যাদি ইত্যুপসংহরতি—কথমিতি। আক্রেপং পরিহরতি—শৃণিতি।
ভগবংপ্রাপ্রেনিবৃত্তান্তরাভাবং সপ্রমার্থং। জীবক্ত পরাংশদ্বেংশি কথমুক্রদোরসমাধিরিত্যাশন্ত্য প্রতিবিশ্বপক্রমাদার দৃঠান্তেনপ্রত্যাচ্টে—যথেতি। অবক্রেদপক্ষমাধিত্য
দৃঠান্তাহরেগোক্রদোরসমাধিং দর্শরতি—যথা বেতি। আক্রেদপক্ষমাধির্পসংহরতি—অত ইতি। পরক্ত নিরবরবন্ধাং তদংশত্বং জীবভাযুক্তমিতি শক্তে—
নিল্লতি। তত্ত নিরবরবন্ধং সাধরতি—সাবয়বত্বে চেতি। বন্ধতো নিরংশভাশি
পরক্ত কর্মনয়া জীবোহংশো ভবিশ্বতীতি পরিহরতি—নৈম দোম ইতি। বন্ধতভ জীবক্ত নাংশত্বং পরমান্দ্রনা তাবয়াত্রতায়া দর্শিতহাদিত্যাহ—দর্শিত্রশেচ্তি।
বিদি পরভাংশন্থন করিতো জীবো বন্ধতন্তিলবন করিছি তত্ত সংসারিত্বশ্ব

ইৎক্রান্তির্কেতিশ্বতে—কথমিতি। জীবক্ত সংসরণমুৎক্রমণক্ষ উপপাদরিক্রমৃক্রমতে—উচ্যুক্ত ইতি॥ ৭

অকুবাদ। বাহা প্রাপ্ত হইলে আর ফিরিতে হর না, ভাহা বলা হইরাছে। একণে আগত্তি এই প্রকার হইতেছে বে, বত প্রকার গমন আছে, আঁহা ুর্জুনাই

भागमनाच भर्वार गंजित शत প্রত্যাগতি হইবেই হইবে। তাহাই বলি হইল, ভবে এখানে কি প্রকারে বলা হইল বে, দেই ধামে বাহারা বার, ভাছাদের আর প্রভ্যাবর্ত্তন করিতে হয় না ? কেন বে এই প্রকার বলা হইরাছে, তাহার কারণ বলিতেছি শুন। এই জীব-লোকে অর্থাৎ সংসারে "জীবভূত" কর্ত্তা ভোক্তা বলিয়া বাহা দিল এবং বাহা সনাতন, সেই জীব "আমার" প্রমান্মার অংশভঙ অর্থাৎ ভাগ অবরব কিংবা একদেশ। যেমন জলে প্রতিবিশ্বত সূর্য্য, (প্রতিবিশ্বের) নিমিত্ত বে জল, তাহার অভাব হইলে বিশ্বস্ত্রপ বে বথার্থ কর্য্য ভাহাতে বার এবং আর তাহার প্রত্যাবর্ত্তন হর না, সেই প্রকার এই জীবস্বরূপ সেই প্রমান্মার অ.শ ডিপাধির বা নিমিত্তের বিলয় হইলে বিরমান্মার সহিত মিলিত হর িএই ভাবেই ইহার তাংপর্য্য গ্রহণ করিতে হইবে] অথবা ঘটরূপ উপাধির দারা পরি-ক্ষিব্ন বে ঘটাকাশ, তাহা বেমন আকাশেরই অংশ অথচ ঘটরূপ উপাধির বিনাশ **∌ইলে এই ঘটাকাশ বেমন আকাশকে পায়, আর ফিরিয়া আসে না, সেইরূপ** িউপাধির বিনাশ হইলে] সেই পদকে প্রাপ্ত হইরা জীব এ সংসারে জার ফিরিয়া चारन ना। এইরপ যাহা পূর্বে বলা হইরাছে, তাহা সকতই হইরাছে। একণে বিজ্ঞানা হইতে পারে যে, পরমাত্মা নিরবয়ব, তাঁহার আবার অবয়ব বা একদেশ কি প্রকারে সম্ভবপর ? প্রমাত্মা বদি সাবর্ব হন, তাহা হইলে, অবন্থববিভাগ बहेरन छांबात विनाम व्यवश्रकावी। এই कात्रत পর্মান্মার যে व्यवहर नाहे মধাৎ তিনি বে নিরবরব, তাহা হির হইতেছে-এই প্রকার পূর্বপক্ষের উত্তর এই বে —ইহা দোবই নহে; কারণ, পরমাত্মা বধন অবিভাক্ত উপাধিছারা পরি-চ্চিন্ন হন, তথনই তাঁহার একদেশ ও অংশ ক্রিত হইরা থাকে, ক্রোধ্যারেও এই বিষয়টি বিস্তৃতভাবে প্রতিপাদিত হইয়াছে। সেই আমার অংশভাবে কল্পিত লীৰ কি প্ৰকারে সংসারে প্রবেশ করে এবং কি ভাবেই বা উৎক্রাস্ত হয়, তাহা बना ब्हेरजरह दर, मन ब्हेबारह यह दर क्यणि विकासत्त्र, त्रहे शांकृषि विकास व्यर्धा শ্রোত্ত নাসা প্রস্তৃতি এবং মন এই কয়টিকে আত্মা আকর্ষণ করিয়া থাকে। ঐ পাঁচটি ইন্দ্রির ও মনঃ কিরুপভাবে থাকে, তাহাই বলা হইতেছে বে. "প্রকৃতিক" প্রকৃতি অর্থাৎ উপাদান, যেমন শ্রোৱেন্সিয়ের উপাদান কর্ণছিল ইত্যাদি। সেই নৈট উপাদানে যাহারা থাকে, তাহারই "প্রকৃতিত্ত"॥१

> শরীরং যদবাপ্নোতি যচ্চাপ্যুৎক্রামতীশ্বরঃ। গৃহীকৈতানি সংযাতি বায়ুর্গনানিবাশরাৎ॥৮

অব্যা । ঈশর: হৎ (यहा) শরীরম্ অবাগ্রোতি মচ (বদা চ) উৎক্রোমতি [তদা] বায়ু: আশরাৎ গন্ধান্ ইব এতানি গৃহীত্বা সংবাতি ॥৮

অনুবাদ। সেই ঈশ্বর (পরমামা) বে সময় শরীরকে আশ্রর করেন বা পরিত্যাগ করেন, সেই উভয় কালেই তিনি, বায়ু বেমন পুসাদি হইতে গন্ধকে শয়, সেই ভাবে এই ইন্দ্রির পাঁচটি এবং মনকে লইয়া বান ॥৮

ভাষ্য। কমিন্ কালে ?—বচ্চাপি বদা চ অপি উৎক্রামতি ঈশরো দেহাদি সক্ষাতস্থানী জীবন্তদা কর্ষতীতি শ্লোকস্ত দ্বিতীরপাদোহর্ষবশাৎ প্রাথম্যন সম্বধ্যতে। বদা চ পূর্কমাৎ শরীরাৎ শরীরাস্তরম্ সাম্নোতি তদা গৃহীদা এভানি মনঃবঠানি ইন্দ্রিয়াণি সংযাতি সমাগ্ বাতি গচ্ছতি। কিমিনেত্যাই বারুঃ প্রনো গন্ধানিবাশরাৎ পূপাদেঃ ॥৮

আনন্দণিরিটীকা। সম্বানে ম্বিতানামিজিরাণাং জীবেনাকর্বণ কালং পৃচ্ছতি—ক্স্মিলিত। জীবজোৎক্রাম্বিনে শ্বত ইত্যাশক্ষেপরশৃদ্ধার্থনাহ— দেহাদীতি। উৎক্রাম্ব্যনম্বরভাবিনী গতিরিত্যেতদর্থবশাদিত্যক্রম্। অবশিষ্টানি লোকাক্ষরাণ্যাচষ্টে—যদা চেতি ॥৮

অনুবাদ। কোন্ সময়ে १—বে সময়ে "ঈশর"—দেহাদি সংঘাতের শামী—জীব উৎক্রমণ করেন, সেই সময়ই আকর্ষণ করিয়া থাকেন [এইটি ছিতীয় চরণের অর্থ হইলেও, প্রয়োজনবশতঃ প্রথমেই ইহার সহিত অব্যয় করা হইতেছে]; বে সময় জীব পূর্বাদেহ ছাড়িয়া আর একটি দেহকে প্রাপ্ত হন, সেই সময় এই পঞ্জেব্রের এবং মনংকে সঙ্গে লইয়া বান। কেমন করিয়া সঙ্গে লইয়া বান, তাহাব উপমা এই বে, বায়ু বেমন "আশয়" পূশাদির মধ্য হইতে গদ্ধকে বহন করিয়া লইয়া বার, [সেইকপ এই আত্মাও ইক্রিয় এবং মনকে এই দেহের মধ্য হইতে দেহান্তরে যাইবার সময় বহন করিয়া লইয়া বান] ॥৮

শ্রোত্তং চক্ষু: স্পর্শনঞ্চ রসনং ত্রাণমেব চ। অধিষ্ঠায় মনশ্চায়ং বিষয়াসুপসেবতে ॥৯

জ্বয়। স্বরং শ্রোজং চকু: স্পর্ণনং (স্বর্গিজিরং) রসনং প্রাণং সনশ্চ স্বিষ্ঠার বিষয়ান্ (শস্থাদীন্) উপসেবতে (ভূঙ্কে) ॥১

चानू वात । धरे जीव, त्यांक वन् पक् तमन आन धर्वर मत्नत उनत .चिन विक वरेवा, विवतमम्द्वत रक्षांभ कतियां थार्स ॥» . ভাষ্য। কানি পুনস্তানি ইতি—শ্রোত্রং চক্ষ্য ম্পর্ণনং চ পরিবিয়ং রসনং আগমেব চ মনশ্চ বঠং প্রত্যেকমিন্তিরেণ সহ অধিঠার দেহস্থ: রিবয়ান্ শকাদীন্ উপসেরতে ॥>

আনক্ষিবিটীকা। মনঃষষ্ঠানীক্রিরাণ্যেব প্রশ্নবারা বিশেষতো দর্শরিভ— কানীতি ">

অনুবাদ। তাহারা কে, তাহাই বলিতেছেন বে, শ্রোত্র, চক্ষুং, ছগিজির, রুসন, আণ এবং বর্চ মন এই কয়টি ইজিরের প্রত্যেক ইজিয়ের সহিত দেহে অধি-ট্রিত হইরা [সেই জীব] শশাদি বিষয়ের সেবা করিয়া ণাকে ॥৯

> উৎক্রামন্তং স্থিতং বাপি ভূঞ্জানং বা গুণান্বিতম্। বিমৃঢ়া নামুপশ্যন্তি পশ্যন্তি জ্ঞানচক্ষুষঃ॥১•

আৰুয় । বিমৃচাঃ ভণাৰিতম্ [তম্] উৎক্রামন্তংস্থিতং বাপি ভূঞানং বা ন অমুপশুন্তি, জানচকুবঃ [তু] পশুন্তি ॥>•

অসুবাদ। সেই আত্মা গুণান্থিত হইরা বধন উৎক্রাস্ত হয়েন, অথবা
' এই দেহের মধ্যে অবস্থিত থাকিয়া বধন বিষয়সমূহের ভোগ করিরা থান্দেন,
এই উভর অবস্থাতেই তাঁহাকে অজ্ঞ ব্যক্তিগণ দেখিতে পায় না। কিন্ত বাঁহারা
ক্রানচকু, তাঁহারা দেধিরা থাকেন ॥>•

ভাষ্য। এবং দেহগতং দেহং—উৎক্রামন্তং পরিত্যক্রতং দেহং পুর্বোপাতং হিতং বা দেহে তিঠন্তং ভূঞানং বা শব্দাদীংশ্চোপলভ্যানং গুণাহিতং
ক্ষয়ংখনোহাথৈঃ গুণারহিত্য অনুগতং সংযুক্তম্ ইত্যর্থ:। এবজ্তমপি এনমত্যন্ত্রদর্শনগোচরপ্রাপ্তং বিম্চা দৃষ্টাদৃষ্টবিষরভোগবলাক্ষইচেতন্তরা অনেক্ধা মৃচা
নাম্পশ্রন্থি অহো কটং বর্ত্তে ইত্যক্রোশতি চ ভগবান্। যে তু পুন: প্রমাণক্ষনিক্রানচকুবং তে এনং পশ্রন্থি জ্ঞানচকুবং বিবিক্তদৃষ্টর ইত্যর্থ: ॥>•

আনন্দ্রগিরিটাকা। শরীরমিত্যাদির্মাকে দেহাদান্মনোহভিরেকমুকা শ্রোবং চকুরিত্যাদৌ স্বাভিলবিতে বিষরে বথাবথং করণানাং প্রবর্ত্তকথাৎ ভেত্যোহতিরিক্তশ্চান্মেত্যক্তং তর্হি তম্ৎক্রান্ত্যাদি কুর্বস্তং স্বরূপথাৎ কিমিতি সর্ব্বেন পঞ্চন্তীত্যাশভ্যাহ—এবমিতি। সরিহিত্তমন্দেন দর্শনবোগ্যমণি বিষয়-পান্নক্রাদান্দানং সর্ব্বেন পঞ্চন্তীতি ভগবতোহমুক্রোশং দর্শরতি—এবস্কৃতমিতি। ভর্তি কেবানান্দর্শনন্ ? ত্রাহ—যে তু পুনরিতি ॥১০ অনুবাদ। এই প্রকারে দেহগত আত্মা দেহ হইতে দেহান্তরে বর্ণন গমন করেন—উৎক্রান্ত হরেন অর্থাৎ পূর্বালীক্বত দেহকে পরিত্যাগ করেন কিবো দেহে অবহিত থাকিরাই শলাদি বিষয়সমূহকে ভোগ করেন [কেমন ভাবে ভোগ করেন ?] "গুণাহিত" মুধ হঃধ এবং মোহ এই তিনটি গুণের সহিত মিলিত ইইরাই তিনি বিষয়সমূহের ভোগ কবিরা থাকেন। এই কারণেই সকল অবস্থাতেই আত্মা সকলের দর্শনগোচর প্রাপ্ত হইরা থাকেন। তথাণি বাহারা মৃচ অর্থাৎ প্রহিক ও পারত্রিক ভোগের হারা বাহাদের চিত্ত অতি প্রবলভাবে আহুই, তাহারাই অনেক প্রকারে মৃচ, এইজন্তই তাহারা সেই আত্মাকে দেখিতে পার না; এই কথাটি বলিরা যেন ভগবান্ সেই সকল জীবের প্রতি দরা প্রকাশ করিয়া বলিতেছেন,—হার, তাহাদের কি কঠা। কিন্তু বাহারা জ্ঞানচকু অর্থাৎ প্রমাণ হারা উৎপন্ন জ্ঞানই বাহাদের চক্ক,—ভাহারা অর্থাৎ বিবিক্তদর্শিগণই ভাঁহাকে দেখিতে সমর্থ হন ॥১০

যতন্তো যোগিনশৈচনং পশাস্ত্যাত্মন্মবস্থিতম্। ব যতন্তোহপ্যকৃতাত্মানো নৈনং পশাস্ত্যচেতসঃ ॥১১

অমুয়। যতন্তঃ (যতমানা:) যোগিনঃ আত্মনি (বৃদ্ধো) অবস্থিতন্ এনং পশুস্তি; সক্তাত্মানঃ (অজিতেন্দ্রিয়া:) যতন্তঃ (যতমানাঃ) অপি—[বৃতঃ] অচেতসঃ (ব্যুচিন্তাঃ) [অতঃ] এনং ন পশুস্তি ॥১১

অনুবাদ। বোগিগণ বন্ধপর হইরা আত্মাতে (বুদ্ধিবৃত্তিতে) অবস্থিত এই পরমাত্মাকে দেখিরা থাকেন; কিন্তু বাহারা অজিতেক্সির, স্থতরাং চিত্তইীন (শব্চিত্ত) তাহারা বন্ধপর হইরাও ইহাকে দেখিতে পার না ॥১১

ভাষ্য। কেচিৎ তৃ—বতত্তঃ প্রবন্ধং কুর্বন্তঃ বোগিনন্চ সমাহিতচিন্তা এনং প্রকৃতনাত্মানং পশুতি অরমহমন্মীতি উপলভত্তে আত্মনি স্বসাং বৃদ্ধী অবস্থিতম্। বতত্তোহণি শান্তাদিপ্রমাণৈরক্কভাত্মানঃ অসংস্কৃতাত্মানঃ ভপসাইন্দিরজ্বেন চ ফুল্চরিভাদমূপরতা অশান্তদর্শাত্মানঃ প্রয়ন্ধং কুর্বন্তোহণি নৈনং পশুতি অচেভসোহবিবেকিনঃ ॥১১

আনন্দণিরিটীকা। জানচক্ষণদেন স্থারাস্থ্যীতং শালং জানসাধনস্কর তৎ কিমিদানীং শাল্তমাত্তেণ স্থারাস্থ্যীতেনাত্মানং পশ্যতি নেত্যাহ—কেচিনিত্তি। প্রবন্ধ:। প্রবন্ধ: প্রবন্ধননাত্মকঃ ৮শাল্লাদিপ্রমাধ্যৈতভোষ্ণীতি সম্বন্ধঃ অসংক্ষতাত্মকর্মং প্রকটরতি—তপ্রস্তি। স্থারিভাদবিরতিফলং ক্রমিটি—ই

আশান্তেতি। অভনব্দীনামবিবেকিনাং সদপি প্রবণাদি ন ফলবদিতি মন্বাহ
—প্রয়ত্ত্বমিতি ॥১১

অসুবাদ। কোন কোন বোগিগণ সমহাহিতচিত্ত এবং প্রযক্ষপর হইরা এই (অর্থাৎ বাহার প্রসঙ্গ চলিতেছে), সেই আত্মাকে দেখিতে সমর্থ হন—এই আমিই পরমাত্মা এই ভাবে নিজ বৃদ্ধিতে প্রতিফলিত আত্মস্বরূপের উপলব্ধি করিরা থাকেন। কিন্তু বাহারা "অক্সতাত্মা" অসংকৃতহাদর অর্থাৎ বাহারা তপতা ও ইন্তিরেকর এই ছইটি উপার অবলম্বন করে নাই বলিরা হশ্চরিত হইতে কিরত হইতে গারে না এবং বাহারা অবিবেকী, ভাহারা শাস্তাদি প্রমাণকে অবলম্বনপূর্বক প্রযক্ষপরারণ হইরাও সেই আত্মাকে দর্শন করিতে সমর্থ হর না ॥>>

যদাদিত্যগতং তেজো জগদ্তাসয়তেহখিলম্। যচচন্দ্রমসি যচ্চাগ্রো তত্তেজো বিদ্ধি মামকম্॥১২

ভাষুরা | আদিত্যগতং বং তেজঃ অথিলং জগদ্ভাসরতে, তথা চক্রমসি বং তেজঃ অয়ৌচ বং তেজঃ [দৃশ্যতে] তং মামকম্ [এব] তেজঃ বিদ্ধি ॥১২

অনুবাদ। বে তেজ: স্বেঁ্য অবস্থান করে এবং বাহা এই অথিব জগৎকে উদ্ভাসিত (আলোকিত) করে, বে তেজ: চক্রে বর্ত্তমান রহিরাছে কিংবা অন্নিতে বে [তেজ: দৃষ্ট হয়] ঐ সকল প্রকার তেজ: আমারই তেজ: জানিও॥ ১২

ভাষ্য। যৎ পদং সর্বজ্ঞাবভাসকমপি অগ্নাদিত্যাদিকং জ্যোতিন বিভাসরতে বং প্রাপ্তান্দ মুক্তবং পুনঃ সংসারাভিমুধা ন নিবর্ত্তরে, যত চ পদত্ত
উপাধিভেদমন্থবিধীরমানা জীবা ঘটাকাশাদর ইব আকাশতাংশান্তত্ত পদত্ত
সর্বান্মত্বং চ সর্বব্যবহারাম্পদত্মং চ বিবক্তুশতভূতিঃ লোককৈবিভূতিসংক্ষেপমার্হ
ভগবান্—বদাদিত্যগতং আদিত্যাশ্রম্, কিং তং ? তেজঃ দীপ্তিঃ প্রকাশঃ
জগদ্ভাসরতে প্রকাশরতি অথিলং সমস্তং বচ্চক্রমসি শশভূতি তেজোহবভাসকং
বর্ততে, বচাগ্রে হতবহে তত্তেজা বিদি বিজানীহি মামকং মদীরং মম বিক্ষোন্তং
জ্যোতিঃ। অথবা বদাদিত্যগতং তেজকৈতত্তাত্মকং জ্যোতিঃ বচ্চক্রমসি বচ্চাগ্রে
ভততেলা বিদি মামকং মদীরং শম বিক্ষোন্তক্ত্ জ্যোতিঃ। নমু হাবরের অধ্যমের্
চ তাং সমান্য হৈতত্তাত্মকং জ্যোতিঃ তত্ত্ব কথমিদং বিশেষকং বদাদিত্যগতবিদ্যাদি। নৈয় দোরঃ, সন্থাধিক্যাদাধিক্যোগপত্তেঃ। আদিত্যাদির হি সক্ষরঃ

ভাষ্কপ্রকাশমত্যস্তভাশ্বরম্ অভন্ত তৈবাবিন্তরাং জ্যোভিরিতি তদ্বিশিষ্যকে, ন ভূ ভারেব তদ্বিদ্যিত। বধা হি লোকে তুলাহণি মুধসংস্থানে ন কার্ভক্জালী মুধমাবির্ভবভি আদর্শাদে তু বচ্ছে শহুতরে চ তারতম্যেন আবির্ভবিভি , তদ্বৎ ॥১২

আনন্দগিরিটীকা। অনস্তরশ্লোকচত্ইয়ন্ত ব্তাম্বাদ্ধারা তাৎপর্য্যাহ—
যৎপদ্মিতি। জীবান্ধদেন চিদ্রপথমূকা তদীর্হিচতন্তেন আদিত্যাদীনাৰ্
অবভাসকভাচে ব্রহ্মণন্টিকপথমিত্যাহ—যদাদিত্যেতি। চিদ্রপত্তিব ব্রহ্মণঃ সর্ব্ধান্
অকত্বপ্রতিপাদকদেন শ্লোকং ব্যাচষ্টে—যদিত্যাদিনা। আদিত্যাদে তব্রভ্রন্ত ব্রহ্মন্ট তক্তবেল্যাতিঃ সর্ব্ধাবভাসকমিত্যর্থঃ। ব্রহ্মণঃ সর্ব্বজ্ঞদেন চিক্রপত্তমন্ত
বিবক্ষিতমিতি ব্যাধ্যাম্বরমাহ—অথবৈতি। হৈতক্তমে্যাতিবঃ সর্ব্বনাবিশেষাৎ
আদিত্যাদিগতত্ববিশেষণমর্ক্তমিতি শহতে—নিষ্তি। সর্ব্বন সংক্রোবিশেষাৎ
অভিব্যক্তিবিশেষাদ্বিশেষণমিতি পরিহরতি—নৈষ্ দোষ্ ইতি। তদেব প্রপঞ্চন
মতি—আদিত্যাদিশ্লিতি। সর্ব্বন হৈতক্তমন্ত্র্যাতিবন্ত্রল্যান্থেৎপি কচিদেবাভিব্যক্ত্যাবিশেষণাপত্তিং দৃষ্টান্তেন স্পষ্টমতি—যথা হীতি॥১২

অমুবাদ। যে পদ সকল বস্তুকে অবভাগিত করে—অগ্নি বা আদিতা প্রভৃতি জ্যোতিঃও বাহাকে অবভাসিত করিতে পারে না, বে পদকে প্রাপ্ত হইরা মুমুক্সণ পুনর্কার প্রত্যাবর্ত্তন করেন না, আকাশেব ধেমন ঘটাকাশ প্রভৃতি অংশ, সেইরপ অন্ত:করণকণ উপাধিভেদবশে ভিন্ন ভিন্ন বলিয়া প্রতীত জীবগণও বে পদেরই অংশ বলিয়া প্রতীত হয়, সেই পদই সকল বস্তুর আত্মা এবং সকল প্রকার ব্যবহারের একমাত্র আশ্রর, ইহা প্রতিপাদন করিবার জন্ত ভগবান্ চারিট লোকের যারা সংক্রেপে [সেই পদেরই] বিভূতি বর্ণন করিতেছেন। "আদিত্যগত্ত আদিত্যকে আশ্রম করিয়া ৰাহা প্রকাশ পার, তাহাই আদিত্যগত। সৈই আদিত্যগত কি ? অর্থাৎ "তেবঃ"। এই তেবঃ শব্দের অর্থ দীবি বা প্রকাশ, এই 'অথিল' সমস্ত জগৎকে অবভাসিত করিয়া থাকে, বে ডেজঃ "চন্ত্রমসি" শশধরেও অবভাসকরূপে প্রকাশ পায় এবং যে তে**ং "অগ্নি" অর্থাৎ** रखरार अवकान कतार धाकान भाव, (नहे (कक्: "मामक" मनीव वर्षार वाहि বিষ্ণু, সেই ডেব: আমারই ডেব:--ইহা ভূমি জানিবে। অথবা ডেবা এই শব্দের অর্থ চৈতন্তরণ ক্যোতিঃ; এই বে স্ব্যা চক্র এবং অগ্নিতে চৈতন্তরূপ ক্যোতিঃ अकाम नारेश बारक, तरे ब्यांजिः कामात्र कवीर विकृतरे ब्यांजिः रेश कृति वानितः। अकरन विकामा रहेरछ भारत्र त्व, श्वत्तहे हेडक नाः व्यवहे व्यक्तिकः সর্বাহি দেই চৈতন্ত্র কপ জ্যোতিঃ সমানভাবেই বিশ্বমান রহিরাছে, তবে কেন এরপভাবে বিশেষ করিয়া নির্দেশ করা হইল যে, আদিত্য প্রভৃতিতে অবস্থিত যে চৈতন্তর প্রজাতিঃ—তাহা আমারই জ্যোতিঃ ? ইহার উত্তর এই যে, এই প্রকার বলাতে যে কোন প্রকার দোষ হইরাছে, তাহা বলা যায় না; কারণ, দেই চৈতন্ত জ্যোতিঃ সর্বাত্র সমান হইলেও যেখানে সন্বপ্তণের আধিক্য, সেইখানে অধিক ভাবে প্রকাশ পাইয়া থাকে। আদিত্য প্রভৃতিতে অত্যন্ত ভাস্বর এবং অত্যন্ত প্রকাশমর সন্বপ্তণ দেখিতে পাওরা যায়; স্বতরাং আদিত্য প্রভৃতিতে দেই চৈতন্তময় জ্যোতিঃ অতি বিশদভাবে আবিভূতি হইয়া থাকে—এস্থলে ইহাই তাৎপর্যার্থ। বস্তুতঃ দেই চৈতন্তময় জ্যোতিঃ যে আদিত্য প্রভৃতি বন্ধতে অধিক আছে, তাহা নহে। যেমন লোকে প্রায়ই দৃষ্ট হয় যে, মুখের আকার একই, তথাপি কাঠ প্রাচীরাদি অস্বচ্ছ বস্তুতে মুখ আবিভূতি হয় না, কিন্তু দর্পণাদি স্বচ্ছ বা স্বচ্ছতর বস্ত্রতে ঐ মুখই অধিক বা অধিকতর ভাবে আবিভূতি হইরা থাকে, এথানেও সেইরূপ॥১২

গামাবিশ্য চ ভূতানি ধারয়াম্যহমোজসা। পুষ্ণামি চৌষধীঃ দর্কাঃ দোমে। ভূত্বা রদাত্মকঃ॥১৩

আন্ধ্য়। অহং গাম্ (পৃথিবীম্) আবিগু ওজনা (বলেন) ভূতানি ধারয়।মি, রসাত্মক: সোমো ভূতা অহং সর্কাঃ ওষধীঃ পুরুষমি ॥১৩

আমুবাদ। পৃথিবীর মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া আমিই নিজ বলের দারা ভূতগণকে ধারণ করিয়া থাকি। আমিই রদময় চক্রমৃত্তি ধারণ করিয়া সকল প্রকার ওবধিগণকে পরিপুষ্ট করিয়া থাকি ॥১৩ •

ভাষ্য। কিঞ্চ –গাং পৃথিবীম্ আবিশু প্রবিশু ধাররামি ভূতানি জগৎ অহম্ ওজ্ঞসা বলেন বব্লং কামরাগবিবর্জিতম্ ঐশ্বরং জগন্বিধারণার পৃথিবাঃং প্রবিষ্টং বেন গুরুবী পৃথিবী নাধঃ পততি ন বিদীর্যতে চ। তথা চ মন্ত্রবাঃ—
"বেন ভৌক্রা পৃথিবী চ দ্ঢ়া" ইতি। "দ দধার পৃথিবীম্" ইত্যাদিশ্চণ অতো গামাবিশু চ ভূতানি চরাচরাণি ধাররামীতি যুক্তমুক্তম্; কিঞ্চ পৃথিব্যাং জাতা ওষধীঃ দর্বা ব্রহিববাস্থাঃ পৃঞ্চামি পৃষ্টিমতী রসন্বাহ্মতীশ্চ করোমি সোমো ভূষা রসাক্ষকঃ সোমঃ সর্বরসাত্মকঃ সর্বরসাত্মকঃ সেমঃ স হি দর্বা ওষধীঃ স্বাস্থ্

জানন্দগিরিটীক। ইত্রণ্ট সর্বাত্মতং প্রক্রতপদশু যুক্তমিত্যাহ—
কিক্তেতি। ঈশরো হি পৃথিবীদেবতারূপেণ পৃথিবীং প্রবিশু ভূতশব্দিতং কর্পৎ
ঐশরেণৈর বলেন বিভর্ত্তি ততো গুর্ব্যাপি পৃথিবী বিদীর্ঘ্য নাথে নিপততীত্যক্ত
প্রমাণমাহ—তথা চেতি। পরস্থৈব হিরণ্যগর্ভাত্মনাবস্থানাং ন মন্ত্রব্যারশ্রপরতেতি
ভাবঃ। দেবতাত্মনা জাবাপৃথিব্যার্কগ্রত্ম * উদ্ধরণসামর্থাং † তথাপীশ্রবায়ন্তমেন
স্কর্পধারণং তদপেক্ষা ত্র্বলভাদিতি ক্রপ্তব্যা। ঈশরশু সর্বাত্মেরে হেত্তম্ভরমাহ—
কিক্তেতি। রসাত্মক্রেমাররপতাপত্তাবপি কপমৌরধীরীশ্রঃ সর্বাঃ পৃঞ্চাতীত্যাশঙ্কাহ—সন্ব্রিতি॥ ২৩

অনুবাদ। আরও গো শব্দের অর্থ যে পৃথিবী, তাহণর মধ্যে আবিষ্ট অর্থাৎ প্রবিষ্ট ইইয়া আনি ভূতসমূহকে জগৎকে ধারণ করিরা আছি [কিসের ঘারা ধারণ করি?] ওজঃ অর্থাৎ বলের ঘারা। যে বল, কাম ও রাগ ঘারা পরিচালিত নছে এবং ঈশ্বরদম্বন্ধি যে বল জগৎকে বিশ্বত করিবার জক্ত পৃথিবীতে প্রবিষ্ট ইইয়া রহিয়াছে এবং বে বলের প্রভাবে এই ভারবতী পৃথিবী নীচে পড়িয়া নায় না অথবা বিদীর্ণ ইইয়া যায় না। শ্রুতিতেও নির্দ্দিষ্ট আছে যে, "যাহার প্রভাবে আকাশ উজ্জ্বণ হইয়া পাকে এবং বাহার প্রভাবে পৃথিবী চূচ ইইয়া পাকে"। শ্রুতিতে আরও নির্দ্দিষ্ট ইইয়াছে যে, "তিনিই পৃথিবীকে ধারণ করিয়া পাকে"। শ্রুতরাং পৃথিবীতে প্রবিষ্ট ইইয়া বলের ঘারা আমি জগৎকে ধারণ করিয়া পাকি, এই যে কথা বলা ইইয়াছে, তাহা স্ক্রিয়ক্ত ইইয়াছে। আরও পৃথিবীতে উৎপন্ন সর্ব্বপ্রকার "ওবিধি" ধান্ত যব প্রভৃতিকে আমি পৃষ্ট করিয়া থাকি এবং আত্-রসযুক্তও করিয়া থাকি। [কি প্রকার স্বরূপ ধারণ করিয়া পৃষ্ট করিয়া থাকি যান্ত অর্থাৎ সর্ব্বপ্রকার রসম্বর্জণ—সর্ব্বপ্রকার রসের আধার অর্থাৎ সর্ব্বরূস শুভাব যে "সোম" চন্দ্র, তাহাই আত্মরস প্রবেশ করাইয়া সকল প্রকার ওরধিকে পৃষ্ট করিয়া থাকে॥ ১৩

অহং বৈশ্বানরো ভূত্বা প্রাণিনাং দেহমাশ্রিতঃ। প্রাণাপানসমাযুক্তঃ পচাম্যন্ধং চতুর্বিধম্॥ ১৪

অন্বয়। অংং বৈশানর: (জাঠরাঝি:) ভূদা প্রাণিনাং দেহম্ সাখিতঃ প্রাণাপানসমাযুক্তঃ [সন্] চতুর্বিধম্ অন্নং পচামি ॥ ১৬

স্পাবাপৃথিব্যোগ্ত ক্লছমিতি কেচিৎ পঠস্তি।

⁺ उद्मत्रविमामबीम् इकाशि किर।

আফুবাদ। আমিই বৈখানরশ্বরূপ হইয়া প্রাণিগণের দেহকে আশ্রর করি এবং প্রাণ এবং অপান এই ত্বই ভাগে বিভক্ত হইয়া চতুর্বিধ আল্লের পরিপাক সাধন করিয়া থাকি॥ ১৪

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ—অহমেব বৈখানর উদরন্থ: অগ্নিভূমি "অয়মগ্নিবৈধানর: বেখানর: পুরুষে যেনৈতদলং পচাতে" ইত্যাদিশ্রুত: বৈখানর: সন্ প্রাণিনাং প্রাণবতাং দেহমাশ্রিত: প্রবিষ্ঠ: প্রাণাপানসমাযুক্ত: প্রাণাপানাভ্যাং সমাযুক্ত: সংযুক্ত: পচামি পক্তিং করোমি, চতুর্বিধং চতুপ্রকারম্ অলমশনম্ ভোজ্যং ভক্ষাং চোষ্যং লেছং চ ভোক্তা বৈখানর: অগ্নিং ভোজ্যমলং দোম: তদেতত্ভয়মগ্নীবোমৌ স্কামিতি পশ্রুতোহরদোবলেপো ন ভবতি ॥ ১৪

আনন্দগিরিটীকা। ভগবতঃ সর্পায়ত্ব হেম্বরনাহ—কিঞ্জেতি।
মহমেবেতাহংশকেন পরো লক্ষাতে, ভূষা পচামীতি সম্বন্ধঃ। পরক্তৈব জাঠরাত্মনা
স্থিতৌ শ্রুতিং প্রমাণয়তি—অয়ুমিতি। বাহাং ভৌমমগ্রিং ব্যাবর্ত্তয়তি—
যোহয়মিতি। দেহাস্তরারম্ভকং ভূতীয়ং ভূতং ব্যবচ্ছিনন্তি—যেনেতি। জাঠরায়্মনা পরঃ স্থিতকেং তক্ত দেহাশ্রিতত্বং সিদ্ধমিতি ন পৃথগ্ বক্তবামিত্যাশদ্য
"প্রাথবিধং প্রায়ের্ডাগ্রেতিইতং বেদ" ইতি শ্রুতিমাশ্রিত্যাহ—প্রবিষ্ট ইতি।
পরক্ত জাঠরাত্মনোহয়পাকে সহকারিকারণমাহ—প্রাণেতি। সংযুক্তবং
সংধুক্তিত্বেম্। অয়ত্ত চাতুর্বিধ্যং প্রকটয়তি—ভোজ্যমিতি। ভোক্তরি বৈশ্বানরদৃষ্টির্জাজ্যে সোমদৃষ্টিরেবং ভোক্তভোজ্যরূপং সর্বাং জগদন্ধীবোমাত্মনা ভূক্তিকালে
ধ্যান্নতো ভোক্ত্ররন্ধতা দোবো নেতি প্রাসন্ধিকং সফলং ধ্যানং দর্শয়তি—
ভোক্তেতি ॥ ১৪

অকুবাদ। আরও [বলি গুন] আমিই "বৈখানর" উদরস্থ অগ্নি; এই বিষরে শ্রুতিতেও নির্দেশ আছে যে "এই আত্মাই বৈখানর অগ্নি, যে অগ্নি শরীরের মধ্যে প্রবেশ করিয়া অল্লের পরিপাক করে।" প্রাণী অর্থাৎ প্রাণধারি-গণের দেহে প্রবিষ্ট হইয়া সেই বৈখানর আমি "প্রাণাপানসমাযুক্ত" প্রাণ এবং অপান এই তৃইটির সহিত যুক্ত হইয়া পরিপাক করিয়া থাকি। [কিসের পাক্কানা সাধন করি ? তাহার উত্তর হইতেছে যে] চতুর্বিধ অল্ল ; অর্থাং ভোজ্যা ভক্ষ্য চোষ্য এবং লেহ্য এই চতুর্বিধ অল্লের পাক করিয়া থাকি। ভোজ্যা বিখানর—অগ্নি, ভোজ্য অল্ল—সোম, এই তৃইটিকে মিলাইলে অগ্নীবোম হয়, এই ক্রীবোমময়ই জগৎ এই প্রকার দৃষ্টি বাহার হয়, তাহার পক্ষে সকল প্রকার অল্ল-দোষ বিশুপ্ত হইয়া যার॥ ১৪

সর্ববেশ্য চাহং হৃদি সন্নিবিষ্টো, মত্তঃ স্মৃতিজ্ঞানমপোহনং চ। বেদৈশ্চ সর্বৈরহমেব বেগ্যো, বেদান্তকুদ্বেদবিদেব চাহম্॥ ১৫

আনুষ্। অবং দর্শশু দদি দদ্ধিবিষ্টঃ,মত্তঃ স্থৃতিঃ জ্ঞানম্ অপোহনং (তয়োর-ভাব*চ) চ, দর্বৈশঃ বেদৈঃ অহমেন বেছ*চ, অহং বেদাস্তক্তৎ অহমেন বেদ্বিক্ষ ॥: ৫
অকুবাদ। আমি দক্ষের সদয়ে দদ্ধিকি, আমা ইইতেই স্থৃতি, জ্ঞান

অকুবাদ। আন সকলের সদরে বারাবন্ধ, আনা হংতেই স্থাত, জ্ঞান এবং অপোহন [জ্ঞান ও স্থৃতির অভাব], সকল বেদের আমিই বেছ, আনিই বেদাস্তক্তং এবং আমিই বেদবিং ॥১৫

ভাষ্য। কিঞ্চ-সর্বস্ত প্রাণিজাতস্ত অহমান্মা সন্ হুদি বুদ্ধৌ সন্নিবিষ্টঃ অতো মত্ত আন্ধান সর্বপ্রাণিনাং স্মৃতিজ্ঞানং তদপোহনঞ। বেষাং পূণ্যকর্মিণাং পৃণ্যকর্মান্তরোধন জানস্থতী ভবতঃ তথা পাপকর্মিণাং পাপকর্মান্তরূপেণ স্থৃতিজ্ঞানয়োরপোহনং চ অপায়নমপগমনং চ। বেদৈশ্চ সর্বৈরহমেব প্রমান্মা বেস্তঃ বেদিতব্যঃ বেদাস্তর্জং বেদাস্থার্থসম্প্রদায়কৃদিত্যর্থঃ। বেদবিদ্ বেদার্থবিদেব চাহ্ম্॥১৫

আননদিগিরিটীকা। ইতশ্চ সর্ব্বাদ্ধান্তন সর্ব্ববহারাম্পদত্বম্ ঈশ্বরশ্রেতাহ — কিপ্লেতি। প্রাণিজাতং ব্রহ্বাদিপুতিকান্তম্। আত্মত্বা বৃদ্ধে সিরিটিজং তন্ত্রণদোষাণানশেবেণ দ্রষ্ট্ তৃষ্ণ। অত্যে বৃদ্ধিমধ্যস্ত্র গুণদোষদেষ্ট্ ত্বাদিতি বাবং। মতঃ সর্ব্বাধ্যকাণ জগদ্বস্থুস্ত্রধারাদিত্যর্থঃ। প্রাণিনাং স্থৃতিজ্ঞানরোন্তদপারস্ত চ ভগবদণীনত্বে ভগবতো বৈষম্যং স্থাদিত্যাশঙ্ক্যাহ— যেয়ামিতি। স্থৃতিজ্ঞান্তরান্ত্রান্তনাদাবস্থৃত্ত পরামর্শঃ। দেশকালস্বভাববি প্রকৃষ্ট্র্যাপি জ্ঞানমন্ত্রত্বঃ। ধর্মাধর্মাভ্যাং বিচিত্রং কুর্নতো নেশ্বরস্থ বৈষম্যমিতি ভাবঃ। বেদবেজং পরং ব্রহ্ম জগবতোহন্তদিতি শক্ষাং বারম্বতি—বৈদ্বিতি। বেদান্তানাং পৌরুষ্কের্মাই—বৈদ্বিতি। তদর্থদন্তি। তদর্থদন্ত্রাধার্থবর্ত্তকত্বার্থং তদর্থবাধা হথ্যজ্ঞানবন্ধমাহ—বেদার্থিতি। ১৫

অনুবাদ। আরও [বলি শুন্] সকল প্রাণিগণের আমি আত্মা।

স্তরাং আফ্টি তাহাদের হৃদি অর্থাৎ বৃদ্ধিতে সন্নিবিষ্ট। আনা হইতেই অর্থাৎ

আত্মা হইতেই স্থৃতি এবং জ্ঞান হইয়া থাকে এবং আনা হইতেই তাহাদের স্থৃতি

এবং জ্ঞানের অপোহ অর্থাৎ অভাব হইয়া থাকে। বাহারা পুণ্যকর্মা, তাহাদের

স্কৃত পুণ্যকর্মের অনুসারে স্থৃতি এবং জ্ঞান আমা হইতেই উৎপন্ন হয়।

এইরূপ যাহারা পাপকর্মা, তাহাদের নিজক্বত পাপকর্মের অনুক্রণ স্থৃতি এবং

জ্ঞানের অভাবও আমা ইইতেই ইইয়া থাকে। আমিই বেদাস্তব্ধৎ অর্থাৎ বেদাস্তব্ধ প্রথাপ প্রামান্ত বেদাস্তব্ধ প্রথাপ প্রামান্ত বেদাব্ধি প্রথাপ প্রামান্ত বেদাব্ধি প্রথাপ প্রামান্ত বেদাব্ধি প্রথাপ প্রথাপ প্রথাপ বিশ্ব ।১৫

দ্বাবিমো পুরুষো লোকে ক্ষরশ্চাক্ষর এব চ। ক্ষরঃ সর্ব্বাণি ভূতানি কূটন্থোহক্ষর উচ্যতে ॥১৬

আর্য় । শোকে করঃ অকরশ্চেতি ইনো দৌ এব পুরুষৌ । বিত্র] সর্বাণি ভূতানি করঃ, কৃটস্তঃ অকর উচ্যতে ॥১৬

অনুবাদ। সংসারে ক্ষর এবং অক্ষর এই দ্বিনিধ পুরুষ [বিল্লমান রহিয়াছে]। তাহাদের মধ্যে ক্ষর শক্ষের অথ সর্বভূত, আব কৃটত্ব পুক্ষট অক্ষর বলিয়া অভিচিত ॥১৬

ভাষ্য। ভগবত ঈশ্বরশু নারায়ণাণ্যপ্ত বিভৃতিসংক্ষেপ উক্ত: বিশিষ্টোপাধিক্ষতঃ "বদাদিত্যগতং তেজ" ইত্যাদিনা, অথাধুনা তত্ত্বৈ ক্ষরাক্ষরোপাধিপ্রবিভক্ততয়া নিরূপাধিকশু কেবলশু বরূপনির্দিধারয়য়য়া উত্তরশ্লোকা আরভ্যন্তে। তজ্ঞ
সর্বমেব অভীতানাগভানস্তরাধ্যায়ার্থজাতং ত্রিধা রাশীক্ত্যাহ। ঘাবিমৌ পণগ্রাশীক্তা পুরুষৌ ইত্যুচ্যেতে লোকে সংসারে। ক্ষরণ্ঠ ক্ষরতি ইতি ক্ষরঃ
বিনাশী একো রাশিরপরঃ পুরুষোংক্ষরগুদ্বিপরীতঃ ভগবতো মায়াশক্তিঃ ক্ষরাধ্যশু
পুরুষশু উৎপত্তিবীজম্ অনেকসংসারিজ্পুকামকর্মাদিসংস্কারাশ্রয়ঃ অক্ষরঃ পুরুষ
উচ্যতে। কৌতে পুরুষৌ ইত্যাহ ব্য়মেব ভগবান ক্ষরঃ সর্বাণি ভূতানি সমস্তঃ
বিকারজাত্তমিত্যর্থঃ। কৃটন্থঃ কৃটঃ রাশিঃ রাশিরিব স্থিতঃ, অথবা কৃটঃ মায়া বঞ্চনা
জিক্ষতা কৃটিলতা ইতি পর্যায়াঃ, অনেক্মায়াদিপ্রকারেণ স্থিতঃ কৃটন্থঃ সংসারবীজ্ঞানস্ত্যাৎ ন ক্ষরতি ইতি মক্ষর উচ্যতে। ১৬

আনন্দণিরিটীকা। উত্তরশ্লোকানাং তাৎপর্য্যৎ বক্ত্র্ং বৃত্তং কীর্ত্তর্গ্রন্ত ইতি। বিশিষ্টোপাধিরাদিত্যাদিঃ। সম্প্রত্যধ্যায়সমাপ্রেক্তরসন্দর্ভন্ত তাৎপর্য্যাহ—অথেতি। ন কেবলং নির্ন্পাধিকাত্মস্থানপনির্নায় উত্তরগ্রন্থঃ কিন্তু সর্ব্বেত্র্য গীতাশাল্পক্ত অর্থনির্নার্থমিত্যাহ—তত্ত্রেতি। ক্ষরাক্ষরোপাধিভ্যাৎ পরমাত্মনা চ রাশিত্রয়ন্কেন সর্ব্বাত্মবেন অশুদ্যাদিদোত্মপ্রস্ত্রন্ম্
— দ্বাবিমৌ ইতি। প্রন্থাধিষাৎ প্রন্থবং ন সাক্ষাদিতি বিবক্ষিত্বাহ—
পুরন্ধাবিত্তি। পরং প্রন্থবং ব্যাবর্ত্তরতি—ভগবত ইতি। তত্র কার্যানিস্ক্রন্থমানং স্ক্রন্তি—ক্ষরাখ্যুস্তেতি। মারাশক্তিং বিনা ভোক্ত্বণং কর্মাদিসংস্কারাদের উক্ককার্য্যোৎপত্তিরিত্যাশক্ষ্য তম্ভ নিমিন্তত্বেপি মারাশক্তিকপাদান-

মিতি মত্বাহ—অনেকেতি। কামকর্মাদীত্যাদিশব্দেন জ্ঞানং গৃহতে।
প্রকৃতিং পুরুষং চৈবেতি প্রকৃতয়ারিহ গ্রহণমিতি শঙ্কামাকাজ্জাদারা বারয়িত—
কৌ তাবিতি। কূটশব্দার্থমূজা তেন হিতন্ত ক্টছতেতি সংপিণ্ডিতমর্থমাহ
অনেকেতি। তম্ভ কণমক্ষরত্বং বিনা ব্রন্ধজ্ঞানমনাশাদিত্যাহ—
সংসারেতি॥>৬

অনুবাদ। ভগবান ঈশ্বর যিনি নারারণ এই নামে প্রসিদ্ধ, তাঁহার বিভূতি সংক্ষিপ্তভাবে কণিত হইয়াছে ; সেই প্রমাত্মা এক হইলেও তদীয় উপাধির নানাৰ আছে বলিয়া তিনি নানা বিভূতিমান বলিয়া ব্যবহারের গোচর হইয়া থাকেন। "আদিত্যগত যে তেজঃ অথিল জগংকে ভাসিত করে" এই প্রকার করটি শ্লোকের দারাই এই বিভৃতি সংক্ষিপ্তভাবে বর্ণন করা হইয়াছে; একণে সেই কর এবং অক্ষর এই দ্বিবিধ উপাধি দারা প্রবিভক্ত বলিয়া প্রতীত অথচ বাস্তবিক নিরুপাধিক বে এক্ষা, তাঁহারই প্রকৃত স্বরূপের নির্দ্ধারণ করিবার ইচ্ছার পুরবর্তী শ্লোক ওলির আরম্ভ করা হইতেছে। অতীত এবং অব্যবহিত পূর্ব্ববর্তী অধ্যায়ে বাং। কিছু বলা হইয়াছে, সেই সকল পদার্থকে তিন প্রকারে ভাগ করিয়া দেখাইতেছেন য়ে, পুরুষ ছুই প্রকার। এই সংসারে পুরুষ বলিলে ছুই প্রকার রাশিতে বিভক্ত তুই জাতীয় পদার্থ বুঝা যায়। একটি প্রকার হইতেছে ''ক্ষর' যাহা ক্ষরিত হয় অর্থাৎ বিনাশ প্রাপ্ত হয়, তাহাই হইতেচে "কর পুরুষ"। স্বার একপ্রকার পুরুষ আছে, তাহাকে বলা বায় ''অফর"। এই অকর রাশি (প্রকার) কর হইতে বিপরীত পুরুষ অর্থাৎ ইহাই ভগবানের মায়াশক্তি এবং এই অক্ষরই ক্ষরনামক পুরুষের উৎপত্তির পক্ষে বীজন্থানীয় কারণ, অর্থাৎ অনেক সংসারী জীবের কাম-কর্ম এবং সংস্কার সমূহের একমাত্র আশ্রয় [বলিলে এই অক্ষর বা মায়াশক্তিই বুঝা যায়]। কে দে কর ? এবং কেই বা দে অক্ষর ? তাহাই ভগবান স্বরং বলিতেছেন যে, ক্ষর শব্দটির অর্থ সর্ব্বভূত অর্থাৎ জগতের বত কিছু কার্য্য সকলই ''ক্ষর''; কৃটস্থ যে পুরুষ, তাহাই ''অক্ষর'' শব্দের প্রতিপান্ত অর্থ। যাহার হ্বরণ বা বিনাশ হয় না, তাহাকেই "অকর" বলা যায়। কৃটস্থ এই শন্ধটির অর্থ এই, কৃট শক্ষের অর্থ রাশি। যিনি রাশির স্থায় অপরিবর্ত্তনশীল হইয়া অবস্থিতি করেন, তাঁছাকেই "কুটছ" বলা যায়। অথবা কূট এই শব্দটির অর্থ মায়া বঞ্চনা জিল্পতা কৃটিলতা—এই কয়টি শব্দেরও যাহা অর্থ, কূট শক্ষাটরও তাহাই অর্থ। বিনি অনেক মায়াদি প্রকারে এই সংসারে প্রতীত হন অর্থাৎ সংসারের বীজ অনস্ত মানাই বাঁছার উপাধি; স্থতরাং ঐ বিচিত্রপ্রকার অনন্ত মানাশক্তির যিনি আশ্রয়,

তাঁহাকেই ''কুটস্থ'' শব্দের অর্থ বিদিয়া জানিতে হইবে; অনস্ত মায়াশক্তির জাশ্রয়, এই কারণেও তিনি অক্ষর অর্থাৎ অবিনাশী ॥১৬

> উত্তমঃ পুরুষস্থক্তঃ পরমাত্মেত্যুদাহৃতঃ। যো লোকত্রয়মাবিশ্য বিভর্ত্যব্যয় ঈশ্বরঃ॥১৭

প্রমুয় । অন্তস্ত উত্তম: পুরুষ: প্রমান্ত্রা ইতি উদাহত:। য: প্রব্যায়: ঈশ্বর: (সর্ক্জো নারায়ণাখ্য:) লোকত্রমাবিশ্য বিভর্তি ॥১৭

অনুবাদ। এই ছই প্রকার পুরুষ হইতে ভিন্ন আর একটি উত্তম পুরুষ আছেন, যাঁহাকে পরমাত্মা বলিয়া [শাস্ত্রে] নির্দেশ করে; এবং যিনি অবিনাশী এবং ঈশ্বর [অর্থাৎ সর্বেজ্ঞ নারায়ণ] এবং যিনি অস্তরে প্রবিষ্ঠ হইয়া লোকত্রয়কে ভরণ করিয়া পাকেন ॥১৭

ভাষ্য। আভাং ক্ষরাক্ষরাভাং বিলক্ষণ: ক্ষরাক্ষরোপাধিষয়দোবেশাস্পৃষ্ট:
নিতাশুদ্ধবৃদ্ধমূক্তরভাব:—উত্তম: উৎকৃষ্টতম: পুরুষরভা: অত্যন্তবিলক্ষণ আভাং
পরমান্ধা ইতি পরমণ্ডামো দেহাগুবিগাক্ষতান্মভা: আন্ধা চ সর্বভৃতানাং প্রতাক চেতন ইত্যত: পরমান্ধা ইত্যুদাহ্বত উক্তো বেদান্তের্। স এব বিশেষ্যতে বেগ গোকত্রয়ং ভূর্ভু বংস্থরাখ্যং ক্ষকারয়া চৈতভাবলশক্তা আবিশ্য প্রবিশ্য বিভর্তি ক্ষরপদ্ভাবমাত্রেণ বিভর্তি ধারয়তি অব্যয়ো নাম্ম ব্যয়ো বিগতে ইত্যব্যয়:
ক্ষিরঃ সর্বজ্ঞো নারয়ণাথা ক্ষশনশীলঃ ॥১৭

আনন্দণিরিটীকা। কার্য্যকারণাখ্যো রাশী দর্শয়িষা রাশ্যন্তরং দর্শয়তি—
আভ্যামিতি। বৈলক্ষণ্যফলমাহ—ক্ষরেতি। উপাধিষয়কত শুণদোষাম্পর্শে
ফলিতমাহ—নিত্যেতি। আভ্যাং করাক্ষরাভ্যানিতি যাবং। উত্তমোহশু ইতি
পদ্বয়ং বস্তুতঃ সর্বধৈব ক্ষরাক্ষরাত্মখাভাবদৃষ্ট্যর্থম্। জড়বর্গস্থান্ততক্তং স্বাতম্যাং
নির্ম্পতি—স্প্রবৈতি। লোকত্রয়মিত্যুপলক্ষণং সর্বং জগদপি বিবিক্ষতম্।
চৈতন্তমেব বলং তত্ত শক্তিশায়া তয়েতি যাবং। জগদায়েল পরস্থ ব্যাপায়ান্তরং
বারয়তি—স্বরূপেতি। ন চাস্তালো ধায়য়িতা স্বতোহচলঘাদিত্যাহ—অব্যয়্ম
ইতি। "সংযুক্তমেতং ক্রমক্ষরঞ্চ ব্যক্তাব্যক্তং ভরতে বিশ্বমীশঃ" ইতি প্রত্যর্থং
গৃহীষাহ—ঈশ্বর ইতি॥ ১৭

অনুবাদ। এই ক্ষর এবং অক্ষর নামে প্রসিদ্ধ পুরুষদ্বর হইতে বাহা জ্ঞান্ত বিলক্ষণ—অর্থাৎ ক্ষর এবং অক্ষর এই হুই প্রকার উপাধির কোন প্রকার দোবের দারা যাহা স্পৃষ্ট নহে, এবং যাহা সর্বাদা বৃদ্ধ সর্বাদা শুদ্ধ এবং সর্বাদা মৃক্তা, সেই পুরুষ "উত্তম" উৎক্ষষ্ঠতম এবং এই দ্বিধ পুরুষ হইতে ভিন্ন অর্থাৎ বিলক্ষণ সেই উদ্ভম পুরুষই পরমাত্মা, পরম [অর্থাৎ উৎক্ষষ্ঠতম, কাহা হইতে ?] দেহাদিরক আবিছা দারা পরিকল্পিত যে আত্মা, তাহা হইতেও এই উদ্ভম পুরুষ পরম অর্থচ তাহার আত্মা অর্থাৎ দকল ভূতেরই ব্যাপক চৈত্রভ্যময়, এই কারণেই বেদাস্ত-সমূহে ইনি "পরমাত্মা" এই শব্দের দারা নির্দিষ্ট হইয়া পাকেন। সেই পরমাত্মারই বিশেষণ এই যে, তিনি "অব্যয়" অর্থাৎ কোন অব্ত্থাতেই তাঁহার কোন অভাবেরই নাশ হয় না; এইজভ্যই তিনি অব্যয়, তিনি স্বীয় চৈত্রভ্যবলশক্তির দারা ভূ: ভূব: এবং স্ব: এই তিনটি লোকের অন্তরে প্রবিষ্ট হইয়া ভরণ করিতেছেন,এবং তাঁহার নিজ স্বরূপের সত্রা মাত্রধারাই পালন করিতেছেন। তিনিই ঈশ্বর অর্থাৎ সর্বজ্ঞ, নারায়ণ তাঁহারই নাম, এবং ঈশ্বরত্বই তাঁহার স্বভাব ॥ ১৭

যম্মাৎ ক্ষরমতীতোহ্হমক্ষরাদপি চোত্তমঃ। অতোহস্মি লোকে বেদে চ প্রথিতঃ পুরুষোত্তমঃ॥১৯

আনুয়। বন্ধাৎ অহং করম্ অতীতঃ অকরাদপি উত্তমঃ, অতঃ লোকে বেদে চ পুরুষোত্তন ইতি প্রথিতঃ অন্মি॥ ১৮

আমুবাদ। যে কারণে আমি ক্ষরকে অতিক্রম করিয়া অবস্থিত আছি এবং অশব হইতেও আমি উত্তম, এই জন্মই লোকে এবং বেদে আমি পুরুষোত্তম এই নামে প্রসিদ্ধ আছি॥১৮

ভাষ্য। যথাব্যাখ্যাতশু ঈশ্বরশু প্রুবে। তুন ইত্যেতরাম প্রাদিদ্ধ তশু
নাদনির্কান প্রদিদ্ধা অর্থবন্ধ নামো দর্শরন্ নিরতিশরঃ অহম্ ঈশ্বর ইত্যাত্মানং
দর্শরতি ভগবান্—বন্ধাৎ করমতীতোহহং সংসারমারাবৃক্ষম্ অর্থথাধ্যম্ অতিক্রান্তঃ
অহম্ অক্ষরাদিপি সংসারবৃক্ষ-বীজভূতাদিপি চোভ্তমঃ উৎক্রপ্ততমঃ উর্ক্রতমো বা অতঃ
করাক্ষরাভ্যাম্ উত্তমন্তাং অন্ধি ভবামি লোকে বেদে চ প্রথিতঃ প্রুধ্যাতঃ পুরুবোত্তম ইত্যেবং মাং ভক্তজনা বিহঃ কবরঃ কাব্যাদিরু চ ইন্ধং নাম নিবর্গন্তি
পুরুবোক্তম ইত্যনেনাভিধানেন অভিগ্রান্তঃ। ১৮

আক্রদ গিরিটীকা। কিঞ্চ লোকবেদয়োর্ভগবতো নাম প্রসিদ্ধা সিদ্ধনপ্রপঞ্চত্বমিত্যাই—যুখেতি। অথকণাদিবদক্ত নামো রুড়ত্বাদর্থবিশেষাভাবাদ্
ভগবতোহপি লৌককেখরবদীখরত্বং সাতিশয়মিতি নেত্যাই—তুশ্রেতি।

যত্মাদিত্যভাপেকিতং নিকিপতি—অত ইতি। উত্তমঃ পুরুষ ইতি
বাক্যাশেষঃ ॥ ১৮

অনুবাদ। যে ভাবে ঈশবের শ্বরূপ ব্যাখ্যাত হইরাছে, সেইভাবেই তাঁহার পুরুষোত্তম এই নামটিও প্রাসিদ্ধ হইরাছে। যৌগিক শক্তির দ্বারা এই নামের অর্থ কি, তাহা দেখিলে বুঝা যায় যে, এই নামটিও তাঁহার সার্থক। ইহাই দেখাইরা [তদ্বারা] ভগবান্ প্রকারাস্তরে ইহাই দেখাইতেছেন যে, আমিই নিরতিশর ঈশব। "কর" সংসাররূপ মায়ামর অশ্বর্গকের বীজভূত যে পুরুষ, তাহা হইতেও আমি "উত্তম" উৎকৃষ্টতম বা উর্দ্ধতম, এই কারণে অর্থাৎ কর এবং অকর নামক প্রসিদ্ধ দিবিধ পুরুষ হইতে উত্তম বলিয়া আমি লোকে এবং বেদে পুরুষোত্তম এই নামে "প্রথিত" প্রখ্যাত রহিয়াছি। ভক্তগণ আমাকে পুরুষোত্তম বলিয়া জানে, কবিগণও কাব্য প্রভৃতিতে এই পুরুষযোত্তম নামেই আমার শ্বরূপ নিবন্ধন করিয়া থাকেন অর্থাৎ [লোক সমাজে] এই নামের দ্বারাই আমার শ্বরূপের পরিচ্ব প্রদান করিয়া থাকেন॥ ১৮

যো মামেবমদম্চো জানাতি পুরুষোত্তমম্। দ সর্ববিদ্ ভজতি মাং সর্বভাবেন ভারত॥ ১৯

আর্যা । বা অসম্চানাম্ এবং প্রবোভনং জানাতি, হে ভারত! স স্কবিং সন্মাং স্কভাবেন ভজতি ॥১৯

আকুবাদ। যে বাজি বিগতনোহ হইয়া আমাকে এই ভাবে পুরুষোত্তম বিদিয়া বৃষিতে পারেন, হে ভরত। তিনি সর্বজ্ঞ হন এবং সব্বভাবে আমাকে ভল্পনা করিয়া থাকেন॥ ১৯

ভাষ্য। অথেদানীং বণানিকক্তমাত্মানং বো বেদ তভেদং ফলম্ উচ্যতে— বো মামীশ্বরং বণোক্তবিশেষণমেবং বণোক্তেন প্রকারেণ অসন্মূচঃ সংমোহবর্জিতঃ সন্ জানাতি অয়মহমন্ত্রীতি পুরুষোত্তমং স সর্কবিং সর্কাত্মনা সর্কং বেত্তি ইতি সর্কাত্রঃ সর্কভৃতত্তং ভজতি মাং সর্কভাবেন সর্কাত্মতিত্তত্মা হে ভরত ॥ ১৯

আনন্দ্রিটীকা। আত্মনোংপ্রপঞ্চবং জ্ঞানফলোক্ত্যা স্তৌতি—অথেতি বথোক্তবিশেষণং সর্বাত্মদাদিবিশেষণোপেতনিতি যাবং। ক্ষরাক্ষ্যাতীতত্বং ধথোক্ত প্রকার:। সংমোহবর্জ্জিতঃ সংমোহেন দেহাদিঘাত্মাত্মীয়ত্ববৃদ্ধ্যা রহিত ইত্যর্থ:! ভগবস্তং জানতঃ সর্ববিশ্বং তত্তৈব সর্বাত্মনা বেয়ত্বাদিত্যাহ—স সূর্ব্বিশ্তি। সর্বাত্মনি মধ্যেবাসক্তচিত্তত্বেনেত্যর্থ:॥১৯

জাকুবাদ। একণে পুরের যে ভাবে বর্ণিত হইয়াছে, সেই ভাবে আত্মার

স্বরূপ যিনি জানেন, তাঁহার এই ফল বলা ষাইতেছে যে, যিনি আমাকে অর্থাৎ যথোক্তবিশেবণযুক্ত ঈশ্বরকে যথোক্ত-প্রকারে অসম্চ্—মোহবর্জিত হইয়া সম্যক্ প্রকারে জানিতে সমর্থ হন, [কি ভাবে জানিবেন, তাহাও বলিতেছেন] আমিই সেই প্রমাত্মা এই ভাবে [যিনি আমাকে জানিবেন] তিনি সর্ক্রিৎ, সর্কপ্রকারে সকল পদার্থকে যিনি জানেন, তিনি সর্ক্রিৎ অর্থাৎ সর্ক্রজঃ। সেই ব্যক্তিই সর্ক্রভাবের সহিত অর্থাৎ সকলের যাহা আয়া তাহাতেই একেবারে চিত্র সমর্পণ করিয়া সর্ক্রভুত্ত আমাকে ভক্তনা করিয়া পাকেন, হে ভরত ॥১৯

ইতি গুহুতমং শাস্ত্রমিদমুক্তং মধানগ। এতদ্বৃদ্ধা বৃদ্ধিমান্ স্থাৎ কৃতকৃত্য*চ ভারত॥ ২০

हेकि शक्कनत्मारुशायः।

আনুর্। হে অনঘ! হে ভারত! ইতি ইদং গুঞ্তনং শাস্ত্রণা উক্তম্ এতিব্বুদা [জনঃ] বুদ্দিশান্ কুতকুত্যুশ্চ স্থাৎ ॥ ২০

অনুবাদ। হে পাণরহিত, এই অতি গোপনীয় শাস্ত্র মানি বলিলাম। যে ব্যক্তি এই শাস্ত্র বৃঝিবে, তিনিই বৃদ্ধিমান্ এবং ক্ষতক্লতা হইবেন॥২•

ভাষ্য। অনিরধারে ভগবত্তবজ্ঞানং মোককলমুকা অপেদানীং তৎ স্থাতি—ইত্যেতৎ গুছ্ তমং গোপ্যতমং মত্যন্তরহন্তনিত্যেতং। কিং তৎ শাস্ত্রম্ ।
বছপি গীতাখাং সমন্তং শাস্ত্রম্পতি তপাপ্যরমেবাধ্যার ইহ শাস্ত্রমিত্যুচ্যতে স্থাত্যধং প্রকরণাং। সর্কো চি গীতাশাস্থার্থঃ অন্মিন্ মধ্যারে সমাসেন উক্তঃ ন কেবলম্ সর্কান্চ বেদার্থ ইহ পরিসমাপ্তঃ "যন্তং বেদ স বেদবিৎ" 'বেদৈন্দ সর্কৈরহমেব বেদ্ধঃ' ইতি চোক্তম্। ইদমুক্তং কথিতং মরা হে অনম্ অপাপ। এতং শাস্ত্রম্ যথাদর্শিতার্থং বৃদ্ধা বৃদ্ধিমান্ স্থাৎ ভবেরান্তপা কৃতকৃত্যান্চ ভারত! কতং ক্রত্যং কর্ত্ব্যং বেন স কৃতকৃত্যো বিশিষ্টক্রমপ্রপ্রতেন ব্রাহ্মণেন বং কর্ত্ব্যং তৎ সর্কং ভগবত্তক্ত্রে বিদিতে কৃতং ভবেদিত্যর্থঃ। ন চাক্তথা কর্ত্ব্যং পরিসমাপ্যতে কন্তাচিদিত্যভিপ্রায়:।, "সর্কং কর্মাধিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে" ইতি চোক্তম্।—

এতদ্ধি জন্মদাফন্যং বান্ধণন্ত বিশেষতঃ। প্রাপ্যৈতৎ কৃতক্কত্যো হি বিজো ভবতি নাম্ভণা।

ইতি চ মানবং বচনম্।

ষ্ড এতং প্রমার্থতত্ত্বং মন্তঃ শ্রুতবানসি ততঃ কুতার্থত্বং ভারতেতি ॥২০ 👉

আনশাণিরিটীকা। অধ্যায়ার্থমন্ভোপসংহারশ্লোকমবতারয়তি—
অস্মিমিতি। সর্বস্থাং গীতায়াং শাস্ত্রশব্দে বক্তব্যে কথমস্মিল্লধ্যারে তৎপ্রয়োগঃ
ভাদিত্যাশঙ্কাহ—মৃত্যুপীতি। সমিহিতমধ্যায়ং ভোতৃমপি কৃতত্ত্ব শাস্ত্রশপ্তজ্বদর্থাভাবাৎ তত্ত্রাহ—সূর্বেবি। হীতি। গীতাশাস্ত্রার্থস্ত সর্ব্বভাব সংক্রিপ্তাদেব
কেবলং শাস্ত্রশক্ষো ন ভবতি কিন্তু বেদার্থভাপি সর্ব্বভাব সমাপ্তের্যুক্তং শাস্ত্রপদমিত্যাহ—নেতি। তত্ত্র গমকমাহ—মৃত্যুমিতি। ভগবত্ত্বজানে কৃতকৃত্যতা
ইত্যেতত্বপ্রপাদয়তি—বিশিষ্টেতি। নাগ্রথেত্যুক্তং প্রপঞ্চয়তি—ন চেতি।
সভ্যপি তত্ত্বজানে কর্ম্মণাং কর্ম্বগ্রহাৎ ন কর্ম্বর্যমাপ্তিরিত্যাশঙ্ক্যাহ—সূর্ব্বমিতি।
তব্ত্তানে কর্মার্থতা ইত্যত্র মনোরপি সম্মতিমাহ—এত্ত্মীতি। ভারতেতি
সন্মোধনতাৎপর্যামাহ—যুক্ত ইতি। তদনেনাম্বনো দেহাগ্রতিরিক্তরং চিত্রপত্তং
সর্বান্মত্বং কার্য্যকারণবিনিম্মুক্তব্বেনাপ্রপঞ্চবং তত্তাগগৈণ্ডকরসত্রন্ধান্মত্বজ্ঞানাৎ
অশেষপুক্রমার্থপরিস্কাপ্তিরিত্যুক্তম্॥২০

অনুবাদ। এই অধ্যায়ে বলা হইয়াছে যে, ভগবানের কি তত্ত্ব তাহা জানিতে পারিলে মোকলাভ হয়, এইকণে সেই তথুজ্ঞানের প্রশংসা করা হইতেছে। এই ইহা "গুফ্তন" মতাস্ত রহস্তই গুফ্তন শব্দের অর্থ। কি শুহাতম ? [ভাহার উত্তর দেওয়া হইতেছে যে] শাস্ত্র। যগপি শাস্ত্র বলিলে এখানে সমগ্র গীতাশাস্ত্রই পাওয়া যায়, তথাপি এখানে এই শাস্ত্রশঙ্গের অর্থ এই অধ্যার মাত্র: কারণ ইহারই প্রকরণ চলিতেছে; স্থতরাৎ এই অধ্যায়েরই স্কৃতি করা হইতেছে। সমগ্র গীতাশান্ত্রের বাহা অর্থ, তাহা এই অধ্যায়ে সংক্ষেপে প্রতিপাদন করা হইয়াছে। ইহাই যে কেবল, তাহা নহে। সমগ্র বেদের যাহা অর্থ, তাহাও এই অণ্যায়ে সংক্ষেপে বলা হইয়াছে, "যে তাহাকে জানে সেই বেদবিং" "সকল বেদের আমিই একমাত্র প্রতিপান্ত।" ইত্যাদি বাক্যের ছারাও ইহাই প্রতিপাদিত হইতেছে। এই আমি তোমাকে যাহা কহিলাম. "হে অন্দ" পাপরহিত! সেই এই শাস্ত্র এবং ইহার অর্থ যে ভাবে প্রদর্শিত হইয়াছে, ভাষা জানিলেও লোক বুদ্ধিমান হয় এবং হে ভারত, কুতকুত্যও হয়। কৃত্য শব্দের অর্থ কর্ত্তব্য কার্য্য, বাহার কর্ত্তব্য কার্য্য সকল সম্পন্ন অর্থাৎ শেষ হইয়াছে, তিনি কত কতা। বিশিষ্ট কুলে জন্মগ্রহণ করিয়া বান্ধণের যাহা কিছু কর্ত্তব্য, তাহা সকলই পরিসমাপ্ত হয়, যদি ভগবানের স্বরূপ ভাল করিয়া বুরিতে পারা যায়, সে পর্যান্ত কাহারও কর্ত্তব্য কর্মের শেষ হইতে পারে না, ইহাই অভিপ্রায়। এই গীতাতেই ভগবান বলিয়াছেন বে, "হে পার্প, জ্ঞান হইলে দকল কর্ম্মের পরিসমান্তি হয়।" মন্ত্র বলিয়াছেন যে, "বিশেষতঃ বান্ধণের পক্ষে ইহাই জন্মের সফলতা। এই জ্ঞানকে লাভ করিতে পারিলেই দিজাতি কৃতকৃত্য হয়, অন্ত কোন প্রকারে তাহার কৃতকৃত্যতা হইবার সভাবনা নাই।" তুমি সাক্ষাৎ আমার মুখ হইতে ষেহেতু এই প্রমার্থতত্ব শ্রবণ করিলে, দেই কারণে তুমিও হে ভারত, কৃতার্থ হইলে॥২০

र्शक्षम् स्थाप्तः स्थाप्तः ।

অথ বোড়শোহধ্যায়ঃ

ভীভগবাসুবাচ।

অভয়ং সত্ত্বসংশুদ্ধিজ্ঞ নিযোগব্যবস্থিতিঃ। দানং দমশ্চ যজ্ঞশ্চ স্বাধ্যায়স্তপ আৰ্জ্জবম্॥১

আহ্যা শ্রীভগবালুবাচ। অভয় সত্ত্বংশুদিঃ জ্ঞানযোগ-ব্যবস্থিতিঃ দান দমঃ বজ্ঞা আধায়ঃ তপা আর্জ্জবং চ ॥১

অকুবাদ। জীভগবান্ কচিলেন .—নি ভীক তা, চিত্ত ছবি, জ্ঞান এবং বোগে তৎপরতা, দান, বাহ্ছ ইক্রিয়গণের সংযম, শাস্ত্রাধ্যয়ন, তপ্সা ও সরল্ভা॥১

ভাষ্য। দৈবী আহ্বরী বাক্ষণী চ ইতি প্রাণিনাং প্রকৃতয়ঃ নবনে আধ্যায়ে স্চিতান্তানাং বিস্তরেণ প্রদর্শনায় অভয়ং সন্ত্রপংশুদ্ধিরিত্যানিরধ্যায় আরভাতে। তত্র সংসারমোক্ষায় দৈবী প্রকৃতিঃ, নিবন্ধনায় আহ্বরী রাক্ষণী চেতি দৈবাা আদানায় প্রদর্শনং ক্রিয়তে ইতরয়োঃ পরিবর্জনায় :— অভয়মভীরুতা সন্ত্রপংশুদ্ধিঃ সন্ত্রপ্র অন্তঃকরণজ্ঞ সংব্যবহারেয় পরবঞ্জনমায়ান্তাদিপরিবর্জনং শুদ্ধভাবেন ব্যবহার ইত্যর্থঃ। জ্ঞানয়োগব্যবস্থিতিঃ জ্ঞানং শাস্ত্রত আচার্য্যতশ্চ আত্মাদিপদার্থানামবর্গমঃ অবগতানাম্ ইক্রিয়াত্যপসংহারেণ একাগ্রতয়া স্বাত্মসংবেগভাপাদনং গোগঃ তরেয়্র নিমোগয়োর্যবস্থিতিঃ ব্যবস্থানং তয়িষ্ঠতা এয়া প্রধানা দৈবী সান্ধিকী সম্পং। যত্র চ বেষামধিরুতানাং যা প্রকৃতিঃ সম্ভবতি সান্ধিকী সা উচ্যতে। দানং মথাশক্তি সংবিভাগোহয়াদীনাম্, নমশ্চ বাহ্মকরণানাম্পশমঃ অন্তঃকরণজ্ঞ উপশমং শাস্তিং বক্ষ্যতি, যজ্ঞত শ্রোতাহিরিকোনাদিঃ, আর্জবৃত্ত্বং সর্বনা।>

আননদিগিরিটীকা। ব্যবহিতেন দম্বরং বদন্ অধ্যায়ান্তরমবভারম্বতি— দৈবীতি। দৈবী স্বৃতিতা রাক্ষসীমান্ত্রীঞ্চৈব প্রকৃতিং মোহিনীসিত্যাদাবিতি শেষ:। প্রকৃতীনাং বিন্তরেণ দর্শনং ক্রোণযোগীত্যাশক্ষা বিভ্রোপ্যোগসাহ— সংসারেতি। অতীতে চাধ্যায়ে কর্মায়বদ্ধীয়ধশ্চ মূলায়য়য়য়তানীত্যন্ত কর্মব্যক্ষা
বাসনাঃ সংসারস্তাবাস্তরমূলতেনোক্তান্তা ময়য়দেহে প্রাণ্ডবীয়কর্মায়লারেল
ব্যক্তামানাঃ সাবিকাদিভেদেন দৈবাদিপ্রকৃতিত্রয়ত্বেন বিভক্তা বিন্তিতীয়ুর্ভগবায়ক্তা
বানিত্যাহ—শ্রীভগবানিতি। অভীক্ষতা শাল্তোপদিষ্টেহর্থে সন্দেহর
হিদ্বাস্থলাননির্চয়্ব, পরবঞ্চনা পরস্থা ব্যাজেন বশীকরণম্, মায়া ফ্রদরে অম্পথা
ক্ষয়া বহিরম্পণা ব্যবহরণম্, অনুভ্রমধণাদৃষ্টকগনম্, আদিপদেন বিপ্রকান্তাদিপ্রহঃ।
উক্তমর্থং সংক্ষিপ্যাহ—শ্রুদ্ধেতি। এবেত্যভ্রমান্তা জ্ঞানাদিস্থিত্যন্তা ত্রিধাক্তেতি
বাবেং। তামেব সান্তিকীং প্রকৃতিং প্রকটরতি—যুত্তেতি। জ্ঞানে কর্মবি
বা অধিক্রতানামভীক্রতান্তা বা প্রকৃতিং প্রকটরতি—যুত্তেতি। জ্ঞানে কর্মবি
বা অধিক্রতানামভীক্রতান্তা বা প্রকৃতিং সা ভেবাং ভক্র সান্তিকী সম্পৎ ইত্যর্থঃ।
মহাভাগ্যানামত্যক্রমা দৈবী সম্পত্তলা, সংপ্রতি সর্মেবাং বথাসন্তবং সম্পদ্ধে
বাপদিশতি—দান্মিতি। বাহ্নকরণবিশেবে কারণমাহ—অন্তঃকরণস্থৈতি।
দেববজ্ঞাদিরিত্যাদিশন্ধেন পিতৃবজ্ঞা ভূতবজ্ঞা বস্বয়বজ্ঞকেতি প্রস্কিম্কন্।
ব্রক্ষরজ্ঞ স্বাধ্যায়েন পৃথক্ করণাং॥১

অনুবাদ। জীবগণের প্রকৃতি তিনপ্রকার—দৈবী অন্থরী এবং রাক্ষ্মী, ইং। নবম অধ্যায়ে হচিত হইয়াছে। সেই ত্রিবিণ প্রকৃতির বিপ্ততভাবে পরিচয় দিবার জন্ম "অভয়" ইত্যাদি অধ্যায়ের আরম্ভ করা চইতেছে। দেই ত্রিবিধপ্রকৃতির মধ্যে দৈবী প্রকৃতিই মোক্ষণাডের অনুকৃল, আহুরী এবং রাক্ষমী প্রকৃতি বন্ধের কারণ; স্থতরাং দৈবী প্রকৃতিকেই গ্রহণ করিতে হইবে এবং আস্থরী ও রাক্ষদী প্রকৃতির পরিবর্জন করিতে হইবে। দেইজন্তই তাহাদের বিস্ততভাবে পরিচয় আবশুক। এই কারণে ভগবান্ বলিতেছেন বে, "अंভয়" অভীকতা, "গ্ৰুদংগুদ্ধি" স্বুশক্ষের অর্থ অন্তঃকরণ, তাহার গুদ্ধি—গুদ্ধভাবে वायहात व्यर्थाए वायहात्रकारण भत्रश्रवका मान्ना धवर मिणा धरे कन्नि लाखन পরিবর্জ্জন, "জ্ঞানযোগব্যবস্থিতি" জ্ঞান শব্দের অর্থ—শান্ত এবং আচার্য্যের সাহায্যে আত্মাদি পদার্থের স্বরূপাবগতি, এই প্রকার অবগতির পরে ইচ্ছিয়।দির 'সংষমপূর্ব্বক একাগ্রচিত্তে ঐ সকল পদার্থকে আত্মপ্রত্যক্ষের গোচর করা**ই যো**গ শন্দের অর্থ 🗸 এই জ্ঞান ও যোগ বিষয়ে ব্যবস্থিতি অর্থাৎ তন্মিষ্ঠা একাগ্রতা वा जर्भावाह कानत्याभवाविष्ठि हैं हो है विश्व श्री मा किकी देवती मन्नार । অধিকারিগণের যেখানে যেরূপ সাত্তিক প্রকৃতি হইতে পারে, তাহাই বলা इटेटाउट्ड.—"नान" निट्छत সামধ্যাञ्चनाटत खन्नानित সংবিভাগই नान; "नम" वारकक्षित्वत मधन : अत्यःकत्रत्वत निवाहरे नान्ति, हेरा नात्त विनादन ।

"ষক্ত" বেদবিহিত অগ্নিহোত্রাদি এবং দেবষজ্ঞ নৃষক্ত প্রস্তৃতি পঞ্চমহাষক্ত [যাহা]
শ্বতিশাল্কে বিহিত, [সেগুলিও ধরিয়া লইতে হইবে]; "স্বাধ্যার" শুভাদৃষ্ট
লাভার্থ ঋথেদাদির অধ্যয়ন; "তপ" বক্ষ্যমাণ শারীর ক্লেশ, "আর্জ্জব" ঋজ্তা
সরলতা সর্বাদ [এইগুলি দৈবী সম্পাদে থাকা চাই] ॥>

অহিংসা সত্যমক্রোধস্ত্যাগঃ শান্তিরপৈশুনম্। দয়া ভূতেম্বলোলুপ্ত্যুং শ্ব মার্দ্দবং দ্রীরচাপলম্॥২

অন্ত্র্য়। অহিংসা, সত্যন্ অক্রোধ:, ত্যাগ:, শান্তি:, অপৈশুনন্, দয়া ভূতেরু অলোল্প্র্ং, মার্দ্বং, খ্রী:, অচাপলন্ ॥২

অনুবাদ। অহিংসা, সত্য, অক্রোধ ত্যাগ, শান্তি, অকাপট্য, প্রাণি-গণের প্রতি করুণা, লজ্জা এবং অচপলতা॥ ২

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ-অহিংসা অহিংসনং প্রাণিনাং পীড়াবর্জনম্, সভাম্
অপ্রেম্বান্তবজ্জিতং বণাভূতার্থবচনম্, অক্রোধঃ পরৈরাক্ষ্ট্র অভিহত্ত বা
প্রাপ্ত ক্রোধ্য উপশ্মনম্, ত্যাগঃ সন্ন্যাসঃ পূর্বং দানগু উভ ডাৎ, শান্তিঃ
অন্তঃক্রণপ্ত উপশ্মন, অপৈশুনম্, অপিশুনতা পরবৈত্ব পররক্ষুপ্রকটীকরণং
পৈশুনম্ তদভাবঃ অপৈশুনম্, দয়া ক্রপা ভূতের হঃথিতের, অলোল্পু,ম্ ইন্দ্রিয়াণাং
বিষয়সন্নিধাববিক্রিয়া, মার্দ্রবং মৃহতা অক্রোধ্যম্, ব্লীঃ লজ্জা, অচাপদম্ অসতি
প্রেম্জনে বাক্পাণিপাদাদীনাম্ অব্যাপার্মিতৃত্বম্ ॥২

আনন্দগিরিটীকা। দৈবীং সম্পদমভিজ্ঞাতশু বিশেষণাস্তরাণি দর্শরতি

কিঞ্চেতি। ত্যাগদন্দেন দানং কন্মান্নোচ্যতে তত্তাহ—পূর্ব্বমিতি। লঙ্কা
অকার্যান্তর্গুত্তহেতুগর্হানিমিতা মনোরুত্তিঃ॥ ২

অসুবাদ। আরও "অহিংসা" অহিংসন অর্গাৎ প্রাণীদিগকে পীড়িত না করা, "সত্য" অপ্রিয় এবং অনৃত না কহিয়া, যে বস্ত যাহা তাহাকে ঠিক সেই ভাবে বলা। "অক্রোধ" অপরে গালি দিলে বা প্রহার করিলে ক্রোধ না করা। "ভ্যাগ" সন্ন্যাস [দান নহে]; কারণ, দানের বিষয় পূর্বেই বলা হইয়াছে। "শাস্তি" অস্তঃকরণের উপশম। "অবৈশুল-" অপিশুনতা—পরের কাছে অপরের ছিদ্র প্রকাশ করাকে "বৈশুল-" কতে, সেই পৈশুনের পরিবর্জ্জনই "ঘ্লৈশুল-"। "দয়া" কপা [কাহার প্রতি ?] প্রাণিগণের প্রতি, "অলোল্প্," বিষয়্ক নিকটে আসিলেও ইন্তিয়সমূহের অবিক্রতি। "মার্জব" মৃত্তা অর্থাৎ ক্রুরতার পরিবর্জ্জন।

^{* ,} অলোগ্ডন্ ইতি অলোলছমিতি চ বা পাঠে।

"খ্রী" লজ্জা। "অচাপল" বিনাপ্ররোজনে বাক্ পাণি বা পাদ প্রভৃতির পরিচালনা করাই না "অচাপল"॥ ২

> তেজঃ ক্ষমা ধৃতিঃ শোচমদ্রোহে। নাতিমানিতা। ভবস্তি সম্পদং দৈবীমভিজাতস্থ ভারত॥ ৩

অন্তব্য । হে ভারত ! তেজঃ কমা ধৃতিঃ শৌচম্ অন্দোহঃ নাতিমানিতা [চ ইত্যেতে ধর্মাঃ] দৈবীং সম্পদমভিজাতক্ত ভবস্কি ॥৩

অনুবাদ। তেজঃ, কমা, ধৈর্যা, শৌচ, অন্দোহ এবং নাতিমানিতা, এই কয়টিকে দৈবীসম্পৎ বলা যায়] হে ভারত, দৈবী সম্পৎ লাভ করিবার জন্ত যাহার জন্ম হয়, তাহারই এই সকল গুণ প্রাত্ত্তি হয় ॥৩

ভাষ্য। কিঞ্চ—তেজঃ প্রাগল্ভ্যং ন বগ্গতা দীপ্তিঃ। ক্ষমা আকৃষ্ঠপ্ত তাড়িতপ্ত বা অন্তবিক্রিয়ামুৎপত্তিরুৎপরায়াং বিক্রিয়ায়াং প্রশমনমক্রোধঃ ইত্যবোচাম, ইথং ক্ষমারা অক্রোধস্ত চ বিশেবঃ। ধৃতিদে হৈচ্নিয়েম্ববসাদং প্রাপ্তেম্ব তপ্ত প্রতিষেধকোহন্তঃকরণরতিবিশেবঃ ষেনোত্তিতানি করণানি দেহক নাবস্মাদন্তি, শৌচং দিবিধং মৃজ্জলক্ত হং বাহ্মম্ আভ্যন্তরঞ্চ মনোবুদ্যোটনর্ম্মল্যং মায়ারাগাদিকাল্যাভাব এবং দিবিধং গৌচম্, অদ্রোহঃ পরজিলাংসাভাবঃ সহিংসনম্,
নাতিমানিতা অত্যর্থং নানোহতিমানঃ স যক্ত বিশ্বতে সোহতিমানী তদ্ভাবোহতিমানিতা ওদভাবো নাতিমানিতা আয়্বনঃ পূজ্যতাতিশঙ্গভাবনাভাব ইত্যর্থঃ।
ভবন্তি অভ্যাদীনি এতদন্তানি সম্পদমভিজাতক্ত। কিংবিশিষ্টাং সম্পদম্ দ দৈবীং
দেবানাং সম্পদমভিলক্ষ্য জাতপ্ত দৈববিভ্তাইপ্ত ভাবিকল্যাণপ্ত ইত্যর্থো হে
ভারত ॥০

আনন্দ গিরিটীকা। দৈবীং সম্পদং প্রাপ্তস্থ বিশেষণাস্তরাণ্যপি সন্তীত্যাহ—
কিন্ধেতি। ব্যাবর্ত্তাং কীর্ত্তরতি—নেতি। অধ্যাত্মাধিকারাদিতিশেবঃ। ক্ষমাকোধরোরেকার্থত্বেন পৌনক্ষক্যমাশক্য পরিহরতি উৎপদ্মায়ামিতি। তরোরেবং
বিশেষাদপৌনক্ষক্তাং ফলতীত্যাহ—ইপ্রমিতি। রতিবিশেষমেব বিশদরতি—
যেনেতি। শৌচস্ত দৈবিধ্যমেব প্রকটয়তি—মৃজ্জলেত্যাদিনা। নৈর্ম্মলায়েব
ক্ষের্মিত—মায়েতি। উক্তম্পসংহরতি—এব্যাতি। অভিমানিকাভাবমেব
স্ক্রনজ্জি—আ্লুন ইতি। কস্পৈতানি বিশেষণানীত্যপেকায়ামাহ — ভবস্তীতি।
সাধকন্ত মন্ত্র্যদেহস্থান্তব কথং দৈবীং সম্পদমভিদক্ষা জাতত্বমিত্যাশক্যাহ—
দৈবেতি॥৩

অনুবাদ। আরও—"তেবঃ" প্রগণ্ডতা—বাছ ত্বগুণতদীপ্তি নহে। 'কমা'' কেহ গালি দিলে বা তাড়না করিলে মনের মধ্যে কোন প্রকার বিকার না হইতে দেওয়া, মনের মধ্যে বিকার হওয়ার পর তাহাকে বাহিরে প্রকাশ না করিয়া ভিতরেই প্রশমিত করাকে "অক্রোধ" বলা যায়। ইহাই হইল ক্ষমা এবং অব্রোধের পরম্পর বৈষমা। "ধৃতি" দেহ ও ইন্সিয়সমূহ যথন অবসন্ন হইরা পড়ে, তথন সেই অবসন্ধতার প্রতিষেধক বে অন্ত:করণবৃত্তিবিশেষ, তাহাই "ধৃ তি"; এই ধৃতির দ্বারা পুনকজ্জীবিতপ্রায় হইয়া দেহ এবং ইক্রিয়গণ আর অবদর হইতে পারে না। "শোচ" ইহা হই প্রকার –বাহ্য এবং আভ্যন্তর; মৃত্তিকা ও জ্লাদির খারা যে পৌচ, তাহাই "বাহু পৌচ"; মন এবং বুদ্ধির নৈর্থল্য অর্থাৎ মায়া বং অমুরাগাদিজনিত যে কল্যতা, তাহার অভাবই "আভান্তর শৌচ"; "মদ্রোহ" পরকে হনন করিবার ইচ্ছা মনের মধ্যে না হইতে দেওয়া—অর্থাৎ হিংসা না করা। "নাতিমানিতা" অতিশয় বে মান, তাহাই অতিমান ; অতিমান বাহার আছে, দে "অতিমানী"; অতিমানীর স্বভাবই "অতিমানিতা" অর্থাৎ আদি অতিশয় পুজ্য এইরূপ অভিমান—ইহা না থাকাই "নাতিমানিতা"। 'অভয়' হইতে 'নাতি, মানিতা' পর্যান্ত যে কয়টি গুণ প্রদর্শিত হইল, তাহা দৈবী সম্পদ ভোগার্থ যিনি জন্মগ্রহণ করেন, তাঁহারই হইয়া থাকে। হে ভারত। যে ব্যক্তি দৈববিভৃতি ভোগের যোগ্য পাত্র এবং যে ব্যক্তি ভবিষ্যৎ কল্যাণার্হ, তাঁহারই । এই সকল প্তৰ প্ৰাহ্ৰ ত হয়। । ৩

> দক্তো দর্পোহভিমানশ্চ * ক্রোধঃ পারুষ্যমেব চ। অজ্ঞানং চাভিজাতস্থ পার্থ সম্পদমাস্থরীমু॥ ৪

আৰুয়ু। হে পাৰ্থ! আহুরীং সম্পদ্ম অভিজাতত দস্ত: দৰ্প: অভিমান: কোধ: পাৰুষ্যম্ অঞ্চানং চ [ইত্যেতানি ভবস্তি] ॥ ৪

অনুবাদ। হে পার্থ! আহুরী সম্পদকে ভোগ করিবার জন্ম ধাহার জন্ম হয়—তাহার দন্ত দর্প অভিনান ক্রোধ পরুষতা ও অজ্ঞান এই কয়টি স্বভাব উৎপন্ন হয় ॥৪

ভাষ্য। অথেদানীমাস্থরী সম্পত্চ্যতে দন্তঃ ধর্মধ্বজিত্বম্, দর্পঃ ধনস্বজ্ঞাদি নিমিত্ত উৎসেকোছভিমানঃ পূর্ব্বোক্তঃ ক্রোধন্চ, পারুষ্যমেব চ পরুষবচনং যথা কাবং চকুষ্মান, বিরূপং রূপবান, হীনাভিজনং উত্তমাভিজন ইত্যাদি। অজ্ঞানং

^{*} দর্পোহতিমানক ইতি বা পাঠঃ।

চাবিবেকজ্ঞানং মিপ্যা প্রতায়ঃ কর্ত্তব্যাদিবিষয়ম্ অভিজ্ঞাতত্ত্ব পার্থ। কিমডি-স্থাতত্ত্ব ইত্যাত -- অমুরাণাং সম্পদামুরী তামভিজ্ঞাতত্ত্ব ইত্যর্প:॥ ৪

আনন্দণিরিটীকা। আদেয়ছেন দৈবীং সম্পদমুক্তা হেয়ছেনান্ত্রীং সম্পদমাহ—অতথিতি। উৎসেকো নদো মহদবধীরণাহেতুঃ, আত্মপ্রতংক্তরণধ্যারোপোহভিমানঃ, ক্রে।ধন্ত কোপাপরপর্য্যায়ঃ ত্বপরাপকারপ্রবৃত্তিহেতুঃ
নেত্রাদিবিকারলিকোহন্তঃকরণরৃত্তিবিশেনঃ। পরুষো নিষ্ঠুরঃ প্রত্যক্ষরুক্তরাক্তরভাবঃ পারুষ্যম্, ভহদাহরতি—যুথেতি। তামভিজ্ঞাতভ দন্তানীভজ্ঞানান্তানি
ভবন্তি ইত্যান্ত্রহজ্ঞতে ॥ ৪

অনুবাদ। "দন্ত" ধর্মধ্বজিতা; "দর্গ, ধনবল এবং লোকবল থাকা প্রাক্ত উৎসেকই "অভিমান"; "ক্রোধ" ইহা কি তাহা পূর্বেই বলা হইরাছে; "পারুষ্য" পরুষ বচন যেমন—যে কাণা, তাহাকে চকুমান্ বলিয়া ডাকা; যে ক্রূপ, তাহাকে স্থলর বলিয়া ডাকা; যাহার অত্যন্ত নিক্ত কুলে জন্ম, তাহাকে মহাকুলপ্রস্ত বলিয়া ডাকা ইত্যাদি; অজ্ঞান অবিবেকজ্ঞান অর্থাৎ কর্ত্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাকর্ত্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাকর্ত্তব্যাক্তব্যাকর্ত্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্যাক্তব্য

দৈবী সম্পদ্ বিমোক্ষায় নিবন্ধায়াস্থরী মতা। মা শুচঃ সম্পদং দৈবীমভিজাতোহসি পাণ্ডব॥ ৫

্ অনুয় । দৈবী সম্পদ্ বিলোকায়, আহেরী [সম্পং] নিবন্ধায় মতা। হে পাণ্ডব ! মা ওচ: [যতস্থং] দৈবীং সম্পদম্ অভি গাতোহসি ॥ ৫

অনুবাদ। দৈবী সম্পদ্ মোক্ষ লাভের কারণ এবং আহরী সম্পদ্ বন্ধনের কারণ বলিয়া বিবেচিত হইয়া থাকে। হে পাণ্ডব! তুমি শোক করিও না, [কারণ] তুমি দৈবী সম্পদ্ভোগ করিবার জন্ত জন্মগ্রহণ করিয়াছ ॥৫

ভাষ্য। অনরোঃ সম্পদোঃ কার্যমূচ্যতে—দৈবী সম্পদ্ যা সা বিমোক্ষার সংসাব্যক্ষনাৎ, নিবন্ধার নিয়তো বন্ধঃ নিবন্ধঃ তদর্থমান্ত্রী সম্পন্মতাইভিপ্রেভা তথা রাক্ষসী। তত্ত্বেব্যুক্তে অর্জ্জনভান্তর্গতং ভাবং কিমহম্ আন্তরসম্পাদ্যুক্তঃ শিংবা দৈবসম্পদ্যুক্ত ইত্যেবমালোচনারপমালক্ষ্য আহ ভগবান্, মা ভাচঃ শোকং মা কার্যীঃ সম্পদং দৈবীমভিজাভোহসি অভিলক্ষ্য জাতোহসি ভাবিক্ষাণ্ড্যমনীতার্থঃ হে পাণ্ডব॥৫

আনন্দগিরিটীকা। কার্য্য ফলবিভাগ:। আমুরীত্রপলক্ষণ রাক্ষ্সী চেতি দ্রষ্টব্যমিত্যাহ—তথেতি। ফলবিভাগে সম্পদোরেবমুক্তে প্রতীত্যার্জুনস্তা-ভিপ্রারং ভগবতো বচনমিত্যাহ—তত্ত্রেতি। তথ্যভিন্ধাত্যং হেজুং করোতি— ছে পাগুবেতি॥ ধ

অনুবাদ। এই ছই প্রকার সম্পাদের কার্যাই কি, তাহাই বলা হইতেছে
—বে সম্পাদ্ দৈবী, তাহা সংসার-বন্ধন হইতে মুক্তিলাভের হেতু। নিশ্চিত বন্ধনই
[এখানে] নিবন্ধ [শন্দের অর্থ] সেই নিবন্ধেরই কারণ আহ্মরী সম্পাদ্ এবং
রাক্ষসী সম্পাদ্ও নিবন্ধের কারণ বলিয়া অভিপ্রেত। এই প্রকার বলার পর
"আমি কি আহ্মরসম্পাদ্যুক্ত অথবা দৈবসম্পাদ্যুক্ত" এই প্রকার আলোচনারপ
অর্জুনের মনোভাব লক্ষ্য করিয়া ভগবান বলিতেছেন—হে পাণ্ডব, তুমি শোক
করিও না, কারণ দৈবী সম্পাদকে অভিলক্ষ্য করিয়া তুমি জন্মগ্রহণ করিয়াছ
অর্থাৎ তুমি ভবিষ্যৎ কল্যাণময়॥ ৫

রে ভূতসর্গে । লোকেহস্মিন্ দৈব আহ্বর এব চ। দৈবো বিস্তরশঃ প্রোক্ত আহ্বরং পার্থ মে শৃণু॥ ৬

আনুষ্ম । অস্মিন্ লোকে দৈব আহ্মরশ্চ ইতি দ্বৌভূতসর্কে । [তক্ত্র] দৈবঃ বিস্তরশঃ প্রোকঃ ; তে পার্থ! [অধুনা] আহ্মরং [সর্গং] মে শৃণু॥ ৬

তাকুবাদ। এই লোকে দৈব এবং আন্তর এই চুট প্রকার মনুষ্য স্টি [হইয়া থাকে]। দৈব কি, ভাগ বিস্তৃতভাবে বলা হইয়াছে—একণে আস্তব স্টি [কি প্রকার, তাহা] আমার কাছে শুন, হে পার্থ॥ ৬

ভাষ্য। বৌ ভূতেতি। বৌ দিনংখ্যাকৌ ভূতদর্গে) ভূতানাং মন্ত্র্যাণাই দর্গে । ক্ষী—ভূতদর্গে সংক্ষাতে ইতি দর্গে) ভূতান্তের স্ক্র্যানানি দৈবাস্তর-সম্পান্ক্রানি বৌ ভূতদর্গে । ইতি উচাতে "বরা হ প্রাজাপতাা দেবাশ্চাস্তরাশ্চ" ইতি শ্রুতে । দর্শেষাং দৈবিধ্যোপপত্তে:। কৌ তৌ ভূতদর্গে । ইতি উচ্যতে প্রক্রতাবেব দৈব আস্তর এব চ। উক্রবোরেব পুনরম্বাদে প্রয়োজনমাহ—দৈব: ভূতদর্গ: "অভয়ং সর্সংশুদ্ধিং" ইত্যাদিনা বিস্তর্শ: বিস্তর্প্রকারেঃ পোর্থ মে মম বচনাৎ বিস্তর্শ: শৃগু অবধারয় ॥ ৬ ১

. আনন্দগিরিটীকা। নির্দিয়ানাং রক্ষসাং সম্পৎ ভৃতীয়ান্তি সা ক্সামোঞ্জা ইত্যাশক্য আহর্য্যামন্তর্ভাবাদিত্যাহ—দ্বাবিতি। ভূতানাং দৈবিখ্যে মানবেনােশ্গীথবান্ধণমূদাহরতি—দ্বয়া হেতি। সম্পদ্মযুতেভাাইভিরিজানামপি প্রাণিভেদানাং সম্ভবাৎ কুতো ভূতানাং দ্বিদিরতিরিত্যাশ্র্যাহ—স্ক্রেযামিতি॥

অকুবাদ। বৌ ভূত ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ এই বে] "ভূতদর্গ"---ভূতশব্দের অর্থ মহুব্য, মহুব্যগণের স্ষ্টিই 'ভূতদর্গ' এই শব্দের অর্থ। এই ভূত দর্গ ছই প্রকার। "দর্গ" এই: শব্দটির অর্থ স্বজ্যমান অর্থাং যাহাদের সৃষ্টি হয় তাহারাই এই স্থলে দর্গ শব্দের অর্থ—স্কুত্রাং স্ক্রামান প্রাণি [মহুদ্য]-গণ্ই 'ভূতদর্গ' শব্দটির অর্থ। স্থল্যমান মহুষ্যগণ হয় দৈবদম্পদ্যুক্ত কিংবা **षाञ्चतम्ला**त्युक- এই इट প্रकारतत मरश এक श्रकात हरेबा शास्त्र। तह বিবিধ সম্ব্যুগণই 'ভূত দর্গ' এই শব্দের ধারা প্রতিপাদিত হইতেছে। প্রাক্তিতে নির্দিষ্ট হইরাছে যে, "দ্বিধ [স্বষ্টই] প্রাজাপত্য, দৈব এবং আক্সর"। "লোক" এই শন্ধটির অর্থ সংসার অর্থাৎ এই সংসারে সর্বপ্রকার মহুষ্ট্ এই বিবিধ স্ষ্টের মধ্যে পরিগণিত হইয়া থাকে। কি সেই তুইটি ভূতদর্গ ভাহাই বলা হইতেছে যে, সেই প্রকৃত দৈব এবং আহুর এই গুই প্রকার অর্থাৎ দৈব এবং আহ্নর প্রকৃতির কথা একবার বলা হইরাছে, আবার কেন বলা হইল ? তাহারই প্রয়োজন বলা হইতেছে। দৈব ভৃতদর্ম বিশুর প্রকারে বলা হইয়াছে অর্থাৎ "অভয়ং সত্ত্বসংগুদিঃ" ইত্যাদি বাক্যের দারা অতি বিস্তৃত-ভাবে দৈবভূতসর্গের পরিচয় দেওয়া হইয়াছে—কিন্ত আহ্মর ভূতসর্গের বিস্তর প্রকারে পরিচয় দেওয়া হয় নাই। এইভাবে বিস্তৃত বর্ণনা না করা রূপ ত্রুটি পরিহার করিবার জন্ত বিশুর প্রকারে সেই আহ্বর ভৃতসর্গের বর্ণনা করা ঘাইতেছে; হে পার্থ, তুমি তাহা আমার নিকটে অর্থাৎ আমার বচন হইতে "শোন" অবধারণ কর॥ ৬

> প্রবৃত্তিঞ্চ নিরুত্তিঞ্চ জনা ন বিছুরাস্থরাঃ। ন শৌচং নাপি চাচারো ন সত্যং তেয়ু বিগ্যতে ॥৭

অনুযু । আহ্বা: জনা: প্রবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ ন বিহুঃ ; তেরু ন শৌ১ং নাপি আচার: ন সভ্যং বিশ্বতে ॥৭

আকুবাদ। আহ্বরপ্রকৃতিযুক্ত মন্থয়গণ—প্রবৃত্তি বা নিবৃত্তির কি বরূপ, তাহা অবগত নহে; [অতএব] তাহাদের মধ্যে শৌচ আচার এবং সভ্য [এ সক্রের কিছুই] নাই ॥१ ভায়া । আ অধ্যায়পরিসমাপ্তে: আহ্মরী সম্পৎ প্রাণিবিশেষণ্ডেন প্রদর্শ্যতে প্রভাকীকরণেন চ শক্যতে অক্সাঃ পরিবর্জনং কর্তুমিভি—প্রস্তিং চ প্রবর্জনং যশ্মিন্ প্রক্ষার্থসাধনে কর্ত্তব্যে প্রবৃত্তিঃ তাং নির্ত্তিং চ তদ্বিপরীতাং বন্ধাদনর্থহেতোর্নিবর্তিতব্যং সা নির্ত্তিঃ তাং চ জনা আহ্মরা ন বিহুর্ন জানস্তি। ন কেবলং প্রবৃত্তিনির্ত্তী এব ন বিহুঃ ন শৌচং নাপি চাচারঃ ন সত্যং ভেষু রিষ্মতে। অশৌচা অনাচারা মায়াবিনোংন্তবাদিনো হাম্বরাঃ॥१

আনন্দ্রিটীকা। নরধ্যায়শেবেণাস্থরীসম্পদর্শনসযুক্তং তন্তাস্থ্যাক্ষ্যবেন প্রপ্রকালনভারাবতারাথ ইত্যাশস্থ্যাহ—প্রত্যক্ষীকরণেতি। বর্জনীরাম্ আস্থরীৎ সম্পদং বির্ণোতি—প্রবৃত্তিঞ্জিত। তাং বিহিতা প্রবৃত্তিং ন জানস্তীত্যর্থ:। তাঞ্চ নিষিক্ষাং ক্রিয়াং ন জানস্তীতিগস্বন্ধ:। ন শৌচমিত্যাদেস্তাৎপর্য্যন্ত্রনাচারাস্থ জাবেহিল ব্রাহ্মনপরিব্রাহ্মকভায়েন পৃথ প্রপাদানম্॥ ৭

অনুস্বাদ। এপান হইতে অধ্যায়ের পরিসমাপ্তি পর্যান্ত প্রাণিগণের বিশেষণভাবে আন্তর সম্পদের বর্ণনা করা হইবে; কারণ, ইহা দারা ভাল করিয়া বৃদ্ধিয়া লইয়া তাহার পরিবর্জন করা ষাইতে পারে। "প্রবৃত্তি" [এই শক্টির অর্থ] প্রবর্জন অর্থাৎ যে পুরুষার্থ সাধনের অন্তর্ভান করিতে হইলে যেরপভাবে প্রবৃত্তি হওয়া উচিত এবং "নিরৃত্তি" ইহারই বিপরীত অর্থাৎ যে অনর্থহেতু হইতে বেজাবে নিরৃত্ত হইতে হইবে, তাহাও আন্তরপ্রকৃতিসম্পন্ন মন্ত্রগণ বৃবিতে পারে না। তাহারা যে কেবল প্রবৃত্তি এবং নিরৃত্তিকে বৃন্ধে না, তাহাই নহে; কিন্তু তাহাদের মধ্যে শৌচ আচার এবং সত্য এই তিনটিও নাই অর্থাৎ যাহারা আন্তরপ্রকৃতিযুক্ত মন্ত্র্যা, তাহারা শৌচহীন আচারহীন মায়াবী এবং মিধ্যাবাদীই [হইয়া থাকে] ॥৭

অসত্যমপ্রতিষ্ঠং তে জগদাহুরনীশ্বরম্। অপরস্পরসম্ভূতং কিমন্যৎ কামহৈভূকম্॥৮

আর্য়। তে [আহরা:] আহ: জগং অসত্যম্ অপ্রতির্গ্ অনী বর্ম্ অপরম্পরসভূতং কামহৈত্কং চ [ইত:] অন্তং কিম্ গ ॥৮

অকুবাদ। তাহারা [আহরপ্রকৃতিসম্পন্ন ব্যক্তিগণ] বলিরা থাকে বে, এই ক্লগতে সকলই অসত্য, ধর্ম বা অধর্ম কিছুই নাই, এই ক্লগতের নিরক্তা কোন ঈশরও নাই। ত্রীপুরুষগণ পরস্পর কামবশে মিলিত হইয়াই এই জগৎকে উৎপাদিত করিয়াছে; ইহা ছাড়া এ জগৎ আর কি হইতে পারে १৮

ভাষ্য। কিঞ্চ-অসতাং যথা বন্ধমন্তপ্রারাঃ তথেদং জগৎ সর্ক্ষ্
অসতাম্ অপ্রতিষ্ঠা চ নাস্ত ধর্মাধন্দ্রী প্রতিষ্ঠা অতোহপ্রতিষ্ঠা চেতি তে আফ্রা
জনা জগদাহরনীশ্বরং ন চ ধর্মাধর্মসব্যপেক্ষকোহস্ত শাসিতা ঈশবাে বিছতে
ইত্যতোহনীশ্বরং জগদাহাঃ। কিঞ্চ অপরস্পরসভূতং কামপ্রযুক্তরোঃ জীপুক্ষরোঃ
অক্তোম্ভসংযোগাৎ জগৎ সর্কাং সভূতম্। কিমন্তং কামহৈত্কং কামহেত্কমের
কামহৈত্কং কিমন্তং ? জগতঃ কারণং ন কিঞ্চিদ্টাং ধর্মাধর্মাদি কারণান্তর্মাং
বিশ্বতে জগতঃ। কামএব প্রাণিনাং কারণম্ ইতি লোকান্তিকদৃষ্টিরিন্ধ্॥৮

আনন্দ গিরিটীকা। আহ্বরাণাং জনানাং বিশেষণান্তরাণাপি সন্তীত্যাহ—
কিঞ্চেতি। বিশ্বত ইত্যাহুরিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। শাস্ত্রৈকগম্যমদৃষ্টং নিমিন্তীকত্য প্রকৃত্যধিষ্ঠান্তাত্মকেন ব্রহ্মণা রহিতং জগদিষ্যতে চেৎ কথং তহুৎপত্নির্দ্ধত্যাশঙ্ক্যাহ—কিঞ্চেতি। কিমন্তুদিত্যাদেরাকেপন্ত তাৎপর্য্যমাহ—ন কিঞ্চিঃ
দিতি॥৮

অমুবাদ। [আরও আহ্নর জনগণ বলিয়া থাকে বে, এই জগং ট্র "অসত্য" বেমন আমরা মিথ্যাব্যবহারপরিপূর্ণ, সেইরপ এই জগতের সকলই মিথ্যাব্যবহারপরিপূর্ণ, এই জগতে ধর্মাধর্ম নিবন্ধন যে কোন প্রকার মর্য্যাদা আছে, তাহা নহে। জীবের ধর্মাধর্ম নিবন্ধন যে কোন প্রকার মর্য্যাদা আছে, তাহা নহে। জীবের ধর্মাধর্মকে দেখিয়া তদমুসারে এই জগতের জীবগণের নিয়স্তা কোন ঈশ্বরও আছেন, এইরূপ সিদ্ধান্তও হইতে পারে না; স্ত্তরাং এই জগৎ ঈশ্বর-বিরহিত। তাহারা আরও বলিয়া থাকে, এই মন্ত্রাজগৎ ত্রী এবং পুরুবের কামনা জনিত পরস্পর সমাগমের ফল ব্যতীত আর কিছুই নহে; এই জগতের উৎপত্তির পক্ষে ধর্ম বা অধর্মারপ কোন অদৃষ্ট কারণ হইতেই পারে না—কামই প্রাণিগণের স্কৃষ্টির কারণ—এই প্রকার দর্শন (অর্থাৎ মত) লোকায়তির অর্থাৎ চার্মাকগণের হইয়া থাকে॥৮

দৃষ্টিমবফভ্য নফীত্মানোহঙ্গবুদ্ধয়ঃ। প্রভবস্ত্যগ্রকর্মাণঃ ক্ষয়ায় জগতোহহিতাঃ॥৯

অনুমা। উগ্রক্থাণ: নট্টাখান: অন্নবুদ্ধ: অহিডা: [বনা:] এডাং দৃষ্টিস্-অবটভ্য (সমাশ্রিত্য) বগতঃ করার প্রভবন্তি ॥ > ভাকুবাদ। উগ্রকর্মা নষ্টাম্মা অরব্দি ও অমঙ্গল-ম্বভাব জনগণ এই প্রকার বৃদ্ধিকে আশ্রয় করিয়া জগতের ধ্বংসের জন্ত জন্মগ্রহণ করে॥৯

ভাষ্য। এতামিতি। এতাং দৃষ্টিম্ অবষ্টভা আশ্রিতা নটাম্মানঃ
নট্যভাবা বিশ্রন্থবাকসাধনা অন্নবৃদ্ধনাে বিষয়বিষয়া অন্নৈব বৃদ্ধির্যবাং তে
আনবৃদ্ধনঃ প্রভবন্তি উদ্ভবন্তি। উগ্রক্ষাণঃ ক্রক্ষাণঃ হিংসাম্মকাঃ ক্ষার
ক্যতঃ প্রভবন্তি ইতি সম্বন্ধঃ। জগতোহহিতাঃ শত্রব ইতার্থঃ॥ ১

আনন্দগিরিটীকা। যথোকা দৃষ্টির্জ্মদৃষ্টিবং ইষ্টেবেত্যাশব্যাহ—এতা মিতি। প্রাপ্তপদিষ্টামেতাং লোকারতিকদৃষ্টিমবলম্বেতি যাবং। নইবভাবদ্ধনেব স্পষ্টরতি—বিভাষ্টেতি। বিষয়বৃদ্দেরমত্বং দৃষ্টমাঝোদেশেন প্রবৃত্তদম্, কগতঃ প্রাণিক্ষাভন্তেতি যাবং॥১

অকুবাদ। এতাম্ ইত্যাদি [লোকের অর্থ এই যে] এই প্রকার দৃষ্টিকে আশ্রর করিয়া—জগতের করের জন্ম উন্মত হইয়া থাকে অর্থাৎ উত্তব পাইয়া থাকে; [কাহারা ?] "নষ্টাত্মা" নষ্টস্মতাব, যাহাদের পরলোকসাধন বিশ্রপ্ত হইরাছে, তাহারাই "নষ্টাত্মা"; "অল্লব্দি" ধাহাদের বৃদ্ধির বিবন্ধ ক্ষতি ক্ষা, তাহারাই "অল্লব্দি"; "উগ্রকর্মা" ক্রকর্মা অর্থাৎ যাহাদের প্রকৃতি সর্বাদা হিংসা প্রবণ, তাহারাই "উগ্রকর্মা"। [ইহারাই জগতের অহিত অর্থাৎ শক্র, ইহাই তাৎপর্য্য]।১

কামমাশ্রিত্য কুষ্পূরং দম্ভমানমদান্বিতাঃ। মোহাদ্ গৃহীত্বাহসদ্গ্রাহান্ প্রবর্তন্তেইশুচিত্রতাঃ॥১০

আৰুয় । ছম্পূরং কামম্ আশ্রিত্য নোহাৎ অসদ্গ্রাহান্ গৃহীত্বা দন্তমান-মদাবিতা: অভচিত্রতাঃ প্রবর্ততে ॥১•

আকুবাদ-। তাহারা হৃপ্র কামকে আশ্রয় করিয়া পাকে, এবং মোহবশতঃ অগুভ নিশ্চয়কে অবলম্বন করিয়া সকল কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়, তাহারা প্ অগুচিত্রত এবং দন্ত মান এবং মদে পরিপূর্ণ থাকে॥১•

ভাষ্য ৷ তে চ কামম্ ইচ্ছাবিশেবমাশ্রিত্য অবইত্য হপার অপক্যপূরণং দন্তমানমদাখিতাঃ দন্তশু মানশ্চ মদশ্চ দন্তমানমদাঃ তৈঃ অবিতাঃ
দন্তমানমদাখিতা মোহাদবিবেকতো গৃহীত্বা উপাদার অসদ্গ্রাহান্ অভতনিশ্চরান্
শ্রেষ্ঠতে লোকে, অভাচিত্রতাঃ অভাচীন ব্রতানি বেষাং তে অভাচিত্রতাঃ ॥১০

বোড্গোহখ্যায়ঃ

আনন্দগিরিটীক।। তানেব হরাচারানা —তে চেতি ॥১•

আমুবাদ। তাহারা [কি করে, তাহাই বলা হইতেছে] "কাম" ইচ্ছাবিশেষ [যাহা] তুপ্র অর্থাৎ যাহার পূরণ হইবার সম্ভাবনা নাই, সেই-কামকে আশ্রর করিয়া [তাহাদের শ্বভাব কি, তাহাই বলিতেছেন] "দম্ভমানমদান্বিত" দম্ভ মান এবং মদ এই তিনটির সহিত সর্কাদা যুক্ত [হইরাই থাকে] এবং "অসদ্গ্রাহ" অসদ্বিষয়ের নিশ্চরকে গ্রহণ অর্থাৎ উপাদান করিয়া [তাহারা] প্রবৃত্ত হইয়া থাকে। তাহাদের ব্রত অপবিত্ত, এইজন্ত তাহাদিগকে ''অশুচিব্রত" কহা যায়॥>•

চিন্তামপরিমেয়াং চ প্রলয়ান্তামুপাঞ্জিতাঃ। কামোপভোগপরমা এতাবদিতি নিশ্চিতাঃ॥১১

অনুয়। অপরিমেরাং প্রলয়ান্তাং চিন্তাম্ উপাল্লিডাঃ কামোপরে ্রপরনাঃ, এতাবদিতি নিশ্চিডাঃ [তে ভবস্তি] ॥>>

অনুবাদ। আমরণ অপরিমের চিস্তাকেই [তাহারা] আশ্র করিরা থাকে। কামোপভোগই তাহাদের পরম পুরুষার্থ; এবং তাহাদের নিশ্চর এই যে, ইহাই জগতের সার [ইহা ছাড়া পরবোক প্রভৃতি কিছুরই স্তানাই]।১১

ভাষ্য। কিঞ্চ চিস্তাম্ অপরিনেরাং ন পরিমাতুং শক্যতে বঙাঃ চিস্তারা ইরভা সা অপরিমেরা তাম্ অপরিমেরাং প্রলরাস্তাং নরণান্তামুপাশ্রিতাঃ সদা চিন্তাপরা ইত্যর্থঃ। কামোপভোগপরমাঃ কাম্যন্তে ইতি কামাঃ শকাদরঃ তত্তপভোগপরমাঃ অরমেব পরমঃ পুরুষার্থঃ বঃ কামোপভোগ ইত্যেবং নিশ্চিতাস্থানঃ এতাবদিতিনিশ্চিতাঃ ॥১১

আনন্দ গিরিটীকা। তানেব বিধান্তরেণ বিশিনটি—কিঞ্চেতি। চিন্তান্ আন্ত্রীরবোগক্ষেমোপারালোচনাত্মিকান্ অপরিমেরবিষরতাং পরিমাতুমশক্যান্ আশ্রিচা ইতি সম্বন্ধ: । এব কামোপভোগঃ পরময়নং স্থপ্তেভ্যেতাবং পার্মিকং তুনার্ভি স্থানিতি নিশ্চরবন্ত ইত্যাহ—এতাবদিতীতি ॥ ১১

আমুবাদ। আরও "অপরিমের" যে চিন্তার ইরতা কোথার ? তারা নিরূপণ করা বার না, তাহাই অপরিমের ; সেই অপরিমের অথচ "গুলুলাত্ত" মরণাত্ত চিত্তাকে [তাহারা] আশ্রম করিয়া থাকে অর্থাৎ ভাহারা সর্ক্ষাই চিন্তাপর। "কামোপভোগ-পরম" যাহার কামনা করা যায়, তাহাকেই "কাম" কহা যায় অর্থাৎ শব্দ স্পর্ণ প্রভৃতি ভোজ্য বস্তুই এই স্থানে কাম শব্দের অর্থ। সেই কামই যাহাদের পরম পুরুষার্থ [-ভাহাদিগকেই কামোপভোগপরম কহা যায়] এই প্রকারই তাহাদের নিশ্চয় হইয়া থাকে॥ ১১

> আশাপাশশতৈর্বদ্ধাঃ কামক্রোধপরায়ণাঃ। ঈহন্তে কামভোগার্থমন্তায়েনার্থদঞ্চ্যান্॥ ১২

আমুয় । আশাপাশশতৈবদাঃ কামক্রোধপরায়ণাঃ [তে] কামভোগার্থম্ অস্তারেন অর্থসঞ্চয়ান্ ঈহস্তে॥ ১২

অকুবাদ। তাহারা আশারণ শত শত পাশসমূহের দ্বারা আবদ্ধ হর এবং সংক্ষা কাম ও ক্রোধের অধীন থাকে; তাহারা কামভোণের জন্ম অপ্রায় উপায় দ্বারা অর্থ সঞ্চয় করিয়া থাকে॥ ১২

ভাষ্য। আশাপাশেতি। আশাপাশশতৈঃ আশা এব পাশাঃ তচ্ছতৈঃ আশাপাশশতৈঃ বদ্ধা নিয়ন্ত্রিতাঃ সন্তঃ সর্বত আক্রয়্যাণাঃ কামক্রোধপরায়ণাঃ কামক্রোধৌ পরমরনং পব আশ্রো বেষাং তে কামক্রোধপরায়ণাঃ। ঈহস্তে চেষ্টান্তে কামভোগার্থং কামভোগপ্রাজনায় ন ধর্মার্থম্, অস্তারেন অর্থসঞ্চান্ অর্থপ্রচয়ান্ অস্তারেন পর বাপহবণাদিনেত,র্থঃ॥১২

আনন্দগিরিটীকা। আহ্বরানেব পুন: বিশিনষ্টি—আন্শেতি। অশংক্যা-পান্নার্থবিষরা অনবগতোপান্নার্থবিষয় বা প্রার্থনা আশাস্তাঃ পাশাইব পাশাস্তেষাং শতৈর্বদ্ধা ইব শ্রেরসঃ প্রচ্যাব্যেতস্ততো নীন্নমানা ইত্যাহ—আশা গ্রাবেতি॥ ১২

অকুবাদ। আশাপাশ ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ এই যে] "আশাপাশশত" আশাই পাশ (রজ্জু) এই অর্থে 'আশাপাশ' এই শন্ধটি ব্যবহার করা হইয়াছে; দৈই আশাপাশ বদি বহু শত হয়, তাহা হইলে তাহাকেই 'আশাপাশশত' বলা বায়। সেই আশাপাশশতসমূহের বারা বন্ধ অর্থাৎ নিয়ন্তিত হইয়া [তাহারা] "কামকোধাদিপরায়ণ" [হইয়া থাকে]। কাম এবং ক্রোধ এই হইটিই বাহাদের প্রধান অরন অর্থাৎ পরম আশ্রর, তাহারাই 'কামকোধপরায়ণ' বলিয়া ক থিত হয়। [কামকোধপরায়ণ হইয়া তাহারা কি করে ? তাহাই দেখান বাইজেছেব্বি বি অক্সার উপার বারা অর্থাৎ পরের ধন হয়ণাদি করিয়া অর্থ সঞ্চর করিতে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে ॥ ১২

ইদমত ময়া লক্ষমিদং *প্রাপ্স্যে মনোরথম্। ইদমস্তীদমপি মে ভবিষ্যতি পুনর্ধনম্॥ ১৩

অনুষ্য়। অন্ত নয়া ইদং লক্ষ্, ইদং মনোরথং প্রাপ্সো, ইদং ধনং মে অন্তি, ইদমপি ধনং পুনঃ মে ভবিষাতি॥ ১৩

: আমুবাদ। আমি অন্ত এই ধন পাইরাছি, এই মনোরথটি আমার লক হইবে, এই ধন ত আমার রহিরাছে, আরও এইরূপ ধন আমার হইবে॥ ১৩

ভাষ্য ৷ ঈদৃশশ্চ তেষামভি প্রায়: ইদং দ্রব্যম্ অজেদানীং ময়া লক্ষ্ইদৰ্ অন্তং প্রাপ্সেয় মনোরথং মনস্তুষ্টিকরম্ ইদং চান্তি ইদমণি মে ভবিষ্যাতি আগামিনি সংবংসরে পুনধ্নং তেনাহং ধনী বিখ্যাতো ভবিষ্যামি ॥ ১৩

আনন্দ গিরিটীকা। তেষামভিপ্রায়োহপি বিবেকবিরোধীত্যাহ—ঈদৃশ-শেচতি। জব্যং গো-হিরণ্যাদি। ইদমশুদ্বুদ্ধৌ প্রার্থ্যমানকেন বিপরিবর্ত্তমান-মিত্যেতং॥ ১৩

অনুবাদ । তাহাদের অভিপ্রায়ও এই প্রকার হইয়া পাকে, যণা—এই জব্য আমি একণে পাইলাম, এই অন্ত জব্য অ.নি লাভ করিব [সেই জব্য কি প্রকার ?] মনোরণ অর্থাৎ মনের সস্তোষকর। এই ধন আমার রহিয়াছে এবং আগামী সংবৎসরে আমি এত ধন পাইব এবং তাহা ছারা আমি [জনসমাজে] ধনী বলিয়া প্রসিদ্ধ হইব ॥ ১৩

অসো ময়া হতঃ শক্রহনিষ্যে চাপরানপি। ঈশ্বরোহহমহং ভোগী সিদ্ধোহহং বলবান্ স্থী॥ ১৪

অনুষ্য়। অসে শক্তঃ মরা হতঃ অপরান্ অপি হনিষ্যে, অহন্ ঈশবঃ, অহং ভোগী, অহং দিদ্ধঃ বলবান্ স্থী চ॥ ১৪

অনুবাদ। এই শক্রকে আমি মারিরাছি, [এইরূপে] অপর শক্তগণকেও জামি বিনাশ করিব, আমি ঈশ্বর, আমি ভোগী, আমি সিদ্ধ, আমি বলবান্, আমি স্থী॥ ১৪

ভাষ্য। অংশ ময়েতি। অংশ দেবদত্তনামা মরা হতো ত্র্জরঃ শক্তঃ হনিয়ে চান্তান্ বরাকান্ অপরানপি কিমেতে করিষ্যন্তি তপবিনঃ। সর্বধাপি নাতি মত্ন্যঃ। ঈশবঃ অহং, অহং ভোগী, সর্বপ্রকারেণ চ সিছোহহং সম্পন্তঃ

A STO STORE STEE STEE STEE STEE

পুরৈ: পৌত্রৈ: নপ্তৃতি: ন কেবলং সামুষোহহং বলবান্ অধী চাহমেবাঞে তৃ ভূমিভারার অবতীর্ণা: ॥ ১৪

আনন্দণিরিটীকা। বথোকে মদভিপ্রায়ে প্রতিবন্ধক: শক্তরপি ন সম্ভবতীত্যাহ—অসাবিতি। স্বত্তো বিহানানাং দ্বয়া পরিভবেহপি দ্বন্ধুন্যানাং শক্রণাং পরিভবো নিশ্চিতো ন ভবতীত্যাশক্ষাহ—স্বৃথিতি। ঐশ্ব্যাতি-রেকেহপি কৃতত্ত্বোং ভোগদামর্থামিত্যাশক্ষাহ—অহমিতি। সিম্বদনেব স্টেরতি—সম্পন্ন ইতি। বলবানোজন্বী স্থা রোগরহিতঃ॥১৪

আমুবাদ। অসৌ মরা ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]—এই দেবদত্ত নামে প্রাদিদ্ধ হর্জর শক্রকে আমি মারিরাছি, এইরূপ তুক্ত শক্রগণকেও আমি বিনাশ করিব। ইহারা অকিঞ্চিৎকর, ইহারা আমার কি ক্ষতি করিতে পারে, ে এ জগতে] সর্ব্ধ প্রকারেই আমার তুল্য কেহ নাই। আমি ঈশর, আমি ভোগী, আমি সর্বপ্রকারেই সিদ্ধ অর্থাৎ পুত্র পৌত্র প্রভৃতি স্বজনগণে বৈষ্টিত; আমি যে কেবল একজন মামুষ, তাহাই নহে; আমি বলবান্ এবং আমিই স্বুখী, সার সকলে কেবল ভূমির ভারের জন্মই এই সংসারে জন্ম লাভ করিরাছে মাত্র॥ ১৪

আঢ্যোহভিজনবানিম্ম কোহন্যোহস্তি সদৃশো ময়া। যক্ষ্যে দাস্থানি মোদিয্য ইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ॥ ১৫

ভাষুর। অহম আঢ়াঃ (ধনবান্) অভিজনবান্ [চ] অসি, ময়া সদৃশঃ অন্ত কঃ অন্তি ? অহং বক্ষ্যে, দাস্তামি, মোদিষ্যে (হবং প্রাপ্যামি) চইত্যজ্ঞানবিমোহিতাঃ [তে ইতার্থ:]॥ ১৫

অকুবাদ। আমি ধনবান, আমি সংক্লে প্রস্ত, আমার ভুল্য আর অন্ত কে হইতে পারে? আমি যাগ করিব, দান করিব এবং আনন্দ ভোগ করিব; এই প্রকার অজ্ঞানের শ্বারা [তাহারা] বিমোহিত হইরা থাকে॥ ১৫

ভাষ্য। আঢ্য ইতি। আঢ্যো ধনেন অভিজনেন অভিজনবান্ *
সংগ্ৰুষণ শ্ৰোত্তিরখাদিসম্পন্ন তেনাপি ন মম তুল্য অতি কল্চিৎ, কোহস্তোহস্তি
সদৃশন্তল্যা ময়। কিঞ্ ৰক্ষ্যে যাগেনাপি অক্সান্ অভিভবিষ্যামি, দাভামি
নটাদিভো, মোদিষ্যে হর্ষং চাতিশন্তং প্রাপ্যামি ইত্যেবস্ অক্সানেন বিশ্বেছিতা
অক্সান্বিনাহিতা বিবিধনবিবেকভাব্যাপনাঃ ॥১৫

अख्यिनत्नाष्टिकनवान् देकि गार्ठरचनः ।

আনন্দগিরিটীকা। বিভারত্তধনাভিদ্ধনৈ: মতুল্যো নাঠীত্যাহ— আঢ়্য ইতি। তথাপি যাগদানাভ্যাং তৎফলেন বা কন্দিদধিকো ভবিষ্যতীত্যা-শঙ্ক্যাহ—কিঞ্চেতি। ন চ তেষামেষোহভিপ্রায়: সাধীয়ানিত্যাহ—ইত্যেব-মিতি॥ ১৫

অকুবাদ। আঢ়া ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ এই গে] "আঢ়া" ধনবান্ "অভিজনবান্," অভিজন শব্দের অর্থ নহাকুল, সেই কুলে যে জন্মগ্রহণ করে, সেই অভিজনবান্। সপ্তপুরুষ হইতে আমার কুলের সকলেই শ্লোত্তিরছাদি শুণশালী; স্থতরাং ধনে এবং কুলে আমার সদৃশ আর আছে কে ? আরও আমি যাগ করিব অর্থাৎ যাগ করিরাও অন্ত সকলকে অভিভব করিব, আমি নট শুভৃতিকে ধন দিব এবং [এইরূপে] অভিশর আনন্দ ভোগ করিব। এই প্রকার বছবিধ অক্সান হারা [তাহারা] বিমোহিত হর অর্থাৎ তাহারা বিবিধ অবিবেকভাব আশ্রম করিয়া থাকে ॥১৫

অনেকচিত্তবিভ্রান্ত। মোহজালসমার্তাঃ। প্রসক্তাঃ কামভোগেরু পতন্তি নরকেইশুচৌ ॥১৬

ভাষ্য ৷ অনেকচিত্তবিভাস্তা: মোহজালসমার্তা: কামভোগের্ প্রস্কৃত্তা:
[তে] অন্তটো নরকে পতস্থি ॥১৬

• অকুবাদ। তাহাদের চিত্ত অনেক প্রকারে আন্ত, তাহারা মোহকালে সমার্ত। [এইরূপে] তাহারা কামডোগে মত্যন্ত আসক হটরা [অবশেবে] অন্তচি নরকে পতিত হইরা থাকে ॥১৬

আৰুয়। অনেকেতি। অনেকচিন্তবিভ্রান্তা উক্তপ্রকারৈঃ অনেকৈঃ
চিত্তৈঃ বিবিধং ভ্রান্তা অনেকচিন্তবিভ্রান্তা মোহকালসমার্তা মোহঃ অবিবেকঃ
অজ্ঞানং তদেব জালম্ ইব আবরণাত্মকত্বাং তেন সমার্তাঃ, প্রসক্তাঃ কামভোগেরু
তিক্রব নিষ্ণাঃ সম্ভবেনোপচিত্তকল্মবাঃ প্রতিষ্টি নরকে অন্তচৌ বৈতরণাদে ॥১৬

আনন্দগিরিটীকা। উক্তপ্রকারবিপর্যারেণ ক্বতাাকুত্যবিবেকবিক্লানাং কিং ভাদ্ভিতাপেকারামাই—অনেকৈতি। কামা বিষয়ান্তেবাং ভোগেরু তৎ-প্রযুদ্ধে প্রভোগেষিতি বাবং ॥১৬

অসুবাদ। "অনেক" ইত্যাদি [স্নোক্সে অর্থ]—"অনেকচিত্তবিত্রাত্র" উক্তপ্রকার বছবিধ [সহর-পরিপূর্ণ] চিত্তের ছারা নানাপ্রকারে যাহারা আত্ত, ভাহারাই অনেক 'চিত্তবিত্রাত্ত'; "মোহজালগমার্ড" মোহ শব্দের অর্থ অবিবেশ আর্থাৎ অজ্ঞান, এই মোহই জাল; কারণ, ইহা জালের স্থায় আবরণ করিয়া থাকে। সেই মোহজালের দারা বাহারা সমার্ত, তাহারাই 'মোহজালসমার্ত'। "প্রসক্ত" কামতোগসমূহে নিষণ্ণ অর্থাৎ তাহাতেই আসক্ত হইয়া বাহারা পাপরাশিকে সঞ্চয় করে, তাহারাই কামতোগে নিষণ্ণ। [এই প্রকার হইয়া তাহারা কি করে?] নরকে পতিত হয়। [সে নরক কি প্রকার?] অন্তচি তাৎপর্য্য এই যে, তাহারা বৈতরণী প্রভৃতি নরকে পতিত হয়]॥১৬

আত্মসম্ভাবিতাঃ স্তব্ধা ধনমানমদাবিতাঃ। যজন্তে নাময়জৈন্তে দম্ভেনাবিধিপূর্ববিকম্॥ ১৭

আৰুয়। আত্মসন্তাবিতাঃ গুৰাঃ (অন্সাঃ) ধন্মান্মদাৰিতাঃ তে দভেন অবিধিপুৰ্বকং নামধক্তৈঃ বজতে ॥ ১৭

অনুবাদ। তাহারা আপনাকেই সর্বপ্রকারে উপযুক্ত বিবেচনা করে, কাহারও নিকটে তাহারা অবনত হয় না। ধন থাকা প্রযুক্ত তাহাদের অভিমান ও মন্ততা সর্বাদাই থাকে। তাহারা দম্ভবশতঃ অবিধিপূর্বক সম্পাদিত নামমাত্র যক্তসমূহের দারা আরাধনা করিয়া থাকে॥ ১৭

. ভাষ্য। আত্মেতি। আত্মসন্তাবিতাঃ সর্বপ্তণবিশিষ্টতয়া আত্মনৈব সন্তাবিতা আত্মসন্তাবিতাঃ, ন সাধুভিঃ। স্তব্ধা অপ্রণতাত্মানঃ। ধনমানমদাবিতাঃ ধননিমিত্তঃ মানো মদশ্চ তাভ্যাং ধনমানমদাভ্যাম্ অবিতা বজ্ঞ নামবজ্ঞৈঃ নামমাত্রৈবলৈঃ তে দন্তেন ধর্মধ্বজিতয়া অবিধিপূর্বকং বিহিতাকেতিকর্মবাতারহিতৈঃ॥১৭

আনন্দগিরিটীকা। নম তেষ।মপি কেষাঞ্চিন্বৈদিকে কর্মণি যাগদানাদৌ প্রবৃত্তিপ্রতিপত্তেরযুক্তং বৈতরণ্যাদৌ পতনমিতি চেৎ তত্তাহ—আত্মেতি॥ ১৭

অনুবাদ। আতা ইত্যাদি [লোকের অর্থ]—"আত্মসন্তাবিত" সকল প্রকার গুণ আমারই আছে—এই বলিয়া বে আপনাকে সম্ভাবনা (সন্মাননা) করে; কিন্তু সাধুরা সেইরূপ বিবেচনা করেন না, ঈদৃশ ব্যক্তিরাই 'আত্মসম্ভাবিত'। ''স্তর্ন'' বাহাদের স্বভাব নত নহে, তাহারাই 'গুন'। ''ধনমানমদাবিত'' ধন আছে এইজ্ঞা যে মান ও মদ উৎপন্ন হয়, সেই ধনমান এবং ধনমদ 'ড্রাহাদের লাগিরাই আছে, তাহারা 'ধনমানমদাবিত'। নামযক্ত অর্থাৎ নামমাত্রে বজ্ঞা কার্যাতঃ নহে] এই তাৎপর্য্যে [নামযক্ত এই শক্টি প্রযুক্ত হইনাছে] এ বিই প্রকার নামযক্তসমূহের ঘারা ভাহারা দম্ভবশতঃ অর্থাৎ ধর্মধ্বক্তিভার

বলে অবিধিপূর্বক যজন করিয়া থাকে। [তাহাদের ঐ সকল যজ্ঞ] "জবিধিপূর্বক" অর্থাৎ ঐ সকল যজ্ঞের যে সকল বিহিত অঙ্গ কিংবা অনুষ্ঠান করিবার
পদ্ধতি আছে, তাহার কিছুই অবলম্বিত হয় না॥ ১৭

অহঙ্কারং বলং দর্পং কামং ক্রোধঞ্চ সংশ্রৈতাঃ। মামাত্মপরদেহেযু প্রদ্বিষস্তোহভ্যসূরকাঃ॥ ১৮

অনুয় । অহকারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং চ সংশ্রিতা: (অবলম্মানা:) মাম্ আত্মপরদেহেরু প্রবিষয়: অভ্যস্রকা: [ভবস্তি] ॥ ১৮

্ অনুবাদ। তাহারা বল দর্প অহকার কাম ও ক্রে:ধকে অবলম্বন করিরা থাকে। তাহারা নিজদেহে এবং পরদেহে আমার প্রতি অর্থাৎ ঈশ্বরের প্রতি বিষেষপরায়ণ হয়, তাহারা পরের গুণ সহিতে পারে না॥ ১৮

ভাষ্য । অহমিতি। অহকারম্ অহংকরণম্ অহকার: বিজমানৈ: অবিজ্ঞনানৈণ গুণৈরাত্মনি অধ্যারোপিতৈঃ বিশিষ্টমাত্মানম্ অহম্ ইতি মক্ততে দোহহলা-বোহবিজ্ঞাথাঃ কষ্টতমঃ দর্কদোষাণাং মৃলং দর্কানর্গপ্রবৃত্তীনাং চ। তথা বলং পরাভিজ্ঞবনিমিতাং কামরাগাবিতম্, দর্পং দর্পো নাম যজোদ্ভবে ধর্মানি ক্রামতি দোহরমত্তঃকরণাপ্রয়ো দোষবিশেষঃ *। কামং স্ত্র্যাদিবিষয়ং ক্রোধমনি ক্রির্মেতান্ অক্তাংশ্চ মহতো দোষান্ সংশ্রিতাঃ। কিঞ্চ তে মামীশ্রমাত্মপরদেহেয়্ স্থানেহে পরদেহেয়্ চ তত্তভ্রিকর্মানিক্রতং মাং প্রবিষত্তঃ মচ্ছাসনাতিবর্তিতং প্রবৃত্তঃ অভ্যুদ্ধকাঃ সন্ত্রাগিছানাং গুণেজসহমানাঃ ॥১৮

[&]quot;কোদীরস্যাপি, বিভাদৌ প্রাপ্তে হাধর্মে। হাষ্টো দৃপ্যতি দৃপ্তো হি ধর্মনিভক্রামতী্তি স্মৃত্তেঃ" ইত্যাধিকম্ কৃচিৎ দৃশ্বতে ।

⁺ अवृरखन्त्रीषि शांशखन्।

[‡] বর্তানীতি পাঠভেদ:।

দোষান্মাৎসর্ব্যাদীন্। ন কেবলম্ উক্তমেব তেষাং বিশেষণং কিন্তু কষ্টতমমন্তি বিশেষণান্তরমিত্য।ই—কিঞ্জেতি। ষম্পণীশ্বরং প্রতি বেষণ্ডেবাং সম্ভাব্যতে তথাপি কথং স্বদেহে পরদেহের্চ তথ প্রতি বেষঃ ন হি তত্ত্ব ভোক্তারমন্তরেণ স্বারস্থাবন্থানমিত্যাশস্থাহ—তদ্বুদ্ধীতি। তেষামীশ্বরং প্রতি বেষমেব প্রকটরতি—মচছাসনেতি। স্ববরস্থ শাসনং প্রতিস্থৃতিরূপং তদ্বতিবর্ত্তিশ্বং তত্তকার্যজ্ঞানামুঠানপরাঙ্মুধ্বম্॥১৮

অনুবাদ। অংশ্ ইত্যাদি [ক্লোকের অর্থ এই বে]—"অংকার" অংকরণ --- (व नकन खन विश्वमान এवং व नकन खन वाखिवक नाहे, छाहा नकनहे (व আত্মার উপর আরোপ করা অর্থাৎ আমার এত ৩৩ণ আছে এই প্রকার বে ভাবনা, তাহাই 'অহলার'; এই অহলারকে অবিল্যা বলা যায়: এই অহলাররপ দোৰ অক্তান্ত দোৰ সকলের মধ্যে সর্কাপেকা ক্রেশদায়ক: যতপ্রকার অনর্থকর প্রবৃত্তি আছে, সেই দকলেরই মূল হইতেছে অংকার। 'বল' বাহাদারা পরের অভিভব করা যার, কাম ও রাগ হইতে যাহা উৎপন্ন, দেই সামর্থ্য বিশেষই 'বল'। ''দর্প' বাহার উদ্ভব হইলে লোকে ধর্ম পরিত্যাগ করে ও বাহা অহঃকরণে আশ্রিত, নেই দোর বিশেষই 'দর্প'। "কাম" ত্রী প্রভৃতি ভোগ্য বস্তুর এতি যে অভিলাব, ভাহাই কাম'। "ক্রোধ" অনিষ্ট অর্থাৎ হঃথ বা হঃথহেতুর উপর মনের প্রতিকৃদ বৃত্তিই 'ক্রোধ'। এই সকল এবং আরও অনেক মহানু দোষসমূহের আশ্রয় তাহারাই হ**ইরা থাকে।** আর তাহারা "আত্মপরদেহে" অর্থাৎ নিচ্চ দেহে এবং অপর জীবগণের দেহসমূহেও অবস্থিত আমাকে অর্থাৎ ঈশ্বরকে বিদ্বেষ করিয়া পাকে; দেহমধ্যে বাহা কিছু কর্ম হয় বা যাহা কিছু বৃত্তি হয়, সেই সকলই আমার নিকটে সর্বদাই প্রতিভাত হইরা থাকে, এই কারণেই আমি দেহে অবৃশ্বিত অর্থাৎ আশিগণের বাবতীয় কর্ম্মের সাক্ষী। সেই আমার প্রতি তাহাদের বিষেষ হয় [এই বিষেষ कি প্রকার, ভাহাই বলিভেচেন] আমার আজ্ঞা লজ্মন করাই **জামার প্রতি বিদ্বেব [জারও তাহারা] ''ব্য**ন্তাস্থ্যক' হইয়া থাকে। যাহারা সন্মার্গে অবস্থিত, তাহাদের গুণকে ঐ সকল তামন জীবগণ সহিতে পারে না ॥১৮

> তানহং বিষতঃ ক্রুরান্ সংসারেষু নরাধমান্। • ক্ষিপাম্যজ্জসমশুভানাস্থরীম্বেব যোনিষু॥১৯

় ' **অধ্যা ।** অহং তান্ ক্রান্ বিষতঃ নরাধমান্ সংসারেষ্ আফ্রীষ্ এব বোনিবু অজ্ঞাং কিপামি ॥১৯ অসুবাদ। সেই সকল বিষেষপর জুর নরাধম ব্যক্তিগণকে আমি সংসার সমূহে আম্রীযোনিনিবহে বারংবার নিকেপ করিয়া থাকি ॥১৯

ভাষ্য। তানহমিতি। তানহং সর্বান্ সন্মার্গপ্রতিপক্ষভূতান্ সাধুৰে-বিণো বিবতক মাং ক্রান্ সংসারেষেব নরকসংসরণমার্গের্ নরাধমান্ অধর্মদোব-বন্ধাং কিপামি প্রক্রিপামি অজ্ঞাং সম্ভতমগুভানগুভকর্মকারিণঃ আন্মনীবেব ক্রুর-কর্মপ্রায়ান্ত ব্যাপ্রসিংহাদিযোনিরু ক্রিপামীত্যনেন সম্বন্ধঃ ॥১৯

আনন্দগিরিটীকা। তেবামুক্তবিশেষণবত।মাস্থরাগাং কিং স্থাদিতি তত্ত্বাহ— তানিতি। তগবতোনৈমূণ্যপ্রসঙ্গং প্রত্যাদিশতি—অধুশ্রেতি ॥১৯

অনুবাদ। তানহম্ ইত্যাদি [স্লোকের অর্থ]—সন্মার্গের প্রতিপক্ষ
সাধুগণের প্রতি এবং আমারও প্রতি বিশ্বেষপর—ক্রুর সেই সকল নরাধমগণকে
আমি "সংসারে" নরকরপ সংসারের পথে আহ্মরী যোনিতে অর্থাং ব্যান্ত সিংহ
প্রভৃতি কুরকর্মপ্রায় যোনিতেই নিক্ষেপ করিয়া থাকি—যে কারণে তাহারা
সর্কান্ট অন্ত-কর্মপর, এই জন্ত, আমি, তাহাদিগকে আহ্মরী যোনিতেই নিক্ষেপ
করিয়া থাকি, এইপ্রকার অধ্বয় [করিতে হইবে] ॥১৯

আহ্বরীং যোনিমাপন্ধা মূঢ়া জন্মনি জন্মনি। মামপ্রাপ্যৈর কোন্তেয় ততো যান্ত্যধমাং গতিম্॥২০

ভাষ্য ৷ মৃঢ়া সাহ্যরীং বোনিম্ অ/পরা থে কৌন্তের ! জন্মনি জন্মনি মাষ্
অপ্রাপ্যেব ততঃ অধ্যাং গতিং বাস্তি ॥২•

অনুবাদ। তাহারা [এইরপে] আত্মরী যোনিপ্রাপ্ত হয় এবং জন্ম জন্মান্তরেও বিবেক লাভ করিতে পারে না; স্থতরাং আমাকে প্রাপ্ত না হইরা ভাহা অপেকা [উত্তরোত্তর] আরও অধম যোনিতে জন্মগ্রহণ করিরা থাকে, হৈ কুন্তীনক্ষন ৷ ॥২০

ভাষ্য। আহ্ননীমিতি। আহ্ননীং বোনিমাপন্নাঃ প্রতিপন্নাঃ মৃঢ়া জন্মনি জন্মনি জনিববৈদিনঃ প্রতিজন্ম তমোবহুলান্থেব বোনিষু জান্মনানা অবধা গছতের মৃঢ়া মামীখনমপ্রাপ্য অনাসাথ্যৈব হে কৌস্তেয় ততন্তমাদপি বাবিত্ত অধনাং নিক্কান্ত মান প্রতিপাবেতি ন মংপ্রাপ্তে কাচিদপ্যাশকা অবি, অত্যে মিছ্কিসাধুমার্গমপ্রাপ্য ইত্যর্থঃ ॥২•

আনন্দগিরিটীকা। নম তেবামপি ক্রমেণ বহুনাং জন্মনামন্তে শ্রেরো ভবিষ্যতি নেত্যাহ—আসুরীমিতি। ভেষামীশ্বপ্রাপ্তিশঙ্কাভাবে কথ্য তরিষেধঃ ভাদিত্যাশক্যাহ—মামিত্যা দিনা। যন্ত্রাদাস্থরী সম্পদনর্থপরস্পরমা সর্বপ্রস্থার্থ-পরিপছিনী তন্ত্রাদ্যাবৎ পুরুষ: স্বতদ্রো ন কাঞ্চিৎ পারবগুকরীং যোনিমাপদ্মন্তাব-দেব তেনাসৌ পরিহরণীয়েতি সমুদায়ার্থ: ॥২•

অকুবাদ। আসুরীম্ ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ] আসুরী বোনিকে "আপর্ন" প্রাপ্ত হয়; প্রতিজন্মই "মৃঢ়" অবিবেকী হয়, প্রতিজন্মই তাহারা তমোবহন বোনিসমূহে জন্মগ্রহণ করে এবং ভাহারা ক্রমেই অধাগতিই প্রাপ্ত হয়। সেই মৃঢ়গণ আমাকে অর্থাৎ ঈশ্বরকে প্রাপ্ত না হইয়া হে কৌস্তের, তাহা হইতেও অধম অর্থাৎ নিক্লইতম গতিকে প্রাপ্ত হয়। "আমাকে প্রাপ্ত না হইয়া" এইরূপ বে বলা হইতেছে, তাহার তাৎপর্যা এই বে, তাহারা মহক্ত সাধুমার্গ প্রাপ্ত হয় না; এই কারণ আমাকে পাইবার সন্তাবনাও তাহাদের নাই॥২০

ত্রিবিধং নরকস্থেদং দ্বারং নাশনমাত্মনঃ। কামঃ ক্রোধস্তথা লোভস্তস্মাদেতত্রয়ং ত্যক্ষেৎ॥২১

আনুষু। কাম: ক্রোধ: তথা লোভ: [ইতি] ইদং ত্রিবিধম্ আত্মনো নাশনং নরকস্ত দারম্; তত্মাৎ এতপ্রয়ং ত্যাকেং ॥২১

আকুবাদ। কাম ক্রোধ এবং লোভ এই তিন প্রকার গুণই আগ্রনাশের কারণ এবং নরকের দারশ্বরূপ, এই কারণে এই তিনটিকে পরিভাগে করিবে॥২১

ভাষা। সর্বাহ্য আহ্বর্যাঃ সম্পদঃ সংক্ষেপোহয়মূচ্যতে, যদ্মিন্ ত্রিবিধে সর্বাহ্য ক্ষান্ত্রসম্পন্তেদঃ অনস্তোহপি অন্তর্ভবতি। বৎপরিহারেণ পরিহাতক ভবতি, বন্মু লং সর্বাহ্য তদেতহচ্যতে—ত্রিবিধং ত্রিপ্রকারং নরকন্ত প্রাপ্তৌ ইদং ছারং নাশনমান্ত্রনঃ বন্ধারং প্রবিশন্তেব আত্মা নগুতি কথৈছিৎ পুরুষার্থার যোগ্যে ন ভবতি ইত্যেতদত উচ্যতে ছারং নাশনমান্ত্রন ইতি। কিং তৎ কামঃ ক্রোধঃ তথা লোভঃ তন্ত্রাৎ এতত্রয়ং ত্যকেৎ। যত এতদ্বারং নাশনমান্তন্ত্রাৎ কামাদিত্রহমেতৎ ত্যকেৎ ত্যাগস্তাতিরিয়ম্ন্।।২১

আনন্দণিরিটীকা। কথসাম্বরী সম্পদনগুডেদবতী প্রবায়্বেণাপি পরিহর্ত্ত্ব, শব্যেতেত্যাশক্ষাহ—স্ববিস্থা ইতি। সংক্রেণোজিফলমাহ—য়িশ্মি-দ্লিতি। কামাদৌ ত্রিবিধে সর্বস্থাম্বসম্পত্তেদভান্তর্ভাবেহুপি কথমসৌ ইরি-ছিরতৈ তত্ত্বাহ —যুহুপরিহারেণেতি। কামাদিপরিহারেণাম্বরসম্পত্তেদপরি-হারেহুপি কথং সর্বাদর্থপরিবর্জনমিত্যাশক্যাহ—যুদুদ্রমিতি। কথমান্ধনা নিত্যন্ত নাশাশক্ষেতি তত্ত্ৰাহ—কৈশ্বৈছিচিদিতি। জিবিধমণি সামান্ততো দৰ্শিতমা-কাজ্জাদারা বিশেষতো দর্শরতি—কিং তদিতি। তত্মাদিতি ব্যাচন্টে—কৃত্ত-ইতি। কামাদিত্যাগে সতি অনর্থাবরণশ্রের:প্রতিবন্ধনিবৃত্তে ভাতামিতি ভাবঃ ॥২১

অমুবাদ। সকল আহ্নরী সম্পদের সংক্ষেপ এই শ্লোকে বলা হইতেছে,—
আহ্নরী সম্পদের ভেদ অনস্ত হইলেও সকলই যাহার মধ্যে নিবিষ্ট, যাহার পরিহার
করিতে পারিলে সকল প্রকার আহ্ররসম্পদের পরিহার করিতে পারা বার এবং
যাহা সকল প্রকার অনর্থের মূল, তাহাই এই বলা হইতেছে। "ত্তিবিধ" তিন
প্রকার, নরক প্রাপ্তির দার এবং আত্মার "নাশন"; যে দারে প্রবিষ্ট হইলে আত্মা
নাশ প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ আর কোন প্রকার পুরুষার্থের যোগ্য হইতে পারে না,
তাহাকেই 'আত্মার নাশন' বলা যায়। কি তাহা ? কাম ক্রোধ এবং লোভ এই
তিনটিই (আত্মার নাশন অর্থাৎ নরকের দার); সেই কারণে এই তিনটি পরিত্যার
করিবে। যেহেতু এই কাম ক্রোধ এবং লোভ রূপ তিনটি বস্তু আত্মার নাশন,
সেইহেতুই এই তিনটি পরিত্যাগ করিবে। এইপ্রকার উক্তি দারা ভ্যাগেরই
প্রশংসা করা হইতেছে ॥২১

এতৈর্বিমুক্তঃ কোন্তেয় তমোদারৈক্সিভির্নরঃ। আচরত্যাত্মনঃ শ্রেয়স্ততো যাতি পরাং গতিমু॥২২

অন্থয় | হে কৌন্তের এতৈঃ ত্রিভিঃ তমো**হারৈঃ বিমৃক্তঃ নরঃ আত্মনঃ** শ্রেষ আচরতি, ততঃ পরাং গতিং যাতি ॥২২

অকুবাদ। হে কুস্তীনন্দন, তমোদার এই তিনটি গুণ হইতে বিমুক্তি গাভ করিয়া মহুষ্য নিজের শ্রেয়: অহুষ্ঠান করিতে পারে এবং সেই অহুষ্ঠানের প্রসাদে প্রমণ্ডি লাভ করিতে সমর্থ হর ॥২২

ভাষ্য । এতৈরিতি । এতৈর্বিস্কঃ কৌস্কের তমোধারৈঃ তমসঃ নরকঞ্চ গুংখমোহাত্মকণ্ঠ ঘারাণি কামাদরঃ তৈরেতৈঃ ত্রিভিঃ বিস্কো নরঃ আচরতি অমুতিষ্ঠতি । কিমৃ ? আত্মনঃ শ্রেরঃ যংপ্রতিবদ্ধঃ পূর্বং নাচরতি তদপগমাদাচরতি তত্ত্বস্থাচিরণাদ্ যাতি পরাং গতিং মোক্ষমপীতি ॥২২

আনন্দ্রিট্রিকা। কেবলং শ্রেরঃ সমাচররাস্থরীং চ সম্পদং বর্জরন্ মোক্ষমেব সম্যাগ্রীবারা লভতে কিন্তু গৌকিকমণি স্থামিত্যণেরর্থঃ ॥২২ আকুবাদ। এতৈঃ ইত্যাদি [শোকের অর্থ]—হে কুস্তীনন্দন ! "তমোবার" তমঃ এই শব্দের অর্থ হঃথ এবং মোহময় নরক। সেই নরকের বার।
তিমোবার' এই শব্দের অর্থ। এই কাম ক্রোধ এবং লোভ তিনটিই নরকের বার।
এই তমোবার রূপ তিনটি গুণ হইতে মুক্ত হইয়া মানব "আচরণ" অমুষ্ঠান করে।
কি ? আত্মার শ্রেয়ঃ। বে তিনটির বারা প্রতিবদ্ধ বলিয়া নিজের শ্রেয়ঃ জাচরণ
করিত্তে পারে না, তাহা হইতে মুক্ত হইয়া শ্রেয়ঃ আচরণ করিয়া পাকে এবং .সই
আচরণের বারা "পরা গতি" অর্থাৎ মোক্ত পর্যন্ত ও লাভ করিতে পাবে ॥২২

যঃ শাস্ত্রবিধিমূৎস্ক্র্য বর্ত্ততে কামচারতঃ।*
ন স সিদ্ধিমবাপ্নোতি ন স্থং ন পরাং গতিম্॥২৩

অমৃয় । যঃ শাস্ত্রবিধিম্ উৎস্ঞ্য কামচারতঃ বর্ত্তে, স সিদ্ধিং ন অবাপ্লোতি ন স্থেম্ [অবাপ্লোতি তথা] ন পরাং গতিম্ অবাপ্লোতি ॥২৩

আমুবাদ। যে ব্যক্তি শাস্ত্রবিধিকে পরিত্যাগ করিয়া নিজের ইচ্ছাযুসারেই চলিয়া থাকে, তাহার দিদ্ধি লাভ হয় না, সে স্থথ পায় না এবং সে পরম গতিকেও লাভ করিতে পারে না ॥২৩

ভাষ্য । দর্বশ্র এতপ্ত আত্মরসম্পৎপরিবর্জনন্ত শ্রের আচরণন্ত চ শাস্ত্রং কারণং শাস্ত্রপ্রমাণাছভরং শক্যং কর্ত্ব্ নাঞ্জা, অতঃ,—যঃ শাস্ত্রবিধিং † কর্ত্ব্যাক্রানকারণং বিধিপ্রতিষেধাথ্যমুৎস্ক্র তাক্তা বর্ত্তে কামচারতঃ কামপ্রযুক্তঃ সন্ন দ দিছিং পুরুষার্থযোগ্যতাম্ আপ্নোতি। নাপি অন্নিন্ লোকে স্বর্থং নাপি প্রাং প্রকৃষ্টাং গতিং স্বর্গং নোকং বা ॥২৩

আনন্দগিরিটীকা। আহ্মর্যাঃ সম্পাদে বর্জনে শ্রেরসন্ট করণে কিং কারণং তদাহ—স্ব্রিস্তোতি। তম্ম কারণন্ধ সাধরতি—শাস্ত্রেতি। উক্তমুপজীব্যানন্তরন্ধোকং প্রবর্ত্তরভিত অত ইতি। শিব্যতেহমুশিব্যতে বোধ্যতেহনেনাপূর্বেঃ, হর্ষ ইতি শাস্ত্রং তচ্চ বিধিনিষেধাত্মকমিত্যুপেত্য ব্যাচষ্টে—কর্ত্তব্যুতি। কামঞ্চ করণং কামকারঃ তত্মান্ধেতোরিত্যুপেত্য কামাধীনা শাস্ত্রবিমুধস্ম প্রবৃত্তিরিত্যাহ
—কামেতি। কামাধীনপ্রবৃত্তেঃ সদা প্মর্থাবোগ্যন্ম সর্বপ্রবর্ধাবিদিদ্ধিরিত্যাহ—
নাশীতি॥২৩

^{*} কামকারত: ইতি পাঠান্তরম্।

[†] শারং বেদক্তক বিধিন্ ইত্যধিকং কুত্রটিৎ দৃখতে।

অকুবাদ। এই সকল প্রকার আন্তরসম্পৎ পরিবর্জন এবং শ্রেরঃ জাচরণের কারণ একমার শান্তই; কারণ, শান্তরূপ প্রমাণের হারাই এই উভরের অকুচান করিতে পারা বার,—অন্ত কোন প্রকারে হইতে পারে না। এই জন্ত বে ব্যক্তি "শান্তবিধি" কর্ত্তবা ও অকর্ত্তবা বুঝিবার উপার বিধি বা প্রতিষেধরূপ শান্তকে পরিত্যাগ করিরা "কামচারতঃ" অর্থাৎ নিজের ইচ্ছাম্পারেই চলিরা থাকে, কে "সিদ্ধি" (অর্থাৎ) পুরুষার্থপ্রাপ্তির যোগ্যতা প্রাপ্ত হর না; সে ইহলোকে সুধী হর না, "পরা" প্রকৃষ্টা 'গতি" স্বর্গ বা মোক্ষ কিছুই সে পাইতে পারে না ॥২৩

তস্মাৎ শান্ত্রং প্রমাণং তে কার্য্যাকার্য্যবাহ্বতো। জ্ঞাত্বা শাস্ত্রবিধানোক্তং কর্ম্ম কর্ত্তুমিহার্হসি॥ ২৪

ইতি বোড়শোহধ্যায়:।

অন্তয়। তমাৎ কাৰ্য্যাকাৰ্য্যবৃহিতে তে শাস্ত্ৰং প্ৰমাণম্, জ্ঞানা শাস্ত্ৰ-বিধানোক্তং কৰ্ম্ব কৰ্জুম্ ইহ অহ সি ॥২৪

অনুবাদ। সেই কারণে কোন্টি কার্য্য এবং কোন্টি অকার্য্য এই প্রকার ব্যবস্থা বিষয়ে তোনার শাস্ত্রই প্রমাণ। শাস্ত্রবিধানোক্ত কর্ম কি, তাহা জানিয়া তুমি কর্মাফুটান করিতে প্রবৃত্ত হও॥২৪

ভাষ্য। তন্মাদিতি। তন্মাচ্ছান্তং প্রমাণং জ্ঞানসাধনং তে তব কার্যা-কার্যাব্যবিছিতে কর্ত্তবাকর্ত্বব্যবহারান্ অতো জ্ঞাত্ম বৃদ্ধা শান্তবিধানোক্তং বিধিবিধানং শান্ত্রেণ * বিধানং শান্ত্রবিধানং ক্র্য্যাৎ ইত্যেবংলক্ষণং তেনোক্তং স্বকর্ম বং তৎ কর্জুমিহার্হনি। ইহেতি কর্মাধিকারভূমি প্রদর্শনার্থ-মিতি॥ ২৮

• আনন্দ্রিটীক। শাস্তাদৃতে কর্মণো নিক্ষণত্বে কণিতমাহ—তুন্মাদিতি। কর্ত্তব্যাকর্তব্যে ধর্মাধর্মে তিত্র শাস্ত্রত্ব প্রমাণ্ডেংপি মম কিং কর্ত্তব্যমিড্যাশভ্যাহ— অতুইতি। স্বকর্ম ক্ষত্রিয়ত যুদ্দাদি, ইতিশব্দেহধ্যারসমাপ্ত্যপ্রঃ।
তদনেনাধ্যারেন প্রাণ্ড্রীয়-কর্ম-বাসনামুসারেণাভিব্যভ্যমানসাধিকাদিপ্রকৃতিত্রম্বিভাগেন দৈব্যাস্থ্রীতিসম্পদ্রমাদানহানাভ্যামুপদিত্র কামক্রোধনোভানপহার
প্রমার্থিনা শাস্ত্রপ্রণেন ভত্তক্রবারিণা ভবিতব্যমিতি নির্দারিতম্ ॥২৪

অনুবাদ। তন্মাদিত্যাদি [রোকের অর্থ]। এই কারণে তোমার শান্তই

 ^{&#}x27;শান্তমের বিধানন' ইতি গঠন্তি কেটিৎ।

"প্রমাণ"। জ্ঞানের সাধন, [কোন্ বিবরে ?] কার্যাকার্য ব্যবস্থা অর্থাৎ কর্মব্যাকর্মব্যবিভাগ বিষয়ে। এই জস্ত বৃষ্ণিরা "শাস্ত্রবিধানোক" বিধান শক্ষের অর্থ বিধি, শাস্ত্রের বারা বে বিধান, তাহার নাম 'শাস্ত্রবিধান,' তাহা বারা উক্ত অর্থাৎ ইহা কর্ম্ব্য হহা কর্ম্ব্য নহে, এইভাবে শাস্ত্রবিধিবারা উক্ত কর্ম গুলির মধ্যে বেটি তোমার পক্ষে কর্ম্ব্য বিলয়া উক্ত হইরাছে, তাহাই 'শাস্ত্রবিধানোক্ত কর্ম'; তাহাই বৃষ্ণিয়া তুমি কর্মাফ্র্যান করিতে উত্থত হও। 'ইহ" এই শক্ষ্টির অর্থ এই কর্মাধিকার ভূমিতে অর্থাৎ ভারতবর্ষে [ইহাবারা ইহাই প্রদর্শিত হইতেছে বে, এই ভারতবর্ষই বেদোক্ত কর্মের অধিকার ভূমি]।।২৪

ইতি বোড়শোহধ্যায়: সমাপ্ত:।

অথ সপ্তদশোহধ্যায়ঃ।

অৰ্জুন উবাচ। •

-:•:----

যে শাস্ত্রবিধিমূৎসঞ্জ্য যজন্তে শ্রন্ধরান্বিতাঃ। তেষাং নিষ্ঠা তু কা কৃষ্ণ সন্ত্রমাহো রজন্তমঃ॥১১

় অনুয় । অর্জুন উবাচ । হে কৃষ্ণ ! যে শাস্ত্রবিধিম্ উৎস্ক্র প্রভরা অবিতাঃ যক্তে, তেবাং কা নিঠা ? আহো সতং রক্ষঃ তমঃ [বা]॥১

অনুবাদ। অর্জুন বলিলেন,—হে রুঞ্চ, বাহারা শাস্ত্রীয় বিধান পরিত্যাগ করিয়াও শ্রন্ধার সহিত যজন করে, তাহাদের নিষ্ঠা কিরূপ ? ঐ নিষ্ঠা কি সাজিকী কিংবা রাজসী অথবা তামসী ?॥>

ভাষ্য। তন্মাৎ শাত্রং প্রমাণং তে ইতি ভগবন্বাক্যাৎ লব্ধ প্রমান্ধঃ
(অর্জুন উবাচ) বে কেন্দ্ অবিশেষিতাঃ শাত্রবিধিং শাত্রবিধানং শ্রুতিশাত্রচোদনাম্ৎক্রা পরিত্যক্র্য যজতে দেবলৌন্ পূরুরত্তি। প্রদ্ধা আতিকাব্র্যা অঘিতাঃ সংযুক্তাঃ দত্তঃ শ্রুতিলফণং বা কঞিৎ শাত্রবিধিমপশুস্তো ব্রুববিধারদর্শনাদেব প্রদ্ধানত্যা যে দেবাদীন্ পূরুরত্তি তে ইহ "যে শাত্রবিধিমপ্রতা যজতে প্রদ্ধায়িতাঃ" ইত্যেবং গৃহত্তে। যে তু পূনঃ কঞিৎ শাত্রবিধিমপ্রতা যজতে প্রদ্ধায়িতাঃ" ইত্যেবং গৃহত্তে। যে তু পূনঃ কঞিৎ শাত্রবিধিমপ্রতানাএব তম্ৎক্রা অবথাবিধি দেবাদীন্ পূরুরতি তে ইহ "যে শাত্রবিধিমুৎক্রা যজতে" ইতি ন পরিগৃহত্তে। কন্মাং ? প্রদ্ধা অবিভ্রবিশেবণাং। দেবাদিপূলাবিধিপরং কিঞ্চিৎ শাত্র পশ্রত এব তহৎক্রা অপ্রদ্ধানত্রা তিহিভায়াং দেবাদিপূলায়াং প্রদ্ধা অবিতাঃ প্রত্তিত্তে ইতি ন শক্যং কর্মিতৃৎ বন্ধাৎ তন্ধাৎ পূর্বোক্রা এব "যে শাত্রবিধিমুৎক্রা যজতে প্রদ্ধাক্রা এব "যে শাত্রবিধিমুৎক্রা যজতে প্রদ্ধানিতাঃ" ইত্যাত্র গৃহত্তে। তেবামেবংভূতানাং নিষ্ঠা তু কা ক্রক সন্ধ্য আহো রক্তর্যঃ, কিং সন্ধং নিষ্ঠা অবস্থানন্ আহোমিৎ রক্তঃ অথবা তমঃ। এতহ্নকং ভবতি বা তেবাং দেবাদিবিধা পূলা সা কিং সান্ধিকী আহোম্বিৎ রাজসী উত্ত তামসী ইতি ॥>

আনন্দ্গিরিটীকা। অতিকানাং নাত্তিকানাঞ্চ শাক্তৈদ্বাং গতিককা সম্প্রতি আতিকানামের শাক্তানভিক্ষানাং গতিকিক্সাসয়া পৃদ্ধতীত্যাহ—ক্তস্মান দিতি। যজন্ত ইতি যাগগ্রহণং দানাদেরপদক্ষণম্। যদি বেদোকং বিধিমপশ্রস্তত্বস্থেজন্তি কথং তর্হি শ্রহ্মধানা বাগাদি কুর্কন্তি ন হি মানং বিনা শ্রহ্মা বাগাদি
কর্ত্বং শক্যমিত্যাশক্যাক—প্রুক্তীতি। নম্ম শাস্ত্রীয়ং বিধিং পশ্রস্তোহপি কেচিৎ
তম্পেক্ষ্য ঘোণাদি কুর্কন্তো দৃশ্রন্তে তেষামিহ 'যে শাস্ত্রবিধিমুৎস্ক্যু'
ইতি গ্রহো ভবিষ্যতি নেত্যাহ—যে পুনরিতি। তেষামত্রাপরিগ্রহে প্রশ্নপূর্বকং হেতুমাহ—কুস্মাদিতি। শাস্তজ্ঞানাং তহুপেক্ষাবতাং গ্রহেছপি বিশেষণমবিক্রমিত্যাশক্য ব্যাঘাতান্মৈবমিত্যাহ—দেবাদীতি। অশ্রহ্মধানতয়া তহুৎক্রন্ত্রাতি সম্বৃদ্ধঃ। শাস্ত্রোক্তং বিধিমধিগচ্ছতামপি তমবধীর্য্য স্বেছ্র্যা দেবপূজাদো
প্রব্রানামান্মরেছেবাস্তর্ভাবো ফ্রাদনস্করাধ্যায়ে সিদ্ধস্কাদান্তিকাধিকারে তেষাং
প্রস্কোনার্যন্তর্ভাবনি যুস্মাদিতি। পূর্ব্বোক্তা: শাস্ত্রানভিজ্ঞা ক্রন্
ব্যবহারাম্পারিণ ইতিযাবং। তৈঃ শ্রদ্ধ্যা ক্রির্মাণং কর্ম্ম কুত্র পর্য্যবস্থতীতি
পৃচ্ছতি—ত্রেয়ামিতি। কা নিষ্ঠেত্যেভদ্বির্ণোতি—স্ত্র্মিতি। কার্য্যাণাং
কার্যবর্গ্রপদেশমান্রিত্য তৎ পর্য্যমাহ—এতদিতি॥>

"দেই কারণে শাস্ত্রই তোমার প্রমাণ" এই প্রকার ভগবানের বাক্য হইতেই প্রশ্নের বীজ উপলব্ধি করিয়া [অর্জুন বলিলেন যে] যে কোন ব্যক্তি "শাস্ত্রবিধি" শাস্ত্রবিধান অর্থাৎ বেদ বা ধর্মশাস্ত্রের বিধানকে পরিত্যাগ क्तिया रक्षन करत व्यरीए रागित भूका कतिया थारक [कि ভारि भूका करत ?] শ্রমা বারা ''অবিত'' সংযুক্ত হইয়া [পূজাকরে]। এই শ্রমা শব্দটির অর্থ আত্তিক্যবৃদ্ধিযুক্ত হইয়া যাহারা দেবাদির পূজা করে, অথচ দেই পূজার প্রমাণ শ্বরূপ কোন শ্রুতি বা শ্বতিবাক্য দেখিতে পার না, কেবল বুদ্ধব্যবহার দেখিয়াই ঐক্নপ পূজা প্রভৃতি কার্ব্যে প্রবৃত্ত হয়, তাহারাই এই স্থানে "যাহারা শান্তবিধি পরিত্যাগপর্বক শ্রদান্থিত হইয়া যজন করে" এই প্রকার বাক্যের দ্বারা বোধিত হুইতেছে। যাহারা কিন্তু কোনপ্রকার শান্তের বিধান দেখিতে পাইয়াও তাহা পরিভ্যাগপুর্বক অবণাবিধি দেবাদির পূঞা করিয়া থাকে, ভাহারা "বাহারা শান্ত্রবিধি পরিত্যাগ করিয়া যজন করে" এই বাক্যের প্রতিপান্ত নছে। কি কারণে নছে? বে কারণে শ্রদাধিতত্বরূপ বিশেষণ বহিরাছে। দেবপূজার বিধারক প্রত্যক্ষ শাস্ত্র দেখিতে পাইয়াও, তাহাকে অশ্রদ্ধার সহিত পরিত্যাগ-পূর্বক যাহারা অবণাবিধি সেই শান্তবিহিত দেবপূজাদি করে, তাহারা একাবিত হইরা পূজা করে, যে কারণে, এই প্রকার কিছুতেই করনা করা ঘাইতে পারে না নেই কারণেই [স্বীকার করিতে হইতেছে] যাহারা পুর্কোক্ত [আর্থাৎ বাহারা

কোনপ্রকার শাস্ত্র দেখিতে না পাইয়া বৃদ্ধব্যবহারাদি দেখিরাই শ্রদ্ধার সহিত দেবপূজাদি করে] তাহারাই "যাহারা শাস্ত্রবিধি পরিত্যাগ করিয়া বজন করে" এই প্রকার বাক্যের দ্বারা প্রতিপাদিত হইতেছে। যাহারা এইপ্রকার, তাহাদের নিষ্ঠা হে ক্বফ! কি প্রকার ? উহা কি সন্ধ অথবা রজঃ কিংবা তমঃ ? এই কণা বলা হইতেছে যে, তাহাদের যে দেবাদিবিষয়া পূজা, তাহা কি সাজিকী ? অথবা তাহা কি রাজসী ? কিংবা তাহা তামসী পূজা ? ॥১

শ্রীভগবাসুবাচ।

ত্তিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনাং দা স্বভাবজা। দান্ত্রিকী রাজদী চৈব তামদী চেতি তাং শৃণু॥১

আনুয়। শ্রীভগবাহুবাচ। দেহিনাং সা স্বভাবজা শ্রদ্ধা সান্ধিকী রাজসী ভামসী ইভি ত্রিবিধা ভবতি তাং [শ্রদ্ধাং] শুণু ॥>

আমুবাদ। শ্রীভগবান্ কহিলেন,—প্রাণিগণের নিজ নিজ স্বভাবজাত শ্রুদ্ধা বিবিধ হইরা থাকে। যথা—সান্তিকী শ্রুদ্ধা, রাজ্যী শ্রুদ্ধা এবং তামসী শ্রুদ্ধা। দেই শ্রুদ্ধা [কি প্রকার, তাহা বিস্তৃতভাবে বলিতেছি] শ্রুবণ কর ॥২

ভাষ্য। সামান্তবিষয়েং প্রশ্নং নাপ্রবিভঙ্কা প্রতিবচনমইতীতি—
বিবিধা বিপ্রকারা ভবতি প্রকা। যন্তাং নিষ্ঠায়াং বং পৃষ্ক্রিন দেহিনাং সা
বঙাবজা। জন্মগুরক্তো ধর্মাদি-সংখ্যারো মরণকালে অভিব্যক্তঃ বভাব উচ্যতে
ততো জাতা বভাবজা সাধিকী সন্থনির্কৃত্তা দেবপূজাদিবিষয়া, রাজসী
রজোনির্কৃত্তা যক্ষরক্ষঃপূজাদিবিষয়া, তামদী তমোনির্কৃত্তা প্রেতপিশাচাদিপূজাবিষয়া এবং বিবিধা, তামুচ্যমানাং শ্রুজাং শুণু ॥২

ত্থানন্দগিরিটীকা। বিশেষনিষ্ঠমুত্তরং সামাঞ্জেন বক্তৃং ন শক্যমিত্যাশরেন পরিহরতি—সামান্তেতি। কিমিতি শ্রন্ধারৈবিধ্যং প্রশার্থপযুক্তমূচ্যতে
তত্ত্বাহ—হাস্থামিতি। শ্রন্ধাপৃর্বিকারাং ক্রিরারামিতি যাবং। শ্রন্ধারৈবিধ্যে
হেতৃমাহ—সা স্বভাবক্তেতি। স্বভাবশেশার্থং প্রক্রতোপবোগিতরা কথরতি—
জন্মান্তরেতি। কথং ক্রিবিধেত্যপেক্ষারামাহ—সাত্ত্বিকীত্যাদিনা।
কথস্কা শ্রন্ধা স্বভাবজেতি তত্তাহ—তামিতি ॥২

ভাতুবাদ। এই প্রশ্নটি সামাগ্র অর্থাৎ সাধারণ ভাবের; এই কারণে বিষয়বিভাগ না করিয়া ইহার উত্তর দেওয়া বাইতে পারে না। [সেইকঞ বিষরবিভাগপূর্বক শ্রীভগবান বলিতেছেন যে] শ্রদ্ধা "ত্রিবিধ," তিন প্রকারের হইরা থাকে, যে নিষ্ঠার (শ্রদ্ধার) বিষয় তুমি জিজ্ঞার্সা করিতেছ, তাহা প্রাণিগণের "স্বভাবজ," পূর্বজন্মে যে সকল ধর্মাদি বিষয়ে সংস্কার উৎপন্ন হয় এবং বাহা পূর্ববর্ত্তী দেহের বিনাশকালে সম্ব্বোধিত হয়, সেই সংস্কারবিশেষই 'স্বভাব'। সেই স্বভাব হইতে বাহা উৎপন্ন হয়, তাহাই স্বভাবজ। িতন প্রকার কিরুপ, তাহাই বলিতেছেন যে] "সান্বিকী" সন্বন্ধণ হইতে উৎপন্না অর্থাৎ দেবপূজা প্রভৃতিতে যে শ্রদ্ধা তাহাই সান্বিকী শ্রদ্ধা; "রাজসী" রজোঞ্জণ হইতে উৎপন্ন বক্ষা তাহাই সান্বিকী শ্রদ্ধা; "রাজসী" রজোঞ্জণ হইতে উৎপন্ন থক্তির পূজা বিষয়ে যে শ্রদ্ধা, তাহাই রাজসী শ্রদ্ধা; "তামসী" তমোগুল হইতে উৎপন্ন প্রেত-পিশাচাদির পূজাবিষয়ে যে শ্রদ্ধা, তাহাই তামসী শ্রদ্ধা। এই ত্রিবিধ শ্রদ্ধা। এই শ্রদ্ধা বিষয়ে আমি বাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর॥২

সন্ত্রাসুরূপা সর্ববস্থ শ্রদ্ধা ভবতি ভারত। শ্রদ্ধাময়োহয়ং পুরুষো যো যচ্ছুদ্ধঃ স এব সঃ॥৩

আনুষ্য । হে ভারত ! সক্ষত শ্রদা স্বাহ্রপা ভবতি, অরং প্রায়; বো কছুদ্ধ, স: স এব ॥৩

আমুবাদ। হে ভারত, সকলেরই শ্রনা [নিজ নিজ] সত্ত্বে (অন্ত:ক্রণের) অন্ত্রেপ হয়, এই পুরুষ শ্রনাময়; যে যাদৃশ শ্রনাসমন্তিত, সে তাহারই অন্তর্নপ হুইয়া থাকে ॥৩

ভাষ্য। সৈবং ত্রিবিধা ভবতি—স্বামুরপা বিশিষ্টসংস্থারোপেতাস্তঃকরণামুরপা সর্বান্ত প্রাণিজাতত শ্রনা ভবতি ভারত। বত্যেবং ততঃ কিং ত্যাদিত্যুচ্যতে
শ্রনাময়ঃ শ্রনাপ্রায়ঃ অয়ং পুরুষঃ সংসারী জীবঃ। কথং যো যচ্চুদ্ধঃ যা শ্রদা
যক্ত জীবত স যচ্চুদ্ধঃ স এব তচ্চুদ্ধামূরপ এব স জীবঃ॥৩

আনন্দ্রিটিক। প্রাচীনকর্ম্মেদ্রোধিতা ত্রিবিধা বাসনা স্বভাবশন্ধিতা ত্রিবিধারাঃ প্রজারা নিমিত্তমিত্য ক্রম্ ইদানীম্পাদানং তন্তা দর্শরতি—সৈবমিতি। বিশিষ্টচিত্তোপাদানা প্রজা তত্রৈবিধ্যে ত্রিবিধেতি পূর্বার্দ্ধতার্থঃ। কণং নিষ্ঠারাঃ সন্ধা দপ্রকারপ্রস্থারা প্রজারাত্রৈবিধ্যানিরূপণমূপ্যুক্তমিতি মধানঃ শন্ধতে—যুদ্ধেবিদ্যারন্ তয়া তত্ত্রৈব প্রবর্ত্ত ইতি মধানঃ পরিহরতি—উচ্যুক্ত ইতি।। প্রজামরত্বং প্রস্থাকিকং কথমতি—কথমিতি। প্রজা ধ্বধিকৃতে প্রক্রে প্রাচুর্ব্যেণ প্রকৃতেতি তন্ত প্রজামরত্বিদ্যিবিদ্যার্থঃ।ত

অকুবাদ। সকল প্রাণীরই এই ি বিধ শ্রদা সন্থাহরণ হইরা থাকে।
সন্ধানের অর্থ — বিশিষ্টসংস্থারযুক্ত অন্তঃকরণ। যাহার অন্তঃকরণে বেরূপ সংস্থার
প্রবল, সেই সংস্থারের অন্তর্গন তাহার শ্রদা হইরা থাকে, হে ভারত। বদি এই
প্রকার হইল, তবে ফলে কি দাড়াইতেছে । তাহার উপর বলা হইতেছে বে, এই
"পুরুষ" সংসারী জীব "শ্রদাময়" শ্রদাপ্রায় অর্থাৎ যাহার বেরূপ শ্রদা, সে পুরুষ
সেই শ্রদারই অন্তর্গ হইরা থাকে ॥৩

যজন্তে সাত্ত্বিকা দেবান্ যক্ষরক্ষাংসি রাজসাঃ। প্রেতান্ ভূতগণাংশ্চান্তে যজন্তে তামসা জনাঃ॥৪

আহুর। সাধিকা দেবান্যজন্তে, রাজসা যক্রকাংসি [যজতে], অঞ্জে ভামসাঃ জনাঃ প্রেতান্ভূতগণান্চ যজতে ॥৪

অনুবাদ। সান্ধিকগণ দেবগণের পূজা করিয়া থাকেন, রাজসগণ যক্ষ ও রাক্ষদগণের পূজা করেন, অন্ত ভামসগণ প্রেত ও ভূতগণের পূজা করে ॥৪

ভাষ্য ৷ তত চ কাৰ্য্যেণ বিক্লেন দেবাদিপূজ্যা স্থাদিনিষ্ঠা অহুমেয়া ইত্যাহ—যজন্তে পূজ্যন্তি সাহিকাঃ স্থানিষ্ঠা দেবান্; যক্রকাংসি রাজ্সাঃ; প্রেতান্ভূতগণা চ সপ্তমাত্কাদীং চ অত্যে যজন্তে তামসা জনাঃ ॥৪

আনন্দ গিরিটীকা। তথাপি কথং স্বাদিনিষ্ঠা বথোকত পুরুষত আতুং শক্যেত্যাশস্ক্যাহ—তত্তেতি। অধিকতত পুরুষত শ্রদাপ্রধানদাদিতি বাবং। দেবা বস্বাদয়ঃ, যক্ষাঃ কুবেরাদয়ঃ, রক্ষাংসি নৈশ্বভাদয়ঃ, স্বধর্মাৎ প্রচ্যুতা বিপ্রাদয়ো দেহপাতাদ্র্দ্ধং বায়ুদেহমাপয়ঃ প্রেতাঃ। এভ্যশ্চ যথাযথমারাধ্যদেবাদয়ঃ সাল্বিকরাজসতামসান্ প্রকামান্ প্রযাদ্বজন্তি সাম্প্রাদ্বগন্তব্যম্॥৪

অনুবাদ। দেই কারণে দেবপৃজাদিরপ যে সকল কার্যা, তাহা দারা লোকের সান্থিকী প্রভৃতি শ্রদ্ধার অহমান করিয়া লইতে হয়। বাঁহারা "সান্ধিক" অর্থাৎ সন্থনিষ্ঠ, তাঁহারা দেবগণের যজন অর্থাৎ পূজন করিয়া থাকেন। "রাজ্ঞস" রজোনিষ্ঠগণ যক ও রাক্ষসগণের পূজা করেন, ''তামস'' তমোনিষ্ঠগণ প্রেভগণ ভূতগণ এবং সপ্তমাতৃকা প্রভৃতির পূজা করে॥৪

অশান্ত্রবিহিতং ঘোরং তপ্যস্তে যে তপো জনাঃ।
দম্ভাহস্কারসংযুক্তাঃ কামরাগবলান্দ্রিতাঃ॥৫
কর্শয়ন্তঃ শরীরস্থং ভূতগ্রামমচেতসঃ।
মাং চৈবান্তঃশরীরস্থং তান্ বিদ্যান্ত্রনিশ্চয়ান্॥৬

অন্তব্য । বে অচেতসঃ দন্তাহকারসংযুক্তাঃ কামরাগবলাবিতাঃ অচেতসঃ কনাঃ শরীরস্থ ভৃতগ্রামন্ অন্তঃশরীরস্থং মাং চ কর্শরন্তঃ অশাস্তবিহিতং বোরং তথঃ তথ্যন্তে, তান্ আস্থ্যনিশ্চয়ান্ বিদ্ধি ॥৫-৬

অকুবাদ। যাহারা বিবেক্ছীন এবং দন্ত ও অহন্ধার্মুক, যাহারা কামরাগজনিত বলের আধার, যাহারা শরীরস্থ ভূতসমূহ এবং শরীরের মধ্যে বিরাজমান আমাকে ক্লশ করিয়া অশাস্ত্রবিহিত ঘোর তপ্তার অফুঠান করে, ভাহাদিগকে আহুর-নিশ্চর বলিয়া জানিও ॥৪-৬

ভাষ্য। এবং কার্যাতো নির্ণীতাঃ সন্ধাদিনিষ্ঠাঃ শান্ত্রবিধ্যুৎসর্গে তত্ত্র কলিদেব সহস্রেষ্ দেবপুজাদিতৎপরঃ সন্ধনিষ্ঠো ভবতি, বাহল্যেন তু রজোনিষ্ঠান্ত-মোনিষ্ঠান্টেব প্রাণিনো ভবন্তি। কথম্,—অশান্ত্রবিহিতং ন শান্ত্রবিহিতম্ অশান্ত্র-বিহিতং ঘোরং পীড়াকরং প্রাণিনামাত্মনশ্চ তপঃ তপ্যস্তে নির্কর্ত্তরন্তি যে তপঃ ক্রনাঃ তে চ দন্তাহজারসংযুক্তা দন্তশচ অহলারশচ দন্তাহজারে তাভ্যাং সংযুক্তা দন্তাহজারসংযুক্তাঃ কামরাগবলাধিতাঃ কামশ্চ রাগশ্চ কামরাগৌ তৎক্রতং বলং কামরাগবলং তেন অধিতাঃ কামরাগবলৈবা অধিতাঃ। কর্শরন্ত ইতি।—কর্শরন্তঃ ক্রশীকুর্বন্তঃ শরীরন্তং ভৃতগ্রামং করণসমুদারম্ অচেতসঃ অবিবেদিনঃ মাং চৈব তৎকর্মবৃদ্ধিদান্দিভূতং অন্তঃশরীরন্তং কর্শরন্তঃ মদমুশাদনাকরণমের মৎকর্শনং তান্ বিদ্ধি আফ্রনিশ্চরান্ আফ্রেরা নিশ্চরো ঘেষাং তে আফ্রনিশ্চরাঃ তান্ পরিহরপার্থং বিদ্ধি ইত্যুপদেশঃ ॥৫-৩

আনক্ষণিরিটীক। নমু স্বাদিনিষ্ঠাঃ শারেণ জ্ঞাতুং শক্যন্তে কুতং কার্যালঙ্গকামুমানেনেতি তত্রাহ—এবমিতি। স্বাদিনিষ্ঠানাং জ্ঞুনামবা দ্বর-বিশেবং প্রচুরবাপ্রচুরবারপ দর্শয়তি—তত্ত্রেত্যাদিনা। রাজসানাং তামসানাঞ্চ প্রাচ্গ্র্যাং প্রশ্নবারা বিরুণোতি—কথমিত্যাদিনা। কামক কাম্যমানবিরুরের রাগক তদ্বিবরুভোগাভিলায়ঃ, তৎকুতং তৎপ্রযুক্তং তরিমিত্তমিতি বাবং। রজ্ঞোনিষ্ঠান্ প্রাধান্তেন প্রদর্শ্য তমোনিষ্ঠান্ প্রাধান্তেন দর্শয়তি—কর্শয়ন্ত ইতি। কথং শরীরাদিসাক্ষিণমীশ্বরং প্রতি ক্লীকরণং প্রাণিনাং প্রকল্পরুত্ত ত্ত্রাহ—মদসুশাসনেতি। তেবাং বিপর্যাসনিক্ষরতাং পরিজ্ঞানং কুত্রোপ্রমৃত্তে ত্ত্রাহ—সারহুরণার্থমিতি॥৫-৬

আনুবাদ। সৰু প্ৰাভৃতি ভাগের নিষ্ঠা এই ভাবে কার্য্যের বারা নির্নীত হইল। যদিও শাল সামান্ত ভাবে সকলকেই বিহিত কার্য্য করিবার জন্ত উপদেশ দেন বটে, তথাপি, সহস্র সহস্র ব্যক্তির মধ্যে হয়ত কোন একজন সন্থানিষ্ঠ হইরা, বিহিত দেবপূজাদি কর্ম্মে তৎপর হয়; পরস্ত অধিকাংশ প্রাণীই রক্ষোনিষ্ঠ বা তমোনিষ্ঠ হইয়া থাকে; কি প্রকারে [রজোনিষ্ঠ ব্যক্তিগণ বিপরীতাচরণ করে. ভাহাই দেখান হইভেছে বে] "অশান্তবিহিত" বাহা শাল্লে বিহিত হয় নাই িতাহাকে 'অশাস্ত্রবিহিত' কহা যায়] ''ঘোর'' অন্তান্ত প্রাণিগণের এবং নিজের পীড়াকর, এইরূপ তপ্রভাই তাহারা করিয়া থাকে। [ভাহারা কিরুপ ?] "দস্তাহকারসংযুক্ত" দস্ত এবং াহকার এই ছইটির সহিত বাহাদের নিতাসখন, তাহারাই 'দন্তাহন্ধারসংযুক্ত', [এবং তাহারা] "কামরাগবলান্বিত" কাম ও রাগ এই ছইটিকে বুঝাইবার জন্ত 'কামরাগ' এই শন্দটি প্রযুক্ত হইয়াছে; সেই কামরাগ-জনিত যে বল, তাহার দারা যাহারা অন্বিত, তাহাদিগকে 'কামরাগবলান্তিত' বলা ষায়। অপবা কাম, রাগ এবং বল, এই তিন্ট বাহাদের আছে, তাহারাই কাম-রাগবলাধিত'। কর্শয়ন্ত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ এই যে,—কর্শন করা অর্থাৎ ক্লখ করা তাহারা নিজ শরীর-মধ্যে অবস্থিত ভূতসমূহকে [রুণা ক্লেশের খারা] ক্লুণ করিয়া থাকে। তাহারা "অচেতা" অর্থাৎ বিবেকশৃত্ত ও তাহারা শরীরের মধ্যে অম্ব:করণবৃত্তির সাক্ষিত্বরূপে অবস্থিত আমাকেও কর্মন করে: আমার উপদেশ্য-নুদারে কার্য্য না করিলেই মামার কর্শন করা হয়। এই প্রকার যাহারা করিয়া পাকে, তাহাদিগকে আমুরনিশ্চর বলিয়া জানিবে। অমুরের ন্তার বাহাদের নিশ্চর, তাহাদিগকেই 'আস্থর-নিশ্চর' কহা যার। তাহাদিগকে পরিত্যাগ করিবার ष्ठच्छे. তाहारमत अत्रथ कानिया ताथ। हेहाहे फ्रावारनत फेनरम्म ॥८-७

> আহারস্থপি দর্ববস্থ ত্রিবিধো ভবতি প্রিয়ঃ। যজ্ঞস্তপন্তথা দানং তেষাং ভেদমিমং শৃণু ॥৭

অনুষ্য । সর্বস্ত আহার: ত্রিবিধ: প্রিয়: ভবতি, [তথা] য**্জোহণি [ত্রিবিধ:** প্রিয়া ভবতি] তথা তপ: দানং চ [ত্রিবিধিং প্রিয়ং ভবতি] তেবাম্ ইমং [ত্রিবিধিং] ভেদং শুণু ॥ ৭

অনুবাদ। সকল মন্থব্যেরই নিজ নিজ প্রকৃতি অনুসারে আহার, বজ্ঞ, তপঞা এবং দান ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের হয় [অর্থাৎ সান্ধিকের আহারাদি সান্ধিক হয়, রাজসপ্রকৃতি এবং তামসপ্রকৃতি পূর্কবের আহারাদি বথাক্রমে রাজস ও তামসই হইয়া থাকে]। সেই তাহাদের প্রিয় ত্রিবিধ আহারাদির বিশেষ পরিচয় দিতেছি, প্রবণ কর ॥৭ ভাষ্য। মাধারাণাঞ্চ রশ্বনিধাদিবর্গতায়রূপেণ ভিন্নানাং বথাক্রমং সাবিকরাজ্য ভাষ্য-পূক্ষর প্রির্ম্বদর্শনিষ্ট ক্রিম্নতে, রশ্বনিধাদির আহারবিশেষের আত্মন:
প্রীত্যতিরেকেণ লিজেন সান্থিকত্বং রাজ্যত্বং তামসহং চ বৃদ্ধা রজস্তমোলিকানাম্
আহারাণাং পরিবর্জনার্থং সম্বলিকানাঞ্চ উপাদানার্থম্। তথা যজ্ঞাদীনামপি
সন্থানি প্রত্তিকেনার্থং সম্বলিকানাঞ্চ উপাদানার্থম্। তথা যজ্ঞাদীনামপি
সন্থানি প্রতিকেনার্থং প্রতিপোদনমিই রাজ্যতামসান্ বৃদ্ধা কর্থং হু নাম পরিভাজেৎ সান্ধিকানের অন্ততিষ্ঠেদিত্যেবমর্থম্—আহ্মান্থপি সর্বাশ্ব ভোক্ত্রিবিধাে
ভবতি প্রির্মীইইস্থা যজ্ঞপ্রণা তপন্তথা দানং তেষামাহারাদীনাং ভেদমিমং বক্ষ্যমাণং শৃণ্না

আনন্দগিরিটীকা। উত্তরশ্লোকপূর্বার্দ্বতাৎপর্য্যাহ—আহারাণামিতি।
রক্তাদিবর্গক্ত সাধিকপূরুষপ্রিরত্বং কটাদিবর্গক্ত রাজ্যপ্রিরতং বাত্যামাদিবর্গক্ত
ভাষসপ্রিরত্বমিতি দর্শনং কুত্রোপযুজ্যতে তত্ত্রাহ—রুস্ত্রেতি। শ্লোকোন্তরার্দ্ধভাৎপর্য্যাহ তথেতি। আহারত্রৈবিধ্যবদিতি যাবং। কণ্যেতেয়াং প্রত্যেকং
বৈবিধ্যং তত্ত্বাহ—তেষামিতি ॥৭

অমুবাদ। রশু ও মিথ প্রভৃতি আহার তিন ভাগে বিভক্ত; বণাক্রমে সান্ধিক, রাজস ও তামস আহার সন্থনিষ্ঠ রজোনিষ্ঠ এবং তমোনিষ্ঠ মহুবেরর "প্রির" ইট্ট হইরা থাকে। ইহাই দেখান হইতেছে,—সেই রশু ও মিথ প্রভৃতি ত্রিবিধ আহারের মধ্যে, সান্ধিক আহারে যাহার অভিশন্ন প্রীতি দেখিতে পাওয়া যায়, সেই ব্যক্তিকে সন্থনিষ্ঠ বলিয়া বৃথিতে হইবে; এইরপ রাজস এবং তামস আহারে প্রীতির আবিক্য দেখিয়া বথাক্রমে রজোনিষ্ঠ এবং তমোনিষ্ঠ পুরুষকেও চিনিয়া লইতে পারা যায়। সান্ধিক প্রভৃতি ত্রিবিধ আহারের স্বরূপ বৃথিয়া রাজস এবং তামস আহারকে পরিবর্জন করিতে হইবে। সান্ধিক আহারের উপাদান (গ্রহণ) করিতে হইবে। এই ত্রিবিধ বজ্ঞ তপঃ এবং দানের মধ্যে যাহা রাজস এবং তামস তাহার পরিত্যাগ করিতে হইবে, আর যাহা সান্ধিক, তাহারই অমুষ্ঠান করিতে হইবে। ইহার জন্মই বলিতেছেন যে, সকলপ্রকার ভোক্ষারই ত্রিবিধ আহার [আপন আপন প্রকৃতি অমুসারে] "প্রির" ইট্ট হইয়া থাকে। সেইরূপ [প্রকৃতি জেদে] যক্ষ তপন্তা এবং দানও ত্রিবিধ ব্যক্তির প্রিয় হইয়া থাকে, সেই আহার প্রভৃতির ভেদ আমি যাহা বলিতেছি, তাহাপ্রবণ কর।।৭

আরু:দৰ্বলারোগ্যন্ত্রপ্রীতিবিবর্দ্ধনাঃ। রস্তাঃ সিগ্ধাঃ ছিরা হুলা আহারাঃ দান্ত্রিকপ্রিয়াঃ॥৮ অন্ত্রয়। আর্: সম্বনারোগ্যস্থপ্রীভিবিবর্দনাঃ রক্তাঃ বিশ্বাঃ বিরাঃ ব্যাঃ [চ] আহারাঃ সাধিকপ্রিয়া: [ভবস্তি]॥৮

আকুবাদ। আয়ু: বৃদ্ধি বল আরোগ্য স্থপ ও প্রীতির বৃদ্ধি বাহা দার। হর, বাহা রসমুক্ত, বাহা স্লিপ্ক, বাহার ফল বহুকাল থাকে, এবং বাহা হৃদরের ভৃপ্তিকর, সেইরূপ আহারই সান্তিকগণের প্রিয় [হয়]॥৮

ভাষ্য । আয়ুরিতি। আয়ুশ্চ সন্ত্রঞ্চ বলঞ্চ আরোগ্যং চ স্লখং চ প্রীতিশ্চ তাসাং বিবর্জনা আয়ুংসন্থবলারোগ্যন্ত্রখপ্রীতিবিবর্জনাঃ তে চ রক্তাঃ রসোপেতাঃ রিশ্বাঃ সেহবস্তঃ স্থিরাশ্চিরকালস্থারিনো দেহে, কন্তা ক্দরপ্রিরা আহারাঃ সান্ত্রিক-প্রিরাঃ সান্ত্রিকস্তেষ্টাঃ ॥৮

আনন্দ গিরিটীকা। দান্ধিকপ্রীতিবিষমাহারবিশেষমূদাহরতি—আয়ুরিতি। আয়ুজীবনং দলং চিত্তইর্ঘ্যং বীর্ঘ্যং বা, বলং কার্য্যকরণদামর্থ্যম্, আরোগ্যং নারোগতা, স্থেম্ অন্তরাহলাদঃ, প্রীতিঃ পরেষামপি দম্পদ্ধানাং দর্শনাং পরমোহর্ম্যাং বিবর্দ্ধনাঃ বিবর্দ্ধস্তীতি ব্যুৎপত্তেঃ। রনোপেতা রুদ্ধিতব্যাঃ দরদাঃ দেহে চিরকালস্থারিক্ষং চিরতরং শরীরোপকারহেতৃত্বম্ ॥৮

অনুবাদ। যে আহার, আয়ু: সন্ধ বল আরোগ্য স্থথ এবং প্রীতিকে বাড়াইরা থাকে, তাহাকে "আয়ু:সন্ধবলারোগ্য স্থপ্রীতি-বিবর্দ্ধন" কহা বার। সেইরূপ আহার এবং "রক্ত" সরদ "বিশ্ব" সেহজব্য মিশ্রিত "হির" দেহে যাহার ফল বছকাল থাকে, তাহাই 'স্থির'; এই সকল গুণযুক্ত তাহার "দান্তিকপ্রির" সাত্তিক প্রকৃতিবিশিষ্ট ব্যক্তিগণের ইষ্ট হইরা থাকে॥ ৮

কট্বস্লবণাত্যক্ষতীক্ষরক্ষবিদাহিনঃ। আহারা রাজসম্মেন্টা হুঃখশোকাময়প্রদাঃ॥ ৯

অনুষ্য । কট্নলবণাত্যকতীক্ষকবিদাহিন: হংথশোকামরপ্রদা: আহারা:
• রাজসম্ভ ইষ্টা: ॥৯

অকুবাদ। অতি কটু, অতিশয় অন্ন, অতিশয় লবণযুক্ত, অত্যস্ত উক্ষ, তীক্ষ, রক্ষ, দাহকর ও তঃখশোকাময়প্রদ (ছঃখ শোক ও পীড়া দায়ক) আহার রাজস বাক্তির ইষ্ট হইরা থাকে ॥১

ভাষ্য । কটুঃ অন্নঃ লবণঃ অত্যক্ষঃ, অতিশব্দঃ কট্যদিষ্ সর্বজ্ঞ বোজাঃ। অভিকটুঃ অভিতীক্ষ ইত্যেবং কট্নলবণাত্যক্ষতীক্ষক্ষবিদাহিনঃ আহারা রাজ- সভেটাঃ ত্রংপশোকামর প্রদাঃ ত্রংপ চ শোকঞ্চ আমরঞ্চ প্রবছন্তীতি ত্রংপণোকামর-প্রদাঃ ॥১

আনন্দগিরিটীকা। রাজ্বসপ্রীতিবিষয়নাহারবিশেষং দর্শন্নতি—কটি বি
কটুন্তিক্ত: কটুকন্ত তীক্ষণন্দেনোক্তবাৎ, রক্ষো বিশ্লেহ: বিদাহী সন্তাপক:। অতিশন্ত সর্বত্ত বোজনামেবাভিনয়তি—অতিকটুরিতি। হংখং তাৎকালিকী
পীড়া ইষ্টবিয়োগজং হংখং শোক: আময়ো রোগ:॥১

অমুবাদ। "কট্মলবণাতাফতীক্ষরক্ষবিদাহী" এই শব্দটির মধ্যে বে অতিশব্দটি আছে, তাহা যে কেবল উষ্ণ শব্দের সহিত অন্বিত, তাহা নহে; কট্ প্রস্তৃতি শব্দগুলির সহিতও উহার অবর করিতে হইবে অর্থাৎ অতিশর অম, অতি শবণ, অত্যুক্ত, তীক্ষ্ণ, রক্ষ এবং বিদাহকর খে আহার, তাহাই "কট্মলবণাত্যুক্ষ-তীক্ষরক্ষবিদাহী" এই প্রকার আহার, রাজস মহুষ্যেরই অভিপ্রেত হয়; তদ্ব্যতীত "হংখ-শোকাময়প্রদ" আহারও রাজস মহুষ্যেরই অভিলবিত; যাহার সেবনে হংখ শোক এবং ব্যাধি উৎপন্ন হয়, তাহাকেই "হংখশোকাময়প্রদ" কহা বার ॥৯

যাত্যামং গতরসং পূতি পর্যুষিতঞ্চ য় । উচ্ছিন্টমপি চামেধ্যং ভোজনং তামস্প্রিয়ম্ ॥ ১০

আন্তর্ম। যং যাত্যামং গতরদং পৃতি পয়্র বিতং চ উচ্ছিট্টন্ অপি চ [যং] অনেধ্যং [তং] ভোজনং তামসপ্রিয়ন্॥ ১০

অকুবাদ। বাহা মন্দপক, নীরদ, হর্গন্ধ, পর্ত্তবিত (গত রাত্তিতে পক), উচ্ছিষ্ট এবং অপবিত্র, দেই প্রকার ভোজনই, তামদ প্রকৃতি জীবের প্রির ॥ ১০

ভাষ্য। বাতবামমিতি। বাতবামং মন্দপকং নির্রীর্যাস্য গতরসেনোকজাৎ গতরসং রসবিষ্তৃৎ পৃতি তুর্গদ্ধং প্যাধিতং চ পকং সং রাত্যস্তরিতঞ্চ বহুচ্ছিষ্টমপ্রি অমেধ্যমযজাইং ভোজনমীদৃশং তামসপ্রিরম্॥ ১০

আনন্দ গ্রিরিটীকা। তামসপ্রিয়মাহারমুদাহরতি—যাত্যামমিতি। নম্থ নির্ম্বীর্য্য বাত্যামমূচ্যতে,ন পুনঃ সামিপকমিতি নেত্যাহ—নিব্রীর্যুক্তেতি॥ >•

অনুবাদ। বাতবামন্ ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]। "বাতবাম" এই শক্টির অর্থ [এই স্থলে] মন্দপক। [বাতবাম দক্ষের বাচ্যার্থ নির্ব্বীর্য্য হইলেও, এই স্থানে ইহার নির্ব্বীর্য্যরূপ অর্থ গ্রহণ করা যাইতে পারে না] স্কারণ, গতরস বলিলেই নির্ব্বীর্য্যরূপ অর্থ আপনাআপনিই প্রতীত হইরা থাকে। "প্রত্রাং নির্ব্বীর্য্য] "পৃতি" হুর্গন্ধবৃক্ত। "পর্যুবিত"

ষাহা পক হইবার পর একরাত্রি অতীত হইরাছে, তাহাই 'পর্ত্তিত'। 'ভিছিই''
অপরের ভূকাবিশিষ্ট এবং "অমেধ্য" যজে দিবার উপর্ক্ত বালা নহে, জাহাই
'অমেধ্য'। এইরপ ভোজনই তানসপ্রকৃতিসম্পন্ন ব্যক্তির প্রির হ**ইরা বাং**ক ॥ ১০

অফলাকাজ্ফিভির্যজ্ঞে। বিধিদৃষ্টো * য ইজ্যুতে। যক্টব্যমেবেতি মনঃ সমাধায় স সাত্ত্বিকঃ॥ ১১

অনুয়া । বটব্যমেব ইতি মন: দমাধার অফলাকাজ্জিভিষঃ বিধিদৃষ্টঃ বজঃ ইজাতে স: [বজঃ] সান্ধিক: || ১১

অনুবাদ । যজ্ঞ করাই আমার কার্য্য, এই প্রকারে চিত্তকে সমা-হিত করিয়া, ফলের প্রতি কামনা পরিহারপূর্বক, লোকে যে শাস্ত্রবিহিত যজের অষ্ঠান করে, নেই যজ্ঞই সাত্তিক ॥ ১১

ভাষ্য ৷ অপেদানীং যজজেবিধ উচ্যতে—অফলাকাজ্জিভি: অফলার্থিভি:
যজ্ঞ: বিধিদৃষ্ট: শাস্ত্রচোদনাদৃষ্ট: যো যজ্ঞ: ইজ্যতে নির্বান্তিতে, ষষ্টব্যমেবেভি
যজ্জস্বরূপনিবর্ত্তনমেব কার্য্যমিতি মন: সমাধার নানেন পুরুষার্থ: মম কর্ত্তব্য
ইত্যেবং নিশ্চিত্য স সাধিকো যজ্ঞ উচ্যতে ॥ ১১

আনন্দগিরিটীকা। হানাদানার্থন্ আহারত্রৈবিধ্যমেবং বিভক্ষ্য ক্রম-প্রাপ্তং বজ্লতৈবিধ্যং কথয়তি—অথেতি। অত্র সান্থিকং বজ্ঞং জ্ঞাপরতি—
অফলেতি। ফলাভিসন্ধিং বিনা বজ্ঞবন্ধপনেব ভাব্যমিতি বৃদ্ধা শাস্ত্রতোহমুঞ্জীরনানো বজ্ঞঃ সান্ধিক ইত্যুর্থ:॥ >>

• অমুবাদ। তাহার পর একণে তিবিধ বঞ্চ বলা হইতেছে। "অফণা-কাজ্জী" বাঁহাদের ফলবিষয়ে কামনা নাই, উঁহোরা "বিধিদৃষ্ট" শান্তবিধানের 'ছারা অমুজ্ঞাত যে যজের অমুষ্ঠান করেন [কি ভাবে করেন], ঘটবা অর্থাৎ বাগের যাহা প্রকৃত স্বরূপ, তাহারই অমুষ্ঠান মাত্র আমার কর্তব্য, এই ভাবে, মনকে সমাহিত করিয়া [বে যজের অমুষ্ঠান করেন] তাহাই, ''সাভিক বক্ত'' বলিয়া কথিত হয়॥ >>

অভিদন্ধায় তু ফলং দম্ভার্থমপি চৈব য**ং** i

- ইজ্যতে ভরতশ্রেষ্ঠ তং যজ্ঞং বিদ্ধি রাজসম্ ॥ ১২
 - * বিৰিদিষ্টো ৰ ইজাতে ইতি বা পাঠঃ।

আন্তর্ম । ফলম্ অভিসন্ধায় অপি তৈব দন্তার্থং বা ষৎ ইঞ্জেতে, হে ভরত-শ্রেষ্ঠ ৷ তং বজ্ঞং রাজসং বিদ্যি ১২

আনুসুবাদ। ফল লাভ করিব এই প্রকরে কামনার, কি বা ধান্মিক বলিরা খ্যাতিলাভের ইচ্ছার, যে যজ্ঞ করা যার, হে ভরতপ্রেষ্ঠ। সেই যজ্ঞই, রাজস যক্ষ ইহা বুঝিবে ॥ ১২

ভাষ্য। অভিসন্ধান্তে। অভিসন্ধান্ন উদ্দিশ্য ফলং দম্ভার্থমপি চ এব যদিজ্ঞাতে ভরতশ্রেষ্ঠ তং যজ্ঞং বিদ্ধি রাজসম্॥ ১২

আনন্দগিরিটীকা। রাজ্বনং যজ্ঞং হানার্থং দর্শবতি—অভিসন্ধায়েতি। স্বর্গাহ্যদিশু ধার্ম্মিকস্বধ্যাপনার্থঞ্চ বদ্ যজনং ক্রিয়তে তদ্যজ্ঞং রক্ষনা নির্কৃত্যং ত্যাজ্যমবগচ্ছেত্যর্থঃ॥ ১২

অনুবাদ। অভিসন্ধার ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]—অভিসন্ধান করিয়া অর্থাৎ ফল লাভ হউক এই প্রকার কামনা করিয়া কিংবা দম্ভার্থ আমি ধার্ম্মিক ইহা লোকে জামুক এই প্রকার কামনা করিয়া, নে যজের অনুষ্ঠান করা বার, হে ভরতশ্রেষ্ঠ। সেই যজ্ঞকে, রাজস যজ্ঞ বলিরা বুঝিবে॥ ১২

> বিধিহীনমস্ফানং মন্ত্রহীনমদক্ষিণম্। শ্রেদ্ধাবিদ্ধহিতং যজ্ঞং তামসং পরিচক্ষতে॥ ১৩

জার্যু। বিধিহীনম্ অস্তারং মন্ত্রীনম্ অদক্ষিণং এদ্ধাবিরহিতং চ যক্তং ভাষসং পরিচক্তে ॥১০

আকুবাদ। বাহার ষ্ণাবিধি অনুষ্ঠান হর না, যাহাতে অরের উৎসর্গ (দান) হর না, বাহা দক্ষিণাহীন, এবং যাহা শ্রদ্ধাবিরহিত, সেই যজ্ঞাকে তামদ যজ্ঞ বলা যার ॥১৩

ভাষ্য। বিধিহীনমিতি। বিধিহীনং ম্পাচোদিতং বিপরীতম্ অস্প্রারং ব্রাহ্মণেভাঃ ন স্টং ন দত্তমরং যন্মিন্ যজে সোহস্টারঃ তসস্টারম্, মন্ত্রহীনং মন্ত্রভঃ স্বরতো বর্ণতশ্চ নিযুক্তং মন্ত্রহীনম্, অদক্ষিণমুক্তদক্ষিণারহিতং প্রদাবিরহিতং মৃদ্ধং তামসং পরিচক্ষতে তমোনির্ভং ক্পর্ভি॥ ৩

আনন্দ গিরিটীকা। তামসং ৰজ্ঞং হানার্থমেবোদাহরতি - বিধীতি ॥>০ অমুবাদ। বিধিহীনশ্ ইত্যাদি [ম্লোকের অর্থ]। "বিধিহীন" শাস্ত্রে বে ভাবে কর্ম করিতে বিধান আছে, ভাহার বিপরীত হইলেই বিধিহীন হয়।
"অক্টায়" অর্থাৎ বে যজে বান্ধণগণের উদ্ধেশে অয়দান করা হর না, সেই বজ্ঞকে

'অস্টার' বলা বায়। "নজ্ঞহীন" যে বজ্ঞে মান্তের হার ও বর্ণ ঠিকভাবে পঠিত হয় না, ভাহাই 'মন্ত্রহীন', যে বজ্ঞে শান্তকথিত দক্ষিণা দেওয়া হয় না, দেই বজ্ঞ "অদক্ষিণ," এবং "শ্রদ্ধাবিরহিত" আফিকাবৃদ্ধিপূর্বক যাহার অফ্টান হয়, ভাহা 'শ্রদ্ধাবিরহিত'। এইপ্রকার বজ্ঞাকে "ভামদ" তমোগুণের কার্য্য বলিয়া [পণ্ডিভগণ] নির্দ্দেশ করিয়া পাকেন ॥১৩

> দেবদ্বিজগুরুপ্রাজ্ঞপূজনং শোচমার্জ্জবম্। ব্রহ্মচর্য্যমহিংসা চ শারীরং তপ উচ্যতে॥ ১৪

আনুয়। দেবছিজগুরুপ্রাজপ্রনং শৌচম্ আর্জ্বং ব্রন্ধর্যা আহিংসা চ শারীবং তপঃ উচ্যতে ॥১৪

অকুবাদ। দেবতা ব্রাহ্মণ গুরু এবং পণ্ডিতের পূজা, শৌচ, সরল ব্যবহার, ব্রহ্মচর্য্য, এবং অহিংসা, এই কয়টিকে শারীর তপস্তা বলা বার ॥১৪

আনন্দণিরিটীক।। সাধিকাদিভাবং নিরূপরিতৃং সর্বান্ত তপসঃ ব্দর্শণং বিবিধং নিরূপরতি—অথেতি। তত্ত্ব শারীরং তপো নির্দ্দিশভি—দেবেতি। দেবা ব্রন্ধবিকৃশিবাদরঃ, বিজ্ঞাঃ, প্রাপ্তাত্তাং বিজ্ঞান্তমাঃ, ধ্বরঃ শিত্তাদরঃ, প্রাজ্ঞাঃ পণ্ডিতা বিদিতবেদিতব্যান্তেবাং প্রূনং প্রণামগুল্লবাদি। শৌচন্ মৃক্ষ্ণান্তাং শরীরশোধনম্, আর্জবমৃত্ত্বং বিহিতপ্রতিবিদ্ধারেকর্মপপ্রস্থৃতিনির্দ্ধিনরিত্ত মন্ত্র্মান্ত তপসা ন সন্তবতীতি মন্তা বিশিন্তি—শ্রীরেতি। কর্মং কর্মানিন্তিভ্রমন্ত তপসা ন সন্তবতীতি মন্তা বিশিন্তি—শ্রীরেতি। কর্মং কর্মানিন্তিভ্রমন্ত তপসঃ শারীরম্বং শারীরমের বা কর্মং কর্মাদিসাধ্যমত্যাশভ্যাহ—প্রেতি ॥১৪

অনুবাদ। অতঃপর এইকণে তপতা [যে] ত্রিবিধ [তাহা] বিনিতিক্রেন। দেবতা, ত্রাহ্মণ, ওকজন ও প্রাক্ত, ইহাদের পূকনই "দেবিজিওক-প্রাক্তপ্রদ্ধন," "শোচ," "আর্জব" সরসতা, ত্রন্মচর্য্য এবং "জহিংসা" এই কর্মটি শারীর তপতা; কারণ, শরীর অধবা শরীরপ্রধান বে সকল কার্য্যকর্মণ ও কর্ম্

প্রভৃতি, ভাহাদের দারাই এই ওলির অফুঠান নিশাদিত হইয়া থাকে। পরে ভগবান্ই বলিবেন, ভাহার হেতু এই পাঁচটি॥১৪

> অনুদ্বেগকরং বাক্যং সত্যং প্রিয়হিতঞ্চ যৎ। স্বাধ্যায়াভ্যসনক্ষৈব বাধায়ং তপ উচ্যতে॥ ১৫

জার্যু । জার্দ্বেগকরং সত্যং প্রিরহিতঞ্চ যদ্ বাক্যং [তৎ] স্বাধ্যায়াভ্যসনং চ এব বাদায়ং তপঃ উচ্যতে ॥১৫

অকুবাদ। যাহার কার্য্যের দারা কাহারও উদ্বেগ হর না, যাগ প্রিয় ও হিছেসাধক, এবং যাহা সভ্য, এইরপ বাক্য এবং বেদের অভ্যাসকে, বাল্মর ভপতা বলা যার ॥১৫

ভাষ্য । অমুদ্বেগেতি। অমুদ্বেগকরং প্রাণিনাসহঃথকরং বাক্যং সত্যং প্রিছতিং চ বং প্রিছতে দৃষ্টাদৃষ্টার্থে। অমুদ্বেগকর্ত্বাদিভিঃ ধর্মেঃ বাক্যং বিশিশ্বতে। বিশেষণধর্মসমূচয়ার্থশ্চশকঃ। পরপ্রত্যায়নার্থং প্রযুক্ত বাক্যস্ত সত্যপ্রিছতামূদ্বেগকর্ত্বানামন্তত্মেন ছাভ্যাং ত্রিভির্বা হীনতা স্তাং বদি ন ভদ্ ৰাত্মমং ওপঃ। তথা সত্যবাক্যস্ত ইতরেষামন্তত্মেন ছাভ্যাং ত্রিভির্বা হীনভারাং ন বাত্মমতপত্মন। তথা প্রিয়বাক্যস্তাপীতরেষামন্ত্রত্মন ছাভ্যাং ত্রিভির্বা হীনভান বাত্মমতপত্মন। তথা হিত্বাক্যস্তাপীতরেষামন্ত্রত্মন ছাভ্যাং ত্রিভির্বা বিষ্কৃত্ত ন বাত্মমতপত্মন। তথা হিত্বাক্যস্তাপীতরেষামন্ত্রত্মন ছাভ্যাং ত্রিভির্বা বিষ্কৃত্ত ন বাত্মমতপত্মন। কিং পুনস্তৎ তপঃ
। বং স্বত্তং তপঃ
। বং স্বত্তং তপঃ
। বং স্বত্তং তপঃ
। বং স্বত্তাত । বং বাত্মমাভাসনং তৈৰ ষ্ণাবিধি বাত্মমং তপে উচ্যতে । ব

আনন্দ্রিনিকা। সম্প্রতি বাষায়ং তপো ব্যপদিশতি—অনুদ্বেগকর-মিতি। সত্যং বথাদৃষ্টার্থবচনং প্রিয়ং শ্রুতিস্থং হিতং পরিণামপথাম্। প্রিয়-হিতরোর্ক্ষিরান্তরেণ বিভাগমাহ—প্রিয়েতি। কথমত্র বিশেষণবিশেয়াখং তদাহ —অসুদ্বেগেতি। বিশেষণানাং ধর্মাণামন্ত্র্লবেগকরন্বাদীনাং বিশেয়েণ বাক্যেন সম্বিতানাং পরস্পরমণি সমুচ্বল্যোতী চকার ইত্যাহ—বিশেষণেতি। কিমিতি বাক্যমেতৈর্কিশিষ্যতে কিমিতি বা তেষাং মিথঃ সমুচ্বন্ত্রতাই—প্রেতি। বর্জাণ বাক্যমাত্রভাবিশেষিতভ বারায়ভপন্বান্ত্রপণিত্তর্থাপি সত্যবাক্যভ বিশেষণান্ত-রাভাবেহ্পি বাধ্যমতপন্ত্রমিত্যাশঙ্ক্যাহ—তথেতি। তথাপি পরিণামপণ্যং তথা তথান্তং ভাদিত্যাশন্ত্রাহ—তথা প্রিয়েতি। তথাপি পরিণামপণ্যং তথা ন্ত্ৰিষ্যতি নেত্যাহ—তথা হিতেতি। কীপৃক্ ভৰ্চি তরোর্বাদ্মন্থমিতি প্রশ্নপূর্বকং বিশদরতি—কিং পুন্রিতি। বিশিষ্টে বাদ্মরে তপদি দৃষ্টান্তমাহ—
যথেতি। প্রান্ত্র্পত্বং পবিত্রপাণিত্বমিত্যাদি বিধানমনতিক্রম্য স্বাধ্যারত আবর্ত্তনমপি বাদ্মরে তপস্তম্ভর্তবতীত্যাহ—স্বাধ্যায়েতি। বাক্প্রাচুর্ব্যেণ প্রস্তুতান্দিরিতি
বাদ্মরং বাক্প্রধানমিত্যর্থ: ॥১৫

অনুবাদ। অমূৰ্বেগ ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ — অমূৰ্বেগকর" প্রাণিগণের যাহা হারা কোনপ্রকার হঃথ হর না, তাহাই 'অফুদ্বেগকর'। "প্রিয় ও হিত."বে বাকোর দারা ঐহিক এবং পারত্তিক প্রের এবং হিত হয় সেই বাক্যকে 'প্রিরহিত' বাক্য বলা বার। এই অমুদ্বেগকরত্ব প্রভৃতি ধর্ম কর্টার ছারা বাকা বিশেষিত হইতেছে। অমুদ্বেগকরত্ব, প্রিরত্ব, চিতত্ব এবং সভ্যেছ এই চারিটি ধর্মের সহিত বাক্যের সম্বন্ধ পাকাই চাই, ইহাই বুঝাইবার জয় "চ" এই সমুচ্চম্বাচক শব্দরটির প্ররোগ করা হইরাছে। এই চারিটি ধর্ম্মের একটি ছুইটি বা তিনটির সহিত যে বাক্য যুক্ত নহে, সেই বাক্য পরকে বুঝাইবার জন্ম প্রাযুক্ত ছইলেও তাহা বায়ার তপঃ হইতে পারে না, ইহাই তাৎপর্য্য। দৃষ্টান্ত এই যে, যদি বাক্য সত্য হয়, অণচ তাহা উদবেগকর অথবা অহিত কিংবা অপ্রিয় হয়, তাহা इटेटन की वाकारक वाबाब जल: वना बाटित ना। आवाब बिन, वाका हिन्छ छ অমুদবেগকর হয়, কিন্তু সত্য না হয়, তাহা হইলেও ঐ বাক্য বান্ধর তপঃ হইতে পারে না। এই প্রকার প্রিয় বাকাও যদি ঐ কয়টি ধর্মের মধ্যে কোন একটি ছুইটি বা তিনটি ধর্মের সহিত যুক্ত না হয়, তাহা হইলে ঐ হিতৰাক্যকে ৰাম্মর তপঃ বলা যাইতে পারে না। [কিরপ হইলে বাক্য বান্মর তপঃ হর ? তাহার নিদর্শন] যে ৰাক্য, সত্য অমুদ্বেগকর, প্রিন্ন এবং হিত, (অর্থাৎ এই চারিটি বিশেষণ যে বাক্যে নিত্য বিশ্বমান থাকে) সেই বাক্যই বান্ধন্ন তপ এবং "ৰাধাায়াভ্যসন" অৰ্থাৎ যথাবিধি বেদাভ্যাসও বাল্ময় তপঃ বলিয়া ক্ষিত इहेम्रा थाएक ॥५३

> মনঃপ্রদাদঃ সৌম্যত্বং মৌনমাত্মবিনিগ্রহঃ। ভাবদংশুদ্ধিরিত্যেতৎ তপে। মানদমূচ্যতে ॥১৬

আনুষু। মন:প্রসাদ:, সৌম্যখন্, মৌনম্, আত্মবিনিগ্রহ:, ভাবসংক্ষি: ইজ্যেতং মানসং তপ: উচ্যতে ॥>৬ অসুবাদ। চিত্তের প্রসন্নতা, সৌমাতা, মৌন, স্বাম্মনিগ্রহ এবং ভাব-সংশ্বদ্ধি এই কর্মটিকে মানস তপঃ কহা যায় ॥১৬

ভাষ্য। মন ইতি। মন:প্রসাদ: মনস: প্রশাস্তি: স্বছ্তাপাদনং প্রসাদ:। সৌম্যত্বং যৎ সৌমনস্তমাত্তঃ মুখাদিপ্রসাদকার্য্যান্তঃকরণক্ত বৃদ্ধি: *।
মৌনং বাক্সংবনোহপি মন:সংবমপূর্বকো ভবতীতি কার্য্যে কারণমূচ্যতে মন:সংবমো মৌনমিতি। আত্মবিনিগ্রহো মনোনিরোধ: সর্বতঃ সামান্তরপ আত্মবিনিগ্রহঃ বাগ্বিষয়কৈব মনস: সংবম: মৌনমিতি বিশেষ:। ভাবসংশুদ্ধি: পরৈব্যবহারকালে অমায়াবিত্বং ভাবসংশুদ্ধিরিত্যেতং তপো মানসমূচ্যতে ॥১৬

আননদ্গিরিটীকা। মানসং তপঃ সংক্ষিপতি—মন ইতি। প্রশান্তিক্রন্মের ব্যানজি—স্টেড্রেডি। মনসং স্বাক্ষ্যমনাক্র্যা নৈশ্চিন্তামিত্যর্থঃ। সৌমনজং সর্বেভ্যাে হিভৈষিত্বমহিতাচিন্তনক। তৎকথং গম্যতে তত্তাহ—মুখাদীতি। তত্ত স্বরূপমাহ—অন্তঃক্রণস্তেতি। নহু মৌনং বাহ্নিয়মনং বাহ্মর তপত্তপ্তর্ভবিতি তৎকথং মানসে তপসি ব্যাপদিশুতে তত্ত্র বাচঃ সংমমশু কারণত্বাৎ কার্য্যে কারণগ্রহণাৎ মানসে তপসি মৌনমুক্তামিত্যাহ—বাগিতি। যদ্বা মৌনং মুনিভাবো মননম্ আত্মনা মনসো বিনিগ্রহঃ নিরোধঃ। নম্বেং মৌনগু মনোনিগ্রহণ্ড চ মনঃসংয্যমেইনক্স্বাৎ পৌনক্ষজ্যং নেত্যাহ—স্ব্রিতি ভিতি। ভাবজ হদয়ত্ত সংশুদ্ধী রাগাদিমলবিক্রতেতি ব্যাচ্টে—প্রিরিতি। মানসং মনসা প্রধানেন নির্কর্ত্যমিত্যর্থঃ ॥১৬

অনুবাদ। মন ইত্যাদি [শোকের অর্থ]—"মন:প্রসাদ," মনের প্রশান্তি অর্থাৎ মনের স্বচ্ছতা সম্পাদনই 'মন:প্রসাদ' শব্দের অর্থ। "সৌম্যদ" বাছাকে লোকে সৌমনস্ত কহিয়া থাকে। মুথের প্রসন্মতা প্রস্তৃতি কার্য্যের দারা অন্তঃকরণের যে বৃত্তিবিশেষ অন্থমিত হয়, তাহাই 'সৌন্যদ'। "মৌন" বাক্সংযম, মূন:সংযম হইতেই বাক্সংযম হইতে পারে,এই কারণে,কার্য্য বাক্সংযমরপ মৌনের দারা এইস্থানে কারণস্বরূপ যে মন:সংযম, তাহারই গ্রহণ করা ঘাইতেছে; স্কুতরাং এশানে মৌন শব্দের অর্থ 'মন:সংযম'। "আত্মবিনিগ্রহ" ইহার অর্থ অন্তঃকরণের নিরোধ, সকল প্রকার বিষয় হইতে যে সামান্ততঃ মনোনিরোধ, ভাহাই এই স্থলে 'আত্মবিনিগ্রহ' শব্দের অর্থ। [স্কুতরাং আত্মবিনিগ্রহ এবং মৌন এই স্কুইটি শব্দের অর্থ

মুখাদিক্রনাদাদিকার্য্যায়েয়া অতঃকরণত বৃত্তিরিতি কেটিব।

এক নহে]। "ভাবসংগুদ্ধি" পরের সহিত ব্যবহারকালে অকপটতাই 'ভাবসংগুদ্ধি' কের অর্থ। এই কর্মটকে মানস তপঃ কহা যায় ॥১৬

> শ্রহ্মা পরয়া তপ্তং তপস্তৎ ত্রিবিধং নরৈঃ। অফলাকাঞ্জ্যিভিযু কৈঃ সান্ত্রিকং পরিচক্ষতে ॥১৭

অম্বয় । অফলাকাজ্ঞিভিঃ যুক্তৈঃ পররা শ্রন্ধরা তপ্তং (অ**ত্তিতং)** য়ং ত্রিবিধং তপঃ সান্ধিকং পরিচক্ষতে ॥১ ৭

অনুবাদ। ফলের অভিলাষ পরিত্যাগ করিয়া, সমাহিতচেতা ব্যক্তিগণ ারম শ্রনার সহিত যে পুর্বোক্ত ত্রিবিধ তপস্থার অনুষ্ঠান করেন, তাহাকে াাক্কি [তপঃ] বলা যায়॥১৭

ভাষ্য ৷ যথোক্তং কারিকং বাচিকং মানসং চ তপন্তপ্তং নবৈঃ সন্ধাদিভদেন কথং ত্রিবিধং ভবতীতাচ্যতে—শ্রদ্ধা আন্তিক্যবৃদ্ধা পররা প্রকৃষ্টরা

গপ্তমন্ত্রভিতং তপন্তৎ প্রকৃতং ত্রিবিধং ত্রিপ্রকারম্ অন্তর্ভানম্ নবৈরস্কাভৃতিঃ

সফলাকাজ্জিভিঃ ফলাকাজ্জারহিতৈঃ যুক্তৈঃ সমাহিতঃ যদীদৃশং তপঃ, তৎ

শাবিকং সন্থনির্ভিং পরিচক্ষতে কথয়ন্তি শিষ্টাঃ ॥১৭

আনন্দ গিরিটীক। তিবিধস্থ তপসো যথাসম্ভবং সান্ধিকাদিভাবেন ত্রৈবিধ্যমাকাজ্ঞাদারা নিক্ষিপতি—যুখোক্তমিতি। তত্ত্বৈব অধিষ্ঠানং দেহ-বাশ্মনো নির্ব্বর্ত্তামিত্যর্থ:। সমাহিতঃ সিদ্ধ্যানির্ব্বিকারৈরিতি যাবং ॥১৭

অনুবাদ। এই যে পূর্নোক কায়িক বাচিক এবং মানসরূপ তিবিধ তপ, ইহা সন্থাদি গুণভেদে কিরপে সাবিকাদি তিবিধ হইতে পারে, একণে তাহাই বলা হইতেছে। "শ্রদ্ধা" আন্তিক্যবৃদ্ধি "পর" অর্থাৎ প্রক্লষ্ট, সেই প্রক্লষ্ট আন্তিক্যবৃদ্ধির সহিত ধাহার অনুষ্ঠান করা যায়, সেই প্রক্লত তপঃ তিবিধ— অর্থাৎ তিন প্রকার [কেন তিন প্রকার ? বেহেডু] দেহবাক্ এবং মনের দারা সম্পাদিত [হয়]। ফলাকাজ্জা পরিত্যাগ করিয়া, সমাহিত্চিত্ত ব্যক্তিপণ কর্ত্বক এই তিবিধ তপস্তা অনুষ্ঠিত হইলে, ইহাকে শিষ্টগণ "সান্থিক তপঃ" বিলয়া থাকেন ॥১৭

সৎকারমানপূজার্থং তপো দল্ভেন চৈব যৎ।

, ক্রিয়তে তদিহ প্রোক্তং রাজসং চলমধ্রুবম্॥১৮

আনুষ্য । যথ তপঃ দভেন সংকারমানপূজার্থম্ এব চ ক্রিয়তে, তথ ইছ চলম্ অঞ্বং রাজসং প্রোক্তম্ ॥১৮ অনুবাদ। দভের সহিত সংকার, মান ও পূজা লাভ করিবার জন্ত বে তপতাব অহঠান করা বার এবং বাহা চল অর্থাৎ অনিত্য ফলের হেতু, এইরূপ তপতাকে রাজস তপতা বলা বার ॥১৮

ভাষ্য । সংকারেতি। সংকারদানপূজার্থং সংকারঃ সাধুকারঃ সাধুরুরং তপন্থী ব্রাহ্মণ ইত্যেবমর্থঃ মানো মাননং প্রত্যুখানাভিবাদনাদিন্তদ্বর্ম, পূজী পাদপ্রকালনার্চনাশরিভ্ডাদিঃ তদর্থং চ তপঃ সংকারমানপূজার্থং, দজেন চৈব বং ক্রিয়তে তপন্তদিহ প্রোক্তং কথিতঃ রাজসং চলং কাদাচিৎকফলজেন অঞ্চবম্ ॥১৮

আনন্দ গিরিটীকা। রাজসং তপো নির্দিশতি—সংকারেতি। সাধু-কারমেব ক্ষোরয়তি—সাধুরিতি। দন্তেন চৈব নান্তিক্যেন কেবলধর্মধনজিছে-নেত্যর্থ:। তদিহ প্রোক্তমশ্বিয়েব লোকে ফলপ্রদমিত্যর্থ:। কাদাচিৎকফলম্বন্ অঞ্বন্ অনিয়তমনৈকান্তিকফলমিতি যাবং॥১৮

অসুবাদ। সংকার ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]—"সংকারমানপূজার্থ" "সংকার" শব্দের অর্থ সাধুকার। এই ব্যক্তি সাধু তপস্বী বাহ্মণ, এই প্রকার প্রশংসাই 'সংকার'। "মান" অর্থাৎ মানন—আসিতে দেখিয়া উঠিয়া দাঁড়ান ও অভিবাদন করা প্রভৃতিই 'মান'। "পূজা" পাদপ্রকালন অর্চনা ও ভোজন করান প্রভৃতিই 'পূজা'। এই সংকার, মান ও পূজা লাভ করিবার জন্ত দম্ভের সহিত্ব তেপস্থার অনুষ্ঠান করা বায়, তাহাকে "রাজস তপঃ" বলা বায়। ঐ রাজস তপঃ চল, উহার ফল বেহেতু অনিয়ত, এই কারণে উহা অঞ্চব ॥১৮

মৃঢ়গ্রাহেণান্মনো যৎ পীড়য়া ক্রিয়তে তপঃ। পরস্থোৎসাদনার্থং বা তৎ তামসমুদাহতম্॥১৯

ভাষ্য়। মৃঢ্গ্রাহেণ আত্মন: পীড়য়া, পরশু উৎসাদনার্থং বা বৎ তপ: ক্রিয়তে, তৎ তামসম্ উদাহতম্।।১৯

আমুবাদ। সদসদ্বিবেক পরিত্যাগপূর্বক নিজের দেহকে পীড়িত করিয়া বৈ তপঃ অমুষ্ঠিত হয়, কিংবা পরের উৎসাদনার্থ বে তপঃ অমুষ্ঠিত হয়, তাহাই সাজস তপঃ বলিয়া কীর্ত্তিত হয় ॥১৯

ভাষ্য। মৃঢ়েতি। মৃঢ়গ্রাহেণ অবিবেকনিশ্চরেন আত্মনঃ পীড়রা ক্রিয়তে মহ, তপঃ প্রক্ত উৎসাদনার্থং বিনাশার্থং বা তৎ তামসং তপঃ উদাহতম্ ॥১৯

আনন্দর্গিরিটীক।। তামসং তপঃ সংগৃহাতি—মূচেতি। মূচোইত্যস্তা-

বিবেকী তম্ব গ্রাহো নামাগ্রহাভিনিবেশ: তেনেত্যাহ—অবিবৈক্তি। আছনঃ
বস্ত দেহাদেরিত্যর্থ: ॥১৯

অকুবাদ। মৃঢ় ইত্যাদি [শোকের অর্থ]—"মৃঢ়গ্রাহ" বিবেকনিশ্চরের অভাব [অর্থাৎ] সদসদ্বিবেকের অভাব বশতঃ কিংবা পরের উৎসাদন বা বিনাশের জন্ত যে তপঃ অমুটিত হয়, তাহাই "তামস তপঃ" বলিয়া কীর্তিত হয় ॥১৯

দাতব্যমিতি যদানং দীয়তে২মুপকারিণে।

দেশে কালে চ পাত্তে চ তদ্দানং সাত্ত্বিকং স্মৃতম্ ॥২০

আন্বয়। দাতব্যন্ ইতি (এবং নিশ্চিত্য) দুদশে কালে পাত্রে চ [বিশ্বমানে সতি] অমুপকারিণে বন্ধানং দীরতে তৎ সাধিকং দানং স্বতম্॥২•

অনুবাদ। 'দেওয়া আবশুক' এই প্রকার নিশ্চয়পূর্বক দেশ কাল ও পাত্র সন্ধিধানে অনুপকারী জনকে যে দান করা বায়, তাহাই সাবিক দান বলিয়া স্থতিতে উক্ত হইয়া জ ॥২০

ভাষ্য। ইদানীং দানভেদ উচ্যতে—দাতব্যমিত্যেবং মন: ক্বড়া ধন্দানং দীরতে অহপকারিণে প্রত্যুপকার্গেমর্থার, সমর্থার অপি নিরপেক্ষং দীরতে, দেশে পুণ্যে ক্রুক্জেত্রাদৌ কালে সংক্রান্ত্যাদৌ, পাত্রে চ ষড়ক্ষবিদ্বেদপারণে ইত্যাদৌ তদানং সান্তিকং স্থতম্ ॥২০

আনন্দগিরিটীকা। ক্রমপ্রাপ্তং দানস্ত গুণনিমিত্তং তেদমাহ—ইদানী.
'মিতি। দাতব্যমিত্যেব মনঃ ক্লবা দানমেব ময়া ভাবাং ন ফ্লমিত্যভিসন্ধারেত্যর্থঃ ॥' •

অনুবাদ। এইকণে দানের ভেদ বলা হইতেছে। দান অবশুকর্তব্যএই প্রকার মনে করিয়া, "অমুপকারীকে" অর্থাৎ প্রত্যুপকার করিতে অসমর্থ ব্যক্তিকে বে দান করা যায়। ঐ ব্যক্তি যদি প্রত্যুপকার করিতে সমর্থও হয়, তাহা হইলে তাহার কাছে কোনপ্রকার প্রত্যুপকার লাভের অপেকা না করিয়াও বে দান করা বায়, [এবং যদি] "দেশে" অর্থাৎ পুণ্য কুরুক্তের প্রভৃতি হালে, "কালে" অর্থাৎ সংক্রান্তি প্রভৃতি পুণ্যকালে এবং "পাত্রে" অর্থাৎ বড়ঙ্গবিদ্ ও বেদপারণ প্রভৃতি গুণবান্ ব্রাহ্মণে ঐ দান অম্প্রতি হয়, তাহা "সান্ধিক দান" বিদুরা ধর্মশান্তে ক্থিত হয়॥২০

> যন্ত_ু প্রত্যুপকারার্থং ফলমুদ্দিশ্য বা পুনঃ। দীয়তে চ পরিক্লিফং তদানং রাজসং শ্বৃতম্॥২১

আনুষু । যৎ তু প্রত্যুপকারার্থং ফলমুদ্দিশু বা পরিক্লিষ্টং চ দীরতে, তন্ রাজসং দানং স্থতম্ ॥১১

অনুবাদ। [এই জীবনেই] কোনপ্রকার প্রত্যুপকার পাইবার জন্ম, অথবা [পরলোকে] স্বর্গাদি ফল লাভ করিবার জন্ম, অত্যস্ত ক্রেশের সহিত বে দান করা যায়, তাহাই রাজস দান বলিয়া শাস্তে কথিত হয় ॥২১

ভাষ্য । যদ্বিতি । যতু দানং প্রত্যুপকারার্থং কালে তু অরং নাং প্রত্যুপ-ক্ষরিশ্বতি ইত্যেবমর্থং ফলং বা অক্ত দানক্ত নে ভবিশ্বতি অদৃষ্টন্ ইতি তহদিশ্র পুনদীরতে চ পরিক্লিষ্টং থেদসংযুক্তং তৎ দানং রাজসং স্বতন্ ॥২:

অকুবাদ। যত্ ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ—বে দান প্রত্যুপকারের জন্ত সমম্বিশেষে এই ব্যক্তি আমার প্রত্যুপকার করিবে—এই প্রকার আশার, অথবা ফল লাভ করিবার জন্ত অর্থাৎ. এ দান করিলে যে অদৃষ্ঠ হর, তাহা পাইবার জন্ত, থেদের সহিত যে দান ক্বত হয়, তাহাই "রাজস দান" বলিয়া শ্বতিশাল্পে উক্ত হইয়াছে ॥২১

অদেশকালে যদ্দানমপাত্রেভ্যশ্চ দীয়তে। অসৎকৃতমবজাতং তৎ তামসমুদাহূতম্॥২২

আমৃয়। অদেশকালে অপাত্রেভ্যঃ অসংক্রতম্ অবজ্ঞাতং [চ] যদানং দীরতে তৎ তামসম্ উদাহতম্॥২২

অনুবাদ। অবিহিত দেশে এবং অবিহিত কালে অপাত্রগণের উদ্দেশে । অসংকৃত (সংকার বর্জিত) এবং অবজ্ঞাপূর্বক যে দান করা যায়, তাহাই তামস দান বলিয়া পরিকীর্ত্তি॥২২

ভাষ্য। অদেশেতি। অদেশকালে অপুণ্যে দেশে শ্লেচ্ছাণ্ডচ্যাদিসংকীর্ণে অকালে পুণ্যছেতুবেনাপ্রখ্যাতে সংক্রাস্ত্যাদিবিশেষরহিতে অপাত্রেভ্যন্ত মুর্থতন্তরাদিজ্যঃ দেশাদিসম্পত্তী চ অসৎক্বতং প্রিন্নবচনপাদপ্রকালনপূজাদিরহিত্য অবজ্ঞাতং
পাত্রপরিভবযুক্তং চ যদানং তৎ তামসম্ উদাহ্বতম্ ॥২২

আনন্দ গিরিটীকা। রাজসতামসদানবিভজনং স্পষ্টার্থন্ ॥২১-২২
আকুবাদ। অদেশ ইত্যাদি প্লোকের অর্থ—"অদেশে" অপুণ্যদেশে, [বে
দেশ] অস্তাজাতি এবং অক্তান্ত অন্তচিদ্রব্যপরিপূর্ণ, [তাহাই] 'অদেশ' [শক্ষের অর্থ]। "অকাল" পুণ্যের হেতু বলিয়া বে কাল প্রশিদ্ধ নহে অর্থাৎ সংক্রান্তি প্রস্তৃতি বিশেষহীন, সেই কালই 'অকাল'; এই অদেশে এবং অকালে অপাত্রগণকে অর্থাৎ মূর্থ তকর প্রভৃতিকে যে দান করা হয়, তাহাই তানস দান বলিয়া পরিকীর্তিত। [অন্ত প্রকার তামস দান বলিতেছেন] শোভন দেশ বা প্ণ্যকাল হইলে কি হয় ? ঐ দান যদি অসংক্ষত হয় অর্থাৎ প্রিয় বচন ও পাদপ্রকালনাদি-পূর্বক না হয়, অথবা অবজ্ঞাত অর্থাৎ পাত্রকে অবজ্ঞা করিয়া দেওয়া হয়, তাহা হইলেও ঐ প্রকার দানকে তামস বলা যায় ॥২২

ওঁ তৎসদিতি নির্দেশো ত্রক্ষণস্ত্রিবিধঃ স্মৃতঃ। ত্রাক্ষণাস্তেন বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ পুরা॥২৩

ভাষ্য । ব্ৰহ্মণঃ ওঁ তৎ সৎ ইতি ত্ৰিবিধঃ নিৰ্দেশঃ স্বৃতঃ, তেন পুরা ব্রাহ্মণাঃ বেদাঃ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ ॥২৩

অনুবাদ। একোর তিনটি নির্দেশ মর্থাং নাম বলিয়া [ব্রহ্মবিদ্গণ]
শ্বরণ করিয়া থাকেন, যথা—ওঁ, তৎ, এবং সৎ। এই তিন প্রকার নির্দেশের
দারা পূর্বে ব্রাহ্মণ যজ্ঞ ও বেদ সকল নির্দ্মিত হটরাছে ॥২৩

ভাষ্য। যজ্ঞদানতপঃপ্রভৃতীনাং সাদ্গুণ্যকরণায় অয়মুপদেশ উচ্যতে— ওঁ তৎসদিতি। ওঁ তং সং ইতি এবং নির্দেশঃ নির্দিশ্রতে অনেন ইতি নির্দেশঃ ত্রিবিধঃ নামনির্দেশঃ ব্রহ্মণঃ স্বৃতঃ চিস্তিতো বেদান্তেমু ব্রহ্মবিদ্য়ি। ব্রাহ্মণাত্তেন নির্দেশেন ত্রিবিধেন বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ নির্দ্মিতাঃ পুরা পুর্বমিতি নির্দ্দেশস্কত্যর্থমূচ্যতে ॥২০

আনন্দগিরিটীকা। বিহিতানাং কর্মণাং প্রমাদগুক্তে বৈশুণ্যে কথং পরিহার: তাদিত্যাশক্ষাহ—যুক্তেতি। "ওমিতি ব্রহ্ম" ইত্যাদিশ্রুতে:। ওমিতি তাবদ ব্রহ্মণো নামনির্দ্দেশঃ, "তত্ত্বমিদি" ইতি শ্রুতেঃ তদিত্যপি ব্রহ্মণো নামনির্দ্দেশঃ, "সদেব সোম্যেদম্" ইতি শ্রুতেঃ। সদিত্যপি তত্ত্ব নামেতি মন্ধাহ—ওমিতিঃ। কথং নির্দেশন তেয়াং বিধানমিত্যাশক্ষাহ—নির্দ্দিশ্রত ইতি। বজ্ঞাদীনাং বৈশুণ্যপ্রতীতিকালে যথোক্তনামামন্তত্ত্মোচ্চারণাদবৈশুণ্যং নিধ্যতীতি ভাবঃ। কর্ম্মাদ্শুণ্যকারণং ত্রিবিধং নাম স্তৌতি—ব্রাহ্মণা ইতি। পূর্ব্বে সর্গাদৌ নির্দ্দাণগু প্রশ্লাপতিকর্তৃক্ম্॥২৩

অনুবাদ। যজ দান ও তপস্তা প্রভৃতির পরিপূর্ণতা সাধন করিবার জন্ত্র এই উপদেশ উক্ত হইতেছে। "নির্দেশ" এই শক্তির অর্থ এই যে, বাহার ঘারা কোন বন্ধ নির্দিষ্ট হইরা থাকে, তাহাকেই 'নির্দেশ' বলা যার। [কলে এই দীড়াইতেছে যে] নির্দেশ শব্দের অর্থ নাম"; ত্রন্মের নাম ডিনটি, বথা— উ এবং সং। বেদাস্তসমূহে ব্রহ্মবিদ্রণ এই তিনটিকেই ব্রহ্মের নাম বলিরা চিস্তা ক্রিরা থাকেন। সেই এই ত্রিবিধ নির্দ্দেশের দারাই ব্রাহ্মণ্যণ, বেদসমূহ ও ফল সকল পূর্বকালে নির্মিত হইয়াছে। এই প্রকার কথন দারা ঐ ত্রিবিধ নির্দেশের স্থতি করা হইতেছে॥২৩

তস্মাদোমিত্যুদাহৃত্য যজ্ঞদানতপঃক্রিয়াঃ। প্রবর্ত্তন্তে বিধানোক্তাঃ সততং ব্রহ্মবাদিনাম্॥২৪

আস্থ্য়। তত্মাৎ ব্ৰহ্মবাদিনাং ধিধানোকাঃ যজ্ঞদানতপঃক্ৰিয়াঃ ওম্ ইভি উদাস্থ্য (উচ্চাৰ্য্য) সততং প্ৰবৰ্ত্তয়ে ॥২৪

আকুবাদ। সেই কারণে ব্রহ্মবাদিগণের বেদবিহিত যজ্ঞ দান এবং তপঞ্জা-সমূহ সর্বাদা 'ওম্' এই শক্টির উচ্চারণের পরই প্রবৃত্ত হইরা পাকে ॥২৪

ভাষ্য। তত্মাৎ ওম্ ইতি উদাসতা উচ্চার্য্য যজ্ঞদানতপঃক্রিয়া: বঞ্জাদিস্বন্ধপা: ক্রিয়া: প্রবর্ত্তরে বিধানোক্রা: শাস্ত্রচোদিতা: সততং সর্বাদানাং
বক্ষবদনশীলানাম্॥২৭

্ আনন্দ্রিতীক।। যত্মান্ এক্ষণাদীনাং কারণং যত্মাচ্চ এক্ষণো নির্দেশ-ক্তমাদিত্যুপসংহরতি—তত্মাদিতি। এক্ষণাদিনামিত্যত্ত এক্ষ বেদঃ ॥২৪

্ অকুবাদ। সেই কারণে ওম্ এই শন্ধটি উচ্চারণ করিয়া "বজ্ঞদানতপঃক্রিয়া" অর্থাৎ বজ্ঞাদি ক্রিয়া—[যাহা] "বিধানোক্ত" শাস্ত্রবিহিত [তাহা] প্রবৃত্ত হইয়া থাকে [কাহাদিগের ?] বন্ধবাদিগণের অর্থাৎ বাহারা বন্ধবদনশীল, ভাঁহাদিগের ॥২৪

তদিত্যনভিসন্ধায় ফলং যজ্ঞতপঃক্রিয়াঃ। দানক্রিয়াশ্চ বিবিধাঃ ক্রিয়ন্তে নোক্ষকাঞ্জিভঃ ॥২৫

অস্থ্য। তৎ ইতি [উচ্চাৰ্য] ফলম্ অনভিদদ্ধায় চ মোক্ষকাজ্জিভিঃ বক্ষতপঃক্ৰিয়াঃ বিবিধাঃ দানক্ৰিয়াণ্চ ক্ৰিয়ত্তে ॥২৫

অনুস্বাদ। তৎ এই শক্টির উচ্চারণ করিয়া এবং ফলাকাজ্ঞা পরিত্যাগ ক্রিয়া মোক্ষকাম ব্যক্তিগণ যজ্ঞ তপস্থা প্রভৃতি ক্রিয়া এবং বিবিধ দানক্রিয়ার ক্রমুঠান ক্রিয়া থাকেন ॥২৫

• ভাষ্য। তদিতি। তদিতি অনভিসনায় তদিতি ব্নাভিধানম্ উচ্চাৰ্য অইভিসনাম চ কৰ্মণ কলম্, যজতগংক্ৰিয়াঃ বক্কক্ৰিয়াঃ তপংক্ৰিয়াক বক্ষত্যঃ ক্রিরাঃ, দানক্রিরাশ্চ বিবিধাঃ কেত্রহিরণ্যপ্রদানাদিলকণাঃ ক্রিরয়েন্ত নির্বস্ত্যুদ্র মোককাজ্যিভিঃ মোকার্থিভিঃ মুমুকুভিঃ ॥২৫

আনন্দগিরিটীকা। ও শব্দশু বিনিয়োগমুক্তা তচ্ছদশু বিনিয়োগমাহ
—তদিত্যাদিনা ॥২৫

অকুবাদ ৷ তদিতি [শ্লোকের অর্থ]—"তদিতি অনভিসন্ধার্য তৎ এই শক্ষটির অনভিসন্ধান করিয়া ইহার তাৎপর্য্য এই যে, "তৎ" এই ব্রহ্মবাচক শক্ষটির উচ্চারণপূর্বক ফলাকাজ্ঞা পরিহার করিয়া "মোক্ষকাজ্ঞিলগণ" অর্থাৎ মুমুক্ত্রণ যজ্ঞক্রিয়া তপস্থাক্রিয়া এবং বিবিধ ক্ষেত্র হিরণ্য প্রস্তৃতির দান ক্রিয়া সম্পাদন করিয়া থাকেন ॥২৫

সদ্ভাবে সাধুভাবে চ সদিত্যেতৎ প্রযুজ্যতে। প্রশস্তে কর্মণি তথা সচ্ছকঃ পার্থ যুজ্যতে॥২৬

আনুয়। সদ্ভাবে সাধুভাবে চ সৎ ইতি এতৎ প্রয়ন্ধ্যতে। তথা প্রশস্তে কর্মণি সচ্চবাং হৈ পার্থ যুক্ষ্যতে ॥২৬

অকুবাদ। হে পার্থ! সং এই শব্দটি সন্ভাব এবং সাধুভাবকে বুঝাইবার জন্ম প্রযুক্ত হয়; এবং যে কর্ম প্রশন্ত, তাহাও বুঝাইবার জন্ম সং এই শব্দটির প্রয়োগ হইয়া পাকে॥> ১

ভাষ্য। ও তক্ষয়েবিনিয়োগ উক্তঃ। অণেদানীং সক্তব্দশু বিনিয়েরণঃ
কথাতে—সন্ভাবে অসতঃ সন্ভাবে তথা অবিজ্ঞানস্থ পুত্রস্থ জনানি তথা সাধুভাবে অসদ্রক্ত অসাধোঃ সন্রক্তা সাধুভাবঃ তন্মিন্ সাধুভাবে চ সদিত্যেজনভিধানং ব্রহণঃ প্রযুজ্যতে তত্র ইচাতে অভিধীয়তে। প্রশত্তে কর্মণি বিবাহাদৌ
চ সক্তব্দঃ পার্থ যুজ্যতে প্রবৃজ্যতে ইত্যেতৎ ॥২৬

আনন্দগিরিটীকা। বুওমন্ভানস্তরশ্লোকতাৎপর্য্যমাহ—ও — উচ্ছব্দয়ো-রিতি ॥২৬

আনুবাদ। ওঁ এবং তং এই তৃইটি শব্দের বিনিয়োগ দশিত হইরাছে, একণে সং এই শব্দটির বিনিয়োগ কথিত হইতেছে। "সদ্ভাব" শব্দের অর্থ— অস্তের সদ্ভাব, যেমন পুত্র ছিল না, পুত্র হইলে পুত্রের "সদ্ভাব" হইয়াছে বলা যার, সাধুভাব শব্দের অর্থ অসাধু ব্যক্তির সচ্চরিত্র হওয়া—এই সদ্ভাব এবং সাধু-ভাবকে বুঝাইবার জন্ত "সং" এই শব্দটি প্রযুক্ত হয় অর্থাৎ উক্ত হয় বা অভিহিত হয়। এবং কোন প্রকার প্রশন্ত কর্ম অর্থাৎ বিবাহাদিতেও সৎ এই শব্দের প্রয়োগ হইয়া থাকে। হে পার্থ! ইহাই হইল তাৎপর্য্য॥২৬

> যজ্ঞে তপসি দানে চ স্থিতিঃ সদিতি চোচ্যতে। কর্ম্ম চৈব তদর্থীয়ং সদিত্যেবাভিধীয়তে ॥২৭

অনুষ্ । বজ্ঞে ওপদি দানে চ স্থিতি: দদিতি [শক্ষেন] উচাতে চ। তদ্থীয়ং কর্ম চ এব সদিতোৰ অভিধীয়তে ॥২৭

আমুবাদ। যজ তপ এবং দানে স্থিতি বুঝাইতে হইলে সৎ এই শক্টি উক্ত হইয়া পাকে। ঈখরার্থ কর্মাকে বুঝাইবার জ্ঞাও সৎ এই শক্টি কথিত হইয়া পাকে॥২৭

ভাষ্য। বজ্ঞে বজ্ঞকর্ম্মণি যা স্থিতি: তপসি যা স্থিতি: দানে চ যা স্থিতি:, সা চ সদিত্যচাতে বিদ্যালয়। কর্ম চৈব তদপীয়ং বজ্ঞদানতপোহপীয়ম্; অথবা বস্তাভিধানত্রং প্রকৃতং তদপীয়ং বজ্ঞদানতপোহপীয়ম্ ঈশ্ববাণীয়মিতেতেং। সদিত্যের অভিধীয়তে। তদেতং বজ্ঞদানতপ্রাদি কর্ম অসাত্ত্বিকং বিশুণমপি শ্রুদ্ধাপ্রকিং ব্রহ্মণোহভিধানত্র প্রয়োগেণ সপ্তগং সাহিকং সম্পাদিতং ভবতি ॥২৭

আনন্দ গিরিটীকা। প্রকারা স্তরেণ সচ্ছদত্ত বিনিরোগমাহ—যজ্জইতি। নামত্রোচ্চারণেন সাদ্ধণ্যং সিধ্যতীতি প্রকরণার্থমুণসংহরতি—তদেতদিতি॥২৭

অনুবাদ। বজ্ঞে মর্থাৎ বজ্ঞকর্মে বে স্থিতি (পূর্ণতা), তপস্থাতে যে স্থিতি, তাহারই নাম "সং" ইহা পণ্ডিতগণ বলিয়া পাকেন। এবং তদলীয় অর্থাৎ ওঁতং সৎ এই তিনটি শব্দের প্রতিপান্ত যে পরনেখন, তাঁহার জন্ত যে যজ্ঞ প্রভৃতি কর্মা অনুষ্ঠিত হইয়া পাকে, সেই সকল কর্মাই ভদলীয় কর্মা; "সং" এই শক্ষটির দ্বারা তদলীয় কর্মাও অভিহিত হইয়া পাকে। এই প্রকার বলিবার তাৎপর্য্য এই যে, যক্ষ প্রভৃতি কর্মা বদি মসাবিক কিংবা অঙ্গবিশুণ হয়, তাহা হইলে এই তিনটি শব্দের প্রয়োগ করিবে, তাহা হইলে এই সকল কর্মা সগুণ এবং সান্তিক হইবে ॥২৭

অশ্রদ্ধা হতং দত্তং তপস্তপ্তং কৃতঞ্চ যথ।
অসদিত্যুচ্যতে পার্থ ন চ তথ প্রেত্য নো ইছ ॥২৮
ইতি সপ্তদশোহধ্যায়:।

আনুষ্ ৷ হে পার্থ ! যৎ অপ্রদায় হতং দত্তং তপঃ [বা] তপ্তং [অনুত্বা বং] ক্লতং তৎ অসং ইত্যাততে ন তৎ প্রেত্য ইহ চ নো (ভবতি, ॥ ৮ অকুবাদ। হে পার্থ! অশ্রদার সহিত যে হোম করা যার, যে দান করা যার, যে তপস্থার অফুষ্ঠান অথবা যাহা কিছু করা যার, তৎসমস্ত "অসৎ" নামে কথিত হয়। সেই অসৎ কর্ম ইহকালে বা শ্রকালে ইষ্টফ্লপ্রাদ হয় না ॥২৮

ভাষ্য। তত্ত্ব চ সর্বাজ শ্রদ্ধা প্রধানতয়া সর্বাং সংপাছতে নসাৎ তত্মাৎ—
অশ্রদ্ধরা হতং হবনং ক্বতম্ দত্তক, রাক্ষণেভ্যঃ অশ্রদ্ধরা, তপস্তপ্তং অনুষ্ঠিতর্মশ্রদ্ধরা,
তথা অশ্রদ্ধরৈব ক্বতং স্ততিনমস্বারাদি তৎ সর্বামসৎ ইত্যুচ্যতে। নৎপ্রাপ্তিদাধনমার্গবাহ্যবাৎ পার্থ। ন চ তৎ বহুবায়াসম্পি প্রেভ্য ক্লায় নো অপি ইহার্থম্,
সাধৃভিনিন্তিত্বাৎ ইতি ॥২৮

আনন্দ্রিনিক।। অশ্রনাবিত্যাপি কর্মণো নামন্ত্রোচ্চারণাদবৈ গুণ্যে শ্রনাপ্রানান্য ন স্যাদিত্যাশক্যাহ—অত্র চেলি। সপ্তমীভ্যাৎ প্রক্তং ষঞ্জাদি গৃহতে। সর্বাং যজ্ঞাদি সপ্তণমিতিশেষ:। তপ্তাসবং সাধ্যতি—মৃত্প্রাপ্তি। ঐহিকামুম্মিকং বা ফলমশ্রনিতেনাপি কর্মণা সম্পংগুতে কুতোহন্তাসব্মিত্যাশক্যাহ
—নচেতি। তন্ত্যোভয়বিধফলাহেতৃত্বে হেতৃমাহ—সাধুভিরিতি। নিন্দ্রিভ হি সাধবঃ শ্রনারহিত্য কন্ম, অতো নৈতহ্তয়ফলৌপয়িকমিত্যর্থঃ। তদনেন শাস্তানভিজ্ঞানামপি শ্রনাবতাং শ্রন্থা সাবিক্রাদিট্রবিধ্যভাদ্ধং রাজ্ম-ভাম-সাহারাদিত্যাগেন সাবিক্রাহারাদিসেবয়া সইস্কশরণানাং প্রাপ্তমপি বজ্ঞাদিবিগুণ্যং ব্রহ্মনামনির্দ্রেশন পরিহরতাং পরিশুরুবৃদ্ধীনাং শ্রবণাদিসামগ্রীদঞ্জাতত্ত্বসাক্ষাৎকারবতাং নোক্ষোপপতিরিতি স্থিতম ॥২৮

অকুবাদ। তাহাতে বক্তব্য এই বে, যে কর্ম্মসকল শ্রদ্ধাপ্রধান তাহাই
সফল হইয়া থাকে যে কারণে, সেই কারণেই অগ্রদ্ধার সহিত যে হোম করা হয়,
অশ্রদ্ধার সহিত যে দান করা হয়, অশ্রদ্ধার সহিত যে তপপ্রার অফ্র্যান করা হয়,
কিংবা অশ্রদ্ধায় যে স্তৃতি বা নমস্বারাদি করা হয়, সমুদয়ই অসৎ বিদয়া
উক্ত হয়। কারণ, ঐ সকল অশ্রদ্ধাবিহিত কর্ম মৎপ্রাপ্তি যে সাধনমার্গ—তাহার
বিপরীত; ঐ সকল কর্ম বহু আয়াসের সহিত অফ্রন্তিত হইলেও, পরলোকে বা
ইহলোকে ফলের জনক হয় না; কারণ, ঐ প্রকার অশ্রদ্ধাবিহিত কর্ম্ম সাধুজনবিগহিত ॥২৮

ইতি সপ্তদশোহধ্যায়ঃ সমাপ্ত:।

অথ অপ্তাদশোহধ্যায়°

অৰ্জুন উবাচ।

সন্ন্যাসস্থ মহাবাহো তত্ত্বমিচ্ছামি বেদিভুম্। ত্যাগস্থ চ হুষীকেশ পৃথক্ কেশিনিষ্দন॥ ১

ভাষ্য। অৰ্জুন উবাচ—হে মহাবাহো হ্যবীকেশ! হে কেশিনিব্দন। সন্ন্যাসক্ত ত্যাগক্ত চ তত্ত্বং পৃথক্ বেদিত্মিচ্ছামি ॥১

তাকুবাদ। অর্জুন কহিলেন—হে মহাবাহো স্বীকেশ, হে কেশিনিবৃদন, আমি সন্ন্যাস এবং ত্যাগের তত্ত্ব (স্বরূপ) কি, তাহা বিবিক্তভাবে জানিতে চাহিতেছি॥>

ভাষ্য। দর্কভৈব গীতাশাস্ত্রভার্থেহিশ্মির্ধ্যায়ে উপদংক্ত্য দর্কশ্চ বেদার্থো বক্তব্য ইত্যেবমর্থেহিরমধ্যার আরভ্যতে। দর্কের্ হি অতীতের্ অধ্যায়ের্ উক্তোহর্থ: অন্ধ্রিধ্যায়েহবগম্যতে। অর্জ্রনস্ত দ্ভাগত্যাগশন্দার্থয়োরেব বিশেষং বৃত্ৎস্কুরবাচ। সন্ন্যাসভ্য সন্ন্যাসশন্ধার্থভ্য ইত্যেতং। হে মহাবাহো তত্তং তত্ত ভাবস্তবং বাথাআনিত্যেতং ইচ্ছামি বেদিতৃং জ্ঞাতু ত্যাগভ্য চ ত্যাগশন্ধার্থভ্য ইত্যেতং হ্রবীকেশ পৃথক্ ইত্রেতবিভাগতঃ। কেশিনিযুদন কেশিনামা সম্বচ্ন্মা অস্কুরন্তং নিব্দিতবান্ ভগবান্ বাস্তদেবস্তেন ত্রীয়া সংবোধ্যতে অর্জ্ঞ্নেন॥১

আনন্দ গিরিটীকা। পূর্বৈরধ্যায়ৈর্বিস্তরেণ যতন্ততো বিক্ষিপ্তরোজনর্থং স্থপ্রতিপন্ত্যর্থং সংক্ষেপেণোপসংহত্য অভিধাতৃম্ অধ্যায়াস্তরমবতারয়তি—স্বিস্তৈত্যবিতি। উপসংহত্য বক্তব্য ইতি সম্বন্ধঃ। কিঞাপনিবংস্থ যতন্ততো বিক্ততভার্থত বৃদ্ধিসৌকর্যার্থমিমিয়ধ্যায়ে সংক্ষিপ্তাভিধানং কর্ত্তব্যমুপনিষদাং গীতানাঞ্চৈকার্থছাদিত্যাহ—স্বিক্তেতি। কথং সর্বোহিপ শাস্তার্থেই সিম্বন্ধ্যায়ের সংক্ষিপ্তাপসংহ্রিরতে ত্ত্রাহ—স্বেষ্ হীতি। নম্ব বেদার্থভেদশেষভোহত্ত্রোপন্ধিইবিতন্তর্ধি কিমিতি ত্যাগেনৈকে সন্ধ্যাস্বোগাদিতি চ বেদার্থক্দেশবিষয়ং

প্রশ্নপ্রতিবচনং তত্ত্রাহ—অর্জ্জুনৃস্থিতি। পৃথগনরোম্বন্ধ বেদিতুমিছামীতি বিশেষণাদপৃথগর্থস্তমারস্তীতি গম্যতে। বৃভূৎদিতক্ত প্রষ্টব্যম্বাদেকদেশে তস্তাবাছক্তপ্রশ্লোপপত্তিরিতিভাবঃ ॥>

অমুবাদ। সকল গীতাশান্ত্রের অর্থ এবং সকল বেদের অর্থ উপসংহার করিয়া এই অধ্যান্তের বলিতে হইবে, এই কারণে এই অধ্যান্তর আরম্ভ করা হইতেছে। [কেন এই প্রকার বলিতেছি, তাহার কারণ এই বে] অতীত অধ্যায়সমূহে যে অর্থ উক্ত হইয়াছে—তাহা সকলই [সংক্ষিপ্তভাবে] এই অধ্যান্তে প্রকার] কথিত হইয়াছে, এইরূপ ব্ঝা যাইতেছে। অর্জ্ন্ন কিন্তু আপাততঃ সংস্থাস ও ত্যাগ এই ছইট শব্দের অর্থগত কি বিশেষ, তাহাই জানিবার ইছার বলিতেছেন যে—"সংস্থাসের" সংস্থাসশব্দার্থের—ইহাই এইয়ানে তাৎপর্য্য, "তত্ব" তাহার স্থভাব এই অর্থে তত্ব শব্দাট প্রযুক্ত হইয়া থাকে, সেই তত্ব অর্থাৎ বাথার্থ্য —স্বরূপ কি ? তাহা হে মহাবাহো, আমি জানিতে ইছা করি এবং "ত্যাগের" ত্যাগশব্দার্থেরও কি তত্ব ? তাহাও হে ছ্যীকেশ, "পৃথক্" পরম্পর বিভক্তভাবে জানিতে ইছা করি । হে কেশিনিযুদন! কেশিনামে একজন অন্যবেশধারী অন্তর্মকে ভগবান্ বাস্থদেব বিনাশ করিয়াছিলেন, এই হেতু সেই নাম ধরিয়া অর্জ্বন তাঁহাকে সংস্থান করিতেছেন॥>

শ্রীভগবামুবাচ।

কাম্যানাং কর্মাণাং ভাদেং দম্যাদং কবয়ে। বিছঃ। দর্বকর্মফলত্যাগং প্রাহস্ত্যাগং বিচক্ষণাঃ॥২

আন্ময়। শ্রীভগবান্ উবাচ—কবয়ঃ কাম্যানাং কর্মণাং স্থাসং সন্ধ্যাসং বিছঃ। বিচক্ষণাঃ সর্প্র কর্মফলত্যাগং ত্যাগং প্রান্তঃ॥২

অনুবাদ। শীভগবান কহিলেন, কবিগণ কাম্য কর্মের পরিত্যাগকে সন্ম্যাস বলিরা বৃষিরা থাকেন। পণ্ডিতগণ সর্বপ্রকার কর্মফলের ত্যাগকেই ত্যাগ বলিরা বর্ণন করিরা থাকেন॥২

ভাষ্য । তত্ত্ৰ তত্ত্ৰ নিৰ্দিষ্টে সন্ন্যাসভ্যাগশন্দো ন নিৰ্সু টিভাৰ্থে । পূৰ্বেষু অধ্যাবেষু অভাহৰ্জুনায় পৃষ্টবতে ভন্নিৰ্নায় (শ্ৰীভগবামুবাচ) কাম্যানামৰমেধা দীনাং কৰ্মণাং স্থাসং পরিভ্যাগং সংস্থাসং সংস্থাসশকার্থম অমুঠেরবেন প্রাপ্ত অনমুঠানং কবয়ঃ পণ্ডিভাঃ কেচিদ্বিছঃ বিজ্ঞানন্তি । নিত্যনৈমিত্তিকামান্

অষ্টায়মানানাং সর্ককর্মণাম্ আত্মসম্বন্ধিতয়া প্রাপ্তস্থ ফলস্ত পরিত্যাগঃ সর্ককর্মকলত্যাগন্তং প্রান্থঃ কথয়স্তি ত্যাগং ত্যাগশন্ধার্থং বিচক্ষণাঃ পণ্ডিতাঃ। বদি কাম্যকর্মপরিত্যাগঃ ফলপরিত্যাগো বা অর্থো বন্ধবঃ সর্ক্ষণাপি ত্যাগমাত্রং সন্মাসত্যাগশন্ধয়োরেকোহর্থো ন ঘটপটশন্ধাবিব জাত্যস্তরভূতার্থে। নমু নিত্যবৈমিন্তিকানাং কর্মণাং ফলমেব নাস্তি ইত্যান্থঃ কথম্চ্যতে তেষাং ফলত্যাগ ইতি,
মথা বন্ধ্যায়াঃ পুত্রত্যাগঃ। নৈষ দোবঃ, নিত্যানামপি কর্মণাং ভগবতা ফলবরুক্তেইছাং। বক্ষাতি হি ভগবান্ "অনিষ্ঠমিষ্টম্" ইতি "ন তু সন্ম্যাসিনাম্" ইতি
চ। সন্ম্যাসিনামেব হি কেবলং কর্মফলাসম্বন্ধং দর্শয়ন্ অসন্ম্যাসিনাং নিত্যকর্মফলপ্রাপ্তিং "ভবত্যত্যাগিনাং প্রেত্য" ইতি দর্শয়ত ॥২

আনন্দগিরিটীকা। নম্থ পূর্বেষধ্যায়ের্ তত্ত্ব তত্ত্ব সংস্থাসত্যাগয়োরুকত্বাৎ কিমিভি প্নস্তৌ প্র্যেতে জ্ঞাতে তদযোগাৎ তত্ত্বাহ—তত্ত্ব ত্রেতি। ন নিল্পিতার্থেটা ন নিন্ধারিথিটার নির্বিক্রার্থাবিত্যর্থঃ। বৃত্ৎসয়া প্রশ্নক্ত প্রবৃত্ত্বরাৎ প্রস্তুর বিপ্রারং প্রশ্নেন প্রতিপত্ত ভগবাম্থ ররমুক্তবানিত্যাহ—অতইতি। পক্ষ-ব্রেপিত্যাসন্দ নংক্রাসত্যাগশন্ধয়ারর্থভেদং কথয়তি—কাম্যানামিতি। তৎ কিমিদানীং সন্নাসত্যাগশন্ধয়োরর্থভেদং কথয়তি—কাম্যানামিতি। তৎ কিমিদানীং সন্নাসত্যাগশন্ধয়োরাত্যক্তিকং ভিয়ার্থত্বং তথা চ প্রসিদ্ধিবিরোধঃ ত্রাদিত্যাশন্ত্র অবান্তরভেদেহিশ নাত্যন্তিকভেদোহন্তীত্যাহ—যদীতি। পূত্রাভাবাদ্ বন্ধ্যায়াত্তর্যাগাযোগবৎ নিত্যনৈমিত্তিককর্ম্বণাম্ অফলানাং কলত্যাগাম্থাপ্রক্রেক্তন্ত্রাগশন্ধর্থে। ন নিধ্যতীতি শন্ধতে—নিম্বৃতি। নিত্যনৈমিত্তিককর্ম্মলত্ত্ব বন্ধ্যাপ্রসাদ্ভাভাবাৎ তত্ত্বাগসন্তবাহকন্ত্রাগশন্ধর্থঃ সম্ভবতীতি সমাধত্তে—নৈষ দোষ ইতি। ভগবতা তেরাং কলবন্ধমিষ্টমিত্যত্র বাক্যাধ্যমন্ত্রক্রিতি—ক্ষ্যক্রিতি—ক্ষ্যতিতি। তর্ধি সন্ধ্যাদিনামসন্ন্যাদিনাক্ষ নিত্যাত্যক্রম্বর্ধণং ক্রারার্থঃ। প্রসক্ত বচসোহর্থং প্রক্রতোপযোগিত্বেন সংগৃহ স্বারম্বতি—সম্বাদিনামিতি॥২

অকুবাদ। গীতাশাল্লের সেই সেই স্থলে সন্ন্যাস ও ত্যাগ এই ছইটি শব্দের
নির্দেশ করা হইরাছে—কিন্তু ঐ ছইটি শব্দের কি স্পষ্ট অর্থ, তাহা পূর্ব্ব অধ্যারসমূহে বলা হর নাই—এই কারণে অর্জ্জ্ন উক্ত প্রেল্ল করলে ভগবান্ তাহার
নির্ণর করিবার জন্ত বলিভেছেন বে—"কাম্য" অর্থাৎ অশ্বমেধাদি কাম্যকর্ম্মুসমূহের বে "প্রাস" পরিত্যাগ, তাহাই ''সন্ন্যাস'' সন্ন্যাস শক্ষের অর্থ, ইহা ''কবিগণ'—কোন কোন পণ্ডিতগণ ব্রিরা থাকেন; অর্থাৎ কামনা থাকিলে ধে

দকল কর্মা অমুঠের বলিয়া শাল্পবিহিত, সেই দকল কর্ম্মের পরিত্যাগই 'সন্ত্যাস' শব্দের অর্থ—[ইহা কবিগণ বৃথিয়া থাকেন] যে সকল নিত্য বা নৈমিত্তিক কর্ম অমুষ্টিত হইরা থাকে, তাহাদের বে ফল আপনার (অমুষ্ঠাতার) হইবার সম্ভাবনা আছে, সেই ফলের পরিত্যাগ (অর্থাৎ আকাজ্ঞা পরিত্যাগ) ভাহাই এই স্থলে 'সর্বকর্মাফলত্যাগ'; এই সর্বকর্মপরিত্যাগই ত্যাগ শব্দের অর্থ, তাহা "বিচক্ষণ" পণ্ডিতগণ বলিরা পাকেন। কাম্য কর্ম্মের পরিত্যাগই হউক অথবা কর্মকলের পরিত্যাগই বা হউক, সর্বাথা –সম্যাস ও 'ত্যাগ' শব্দের ত্যাগমাত্রই এক অর্থ। ঘট এবং পট এই ছুইটি শব্দের অর্থ বেমন পরম্পর ভিন্নজাতীয়. দেইরূপ ত্যাগ ও সন্ন্যা**ন শন্দের অর্থ পরম্পার ভিন্নজাতী**র অর্থাৎ হুই **প্রকার** বস্তু নহে। একণে শকা হইতে পারে ষে, নিত্য ও নৈমিত্তিক কর্ম্মসমূহের আফুষ্ঠান না করিলে প্রত্যবায়ই হয়] অনুষ্ঠান করিলে ত কোন ফল হয় না, তবে এই স্থানে কি প্রকারে বলা হইতেছে যে—তাহাদের ফলত্যাগই ত্যাগ শব্দের অর্থ] যেমন বন্ধ্যার পুত্রত্যাগ। এই প্রকার শন্ধারূপ দোষ এগানে হইতে পারে না. কারণ—নিত্যকর্মসমূহের অনুষ্ঠানেও যে ফল হইয়া থাকে, তাহা ভগবানের অভিপ্রেত: কারণ—তিনি নিজেই বলিবেন যে, 'কর্মমাত্রেরই ত্রিবিধ ফল—ইষ্ট चनिष्टं এবং मिन्न" "(यह कन मन्नामिशलत हम ना" हेजानि, এह अकात वहन-সমূহের দারা তিনি কেবল সন্ন্যাসিগণেরই ফলাভাব দেখাইতেছেন। তাহা দারা তিনি বুঝাইতেছেন যে—যাহারা অসন্ন্যাসী, তাহাদের ফললাভ হইন্না থাকে—"অত্যাগিগণের পরলোকে" ইত্যাদি শ্লোকে ইহাই দেখাইবেন ॥২

> ত্যাজ্যং দোষবদিত্যেকে কর্ম প্রান্থর্মনীষিণঃ। যজ্ঞদানতপঃ কর্মান ত্যাজ্যমিতি চাপরে॥৩

আর্য়। একে মনীবিণ:—কর্ম দোষবৎ ইতি ত্যাজ্যং প্রাভঃ। অপরে চ বজ্ঞদানতপঃ কর্ম ন ত্যাজম্ ইতি (প্রাভঃ) ॥৩

অকুবাদ। কতকগুলি মনীধী বলিয়া থাকেন যে—কর্মাত্রই সদোধ এই কারণে উহা পরিত্যাজ্য; আবার কেহ কেহ বলেন যে, যজ্ঞ, দান এবং তপ্রস্তারূপ কর্ম্ম পরিত্যাজ্য নহে ॥৩

ভাষ্য । ত্যাজাং দোষেতি। ত্যাজাং ত্যক্তব্যং দোষৰৎ দোৰঃ অভা-স্তীতি দোষৰৎ। কিং তৎ কৰ্ম, বন্ধহেতৃত্বাৎ সর্বমেব। অথবা দোষো ষ্থা

রাগাদিভাজাতে তথা ত্যাজানিত্যেকে প্রাহঃ মনীবিণ্যপঞ্জিতা সাংখ্যাদিদটিমাখিতা অধিক্লতানাং কর্মিণামপীতি। তত্ত্বৈব বজ্ঞদানতপঃ কর্ম ন ত্যাক্সমিতি চাপরে। কর্মিণঃ এবাধিকতান অপেক্ষা এতে বিকল্পা ন তু জ্ঞাননিষ্ঠান ব্যুপায়িনঃ সল্লাপিন নোহণেকা। "জ্ঞানযোগেন সাংখ্যানাং নিষ্ঠা ময়া পুরা প্রোক্তা" ইতি কর্মাধি-কারাৎ অপোদ্তা যে ন তান প্রতি চিন্তা। নহু "কর্মযোগেন যোগিনাম্" ইতাধিকতা: পূর্বং বিভক্তনিষ্ঠা অপীহ সর্বশাস্তার্থোপসংহার প্রকরণে বলা বিচার্য্যন্তে তথা সাঝ্যা অণি জ্ঞাননিষ্ঠা বিচাৰ্য্যস্তামিতি। ন. তেষাং মোহতঃধনিমিত্ততা। গামুপপতে:। ন কায়ক্রে ।নিসিত্তানি ছ:থানি * সাংখ্যা আত্মনি পশুন্তি, ইচ্ছাদীনাং ক্ষেত্রধর্মছেনৈব দশিতভাৎ। অতন্তে ন কায়ক্লেশচঃথভয়াৎ কর্ম্ম পরিতাজন্তি। নাপি তে কর্মাণি আত্মনি পশুন্তি। বেন নিয়তং কর্ম মোহাৎ পরিত্যক্ষেয়ু:। ঙ্খানাং কর্ম "নৈব কিঞ্চিৎ করোমি" ইতি তে সন্নাম্মন্তি। "সর্ক্ষকর্মাণি মনসা সংস্তৃত্রত ইত্যাদিভিহি তত্বনিঃ সন্ধাসপ্রকার উক্তঃ। তত্মাদ বেহতেহধিকতাঃ কর্মণি অনাত্মবিদঃ, যেযাং চ মোহাৎ ত্যাগঃ সম্ভবতি, কারক্রেশভরাচচ, ত এব ভামসান্ত্যাগিনো রাজ্যাশ্চেতি নিল্যন্তে, কর্মিণামনাত্মজানাং কর্ম্মকলত্যাগন্ত-ত্যর্থম। "সর্বারম্ভপরিত্যাগী" "মৌনী, সম্ভুষ্টো যেন কেনচিং। অনিকেতঃ স্থিরমতি:" ইতি গুণাতীতলক্ষণে চ প্রমার্থসন্ন্যাসিনো বিশেষিত **হাৎ। বক্ষ্যতি** চ "জ্ঞানত বা পরা নিষ্ঠা" ইতি। তত্মাজ জ্ঞাননিষ্ঠা: সন্ন্যাসিনো নেহ বিবক্ষিতা: কর্মফলত্যাগ এব সান্ধিকত্বেন গুণেন তামসন্বাগ্যপেক্ষা সন্ন্যাস উচ্যতে ন মুণাঃ সর্বকর্মসন্ন্যান:। সর্বকর্মসন্ন্যাসমন্তবাচ্চ । 'ন হি দেহভূতা' ইতি হেতৃবচনানুখ্য এবেতি চেৎ, ন, হেতৃবচনন্ত স্তুত্যর্থবাৎ। যথা 'ত্যাগাচ্ছান্তিরনস্তরম' ইতি কর্ম-ফলত্যাগস্ততিরেব, বণোক্তানেকপকার্ষ্ঠানাশজিমন্তমর্জুনমঞ্চ প্রতি বিধানাং'। তথেদমপি 'ন হি দেহভূতা শক্যম্' ইতি কর্মফলত্যাগস্কত্যর্থং বচনম। ন 'সর্ম-কর্মাণি মনসা সন্ন্যুক্ত নৈব কুর্বন ন কারয়ন্নান্তে' ইত্যুক্ত পক্ষপ্রাপরাদঃ কেন্টিৎ দর্শবিতং শকাঃ। তন্ত্রাৎ ক্রমণি অধিক্তান্ প্রতি এবৈষ সন্ত্যাগতিকরঃ। বে তু প্রমার্থদর্শিনঃ সাংখ্যান্তেষাং জ্ঞাননিষ্ঠারামেব সর্বাকশ্বসক্সাসলক্ষণারাম অধিকারো নামত্রেতি ন তে বিকরার্হা:। তথোপপাদিতম্ # সম্মাতি: "বেদা-বিনাশিনম্" ইত্যান্দ্ৰিন্ প্ৰদেশে তৃতীয়াদৌ চ ॥৩

কারক্রেশনিমিত্তং তুঃখমিতি কচিৎ পাঠঃ ।

[†] স্**র্বাকর্ণ্মসন্ন্যাসাগন্তবেচ ইতি** কচিৎ পাঠ: ।

[🙏] ७०० डें भभाषिकम् देखि ह कहिर।

আনন্দ্রিটিক। কাম্যানি বর্জারতা নিত্যনৈমিত্তিকানি ফলাভিলাব। দতে কর্ত্তব্যানীত্যক্তং পক্ষং প্রতিপক্ষনিরাদেন দ্রচ্যিতৃং বিপ্রতিপত্তিমাহ—ত্যাক্ত্য-মিতি। কর্মণঃ দর্বস্থ দোষবত্বে .হতুমাহ—বন্ধেতি। দোষবদিত্যেতভৃষ্ঠান্ত-ত্বেন ব্যাচষ্টে—অথাবৈতি। কর্মণ্যনধিক্ষতানামকর্মিণানেব কর্ম ত্যাজ্যং কর্মিণাং ভত্তাগে প্ৰভাবারাদিভ্যাশকাহ--অধিকৃতানামিতি। ন হি ভেষামণি কর্ম ত্যমতাং প্রত্যবায়ো হিংসাদিযুক্ত কর্মণোইমুষ্ঠানে পরং প্রত্যবায়াদিতি ভাব:। সান্ধ্যাদিপক্ষসমাপ্তাবিতিশবঃ। মীমাংসকপক্ষমাহ—তবৈত্তে । কর্মাধি-ক্লতেখেবেতি যাবং, কর্ম নিভ্যং নৈমিত্তিকঞ্চ। কাম্যানাং কর্মণামিত্যারভ্য শ্লোকাভ্যাং কর্ম্মিণোহকর্মিণোহধিক্বতাননধিক্বতাংশ্চাপেক্য দর্শিতবিক্রানাং প্রবৃত্তিরিত্যাশঙ্কাহ — কর্ম্মিণ ইতি। এবকারব্যবচ্ছেদ্যমাহ — নৃত্তিতি। তদেব স্ফুটয়তি—জ্ঞানেতি। কর্মাধিকতানাং জ্ঞাননিষ্ঠাতো বিভক্তনিষ্ঠাৰত্বেন পূর্ব্বো-: ক্তানামপি শান্তার্থোপসংহারে পুনর্ব্বিচার্য্যত্বক জ্ঞাননিষ্ঠানামপি বিচার্য্যত্বমঞ্জান বিক্লমতি শহুতে—নিম্বৃতি। সাঝাানাং প্রমার্থজ্ঞাননিষ্ঠানাং নাত্র বিচার্য্যতে-ভূাৰুরমাহ—ন তেষামিতি। নমু তেবামপি স্বাত্মনি ক্লেশহংথাদি পশুতাং ভদছরোধেন রাজগঁকর্মত্যাগদিদ্ধের্মিচার্যাখং নেত্যাহ- ন কায়েতি। তত্ত্ব কেত্রাধ্যায়োক্তং হেভূকরোতি—ইচ্ছাদীনামিতি। স্বাত্মনি সা**খ্যাদীনাং** ক্লেশান্ত প্ৰতিপত্তী ফলিতমাহ—অত ইতি। নহু ক্লেশান্তদৰ্শনেহপি স্বাস্থান কর্মাণি পশুতাং ভত্ত্যাগো যুক্ততেষাং কায়ক্লেশাদিকরতালেত্যাহ—নাপীতি। অজ্ঞানাং মোইমাহাত্ম্যাৎ নিয়তমপি কর্ম তাজুং শক্যংন তত্ত্বিদাং স্বাহ্মন কৰ্মাদৰ্শনে তত্ত্যাগে হেৰভাবাদিতি মন্বাহ—মোহাদিতি। কথং তৰ্হি তেৰা-মার্ম্মনি কর্মাণ্যপশ্রতাং প্রাপ্তাভাবে তত্ত্যাগঃ সন্ন্যাসন্তত্ত্বাহ—গুণানামিতি। অবিবেক প্রাপ্তানাৎ কর্ম্মণাং ত্যাগন্তত্ববিদানিত্যুক্তং স্মারয়ন্ত্রপ্রপ্রতিষেধং প্রভ্যাদি-শতি - সূৰ্ব্বেতি। তত্ত্বিদামত্ৰাবিচাৰ্য্যত্তে ফলিতমাহ—তত্ম্মাদিতি। বেনা-স্থবিদক্ত এবেত্যুক্তঃত্র সম্বন্ধঃ। কর্ম্মণ্যধিক্ষতানামনাত্মবিদাং কর্মজ্যাগসম্ভাবনাং 'দৰ্ণনতি—যেষাঞ্চেতি। তনিন্দা কুত্ৰোপযুক্তেত্যাশব্যাহ—কৰ্ম্মিণামিতি! কিঞ্চ পরমার্থসন্ন্যাসিনাং প্রশক্তবোপশন্তান নিন্দাবিষয়ত্বমিত্যাহ—সুঠেতি 1 কিঞ্চাত্রাপি সিদ্ধিং প্রাপ্তো যথেত্যাদিনা জ্ঞাননিষ্ঠায়া বক্ষামাণড়াৎ তদ্বতাং নেই বিচার্যাতেত্যাই—বক্ষাতীতি। কর্মাধিকৃতানামেবাত্র বিবক্ষিতত্ত্বং ন জ্ঞান-নিষ্ঠানামিত্যপদংহরতি—তুন্মাদিতি। নহু সন্ন্যাদশব্দেন দর্ককর্মনন্তাদ্ভ গ্রাহ্মবাৎ তথাবিধসম্যাদিনামিং বিবন্ধিতমং প্রতিভাতি তত্তাং—কর্ম্মেতি।

সন্ত্যাসশব্দেন মৃথ্যকৈব সন্ত্যাসভ গ্রহণং গৌণম্থ্যয়োর্দ্ম থেয় কার্যসংপ্রভারাদশ্রথা ভদসন্তবে হেতৃক্তিবৈর্ধ্যাৎ অপ্রাপ্তপ্রতিবেধাদিতি শঙ্কতে—সুর্ব্বৈতি। নেদং হেতৃবচনং সর্ক্রকর্মন্নাসাসন্তবসাধকং কর্মফলত্যাগন্ততিপরন্ধাদিতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। এতদেব দৃষ্টান্তেন স্পইরতি—যথেতি। দৃষ্টান্তেহপি বথাক্রণগর্ভিং কিং ন ভাদিত্যাশন্ত্যাহ—য্থোক্রেক্তি। ন হি ফলত্যাগাদেব জ্ঞানং নিনা মৃত্তির্ধুকা মৃক্তেপ্তানি কাধীনন্ধসাধকশ্রতিশ্বতিবিরোধাৎ অন্নেষ্টেত্যাদিনা চানম্ভরমেব জ্ঞানগাধনবিধানানর্থক্যাৎ অভন্ত্যাগন্ততিরেবাত্র গ্রাহেত্যর্থঃ। দৃষ্টান্তব্যবহ কিং ন ভাদিত্যাশক্ষ্য তদপবাদে হেতৃত্যাদিনা চানম্ভরমেব কিং ন ভাদিত্যাশক্ষ্য তদপবাদে হেতৃত্যানি মৃথ্যার্থব্যেব কিং ন ভাদিত্যাশক্ষ্য তদপবাদে হেতৃত্যানি মিত্যাহ—ন স্ব্রেতি। ন চ ইর্মেব হেতৃক্তিন্তদপবাদিকান্তপাসিদ্দেককণ্ডাদিতিভাবঃ। মুথ্যস্ব্যাসাপবাদাসন্তবে সন্ন্যাসত্যাগবিকরশ্ব কণং সাবকাশতা ইত্যাশক্ষাহ—তত্মাদিতি। জ্ঞাননিষ্ঠান্ প্রত্যক্তবিকরাহপপন্ত্যা কৃত্র তেষামধিকারম্ভত্তাহ—তত্মাদিতি। স্ব্যাসিনাং বিকল্পানর্থনে জ্ঞাননিষ্ঠায়নেবাধিকার্য ভূয়ঃম্ব প্রদেশের্দ্ সাধিতধার সাধনীরম্বাপেক্ষেত্যাহ—তথেতি ॥০

অনুবাদ। ত্যালাং দোষেতাদি [স্লোকের অর্থ]। "তাগে" তাক্তব্য "দোষবৎ" দোষ যাহার আছে, তাহা 'দোষবৎ'। [কর্ম যেহেতু দোষবং!] এইজ্ঞ কর্ম পরিত্যাজ্য; অর্থাৎ বন্ধের কারণ বলিয়া সকল কর্মই পরিত্যাজ্য অথবা রাগ ও ছেবাদি দোষ যেরূপ পরিত্যাগ করা উচিত, দেইরূপ কর্ম্ম স্কল্ভ পরিতাগ করা উচিত, ইহা কোন কোন পণ্ডিত বলিয়া গাকেন। এই সকল পণ্ডিত সাংখ্যদৃষ্টিকে আশ্রয় করিয়া থাকেন; ই হাদের মতে অধিকারিগণের পকেও কর্মমাত্র পরিত্যালা। এইস্থলে অপর পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন যে. ষজ্ঞ. দান এবং তপস্থা-রূপ যে সকল কর্ম, সেগুলি পরিত্যাজ্য নহে ৷ [এক্ষণে দ্রষ্টব্য এই যে] অধিক্কত কর্মিগণকে লক্ষ্য করিয়াই এইপ্রকার মতভেদসমূহ দশিত হইয়াছে। বাঁহারা জ্ঞান ছারা সংসারপথ হইতে ব্যুখিত অর্থাৎ সন্ন্যাসী হইশ্বাছেন, তাঁহাদিগকে লক্ষ্য করিয়া এই সকল বিকল্প হইতে পারে না; কারণ, "জ্ঞানযোগেন সাংখ্যানাম্" ইত্যাদি শ্লোকের দারা—তাঁহাদের কর্দ্মসংস্থাস প্রদর্শিত হইমাছে। স্থতরাং তাঁহাদিগকে অপেকা করিমা এই চিন্তা হইতে পারে না। একণে এইরপ শঙ্কা হইতে পারে যে, "কর্মবোগেন যোগিনাম" এই . স্নোকের বারা কর্মিগণের নিষ্ঠা পৃথক্ প্রতিপাদিত হইলেও, আবার এইস্থানে সকল শাস্ত্রার্থের উপসংহার-প্রসঙ্গে বেমন নির্দেশ করা হইতেছে, সেইরূপ সাংখ্য-

বুদ্ধিনিষ্ঠ জ্ঞানিগণেরও বিষয়ে পুনর্জার বিচার করা হউক—এই প্রকার কয়না ক্রিলেই বা ক্ষতি কি ? এই প্রকার শঙ্কা ঠিক নহে; কারণ-কারক্লেশ নিমিস্ক. (व कृ:थ, তাহা জ্ঞানিগণ কখনই আত্মার ধর্ম বলিয়া দেখেন না; কারণ, ইছে। বেষ প্রভৃতি ধর্ম দেহেরই, আত্মার নহে-ইহা পূর্বে প্রদর্শিত হইয়াছে। স্থতরাং তাঁহারা ক্লেশভরে বে [ছ:থজনক] কর্মকে পরিত্যাগ করিবেন, তাহা সম্ভবপর নহে। আরও এক কথা এই যে, তাঁথারা কর্মের সহিত আত্মার কোন সম্বরুই দেখিতে পান না যে কারণ মোহবশতঃ তাঁহারা নিয়ত কর্ম্ম পরিত্যাগ করিতে উম্বত হইবেন। কর্ম গুণসমূহেরই ধর্ম [আত্মার ধর্ম নহে]। স্ক্তরাং আমি কিছুই করি না এই প্রকার বৃদ্ধিতেই তাঁহারা কর্মসন্ন্যাস করিয়া থাকেন। "মনের দারা দর্ব কর্মের সন্ন্যাদ'' ইত্যাদি বাক্যের দারা তম্ববিদ্গণের সন্ন্যাস कि ध्वकात. जाहा नना इदेशाहा । त्महे कान्नत्व याहाता खानी नत्ह, याहात्मन কমেই অধিকার আছে, কাহারা অনাত্মজ্ঞ এবং বাহাদের পক্ষে মোহবশতঃ বা কায়ক্লেশভয়ে কর্মা পরিত্যাগ সম্ভবপর সেই সকল তামস এবং রাজস ত্যাগিগণই এই স্থানে, নিন্দিত হইতেছে। এই প্রকার নিন্দার দ্বারা মনাত্মজ্ঞ কর্মিগণের কর্মফলত্যাগেরই স্তুতি করা হইতেছে। "স্ব্রারম্ভপরিত্যাগী, মৌনী, স্কল প্রকারেই সম্বষ্ট, অনিকেত ও স্থিরমতি" ইত্যাদি শব্দের দারা যে গুণাতীতের লক্ষণ প্রদার্শত হইয়াছে, তাহাতেই প্রমার্থসন্ত্র্যাসীর প্রকৃত অবস্থা বর্ণিত হইয়াছে। এই অধ্যায়েও ভগবান বলিবেন যে—"জ্ঞানের যাহা পরম নিষ্ঠা" ইত্যাদি। এই কারণে বাহারা জ্ঞাননিষ্ঠ সন্ন্যাসী--তাহাদের বিষয়ে এই স্লোকে কিছুই বলা হইতেছে না। কর্মফলত্যাগ একটি দাবিক গুণ। এই কারণে ভামদ বা রাজদ ত্যাগ অপেকা--উহা প্রশস্ত বলিয়া সংস্থাস শব্দের মারা অভিহিত হইতেছে, বাস্তক পকে ইহা মুখ্য সর্বাকশ্বসন্ধাস হইতে পারে না। একণে এই थकांत मका श्रेटिक भारत (य, "(मरी कथनरे [मर्स्यकांत कर्त्यंत मन्नाम] করিয়া থাকিতে পারে না" এই প্রকার বচনের দারা সর্বকর্মসন্ন্যাস ্বে অসম্ভব, তাহা দেখাইয়াছেন। তাহা হইলে ইহাই সিদ্ধ হইতেছে एय—मर्क्कक्षं विद्यान र्वारङ्क व्यमञ्चन, এই कांत्रण छेरा मन्नाम मरम्ब মুখ্য অর্থ নহে : কিন্তু কর্মফল পরিত্যাগই সন্ন্যাস শব্দের মুখ্য অর্থ ৷ এই প্রকার महा अ किंक नरह : कात्रन-वि रेय स्कृतिक हैशे खेळार्थ [वर्थाए तिशे नर्सकर्य পরিত্যাগ করিয়া পাকিতে পারে না বলিয়া সর্বকর্মসন্ত্যাস অসম্ভব-এই প্রকার হেতু নির্দেশ দারা প্রকারান্তরে সর্বকর্মসন্ন্যাস প্রশংসিত হইরাছে চ উহা বে

একেবারে হইতেই প্রের না, তাহা বলা হয় নাই।] বেমন "ত্যাগের পরই শান্তিলাভ হয়" ইত্যাদি বচনের যারা [কর্মফল] ত্যাগের স্থতিমাত্র করা হইয়াছে; কারণ, ঐত্যাগ অর্জুনের পক্ষে বিহিত; কারণ, অর্জুন অজ ; স্থতরাং ঐ ত্যাগ ব্যতিরিক্ত অন্তান্ত প্রধান কল্পের অমুষ্ঠানে অসমর্থ। সেইরূপ এই স্থানেও দেহী কর্ম্ম পরিত্যাগ করিয়া থাকিতে পারে না—এই প্রকার উক্তি দারা কর্মফল ত্যাগের প্রকারান্তরে শুতিই করা হইয়াছে [ইহা ব্রিয়া লইতে হইবে]। "সকল কর্মকে মনের দারা পরিত্যাগ করিয়া" নিজে কিছু না করিয়া বা কাহারও ছারা কিছু না করাইয়া"--ইত্যাদি বচনের ছারা জ্ঞানীর পক্ষে যে দর্বাকর্ম-সন্যাসরূপ মুখ্য সন্থান প্রদর্শিত হইরাছে, কেহই যুক্তিছারা তাহার **অপ**বাদ করিতে পারেন না। সেই কারণে যাহারা কর্মে অধিকৃত এবং অনাত্মতত্মজ্ঞ, ভাহাদিগের জন্মই এই ত্যাগ এবং সন্ন্যাদের বিকল্প প্রদর্শিত হইয়াছে! বাঁহারা পরমার্থদর্শী সাংখ্য, তাঁহাদের সর্বাকর্ম সন্ত্র্যাসরূপ কাননিষ্ঠাতেই অধিকার, অভ্য কোন প্রকার কর্ম্মে তাঁহাদের অধিকার নাই। স্থতরাং তাঁহাদের পক্ষে এই প্রকার বিকল্প সম্ভবপর নহে। "বেদাবিনাশিনম্" ইত্যাদি শ্লোকের ব্যাখ্যা-প্রসঙ্গে এবং তৃতীয়াধ্যায়ের আদিতে এই বিষয়টি আমরা প্রতিপাদন করিয়া আসিয়াছি ।৩

> নিশ্চয়ং শৃণু মে তত্ত্র ত্যাগে ভরতসত্তম। ত্যাগো হি পুরুষব্যাত্র ত্রিবিধঃ সংপ্রকীর্ত্তিতঃ ॥৪

আন্বয়। হে ভরতসত্তম! তত্র ত্যাগে মে নিশ্চয়ং শূণু, হে পুরুষব্যাদ্র! ত্যাগঃ হি ত্রিবিধঃ সংপ্রকীর্তিতঃ ॥৪

অনুবাদ। হে ভরতসত্তম, সেই ত্যাগ বিষয়ে আমার কি নিশ্চর (সিদ্ধান্ত), তাহা আমার নিকটে শ্রবণ কর। হে পুরুষশ্রেষ্ঠ, ত্যাগ তিন' প্রকার, ইহা [শাস্ত্রে] পরিকীর্ত্তিত হইরাছে ॥৪

ভাষ্য। তত্ত্ব এতেবু বিকল্পভেদেবু—নিশ্চরং শৃণু অবধারর মে মম বচনাৎ তত্ত্ব ত্যাগে ত্যাগসন্ন্যাসবিকল্পে যথা দর্শিতে, ভরতসত্তম ভরতানাং সাধুতম ! ত্যাগো হি ত্যাগসন্ধ্যাসশব্দাচ্যো হি –যোহর্থঃ স এক এবেত্যভিপ্রেত্য আহ ত্যাগো হীতি। পুরুষব্যাঘ্ন ! ত্তিবিধঃ ত্রিপ্রকারঃ তামসাদিপ্রকারৈঃ সংপ্রকীর্তিতঃ শাল্তেবু সম্যক্ কথিতঃ। যন্মাৎ তামসাদিভেদেন ত্যাগসন্ধ্যাস-শন্ধাচ্যঃ ক্রের্থঃ অধিকৃতক্ত ক্রিণঃ অনাত্মক্তত্ত ত্রিবিধঃ সম্ভব্তি ন প্রমার্থদর্শিন

ইত্যুয়মর্থ: ছক্তান: তত্মাদত্র তত্ত্বং নাস্তো বক্তাং সমর্থ:। তত্মাৎ নিশ্চয়ং পরমার্থ-শাস্তার্থবিষয়ম্ অধ্যবসায়মেশ্বরং শৃণু ॥৪

আনন্দ্গিরিটীকা। কর্দাধিকতান্ প্রত্যেবাক্তবিকরপ্রবৃত্তাবিপ কুতো নির্দারণসিদ্ধিস্ততাহ—তত্ত্রেতি। তমেব নিশ্চরং দর্শনিত্নাদৌ ত্যাগগতন্ত্র্ অবাস্তরবিভাগমাহ—ত্যাগো হীতি। নমু ত্যাগসন্মাসন্মোকভন্নোরপি প্রকৃত্ত্বাবিশেবে ত্যাগস্তৈব অবাস্তরবিভাগাভিধানে সন্মাসক্ত উপেক্ষিত্ত্বমাপত্তেত নেত্যাহ—ত্যাগতি। সান্ধিকো রাজসন্তামসন্চ ইত্যুক্তেহর্থে ত্রৈবিধ্যেহপি বন্ধমেব নিশ্চনামন্তবাৎ কিমত্র ভাগবতেন নিশ্চরেন ইত্যাশক্ষাহ—যুম্মাদিতি। ভগবতোহক্ত উক্কবিভাগে তত্তানিশ্চনাৎ ভাগবতনিশ্চরক্ত শ্রোতব্যতেতি নিগমরতি—তন্মাদিতি॥৪

অনুবাদ। দেই প্রদক্ষে—বে ত্রিবিধ বিকল্প-বিশেষ [প্রদর্শিত হইরাছে] তাহাদের মধ্যে [কি নিশ্চন্ন, তাহা] আমার নিকট হইতে শুন অর্থাৎ অবধারণ কর। ত্যাগ এবং সন্ন্যাস এই হুইটি শ্বের যে অর্থ, তাহা অর্থাৎ বাহা পুর্বের্মিলিত হইরাছে, সেই ত্যাগ ও সন্ন্যাস শব্দের অর্থ বন্ধতঃ একই, ইহা মনে করিরা বলিতেছেন বে, হে প্রক্ষব্যাত্ম ! হে ভরতবংশীরগণের মধ্যে সাধুপ্রেষ্ঠ ! তামসাদি প্রকার ভেদে সেই ত্যাগ এক হইলেও, শাস্ত্রসমূহে ত্রিবিধ বলিরা কীর্ত্তিত হইরাছে। বে ব্যক্তি কর্ম্মে অধিকৃত এবং অনাত্মজ্ঞ, তাহার পর্কেই সেই ত্যাগ ত্রিবিধ বটে, কিন্তু পরমার্থদশীর পক্ষে সেই ত্যাগ একই রূপ; স্কতরাং এই ত্যাগতত্ব হজ্জের। অন্ত কেহ এই তত্ব বলিতে পারে না; অতএব—পরমার্থশাস্ত্রার্থ-বিবর্মক ঐশ্বরিক নিশ্চন্ন, [আমার নিকট] প্রবণ কর ॥৪

যজ্ঞো দানং তপঃ কর্ম্ম * ন ত্যাজ্যং কার্য্যমেব তৎ। যজ্ঞো দানং তপশ্চেব পাবনানি মনীধিণাম্॥৫

আনুষ্য। যজ্ঞা দানং তপঃ—[ইতি ত্রিবিধং] কর্ম্ম ন ত্যাজ্ঞাং তৎ কার্য্যনের। মনীবিগাং যক্ষা দানং তপঃ চ [ইত্যেতানি কর্মাণি] পাবনানি ॥৫

অফুবাদ। যজ্ঞ দান এবং তপতারূপ ত্রিবিধ কর্ম পরিত্যাব্দ্য নহে, কিছ কর্ত্তব্য: কারণ, এই ত্রিবিধ কর্ম মনীবিগণের পবিত্ততার প্রতি হেতু॥

ভাষ্য ৷ ক: প্নরসৌ নিশ্চর ইত্যত আহু—যজ্ঞো দানং তপ ইত্যেতৎ ত্রিবিধং কর্ম ন ত্যাজ্ঞাং ন ত্যক্তব্যং কার্যাং করণীয়মেব তং ৷ কন্মাং ? যজ্ঞো

[🛊] যক্তদানতপঃ ৰূপ ইতি বা পাঠঃ।

দানং তপকৈৰ পাবনানি বিশুদ্ধিকারণানি মনীবিণাং ফলানভিসন্ধীনা-মিত্যেতং ue

আনন্দগিরিটীকা। তমেব ভগবতো নিশ্চয়ং বিশেষতো নির্দারিরতং অন্নপূর্বকমনস্তরশ্লোকপ্রবৃতিং দর্শয়তি—কঃ পুনরিতি। বজ্ঞাদীনাং কর্ত্ববৃত্বে হেতুমাহ—যুক্ত ইতি। ন কেবলম্ অত্যাজ্ঞাং কিন্তু কর্ত্ববৃষ্ ইত্যাহ—কার্য্য-মিতি। প্রতিজ্ঞাতমেবং বিভজ্ঞা হেতুং বিভজ্ঞতে – কম্মাদিতি॥৫

আকুবাদ। বজ্ঞ দান এবং তপস্তা এই ত্রিবিধ কর্ম ত্যাক্স্য নহে অর্থাৎ ত্যক্তব্য নহে; কিন্তু "কার্য্য" অবশুকর্ত্তব্য। কেন?—[বেহেচু] বাঁহারা মনীষী অর্থাৎ বাঁহাদের কর্মফলে স্পৃহা নাই, তাঁহাদের এই বজ্ঞ দান এবং তপস্তারূপ ত্রিবিধ কর্ম্ম—"পাবন" চিত্তক্ত দ্ধিকর ॥৫

এতাশ্যপি তু কর্মাণি সঙ্গং ত্যক্ত্বা ফলানি চ। কর্ত্তব্যানীতি মে পার্থ নিশ্চিতং মতমুভ্রমম্ ॥৬

আহ্মা। অপি তুহে পার্থ! সঙ্গং ফলানি চ ত্যক্ত্ব। এতানি কর্মাণি কর্ত্তব্যানি ইতি মে উত্তমং নিশ্চিতং মতম্ ॥৬

ভাসুবাদ। হে পার্থ! আসঙ্গ এবং ফলসমূহ পরিত্যাগপুর্বক এই তিবিধ কর্ম্ম করাই উচিত; ইহাই আমার নিশ্চিত এবং উত্তম মত ॥৬

ভাষ্য । এতান্তপীতি। এতান্তপি তু কর্মাণি যজ্ঞদানতপাংসি পাধনানি উক্তানি, সন্নমাসন্তিং তেমু ত্যক্ত্বা ফলানি চ তেষাং ত্যক্ত্বা পরিত্যন্য কর্ত্বব্যানীতি অমুঠেয়ানীতি মে মম নিশ্চিতং মতমুত্তমম্। "নিশ্চমং শৃণু মে তত্ত্ব" ইতি প্রতিজ্ঞার পাবনত্বং চ হেতুমুক্তা এতান্তপি কর্মাণি কর্ত্বব্যানীত্যেত-রিশ্চিতং মতমুত্তমমিতি প্রতিজ্ঞাতার্থোপসংহার এব, নাপুর্বার্থং বচনমেতান্থপীতি প্রক্রতসন্তিরক্তীর্থতোপপত্তেঃ। সাসঙ্গত্ত ফলার্থিনো বন্ধহেতব এতানি অপি কর্মাণি মুম্কোঃ কর্ত্বব্যানি ইত্যপ্রিশক্তার্থং ন ত্বত্যানি কর্মাণি অপেক্ষ্য এতান্ত-পীত্যুচ্যতে। অস্তে বর্ণরন্তি নিত্যানাং কর্ম্বণাং ফলাভাবাৎ "সঙ্গং তাক্তা ফলানি চ" ইতি নোপপত্ততে। এতান্তপীতি যানি কাম্যানি কর্মাণি নিত্যেত্যঃ অন্তানি এতান্তপি কর্ত্ববানি কিমুত বজ্ঞদানতপাংসি নিত্যানি ইতি। তদসং। নিত্যানামপি কর্ম্বণাং ফলবন্ধভোপপাদিত্বাৎ। "যজ্ঞো দানং তপল্টেব পাবনানি" ইত্যাদিবচনেন নিত্যান্তপি কর্মাণি বন্ধহেতুদাশক্ত্রা জিহাসোমুম্কোঃ কৃত্তঃ কাম্যের প্রসন্ধঃ প্রপ্রেণ হ্বরং কর্ম্ব" ইতি চ নিশ্বিত্বাং। "ব্জার্থাৎ

কর্মণোহন্তর" ইতি চ কাম্যকর্মণাং বন্ধহেতৃত্বস্ত নিশ্চিতত্বাৎ। "বৈশুণ্যবিষর! বেদাঃ" "বৈবিভা মাং সোমপাঃ" "কীণে পুণ্যে মর্দ্তালোকং বিশক্তি" ইতি চ দ্র-ব্যবহিতত্বাচ্চ ন কাম্যেয় এতান্তপীতি ব্যপদেশঃ ॥৬

আনন্দণিরিটীকা। প্রতিজ্ঞাতমর্থমুপসংহরতি—এতান্যুপীতি। উপসংহারশ্লোকালরাণি ব্যাকরোতি—এতানীত্যাদিনা। জ্ঞলরার্থমুকা তাৎপর্যার্থমাহ—নিশ্চয়মিতি। প্রকৃতার্থোপসংহারে গমকমাহ—এতান্যুপীতি।
অপিশবস বিবক্ষিতমর্থং দর্শয়তি—সাসঙ্গস্যেতি। ব্যাবর্ত্তাং কীর্ত্তরতি—
ন জ্বিতি। এতান্তুপীত্যাদিবাক্যং ন নিত্যকর্মবিষয়মিতি মতমুপক্সমুতি – অন্যুইতি। ন চেদিদং নিত্যকর্মবিষয়ং কিং বিষয়ং তর্হি
। ইত্যাশব্য বাক্যমবভার্য্য
ব্যাকরোতি—এতানীত্যাদিনা। নিত্যানামকলত্বমুপেত্য বচ্চোল্ডং তদমুক্তমিতি
দ্বয়তি—তদসদিতি। বত্রু কাম্যান্ত্রপি কর্ত্বব্যানীতি তল্লিরক্সতি—নিত্যান্ত্যপীতি। কিঞ্চ কাম্যানাং ভগবতা নিক্ষিত্বাল্ল তের্ মুমুক্ষোরম্ভানমিত্যাহ
—দূরেণেতি। কিঞ্চ মুমুক্ষোরপেক্ষিতমোক্ষাপেক্ষয়া বিক্ষমকলবন্থাৎ কাম্যকর্মণাং ন তেরু তল্তামন্ত্রীনমিত্যাহ—যুক্তার্থাদিতি। কাম্যানাং বন্ধহেতুব্বং
নিশ্চিতমিত্যকৈর পূর্বোত্তরবাক্যান্তক্ল্যং দর্শরতি—ত্ত্তিগ্রেতি। কিঞ্চ পূর্বলোকে বজ্ঞাদিনিত্যকর্মণাং প্রকৃত্তরাদেতচ্ছক্ষেন সন্ধিহিতবাচিনা পরামর্শাৎ কাম্যকর্মণাঞ্চ কর্মণাঞ্চ কর্মানাং কর্ম্মণান্ত্র ব্যবহিত্যনাং সন্ধিহিতবামন্ত্রক্ষান্তিতচ্চক্ষান্বির্মীত্বাৎ কাম্যকর্ম্যাণ্যেতান্ত্রপীতি ব্যপদেশমইন্ত্রীত্যাহ—দূরেতি॥৬

অমুবাদ। এতান্তপি ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ—এই ত্রিবিধ বস্ত্রা, দান ও তপ্রসারপ কর্মসমূহ পাবন বলিয়া উক্ত হইয়াছে; সেই ত্রিবিধ কর্ম্মসমূহে "সঙ্গু আসজি পরিত্যাগ করিয়া, এবং সেই ত্রিবিধকর্মের ফলনিচয়কেও পরিত্যাগ করিয়া ঐ ত্রিবিধ কর্ম্ম "কর্ত্তবা" অমুর্ছের, ইহাই আমার নিশ্চিত এবং উক্তম মত। "সেই বিষয়ে নিশ্চিত শুন" এই প্রকার পাভিজ্ঞা করিয়া, পাবনম্বই কর্মায়ের বিষয়। শেষে বলা হইয়াছে—"ইহাই আমার নিশ্চিত এবং উক্তম মত" ইহা দারা ব্রিতে হইবে যে, ভগবান্ প্রভিজ্ঞাত অর্থের উপসংহারই করিতেছেন, অন্ত কোন প্রকার যে নৃতন অর্থের অবতারণা করিতেছেন, তাল্লা নহে। কারণ, এই কর্ম্ম সকল—এই প্রকার নির্দেশ করিয়ে, নিকটে বাহা বলা হইয়াছে তাহাই ব্রান হয়, এই প্রকার কল্পনাই স্থান্ধত। যাহার কর্মের আগতি আছে, য়ে ব্যক্তি কর্ম্মকতে। যাহার কর্মের আগতি আছে, য়ে ব্যক্তি কর্ম্মকতে স্পৃহাবান, তাহার পর্কের বন্ধের

कांत्र रहेरा ७, पूर्कृत ७ এই मकन कर्य कर्डवा--- हेरा है जिनिक्षित बाता रहिज হইতেছে। অন্ত কোন প্রকার কর্মকে অপেক্ষা করিয়া যে "এতানি" [এই সকল] "অপি" [ও] এই তুইটি শব্পপ্রযুক্ত হইয়াছে, তাহা নতে। এই স্থলে কেই কেই এই প্রকার বর্ণন করিয়া থাকেন যে, নিতাকর্মসমূহের কোন ফল নাই, [নিত্যকর্ম] না করিলে প্রত্যবায় হয়, বিস্ক করিলে কোন [ম্বর্গাদি] ফল হয় না। স্থতরাং নিভ্যকর্মসমূহকে অপেকা করিয়া, "ফলপরিভাগপূর্বক" এই প্রকার অর্থ সঙ্গত হয় না। স্থতরাং "এতান্তপি" এই শব্দের দারা স্থচিত হইতেচে বে, যথন এই সকল কাম্য কর্মাও করিতে হইবে, তথন যঞ্জ, দান ও তপোরপ নিত্যকর্মসমূহও যে করিতেই হইবে, সে বিষয়ে আর অধিক করিয়া কি বক্তব্য হইতে পারে ? এই প্রকার বর্ণনও ঠিক নহে ; কারণ, নিত্যকর্ম-সমূহেরও ফল আছে, তাহা পূর্ব্বেই উপপাদিত হইয়াছে। यळ, দান এবং তপঃ এই ত্রিবিধ কর্ম্মই পাবন, এই কথার ধারা স্থচিত হইতেছে যে, বন্ধের হেতু বলিয়া যে মুমুকুব্যক্তি, নিত্যকর্মসমূহকে পরিত্যাগ করিতে চাহেন, তাঁহার পক্ষে কাম্য-কর্মের প্রসঙ্গ কি প্রকারে হইডে পারে ? কারণ "দূরেণ হুবরং কর্মা" (কর্ম **অভিশয় জ্বস্তু) ই**ত্যাদি বাকে।র দারা কাম্য কর্শ্বের নিন্দা করা হইয়াছে। "ষজার্থাৎ কর্মণোহস্তত্ত" (পরমেশ্বরের প্রীতির জন্ম বে কর্ম অনুষ্ঠিত না হয়, তাহাতেই লোক বন্ধ হইয়া পাকে) ইত্যাদি বচনের দ্বারা কাম্যকর্মসফল যে বন্ধেব কারণ, তাহাও নিশ্চিত হইরাছে। "ত্রৈ গুণাবিষয়া বেদাঃ" (বেদমমূহের বিষয় ত্রৈ গুণা মর্থাৎ সংসার) ''ত্রৈবিজ্ঞা মাং দোমপাঃ'' (সোমপায়ী ত্রিবেদবিদ্যাণ আমাকে উপাসনা করিয়া ইত্যাদি) ''কীণে পুণ্যে মর্ত্তালোকং বিশস্তি" (পুণ্যক্ষ হইলে তাহারা আবার মর্ত্তালোকে প্রবেশ করিয়া থাকে) ইত্যাদি বছতর বাক্যের দ্বারা কাম্য কর্ম্ম সকল সন্ন্যাসী আত্মজ্ঞ হইতে বহুদূর প্রক্রিপ্ত হইয়াছে বলিয়া, এইস্থলে "এতান্তপি" এই বচন দারা যে কাম্যকর্ম প্রতিপাদিত হইতেছে, हेहा कथनहै वना यात्र ना ॥७

> নিয়তস্থ তু সন্ধ্যাসঃ কর্মণো নোপপদ্মতে। মোহাৎ তম্থ পরিত্যাগস্তামসঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥৭

অন্বয় । নিরতন্ত (নিত্যন্ত) কর্মণ: সন্ন্যাস: ন উপপদ্ধতে । মোহাৎ তক্ত পরিত্যাগ: তামস: পরিকীর্তিতঃ ॥৭ আকুবাদ। নিত্য কর্ম্মের সন্ন্যাস্ উপপন্ন হইতে পান্নে না। মোহবশে নিত্যকর্মপরিত্যাগ, তামস-সন্ন্যাস বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া গাকে॥৭

ভাষ্য। তথাদজভাধিকতভ মুম্কোং, নিয়তভ তু নিত্যভ, সন্মাসঃ প্রিভাগঃ, কর্মণো নোপপভতে অজভ পাবনম্বভ ইট্ডাং। মোহাং অজ্ঞানাং ভভ নিয়তভ প্রিভাগাঃ। নিয়তং চাবভাং কর্ত্তব্যং তাজ্যতে চেত্তি বিপ্রতিষিদ্ধ ; অভো মোহনিমিতঃ পরিভাগাঃ তামসঃ পরিকীর্ত্তিতঃ মোহন্চ তম ইতি ॥?

অধিনন্দ গিরিটীক। । নিত্যকর্মণামবশুকর্তব্যথমুক্তমুপজীব্যাপেক্ষিতং পূরমন্ অনন্তরশ্লোকমবতারমতি—তুম্মাদিতি । নম্ কশ্চিরিয়তমপি কর্ম ত্যজন্ধুপলভ্যতে তত্তাহ—মোহাদিতি । অজ্ঞানং পাবনত্বাপি জ্ঞানন্ অজ্ঞান নিত্যকর্মনভ্যাগো মোহাদিত্যেতত্বপপাদয়তি—নিয়ত্তক্তে । নিত্যকর্মত্যাগশু মোহকৃতত্ত্বে কৃতস্তামসত্মিত্যাশক্যাহ—মোহক্তেতি ॥ ৭

অনুবাদ। সেই কারণে যে ব্যক্তি মুমুক্ক্ অণচ অনাত্মপ্ত, সেই ব্যক্তি নিত্য কর্মে অধিকারী — তাগার পক্ষে "নিয়ত" নিত্যকর্মের "সন্ন্যাস" পরিত্যাগ যুক্তিন্তিক নহে; কারণ, অক্তের নিত্যকর্মের অমুষ্ঠান দ্বারা চিত্তগুদ্ধির একান্ত আহি । "মোহ" অজ্ঞানবশতঃ সেই নিয়ত কর্মের যে পরিত্যাগ তাহা তামস]। নিত্যকর্ম অবশ্য কর্ত্তব্য; যাহা অবশ্য কর্ত্তব্য, তাহার আবার ত্যাগ [জানিয়া শুনিয়া] কিরপে করিতে পারা যায় ? স্ক্তরাং নিত্যকর্মের পরিত্যাগ এইরপ কগন পরস্পর-বিরুদ্ধ হইয়া পড়িতেছে, এই প্রকার শক্ষা নিরাস করিবার জন্মই বলিতেছেন যে, এই পরিত্যাগ ভামস অর্থাৎ অজ্ঞানকত; কারণ, "মোহ" অজ্ঞান ও তমঃ একই বস্তু ॥৭

ত্বংখমিত্যের যৎ কর্ম্ম কায়ক্লেশভয়াৎ ত্যজেৎ। স কৃত্বা রাজসং ত্যাগং নৈব ত্যাগফলং লভে্ৎ ॥৮

আনুয়। হ:ধম্ ইত্যেব কায়ক্লেশভরাৎ ষৎ কর্মা ত্যজেৎ স রাজসং ত্যাগং কৃষা ত্যাগফলং নৈব লভেং ॥৮

অনুবাদ। কর্ম ছংখজনক এইরপ বিবেচনা করিয়া শরীরের ক্লেশের ভয়ে যে নিত্যকর্ম প্রত্যাগ করিয়া থাকে, সে রাজন ত্যাগ করিয়া ত্যাগের , ফলপ্পাপ্ত হয় না॥৮

ভাষ্য | কিঞ্চ--ছঃথমিত্যেব যৎ কর্ম্ম কায়ক্ত্রশভরাৎ, শরীরত্ব;থভরাৎ ১১০ ভ্যান্ত্রেং পরিভ্যান্ত্রেং, স ক্বত্বা রাজসং রজোনির্বত্তং ভ্যাগং নৈব ভ্যাগফলং জ্ঞান-পুর্ব্বক্ত সর্ব্বকর্মভ্যাগশু ফলং মাকাধ্যং ন লভেও নৈব লভভে ॥৮

আনন্দগিরিটীকা। ইতশ্চ নিত্যকর্মত্যাগো নাজ্ঞ সম্ভবতীত্যাহ—
কিঞ্চেতি। নমু মোহং বিনৈব হঃধাত্মকং কর্ম কারক্রেশভয়াৎ তার্জতি করণানি হি কার্যাং জনয়ন্তি শ্রামান্তি চ তথাচ ন তত্ত্যাগন্তামসো সুক্তব্যতাহ—
তুঃখমিত্যেবৈতি। বং কর্ম হঃখাত্মকশক্যাশাধামিত্যেবালোচ্য তত্তো নিবর্ত্ততে দেহস্তেন্দিরাণাঞ্চ ক্রেশাত্মনো ভয়াৎ তার্জতি স তৎ তাল্কা রজোনিমিত্তং
ত্যাগং ক্রতাপি ন তৎফলং মোকং লভতে, কিন্তু ক্রতেনৈব রাজসেন ত্যাংগন
তদমুক্রপং নরকং প্রতিপ্যত ইত্যাহ—তুঃখমিত্যেবেত্যাদিনা ॥৮

আমুবাদ। আরও—হঃথকর এইজন্ত শরীরের ক্লেশ হইবে এই ভয়ে যে কর্ম্ম পরিত্যাগ করে, সে "রাজদ" রজো গুণপ্রযুক্ত ত্যাগ করিয়া ত্যাগের অর্থাৎ জ্ঞান-পূর্মক-ক্লত দর্মকর্মসন্ন্যাদের "ফল" মোক কিছুতেই লাভ করিতে সমর্থ হয় না ॥৮

> কার্য্যমিত্যেব যৎ কর্ম্ম নিয়তং ক্রিয়তেহর্জ্জ্ন। দঙ্গং ত্যক্ত্যা ফলং চৈব দ ত্যাগং দান্ধিকো মতঃ ॥১

অস্থ্য়। হে অর্জুন! সঙ্গং কগং চ ত্যক্রা ষ্থ নিয়তং কর্ম কার্যানিত্যেব ক্রিয়তে স সালিক: ত্যাগো নত: ॥১

অনুবাদ। হে অর্জুন! আসকি ও ফল পরিত্যাগ করিয়া কেবল কর্ত্তব্য-বুদ্ধিতে যে নিত্যকর্মের অনুষ্ঠান করা যায়, সেই অনুষ্ঠানকেই সান্ত্রিক ত্যাগ বলিয়া [শাস্ত্রকারগণ] বিবেচনা করিয়া থাকেন॥১

ভাষ্য। কঃ পুনঃ সাধিকস্ত্যাগঃ ?—কার্যাৎ কর্ত্তব্যমিত্যের যথ কর্ম নিয়জ নিতাৎ ক্রিয়তে নির্বন্ততে, হে অর্জ্জন সঙ্গং তাজা কলং চৈর । নিত্যানাথ কর্মণাং ফলবদ্বে ভগবদ্বচনং প্রমাণমবোচাম। অথবা ষত্মপি ফলং ন শ্রার্মজে নিত্যক্ত্রু ক্রম্মণাং, তথাপি নিতাং কর্ম ক্রতম্ আত্মসংস্কারং প্রত্যবায়পরিহারং বা ফলং করোত্যাত্মনঃ ইতি কয়য়ত্যেবাজ্ঞঃ তত্র তামপি কয়নাং নিবায়য়ভি, ফলং ত্যক্ত্বা ইত্যনেন অতঃ সাধ্কং সঙ্গং ত্যক্তা ফলং চেভি। স ত্যাগো নিত্যকর্মস্থ সঙ্গকলপরিত্যাগঃ সাধিকঃ সন্ধনির্ব্তঃ মতোহভিমতঃ। নমু কর্মপরিত্যাগন্তিবিধঃ সয়্মান ইতি চ প্রকৃতত্ত্বে তামগো রাজসন্টোক্ত স্ত্যাগঃ কথমিত সক্ষক্ত

ত্যাগস্থতীরবেনোচাতে ? বথা এরো ব্রাহ্মণা আগতান্তত্র বড়ঙ্গবিদো বৌ ক্ষত্রির-স্থতীরইতি তদ্বং ? নৈষ দোবঃ, ত্যাগদামান্তেন স্বত্যার্থছাং। অন্তি হি কর্ম-সন্ধাসন্ত ফলাভিসন্ধিত্যাগন্ত চ ত্যাগদ্বসামান্তং তত্র রাজসভামসন্থেন কর্মত্যাগ্-নিক্ষরা কর্মফলাভিসন্ধিত্যাগঃ সান্ধিকছেন স্ত্রুতে "স ত্যাগঃ সান্ধিকো মৃতঃ" ইতি ॥৯

আনন্দগিরিটীক।। কর্মত্যাগস্তামসো রাজসতেতি দিবিধো দর্শিত:। সম্রতি সান্তিকং তাাগং প্রশ্নপূর্বকং বর্ণরতি—কঃ পুনরিতি। মিত্যের ইত্যেরকারেণ নিতান্ত ভাব্যাস্তরং নিবিধ্যতে। নিত্যানাং বিধ্যুদ্ধেশ ু ফলাশ্রবণাৎ তেবাৎ ফলং তাজা ইতাযুক্তমিত।।শঙ্কাহ—নিত্যানামিতি। ফলং ভাক্তোন্ত বিধান্তরেণ তাৎপর্যামাহ—অথাবেতি। ন হি বিধিনা ক্লতং কর্ম্ম অনর্থকং বিধ্যানর্থক্যাৎ তেন শ্রোতফলাভাবেছপি নিতাং কর্ম বিধিতোছমুতিষ্ঠন আত্মানমজানন অমুপহতমনব্যোক্ত্যা তত্মিন কর্মণ্যাত্মসংস্কারং ফলং করম্বতি ভদকরণে প্রত্যবায়স্থত্যা তৎকরণং কর্ত্তরাত্মনগুলিবৃত্তিং করোজীতি বা নিভ্যে করনামমুনিপাদিতফলকরনাঞ্ছলং তাক্তেতানেন ভগবান্ কৰ্ম্মণ্যক্তাং নিবারয়তীতার্থ: i নিত্যকর্ণ্ণস্থ ফলত্যাগোক্তে: সম্ভবে ফলিতমাহ —**অত্তইতি**। কৰ্মতৎফৰত্যাগন্ত ত্যাগনন্ত্যাসশন্ধাভ্যাৎ প্ৰক্লতন্ত ত্যাগে। হীতি ত্ৰৈনিধ্যং প্রতিজ্ঞায় প্রতিজ্ঞানুরোধেন 👣 বিধে বাৎপাগ তৃতীয়াং বিধাৎ তদ্বিরোধেন বাৎপাদরতো ভগবতোহকৌশলমাপতিতমিতি শকতে—নিম্বৃতি। প্রক্রম-প্রতি-কুলম্ উপসংহারবচনম্ অহুচিতমিত্যত্ত দৃষ্ঠান্তমাহ—যুথেতি। ত্তরবিরোধেন প্রাপ্তমকৌশলং প্রত্যাদিশতি— নৈষ দোষ ইতি। কর্মত্যাগফল-ত্যাগীরোস্ত্যাগন্থেন সাদৃশ্রাৎ কর্মড্যাগনিকরা তৎফলত্যাগস্তভ্যর্থমিদং বচনম্ हेजुाननमार न निरतारधारखीजुाकरमन नाकोकूर्सबारमो जानमामाञ्चर निनमप्रजि— অস্ট্রীতি। সতি সামান্তে নির্দেশন্ত স্বতার্থং সমর্থরতে—তাত্তেতি 🗈

অনুস্বাদ। সাধিক ত্যাগ কিরপ? [তাহাই বলিতেছেন ধে]
"কার্যা" কর্ত্তব্য এই প্রকার ছির করিয়া, যে "নিয়ত" নিতাকর্মের অনুষ্ঠান
করা বার। [কি ভাবে করা বায়?] সঙ্গ এবং কল পরিত্যাগ করিয়া।
নিত্যকর্মণ্ড যে সকল, সেই বিষয়ে ভগবানের বাকাই প্রমাণ, ইহাই আমরা ।
পূর্ব্বে বলিয়াছি। অথবা [যদি একান্ত নিত্যকর্মের কোন কল নাই এই প্রকার
সিদ্ধান্ত মানিয়া লইতে হয়, তাহা হইলে এই শ্লোকের ভাৎপর্য্য এইভাবে বর্ণন
করিতে হইবে যে] যম্বাপি নিত্যকর্মের কল শান্তে বিহিত নাই থাকে, তাহা

হইলেও নিত্য কর্ম্বের অমুষ্ঠান হইলে, তাহা আত্মাতে নৃতন কোন সংস্থার বা প্রত্যবায়-পরিহাররূপ ফল অবশুই উৎপাদিত করিবে-এই প্রকার করনা অনাত্ম-জ্ঞের হাদরে উপস্থিত হইতে পারে, দেই কল্পনারও নিবারণার্থ এই স্থানে ভগবান্ বলিতেছেন যে, "সঙ্গ ও ফল পরিত্যাগ করিয়া" সেই ত্যাগ অর্থাৎ নিত্যকর্ম-সমূহের সঙ্গ ও ফলের পরিত্যাগই 'নাত্তিক ত্যাগ'; বাহা সত্তগুণের কার্য্য, তাহাই 'সান্ত্রিক'। এক্ষণে এরূপ শকা হইতে পারে বে, সন্ন্যাস বা কর্ম্মপরিত্যাগ ত্রিবিধ— এই প্রকার পূর্বে নির্দেশ করিয়া রাজ্য এবং তামস এই দ্বিবিধ কর্ম্মেরই পরি-ভূ৷াগ প্রদর্শিত হইয়াছে; কিন্তু এই ল্লোকে বে সান্ত্রিক ত্যাগ বলা হইতেছে, ভাহা ত আর কর্ম্ম পরিত্যাগ নহে, তাহা কর্ম্মের ফল ত্যাগ ফিলত্যাগ কিছ প্রক্রান্ত নহে, কর্মজ্যাগই প্রক্রান্ত], ফলে দাঁড়াইতেছে—বেমন, তিনজন ব্রাহ্মণ স্মাসিয়াছেন—এই প্রকার বলিয়া, যদি কেহ বলে যে, ঐ তিন জনের মধ্যে ছইজন বড়ঙ্গবিদ ব্রাহ্মণ, আর তৃতীয় ব্যক্তি একজন ক্ষত্রিয়, তাহা হইলে তাহার কথা বেমন পূর্ব্বাপর-বিরুদ্ধ হয়, এই স্থলেও সেইরূপ পূর্ব্বাপর-বিরুদ্ধ কথনই হইতেছে। এই প্রকার শঙ্কাও ঠিক নহে। কারণ [কর্ম্মত্যাগ বা কর্মফলত্যাগ এইরূপ বিশেষভাবে ত্যাগের উল্লেখ না করিয়া] সামান্তভাবে ত্যাগত্বরূপে —কর্ম্মত্যাগের সহিত, কৃষ্মকলত্যাগের যে সাধন্ম্য আছে, তাহাই লক্ষ্য করিয়া ভগবান্ এইভাবে কর্ম্মকলত্যাগের স্তুতি করিয়াছেন। কর্ম্মকলত্যাগ এবং কর্ম্মত্যাগ এই উভরেব্লই ত্যাগত্বরূপ সামান্ত ধর্ম্ম বিভ্যমান রহিয়াছে, তাহার মধ্যে কর্মব্যাগ রাজস ও তামদ হইলে উহা নিন্দিত হয়, দেই নিন্দা দ্বারা এস্থানে [প্রকারাস্তরে] সান্ধিক কর্মফলত্যাগেরই প্রশংসা করা হইতেছে; এইজন্ম [ভগবান্ বলিতেছেন বে] **শেই ভ্যাগই 'দান্ত্বিক' বলিয়া অভি**মত ॥৯

ন দ্বেষ্ট্যকুশলং কর্ম্ম কুশলে নানুষজ্জতে।
ত্যাগী সন্ত্রসমাবিষ্টো মেধাবী ছিম্মসংশয়ঃ ॥১০

অন্তব্য । সম্বসমাবিষ্টঃ মেধাবী ছিন্নসংশয়ঃ ত্যাগী অকুশলং কর্মান দ্বেষ্টি; কুশলে [কর্মাণি চ] ন অমুষজ্জতে ॥১০

আমুবাদ। সৰ্গুণযুক্ত মেধাবী ও ছিন্নসংশর ত্যাগী অকুশন কর্মের প্রতি বিষেষ করেন'না এবং কুশন কর্মেও আসক্ত হন না ॥১•

ক্বাষ্যা। মন্বধিক্বতঃ সঙ্গং ত্যক্তা ফলাভিসন্ধিং চ, মিতাং কর্ম করোতি

তত্ত ফলরাগাদিনা অকলুবীক্রিরমাণম্ অন্তঃকরণং * নিত্যৈশ্চ কর্ণ্বভিঃ সংক্রিরমাণং বিশুধাতি। বিশুদ্ধ প্রসরমাত্মালোচনক্ষমং ভবতি †। তত্ত্বৈ নিতাকর্মানু-ষ্ঠানেন বিশুদ্ধান্ত:করণত আত্মজানাভিমুথত ক্রমেণ যথা তল্লিষ্ঠা তাৎ তদ্বক্তব্য-মিত্যাহ--ন বেষ্টি অকুশলম্ অশোভনং কাম্যং কর্ম, শরীরারপ্তথারেণ সংসার-কারণ কিমনেন ইত্যেবম্। কুশলে শোভনে নিত্যে কর্মণি সন্ত্ভিজ্ঞানোং-প্রিতরিষ্ঠাহেতুত্বেন মোক্ষকারণমিদমিত্যেবং নামুষজ্জতে, তত্তাপি প্রয়োজনম-পশুন্ অমুষঙ্গং প্রীতিং ন করে।তি ইত্যেতং। কঃ পুনরসৌ ত্যাগী পূর্ব্বোক্তেন সঙ্গকণপরিত্যাগেন তথ্বান্ ত্যাগী, ষঃ কর্মাণ সঙ্গং ত্যক্তা তৎফলঞ্চ নিত্যকর্মানু-ষ্ঠায়ীস ত্যাগী। কদা পুনরসাবকুশলং কর্মন ছেটি কুশলে চ নামুষজ্জতে ইত্যুচ্যতে-সন্তসমাবিষ্টঃ বদা সত্ত্বেন আত্মানাত্মবি্বেকবিজ্ঞানহেত্না সমাবিষ্টঃ সংব্যাপ্তঃ সংবুক্ত ইত্যেতে। অতএব চ মেধাবী আত্মজানলকণপ্রজন্ম সংবুক্তঃ जन्तान् त्मशावी त्मशाविषात्मव व्हिन्नमः महाः व्यविष्ठाकुष्ठः मः मन्नः यत्र व्यापन ব্দ্ধপাৰস্থানমেৰ পৰং নিঃশ্ৰেষ্ণসাধনং নাজং কিঞ্চিৎ ইত্যেবং নিশ্চন্তেন ছিল্ল-मश्माता (यार्थिङ्गाङ: भूक्य: भूर्त्वारकन ध्वकाद्मण कर्वादाशास्त्रीतन क्रामण সংস্কৃতাত্মা সন্, জন্মাদিবি ক্রিরারহিতত্তেন নিক্রিরমাত্মানমাত্মত্তেন সংবৃদ্ধা স এব नर्सकर्थानि मनना नन्ना छ देनव कूर्यन् न कात्रव्यानीता देनकर्यानमनार ज्ञाननिष्ठी-মল্পতে ইতি পূর্বোক্তন্ত কর্মবোগ্ এ প্রবোজনমনেন লোকেন উক্তম্ ॥১٠

আনন্দ গিরিটীকা। এবং পূর্বাপরবিরোধং পরাক্বতা অনন্তরশ্লোকতাৎপর্য্যনাহ—যক্তি। ফলরাগাদিনা ইত্যাদিশব্দেন কর্ম্মন্তপাসঙ্গোহ—
অন্তঃকরণমকন্বীক্রিয়মাণমিতিছেন:। বিশুদ্ধেইকরণে কিং স্থাদিত্যাশস্থাহ—
বিশুদ্ধমিতি। মলবিকলমং বিশুদ্ধং সংস্থারবন্ধং প্রসমন্বমিতি ভেদঃ। ক্রমেণ
প্রবাদ্যারবিদ্যারেণেতার্ধঃ। তিরিঠেত্যাম্মজ্ঞাননিঠোকা। কাম্যকর্মণি ত্যাল্যবেন বেষমভিনয়তি—কিমিতি। উভয়ত্র বেবং প্রীতিঞ্চ ন করোজীতি সামান্তেনোজ্য কর্ত্তারং প্রশ্নপূর্বকং বিশেষতো নির্দ্দিতি—কঃ পুনরিতি। ত্যাসীত্যুক্তং ত্যাগিনমভিব্যনজি - পূর্বোক্তেনেতি। কর্মণি সমস্থ তৎফলম্ভ চ
ত্যাগেনেতি বাবং। উক্তমের ত্যাগিনং বির্ণোভি—যঃ কর্ম্মণীতি। তৎকলং
ভ্যক্তেতি সম্বর্ম্মঃ। কাম্যে নির্দ্দি চ কর্মণি বন্ধতেতুরিতি ন বেষ্টি নিত্যে
নৈমিন্তিকে চ মোক্ষহেতুরিতি ন প্রীয়তের্য তত্ত্ব কালবিশেবং পৃক্ষতি—

সঞ্সিত্যধিকং কুম্লিটিং দৃশ্যতে।
 পুত্রতীতি তত্ত্বৈবন্ ইতি চ কেচিৎ পঠিছি।

কদেতি। নিত্যাদিকর্মণা ফলাভিসন্ধিবর্জিতেন ক্ষপিতকথ্যবস্তু সবং যথার্থগ্রহণ সমর্থমূণ্বুধাতে তেন সমাবেশদশারামূক্ত প্রীতিষেবম্নোরভাবো ভবতীত্যাহ—উচ্যুক্ত ইতি। অতএবেতি সমূণ্বুদ্ধবর্ণার্থগ্রহণসমর্থসমাবিষ্টবাদিতার্থ:। ছিন্নসংশর্ষমেব বিশদরভি—আ্রুক্তি। পরং নিঃশ্রের্মং তক্ত চ সাধনং সম্যাগ্র্জানমেবেতি বোজনা। ন বেষ্টাত্যাদিনা শ্লোকেনোক্তমর্থং সক্তিপ্যান্থবদতি—যোহধিকৃত ইতি। পূর্ব্বোক্তপ্রকারেণতি কর্মণি তৎকলে চ সঙ্গতাগেন ইত্যর্থ:, কর্মাদ্মনো বোগতার্ম্ভানেন সংস্কৃতাত্মা সন্ ক্রমেণ প্রবণাত্মন্তানবারেণ কৃতত্ত্বং বন্ধ প্রতাক্ষেন সংবৃদ্ধ ইতি সম্বন্ধ:। পরশ্র নিক্রির্মে হেতুমাহ—জন্মাদীতি। উত্ত জানবতঃ সর্ব্বকর্মত্যাগদারা মুক্তিভাক্তং দর্শরতি—স স্ক্রেতি ॥১০

অকুবাদ। যে ব্যক্তি অধিকৃত হইরা, সঙ্গ এবং ফলাভিসন্ধি পরিতাাগ-পূর্বক নিত্যকর্মের অমুষ্ঠান করেন, তাঁহার অম্ত:করণ ফলবিষয়ে অমুরাগাদি দারা ক্লুবিত হয় না-এবং নিত্যকর্মসমূহের অমুষ্ঠানের দারা সংস্কৃত হইয়া গুদ্ধি লাভ করে। অন্তঃকরণ বিশুদ্ধ এবং সংস্থার ধারা প্রসন্ধ হইলে, আত্মার স্বরূপালোচনা করিতে সমর্থ হয়। সেই অধিকৃত ব্যক্তির বিশুদ্ধ অস্তঃকরণ আত্মজ্ঞানের অভি-মুধ হইলে, ক্রমে যে ভাবে তাহার জ্ঞাননিষ্ঠা উৎপন্ন হয়, তাহাই বলিতে হইবে— এই জন্ম বলিতেছেন যে, "অকুশল" অশোভন কর্ম অর্থাৎ কাম্য কর্ম, শরীরারম্ভ-ষারা সংসারের কারণ; স্কুতরাং ইহা দারা আমার কি লাভ ?- এইভাবে, কামা কর্শের প্রতি যে বাক্তি ছেষ করেন না, এবং নিতাকশ্বই কুশল, অর্থাৎ শোভন কর্ম্ম ; কারণ, নিতাকর্ম চিত্তগুদ্ধি ও জ্ঞানোৎপত্তি দারা মোক্ষণাভের হেতু হয়, এই ভাবিয়া সেই নিত্যকর্মের প্রতি যিনি আসক্তও না হন; অর্থাৎ তাহাতেও কোনপ্রকার প্রয়োজন না দেখিতে পাইয়া যাঁহার অমুবঙ্গ বা প্রীতি হর না। কে এইপ্রকার হর ? ত্যাগী, পূর্ব্বোক্তপ্রকারে কর্মফলপরিত্যাগ যিনি করেন, তিনি 'ভাগী'; বে বাজ্ঞি সঙ্গ এবং কর্মাফল পরিভাগপূর্বক নিভাকর্ম্মের অফুষ্ঠান করিয়া থাকেন, তিনিই এইথানে 'ত্যাগী' [বলিরা নির্দিষ্ট হইতেছেন] কোন সময়ে তিনি অকুশল কর্ম্মের উপর বিধেষ করেন না এবং কুশল কর্ম্মের প্রতি আসক্তিপর হন না, তাহাই বলা হইতেছে—"সম্বসমাবিষ্ট" যে সময় আত্মা ও অনাত্মার বিবেকজ্ঞানের হেতু সম্বৰ্ধণ অধিক হইয়া তাঁহাকে ব্যাপিয়া ফেলে, তথনই তিনি 'সম্বন্মাবিষ্ট হন' [এবং কুশল ও অকুশল কর্ম্মের প্রতি যথাক্রমে বেষ বা আসজ্জিপর হন না], অতএব তিনি মেধাবী, মেধা অর্থাৎ আত্মজানরূপ প্রজা, সেই প্রজা বাঁহার আছে, তিনিই 'মেধাবী'। মেধাবিত্ব নিবন্ধনই 'ছিল্লসংশর': আত্মার অন্ধপে অবস্থানই

পরম-নিংশ্রেরস-সাধন, অন্ত কোন উপারে এই নিংশ্রেরস হইতে পারে না, এই প্রকার নিশ্চরের দারা বাহার অবিদ্যা-জনিত সংশ্র ছিন্ন হইন্নাছে, তাঁহাকে 'ছিন্নসংশর' বলা গিরা থাকে। বে অধিক্বত পুরুষ পূর্ব্বোক্তপ্রকারে কর্মবোপের অমুঠান দারা ক্রমে বিশুদ্ধতিত হন, এবং আত্মা জন্মাদি বিকারহীন; স্বভরাং নিজ্ঞির—এই ভাবে আত্মাকে ব্রিতে সমর্থ হন, সেই ব্যক্তি সকল কর্মকেই মনের দারা সন্ন্যাস করেন এবং প্রকৃতপক্ষে কোন কার্যাই করেন না এবং কাহারও দারা করানও না, এইরপে সেই ব্যক্তি নৈদ্ধ্যাসিদ্ধিরপ জ্ঞাননিষ্ঠা প্রাপ্ত হইরা থাকেন। এইরপে বলিয়া ভগবান্ এই শ্লোকের দারা পূর্ব্বোক্ত জ্ঞানবোগের প্রয়োজন প্রদর্শন করিতেছেন ॥১৩

ন হি দেহভূতা শক্যং ত্যক্ত_{ুং} কর্মাণ্যশেষতঃ। যস্তু কর্মফলত্যাগী স ত্যাগীত্যভিধীয়তে ॥১১

অমৃয়। দেইভ্তা অশেষতঃ কর্মাণি ত্যক্ত্র ন শক্যং হি ; যন্ত কর্মকলত্যাগী স ত্যাগীতি অভিধীয়তে ॥১১

অফুবাদ। দেহাভিমানী জীব কিছুতেই একেবারে সকল কর্ম পুরিভাগ করিতে সমর্থ হয় না; যিনি কর্মফলকে পরিভাগ করেন, তিনিই ভাগী বলিয়া অভিহিত হইয়া পাকেন ॥১১

ভাষ্য। বং প্নরধিক্বতঃ সন্ দেহাদ্মাভিমানিদ্দেন দেহভূদক্কঃ অবাধিতাদ্ধ-কর্ত্ববিজ্ঞানতয়া অহং কর্ত্তেতি নিশ্চিতবৃদ্ধিঃ তক্ত অনেধকর্মপরিত্যাগস্থাপক্যদ্বাৎ কর্মফলত্যাগেন চোদিতকর্মাষ্টান এবাধিকারঃ ন তত্ত্যাগ ইত্যেতমর্থৎ দর্শবিতৃমাহ—ন হি যত্মাৎ দেহভূতা দেহৎ বিভর্ত্তি ইতি দেহভূৎ দেহাত্মাভিমানবান্ দেহভূত্যতে ন হি বিবেকী, স হি "বেদাবিনাশিনম্" ইত্যাদিনা কর্ত্বাধিকারাদ্ধিবর্ত্তিতঃ অতঃ তেন দেহভূতা অজ্ঞেন ন শকাং তাক্তৃং সন্মাস্তৃৎ কর্মাণি অশেষতঃ
নিঃশেষেণ। তত্মাদ্ যন্ত অজ্ঞাহধিক্কতো নিত্যানি কর্মাণি কর্মক্রত্যাগী
কর্মফলাভিসন্ধিমাত্রসন্ন্যাসী স ত্যাগীত্যভিধীন্তে কর্ম্মণি সন্নিতি স্বত্যাভিপ্রায়েণ। তত্মাৎ প্রমার্থদর্শিনৈব অদেহভূতা দেহাত্মভাবরহিত্তেন অশেষকর্ম্মসংস্থাসঃ শক্তিতে কর্ত্ব্যু।১১

, আনন্দ্রিটীকা। আত্মজানবতঃ সর্ককর্মত্যাগদভাবনামুকা তদ্ধীনস্থ তদসন্তবে হেতৃবচনত্বন অনন্তবলোক্ষনতারমতি—যঃ পুনরিতি। ন বাধিত-মাত্মনি কর্তৃথবিজ্ঞানমস্থেতাজ্ঞত্বথা তক্ষ ভাবস্ততা তরেতি ধাবং, এতমর্থং দর্শনিত্মক্ত সর্বকর্ণসন্থাসাসন্থবে হেতুমাহেতি বোজনা। বস্মাদিত্য তস্মাদিভ্যন্তরেণ সম্বন্ধ: । বিবেকিনোহণি দেহধারিতরা দেহভ্বাবিশেবে কর্মাদিকারঃ
ভাদিত্যাশক্ষাহ—ন হীতি । কর্ভ্যাধিকারগুৎপূর্দকং কর্মান্তরানং তন্মাদিতি
বাবং । জ্ঞানবতো দেহধারণেহণি তদ্ভিনানিম্বাভাবোহতঃশব্দার্থ: । ক্ষপ্তভা
সর্বকর্মত্যাগাযোগমূকং হেতৃক্তা ফলিতমাহ—তন্মাদিতি । কর্মান্তর্ভানিক্যাগিম্বোক্তরযুক্তেত্যাশক্ষাহ—কর্ম্মাপীতি । কর্মিণোহণি ফলত্যাগেন
ভ্যাগিশ্বচনং ফলত্যাগন্তত্যর্থমিত্যর্থ: । কন্ত তর্হি সর্বকর্মত্যাগঃ সম্ভবতীত্যাশক্ষ্য
বিবেক্টবেরাগ্যাদিমতো দেহাভিনানহীনক্তেত্যকং নিগমন্বতি—তন্ত্রাদিতি ॥ ১১

অকুবাদ। যে ব্যক্তি কর্ম্মে মধিকত হইয়া দেহের উপর মান্মাভিমান করিয়া থাকে বলিরা 'দেহভূৎ' পদবাচা হয়, সেই ব্যক্তি অজ্ঞ: কারণ, তাহার "আমি কর্ত্তা" এইপ্রকার নিশ্চয় বিশ্বমান আছে বলিয়া, সকল প্রকার কর্ম একেবারে পরিত্যাগ করিবার সামর্থ্যও তাহার নাই: স্কুতরাং কর্ম্মকল পরিত্যাগ-পুর্বক বিহিত কর্ম্মের অমুষ্ঠানেই তাহার অধিকার আছে,—কর্মত্যাগে তাহার অধিকার নাই-এই অর্থটিকে দেখাইবার জন্ত বলিতেছেন যে, যে কারণে, ''দেহ-ভূৎ" দেহকে যে ধারণ করে সেই 'দেহভূৎ' অর্থাৎ যাহার দেহেতে আত্মাভিমান चाहि. त्मृहे वहे ऋता 'तम्हज्रू' विनम्ना निर्मिष्टे इटेएउएह, वित्वकी श्रुक्त वहरन দেহতৎ এই শব্দের অর্থ নহে। "বেদাবিনাশিনং" ইত্যাদি শ্লোকে তাঁহার যে কোন কর্ম্মে অধিকার নাই, তাহা প্রদর্শিত হইরাছে। স্বতরাং দেহভুৎ এই শ্বাটির অর্থ অনায়তব্জ ; সেই দেহভূতের একেবারে সকল কর্ম পরিত্যাগ ক্রিবার সামর্থ্য নাই। সেই কারণে, যে মজ্জ মুণ্চ নিত্যকর্মে অধিক্রত হুইয়া **"কর্ম্মন্ত্যাগ" কর্ম্মদল লাভের প্রতি সর্বপ্রকার অভিসন্ধিকে পরিত্যাগপুর্বা**ক নিত্যকর্মানমূহের অনুষ্ঠান করিয়া থাকেন, তিনি কর্মী হইলেও ত্যাগী বলিয়া অভিছিত হন। ইহা স্তুতির অভিপ্রায়ে বলা হইতেছে। স্লুতরাঃ যে পরমার্থদর্শী অতএব দেহতুৎ নহে অর্থাৎ বাহার দেহের উপর আত্মভাব বিনষ্ট হইরাছে, সেই বিবেক্টি সকল প্রকার কর্ম্ম পরিত্যাগ করিতে সমর্থ॥ ১১

> অনিষ্টমিষ্টং মিশ্রঞ্চ ত্রিবিধং কর্ম্মণঃ ফলম্। ভবত্যত্যাগিনাং প্রেত্য ন তু সন্ম্যাসিনাং ক্ষচিৎ ॥১২

· আৰুয়। কৰ্মণঃ অনিষ্টম্ ইটং মিশ্রং চ ত্রিবিধং ফলম্ অভ্যাপিনাং প্রেত্য ভব্তি সংস্থাসিনাং কৃচিৎ ন ভব্তি ॥১২ র্যাকুবাদ। স্বত্যাগিগণেরই মরণের পর (পরলোকে) ই**ট অনিট ও** মিশ্ররণ ত্রিবিধ কর্মফলের ভোগ হট্যা থাকে। সন্ন্যাসিগণের কথনও কর্ম্ম**গলের** ভোগ হর না ॥১২

ভাষ্য ৷ কিং পুনস্তৎ প্রয়োজনং বং দর্মকর্মপরিত্যাগাৎ স্থাৎ ইত্যুচ্যতে—অনিষ্ঠং নরকভির্যাগাদিললন্ম, ইষ্ট দেবাদিলক্ষণম, মিশ্রমিষ্টানিইদংযুক্তং
মন্ত্র্যালকংং হৈবং ত্রিবিধং ত্রিপ্রকারং কর্মণো ধর্মাধর্মলক্ষণশু ফলং বাহ্যানেককারকব্যাপারনিপারং দদবিভাক্তিমিজ্ঞজালনায়োপনং মহামোহকরং প্রত্যাগাদ্মোপদর্শীব, ফল্কতরা লয়ম্ অদর্শনং গচ্ছতীতি ফলম, ইতি ফলনির্ম্বচনং, তদেতদেবং
লক্ষণং ফলং ভবতি অত্যাগিনাম্ অজ্ঞানাং কর্মিগাম্ অপরমার্থসন্ত্র্যাসিনাং প্রেফ্ড্যা
শরীরপাতাদৃর্দ্ধম্। ন তু পরমার্থসন্ত্র্যাসিনাং পরমহংসপরিব্রাজকানাং কেবলজ্ঞাননিষ্ঠানাং কচিং। ন হি কেবলসম্যুগ্দর্শনিনিষ্ঠা অবিভাদিসংসারবীজং ন
উন্মূলয়ন্তি কদাচিদিত্যুর্থ: ॥১২

আনন্দ্রগিরিটীকা। উক্তাধিকারিণ: সর্ব্বকর্মসন্ন্যাসাসম্ভবেহিপ ক্লাভাবে কুতত্বস্ত কর্ত্তব্যতেতি শঙ্কতে—কিংপুনরিতি। গৌণত মুথ্যস্ত বা সন্ত্যাসন্ত ফলং পিপৃচ্ছিষিতমিতি ৰিকন্নয়তি—উচ্যতে ইতি। দৰ্ককশ্বত্যাগো নাম তদত্ব-ষ্ঠানেহপি তৎফলাভিসন্ধিত্যাগ:। স চামুখ্যসন্ন্যাসম্ভত ফলমাহ—অনিষ্ঠামিতি। মুখ্যে তু সন্ত্রানে সর্ব্বকর্মত্যানে সম্যণ্ধীদ্বারা সর্ব্বসংসারোচ্ছিত্তিরেব ফলমিত্যাহ —নত্বিতি। পাদত্তমং ব্যাকরোতি—অনিষ্টমিত্যাদিনা। তির্যাগাদীত্যাদি-পদমবশিষ্টনিকটাযোনিসংগ্রহার্থম, দেবাদীত্যাদিপদমবশিষ্টোৎকটাযোনিগ্রহণারেতি বিভাগ:। ফলশব্ধ বাৎপাদয়তি—বাছ্যেতি। করণদারকমনেকবিধন্বমুক্তা মিথ্যাত্বমাহ—অবিদ্যেতি। তৎকৃতত্ত্বেন দৃষ্টিগাত্তদেহতে দৃষ্টাস্তমাহ—ইল্লেডি। প্রতীতিতো রমণীয়বং স্চয়তি—মহামোহেতি। অবিজ্ঞোপস্থাবিষ্ঠাশ্রিতবা-দাত্মাশ্রিভত্বং বস্তুতো নাস্তীত্যাহ—প্রত্যাগিতি। উব্জং ফলং কর্মিণামিষ্যতে চেদমুখ্যসন্ত্র্যাসফলোক্তিপরত্বং পাদত্তরশু কথমিষ্টমিত্যাশঙ্ক্যাহ—অপরমার্থেতি। ফলাভিসন্ধিবিকলানাং কর্মিণাং দেহপাতাদুর্দ্ধং কর্মাসুরোধিফলমাবখ্রকমিত্য**র্ধ:।** কর্মিণামের সতামফলাভিসন্ধীনামমুখ্যসন্ন্যাসিতাৎ তদীয়ামুখ্যসন্ন্যাসক্ত ফলমুক্ত্রা ব্যাচষ্টে—ন ত্বিতি। অমুখ্যসন্মাসমনস্তরপ্রক্বতং ব্যবচ্ছিনত্তি— পর্মার্থেতি। তেবাং প্রধানং ধর্মস্পিনশতি—কেবলেতি। ৰুচিদ্দেশে कारन वा नान्धि यरशान्तः कनः रजवामिति मध्यः। छहि भत्रमार्थमञ्चारमारुकन-ৰাৎ নামুষ্ঠীব্ৰেভেড্যাশস্ক্য ভন্ত মোকাবসায়িত্বাকৈবমিড্যাহ—ন হীতি ॥১২

অনুবাদ। কি সে প্রয়োজন, যাহা সর্বকর্মপরিত্যাগ করিলে হইয়া পাকে

ত তাহাই বলা হইতেছে বে, "অনিষ্ট" নরক বা তির্ব্যগ্যোনি প্রভৃতিতে বি জনা, তাহাই 'অনিষ্ঠ' শব্দের অর্থ। "ইই" দেবাদি লোকে জনা প্রভৃতি 'ইষ্ঠ' শক্রে অর্থ। "মিশ্র" ইট ও অনিউমিশ্রিত, মহুষ্য হইয় জন্ম গ্রহণ, 'মিশ্র' শব্দের অর্থ। ধর্ম্ম এবং অধর্মারূপ কর্মোর এই "ত্রিবিধ" তিন প্রকার ফল; এই ফলকে উৎপন্ন করিতে হইলে, বাহ্য অনেক প্রকার কারকব্যাপারের অপেকা করিতে হর, অপচ ইহা অবিভারই কার্যা; ইহা ইক্রজাল ও মারার ভার [অনির্বাচ্য] এবং মহামোহের হেতু; ইংার সহিত আত্মার কোন সক্ষ না থাকিলেও বোধ হর ইহা যেন আত্মার সহিত মিলিত হইয়া রহিয়াছে; ইহা অত্যন্ত কল্প (তুচ্ছ) এবং শীঘ্রই লয় প্রাপ্ত হয়, এই কারণে ইহার নাম "ফল," ইহাই হইল ফল শব্দের বাৎপত্তি; সেই এই প্রকার স্বভাবয্ক্ত ফল [কাহাদের হয় ?] যাহারা স্বত্যাগী — অজ্ঞ কর্মী বা অপরমার্থসন্ন্যাসী, তাহাদেরই দেহপাতের পর এই ত্তিবিধ ফল [ভোগ] হইয়া পাকে। যাঁহারা প্রমার্থনলাদী প্রমহ সপ্রিবাজক ও কেবল জ্ঞাননিষ্ঠ, তাঁহাদের কোন সময়েই এই তিবিধ কর্মফলের ভোগ হয় না। বাঁহারা ,কেবল সমাগ্দশননিষ্ঠ, তাঁহারা যে অবিভাদি সংসার বীজকে উন্মূলিত করেন না, তাহা কথনই সম্ভবপর নহে॥১২

> পঞ্চেমানি # মহাবাহো কারণানি নিবোধ মে। সাংখ্যে কুতান্তে গ্রোক্তানি সিদ্ধয়ে সর্ব্বকর্মণাম্॥১৩

অন্থয়। হে মহাবাহো, ক্বতান্তে সাংখ্যে সর্বকর্মণাং সিদ্ধয়ে প্রোক্তানি ইমানি পঞ্চ কারণানি মে নিবোধ ॥১৩

অনুবাদ। হে মহাবাহো, [কর্মসমাপ্তিবোধক] বেদান্ত শাস্তে সকল প্রকার কর্মের সিদ্ধিহেতু বলিয়া কণিত এই যে পাটি কারণ উক্ত হইয়াছে, তুমি তাহা আমার নিকট হইতে বুঝিয়া লও॥.৩

ভাষ্য। অতঃ প্রমার্থদর্শিন এবাশেষকর্মসন্ন্যাসিত্বং সম্ভবতি, অবিদ্যা-ধ্যারোপিতবাদাম্বনি ক্রিয়াকারকফলানাং, ন বজ্জন্ত অধিষ্ঠানাদীনি ক্রিয়াকর্জ্বণি কারকাণি আত্মফেন পশুতোহশেরকর্মসন্ন্যাসঃ সম্ভবতি। তদেতত্ত্তরৈঃ স্নোকৈ-দর্শন্তি। পঞ্চ ইমানি বক্ষ্যমাণানি হে মহাবাহো কারণানি নির্বর্জকানি নিবাধ

^{🖈 *} পকৈতানি ইতি বা পাঠঃ।

নে মমেতি। উত্তরত্ত্ব চেতঃসমাধানার্থং বস্তবৈষমাপ্রদর্শনার্থং তানি কারণানি জ্ঞাতব্যতয়া ছৌতি। সাংধ্যে জ্ঞাতব্যাঃ পদার্থাঃ সংখ্যারন্তে যশ্মিন শাস্ত্রে তৎ সাংখ্যং বেদান্তঃ। কৃতান্ত ইতি তত্ত্বৈব বিশেষণং কৃতমিতি কর্ম্ম উচাতে, তত্তান্তঃ কৃতত্ত পরিসমাপ্তিঃ যত্র স কৃতান্তঃ, কর্মান্ত ইত্যোতৎ। "বাবানর্থ উদপানে" "সর্বাং কর্মাধিলা পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে" ইত্যাত্মজ্ঞানে সঞ্জাতে সর্বাকর্মণাং নির্ত্তিং দর্শরতি। অতন্তমিন্ আত্মজ্ঞানার্থে সাংখ্যে কৃতান্তে বেদান্তে প্রোক্তানি ক্থিতানি সিদ্ধরে নিশান্ত্যর্থিৎ সর্বাকর্মণান্॥১৩

আনন্দ গিরিটীক।। নহ অপরমার্থসন্ত্রাসবদজ্ঞানাং পরমার্থসন্ত্রাসো-হপি কিং ন স্তাৎ ত্যাগদ্য হকরত্বাৎ তত্তাহ—অতঃ পরমার্থেতি। তদ্য দম্যগ্-দর্শনাদ্বিস্থানিবৃত্তৌ তদারোপিতক্রিয়াকারকাদিনিবৃত্তেরিতি হেম্বর্থ:। বিস্থাবতঃ সর্বাকর্মসন্ন্যাসিম্বসন্তাবনামুক্তা এবকারব্যাবর্ত্তাং দর্শরতি — ন স্থিতি। অবিহুরোহ-শেষকর্মণাং তদ্ধেতৃনাঞ্চ রাগাদীনা: ত্যাগাযোগে কারকেষু অধিষ্ঠানাদিষু আত্ম-দর্শনং হেতুমাহ—ক্রিয়েতি। কণমধিষ্ঠানাদীনাং ক্রিয়াকর্ভ্যং কথং বা অবিহ্বঃ তেরু আত্মবারিত্যাশঙ্কা অনস্তরপ্লোকচতুইয়স্য তাৎপর্যামাই—তদেতদিতি। ক্ত্মার্থানামধিষ্ঠানাদীনাম্ অপ্রামাণিকত্বাশকাম্ মাদাবুদ্ধরতি – পুঞ্জেতি। উত্তরত্ত इंडाक्षिक्षानामियु वक्कामार्शिष्ठार्थः । वस्तुनाः ट्रियारमव देवसमः मिम्मीविष्ठिः न হি চেতঃ সমাধানাদৃতে জ্ঞাতুং শকাতে। সাঞ্চাশক্ষং বাৎপাদয়তি –জ্ঞাতব্যা ইতি। আত্মা তংপদার্থস্তংপদার্থো ত্রন্ধ তয়ে।রৈক্যধীস্তত্পবোগিনন্চ শ্রবণাদয়ঃ পদার্থান্তে সাধারতে বুৎপাছতে। কৃতান্তশব্দা বেদান্তবিষয়ত্বং বিভক্তে-কৃত্মিত্যাদিনা। বেদান্তদা তত্ত্বধীগারা কর্মাবদানভূমিত্বে বাক্যোপক্রমামুকুল্যং দর্শক্ষতি – হাবানিতি। উদপানে ক্পাদৌ ধাবানর্থ: স্থানাদি: তাবানর্থ: সমুদ্রে সম্পদ্মতে, অতো বথা কৃপাদিকতং কার্যাং সর্বাং সমুদ্রেছস্তর্ভবতি তথা সর্বেষ্ বেদেয়ু কর্মার্থেয়ু যাবৎ ফলং ভাবৎ জ্ঞানবতো গ্রাহ্মণস্য জ্ঞানেইস্কর্জবভি, জ্ঞানং প্রাপ্তদ্য কর্ত্তব্যানবশ্বোদিত্যর্থ:। তত্ত্বৈব বাক্যান্তরমন্থকামতি—সর্ব্বমিতি। উনাহতবাক্যয়োস্তাৎপর্যামাহ—আত্মৈতি। আত্মজানে সতি সর্বাকশনিবৃত্তাবণি কথং বেদান্ত্রদ্য ক্বভান্তর্থমিত্যাশন্ধ্যাহ—অত ইতি। তানি মদ্বচনতো নিবো-ধেতি পূৰ্বেণ সম্বৰঃ ॥১৩

আমুবাদ। এই কারণে পরমার্থদশীরই অশেষকর্মসন্ত্রাস সম্ভব হর। কারণী—ক্রিয়া, কারক এবং ফল অজ্ঞানের ঘারাই আত্মাতে আরোপিত হ**ইয়া** গাকে। কিন্তু যে অক্ত, স্থতরাং অধিঠানপ্রভৃতি ক্রিয়াসম্পাদক কারক**্বিকেই** ষাত্মা বলিয়া ব্রিয়া থাকে, তাহার পক্ষে সর্বপ্রকার কর্ম্মের সন্নাস সম্ভবপর নহে; এই বিষয়টি বক্ষ্যাণ শ্লোক্গুলির দ্বারা প্রতিপাদন করিতেছেন,---"এই" অর্থাৎ উত্তরবর্ত্তী শ্লোকে বক্ষ্যমাণ, হে মহাবাহো! "কারণসমূহ" অর্থাৎ পাঁচটি নির্বাহকসমূহকে তুমি আমার নিকট বুঝ। পরে ধাহা বলিবেন, তাহার প্রতি [অর্জ্জুনের চিত্তকে] সমাহিত করিবার জন্ম ও যে বিষয়ের উপদেশ এই-কণে হইবে, এবং এককণ যাহা বলা হইতেছিল, তাহা যে এক নহে, ইহা বুঝাইবার জন্ম [তুমি আমার কাছে বুঝ, এই কণা বলা হইল অর্থাৎ] সেই পাঁচটি কারণকে অবশ্র জ্ঞাতব্য বলিয়া প্রশংসা করা হইল। "সাংখ্য" বে শাল্কে জ্ঞাতব্য পদার্থসমূহ সম্যক্ প্রকাবে বর্ণিত হয়, তাহারই নাম সাঙ্খা, অর্থাৎ বেদান্তই এই স্থানে সাংখ্যা শব্দের অর্থ। "কুতান্ত" এই শব্দটি সাংখ্যেরই বিশেষণ-কুত শব্দের অর্থ কর্ম্ম, সেই কর্ম্মের অন্ত অর্থাৎ পরিসমাপ্তি যে শান্ত্রে উপদিষ্ট হয়, ভাহাকে ক্বতান্ত বলা যায় ; 'ক্বতান্ত' ও 'কন্মান্ত' এই তুইটি শব্দের একই অর্থ। "যাবানর্থ উদপানে" এই শ্লোকে এবং "সর্কাং কর্মাথিলং পার্থ জ্ঞানে পরিসমাপ্যতে' ইত্যাদি লোকে, আত্মজ্ঞান হইলে যে, সকল প্রকার কর্ম্মের নিবৃত্তি হয়, তাহা পুর্বেই প্রদর্শিত হইয়াছে। এই কারণে সাংখ্য শব্দের অর্থ আত্মজানার্থ এবং ক্লতান্ত শব্দের অর্থ [কর্মসমাপ্তিবোধক] বেদান্ত। সেই এই সাংখ্য বেদান্ত শাস্ত্রে সকল প্রকার কর্ম্মের সিদ্ধির অর্থাৎ নিষ্পত্তির জন্ম কণিত [যে পাঁচটি কারণ, তাহাই তুমি আমার কাছে গুন, ইহাই তাৎপর্যা] ॥১৩

> অধিষ্ঠানং তথা কর্ত্তা করণঞ্চ পৃথগ্বিধম্। বিবিধাশ্চ পৃথক্ চেফা দৈবঞ্চৈবাত্ত পঞ্মম্॥১৪

আস্থ্য়। অধিষ্ঠানং, তথা কর্তা, পৃথগ্বিধং করণং চ, বিবিধাঃ পৃথক্ চেষ্টান্চ অত্ত চ পঞ্চমং দৈবমেব চ ॥১৪

অসুবাদ। শরীর, ভোক্তা, করণসমূহ, পৃথক্ নানাবিধ চেষ্টা এবং ইহাদের মধ্যে পঞ্চম দৈব [এই পাঁচ প্রকার কারণ] ॥১৪

ভাষ্য। কানি তানি ইত্যাচ্যতে—অধিষ্ঠানমিচ্ছা-বেষ-স্থ-ছ:থ জ্ঞানাদীনাম্ অভিব্যক্তেরাশ্ররোথবিষ্ঠানং শরীরম্, তথা কর্তা উপাধিধকণো ভোজা,
করণক শ্রোতাদিকং শক্ষাত্মগলদ্ধরে পৃথগ্বিধং নানাপ্রকারং বানশনংখ্যম্,
বিবিধাশ্চ পৃথক্ চেষ্টা বায়বীরা প্রাণাপানাভাঃ, দৈবং দৈব দৈবমেব চ অত্ত এতের্
চতুর্প্রক্ষাং পঞ্চানাং প্রশ্যাদিত্যানি চক্ষ্রাভত্তপ্রাহক্ষ্য।১৪

আনন্দগিরিটীকা। কর্মার্থান্তধিনাদীনি মানমূলতাৎ জ্বোনীত্যুক্ত-মিদানীং প্রশ্নপূর্বকং বিশেষততানি নির্দিশতি—কানীত্যুদিনা। প্রতীক্ষাদার ব্যাকরোতি—অধিষ্ঠানমিতি। উপাধিলকণো বৃদ্যাদিরপাধিত্তরক্ষণতত্ব-স্বভাবো বৃদ্যাল্লস্থবিধারী তদ্ধানাত্মনি পঞ্চর পহিতত্তৎপ্রধান ইত্যর্থ:। তত্ত্ব কার্য্য-লিকক্ষর্মানং স্চরতি—শব্দাদীতি। জ্ঞানেন্দ্রিগাণি পঞ্চ, পঞ্চ কর্ম্মেরাণি মনো বৃদ্ধিশ্চতি বাদশসংখ্যুষ্ম। চেষ্টারা বিবিধতাল্লানা প্রকারত্বং তদেব স্পষ্টরতি —বায়বীয়া ইতি। পৃথক্ত্মসন্ধীর্ণহং নহি প্রাণাপানাদিচেটানাং মিথঃ সন্ধরো-ইতি। দৈবমেবেতি বিশ্বরতি—আদিত্যাদীতি ॥১৪

অনুবাদ। সে পাঁচটি কি, তাহাই বলা হইতেছে—'-মধিষ্ঠান' ইচ্ছা, দেব, স্থাও হংগ প্রাকৃতির অভিব্যক্তির আশ্রমকে 'মধিষ্ঠান' কহে; মধিষ্ঠান, বলিলে শরীর ব্রায়। সেইরূপ, "কর্ত্তা" অন্তঃকরণরূপ উপাধিদ্বারা স্টিত জীবই তোজা (সেই জীবকেই এখানে কর্ত্তা বলা হইরাছে)। "করণ" শন্ধাদিভোগ্যবন্ধনিবহের উপলব্ধির সাধন শ্রবণ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়, তাহা "পৃথগ্ বিধ" নানাপ্রকার অর্থাৎ দাদশ-বিধ, [পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রির, পঞ্চ কর্ম্মেন্ত্রিয়, মনঃ এবং বৃদ্ধি] বিবিধ পৃথক্ চেষ্টা (অর্থাৎ) প্রাণাপান প্রভৃতি বারবীয় ব্যাপার, এবং দৈব (অর্থাৎ) চক্ষু:প্রভৃতি ইন্দ্রিয়গণের অন্ত্রাহক ইন্দ্রাদি দেবতা-সমূহই 'দৈব' শন্ধের অর্থ; এই পূর্ব্বোক্ত চারিটির পূরণক্ষরূপ পঞ্চম দৈব হইরা থাকে ॥১৪

শরীরবাঙ্ মনোভির্যৎ কর্ম প্রারভতে নরঃ। স্থায়াং বা বিপরীতং বা পঞ্চৈতে তম্ম হেতকঃ॥১৫

অনুষ্ম । নরঃ শরীরবাঙ্মনোভিঃ স্থাষ্যং বা বিপরীতং বা ষৎ **কর্ম প্রা**র-ভতে এতে পঞ্চ ভত হেডবঃ ॥১৫

আনুবাদ। মানব, শরীর বাক্য এবং মনের দারা বাহা কিছু স্থাব্য অথবা অস্তাব্য কর্ম্ম করে, এই পাঁচটি তাহার হেতু হইরা পাকে ॥১৫

ভাষ্য। শরীরেতি।, শরীরবাঙ্মনোভিঃ যৎ কর্ম ত্রিভিঃ এতৈঃ প্রার-ভতে নির্বান্তরিক নরো ভাষ্যং বা ধর্ম্মঃ শাস্ত্রীয়ম, বিপরীতং বা অশাস্ত্রীয়মধর্মীয় । বচ্চাপি নিমিবিতচেষ্টাদি জীবনহেতৃত্তদপি 'পূর্বকৃতধর্মাধর্মরোরেব কার্যানিতি, ভাষ্যবিপরীতরোরেব গ্রহণেন গৃহীতম্। পঞ্চৈতে যধোক্তাত্তভ সর্বভিত্ব কর্মণো হেতবঃ কারণানি নম্ববিদ্যানাদীনি সর্বাক্ষণাং কারণানি, কথম্চাতে পরীরবাঙ্- মনোভি: কর্ম প্রারভতে ইতি। নৈষ দোষঃ, বিধিপ্রতিবেধলক্ষণং সর্বাং কর্ম শরীরাদিত্রয়প্রধানং তদক্ষতরা দর্শনশ্রবণাদি চ জীবনলক্ষণং ত্রিধৈব রাশীক্ষতমূচ্যতে শরীরাদিভিরারভতে ইতি ফলকালেছপি তৎ প্রধানৈভূজ্যতে ইতি পঞ্চানামেব হেতৃত্বং ন বিক্লধ্যতে ॥১৫

আনন্দগিরিটীকা। পঞ্চানামধিষ্ঠানাদীনামুক্তানাং দর্ককর্ম্বসিদ্ধার্থবং
শুটরতি—শরীরেতি। নম্ব জীবনকৃতং নিমেবোলেয়াদিকর্ম্বান্তরং সাধারণমন্তি
তৎ কথং রাশিষরকরণমিতি তত্তাহ—যুচ্চেতি। অধিষ্ঠানাদীনাং কর্মমাত্রহেতৃত্বং
প্রতিজ্ঞার শরীরাদিত্রিবিধকর্ম্বহেতৃত্বোক্তিরযুক্তেতি শকতে—নিস্থিতি। পূর্বাপরবিরোধং পরিহরতি—নৈষ দোষ ইতি। নম্ব জীবনকৃতানি স্বাভাবিকানি কর্মাণি
দর্শনাদীনি বিধিনিবেধবাহুত্বার্ল দেহাদিনির্বর্ত্ত্যানীত্যাশক্ষাহ—তদ্সতুত্ত্বতি।
তক্ত দেহাদিত্রয়ন্ত প্রধানক্ষান্তং চক্ত্রাদি তব্লিপান্তবেন জীবনকৃতং দর্শনাদি প্রধানকর্মণি অন্তর্ভূত্রমিতি ত্রৈবিধ্যমবিক্রদ্ধমিত্যর্থং। দেহাভারন্তে ত্রিবিধে কর্মণি
সর্ব্বকর্মান্তর্ভাবেহপি কথং পঞ্চানামেবাধিষ্ঠানাদীনাং তত্র হেতৃত্বং ফলোপভোগকালে কারণান্তরাপেক্ষাসম্ভবাদিত্যাশক্ষ্য জন্মকালভাবিনো ভোগকালভাবিনশ্চ
সর্বক্ত কারণন্ত তেরেবান্তর্ভাবাৎ মৈব্যিত্যাহ—কৃষ্ণেতি॥১৯

"শরীরেত্যাদি" শ্লোকের অর্থ—শরীর বাগিন্দ্রির এবং মনঃ অন্তবাদ। এই তিনটির ধারা মাতুব যাহা কিছু, কর্ম্ম সম্পাদন করে, তাহা "প্রায্য"-ধর্ম্মের হেত অর্থাৎ শান্ত্রবিহিত, অথবা "বিপরীত" অধর্ম-জনক অর্থাৎ অশান্ত্রীয়। ব্যতীত নিমেৰ বা চেষ্টা প্ৰভৃতি জীবন হেতু কৰ্ম, [বাহা সামূৰ করে], তাহাও পর্বজনের ক্বত ধর্ম ও অধর্মের ফল; এই কারণে স্থায়া ও বিপরীত কর্মের মধ্যে তাহাও অন্তত্ত হইয়াছে। [সেই পূর্ব শ্লোকে কণিত পাচটি বস্তু এই সকল প্রকার কর্ম্মেরই হেডু]। যদি বল, অধিষ্ঠান প্রভৃতি পাঁচটিই সকল প্রকার কর্ম্মের কারণ বলিয়া যথন কথিত হইতেছে, তথন, "শরীর বাক্ এবং ' মনের বারা বাহা কিছু মানব আরম্ভ করে" এই প্রকার কথন আবার কি প্রকারে সঙ্গত হইবে ? ইহার উত্তর এই বে, এই প্রকার উক্তিতে [বাস্তবপক্ষে] কোন প্রকার দোষ দেখা যায় না; কারণ, বিহিত বা প্রতিষিদ্ধ যত কার্য্য আছে, সকল কার্য্যেরই প্রধান হেতু শরীর, বাক্ ও মনই হইয়া থাকে। দর্শন বা প্রবণ প্রভৃতি कातन रहेरा अधान आर्व नरहः, किन्द अधान आर्वहे कातन रहेशा পাকে। স্থতরাং জীবনলকণ দর্শন-শ্রবণাদিকেই তিন ভাগে বিভক্ত করিরী. নির্দেশ করা হইয়াছে। ঐ সকল দর্শন শ্রবণ প্রভৃতিও ত শরীরাদিরই কার্যা।

স্থতরাৎ কর্মফলের ভোগসময়ে শরীরাদিরপ প্রধান সাধন বারাই ভোগ হইয়া থাকে; এই কারণে, পাচট পদার্থকে যে কারণ বলিয়া নির্দেশ করা হইয়াছে, তাহাতে পূর্বাপর কোন বিরোধের সম্ভাবনা নাই ॥১৫

> তত্তৈবং সতি কর্ত্তারমান্থানং কেবলং তু যঃ। পশ্যত্যকৃতবুদ্ধিত্বাম স পশ্যতি দুর্শ্বতিঃ॥ ১৬

আন্তর্য়। তত্র এবং সতি যঃ কেবলম্ আঁছানং কর্তারং পশুতি স হৃশ্বিতঃ অক্কতবৃদ্ধিয়াৎ ন পশুতি ॥১৬

অমুবাদ। তাহাই যদি হইল, তবে বে ব্যক্তি, কেবল 'আত্মাই কর্ত্তা' এইরূপ দেখিরা থাকে, সে চুর্মাতি, তাহার বৃদ্ধি সংস্কৃত হয় নাই বলিয়া বণার্থ ভাবে দেখিতে পারে না ॥১৬

ভাষ্য। তত্ত্বতি ! তত্ত্বতি প্রক্ষণেন সংবধ্যতে, এবং সতি, এবং বথাকৈ: পঞ্চন্তি: নির্বর্ত্ত্যে সতি কর্মণি। তত্ত্বৈবং সতি ইতি কর্ম্বাভিশ্বস্ত হেতৃত্বেন সংবধ্যতে। তত্ত্ব এতের আমানমনস্তব্ধেন অবিষয়া পরিকল্পা তৈঃ * ক্রিমাণান্ত কর্মণঃ অহমেন কর্ত্তেতি কর্ত্তারমান্থানং কেবলং শুদ্ধং তু যঃ পঞ্চতি অবিধান, কন্মাৎ ? বেদাস্তাচার্ব্যোপদেশস্থারৈঃ অকতব্দ্বিদ্বাৎ অসংস্কৃতবৃদ্ধিদ্বাৎ; বোহপি দেহাদি ব্যতিরিক্তাত্মবাদী অসমান্থানমেন কেবলং কর্ত্তারং পঞ্চতি অসাব্দ্যাক্তবৃদ্ধিরেন; অতোহকৃতবৃদ্ধিন্থান্ন স পশ্চতি আত্মনস্তব্ধ কর্মণো বা ইত্যর্থঃ। অতো হর্মতিঃ কুণেচিতা বিপরীতা হন্তা অক্সং জননমরণপ্রতিপত্তিহেতুভূতা মতিরস্তোত কুর্মতিঃ। স পশুলপি ন পশ্রতি, যথা তৈমিরিকঃ অনেকং চক্রং, বথা বা অত্যের্থাবংস্ক চক্রং ধাবস্তং, যথা বা বাহনে উপবিষ্টঃ অন্তের্ম্ব ধাবংস্ক আত্মানং ধাবস্তম্॥১৬

আনন্দ গিরিটীকা। ক্রিয়াক ভ্রমধিষ্ঠানাদীনামাপান্ত অবিহ্বজেশাত্মবদৃষ্টি-মন্থ্রদতি—ত্রেতি। তৎপদপরামর্শবোগ্যং প্রকৃতং সর্বাং কর্ম। প্রতীক্ষাদার পূর্বেণ সহাক্ষরার্থং কথয়তি—এবমিতি। অধিষ্ঠানাদীনামুক্তরীতাা কর্ভুবে সতি অন্তগতং কর্ভুবমাত্মনো বতোহধ্যারোপ্য পশুতি অতা হর্ম্মতিরিত্যাত্মনি কর্ভুবং পশুরিত্যাহ—ত্রৈবমিতি। কর্তারমিত্যাদি ব্যাচষ্টে—ত্রেত্যা-দ্বিনা। তেলধিষ্ঠানাদির্ তৈরধিষ্ঠানাদিভিরারোপিতাত্মভাবৈরিত্যর্থঃ। অকর্তার্ক্রনাত্মানং কর্তারং পশুতীত্যক্র প্রশ্বধারা হেতুমাহ—ক্সমুদ্বিতি। নম্ম শান্ত্র-

পরিকলিতৈঃ ইতি পাঠাক্তরম্।

সংস্কৃতবৃদ্ধিরেবাতিরিক্তাত্মবাদী কভূ ছিং তভাসুমন্ততে নাসৌ কভূ ছমাত্মনি পশুদ্ধি ভবত্যক্ষতবৃদ্ধিত্তকাহ যোহপীতি। তভাপি শান্তপূর্বকমাচার্যোপদেশেন তদসুসারিন্তারৈশ্চানাহিতবৃদ্ধিদক্ষতবৃদ্ধিছং সিদ্ধ মতার্থ:। কৌট্ছামাত্মনত্ত্বং বাথাত্মাং কর্মণোহিপি তর্মবিভাক্কতাধিষ্ঠানাদিক্কতত্ত্বনাত্মাম্পর্শিত্মমাত্মকর্মণোত্তৰ দর্শনাভাবোহতঃশব্দার্থ:। ছষ্টছং স্পষ্টাকর্ত্বং হর্মতিত্বং বির্ণোতি—জনুনেতি। অহং কর্ত্তেতাা স্থাপনিবতাহিপি নাবিছ্যতদ্ধনমন্তীত্যক্র দৃষ্টান্তমাহ – যথেতি। তিমিরোপহত্যক্ষরনেকং চক্রং পশুদ্ধপি তর্তোন তং পশুত্যবমবিদ্ধানাত্মানং কর্তারং পশুদ্ধপি তর্তোন তং পশুতীত্মর্থ:। অধিষ্ঠানাদিত্মবিদ্ধান স্বদ্ধান্তনঃ স্বাত্মনি তৃত্তি ক্রাব্যোপে দৃষ্টান্তমাহ—যথা বেতি। অন্তেমু বাহকেষু পক্ষবেষু ধাবনকর্ত্ব্ বাহনে স্থিতঃ ত্বাত্মানং প্রধাবনকর্তার্মবিবেকাদভিমন্ততে ত্বাধি ষ্ঠানাদির্ম্ব ক্রিরাকর্ত্ব্ ত্বগতং বাত্মানং কর্ত্তারং মন্তমানো ক্র্তিরিত্যর্থ:॥১৯

অমুবাদ। তত্ত্ৰেভ্যাদি শ্লোকের অর্থ—"তত্ত্ব" এই শস্কটির সম্বন্ধ প্রকৃতের (মর্থাৎ পূর্ব লোকে উক্ত পাঁচটি কারণের) সহিত। "এবং সতি" এমন হইলে অর্থাৎ বথোক্ত পাঁচটি হেতুর বারাই সকল কার্য্য দাধিত হইয়া পাকে, এই প্রকার সিদ্ধান্ত হটলে, "তত্ত্রৈবং সভি" এই প্রকার কথনই ফুর্যভিত্তেরই হৈতু স্বরূপে অবিত হইতেছে। 'তএ' অর্থাৎ দেই পূর্ব্বোক্ত পাচটি কারণের মধ্যে আত্মাকে অপুর কয়টি হইতে অভিন্নভাবে অজ্ঞান বশতঃ পরিকঃনা করিয়া ভাষাদের ছারা সম্পাদিত কার্য্যের "আমিই কর্ত্তা" এই ভাবে "কেবল" গুদ্ধ আত্মাকে কর্ত্তা, বিশিয়া যে ব্যক্তি দেখিয়া থাকে [সে] অবিধান্; কারণ বেদা ঃ শাত্র, আচার্যে:-পদেশ, এবং যুক্তি সমূহের দারা তাহার বুদ্ধি সংস্কৃত নহে; যে ব্যক্তি, দেহাদি হইতে ব্যতিরিক্ত আত্মা ইহা অঙ্গীকার করে, অথচ সেই কেবল আত্মাকেই কর্ত্তা বলিয়া দেখিয়া পাকে, দে ব্যক্তিও অসংস্কৃতবুদ্ধি; এই কারণে অর্থাৎ ভাষার वृद्धित्र मध्यात रत्र नारे विनित्रा, शूर्व्साक विविध वास्त्रिर आचा किश्वा कर्णात প্রকৃত তব দেখিতে পার না ; এই কারণে, তাহারা হুর্নতি কর্ধাৎ তাহাদের মতি হুষ্ট কুৎসিত অর্থাৎ বিপরীত; কারণ, ঐ প্রকার মতি অঞ্চল জন্ম ও মরণ প্রাপ্তির হৈতু হয়, এই কারণেই এ মতি ছন্ট; সেই ছুর্মতি দেখিয়াও দেখিতে পাৰ না : বেমন "তৈনিবিক" তিমিরোপহতদেত্র এক চল্লকে অনেক বলিয়া দেখে, অথবা বেমন গতিশীল মেঘের মধ্যে চক্সকে লোকে গতিশীল দেখে, কিংনা ব্যুমন কোন ভ্রান্ত ব্যক্তি নিজে বাহনে উপবিষ্ট থাকিয়া অস্তের গভিস্কালে আপনাকে গতিমান বলিয়া বিবেছনা করে, সেইরূপ ॥১৬

যশ্য নাহঙ্কতো ভাবে। বুদ্ধির্যন্ত ন লিপ্যতে। হয়াপি স ইমান্ লোকান্ ন হস্তি ন নিবধ্যতে॥ ১৭

· অনুয়। যস্ত ভাব: ন অহঙ্কতঃ, যস্ত বৃদ্ধিং ন লিপ্যতে, স ইমান্ লোকান্ জ্বাপি ন হস্তি ন নিবধ্যতে [চ] ॥১৭

আমুবাদ। যাহার ভাব অহন্ধত নহে, যাহার বৃদ্ধি লিপ্ত হয় না, সে যদি সকল লোককেও হনন করে, তথাপি, সে প্রকৃত পক্ষে হত্যাকারী হয়, না, এবং সেই হত্যা নিবন্ধন তাহার কর্মবন্ধনও হয় না॥১ ৭

ভাষ্য ৷ ক: পুন: স্মতি র্য: সমাক্ পশুতীভূচ্যতে—যন্ত শাল্লাচার্য্যো-পদেশসাম্বসংস্কৃতাত্মনঃ, ন ভবতি অহঙ্কতঃ অহংকর্ত্তেত্যেংলকণঃ ভাবো ভাবনা প্রভার:-- অতএব পঞ্চাধিষ্ঠানাদয়: অবিভায়া আত্মনি করিতা: সর্বকর্মণাং কর্তারঃ, নাহম্, অহং তু তদ্ব্যাপারাণাং সাক্ষিভৃতঃ অপ্রাণো হুমনাঃ শুলোহক্ষরাৎ পরতঃ পরঃ কেবলঃ অবিক্রিয়ঃ ইত্যেবং পশ্রতীত্যেতং। বৃদ্ধিরস্তঃকরণং হস্ত মাত্মনঃ, উপাধিভূতা ন লিপ্যতে নামুশায়িনী ভবতি,ইদমহমকার্বং তেনাহং নরকং গমির্যামি ইত্যেবং মশু বৃদ্ধিন লিপ্যতে, স স্থমতিঃ স পশুতি। হন্ধাপি স ইমান্লোকান্ সর্বান্ প্রাণিন ইত্যর্থ:। ন হস্তি হননক্রিরাং ন করোতি। ন নিবধাতে নাপি তৎকার্যোণ অধর্মফলেন সংবধাতে। নমু হয়াপি ন হস্তীতি বিপ্রতিবিদ্ধমুচ্যতে বছাপি স্থতি:। নৈষ দোষ:, লৌকিকপারমার্থিকদৃষ্ট্যপেক্ষরা তত্বপারে:। দেহাভাষাবৃদ্ধা হস্তাহমিতি লৌকিকীং দৃষ্টিমাঞ্চিত্য হত্বাপীত্যাহ ষণাদর্শিতাং পারমার্থিকীং দৃষ্টিমাশ্রিতা ন হস্তি ন নিবধ্যতে ইতি তত্ত্তরমূপপৃষ্ণতে এব। নম্বধিষ্ঠানাদিভিঃ সম্ভয় করোতোব আত্মা "কর্ত্তারমাত্মানং কেবলং ত" ইতি কেবলশৰপ্ৰয়োগাং। নৈষ দোষ:, আত্মনোহৰিক্ৰিয়শ্বভাবদে অধিষ্ঠানাদিভিঃ সংহতত্বামুণপতে:। বিক্রিয়াবতো হি অলৈ: সংহননং সম্ভবতি, সংহত্য বা কর্ত্ত্বং স্থাৎ, ন তু অবিক্রিয়স্ত আত্মনঃ কেনচিৎ সংহননমন্তি, ইতি ন সম্ভন্ন কর্ত্ত্ব-মুপুপদ্ধতে। অতঃ কেবলত্বমাত্মনঃ স্বাভাবিকমিতি কেবলশন্দেহিত্বাদমাত্রম্।

মবিক্রিরছং চাছান: শ্রুতিস্থৃতিন্তার প্রসিদ্ধ। "স্ববিকর্বিগাহরমূচ্যতে" "শ্বরৈবর কর্মাণি ক্রিরছে" "শরীরস্থাহণি ন করোতি" ইত্যাদি অসক্তপণাদিতং গীতান্বের তাবং। শ্রুতির চ "ধ্যায়তীব লেলায়তীব" ইত্যেবমাছাস্থ। স্থায়তীক নির্বয়বমপরতক্রম্ অবিক্রিয়মাছাতব্য ইতি রাজমার্গঃ। বিক্রিয়াবছাভ্যুপগমেহণি মাছানঃ স্বকীরের বিক্রিয়া শ্বন্ত ভবিত্যুর্তি। নাধিষ্ঠানাদীনাং কর্মাণি মাছান

কর্ত্কাণি স্থাঃ। নহি পরস্ত কর্ম পরেণাক্বতমাগব্দহ তি। যন্ত্ অবিভয়া গমিতং ন তৎ ভক্ত। যথা রঞ্জন্তমং ন শুক্তিকারা বা যথা তলমলবন্ধং বালৈগমিতমবিভয়া নাকাশন্ত, তথা অধিষ্ঠানাদিবিক্রিয়াপি তেযামেবেতি নাম্বনঃ। তন্মান্ যুক্তমুক্তম্ অহঙ্কতম্ব্রিলেপাভাবাং বিঘান্ ন ছন্তি ন নিবধ্যতে ইতি। "নারং হন্তি ন হলতে" ইতি প্রতিজ্ঞায় "ন জায়তে" ইত্যাদি হেতৃবচনেন অবিক্রিয়ন্তমাত্মন উল্লা "বেদাবিনাশিনশ্" ইতি বিহুষঃ কর্মাবিকারনিবৃত্তিং শান্তাদৌ সংক্ষেপণ উল্লা মধ্যে প্রায়বিভাঞ্চ তত্র তত্র প্রসঙ্গং কর্মা ইহ উপসংহর্ ত শান্তার্থপিগুকিরণার "বিঘান্ ন হন্তি ন নিবৃধ্যতে" ইতি। এবং চ সত্তি দেহভ্রাভিমানাম্পপক্তৌ অবিভাক্তাশেষকর্ম্বসর্যানোপপত্তেং সন্ত্যাসিনাম্ অনিষ্ঠাদি ত্রিবিধং কর্ম্মণঃ ফলং ন ভবতীত্যুপপন্ম। তদ্বিপর্যয়াচ্চ ইতরেষাং ভবতীত্যেতচ্চ অপরিহার্য্যম্ ইত্যেষ্ গীতাশান্ত্রভার্থ উপসংহ্তঃ। স এষ সর্ববেদার্থসারো (সর্ববেদান্তার্থসারো) নিপ্লম-তিন্তিঃ পণ্ডিতঃ বিচার্য্য প্রতিপন্তব্য ইতি তত্র তত্র প্রকরণবিভাগেন দশিতোহ-ক্ষাভিঃ শান্ত্রভারান্থসারেণ॥১৭

আনন্দ্রিটিক।। বিপরীতদৃষ্টেছ র্মতিত্বং শিষ্টা সম্যগ্ দৃষ্টে: স্থ্যতিত্বং প্রপূর্বকমাহ—কঃ পুনরিত্যাদিন। অহং কর্বেত্যাছনি কর্বপ্রভাষাভাবে কুত্র কর্তৃষধীরিত্যাশস্থাহি—এত ইতি। কণং তর্হি কর্তৃষধীরাত্মনীত্যাশস্থ্য অধিঠানাদীনাং তদ্ব্যাপারাণাঞ্চ সাকিষাদিত্যাহ—অহং ত্বিতি। আমনো ন ষভোহত্তি ক্রিয়াশক্তিমন্ত্রমিত্যত্ত প্রমাণমাহ—অপ্রাণো হীতি। নাপি তম্ম স্বতো জ্ঞানশক্তিৰমিত্যাহ—অমন। ইতি। উপাধিৰয়াসম্বন্ধে ভদ্দং ফলিতমাহ— শুভ ইতি। কারণসখনাদগুদিমাশক্ষ্যোক্তম্—অক্ষরাদিতি। কার্য্যকারণয়ো-রাত্মান্দর্শিত্বন পার্থক্যে সদিতীয়ত্বমাশক্য তয়েগরবন্তত্বালৈবনিত্যাই—ক্রেবল ইতি। জন্মাদিসর্কবিক্রিয়ারহিতত্বেন কৌটস্থামাহ – অবিক্রিয় ইন্ডি। বৃদ্ধির্যন্তেত্যাদি ব্যাচষ্টে—বুদ্ধিরিতি। নামশায়িনী নাম্শয়বতী ন ক্লেশশালিনী ইত্যর্থ:। বিতীয়পাদতাকরার্থমৃত্বা বাক্যার্থমাহ—ইদমিতি। পাপং কর্ম ইদমা প্রামৃখ্যতে। লোকানাং প্রাণসম্বদ্ধাভাবে কুতো হিংসেত্যাশস্থ্যাহ— প্রাণিন ইতি। বিক্লমার্থাক্তা শ্বতিরপি ন যুক্তেতি শহতে—নশ্বিতি। विरतायः পরিহরতি—तिय দোষ ইতি। लोकिकमृष्टिमवहेक्यार-इञ्चाशीकि। निर्द्भने विनम्प्रिकि । जिल्ली मृतिमाद्यात्र न स्कीजानिमिद्धन्तुः · পাদরতি—যথেতি। নাহং কর্তা কিন্ত কর্তুতদ্ব্যাপার্টোঃ সাকী ক্রিয়ালান-निक्रमञ्भाभिषत्रविनित्र कः उतः मन् कार्याकात्रशामश्रकाश्विजीताश्विकत्र हेरलाकः পারমার্থিক টুর্টের্থবাদশিতবং প্রট্টবাদ্ । হবাপীত্যেতর হন্তীত্যাদি চোভরং চৃষ্টিবরাবইন্তাহপপন্ধন্ ইত্যুপসংহরতি—তত্ত্ভয়মিতি । কেবলনেবাদ্ধানং কর্তারং
পশুন্ হুর্মতিরিত্যক্ত আদ্ধবিশেষংসমর্শককেবলশন্ধসামর্থ্যাৎ আদ্ধনো বিশিষ্ট্রন্ত
কর্ত্ত্বমিতি শক্তে—নিস্থিতি । আবিক্রেয়ন্তাব্যেহপি কর্থমান্ধনোহসংহভত্তমিত্যা
শক্ষাহ—বিক্রিয়েতি । অধিষ্ঠানাদিভিরাদ্ধনঃ সংহননেহপি ন কর্ত্ত্বমবিক্রিয় ক্রিয়াব্যাদাতাদিত্যাহ—সংহত্যেতি । সংহত্ত্বাহ্নপপত্তিং ব্যক্তীকরোতি—ন জ্বিতি । অসংহত্ত্বে কলিত্যাহ—ইতি নেতি । কথং তর্হি
কেবলব্যাদ্ধনি কেবলশন্ত্রক্তং তদাহ—অত ইতি ।

[অ] কর্তৃত্বমাত্মনোহভূাপপরং নাস্তাবিক্রিরত্বমূপৈতীত্যাশক্যাহ — অবি-ক্রিয়ত্বঞ্চেত। তত্র স্বৃতিবাক্যানি উদাহরতি—অবিকার্য্যোহয়মিতি। নারং হস্তি ন হন্তত ইত্যাদিবাক্যমাদিশস্বার্থঃ। উক্তবাক্যানামাস্থাবিক্রিরছে তাৎপর্ব্যং হচরতি—অসুকুদিতি। নিক্লণ নিজিন্তং শাস্তমিত্যাদি বাক্যং শ্রুতাবাদিশলার্থ:, যানি বাক্যানি তৈরাদ্মনোহবিক্রিরম্বং দর্শিতমিতি বোলনা, প্তারতণ্ট তদর্শিতমিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। স্তারমেব দর্শরতি—নির্বয়বমিতি। ন ভাবদান্মা খতো বিক্রিয়তে নিরবয়বদ্বাৎ আকাশবহাপি পরতোহসঙ্গসাকার্যান্ত পরাধীনত্বাবোগাদিত্যর্থ:। কিঞ্চাত্মন: স্বনিষ্ঠা বা বিক্রিয়াধিষ্ঠানাদিনিষ্ঠা বা, নাডাঃ বনিষ্ঠবিক্রিরামূপপডেরাত্মনো দর্শিতত্বাৎ ইত্যাশরেনাহ—বিক্রিয়া-সা চাযুক্তেত্যুক্তমিতিশেষ:। বিতীয়ং দূষগভি—নেত্যাদিনা। অধিষ্ঠানাদিকতমপি কর্ম তদ্বোগাদাত্মনি আগচ্ছতীত্যাশন্ব্য তদাগমনং বাস্তব-মাবিন্তং বেতি বিকল্পাত্যং দ্বন্নতি—ন হীতি। বিতীনং নিরন্ততি—যক্তিতি। আত্মন্তবিষ্ঠাপ্রাপিতং কর্ম নাত্মীয়মিত্যেতদ্ প্রান্তান্য উপপাদরতি —যুখেত্যা-দিনা ৷ আত্মনোহবিক্রিরত্বেন কর্তৃথাভাবে ফলিতমাহ—ত্রুদ্রাদিতি ৷ নমু-প্রাগেবাম্বনোহবিক্রিয়ম্বং প্রতিপাদিতং তদিহ কন্মাছচ্যতে তত্তাহ—নায়ুমিতি। °শান্ত্রাদৌ প্রতিজ্ঞাতং হেতৃপূর্বকং সংক্রিপ্যোক্তা মধ্যে তত্ত্ব তত্ত্ব প্রসক্রং ক্কৰা প্রসারিতাং কর্মাধিকারনির্ভিম্ ইহোপসংহরতীতি সম্বন্ধঃ। প্রতিজ্ঞাত্ত হেতুনোপপাদিওভাত্তে নিগমনং কিমর্থমিত্যাশব্যাহ—শাস্ত্রার্থেতি। কর্মাহি-কারো বিহুবো নেভি স্থিতে তক্ত দেহাভিমানাভাবে সতি অবিভোগসর্ককর্মত্যাগ-সিজেরনিষ্টমিষ্টং মিশুঞ্ছেডি ত্রিবিধং কর্মফলং সন্ন্যাসিমাৎ নেতি প্রাপ্তক্তং যুক্তমেবেতি পরমপ্রকৃতমুপসংহরতি—এব্যঞ্চতি। যে পুনরবিধাংলো দেহা-

ভিমানিনক্তবাং ত্রিবিধং কর্মফলং ভবত্যেবেতি হেতুবচনসিদ্ধন্মর্থং নিগময়ভি
— তদ্বিপ্রযুম্বাচেতি । অধিষ্ঠানাদিকতং কর্ম নাত্মকতমবিত্ববামেব
কর্মাধিকারো দেহাভিমানিবেন তন্ত্যাগাবোগাৎ দেহাভিমানাভাবাৎ তু বিশ্ববাং
কর্মাধিকারনির্ত্তিরিত্যুগসংহত্মর্থং সজ্জিপাহ—ইত্যেষ ইতি । উক্তশ্চ
গীভার্থো বেদার্থমাৎ উপাদের ইত্যাহ—স এষ ইতি । কথময়মর্থো বেদার্থোহপি
প্রতিপত্ত্বং শক্যতে তত্রাহ—নিপুণেতি । ভাষ্যক্তা মানযুক্তিভাাং বিভঞ্জান্ধক্তছাৎ নাত্রার্থস্তোপাদেরত্বিস্থান্ত্যাশস্ক্যাহ—তত্ত্রেতি ॥১ ৭

অকুবাদ। কে হুমতি, যে সম্যগ্ দর্শন করিতে পারে ? তাহাই বলা ইইতেছে, শাস্ত্র—আচার্য্যোপদেশ এবং যুক্তি বারা বাঁহার অস্তঃকরণ সংস্কৃত হই-রাছে, বাঁহার "অহত্কত ভাব" আমি কর্ত্তা এই প্রকার ভাবনা বা প্রত্যের হয় না; বিনি ভাবিয়া পাকেন যে "এই অধিষ্ঠানাদি পাঁচটি হেতু অবিন্থাপ্রভাবে আস্মাতে করিত হইরা সকল প্রকার কার্য্যের কড় জ করিয়া থাকে, 'আমি কিছুই করি না' আদি কেবল ঐ সকল ব্যাপারের সাকী; আমি অপ্রাণ এবং অমনাঃ, আমি ভঞ এবং পর, অক্ষর হইতেও পর, আমি কেবল ও বিকারহীন" আরও আত্মার উপাধি-ভূত বে বৃদ্ধি তাহাও লিপ্ত হর না; অনু অর্থাৎ পশ্চাৎ তাপযুক্ত হর না; "আমি এই অকার্য্য করিয়াছি, সেইজন্ত আমি নরকে যাইব" এইরূপ ভাবে বাঁহার বুদ্ধি निशं रह मा, जिमि धरे लाक मकनारक वर्शा मकन आगीरक इनन कतिराउ প্রক্রত পক্ষে হনন করেন না, এবং নিবদ্ধও হন না, অর্থাৎ সেই হননের ফলস্বরূপ বে পাপ, সে পাপও তাঁহার হয় না। একণে শকা হইতে পারে যে, এ কি প্রকার উক্তি! "হনন করিয়াও হনন করেন না" ইহা পরম্পর বিরুদ্ধ উক্ত হইলেও বদি वन, देश खिंखिनका, जांश बहेरनहे ना कि बहेन ! शत्रान्त विक्रम नारकात मात्रा স্তুতিই বা কি প্রকারে সম্ভবপর ?] এই [প্রকার শঙ্কারপ] দোব হইতে পারে ना ; कात्रन, लोकिक व्यवस् भात्रमाथिक व्यवे विविध मृष्टिक व्यवनवन कतिरन, সকলই উপপন্ন হইয়া যায়'। দেহ প্রভৃতির উপর আত্মবৃদ্ধি থাকা প্রযুক্ত "আমি হকা" এইরূপ যে গৌরিক বৃদ্ধি হইয়া থাকে, সেই বৃদ্ধিকে অপেকা করিয়াই বলা ' হইরাছে বে "তিনি এই লোক সকলকে হনন করিয়াও" এবং পূর্ব্বেপ্রদর্শিত বে পারমার্থিকী দৃষ্টি, তাহাকে অপেকা করিয়া বলা হইয়াছে যে, "তিনি হননও করেন না এবং বন্ধও হর না" [এই ভাবে দেখিলে] এই ছই প্রকার কর্থনই উপ্পন্ন হইতে পারে ৷ যদি বল আত্মা অধিষ্ঠান প্রভৃতির সহিত মিলিত হইরা বাস্তবিকই ত কর্ত্তা হইরা থাকেন; কারণ, এইথানেই বলা হইতেছে যে, যে ব্যক্তি কেবল

আন্ধাকেই কর্ত্তা বলিয়া দেখিয়া থাকে [সেই ফুর্নাভি ইত্যাদি] এই 'কেবল' শক্ষের প্রায়োগ করা হইরাছে [ইহা ছারা বুঝা যাইতেছে যে, কেবল আত্মাকে কর্ত্তা বোধ করা ঠিক্ নহে অর্থাৎ দেহাদির সহিত মিলিত হইলে আত্মার কর্তৃত্ববৃদ্ধি দোষাবহ নহে] এই প্রকার শক্ষারূপ দোষও এখানে হওরা উচিত নহে; কারণ, আত্মার স্বভাব যদি অবিক্রিয়ন্ত্ব হয়, তবে তাহার সহিত [কোন বেক্তই বধন সংহত হইতে পারে না, তথন] অধিষ্ঠান প্রভৃতির সহিত সংহতত্ব বা সহন্ধ কোন প্রকারেই উপপন্ন হইতে পারে না। যে বস্তু বিকারী, তাহার সহিতই অন্ত কোন বস্তু সংহত বা মিলিত হইতে পারে এবং মিলিত হইলে তবে কর্তৃত্বও সন্তব্যর হয়। আত্মার বধন কোনপ্রকার বিকার (বা অবহান্তর) অসন্তব, তথন আত্মার সহিত কাহারও মিলন হইতে পারে না; স্থতরাং মিলিত হইরা আত্মার কর্তৃত্বও হইতে পারে না। এই কারণে বলিতে হইবে যে, আত্মার ক্রেবলন্থ স্বাভাবিক; স্থতরাং এই শ্লোকের 'কেবল' শক্ষ্টি তাহার স্বতঃসিদ্ধ স্ক্রপের অন্থবাদ মাত্র। [ইহা ছারা বে মিলিত আত্মার কর্তৃত্ব প্রকারান্তবের স্থিতিত হইতেছে, তাহা কিছুতেই সম্ভবপর নহে]।

আত্মার অবিকারিস্বভাব, শ্রুতি, স্বৃতি এবং যুক্তি বারা সিদ্ধ হইরা থাকে। "এই আত্মা অবিকাৰ্য্য বলিয়া কথিত হয়" "কৰ্মসমূহ গুণগণেরই কাৰ্য্য" "শরীরত্ব হইয়াও কিছুই করে না" ইত্যাদি বাক্যের দারা এই গীতাশান্তে আত্মার অবিক্রি-মন্দ্র পূর্বে বছবার উপদিষ্ট হইয়াছে। শ্রুতিতেও "যেন ধ্যান করে, যেন ক্রীড়া-করে" ইত্যাদি বাক্যের ধারাও তাহা প্রতিপাদিত হইয়াছে। বৃক্তিও রাজ-মার্গের ন্যায় [সর্বজনসমকে] পড়িয়া রহিয়াছে যে, আত্মা নিরবয়ব অপরতন্ত্র ও অবিক্রির। আত্মার কোন রূপ বিকার আছে, ইহা যদি অঙ্গীকার করিতে হর. তাহা হইলে মানিতে হর্ম যে, ঐ বিকার তাঁহার নিজেরই ধর্ম। অধিষ্ঠান প্রভৃতির ধর্ম যে সকল ক্রিরা, তাহাদের কর্তা কোন রূপেই আত্মা হইতে পারেন না। যাহা একের কর্মা, তাহা অপরের হর না; স্কুতরাং তাহা অপরকে কিছুতেই প্রাপ্ত হইতে পারে না। যদি বল, অবিদ্যার প্রভাবে উহা অপরের উপর আরোপিত হইতে পারে, তাহা হইলেও, বস্তুতঃ তাহা কোন প্রকারেই অপরের ধর্ম হইতে পারে না। যেমন অজ্ঞ ব্যক্তি রক্তথর্শ্বকে শুক্তির উপর আরোপিত করে, বা ভূতুলের ধর্ম মলিনত্বকে আকাশের উপর আরোপিত করে বলিয়া, রম্বতত্ব শুক্তির थर्ष वा गणिनक बाकालित थर्ष रहेरत, रेरा कथनरे मखन्पत्र नरर, म्टेक्स व्यक्तिन প্রভৃতির ধর্ম বে বিক্রিয়া, ভাহা অধিষ্ঠান প্রভৃতিরই ধর্ম হইবে, কিছুতেই ভাহা

আত্মার ধর্ম হইবে না। সেই কারণে ইছা ঠিক বলা হইরাছে যে, বিশানের অংকার-রূপ বেপ না থাকার তিনি কাহাকে হননও করেন না এবং হনন করিরা নিজে वस्ता अधि इन ना । "वह आशा इनन करतन ना ववः इंड इन ना" हेंडांपि বাক্যের দারাও, আত্মার অবিকারিত্ব প্রতিজ্ঞাত হইয়াছে। "আত্মার জন্ম হয় না" ইত্যাদি বাক্যের দারা আত্মার অবিক্রিরত্বের প্রতি হেতু প্রতিপাদন করা হটয়াছে। ভাহার পর "এই আত্মাকে অবিনাশী বলিয়। যিনি মানেন" ইত্যাদি বাক্যের থারা বিহানের কর্মাধিকার নিবৃত্ত হয়, ইহা শাল্রের আদিভাগে সংশে পে ৰলা হইরাছে এবং মধ্যভাগে এই কথাই বিস্তৃতভাবে নানাপ্রসঙ্গে বলা হইরাছে, একণে এক সলে ঐ সকল অর্থ একত্র করিয়া ব্যাইবার জন্ম উপসংহার করিতে-ছেন বে. এই বিদ্বান কাহাকেও হনন করেন না এবং বন্ধও হন না। এই প্রকার অবস্থা উপস্থিত হইলে,আত্মাতে আর দেহিত্বাভিমান থাকিতে পারে না : স্থতরাং. তথন অবিদ্যা দারা আরোপিত সকল কর্ম্মেরই সন্ন্যান উপপন্ন হইয়া থাকে। এইস্বর্গুট সন্ন্যাদিগণের পক্ষে কর্ম্মের অনিষ্ঠ প্রস্তৃতি ত্রিবিধ ফল হইতে পারে না; किन्न, बाहाता जलान, जाहारमत्रहे थे खिविध कर्माकरमत्र एजांश हहेना शास्त्र। এই প্রকার মতটিকে কেহই [যুক্তি বা প্রমাণের দ্বারা] খণ্ডন করিতে পারে না। এই হইল গীতাশাল্রের উপসংস্কৃত অর্থ। এই সিদ্ধান্তই সকল বেদার্থের সারভূত। যাঁহারা পণ্ডিত এবং নিপুণমতি, তাঁহাদের উচিত যে, বিচার করিয়া এই পিঁদান্তটি ভাল করিয়া বুঝা। আমরা শাস্ত্র এবং ক্যায়ের অনুসরণ করিয়া, সেই সেই স্থানে প্রকরণ-বিভাগের দারা এই সিদ্ধান্তটি প্রতিপাদন করিয়াছি ॥১৭

> জ্ঞানং জ্ঞেয়ং পরিজ্ঞাতা ত্রিবিধা কর্মাচোদনা। করণং কর্মা কর্ত্তেতি ত্রিবিধঃ কর্মাসংগ্রহঃ॥১৮

ন্তাষ্য । জ্ঞানং জেরং পরিজ্ঞাতা ইতি কর্মচোদনা ত্রিবিধা। করণং কর্ম কর্মাইতি কর্মসংগ্রহঃ ত্রিবিধঃ ॥১৮

অকুবাদ। জ্ঞান জের এবং পরিজ্ঞাতা এই তিন প্রকার কর্মের প্রবন্তনা, এবং করণ কর্ম ও কর্ডা এই তিন প্রকার কর্মসংগ্রহ ॥১৮

ভাষ্য। অথেদানীং কর্মনাং প্রবর্ত্তকমূচ্যতে,—জ্ঞানং জ্ঞারতে অনেনেতি স্ক্রিবরমবিশেবেণ উচ্যতে। তথা জ্ঞেরং জ্ঞাতব্যম্, তদপি সামাস্তেনৈব স্ক্রিব্রমবিশেবেণ স্ক্রিভাতা উপাধিলক্ষণোহবিত্যাক্রিতো ভোক্তা, ইত্যেতক্রমন্ এবাদ অবিশৈবেণ স্ক্রিভ্রমণং প্রবর্ত্তিকা ত্রিবিধা ত্রিপ্রকারা কর্মচোদনা। জ্ঞানা-

দীনাং হি এরাণাং সরিপাতে হানোপাদানাদি প্রয়োজনঃ সর্ককর্পারন্তঃ ভাং। ভতঃ
পঞ্চ ভিঃ অধিষ্ঠানাদিভিঃ আরন্ধং বাখনঃকারাপ্রয়ভেদেন বিধা রাশীভূতং বিষু
করণা দিরু সংগৃহতে ইত্যেতহচ্যতে। করণ ক্রিরতে অনেন ইতি বাজং প্রোবাদি,
অন্তঃ স্থং বৃদ্ধাদি কর্মেন্সিতভূমং কর্জুঃ ক্রিররা ব্যাপামানম্, কর্জা ক্রণানাং
ব্যাপার্য়িতা উপাধিলক্ষণ ইতি বিবিধঃ বিপ্রকারঃ কর্মসংগ্রহঃ সংগৃহতেহ্মিন্
ইতি সংগ্রহঃ কর্মণঃ সংগ্রহঃ কর্মসংগ্রহঃ। কর্ম এরু হি বিষু সমবৈতি। ভেনারং
বিবিধঃ কর্মসংগ্রহঃ॥১৮

আনন্দগিরিটীকা। শাস্ত্রার্থোপসংহারানন্তর্যাম্ অপেত্যক্তমিদানীমিতি প্রব-र्वरकाशरमभारशकावरञ्चाका कर्चाणाः रायु विश्वार नाधिकारबाश्विश्वाकाधिकात-ষ্টেবাসিতার্থ:। জ্ঞানশব্দ করণবাৎপত্তা জ্ঞানমাত্রার্থম্বমাহ –জ্ঞানমিতি। ক্ষেরশক্ষাপি তদবদেব **জা**তব্যমাত্রা**র্থম্বমাহ—তাথে**তি। তংপ্রধানমুপ্রিতম্ব তভাবভার্যম্ অবিভাক্তিতবিশেষণম। এতদেব তারং সর্ক-কর্মপ্রবর্ত্তকমিত্যাহ—ইত্যেতদিতি। সর্ব্বকর্মণাং প্রবর্ত্তকমিতাধ্যাহর্ত্তব্যর্থ। চোদনেতি ক্রিয়ায়াঃ প্রবর্ত্তকং বচনমিতি ভাষ্যামুসারেণ চোদনাশক্ষার্থমাছ-প্রবর্ত্তিকৈতি। সর্বকর্মণামিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ: তৈবিধাং জ্ঞানাদীনাং প্রাঞ্জ কর্মণাং চোদনেতি বিগ্রহ:। তেবাং সর্মকর্মপ্রবর্তক্ষমকুভবেন সাধরতি — क्कानामीनामिछि। शानाभागामीकामिभारम डेलका विवक्तिका। कत्रन মিত্যাদেস্তাৎপর্য্যমাহ—তত ইতি। জ্ঞানাদীনাং প্রবর্ত্তকদাদিত্যর্থ:। উক্তেহর্থে শ্লোকভাগমবতারয়তি—ইত্যেতদিতি । বাহুমস্তঃহঞ্চ দিবিধং কর**ণ্ করণবা**ং-পত্ত্যা কথয়তি—করণমিতি। উক্তলকণ কর্মৈব স্ফুটয়তি—কর্জুরিতি। বৃত্তাহি কৰা খাতমাঞ্চ কারকাপ্রমোক্তান্ত তৎপ্রমোক্ত্রমিত্যাহ—কর্ত্তেতি। কণমুক্তে ত্রিবিধে কর্ম সংগ্রন্থতে ত্রাহ—কর্মেতি। কর্মণো হি প্রসিদ্ধং কারকাশ্রয়ত্বমিতি ভাব: ॥.৮

অনুবাদ। ভাহার পর একণে কর্মসমূহের প্রবর্ত্তক [কি, ভাহাই]
- বলিতেছেন। "জ্ঞান" বাহার দারা বিষয়সমূহ প্রকাশিত হয় তাহাকেই 'জ্ঞান'
কহে; এই জ্ঞান শব্দের অর্থ সামাঞ্জঃ সর্কবিষয়েরই জ্ঞান। সেইরূপ "জ্ঞার"
শব্দের অর্থ বাহা কিছু জ্ঞাতব্য, সেই সকলই। সেইরূপ "পরিজ্ঞাতা" অর্থে বৃদ্ধিরূপ উপাধিদারা বিশেষিত অবিভাক্তিত ভোকা। এই যে তিন্তি, ইহারাই সামাজ্ঞাবে-সকলপ্রকার কর্ম্মের প্রবর্ত্তক; স্কুডরাং কর্মান্তোদানা (কর্মপ্রবর্ত্তক বাক্যও) ত্রিবিধ। কারণ, এই যে জ্ঞান, জ্ঞেয় এবং পরিজ্ঞাতা, এই তিন্তির

পরস্পার সম্বন্ধ হইলেই, তবে কোন বস্তুর উপাদান বা পরিভাগের জক্ত সর্মন্থার কর্মের আরম্ভ হইরা থাকে। তাহার পর অধিষ্ঠান প্রস্কৃতি পূর্ব্বোক্ত পাঁচটি হেতু হারা আরম্ভ হইরা, বাক্ মনঃ এবং কার্ম্বর আপ্রান্ধর বৈবিধ্য প্রযুক্ত, তিন প্রকারের ঐ কর্ম্ম তিনটি রাশিতে প্রবিভক্ত হয়; স্বতরাং ঐ সকল কর্ম্মন্থান প্রভাতি তিনটির মধ্যেই সংগৃহীত হইরা থাকে। এই কথাই বলা হইতেছে — "করণ" বাহা হারা করা বায়, তাহার নাম 'করণ'; করণ শব্দের অর্থ শ্রোত্র প্রস্কৃতি বাহ্ ইন্দ্রির এবং বৃদ্ধি প্রভৃতি। 'কর্ম্ম' শব্দের অর্থ কর্তার বাহা অত্যন্ত অভিলবিত, বাহার জন্ম ক্রিয়া—তাহাই কর্ম্ম। "কর্তা" ঐ সকল প্রোত্র প্রস্কৃতি করণের প্রবর্ত্তক ও বৃদ্ধিরূপ উপাধি পরিচ্ছিন্ন ভোজা। এই তিনটিই হইল "কর্ম্ম-সংগ্রহ"। বাহা হারা সংগৃহীত হয়, তাহার নাম 'সংগ্রহ', কর্ম্মসম্ভের সংগ্রহ এই অর্থে 'কর্ম্মসংগ্রহ' এই পদটি প্রযুক্ত ইইয়াছে। এই তিনটি বস্তুতেই সকল কর্ম্ম সমবেত হয়, এই কারণে এই ত্রিবিধ বস্তুকেই 'কর্ম্মসংগ্রহ' বলা বায়॥১৮

জ্ঞানং কর্ম্ম চ কর্ত্ত। চ ত্রিধৈব গুণভেদতঃ। প্রোচ্যতে গুণসংখ্যানে ষথাবচ্ছ,ণু তাশ্যপি॥১৯

অনুষু । গুণসংখ্যানে (সাংখ্যপান্তে) গুণভেদতঃ জ্ঞানং কর্ম চ কর্ম্ব। চ ত্রিধৈব প্রোচ্যতে ; তানি যথাবং শৃণু ॥১৯

অনুবাদ। তথগংখ্যানে (অর্থাৎ সাংখ্যশাস্ত্রে) গুণভেদ-নিবন্ধন জ্ঞান, কর্মা ও কর্ত্তা এই তিনটিই প্রত্যেকে ত্রিবিধ বলিয়া পরিকীর্ত্তিত চইয়াছে, ভাহাও ভূমি বথাবথ ভাবে শ্রবণ কর ॥১৯

ভাষ্য। অর্থেদানীং ক্রিয়াকারকফলানাং সর্বেষাং ওণাত্মকতাৎ দ্বরক্ষন্তমোগুণভেদতঃ ত্রিবিধা ভেদো বক্তব্য ইত্যারভাতে—জ্ঞানং কর্ম চ, কর্ম্ম
ক্রিয়া, ন কারকং পারিভাষিকমীপ্সিততমং কর্ম্ম, কর্ত্তা চ নির্বেক্তকং ক্রিয়াণাং
ব্রিধৈবাবধারণং গুণব্যতিরিক্তকাত্যস্তরাভাবপ্রদর্শনার্থং গুণভেদতঃ সন্ধাদিভেদেন
ইত্যর্থঃ,প্রোচ্যতে কথ্যতে গুণসংখ্যানে কাণিলে শাস্ত্রে,তদপি গুণসংখ্যানং শাস্ত্রম্
গণভোক্তবিষয়ে প্রমাণমেব পরমার্থব্রৈক্ষকত্ববিষয়ে যন্ত্রপি বিক্রধ্যতে। তে হি
কাপিলা গুণগৌধব্যাপারনিরপণে অভিযুক্তা ইতি তছান্ত্রমপি বক্ষানাণার্থস্ত্র্যর্থক্রেন উপাদীয়তে ইতি ন বিরোধঃ। বথাবৎ যথাজায়ং যথাশাস্ত্রং শৃণ্ তান্ত্র্পি,
ক্রানাদীনি তদভেদক্র্তানি গুণভেদক্রতানি শৃণ্ বক্ষ্যাণে অর্থে মনঃসমাধিং ক্রক
ইত্যর্থঃ ॥১৯

আনন্দগিরিটীকা। অনন্তরশ্লোকদশকতাৎপর্য্যনাহ—অথেতি। ভানাদি-ইদানীং প্রস্তুজ্ঞানাম্ববাস্তরভেদাপেকারামিতার্থঃ। প্রস্থাবানস্তর্যামথশব্দার্থঃ । ভেষাং গুণভেদাৎ ত্রৈবিধ্যে হেতুমাহ—গুণাজ্বকত্মাদিতি। বন্ধব্যো বক্ষামাণ-শ্লোকনবকেনেতি শেষঃ। এবং স্থিতে প্রথমনবাস্তরভেদপ্রতিজ্ঞা ক্রিয়ত ইত্যাত —ইতাবিভাতে ইতি। কর্ত্তরীপিততমং কর্মেতি বং পরিভাষ্যতে তরাক কর্মশন্বাচামিতাাহ—নেতি। গুণাতিরেকেণ বিধান্তরং জ্ঞানাদির নেতি নির্দ্ধারন্থিতুসবধারণমিত্যাহ—গুণেতি। জ্ঞানাদীনাং প্রত্যেকং **ও**ণভেদ প্রযুক্তে ত্রৈবিধ্যে প্রমাণমাহ—প্রোচ্যত ইতি। নম্ কাপিলং পাতঞ্জলমিত্যাদি শান্তং বিৰুদ্ধাৰ্থস্থাদপ্ৰমাণং কথমিহ প্ৰমাণীক্ৰিয়তে তত্তাহ—তদপীতি। বিষয়-বিশেষে বিরোধেছপি প্রক্লতেছর্থে প্রামাণ্যমবিরুদ্ধমিতার্থঃ। বন্তপি কাপিলাদরে। গুণর বিচারে গৌণব্যাপারশু ভোগাদেনি রূপণে চ নিপুণান্তথাপি কথং তদীয়ং শান্ত্ৰনত প্ৰমাণীকৃতনিত্যাশক্যাহ—তে হীতি ৷ জ্ঞানাদিবু প্ৰত্যেকমবাস্তৱ-ভেদো বক্ষ্যমাণোহর্থস্তত্ত তন্ত্রাস্তরেহপি প্রসিদ্ধিকপনং স্কৃতিস্তাদর্থ্যেন কাপিলাদি-মতোপাদানমিহোপযোগীতার্থ:। তৃতীয়পাদভাবিক্দার্থতং নিগময়তি—নেতি। যথাবদিত্যাদি ব্যাচষ্টে—যথাস্থায়মিতি ॥>>

অনুবাদ। তাহার পর এইকণে ক্রিয়া, কারক এবং ফল এই ব্রিধা বিভক্ত জগৎ সকলই গুণমর; স্থাতরাং গুণের [সন্ধ, রজঃ এবং তমঃ এইরূপ] ব্রৈবিধ্য আছে বলিরা, এ তিনটি পদার্থও ব্রিবিধ হয় ইহাই বুঝাইতে হইবে; এই জল্প, এই ক্লোকের আরম্ভ করা হইতেছে। "জ্ঞান" (বিষয়রূপে পরিণত বুদ্ধির ক্রি) কর্ম শক্ষের অর্থ ক্রিয়া, কর্ত্তার ঈপ্সিততম যে কারককে পূর্বের কর্ম বলিয়া ব্রিক্রেশ করা হইয়াছে, সেই কারকরূপ পারিভাষিক কর্ম্ম, এ হুলে 'কর্ম্ম' শক্ষের অর্থ নহে। "কর্ম্তা" যে কর্ম্মের নির্ব্বেজক, সেই 'কর্ত্তা'। "ব্রিধা" তিনপ্রকার, 'এবং" শক্ষের অর্থ অবধারণ অর্থাৎ তিন প্রকারই হইবে; অধিকও নহে, নালও নহে। এই প্রকার অবধারণ ক্রায়া প্রতিপাদন হইতেছে বে, জ্লাগতিক যত কিছু বস্ক, সকলই এই তিনটি গুণজাতির মধ্যে প্রবিষ্ঠি। এই গুণগত জ্লাতি ব্যক্তীত জন্ম কেনা জাতির সন্থাবনা নিরাকরণ করিবার জন্মই এই হানে এই অবধারণার্থ 'এব' শক্ষের প্রয়োগ করা হইয়াছে। "গুণভেদ" অর্থাৎ সন্ধ, রলঃ এবং তরো-শুনের ভেদবশতঃ—অর্থাৎ ঐ গুণ তিন ভাগে প্রবিভক্ত বলিয়া—গুনের ক্রার্মানি গুলিও তিন ভাগে বিভক্ত হইয়া থাকে। "প্রোচ্যতে" এই শন্ধটির অর্থ—ক্র্মিড হয়। "গুণসংখ্যান" এই শন্ধটির অর্থ কপিল-প্রোক্ত সাংখ্য দর্শন। সেই কপি-

লোক্ত শাস্ত্রও 'গুণদংখ্যান' শব্দের অর্থ হইতে পারে, এবং সেই শাস্ত্র গুণ-ভোক্তার স্বরূপ নির্ণয়ে প্রমাণ বলিয়া পরিগৃহীত হইতে পারে। ঐ শাস্ত্র বেদান্ত-প্রতিপায় পরমার্থ প্রক্রৈক্ছ বিষয়ে বিরুদ্ধ মত প্রকাশিত কবে [তথাপি গুণ ও গুণভোক্তার বিষয়ে এ শাস্ত্র প্রমাণ বলিয়া গৃহীত হইতে পারে]। সেই কাপিলগণ গুণ ও গুণ-ব্যাপার নিরূপণে পণ্ডিত; একারণে তাঁহাদের শাস্ত্রও বক্ষ্যমাণ বিষয়ের প্রশংসার জন্ম এখানে পরিক্রীন্তিত হইতেছে। স্কুতরাং কোন বিরোধ হইতেছে না। 'বথাবং' এই শব্দের অর্থ যথান্তায়—সর্থাৎ বথাশাস্ত্র, সেই জ্ঞানাদি এবং তাহাদের অবান্তর ভেদ সকল গুন অর্থাৎ আমি এক্ষণে যাহা বলিব, তাহা ভাল করিয়া ব্রিবার ক্ষম্ত মনকে সমাহিত কর। ইহাই তাৎপর্য্য॥১৯

সৰ্ব্বভূতেরু যেনৈকং ভাবমব্যয়মীক্ষতে। অবিভক্তং বিভক্তেযু তজ্জ্ঞানং বিদ্ধি সান্ত্ৰিকম্॥২০

অনুয় । বিভজেব সর্কভ্তের বেন একন সনিভক্তন মব্যাং ভাবন ঈগতে, তৎ সারিকং জ্ঞানং বিদ্ধি ॥২০

আকুবাদ। পরস্পর বিভক্ত সকণ ভূতেই বদারা একমাত্র অবিনাশী ও অবিভক্ত ভাব দৃষ্ট হয়, তাহাই সাৱিক জ্ঞান জানিবে ॥২•

ভাষ্য। জ্ঞানস্থ তু তাবং বিবিধমন্ত্যতে—সর্বভৃতের অব্যক্তাদিস্থাব-রাস্তের ভূতের যেন জ্ঞানেন একং ভাবং বস্তু, ভাবশব্দো বস্তুবাচী একমান্ত্রবস্তু ইত্যর্থ:। অব্যয়ং ন ব্যেতি স্বান্থনা ধর্মো: বা * কুটস্থ নিত্যমিত্যর্থ:। ঈসতে যেন জ্ঞানেন পশ্যতি, তং চ ভাবম্ অবিভক্তং প্রতিদেহং বিভক্তের ন বিভক্তং ভদান্ত্রবস্তু ব্যোমবল্লিরস্তরম্ ইত্যর্থ:। তং জ্ঞানং অবৈতাত্মদর্শনং সার্ভিকং সম্যাগ্দেশনং † বিদ্ধি ইতি। যানি বৈতদর্শনানি অসম্যাগ্ভূতানি রাজ্যানি তামসানি চইতি ন সাক্ষাৎ সংসারোচ্ছিত্তয়ে ভবস্তি॥২॰

আনন্দণিরিটীকা। জ্ঞানাদীনাং প্রত্যেকং তৈবিধ্যং জ্ঞাতব্যং প্রতিজ্ঞার জ্ঞানতৈবিধ্যার্থং শ্লোকত্তরমবতারয়তি—জ্ঞানস্তেতি। তত্ত্ব সাধিকং জ্ঞানমূপক্লম্ভতি—সূর্বেতি। ভূতানি কার্য্যকারণাত্মকাম্যুপাধিজাতানি অধিতীয়মধক্তৈকরসং প্রত্যগাত্মভূতমবাধিতং তত্ত্বং জ্ঞেরংনে বিবক্ষিতমিত্যাহ—একমিতি। বিবক্ষিতমব্যরত্বং সক্ষিপতি—কূট্সেইতি। প্রতিদেহমবিভক্তমিত্যুক্তং

^{🔅 -} স্বধৰ্মেণ বা ইতি কচিৎ দৃগুতে।

^{†..} ছং জানং সাকাৎ সমাগ্দর্শন্ অবৈতাত্মবিষয়ং সাত্মিকং বিদ্ধি ইতি কেচিং বদন্তি।

ব্যনজি—বিভক্তে ছিতি। তজ্জানমিত্যাদি ব্যাকরোতি—অহৈতিতি। বৈতদর্শনান্তপি কানিচিম্ভবন্তি সন্ত্রনির্ভানি সম্যঞ্চীত্যাশঙ্ক্যাহ—মানীতি। তেবামসম্যক্ষে হেতুমাহ—রাজসানীতি ॥২০

অকুবাদ। জ্ঞানও যে তিন প্রকার, তাহা বলিতেছেন—সর্বভূতে অর্থাৎ অব্যক্ত ইতে স্থাবর পর্যায় সমন্ত প্রপঞ্চে, যে জ্ঞানের দ্বারা এক "ভাব" বস্তুকে দেখিতে পাওয়া যায়, এখানে 'ভাব' শন্দের অর্থ বস্তু অর্থাৎ এক আত্মস্করণ বস্তু। [সেই আত্মবস্তু কেমন ?] "অবায়," যাহা স্বরূপতঃ এবং ধর্মতঃ বায়কে প্রাপ্ত হয় না, অর্থাৎ বাহা অপরিবর্ত্তনশীল নিত্য। যে ক্র্ঞানের দ্বারা সর্বত্ত এইরূপ আত্মবস্তুকে দেখিতে পাওয়া বায় —[সেই আত্মবস্তুকে কি ভাবে দেখিতে পাওয়া বায়, তাহাই বলা হইতেছে যে] অবিভক্ত স্বরূপে, প্রতিদেহ পর্বশের প্রবিভক্ত হইলেও সেই আত্মস্কর্প বস্তু আকাশের স্থায় এক ও নিরম্ভর, ইহাই অর্থ —সেই অবৈতাত্মদর্শনই সমাগ্ দর্শন এবং তাহাই 'সাল্বিক' ইহা জানিও। তাহা ভিল্ল আর যত প্রকার হৈতজ্ঞান আছে সে সকলই অসম্যগ্ দর্শন; স্ক্তরাং হয় রাজস, না হয় তামস; ঐ সকল রাজস এবং তামস জ্ঞান সাক্ষাৎ সংসারের উচ্ছেদক হইতে পারে না॥২•

পৃথক্ত্বেন তু যজ্জানং নানাভাবান্ পৃথগ্বিধান্। বেত্তি সর্কেষু ভূতেযু তজ্জানং বিদ্ধি রাজসম্॥২১

আৰীয় । যং জ্ঞানং সর্কেষ্ ভূতেষ্ পৃথগ্বিধান্ নানাভাবান্ পৃপক্জেন বেভি, তব্রাজসং জ্ঞানং বিদি ॥১১

• অনুবাদ। দর্কভূতে পৃথগ্বিধ নানাভাবকে বে জ্ঞান পৃথগ্ ভাবেই প্রকাশিত করে, তাহাই রাজস জ্ঞান, ইহা জানিবে ॥২>

ভাষ্য। পৃথক্ষেন ইতি। পৃথক্ষেন তু ভেদেন প্রতিশরীরম্ অন্তম্বেন যজ্জানং নানা ভাষান্ ভিন্নানামনং পৃথবিধান্ পৃথক্প্রকারান্ ভিন্নলকণানিত্যর্থ:। বেতি বিজ্ঞানাতি যজ্জানং সর্কের্ ভূতের্ জ্ঞানন্ত কর্তৃপাসন্তবাং বেন জ্ঞানন বেতি ইত্যর্থ:। তজ্জানং বিদ্ধি রাজসং রক্ষোগুণনির্বিষ্ ॥২১

আনন্দণিরিটীকা। প্রতিদেহমন্তবেন ভিন্নাপ্রনোবেন জানেন জানাতি তক্ত জানং রাজসমিতি ব্যাচষ্টে—ভেদেনেতি। পৃথক্বং পূণগ্বিধত্বক পুন-কর্তুমিত্যাশস্থ্য হেত্হেত্মন্তেন বিভাগং বিবক্ষিত্যভ—ভিন্নেতি। জ্ঞানস্থ জানকর্তুমন্ত্রমিত্যাশক্ষ্যাহ—হোনেতি ॥২১

অমুবাদ। পৃথক্ষেন ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "পৃথক্ষ" এই শক্ষটির অর্থ ভেদ, সেই ভেদপ্রস্থারে অর্থাৎ প্রতিদেহেই ভিন্ন ভিন্ন ভাবে নানা অবস্থাসন্পার বহু আছা বিশ্বমান রহিরাছে; ঐ সকল আছার স্বরূপ ও লক্ষণ পৃথক্ পৃথক্; এইভাবে যে জ্ঞানের হারা আছাকে ব্ঝিতে পারা যার, সেই জ্ঞানই রাজদ অর্থাৎ রজ্যেগুণের কার্য্য। জ্ঞান শক্ষটির উত্তর কর্ভ্বোধক প্রথমা বিভক্তি থাকিলেও জ্ঞানের কর্ভ্য অসম্ভব বলিয়া ঐ প্রথমাকে তৃতীয়ার স্থায় ব্ঝিয়া, 'জ্ঞানের হারা' এই রূপ অর্থ করিতে হইয়াছে ॥২>

যভু কৃৎস্নবদেকস্মিন্ কার্য্যে সক্তমহেতুকম্ # । অতত্ত্বার্থবদল্লঞ্চ তৎ তামসমুদাহৃতম্ ॥২২

আনুয়। যৎ এক মিন্ কাৰ্য্যে ক্বন্ধৰ সক্তম্ আহত্কম্ অত কাৰ্থবৰ অক্ষ তং [জানং] তামসমূলাক্তম ॥২২

আকুবাদ। বে জ্ঞান কোন একটি কার্ষ্যে "ইহাই সব" এই ভাবে সক্ত হয়, বে জ্ঞান যুক্তিহীন, যে জ্ঞানের বিষয় মিথ্যাভূত এবং পরিচ্ছিয়া, সেই জ্ঞানই ভামস বলিয়া উদাহত ॥২২

ভাষ্য। যন্তি। যত জানং ক্বংসবং সমন্তবং সর্কবিষয়নিব এক সিন্
কার্য্যে দেহে বহির্কা প্রতিমাদে সক্তম্ 'এতাবান্ এব আয়া ঈশরো বা নাতঃ
পরমন্তি' ইতি, যথা নগ্রক্ষপণকাদীনাং শরীরাম্বর্তী + দেহপরিমাণো জীবঃ, ঈশরো
বা পাবাপদার্কাদিমাত্র ইত্যেবমেক সিন্ কার্য্যে সক্তম্, অহেত্কং ক্তেত্ব জিতঃ,
নির্মৃত্তিকম্ অভন্তার্থবদ্ যথাভূতোহর্থঃ তন্তার্থঃ সোহত্ত জ্ঞের্ভতোহন্তীতি তন্তার্থ
বং ন ভন্নার্থবং অভন্নার্থবং, অহেত্কন্তাদেব অরং চ অরবিষয়ন্তাদ্রম্ভান্য
তৎ ভাম্সমূদান্তব্য ভামসানাং হি প্রাণিনাম্ অবিবেকিনাম্ ঈদ্শং জ্ঞানং
দৃশ্যতে ॥২২

আনন্দণিরিটীক। সক্তথ্যের ব্যনকি—এতাবানিতি। একমিন্
কার্য্যে জ্ঞানক সক্তথ্যের দৃষ্টান্তেন সাধয়তি—যথেত্যাদিনা। বিশ্বযুক্তিকন্ধং,
তদের জ্ঞানকাভাগত্বে কারণমিত্যাহ—অনুহতুকত্বাদিতি। স্বরূপতো বিবয়তক্
আভাগত্বং ফলতো বা ইত্যাহ—অন্ত্র্যুমিতি। তামসং জ্ঞানমুক্তলক্ষণম্
ইত্যজাহত্বং প্রমাণয়তি—তামসানাং হীতি॥২২

बदेश्रुकम् ইতি বা পাঠ:।

र विश्वक्ति है कि क्लिश शर्भ ।

অকুবাদ। বভুইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]। যে জ্ঞান একট কার্য্যে অর্থাৎ দেহে বা বাহ্য প্রতিমা প্রভৃতিতে "কংমবং" সমস্তবং অর্থাৎ ইহাই আত্মা বা ইহাই ঈশ্বর, ইহা ছাড়া আর কিছু আত্মা বা ঈশ্বর হইতেই পারে না, এই ভাবে যেন সর্কাবিষয়ক হইয়া সক্ত হয়। যেমন নয় ক্ষপণক জৈন ও বৌদ্ধ দার্শনিক প্রভৃতির মতে, জীব দেহপরিমাণ বা শরীরকে অন্থর্জন করে কিংবা ঈশ্বর কার্চাদিপরিমাণ মাত্র, সেইরূপ যে জ্ঞান একটি কোন কার্য্যে আসক্ত অবচ সর্কাবিষয়কবং প্রতীয়মান; "অহেতুক" বাহার হেতু নাই অর্থাৎ যে জ্ঞান নিয় কিক (যুক্তিহীন); "অতথার্থবং" তরার্থ শব্দের অর্থ সত্য বন্ত, যে জ্ঞান সত্য বন্তকে প্রকাশ করে, তাহা তরার্থবং, যে জ্ঞান তত্মার্থবং নহে, তাহাই 'অতহার্থবং;' অহেতুক বলিয়াই "অরু" বাহার বিষয় অরু বা বাহার ফল তৃচ্ছ। এই প্রকার যে জ্ঞান, তাহাই শাস্তে তামস বলিয়া উদাহত হয়। তামস অর্থাৎ অবিবেকী প্রাণিগণেরই ঈদুশ জ্ঞান হইয়া থাকে ॥ ২২

নিয়তং দঙ্গরহিতমরাগদ্বেষতঃ কৃতম্। অঞ্চলপ্রেশ্সু না কর্ম্ম যৎ তৎ দাত্ত্বিক্মুচ্যতে ॥২৩

আয়ুর। অফলপ্রেঞ্না অরাগদ্বেবতঃ নিরতং সঙ্গরহিতং চ [বথা ভবতি তথা] বং কর্ম কৃতং [ভবতি], তং সাধিকম্ উদাহতম্ ॥২৩

আমুবাদ। ফলকামনাহীন ব্যক্তি রাগ ও দ্বের পরিহারপূর্বক নিয়ত ও জনাসক্ত ভাবে যে কর্মের অমুষ্ঠান করে, সেই কর্মাই সান্তিক কর্মে বলিয়া পরি-কীর্ত্তিত হইয়া থাকে ॥ ২৩

ভাষ্য। অথ কর্মণবৈরিবিধাম্চাতে—নিয়তং নিতাং সকরহিতম্ আসক্ষি-বর্জিতম্ অরাগদেষতঃ ক্বতং রাগপ্রযুক্তেন হেবপ্রযুক্তেন চ কৃতং রাগদেষতঃ কৃতং, তদ্বিপরীতং কৃতম্ অরাগদেষতঃ কৃতম্, অফলপ্রেঞ্জানা ফলং প্রেঞ্জাতীতি ফল-প্রেঞ্জাঃ ফলভ্কাঃ তদ্বিপরীতেন অফলপ্রেঞ্জানা ক্রন্তা কৃতং কর্ম্ম বং তৎ সাধিক-মূচাতে ॥২০

আনন্দণিরিটীক। তিবিধং কর্ম বস্তুমনস্তরশ্লোকত্তরমিত্যাহ—অপ্রেতি।
ত্তুমান্ধিকং কর্ম নিরপরতি—নিয়তমিতি ॥২৩

আনুবাদ। অনস্থর কর্মও যে ত্রিবিধ,তাহা বলিতেছেন—"নিয়ত" নিত্য, "সঙ্গরহিত" আসক্তিবর্জিত, "অরাগধেবতঃ ক্রত" রাগ বা থেবদারা গ্রেরিত হইয়া লোকে যে কর্ম করে, তাহাই 'রাগছেষতঃ ক্বত' যে কর্ম রাগছেষতঃ ক্বত নহে তাহাই 'অরাগ বেষতঃ ক্বত'; "অফলপ্রেপ্স্" যে ফল কামনা করে, অর্থাৎ ফলে যাহার ভূষা আছে, তাহাকে 'ফল-প্রেপ্স্' বা 'ফলভূষ্ণ' করে; যে ফল-প্রেপ্স্ নহে, তাহাকে 'অফলপ্রেপ্স্' কহা যার; সেই অফলপ্রেপ্স্ ব্যক্তি যে কর্ম করেন, সেই [পূর্ব্বোক্ত বিশেষণযুক্ত] কর্মকেই 'সান্তিক কর্ম' বলিরা শাস্ত্রকারগণ নির্দেশ করিরা গাকেন ॥২০

> যৎ তু কামেপ্সুনা কর্ম্ম সাহস্কারেণ বা পুনঃ। ক্রিয়তে বহুলায়াসং তদ্রাজসমুদাহতম্॥২৪

আয়ুয় । বং তুপুন: বহুলায়াসং কর্ম কামেপ্যুনা সাহস্কারেণ বা ক্রিয়তে, তং রাজসম্ উদাহতম্॥ ২৪

অনুবাদ। ফলকামী অপবা অহম্বারী মানব বহুক্লেশকর যে কণ্ম করিরা থাকে, তাহাই রাজস কর্ম্ম বলিরা পরিকীর্ত্তিত হয় ॥২৪

ভাষ্য। বৃদ্ধিতি। বতু, কানেপ্সুনা ফলপ্রেপ্সুনা ইত্যর্থ:। কর্ম্ম সাহস্কারেণ বা সাহস্কারেণেতি ন তবজ্ঞানাপেক্ষা, কিং তর্হি ? লৌকিকপ্রোত্তির-নিরহন্ধারাপেক্ষা। যোহি প্রমার্থনিরহন্ধার আত্মবিং ন ত ত কানেপ্সুত্বত্তলায়াসকর্ত্বপ্রাপ্তিরন্তি। সাবিক্সাপি কর্মণ: অনাত্মবিং সাহস্কার: কর্ত্তা, কিমৃত্ত রাজস্তামস্যো:। লোকে অনাত্মবিদপি প্রোত্তিয়: নিরহন্ধার উচ্যতে, নিরহন্ধারির্যার ইতি। তত্মাৎ তদপেক্ষরৈর সাহস্কারেণ বা ইত্যুক্তং পুন:শব্দঃ পাদপুরণার্থ:। ক্রিয়তে বহুলায়াসং কর্ত্ত্বা নহতা আয়াসেন নির্বর্ত্ত্যতে, তৎ কর্ম রাজসমূদাহত্ত্ব য়ং৪

আনন্দগিরিটীকা। রাজসং কর্ম নির্দিশতি—হাত্ত্বিতি। ফলপ্রেপ্রনা কর্দ্রা যথ কর্ম ক্রিয়তে তদ্রাজসমিত্যুত্তরত্ত্ব সম্বন্ধঃ। তত্মজানবতা নিরহন্ধারেণ সাহন্ধারেণ ঘজ্ঞেন ক্রিয়তে কর্মেতি বিবক্ষাং বারমতি—সাহস্কারেণেতি। তব্জ্ঞানবতা নিরহন্ধারেণ ক্বতং কর্মাপেক্য সাহন্ধারেণাজ্ঞেন ক্বত্যেতৎ কর্মেতি ন বিবক্ষাতে চেৎ তর্হি কিমত্র বিবন্ধিতমিতি পৃচ্ছতি—কিং তহীতি। বা হি হরিতরহিতঃ শ্রোক্রিয়ো লোকাদনপেতস্তত্ত বদহন্ধারবর্জ্জিতং কর্ম তদ-পেক্ষরেদং সাহন্ধারেণ ক্বতং কর্মেত্যুক্তমিত্যাহ—লৌকিক্রেতি। নম্ম ভন্মজান-বতো নিরহন্ধারত্ত কর্মকভূমনপেক্য সাহন্ধারেণেত্যাদি কিং নেব্যাতে তত্ত্রাহ— ষো হীতি। বিশেষণাস্তরণশাদেব তর্ববিদো নিবারিভন্বাৎ ন তদপেক্ষমিদং বিশেষণমিতার্থ:। সাহস্কারভৈব রাজনে কর্মণি কর্ভ্ মিত্যেতৎ কৈমৃতিকস্তারেন সাধ্যতি — সাত্ত্বিক্সেতি। নম্ম আত্মবিদোহস্তম্ভ নিরহন্ধারবাবোগাৎ কণং তদপেক্ষা সাহস্কারেণে হাক্তং তত্রাহ—লোক ইতি ॥২৪

অকুবাদ। यतु ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ। যে কর্ম কিন্তু কামেপ্র-অর্থাৎ ফলকামী অথবা সাহগার জনকর্ত্বক অনুষ্ঠিত হয়,--এই বে সাহস্কার বলা हरेत. हेरा य **उद्≠ानो**य्क व्यापका कतिया खेक रहेबाएह, जाहा नरह : किड লৌকিক যে নিরহকার শ্রোতিয় তাহাকে অপেকা করিয়াই এখানে 'সাহকার' বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। কারণ, যে ব্যক্তি প্রমার্থ নিরহন্ধার সূত্রাং আত্মতত্ত্ত তিনি কামেপ্র, হইতে পারেন না, এবং বহু ক্লেশদায়ক কর্মাও তাচা দারা সম্পাদিত হইতে পারে না। অনাঅবিধ যদি সান্ত্রিক কর্মেরও কর্তা হয়, তাহা হইলেও সে সাহতার কর্ত্তাই হইরা থাকে ; রাজ্ব বা তামদ কর্ম্বের কর্ত্তা যে সাহতার কর্ত্তা হইবে. এ বিষয়ে আর অধিক বক্তব্য কি হাঁতে পারে <u>৭</u> সংসারে আত্মত্ত্ব আ ब्हेरल ९, बाक्स यिन विशामि अगम्भिन इन, छाडा ब्हेरल छाँडारक ९ नितब्हात वना यात्र ; (यमन आत्रहे लाएक वनित्रा थाएक, এই ब्राञ्च कि 'नित्रहहात' ; (महे কারণে, সেই প্রকার নিরহঙ্কার শ্রোত্তিয় ব্রাহ্মণকে অপেকা করিয়া এই শ্লোকে "সাহন্ধারেণ" এই পদটি প্রসুক্ত হইয়াছে। 'পুন:" শন্দটির কোন অর্থ নাই, ইহা দারা পাদপুরণ হইরাছে নতে: এই প্রকার কর্তা বহু ক্লেশ স্বীকার করিয়া যে কর্মের অনুষ্ঠান করিয়া পাকে,— দেট কর্মা "রাজ্স" বলিয়া কপিত হইয়া शारक ॥२८

> অনুবন্ধং ক্ষয়ং হিংসামনপেক্ষ্য চ পৌরুষম্। মোহাদারভ্যতে কর্ম্ম যৎ তৎ তামসমূচ্যতে ॥২৫

আন্তর্ম । অফুবন্ধং (পশ্চান্তাবিফলং) ক্ষয়ং হিংসাং পৌরুষং চ অনপেক্য মোহাৎ যৎ কর্ম আরভ্যতে তৎ তামসমূচ্যতে ॥২৫

আকুবাদ। ফল, হানি, হিংগা ও নিজের সামর্থাকে অপেকা না করিয়া, মোহবশতঃ যে কার্য্যের আরম্ভ করা যায়, সেই কর্মকে তামদ কর্ম কহা বার ॥২৫

ভাষ্য। অহবন্ধনিতি। অহবন্ধং পশ্চান্তাবি যদ্বস্ত সোহহ্বন্ধ উচ্যতে, তং চ অঞ্বন্ধন্, কয়ং বন্ধিন্ কৰ্মণি ক্ৰিয়মাণে শক্তিক্যঃ অৰ্থক্যো বা ছাৎ তং

ক্ষমন্, হিংসাং প্রাণিপীড়ামনপেকা চ, পৌক্ষং পুক্ষকারং শক্রোমীনং কর্ম সমা-পরিত্সিত্যেবমাত্মসামর্থ্যম্, ইত্যেতানি অমুবদ্ধাদীনি অনপেকা পৌক্ষান্তানি মোহাদবিবেকতঃ আরভ্যতে কর্ম যৎ তৎ তামসং তমোনির্ভম্ উচ্যতে ॥২৫

আনন্দ্রিরিটীকা। সম্প্রতি ভাষসং কর্মোদাহরতি অমুবন্ধমিত্যাদিনা ॥২৫

অসুবাদ। অসুবদ্ধন্ ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]। যে বস্তু পরে হর, তাহাকে "অসুবদ্ধ" কহা যার, সেই অসুবদ্ধকে,—যে কর্ম করিলে শক্তি বা অর্থের কর হইবে তাহাই এই স্থলে "কর" শক্ষের অর্থ, সেই কর্মকে,—প্রাণিগণের পীড়াই "হিংসা" শক্ষের অর্থ, সেই হিংসাকে,—অপেকা না করিয়া এবং "পৌরুষ" অর্থাৎ এই কার্য্য আমি সমাপন করিতে সমর্থ, এই প্রকার সামর্থ্যরূপ পুরুষকারই "পৌরুষ" শক্ষের অর্থ, সেই পৌরুষকেও অপেকা না করিয়া, অর্থাৎ অসুবদ্ধ হইতে পৌরুষ পর্যন্ত উক্ত কয়টি বস্তুর প্রতি একেবারে লক্ষ্য না করিয়া, "মোহ" অর্থাৎ অবিবেক্বশতঃ যে কার্য্য করা যার, সেই কার্য্যকে "তামদ" তমোঞ্জের পরিণাম কহা যার ॥২৫

মুক্তসঙ্গেহিনহংবাদী ধুত্যুৎসাহসমন্বিতঃ। সিদ্ধ্যসিদ্ধ্যোনির্বিকারঃ কর্তা সাত্ত্বিক উচ্যতে ॥২৬

আনুষ্ । মৃক্তনঙ্গ: অনহংবাদী ধৃত্যুৎসাহদমধিতঃ দিদ্ধাদিদ্ধ্যো: নির্বিকারঃ কর্ত্তা দাবিক উচ্যতে ॥২৬

আনুবাদ। আদক্তিশৃন্ত, নিরহজার, ধৈর্যা ও উৎসাহযুক্ত, দিদ্ধি বা অদিদ্ধিতে নির্বিকার কর্তাই সান্ধিক কর্তা বলিয়া কীর্ত্তিত হন ॥২৬

ভাষ্য। মুক্তেতি। মুক্তসঙ্গং মুক্তং পরিত্যক্তং দক্ষো যেন স মুক্তসঙ্গং, অনহংবাদী নাহংবদনশীলং, ধৃত্যুৎসাহসম্বিতঃ—ধৃতিং ধারণমুৎসাহং ইঅমং, তাভ্যাং সম্বিতঃ সংযুক্তঃ ধৃত্যুৎসাহসম্বিতঃ, সিদ্ধাসিদ্ধোঃ ক্রিয়মাণ্ড কর্মণং কল্মিছো অসিদ্ধো চ সিদ্ধাসিদ্ধোঃ, নির্বিকারঃ কেবলং শাস্ত্রপ্রমাণপ্রযুক্তঃ ন ফল্রাগাদিনা যুক্তো যং স নির্বিকারঃ উচ্যতে। এবং ভৃতঃ কর্ত্তা বং সং সাধিক উচ্যতে॥২৬

আনন্দ্রিটিকা। ইদানীং কর্ত্তিবিধ্যং ক্রবন্ধানে সান্ধিকং কর্তারং

 দর্শরতি—মুক্তেতি। সঙ্গো নাম ফলাভিসন্ধির্মা কর্ত্তাভিসামো বা, নাঁহং

বদনশীলা কর্তাহমিতি বদনশীলো ন ভবতীত্যর্থঃ, ধারণং বৈধ্যম্। ক্রিরমাণত

কর্মণো যদি ফলানভিদ্দিত্তই নামুষ্ঠানবিশ্রন্ত: সম্ভবেদিত্যাশঙ্ক্যাহ—কেবল-মিতি। ফলরাগাদিনেত্যাদিশকেন কর্মরাগো গৃহতে। মযুক্ত ইতি ছেদ: ॥২৬

অসুবাদ। মুক্ত ইত্যাদি প্লোকের অর্থ। "মুক্তসঙ্গ" যে ব্যক্তি সঙ্গ অর্থাৎ আসন্তিকে পরিত্যাগ করিয়াছেন,তিনিই 'মুক্তসঙ্গ'; "অনহংবাদী', "আমিই [কর্তা] এই প্রকার বলা বাঁহার সভাব নহে, তিনিই 'অনহংবাদী'; "গুতৃৎসাহসমন্বিত" গৃতিশব্দের অর্থ ধারণ (সহিবার শক্তি) উৎসাহ শব্দের অর্থ উল্পন, বাঁহার ধীরতা ও উল্পন আছে, তিনিই 'গুতৃৎসাহসমন্বিত'; সিদ্ধি এবং অসিদ্ধি এই উল্ভরেই বাঁহার চিত্ত বিক্বত হয় না অর্থাৎ শাস্ত্রে ইহা কর্ত্তব্য বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে, এইক্লপ্ত আমি এই কার্য্য করিব এই প্রকার বৃদ্ধিরই বশব্দী হইয়া বিনিকর্ত্তব্যক্ষ্যসমূহ সম্পাদন করেন, কর্মফলে তৃষ্ণাবশতঃ কার্য্য করেন না, সেই ব্যক্তিই সিদ্ধি এবং অসিদ্ধিতে নির্দ্ধিকার হইয়া থাকেন; এইরূপ গুণশালী বে কর্তা, তিনিই "সান্বিক" কর্তা বলিয়া কীর্ত্তিত হন॥২৬

রাগী কর্মফলপ্রেপ্স লু দ্বো হিংদাত্মকোইশুচিঃ। হর্মশোকাম্বিতঃ কর্ত্তা রাজসঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥২৭

অনুয় | রাগী কর্মফলপ্রেপ্স, লুবঃ হিংসাত্মক: অশুচিঃ হর্মশোকান্বিতঃ কর্ত্তা রাজসঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥২৭

অসুবাদ | রাগী, কর্মাফলে আকাজ্জায্ক্ত, লোভযুক্ত, হিংসাপ্রকৃতি-অপবিত্র এবং হর্মশাকযুক্ত [যে] কর্ত্তা, [সে] রাজস [কর্ত্তা] বলিয়া [শাস্ত্রে] পব্লিকার্ত্তিত হয় ॥২৭

ভাষ্য। রাগীতি। রাগী রাগোহস্তান্তীতি রাগী, কর্ম্মলপ্রেপ্য: কর্মনন্থী ইতার্থ:, ল্ব: পরদ্রবায় সঞ্জাততৃক্ষ: তার্থাদে স্বদ্রবাপরিত্যাগী বা, হিংসাম্বক: পরপীড়াকরস্বভাব: * অশুচি: বাহান্ত:শোচবর্জ্জিত:, হর্বশোকাবিত: ইষ্টপ্রপ্রেটা হর্ব: অনিষ্টপ্রাপ্তেটা ইষ্টবিরোগে চ শোক:, ভাভ্যাং হর্বশোকাভ্যাম্ অহিত: সংযুক্ত:, তত্তৈব চ কর্মণ: সম্পত্তিবিপন্ত্যো: † হর্বশোকো স্থাতাং ভাভ্যাং সংযুক্তা য: কর্ম্বা স রাজস: পরিকীর্ন্তিত: ॥২৭

আনন্দগিরিটীকা। রাজনং কর্তারং কণয়ুতি—রাগীতি। কর্মবিষয়ো

পরপীড়ামভাব: ইতি কচিদ্দুখতে।

⁺ সম্পত্তিবিপত্তিভাষে ইতি পাঠান্তবয

রাগঃ, কর্মফলপ্রেঞ্গুরিতি ফলরাগশু পৃথক্কথনাং। স্বাভিপ্রারাপ্রকটীকরণপূর্বকং পরণীড়নং পরবিচ্ছেদনং তেন স্বার্থপর ইত্যর্থঃ ॥২৭

অকুবাদ। রাগী ইত্যাদি [শোকের অর্থ]। বাহার রাগ (আসন্তি) আছে, "কর্মকলপ্রেপ্সূ" যে কর্মকলের প্রার্থনা করে; "লুক্র" পরের দ্রব্যসমূহে যাহার তৃষ্ণা অর্থাৎ ভোগেছহা আছে, অথবা তার্থাদিতে যাইয়াও যে নিজ দ্রব্যাদান করে না; "হিংসাত্মক" পরকে পীড়ন করাই যাহার স্বভাব; "অঙ্চি" বাহ্য এবং আন্তর এই দ্বিধি শৌচের মধ্যে একটিও বাহার নাই; "হর্মশোকান্বিত" ইইপ্রাপ্তিতে হর্ম, এবং অনিষ্ঠপ্রাপ্তিতে বা ইই বস্তুর বিয়োগে শোক, এই উভয়টি যাহার আছে; এবং সেই কর্ম্মেরই সংপূর্ণতা বা বিপত্তিতে যাহার হর্ম বা শোক হয়, ভাহাকেও 'হর্মশোকসমন্বিত' কহা যায়; এইরূপ যে কর্ত্তা, সেই "রাজ্নস" [কর্ত্তা] বিলিয়া পরিকার্ত্তিত হয়॥২৭

অযুক্তঃ প্রাক্তঃ স্তব্ধঃ শঠো নৈক্ষতিকোহলদঃ *। বিষাদী দীর্ঘসূত্রী চ কর্ত্ত। তামদ উচ্যতে ॥২৮

অনুষ্য । অধুক্তঃ প্রাক্ততঃ (মৃঢ়ঃ) ন্তরঃ (অনন্তঃ) শঠঃ নৈক্ষতিকঃ (পর-বৃত্তিচ্ছেবা) অলসঃ বিবাদী দীর্ঘস্তী চ কর্তা তামসঃ উচ্যতে ॥২৮

অনুবাদ। চঞ্চল, মূর্থ, অনতি-পর (উদ্ধৃত; যে কাহারও নিকট নত হয় না) শঠ, পরের বৃত্তিচ্ছেদকারী, অলস, বিষাদপূর্ণ ও দীর্ঘস্তী কর্ত্তাই তামস [কর্ত্তা] বলিয়া পরিকীর্ত্তিত হয় ॥২৮

ভাষ্য। অযুক্ত ইতি। অযুক্তান যক্তা অসমাহিতা, প্রাক্তকা অত্যন্তান্ত্র বিষাদী সর্বাদ্য প্রবৃদ্ধি বালসমা, তারা দণ্ডবং ন নমতি কলৈচিং, শঠা মায়াবী, শক্তিগৃহনকারী, নৈছতিকা পরবৃত্তিছেদনপরা, গ অলসা অপ্রবৃত্তিশীলা কর্ত্তব্যেদপি, বিষাদী সর্বাদ্য অবসম্বভাবো, দীর্ঘস্থী চ কর্ত্তব্যানাং দীর্ঘপ্রমারণা যং অভ্যাধা বা কর্ত্তবাং তন্মাদেনাপি ন করোতি, যদৈবস্তৃতা কর্ত্তা স তামস উচ্যতে ॥২৮

আনন্দণিরিটীকা। দীর্ঘং স্ত্রেরিভঃ শীলমশ্রেতি বৃৎপত্তিং গৃহীতা বিব-ক্লিডসর্থমাহ—কর্ত্তব্যানামিতি। এবং ক্রিরমাণে সতি অনিষ্টমিদং কথঞ্চি-দাপত্তেত যদা প্নরেরং ক্রিরতে তদা অনিষ্টমেব সম্ভাবনোপনীতমিতি চিন্তাপর-ম্পারয়া মন্থরপ্রবিরিতার্থঃ। তদেব স্পাইরতি—যদত্যেতি ॥২৮

 [&]quot;নৈকৃতিকোহলসঃ" ইতি বা পাঠঃ।

⁺ নৈকৃতিক: পুরবিভেদনপবঃ ইতি কচিৎ।

অমুবাদ। অযুক্ত ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ। "অযুক্ত" অসমাহিত, "প্রাক্ত" যাহার বৃদ্ধি একেবারে অসংস্কৃত, অর্থাৎ যে বালকের তুল্য; "ক্তর" দড়ের ন্তার, কাহাকেও নমস্কার যে করে না; "শঠ" মারাবী অর্থাৎ নিজ্ঞের শক্তিরও গোপন করিরা থাকে যে; "নৈক্কতিক" পরের বৃত্তি ছেদন যে করে; "বিষাদী" সর্বাদা অবসম্পত্তাব; "দীর্ঘস্থত্তী" যে কার্য্যকে প্রসারিত করে অর্থাৎ যে কার্য্যটি আজ বা কাল সমাপ্ত হইতে পারে, তাহা একমাসেও যে করিরা উঠিতে পারে না; এইরূপ যে কর্ত্তা, তাহাকে "তামস" বলা যার ॥২৮

বুদ্ধের্ভেদং ধ্রতেশ্চৈব গুণতন্ত্রিবিধং শৃণু। প্রোচ্যমানমশেষেণ পৃথক্ত্বেন ধনঞ্জয় ॥২৯

অন্বয় । হে ধনঞ্জ ! এবং বুদ্ধেঃ ধ্বতেশ্চ গুণতজ্বিবিধং ভেদং পূথস্কেন অন্যেবণ প্রোচ্যমানং শৃণু ॥২৯

আকুবাদ। হে ধনঞ্জয়! এইরূপ গুণভেদ প্রযুক্ত বৃদ্ধি এবং, ধৃতিরও ত্রিবিধ ভেদ, যাহা আমি পূপগ্ভাবে অশেন প্রকারে তোমায় বলিভেছি, ভাহা ভূমি শ্রবণ কর ।২১

ভাষ্য। বৃদ্ধের্ভেদমিতি। বৃদ্ধের্ভেদং ধৃতেশৈচব ভেদং গুণতঃ সন্থাদি-গুণতঃ ত্রিবিধং শৃণু ইতি হুত্রোপস্থাদঃ। প্রোচ্যমানং কথ্যমানম্ অশেষেণ নিরবশেষতঃ যথাবং পৃথক্ষেন বিবেক্তঃ ধনঞ্জা। দিগ্বিভ্রে মান্ত্রং দৈবং চ প্রভূতং ধনম্ অজয়ং তেনাসো ধনঞ্জায়েহজুনঃ ॥২৯

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞানাদীনাং প্রত্যেকং ত্রৈবিধ্যম্কা বৃত্তিমত্যা বৃদ্ধেন্তদ্ বৃত্তেশ্চ ধৃত্যাধ্যাদাক্তিবিধ্যং হ্রচন্দতি—বুদ্ধেরিতি। হু এবিবরণং প্রতিজ্ঞানীতে— প্রোচ্যমানমিতি। অর্জ্বল্য ধনঞ্জন্ম ব্যুৎপাদন্তি—দিগিতি॥২৯

. অসুবাদ। বৃদ্ধি এবং ধৃতিরও সন্থাদি গুণ বশতঃ ত্রিবিধ ভেদ শুন। ভবিষ্যতে বিস্তারপূর্বক বলিবার জন্ম স্থেরের ন্যায় সংক্ষেপে স্চনা করা যাইতেছে। "প্রোচ্যমান" অর্থাৎ বাহা আমি বলিতেছি, অশেষরূপে অর্থাৎ কিছু বাদ না দিরা, পৃথক্দ্বের সহিত অর্থাৎ বিবিক্তভাবে, হে ধনঞ্জয়! পূর্বকালে অর্জ্ন্ন মাছ্রম এবং দৈব এই দ্বিবিধ প্রভৃত ধন জয় করিয়াছিলেন, এইজন্ত অর্জ্নুনকে 'ধনক্রর' বলা যার ॥২৯

প্রবৃত্তিঞ্চ নির্ত্তিঞ্চ কার্য্যাকার্য্যে ভয়াভয়ে। বন্ধং মোক্ষং চ যা বেতি বৃদ্ধিং সা পার্থ সাধিকী॥৩• আন্বয়। হে পার্থ! যা বৃদ্ধিঃ প্রবৃত্তিং চ নিবৃত্তিং চ কার্য্যাকার্য্যে ভরাভরে বৃদ্ধং মোকং চ বেন্তি সা সাধিকী ॥৩•

অসুবাদ। হে পার্থ! বে বৃদ্ধি (বে বৃদ্ধিসম্পন্ন মামুষ) প্রার্থিত, নিবৃত্তি, কার্য্য, অকার্য্য, ভর, অভয়, বন্ধ এবং মোক্ষ জানিতে পারে, সেই বৃদ্ধিই (তাহার বৃদ্ধিই) সান্ধিকী ॥৩•

ভাষ্য। প্রবৃত্তিঞ্চেতি। প্রবৃত্তিং চ প্রবৃত্তিং প্রবর্তনং বন্ধহেতুং কর্মার্গং, নির্বিং চ নির্বিঃ মোক্ষরেতুং সংগ্রাসমার্গং,—বন্ধমোক্ষসমানবাক্যভাৎ প্রবৃত্তিনির বী কর্মসন্নাসমার্গে। ইত্যবগম্যতে। কার্য্যাকার্য্যে বিহিত প্রতিবিদ্ধে * কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্যে করণাকরণে ইত্যেতৎ, কন্ত ? দেশকালাছ্যপেকরা দৃষ্টাদৃষ্টার্থানাং কর্মণাম্। ভন্নাভরে বিভেত্যক্মাৎ ইতি ভন্নং, তদ্বিপরীতমভন্নং † ভন্নং চ অভন্নং চ ভন্নাভরে, দৃষ্টাদৃষ্টবিষরন্নোঃ ভন্নাভরন্ধোঃ কারণে ইত্যর্থঃ। বন্ধং সহেতুকং মোক্ষং চ সহেতুকং যা বেত্তি বিজ্ঞানাতি বৃদ্ধিঃ, সা পার্থ সাল্বিকী। তত্র জ্ঞানং বৃদ্ধেঃ বৃত্তিঃ বৃদ্ধিন্ত বৃত্তিমতী। ধৃতিরপি বৃত্তিবিশেষ এব বৃদ্ধেঃ ॥০০

আনন্দগিরিটীকা। তত্রাদৌ সান্তিকীং বৃদ্ধং নির্দিশতি—প্রবৃত্তিঞ্চিত। প্রবৃত্তিরাচরণমাত্রম্ অনাচরণমাত্রঞ্চ নির্ভিরিতি কিং নেষ্যতে তত্রাহ—বদ্ধেতি। বিন্দিন্ বাক্যে বন্ধনান্ত্রাক্ত তি বিন্দির্ভাক্ত কর্পান্যর্গত্ত বন্ধন্দের্ভাক্ত কর্পান্যর্গত্ত বন্ধন্দের প্রবৃত্তিনির্ভ্যাক্ত করণাকরণরো-বিন্দির্ব্যন্থানান্দেই কর্পাকরণরো-বিন্দির্ব্যন্থানান্দির্ব্যন্তি সন্ধান্যন্তর্গতি বিভন্ততে—ভ্যুতি। বন্ধাদিমাত্রজ্ঞানত ব্রুত্তরেহিলি সন্তবাদ্বিশেষণম্। ন বৃদ্ধিন্দিতত জ্ঞানত প্রাণ্ডি ব্রুত্তি পাদনাং কিমিতি বৃদ্ধেরিদানীং ত্রৈবিধ্যং প্রতিজ্ঞার বৃৎপান্থতে তত্ত্বাহ—জ্ঞান-মিতি। তিই জ্ঞানেন গতন্তার পুনধু তিঃ বৃৎপাদনীয়েত্যান্দ্র্যাহ—ধ্রুতিরপীতি। বিশেষণকেন জ্ঞানান্ব্যার্ভিরিষ্টা ॥৩০

অনুবাদ। প্রবৃত্তিং চ ইত্যাদি [মোকের অর্থ]। "প্রবৃত্তি" প্রবর্ত্তন অর্থাৎ বন্ধের হেতৃ কর্মমার্গ; "নিবৃত্তি" মোকের কারণ সন্ন্যাসমার্গ। এই স্নোকে বন্ধ ও মোকের প্রয়োগ রহিন্নাছে বলিন্না, প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তি এই ফুইটি শক্ষের যথাক্রমে বন্ধ এবং মোক-কারণ, অর্থাৎ কর্মমার্গ এবং সন্ন্যাসমার্গ এই ফুইটি অর্থ করা হইল। "কার্য্যাকার্য্যে" বিহিত স্কৃত্তরাং কর্ত্তব্য, প্রতিহিদ্ধ

[🚁] লৌকিকে বৈদিকে বা শাস্ত্রবৃদ্ধে: ইত্যধিকং কেচিৎ পঠস্তি।

[🕇] চোরব্যাছাদি, ন ভরমভরস্ইতি চ কুঞ্চিং।

স্তরাং অকর্ত্তব্য এই বিবিধই 'কার্য্যাকার্য্য'; [ফলতঃ] করা এবং না করা, ইহাই কার্য্যাকার্য্য শব্দের তাৎপর্য্যার্থ। কাহার ? দৃষ্ট এবং অদৃষ্ট ফলের হেতু, যে সকল কর্ম তাহাদের দেশ ও কালের অপেকার করণ ও অকরণই [কার্য্যাকার্য্য শব্দের তাৎপর্য্যার্থ]। "ভয়াভয়" বাহা হইতে ভয় হয়, তাহাই 'ভয়' তাহার বিপরীতই 'অভয়'; এইক এবং পারলোকিক ভয় এবং অভয়ের করেণই এখানে 'ভয়াভয়' শব্দের তাৎপর্য্যার্থ। "বন্ধ" অর্থাৎ কারণের সহিত বন্ধ এবং "মোক্ষ" অর্থাৎ সকারণমোক্ষ, এই বিষয় কর্মটিকে যপায়থ ভাবে যে বৃদ্ধি প্রকাশিত করে, হে পার্থ! তাহাই "সান্থিকী" বৃদ্ধি। জ্ঞান বৃদ্ধির বৃত্তি, জ্ঞান-রূপ বৃত্তি বৃদ্ধিরই ধর্ম্ম, এইরূপ ধৃতিও বৃদ্ধির বৃত্তিবিশেষ॥৩•

যয়। ধর্মমধর্মঞ্চ কার্য্যঞ্চাকার্য্যমেব চ। অযথাবৎ প্রজানাতি বুদ্ধিঃ সা পার্থ রাজদী ॥৩১

অন্থ্য়। বরা ধর্ম অধর্মৎ চ কার্য্যম্ অকার্য্যম্ এব চ অবথাবং প্রজানাতি হে পার্থ! সা বৃদ্ধিঃ রাজসী ॥৩১

অনুবৃদ্। হে পার্থ ! যে বৃদ্ধির দারা ধর্মণ্ড অধর্মা, কার্য্য ও অকার্যকে অষণাভাবে বৃধিতে পারা ধায়, সেই বৃদ্ধিই রাজসী ॥৩১

ভাষ্য। বরেতি। বরা ধর্মং পাস্তচোদিতম্ অধর্মং চ তৎপ্রতিবিদ্ধং কার্যাং চ অকার্যানেব চ পূর্ব্বোক্তে এব কার্য্যাকার্য্যে অযথাবঁৎ ন বথাবৎ সর্ব্বতো নির্ণয়েন ন প্রজানাতি, বৃদ্ধিঃ সা পার্থ রাজসী ॥৩১

আনন্দ গিরিটীক।। কার্য্যাকার্য্যয়র্দ্মাধন্মাভ্যাং পৌনকক্তাং পরিহরতি— পূর্ব্বোক্তে ইতি। পূর্বজোকে কার্য্যাকার্য্যশন্ধাভ্যাং দৃষ্টাদৃষ্টার্থানাং কর্মণাং করণাকরণে নির্দিষ্টে তরোরেবাজাপি গ্রহায় ধর্মাধর্মাভ্যামপূর্বপর্যায়াভ্যাং গভার্থভা ইত্যর্থ:। বা (সা) বুদ্ধির্যয়া বৃদ্ধ্যা বোদ্ধা নির্ণয়েন ন জানাতীত্যর্থ: ॥৩১

অসুবাদ। যরা ইত্যাদি [শোকের অর্থ]। "ধর্ম" শান্তবিহিত, "অধর্মশ শান্ত-প্রতিষিদ্ধ, এনং "কাষ্য" ও "অকার্য্য" পূর্বে শ্লোকে কার্য্য এবং অকার্য্য শব্দের যে অর্থ করা হইরাছে, এথানেও তাহাই [গ্রহণ করিতে হইবে], এই করটি বস্তুকে "অবথাবং" ঠিক ইহা যেরূপ, সে ভাবে নহে, এই প্রকার অর্থে 'অবথাবং' এই শক্ষটি প্রযুক্ত হইরাছে, অর্থাৎ সর্মীক্ নিশ্চিত ভাবে যে বৃদ্ধির দারা এই করটি বস্তুর স্থরূপ বৃদ্ধিতে পারা যার না, হে পার্থ! সেই বৃদ্ধিই "রাজসী" ॥৩১

অধর্ম্মং ধর্মমিতি যা মক্সতে তমসার্তা। সর্বার্থান্ বিপরীতাংশ্চ বুদ্ধিঃ সা পার্থ তামদী॥৩২

অনুষ্য। হে পার্থ! তমসা আর্তা যা বৃদ্ধিঃ অধর্মাং ধর্ম ইতি মন্তে, [ভেণা] সর্বার্থান বিপরীতান্চ মন্ততে, সা বৃদ্ধিঃ তামসী ॥৩২

অকুবাদ। হে পার্থ! তমোগুণে আরত যে বৃদ্ধি, অধর্মকে ধর্ম বিদায়া প্রকাশিত করে, এবং সকল পদার্থকেই বিপরীত ভাবে বৃন্ধাইয়া থাকে, সেই বৃদ্ধিই তামসী ॥৩২

ভাষ্য। অধকমিতি। অধকাং প্রতিষিদ্ধং ধর্কং বিহিতম্ ইতি যা মন্ততে জানাতি, তমসা আর্তা সতী সর্বার্থান্ সর্বানেব জেরপদার্থান্ বিপরীতাংশ্চ বিপরীতানেব বিজানাতি বুদ্ধিঃ সা পার্থ তামসী ॥৩২

আনন্দগিরিটীকা। ধর্মণন্দো নপুংসকলিদ্বোহণীত্যভিপ্রেত্য ধর্মসিত্যুন্। তমসাবৃত্তাহবিবেকেন বেষ্টিতেত্যর্থঃ। কার্য্যাকার্য্যাদীমুক্তামুক্তাংশ্চ সংগ্রহীতুং সর্ব্বাধনিত্যক্তং তদ্ব্যাচষ্টে—স্ব্বানেবৈতি। বিপরীভাংশ্চেতি চকারনব-ধারণে গৃহীদ্বা বিপরীতানেবেত্যুক্তম্ ॥০২

অকুবাদ। অধর্মং ইত্যাদি [লোকের অর্থ]। "অধর্ম" অর্থাৎ প্রতিবিদ্ধ কর্মকে "ধর্মা" অর্থাৎ বিহিত বলিয়া যে বৃদ্ধি বিধেচনা করে—এবং তমোগুণের দারা আবৃত হইয়া যে বৃদ্ধি জগতে সকল প্রকার জ্ঞেয় বস্তুকে বিপরীত ভাবেই বৃদ্ধিয়া থাকে, হে পার্থ ! সেই বৃদ্ধিই "তামসী" বৃদ্ধি ॥৩২

> ধৃত্যা যয়। ধারয়তে মনঃপ্রাণেক্রিয়ক্রিয়াঃ। যোগেনাব্যভিচারিণ্যা ধৃতিঃ সা পার্থ সান্ত্রিকী॥৩৩

জান্ত্রয় । হে পার্থ ! বোগেন অব্যভিচারিণ্যা বয়া ধৃত্যা মনঃপ্রাণেক্রিয়ক্তিয়াঃ ধারমতে, সা সান্তিকী ধৃতিঃ ॥৩৩

অকুবাদ। হে পার্থ! সমাধির নিত্য অনুগত ধে ধৃতির দারা মনঃ প্রাণ এবং ইন্দ্রিরসমূহের ক্রিয়ানিবহকে ধারণ (নিয়মিত) করা ধার, সেই ধৃতিই সান্তিকী ২০০

ভাষ্য। ধ্বভোতি। ধৃত্যা ষরা অব্যভিচারিণ্যা ইতি ব্যবহিতেন সম্বন্ধ:। ধারমতে; কিম্ ? মনঃপ্রাণেন্দ্রির ক্রিয়া: মনশ্চ প্রাণাশ্চ ইন্দ্রিয়াণি চ মনঃপ্রাণে-ক্রিয়াণি, তে্বাং ক্রিয়াশ্চেষ্টাঃ তাঃ উদ্ধান্ত্রমার্গপ্রবৃত্তেঃ ধারম্বতি। ধৃত্যা হি ধার্যসাণা উচ্ছান্ত্রসার্গবিষয়া ন ভবস্তি। বোগেন সমাধিনা অব্যভিচারিণ্যা নিত্য-সমাধ্যমণত্রা ইতার্থ:। এতহুক্তং ভবতি—অব্যভিচারিণ্যা ধৃত্যা মন:প্রাণেক্রিয়-ক্রিয়া ধারয়মাণ: * বোগেন ধারয়তীতি। যা এবংলক্ষণা ধৃতি: মা পার্থ সান্ত্রিকী॥ ৩০

আনন্দণিরিটীকা। ইদানীং ধৃতিত্তৈবিধাং বৃংপিপাদরিষ্রাদৌ সারিকীং
ধৃতিং বৃংপাদরতি—ধুত্তে তি। নির্দিষ্টানাং চেষ্টানাং কগং ধৃত্যা ধারণং ভত্তাহ—
তা ইতি। ভদেবাহভবেন সাধরতি – ধৃত্যা হাতি। ধিরতে অনরেতি ধৃতির্বন্ধবিশেষঃ তয়া ধৃত্যা ধার্যমাণা যথোপদিষ্টাশেচষ্টাঃ শাস্ত্রমত্য নার্থান্তরাবগাহিক্তাে
ভবস্তীত্যর্থঃ। ধৃতিমেব সমাধ্যবিনাভ্তবেন বিশিন্টি—যোগেনেতি। নহু ধৃতেনির্মেন সমাধ্যহগতত্বং কথমুক্তিরাধারণােপযােগীত্যাশক্যাহ—এতদিতি।
উক্তিরা ধারয়মাণাে যােগেন বন্ধনি সমাধানেনৈকাগ্রেগ অব্যভিচারিণ্যা অবিনাভ্তরা ধৃত্যা ধারয়ত্যান্তথা তদবিনাভাবাভাবে নির্মেন তদ্ধারণািদিক্রেত্যর্থঃ ॥৩৩

অনুবাদ। খৃত্যা ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]। [তৃতীর চরণের] "অব্যাদি চিচারিণ্যা" এই পদটি দ্রবর্তী হইলেও, তাহারই সহিত "খৃত্যা" এই পদের অব্য করিতে হইবে। যে ধৃতির হারা ধারণ করে, তাহা কি ? [তাহার উত্তর এই যে] "মনঃপ্রাণেক্রিয়ক্রিয়া" অর্থাৎ মন, প্রাণ এবং ইক্রিয়সমূহের "ক্রিয়া" চেষ্টাসমূহকে, [কাহা হইতে ?] শাস্তে যাহা প্রতিষিদ্ধ মার্গ, সেই মার্গে যে প্রবৃত্তি, সেই প্রবৃত্তি হইতে [ইহাই তাৎপর্যার্থ]। ধৃতির সাহায়ে নিবারিত হইয়া তাহারা প্রতিষিদ্ধ কার্য্য করিতে সমর্থ হয় না। 'বোগ' অর্থে সমাধি, সেই সমাধির সহিত্ত সর্প্রদা সংযুক্ত যে ধৃতি, ভাহাই 'অবাভিচারিণী ধৃতি'। এই কণা বলা হইতেছে যে, যে অবাভিচারিণী ধৃতির হারা মনঃ প্রাণ ও ইক্রিয়নিচয়ের ধারণা করিলে, সাধক যোগের হারা ধারণা করিতে সমর্থ হয়, হে পার্থ ! সেই ধৃতিই "সান্থিকী" ধৃতি ॥৩৩

যয়া তু ধর্মকামার্থান্ ধৃত্যা ধারয়তেহর্জ্বন। প্রদক্ষেন ফলাকাজ্ফী ধৃতিঃ দা পার্থ রাজদী ॥৩৪

অব্যুদ্ধ হে পার্থ অর্জুন! প্রদক্ষেন ফলাক্ষাজ্ঞী য্যা ধুতা। ধর্ম কামার্থান্ ধ্রিরতে, সারাজসী ধৃতিঃ ॥৩১

[#] श्रीवामानाः -- हे जि वह्यकाराष्ट्रः कि १० १४ थि ।

আকুবাদ। আশক্তি বশতঃ ফলের আকাজ্জা করিয়া যে গৃতি দ্বারা ধর্ম কাম এবং অর্থকে ধারণ করে, সেই ধৃতি রাজ্গী ॥৩১

ভাষ্য। যরা ইতি। যরা তুধর্মকামার্থান্ ধর্মনচ কামনচ অর্থনচ ধর্মকামার্থান্তান্ ধর্মকামার্থান্, ধৃত্যা যরা ধার্মতে মনসি নিত্যকর্ত্ব্যরূপান্ অবধার্মতি
হে অর্জুন প্রসঙ্গেন যতা যতা ধর্মাদেঃ ধারণ প্রসঙ্গতেন তেন প্রসঙ্গেন ফলাকাজ্জী
চ ভবতি যঃ পুরুষঃ ততা ধৃতিঃ যা, সা পার্থ, রাজসী ॥৩৪

আনন্দগিরিটীকা। রাজ্মীং ধৃতিং দর্শরতি—যয়া ত্বিতি। তেবাং ধারণপ্রকারমভিনয়তি —মনসীতি। ফলাকাজ্জীতি কশু বিশেষণং ভত্তাহ— যঃ পুরুষ ইতি॥৩৪

অনুবাদ। যরা ইত্যাদি [শ্লোকের কর্থ]। যে ধৃতির দারা "ধর্মকামার্থ" ধর্ম কাম এবং অর্থকে ধারণ করে, অর্থাৎ ইহা আমার অবশু কর্ত্তব্য এই প্রকারে মনের মধ্যে নিশ্চর করিয়া রাথে। [বথন যথন] যে ধর্মা কর্মা বা অর্থের ধারণ করে, সেই সেই প্রসঙ্গে ভাহার ফলভোগও ঐ ধৃতির দারা প্রেরিত হইয়া পুরুষ কামনা করে, সেই ধৃতিই হে পার্থ অর্জুন! "রাজদী" ধৃতি ॥৩৪

· যয়। স্বপ্নং ভয়ং শোকং বিষাদং মদমেব চ।

ন বিমুঞ্চতি চুর্ম্মেধা ধূতিঃ দা তামদী মতা ॥৩৫

আস্থা। হর্মেধাঃ ষরা স্বপ্নং (নিজাং) ভরং শোকং বিষাদং (স্বসাদং) সদস্ এব চন বিমুঞ্জি, সা তামসী ধৃতিম তা ॥৩৫

ভাকুবাদ। ছর্মেখা ব্যক্তি যে গৃতির বংশ নিজা, ভর, শোক, বিষাদ এবং মদকে ছাড়িতে পারে না, দেই গৃতিই তাসদী বলিরা বিবেচিত হয়॥১৫

ভাষ্য। বয়েতি। যয় স্বয়ং নিজাং ভয়ং আসং শোকং বিষাদম্ অবসাদং বিষয়ভাং মদং বিষয়সেবাম্ আত্মনা বহুমন্তমানঃ মত্ত ইব মদমেব চ মনসি নিভামেব কর্ত্তবারূপতয়া ক্র্নিন্ন বিম্ঞ্জি ধারয়ত্যেব হুর্পেধাঃ কুৎসিতমেধাঃ পুরুষঃ যঃ, তক্ত ধৃতিঃ যা সা তামসী মতা ॥৩৫

আনন্দ গিরিটীকা। তামদীং ধৃতিং বাচাই শ্বয়েতি। শোকং প্রির-বিয়োগনিমিত্তং সন্তাপং বিষণ্ণতামিজিয়াণাং গ্লানিং বিষয়সেবা কুমার্গপ্রবৃদ্ধেক্ষণ-লন্দ্যক্তং স্থাদিমদাত্তং সর্বামের কর্তব্যতয়া আত্মনো বহুমন্ত্রমানো মনি নিত্য-দেব কুর্মন্ গুর্মেণাং ন বিমুঞ্জি কিন্ত ধারয়ত্যেবেতি বোজনা ॥৩¢ অনুবাদ। বরা ইত্যাদি [শ্লোকের অর্থ]। "ব্রপ্ন" নিজা "ভর" বাস.
শোক, "বিবাদ" অবসাদ অর্থাৎ বিবপ্নতা "মদ" নিজের বিবরসেবাকে শ্লাখনীর
বিবেচনা করিতে করিতে লোকে মন্তের স্থার যে মনোর্জি-বিশেষের অক্তবে
করে, এবং ছর্মেধা ব্যক্তি বাহা সর্বাদা কর্ত্তব্য বলিয়া বোধ করে, এবং পরিত্যাগ
করিতে চাহে না, ভাহাই 'মদ', এই সকল নিজাদি দোষকে যাহার বারা ধারণ
করে, তাহাই "তামসী" ধু তি বলিয়া অভিমত ॥০৫

স্থং দ্বিদানীং ত্রিবিধং শৃণু মে ভরতর্বভ।
অভ্যাসাদ্রমতে যত্র হুঃখা ত্তঞ্চ নিগচ্ছতি ॥৩৬
যত্তদত্রে বিষমিব পরিণামেহমূতোপমম্।
তৎ স্থং সাদ্ধিকং প্রোক্তমাত্মবৃদ্ধিপ্রসাদজমু॥৩৭

আৰ্য। হে ভরতর্বভ! ইদানীং ত্রিবিধং স্থাং মে শূণু। যত্র সভ্যাদাৎ রমতে [যত্র] হৃঃধান্তঃ নিগছতি চ, যৎ তৎ অগ্রে বিষমিব পরিণামে সমৃতোপমং, তৎ সাল্লবৃদ্ধি প্রদাদক্ষং স্থাং সাত্তিকং প্রোক্তন্॥৩৬ ৩৭

অনুবাদ। হে ভরতকুলশ্রেষ্ঠ। একণে ত্রিবিধ স্থ কি, তাহা আমার নিকট শ্রবণ কর। অভ্যাসবশতঃই যে স্থে আসক্তি হয়, যে স্থে হইলে ছংপের অন্তকে প্রাপ্ত হওয়া যায়, যে স্থে প্রণেদে বিষের ভার প্রেতীরমান হইলেও পরিণামে অমৃতের ভার হয়, সেই স্থির বৃদ্ধির প্রসন্নতার ফলস্বরূপ স্থেই সান্ধিক স্থে বিলিয়া অভিহিত হয়॥১৬৩১

ভাষ্য। গুণভেদেন ক্রিয়াণাং কারকাণাং চ ব্রিয়া ভেদ উক্তঃ। অথেদানীং কল্ম চ স্থাপ্ত বিধা ভেদ উচ্যতে—স্থাং তু ইদানীং ব্রিবিধং শৃণু সমাধানং ক্রু ইভ্যেতং। মে মম ভরতর্বভ। অভ্যাসাৎ পরিচয়াদারুক্তঃ রমতে রতিং প্রতিপ্যতে যব্র যন্মিন্ স্থামূভবে হঃখাস্তং চ হঃখাবসানং হঃথোপশমং চ নিগছতি নিশ্চরেন প্রাপ্রোতি। যদিতি। যৎ তৎ স্থাম্ অত্যে পূর্বং প্রথমসন্নিপাতে জানবৈরাগ্যধ্যানসমাধ্যারুদ্ধে অত্যম্ভায়াসপূর্বকর্বাৎ বিষমিব হঃখাম্মকং ভবতি, পরিণামে জ্ঞানবৈরাগ্যাদিপ্রিপাকজং স্থম্ অমৃতোপমম্, তৎ স্থাং সাধিকং প্রোক্তং বিছন্তিঃ, আত্মনো বৃদ্ধিঃ আত্মবৃদ্ধিঃ, আত্মবৃদ্ধিঃ প্রসাদেশ নৈর্ম্বল্যং সনিল্বং বছত্তা, ততো জাতম্ আত্মবৃদ্ধিঃসাদক্রম্। আত্মবিষরা বা আত্মবিকানা বা বৃদ্ধিঃ আত্মবৃদ্ধিঃ তৎপ্রসাদপ্রকর্বাদ্বা জাতমিত্যেতৎ তত্মাৎ। সাধিকং তং ॥৩৯-০৭

আনন্দগিরিটীকা। বৃত্তমন্ত্যানন্তরশ্লোকতাৎপর্য্যাহ—গুণেত্যাদিনা। ক্রিরাকারকাণাং গুণতরৈবিধ্যাক্তানন্তরং ফলশু স্থপ ত্রৈবিধ্যাক্তাবসরে সভীত্যাহ—ইদানীমিতি। হেরোপাদেরভেদার্থং ত্রৈবিধ্যং সমাধানমৈকাগ্র্যং মম বচনাদিতি শেষ:। ব্রেভ্যুভয়ত্র সম্বধ্যতে। তৎ ত্রিবিধং স্থমিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। তত্র সান্ত্রিকং স্থমাদেরভেন দর্শমতি—যুৎ ত্রুদিতি। প্রথমসিপ্রপাতং বিভলতে—জ্রানেতি। কৃতস্তশু হংথাত্মকত্বং তত্তাহ—অত্যক্তেতি। ছ.থাত্মকত্বে দৃষ্টান্তমাহ—বিষ্মিনেতি। জ্ঞানাদিপরিপাকাবন্থা পরিণাম-স্থানিন্ সতি তত্তো জাত্মিতি বোজনা। তত্ত্বৈ হেত্বস্তর্মাহ—আ্লুন ইতি। আত্মবিদ্বান্ত অর্থান্তর্মাহ—আ্লুনি ইতি। আ্লুবিশ্বন্ত অর্থান্তর্মাহ—আ্লুবিষ্ট্রেতি। অন্তঃকরণনৈ ব্লান্বা সম্যগ্ঞান প্রকর্ষাদ্বা জাতত্বাদিতি ভচ্ছকার্থং ॥৩৬-৩৭

আকুবাদ। ক্রিয়া এবং কারকসমূহের সন্তাদিগুণত্ত্রের ভেদবশত: তিন প্রকার ভেদ হয়—ইহা পূর্বে বলা হইয়াছে, এইক্ষণে স্থপরণ যে ফল, তাহাও ভিন প্রকার—ইহাই বলা হইতেছে। এখন ত্রিবিধ স্থপ বিষয়ে যাহা বলিতেছি, ভাহা শুন মর্থাৎ [শুনিবার জন্ম] চিত্তকে সমাহিত কর, ইহাই ভাৎপর্য্য। **'অ**স্ত্যাসবশত: যে *স্থং*থ লোক রত হয় অর্থাৎ প্রীতি লাভ করে, এবং <mark>যে স্থং</mark>ধর অফু ভব হইলে ছঃথের অন্তকে প্রাপ্ত হয়, 'ছঃথান্ত' শব্দের অর্থ ছঃথের অবসান, ছ:থের উপশম [ইত্যাদি], [সেই ছ:থের অবদান কেমন ভাবে পায় ?) নিশ্চরের সহিতই পার। যৎ ইত্যাদি [লোকের অর্থ] "অগ্রে" প্রথমসন্ধিপাত-কালে বে হৃথ বিবের স্থার অর্থাৎ তঃখনর বলিরা প্রতীত হয়; অর্থাৎ জ্ঞান বৈরাগ্য ধ্যান ও সমাধির আরম্ভকালে অত্যস্ত আমাস স্বীকার করিতে হয় ৰলিয়াই প্ৰথমত: যে সুথ হু:থাত্মক বলিয়া প্ৰতীত হয়; কিন্তু "পরিণামে" জ্ঞান ও বৈরাগ্যের পরিপাক হইলে, যাহা অমৃতের স্থায় প্রতীত হয়, পণ্ডিতগণ সেই স্থকে "দান্তিক" স্থ বলিয়া পাকেন। [দেই স্থ কিরপ ?] "আত্মবৃদ্ধিপ্রদাদজ" আত্মার বৃদ্ধি এই অর্থে 'আত্মবৃদ্ধি' এই শব্দটি প্রযুক্ত হইয়াছে। আত্মবৃদ্ধির প্রদাদ অর্থাৎ নির্মালতা বা জলের স্থায় স্বচ্ছতা, তাহা হইতে যে সুথ উৎপন্ন হয়, তাহাকেই 'आञ्चवृद्धि श्रमानक' रूथ वना यात्र। अथवा आञ्चविष्ठिमी वा आञ्चानकना त्य वृद्धि, ভাহাই এথানে 'আত্মবুদি' শব্দের অর্থ; সেই আত্মবুদির প্রসাদাতিশয় হইলে ৰে স্থুপ হয়, তাহাই "দাবিক" স্থুপ ॥৩৬-১৭

> বিষয়েক্তিয়সংযোগাদ্ যৎ তদগ্রেহ্মতোপমম্। পরিণামে বিষমিব তৎ স্থুখং রাজসং স্মৃতম্॥৩৮

আহ্বর । বং তৎ অগ্রে অমৃতোপমং পরিণামে বিষমিব বিষয়ে ক্রিরসংবোগাৎ [কারতে চ] তৎ সুধং রাকসং স্বতম্ ॥১৮

আকুবাদ। যে স্থা বিষয় ও ইন্দ্রিরের পরস্পার সংযোগ হইতে উৎপন্ন হর, বে স্থা প্রথমে অমৃতের ভায় [প্রিয়] কিন্তু পরিণামে বিষের ভার [অপ্রিয়] হয়, সেই স্থাকে রাজস স্থা বলা যায়। ৩৮

ভাষ্য। বিষয়েতি। বিষয়েক্সিরসংযোগাৎ বৎ তৎ স্থাৎ জারতে, আগ্রে প্রথমকণে অমৃতোপমন্ অমৃতসমং পরিণামে বিষমিব বলবীর্যারূপপ্রজ্ঞানেধাধনোৎসাহহানিহেতুত্বাৎ অধর্মাতজ্জনিতনরকাদিহেতুত্বাচ পরিণামে তত্পভোগ্রিপরিণামান্তে বিষমিব, তৎ স্থাৎ রাজসং শ্বতম্ ॥৩৮

আনন্দ গিরিটীকা। রাজসং স্থাৎ হেরছার কথরতি – বিষয়েতি। বলং সক্তবাতসামর্থ্যম্, বীর্ঘ্যৎ পরাক্রমক্বতং ধশঃ, রূপং শরীরসৌন্দর্য্যম্ প্রজ্ঞা শ্রুতার্থগ্রহণসামর্থ্যম্, মেধা গৃহীতার্থগ্রাবিম্মরণেন ধারণাশক্তিঃ, ধনং গোহিরণ্যাদি, উৎসাহস্ত কার্য্যং প্রত্যুপক্রমাদিঃ, এতেবাং নাশক্তবাং বৈষ্মিকং স্থাৎ বিষদ্মনিতার্থঃ। তত্তিব হেজস্করমাহ— অধ্যেতি । তে

অনুবাদ। 'বিষয় ইত্যাদি [শ্লোকের অথ]। বিষয়ের সহিত ইন্দ্রিরের সংবাগ হইলে যে স্থথ হয়, যে স্থথ "অত্যে" প্রথমক্ষণে "অমৃত্যেপম" অমৃতের জায় [প্রতীত হয়], কিন্তু, পরিণামে বিষের জায় হয়, অর্থাৎ বল, বীর্য্য, রূপ, মেশা, ধন ও উৎসাহকে বিনষ্ট করে—এবং অধর্ম ও অধর্মান্ত নরকাদিরূপ হংথের কারণ হয়, এই কারণে যে স্থেপর ভো,গের পরই উহা বিষের জায় প্রতীত হয়, সেই স্থাই "রাজস" স্থাধ বিলিয়া স্থাত হইয়া থাকে ॥৩৮

যদত্যে চামুবস্কে চ স্থং মোহনমাত্মনঃ। নিদ্রোলস্থপ্রমাদোখং তৎ তামসমুদাহতম্॥৩৯

আন্তর্য়। বং নিজালক্ত প্রমাণোখন্ অগ্রে (প্রথমে) অমুবন্ধে (অবসানে) চ
আন্তনঃ মোহনন্, তং তামসং স্থম্দাহত্য্॥৩৯

অকুবাদ। বাহা নিদ্রা, আলস্ত ও প্রমাদ হইতে উপিত হর, বাহা পুর্বে এবং পরে আত্মনোহকর, তাহাঁই তামস স্থপ বলিয়া উদাহত হয় ॥১৯

ভাষ্য । যদতো চেতি । যদতো চ অমুবদ্ধে চ অবসানোভরকালে ক্রথং মোহনং মোহকরম্ আত্মনো নিজালভ্তপ্রমাদোখং নিজা চ আল্ভং চ প্রমাদন্চ ইত্যেতেভ্যঃ সমুন্তিঠতি ইতি নিজালভ্তপ্রমাদোখং তৎ তামসমুদান্তব্য ॥৩৯ আনন্দ গিরিটাক। । তামসং স্থথং ত্যাগার্থমেরোদাহরতি—যদত্রে চেতি।
অম্বন্ধশন্ধার্থমাহ—অবসানেতি। মোহনং মোহকরম্। তহুৎপত্তিহেতুমাহ—
নিদ্রেতি ॥৩৯

আমুবাদ। "যদগ্রে চ" [ইত্যাদি শ্লোকের অর্থ]। যাহা প্রথমে এবং "অমুবক্তে" অবসানে, "নোহন" আত্মার মোহকর, এবং যাহা "নিদ্রালগুপ্রমাদে।খ" নিদ্রা, আলঙ্ক এবং প্রমাদ এই তিনটি হইতে যাহা উৎপন্ন হয়, তাহাকে "নিদ্রালগুপ্রমাদোখ" কহা যায়। তাহাই "তামস" স্থথ বলিয়া উদাহাত ॥১৯

ন তদন্তি পৃথিব্যাং বা দিবি দেবেষু বা পুনঃ। সত্ত্বং প্রকৃতিজৈমু ক্রং যদেভিঃ স্থাৎ ত্রিভিগু'ণৈঃ॥৪০

আমুয় । পৃথিব্যাং দিবি বা দেবেষুবা তৎ সন্ত্রং নান্তি যৎ এভিঃ প্রকৃতিজৈঃ বিভিঃ গুণৈঃ মুক্তং স্থাৎ ॥৪০

অকুবাদ। পৃথিবীতে কিংবা স্বর্গে দেবগণের মধ্যে এমন কোন প্রাণীই বিষ্ণমান থাকিতে পারে না, যাহা এই প্রকৃতিজ তিনটি গুণ হইকে বিমুক্ত [হুইয়া থাকিতে পারে] ॥৪০

ভাষ্য। অথেদানীং প্রকরণোপসংহারার্থ: শ্লোক আরভ্যতে—ন তদন্তি তল্লান্তি, পৃথিব্যাং বা মহুষ্যাদি সবং প্রাণিজাতম্ অন্তদ্ বা অপ্রাণিজাতং দিবি দেবেষু বা পুন: সবং প্রকৃতিজৈ: প্রকৃতিতো জাতেরেভি: ত্রিভি ছ নৈ: সব্বাদিভি: মুক্তং পরিত্যক্তং ষং স্তাদ্ ভবেং ন তদন্তীতি পূর্বেণ সংবদ্ধ: ॥৮০

আনন্দ্রিটিক। কিয়াকারকফলাছান: সংসারত প্রত্যেকং সান্ধিকাদি-ভেদেন তৈবিধ্যমুক্তা সংসারাত্তর্ভু তিমেব কিঞ্চিং গুণত্ররাম্পৃষ্টমপি কচিত্তবিব্যক্তি ইত্যাশঙ্ক্যাহ—অথেতি। সংসারত সর্বত্তৈব গুণত্ররম্পৃষ্টবং প্রকরণম্, অন্তদ্বা অপ্রাণীত্যত্ত অপ্রাণিশক্ষেন প্রসিদ্ধ্যা স্থাবরাদি গৃহতে ॥৪ •

্অকুবাদ। ইহার পর এক্ষণে যে প্রকরণ চলিতেছিল তাহার উপস্ংহারার্থ শ্লোকের আরম্ভ করা যাইতেছে। পৃথিবীতে অর্থাৎ মন্থ্যাদি প্রাণিসমূহে অথবা অন্ত কোন প্রাণহীন বন্ধতে, কিংবা স্বর্গেও দেবতাগণের মধ্যে এমন কোন প্রাণী নাই—যাহা এই তিনটি প্রকৃতিজ্ঞাত গুণ হইতে বিদুক্ত হইয়া থাকি:ত পারে। "এমন কোন বস্তু নাই" এই পূর্ব্ব বাক্যটির সহিত ইহার সম্বন্ধ ॥৪০

ব্রাহ্মণক্ষৃত্রিয়বিশাং শূদ্রাণাঞ্চ পরন্তপ। কর্মাণি প্রবিভক্তানি স্বভাবপ্রভবৈগু গৈঃ ॥৪১ আশ্বয়। হে পরস্তপ! ব্রাহ্মণকজিয়বিশাং শূদ্রাণাং চ কর্মাণি বভাব-প্রভবৈশ্ব বিঃ প্রবিভক্তানি ॥৪১

অনুস্বাদ। হে পরস্তপ। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, বৈশু এবং শূদ্রগণের — কর্ম্ম সমূহ স্বভাবপ্রভবগুণ-নিবহের দারা প্রবিভক্ত হইয়া থাকে॥৪১

ভাষ্য ৷ সর্বঃ সংসারঃ ক্রিয়াকারকফললকণঃ সন্তরজ্ঞতমোগুণাত্মকঃ অবিত্যা-প্রিকল্পিড: সমূলোধনর্থ উক্তঃ বৃক্রপক্রনয়া চ উদ্বাদ্যাদিনা, তং চ অসক শস্ত্রেণ দুঢ়েন ছিবা ততঃ পদং তৎ পরিমার্গিতব্যম্ ইতি চোক্তম। তত্র চ সর্বস্ত ত্রিগুণাত্মকতাৎ সংসারকারণনিবৃত্তামুপপত্তো প্রাপ্তায়াং যথা তলিবৃত্তি: ভাৎ তথা বক্তবাম, সর্বাচ্চ গীতাশাস্ত্রার্থ উপদংহর্তব্যঃ, এতাবানের চ সর্বো বেদস্বত্যর্থঃ পুরুষার্থনিচ্ছত্তিঃ অনুষ্ঠের ইত্যেবমর্থং চ ব্রাহ্মণক্ষত্রিয়বিশামিত্যাদিরারভাতে— ব্রাহ্মণাল্ড ক্ষত্রিয়াল্ড বিশশ্চ ব্রাহ্মণক্ষত্তিয়বিশঃ চেবাং ব্রাহ্মণক্ষত্তিয়বিশাং শুদ্রাণাঞ শুদ্রাণামসমাসকরণমেকজাতিত্বে সতি বেদেহনধিকারাং। তে পরস্তপ! কর্ম্মাণ প্রবিভক্তানি ইতরেতরবিভাগেন ব্যবস্থাপিতানি, কেন ? স্বভাবপ্রভবৈগু হৈ: স্বভাব ঈশ্বরম্ভ প্রকৃতিন্ত্রিগুণাত্মিকা নারা সা প্রভবো বেষাং **গু**ণানাং ভে স্বভাব-প্রভযাঃ তৈঃ। ' শমাদীনি কর্মাণি প্রবিভক্তানি ব্রাহ্মণাদীনাম। অথবা ব্রাহ্মণ-স্ব ভাবস্থা সত্ত গুণঃ প্রভবঃ কারণম্, তথা ক্ষত্রিয়স্বভাবস্থা সত্ত্বোপসর্জ্জনং রক্ষঃ প্রভবঃ বৈশ্ব ৰভাবন্ত তম ইপ্দৰ্জনং রঙ্গ: প্রভবঃ, শূদস্বভাবতা রজ্জবিদর্জনং তম: প্রভবঃ, প্রশাইন্তাখর্ব্যহামৃঢ্তাখভাবদর্শনাচ্চতুর্ণাম্। অথবা জন্মান্তর্কুত্সংস্থার: প্রাণিনাং বর্ত্তমানজন্মনি বক।গ্যাভিম্পক্ষেনাভিব্যক্তঃ স্বভাবঃ স প্রভবো বেষাং গুণানাং স্বভাবপ্রভবা গুণাঃ। শুণপ্রাহর্ভাবস্থ নিষ্কারণতামুপপত্তে:। স্বভাবঃ কারণমিতি কারণবিশেষোপাদানম্। এবং শ্বভাবপ্রভবৈঃ প্রকৃতিপ্রভবৈঃ সন্ধ-রছন্তমোভি ও লৈ: স্বকার্যায়রপেণ শনাদীনি কর্মাণি প্রবিভক্তানি। নমু শাস্ত্র-'প্রবিভক্তানি শান্ত্রেণ বিহিতানি ব্রাহ্মণাদীনাং শুসাদীনি কর্মাণি কথমুচ্যতে সম্বাদি এণ প্রবিভক্তানীতি। নৈষ দোষঃ, শাল্রেণাপি বান্ধণাদীনাং সম্বাদিখণ-• বিলেষাপেক্ষরৈর শমাণীনি কর্মাণি প্রবিভক্তানি ন গুণানপেক্ষরৈবেতি শাস্ত্রপ্রবি-ভক্তান্তপি কৰাণি গুণপ্ৰবিভক্তানীতি উচ্চতে।।৪১

আনন্দণিরিটীক। । প্রকরণার্থমুপদংক্তমন্থবদতি—সর্বব ইতি। ভঙ্গানকাত্মকথেন হের ২ং হচরতি—ক্রিয়েতি। নিপ্রণাদাত্মনার্থক অবিভাকনিত-তে হের তৈ । ব্যাক্সনার্থক অবিভাকনিত-তে বেনাবন্ধনা বস্তবদ্যানিত্যাং—ম্বিতি। নিপ্রবিদ্যাতি। ন কেবনমন্তাদশে সংসারো

দর্শিতঃ, কিন্তু পঞ্চদশেহণীত্যাহ—বুক্ষেতি। চকারাৎ উক্তঃ সংসারঃ ইত্যন্ত্র-ক্ষাতে। সংসারধ্বন্তিসাধনং সমাগ্জানঞ্চ তত্ত্তিবোক্তমিত্যাহ—অসক্তেতি। র ৪মনুছা অনস্তরদন্দর্ভতাৎপর্য্যমাহ – তত্ত্র চেতি। উক্তো নিবিবর্ত্তমিবিতঃ সংসার: সভি-সপ্তম্যা পরামূশুতে, সর্বো হি দংসারো গুণত্রাভাক:। গুণানাং প্রক্লত্যাত্মকানাং সংসারকারণীভূতানাং নিবৃত্তিযুক্তা প্রক্লতের্নিত্যখাদিত্যা-শকারাং স্বধর্মার্ফানাং তওজানোংপত্তা গুণানামজানাত্মকানাং নিবৃত্তির্যথা ভৰতি তথা স্বধৰ্মজাতং ৰজবামিতাতরগ্রন্থ প্রবৃত্তিরিতার্থ: ৷ তত্তম্বৰ্ণপ্রযুক্তধর্ম-জাতামুপদেশে চোপদংহারপ্রকরণপ্রকোপ: ভাদিত্যাহ - সর্ব্ব**ে**শ্চতি । উপদং-হুতে গীতাশান্ত্রার্থে যন্ত্রপি দর্কো বেদার্থ: স্থত্যর্থন্ট দর্কা উপদংহৃতস্ত্রণাপি মুমুকুভিরমুঠেমনতি বক্তব্যমবশিষ্ঠমিত্যাশক্ষাহ—এতাবানিতি। পরিমাণনির্দারণবং। উক্তশঙ্কানিবর্ত্তশং শাস্ত্রার্থোপসংহারশ্চ ইত্যেততভরং চকারার্থ:। সম্প্রতি বর্ণচতুইয়ত অনুষ্ঠেরং ধর্মজাতমসংকীর্ণমিতি স্বয়ন্প্রভাত— ব্রাক্ষাণেতি। উপনয়নসংস্থারবত্তে সতি বেদাধিকারিতং সমানমিতি ত্রয়াণাং সমাসকরণম্ ইতরেয়ামসমানে হেতুমাহ—শূদ্রাণামিতি। একজাতিত্বম্ উপনয়ন-বর্জিতত্বন্। কর্মণাম্ অসংকীর্ণত্বেন ব্যবস্থাপকং প্রশ্নপুর্বকং প্রকটয়তি-কেনেত্যাদিনা। বভাবপ্রভবৈঃ ধবৈরিত,ত অধান্তরমাহ—অথবেতি। উক্ত-ব্যবস্থায়াং কার্য্যদর্শনং প্রমাণয়তি—প্রশান্তীতি। ২ভাবশন্বরু অর্থান্তরনাহ— অথবেতি। কিমিতি গুণাভিব্যক্তেক্তক্তবাসনাধীনত্বং তত্রাহ—গুলুভি। নমু নাত্তি গুণপ্রাহর্ভাবত নিষারণত্বং প্রকৃতিকৈগু গৈরিতি প্রকৃতে গুণকারণ-দাভিধানাদত আহ-স্তাব ইতি। বাদনাকারণমিতি গুণাব্যক্তেনি মিত্ত-বিবক্ষিতঃ প্রকৃতিস্ত উপাদানমিতি ভাবঃ৷ উক্তমুপদংহরতি— ' এবমিতি ৷ স্বভাবপ্রভবৈ: সন্থাদিগুলৈ: ব্রাহ্মণাদীনাং কর্মাণি প্রবিভক্তানী-ভাজমান্দিপতি—নিম্বতি। শান্তভ ধর্মবিভাগহেতোঃ সন্তাদিবিশেষাপেক্ষরৈব বিভাগজ্ঞাপকত্বাৎ উভয়ত্র বিভাগহেতুহোক্তিরবিক্ষছেতি পরিহরতি—নৈষ দোষ ইতি ॥৪১

অসুবাদ। ক্রিরা, কারক এবং ফল এই তিনটি লক্ষণের বারা লক্ষিত সকল সংসারই সধ রঞ্জ: ও তমোগুণমর এবং অবিভা বারা পরিক্রিত। এই সংসারই ম্লের সহিত অনর্থস্বরূপ, ইহা "উর্জম্লম্" ইত্যাদি শ্লোকে বৃক্রপক্ষনা, বারা প্রতিপাদিত হইরাছে; সেই এই সংসাররূপ বৃক্ষকে অসক্ষরণ দৃঢ় শঞ্জের বারা ছেদন করিরা, পরে সেই ব্রহ্মপদের অবেষণ করিতে হইবে, ইহাও বলা ইইরাছে।

তাহা হইলে এইরূপ শকা হইতে পারে ষে, সকল সংসার যদি ত্রিগুণাত্মক হর, তাহা হইলে সেই সংগারের যাহা কারণ, তাহারও নিবৃত্তি অমুণপন্ন হইনা পড়ি-তেছে—এই আশঙ্কার পরিহারার্থ বেরূপে সংসারকারণের নিবৃত্তি হইতে পারে. তাহা বলিতে হইবে, এবং গীতাশান্তের যাহা কিছু প্রতিপাম্ম অর্থ, তাহারও উপ-সংহার করিতে হইবে, এবং গীতাশাম্বে যাহা বলা হইল, তাহাই যে সকল বেদের ও স্বৃতির মুখ্য প্রতিপাত অর্থ, তাহাও বলিতে হইবে, এবং যাহারা পুরুষার্থ (অর্থাৎ ধর্ম, অর্থ, কাম ও মোক] ইকা করে, তাহাদের সকলের পক্ষেই [এই গীতা-প্রতিপাছ] বেদের ও স্বৃতির সার অর্থের অফুষ্ঠান করা উচিত, এই কয়টি বিষয় বিশদভাবে বুঝাইবার জন্ত "ব্রাহ্মণক্ষতিয়বিশাম্" ইত্যাদি শ্লোকের আরম্ভ করা হইতেছে। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় এবং বৈশ্র এই তিনটি বর্ণকে বুঝাইবার জন্ত "ব্রাহ্মণ-ক্ষত্রিয়বিশাম্" এই পদটি প্রযুক্ত হইয়াছে। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশু এই ভিনবর্ণকে বুঝাইবার জন্ত একটি সমস্তপদ প্রবুক্ত হইয়াছে, আর শুদ্রগণকে বুঝাইবার জন্ত একট অসমস্ত পৃথক্পদ প্রযুক্ত হইরাছে। ইহার তাৎপর্য্য এই বে, ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রির এবং বৈশ্য ভিন্ন মত্ত মতল সমুধ;ই শুদ্রজাতির সমানধর্মা-এবং তাহাদের মধ্যে কাহারও বেদাধ্যয়নে অধিকার নাই। হে পরন্তপ! কর্ত্তব্য কর্ম্মসমূহ প্রবিভক্ত হইয়াছে অর্থাৎ পৃথক্ পৃথক্ স্বরূপে ব্যবস্থাপিত হইয়াছে। কাছা ছারা প্ৰবিভক হইর।ছে ?—ঘভাবপ্ৰভব গুণসম্হের গারা। ্যভাব **শন্মের অ**র্থ ক্লববের প্রকৃতি ত্রিগুণাত্মিকা মায়া; সেই মায়া হইতে বে গুণসমূহ উৎপন্ন হয়. তাহারাই 'মভাবপ্রভবগুণ'; সেই মভাবপ্রভব গুণসমূহের দারাই ব্রাহ্মণাদিবর্ণের শমদুমাদি কর্ম্মসূহ ব্যবস্থাপিত হইয়াছে। অথবা ব্রাহ্মণের স্বভাবের সন্ধ্রপুণ্ট প্রভব মর্থাৎ কারণ—সেইরূপ ক্রিয়যভাবের প্রভব [কারণ] সম্বোপসর্জ্ঞন রজোগুণ, [সংখাপনর্জন অর্থাৎ সর্বগুণ অপ্রধানভাবে মিলিত হইয়া যে রজো-গুণের কার্য্যে সহায়তা করে, সেই রজোগুণকে 'সন্বোপসর্জন রজোগুণ' কছা যায়।] বৈশ্রস্বভাবের প্রভব [কারণ রজোগুণ [কিন্তু ঐ নক্ষোপ্তণ সন্বোপ-সর্জ্জন নহে, কিন্তু | তম্-উপসর্জ্জন। তজ্ঞপ শূদ্রস্বভাবের প্রভব [কারণ] রঞ্জ-উপদক্তন তমোগুণ। बाञ्चणामि চারিটি বর্ণের যথাক্রমে প্রশান্তি ঐশ্বর্য্য, প্রবৃত্তি ও মৃঢ়তা-রূপ শ্বভাব দেখিতে পাওয়া যায় বলিয়াই, এই প্রকার অর্থ করিতে হইরাছে। অথবা-পূর্বজনো কত ধর্ম বা অধন্ম-রূপ সংস্থার বর্তমান জন্ম প্রাণিগণের নিজ নিজ ফল প্রদব করিতে উত্তত হইয়া থাকে; এই ফলপ্রদবোৰুধ সংস্থারই चलाव मरस्त वर्ध; मिर चलाव रहेर्ड य मकन खन छर्भा इस.

ভাহারাই 'স্বভাব-প্রভব-শুল'। [এইরূপ করনা করিবার হেতু এই যে] প্রাণিগণের শুলপ্রান্থভাব, বিনা কারণে ইইতে পারে না; এই কারণেই স্বভাব কারণ, এই বিলয়া বিশেষ কারণের উপাদান করা হইয়াছে। এই প্রকার [আরও বাাধ্যান্তর হইতে পারে, যথা,—] স্বভাব শব্দের অর্থ প্রকৃতি, সেই প্রকৃতি হইতে প্রান্থভূতি যে সন্ধ রক্ষ: এবং তমঃ এই তিনটি গুণ, সেই তিনটি গুণের হারাই ব্রাহ্মণানি চারি বর্ণের স্ব কার্য্যান্থরূপ শমাদি গুণ প্রবিভক্ত হইয়াছে। একণে শক্ষা হইতে পারে যে, রাহ্মণাদি বর্ণের শমাদিগুণ শাক্রহারাই বিহিত হইয়াছে, এবং শাক্র হারাই পৃথক্ পৃথক্ স্বরূপে ব্যবস্থাপিত হইয়াছে; তাহাই যদি হইল, তবে কেন বলা হইতেছে যে স্বভাবপ্রভবগুণের হারা প্রবিভক্ত হইয়াছে? ইহাতে কোন প্রকার দোষ হয় নাই; কারণ, শাক্রে যে রাহ্মণাদি বর্ণের শমাদি কর্ম্মের বিধান করা হইয়াছে, তাহাও তাহাদের [স্বভাবদিদ্ধ] সত্ত্ব প্রতি অপেকা না করিয়া যে শমাদি কর্ম্মের বিভাগ করা হইয়াছে, ইহা কথনই সন্তব্পর নহে, এই কারণেই—শমদমাদি কর্ম্মম্য শাক্র হারা বিভক্ত হইলেও, গুণ-প্রবিভক্ত বিলয়া নির্দিই। ইইতেছে ৪৪১

শমো দমস্তপঃ শৌচং ক্ষান্তিরার্জ্জ্বমেব চ। জ্ঞানং বিজ্ঞানমান্তিক্যং ত্রহ্মকর্ম্ম স্বভাবজন্ ॥৪২

আনুষু । শমঃ দমঃ তপঃ শৌচং কান্তিঃ আন্তর্ম এব জ্ঞানং বিজ্ঞানম্ আতিকাং চ কভাবজং ব্লাক্ষ্ ॥৪২

অকুবাদ। শম দম তগঃ শৌচ কমা সারল্য জ্ঞান বিজ্ঞান এবঁং আন্তিক্য ব্যক্ষণের স্বাভাবিক কর্ম ॥৪২

ভাষ্য। কানি পুনন্তানি কর্মাণি ইতি উচ্যন্তে—শমো দমশ্চ যথাব্যাখ্যা-ভার্থে ।, তপো যথোক্তং শারীরাদি, শৌচং ব্যাখ্যাতম্, কান্তিঃ ক্ষমা, আর্জ্ববম্ ঋজুতৈব চ, জ্ঞানং বিজ্ঞানম্, আন্তিক্যম্ অন্তিভানঃ শ্রদ্ধানতা আগমার্থেব্, "ব্রহ্মকর্ম্ম" ব্রাহ্মণজাতেঃ কর্মা ব্রহ্মকর্মা স্বভাবজম্। বৃহক্তং স্বভাবপ্রভবৈঃ শুলৈঃ প্রবিভক্তানীতি তদেবোক্তং স্বভাবজমিতি ॥৪২

আনন্দগিরিটীকা। প্রবিভক্তানি কর্মাণোব প্রশ্নধারা বিবিচ্য দর্শরতি —
কানীত্যাদিনা। অন্তঃকরণোপশনঃ শনো দমো বাহুকরণোপরতিরিভ্যুক্তং
সারম্বতি—যুপ্তে। ত্রিবিধং তপঃ সপ্তদশে দর্শিত্যিত্যাহ—তপ ইতি।

শৌচৰণি বাহান্তরভেদেন প্রাগেবোক্তমিত্যাহ—শৌচমিতি। ক্ষমা নামাক্টক তাড়িতক বা মনসি বিকাররাহিত্যম্। জ্ঞানং শাক্তীরং পদার্থজ্ঞানম্, বিজ্ঞানং শাক্তার্থক সামুভবপর্যান্তর্বাপাদনং ত্রিধা ব্যাধ্যাতম্। স্বভাবশন্থার্থমূপেত্যাই—
যত্তক্তমিতি॥ ৪২

অমুবাদ। সে সকল কর্ম কি, তাহাই বলা হইতেছে—শম এবং দম পূর্বেই বাধ্যাত হইরাছে; তপজা পূর্বোক্ত শারীরাদি, পূর্ববাধ্যাত শৌচ; কান্তি শব্দের অর্থ ক্ষমা, আর্জন শব্দের অর্থ ঝজ্তা। জ্ঞান ও বিজ্ঞান [কি, জাহাও বলা হইরাছে] এবং "আন্তিক্য" অন্তিব্দি অর্থাৎ শান্তার্থে প্রদা। এই কয়টি "বন্ধকর্ম" অর্থাৎ বান্ধনজাতির সভাবক্ত কর্মা; সভাবপ্রভব গুণসমূহ থারা কর্ম্ম সকল প্রবিভক্ত হইরাছে, এই বে পূর্বে বলা হইরাছে, তাহাই 'স্বভাবক্ত' শক্ত বারা এখানে ব্যক্ত হইল ॥১২

শোর্য্যং তেজে। ধৃতিদ ক্ষিঃ যুদ্ধে চাপ্যপলায়নম্। দানমীশ্বভাবশ্চ ক্ষত্রকর্ম # স্বভাবজম্ ॥৪৩

আনুষ্ম। শৌৰ্যাং তেজঃ ধৃতিঃ দাক্ষ্যং বুদ্ধে চ অপি অপনারনং দানন্ দীব্যক্তাবঃ চ স্বভাবক্তং ক্ষত্তকর্ম ॥৪ ০

অনুবাদ। শৌর্যা, তেজঃ, ধৈর্য্য, দক্ষতা, যুদ্ধে পল্পায়ন না করা, দান এবং ঈশরভাব (প্রভূত্ব) এই কয়টি ক্ষত্রিয়জাতির স্বাভাবিক কর্ম ॥৪৩

ভাষ্য। শৌর্যমিতি। শৌর্যং শ্রক্ত ভাব:। তেজঃ প্রাগন্তাং
ধৃতিঃ ধারণং, সর্বাবহাস্থ অনবসালো ভবতি ষয়া ধৃত্যা উত্ততিক্তঃ। দাক্ষ্যং
দক্ষ ভাব: সহসা প্রভূগেণয়ের কার্যেয় অব্যামোহেন প্রবৃত্তিঃ। যুদ্দে চাপি
অপলায়নম্ অপরাজ্থীভাব: শক্রন্তা:। দানং দেয়ের মুক্তহত্তা। ঈশরভাবন্দ্ত
ঈশরক্ত ভাব: প্রভূশক্তিপ্রকটীকরণম্ ঈশিতব্যান্ প্রতি। ক্রেকর্ম ক্রিয়লাডেঃ
বিহিতং কর্ম ক্রেকর্ম সভাবক্ষ্॥৪৩

আনক্ষণিরিটীক। শ্রন্থ ভাবো বিক্রমো বলবন্তরানণি প্রহর্ত্ত, প্রর্থিঃ, প্রাগল্ভাং পরৈরধর্বণীয়ুদ্ম। মহত্যামণি বিপদি দেহে প্রিরোভভনী চিত্তর্তিশ্ব তিরিতি ব্যাচটে—সর্বোবস্থাস্থিতি। দক্ষণ্ড ভাবমেব বিভল্পতে—সহস্তে। শ্বভাবত্ত পূর্ববং ৪৪০

^{*} কৰেং কৰ্ম ইতি কাৰেং কৰ্ম ইতি চ বা পাঠে।
>>৬

জাসুবাদ। শৌর্য ইত্যাদি জোকের জানুবাদ। "শৌর্য" শ্রের ভাব। "তেলঃ" প্রগাল্ভতা। "শ্বৃতি" ধারণ, দকল অবস্থাতেই বাহার ছারা উত্তিভিত (ইংলাহিত) হইরা লোক অবসন্ধ হয় না। "দাক্ষ্য" দক্ষের ভাব অর্থাৎ কার্য্য উপস্থিত হইলে অব্যাকুলভাবে প্রবৃত্তি। "বুদ্ধে অপলার্থন" অর্থাৎ শক্ষণণ হইতে প্রাছ্মুপ না হওরা। "দান" দেয়বস্তুসমূহে মুক্তহস্ততা। "ঈশ্বরভাব" ঈশ্বরের ভাব অর্থাৎ বাহারা অধীন, তাহাদের নিক্ট নিজের প্রভূশক্তির প্রকাশ করা। এই কর্টি "ক্রক্রকর্মা" ক্রিয়ন্তাতির পক্ষে বিহিত শ্বভাবন্ধ কর্মা ॥৪৩

কৃষিগোরক্ষ্যবাণিজ্যং * বৈশ্যকর্ম স্বভাবজ্ঞ্য । পরিচর্য্যাত্মকং কর্ম শূদ্রস্থাপি স্বভাবজ্ঞ্য ॥৪৪

জ্যমূয়। ক্বৰি-পৌরক্ষ্য বাণিজ্যং স্বভাবজং বৈশ্রকর্ম। শূদ্রভাগি পরিচর্ব্যা-জ্যকং কর্ম স্বভাবজন্॥৪৪

অফুবাদ। ক্বৰি গোৱকা এবং বাণিজ্য—এই তিনটি বৈখ্যের স্বভাবত কর্ম। শুদ্রজাতির স্বভাবত কর্ম পরিচর্য্যা ॥৪৪

ভাষ্য । ক্রমতি। "ক্রমিগোর ক্রমণিজ্যন্" ক্রমিণ্ড গোরক্সং চ বাণিজ্যঞ্ ক্রমিগোরক্ষ্যবাণিজাং ক্রমি: ভ্রমিবিলেখনং গোরক্ষাং গা রক্ষতীতি গোরক্ষতভাবে। গোরক্যাং পাঞ্চেশালাং বাণিজাং বণিক্কর্ম ক্রম্মবিক্রমাদিলকণং বৈশুকর্ম বৈশুজাতিঃ কর্ম্ম বৈশুকর্ম স্থাবজন্। পরিচর্যাছ্মকং গুল্লমাস্থাবং কর্ম শ্রভাশি স্বভাবজন্ম ॥৪৪

আনন্দগিরিটীকা। • 188

অনুবাদ। ক্বীত্যাদি [প্লোকের অর্থ]। "ক্বিগৌরক্ষাবাণিজাম্" ক্বি, গৌরক্ষা এবং বাণিজা [ছন্দ্রসমাস নিপার পদ]। ক্কবি শন্ধের অর্থ ভূসি-কর্বণ। গো সমূহকে রক্ষা করার নাম 'গোরক্ষ', গোরক্ষের ভাব 'গৌরক্ষা' অর্থাৎ পশু-পালন, এবং "বাণিজা" বণিকের কর্ম্ম ক্রের এবং বিক্রের প্রভৃতি, এই করটি "বৈশ্র-কর্ম্ম" অর্থাৎ বৈশ্রজাতির স্বভাবজ কর্ম। শুদ্রের স্বভাবজ কর্ম "পরিচর্ব্যাত্মক" শুশ্রবাস্থর্মণ ॥৪৪

স্বে কের্মগ্যভিরতঃ সংসিদ্ধিং লভতে নরঃ। স্বকর্মনিরতঃ সিদ্ধিং যথা বিন্দতি তচ্ছ,পু॥১৫

কুনিগোরকাবাণিজানিতি বা পাঠঃ।

অন্তর্ম । নর: যে যে কর্মণি অভিরতঃ সংসিদ্ধিং লভতে। ব্রক্রমিরতঃ বধা সিদ্ধিং বিশ্বতি ভং শৃণু ॥৪৫

অকুবাদ। মহুব্য নিজ নিজ কর্মে নিরত হইরা স সিদ্ধি লাভ করে। মানব স্বকর্মনিরত ইইরা বেরুপে সিদ্ধি লাভ করে, তাহা শুন ॥৪৫

ভাষ্য । এতেষাং জাতিবিহিতাদাং কর্মণাং সম্যাসম্প্রিতানাং বর্গপ্রান্তিঃ কর্ম কর্ম বভাবতঃ, 'বর্ণা আশ্রমান্ট ক্ষর্মনিষ্ঠাঃ প্রেত্য কর্মফলমমুভ্র ততঃ শেবের বিশিষ্টদেশলাতিকুলধর্মায়ঃশ্রুতবৃত্তবিভ্রম্থনেধনো জন্ম প্রতিগণ্ডতে ইত্যাদি বৃতিত্যঃ; পুরাণে চ বর্ণিনামাশ্রমিণাঞ্চ লোকফলভেদবিশেষম্মরণাং। কারণান্ত্র-রাৎ তু ইদং বক্ষ্যমাণং ফলম্—বে বে বংগাক্তলকণভেদে কর্মণি অভিন্নতঃ তৎপন্নঃ সংসিদ্ধিং ক্ষর্মান্তানাদশুদ্ধিকরে সতি কারেজিরাণাং জ্ঞাননিষ্ঠানাত্যালকণাং লভতে প্রাপ্রোতি, নরোহধিকতঃ পুরুষঃ। কিং ক্ষর্মামুষ্ঠানত এব সাক্ষাৎ সংসিদ্ধিঃ ? ন, কথং তর্হি ক্ষর্ম্মনিরতঃ সিদ্ধিং বথা বেন প্রকারেণ বিক্তি তচ্ছুণু ॥৪৫

আননদ্গিরিটীক। শমাদিপরিচর্য্যান্তকর্থণাং বিভল্পোজানামভ্যুদরং ফলম্ আদাব্পঞ্জতি—এতেমামিতি। বভাবতো বিহিতদাদেব মোক্ষাপেক্ষান্তরেগার্থানাদিত্যর্থ: ।তত্র প্রমাণমাহ—বর্ণা ইতি। শেবশবেন ভূককর্পোছতি-রিকং কর্মান্তপারপুলিতম্চ্যতে, প্রত্যেকং দেশাদিভির্কিশিষ্টশন্ধ: সম্বয়তে, আনিশবেন তিদ্বণা আত্রে ফলার্থে নিমিত্তে ছারাগন্ধান্তন্থপত্তে এবং ধর্মং চর্য;মাণমর্থাহন্ৎপত্তত্তে ন ধর্মহানির্ভবতি" ইতি স্বৃতিপৃহতে। ইত্তশ্ভোজানাং কর্মণাং স্বর্গক্ষরং যুক্তমিত্যাহ পুরাণে চেতি। উকং হি—

"বস্ত সম্যক্ করোভ্যেবং গৃহত্বঃ প্রমং বিধিম্।
তদ্বর্গবন্ধমুক্তোহসৌ লোকানাপ্রোত্যস্থতমান্" ॥ ইতি ।
"বব্দেতাং নিরতশূর্ত্যাং বানপ্রস্থাতরস্থানঃ ।
স দহত্যশ্বিবদোবান্ জরেলোকাংশ্চ শাখতান্" ॥ ইতি ।
"নোকাশ্রমো বশ্বরতে বধোক্তং, গুচিঃ স্থাংক্সিতব্দিব্কঃ।
অনিশ্ধনজ্যোতিরিব প্রশান্তং, স ব্রন্ধলোকং শ্রয়তে বিজাতিঃ" ॥ ইতি চ

সর্ব এতে প্ণালোকা ভবন্তি ইতি শ্রুতিশ্রামার্থা । বদি প্নর্বোকার্ম গ্রেক্সাকানি কর্মাণাস্থ্যীরেরন্ তদা মোক্সালয় তেরাং সেংক্ততীত্যার কারণাস্তরাদিতি। তদেব কারণাস্তরং ধর্মোকাণেক্সা তেবাসম্ভানম্। সোকোধারের্ শ্যাদির্ সাহিকের্ প্রাক্ষণার্থক ক্রিরাদীনাসন্ধিকারাম

ব্রাহ্মণানামের মোক্ষো ন ক্ষত্রিরাদীনামিত্যাশন্থাহ— (স্ব স্থে ইতি। বথাকে কর্মণাভিরভক্ত বৃদ্ধিভদ্ধিরার জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতা ভরা প্রাপ্তজ্ঞানক মোক্ষাপণ পরেব্রাহ্মণাভিরিক্তকাপি জ্ঞানবডোমুক্তিরিভি মন্ধা পূর্বাহ্মির ব্যা০ট্টে—স্প্রে স্থে ইক্ত্যাদিনা। সংসিদ্ধিশনক মোক্ষার্থনং গৃহীদ্ধা অধর্মনিষ্ঠত্তমাত্তেণ ভ্রাতে তাদর্থ্যেন সন্ন্যাসাদিবিধানানর্থক্যমিতি মন্বান: শক্ততে — কিমিতি। ন ভাবন্মাত্ত্বেণ সাক্ষাব্যোক্ষা জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতা বেভি পরিহরতি— নেতি। ভর্থি কথং স্বধর্মনিষ্ঠক্ত সংসিদ্ধিরিতি পূচ্ছতি — কথং ভ্রন্তিভি। উন্তরাহ্মেনান্তর্মাহ—স্বকর্ম্যেতি। ভদ্ধি বঙ্গ প্রকার্মেকাগ্রচেতা ভূতা, শ্রুদ্বাবধারর ইত্যর্থ: ৪৪৫

আকুবাদ। এই সকল জাতিবিহিত কর্ম্মের সম্যক্ অমুষ্ঠান হইলে স্বভাবতঃ স্মর্গপ্রাপ্তিরূপ ফল লাভ হইরা থাকে। বর্ণসমূহ, আশ্রমসমূহও বদি স্বকর্মনিষ্ঠ হর, তাহা হইলে তাহারা মরণের পর কর্ম্মফল অমুভব করে এবং পরে ভূকাবশেষ কর্মের ফলস্বরূপে, দেশবিশেবে, বিশিষ্ঠ কুলে জন্ম, ধর্মা, আয়ৄঃ, বিস্তা, চরিত্র, মুখ ও বৃদ্ধি লাভ করে। এইরূপ লোকবিশেষে বিশেষ বিশেষ ফললাভের বিষয় স্থতি শাস্তে কার্তিত হইরা থাকে। অন্ত প্রকার কারণ হইতে কিন্তু, বক্যমাণ ফল হইরা থাকে [তাহাই বলিভেছেন যে] স্ব স্ব কর্মে [যাহার স্বরূপ পূর্ব্দে কথিত হইরাছে] 'অভিরত' অর্থাৎ তৎপর হইরা অভিরত নর সংসিদ্ধি লাভ করিরা থাকে, স্ব স্ব কর্মের অমুষ্ঠান করিতে করিতে করিতে নরীর এবং ইন্দ্রির্দ্রের অগুদ্ধিক ক্ষের হইলে যে জ্ঞাননিষ্ঠার যোগ্যতা হর, সেই যোগ্যতাই "সংসিদ্ধি"। তবে কি স্বক্ষের অমুষ্ঠান করিলেই সংসিদ্ধি হয় । তাহা নহে, তবে কি প্রকারে হয় ? বে প্রকারে সিদ্ধি লাভ করিতে পারে, [তাহা বলিভেছি] শ্রবণ কর ॥৪৫

যতঃ প্রবৃত্তিভূ তানাং যেন সর্ব্যমিদং ততম্। স্বকর্মণা তমভ্যক্তি সিদ্ধিং বিন্দতি মানবঃ ॥৪৬

ভাষ্য। যতঃ ভূতানাং প্রবৃত্তিঃ (উৎপত্তিঃ), যেন ইদং দর্কং ততম্ (পরিব্যাপ্তং), তং স্বকর্মণা অভ্যর্চ্চ্য মানবঃ সিদ্ধিং বিন্দতি ॥৪৬

আকুবাদ। বাহা হইতে প্রাণিগণের প্রবৃত্তি (উৎপত্তি) হয়, এই সমস্ত বাহা বারা ব্যাপ্ত রহিয়াছে, ককর্মের বারা তাঁহার উপাসনা করিয়া সানব সম্মুক্ সিদ্ধিলাভ করিয়া থাকে ॥ ৪৬

ভাষ্য। বত ইতি। বতো বন্ধাৎ প্রবৃত্তিরুৎপতিঃ চেষ্টা বা, বন্ধানগুর্বানিণ ইমরাণ ভূতানাং প্রাণিনাং ভাৎ, যেন ইমরেণ স্ব্রিনং জনং ততং ব্যাপ্তম্, স্বকর্মণা পূর্বোক্তেন প্রতিবর্ণং তমীখরম্ অভ্যর্চ্য পূক্ষিতা আরাণ্য কেবলং জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যভালকণাং সিদ্ধিং বিন্দতি মানবো মনুষ্যঃ ॥৪৬

আনন্দগিরিটীকা। তমেব প্রকারং ক্ষুটরতি—যত ইতি। বতঃ শব্দার্থং ধন্দার্থিত ক্রান্ধানিত্যক্তং ব্যক্তীকরোতি—হান্দানিতি। প্রাণিনামুৎপত্তির্বাদীবরাৎ তেবাং চেষ্টা চ যন্দানস্তর্বামিণো যেন চ সর্বাং ব্যাপ্তং মূদেব ঘটাদিকার্য্য কারণান্তিরিক্তবর্মপাভাবাৎ তং স্বকর্মণা অভ্যর্চ্চ্য মানবঃ সংসিদ্ধিং বিন্দতীতি সম্বন্ধঃ। ন হি ব্যান্ধানীনাং বংগাক্তধর্মনিষ্ঠরা সাক্ষানোক্ষো লভ্যতে তত্ত জ্ঞানৈকলভ্যবাং, কিছ তিরিষ্ঠানাং কর্মন্ত ফলমপশ্রতাম্ ঈশ্বরপ্রসাদাসাদিতবিবেকবৈরাগ্যন্তাং সন্ধ্যাসিনাং জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতাবতাং জ্ঞানপ্রাপ্ত্যা মৃক্তিরিভ্যতিপ্রেভ্যাহ—
ক্রেবলমিতি ॥৪৬

অমুবাদ। "যত" ইত্যাদি [শোকের অর্থ]। যতঃ এই শক্ষটির অর্থ বাহা হইতে, ভূতগণের—প্রাণিগণের 'প্রবৃত্তি' উৎপত্তি, অথবা চেষ্টা যে অন্তর্যামী পুরুষ ঈশর হইতে হইরা থাকে, যে ঈশরের দ্বারা এই সমস্ত জ্বগৎ "তত" ব্যাপ্ত, পুর্বে বর্ণভেদে ভিন্ন ভিন্ন বিশ্বা কথিত, নিজ কর্ম্মের দ্বারা, তাঁহার অভ্যর্কনা অর্থাৎ পূজা বা আরাধনা করিয়া—"মানব" মহুষ্য "নিদ্ধি" জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে ॥৪৬

শ্রোন্ স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাৎ স্বসুষ্ঠিতাৎ। স্বভাবনিয়তং কর্ম কুর্বনাপ্নোতি কিল্মিষ্ম্॥৪৭

আনুয়। স্বত্ঠিতাৎ প্রধর্মাৎ বিশুণ: স্বধর্ম: শ্রেয়ান্। স্বভাবনিয়তং কর্ম কুর্বন্ কিবিষং ন আগ্রোতি ॥৪৭

অমুবাদ। পরধর্ম স্থন্দররূপে অস্ট্রতি হওরা অপেকা অঙ্গহীন বধর্মের অস্ট্রানও শ্রের:। [কারণ] বজাবনিয়ত কর্ম্বের অস্ট্রান ক্রিয়া [মানব] কিৰিব অর্থাৎ পাপ প্রাপ্ত হয় না॥৪৭

ভাষ্য। যত এবমতঃ—শ্রেয়ান্ প্রশক্তবঃ স্বো ধর্মঃ স্বধর্মো বিশুণোহিশি ইতাপি শ্রো জইবাঃ, পরিধর্মাৎ স্বস্থাউতাৎ। স্বভাবনিয়তং স্বভাবেন নিয়জ্য; বহুক্তং স্বভাবন্দমিতি তদেবোক্তং স্বভাবনিয়ত্মিতি। বথা বিষ্ণাত্ম ক্রমের্বিবং ন দোবক্রম, তথা স্বভাবনিয়তং কর্ম ক্র্মন্ নাপ্লোতি কিৰিবং পাপম্॥৪৭

🎍 আনন্দ্রিটীকা। বংশাহঠানত বৃদ্ধিভাগিদারা নোকাবসারিভাও

ভদম্ভানমাবশ্রকমিত্যাহ—যুক্ত ইক্তি। নমু যুদ্ধাদিলকণং ব্যর্থং কুর্বরূপি হিংসাধীনং পাপং প্রাপ্রোতি তৎ কথং ব্যর্থঃ শ্রেরানিতি জ্ঞাহ—স্বভাবেতি! বকীরং বর্ণাপ্রমং নিমিন্তীকৃত্য বিহিতং বভাবজমিত্যধন্তামৃক্তমিতি। বিগ্রহাত্মকমপি বিহিতং কর্ম কুর্বন্ পাপং নাপ্নোতীত্যক্ত দৃষ্টান্তমাহ—ত্যেতি। ইতশ্চ বিহিতং কর্ম দোষবদপি কর্তব্যং প্রকারান্তরা-সন্তবাং ইত্যুক্তামুবাদপূর্বকং কথরতি—স্বভাবেত্যাদিনা। নহি ক্রমির্বিহলো বিবনিমিন্তং মরণং প্রতিপদ্ধতে তথা অরমধিকৃতঃ পৃক্ষয়ো দোববদপি বিহিতং কর্ম কুর্বন্ পাপং নাপ্রোতীত্যুক্তমিত্যর্থঃ ॥৪৭

অমুবাদ। যেহেতু এই প্রকার, এইজন্ত—স্বধর্ম বিশুণ হইলেও [এখানে অপি শব্দটি না থাকিলেও তাহা আছে বলিয়া ধরিয়া লইবে। অপি শব্দের অর্ধ "ও"] স্থলররপে অর্থন্ডিত পরধর্ম হইতে "শ্রেয়ান্" প্রশক্তরে । স্থভাবের বারা নিয়ত এই অর্থে "স্বভাব-নিয়ত" এই শব্দটি প্রযুক্ত হইয়াছে; পূর্বের স্বভাবক্ত শব্দটি যে অর্থ "বুঝাইবার জন্ত প্রযুক্ত হইয়াছে, এখানে "স্বভাব-নিয়ত" এই শব্দটিও সেই অর্থকেই বুঝাইতেছে। যেমন বিষক্তাত ক্রমির পক্ষে বিব দোব-জনক নহে, সেইরূপ স্বভাব-নিয়ত কর্ম্ম করিলে মানব "কিবিষ" পাপ প্রাপ্ত হয় না ॥৪৭

সহজং কর্ম কোন্তের সদোষমপি ন ত্যজেৎ। সর্বারম্ভা হি দোষেণ ধূমেনাগ্রিরবার্তাঃ ॥৪৮

আনুষ্য । হে কৌত্তের ! সদোবনপি সহজং কর্মান ত্যজেৎ ; হি (যত্মাৎ) ধুনেন অগ্নিরিব সর্বারন্তা দোবেণ আর্তাঃ ॥৪৮

অনুবাদ। হে কুঞানন্দন! স্বভাবক কর্ম সদোষ হইলেও তাহা পরিতাগ করিবে না, কারণ, ধ্মের ছারা যেমন অগ্নি আরত হয়, সেইরপ সকল কর্মই ' দোবের ছারা আছত হইয়া থাকে ॥৪৮

ভাষ্য। স্বভাবনিয়তং কর্ম কুর্মাণো বিষদ্ধাত ইব ক্রমিঃ কিবিবং নাগ্নোতি
ইত্যুক্তম্। পরধর্মণ ভরাবহ ইভি। অনাত্মপ্রণ 'ন হি কণ্ডিং কণমণি অকর্মক্রুং তিঠিতি' ইভি অতঃ সহজং সহ জনানৈব উৎপন্নং গহজম্; কিং তৎ ? কর্ম্ম
কৌন্তের সদোবদণি ত্রিগুণদার " ভাজেং। সর্মারস্তা আরভ্যন্তে ইত্যারস্তাঃ
ক্রুক্তর্মণি ইত্যেতং প্রকরণাং। যে কেচিদারস্তাঃ † স্বধর্মাঃ পরধর্মান্দ তেঁ

विश्वनीष्मकृष्वार देखि क्विर। † यः क्विनात्रकः देखानि क्विर।

সর্বে হি ৰশাং ত্রিগুণাত্মক্ষমত্র হেতৃঃ, ত্রিগুণাত্মক্ষাৎ গোবেৰ ধুমেন সহজেন অমিরিব অাবুভাঃ। সহ মন্ত কর্ম্মণঃ স্বধর্মাধ্যক্ত পরিভ্যাগেন পরধর্মা-क्षक्रीत्नरिश (नवारियन मृहारक, खन्नावरूक शत्रधर्यः। न ह भकारक व्यत्नवकः ত্যক্তৃ মজ্জেন কর্ম্ম যতন্তমাং ন ত্যকেদিত্যর্থ:। কিমশেষতঃ ত্যক্তৃ মশক্যং কর্মেতি ন ত্যক্তেং? কিং বা সহজ্ঞ কর্ম্মণস্ত্যাগে দোবো ভবতীতি ? কিঞ্চাতো যদি তাবদশেষতঃ ত্যকুমশক্যমিতি ন ত্যাজ্ঞাং সহজং কর্ম এবং তর্হি অশেষতন্ত্যাগে গুণ এব স্থাদিতি সিদ্ধং ভবতি। অশেষতস্তাগ এব নোপপন্থতে ইতি চেৎ কিং নিত্যপ্রচলিতাক্সকঃ পুরুষঃ ৰধা সাংখ্যানাং গুণাঃ ? কিং বা ক্রিটেয়ব কারকম্, যথা বৌদ্ধানাং পঞ্চ স্কলাঃ ক্রণ-প্রধ্বংসিনঃ ? উভয়থাপি কর্মণোহশেষতঃ ত,াগো ন সম্ভবতি। অথ তৃতীয়োহিশি পক্ষ: यहां করোতি তদা সক্রিয়ং বস্ত। यहां ন করোতি তদা নিক্রিয়ং বস্ত তদেব। তত্ত্রৈবং সতি শক্যং কর্ম অশেষতঃ ত্যক্তুম্। অরং তু অন্মিন্ তৃতীরে পক্ষে বিশেষঃ, ন নিত্য প্রচলিতং বস্তু, নাপি ক্রিয়ৈব কারকম্ কিং তর্হি ? ব্যবস্থিতে দ্ৰব্যে অবিভাগানা ক্ৰিয়া উৎপভাতে, বিভাগানা চ বিনশুতি। গুদ্ধং দ্ৰব্যং শক্তিমং অবভঠতে। ইত্যেবসাহঃ কাণাদাঃ। তদেব চ কারকমিত্যন্দ্রিন পকে কো দোর ইতি। অয়নেব তু দোবঃ, যতত্ত্ব অভাগবতং মতমিদম্। কথং জায়তে, বভ আহ ভগবান "নাসতো বিশ্বতে ভাব:" ইত্যাদি। কাণাদানাং হি অসতো ভাব: সভশ্চাভাব ইতীদং মতম্ অভাগ্ৰতম্। অভাগ্ৰতমপি ভার্বচেৎ কো দোৰ हेकि ८६९, डिठाटक, त्माववजु हेमम्, नर्क्श्यमानित्ताधार । कथम् १ यमि छात्रम्बान-কাদি দ্রব্যং প্রাপ্তৎপত্তেরতাস্তমেব অসৎ উৎপঙ্গং চ স্থিতং কঞ্চিৎকালম, পুনরভাস্ত-মেৰ অসন্তম্ আপছতে। তথা চ সতি অসদেৰ সজ্জায়তে 🛊 অভাৰো ভাৰো ভবতি ভাবশ্চাভাব ইতি। তুর্ভাবো কান্নমানঃ প্রাগুৎপত্তে: শৃশ্বিবাণকর: 'সমবাষ্যসমবারিনিমিত্তাখ্যং কারণমণেক্ষ্য জারতে ইতি। ন চৈবমভাব উৎপশ্ততে, कात्रभः वा व्यर्शकरण हेलि नकाः वर्ज्यम् व्यन्ताः ननविष्ठानामानीनामानीनाः .ভাবাত্মকাশ্চেদ্ ঘটাদয় উৎপছমানাঃ, কিঞ্চিৎ অভিব্যক্তিমাত্মকারুণমপেক্ষ্য উৎপদ্ধস্তে ইতি শক্যং প্ৰতিপত্ম। কিঞ্চ অসভন্চ সদ্ভাবে সভন্চাসন্ভাবে ন कृष्टिर श्रमान श्रामत्रवावहारत्रवृ विचामः कन्निष्ट न्नार । 'मर मरमव व्यमर व्यमरम्बर ইতি নিশ্চরামূপণপতে:। কিঞ্, উৎপদ্মতে ইতি বাগুকাদের বাস্ত স্থকারণসভা-

সদেব অসন্তম্ আপদ্যতে ইত্যধিকং কচিৎ।

मक्समाहः। शाखरभाखनामर, भन्तर चकात्रगवाभातमरभका चकात्ररेनः भन्न-মাণুভিঃ সম্ভরা চ সমবারলকংশন সহস্কেন সহস্কাতে। সহস্কং সং ক্রিব্রণসমবেতং সম্বভবতি। তত্ত্ব বক্তব্যং কথমসতঃ সংকারণং ভবেং ? সম্বন্ধো বা কেনচিং ? নহি বন্ধ্যাপুত্রত সভা সম্বন্ধো বা কারণং বা কেনচিং প্রমাণতঃ কর্মান্তং শক্ষম।* नष्ट देनेव देवर्णियरेकत्र जावज्ञ मश्वन्नः कन्नार्ण पानुकामीनाः वि जवाानाः चकात्रःन সমবারদক্ষণঃ সম্বন্ধঃ সভামেব উচ্যতে ইতি। ন সম্বন্ধাৎ প্রাক্ সন্থানভূয়পগমাৎ। न हि देवत्यविदेवः कूना नम्खठकानियाभातार आन् चेनिनार अधिप्रियारछ। ন চ মূদ এব ঘটাভাকার প্রাপ্তিমিচ্ছত্তি। ততশ্চাসত এব সম্বন্ধ: পারিশেষ্যাদিটা ভবতি। নর্বসতোহিপি সমবায়লকণ: সহরো ন বিরুদ্ধ:। ন : वद्यार्थञ्चामीनाम-मर्ननार । चंद्रीरमात्रव প्राशंखां च चकात्रशम्बद्धां खर्जि. न वद्धााशृज्ञातमः অভাবত তুল্যান্বেছপি ইতি বিশেষোহভাবত বক্তব্যঃ। একভাভাবঃ, ধরোরভাবঃ, সর্বস্থাভাব: প্রাঃভাব: প্রধ্বংসাভাব: ইতরেতরাভাব: বতারাভাব: ইতি লক্ষণতো ন কেনচিদ্বিশেষো দর্শয়িতুং শকাঃ। অসতি চ বিশেষে ঘটভ প্রাগ-ভাব এব কুলালাদিভি: ঘটভাবমাপভাতে সম্বধ্যতে চ ভাবেন ক্পালাধ্যেন শ্বকারণেন সর্বব্যবহারবোগ্যন্চ ভবতি, ন তু ঘটপ্রেব প্রধ্বংসাভাবঃ অভাবত্তে সভাপি ইতি প্রধ্ব সায়ভাবানাং ন কচিদ ব্যবহারযোগাত্বং প্রাগভাবহৈত্ব हानुकातिस्वाराभाक उर्भवातिवावशांतर्वम् हेर्छाउर अगमअगम्; अकावचावि-শেষাৎ অত্যন্তপ্ৰধ্বংসাভাবয়োরিব। নতু নৈবান্মাভিঃ প্রাগভাবস্ত ভাবাপি&ক-চাতে। ভাৰত্তৈৰ হি তৰ্হি ভাৰাপত্তি: : যথা ঘটত ঘটাপত্তি: পটত বা পটাপত্তি:। এভদিপি অভাবত ভাবাপত্তিবদেব প্রমাণবিরুদ্ধম। সাংখ্যতাপি যঃ পরিণামপকঃ অভিব্যক্তিভিরোভাবাক্সকরণেংপি অভিব্যক্তিভিরোভাবয়ো বিশ্বমানধাবিশ্বমান-इनिक्रभर्ग श्रुक्तिरामय धामानिरातायः। এতেন कात्रनरेख्य मश्कानमुरभक्तामि ইত্যেতদপি প্রত্যুক্তম্। পারিশেষ্যাৎ সদেকমেব বস্তু অবিশ্বরা উৎপত্তিবিনাশাদি श्रेत्यः नृहेदमानकथा विकन्नारक देखि । देमर जागरकर मजमूकम, 'नामरका विश्वरक ভাবং' ইত্যান্বিন শ্লোকে। সংপ্রত্যরক্ত ব্যভিচারাদ্ ব্যভিচারাচ্চেতরেবাম ইতি। कथर छहि जान्मताश्विकित्रप जानवणः कर्नानछात्भा ताननमार्छ हेछि १ विष वस्तृष्ठां श्वनाः, विषे वा व्यविद्याकतिष्ठाः, उद्गर्यः कर्म जना व्यविद्याशास्त्राः

ন হি বন্ধ্যাপুত্রস্ত বং কারণং সম্বন্ধো বা কেন্টিৎ প্রমাণতঃ কর্মরিভূং শক্যতে—ইতি
কেটিৎ গঠিছি।

পিতমেব ইত্যবিদ্ধান্ নৈ হি কশ্চিং ক্ষণমণি অশেষতঃ ত্যক্তং শক্ষোতি' ইত্যুক্তৰ্ বিদ্বাংশ্ব পুনঃ বিশ্বয়া অবিশ্বায়াং নির্ব্তারাং শক্ষোত্যেব অশেষতঃ কর্ম পরিত্যক্তমূন, অবিশ্বাধানেরাপিতভ্ত শেষামূপপত্তেঃ। ন হি তৈমিরিকদৃষ্ট্যা অধ্যারোপিতভ্ত দিচক্রাদেন্তিমিরাপগমেহণি শেষোহ্বতিষ্ঠতে। এবঞ্চ সতি ইদং বচনমূপপ্রম্। "সর্ক্ষর্মাণি মনসা" ইত্যাদি। "বে বে কর্ম্মণ্ডিরতঃ সংসিদ্ধিং লভতে নরঃ।" "ব্যুক্মণা তমভ্যান্চ্য সিদ্ধিং বিল্ভি সানবঃ." ইভি চ ॥৪৮

আনন্দ্রিরিটীকা। তর্হি দোষরহিতদেব ভিকাটনাদি সর্কেরমুঞ্জয়ভান অতো ন পাপপ্রাপ্ত্যাশকা ইত্যাশক্ষাহ্—পরেতি। উক্তমিত্যমূবর্ত্ততে। তর্হি পাপ প্রাপ্তিশকাং পরিহর্তু মকর্মনিষ্ঠ হমেব সর্কেষাং স্থাদিত্যাশকা জ্ঞানাভাবালৈৰ-মিত্যাহ—অনাত্মজ্ঞ ইতি। পূর্ববদত্তাপি সমন্ধ:। প্রকারান্তরাসম্ভবক্রতং ফলমাহ—অত ইতি। সহ জায়তে ইতি সহজং স্বভাবনিয়তং নিতাং কর্ম তদ্বিধিতত্বাৎ নির্দ্ধোষমপি হিংসাত্মকত্মা সদোষ্মিত্যত্ত হেতুমাই—ক্রিগুণেতি। সন্তাদি গুণত্ত্রয়ার্ক ত্রা হিংসাদিদোষবদপি কর্ম বিহিত্সত্যাজ্যমিত্যর্থঃ। কর্মণাং দোষবন্ধং প্রপঞ্চয়তি—সূর্ব্বেতি। আরম্ভশন্ত কর্মবৃহৎপত্ত্যা স্বপরস্ক-কর্মার্থতে কর্মণাং প্রকৃতত্বং হেতুমাহ—প্রকর্মাদিতি। দোবেণেত্য।দি বাচেষ্টে—যে কেচিদিতি। তে সর্বে দোগেলাবৃতা ইতি সম্বন্ধ: । সর্বকর্মণাং দোষার্তত্বে হিশক্ষোপাত্তং বন্ধাদিত্যক্তং হেত্মেবাভিনয়তি <u>-</u> ত্রিগুণাত্মকত্ব-মিতি। স্বভাবনিয়তভ কর্মণো দোববস্থাৎ তত্তাগৰারা প্রধর্মাতিষ্ঠমানভাপি নৈব দোষাদ্বিমোক্ষ: সম্ভবতি। ন চ প্রধর্মোই ফুঠাতুং শক্যতে ভরাবহন্বাৎ ন চ তর্হি কর্মণোহশেষতোহনমুগ্রানমেব অজ্ঞস্তাশেষকর্মত্যাগাযোগাৎ অত: সহজং কর্ম সদৌষমপি ন ত্যাক্সমিতি বাক্যার্থমাহ—সহজ্বস্তেতি। সহজ্ঞং কর্ম্ম সদোবমপি ন ত্যব্দেদিত্যত্র বিচারমবতারয়তি—কিমিতি। নহি কশ্চিদিতি স্থায়াদিতি শেষঃ। দোষো বিহিতনিত্যত্যাগে প্রত্যবায়:। সন্দিগ্ধশু সপ্রয়োজনশু বিচার্য্যছাত্ত সন্দেহে প্রয়োজনং পৃচ্ছতি—কিঞাত ইতি। তত্রাখ্যনন্থ ফলং দর্শরতি— যদীতি। অপক্যার্থামুষ্ঠানত গুণবেন প্রসিদ্ধবাৎ প্রসিদ্ধং হি মহোদ্ধিমগত্তাত চুলুকীক্বতা পিবতো গুণবৰং তদাহ-এবং তহীতি। অশেষকৰ্মত্যাগত গুণ-বংহংশি প্রাপ্তকুরায়েন তদর্যোগাৎ ততাশক্যামুগ্রানতেতি শক্তে—স্ত্যুমিতি। চোজ্বাৰ ব্ৰিগ্নাভং বিভৰতে—কিমিতি ৷ স্বাদিগুণবদান্মনো নিত্যপ্ৰচলিত-ছেন অশেষতঃ তেন ন কর্ম ত্যক্তং শক্যং নাপি রূপবিজ্ঞানবেদনাসংজ্ঞাসংস্থার-সংজ্ঞানাং কণধ্বংসিনাং স্কন্ধানামিব ক্রিয়াকারকভেদাভাবাৎ কারকভৈবাত্মনঃ

ক্রিরাম্বনিত্যকে কর্ণাশেষতন্তাক্তঃ শকামূভরতাপি স্বভাবভঙ্গাদিত্যাহ— উভযুপেতি | পক্ষরামুরোধেন অশেষকর্মত্যাগাঘোগে বৈশেষকশ্চোদয়তি— আপেতি। কদাচিদাত্মা দক্রিয়ো নিজ্জিয়ত কদাচিদিতি স্থিতে ফলিতমাহ— তত্ত্ত্তি। উক্তমেব পক্ষং পূর্ব্বোক্তপক্ষংয়াদ্বিশেষদর্শনেন বিশদয়তি— আগমাপারিছে ক্রিয়ায়ান্তন্বতে দ্রব্যা কথং স্থায়িতেত্যাশস্ক্যাহ — অয়ংত্মিতি। শুদ্ধমিতি। ক্রিয়াশক্তিমত্ত্বংপি ক্রিয়াবরাভাবে কগং কারকত্বং ক্রিয়াং কুর্বাৎ হি কারণং কারকমিত্যভাপগমাদিত্যাশঙ্কাহ—তদেবেতি। कात्रकः न किवाधिकत्वः अत्राष्ट्रातां वाक्षिकार्यः । देवः भविकारकः त्मायां छ। नामि স্টর্ম: স্বীকার্য্যতা ইত্যুপদংহরতি—ইত্যুন্মিতি। তগবন্মতামুদারিয়াভাবা দক্ত প্রস্যা ত্যাকাতেতি দুষ্যতি — অযুমেবেতি। ভগবন্মতানমুদারিত্বসদ্য অপ্রামাণিকমিতি শক্তে —কথমিতি। ভগবদ্বচনমুদাহরন্ পরপণ ভ তদমুগুণ-ষাক্রাবমাহ—যুক্ত ইতি। পরেবামপি মতমেতদমুগুণমেব কিং ন, স্যাদিত্যাশ-ৰ্যাহ—কাণাদানাং হীতি। ভগবন্মতামুগুণখাভাবেহপি স্থায়ামুগুণখেন দোৰরহিতৎ কাণাদানাং নতম্ উপাদেয়মেব তর্হি কাণাদমত্বিরোধাছপেকতে ভগবন্মতমিতি শঙ্কতে—অভাগবিত্ত্ত্বস্পীতি। স্থায়বৰ্মণিশ্বমিতি দূৰ্যতি— উচতে ইতি। সর্বপ্রমাণামুদারিণো মত্যা ন তথ্বিরোধিতা ইত্যাক্ষিপতি — কথমিতি। বৈশেষিকমত্ন্য সর্বপ্রমাণবিরোধং প্রকটরন্নাদৌ তন্মতমমুবদতি— যদীতি। অসতে। জন্ম সতশ্চ নাশ ইতি হিঁতে ফলিতমাহ –তথা চেতি। উক্তমেৰ বাক্যং ব্যাকরোত্তি—অভাব ইতি। সদেবাসৰ্মাপ্সত ইতৃত্তিং ব্যাচষ্টে—ভাবশ্রেচ্ তি। ইতি মতমিতি শেষ:। তত্ত্বৈবাভাগগমান্তরমাহ— জারেতি। প্রকৃতং মতং সপ্তমার্থ:। ইত্যভাপগ্যাত ইতিশেষ:। পরকীর-মভাপগমং দ্যরতি—ন চেতি। এবমিতি পরপরিভাষামুদারেণেত্যর্থঃ। व्यमर्गनाष्ट्रश्राखद्राराकांद्रारक्ति (नय:। क्यवर्धि जन्माज्ञेशि चहामीनाः काद्रमा পেকাণামুংপত্তি নহি ভাষানাং কারণাপেকোৎপত্তিকা যুক্তেতি তত্তাহ—ভাবেতি ঘটাদীনামশ্বৎপক্ষে প্রাগপি কারণাত্মনা সতামেব অব্যক্তনামরূপাণাম্ অভিব্যক্তি-ি সামগ্রীমপেক্ষা পুথগভিবাক্তিসম্ভবার কিঞ্চিৎ অবন্তমিতার্থ:। অসংকার্য্যবাদে দোবান্তরমাহ—কিঞ্জেতি। পরমতে মানমেরবার্বহারে কটিদিপি বিশ্বাদো ন कमािहिनिजाल राज्याह-मृद् मृत्तात्वि । निह मद जरेशस्वि निन्छिर . তহৈন্যৰ পুনরদত্তপ্রাপ্তেরিষ্টবাৎ ন চাসৎ তথৈবেতি নিশ্চয়ঃ তলৈয়ৰ সভ্তপ্রাপ্তেকপ-शमा करका बन्मातन महमन्या निर्गेष ७९ जरशकि विधामाणावार मानदेवसमा-

মিভার্থ:। ইতশ্চাদৎকার্য্যবাদো ন যুক্তিমানিত্যাহ—কিঞ্চেত। তদেব হেছ-স্তরং ক্ষোরন্নিভুং পরমভমন্থবদতি—উৎপদ্যত ইতীতি। পরকীরং বচন-মেব ব্যাচষ্টে—প্রাণিতি। সম্বন্ধং সদিত্যনেন কারণসম্বন্ধে সতি কার্য্যস্য সন্বাদম্বন্ধে। ভবতীত্যক্তং তদেব স্ফুটয়তি—কারুণেতি। পরমতমেবমহুভাব্য দুৰম্বতি—তাত্ৰেতি। কাৰ্য্যস্যাদতোহপি কারণং সম্ভবতি তদ্য চ কাৰ্য্যেণ সম্বন্ধঃ বিধ্যতীত্যাশস্ক্যাহ—ন হীতি। অসন্বাদেবাসতঃ সম্বন্ধাভাবে কারণস্য সতোহিশ ন তেন সম্বন্ধোহমুনাতৃং শক্যতে সদসতোঃ সম্বন্ধাসম্ভবাদিতার্থঃ। কার্ব্যস্যাত্যস্তা-সন্থান ভ্যুপগ্নাৎ কারণসন্ধঃ স্যাদিতি শঙ্কতে—নিশ্বিতি। সতামেব ধ্যুকাদীনাং কারণদম্বন্ধ শঙ্কিতং দূবয়তি—ন সম্বন্ধাদিতি। অনভ্যুপগমমেব বিশদরতি —ন হীতি। সদেব কারণং কার্য্যাকারমাপত্ত কার্য্যব্যবহারং নির্বাহতীত্যভাূপ-গমান্নান্তি সম্বন্ধামূৰ্ণপঞ্জিবিত্যাশব্যাপরাদ্ধান্তালৈবনিত্যাহ--ন চেতি। কার্য্যস্ত কারণসম্বন্ধাৎ পূর্বাং সরাভাবে পরিশেষসিদ্ধার্থং দর্শরতি —তত**ে**চ্তি। চামুপপত্তিরুক্তেতি পেষ:। সম্বন্ধিনো: সদদতোরেবাসংযোগেহপি সদসতোঃ সম্ভবেদিতি তদ্য নিভাষাদক্ততরসম্বন্ধাভাবেহণি ছিতেরাবঞ্চকরাদিতি শক্ষতে—নন্মিতি। সদসতোর্দ্ধিণঃ সম্বন্ধ্যাদৃষ্ট্রবামেতি নিরাচষ্টে—ন ব্যুদ্ধতি। ঘটাদিপ্রাগভাবদ্য অত্যন্তাভাবহাভাবাদ্বন্ধ্যাপুত্রাদিবিলকণ্ডয়া নিধাতী গাশকাহ —ঘটাদেরিতি । উভন্নভাশকভাবাবিশেষেংপি কন্যচিং কারণনম্বন্ধো নেতরস্যেতি বিশেষে হে হভাবাল প্রাণভাবস্য কারণনম্বন্ধ: সম্ভবতী-ত্যর্থ:। ঘটাদিপ্রাগভাবস্য সপ্রতিযোগিকত্বং বন্ধ্যাপুত্রাদেনৈ বিমিতি বিশেষ-মাশঙ্কা দূষরতি—একস্মেতি। প্রাগভাবদ্যেব প্রধ্বংসাভাবাদেরপি সপ্রতি-योगिकञ्चावित्मय नकात्रलन मःवसावित्मयः मामिकार्थः। প्रांगज्ञाव श्रेश्वरमाजा-রুরোর্বিশেষাভাবে ফলিতনাহ—অস্তি চেতি। ফপালশব্দো ঘটকারণীভূতি। মুদবরববিষয়ঃ, সর্বেষা ব্যবহারো ঘটাশ্রিতো জন্মনাশাদিব্যবহারঃ, ,প্রধ্বংসাভাবস্ত ঘটন্যৈবাভাবত্বে সত্যপি ন ঘটম্বমাপ্ততে নাপি কারণেন সম্বধ্যতে ন চোৎপঞ্জাদি-ভবতীত্যেতদযুক্তঃ প্রাগভাবেনাগ্য বিশেষাভাবাদিত্যাহ — ন ত্বিতি। অ্সমঞ্জসমিত্যনেন ইতিশশঃ সম্বাহত। অসমঞ্চসাস্তরমাহ— প্রধ্বংসাদীতি। অভোভাভাবাত্যস্তাভাবৌ আদিপদাবৌ ৰচিদিতি দেশ-कां करवार्था हर्गरे वावहारता कमामिरतव श्रीशंखारता नारशंखामियावहातरवार्शाह ভাৰত্বাৎ প্ৰধ্বংগাদিবদিতাৰ্থঃ। প্ৰাগভাৰত ঘটভাবানভাপগমাদক্মানং শিদ্ধশাৰন-মিতি শহতে—মিন্বিতি ৷ অভাবত ভাবাপন্তামত্মাপগমে ভাবতৈৰ ভাবাপতিনি

ভানিষ্ঠং ভাদিভি দুষম্বভি—ভাবসৈত্যবেতি। তত্ত তদাপত্তেরযোগ্যতে দৃষ্টাত্ত-মাহ—যুপ্তে। ভাবত ভাবাপত্তিরনিষ্টেতি দাষ্টাত্তিকং স্পষ্টয়তি—এত্ত-দুপীতি। আরম্ভবাদোকং দোষং পরিণামবাদেহপি সঞ্চারম্বতি—সাদ্ধ্যান্তেতি। ধর্মঃ পরিণামঃ। অসতোহপূর্ব পরিণামক্তোৎপত্তে: সতল্চ পূর্বপরিণামন্ত নাশাদ-সদস্দেব সচ্চ সদেবেতি ব্যবস্থাতাপি ছর্ঘটেত্যর্থঃ। নমু কার্য্যং কারণাত্মনা প্রাগণি সদেবাব্যক্তং কারকব্যাপারাদ্ ব্যক্ষ্যতে তেন ব্যক্তাব্যক্ত্যোর্জনাশব্যব-মহান্তরাৎ বিশেবসিদ্ধিন্তত্তাহ—অভিব্যক্তীতি। কারকব্যাপারাৎ প্রাগনভিব্যক্তিবদভিব্যক্তে: সন্তমসন্থং বা সন্থে কারকব্যাপারবৈর্থ্যাৎ ভদ্বিবর-প্রমাণবিরোধ: বিতীয়ে পকান্তরবৎ অতান্তাসতঃ তরির্কর্ত্যবাবোণে স এব দোবঃ কারকব্যাপারাদুর্দ্ধং ব্যক্তিবদব্যক্তেরপি সত্তে সএব দোবঃ অসত্তেহপি সতোহসন্থান-कीकातार मानरमत्रवावशास न काणि विचामः मर मानव व्यमकारात्विक व्यनिद्धात-পাদিতার্থ:। সাংখ্যপক্ষপ্রতিকেপ্যায়েন পক্ষাস্তর্মপি প্রতিকিপ্রমিত্যাহ— এতেনেতি। কারণক্তৈব কার্য্যরূপাপত্তিরুৎপত্তিস্তক্তৈব জ্জ্রপত্যাগেন স্বরূপা-পদ্ধিন শি ইভ্যেতদপি ন পূর্বারপে স্থিতে নাষ্ট্র চ পরস্ত পররূপাপভেরমূপপছেন ্চ প্রাপ্তং রূপং স্থিতেন নষ্টেন বা ত্যক্তৃং শক্যমিত্যর্থ:। আরম্ভবাদে পরিণাম-बारम ह छ९ अखामिवावशात्रभभारत अतिरमवात्राणः मर्मन्नि आतिरमवात्रा-এক্সানেকবিধবিকরামূপপত্তিমাশক্যাহ—অবিভায়েতি। অস্তাপি মতত্ত ভগবন্মতামুরোধিয়াভাবাদবিশিষ্টা ত্যাজ্যতেত্যাশঙ্কাহ—ইতীদমিতি। উষ্ট মেব ভগবন্ধতং বিশদয়তি—সংপ্রতায়ুস্তেতি। সদেকমেব বস্তু সাদিতি শেব:। ইতরেবাং বিকারপ্রত্যন্ত্রানাং রক্ষতাদিধীবং অর্থব্যভিচারাদবিষ্ণর তদেব সদ্বস্ত অনেকধা বিকরাতে ইত্যাহ—ব্যক্তিচারাচেচতি ৷ ইতি মঁতং স্নোকে দর্শিতমিতি সমন্ধঃ। আত্মনশ্চেদবিক্রিয়ন্তং ভগবতেটং তর্হি সর্ককর্মপরি-ভাাগোপণতে: সহজ্ঞাপি কর্মণন্ত্যাগদিদ্ধিরিতি শঙ্কতে—কথমিতি। কিং কার্য্যকারণাত্মনাং গুণানামকল্লিতানাং কল্লিতানাং বা কর্ম ধর্মছেনেষ্ঠং ছিধাপি নিঃশেষকর্মত্যাগোধনিছবোধনিছবো বা নাম ইত্যাহ—যদীত্যাদিনা। **অবিস্থারোপিতমেব গুণশন্দিতকার্য্যকারণারোপদ্বারা কর্ম্মেতি শেবঃ। বিতী**য়ং প্রভাহ-বিদ্বাংস্তিতি। আরোপশেষবশাদ্বিত্বোহপি নাশেষ্কৃশ্বভাগিসিদি-षिणानकार—অবিদ্যেতি। তামেবাছণপত্তিৎ দুষ্টাম্বেন স্পষ্টরতি—ন হীতি। বিছবোহ শেষস্থাতাগে পাঞ্চমিকমণি বচোহতুক্দমিতাার—এবঞ্চিতি I

অবিহবঃ দৰ্মকৰ্মজ্যাগাবোগে চ প্রক্রজাধ্যায়ন্থমেব বাক্যমন্থ গমিজ্যাহ—ত্যে স্থে ইতি। বাক্যান্তরমণি তবৈবার্থে যুক্তার্থমিত্যাহ—স্বকর্মণেতি॥৪৮

অনুবাদ। বিষঞ্চাত কুমির স্থায় [অর্থাৎ বিষ হইতে উৎপন্ন কুমি रिका विराय अनिर्देशना का करत ना अर्थाए विष-मन्मर्क मत्रगानि ना**छ करत** না, সেইরপ] খভাব-নিয়ত কর্নের অনুষ্ঠান করিলে পাপ প্রাপ্ত হয় না—ইহা वना रहेबाह्य ; श्रवध्य छवावर हेरा । वना रहेबाह्य ; अवः शृत्सि । वना रहेबाह्य বে, অনাম্বঞ্জ ব্যক্তি কণকালও কর্ম না করিয়া পাকিতে পারে না। এইজয়ই [স্পাবার বলিতেছেন যে] "সহজ্রত জন্মের সহিত বাহা উৎপন্ন হয়, তাহাই 'সহজ'। कि जारा ? क्यं, तर कोत्खर । धे क्यं विश्वनप्रनिवस्त मानाय स्टेरम् छान क्तिरव ना। याहात जात्रस कता यात्र, जाहाहै এहे द्वारन "जात्रस" नरस्त वर्ष। "দর্কারম্ভ" অর্থাৎ দকল কর্ম। কর্ম্মের প্রকরণ চলিতেছে বলিয়া [এই ছলে আরম্ভ শব্দের অর্থ কর্মাই গ্রহণ করিতে হইবে]। যত প্রকার আরম্ভ আছে, অর্থাৎ স্বধর্ম বা পরধর্মসমূহ, তাহা সকলই সহজ ধুমের বারা অগ্নির স্তার, দোবের ৰারা সারত হইয়া থাকে। সকল কর্মাই যথন ত্রিগুণাত্মক, তথন সেই ত্রিগুণাত্ম-করণ হেতৃ আছে বলিরা উহারা সকলেই 'সদোষ'। সহজ কর্ম্মের অর্থাৎ স্বধর্ষের পরিত্যাগ করিয়া পরধর্ষের অনুষ্ঠান করিলেও দোৰ হইতে মুক্তিলাভ **হ ওয়ার সম্ভাবনা নাই, অ**গচ প্রধ্র্য ভ্যাবহ। একেবারে স্কল কর্ম প্রিত্যাগ করা অজ্ঞের পক্ষে সম্ভবপর নহে; এই কারণে সহজ্ঞ কর্ম্ম পরিত্যাগ করিবে না —ইহাই অর্থ। [একণে জিঞানা ২ইতেছে বে] অপেবভাবে বেহেতু কর্ম পরিত্যাগ করিতে পারা যায় না, এই কারণেই কি পরিত্যাগ করিবে না, এই প্রকার বলা হইতেছে ? অথবা সহজ কর্মা পরিত্যাগ করিলে দোব হয়, এই কারণে উহা পরিত্যাগ করিবে না বলা হইতেছে ? এই বে হুই প্রকার শহা कता बाहराज्य है होराज का कि १-- थिशम भन्नात का हरेराज्य दि] विनि অশেষতঃ কর্ম ত্যাগ স্বরিতে পারা অসম্ভব বলিয়া সহজ কর্মকে পরিত্যাগ স্বরিবে লা, এইরপ [অভিপ্রার] হয়, তাহা হইলে স্বীকার করিতে হয় যে, অশেষ কর্ম পরিত্যাগ করাও শুণের মধ্যে পরিগণিত হইতে পারে, এইরূপই দিম বইরা পঞ্জে। এইরপ হইতে পারে সত্য, কিন্ত অশেষতঃ কর্মত্যাগই উপপন্ন হইতে পারে না; , ি কারণ, পুর্বেই উক্ত হইয়াছে বে, কেহই কর্ম না করিয়া কণকালের অভ भाकित्छ शादत ना ; स्छतार একেবারে সকল कर्ष ছाष्ट्रित, ইश कि विकारत क्रिश्मन हहेरन ?]। देशांत्र উপत वक्तवा धारे रव, करन कि हेराई निकास

ছইতেছে বে, সাঞা-মতে বেমন গুণ [সন্ধু, রক্ষঃ ও তমঃ] সমূহ সর্বাদাই ক্রিয়া-শীল, সেই প্রকার আত্মাও কি সর্বনাই ক্রিয়াশীল ? কিংবা বৌদ্ধগণের মতে বেমন [क्रि तिष्ठान, दिवना, मध्छा ও मध्यात क्रि] भर्ष यस व्यविश्वरती, कार्त्रन, [ভাছাদের মতে] ক্রিয়াই কারক; [ক্রিয়া ছাড়া কারক না থাকিলে কোন বস্তুই স্থায়ী হইতে পারে না, এইজন্ত পঞ্চমন্ধরণ যে, তাহাও কতকগুলি ক্রিয়ার সমষ্টি ছাড়া আর কিছুই নহে: স্নতরাং তাহাও ক্পবিধ্বংদী] সেই প্রকার আত্মাও কি কণবিধ্বংগী ? অথবা এই হুই প্রকার পক্ষ ভিন্ন আর একটি তৃতীয় পক্ষ আছে, দেই পক্ষে [এইরূপ স্বীকৃত হইয়াছে যে] বস্তু [স্থায়ী হইলে] যধন কোন কার্য্য করে, তথন তাহা সক্রিয়; যে সময় তাহা কোন কার্য্য করে না, তখন তাহাকেই নিজিয় বলা যাইতে পারে। এই প্রকার যদি দিছান্ত হয়, তাহা হইলে, অশেষতঃ কর্ম পরিত্যাগ করা সম্ভবপর হইয়া উঠে। কিন্তু তৃতীয় পক্ষে এই বিশেষ যে, এই মতে আত্মরূপ বস্তু নিত্যপ্রচলিতও নহে এবং ক্রিয়াই ষে কারক, তাহাও নহে; [ক্রিয়া ব্যতীত স্থায়ী কারকও বিভ্যমান আছে]। धरे कृठीम माठ बिख्लाण धरे रा, जरन कि देशरे अनीकात कतिरा श्रदेश रा, ব্যবস্থিত বস্তুতে, [স্বত: শিদ্ধ ভাবে] বিশ্বমান না থাকিয়াও সময়-বিশেষে ক্রিয়া উৎপন্ন হয় এবং পরে বিনাশও পাইয়া থাকে ? শুদ্ধ [নির্বিকার] দ্রব্য [বিকারামুকুল] শক্তিমং হইয়া অবস্থিতি করে, এইরূপ কণাদ মতামুবায়ী দার্শনিকগণ বলিয়া থাকেন। [তাঁহাদের মতে] দেই শুদ্ধ ও শক্তিমৎ দ্রব্যই কারক হইয়া থাকে। এই প্রকার মতে কি দোব আছে? ইহাই দোব যে. ইহা ভগবানের অভিমত নহে। কিসে জানা গেল বে ইহা ভগবানের মত নহে] ? যেহেতু ভগবান বয়ৎই বলিয়াছেন "অসতের উৎপত্তি হইতে পারে না" ইত্যানি। কণান-মতামুঘায়ী দার্শনিকগণের ইহা মত বে, অসতের উৎপত্তি হয় এবং সভেরও বিনাশ হয়। ভগবানের অভিমত নাই হইল, তাহাতে ক্ষতি कि ? এই মতটি যুক্তিসঙ্গত যদি হয় [তাহা হইলে কেন ইহাকে গ্রহণ করা যাইবে না 🕈] ইহার উপর বক্তব্য এই যে, এই মতটি সদোষ; কারণ, ইহা সর্বপ্রমাণবিক্লম। কি প্রকারে ? বদি ছাণুক প্রভৃতি কার্য, জব্য উৎপত্তির পূর্বে একেবারে অসৎ হয়, এবং উৎপন্ন হইয়া কিছুকালের জন্ত সং হয়, পরে আবার অত্যন্ত অসংকে প্রাপ্ত হয়, তাহা হইলে [এই আপত্তি হয় বে] অসৎ সৎ হয়, অর্থাৎ অভাব ভার হয়, এবং ভাব অভাব হর। এইরূপ সেই কাণাদমতে [ইহাও অন্মকার করিতে बहेटव (व] উৎপত্তির পূর্বে কার্য্য অভাব : স্থতরাং শশবিষাণস্বরূপ হইলেও বর্থন

উৎপন্ন হইতে থাকে, তথন সমবান্ত্রি অসমবান্ত্রি এবং নিমিত্ত কারণকে অপেকা ু কুরিয়াই উৎপন্ন হট্না থাকে। ইহা কিন্তু, কিছুতেই সম্ভব নহে যে, অভাবের উৎপত্তি হয় বা অভাব কোন প্রকার কারণকে অপেকা করে; কারণ, শ্রশুর উৎপন্ন হইতেছে বা কারণকে অপেক্ষা করিতেছে, ইহা দেখিতে পাওয়া যায় না। তবে ইহা यদি অঙ্গীকার কর যে, ঘট প্রভৃতি কার্য্য সর্মদাই বিশ্বমান আছে, কেবল সময় বিশেষে আবিভূতি হইয়া থাকে, এবং আবিভাব বা অভিব্যক্তির প্রতি বাহা কারণ, ভাহারই অপেকা করিয়া আবিভূতি হইয়া থাকে এইমাত্ত, তাহা হইলে এইরপ দিদ্ধান্ত অঙ্গীকার করা যাইতে পারে। আরও একটি কথা এই যে, অসং যদি সং হয় কিংবা সং যদি অসং হয়, তাহা হইলে কোন প্রকার প্রমাণ ও প্রমেয়-ব্যবহারের প্রতি কাহার ও বিশ্বাস থাকিতে পারে না। সং সংই, অসং অসংই, এই প্রকার নিশ্চয়ও অমুপপন্ন হইয়া পডে। আরও দেখিতে हहेरत रह] तक्क छे९भन्न हहेराजरह —हेरात व्यर्थ कि ? रेतर्শविकशण विनिन्ना शास्त्रन যে. ইহার এই উত্তর যে, স্বাণুকাদি কার্য্যন্তব্য নিজ কারণ প্রমাণু এবং সন্তার সহিত সম্বন্ধ হইতেছে। অর্থাৎ উৎপত্তির পূর্ব্বে কার্যান্দ্রব্য অসৎ হইলেও ভাষা নিজকারণের ব্যাপারকে অপেকা করিয়া, নিজ কারণ প্রমাণুর সহিত এবং নিজের সন্তার সহিত সম্বন্ধ লাভ করিতেছে: এ সম্বন্ধের নাম "সমবায়।" এই-ভাবেই উৎপন্ন দ্ৰব্য নিজ সমবাগ্নি কারণে সমবেত হইয়া থাকে [ইহাকেই লোকে উৎপত্তি কহিয়া থাকে । বৈশেষিকগণের এই প্রকার সিদ্ধান্তের উপর বক্ষবা এই যে.—যাহা অসং, তাহার কারণ সং হইবে কি প্রকারে ? এবং ভাহার সহিত অন্ত কোন বস্তুর সম্মই বা হইবে কিরপে ? বন্ধ্যা পুত্রের কারণ আছে • বা বন্ধ্যা-পুলের সৃহিত কাহারও সম্বন্ধ আছে—ইহা কেহই প্রমাণের সাহায়ে কএনা করিতে পারে না। যদি বল বৈশেষিকগণ যে অভাবের সহিত কাছারও मचक कहना करतन. जाश नरह; जाशता वरनन रव, बानुकामि कार्या अव, তাহাদের স্থিতই কারণদ্রবাের সমবায়রূপ সম্বন্ধ কলিত হইয়া থাকে। ই**ই**ছাও ঠিক নতে: কারণ, কারণদ্রব্যের সহিত সম্বন্ধ ইইবার পূর্বে কার্যাদ্রব্যের সম্ভা বৈশেষিকর্গণ একেবারেই স্বীকার করেন না। কুম্বকার দণ্ড ও চক্র প্রভৃতির ব্যাপারের পূর্বে ঘটাদিকার্য্যদ্রব্যের অন্তিত্ব আছে, ইহা ত বৈশেষিকংণ স্থীকার क्राबन ना। देवर्णविकाण श्रीकांत्र क्राबन ना दा, मांगेहे घंगेनि आकांत्रदक প্রাপ্ত ইইনা থাকে; স্তরাং তাঁহাদের মতে পরিশেষে ইহাই ছির ইইভেছে বে, क्षमएकत्रहे मक्क रहेशा थाटक। यनि यन, क्षमएकत मेरिक मएकत .[क्षक क्यांस

সম্বন্ধ ঘটিতে না পারিলেও] সমবায়রূপ সম্বন্ধ হইতে পারে।—তাহাও ঠিক নহে; কারণ বন্ধ্যা-পুত্রের কাহারও সহিত কোন প্রকার সম্বন্ধ আছে, ইহা দেখিতে পাওয়া যায় না। আরও দেখিতে হইবে যে [বৈশেষিকগণের মতে দেখা যায় ষে] উৎপত্তির পূর্বের বটাদির যে মভাব থাকে, তাহার সহিত তাহার কারণের সম্বন্ধ হইয়া থাকে, কিন্তু অন্ধ্যা-পুত্রের অভাব হইলেও তাহার কারণের সহিত সম্বন্ধ হয় না. এই অভাবের মধ্যে বিশেষ অঙ্গীকার করা হইতেছে; তাহা কিন্নপ, তাহা বুঝাইয়া দেওয়া উচিত। একের মভাব, হইয়ের মভাব, সকলের অভাব, প্রাগভাব, প্রধ্বংদাভাব, অন্তোক্তাভাব ও অত্যস্তাভাব এই অভাব করটির মধ্যে পরস্পর লক্ষণগত বা স্থরূপগত কোন বিশেষ কেইই দেখাইতে পারেন না। বিশেষ যদি না পাকে, তবে এক ঘটের প্রাগভাব কুম্ভকারাদির প্রয়ন্ত্রের সাহায্যে ঘটভাবকে প্রাপ্ত হয় এবং কারণরূপ কপাল দ্রব্যের সহিত সম্বন্ধও হইয়া থাকে এবং ব্যবহারেরও যোগ্য হয়, কিন্তু ঘটেরই প্রধ্বংসাভাব অভাব হইলেও এরপ হইতে পারে না অর্থাৎ প্রধ্বংসাভাব প্রভৃতি অভাবগুলি ব্যবহারবোগ্য হয় না। প্রাগভাবই দ্বাগুকাদি, দ্রবানামে প্রথিত হইয়া উৎপত্তি প্রস্কৃতি ব্যবহারের যোগ্য হয়—এই প্রকার কল্পনা নিতান্ত অনঙ্গত। প্রধ্বাদাব ও অত্যস্তাভাব যেমন অভাব, দেইরপ প্রাগভাবও অভাব; ইহাদের মধ্যে কোনপ্রকার বিশেষ থাকা সম্ভবপর বহে।

ষদি বল, "আমরা ইহা বলিতে চাহি না যে, প্রাগভাব ভাবরূপে উৎপন্ন হয়, "তাহাও ঠিক নহে"; কারণ, তাহা হইলে তোমাদিগকে অঙ্গীকার করিতে হয় যে, ভাবেরই ভাবাপত্তি (অর্থাৎ যাহা সিদ্ধ আছে, তাহারই উৎপত্তি) হয়, যেমন ঘটের ঘটাপত্তি, বা পটের পটাপত্তি; ইহাও অভাবের ভাবাপত্তির স্থায়ই প্রমাণ-বিক্লম। সাম্মাগণেরও যে পরিণামপক্ষ, তাহাও বৈশেষিকগণের অঙ্গীকৃত পক্ষ হইতে [বড় একটা] পৃথক্ হইতেছে না; কারণ, সাংখ্যমতে অপূর্ব্ধ ধর্মের উৎপত্তি এবং বিনাশ অঙ্গীকার করিতে হয় [বৈশেষিকগণের মতেও অপূর্ব্ব ধর্ম্মীর উৎপত্তি ও বিনাশ অঙ্গীকার করিতে হয়; শ্বভরাং উভয়মতেই অসতের উৎপত্তি মানিতে হয়]। অভিবত্তি এবং তিরোভাব রূপ হইটি ধর্মের বিশ্বনমানতা আছে কি না, তাহা নিরূপণ করিতে হইলে পূর্বের স্থায়ই প্রযাণবিরোধ হয়। এই প্রকার, ইক্তির ঘারা—"কারণেরই সংস্থান বা অবস্থাবিশেষ কার্য্য". এই মতটিও নিরাক্বত হইতেছে। পরিশেষে স্থির হুয় হইতেছে যে, সন্বন্ধ সর্বাণা এক এবং একরপ। উহা এক হইয়াও নটের স্থায় অবিশ্বাবশতঃ উৎপত্তি ও

বিনাশ প্রভৃতি ধর্মগৃষ্টের বারা নানাপ্রকারে বিকলিত হটরা থাকে, ইহাই ভগবানের মত এবং ইহাই 'নাসতো বিশ্বতে ভাবঃ" ইত্যাদি লোকে প্রকটিত হইরাছে। কারণ, সকল প্রকার ব্যবহারেই সংপ্রতারের ব্যভিচার দেখিতে পাওয়া যায় না : কিন্তু সংপ্রত্যয় ব্যতীত অন্ত যাহা কিছু ঘটপট প্রভৃতি প্রত্যয়, তাহা সকলই ব্যক্তিচারী হইয়া থাকে। ভাহাই যদি হইল, তবে আখা ত স্বতঃ অবিক্রিয়; সেই আত্মার পক্ষেত অশেষতঃ কর্মত্যাগ সম্ভব নছে—এই প্রকার উক্তি সঙ্গত হইল কিরপে ? ইহার উত্তর এই যে, গুণসমূহ (সন্ধ রঞ্জঃ ও তমঃ) বদি বাস্তবিক সংপদার্থ হয়, কিংবা অবিস্থা দারা পরিক্ষিত হয়, উভন্ন मराउटे कर्पा दम अर्गत भर्पा: जाहा श्वित । जाहारे यमि हरेन, जाद हेहारे श्वित বে, কর্ম আত্মাতে আরোপিত ধর্ম [স্বাভাবিক ধর্ম নছে]; স্থতরাং যে অবিধান, তাহার পকে [অঞ্চানবশত: কর্ম সর্বনাই আত্মাতে আরোপিত হয় বলিয়া] ক্ষণকালেরও জন্ম কর্ম পরিত্যাগ হইতে পারে না, ইহাই বলা হইরাছে। কিন্ত ষে বিশ্বাৰ, জ্ঞানোদয়বশত: অজ্ঞান নিবৃত্ত হুইলে, সে সকল প্রকার কর্ম্ম পরিত্যাগ করিতে সমর্থ হয়। কারণ, জ্ঞানোদয় হইলে যখন অবিভা নিব্রত हत. ज्यन व्यविद्या वा जाहात्र कार्यात द किছू भिन थाकिता गाहैरन, हेश छ আর সম্ভবপর নহে। যেমন তিমির-নামক নেত্ররোগে পীড়িত ব্যক্তির তিমির-রোগ নিবুত্ত হইলে, তাহার আর বিচক্রাদির দর্শন হর না, [সেইরূপ অবিষ্ণা নিবৃত্ত হইলে, তাহার কার্য্য সংসারও আর থাকে না] এই প্রকার সিদ্ধান্তই ষ্দি ভগ্ৰংসন্মত হয়, তাহা হইলেই "সকল কর্মকেই মনের ছারা ত্যাগ করিয়া" "নিজ নিজ কর্ম্মে অভিরত থাকিয়া মানব সংসিদ্ধি লাভ করে" এবং "নিজ . কর্ম্মের দারা তাঁহার উপাদনা করিয়া মানব সিদ্ধি লাভ করে" ইত্যাদি বচনগুলিও উপপন্ন হইতে পারে ॥ ৪৮

> অসক্তবুদ্ধিঃ সর্ববত্ত জিতাত্মা বিগতস্পৃহঃ। নৈক্ষর্ম্যসিদ্ধিং পরমাং সম্যাদেনাধিগচ্ছতি॥ ৪৯

অন্ত্র্য়। সর্বা অসক্তব্দিঃ জিতাত্মা বিগতস্পৃহঃ সন্ন্যাদেন পরমাং নৈক্ষ্য-সিদ্ধিম্ অধিগছতি ॥ ৪৯ ু

অনুবাদ। সর্বাত্ত অনাসক্তচেতাঃ জিতেন্ত্রিয় এবং নিস্পৃহ ব্যক্তিই সম্মানের বারা পরম নৈকর্মাসিদ্ধি লাভ করেন ॥ ৪৯

ভাষ্য ৷ যা চ কৰ্মকা সিদ্ধিককা জাননিষ্ঠাবোগ্যতালকণা তঙ্গাঃ কলভূতা

নৈদ্বাসিদিঃ জাননিষ্ঠালকণা বক্তব্যেতি শ্লোক আরভ্যতে—অসক্তযুদিঃ অসঞা সলরহিতা বুদ্দিরক্তংকরণং বস্ত সোহসক্তবৃদ্ধিঃ সর্বান্ত পুত্রদারাদির আসক্তিনিমিন্তের, দিতাত্মা জিতো বশীক্ত আত্মা অস্তকরণং বস্ত স জিতাত্মা, বিগতস্পৃহঃ বিগতা স্পৃহা তৃক্ষা দেহজীবিতভোগের যথাৎ স বিগতস্পৃহঃ, য এবংভূত আত্মক্তঃ সঃ নৈদ্বাসিদিং নির্গতানি কর্মাণি যথাৎ নিজ্ঞিরত্রমাত্মসংবোধাৎ সঃ নিদ্বা তস্ত ভাবো নৈদ্বাস্থা, নৈদ্বাসং চ তৎ সিদ্ধিশ্চ সা নৈদ্বাসিদ্ধিঃ, নৈদ্বাস্ত বা সিদ্ধিঃ নিজ্ঞিরাত্মসাত্মসংবোধাৎ সঃ নিদ্বাস্ত বা সিদ্ধিঃ নিজ্ঞিরাত্মস্বাপাবস্থানলক্ষণত্ত সিদ্ধিঃ নিজ্পত্তিঃ তাং নৈদ্বাসিদ্ধিং পরমাং প্রেক্তাইাং কর্মজ্বসিদ্ধিবিলক্ষণাং সভ্যোমুক্ত্যবস্থানক্ষণাৎ সন্ন্যাসেন সম্যুগ্ দর্শনেন তৎপূর্বকেণ বা সর্বান্ধ্বসন্ধানেন, অধিগছতে প্রাণ্থোতি। তথা চোক্তং "সর্বাক্রমণি মনসা সন্ন্যত্ত নৈৰ কুর্বন্ধ কাররনান্তে" ইতি ॥ ৪৯

আনন্দ্রিরিটীকা। বিছবং সর্প্রকর্মগ্রাগেছিপ নাবিছবন্তথেত্যুক্তম্, ইনানীমুক্তমনৃত্ব অনস্তরশ্লোকতাৎপর্য্যমাহ—যা চ কর্ম্মজেতি। চোহবধারগাথো ভিন্নক্রমো বক্তব্যেতার সম্বাতে। সাধনাম্যুপদিশকৈদ্র্ম্যসিদ্ধিং ব্যপদিশতি
—অসক্তেতি। পুত্রাদিবিষয়ে চেতসং সন্ধাভাবেছপি তক্তাম্বাধীনত্বমাশস্থাত্ত
—জিতাত্মেতি। অসক্তিমুক্তা স্পৃহাভাবং বদতা পুনক্রকিরিটা ইভ্যাশস্থাহ—
ক্রেতি। উক্তমন্ত্র তংফলং লন্তমতি—য এবমিতি। কর্মগাং নির্গতে।
হেত্মাহ—নিজ্রিয়েতি। সম্যগ্জানার্থতেন নৈম্বর্যাসিদ্ধিশন্ধং ব্যাথ্যান্নার্থান্তরমাহ— নৈজ্বর্যান্তেতি। প্রকর্ষমেব প্রকট্যতি—কর্ম্মজেতি। সন্মাসত্ত
শতিম্বত্যোং সম্যগ্দর্শনসাধনত্বপ্রসিদ্ধেং অযুক্তং তাদান্ম্যমিত্যাশন্ত্য পক্ষান্তরমাহ
—তৎপূর্ববেকেণেতি। সন্মানারৈদ্বর্যাপ্রাপ্তিরিত্যন্ত বাক্যোপক্রমান্ত্রক্তা বিভিন্ন । ৪৯

অমুবাদ। জ্ঞাননিষ্ঠার যোগ্যতাই কর্ম্মজা সিদ্ধি, ইহা উক্ত হইরাছে।
একণে সেই কর্মজা সিদ্ধির ফল যে জ্ঞাননিষ্ঠা অর্থাৎ নৈদ্ম্যাসিদ্ধি, ভাহাই
বলিতে হইবে. এইজন্ম এই শ্লোকের আরম্ভ করা হইতেছে। "অসক্তবৃদ্ধি"
বাহার "বৃদ্ধি" অন্তঃকরণ—"অসক্ত"—সঙ্গরহিত, সেই 'অসক্তবৃদ্ধি' [কোন্ বন্ধতে ?]
পুত্র পদ্ধী এবং গৃহ প্রভৃতি সকল প্রকার আগক্তি-নিমিন্ত ভোগ্য বন্ধতে [ইহাই
ভাৎপর্যা]; "জিভান্মা" যে "আন্মা" অন্তঃকরণকে বলীভূত করিতে গারিরাছে,
সেই 'ভিতান্মা'; "বিগতস্পৃহ" দেহ জীবন এবং ভোগে বাহার "স্পৃহা" ভূকা বিগত
হইরাছে, সেই 'বিগতস্পৃহ'। যে এই প্রকার অথচ আন্মতন্ত, সেই নৈদ্ম্যী
সিদ্ধিকে প্রাপ্ত হয়। "আন্মা নির্কিকার এবং ক্রম্ম" এই প্রকার ক্লান হওরাতে

ষাঁহার সকল প্রকার কর্ত্তব্য কর্ম্ম শেষ হইরাছে, তাঁহাকে 'নিক্ম্মা' বলা বার; নিক্ম্মার ভাব এই প্রকার অর্থে 'নেক্ম্মা' এই শক্ষাি প্রযুক্ত হইরাছে; সেই নৈক্ম্মাই সিদ্ধি এই অর্থাট বুঝাইবার জন্ত "নেক্ম্মা-সিদ্ধি" এই পদটি বাবহাত হর। অথবা নৈক্ম্মা শন্দের অর্থ নিক্সিয় আত্ময়ক্তপে অবস্থিতি; ভাহার "দিন্ধি" নিক্ষািত— "নেক্মাাসিদ্ধি"; সেই নৈক্মাাসিদ্ধি [কি প্রকার?] "পরমা" প্রক্রমা অর্থাৎ কর্মাজনিত বে সিদ্ধি, ভাহা হইতে বিলক্ষণ, "সন্ন্যাস" সম্যুগ দর্শন অথবা সম্যুগ দর্শনের ফলম্মরূপ যে সর্মাক্ষ্মতাাগ, ভাহাই 'সন্ন্যাস' শন্দের অর্থ, সেই সন্ম্যানের দারা [আত্মতক্ত] সন্মোম্কিতে অবস্থানস্বরূপ নৈক্মাাসিদ্ধিকে প্রাপ্ত হন [ইহাই ভাৎপর্য্য]। এই গীতাশাল্পে অন্তত্ত্বও প্ররূপই বলা হইরাছে, বে, "মনের দারা সকল কর্ম্মের সন্ম্যাস করিয়া নিজে কিছু না করিয়া বা কাহারও দারা কিছু না করাইয়া [জ্ঞানী] অবস্থান করেন" ॥ ৪৯

দিদ্ধিং প্রাপ্তো যথা ব্রহ্ম তথাপ্রোতি নিবোধ মে। সমাদেনৈব কৌন্তেয় নিষ্ঠা জ্ঞানস্থ যা পরা॥৫০

অস্থ্য । সিদিং প্রাপ্তো যথা ব্রহ্ম আপ্নোতি তথা মে নিবোধ। কানগু যা পরা নিষ্ঠা, হে কৌস্তেয় [তামপি] সমাসেনৈব [মে নিবোধ] ॥৫০

অনুবাদ। [জ্ঞাননিষ্ঠার যোগ্যতারূপ] সিদ্ধি লাভু করিয়া যে প্রকারে ব্রহ্মকে প্রাপ্ত হয়, তাহা আমার নিকট শ্রবণ কর এব' জ্ঞানের যাহা প্রম প্রকর্ব, তাহাও আমি সংক্ষেপে বলিতেছি, তুমি শ্রবণ কর॥ ৫০

ভাষ্য। পূর্ব্বাক্তেন স্বকর্মান্ত্র্চানেন ঈশরাভ্যর্কনরণেণ জনিতাং প্রাশুক্তগক্ষণাং সিদ্ধিং প্রাপ্তক্ত উৎপদ্মার্থাবিবক্জানন্ত কেবলাগ্রজাননিষ্ঠারপা নৈদর্শ্যলক্ষণা সিদ্ধিং বেন ক্রমেণ ভবতি তদ্বক্তব্যম্ ইত্যাহ—সিদ্ধিং প্রাপ্তঃ স্বকর্মণা
ঈশরং সমভ্যর্ক্ত্য তৎপ্রসাদজাং কারেন্দ্রিরাণাং জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যতালক্ষণাং সিদ্ধিং
প্রাপ্তঃ—সিদ্ধিং প্রাপ্ত ইতি তদমুবাদ উত্তরার্থঃ। কিং তহন্তরম্, বদর্থেহমুবাদ
ইত্যুচ্যুতে। বথা বেন প্রকারেণ জ্ঞাননিষ্ঠারণেণ ব্রন্ধ পরমাত্মানমাপ্নোতি তথা
তং প্রকারং জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তিক্রমং মে মম বচনান্নিবোধ ছং নিশ্চরেনাবধারদ্ধ
ইত্যেতং। কং বিস্তরেণ পুনতাহ সমাসেনিব সংক্ষেপেণের হে কোন্দ্রেরা
বুণা ব্রন্ধ প্রাপ্তানিত তথা নিবোধ ইতি। সনেন বা প্রতিজ্ঞাতা বন্ধপ্রাপ্তিঃ
তামিদংতরা দর্শন্তিত্ব আহ 'নিষ্ঠা জ্ঞানন্ত বা পরা' ইতি। নিষ্ঠা পর্যবসানং
পরিস্বাপ্তিরিত্যেতং। কন্ত পুরক্ষানন্ত বা পরা পরিস্বাপ্তিঃ।

না ? বাৰ্ণনাম্মজানম্। কীদৃক্ তৎ ? যাদৃশ আত্মা। কীদৃশোহসৌ ? যাদৃশো ভগৰতা উক্তঃ, উপনিষদ্বাক্তিশেচ স্থায়তশ্চ।

নমু বিষয়কারং জানম্, ন জ্ঞানবিষয়ো নাপ্যাকারবান্ আত্মা ইবাতে কচিং। নমু "আদিতাবর্গং" "ভারপং" "বয়ংজ্যোতিঃ" ইতি আকারবত্মাত্মনঃ শ্রেরতে। ন, তমারূপত্মতিষেধর্থিছাং তেষাং বাক্যানাম্। ক্রয়গুণাভাকার-প্রতিষেধর্থিছাং তেষাং বাক্যানাম্। ক্রয়গুণাভাকার-প্রতিষেধর্থিছাং তেষাং বাক্যানাম্। ক্রয়গুণাভাকার-প্রতিষেধর্থিছান "আর্মিনার্মণ আনিতাবর্গম্" ইত্যাদি বাক্যানি। "অরূপম্" ইতি চ বিশেষতো রূপপ্রতিষেধার্থ। অবিষয়ভাচ্চ "ন সংদ্শে তিষ্ঠতি রূপমন্ত ন চকুষা পশ্রতি কন্দ্রেনম্য্। "অনক্ষমশর্শম্" ইত্যাদেঃ। তত্মাদাত্মাকারং জ্ঞানমিত্যমূপপল্লম্। কর্থং তর্থি আত্মনো জ্ঞানম্ ? কর্মং হি বদ্বিষয়ং জ্ঞানং তং তদাকারং ভবতি, নিরাকারশ্রতাত্ম ইত্যুক্তম্। জ্ঞানাজ্যনোশ্রতার্যানির্মান কর্মং তানাজ্যনাশ্রতার্যান্ত্রপাত্রাত্মনা বৃদ্ধেশ্য আত্মসমনৈর্মন্যান্ত্রপপ্রেঃ আত্মনির্মান বৃদ্ধেশ্য আত্মসমনৈর্মন্যান্ত্রপপ্রেঃ আত্মনির্মান বৃদ্ধেশ্য আত্মসমনৈর্মন্যান্ত্রপপ্রেঃ আত্মনির্মান বিজ্ঞাকারভাসত্বোপপ্রিঃ, বৃদ্ধ্যভাসং মনঃ তদাভাসানী শ্রিয়ানি ইন্সিয়াভাসশ্য দেহঃ। অতো লৌকিকৈদে হিমাত্র এব আত্মদৃষ্টিঃ ক্রিয়তে।

দেহতৈতক্সবাদিনশ্চ লোকায়তিকা: "চৈতক্সবিশিষ্টা কারা পুরুষা" ইত্যান্থাতথা অক্টে ইন্সিরটৈতক্সবাদিনা। অক্টে মনশৈচতক্সবাদিনা। অক্টে বৃদ্ধিটৈতক্সবাদিনা। ততোহিপি আন্তরম্ অব্যক্তম্ অব্যাক্ষতাথ্যম্ অবিদ্যাবহুম্ আত্মহেন প্রতিপরাা কেচিং। সর্বতি হি বৃদ্যাদিদেহান্তে আত্মটিতক্সাভাসতা আত্মলান্তিকারণমিত্যত আত্মবিষরং জ্ঞানং ন বিধাতব্যম্। কিং তর্হি ? নাম-রূপান্থনাত্মাধ্যারোপানিবৃত্তিরেব কার্য্যা, নাত্মটৈতক্সবিজ্ঞানম্। অবিভাধ্যারো-পিতসর্বপদার্থাকারৈরেব বিশিষ্টত্যা গৃহ্যাণহাং। *

শতএব হি বিজ্ঞানবাদিনো বৌদ্ধা বিজ্ঞানব্যতিরেকেণ বস্ত্বের নান্তীতি প্রতিপদ্ধাঃ প্রমাণাস্তরনিরপেকতাং চ স্বসংবিদিতদ্বাভ্যুপগদেন। তত্মাৎ অবিজ্ঞাধ্যারোপণনিরাকরণমাত্তং ব্রহ্মণ কর্ত্তব্যং ন তু ব্রহ্মজ্ঞানে যত্ম অত্যক্তপ্রসিদ্ধাৎ।
অবিজ্ঞাকরিতনামরূপবিশেবাকারাপভ্তবৃদ্ধিদ্বাৎ † অত্যক্তপ্রসিদ্ধং স্থবিজ্ঞেয়মাসম্বত্তরম্ আত্মভূতমপি অপ্রসিদ্ধং হবিজ্ঞেয়ম্ অতিদ্রম্ অক্তদিব চ প্রতিভাতি
অবিবেকিনাম্। বাহ্যাকারনির্ভবুদ্ধীনাং তু লক্তর্কীজ্মপ্রসাদানাৎ নাতংপরং

আনুটেতপ্রবিজ্ঞানং কার্য্য্ সর্বাপদার্থাকারেঃ অবিশিষ্টতয়া দৃশ্বমানদাৎ ইতি কেটিৎ
পঠিছি।

^{† ...} क्षीनाम् देखि कंति ।

স্থং স্থাসিদং স্বিজেরং স্বাসরজরমন্তি। তথা চোক্তন্—"প্রত্যকাবগমং ধর্মান্" ইত্যাদি।

কেচিত্ পণ্ডিতমন্তাঃ 'নিরাকারত্বাং আত্মবস্তু নোপৈতি বৃদ্ধিঃ অতো হঃসাধ্যা সম্যগ্জাননিষ্ঠা' ইত্যাহঃ। সত্যম্; এবং গুরুসম্প্রদাররহিতানাম্ অঞ্চতবেদান্তানাম্ অত্যন্তবহির্বিষয়াসক্র্মীনাং সম্যক্রমাণের্ অক্কতশ্রমাণাম্। তণ্বিপরীতানাং তু লৌকিকগ্রাহ্মগ্রাহকদৈতবন্তনি সদ্বৃদ্ধিঃ নিতরাং ছঃসম্পাদ্ধা আত্মটৈতজ্ঞব্যতিরেকেণ বন্ধন্তরক্তাহ্মপ্লকেঃ। যথা চ 'এতদেবমেব নাজ্ঞথা' ইত্যবোচাম। উক্তং চ ভগবতা—"বক্তাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্রতো মুনেঃ" ইতি। তত্মাং বাহ্যাকারভেদবৃদ্ধিনিবৃত্তিরেব আত্মস্কর্পাবলম্বনে কারণম্। ম হাত্মা নাম কন্তচিং ক্লাচিং অপ্রসিদ্ধঃ প্রাপ্ত্যেরন্। *

ন চ দেহান্তচেতনার্থন্থং শক্যং কর্মীতুন্। ন চ স্থার্থং স্থং হঃখার্থং বা হঃখন্। আত্মাবগত্যবদানার্থনিচ সর্বব্যবহারত। তত্মান্ বলা বদেহত পরিছেনার ন প্রমাণান্তরাপেকা ততোহিপি আত্মনোহস্তরতমত্বাং তদবগতিং প্রতি ন প্রমাণান্তরাপেকা ইতি আত্মজাননিষ্ঠা বিবেকিনাং স্থপ্রিদ্ধা ইতি দিছন্। যেবামপি নিরাকারং জ্ঞানন্ অপ্রত্যক্ষন্, তেরামপি জ্ঞানবশৈব † জ্ঞোবগতিরিতি জ্ঞানমত্যন্তং প্রিদিনং স্থাদিবদেব ইত্যভ্যুপগন্তব্যন্। জ্ঞিলান্ত্রপণত্তেভা। অপ্রদিদ্ধং চেজ্জানং জ্ঞেরবজ্জ্ঞান্তেত। বলা ক্ষেরং ঘটানিক্ষণং জ্ঞানেন জ্ঞাতা ব্যাপ্ত্রনিক্তিত তলা জ্ঞানমপি জ্ঞানান্তরেণ জ্ঞাতা ব্যাপ্ত্রনিক্তেং। ‡ ন চৈতদন্তি। অতোহত্যন্তপ্রসিদ্ধং জ্ঞানম্, জ্ঞাতাপ্যত্রব প্রসিদ্ধানিক্তি। তত্মাজ্জ্ঞানে যত্নো ন কর্তব্যঃ কিন্তু অনাত্মবৃদ্ধিনিক্তাবেব। ৡ তত্মাজ্জ্ঞাননিষ্ঠা স্থসম্পাত্যা। ৫০

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞানপ্রাপ্তিবোগ্যতাবতো কাতসম্যগ্ ধিরস্তংফলপ্রাপ্তো মুকাবৃক্তারাং বক্তব্যশেষো নান্তীত্যাশস্থ্যহ—পূর্ক্তোক্তেনেতি। জ্ঞাবিং বস্তু ভদিত্যচাতে। সিদ্ধিং প্রাপ্ত ইত্যুক্তমেব কম্মাদন্থতে তত্তাহ—তদকুবাদ

^{🛊 &#}x27;কার্বাঃ সর্বাঃ প্রবৃত্তরঃ ব্যর্থাঃ প্রসঞ্জ্যেরন্'—ইত্যাপি কচিৎ দৃশ্যতে।

ţ 'জ্ঞানবশেনৈব'—ইতি কেচিৎ পঠন্তি।

[‡] জ্ঞানমপি আনান্তরেণ জ্ঞাতব্যমাপ্ত মিচ্ছেৎ ইতি পাঠান্তরম্।

[§] किन्तु अनात्रनि आञ्चत्रिनिवृञ्जात्वय—हेळालि किष्टः।

ইতি। উত্তরমেব প্রশ্নপূর্বকং কোরয়তি—কিং তদিত্যাদিনা। জ্ঞানানিষ্ঠা-প্রাপ্তক্রমন্ত হর্বোধন্তমাশঙ্কা পরিহরতি—কিমিতি। চতুর্ব-পাদন্ত পূর্বেলাসন্থতিমাশঙ্কাহে—যথেতি। নিষ্ঠায়াঃ সাপেক্ষাৎ প্রতিসম্বন্ধি প্রতিনির্দেষ্টব্যমিত্যাহ—ক্স্যেতি। বা ব্রহ্মজ্ঞানন্ত পরা নিষ্ঠা সা প্রকৃত্ত জ্ঞানন্ত নিষ্ঠেত্যাহ—ব্রক্ষোতি। তত্ত পরা নিষ্ঠা ন প্রসিদ্ধেতি ক্রন্থা সাধনাম্ম-ষ্ঠানাধীনতয়া সাধ্যেতি মন্থা পৃচ্ছতি –কীদৃশীতি। প্রসিদ্ধমান্মজ্ঞানমক্ষণ্য ব্রহ্মজ্ঞাননিষ্ঠা স্ক্রোনেত্যাহ—যাদৃশমিতি। ত্রাপি প্রসিদ্ধরসিদ্ধেতি শব্দতে—কীদৃগিতি। অর্থেনেব বিশেষো হীতি ভারেনোত্তরমাহ—যাদৃশ ইতি। তরিম্বলি বিপ্রতিপত্তেরপ্রসিদ্ধমতিসন্ধার পৃচ্ছতি—কীদৃশ ইতি। তর্গবদ্বাক্যানি উপনিবন্বাক্যানি চাপ্রিত্য পরিহরতি—যাদৃশ ইতি। ন জায়তে ব্রিরতে বেত্যাদীনি বাক্যানি। কুটত্বসমসক্ষমিত্যাদিলারঃ!

জানপ্ত বিষয়াকারত্বাদাত্মনশ্চ অবিষয়ত্বাৎ অনাকারত্বাচ্চ তদাকারজ্ঞানা যোগাদাত্মপ্রসিদ্ধাবপি নাজ্জানপ্রসিদ্ধিরিতি শহুতে—নৃদ্ধিতি। আত্মনঃ শ্রুতিসিদ্ধনিতি সিদ্ধান্তী শঙ্কতে—নহাদিত্যেতি। উক্তবাক্যানাম্ অস্তার্থছদর্শনেন পূর্ব্ববাদী পরিহরতি—নেত্যাদিনা। সংগ্রহবাক্যং প্রপঞ্চরতি ---দ্রব্যেতি। ইতশ্চাকারবন্ধমাত্মনো নাস্তীত্যাহ—অরূপমিতি। যদাত্মনো বিষয়পাভাবাৎ তন্বিষয়ং জ্ঞানং ন সম্ভবতীত্যুক্তং তহুপপাদয়তি—অবিষয়-ত্বাচ্চতি। আত্মনো বিষয়ত্বে শ্রুতিমুদাহরতি—নেত্যাদিনা। সম্যগ্দর্শনবিষয়ত্বায় অক্সাত্মনো রূপং ন তিষ্ঠতীতার্থঃ। তদেব করণাগোচরত্বে-নোপপাদরতি—নেতি। শবাদিশৃগুড়াচ্চ আত্মা বিষয়ো ন ভবতীত্যাহ—অশব্দ-মিতি। আশ্বনো বিষয়ত্বাকারবন্তরোরভাবে ফলিতমাহ—তস্মাদিতি। আত্মকারত্বাভাবে সভ্যাত্মঙ্গানমিতি ব্যপদেশাসিদ্ধিরিত্যেকদেশী শঙ্কতে—কথং ক্রইতি। কাহতামুপপন্তিরিত্যাশস্থাহ—সর্ব্বং হীতি। আত্মনোহপি বিষয়বেন জ্ঞানস্থ তদাকারবং স্থাদিত্যাশক্ষাহ —নিরাকারশেচতি। বিষয়পরাহিত্যং চকারার্থ:। আত্মবৎ তজ্ঞানভাপি তর্হি নিরাকারস্থং ভবিষ্যতী-ত্যবাহ * —জ্ঞানেতি। তচ্ছস্পেনাম্মজানং গৃহতে। তত্ত ভাবনাপৌনঃপ্রেন অমৃসন্ধানম, তহা নিষ্ঠা সমাথিরাত্মসাক্ষাৎকারদার্চ্য ন চৈতং সর্বামাত্মনা জ্ঞানত বা নিরাকারতে দিধ্যতীত্যর্থ:। জ্ঞানাত্মনোঃ দাম্যোপভাদেন দিছান্তী

ভ্ৰিণাডি নেত্যভাহ—ইতি কেচিৎ পঠিস্তি।

সমাধতে—নেত্যাদিনা। যথোকশাস্যাহ্মারাৎ আছাতৈতভাতাসব্যাপ্তা * জ্ঞান-পরিণামবতী বৃদ্ধিঃ সাভাসবৃদ্ধিব্যাপ্তং মনঃ সাভাসমনোব্যাপ্তানীলিয়াণি সাভাসেক্রিয়ব্যাপ্তঃ স্থূলো দেহঃ। তত্র লৌকিকলান্তিং প্রমাণয়তি—অত ইতি। আছাদৃষ্টেঃ দেহমাত্রে দৃষ্টবাৎ তত্র চৈতভাতাসব্যাপ্তিরিক্রিয়দারা করাতে ইক্রিয়েয়্ চ
তদ্ষ্টিদর্শনাকৈতভাতাসবত্তং মনোদারা সিধ্যতি মনসি চাত্মদৃষ্টেই-চতভাতাসবত্তং
বৃদ্ধিরারা শভ্যতে বৃদ্ধী চাত্মদৃষ্টেরজ্ঞানদারা চৈতভাতাসসিদ্ধিরিভার্থঃ।

দেহে গৌকিকমাত্মঘদর্শনং স্থারাভাবাহপেক্ষিতমিত্যাশস্ক্যাহ—দেহেতি।
তথাপি কথমিন্দ্রিরাণাং স্থারহীনমাত্মমিইমিত্যাশক্ষ্যাহ—তথেতি। তথাপি
মনসো যদাত্মদং তং স্থারশ্সমিত্যাশক্ষ্যাহ—অন্য ইতি। বুদ্ধেরাত্মমিপি
স্থারোপেতমিতি স্চয়তি—অন্যে বুদ্ধীতি। দেহাদে বুধ্যন্তে প্রমাত্মমুদ্ধিং
নাস্তব্রেতি নিরমং বারয়তি—ততোহপীতি। তত্র হি সাভাসেহস্তর্যামিপি
করণোপাসকানামাত্মধীরস্তীত্যর্থ:। বুদ্ধাদৌ দেহাস্তে গৌকিকপরীক্ষকাণাম্
আত্মহলক্তে সাধারণং কারণমাহ—সর্বিত্রেতি। আত্মজানস্ত গৌকিকপরীক্ষকাণাম্
আত্মহলক্তে সাধারণং কারণমাহ—সর্বিত্রেতি। আত্মজানস্ত গৌকিকপরীক্ষকাণাম্
ভানস্ত বিধেরতাভাবে কিং কর্ত্ব্যং দেইব্যাদিবাক্যৈরিত্যাশক্ষ্যাহ—কিং
তহীতি। আত্মজানস্থাবিধেরত্বে প্রাপ্তক্ষযতঃশন্ধিতং হেতুং বির্ণোতি—
অবিত্রেতি।

দেহেক্সিমনোবৃদ্ধাব্যক্তৈরূপণভাসানৈঃ সহোপণভাতে ' চৈতন্তঃ নাঞ্চণা তেবামুপণজ্যে জড়বাদিতাত্র বিজ্ঞানবাদী ল্রাস্তিং প্রমাণয়তি—অতএবেতি । সর্কাং জ্ঞানব্যাপ্তমেব জ্ঞায়তে তেন জ্ঞানাভিরিক্তং নাস্তেয়ব বস্তু সম্মতং ছি বপ্রদৃষ্টং বস্তু জ্ঞানাভিরিক্তম্ । নাজীতি তে ল্রামান্তীত্যর্থঃ । জ্ঞানস্তাপি জ্ঞেয়ম্বাং জ্ঞাত্বস্বস্তরমেইব্যমিত্যাশক্ষাহ—প্রমাণাস্ত্রেতি । জ্ঞানস্ত স্বেনব জ্ঞেয়ম্বোপগমে অনভিরিক্তপ্রমাণনিরপেক্ষতাঞ্চ প্রতিপন্না ইতি সম্বন্ধঃ । ত্রন্ধাত্মনি জ্ঞানস্ত সিদ্ধমেনাবিধেরকে ফণিতমাহ—ত্রমাদিতি । বঙ্গোহত্র ভাবনা ত্রন্ধণক্তক্ত্রন্ধ চাত্যস্তপ্রসিদ্ধমে কথং ত্রন্ধণান্তার প্রথা গৌকিকানামিত্যতাহ—
অবিত্যেতি । যথাপ্রতিভাসং ছর্নিজ্ঞের্মাদিরূপমেব ত্রন্ধ কিং ন স্তাৎ তত্ত্রাই ।
—বাহ্যেতি । শুরুপ্রসাদঃ শুশ্রের্মা তোবিতবুদ্ধেরাচার্যস্ত ঞ্ কর্মণাভিরেকাদেব

^{* *···}বাপ্তা—ইতি চ কচিৎ।

[🕇] নক্তাদিত্যাশক্ষাহ ইতি কুত্রচিৎ পাঠঃ।

[🚶] ভোষিতাচার্য্যবুদ্দেরিতি পাঠান্তরস্।

ভবং ব্ধ্যতামিতি নিরবগ্রহোহযুগ্রহ:, আত্মপ্রসাদন্ত্রিগতপদশক্তিবাক্যতাংপর্যান্ত শ্রোত্তযুক্ত্যস্থসদ্ধানাদাত্মনো মনসো বিষয়ব্যাব্রক্ত প্রত্যগেকাগ্রতয়া তৎপ্রাব্যান্ত মিতি বিবেক:। আত্মজ্ঞানস্থাত্মবারা প্রসিদ্ধতে বাক্যোপক্রমং প্রমাণরতি—তথাচিতি ।

আত্মনো নিরাকারত্বাৎ তশ্মিন্ বুদ্ধের প্রবৃত্তঃ সম্যগ্জাননিষ্ঠা ন স্থদস্পান্তেতি মতমুখাণরতি—কেচিত্ত্বিতি। বহিম্পানামন্তর্পানাং বা বন্ধণি সম্যগ্জান-নিষ্ঠা হঃদাধ্যেতি বিকল্পাত্যমন্ত * অঙ্গীকরোতি—স্ত্যমিতি। পূর্ববিশেষণম্ উত্তরোত্তরবিশেষণে হেতুবেন যোজনীয়ম্। বিতীয়ং দুষয়তি —তদ্বিপ ব্রীতানামিতি। অবৈতনিষ্ঠানাং বৈতবিষয়ে সমাগ্রুদ্ধেরতিশয়েন হঃসম্পাছাছে হৈতুমাহ—আত্মেতি ৷ তদ্ব্যতিরেকেণ বস্বস্তবস্থাসৰং কথমিত্যাশক্যাহ— হথা চেতি। অবৈতমেৰ বস্ত বৈতং দাবিত্যং নাত্তথা তাৰিকমিত্যেতদেৰমেৰ ৰধা ক্লাৎ তথোক্তবস্তো বয়ং তত্ৰ তত্ৰাধ্যায়েদিতি যোজনা। 'অন্তৰ্নিষ্ঠানামৰৈত-দর্শিনাং বৈতে নাস্তি সদ্বৃদ্ধিরিত্যত্র ভগবতোহপি সম্বতিমাহ—উক্তেঞ্জেতি। প্রমতং নিরাক্তা প্রকৃতমুপসংহরয়াত্মনো নিরাকারছে জ্ঞানস্ভ তদালখনছে কিং কারণমিত্যাশস্থাহ—তস্মাদিতি। নবাত্মা কর্থঞিং সম্যগ্ জ্ঞানক্রিরাসাধ্য-· শেহৎ তক্ত হেরোপাদেরাক্ততরকোটিনিবেশাৎ প্রাপ্তং বর্গাদিবৎ ক্রিরাসাধ্যবেনা-দিছত্বং নেত্যাহ—ন হীতি। আত্মতাদেব প্রসিদ্ধত্বন প্রাপ্তত্বাদনাত্মবৎ তত্ত হেরোপাদেরত্বরোর্ফোগাৎ ন ক্রিরারাধ্যভেত্যর্থঃ। আত্মনশেলত ক্রিরামসিদ্ধত্বং ভদা সর্বপ্রবৃত্তীনামভাদরনিঃশ্রেরসার্থানাম্ আত্মার্থছাযোগাৎ অথিনো২ভাবে স্বাৰ্থব্যপ্ৰামাণিকং ক্লাদিত্যাহ—অপ্ৰসিদ্ধে হীতি।

নক্ন প্রবৃত্তীনাং স্বার্থন্থং দেহাদীনাম্ অন্ততমন্তার্থিন্দের তাদর্থ্যাদিত্যাশন্ধ্য দটাদিবদচেতনন্তার্থিন্ধাবোগাৎ নৈবমিত্যাহ—ন চেতি। নক্ন প্রবৃত্তীনাং ক্লাবদান্নিতরা স্থকঃধরোরন্ততরার্থনার স্বার্থনং তত্রাহ—ন চেতি। প্রবৃত্তীনাং স্থকঃধার্থন্থেইপি তরোঃ স্বার্থনিদ্ধের্থিন্দেনাল্বা সিধ্যতীত্যর্থঃ। কিঞ্চ সর্ব্বাপেক্ষান্তারাৎ আত্মাবগত্যবসানঃ সর্ব্বো ব্যবহারঃ, ন চাত্মন্তপ্রসিদ্ধের ক্রাদিব্যবহারক্ত তল্প্রানার্থনং তেনাল্মপ্রসিদ্ধিরেইব্যা ইত্যাহ—আত্মিতি। নক্স আত্মা প্রসিদ্ধাতি বং সিধ্যতি তৎ প্রমাণাদেবেতি নারাৎ তত্ত্বাহ—তত্ত্বাদিতি। মানমেরাদিস্ক্ব্যবহারক্ত আত্মাবগত্যক্রেশ্রণ্

অনুভামজীকরোতীতি কেচিৎ।

গমাৎ প্রাণেব প্রমাণ প্রব্যেরাত্ম প্রসিদ্ধেরেষ্ট্রতাত্মাদিতার্থঃ। আত্মানগতেরেবং স্বাভাবিকবে বিবেকবতামারোপনিবৃত্ত্যা জ্ঞাননিষ্ঠা স্থপ্রসিদ্ধেত্যুপদংহরতি— ইত্যাত্মেতি। নমু অনাকারানেবামুমিমীমহে বৃদ্ধিমিতি বদতামনাকারম-প্রতাক্ষমিক্ততাং প্রাগর্থাবগতেরপ্রদির্মেব জ্ঞানং নেত্যাহ — যেষামিতি। মুখাদিবৎ নিত্যামূভবগমাং জ্ঞানং নামুমেয়ং বিষয়াবগত্যা তদুমুমিতাবিত-রেতরাশ্রয়াদিতি ভাবঃ। ইতশ্চ জ্ঞানং প্রসিদ্ধমস্তথা তত্ত প্রসঙ্গাৎ ন চ জ্ঞানে জিজ্ঞাসা প্রসিদ্ধা প্রসিদ্ধে চ * তদযোগাদিত্যাহ— জিজ্ঞাসেতি। তদেব প্রপঞ্চয়তি—অপ্রসিদ্ধক্ষেদিতি। দৃষ্টান্তমেব ব্যাচঞ্চে —যথেতি। দাষ্ট'াস্তিকং বিবুণে।তি--তথেতি। ইটাপত্তিং নিরাচষ্টে--ন চেতি। জ্ঞানস্থ জ্ঞানাস্তরেণ জ্ঞেরত্বমেতচ্ছকার্থ:। অনবস্থাপত্তেরিতার্থ:। জ্ঞানে জিজ্ঞাসামুপপত্রো ফলিতমাহ—অত ইতি। প্রসিদ্ধেহপি জ্ঞানে জ্ঞাতর্যাত্মনি কিমায়াতং তদাহ—জ্ঞাতাপীতি। জ্ঞানশু বিনা জ্ঞাতারমপর্য্যবদানাদিত;র্থ:। জ্ঞানত প্রসিদ্ধতে তত্র ভাবনাপর্য্যায়ো বিধিন স্থিতি। কুত্র ভর্ষি প্রযন্ত্রাপ্যা ভাবনেত্যাশক্ষাহ—কিংত্তিতি। অবিষয়ে নিরাকারে চাত্মনি আন-নিষ্ঠায়া: ত:সম্পান্তত্বাভাবে ফলিতং নিগময়তি—তম্মাদিতি ॥৫০

অনুবাদ। পূর্ণ্বে উক্ত ইইয়াছে, ঈশ্বরার্চনরূপ ্য স্বকর্ম, তাহার দারা পূর্ণ্বেজিরূপ দিন্ধি লাভ হয়, দেই দিন্ধিকে প্রাপ্ত ইইয়া বিবে ক্ষান লাভের পর কেবলাম্মজ্ঞানরূপ যে নৈকর্ম্যাদিন্ধিকে লাভ করিতে পারা যায়, তাহা কি প্রকারে হয় ? তাহাই একংণ বলিতে ইইবে, এইজভ্ত বলিতেছেন যে, দিন্ধিকে প্রাপ্ত ইইয়া অর্থাৎ স্বকর্মান্ত্রহান দারা ঈশ্বরের অর্চনা করিতে করিতে তাঁহারই অনুগ্রহে দেহ এবং ইন্দ্রিয়সমূহের জ্ঞাননিষ্ঠাযোগ্যভারপ সিন্ধিকে প্রাপ্ত ইইয়া থাকে]। "সিন্ধিকে প্রাপ্ত ইইয়া" এই যে কথাটি বলা ইইল, ইহা পূর্বের্ম একবার বলা ইইলেও পূনর্বার ইহার উপর কিছু নৃতন করিয়া বিধান করিবার জন্ত অনুবাদ করা ইইল (যাহা একবার বলা ইইয়াছে, তাহারই পূন:কথনের নাম অনুবাদ)। ভবিষ্যুক্ত কি বলিবার জন্ত এই অনুবাদ করা ইইল ? তাহাই বলা ইইডেছে যে, "য়থা" যেরূপ অর্থাৎ জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তিরূপ ক্রমের সাহায্যে "ব্রক্ষ" পরমান্মাকে প্রাপ্ত ইয় , "তথা" সেই জ্ঞাননিষ্ঠাপ্রাপ্তিরূম, তুমি জ্ঞামার ব্যুক্তের দারা অবগত হও অর্থাৎ নিশ্চিতভাবে ব্রিয়া লও, ইহাই তাৎপর্য্য।

কিজাদাঞ্যদিক্ষেৎপ্রদিক্ষে চ ইতি পাঠান্তরষ্ ।

তাহা কি বিস্তরভাবে বলা হইবে ? তাহা নহে। "সমাস" অর্থাৎ সংক্ষেপেই বলা হইতেছে। 'হে কোন্তের ! বেরূপে ব্রহ্মকে প্রাপ্ত হর, তাহা বুঝিরা লও।' এই বাক্যের দ্বারা যে ব্রহ্মপ্রাপ্তি প্রতিজ্ঞাত হইল, তাহাকেই স্পষ্টভাবে দেখাইবার জ্ঞা বলিতেছেন যে "বাহা জ্ঞানের পরম নিষ্ঠা", নিষ্ঠা শব্দের অর্থ পর্যাবসান বা পরিসমাপ্তি। কাহার [পরিসমাপ্তি ?] ব্রহ্মজ্ঞানের যে পরিসমাপ্তি [-র কথা বলা হইল]; তাহা কি প্রকার ? যেরূপ আত্মজান [সেইরূপই পরিসমাপ্তি] তাহাও কিরূপ? আত্মা যে প্রকার। সেই আত্মাই বা কি প্রকার ? ভগবান্ বেরূপ বলিরাছেন এবং যুক্তিসমূহের দ্বারা ও উপনিবদ্বাক্যসমূহের দ্বারা যে ভাবে সিন্ধি হইরা থাকে [আত্মা সেইরূপ]

্ একণে শঙ্কা হইতেছে যে, বিষয়ই জ্ঞানের আকার হইয়া থাকে, আত্মা বিষয় নহে এবং আত্মার আকার আছে, ইহা কাহারও ইষ্ট নহে। यদি বল [উপনিষৎসমূহে] "[আত্মা] আদিত্যবর্ণ" "ভারপ" এবং "বরংজ্যোতি:" এই সকল বাকোর দ্বারা আত্মার যে আকার আছে, ইহাও ত শ্রুত হইয়াছে। তাহা ঠিক নহে: কারণ, ঐ সকল বাক্য আত্মার তনোরপত্বকে প্রতিষেধ করিবার জ্ঞ প্রবৃক্ত হইরাছে। [ষদি বল] আত্মার তমোরপত কি প্রকারে প্রদক্ত . হুইতে পারে ? [তাহার উত্তর এই যে] দ্রব্য গুণ প্রাকৃতি আকারের প্রাতিষেধ হইলে আত্মার তমোরপত্ব প্রদক্ত হইতে পারে, দেই তমোরপত্ব-প্রদক্তিকে নিরা করণ করিবার জন্ম উপনিষদে আদিত্যবর্ণ ইত্যাদি বাক্য প্রযুক্ত হইয়াছে। "অরপ্ন" ইত্যাদি বাক্যের দারা আত্মাতে বিশেষ করিয়া সকল প্রকার রূপের সম্বন্ধ প্রতিবিদ্ধ হইরাছে। আত্মা কোন প্রকার জ্ঞানেরও বিষয় হইতে পারে না: কারণ উপনিষদে উক্ত হইয়াছে বে "এই আত্মার স্বরূপ চক্ষুতে প্রতিভাত হয় না: কারণ, এই আত্মার স্বরূপকে কেহই চকুর দারা দেখিতে পায় না; স্থতরাং 'আত্মাকার জ্ঞান হর' এই প্রকার যে বলা হইতেছে, তাহাতে কোন প্রকার উপপত্তি নাই। তবে কিরপে আত্মার জ্ঞান হইবে १—गरादक জ্ঞান প্রকাশিত করে, তাহাই ত সকল জ্ঞানের আকার হইয়া থাকে; আত্মা কিন্তু নিরাকার, हैश शुर्व्या वरे बार हो हो है । खान अवर बाबा अहे हाई हिंदे यहि निवाकात है है ভবে আত্মজানের নিষ্ঠা কিরুপে সক্ষত হইতে পারে ?-- এ শকাও ঠিক নহে: কারণ আত্মা অত্যন্ত নির্মান স্বচ্ছ ও হক্ষ, ইহা [শান্তে] উপপত্তির' দারা দ্বির হইখাছে। বৃদ্ধি অর্থাৎ অন্তঃকরণও আত্মার স্তায় স্বচ্ছ ও নির্মাণ, এই কারণে আত্মটৈত: শ্বর আভাস বুদ্ধিতে প্রতিফলিত হইমা থাকে। বুদ্ধির বে প্রকার আভাস হয়, মনও তদাভাসবং প্রতীত হয়, মনের সহিত যুক্ত হওয়াতে ইক্সিরসমূহও তদাভাসযুক্ত হয় এবং দেহও পরম্পরায়, এইভাবে সেই আত্মতৈতভাভাসযুক্ত হয় বিলয়া অফুভূত হয়। এই কারণে সাধারণতঃ লোকসমূহ দেহেতেই
আত্মবৃদ্ধি করিয়া থাকে।

দেহেরই ধর্ম চৈতন্ত এই প্রকার বাঁহারা বলিয়া থাকেন, সেই চার্কাকগণ বলেন যে, চৈতন্তবিশিষ্ট দেহই আত্মা। সেইরূপ আরও কতকগুলি দার্শনিক বলিয়া থাকেন যে, ইন্দ্রিয়সমূহেরই ধর্ম চৈতন্ত [ক্সতরাং ইন্দ্রিয়ই আত্মা]; কেই কেই মনকেই চৈতন্তব্যুক্ত [ক্সতরাং মনই আত্মা] বলিয়া স্বীকার করেন। অপর একদল আছেন, বাঁহারা বৃদ্ধিরই চৈতন্ত অঙ্গীকার করেন। দেই বৃদ্ধি ইইতেও অভ্যন্তর অব্যক্ত ও নামরূপাকারে অনন্তিব্যক্ত কোন অবিস্থাক্তরিত বস্তকেও কেই কেই আত্মা বলিয়া স্বীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু, এই দেহ ইইতে আরম্ভ করিয়া বৃদ্ধি পর্যান্ত সকল জড়বস্ততে [বাস্তবিক চৈতন্ত না থাকিলেও] চৈতন্তা-ভাগতা থাকা নিবন্ধনই এই সকল বন্ধতে আত্মনান্তি ইইয়া থাকে; এই কারণে, শাক্রারা আত্মবিষয়ক জ্ঞানের বিধান করিবার আবশুকতা নাই। তবে কি আবশুক । আত্মবর্ষক জ্ঞানের বিধান করিবার আবশুকতা নাই। তবে কি আবশুক । আত্মবরূপ তৈ তন্তের জ্ঞান করিতে ইইবে, শান্ত এই প্রকার বিধান করে না। কারণ, অবিভা ত্বারা আরোপিত সকল পদার্থের আক্ষার সমূহের সহিত সংমিলিত হইয়া সর্বনাই দেই আত্মতিতন্ত প্রকাশিত হইয়াছে থাকে।

এই কারণেই বিজ্ঞানবাদী বৌদ্ধগণ বলিয়া থাকেন বে, বিজ্ঞানব্যতিরিক্ত অন্ত কোন বাহ্ছ বস্তু নাই, এবং সেই বিজ্ঞান প্রমাণান্তরের অপেক্ষা করে না; তাহা নিজেই নিজ্ঞ্যরপকে প্রকাশিত করে। সেই কারণে ব্রন্ধে অবিতা দারা অধ্যারোপিত সংসারেরই নিরাকরণ মাত্র কর্ত্তব্য; [স্বরংপ্রকাশ] ব্রহ্মকে জানিবার জন্ত বত্ব করিবার আবশুকতা নাই; কারণ, ব্রহ্ম [বেহেতু সকলেরই আত্মা, স্কতরাং প্রত্যেকেরই তাহা] অত্যক্ত প্রসিদ্ধ। যাহারা অবিবেকী, স্কতরাং অবিত্যকেরই তাহা] অত্যক্ত প্রসিদ্ধ। যাহারা অবিবেকী, স্কতরাং অবিত্যকেরই তাহা] অত্যক্ত প্রসিদ্ধ। যাহানের বৃদ্ধি অপদ্ধত, তাহাদের নিকট আত্মত্ত ক্রবিজ্ঞাত হইলেও ত্র্তিজ্ঞের; আসমত্বর হইলেও ত্রতিদ্বিত্তর ; আসমত্বর হইলেও ত্রতি দ্বরবর্তী; আত্মত্ত হইলেও অত্যক্ত ভিন্ন বলিয়া প্রতীত হয়। কিন্তু যাহারো বিবেকী, গুরুত্বপার হাহাদের আত্মপ্রসাদ লাভ হইরাছে, তাঁহাদের নিকটে আত্মত্ত অপেক্ষা স্ক্রপর্যর হাহাদের আত্মপ্রসাদ লাভ হইরাছে, তাঁহাদের নিকটে আত্মত্ত অপেক্ষা স্ক্রপর্যর, আসমত্বর এবং স্ক্রিজ্ঞের অন্ত কোন বস্তুই নাই।

ভগৰান্ও সেইরপই বলিয়াছেন যে, '[এই আত্মতত্ব] অনায়াসে জ্ঞের এবং ইহার জ্ঞান ধর্মজনক।"

কতকগুলি পাণ্ডিত্যাভিমানী লোক বলেন বে, আত্মন্বরূপ বস্তু নিরাকার;
অভএব বৃদ্ধি আত্মাকে বিষয় করিতে পারে না; স্মৃতরাং আত্মজাননিষ্ঠা ছঃসাধ্য।
বাহারা শুরুসম্প্রাণায়রহিত, বাহারা বেদান্ত প্রবণ করে নাই, বাহাদের বৃদ্ধি বাহ্
বিষয়েই সর্বাদা আসক্ত এবং বাহারা সম্যক্ প্রমাণের তত্ত্ব জানিতে বণেষ্ট প্রমাকরে নাই, তাহাদের পক্ষে ঐ পণ্ডিত্মগুদিগের কথা সত্য বলিয়া প্রতীত হইতে
পারে বটে। কিন্তু বাহারা ঐ জাতীয় পুরুষ হইতে বিপরীত, তাহাদের পক্ষে
লোকসিদ্ধ প্রাহ্ ও প্রাহকরপ হৈত্বস্তুতে সদ্বৃদ্ধিই একান্ত অসম্ভব; কারণ,
তাহারা আত্মতৈত্ব্য ব্যতিরেকে মন্তু কোন বস্তুর সন্ত্রাই উপলব্ধি করিতে পারে
না। এই মতটি বে প্রকারে এইভাবে ব্যবস্থাপিত হইতে পারে, তাহা পূর্বেই
বিদান আসিয়াছি। ভগবান্ও বলিয়াছেন, "যে সময়ে সকল প্রাণীই জাগিয়া
পাকে, মননশীল ব্যক্তির পক্ষে তাহাই রাত্রি।" এই কারণে বাহ্ আকারসমূহে
যে ভেদবৃদ্ধি, তাহার নিরাকরণই আত্মস্তর্মপাবলম্বনের কারণ। আত্মা কোন
কালে কাহারও নিকট অজ্ঞাত হইতে পারে না; মাত্মা কথনও প্রাণ্য হের বা
উপাদের হইতে পারে না। দেই আত্মা যদি অপ্রসিদ্ধ হয়, তাহা হইলে, সকল

দেহাদি অচেতন বস্তুর স্বার্থসিদ্ধির জন্ম প্রবৃত্তি হয়, ইহা বলা বার না; কারণ, মুথ মুথের জন্ম বা হঃথ হঃথের জন্ম হইতে পারে না। সকল প্রকার ব্যবহারের শেষ কল হইতেছে আত্মাবগতি; দেই কারণে যেমন নিজের দেহের সন্তা নিশ্চর করিবার জন্ম অন্ধ কোন প্রমাণের অপেক্ষা করিতে হয় না, সেইরূপ দেহ হইতেওঁ অন্তর্গতম আত্মার অবগতির জন্ম প্রমাণান্তরের অপেক্ষা করিতে হয় না। মুতরাং বিবেকিগণের পক্ষে আত্মাননিষ্ঠা মুপ্রসিদ্ধ, ইহা দিল হইতেছে। বাহাদের মতে জ্ঞানের কোন আকার নাই এবং জ্ঞানের প্রত্যক্ষ হয় না, তাহাদেরও [বাধ্য হইয়া স্বীকার করিতে হইবে যে] জ্ঞের বস্তুর অবগতি জ্ঞানের অধীন; মুতরাং, জ্ঞানও মুথাদির ন্থায় অত্যন্ত প্রসিদ্ধ। আরও তাহাদের মতে জ্ঞিজাসাও অনুপ্রসানও মুথাদির ন্থায় অত্যন্ত প্রসিদ্ধ। আরও তাহাদের মতে জ্ঞিজাসাও অনুপ্রসান করিতে হইবে যে] জ্ঞান জ্ঞের বস্তুর ন্থায় অপ্রসিদ্ধ থাকে বিলয়া জিজ্ঞান্থ হয়, যেমন ঘট পট প্রভৃতি জ্ঞের বস্তু জ্ঞানরূপ ক্রিয়াণ হারা ব্যাপ্ত করিতে লোকের ইচ্ছা হয় [এবং সেই ইচ্ছাকে ঘটাদি বস্তুর জিজ্ঞাসা কহে] সেইরূপ জ্ঞানকেও অন্ত আর একটি জ্ঞানরূপ ক্রিয়া হারা ব্যাপ্ত করিবার ইচ্ছা

হওরা আবশুক; বাস্তবিক [কিন্তু কেহই তাহা স্বীকার করেন না, এইজয়]
এই প্রকার হইতে পারে না। এই কারণে [স্বীকার করিতে হইবে ষে] জ্ঞান
অত্যন্ত প্রিসিদ্ধ এবং জ্ঞাতাও এই কারণে অত্যন্ত প্রসিদ্ধ। সেইজন্ত জ্ঞানের
জন্ম যত্ন করিতে হয় না, কিন্তু অনাত্মজ্ঞানের নিবৃত্তির জন্যই যত্ন করা উচিত।
সেই কারণে [বিবেকিগণে বুর পকে] জ্ঞাননিষ্ঠা অনায়াসে হইতে
পারে ॥৫০

বৃদ্ধ্যা বিশুদ্ধরা যুক্তো ধৃত্যাত্মানং নিয়ম্য চ।
শব্দাদীন্ বিষয়াংস্ত্যক্তা রাগদেয়ো ব্যুদস্য চ॥৫১

অনুষ্ । বিশুদ্ধা বৃদ্যা যুক্তঃ আত্মানং ধৃত্যা নিয়ম্য চ শব্দাদীন্ বিষয়ান্ ত্যক্ষা রাগবেষো বৃদেভ চ ॥৫১

অনুবাদ। বিশুদ্ধ বুদ্ধিকে লাভ করিয়া, থৈর্য্যের দারা আঝাকে নিয়মিত করিয়া, শব্দাদি বিষয়সমূহকে ত্যাগ করিয়া, রাগ ও দেবকে পরিহার করিয়া [মুক্তিলাভ করিতে সমর্থ হয়] ॥৫১

ভাষ্য। সেরং জ্ঞানত পরা নিষ্ঠা উচ্যতে—কণং কার্যাইতি বৃদ্যা অধ্যবসারাত্মিকরা বিশুদ্ধরা নারারহিতরা যুক্ত: সম্পন্ধঃ প্রত্যা গৈর্য্যেণ আত্মানং কার্যাকরণসভ্যাতং নির্মান চ নির্মনং ক্রতা বশীক্ষতা, শব্দাদীন্ শৃক আদির্যেবাং তে
শব্দাদরস্তান্ বিষয়ান্ ত্যক্ত্যে, সামর্থ্যাৎ শরীরস্থিতিমাত্রান্ * কেবলান্ মুক্তা ততোহিদিকান্ স্থার্থান্ ত্যক্তেত্যর্থঃ । শরীরস্থিতার্থ্যেন প্রাপ্তের্ রাগ্রেষে ব্যুদ্ভা
চ পরিত্যক্ত্য ॥৫১

আনন্দ গিরিটীক। । ব্রহ্মজ্ঞানশু পরাং নিষ্ঠাং প্রতিষ্ঠাপিতামন্ত লোকাস্তর্মবতার্রিত্থ পৃচ্ছতি—সেয়্মিতি। ব্যরং ব্রহ্মজ্ঞানশু পরা নিষ্ঠা সমাব্যোপিতা তদ্দ্রনিবৃতিদারা ব্রহ্মণি প্রিস্মাপ্তিজ্ঞানসন্তানরপোচ্যতে সা কার্য্যা
স্থাপ্রতি ষত্ত্বং তৎকণং কেনোপায়েনেতি, প্রশ্নার্থঃ। পৃষ্টমুপায়তেদমুদাহরতি—বুদ্ধ্যেতি। অধ্যবসারো ব্রহ্মাত্রত্নিন্দরঃ, নায়ারহিতত্বং সংশশ্ধবিপর্যায়শৃশুভ্বম্। শকাদিসমন্তবিব্রত্যাগে দেহস্থিতিরপি হংস্থা শুদিত্যাশস্ক্যাহ—
সামর্থ্যাদিতি। বিষয়মাত্রত্যাগে দেহস্থিত্যমূপপত্তেঃ জ্ঞাননিষ্ঠাসিদ্ধি প্রসঙ্গাদিভার্থঃ। দেহস্থিত্যপ্রেনাম্ক্রাতেম্প্র্থ্ প্রাশ্তং রাগাদিক্রাননিষ্ঠাপ্রতিবন্ধকং

শরীরন্থিতিমাএহেডুভূতান্ ইতি পাঠান্তরম্।

अग्रजनमध्येषा।

'ব্যুবততি—শ্রীরেতি। পরিতাশ্য বিবিক্তনেরী ফার্টিভি সম্বন্ধ: ব্রেবর্জশারভং করেন কার্য্যকরণনিরমনন্ ॥৫১

জানুবাদ্। সেই প্রসিদ্ধ জ্ঞাননিষ্ঠা কি প্রকারে সম্পাদিত হইতে পারে,
[তাহাই বলা হইতেছে বে] "বিশুদ্ধ" নারারহিত "বৃদ্ধি" অধাবসারমুক্ত অধাৎ
সম্পন্ন হইরা, "ধৃতি" বৈর্ধা, তাহার বারা আত্মানুক অর্ধাৎ দেহ ও ইন্দ্রিবসমূহকে
নিরমিত করিরা অর্থাৎ বশীভূত করিরা "শক্ষাদি" শক্ষ হইরাছে বাহাদের আদি
এমন যে সকল বিষয় তাহাই এই স্থলে শক্ষাদি শক্ষের অর্ধ ; সেই শক্ষাদি
বিষয়কে ত্যাগ করিরা বোগ্যতাবলে [এখানে ধরিরা লইতে হইবে যে, যাহা বারা
শরীরের স্থিতি মাত্র সাধিত হর, তাহা ছাড়া যে শক্ষাদিবিষরসমূহ তাহাদেরই
পরিত্যাগ করিরা] এবং শরীরস্থিতিব ক্ষম্প উপস্থিত শক্ষাদি বিষয়েও রাগ এবং
বেষকে পরিহার করিরা ॥৫>

বিবিক্তদেবী লঘুাশী যতবাক্কায়মানসঃ। ধ্যানযোগপরো নিত্যং বৈরাগ্যং সমুপাঞ্জিতঃ॥ ৫২

অনুষ্য় । বিবিক্তদেবী লখ্।শী যতবাক্কারমানদঃ নিত্যং ধ্যানযোগপরঃ বৈরাগ্যং সমুপাঞ্জিতঃ ॥ ৫২

আমুবাদ। নির্জনবাসপ্রিয়, নিতাহার, স'বতবাক্, সংবতদেহ, সংবতমনাঃ, নিত্য-ধ্যানবোগপর এবং বৈরাগ্যযুক্ত ॥ ৫২

ভাষ্য। ততঃ বিবিজ্ঞদেবী, অরণ্যনদীপুলিনগিরিগুহাদীন্ বিবিজ্ঞান্ দেশান্ সেবিতৃং শীলমন্তেতি বিবিজ্ঞদেবী। লঘুশা লঘুশনশীলঃ। বিবিজ্ঞ্ঞান্দেবাৰ শনরোঃ নিজাদিদোবনিবর্জকদেন চিত্ত প্রসাদহেতৃদাদ্ গ্রহণম্। বতবাক্কারমানসঃ বাক্ চ কারল মানসং চ বতানি সংবতানি বস্তু জ্ঞাননিষ্ঠিত স
জ্ঞাননিষ্ঠো বতিঃ বতবাক্কারমানসঃ তাং। এবমুপরতসর্বকরণঃ সৃন্ধ্যানবোগপরঃ
ধ্যানমাত্মবর্জপচিন্তনং যোগ আত্মবিষর এব একাগ্রীকরণং তৌ ধ্যানবোগে পরত্বেম কর্তব্যা বস্তু স
ধ্যানবোগপরঃ। নিজ্ঞাং নিজ্ঞারণ মন্ত্রজ্ঞাং সমুপাঞ্জিতঃ
কারপ্রদর্শনার্থম্। বৈরাগ্যং বিরাগভাবঃ দৃষ্টাদৃষ্টেব্ বিষধেষ্ বৈতৃক্যাং সমুপাঞ্জিতঃ
সম্যত্তপালিজঃ নিজ্ঞানৰ ইত্যর্থঃ ॥ ৫২

আনন্দগিরিটীকা। দেহত্বিতিহেত্বতিরিক্তবিষয়তাগঃ দেহত্বিক্তবৈশি তেরু রাগন্তেববর্জ নমভূপারকেদে গিছে সন্তাপারাত্তরাণাপে বন্ধগানীকার— তত ইতি। চিবৈকাব্যপ্রশাদার্থং বিবিক্তনেবিশ্বং ব্যাকরোভি— অর্প্রেন্টি। নিলাদিদোর নির তার্থং লদ্বানিখা বিনদরভি— প্রত্মিত । লদ্ব পরিনিখা হিজং মেখাং চালিজুং লীলমন্তেতি তথোচাতে। বিশেষণরোজ্ঞাংপর্ব্যং বির্ণোতি বিবিক্তেতি। নিজাদীত্যাদিশনাদালভ প্রমাদাদরো বৃদ্ধিবিদেপকা বিবক্তিতা: । বক্ষামাণধানিবোগরোক্ষপারন্ধেন বিশেষণান্তরং বিভক্তে— বাক্চেতি । বাগাদিস বমভাবশুক্তভোতনার্থং ভাদিজ্যক্তম্ । সংযতবাগাদিকর বাক্তিতি । বাগাদিস বমভাবশুক্তভোতনার্থং ভাদিজ্যক্তম্ । সংযতবাগাদিকর বাক্তিতি । বাগাদিস বমভাবশুক্তিত এবিমৃতি । মন্ত্রন্পাদিশতে প্রদিক্তিশ্রণামাদরো ধ্যানবোগপ্রতিবদ্ধকা গৃহীতা: । উক্তরোরের ধ্যানবোগরোক্ষণারন্ধেনাক্তং বিরাগভাবং বিভক্তে—দুফ্টেতি । সম্যক্ত্ মেব ব্যাক্তি— নিত্যমিতি ॥ ৫২

অমুবাদ। তাহার পর "বিবিজ্ঞানেনী" বিবিজ্ঞ শক্ষের অর্থ অরণ্যনদীপ্লিন-গিরিশুহা প্রভৃতি নির্জ্জন দেশ, সেই বিবিজ্ঞকে সেবা করা বাহার
বভাব, তাহাকে 'বিবিজ্ঞানেনী' কহা যায়। "লঘ্ ালী'' অর আহার করা বাহার
বভাব, সেই 'লঘ্ ালী'; বিবিজ্ঞানে এবং মিতাহার নিজাদি দোবের নির্ব্তক্ষ
বলিয়া চিত্তের প্রসাদকর, এই কারণে এই হুইটির গ্রহণ করা হুইরাছে।
"বঙ্গাক্ বারনানস" যে জ্ঞাননিষ্ঠ ব্যক্তির বাগিল্রিয় দেহ এবং মানস সংযত্ত,
সেই জ্ঞাননিষ্ঠ বতিই 'বতবাক্কায়মানস'। এই প্রকারে সকল্ ই ক্রিরকে নিয়মিত্ত
করিয়া—"ধ্যানযোগপর" ধ্যান শব্দের অর্থ আত্মবর্রপ চিস্তন এবং বাগে শব্দের
অর্থ আত্মবিবরে চিত্তের একাগ্রতা সম্পাদন, এই ধ্যান ও বোগ বাহার পর্ম
কর্ত্তব্য, সেই 'ধ্যানবোগপর'; নিত্য (সর্কাদা); নিত্য শব্দের গ্রহণ হারা প্রক্তিপাদিত হুইতেছে বে, তাহার পক্ষে মন্ত্রজ্ঞপাদি অন্ত কার্য্যের আবশ্রকতা নাই।
"বৈরাগ্য" বিরাগের ভাব, দৃষ্ট বা অদৃষ্ট ভোগ্যবন্ধসমূহে বিত্তকা; সেই বৈরাগ্যক্ষে
সর্কাদা আশ্রের করিয়া বে থাকে, ভাহাকে "বৈরাগ্যং সমুপাশ্রিতঃ" কর্ম
হার ৪৫২

অহক্ষারং বলং দর্পং কামং ক্রোধং পরিগ্রহম্। বিমুচ্য নির্ম্মমঃ শাস্তো ব্রহ্মভূয়ায় কল্পতে ॥৫৩

আইয়। অহমারং বলং দশং কানং কোধং পরিপ্রাবং বিষ্চা নির্দান শাস্তঃ ব্যক্তবার করতে ১০০ অ্ফুবাদ। অহন্ধার, বল, দর্প; কাম, ক্রোধ এবং পরিগ্রহকে পরিত্যাগ করিয়া নির্শ্বম এবং শান্ত [যতি] মোক লাভ করিতে সমর্থ হয়॥ ৫৩

ভাষ্য ৷ কিঞ্চ — মহজারম্ অহজরণম্ অহজার: দেহেজিয়াদির্ * তম্,
বলং সামর্থাং কামরাগাদিযুক্তং নেতরং শরীরাদিসামর্থাং স্বাভাবিক্ষেন ত্যাগভাশকাষাং ৷ দর্শো নাম হর্বানস্তরভাবী ধর্মাতিক্রমহেতুঃ "ছাষ্টো দৃণ্যতি দৃথো
ধর্মাতিক্রামতি" ইতি স্মরণাং; তং চ কামনিছাং ক্রোধং থেবং পরিপ্রহম্
ইক্রিয়মনোগতদোবপরিত্যাগেহণি শরীরধারণপ্রসঙ্গেন ধর্মাযুঠাননিমিত্তেন বা
বাহুং পরিপ্রহঃ প্রাপ্ত: ত চ বিমৃচ্য পরিত্যজ্য পরসহংসপরিপ্রাজ্ঞকঃ ভূষা দেহজীবনমাত্রেহপি নির্গতমমভাবঃ নির্দার; অতএব শাস্তঃ উপরতঃ; যঃ সংজ্ঞান
রাসঃ + ষতিঃ জ্ঞাননিষ্ঠঃ প্রক্ষভ্রায় প্রক্ষতবনার ক্লতে সমর্থো ভবতি ॥ ৮৩

আনন্দগিরিটীকা। জ্ঞাননিষ্ঠপ্ত বতের্ব্দেশবণান্তরং সম্চিনোতি—
ক্রিক্তি। নিত্যং ধ্যানযোগপরত্ব সম্চিত্তং কারণান্তরং বিরণোতি—
ক্রাহ্মরণমিতি। সামর্থ্যমাত্রে বলশকাত্পণভ্যমানে কিমিতি বিশেষবচনমিত্যাশক্ষাহ—স্থাভাবিকত্বেনেতি। উক্তেহর্থে মানমাহ—হৃষ্ট্র ইতি। বৈরাগ্যশব্দেন লক্ষণাপি কামত্যাগপ্ত পুনর্ব্দেন্ড প্রেক্ট্রখ্যাপনার্থ্য। অহক্ষারাদিত্যাগে
পরিগ্রহপ্রাপ্তাভাবাৎ তত্ত্যাগোক্তিরযুক্তেত্যাশক্ষাহ—ইন্দিয়েতি। পরিপ্রহাভাবে
মমন্দ্রবিররাভাবারিশ্বন্দং কর্থমিত্তাশক্ষাহ—(দেহেতি। অহক্ষারমমকারয়োরভাবেন প্রাপ্তামন্ত্রংকরণাপরতিমন্ত্র্বদতি—অত্তর্বিতি। উক্তমন্ত্র জীবরেবাসৌ ব্রন্ধীভবতীতি ফলিতমাহ—যঃ সংহাতেতি। জ্ঞাননিষ্ঠপদাদ্দ্ধং সশক্ষা
দ্রন্ত্রাঃ। ব্রন্ধণো ভবনমন্দ্রদ্ধানপরিপাকপর্যাত্তং সাক্ষাৎকরণং তদর্থমিতি
ব্যবং ৪৫০

অনুবাদ। আরও—"অহন্বার" দেহ এবং ইন্সিরসম্হের উপর বে আত্মজ্ঞান, তাহাই 'অহন্বার'; সেই অহন্বারকে [পরিত্যাগ করিরা] "বল" সামর্থ্য
অর্থাৎ বে সামর্থ্য কামরাগাদিযুক্ত, তাহাই পরিত্যাক্ষ্য; তাহা ছাড়া বে শরীরের
সামর্থ্য, তাহা স্বাভাবিক; স্কুতরাং তাহার ত্যাগ করা অসম্ভব। "দর্প" হর্বের
অন্তর উদিত যে মনোর্ভিবিশেষ ধর্মাতিক্রমের হেতু কারণ, দর্মশান্ত্রে স্কৃত
হুইরাছে বে হুই ব্যক্তির দর্প হয় এবং দর্পযুক্ত হুইরা ধর্মকে অভিক্রম করে।

[•] দেহাদিব ইতি পাঠান্তরন্।

[†] সংস্তৃতহ্বারাসঃ ইতি কেটিৎ পঠস্কি।

"কান" ইচ্ছা, "ক্রোধ" বেব, "পরিপ্রহ" ইপ্রির এবং মনের দোব পরিত্যক্ত ইইলেও পরীরধারণ প্রসঙ্গে বা ধর্মাছ্র্ছানার্থ যদি কোন প্রকার বাহু প্রতিপ্রহ আসিয়া পড়ে, ভবে ভাহাই 'পরিপ্রহ'। [মহকার হইতে পরিপ্রহ পর্যন্ত করটি দোব] পরিভাগে করিয়া পর্যনহংস পরিপ্রাক্ত হইয়া দেহ ও জীবনধারণোপারেও মমন্ত্রীক্তর পরিহার করিয়া "গান্ত" উপরত হইয়া জ্ঞাননিষ্ঠ যতি "প্রস্তৃত্ব" প্রস্কৃত্বাক্ত করিতে করিত (সমর্থ) চন ॥৫৩

ব্রন্মভূতঃ প্রসন্ধারা ন শোচতি ন কাজ্কতি। সমঃ সর্কেষু ভূতেষু মদ্ভক্তিং লভতে পরাম্॥৫৪

আনুয়। বন্ধত্তঃ প্রসামান শোচতি ন কাজ্মতি, সর্কের্ ভূতের্ সমঃ পরাং মদ্ভক্তিং লভতে ॥१৪

আনুবাদ। ব্রশাভূত স্তরাং প্রসন্নাম্মা বতি শোকও করেন না এবং কোন বিব্যের আকাজনাও করেন না। তিনি সর্বভূতে সমদৃষ্টিযুক্ত হইনা প্রমা মদ্-ভক্তিকে লাভ করিয়া থাকেন ॥৫৪

ভাষ্য । অনেন ক্রমেণ ব্রন্ধভূতঃ ব্রন্ধ প্রাপ্তঃ প্রান্ধান্থা বাধান্থ প্রসাদঃ
ন শো.তি কিঞ্চিদর্থ বৈক্ল্যমান্ধনো বৈশুলাং বা উদ্দিশু ন শোচতি ন সন্তপ্তে
ন কাজ্কতি । ব্রন্ধভূতশ্বাহরং বভাবঃ অন্ততে ন শোচতি ন কাজ্কতি ইতি ।
ন ভ্রাপ্তবিষয়াকাজ্কা ব্রন্ধবিদ্ উপপদ্ধতে । ন হ্ব্যতীতি বা পাঠঃ । সমঃ
সর্বের্ ভূতের্ আন্মোপম্যেন সর্বের্ ভূতের্ স্থাং হংখং বা সমমেব পশুতি ইভার্জঃ ।
নান্ধসমদর্শনমিহ তন্ত বক্ষ্যমাণহাৎ 'ভক্ত্যা মামভিজ্ঞানাতি' ইতি । এবংভূতো
জ্ঞাননিটো মন্ভক্তিং মরি পরমেশ্বরে ভক্তিং ভন্ধনং পরামুক্তমাং জ্ঞানলকণাং
চতুর্লীং শন্ততে "চতুর্বিধা ভ্রুত্তে মান্" ইত্যুক্তম্ ৪৫৪

আবাদ্দি গিরিটীকা। অপেকিডং প্রয়র তর্মোক্ষবতারয়তি—আনেনিতি। বুলা বিশুল্বেডাাদিরত্র ক্রমঃ, ব্রহ্মপ্রান্তো জীবরেব নিবুভাশেরাকর্মে
নিরভিশ্বানক্ষং ব্রহ্ম আত্মনেনাত্তবরিতার্থঃ। অধ্যাদ্ধং প্রত্যুগদ্মা তবিন্ প্রসাদঃ
কর্মানর্থনিবুভা৷ পরমানকাবিভাবিঃ। স লক্ষো বেন জীবযুক্তেন স ভবা। 'ম
শোচতীত্যাদে তাৎপর্যমাহ —ব্রহ্মভূতত্তেতি । প্রাপ্তব্য-পরিহার্য্যভাবনিদ্দার্ম
দিত্যর্থঃ'। ফভাবাত্মনাক্র্পাদ্যভি—ন হীতি। ততাপ্রাপ্তবিহরাভাবাত্মানি পরিহার্যালিরিছারপ্রকৃত্য লোকঃ পরিহার্যক্রেবাভাবাদিভার্ম। পাঠান্তরে ভূ

রমণীরং প্রাণ্য ন প্রনোদতে তরভাবাদিতার্থ:। বিবক্ষিতং সমদর্শনং বিশদরতি—
আত্ত্বিতি। নমু সর্কের্ ভূতেঘাত্মনঃ সমস্ত নির্কিশেষত দর্শনমত্রাভিপ্রেতং
কিং নেব্যতে তত্রাহ—নাত্রেতি। উক্তবিশেষণবতো জীবস্কুত জানমিঠা
প্রাণ্ডকক্রমেণ প্রাপ্তা অপ্রতিষ্ঠিতা ভবতীত্যাহ—এবজ্ঞুত ইতি। প্রবণমনমনির্দিশ্যাসনবতঃ শমাদিযুক্তভাত্যকৈঃ প্রবণাদিতিঃ ব্রহ্মাত্মপ্রপ্রোকং মোক্ষকাং জানং সিধ্যতীত্যর্থঃ। আর্ত্তাদিভক্তিব্রয়াপেক্ষা জ্ঞানসক্লা ভক্তিঃ
চতুর্বিথ্য ইতি ॥ ৫৪

অসুবাদ। এইরপে ক্রমে "বন্ধভূত" বন্ধপ্রাপ্ত [সুতরাং] "প্রসরাদ্ধা"
অধ্যাদ্ধপ্রমানকে লাভ করিরা শোক করেন না, অর্থাৎ কোন প্রকার অর্থের কৃতি
বা আত্মার বৈশুণাকে উদ্দেশ করিরা অস্তপ্ত হন না এবং কোন বন্ধর প্রার্থনাপ্ত
করেন না। শোকও করেন না, প্রার্থনাও করেন না—এই কথা দারা বন্ধভূত
বৃতির স্বভাবেরই অসুবাদ করা হইতেছে। কারণ, অপ্রাপ্ত কোন বন্ধরই আকাজ্যা
বন্ধবিদের হইতেই পারে না। কোন কোন পুস্তকে 'ন হাব্যতি' (হাই হন না)
এই প্রকারও পাঠ আছে। "সর্বভূতে সম" অর্থাৎ সকর প্রাণীতেই স্থখ বা
হাধকে সমান বলিরা বিনি বোধ করেন, তিনিই "সর্বভূতে সম"; সর্বজ
আত্মসমদর্শন এক্সের তাৎপর্যার্থ নহে, কারণ, ভক্তির দারা আমাকে জানিতি
পারেন ইত্যাদি বাক্যের দারা ঐ বিষয়তি-পরেই উক্ত হইবে। এইরূপ জাননির্হ
বৃত্তি 'মন্ডক্তি" [র্ম্বর্থাৎ] আমি বে প্রমেশ্বর তাহাতে "ভক্তিকে" ভন্ধনকে লাভ
করেন। এই ভক্তি জানরূপা চতুর্থী ভক্তি। কারণ, ভগবান্ পূর্কেই বিশ্বাছেম
ব্য, চারি প্রকার ভক্ত আমাকে ভক্তনা করেন ইত্যাদি ॥৫৪

ভক্ত্যা মামভিজানাতি যাবান্ যশ্চাম্মি তত্ত্বতঃ। ততে। মাং তমকো জ্ঞাত্বা বিশতে তদুনস্তরম্॥৫৫

অনুষুয় । তৰতঃ [অহন্] বাবান্ বশ্চ অস্মি [তং মাম্] ভক্ত্যা অভিকানাতি ততো মাং তৰতো আৰা তদনস্তরং বিশতে ॥৫৫

আনুবাদ। আমি কি পরিমাণ ও কে, তাহা তক্তি যারা বধার্থরণে আনিতে পারেম ও তাহার পর আমাকে বধার্থ স্বরূপে বৃক্তিরা তাহার অনতর পুনে অর্থাৎ আমাতেই প্রবিষ্ট হইরা থাকেন ৪৫ঃ

ভাষ্য । ততে ভানলকণরা ভক্তা নামভিজানাতি বাবান্ অংশ্ উপাধি-ক্সবিভয়তেলো বভাংং বিধাত্তনর্বোপাধিভেদ উত্তমঃ পুরুষ আঁকান্তর্বাত মানবৈতং চৈতন্যাত্রৈকর্সম্ অলমজর্মমর্মভর্মনিধনং তবতোহ তিলালিছি। ততো মান্ এবং তবতো আবা বিশতে তদনত্তরং মামেব। শন্ত আমানতিন্ত্রী-প্রবেশক্রিয়ে ভিরে বিবন্ধিতে 'ভাষা বিশতে তদনত্তরং মামেব। শন্ত আমানতিন্ত্রী-ক্ষান্তরাভাবাৎ আনমান্তমেব, 'ক্ষেত্রজং চাপি মাং বিদ্ধি' ইত্যুক্তমাই। নিম্ন বিক্রমান্তম্বাভাবাৎ আনমান্তমেব, 'ক্ষেত্রজং চাপি মাং বিদ্ধি' ইত্যুক্তমাই। নিম্ন বিক্রমান্তমান্তমের গোনতা বা পরা নিষ্ঠা তরা মামভিলানাতি' ইতি। কবং বিক্রমান্তি চেহ্চাতে,—বদৈব বন্মিন্ বিবরে আনমুংপদ্ধতে আভ্রত্তীবে তং বিসম্বাভিলানাতি আতা, ইতি ন আননিষ্ঠাং আনাব্রিলক্ষণাম্ অপেক্ষতে ইতি। তত্তে আনেন নাভিলানাতি, আনাব্রা তু আননিষ্ঠরা অভিলানাতীতি।

নৈব দোবঃ, জ্ঞানত হাত্মোৎপতিপরিপাকহেত্যুক্ত প্রতিপক্ষবিহীনত বদাস্বান্থতবনিশ্চরাবসানহং তত নিঠাশস্থাতিলাপাৎ শাল্লাচার্ব্যোপদেশেন কানোহণ প্রিপরিপাকহেত্ৎ সহকারিকারণং বৃদ্ধিবি ওছমাদি অমানিম্বাদি চাপেক্য জনিতত ক্ষেত্রপরমাইম্বক্ষলানত কর্জ্রাদিকারকতেদবৃদ্ধিনিবদ্ধনসর্বকর্মসাসসহিত্ত বাত্মাকুতবনিশ্চররপেণ বদবস্থানং সা পরা জ্ঞাননিঠেত্যুচ্যতে। সেরং জ্ঞাননিঠা আর্জাদিভজ্জিরাপেক্ষরা পরা চতুর্থী ভক্তিরিত্যুক্তা। তর্ম পররা ভজ্ঞা তপ্রস্থাৎ তত্তাহিভিলানতি। বদনভরমেবেশ্বরক্ষেত্রজ্ঞভেদবৃদ্ধিং অশেষতঃ নিবর্ত্তে। আল চ সর্বাৎ নিবৃত্তিবিধারি শাল্রং বেদান্তেতিহাসপুরাণস্থতিলক্ষণম্ অর্থবদ্ ভবতি। 'বিদিম্বা ব্যুখার অর্থ তিকাচর্ব্যং চরন্তি' তেমাৎ স্থাসমেবাং তপ্সামতিরিক্সনাত্য' 'ন্যাস এব অত্যরেচয়ং' ইতি 'সন্মাসং কর্মণাং ন্যাসং' 'বেদানিমং চ লোক সৃক্ষ পরিত্যন্ত্য' 'ভাজ ধর্মমধর্মাং চ' ইত্যাদি। ইহ চ দর্শিতানি বাক্যানি।

শ চ তেবাং বাক্যানামানর্থকাং যুক্তম্; ন চার্থবাদনং স্বপ্রকরণস্থাৎ প্রজ্যগাত্মাবিজিরস্বরপনিষ্ঠতাচ মোন छ। ন হি পূর্বসমূত্রং বিগমিবোঃ প্রাতিলোম্যেন প্রভাত্সমূত্রং বিগমিবুণা সমানমার্গত্বং সম্ভবতি। প্রভাগাত্মবিবরপ্রভারসন্তানকরণাভিনিবেশত জ্ঞাননিষ্ঠা। সা চ প্রভাত্সমূত্রগমনবং কর্মণা
সহভাবিত্বেন বিক্লধ্যতে। পর্বভিস্বপরোরিবান্তরবান্ বিরোধঃ প্রমাণবিদাৎ
নিশিততঃ। তত্রাৎ সর্বকর্মসংন্যাসেনৈব জ্ঞাননিষ্ঠা কার্য্যা ইতি সিদ্ধন্ম ॥৫৫

আনন্দ গিরিটীকা । নম সমাধিসাধ্যেন পরমভক্ত্যাত্মকেন আনেন ক্মি-পূর্বববাপ্যতে তরাব—তত ইতি। ভক্তা নমাধিকন্যরা মাং বন্ধাভিদ্বধ্যেন

কানাভগন্ ইভাবিকং কেচিৎ পঠিছি।

প্রত্যক্তরা জানাতি ব্যাগ্নোতীত্যর্থঃ। তদেব জ্ঞানং ভব্তিপরাধীনং বিরুণোতি-ষাবানিতি। আকাশকরত্বসনবচ্ছিরত্বসঙ্গর্ঞ। চৈতন্যস্ত বিষয়সাপেকত্বং প্রতিবিপতি—অবৈতমিতি। যে তু প্রব্যবোধান্মক্যান্মনো মন্যন্তে ভান্ প্রভাক্তন্— চৈতন্তমাত্তেতি। আত্মনি তন্মাত্রেংণি ধর্মাতরমূপেতা ধর্মধর্মিত্বং সর্ববিক্রিয়ারাহিত্যোক্ত্যা কৌটস্থামান্মনো ব্যব-প্রতাহ—একরসমিতি। ষাণম্বতি—অজমিতি। উক্তবিক্রিয়াভাবে তদ্বেজ্ঞানাসম্বন্ধ হেতুমাহ— অভযুমিতি। তত্ত্সন্মন্ত তংকলং বিদেহকৈবলাং শন্তরতি—তত ইতি। তত্বজ্ঞানন্ত তত্মাদনন্তর প্রবেশক্রিয়ায়াশ্চ ভিন্নত্বং প্রাপ্তং প্রত্যাহ—নাত্রেতি। ভিত্রত্বাভাবে কা গতিরভিদোক্তেরিত্যাশক্ষে)পচারিকত্বনাই — কিং ত্রন্থীতি। প্রবেশ ইতি শেষ:। ব্রহ্ম প্রাপ্তিরেব ফলাস্তরমিত্যাশস্ক্য ব্রহ্মাত্মনোর্ডেদাভাবার জানাতিরিকা তৎপ্রাথিরিত্যাহ—ক্ষেত্রজ্ঞপ্তে। জাননিষ্ঠয়া পররা ভক্ত্যা মামভিলানাতীত্যজনানিপতি—নৃত্মিতি। বিরুদ্ধং কোর্রিতুং পৃচ্ছতি— কথমিতি। বিরোধস্টীকরণং প্রতিজ্ঞানীতে—উচ্যত ইতি। তত্ত্র জ্ঞানস্তোৎ-প্রত্তিরেব বিষয়াভিব্যক্তিরিভ্যাহ—যদেতি। এবকারনিরস্তং দর্শর্তি—ন ক্রানেতি। ইত্যাবরো: সিদ্ধনিতি শেব:। জ্ঞানস্ভোৎপত্তেরেব বিষয়াভি-'ব্যক্তত্বেহুপি কণং প্রকৃতে বিরোধধীরিত্যাশস্ক্যাহ—তত্তক্ষেত্ততি। বিক্লম্ব-সিভি শেষ:।

শৃত্বিত বিরোধং নিরপ্ততি— নৈষ দোষ ইতি। উক্তমেব হেতৃৎ
প্রপঞ্চরতি— শাস্ত্রেতি। বোহি শাত্রামুদার্য্যাচার্য্যোপদেশন্তেন জ্ঞানোংপত্তিঃ
"আচার্যানান্ প্রকরো বেদ" ইতি শ্রুতেঃ তন্তাশ্চ পরিপাকঃ সংশ্রাদিপ্রতিবন্ধধ্বংসক্তব্র হেতৃত্তমুপদেশকৈর সহকারিকারণং বদ্বৃদ্ধিগুদ্ধ্যাদি তদপেক্ষ্য তন্মাদেবোপঃ
দেশাজ্জনিতং বদৈক্যজ্ঞানং তন্ত কারকভেদবৃদ্ধিনিবন্ধনানি যানি সর্কাণি কর্মাণি
তেবাং সন্ম্যাসেন সহিতন্ত ফলরপেণ স্বাত্মন্যেব সর্কাকরনারহিতে বদবস্থানং
সা জ্ঞানন্ত পরা নিষ্ঠেতি ব্যবহিরতে প্রামাণিকৈরিত্যর্থঃ। বদি বংগাক্তা পরা
জ্ঞাননিষ্ঠা কথং তহি সা চতৃপী ভক্তিরিত্যুক্তেতি তত্রাহ— সেয়ুমিতি। যথোক্তর্মা জক্ত্যা ভগবত্তক্জানং সিধ্যতীত্যাহ— ত্রুতি। তত্ত্জানন্ত ফলমান্থ—
যদনস্তর্মনিতি। জ্ঞাননিষ্ঠারপারা ভগবত্তকেত্বক্জ্মনানতিরেকান তৎকল্ভ চ
স্ক্রানন্তিরস্তান্ত্রমাত্রমাত ভেদোক্রেশ্চোপচারিকত্বাৎ প্রকৃতং বাক্যমবিক্রমাত্যুপসংহরতি— অত ইতি। ঔপদেশিই ক্যজ্ঞানন্ত সর্কাক্র্মসন্ত্র্যাসসহিতন্ত স্বর্মপান

শাস্ত্রমূদাহরতি—বিদিত্বেত্যাদিনা। দর্শিতানি বাক্যানি সর্বাক্ষণী মন-সেত্যাদীনি।

নবেষং বাক্যানামবিবন্ধিতার্থতাৎ নান্তি স্বার্থে প্রামাণ্যমিত্যাশঙ্কা অধ্যয়নবিধ্যুপাত্তত্বাৎ বেদবাক্যানাং তদমুরোধিখাচ্চেত্রেষাং নৈবমিত্যাহ—ন চেতি।
তথাপি পোহরোদীদিত্যাদিবল স্বার্থে দানতেত্যাশঙ্ক্যাহ—ন চার্থবাদত্বমিতি।
ইতশ্চ মুমুক্ষোরপেন্ধিতনোক্ষোপরিকজাননিষ্ঠদ্য সন্ম্যাদেহধিকারো ন কর্মনিষ্ঠারামিত্যাহ—প্রত্যুগিতি। জাননিষ্ঠদ্য কর্মনিষ্ঠা বিক্তন্ধেত্যত্র দৃষ্টান্তমাহ—ন হীতি।
জাননিষ্ঠান্তর্কাদপূর্বকং কর্মনিষ্ঠর্মা তদ্যাঃ সহভাবিত্বং বিক্রমিতি দার্গ্রাজিকমাহ—প্রত্যুগাত্ত্বেতি। কথং জ্ঞানকর্মণোর্ব্যরোধধীরিত্যাশভ্য কর্মণাং
জ্ঞাননিবর্ত্যত্ত প্রতিস্বিদ্বাদিত্যাহ—পর্বতেতি। অন্তরবামুক্তরেফ ফর্মিনিষ্ঠত্বন সান্ধর্যাভাবসম্পাদকভেদবানিত্যর্থঃ। জ্ঞানকর্মণোর্বারসমূচ্চরে ফরিতমুপ্সংহরতি — তদ্মাদিতি ॥ ৫৫

তাহার পর সেই জ্ঞানরূপ ভক্তি বারা আমাকে জানিতে পারে [কি ভাবে ?] আমি "যাবান" বত প্রকার উপাধি বারা ভিন্ন ভিন্ন ভাবে কল্লিড এবং আমার বাহা যাথার্থ বরূপ অর্থাৎ দক্ষ প্রকার উপাধি ছারা कतिल एउएमत विश्वरम सामाएल्ड स्टेगाए सामिट उत्तम शुक्त धर सामान-বল্ল। আনি একমাত্র বৈতবৰ্জিত সেই চৈত্র মাত্রই আমার যথার্থ স্বরূপ: আমার জন্ম নাই, জরা নাই, মৃত্যু নাই, আনি অভয় ও অবিনাশী-এইভাবে বাস্তব রূপে আমাকে জানিতে পারে। তাহার পর আমাকে এই ভাবে জানিরা আমাতেই প্রবিষ্ট হইয়া পাকে। এথানে জ্ঞান এবং তাহার অনন্তর প্রবেশ •এই চুইটি ক্রিয়া যে পরম্পর ভিন্ন ভাবে বিবকিত হইয়াছে, তাহা নহে [এইরূপ শঙ্কা হইবার কারণ এই যে] জানিয়া তাহার পর প্রবেশ করে, এই কথা বলা হটয়াছে। তবে কি পু ঐ জ্ঞানরূপ ক্রিয়ার অন্ত কোন ফল নাই, কারণ, এই গীতাতেই বলা হইয়াছে বে,—আমাকেই কেত্ৰজ বলিয়া জানিও। [অর্থাৎ ঈবর ১ইতে বাস্তবিক জীব যদি ভিন্ন না ^{*}হন্ন তবে, ঈবর ত নিত্য-প্রাপ্ত নিত্যপ্রাপ্তকে জানিবার পর পাওয়া যায়, ইহা কখনই সম্ভব নছে: স্কুতরাং জ্ঞানকেই এক্সলে প্রবেশ বলিয়া ধরিয়া লইতে হইবে] এক্সণে এইরূপ শস্কা हरेएलाइ त्वं, धरे त्व वना हरेन, रेश निष्ठासु विक्रमारे वना हरेम्राइ। [कि বিক্লছ 🕴] জ্ঞানের যে পরানিষ্ঠা, সেই নিষ্ঠার ছারা আমাকে জানে, এই প্রকার क्थन विक्रम हरेन, कि अकारत ? देशत छेखन धरे (व. यथनरे द विवस्त

জ্ঞান উৎপদ্ধ হয়, তথনই জ্ঞাতা সেই বিষয়কে জ্ঞানিয়া থাকে। সেই জ্ঞানিবার

অন্ত যে জ্ঞাতার জ্ঞানের আবৃত্তিরূপ জ্ঞাননিষ্ঠাকে অপেকা করিতে হয়—

এইরূপ ত কেহই স্বীকার করেন না; তাহা হইলে ইহাই হইল যে, জ্ঞানের দ্বারা

জানিতে পারেন না, কিন্ত জ্ঞানের আবৃত্তি দ্বারা জ্ঞানিতে পারেন; এই প্রকার
বাক্য স্কুতরাং বিরুদ্ধই হইরা পড়িল।

वहे खकात महात डेखत वह रा. वह सात हहेरड भारत ना। ज्ञात्नत बाहा উৎপত্তি ও পরিপাকের কারণ, তাহা যদি প্রতিপক্ষবিহীন হয়, তাহা হইলে উহা হইতে বে জ্ঞান উৎপন্ন হয়, তাহ। আত্মান্তভবস্থারপ নিশ্চয়রপেই পর্যাবসন্ন হয়, এবং দেই নিশ্চররূপে পরিণতিকেই 'জ্ঞাননিষ্ঠা' বলা যার। বৃদ্ধির বিশুদ্ধি ও স্মাচার্য্যোপদেশে জ্ঞানোংপত্তি এবং জ্ঞান-পরিপাকের হেতু স্মানিত্ব প্রভৃতিও বৃদ্ধিওদির সহকারী। এই সকল সহকারী কারণের সহিত মিলিত হইলে, আচার্য্যোপদেশ প্রভৃতি-ক্ষেত্রক ও প্রমাত্মার অভেদ জ্ঞানকে উৎপাদন করে। কন্ত্রাদি কারক এবং ক্রিয়াদির ভেদবৃদ্ধি হইতে উৎপন্ন হইতে পারে এরপ বত প্রকার কর্ম আছে, দেই সকল কর্ম্মের সন্নাস বদি ঐ জ্ঞানের দহিত মিলিত হর, তাহা হইলে ঐ জ্ঞান স্বাত্মান্থভবরূপ নিশ্চররূপে পরিণত . হয়; এই পরিণত হওয়াকেই 'পরাজ্ঞাননিষ্ঠা' বলা বায়। আবর্ত প্রভৃতির ত্রিবিধ ভক্তি হইতে বিলক্ষণ যে চতুণী ভক্তি, তাহা এবং এই পরা জ্ঞাননিষ্ঠা একই বন্ধ, ইহাই [এই শাল্পে] বলা হইয়াছে। দেই পরা ভক্তির বারাই ভগ-বানকে জানিতে পারা যায়। এই ভগবতবজ্ঞানের উদয় হইলে, ঈশ্বর হইতে শীব ভিন্ন এই প্রকার ভেদবৃদ্ধি একেবারে বিলুপ্ত হয়। এই কারণে "জ্ঞাননিষ্ঠা-রূপ পরা ভক্তির হারা আমাকে জানিতে পারে" এইপ্রকার যে ভগবদবচন, তাহা প্রমাণবিক্লম হইতে পারে না। এই প্রকার সিদ্ধান্ত প্রির হইলে, নিব্রন্তিবিধারক বেদান্ত, ইতিহাস, পুরাণ ও স্বতি প্রভৃতি শান্ত্রও সার্থক হইরা থাকে: "জানিরা এবং গার্ছা পরিত্যাগ করিয়া ভিক্ষাচর্য্য করিবে।" সেই কারণে সর্ব্ধকর্ম্ব-সন্মাসই সকল তপস্তা হইতে শ্রেষ্ঠ, ইহা [শাস্ত্রক,রগণ] বলিয়া থাকেন। "সর্ব্ধ-কর্মনন্ত্রাস সকল প্রকার তপ**তা** হইতে অতিরিক্ত প্রধান)।" "সন্ত্রাস [काशत नाम ?] नर्ककर्त्यत পतिष्ठांश।" "त्वरार्कनत्व अहे 'त्वाकत्क छ পরলোককে পরিত্যাগ করিয়া ধর্ম ও অধর্মকে পরিত্যাগ করিবে।" এই সকল বাক্য এবং এই গীতাশাস্ত্রে দর্শিত এই প্রকার বাক্যসমূহও তাহা হইলেই নার্বকু **ब्हेट भारत.। এই मक्न शका अर अमर्निक भारतकाममूख्य रव दकान वार्य**

নাই, ইহা হইতেই পারে না। এই সকল বাক্য যে [কোন প্রকার কার্য্যের প্রশংসা করিবার জক্ত] অর্থবাদরণে প্রযুক্ত হইরাছে, তাহাও নহে; কারণ, এই সকল বাক্য [কোন কর্মবিশেষের প্রকরণে পঠিত হর নাই অর্থাৎ ইহা] নিজ্প প্রকরণেই পঠিত হইরাছে। নোক্ষ যে প্রমান্মার অবিকারী স্বরূপে অবস্থান, তাহাও পূর্বে প্রদর্শিত হইরাছে। যে পূর্বে সমুদ্রে যাইতে ইচ্ছা করে, তাহার সহিত প্রতিকৃলদিকে পশ্চিম সমুদ্রে গমনোন্তত ব্যক্তির এক পথে বাওরা কথনই সম্ভবপর নহে [সেইরূপ মোক্ষবিধারক শান্ত্রীয় বচনগুলির সহিত কর্মবিধারক কোন শাস্ত্রের একার্থবাধকতা কথনই সম্ভব নহে]। পরমান্মবিবয়ে অনুবরত বাহাতে জ্ঞানধারা প্রবাহিত হয়, তাহারই জক্ত যে চেন্তা, তাহাই ত জ্ঞাননির্ভাণ এই জ্ঞাননির্ভা প্রস্কর্মন এক সমরে এক পূর্ববে কথনই হইতে পারে না। স্থতরাৎ জ্ঞাননির্ভা ও কর্মনির্ভা পরক্ষর বিরুদ্ধ। পর্বতি ও সর্বপের মধ্যে যেমন অত্যন্ত বিরোধ, এইরূপ জ্ঞাননির্ভার সহিত কর্মের অত্যন্ত বিরোধ; তাহা সকল প্রামাণিক ব্যক্তিগণের নিকট স্থবিদিত আছে। সেই কারণে সর্বক্রম্বায়াসের ঘারাই জ্ঞাননির্ভার উৎপাদন করিতে হইবে ৪৫৫

দৰ্বকৰ্মাণ্যপি দদা কুৰ্বাণো মদ্ব্যপাশ্ৰয়ঃ।
মংপ্ৰদাদাদ্বাপ্নোতি শাশ্বতং পদ্মব্যয়ম॥ ৫৬

অব্যা । সদা মদ্ব্যপাশ্রম: সর্ককর্মাণি কুর্বরপি মংপ্রসাদাৎ শাশ্বতম্ অব্যায়ং পদং প্রাপ্তাতি ॥ ৫৬

অনুবৃদ্ধ। সর্বাদা বে আমাকে বিশেষরূপে আশ্রন্ন করিয়া থাকে, সে সকল শ্রুকার কর্মা করিলেও, আমার প্রসাদে শাখত ও অব্যন্ন পদকে প্রাপ্ত হয়॥ ৫৬

ভাষ্য। স্বকর্মণা ভগবতোহভার্কনভকিষোগন্ত সিদ্ধিপ্রাপ্তিঃ ফলং জাননিষ্ঠাবোগ্যতা। যদ্মিষা জাননিষ্ঠা মোক্ষকাবসানা। স ভগবন্তজিনোগোহধুনা জুমতে শাস্তার্থোপসংহার প্রকরণে শাস্তার্থনিশ্চরদার্ট্যায়—কর্মকর্মাণি প্রতিষিদ্ধান্তপি সদা কুর্মাণোহছতিষ্ঠন্ মন্ব্যপাশ্রমঃ অহং বাহুদেব ঈশরঃ ব্যাপাশ্রয়ে বক্ত স মন্ব্যপাশ্রয়ঃ ময্যপিতসর্মাত্মভাব ইত্যর্থঃ। সোহণি মৎপ্রসাদাৎ মমেশ্রক্ত প্রসাদাৎ অবাগ্রেতি শাশতং নিত্যৎ বৈক্ষবং পদমব্যম্য ॥ ৫৬

আনন্দ গিরিটীকা। তর্হি জ্ঞাননিষ্ঠরৈব নাক্ষসন্তবার কর্মাহঠানদিছি-রিজ্যাশক্ষ্যাহ—স্বকর্মণেতি। তামেব দিছিপ্রাপ্তিং বিশিন্তি—জ্ঞানেতি। জ্ঞাননিষ্ঠাবোগ্যতারৈ স্বকর্মাহঠানং তগবদর্জনরূপং কর্মবাদিত্যর্থঃ। জ্ঞাননিষ্ঠা-

বোগ্যভাপি , কিমর্থেভ্যাশস্ক্য জ্ঞাননিষ্ঠানিদ্ধ্যথেভ্যাহ—যন্ত্রিমিত্তেভি। श्लान-নিষ্ঠাপি কৃত্রোপবুক্তেতাাহ – মোক্ষেতি। বকর্মণা ভগবদর্চনাম্বনো ভঞ্জি-বোগত পরপার্যা মোক্ষকত কার্ব্যাহ্বন বিধেয়ত্তে বিধ্যুপেক্ষিতাং স্থতিমব্তার-রতি—স ভগবদিতি। জ্ঞাননিষ্ঠা কর্মনিষ্ঠেত্যভাগ প্রতিজ্ঞায় তত্ত্ব তত্ত্ব বিভাগেন প্রতিপাদিতং কিমিতীদানীং কর্মনিষ্ঠা পুন:স্বত্যা কপ্রব্যতয়োচ্যতে তত্তাহ - শাস্ত্রার্থেতি। তত্ত্ব তত্ত্বাক্ত তৈব কর্মানুষ্ঠানন্ত প্রকরণবদাদিছোপ-সংহার:। স চ শাত্রার্থনিশ্চয়ত দৃঢ়তাং ছোতয়তীত্যর্থ:। যন্ত্রপি কণ্ডচিৎ কর্মাত্র্ভারিনো বৃদ্ধিভদ্মিদারা কৈবল্যং সিধ্যতি তথাপি পাপবাহল্যাৎ কর্মাত্র্ভারি-নোহণি ক্সতিদ্বৃদ্ধিশ্বদ্যাভাবে কৈবল্যাসিদ্ধিরিত্যাশ্ব্যাহ-সর্ব্বকর্মাণীতি। সর্বনদাইরোধাদীবরারাধনস্ততিপরছেন শ্লোকং ব্যাচষ্টে -প্রতিষিদ্ধান্যপীতি। নিবিদ্ধাচরণভ প্রামাদিকদং বাাবর্ত্তর্তি-নিতানৈমিত্তিকবদিতাপেরর্থঃ। অনুতিষ্ঠন বৈষ্ণবং পদমাপ্রোতীতি সম্বন্ধ:। পাপকশ্বকারিণো ৰংখাক্তপদপ্ৰাণ্ডৌ পাপক্তাপি মোক্ষদলত্বমূপগতং স্যাদিত্যতাহূ—মদৃব্যপাঞ্জয় ক্টিত। তত্ত্বৈ তাৎপর্যানাহ—মুম্মীতি। তর্হি জ্ঞানম্ভ মোকছেতুত্বমুপেকিতং ভাদিত্যত্তাহ—সোহপীতি। প্রসাদোহত্ত্তহং সম্যগ্ জ্ঞানোদর: । পদং পদনীরং উপনিষ্ঠাৎপর্যাগমাম অব্যয়মপক্ষরহিত্ম ॥१৬

অনুবাদ। অকর্মের ছারা ভগবানের অর্চনারপ ভক্তিবোগের ফল সিদি-প্রাপ্তি [অর্থাৎ] জ্ঞাননিষ্ঠার বোগ্যতা; সেই ভক্তিযোগ লাভ হইলে জ্ঞাননিষ্ঠা হর এবং সেই জ্ঞাননিষ্ঠার ফল মোক্ষলাভ। সেই ভগবানের প্রতি ভত্তিবোগের, এই শাল্রার্থের উপসংহার-প্রদক্ষে স্তৃতি করা হইতেছে, এই প্রকার শুতির ছারা [অধিকারী সাধকের] শাল্রার্থে নিশ্চর দৃঢ় হয়। সর্ককর্মের—[উহা প্রতিবিদ্ধ, হইলেও—সর্কদা বদি কেহ অমুষ্ঠান করেন, কিন্তু তিনি বদি "মদ্ব্যপাশ্রর" হন, অর্থাৎ আমি বাস্থদেব ঈশ্বর, আমাকেই বিনি সর্বাত্মভাবে আশ্রর ক্রিরা পাক্ষেন অর্থাৎ আমাতেই সর্বপ্রকার আত্মভাবকে অর্প্য করেন, তাদৃশ [সাধক] আমার (ঈশবের) "শাশ্রত" নিত্য "অব্যর্গ অবিনালি বৈক্ষব পদ প্রোপ্ত হন ॥৫৬

> চেত্রদা সর্ববকর্মাণি ময়ি সন্মান্ত মৎপরিঃ। বৃদ্ধিযোগমুপাঞ্জিত্য # মদ্যিতঃ সততং ভব ॥৫৭

"বৃদ্ধিযোগমপাজিতা" ইতি বা পাঠঃ

জানুয় , মৎপর: চেত্যা (বিবেক বৃদ্যা) সর্কাকর্মাণি মন্ত্রি সন্ম্যন্ত বৃদ্ধিৰোগ-ম্পাশ্রিত্য সভতং মুচিত্তো ভব ॥৫৭

অকুবাদ। মৎপর হইয়া সকল কর্ম আমাতে [মনে মনে] সর্যাদ কর, এবং বৃদ্ধিযোগকে আশ্রর করিয়া সর্বদা আমার চিন্তা ক্রিতে থাক ॥ ৭

ভাষ্য ৷ ষত্মাদেবং তত্মাৎ চৈতসা বিবেকবৃদ্যা সর্ক্রক্মাণি দুটাদৃষ্টার্থানি ময়ীখরে সন্নান্ত বিং করোষি যদপ্রাদি' ই ত্যুক্তভায়েন, মৎপরঃ অহং বাস্থদেবঃ পরো যন্ত তব সঃ তং মৎপরঃ সন্ * বৃদ্ধিযোগং ময়ি সমাহিতবৃদ্ধিতং বৃদ্ধিযোগঃ তং বৃদ্ধিযোগম্পাশ্রিত্য উপাশ্রমঃ অনভাশরণতং মচিত মধ্যেব চিতং বত্ত তব সং তং মক্তি ভঃ মততং সর্ক্রণ ভব ॥৫ ৭

আনন্দ্রিট্রাকা। প্রমেশ্বরপ্রসাদকৈবং নাহাত্মাং বতঃ সিদ্ধং তন্ত্রাং তংপ্রসাদার্থং ভবতা প্রবৈতিব্যমিত্যাহ—হাস্মাদ্রিত । ভগবং প্রসাদাসাদিত-সম্যগ্জানাদেব মৃক্তিন কর্ণনাত্রাদিতি জ্ঞানং বিবেকবৃদ্ধি:। আপ্রস্লম্পর্থনিহ—অনুন্যোত্তি ॥৫ গ

অনুবাদ। বেহেতৃ এইরপ, দেই জন্ত, "চেতঃ" বিবেকবৃদ্ধি, তাহার সাহাধ্যে সর্ব্বকর্ম অর্থাৎ যে কর্মের ফল ঐহিক এবং যে কর্মের ফল পার্মিক এইরূপ সকল কর্মাই, আনাতে ঈশ্বরে, সন্ত্যান করিয়া [কিরপভাবে ?] "যাহা করিতেছ, বাহা ভোজন করিতেছ" [তাহা সকলই আনাতে অর্পণ কর] এই পূর্ব্বকৃষিত নির্মান্থনারে [আনাতে অর্পণ করিয়া] "নংপর" আনি বাস্থদেবই বাহার প্রধান [আশ্রম] সেই 'নংপর'; [এইরূপে] তুমি নংপর হইয়া এবং বৃদ্ধিবোগকে আশ্রম করিয়া অর্থাৎ আনাতে বৃদ্ধিকে সমাহিত করাই 'বৃদ্ধিষোগ', নেই বৃদ্ধিবোগকে আশ্রম করিয়া সর্বাদা "মচ্চিত্ত" হও; আনাতেই বাহার চিত্ত সংলশ্ধ পাকে, সেই 'মচ্চিত্ত।' এই স্লোকোক্ত আশ্রম শব্দের অর্থ অনন্তশর্পত্ব ৪৫৭

মচ্চিত্তঃ দর্ব্বতুর্গাণি মৎপ্রদাদাৎ তরিষ্যদি। অথ চেৎ ত্বমহঙ্কারাম শ্রোষ্যদি বিনক্ষ্যদি॥৫৮

আন্ত্র্য। মচিতঃ মংপ্রদাদাৎ সর্বাহর্গাণি তরিষ্যাদি (অতিক্রমিষ্যাদি), অধ চেৎ (যদি) তুমু অহতারাৎ ন শ্রোষ্যাদি বিনক্ষাদি ॥৫৮

অফুবাদ। 'আমাতে [সর্বাদ] চিত্ত অর্পণ করিরা থাক; তাহা হইলে আয়ার প্রসাদে সকল প্রকার বিপদ্ হইতে মৃক্তিলাভ করিবে। আর যদি মহকার বশতঃ আমার কথা না গুন, তাহা হইলে, বিনাশ প্রাপ্ত হইবে ॥৫৮

 [&]quot;ম্বার্ণিভদর্কায়ভাবঃ" ইত্যধিকং কচিং দৃশ্বতে ।

ভাষ্য । মজিতঃ সর্মান্ত সর্মানি সর্মানি ছত্তরাণি সংগারহেত্ত্বাভানি মংপ্রসালাং ভরিবাসি অভিক্রমিয়াসি। অণ চেৎ যদি অং মত্ত্বং অহ্বারাৎ পণ্ডিভোছ-হমিতি ন শ্রোষাসি ন গ্রহীয়াসি ভতত্ত্বং বিনজ্জাসি বিনাশং গমিষাসি ॥৫৮

আনন্দগিরিটীকা। কিমতো ভবতি তদাহ—মচ্চিত্ত ইতি। ভীত্যাপি প্রবর্ত্তেইতি মন্বানো বিপর্যায় দোষমাহ—অথ চেদিতি॥ ॥

অকুবাদ। মচিত হইলে "সর্পত্র্গ" সকল প্রকার হন্তর সংসারহেতুকে তুমি তরণ করিবে অর্থাৎ অতিক্রমণ করিবে আমার অমুগ্রহে। আর যদি—
"আমি পণ্ডিত"—এইরপ অংখারবশে আমার কথা না শুন (গ্রহণ না কর),
ভাহা হইলে, বিনষ্ট হইবে ॥৫৮

যদহঙ্কারমাশ্রিত্য ন যোৎস্থ ইতি মন্মদে।
মিথ্যৈয় * ব্যবসায়স্তে প্রকৃতিস্তাং নিয়োক্ষ্যতি ॥৫৯

জানুষু। অহকারম্ আপ্রিতা ন খোৎস্তে ইতি বৎ মন্ত্রসে, এব তে ব্যবসায়: মিপাা; [তে] প্রকৃতিস্থাং নিযোক্ষ্যতি ॥৫৯

আকুবাদ। অহকারকে আশ্রয় করিয়া তুমি ভাবিতেছ বে, আমি যুদ্ধ করিব না; ইহা ভোমার মিগা নিশ্চর, ভোমার প্রকৃতিই (ক্ষত্রির স্বভাবই) ভোমাকে যুদ্ধে নিধুক্ত করাইবে।

ভাষ্য। ইনং চ ত্বরা ন মস্তব্যং 'বতজোহহং কিমর্থং পরোক্তং করিব্যামি' ইতি—বক্তৈতং ত্বনহকারমাপ্রিত্য ন বোৎতে ইতি যুদ্ধং ন করিব্যামীতি মন্তবে চিন্তব্যনি নিশ্চরং করোবি, মিপ্যৈষ ব্যবসারো নিশ্চরত্তে তব যন্ত্রাৎ প্রকৃতিঃ কর্ত্র-বভাবনাং নিবাক্যাতি ॥৫৯

আনন্দগিরিটীকা। স্বাতন্ত্রে সতি ভীতেরবকাশো নাস্তীত শিক্ষ্যাহ—. ইদক্ষেতি॥৫৯

অকুবাদ। আমি স্বাধীন; স্তরাং কেন আমি পরের কথাপুসারে কার্যা করিব ? এই প্রকার অভিমান তুম করিও না [ইহাই বলিতেছেন] অহলরেক আশ্রের করিরা আমি যুদ্ধ করিব না, এই প্রকার তুমি যে চিন্তা করিতেছ অর্থাৎ নিশ্চর করিতেছ, তোমার এই 'ব্যবসার' নিশ্চর মিধ্যা; [কারণ] ভোমার "প্রকৃতি" ক্রিরস্বভাবই তোমাকে [যুদ্ধে] নিযুক্ত করিবে ॥৫৯

মিথাৰ ইতি বা পাঠ:

স্বভাবজেন কোন্তেয় নিবদ্ধঃ স্বেন কর্ম্মণা। কর্জুং নেচ্ছসি যম্মোহাৎ করিষ্যস্তবশোহপি তৎ ॥৬•

অস্বয়। হে কৌত্তের ! বং মোহাৎ কর্জুংন ইচ্ছেসি, তৎ স্বভাবজেন স্বেন কর্মণা নিবন্ধঃ [সন্] অবশোহপি করিষ্যাসি ॥৬•

অকুবাদ। হে কৌন্তের, মোহবশতঃ বাহা করিতে ইচ্ছা করিতেছ না, নিজ স্বভাবজ শৌর্যাদি কর্মের দারা বন্ধ হইরা অবশভাবেই তোমাকে সেই কার্য্য করিতে হইবে ॥৬•

ভাষ্য। বসাচচ--সভাবজেন শোষাদিনা যথোকেন কোন্তের নিবদ্ধানি-চয়েন বদ্ধা কেন্দ্র কর্মণা, কর্জুং নেচ্ছিসি যথ কর্ম মোহাদবিবেক্তঃ করিষাসি অবশে ছপি পরবশ এব তথ কর্মা। ১০

আনন্দ্গিরিটীকা। ইত"চ বয়া সৃদ্ধান্ন বৈম্প্যৎ কর্ত্তুমৃচিতমিত্যাহ— যক্ষাচেচতি। বভাবদেন বেন কর্মণা নিবদ্ধস্থমিতি সম্বন্ধঃ॥৬•

অকুবাদ। বেংহত তুমি নিজ "বভাবজ" শৌর্যাদি [নিবন্ধন]
শুদ্ধাদি কর্ম্মের দারা একান্ত আবদ্ধ রহিয়াছ, এইজন্ত তুমি "মোহ" অবিবেক্বশতঃ
যে কর্ম্ম করিতে ইচ্ছা করিতেছ না, সেই কর্ম্ম তোমাকে পরবশ হইরাই করিতে
হইবে॥৬•

ঈশরঃ দর্বভূতানাং হুদ্দেশেহর্জুন তিষ্ঠতি। ভাময়ন্ দর্বভূতানি যন্ত্রারুঢ়ানি মায়য়া॥৬১

আন্তর । হে অর্জুন ! যন্ত্রার্জানি সর্বভূতানি মার্রা আমন্ব স্ক্ভূতানাং হদেশে ঈশ্বরস্তিষ্ঠিত ॥৬২

অকুবাদ। হে অর্জুন! যন্ত্রার দেবল জীবকে নারার দারা ভ্রান্ত করিয়া ভাহাদের জ্বরদেশে ঈশ্বর [বিরাজনান] রহিয়াছেন॥৬১

ভাষ্য। যত্মং—ঈশর: ঈশনশীলো নারারণ: সর্বভ্তানাং সর্বপ্রাণিনাং ক্লেশে হাদরদেশে অর্জুন শুক্রান্তরাত্মহাতার: বিশুদ্ধান্তরণ ইতি, "মহত ক্লক্ষ্য মহর্জ্জুনক্ষ" ইতি দর্শনাং। তিষ্ঠতি স্থিতিং লভতে। তেরু স কথং তিষ্ঠতি ইত্যাহ—ভ্রামরন্ ভ্রমণং কার্রন্ সর্বভ্তানি যন্ত্রার্টানি অধিষ্ঠিতানীর ইতি ইব শক্ষেংজ ক্রইব্যঃ। যথা দাক্ষ্যতপ্রবাদীনি যন্ত্রার্টানি মার্রা ছল্মনা প্রামরং তিষ্ঠতি ইতি সম্বর্ষঃ ॥৬১

আনন্দগিরিটীকা। ইতোহপি তথা যুদ্ধ কর্ত্তব্যমেবেত্যাহ—যুস্মাদিতি। অর্জ্নশক্ষেত্রাকার্থনে প্রতিমুদাহরতি—অন্তলেচিত। 'অংশ্চ
ক্রক্ষমন্তর্জ্বক বিবর্ত্তেে রজনী বেছাভিঃ' ইত্যত্র কিঞ্চিদহন্তাবং ক্রক্ষমন্তর্ভ্ব কর্মুবিভমিব লক্ষ্যতে কিঞ্চিৎ পুনরহরর্জ্বনিতি স্বন্ত্রং গুদ্ধস্বভাবমুপলভ্যতে।
এবমর্জ্বনশবস্থ গুদ্ধপর্বায়তথা প্রয়োগদর্শনাৎ উক্তার্থন্তমৃচিতমিত্যর্থঃ। বন্ত্রাক্রানীবেতি কথম্চাতে তত্রাহ—ইব্শব্দ ইতি। তদেব প্রপঞ্চয়তি—
যথেতি। দাক্ষমন্ত্রানি বজাণি বথা লৌকিকো নান্নাবী নান্না ভ্রানন্ত্রন্ত তথেশব্রাহিপি দর্মাণি ভূতানি ভ্রানন্ত্রেব ক্র্নের্ তিঠ্তীত্যর্থঃ॥১১

অসুবাদ। যে কারণে—"ঈশর" ঈশনস্থভাব নারায়ণ, "সর্বভৃতের" সকল প্রাণিগণের "হদেশে" হৃদয়দেশে স্থিতি করিতেছেন। হে অর্জুন! অর্জুন শব্দের দারা ইহাই প্রতিপন্ন হইতেছে যে, তাঁহার অন্তরাত্মার স্থভাব শুক্ত অর্থাৎ বিশুদ্ধ শব্দ যে শুক্ত অর্থে প্রযুক্ত হয়, তাহার প্রমাণ এই] "ভিথি কৃষ্ণ এবং তিণি অর্জুন", অর্থাৎ শুক্ত এইরূপ শাস্ত্রীয় বচন দেখিতে পাওয়া যায়। সেই ঈশর কি ভাবে হৃদয়ে আছেন ? যন্ত্রায়ঢ় অর্থাৎ যন্ত্রেতে আরুচ্ কাঠাদিনির্শিত প্রতিকাদির ভার সকল ভৃতকে ভ্রামিত করিয়া তিনি হৃদয়দেশে বিশ্বমান আছেন, এই প্রকার অবল করিতে হইবে। "যন্ত্রায়চ্লানি" এই শব্দের পর একটি 'ইব' শব্দের অধ্যাহার করিতে হইবে, ইহা দেখিতে হইবে॥৬১

তমেব শরণং গচ্ছ সর্বভাবেন ভারত। তৎপ্রসাদাৎ পরাং শান্তিং স্থানং প্রাপ্স্যাদি শাশ্বতম্॥৬২

আমুদ্ধ । হে ভারত ! তমেব সর্বভাবেন শরণং গচ্ছ ; তৎপ্রসাদাৎ [অচিরেণ] পরাং শান্তিং শান্তং স্থানং চ প্রাপ্সাসি ॥৬২

অমুবাদ। হে ভারত! দর্কভাবের সহিত দেই ঈশ্বরকেই আত্রর কর; তাঁহার অমুগ্রহে পরা শাস্তি ও শাশ্বত পদকে প্রাপ্ত হইবে ॥৬২

ভাষ্য। তমেবেশ্বরং শরণমাশ্ররং সংসারাতিহরণার্থং গচ্ছ আশ্রন্থ সর্বা ভাবেন সর্বাত্মনা হে ভারত ততত্তংপ্রসাদাদীখরামুগ্রহাৎ, পরাং প্রকৃষ্টাং শান্তিং পরামুপরতিং স্থানং চ মম বিক্ষোঃ পরমং পদমবাপ্যাসি শাশ্বতং নিভাম্ ॥২২

আনন্দগিরিটীকা। ঈশবঃ সর্বাণি ভূতানি প্রেররতি চেৎ প্রাপ্ত-কৈবল্যার্থকাপি প্রুমবকারভানর্থক্যমিত্যাশক্ষাহ—ত্রেব্রেডিন্ সর্বাত্মনা মনোবৃস্ত্যা বাচা কর্মণা চেত্যর্থঃ । ঈশব্দাসুগ্রহাৎ তবজ্ঞানোৎপত্তিপর্য্যন্তাদিতি শেষঃ । মুক্তান্তিঠন্ত্যামিরিতি স্থানম্ ॥৬২

অনুবাদ। সেই ঈখরকেই, সংসারের ক্লেশশান্তির জন্ত আশ্রের কর সর্বভাবের সহিত অর্থাৎ সর্বস্থির (হে ভারত! সেই ঈখরের অনুগ্রহে "পরা" প্রকৃষ্টা "শান্তি" সংসারোপরতি এবং আমার অর্থাৎ বিষ্ণুর নিত্য ও পরম পদপ্রাপ্ত হইবে ॥৬২

> ইতি তে জ্ঞানমাখ্যাতং গুহ্মাদ্গুহ্মতরং ময়া। বিমুখ্যেতদশেষেণ যথেচ্ছসি তথা কুরু॥৬৩

আন্তর্ম । ময়া গুহাৎ গুহতরম্ইতি জ্ঞানং তে আখ্যাতম্ এতং অশেষেণ বিম্খ যণা ইচ্ছসি তথা কুরু ॥ ২৩

অনুবাদ। আমি তোমার নিকটে এই ওঠ হইতে ওঞ্জর জ্ঞানের পরিচয় প্রদান করিলাম, ইহা ভাল করিরা বিচার করিয়া যাহা করিতে ইচ্ছা হয়, তাহা কর ॥৬৩

ভাষ্য । ইত্যেতৎ তে তুভ্যং জ্ঞানমাখ্যাতং কণিতং শুহাৎ গোপাণং শুহুতরম্ অভিশয়েন শুহুং রহস্তমিত্যর্থ:। ময়া সর্বজ্ঞেন ঈশ্বরেণ, বিমৃশ্য বিমর্শ-নমালোচনং রুদ্ধা এতন্ যথোক্তং শাক্রম্ অশেষেণ সমস্তং যণোক্তং চার্যজ্ঞাতং যণেছেসি তথা কুরু॥৬৩

আনন্দ গিরিটীকা। শাস্ত্রমূপসংহর্তি ছেলাই—ইতি তে জ্ঞানমিতি।
জ্ঞানং করণবৃৎপত্ত্যা গীতাশাস্ত্রম্। যথেচ্ছদি তথা কুক, জ্ঞানং কর্ম্ম বা যদিষ্টং
ভদম্ভিষ্টেত্যর্থ: ॥১৩

আমুবাদ। এই তোমাকে "গুরু" গোণ্য হইতেও "গুরুতর" অভিশর শুরু অর্থাৎ রহস্ত, আমি—সর্বজ্ঞ ঈশ্বর তোমাকে এই জ্ঞানের উপদেশ করিলাম; ইহা বিমর্শন" ভাল করিয়া বিচারপূর্বক যাহা ইচ্ছা তাহা করিতে পার ॥১০

> দর্ববিশুহতমং ভূয়ঃ শৃণু মে পরমং বচঃ। ইফৌহসি মে দৃঢ়মিতি ততো বক্ষ্যামি তে হিতম্ ॥৬৪

আর্য় ়া সর্বাঞ্চলনং প্রমং মে বচঃ ভূরঃ শুগু। মে দৃঢ়ম্ ইষ্টোৎসি (প্রেরো-ভ্রমি) ইতি ভতঃ তে হিতং বক্ষামি ॥৬৪

অকুবাদ। সর্বপ্রকার গোপ্য হইতেও অতিশর গোপ্য আমার পরম বাক্য

পুনরায় শ্রবণ কর। তুমি আমার অতিশয় ইষ্ট (একান্ত প্রিয়), এই কারণে তোমার হিত [আবার] বলিতেছি ॥৬৪

ভাষ্য। ভ্রোহপি ময়া উচ্যমানং শৃণ্—সর্বপ্তহাতমং সর্বপ্তহাত্তাত্ত-রহওম্ উজ্জনপি অসক্তং ভ্রঃ পুনঃ শৃণ্ মে মম প্রমং প্রকৃষ্টং বচঃ বাক্যম্। ন ভয়াং নাপার্থকারণাদ্বা বক্ষ্যামি কিং তর্হি ? ইটঃ প্রিয়োহসীতি মে মম দৃঢ়ম-বাভিচারেণ ইতি ক্রমা ততন্তেন কারণেন বক্ষ্যানি কথিয়িষ্যামি তে হিতং পরং জ্ঞানপ্রাপ্তিসাধনম্। তিদ্ধি সর্বহিতানাং হিত্তমম্॥৬৪

আনন্দ গিরিটীকা। গীতাশাস্ত্রস্ত পৌর্বাপর্ব্যেণ বিমর্শনদ্বারা তাৎপর্য্যার্থৎ প্রতিপত্ত মসমর্থৎ প্রত্যাহ – ভূয়োহপীতি। কিমর্থমিচ্ছন্ পুনঃপুনরভিদধাসীত্যা-শঙ্কাহ—ন ভয়াদিতি। হিতমিতি সাধারণনির্দেশে কণং পরমিত্যাদিবিশেষণ-মিত্যাশঙ্ক্যাহ—তদ্ধীতি॥৬৪

অমুবাদ। মাবার মানি বলিতেছি, শ্রবণ কর; "সর্বগুড্তম" সকল প্রকার গুড্ হইতে অত্যস্ত গুড্ অর্থাৎ রহস্ত, অনেকবার ইহা কথিত হইলেও আমার এই "পরম" প্রস্কৃত্তি বাক্য পুনর্কার বলি, শ্রবণ কর। ভরে বা মস্ত কোন স্থার্থের বলে যে আমি বলিতেছি, তাহা নহে, কি ভবে ? তুমি আমার একান্ত "ইষ্ট" প্রির, এই জন্তই আমি ভোমার "হিত" পরম জ্ঞান প্রাপ্তির উপান্ন, যাহা সকল প্রকার হিত হইতে হিত্তম্, তাহাই বলিতেছি ॥৬৪

> মশ্মনা ভব মদ্ভক্তো মদ্যাজী মাং নমস্কুর । মামেবৈষ্যদি সত্যং তে প্রতিজ্ঞানে প্রিয়োহদি মে ॥৬৫

আস্বয়,। মশ্মনা মণ্ডক্ত: [তথা] মণ্যাজী ভব, মাং নমস্কুক [এবং সতি] মামেব এব্যসি, তে সত্যং প্ৰতিজ্ঞানে সে প্ৰিয়োহসি ॥৬৫

অনুবাদ। আমাতে হানর অর্পণ কর, আমার ভক্ত হও, আমার প্রীতির জন্ম বল্ল কর, এবং আমাকেই নমস্কার কর; এইরূপ করিলে আমাকেই পাইবে, ইহা আমি মত্য প্রতিশ্রু। করিতেছি; তুমি আমার প্রির ॥৬৫

ভাষ্য। কিং তদিত্যাহ— নন্মনা ভব সচিত্তো ভব মদ্ভক্তো ভব মন্তৰনো ভব মন্যালী মন্যলনশীলঃ ভব সাং নমকুক নমস্বারমণি মমৈব কুক.। তত্ত্বেবং অর্ত্তমানঃ বাস্থাদেবে এব সর্বাসমন্পিতসাধ্যসাধনপ্রয়োজনঃ সামেব এব্যসি আগর্মি-ব্যসি। স্ভাং তে প্রতিজ্ঞানে সভ্যাৎ প্রতিজ্ঞাৎ করোমি এভন্মিন্ বস্তুনি ইত্যর্থঃ। ষতঃ প্রিরোইসি মে এবং হগবতঃ সভ্যপ্রতিজ্ঞহং বৃদ্ধা ভগবন্ধক্তেরব**ভাছাবিমোক**-ফলমবধার্য্য ভগবচ্ছরণৈকপরায়ণো ভবেদিতি বাক্যার্থঃ ॥ ৫

আনন্দণিরিটীকা। তদেব প্রশ্নধারা বিরণোতি—কিং তদিত্যাদিনা। উত্তরার্জং বাচষ্টে—তত্ত্রেতি। এবস্করা রীতাা বর্ত্তসানস্থং তদ্মিয়েব বাস্থ-দেবে ভগুব্ ত অপিতসর্মভাবো সামেবাগমিষাসীতি সম্বন্ধ:। সত্যপ্রতিষ্ঠাকরণে হেতুমাহ—যত ইতি। ইদানী বাকার্যার্থং শ্রেমাহর্ণিনাং প্রবৃদ্ধ্যপ্রোগিম্বেদ সংগ্রাতি—এবমিতি ॥৬৫

অমুবাদ। কি তাহা ? তাহাই বলিতেছেন। মন্মনা: হও অর্থাৎ আমাতে চিত্র অর্পণ কর, আমার ভক্ত হও, আমার ভক্ত ইও, আমার ও নমস্থার কর অর্থাৎ নমস্কার আমাকেই কর; এই ভাবে ধদি আমাতে (বাস্থানেরে) সর্বাপ্রকারে সাধ্য সাধন ও প্রয়োজনের সমর্পণ করিতে পার, তাহা হইলে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে। এই তোমাকে সত্য প্রতিক্ষা বলিতেছি। বেহেতু তুমি আমার প্রিয়। এই প্রকার উক্তির দারা ভগবানের সত্য প্রতিক্ষম্ব ব্রিয়া ভগবানের উপর সর্বপ্রকারে আত্মসমর্পণরূপ ভক্তি করিলে, তাহার দারা মোক্তরপ কল অবশ্যই লাভ করিতে পারা বায়, ইহা নিশ্চর করিয়া, ভগবান্কেই আশ্রর করিবে, এবং তিনিই পরম সহায়, ইহা অবধারণ করিবে ॥৬৫

সর্ব্বধর্ম্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রহ্ন। অহং ত্বাং সর্ব্বপাপেভ্যো মোক্ষয়িষ্যামি মা শুচঃ ॥৬৬

আনুষু । সর্বধর্মান্ পরিত্যজ্য মাষ্ এক শরণং ব্রজ; স্বং মা ভচঃ, অহং স্বাং সর্বপাপেভ্যো মোক্ষিয়ামি ॥१৬

আফুবাদ। তুমি সর্বপ্রকার ধর্মকে পরিত্যাগ করিয়া একমাত্ত আমা-কেই আশ্রর কর, তুমি শোক করিও না; আমি তোমাকে সকল পাপ হইতে মুক্ত করিব॥৬৬

ভাষ্য। কর্মবোগনিষ্ঠায়াঃ প্রমরহস্ত্রনীশ্বন্দরণত।মুপ্সংজ্তা অপেকানীং কর্মবোগনিষ্ঠাফলং সম্যুগ্ দর্শনং সর্ববেদাস্তবিহিতং বক্তথ্যমিত্যাহ—সর্বধর্মান্ত্র দর্বেক চ তে ধর্মান্চ সর্বধর্মান্তান্। ধর্মশব্দেনাত্র অধর্মোইপি গৃহতে নৈকর্মান্ত্র বিবিক্ষিতভাং "নাবিরতো ত্ণ্চরিতাং" "তাক্ষ ধুর্মমধর্মান্ত্র ইত্যাদি ইভিস্কৃতিভাঃ। সর্বধর্মান্ পরিত্যক্তা সন্ত্রান্ত সর্বকর্মানীত্যেতং। মানেকং সর্বাভ্যানং সমং সর্বভ্রন্ত্র ইত্যেবংকং শব্দং ক্রন্ত্র স্বামরণবিবিশ্বিত্যক্ত্র অহমেক ইত্যেবংকং শব্দং ক্রন্ত

ন মৰোহভদন্তীতি অবধারর ইত্যর্থ:। অহং থামেবং নিশ্চিতবৃদ্ধিং সর্বাপাপেজ্য: সর্বাধর্মাধর্মবন্ধনর কলে। উক্তং চ—
"নাশরাম্যাত্মভাবত্বো জ্ঞানদীপেন ভাস্বভা" ইতি। অতো মা ওচঃ শোকং মা কার্মিরিত্যর্থ:।

অবিন্ হি গীতাশাত্রে পরং নিঃশ্রেরস্সাধনং নিশ্চিতং, কিং জ্ঞানঃ কিং কর্ম আহোবিহুভরম্ ইতি। কুতঃ সন্দেহঃ "বজ্ঞাতা অমৃতমর্গুডে", "ততাে মাং তরতাে জ্ঞাত্বা বিশতে তদনস্তরম্" ইত্যাদীনি বাক্যানি কেবলাৎ জ্ঞানাং নিঃশ্রেরস্পান্তিং দর্শরন্ত । "কর্মণ্যবান্তিকারতে" "কুরু কর্মের" ইত্যেবমাদীনি কর্মণামবস্তকর্ত্রতাং দর্শরন্ত । এবং জ্ঞানকর্মণােঃ কর্ত্রতাণদেশাং সমৃচ্চিতরােরপি নিঃশ্রেরস্তেত্ত্বং ক্রাদিতি ভবেং সংশরঃ । কিং প্নরত্র মামাংসাফলম্। নতু এতদের এবামস্ততমন্ত পরমনিঃশ্রেরস্বাধনতাবধারণম্। অতাে বিত্তীর্ণতরং মামাংস্তমেতং । আত্মজ্ঞানক তু কেবলক্ত নিঃশ্রেরস্তেত্বং ভেদপ্রত্যরনিবর্ত্তক ক্রেব্যাফলাবদানতাং।

ক্রিয়াকারক্ষণভেদবৃদ্ধিঃ অবিভায়া আত্মনি নিত্যপ্ররা মন কর্ম অহং কর্জা অরুদ্ম ফলার ইদং কর্ম করিবাসি ইতীয়মবিভা অনাদিকালপ্রবৃত্য। অভ্যা অবিভায়া নিবর্জকং অয়মহমত্মি কেবলোহকর্জা অক্রিয়ঃ অফলঃ ন মরোহভোহত্তি কন্দিদিত্যেবং রূপমান্থবিষয়ং ভানমুৎপভ্যমানং কর্ম প্রবৃত্তিহেতুভূতায়া ভেদবৃদ্দেনিবর্জকত্বাও। তুশকঃ পক্ষয়রবায়্রভার্থা ন কেবলেভাঃ কর্মজাঃ ন চ ভানকর্মজাং সমুচ্চিতাভাগং নিংশ্রেয় প্রাপ্তিরিতি পক্ষয়ঃ নিবর্জয়তি। অকার্যমান্ত নিংশ্রেয় সভ কর্মসাধনমামুপপত্তিঃ। ন হি নিতাং বন্ধ কর্মণা ভ্রানেন বা ক্রিয়তে। কেবলজানমপি অনর্থকং তর্হি ? ন, অবিভানিবর্জকত্বে স্তি দৃষ্টকৈবলাফলাবসানস্থাও। অবিভাতমোনিবর্জকত্ব ভ্রানন্ত দৃষ্টং কৈবলাফলাবসানর্ম।

রজ্ঞাদিবিবরে সর্পাত্যজ্ঞানতমোনিবর্ত্তকপ্রদীপপ্রকাশফলবং। বিনির্ভ্তসর্প্রিক্ররজ্বৈবল্যাবসানং হি প্রকাশফলং তথা জ্ঞানম্। দৃষ্টার্থানাং চ জ্ঞিদিক্রিরারিমহনাদীনাং ব্যাপৃতকর্ত্ত্রাদিকারকাণাং বৈধীজাবারিদর্শনাদিফলাং অক্তফলে কর্মান্তরে ব্যাপারামূপপত্তির্থা তথা জ্ঞাননিষ্ঠাক্রিরারাং দৃষ্টার্থায়াং ব্যাপৃতত্ত জ্ঞাত্রাদিকারকত্ত আত্মকৈবল্যফলাদভ্তমলে কর্মান্তরে প্রবৃত্তিরমূপপল্লেভি ন জ্ঞাননিষ্ঠা কর্ম্ম-সহিতা উপপত্ততে। ভূজ্যারিহোত্রাদিক্রিরাবং তাং ইতি চেং, ন; কৈবল্যফলে জ্ঞানে ক্রিরাফলার্থিরাম্পপত্তে:। কৈবল্যফলে জ্ঞানে ক্রিরাফলার্থিরাম্পপত্তে:। কর্মাক্রাক্রাক্রের তং-

সাধনভূতারাং বা ক্রিরায়ামর্থিত্বাহ্নপপতিঃ। ন হি রাজ্য প্রাপ্তিফলে কর্মণি ব্যাপ্তভে ক্রেপ্রপ্রিফলে ব্যাপারোপপতিঃ তদ্বিষয়ঞার্গিত্বম্। তত্মার কর্মণোহন্তি নিংশ্রেমাধনত্ম।

ন চ জ্ঞানকর্মণোঃ সমুচ্চিতয়োঃ। নাপি জ্ঞানস্ত কৈবল্যফলস্ত কর্মসাহাষ্যাপেক্ষা, অবিক্যানিবর্ত্তকত্বেন বিরোধাং। ন হি তমন্তমসো নিবর্ত্তকম্। অতঃ
কেবলমেব জ্ঞানং নিংশ্রেমসাধনমিতি। ন; নিত্যাকরণে প্রত্যবাদ্মপ্রাপ্তেঃ
কৈবল্যস্ত চ নিত্যত্বাং। বং তাবং কেবল্যজানাং কৈবল্যপ্রাপ্তিরিত্যেত্বসং।
বতো নিত্যানাং কর্মণাং শ্রুক্ত্যজানামকরণে প্রত্যবারো নরকাদিপ্রাপ্তিকক্ষণঃ
স্থাং। নদ্মবং তর্হি কর্মভো মোক্ষঃ নাস্তীত্যনির্দ্ধোক্ষ এব। নৈব দোবঃ নিত্যভাব্যোক্ষস্ত। নিত্যানাং কর্মণাম্ অনুষ্ঠানাং প্রত্যবার্ম্যাপ্রাপ্তিঃ। প্রতিবিদ্ধস্ত
চাকরণাং অনিষ্ঠশরীরাহ্বপপত্তিঃ। কামানাং চ'শ্রুক্তনাং ইন্তর্শরীরাহ্বপপত্তিঃ।

বর্ত্তমানশরীরারস্তকন্য চ কর্মণঃ ফলোপভোগক্ষরে পতিতেহম্মিন্ শরীরে দেহাস্তরোৎপত্তে) চ কারণাভাবাৎ আত্মনো রাগাদীনাং চাকরণাৎ স্বরূপাবস্থানন্য বৈ বল্যমিত্যযন্ত্রদিদ্ধং কৈবল্যমিতি। অতিক্রাস্তানকজন্মান্তরক্তন্ত স্বর্গনরকাদিপ্রাপ্তিফলন্ত অনারক্রকার্য্যন্ত উপভোগামূপপত্তেঃ ক্রয়াভাব ইতি চেৎ, ন; নিত্যকর্মামূপ্তানায়াসহংখোপভোগন্ত তৎফলোপভোগদেপত্তাঃ। প্রার্লিষ্টনিব্যাপ্রিফলন্ত অনারক্রমার্থরাৎ নিত্যকর্মণান্ আরক্রানাঞ্চ উপভোগেনৈর কর্ম্মণাং ক্রীণন্ধাদপূর্ব্বাণাঞ্চ কর্মণামনারস্তে * অযন্ত্রসিদ্ধং কৈবল্যমিতি। ন, তেমেব বিদিছাতিমৃত্যুমেতি নাত্তঃ পছা বিভাতেহয়নার্য ইতি বিভায়া অন্তঃ পছা মোক্ষান্ত্রন বিভাতে ইতি প্রতেশ্বরদাকাশবেষ্টনাসন্তববদ্বিহ্বো মোক্ষান্তবস্থানাং কর্মণাং ক্র্যান্থপ্রতেঃ, ক্রান্থপ্রতেই ভিত্ত চপ্রাণস্থতেঃ অনারক্ষলানাং পুণ্যানাং কর্মণাং ক্রয়ন্থপণত্তেক্ত।

যথা পূৰ্ব্বোপান্তানাং ছবিতানান্ অনাবন্ধকলানাং সম্ভবঃ, তথা পূ্ণানামপি অনাবন্ধকলানাং ভাৎ সম্ভবঃ। তেবাং চ দেহাস্তবমকৃতা ক্ষাকুপপত্তী মোকাঞ্পপন্তিঃ। ধর্মাধর্মহেতৃনাং চ বাগবেষমোহানামগুৱাত্মজানাৎ উচ্ছেদান্তপপত্তঃ ধর্মাধর্মোচ্ছেদান্ত্পপত্তিঃ। নিত্যানাঞ্চ কর্মণাং পুণ্যলোকফলশ্রুতঃ 'বর্ণা আশ্রমাশ্রু কর্মাধনিষ্ঠাঃ' ইত্যাদিশ্বতে কর্মক্ষান্তপপত্তিঃ। বে তাহঃ—নিত্যানি কর্মাণ

^{⇒—}ছরিতক্ষরার্থং নিত্যং কর্ম। আরাজনাঞ্ কর্মণান্ উপভোগেনের ক্ষীণড়াৎ অপ্রাধাঞ্
কর্মণান্ অনারভে ইতি কচিৎ দুখতে।

তঃশরপদাৎ পূর্বকৃতহ্রিতকর্মণাং ফলনেব ন তু তেষাং স্বরূপব্যতিরেকেণ অশুৎ কলমন্তি অপ্রতানাং কর্মণাং ফলদানাসভবাৎ, হঃখফলবিশেবামুপপত্তিশ্চ আৎ। যহক্তং পূর্বজন্মকৃতছরিতানাং কর্মণাং ফলং নিত্যকর্মামুঠানায়াসহঃখং ভূজ্যতে ইতি তদসং। ন
হি মরণকালে ফলদানায় অনন্ধ্রীভূততা কর্মণঃ ফলমতাকর্মারেরে জন্মনি উপভূজ্যতে
ইত্যুপপত্তিঃ। অনাথা স্বর্গফলোপভোগায় অগ্নিহোত্রাদিকর্মারেরে জন্মনি নরককর্মফলোপভোগামুপপত্তিন আৎ। ততা ছরিততঃখবিশেষফল্যামুপপত্তেশ্চ,
অনেকের্ হি ছরিতের্ সন্ধ্রং ভ্রেছঃখনাধনফলের্ নিত্যকর্মারুগিনায়াসছঃখনাত্রকর্মামুঠানায়াসছঃখনের পূর্লকৃত্ত্রিতফ্লং ন শির্দা পাষাণ্বহনাদিহংপ্যতি।

অপ্রকৃতং চেদম্চাতে নিত্যকর্মানুষ্ঠানায়ানহংখং প্রকৃতহ্বিতকর্মকলমিতি।
কণম্? অংক্তকলক্ত পূর্বকৃতহ্বিতক করো নোপপছতে ইতি প্রকৃতম্। তত্ত্ব
প্রকৃতকলক্ত কর্মণঃ ফলং নিত্যকর্মানুষ্ঠানায়াসহংখনাহ ভবান্, নাপ্রস্তফলক্ত
ইতি। অথ সর্বমেব পূর্বকৃতং হবিতং প্রস্তফলমেবেতি মন্যতে ভবান্, ততাে
নিত্যকর্মানুষ্ঠানায়াসহংখনেবফলনিতি বিশেষণাম্যুক্তম্। নিত্যকর্মবিধ্যানর্থক্তা
প্রসঙ্গক উপভোগেনৈব প্রস্তফলক্ত হ্বিতকর্মণঃ ক্ষয়োপপত্তেঃ। কিঞ্চ প্রতক্ত নিত্যক হংখং কর্মণশ্চেৎ ফলং নিত্যকর্মানুষ্ঠানায়াসাদেব তদ্পুতে ব্যায়ামাদিবৎ,
তদন্যস্যেতি কর্মানুষ্ঠপত্তিঃ। জীবনাদিনিমিত্তে চ বিধানাৎ নিত্যানাং কর্মণাম্।
প্রায়ন্টিত্তবং পূর্বকৃতহ্বিতফলত্তামুপপত্তিঃ। যিত্রন্ পাপকর্মনিমিত্তে বদ্বিহিতং
প্রায়ন্টিত্তং কলম্, জীবনাদিনিমিত্তমপি নিত্যকর্মানুষ্ঠানায়াসহংখং জীবনাদিনিনিত্তনৈত্যক তৎ ফলং প্রসজ্যেত নিত্যপ্রায়ন্টিত্বয়োনৈ মিত্তিকত্ববিশেষাৎ।

কিঞ্চানাং—নিত্যস্য কাম্যস্য চাগ্নিংগ্রাদেরসুষ্ঠানাগ্নাসত্ংথস্ত তুল্যবাং
নিত্যাস্থঠানাগ্নাসত্ংথনেব পূর্ব্বকৃতত্বিতস্য ফলম্, ন তু কাম্যাস্থঠানাগ্নাসত্ংথমিতি
বিশেবো নাস্তীতি তদপি পূর্বকৃতত্বিতিকলং প্রসজ্যেত। তথা চ সতি নিত্যানাংকলাশ্রবণাং তদ্বিধানাস্থগাম্পপত্তেশ্চ নিত্যাস্থঠানাগ্নাসত্থেং পূর্বকৃতত্বিতিকল্পনিত্যবাপত্তিকল্পনা। এবং বিধানাস্থাম্পপত্তঃ অনুষ্ঠানাগ্নাসত্থেধ্বত্তিকিকলনা অনুপ্রধা। এবং বিধানাস্থাম্পপত্তঃ অনুষ্ঠানাগ্নাসত্থেধ্বত্তিকিকলনাগ্রমানাক্ত নিত্যানাম্। বিরোধাক্ত; বিক্রকেন্ট্রাম্নাত্ত—ত

নিত্যকর্মণি অমুষ্ঠীয়মানে * অক্তস্ত কর্মণ: ফলং ভূজাতে ইত্যভ্যুপগস্যমানে স এবোপভোগ: নিত্যস্ত কর্মণ: ফলমিতি, নিত্যস্ত কর্মণ: ফলাভাব ইতি চ বিরুদ্ধসূচ্যতে। কিঞ্চ কাম্যাগ্নিহোত্রাদাবস্থীগ্নমানে নিত্যমপ্যশ্বিহোত্রাদি তদ্রেণৈব অমুষ্ঠিতং ভবতীতি তদারাসহঃখেনৈব কাম্যাগ্নিহোত্রাদিফলমুপক্ষীণং স্থাৎ তত্তব্রহাৎ।

তন্মান্ন নিত্যানাং কর্মণামদৃষ্ঠফলাভাবং কদাচিদপ্যপপন্থতে। অতশ্চাবিদ্যা-পূর্ব্বকল্প কর্মণো বিল্লা এব শুভলাশুভল্প বা ক্ষমকারণমশেষতো ন নিত্য-কর্মান্দ্র্ছানম্। অবিলাকামবীজং হি সর্ব্যেব কর্ম। তথা চোপপাদিতম্ অবিল্পবিষয়ং কর্ম বিল্পবিষয়া চ সর্ব্যক্ষাসপ্র্বিকা জ্ঞাননিষ্ঠা "উভৌ ভৌ ন বিলানীতঃ নারং হস্তি ন হলতে" "বেদাবিনাশিনং নিত্যম্" "জ্ঞানযোগেন সাংখ্যানাং কর্মযোগেন যোগিনাম্," "অজ্ঞানাং কর্মসন্ধিনাম্," "তম্বিক্ত্যু …"গুণা গুণেষু বর্ত্তন্ত ইতি মত্মা ন সজ্জতে," "সর্ব্যকর্মণি মনসা সন্মান্তাজ্যে," "নৈব কিঞ্চিং করোমীতি যুক্তো মন্তেত তত্ত্বিং" অর্থাৎ অজ্ঞা করোমীতি। আক্রক্ষোঃ কর্ম কারণম্ আরুত্ত যোগস্থল্প শম এব কারণম্। উদারাল্তর্মোই-প্রজ্ঞা "জ্ঞানী তু আবৈর মে মতম্," "অজ্ঞাঃ কর্মিণো গভাগতং কামকামা লভত্তে" "অন্ত্যান্তিরয়েরা নাং নিত্যযুক্তা" যথোক্তমাত্মানমাকাশক্রম্ অক্সাব্যু-পাসতে "দদামি বৃদ্ধিযোগং তং যেন মামুপ্যান্তি তে" অর্থাৎ ন কর্মিণোহজ্ঞা উপ্যান্তি।

নিত্তকর্মণা অফ্টায়মানেন ইতি কচিৎ পাঠ: ।

[🕂] ভিন্নং দুখাতে ইতি কচিৎ।

[্]ৰান্দ্ৰ উপক্ষঃ নিজানাম্ ; স্বৰ্গাদিমহাফলম্বং কাম্যানাম্, অঙ্গেডিকৰ্তব্যতাষ্ট্ৰা বিক্যোম্বনতি কলকামিম্বমাত্ৰেণেতি ৰুচিদ্ ভেলো দৃশ্যতে।

ভগবৎকর্মকারিলা যে যুক্ততমা অপি কর্মিণাহজ্ঞান্তে উত্তরোত্তরহীনফলত্যাগাবদানসাধনা:। অনির্দেখ্যাক্ষরোপাসকান্ত "অবেষ্টা সর্বভৃতানান্" ইত্যাভ্রম্যায়পরিসমাপ্ত, ক্রমধনাঃ ক্রেরাধ্যায়াভ্রমায়ব্রেরাক্তজ্ঞাননাধনাশ্চ। অধিষ্ঠানাদিপঞ্চহেতৃক্সর্বকর্মসন্ন্যাসিনান্ আছৈকত্বাকর্ভ্যজানবতাং পরভাং জ্ঞাননিষ্ঠায়াঃ
বর্জমানানাং ভগবত্তব্বিদান্ অনিষ্ঠাদিকর্মফলত্রয়ং পরমহংসপরিপ্রাক্ষকানানেব
লক্ষতগবংশ্বরপাইত্মকত্বশরণানাং ন ভবতি। ভবত্যেব অভ্যেমান্ অজ্ঞানাং
কর্মিণামসন্ন্যাসিনামিত্যের গীতাশান্ত্রোকন্ত কর্ত্বব্যাকর্ত্বব্যার্থক্ত বিভাগঃ *।
অবিদ্যাপুর্ককত্বং সর্বন্ত কর্ম্মণোহসিদ্ধমিতি চেং, ন; ব্রহ্মহত্যাদিবং। যত্তপি শাত্রাবগতং নিত্যং কর্ম্ম, তথাপি অবিভাবত এব ভবতি।

ৰথা প্ৰতিৰেধশান্তাবগতমপি ব্ৰহ্মহত্যাদিলকণং কৰ্ম অনৰ্থকারণমবিষ্ঠাকামাদিদোৰবতো ভবতি অন্তথা প্ৰবৃত্তাহপপতে: তথা নিত্যনৈমিত্তিক কাম্যান্তপীতি।
দেহব্যতিরিকাত্মনি অজ্ঞাতে প্রবৃত্তিনিত্যাদিকর্মন্ত অন্তপপন্নতি চেৎ, ন;
চলনাত্মকন্ত কর্মণোহনাত্মকর্ত্তকন্ত 'অহং করোমি' ইতি প্রবৃত্তিদর্শনাং। দেহাদিসংঘাতেহহংপ্রত্যয়: গৌণঃ, ন মিণ্যা ইতি চেৎ, ন; তৎকার্যোহ্বপি গৌণত্মোপপতে:। আত্মীরে দেহাদিসংঘাতে অহংপ্রত্যয়ো গৌণো যণা আত্মীরে পুত্রে
'আত্মা বৈ প্রনামাদি' ইতি, লোকে চাপি 'মম গ্রাণ এবায়ং গৌঃ' ইতি
তদ্বং।

নৈবারং মিণ্যাপ্রত্যয়ঃ । মিণ্যাপ্রত্যয়য় স্থাণুপুরুবয়োরগৃহমাণবিশেষয়োঃ ।
ন গৌণপ্রত্যয়য় মুখ্যকার্যার্থয়৸ অধিকরণয়ত্যর্থয়াৎ লুপ্রোপমাশক্ষেন । বণা
'মিংহো দেবদন্তঃ' 'অয়িম ণিবকঃ' ইতি সিংহ ইব অয়িরিব চ ক্রোর্যাইপঙ্গল্যাদিশামান্তব্যাৎ দেবদ ভ্রমাণবকাধিকরণয়ত্যর্থমেব, ন তু সিংহকার্যময়িকার্যাং বা
গৌণশক্ষপ্রত্যয়নিমিত্তং কিঞ্চিৎ সাধ্যতে মিণ্যাপ্রত্যয়কার্যাং তু অনর্থমমূত্রবতীতি ।
গৌণপ্রত্যয়নিমত্তং কিঞানতি 'নৈব সিংহঃ দেবদন্তঃ' তথা 'নায়ময়িম ণিবকঃ'
-ইতি ৷ তথা গৌণেন দেহাদিসংঘাতেন 'আয়ানা ক্রতং কর্ম্ম ন মুখ্যেন অহংপ্রত্যয়বিবয়েণ আয়্যনা ক্রতং ত্যাং ৷ ন হি গৌণসিংহায়িভ্যাং ক্রতং কর্ম মুখ্যদিংহায়িভ্যাং ক্রতং ত্যাং ৷ ন চ ক্রোর্যোণ পৈঙ্গল্যেন বা মুখ্যসিংহায়োঃ কার্যাং
কিঞ্চিং ক্রিয়তে, স্বত্যর্থমেন উপক্ষীণয়াং ৷ স্ত্রয়মানৌ চ জানীতঃ 'নাহং সিংহঃ'
'নাহময়িঃ' ইতি ৷ ন হি 'সিংহস্ত কর্ম মম অয়েশ্চ' ইতি ৷ তথা 'ন্ সক্রাভত্য

গীতাশাৱোক ক'ৰ্বব্যাথ ছ বিভাগঃ ইতি কেচিৎ।

কর্ম মন সূথ্যন্ত আত্মন: ইতি প্রত্যরঃ যুক্ততরঃ তাৎ; ন পুন: 'অহং কর্তা মন কর্ম' ইতি।

যচাতঃ 'আত্মীরৈঃ স্থতীচ্ছাপ্রবল্ধিঃ কর্মহেতৃভিরাত্মা কর্ম করোতি' ইতি, ন;
তেবাং মিথ্যাপ্রত্যরপূর্বকতাং। মিথ্যাপ্রত্যরনিমিন্তেইানিষ্টাস্থতৃতক্রিরাফলকনিতসংশ্বারপূর্বকা হি স্থতীচ্ছাপ্রযন্তাদরঃ। যথা অমিন্ জন্মনি দেহাদিসংঘাতাভিমানরাগবেষাদিকতৌ ধর্মাধর্মে বিত্তকলামুভবন্চ, তথা অতীতে অতীত্তরেহণি
কর্মনি ইতি অনাদিরবিভাক্কতঃ সংসারঃ অতীতঃ অনাগতন্তামুমেরঃ। ততন্ত সর্ম্বক্মির্যাসাক্ জ্ঞাননিষ্ঠারাম্ * আত্যন্তিকঃ সংসারোপর্ম ইতি সিদ্ধ্য়।

অবিভাত্মকত্বাচ্চ দেহাভিমানভ তি প্রবৃত্তী দেহামপণতে: সংসারামপণতি:।
দেহাদিসংঘাতে আত্মাভিমান: অবিভাত্মক:। ন হি লোকে 'গবাদিভ্যোহভোহ্হম্
মঙ্কলানে গবাদর:' ইতি জানন্ তেরু অহমিতি প্রত্যাং মন্ততে † কন্দিং।
অজানন্ তু হাণী পুরুষবিজ্ঞানবং অবিবেকতো দেহাদিসংঘাতে কুর্য্যাং 'অহম্'
ইতি প্রত্যায়ম্, ন বিবেকতো জানন্। যন্ত 'আত্মা বৈ পুরুনামাসি' ইতি পুরেহহংপ্রত্যায়: স তু জন্তজনকসম্মনিমিন্তো গৌণ:। গৌণেন চাত্মনা ভোজনাদিবং
পরমার্থকার্য্যাং ন শক্যতে কর্ত্র্যা, গৌণসিংহাগ্রিভ্যাং মুখ্যসিংহাগ্রিকার্য্যবং।

অনুষ্টবিষয়চোদনা প্রানাণ্যাৎ আত্মকর্ত্তবাং গৌণৈদে হৈন্দ্রিয়াত্মভিঃ ক্রিয়তে ইতি চেৎ, ন; অবিভাক্ষতাত্মকরাৎ তেবাম্। ন গৌণা আত্মনো দেহেক্রিয়াদয়ঃ। কথং তহিঁ ? মিথ্যাপ্রত্যরেদিব অসক্ষাত্মনঃ সক্ষতা "আত্মনাণভ্যতে ‡ ? তদ্বাবে ভাবাৎ তদভাবে চাভাবাং। অবিবেকিনাং হি অজ্ঞানকালে বালানাং দৃগ্রতে 'দীর্ঘোহহম্' 'গৌরোহহম্' ইতি দেহাদিসংঘাতেহহৎপ্রত্যয়ঃ। ন ভূ বিবেকিনাম্ 'অল্ঞাহহং দেহাদিসংঘাতাং' ইতি বিজ্ঞানবতাং তৎকালে দেহাদিসংঘাতে অহংপ্রত্যয়ো ভবতি। তত্মামিথ্যাপ্রত্যয়াভাবেহভাবাৎ তৎক্ষত এব, ন গৌণঃ। পৃথগ্ গৃহ্মাণবিশেষসামান্তয়োর্হি সিংহদেৰদন্তয়োঃ অগ্নমাণবক্ষোর্বা গৌণঃ প্রত্যয়ঃ শব্দপ্রয়োগো বা স্থাৎ নাগৃহ্মাণসামান্তবিশেষয়োঃ।

ষত্তকং 'শ্রুতিপ্রামাণ্যাং' ইতি, ন; তৎপ্রামাণ্যস্ত অদৃষ্টবিষয়ত্বাং। প্রত্যকাদিপ্রমাণাত্বপলকে হি বিষয়ে অগ্নিহোত্রাদিসাধ্যসাধনসম্বন্ধে শ্রুতেঃ প্রামাণ্যম্,
ন প্রত্যকাদিবিষয়ে, অদ্টদর্শনার্থবিষয়ত্বাং প্রামাণ্যস্ত। তত্মায় দৃষ্টমিণ্যাজ্ঞান-

সর্ব্বর্শ্বসন্ত্র্যাসসহিতজ্ঞাননিষ্ঠয়া ইতি কচিৎ।

⁺ ইতি জানন্ তান্ অহমিতি মস্ততে কশ্চিৎ ইচিচ চ কেচিৎ পঠন্তি।

[‡] মিথ্যাপ্রভারেনৈর অনাশ্বনঃ সস্তঃ আত্মছমাপাদ্ধত্তে ইতি **কচি**ৎ।

নিমিত্ত অহংপ্রত্যরন্ত দেহাদিসংঘাতে গৌণতং কর্ম্মিতুং শক্যম্। ন হি শ্রুতি-শতমপি 'শীতোহ্যিরপ্রকাশো বা, ইতি ক্রবৎ প্রামাণ্যমূপৈতি।

ষদি ক্রয়াৎ 'শীতোহগ্নিরপ্রকাশো বা' ইতি তথাপ্যর্থান্তরং শ্রুতের্বিবন্ধিতং ক্রমান, প্রামাণ্যান্তথামূপপত্তেঃ, ন তু প্রমাণান্তরবিক্লন্ধং বা। কর্মণো মিথ্যাপ্রত্যয়বৎকর্ত্কভাৎ কর্ত্তরভাবে শ্রুতেরপ্রামাণ্যমিতি চেৎ, ন; ব্রহ্মবিস্তায়ামর্থবন্তোপপত্তেঃ।

কর্মবিধিশ্রতিবদ্ ব্রন্ধবিভাবিধিশ্রতেরপি অপ্রামাণ্যপ্রদঙ্গ ইতি চেৎ, ন;
বাধকপ্রত্যরামুপপতে:। যথা ব্রন্ধবিভাবিধিশ্রত্যা আত্মনি অবগতে দেহাদিদভবাতে অহংপ্রত্যয়ো বাধ্যতে, তথা আত্মন্তব আত্মাবগতিন কদাচিৎ কেনচিৎ
কথঞ্চিদপি বাধিতৃং শক্যা। ফলাব্যতিরে কাবগতে:, যথা অগ্নিক্ষণ্ড: প্রকাশশ্রেতি।
ন চ কর্মবিধিশ্রতবেরপ্রামাণ্যম্, পূর্ব্বপূর্বপ্রবিনিরোধেন উত্তরোত্তরাপূর্বপ্রবৃত্তিজননস্ত প্রত্যগাত্মাভিম্থ্যপ্রবৃত্ত্যৎপাদনার্থস্বাৎ। মিথ্যাত্মেংপি উপায়স্ত উপেয়সভ্যত্রা সত্যত্মেব স্থাৎ, যথা অর্থবাদানাং বিধিশেষাণাম্। লোকেহপি
বালোন্মন্তাদীনাং পর্যাদৌ পার্মিতব্যে চূড়াবর্দ্ধনাদিবচনম্। প্রকারান্তরন্থানাং
চ সাক্ষাদেব প্রামাণ্যসিদ্ধি: * প্রাগাত্মন্তানাৎ দেহাভিমাননিমিত্তপ্রত্যক্ষাদিপ্রামাণ্যবং।

যতু মন্তাদে স্বয়মব্যাপ্রিয়মাণোহপ্যাত্মা সন্নিধিমাত্রেণ করোতি, তদেব চ
মুখ্যং কতু ত্থিমাত্মন: । যথা রাজা স্ধামানের যোধের য্ধ্যতে ইতি প্রসিদ্ধং স্বয়ময্ধ্যমানোহপি সন্নিধানাদেব জিতঃ পরাজিতকেতি, তথা সেনাপতিব চিব
করোতি; ক্রিয়াফলসম্বন্ধণ রাজঃ সেনাপতেশ্চ দৃইঃ। যথা ঋত্বিক্কর্ম বজমানস্ত, তথা দেহাদীনাং কর্ম আত্মকতং ভাৎ তৎকলন্তাত্মগামিত্বাৎ। যথা চ'
লামকন্ত লোহলাময়িত্ত্বাৎ অব্যাপ্তভৈব ম্থ্যমেব কতু ত্বম, তথা চাত্মন ইতি।
ভদসৎ, অকুর্বতঃ কারকত্মপ্রসঙ্গাৎ। কারকমনেকপ্রকারমিতি চেৎ, ন; রাজপ্রভূতীনাং মুখ্যভাপি কর্ত্বন্ত দর্শনাৎ। রাজা তাবৎ স্বব্যাপারেণাপি ব্ধাতে;
বোধানাঞ্চ বোধায়ত্ত্বেন ধনদানেন চ মুখ্যমেব কর্ত্বম্, তথা জয়পরাজয়ফলোপভোগে। যজমানভাপি প্রধানত্যাগেন দক্ষিণাদানেন মুখ্যমেব কর্ত্বম্। তত্মাৎ
অব্যাপ্তভ কর্ত্বোপচারো যঃ স গোণ ইত্যবগম্যতে। যদি মুখ্যং কর্ত্বং
স্বব্যাপারলকণং নোপলভাতে রাজযজমানপ্রভূতীনাং তদা সমিধিমাত্রেণাপি

^{*} প্রামাণ্যং সিদ্ধন্ ইতি কচিৎ পাঠঃ।

কর্তিং ম্পাং পরিকল্পোত। যথা ভ্রামকশু লোহভ্রামণেন, ন তথা রাজ্যজ্ঞমানানীনাং স্বব্যাপারো নোপলভাতে। তস্মাৎ সন্নিধিমাত্ত্রেণাপি কর্তৃত্বং গৌণমেব। তথা চ সতি তৎফলসহজ্ঞাহপি গৌণ এব স্থাৎ। ন গৌণেন মুধ্যং কার্য্যং নিবর্ত্তাতে।

তমানসদেব এতদ্গীয়তে 'দেহাদীনাং ব্যাপারেণ অব্যাপৃত আত্মা' কর্ত্তা ভোক্তা চ স্থা' ইতি। লান্তিনিমিত্তং তু সর্বমুপপগুতে। যথা স্বপ্নে, মারারাং চৈবন্। ন চ দেহাত্মাত্মপ্রভান্তিসন্তানবিচ্ছেদের্ স্ব্পিসমাধ্যাদিরু কর্ত্তা ভোক্তবাত্মনর্থ উপলভ্যতে। তত্মান্ লান্তিপ্রভায়নিমিত্ত এবারং সংসারভ্রমঃ; ন তুপরমার্থ ইতি সম্যাগ্দর্শনাদত্যন্তমেবোপরম্ ইতি সিদ্ধন্ম ॥ ৬৬

আনন্দ গিরিটীকা । বৃত্তমন্ত অনস্তরশ্লোকতাৎপর্য্যাহ—কর্দ্মধোগেতি।
ধর্মবিশেষণাদধর্মান্মজ্ঞানং বারম্বতি—ধর্দ্মেতি। জ্ঞাননিষ্ঠেন মুমুকুণা ধর্মাধর্মম্বোঃ
ভাাজ্যত্বে প্রভিত্ত্ত্তী উদাহরতি—নাবিরত ইতি। মানেকমিত্যাদেব্যাহেশ্রেমাহ
—ন মত্ত্তোহ্নিতি। অর্জ্বন্ত ক্রিম্বাহক্তদল্লাদ্বারা জ্ঞাননিষ্ঠান্নাং মুধ্যাধিকারেহিপি তং পুরস্ক ত্যাধিকারিভাত্তগ্রোপদিদিক্ষিতভাদবিরোধমভিপ্রেত্যাহ —অহং
ত্বিতি। উক্তেহর্থে দাশনিকং বাক্যমন্তর্ক্রমতি—উক্তক্তেতি। ঈশ্বর্জ দ্বনীয়বন্ধননির্দনবারা ত্রংপাল্যিত্যান তে শোকাবকাশোহন্তীত্যাহ—অত ইতি।

পূর্বাপরালোচনাতো গীতাশান্ত্রং ব্যাথারোপসংক্তর ত ভাৎপর্য্যার্থথি নির্দ্ধারিতমপি বিচারদারা নির্দ্ধার্যার্ত্যুং বিচারমবতারশ্বতি—ত্যুদ্ধিতি। কিংশস্বার্থমেব ত্রেধা বিভন্ধতে—জ্যানমিতি। নিমিন্তাভাবে সংশয়স্তাভাগরায় নিরস্ততেতি মথা পৃচ্ছতি—কুত ইতি। তবদর্থাবজ্ঞাতকানেক লাক্যদর্শনং, তন্নিমিন্তমিত্যাহ—যজ জ্ঞাত্বেতি। কর্ম্মণামবশুকর্ব্যয়োপলভাগে তেভ্যোহপি নিংশ্রেম্ব প্রাপ্তিভাতীত্যাহ—কর্ম্মণ্যেবৃত্তি। তথাপি সমুদ্ধর-প্রাপকং নাস্তীত্যাশস্ক্যাহ—এবমিতি। সত্যাং সামগ্র্যাং কার্য্যমবশুস্কাবীভূগ্রুপকং নাস্তীত্যাশস্ক্যাহ—এবমিতি। সভ্যাং সামগ্র্যাং কার্য্যমবশুস্কাবীভূগ্রুপকং নাস্তীত্যাশস্ক্যাহ—এবমিতি। সল্পন্ধ সকলঞ্চ বিচার্য্যমিতি স্থিত্যেকং জ্ঞান-কর্মণে। সমুক্তিভ্রোর্মা পৃছতি—কিং পুনরিতি। প্রত্যেকং জ্ঞান-কর্মণে। মমুক্তিভ্রোর্মা মুক্তং প্রতি পরম্যাধনতেত্যবধারণমেব বিচারফলমিতি পরিহরতি—নিস্থিতি। সন্দেহপ্রয়োজনয়্যোর্দ্মিচারপ্রয়োজকয়্যোর্ভাবাৎ বিচারদারা পরসম্মক্রিসাধনং নির্দ্ধারণীয়মিতি নিগ্ময়তি—অত ইতি। এবং বিচারমব্রার্যা সিন্ধারং সংগৃহাতি—আত্যেতি।

मर्श्वहवाकाः विवृशन् वानावाश्वाकानात्भाशामविष्ठार नर्भवि - किर्मु ।

আপ্রবাক্তা ভদনাদিবদাহ—আজুনীতি। তানেশাবিদ্বাদনাদ্ববিশ্বাদান থাত্মিকাং প্রপঞ্চতি—মুমেতি। অনাদ্ববিদ্বাদার্থ্য প্রবাহরপেণানাদি-ভদনতোপক্ততি—অসা ইতি। নমু নেদম্পেরং জ্ঞানং নিবর্ত্তরভাবিরোধে-লোপের্বার চাহংপর্যনলনাত্মকতার্থক্রিরাকারি্বাভাবাৎ তর্ত্তাহ—উৎপাত্মান-মিতি। কথং তম্ভ কারণাবি্যানিবর্ত্তক্রমিত্যাশক্ত কার্যাবি্যানিবর্ত্তক্ষ-দুর্টেরিত্যাহ—কর্ম্মেতি। আত্মভানপ্রত্যাদিসংগ্রহবাক্তে তুশস্ক্রোত্যবিশেষা-ভাবাৎ তদানর্থক্যমাশক্ষাহ—তুশব্দ ইতি। পক্ষরব্যাবর্ত্তক্রমেবান্ত স্ট্রতি —নেত্যাদিনা। ইতশ্চ কর্মাসাধ্যতা মুক্তেরিত্যাহ—অকার্যান্তাচিতি। "এব নিত্যো মহিমা" ইতি ক্রতে: নিত্যতেন মোক্সভাব্যান্তার তর হেত্বপেক্ষে-ভাগপাদরতি—নহীতি। জ্ঞানেনাপি নোক্ষো ন ক্রিরতে চেৎ তর্হি কেবলমপি জ্ঞানং মুক্তান্থপ্রক্রমিতি কুত্তক্ত তর্ত্র হেত্বধীরিত্যাশক্তে—ক্রেক্তি।

জ্ঞানাবর্ত্তাং নৃব্রতি—নেতি। তদেব প্রপঞ্চরত—অবিন্ত্রেতি।

্ষত্তক্ষবিভানিবর্ত্তকজ্ঞানশ্র কৈবলাফলাবসায়িত্ব দৃষ্টমিতি তত্ত দৃষ্টাভ্রমাহ —রক্ষাদীতি। উক্তে বিষয়ে তমে।নিবর্ত্তকপ্রকাশণ কলিন্ ফলে পর্য্য বদানং ততাহ—বিনিবুত্ত্তি। প্রদীপপ্রকাশন্ত সর্পভ্রমনিবৃত্তিবারা রচ্ছ মাত্রে পর্য্যবসানবদাত্মজ্ঞানভাপি তদবিভানিবৃত্ত্যাত্মকৈবল্যাবদানমিতি দাই কি-মাহ—তথেতি। ভাতাদীনাং জাননিষ্ঠাহেতৃনাং কর্মান্তরে প্রবৃত্তিসম্ভবাং কৰ্মনহিতৈৰ সা কৈবল্যাবসায়িনীতি চেৎ তত্ত্ৰাহ *—দৃক্টাৰ্থায়ামিতি। কর্মসাহিত্যং জ্ঞাননিষ্ঠারা দৃষ্টাম্ভেন সাধররাশকতে—ভুজ্জীতি। ভুক্তিকিয়ারা लोकिका देविकाम्हाबिद्दांजानिकियायाः नशस्त्रीनवनिद्दशंजानिकियाया स्नान-ভূজিফলে তৃপ্তাথো প্রাপ্তেহণি স্বর্গাদৌ সাহিত্যমিতার্থ:। তদ্ধেতে চালিংহাত্রাদাবর্ধিল্পষ্টের্পুক্তৎ তত্ত্ব সাহিত্যৎ ন তথা মুক্তিফলজান-নিষ্ঠালাভে স্বৰ্গাদৌ তদ্ধেতৌ বা কৰ্মণাৰ্থিত্বং তেন জ্ঞাননিষ্ঠাকৰ্মণোৰ্ন সাহিত্যমিতি পরিহরতি—নেত্যাদিনা। সংগ্রহবাকাং বিরুগোতি—কৈবলোতি। জ্ঞানে ফলবতি লব্ধে ফলাস্তরে তত্ত্বেতোঁ চ নার্থিতেতাত্ত্র দৃষ্টাস্তমাহ—সর্ববিত ইতি। गर्सख मः भ्रुष्ठः व्यार्थमूनक्षिणि मम्द्राक्तिस्वरुक्तः सौनानि छित्रिन् श्रीरथं न তড়াগাদিনিশ্বাণক্রিরারাং তদধীনে চ দানাদে কন্তচিদর্থিত্বং তথা প্রক্লতেহ্পী-जार्थ:। निविधिनवकरण कारन गरक गांधिनवकरण कर्मान नाथिविर्मिरछाछ-

^{• &}quot;চেরেডাং" ইতাপি কেচিৎ পঠন্ধি।

দৃষ্টান্তেন ক্ট্যুভি — নহীতি। কৰ্ণঃ সাভিশয়কলম্কুমুণদীব্য ফলিভমাহ— তন্মামেতি।

জ্ঞানকর্মণোঃ সাহিত্যাসম্ভবমপি পুর্বোক্তং নিগময়তি—ন মটি প্রকাশতমনোরিব মিণো বিরুদ্ধয়োত্তয়োঃ সাকাদেক মিন সাহিত্যমিত্যর্থঃ। নহু জ্ঞানদেব মোগং সাধ্যদাত্মসহায়ত্বেন কর্মাণেকতে করণকোপকরণাপেকদাৎ ভত্তাহ—নাপীতি। জ্ঞানমুৎপত্তো বজ্ঞাদ্বণেকমণি (मार्श्वर करन छम्एभक्र मार्शिवनाखतीत्रक्षन मुक्कब्रमाबात्रह्वानिछार्थः। বহুক্তমিতিকর্ত্তব্যবেন জ্ঞানং কর্মাপেকমিতি তত্ত্বাহ—অবিস্ত্যেতি। **জ্ঞানস্তা**-জ্ঞাননিবর্দ্ধকত্বাৎ তত্র কর্ম্মণো বিক্রমতন্ত্রা সহকারিত্বাবোগাল ফলে তদপেকেতার্থ:। কর্মণোহপি জ্ঞানবদজ্ঞাননিবর্ত্তকত্বে কুতো বিক্লব্ধতেভ্যাশঙ্কাহ—নহীতি। কেব-লক্ত সমুচ্চিতক্ত বা কর্মণো মোকে সাকাদনহয়ে ফলিতমাহ—অত ইতি। কেবলং জ্ঞানং মুক্তিসাধনমিত্যকং ●তরিবেধয়রাশহতে ঃ—নেত্যাদিনা। নিষেধ্যমনৃষ্ণ নঞ্জধনাহ—যুদ্ধাবদিতি। নিত্যাকরণে প্রত্যবায় প্রাপ্তেরিভি হেতৃং প্রপঞ্চ তি — যত ইতি। জ্ঞানবতোহপি নিত্যার্হানভাবগ্রকতার কেবল্**জানভ** देक्वनारहजूर्डेडार्थः। देक्वनाञ्च চ নিতাখাদিতাক্ত ব্যাবর্দ্তা দর্শরতি—নম্মিতি। যদি নিত নৈমিত্তিককর্মাণি শ্রোভান্তকরণে প্রত্যবারকারীণ্যবশ্রামুঠেরাল্লেবং ভৰ্ষি ভেডাঃ সমৃচ্চিতেভাগ্ৰম্ফিতেভাশ্চ মোকো নেত্যুক্তৰাং কেবলজানত চ অভদ্ধে হুখাদনিবন্ধনা মুক্তির্নিধ্যিদিত্যর্থ:। কৈবল্যস্ত চেত্যাদি ব্যাকুর্বন্ধনি শ্রাক প্রদান্ত প্রত্যাদিশতি নিষ দোষ ইতি। মুক্তের্নিত্যছেন অবত্রসিদ্ধের্ন তদ-ভাৰশক্ষেত্যক্তং প্ৰপঞ্চয়তি ← নিত্যানামিতি ৷ কাম্যকর্মবশাং ইইশরীয়াপতিং শহিষোক্তং—কাম্যানাঞ্চেতি।

আরক্তর্পবশাৎ তর্হি দেহাস্তরং নেত্যাহ—বর্ত্ত্রানেতি। তর্হি দেহাস্তরং শেষকর্মণা স্থানিত্যাশক্ত কর্মাশরকৈতভবিক্ষারেত্যাহ—পতিতেই স্মিন্নিতি। রাগাদিনা কর্মান্তরং ততো দেহাস্তরঞ্চ ভবিষ্যতীত্যাশক্তাহ—রাগাদীনা-ক্ষেতি। আত্মনঃ ক্ষরণাবস্থানমিতি সম্বন্ধঃ। অতীতাস্থ্যাজন্মভেদেক্তিভ্র কর্মণো নানাফলস্থানারক্ত ভোগেন বিনাহক্ষরাৎ ততো দেহাস্তরারস্তাকৈত্বভিত্তি কর্মণো মানিক্সার মুঁক্তের্বত্মসিদ্ধতেতি চোদরতি—অতিক্রান্তেতি। ক্রোক্তকর্মনিমিত্তং দেহাস্তরং শহিতব্যমিত্যাহ—নেতি। নিত্যনৈমিত্তিক

[&]quot;ভব্লিবেধনাশহতে" ইতি পাঠান্তরমপি কচিৎ।

কর্মাণি শ্রৌতান্তবশুসমুষ্টেয়ানি তদমুষ্ঠানে চ মহানায়াসস্ততো ত্ঃখোপভোগঃ তস্তোজানারর কর্মফলভোগভোগপোগনার ততো দেহাস্তরমিত্যাহ—
নিত্যেতি। নিত্যাদিনা ছরিতনির ভাবপ্যবিরোধার স্ক্রতনির ভিস্ততো দেহাস্তরমিত্যাশহ্য স্কৃতস্থ নিত্যাদের স্তাহে হুলাররছে চ সায়বিরুদ্ধস্থ তস্থাসিরছাৎ ততোদেহাস্তরাবোগারিতাাদের কর্মছে চ ন তক্ষ ফলাস্তরনিতি মন্থা যথা প্রায়শিত ক্র্যুণান্তহরিতনিবর্ছ পার্থং ন ফলাস্থরাপেক্ষং তথেদং সর্বমিপি নিত্যাদিক র্ম্যোপা ব্রপাপ
নিরাকরপার্থং তিমিয়েব পর্যাবস্তার দেহাস্তরারস্তকনিতি পক্ষাস্তরনাহ—প্রায়শিক্তবাদিতি। তথাপি প্রারন্ধনাদের দেহাস্তরং শক্ষাতে নানাহান্মারস্তকাণামপি তেষাং বাবদধিকারস্তারেন সন্তবাদিত্যাশহ্যাহ—আর্ক্রানাক্ষেতি। পূর্বাজিত্বস্থাণানেবং ক্ষীণন্তেংপি কানিচিদপূর্ব্বকর্মাণি দেহাস্তরনার ভেরমিত্যাশহ্যাহ
—অপুর্বাণাক্ষেতি। বিনা জ্ঞানং কর্মন্তির শক্ষরেতি পক্ষং শ্রুত্যবিস্তেন
নিরাচঠে—নেত্যাদিনা। বিশ্বতেংক্ষীনারেতি শ্রুতেরিতি সম্বন্ধঃ। এবকারার্থং
বির্থক্যেতাাদিভাগং ব্যাকরোতি—অন্য ইতি।

"ষদা চাৰ্যবদাকাশং কেইয়িষান্তি মানবা:। তদা দেবমবিজ্ঞায় তঃখহাজো ভবিষ্যতীতি॥"

ইতিশ্রতিমর্থতোহমুবদত্তি—চন্মুবদিতি। শ্রোতার্থে স্বৃতিৎ সংবাদরতি— ভ্রানাদিতি। কিঞ্চ ঘদীয়স্তায়স্যাত্ত্থাহ্যমানহীনছেনাভাগত্যা পুণাব র্মণামনার্ক্ত ফলানাং ক্ষয়ভাবে দেহান্তরারস্তমন্তবার জ্ঞানং বিনা মুক্তিরিত্যাহ—অনারস্ক্রেতি ! তথাবিধানাং কর্মণাং নান্তি সম্ভাবনেত্যাশস্ক্যাহ—যুগেতি। অনারক্ষণ-পুণ্যকর্মভাবেহপি কথং মোক্ষামূপপত্তিরিতি তত্তা⁵—তেষাপ্রেটি। কর্মকরাত্বপততা। মোক্ষাত্বপপত্তিরিতি তত্তাগ্র-ধর্ম্মেতি। কর্মণা পিতৃলোক ইতি শ্রুতিমাশ্রিতা কর্মক্রে হেত্বস্তরমাহ—নিত্যানামিতি। ষথোক্তমর্থং সমর্থরতে—বর্ণা ইতি। প্রেত্য কর্মফলমমুভুর বিশিষ্টজাত্যাদিভাজো জন্ম প্রতিপত্মন্ত ইত্যেতদাদিপদার্থঃ। যত নিত্যামুদ্ধানায়-সকু:খভোগস্য তৎফলভোগস্থমিতি তদিদানীমমুবদতি—যে ত্বিতি। নিতাাক্ত-ক্ষীয়মানান্তায়াসপ্যান্তানীতি শেষ:। তথাপি নিতানাং কাম্যানামিব স্বরূপাতি-রিকং ফলমাশক্ষ্য বিধ্যুদ্দেশে তদশ্রবণান্মৈবমিত্যাই—নৃত্তিত । বিধ্যুদ্দেশে ফ্লাশ্রতী তৎকামনায়ানিমিন্ডস্যাভাবার নিত্যানি বিধীয়েররিত্যাশস্ক্যাহ— জীবনাদীতি। ন নিত্যানাং বিধ্যাসিদ্ধিরিতি শেব:। অমুভাষিতং দুষয়তি— নঞৰ্থনাহ—যত্নক্তমিতি। নেত্যাদিনা। বিবৃণু ক্লিষেধ্যমনুগু তদেব

অপ্রব্রানামিত্যাদিহেতুং প্রপঞ্চয়তি —নহীতি। কর্মান্তরারক্ষেপি দেহে ছবিতফলং নিত্যায়ন্তানায়াদহংখং ভূজ্যতাং কাম্পপত্তিরত্যাশস্থাহ -অন্যতেতি। বহুকং ছংখফলবিশেষাম্পপত্তিশ্চ স্তাদিতি হতুপপাদয়তি—তত্ত্যতি। সম্ভাবিতানি তাবদনস্থানি দক্ষিতানি ছবিতানি তানি চ নানাছংখফলানি, বদি তানি নিত্যায়ন্ত্রামালয়কপং ছংখং তন্মাত্রফলানি কল্পোরন্ তদা তেবেং কল্পমানের সংস্থানিত্যাহানিত্রায়াসমাসাদয়তো যো ছবিতক্ততো ছংখবিশেষো ন তৎফলং ছবিতফলানাং ছংখানাং হতুলাদতো নিতাং কর্মা যথাবিশেষিতং ছবিতক্তহংখবিশেষফলক্ষিত্যযুক্তমিত্যর্থ:। কিঞ্চ নিত্যায়ন্ত্রামালহংখমাত্রফলানি চেন্দ্রিতানি কল্পান্তে তদা হন্দশিকতরাগাদিবাধস্থ রোগাদিবাধায়াশ্চ ছবিতনিমিত্ত ছবিত্রকৃত্ত ভিল্ল হিন্দ্রালয়িক্সান্তর্থনা ছবিত্রকৃত্ত ভিল্ল নিত্যায়ন্ত্রানায়াসছংখনের ছবিত্রকৃত্যাহি—ছবেন্ত্রতি। ইতশ্চ নিত্যায়ন্ত্রানায়াসছংখনের ছবিত্রকল্মিত্যযুক্তমিত্যাহি—বিত্যতি। ছংখমিতি ন শক্যতে কল্পবিত্রমিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। যদি তদেব তৎফলং ন তর্হি শিবসা পাষাণবহনাদিছংখং ছবিতকৃতং ন চ তৎকারণং অক্তৎ ছংখসাতৎকার্য্যাদতত্ত্বাকৃষ্টিত্যর্থ:।

নিত্যাম্ঠানায়াদহ:খম্পাতহরিতফলমিত্যেতদপ্রকৃতত্বাচ অযুক্তং বকুমিত্যাহ —অপ্রকৃত্তঞ্তি। তদেব প্রপঞ্চিতৃৎ পৃচ্ছতি—কথ্মিতি। <mark>তত্তাদৌ</mark> প্রক্তনাহ--অপ্রসূত্তেতি। তথাপি কণনশাকনপ্রকৃতবাদিস্বং প্রহতকণ্ডমপ্রস্থ চদ্ণ্ডণিতি প্রাচীনত্রিতৃগ্তবিশেষা**হুপ্গ্**মাদ-বিশেষেণ স্বিষ্টেব তন্ত প্রস্তুদলহাৎ নিত্যামুচানালাসহংখদলম্বসম্বানাপ্রকৃত-বাদিতেতি শঙ্কতে—অথেতি। পূর্ণ্বোপাত্ত্রিতভাবিশেষণার্দ্ধফলতে বিশেষণা-নর্থক্যমিতি পরিহরতি—তত ইতি। হরিতমাত্রদ্য আরক্ককণ্ডেন অনারক্ ফলস্য তদ্যোক্তফলবিশেষবস্থার প্রপত্তেরিতার্থ:। পুর্রোপাতত্রিতমার**র**ফলকে। ভোগেটনৰ তৎক্ষয়সম্ভবাৎ তির্বৃত্যর্থৎ নিত্যং কর্ম ন বিধাতব্যমিতি দোষাম্বর-ইতশ্চ নিত্যাহ্ঠানায়াসহঃখং মাহ-নিভ্যেতি। নোপাত্তপ্রিতক্ল-মিত্যাহ—ক্রিঞ্জেত। তদেব স্ফোরয়তি—শ্রুতস্তেতি। বধা ব্যায়াম-গমনাদিক্বতং হু:ধং নাজ্ঞস্য ছবিত্যােষ্যতে তৎফলম্বসম্ভবাৎ তথা নিত্যুস্যাপি শ্রুত্তক্ষ্যাত্মষ্টিতস্যায়াসপুর্যান্তস্য ফলান্ডরাম্পগনাদম্ভানায়াসহংখনেব চেৎ ফলং তর্হি তত্মাদের তদ্ধনিং তদ্য ন ছ্রিতফলত্বং করাং নিত্যফলত্বসম্ভবাদিত্যর্থ:। •হঃথফরারে নিত্যানামনমুঠানমেব শ্রেয়ঃ স্যাদিত্যাশক্ষ্যাহ—জীবনাদীতি। নিত্যানাং ছরিতদক্ষামুপপত্তৌ হেবস্তরমাহ —প্রায়ুশ্চিত্তবদিতি।

প্রশক্ষ তি যি যি বিশ্ব বিশ্র

ইতক্চ নিত্যায়্ঠানায়াসহঃখমেবোপাত্তহ্বিত্তক্দমিত্যাশক্যং বক্তুমিত্যাহ—
কিঞ্চান্তাদিতি। কাম্যায়্ঠানায়াসহঃখমপি ছবিত্তক্দমিত্যুপগমাৎ প্রসঙ্গমেষ্ঠকমাশক্ষাহ—তথা চেতি। বিহিতানি তাবদ্বিত্যানি নচ তেরু ফলং শ্রুতং
ন চ বিনা কলং বিধিঃ তেন ছবিতনিবহ'ণার্থানি নিত্যানীত্যর্থাপদ্ধ্যা কল্পতে ন
তেরু চ সা যুক্ষা কাম্যায়্ঠানাদপি ছবিতনিবৃত্তিসম্ভবাদিত্যর্থ:। কিঞ্চ নিত্যাম্ত্রমুঠানায়াসহঃখাতিবিক্রক্লানি বিহিত্ত্বাৎ কাম্যবদিত্যম্মানাৎ ন তেবাং
ছবিতনিবৃত্ত্যর্থতেত্যাহ—এবমিতি। কাম্যাদিকর্ম্ম দৃষ্টাস্তম্ম্যুক্তম্য নিব্যাম্বাতাচ্চ নিত্যায়্টানাৎ ছবিত্তক্লভোগোক্তিরয়ুক্তেত্যাহ—বিরোধাচেচতি। তদেব প্রপঞ্চরতি—বিরুদ্ধক্তি। ইদংশব্দার্থমেব বিশদয়তি—
নিত্যেতি। অন্তস্য কর্মণো ছবিত্যস্যতি যাবৎ—স এবেতি। যদনন্তবং বন্তবত্তি
তৎ তস্য কার্য্যমিতি "নিয়্মাদিত্যর্থ:। ইতক্চ নিত্যায়্ট্রানে ছবিত্তক্লভোগা ন
সিধ্যতীত্যাহ—কিঞ্চতি। কাম্যায়্ট্রান্স্য নিত্যায়্ট্রান্স্য চ যৌগপ্যাম্নিত্যায়্ট্রান্স্যান্ত্রাম্ন্র্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাম্নির্যাদিতি।
তন্ত্রত্বাদিতি।

নিত্যকাম্যাষ্টানয়োবৌগপভেংপি নিত্যাষ্ঠানায়াসহঃপাদশ্রদেব কাম্যাষ্ঠান
হলং শ্রুতজাদিতি শহুতে—অথেনি। কাম্যাষ্ঠানয়ল নিত্যাষ্ঠানায়াস
হংথান্তিরক্তেং তর্হি কাম্যাষ্ঠানায়াসহঃথং নিত্যাষ্ঠানায়াসহঃথঞ্চ মিথো ভিন্তং

স্যাদিত্যাহ—তদ্দসুষ্ঠানেতি। প্রস্কল্যেইজমাশক্য নিরাচ্ছে—ন চেতি। দৃষ্ট
বিরোধনেব স্পষ্টয়তি—ন হীতি। আছ্জানবদন্তিহোত্রাদীনাং মোক্ষে সাক্ষাদ্বরো

নেত্রত্রাক্তদণি কারণমন্তীত্যাহ—কিঞ্চান্ডাদিতি। ওদেব কারণং বির্ণোভি

—অবিহিত্রিমতি। বৎকর্ম মর্দনভোজনাদি তয় শাস্ত্রেণ বিহিতং নিষিদ্ধং বা

ভদনস্তর্মতাং তথাক্তবাদিত্যথঃ। শাস্ত্রীয়ং কর্ম তু নানস্তর্মসনানস্তর্মসাচাদিভদ্মাণতো জ্ঞানে দৃষ্টফলে নাদৃষ্টকলং কর্ম সহকারি ভবতি, নাপি স্বয়্বমেব দৃষ্টফলে

মোক্ষে কর্ম প্রবৃত্তিক্ষমনিতি বিবক্ষিত্বাহ—ন ত্বিতি। শাস্ত্রীরদ্যাম্বিহোত্রাদেরপি ফলানন্তর্য্যে ধর্গাদীনামনস্তরমম্বপলি * বিরুধ্যেত—ততত্তেম্বপি তথাবিধ্দলাপেক্ষয়া প্রবৃত্তিরম্ভিহোত্রাদির ন স্যাদিত্যাহ—তদ্বিত। কিঞ্চ নিত্যানাম্প্রিহোত্রাদীনাং নাদৃষ্টং ফলং তেবামের কাম্যানাং তাদৃক্ ফলং ন চ হেতুং বিনারং বিভাগো ভাবীভ্যাহ— অগ্নিহোত্রাদীনামিতি। ফলকামিত্বমাত্রেণেতি। ন স্যাদিতি পূর্বেণ সম্বন্ধ:। যানি নিত্যান্তর্মিহোত্রাদীনি যানি চ কাম্যানি তেবাম্ভরেষামের কর্মপ্রকাপবিশেষাভাবেহপি নিত্যানাং তেবামকুর্চানায়াসহংখনাত্রেণ করেয়া ন ফলান্তরমন্তি, তেবামের কাম্যাদামকাভাধিক্যাভাবেহপি ফলকামিত্বমধিকারিণ্যস্তীত্যেতাবেল্লাত্রেণ স্বর্গাদিমহাফলত্বমিত্যরং বিভাগো ন প্রমাণবানিত্যর্থ:।

উক্তবিভাগাযোগে ফলিতমাহ—তুস্মান্ত্রেতি। কাম্যবন্নিত্যানামপি পিতৃ-লোকাপ্তদৃষ্টফলবত্ত্বে তুরিতনিবৃত্ত্রর্থন্বাবোগাৎ তাদর্থ্যেনান্দ্রবিষ্ঠেবাভ্যুপগন্তব্যেত্যাহ — অত্তশ্চেতি। ওভাওভাত্মকং কর্ম দর্মনবিদ্বাপূর্বকঞ্চেদশেষত্তহি তস্য ক্ষ্কারণং বিষ্ণেত্যুপপন্ততে ন তু সর্কাং কর্মাবিন্তাপুর্ককমিতি সিদ্ধমিত্যা-শন্ধাহ—অবিদ্যোতি। তত্ত্ব হিশক্ষোতিভাং যুক্তিং দর্শরতি—তথেতি। ইতশ্চাবিশ্ববিষয়ং কর্মেত্যাহ—অবিদ্বদিতি। অধিকারিভেদেন নিষ্ঠাবন্ধ-মিতাত বাক্যোপক্রমমমুকুলয়ন্ আত্মনি কর্তৃংং কর্মাত্রখারোপঃন্ ন জানাতাা-স্মানমিতি বদতা কর্মজ্ঞানমূলমিতি দর্শিতমিত্যাহ—উভাবিতি। স্বান্ধানং যাপাতথ্যেন জানন কর্ত্তবাদিরহিতো ভবতীতি ব্রুবতা কর্মসন্ন্যামে জ্ঞানবতো-২ধিকারিত্বং স্থচিতমিত্যাহ—বেদ্রে। নিষ্ঠান্বয়মধিকারিভেদেন বোদ্ধব্য-মিতাত্রৈব বাক্যান্তরমাহ—জ্ঞানেতি। ন বুদ্ধিভেদং জনরেদিতাত চাবিষ্যা-মূলছং কৰ্ম্মণঃ স্থায়তা কৰ্মনিষ্ঠাবিদ্বিদ্বানুমোদিতেত্যাহ—অজ্ঞানামিতি। যত্তঃ বিদ্বিষয়া সন্ন্যাসপূৰ্ব্বিকা জ্ঞাননিষ্ঠেতি তত্ত্ৰ তত্ত্ববিভূ মহাবাহো গুণকৰ্দ্ম-বিভাগন্নোরিত্যাদি বাক্যমুদাহরতি—তত্ত্ববিত্ত্বিতি। তত্ত্বৈব বাক্যাস্তরং পঠতি —সুৰ্ব্বেতি। বিছবো জ্ঞাননিষ্ঠেত্যত্ত্বৈব পাঞ্চমিকং বাক্যান্তরমাহ— নৈবেতি। তকৈবার্থদিদ্ধনর্থং কণমতি—অজ্ঞ ইতি। সম্ভত ইতি সম্বন্ধঃ। অজ্ঞস্য চিত্তভদ্যর্থং কর্ম ভদ্দচিত্তস্য কর্মসন্ন্যাসো জ্ঞানপ্রাপ্তো হেতুরিত্যতা বাক্যাস্তরমাহ ু আরুরুক্তে রিভি। বথোক্তে বিভাগে সাগুমিকং বাকামস্থেশমিত্যাই

^{*} অমুপল্বীন বিক্ষাত ইতি কচিৎ পুস্তকে !

—উদার। ইতি। এবং ত্ররীধর্মমিত্যাদি নাবমিকং বাক্যম্ অদিবিষধ কর্মেত্যত্ত প্রমাণয়তি—অজ্ঞা ইতি। বিছমঃ সন্ন্যাসপূর্ব্দিকা জ্ঞাননিষ্ঠেত্যত্ত্বৈব নাবমিকং বাক্যান্তরমাহ—অন্যথা ইতি। মামিত্যেত্ব্যানষ্টে—মথোক্তমিতি। তেবাং সতত্যকুলামিত্যাদি দাশমিকং বাক্যাং তত্ত্বৈব প্রমাণয়তি—দদামীতি। বিস্থাব্দামেব ভগবং প্রাপ্তিনিদে শিদিতরেষাং তদপ্রাপ্তিং হচিতেত্যুর্থনিদ্দার্থমাহ—
অর্থাদিতি।

নম্ব ভগবৎকর্মকারিণাং যুক্ততমত্বাৎ কর্মিণোহপি ভগবন্তং বাস্তীত্যা-শঙ্ক্যাহ—ভগবদিতি ৷ যে মংকর্মকদিত্যাদিস্তায়েন ভগবৎকর্মকারিণন্তে ষভপি যুক্ততমা: তথাপি কর্মিণোহজ্ঞা: সম্ভোন ভগবন্তং সহসা গ্রমহ্স্তী-ত্যথ:। তেষামন্ত্রপে গমকং দর্শরতি —উত্তরোক্তরেতি। চিত্তসমাধানমারত্য ফলতাাগপর্যান্তং পাঠক্রমেণোত্রে ত্রেরং হীনসাধনোপাদানাদভ্যাসাসমর্থস্ত ভগবৎ-কর্মকারিছাভিধানান্তগ্রৎকর্মকারিণামজ্ঞত্বং বিজ্ঞাত্মিতার্থঃ। যেত্রকরমনির্দেশ্র-মিত্যাদিবাক্যাবষ্টভেন বিদ্বাবিষয়বং সন্ত্র্যাসপুর্দ্ধকজ্ঞাননিষ্ঠায়া নির্দ্ধারয়তি-অনির্দ্দেশ্যেতি। উক্তনাধনান্তেন তে নন্ন্যানপূর্বকজ্ঞাননিষ্ঠায়ামধিক্রিয়েরন্নিতি শেষ:। কিঞ্চ ত্রয়োদশে যাগ্রমানিত্বাদীনি চতুর্দণে চ প্রকাশঞ্চ প্রবৃত্তিঞ্চ ইত্যা-দীনি পঞ্চদশে চ যাক্সক্ষরাদীনি উক্তানি তৈঃ সর্বৈঃ সাধনৈঃ সহিতা ভবস্তানির্দে-খ্রাক্ষরোপাসকান্ততোহপি তে জ্ঞাননিষ্টায়।মেবাধিক্রিরেরিত্যাহ —ক্ষেত্রেতি। নিষ্ঠান্বয়মধিকারিভেলেন প্রতিষ্ঠাপ্য জ্ঞাননিষ্ঠানামনিষ্টনিষ্ঠং মিশ্রমিতি ত্রিবিধং কর্মফলং ন ভবতি, কিন্তু মুক্তিরেব কর্মনিষ্ঠানান্ত ত্রিবিধং কর্মফলং ন মুক্তিরিতি শাস্ত্রার্থবিভাগমভিপ্রেতমুপদংহরতি—অধিষ্ঠানাদীতি। বহক্তমবিভাকামবীজং দর্বং কর্ম্মেতি তত্ত্ব শাস্ত্রাবগতক্ত কর্মনোহবিত্যাপূর্বকত্বাত্বপণত্তেরিভ্যাগিপতি— অবিদ্যোতি। দৃষ্টান্তেন সমাধন্তে—্নেতি। তত্রাভিমতাং প্রতিজ্ঞাং বিভক্তে যগপীতি।

উক্তং দৃহাস্তং ব্যাচটে—যুথেতি। অবিখাদিমতো ব্রহ্মহত্যাদি কর্মেতাক্ত হেতুমাহ—অন্যথেতি। দাই জিকং গৃহাতি—তথেতি। তামপ্যবিখাদি-মতো ভ্ৰম্ভীত্যবিখাদিপূর্ককংং তেষামেবিত্যামিতার্থ:। পারলৌকিককর্মস্থ দেহাখাতিরিকাম্মজানং বিনা প্রবৃত্ত্যবোগান্ন তেষামবিভাপূর্ককভেতি শক্তে— ব্যতিরিক্তেতি। সভ্যপি ব্যতিরিক্তামাম্মজানে পারমাথিকাম্মজানাভাবামিথ্যা-জ্ঞানাদেব নিত্যাদিকর্মস্থ প্রবৃত্তেরবিখাপূর্ককছং ভেষামপ্রতিহতমিতি পরিহরতি —নেত্যাদিনা। কর্মপ্রকামাম্মকর্মকার্মকর্ত্ত্বং তম্প নিজিম্বাৎ দেহাদি- সজ্বাতস্থ তু সক্রিরন্থাৎ তৎকর্ত্তকং কর্ম যুবং তথাপি সজ্বাতে মমাজিমানছারাহং করোমীত্যাত্মনো মিণাধীপূর্ব্বিকা কর্মণি প্রবৃদ্ধি তেনাবিদ্যাপূর্ব্বক্ষং
তক্ম যুক্তমিত্যর্থ:। যত্ত্বং দেহাদিসজ্বাতেহহমভিমানস্থ মিণাজানত্বং তদাক্ষিণতি—দেহাদীতি। অহং ধিয়ো গৌণত্বে তৎপূর্ব্বকর্মস্থপি গৌণস্বাপক্তে
রাশ্বনোহনর্থাভাবাৎ তন্নির্ব্রুর্থং হেহম্বেরণং ন স্থাদিতি দ্বয়তি—নৈতি।
ক্রত্তমের প্রপঞ্চয়নাদী চোলং প্রপঞ্চয়তি—আত্মীয় ইতি। তক্র শ্রুত্তমন্ত্বদ্দীয়ভ্যাহ—হাথেতি। দশিতশ্রুতেরাত্মীয়ে প্রত্তহংপ্রতায়ো গৌণো যথা
সক্ষাতেহপ্যাত্মীয়েহহং প্রতায়ন্তপাযুক্ত ইত্যর্থ:। ভেদধীপূর্ব্বকরং গৌণবিয়ো
লোকে প্রদিদ্ধনিত্যাহ—লোকে চেতি। লোকবেদাম্বরাধেনাত্মীয়ে সজ্বাতেহহংধীরপি গৌণী স্থাদিতি দাই জিকমাহ—তদ্বদিতি।

মিথ্যাধিয়োহপি ভেদধীপূর্দ্ধকঃসম্ভবাদাল্পীয়ে সংঘাতেইহংধিরো মিথ্যাঃমেব কিং ন ভাদিত্যাশক্যাহ— নৈবায়ুমিতি। ভেদধীপূর্বকথাভাবে কথং মিথ্যাধীক্লে-তীত্যাশক্ষাহ--- মিথ্যেতি। অধিষ্ঠানারোপ্যয়োর্বিবেকাগ্রহাৎ তত্তৎপত্তিরিত্যর্থ:। দেহাদাবহংধিয়ো গৌণতেতি চোগ্রে বিবৃত্তে তংকার্য্যেম্পীত্যাদি পরিহারং বিরুণোতি - নেত্যাদিনা। হেতুভাগং বিভন্ধতে—যুথেতি। সি হো দেবদন্ত ইতি বাক্যং দেবদত্তঃ দিংহ ইবেতু;পনয়া দেবদত্তং ক্রোর্যান্তবিকরণং স্তোতুং প্রবৃত্তমগ্রির্মাণবক ইত্যাপি বাক্যং মাণবকোহগ্রিরিবেত্যুপময়া মাণবক্ত পৈদ্বল্যাধি-করণস্ত স্তত্যর্থমের ন তথা মহুষ্যোহহমিতি বাক্যস্তাধিকরণস্তত্যর্থতা ভাতি ইতার্থ:। দেবদত্ত্বাণবক্ষোরধিকরণত্বং কণ্মিত্যাশঙ্কাহ—ক্রেরিডিত। কিঞ গৌণশলং তৎপ্রত্যরঞ্চ নিমিত্তকং কলা সিংহকার্যাং ন কিঞ্চিন্দেবদত্তে সাধ্যতে 'নাপি মাণবকে কিঞ্চিদ্যাকার্য্যৎ মিণ্যাধীকার্য্যং ছনর্থমায়াহত্বভবতাতো ন দেহা-मावहश्योशी वी जाह-न जिलि। हेटजाहिल प्रमास नाहश्योः र्भी वीजाह -গোলেতি । যো দেবদভো মাণবকো বা গোণ্যা ধিয়ো বিষয়ন্তৎ পরো নৈষ সিংহে। নায়ম্থিরিতি জানাতি নৈব্যবিদ্বানাত্মনঃ সজ্বাতভ চ সত্যপি ভেদে সজ্বাতভা-নামুদ্ধ প্রত্যে ত্যতো ন সভ্যাতে হংশব প্রতায়ৌ গৌণাবিতার্থঃ। সভ্যাতে তরে। ্র্বে বিশ্ব দোষান্তরং সমুচ্চিনোতি ত্রুথেতি। তথা সত্যাত্মনি কর্ত্তবাদি প্রতিভাগার্দিদ্বিতি और:। গৌণেন ক্বতং ন মুখোন ক্রতমিতালাহরণেন ুক্টয়ঙ্গি – ন হীতি। 🔊 পি দেবদ তমাণবকাজাাং ক্বতং কাৰ্যাং মুখ্যাজ্ঞাং সিংখ্রিভ্যাং ন ক্রিরতে, হিগাপি দেবদত্তগতকোর্যোণ মুখাসিংহস্ত মাণবক-নিষ্ঠিংখিললোন মুগ্যাগ্রেরিব 🕏 বিজ্ঞাতগুডেনাপি জড়বেনালনো মুখ্যক্ত কিঞিং

কার্যাং ক্লতং ভবিশ্বভীত্যাশক্ষাহ—ন চেতি। দেহাদাবহংধিয়ো গৌণদ্বাযোগে হেদ্বস্তমান বিতি। দেবদত্তমাণবক্ষোঃ দিংহান্নিভ্যাং ভেদ্ধীপূর্ব্ধকং ভন্যাপারবন্ধাভাবধীবদাদ্মনোহপি মুখ্যক্ত সভ্যাতান্তেদধীদারা ভদীরব্যাপাররাহিত্য-মান্থনি দৃষ্টং ক্লাদিভ্যৰ্থঃ। ব্যাবর্ত্তাং দর্শরতি—ন পুনরিতি।

সক্তবাতেইহংখিয়ো মিণ্যাধীত্বেহপি ন তৎক্বতমান্থানি কর্ত্বং * কিন্তু আনাধিক্ত লানেছা প্রবছৈর ভ কর্ত্বং বান্তবমিতি মতমন্থবদতি—হাচেতি। জ্ঞানাদিক্ত তমপি কর্ত্বং মিণ্যাধীক্ত সেব জ্ঞানাদীনাং মিণ্যাধীকার্যানাদিতি দ্বরতি—ন তেমামিতি। তদেব প্রপঞ্চরতি—মিণ্ডাতি। মিণ্যাজ্ঞানং নিমিত্তং ক্বতা কিঞ্চিদিত্তং কিঞ্চিদনিষ্টমিত্যারোপ্য তদ্বারাহ্বভূতে তন্মিন্ প্রেপাজিহাসাভ্যাং ক্রিয়াং নির্বত্তা তরেষ্ট্রমনিষ্টঞ্চ ফলং ভূক্বা তেন সংস্কারেণ তৎপূর্বকাঃ স্বত্যাদরঃ আমান ক্রিয়াং ক্র্বতীতি যুক্তং কর্ত্বভ চ মিণ্যাদ্ব মত্যর্থঃ। অতীতানাগত-জন্মনোরিব বর্ত্তমানেহপি জন্মনি কর্ত্বাদিসংসারস্ত বস্তব্যাশক্যাহ—যুথেতি। বিসতৌ কালাববিজ্ঞাক্বতদংসারবস্তৌ কাল্বাদ্বর্ত্তমানকালবদিত্যর্থঃ। সংসারস্যাবিজ্ঞাক্তব্রে ফলিতমাহ—তত্ত শেচ্তি।

ভন্তাবিভানে বিভাগোহ্যতে হেছন্তরমান — অবিস্তেতি। ক্তোইভাবিভাক্তভং ধর্মাধর্মকত্ত্বসন্ত্রবাদিত্যাশদ্যাহ—দেহাদীতি। আত্মনা ধর্মাদকর্ভত্তসন্ত্রবাদিত্যাশদ্যাহ—দেহাদীতি। আত্মনা ধর্মাদকর্ভত্তসন্তিমানভাবিভা বিভামানতেতার্থঃ। আত্মনা দেহাভতিমানভাবিভাকত্বমন্বরাতি-রেকাভ্যাং সাধরন্ ব্যতিরেকং দর্শরতি—নহীতি। অবরং দর্শরন্ ব্যতিরেকমন্থবদতি—অজ্ঞানমিতি। পুত্রে পিত্রহংধীবদান্থীয়ে দেহাদাবহংধীর্গোণীত্যক্তমন্থবদতি—যুক্তিত। তত্ত্ব দৃষ্টান্তক্রতের্কা শিত্মবিষরমুক্তমন্ত্রীকরোতি - সৃত্তিতি। তর্তি দৃষ্টান্তক্রতের্কা শিত্মবিষরমুক্তমন্ত্রীকরোতি - সৃত্তিতি। তর্তি দেহাদাবিপি তথৈব অকীরে ভাদহংধীর্কোণীত্যাশক্ষাহ—গৌণেনেতি। ন হি অকীরেন পুত্রাদিনা গৌণাত্মনা পিতৃভোক্রনাদিকার্যাহ ক্রিরতে তথা দেহাদেরপি গৌণাত্মতে তেন কর্ত্ত্বাদিকার্য্যমান্থনো ন বাস্তবং সিধ্যতীত্যর্থঃ। গৌণাত্মনা মুখ্যাত্মনো নান্তি বাস্তবং কার্য্যমিত্যক্ত দৃষ্টান্তমাহ—গৌণেতি। ন হি গৌণিসিংহেন দেবদক্তেন মুখ্যসিংহকার্যাং ক্রিরতে নাপি গৌণাত্মিনা মাণ্বকেন মুখ্যান্মিকার্য্যং দাহপাকাদি তথা দেহাদিনা গৌণাত্মনা মুখ্যাত্মনো ন বাস্তবং কার্য্যং কর্ত্ত্বাদি কর্ত্তং শক্যমিত্যর্থঃ।

^{* &}quot;किक्रांचा यक्कार्तक्त्रा" देजापि शांशंखतम् ।

বর্গকানাদিবাক্যপ্রামাণ্যাৎ আত্মনো দেহান্ততিরেকজানাৎ তক্ত চ কেবলতাকর্ত্বাৎ তৎকর্ত্তাং কর্ম গৌণৈরেব দেহান্তাত্মন্তিঃ সম্পান্ততে ন হিম্মত্যেই
শ্রৌডাভিরেকজানে দেহাদাবাত্মত্মত্মতা মুধ্যাং বৃস্কমিতি চোক্ত্রতি—আন্
শ্রেডি। ন দেহাদীনামাত্মত্ম গৌণং ভদীরাত্মতাবিভ্রবেন মুধ্যত্মাদতো ক্র
গৌণাত্মভিরাত্মকর্ত্তবাং কর্ম ক্রিরতে কিন্তু মিধ্যাত্মভিরিতি পরিহরতি—
নাবিত্যেতি। তদেব বির্থন্তপর্থং স্ট্রেভি—ন গৌণা ইতি। কথং
তর্হি দেহাদিবিবরাত্মর প্রথা ইত্যাশন্ত্য অবিভারতেত্যাদিহেতুং বিভরতে—ক্রথং
তর্হীতি। দেহাদীনামনাত্মনামের সভামাত্মত্মত্যাদিহেতুং বিভরতে—ক্রথং
তর্হীতি। দেহাদীনামনাত্মনামের সভামাত্মত্মতাাদিহেতুং বিভরতে—ক্রথং
তর্হীতি। দেহাদীনামনাত্মনামের সভামাত্মত্মতাাদিহেতুং বিভরতে—ক্রথং
তর্হীতি। দেহাদীনামনাত্মনামের সভামাত্মত মিধ্যাপ্রতারক্রমতান্তান্ত্রভ্রেক্তান্ত্রভ্রেক্তি
রক্ষাবৃদ্ধি ভ্রতি। উত্তে অ্বরের শান্তীরসংখারপ্রানামত্মতবং
প্রমাণরতি—ক্রেবিকিনামিতি। বাতিরেকেহণি দর্শিতে শান্তাভিজ্ঞানামত্মত্মত্মত্মত্মতালিতি। তৎক্তত এব দেহাদাবহংপ্রতার ইতি শেবং। ক্রিক্
বাবহারভূমে ভেলগ্রহনা গৌণত্বনাপকর্বাং তক্ত প্রক্ততেহভাবান্ত্র দেহাদাবহংশকপ্রতারে) গৌণাবিত্যাহ—পৃথগিতি।

অদৃষ্টবিষয়টোদনা প্রামাণ্যাৎ কর্ত্ত রাশ্বনো ব্যতিরেকাবধারণাৎ তক্ত দেহাদাবহঁমজিমানক গৌণতেত্যুক্তমন্থবদতি—যৃদ্ধিতি । শুভিপ্রামাণ্যক্তার্জার্ডার্থিবিরম্বাৎ
মানান্তরিকি বাতিরিক্তান্থানি টোদনাপ্রামাণ্যভাবার তদবইন্তেন দেহাদাবান্ধাভিমানক গৌণতেত্যুক্তরমাহ—ন তদিতি । শুভিপ্রামাণ্যভার্ক্তবিবরহৎ
শাইরতি—প্রত্যক্রাদীতি । অজ্ঞাতার্থক্তাপকং প্রমাণমিতি কিতেন ভাতে
শ্বিকাশ্বন্তৌলাদীতে ফলিতমাহ—তত্মাদিতি । অব্যব্যভিরেকাভ্যাং দৃষ্টো
মিণ্যাক্তাননিমিকো দেহাদিসক্তাতেহহংপ্রত্যরক্তেতি বাবং । অক্তবিরম্বাক্তাদনান্য
নাতিরিকাশ্ববিরতেত্যুক্তমিদানীং তিবিরম্বাক্তীকারেহণি ন তরির্ব্বোচ্যুক্ত প্রস্কৃতি ।

অপৌরুবেরারাঃ শ্রুতেরসন্তাবিতদোষারাঃ মানান্তরবিরোধেছণি প্রাঞ্জাণার্
অপ্রত্যাথারম্ ইতাভিপ্রেত্যাহ—হাদিতি। বার্থং বোধরত্যাঃ শ্রুতেরবিরোধা-পেদ্ধাৎ বিস্কার্থনাদিধে তংগরিহার।র বিবক্ষিতমর্থান্তরমবিরুদ্ধং তন্ত্রাঃ
বীকর্তব্যং বিরোধে তংগ্রামাণ্যাত্মপণতেরিত্যাহ—তথাপীতি। অবিরোধ-মবধার্য শ্রুত্রপক্ষানা ন ব্রুত্তি ব্যাবর্ত্ত্যাহ—ন ব্রিতি। অবিদ্যাবৎ-

^{&#}x27;'অসুভাৰাত্মারিভ্যান্'' ইতি বা পাঠাত্রন্।

কর্ত্বং কর্মেতি ধরোপগমাহংপরারাং বিছারামবিদ্যাভাবে তদধীনকর্ত্বন ভাবাদম্ভরেণ কর্ত্তারমুর্ছানাসিছো কর্মকাণ্ডাপ্রামাণ্যমিত্যধ্যরমবিধিবিরোধঃ স্তাদিতি শহতে—কর্ম্মণ ইতি। কর্মকাণ্ডশ্রুতের্কিছোদরাৎ পূর্বং ব্যাবহারিক প্রামাণস্য ভাবিকপ্রামাণ্যাভাবেহিপি সম্ভবাদ ব্রহ্মকাণ্ডশ্রুতেন্চ তার্বিকপ্রামাণ্য বন্ধবিদ্যান্তন্ত্রমাণ্যমনবিধিবিরোধ ইতি পরিহরতি—ন ব্রক্ষেতি।

ৰৰ্মকাণ্ডইভেডেক্তান্ত্ৰিকপ্ৰামাণ্যাভাবে ব্ৰশ্বকাণ্ডইভেরণি ভদসিদ্ধিরবিশেষাদিতি শহতে - কর্ম্বেতি। উৎপন্নায়া ব্রশ্নবিস্থায়া বাধকাভাবেন প্রমাণদাৎ তদ্ধেতৃ-শ্রুতেন্তাবিকং প্রামাণ্যমিতি দূররতি ন বাধক্তেতি। বন্ধবিভায়া বাধকার-পণজিং দৃষ্টাস্তেন সাধরতি—যুপ্তে । দেহাদিসজ্বাতবদিতাপেরর্গ: । নৌকিকাব-গতেরিবামাবগতেরপি ফলাব।জিরেকমুদাহরণেন ক্ষোরন্বতি—যুপ্তি। জ্ঞাননিবৃত্তি:। কর্মবিধিশ্রতিবদিত্যক্তং দৃষ্টাস্তং বিষ্টম্বতি—ন চেতি। অনাদি-कान প্রবৃত্তস্বাভাবিক প্রবৃত্তিবাক্তীনাং প্রতিবন্ধেন বাগান্তলৌকিক প্রবৃত্তিব্যক্তীর্জন-রতি, কর্মকাণ্ডশ্রতিভক্ষননঞ্চ চিত্তভদ্দিবারা প্রতাগান্বাভিমুখ্য প্রবৃত্তিমুৎপাদর্ভি, তথা চ কর্মবিধিশ্রতীনাং পারম্পর্যোগ প্রত্যাগাত্মজ্ঞানার্থতাং তাত্তিক প্রামাণ্যনিত্বি-রিভার্থ:। নবেবমপি শ্রুতেমিথ্যাত্বাৎ ধুমাভাগবদপ্রামাণ্যমিতি চেলেভায় — মিখাছে পীতি। বরপেণাসভাষেৎপি সভ্যোপেরহারা প্রামাণাসিভাত দৃষ্টান্তমাহ—যুথেতি। মন্ত্রার্থবাদেতিহাসপুরাণানাং শ্রুতেহর্থে প্রামাণ্যাভাবে-**২পি শেষিবিধানুরোধেন প্রামাণ্যবৎ প্রকৃতে২পি শ্রুতে: স্বরূপেণাস্ত্যারা বিষর-**সভাভয়া সভাছে প্রামাণ্যমবিক্রমিতার্থ:। বাক্যক্ত শেষিবিধান্তরোধেন প্রামাণ্যং নালৌকিকমিত্যাং—লোকেইপীতি। কর্মকাওঞ্চতীনামুক্তরীত্যা পরম্পররা প্রামাণ্যেছপি সাক্ষাৎপ্রামাণামুপেকিত্যিত্যাশব্যাহ-প্রকারান্ত-বেতি ৷ আত্মজানোদরাৎ প্রাগবস্থা প্রকারান্তরং, তত্র স্থিতানাং কর্মঞ্জীনাম অজ্ঞাতসম্বন্ধবোধকম্বন সাক্ষাদেব। প্রামাণ্যমিষ্টমিতার্থ:। পূর্বাং কর্মঞ্জীনাং ব্যাবহারিকপ্রামাণ্যে দৃষ্টাস্তমাই - প্রাণ্ডিতি।

প্রাতীতিককর্বতাবিশ্ববেহিপ শ্রতিপ্রামাণ্যমপ্রতাহমিত্যকং সম্প্রতি কর্ত্বত প্রকারাম্বরেণ পারমার্থিকমুখাপরতি—যুক্তি। খব্যাপারাভাবে সমিধিনারেণ কুতো মুধ্যং কর্ত্বমিত্যাশকা দৃষ্টাস্তমাহ—যুক্তি। বর্গমর্ধামানকে কর্বং তৎকল ব্যমিত্যাশকা প্রসিদ্ধিনাদিত্যাহ—ক্ত্রিত ইতি। কারিকণ্রাণারাভাবেহিপি কর্ত্বত মুণ্যাবে দৃষ্টাস্তমাহ—সুনাপ্রভিরিতি। ভ্রতাপি ফ্লবব্বং রাশ্ববিশিষ্টমিত্যাহ—ক্তিয়েতি। অক্সক্রণা অন্তত্ম সমিহিত্যা

মুখ্য কর্ত্তে বৈধিকমুদাহরণমাহ— যথা চেতি। কথমৃত্তি । কথমৃত্তি । কথমৃত্তি । কথমৃত্তি । কথমৃত্তি । করাং কর্ত্তে দ্রীভাররমাহ— যথা চেতি। ক্রিয়ং ক্রেং কারণং কারক-মিত,ক্লীকারবিরোধারৈভদিতি দ্বরতি – তদ্সদিতি । কারকবিশেববিষরকেনাকীকারোপপত্তিরিতি শহতে—কারকমিতি । ব্রাপারমন্তরেণ ন কিঞ্চিদি কারকমিতি পরিহরতি—ন রাজেতি । দর্শনমেব বিশদরতি—রাজেতি । কথা রাজো বৃদ্ধে বোধরিভূত্তেন ধনদানেন চ মুখ্যং কর্ভৃত্তিং তথা ফলভোগেহিপ মুখ্যমেব তত্ত্ব কর্ভমিত্যাহ – তথেতি । বহুক্তমৃত্তিক্তর্পর্ব বহুমানত্তিতি ভবাহ— যুক্তমান-স্থাপীতি । ব্রাপারাদেব মুখ্যং কর্ভৃত্তি হতে ফলিতমাহ—তত্মান্তিতি । তর্হি সন্নিধানাদেব মুখ্যং কর্ভৃত্তং রাজাদীনামূল-গতমিতি নেত্যাহ—ন তথেতি । রাজপ্রভূতীনাং সন্নিধিরের কর্ভৃত্তে গৌণ্ডে জয়াদিকলবত্ত্তাপি সিদ্ধং গৌণ্ডমিত্যাহ—তথা চেতি । তত্ত্ব পূর্বোক্তং হেভূত্তেন স্বারয়তি—নেতি ।

অন্তব্যাপারেণান্তর ম্থ্যকর্ত্বাভাবে ফলিতমুপসংহরতি—ত্রুম্বাদিন্তি।
কণং তর্হি দ্বরাদ্ধনি কর্ত্বাদি স্বীকৃতং নহি বুদ্দেস্থদিষ্টং কর্ত্বা শাস্ত্রার্থনদাদিতি
ন্তারাং ত্রতাহ – ভ্রান্তীতি। কর্ত্বাস্থান্ধনি লাপ্তনিত্যেত্রদাহরণেন ক্ষোরত্বতি
ন্যাথিতি। মিধ্যাজ্ঞানক্ষত্রমান্ধনি কর্ত্বাদীত্যত্র ব্যতিরেকং দর্শহতি—ন্
চিতি। উত্তব্যতিরেকে ফলং কণয়তি—ক্স্মাদিতি। সংসারভ্রমত্যবিষ্ণাক্তরে দিদ্ধে পরমপ্রকৃতমুপসংহরতি—ইতি স্ম্যুন্গিতি। ৬৬

অমুবাদ। কর্মযোগনিষ্ঠার পরম রহন্ত ঈশবের শরণ গ্রহণরূপ বিষয় শেব করিয়া কর্মযোগনিষ্ঠার ফল বে সম্যাগদর্শন, বাহা সকল বেদান্তে বিহিত হইরাছে, তাহাই বলিতে হইবে—এইজন্ত বলিতেছেন, বত প্রকার ধর্ম আছে, তংসমন্ত 'সর্ব্ব ধর্মা' এই শক্ষটির বারা প্রতিপাদিত হইতেছে; এই শক্ষটি অধর্মেরও উপলক্ষণ। কারণ, শ্রুতিও বৃত্ততে উক্ত হইরাছে বে, "কুল্ডরিত হুইতে বে অবিরত" [সে আত্মজানে অধিকারী হয় না] "ধর্ম ও অধর্মা এই কুইকেই পরিত্যাগ কর" ইত্যাদি অর্থাৎ সর্বধর্মা শক্ষের অর্থা স্কল প্রকার কর্মা। সেই সকল প্রকার কর্মকে পরিত্যাগ করিয়া অর্থাৎ [পূর্ব্বোক্ত প্রধানীতে] সর্বাকর্মা সর্বায় করিয়া একমাত্র আমানেক আপ্রায় করি। আইমি সর্বাত্তিক্ত, সক্লেরই আছা, সর্বাত্ত সম, ঈশ্বর, অচ্যুত ও গ্রহ্ণ করা

'ও মরগ-বর্জিত, আমা হইতে অতিরিক্ত কোন বন্ধই নাই। এই প্রকার ভাবিরা আমাকে আশ্রর কর, ইহাই অর্থ। তাহা হইলে আমি ভোনাকে সকল পাপ হইতে অর্থাৎ সর্বপ্রকার ধর্ম ও অধর্মরূপ বন্ধন হইতে মুক্ত করিব অর্থাৎ আমার নিজ স্বভাবকে প্রকটিত করিবা ভোনাকে সর্বা পাপ হইতে মুক্ত করিব। এইরূপ উক্ত হইরাছে বে, "দীপ্রিমান্ জানরূপ প্রদীপ দারা আত্মভাবদ্ব হইরা আমি [অজ্ঞানকে] বিনষ্ট করিবা পাকি।" এইজক্ত [বলিভেছি] ভূমি শোক করিও না, ইহাই অর্থ।

এই গীতাশান্তে মোক্ষলাতের বাহা চরম উপার তাহা নির্ণীত হইনাছে;
সেই উপার কি ? জান ? বা কর্ম্ম ? অথবা জান ও কর্ম এই উত্তর ?
এই প্রকার সন্দেহ হইতেছে কেন ? "বাহাকে জানিরা অমৃত লাভ করে"
"তাহার পর আমাকে তত্বতঃ জানিরা তাহার অনস্তর পদে প্রবেশ করে"
এইরূপ অনেক বাক্য দেখিতে পাওরা বার । ঐ বাক্য সকল প্রতিপাদন
করিতেছে বে, কেবল জানই মোক্ষলাতের উপার । "তোমার কর্ম্মেতেই
অধিকার আছে" "তুমি কর্মাই করে" ইত্যাদি বচন কর্ম্মম্বরে অবশুকর্ম্বিতা
প্রতিপাদন করিতেছে । এইরূপ জান এবং কর্ম্ম এই উভরে বর্থন কর্ম্মব্যতার
উপদেশ রহিরাছে, তথন উত্য মিলিত হইরাও মোক্ষের কারণ হইতে পারে;
এই সকল কারণে সংশর হইতে পারে । এই বিবরে মামাংসার প্ররোজন
কি ? ইহাই প্রয়োজন বে, ইহাদের মধ্যে কোন্টি মোক্ষলাতের ব্যার্থ
উপার, তাহার নিরূপণ। এই কারণে এই বিবরটিকে বিভ্তভাবে মীমাংসা
করিতে হইবে । [সিদ্ধান্ত হইতেছে এই বে] সকল প্রকার ভেদজানের
নিবর্তন করিরা আত্মার কৈবল্যলাভের উপার হর বলিরা, কেবল আত্মজানই '
যোক্ষলাতের উপার ।

ক্রিরা কারক এবং ফলের মধ্যে পরম্পর ভেদ আছে, এইরপ বৃদ্ধি অবিছা ছারা সর্বাদাই আত্মাতে উৎপাদিত হইয়া থাকে। আমার কর্মা, আমি কর্ত্তা, এই ফলের কল্প এই কর্ম আমি করিব, এই প্রকার অবিছা [বিপরীত জ্ঞান] অনাদিকাল হইতে চলিরা আলিতেছে। আমিই এক, ক্বেৰল, আমি কর্তা নহি, আমার ক্রিয়া নাই, আমার কোন কলও নাই, আমা হইতে পৃথক্ এ জগতে কোন বস্তুই নাই, এই প্রকার জ্ঞানই এই, অবিছার নিবর্ত্তক। এই প্রকারের আত্মজান উৎপন্ন হইলে, তাহা কর্ম-প্রবৃত্তির কারণ যে ভেদবৃদ্ধি, তাহাকে নিবর্ত্তিত করে, এই বে তুঁ শক [আছ্কানত ও কেবলত] ইহা চুইটি পদাক্তরকে ব্যাবর্ত্তন করিতেছে অর্থাৎ কেবল কর্ম হইতে মোক হয় না, এবং মিলিত জ্ঞান ও কর্ম নাকের সাধন হইতে পারে না, ইহাই প্রতিপাদন করিবার বস্তু এই 'তু' শক্ষটির প্ররোগ করা হইরাছে। মোক যে কারণে কার্য্য নহে, এই কারণে, তাহা যে কর্মের হারা নিম্পাদিত হইবে, তাহা হইতেই পারে না। কারণ, বাহা নিত্য বন্ধ, তাহা কর্মের হারা বা জ্ঞানের হারা সাধিত হইতে পারে না। তবে ও কেবল জ্ঞানও অনর্থক হইরা উঠিতেছে ? না, তাহা হইতে পারে না; কারণ, অবিভাকে নিরত্ত ক্রিয়া জ্ঞান কৈবল্যরূপ কলে প্রয়োকক হয়, ইহা লোকেই দেখিতে পাওয়া কার। অবিভারূপ অক্ষারের নিবর্ত্তক যে জ্ঞান, তাহার কৈবল্যরূপ ফলই অবসানে হইয়া থাকে।

রজ্জু প্রস্কৃতিতে সর্পভ্রমরূপ অন্ধকারের নিবৃত্তি ক্ষরিতে হইলে, প্রদীপ-প্রকাশ-ভূলা যে জ্ঞান আবশুক, তাহার অন্ত কোন ফল দেখা বার না অর্থাৎ এ জ্ঞান সর্পুত্রান্তির নিবৃত্তি করিয়া রজ্জ্র কৈবল্যরূপ ফল ব্যতিরিক্ত অন্ত কোন ফলের জনক হর না. সেই কেবলাত্মবরূপ প্রকাশই জ্ঞানের ফল। ছেদক্রিরা বা অগ্নি-মহনক্রিয়ার ক্ল প্রত্যক্ষিদ্ধ ; সেই প্রত্যক্ষিদ্ধ ক্ল কি ? বৈধীভাব বা অগ্নি উৎপাদন করিবার জন্ত যখন কর্ত্তপ্রভৃতি কতকগুলি সারক ক্রিয়ার সহিত অঘিত इटेबा कार्यााच्य इब, उथन रवमन के दिवीजार रा अधिक्रभ कनारे इटेबा शास्त्र, অভ ফলের জন্ত এ সকল কর্ত প্রভৃতির ব্যাপার হইতে পারে না, সেইরপ জাতা বা অক্সান্ত কারক, বধন জ্ঞানরূপ ফলকে উৎপাদন করিতে প্রবৃত্ত হয়, তথন ভাহারা কৈবলাশ্বরূপ প্রকাশরূপ জ্ঞান ছাড়া অঞ্চ কোন প্রকার ফর্লকে উৎপাদনই করিতে পারে না। ভোকন বা অন্নিহোত্রাদি ক্রিরার বেমন অন্ত ফল হর, আত্মজানেরও সেইরপ ফলান্তর কেন হইবে না ? এই প্রকার শহাও হইতে পারে না : কারণ, আত্মজানের ফল কৈবল্য ছাড়া আর কিছুই হইতে পারে না [ইহা পূর্বেই সিদ্ধ হইরাছে] ; স্থতরাং জ্ঞাম হইলে যে অন্ত ফল বিষয়ে " আকাব্দা হইবে, ভাহা সম্ভবপর নহে। বেমন অপান অসীম জলাশরকে প্রাপ্ত वहेरन लारक जात कूछ क्शानित कछ अधिनाय करत्र ना, क्शानिरक याश किंदू প্রবোজন সাধিত হয়, তাহাঁ সকলই সেই অপার অলক্ত জলাশবের বারা সভাবিত পুরিভালনের বধ্যেই নিবিষ্ট হইরা থাকে। কিংবা বে ব্যক্তি রাজ্যলাভ করিতে উছক হয়, ভাহার বেমন পূথগ্ভাবে একখানি ক্ষা কেবলাতের বস্ত প্রবৃদ্ধি रम् मा, मिहेन्नल देकवनाक्ष्म थान खानरक या थांथ हम, जाशांत जान देकान वेका- বিষয়ে অর্থিছ সম্ভবপর নহে; কারণ তাহার যত কিছু প্রান্তেলন, তাহা সক্ষর সেই জ্ঞানের ফলস্বরূপ [নিত্যানন্দস্বরূপ] মোক্ষের মধ্যে নিবিষ্ট হইরা থাকে। এই কারণে কর্ম কিছুতেই মোক্ষের সাধন হইতে পারে না।

জান এবং কর্ম্ম উভয়ে মিলিত হইরা যে মোক্ষের কারণ হইবে, তাহাও নহে: कांत्रन, त्व कार्यनत कन देकवना, जाश त्व निक कनात्क छेरशानन कतिए वाहेता কোন কর্ম্মের সাহায্যকে অপেকা করিবে, তাহা সম্ভবপর নহে। জ্ঞান অবিস্থার নিবর্ত্তক, অবিদ্যাত্মক কর্ম্মের সহিত তাহার বিরোধই প্রমাণসিদ্ধ; স্বতরাং দে ভাহার অপেকা করিতে পারে না। অন্ধকার অন্ধকারের নিবর্ত্তক হইতে পারে না: এই কারণে কেবল জানই মোকের সাধন [ইহাই গীতার সিদ্ধান্ত]। িএই সিদ্ধান্তের উপর দোবারোপ করিবার জন্ত কর্ম ও মোকেই কারণ ইহা বাহাদের মত, তাহারা শলা করিতেছে যে বি জ্ঞানের সহিত কর্মের বিরোধ হইতে পারে না; কারণ, নিত্যকর্ম বদি না করা বায়, তাহা হইলে পাপ হইবেই হইবে. পাণ হইলে তাহার ফল--- তু:খডোগ অপরিহার্য্য ; স্বতরাং একেবারে কর্ম পরিত্যাগ করিলে দর্মগুঃখনিবুত্তিরূপ মোক্ষ কিরুপে ছইতে পারে 🎮 কৈবল্য ত নিভাই। কেবল জ্ঞান হইলেই যে কৈবল্য প্রাপ্তি হইবে. এই প্রকার মত সমত নহে; কারণ, বেদবিহিত নিত্যকর্মগুলিকে পরিত্যাগ করিলে পাপ হইবে এবং পাপের ফল বে নরক, তালা অবশুই ভূগিতে হইবে। তবে বদি বল, এইরূপ সিদ্ধান্তে দোব এই বে, কর্ম্মসমূহও বে মোক্ষপ্রাপ্তির উপায়, ভাহাও ত সম্ভবণর হইতেছে না। এইরূপ শঙ্কাও ঠিক নহে; কারণ, মোক্ষ নিত্য িইহা ত অঙ্গীকৃত আছে]; নিতাকর্থসমূহের অমুষ্ঠান করিয়া চলিলে, আর পাপ হটবার সম্ভাবনা থাকিবে না : প্রতিবিদ্ধ কর্ম্মের অনুষ্ঠান না করিলে অনিষ্ঠ শরীরের উৎপত্তি হইবে না; এবং কাম্যকর্মগুলিকে পরিত্যাগ প্রযুক্ত ইঠ শরীরেরও উৎপত্তি হইবে না।

বর্ত্তমান শরীরের আরম্ভক কর্মের ফলোপভোগ শেব হইলে, এই শরীর পতিত হইলে, অন্ত নৃতন দেহের উৎপত্তি হইবার কারণ না থাকার, এবং রাগ-বেব প্রেকৃতির অকরণ নিবন্ধন আত্মার স্বরূপে অবন্ধিভিরূপ কৈবল্য আপনা হইতেই সিদ্ধ হইতেছে; এই কারণে, কৈবল্য যে অবন্ধসিদ্ধ, ইহাই হির হইল। একণে একটি শহা এই হইতে গারে বে, অতীত অনেক ক্ষেত্র অর্জিত যে সক্ষ কর্ম সন্ধিত হইয়া আছে, স্বর্গ কিংবা নরকপ্রান্তিরূপ ফলজোগ যে প্র্যান্ত না হইবে, সে প্রান্ত ঐ সকল ফর্মের ক্ষর হইবার সম্ভাবনা নাই [স্কুডরাং এই ক্লেহ প্রতিত চইলেই বে কর্মীর মোক হইবে, ইহা অসম্ভব হইরাপড়িল । এই প্রকার শহাও ঠিক নছে; কারণ, নিত্যকর্মের অমুষ্ঠানকালে বে ফু:থভোগ করিতে **इत्र, जारा वाता পूर्वक्यमक्षिष्ठ कक्षण कर्य मकरणत क्षत्र हरेता बाहेरत। व्यथवा** প্রান্নশিক্ত করিলে বেমন পূর্বকৃত পাপের কর হর, সেইরুণ নিভাকর্ম অ্মুষ্ঠান क्तिराज्ञ मिक्क-भागमम्रह्त कम इहेमा वाहरत [हेशक वना वाहरक भारत]। তহাতীত যে সকল কর্ম এই দেহের আরম্ভক, তাহাদের ফলোপভোগ এই দেহেই হইয়া বায়, এবং নৃতন কোন কর্মের [ফল বে পাপ বা পুণ্য ভাছার] উৎপত্তি হয় না বলিয়া মোক অনায়াদেই ত সিদ্ধ হইতে পারে। [ইহাই হইল কর্ম্মবাদিগণের মোক বিষয়ে সিদ্ধান্ত; একণে এই সিদ্ধান্তের উপর দোষ প্রদর্শন করা হইতেছে।] এই সিদ্ধান্ত ঠিক নহে; কারণে প্রান্ত মাছে, বে, ''তাহাকেই জানিরা মৃত্যুকে মতিক্রমণ করিতে পারা বার, তাঁহাকে জানা ভিন্ন অক্ত কোন উপায় নাই।" ইহা বারা স্পষ্ট প্রতিপাদিত হইতেছে যে [আলুতর্] ভান ব্যতীত মোক্ষণাভের উপারাম্বর নাই। "বেমন চর্ম্বের প্রায় আকাশকে বেষ্টন করা যায় না, দেইরূপ আত্মাকে না জানিয়া কিছুতেই মোক্ষ লাভ করিতে পারা ধায় না" এইরূপ পুরাণেও দেখিতে পাওরা বার। আর একটি বিষয় ড্রষ্টব্য যে [ভোমাদের মতে] বে সকল: পু**্যকর্ম পূর্বজন্ম** হইতে সঞ্চিত আছে, তাহাদের ফলোপভোগ হইবার সন্থাবনা না পাকার, ঐ সকল কর্ম্মের ক্ষয় অমুপপন্ন হইয়া উঠিতেছে।

পূর্বজন্মের সঞ্চিত অবচ ফল প্রদান করিতে প্রবৃত্ত নতে, এইরূপ হঃবছেতৃ কর্মসমূহের অবস্থান যেমন সম্ভবপর, সেইরূপ পূর্বজ্মসঞ্চিত ফলপ্রদানে অপ্রবৃত্ত কর্মসমূহেরও অবস্থিতি সম্ভবপর। [নিত্যকর্মের অস্ট্রানে যে হঃব ভোগ হর, তাহাতে হঃবহেতৃ কর্মসকলের কর হইলেও] ক্মবভোগের হেতৃ সেই সকল পূণ্য কর্ম কোন নৃতন দেহের উৎপাদন না করিয়া আর ক্মব-ভোগরূপ ফলপ্রদান [ভোমাদের মতে] করিতে পারিভেছে না; ক্মত্রাহ সেই সকল পূণ্যকর্মের কর হইতে পারে না বলিয়া মোক্ষলাক অনম্ভব হইয়া পঞ্জিল। [আরও জইব্য এই যে] আত্মজ্ঞান না হইলে ধর্ম ও অধর্মের হেতৃ রাপ, বেব ও মোহের উল্লেদ হইতে পারে না; রাপ, গ্লেব ও মোহের উল্লেদ হইতে পারে না; রাপ, গ্লেব ও মোহের উল্লেদ হইতে পারে না; রাপ, গ্লেব ও মোহের উল্লেদ বিভিত কর্মের উল্লেদ্য অসম্ভব। আত্মতি কিন্তি হইয়াছে যে, নিভাকর্মসমূহের কল—পূণ্যলোকপ্রান্তি, এবং স্থাতিতে উক্ক হইয়াছে যে, বলী আশ্রমী যদি বিহিত কর্মের অস্ট্রান করে,

ভাহা হইলে [ভাহারা শ্বর্গলোকে নিজ নিজ কর্মকলের অসূত্র করিয়া সেই ভুক্তাবশিষ্ট পুণোর বলে পবিত্রকুলে উৎকৃষ্ট জন্ম লাভ করিয়া পাকে] ইত্যাদি। এই नक्क कात्रत [श्रीकांझ कत्रिएण हत्र एग, खान वाजित्तरक) भाभ ও भूगात्रभ यांवजीत कर्त्वत कत इहेटजर शादि ना। याहाता वरन-निजाकर्त्वत अपूर्णनिर ছঃখবরণ [স্কুতরাং তাহার অনুষ্ঠান করিলে পূর্ব্বসঞ্চিত হরদৃষ্টরণ কর্মের ক্ষয় इत्र. कारव कारव जाशासत्र मानिया गरेएछ हहेरव रव] निष्ठाकर्षामपूर शूर्ववन्त्रकृष्ठ পাণকর্ম্মেরই ফল; কারণ, নিভাকর্মের অনুষ্ঠানরূপ বরূপ ব্যভিরেকে ভাষার আর कान क्वरे नारे, व्याप छाहात कान क्वरे क्षेष्ठ दत्र नारे ; व्याक् द्वाप छक इटेब्राटक, यजिनन वैाक्टिय, जजिनन अविद्याज कतित्व [**अविद्याज क**तित्व दि কোন কল হইতে পারে, তাহা বেদে উলিপিত হয় নাই; স্বতরাং হঃখনর অগ্নি-হোত্রামুষ্ঠান ফলতঃ পূর্বজন্মকৃত অন্তভ কর্মের ফল ছংখভোগ ছাড়া আর কি হইতে পারে ? } তাহাদের এইরপ কথনও নিতান্ত অসকত; কারণ বে সকল कर्मा मक्षिष्ठ कार्याद कात्रक वा कनमारन अनुष्ठ नरह, जाहाता এই करना किছु छिहे ধল প্রদানে সমর্থ হইতে পারে না : এই সাধারণ নিরমামূসারে সঞ্চিত, কতক-গুলি কর্মফলবিশেষকে য়ে উৎপাদন কবিবে, তাহা কিছুতেই সম্ভবপর ইইতে পারে না। আরও বলা হইয়াছে যে, পূর্ব জন্মে ক্বত পাপরূপ কর্মসমূহেরই ফল নিত্যকর্মের অত্থানরূপ ছঃখডোগ হইরা পাকে, তাহাও বৃক্তিসক্ত নহে। কারণ, মরণ-সমরে বে সকল কর্ম আগামী কলের ফলভোগের জন্ত অস্থুরিত না হয়, তাহারা অন্ত কর্মের ফল বরণ আগামী জন্ম ফল প্রদান করিবে, ইহা किছू. उट्टे मह्डदभत्र नरह। এই প্রকার নিরম यनि अत्रीकांत्र ना कता हत्र, ভাহা হইলে, মরিহোতের ফলস্বরূপ অর্গভোগের সমন্ত নরকরপ যে কর্নান্তরের ফস, ভাহারও ভোগের আপত্তি হইতে পারে। নিতাকর্মের জহুঠান বে পূর্ম ক্ষের সঞ্চিত ছরিত কর্মেরই ফল, তাহাও করনা করিতে পারা বাদ না। অনেক প্রকার অসংখ্য পূর্বজন্মের সঞ্চিত পাপ থাকিতে পারে, দেই সকল शारात्र कन त्व अक अक्रोत श्वांचाराहे हहेत्व, छाहा वना वात्र ना। मिक्ट आमिक अनि भाग दिशाहर, छोशामित कन नामा अकात छाथ। अथह अ नकन ভিন্ন ভিন্ন ছঃধজনক পাণশুলি সঞ্চিতই রহিয়া গেল অর্থাৎ ভারাদের কোন কল এ কলে হইল না, কেবল অগিহোতাছভানরণ হংগের হেডুভ্ড' যে সঞ্চিত্ত পাণ ওলি আছে, ভাষাদের কলভোগ হইল আর শীতাতণ প্রভৃতি আর হংগরণ দ্বোর হেতু পাশগুলির-কোন কলেরই ভোগ হইবে না অর্থাৎ সঞ্চিত কুর্লের

অগ্নিহোত্রামুষ্ঠান হঃখভোগরূপ ফল হইবে; কিন্তু সঞ্চিত কর্ম্মের মাথার পাধর বহনরূপ যে হঃখ ভোগ ফল, তাহা হইবে না; এইরূপ বিশেষ করনা করিবার কোন যুক্তিই দেখিতে পাওয়া যায় না।

নিত্যকর্মের অমুষ্ঠানে যে আহাদ, তাহা হইতে যে হঃথ হয়, তাহা পুর্ব-জন্মের সঞ্চিত পাপের ফল, এই প্রকার কথনও নিতান্ত অপ্রক্ষত। কেন অপ্রকৃত ? [তাহা বলিতেছি—]বে প্রাক্তন কর্ম ফলদান করিতে প্রবৃত্ত बम् नाह [वर्थाए यादात्क श्राज्ञक कर्य नना यात्र ना], जादात्र क्रम इहेरज शास्त्र না, ইহাই প্রকৃত। ইহা প্রকৃত হইলে নিত্য কর্দ্মানুষ্ঠানের জন্ম যে আয়াস ভয়, সেট আলাদের কল যে তঃপ, তাতা প্রারন্ধ কর্মের্ট ফল, টছাই ভোমার বলা উচিত; ঐ হ:গ প্রারন্ধ কর্মের ফল নহে [কিন্ধুসঞ্চিত পাপের ফল] ইহা কিছুতেই তোমার বলা উচিত নহে। আর যদি এই কথাই ভূমি বলিতে চাহ বে, পূর্বজন্মের যত পাপ আছে, তাহা সকলই বর্ত্তমান জন্ম ছঃখরূপ ফলকে ূপ্রদ্ব করিতে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে, তাহা হইলে নিত্যকর্মামুষ্ঠানের আয়াসে যে হু:খ হয়, তাহাই পুর্বজনাকত পাপের ফল বিজ্ঞ প্রকারের হু:খগুলি পুর্বকৃত পাপের ফল নছে] এই ভাবে বিশেষ করিয়া নির্দেশ করা নিতান্ত যুক্তিবিক্লম। আর একটি কথা এই যে, বেদবিহিত নিত্যকর্মের হু:খই ফল, যদি ইহা অঙ্গীকার কর [তাগাও ঠিক নহে, কারণ] তাহা হইলে [ইহাই বলা উচিত ষে টুনিত্যকর্মের অনুষ্ঠান করিতে হইলে যে আয়াস হয়, ভাহা হইতেই ছ:থ হয়; স্তরাং এ তুথ ঐ আয়াদেরই ফল, পূর্বাক্তত ছরিতের ফল, উহা হইতে পারে না; বেমন বাারাম করিলে যে হঃথ হয়, তাহা ব্যারামেরই ফল। ব্যায়াম ভিন্ন ষে পূর্ব্বসঞ্চিত ছ্রিত, তাহার ফল নহে। প্রকৃতস্থলেও সেইরূপ নিত্যকর্ম্বের অনুষ্ঠানের যে আয়াস, তাহা হইতে যে ছঃখ হয়, তাহা ঐ আয়াসেরই ফল হওয়া উচিত; পূর্বজন্মসঞ্চিত পাপের ফল হইবে কেন ? [''বাবজ্জীবমন্সিহোত্তং জুত্রাৎ" যতদিন বাঁচিবে, অগ্নিহোত্র যাগ করিবে। এই বাক্যের ছারা] জীবন-রূপনিমিত্ত বিভাগান থাকিলে অগ্নিহোত্ররূপ নিতাকর্ম করিতে হইবে, ইহা বিহিত হইয়াছে। এই কারণে প্রায়শ্চিত্তের ফ্রায় নি ত্যকর্ম গুলিরও নিমিত্ত বে পূর্ব-জন্মকৃত পাপ, তাহা কিছুতেই সঙ্গত হইতে পারে না। বে পাপকর্শক্রপ নিমিত্ত বিশ্বমান থাকিলে, যে প্রায়শ্চিত্তের বিধান শাস্ত্রে কথিত হয়, সেই প্রায়শ্চিত বে দেই পাপেরই ফল, তাহাও কেহ খীকার করিতে পারে না। আর যদি বল দেই প্রায়শ্চিত্ত করিতে হইলে যে ছাথ হয়, সেই, ছাথই এই পাপের ফল,

তাহা হইকে ইহাই স্বীকার করা উচিত যে, নিত্যকর্ম্মের অফুষ্ঠানে যে ঝায়াস হর, তাহার ফলস্বরূপ যে হঃখ তাহার কারণ জীবনই হউক [কারণ, জীবনরূপ নিসিত্ত বিশ্বমান পাকিলেই নিত্যকর্ম্ম করিতে হইবে, এই প্রকার বিধান আছে বলিয়া] জীবনরূপ নিসিত্তেরই ফল ঐ নিত্যকর্ম্মামুষ্ঠানজনিত হঃখ, এইরূপ আপত্তি উপস্থিত হয়। কারণ, প্রায়ন্চিত্ত এবং নিত্যকর্ম্ম এই বিবিধ কর্মই নৈমিত্তিক কর্ম্ম; ইহাদের মধ্যে একরূপতাই পাকা উচিত [বৈষম্য পাকিবে কেন ?]।

মার ও বক্তব্য এই যে, নিত্য অগ্নিহোতের অমুষ্ঠান করিতে যে ছঃখ হয়, কাম্য व्यक्तिरहारकत व्यक्तकारन प्रतिकृति प्रतिक विकास कार्य । जाराहे यनि इहेन, जरत] নিত্য অপ্লিহোত্তের অফুষ্ঠানে বে ঢু:খ হয়, তাহাই পূর্বজন্ম সঞ্চিত পাপের ফল: কিন্তু কাম্য অশ্বিহোত্তের অনুষ্ঠানে যে তঃখ হয়, তাহা পূর্বজন্মে সঞ্চিত পাপের कन नरह, अहेन्नभ द्यान विरमय ना शाकान्न, के कामा अन्निरहार्वित्र अक्षेत्रात स्य ছংখ হয়, তাহাও পূর্ব ভলের সঞ্চিত পাপের ফল হউক। তাহাই যদি হইল, ভবে নিতা কর্মের কোন প্রকাব ফল আছে—এইরপ কণা বেদে না থাকায় ভাহার বিধান অভাগা উপপতিস্কু হটতে পারে না নলিয়া পুর্ব জন্মের সঞ্চিত ্পাপের ফলই নি একপের অমুষ্ঠানজনিত গ্র:খ. এই প্রকার অর্থাপত্তি করনাও অফুপপর হইরা পড়ে। আরও এক কথা—কেবল ছ:খের জন্ত কোন কার্য্যই বেদে বিহিত হইতে পারে না: স্থতরাং বেদে যখন নিত্যকর্মের বিধান রহিয়াছে, তণন অন্তানকালে অবশ্রস্তানী ছঃধই যে তাগার ফল, তাহা কিছুতেই সম্ভব নহে: উহার হঃপ ব্যতিরিক্ত অন্ত কোন ফল নিশ্চয়ই আছে, এই প্রকার অস্মানের দারা অস্ঠানায়াসহঃগ বাতীত মন্ত কোন প্রকারও নিতাকশ্বের ফল আছে, ইছা সিদ্ধ করা বাইতে পারে। আর এক কণা এই বে. এইরূপ করনা নিতান্ত বিরুদ্ধ হইরা পড়িতেছে। [কিরূপে বিরুদ্ধ হইরা পড়িতেছে, তাহাও বলি] নিত্য কর্ম্মের অমুষ্ঠান করিলে অস্ত কর্মের [অর্থাৎ পূর্বাদ্ধমের সঞ্চিত কর্মের] ফল ভোগ করিতে হয়, এই প্রকার বদি অঙ্গীকার করা হয়, ভাহা হইলে সেই ছঃখভোগই নিভাকর্মের ফল হইয়া থাকে; অথচ [ভূমি বলিতেছ] নিতাকর্মের ফল নাই; এই প্রকার উক্তিই পরপার 'বিকৃদ্ধ হইয়া পড়িতেছোঁ আরও [দ্রষ্টব্য এই বে] এক কাম্য অগ্নিহোত্তের অন্তর্গান করিলেই ন সঙ্গে সঙ্গে নিভা অপ্লিহোত্রের অমুষ্ঠান সিদ্ধ হইয়া থাকে। ফিলে এই দাঁড়াইতেছে বে] নিত্যালিহোত্তের অনুষ্ঠানজনিত হ:খভোগের সহিত কাম্যালিহোত্তেরও

ফলভোগ হইয়া গেল; স্কুতরাং তাহার আরু কোন অতিরিক্ত ফল—ভোগের জক্ত অবশিষ্ট রহিল না, এই প্রকার আপত্তি উপস্থিত হইল।

আর यनि वन य, कामा अश्विरहारत्वत्र कन वर्शानि, এवং উश निजा অগ্নিহোত্রের ফল হইতেও ভিন্ন, তাহা হইলে [ভোমাকে স্বীকার করিতে হুইবে বে] কাম্য অগ্নিহোত্রের অমুষ্ঠান করিতে হুইলে বে ছু:খ·উৎপন্ন হয়, তাহা নিজাগ্নিহোত্রের অমুষ্ঠান-ছঃপ হইতে ভিন্ন; বাস্তবিক কিন্ধু তাহা হটতে পারে না. তাহা হইলে প্রত্যক্ষ-বিরুদ্ধের করনা করিতে ছব: কাম্যাগ্নিহোত্রের অনুষ্ঠান করিতে হইলে যে হঃখ ভোগ করিতে হয়, তাহা হইতে নিত্যাশ্বিহোত্তের অমুষ্ঠানজনিত গ্রংপভোগ বে ভিন্ন তাহা ত দেখিতে পাওয়া বায় না। আরও একটি বক্তব্য এই যে, যে কর্ম শাল্পে বিহিত নহে বা যে কার্যা শাল্পে প্রতিষিদ্ধ নহে, তাহার ফল অবিলম্বেই হইরা থাকে। শাল্পে যাহা বিহিত বা প্রতিষিদ্ধ, তাহার অনুষ্ঠান করিলে বে দেই সমরেই শাস্ত্রকপিত ফল হইবে, ইহা কথনই সম্ভবপর নহে। তাহা যদি সম্ভবপর হইত, তাহা হইলে স্বৰ্গ প্ৰস্তৃতি অনুষ্ঠ ফলের জন্ম বিহিত যে কর্ম্মণমূহ, তাহাতে লোকসমূহের প্রবৃত্তি অমুগণর হইর। পড়িত। নিত্য মলিহোত্র হইতে কাম্য স্বিংহাত্রের স্বরূপগত কোন বিশেষই দেখিতে পাওয়া যায় না; অথচ অমুষ্ঠানজনিত হঃথফল হইলেই নিত্যালিহোতের ক্ষম হইবে, আর কেবল স্বর্গভোগ করিবার ইচ্ছা বল্পমানের আছে বলিয়াই [কানা অগ্নিহোত্রের] স্বর্গাদির ভোগ ইইবার পর ঐ কানা অগ্নিখেন্তের কর হইবে, এই প্রকার করনা কোন প্রকারেই সম্পত হইতে পারে না।

সেই কারণে [সিদ্ধ হইল যে, নৈত্যকর্ম করিলে যে একেবারে কোন অনৃষ্ট হইবে না, ইহা যুক্তিহীন। ইহা দারা সিদ্ধ হইতেছে বে কর্মের মূল অবিদ্ধা। বিদ্ধার উদর হইলে শুভই হউক বা অগুভই হউক, সকল কর্মেরই কর হইরা থাকে। অবিদ্ধা এবং কাম এই তুইটি সকল কর্মের মূল কারণ। এইরূপই ভগবদ্গীভাতে প্রতিপাদিত হইরাছে যে, কর্মের অধিকারী অনাম্মন্ত ব্যক্তিই হইরা থাকে। আত্মভয়ুক্ত ব্যক্তির পক্ষে সর্বাকর্মাস এবং তৎপূর্বক জান্দ্র নিষ্ঠাই বিহিত। [ইহার প্রতিপাদক বহুতর বাক্যই এই গীভাশাক্তে দেখিতে পাওরা বার, যেমন] ভাহারা উভরেই জানে না। আম্বাহক অবিনালী নিজ্য বিলিয়া জানিবে। "জানবোগের দারা সাংখ্যগণের এবং কর্মবোগের দারা বোগিগণের [সিদ্ধিলাত হয়]" "জাজগণের [অর্থাৎ] ক্মনিস্থিগণের।" "ভর্বিং"

কিন্ত "গুণসমূহ গুণেতেই প্রবৃত্ত হইতেছে, এই বৃদ্ধি থাকার বিচলিত হর না।" "সকল কর্মকেই মনে মনে সর্ব্যাস করিরা অবস্থান করে" "সমাহিতচেতা বিবেচনা করে যে, আমি কিছুই করি না।" অর্থাৎ অজ্ঞই বোধ করে যে, আমি করিতেছি। "সমাধিতে আরোহণ করিতে যে চাহে, তাহার পক্ষেকর্মই সিদ্ধি লাভের উপার, কিছু যে সমাবি লাত করিরাছে, তাহার পক্ষে নির্ম্ভিই সিদ্ধি লাভের উপার।" "তিন প্রকার ভক্তই উদার হইলেও ইহারা অজ্ঞ; কিছু জানী ভক্তই আমার আত্মা, ইহাই আমার মত।" বাহারা অজ্ঞ, স্তেরাং কর্মী, "তাহারা ভোগ-কামনার এই সংসারে বাতারাতই করিরা থাকে।" "বাহারা অনজ্ঞপর হইরা আমার ধ্যান করে" সেই নিত্যযুক্ত ব্যক্তিগণ যথোক্ত আকাশকর নিস্পাপ আত্মারই উপাসনা করে। "তাহাদিগকেই আমি বৃদ্ধিযোগ প্রদান করি, বে বৃদ্ধিযোগ হারা তাহারা আমাকে প্রাপ্ত হয়।" [অর্থাৎ বাহারা জ্ঞানী, তাহারাই আমাকে প্রাপ্ত হয়] কিন্তু যাহারা কর্মী অর্থাৎ অজ্ঞ, তাহারা জ্ঞানাকে পার না।

ষাহারা ভগবানের প্রীতির জন্মই বিহিত কর্ম্মের অনুষ্ঠান করে, স্নৃতরাং ৰাহারা যুক্ততম কম্মী, তাহারাও অজঃ; তাহারা ক্রমে ক্রমে হীন ফলসমূহকে ভাগ করিতে করিতে অবদানে প্রকৃত মোকসাধনকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে। আর যাহারা সেই অনির্দেশ্য অকরের উাসক, বাহাদের সাধন বিষয়ে "সকল ভূতের · অদেষ্টা" ইত্যাদি শ্লোক হইতে আরম্ভ করিলা দ্বাদশাধ্যারের শেব পর্য্যস্ত বিশ্ব ভাবে বর্ণনা করা হইরাছে। তাহাদের একমাত্র সাধন যে জ্ঞান, তাহা "কেত্রা-ধ্যার" [ত্রেরোদশাধ্যায়] প্রভৃতিতে উক্ত হইরাছে। অধিষ্ঠান প্রভৃতি পাচটি কারণ হইতে যত প্রকার কর্ম হইতে পারে, সেই সকল কর্মের সন্মাস যাহারা করিয়াছে, স্বাত্মা এক এবং কর্ত্তা নহে এই প্রকার জ্ঞান যাহাদের ছাছে. যাহারা পরম জ্ঞাননিষ্ঠাকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে এবং যাহারা ভগবানের তত্ত্ব বুঝিতে পারিয়াছে, সেই পরসহংস পরিবাঞ্চকগণ ভগবংশ্বরূপ বে আত্মতত্ব, তাহাকেই আশ্রয় করিয়া থাকে এবং তাহাদের আর ত্রিবিধ কর্ম-ফলের ভোগ করিতে হর না। কিন্তু যাহারা অজ্ঞ কর্মী, স্থতরাং অসম্নাসী, ভাহারাই ত্রিবিধ কর্মফলের ভোগ করিয়া পাকে। ইহাই, হইল গীতাশান্তে উক্ত কর্ত্তব্য ও অকর্ত্তব্য অর্থের বিভাগ। সকল কর্মই যে অবিদ্যাপ্র্যক, তাহা মানিতে, পারা বার না, এইরপ আশকা করাও ঠিক নহে:৷ কারণ বন্ধহত্যা প্রভৃতি কর্ম্ম বেমন রাগ বা হেষবশতঃ অমুক্তিত হয় বলিয়া অবিভাসুলক, সেইরূপ রাগ

থেব বশতঃ অনুষ্ঠিত হয় বলিয়া সকল কর্মাই অবিদ্যাস্থক। যদিও নিত্যকর্মা শাস্ত্রবিহিত, তাহা হইলেও উহা অবিদ্যানের জন্যই বিহিত; স্তরাং উহা অবিদ্যানের পক্ষেই কর্ত্ব্য।

িষেমন প্রতিষেধ শাস্ত্রের দারা অবগত ব্রন্ধহত্যাদি কার্য্য অনর্থের কারণ হইলেও অবিষ্ঠা ও কাম প্রস্থৃতি দোষ যাহার আছে, সেই ব্যক্তিই ঐ ব্রহ্মহত্যাদি কর্ম করিয়া থাকে; কারণ, সজ্ঞান এবং কাম প্রভৃতি দোষ না থাকিলে কেইই অনর্থকর কার্য্যে প্রবৃত্ত হয় না; সেইরূপ নিত্য নৈমিত্তিক এবং কাম্য কর্মসমূহে যে প্রবৃত্তি, তাহাও অবিদ্যাও কাম প্রভৃতি দোষ বশতঃই হইয়া থাকে। यদি वन. त्मर रहेरा जाचा পुथक धरे श्रकात खान ना शांकितन, त्करहे भत्रतनात्क ভোগা স্বর্গাদির হেতু যে বিহিত কর্ম, তাহাতে প্রবৃত্ত হইতে পারে না [স্থতরাং ইহা দারা প্রতিপন্ন ইইতেছে যে, যাহার আত্মার স্বরূপ জ্ঞান আছে, তাহার পক্ষে কর্ত্তব্য বলিয়া শাল্পে কর্ম্মসমূহ বিহিত হইয়াছে] তাহাও ঠিক নহে। কারণ ঐি প্রকার জ্ঞান হইলেই যে আত্মার প্রকৃত স্বরূপ জ্ঞানা হইল তাহা নহে] ক্রিয়া চলনস্বভাব; স্বতরাং তাহা আত্মার ধর্ম হইতে পারে না; সেই ক্রিবাকে আত্মার ধর্ম বলিয়া যে বুঝিয়া থাকে, দেই 'আনি' করিতেছি—এই প্রকার বিবেচনা করে, মামি করিতেছি এইরূপ জ্ঞান না থাকিলে কেহট বিহিত कार्या প্রবন্ত হইতে পারে না ;—ইহাই यদি স্থির হইল, তবে কি প্রকারে বলা ষাইতে পারে যে, আত্মার প্রকৃত বরূপ যে জানিয়াছে, •সেই বিহিত কর্ম্বের অধিকারী হইয়া পাকে ? यদি বল, দেহাদিসংঘাতে আমাদের যে আত্মপ্রতার হয়, তাহা গৌণ প্রত্যয় হইতে পারে; কিন্তু, তাহা মিখ্যা প্রত্যয় নহে। এই প্রেকার মতও সঙ্গত নহে ; কারণ, দেহাদিতে যে আত্মপ্রত্যর, তাহা বদি গৌণ প্রতার হইত, তাহা হইলে পেই দেহাদিতে আত্ম প্রত্যরের যে কার্য্য সমূহ, ভাহাও গৌণ হইত। ইহার পরও যদি এইরূপ বল যে, আত্মার সহিত মিলিত দেহাদিতে যে আত্মপ্রত্যন্ন হইরা থাকে, তাহাকে গৌণ আত্মপ্রত্যন্নই বলিব; যেমন আপন প্তকে উদ্দেশ করিয়া "আত্মারই নাম প্ত" এই প্রকার শাল্তে নির্দেশ আছে দেখিতে পাওয়া যায়, লোকসমাজেও ব্যবহার দেখিতে পাওয়া যায় বে, এই গোকটি আনার প্রাণই', নেইরূপ দেহাদিতে বে আত্মপ্রত্যর, তাহাও গৌণ প্রত্যন্ন হইবে।

স্ক্রাং এই যে দেহাদিতে আত্মপ্রতার, ইহা মিথ্যা প্রত্যন্ত নহে; ইহা গৌণ প্রতার। স্থাণু এবং প্রুষের যদি পরস্পত্কগত বিশেষ না জানা

থাকে, তবেই দেই স্থাণতে পুরুষবৃদ্ধিরূপ মিণ্যা প্রত্যয় উৎপন্ন হয়। এইভাবে দেহাদিতে বে আত্মবৃদ্ধি হয়, তাহা গৌণ প্রত্যয়, কিন্তু মিধ্যা প্রত্যয় নহে; এইরূপ যুক্তিছারা এই মতটি যে স্থাপিত হইল, তাহা ঠিক নহে; কেন ঠিক নহে, একণে তাহাই বিশদভাবে বুঝান ঘাইডেছে। গৌণ প্রত্যয় কখনই মুখ্য প্রতায়ের কার্য্য করিতে পারে না; কেবল বিশেষ্যের স্তুতি করিবার জন্মই লুপ্রোপমা দারা গৌণ শব্দের প্ররোগ করা হয়। বেমন যদি কেহ বলে "দেবদত্ত সিংহ" বা "মাণবক অগ্নি", ভাষা হইলে আমরা बुक्षिया थाकि (य, रमयमञ्ज निःश्ममुन वा मानवक (উপনীত ব্রাহ্মণবালক) অগ্নিসদৃশ। অর্থাৎ সিংহের ধর্ম বে ক্রুরতা, তাহা দেবদত্তেরও আছে; অথবা অগ্নির ধর্ম যে পিঙ্গল প্রভা, তাহা মাণবকেও আছে। এই প্রকার গৌণ প্রয়োগের ফল इहेट्डिट्डि—(मवमस् वा गांगवक-क्रथ रिवार्सिश, जाहात अनेश्मा। हेहा बाता এমন বুঝান যায় না যে, দেবদন্ত সিংছের কাষ্য করে, বা মাণবক অগ্নির কার্য্য করে। স্থতরাং ইহা সকলেই জ্বানে বে, সিংহের বা অগ্নির কার্য্য করে বলিয়া দেবদন্ত বা মাণবককে সিংহ বা অগ্নি বলিয়া গৌণভাবে নির্দেশ করা হর তাহা নহে; ইহা দারা কেবল দেবদত্ত বা মাণবকের প্রশংগামাত্রই করা হয়। কিন্তু মিণা। প্রতায় এইরূপ নহে; কারণ, মিণ্যা প্রত্যায়ের বে কার্য্য, তাহা দারা অনর্থ অমুভূত হইয়া পাকে। যেখানে গৌণ প্রভার হয় সেখানে লোকে ম্পষ্ট জানিয়া থাকে যে, এই দেবদত্ত সিংহ নহে অপবা এই মাণ্বকও অগ্নি নছে; সেইরূপ গৌণ প্রভারের বিষয় যদি দেহাদি হইত, তাহা হইলে, দেহাদি দারা ক্লত যে কর্ম, তাহা অহংপ্রত্যয়ের মুখ্য বিষয় যে আত্মা, সে কথনই আমার কর্ম বলিয়া বোধ করিত না গৌণ সিংহ বা গৌণ অগ্নি যে কার্য্য করে, তাহা কথন মুধ্য সিংহ বা মুখ্য অশ্বির কার্যা হইতে পারে না। আরও দেখিতে হইবে যে, ক্রুরতা বা পিঙ্গলপ্রভা আছে বলিয়া দেবদত্ত বা মাণবক যে সিংহ বা অগ্নির কার্য্য করিবে, ভাষাও সম্ভবপর নহে। এই প্রকার গৌণপ্রয়োগ—ছতিরূপ অর্থ প্রকাশ করিরাই আমাদের নিকট ক্ষীণপক্তি হইরা পড়ে [অর্থাৎ অন্ত কোন কার্য্য করিতে সমর্থ হয় না]। ঐ প্রকায় ুগৌণ শব্দ প্রয়োগের দারা বাইাদের স্বতি করা হয়, তাহারাও জানিয়া থাকে বে, আমি সিংহ ্নিहি: অথবা আমি অমি নহি, এবং ইহাও জানে বে, সিংহের কার্য্য জালি করি না অপবা অগ্নির কার্যাও আসি করি না। কিন্তু দেহাদিতে বে আমাদের

আত্মপ্রতার, তাহা গোণ প্রতার হইতে পারে না; কারণ, দে স্থানে আমরা এইরূপ বৃধি না যে, ইহা দেহের কর্ম, আমার কর্ম নহে; সেইখানে বরং আমাদের বোধ হয় যে, আমি কর্ত্তা এবং ইহা আমার কর্ম [দেহাদিতে বে আত্মপ্রতার, তাহা যদি গোণ প্রতার হইত, তাহা হইলে আমাদের "আমি কর্ত্তা নহি, আমার ইহা কর্ম নহে, ইহা দেহাদিসজ্যাতেরই কর্মা এই প্রকার বোধ হওয়াই যোগ্যতর হইত; বাস্তবিক কিন্তু এরূপ বোধ কোন সংসারী ব্যক্তির হয় না]।

িনিয়ায়িকগণ বি বলিয়া পাকেন, আত্মা নিজেরই জ্ঞান ইচ্ছা এবং প্রবত্ব এই তিনটি গুণের দারা বাস্তবিক কর্তা হইন্না থাকে. এই মডটিও সঙ্গত নহে। তাঁহারা আত্মার যে গুণ কয়টির উল্লেখ করিয়া পাকেন. ঐ তিনটি গুণও মিথ্যা প্রতায়ের ফল। কারণ, মিথাপ্রতায়বশতঃ কোন একটি বস্তুকে ইষ্ট বলিয়া বোধ করা অথবা কোন একটি বস্তুকে অনিষ্ট বলিয়া বোধ করাই আনাদের যাবতীয় জ্ঞানপূর্বাক কার্য্যের হেতৃ হুইয়া ণাকে এবং দেই কার্য্যের ফলম্বরূপ যে সংসার প্রস্তুত হয় তাহাই হইল আমাণের জ্ঞান ইচ্ছা এবং প্রবংক্তর কারণ মিণাক্তানজন্ত সংস্থার না পাকিলে আমাদের সাংসারিক কোন জ্ঞান ইচ্ছা বা প্রযন্ত্র হইতেই পারে না । বেমন এই জন্মে দেহ ও ইক্সিয় প্রভৃতিতে অভিমান বশত: রাগ বা দ্বেষ হয় এবং রাগদ্বেষের বশবন্তী হইয়া কার্য্য করিলে ষ্পাসম্ভব ধর্ম বা অধর্ম উৎপদ্ধ ২য় এবং তাহার ফলও অমুভব করিতে হয়: সেইরূপ মত্রতি ও মতীততর জন্মেও এইরূপ মবিস্থানিবন্ধনই সংসার ভোগ করিতে ১হয়: ভবিষাৎ জনোও এই প্রকার হইবে, তাহা অনুমান দারা বুঝা বায়। ভাছাই যদি হইল, জবে ইহা দিদ্ধ হইতেছে বে, দর্ম কর্ম দল্লাদপূর্মক যে আত্মজাননিষ্ঠা, তাহা হইলেই সংসারের উপরতি হয় এবং ঐ উপরতি বা নিবৃত্তি যে আত্যন্তিক, তাহাও সিদ্ধ হইল।

দেহাভিমানই অবিষ্ঠা; সেই অবিষ্ঠার নিবৃত্তি হইলে দেহও অমুণপর হর। দেহ অমুপপর হইলে, তর্মূলক সংসারও অমুপপর হইরা থাকে। দেহ ও ইল্রির 'প্রভৃতিতে বে আত্মাভিমান, তাহাই অবিষ্ঠা। লোকসমাজে বাহার এরপ জ্ঞান আছে, আমি গো প্রভৃতি হইতে ভিন্ন এবং গো প্রভৃতিও আমা ছইতে ভিন্ন, সে কখনও গোপ্রভৃতিতে আমি এই প্রকার জ্ঞান করিতে পারে না। বাহার প্রকাপ ভেদভান নাই, তাহারই অবিবেক্বশতঃ স্থাপ্তে

পুরুষবৃদ্ধির স্থায় দেহ ও ইন্দ্রিয় প্রভৃতিতে 'আমি' এই প্রকার জ্ঞান হইরা থাকে। বাহার বিবেকজ্ঞান আছে, তাহার এই প্রকার অভিমান কথনও হয় না। শাস্ত্রে যে প্রয়োগ দেখিতে পাওয়া যায় যে, আত্মাই পুত্রনামা 'হইরাছে এবং এই প্রয়োগামুসারে পুত্রাদিতে যে আত্মপ্রভায় হয়, তাহাঙ গৌণ পুত্রের সহিত পিতার জন্মজনকভাবরূপ সম্বন্ধ আছে বলিয়াই [এই প্রকার গৌণ প্রতায়] হইয়া থাকে। গৌণ আত্মা প্রকৃত আত্মার হইয়া পরমার্থতঃ ভোজনাদি কার্য্য নির্ম্বাহ করিতে পারে না; গৌণ সিংহ ও গৌণ অত্মি ব্রুষন প্রস্কৃত সিংহ ও প্রকৃত অধির কার্য্য করিতে পারে না।

যদি বল, "যাগ করিলে অদৃষ্ঠ হয়," এইরূপ শাস্ত্রই ত প্রমাণ এবং এই প্রমাণ দারা পরম্পরায় ইহাই দিদ্ধ হইতেছে বে, দেহ ও ইলিয় প্রস্তৃতি গৌণ আত্মার দারা যথার্থ আত্মার কার্য্য সাধিত হইয়া থাকে, এই প্রকার বলাও সঙ্গত নহে: কারণ, ঐ দেহ ও ইন্দ্রিয় প্রভৃতিতে যে আত্মপ্রতায় হয়, তাহা ভ্রান্তিমাত্র এবং দেহ প্রভৃতিও সেই ভ্রান্তির কার্যা বিত্তীত আর কিছুই নহে], দেহ ও ইক্রিয় প্রভৃতি গৌণ আত্মা নহে। কি তবে গ আ্মা বাত্তবিক অসক হইলেও মিথ্যাজ্ঞানবশতঃ তাহার সহিত দেহ ও ইন্দ্রির প্রভৃতির বে দঙ্গতি হয়, দেই দঙ্গতিই দেহ ও ইন্দ্রিয় প্রভৃতিতে আত্মভাবের আরোপ করিয়া থাকে। তাহার কারণ এই যে, যে পর্যান্ত অবিদ্যা বা ভ্রান্তি বিশ্বমান থাকে, দেই পর্যান্তই দেহ ও ইন্দ্রির প্রভৃতিতে আছভার আরোপিত হয়। আবার যখন সেই অবিভা বা ভ্রান্তি বিনাশ পায়, তথনই দেহ ও ইন্দ্রির প্রভৃতিতে আত্মভাবের আরোপও নিবৃত্ত হইয়া পাকে। যাহারা জ্ঞানহীন অর্থাৎ অবিবেক, তাহাদের অজ্ঞানাবস্থার-জামি দীর্ঘ আমি গৌর—এইরূপে দেহ ইন্দ্রিয় প্রভৃতিতে সাত্মভাবের আরোপ হট্যা থাকে। আমি দেহ ও ইন্দ্রিয় প্রভৃতি হইতে ভিন্ন,-এই প্রকার विदिक्छान बाहारमत्र चारह, जाहारमत धहे अकात खानकारण कथनहे एह ও ইন্দ্রিয় প্রভৃতিতে "আমি" এইরূপ প্রত্যয় হইতেই পারে না। সেই কারণে . [ইহা সিদ্ধ হইতেছে যে] সিণ্যা প্রত্যয়ের অভাব হইলে পাকে না বলিয়া দেহাদিতে অহংপ্রতার নিণ্যা প্রতারেরই কার্যা; •ইহা গৌণ পা**দ্মপ্র**তার इट्रेंटिज शास्त्र ना। त्रिश्ट ও দেবদত অথবা অधि ও মাণবক ইহারা পরম্প্র প্রশার হইতে পৃথক্, সামাঞ্জাবে বা বিশেষভাবে ইহারা কেহই কাছা হইতে अफिन नार, এই श्रकात खानकारने निश्व उ एन्याएखन अभवा अपि उ মাণবব্দের মধ্যে গৌণ প্রত্যায় বা গৌণ শব্দের প্রয়োগ হইরা থাকে। ইহাদের মধ্যে বখন সামাক্ত ও বিশেষভাবে ভেদপ্রভার বিশ্বমান থাকে না, তথন সিংহই দেবদক্ত, অমিই মাণবক, এইরূপ গৌণ প্রভার হইতে পারে না।

তবে বে বলিয়াছিলে, শ্রুতি-প্রামাণ্য-বশতঃ [দেহাদিতে যে আত্মপ্রশুদ্ধার তাহা গৌণ, ইহা] দিছ হইতেছে, তাহাও চইতে পারে না; কারণু শ্রুতির প্রামাণ্য অনুষ্ঠ বিষয়েই অঙ্গীকৃত হইরা থাকে। বাহা প্রত্যক্ষাদি [লোকিক] প্রমাণের বারা সিম্ভ হইতে পারে না তাহাই শ্রুতিরূপ প্রমাণের বারা সিদ্ধ হইরা থাকে। অগ্নিহোত্ত পাগ কারণ, বর্গ কার্য্য; এইপ্রকার কার্য্য-কারণভাবরূপ দম্বদ্ধকে কোন প্রত্যক্ষাদি গৌকিক প্রমাণ দিছ করিতে পারে না: স্থতরাং ইহাকে শ্রুতিরূপ প্রমাণের বারা সিদ্ধ করা বার। আমাদের প্রত্যকাদি প্রমাণ বারা সিদ্ধ চইয়া থাকে, তারা ছাড়া অভ কোন বিবয়কে নিম করিছে পারিলেই, প্রতির প্রামাণ্য নিম হয়। সেই कातरण । देश आक्रोकात कतिराठ व्हेरव (व] अन्तराक्षक: वथन सिक्टिक ষে, দেহাদিতে যে অহপ্রভার, তাহা মিণ্যাজ্ঞানমূলক, তথন [তাহার দহিত বিরোধ করিরা] শ্রুতি কিছুতেই প্রতিপাদন করিতে পারে না বে. এই দেহাদিতে অহংপ্রতার মিথা। নতে, কিন্তু ইহা গৌণ। কারণ, একণত শ্ৰুতি মিলিয়া বদি বলে, অগ্নি শীতৰ বা অঞ্চকাৰ, তাহা হইলে কেইই এ প্রতিশতের প্রামাণ্য অঙ্গীকার করিবে না। বদি কোন হলে "অগ্নি শীতৰ বা মপ্ৰকাশ" এই একার প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণবিক্ষম অৰ্থ শ্ৰুতিতে উলিখিত থাকে, তাহা হইলে ঐ শ্রুতির অন্ত কে।ন লাকণিক অর্থ বিৰক্ষিত আছে. , ইচা মানিতেই হইবে ; কারণ, এই প্রকার না মানিলে, ঐ अভির প্রামাণাই वकुर्गात इस । अभागास्त्रतिकृष वा स्वत्निविकृष वर्ष क्थनहे अचि वाता প্রতিপাদিত হইতে পারে না। মিণ্যাপ্রতারবৃক্ত ব্যক্তিই বদি কর্মের কর্মা হয়, তাহা হইলে বাস্তবিক কর্ত্তা কেহই রহিল না ; স্থতরাং কর্তৃপ্রভৃতির প্রতিপাদক त्व त्वक्छान, छाडा छ अध्याग इटेबा भिज्न ; এই ध्वकांत विन त्कर नदा करत, [তাহার উত্তর এই যে] এইরপ শহাও টিকিতে পারে না। কারণ, বন্ধবিস্থারপ বিষয়কে ব্যায় ই ক্রডিক প্রামাণ্য হইতে পারে।

কর্মবিভাবিধারক বেদভাগের ভার বৃদ্ধবিভাবিধারক বৃষ্ণভাগেরও অপ্রামাণ্য প্রসক্ত হইভেছে, এই প্রকার শভাও হইভে পারে না ; কার্মবু, ব্রহ্ম-বিভাবিধারক বেদভাগের বাধক কোন প্রকার কান গৃষ্ট হয় না । ব্রহ্মবিভার

विधासक अधित माहारा आश्वात वर्धार्थ खत्राण अवगठ हहेरा, रामन प्रह छ ইস্ক্রির প্রভৃতিতে অহংপ্রতার [আমি এই প্রকার জান] বাধিত হর, সেইরূপ উপনিষ্বাকাসমূহের ছারা যথার্থ আত্মাকে আত্মা বলিয়া বে জ্ঞান উৎপন্ন, মেই জ্ঞানকে কেহ কোন কালে কোনরূপে বাধিত করিতে পারে, এইরূপ হইডেই পারে না। কারণ, প্রকৃত আত্মাকে আত্মা বলিয়া যে জ্ঞান হর, তাহার कन कथनरे वाकिनाती रम ना : तमन समि डेक ९ श्रकाम- এই প্রকার वर्शार्थ অগ্নির মনুভব। সারও দেখিতে হইবে বে কর্মবিভার বিধারক বেদভাগ বে একেবারেই প্রমাণ নহে, তাহা নহে। কারণ, ঐ কর্মবিছার প্রতিপাদক বেদভাগ [মানবের স্বভাবজাত বাহ্যবিষয়ক] পূর্ব্ব পূর্ব্ব প্রবৃদ্ধিকে নিরোধ করে · এবং সেই সঙ্গে উররোতর অপূর্ব অর্থে প্রবৃত্তি অন্যাইরা [এইরূপ ক্রমে] বাছ বিষয় হইতে আন্তর বিষয়ে প্রবৃত্তির উৎপাদন দারা সেই প্রত্যক [অর্থাৎ পরম] আত্মা বিষয়ে আমাদের প্রবৃত্তি যাহাতে অভিমূপ হয়, তাহাই করিয়া দেয়। এই क्षकात छेलांब त्मारं मिथा। हरेताथ हेरांत कन त्यरहर् मिथा। नरह, त्मरे कांत्ररं ইহাকেও সভ্য বলিয়াই অঙ্গীকার করিতে হইবে। কর্মকাণ্ডের প্রামাণ্য ঘাঁহারা অঙ্গীকার করেন, তাঁহারাও ইহা মানিয়া থাকেন যে, অর্থবাদবাকাসমূহ 'অন্নং প্রমাণ না হইলেও, কোন প্রকারে বিধিবোধিত কর্ম্মের অনুষ্ঠানের **অনুক্**র অর্থ প্রকাশ করিরা থাকে বলিয়া প্রমাণের মধ্যেই পরিগণিত হইয়া থাকে। লোকমধ্যেও দেখিজে পাওয়া বার বে, বালক বা উন্মন্তকে ছথ্ প্রভৃতি পান ক্রাইতে হইলে বলিতে হর বে, ইহা থাইলে তোমার চূড়াটি বড় হইবে। আছুলানের উদর যে পর্যান্ত না হয়, সে পর্যান্ত ঐ সকল কর্মপ্রতিপাদক বেদভাগের [ব্যবহারিক বিষয়ে] প্রামাণ্য ত সিদ্ধই আছে। বেমন আয়্ব-ভদ্বজানের উদর হইবার পূর্বে দেহপ্রভৃতিতে আত্মাভিমানের ফলস্বরূপ যে প্রতাক অনুমান প্রভৃতি, তাহা সকলের নিকটই প্রমাণ বলিয়াই অন্তীক্তত হইরাই থাকে [দেইরপ প্রকৃত আয়ুক্তানের পূর্বে কর্মকাণ্ডেরও প্রামাণ্য वजीक्र हरेत्रा शास्त्र]।

আরও তুমি মানিরা পাক বে, আত্মা নিজে সর্বপ্রকার ব্যাপার রহিত হইলেও, সরিধানে আছে বলিরা উহাকে কোঁও বলা নার, এই সরিধানে অবস্থিতিই ভাহার মুখ্য কর্তৃত্ব; বেমন সেনাগণই যুদ্ধ করিরা, পাক্ষে; কিন্তু সরিধানবশতঃ কোকে বলিরা থাকে বে, রাজা বৃদ্ধ ভিত্তিতেহন; ভিনি নিজে বৃদ্ধ না করিলেও সরিধানবশতঃ অরী হইলেন

বা পরাজিত হইলেন এই প্রকারও লোকে বলিয়া থাকে। এই-রূপ সেমাপতি কেবল যুদ্ধ করিতে আদেশনাত্র দিয়া থাকেন, তথাপি যুদ্ধক্রিয়ার বে কল জর বা পরাক্তম, তাহা রাজা বা দেনাপতিরই হয়, ইহা দেখিতে পাওয়া ৰার। এইরূপ পুরোহিত বাগ প্রভৃতি করিলেও, তাহার ফল বে পুণারূপ चानृष्ठे, जारा यक्षमार्त्नत्रहे रहेशा शारक। त्महेन्नश त्मरामित्र कर्मा आंचाकुक হইতে পারে; সারণ, ঐ কর্মের যে ফল, তাহা ত আত্মারই হইরা থাকে। িনিজের কোন প্রকার ব্যাপার না থাকিলে, সন্নিধানবশত: অপরের ব্যাপারকে উৎপাদন করে, এমন দৃষ্ঠান্তও দেখিতে পাওলা যায়।] বেমন চুম্বক শ্বরং कान अकात वालारतत जाला ना रहेता कित्वत निर्मात वाता रगोरहत পরিভ্রামক হর বলিয়া, তাহা মুখ্য কর্জ্ব অঙ্গীকার করা বার [প্রকৃত স্থলেও সেইরূপ হইতে পারে অর্থাৎ] সেই আত্মার কোন প্রকার ব্যাপার না থাকিলেও, স্ত্রিধানবশতঃ তাহার মুধ্য কর্তৃত্ব হইতে পারে। এই প্রকার সিদ্ধান্ত যুক্তিসঙ্গত হইতে পারে না। কারণ, তাহা হইলে যে কিছুই করে না, তাহাকেও কারক বলিবা অঙ্গীকাব করিতে হয়। যদি বল কারক ত নানা প্রকার, তাহাও ठिक नत्ह, दि करत तम कईकातक इटेर्ड भारत, य करत ना, तम कातक হইতে পারে না; স্কুতরাং নানাপ্রকার নহে, উহা এক প্রকারেরই হয়, বেমন] রাজা বা সেনাপতির যে কড়ঃ, তাহা মুখাই হইয়া থাকে, ইহা সম্ভব। গ্দে রাজার নিজের ব্যাপার দেখিতে পা ওয়া যায়; হয় তিনি যুক্ত করিবার অস্ত স্বয়ং আদেশ করেন, কিংবা ধন প্রদান করেন। স্থতরাং যুদ্ধে তাঁহার মুধ্য কতৃত্বই সম্ভবপর। স্মৃতরাং জন্ম বা পরাজন্তরপ যুদ্ধের যে ফল, তাহা তিনি স্বন্ধই ভোগ করিয়া থাকেন। দেইরূপ যজ্মানও যাগের জন্ত অত্যন্ত আবশুক বে দ্রব্যু তাহা ত্যাগ করেন এবং পুরোহিতগণকে দক্ষিণাও দিয়া থাকেন; স্থতরাং তাঁহারও কর্ভুদ্ব মুধ্যই হইরা থাকে। তবেই দাঁড়াইতেছে বে, নিজে বে ব্যাপৃত নহে, তাহার মুখ্য কর্তৃত্ব সম্ভবপর নহে। তাহার কর্তৃত্ব গৌণ। বদি রাজা ও বন্ধমানের চুখকের ভার একেবারে নিজের কোন ব্যাপার দেখিতে পাওয়া না ঘাইত, তাহা হইলে তাহাদের সন্নিধানবশতঃই মূখ্য কর্ত্ব অঙ্গীকার করা ষাইত। বাঞ্ডবিক কিন্তু সেইরপ করনা করা যার না; কারণ রাজা ব युक्तमानाषित्र य निष्कत कान ध्यकात वार्णात रत ना, जारा ज मर् । रम्हे कांतर्त [विनाट इहेरव य], मतिशान मांबहे य कर्ष्य. जाहा [मूराकर्ष्य मरह] किंदु (त्रीन कर्ड्द। (त्रीन कर्त्वात कन मक्दि (त्रीनहें हहेजा **धारक**)।

গোণ কথন মুখ্য কার্য্য করিছে পারে না। সেই কারণে [বলিতে হইতেছে], সাংখ্যাচার্য্যগণ বলিরা থাকেন বে, দেহাদির ব্যাপারবশতঃ আত্মা ত্বরং ব্যাপার-রহিত হইরাও কর্তা এবং ভোকা হইতে পারেন, তাহা যুক্তিসক্ত নহে। এই-রূপ ভ্রম হইরা থাকে, এই প্রকার মানিরা লইলে কিন্তু, সর্বপ্রকারে উপপত্তি, হইতে পারে। বেমন স্বপ্রাবহার কিংবা ঐক্তকালিকের মারার ভ্রান্তিমূলক সকল ব্যবহার হইরা থাকে [প্রকৃত স্থলেও সেইরূপ হইরা থাকে]। আরও দেখিতে হইবে বে, স্বর্থ্য বা সমাধির সমর আমাদের দেহাদিতে আত্মপ্রত্যেরকপ ভারিধারার বিচ্ছেদ হর এবং সেই বিচ্ছেদদশার আমাদের কর্তৃত্ব ভোকৃত্ব প্রস্তৃত্তি সংসারক্রপ অনর্থও উপলব্ধ হর না। সেই কারণে ইহা সিদ্ধ-ইইতেছে যে, এই সংসারক্রম ভান্তিপ্রত্যারমূলক; সম্যক জ্ঞানের উদয় হইগেই, ইহার আত্যন্তিক উদ্দেদ হইরা থাকে ॥ ৬৬

ইদং তে নাহতপক্ষায় নাহভক্তায় কদাচন। ন চাহশুশ্ৰাষ্টবে বাচ্যং ন চ মাং যোহভ্যসূয়তি॥ ৬৭

আৰুষু । অতপন্ধার ইনং তে কদাচন ন বাচ্যং তথা ন অভক্রায় [বাচ্যং] ন চ অভ্যান্তবে [বাচ্যং] যঃ চ মাং অভ্যান্তবিত তামৈ অপি ন [বাচ্যং] ॥ ১৭

আসুবাদ। বে. তপৰী নহে, বে ভক্ত নহে, ও যে আমার দেবক নহে, তাহাকে এই বিষয়ের উপদেশ তুমি দিও না, বে ব্যক্তি আমার প্রতি অস্থা করে, তাহাকেও কখনও তুমি এই বিষয়ে উপদেশ দিও না॥ ৬৭

ভাষ্য। দর্বং গীতাশারার্থম্পসংঘত্য অন্তিন্ অধ্যারে বিশেষতশ্চান্তে ইছ
শারার্থদার্চ্যার সংক্ষেপত উপসংহারং করা অর্থেদানীং শার্ত্রসম্প্রদার্বিধিমাহ—
ইদং শারুং তে তব হিতার মরোক্তং সংসারবিচ্ছিত্তরে, অতপদার তপোরহিতার
ন বাচ্যম্ ইতি ব্যবহিতেন সম্বধাতে। তপবিনেহিপ অভক্তার গুরৌ দেবে
চ ভক্তিরহিতার কদাচন ক্রাঞ্চিদপ্যবহারাং ন বাচ্যম্। ভক্তং তপন্থী অপি
সন্ অভশ্রের্বা ভবতি তকৈ অপি ন বাচ্যম্। ন চ বো মাং বাস্থদেবং প্রাকৃতৎ
ব্যন্ত্রাং মন্ধা অভ্যন্তরতি আত্মপ্রশংসাদিদোবাধ্যারোপপ্রেন মনেশ্রর্থমজ্ঞানন্ ন
সহতে, অসাবিপি অবোগ্যক্তরে অপি ন বাচ্যম্। ভগবতি * ভক্তার্ম ভপবিনে
ভক্তার্যবে অনস্থবে চ বাচ্যং শার্জমিতি সামর্য্যাদবগন্যতে। তর্ত্ত মেধাবিনে

ভগৰতি অনক্ষাবৃক্তার তপধিনে ইতি পাঠান্তরন্।

তপশ্বিনে বাইতানরোর্বিকরদর্শনাং। শুশ্রবাভক্তিযুক্তার তপশ্বিনে তদযুক্তার বিষাবিনে বা বাচ্যম্। শুশ্রবাভক্তিবিযুক্তার ন তপশ্বিনে নাপি মেধাবিনে বাচ্যম্। শুগ্রবিভি অস্থাযুক্তার সমন্তগুণবতেহপি ন বাচ্যম্। শুরুশুশ্রবাদ তক্তিমতে চ বাচ্যম্ইত্যের শান্তসম্প্রদারবিধিঃ॥ ৬৭

श्रांबन्स्तिविका। श्रांखणारशर्यार्थः विवायवात्रा निर्दार्थानस्त्रतमान-মৰতাররতি —সর্ববিমিতি। প্রকৃতে থবটাদশাধাারে গীতাশাস্তার্থং দর্শং প্রতি-প্রিসৌক্র্যার্থম্পদংক্ত্যান্তে চ সর্ব্বধর্মান পরিত্যক্র্যেত্যানে বিশেষকত সংক্ষে পেলোপসংহারং কথা সম্প্রদারবিধিবচনস্থাবসরে সন্তীদানীমিতি বোজনা। কিমিভি বিস্তরেণোপসংহৃতঃ শাল্লার্থ: সংক্রিপ্যোপসংছিরতে তত্তাহ - শাল্লা-র্থেতি। সংক্ষেপবিস্তারাভ্যামুক্তোহর্থ: সর্কেবাং দৃঢ়তথা বুদ্ধিমধিরোহতীত্যর্থ:। हिভারেত্যেতদেব ব্যাচষ্টে—সংসারেতি। কদাচনেতি সর্বৈ: সম্বাতে। প্রতি-বেধসামর্থ্যদিদ্ধমর্থং কথরতি—ভগবতীতি। অর্থদিদ্ধেহর্থে বৃত্যস্তরমন্ত্রস্থতা মেধাবিত্বমন্তর্ভাবম্বতি— তাত্তেতি। বিকরদর্শনাৎ তের উক্তের বিশেষণের মেধাবিত্বমণি প্রবিশতীভার্থঃ। বিকরণকে কথমধিকারিপ্রভিগন্তিরিতি তত্তাহ— 👟 🛎 যেতি। তাভ্যাং যুক্তার ভগবতাহুরারহিতার তপন্থিনে বাচ্যমিতি সম্বন্ধঃ। তদ্ৰুক্তার শুক্রবাভক্তানস্থাসহিতায়েতার্থঃ। তপস্বিত্বং মেধাবিত্বং বা নিরপৈক-মধিকারিবিশেবণমিতি শকাং শাতরতি—শুক্রারেতি। ভগবদ্বিবরাস্বারাহিত্যে তাংপর্য্যৎ স্কুচরতি—ভগ্নবন্তীতি। কলৈ তর্হি বাচ্যমেতদিত্যাশস্ক্য পুর্ব্বোক্ত-নৰ্ম গুণদশ্যনারেত্যাহ--- প্রুক্ত ক্রেন্ডেনি । অমুক্তেতরবিশেবণোপলকণার্থমুভর-গ্রহণম। মেধাবিনস্তপশ্বিদ্ধং নাতীবাপেকতে সর্ব্বমক্তদবাধকাভাবাদপেকিতমেবেডি ভাব: ৮৬৭

ভাসুবাদ। এই অধ্যানে সামান্তভাবে গীতাশান্তার্থের উপসংহার করিরা, এইপানে অধ্যানের অন্তে শান্তার্থের দৃঢ়তা রক্ষা করিবার জন্ত সংক্ষেপতঃ আবার বিশেষভাবে উপসংহার করিয়া, এইকণে কি ভাবে শান্ত্রসম্প্রায় রক্ষিত হইবে, তাহারই বিধি বলিতেছেন। এই যে শান্ত্র অর্থাৎ তোমার সংসার-বিজেপর্মপ্রমান্তরের জন্তর মাহা আমি বলিলান, তাহা "অতপন্তার্গ তপভারহিতব্যক্তিকে বলিও না [এই দ্রন্থিত পদের সহিত ইহার অব্য করিতে হইবে] তপত্বী অথচ মাহার্গ ভজি নাই, তাহাকেও "কদাচন" কোন প্রকার অবস্থান্ত বলিও না । ভজ্জ এবং তপত্রী হইরাও যে শুলার্ নহে, তাহাকেও বলিও না । যে ব্যক্তি আমানিক বন্ধদেবের প্র ও প্রান্ধত মধুষ্য বিবেচনা করিয়া আমার প্রতি অনুমান্তরে

অর্থাৎ এই সীতাশান্তে আমার নিজ মুখ হইতে আমার নিজেরই প্রশংসা প্রস্তৃতিকে দোব বলিরা বিবেচনা করিরা, বে ব্যক্তি আমাকে অক্সানবশতঃ ঈর্পর বলিরা বিখাস করিতে চাহে না, তাহাকেও বলিও না; কারণ সে ব্যক্তি এই শান্ত্রশ্রবণে অধিকারী নহে। ইহা দারা অর্থতঃ ইহা বুঝান হইতেছে বে, বাহার ভগবানে ভক্তি আছে, বে ভগবী এবং শুশ্রবাপর এবং যে অস্বরারহিত তাহাকেই বলিও। [শান্তান্তরে] মেধাবী ও তপস্বীর মধ্যে বিকর দেখিতে পাওরা বার [অর্থাৎ মেধাবিদ্ধ এবং ভগস্বিদ্ধ এই ছইটি খণই যে আবশুক, তাহা নহে; এই ছইটির মধ্যে একটি থাকিলেও এই শান্ত্র শ্রবণে অধিকারী হইতে পারা বার] স্বভরাং এই প্রোকের এই প্রকার তাৎপর্য্য বর্ণন করিতে হইবে বে, শুশ্রবা ও ভক্তিমুক্ত ভগস্বী কিংবা গুশ্রবা ও ভক্তিমুক্ত মেবাবীকে বলিবে। বাহার শুশ্রবা এবং ভক্তি নাই, সে তপস্বীই হউক বা মেধাবীই হউক; তাহাকে বলিবে না। ভগবানের প্রতি যে ব্যক্তি অস্থ্রা করে, তাহার আর সকল খুণ থাকিলেও তাহাকে বলিবে না। বে শুক্তপ্রম্ব এবং শুক্তক্ত, তাহাকেও বলিবে, ইহাই হইল শান্ত্রসপ্রধার বিধি ॥৬৭

় য ইমং পরমং গুহুং মদ্ভক্তেদ্বভিধাশ্যতি। ভক্তিং ময়ি পরাং কৃত্বা মামেবৈষ্যত্যসংশয়ঃ॥ ৬৮

আৰুষু । যা নরি পরাং ভ'জিং কারা নদ্ভকের্ ইনং পরনং শুহুং [শারার্থং] অভিযান্ততি [সা:] অসংশয়া [সন্] মান্ এব এয়তি ॥ ৬৮

অকুবাদ। আমার প্রতি ভক্তি করিয়া মদ্ভক্তগণের নিকট বে ব্যক্তি এই পরম শুহু বিবরের উপদেশ করিবে, তাহার সর্বপ্রকার সংশর মিটিয়া বাইবে এবং সে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে॥ ৬৮

ভাষ্য। সম্প্রদারত কর্ত্বঃ ফলমিদানীমাহ—য ইমং যথোক্তং পরমং
মিঃশ্রেরসার্থং কেশবার্জ্বনরোঃ সংবাদরূপং প্রসং গুরুং গুরুং গোপ্যং মন্তক্তের্
মরি ভক্তিমংক্ত অভিযাতিতি বক্ষাতি গ্রহতঃ অর্থতক্ত স্থাপরিব্যতি ইত্যর্থঃ।
যথা দ্বরি মরা। ভক্তেঃ পুনুগ্রহণাৎ ভত্তক্তি-+ মাত্রেণ কেবলেন শার্ত্তন্তাদানে পারেং ভবতি ইতি গম্যতে। কথমভিধাততি ইত্যুচ্যতে—ভক্তিং
মরি পরাং ক্রম্বা ভর্মবতঃ পরমগুরোঃ † শুক্রমা মরা ক্রিরতে ইত্যেবং

ভিন্তিৰাত্ত্ৰেৰ কেবলেন ইত্যাণি পাঠঃ।

[🕇] অচ্যতশ্ৰ ইত্যুদিকমণি কচিৎ দুখতে।

ক্বা ইত্যর্থ। তত্তেলং ফলং মাম্ এব এব্যতি মুচ্যত এব। অত ন সংশব্ধ কর্ত্ব্যঃ। ৬৮

আনন্দ্গিরিটীকা। শান্ত্রসম্প্রদারপ্রবৃত্ত্যর্থমূত্তরশ্লোকপ্রবৃত্তিং দর্শরতি—
সম্প্রদায়স্তেতি। ব ইত্যধাপকো নির্দিশ্রতে। পরমন্ধং গ্রন্থত নিরতিশরপুরবার্থসাধনস্থমিত্যাহ—পরম্মিতি। গোপ্যমান্ত রহন্তার্থবিষয়স্থাং বথোজ্যংবাদক্ত
গন্ধতাহর্থতক্ষ ভক্তের্ স্থাপনে দৃষ্টান্তমাহ— যথেতি। মরি বাস্ক্রদেবে ভগবতি
আনম্ভর্জে বরি বণা মরা গ্রন্থোহর্থতঃ স্থাপিতত্তথা মন্তক্ষেপ্রস্থাপ বো গ্রন্থমিমং
ছাপরিব্যাতি তক্তেদং কলমিত্যুত্তরক্ত সম্বন্ধ:। নাভক্তারেতি ভক্তেরধিকারিবিশেবণন্বোজের্মন্তক্তেবিতি পুনর্ভক্তিগ্রহণমনর্থকমিত্যাশন্ত্যাহ—ভক্তেরিতি।
ভক্তাবাদিসহকারিরাহিত্যং কেবলশন্ধার্থ:। যক্ত্রপি মাত্রশক্ষেন স্থাতিনেতার তথাপি
ইতরেণ স্ফুটীক্রভমিত্যবিরোধ:। প্রশ্নপূর্বক্ষভিধানপ্রকারমভিনরতি—ক্রপ্রমিত্যাদিনা। ভগবতি ভক্তিকরণপ্রকারং প্রকটরতি—ভগবত ইতি। বচ্ছম্বাপেক্ষিতং প্রয়তি—তস্তেতি। মামেব্যত্যেবেত্যবরং গৃহীদ্বা ব্যাচক্টে—
মুচ্যত এবেতি॥ ৬৮

অনুবাদ। এগণে সম্প্রদায়কর্তার কি ফললাভ হইবে, তাহাই বলিতেছন।
আমি তোমাকে বাহা বলিলাম, বে ব্যক্তি সেই এই "পরম নিঃশ্রেরসকর" "এছ"
গোপনীর কেশব ও অর্জুনের সংবাদরপ প্রস্তের উপদেশ আমার ভক্তগণের
নিকটে করিবে অর্থাৎ এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শুনাইবে, অথবা ইহার ব্যাখ্যা
করিয়া অর্থ শুনাইবে, যেমন আমি তোমার নিকটে করিলাম। এইখানে পুনর্কার
ভক্তির নাম করার ইহাই প্রতিপাদিত হইতেছে যে, অন্ত কোন গুণ না ণাকিলেও
বাহার একমাত্র ভক্তিই আছে, সেই এই গ্রন্থ শুনিতে অধিকারী হইয়া থাকে।
কি প্রকারে এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া বা ব্যাখ্যা করিয়া শুনাইবে? আমাতে
ভক্তি করিয়া, অর্থাৎ এইরূপ কার্য্যের দ্বারা সেই পরমগুরু ভগবানেরই আমি
শুন্রমা করিতেছি, এই প্রকার নিশ্বর করিয়া, ইহাই অর্থ। তাহার ইহাই
ফল—সে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে অর্থাৎ [সংসারত্বংথ হইতে] মুক্তিলাভ
করিবে, এই বিষয়ে কোন প্রকার সংশব্ধ করা উচিত নহে॥৬৮

ন চ তন্মানুমুহায়ের কশ্চিমে প্রিয়ক্তমঃ। ভবিতা ন চ মে তন্মাদন্তঃ প্রিয়তরে। ভূবি॥ ৬৯

আৰ্য়। মহয়েৰ ডকাৎ কশ্চিৎ মে প্ৰিয়ক্তমো নাখি, ন চ কশ্চিৎ ডকা-দক্ষ: প্ৰিয়ন্তরঃ ভূবি ভবিডা॥৬৯ অনুবাদ। মহয়গণের মধ্যে সেই মহয় অপেকা আমার প্রিয়-ক্রম কেহই নাই এবং পৃথিবীতে সেই ব্যক্তি ভিন্ন কেহই আমার প্রিয়ন্তরও হইবে না ৪৬১

ভাষ্য। কিঞ্চলন চ তত্মাৎ শাল্তসম্পানরকতঃ সম্বোধ্ মন্ব্যাণাং মধ্যে কশ্চিমে মম প্রিরক্তমঃ অভিশব্দেন প্রিরক্ত ততোহতঃ প্রিরক্তমো নাস্তোব ইতার্থঃ বর্তমানের। ন চ ভবিতা ভবিষ্যতাপি কালে তত্মাদিতীয়োহতঃ প্রির-ভবা ভবি লোকেহমিন্ ॥৬১

আনন্দগিরিটীক। । নমু সর্বেষাং মৃক্তিসাধনানাং ধ্যানস্ত শ্রেষ্ঠছাৎ ভরিষ্ঠত মুমুক্তোনান্তি বিভাগভাদানে প্রবৃত্তিরিভি ভরাহ—কিঞ্জেতি। ইভঙ্গ বিভাগভাদানং মুমুক্তা বংগাজবিশেষণবতে কর্ত্তব্যমিত্যর্থ:। বর্ত্তমানের মধ্যে ভতো-হল্যো নাজ্যেব প্রিয়ক্তমো নাপ্যতীতের ভাদৃক্ কশ্চিদাসীদিভিশেষঃ। তন্দাদ্ বিভাগভাদায়কর্ত্ত্যু সকাশাদিভার্থ:। ধ্যাননিষ্ঠত শ্রেষ্ঠতেম্পি স্বস্ত্রাদায়কর্ত্তুঃ প্রকাশাদিভার্থ:। ধ্যাননিষ্ঠত শ্রেষ্ঠতেম্পাত্তিতা বিভাগভাদানে প্রবৃত্তিরিভি ভাবঃ ॥৬৯

অনুবাদ। আরও [বলি শুন]—বে এই প্রকারে এই শান্তের সম্প্রদার করিবে, সেই ব্যক্তি অপেকা মহয্যগণের মধ্যে কোন ব্যক্তিই আমার শিপ্তারক্তম" (বে অতিশন্ধ প্রের করে, তাহাকেই প্রিরক্তম কহা যায়) বিশ্বমান নাই অর্থাৎ মহুরাগণের মধ্যে কেইই সেই ব্যক্তি অপেকা আমার অধিক প্রির করিতে পারে না; এবং ভবিষ্যৎস্কালেও সেই ব্যক্তি ব্যতীত অন্ত কেইই আমার অতিশন প্রির ইতে পারিবে না—এই লোকে ॥৬৯

অধ্যেষ্যতে চ য ইমং ধর্ম্ম্যং সংবাদমাবয়োঃ। জ্ঞান্যজ্ঞেন তেনাহমিষ্টঃ স্থামিতি মে মতিঃ॥ ৭০

আৰুয়। আবয়োঃ ইমং ধর্মাৎ সংবাদং চ বং অধ্যেষ্তে তেন জ্ঞানক্ষেন জহম্ ইট্টা স্থাম্ ইতি মে মতিঃ ॥ ॰ ॰

অফুবাদ। আমাদের এই ধর্মজনক সংবাদ বে ব্যক্তি অধ্যয়ন করিবে, সে জানবজ্ঞের বারা আমাকে পরিভৃপ্ত করিবে, ইহাই আমার মত ॥१०

ভাষ্য। বেহিপি—অধ্যেষ্যতে চ পঠিষ্যতি চ ষ ইনং ধর্মং ধর্মাদনপেতং সংবাদরূপং প্রস্থন্থ আৰক্ষেত্রেদং কৃতং ভাং। জানযজেন বিধিন্দেপাপাংশু-মানসানাং বজানাং জানযজঃ মানসম্বাং বিশিষ্ট্রতম ইত্যতত্ত্বেন জানবজেন গীতা-পাক্ষাধ্যাদ্বনং অ্বতে। ফলবিধিরেব বা দেবতাদিবিধয়ক্কানযজ্ঞকাত্ন্যমন্ত ফলা ভবজীতি। তেন অধ্যয়নেন অহমিষ্ট: পৃঞ্জিত: ভাং ভবের্মিডি মে মৃতিঃ নিশুর: ॥৭০

আনন্দণিরিটীকা। সম্প্রদারপ্রবক্ত: সর্বাধিকং কলম্ "স বক্তা বিষ্ণুরিত্যুক্তোন স বিশাধিদৈবতম্" ইতি ভারেনোক্তা সম্প্রভাগ্যেত্র্বিক্রিতং ফলমার

"বোহপীতি। যথোকত শাস্তত বোহপাগ্রেতা ভেনেদং ক্রতং তাদিতি সম্বন্ধ:
তদেবার—আধ্যেষ্যুত ইতি। তেনেদং ক্রতমিত্যাত্রেদং শলার্থং বিশদরতি—
ভ্রানেতি। তেনাহমিষ্ট: তামিতি সম্বন্ধ: । চতুর্বিধানাং যজ্ঞানাং মধ্যে জ্ঞানযক্তত্র "শ্রেরান্ দ্রব্যমনাদ যজ্ঞাং জ্ঞানযক্ত:" ইতি বিশিষ্ট্রভাতিধানাং তেনাহমিষ্ট:
তামিত্যধার্মত স্বতিরভিমতেত্যাহ—বিধীতি। পক্ষান্তরমাহ—ফলেতি।
ফলবিধিমেবং প্রকটরতি—দেবতাদীতি। যদি জ্ঞানযক্তত্র ফলং কৈবল্যং তেন
তুল্যমন্ত্রাধ্যেত্: সম্পন্ততে তচ্চ দেবতাদ্বাত্রখ্যমিত্যর্থ: । কণমধ্যরনাদেব সর্বাত্রম্বং
কলং লভ্যতে তন্ধাং তৎসর্বমভবদিতি শ্রুতিন্ত্রাহ—তেনেতি। তেনাধ্যেত্রা
জ্ঞানযক্ত্রত্বানাধ্যরনেন ভগবানিষ্ট্রপা চ তক্ত্র্জানাচ্তরং ফলমবিক্রমেত্রর্থ: ॥ ০

অকুবাদ। যে ব্যক্তি অধ্যয়ন করিবে অর্থাৎ পাঠ করিবে [কি ?] এই "ধর্ম্মা" ধর্ম হুইতে অনপেত [অর্থাৎ ধর্মজনক] আনাদের কথোপকথনরপ এই গ্রন্থ। সে ব্যক্তি ইহা করিবে। [কি করিবে?] সে জ্ঞানবজ্ঞের ধারা আমার পূজা করিবে। বিধি, জপ, উপাংশু ও মানস এই কয়প্রকার যজ্ঞের মধ্যে জ্ঞানবজ্ঞ যে কারণে মানস, সেই হেতু শ্রেষ্ঠ; স্কুতরাং সেই জ্ঞান-যজ্ঞের সমান বলিয়া গীতাশান্তের অধ্যয়নের শ্বুতি করা হইতেছে। অথবা ইহা ফলবিধি [এইরপ বিধির তাৎপর্যা এই যে] দেবতাদির উপাসনারপ ,যে জ্ঞানবজ্ঞ, তাহার যে ফল, এই গীতাশাস্ত্রের অধ্যয়নেরও ফল তাহার জুলাই হইরা থাকে; সেই অধ্যয়নের ধারা আমি পূজি, হইয়া থাকি, ইহাই আমার "মৃতি" নিশ্চর ॥৭০

· अक्षावाननमृत्र क भृशूत्रामि या नतः।

সোহপি মুক্তঃ শুভান্ লোকান্ প্রাপ্ন পুণ্যকর্মণাম্ ॥৭১

আন্ত্য । বো নর: শ্রদাবান্ অনস্রশ্চ [সন্] শৃগ্রাদপি সোহপি স্কঃ পুণ্যকর্মণাং ভভান লোকান্ প্রাথ্যাৎ ॥ ৭১

- অনুবৃদ্ধি। বে মানব শ্রদ্ধালু এবং অহরার্হিত হইরা ইহা শ্রবণ করিবে, নৈ পাপমুক্ত হইরা পুণাকর্মনিরত ব্যক্তিগণের [প্রাপ্য] মললমর লোকসমূহ [ভোগ করিবার জম্ম] প্রাপ্ত হইবে ॥१১ ভাষ্য: ৷ অথ শ্রোভ্রিদং ফল'—শ্রদাবান্ শ্রদধানঃ অনস্বদ্ধ অস্বা-বার্জ্জঃ সন্ ইমং গ্রন্থং শৃণ্যাদপি যো নরঃ অপিশন্ধাং কিম্ভার্যজ্ঞানবান্ সোহপি পাপাৎ মৃক্তঃ ভভান্ প্রশন্তান্ লোকান্ প্রাগ্রাৎ পুণ্যকর্মণাং অগ্নিহোত্রা-দিকর্মবভাষ্ ॥৭১

আনন্দগিরিটীকা। প্রবজুরধাতৃন্চ ফলমুক্তা শ্রোত্রিদানীং ফলং কথয়তি—অথেতি॥৭১

• অকুবাদ। তাহার পর একণে শ্রোতার এই কল হইবে—"শ্রদ্ধাবান্"
বিশাসমূক্ত এবং "অনস্ম" অংমাবর্জিত হইমা বে মকুষ্য শ্রবণও করিবে। এখানে
অপি শক্টি থাকায় এইরূপ স্থতিত হইতে চ, বে ব্যক্তি শুনিয়া অর্থ বোধ করিতেপারিবে, তাহার পক্ষে মার অধিক করিয়া বলিব ? [কি ?] যে এই গ্রন্থ
কেবল শ্রবণও করিবে, দেও পাপ হইতে মুক্ত হইয়া পুণ্যকর্মা অর্থাৎ অক্সিহোত্রাদিপুণ্যকর্মনিয়ত ব্যক্তিগণের "শুভ" প্রশন্ত লোকসমূহকে প্রাপ্ত হইবে ॥১১

কচ্চিদেতচ্ছুতং পার্থ ছয়ৈকাগ্রেণ চেতদা। কচ্চিদজ্ঞানসম্মোহঃ প্রনফক্তে ধনঞ্জয়॥ ৭২

আহ্বয়। হে পার্থ ! ত্বরা একাগ্রেণ চেতসা কচিৎ এতৎ শ্রুতম্ ?.হে ধনঞ্জ ! তে অজ্ঞানসম্মোহঃ কচিৎ প্রনষ্টঃ ? ৭২

অনুবাদ। হে পার্থ! তুমি কি একাগ্রচিত্তে ইলা শ্রবণ করিয়াছ? তে ধনঞ্জার, তোমার অব্দানজনিত মোহ কি প্রানষ্ট হইয়াছে ? ৭২

ভাষ্য। শিষ্য শাস্ত্রার্থগ্রহণা গ্রহণবিবেকবৃত্ৎসন্ধা পৃচ্ছতি। তদগ্রহণে জ্ঞাতে প্নপ্রাহিরিয়ামি উপায়ান্তরেণাপি ইতি প্রষ্টুরভিপ্রার:। যক্ত্রান্তরমান্তার শিষ্য: কর্ত্রার ইত্যাচার্য্যধর্ম: প্রদশিতো ভব'ত — কচিৎ কিম্ এতং মধা উক্তং ক্রাহণে স্বধাবিতম্ ? পার্থ! কিং ত্রা একার্গ্রেণ চেত্রমা চিল্তেন কিংবা প্রমাদিতম্ ? কচিদজ্ঞানসংমোহ: অজ্ঞাননিমিত্তঃ সংমোহো বিচিত্তভাব: অবিবেকতা স্বাভাবিক: কিং প্রনষ্টঃ ? যদর্থ: অরং শাস্ত্রবণায়াসঃ তব, মম চ উপদেষ্টু তারাসঃ প্রনষ্টন্তে তব ধনঞ্জয় ॥৭২

তানন্দগিরিটীকা। সাচার্ব্যেণ শিষ্যার বাবদজ্ঞানসংশরবিপর্য্যাস: তাবদনেক্ষোপদেষ্টবামিতি দর্শরিত্ব ভগবানর্জ্বনং প্রতি পৃষ্টবানিত্যাহ—শিষ্যুস্তেতি।
প্রাষ্ট্রজিপ্রার্থ প্রকটরতি—তদগ্রহণ ইতি। শিষ্যুদেছক্তং গ্রহীত্বং নেট্রে
ভর্মিত প্রত্যোদানীক্স।চার্য্যক্রোচিতং তক্ত মন্দর্জিম্বাদিত্যাশক্ষ্যাহ—যত্নান্তরমিতি। কচিদিতি কোমল গ্রন্ধে। তমেব ব্যাচ্টে—কিমে শিকি। দিতীয়ং

কিংপদং পূর্বন্ত ব্যাখ্যানতয়া সমধ্যতে। কচিদিতি দিতীয়ং প্রান্ত বৈভলতে

কিংপদং পূর্বন্ত ইতি। মোহপ্রণাশত প্রসঙ্গং দর্শরতি—যদর্থ ইতি।

অসুবাদ। শিষা শান্তার্থ গ্রহণ করিতে পারিলেন কি না, তাহা জানিবার লক্ত জিজ্ঞাসা করিতেছেন। যদ না ব্রিয়া থাকেন, তাহা হইলে অক্ত উপার অবলম্বন করিয়া আবার তাঁহাকে ব্রুটবেন, ইহাই প্রশ্নকর্তার অভিপ্রায়। [একেবারে না ব্রিলে বারাস্তরেও] অক্ত প্রকারে প্রয়ম্ব করিয়া শিষ্যকে কুডার্থ করাই আচার্য্যের ধর্মা, ইহাও এই প্রশ্নের দারা প্রদর্শিত হইতেছে। "কচিংং" এই শল্পটি 'কিং' এই অর্থে প্রযুক্ত হইয়াছে [ইহা জিজ্ঞাসার স্চক অব্যয় শল্প] হে পার্থ, আমি যাহা বলিলাম, তুমি একাগ্রচিত্তে তাহা ভনিয়াছ কি ? অর্থাৎ ভনিয়া অবধারণ করিতে সমর্থ হইয়াছ কি ? তোমার "অজ্ঞানসংনোহ" অজ্ঞানহতে উৎপন্ন সংমোহ অর্থাৎ অবিবেক [কি প্রকার ?] যাহা স্বাভাবিক, তাহা নাই হইয়াছে কি ? বাহার লক্ত তোমার এই প্রবণায়াস এবং আমারও এই উপদেশারাস তাহা সিত্ত হইয়াছে ত ? হে ধনঞ্জয় ॥৭২

অজ্জুন উৰাচ।

নক্টো মোহঃ স্মৃতির্লব্ধা স্বৎপ্রসাদান্ময়াচ্যুত। স্থিতোহস্মি গতসন্দেহঃ করিষ্যে বচনং তব ॥৭৩

অশ্বয়। অৰ্জুন: উবাচ—হে অচ্যুত! বংপ্ৰসাদাং গোঁহং নষ্টঃ, স্বৃতিঃ লবা, গতসন্দেহঃ স্থিতোহস্মি তব বচনং করিবো॥ ৭০

আনুবাদ। অর্জুন কহিলেন, হে অচ্যত! তোমার **অনুগ্রেছ** আমার মোহ বিনষ্ট হইরাছে, আমি আয়তব্বিষয়ক স্বৃতি অর্থাৎ জ্ঞান লাভ করিয়াছি। আমার সন্দেহ দ্রীভূত হইরাছে, এবং আমি স্থির হইরাছি, আমি তোমারই কথানুসারে কাব্য করিব॥৭৩

ভাষ্য । নাষ্টা নোহঃ অজ্ঞানজঃ সমন্তসংসারানর্থহেতৃঃ সাগর ইব হন্তরঃ। বিশ্বতিক আত্মতব্বিষয়া গলা। বস্তু লাভাই সর্বগ্রহীনাং বিপ্রমোকঃ। ছং-প্রসাদাই তব প্রসাদাই মরা ছংপ্রসাদমাল্রিতেন অচ্যুত। অনেন বোহনালপ্রশ্ব-প্রতিবচনেন সর্বাল্রখিজ্ঞানফলমেতাবদেবেতি নিশ্চিতং দশিতং তবতি বহুজা-জানসংখ্যাহনালঃ আত্মত্মতিলাভন্চ ইতি। তথা চ প্রতিত বনাত্মবিজ্ঞোচারিশ ইত্যুপ্রস্তু আত্মজ্ঞানে সর্বগ্রহিবিপ্রমোক্ষ উক্তঃ। "ভিন্ততে হননগ্রহিং" ভিত্তি কো মোহং কঃ শোক একসমন্ত্রপ্রতঃ" ইতি চ মন্ত্রবং। অথেলানীং ক্লোসন্ত

হিতোহম্মি গতসন্দেহ: মুক্তসংশর: করিষ্যে বচনং তবাহৎ স্বৎপ্রসাদাৎ স্বহং ক্বতার্থ: ন মম কর্ত্তবামন্তীত্যভিপ্রার: ॥१৩

আনন্দণিরিটীকা। প্রেনোপদিষ্টাব্দজানত অজ্ঞানসন্দেহবিপর্ব্যাসরহিতত পৃষ্ঠত ভগবদমূগ্রহপ্রাপ্তিকথনেন ভগবন্তং পরিতোষন্নিরারজ্জনে। বিজ্ঞাপিতবানি: তাহি—্ অর্জ্জুন ইতি। অজ্ঞানোখন্তাবিবেকত নইন্থমেব স্পষ্টরতি— সমস্ত-ইতি। ব্যৱংজ্ঞাতিরি প্রতীচি ব্রহ্মণ্যবিষ্ঠাত্রমং বিষ্ঠাপনরতি নাবিদিতং প্রকাশরতীতি মন্বাহ— স্মৃতিক্ষেতি। বৃতিলাভে কিং তাদিভিচেৎ ভদাহ—
বস্তা ইতি। সোহনাশে বৃতিপ্রতিলয়ে চাসাধারণকারণমাহ—তৃৎপ্রসাদা-দিতি। প্রক্রতেন প্রশ্ন প্রতিবচনেন লব্ধমর্থং কণরতি— অনেনেতি। 'বহুক্তং বৃতিপ্রতিলন্তাদশেবতো হৃদয়গ্রন্থীনাং বিপ্রমোলঃ তাদিতি তত্র প্রমাণমাহ—তথা চেতি। জ্ঞানাদজ্ঞানতংকার্যানিব্র্য্রো শ্রুতান্তর্মপি সংবাদয়তি—ভিত্তত্তইতি। ভগবদমূগ্রহাৎ অজ্ঞানক্রতমোহদাহানন্ত্রম্ আত্মজ্ঞানে প্রতিলক্ষে দদাজ্ঞান্ত্রাব্দং ব্যাকরোতি—অত্থিতি। ভব বচনং করিব্যেহ্হমিত্যত্ত তাৎপর্য্যমাহ — অহ্মিতি ॥৩৩

অকুবাদ। মাহ নষ্ট হইরাছে [সে মোহ কিরপ ?] সমন্তসংসারানর্থের হৈতু এবং ৰজ্ঞান হইতে উৎপন্ন। আত্মতত্ববিষয়ের "শ্বতি" জ্ঞানকেও পাইরাছি। বে স্বৃতির লাভ ২ইলে দকল প্রকার গ্রন্থির মোচন হয়। তোমার অনুগ্রহে— ভোমারই অমুগ্রহকে একমাত্র আশ্রয় করিয়া আমি [এই স্বৃতিকে লাভ করিয়াছি] হে অচ্যুত! এই মোহনাশ বিষয়ে প্রশের যে উত্তর দেওয়া হইয়াছে, তাহা ছারা निन्डिड्डारव देशहे প্রতিপাদিত হইতেছে যে, অ্ঞানল গোহের ধ্বংস এবং আত্মন্বতিলাভ এই ছঃটিই সর্কশান্তার্থজ্ঞানের পরিণাম। সেইরূপ শ্রুতিতেও। দেখা বার বে, "আমি আত্মাকে না জানিরাই শোক করিতেছি" এই প্রকার আরম্ভ করিয়া উপসংহারেও বলা হইরাছে যে, আত্মতত্ত্জান হইলেই সকল প্রকার গ্রন্থির (শোকের) নাশ হয়। "হাদয়ের গ্রন্থি ভিন্ন হয়" "আত্মার একড যে দেখিতে পায়, তাহার সেই জ্ঞানকালে শোক ও মোহ কি প্রকার ?" এই প্রকার বেদমন্ত্রগুলি [ও দেখিতে পাঙ্মা বার]। এইক্লে আমি তোমার আজা প্রতিপালন করিবার জন্ত অবস্থিতি করিতেছি। স্থামার গলৌহ দুরীভূত হইরাছে। আমি ভোমার বচনই [প্রতিপালন] করিব। ভোমার অনুএংে আমি কৃতকৃত্যতা লাভ করিয়াছি। আমার আর [অন্ত] কোন কর্ত্তব্য নাই। ইহাই [এই স্বোকের] অভিপ্রায় ॥ ৭৩

্সঞ্জর উবাচ।

ইত্যহং বাস্থদেবস্থ পার্থস্থ চ মহাত্মনঃ। সংবাদমিমমশ্রোধমদ্ভুতং রোমহর্ষণম্॥৭৪

আমুয়। সঞ্জঃ উবাচ—মহাত্মনঃ বাস্থদেবত পার্থক । অভ্তং রোমহর্ণাং (লোমাঞ্চরং) সংবাদং অহম্ অল্পোবম্॥ ৪

আমুবাদ। সঞ্জয় বলিলেন, মহাত্মা বাস্থদেব এবং আর্কুনের এই প্রকার রোমাঞ্চলনক ও বিত্মরকর কলোপকথন আমি প্রবণ করিয়াছি ॥°৪

ভাষ্য । পরিসমাপ্তঃ শান্তার্থঃ। অপেদানীং কথাসম্বর্জপ্রদর্শনার্থম্— ইত্যেবমহং বাস্থদেবতা পার্থতা চ মহাজ্মনঃ সংবাদম্ ইমং যথোক্তম্ অপ্রোবং শ্রুতবান্ অস্থি। অভূতম্ অত্যস্তবিস্ময়করং রোমহর্বণং রোমাঞ্চকরম্॥ १৪

আনন্দগিরিটীকা ৷ শাত্রাধে সমাপ্তে সত্যক্তামবহারাং সঞ্জরবচনং কুরোপযুক্তমিতি ভদাহ—পরিসমাপ্ত ইতি ৷ বাহুদেবত সর্বজ্ঞত সর্বেধরত কুরোপযুক্তমিতি ভদাহ অপরিসমাপ্ত ইতি ৷ বাহুদেবত সর্বজ্ঞত সর্বেধরত কুরার্ভি পার্বত পৃগান্তভার্জ্জনত মহান্মনোহকুদ্রবুদ্ধেঃ সর্বাধিকারি গুণসম্পত্নত সমাঞ্চং বাদং সংবাদং গুরুশিব্যভাবেন প্রশ্নপ্রতিব্যাভিধানমিমশ্ অনুক্রান্তশ্ব বোমাণি জ্যুত্তি পুলকীভবন্ত্যানেনেতি রোমহর্বপসাহলাদকরং বধোক্তং প্রতানস্মাত্যাহ —ইত্যেবমিতি ॥ '৪

অকুবাদ। শাস্তার্থ পরিসমাপ্ত হইরাছে, এক্ষণে কণার সম্বন্ধ প্রদর্শন করাইবার জন্ম [বলা হইতেছে] এই প্রকারে মানি মহান্ধা বাস্থদেবের এবং অর্জুনের যথে।ক্ত সংবাদ (কথোপকথন) শুনিরাছি, [উহা কিরূপ ?] "অঙ্ভ" অত্যক্ত বিশ্বরুকর, এবং "রোমহর্ষণ" রোমাঞ্চকর ॥ ৭৪

> ব্যাসপ্রসাদাচ্ছুত্রবান্ এতদ্ গুহুমহং পরম্। যোগং যোগেশ্বরাৎ কৃষ্ণাৎ সাক্ষাৎ কথয়তঃ স্বয়ম্॥ ৭৫

অনুষ্য়। স্বরং কথরতঃ ঘোণেস্বরাৎ ক্রফাৎ এতৎ পরং ওক্তং (গোপ্যং) বোগম্ অবং ব্যাস প্রসাদাৎ সাক্ষাৎ প্রতবান্॥ १৫

আনুবাদ। স্বরং এই প্রকার উপদেশ করিতেছিলেন যে বোগেশর ব্রক্ত, তাঁহার মুথ হইতে আমি ব্যাসদেবের অন্থগ্রহে [দিবাদৃষ্টি লাভ করিয়া] সাক্ষাৎ এই পরম গোপনীর যোগ গুনিয়াছি॥ १६

ভাষ্য ৷ তং চেমন্—ব্যাসপ্রসাদাৎ ততো দিব্যচক্রণভাৎ শ্রুতবান্ এতং সংবাদং গুজ্ম শহং পরং বোগং বোগার্থভাৎ সংবাদমিমং বোগ্যেব বা বোগেখরাৎ কুকাৎ সাকাৎ ক্থরতঃ বরং ম প্রশার্ভিঃ ॥ ৭৫ আনন্দগিরিটীকা। প্রস্তুষ্ট সংবাদং কথমশ্রোবারিতি চেৎ তত্তাহ—
তক্ষেতি। এতৎপদং সংবাদপরভাৎ পুংলিক্ষনে নেতবামিত্যাহ—এতমিতি।
পরমপ্রুবার্থেনপরিক্ষাৎ পরস্থং পরং শুহুমতিশরেন শুহুং রহন্তমিতি বা বোগো
ভানং কর্ম চ তদর্থস্থাদরং সংবাদো বোগ উক্তঃ অথবা চিত্তবৃত্তিনিরোধন্ত.
বোগন্তাক্ষ্মদরং সংবাদো বোগ ইত্যাহ—সংবাদমিতি। বোগানামীধরো বোগেশরঃ তদপুগ্রহহেতৃত্বাৎ বোগতৎক্ষশরোঃ ততঃ সাক্ষাদব্যবধানেন শ্রুতবান্ ন
পরম্পরয়েত্যাহ—যোগেশ্বরাদিতি। স্বরং স্থেন পরমেশ্বরেণাতিরম্বত্ত্তানৈশ্বর্যুক্তবেপ কথমতো ব্যাচক্ষাণাদিত্যর্থঃ ॥ ১১

অনুবাদ। সেই এই ব্যাসের অন্ত্রহে অর্থাৎ তাঁহার অন্ত্রহে দিব্য নেত্র লাভ করিরাছি বলিরা, এই ''গুহু'' গোপ্য ''সংবাদ'' কণোপকথন আমি ভিনিরাছি [এই সংবাদ কিরূপ ?] ''বোগ'' ইহার প্রতিপান্থ বিষয় যোগ, এই ' কারণে ইহাকেই বোগ [বলিরা, নির্দেশ করা হইরাছে] অথবা ইহাই বোগ। [কাহার নিকট হইতে ?] বোগেশ্বর জ্ঞীক্ষক শ্বরং বলিতেছিলেন, আমি ইহা নিজে সাক্ষাৎ তাঁহার মুথ হইতে শুনিরাছি, প্রম্পরার শুনি নাই॥ १৫

> রাজন্ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য সংবাদমিমমন্ত্রুম্। কেশবার্জ্নয়োঃ পুণ্যং হৃষ্যামি চ মুহুমুক্তঃ॥ ৭৬

আৰুয় । হে রাজন্ ! কেশবার্জনুনরো: ইনং পুণ্যন্ অভূতং সংবাদং সংস্কৃত্য সংস্বৃত্য মূতঃ মূতঃ ভ্রামি [অহন্] ॥ ৭৬

আমুবাদ। হে রাজন্। কেশব ও সুর্জ্নের এই পুণাজনক ও ,বিস্ফুকর সংবাদ বারবার স্বরণ করিয়া আমি মৃত্যুক্তঃ হর্বপ্রাপ্ত হইতেছি । १৯

ভাষ্য। হে রাজন্ ধৃতরাষ্ট্র ! সংস্থৃতা সংস্থৃতা সংবাদমিমভুতং কেশবা-জুনরোঃ পুণাং শ্রবণাদপি পাপহরং শ্রুষা হায়ামি চ মুক্মুইঃ প্রতিদণ্ম ॥ ৭৬

আনন্দগিরিটীকা। বথোক্তং সংবাদং ভগবতঃ শ্রুতা কিমুপেক্ষ্যে নেড়্যাহ —রাজমিতি। পুণ্যম্বং সাধয়তি—শ্রোবণাদপীতি । ৭৬

আমুবাদ। হে রাজন্ ধৃতরাষ্ট্র । কেশব ও অর্জ্জুনের অঙ্ত এবং পর্ম পবিত্র অর্থাৎ শ্রুতিমাত্তেই পাপনাশন এই সংবাদ (কথােুপকথন) স্থরণ করিয়া আমি প্রতিক্রণ হর্ব লাভ করিতেছি॥ ৭৬

> তচ্চ সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য রূপমত্যদুতং হরেঃ। বিশ্বয়ো মে মহান্ রাজন্ হুয়ামি চ পুনঃ পুনঃ॥ ৭৭

আহ্বয়। তে রাজন্। হরে: তৎ অত্যত্তং রূপং সংখ্তা সংখ্তাচ বৈ মহান্বিশ্বরো [ভবতি] [অহম্] পুন: পুন: হ্ব্যামি চ 🖁 ৭৭

্**অসুবাদ।** হে রাজন! শ্রীহরির সেই অত্যন্তুত রূপ স্বরণ করিতে করিতে (ষতই স্বরণ করি ততই) আমার মহান্ বিশ্বর হইতেছে এবং আমি প্রতিক্ষণে হর্বণাভ করিতেছি॥ ৭৭

ভাষ্য | তক্ত সংস্থা সংস্থা রূপমতাত্তং হরেঃ বিশ্বরণং বিশ্বরো মে মহান্ হে রাজন্! হারামি চ পুনঃ পুনঃ ¦ ৭ ৭

আনন্দ্রিটীক। যৎ তু বিষরপাধ্যং রূপং সপ্তণমূর্জুনার ভগবান্ দর্শিতবান ধ্যানার্থং তদিদানীং স্তোতি—ত্যুক্তি ॥ १৭

আকুবাদ। সেই এইরির অভিশয় বিশারকররপ সর্থাং বিশারপ শারণ করিতে করিতে আমোর মহান্ বিশায় হইতেছে। হে রঞ্জন্ শামি পুনঃ পুনঃ হাই (রোমাঞ্চিত) হইতেছি॥ ৭৭

> যত্র যোগেশ্বরঃ কৃষ্ণো যত্র পার্থো ধকুর্দ্ধরঃ। তত্ত্ব শ্রীবিজয়ো ভৃতিগ্রুবা নীতির্মতির্মন॥ ৮৮

আমৃত্য। যত্ত যোগেশর: ক্লফ: যত্ত পার্থ: ধক্ত্রির. তত্ত আটি: বিজয়: ভৃতি: গুবানীতি: [ইতি] মম মতি: ॥ ৭৮

আনুবাদ। বে পকে থোগেশর ক্ষক, বে পকে ধছর্দ্ধর পার্থ, সেই পকে শ্রী বিজয় ভূতি এবং গ্রবনীতি, ইংাই সামার নিশ্চয়॥ ৭৮

ভাষ্য। কিং বছনা বত্ত যশিন্ পক্ষে বোগেশবঃ সর্ক্যোগানানীশরন্তং প্রভবজ্বাৎ সর্ক্যোগবীজ্ঞ কৃষ্ণ:। যত্ত পার্থো যশিন্ পক্ষে ধমুর্দ্ধরঃ গাঙীবধৰা। তত্ত শ্রীঃ তশ্বিন্ পাণ্ডবানাং পক্ষে বিজয়ঃ তত্ত্বৈব ভূতিঃ শ্রিরো বিশেৰো বিস্তারো ভূতিঃ ধ্রবা অব্যভিচারিণী নীতিন্ম ইত্যেবং মতিম্মৈতি॥ ৭৮

আনন্দ্রির নিক।। বরোর পি রুষার্জ্নরো: নরনারারণরো: সংবাদত প্রামাণ্যার্থং পরমুৎকর্বং দর্শরতি—কিং বহুনেতি। কথং সর্বেষাং বোগানানীখরো ভগবানিতি তত্তাহ—তৎপ্রভবত্তাদিতি। সর্ক্ষোগো জ্ঞানং কর্ম চ তত্ত বীজং শাস্ক্রীরং জ্ঞানবৈরাগ্যাদি তদ্ধি ভগবদধীনং তদম্প্রাহবিহীনত তদবোগাদভো-বোগতংক্সরোর্ভগবদম্প্রহায়ন্তভাদ্ ভগবত্যে বোগেখরছমিতার্থ:। বীলাম্বীন্বিজয়: পরম উৎকর্ম:। রাজ্যে ধৃতরাইত স্বপ্তের্ বিজয়াশাং শিধিলীকত্য পাওবের্ ক্র প্রান্তিবিদ্যান্তিকীমুখ্যংহরতি—ইত্যেব্যক্তি। উপারোধ্যক্তাবেন নিঠাব্যক্ত

অভিঠাপিভৰাৎ কর্মনিঠাপরস্পরত্বা জাননিঠাহেতুঃ, স্কাননিঠা তৃ সাকালেই বোজ-হেতুরিতি শাল্লার্থমূপসংহর্তুমিতীত্যক্তম্।

কাওজনাম্বং শান্তং পদবাক্যার্থগোচন্ত্রন্থ।
আদিমধ্যান্তবট্কেব্ ব্যাধ্যানা গোচনীকুতন্ ॥ ১
সংক্রেপবিস্তরাভ্যাং বো লক্ষণৈরূপগাদিতঃ।
সোহর্থেছিন্তিনেন সংক্রিপ্য লক্ষণেন বিবক্ষিতঃ॥২
নীভাশান্তনহার্ণবোখনমৃতং বৈকুঠকঠোত্তবং
ক্রিক্ঠাপরনামবন্থনিকৃতং নিঠাবরভোভিতন্।
নিঠা বন মভিপ্রসাদরননী সাকাৎকৃতং ক্রিতী
মোকে পর্যাব্যান্ততি প্রতিদিনং সেবধ্বনেতদ্ বৃধাঃ।৩
প্রাচামাচর্য্যপাদানাং পদবীমন্থগ্রুতা।
নীভাভাব্যে কৃতা টীকা টীক্তাং প্রুব্যেন্তমন্॥ ৭৮

অমুবাদ। বে পক্ষে "বোগেরর" সকল বোগের ঈশর, তাৎপর্য এই বে, ক্রিনিই সকল প্রকার বোগের স্টেইকর্তা, এই কারণে সকল বোগের বীজ্ঞসক্ষণ ও বে পক্ষে এইকপ শ্রীক্ষক [বর্ত্তমান আছেন] ও বে পক্ষে পার্ব শিহর্ত্বর গাঁভীবধারী [বর্ত্তমান আছেন] সে পক্ষে "শ্রীত সম্পাৎ, সেই পক্ষে বিজ্ঞর, সেই পক্ষে "ভূতি" সম্পাদের বিশেষরূপ বিস্তারই ভূতি শক্ষেব অর্থ ও সেই পক্ষে "ক্রব" অব্যক্তিচারিনী "নীতি" নয়, ইহাই আমার মতি॥ ৭৮

हेि बहान स्मार्थातः नमार्थः।

श्रीहतिः।

এককার্পণমন্ত।